राजस्थान के जैन शास्त्र भगडारों की प्रंथ सूची पंचम भाग



# राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

# 💳 ग्रंथ-सूची 💳

(पंचम भाग)

( राजस्यान के विभिन्न नगरों एवं ग्रामों के ४४ शास्त्र मण्डारों में संग्रहीत २० हजार से मी अधिक पाण्डलिपियों का परिचयात्मक विवरण )

ग्रामीबदि

मुनि प्रवर १०८ श्री विद्यानन्दर्जी महाराज

पुरावाय् ः

डा॰ हजारीप्रमाट द्विवेदी

सम्पादकः

डा० कम्तूरचन्द कासलीवाल एम. ए., पी.-एव. डी., शास्त्री पं० अनूपचन्द न्यायतीर्थ साहस्यस्त

•

प्रकाशकः -

सोइनलाल सोगागी

मन्त्री:

प्रवन्ध कारिसी कमेटी

श्री दि० जैन ग्र० क्षेत्र श्रीमहावीरजी

# प्राप्ति स्थान

- १. साहित्य शोध विभाग, दि० जैन अ० होत्र श्रीमहावीरजी महाबीर भवन, सवार्दमानसिंह हाईवे, जयपुर-३
- २. मैंनेजर दि॰ जैन अ॰ चेत्र श्रीमहावीरजी भोमहाबीरजी (राजस्थान)

प्रथम संस्करण वी० नि० स० २४६८ मृज्य ४•० प्रति मार्च, ७२ ४०)

# = विषय-सूची =

#### १ शास्त्र मण्डारो की नामावली

२ प्रकाशकीय --- सोहनलाल सोगाणी

३ ग्राशीबीद -- मुनि श्री विद्यानस्य जी महाराज ४ पूरोवाक डा० हजारी प्रसाद द्विजेदी

५ ग्रामार एव प्रस्तावना ग्रादि

		ग्रन्थ सस्या	पत्र संस्था
Ę	ग्रागम सिद्धान्त एव चर्चा	€3₽	3=-\$
G	धर्मण्य ग्राचार शास्त्र	<b>६</b> २ <b>२</b>	90-108
5	ध्रध्यातम, चितन एव योगणास्त्र	७२३	१००-२४७
3	न्याय एव दर्शन शास्त्र	१७४	₹8 <b>=-</b> ₹\$
90	पुराग्ग साहित्य	¥56	२ <b>६४-३१३</b>
११	काव्य एवं चरित	3008	₹ <b>१</b> ४~४२•
193	कथा माहित्य	1900	४२१-५०६
₹ ₹	व्याकरम् शास्त्र	२२४	<b>₹ ₹ • − ₹ ₹ •</b>
ŧ¥	कोश	१०५	<b>५३१५४</b> •
१५	ज्योतिए, शकुन एव निभित्त शास्त्र	₹ <b>X</b> ₹	<b>५४१-५७</b> २
۶٤	<b>प्रायुर्वेद</b>	₹•8	403-462
وع	श्चलकार एवं छन्द शास्त्र	23	* 63-607
१ ≒	नाटक एवं संगीत	٤.	६०३–६०६
₹€	लोक विज्ञान	₹ \$	<b>६१०−६१</b> €
२०	मत्र शास्त्र	80	६२०-६२४
5 \$	श्रुगार एवं कामशास्त्र	3₽	६२६-६२६
२२	रास फागु वेलि	१३२	६३०–६५ ७
२३	इतिहास	Хź	६४१–६४७
۶.۶	विनास एव संग्रह कृतिया	<b>१</b>	६४६-६८०
२५	नीति एव मुभाषित	२७३	६८१-७०८
२६	स्तोत्र साहित्य	<b>\$</b> <0	३७७-७ ०
२७	पूजा एव विधान साहित्य	१६७५	3 € 3 −000
२८	गुटका सग्रह	१२३५	६४०-११७२
₹8	भविशब्द साहित्य	३६६	<b>११</b> ७३-१२ <b>०</b> ८

२० प्र बानुकमिणिका १२०६-१३०० १३ प्र य एव धंषकार १३०६-१३६४ १२ प्रापको की नामाविल १३६८-१३६० १३ प्राप एव नगर नामाविल १३६८-१३६०

# शास्त्र भण्डारों की नामाविल

?	शास्त्र सण्हार	म ० दि० जैन मन्दिर, (बड़ा घडा) भजमेर
2		दि० जैन सण्डेलवाल प्रवासती मन्दिर, भ्रलवर
÷	**	दि० जैन श्रप्रवाल पंचायती मन्दिर, <b>शल</b> वर
٧	••	दि० जैन मन्दिर, दूनी
ų	91	दि० जैन संघेरवाल मस्टिर, ग्रावा 👍
Ę		रि० जैन मन्दिर पार्श्व नाथ बुदी
9	,	दि० जैन मन्दिर श्रादिनाय, चुदी
Ę		दि० जैन मन्दिर ग्रिमनन्दन स्वामी, बुदी
3	٠,	दि० जैन मन्दिर महावीर स्वामी, बूँदी
•		दि० तैन मन्दिर नेमिनाय स्वामी, बूदी
ŧ	11	दि० जैन मन्दिर बधेरवाल, नैरावा
Ç	ν	दि० जैन मन्दिर तेरापयी, नैगाबा
3	.,	दि० जैन मन्दिर श्रव्याल, नैगावा
۵	**	दि० जैन मन्दिर, दबलाना
4	,	दि० नैन मन्दिर पार्श्वनाथ, इन्दरगढ़
٤		दि० जैन ग्रयवाल मन्दिर, फनेहपुर (शेखाबाटी)
3	.,	दि० जैन पचायनी मन्दिर, मरतपुर
۵.	••	दि० जैन मन्दिर फोब्रगम, भरतपुर
Ē,	**	टि॰ जैन पंचायती मन्दिर, नयी डीग
0	19	६० जैन बडी पचायती मन्दिर, नयी डीग
	31	दि० जैन मन्दिर, पुरानी कीय
Ť	•,	दि० जैन खण्डेनवाल पचायती मन्दिर, कामा
	**	दि० जैन भग्रवाल मन्दिर, कामा
•	10	(८० जन नेमिनाथ मन्दिर, टोडारायसिंह
y	78	दि० त्रैन पार्श्वनाथ मन्दिर, टोडत् <b>गयसिंह</b>
Ę	,,	दि० जैन मन्दिर, राजमहल
9	<b>.</b>	दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा
ς,		दि० जैन पचायती मन्दिर, बयाना
3	•	(द० जैन छोटा मन्दि <b>र, बयाना</b>
	,,	दि० जैन मन्दिर, वैर
8	,,	दि॰ जैन भग्नवाल मन्दिर, उदयपुर

<b>३</b> २	मास्त्र भण्डार	दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर
33	••	दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर
₹४	,,	दि० चैन तेरहपथी मन्दिर, बसवा
34	••	दि० जैन पचायती मन्दिर, बसवा
3 €	.,	दि० जैन मन्दिर कोटडियोका, हं नरपुर
₹७	,,	दि० जैन मन्दिर, भ।दवा
३८	"	दि० जैन मन्दिर चोधरियान, मालपुरा
₹€	"	दि० जैन ग्रादिनाय स्वामी, मालपुरा
¥.	"	दि० जैन मन्दिर तेरहपथी, मालपुरा
Yŧ	,,	दि० जैन पंचायती मन्दिर, करोली
85	"	दि० जैन मस्दिर सोगासीयो का, करोली
Α3	•	दि० जैन बीसपथी मन्दिर, दौसा
**	,,	वि॰ जैन तेरहपत्री मन्दिर, दौसा
¥¥	**	दि० जैन मस्दिर लक्ष्कर, जयपुर

# प्रकाशकीय

यम पूजी के तम पजम आग मे राजम्यान के विशिध्न नगरी व कस्त्री में स्थित ४% मास्य अध्यान के सहत्य, प्राज्य, प्रभाग है। यदि प्रदर्श में सहत्य, प्रभाग, एवंदी एवं राजम्यान आगा के प्रयो का विवरण दिया गया है। यदि दूरों में संबद्दीन पाण्डुनिरायों को सम्या को जोड़ा जाय तो इस सूची में बीस हुआ से प्रिफ्त याँचों का विवरण प्राप्त होगा। ससूचे साहित्यक जगन में ऐसी विशास उप्य सूची का प्रकाशन सम्यत प्रमाप चटना है। वे इस्तिनिय्तत य पाजस्थान के प्रमुव नगर अपपुर, संबंध, उदयपुर, ह्रायपुर, कोटा, बूदी, प्रजय प्रसुद, एवं प्रमुख कस्त्र टोशारापित, भाजपुर, तैयावा, उपयोद, ब्याया, वंद, दलाला, फतेहपूर, दूवी राजमहल, वस्त्र मुख्य कर्मा टोशा प्रारं के दिशास्त्र ने मांत्र प्रप्ति का स्वाप्त प्रमुश्त है। दल्की प्रमुख कर्मा का कार्य हमारे के दिशास्त्र ने मांत्र प्रमुख कर्मा कार्य हमारे के दिशास्त्र ने सांत्र प्रमुख कर्मा कार्य हमारे के दिशास्त्र ने सांत्र के प्रमुख कर्मा कार्य हमारे कार्य हमारे स्वाप्त कर प्रमुख सांत्र कार्य हमारे सांत्र कार्य सांत्र हमारे मारे कार्य हमारे कार्य हमारे सांत्र कार्य सांत्र हमारे कार्य कार्य हमारे कार्य कार्य हमारे कार्य कार्य सांत्र हमारे सांत्र कार्य कार्य हमारे कार्य हमारे सांत्र कार्य हमारे हमारे कार्य कार्य हमारे कार्य कार्य हमारे कार्य विद्यास है।

भगवान महावीर के जीवन पर निबद नवलराम कवि का ''बदंमान पुरास्।'' कामा के शास्त्र मदार में उपलब्ध हुमा है यह १७ वी जनावी की इति है तथा भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित हिन्दी कृतियों में प्रस्थावक प्राचीन है। श्रीमहावीर जो क्षेत्र की घोर से नगवान महावीय के जीवन से सम्बन्धित प्रमुख हिन्दी कार्यों के लीक्ष प्रकाशन की योजना विचाराधीन है। सभी राजस्थान में नागौर कुचामन, प्रतायगढ़, सायवाडा, सादि स्थानों के महस्वपूर्ण प्रंच भण्डारों की मुखी का कार्य प्रवाण्य है। इनकी सूची दो भागों में समाप्त हो जायगी, ऐसी मात्रा है। इस प्रकार राजस्थान के सन्त्र मण्डारों की प्रंच सूची के 0 भाग प्रकाशित हो जान के परचान् प्रच मूची प्रकाणन की हमारी योजना मगवान महाबीर की २५०० वी निर्वाण जावाडी तक पूर्ण हो गरेगी।

प्रबन्धकारिसी कोर्ग उन विभिन्न नगरे एवं कस्त्री के शास्त्र भण्डारों के व्यवस्थायकों की ब्राभारी है जिन्होंने विद्वानों का प्रथ सूची बनानं कंकाय में पूर्ण गहेंगा प्रदान किया है। प्राणा है भविष्य में नी साहित्य सेवा के प्रतीत नार्थ में उनका कहारीण प्राप्त होना क्षेत्रण।

क्षेत्र कमेटो पूरण १००० पुनिवर ध्यो विद्यानपञ्जी महाराज की भी आभारो है जिन्नोने इस सूर्यों स प्रकाणनार्थ अपना पुनोत अभिविदे प्रदान करन की पहुँची जगा की है। साहित्योद्धार व कार्य में मनियी पुनास इसे बराबर प्रेरणा मिल्ली रहते हैं। इस साहित्य के नहीं न विदान हो। हमारिप्रनार जो दिवसी के नी सामारो है जिन्नोंने दसका पुरीवाक् निक्यों की कुणा की है।

> महावीर भवन जयपुर

सोहनलाल सीगागाी मंत्री

# ग्राशीर्वाट

धर्म, जानि घोर समात की स्विति में बहा संस्कृति मून कारण है, वहा इनके संबंधन घोर मरकाण में साहित्य का भी महत्वपूर्ण स्थान है। सन्कृति एवं साहित्य दोनो बोबन घोर प्रश्लावायु सहस परस्परिचेती है। एक के बिना दुमरे की स्थिति ममब नहीं। प्रतः दोनो का संस्कृत्यु प्रान्द्यक है।

सादि युगपुरम नीर्घ कर शुगमदेव से प्रवितित दित्य देशना ने तीर्घ कर वर्ड मान पर्यस्त सोर समावित ने विदान पारण भी, वह साहित्य की ही देत हैं। यदि प्राप्त के युग में प्राण्डीन साहित्य हमारे बीच न होता ती हमारा सम्मिन्द हो सम्मान प्राय था। भारत के प्रभुत शारामां में साज भी विद्युल साहित्य मुद्दिकत है। न जाने, किन किन महापारणों, धर्मपं दियों ने दस नाहित्य की की की प्रयत्नों से रक्षा की। पिछले नमपों में बढ़े बढ़े उत्तर की प्रमुत्त मामाया था। विद्युलिया के कहा कब किनने करते पर्मदेशि संभावता चर्च, दस्का तो सत्तीत विद्युल साहित्य की प्रमुत्त साहाय की प्रमुत्त कराया साथा होने सो साव के भण्डारों में विप्न साहित्य की प्रमुत्त होता। स्थाप है कि ऐसे साहित्य की प्रमुत्त का ध्यान सथा सी प्रमुत्त स्थापों से उसके उद्धार का कार्य प्रनुत्त से समक्ष साने सना, यह मुखद प्रमुत्त है।

राजन्यान के बान्य अण्डारों की घय भूषों का वसम भाग हमारे समक्ष है। इसके पूर्व चार भागों में नवपम वच्चीन हजार ये पो को पूर्वों प्रकाशित हो चुकी है। इन भाग में भी लगमम बीम हजार वंची ते नमावली है। प्राकृत, प्राप्त या, सन्कृत, राजन्यानी योर हिन्दी सभी भागायों में लगभग एक हजार लेलकों, मानायों, मुनियों भी विदानों की प्यत्यय है। इन प्यत्यामं में दोहा, चीचई, राम, कानु, बेलि, मतसई, बाबनी, जनक मादि के माध्यम में तरब, पाचार विचार एवं क्या सबची बिविष या यहै।

प्रस्तुत प्रकाषन के महत्वपूर्ण कार्य से श्रीमहावीरजी प्रतिषय क्षेत्र कमेटी, उसके तलकालीन मंत्रियों सी जानवण्ड विष्णूका व सी सीहननाल सोगाएंगे के साहित्योदार प्रेम की भलक सहज ही मिल जाती है। ग्रन्य तीचेंक्षेत्रों के प्रवण्यों को इनका जनुकरण कर साहित्योदार में विश्व नेत्र सर्वेषा उपयोगी है। ग्रंथ कंपादन के कार्य में सी पं अपूर्व न्यापतीर्ष, साहित्यरूल से डाल साहब को पूरा पूरा तहयोग मिला है। हमारी भावना है कि समाज भीर देण इस समृत्य पूरी का महिकाषिक लाभ ने सके।

विद्यानन्द मुनि

खज्जैन ३०-१२-७१

# पुरोवाक्

मुक्ते राजस्थान के जैन प्राप्त मण्डारों की इस पांचवीं यां यू मुखी को वेख कर बड़ी प्रसक्ता हुई। डा॰ कामलोवालजी ने विभिन्न नगरो एव यामों के ४४ शास्त्र मण्डारों का झालोडन करके इस पर सूची को ने यार किया है। इसमें लगमन बील हकार पाण्डुलियों का झालोडन करके इस पर सूची को ने यार किया है। इसमें है। इस यं थू नूची में कुछ ऐसी महावपुर्य पुस्तके भी हैं जिनका प्रमी तक प्रकाशन नहीं हुमा है। मुक्ते यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि डा॰ कस्तूरचन्य जी एवं यं॰ प्रतूपचन्य जी ने इस यंथ मूची का प्रकाशन करके नारी शोध कर्ताधों और शास्त्र जिल्लाखों के लिए बहुत ही महत्वपूर्य पंच देवा है। इस प्रकार को यंथ मूचियों में मान प्रकाशन चित्र पर्वाच है। महत्वपूर्य पंच देवा है। इस प्रकाशन विश्व मुख्य में आप कर्ता को प्रयन्त समीच्या मार्ग की सुखना में सिंग स्वाच समीच समीच सार्ग की सुखना में सिंग स्वाच समीच सार्ग की सुखना में सिंग स्वाच सार्ग की सुखना है। वे इस के प्रवाच महत्वपूर्य कार्य प्रवाच महत्वपूर्य कार्य कर रहे हैं। मेरा विश्वसा है कि विद्वत समाज उनके प्रयन्तों का पूरा सार्ग उठाएगा।

यद्याप इन यं घों की सूची जन मण्डारों से सपह की गई तथापि यह नहीं समस्ता वाहिए कि इसमें केवल जेन घमं से संबद्ध पथ ही है। ऐसे बहुत से प्रंथ हैं जो कि जैन धमें केव के बाहर भी पढ़ते हैं धौर कई यब हिन्दी साहित्य के शोध कर्तामों के लिए बहुत उपयोगी जान पढ़ते हैं। इस महस्वपूर्ण ग्रंथ सूची के प्रकासन के लिए थी महाबीर तीय क्षेत्र ककेटी के मण्डी भी सोहलास जो मीगाशी तथा डा० कस्तूरचन्द जो ग्रोर ए० ग्रनुपचन्द जो न्यायसीय साहित्य भीर विद्या प्रेमियों के हार्विक पन्यवाद के प्रधिकारी हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वारासभी

# ग्रंथ सूची-एक झलक

म सस्या	नाम		संस्था
ŧ	ग्रंथ संख्या		χοχο
• ₹	पाण्डुलिपि सस्या		20,000
₹	ग्र <b>ंब</b> कार		१०८०
¥	ग्राम एव नगर		६२०
<b>X</b>	शासकों की सम्या		१३५
Ę	श्रक्षात एव श्रप्रकाणित ग्रंथ विव	रग्	100
· ·	ग्रथ भण्डारों की सम्ब्यः		ΥX

#### ग्राभार

हम सर्वप्रयम क्षेत्र कर पश्च कारियों कभटों के गभी माननीय सदस्यों तथा विशेषतः निवर्तमान मंत्री श्रीज्ञानकद्व जी मिल्कुण एवं वर्तमान कारकः थी मोध्यालाल की काला तथा मंत्री श्री मोहतलालजी सोमासी के प्राभागे हैं जिन्होंने ये ये सुधी ने इस मांग को प्रकाशन करताले 'स्मान्तिय काम हत्त्र उपकार किया है। क्षेत्र कोरी इस्त माहित्य सोम एवं माहित्य काशन के अन में अः महत्त्रपूर्ण कैये किया गया है वह प्रस्थिक प्रकाशनिय एवं ब्लामशिय है। याजा है भविषय में माहित्य प्रसादन के काय की गीर मी प्राविम्बता मिलेगी।

हम राजन्यान के उन मनी दि० जैन मिंचरों के स्वरूप्यायम में साभारी हैं जिन्हींने स्वपने यहां स्थित शान्त अवदारों की प्रथ मुखी बनाने में हमें पूर्ण जहयोग दिया। बान्तव म यदि उनका सहस्रोण नहीं मिलता तो इस इस कार्य में प्रमति नहीं कर सकते थे। ऐसे स्वयाधायक महानुभावों से निम्न निवित्त सप्त्रजों के नाम विशेषतः जन्मेलनीय हैं।

ह सस्पर	स्व० श्रीमीराचन्द जी गाधी
•	म्ब० श्री रत्नलालजी कोटहिया
	न्रजमन्त्रीनन्दलालजी ढंह सर्राफ
फतेहपूर —	श्री बाबू गिन्नीलालजी जैन
धवमर	समस्त समाज दि॰ जैन मन्दिर बढाघडा (मट्टारक) भ्रजमेर
कोटा	श्रीका० नेभीचन्द जी
	श्रीस्व० ज्ञानचन्द जो
नेसाबा	श्री बात् जयकुमार जी वकील
ब दी	श्री सेठ मदनमोहन जी कासलीवाल
,	श्री केशरीमल जी गगवाल
दूनी	श्री मदननाल जी
मालपुरा	श्री समीरमल जी छाबडा
टोडारायसिह—	श्री मोहनला <b>लजी जैन</b>
	%; रतनलाल जी जैन
भरतपुर	श्रो बार्गासस्यन्य जी गोषा
उदयपुर	श्री सेठ पन्नालाल जी जैन
****	श्री मोतीलाल जी मींडा
बयाना	श्री रोशनलाल <b>जी टेकेटा</b> र
अवपुर	श्री मुंशी गैदीनाल जी साह
443	•

इस प्रवसर पर स्व० गुस्वस्यं प० वैनशुक्षदास ओ सा० न्यायतीयं के वरणों में सावर श्रद्धाञ्चित धर्मित है जिनकी सतत प्रेरणा से ही राजक्यान के इन सास्त्र मण्डारों की प्रव मूची का कार्य क्रिया वा सका । हम इसारे सहयोगी स्व० कुमानक्द जी जेन की देवाओं की भी नहीं मुना ककी जिन्होंने हमारे साव रह कर सास्त्र मण्डारों की प्रंच सूची बनाने में हमें पूरा सहयोग दिया था। उनके प्राक्तिमक स्वगंदास से साहित्यक कार्यों में हमें प्राच सुची बनाने में हमें पूरा सहयोग दिया था। उनके प्राक्तिमक स्वगंदास से साहित्यक कार्यों में हमें कार्य अपने प्राच हमें प्राच सुची की प्रमुक्त सिला के सी प्रामारी हैं विन्होंने यां सूची की प्रमुक्त सिलाक़ से वीचार करने से पुरा सहयोग दिया है।

हिल्ली के मूर्ब न्य बिदान् दा॰ हजारी प्रसाद जी दिवेदी के हम सन्यश्विक माभारी हैं जिन्होंने हमारे निवेदन् पर ग्रंथ सुची पर पुरोबाक् निवते की महती हुए। को है। जैन साहित्य की भ्रोर माणकी विशेष क्षि रही हैं भ्रोर हुमें भ्रामा है कि भ्रापकी भेरणा से हिन्दी के दितद्वास में जैन विदानों को कृतियों को उचित स्थान प्रान्त होगा।

राष्ट्रमत मुनिप्रवर श्री विद्यान दत्री महाराज का हम किन शब्दों में ग्राभार प्रकट करें। मृति श्री कर भागोवदि हो हमारी साहित्यक साधना का सबल है।

१-१-७२

कस्तूरचन्द कासलीवाल ग्रनूपचन्द न्यायतीर्थ

#### प्रस्तावना

राजस्थार के सारण मण्डारों का याँर मुन्याकन किया जाने तो हमारे पूर्वजों की नुद्धिमत्ता एवं उनके साम्वित्यक में म की जितनी भी प्रमास की बावे बही कम सहंगी। उन्होंने समय की गति को पहिचाना, साहिस्त निर्मास के साम बाथ उसनी सुरका की घोर भी स्थान दिया ग्रीर धोरे-पीरे लाखों की संस्था में पाणुलिपियों का संस्कृत कर किया। मुनियम मासन काल में जिल प्रकार नहींने साहिस्यक परोहर को सपने प्रायुत्ते को मी समिक प्रिय समक्त कर सुरक्षित रक्षा वह माज एक कहानी बन गयी है। यहां के मासक एव जनता दोनों ने ही मिल कर समक्त कर सुरक्षित रक्षा वह माज एक कहानी बन गयी है। यहां के मासक एव जनता दोनों ने ही मिल कर समक्त प्रसासों से साहिस्य की प्रकृत निर्मा के निर्मा होते से बचा लिया। इसकिय तहा के बातकों ने तहां राज्य स्तर पर भ व प्रवह्मायों एवं योबोखानों की स्थानना की, वहां यहा की जनता ने पपने-पपने मनिर्दे पर निर्मा स्थानों पर भी पाणुलियों का मुन्न स्वाह का था। भी कोनेर की मनूप संस्कृत नामके री एवं अव्युद्ध का पोजीखाना जिल प्रतार प्रायोग पाणुलियों के महह के लिये दिव्यविक्यात है उसी प्रकार नायौर, जैसलमेर, स्वामेर, कोनेन एवं उद्यापुर के जैन स चालम मो है किर भी गत २० वर्षों में इत संमुहानमों की जो दश्च कुणियां साम है उसी प्रायोग ही उसी दिवान वस इस मोर प्रावृत्य होने सो है सीर प्रवृत्त सामी है उसी स्वा सामी की अपने है उसी प्रवृत्त मानि है उसी सामी है उसी प्रवृत्त सामी है स्था सामी स्थानी है असी स्वान सामी है उसी प्रवृत्त सामी है उसी प्रवृत्त सामी है उसी प्रवृत्त सामी है अपने होने सामी है उसी प्रवृत्त सामी है उसी प्रवृत्त सामी होने सामी है उसी प्रवृत्त सामी है उसी प्रवृत्त सामी होने सामी है सम्बा है।

जनता द्वारा स्वाधित राजस्थान के इन जास्त्र भण्डारों से जैन जास्त्र भण्डारों की सबसे बड़ी सल्या है। ये बाक्ष्य श्रव्यार राजस्थान के सभी प्रमुख नगरों एव कस्वों से मिसते हैं। यद्यपि बामी तक इन लास्त्र वण्डारों की पूरी सूची सेवाद महीं हो सकी है। मैंने बपने Jain Granth Bhandars in Rajasthan में ऐसे १०० खाक्स प्रव्यारों का परिचय दिया है सेकिन उसके पश्चात और मी कितने ही प्रवागारों का ष्ठं सुभी का पांचवां साम विद्वानी एव पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इनये जयपुर नगर के सामक्ष प्रस्तार दिंव जैन सन्दिर लक्कर के सिनिस्त सभी साहत्र अध्वार दिंव जैन सन्दिर लक्कर के सिनिस्त सभी साहत्र अध्वार दावस्थान के विभिन्न नगरी एवं करवां में सिन्दिर सिन्दिर से साहत्र अध्वार अध्वार से सम्बद्ध से सी सिक्त पानुविद्यों का परिचयात्मक विवार दिया नगा है। एक ही भाग में इतनी सिक्त पाण्डुनिष्यों का परिचय देने का हमारा यह प्रवस्त प्रमान है। इत साहत्र अध्वार के से सी सिक्त समय समा। एक एक अध्वार के देखा, वहां के प्रवी की भूषीकराएं के कार्य के हमें वद्ध करना, सहस्त्रक्ष कर साम के अव्वार्थ तहर तहर तहर प्रमान प्रमान हो में वो कि में वे केटनी ये परिवर्तित करना, महत्ववृद्ध पाठों नव प्रमान्दित करना, पुराने एवं कीएं सीट्र केटन के कोर्य केटनी ये परिवर्तित करना, महत्ववृद्ध पाठों नव प्रमान्दित की प्रति विधित तथा, पूरे अब भण्डार को ध्यवस्थित करना सादि सभी कार्य हमें करने पढ़े कोर यह कार्य कितना अम साध्य है हमें कुक्त भीगी हो जान सकता है। किर भी, यह कार्य कार्य हम हो स्वार्थ अप सम्मत्ते हैं क्यों कि कुछ ऐसे कारत अध्वार भी है जिन्हे पत्थांत वर्षों है नहीं सोना गया और उनमें किननी र साहित्यक निर्यात विध्यान है हवे जानने वन कभी प्रयास हो नहीं किया।

इस यं य सूची में बीस हार पाण्डुलिपियों के परिचय के प्रतिरिक्त संकडों यं प्रश्नास्त्रयों, लेखक प्रश्नास्त्रयों तथा प्रवस्य एव प्राचीनतम पाण्डुलिपियों का परिचय भा दिया गया है। इस सूची के प्रवस्तेवत संवस्त्रयों तथा प्रवस्त विदानों को इसका पता लग सकेपा कि संवक्त कर के प्रवस्त विदानों को इसका पता लग सकेपा कि संवक्त प्रयोग है जिनकी चाण्डुलिपियों की जानकारी मिली है जिनके बारे में साहित्यक जगन प्रभी तक प्रमंदेर में था। कुछ ऐसे प्रच है जिनकी चाण्डुलिपिया राज-स्थान के प्राय: सभी बास्त्र भण्डामें में उपलब्ध होती है जो उनकी लोकप्रियता की घोतक है। स्वय प्रवक्तारों की प्रस्त प्रवक्त में अपना के प्रयास प्रवक्त में सम्बद्ध प्रवक्त स्वयं पाठ के प्रसाद पर प्रकाशन के समय पाठ भेद जैसा दुक्ट कार्य कम हो लावेगा धीर पाठ की प्रमाशिक्तता में उद्योगित हों करना पहेगा। महापिक्त टीडरसल के प्रमाश्चासन माथा की विभिन्न मण्डारों में ४६ प्रतिक्रिपियों संप्रहीत हैं इसी प्रकार ममोहरवास सोनी की प्रवर्शियां की प्रणार्ट्सियत के व्यक्तित की स्वर्शन के व्यक्तित की स्वर्शन होत्र स्वर्शन के व्यक्तित की स्वर्शन होत्र स्वर्शन के व्यक्तित की देश.

पपनिष्द पंचिवकित की ३५, ऋषमदास िंगोरमा के मूनावार भाषा की ३३, हुमचन्द्र के जानाएँव की ३५, मूचरवात के चर्चात्मायान की २६ पाण्डुलिया उपत्वव हुई हैं। सबसे अधिक महाकवि मूचरदास के पाच्छेदार को वाच्छुदार के वाच्छुदार को पाच्छुदार के स्वाद्ध के प्रचान का कि तांव वाच्छा प्रभी इसका कितनी उत्पुक्त से स्वाद्ध वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत के वाच्छुत वाच्छ वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत वाच्छुत

इस भाग में रावस्थान के विधान नगरों एवं गामों में स्थित दिगम्बर अने मन्दिरों में संमहीत ४५ गास्त्र मण्यारों की हत्तिविवत पाणुविचियों का परिचय दिया गया हैं। ये बाह्य मण्यारों को हत्तिविवत पाणुविचियों का परिचय दिया गया हैं। ये बाह्य मण्यारों को हत्तिविवत पाणुविचियों का परिचय गणुविचियों का समह सिलता है नथा कुछ बाहर मण्यारों में १०० से भी कम हत्तिविवत प्रव है। इन मण्डारों के १०० से भी कम हत्तिविवत प्रव है। इन मण्डारों के श्रविचित तथा उनके समह का मत्यिक और रहा। मुस्तिम काल में प्रतिकिष्त की गयी पाण्युविपयों को सबसे प्रविच संस्था है। यं प्रमण्यारों के लिये इन सातिवयों को हम उनका स्वर्णकाल कह सकते हैं। प्रामेर, नागीर, प्रवर्णन, सालावाइ, कार्गा, मोजमाबाद, दी. टोडाराविन्द, चनावती (चाटमू) प्रादि स्थाचों के बाह्य मण्डार हम सताविवयों में स्थापित किये गये और रही श्वानी पर पंचो की तेजी से प्रतिविधित की गयी। यह युग महारक सस्या का क्यां युग या। साहित्य नेवन एव उनकी सुरक्षा एव प्रचार प्रसार में वितता इन भट्टारकों का योगदान रहा उतना योगदान किसी साधु सस्या एव समाज का नहीं रहा। महारक सकलकीर्ति से नेकर १० वी मानावी तक होने वाले भट्टारक मुरेक्शील तक इन भट्टारकों ने देश में जबरदस्त साहित्य प्रचार किया और वन जन को इस मोर सोहत का प्रधान किया।

लेकिन राजस्थान में महायदित टोडरमल थी के किन्तिकारी विचारों के कारण इस सस्या को जवन्दरन प्राचान पहुंचा प्रोर फिर साहित्य लेखन का कार्य प्रवच्य सा हो गया। अयपुर नगर ने सारे जैन ममाज का मार्गदर्भन किया थीर यहां पर होने वाल पंच दोलतराज कासलीवाल, प० टोडरमल, मार्ड रायमलल, प० अयचन्य खाड़ा, प० सराजुलदात कासलीवाल और विद्वानों को कृतियों को पाण्डुलिपिया तो होती ही किन्तु प्राइत, सस्कृत, प्रपत्ने ला एवं हिनी राजस्थानी भाषा कृतियों को सर्वेषा उपेक्षा कर दी गयी। यही नहीं प्रयो की सुरला की घोर मो कार्य ख्यान नहीं दिया गया। भीर हमारी इसी उपेक्षा वृत्ति से प्रया प्रणाही के लाले नग गये। सैकडों प्रया पूर्वी प्रीर दीमकों के विकार हो गये घोर सक्कृत एव प्राइत की हुजारों पाण्डुलिपियों को नहीं समक्ष सकते के कारण अल प्रवाहित कर दियागया।

लेकिन गत २५-३० वर्षों से समाज में एक पुत्रः साहित्यिक चेतना जाग्रत हुई घीर साहित्य सुरका एवं खसे प्रकाशन की घीर उदका ध्यान जाने जगा। यही कारण है कि धान सारे को मुनः जैन में बाकारी के वांचे पुत्रः जैन में बाकारी में के वांचे पुत्रः जैन में बाकारी में के वांचे प्रकारों के महत्वपूर्ण पर प्रकाशन में पर्वारों में मुरक्षित है। विश्वविद्यालयों में जैन धानायों एवं उनके साहित्य पर रिसर्च होने लगी है वर्षीक प्राव्य के विद्यान एक शिल्प के प्रकाशन के जिल्ला कर कुछ काम करना चाहता है। इस्तिये ऐसे समय में प्रवाद का प्रविद्यालयों का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत य सूची में राजस्थान के जिन शास्त्र मण्डारों का विद्यार एवं परिचय निष्य प्रकाश के जिन शास्त्र मण्डारों का विद्यार प्रियाण है उन प्रवाद है उन्हें परिचय निष्य प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है। महत्वपूर्ण कारण कारण है उन्हें परिचय निष्य प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य है।

#### शास्त्र मण्डार भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर श्रममेर

महारकीय दि॰ जैन मन्दिर धनमेर का वाश्त्र मण्डार राजस्थान के प्राचीनतम वंच मण्डारों में ते एक है। इस पंच मण्डार की स्थापना कह दुई थी इसकी तो घनों तक निष्वत कोज नहीं ही सकी है कर पूर्व सिहारकों को गांदी के साथ बास्त्र मण्डारों की स्थापना का संबंध जोड़ा वार्व तो यहां का मास्त्र मण्डार रेखें कालक्ष्म में ही स्थापित हो जाना चाहिये, ऐसी हमारी मास्यता है। क्योंकि संवत ११६० में महारक विकास कीर्ति प्रधम महारक के रूप में यहां की गांदी पर हैंटे थे। इसके परचात १६ की जातान्त्री से तो प्रजमेर सहारकों के प्रस्ता केट कर मा महारकों ने पान्कृतिपामों के तिस्त्री में प्रत्यिक योग दिया भीर इस मण्डार की प्रस्तुद्धि की घीर जुड़ कार्य किया।

इस मण्डार को सर्वे प्रयम स्व० श्री जुगलिक क्षोरजी मुस्तार एव प० परमानन्दश्री मास्त्री ने वहा कुछ समय ठहरकर देखा था किन्तु वे इस की ग्रंथ सूची नहीं बना पाये इसलिए इसके पण्चात् दिसम्बर १९५० में हम सोग वहां गये भौर पुरे भाठ दिन तक ठहर कर इस मण्डार की ग्रंथ सूची तैयार की ।

 जीवन एवं आ युक्ते सन्वत्व में त्रिजेष प्रकाश पक्षता है। यदि इस प्रवास्त का-सन्वत्व पं०टोडरमलजी से ही है तो फिर टोडरमलजी की बायु के सन्वत्व में सभी मान्यताएं (पारएएएं) गलत दिख हो जाती है। यदि सक्त् १७६३ में पंदितजी की बायु १५-१६ वर्ष की जी मान ली जावे तो उनके जीवन की नयी कहानी प्रारम्म हो जाती है, और उनकी बायु २५-२६ वर्ष की न रहकर ५० वर्ष से भी ऊपर पहुंच जाती है लेकिन सभी इस की लीज होना वेष है।

#### ग्रलवर

प्रनवर प्रान्त का नाम पहिले मत्स्य प्रदेश या जो महामारत कालीन राजा विराट का राज्य था । मिंद्रों के नाम से भव भी यहा एक प्राप्त है। जो मतस्य का हो सपभंश शब्द है। यही कारए है कि राजस्थान निर्माण के पूर्व भनवर, भरतपुर, घोलपुर और करोजी राज्यों के एकीकरण के पश्चात् इस प्रदेश का नाम सहस्य रेज क्ला नाथा। १६ सी सतस्यों के पूर्व भनवर भी जयपुर के राज्य में सम्मिनित था लेकिन महाराजा प्रताशित ने प्रपना स्वत्य राज्य स्थापित किया और उसका भनवर नाम दिया। सज्जवर नाम यौर देहली जयपुर के मध्य में बता हुआ है।

जैन साहित्य धौर सस्कृति का भी जनवर प्रदेश धण्या केन्द्र रहा है। इस प्रदेश में धलवर के घतिरिक्त तिवारा, अजवगढ़, रावगढ़, ब्रादि प्राचेन स्थान है और जिनमें सास्त्र संख्यार भी क्यांपित हैं। बहा ७ मनिदर हैं हैं थिर सभी में गंध मण्डार है। सबसे अधिक गंध सण्डेनताल प्यापनी मदिर एवं प्रावधाल पंचायती मदिर हैं हैं कि जौन स्वध्येत्वरा व्यापनी मदिर में मिलामर स्लोग एवं तात्वार्यमूत्र की स्वख्येत्वरा अवियां हैं थी कला की हिण्ट से उन्लेखनीय हैं। वयपुर के महाराजा सवार्य प्राचित हारा लिखित प्रायुक्षेदिक प्राचं समुत्रधालर मी भी एक उत्तम प्रति है सक्त लेखन काल मंत्र १९८१ है। स्वध्येतवाल पंचायती मंदिर के बाहक प्रयुक्त में प्रश्ने स्वाप्त प्रयूक्त स्वाप्त संप्ति स्वाप्त प्रयूक्त स्वाप्त प्रयूक्त स्वाप्त प्रयूक्त स्वाप्त प्रयूक्त स्वाप्त प्रयूक्त स्वाप्त स्वाप्त

# शास्त्र मण्डार दि० जैन मंदिर दुनी

जयपुर से देवली जाने वाली सङ्क पर स्थित दूवी एक प्राचीन कस्वा है। यह टॉक से १२ मीक एवं देवली से ६ लाज है। जयपुर राज्य का यह कार्यारी गांव वा जिसके ठानुर राकराजा कहलाई से। यहां एक दिन तेन ते से ते हैं। सिरंद है। सिरंद के एक साग पर एक जो लेख प्र निकत है उसके प्रमुखार इस सिद्द का निर्माण संवे ११ रूप से हिया या और हतीलिये यहां का ये व लखार नी उसी समय का स्थापित किया हुवा है। यहां के ये व भण्डार में १४३ हस्तिलिय यहां का ये व लखार नी उसी समय का स्वाधित किया हुवा है। यहां के ये व भण्डार में १४३ हस्तिलिय यं व हैं। जिनमें अधिकांश पृष्ट हिन्दी माग के हैं। या मण्डार में सबसे प्राचीन पाण्डिलिय संवद १४०० में लिये की हुई जिनदस कवा है। विद्यासागार की हिन्दी रचनाएं भी यहां संवदीत हैं जिनमें भीकह स्थल, जिनाया महोत्व सुक्त स्थल्या है। स्थी तरह तानुसाह का भूतना, गंग किय का 'राजुन का बारह माता' हिन्दी की सजात स्थनाएं है।

गंग कवि पर्यंत क्योंचीं के पुत्र थे। महारक सुभवन्त्र के जीवंघर कशासी चरित्र की सबत् १६१६ में लिली हुई पाण्डुलिपि भी उल्लेखनीय है। बाख किंब इत कलियुगवरित्र (संबन् १६७४) की हिन्दी की प्रच्छी इति है।

#### ज्ञास्त्र प्रवशार दि० जेन बधेरकाल संदिर ग्रावां

टींक प्रांत का प्रावा एक प्राचीन नगर है। साहित्य एवं संस्कृति की हाँग्ट से १६-१७ वी बतावसी में यह मौरव पूर्ण स्थान रहा। बारों भीर छोटी र पहाड़ियों के मध्य में स्थित होने के कारण जैन साहुर्यों के सिथ विस्तत करने का यह एक प्रच्छा केन्द्र रहा। सबत् १४-६२ में यहां सडलाव्यार्थ यमेकीति के नेतृत्व में एक विस्त्र प्रतिकार प्रतिकार महोरवा पहोत्तव तपत्र हुमा वा जिसका एक विस्तृत का मिर में भ्राकित है। लेख में मोलकी वन के महाराजा मुसेरित के शासन की प्रश्न को गयी है इसी लेख में महाराजा पृथ्वीराज के नाम के का उल्लेख हुमा है। नगर के बाहर समीप ही छोटी मी पहाड़ी पर भ प्रमाचन्द्र भा जिनवन्द्र, एव भ० प्रमंचन्द्र की तीन निवेधिकाएं हैं जिनवर लेख भी भ्राकिन है। ऐसी निवेधिकाएं इस क्षेत्र में प्रयस्त्र बार उपलब्ध दुई है जो अपने प्रामे अहारकों के जबरदसर प्रभाव नो धोतक है।

यहा दो मदिर हैं एक बधेरवाल दि० जैन मदिर तथा दूसरा खण्डेन्दाल दि० जैन मदिर । दोनों ही मदिरों में हस्तिलिखित यथो का उल्लेखनीय संग्रह नहीं है केवल स्वाध्याय में काम धाने वाले प्रस्य ही उपलब्ध हैं।

बुंदी

बूदी राजस्थान का प्राचीन नगर है जो ब्राचीन काल के तृत्वावती में नाम से प्रसिद्ध था। कोटा में बीस मील परिचम की भीर स्थित बूदी एवं भाजाबाड़ का केत्र हाडीनी प्रदेश कहलाता है। सुगलमासन में बूदी के मासको का देश की राजस्थान की राजनीति में विशेष स्थान रही। साहित्यक एवं सास्कृतिक हण्टि से भी एंध में १८ वी एवं १८ वी शताब्दी में सहा पर्योग्ज गनिविधिया चलती रही। १७ वी शनाव्दी में होने वाले जेन कवि पथनाभने बूदी का निम्म शब्दी में उल्लेख किया है—

> बुदी इन्छपुरी जिलापुरी कि कुनेरपुरी रिजि विक्रिय भरी द्वारिंग्य काली घरीधर से धर्मसहर साम, घर बर जिलाज ता मन नर कालदेव जैसे सेवे मुक्का सह से बापी बाग बाक्रण बाजार बीबी विद्या देट बिजुब विकोर बानी जोते पुल्लि नर से तहां करे राज भावरवक्ष सहाराज हिन्दू धर्मसाज पातसाहि साज कर से

रै- कों शताब्दों से कांव दिलारास धीर होरा के नाम उल्लेखनीय है। सूदी नगर से ५ सन्य भण्डार है जिनके नाम निम्न प्रकार हैं—

१ स य भण्डार दि जैन मदिर पार्वनाश

२ ,, ग्रादिनाथ

४ . , भनिनन्दन स्वामी ४ . महावीर स्वामी

५ ,, नागदी (नेमिनाथ)

#### एं य मण्डार वि० क्षेत्र मन्विर पार्श्वनाथ

इस मण्डार में २३४ हस्तीलिकत ग्रंग एवं गुटके हैं। प्रथिकांत्र ग्रंग संस्कृत एवं हिन्दी माया के हैं तथा पूत्रा, क्या प्रमान एव स्तीत व्याकरण, विषयक हैं। इस मण्डार में ब्रह्म जिनदास विद्यित 'रामवन्द्र राख' की एक मुक्तर पण्डांतिष्ठ है। इसी तरह मकामरस्तीत्र हिन्दी गया टीका की प्रति भी यहां उपसम्ब हुई है जो हेसराज कृत है।

#### ग्रंथ मण्डार दि० जैन संदिर धादिनाथ

इस मन्दिर के प्रयापण्डार में १६० हस्तिनिश्चित यंथो का सप्रह है इस संबह में स्थोतिय रत्नमासा की सबसे प्राचीन प्रतिनिधि है जो संबद् १६१६ में निधि की गई थी। इसी तरह सागारवर्गामृत, त्रिलोकसार एवं उपवेशमाला की भी प्राचीन प्रतिया है।

## ग्रंथ मण्डार दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी

इस य व भण्डार में २६ - हस्तिशित यंत्री का सबह है। यह मदिर महारकों का केन्द्र रहा वा और यहां महारक गादी मी वी, और सबबत इसी कारत्य यहां यंत्रों का सम्ब्रास्थ है है। मब्दार में सपभां श भावाकी इति 'करकष्ट्र वरित की' सहूगंप्रति है जो सस्कृत टीका सहित है। सबह सम्ब्राह तथा यंत्रों की प्राचीन प्रतियां भी उन्तेवनीय हैं।

### ग्रंथ मण्डार दि० जैन संदिर महाबीर स्वामी

यह मन्दिर विद्वानों का केन्द्र रहा है। यहां के पंचों का प्रिमकांश संग्रह हिस्सी भाषा के पंचों का है। इसमें पुरास, कथा, पूत्रा एवं स्नीत्र साहित्य का बाहुत्य है। प्रचों की सख्या मुटकों **साहित १७२ है।** प्रिमकाश ग्रम १८–१८ वीं शताब्दी के है।

# ग्रंथ मण्डार दि० जैन मंदिर नागदी (नेमिनाथ)

नेमिनाय के मदिर में रियन यह ग्रंथ मण्डार नगर का महत्वपूर्ण मण्डार है। यहां पूर्ण ग्रंथों की सन्या २२२ है जो सभी प्रच्छी ग्या में हैं। नेकिन कुछ यम प्रपूर्ण प्रवस्था में हैं जिनके पत्र इपर उपर हो गये हैं इस संयहानय में 'माण्डानत प्रवस्त' जो गोजुन के सुत नरसी की हित्दी कृति है, की संवद १६५६ की घम्की प्रति है। श्रेणिक चरित एक जान मं० १८२४-दौलत मोसेरी) चतुर्गतिनाटक (डान्र्राम), घाराधनासार (विमतकीति), मोगवत पुरास्त (श्रीवर) घारि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस संग्रह में एक गुटके में नूचराज कवि की हिन्दी रचनाथी का घम्का संग्रह है।

इस प्रकार बुंदी नगर में हस्तलिखित ग्रंथों का महत्वपूर्ण सग्रह हैं।

#### नेरावा

बूदी प्रांत का नैरावा एक प्राचीन नगर है जो बूदी से २२ मील है और रोड से जुडा हुआ है। यह नगर प्रारम्म से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। उपलब्ध हरू जिल्लित प्रांचों में प्रवृत्तवरित की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है जो वन् १४६१ में इसी नगर विश्वी गई थी। महारक सक्तक्षकोर्ति के गुरु महारक प्यनिष्द का नंगावा मुख्य स्थान या और सक्तक्षिति ने बाठ वर्ष यही रह कर उनते किला प्रान्त की थी। महारक प्यनिष्ठ इर्रा प्रतिकारित नंगत (१४०० की किन प्रतिमाय टॉक के बाहर जैन निवाम में विराजमान है। इसी तरह तर रिक्त प्रतिकारित नंगत पेंद्र पेंद्र की जिन प्रतिमाय टॉक के बाहर जैन निवाम में विराजमान है। इसी तरह तर रिक्त हैंए यहाँ कीई 'बच्छा संग्रह नहीं है। यहां ठीन जैन प्रतिन्द हैं धीर इन तीनों में करीब २२० हस्तिनिवा व वी का संग्रह है। विकित यहां पर प्रतिविधि किन्ने हुए यह बाज भी बूंदी, कोटा, इवलाना, इरराज, प्रामेन, जयपुर, भरतपुर एवं कामा के म्यवस्था होते हैं। इसते यहां की साहित्यक गितिथियों जयपुर के प्रय मण्डारों में मुर्सिल है। इसी तरह समाधितन भाषा-वंतकवर्षीर्य (सन् १७१६), क्रियाकोण माथा-विकानीसह (सन् १७४७) पार्वपुराण भूषरदास (संवन् १००६) तमयसार नाटक-बनारसीशस (वन् १०४१) बादि कुछ एती पार्युतिथियां है जनका तेलत हमी नगर में हुआ था।

#### शास्त्र संपद्धार दि० जीन बचेरताल संतर

यह यहा का प्राचीन एवं प्रसिद्ध मन्दिर है जिसके माध्य मण्डार में १०४ हस्तर्जितन प्रयों का समृद्द है। सभी पंच सामान्य विषयों से सम्बन्धित हैं। इसी मण्डार में एक गुटका मी है जिसमें हिन्दी की किंतनी ही मजात रचनामों का संग्रह है। कुछ रचनामों के नाम निगन प्रकार है—

सारसीखामिए। रास नेमिराजमितगीत	मट्टारकः सकलकीर्ति वहा यशोधर	१५ वी शताब्दी १६ वी शताब्दी
पञ्चेन्द्रियगीत	जिनसेन	•
नेमिराजमति वेलि	<b>सिहदास</b>	*,
वैशाग्य गीत	वहायकोदर	,,

# शास्त्र मण्डार वि० जैन तेरावंधी मन्दिर

इस गास्त्र भण्डार में पुरागु, पूबा, कथा एवं चरित सम्बन्धी रचनामी का समह मिलता है। महारक सकतकोति के शिष्य श्री लालचरद द्वारा निमित सम्मर्शणक्षर ूजा की एक प्रति हजी सबनू १८४२ में देश्याह नगर में छन्दोबद की गयी थी। यहा नीन मन्त्र हैं जो कपडे पर निमें हुए हैं। ऋषिमद्रल मत्र मबलू १४८५ का जिला हुया है। नथा २२० २३ इन्ब बाले झाकार का है। मत्र पर दी हुई प्रजनित निम्न प्रकार है—

श्री श्री श्री खुक्बन्द्रमूरिस्यो नमः । ध्रभ गवस्तरेस्तिन् श्री नृगविकमादित्य नताददः सवन् १५६५ वर्षे कार्तिक बदी रे सुक्र दिने श्री रिचीमडल यत्र बता धन्द्रसोग्य पः शहरतिन जिल्लापं नावकरेलेन विचित्त ब्रय भनतु । बृहद् निद्धसक्र यत्र वा लेशन काल सवन् १६१८ है स्पीर धर्मचक्र यत्र कालेखन काल सवन् १९७८ है।

# ग्रंथ मण्डार दि० जैन अग्रवाल मन्दिर

इस मन्दिर में कोई उल्लेखनीय संपन्न महीं है। केवल ३० पाण्डुलिनियों हैं जो पुरारए एवं कथा से सम्बन्धित है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मंदिर दबलाना

बूंदी ते १० मील परिवम की स्रोर स्थित दबलाना एक छोटा सा वाब है, लेकिन हस्तिचित व चों के संबह की ट्रिट से सहस्वपूर्ण है। यहां के भावार में ४२ इस्तिविलित व चों का सबह है। संबह से ऐसा पता लगता है कि यह सारा मण्डार किसी भट्टारक प्रवास सामु के पान या। बिसने यहां लाकर निंदर में विराव-सान कर दिया। सण्डार में कारय, चरित, करा, राम, व्याकरण, प्रायुवेंद एवं व्योतिय विदयक येथी का प्रवास संबह है। बूंदी, नैएवा, गोटडा, दाररागढ़, जयपुर, जोबपुर, सामवाडा एवं सीझवाली में लिखे हुए वंचों की प्रमुखता है। सबसे प्राचीन प्रति 'पदावयक बालाववोग' की पाण्डुलिपि है जो संबद १५२१ में मालवा मंडन की राज्यानी उपनेन में लिग्ने गयी थी। संबद्ध १५६६ में बिचित्त नेहड किंद का प्रावस्था एक सामवाडा एका लालदात का इतिहाससार समुख्य, राष्ट्र आनवाडा, राष्ट्र का साहिताचार सम्बन्ध कर साहिताचार सामुख्य, राष्ट्र आनवाडा प्रवस्था का कर १६००, साहित यो के नाम उन्तेवतीग है। यवडार से सबदीत पाण्डुलिपियों भी प्राचीन एवं युव है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ

इन्टरनद कोटा राज्य का प्राचीन महर है। यह परिवर्गी रेलवे की वही जाइन पर सवाईमाधोपुर घोर कोटा के मन्य में स्थिन है। ग्रांक रेटि जेन पार्थनाय मन्दिर में हस्तिस्थित प्राची का एक सबह उपलब्ध है ब्राह्म मण्डार में तस्त्रीलीला प्राची की सक्या २०० है। इनमें सिद्धान्त, स्त्रीन, घ्राचार मास्त्र, से सम्बर्धिन पार्थुलिपियों की मन्या नार्थाक हैं कुद्र घर ऐने भी है। जिनका सेवन इस नवार में हुसा था।

# शास्त्र मण्डार वि० जैन भ्रष्नवाल मन्दिर फतेहपुर (शेखावाटी)

फतेहपुर सीकर जिले का एक सुन्दरतम नगर है। चुरु से सीकर जाने वाली रेल्वे लाइन पर यह पश्चिमी रेल्वे का स्टेशन है। जैन साहित्य भीर कला की हिंदर से फ्लेइपर प्रारम्भ से ही केन्द्र रहा । देहली के भट्टारकी का इस नगर में सीधा सम्पक्त रहा धीर व यहां की व्यवस्था एवं साहित्य संग्रह की धीर विशेष ध्यान देते रहे । यहां का भारत भण्डार उन्हीं भड़दारकों की देन हैं। भारत भण्डार में हस्तिलिखन प्राची एवं गुटकों की सस्या २७४ हैं। इनमें गुटको की संख्या ७३ हैं जिनमें कितने ही महत्वपूर्ण हातिया संबहीत है। प्रजीवनराम द्वारा लिखा हमा यहा एक महत्वपुर्ग गुटका है जिसके १२२२ पुष्ठ है ग्रभी तक शास्त्र भण्डारों में उपलब्ध गुटकों में यह सबसे बडा गुटका हैं इसमे ज्योतिष एवं बायुर्वेद के पाठों का सम्रह हैं। जिनकी एक लाख क्लोक प्रमास संख्या है। इस गुरके को लिखने मे जीवनराम को २२ वर्ष (सबन १८३८ से १८६०) लगे थे। इसका लेखन चूरु मे प्रारम्म करके फोहपूर में समाप्त हमाया। इसी तरह भण्डार मे एक 'एमोकार महातम्य कथा" की एक पाण्डुलिपि है जिसमें १३" × ७३" बाकार वाले ७८ १ पत्र हैं। यह पाण्डुलिपि सचित्र है जिसमें ७६ चित्र हैं जो जैन पौरास्मिक परुषों के जीवन कथाओं पर तैयार किये गये है। यथ मण्डार में इस्तिविक्ति ग्रन्थ की समिक संख्या न होते हवे भी कितने ही हिन्दी के जब प्रवम बार उपलब्ध हए जिनका परिचय आगे दिया समा है। यहां मंथों की लिपि का कार्य भी होता था। विलोकसार भाषा (सबत १८०३), हरिवश पुराश (संबत १८२४) महावीर प्राण, समयसार नाटक एवं झानाएांव खादि की कितनी ही प्रतियों के नाम गिनाये जा सकते हैं। प्रंथ सुबी के कार्य में तगर के प्रसिद्ध समाज सेवी एव साहित्य प्रोमी श्री गित्रीलाल जी जैन का सहप्रोग मिला उनके हम यसही है।

#### भरतपुर

राजस्थान प्रदेश का भरतपुर एक जिला है। जो पर्यान्त समय तक साहित्यक केन्द्र रहा था। यज भूनि भूमि में होने के कारण यहां की भाषा भी पूर्णतः वज प्रभावित है। भरतपुर जिले में भरतपुर, डीग, कामा, वयाना, बैर, कुम्हेर पादि स्थानों में हस्तलिखिन यथों का घच्छा समृह है।

भरतपुर नगर की स्थापना सूरअभल जाट द्वाराको गयीथी। १८ वी शताब्दी की एक कवि श्रुत-सागर ने नगर की स्थापना का निम्म प्रकार वर्णन कियाहै ---

देश काठहड विरक्षि मैं, वदनस्यंथ राजान।
नाके पुत्र है भलो, सूरिजमल गुराधाम।
नेज पुज रांब है मयो लाभ कीनि गुराबान।
ताको मुजस है जगत मैं, तर्प दूसरो मान।
विनक्ष नगर जुब साइयो नाम मन्तपुर तास।

### शास्त्र मण्डार दि० जैन पंचायती मंदिर मरतपूर

प्रचो के सकतन की दिए से इस मन्दिर का जान्य प्रण्डार इस जिले का प्रमुख मण्डार है। सभी प्रच कामज पर तिले हुए हैं। बास्त्र प्रण्डार की स्वापका करत हुई थी, इसकी निवस्त तिथि वा दो कही उननेत्र नहीं मिलता तिकित मन्दिर निर्माण के बाद ही जिने के घर्य कामज देश प्रचों को मलद किया गया। 'है से जातवादी में प्रचों का सबसे परिक मण्ड हुया। भण्डार में हन्तिविध्त प्रचों की सब्या ८०१ है जिनमें सस्कृत एव हिन्दी भाषा के ही प्रचित्त वह है। मनमें प्राचीन पाण्ड्रांगिय वृत्तद तपानच्छ मुर्वादनी की वो मृति मुद्दन्त (द्वारा निर्मित है तथा जिसका लेवत काल मन्दर्ग १८६० है। इसी प्रचार में मनद १८६२ की दूरांगे पण्ड्रांगिय है। इसके प्रतिक्तित नगायाम कवि वा मामगुरुपण, हर्वज्वद का पर नगद, विक्यूरण का जिनदत्त माम, जोषपात कासजीवाल का मुलविलास की गाण्ड्रांगिय है। इसने प्रचार में मत्त्रभूपण को जनवत्त की स्वाप्त जोषपात कासजीवाल का मुलविलास की गाण्ड्रांगिय हो। प्रचार में मत्त्रभूपण को मत्त्रभूपण हो। स्वर्भ के एक सविल पण्ड्रांगिय है जिनमें १९ विल है। मण्डांगि का लेवत काल सवन १८२६ है। जैन कला को हि) से कलाका हो हो। से कलाका हो ही। से कलाका स्वर्भ १८ वर्ष कला की हि। से कलाका सवन सवन १८२६ है। जैन कला की हि।

# शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर फौजु स

भरतपुर नगर का यह दूसरा जैन मन्दिर है जहा उड़ानियित सबी का सबह है। मन्दिर के निर्माण को बभी अविक समय नहीं हुआ दासिये उन्होंनियत सबी का समझ भी करीब १०० वर्ष पुराना है। इस मज्यार में १५ इतिवित्त संबाहत सबद है। होनी भड़ता में कुन्हर के सिरावर्गनिह की सत्वार्थमुक पर हिन्दी गढ़ दीका उन्होंक्किनीय होते हैं। इसकी रचना सबन १९३५ में बी गयी थी।

# शास्त्र मण्डार पंचायती मन्दिर, डीग (नयी)

'दीगं पहिले भरतपुर राज्य को राजधानी घी। यात्र भी फब्जारो की नगरी के नाम से यह नगर प्रसिद्ध है। पचायनी मन्दर में हस्तिसिक्षत अयो का छोटासा समृह है जिसमें ८१ व ण्ट्रेलिपिया उपलब्ध होती हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सेवाराम पाटनी इसी नगर के थे। उनके द्वारा रचित मस्चिनावचरित की मूर्य पाण्डुलिपि इसी मण्डार में मुरक्षित है इस चरित काव्य का रचना काल सबत् १०५० है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन बडा पंचायती मन्दिर डीग

इस मन्दिर में पहिने हस्तिलिला प्रंचो का सम्बा सग्रह या। लेकिन मन्दिर के प्रवत्यकों की इस स्रोर जवासीनता के कारण प्रविकाण मण्ड सदा के लिये नमान्त हो गया। वर्तमान में यहा १६ प्रंच तो दूर्ण एवं सम्ब्री स्थिति में है और लेक सपूर्ण एवं बृटिन दशा में सप्रहीत है। शण्डार में मगवती प्राराधना भी सबसे प्राचीन पाण्डुलिए है। जिसका लेखन काल सबद् ११११ वंशाल मुक्ता सन्तमी है। इसकी प्रतिलिपि मावलगढ़ में महाराष्ट्रा कुंपकरण के गासन काल में हुई थी। इसके प्रतिस्ति राजहंत के यद्दर्शन समुख्य, प्रपत्रं के महाराष्ट्र के गासन काल में हुई थी। इसके प्रतिस्ति राजहंत के वस्तुस्वामी चरित की भी प्रच्छी पाण्डलिपिया है।

# शा त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर पुरानी डीग

पुरानी होग का दि० जैन मन्दिर सन्याधक प्राचीन है सौर एसा मालूम देता है कि इसका निर्माण १५ से बत क्यी पूर्वही हो चुका होगा। मिदर की प्राचीनगा को देवते हुए यहा प्रवाह आप अध्यार होना चाहिए लेकिन नयी होग एक भरतपुर बनने के पत्रवाद यहां ने बहुन से ग्रंथ उपर चया प्रवे गये। वसंमान में यहां के भष्टार में इस्ति सिका या यो की सक्या १०१ है लेकिन वे भी अध्याद तरहे तह हुए नहीं है। मण्डार के अधिकांश ये पहिन्दी भाषा के हैं। नयमन कि तो जिम्मागृगाविनास (उच्छा: काल सन १८६५) की एक पाण्ड्रियि यहा सबत् १८६६ की लिखी हुई है। मुकुन्दरास कीव के अपनागत वी पाण्ड्रियि मी उत्तम्बनीय है। किया चुक्तिया की वीची स्थापन प्रवाह से स्थापन प्यापन की जिल्ला में स्थापन प्रवाह से प्रवाह से स्थापन प्रवाह की जन्म पत्री की प्रति मी सबदीन है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर कामा

राजस्थान के प्राचीन नगरों में कामा नगर का भी नाम तिया जाता है। पहिले यह सरतपुर राज्य का प्रसिद्ध नगर था नेकिन प्राज्ञकन नहसीन का प्रधान कार्यालय है। उक्त मन्दिर के कास्त्र भण्डार में संग्रहीत प्रांची के घाधार पर इतना प्रथ्य कहा जा तकता है कि यह नगर १०-१० वी बताब्दी में साहिरयक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा। हिन्दी के प्रमिद्ध महाकवि दीननगर मत्राक्तीवाल में मुण्य जीधराख कासलीवाल यहा धाकर रुक्ते लगे ये जिन्होंने सबन् १०-६० में सुख्यविलान की रचना की थी। इसी तरह इत्से भी पूर्व पंचास्तिकाय एव प्रवचनकार को हेनगड़ के हिन्दी रोका की पाण्डीनिया भी इसी। मण्डार में उपलब्ध होती है।

भण्डार में मुटको सहित ५७८ पाण्ड्लिपिया उपलब्ध होती है। ये पाण्ड्लिपियां सस्कृत, प्राहृत प्रपः भंग, हिन्दी, वन एवं राजस्थानी भाषा से सम्बधित रचनाये हैं। यह मण्डार महत्वपूर्ण एवं सज्ञात तथा प्राचीन पाण्ड्लिपियों की रिष्ट से राजस्थान के प्रयुक्त भण्डारों में से हैं। कामा नगर सीर फिर यह साहत मन्दार साहित्यक गतिविधियों का बड़ा भारी केन्द्र रहा। सागरा के पश्चात सीर सागानेर एवं वयपुर के पूर्व कामा में ही एक सम्बद्ध सरहालय था। जहा बिडानों का समादर था इसलिए सण्डार से स्वन् १४०४ तक की पाण्ड्र-लिपियां मिनती है। यहा की कुछ्य महस्वपूर्ण पाण्डुलिपिया के नाम निस्न प्रकार है—

१ प्रंबोच वितामिए	राजगेलर मूरि	संस्कृत	लिपि संबंत् १४०४,
<ul> <li>भारमानुशासन टीक</li> </ul>	प्रभाषन्द्र "	•	62.66
३. भारमप्रशोध	कूमार कवि	,,	१४४७
४. धर्मपचिंकाति	ब्रह्म जिनदास	धपश्च श	
<ol> <li>पाश्वे पुरागा</li> </ol>	पद्मकीर्ति	**	१४७४
६. यशस्तिलक चम्पू	से मदेव	सस्कृत	έλ.ξ.ο
७. प्रवास्त चरित	सम्रारू कवि	वज भाषा	१४११ (रचना काल)

उक्त पाण्डुलिपियों के स्रतिरिक्त मंडार में भीर भी ब्रज्ञात, प्राचीन एवं सप्रकाशित रचनाएं हैं।

#### ज्ञास्त्र भण्डार ग्रंपवाल पंचायती मन्दिर कामां

इस मन्दिर में यांचों की संस्था प्रथिक नहीं हैं। पहिले ये समी प्रंच कान्देतवाल पवायती मन्दिर में ही वे लेकिन करीव ७० वर्ष पूर्व इस मन्दिर में से कुछ या प्रधायता पवायती मन्दिर में स्वापित कर दिये गये। यहाँ ११५ हस्तिनिक्तित यांचा हैं। इस अण्डार में सभार किन कृत एक प्रयुक्त चित्र की भी पण्डुनिषि हैं। जिसमें उसका रचना काल मान १२११ दिया हुसा है। किन्तु यह प्रति प्रपूर्ण है। उसी अण्डार में नवकारम कृत वर्षमान पुराण आया की पाण्डुनिषि है जो प्रथम बार उपनव्य हुई है। इसका ज्वान

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर पाश्वंनाथ टोडारायसिंह

टोडारायसिंह का प्राचीन नाम नक्षकगढ़ था। जैन यंथों की प्रणस्तियों, शिवालेको एव मूर्ति नेकों में तक्षकगढ़ का काफी नाम धाना है। इसकी स्थापना नागायों ने की यो नवा १४ थी धनावशी तक यह प्रदेश उद्यापुर के महाराणाओं के खंधीन रहा। जैने पर्म एव साहिष्ण का नक्षकगढ़ में काफी मान्यक्य रहा। विशेषिया के एक लेक से बर्णान धाना है कि टोडानगर में राज नक्षक के पूर्वजे में एक जैन मीटर बनाया था। जब से यह नगर कानकी बणी राजपूरी के प्रधीन हुया वन उसी समय में जैन मरिक्त के विकास में इन राजाओं का काफी योगदान रहा। महाराजा रामक्यर राव के शांशनहाल में यहा बहुत से प्रयोग प्रशित्त किया मान्यप्र हुई। इनने उसकाराययन, सायकुमार चरित्र (१० १६१०), संशोधर वर्षाण (१० १९४५) अच्छूत्यामां चौरत्र (संट १९६०) आदि यंथी के नाम उन्लेकां। है

यहां दो मन्दिरा में हस्तिलिया ग्रंथों का गण्ड मिलता है। कित व पश्चिम निम्न प्रकार है --

## शास्त्र भण्डार दि० जीन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह

नेमिनाय स्वामी के मन्दिर के जान्य नण्डार में २९६ इस्तांतियन स्वयो का स्वाप्त है। इस उप्यास में सबसे प्राचीन पार्ट्टिश क्रिकोक्तार टीवा मण्डवन्द्र पूर्वस्य की है जो स० १५८८ सावमा मृत्ते १४ की सिक्षी हुई है एक प्रवचनसार की संस्कृत टीका है जो स० १६०४ की है। इनके प्रतिस्कर धावीम तांच कर्युका (देवीसाम), आप्त प्राचीन सी होता (ग० सोमंदर), एलस्थान चीवर (द्वा जिन्द्रान) देवित्रक्या (विद्यासातर) आदि वर्षों की पाण्डिनियम भी उल्लेशनीय है। वर्षास्त में ऐसी हिननी ही रासाय है इनकी लिपि तक्षकपुर। (टीडारायसिंह) में हुई थी। इससे इस नगर की सांस्कृतिक सहना वा स्वन है पता चल जाता है।

## शास्त्र मण्डार वि० जैन मन्दिर पारवंताय टोडारायसिह

इस मन्दिर में छोटा सा प्रय भण्डार है जिसमे केवल ८१ पाड्सिपिया है जिसमें गुटके भी सम्मिलित हैं। यहाँ विजास सजक रचनाओं का प्रच्छा सथ ह है जिनमें धर्म विजास (धानतराम) बहाविजास (भगवतीयास) नमाचिजास, बनारसीविजास (बनारसीदास) द्वार के नाम उल्लेखनीय है वैसे यहा पर प्रची का सामाण्य संग्रह है।

### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर राजमहल

राजमहल बनास नदी के किनारे पर टोक जिले का एक प्राचीन कस्वाहै । संबंद १६६९ में अर्थ महाराजा मानसिंह का घामेर पर शासन था तब राजमहल भी उन्ही के घंधीन था । इसी सवत् में राजमहल में बहुत जिन्दास कृत हरिवक्षपुराण की प्रति का लेखन हुवा था।

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे २२५ हस्तीलीलत पाण्डुनिश्या है जिनमे आहा जिनदास इति करकण्डुरास, मुनि सुभवन्द्र की होसी कथा, त्रियोक पाटनी का इन्द्रिय नाटक म्रादि के नाम उरलेखनीय हैं। भण्डार में हिन्दी के प्रधिक प्रयाहे।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर बोरसली कौटा

दि० जंन मन्दिर मे स्थित अरात भण्डार नगर के प्रमुख य सम्मान्य में से है। इस मण्डार में४०५ हस्तितित प्रयो का प्रख्या नगर है। वेते ता जहा प्रमुख नारक मुद्र है। दिन हिन्दी के प्रयो की प्रयोग के प्रयोग ना राजस्वानी एक हिन्दी सभी भागायों के प्रयोग का समूर है। दिन हिन्दी के प्रयोग की प्रयोग हो। देन वी लालादी में लिख गये अप भागायों के प्रयोग नामहित्यक बातावरण प्रच्या या। महीपान चण्त (सबन् देन्दर), पवेरनावनी (सबन् देन्दर्र) मामित्रक प्राणा (सबन् देन्दर्र), पवेरनावनी (सबन् देन्दर्र) मामित्रक प्रणा (सबन् देन्दर्र) आत्रात गण्डानित प्राणा क्षा की है। मिला प्रयोग नामहित्यक प्रयाग में सबसे प्राणीन गण्डानित प्राणाय मुभव्य के जानास्थ की है जिसका लेखन काल मबन् १४४६ है। पत्यविधानस्था (भ जुनव्य) व्यवप्रभावासी विवाहकों (भ० नग्यद्रकीत) भेतावणों, रविवृत कथा (मुनि सक्तकविति), प्रवृत्य मामित्रका निम्मित्रका हिन्दे में प्रचीत प्रणीनराम (कुमुद्वव्य में निमित्रकाह वच्चीमी (बेत्यात्र) आदि कुछ हिन्दी रचनाव इस शास्त्र मण्डार की सहत्य गण्डा हिन्दी है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जेन मन्दिर बयाना

राजस्थान प्रदेश का अधारा नगर प्राचीनतम नगरों में में है। यहा का किया चतुर्थ बताब्दि से पूर्व ही निर्मित हो बुका था। डा॰ इस्तेजर को यहा पुष्ता कालीन स्वर्ण युत्राएं प्राप्त हुई थी। जैन सत्कृति और साहित्य की हरिट में भां यह प्रयोग कात्यिक नमृद्ध रहा था। यहां के दि॰ जैन मन्तिर १० वी साताब्दि के पूर्व के माने जाते हैं इत रृटि से गहां के जात्व भण्डार भी प्राचीन होने चाहिये थे लेकिन मुसलिम सासको का यह प्रयोग शर्देश कोच भाजन रहा दानिये यहां बहुमुख्य प्रय मुस्तित नहीं रह सके।

पंचायती मन्दिर का मास्त्र भण्डार यज्ञपि ग्रन्थ संख्या की टिप्ट से मणिक महस्यपूर्ण नही है लेकिन भण्डार पूर्ण व्यवस्थित है और प्रमुख रूप में हिन्दी पाण्डुलिपियों का प्रच्छा संग्रह है जिनकी सख्या १५० है। इनमें घत विचान पूजा (हीरालाल खुड़ाडिया), वाद्रप्रभपुराण (जिनेद्रभूषण) बाहुबलि छन्द (कुमुदवन्ट) नैमिनाच का छन्द (हेमबन्द) नेमिराजुलगीत (गुणबन्द्र) उदररीत (छीहल) के नाम उल्लेखनीय है।

# शास्त्र भण्डार वि० जैन छोटा मन्दिर बयाना

इस मन्दिर के बास्त्र भण्डार में १५१ पाण्डुलिपियो का सग्रह है। और को प्रायः सभी हिन्दी भाषा की है। बोडशकारलावापनपूत्रा (मुमितसागर) समोसरन पाट (लल्लूजाल - रचना स०१८३५) मीजावती माषा (लालचनर रचना स०१७३६) धराखाबनी (केशव टास रचना मवन् १७३६) हिन्दी पद (लान मुहम्मद) सादि पाण्डुलिपियो के नाम विशेषत. उल्लेखनीय है।

## शास्त्र मण्डार वि० जैन मन्दिर बैर

बयाना से पूर्व की और वैग' नामक एक पाचीन कस्वा है, वो माजकत तहसीन कार्यात्म है। यह स्थान चारों भोर परकोट से परिवेरिटत है। मुगल एक सन्द्रता नामन से यह उस्लेखनीय स्थान माना जाता था। यहां एक दिव जैन मन्दिर है जिसका नास्त्र भण्डार पूर्णतः स्थ्यन्तित है। कुछ कृतियां महन्वग्णं घवस्य है इसमें साधु-बदना (साचार्य कुंबर वो रचन। काल सव १६२४) प्रन्यासक बारहलडी (दौनतराम कासनीवान) के स्रतिरिक्त पव टोक्टयन, मानतीवान, रामचन्द्र, सुनासकर्ट सार्टिक को कृतियों का सन्दर्श मंग्रह है।

## उदयपुर

उदयपुर यक्त निर्माण काल से ही राजस्थान की सम्मानित रिधासत रही। महाराणा "द्यमिद्ध ने इस नगर की स्थापना संवत् १:२६ से की थी। भारतीय संवति एवं साहित्य की यहां के जायभी द्वारा ने विषय प्रोत्साहन सिला वह निर्माण कल्लेनवाने हैं 'जैन-यमं प्रीर साहित्य के विशास की हरिट म भी उत्थरपुर का विश्वास स्थान है। चिनोड के बाद में इसे ही सभी हरिटयों में प्रमुख स्थान निला। मलाइ के जायक प्रभाव में अन्यविक गांग दिया और उन्हों के बायह पर नगर में भित्र मंत्र सक्ति एवं साहित्य के प्रयान एवं सगर रोग मत्यविक गांग दिया और उन्हों के बायह पर नगर में मित्र का निर्माण कराया गया। इस नगर में भित्र का निर्माण कराया गया। इस नगर में अपनित की नाव्य में प्राप्त करियों के निर्माण कर्म का प्रश्न के कितने ही जावत्र प्रस्तान में स्थान है। माशवित विवास स्थान के कितने ही जावत्र प्रस्तान में स्थान है। माशवित विवास स्थान क्रियों की पाए क्षियों के स्थान के कितने ही जावत्र प्रस्तान की सी पी। भीर जीवार स्थान स्थान का स्थान के कितने ही जावत्र प्रस्तान की सी। भीर जीवार स्थान का स्थान का स्थान के सित्र में स्थान का स्थान करियों से स्थान का स्थान करिया है। सामवित सी पी। भीर जीवार स्थान सित्र से स्थान सामवित्र से स्थान स्थान करियों है। यहा तीन मन्यितों में प्राप्त भण्डार स्थापित किये हुए मिलते हैं। विवक्त परित्य सित्र प्रस्ता ना प्रकार है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जेन श्रग्रवाल मन्दिर

दि॰ जैन घरवाल मन्दिर के ब्राह्म प्रण्डार में हस्तिनियंत पाण्डुलिपियों का ग्रन्छ। सबहु है जिनकी सम्बा देव है। इस हिस्से हैं प्रमे हिस्से के प्रमो की कथा सबसे प्रधिक है। प्रयुप्पाद की सर्वार्थनिद्धि की सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है जो सबत् दिश्क की है। इसकी प्रतिलिपि योगिगोपुर में हुई थी। महाकवि दौलतपाम कासली-वाल का यह मन्दिर साहित्यक केट था। उनके बीजधर चरित हो सूच पाण्डुलिपि इसी मण्डार में नुर्धात है। इस साहत्र मण्डार में नुर्धात है। इस प्राचीनिक स्वा प्रमाण्डानिय हो। इसके प्राचीनिक है।

स्नकलकवर्तिरास (जयकीनि) प्रजितनाथराम, प्रविकारास (त्र० जिनदास) श्रावकाखार (वर्मविनोद) पंचकल्याएक पाठ ( ज्ञानभूषरण ) चेतन-मोहराज सवाद (श्रेम सागर) ग्रादि इस भण्डार की ग्रलकृत प्रतिया हैं।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर

इस जारत मण्डार में १०५१ हस्तिनिखित यन्यों का सबह है जिनमें प्रशिक्षकाश हिन्दी के यन्य हैं। इनमें नेमोनावरास (बहा जिनदान। परसहस रास (बहा किनदास) बहा विलास (भैया भगवतीदास) वरणवारीगीत (कुमुदबन्द) टानफन रास (ब॰ जिनदास) भविष्यदत्त राम (ब॰ जिनदास) रामरास (साववदास) प्रादि के नाम विवेचतः उल्पेसनीय है। भण्डार में भंश सकलकीनि की परस्परा के भट्टारको एव बहाम्यारियों की प्रधिक कतियां हैं।

### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर संमवनाथ, उदयपुर

नगर के तीनो जास्त्रों में इस मन्दिर का वास्त्र मण्डार सबसे प्राचीन, महत्वपूर्ण एव बढा है। मण्डार में मण्डीत सैक्डो पण्डुनिषिया अस्पीपन प्राचीन है एवं उनकी प्रसास्त्रिया नवीन तप्पों का उद्घाटन करने वाली है। तया साहित्यक रिट्स इतिहास को नवी दिवा देने वाली है। वेधे यहां के हस्तिनिस्तित प्रपची से मस्त्रा प्राचीन के किन प्रधिकाण पाण्डुनिषिया १५ मीं, १६ मीं, १६

# शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा

बमबा जयपुर प्रदेश का एक प्राचीन नगर है। इसमें हिन्दी के कितने ही विद्वानों ने जन्म लिया थीर धपनी हृतियों से हिन्दी मंग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन विद्वानों में महाक्षिय व टीलतराम कासणीवाल का नाम प्रमुख है। पढ़ित जीने २० से भी ध्विक प्रयो की रचना करके इस क्षेत्र में अपना एक नया कोतिमान स्थापित किया। सेट धमरचन्द विज्ञाना भी यहीं के रहने वाले थे। यहां कितनी ही हस्त्रीलियत ध को की प्रतिलिपि हुई थी जो राजस्थान के विभिन्न भण्डारों में एवं विकोषतः जयपुर के भण्डारों में संग्रहीत हैं।

तरह्यंबी मन्दिर के शास्त्र मण्डार में यशिष प्रांची का सयह १०० से स्रविक नहीं है किन्तु इस लचु संग्रह में भी कितनी हो पाण्ड्लिपियां उल्लेखनीय हैं। इनमें पार्थनाथस्तुति ( पासकि ) राजनीति सर्वय्या (देवीदास) झच्चारम बारहलडी (दौलतराम) सादि रचनायें उल्लेनीय हैं।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन पंचायती मंदिर बसवा

स्वीत राह्य यहां का प्रवासती मंदिर पुराना मंदिर है जिसमें १२ वी जताकों की एक विशास जिन प्रतिमा है। यहां करनामून की दो पाण्ड्विसिया है जो स्वाएंसरी है तथा साथंक है। इसमें एक में १६ विन तथा बहरे में ४२ विच है। दोनों ही प्रतिया संवत् १५३६ एवं १४२६ की निक्ती हुई हैं। यहां प्यानीन्त्र महाकाव्य की एक प्राटीक प्रति हैं जिसके टीकाकार प्रहृताद है। इस प्रय को प्रतिशिष्ट सवत् १७६६ में बतवा में ही हुई बी। महाक्वित श्रीयर की सपभो का कि प्रतिस्थान चरित की सवत् १४६२ की पाण्ड्वियि एवं समयतार की तार्य्यवृत्ति की सवत् १४४० की पाण्ड्वियि उल्लेखनीय है। प्राचीन काल में यह मण्डार और महत्वपूर्ण रहा होगा ऐसी पूर्ण संभावना है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन सन्दिर भाववा

भारवा फुनेरा तहसील का एक छोटाना ग्राम है। पश्चिमी रेल्वे की रिवाडी फुनेरा वास लाइन प भीवतला स्टिमन है। जहां से यह यान सीन मील हूरी गर स्थित है। जैन दर्शन के प्रकाश विद्यान स्व थं पैननुस्वास न्यायतीर्थं का जन्म यही हुगा या। यहां के ७० जैन मन्दिर में एक शास्त्र है जिसमे १४० से प्रविक हस्त्रलिख्त क्यों का सबह है।

वास्त्र मण्डार में हिन्दी हिन्दी की प्रच्यी स्त्या है। इनमें बानतराय का धर्म विनास, भैश्या भगवतीयास का 'बहा विनास' तथा धर्मदास का 'श्रावकाचार' के नाम विजेषत. उन्लेखनीय है। गुटकी मं भी छोटी छोटी हिन्दी इतियों का ग्रम्छ। स्यष्ट है।

# शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर डू गरपुर

हू गरपुर तगर प्रारम्भ में हो जिन साहित्य एक सम्बन्धित का केन्द्र रहा। १५ जो झाला दी में जब से महारक सक्तककीति ने बहा कथनी गादी की स्थापना की, उसी समय ने यह नगर २-३ खनाविद्या तक महारको एव नगरीनों का केन्द्र दहा। सेव ११६०० से यहा एक भध्य समाशोर से सकलकीति की महारक के अन्यन्त सम्माननीय पर की दोशा दी स्वी

> चजदय ध्यासीय मर्वात कुल दीवक नरवाल सथवित। हृगरपुर दीक्षा महोद्धल तीमिण कीवा ए। श्री सकलकीर्ति सह पुरि गुकरि दीक्षी दीक्षा श्रास्ट परि। जय जय नरर संयति सचराचरए ग्रमाधार।।

म ० सकनवीति के वदनात् यहा शुक्रविति, ज्ञातमुख्या, विवयसीति त्व गुभवन्य जेसे महा। ध्यक्तिय के धनी भहारकों का यहां सम्मेवन रहा धौर इस प्रकार २०० वर्षों तक यह ततर जैन समाज की गतिविधियों को केट रहा श्रास्ति वागरे के घहत को देखते हुए वर्षमान में वो यहा ज्ञास्त्र मध्यार है वह उताना महत्वपूर्ण नही है। यहा का साहत मध्यार रि० जैन कोटिया मिस्टिय ने स्थार प्रमा है विवसे हस्तिविति प्रभो की केट केट स्थार प्रमा है विवसे हस्तिविति प्रभो की सेव्या प्रश्ने है। जिनमें जन्दनसक्यितीर कथा, धादिरस्वार कथा, क्या प्रणानियों से सेविय प्रावृत्ति हो हो। प्रयोग से विवसे हस्ति की स्थार प्रावृत्ति है। हसी प्रयाग प्रमित्यों से सेविय

स्रतिरिक्त इ॰ निनदात की भी रासक इतियों का वहां सकक्षा संब्रह है। केलीवास का सुकीसकरास, यसोधर व्यरित (परिहानन्द) सम्मेदिनकर पूजा (रामपान) जिनदत्तरास (रतनसूचरास्ट्रिर) रामासरा ख्य्यय (जयसायर) 'स्नादि और जी पाण्डुनिरियों के नाम उल्लेखनीय हैं। यहां भ्रष्टारकों द्वारा रचित रचनार्यों का सम्ब्रा संग्रह है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैस मन्दिर मासपूरा

सासपुरा अपने क्षेत्र का प्राचीन नगर रहा था। तत्कासीन साहित्य एवं पुरातत्व को देखने से साबून होता है कि टोडारायसिंह (तक्षकगढ़) एवं चाटसू (बस्पावती) के समान ही सालपुरा भी साहित्यिक एवं सांक्ष्ट्रिकि गतिविधियों का सम्ब्रा केन्द्र रहा। बयदा के पाटोदी के मदिर के साहत्व भण्यार में एक गुटका संबद्ध १९१६ का है जो यहीं सिना पाया था। भागनुपा का पुतान साहत्व प्राची या। यहां सभी जैन सन्दिर विसास हो नहीं किन्तु प्राचीन एवं कला पूर्ण भी हैं तथा दांगीय है। ये मन्दिर नगर के प्राचीन येजब की भीर संकेत करते हैं। यहां की बाबबाडी सोसवाल समाज का तीर्थस्थान के रूप में मिदद है।

यहा तीन मन्दिरों में मुख्य रूप से बाहत प्रण्डार है। इनके नाम हैं चौधरियों का मन्दिर, झादिनाच स्वामी का मन्दिर तथा तेरावधी मन्दिर। यद्यपि इन मन्दिरों में प्रवों की सख्या घषिक नहीं है किन्तु कुछ, पाण्डुलिपियां घषस्य उल्लेखनीय 2। इनमें बहा कपूरचन्द का पाह्वनाचरास तथा हवंकीर्ति के पद है।

#### शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर करौलो

करोनी राजस्थान की एक रियासत यी। माजकल यह सवाईमाधोपुर जिले का उपजिला है। १० वीं
रेट वी क्रतान्त्री में यहा पथ्छी साहित्यत नांजिया रही। तथसन जिलाला, विनोदीलाल, सालचन्द झादि
लियों का यह नगर केन्द्र रहा था। यहा दो मन्दिर है धीर दोनों में हो साल्मों का संग्रह है। इन मन्दिरों के
नाम हैं दिल की पंजायनी भन्तिर एक दिल जैन सोमायी मन्दिर। इन दोनों ग्रंथ मण्डारों में २०४ हस्तिलिखत
पाण्डुनिर्गयों का नग्रह है। स्रियकाश हिन्दी की पाण्डुनिश्चियों है। ग्रपभ्रंश माया की दरांग जरित्र की पाण्डुलियि ना भी यहा मग्रह है। सदन १८४० में समोसरनसगल जोवीसी पाठ को रचना करीलों में हुई थी। इसकी
व्यद्ध संच्या ४०४ है। यह संभवत. नथमत विजाला की हित है। ग्रंथ भण्डार पूर्णतः व्यवस्थित एव उत्तम
विविधित में है।

#### शास्त्र मण्डार दि० जैन बीस प्रयो मंहिर दौसा

दौसा दूबाहड प्रदेश का प्राचीन नगर रहा है। यहापहिले मीएगा वाति का सासन या भीर उसके पश्चान यह कछबाहा राजपुती की राजधानी रहा। इसका प्राचीन नाम देविगीर या। यहाँदी जैन मन्दिर है भीर दोनों में ही हस्तर्लाव्यत यथे का सकलन है।

इस मन्दिर के प्रमुख देदी के पिछले भाग में स्व फित लेखानुसार इस मन्दिर का निर्माण संबद् १७०१ में हुमा बा। यहां के सारन मण्डार में हुस्तिनित गंधों की सल्या १७७ है जिनने गुटके भी सम्मितित हैं। अधिकांत संघ हिन्दी साथा के हैं जिनने परमहस चांगर्ट (हं० रायनल्ल) आवकाचार रास (जिल्हाशा) याचेचर वर्षाह, (संक्तिन-पूर्णदेव) सम्बद्धनानुद्ध माथा (सुनि दयानन्द) रामयन रक्षायन (कैकराज) आदि यंघों के नाम विकेशत: इल्लेखनीय है।

## शास्त्र भण्डार दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौसा

इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे हस्तिचित्रत य घों को सक्या १४० है लेकिन समह की दृष्टि से भण्डार की सभी पाण्डुनिपियों महत्वपूर्ण है। स्रिफकांत्र य धार में प्रत्यास एवं हिन्दी के हैं। स्राप्त्रंत्र य धों में जिल्लासन्त्र प्रत्यास हत्वा भूकुमान विदिश्च सिंहर स्वाप्त के इस स्वत्यास हत्वा (धन्दान) महावुगाला (पुण्यंत) के नाम उल्लेकनीय हैं। हिन्दी भाषा के यूत्री में जोहतुगृत्या चर्चा (सब्दान) सामान विव्हित्त स्वाप्त स्वाप्त के चौपर्द (समयनुक्दर सिंहासन बसोसी (होर कनवा) की महत्वपूर्ण पाण्डुनिपियाँ है। इसी भण्डार में तत्वावित्र को एक सक्कत दीका स्वता १४७० की पाण्डुनिपि भी उत्वयन है।

### शास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर लश्कर जयपुर

अपपुर के प्रविकास सास्त्र भण्डारों की सूची इससे पूर्व चार भागों में प्रकाशित हो चुकी है लेकित प्रव भी कुछ सास्त्र भण्डार चच गये हैं। दिल जैत मन्दिर लाकर तथा का प्रसिद्ध एवं विशास मन्दिर है। यहां का शास्त्र मण्डार भाष्टा उच्च से हैं। दिल जैत मन्दिर लाकर तथा का प्रसिद्ध एवं विशास मन्दिर है। यहां का शास्त्र मण्डार भी पण्डा हैत चा मुख्यसिक है। पाण्डितियों की तस्त्रा न्दिर है। सदह अपयोक्त अरुख पूर्ण हैं। यह मन्दिर वर्षों तक साहित्यक गतिविधियों को केन्द्र रहा है। बन्दराम साह ने घपने बुद्धित्वास एक मिन्द्रात्त स्वत्र को पत्त्र वर्षों तक साहित्यक गतिविधियों को क्रिन्नीति हों में देवान पुराण् ( मवत् १९२१ ) की भाषा टीका इसी मन्दिर में पूर्ण की थी। यह मंदिर बीसव्य प्राम्ताय वालों का प्राप्त्र दाता था। यहा मन्द्रत प्रयोक्त भी भव्छ। संपर्द्ध निव्यत्व मन्द्रत भी मन्द्र से प्रस्तु है। प्रमाण्डित साहित्य साहित्य

#### विषय विभाजन

प्रमुत प्रत्य सूची में इस्तिविवन प्रायों को २४ विषयों में विमाजित किया गया है। धर्म, धावार गारत, सिदांन्त एव कांत्र तथा पूजा विषयों के धानिरक पुराण, काव्य, चरिन, कथा, व्यक्तरण, कोण, अधित, प्रावृद्धें, नीति एव गुमांपित विषयों के धानार वर संयों की पालिविषयों का परिश्य दिशा गया है। इस बार संगीत राम, फागु, विलि एव विचान के धार्यजनिक उपयोग के पत्री की मन्दिरण प्रत्यों का विशेष विवया मिलेगा। जैन भरडारों में इन विषयों के सार्यजनिक उपयोग के पत्री की निवस्त में इस भरडारों की सहज उपायेशा विवय होती है। माहिर्य को गेंगी एक भी विधा नहीं है जिन पर दन भरडारों के उपयो नहीं निकते हो इस्तिये बोधापियों के विषये गों य जात्र भरडार मालात नरस्त्यों के करवान के समान है। चाहे कोई विवय, प्रत्य भरडारों में उपयोग होती विवय हो घयवा साहिर्य की कोई विवा, प्रत्य भरडारों में उन पर हस्त्र विशेष प्रवृद्धें भी राम, हानु, बेति, गीत, विजामात्मक इतियों के धातिरिक को शास्त्र। सर्टक, वारत्यभाग, द्वारण, पत्रचीमी, प्रत्यें, स्त्रां स्वत्य है। पत्र व्यक्ति संस्था के स्वत्य के स्वत्य स्वत्य है। स्वत्य स्वत्य है। स्वत्य स्वत्य है। स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य है। स्वत्य स्वत

सैकडों ऐसी हतियां हैं जो बसी तक प्रकाण में नहीं था सकी हैं धोर जो कुछ कृतियां प्रकाण में भासी है उनकी मी प्राचीनतम पाण्डुविधि का विदरता हमें यन्त्र मुची के इस माग में मिलेगा। किसी भी प्रन्य की एक से श्राधिक पाण्डुविधि मिलना निःस्तरह ही उसको जोक्तियदात का खोतक है। क्योंकि उस युग में सन्यों का लिखाबाना, शास्त्र मण्डारों में विरादमान करना एवं उन्हें अन जन को पढ़ने के सिये देना जैनाचार्यों की एक विजेवदा रही थी। ये पन्य मण्डार हमारी मतत साक्ष्ता के उज्जयक पन्न हैं।

# महत्त्रपूर्ण साहित्य की उपलब्धि

प्रस्तुत जन्य सूची से संतडो ऐसी इतियां प्रायी है जिनका हमें प्रथम बार परिचय प्राप्त हो रहा है। ये हित्यां मुख्यतः सस्वत, हिनी तथा राजन्यानी भाषा को हैं। इनसे भी सबसे प्रक्रिक हित्यां हिन्दी की है। वास्तव में जैन कवियों ने हिन्दी के विकास से भी योगदान दिया उसका प्रसी कुछ भी मुस्योवन नही हो सका है। सक्तेने ब्रह्म जिन्दा कि रिंग रे भी प्रियंक रचनायों का विवरण हत सूची में मिलगा। इसी तरह भीर भी जितने ही कवि हैं जिनकी बीस से प्रथिक रचनाएँ उपतथ्य होती हैं लेकिन प्रभी तक उनका विवाद परिचय हम नही जान सके। यहा हम उन सभी इतियों का सक्तित कर से परिचय उपस्थित कर रहे हैं जो हमारी इष्टि में मंत्री प्रवाद स्वाप्त रचन परिचय हम नही जान सके। यहा हम उन सभी इतियों का सक्तित कर से परिचय उपस्थित कर रहे हैं जो हमारी इष्टि में मंत्री प्रवाद स्वाप्त रचन परिचय हम विवाद परिचय स्वाप्त स्वाप्त रचन र हो। सकता है उनमें से कुछ इतियों का परिचय विदानों को मालुम हो। यहां इन इतियों का परिचय प्रयूपत, विवादानुवार दिया जा रहा है।

# १ कर्मविपाक सूत्र चौपई (८१)

प्रस्तुत कृति किस कवि दौरा निलों गयी थी इसके बारे में रचना में कोई उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन कमं सिद्धांत पर यह एक सम्ब्री कृति है जितमे २४१९ पद्यों में विषय का वर्णन किया गया है। चौतर्क की भाषा हिल्दी है जिस पर गुजराती का प्रभाव है। इसकी एकबाव पाण्डुनिषि सजमेर के प्रहारकीय झाड़क भण्डार में सम्प्रतित हैं।

#### २ कमंबिपाक रास (८२

कर्म सिद्धान्त पर धाधारित राम मैली में निबद्ध यह दूसरी रचना है जिसकी दो पण्डुलिपिया राजमहल (टीकें) के कास्त्र भण्डार में उपलब्ध होती हैं। रचना काफी बड़ी है तथा इसका रचना काल सबत्  $\xi \sim \chi$  है।

# ३ चौदह गुरा स्थान वचनिका (३३२)

झस्वयराज श्रीमाल १८ मीं मताब्दि के प्रमुख हिल्दी गद्य लेखक थे। 'बौदह गुण क्यान वयनिका' की फितनी ही पाण्डुविधिया मिसती हैं लेकिन उनका माकार सलग प्रसग है। १० जेन तेरहप्पी मिस्ट दौता में क्षा एक पण्डुविधि है बिसमें ३१६ पत्र हैं। इसमें गोम्मटसार, जिलोकसार एवं लब्बिसार के म्राधार पर गुणक्यानों सहित सन्य सिद्धानों पर चर्चा की गयी है। वयनिका की माथा राजस्थानी है। मत्वयराज ने रचना के मन्त में निम्न प्रकार दोष्टा लिख कर उसकी समास्त की है। चौदतं गुरुएस्थान कवन, भाषा सुनि सुख होय । बखयराज श्रीभास ने, करी जयश्मति जोय !!

### ४ बीबीस गुरुगस्थान चर्चा (३४१)

दादूरप के साथु गोविन्द दास को इस कृति को उस्ताच्य टोडारायांतह के दि० जैन नैबिनाय मन्दिर के सास्त्र मण्डार में हुई है। गोविन्द दास नासरदा में रहते ये घोर उसी नगर में मदन १८८१ कायुण, मुदी १० के दिन इसे समारत को गयी थी। रचना क्षियक बड़ी नहीं है लेकिन कवि ने लिला है कि सस्कृत और पाला (प्राकृत) के सम्माना कांक्रन है इसलिये उसने हिन्दी में रचना की है। प्रारम्भ में उनने एव परमेण्टि को नसस्कार किया है।

# ५ तत्वार्व सूत्र मावा (५३०)

तत्त्वार्थं तुत्र जैजबर्मका तरहे श्रदाभ्यव प्रत्य है। सस्तृत एवं हिन्दी आकामे इस पर प्यासों टीकार्ये जयसम्ब होती हैं। प्रस्तुत वश्य सूची मे २०० से प्रविक पाण्युलिपियां प्रायी है जो विभिन्न विदानों की टीकाफी के रूप में है।

प्रस्तुत कृति साहिबराम पाटनों की है जो दूँदी के रहने वाले ये तथा जिन्होंने तत्वार्थ सूत्र पर विस्तृत आराव्या स्वंत १८१६ में लिखी थी। बयाना के साहत आराव्यार है जो पाण्हिलीए उपलब्ध हुई है बहु मी उसी समय को है दिला बयं पाटनी द्वारा मृत्य कृति लिखी गयी थी। कि ने प्रथने पूर्ववर्ती विद्यानों की टीकाओं का प्रथमयन करने के परवाद हुई लिखा था।

# ६ त्रिभंगी सुबोधिनी टीका (६२३)

निभयोतार पर यह पहित धाशावर को सहकत टीका है जिसकी दो प्रतिया वयपुर के दिन जैन सम्बद, सबकर के शास्त्र प्रण्डार में सपहीत हैं। नामूराम प्रेमी ने प्राशाधर के जिन १६ पत्नों का उल्लेख सिंदा है उसमें दस दबना का नाम नहीं हैं। टीका की जो दो पाण्डुनिरिया निसी है उनमें एक मबन् १५८१ की विक्वी हुई है तथा दूसरो प्रशिद्ध हिन्दी खिड़ान् ओधराज गोदीका की न्यय की पाण्डुनिर्षि है जिसे उन्होंने मानपृरा में स्वित किसी व्हेतान्त्रर अपृत्त ली थी।

# धर्म एवं ऋा बार शास्त्र

# ७ कियाकोश माषा (११६)

यह महाकवि दोतनाम कामनीवान को रचना है जिसे उन्हों। सबन १०६४ में जबसपुर नगर में लिला था। प्रस्तुन पार्व्ह्तिपि स्वय महाकवि की मूल प्रति है जो दोन्झल एव साहित्य की प्रमूल्य घरोहर है। उस समय कवि उरवपुर नगर में जबपुर महाराजा को और ने बक्तीन की पद पर निमुक्त थे।

# ८ चतुर चितारस्मी (१०५८)

प्रस्तुत सम् कृति महाकवि दोसतराम को कृति है जिसकी एक मान वाण्डुविधि उदयपुर के दि॰ जैन प्रयचाल मन्दिर में उपलब्ध हुई है। महाकवि का यही मन्दिर काव्य सामना का कैन्द्र वा। रचना का दूसरा नाम मवजनतारिएों भी दिया हुमा है। यह कि की सबीयनात्मक कृति है।

#### १ ब्रह्म बावभी (१४५७)

बह्य बीबनी ऐकं प्राप्यास्मिक इति है। इसकें कि निहालबाद हैं जो संभवतः बंगाल में किसी कार्यवण गये दे और वहीं मक्यूदाबाद में उन्होंने इसकी रवना की दों। बेसे किन कनपुर के नास की छावनी में रहते वे इनकी एक बीट इति नियकक्षमाया प्रस्तुत सूची के २३४४ सख्या पर खारी है जिसमें किया ने खपना संक्षित्व परिचय दिया हैं। नवकमाया सन्तर १८६७ की इति है इसिनये इहा बावनी इसके पूर्व की रचना होनी बाह्य वर्गोंकि उन्होंने उने येथे के साथ बेठ कर निखने का उत्लेख किया है। बावनी एक लमुकुति है लेकिन बाह्यांशिक रस से भीत प्रीत है।

#### १० मुक्ति स्वयंबर (१५३६)

मुलि न्ययवर एक रूपक काव्य है जिससे मोज रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिये स्वयंबर एवं जाने का रूपक बांधा गया है। यह रचना काफी बड़ी है तथा ३१० पूटों मे समान्त होती है। रूपककार वेणीचन्य कवि है जिन्होंने इसे नक्कर मे प्रारम्भ किया था प्रीर जिसकी समान्ति इस्तीर नगर में हुई थी। देसे किय ने प्रपत्ते को फलटन का निवासी लिखा है और मनुकचन्द का पुत्र बतनाया है। रूपक काव्य का र्यंचना कालंसवत् १६२४ है। दन प्रकार किस ने हिस्सी जैन रूपक काव्यों की परम्परा में धननी एक रचना और बोड़ कर उसके विकास में सीग दिया है।

#### ११ बसुनन्दि श्रावकाचार भावा (१६६४)

बमुनिष्द भावकाचार पर प्रस्तुन भाषा वचनिका ऋषभदास कृत है जो भक्षमपाएक (राजस्थान) के निवासी थे। कवि हूंगड जीति के श्रांबक थे। इनके पिता का नाम नाभिदास था। इस प्रश्व की रचना करने में प्रांमर के महारक देवेग्द कीनि की प्रेरिशा का कवि ने उल्लेख किया है। भाषा टीका विस्तृत है जो ३४७ पृथ्ठों में पूर्ण होती है। इसका रचनाकल संबत १८०७ है जिसका उल्लेख निम्न प्रकार हुआ है—

> ऋषि पूररण नव एक पुनि, साथ पूनि शुभ श्वेत । जया प्रथा प्रथम कुजवार, मम मगल होय निकेत ।।

कवि ने भानरापाटन स्थित शांतिनाथ स्वामी तथा पार्र्वनाथ एव ऋषभदेव के मन्दिरका भी उल्लेख केया है।

#### १२ भावकाचार रास (१७०२)

पदमा कवि ने श्रावकाचार रास की रचना कव की यो उसने इतका कोई उल्लेख नहीं किया है। इसमें पद्यात्मक रूप से श्रावक चर्म का वर्णन किया नया है। रास भाषा, जैली एवं विषय वर्णन की ट्रस्टिसे उत्तम कृति हैं। इसकी एक प्रपूर्ण प्रति दि० जैन मन्त्रिर कोटा के शास्त्र मण्डार में संप्रहीत हैं।

## १३ मुख विसास (१७६१)

जोधराज कासलीवाल हिन्दी के प्रतिद्ध महाकवि दोलतराम कासलीवाल के सुपुत्र में। प्रपने पिता के सामन ही जोबराज भी हिन्दी के प्रच्छे कवि थे। मुख बिलास में कवि की रचनाओं का संकसन है। उनका यह काव्य संबत् १८८४ में समाप्त हुमा था जब किय की घन्तिम प्रवस्था थो। दौलनरामजी के मण्ने के पश्चान कोध-राज किसी समय कामां नगर में चले गये होगे। किय ने कामा नगर के वर्णन के साथ ही वहाँ के जीन मन्दिरों का भी उल्लेख किया है। कामां उस समय राजस्थान का प्रच्छा व्यापारिक केन्द्र था इसलिए कितने ही विद्वान भी बहा जाकर रहने बने थे। मुख विलास को तीनो ही प्रतिया भरतपुर के प्यायती मन्दिर के शास्त्र भण्डार में सम्बोत है।

सुख विलाग गद्य पद्य दोनों मे ही निबद्ध है। कवि ने इसे जीवन को मुखी करने वाले की सज्ञार्दी है।

सुख विलास इह नाम है सब जीवन सुखकार । या प्रसाद हम हुलहै निज ग्रातम सुखकार ।:

## अध्यात्म चितन एवं योग

#### १४ गुरा विलास (१६८८)

विलास सज्जक रचनायों में नयन्त जिलाला हुन गुरा विलास का नाम उन्नेनवनीय है। गुरा विलास के प्रतिरिक्त इनकी 'वै.र विलास' सज्जक एक हृति धीर है जो एक मुटके में (एउट संस्था १६२) मध्यीन है। युरा विलास में कवि को लघु रचनायों का सथ्य है। यह सकलन सबन् १९२२ में समारत हुआ। का। कवि की कुछ प्रमुख रचनाओं में जीवन्थर चित्र ने, नासकुमार चरित्र, सिद्धाननार दीपक भारि के नाम उन्नेलनीय है। वैसे कवि मरतपुर में धवीपार्जन के लिए भ्रावर रहने लगे ये भ्रीर सप के साथ श्रीमहाभीरजी की यात्र पर रोगे थे।

#### १४ समयसार टीका (२२८७)

भट्टारक मुभवरद १६-१७ वी मताब्दी के महान् विद्वान थे। सस्कृत, प्रान्त, हिन्दी गुकरानी भाषा पर जनका पूर्ण विभक्तर था। प्रकृतक मुभवरद की जिननी हृतिया मिसी है उनमें समयसार टीका का नाम नहीं निया जाता था। इसनिष्ठ प्रस्तुत टीका की जनकिय प्रथम बार हुई है। टीका विश्तुत है और कांव ने इसका नाम प्रध्यास्तर-शिम्ही दिया है। वित्ते ने टीका के घनन में विस्तुत प्रमस्ति दी है जिसके घनुसार इसका प्रकृत काल सक्तु १९७३ है। इस टीका की एक मात्र प्रति मास्त्र भण्डा। दि० जैन मन्दिर कामा में सप्रश्रीत है। इसका प्रकासन होना सावस्यक है।

#### १४ वटपाहुड भाषा (२२५६)

पर्पाहुड पर प्रस्तुत टोका प० देवांशस छावडा हत है। जिसे दल्होंने सवत् र्⊏०१ सावरा सूर्या १६ के दिन समाप्त को थी। देवीशिह प्राकृत, सस्हत एवं हिस्सी के बच्छे विदान ये तथा आधा टीकाए लिक्सने मे जब्हे निरोध दर्भिया विद्याहुद पर उनकी यह टीका हिस्सी पद्य में है। जिसमें कदि ने प्राथार्थ कुल्कुल्ट के आयों को ज्यों का त्यों अपने का प्रयास किया है। भाषा, भाषमंत्री की टीक्ट से यह टीका धरश्यिक सहस्य पूर्ण है।

#### १६ ज्ञानार्शव गद्य टीका

धालार्य मुजनार के जानाएंव पर सस्कृत भीर हिन्दी की कितनी ही कियाएं उपसंक्ष्य होती हैं। इनमें जानवाद द्वारा रवित हिन्दी गया टीका उन्नेवतीय है। टीका का रवना काल स०१ स्६० आप सुदी रहे। टीका की आपा पर राजस्वानी का न्यष्ट प्रभाव है। इनकी एक प्रति दि० जैन मन्दिर कोटडियान हंगरपुर में संबक्षीत है।

#### १७ चेतावर्गी प्रथ (२००२)

शह कविवर रामचरण की ज़िति है वो राजन्यानी आधा में निबद्ध है। कवि ने इसमें प्रत्येक व्यक्ति को सज़ग रहने की चेतावनी दी है। इति का उड़ेंग्य मोते हुए प्रारित्यों को जगाने जा रहा है। इसमें २१ पद्य है जिसमें किन ने स्पष्ट राज्यों में विषय का विवेचन किया है। आधा आब एव जीनी की ट्रिस्ट से रचना उत्तम है। इसकी एक मात्र प्रति दिल जैन मन्दिर कीटा के शास्त्र प्रचार में महत्ते हैं।

## १८ परमार्थशतक (२०६६)

वरमार्थं शतक भैन्या भगवतीदास की है जो प्रथम बार उपसब्ध हुई है । रचना पूर्णतः प्राध्यान्मिक है जिसकी एक मात्र पाण्डलिपि पचायती मन्दिर भग्तपुर में सग्रहीत है।

#### १६ समयसार वृत्ति (२३०४)

समयसार पर प० प्रभावन्द्र कृत सम्कृत रीका की एक मात्र पाण्ड्लिपि महारकीय दि० जैन सन्दिर ग्रजमंत्र के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है। प० प्रभावन्द्र ने कितने ही वांचों पर सस्कृत टीकार्ये लिखकर धपनी विद्वत्ता का प्रयंग ही नहीं किया किन्तु स्वाध्याय प्रीमयों के लिये भी कितन वांचों के प्रयं को सरल बना दिया। श्री नाष्ट्राम प्रीमी न मनयसार दृत्ति का '' जैन माहित्य धोर इतिहास '' में उल्लेख श्रवस्य किया है, लेकिन उन्हें भी इसती पाण्ड्रियि उपस्यत्वार दृत्ति हो। सकी थी। प्रस्तुत प्रति संबत् १६०२ मगसिर सुदी - की लिपिबड़ की हुई है। वृत्ति प्रकामन योग्य है।

#### २० समयसार टीका (२३०६)

अ० देवेन्द्रकीति प्रामेर नादी भट्टारक थे। वे भट्टारक के साव २ साहित्य प्रेमी भी थे। प्रामेर हास्त्र भण्डार की स्थापना ऐव उनके विकास में म० देवेन्द्रकीति का भुमुत हाथ रहा था। समयसार पर उनकी यह टीका यर्थाप प्रियक वदी नहीं है। किन्तु भौतिक तथा सार गिनत है। इस टीका से पता लगता है कि समयसार जेले प्राध्यातिमक प्रथ का भी इस गुग में कितना प्रचार था। इसकी एक मात्र पाण्डुविधि जास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर प्रिमिनक्ष्तर स्वामी बूबी में मण्डीत है। इसका टीका काल संवत् १७८८ भाववा सुदी १४ है।

#### २१ सामाधिक पाठ भाषा (२४२१)

हमामराम कृत सामाधिक पाठ भाषा की पाण्डुलिपि प्रथम बार उपलब्ध हुई है। इसका रचनाकाल स॰ १७४६ है। कृति की पाण्डलिपि दि॰ जैन पचायती मन्दिर मरतपुर में संग्रहीत है। रचना धच्छी है।

#### ( वोशीस )

## प्राच साहित्य

#### २२ पद्मवस्ति हिप्परम (२८७१)

रिविदेशानार्यकत वर्षाचित पर श्रीचन्द मृति द्वारा लिखा हुया सह टिप्पसा है। टिप्पसा सिक्षण है भौर कुछ प्रमुख एवं कठित सबसी तिखा गया है। प्रस्तुत पाण्डुलिपि संवत् १५११ की है जो उपपुर के सरकर के समिद से समहीत है। श्रीचन्द मृति ग्रायध सं मार्था की रचना रत्नकरण्ड के कलां ये जो १२ वीं सतास्त्री के विद्वान थे।

#### २३ पार्श्व पुराशा (३००६)

स्पर्भ म के प्रसिद्ध कवि रश्चन्न विश्वित पार्श्वपुरास्त्र की एक प्रति शास्त्र मण्डार दि॰ जैन मन्दिर वोरसली कोटा में संब्रहीत है। पार्श्वपुरास्त्र प्रपन्न स की मृत्वर कृति है।

#### २४ पुरासार (३०१३)

सागर सेन द्वारा रश्वित पुराणसार को एक सात्र पाण्ड्रांलिय शास्त्र भण्डार दि० जैन सन्दिर क्राजंस में संबद्दीत है। कवि ने रमताकाल का उस्लेख नहीं किया है लेकिन यह समयत. १५ वी शातांक्टिकी पत्रना सामृत्र पहनी है। इति घण्डों है। महारक सकलकीति ने जो पुराणसार ग्रंथ निला है समयत. यह इस कृति के क्राचार पर ही लिखा गया या।

## २५ वर्धमानपुरार्ग माबा (३०८२)

बड़ेमान स्वामी के जीवन पर हिन्दी में जो कान्य निसे गये हैं व प्रभी तक प्रकाश में मही छाये हैं। इसी जब मुक्ती मंबद्धमान पर कुछ कान्य मिले हैं छीर उनमें नवनराम विर्णयत बढ़ेमान पुरासर भाषा भी एक हान्य है। यह कान्य स्वत् १९६१ का है। महाकांच बनारमीदास जब समयसार साटक निव्य रू. व तभी भनवान महाबीर पर यह कान्य निक्का ता रहा था। नवनराम बुदेलनव के निवासी ये छीर मुनि सबस-कोर्ति कं उपदेश से नवनराम एवं उनके पुत्र दोनों ने मिल कर दम कान्य की रचना की यो। वास्य विस्तृत है तथा उसकी एक प्रति दिल जैन रचायती सन्दिर कामा में उपनन्य होर्ति है।

## २६ वर्षमानपुराम् (३०७०)

वर्षमान स्वामी के जीवन पर यह दूसरी हिनि है जिंग किवियर नवल शाह ने सबदू १८२४ में समाज की थां। इसमें १६ ऋषिकार है। पुरासा में मगवान महाबीर के जीवन पर सम्याविक मुन्दर गीति से बसान किया गया है। इस पुरासा की प्रति बयाना एवं दो प्रतिया फोतेल्पुर सेलावाटी के सारत भण्डार में उपलब्ध होती है। किवि ने पुरासा के प्रस्त में रचना काल निम्न प्रकार दिया है--

> उज्जयत विकस नृपति, सबरसर थिति तेह । सतः अठार पञ्चीस प्रक्षिक ,समय विकारी एह ॥

## २७ शांतिनाथ पुरास (३०६५)

यह ठाफुर किंद की रचना है जिसको जानकारी हमें प्रथम बार प्राप्त हुई है। हिन्दी माला में झान्तिनाय पर यह पुराए। सर्वीधिक प्राचीन कृति है जिसका रचनाकाल संबत् १६६२ है। इस पुराए। की एक झात्र पाण्डलिपि स्रजमेर के महारकीय साध्य मण्डार में सप्रहोत है।

#### २८ शान्तिपुराग् (३०६४)

महापंडित मालाघर विरक्ति लालिपुराण सस्हत का घस्छा काव्य है। कवि ने इसकी प्रयस्ति में घपना विस्तृत परिचय दिया है। श्री नामूराम प्रेमी ने मालाघर की जिन रचनाओं के नाम मिनाये हैं उनमें इस पुराण का नाम नहीं लिया गया है। इसकी एक प्रति जयपुर के दि० जैन मन्दिर लक्कर में संबहीत है। पुराण प्रकालन योग्य है।

## कात्र्य एवं चरित्र

#### २६ जीवन्धर चरित (३३४६)

महाक्षि दौलतराम कासनीवाल की पहिले जिन हतियों एवं काव्यों का उस्तेल मिलता था उनमें बीकन्यर विरंत का नाम नहीं था। उदयपुर के प्रध्याल दिन जैन मिलर में जब हम लोग प्रधी की सूची का कार्य कर हे थे। तमो इसकी एक घरत उपरन प्रति पंच प्रपुत्र के अध्याल के प्राप्त के प्राप्त हों के किया नहीं कहा कि एक हिस्सी का प्रचल्का के लिए के एक हिस्सी का प्रचल्का के लिए के प्रचल्का हो जिसे का लाखे हैं जिसे कालाहे हों जो पांच प्रधान एवं पृथ्वीराज तथा साशवादा के निवासी श्रीवेलजी हुंबड के प्रमुरोध पर उदयपुर प्रवास में मदा १००४ निवक्तर मा भारती की गेंट की थी। उदयपुर में प्रप्रवाल दिन जैन मिलर के लात्त मण्डार में जो शि प्राप्त हुई थी, वह किय की मून पाइनिंग है जिससे इसका महस्व श्रीर भी बढ़ गारी है। काव्य प्रवालन होने योग्य है।

### ३० जीवंधर चरित (३३४८)

महाकवि रह्यू द्वारा विरवित्र जीवन्यर चरित प्रपन्नां वे की विशिष्ट रचना है। इस काष्य की एक प्रति दि॰ जैन मस्टिर पत्तेहपुर नेपाबाटी के कारत अध्यार में सम्हीत है। पाण्डुलिपि प्राचीन है भीर सबत् १६४६ में लिपि बद की हुई है। यह काब्य प्रकाशन योग्य है।

#### ३१ जोबन्धर चरित्र प्रबन्ध (३३६०)

वीवन्धर पित्र हिन्दी भाषा का प्रवन्ध काव्य है जिसे अट्टारक यत्र: कीर्ति ने ख्रन्योबद किया था स्वाःकीर्ति मट्टारक चन्द्रकीर्ति के प्रतिष्य एवं अट्टारक ए.सकोर्ति के प्रतिष्य एवं अट्टारक चन्द्रकीर्ति के प्रतिष्य एवं अट्टारक प्रवन्ध उत्तर के सम्बे विद्वान थे। अस्तुत काव्य हिन्दी को कोर्ट वडा काव्य नहीं है किन्तु नाथा एवं वीती की टिप्ट से काव्य उत्तरिक्तीय है। इसकी एक पाष्ट्रतिषि उत्तर्य ते अपने मन्दिर के पाष्ट्र के पाष्ट्रतिषि उत्तरिक से स्वत्र प्रतिक प्रतिक के प्रतिक प

संबत मठारासे इकहोलारे भावना सुनी वनामी गुरुवार रे।
ए प्रवच पूरो करो प्रशामी जिल सुरु पाय रे।
गुजंद रेग से सोभरतो ईवट गढ ने पाल रे।
गोलोडी मुशाम है तिहा श्यावक नो सुन्वतारों।
गोलोडी सुशाम है ते सुग्य पूर्व जिल पाय रे।
विहां रहिने जना करी, यक्कोति सुगी राज रे।

#### ३२ धर्मशर्मम्युदय टोका (३४६१)

चर्मसमिन्युद्य सम्बन्ध नाथा के श्रेष्ठ महाकाव्यों में से हैं। यह महाकवि हरिक्द की रक्ता है सोर प्राचीन काल में इसके एठन पाटन का घण्या प्रचार या। इसी महाकाव्य पर अट्टारक यस्कीति की एक विस्तृत दोका स्वाचेर के मास्त्र भण्यार में उपलब्ध हुई है जिसका महेहश्वान दीविका नाम दिया गया है। टीका विद्यापूर्ण है तथा उससे काव्य के कठिन खरों का घण्या बुनामा दिवा गया है।

## ३३ नागकुमार चरित (३४८०)

नवमल विलाला कृत नागकुमार चरित हिस्से की प्रच्छी राति है विश्वकी पाण्डीलिपिया राजस्थान के विभिन्न नास्त्र भण्डारों में उपलब्ध होती है। प्रस्तुन पाण्डीलिप स्वयं नवमल विलाला द्वारा निपिबद हैं। इसका लेकन काल सकत् १८३६ है।

> प्रथम जेठ पूतम मुदी सहस्त्र रात्रावर वार । प्रथम सुनित्र पूरत कियो ही राषुरी संस्तार । नथमल नै निजकर यको ग्रंथ लिल्यी घर प्रीत । पूत चूक यामें नलीतो सुन को जो मीत ।

## ३४ वारा स्नारा महा चौपई बध (३६६०)

महारक सकतकीति को परात्मा एं होने वाज महारक रामकीत के प्रणिक्ष एव प्रधानित के सिष्य वंश्व कपत्रों की उक्त कृति एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें २४ तीये करों का स्पीर, साधु वर्षा स्थादि का वर्षात है। इसमें तीन उल्लास है। यह कवि को मूल पाण्डीनीय है जिसे उसे माश्याना नगर के साथि जिस कैस्पालय में उत्योवड किया था। इस चीर्य की एक प्रति उदयपुर के समयनाय मन्दिर से उपसम्ब होती है।

### ३५ मोज चरित्र (३७२१)

हिन्दी माणा में भीज चरित्र भवानीदास स्थास को उचना है। यह एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें राजा मोज का जीवन निबंद हैं। विने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

> गढ जोघासा सतील याम आई विलाडे। भीर पाठ कल्यासा मुजस गुसा गीत गवाडे।।

भोज चरित तिन सौ कहां कवियस मुख पार्च ।। व्यास सवानीदास कवित कर बात सुसावे ।। मुसी प्रवथ चारस मते योजराज बीन कहां।। कस्यासदास भूपाल को वर्स व्यवा धारी कहां।।

#### ३६ वशोधर चरित्र (१८२४)

महाराजा यमोचर के जीवन पर सभी मायाओं से प्रतेत काव्य जिले गये हैं। हिन्दी में भी विभिन्न कियों ने रचना करके इस कथा के लोकप्रियता में प्रामृहिंद की है। इन्हीं काव्यों में हिन्दी के वि वेदेन कर यसीचर चरित भी है जिलकी पाण्डुलिपियों हूँ गरपुर के ग्राम्त्र मण्डार से उपलब्ध हुई है। काव्य काफी बढ़ा है। इसका रचनाक्र संवद १६२ है। देवेद कार्य विकस्म के पुत्र ये जो स्वय भी संस्कृत एवं हिन्दी के मण्डे किये थे। विकस एवं गाणिय दो भाई ये जो जन बाह्याएं थे। गुजरात के कुत्र जुला के दरवार से जनपर्स की प्रतिष्ठा बढ़ाने का भ्रेय क चीतिक्षण की प्राम्त के कारणा विकस के माता पिता ने जनवर्स स्वीकार किया था। उन्हीं के सुत देवेन्द्र ने महुषा नगर में यश्रधोर की रचना की थी।

सबन १६ म्राठ त्रीमि म्रासी मुदी वीज मुक्रवार तो रास रच्यो नबरस भरयो महम्रा नगर ममार तो ।

कवि ने अपनी कृति को नवरस से परिपूर्ण कहा है।

#### ३७ रस्नपाल प्रबन्ध (३८८८)

रत्नपाल प्रवन्ध हिस्टी की ग्रन्थी कृति है जो त्र० श्रीपती द्वारा रची गयी थी। इसका रचनाकाल स॰ १७३२ है। भाषा एव शंली की ट्रॉव्ट से रचना उत्तम प्रवन्ध काव्य है तथा प्रकाशन योग्य है।

#### ३८ विकस सरिज सीपई (३१३१)

माउ कि हिन्दी के लोकप्रिय किये। उनकी रविश्वतकषा हिन्दी की धरयिक लोकप्रिय रचना रही है। विकम्पणित चीपर्ट उनकी नतीन रचना है। जिसकी एक पण्डुलिपि दक्लाना की शास्त्र भण्डार में सध्योत है। रचना काल सचन् १८-८ है। इस रचना से माउ किये का समय भी निश्चित हो जाता है। कवि ने रचना काल का उनकेल निम्म प्रकार किया है---

> सबत् पनर प्रठासिइ तिथि बलि तेरह हु ति मगसिर मास जाण्यो रविवार जते हु ति । बडी तराइ पसाउ सबडउ प्रबन्ध प्रमारा । उबक्राय भावे भराइ बातज खाबा ठाएा ।।

#### ३६ शांतिनाथ चरित्रा मावा (३६६४)

सेवाराम पाटनी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। शांतिनाथ चरित्र उनके द्वारा लिखा हुचा विधिष्ट काव्य है। कवि महापंडित 'टोडरमक के समकाक्षीन विद्वान् थे। उनको उन्होंने पूर्ण मादर के साथ उल्लेख किया है। इन्हीं के उपरेक्ष से सेवाराम काव्य रचना को स्रोर प्रवृत्त हुए ये। शांतिनाय चरित्र हिन्सी का सच्छा काव्य है जो २३० पत्रों में समाप्त होता है। सेवाराम बूंडार्ड देश में स्थित सेव्याद (देवली) नगर के रहने वाले से। कवि ने काव्य के सन्त में निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

हेश हूं शहर धादि दे संबोधे बहुतेश ।
रबी रबी एन कठिन टीडरमल सहेता ।
ता उपदेश तबान नहीं सेवाराम समान ।
रब्धों ग्रंग सिवान के हुये हुए धीषकान ।। रब्धों ।
सबन घरटाटक सतक पुनि चौतीन महान ।
सावन कच्छा धरदारी पूरन कियो पुरान ।
धाति धरार मुलसो बने नगर देश्यद सार ।
आवक बसे महाधनी यान पुत्रम ग्रंथ ।

#### ४० श्रीपाल चरित्र (४०५०)

श्रीपाल चरित्र बहा चन्द्रसागर की कृति है जो अहारक पुरेण्ट्रकंति के प्रीक्रम्य एवं सकलकीति के क्षिप्य ये। जो काष्ट्रासंय के रामसेन के पत्मप्रा के महारक ये। कवि ने मुरेण्ड्रकीति एवं सकलकीति दोनों की प्रवास की है तथा प्रपत्ती लघुता प्रयट की है। कास्य की रचना सीजन नगर में सबन् १८०३ में मम्माप्त हुई थी।

> सोजच्या नगर सोहामणु दोसे ते मनोहार। सासन देवी ने देहरे परतापुरे अपार। सकतकोति तिहाराजना खाजता गुण महार। ब्रह्म चन्द्रनागर स्वता रवी तिहा वेसी मानाहार ॥ ३०॥

चरित्र की भाषा एव जैसी दोनों हो उत्तम है तथा वह विविध उद्योगों ने सिंत की गयी है। इसकी एक प्रति फरोहपुर के बास्त्र भण्डार मे उदलब्ध होती है।

## ४१ अरेगिक चरित्र (४१०३)

श्रेरिक चरित्र महाकवि दोचनराम बामनोदाल को तृति है। सब तक जिन काव्यों का विद्वत जगत को पता नहीं या उनमें किंद की यह कृति भी सम्मित्त है। लेकिन ऐसा मालूम पश्ता हैकि कवि के प्रयपुरास, हरिजंबपुरास, प्रादिपुरास, पुण्यालय कथाकोष एवं सध्यामबारहस्त्र और्मी तृहर किनियों के सामने दस कृष्ठि का प्रायक प्रभार नहीं हो सका दमसिए दसकी पाण्ट्रनिषिया भी राजस्थान के बहुत कम भण्डानों में मिससी है के श्रेरिक चरित्र कवि का लच् काव्य है जिसका रचनाकाल सबस् १७८२ भैत सुदी संबसी है।

> सवत सतरेंसे बीग्रासी, मो चैत्र मुकल तिथि जान । पत्रमी दीने पूरमा करी, बार चंद्र पद्मान ॥

कृति ५०० पद्यों में समाप्त होती है जिसमें दौहा, चौपई, छन्द प्रमुख है। रचनाकी भाषाध्यीक वरिस्कृत नहीं है। इसकी एक प्रति दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर में संबद्धीत है।

## ४२ सुदर्शन खरिता मावा (४१८८)

सुरमंत के जीवन पर महाकवि नयनिंद ने सपक्ष साथा से सबन् ११०० में संहाकाव्य निल्ता था। उसी को देख कर जैनस्व ने शबन् १६३३ में प्राप्ता नपर से प्रस्तुत काव्य को पूर्ण किया था। जैनन्द ने महारक समान्त्रीति कोमकीति तथा जिम्नुवनकीति का उल्लेख किया है। इसी तरह सादवाह सम्बद्ध एवं जहांगीर के साधन को भी व्यान विधा है। काव्य सथि प्रधिक वटा नहीं है किन्तु भाषा एवं वर्णन की दिन्द से काव्य सब्दा है। काव्य की छर्द संस्था २०६ है। काव्य के प्रभुत्त छन्द सोहा, चौपई एवं सीरठा है। कबि ने निस्त छन्द जिस्त कर सपनी लघुना प्रकट की है।

> छद भेद पद भेद हो, तो कड्डु अर्थ्ड शिक्षि। ताकी कियो न बेद, कथा भई निज मक्ति बस्र ॥

#### ४३ व्ये स्पिक प्रबन्ध (४१०५)

कत्यारण कीर्तिकी एक रचना चारदल चरित्र का परिचय हम ग्रंथ सूची के चलुकं भाग से दे दुके हैं। यह कवि की दूसरी रचना है । जसकी उपलब्धि राजस्थान के फतेल्युर एव बूबी के मण्डारों में हुई हैं। किये महुरक सकलकीर्तिकी परभ्या में होने वाले महुरक देवकीर्तिके किया थे । किये ने इक्कं अवश्य को बागड प्रदेश के कोटनगर के श्वावक विमन के श्रायह में भ्रादिनाथ मन्दिर में समाप्त की थी। रचना गीतात्यक है तथा प्रकाशन योग्य हैं।

#### कथा साहित्य

#### ४४ ग्रनिबद्ध हरगा-उचा हरगा (४२२३)

यह रत्नभूषण की कृति है जो भट्टारक ज्ञानभूषण के विषय एव भ० सुमितिकीति के परम प्रशंसक थे।
श्रान्द हरण की श्वा भ० ज्ञानभूषण के उपरेण से ही हो सकी थी एका कि ने उससेल किया है। कि ने कृति का रचनाकान नहीं दिया है नेकिन भट्टारक ज्ञानभूषण के समय को देखते ही हुए यह कृति संवत् १५६० से पूर्व की होनी बाहिए। श्रानेष्ठ हरण की भाषा पर मराठी भाषा का प्रमाव है कि वे रचना को "रचना इ बहुरस कहुँ" बहुरस भरी कहा है। धनिष्ठ प्रशुम्न के पुत्र थे। कि ने काष्य का नाम क्या हरण न देकर श्रानेष्ठदुरुण दिया है।

#### ४५ झनिरुद्ध हरुए। (४२२४)

श्चित्र के जीवन पर यह हुतरा हिन्दी काव्य है जो बहा जयसागर की कृति है। बहा जयसागर महापक महोचन्द्र के विष्य थे। ये विहरुष जाति के आवक से तथा हांसीर नगर में इन्होंने इस काव्य को सबस् १७३२ में समान्द्र किया था। इसमें जार मिश्चर हैं। इस रचना की मान्या राजस्थानी है तथा उस पर गुजराती का प्रवाद है। रक्तपूष्पण सुरि के प्रनिक्द हाग से यह रचना बड़ी है।

## धनिरूद हरराज में कर्युं दुःस हररा ए सार । सामसा सुस ऊपजे कहे जयसागर बहाचार जी ॥

#### ४६ सभयकुमार प्रवन्ध (४२२६)

उक्त प्रबन्ध पंदमराज कृत हिन्दी काव्य है जिसमे अभयकुमार के जीवन पर प्रकास वासा गया है । पदमराज सरतर गच्छ के प्राचार्य जिनहन के प्रशिष्य एव पुष्प सागर के जिल्य थे। जैसलमेर नगर से ही इसकी रचना समाप्त हुई थी। प्रबन्ध का रचनाकाल सबत १६५० है। रचना राजस्थानी भाषा की है।

## ४७ मादित्यवार कया (४२५१)

प्रस्तुत कथा प० गगायात की रथना है जो कारंजा के भट्टारक धर्मकट के लिप्स थे। धादित्यवार कथा एक लोकप्रिय कृति है जिसे उन्होंने अंबत १७४० में समारत किया था। कथा की दो सनिव प्रतियां जपलक्य हुई हैं जिनमें एक भट्टारकोध रि०जैंद मध्यभेर में तथा दूसरी हुगरपुर के बाश्च मध्यार में उपलक्य हुई है। दोनों ही सचित्र प्रतियों प्रत्यक्षिक कलारक है। हुगरपुर वाली प्रति में स्वय ०० गगायात एवं भ० वर्भवन्द्र के चित्र भी हैं। कथा की रचना संत्री एव वर्गान संत्री होनो ही भन्छी है।

## ४८ कथा सब्रह (४३०,८)

भट्टारक विजयकीर्ति प्रजमेर नादी के प्रभिद्ध भट्टारक थे। वे भन्त के साथ साथ विदान एवं कार्य में कार्य हो प्रचार के प्रमाण के प्रभाव क्यांमृत पुराया एवं श्री मिक वरित पहिले ही उसक्य हो चुक्ती हैं। क्या मध्द करकी तीसरी रचना है। इसका रचनाकाल सवत है देउ हैं। इस कथा संबह में करत कुमार, चन्य कुमार, तथा वालिमद की कथाएं चौपर खर में निवद हैं। रचना की एक राष्ट्रिवरि महारकीय डिंग् अंत प्रस्तिर खड़ामेर में समझित हैं।

## ४६ चन्द्रप्रम स्वामीनो विवाह (४३२६)

प्रस्तुत किल भ० नरेन्द्रकीति को है जिसे उन्होंने सकत १६०२ मे छ्यतीबद्ध किया था। किन न इस काव्य को गुजरात प्रदेश के महताना नगर में समाप्त किया था। वे स्ट्रारक सुनितकीति के गुरू आता स्ट्रारक सकलभूष्या के शिष्य थे। विवाहलो साथा एवं बर्गन जैनी की ट्रिट से सामान्य है इसकी एक पाण्डुनियि कोटा के बोरसली के मन्दिर से जयसल्य हुई है।

## ४० सम्यवत्व कौमुदो (४८२८)

जगतरायं की सम्यक्त कोमुरी कवा हिन्दी कथा हृतियों में प्रच्छी हृति है। इसमें विश्वित्र कवाओं का अंबह है। कवि सागरे के निश्वते थे। कवि की पचनित्र पर्वावमतिका, सामयविवास सारि पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं। रचना सामाग्यतः प्रच्छी है।

#### ५१ होली कथा (४६००)

यह भुनि गुमचन्त्र की कृति हैं। जो भामेर गादी के मट्टारक जगतकीरित के शिष्य थे। भुनि की इंडोती अदेश के कुबडपुर से रहते थे। बहुनि की इस्तेम स्वामी का जैत्यालय या भीर उसी में इस रचना को छत्यों-बद्ध किया गया था। रचना भाषा की टेप्टिसे धच्छी क्वा कृति है। इसकी रचना चमेचरीला में विश्वत कथा के मनसार की गयी है।

मुनि गुभवन्द करी या कथा, घमं परीक्षा में ली जथा। होली कथा मुने जे कोई, मुक्ति तरगा सुख पावे सोय। सवत मतरासै परि जोर, वर्ष पचावन ऋषिक स्रोर ।। १२६ ।।

#### ५२ वचन कोश (५२३२)

बुलाकीदान कृत वसनकोश हिन्दी आया की भन्छी कृति है। कवि की पाण्डसपुरास एव प्रश्नोत्तरोसासकाचार किरोब जात की उत्तम कृतियां है जिन पर क्रम्य नृत्वों के पूर्व भागों से प्रकास काला जा कुक्त है। सम्बन्धिण के माध्यस में जैन सिद्धान्त को कोश के रूप से प्रमुत कम्भे कृति ने हिन्दी अपना की महात् देवा की है। इस कृति का प्यनासाल नंबत १३५३ है। यह कृषि की प्रारम्भिक कृति है। एवला प्रकाशन सीम्प है।

## **घा**युर्वेद

#### ५३ झजीर्ग मंजरी (५५६२)

स्वामनला फनेहनुर (तंबाबाटी) के ब्रासक क्यामला के ज्ञासन काल के हिस्सी किस थे। उन्होंने धायुर्वेद की इस हरि को नैयक बाहत के प्रत्य पत्यों के प्राध्ययन के पत्त्यात लिखी थी। इससे ब्रास होता है कि यामतलां संस्कृत एवं हिन्दी टोनों ही आवाधों के विद्वान थे। इसकी रचना सबत १७०४ है। कवि ने लिखा है कि उसने यह रचना इससे के उपकारायं लिखी है।

> वैद्यक प्रास्त्र को देखि करी, नित यह कियो बखान । पर उपकार के कारग़ै, सो यह ग्रन्थ मुखदान !! १०२ ।।

#### १४ स्वरोदय (५७६४)

प्रापुर्वेद विषय पर यह मोहनदास कायस्थ की रचना है। यथि इस विषय की यह लच्चुरचना है। नाडी परीक्षा पर मी न्वर के साथ इसमे विशेष वर्णन है। स्वत १६०० में इस रचना को कन्नोज प्रदेश में स्थित नैमलार के समीप के ग्राम करस्य में समाप्त किया गया था।

## रास, फागु वेलि

## ४४ बहा जिनदास की रास संज्ञक रचनायें

बह्या जिनदास सस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही महाकृषि थे। दोनों ही आधाओं पर इनका समान अधिकार था। इसलिये जहां इन्होने सस्कृत में बड़े बड़े पुराख एवं चरित्र प्रस्थ लिखे वहां हिन्दी में रास संज्ञक रवनायें तिल कर १५ वीं बताब्दी में हिन्दी के पठन पाठन में घपना धपूर्व योग दिवा। प्रस्तुत वश्य सूची में ही इनकी १५ रवनायों का विश्वय दिया गया है। इनमें सहकत की ४, प्राकृत की एक तथा शेव ५६ रवनायें हिन्दी सावा की हैं। प्रस्तुत अप्य सूची में सबसे स्विक कृतियां दश्ही की है इसलिये बहा विनदास साहित्यिक सेवा की इन्टि से सर्वोपरि है। कवि की जिन रास सजक रवनायों की उपस्थित हुई है इनके नाम निम्न प्रकार है—

१. प्रजितनाथ रास	(\$\$\$3)	२. ब्रादिपुराग रास	(६१३५)
३. कर्मविपाकरास	( <b>६१४</b> ६)	४. जम्बूस्वामी रास	(६१५३)
प्र. जीवधर रास	(६१५७)	६ दानफल रास	(६१६१)
७. नवकार रास	(६१७१)	८, घमंपरीक्षारास	( <i>६१६</i> ४)
<ol> <li>नागकुमार रास</li> </ol>	(६१७२)	१०. नेमीश्वर रास	(६१७६)
११. परमह⊹ रास	(६१८०)	१२. भद्रबाह र स	(4384)
१३. यशोधर रास	(6389)	१४, रामचन्द्र रास	(६२०२)
१४. राम रास	(६२०३)	१६. रोहिगी रास	(६२०६)
१७. श्रावकाचार रास	(६२१४)	१८. श्रीपाल रास	(६२१५)
१६. श्रुतकेयलि रास	(६२२३)	२०. श्रीसाक रास	(६२२५)
२१. सोलहकारसा रास	(\$878)	२२. हनुमत रास	(६२४३)
२३. धनतवत रास	(3 = 7 = 7)	२४ भठाईसमूलगुरा रास	(१०१२०)
२५. करकंड्रनो रास	(६१४७)	२६. चारुदत्त प्रवध रास	(3:508)
२७. धन्यकुमार रास	(६१६३)	२८. नागश्रीरास	(१०२३६)
२६. पानीगालस रास	(१०१२०)	३०. बकचूल रॉस	(0393)
३१. भविष्यदत्त रास	(\$\$\$\$)	३२. सम्यक्त्व रास	
३३. सूदर्शन रास	(१०२३१)	३४ होली गस	(80938)

११. वी शताब्दी में होने वाले एक ही कवि के इननी भिष्क रास सजक कृतियों जा उपलब्धि हिन्दी साहित्य के दाज्यास में सच्युच एक महत्युप्त कहानी है। वर्ष कर जम्मीसाराम ही महाकवि नुमसीदाम की सामया है। वर्ष करि की कुछ होत्यों को छोट कर सभी रननाये मरस्तरूग नथा भाषा एवं वैश्वी की दूरित से उपनेताया में है। वर्ष करा वर्ष का इत्या कर प्रदेश एवं गुजरान मृज्य कार्य स्थान रहा था। इसलिय दनके एक गुजरान मृज्य कार्य स्थान रहा था। इसलिय दनके एक गाम पर पुत्र निकास के प्राप्त है।

वता जिनदास की त्यनाची का प्रभी मूल्यांकन नहीं हो पाया है। यद्यार कवि पर राजस्थान विषय विज्ञालय में शोध कार्य अल रहा है लेकिन प्रभी तक अनेक माहिस्यिक दृष्टिया है जिनके आधार पर कवि का मृत्यालन किया जा सकना है। एक ही नहीं बीसो शोध निकन्य निसं जा सकते है।

क्षि महारक सकस्कीति के माई ही नहीं किन्तु उनके प्रमुख निष्य भी थे। इन्होंने धपनी कृतियों से पहिने सकनशीति की द्रीर उनकी मृत्यु के पश्चात म॰ जुगनतीति का स्मरण किया है वो उनके पश्चात सहारक गादी पर वेठे थे। द॰ जिनदास रास सक्षक रचनाकों के प्रतिरिक्त धीर भी रचनामें लिखी है। जिनके बाखार पर यह कहा जा सकता है कि कवि सर्वेतीमुखी प्रतिमा वाने विक्षात थे।

## **४६ चतुगं**ति रास (६१४६)

वरिवाद हिन्दों के प्रच्छे कि वं । इनकी प्रव तक कितनी हो रचनाओं का परिचय विक चुका है। इन रचनाओं में चतुर्गति रास इनकी एक लघु रचना है। जिसकी एक पाण्डुलिपि कोटा के बोरसजी के मन्दिर के बाहन भण्डार में संबद्धीत है। रचना प्रकालन योग्य है।

#### ५७ वर्षमान रास (६२०७)

भगवान महबीर पर यह प्राचीनतम राग सजक काम्य है जिसका रचना काल सबत १६६५ है तथा जिसके निर्माता है गर्दाना किंव। रास यद्यांप प्राचिक बडा नहीं है फिर भो महाचीर पर निल्ली जाने वाली यह उस्लेखनीय रचना है। कास्य की हप्टी से भी यह सच्छी रचना है। वर्षमान किंव बहाचारी में भीर महारक वास्त्रियण के जिप्य थे।

> सवत सोल पासिठ मार्गसिर सुदि पंचमी सार । बढ़ा वर्धमानि राम रच्यो तो सामनी तम्हे नश्लार ॥

#### ४८ सीताशील पतःका गुरावेलि (६२३२)

बेलि सज़क रचनाथों में धाचार्य जयकीति की दगरचना का उल्लेखनीय स्थान है। इसमें महासती सीता के उत्कृष्ट चरित्र का यशोगान गाया गया है। धाचार्य जयकीति हिन्दी के सच्छे किय थे। प्रस्तुत पत्य सूची में ही जनती ९ रचनाथी का परिचय दिया गया है। इसमें फ्रक्तकवितान, समस्यत नित्रान्य रोती, रविज्ञत कथा, वसूत्रेय प्रजन्म, शानः दूषरी प्रवस्य उन्न बेति के प्रतिरिक्त हैं। किये ने काश्य के विचय क्यों से रचनार्य निर्माधी निया प्राप्ती जतियां को विचित्र प्रयो में निल्ल कर पाठकों की रक्ष भी कहांच जायत किया करते थे।

धा० जयकीति ने महारकीय युग में महारका सकनकीति की परम्परा में होने वाले भ० रामकीति के शिष्य ब्रह्म हरला के आपह से यह विनि निलों थी। इस का रचता काल सेवन १६०४ ज्येष्ट सुनी १६ मुख्यार है। यह जुजरात प्रदेश के कोटनगर के प्रतिकार वेचाल में निलों गयी थी। प्रस्तुत प्रतिकी एक स्रोर विमाल से निलों गयी थी। प्रस्तुत प्रतिकी एक स्रोर विमाल से हैं के इस से स्वय प्रस्वकार के हाथ से निलों हुई है इस कि निर्मा प्रशिक्त में स्वयह है—

संबत १६७४ घाषाट सुदी ७ गुरो श्री कोटनगरे स्वज्ञानावर**णी कर्मक्षयार्थ ग्रा॰ श्री व्यवकी**र्तिना क्वहस्ताच्यां विख्यितेय ।

#### ४६ जम्बस्वामीरास (४१४४)

प्रस्तुत गस नययियन को रचना है। इसमें बन्जिम केवली जस्तूरवामी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश काला गया है। यह रास माया एवं मौनी की दृष्टि से सर्याक्षक महत्वपूर्ण है। रास में रचनाकाल नहीं विया है लेकिन यह १० मीं चनाक्षी का मालून देता है। इनको एक प्रति सास्त्र मण्डार दि० जैन मन्दिर कोरसकी कोटा में संस्त्रीन है।

#### ६० ध्यानामृतरास (६१७०)

यह एक आध्यारिमक रास है जिसमें प्यान के उपयोग एवं उसकी विशेषताओं के बारे में विश्वुत प्रकाश डाला गया है। रास के निर्माता है वर्णकरममें। जो अट्टारक गुम्बन्दर के प्रविच्य एवं मुनि विनयवन्द्र के मिन्य थे। रास की माया एवं सैली सामान्य है। कवि ने धपना परिचय निम्न प्रकार दिया हैं—

> जिन सामगा चिरजयो विबुत् गदा परा।मरा सुर । चुजिह सच सदा ज्यो विचन जायो तुम्ह दूर ।। श्रो गुअवन्द्र सुरि नमी समगी विनयचन्द्र मुनिराय । निज वृद्धि बनुसरि राम कियो ब्रह्म करमसी हरसाय ।।

#### ६१ रामरास (६२०४)

रामराम कविवर माधवदास को इति है। यह इति बात्यीकि रामायस पर घोधारिन है। रचना सबत नहीं दिया हुआ है लेकिन रास १७ वी सताब्दी का मानून पहला है। नवस् १७६६ की निक्सी हुयी एक पाण्डुलिपि दि० जैन सब्धेनवाल मन्दिर उदयपुर में मण्डीत है।

#### ६२ श्रोशिकप्रबंधरास (६२२४)

यह बहा समझी की रचना है जिसे उन्होंने सबत् १७७५ से समाज की यो। कवि ने सपनी हति की प्रवप एवं राज दोनों निजा है। यह एक प्रवप काव्या है और भागा गय दोनों की हिंह से काव्य उसनेपत्तनीय है। भगवान महावीर के प्रमुख उपासक सहाराता भें शिक का जीवन का विस्तृत यार्गन किया गया है। रचना प्रकाशन योग्य है।

#### ६३ सुकौशलरास (६२३४)

बेगीशस भट्टारक विदवसेन के शिष्य थे। प्रशीमण्टरम उन्हों की न्यना है जिने उन्होंने रेश बी बताब्दी में निवड़ किया था। यदार्थि पह एक लयु नाम है नीवन नाम्यन की ट्रॉट में यह एक घमझी कृति है। एस की पाण्डुलिय बहायस्थायर के बातिनाम वैत्यालय में मंतर १०१४ की माम मुदी पचमी को की सभी भी जो आजकत हुं मरपुर के सारूप भण्डान में महामेत है।

#### ६४ बृहद्तपागच्छ गुरावली (६२६८, ६२६६)

श्रोतास्वरीय तथागण्ड में होने बांने सायुद्यों को विस्तृत प्रश्वनी की एक प्रति दिंश नेन **प्रधान** पनायती मस्टिर समझर पीर एक प्रति पनायती मस्टिर मस्पुत्र के साम्य मण्डार में स्वरीत है। दोनों ही पार्ड्युनिया प्राचीन है लेकिन भरतपुर वानी प्रति स्विक्त कही है भीर १४ परो ने पूर्ती होनी है। समसर बाजी प्रति में मुनि मुख्यपूर्णित के के पुरुषों को पहाचनी दो हुई है। जबकि मानों प्रति स्वर्ष सूर्ति सुन्तर सूर्णि की लिसी हुई है भीर उसका लेलन काल सबत् १४६० आपूरा मुदी १० है।

## ६४ मट्टारक सकलकीतिनुरास (६३१०)

भट्टारक सकलकीति १५ वों सताब्दी के जबरदस्त विद्वान संत चे । जैन बाह्यय के निष्णात ज्ञाता से । उनकी बाग़ी में सरक्वती का बास या एव वे तेबोमय व्यक्तित्व के बनी से । उन्होंने बागव देख में भट्टारक संस्था को इतनी गहरी नीव लगायों कि वह सागामी २०० वर्षों तक उनने सारत समाव पर एक छन राज्य विद्यान स्ट्टारक सकलकीति स्वय ऊचे विद्वान एव धनेक ज्ञास्त्रों के रचिता ये । इसके प्रतिष्य भी वहे मारी साहित्य सेवी होते रहे । प्रस्तुत रास में मट्टारक सकलकाति एव उनके विषय प्र० भुवनकीति का संशित्य परिचय दिया गया है। रास ऐतिहासिक हे घीर यह उनके जीवन की कितनी घटनाओं का उद्घाटित करता है। रास के प्रारम्भ मे भ्राचार्यों की परम्पार दो है। धीर किर भ० सकलकीति के ज्ञान, माता, विदा, प्रभयन, विवाह, समय बहुल, भट्टारक पर महाय, प्रथं रचना आदि के बारे में सक्षित्य परिचय दिया गया है। इसके पत्रचात २५ पद्यों में भ० भुवनकीति के गुएंगे का वर्णन हिम्स गया है। भ० भुवनकीति की सर्व प्रथम सवत् १४८२ में इंतरपुर में दीक्षा हुई थी। रास पूर्णन ऐतिहासिक है।

द्वः सामल को यह रचना प्रत्यधिक महत्त्वपूर्ण है जिसको एक २,०वृत्तिप उदयपुर के संभवनाथ मन्दिर मे मण्हीत है।

## विलास एवं संग्रह कृतिया

## ६६ बाहुबलि छन्द (६४७६)

यह ल पुरचना भ० प्रभावन्द्र के शिष्य बादिचन्द्र की कृति है। इसमें केवल ६० पद्य हैं बिसमें भन्त सम्राट के छोटे भाई बाहुब्लि की प्रमुख बीवन घटनाओं का वर्शन है। रचना ग्रच्छी है। तचाएक संग्रह ग्रंथ में सपहीन है।

#### ६७ चतुर्गति नाटक (६५०४)

डालूरास हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। यंब तूची के उसी माग में उनकी ६ भीर रचनार्थों का विवरण दिया गया है। अनुमति नाटक में चार गनि देव, मृत्या, तियंत्र्य और नरकमति से सहे जाने वाले दुःखों का कर्णन किया गया है। यह शोव स्वय जगत नयी नाटक का नायक है जी विभिन्न सोनियों को भारण करता हुमां सतार परिप्रमाग करता रहता है। रचना अपखी है तथा पटनीय है।

#### ६८ संबोध सत्तारानु बुहा (६७७६)

यह बीरचन्द की रचना है जो सबोधमारमक है। बीरचन्द का परिचय पहिले दिया जा चुका है। भाषा एवं सैली की ट्रिट में रचना सामान्य है।

#### स्तोत्र

#### ६६ प्रकलंकदेव स्तोत्र मावा (६७६४)

सकलंक स्तोत्र संस्कृत का प्रतिद्ध स्तोत्र है और यह बसी स्तोत्र की परमतकंडिनी नाम की भाषा टीका है। इस टीका के टीकाकार चंपालाल बागडिया है जो फालरापाटएा (राजस्वान) के निवासी थे। टीका विस्तृत है तथा वह पद्यमय है। टीकाकाल संबत् १६१२ श्रावसा सुदो ३ है। टीका की एक प्रति वृदी के पार्चकांच मन्दिर कें बांस्त्र पण्डार में संप्रति है।

#### ७० भाविनाथ स्तवन (६८०७)

यह स्तवन तपापक्रिये साधु गोममुखर नूरि के शिष्य महत द्वारा निर्मित है। इसका रचनाकाल संबत् १४६६ है भाषा हिन्दी एव पद्म सच्या ४५ है। इसमें रागफ्तुर के मन्दिर का मुखर वर्णन किया गया है रचना ऐतिहासिक है। स्तवन का अनिया पद्म निम्म प्रकार है—

भगिन करूं सामी तहीं ए छाइ दरसहा दाहा। बिहु दिसि कीरति विस्तरों, ए वन घरण प्रधान । संवत व्यवस्थान ए पुरि काली माहे । सेव्ह कहत माह स्वतं की माने दें। मेहु कहत माह स्वतं की माने सी लागे। भरा । इसि भी राष्ट्र मेहु साह स्वतं की माहिताब स्वतं न प्रधान में

## ७१ मक्तामर स्तोत्र भाषा टीका (७१७३)

भक्तामर स्तोत्र की हैमराज कृत भाषा टीका उल्लेखनीय कृति है। दि॰ जैन मस्तिर कामा के बाश्य भण्डार मे २६ पृष्ठीं बानी एक पण्डुलिपि है जो स्वय देवराज की प्रति वो ऐसा उब पर उल्लेख मिलता है। यह प्रति सबत् १७२७ की है। स्वय य बकार की पाण्डुलिपियों में दमका उल्लेखनीय न्यान है।

## ७२ मक्तामर स्तोत्र वृत्ति (७१८४)

भक्तामर स्तोत्र पर भ० रलवस्त्र को यह सम्झत टोका है। टोका विस्तृत है तदा सरस एव मुझोच है। खबमेर की एक प्रति के प्रतृतार टमको टोका स्टिइ नदी के तट पर स्थित प्रीयापुर तगर के पार्श्वनाण वैव्यास्थ्य में की गई थी। टीका करने में आवक करमधी ते विशेष प्राप्त किया था।

## ७३ वर्षमान विलास स्तोत्र (७२८७)

प्रस्तुत स्तोत्र भट्टारक ज्ञानभूषमा के प्रमुख शिष्य भ० जार्भुगमा द्वारा विरक्ति है। इसमें ४०९ पद्ध है स्तोत्र विस्तृत है तथा उससे भगवान महाबीर के जीवन पर भी प्रकाल *दाला गया है*। पा**रहीयपि सपूर्ण है** तथा प्रारम्भ के २ पत्र नहीं है फिर भी स्तीत्र प्रकालन होने योग्य है!

## ७४ समवशरमा पाठ (७३५४)

सस्कृत भाषा में निबद्ध उक्त सम्बद्धान्या पाठ रखराज को छति है। रेखराज कवि ने **दसे कब** समाप्त किया चा इसके बारे में कोई उन्नेख नहीं मिलता है। रचना सामास्तरः सम्बद्धी है।

इसी तरह समयगरण मगल महाकवि माखाराम का (७३११) तथा समवत्ररण स्तीत्र (विश्वपुष्ठेत) भी इस विषय की उस्लेखतीय कृतिया है।

## पूजा एवं विधान साहित्य

उक्त दिवस के अन्दर्गत बन रचनाओं को दिया गया है जो या नी पूजा खाहित्य में सम्बन्धित हैं अथवा प्रतिच्छा विधान सादि पर जिल्ली गयी हैं। प्रस्तुत विषय को १६७५ पाण्डुनिपियों का परिचय इस आग में दिया गया है प्रच मुची के भाग में सबसे अधिक इतिया इन्हों नियों की है। ये पूजाएं मुख्यतः संस्टत एवं हिस्सी आया को है। पूजा साहित्य का सम्बन्ध में कितना प्रविक्त प्रचार या यह इन पाण्डुनिपियों की सदया से जाना जा सकता है। इस विषय की कुछ सजात एवं उल्लेजनीय रचनाये निम्म प्रकार है—

*	ब्रमुद्रिम चैत्यालय पूजा	मल्लिसागर	(3858)	मस्कृत
7	भनन्तचतुर्दशी पूत्रा	<b>गान्तिदास</b>	(9888)	,,
ą	धनन्तनाथ पूजा सङ्ख विधान	गुरम्बन्द्राचार्य	( <i>७१.०</i> =)	.,
¥	धनस्तवन कथा पूजा	ल <b>िनकी</b> ति	(७४१६)	,,
¥	<b>भन</b> स्तवत पूजा	पाण्डे धर्मदास	(७५१७)	,,
Ę	धनन्तवत पूजा उद्यापन	सकलक <sup>्र</sup> न	(9×3 ₹)	,,
•	ब्रष्टाह्मिका प्रतोद्यापन पूजा	प०नेशिय÷व	(3 4 10)	,,
5	भादित्यवार श्रतोद्यापन पूजा	जयस:गर	(५४७१)	,,
ĉ	कल्य।गमन्दरपूजा	देषेन्द्रकीति	(6836)	,,
80	चतुर्दशी प्रतोद्यापन पूजा	विद्यानन्दि	(७२≂१)	
? ?	चौबीम तीथ कर पूजा	देवीद स	(৬৯২৬)	हिन्दी
१२	चनुर्विणति तीर्थं कर १ बकल्यामाक पूजा	जयकीति	(9588)	संस्कृत
१३	जम्बूहीय पूजा	प० जिनदास	(७८६८)	,,
१४	तोस वौदीस पूजा	पं० साधारम्	(७१२४)	,,
**	त्रिकाल चतुर्विणति पृजा	त्रिभुवनचन्द्र	(3750)	
<b>१</b> ६	त्रिलोकसार पूजा	नेमीचन्द	(७१६२)	हिन्दी
१७	**	मुमतिस।गर	(७६७२)	संस्कृत
१८	दजलक्षराव्रतोत्वापन पूजा	भ० जानभूषरा	(५०६४)	मस्कृत
38	नन्दीश्वर द्वीय पूजा	प० जिनेश्वदास	(\$77)	,,
२०	नन्दीश्वर द्वीप पूजा	विरधीचन्द	( <b>=</b> २३१)	हिन्दी
₹ ₹	पच कल्यासक पूजा उद्यापन	गुजरमलाठग	(=235)	20
33	पच कल्यासाक पूजा	प्रभ:चन्द	(=588)	सस्कृत
₹ ₹	पच कल्याः सक	व।दिभूषस्	(2888)	,,
२४	पच कल्यास्यक विधान	हरी किशन	(5260)	हिन्दी
₹ <b>X</b>	पद्मावती पूजा	टोपग्ग	(====)	संस्कृत
२६	पूजाष्ट्रक	ज्ञातभूषसा	(६४४२)	,,
२७	प्रतिष्ठा पाठ टीका	पर <b>शुराम</b>	(#659)	,,
२८	लघु पंच कत्यासाक पूजा	हरिमान	( <i>&lt;</i> 0 <i>§</i> 0)	हिं 🛋

#### ( शक्तीस )

₹€ <b>₹</b> •	वत वि <b>धान पूजा</b> योडसकार <b>ला वतोबा</b> पन पूजा	ग्रम <b>रचन्द</b> सूमतिसागर	(55.55) (55.55)	हिन्दी संस्कृत
3 8	सम्मेदशिखर पूजा	ज्ञानवन्द	(={={})	हिन्दी
<b>3</b> ?	सम्मेदशिखर पूजा	रामपाल	(=35=)	,,

## गुटकासंब्रह

## ७६ सोता सतु (६१६६)

यह रूबियर मगोतीशास की रचना है जो देहमी के प्राप्त आ एवं हिन्दी के प्रसिद्ध कि वि । प्रजमेर के भट्टारकीय वास्त्र मण्यार में एक वडा गुटका है जिससे सभी पचनार्थ भगौतीशास विरचित है। सीनासनु भी उन्हीं में से एक पचना है जो इसरे गुटके में भी सप्तरीत है। यह सबद १६६४ की रचना है जांव ने जो ब्रापना परिचय दिया है वह निम्न प्रभार है—

पुरु मुनि महिंदसीय जगीती, रिक्षि पद पक्क रेलु मगीती। इत्यासस बनि तनुत्र भगीती, तुरिय गङ्का) बनु मनुब भगोती। नगरि दुढिये बासि मगीती, जन्म भूमि विरू स्राप्ति नगीती। मध्याज कुल बस लगि, पब्लि पर निरक्षि भगि मगीती। सीतासनुको कुल पद्य संस्था ७७ है।

## ७७ मृगी संवाद (६१६६)

यह कवि देवराज की कृति है जिसे उन्होंने सबन् १६६३ में निस्ती थी। सवाद रूप से यह एक सुरवर काव्य है जिसकी पद्य सस्या २५० है। कवि देवराज पासचन्द्र सूर्य के जिप्य थे।

## ७८ रत्मबूडरास (६३००)

रम्मण्डरसस सबत् १४०१ की रचना है। इसका पद्य तन्या १३२ है। इसकी नावा राजस्थानी **है तथा** काव्यत्य की हरिट से यह एए अच्छी रचना है। कवि बढाउगच्छ के साथु रनमृति के क्रिया थे।

## ७६ बृद्धि प्रकाश (६३०१)

धेरत हिन्दी के प्रच्छे कांव थे । बुद्धिअकास इनको एक लघुरचना है जिसमे केवल २७ पद्य हैं । रचना उपदेजात्मक एव सुमापित विषय से सस्दद्ध हैं ।

## ८० वीरचन्द दूहा (१३६१)

यह तक्ष्मीचन्द की इति है जिसमें मट्टारक बीरचन्द के बारे में ६६ प**द्यों में परिचय प्रस्तुत किया** है। रचना १६ वी जनाव्दी की साहुस पड़ती है। यह एक प्रकागन योग्य कृति **है**।

#### ८१ प्रगंलपुर जिन बन्दना (६३७१)

यह रचना भी कविवर भगवतीयान की है जो देहनी निवासी थे। इसमे आगरे में सबत् १६४१ में बतने भी किन मन्दिर एवं वेत्यानव थे उन्हों का वर्णन किया गया है। रचना ऐतिहासिक है तथा "मर्गलपुर पट्टिशा जिएा मन्दिर जो प्रतिमा रिति गई" यह प्रत्येक एख को टेक है। प्रत्येक एख १२ पंक्ति वाला है। पूरी दवना में २१ रख है। प्रागरा में तत्कानीन आवकों के भी कितने ही नामों का उल्लेख किया गया है। एक उदाहरण, देंबिये—

साहु नराइनी करिंड जिनालय स्नित उत्तरा घुज सोहर हो।
पण्डुप्ती जिन बिल विराजित समर खबर खोहर हो।
जमभूषपु नर्टारक तिह विश्व को करि छमर वी हो।
जमभूषपु नर्टारक तिह विश्व को करि छमर वी हो।
तिनि डकु क्लोकु मुनायो मुख आली रामपुरी की कहो।
विह सरवरि निस हंस विराज्य सोम खत वर भोक हो।
वह सरवरि निस हंस विराज्य सोम खत वर भोक हो।
वृद मगल उटि जानि जहांने निह मरिं सोभा नाही हो।
जानी प्रच दानी जम मसस्य समुफ्ति लाने मनर्हित हो।
सन्दित लवाह पन माहि ममुण जमा मुनि वानो पुत देवा।
सन्दित लवाह पन माहि समुण जमा मुनि सोने सोभा नाही।

#### दर संतोष जयतिलक (E४२१)

गृह ्वराज काँक का रूपक काल्य है जिसमें सतीय की लीम पर विजय का वर्शन किया गया है। स्तीय के प्रमुख मा है शाल, मदाचार, मध्यक ज्ञान, सायक किया, वैराय, तम, करुणा क्षमा एवं संयम । तीज के प्रमुख प्रगी में मान, कीच, मीह, माया कलत्र आदि हैं। कवि ने इन पात्रों की संयोजना करके प्रकाश और स्थायकार पत्र की मीजिक उद्भावना प्रस्तुत की हैं। इसमें १३१ पद्य हैं जो सारिक, रह रविक्का, नाया, दौहा, पद्धा, आंडल्ल, रासा, आदि छारों में विकक्त हैं। इस काव्य की एक प्रति दिन जैन मन्दिर नैमिनाय बूंदी के ज्ञान्त मध्यर में महर्त दिन जीन मिनार है। इस काव्य की एक प्रति दिन जैन मन्दिर नैमिनाय बूंदी के

#### ५३ चेतन पुरुगल बमालि .६४२१)

यह कवि का दूसरा रुपक काव्य है। वंग्न तो किव का 'मयरणुज्य' सत्यधिक प्रसिद्ध रूपक काव्य है। वेकिन भाषा एव श्रीसी की दृष्टि से चेतन पुरुगल समालि सबसे उनम काव्य है। इसमें किव ने जीव कीर पुरुगल के पारस्परिक सम्बन्धों का तुलनात्मक वर्णन किया है। बास्तव में यह एक सवावास्तक रूपक काव्य है। जिसके बढ़ एव भीव नोतों नायक है। काव्य का पूरा संवाद रोचक हैतवा कि ने उसे वड़े ही सुन्दर उसे से प्रस्तुत किया है। इसमें १३६ पद्य है जिनमें १३१ पद्य दीपकराग के तथा ५ पद्य सन्द खप्पय खन्द के हैं। दचना में रचनाकाल का उल्लेख नहीं है। सन्मिन पद्य तिमन प्रकार है—

जे वचन श्रीजिस बीरि भासे, तास नित घारह हीया। इव भण्ड वचा सदा निम्मल, मुकति सरूपी जिया।।

#### ८४ खाराधना प्रतिबोधसार (१६४१)

यह कृति प्रे॰ विमलकीर्तिकी है जो संभवतः प्र० सकलकीर्तिके पश्चात् बादी पर बैठे वे लेकिन स्रोपक दिनों तक उस पर टिकेनहीं रह सके। इस कृति से ४५ छन्द हैं। कृति स्नाराधना पर सच्छी सामशे प्रस्तुत करती है। इसको भाषा सपन्ने के सम है।

> हो झप्पा दंशभ गारा हो, झप्पा संवम जारा। हो झप्पा मुस्स गमीर हो, झप्पा सिव पद घार।। ४१॥ परसप्पा परसबक्षेद्र, परसप्पा शकन झभेद। परसप्पा देवल देव, इस जासी झप्पा सेव । ४१॥

#### ८५ सुकौशल रास (६६४६)

यह सासू कि की रचना है जो प्रमुख रूप से चीगई छन्द में निबद्ध है। प्रारम्भ में किन का नाम नागुं भी दिया गया है। इसी तरह कृति का नाम भी "सुकोमल रास च उगई" दिया है। किन ने प्राने नामोलिस के मतिरिक्त भ्रम्य परिचय नहीं दिया है भीर न अपने गुन परम्परा का ही उल्लेख किया है। राम की मापा सरल एवं सुनोब है। एक उदाहुरए। देखिये—

> प्रजोध्या नगरी ग्रनि भनी, उत्तम कहीइ ठाम । राज करि परिवार मु, कीनि धवन नस नाम ॥१०॥ तस घारि राणी रूपडी, रूपवन सुव सेय । सहि देवी नामि सुणु, मक्ति भरनार विवेक ॥११॥

#### द६ बलिभद्र चौपई (६६४६)

सह चोपई काव्य बहु सजीपर की कृति है जिसने नेसठ सालाका मागृहकों से से ६ बिन स्था पठ करण दाना गया है। इसका एकता काल सबत १५६५ है। सकत नगर के भीता नाथ चैनालय संध्याकों रकता की सभी भी। ४० सकीपर स॰ रामदेव के अनुकत संक्षेत्र नाम अधुरक सक्ष को लिख्य संविद्ध से १०६९ पछ है।

> सवत पनर पत्थासई, रक्षंब नगर मक्त'रि । सविण अजिन जिनवर निमा ए गुरु गाया सार ॥१८६०।

## ८७ यशोधररास (१६४६)

यह नोमकीर्तिका हिन्दी काब्य है त्रियमे महाराजा बणोधर के जीवन पर प्रकास डाला गया है। रचना गुबनी नगर के जीवननाथ रवासी के मन्दिर में की गयी थी। सारा काब्य दल बाजों से विसक्त है। ये बाले एक रून से सर्गका हो काम देती है। इसकी माद्या राजस्थानी है जिसमें कही कही गुजराती के सब्दी का भी प्रयोग हुधा है। रास की संवत १६६४ की पार्व्युनिय बूंदी नगर के मन्दिर कैंगुटके से उपसब्ध होती है।

#### ६० चूनड़ी. ज्ञान चूनडी धावि (१७०८)

पूनकी एवं झान पूनकी, पर संगह, नेमि व्याह पन्यीसी, बारतुषड़ी एवं झारवा अवंगी संवाद सांवि सभी रचनामें नेपराव कवि की हैं। कवि १६ नी मताब्दी के थे।

#### **६१ नेवियाथ को छ**न्त (११२२)

'नैक्सिय की खंद' कृति हेमचार की है जो श्रीयुक्त के जिल्ल ने : इताई **जिल्ला का** बोवन चित्रित किया गया है। रचना विश्विष खुन्दों में जिल्ला है छुन्द की कुछना संस्कृत निष्ठ है नेकिन ने हैं संस्कृ एवं सामान्य है। इसकी पक्ष संस्था २०४ है। रचना प्रकाशन होने भीना है।

#### ८८ शालिमद्ररास (१६७८)

यह श्रायक फकीर की रचना है जो बंधरवाल जाति के व्यविध्या गोज के व्यविक थे। इसका रचना काल सबत् १७४३ है। राग की पछ सक्या २२१ है। रचना काल निम्में अकीर दिया समा है—

> महो संबन् बरागमं बरुत ज़िकालः। मास वेशामः पूरिणमं मसियासः। जोगनीमदर सब सत्या सिन्धा गुडामकी। पुरस्कारः रकते धनरसः राजदे। सहो समाने मन्नी प्रणानी सामा मसिकाल स्था बरशाउ ।।२२१।।

#### ८६ गुराठाखा गीत (६६८३)

पुराकारणा गीत (गुरास्थान गीन) वहा वडंन की ऋति है जो जो प्रापन्द सूरि के खिळा थे। गीत बहुत छोटा है धीर १७ खन्दों में ही समाप्त हो जाना है। इसमें गुगरस्थान के बारे में प्रच्छा प्रकाश बाला गया है। माचा राजस्थानी है।

#### (2835) PP F3

यह एक मुख्तिम कवि को रचना है जिसमे नेनिनाथ का नृषानुबाद किया नया है। नेनिनाथ के वीचन पर किसी मुख्तिम कवि द्वारा यह प्रचन पर है। कवि नेमिनाथ के जीवन से परिचित्त हो नहीं चा किन्तु वह जनका मक्त सी था। जीखा कि पर की निस्म पक्ति से जाना जा सकता है—

> छ्यन कोटि बादी तुम मुकुट मनि । तीन कोक तेरी करत छेवा। स्वाम मुहम्मद करत ही बीमती। रास्त्रिके करला देवासिदेवा।।६॥

#### **१३ धनकुमार चरिउ (१०,०००)**

ं प्रस्कुरार चरित महाकवि रहत् की इति है। रहपू प्रयक्त क ने १४ वी शताब्दि के जबरदस्त महा कवि ये। प्रवतिक जनको २० में भी धरिक रचनायें उपलब्ध हो चुकी है। धन्यकुमार चरित इसी कवि की रचना है जिसकी पाण्डलियि कामा क दि० जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में सम्प्रीत है।

#### **१४ तीर्थं** कर माता पिता वर्शन (१०१३७)

यह संबद् १४४६ की रचना है जिससे २० पट है। इसके कवि है हेमनु जिसके पिता का नाम विनदास एवं प्राता का नाम बेस्हाया। वे पोलापूर्ण जाति के वरिषक थे। इससे २४ तीर्थ करों के माता पिता, बरीर, आगु धार्दिका वर्णन मिलता है। वर्णन के भाषा एक गैली सामान्य है। यह एक गुटके से सबहीत है जो बसपुर के सक्कर के टि॰ जैन सम्बर्ध से सख्दीत है।

#### ६५ यशोधर चरित (१०१८१)

मनमुख्यमागर हिन्दी के बच्छे कवि थं। इनका सम्मेदनिक्य महास्प्य हिन्दी कृति पहिले ही मिल चुकी है। सम्दुत कृति में स्वाधिय के जीवन पर वर्षण किया गया है। यह सबत् १८८७ की कृति है। इसी सबत् की एक प्रति शास्त्र क्यार दि॰ जैन मन्दिर कतेहतुर में सबहीत है। यह हिन्दी की धन्छी ग्वना है। सनम्बसागर की धनी धीर मी ग्वना मित्रने की समावना है।

#### ६६ गुटका (१०२३१)

दि० जैन प्रध्यास मन्दिर उदयपुर में एक गुटका यत्र सत्या १८-२१- है। यह गुटका सज्य १९६१ से १६४३ तक विभिन्न वर्षों में लिखा गया था। इससे १८८ जनवामों का सम्रह है। रहका के प्रमुख जेनक महारक यी विद्याप्तरण के प्रशिष्य एल विनयकोति के शिष्य त० धन्ना थे इससे जिननों भी हिन्दी क्रूनिया है वे सभी महत्वपूर्ण एल प्रप्रकाशित है। उनते कवि ने भिति, 'व्यवस्थी नगाने में निष्या था। गुनके म कुछ महत्वपूर्ण पाठ निम्न प्रकार है--

ŧ	जीवघरराम	त्रिभुवनकीति	रचना काल सबग १६०६
7	श्रावकाचार	प्रतापकी ति	
₹	सुकमाल स्वामीराम	धर्म रूचि	
¥	बाहुबलियोलि	गानिदास	
X	<b>सुको</b> णलरास	साग्	TOTAL
٩	यशोधरगस	सोमकी नि	
૭	भविष्यदत्तरास	विद्याभूषमा	

#### १७ मद्वारक परम्परा

हूं गण्युर के बास्त्र प्रथार में एक गुरका है जिसमें १४० है से १८२२ तक मट्टारक सकतकीति की परम्परा में होने वाले मट्टारको को बिस्तृत परिचय दिया गया है। सर्गप्रयम बायड देंग के फूंपम राज्य में होने वाले देहभी पट्टस्य मट्टारक पद्मवन्य से पान्यरा दी गयी है। उसके पश्चात् अ॰ पद्मवित्व एसं उसके पद्मात् अ॰ सकलकीति का उस्लेख किया गया है। अ॰ सकलकीति एक मुक्तकीति के मध्य में होने वाले अ॰ विमलेश्वकीति का भी उस्लेख हुया है। पट्टावली महस्वपूर्ण है तथा कितने ही नये तथ्यों की उद्वादित करती है।

#### ६८ महारक पट्टावलि (६२८६)

उदयपुर के समयनाय में ही यह एक दूसरा पट्टावली है जिलने जो १६६७ सामंगीयं सुदी ३ मुकबार से शास्त्रभ का गयी है इस दिन प० क्षमा का जन्म हुआ दा जो अट्टारक देवन्द्रकीति के पण्यात् भटटारक वने थे। इसके पवचात् विशिक्त नगरों में देहार एवं चाहुमांन करते हुए आवको को उपयेश देते हुए सन् १७६७ की मार्गवीयं बुती १ के दिन शहसदाबार नगर म ही इसमें मन्या । उस समय उनकी खाडु ६० वर्ष की थी। पूरी पट्टावली संपरकार्ति को है। ऐसी विस्तृत पट्टावलों वहत वस नेवलने से साथी है। उनकी ६० वर्ष की जो जीवन गावा कही गयी है वह पूर्णतः ऐतिहासिक है।

#### **१६ मोक्समार्ग बावनो (१५६३)**

यह मोहनदास को बाबनी है। मोहनदास कीन ये तथा कहा के निवासी ४ इसं सम्बन्ध में किब ने कोई परिचय नहीं दिया है। इससे सबैध्या, दोहा, कुंडलिया एवं ख्रेप्य झादि छन्दों का प्रयोग हुसा है। बाबनी पूर्णतः झाध्यास्मिक है तथा भाषा एवं शैनी की इंटिट से रचना उत्तम है।

> है नाही जामै नहीं, नहि उताति विनास। सो सभेद सातम दरव, एक भाव परमास।। १३।। जित सिरता नहि मेर सस, स्रीयर न पत्र समान।। ज्यौतर पवन भकोतनै ठोर न तज्ञत सुजान।। १४।।

#### १०० मुमतिमाध पुरास (३१०४)

दीक्षित्र देवदत्त सस्कृत एस हिम्पी के घन्छे विद्वात थे। उनकी सस्कृत रचनाओं में सबर चरित्र, सम्मेदिशिक्तर महास्य एक मृत्रणेन चित्र उन्तेनकीय त्रवायें हैं। सुमितनाथ पुरारण हिन्दी कृति है जिसके पोचने कीचें कर मुम्मितनाथ के बोचन पर प्रकाल डाला गया है। इसमे पाच कथ्याय हैं। कवि जिनेन्द्र भूवणा के जिप्य थे। पुराला के बीच से सम्कृत के ब्लोको का प्रयोग किया गया है।

## ग्रंथ सची के सम्बन्ध में

प्रस्तुन जय मूचों में बोस हजार से भी ध्रमिक राण्ड्रलिपियों का बर्ग्स है। जिसमें मूल घय ५०६० है। ये यंथ सभी भाषाओं के हैं लेकिन मुख्य भाषा सन्द्रन, प्राह्त एय हिस्सी है। प्राह्त माखों के भी उन हो वंदों की पाण्ड्रलिपिया हैं जो राजस्थान के घ्रम्य भण्डारों में मिलती हैं। घप घंदा की बहुत कम रचनायें इस सूची में बायी हैं। घवमेर एस कामा जैसे यंथागारों को छोड़कर घम्पण इस भाषा की रचनायें बहुत कम मिलती है बेहिक्स भाषा में सबसे प्राप्त रचनाये स्तीन एकं पूजा सन्तम्भी है। बाकी रचनाय वही सामाम्य है। संस्थानीर पर सस्कृत भाषा की जो तीन संस्कृत टीकाए उपनम्प हुई है और जिनका जरर परिवया भी दिया जो चुंचा है वे महत्वपूर्ण हैं। वेकिन सबसे क्षिपक रचनाये हिन्दी भाषा की प्राप्त हुई है। वस्तुत स्वत विकास क्षेत्र में स्वत हुई है। वस्तुत स्वत के स्वत के स्वत स्वत के स्वत के

य प मुची के इस विज्ञासकाय भाग में श्रीस हजार पाण्ड्रीसियों के परिचय में यदि कहीं कोई कमी रह यथी हो अववा लेकक का ताम रचनाकाल आदि दंग से कोई गहती हो गयी हो तो विद्याप्त उन्हें हमें सुवित करने का करण करेंग । जिससे मिब्राम अर्थ निर्मे उन पर प्रधान रखा जा मके। जारत मण्डरों के परिचय हमने उनकी सुची बनाते समय लिया था उसी घाषार पर इस सुची में परिचय दिया गया है। इसने सभी पाण्ड्रिसियों का अधिक से प्रधिक परिचय देने का प्रधास किया है। सभी महत्वपूर्ण य एवं लेकक प्रकारिना भी वे तो गयी है खिनकी सच्या एक हजार के कम नही होगी। इन प्रधासत्त्रों के प्रधार पर साहित्य एवं इतिहास के कितने ही विदानी, प्रावको एवं झालकों के सम्मत्व में नवीन जानकारी सिल्य नहीं।

राजस्थान के विभिन्न नगरीं एवं धामों में स्थापित कुछ भण्डारों को छोडकर लेग की स्थिति युन्धी नहीं है भीर यही स्थिति हती तो थोड़े ही क्यों में इन पाण्डुलियों का नय्ट होने का भग है। इन मण्डारों के व्यवस्थापकों को चाहिये कि वे इन्हें प्रवास्थित करके बेटरनी में नाएकर विराजमान कर र जिसमें वे प्रवित्य में वार्यक भी नहीं हो भीर नमय र पर बनका उपयोग भी होता रहे।

> महाबीर भवन जयपुर

दिनाक २४-१२-७१

बस्तुरबन्द कामलीबान श्रद्धपनन्द सामनीश्रे

## कतिपय ग्रज्ञात एवं ग्रप्रकाशित ग्रंथों की नामाविल

क्रमसस्य	ाग्रय सूची क्रमांक	ग्रंथ नाम	ग्रथकार	मावा
ę	६७१४	ग्रकलंकदेव स्तीत्र भाषा	चयानाच दागहिया	हिन्दी
>	4x62	प्रजीर्मामजरी	<b>ग्यासन्दर्भा</b>	,,
3	<b>६१३३</b>	ग्रन्थितनाथ राम	<b>त</b> ः विनदास	••
	8253	श्रनिरूद्ध हररा (उषाहररा)	रत्नभूषरा	**
×	8457	ग्रनिरूद्ध हरए।	जयसागर	
£	¥₹₹₹	प्रभयकुमार प्रबन्ध	<b>च्छ</b> भगाञ	4
ঙ	४२४१	धादित्यवार कथा	यगाराम	,,
c	१०१२०	प्रठाईस मूलगु/ग्राम	<b>त० ∉िक्नद</b> ेस	द्विन्दी
3	१३७१	धर्मलपुर जिनवन्दना	भगवतीबास	,,
90	६१३४	धारिपुराण राम	्व० जिनदास	,,
? १	ره≘و	ग्रादिनाथ स्तवन	मेहउ	,,
9.5	€ \$ 3 ¥	ब्राविषुगण राम	<b>ब</b> ० जिनदास	,,
१३	७४३१	धनस्तवन एजा उद्यापन	मकमकीर्ति	संस्कृत
१४	.30€	कथा संग्रह	विजयकीति	हिन्दी
44	<b>≂</b> ₹	कर्मविषाक सूत्र चोपई		हिल्दी
१६	εQ	कर्मविपाक राम		31
<b>१</b> ७	<b>દ</b> ૯ ૬	कियाकीण भाषा	दौलतराम कासलीवाल	,,
<b>?</b> =	६१४६	कर्मविषाक राम	<b>य० जिनदास</b>	**
35	६१४७	<b>करकण्डुनोरा</b> स		हिन्दी
२०	<b>१</b> ६ <b>५६</b>	गुरम विलाम	नथमल बिलाला	,,
₹.	<i>६६</i> ८३	गुरा <b>ठारमा</b> गीत	बह्म बंद्धं न	
२२	७६=१	चतुर्देशी वतीसापन पूजा	विद्यानन्दि	"
43	و چونوا	चौदीस तीर्थं कर पूजा	देवीदास	हिन्दी
4.8	१०४८	च <b>तुर्राच</b> तारागी	दौलतराम कासलीवाल	•,
२५	६१४६	चतुर्गतिरास	वीरचन्द	हिन्दी
२६	6408	चतुर्गेति नाटक	डालूराम	19
२७	¥325	चन्द्रप्रम स्थामीनो विवाह	नरेन्द्रकीति	,,
35	<b>३३</b> २	चौदह गुग्रस्थान वयनिका	ग्रसगराज	11
२१	386	बौबीस गुग्गस्थाव अर्था	गीविन्दराम	,,

## ( खियालीस )

कम संख्य	।। प्रयसूची कमांक	प्रंचनाम	ग्रथकार	भावा
₹•	₹• <b>२३</b> €	चारुदत्त प्रबन्धरास	स्र० जिनदास	हिन्दी
₹.	7007	नेतावसी प्रथ	रामबरग	,,
32	£¥ <b>₹</b> ₹	नेतन पुद्गल समालि	<b>ब</b> ० दुचराज	,,
33	2003	चूनडी एव ज्ञान चून <b>डी</b>	वेगराज	,,
38	७६६	जम्बुद्वीप पूजा	प० जिनदास	संस्कृत
31	३३४८	जीवधर चरिउ	रइध्	धपभ्रम
35	33 <b>4</b> E	जोदधर चरित	`न्द्र दौलतराम कासलीवाल	हिन्दी
30	33 <b>5</b> 0	जीवंघर चरित्र प्रबंध	भ०यण.कीति	हिन्दी
35	६१५७	जीवधर रास	ब ० जिनदास	21
36	5 X X 3	जम्बुस्वामीराम	क जिनदास	हिन्दी
Y.	X		नयश्चिमल	17
X 5	२०४४	" ज्ञानार्श <b>व गद्य</b> टीका	जानचन्द	संस्कृत
**	×30	तत्वार्थं मूत्र भाषा	साहिबराम पाटनी	,,
¥₹	<b>६२३</b>	त्रिभगी सुबोधिनी टीका	प्राशाधर	संस्कृत
48	<b>१०१</b> 3७	तीर्थं कर माता पिता वर्णन	हेमलु	िन्दी
YX	20,000	धनकुमार चरित्र	रइध्	द्मप्य ग
ΥĘ	<b>१४६१</b>	धमंशर्माभ्युदय टीका	यश की नि	सर्द्रत
70	६१६४	धर्मपरीक्षा रास	त्र ० जिनदास	हिन्दी
Ys	00 \$ 3	ध्यानामृत रास	ब्र० करमसी	19
38	3850	नागकुमार चरित	नथमल बिलाला	्रिन्द <u>ी</u>
٧.	६१७१	नवकार राम	ब ० जिनदाम	.,
47	<b>६१</b> ७२	नागकूमार रास	র০ জিবলান	हम्दी हिम्दी
**	30,53	नेमीश्वररा <b>स</b>		.,
પ્રર	<b>१</b> 0२३२	नागश्री राम	•	,,
**	६६२२	नेमिन यंको छन्द	े. हेमचस्द	हिन्दी हिन्दी
થ્પ	<b>२</b> १२ <b>१</b>	परमात्मप्रकाश भाषा	ब्धजन	
५६	२१२७	परमात्मप्रकाश टीका	द्र० जीवराज	्र हिन्दी
ছ ৩	२८७१	पद्मचरित हिप्पमा	शीवन्य मृति	गरका संस्कृत
ሂጜ	३५२०	पार्श्वं चरित्र	नेजपाल	भरहर सरभ्रम
3.8	१०१२०	पानोगालग् राम	ब ० जिनदास	हिस्दी
ξø	3083	पुरा <del>शा</del> सा <i>र</i>	सागरमेन	सन्द्रत
€ş	२०१६	परमाथ शतक	भगवनीदास	हि <b>श्यी</b>
६२	६१८०	परमहस रास	व ् जिनदाम	हिन्दी -
ξē	१४५७	बस्य बाबनी	निहाल चन्द	
				,,

## (सैंनासीस )

	संस्या ग्रंथ सूची	<b>कर्माक ग्रेंथ</b> नाम	ग्रंथकार	
	A 6688	बलिभद्र चौपई		<b>দা</b> খা
	<b>t</b> "	बाहुवांलवाल	<b>क</b> ्यशोधर	हिन्दी
Ę		बारा भाग महाचीपई बंध	गातिदास	••
Ę		बुद्धि प्रताम	<b>ब॰ यद्यो</b> धर	हिन्दी
Ę	- 1 - 1	मक्तामः स्तीत्र मावा टीका	घेल् <b>ह</b>	,,
٤,		मकापर स्वीत वृत्ति		.,
90		महारक परम्परा	म॰ स्तनबस्ट	**
6		भट्टारक पट्टार्वान		हिन्दी
৬২		भविष्यास राप		हिन्दी
6.9		मोजचरित्र	विवस्यूषम्	हिन्दी
68	****	मृगोस व द	म्बनिदास व्यःस दैवराज	,,
ভধ	१५६३	भोजमार्गबावती		.,
હહ	3 € 🗴 🦻	मृक्ति स्वयवन	मोहनदास वेग्गीचन्द	,
85	हेद्र द	यशोधर चरित्र	प्रशासन्द देवेन्द्र	,,
30	€387	यशोधर राम	वर्णा वर्णानदास	हि <del>न्दी</del>
50	८६४६	यशोधर रास	जणाजनदाम सोमकोनि	हिन्दी
5 t	१०१८१	यणोधर चरित	मनसूखसागर -	.,
= <b>?</b>	6300	रत्न <b>चूडरास</b>		*7
<b>= 3</b>	3555	रत्नपालप्रवन्ध	श्रीपनि	nì
£8.	<b>4403</b>	रामरास	प्र <b>ः</b> जिनदास	n
cχ	६२०२	रामवन्द्रराम		,,
5 X	६२०४	रामरास	,. माघवदास	,,
=0	<b>4434</b>	वचनकोश	बुला <b>कीदा</b> स	हिन्दी
55	\$\$EX	वसुनन्दि श्रावकाबार माषा	क् <b>यभ</b> दास	,,
32 6 •	३०⊏२	बद्धं मानपुराग्। भाषा	नवलराम	2.
£ १	₹000	<b>वर्ड</b> मानपुरास्त	नबलशाह	
८१ १२	<b>\$</b> \$00	वर्षमानरास	व्र॰ जिनदास	. **
. ₹ € ₹	3353	वरिचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	हिन्दी
E¥	\$ \$ \$ \$	विक्रम चरित्र चौपई	माउ	द्विन्दी
EX.	१६६४	वसुनन्दि श्रावकाचार माषा		**
Ę	<b>₹</b> ₹₹ <b>€</b>	वृहद् तपागच्छ पट्टाबली		
9	<b>७२८७</b> ३०१४	वर्धमान विनास स्तोत्र	भ० जगदभूषरा	सस्कृत
5	\$068 \$00H	गांतिपुरास	प॰ ग्राशाचर	*
	३०६५	मो <b>तिनाथ</b> पुरारा	ठाकुर	संस्कृत
			~	हिन्दी

		( ग्रहतालीर	ਜ਼ )	
कम संख्य	ा ग्रंच सूची कवांक	ग्रंद नाम	ग्रंचकार	भाषा
3.3	<b>36</b> 5%	श्रोतिनाम चरित्र श्राया श्रातिगदरास	सेवाराम पाटनी फकीर	•• हिन्दी
\$00 \$0\$	६३७८ २ <b>७</b> ०२	ज्ञासम्बद्धस्य श्रासकाचार श्रासकाचार	त्र » जिनदास प्रतापकीरित	**
\$08 \$08 \$08	१०२३ <b>१</b> ४०५० ४१०३ ४१० <b>५</b>	श्रीपातचरित्र श्रीत्तक चरित्र श्रीत्तकप्रवस्थ	द्र० चन्द्रसागर दोलतराम कासलोवाल कल्यागाकीति	9) 11 19
१०६ १०७ १०≡	६२२ <b>३</b> २२⊏७ २३० <b>६</b>	श्रुतकेवलीरास समयसार टीका समयसार टीका	त्र • जिनदास भ • णुभवन्द्र देवेन्द्रकोति	मंस्कृत ''
१०६ ११० <b>११</b> १	२ <b>३०४</b> ४ <i>५</i> २६ ७३५४	समयसार वृत्ति सम्यक्त्व कोमुदी समवसरए।पाठ	प्रभाचन्द्र जगतराय रेखराज	हिन्दी 
११२ ११३ ११४	<b>438</b> • '	,, सकलकीत्तिन्नुरास सबोध सतारानुदूहा	मायाराम द्र० सामल बीरचन्द	
११x ११ <sup>६</sup> ११	१ ४७६४	स्वरोदय सतोष तिलक जयमाल सामायिक पाठ भाषा	मोहनदास बूचराज ज्यामराम	87 17 11
११० ११० १२	: ६२३४ १ <b>६१४</b> ६	मुकोशलरास ,, सुमतिनाथ पुराग्ग	वेग्गीदास सागु दक्षित देवदन	P1 P7 17
१२ १२ १२	१ ४१८८ २ १०२३१	सुदर्शन चरित्र भाषा सुकुमाल स्वामी राम सुदर्शन रास	जैनन्द धर्मरुचि इ.ठ.जिनदास	54 51 59
१२ १२ १२	४ २२४६	सुखबिलास षट् <b>पाहुड भा</b> या होली कथा	जोषराज कासलीवाल देवीसिह सुनि शुभवन्द्र	ू हिन्दी

## राजस्थान के जैन शास्त्र भगडारी

\_

# ग्रंथ सूची-पंचम भाग

#### विषय-भागम, सिटान्त एवं चर्चा

**१. धनुयोगद्वार सूत्र**—  $\times$  1 पत्र सस्या ४६ । अथा-बाकुत : विषय-बागम । रचना-कास  $\times$ । लेखन काल  $\times$ । पूर्ण । वेषुन स० १६६। **प्राप्ति स्था**न--दि० जैन भंशायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--यह पांच मूल मुत्रों में से एक सूत्र है।

**२. अर्थअकाशिका—सदामुख कासलीवाल् ।**  $^{4}$ र २० ४६८ । प्रा० १५ $\times$ ० $^{4}$  इश्व । मापा—राजस्थानी (हुडारी गद्य)। विषय—मिद्रानः । रक्ष्मः काल स० १६१४ वैद्याल सुदी १०। लेलन काल  $\times$ । पूर्णः । प्रा**रित स्थान**—दि० जैन प्रथवाल, यंवाय ही पन्दिर स्वयद । वेष्ट्रन स०१।

विशेष— इमका रचना कार्य स० १६१२ में प्रारम्भ हुआ था । यह तत्त्वार्थसूत्र पर सदासुक्त जीकी बृहद् गर्धाटीका है।

- ३. प्रति सं०२ । पत्र स०२६५ । ले० काल सं०१६२६ वैकासः सुदी ११ । पूर्णं। बेष्टन सं०२ प्राप्ति स्थानः, उपरोक्त मंदिर ।
- ४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१६ । घा० १२ ४७ है इला। ले० काल 🗴 । पूर्णा । प्रास्तिः स्थान दि० जैन सण्डेसवाल पचायती मन्दिर, धसवर । वे० सं० १४३ ।
- **५. प्रति सं०४ ।** पत्र सं० २०६ । ग्रा० १२ $\times$ ६ $^{3}$  इच्य । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वेष्टन सं०१७ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर महावीर, ब्रुदी ।
- ६. प्रति सं० ४ । पत्र स० २०६ । स्रा० १०३ै ४६ इचा । ले० काल सं० १६४० वैकाल सुरी ८ । पूर्ण । वेष्ट्न सं० ३४ । प्राप्ति रुवान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, टोडारायसिंह ।
- ७. प्रति सं०६। पत्र स०३२१। ब्रा०१११ै४७१ इन्ता। ले० काल सं०१६३७। पूर्ण। बेष्टन सं०७७। प्राप्ति स्थास्त —पार्खनाथ दि० जैन मस्टिर इन्दरक्ष (कोटा)।

विशेष-- गर्शकसाल पाष्ट्रशा चौघरी चाटसू बाले ने प्रतिलिपि कराई । युस्तक साह भैरूबनसर्जी कस्य धम्मालाल भी इन्द्रगढ बालों ने मसूरालाल जी अग्रवाल कोटा वालो की मारफत लिखाई ।

द. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३१२ । झा० १२×७३ इचा । लेखन काल सं० १६३३ कार्तिक कुरी २ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६८ । क्रान्ति स्थान—वि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना । विशेष-श्रावक माधोदान ने इसी मन्दिर में ग्रन्थ की चढाया था।

- प्रति सं० ८ । पत्र स० ६१६ । ग्रा० १० रे ४ ७ इश्वः । लेखन काल ४ । गुर्गः । वेष्टन सख्या ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० कैन छोटा मन्दिर बयाना ।
- १०. प्रति सं० ६ । पत्र सख्या १६३ । घा० १२३ ८७ दश्वः। लेवन काल १६३० । पूर्णः । बेष्टन सम्याधः । प्रास्ति स्थान--दि० जैन पंचायती मन्दिर कामाः ।
- **११. प्रति सं० १०** । पत्र सस्या १२१ । ग्रा० १०८६ <sup>मु</sup> इच्च । लेलन काल सबन् १६४४ सा**बन्त** सुदी ११ । पूर्ण । बेठून सस्या ४**१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटियोका नैगावा
- **१२. प्रति सं० ११।** पत्र स० ६०१। लेखन काल स० १६२६। पूर्ण । बेष्टन संस्था ८५ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपूर गेखावाटी (सीकर)।
  - विशेष- रिखबदास जैसवाल रहने वाला हवेली पालम जिला दिल्ली वाले ने प्रतिनिधि कराई भी ।
- **१३. प्रति सं० १२ ।** पत्र सस्या १०६ । ग्रा० ११३/५ ४ हु इखा । तेयन काल सं० १६४० भा**दवा** बुदी ६ । पूर्ण । बेहन सस्या ४६५ । **प्राप्ति स्थान**िद० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- विशेष—रियवचन्द्र विन्दायक्या ने प्रतिनिधि की श्री नथा सन् १९६६ कार्तिक कृत्सा ६ की लक्ष्कर के मदिर में विराजमान किया था।
- **१४. धर्यसंहर्षिट**  $\times$  । पत्र सस्या ४ । म्रा॰ २२ $\times$ ४ उत्रथः भाषा-प्राकृत-सस्कृतः । विषय -- म्रागम । र० काल  $\times$  । तेष्यत काल  $\times$  । स्रपूर्णः । वेष्ट्रत सस्या २२६ । ६५५ । प्राप्ति स्थानः विक जैन समयनाय मन्दिर उदयपुरः ।
- १५. आगमसारीखार—वेबीचन्दा । तत्र मन्या ६० । प्राठ ०१/४६ दश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-मिदान्त । र० कान म० १७४६ । लेलन काल । एग्गं। त्रेष्ट्रन सन्या २७० । प्राप्ति स्थान—हि० त्रैन प्रवताल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष---गुटका के रूप में है। टीका का नाम मुखबोध रीका है।

**१६. प्रति सं० २।** पत्र नस्य। १६। प्रा० १० १ इञ्च । तेसन काल 🗷 । वे**ट्न संस्था** १६६/१२६। **प्राप्ति स्थान**—(६० जैन मन्दिर नेमिनाथ टांडारायोगह (टाक)

इति श्री खरतरगच्छे श्री देवेन्द्रचन्द्रमांग विर्राचता श्री ग्रागमसारोद्धार बालाववोध सपूर्गी ।

**१७. घ**न्तगडदसाम्रो— ४। पत्र सन्या २१। घाकार १०४८} ८२च । **माया—प्राकृत** विषय-मागम । रचना काल ४। लेखन काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सन्या १३६। **प्राप्ति स्थान-अक्टार**-कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--इसका सरकृत में अन्तकृहणासूत्र नाम है। यह जैनागम का प्राठवा सङ्ग है।

१६. प्रन्तकृतदशांग वृत्ति— × । यत्र न० ६। प्रा० १०१४४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पासम । र० काल × । नेलन काल म० १६०४ । प्राप्त । वेष्ट्रन म० ६६ । प्राप्ति स्थान--रि० जैन प्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है-स०१६७५ वर्षे शके १५४० प्रवर्तमाने भारिवनिसाक्षे सुस्क

पक्के पूर्णमास्यां तिथी बुधवासरे श्री चन्द्रगच्छे श्री हीराचन्द सूरि शिष्य गंगादास निखितमल ।

**१६. क्राचारांग सूत्र — × ।** पत्र सं० २६ । ग्रा० १०४४ है इञ्च । शाया-प्राकृत । विषय – श्रामय । र० कान ४ । लेकन काल ४ । पूर्णा । वेष्टन संख्या २०६ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर **श्राप्तिन्दन स्वापी**, दृंदी ।

विशेष—प्रति प्राचीन है कही कहीं हिन्दी टीका भी है। प्रथम श्रुतस्कघतक है। श्राचाराग− सुत्र प्रथम भागम पन्य है।

२०. प्रति सं०२ । पत्र संस्था १ । लेखन काल $\times$ । बेष्टन स० ६६८ । ध्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान-वि० जैन पंचाबती मन्दिर, भरतपुर ।

**२१. साचारांग सूत्र वृक्ति— प्रमयदेव सूरि ।** पत्र स० १-१६५ । ६०० १००१८४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-प्रागम । र०काल ⋉ । लेखन काल ⋉ । कपूर्ण । वैष्टन स० २५३ । **प्राप्ति**— स्थाल–दि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बडी ।

विशेष--प्रति प्राचीन है पर बीच के कितने ही पत्र नहीं हैं।

२३. **आवश्यक सूत्र** — ४ पत्र स० — १० से ४० । आषा-श्रक्त । विषय-प्राणम । रचना काल-🗶 । लेखन काल × । अपूर्ण ।वेटन स० ७४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष—टमका दूसरा नाम चडावज्यक सूत्र भी है। ग्रंथ मे प्रतिदिन पानी जानी योग्य किसाओं का वर्णन है।

२४. **ग्रावस्थक सूत्र निर्मुक्ति ज्ञानिवसव सूरि**—पत्र सख्या-४४। भाषा-संस्कृत । विषय-श्रायम । रक्ता क∜र- <। तेल्लन काल-स०१८६३। पूर्ण । वेष्टन स०६३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती प्रस्टिर, भरतपुर

२**५. फ्राश्चव त्रिभंगी-नेमिचन्द्राचार्य**—पत्र सं० २–३२ । फ्रा. १० X ४३ इन्छ । भाषा-प्राकृत । विषय— मिद्धात । र काल X । ले काल X । क्ष्यूर्ण । वे. स, ३०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि. जैन मन्दिर दीवानत्री. कामा ।

विशेष---प्रति सस्कृत टीका महित है।

२६. प्रति सं. २ । पत्र स०१० । ब्रा. १२ × ४ ३ इ.चा । ले० काल । × वे० स०६३३ । बपूर्सा। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लगकर, जसपुर ।

विशेष-प्रति टीका सहित है।

२७. प्रति सं. ३. । पत्र स. ८७ । प्रा० १२ ४ ६ ६ था। ले० काल ४ । अपूर्णावे. स. १४६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन सन्दिर प्रादिनाय, बूदी ।

विशेष-- ८७ से मार्ग के पत्र नही है।

२८. प्रति सं. ४.। पत्र सं. ६०। ग्रा० १३ × ६३ इ.च.। ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३९ (२) प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)। विशेष—प्रान्तमः पुष्पिका—इति श्रीनेमिचन्द्रसिद्धान्तचन्नवर्गीविरचितायां श्री सोमवेच पण्डितन इत टीकामा श्रीमाश्रववधवदय उद्यीरणः सत्व प्रमृति लाटी भाषायां समान्ता । प्रति सटीक है । टीकाकार पंक सोमवेच है ।

२६. इक्कीस ठाएगाप्रकरण्—नेमिचंद्राचार्य । एक सं०७ । घा०-१० ४ ४ रै इका । आया-प्राहत विषय—तिहान्त । र० काल ४ । ले० काल स० १८२० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाय चौगान, वृंदी ।

विशेष--नैगासागर ने प्रतिलिपि की थी।

३०. प्रति सं २.। पत्र सं० १४। घा० ११ $\times$  $^3$  द्वा । ले० काल  $\times$  । । बे० सं० १८६ प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लगकर, जयपर ।

३१. प्रति सं. ३. । पत्र स० ६ । झा० १० ४४ इचा लेखन कान ४ । पूर्ण । वे० स० ६७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

३२. उक्तिनिरूपस्प $-\times$ । पत्र स०२१। ग्रा० १० $\cap{2} \times '\cap{2} दख । भाषा—सस्कृत । निषय—$  $शामम । १० काल <math>\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० १७६ । २१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ सीन्द्र इन्दराज्य

३३. उत्तरप्रकृतिवर्णन—× । पत्र स०१२। झा०-१०×०} दश्व । भाषा-द्रिश्यी पद्य । विषय—पिद्धान्त । र. काल— × । ते० काल— × । पूर्णा वे० स० १३३। प्राप्ति स्थान—दि० त्रैन मन्दिर नाप्ती, वृदी।

विशेष प॰ विरधीचन्द ने स्वपटनार्थ सुदारा मे प्रतिलिपि की थी।

**३४. उत्तराध्ययन सूत्र** ~ ४ । पत्र स० ३६ । प्राकार-१०४४<sup>३</sup> इश्व । भाषा—प्राकृत । विषय— भाषम शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल **४** । पूर्ण । वे० स० ३३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० त्रंत मन्दिर दबलाना (वृंदी )।

विशेष - प्रति जीग्र्स है । गुजराती गद्य टीका महिन है । लिपि देवनागरी है ।

३४. प्रति सं. २ । पत्र सस्या—७ । भाषा-प्राकृत । तेलन काल—४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ७१६ । प्राप्ति स्थान—पनामनी मन्दिर सरनपुर ।

विशेष-वीसवा अध्याय सम्कृत छाया महित है।

३६. उत्तराध्ययन टीका— × । पत्र सः ११४ । ग्रा०१० ४४ देश्वः । भाषा—प्राकृत-संस्कृतः । विषय – ग्रागम । र०काल ४ । ले०काल ४ । ब्रपूर्ण । वे०स० १४४ । प्रास्ति स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३७. प्रति सं. २ । पत्र म० ७६-३२८ । बा० १० रे 🗡 १ इचा । ले० काल 🗴 । सपूर्ण । वे. सं० १९२ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर बारमनी, कोटा ।

विशेष - प्रति प्राचीन है।

रेक. उत्तराध्ययन सूत्र <mark>बृत्ति — ×</mark> । एत्र मं २-२१६। माषा — संस्कृत । **बिषय — सामय । २०** कात - × । ले० कात - × । षपूर्ण । बे० मं० ४४। **प्राप्ति स्थान** — दि**० जैन मन्दिर चौपरियान** मालपुरा (टोक) विशेष-वीच के बहुत से पत्र नहीं है।

**३६. उत्तराध्ययनसूत्र बलावबोधटीका**- $\times$ । पत्र सं. २-२०४। ग्रा० १० $\times$ ५ इया । प्राथा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-प्राणम । र० काल  $\times$ । ले० काल । स० १६४१ कार्तिक सुदी १३ । ग्रपूर्ण । वे० सं० ३१६ । **प्राप्ति स्वात**-पदि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति — मंबन् १६४१ वर्षे कार्तिक सुदी १३ बारसोमे श्री जैमलमेरमध्ये लिपिकृता श्रावकेः ऋषि श्री ज्येठा पठनार्थं ।

४०. उत्तराध्ययन मूत्र बालावबोध टीका 🗷 । पत्र स० २१६ । प्रा० १० ४४ इला । साया-हिन्दी (गवा) । विषय — सामम । र० काल 🗴 । ते० काल 🗴 । पूर्णा । वे० सं० ४६ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर दवनाना (वृंदी)

विशेष---प्रति प्राचीन है।

४१. उपासकादशीम—पत्र सं० ७८ । प्रा० १० ४५ ६ च्या । प्रा∪-पाहत । विषय-प्राणम । र०काल ४ । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । बेष्टन स० २४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर दबलाना (वंदी) ।

**विशेष** - मूल के नीचे गुजराती प्रसावित राजस्थानी गद्य टीहा है। सबत् १६०७ में फागुण सुदी २ को साथ मारणक जन्द ने ग्राम नायदारा में प्रतिलिपि की स्

**४२. प्रति सं० २ ।** पत्र मं० ७ । ग्रा० १०१४० $\frac{2}{5}$  दुख । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी) ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

४३. **उबाई सुत्र**— × । पत्र सं० ७६ । झा० १० × ४ इचा । भावा-प्रकृत । विषय-मागम । र०काल— × । प्रें कात— × । पूर्ण । वेष्ट्रत स० १४६ । **प्राप्ति स्थात**— दि० जैन मन्दिर बोरसत्ती कोटा ।

४४. प्रति सं०२ । पत्र मं०३ दाले० काल स०१६२६ । पूर्णा वेष्टन स०४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पंचायती मस्थिर बसवा ।

विशेष--राजपाटिका नगर प्रतिलिपि कृतः।

**४५. प्रति सं० ३ ।** पत्र सं० ८४ । झा० १०३ × ४३ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०० **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन० मन्दिर बोरसर्ली, कोटा ।

विशेष-प्रित प्राचीन है तथा सटीक है।

४६. एकचष्ठि प्रकर्श × । पत्र स० २१ । मा० ११६ ४५६ इच । भाषा-प्राकृत । विषय— सिद्धांत । र० काल ४ । ते० काल स० १७६४ कागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२३ । प्रास्ति स्थान− वि• जैन पंचावती मस्ति, बयाता ।

विशेष-जिनेम्बरमूरि कृत गुजराती टीका सहित है । धर्य गाथाघों के ऊपर ही दिया है ।

४७. एकसीम्रयुतालीस प्रकृति का क्योरा— $\times$  । पत्र स॰ २। म्रा॰ ११ $\times$ ४ इव । भाषा-सस्कृत । विषय—सिद्धांत । र॰ काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन स॰ ६१ । प्रास्ति स्थान—वि॰ वेन म्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८. सङ्ग्रयण्गती—×। पत्र स० २५ । झा० १०×४० इथा । भागा—प्राकृत । विषय—झागम । र० काल् ×। ले० काल् ×। पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन स्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६. प्रति सं०२। पत्र सं०४-६। मा० १२४ ५१ इ.च.। ले०काल स०१४६६। मपूर्ण। वेप्टन स०४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सप्रवाल मन्दिर उदयपुरः।

विशेष--प्रशन्ति निम्न प्रकार है। सवन् १४.६६ वर्षे पौष बुदी ४ भौमवासरे श्रीगिरिपुरे श्री भादिनाथ चैन्यालये श्री मुल संधे भट्टारक श्री शुभवन्द्र गृहपदेशान् लिखित व० तेजपाल पठनार्थ।

४०. कर्म प्रकृति —नेमिचन्द्राज्यायं । पत्रसंत् १६ । सा. ११ ४ ४ है इञ्च । भाषा —प्राकृत विषय —निदात । रकास — ४ । लेकासा—सत्त १६८६ पीय बुटी समावत । पूर्ण । बेहनसंत १३०१ । प्राप्ति कथा — भारति कर्मा — भारति कर्मा ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

मंबन् १६८८ वर्षे मिति पीयमासे प्रमितपक्षे प्रमावस्था तिथी ग्रुभनक्षत्रे श्रीकुरबहुन्दावायांव्यये महना-चार्ये श्री १ श्रीयश्च कीत्वतीन्द्रस्य ४० गोपानदासस्तेन स्वयमयं निषिक्त स्वारमपटनार्यं नगरं श्रीमहाराष्ट्र राज श्रीमीहनदासनार्थः ।

**५१. प्रतिसं०** २ । पत्रस० २० । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ३१८ । प्राप्ति स्थान -उपरोक्त सन्दिर ।

**५२. प्रतिसं० ३** । पत्रस० १२ । ग्रा० १०१ × ४२ डख ।ले०काल × । पूर्गा । बेष्टनस० २०२ । **प्रास्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

**१३- प्रतिसं० ४** । पत्रस० २८ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस० ४७२ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

**१४. प्रतिसं० ५** । पत्रत० ७ । ले०काल 🗶 । पूर्णं । वेष्टन म० १०६० । **प्रास्ति स्थान**∹उपरोक्त मन्दिर ।

४.४. प्रतिसं०६ । पत्रस०१३ । ग्रा०१० ४ ४ इ.च । ल०काल ४ । पूर्ण । बेष्ट्रनस०१३६३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**५६. प्रतिसं० ७** । पत्रसं० ११ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस० ४० । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर आदिनाथ, बुर्वा ।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४७. प्रतिस् ० ६ । पत्रस्० १२ । लेब्बान-स० १७०२ । पूर्या । वेष्टनस० ४१२ । प्राप्ति स्थान-दिव्जीन पत्राप्ती मन्दिर, भन्तपुरः ।

विषय -- त्रिलोक चन्द्र के पठनाथं लिस्स गया था ।

५६. प्रतिसं० १०। पत्रसं० २६। घ्रा० १० × ४ इन्त्रः। लेलन स०१८०६ माघ बुदी १४। पूर्णं। बेहुत सं० १३४। प्राप्ति स्थान ---दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

**विशेष**—कामा मे जिनसिंह के शासन काल में पार्श्वनाथ चैन्यालय में रतनबन्द ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थीं ।

६०. ४**तिसं० ११** । पत्रस० १४ । म्रा० ११ x ५ इच्छ । ले०काल x । पूर्ण । बेष्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

**६१. प्रतिसं० १२** । पत्रसं० ४२ । ले०काच म० १५८६ चैत्र बुटी १ । पूर्ण । बेहनसं० १७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर टीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सम्कृत टीका सहित है । इस प्रति की कक्षेत्रवालास्वय केंद्र गोत्रवाले पं० लाला भाषां लालसिरि ने प्रतिलिधि करवायी थी ।

६२. **ब्रतिसं० १**३ । पत्रसं० १६ । ने॰काल 💢 । पूर्ण । वेष्ट्रनस**०** ११२ । **प्राप्ति स्थान**— डि॰ जैन पत्राक्षरी मन्दिर करोली ।

**६३. प्रतिसं० १४** । पत्रस० १२ । ले०काल सं० १७०० । पूर्णः : बेष्टन स० २५२ - १०१ । प्रा<mark>रित स्थान —</mark> दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डुगरपुर)

प्रशस्ति—स० १७०० वर्षे कागुणमाने ज्ञान्तपत्ते , १ िने गुरुवासरे इड्डकायामे श्रीम्रादिनायर्वेत्यालये श्रीम्तवन्त्रे सरस्वती गर्चेत्र बनान्कारमाणे श्री कुन्दकुन्दावामान्त्रये भ० श्री रत्तवन्द्रास्त्राये बद्धा केजवा तत् ज्ञिष्य ८० श्री गणदास तत् ज्ञिष्य ४० देवराजाच्या पुस्तक कर्मकाडमिद्धास्त्र निस्तिमस्ति स्वजानावर्मकर्म-अवर्ष्यः।

६४. प्रह्मिस् १५ । पत्रसं∘ १–१७ । ले०काल 🗴 । बपूर्ण । वेष्टनस० ७४३ । प्राप्ति – स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**६५. प्रतिसं० १६** । पत्रस० १० । झा० ११×५ । वेष्टन म०१० । **प्रास्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

**६६. प्रतिसं० १७ ।** पत्रसं० १६ । घा० ११ × ४ । निषिकाल स० १७६४ पौप सुदी २ । वेधून सं**०** ११ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - प्रति टब्बा टीका सहित है। महाराजा थी जर्यागह के शासन काल में ग्रम्बावती नगर में पुरु चौबावन्द ने प्रतिक्षिप की थी।

६७. बेष्टन स०। १८ । पत्र सं०१६ । घा०१० ४४ ८३ । बेष्टन सं०१२ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त सन्दिर।

६८. कर्मप्रकृति टीका-ग्रमयचन्त्राचार्य। पत्रतः १४। या० १०३ ४८३ इतः । भाषा-संस्कृत विषय-—सिद्धात । र०काल х । ने०काल х । पूर्ण । वेष्टनस० १६७। प्राप्ति स्थान---भट्टाकीय दि० जैन मस्टिग् ग्रमेर । ६६. कर्मप्रकृति टोका—भ० सुमितिकोति एवं ज्ञानभूवता । पत्रसं• ४४ । मा० १०ई ४ ४ है । भाषा—संस्कृत । विषय-सिदान्त । २०कास — ४ । लिपिकाल —सं• १६४४ चैत्र बुदी । बेष्टन सं• १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

विशेष - लेखक प्रशस्ति भपूर्ण है।

७०. कर्मप्रकृति वर्गन—  $\times$  । पत्रस० १२०। प्रा०-४ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ इत्र । प्राप्त -हिन्दी संस्कृत । विषय — सिद्धान - १०काल—  $\times$  । ले॰काल—  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १८४। प्राप्ति स्थान—द० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी ।

विशेष - ग्रन्य पाठ भी हैं।

७१. कमंत्रकृति वर्णन $-\times$ । पत्रस०२ । प्रा० ११  $\times$  ४ हे दःव । प्राया-सन्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । प्रेणं । वेष्टनसं० १२०६ । प्राप्ति स्थान -भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--१४८ प्रकृतियों का व्यारा है।

- ७२. कर्मप्रकृति वर्णन $-\times$ । पत्र स०२४-६३। प्रा०११ $\times$ ४ है इच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । r०काद  $\times$ । ले०कात  $\times$ । प्रपूर्ण। बेष्टनसं-२४१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन सम्बास मन्दिर उदयपुर।
- े पर. कर्मप्रकृति बर्ग्गन $-\times$ ा पत्रस० ११। ग्रा०  $+\times$ प्र इत्रः । भाषा-हिन्दी गद्यः। विषयः-सिद्धानः । २०कालः  $-\times$ । ले०काल स० १६११। पूर्णः। वेष्टनसं० १५६। **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान, बुदी।
- ७४. प्रतिसं०२ । पत्रस० ३५ । ले०काल म० १६२० । पूर्ण । वेष्टनस०—२३ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन सण्डेनबान मन्दिर उदयपुर ।
- ७५. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६ । ने०काल 🗴 । झपूर्णः । बेष्टनसं० ६६ । २७६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर टोडागर्यासह ।
- ७६. कर्मविपाक— ४ । पत्रसः ११ । मा०—१२ ४ ४ है इञ्च । माषा —सस्क्रत । विषय— सिद्धान्त । र०काल— ४ । ले० काल— ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४ = । **प्राप्ति स्थान**—पि० जैन मदिर म्राप्ति-नाष बुंदो ।
- ७७. कर्मविषाक—बनारसीदास । पत्र त० १० । ग्रा०--- ६  $\frac{1}{7} \times \frac{1}{5}$  इन्छ । भाषा—हिन्दी पव्य । विषय—सिद्धान । २०काल—१७०० । ले०काल --  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २६३ । **प्राप्त स्थान**—रि० जैन मदिर पार्श्वनाथ योगान, बुदी ।
- ७८. कर्मविषाक—स० सकलकीति । पत्रस० १६ । प्रा० १० ४ ४ है इ**ल । भाषा**—संस्कृत । विषय—निदान । २०कार ४ । ले०काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टनस० २३६ । **प्राप्ति स्थान—स० दिसम्बर** र्जन मन्दिर स्रबंगर ।

विशेष कमों के विपाक (फल) का वर्गन है।

७६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३३ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ६१ । प्राप्ति स्थान—वि• र्जन मरिर ग्रादिनाय बुदी । द्ध**ः प्रतिसं** २---पत्रसं २४। ले॰ सं॰ १६१७ ज्येष्ठ सुदी १३। पूर्णं। बेहन सं॰ ७७। प्रास्ति स्थान----दि॰ जैन मन्दिर दीवानकी कामा।

द्र १. कर्मविपाकसूत्र चौपई— × । पत्रसं∘ १२७ । मा० ११३ × ४ इच । माषा —हिन्दी (पत्र ) । विषय —सिद्धान्त । र०काल ×। ले०काल ×।पूर्णं ।वेष्टनसं० ४७ । प्राप्ति स्थान — म० वि० जैन मन्दिर मनभेर ।

विशेष-- ग्रंथ का श्रादि भन्त भाग निम्न प्रकार है :---

श्री परमात्मने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।

देव निरम्बराने नमु, धनुरू धन्य भ्रमिराम । घट घट धन्तर धातमा, परम जोत परगाम ।१ १। सादद बचन सबे तजि, राजिरिय मंदार । बनवानी घुनीवर नमुं, जे मुद्धा भरणार ।१ ५-१ जिनवर बाराी ने नमुं, भविक जीव दितकार । जनम भररा ना दुल पकी, छुटे ते निरधार ।। ६।। सीतवत नर नार नै, समसीन वरत महित । हरस घरी तेहने नमु, कर्म मुभट लेखें औन। ४।।

देव तीरीय मनुष्य ते जाए। लेप काष्ट प्रने पानाए।।

## मध्यभाग (पत्र ७१)

ए क्यारेनो करुंबलागा, परा थे मुराजो चतुर सुजान ।। १४०३ ।। मन वचन काया ये जाए। एह मोकले घरमनी टाए। ए क्यों चीगरा। च्यार । लेखे करता था ये बार ।। १४०४ ।। कर, करावत धनमोदना, तिगलावार करो एक मना। एम करता छती से भया। इन्द्री पंच गएग ते मया।। १४०५।। ग्रन्तिम----सतोषी कवले सदा समना सहित सुजांरा। **ड**र्या विसर्**या रहे सदा ते पहुँचै निरवा**ण ।। २४०७ ।। द्यागमवाणी उचर उर न बोले बोल । दयापरुपै रात दिन हंसाये रहे भवोल ।। २४०८।। एक भगत चुके नहीं पाछे, जल नी त्याग । भातम हेत जागे सही ते समभे जिनमाथ ।। २४०६ :। पर निद्या मूलनवि गमें हास्यादि न करंत । संका कांका कोए नहीं जीत्यों ते शिवमंत ॥ २४१०॥ **६हने मारग जे चले ते नर जा**एो साथ । एसा बी बीजा जे नरा ते सब आएते वाघ ।। २४११ ।।

इति श्री कर्मेविपाक सूत्र चौपई सपूर्णम् । श्री उदयपुर नगर मध्ये लिपि कृता ।

द२. कर्मविपाक रास — । पत्र सं०१८३ । झा० – १, ४४ इ.ख.। भाषा — हिन्दी पद्य । विषय — सिद्धात । २०काल स०१८२४ । पूर्ण। बेष्टन सं०८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर राजमहन (टोक)।

द ३. प्रतिसं० २ । पत्र सच्या १५६ घा० ६ ॄै ४६ दश्व । ले०काल स०१८६२ फागुरा सुदी ६ । पूर्णं । बेष्टनसं० ५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक )।

८**४. कर्मविषाक सूत्र**—ण्यस०१४ से १७। प्रा०१० ४ ४ इच । भाषा—प्राकृत । विषय— सिद्धान्त । र०काल ४ । ले०काल सं०१४१२ भारवा सुदी १३। श्रपूर्ण । वे० सं०४४५ । **प्राप्ति** ─ स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष—श्रीक्षानपेरीजविजयराज्ये श्रीनागपुरमध्ये बृहद्गण्छे सागरभूतम्रिशिष्य श्रीदेशनितक तच्छिष्य मृति श्रातमेरुणा लेखि । रा० देव्हा पुत्र सथप मेघा पठनार्थ ।

८५. कर्मियपक सूत्र—वेवेन्द्रसूरि— 'ज्ञानवन्द्रसूरि के शिष्य'। पत्रस०११। मा०१०४४ इंच । भाषा—प्राहत । विषय — सिद्धात । र०काल म० x । ते०काल x । पूर्ण । वेष्ट्रनस०११६। प्राप्तिः स्थान—वि० जैन मन्दिर दवताना (व वी) ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

**८६. प्रतिसं०२** । पत्र स०५६ । द्या०१० <mark>१</mark> ४६ १ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । बहुन स०१०२ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर दबलाना ।

विशेष-प्रति टव्वा टीका सहित है।

**म्छ. कर्यसिद्धान्त मांडरगी**— ४ । पत्रस्य ६। ब्रा०-१० ४४} ट्रञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय्-सिद्धान्त । २०काल- ४ । ले०काल- २ । पूर्ण । बेष्टनस्य०११० २ । पूर्ण । **प्राप्तिः स्थान**ार० जैन मस्दिर बाडाबीस पथी दौमा ।

विशेष--हिन्दी (गद्य) ग्रथं महित है।

स्मः कर**स्पूत्र — मद्रवाहु स्वामी** । पत्रस० २०-४० । आ०-२ ट्रै \ ४ टञ्च । भाषा-प्राकृत्िवषय आगमः । र०कालः \ । ते०कालः स० १६१३ चैत्रः मृशो ७ । अपूर्णः । वेष्टनस० ६५ । **प्रास्ति स्थानः —** दि० जैन मस्रिर बोग्सनी कोटा ।

विशेष — तीरतननगरे भट्टारक श्री धर्ममूर्तिसूरितित्यापितः जयसदनगरिंग पठनार्थ ।

स्ट. प्रतिसं० २ । पत्रसं० दश्मधा० १० ४ ४ ¦ इ.स. विश्वनाल ४ । बपूर्णा । बेष्टुन सं० ६४५ । प्राफ्तिस्थान—भ० दि० जैन मन्दिर धर्यसर ।

६० प्रतिसं ३ । यम्रतः २-१४६ । लेक्काल स० १८२३ । प्रमूर्णः । वेष्ट्रनं स० १३३७ । प्राप्ति स्थान-ज्यरोक्त मन्दिरः ।

६१. प्रतिसं०४ । पत्र स०१ । ले०काल स०१४ - ४ चैत्र मुटी ४ । क्रपूरणे । बेष्टन सं० ३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर व्यक्तिमध्य यूंदी ।

६२. प्रतिसं० 🗴 । पत्रसं० १४६ । ले०काल स 🔀 । घपूर्ण । बेष्टनसं० ७४६ । **प्राप्तः स्थान—** दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरनपुर । **६३. प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १३४ । ले०काल × । पूर्ण ( ८ झध्याय तक ) । बेष्टनसं० १६।४५ प्रा**पित स्थान**—वि० जैन मन्दिर बड़ा बीम पंथी, दोसा ।

विज्ञोज---पत्रस० २५ तक गायाओं के ऊलर हिन्दी में प्रर्यंदिया हुआ है। इसके बाद बीच में अनह २ सर्यंदिया है। भाषा पर गुजराती का श्रीचक प्रभाव है।

- ६४. प्रतिसं०७—पत्रसं० ७१ । ले०काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० २६४ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।
- **६५. प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २-६३ । ग्रा० १२imes४ इञ्च । ले०काल imes । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । ६०५ । **प्राप्तिः स्थान-**र्नद० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। ग्रन्तिम ५% वे ग्राध हिस्से पर चित्र है।

**६६. प्रतिसं० ६** । पत्रसं० १२२ । ले०काल सं० १४३६ । पूर्ण । वेष्ट्रासं० १ । **प्राप्ति स्थान**— डि० जैन मन्दिर बसवा ।

विशेष — प्रति सचित्र है तथा चित्र बहुत मृत्दर हैं। प्राधिकतर र्िन परस्वम् का पत्नी या रंग चढ़ाया गया है। चित्रो की संख्या २६ है। प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा।

**६७. कस्त्यमुत्र टोका**— × । स० १२ । प्रा० १० ४४ इच् । आषा — गुजराती । विषय— भागम । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्णं । वेष्टन स० २०११ प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर प्राप्तिन्दन स्वामी, वृद्धी ।

विशेष-प्रति प्राचीन है लिपि देवनागरी है ।

**६८. कल्पसूत्र बालावबोध**— $\times$  । पत्रस० १९८ । ग्रा॰ १० $\times$ ४ इच । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय—मागम । र०काल— $\times$  । ले०काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४४० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर कोर्टाब्यों का, ड गण्यर ।

६६. द~सूत्र बृत्ति— × । पत्रस० १४० ११ मा० १० ×४ १ इ.च । भाषा—प्राहत-संस्कृत । विषय,—प्रागम । र०काल — × । ले०काल — × । यपूर्ण । वेष्टनस० २१४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, वन्दी ।

विशेष -- १४० से थागे पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है। प्रथम पत्र पर सरस्वती का चित्र है।

**१००. कल्पसूत्र वृत्ति**— $\times$  । पत्रस० १६३ । भाषा—प्राकृत—गुजराती लिपि—देवनागरी । विषय—प्रागम । र०काल्— $\times$  । ले०काल्— $\times$  । भपूर्णं । बेष्टनसं० १ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर वसवा ।

विशेष— श्री जिनचन्द्रसूरि तेह तरगी सालाइ एवंविष श्री पर्यू वर्गीपर्व साराधनउ हुंतउ श्रीसंघ साचन्द्राकं जयवंत परगउ ।

**१०१. कल्याध्ययन सूत्र—×** । पत्रस० १०२ । भाषा-प्राष्टत । विषय-भागम । र०काल-× । पे**०काल सं** १४२८ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनसं०-२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पत्रायती मन्दिर वसना ।

विशेष—सवत् १५२६ वर्षे कार्तिक बुदी ५ शनी तिहिने लिलिले । प्रति सचित्र है तथा इसमे ४२ चित्र हैं जो बहुत ही सन्दर हैं । **१०२ क**ल्याबजूरि $-\times$  । पत्रस० ४०। पा० १० $\frac{1}{7}$  $\times$  ४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-यागम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रतस० १८। प्राप्ति स्थान —पार्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रताव (कोटा) ।

१०३. करपावजूरि— $\times$  । पत्रस०१८१ । घा० १० $\times$ ४ $\S$  इस । भाषा—संस्कृत । विषय— भागम । २०काल — $\times$  । ले०काल—सबद् १६६१ भ्रासोज नुदो ८ । पूर्ण । बेष्टनसं० २०८ । प्रास्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदो)

१०४. कस्पलता टीका—समयसुन्दर उपाध्याय । पत्रसः १२४ । भाषा — सन्कृत । विषय—सागम । र०कास—X । ले० काल —X । सपूर्ण । बेष्टनसः ०—६२१ । प्राप्ति स्थानः —दि० जैन पनायनी मन्दिर भरतपुर ।

**१०५. कवायमार्गरा।**  $-\times$  । पत्रस० १-२५ । प्रा० १२ $\frac{1}{2}\times$  ७ इत्रा । माया-संस्कृत । विषय सिद्धान्त । र०काल $--\times$  । ले० काल $--\times$  । वेष्टन सं०--७३७ । प्रमुर्ग । प्राप्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर

**१०६. कार्मा**स्पकाययोग प्रसंग $-\times$ । पत्रस०—५। भाषा -सरकृत । विषय --मिद्धान । र०काल $-\times$ । ते० काल $-\times$ । पूर्ण । वेष्टनस०—६७५ । प्राप्ति स्थान ---दि० प्रचापनी जैन मन्दिर भरतपुर ।

वशेष--तन्वार्थं सूत्र टीका अत सागरी में से दिया गया है।

**१०७. कुंटप्रकार**—  $\times$  । पत्रस**ः** न्य । बा० १००५ इन्त । भाषा-सम्बन्ध । विषय-सिदान्त । र०काल —  $\times$  । ले० काल —  $_{\wedge}$  । पूर्ण । वेष्ट्नस० –२६७ — ६४८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जेन सभवनाय मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष--- भनतानुबधी कपायों का कट बर्ग्गन है।

**१०८. क्षप्**रा**तार- नाधवचन्द्र त्रैविद्यदेव** । पत्रम०१४२ । ग्रा०११ × ६ $\xi$  इश्व । भाषा— संस्कृत । विषय—मिद्रान्त । २०कात । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । यहन् सं० ५१ । **प्राप्ति स्थान** - (२० जैन मंदिर दीवानवी, कामा ।

१०६ गर्भवस्वृतसंस्थापरिमा(गः —  $\times$  । पत्रस्य र । प्राप्तः १०  $\times$  ४ इक्षः । भाषा प्राकृतः सस्कृतः । विषयः — प्राप्तः । र०कालः  $\times$  । ले०कालः  $\times$  । प्रपूर्णः । वेष्ट्रगसः ० २१६ । ६४८ । प्राप्ति स्थानः — वि० जैन सथनाय सदिर उदयपुरः ।

१९० गुरुहस्यान चर्चा — ४ । पत्रम० ००। प्राः -१०१४४) दश्व । आया —सरकृत । विषय—निद्धान्त चर्चा । र०काः।— ४ । ने० वाल चा० १००४ माप सुदी १ । पूर्णे । वेष्टनस० २०३ । प्राप्ति स्थान —दि० त्रेन मदिर नीमनाय, टोडायबांगह ।

**११९ पुरास्थान चर्चा** × । पत्रतः १२० । झा० – ६ ४**८ टखा भाषा — हिन्दी।** विषय — निदाना । २०काल **—** ४ । ले०काल • ४ । पूर्णे । वेष्टन म० ७७ । **प्राप्ति स्थान — दि० जैन** मंदिर श्रादिनाय, वृदी।

११२. गुरास्थान चर्चा— imes । पत्रसः २० । प्राः ११imes४५ इच । भाषा—हिली । विषय-चर्चा । २०काल imes। ने ० काल imes। पूर्ण । बेष्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर राजसहत । विशेष-- पंचकल्या एको की निधि भी दी हुई है। गुटका साइज में प्रत्य है।

- **११३. गुरास्थान चर्चा** × । पत्र सं० ५१ । घ्रा०—१२२ ४ ० इश्व । भाषा —हिन्दी गद्य । विषय —सिद्धान्त चर्चा । र०काल — ४ । ले० काल — ४ । घ्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ५० । **प्राप्ति स्थान** — विक जैन मंदिर बढा थीस पथी दीसा ।
- **११४. गुरुस्थान चर्चा** x । पत्रस० ४२ । छा० १२१ॄै x ७१ॄै इखा भाषा —हिस्दी। विषय—सिद्धान्त चर्चा। र०काल x । ले०कान x । पूर्णा विष्टनसं० ११७-७५**-प्राप्ति स्थान**— विरुक्ति सहिद्य भावता।
- **११५ पुरास्थान सर्वा**  $\times$  । पत्रस० २–६७ । या० १०  $\times$  ४ $\frac{3}{8}$  । भाषा —िहन्दी । विषय— गिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेकृतस० २५ । प्रपूर्णः —प्रथम पत्र नही है । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्ष्यर, जयपुर ।
- **११६ प्रति सं० २** । पत्रस**ः १–१**६ । ग्रा० १० $\{ \times^2 \}$  । ले० काल  $\times$  । बेहुन सं० २६ । **श्रप्**एं –-१६ से ग्रांगे के पत्र नहीं है । **प्राप्ति स्थान**—उपयोक स्रतिह ।
- ११७. गुरास्थान चर्चा × । पत्रस० १-३। गा० ११ × ४। भाषा हिन्दी । विषय चर्चा । र०काल ४ । ने० काल ४ । वेष्ट्रनस० ७०१ । क्ष्रुणे । प्रास्ति स्थान दिगन्दर जैन महिर नक्कर, जबपुर ।
- **११८ मुग्गस्थान कमारोह** × । पत्र द०२। घा०१२ × ५<sup>2</sup>, इल्बा भाषा मन्कृत । विषय—चर्चा : र०काल × । ले०काल × । घपूर्ण् । बण्नसं०१५१ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन प्रदिग्न कर्मर ।
- **११६. गुरास्थान गाया** ८ । पत्रस० ३ । या० ११ ४४३ इख । भाषा प्राक्तत । विषय— सिद्धात । रुकाल 🗵 । वेरकाल 🔀 । पूर्णे । वेष्टुन स० ३४० । **प्र.प्ति स्थान-** भवदिव जैन सन्दिर अजसर ।
- १२७. गुग्गस्थानवर्षा— $\times$ । पत्रम० १२ । प्रा० १०३ $\times$ ४३ इस । भाषा—सम्क्रत । दिएः —चर्चा । २०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णः । वेष्टनस० २३४ । प्राप्ति स्थान -- भ०दि० जैन मन्दिर, प्रजनेर ।
- **१२१. प्रतिसं० २ ।** जनस० ३० । ले०काल सं० १७०५ साघ सुदी १ । पूर्ण । **बेष्टनसं०** २०३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारायमिह ।
- **१२२. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १८० । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाथ, बूंदी ।
- **१२३. प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० २० । ले०काल 📐 । पूर्णे । बेष्टनसं०४६ । **प्राध्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर, राजमहल

विशेष--पंच कल्यागको की तिथिया भी दी हुई है। गुटका साइज मे ग्रन्थ है।

१२४. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ५१ : ले०काल 🔀 । मपूर्ण । वेष्टनसं०५० । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर वडा बीस पंभी दौसा । **१२४. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस**०** ५२ । ले०काल-× । पूर्यो । बेष्टनस० ११७।७**४ । प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

**१२६. प्रतिसं० ७ ।** धवस० २६७ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० २५ । प्राप्ति **स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर

विशेष -- प्रथम पत्र नही है।

**१२७. प्रतिसं० ८ ।** पत्रस० १-१८ । ले०काल 🗴 । घपूर्ए । बेष्टनसं० २६ । **प्राप्ति स्थान --**उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--- १० से धार्ग के पत्र नहीं है।

**१२८. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १८ । ले०काल 🗴 । श्रपूर्ण । वेष्ट्रतस० ७०१ । **प्राप्ति स्थान**---उपरोक्त मन्दिर ।

**१२६. गुर्गास्थान चौपई—बद्ध जिनदास** । यत्रस**०** ४ । ब्रा०-६ $\frac{1}{2}$  ४ इच । भाषा- हिन्दी पद्य । विषय—पर्या । २०काल— $\times$  । ले०काल— $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडाराबीस्ड ( टोक ) ।

**१३०. गुरास्यान मार्गरगा बर्गन—नेमिचन्द्राचार्य।** पत्रसं०-५६ । ब्रा०-१०,४५ इत्त्र । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धाल । र०काल— ≾ः । ते० काल—स० १८८४ चंत्र गृशे ११ । पूर्ण । बे**ष्टनस०** २४४-५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डगरपुर ।

विशेष--ग्रामेर मे प्रतिलिपि की गई थी।

**१२१. गुरास्थान मार्गरा। चर्चा** । पत्रसः ० १२१ । म्रा० --१२ १५ ८४ । भाषा --सम्कृत । विषय --चर्चा। २०कास --- ४ । भे० काल --- ४ । प्रपूर्ण । वेष्टनम० २८१ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर दीवानबी कामा ।

विशेष--- इसमे बन्य पाठ भी है।

**१२२. गुरास्थान मार्गरा। बर्गन** — ४. १ पत्रम०- ५४. १ प्राण-१८४. १ उच । भाषा नीतनी। विषय—सिदाल । ४०काल — ४. १ ते० काल— १. १ पूर्ण । वेष्टन म० - १७४-३३ । **प्रार्गर, स्थान** — दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर, इत्यन्गद (कोटा) ।

विशेष -- यत्र नहिन वर्गन है । पत्र परावर्त्तन का स्वस्प भी दिया है ।

१३३. गुरास्थान वर्णन — ६ । प्रतस्य - - द-४४ । आ० - ११७ ८६ ट्रन्य । भाषा — यहत् । विषय — पिदाना । र०कार — ७ । ते० कार — ७ । प्रपूर्ण । वेष्टन र० -- ०६३ । प्राप्तिः स्थान — १० के मन्दिर प्रधिनन्दन स्वासी, बृदी ।

१३४. गुरास्थान वर्णनः । पत्रसः — । प्राः — १० ४ ४ द्वाः । भाषा — सस्ताः । विषय — गिद्धानः । ४० काल् — ४ । विषय — गिद्धानः । ४० काल् — ४ । १४० । भाषाः वदाः । पूर्णः । थष्टनः सः — ६२७ । भाषाः स्वानः — भट्टारकाः देव जैन मन्दिरः अवसंतः ।

१३४. गुरास्थान रचना---४ । पत्रस०-२० । घा०-१२४६ इव्ह । भाषा-हिन्दी । विषय-

सिद्धान्त । र०काल—— × । ले० काल— × । अपूर्णः । वेष्टनस०— १६ । **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भारता ।

**१३६. गुरास्थान वृत्ति—रत्नशेखर सूरि ।** पत्रस०—१४ । प्रा०—११<sup>\*</sup>४४<sup>१</sup> इन्ध । भाषा — मन्द्रत । विषय —मिदान्त । र०काल- × । ले० काल- × । धपूर्ण । बेप्टन स०—४६ । प्राप्तिः स्थान-दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष--- मत्र सं० २-६-६ नहीं है।

श्चिमिम -- प्रायः पूर्वीवरचित्रै श्लोकै रुद्धतो रन्त्रवेपर.सुरिम ।

वहदगच्छीय श्रीवजमेनसूरिकार्यः ।

श्रीहंमतिलकसूरिपट्टप्रतिवृत्तः

श्रीरत्नकेखरसूरिः स्वपरोपकारायः प्रकरगण्यपं पथा ।।

ग्रन्थाग्रन्थ सं० ६६० ।

**१३७. गोम्मटसार – नेमिचन्द्राचार्य ।** पत्रय**ः—१५ । बा०—११** ३४६ इन्छ । भाषा— प्राकृत । विषय—सिद्धान । र०काल—, ८ । ले०कान—, ८ । पूर्व । वेष्ट्रनस०—६३५ **। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीगान, बुंदी ।

**१३६. प्रतिसं० २** —पत्रस०—१४० । ल० काल ग़॰ १६**८**६ । पूर्ण । बेष्टनस०—१४५ । प्राप्ति **स्थान**—दि ०तैन मन्दिर महाबीरजी बूटी ।

विशेष, —धर्मभूषण के शिष्य जनमोहन के परनार्थ प्रतिलिप हुई थी। मित सस्कृत टीका साँहत है।

**१३६. पतिसं∘**—३. पत्रसं∘—२३ । ले॰ काल—∴ः । पूर्यः । वेष्टनसं∘—२०४। प्राप्तिः **स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिंह ।

विशेष-- अस्तिम नीन पत्रों में जीव एवं धर्म द्रव्यों का वान है।

१४०. ७ तिसं० --४. पत्रसं०-म७ । ले० काल-स० १७५१ (शक स० १६२४) पूर्यो । बेष्टनसं०-१४ । प्राप्ति स्थान-पत्रावती मन्दिर बयाना ।

१४१. प्रतिसं $\bullet$ —४. पत्रस $\bullet$ —६७। ले $\bullet$  काल $-\times$ । पूर्णं । बेहनस $\bullet$ —१६। प्राप्तिः स्थानं-दि $\circ$  जैन बहा पंचायती मन्दि $\tau$ , होग

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

१४२. प्रतिसं∘—६. पत्रसः∘—६७ । ले॰ काल— :< । अपूर्ण । बेहनसः∘—१७७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन अप्रवाल मन्दिर, उदयपुर

विशेष - - प्रतिक्रमण् पाठ के भी कुछ पत्र है।

**१०३. प्रतिसं** ० — ७ । पत्रसरु—२-४४ । ले० काल सर्  $-\times$  । अपूर्ण । बेप्टनसं ० — २३ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर तेरहपथी दौसा

विशेष--प्रति सस्कृत टीका सहित है।

**१४४. प्रतिसं० — द**ापत्रस०— द७। ले० काल - स० १६११। पूर्णः । बेष्टनसं०—१८२ ७७।

**प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, डूंगरपुर ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

१४५. गोम्मट्टसार —नेसिचन्द्राचार्य । पत्रसः—५३७ । आया—प्राहृत । विषय—सिद्धान्त । रूकाल्  $\times$  । ते॰ काल-१७६८ ढि॰ भादवा सुदी १ । पूर्णं । बेष्टनसः —३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन बढा पंचावती मन्दिर, श्रीम ।

विशेष--श्री हेमराज ने लिखी थी। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१४६. प्रतिसं० २ । पत्रतः--२न्द । ग्रा० $-+2\times$ प्रै इखा । ने० काल  $-\times$  । मपूर्ण । वैष्टतसं०--१६२। प्राप्ति स्थान --६० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

**१४७. प्रतिसं० २ ।** पत्रसं०---२४१ । बा० १२ $\frac{3}{4}$  imes दश्च्य । ले० काल--imes । प्रपूर्ण । वेष्टतस0---२७६ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष:--प्रति तत्व प्रदीपिका टीका सहित है ।

१४८. गोम्मटसार — नेमिचन्द्राचार्य  $\times$  । पत्रम० २८७ । प्रा० १२ $\frac{1}{4}$   $\times$  ६ इ.स. । भाषा — प्राकृत-सस्कृत । विषय —सिद्धान्त । र०काल  $\times$ । ले० काल स० १७०४ । प्रपूर्ण । बेष्टुनस० १४२ प्राप्ति स्थान —उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--बहुत से पत्र नहीं हैं। प्रति संस्कृत टीका महित है। प्रशास्ति निम्न प्रकार है---

सवत् १७०५ भादवा सुरी ५ श्रीरायदेशे श्रीजगन्नायजी विजयराज्ये भीलाझा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालये . . ।

१४६. गोम्मटसार टीका — सुमतिकीति । पत्रस० ३४७ । प्रा० १४ , ३ इच । भाषा — सस्कृत । विषय — सिद्धान्त । २०काल — स० १६२० भाइणद मुद्री १२ ते० काल – म० १६६७ । पूर्णे । बेहन सं० १४४-२११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सरिर नेमिनाथ टोडारायिस्ट (टोक) ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

१५० प्रति सं०२ । पत्रस्य ३२ । ग्राप्त - १४ ४ ४ हेट्या । लेक्सर्यस्य स्थान-स्व १७६५ ग्रामोत्र सुदी १२ । पूर्णा । बेष्टनस्य ६२ । प्रास्ति स्थान-स्विजन सदिर ग्रादिनाय वृक्षी ।

बिशेष--वमुपर में पड़ित दोदराज ने पार्खनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

१**५१. प्रति सं०३** । पत्रस०६४ । ते०काल म०१८०६ । पूर्ण । **वेष्टनम०१८०६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर यीवानती ४ कामा ।

१**५२. प्रति सं**० ४ । पत्रस**०** ४ म् । ते० काल 🗶 । पूर्णः । देष्टन सं० १६२ । **प्राप्तिः स्थान** दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा ।

१४३- प्रति सं० ४ । पत्रत० ६० । ले० काल ४ । भपूर्ण । बेहन सं० ६६ । प्रास्ति स्थान– खण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर । विशेष-प्रति जीशं है। प्रन्थ का नाम कर्म प्रकृति भी दिया है।

**१५४. प्रतिसं० ४** 'पत्रस०१ मे १६ । ले० काल — ४ । प्रपूर्ण । बेहनस०—६७ । **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन तेरह पस्थी मन्दिर, दसदा ।

**१४५. प्रतिसं० ६** । पत्रसः ४७ । प्रा० ११५ ४ इच्च ३ ३० काल स० १८५६ आदवा सुदी १४ । पूर्ण । बेहन सं० ११६८ । **प्राप्ति स्थान**—सर्वि० जैन सन्दिर ऋजमेर ।

१५६, गोम्मटसार (कर्ज, काण्ड टीका) — नेमियन्त्र । पत्रसंव १४। बाव ११ × ४ है इन्त । प्राचा — प्राकृत सरकृत । विषय — निढान । २०काल – ४ । जब कात १७४१ मार्गधीर्ष मुदी १४ । पूर्ण । वेक्नापुंव २७१ । प्राप्ति स्थान — दिव जैन गोन्दर बोरसानी कोटा ।

विशेष—प्रशस्ति मदत १७४१ वर्षे मार्ग सुदी १४ बुवे थी मनग ४ बनारकारणयो सरस्वतीगके कुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीनिदेव नन्यट्टे महारक श्री ३ मुरेन्द्रकीनिदेव नद्युष्ट भ्राना प० विद्यारीदामेन निश्चित स्वहरनेन ज्ञानावर्शी बमंश्रयार्थ । श्रीत सस्कृत टीका इहित है।

**१५७. प्रतिसं०** २ । पत्रस० ५२ । ले० काल—स० १७६४ जेष्ठ बुदी २ । पूर्ण । बेष्टनसं० २८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१५६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३-११६ । ले०काल— × । घपूर्ण । वेष्टनस० २४ । प्राप्ति-स्थान— दि० जैन मस्पि तेरह पथी दौसा ।

विशेष-- ३ न संस्कृत टीका सहित है।

१५६. गोम्मटसार कर्मकाण्ड— $\times$  । पत्रसं० १० । प्राथा—प्राकृत । विषय—िमदाल । र०काल— $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ८८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मंदिर, भरतपुर ।

**१६०. गोरघटसार चर्चा** — ४ । पत्रस० ४ । घा०१२ ४६ इख । भाषा — हिन्दी गणा । विषय — सिद्धात । रॅ०काल — ४ । ते०काल — ≯ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३२-१६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सन्दिर कोटडियो का, हुंगरपुर ।

**१६१. गोम्मटसार घूलिका**— $\times$ ा पत्रस**०७**। भाषा—सस्कृत । विषय—निद्धांत । र०काल— $\times$ ा ले०काल— $\times$ ा पूर्ण । वेष्टनस०६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष-हिमराज ने लिखा था।

१६२. गोम्मटसार पूर्वार्ड (जीवकांड) —  $\times$  । पत्रसं० १२३ । आ० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ २७ । भाषा — सस्कृत । विषय — सिद्धात । २०काल —  $\times$  । लेकाल —  $\times$  । पूर्ण । बेष्टून सं० १०४३ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) भाषा टीका— × । पत्रसं० ४० । घा० १० × इख । माषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—सिद्धात । २०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर । १६४. गोम्मटसार (जोवकाण्ड) मावा-महा पं० टोडरमल । पत्रस० १०० । प्रा० १३×७: इला । माया — राजस्थानी (ङ्वारी गया) । विषय — मिद्रात । र०काल — × । शे०काल — × । धपुर्ण । वेष्ट्रस० ११७ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन छोटा मन्तिर वयाना ।

**१६५. प्रतिसं∘ २** । पत्र सं० ४६० । प्रा० १२ ४ ६ } इश्वा । ने०काल— ४ । पूर्ण । वेष्टन स**॰** ६६-१ । प्रास्थि**स्यान**— दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दोसा ।

**१६६. प्रतिसं० ३** । पत्रस० ६ । म्रा० १० <sup>६</sup> ४ ४ है ङख । ले०काल स० ४ । पूर्ण । वेष्टनसं**०** ६१४ । **प्राप्त्स्यान**—स० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

विशेष --- केवल प्रथम गाथा की टीका ही है।

**१६७. प्रतिसं० ४** । पत्र स० २६ । ले०काल —  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर प्रादिताथ स्वामी मालपुरा ।

१६८. गोम्मटसार भाषा-सहा पं० टोडरसल । पत्रस० १-=० । धा० १०) ० ६ । भाषा-राजस्थानी गद्य । विषय —निदान्त । र०काल — ४ । गं०काल — . । बेप्टनस० ७३६ । स्पूर्ण । प्राप्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**१६६. गोम्मटसार साथा-महा पं० टोडरमल ।** पत्रस० ५०२ । घा० १३ - ६ ४७ । भाषा राजस्थानी (डहारी) गद्य विषय —मिद्धान । र०काल — स०१८१८ माघ मृदी ५ त०कात . ﴿ । भूपूर्ण । बेहनस०१४०५ **प्राप्टिस्सान** --भ० दि० जैन मन्दिर धनगर ।

**१७०. प्रतिसं० २** । पत्रम**०** ६६० । लेल्बाल - । पूर्ण । बेष्टनम**०** १८०० । **प्राप्ति—स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - सम्पक्जान -चिन्द्रका टीका सहित है।

१७१. प्रतिस्**०**२ । पत्रस० १०२० । लेक्काल स०— ः । अपूर्णः वेष्ट्रस० ४४ ८४ । प्रास्ति**स्यान** — ४० जैन बीस पथी सस्टिर समान

विशेष -- सम्यकजान-चरिद्रका टीका महिता है।

१७२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १०२१ । ते०काल स० । पूर्णा । वेष्ट्रतस० २४२ । प्रास्ति — स्यान—दि० जैन सन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष--प्रति मृद्य है।

**१७३. प्रतिसं० ४** । प्रभा० १०२६ । तेरुकाल म० १८४२ भादवा सरी १० । द्वार्स । वेष्टन **सं०** ६ । द्वारितस्थान— दि० जैन मन्दिर महार्थार स्वासी, बूदी ।

१७४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३२४ । ने०वान . । सपूर्ण । येष्टुन म० ४२३ । प्रास्ति– स्थान—दि० जैन प्रवासनी मन्दिर भरतपुर ।

**१७४. प्रतिसं० ६** । प्रयान ७६८ । तेषकात म०१=३० भारदा मुदी २ । **पूर्ण । बेप्टन स०** ४२२ । **प्राप्ति स्थान** —उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—प्रति विध्यमारक्षपणामार महित है। कुन्हर म रणजीत के राज्य मे प्रतिविधि हुई थी।

**१७६. प्रतिसं० ७** । पत्रस० ८६२ । ले०काल स०— × । पूर्ण । बेष्टन सं० २३ । प्रास्ति – स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

विशेष—प्रति संहर्ष्ट सहित है। पत्रसं० १५६ तक सब्धिष्ट स्रक्तासार है। १७ वें पत्र में संहर्ष्ट भूमिका तथा प्रतिस ५० पत्रों में बुव्धियार, शपरणामार तथा भौकारसार की भाषा है।

१७८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४,०४ । ले०काल सं०--०१८२१ । पूर्ण । बेष्ट्रस० ६ । प्राप्ति -स्थान----उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-पत्रसं०२७० से ५०४ तक दूसरे वेष्ट्रनस० मे है।

१७६. प्रतिसं० १०। पत्रसं० १०००। ले काल म० १६४० कार्याक मृदी १०। पूर्ण । बेहनसं० ४७। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोट्योका नैमान (वंशि)।

विशेष--- गम्यकज्ञान च न्द्रका टीका सहित है।

**१म०. प्रसिसं० ११** । पत्रस० ७३२ । लालस०—————————————— १५१०**१ ।** प्राप्तिस**स्या**म —वि० जैन पंचायनी मन्दिर ग्रलभर ।

१८२. प्रतिसं० १२ । पत्रन० ६८१ । ले० काल-- 🔀 । पपूर्णे । बेष्टनस० १४५ । प्राप्ति-स्थान - दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायिसह टीक ।

विशेष-- ५८६ के आगे के पत्र नहीं है।

**१८२. प्रतिसं० १३** । पत्रस० १३६६ । ते० काल म० १६२२ सावण बुदी ८ । पूर्ण । बेष्टनस०१ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन बडा मन्दिर फ्लेडगुर (शेलादाटी)

विशेष - गद ग्रन्थ ४ वेष्टनों में बधा है। टीका का नाम सम्यक्जान चरिटका है। लिब्समार क्षपणासार महित है। प० सदामुखदासजी कामनीवास ने उथव लाव पाण्डे चाकसू वालों से प्रतिलिपि करवाई थी।

१६३. प्रसिसं० १४ । पत्रसं० १२६४ । ले० कान स० १८६० माघ बुदी ११ । पूर्गा । वेष्टनस० १४।६१ । प्राप्तिस्थान--- दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

हुमा है। १८४. प्रतिसं०१४ । पत्रसं० ७६-२८४। स्ना०—१२४८ दःखा। ले० काल—४।

विशोध -- सम्यकज्ञान चन्द्रिका टीका है संदर्गिट भी परी दी हुई है। यह प्रन्य तीन वेप्टनों में बचा

षपूर्णः । वेष्ट्रनतः ० ६८-३८ । प्राप्तिः स्थानः— (६० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा । १८.४. सोम्मटसार माथाः — ४. । पश्रतः २४ । ते० कानः— ४ । षपूर्णः । वेष्ट्रनतः ७८।४६ । प्राप्तिः स्थानः— वि० जैन मन्दिर भारता (राजः०)

१८६. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) माखा—हेमराज । पत्रसं०६६ । मा०१४४८ ; इत्रा । माषा—हिन्दी । विषय—सिद्धांत । र०काल—१७३४ मालोज सुदी ११ । ले० काल स०१६४४ । पूर्ण । वैष्टनसं०१४।१६ । प्राप्तिसस्थान । दि०जैन पंचायती मन्दिर सलवर । १८७. प्रसिसं० २ । पत्रसः० ६६ । से० काल 💎 । पूर्णे । बेष्टनसं० ५१ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन स्रवतन पत्रावती मन्दिर सनवर ।

१८८. प्रतिसं० ३। पत्रतः ६६।ते० काव २०१८६४ पौषः सुदी ४। पूर्णः । बेहनसं० ११४। प्राप्तिस्थानः ४० केन प्रध्वात प्यापनी सन्दर सनवर ।

१८६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १०७ । ले० काल — 🔀 । पूर्ण । **वष्टनस० १४ । प्राप्ति स्थाल –** दि० क्रेन मन्त्रिर महासीर स्थामी कृष्टी ।

१६१. प्रतिसं०६ । पत्रस० ४६ । ले० काल म०१६३१ । पूर्ण । **लेहनसं० ३७६ । प्रास्तिः—** स्थान—दि० जैत प्रचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-- र्गनक लाल मुशी ने प्रतिनिधि करवायी थी।

१६२. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ६७ । ले० काल -- र । पूर्ण । **बेहन स० ३१ । प्रास्तिस्थान --**दि० जैन मस्टिर, बयाना ।

विशेष---सबत् १८४१ में गुजरमन गिरधरवाका ने प्रत्य को मन्दिर में चढाया था।

१६३, प्रतिसं० मः। पत्रम० ५४ । ते० काल - ८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० **७ । प्राप्ट**्रस्थान — दि० जैन मन्दिर बोस पर्यो दौसा ।

विशेष अपक समजन्द ने प्रतितिपि की भी।

१६४ प्रतिसंगः ६ ावमण्डरे । लेट काल -- मण्डेट्राण । पूर्णः । वष्ट्रनसण्यक्षः । विरुक्तंन प्रवासी मन्दिर वणीली ।

विशेष-- धनन्तराम ने प्रतिनिधि की भी ।

१**६५. प्रतिसर १०** । पत्रस०१२७ । ले० काच--- > ) वेष्ट्र**स०** १२७ । **प्राप्तिस्थान**---दि० जैन प्लायनी मध्यि करीली ।

१६६. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० ६२ । प्रकार संक्ष्य संविध्या साध्युति है । पूर्ण । वेष्टनसक्ष्यान-प्रविक्तिसम्बद्धान-पर्वक्तिसम्बद्धाना चन्नपुर ।

१६७. गोम्मटसार 'पंचमग्रह' कृति - २ । पत्रम० -२३६ । प्रा०-१४ (७ इश्व । मापा-प्रावन-गरुव । विषय - गिद्धात । २००१म - - १ ते० काल -- २ । प्रपूर्ण । वेष्टनम० -- ११४। प्राप्ति, स्वान----(२० वेत मन्दिर प्रार्टनाय ५११)

विशेष --मन्कर राज्ञ सतित है। २३८ क ब्राम एवं नहीं हैं।

१६८. प्रतिसं० २ : यत्रय० - ३२० : घा० --१४ / ६१ द्वा ! ते० काल --सं० १८६१ : पूर्ण । बेष्टन व॰--४३-४४ : प्राप्तिः स्थान - दि० तेन मन्दिर कीटवियों का दूसरपुर ।

विशेष- प्रति संस्कृत टीका महिल है।

१६६. गोम्मटसार (पंचसंग्रह) वृत्ति—समयचन्द्र । पत्रस० ४०१ । सा० १४% ६ इन्छ ।

भाषा—संस्कृतः । विषय—सिद्धानः । र०काश— $\times$  ले० काल— $\times$  । पूर्णः । वेष्टनस०—१३७ । प्राप्तिः स्वान—भ० दि० जैन मन्दिर सबसेरः ।

२००. प्रतिसं०-२ । पणसं०-१-१४७ । प्रा०-१०३ ४ १ इखा वि० काल-४ । बेहनसं०-७६४ । धपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपूर ।

२०२. प्रतिसंग-४। पत्रक्षर--३३० । धार--१४४ ९ इश्व । नेर बाल--संर १७१७ भारता बुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन संग्--३४४ । पाण्डि: स्थान --विर जैन मन्दिर बोरताना बाटा ।

विशेष-अविका में स्वे० धर्मदीय से प्रतिलिपि की थी।

२०**३. गोम्मटसार वृत्ति —केशववर्गी** । पत्रक्षर—२७६ ! आ० —१४४७ इन्द्र । आथा— सस्कृत । विषय—मिद्धान्त । र०काल —४ । ते० काल—शिर म० २१०७ ज्वेस्ट मृटी ४ । वेष्ट्रन स०— १ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---महस्मलन के कहने से प्रति लिखी गई थी।

२०४. सोम्मटसार वृत्ति—  $\times$  । पत्रस० ४२६ । आ० १२  $\times$   $= \frac{3}{2}$  इच । जापा - सम्कृत । विषय — मिदाना । - ० काल  $\times$  । ले० काल म० १७०४ । पूर्ण । वेष्ट्रस० ७ । प्रास्तिः स्थान —ि॰ जैन अग्रवाल मर्दिर, उदयपुर ।

२०**४. गोम्मटसार जीवकाण्ट वृत्ति (तत्वप्रदीपिका)**— 🗶 । पत्रसु०२६ से १६६ । म्रा०—१० 🗶 ४ डचा । भाषा —सन्द्रत । विषय—सिद्धान्त । र०कान्त— 🗶 । ले०कान् — 🗴 । भुगुर्गु । बेग्नुसु०११६ । प्रास्टिस्मान—दि० जैनुभविर नागदी, वृदी ।

२०६. गोम्मटसार संदृष्टि—झा० नेमिचन्द्र । पत्रसं०११। झा०१०३ × ८३ त्य । सम्पा—प्राकृत । विषय— सिद्धान । र०काल × । ले०काल × प्रमूर्ण । नेप्टनस०२०४। प्राप्तिः स्थान—हिठ नेत्र सरिट तीवाली कामा ।

२०७. गौतमपुष्टक्या सूत्र— × । पत्रस० १३ । घा० १० × ४ इला । साधा — प्राकृत — हिन्दी । विषय — प्रागम । र०काल × । ने०काल × । प्रपूर्ता । बेहन सं० ७४ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मदिर दवलाना ।

चित्रोच — १२ वांपत्र नहीं है। प्राष्ट्रत के सूत्र सामने हिन्दी सर्व सूत्र रूप मे है। सूत्र स०६४। २० झ. गौतसपुरुद्धा — × । पत्रस०१ न। सा०११ ४४ दे इञ्च। सामा सस्कृत। विद्यन भ्रागम । र०काल— x । ले० काल-सबत् १७०१ । पूर्णा । वेष्टनस० ५३ । प्राप्तिः स्थान → दि० जैन मंदिर पचायती, दुनी (टोक)।

विशेष--पडित शिवजीराम ने शिष्य नेमिचन्द्र के पठनाथं दूर्गी नगर में प्रतिलिपि की थी।

२०६. प्रतिसं०२ । पत्रस०१६ । ग्रा०५ ×६ इ.चा। माघा —हिन्दी । र०काक्र— ४ । ले० काल — × । पूर्णा वेष्टनस०५७ । प्राप्तिः स्थान —(दि० जैन मदिर पचायती दुनी (टोक)।

**विरोध**—श्री फतेहचन्द के शिष्य वृत्दावन उनके शिष्य शीतापित शिष्य प० शिवजीना**ल** तत् शिष्य नेमिचन्द ग्रात्मकल्यासार्ष ।

२१०. प्रति सं०३ । पत्रस० ७६ । ते०काल स० १६७४ । पूर्णः विश्वनसं० ७४२ । प्राप्ति स्थानः -- दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

**२११. प्रतिसं० ४।** पत्रस**० ४**२। ले० काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनस० ७४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर।

२**१२. गौतम पृच्छा** — × । पत्रस०—७६ । भाषा -मस्कृत । विषय - सिद्धाला । र०काल × । ले०काल --१८७४ । पूर्णे । वेष्टनसं०७४२ । **प्राप्त्त्स्यान** — दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपूर ।

२१**२. प्रतिसं०२ ।** पत्रस० ४२ । भाषा—सम्कृत । ले० काल— ⋌ । पूर्ण । बेन्टन स० ७४४ **। प्रास्थित्स्थान**—उपरोक्तः महिर ।

विशेष---११६ पद्य है।

**२१६. चतुःशरराप्रकोरांक सूत्र** - पत्रम० — ४ । भाषाः -सरकृत । विषयः -सिद्धान । रक्काल — ४ । लेक्काल — म०१७०३ । पूर्णः । वेष्टन म०१४ । **प्राप्तिस्थान** —दि० जैक पत्रायनी मदिर डीगः।

२१७. **चतुःसररा प्रक्रा**ति —  $\times$  । पत्रम० न से १ । ग्रा० १०  $\times$   $< \frac{1}{2}$  दश्च । भाषा । प्राकृत । विषय—ग्रागम । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रापूर्ण । बेष्टन ग० ११० । प्राप्ति स्थान—म० वि० जैन मंदिर ग्राजमर ।

२१८. चर्चा—म० सुरेन्द्रकीति । पत्रम० १३ । धा०८ × ६६७व । मापा—सस्कृत । विषय—चर्चा । वेष्टन स०४६ । प्राप्तिःस्थानं—दि०जैन मदिर राजमहत्त टोक ।

विशेष -- जैन सिद्धान्तों को चर्चा के माध्यम में समभाया गया है।

२१६. चर्चा  $\times$  । पत्रस्त ३ । ग्रा० ६ $\frac{2}{7}$   $\times$   $\delta_{\frac{3}{7}}^{\frac{3}{7}}$  । मापा - सन्कृत । र०काल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । लेक तल  $\times$  ।

२२०. चर्चा—पत्रसं०३६ । घा०१३ × ६ ॄै इ.च.। भाषा—हिन्दी (गर्च)। र०काल × । ले०काल ≭ । घपुर्गा। वेष्टन स०३७ । घाष्टित स्थास—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

**२५१. चर्चाकोशं—** ४ ! पत्रस॰ १२४ । भागा-हिन्दी । विषय— वर्षा । र०काल— ४ । भूखन काल- ४ । प्रपुर्ण । वेष्टुन॰ सं॰ ५५ । प्रा**प्ति स्थान—** दि॰ जैन नेरह पूरी महिर बसवा ।

**२२२. चर्चा प्रत्य**— ४ । पत्र स०२-६ । घ्रा०११ ४ **०**१ इच्च । भाषा-क्षित्री । मन्दिर विषय—चर्चा । ले० काल— ४ । र० काल— ४ । वेष्टन स० ७१७ । घ्रपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लक्कर, जयद्र<sup>क्ष</sup>

२२**१. चर्चा नामावली**— × । पत्र म० ३३। ग्रा॰ १२ ४७ ३व्हा । भाषा—हिन्दी। विषय—चर्चा। रॅ०काल— ४ । ले० काल०—ग० १६७६ मात्र मुद्री ११। पूर्ण । बेहन म० ४४। प्राप्त स्थान—प्रयोग प्रचायती मन्दिर अवतर ।

विशेष -- जैन सिद्धानी की चरचायों का वर्णन है :

२२४. **चर्चा नामावली हिन्दी टीका सहित**— ४.६ पत्र स० ४७ । झा०—१० ४ १ इथा। भाषा—प्राप्तन हिन्दी । विषय—सिद्धान चर्चा । २०कास— ४ । वे० कान०— स० १६३६ सावन बुदी १० । पूर्णे । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थात**-दि० जैन सन्दिर श्री महावीर बुदी ।

२२६. चर्चाबोध $\leftarrow$   $\times$  । पत्र म०१४। ग्रा०१ $_1^2$  ४ दृष्ट । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । २०काल- ४ । के० वाल- ४ स०१६७३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०। ६१ । २२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर भारवा (राग्र०)

२२०७ **बर्चाप्रया**— X । पत्र स० ४०। घा० ११  $\times$  १५ इ.च । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा । र०नाच  $\times$  । ले० काल-स० १६०२ । पूर्ण । वेष्टर स० १४४१ । **प्राप्ति स्थात**—भट्टारकीय आस्त्र भण्डार क्रयमेर ।

२२८. **चर्चाशतक--धानंतराय** । पत्र स०६ । घा०१०ड्रै ४,४इख । भाषा--हिन्दी (पदा) । २०काश- - । ले० काल- -> । अपूर्ण । बेष्टन म० ४४७ । **प्राप्ति स्थान--**-भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अवसर ।

विशेष-- मैद्रान्तिक चर्चात्रों का वर्णन है।

२२६. प्रतिसं० २ । पत्र म० ६२ । ते० काल-स० १६४० काती मुदी ४ । पूर्ग । वेष्टनस० १४७७ । प्राप्ति स्थान-- भट्टारकीय शास्त्र भण्डार अञ्चेग ।

विशेष---प्रति टब्वा टीका सहित है ।

**२३०. प्रतिसं० ३** । पत्र स० १७ । ले० काल०— $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० २२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुंदी ।

२३१. प्रतिसं०४ । पत्रस० १०२ । ले०काल स० १९४२ घ्रासोज सुदी ६ । पूर्णं । बेष्टनसं० ६९ । प्राप्टिस्थान—दि० जैन मस्टिर पार्थनाथ चौगान व दी ।

विशेष— भगडावत कस्तूरचन्द जी तत् पुत्र चोखचन्द ने प्रतापगढ के चन्द्राप्रभ चैत्यानय में जिलवायाथा।

२३२. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १६ । ले०काल—×ः । पूर्णः । वेष्टनसं० ७६ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मदिर ग्रनिनन्दन स्वामी, वृदी ।

**२३३. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० २६ । ले०काल—— 🗙 । पूर्णः । वेष्टन स० १३६ । प्रास्ति**-**स्थान—वि० जैन मन्दिर नागदा इ.वी ।

२३४. प्रतिसं० ७ । पत्रसः ७१ । ले०काल — 🗴 । सपूर्णः । बेष्टन सः १६३ । प्रास्ति -स्थान — दि॰ जैन मन्दिर श्री महाबीर व दी ।

विशेष-प्रथम पत्र नहीं है।

२३५. प्रतिसंo ६ । पत्रस० १०० । ले० काल--- स० १६४२ । पूर्ण । वेप्टन स० २७ । प्राप्तिस्थान---दि० जैन मन्दिर थी महाबीर बुदी ।

विशेष--- प्रति टीका सहित है।

२३६. प्रतिसं० ६ । पत्रसः० १४ । ले०काल— × । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० २२३ । प्राप्ति-स्थान —दि० जैन मन्दिर राजमहल टांक ।

२३७. प्रतिसं० १० । पत्रम० १६ । लेक्सन—स० १६४३ । पूर्ण । बेस्टन म० ३६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ टाइस्स्यमिह टोक ।

२३८. प्रतिसं० ११ । पत्रम० १८ । लेव्हाल म० १८६२ । पूर्ण । बेस्टन म० ४५ । प्राप्तिस्थान - दिव जैन मन्दिर प्रादिनाथ स्वामी मानपुरा ।

२३६. प्रतिसं १२ । पत्रम० १०२ । ले०काल म० १६२७ । ग्रामांत बुदी १३ । पूर्ग । वेष्टन स० ४० । प्राप्ति स्थान—गण्येनाय जैन मन्दिर इत्दरगढ (कोटा) ।

विशेष -- प्रति टीका महित है।

२४०. प्रतिसं० १३ । पत्रम० ६२ । नेश्काल म० ११६६ । ज्येग्ठ मृदी ३ । **नेग्ठन स०** १२४/२० । प्राप्ति स्थान---पार्यनाथ दि० जैन मन्दिर टब्दरगढ़ ।

विशेष-प्रति बहुत मृत्दर है तथा हिन्दी गद्य टीका सहित है।

२४१. प्रतिसं०१४ । पत्रना० १६ । वे०काल — 🏑 । प्रपूर्ण । वेट्टन स० १४३।१६ । प्राप्ति स्थान—पार्श्वनाव दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

२४२. प्रतिसं० १५ । पत्रस० २५ । लेक्सल स०— 🔀 । प्रपूर्ण । बेप्टन सं० १६ । प्राप्ति स्थान—गण्वेनाथ दि० जैन मन्दिर दन्दरगढ ।

२४३ प्रतिसं० १६। पत्रस० १४। लेक्काल— 🗙 । पूर्सं। वेष्टन स०१७० । प्राप्ति-स्थान — ६० जैन पत्रायनी मन्दिर सत्वर । विशेष-१६ वे पत्र से द्रव्य सग्रह है।

२४४. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ६६ । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेप्टन स० १७६ । प्राप्ति-स्थान-वि० जैन पचायती मन्दिर धलवर ।

विशेष--प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। टीकाकार राजमल्ल पाटनी है।

२४५. प्रतिसं० १८ । पत्रस० ७५ । ले०काल $--\times$  । वेप्टन स० ४२ । प्राप्तिस्थान--दि० जैन प्रग्रवास पंचायती मन्दिर प्रलवर ।

विशेष---हिन्दी गढार्थ सहित है ।

२४६. प्रतिसं० १६। पत्रस० १८। ग्रा० १०र्५ ४७ इत्रा । ले०काल स० ११३८ बैशाल सुदी ८। पूर्ण । वे० स० ६०। प्राप्ति स्थान—वि० जैन पपदाल क्शायती मन्दिर वयाना ।

विशेष---हिन्दी टीका सहित है ।

२४८. प्रतिसं०-२१। पत्रस०-१३। ले० काल-१८१४। पूर्णं । बेष्टन स०--३४८।

विशेष--हिन्दी टीक। सर्दित है । प्राप्ति स्थान --उपरोक्त मन्दिर ।

२४६. प्रतिक्षे०—२२। पत्रक्षः—४१। ले० काल— ४ । पूर्यं । वेष्टन सः –३६४। विशेष—विश्वी टीका सहित है । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

२५०. प्रतिसंद—२३ । पत्रसः—१८ । ले० काल—१८१८ मामोज मुदी ८ । पूर्णे । वेष्टन म०—३६५ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मदिर ।

विशेष--भग्तपुर मे प्रतिलिपि की गई थी। मूल पाठ है।

२**४१. प्रतिसंo**—२४ । पत्रसर—४३ । ले० काल—१६६८ । पूर्ण । वेष्टन स०—३६६ । विशेष--विस्टी टीका सदिल है । उपरोक्त सन्दिर ।

२५२. प्रति सं∘—२५ । पत्रमः ०—५३ । ले० काल—४ । पूर्णः । वेष्ट्रन स०–४२२ । प्रास्टिः स्थान— उपरोक्तः मन्दिरः ।

२५३. प्रति सं०---२६। पत्रस०-१०। न० काल--स० १६२२। पूर्णं। बेष्टन स०---११६। प्राप्ति स्थान--- दि० जैन छाटा मन्दिर बयाना।

विशेष- लश्कर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

२५४. प्रतिसंo—२७ । पत्रसंo—६६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल— स० १६२८ भादवा सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सo—६२ । प्राप्टिः स्थान— वि० जॅन छोटा मन्दिर बयाना ।

**२४४. प्रतिसं०—२८ ।** पत्रस०—५४ । ले० काल—स० १८२० । पूर्णं । बेष्टन सं०-२०**१ ।** प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२**५७. प्रतिसं०— ३० ।** पत्रसं०—५६ । ले० काल-१६३२ । पूर्ण । वेष्टुन स०—५६ । **प्राप्तिः** स्थान - दिः जैन पत्रायनी मन्दिर हण्डालालो का, डीग ।

२५८. प्रतिसं०—३१। पत्रस०—५६। ले० काल — < । प्रपूर्णः । वेष्टन स०—६। प्राप्ति स्थान—५० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीगः।

विशेष - पति समुद्ध एव सन्यवस्थित है।

२५६. प्रतिसं०--३२ । पत्रस०--१०४ । ले० काल -स०१६४७ प्रपाढ बुदी ७। पूर्ण । बेष्टन स०--६३ । प्राप्ति स्थान --दिर जैन मन्दिर बडा बीन गयी दीना ।

**विशेष**—हिन्दी गद्य में टीका भी है। जबपूर में प्रतिनिध हुई थी।

२६०. प्रतिसंo—३३ । पत्र स० ७७ । ते० काल-स० १६३४ बैशास्त्र मृदी ६ । पूर्गे । तेवृत स० ३० । प्रास्ति स्थान-दि० जैन सन्दर फ्लेडपूर अलाबाटी (सीकर)

बनेष—नेवक प्रणस्ति निन्त प्रकार है जास्त्रामिये मानुरावे गुरुक्यामें लोहाचार्य प्राप्ताय भट्टारक जी श्री श्री १०० वी स्वित्तकीर्ति भट्टारकजी श्री श्री १०० श्री राजस्त्रकार्ति जी तत् शिष्य पडित औरस्वर चंद जी निवासी कोहरूर मध्ये निविक्त श्रीममुख भाजक ।

**२६१. प्रतिस**० ३४ । पत्र स० १२ । ले० काल—ग० १६०० कानिक बुरी १४ । पूर्ग्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फलेसपुर शेखाबाटी ।

विशेष--- वाली जुलबन्द न लिपि की थी।

२६४. प्रतिसं० ३७ । एव म०—ः दः । ले० व ।  $\cdots$  स० १८६५ अस्तिक बुटी दः । पूर्ण । बेष्टुन स०। ११३ ।

**विशेष** - रियोभवर्ग्द विरायक्या में एतिरिसिः १२ तथ्यः स्थितम् व्यापनमात्र किया । **प्रास्ति** स्थान—दिश् जेन मन्दिर त्रकर, अयपुर ।

२६५. चर्चामतक टोका—हरजोमन । ६२ ५ ६ । बा० १८ ७ इच । भाषा -हिन्दी (खा तथा गया ) । विषय — सर्वा । २०काष — । १० ५ — ५० १६२० । पूर्ण । वष्ट्र म० ३४ प्राप्ति स्थान —१० केन प्रयासना महिन वर्षाना ।

विशेष -- हरजामन पानीयन वालं को टीका महिन है। राज पात है। निज ठाकुरदाम हिण्डीन बाने ने प्रतिविधि की थी। जिलाहन लाला की मह्यास्प्रजी पठनाय जानात हानुनमा का यहा नानी हुन्तामी साम का, यात्र चानुवाद ययाना वालं ने मायोदास आवक्त उदाशी। तहाराद कारण आग घर मे रिक्न होकर यह अन्य निष्यकार नरप्रमुक्ते पुरान महिरह में चात्र ।

२६६. प्रतिस् ०२ । पत्रस् ७६ । विषय-तर्षा । २० काल — । ल० काल - ८ । पूर्णी ।

बेष्टन स॰ १०३ । प्राप्तिस्थान-दि॰ जैन मदिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष --इति चर्चाक्षतक भाषा कविन द्यानतराय कृति निनकी सर्थ टिपरण हरजीमल पासीपथ की समार्थ समूर्ग । यह पुस्तक श्री ग्रीमनदनशी का मिंदर की छै ।

२**६७. प्रतिसं० ३**। पत्रस०६७ । ले०काल-स०१६४६ पौष मुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन ं०४४०: **प्राप्ति स्थान**- दि०जैन मदिर नागदी, बुंदी ।

२६८. प्रतिसं० ४ । पत्रम० ८० । ले० काल — 🗴 । पूर्यं । बेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान — दि० चैत्र भंदिर महाबीर स्वाभी, वृदी ।

२६६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४३ । लंककाल -स० १६६६ ९ पूर्णा । बेष्ट्रन तर ४२१ । प्राप्ति-स्थान दि० जैन मन्दिर महाधीर स्टार्मा, वृती ।

२७०. चर्चामतक टीका तायुक्ताल होसी । पत्र स० ८६ । प्रा॰ १२ ८६ १ आप १२ ८६ । आप १२ ८६ । आप १२ ८६ । आप १२ ८६ । आप । विषय - मिद्रान-चर्चा । ४० कार-प्रांत । लेकाल — 🗡 । पूर्ण । चैनुन स० — ६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मिद्रिय सहावीय स्थानी, वृदी ।

विशेष-प्रति ठव्दा शोका पहिल है।

२**७१. चर्चा समाधानं** - रा । पत्र न० १३ । सा० ६३ ४७ दश्व । भाषा-ेनस्कृत । विषय—चर्ना : ने०काल— । र०काल । पूर्ण । वेष्ट्रत स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रतिदर पार्थनाथ कोसात्र वर्षा ।

२७२. **चर्चासमाधान - भूधरदास ।** पत्र स०११४ । ब्रा० क्ट्रेप्र ४६ दश्व । भाषा— हिन्दी (पदा)। विषय - पर्चा। २००१५ स०१००० माघ मृती ४। विकास --स०१ सक्क मावण सुदी ११। पूर्णा। वेष्ट्रत म०१००४। **प्राप्ति स्थान**---भट्टारकीय णास्त्र भण्डार - धत्रमेर।

२७३. ५ पिसं०२ । पत्र स० ८७ । लेक्काल-स० १६३६ । पूर्णावेष्टन स०१०७ । प्राप्ति स्थान-प्रिंजन सन्दिरपाञ्चनाथ योगान बुदी ।

**विशेष** - मन्त्र १६२६ माद्रपट क्रण्या २ बुधवारे लिखायन पडित छोगालाल लिखिन मिश्र रूपनारायमा भीलाय मध्ये ।

२७४. प्रतिसं० ३ । पत्र म०११ । ने०काल--  $\times$  । पूर्णे । वेष्ट्रन स० ११७ । प्राप्ति – स्थान-िक जैन मन्दिर महाधीर स्वामी बुदी ।

२७५. प्रतिसं० ४। पत्र स० ४७। ग्रा०-११४५ है स्था। लेक्काल-स०१८६७। पूर्णा। बेष्टन स०६१। प्राप्ति स्थात--दि० जैन मन्दिर महाबीर स्वामी बूदी।

२७६. प्रतिस्**० ४।** पत्र स० ११४। घा० -- १२१४६ इ**न्छ**ा। लेक्नाल स० १८८७। पूर्णी। वेष्टुन स० २८। **प्राप्ति स्थान** िर० जैन मन्दिर ाटडियो का, नैराया ।

विशेष धर्ममींत रोट ने खीतकी निप्र से लोचनपुर मे प्रतिसिपि कराई थी।

२७७. प्रतिसं०६ । पत्र स० ११४ । झा०१ ४६ इ.च । ले०काल — स० १८०४ । वैशाख बुरी १३ । पूर्णा वेशुन स०१११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायनी मन्दिर दूसी । २७८. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० १२३ । ग्रा० १ $\frac{1}{4} \times 1^3_7$  इख । ले॰काल—स० १८८६ । प्राप्त स्थान—स० जैन मन्दिर राजमहल

विशेष—राजमहल वा दूर्णी मध्ये लिखितं। कटार्या मोजीराम ने राजमहल के चन्द्रप्रम मन्दिर को भेट किया था।

२७६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६६ । घ्रा० ११ र्रै ४ ४ है इक्षा । लेब्काल—स० १८५० चैत्र सुदी ४ । पूर्णे । वेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर राजमहल ।

विशेष— विजयकीति जी तर् शिष्य पडित देवचन्दजी ने तक्षकपुर में घादिनाथ चैंग्यालय में स्थास सहजराम से प्रतिलिपि कराई थी।

२८०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६६ । ग्रा० १०३४ ४ है इसा । ने०काल —स० १८८२ । पौष सुदी ३ । पूर्णा । वेप्टन स० ६४ –३१ । प्राप्ति स्थान —दि० त्रैन मन्दिर नेमिनाथ टोबारायसिंह

विशेष--तक्षकपूर मे गुमानीराम ने प्रतिलिपि की थी।

२.स. प्रतिसं० १०। पत्र स ८४। झा० ११ ८४ इचा। ने०काल—स० १९७६ ग्रपाढ़ बुदी १४। पूर्ण। बेटन स० १४१। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी।

बिशेष-वाबुलाल जैन ने मार्फत बाबू वेद भास्कर से आगरे में लिखवाया था ।

२६२. प्रतिसं० ११। पत्र म० ७७-१०६। ग्रा० --११ ४.६ इ.स.। लेव्काल म० १६४६। पीष बुदी १। प्रपूर्ण। वेप्टन म० ६४।६२। प्राप्ति स्थान --दिव् कैन पार्श्वनाय मन्दिर इन्दरसङ् ।

रम ३. प्रतिसं० १२ । पत्र म० १३४ । मा० १२ ८७ इ.च. । ले०काल---- र । पूर्ण । वेष्टन म० ६।३७ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पत्राथती मस्टिर ग्रनवर ।

२**५४. प्रतिसं० १३** । पत्र मण्डम् । साल १२ - ६ इन्त्रः । लेल्काल स**०** १८०६ । पूर्यो । वेग्टन सल्बर । **प्राप्ति स्थान**—दिल जैन प्रवाल प्रवासनी प्रतिस्त प्राप्तवर ।

विशेष -- जयपूर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२**८४. प्रतिसं० १४** । पत्र स० १६८ । लेब्काल --- / । पूर्ण । वेस्टन सं० ४१२ । **प्राप्ति-**स्**यान**--- दि० जैन पत्रायती मन्दिर मन्तपुर ।

२८६. प्रतिसं० १४ । पत्र म०---१८१ । ले०काल म० १८२३ जेठ मुदी ४ । पूर्ण । बेस्टन स∙ ४१७ । प्रास्ति स्थान -- दि० जैन पचायनी मन्दिर सन्तपुर ।

विशेष-गुस्तक कामा में लिखी गई थी।

२८७. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ११६ । ने० काल स० १६२४ । पूर्णः । वेष्टन स० ४१६ । प्राप्ति स्थान—दि० नेन पत्राधनी मन्दिर मरनपुर ।

विशेष-- तथपुर में प्रतिनिधि हुई थी तथा दो प्रतियों का मिश्रमा है।

२८६. प्रतिसं०१७ । यत्र स०६१ । लेल्काल — स०१८४४ । पूर्णः । वेष्टत सं० ४१९ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पत्रावनी मन्दिर सरलपुर । २८६. प्रतिसं०१८ । पत्र सं०१३१। ग्रा०१० $\frac{2}{5}\times$ ५ इखा ने काल—स० १८१५ । माह बुदी ५। पूर्ण । बेष्टन सं०४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रचायनी मन्दिर बयाना ।

२**६१. प्रतिसं० २० ।** पत्र म० १४६ । लेक्काल—× । पूर्ण । बेष्टन स० ४६ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन प्रवायनी मन्दिर इण्डावालों का डीग ।

विशेष-- बगालीमल छाबडा ने करीओ नगर में प्रतिलिप करवाई थी ।

**२६३. प्रतिसं∘ २२** 'पत्र सः० १३४ । घा० ११्र ४-५्रेटखा । लेक काल – स०१=१४ ग्राध्विन मुदी १०। पूर्ण । वेष्टन स०१३४ । **प्राध्ति स्थान**—दि० जैन पचायती सदिर करोली ।

**२६४. प्रतिस्ं०२३** । पत्र स०१०३ । प्रा०१२३ ४६ ६ ७ । ले० काल-१८०७ जेठ मृदी १३ । पूर्णुं । वेष्टन स०१२/२० । प्रा**प्ति स्थान**---दि० जैन सीमार्गा सन्दि<del>र्गं</del> करीली ।

विशेष-चदप्रभ चैत्यालय करौली में साहिबराम ने प्रतितिषि की थी ।

२**६५ प्रतिर्स• २४** । पत्र स० १३२ । लं० काल—स० १८५२ ज्येष्ठ मृदी द । पूर्ण । बेष्टन स० २०-३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बडा बीस पथी दोसा '

**२६६. प्रतिसं० २५** । पत्र म०६ । घ्रा०६>६ इश्वः । ले०काल—स०१६१५ । पूर्णः । केष्टन म०१३१–६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौमा ।

थिशेष-चिमन लाल छावडा ने प्रतिलिपि की थी ।

**२९७. ब्रश्तसं० २६ ।** पत्र म०१२६ । ले०काल स०१८२३ फागुण मुदी २ । पूर्ण । वेकन स.१४७/४० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मादवा (राजस्थान )।

२**८ म. प्रतिसं० २७ ।** पत्र स० १६७ । ले०काल⊸स० १६२० । पूर्ण । वेष्टन स० ४४/ १०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मादवा ( राज० \ ।

विशेष---भवरमाल पाटौदी ने प्रतिलिपि की थी।

२**६६. प्रतिसं∘ २**⊏ । पत्र स०११७ । ग्रा०१३ x ४ इव्य । ले०काल—स०१६३१ ग्राघाड सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स०४० । प्राप्ति स्थान— दि०र्जन मन्दिर फतेहपुर नेम्बाबाटी (सीकर) ।

विशेष-ईश्वरीय प्रसाद गर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

२००. प्रतिसं० २६ । पत्र स० १११ । ले० काल—स० १६२६ फानुगामुदी २ । पूर्णा। वेष्टन स० ४६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-साह रतनचन्द ने स्वय के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३०१. चर्चा समाधान-मूखर मिश्व। पत्र सं० ४३। ग्रा० १२×६ इश्व। भाषा-हिन्दी

गद्याः विषय—-निद्धान वर्षाः र०काःः - रा लेकाल — न०१७४४ । पूर्णः विष्टृन स० ६४-४७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का दुगरपुरः।

विशेष-्ट बड जातीय लघु भावा के पाडलीय नवलकद ने प्रतिलिपि कराई थी।

२०२. चर्चासागर - पं० चरपालाल । पत्र म०-३६० । प्रा० १२४६ हे इ.स. । भाषा---हर्ल्टा गत्र । विषय -- सिद्धात चर्चा । र०काल---स० १६१० । लेकाल --- ४ । पूर्ण । वेष्टन स०४४ । प्राप्ति स्थाल----दि० जेन मस्टिर फतेहपुर, मेलावाटी ।

३०४. चर्चासार-धन्तालाल-पन म०२७। प्रा० १००४६० १४व । भाषा -हिन्दी । विषय-भिद्वात । र०काः,-प०१६४७ फागुण मुदी १०। ने०काल-४०१६४७ फागुण मुदी १२ । प्राप्तिस्थान-पार्वनाय १०० वेन मध्यः उत्याव कोटा ।

३०४. चर्चासार - पं० शिवजीलाल । पत्र ग० १४० । घा० ११ रे. ६ ४७ । भाषा— हिन्दी । विषय—वर्ची । १०कान्—प० १११३ । ले०काल —य० ११४२ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ६ । प्रास्ति-स्थान—दि० जेन मन्दिर पाण्येनाय श्रीगात, वृदी ।

सकल शास्त्र की सान्ति में देशिय की यो निराधन ॥

२०६२ प्रतिसंठ २ । पत्र सर् १०७ । तेक नात्र म० १६८३ । पूर्णा । बेष्टुन म० ४ । प्रास्ति-स्थानः दि० तेन सन्दिर प्रतिनन्दत स्थामा चर्चा ।

२०७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १११ । वेश्वात - 😭 । पूर्णः । तप्रत स० ६६ । प्राप्तिस्थात -दि० वैत प्रवादती सन्तिर दुती. शेकः ।

२०६. प्रतिस्रः ४ । तव म० ४० । चे०वान----- । पूर्णः । वेष्ट्रनं स० ११० ४४ । प्रास्ति स्थार--दि० तेन मांध्यत्वेसनाथ टोकारायस्यत् सत् ।

२०६. प्रतिसं० ५ । यथ गुरु ६० । त्रेल्याय-स्मा० १८२६ । ध्रमूर्मा । बेट्स स० ७६ । प्रास्ति स्थान - दिरु बेन नेप्यमंत्री १८७ण नगता ।

हे**१०. प्रतिसं**०६। एवं २० १२०। से०काल---/: । सपूर्ण । बेहून स० ६० **! प्रास्ति-**स्थास---(६० जेन नरहाभी मृतिक वनवा ।

२१२. चर्चामार--- । पत्र सं६६। म्रा० ११७ ५ इखा। भाषा सम्हत-हिन्दी । विषय-मिद्धात । ४०काल--- रे । ४०१४त -- । पूर्ण । वेष्ट्रम स० १९६० । प्राप्ति स्थान-स्हारकीय दि० कैन सन्दिर ग्रजनर ।

- ३१३, खर्चासार— र । पत्र स० ७६ । मा० १०१ ४ ४१ इस्त्र । भाषा हिन्दी गद्य । विषय मिद्रात चर्चा । र०काः, —,८ । ने० काल् — स० १६२६ फालुक बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टत स० २० । प्रास्ति स्थान— दि० केन मन्दिर पण्वेनाथ चौगान ब्रॉडी ।
- ३१४. चर्चासार—४ । पत्र म० ४३ । प्रा० ८ र्रे . ६ टचा । भाषा-हिन्दी गर्धा । विषय— मिद्रात । र०काल—४ । ले•काल—४ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० २४ । प्राधित स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहानीर व दी ।
- ३**१४. चर्चासार संग्रह—स० सुरेन्द्र भूषरा** । पत्र ग० र । घा० १०३८ ४३ इखा । भाषा— सरकृत । विषय —मिदान चर्चा । र०काल — 火 । लेकाल — स० १७३४ । पूर्ण । तेष्ट्रन स० १३० । प्रास्ति स्थान — टि० जैन मन्दिर पाञ्चनाथ जोगान ब सी ।

विशेष - ब्राह्मण चपे ने ब दी भ छोगालान के पठनार्थ प्रांपलिए की थी।

- ३**१६. चर्चासार संगह** पत्र म० २१६ । ग्रा० १४३ ८७ हे इन्छ । भाषा—हिन्दी : विषय चर्चा । रुकास — म० १६०० । लेकास- म० १९६० । भूगं । बेप्टून म० ७४ । **प्राप्ति स्थान**—ि० जैन मन्दिर कतेहुपर, मीवर ।
- **३१७. सर्चा संग्रह** ८१ पत्र म० १०। प्रा० १०६व । आपा-प्रकृत । विपय— मिञ्जल । १०कार - , । भे०कारा-चार्च । प्रयूगं । वेष्ट्रन म०६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अस्तिर तेरक्षको मालपुरा ।

विशेष प्रदिशियो रीका सहित है।

- **३१८. चर्चा संग्रह** । पत्र २००१ । आ० १२८६ छा । भाषा-सस्कृत । हिन्दी । विषय—चर्चा । १०७१५ - २४ । लेज्बाल — । वेष्टुत २० ७३४ । **प्राप्ति स्थान**—'द०वेन मन्दिर लाकर व्यपर ।
- **३१६. चर्चार्यप्रह** र । पत्र स**०२**४ । भाषा-द्विती । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णा । वेष्टुत स०३६१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन प्रनायती मन्दिर भराषुर ।

**३२०. प्रतिसं० २ ।** पत्र म० २६ । ले∘काल — ् । पूर्णावराज्य म० ६६३ । **प्राप्ति -स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर सरनपुर ।** 

३२१. चर्चा संग्रह— \ । पत्र स० १९३ । ग्रा० १२२ \ . ं घ्ला । भाषा-हिन्दी । विषय—चर्चा (२०काल— ४ । ते०काल— २० १=५२ माघ बुदी २ । एगः । बेहन स० १३० । प्रास्ति स्थान— ४० दि० जैन मन्दिर, ध्रजमेर ।

विशेष-विविध प्रकार की चर्चामां का नगर है।

- ३२२. **चर्चा संग्रह** । पत्र म०६२ । ग्रा०११ ८६% । भागा हिन्दी । विषय नर्चा । प्रपूर्ण । र०काल ४ । लेक्शल । वेष्टन म० १६ । प्रास्ति स्थान ह० जैन मन्दिर प्रास्तिष्य स्वामी, मालपूरा ।
- <mark>२२३. चौदह गुरास्यान वर्गन— नेमिचःद्राचार्य ।</mark> पत्र स०३४ । झा०१०}८५ई इत्थ । भाषा–प्राकृत । विषय—सिद्धान चर्चा । र०काल—रः । ले०काल—स०१६३० खापाट सुरी १ । पूर्ण ।

वेष्टन स०११३६। **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष-- चौदह गुरास्थानो का वर्रान है।

३२४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३८ । ले०काल स० १२४८ । पूर्एं । वेष्टन स० ६२३ । प्रास्ति -स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**३२५. प्रतिसं०३।** पत्र स० ११। ले०काल—— 🗙 । पूर्णु । वेष्टन स० ४६१। **प्राप्ति -स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**३२६. चौदह गुरास्थान वर्गन**—पत्र स०२। माथा-सस्कृत। विषय—सिद्धात । र०काल- $\times$ । ले०काल- $\times$ । पूर्ण । बेपून स०७१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर।

३२७. **जोदह गुरास्थान चर्चा**— × । पत्र सं० ३६ । प्रा० ६३, ४६१ इस्त । भाषा— हिन्दो । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल—स०१८४४ माच सुदी द । पूर्ण । वेष्टन स०३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर हेर ।

विशेष-भूरामल की पुस्तक से महादास ने प्रतिलिपि की थी।

३२८. **चौदह गुग्तस्थान खर्चा** $- \times 1$  पत्र स० ३७ । प्रा० ६ $\times$ ६ दे दश्च । आधा-क्रिन्दी । विषय—चर्चा । र०काल $- \times 1$  ले०काल—स० १८४४ कार्तिक मुदी १३ । पूर्ण । वेहन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर स्थाना ।

३२६. चौदह पुरास्थान चर्चा— $\times$ । पत्र स०१। ब्रा०१० $\angle$ ४१ इ.स.। भाषा-क्रियी। विषय—सिदान। रुकाल $-\times$ । ले॰काल $-\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०"७। प्राप्ति स्थान --दि॰ कैन मन्दिर दीवानजी कामा।

३३०. **चौदह गुगस्थान चर्चा** -  $\times$  । पत्र म० २६६। ग्रा० ६ $\times$ ६१ दश्च । भाषा-क्रियी । विषय—चर्चा । र०काल— $\times$  । ले०काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २० । **प्राप्त स्थान**—दि० त्रैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष- नानिकाक्षों के रूप में गुगस्थानों एव मार्गगाओं का वर्गन किया हुआ है ।

विशेष -- नादूराम तेरह पथी ने चिमनलाल तेरहपथी में प्रतिलिपि कराई थी।

प्रारम्भ---

धर्म धुरन्घर ग्रादि जिन, ग्रादि धर्म करतार ।

मै नमी ग्रय हरगा तै, सब विधि मगल सार ।।१।। ग्रजिन ग्रादि पारस प्रभू, जयबन्ते जिनराय।

घाति चतुत्क कर्ममल, पीछे सथे शिवराय ।

बरधमान वर्तो मदा, जिनशासन सुद्ध सार । यह उपनार तुम तर्जो, मैं पाये सुखकार ।

अप शास्त्र गोमट्टार जी वा त्रिनोकसार जी वा लिक्सार जी के अनुसारि वा क्वित और शास्त्रां के अनुसारि चर्चा लिखिये हैं सो हे मध्य तुं जाति को ज्यानू जाध्यां परारचा का सरूप ज्यामं जाम्यां जाय । अपने को स्वाप्त का सरूप जाएंग वा करि सम्बन्दक को प्राप्ति होय । घर सम्यन्त्र की प्राप्ति से गुढ स्वरूप की प्राप्ति होय सो एही वात उपारेय जाएंग स्वयं जीवन के चर्चा सीखतो उच्चित है।

## ग्रन्तिम पृष्टिपका---

इति श्री चौदह गरास्थानक की वचनिका करी श्री जिनेसर की बाशी के ग्रनसारि सपर्श ।

बोहा---बोदह गुरास्थानक कथन, माथा सुनि सुख होय ।

श्रम्ययराज श्रीमाल नै, करी जयामित जोय।।

इति श्री गुगान्धान टीका संपूर्ण । प्रन्थ कर्त्ता ग्रव्ययराज श्रीमाल ।

३३३. प्रतिसंo—३ । पत्र स०—३६ । ते० काल-४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०—६४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा ।

विशेष--- पत्र स० ३० से ३४ व ३६ से प्रागे नहीं हैं।

३३४. प्रतिसं० --४। पत्र म०-५२। ले० काल स० १७४१ कातिक बुदी ६। बेष्टन स० ६०६। प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३३६. प्रतिसं०६ । पत्र म० ४२ । ले० काल सं०१६१२ । पूर्णः । वेष्टन स०६१ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन ध्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशन्ति निम्न प्रकार है---

स॰ १८१२ वर्षे पौपमासे कृष्णापक्षे तीज तिथौ शनिवासरे गुग्रस्थान की भाषा टीका लिखी उदयपुर मध्ये ।

ग्रन्थ प्रमार्ग--प्रति पत्र १२ पक्ति एव प्रति पक्ति ३५ ग्रक्षर ।

**३३७. प्रतिसं०७।** पत्र स०५३ । ले० काल स०१८५४ । पूर्णा । बेष्टन स०११६/२८ । प्रा**प्ति स्थान**—पाप्रवंनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरनढ ।

**३३ म. प्रतिसं० म ।** पत्र सं० ५२ । ले० काल स० १७५० कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० १९७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-कामा मे गोपाल बाह्मगा ने प्रतिलिपि की थी।

३३६. प्रतिसं≎ ६ । पत्र स०६४ । घा० १०. ४ ४ हुँ इचा। ले० काल सं० १७४६ । पूर्णं। वेष्टन स०७० । प्राप्ति स्वान⊶िद० जैन मन्दिर दीवानजी कामा। ३४०. प्रतिसं० १० । पत्र स० ६६ । ले० काल स० १७४१ मादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजीकामा ।

३४१. चौबीस गुरास्थान चर्चा— गोबिन्द दास । पत्र म० ८ । घा० १० $\times$ ४ रख । आपा-हिन्दी । विषय-मुरास्थानो की चर्चा । र० काल स० १८८१ फाल्युन सुदी १० । ले०काल स० १८....। पूर्ण । बेहन स० ४३-११६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह ( शंक ) ।

## प्रारम्भ ---

गुण खियालीस करि सहित, देव घरहंत नमानि । नमो ग्राठ गुण किये, निद्ध सब हित के स्वामी ।। छत्तीस गुणा करि, विमल ग्राप प्राचारित्व सोहत । नमो औरि कर ताहि, मुनत बानी मन मोहत । घर उपाध्याय पच्चीस गुण, सदा बमन प्रनिराम है । गुगा ग्राठ बोम फिरिसाध है, नमो पच नुख याम है ।।

## ग्रन्तिम —

सस्कृत गाथा कठिन, घरष न समझ्यो जाय । ता कारण गोविद करिं, माया रची बनाय ।। जो या की सीले मुर्गं, घरप विचारं जोय । ममा माह धारद वहं, पुरिष्म कर्ड न कोय ।। घस्त घरप यामें घरि विड होय । बुधनन सर्व मुधारज्यो माफ कीजिये सीय ।। घटारासे उत्तरं गर्गं, इक्याची भीर प्राप्ता सुदी दलमी मुनिषि, गांग बासर णिरमीर ४६ ॥ दाहूनी को सामु है, नाम जो गोंबिन्दराग । नानं यह माया रची, मनमांठि घारि उन्हास ।। नामरदा ही नगर में रच्यों नु, माया ग्रथ । जो साकु सीले मुणे नहीं जैन मत पथ ।।

३४२. **चौबह मार्गरण टीका** — ८ । पत्र म० ६६ । ग्रा० ६४४<mark>. इखा । भाषा — हिन्दी ।</mark> विषय — मिद्रात । २०काल ८ । ले० काल ४ । **प्रपूर्ण** । वेर्हुन ग० १४१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४३. चौबीस ठाएगा —  $\times$  । पत्र स॰ 3/2। प्रा॰ 2/2 3/2 इन्न । प्राधा — सम्कृत । विषय — चर्चा। २०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वहुत स० ६९०। प्राध्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष—महाराजा सवाई प्रतापिसह के शासन काल मे पं० रलवन्द्र ने जयपुर के लक्कर के मन्दिर मे पूर्ण किया तथा प्रारम्भ "चम्पावती नगर में किया। चन्य का नाम "जैन सिद्धान्त सार" भी दिया है जिसको दयातिलक ने प्रानन्द राय के लिये रखा था।

३४४. **जीबोस ठारा। जर्जा** — ४ . पत्र सं० १० । ग्रा० १६×१११ हुच । भाषा-सस्कृत । विषय—निदान्त । र०कास× । ले० कान स० १६४३ भाषाठ सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ८० । प्राप्ति स्थान—सावनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरस्य, (कोटा)

विशेष---वडानक्शादियाहुमाहै।

३४६. **चौबीस ठागा चर्चा—झा० नेमिबन्द्र**ापत्र स०२६ । झा०१०१ै,४४१ै इखा। माषा-प्राकृत । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १६२७ । **प्राप्ति** स्थान—महारकीय १० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**३४७. प्रतिसं∘**— २ पत्र सं० ३०। प्रा० १०१<sup>°</sup>,४४१<sup>°</sup> इल्दा । ले० काल × । पूर्ण । बेप्टन स**०** १६६ । **प्राप्ति स्था**त— उपरोक्त मन्दिर ।

**३४८. प्रतिसं०३** पत्र स०२८ । ले० काल–स०१८८८ श्रावण बुदी ४ । बेष्टन स २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लाकर जयपुर ।

विशेष --- शक्रमी ने बाह्मण चिरजीव राजाराम से प्रतिलिप कराई थी।

३४६. प्रतिसं० ४ ।पत्र सं० ३२ । ले० काल− । बेप्टन स० २३ । प्राप्ति स्थान— ⊊० जैन मन्दिर, लब्कर ।

विशेष----प्रति सम्बत टिप्पण महित है । कृष्णगर के चन्द्रप्रम चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

**३५०. प्रतिसं० ५ ।** पत्र म० ५२ । लेक्काल—स० १७८४-फागुरा मुदी १२ । वेष्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- लखक प्रशनित निम्न प्रकार है --

मतन्मरे १७८४ फागुगमानं शुक्लगक्षे द्वादशतिषौ रीववारे उदयपुरनगरे श्रीगार्थनाय चैत्यानये श्री मृतमधे महारकेंद्र महारकको शी १०८ देंग्द्रकीतिजी धावार्य श्री शुप्रचन्द्रजी तत् शिप्याचार्यवर्या-चार्यजी श्री १०८ क्षेमकीति जो त्तिकृष्य पाढे गोर्द्रनास्यरनेनेद पस्तक लिखित।

**३५१. प्रतिसं∘ ६**। पत्र स० ३०। ले० काल स०१-६५। पूर्ण । वेष्ट्रन स०१७५-७५। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुँगरपुर ।

३५२. प्रतिसं० ७ पत्र स० २६। ले० काल स० १७३१। पूर्णे। वेष्ट्रत सं० ११०/११। प्रास्ति स्थान—प्रवताल दि० जैनसन्दिर उदयपुर्।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है.-- सबन् १७३१ वर्षे भाषाढ्मासे हुटी ६ शुक्रे श्री गिरिपुरे श्री भाषिनाय चैत्यासये श्री काष्टासचे नंदीनटगच्छे विद्यागरी भट्टारक श्री राजकीर्ति व० श्री भ्रमयरुचि पठनार्थ।

३**५३. प्रतिसं० ८ ।** पत्र स० २६ । ले० काल स० १७१३ । पूर्णं । वेष्टुन स० ४१२ । १६७ । प्राप्ति स्थान—संसवनाय दि० जैन मस्दिर उदयपुर । प्रशस्ति — सं० १७१३ कार्तिक मुदी ७ सोमबार को सागवाडा के मन्दिर में रावल श्री पुज विजय के शासन में कल्याराकीति के शिष्य तेजपाल ने प्रतिविधि की थी।

३५४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २५ । लेक्नाल imes । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४१३ । १६८ । प्रास्ति स्थान—सक्ताय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५५. प्रतिसं० १० पत्र स०३०। ले० काल स०१७७४। पूर्ण। बेष्टन स०४१४/१६६ प्राप्ति स्थान—मभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—स॰ १७७४ मगसिर मुदी ४ रविवार को श्री सागपत्तन नगर मे ब्रादिनाथ चैत्यालय मे नौत्तम चैत्यालय मध्ये **व**० केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

३४६. प्रतिसं० ११ । पत्र स० १६ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टन स० २०० । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

**३५७. प्रतिसं० १२ ।** पत्र स० ४४ । ले० काल० × । पूर्णं । वेष्टन ⊏१–११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपशी दौसा ।

**३५ ⊏. प्रतिसं० १३** । पत्र स० ३४ । ले० काल × । झपूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर वडा वीस पथी दौमा ।

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३५६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १३ । ले० काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६०. प्रतिसं० १४ । पत्र स०२३ । ले०काल ⋌ । पूर्णं । वेष्ट्रन स० ८४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिन्र दीवानजी कामा ।

**३६१. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स० ३१ । ले० काल स० १७३६ मगसिर मुदी १२ । पूर्ण । बेधन स० ८४ । **प्रान्ति स्थान**्दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६२. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २४ । ले० काल $\times$  । पूर्ण । वेट्न स ८६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६३. प्रतिसं०१८ । पत्र स० २४ । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०३२४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**३६४. प्रतिसं० १९।** पत्र स०६७। ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेब्रुत स० ११२/४ **प्राप्ति** स्थान—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर टन्डरगढ (कोटा)

३६५. प्रतिसं०२०। पत्र स०३०। ले० काल स०१८४७। पूर्णा जीर्णा बेष्टन स० ३८। प्राप्ति स्थान—ंद० जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

**३६६. प्रतिसं० २१ ।** पत्र स० २४ । ले० काल 🗷 । पूर्णा । बेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३६७. प्रतिसं० २२ । पत्र स०१७ । ग्रा०११ 🖂 इंब्ब ले० काल---- स०१६१७ थावस

सुदी । पूर्ण । वे० सं० ३१४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर धनिनन्दनस्वामी बूंदी ।

प्रशास्ति— प्रथ सवतसरेरिमन् श्रीविक्सादित्यराज्ये सवत् १६१७ श्रावशामासे मुक्तपक्षे नक्षत्रे श्रीमृत्तसंवे सरस्वतीनच्छे बलात्कारगर्गे तदाम्नाये प्राः श्री कुरःवार्यात्रये मः जिनवंददेश मकलनाकिक-वृद्धामण्य सी सिषकीत्तिवे तत्पट्टे मः वर्मकीतिवेवादम्नाये समारीकारानिविक्र त्रयोदकविधिवारिय-प्रतिपासक सञ्चानकुमुदप्रतिवोधिन वहोदये मेनार प्राचार्य श्री मदनवद तत्रकृष्टिय पंडितावार्य श्रीष्यानवंदेन इंच वर्षुकास्थान विषक्तः । प्रतितत्परः पुस्तक कृत्वा नेलकाना श्रीमोहन्वास्तव्येन माः प्रारहदास पठनार्यं कर्मक्षवानित्तः

**३६**८. प्रतिसं**०२३ ।** पत्र स०४२ ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३४६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर ग्राभनन्दनस्वामी बूदी ।

**३६९. प्रतिसं० २४ ।** पत्र म०४६ । ले० काल—कं० १८५९ द्यासोत्र सुदी १३ । पूर्णा । वेष्टुन स०१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाय बूंदी ।

विशेष-सम्बत टीका सहित है।

३७०. प्रतिसं० २४ । पत्र स० २३ । प्रा० ११ $\times$ ४ $^{3}_{4}$  इस्त्र । लेक्सल $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादीनाथ बृदी ।

३७१. प्रतिसं० २६ । पत्र स० २०। ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय बुदी ।

३७२. **चौबीसठारणा चर्चा**—पत्र सस्या २१ । प्रा० १०३ ४४ $\frac{1}{2}$  इख । भाषा-सस्कृत । विषय-चर्चा। २० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टुन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनस्दर स्वामी, बृदी।

३७५. चौबीसठाराग चर्चा $-\times$ । पत्र स०१५०। घा०११ $^1_1\times ^1_2$  इला। भाषा-हिन्दी (गष्य)। विषय-चर्चा। र०काल  $\times$ । ले०काल स०१२१५ प्रासीज सुदी१४ । पूर्ण। बेप्टन स०२/४४। प्राप्ति स्थान—सार्थनाय दि०जैन मन्दिर इन्दरगढ़।

विशेष--- धन्नालाल ने माघोगढ मे प्रतिलिपि कराई थी।

**३७६. चौबोसठासा चर्चा**— ४ । पत्र स० ७५ । **ग्रा०** च<sup>2</sup>ॄ ४ ४ इच्छ । भाषा—िहनी । विषय-चर्चा (२०काқ४ । ते० काल-पूर्ण । बेष्टन स० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—ाव्यंताथ दि० जैन मन्दिर बन्दरसद्ध ।

विषय-सिद्धांन्त चर्चा । ले० काल  $\times$  । ए० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १०/७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर दुनी (टोक )

३७८. चौबीसठारण चर्चा—× । पत्र स०-६ । म्रा०—१०×६-६ इश्व । विषय —हिन्दी । (पद्य) विषय—सिद्धान्त चर्चा । र०काल—× । ले० काल—× । म्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०—३७५ । प्राप्ति स्थान—दिञ्जैन मन्दिर दबलाना वृदी ।

३७६. चौबीसठार्गा चर्चा— $\times$ । पत्र स०---२३। घ्रा०—१०  $\times$ ७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त-चर्चा । २०काल— $\times$ । ले० काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०---४१। प्राप्ति स्वान---दि० जैन मन्दिर तेरह्मपी मालपुरा (टोक्र)।

३००. जोबोसठास्या चर्चा— $\times$  । पत्र स०-४२ । का०-१० $\forall \times 1 \$  इच । आधा-हिन्दी । विषय—सिद्धान्त-चर्चा । २०काल— $\times$  । ले० काल— $\times$  पूर्ण । वे० स०—१६७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर नागरी, बुंदी ।

३८९. प्रतिसं—२ । 'पत्र स०—४४ । ले० काल— × । पूर्णा । वे० स०—१४३ । प्रास्ति स्थान—देठ जैन प्रवासनी मस्टिंग करोली ।

**३६२. प्रति सं०—३।** पत्र स०–५६। ले० काल–स० १६२६। पूर्णं। वे० स०- २४–१६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेत-भादवा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी ।

३६३. जीबीसठारणा जर्जा  $\times$  । पत्र स०—१४ । घा०—११ $\times$ १ इ.स. । भाषा —िहन्दी सस्कृत । विषय —िसद्धान्त जर्जा । र०नास —  $\times$  । ते० काल —  $\times$  । घपूर्ण । वे० स० —१४०—६३ । प्राप्ति स्थान —ि१० जैन मन्दिर कोटडियो । का इनग्युर ।

३६४. चौबीस ठाएग- imes । पत्र स॰ ६। या॰ ११imes३ हुउथा । माथा- हिन्दी । विषय-मिश्चान चर्चा। ले॰ काल- $\times$  । पूर्ण । वे॰ स॰ - -१३२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन अग्रवाल पत्रावानी मन्तिर अनवर ।

विशेष---बसवा मे प० गरसराम ने चि० ग्रनतराम के पठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

३**८५. प्रति सं०—२।** पत्र म०—६। ग्रा०—१०है ४४ टखा। भाषा —हिन्दी । ने० काल-> । पूर्ण । ने० म०—२६१ । **प्राप्ति स्थान** - दि जेन मन्दिर दवलाना (ब टी) ।

३८६. प्रतिसं० — ३ ।  $\times$  । पत्र ग० — १४ । ले० काल –  $\times$  । पूर्ण । ते० म० - १८६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर फनेतुपुर ऐस्तावादी (मीकर)

३८७. **चौबीसी ठारणा पीठिका**— > १ पत्र स०-२-६५ १ आ०—८; ४५१ डला १ विषय —सिद्धान्त । ४०कारा—४ । ले० काल— ४ । पूर्ण १ वे० म०—३८६-१४३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ड गुरपुर ।

३८८. चौरासी बोल-- / । पत्र म०-- ८। छा०---११३४४३ इख । भाषा--हिन्दी । विषय--चर्चा । र०काल--- ४ । ले० काल-स०१७२८ वैशाल बुदी ६ । पूर्ण । व० स०१६० । प्राप्ति स्थान --दि० जैन लब्धेनवान मन्दिर उदयगर । विशेष--- लिखित प० जगन्नाथ ब्राह्मण् लघ्देवगिरी वास्तव्य ।

**३२६. श्रियालीस ठाराग वर्चा**— × । पत्र स०—१४ । धा०—१०००० ४ ६०० । भाषा— हिन्दी । विषय — सिद्धान्त । र०काल— × । ले० काल—स० १८५० ग्रावाढ बुदी १२ । पूर्ण् । वे० स०— १६२ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष---त्रेषठ शलाका पुरुषों के नाम भी दिये हुये हैं। शेरगढ में पाश्वेनाथ कैत्यालय में नित्वा गया था।

३६०. खुलीसी ग्रन्थ— × । पत्र स०११-६६ । घा०११ रे ४ ६९व । भाषा— सस्कृत । विषय —गुरास्थान चर्चा । र०काल × । ले०काल स० १६४८ । घपूर्ण । बेष्टन स०४१ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन घण्डाल महिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवन् १६४८ वर्षे घामोज बुदी १३ दिने श्री मृतसये कुन्दकुन्दावार्यात्वये महारक श्री वादिश्रयण् गुरूपदेशातृ नागदा जातीय सा० घत्रका भावां वहा पुत्री राजा एतं. स्वज्ञातावरणीय कर्मद्यायां इद खरीती नाम श्रीम्त्र नित्वास्य बह्म महारक श्री विजयकोति बह्म नारक्यणाय दलमिद """""

पक्ति १२ प्रति पक्ति २६ झक्षर है।

**३८१. जीव उत्पत्ति सभ्काञ्य – हरखसूरि ।** पत्र म०२ । प्रा० ––६२ × ४० इन्त । भाषा––हिन्दी । विषय – मिद्रान्त । र०कारा – × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म०२७३ । प्राप्ति स्थानः - दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

विशेष-- नदपेग्ग सङ्भाय भी है।

**३६२. जीवतत्वस्वरूप**— 🗴 । पत्र स० १० । भाषा —सस्कृत । विषय—निश्चन्त । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । ध्यूक्षुं । वष्ट्रन स०६४ । २४१ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन सम्बनाय मदिर उदयपुर ।

**३६३. जीवविचार सूत्र** — पत्र स० १०। घा०६  $\times$  4े इच । भाषा — सस्वत-हिन्दी। विषय — सिद्धानः । र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्णं। वेष्ट्रन स० ५२। **प्राप्ति स्थान**ः —दि० जैन मदिर दवलाना वृंदी।

विशेष--पति प्राचीन है तथा शानिमृदि कृत हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**३६४. जीवस्वरूप**— < । पत्र म०७। घा० ६ ४ ५ इश्व । माषा —प्राकृत । विषय — सिद्धान्त । र०काल > । ले० काल ≥ । पूर्या । वेष्ट्रत स०१४४ । **प्राप्ति स्था**न— दि० जैन सदिर दवलाना बुदी ।

विशेष-- प्रति हिन्दी टब्बा टीका महित है ।

१८५. जीवाजीव विचार —  $\vee$  । पत्र स० ८ । आ०- १०  $\times$  ४) दश्व । आपा — आकृत । विषय — सिद्धान । २०काश  $\times$  । ते० काल स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टुन स० ७६ ४६ । प्राप्ति रुमान —वि० जैन सदिर कोटदियों का द्वंगरपुर ।

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

३८६. क्रातुष्यमं सूत्र —  $\times$  । पत्र स० १०२ । मा० १०  $\times$  ४ है इस्त्र । माषा — प्राहत । विषय — प्राप्त म । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६६६ पीय सुरी १३ । पूर्ण । बेहन सं० । प्राप्ति स्थान — दि० जे० मदिर टीवानजी कामा ।

३६७. जोवविवार प्रकर्ण— शांतिसूरि । पत्र सब्द । ग्रा०१०  $\times$  ४ $^1_{\xi}$  इख । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धात । रक्काल  $\times$  । तेक्काल सब्द १७२६ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेकृत सब्द २२४३ । प्राप्ति स्थान—दिव्यंत मंदिर दवलाना हु दी ।

विशेष---मल के नीचे हिन्दी की टीका है।

३६८. प्रति सं० — २ । पत्र स० — ७ । ग्रा० — १०४४ है डखा । ले० काल स० १७६३ पीष सदी २ । पूर्ण । त्रेष्टन । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

विशेष--प्रति हिन्दी टीका सहित है।

३**६६. प्रति सं०—३।** पत्र स०—二। ले० काल—imes। पूर्ण । वेष्ट्रन स०—५६। **प्राप्ति** स्थान—६० जैन मन्दिर दबलाना ।

विशेष--पूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया हुन्ना है।

४००. प्रति सं०—४ । पत्र सः०—७ । ले० काल— 🗙 । पूर्णः । वे० सः०—४१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (व दी) ।

विशेष --- पूल के नीचे हिन्दी मे अर्थ दिया हुआ है। पत्र ७ मे दिशाशूल वर्शन भी है।

४०१. प्रति सं—४ । पत्र म०-७ । ले० काल- ४ । पूर्णः । वे० स०–२१ । प्राप्ति स्थान⊸ दि० जैन पार्वनाय मन्दिर इस्टराद ।

विशेष----गति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४०२. प्रति सं०—६। पत्र स०— ६। ग्रा०-१०×४ इश्वा । ले० काल × । पूर्ण । वेग्टन सं० ६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०३. जीवसमास विचार—  $\times$  । पत्र म०— ६ । प्रा० १० $\times$ % इन्छ । भाषा-प्राइत—सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०कार:—  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स०—१२५ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर कोडडियो का हु गण्युर ।

४०४. जीवस्वरूप वर्णन—  $\times$ । पत्र मः —१ से १४। म्रा॰ १२  $\times$ ४ इन्छ । भाषा— संस्कृत-प्राकृत । विषय—मिद्रान । र०काल— $\times$ । ने॰ काल— $\times$ । वे॰ सः ०—७५८ । मपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर नकार, जयपुर ।

विशेष—-प्रति सन्कृत टीका सहित है। गोम्सटसार जीवकाड में से जीव स्वरूप का वर्णन किया गया है।

४०५. ज्ञान चर्चा-× । र०काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं०--- १३२६ ।

प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४०६. प्रति सं०—२ । पत्र सं०—२-४४ । ने० काल स०१८२८ मादों सुदी ४ । पूर्णं। के० सं०—२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोक)

४०७. प्रति सं०—६। पत्र स०—३७। ले० काल— × । पूर्णः । वे० स०—३४/११४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर झलवर ।

विशेष-विभिन्न वर्जाग्रो का सप्रह है।

**४० ८. ज्ञानसार— मुनि पोर्मासह** । पत्र सं०४ । प्रा० १० $_Y^2 \times Y_2^2$  । माथा—प्राकृत । विषय— विद्वात । र०कास—१००१ व्यावण मुदी १ । ले० कान—स०१८२१ मादवा सुदी ११ । वेष्टन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-पृष्टित श्री चोलचन्द्र के शिष्य श्री सलराम ने नैगासागर से प्रतिलिपि कराई थी।

षिरोष—प्रति हिन्दी टब्बा रीका सिहन है। प्रशस्ति निस्न प्रकार है। टीका विस्तृत है। सबत् १६४६ वर्ष कालिक सुदी दितीया भोमे निषिकृत धारमधें। धप्रथदेव सूरि विरचिते स्थानाक्य तृतीयाग निवरसास्थानकाव्ये । धन्त मं—प्रासाम बालावबोध समाप्त च डीडवास्सा स्थाने। २ से १२ तक पत्र नहीं है। इस ग्रंथ के पत्र १,१३-२३२ तक वेस्टन स० १८२ मे है। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृदी)।

४११. ढाढसी गाथा—ढाढसी । पत्र स०—२–६ । ग्रा० ११ $\times$ ४ इ व । माषा—प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । प्रमुणं । बेष्ट्रन स० ४६० । २४७ । सस्कृत टीका सिंहत है । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समनगथ मन्दिर, उदयपुर ।

४१२. तत्वकौस्तुम—पं० पन्नालाल पांडचा। पत्र स०—च७४। मा० १२४७} इच। माणा-हित्सी (गण्ड)। विषय-मिदान्त। ग०काल स० १६३४। ते०काल—४। पूर्ण। बेष्टुन सं० १३६— १३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर म्रतवर।

विशेष--तत्वार्थराजवार्तिक की हिन्दी टीका है।

प्रति दो बेष्ट्नो मे है---पत्र स०---१-४०० तक बेष्ट्रन स० १३६

पत्र स०--४०१-६७४ तक वेष्ट्रन स० १३७ ।

४१३. तस्वज्ञानतर्रगिर्गी-भ० ज्ञानभूषर्ग । पत्र स०७६ । मा० १३ $\times$ ७ $^1$  इंच । प्राचा-संस्कृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काश—सं० १४६० । ले० काल स०—१९७६ । पूर्ण । बेष्टन सं०—१६६ । प्रास्ति स्वान—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूंदी । ४१४. प्रतिसं० २ । पत्र स०—३०। ग्रा० १०४६ इ.च । ले० काल स० १८४४ । पूर्णं । बेष्टन सं० ६८/४२ । प्राप्ति स्थान—दि० मन्दिर कीटडियो का, हंगण्युर ।

**४१५.** तस्ववर्गन— $\times$ । पत्रत०३३६। प्रा०१० $\times$ ५३६ व । भाषा हिन्दी । विषय-मिद्यान्त । र०काल— $\times$ । ले०काल $\times$ । भूपूर्ण । वेष्टन स०६०। प्राति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाय टोडानयसिक (टोक)।

विशेष —गुजराती मिश्रित हिन्दी गद्य है ।

४१६. तरवसार—देवसेन । पत्र स०४ । घा० १३ $_{i}^{2}$  $\times$ ६ । भाषा — प्रपन्न त्र । विषय — सिद्धाना । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । वे2न स०४०६ । प्राप्ति स्थान — दि० नेन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४१७. तत्वानुसासन-रामसेन । पत्र सं०१७ । ब्रा०१०४४ इच । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काद — ४ । ने० काल — ४ । पूर्ण । वेष्टन स०७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानबी कामा ।

४१८. प्रति सं० २ । पत्र स० १६ । ले० काल $\sim \times$  । वेष्टुन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४१६. तस्वार्थकोध—कृथजन । पत्र स०१०६ । फ्रा०-११४७ इच । भाषा-हिन्दी पछ । विषय-सिद्धान्त । र०काल स०१८७६ कानिक सुदी ४ । ले०काल स०१८८२ फाल्गुन बुटी ४ । पूर्णा बेष्टुत स०७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भ्रषताल पचायती मन्दिर भनवर ।

४२०. प्रति सं०२ । पत्र स०७४ । म्रा०१३ × ८ ६ च । ले० काल — र । पूर्ण । बेयुन स०६६ । ४८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर मादवा ।

४२**२. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १४४ । ले०काल — 🔀 । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

**४२२. प्रति सं०४ ।** पत्र म०—६१ । ले० काल—स० ११६० फाल्गुग मुदी ४ । पूर्णा बेष्टत स०१३४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष-- ५० हम्मोबिन्द चौबे ने प्रतिलिपि की थी।

४२३. तत्वार्थरस्तप्रभाकर—म० प्रमाचन्द्र । पत्र म० १२२ । घा० १११ ४४ डन । भाषा—सङ्कत । विषय—सिद्धान । र०काल स०—१४६६ भारवा मुदी ४ । ले०काल— ४ । पूर्ण । वेष्टन स०३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुदी ।

विशेष-नत्वार्थं मूत्र की प्रभाचन्द्र कृत टीका है।

४२४. प्रति सं २ । पत्रस० १७२ । ले० काल— ४ । पूर्ण । बेटून न० ४४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पत्रावनी मन्दिर, भरतपुर ।

४२४. प्रति सं ३ । पत्र स० ११८ । ले० काल स०—१६८० कार्निक बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर, करीली । .४२६. प्रति सं०४ । पत्र सं०७ ः। ग्रा०११४ ८ इच । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं०—७२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

४२७. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४३ । घा० १२×४३ । ले०काल स० १६८३ बैशाल बुदी ४ । बेष्टन सं० ६६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४२८. तस्वार्थराजवातिक—महाकलेक । पत्रस० ६७४ । भाषा सम्हत । विषय— मिद्यान्त । ८०काल—४ ले॰ काल—४ पूर्णे । वेष्टनसं० ३/१३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पवायती सन्दिर फ़लवः ।

४२६. प्रति सं०-२ । पत्रस० ६२ । ग्रा०-१३imes६ इख । ले०काल-imes । ग्रपूरां । बेवनसं० १२४ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन पचायती मन्दिर, भ्रतवर ।

४**२० प्रति सं० ३।** भा० १४×८<sup>7</sup> इच्छा। पत्रस०-४१२। लेक्नाल ११६२ पौप बुदी १३। पूर्णे। बेष्टुनसं० १४६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेजवाल प्रचायती मन्दिर ग्रतवर ।

विशेष--प्रति उत्तम है।

४३**१. प्रति सं**० ४ ! पत्रम० १२ । ले० काल— 🗙 । बेष्ट्रनसं• ३३ । स्रपूर्ण । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्करे, जयपुर ।

विशेष---१२ म धारो पत्र नहीं लिखे गये हैं।

४३२. प्रति सं०—५ । पत्रसः ४८० । धा०—११४४३ इश्वः । ले०कालः—४ । सपूर्एं । प्राप्ति स्थानः—दिः जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४३२. तस्वार्यवृति - पं० योगदेव । पत्रस० १ से १४६ । प्रा०— १२ ४४ $\frac{1}{8}$  इख । आषा— सम्कृत । विषय — सिद्धान्त । रे०कार्यः — र. । धपूर्णः । बेष्टनस० १७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — प्रति प्राचीन है। प्रतिपत्र मे ६ पक्ति एव प्रतिपक्ति मे ३२ ग्रक्षण्य है। १०० — ११६ तक प्रन्य पति के पत्र है।

४३४. तत्वार्थश्लोकवातिक झा० विद्यानित । पत्रस० ४४३ । झा०-१२४ ८ इख । भाषा-सस्कृत । विषय - मिद्रान्त । र०काल -- ४ । ले०काल स० १९७६ पीच सुदी १ । पूर्ण । बेहनस०२८ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीमान वृदी ।

विशेष— इति ग्रमृतचर⊀मूरीगा कृति सुतत्वार्यसारी नाम मोक्षशास्त्र समाप्त । त्रथ प्रत्याप्रत्यश्लोक सं० ७२४ ।

प्रशस्ति - मंदन् १६२६ वर्षं प्रामोज सुदी ३ क्रुघे श्री मीजिमपुर चैत्यालये श्रीमृतसये सरस्वती गच्छे बसान्कारमणे कुन्दकुन्दावार्यान्वये म० श्री मुमतिदेवास्तत्पट्टे म० गुराकीतिदेवा द्व० कमंसी पठनार्थं देवे माहबजी लक्ष्मी तुः....... । ४३६ प्रति सं० २ । पत्रसं० ४६ । ले०काल १८१४ म्रायाढ बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० २१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--भरतपुर में लिखा गया था।

४३७. तत्त्वार्थसारदीपक—स० सकलकीत्ति । ज्यसं० ६३ । ग्रा०- १०१४५ इच । माषा—संस्कृत । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ७६—४३ । प्राप्ति स्थान - वि० जैन सविर कोटडियो का हुंगरपुर ।

विशेष —प्रति प्राची र है। श्र**िल्स प्रशस्ति**-सागवाडा वास्तव्य स॰ जावऊ भार्या वाई जिमणादे तथो. पुत्री बाई अल् प्रिन्स्सा पठनार्थ ।

४३८ प्रति सं० २ । पत्र स०६६ । ग्रा० १२ × ५३ । ले०काल—स०१८२६ ।
वेबनसं० ४४ । दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष- महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह के शासनकाल में जयपुर नगर में केशव ने प्रतिलिपि की थी।

४३६. तत्वार्थसूत्र मंगल— × । पत्रसः ४ । झाः ११६ॄँ × १९ॄँ इसः । भाषा—िहिनी । विषय—िनदात । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । बेष्टनमः ० १६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- हिन्दी मे तत्वार्थ सुत्र का सार दिया हुन्ना है।

४४०. तत्वार्थसूत्र-उमास्वामि । पत्र स० ३३। घा० ११  $\times$  ४ $^{3}$  इव । भाषा-सम्बन्धः विषय-सिद्धात । र०काल  $\times$  । ले०काल स० $\times$  पूर्णः । तेष्ट्रनस० ११०६ । प्राप्ति स्थान-मट्टारकीय दि० जैन मन्तिर, स्रजमेर ।

विशेष-इसी का दूसरा नाम मोक्षशास्त्र भी है।

**४४१. प्रति सं० २ ।** पत्र स० ११ । आ० १०३ 🖂 ४३ डवा । ले०काल स० १८५३ । पूर्ण । वेक्नसं० स० ६८४ । **प्राप्ति स्थान**—मदारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

४४२. प्रतिसं**०३** । पत्र स०१६ । घा०६ 🖂 ५ इखा । ले०काल ग०१८२५ वैशाख बुदी ३ । पूर्णा । वेष्टन स०१३२३ । **प्राप्ति स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४४३. प्रतिसं०४ । पत्रस०४ । प्रा०१० ४ ४ द्वैद्वा लेकाल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० १००३ । प्राप्ति स्थान--भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, सजमेर ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र स०४० । ले॰काल— 🔀 । पूर्ण । बेष्टन सं० २२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर पार्वनाथ चौगान बूदी । हिन्दी टीका सहित है ।

४४५ प्रति सं०—६। पत्र म०१७। ले०काल $\times$ । पूर्ण वेष्ट्रनसं०—२२८ प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बूदी।

विशेष--मुल के नीने हिन्दी टीका भी है।

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका महित है।

४४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । बा० १३ 🗴 १६ इ.च । ले०काल---- 🗴 । पूर्णं । वेष्टतसं० २**३१ । प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मदिर प्रभिनन्दनस्वामी बूंदी ।

४४६. प्रति सं० है। पत्र स॰ २६। ले॰काल--- × । पूर्ण । बेष्टनसं॰ १४६ । प्रास्ति स्थान---वि॰ जैन मदिर ग्रमिनन्दनस्वामी, बूंदी।

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका महित है ।

४४६. प्रति सं० १० । पत्र स० २४ । ले०काल — स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टन स० १५० प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - हिन्दी टब्बा टीका सहित है। प० रतनलाल चिमनलाल की पुस्तक है।

४४०. प्रतिसं० — १९ । पत्र सं० १९ । ते०काल स० १६४७ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बृदी ।

विशेष-प्रति स्वर्गाक्षरों में लिखी हुई है। चपालाल श्रावक ने प्रतिलिपि की थी।

४५१. प्रति सं०—१२ । पत्र स०५० । घा० --१०४५ है इला । ते० काल—४ । पूर्ण । वेष्टतसं०—४२ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर कोट्योका नैगावा ।

विशेष - इनके आतिरिक्त निम्न पाठी का संग्रह और है-

जिनसहस्रनाम- (सस्कृत) ग्रादिनायजी की वीनती किशोर-(हिन्दी) ।

श्री सकलकीति गुरु बढी कानि स्याम दसेसी। विनती रचीय किजोर पूर केथोग वसै जी।

जो गावे नर नारि सुस्वर भाव धरेजी।

जागाव गर्गार मुन्यर मात्र घरजा। त्याधरि नोनधि होई धन कौष भरेजी।

पाश्वनाथ स्तुति-बलु-हिन्दी (२०काल स० १७०४ भ्रवाढ बुदी ४)

षाविनाथ स्तुति-कुमदचन्द्र-हिन्दी। प्रारम्म-प्रभू पायि लागु करु मेव वारी।

तुम्हे सांभलो श्री जिनराज महारी ।

तुम्हेसामली श्रीजिनराज महार

भन्तिम-परण् विनउ हू जगनाथ देवो । मोहि रालि जे भन्नै भन्नै स्वामी सेत्रो ।।

माहराल जभव भव स्वामा याविनतीभावसूजेभगीजे।

कुमदबन्द्र स्वामी जिसी हो खमीजे ।।

**प्रक्षर माला**---मनराम-हिन्दी ।

विधापहार स्तोत्र भाषा - अचलकीर्ति-हिन्दी (२०काल स०- १७१४)

विशेष -- नारनौल में इस ग्रन्थ की रचना हुई थी।

४५२. प्रतिसं०—१३ । पत्र स० ४५ । पूर्णे । बेष्टनसं०२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमञ्जा । विशेष--प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४५३. **प्रतिसं**० १४ । पत्रस० ६ । ले०काल— 🗴 । ग्रपूर्ण । वेष्टनसं० १४४ । **प्राप्ति** स्थान – दि० जैन मन्दिर, राजमहल ।

विशेष-- हिन्दी टीका सहित है।

४४५. प्रतिसं० १६ । पत्रसं०-३३ । ले० काल स० १८५३ । पूर्ण । बेष्टनसं०-४६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर पाष्ट्रनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष-- मक्तामर स्तोत्र भी दिया हुआ है

४५६. प्रतिसं० १७ । पत्रस०-५४। ले० काल $-\times$ । पूर्णं । वेष्टनस०-१४। प्राप्ति स्थान-४० जेन मन्दिर पास्वेनाय टोडारायसिह (टोक) । हिन्दी टीका सहित है ।

४५७. प्रतिसं० १८ । पत्रस०—१२-३० । ले०काल स० १८१६ पूर्ण । बेष्टनसं०—२८६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृदी) ।

विशेष - इसी मन्दिर के शास्त्र भण्डार में तत्वार्थ सूत्र की पाच प्रतिया ग्रीर है।

४५८ प्रति सं० १६। पत्रस०-३८। ले० काल-स० १६४० ग्रायात बुदी ४। पूर्ण । वेष्टन स० ७८।४०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर, इन्टरगढ (कोटा) ।

विक्रोज — प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। नसीराबाद की छावनी में प्रतिनिधि की गई थी। इस ग्रन्थ की दो प्रतिया ग्रीर है।

४५६. प्रतिसं० २० । पत्रस०-२ से १० । विषय — सिद्धान्त । २०काल -- ४ । ले०काल स० १६३० । अपूर्ण । वेष्ट्रनस०—२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४६०. प्रतिसं० २१ । पत्र स०११। ते०काल — ८ । पूर्णा। बेट्टन ग० २२४। प्राप्ति स्थान—दि जैन प्रदिश्वोरसनी कोटा।

विशेष - सम्कृत टब्बा टीका महित है ।

**४६१. प्रतिसं० २२** । पत्र स०१४ । लेकबाल — म०१७६७ कार्निक बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स०२७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

४६२. प्रतिसं० — २३ । पत्र स० १५ । ले०काल — 🕆 । पूर्ण । वेष्टून स० ३५४ । प्राप्ति-स्थान — द० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

४६३ . प्रतिसं० – २४ । पत्र स०२० । लेब्बाल — स०१६४८ पौष णुक्ला१२ । पूर्ण। वेष्टन संब्१४३ । प्राप्ति स्थान दि० जैन सण्डेलवाल पश्चायती महिर ग्रनवर ।

विशेष - स्वर्गाक्षरो मे बहुत मुन्दर प्रति है ।

४६४. प्रतिसं०२५। पत्र म०२०। ने०काल—म०१६४८ फाल्गुन सुदी१०। पूर्णं। बेष्टनसं०३२। प्राप्ति स्थान — दि०जैन स्रवताल पत्रायनी मदिर प्रतवर । विशेष —प्रति स्वर्णाक्षरों मे लिखी हुई है। चिम्मनलाल ने प्रतिलिपिकी थी।

विशेष---हिन्दी टब्बा टीका सहित है। बहुत सुन्दर है।

४६६. प्रतिसं० २७ । पत्र स० १४ । ले०काल—ः । पूर्णः । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान⊸ उपरोक्त मर्दिरः ।

४६७. प्रतिसं० २ ६ । पत्र स०४७ । ले०काल स०१८८१ । पूर्णा । वेष्टनस०२४७ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पंचायनी मस्टिर, भरतपुर ।

विशेष-हिन्दी धर्थ सहित है तथा ग्रक्षर मोटे हैं।

४६८. प्रतिसं० २८ । पत्रस० ६३ । ले०काल— 🖂 । पूर्णः । वेष्टनस० १८४ । प्रास्ति-स्थान— दि० जैन पश्रायनी मंदिर, भरनपुर ।

विशेष---मामान्य अर्थ दिया हुआ है। इस मन्दिर में तन्तार्थ सुत्र की १३ प्रतिया ग्रीर हैं।

४६९ प्रतिसं०३० । पत्रस०१६ । ले०काल----× । पूर्णः । बेष्टनस०१२१ । प्राप्ति-स्थान----दि० ग्रेव पत्रायती मन्दिर, बयाता ।

४७० प्रतिसं**० ६१** । पत्रसः २७ । ले०काल---------------------- १८३६ । पूर्गा । अष्टनस० ७२ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन पश्चायती मदिर, बयाना ।

विशेष---प्रति हिन्दी नथा टीका सहित है।

४७१. प्रतिसं० ३२ । पत्रस० २१ । लेश्काल--स० १६०४ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ६६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन छोटा मन्दिर, बयाता ।

विशेष--इमी मन्दिर में दो प्रतिया और है।

४७२. प्रतिसं० ३३ । पत्रस० २० । ले०काल — 🗴 । पूर्णः । बेष्टन सं० ६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर, कामा ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। इसी मदिर मे दो प्रतियां ग्रीर है।

४७३. प्रतिसं० ३४। पत्र स० २०। ले०काल— 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रन स० २०६। प्राप्ति -स्थान—दिः जैन महिर दीवानती, कामा ।

विशेष -- प्रति हिन्दी टीका महित है ।

४७४. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० १२ । लेब्काल— 🔀 । पूर्णं । बेष्टनस० १६ । प्राप्ति -स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष-नीने रङ्ग के पत्रो पर स्वर्गाक्षरों की प्रति है।

४७५. प्रतिसं० ३६ । पत्र स०१२ । लेश्काल $- \times$  । पूर्णे । बेष्ट्रन स०१०१ । प्राप्ति-स्थान -िव० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

४७६. प्रतिसं० ३७ । पत्रस० १२१ से १६२ । ले॰काल — 🗴 । सपूर्ण । बेष्टन सं० ११० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - प्रति हिन्दी ग्रर्थं सहित है ।

४७७. प्रतिसं०३८। पत्रस० २१।ले०काल—स०१८६०। पूर्णं । वेष्टन सं०३३४। प्रास्तिस्थान—उपरोक्त मन्दिर।

४७८. प्रतिसं० ३६ । पत्रस० १६ । ले॰काल — × । पूर्ण । वेष्टन स० ६८ । प्राप्ति - स्थान — दि० जंन पचायती मन्दिर हण्डावालो का, डीग ।

४७६. प्रतिसं० ४०। पत्रस० ७०। ले॰काल-१६४४। पूर्ण । बेष्टन स० ६६। प्रास्ति-स्थान-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-हिन्दी ग्रथं सहित है।

४८०. प्रतिसं० ४१ । पत्रस० १२ । ले०काल $-\cdot \times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । प्राप्ति-स्थान-द० जैन पवायती मन्दिर करोली ।

४**८१. प्रतिसं० ४२ ।** पत्रस० २-१६ । ले०काल --- × । बपूर्ण । वेष्टन स० ७७ । जी**र्ण ।** प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर बहा बीसपधी होसा ।

४**८२. प्रतिसं० ४३ ।** पत्रस० ८ । ले०काल — 💢 । पूर्ण । वेष्टन म० ४२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४८३. प्रतिसं० ४४ । पत्रतः० २० । लेकाल — 🗴 । पूर्णः । बेष्टन स०६४ से १०१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भाटवा (राज०) ।

४६४. प्रतिसं० ४५ । पत्र स०११ । लेब्काल — स०१६६७ । पूर्ण । बेप्टन स०६५ से १०१३ प्रास्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-र्विश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिधि की थी।

४८५. प्रतिसं० ४६ । पत्रस० २८ । ले०काल — 🔀 । पूर्ण । बेष्टन स०१५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शंसाबाटी (सीकर) ।

विशेष--- लिपि मृन्दर है। प्रज्ञर मोटे है। हिन्दी गद्य में अर्थ दिया हुआ है।

४**८६. प्रति सं०४७ ।** पत्रस०२० । ले॰कान 💉 । पूर्गं । वेष्ट्रन स०१३२ । **प्राप्ति** – **स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेह्युर शेक्षावाटी (मीकर) ।

विशेष-प्रति मुनहरी है पर किसी २ पत्र के ब्रक्षर मिट से गये हैं।

४८७. प्रतिसं० ४६ । पत्रसः० १३ । ले॰काल - स० १८४३ झासीज वदी ७ । पूर्ण । वेकन स० १४३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

४६६. प्रतिसं० ४६। पत्रस० १६। ते०काल —  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स० १६५ । प्रास्ति-स्वान-स्व० जैन मन्दिर फनेहपुर शेषावादी (मीकर)।

विरोध -ऋषिमडल स्तोत्र गौतम स्वामी कृत और है जिसके पाच पत्र हैं।

४६६. प्रतिसं० ५० । पत्रस० ४२ । ले॰कालimes। पूर्णः । वेष्टन सं० १८६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष - एक प्रति भीर है। प्रति हिन्दी भ्रयं सहित है।

४६०. प्रतिसं० ५१। पत्रसं० १०। (ते०काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४**६१. प्रतिसं० ५२ ।** पत्रस० ६-१३० । ले॰काल सं०१५७७ चैत बुदी २ । पूर्णं १ बेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष-संस्कृत टीका सहित है। लेकिन वह प्रशुद्ध है।

प्रमाण नयैरिधनमः :—चत्वारि सजीवादीना तव पदार्थं तन्त्र प्रमाण भेद द्वं करि । नय कथिते भेद द्वं प्रमाण भवति । तय भवित विकल्प द्वय । तत्र प्रमाण कोर्थं । प्रमाण भेद द्वय । स्वार्थं प्रमाण परार्थं प्रमाण । तत्र च ध्वय प्रमाण को विशेष । प्रथानश्वत्तात्रातार्याद्व्यत्वात्रात्र स्वार्थं प्रमाण भवित । यत् प्रमानस्वतं भवत्व । स्वार्थं प्रमाण विकारमस्वतं । यत् प्रमानस्वतं । प्रमानस्वतं । यत् प्रमानस्वतं । परमार्थं प्रमाण तत्र्यं वचनात्मकः श्रृतं ज्ञानस्य विकल्पना एव प्रमाण विशेषः । नयः कोऽवः । त्रस्य कोर्यः । तस्य भेद-द्वय । द्वंश्यायंनय व्यवहान्त्रय । ध्विष्यस्य कोषः उपयाद्य भेद-द्वय । द्वंश्यायंनय व्यवहान्त्रय । ध्विष्यस्य कोषः उपयाद्य प्रमाणनसस्य । इति भावाषः ।।

४**६२. प्रतिसं० ५३ ।** पत्रस० २६ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ६०१ । **प्राप्ति** स्**यान**—दि० जैते लर्डेसलाप मन्दिर, उदयदुर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है एवं हिन्दी उब्बाटीका सहित है।

४६**३. प्रति सं० ५४**। पत्रस० २२। ले०काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टन स० १६६। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन ७.डेनवान महिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति टच्वा टीका सहित है ।

४६४. प्रश्ति सं० ५५ । पत्रस० १६ । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १३६—६२ । प्रास्ति स्थान दि० जैन मदिर कोटटियों वा हुँगरपुर ।

४६५. प्रति सं० ५६ । पत्रस० ६ । ने०काल imes । वेष्ट्रन स० ४०७ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर नषकर, जयपुर ।

४६६. प्रति सं० ५७ । पत्रस० २३ । लेक्बाल imes । वेष्टुन स० ४२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

 $\dot{\mathbf{v}}$ ६७. प्रतिसं० ५६ । पत्रसः ६२। ग्रा०११ $\mathbf{v}$ ँहृङ्खः । से० काल  $\mathbf{x}$  । बेष्टनसं०४३ । प्राप्तिः स्थान--- दि० जैन भिदर लक्ष्कर जयपर ।

विशेष--प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४**६८. प्रतिसं० ५६ ।** पत्रसं० ८६ । ले० काल 🗴 । वेष्टनसं० ४४ । **प्राप्तिः स्थान**— उपरोक्त मदिर ।

विशेष--प्रति सस्कृत टीका सहित है।

ं ४६६. प्रतिकां० ६० । पवस० २० । ले० काल × । पूर्ण । वेट्टन सं० ३५७ । १६० प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिदर समवनाथ उदयपुर ।

विशेष -प्रति संस्कृत टीका सहित है।

ें ५००. प्रति सं०६१ । पत्रसं०२४ । ले० काल × । पूर्णं । वेष्ट्रनसं०३४ ६ । १६१ । फ्राफ्टि-स्थान— उपरोक्त मन्दिर । प्रति प्राचीन है ।

ः **५०१ प्रतिसं**० ६२। पत्रस॰ ६४। घा० ११३ ४ ४ ४ ४ ४ । ले०काल स० १६१२ चैत्र बुदी ६। पूर्ण । बेष्टन स० १३२। प्रास्ति स्**चान** — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष—प्रति सम्हत टीका सहित है। मरतपुर मे प्रतिलिपि करायी गयी थी। श्री मुखदेव की मार्फत गोपाल से यह पुस्तक खरीदी गयी थी।

चडायन जैन मिरिर कामा के रामसिक्ष कामलीवाल दीवान उमरावसिंह का वेटा वामी कामा के सावरण सदी ४ सं० १६९६ में ।

५०२. प्रति सं०६३ । पत्रस०६२ । ले॰ काल म०१८४६ ज्येष्ठ मुदी २ । पूर्णं । बेहुनसं०२१० । प्रास्तिस्थान —दि०जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष —प्रति हिन्दी टीक। सहित है । प्रानदीनाल दीवान कामावाने ने प्रतिनिधि कराकर दीवान जी के मदिर में चढाधी थी ।

५०३. प्रति सं०६४ । पत्रस० ७६ । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स०७२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है तथा मस्कृत टीका महित है ।

५०४. तत्वार्थं सूत्र भाषा र । पत्रस० ४३ । आ० १२१ ४७१ दश्व । भाषा — हिन्दी गष्ट । विषय—निदाना । र०कारा ८ । ले०काल म० १६१३ भादना सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टुन स० २३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर प्रलवर ।

५०५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २३ । ग्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ म । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० २४ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन अधवाल प्रचायनी मन्दिर श्रमवर ।

**विशेष** — हिन्दी में टिप्पग दिया हुया है ।

४०६. तस्वार्थं सूत्र टीका - श्रु तसागर । पत्रसः ११६ । घा०- ११४ ६ इश्व । भाषा — संस्कृत । विषय - मिद्धाल । २०काल - ४ । ते०काल सः० १७६४ । पूर्णः । बेष्ट्रतसं० ६३ । **प्रास्तिः** स्थान - दि०जैन मन्दिर प्रामनन्दनस्वामी बु दी ।

विशेष - जयपुर में वंते प्रयागदाम ने प्रतिनिधि की थी।

५०७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६६ । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टनसं० ७० । प्रास्ति स्थान—िव० जैन मन्दिर पनायती दूनी (टोक) ।

विशेष-ग्रन्तिम पत्र नहीं है। ग्रन्थ के दोनों पूटठे सचित्र हैं।

४०८. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४७६ । ले० काल स०१८७६ । पूर्ण । बेष्टनसं० २६।१४ ।

प्राप्ति स्थान-वि जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोंक)।

**५०६. प्रतिसं**० ४ । पत्रस० ३३३ । ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

बिशेष--प्रयाप्रस्य स० १०००। लिखायत टोडानगर मध्ये।

५१०. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ३११ । ले० काल स०१८२१ । पूर्ण । बेहनसं० २४१ । प्राप्तिः स्थान--वि० जैन पत्रावनी मन्दिर भरनपुर ।

**५११. प्रतिसं० ६**। पत्रसं० ४६३। ले०काल  $\times$ । पूर्एं । बेष्टनसं० १७४। **प्राप्ति** स्थान---- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष--प्रति भगद है।

११२. तस्वार्थं सूत्र माघा- महाचन्द्र । पत्र सं० ४ । घा० १२ × १६ इ.च. । भाषा--हिन्दी ग्रच । विषय-सिदान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । बेष्टन सं० २३८-८३ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इनागर ।

**ग्रान्तिम**--सप्त तत्व यर्गान कियो, उमास्वामी मृतिराध ।

दणाध्याय करिके सकल शास्त्र रहस्य बताय।

स्वत्य वचितका इम पर्यो. स्वल्य मती बुक्र चिन्ह ।

महाचन्द्र सालापुर रहि, पचन कहे ग्राधीन ।।

**४१३. प्रतिसं० २** । पत्रस**० ३७ । ले०काल स० १६**४५ काली बुदी ६ । पूर्ण । **बेष्टनसं०** २३३-४६३ । **प्राप्तिस्यान**ा दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष - महारक कनकवीति के उपदेश से हुंबडजातीय महता फनेलाल के पुत्र ने उदयपुर के सभवनाथ चंत्रालय में इस प्रति को चढाई थी। भीडर में गोकूल प्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

**५१४. तत्वार्धसूत्र माधा— कनककीर्ति ।** पत्रस्व २–६२ । प्राप्त ११ $\xi \times$ ५ इख । माषा— हिम्दी गर्छ । विषय —िमद्रान्त । २०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । स्पूर्ण । वेष्ट्रनस्व १६०४ । प्राप्त स्थान—अष्ट्राक्तीय दिव जैन मन्दिर धवमेर ।

**४१५. प्रतिसं** २ । पत्रस॰ ४५ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस॰ ३५।३६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज॰) ।

१९६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १९६ । ते०काल सं० १६४४ पौष बुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं० १११ । प्राप्ति स्थान—६० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विरोष—माचार्य विजयकीर्ति के णिष्य प॰ देवीचन्द ने प्रति लिखाई थी। लिखत माली नन्दू मालपुरा का।

**५१७. प्रतिसं० ४।** पत्र स० २२०। ले॰कास 🗴 । पूर्णः । वेज़न स० २७ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर बैर ।

**४१८. प्रतिसं० ४।** पत्र स० १८ । ले॰काल × । षपूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति**न स्थान---उपरोक्त मन्दिर । विशेष---धन्तिम पत्र नही है।

प्रह. प्रतिसं० ६१ पत्र स० १९७। ल०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४०६-१४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपर।

५२०. प्रतिसं० ७ । पत्र म० ८४ । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७६ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन महित्र बहा बीसपथी दोमा ।

**५२१ प्रतिसं० ८**। पत्र स० १६६। ग्रा० ११४७<sup>2</sup>, इन्धा ने०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० २३-५०। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दोसा।

विशेष --- रतनचन्द्र पाटनी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

विशेष-भवानीराम से प्रतिलिप कराई थी।

५२२ प्रतिसं० ६ । पत्र स० १६३ । वेब्काल स० १७८५ जेष्ठ मुदी १ । पूर्म । बेष्टनस० २५-४० । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष--- रहित ईसर ग्रजमेरा लालसोट वाले ने प्रतिनिधि की थी।

५२३. प्रतिसं० १० । पत्र म० ३७ । आ० १२ ४ ५ १ इन्छ । ले०काल स० १८६१ । प्रपूर्ण । बेष्टुन स० २७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दौमा ।

**५२४. प्रतिसं० ११** । पत्रसं० १२६ । स्रा० १०३ ×७३ इ.च. । ले•काल स० १८५६ चैत्र सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ८८−३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेप्रत्यथी दीसा ।

विशेष-प्रित उत्तम है । सेवाराम ने दौसा में प्रतिलिप की थी ।

५२५. प्रतिसं० १२ । पत्रस० क्वा लेकाल स०१०१२ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स०— २४ । प्राप्ति स्थान-र्िव० जैन मन्दिर स्रादिनाथ बुदी ।

**५२६. प्रतिसं० १३** । पत्रस० ४-६५ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । बेहन स० १८० । प्राप्ति स्थान—रि० जैन मन्दिर दबलाना (ब दी) ।

विशेष-इसका नाम तत्वार्थरन्तप्रभाकर भाषा भी दिया है।

५२७. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २० । ले०काल स० १७४४ माघ मुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स०— २१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर चेननदास दीवान पुरानी डीग ।

्रः **४२६. प्रतिसं० १४** । पत्रस० ७६ । लेब्बाल ् पूर्णः । वेष्ट्रन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान—** उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष -- तत्वाथंसूत्र की श्रतसागरी टीका के प्रथम ग्रन्याय की सापा है।

४२६. तत्वार्थसूत्र टीका - गिरिवर्रासह । पत्र म०- ७७ । भाषा-हिन्दी । विषय — सिदात । २०काल १२३६ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टुन म०६३ । **प्राप्तिस्थान** —दि**० जैन मन्दिर** दीवानजी, मरनपुर ।

विशेष--टीका वही में लिखी हुई है।

धान्तमें—ऐसे स्वामी उपास्वामी धावायं कृत दशाध्यायी मूल मूत्र की सर्वाविधिद्ध नामा सस्कृत टीका ताकी माधावविनिकात ते सक्षेप माण प्रयं लेके दीवान बालमुक्तर के पुत्र गिरिवर्गसह बाती कुभेर के के ध्रपती तुच्छ वृद्धि के घतुसार मूल मूत्रिन को धर्ष जानियं के लिए यह वयनिका रवी धौर स० १६३५ के उसेस मुदी २ रिवार के दिन सपूर्ण कीनी।

५२०. तत्वार्थसूत्र माषा -साहिबराम पाटनी । पत्रस०४० । झा० १११ॄँ ४६ इश्व । माषा--किन्दी (पण) । विषय--सिद्धात । र०काल स०१८६८ । लेकाल स०१८६८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६९ । प्राप्तिस्थान---रि० जैन छोटा मंदिर वयाना ।

श्विशेष—प्रत्य गुटका साइज मे है। प्रत्य का ग्रादि प्रन्त भाग निम्न प्रकार है— श्रादि भाग—सुमरण करि गुरु देव द्वादशागवाणी प्रणमि । सुरगमुक्ति मग मेथ, तुत्र शब्द भाषा कही।

पूर्वेकृत मुनिराय, लिखी विविध विधि नचिनका। निनह प्रथं समुदाय लिल्यो अन्त न लल्यो परे।

टीका-शिवमग मिलवन कर्मागर भजन सर्व तत्वज्ञ । बदौ तिह गुग लब्बिकौ वीतराग सर्वज्ञ ।।

ग्रन्तिम-कवि परिचय - है धजाना जिन ग्राध्नमी वर्ग वनिक व्यवहार ।

गोन पाटग्गी वश गिरि है बूदी ब्रामार ॥ २१ ॥ वमुदेश शन परि दमस्वतु माध विश्वति गुग्गब्राम ॥ अस्थरच्यो गुरुजन क्रपा भेवक साहिबराम ॥ २२ ॥

ऋषि खुशालवन्द ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी।

**५३१. तत्थार्थ सूत्र माया—छोटेलाल** । पत्रसं० ७५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय— मिद्रान्त । र०काल म० ११५६ । ने० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० **जैन** ५वायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष —-होटेलाल जी प्रातीगढ वालो ने रचाथा। कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है तथा गुटकासाइज है।

प्रदेश. तत्वार्थ सूत्र भाषा-पं**० सदामुख कासलीवाल ।** पत्रसं० ⊏०। घा० १२ ५ प्रदेश । माषा---हिन्दी (गक) । विषय-निदान । र०काल स० १६१० फाल्गुस बुरी १० । ले० कान स० १६१० । पूर्ण । केन्न स० ४० । प्राप्त स्थान----दि० जैन मदिर पाव्यंनाव टोडारायसिंह (टोक) ।

**१३३. प्रतिसं० २** । पत्रस० ८६ । ले० काल-स० १६७६ । पूर्णं । वेष्ट्रन स०२२ । प्राप्ति-स्थान----वि०जैन भ्रमवाल मन्दिर उदसपुर ।

५३४. प्रतिसं० ३ । पत्र म० १७७ । प्रा० १०३ ४५ १ इ.ख. । ले०काल स० १६५२ । घपूर्ण । वेष्टन सं०—२६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर दबलाता ब्रुदी ।

५३५. प्रति सं० ४ । पत्र त० ३७ । घा० १०३ ४ ५३ इख । ले०काल स १६१४ घातोज मुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ६।६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थताथ मन्दिर इन्दरगढ, कोटा । १३६. प्रति सं० १ । पत्र स० ७३ । लेक्शल — स०१६१३ । पूर्ण । बेष्टन सं० १२-३६ । श्राप्ति स्थान – दि० जैन पाण्येनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष-भैरववक्श ने प्रतिलिपि करायी थी।

५३७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६५ । फ्रा० १२ × ५इन्छ । ले०काल सं० १६१३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पंचायती मन्दिर घलवर ।

¥३८. प्रतिसं•७ । पत्रस॰ ६६ । झा॰ १२ ४ ४ इचा। ले॰काल सं॰ १९२४ । पूर्णी। वेष्ट्रसं•११२ । प्राप्ति स्थान---उपरोक्त मन्दिर।

५३६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६७ । ले०काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११६ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

५४०. प्रतिसं० ६ । पत्रसः० १०७ । ले०काल १६६२ चैत्र बुदी ४ । बेष्टनसं० २०। प्राप्ति स्थारः—उपरोक्त पन्दिर ।

 $\chi$ ४१. प्रतिसं० १० । पत्रसं० ६७ । द्या० १४ $\times$ ६ $\xi$  इश्व । ले०काल स० १६४६ भादवा बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स० २६ प्राप्ति स्थान – उपरोक्त मन्दिर ।

४४२. प्रतिसं० ११ । पत्रसन्४६ । मान १४३ ४ ४३ इ.स. । लेन्काल मन १६२३ । पूर्ण । बेष्टनसन् १४ । प्रास्ति स्थान—दिन्जन छोटा मन्दिर जयाना ।

५४३. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ७३ । द्या० १४ ८० इ.स. । ले०काल 🗴 । पूर्णी । बेष्टत स० ३६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पनायती मध्यि बयाना ।

५४४. प्रतिसं० १३। पत्रस० ७३। नि०काल स०११५५। पूर्म । बेष्ट्नस०१। प्रास्ति स्यान—दि० जैन पनायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

५४५. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ६३ । बा० १३ - ७ इङ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४४६. प्रतिसं०१४ । पत्र म०३०। ग्रा०१२ ४ ७ इन्छ। ले०काल म०१६४३ । पूर्णी। बेप्टन स०२३०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर पाण्डेनाथ चौनान, बृदी।

४४७. तत्वार्थसूत्र माषा (वचनिका)—पत्नानात्र नथी। पत्र म० ४४। घा० १० ४६ इ.च. मापा-राजम्थानी (हुदारी) गर्यः। विषय-मिद्धानः। र०काल म० १६२६। ले० काल स०१६४६ । पूर्णः। वेटन म० १६१। प्राप्ति स्थानः दि० जैन मन्दिर श्री महावीरजी दृदी।

विशेष-वीजलपुर मे प्रतिनिधि हुई।

४४म. प्रतिसं० २ । पत्र म० ६४। ले०काल स० १६४२ । पूर्ण । बेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बृदी।

४४६. तत्वार्यमुत्र माषा-(वचनिका)-जयचन्व खाबडा। पत्र म० ३६३। घा० ११३४ ६ इचा। भाषा-राजस्थानी (हुडारी) गद्य। विषय-निदात। र०काल स० १८६५ चैत्र सुरी ४। लेक्सल-स० १८८० माध मुदी ४। पूर्ण। वेष्टनस० ३१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली। १५०. प्रतिसं० २ । पत्रस० २६६ । प्रा० १३ ×७ इञ्च । ले॰काल सं० १६४१ माच सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टत सं० ११–३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष--- घम्नालाल मांगीलाल के पठनार्थ लिखी गयी थी।

४.४.१. प्रतिसं० ३.। पत्रसं० ३.४.४.। घा० १२ × ८.३ इ.ज.। ले० काल स० १६४४ वैशाखे स्वदी १.। पूर्णावेष्टन सं० १६६.। प्राप्तिः स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

५५२. प्रतिसं० ४ १ पत्रस० ३५४ । ग्रा० ११४६ इञ्च । ले० काल० स० १६१६ । वृर्ता । बेहनस० १४२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बृंदी ।

५५३. प्रतिसं० ५ । पत्रसं० २१० । घा० १४×६ है दःद्व । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । बेहुत स० ६ । प्राप्ति स्थाल---ति० जैन मन्दिर श्रीमहाधीर वृदी ।

**५५४. प्रतिसं० ६। पत्रस**्व ३५४ । ग्राण १०४८ इला। लेव कालव सव १८६५ । पूर्ण । केवन सव २१७ । **प्राप्ति स्थान**—विक्राने लच्छेलवाल प्रचायनी मन्दिर प्रसन्तर ।

५५५. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ५३ । घा० ११ ४५ इचा । ले०काल म० १६६७ । पूर्ण । केस्टनस्० १०३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पत्रायती मन्दिर अलवर ।

**४५६. प्रतिसं**० म । पत्र प $\circ$  २६ । ब्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  हन्ज । लेक्काल  $\times$  । सपूर्ण । बेहुन सं० २ । प्राप्तिः स्थानः — दि० जैन मदिर तेम्हपथी मालपुरा (टॉक) ।

११७. प्रतिसं**० ६ । पत्रतः ४**४७ । घा० १०१% ७} उत्ता । लेक्काल स० ११४ ⊏ । पूर्ण । बेहुनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्योका, नैगावा ।

**५५८. प्रति सं० १०। पत्रस**० ३०१। ब्रा० १३ × ६ इला। ले०काल स० १६३२ ब्रावाढ बुदी २। पूर्णा। बेप्टन म० ५१। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर बयाना।

**५५६. प्रति सं० ११।** पत्रस० ३२१। मा० १२१ × ५ द्वे डच । ले**०काल** सं० १६११ भाषाढ़ बुदी ६। पूर्ण । वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहबुर लेखावाटी (मीकर)।

**५६०. तत्वार्थसूत्र मोवा**— $\times$ । पत्रस**०२** । प्रा०११ $\times$ ६२ इख । भाषा—हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । र०काल— $\times$  । से०काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्ट्रन स० २६२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

**४६१. सत्वार्थसूत्र भाषा .....**। पत्रसं० ६। भाषाः—हिन्दी । विषय—निद्धात । २०काल— × । **ले०काल १७**४४ धाषाढ बुदी ६। पूर्ण । बेष्टन स० ४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर शैंग ।

**४६२. तत्वायंसूत्र भावाः**ःःः। पत्रस० ६४ । ग्रा० १२ $\times$ ६ $^1$ ६व । भाषा -हित्दी । विषय-सिद्धात । र०काल  $\times$  । तेश्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डींग ।

४६३. तस्वार्थसूत्र भाषाः.....। पत्रसं० ४३ । धा० ११ ४६३ इच । भाषा —संस्कृत---हिन्दी । विषय—सिदांत । र०काल ४ । ले०काल १९४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४ । प्राप्तिः, स्थान---दि० जैन मदिर दीवाव चेतनदास पुरानी डीग । विशेष-हिन्दी ग्रयं सहित है।

**१६४. तत्वार्थसूत्र भावा** '''''। वत्रसं∘ २२ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिखांत । र०काल-४ । ले•काल स०१६२६ माह मुदी११ । पूर्ण। बेष्टन स०१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

४६५. तत्वार्थसूत्र भाषा .....। पत्र तः ३४। भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय-सिंढात ।र०कात × । लेकाल × । पूर्ण। वेष्टन तः ४४६। प्राप्तिस्थान—दिः जैनपचायती मन्दिर, भरतपुर ।

५६६. तत्वार्थसूत्र सावा ...... । पत्रसं० ४१ । भाषा—हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्णै । वेक्न-स० ५५० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त सन्दिर ।

५६७. तत्वार्थसूत्र भाषा ....... । पत्रसः ५५ । भाषा-हिन्दी । लेक्काल १६६६ । पूर्ण । वेष्टन सं ०५४१ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

४६८. तस्वार्थसूत्र टीका ......। पत्रस० ८३ । भाषा —हिन्दी । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - गृटका साइज है ।

४६६. तत्वार्थसूत्र भाषा...... । पत्रस०-१४ । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । ने० काल × । पूर्णा । बेष्टन स० ४४४ ।

विशेष—हासिये के चारो ओर टीका लिखी है। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

५७०. तस्वार्थसूत्र भाषा ४ । पत्रस० ⊏२ । माषा— हिन्दी । र०काल — ४ । ले० काल⊸ १७६६ । पूर्णा । बेट्टन म० ४५६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--- अ्तमागरी टीकान्सार कनककीति ने लिखा था।

**५७१.** तत्वार्थसूत्र माaा  $\times$  । पत्रस $\circ$  ६१ । भाषा—किदी । विषय—सिद्धात । र $\circ$ काल  $\times$  । ने $\circ$ काल १६२४। पूर्ण । तेष्ट्रन स $\circ$  १८५८ । प्रास्ति स्थान  $\cdots$ उपरोक्त सन्दिर ।

विशेष --मृत महित है।

५७२. तस्वार्थसूत्र भाषा 📐 । पत्रमण्डला ह्रिट्रे ४ 🚱 इन्ह्या । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । जिपय-निद्धान । रेण्याल 🗴 । लेण्याल मण्डलिहर साह सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन सण्डल्द्र । प्राप्तिःस्थान — भट्टारकीय दिण्याले विष्याले स्वाराण्याले स्वाराणे स

१७३. तत्वार्यसूत्र—साषा 🔀 । पत्र म० ७६ । बा० ७१ ४ १ इच्छ । भाषा-संस्कृत हित्दी । विषय— मिद्धान । २० काः — 🗴 । ते०काल म० १६०४ झामात्र बुदी १ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ७२६ । प्रास्तिःस्थान—महात्रकीय दि० जैन मस्टिर खन्नेम ।

५७४. तस्वार्य सूत्र माखा र । पत्रस० ६६ । बा० ११३ imes ६ $^2$  इका । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—निक्षान । २०काल imes । स्वे०काल imes । पूर्ण । वहुन स० १०२७ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर खबसेर ।

५७४. तत्वार्यसूत्र माषा 🔀 । पत्रस०२०। मा० १२ 🗴 ६३ इचा । भाषा-हिन्दी ।

विषय—सिद्धातः । र०कालः — 🗴 । ले०काल—स० १८४६ सावनः सुदी ३ । पूर्णः । वेष्टनः स० १०२१ । प्रास्ति स्थानः — अट्टारकीय दि० जैन मदिर, घजमेरः ।

४७६. तस्वार्थसूत्र माचा × । पत्रस० ११६ । घा. ११३ × ५ इच । माचा — संस्कृत हिन्दी । विषय — सिद्धांत । र०काल — × । से०काल स० १८०७ ज्येष्ठ मुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० ७७। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन तेरहपयी मदिर, नैशावा ।

विशेष--जीवराज उदयराम ठोल्या ने तोलाराम वैद्य से नैगावा में प्रतिलिपि कराई थी।

१७७. तस्वार्षसूत्र— सावा × । — पत्रसं॰ ४२ । प्रा॰ ७३ × ४३ हवा । मावा — संस्कृत-कृत्वी । विषय—सिदात । र०काल 🗴 । से०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४४ । प्रास्ति स्वान— सम्बेतवाल दि० जैन पवासती मन्दिर धलवर ।

५७८. तस्वार्धसूत्र भावा  $\times$  । पत्रस० १४२ घा० १०  $\times$  ४२ इवा । भावा—संस्तृत, हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । ग्रकाल  $\times$  । तेशकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६३-४४ । प्राप्ति स्वास—हरू अने प्रदिर बडा बीलपंथी दीया ।

४७६. तस्वार्यसूत्र माचा  $\times$ । पत्रस० ६ मे ४३। घा० १८  $\times$  ६ इन । भाषा—सस्कृत हिन्दी । विषय— गिदात । २०६७त  $\times$ । से०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६-६। प्राप्ति स्थान—दिव जेन परित वहा बीमपथी दोगा ।

प्रतः तत्वार्थं सूत्र भाषा imes । पत्रसं० १११ । प्रा० १० × ६ र्रे इञ्च । भाषा— संस्कृत हिन्दी । विषय— निदान । र०काल imes । ते०काल स० १११३ मगसिर बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टुन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोट्यों का, नैगावा ।

प्रदर्शः तत्वार्थसूत्र भाषा ४ । पत्रस०११७ । सा० १ ४ ६ इञ्च । भाषा — संस्कृतः इन्दो । विषय — निद्धात । १०काल म० ४ । से ०काल म० १८६८ चेत्र मुदी ३ । पूर्ता । वेष्ट्रन स० २७ । प्राप्ति कथान – २० अने मदित को रोडो का नेतावा ।

विशेष--नैगावा नगर में लछमीनारायम् ने टोइराम जी हंडा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४२२. तरबार्षसूत्र भाषा ४ । पत्रस० २७ । घा० १२ ४ ७ । इच्च । माषा - सस्कृत, हिन्दो । विषय — सिद्धान । र-कास ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वेप्टन सं० ३० । **प्राप्ति स्थान —** वि० जैन मेहर कोट्यों का, तैयावा ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है।

**४**८३. तरवार्थसूत्र मावा $\times$ । पत्रसः ६३ । ग्रा०१० $\times$ ५ इञ्च । भाषा—हिली । विषय—तिढांत । २०काल  $\times$ । लेक्काल सः०१७८३ । पूर्णा । वेष्टन सः०१३८ । **प्राप्ति स्थान**—विर्कतन भववाल मतिर, उदयपुर ।

५८४. तस्त्वार्थतुत्र—भाषा  $\times$  । पत्र त० १०० । मा० = ६ $\frac{1}{5}$   $\times$  ५ $\frac{1}{5}$  इञ्च । भाषा— संस्कृत-हिन्दी (गद्य) । विषय — सिदान्त । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । तूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन यदिर बोरसनी कोटा ।

विशेष-हिन्दी गद्य टीका दी हुई है।

४८५. तस्वार्थसूत्र भाषा  $\times$  । पत्रस॰ ६० । मा॰ १० $^1_7 \times 3^1_7$  इञ्च । भाषा— सस्कृत—हिन्दी (गद्य) । विषय – सिद्धान्त । २०काल  $\times$  । से॰काल स॰ १८६२ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सण्डेलवाल प्वायती मन्दिर प्रतवर ।

**४८६. तस्वार्थमुत्र भाषा**  $\times$  । पत्रस० २४ । झा० १० $\frac{1}{4}$   $\times$   $\frac{1}{4}$  इज्च । भाषा— संस्कृत हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले०काल म० १६२३ । पूर्ण । वेप्टन संस्था ११३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**५८७. तत्वार्यसूत्र—भावा**  $\times$  । पत्रस०२–३६ । बा०१४ $\times$ ६ $^2_5$  इञ्च । भाषा — हिन्दी (गदा) । विषय—सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । भपूएँ । वेष्ट्न स०१६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर वृदी ।

**१८८. तस्वार्थसूत्र भाषा**  $\times$  । पत्रस**्** ६१ । ग्रा॰ १  $\times$  ४ $^3$  हञ्च । भाषा—सम्हत-हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत । र०काल $\times$  । ले०काल $\times$  । पूर्ण ।वेष्ट्रत स॰ १०४ । प्रास्ति **स्था**त—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दनस्वामी वृद्धी ।

विशेष-- लेखक प्रशस्ति का पत्र नहीं है।

४८६. तस्वार्थसूत्र भाषा × । पत्रस० ४० । झा० १३ ४ ४ इन्त । भाषा — हिन्दी गर्जा । विषय—सिदाल । र०काल ४ । लेकाल म०१६०७ द्वि० जठ बृदी १४ । पूर्ण । बेप्रन स०३० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर नागदी, बृदी ।

**५६०. तत्वार्थमुत्र भाषा** × । पत्र म० ३६ । आ० ११ ८५ इ.स. । भाषा निहन्ते । विषय—सिद्धात । र०काल— ४ । लेक्नाल स० १६६५ भादवा बुदी ४। पूर्ण । बेहन म० १४१० । प्राप्ति स्थान—भद्रान्तीय दि० जैन मन्दिर, अजभर ।

**४.६१. तत्वार्थमुत्र भाषा**  $\times$  । पत्र स॰ ६४ । ष्रा० १२  $\times$ ६ दश्व । भाषा — सम्बन्ध । हिन्दी । पिषय — सिद्धात । २०काल  $\times$  । लेक्कात स॰ १६४४ कार्तिक मुद्दी ४ । पूर्ण । यप्न स॰ १६७२ । **प्राप्ति स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**५६२. तत्वार्थसूत्र भाषा** × । पत्र म० ४३ । षा० ११×५६ खा । भाषा -सस्ता । हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल— ४ । ले० काल—स० १६०१ श्रावला सुदी ५ । पूर्ण । बेपून स० १४-११ । **प्राप्ति स्थान**—सद्वारकीय दि० जैन सन्दिर ग्रजसर ।

**५६३. तस्वार्थमुत्र—भाषा**  $\times$  । पत्र त० १२ । ब्रा० ११ $\times$ ५ हक्ष । भाषा—िहन्दी । विषय—िहन्नता । र०काल त० १८६६ । लेक्सल त० १८६६ । प्रास्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर ब्रजभेर ।

**५६४.** तस्वार्थमुत्र भाषा  $\times$  । । पत्र म० २१ । ब्रा० १२  $\times$  ७ है इन्छ । भाषान्नाहत्तरी । विषय--मिद्रात । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । बेपून स० १४६० । **प्राप्ति स्थान**--मद्रारकीय **दि० जैन** मन्दिर, स्रजमर ।

५६५. तत्वार्थमुत्र भाषा ४ । पत्र स०१४१ । प्रा०१२} ४ = इश्व । भाषा —सस्कृत. हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल ४ । लेकाल स०१६४२ माह मुदी१२ । पूर्ण । बेस्टन स॰ १५७६ । **प्राप्ति स्थान**--- मट्टारकीय शास्त्र भण्डार ग्रजमेर ।

४६६. तत्वार्थसूत्र भाषा × । पत्र स०१६६ । घा०६ × ६ इवा । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल × । ले०काल स० १६४३ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०६२७ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन सन्दिर घनमेर ।

विशेष--- किशनगढ में प० विमनलाल ने प्रतिलिपि की।

४६७. तत्वायंसूत्र भाषा— $\times$  । पत्रस० ६१ । बाकार १० $\frac{3}{4} \times 9\frac{3}{4}$  ६व । भाषा—हिन्दी, गद्य । विषय—सिद्धान्त । २०कास— $\times$  । से०कास—स० १६३२ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ११४ । प्राप्ति स्थान—सण्डेलवास दि० जैन पत्रायती मन्दिर, ग्रन्तर ।

१९८८. तत्वाधंसूत्र भाषा × । पत्रस० १२७ । घा० १० है × १ इचा । भाषा — हिन्दी— (गत्र ) । विषय — मिदान । र०काल — × । ले•काल स० १८७७ घाषाढ बुदी २ । पूर्ण वेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टोक) ।

विशेष - श्लोक सं० ३००० प्रमास ग्रन्थ है।

१८६. तरक्षार्थसूत्र माषा  $\times$  । पत्र स० २५०। मा० १४ $\times$ ६ ६ इञ्च । भाषा —हिन्दी गद्य विषय मिद्रान्त । र०कास —  $\times$  । क्षे काल स० १८६३ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिट्र ने रहपूर्ध । मानपुरा (टोक) ।

६००. तस्वार्यसूत्र,भाषा  $\times$  । पत्रस० २२६ । सा० ५ $\frac{1}{2}$   $\times$  १ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा — हिन्दी गय । विषय — मिद्रात । रकाल —  $\times$  । लेकाल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टुन स० १४४ । प्राप्ति स्थान - नण्डेलवाल दि० जैन प्रवादनी मन्दिर, अलवर ।

६०१. तत्वार्थसूत्र भाषा  $\times$  । पत्र स० ६० । घा० ११ $\frac{5}{4}$   $\times$  ६ इञ्च । भाषा — हिन्दी (गव) विषय — सिदान । र०काल —  $\times$  । ने०काल स० १८०० मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेहन स० ६/३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भादवा राज) ।

विशेष-- मानपुरा मे प्रतिनिपि की गयी थी।

६०२. तत्वार्थसूत्र भाषा— : । पत्रस $\circ$  ३८ । प्रा॰—१०  $\times$  ४ है इन्छ । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय — सिद्धान्त । र $\circ$  काल $\sim$   $\times$  । ते $\circ$  काल $\sim$   $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  ३६-२३ । प्रारिः स्थान —दि $\circ$  जैन मंदिर कोटडियों का हु गरपुर ।

**६०३. तत्वार्थसूत्र** भाषा  $\times$  । पत्रस० ७६ । प्रा०—१२ $\frac{3}{5} \times 6\frac{1}{5}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी गय । विषय--सिद्धान । र०काल --  $\times$  । से**०काल**—स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० २५ । प्रास्ति स्थार,—दि० जैन सदिर दीवान चेतनदास पूरानी डीग ।

**६०४. तत्वाधंसूत्र** माषा imes । पत्रस $\circ$  २६ । प्रा $\circ$  ११ imes ७ इञ्च । भाषा—सस्कृत—हिन्दी । विषय—सिद्धान्न । र $\circ$ काल— imes । ले $\circ$ काल imes । पूर्णं बेष्ट्रन स $\circ$  ११६ । प्राप्ति, स्थान—दि $\circ$  जैन लंदेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है।

६०५. तत्वार्षसूत्र माता—  $\times$  । पत्रसं० ५१ । मा० १० $\frac{3}{4}$   $\times$   $\frac{3}{4}$  इत्त्व । भाषा— हिन्दी गर्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल—  $\times$  । ते०काल—  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १५६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पंचायती मदिर करोली ।

विशेष --- केवल प्रथम भ्रष्याय तक है।

६०६. तत्वाधंसूत्र भाषा । पत्रस्क ४६। मा० १० $\frac{1}{4}$   $\times$ ६ इञ्च । भाषा—हिती । विषय—सिद्धान्त । र०काल—  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रतसंक—म्ह । प्राप्ति स्थान— दि० .जैन खण्डेनवाल मन्दिर, उदयपुर ।

६०७. तत्वार्थसूत्र भाषा —  $\times$  । पत्रसः १०० । ग्रा०—११३  $\times$  ५३ इन्त । भाषा—हिंगे गद्य । विषय—सिद्धान्त । र०काल—  $\times$  । ते०काल—  $\times$  । प्रपूर्ण । वेण्टन सः०३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष-केवल प्रथम प्रच्याय की टीका है और वह भी अपूर्ण है।

६०७ (क). तस्वार्थसूत्र भाषा ४ । पत्रसंब्देश । ग्रा॰—१२३, ४ ६ इञ्च । रब्जाल । से॰ काल स॰ १६१६ । पूर्ण । बेष्टनसंब २६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मदिर ।

विशेष-हिन्दी टब्बा टीका सहित है। ज्ञानचद नेरापथी ने दौसा मे प्रतिलिपि की थी।

६०८. तस्वार्थसूत्र वृत्ति—  $\times$  । पत्रस्व ४०। प्रा॰ ५ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  दश्च । भाषा—सस्त्रत । विषय—सिद्धान्त । र॰ काल $-\times$ । ले॰ काल $\times$ । पूर्ण। वेष्टनस्व ११। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—म्बन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्रीमदुमान्वामी विर्वित तत्वार्थसूत्र तस्य वृत्तिस्तत्वार्थदीपिका नाम्नी समाप्तम् । इस वृत्ति का नाम नत्वार्थ दीपिका भी है ।

६०६. तप्तार्थसूत्र वृक्ति —  $\times$  । पत्रसः ३८४ । झा० १०  $\times$  ५ $\frac{3}{4}$  दृष्ट्य । भाषा — सस्कृत । विषय — सिद्धात । र०काल —  $\times$  । ते० काल — स० १७६१ कागृगा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

**६१०. तत्त्वार्थसूत्र यृति**—  $\times$  । पत्रस० २३ । सा० १२  $\times$  ६ इञ्च । आ**धा**—सस्स्त । विषय-- सिद्धान । र०काल —  $\times$  । लेकाल —  $\times$  । प्रपूर्ण । बेक्टन स० १६२-८० । प्राप्ति-स्थान - दि० जैन मिरिर कोटेडियो का हु गरपुर ।

६११. तस्वायंसूत्र वृत्ति—  $\times$  । पत्रसः ६४ । भाषा—मन्द्रन । विषय—मिद्रालः । र०काल— $\times$  । सपूर्णं । वेष्टनसः ११।३२४ प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मंदिर, उदयपुर ।

विशेष-- प्रति प्राचीन है।

६१२. त्रिभंगीसार-नेमिचन्द्राचार्य। पत्रस॰ ७४। प्रा० ११×५ डच्चा भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान। र०काल × । ले०काल स० १६०७ वैज्ञाल बुदी १०। पूर्ण । बेष्टनसं० १६२ । प्राप्ति स्थान। ग० दि० जैन मन्दिर प्रजोर ।

६१३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६१ । ले॰काल सं० १६३३ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० २६२ । प्राप्ति

स्थान - दि॰जैन पचायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष-हिन्दी टीका सहित है तथा टीकाकार स्वरचन्द ने सं० १६३३ मे टीका की थी।

६१४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ३३ । ले०काल — 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवासती मन्दिर, डीग ।

विशेष--कठिन शब्दों का धर्थ भी है।

**६१५. प्रतिसं० ४** । पत्रसं० ५६ । ले०काल—× । अपूर्ण । बेष्टनसं०१६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**६१६. प्रतिसं० ५**। पत्रस**० ४**४ । घा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  । र० काल —  $\times$  । लिपिकाल —  $\times$  । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

६१७. त्रिभंगीसार टीका—विवेकनिय । पत्रस० ४६ । घा० १२ × ५, इन्या। प्रापा—सम्बर्गा विषय—सिद्धान । टीकाकाल—— ४ । ने०काल स० १७२७ - घ्रासात्र बुदी ३ । पूर्णे । वेप्टन स०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी वृदी ।

**६१६. प्रतिसं० २। पत्रस० ६७ । ग्रा० ११** × ४ है इञ्च । ले० काल--- < । पूर्ण वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान-**---वि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

६१६. प्रतिसं० ३। पत्रसं० ६७ । झा० ११ 🗴 ४३ इथा । ले०काल— 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिरर दीवान जी, कामा ।

६२०. त्रिभंगीसार भाषा  $\times$  । पत्र स $_{\circ}$  १८ । घा० १  $\times$  ६ इञ्च । भाषा —िहत्दी (गर्य) । विषय —िसिद्या र०काल —  $\times$  । ले०काल स $_{\circ}$  । घपूर्ण । वेट्टन सं० १७१ । प्राप्ति स्थान —िदं जैन घप्रशाल सन्दिर उदयपुर ।

**६२२. त्रिभंगीसार भाषा**  $\times$  । पत्रसं० २२ । भाषा—हिन्दी । विषय — र०काल —  $\times$  । ते॰ काल —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३७५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर ।

६२३. त्रिभंगी मुबोधिनी टोका—पं० ग्राशाघर । पत्रसं० २७। घा०११३ × ४। माषा—सरकृत। विषय—सिद्धात । र०काल— × । तिपिकाल—स० १७२१ माह मृदी १०। वेष्टन स०२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर।

विशेष-ग्रथ समाप्ति के पश्चात् निस्न पक्ति लिखी हुई है-

''यह पोथी मालपुरा का सेतावर पासि लई छै। तातै यह पोथी साह जोधराज गोदीका सांगानेर वालो की छै।''

**६२४. प्रतिसं०२ । पत्रस० ८६ ।** लिपिकाल—स० १४८१ घासोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष -- हस्तिकान्तिपूर में गंगादास ने प्रतिनिधि की थी।

६२४. त्रेपनमाव चर्चा—  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४ । प्रार् $\leftarrow$  ६ $^2$   $\times$  ४ $^3$  इञ्च । भाषा— हिन्दी । सिषय—चर्चा । र०काल—  $\times$  । ले॰काल स $\circ$  १८७३ । पूर्ण । बेप्टन स $\circ$  ६४ । प्राप्तिस्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर पचायनी इनी (टोक्) ।

विशेष - अजमेर में प्रतिलिपि की गयी थी।

६२६. दशवैकालिक सूत्र $-\times$ ा पत्रसः १८ । माषा—प्राकृत । विषय-प्रागम । र०काल $\times$  । लेकाल सं ० १७५३ । पूर्णं । वेष्ट्नसं ० ७४७ । प्रास्तिः स्थान— दि० जैन प्रवासती अन्दिर, मन्तपुर ।

विशेष--गुजराती (लिपि हिन्दी) टीका सहित है गायाग्रो पर ग्रथं है।

६२७ प्रतिसं० २ । पत्रसं० १७ । ले०काल—स०१८२६ । पूर्णं । वेष्टनसं० ४६० । उपरोक्त मदिर । दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

६२८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २६ । प्रा॰ ६ $\frac{2}{7} \times \frac{1}{7}$  । लेकाल स० १६७६ माह बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । प्रास्ति स्थान—(६० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्यासह (टॉक) ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**६२६. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० २० । घा० १२३ × ६ इञ्च । ले०काल स० १५६१ । पूर्ण । वेष्टुन स० ११८ । प्रा**प्ति स्थान** – वि० जैन ब्रग्नवाल मस्दिर, उदयपुर ।

विशेष —सवत् १५६१ वर्षे प्रथम आवर्ष मुदि ३ शनौ ज्ञानावरगादिक कर्मक्षयार्थ तेजपानेन इद ग्रंथ स्वहस्तेन लिखितं।

६३०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६१ । प्रा० १० imes ४ $^2_2$  इञ्च । ले०काल स० १७४१ माघ सुदी २ । पूर्ण । बेष्टनस० १५१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

**६३१ द्वयसमुख्या-कजकोति ।** पत्रस $\circ$ २। प्रा $\circ$ १२  $\times$  १ । भाषा—सम्ब्रत । विषय मिद्रान्त । र०काल —  $\times$  । लिपि काल $\circ$ —  $\times$  । वेष्टन म $\circ$  ६ **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  वैन मंदिर सकर जयपूर ।

विशेष - गुभवन्द्र की प्रेरमा से कजकीति ने रचता की थी।

६३२. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । छा० ११ imes ५ । भाषा—सम्ब्रुत । विषय—सिद्धान्त । र०काल imes । विपिकाल — imes । वेष्टुन स० ७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष---प्रति टब्बा टीका सहित है ।

६३४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । छा० ११imes५ इ.स. । ले०काल— imes । पूर्ण । बेष्टुनस० २ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर लक्कर. जयपुर ।

विशेष--- प्रति सस्कृत टीका सहित है । इस मन्दिर में सस्कृत टीका सहित ४ प्रतियां ग्रीर है ।

६२५. प्रतिसं०३ । पत्रस०७ । मा०११ x ५ इश्व । विषि स०१६६६ । वेष्ट्रनसं०५ । प्रास्तिस्थान — उपरोक्त मन्दर । विशेष---प्रति संस्कृत टीका सहित है। भाषायं हरीचन्द नागपुरीय तपागच्छ के पठनायं प्रतिलिपि की गई थी।

विशेष--इस मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे ४ प्रतिया धौर है।

६३७. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ४ । ले०काल — स०१७४० । पूर्णं। बेष्टन स०३१४ । प्राप्ति— स्थान— द० जैन सदिर दीवानजी कामा।

विशेष - इस मन्दिर मे ४ प्रतिया और हैं जो संस्कृत टीका सहित हैं।

६३८. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० २१ । ले०काल — रा० १७२६ फालगुन सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन सं० २२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पनायनी मंदिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष--हिन्दी अर्थ सहित है।

६३६. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ४ । लेश्काल— 🗙 । पूर्णा । वेष्टनसं० ७ । २० । प्रास्त्रि— स्थान—दिल् जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

६४०. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ४ । ले०काल—स० १७६८ जेग्ठ सुदी १२ । पूर्ग ! वेष्टनस०-५६-१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडाग्यांसिह (टोक)

विशेष--गोनेर में महात्मा माहिमल ने प्रतिलिपि की थी।

६४१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४ । ले०काल — ग० १६०० माह बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनस०-२७ । प्राप्ति स्थान — दि० जेन सन्दिर पार्यनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

६४२. प्रतिसं० १०। पत्रस० २४। तेकाल — 🗵 । पूर्णः । बेष्टनस० ८७।१६१। प्राप्ति स्थान - -दि० केत सभवनाथ मस्तिर उदयपुरः।

६४४. प्रतिसं० १२। पत्रस० ५६। लेकालः - 📐 । पूर्णः । वेष्टनस० २४५ । आदिः स्यान — दि० तैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बून्दी ।

विशेष---प्रति सस्कृत टीका सहित है।

६४५. प्रतिसं० १३। पत्रसं० १०। ले०काल-सं० १९५२ सावन सुदी ६। पूर्ण । बेहनस०-१०६। प्राप्तिः स्थान-- दि० जैन मन्दिर पाश्वेनाथ चौगान बूंडी।

विशेष-भगडावत कस्त्रचन्द के पुत्र चोकचन्द ने लिखी थी।

६४६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ४ । ले०काल---सं० १८७= माह बुदी २ । पूर्णं । वेष्टनस० -९६० । प्राप्तिस्थान --- दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

विशेष---प॰ हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६४७. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० ४ । लेब्काल -- 🔀 । अपूर्ण । बेष्ट्रन सं० १३ । प्राप्तिस्थान--

दि॰ जैन मंदिर दबलाना (बृन्दी) ।

६४८. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ११ । घा० ६x ४ इन्द्र । ले०काल — x । पूर्ण । वेष्टन सं०-१११-६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर, इन्द्रराज ।

विशेष---एक प्रति भीर है।

६४६. द्रतिसं० १७ । पत्रसं० १४ । लेकाल—स० १७१३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६८-१<sup>४१ ।</sup> प्राप्तिः स्थान—दि०जैन मन्दिर कोटडियों का ड गरपुर ।

विशेष--पाडे जसा ने नागपूर मे प्रतिनिधि की थी।

६**५१, प्रतिसं० १६**। पत्रस•१७। द्या० ८<sub>१</sub> x ४१ इखा। ले०काल—स० १६४६ सावन बुदी १३। पूर्गा । वेष्टनसं० १५०। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष--- प्रति स्वर्गाक्षरी है। तथा सुन्दर है। चम्पालाल ने प्रतिलिपि की थी।

६५२. द्वर्थसंग्रह टीका — प्रसाचन्द्र । पत्रस्व १४ । ध्रा० ११ ४४६ इस्त्र । भाषा—संस्कृत । विषय — सिद्धान्त । र०काल — ४ । लेप्काल — स०१८२० साथ सुदी १३ । पूर्णा । बेहनसंव ६८० । प्रास्ति स्थान — स०दि० जैन सन्दिर धनसेर ।

६५३. द्रव्य सम्ब्रह टीका—स्वस्त १५ । या० १०१ × ५१ दश्च । भाषाः—सन्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । लेकाल —स० १६२२ । पूर्णा । वेष्ट्रनस० १३३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पावर्षताच चौगान त्रु वी ।

६५४. द्रव्यसग्रह वृत्ति—ब्रह्मदेव । पत्रम० ११६ । मा० ११४४ इ.च. । भाषा सम्बन्ध । विषय—सिद्धानः । र०काल— ४ । ले०काल— ४ । पूर्णः । बेष्टनम० ३११ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन सन्दिर, प्रजोरः ।

६५५. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११७ । ले०काल 🗴 । पूर्णा । बेष्टनस० ६६ । **पाप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६५७. प्रतिसं० ४ । पत्रम० ६ । बा० १२३ ४५ इन्छ । ले०काल ४ । बपूर्ण । **बेहनसं०-**१४२ । **प्राप्तिस्थान** —दि० जैन स्रवनल मदिर, उदयपुर।

६४६. प्रतिसं० ४ । पत्रमः १०१ । लेक्शल-सः १९७१० नेष्ठ बुदी ३ । पूर्णः । बेष्टनसं०-१२२ । प्राप्तिस्थान --दि० जैन मन्दिर, प्रादिनाय बून्दी ।

विशेष -- स० १७१० ज्यंग्ट बुदी १ को धानायं महेन्द्रकीत्ति के पठनार्थ विद्यागुरु श्री तेजपान के उपदेश से वृदावती मे ज्यांगह के राज्य मे प्रतितिषि हुई थी।

६४९. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६४ । ग्रा० ६३ ÷४३ इत्त्र । से •काल—सं० १८०७ श्रापाइ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६।३१ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन सोगगियो का मन्दिर, करौली ।

६६१. प्रतिसं**०६ ।** पत्रसं०— १७१ । सा० ११×४ है इला । ले•काल—- × । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२ । प्राण्यः **स्थान**—-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६२. ब्रब्यसंग्रह वृत्ति— $\times$ । पत्रसं॰ २६ । मा॰ ११ $\times$ ६३ इन्त । भाषा—सस्कृत । विषय—सिदाला । रुकाल— $\times$ । से॰काल— $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स॰ १३३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन प्रतिट टीवानजी कामा ।

६६३. ब्रब्यसंग्रह टीका— × । पत्रस॰ ८ । मा॰ १० ४४ है दब । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—सिदान्त । र०काल— × । से•काल—स० १७६० ज्येप्ट सुदी ४ । पूर्ण । बेहन सं० ६८३ । प्राप्तिः स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६४. द्रश्यसंबह टीका— × । पत्र सं० ४७ । मा०—१११ ४७ इवा । बाया —सस्हत— हिन्दी । विषय —सिटात्र । र०काल— × । लेकाल— स०१ ८१७ वैज्ञास सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०२३।२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सीगासी मन्दिर करोली ।

**६६५. ब्रध्यसंग्रह माथा---** × । पत्र म०११ । लेक्काल-स०१८१७ । पूर्ण । बेहन स०३२।१६। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पवायती मन्दिर दुनी, टोक ।

विशेष--टोडा के नेमिनाय चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी। प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६६६. **इय्यसंग्रह माथा टीका।** पत्र स०४-१०। ग्रा०१० $_{2}^{1}\times 3$  हुन्य । लेक्सल— स०१७१६। वैशाल मुदी १३। ग्रपूर्ण। वेष्टन स०१५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय दृदी।

विशेष-लेखक प्रशस्ति।

सम्बन् १७१६ वर्षे बैसाल मासे शुक्तपक्षे १३ रबी सागपत्तन शुक्तपक्षारे श्री श्रादिनाथ जैरालये श्री काष्ट्रामधे नदीनदगर, विद्यामणे मे शामनेतान्वये तदनुकमेण मे श्री रत्भप्रवेश मे श्री अपकीति में श्री कमनकीति तत् दूरे में श्रुवनकीति विद्यमानं भे श्री कमनकीति तत् विद्या बद्धा श्री गमसागर लिखितं स्वय परनायं।

६६७. **ब्रध्यसम् भाषा** — 🗙 । पत्र स०—१७ । मा० १०२ ४६३ डम्ब । मापा-प्राकृत हिन्दी । विषय-मिद्धात । रचना काल-४ । लेखन काल सं० १६१० ज्येष्ठ बुरी भ्रमावस । पूर्णे । वेप्टन स० १३८ । **प्राप्ति स्थान**—(द० जैन पार्यवराथ मदिर इन्टरगढ, कोटा ।

विशेष---थी प्रमानाल वर्षेरवान पुत्र जिनदास ने इन्दरगढ को प्रपने हाथ से प्रातिलिपि की थी । प्रमस्ति निम्न प्रकार है---

सम्बत् उन्नीस-से-पचास शुम ज्येष्ठ हि मासा । कृष्ण्गा मावस चन्द्र पूर्णं करि चित्तहुलामा ।।

षष्ठानाल बषेरवाल मे गोत्र सुमधर । लघु सुत मै जिनदास लिखी इन्टरगढ निजकर। पठनार्थ मात्महित सुढ चित्त सदा रही नुमा मावना। हो मूल सुढ करियो तहां मो परि क्षमा रक्षावना।

६६८. द्रव्य श्रीप्तह टीका 🗴 । पत्र संख्या-४० । मा० १० x ४३ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-

सिद्धांत । रचना काल---- × । लेखन काल-सं० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान----िद० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष---वस्ततलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६६९. द्रव्यसंग्रह सटीक - × । पत्र स० २६ । ग्रा० ११ x ४ इन्द्र । भाषा-प्राकृत-हिन्दी (गद्य)। विषय—सिद्धात । र. काल × । ले० काल स० १८६१ माहबूदी ६ । पूर्ण। वष्टन सं० ४३ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन अग्रवाल प्रचायती मन्द्रिर अलवर ।

६७०. द्रव्यसंग्रह भावा-पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० ४३ । ग्रा० १२ X ४३ इस । भावा-प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर नागदी बदी।

६७१. प्रति सं०२ । पत्रस०२३ । स्रा०१०३ × ४ इल्बाले ० काल स०१७४१ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दवलाना, बुदी ।

६७२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७२ । लेखन काल स० १७६२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४०६-१५३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर कोटडियान, इ गरपर ।

विषय---सिद्धात । र०काल -- × । लेखन काल--- × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१५७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फतेहपूर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष --गाथाओं के नीचे हिन्दी ग्रदा में ग्रन्वाद है ---

**ग्रन्तिम**-सर्वेगन के निधान वडे पहित प्रधान।

बह दूपन गहित, गुन भूपण महित है। तिन प्रति विनवत, नेमिचन्द मनि नाथ।

मौधियो जुजाको, तुम अर्थ जे अहि । है।

ग्रन्थ द्रव्य सग्रह, गुकीर्ति में बहुत थोरो।

मेरी कक्ष बृद्धि ग्रल्प, शास्त्र सोमहित है। तात मैं ज्यह ग्रथ रचना करी है।

क्ट्र गुन गहिली जो एती बीनती कहित है।

६७४. द्रव्यसंग्रह भाषा-- × । पत्र स० २६ । ग्रा० १×७३ इञ्च । भाषा-सम्कत । हिन्दी । विषय--सिद्धात । र० काल × । लेखन काल × । वेपन स०६४६ । प्राप्ति स्थान--रि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-गरोशलान विन्दापक्या ने स्वय पठनार्थ लिखी थी।

विषय-सिद्धान्त । ले॰ काल-X। पूर्ण वि स १४। प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

६७६. द्रव्यसग्रह भाषा---<। पत्रमं० ६१। ग्रा० १०हे × ६ दला। भाषा--हिन्दी। विषय—सिद्धान्त । र०काल—× । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ३५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० **जैन** मेंदिर दीवानजी, कामा।

६७७. हटससग्रह भाषा — × । पत्रस०२ श । या० १० × ४ इ.च । साथा-हिन्दी । वयस—सिद्धात । रकाल × । ले०काल स०१७२१ कागुला बुदी द । पूर्ण । बेहनसं०७७।४६ । प्राप्तित झ्याना—दि० जैन प्रदिर भादवा (राव०) ।

विशेष-वद्यागम सागर ने प्रतिलिपि की थी।

६७८. द्रव्यसंग्रह भाषा— × । पत्रस०२० । मा०—१२ ४५३ दश्व । भाषा— हिन्दी। विषय—मिद्धान्त । र०कास— × । ले० काल — सं०१६२२ चैत्र मुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स०१०४ । प्राप्ति स्थान— ४० जैन प्वायनी मंदिर कामा ।

विशेष---माहिबी पाण्डे ने भरतपुर मे इच्छाराम से प्रतिलिपि कराई ।

६७६. द्रव्यसंग्रह् भाषा × । पत्र स०१३ । भाषा — हिन्दी । विषय-निद्धानः । र०काल-× । ने०काल १८३१ । पूर्णः । वेष्टन सं०२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मंदिर हण्डावालो का डीग ।

वशेष --- मधुपुरी में लिपि की गई थी।

६८०. द्रव्यसयह भाषा टीका — बसीघर । पत्रस० ११ । मा० ६ हे ४ १ हे इब । माषा— हिन्दी । विषय— सिद्धान्त । २०काल— ४ । ले०काल स०—१८१४ अयेष्ठ मुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० १४७ । प्राप्ति स्थान—पवायनी दि० जैन महिर करीली ।

विशेष--पडित लालचद ने करीली में प्रतिलिपि की थी।

६ म**१ प्रतिसं० २** । पत्रस० २ म । ले०काल— स०१८६२ वैशास बुटी १४ । पूर्णा। वैष्टनस०७०∼२ । **प्राप्ति स्थान**ं दि० जैन मदिर बडाबीस पथी दौसा ।

विशेष-- महात्मा गुलाबचद जी ने प्रतिनिधि की थी।

६ स. ह ट्यसंग्रह भाषा-पं० जयचन्द स्वाबड़ा। पत्रस०-१ ५,२०-४५। प्रा० स $\times$ ६ २७। प्राप्त -- राजस्थानी (३ डारी) गर्या। विषय - सिद्धान्त । २० काल् स० १ स्६३ । ले० काल् х । वेष्ट्रस० ६८७। प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान् - दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६ ६३ प्रतिसं०२ । पत्र म०--- ६४ । । ले० काल × । यपूर्ण । वेष्टन सं० २७ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन पत्रायनी मदिर भण्तपुर :

६ म<mark>४ प्रति सं०३।</mark> ण्यसः १३। ले० काल × । घपूर्णं वेष्टनसं०१०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन, मदिर श्री महाबीर बुदी।

६**६५. प्रतिसं० ४** । पत्रस्० १३ । घा० ६३ × ६ ड॰ब । ले० काल × । पूर्णः । वैष्टतस० २४ । **प्राप्ति स्थान** — दिगस्बर जैन मदिर श्री महावीर बढी ।

६८६ प्रतिसं**० ४** । पत्रस**०** १३ । ले०काल स०१६४० । पूर्ण । बेहनस०७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मटिर श्रीमहाबीर व दी ।

६८७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४० । ने०काल स०१६४४। पूर्णं । वेष्टनस० १४४ । प्राप्ति – स्थान — दि० जैन मन्दिरश्री महावीर बंदी ।

६८८. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ४० । ले०काल स० १६४२ । पूर्ण । देवृतसं० ४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, पार्शनाथ चौगान बुदी । ६८९ प्रतिसंक ६ । पत्रसंक ४४ । रक्ताल  $\times$  । लेक्साल संक १६४० । पूर्ण । बेहनसक् १३२/३३ प्राप्ति स्थान — दिक जैन मन्दिर पाइवंनाय इन्दरगढ (कोटा) ।

६८०. प्रतिसं०६ । पत्रसं०४७ । ले०काल स० १८७६ कार्तिक दुदी ७ । पूर्ण । वेष्टतसं०२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरह संधी दौसा।

विशेष--मैजराम गोधा वासी गाजी का थाना का टोडाभीम में ग्राह्मवाचनार्थ प्रतिलिपि की थी।

**६६१. प्रतिसं० १० ।** पत्रसं० ५० । ते०काल स०१६७० । पूर्णे । वेष्टनसं० १०२ । प्रारित स्थान—अग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर, अलवर ।

**बिलेव** — जहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

**६६२. प्रतिसं० ११ । पत्रस**० ४६ । ले०काल स० १८७६ कार्तिक बदी २ । पूर्ण । वेकनसं० ११७ । **प्राप्ति स्थान**— प्रग्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर झलवर ।

६६३. प्रति सं० १२ । पत्रसः —६६ । द्या० ८ रे ४ ५ हे इथा । ले० कान स०१८८० । पूर्यो । बेहन स०१६१ । प्राप्ति स्थान — लण्डेनवाल दि० जैन पत्रायनी मंदिर प्रलवर ।

६६४. प्रति सं० १३ । पत्रस०—४७ । ले० काल स० १६८३ पूर्ण । बेष्टनस०—१६१ (प्र) । प्राप्ति स्थान —उपरोक्त मन्दिर

६९५. प्रतिसं० १४ । पत्रस०—३६ । ले० काल— 🗴 । पूर्णः । बेष्टनसं०—३६।२१ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

६६७. धर्मकथा जर्चा $\times$  । प्रसः २२ । घा० ६ $\times$ ४३ डला । भाषा-हिन्दी प० । विषय-मिद्यान । र०काल-  $\times$  । ले० काल-स० १८२३ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४०४-१६४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मिदर कोटबियो का हु गरपुर ।

विशेष—प्रश्नोत्तर के रूपमे चवर्ि है। भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य पं० मुखराम के पठनार्थ भीलोडा में लिखा गया था।

६९८. नवतस्य गाया """। पत्रस० २४ । आ०—१० र्रे ४ ४ रेड् व्याः भाषा —माहत विषय—नौ तत्वो का वर्णन । र०काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्णः। वेष्टन सं० २४४ । प्रास्ति—स्थान—दि जैन मदिर दीवान जी कामा।

विशेष--हिन्दी टीका सहित है।

६९६. प्रति सं०२ । पत्रस० ६ । प्रा०१० × ४ है इन्हा । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टनसं०१०० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मरिर बडावीय पथी दीमा ।

विशेष-वालावबाय हिन्दी टीका महित है।

७००. नवतत्व गाया माषा —पन्नालाल चौधरो--पत्रस०४१ । म्रा०१०३ 🗴 ७ इव । भाषा--हिन्दी गव । विषय -- मिडान । र०काल १६३४ । न०काल स०१६३४ वैद्यासबुदी ६ । पूर्छ । बेष्टन सं • ३८।१७८ । प्राप्ति स्थान — पंचायती दि० जैन मंदिर धलवर ।

विशेष---मूलगायाएँ भी दी हुई हैं।

७०**१. नवतत्व प्रकररा—×** । पत्रस॰ ६। ग्रा० १०<sup>2</sup>, ४४ इचा भाषा—प्राकृत । विषय-नव तत्वो का वर्णन । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ५४६ । **प्राप्ति स्थान**-म० दि० क्रिक्सन्तिर ग्रवोरे ।

विशेष --- भीव भजीव भाश्रव बध सबर निर्जरा मोक्ष एव पुष्प तथा पाप इन नव तत्वों का वर्णन है। इस मण्डार में ३ प्रतियां भीर हैं।

७०२, प्रतिसं० २। पत्रसं० ६। प्रा०---११ ४ ४ इच । ले० स० १७८४ बैशास बुदी १। पूर्वं । बेहुनसं० २६२। प्राप्ति स्थान --- दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष -- हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

विशेष-४४ गायायें है।

७०४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ११ । लेक्काल—४ पूर्णः । वेहनसं० ३४२ । प्रास्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष — मूल के नीचे गुजराती गढा में उल्यादिया है। मृति श्री नेमिविमल ने शिव विमल के पठनार्थ इत्तराढ में प्रतिलिपि की थी। इस भण्डार में चार प्रतिया ग्रोर है।

७०५: प्रतिसं० ५ । पत्रस०१० । घा० १०२४ । इत्था । ले०काल— ४ । पूर्ण । बेहनसं० १७५-७५ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हूगरपुर ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। इस भण्डार में एक प्रति और है।

७०६. प्रतिसं०६ । पत्रस० ४ । ले० काल सं० १७७६ । पूर्णं । बेष्टन स०—१२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल पंचायनी मन्दिर प्रत्वदर ।

७०७. प्रतिसं० ७ । पत्रस $\bullet$ —६ । घा० १० $\times$  4 हे क्ष । ले० काल— $\times$  । पूर्ण वेष्टनस $\bullet$ —१६ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर लख्डेनवाल उदयपुर ।

विशेष-प्रति हिन्दी ग्रर्थ सहित है।

७०८. नवतस्य प्रकर्सा टीका —टीकाकार पं० भान विजय । पत्रस०—२१ । ष्रा०  $\mathbb{R} \times \mathbb{R} = \mathbb{R}$  भाषा — सस्कृत हिन्दी । विषय — सिद्धाल । २०काल  $\mathbb{R} \times \mathbb{R}$  ले काल सं० १७४६ माघ सुरी १३ । पूर्ण । वेष्टुन सं० —२१–६६ । प्राप्ति स्थान —२६० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडागर्यासह (टॉक) ।

विशेष -- मूल गथाए भी दी हुई है।

**७०६. नवतरव शब्दार्थ**—imes। पत्रसं०-१६। घा० १० $_{1}^{4} imes V_{2}^{3}$  इश्वः। भाषा —प्राकृतः। विषय—सिद्धान्तः। २०काल—imes। ले० काल सं० १६६६ वैशाल सुरी १। पूर्णः। वेष्टनसं०—५१।

विशेष--रचना का आदि अन्त भाग निन्न प्रकार है--

प्रारम्भ — जीवा १ जीवा २ पुत्रं ३ पावा ४ श्रव ५ सवरोय ६ ति अरगा ७ । बंधो म मुकोय ६ तहानव तत्ता हतिनायव्वा ॥ १ ॥

**ध्याच्या** — साबी बस्तुनज स्वरूप ने तत्व किंदेये। ते सम्यग्रशृष्टिनज जाण्या चाहियज । तेह भर्गी पहिली तेहना नाम लिखियह छाइ । पहिलिज जीव तत्व बीवज ष्रजीव तत्व पृष्प तत्व २ पाप तत्व ४ ष्राध्यव तत्व ४ सवर तत्व ६ निर्जरा तत्व ७ ।

माजीव तैरव पुण्य तत्व ३ पाप तस्व ४ म्राश्रव तत्व ६ सवर तत्व ६ निजेरा तत्व बंघ तस्व - मोक्ष तत्व ६ तथा ए नव तत्व होहि विवेकी एउं जाए।वा ।

श्चिन्तिम - अनजसिष्यगी श्रगातापुरमाल परियट्टो मुगोयब्बो । तेगांतानिम श्रद्धा अगागयदा अगानगरमा ।।

ग्रन्थ स॰ २७५। सबत १६६८ वर्षे बैगाल मासे कृष्मा पक्षे प्रतिपदा तिथी मोमवासरे ग्रागंतापुर मध्ये फोफलिया गोत्रे सा॰ रेखा नद्भार्या रावजादी पठनार्थ।

७१०. नवतत्व सूत्र  $\times$ । पत्रस०  $\subset$ । भाषा —प्राकृत । विषय —नव तत्वां का वरंगत । र० काल — $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० — ६६४ । प्रारित स्थान —दि० जैन प्रचायती मन्दिर, मरतपुर ।

७११. नाम एवं मेद सम्रह— 🗙 । पत्रसः - २४ । नाम - हिन्दी । विषय -- सिद्धात । रज्जाल -- 🗙 । लेज्जाल -- 🗴 । वेहलसः ४४४ प्राप्ति स्थान-दि जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर ।

७१२. नियलावित सुन्त —  $\times$  । पत्र म॰ २० । मा॰ १०  $\times$  ४) इन्छ । भाषा -- प्राइत विषय — स्राप्त । २०काल  $\times$  । ले॰ काल स॰ १७०१ कानुत बुदी १८ । पूर्ण । बेष्टुन स॰ १ । प्रारिद - स्थान — दि॰ जैन मदिर लडेलवाल उद्युप्त ।

७१३. नियमसार टीका — पदाप्रममलधारिदेव । पत्रतः १०३। प्राः ११९,४५) इत्रः । मापा — सस्कृत । विषय — सिद्धात । र०कान — × । न०कान × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १४६ । प्राप्ति — स्थान — भ० दि० जैन महिरा प्रजंभर ।

विशेष - स० १६४७ में भीमराज की बहु ने चढाया था। मूल्य १५ ४४ पैसे।

७१४. प्रतिसं० २ पत्रस० १६४ । ब्रा० ६२ ८६ हुन्छ । लेक्सन स० १०३५ । पूर्ण । बेहनस० १४२१ । प्राप्ति स्थान-- उपरोक्त सन्दिर ।

**७१४. प्रतिसं० २** । पत्रस० ⊏३ । खा० १०∫ ४ ५ इ.च. । ते०काल स० १७६४ सङ्गसिर बुदी ५ । पूर्यो । बेष्टनस० १२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर दीवानकी कामा ।

७१६. नियमसार भाषा – जयचन्द छाबडा । पत्रम० १४३ । ग्रा० १२५४ ७ इन्छ । भाषा –-हिन्दी गढा । विषय –- सिद्धान्त । २०कातः वीर स० २४४ ८ । ने०काल स० १९६४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११२ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीनान बन्दी ।

विशेष-चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

७१७. पंचपरावर्शन टीका  $\times$  । पत्रसं॰ ४। मा० १० $\times$ ४ है इब । भाषा संस्कृत । विषय – सिद्धात । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । येहन स॰ ४३ । प्राप्तिस्थान – म० दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

**७१८. पंचपरावर्शन वर्**शन  $\times$  । पत्रस**ः** २ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इन्छ । भाषा — मस्कृत । क्रिय-सिद्धात । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६५ । **प्राप्ति स्था**न — उपरोक्त मन्दिर ।

७**१६. पंचपरावर्त्तन वर्**शन × । पत्रस०३। प्रा० ५१४५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय -सिद्धात । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं०१०६६ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

७२०. **एंचररावर्शन स्वरूप** ४ । पत्रस**०४** । आ०१०३४ १ इत् । भाषा—मस्कृत । विषय— सिद्धात । र०काल—  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनमं० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

७२**१. पचसग्रह—नेसिचन्द्राचार्य।** पत्रस०२०। ब्रा०११३४४ इचा। भाषा—प्राहत। विषय—मिदात। र०काल — ४ । ले०काल —स०१८२१। घणूणं। वेष्टनम०१६१। **प्राप्ति स्थान**न स०दि० जैन मन्दिर मजभेर।

७२२. प्रति सं०२ । पत्रसं०६३ । ध्रा०१११ै,४४३ इका लेक्सल — 🗴 । पूर्गा। केव्रनमं०३०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

७२३, प्रतिसं. ३ । पत्र स० १७२ । स्रा० ११५० ४ इथा । लेक्काल — स० १७६७ त्रैत बुदी ११ । पूर्णा । वेष्टनस० १०१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर स्रादिनाथ भृती ।

विशेष -- जती नैग्गसागर ने पाडे खीवभी से अयपूर में लिखवायी थी। प्रति जीर्ग्ग है।

७२४. पजसप्रह दृत्ति—सुम्नतिकोति । पत्रस०३७४ । घा०१२४६ दश्व । भाषा— प्राकृत सरकृत । विषय — मिद्रात । र०काल — स० १६२० भादवा मृदी १०। ले०काल — स०१६२२ श्रावस्य दृदी १।पूर्ण । वेष्टृतस०२४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष - इमका दूसरा नाम लघ् गोम्मटमार टीका है।

**७२५. प्रतिसं० २ ।** पत्रस• २०४ । ले॰काल — स० १७=४ सावन सुदी ६ । पूर्स । बेष्टनस०— २९६ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-- भागरा में केसरीसिंह ने प्रतिनिधि की थी।

७२६. पच संसार स्वरूप निरूपर्ग  $\times$  । पत्रस $\circ$  १। आ $\circ$  १० $\S \times Y_0^2$  १७। भाषा — सस्कृत । विषय — मिद्रात । र $\circ$ काल —  $\times$  । ते $\circ$ काल — म $\circ$  १६३६ । पूर्ण । ते $\circ$ नुसु $\circ$ १७६ – ७५ ।

प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपूर।

विशेष--म॰ १६३६ वर्षे भासोज सुदी १२ उपाध्याम श्री नरेन्द्रकीत्ति पठनार्थ ब्रह्मदेवदामेन ।

७२७. पंचास्तिकाय-घा० कुन्यकुन्य । पत्रतः ३४ । घा० ६ ४ ४ ६वा । भाषा— प्रकृत । विषय—सिद्धात । ४०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । प्रास्तिः स्थान —दि० वैन परितः देरा

विशेष--- प्रति प्राचीन है।

७२ फ. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६ । घा० १०२ 🗶 ६ इ.ख । से०काल स० १६०६ । वेष्टन सं० ५०, १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष-प्रति संस्कृत टब्वा टीका सहित है।

७२६. पंचास्तिकाय-कुंबकुंबाचार्य । पत्रसं० १४८ । मा० ११६ ४ ४६ इच । मावा— प्राकृत । विषय—सिंद्रान्त । र०कास ४ । से०काल सं० १७१८ चैत्र मुदी ११ । पूर्ण । बेहन सं० १२४४ । प्रास्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष-प्रति अमृतचन्त्राचार्यकृत संस्कृत टीका एव पाण्डे हेमराज कृत हिन्दी टीका सहित है।

श्री रूपचन्द गुरू के प्रसाद थी। पाष्टे श्री हेमराज ने घपनी बुद्धि माध्रिक लिसित कीना। जे बहुश्रुत है ते सवारिक पढियो ॥६॥ इति पचास्तिकाय प्रथ समाप्त । सवत् १७१८ वर्षे चैत सुदी ११ दीतवार रामपुर मध्ये पचास्तिकाय प्रथ स्वहस्तेन लिपी कृता पाष्टे सेमेन इट ग्रात्मपटनार्थ।

७२०. प्रति सं०२। पत्रस०७६। ग्रा०१२× ४ इचा। से∘काल स०१४१३।पूर्णी। वेष्टन-सं०१७४२४१ प्रास्ति स्थान-सि०जैन मदिर सभवनाय उदयपुर।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । प्रणस्ति—सवत्सरेस्मिन १५१३ वर्षे ब्राण्विन बुदि ७ शुक्रवासरे श्री ब्रादिनाय चैत्यालये मलसवे " " " इससे ब्रागे का पत्र नहीं है ।

७२१. प्रतिसं•३ । पत्रसं•३०। घा० १००० ४४६ इथा । के•काल—× । पूर्णे । बेष्टन स०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

७२२. पञ्चास्तिकाय टीका-टीकाकार-प्रमृतचन्द्राचार्य । पत्र स० १० । प्रा०११३  $\times$   $\chi_{\gamma}^2$  । माथा---प्राहत-सरहत । विषय--- मिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले॰काल स० १५७३ माथ मुटी १३ । बेष्टुत स० २० । दि० जैन मंदिर सम्कर जयपुर ।

७३**३. प्रति सं०२ । पत्रस०१**१४ । ले•काल—स०१७४७ माघ बुदी १ । वेय्टन स०२६ प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - महात्मा विद्याविनोद ने फागी में लिखा था ।

७३४ प्रति स० ३ । पत्रस० ४६ । से०काल स० १४७७ प्राप्तोज बुदी ह**ा धपूर्ण।** वेष्टन सं० २२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १४७७ वर्षे प्राण्वित चुदि ६ बुधवारे निनित्तं तिजारास्थाने धल्लावसमान राज्यप्रवत्तं माने श्रीकारकावे माधुरावये पुष्करमणे म्हारक श्रीहेमचन्द्र तदाम्नाये ध्रमरवालाचये मीतन गोत्रे साम महादास तन्युत्र मा० धौषात्र तेनेद्र पचास्तिकाय पुस्तक निस्तान्य पंडित श्री साधारणाय पठनार्थं दत्तं ।

७३५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७७ । ले•काल सं० १६१४ कागुण मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन-सं० १६६ । प्राप्ति स्थान -- उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष -- राजपाटिकायां लिखितीय ग्रथ.

**७३६. प्रतिसं० ५ । पत्रत० १**३७ । घा० १३ × ५ इञ्च । ले॰काल सवत् १६३२ भादवा इदी ५ । पूर्णे । बेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान** — दि०र्जन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष — कुरुजांगलदेश सुबरांपप सुमस्यान योगिनीपुर मे प्रकवर बादशाह के शासनकाल में प्रथमाल जातीय गोयल गोत्रीय साह चांदणु तथा पुत्र सजराजु ने प्रतिलिपि कराई। लिखितं पाण्डे चंदू हरिचद पुत्र ∵ । प्रशस्ति विस्तृत है। पत्र जुटे काट गये हैं।

७३७. पंचास्तिकाय टीका-समृतचन्द्र । पत्रस० ४१ । घा० १०३ ×४३ इ.च. । भाषा— संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल × । मे०काल × । पूर्णं । वेष्टन स० २१२ । प्राप्ति स्थान— भट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

७३८. पद्मास्तिकाय टीका— × । पत्रसं∘ ४७ । प्रा॰ १० × ४ इञ्च । भ्राषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र०काल — × । ने०काल सं०१७४८ कार्तिक बुदी ७ पूर्ण । बेग्रन स०२०६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबत् १७४८ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे सतम्यातियौ शनिवासरे श्री विजय गच्छे श्री मट्टारक श्रीसमतिसागरस्रि तत् शिष्य मृनि वीरचद लिपीकृत श्रीसकवराबादमध्ये ।

७४१. पचास्तिकाय भाषा-हीरानंद । पत्रसं० १८६ । ग्रा० ६ ४ ४ है दुख । भाषा--हिन्दीपदा । विषय--सिद्धान्त । र०काल सं०१७०० ज्येष्ट मुदी ७ । ले०कान--स०१७११ । ग्रपूर्ण । बेष्टन स०१३१ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन ग्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-वीच के कितने ही पत्र नहीं हैं।

७४२. पंचास्तिकाय भाषा-पाण्डे हेमराज । पत्र स०१३ हः । माषा-हिन्दी पद्य । विषय— मिढान्त । र०काल— $\times$  । ले०काल—सं० १८७४ मगमिर मुदी १४ । पूर्ण । बेध्न स०३०१ । प्राप्ति स्थान—र्व० जैन पनायती मन्दिर मस्तपुर ।

७४३. प्रति सं० २ । पत्र स० १४४ । ते०काल—स० १८६४ । पूर्ण । तेष्ट्रन स० ३०४ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

७४४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १७६। ले०काल—१७२७ कार्तिक बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष— लिलाइतं साह श्री देवीदास लिखतं महात्मा दयालदास महाराजा श्री कर्मीसह जी विजय⊸ राज्ये गढ कामावती मध्ये ।

७४६. प्रतिसं**० ५।** पत्र स०११०। झा०१२ ई 🗴 ५ ई इचा। ले०कालः—स०१६२६। पूर्णः। वेप्टन स०१२२। प्राप्ति-स्थानः—दि० जैन मन्दिर, वयाना।

७४७. प्रतिसं० ६ । पत्र स०---(३१ । झा० ११ × ६ इचा । ले० काल स० १७४६ । पूर्णे । बेस्टन स० ३३७ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन मन्दिर बोरसलो कांटा ।

७४८. प्रति स० ७ । पत्र स० ६६ । म्रा॰ १२  $\times$  ६ इ.स. । भाषा—हिन्दी । विषय—निद्धाल । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० २०/२३ । जैन मन्दिर भाववा (राज०)

७४**६. प्रति स० प**्रत्न । स० ६७ । प्रा० ११र्हे ४ ७३ इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय-निद्वान । र०काल ४ । ले॰काल—स० १६३६ प्रासीज मृती २ । पूर्णः । वेष्टन सं० ४७ । प्रा**प्ति स्थान** —भटारकीय वि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७५०. प्रति स० ६ । प्र स० १३६ । प्राप्त १ $\frac{1}{2}$  प्रश्न । भाषा-दिन्दी (गण) विषय— सिद्धाण । २०काल  $\times$  । ले०काल म० १८४१ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ३१५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयास मन्दिर उदयपुर ।

७५१, प्रति स० १० । पत्र स० १४० । प्रा० १० ८ ४६ उच्च । नापा— हिन्दी गद्य । विषय—निद्वान । र०काल— ४ । लेकाल—स० १८०४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४०-६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष--- अन्तिम दो पत्रों में बह्म जिनदास कृत शास्त्र पूजा है

सं०१५७३ माघ मुदी

७५२. प्रति स. ११ । पत्र स० ११० । प्रा० १२ व्याहित हो । भाषा— हिन्दी । विषय—मिद्रान्त । २०काल— 🙏 । लेश्काल— स० १७४६ पोप सुदी ६ । पूर्ण । वेस्टन स० २४-६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीलपथी दोसा ।

७५३. प्रति स० १२ । पत्र स० १८१ । ग्रा०—१२×५ इश्व । भाषा— हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल— × । लेब्काल स० १८६२ माप मुदी १३ पूर्ण । वेस्टन स०३। **प्राप्ति स्थान**—दि० त्रैन मस्दिर तैरह पथी मालपुरा (टोक)।

विशेष-धनराज गोथा सुत रामचद ने टोडा मे मालपुरा के लिये प्रतिलिपि करवाई थी।

७५४. प्रचास्तिकाय भाषा—बुधजन—पत्र म०६३ । ग्रा० ११ $\times$ ५३ इन्छ । भाषा—हिन्दी प्रच । विषय—मिद्रात । र०काल स०१८८२ । ले०काल— $\times$  । पूर्ण । बंप्टन स०७२ । प्राप्ति स्थान—दि० तैन अग्रवाल प्रवाशनी मन्दिर अनवर ।

विशेष-- दीवान अमरचन्द्र की प्रेरम्मा से ग्रंथ लिखा गया।

७४५ । परिकर्माब्टक — पत्र स०१०। ब्रा०१२ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इ.ख.। प्राथा —हिन्दी (गर्छ) । विषय —िमदात ।  $^{7}$ ० काल imes । लेकाल — imes । ब्रुपूर्ण । वेष्टन स०५१७ । **प्राध्ति स्थान —िर्द**० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--गोम्मटसार की संहष्टि म्रादि का वर्णन है।

७५६. पितस्य मुक्त —  $\times$  । पत्र स० १। आ० ७ $\frac{1}{7}$   $\times$  ३ $\frac{3}{7}$  इन्छ । भाषा — प्रकृत । विषय — प्रापम । र०काल  $\times$  । ले०काल — स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । प्राप्ति स्थान — हि० जैन मन्दिर दबनाना ( बृदी ) ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है ---

सबत् १६४५ वर्षे श्रावरण बुदि द्वितीयायां सोमवासरे श्रीवृहत्त्वरतरगच्छे शृंगारहार श्रीमज्जिनांसहसूरि राजेप्वरारणा ज्ञिप्य कवि लालचन्द पठनार्थं लिखिनं श्री लामपुर महानगरे। इसके मागे श्री जिननप्रसूरि का पार्थनाय स्नवन (सस्कृत ) भी लिखा हमा है।

७५७. प्रतिसं० २ । पत्र स १४ । ग्रा० १० ४ ४ है इश्व । ले०काल— ४ । पूर्ण । वेस्टन स० १८६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

७५८, प्रतिसं० ३ । पत्र स० ८ । धा० ११×४२ ६ च । ले०काल — स० १६४५ वैशाल . सुदी ५ । पूर्ण । बेष्टनस० ६५३ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - इसी भण्डार में इसकी एक प्रति धौर है।

७**५६. प्रतिसं०४** । पत्रसं०२ से ५। घाट क्ट्रै ४ ५ इ.ख । ले**०**काल — ४ । घपूर्ण । वेष्टुनम०२०४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष--- प्रथम पत्र नहीं हैं । लिपीकृत जती कल्यागीन विजय गच्छे महिमा पुरे मकसूमावादमध्ये ।

७६०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १६ । बा० ११ ४४ है इश्वः । ले∙काल — ४ । पूर्णः । वेष्टनप०-१११ । प्राप्ति, स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना ।

विशेष - १०वें पत्र में साधु अनिक्षार एवं २४वें तीर्थकर दिया हुआ है।

**७६१. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ६ । घा०१०<sub>१</sub> × ४<sub>१</sub> इख । ले∙काल—स० १४६४ कानिक सुदी १४ । पुगां । वेप्रनम० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बन्दी)

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

सबन १५६५ वर्षे कार्तिक मुदी १४ सोमवासरे श्रीवोगिनीपुरे । श्रीवरतर गच्छ । श्री उद्देश निधान तत्त्रहे श्री श्रीपाल तत्पहे श्री श्री मेदि ऋषि मृति तत् शिष्य महासती रूप सुन्दरी तथा गृरा सुन्दरी पठिनार्षे कर्मक्षय निम्त । लिखन विश्वन ।

७६२. पार**ली सूत्र** $-\times$ ा पत्रस० १४। ध्रा० ६ $^{1}_{x}$ ४ इखा भाषा—प्राकृत । विषय— (चिंतन)। र०काल —  $\times$ ा सं•काल —  $\times$ । ध्रपूर्ण । बेष्टनस० २४६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर प्रिमिनन्दन स्वामी बुंदी ।

विशेष--१४ से बागे पत्र नही है। प्रति प्राचीन है।

७६३. प्रजापना सूत्र (उपांग) — 🗴 । पत्रस० ४४१ । बा० १०३ ४४३ दश्च । साथा — प्राहत । विषय — सामम दृष्य । र०काल — 🗴 । ते०काल — स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०४-२ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टॉक) । बिरोष—मलयायिरि सूरि विरिचत संस्कृत टीका के धनुसार टब्बा टीका है। पं० जीवविजय ने गुजराती भाषा टीका की है। टीकाकाल सं० १७८४।

७६४. प्रश्नमाला - × । पत्रतः २१ । मा० १०३ ४४६ दश्व । माषा —हिनी । विषय — वर्षा । रुकाल -- × । ते काल -- × । पूर्ण । वेहनतः १४४४ । प्राप्ति स्थान -- ४० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

. विशेष — सृदृष्टि तरिगर्गी बादि ग्रन्थों मे से सग्रह किया गया है।

. ७६५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २= । घ्रा० १२ $\frac{3}{2}$  ४६ $\frac{3}{2}$  इश्व । ले०काल-  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर फतेहपुर ( सीकर)

७६६. प्रश्नमाला वसनिका— × । पत्रस्व-—२६ । ग्रा॰ १२ ४ ५ दश्व । भाषा—हिन्दी गण । विषय—सिद्धात । र०काल— × । ले०काल—सं० १६६७ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०३७ । प्रास्ति— स्थान—दि० जैन मदिर नागदी (नेमिनाथ) इ.दी ।

**७६७. प्रश्नट्याकररा सूत्र** —  $\times$  । पत्रस० ५१ । भाषा—प्राकृत । विषय-मागम । र०काल $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनावनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है।

७७६. प्रश्नव्याकरण सूत्र वृत्ति—ग्रानयदेव गरिए । पत्रस० ११६ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  ४२७ । माया—प्राकृत सङ्कृत । विषय—प्रापम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन गन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष- श्री सविब्रहिब्हिरिए। श्रुतिनिध चारित्र, इसिए प्रशिष्येगासब्देवान्यभूरिणा विवृति इता प्रशन्याकरणागस्य श्रुत भक्त्या समासता निवृत्ति कुलनभभून चन्द्रद्रोणाच्यपूरि मृण्येन" पहित गरीन गुरुपावतप्रियेया न गुण्यतप्रियेना सभोषिता वय ।

७७०. प्रवनशतक--जिनवल्लभसूरि । पत्रस० ४७ । ग्रा॰ ११ ८४ इख । भाषा-- सङ्ग्रा । विषय--चर्चा । र०काल × । ते०काल स०१७१४ श्रवाड मुदो २ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०३०२ । प्रास्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति – स० १७१४ वर्षे अबाढ मुरी २ मुक्तवामरे श्री पाश्येनाथ चैत्यालवे श्री सरोजपुर नगरे भद्रारक श्री जगत्कीत्ति देवस्य शिष्य गुरादासेन इद पुस्तक लिम्बित ।

७७१. प्रश्नोत्तरमाला—प्रः। पत्रस० १३ । द्या० ११८४) दखः। भाषा—हिन्दीः। विषय—चर्चा । र०काल × । ले०काल—स० १६१७ । पूर्णः । वष्टनम० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्रवतल मन्दिर फतेपुर शेखावाटी मीकरः।

**विशेष**—मुदृष्टितरिङ्गिएि के श्राधार पर है।

ः ७७२. प्रति सं०२ । पत्रस०३ मा०१०३ ४५३ द्वा ले∘काल — स०१६२४ । पूर्णी । वेष्टन स०६३ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मदिर । ७७३. प्रश्नोत्तररत्नवाला स्वमोधवर्ष । पत्रतं०२। सा०१२४४ इचा भाषा— संस्कृत । विषय—चर्चा । र०काल ४ । लेक्काल-स०१७८६ । पूर्णः । वेष्ट्रन स०१२० । प्राप्ति स्थान— कि जैन मन्दिर बोरखती कोटा ।

७७४. प्रश्नोत्तरी— $\times$  । पत्रस० २६ । प्रा० १० $^1_2 \times ^1_2$  इन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय— सिद्धात । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६३—१०५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का, इंग्रपुर ।

७७५. **बासठ मार्गरा। बोल ।** पत्रसं० ४ से १ । माया—हिन्दी । विषय—सिद्धात । र०काल× क्रिकाल × । सपूर्ण । वेष्टनसं० ६२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

७५६. वियालीस द्वारागि— $\times$  । पत्रम० २३ । म्रा० १० ×७ $\frac{1}{4}$  इन्त । भाषा—हिन्दी । वियय-सिद्धात चर्चा । र०काल  $\times$  । ले•काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टुन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान** - पार्ध्वनाय दि० जैन मन्दिर पार्थ्वनाय. टोडाराय्सिह (टोक)

७७७. **बंधतरव - वेवेन्द्रसूरि । पत्रस**्ते । भाषा —प्राकृत । विषय —सिद्धात (वय)। रक्तान × । नेक्ताल × । पूर्ण । वेष्टनसं ७०६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पत्रावती मन्दिर भन्नपुर ।

७७६. प्रतिसं०२ । पत्रम०४ । ले॰काल × । पूर्णं। बेष्टनस०७२६ । प्रास्ति स्थान— उपरांक मन्दिर ।

७७६. भगवती स्त्र x । पत्रम० ६६० । ग्रा० १०३ x ५ इख । माषा—प्राकृत । विषय— ग्राम् । प्रकाल x । लेक्काल—स० १६१४ कार्तिक सुदी १० । बेष्ट्रन स० १४१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्त्रि नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक)

७८०. भगवती सूत्र वृत्ति— $\times$  । पत्रस० ३५–५२२ । धा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ इन्त्र । भाषा-सस्ह्रत । विषय- प्रागम ।  $^{7}$ ०काल  $\times$  । सं०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ३११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमणी कोटा ।

विशेष--- प्रारम्भ के ३४ तथा ४२२ से धाने पत्र नहीं है।

७८१. भावित्रभगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्रम० ३३४ । द्या० १० $_{i}^{+} \times$ ६ इच । भाषा प्राकृत । विषय —िमद्धान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स २१६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन प्रप्रवान मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है।

७६२. प्रतिसं० २ । पत्रम० ५१ । घा० ११imes१० ६७ । भाषा—प्राकृत । विषय —िमदात । imes०काल imes1 लेककाल imes1 पुर्तुं। बेहुनसं० ६१ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७६३. प्रतिसं० ३ । पत्रस॰ ३७ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६२ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

७६४. प्रतिसं**०४।** पत्रसं १४३। लेक्काल स०१७२६। पूर्णं। वेष्टन स ६३। प्राप्ति स्थान--उपरोक्त मन्दिरः। ७६४. भावसंग्रह-भृतमुनि । पत्रसं०१३ । घा०११६ 🗙 ४६ै । माया-प्राकृत । विषय-सिद्धाना । रुकाल — 🗙 । लिपिकाल — म०१७३४ । वेष्टासं०१७ । प्राप्ति स्थान—१६० जैन सन्दिर तक्कर

विशेष — घवावती कोट में साह श्री विहारीदास ने महात्मा हूंगरसी की प्रेरणा से प्रतिलिपि की थी।

७८६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६८ । लिपिकाल स०१७८७ माह बुदी ४ । बेष्टनसं०१८ । प्राप्ति स्थान – लपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - केषूरिण नगर मे दुर्जनप्रात के राज्य मे लिखा गया था। त्रिभंगीसार भी इसका नाम है।

७८७. प्रतिसं० ३। पत्रस० ४-४१। प्रा० १२३ × ५६७। लिगि काल० स०१६३७

प्राणाद दृहि १२। वेग्टन स०१६। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

**७८८. प्रतिसं**० ४ । पत्रस० ४६ । ले०काल स०१७४७ कार्तिक बुदी २। पूर्ण । वेष्टुनस०---२१६ । **प्राप्ति स्थान**----दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७८<mark>६. मार्गरगासत्तात्रिभयो-नेसिचन्द्राचार्य-</mark>पत्रस० १७ । भाषा—प्राहत । विषय— सिद्धांत । र०काल — × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ६६/२०१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर संमबनाय उदयपुर ।

विशेष — तीन प्रतिया और है । जिनके वेष्टन स० १००/२०२, १०१.२०३ एव १०२/२०४ है ।

७६०. **भागंगास्वरूप**— x । पत्रसं० ६१। प्रा०१० x ४१ इच । भाषा —प्राकृत संस्कृत । विषय — सिद्धान्त । १०काल — x । ते०काल — x । पूर्ण । वेष्ट्रन स०—२४६ । प्राप्ति-स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष -- संस्कृत टब्बा टीका सहित है।

७<mark>६१. रत्नकोशा – ×</mark> । पत्रस० १२ । श्रा० १२ × ४ इ.च । भाषा—सम्बत । विषय– सिद्धान्त । २०काल — × । ले०काल × । पूर्णा । बेष्टनस० ४४७ । २०१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सभवनाथ सन्दर, उदयपुर ।

प्रारभ --

जयित रगाधवलदेव सकलकलकेलिकोविद : कुशलविचित्रवस्तृविज्ञान रत्नकोषसृदाहुत ।

७६२ **रयस्पासर-कुदकुदाचार्य ।** पत्रस० ११ । झा०—११ × ४३ इञ्च । भाषा— प्राकृत । विषय —सिद्धान्त । र०कास- × । ते० काल- × । पूर्ण । वेष्टन स० १२४४ **। प्राप्ति स्थान—** भ० दि० जैन मदिर स्रजनेर ।

७६३ प्रतिसं० २ । पत्रस० ११ । ले०काल 🗴 । मपूर्ण । वेष्टनसं० १३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७६४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४-६। मा० १० 🗶 १३ हथ । ले०काल 🗶 । मपूर्ण । बेष्ट्रनसं० १६८-६ । प्राप्ति स्थान— दिगम्बर जैन मन्दिर बडा बीसपयी दोसा । ७**६५. प्रतिसं०४** । पत्रस०११ । मा०१० $\frac{1}{2}$  × र्रे हेव्य । ले०काल स०१८२१ भादवा सदी ७। वेष्टनसं०८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष—प० चोलवद के शिष्य सुखराम ने नैएसागर तपागच्छी से अयपुर मे प्रादीश्वर जिनालय से प्रतिकिपि करागी थी।

७६६, सधु संग्रहरागी सुत्र । पत्रस० ४ । पा० १० 🗴 ४ है इन्त्र । भाषा—प्राहत । विषय— भ्रत्यस । र०काल ४ । ले०काल स०४ । पूर्ण । वेष्टन स०४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (जूदी)।

विशेष--मल गायाची के नीचे हिन्दी मे टीका है।

७६७. **लघुक्षेत्रसमासविवरण्-रानशेखर सूरि ।** पत्रस**्थर् । आ०१**२ ४ ४ इत्त । भाषा—प्राकृत । विषय—सिदात । र०काल ४ । ले०काल स०१४३२ साव**ण दु**री ४ । पूर्णं । वेप्टन स०१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन मन्दिर टीवानजी, कामा ।

विशेष — प्रति मनयगिरि कृत टीका सहित है। कुल २६४ गायाएँ हैं। प्रणस्ति निम्न प्रकार है। सबन् १५३२ सबस्तर प्रवर्त माने श्रावरण बदि पचम्या मनी अद्योह श्रीपतनवास्तव्या दीमावाल ज्ञातीय मुक्त देवरामेन लिखन्। भी नामस्त्रमुखे पुक्त जिनदन्त मनि ग्रहोता।

७६६. प्रतिसं०२ । पत्र स०१४ । आर० १४ × ७ इश्वः । ले०काल × । धपूर्णः । वे०स०२१० । प्राप्ति स्थान—१० जैन श्रयवाल मन्दिर, उदयपुरः ।

**८००. प्रतिसं० ३** । पत्र स० १६६ । ग्रा० १२ डै × ५१ इश्वः । ले० काल × । पूर्णः । वेष्ठन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्यनाच चीमान (बंदी) ।

**८०१. प्रति सं०४।** पत्र म०२२०। ले०काल $\times$ । पूर्यं। बेष्टन म०१४६। **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पत्रायती मन्दिर उदयपुर।

६०२. लिख्यसार क्षपारासार भाषा वज्ञतिका-पं० टोडरसल । पत्र स० ३३२ । प्रा० १०३ × ७३ इच्छा । भाषा-राजस्थानी (ढुडारी) गद्ध । विषय-सिद्धात । र० काल स०१८१६ माथ मुदी १ । ले० काल—स०१८१६ चंत्र बुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स०१११६६ । प्राप्ति-स्थान—म०दि० जैन मस्दिर ग्रजमेर ।

**८०१. प्रति सं० २ ।** (पत्र स० २२७ । ले० काल स० १८७४ मादन बदो २ । (पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पत्रावती मन्दिर करीली ।

विशेष—चन्तिम दो पृष्ठो पर गोम्मटमार पूजा सस्कृत मे भी है।

**६०४. प्रति सं०३।** पत्र सं०२ ४४ । द्या०११ ४ ≒ डघ्चाले काल सं०१ ≒६०। पूर्गा। <sup>तेष्टत</sup> स०८। **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन० मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष-नातूलाल तेरापंथी ने प्रतिलिपि कराई थी ।

फ०**४. विचारसंग्रहणी वृत्ति**—  $\times$  । पत्रसं०२४ । मा० १० $\frac{1}{7}$   $\times$   $\times$  $\frac{1}{7}$  इन्छ । भाषा— प्राकृत । विषय—मागम । र०काल सं०१६०० । ले०काल सं०१७१२ पूर्ण । वेच्टन सं०४६३  $\times$  । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटबियान इंगरपुर ।

विशेष -- प्रति सस्कृत टब्बा टीका सहित है । टीका काल स० १६६३ है ।

८०६. विषाक सूत्र— $\times$  पत्रस० ३० से ४६ । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रागम । र०काल- $\times$  । लै॰काल- $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७५२ । दि० जैन पंचायती मदिर मरतपुर ।

६०७. विशेषसत्ता त्रिभंगी-नेमिचन्द्राचार्य । पत्रसं० ४-३७ तक । प्रा० ११ऐ ४ ४१ हरू । भाषा —प्राकृत । विषय —सिदान्त । र०काल — ४ । ले०काल — ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर प्रादिनाय इ'दी ।

प्राप्त संव २ । पत्रसंव ३० । लेक्काल स० १६०६ ज्येष्ट बुदी ४ । पूर्ण । बेष्ट्रन संव / १२४ प्राप्ति स्थान—दिव जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष—श्री मूलसवे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुरवकुन्दाचार्यान्वये भ० गुभवन्ददेवा त० म० जिनवद देवा त. म. सिद्धकीत्ति त. म श्री वमंकीत्ति तदान्ताये वाई महासिरि ने तिखवाया था ।

**८०६. शतस्तोको टोका-त्रिमल्ल ।** यत्रस० १०। प्रा० ६  $\times$  ४ $^1_1$  इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय — सिदात । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६८ । प्राप्ति— स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना ।

विशेष— प० रतनीमायेन चिरदेवेन्द्रविमल बाबनार्थ सदा १८६४ वर्षे ज्येष्ठ कृष्णा ७ गुरूवसे महाराजा जी शिवदानीसह जी विजयराज्ये ।

म्दर्गः स्लोकवर्गतक—विद्यानदि । पत्र स० ३१६ । प्रा० ११हें 🗴 ४हें इञ्च । माषा— सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । ४०काल 🗴 । ले∘काल य० १७२० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४०,७ । दि० जैन पार्खनाथ मन्दिर इन्दरसङ ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबन् १७२० वर्षे कार्तिकसासे कृष्णपुर्ध प्रवास्या रविदिने श्री मूनमधी सरस्वतीगच्छे बनारकार गुणै महारक श्री सकलकीर्ति तत्त्वहु भहारक-कोहिमुकदायतमान भहारक श्री ४ रनवच्द्र तनृशिस्य पहित कुशना निस्तिन दुदी नगरे ग्रीमनन्दन चैत्यान्ये तत्वार्थ टीका समाप्तः ।

६११. श्लोकवार्तिकालंकार । पत्र सं०७ । ग्रा० १२ $\mathbf x$  ५ इख । माषा —संस्कृत । विषय — सिदात । २०काल  $\mathbf x$  । से०काल  $\mathbf x$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १७६/२१० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर समेवनाय उदयपुर ।

- ९२. सत्तात्रिभगो - म्रा० नेमिचन्द्र । यत्र स०४०। मा०१०४६ इचा माषा — प्राकृत हिन्दी । र०काल ४ । लेकाल स०१९७० वृष्णं । वेष्टन स०४३५-१६४। **प्राप्ति स्थान** — दि० **जैन** मदिर कोटडियों का हू गन्दुर ।

विशेष -- हिन्दी गरा में अर्थ दिया हुआ है। मार्गगाओं के चित्र भी दिये हुये हैं।

**६२३. सलास्वरूप** — ×ापत्र सल्भे १३ । धाल १३×७ ६ ला। भाषा — हिन्दी पत्तः। विषय-मिद्धाता । रक्ताल ×ा सेक्नाल सल्१६३३ कार्तिक सुदी ४ पूर्णः। वेष्टन सल्१०४ । **प्राप्ति स्थान** — हिल्जेन प्रथमाल प्रथायती मन्दिर फलवर।

द्ध**रे प्रतिसं०२ ।** पत्र स०१६ । मा०६ दे<sup>2</sup> ×६ दे इला । से०काल × । झपूर्एँ । वेष्टन स०११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

**६१४. सप्ततिका × ।** पत्र सं० २०-३६ । आ० ११×४ ्रै इख । भाषा—मस्कृत । विषय— मिद्यात । २०काश × । ले०कास—× । अपूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रथवाल अस्तिर उदयप्तर । इति कमंग्रन्थ पटक सुत्र समान ।

विशेष---रत्नशेखर ने स्वय के पठनार्थ निखी थी।

**६१७. सप्तपवार्थी टीका—भावविद्योश्वर** । पत्र म० ३७ । झा० १३ ४४ १ इथा । माषा-सम्ब्रत । विषय—सिद्धांत । र०कारा— > । मे•काल > । पूर्णा । वेष्ट्रन सं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर प्रप्रवाल उदयपुर ।

विशेष--इति भावविद्ये श्वर रचिता चमन्कार " नाम सप्तपदार्थी टीका ।

**८१८. समयमूबरा**—इन्**द्रतदि।** पत्र म०३। ग्रा० १३ ×४ इखः। भाषा — सम्कृतः। विषय-मिदातः। र०काल—ः । लेकाल—ः । पूर्णः। बेष्टन म०४६/४३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन गरितर समननार्थं प्रस्पप्रः।

विशेष - इति श्री मदिन्द्रनद्याचार्य विरचितो नाम समयभूषगापरचेय ग्रन्थ ।

६२०. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्रस०—१४० । प्रा० ९ x ४ १ ८च्छ । भाषा —सन्कृत । विषय —सिद्धान । र०काल— रं । ने० काल म १६३१ कार्तिक मुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रन स०—६६ । प्राप्तिस्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष- ग्रजमेर मे भट्टारक श्री त्रिलोकेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६२**१. प्रतिसं० २ ।** पत्रसः -—१ सं १६१ । ले० काल × । अपूर्णः । बेष्टन स० ---११३२ । प्रा**प्ति स्थान**---उपरोक्त सन्दिर ।

**६२२. प्रतिसं**० **३ ।** पत्रस०— ४ से १०४ । ग्रा० ११ $\sqrt[3]{\times}$ ४ $\frac{1}{4}$  इश्वः । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०—१०३६ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

**८२३. प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं०—२१२ । ले० काल सं० १७४५ ग्रापाढ सुदी १५ । पूर्या । वेष्टन स०—१७० । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा । ८२४. प्रति सं० ४ । पत्रस०-१८४ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स०--६ । प्रास्ति स्थान---वि० जैन वडा प्रचायतो मन्दिर डीग ।

**८२४. प्रति सं० ६।** पत्रस०—१६६। घा० ११ $\times$ ४ $_2^2$ । ते० काल —स० १७७६ प्रासोज सुदी = । पूर्णे । बेष्टन स०—३०। **प्रास्थ्यित स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष-हिण्डीन मे प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

**८२६. प्रतिसं० ७ ।** पत्रस०—२१६ । आ० ५ $\frac{1}{2}$ >६ $\frac{3}{4}$  । ले० काल-× । पूर्ण । बेष्टन स०-२६ । प्राप्तिः: स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करोली ।

**८२७. प्रतिसं∘८ ।** पत्रस० १११ । घा० १०३×६३ इ.च. । लेकाल स०—१६८० कार्तिक वदी ११ । पूर्ण । वेस्टन स०१८० । **प्राप्तिस्थान** दि० जैन मन्दिर पत्रायती करोली ।

विशेष--- लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

**म२म. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस०— १५४ । मा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{3}{2}$  ड्वा । ले० काल-१६७० गोग मुदी ६ ।पूर्ण । बेष्टन स० ६/१२ **प्राप्त्त् स्थान**— दि० जैन मन्दिर सौगारिएयों का करीली ।

**६२६. प्रतिसं० १० ।** पत्र स० ३६-२०७ । लेक्काल स० १३७० पोप बुदी ७ । स्रपूर्ण । बण्टन स० १०१-१० । **प्राण्तिस्थान**—दि० जैन सप्रवाल सन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रत्येक पत्र में १० पक्ति एवं प्रति पक्ति में ३१ - 3४ ग्रक्षर है।

भशस्ति निम्न प्रकार है— सबत १२७० पीय बृदी १० गुरुवामरं श्री योगिनीपुरस्थित मापु श्री नारायसम् मृत भीम मृत श्रावक देवधरेमा स्वपठनार्थं तत्वार्थवृत्ति पुरतक श्रिवाणित । लिखन गाहास्त्रय कायस्य प० गणवं पुत्र वाहदुदेवत ।

निष्पदीपृतं चिलचडचिह्नगाः, प्रचारमञ्जूष्यातकाः।

ध्यातः प्रस्तमस्तरिकित्वपविषाः, शास्त्रा बुधे पारमा ।

हेलोन्सूलिनकम्मंकदनिचया कारुण्य पुण्याणया ।

योगीन्त्रा भयभी पदैत्यदलना कुर्वन्तु वो मगल ॥

लेखक पाठवो शुभ भवतु । इसके पण्चात् दूसरी कलम से निम्न प्रशस्ति ग्रीर दी हुई है

र्थामुलसर्वे मरु थी सकलकोतिदेवास्तत्यद्टे थी भूवनकोतिदेवा नेशी थी गौरमधी पठनाव गुम भवतु ।

६३०. प्रतिसं०११। पत्रस०१७०। प्रा०१००० डुंडचाव०काल । पूर्णावप्रत स०४८। प्राप्ति स्थान—दि० जेन सदिर बचेरवालों का, नैनवा।

दरेशे. सर्वार्थासीढि भाषा - पं० जयसन्द । पत्रन०२८६ । प्रा०१३ (७ ८७ । भाषा -राजस्थानी (हुतारी) गढ । विषय --सिद्धान । र०कार स०१८६९ चैत्र मृदी ४ । लेकाल सम्बार्ट६६ साथ चुरी १२ । पूर्ण । वेप्टन स०१४६६ (क) । प्राप्तिस्थान- -भ०दि० जैन सन्दिर प्रप्रमेर ।

द्रदे२ प्रतिसं**०**२ । पत्र स०२६४ । ले०काल स०१६६० । पूर्ण । वे**०** स०५३४ ।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पचायती मरतपुर ।

विशेष लालसिह बडजात्या ने लिखवायी थी।

**८३३. प्रतिसं० ३** । पत्र सच्या—२१३ । लेखन काल स० १८७३ । पूर्ण । बेग्टन म० ४३५ । प्रा**रित स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---जोधराज कासलीवाल कामावाले ने लिखवाया था ।

द**२४. प्रति सं. ४** । पत्र स<sup>्</sup> २४३ । ले०काल — X । पूर्णः । वे०स० ५३६ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

द्धरे प्रति सं. प्र । पत्र स० ४७२ । ले० काल स० १६७४ मावण बुदी १२ । पूर्ण । वे स० --६६ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन स्रवनल पत्रायती मन्दिर स्रलवर ।

**६३६. सारसमुज्यय—कुलमदाचार्य।** पत्र स०१४। भाषाः—ास्कृत । विषय—सिद्धात । २०काल  $-\times$ । ने० काल स०१८०० वैद्याल मुद्दी १३। पूर्णं। वे० स०२४७। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरनपुर ।

दरेशः सिद्धांतसार --जिनचन्द्राचार्यः । पत्रस० ६ । ग्रा० ६ ४.५ इखः । भाषा-प्राकृतः । विषय --मिद्रातः । र०कालः ४ । ले०कालः स० १४६४ ग्रामोज मृदीः ११ । पूर्णः । वेष्ट्रस० ११ । प्राप्तिः स्थान --दि० जैन मन्दिरं ग्रजमेरः ।

विशेष---साभर मे प्रतिलिपि हुई थी। लेखक प्रशस्ति प्रपूर्ण है।

ददेद. प्रतिसं०२ । पत्रस०६ । धा०६ ४ ३१ डळ्चाले∙काल म०१४२५ खासोज सुदी १९ । पूर्णालेहन म०४१० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मदिर ।

विशेष-केवल प्रशस्ति धपूर्ग है।

६३६. प्रति सं ३ : पत्र स० ७ । घा० १० $\times$ ८ $\}$  इञ्च । ले० काल स० १४२४ । पूर्म । वे० स० ३३६ : प्राप्ति स्थान — उपयोक्त मन्दिर ।

विशेष ~ ःणस्ति विस्ति प्रकार है— सं० ११२१ वर्षे श्रावसा सुदी १३ श्री मूलसये भ० श्री जिल सन्दर्भव बील्ही लिस्स्यंत्रत ।

प४०. प्रति स०४ । पत्र स०१२ । ब्रा० प्र्यु ४ ३१ डखा नेवन काल स०१४२४ कार्तिक सरी१४ । एसी। तल्स०१३१ । **प्राप्ति स्था**स — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**विशेष** %'भी गाम प्रतिलिपि हुई थी।

६४१. प्रति सं. ५ । पत्र सं०६ । म्रा०११ x x १३ इश्वः । ले० काल x । पूर्णः । वे० स०१७ । प्राप्ति स्थान -- वि० जेन मन्दिर उदयपुरः ।

विशेष - कही कही सस्कृत में टिप्पानी भी है।

क्षेत्र. सिद्धान्तसार दीयक — म० सकलकाति । पत्रसं० १२४ । ग्रा० ११  $\times$  १४ इन्य । भाषा — सन्द्रत । विषय — सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । लेक्काल स० १८१४ चैत सुदी १४ । पूर्ण । वेहन स० — १०२३ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० औन अन्तिर, ग्रजनेर ।

६४३. प्रति स $\circ$  २ । पत्रसं $\circ$  ११ । ते $\circ$ काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं $\circ$  ११६४ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

द्वध्रधः प्रति सं० ३ । पत्र स०— १२–१५१ । ग्रा॰ १० $\frac{5}{4} \times 3$  इक्षा । लेश्काल —  $\times$  । ग्रपूर्ण । बेवुन स॰ ६५६ । प्राप्ति स्थान —उपरोक्त सन्दर ।

द्र**४५. प्रतिस**० ४ । पत्रसं∘—-११० । ग्रा० १×६ इल्डा ले०काल स०१८४८ ग्रापाढ सुदी १३ । ग्रपुर्णा वेष्टन स० द१ । **प्राप्ति स्थान**-उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--प्रारम्भ के दश्यत्र वेष्ट्रन स० २२१ मे है।

**८४६. प्रति स० ५ ।** पत्रस**ः** – १-४५,१६६ । ले० काल—१८२३ माघ बदी ११ । प्रपूर्णः ! वेष्टत सं० २५४ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भग्तपुरः ।

विशेष-भरतपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

**८४७. प्रति सं०६ । पत्रस०**— ५२ मे १४७ । ले० काल - × । ग्रपूर्ण । वेश्न स० २-६४ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

६४६. प्रति सं०७ । पत्र स०—२३१ । लं० काल स० १७६० द्यासोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--जिहानाबाद मे प्रतिनिपि हुई थी।

८४६. प्रति सo = 1 पत्र सo १६० । ले० काल —  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन सo ५२ । प्राप्ति स्थान — दिo जैन मन्दिर बैर ।

६५०. प्रति स० ६ । पत्र स० १३६ । ले० काल--१८१७ कालिक सुदी ३ । पूर्ण । बेष्टुन म०-६७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेलाबाटी (मीकर) ।

विशेष—२० जीवनराम ने फनेह्रपुर में रामगोपाल ब्राह्माण मौजपुर वाले से प्रतिलिपि कराई थी।

**८५१ प्रतिसं० १०**। पत्र स० ८२। ले० कात स० १७२६ चैत्र बुरी ३। श्रपूर्णः । बेष्टन स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**— टि० जेन श्रवबाल मन्दिर उदयपुरः ।

**८५२. प्रतिसं० ११ ।** पत्र स० ३–१६४ । आ० १००४<sup>९</sup> इ.स. । ले० काल—- × । धपूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मन्दिर उदयपुर ।

स्थ्र-प्रतिसं०१२ । पत्र स०२१७ । ले०काल स०१≒४३ । पर्गा । बेष्टन स० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजसहल ।

विशेष-- ज्योकस्थ ५००।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है— मिनि याय मुद्दी ६ नीमी शुक्रवामरे निषकृत धावायं विजयकीर्तिजी विक सदामृत्व चीवे स्वावन्द को बाद्दी सृशाना मिनि योग मृत्ती ६ सम्बन् १८४३ का नरद्याम नगर हाडा राज्ये महागवजी थी उम्मेदस्यको गज्यं एकसार भाना गांवे राज्य जानिसस्यक्ष जी पित्रती श्रीलाल ने सामित्र के ६५४. प्रतिसं० १३। पत्र सं० १६६। ने० काल सं० १७६४ सावन सुदी ७। पूर्गा । वेष्टन स० १४०। प्रा**प्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर घमिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेख - सवाई माधोपुर में प्रतिनिधि हुई थी।

द्ध**प्र. प्रति सं०१४ ।** पत्र स०३४६ । ग्रा०१०१,४४१ । ले० काल स०१७६६ । पूर्ण। वेष्टत स०५७ । **प्राप्तिस्थान** – दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाय चौगान बूंदी ।

**८५६. प्रतिसं० १५ ।** पत्र स० २-२२६ । आ० १३ $\times$ ५ इचा । ले० काल — १७५४ मगमिर सुदी ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-प्रथम पत्र नहीं है। घर्मपुरी में प्रतिलिपि हुई थी।

६**५७. प्रति सं०१६ ।** पत्र स०१४० । आर०१३ ⋋६ है । ले०काल स०१९१९ । पूर्णा। वे⊳न म०६० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मस्दिर तेरहणंथी नैसावा।

बिशेष---म० १६२८ मे चन्दालाल वंद ने चढाया था।

६.५६. प्रति स १७। पत्र म०२७१। आ.०११×५ इ.च.। ने०काल म०१६६५ सावन मुटी २ पूर्गो वेष्टन म०५२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी।

विशेष — श्री भाष्यविमलजी तर् शिष्य पं० मोतीविमलजी तत् शिष्य प० देवेन्द्रविमलजी नत् चित्र मुख्यमलेत लिथि कृत ।

६५६. प्रति सं०१६ । पत्र स०११३ । प्रा०१० ४ ६ ६२४ । ले०काल — ४ । पूर्ण । बेहुत न०४० । प्राप्ति स्थान — दि०जैन पार्थनाथ मन्दिर देवलाना (बूदी) ।

८६०. सिद्धांत सारदीपक—नयमल बिलाला। पत्र स० २७८। ग्रा० १० ४८ ६३ डच। भाषा-दित्सी (पत्र)। विषय—सिद्धात। १०कास स० १८२४ माह सुदी ४। ने० काल स० १८६४ कार्तिक सुदी ११। पूर्ण। वेष्ट्रत स० १६०६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर।

⊭६६१. प्रति सं०२ । पत्र सं∘२४६ । ले०काल— ४ । पूर्यो । बेष्टन सं०५६३ । प्रास्ति स्थान ∵दि० जैन पचायती मन्दिर, सरतपुर ।

विशेष --- २०१ तथा २०२ कापत्र नहीं है।

**८६२. प्रति सं०३।** पत्र स०२०६। ले∘काल — √.।पूर्ण। वेष्टन स०४६४। **प्रास्ति** स्थान — दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भग्तपुर।

**८६३. प्रतिसं० ४।** पत्र म० २६६। ते० काल म० १८७७ । फायुरा सुरी ३ । पूर्गा । बेहत म० २९७ । **प्राप्ति स्थान**—रि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष——नोधराज कामलीवाल के पुत्र उमराविश्वह व पोत्र लालजीमल धामी कामा ने निखवाया था।

६६४. प्रति सं० ४ । पत्र स० १४६ । ले० काल—५ । पूर्ण । वष्टन स० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

**६६४. प्रति सं०६।** पत्र स०६। ले० काल म०११५६। पूर्णं। वेष्टन स०३। प्राप्ति

स्थीन - दि० जैन मन्दिर चेननदास पुरानी डीग ।

**८६६. प्रति सं०७।** पत्र स०३०६। ले० काल स०१८२४ वैज्ञास सुदी ४। पृगं। वेष्टन स०४। **प्राप्ति स्यान** —दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना।

विशेष— प्रतियों के मिले हुए पत्र है। प्रथम प्रति के २६⊏ तक तथा दूसरी प्रति के २६६ मे ३०६ तक है।

**८६७. प्रतिसं० ८ ।** पत्रसः० २३७ । ग्रा० १२१ 🗶 ४ इच्छा । लेक्काल म० १६२१ चैन सुदी ८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष -- स० १६३२ में इस ग्रन्थ को मदिर में भेट चढाया गया था।

**८६८. प्रति सं० ६ ।** पत्रस० २११ । ग्रा० १३ ८७ | इश्वः । लेक्काल स० १८३४ । पूर्णः । वेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन छोटा मदिर वयाना ।

**८६८. प्रति सं० १० ।** पत्र स० १३१ । ब्रा० १२ % ६ % डब्ब । ले**०काल ४** । पूर्ग । बेष्टन स**०** १३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायनी महिर करीली ।

ष्ठ**०. प्रति स० ११। पत्र** स० २२३। ग्रा० १३४४६ इ.च.। ले•काल स० १६६८ चैत्र सुदी १४। पुर्ण। बेहन सं० ५३। **प्राप्तित स्थान —**दि० जैन सन्दिर ग्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक)।

ष्ठ**१. प्रति स० १२ ।** पत्र स० २६५ । या० ११ ४ ५ इखा । ले॰काल स० १६८६ चैत्र **बुरी** १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर चौधन्यों का मालपुरा (टॉक)

**८७२. प्रति स० १३ ।** पत्र म० १४३ । छा० १३ $\frac{3}{4}$  ८६ $\frac{3}{4}$  दश्च । ने०बाल स० १८३५ भादवर मुदी १ । पूर्ण । बेष्टुन म० २८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन मदिर प्रचायती राजमहल (टॉक)

विशेष-महात्मा स्यभुराम ने जयपुर मे प्रतिनिधि की ।

ष्ठ**३ प्रति सं० १४।** पत्र स० २११। प्रा० ११ ४६ है इश्वा। लेकाल स० १८८३। पूर्णा वेष्टन सं० १८०। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन लण्डेलवाल मीन्डर, उदयपुर।

**८७४. प्रति स १५।** पत्र स०१७६ । द्या०१३ $\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$  इ.स. ने०काल स०१८७२ फागुन बुदी ३। पर्णावेष्टन स०१२२ । **प्राप्ति स्था**स — दि० जैन मदिर महाबीर स्वामी दूदी।

रा**ऽप्र. प्रति स० १६।** पत्र स० २७२। घा० १२४६ इन्छ । लेकाल स० १९७० कानी सुदी १३। पूर्यास चान स० १०६–११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्दरसङ्कीटा)

विशेच---इन्दरगढ़ में प्रतिनिधि हुई थी।

साउद. प्रति साठ १७ । पत स० १२१ । आठ ११८ ५ इखा । लेक्काल स० १८६६ । पूर्ण । बेष्टन स० ११६-५६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिरि कोटडियान हुंगरपुर ।

प्रथ9. प्रति सं० १८ । पत्र स० २३६ । ग्रा० ११ ४७ इश्व । ले०काल ✓ । पूर्ण । बेष्टन स० प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मंदिर बीमपथी दौता ।

स्थर. प्रतिसं० १६ । पत्र स०१८७ । प्रा०११४ ७१ इच्छा ले•काल स०१८६४ स्रामोज बुरी १ । पूर्णे । बेष्टन स०१०६-३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपंथी दौमा । विशेष--धी गौरीबाई ने पन्नालाल चुन्नीलाल साह से प्रतिलिपि करवाई थी ।

ष्ट**्रः, प्रतिसं० २०।** पत्र स० २०६ । घा० ११ × ७ है इन्थ । लेक्काल स० १८४६ । पूर्ण । बेहनसं० १२/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर, मादवा ।

८६०. प्रतिसं० २१। पत्र म० १७७ । स्रा० १३imes६ इ.स. । ते०काल imes । पूर्ण । बेठून म० २११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी नेमिनाथनी बुरी ।

 $\mathbf{x} = \mathbf{r}$ . सिद्धांतसागरप्रदीय  $\times$  । जनन १२६ । म्रा० १२४६ इख । मापा—मन्द्रन । विषय – सिद्धांत । र०काल  $\times$  ले०काल – स० १८७१ । पूर्ण । बेग्रुन स० १२५-४६ । प्राप्ति स्थान – वि० जैन मिद्र कोटडियान इ.गरपुर ।

८६२. सिद्धांतसार सम्रह—नरेन्द्रसेन । पत्रम० २६७ । ग्रा० ११ x ७ इख । भाषा—सम्कृत हिन्दी । विषय —सिद्धात । २०काथ x । ले०काल स० १६३३ । पूर्ण । बेष्टन सं० १४४ । प्राप्ति स्थान – ४० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिट (टोक)

विशेष - प्रति हिन्दी टीका महिता है ।

**८८३. प्रतिसं० २ । पत्रम०**७६ । **आ० १० - ४३ इला । लेक्सल स० १८२२** आवणा नृदी उ । पूर्ण । बहुन स० १०२० । **प्राप्ति स्थान—** स० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष -- सहारोठ नगर में राठीड वर्गाधिपति महाराजाधिराज महाराजा श्री विजयमिहजी के ज्ञासनकाल में वर्णालवन्द पाडका ने प्रतिलिपि की थी।

८८४. प्रतिसं**० ३ ।** पत्रम० १०२ । आग० १२ ६ इस्त्रा ले**०काल स०** १८०६ ग्रामीज बुरी ७ । पूर्णा वेष्टन म २१२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष - जिहानाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

द**८५. प्रति सं०४ ।** पत्रम०५ । घा०१०३ ४ है । २०काल **४ । ले०का**ल । वेष्ट्रन म० १९३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

द्रद**् सूत्र प्राकृत - कु दकु दाचार्य ।** पत्र स०६ । ब्रा० १६३ ४६ इच । आपा---प्राकृत । विषय -- प्रध्यात्म । २०काल , । लेकाल । पूर्ण । वेवृत स ३१० । **प्राप्तिस्थान**----दि० जैन मदिर दोवानश्री कामा ।

८६७. सूत्र सिद्धांत चौपई - ्रापत्र म०१०। भाषा - हिन्दी पद्य । विषय — निद्धान्त । र०काल (२) ले० काल — ्राप्तां। वेष्ट्रत म०४०२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इनस्पर।

**८८८. सूत्र स्थान** - । पत्र म०१३२ । द्यार ६८४ ६**चा । साथा**—प्रस्कृत । विषय **—** स्थितत । रण्काल ४ । लेण्काल ः । पूर्णा । तेष्ट्रन म०१६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सन्दिर नागदी नेमिनाथ बृदी ।

यद **६. संबह्सी सूत्र** ... । पत्र म० ६१ । बा० १० ८ ४<mark>१ दश्व । भाषा-</mark>त्रकृत । विषय— अगम । र०काल ४ । ने० काल म० १७७७ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । बेट्न म० १६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दबलाना **ब**दी । **८०. प्रति सं०२।** पत्र स०१२। ले० काल स०१७७१। पूर्णं। वे० स०१७१–४६। **प्राप्तिस्थान**—वि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर, इन्दरगढ़।

विशेष -- सनत् १७७१ वर्षे माह बुदी = दिने लिपीकृत कौटडामध्ये ।

**६६१. सपहरणो सूत्र--मिल्लबेरा सूरि।** पत्र स० १२। भाषा--प्राकृत । विषय--प्रागम । रक्ताल × । नेक्तान स० १६५७ । पूर्ण । बेष्टन स० ८-४४७ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन सभवनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

प्रशस्ति—सबत् १६५७ वर्षे धासीज बुरी १४ दिने धानवासरे श्री मागलउर नगरे वासारीस श्री नयरंग गांगि तत् शिष्य जती तेजा तत् शिष्य जती बाससा लिखित ।

**मध्र. प्रति सं० र ।** पत्र स० २१ । ग्रा० म× ३१ इला । ले० काल स० १६०१ भादवा बुदी ७ । पूर्णे । वेष्टन स० २८१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दक्ताना ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सतत् १६०१ वर्षे भाद्रपद बुदी ७ जनौ भट्टारकश्ची कमलमेन पठनार्थ लिखिन सम्मनश्ची बहोडानगरे।

स्ट्र. संग्रहर्**गो सूत्र —वेवसद्र सूरि ।** पत्र म०२२ । आपा-१०४४ दश्व । आया — प्राकृत । विषय—सिटाला । र०कास ४ । से० काल स०१७०७ । अपूर्ण । वे० म०२६६ । प्राप्ति;स्**यान** —दि० जैन मन्दिर दीवानत्री कामा ।

विशेष---संस्कृत मे चूरिए सहित है ।

**८६४. सम्रहरागे सूत्र**— ४। पत्र स०८। म्रा० १०४४ इचा। भाषा ⊤पुरानी हिन्दी। **विषय**—भागम । र०काल ४ । ते० काल स०१७०६।। वे० स०६०१ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय **वि० जैन मंदि**र ग्रजोस्र।

**विशेष**—सम् १७०६ वर्षे ब्रापाढ माने शुक्त पक्षे १ दिने मेदवरे श्रीशोधपुरे मिनकीर्ति रिलिक्त्यिति ।

म्ह्थ. प्रति सं०२ । पत्र स०४४ । ले० काल स०१७१३ कार्तिक बुरी २ । पूर्ण । ले० स० ११४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर दवताना (बन्दी)

म्हर्स. सम्बर्गो सूत्र माषा—दयासिंह गिंगा। पत्र स० ४०। मा०१०×४ है इश्वा भाषा—प्राहत हिन्दी। विषय—प्रागम। रच्काल ४। ले० काल स०१६४७ मावगा मुदी १४।पूर्ण। वे० स०१६१। प्रान्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर काम।

विशेष - शियाइ सुयपरेसु इगहीसाऊ हु तिपतीउ । सत्तिम महिष्यरे दिसि इक्किके विदिक्षितास्य ॥ ६६

बीया करतां नीजड प्रतरह । पताई २ एके कउ उछत्र करणः । सानमङ्गरकड उछा श्वास मड् प्रतरह दिसङ एकेकड नरकाबास उछड़ । विद्याङ एकड नरकाबास उनहीं ।। दर्शा

समाप्ति—सवत् १४१७ द्विनीय सावरा सुदी चउदसि मुक्तवार तिराह दिवसइ तपागच्छ

नायक महारक श्री रत्नसिहपूरि नइ शिष्यदइ पडित याहेमगराउँ ए बालावबोध रच्वउ सबसीस्थ मागलिक्य नइ सर्वेद्द हुवउ ।

**६६७. संघरा सूत्र** — imes। पत्र सं० १२ । प्रा० १०imes४ हुँ इश्वः । भाषा — प्राइत । विषय — धागम । र०काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० २१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर द्विमनन्दनस्वामी बून्दी ।

विशेष---गिए श्री जीव विजयग रिए शिष्यरिए गत जी विजयेन लिखित मूनि जसविजय पठनार्थ ।

---

## विषय - धर्म एवं आचार शास्त्र

ह्रह्म, ग्राचीनिर्मय— > । यत्र स० २४ । बा०११र्दु \ ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी। विषय –चर्चा र०कार > । ने० काल स०१११८ मशीसर मुदी१२ । पूर्ण। वेष्टन स०७१ । प्रास्ति स्थान—स०दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

विशेष-- श्रेसठशलाका पुरुषो की चर्चा है।

**८६६. ग्रतिचारवर्गन**—पत्र स० २ । भाषा—हिन्दी । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल—× । ले०काल— × ।पूर्ण ।वेष्टन स० ७६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०० ग्रनगारधर्माम्त— प० ग्राशाधर । पत्र त० २२-२६७ । प्रा०११९५ इन्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्राबार शास्त्र । र०काल ६ । ले० काल ६ । प्रपूर्ण । वेष्ट्न ग०१३६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन ग्रवाल सर्वित उदयपुर ।

विशेष — इसका नाम यथ्याचार भी है। इसमे मृति धर्म का वर्णन है प्रति स्वापन टीका महित है।

**६०१ प्रतिसं० ा** पत्र स० २२४ । बा० १०३ × ४ इला । ले० काल । प्रयूक्त । लेक काल । प्रयूक्त । स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष -२२४ में धार्ग पत्र नहीं है। प्रति स्वीपज टीका सहित है।

**६०२. ग्रनित्यपचाप्रतः - त्रिभुवनचद ।** पत्र सं०६ । ग्रा०११: ५९ ३४ । आपा हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । र०काल १४ । ले०काल । पूर्ण । व्यून सं०११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० कैन नेस्ट्रपंत्री सन्दिर दीमा ।

विशेष---मूलकर्ना पद्मनदि है।

६०३ स्रमितिगति श्रायकाचार भाषा—भागचद । पत्र मरूर्य । प्राच्य । प्राच्य

. **९०४ प्रतिस०२।** पत्र म०<sup>०</sup>०१। ग्रा०१२१ ४ ४) इ. था। ले० काल म० १९८१ । पीष बुदी ११। पूर्मा। वेपून म०१४४। **प्राप्तिस्था**स - दि० जैन महिन् फतेहपुर नेलाबाटी (सीकर)।

**८०४. आर्त्, प्रतबल**— ४ ।पत्र म०२ । षा०—११} ४ १ृ टब । सापा—सस्कृत । विषय—समें । रे०काल— ४ । ते० काल ४ । पर्गाः। वेष्ट्रत म०२१७ । **प्राप्ति स्थान—स०** विकास प्रकार । **६०६, झष्टाह्निका व्याल्यान—हृदयरम ।**पत्र स०११ । भाषा—सस्कृत । विषय —धर्म । र०काल × । ले०काल × ।पूर्ण । बेहन स०७०७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायनी संदिर भरतपुर ।

**१०७ महिसाधर्म महारस्य** — × । पत्र स०६ । श्रा०११ × ६ इचा। भाषा — सम्कृत । विषय — पर्मा रुकाल × । ले०काल स० १६६१ फागुग्ग सुदी १०। पूर्णा वेष्टन स०१४६१ । पारित स्थान — भ०दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

**८०८ श्राचारसार-जीरनिट**। पत्र स० ६१। ग्रा० ६ ४ ६ दश्व । भाषा- मस्कृत । विषय — श्राचार ब्राम्प । रुकाल ४ । लेक काल स० १६२३ ग्रापाट सृदी १। पूर्ण । बेष्टुन स० ३६६ । सन्दिक स्थास - ५० दिक केत्र सीटर प्रकृति ।

**६०६. प्रतिसं०२ ।** पत्र म०१२६ । ध्रा०११ ४ ४/६२ चा। ले० कात्र म०१४६५ । पूर्यो । वेष्ट्रन स०१४६ । **प्राप्ति स्था**ने—दि०जैन महिर्दोशनको कामा।

**६१०. श्राचारसार बचिनका — पन्नालाल चौधरी ।** पत्र स०६० । ग्रा० १४ ८ ८ है डब । भाषा---हिन्दी गर्छ । थिपयं -- प्राचार शास्त्र । ४०काल स १६३४ वैशास बुदी ६ । ले० काल स० १६७७ भाष बदी १४ । पूर्ण । बेटून स०१२१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन सदिर फतेहसूर शेलावाटी (सीकर) ।

**विशेष** --५: हीराजाल में बाबू वेद भास्कर जी जैन प्रागरा निवामी द्वारा बाब्लाल हाथरस वालों से प्रतिनिध कराई ।

**१११. श्रासार्यगुरावर्शन** - 🗸 । पत्रस**ः ३ । भाषा—सस्**कृत । विषय—श्रासार शास्त्र । २०काल 🗴 । लंबकाल । ध्रपूर्ण । वेष्टनस**ः २० । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी महिर बगवा ।

६१२, ग्राराधना प्रतिबोधसार-सकलकोतिः 
पत्रसः २ । भाषा - हिन्दी । विषय — 
प्राचार ग्रास्त्र । रं०काल 

४ । नं ०काल 

८ । घपूर्ण । वेष्टन स० ६१,२४६ । प्राप्तिस्थान — दि० 
जैन सभवनाथ मन्दिर, प्रदेशपुर ।

विशेष--- म तिम भाग निम्न प्रकार है----

जय भगाइ मुगाउनर नार ते जाड भवनइ पारि ।

श्री सकलकीनि कहि मुनिचारि श्राराधना प्रतिवोधसार ।। इति श्राराधनासार समाप्त । दीक्षित वेगीदास लिखित ।

**६९२. प्रतिसं० २** । पत्रस०४ । घा० ६×५ डचा । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टुनस०३३४ । ऑफ्टिस्**स्था**न - दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६१४. प्रतिसं० ३** । पत्रस०४ । ग्रा० ११  $\times$  ५ इश्वः । ले०काल—  $\times$  पूर्णः । वैष्टनस०२६३–१११ । प्राप्टिः, स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वगरपुर ।

**९१४. झाराधनासार—वेबसेन** । पत्रसं० ३-७६ । झा० १२ ४ ४ इच आषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल— 🗴 । ले०काल— 🂢 । ध्रपूर्ण । वेष्टनसं० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्तिर बोरससी कोटा । विशेष--- प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

ह१प्र.(क) प्रतिसं० २ । पत्रस० ११ । मा० ११ × ४ इला । ले०काल--- × । मपूर्ण । वेष्ट्रन सं० १०,३२५ । प्राप्तिस्थान--- दि० जैन समवनाय मदिर उदयपुर ।

**६१६. घाराधनासार—प्रमितिगति ।** पत्र सं० २-६६ । घा० १०  $\times$  ४ है इस । भाषा— सस्कृत । विषय— प्राचार जास्त्र । र० काल—  $\times$  । ले०काल— स० १५३७ श्रावण बुदी = । घर्षुणै । बेकृत स० १४६६ । पारि स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

**६१७. धाराधना**—  $\lambda$  । पत्रस० ६ । **धा० १ x** ४ इ.च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । ग०साल—  $\times$  । ले०काल —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० २३३ । प्राप्तिः **स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

ह**१न. ग्राराधनासार भाषा टीका** — 🏻 । पत्रस० २१ । ग्रा० १० 🔊 ६ॄँ इ च । माषा— प्राहुल-हिन्दी (गरा) । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल स० १६२१ । ने०काल— सं० १६१३ थावगा— मुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस० १६७,६३ **प्राध्तिस्थान**—दि० जैन पाण्डेनाय मदिर इन्दरगढ कोटा ।

**६१६. भ्राराधनासार टोका**— ४ । पत्रस०३= । घा०११ ⋋ ४<sup>3</sup>, इख । भाषा—सन्द्रस । विषय—धर्म । २०काल— х । ले०काल—म०१६३२ । पूर्ण । वेष्टनस०११७ । प्रार्टि, **स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

€२०. ग्राराधनासार टीका—निविष्णि । पत्रस० ४०३ । ग्रा० ११ ४ ४ १ ८ ४ । माला—चन्क्रन । त्रियय – ग्राचार शस्त्र । र० काल ४ । ले०काल । ।पूर्णे । वेष्टनस०१४१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रयवाल सन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रति प्राचीन है। प्रशस्ति पूर्ण नहीं है।

**६२१. स्नाराधनासार टोका—प० जिनदास गमवाल** । पत्रस०६५ । स्ना०१०४५ ! त्या । प्रापा—िक्ष्यी (पद्य) । विषय—स्नाचार जास्त्र । र०काल म०१८३० । पे०काल—म०१८३० चैन मुदी १ । पूर्ण । वेक्रनस०३७४ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन सन्दिर दवलाना (वृदी) ।

६२२ प्रतिसं० २ । पत्रस० १०६ । आ०११ ४ ६ इश्वः । लेज्बाल स० १८३१ जीग्ठ मुदी १ । पूर्णे । बेष्टुनस० ३३४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर बोरमली, बोटा ।

विशेष-भानपुर में प्रतिनिधि हुई थी।

६२३. **आराधनासार माया-दुलीचन्द्र।** पत्रस**्र १** । साया —[हन्दी । विषय—धर्म । रचना काल २० की जनाब्दी । ने ककाल- 🔀 । पूर्ण । विष्टन मुक्त ४३१ । प्रास्ति-स्थान--दिव जैन पचायनी मन्दिर भरनपुर ।

विशेष-- स० १६४० में भरतपुर मन्दिर में चढाया गया था।

६२४. ब्राराधनासार वचनिका —पन्नालाल चौषरी । पत्रसः ३० । ब्रा० १२३ ४ ४३ डञ्च । भागा—हिल्दी (गर्व) । विषय — ब्राचार ब्रारत । र०काल सः० १६३१ चैत बुदी १। लेक्काल । पूर्ण । बेहन स०१८ १६ । ब्रास्ति स्थान —(द० बेन मन्दिर, भोदवा (गज०)। **१२५. झाराघना पंजिकाः —देवकोरितः ।** पत्र स०१७६ । झा०१२ ४ ६ । भाषा— सस्कृतः । दिषय— नर्मार० कान ४ । ले० काल स०१७६० पीष सुदी १ । बेटून स ७० । **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन म०लकर, जयपुर ।

विशेष--- भूरत बन्दरगाह के तट पर बढ़ीदास ने लिखा था।

६२६. द्वाराधनासूत्र—सोमसूरि । पत्रस०३। प्रा० १ $\frac{3}{7}$  $\times$ ४ $\frac{1}{7}$  इचा। भाषा—प्राकृत विषय—प्रमं। र० काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनस० १०१६ । प्रास्तिस्थान—प्र० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष--लिखत तिलकस् दरगरिंग ।

**६२७. प्रतिसं०२ ।** पत्रसं०१२ । धा०६्रै ×४्रे इला । ले∘काल स०१७८३ चैत्र सुदी१ । पूर्णावेष्टनसं०५४० । **प्राप्तिस्थान** — म०दि० जैन मन्दिर धत्रभेर ।

**थिशेष**—६६ गाथाग्ँ हैं। प्रति टब्बाटीका सहित है।

**६२८. प्रतिसं० ३** । पत्रस**०** ४ । ग्रा० १० ४ ४ है इञ्च । लेक्काल म० १६४८ । पूर्ण । योटन स० ७२६ । **प्राप्तिस्थान** --भ० दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

**विशेष** — मे० १६४६ वर्षे गैशास मुदी १३ तृगुवारे लिखिता मु० हमस्तेन मुश्राविका सवीरा पटनार्थ

- ६२**९. भ्रासादना कोश**ः \*\*\*\*\*\* । पत्र स० १५ । प्रा० १२ $\times$ ४ $^*$  इन्द्राः भाषा—सम्बन्धाः विषयः —ग्राधार बास्यः । र०कासः  $^*$ ः। से० कासः  $^*$ ः। वे० स० ६३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर बस्दुरः।
- **६३०. इबकाबन सूत्र** ` । पत्र म०२८ । सा०६<sup>7</sup>, ४६<sup>7</sup>, इ**खा । आपा**—्हिरी । विषय धर्म । र०काल म०१७८० नेत्र बुदी १ । ले० काल अ । पूर्ग । वे**० स० २**३८ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० तेन मन्दिर स्रवर्गर ।

विशेष--- प्रमंका ४१ मनो में वर्णन किया गया है

- **६३१. इन्डमहोत्सव**ः ⊠ापत्र स०४ । ब्रा०१०४४ ई. इ.ख.। भाषा-क्रिन्दी । विषय— भगवान के जन्मोत्सव पर ४६ कृमारी देविया ब्राटि के द्वाने को वर्मान । र०काल ४ । ने० काल ४ । पूर्णा । वेष्टन ग०१०६१ । **प्राप्तिः स्थान—**भद्रापकीय दि० जैन मन्दिर खजमेर ।
- **६२२. इस्ट छत्तीसी—बृधजन ।** पत्र म० २ । ब्रा० ७ $\frac{3}{4} \times \frac{1}{4}$  इखा । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र०काल ्रा । ले० काल्र् । बेष्टुन स० ६५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जगपुर ।
- **६३३. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०२ । ग्रा०१० $\times$ ४२ इश्व । र०काल  $\times$ । ले०काल . । मपूर्ण । बेष्टन स०४३ । **प्राप्ति स्थान**—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ, (कोटा)
- **१३४. इस्टोपदेश—पुरुषपाद** । पत्र सं० २-२७ । आरु १० $\frac{5}{4} \times 1^3_{\varphi}$  दुखा । भाषा —सस्ट्रन । विषय—धर्म । २०काल  $\times$  । क्षेत्रक्ष । अपूर्ण । बेप्टन सः ११ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन क्रयंत्राल मन्तिर उदयपुर ।

**६३५. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०६ । ग्रा० १२ imes७ खा । र०काल imes । ले०कालimes । imesपूर्ण । वेपून स०३४–१३४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष---प्रश्तिलोक ने बून्दी मे प्रतिलिपि की थी। कही २ सम्कृत में कठिन शब्दों के सर्थ भी दिए हुए हैं।

**६३६. उपदेशरत्नमाला—सकलन्नुवर्ग ।** पत्र स० १७ । आ० १२ ४ ४ है इश्व । माषा— सस्कृत । विषय - ग्राचार शास्त्र । र० काल म० १६२७ श्रावरा मुदी ६ । ले० काल स० १६३१ सावरा मुदी २ । पूर्ण । बेष्टुन म० १२४ । **प्राप्ति स्थान—** ग्राट्राकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**६३७. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १४२ । झा० ११ ४ ५ इ**न्छ** । लेवकाल स० १६७४ **भादवा मुरी** ६ । बेष्टुन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**—भद्रारतीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

**६३८. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १४४ । ले० काल स० १६८६ भादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८० । **प्राप्ति स्थान**— भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ऋजमेर ।

हरेहर प्रतिसं**० ४** १ पत्र म० १२६ । ब्रा० १०३ ४५) इत्था । ले०काल म०१०५६ । पूर्ण । वेशन म० २२४ । **प्राप्ति स्था**न—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष---जोवनेर के मन्दिर जयपुर में प्रतिनिधि हुई थी।

**६४०. प्रतिसं० ५** । पत्र ४० १०४ से १७० । ग्रा० ६१ ४ ४३ दक्ष । लेककाल स० १८५३ । **प्रपू**र्ण । बेपून स० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रक्रिनस्दास्वामी वृदी ।

विशेष---प० जिनदास के लिये लिखी गई थी।

**६४१. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स०१२४ । आ०२५ ८ ६२४ । ते० काल स०१६४५ पीप सुदी १४ । पूर्ण । बष्टन स०१० । **प्राप्ति स्थान** – दि जैन सन्दिर नागदी बृदी ।

विशेष-- लडारि मे प० सदामुख ने प्रतिनिधि की थी।

६४२. प्रति सं० ७ । पत्रस० २१६ । ब्रा० ६१ ४४) इश्व । ले० काल स० १८६६ ज्यस्य बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनस० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुन्दी)

विशेष - विमल ने इन्द्रगढ में शिवसिंह के राज्य में प्रतिलिप की थी।

६४३ प्रतिसं∘ ६ । पत्रसः ७६ । ब्रा०१२ ४ ६ है इच्चा लेश्काल मश्रीच्छ१ । पूर्णा। वेष्टन संश्री-३ । प्राप्ति स्थान ∼ीदश्रीन मन्दिर कोटडियो का हुँगरपुर ।

**विशेष** - म०१६७१ प्रामीत गुदी १३ बुघवामरे लिखित भग्तपुर मध्ये पोधी **ग्रा**चारक श्री सकलकीतित्री ।

६४४. प्रति सं०६ । पत्रस० १३६ । ग्रा०१० $\frac{1}{5}$  $\times$ ४ ६%। ले० काल  $\times$ । पूरों । बेहन स० १४३–६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपूर ।

६४५. प्रतिसं० १० । पत्रस० १४४ । आ० १०२ुं ४४ । ने० काल स० १७४० साह सुदी ११ । बेष्टनसं० ६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- अम्बावनी कर्वटे नगर मे महाराजा रार्मामक के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी।

**६४६. प्रतिसं० ११ । पत्र स०** १०१-१३६ । ग्रा०१४ ४५<sup>3</sup> इला । ले० काल स० १७७६ । स्रपुर्ग । बेष्टन सं० ७२२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--हीरापुर मे पं० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

**१४७. प्रतिसं० १२ ।** पत्रसं० ४२ । आ० १२ $\times$ ५ । ले०काल $\times$ । प्रपूर्णः । वेष्टनम० ६८८ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर अयपुर ।

१४८. उपवेशसिद्धांतरस्त्रमाला-नेमिचन्द्र मण्डारी । पत्रसं० १२ । आ० १० $\frac{1}{2}$  ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । माया—प्राहत-सस्कृत । विषय—यमं एव श्राचार शास्त्र । र० काल्  $\times$  । ने०काल  $\times$  । कुम् । वेकृतस० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--गाथाओ पर सम्कृत मे अर्थ दिया हुआ है।

**६४६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १२ । ले० काल ्रा पूर्णा । वेष्टत स० ६० **प्राप्ति स्था**न । दि० जैत मदिर दीवानची कामा ।

६५० प्रतिसं०३ । पत्रस० १६ । ले०काल । पूर्णा वेष्ट्रन स०६८ । प्राप्ति स्थान— क्योगेन मन्दिर ।

विशेष - प्रति संस्कृत टीका सहित है।

विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है।

**६५३ उपदेशरत्नमाला-वर्मदास गरिंग** । पत्रसु० ५४ । आ० १० 🗴 ४ इश्व । भाषा— प्राकृत । विषय वर्म । र०काल 🔀 । ने०काल — । पूर्ण । वेजूनसं० २४४ । ।**प्राप्तिः स्थान**—दि० वेन मन्दिर, दवनाना (बूदी) ।

विशेष - प्रतिजीर्ग है। मून गायाओं के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया है।

**६५४. प्रतिसं० २** । पत्रस्० २७ । मा० १० : , ४ इङ्च । ते०काल स० १८६३ । पूर्ण । केष्टनस० २०६ । प्रास्तिस्**यान**ः -दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

ाध्या। सं० १८६३ वर्षे कार्तिक मृदि ७ भौमदिने शागरा नगरमध्ये लिखायित कृषि टांडर । पटनार्थ सुश्रावक श्रीमाल गोप्र पारमान यु श्रावक मार्नामह तत्पुत्र श्रावक महासिद्ध तस्य भार्यो मुध्याविका पृष्य प्रभाविका देवगुरुमनिकारिका श्राविका रमा पटनार्थ ।

६५५. उपदेशसिद्धांतरत्नमाला – भागचन्द । पत्र त०२६ । स्रा०१२} ८ ८ ६७ । भाषा – हिन्दी (गद्य) । विषय — धर्म । र०काल स०१६१२ झाषाड बुढी २ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं०१२१२ । प्राप्ति स्थान—महारकोय दि० जैन मदिर स्रजमेर । **६५६, प्रतिसं०२ ।** पत्र स०४४ । मा०६ $\times$ ४५ है इ.च. । ले० काल सं०१६४४ भादवा सुदी ४ । पूर्णा विष्टन सं०४० । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पत्रायती मन्दिर बयाना ।

१**५७. प्रतिसं०३** । पत्र स०७४ । ले०काल स०११४० । पूर्णे । बेष्टन ४ । **प्राप्ति** स्थान-दि०जैन पचायती मन्दिर मस्तपुर ।

६५८. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३४ । झा०१४ ४ ८ इ.चा । ते० काल स० १६३० चैत्र बुदी१४ । पूर्ण । बेष्टन स०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैत मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

विशेष ---ठाकुरंचन्द्र मिश्र ने प्रतिनिधि की थी।

**६५६ प्रतिसं०५** । पत्र स०३३ । घा० १२३ × ५३ इश्वा । ले०काल × । पूर्णै । वेदनस०३०६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर, घजमेर ।

-१६०. प्रति सं०६ । पत्रस० २८ । ग्रा० १३ ४ ८ इच । लेक्सल-स०१६३१ । वैज्ञाल मुद्दी ६ । गर्सो । बेष्टन स० ७० । प्राप्ति, स्थाल-स्व० जैन पाण्वेनाथ मन्दिर करीली ।

स मुद्रा द । पूरा । वष्टन स० ७० । प्रास्त स्थान—।द० जन पाण्यनाथ मान्दर कराला । विशेष—जनी हरचंद के मंदिर वियाने में ठाकुर चंद मिश्र हिण्डीन वाले ने प्रतिलिपि की ।

६६**१. प्रतिसं०७ ।** पत्रस० ६४ । घ्रा०१२१ॄ × ४ॄै इश्वा। ले०काल × । पूर्णा। वेष्टन स०११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेखावाटी ।सीकर)।

**६६२. प्रतिसं∘ म**। पत्रस॰ ३४। ग्रा० १३ ४६ इखा। ले०काल ग० १८१६ मगसिर सुदी ६। पूर्णा वेष्टनस० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनहपुर शिलावाटी)।

बिशोप---इस प्रति मे र०काल स० १६१४ माघबुदी १३ दिया हुन। है।

**६६३. प्रतिसं० ६** । पत्रत्त०४६ । ग्रा० १० ई $\times$  ७ इ.च । ले०काल स० १९३६ फामृन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्थान** –िदि० जैन मदिर श्री महावीर स्वामी बूदी ।

**६६४. प्रतिसं० १०**। पत्रस०४६ । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० < । **प्राप्ति स्थान**— दि॰ जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६६४. प्रतिसं० ११। पत्रत्त० ४२। ग्रा०११ (८ इ.स.) ते०कास स०१६३३। पूर्णः वेष्टतस०१२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सण्डेलवाल प्रचावती मदिर ग्रतस्त्राः।

६६६. प्रतिसं० १२ । पत्र स०४० । लंक्काल स०१६३४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०१३० । प्राप्ति स्थान---विकर्णन सण्डेनवाल प्वायती मन्दिर, ग्रलवर ।

६६७. प्रतिसं० १३ । पत्रत० ७१ । मा० १२ $\} \times ४$  हे उन्न । ले०काल स० १६४० मगसिर बुदी २ । पूर्ण । बेटन स० ४६२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मंदिर लकार, जयपुर ।

१६८. **उपासकाचार-पूरुयपाद** । पत्रसः ६ । ग्रा०११ × ४० इञ्च । भावा-सस्कृत । विषय---ग्राचार ग्राम्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसः ०२०६ । प्रास्तिः स्थास---महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजसेर ।

६६६. उपासकाखार-पद्मतंत्रि । पत्रस्य० १०४ । द्या० ११४४ इचा । सावा-संस्कृत । निषय--- धाचार गारत्र । र०काल-४ । ले०काल-४ । सपूर्णे । बेष्टन सं०१३१-६३ । **प्राप्ति स्थान** -- दि॰ जैन मंदिर कोटडियो का द्वारपुर।

विशेष---१०५ से आगे पत्र नहीं है।

६७०. उपासकसंस्कार—पद्माति । पत्रस० ४ । आ०१२ ४ ४ इ.स. । भाषा—सकृत विषय—साचार । र०काल ४ । तं० काल स०१४४० । पूर्ण । बेष्टन स०३०१ । १४६ प्राप्तिस्थान— वि० जैन सभवनाथ सर्वर उदयपुर ।

विशेष---

नृतक बृद्धिहानिभ्या दिनानि दशद्वादण। प्रमृति-स्थान मासैक वासरे पच श्रोत्रिण।। प्रमृति च मृते बाले दंशातरमृते रखे। सन्यासं मरखे चैव दिनेक मृतक मवेत।।।

प्रशस्ति स० १४४२ वर्षे वैभाग्य सुदी ७ लिखत ।

६**७१. उपासकाध्ययन-पडित श्रीविसल श्रीमाल** । पत्रकः १८३ । झा०२ ४ १७७। भाषा हिन्दी पद्या: विषय: धानार शास्त्र । र०काल × । शे० काल × । पूर्णः । ोहन स०२०४-१२१। **प्राप्ति स्थान**ाद० जैन मन्दिर कोट्टियो का हुगरपुर ।

१७२. **उपासकाध्ययन टिप्पग्** × । पत्रस० १-५ । घा०१२ × ५ इखा । भाषा — सन्तर । विषय - म्राचार शास्त्र । ४०काल × । ते०काल स० १४६७ । घपुर्ण । वेष्ट्रनस० ३४३/१६३ प्रास्ति स्थान -- दि० जैन सभवनाथ सन्दिर उदयपुर ।

विशेष—श्र तिम पुरिपका एवं प्रणस्ति निस्न प्रकार है—इति श्री वमुनदिसिद्धातविर्णिनसृपासका

मवत् १५८७ वर्षे चैत्र बुदी ६ रबी श्री मृतमये मरस्वतीयच्छे श्रीकु दकु दाचार्यास्वयं ग्राचार्ये श्री रत्नकीनिम्मच्छित्य मृनि श्रीहरिभूषयोनेद लिखित कमंश्रयार्थ ।

६७३. उपासकाध्ययन विवरण — ४ । पत्रत० १७ । ब्रा० १३ ४४३ इच । भाषा— मन्त्रत । विषय-प्राचार शास्त्र । र०काल ४ । ल०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३३६ । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मस्टिर ग्रवमर ।

१७४. उपासकाध्ययन आवकाचार-श्रीपाल । पत्रस० १-५२० । प्रा० ११  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इन्त । भागा - हिन्दी । विषय-प्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८२२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६७ १६१ । प्राप्तिसस्थान---वि० जैन सभवनाथ मान्वर, उदयपुर ।

विशेष - प्रन्तिम छन्द--

नेपन किया ए तेपन किया ए राम ग्रानीयम । गुभ श्रावकाचार मनोहर प्रवथ रच्यो रचियामणी सुननित बचन मविजन मुखकर । मध्यो भागावे सानने भावमु नवें नवाचें सार । श्रीपाल कहें जें साभनज्यों नेह षर मैगल पर नेह जय जयकार ।। इति उपासकाष्य्यनाध्याने श्रीपालविरचिते । सघपति रामजी नामाकिते श्रावकाचार श्रीभधाने प्रबंध समाप्तः ।

गाधी वर्द्धमान् तत्पुत्र गाधी पूषालजी भागां पानवाई पुत्र जोतिसर जवरचन्द्र जडावचन्द्र एते कृद्धवपरवार आवकावारनी ग्रथ लखावो ।

१७४. उपासकाध्ययन सूत्र भाषा टीका — × । पत्रस० ४४। घा० १०×४६ च । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय —घाबार शास्त्र । र०काल × । ने०काल स० १७०३ घाषाढ मुदी ४। पूर्ण । वेष्ट्रस० २८ । प्राप्ति स्थान —वि० नैन मन्दिर दीवाव नेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष---हिन्दी वर्ष सहित है। सम्गोपासक श्रावकमपपु प्रांसात जिलावर्ष पातातु विचरह। ति द्वारट तेह गोतान् मणती पुरहवी। क्या बार्मा लाघा सावनी। इस खन् निश्चि सहान् पुष्य प्राजीविकाना धर्म शेटनी नड प्रोसा निष्यु धर्म तेह पडिव क्यो प्रावरसा।

१७६. कल्पार्थ — ४ । गत्र त०४२ । घा० १० x ४ ६ व्या भाषा — प्राकृत । विषय — पर्म । रुक्ताल ४ । तेक्काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रत सं० १११-६ । प्रास्ति स्थान — दि० त्रीत मन्दिर बडा बीनपधी दासा ।

१७७. कुदेव स्वरूप वर्शन— पत्र म०२४। बा०१२ ११ इन्द्रां भाषा (तन्त्री (नत्र)। विषय—धर्म । २०काल ४ । के०काल ४ । धपूर्ण । वेष्ट्रन म०१४। प्राध्ति स्थान—र्वद० जैन मन्दिर वैर (व्याना)।

**९७८. कृदेव स्वरूप वर्ग्यन** - ्रा पव म० २७ । धा० ६३ ४ ५ ४ ७ ४ । भाषा हिन्दी गद्य । विषय — धर्म । ४०काल र । लेक्काल म० १६११ डि० व्यापाद नृती २ । पूर्म । वान म० ७२ । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन मन्दिर दीवान वेननदाम पुरानी डीम ।

६७६. कुदैव स्वरूप वर्रोन—> । पत्र २००५ । प्रा०११११ - ४ इ.स. । मापा - हिन्दी । विषय—वर्म । र०काल - । विष्काल २०१६६६ । यगुर्ण । वेष्ट्रत २००४ । प्रास्ति स्थान विश्वते मंदिर भादवा (राज०) ।

विशेष-- नेघराज रावका भादवा जान ने प्रतिनिधि की थी।

६६०. **कुदेवादि वर्सन्।** पत्र मध्या २१। भाषा—हिन्दी। विषय - गर्मः। र०कानः 🔀 । लेवन कानः 😤 । पूर्णः। वेटुन म० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**ः दि० जैन प्रवासनी मंदिर भरतपुरः।

**६८१. केमरचरवत निर्णय** ⊼ 1 पत्रस० १६ । प्रा० ११ . ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गख । विषय —मानार गानव । र० काल ८ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१८ । **प्राप्ति स्थान —१०** जैन मंदिर नागरी व दी ।

विशेष---सग्रह ग्रथ है।

६६२. कियाकलाष टीका—प्रमाचन्द्राचार्यः। यभस्य २८६०। भाषाः—मस्कृतः। विषयः— ग्राचार ज्ञास्त्रः। र०कालः ४ । ले०कालः स० १८०७। प्रपूर्णः । वेष्ट्नं स०६। **प्राप्तिः स्थानः—दि०** जैन नेरक्त्राची मन्तिर बसवाः। **६६३. प्रतिसं०२ ।** पत्रस० ४३ । झा० १०१४४१ इञ्च । ले० काल० ४ ।प्रां। वेक्रनसं∙ ६०–४६ । **प्राप्तिस्यान** — दि० जैन मन्दिर कोटबियो का द्वारपूर ।

**६८४. प्रतिसं० ३।** पत्रस० ४४। स्रा० ११३X४ $\frac{1}{2}$  इञ्च। ले० काल X। सपूर्ण। बेकृत स० ६१२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

**९८५. कियाकोश —दीलतराम कासलीवाल ।** पत्रस०११०। ग्रा०१०३ ४४ है डच। प्राचा—हिन्दी पर्यः। विषय —श्वाचार जास्त्रः। र०काल स०१७६५ भादवा मुदी १२। ले० काल० × । पूर्णः। बेहन म०४५०। **प्राप्ति स्थान** —महान्कीय दि०जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष - इसका दसरा नाम त्रेपन कियाकोण भी है।

**६८६. प्रतिसं०२।** पत्र स० १३ । प्रा० १२imes६ इ.स. । — ले०काल स० १८६७ सगसिर बुरी १.। पूर्ण। केटन स० १६। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर।

विशेष---वैर मे प्रतिलिपि की गई थी।

**६८७. प्रतिसं०३।** पत्रस**०११२ । घा०११ / ७**हेड्चा । रे०काल स०१६४४ भादवा सुदी १२ । पुर्पः वेकनस०४**-१। प्राप्तिः स्थान** – दि० जैन मदिर सक्कर जयपुर, ।

६**८८. प्रति स**० **४ ।** पत्रस० १०६ । प्रा० ६१% ६१ दश्च । ले०काल स० १८७० सावत बुदी ९८ । पूर्ण । वैपून स० १११ । प्राप्ति स्थान —िंद० जैन सन्दिर ग्रादिनाय बुंदी ।

**विशेष**ः - भोपतराय बाकलीवाल यसवा वाते ने सवाई माथोग्रुर में प्रतितिपि की थी ।

६८६६. प्रतिस**०५ ।** पत्रन०१०६ । घा०६<sup>3</sup>,४६३ डश्व । ले**०काल ग०**१८६६ ढि० घ्राया**ढ** बुरी४ । पूर्णा । बेष्टन स०११२ । प्राप्ति स्थान ंदि० जैन मन्दिर ग्रादीनाथ बूदी ।

. विशेष - सवाई साधोपुर में प्रतिलिपि की गई थी।

हरू **. प्रतिसंग्रह**ा पत्रसण्हरू । धार्णा १०९ ४७ । पूर्णा । वैष्टुन मण्टरः । **प्राप्ति स्थान**िद्युजन मन्दिर क्रिमनन्दनस्वामी व दो ।

**६६१. प्रतिसं०७ ।** पत्रस०१२७ । बा०११ ५ ४ इन्द्राः। ले०काल स०१६५२ । पूर्णाः। वेष्टनम०१६६ । **प्राप्ति स्थान**—-दि० जैन मन्दिर नागदीबृदीः।

विशेष - छवडा मे प्रतिलिपि हुई थी।

**६६२. प्रतिसं० ६** । पत्रर० १२५ । ले०काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति** स्**यान**—रि० जैन पचायनी मस्दिर दती (टोक)

**६६३. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ११२ । प्रा० १० $\frac{3}{2} < \chi^2_2$  डख । ने०काल स० १६०४ पीप बुरी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० २२२ । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष-- गोमदलाल वटवाल ने मोनीलाल से कोटा के रामपुरा में लिखाया था।

**६६४. प्रतिसं० १०** । पत्रस० ६० । घा० १३  $\times$  ६३ इचा । ले•काल सं०१८६६ प्रापाङ **बुदी** १२ । पूर्ण । बेष्टन स० ६६ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर बयाना।

विशेष---गुमानीराम रावका ने बयाना मे प्रतिलिपि की थी। इस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का

शासन था। श्रावकों के ८० घर तथा १ मन्दिर था।

**६६५.प्रति सं०११।** पत्रसं०११०। ग्रा०२्रै४६ इत्या।ले०काल सं०१८६६ भादीं बुदी२।पूर्णं। बेहन सं०११–३४। **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

विशेष---नानिगराम द्वारा करौली में प्रतिनिधि की गई थी।

**६६६. प्रतिसं० १२** । पत्रसं० १२६ । या० १० $\times$ ७ है इन्त । ले०काल सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टनसं० २१६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रव्याल मन्दिर उदयपुर ।

**विशेष**—स्वयं ग्रंथकार के हाथ की भूल प्रति है ग्रंथ रचना उदयपुर में हुई थी। फ्रन्तिम भाग निम्म प्रकार है—

सवत् सत्रामौ पच्यागाव भादवा मृदी बारस तिथि जागाव ।

मङ्गलवार उदयपुर का है पूरन कीनी समै ना है ।।१८७१।।

ग्रानन्दमुत जयमुः .... को मन्त्री जय को ग्रनुचार ज्याहि कहै।

सो दौलति जिन दासिन दास जिन मारग की मररा गहै।।

**६६७. प्रतिसं० १३** । पत्रस० ६७। ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० ४१६।१४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

**९८८. प्रतिसं० १४ ।** पत्रस० ६३ । आ० १३२ ४६ इच्छा । ले० काल स० १६४७ । पूर्णा । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—विकर्जन मन्दिर श्रीमहातीर ब्रुदी ।

**८६६ प्रति सं०१५।** पत्र स०१०६ । आ०६ ३५६ इ.ख.। लेक्नाल स०१८६० आसोज सुदी १२। पूर्ण । बेहन स०१३६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर ने*रह*पशी दौसा।

विशेष्ट-नोनन्दराम छावडा ने मवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि करवायी थी ।

१०००. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ६५० । आ० १२३ ४६ इख । ले० काल ी अपूर्ण । बेस्टन म० ५२ । प्रास्ति स्थान--वि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौना ।

**१००१. कियाकोश माया** — **किशानीसह ।** पत्र म०७७। ग्रा०१२ × ४ इश्रा । भाषा — हिन्दी (पद्य)। विषय – भाषार शास्त्र। र०काल म०१७६४ भाषवा मुदी १४। ले० काल म०१८०३ मगलिर मुदी १२। दुर्ग्स् । वेष्टन म०१४६३। **प्राप्ति स्थान** — महारकीय दि० जैन मिंदर ग्रजमेर ।

विशेष---गृहस्थों के ग्राचार का वर्णन है।

**१००२. प्रतिस०२ ।** पत्र म०७६ । ब्रा० १०×४ इञ्चालेक्साल ४ । पूर्गा। वेटन स०५१६ । **प्राप्ति-स्थान—** म०दि० जैन मन्दिर ब्रजमेग ।

**१००३. प्रति स० ३ ।** पत्र स० ६७ । सा० १३ × ६१ इच्छा । ले०कान म० १८३१ । पूर्णा। वेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाथ चौगान बृन्दी ।

**१००५. प्रतिसं०५ ।** पत्र स०६० । द्या० १२३<sup>3</sup> ×५ इच्च । ले०काल स०१०२२ । पूर्ण ।

वेष्टत सं॰ ६२-४७ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

**१००६. प्रतिसं० ६ ।** पत्रसं० ३४ । घा० ६imes६ इन्त । ले॰काल imes । घ्रपूर्णं । वेष्टन स $\circ$ २६६/१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर संगवनाथ उदयपुर ।

**१००७. प्रतिसं० ७ ।** पत्र सं० ६६ । घा० १३imes७ इन्छ । ले०काल सं० १६३७ घाषाङ् बुदी १२ । पूर्णः । वेष्टन सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—वि०जैन मन्दिर फतेहपुर गेलावाटी (सीकर) ।

विशेष—लाला रामचन्द्र बेटे लालाराम रिखबदास प्रधवान श्रावक फतेहपुरवासी (दूकान शहर (इल्ली) ने प्रतिलिपि करवाई थी।

१००६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५०। ब्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ इ.ख.। ले०काल स०१५६४ । पूर्ण । बेग्टन स०६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर (सीकर)

विशेष—कतेहपुर वासी श्रयबान लक्ष्मीचन्द्र के पुत्र मोहननाल ने रतलाम मे श्रांतर्लिप करवाई थी। द. मगलजी आवक।

**१००१. प्रतिसं०** २। पत्रसं० १४५ । द्या० १० 🗶 ६ इ.च.। लेकाल स०१८३१ वैद्यास्य मुद्री ७ । पुर्णा वेषुन् स०५, १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

**१०१०. प्रतिसं० १०**। पत्रस० १५१। झा० १० ४५ दुंद्या । ले०काल स० १८६६ फाग्ग्ग मटी ७। पूर्णा वेष्टन स० १२५। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर तेरहसयी दौसा ।

विशेष गणालास भाट ने प्रतिलिपि की थी।

**१०११. प्रतिसं०११** । पत्रस०१४३ । म्रा०१० x ४} इल्ब । ले०काल म०१८१६ । गुगा । बेवून स० ८६-४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सेरापथी दौसा ।

विशेष-भीगनं संप्रक्षरो पर स्थाही फैल गई है।

१०१२**. प्रतिसं० १२** । पत्रसं० २१४ । ले०काल ४ । पूर्ण । **वेष्ट**तस० ३२ । **प्राप्ति स्थान** विकर्तन पत्रावनी मदिर हण्डावालों का डीग ।

**१०१३. प्रतिसं०१३** । पत्रस० ६६ । म्रा०१२१ 🗴 ६ इच्या । ले०काल स०१६७८ । इक्तं। बेष्टनस०१४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

१०१४. प्रति स० १४ । पत्रस० १२२ । आ० ० । ४ ५ । इत्रव । ले०काल स० १०५५ हि० अपाट बुरी १३ । पूर्ण । बेष्टनस० २२ । **प्रास्ति-स्थान**— दि० जैन पत्रायनी सन्दिर कामा ।

**१०१४. प्रतिसं० १४** । पपस० १४६ । प्रा० १६ × ४ इच । वेश्काल × । पूर्ण । वष्टनमञ्जिष्ठ । ४६ । **प्राप्ति स्थान**—विञ्जन पचायनी मन्दिर कामा ।

**१०१६ प्रतिसं०१६।** पत्रस०६७। ग्रा०१३४६ इञ्चाने०काल न०१८६६ फागूग् सर्वा३। पूर्णावे**वृत्**स०३। **प्राप्ति स्थान**ादि० जैन पचायती मरिर बयाना।

विशेष-- वक्षीराम ने प्रतिनिधि करवायी थी।

**१०१७. प्रतिसं० १७**। पत्रसं० ११६ । मा० १३ ४ ६ इन्ह । ले०काल म० १६७७ ज्येष्ठ <sup>बुदी</sup> २ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मंदिर बयाना । १०१८. प्रतिसं० १८ । पत्रसु० ५२ । ले०काल 🔀 । प्रपूर्ण । बेष्टनस०२६२ । प्राप्ति स्थान— दिगम्बर जॅन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०१६. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १३२ । ले०काल--स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८३ । प्राप्ति रूपान -- दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - इसे कामा के जोधराज कासलीवाल ने लिखवायी थी।

१०२०. प्रतिसं० २०। पत्र सं १११। ले०काल 🔀 । पूर्णा वेष्टन स० २५४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रवासती मन्दिर भरतपुर ।

१०२१ प्रतिसं० २१। पत्रसः० ६२ । ते०काल—स० १८११ ब्राघाड युटी १२ । पूर्ण । बेष्टुनस्० २८४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर सन्तपुर ।

विशेष-इसे जिहानावाद मे प० मयाचन्द्र ने लिखवायी थी।

**१०२२. प्रतिसं० २२** । प्रवस्त० १४२। लेक्काल ग०१८२५ वैमाल सुदी १ । पूर्ण । केप्रतम् ०२८६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रवासती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर निवामी गूजरमल के लिए बसवा में प्रतिलिप की गई थी।

**१०२३. प्रतिसं० २३ ।** पत्रस० ६४ । ते०काल— स०१८४७ सावन सुदी ७ । पूर्ण । बेटन प० २८७ । प्रास्तिः **स्थान**ः दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - हलाशराय चोधरी ने प्रतिलिप बरवायी थी ।

१०२४. प्रतिसं० २४ । पगस० ४६ मे १०४ । ले०कालस० १७८४ । अपूर्ण । बेष्टन स० ४१४ । प्रास्तिस्थाल - दि० जैन पंचायनी - सन्दिर भरनपुर ।

**१०२५. प्रति सं० २५** । पत्रस**ः ११२**। ग्रा० १२५७ दश्व । ले०काल — 🗴 । पूर्ण । वेष्टुन स० ८७ । **प्राप्ति स्थान-दि०** जैन ग्राप्रवाल प्रचावनी मन्दिर ग्रालवर ।

१०२६, प्रतिसं० २६ । पत्रतः १२ । आ० १२ / ९४) इ.स. । लेक्काल -- सं० १८०६ माह मुदी १२ । पुर्या । बेपुत स० ४४ ,१६४ । प्रास्ति स्थान -- दि० जैन प्रकारती मन्दिर ग्रन्थर ।

१०२७ प्रतिसं०२७ । पत्रस०१३४ । लेक्काल स०१६४६ । पूर्णः । वष्टनस०४५,१४ । प्राप्तिस्थानः दिः जैन प्रवासनी सन्दिर कलवर ।

१०२८ प्रतिसं० २८ । पत्रम० १०४ । लेब्बाल—स० १८७४ भारवा सुदी २ । बेष्टनम० ४६,१४,। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर प्रलवर ।

**१०२६. प्रतिसं० २६ ।** पत्रस०---३४-७६ । था० १२ ≾६ इच । ले**०काल - स० १**८८३ । श्रपुर्ण । वेष्टन स० ३२० । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष-कोटा मे प्रतिनिपि हुई थी।

**१०२०. प्रतिसं० ३०** । पत्रसं० १४२ । धा० १० ⋋ ५ इला । ले∙काल स० १६२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११=/७७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पात्र्वनाय मन्दिर इन्दरादृ (कोटा) ।

विशेष-- लिलाइत मुवानीलाल जी श्रावगी बातवान माधोपुर या लिखाई इन्द्रगढ मध्ये ।

१०३१. प्रतिसं० ३१। पत्रस० २ से ६४। मा० १२ × ४१ इत्व । ले०काल — न० १६०८ कार्तिक बृदी १०। मपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ११ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी मालपुरा (टोक) ।

**१०३२. प्रतिसं० ३२** । पत्रस० ११४ । घा० ११४ ४<sup>2</sup> इःख । ले**०काल** स०१८८६ पीप बदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं०४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष--राजमहल मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१०३३. प्रतिसं० ३३** । पत्रस० ३१ । आ० १२×५ दश्वा । **ले०काल ×** । सपूर्ण । नेपन म०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बधेरवालो का घावा (उस्सियारा) ।

**१०३**%. **प्रतिसं० २४।** पत्र म० १२४ । घा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इख । लेक्सल म० १६५० वैजाल मुदी १। दुर्गा। बेहुनस० ३५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पृचायती दुनी (टांक)।

**१०३५. प्रति सं० ३५ ।** पत्रस० ६४ । मा० ११ × ५३ ८ खा ले**०काल** - म० १८५४ माघ शक्ता ५ । पूर्णा । प्राप्त स० ८६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर कोटयो का, नंसावा ।

१०३६ **प्रतिसं**ठ ३६ । पत्रसं० १०२ । घा०११ ४ ६ १ इ.च.। ले०काल - । पूर्णा वेकनसक्षत्र । **प्राप्ति स्थान**--- दि०जैन मन्दिर कोटयो कानैसावा।

**१०३७. प्रतिसं० ३७** ६ पत्रस० ७३ ।प्रा० ११३ ८ ६१ इख । ले०काल स० १८१४ मर्गासर सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टुनस० २१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन तेरहपयी मन्दिर नैसाबा ।

विशेख प्रणस्ति निस्न प्रकार है।

िमान मनमर मुद्दी १४ रखी मंदन् १६९४ का मान को पोशी मगदी मुखदेद गागानेर का की म इनारी हैं नियन नीवाराम सुध्यालकर वेद की पोधी नय नैवादा मध्य बार्च बॉर्न श्री मदद बचा। भी नेवादवी वाम दिर चढाया मिनी फानुगा मुदी र मदन् १६११ विश्वी काल् ने चढाया श्री विरनार जी की बाजा के चढाया श्री मानस्थानाम स्वामी है।

१०३ म. प्रतिसंव २ म. १ प्रसाव १६-८६ । आव १० ×७ दश्या । लेवकाल सव १६ म. । पपुर्ण। बहुत सव २२ । प्राप्ति स्थान । दिव जैन मन्दिर आदिनाथ बुदी।

१०**३६. प्रतिसं० ३६ ।** पतस० ११८ । प्रा० १२ 🗶 १३ इखा । लेक्काल म० १६३७ माह मुर्घा १२ । पूर्ण । वे**ह**नस० २६ । **प्राप्ति स्थान** —(द० जैन मन्दिर पाइवेनाथ टोडारायसिह (टोका) ।

विशेष--मालपुरा निवासी प० जीहरीलाल ने टोडा में सावला जी के मंदिर में लिखा था।

**१०४०. प्रति सं० ३०** । पत्रस० १२३ । छा० ११ ४ ५३ इखा । लेवलाल स०१=४६ । पूर्णे । बेहुनस० ५१ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन सदिर पाण्येनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष-- महजराय व्याम ने प्रतिलिपि की थी।

**१०४१. प्रति सं० ४१** । पत्रस० १५४ । आ०६ × ७३ इ.ख । ले० काल म० १६४० । पूर्णे । बेष्टन सं० ११३ ६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर इन्दरम**ड** (कोटा) ।

विशेष-लावेरी में प्रतिलिपि की गई थी।

**१०४२, प्रतिसं० ४२ । पत्रस०** १२४ । झा०६<sup>2</sup> ४ ६ इखा । ले० काल⊸स०१६१४ । पूर्णे । त्रेष्टनस०१६० **। प्राप्ति स्थान** ⊸दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । १०४३. प्रतिसं० ४३ । पत्रस० ६४ । द्या० १० ४७ डचा। ले० कालः स० १८२६ फाल्गुन बुदी ३ । पूर्या। बेहन स० ११६ – ४७ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर बडावीसपंची दौसा।

विशेष -- लालसोट में प्रतिलिपि की गई थी।

**१०४४ प्रतिसं**०४४ ।पत्रसं०६४ । ग्रा०१२ ४ ५ ६%। । ने० काल—स०१७६० फाल्गुगा बुदी ⊏ । पूर्या । वेष्ट्रनस०१२७ २ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मंदिर वडा वीमपथी दौसा ।

विशेष प० समालीराम ने प्रतिलिपि की थी।

**१०४५. पतिसं० ४५** । पत्रस० १४१ । घा० -- १०३ × ५३ डच । ले० काल स० १८६१ चैन मुदी ४ । पूर्ण । बेहनस० १≍१ । **प्राप्ति-स्थान**--- दिजैन पचायनी मंदिर करीली ।

१०४६ कियाकोष भाषा—-दुलीखन्द । पत्रस०५७। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय - शुरुष की कियाओं का वर्णन । ००कार  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं•  $\times$ । प्राप्ति स्थान- - दि० कैन मदिर दीवानकी भरतपर।

१०४७. कियामद्विति  $\times$  । पत्रस्क १ । स्वः - ४१ इत्रः । भाषा—सम्बन्धः । विषय— स्राचार मास्त्र । रक्सक्  $\times$  । पे॰काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्रनं स्वः ४३ । प्राप्ति स्थान —दि० वेन सन्दिर नागरी (वृदी) ।

विशेष -- जैनेतर प्रन्थ है।

**१०४६, कियासार-अद्रबाहु।** पत्रस०१८। आ०२ हैं ४४ देखा। आया— प्राकृत। विषय -ग्राचार जास्त्र। र०काल ≿। ले०काल स० ४। पूर्ण। वेष्टनस०६८। **प्राप्ति स्थान**—दि० क्षेत्र सदिर लक्कर, वरपुर।

**१०४६. क्षेत्रसमास**  $\times$  । पत्रस० ४ । मा० - १०३ × ४ हे दश्वः । भाषाः—प्राकृत । विषयः— धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल म० १७४३ । पूर्णः । वेष्टन स०४६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्द्रिय प्रकोरः ।

विशेष--- ग्रलवर नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

**१०५०. क्षेत्रसमास प्रकरग**— ≻ । पत्र स = । आ०१०४४, टखा । आषा— प्राकृत । विषय—धर्म । **२०** काल ४ । ते० काल **४** । पूर्ण । वे० स०४४१ । **प्राप्ति स्थान— अ**ट्टास्कीय दि० जैन मन्द्रि बजनर ।

विशेष- दंवणास्त्र गुरु के गुरा तथा दोषो पर विचार है।

१०५२. गुरुपदेशश्रावकाचार — डालूराम । पत्र सं०२०३। बा० १३ x ७ टख । भाषा — हिन्दी । विषय-भाषार शास्त्र । र०काल म०१६६७ । ले० काल म०१६६४ । पूर्ण । बेष्टन स०१५६१ । प्राप्ति स्थान — अ०दि० जैन सन्दिर ग्रजसेर ।

**१०५३. प्रति सं०२ ।** पत्र म०२२१ । घा०१०१४ ५ इन्हां ने ० काल म०१६७० सावत सुदी३ । पूर्णावेहत म०४०७ । **प्राप्ति स्थान— म०** दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर । **१०५४. प्रतिसं०३।** पत्र सं०१ ⊏५ । घ्रा०१० ४७ । इस्या ले०काल सं०१९५० । पूर्ण। बेष्टुन सं०३ द। **प्राप्तिस्थान—** दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजीबृदी।

१०५५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २३६ । ग्रा० १२५ ४ ७ इञ्च । ले० काल स० ११४६ । पूर्ण । वेयन सं० ६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन० मन्दिर कोट्यो का नैम्पता ।

१०५६, गृहप्रतिकमस्य सुत्र टीका— रस्नशेखर गरिया। पत्र म०५६। आया --सम्बन्धन। विषय---प्रमी। र०काल भागे के काल म०१६७६। पूर्णा विष्टन म०७४१। प्रास्ति स्थान----विक्तंन विषयी मन्द्रि भरतपुर।

**१०४७. चउसर एव्ति**— े. । पत्र ग० १२ । प्रा० १० ८४ हे उन्ह । भाषा—प्राहत । विषय-पर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन म० २१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन वर्ण्डेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१०५६. चतुरचितारणो—दोलतराम ।** पत्र म०२-५। प्राठ १०,४५१ इस्त । आपा— हिन्दी (पद्य) । क्षिय—समे । र०काल ० । ले०काल 太 । प्रपूर्ण । वेष्टन म०३०५। **प्राप्ति स्थान**-वि० तेन प्रदेशमा मन्दिर, उदयपुर ।

**विशेष**—इह चनुरचितारींग भवजन नारींग ।

कारिण शिवपुर साधक हैं वाचो धर राजो या में साजी

योजां सर् राजा जा म माजा टीलांत स्वतिस्ताली ···· ।

इति श्री चतुरचितारशी समाप्त ।

१०**४६. चनुंदशी चौपई—चतुरसल।** पत्र स०२७। भाषा —हिन्दी। विषय—धर्म। र०काल । ले०काल स०१६५२ पोष सुदी १३। पूर्ण। वेष्टुन स०३। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर हण्यावालो का द्वील)

**१०६०. चतुरुकशराग बागंन** स्पन्न मण्डा था० १०] र ३२ डचा साया—सङ्ग्त हिन्दी। विषय—धर्मा र०काल र । ते०काल र । पूर्णा । बेष्ट्रन स ३०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर दबलाना बृंदी।

विशेष--गथाओं के अपर हिन्दी ग्रथं दिया हमा है।

१०६१. प्रतिसं०२ । पत्र स०२ । स्रा०६९ ४४ डेडच । ले० काल ४ । स्रपूर्ण । बेह्न स०२६६ । प्राप्ति स्थान-दिल्जैन महिद्युवनाता बढी ।

**१०६२. चर्तुमास अर्म व्याख्यान** 👉 । पत्र स० ४ से १२ । भाषा — हिरी । विषय— धर्म । २०काल 🗶 । के० काल 🗶 । धपूर्ण । वेष्ट्रन स० ६०८ । **प्रास्थितस्थान** - दि० जैन पत्रापनी मन्दिर भरतपुर ।

१०६३. **चतुं मास व्याख्यान---समयमुन्दर उपाध्याय ।** पत्र सं० ४ । भाषा---सस्कृत । विषय----षमं । र०काल : ४ । ले० काल : ४ । पूर्ण । वैष्टुन स० ६४३ । **प्राप्ति स्थान--**-दि० जैन सन्दिर भरतपुर । **१०६४. प्रतिसं० २।** पत्र स० ३-४। ले० काल × । श्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ६६६ । **प्राप्ति** स्थार.—उपरोक्त मस्टिर ।

**१०६४. चारित्रसार— चामुण्डराय** । पत्र स० ११। प्रा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ । भाषा— सस्कृत । विषय— प्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १५२१ ज्येष्ठ मुदी६ । वेष्ट्रन स० १२६। प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर लक्कर, जयगुर ।

१०६६. प्रतिसं० २ । पत्र म०६२ । धा० ११×५३ इ.च. । ले०काल × । धपूर्ण । बेष्टन स०१२६ । प्रास्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- १७ मे ६२ पत्रो पर सस्कृत मे टिप्पणी भी दी गई है।

**१०६७. चारित्रसार—वीरनदि ।** पत्र स० २-१६ । ब्रा० १० $\frac{1}{2}$ ४४ $\frac{1}{2}$  इख । भाषा-प्राकृत । विषय — ब्रवार ग्रास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १४८८ चंत्र बुदी ११ । ब्रपूर्ण । प्राप्तिःस्थान—वि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेग---फागुरा मुदिसी वर्ष सवत् १५० लिखते प्राचार्य श्रीसमतदि देवान धाचार्य भीममे कीति देवा तत् शिष्यागी सुल्नकीबाई पारो । लिखते जानावरणी कर्म क्षयार्थ ।। म० १५८८ वर्षे चैत्र बुरी एकादसी मञ्जस्वारे ३ स्वास्मण्डनार्थ निक्षते क्षल्नकी पारो ।।

**१०६८. प्रतिसं० २ ।** पत्र म०७८ । ग्रा० १ ८१ इथा। ले०काल राम्यूर्णा। वेष्टन म० २३१ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष--- ७० से आगे के पत्र नहीं है प्रति प्राचीन है।

१०६६. **चारित्रसार वचितका सन्तालाल** । पत्रस०६८ । प्रा०१२ ८६ है इन । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय — बाचार बास्त्र । १०काल स०१८७१ माघ सूत्री १ । लेक्काल --स०१६०३ । पूर्ण । वेक्रतस० १३१-४६ । **प्राप्त स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वरारपर ।

**१०७१. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १६१ । ले०कालः- ः । पुग्गं । बेष्टनम० ४१३ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जेन पद्मायनी मन्दिर, भरनपुर ।

१०७२. प्रतिसं० ४ । पनस० १०० । लेब्बान ४ । अपूर्ण । बेटूनस० ४१४ । प्राप्ति स्थान—न्दि० जैन प्रचायनी मन्दिर, भरतपुर ।

१०७३: **बारों गति का चीडालिया** र । पत्रस**ः । यार्०६८५ इखा । भाषा —** हिन्दी । विषय — धर्म । रुकाल र । लेक्काल र । पूर्ण । वेष्ट्रन स**्टर । प्राप्तिस्थान** — दिर्श्व जैन पत्रावनी मन्दिर कामा ।

विशेष-गुटके में है तथा अन्य पाठों का मग्रह भी है।

१०७४. चौबीस तीर्थंकर माता पिता नाम $-\times$ । पत्रस $\circ$  ३। आधा-हिन्दी । विषय-धर्म ।  $\circ$ काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण । बेहुन स $\circ$ -६०६। **प्राप्ति स्थान** -दि॰ जैन । प्रचायनी । प्रदिर भरतपुर ।

विशेष —प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । सबत् १८११ माघ मुदी ५ भगत विमल पठनार्थ रामपुरे लिपी कृत-नेमिशिन चैत्यालये ।

**१०७६. खोबोस दण्डक**— **सुरेन्द्रकोत्ति** । पत्र तः २ । ग्रा॰ १० × ४है इश्व । भाषा — सम्कृत । विषय— समें । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्गं । वे०मं ० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान वन्दी ।

१०७७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३। घा० १०३४ ४। ले०काल 🗴 । बेष्टनस०-३१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष -- एक पत्र और है।

१०७८ **चौबीस दडक माचा**—पं दौलतराम । पत्रस० ३ । प्रा० ८१% है हुन्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—पर्म । र०काल १८वी कागव्दी । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १५०-६८ । प्रास्ति स्थान —दिञ्जन मन्दिर कोटडियो का इनस्पुर ।

**१०७६. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४ । धा० १२  $\times$  ६ $\frac{1}{7}$  इ.स. । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं $\omega$  २४४ १०२ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

१०८०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६ । छा० ११ ४४ है इन्दा । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २०६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१०८१. प्रतिसं० ४ । पत्रम०१२ । प्रा० १४६ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रनस्० ४२२ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इयरपुर ।

विशेष--प्रथम = पत्र पर वत उद्यापन विधि है।

१०८२. प्रतिसं**० ५**। पत्रस०४। आ०११४५३च । लेश्काल — ४ । पूर्ण । बेष्टनसं**०** १६४। **प्राप्ति स्थान —** दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान बंदी ।

**१०६३. प्रतिसं० ६** । पत्र न० ४ । प्रा० १२ imes ४ इ.च. । लेक्शल म० १८७८ उपेष्ट सुदी ६ । पूर्ग । वेग्टन म० ३२ । १३६ । **प्राप्टि. स्थान**—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिष्ट (टोक) ।

**१०८४. प्रतिसं** ७ । पत्रसः १ । ग्रा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इश्वः । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवागती मन्दिर, करोती ।

**१०८४. चौबीस दण्डक** ५. । पत्रस० ६ । भाषा—िहन्दी । विषय—धर्म । र० काल । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४०६–१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियान हुनरपुर ।

**१०८६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ३ । प्रा० १० $\frac{1}{6} \times 6 \frac{1}{8}$  इन्य । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० ३८ । प्राप्ति स्थान—कि० जैन प्रवायती महिंदर करीली ।

१०८७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११ । प्रा० ६५ × ५ इल्ब । ले∙काल × । पूर्एं। वेष्टन सं∙ १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बुदी। **१०८८. प्रतिसं०४ ।** पत्रस०११ । घा०१२×७६ खा। ले∘काल स०१६२६ । पूर्ण। बेष्टन सं०२१३ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बुदी।

**१०८६. चौबीस दण्डक**—  $\times$  । पत्र सं० १०। प्रा० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इश्व । भाषा—संस्कृत । विषय—समं । र०काल  $-\times$ । से०काल म० १८२३ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नागदी व दी ।

विशेष-पाढे गलाव सागवाडा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

**१०६०. चउबोलो की चौपई —चतरू शिष्य सांवलजी** । पत्रस० ३७ । या० १०४४ इञ्च । भाषा —हिन्दी । विषय —धर्म । र०काल ४ । के०काल स० १७६८ । पूर्ण । वेष्टन म० ३४१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्राप्तर प्राप्तिनदन स्वापी वंदी ।

**१०६१. चौरासी कोल**— > । पत्र स० १। भाषा ः हिन्दी । विषय —धर्म । र०काल × । लेकाल ×। पूर्ण । बेष्टुन २० ६७५ । विशेष स्थान —दि० जैन पत्रायती सदिर भरतपुर ।

१०६१. (क) चौरासी बोल- 👉 । पत्रस० १६। ब्रा० १० ४६ छत्र। भाषा--हिन्दी। विषय-- घर्म। २० काल 🗴 । से०काल स० १७४० पूर्ण। बेहन स० १६२। प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर फेलेहपुर केलाबाटी (भीकर)।

विशेष--- काष्ट्रासथ की उत्पत्ति, प्रतिन्ठा धिवरण एवं मनि ग्राहार के ४६ दोषा का वर्णन है।

१०६२ खियालीस गुरा वर्णन—> । पत्रन० १। आ०६ रे ४४ है इस । आया—सस्कृत । विषय—अर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १०४। प्रास्ति स्थान -- दि० जैन सन्दिर तीमनाथ टोडारायसिह (टीक)।

१०६३. जिनकल्पी स्थविर आसार विवार— रापवस०१३। पा०१०८५१वा । भाषा—प्राकृत, हिन्दी (पर्या)। विवयं सावारणस्त्र। र०कानं ×ा लेकाल—स०१६०५। पूर्णा वेष्टनस०१६३। प्राप्ति स्थानं— दि० जैन प्रयवान सन्दिर उदयपुर।

१०६६: जिन प्रतिमा स्वरूप— x । पत्रम०- १४। बा० १०४७ इश्वः। भाषा-हिन्दी। विषय-वर्गा । रचना काल x । तेवन काल x । पूर्णः। वेण्टन म० १४६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर श्री महावीरणी वृदी।

१०६७. जिन प्रतिमास्यरूप भाषा- छोतरमल काला । यत्र सन्या—८२। घा० ६ २ ४ ६ ६ ४ । भाषा-र्वेश १ (४८) । विषय — पर्य । रब्याल म० १६२६ केमाल मुद्दी ३ । केब्बाल म० १६३६ कालिक मुद्दी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६१३१ । प्राप्तिः स्थान—यात्र्यनाय दिक ब्रंत मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

विशेष--उत्तमबन्द व्यास ने मलारए॥ इंगर मे प्रतिलिपि की थी। प्रश्नोत्तर रूप मै है।

१०६८ . **जीव विचार प्रकरत्य**ा पत्रसं० ६। भाषा---प्राकृत। विषय ---पर्म। र०काल ×। लेबकाल--स०१८६१। पूर्ण। वेष्टुन कं ६२४। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पचायती मन्दिर भग्तपुर।

विशेष-प्रलवर मे प्रतिलिपि की गई थी।

**१०६६. जीव विकार** । पत्र संग २। स्राग्ध १२ $\times$  ६ दश्य । भाषा—प्राकृत । विषय—धमं ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । ले० काल— $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन स०—१७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाम, चौरान वृंदी ।

११००. **जोवसार समुख्यय**— × । पत्रस०-२८ । प्राः १२ × ४ इवा । भाषा—सरहत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल--- × । पूर्ण । वेष्ट्रनस०—३१।३ । प्रास्ति स्थान —िर्दे० वैन प्रथमन मन्दिर उदयपुर ।

११०१. जैन प्रवोधिनी द्वितीय भाग $-\times$ । पत्रम $\circ$ २६। प्रा $\circ$ द $^1_2 \times \circ$ दुश्च। भाग-दिल्दी (पद्य)। विषय--धर्म। रुक्तल $-\times$ । वेश्वकाल $-\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रनसंब्द्ध। प्राप्ति स्थान - भ $\circ$ दि $\circ$  जैन मन्दिर ग्रज्ञमें ।

१९०२. जेनश्रावक श्राम्नाय—समताराम । पत्रस०—रः । श्रा० १०१ ४ ७ इचा । भाषा —हिन्दी (पदा) । विषय—श्राचार । १०काल ४ । ने०काल मं०१६१५ धासीज बुदी ७ । पूर्ण । १९०का० २६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

विशेष कवि भेलमा का रहने वाला था। रचना सम्वत निम्न प्रकार है--

स्वत एका पर नो उमै पचदण जानो सोय। इस्सम्बद्ध अस्टी नहीं भग वैभाग्य जो होय।

पत्र २६ से २८ तट प्यारेलाल कृत ग्राभिषेक बावनी है।

११०३. जैन सदाचार मातंष्ठ नामक पत्र का उत्तर— . । पत्र म० २७ । प्रा० ११ $\frac{1}{7}$  $\times$  ६ ३व । माणा - हिन्ती । विषणा-- प्रावार मान्य । रुकार्य —  $\times$  । वेकार्य —  $\times$  । प्राप्त । वेकार्य —  $\times$  । प्राप्त स्थान —  $\times$  अंत छोटा मन्दिर बर्गाता ।

**११०४ ज्ञानियन्तामरि**ण मनोहरदास । पत्रस**्** १ मापा—हिन्दी । विषय—पर्म । र०कान म०१७०० । ले०कान 🗴 १ पूर्ण । वेष्टनस०१६० । **प्राप्तिस्यान** —दि०र्जन पत्रायनी मरिर मरनपुर ।

**११०५. ज्ञानवर्यए। बीपचन्द्र।** पत्रसुरु ३१। प्रारु ११ ६६ १८%। भाषा —िहन्दी भवा। विषय — यमं। रुक्ताल् ४। तेरुकाल मुरुद्धारु केट मुदी १४। पूर्णः। बेट्न मुरुद्धारु प्रार्थिस स्थान —िदरु जैन प्रध्वाल पुचायनी मुदिर क्षानवर।

**११०६. प्रति सं० २ ।** पत्र म० घ२ । प्रा० च<sup>5</sup> ४ ४ द्वा । ले**० काल—म०१** ६६० । माघ बुदी १ । पूर्णा । बे० म० ६६-१६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

**११०७. ज्ञानदीपिका भाषा** ४. । पत्र स० २०। घा० १२ ४. ६ ७ खा। भाषा—हिन्दी गय। विषय—सर्प्यः। २०काल स० १८३१ सावत बुदी २। ले०काल सं० १८६० फापुत वरी १३। पूर्यः। वे०स० १२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर करौती। विशेष--- मवाई माधोपुर मे ही रचना एव प्रतिलिपि हुई थी । लेखक का नाम दिया हुग्रा नही है।

**११०६. ज्ञानभञ्ज्ञोसो-बनारसोदास ।** पत्र स० १ । ध्रा०-१०×४२ इन्छ । भाषा— हिन्दी । विषय — घमं । र०काल × । से०काल स०१७७८ । पूर्ण । वेप्टन स० ६२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सक्कर, जयपर ।

विशेष-कोकिद नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**११०६. प्रति सं० २** । पत्र स०– १ । ले० काल imes । पूर्ण । वे०स० ६८० । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

१११०. **ज्ञानपंचमी व्याल्यान-कनकशाल ।** पत्र स०६ । भाषा—सन्द्रतः । विषय—पत्रमं । र•काल 📐 । ने॰काल—स०१६४४ । पूरां । वे० स० ७३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--भेडवा में लिपि हुई थी।

**११११, ज्ञानानंद आवकाचार-माई रायमल्ल ।** पत्रतः २२२ । या० ११८ ७१ इख । माषा-राजस्थानी (द्वारी) गद्य । विषय-प्राचार णास्त्र । र०काल ८ । ले०काल ८ । पूर्ण । वे०स०--१६०६ । **प्राप्ति स्था**ने--महारकीय वि० जैन महिर । यजमेर ।

**१११२ प्रति सं०२ ।** पत्र स०१३४ । घा०१२ ८ ६ इ.ख.। ले०काल 🗡 । पूर्ण । बेष्टुन स०१३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जै० मदिर प्रभिनन्दन स्वामी बुदी ।

**१११३. प्रति सं०३ । पत्र** स०१२६ । ग्रा०१२ ४ ६ है त्या ने० काल स०१६४ मा पूर्णे । बेष्टन म०१४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर श्री सहाबीर स्वामी बुदी ।

**१११४. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० ११७ । क्रा० १३ $\frac{1}{2}$  × ४ इच्च । ने० काल स० १६४ म ६ पूर्मा । बेठन म० म । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर, नैगावा ।

**१११४. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० २०६ । ग्रा० १२  $\times$   $\leftarrow$  उन्ध । ले० काल नि० १६४२ पीष जुकता १२ । पूर्ण । बेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—रि० जैन सन्दिर राजमहल टोक ।

विशेच--जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । लिपि कराने मे १६।।।) खर्च हुए थे ।

**१११६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० १६६ । ब्रा० १२ $^{\circ}_{1}$   $\times$  ६ इञ्च । लेल्काल स० १६४२ मगीसर बुटी १० । पूर्ण । बेल्सल २५ ४१ **प्राप्ति स्थान**—दिल्जीन प्रवासनी मन्दिर अनवर ।

**१११७. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० १=६ । आ०१२<sup>3</sup> 🗴 ७ इथा । ले०काल स० १६६२ सपाढ बुदी १ । पूर्ण । बेटुन स० ६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन स्रग्रवाल प्रवासी मन्दिर सलकर ।

विशेष--गृहस्य धर्म का वर्णन है।

**१११८. प्रतिसं० ६** । पत्र म० १६४ । ब्रा० १०३ > ६३ इञ्च । ले० काल—स० १६२६ । पूर्ण । बेष्टन म० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन क्षडेलवान मन्दिर उदयपुर ।

**१११६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० १६६ । ग्रा० १२imes६ ६ इ.ख. । ले०काल १६०४ भ्रायाइ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर केलावाटी (सीकर) ।

विशेष-- टोंक मे प्रतिलिपि हुई थी।

**११२०. प्रतिसं० १०** × । पत्र स० १४६ । म्रा० १३ × ६३ ज्वा । लेश्काल स० १८२६ । पूर्ण । बेहन सं० २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म्रप्रवाल मन्दिर म्रलवर ।

१९२१. प्रति सं०११ । पत्र सच्या २६३ । आ०११ 🗙 ५ इला ३ ले० काल म०१६०५ । पूर्या । बेपून स० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा, (राज.) ।

विशेष--- रूधनाथगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

११२२. **दू विधासत उपदेश** × । पत्र स० १४ । घा॰ ७×४ इच । भाषा-हिन्दी (वद्य)। विषय-भमें । र०काल × । ले०कात × । सपूर्ण । वेष्टन स० १६०। प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाना (बृदी)।

**१९२३. तस्वदीपिका** ४ । पत्र स०२२ । प्रा० १२<mark>३ ४ ६ इच । मापा</mark>—हिन्ती । विषय-प्रमं । र०कान ७ । ने०काल ४ । पूर्ण । बेटन स०१४६० । **प्राप्ति स्थान**—मट्टारमीय दि० वैत क्राइटर क्रजोरे ।

१९२४. तस्वधमिम्त $\cdot$ ा पत्र स०२० । ग्रा० १९ $\frac{1}{6}$  % ५ इखा । भाषा-अस्कृत । विषय-पर्मा र०काल  $\vee$ ा ले०काल  $\vee$ ा प्रपूर्ण । वेष्टन स०१२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्टिर दवलाला (बुदी)।

१९२४. तीर्थवदना ग्रासोचन कथा  $\times$  । पत्र स० १३ । ग्रा० १० $\frac{3}{2}$   $\frac{1}{2}$  ६ इन्न । भाषा—मस्त्रन । विषय-धर्म । २०कासः  $\times$  । ले० कास  $\times$  पूर्ण । बेष्टन स० ६१-१७१ । प्रास्ति स्थान—प्रिक जैन मस्टिंग् निमाय टोशाग्यसिंह (टोक्) ।

१९२६. तीस चौबीसी ं । पप स० ४ । ग्रा० १० अ ६ डखा । भाषा—िहिन्दी । विषय – धर्म । र०काल्— ं । ले० काल म० ११३६ । पूर्ण । बहुन स० ६१ । **प्राप्तिस्थान**—िदि० जैन मन्दिर कोटयो का नैस्स्ता ।

११२७. तेरहपय खडन—पद्मालाल दूनीवाले । पत्रसः १६ । घा०१० - ४ ड्या । भागा—ितर्दा गणा विषय—पमं। र०ताल X । लेकाल म०१६४६ । पूर्णा विष्टन स०३०५ । प्राप्ति स्थान—दिः जैन परिदर पाण्वेनाथ नीगान ब हो ।

११२८. त्रिवर्गाचार—श्री बहासूरि । पत्रत० १७ । बा०११ ४ १ इच । भाषा — सम्बन । विषय —बाचार बारत । र०काल ४ । ते०काल ४ । ब्रयूर्ण । वेष्टन म०५१६ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन सदिर प्रवासती दुनी (टोक) ।

ग्रन्थ का प्रारम्भ - ऊँतम श्रीमच्चतविश्रति तीर्थेम्यो नम् ।

श्रत्रोच्यते त्रिवर्गाना शोचाचार-विधि-त्रमः । शौचाचार विधि प्राप्तौ, देहं सम्कर्त महेते ।।

मन्धि समाधित पर-

र्डान श्री बह्मसूरि विरक्षिते श्रीजिनसहिता सारोद्वार प्रतिष्ठातिलक नाम्नि विश्वामकाचारमधहे भूत्र प्रमरंगसध्यावदनदेवारायनायान विश्वदेवसन्तर्परणादि-विधानिय नाम चतुर्व पर्क । **१९२६. त्रिवर्णाचार-सोमसेन ।** पत्रसु० १२१ । घा० १० × ६ इन्द्रा भाषा—संस्कृत । विषय—म्याचार । र०काल स० १९६७. कालिक सुदी १५ । से०काल स० १८६२ माह सुदी १० । पूर्ण वेष्टन-सं० १३४ । **प्राप्तित स्थान**—दि० जैन मदिर पाल्बेनाय चौगान बृंदी ।

११३०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १४४ । आ ० १० 🗡 ४ ) डखा । ले०काल म० १८६२ । पूर्णा । बेष्टन स०४० । प्राप्तिस्थार,—दि० जैन मदिर पार्थ्वनःथ चौगान बृटी ।

विशेष--गोर्डन ने तक्षकगढ़ टोडानगर के नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिप की थी।

१९**३१. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० १०-१४३ । प्रा० १०३ × ४१ इला । र०काल × । नेकाल × । अपूर्ण । बेष्टन स० १७१ । **प्राप्ति स्थान**ा दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

**११३२. प्रति.सं०,४ ।** पत्रस० १४२ । आ० ६ $^{\circ}$   $\times$  ४  $^{\circ}$  द्वा । ले०काल म० १८६४ सावन सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन म० १६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर दवलाना (ब दी) ।

विशेष-- १०१ से ४६ तक के पत्र नहीं हैं। इसका दूसरा नाम धर्म रसिक ग्रंथ भी है।

**१९३३ प्रतिस<b>०५**, । पत्रस०४२ । भाषा—सम्बत् । ले०काल स०१८०९ । पूर्ण। वेण्टन स०२१०। **प्राप्ति स्था**ल – दि० जैन पचायती मस्दिर भरतपुर। इस मस्दिर में एक प्रपूर्णप्रति स्रोर है।

विशेष - दुर्धालाल ने भरतपुर में प्रतिलिपि कर इसे मन्दिर में चढाया था।

**११३४. प्रतिसं० ६।** पत्रस० १०४.। आ ०११ ८. ४. इ.च. । लंबकाल स० १८४२ पूर्णा। बहुत स० ७६। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन सदिर टीवानजी कामा।

**१९३५. प्रति स**० ७ । पत्र म० १०१ । प्रा० १२ × ६ ' इ.ख.। ल०काल म० १६७३ माबत मुदी ५ । पूर्णा। वेष्टन स० १० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रचायनी मदिर करौली।

विशेष - गुमानीराम ने कल्यागापुरी के पंचायती मंदिर तेमिनाथ में प्रतिलिपि की थी।

**११३६ प्रति सं०६।** पत्रम०१०३ । ग्रा०१२ × ४१ डब्ल्य । लेक्काल सं०१८७०। चैत बुटी १४। पूर्ण । वेष्ट्रम म०१४–२१। **प्राप्ति स्थान** - दि०जैन मदिर कोटडियों का द्वौगरहर ।

**११३७. दण्डक** - ४ । पत्रस<sup>० २</sup>१। प्रा० १०१ × ४ डब्च । भाषा—सम्प्रत हिन्दी। विषयः प्राचारणस्त्र । ०काल ० । लेकाल × । पूर्ण । वेष्ट्रत स० १४१६ । **प्राप्ति स्था**स— महारकीय दि० जैन मंदिर खबमेर ।

**११३६. दङक** —  $\times$  । पत्र म० ५। द्वा० १० ० ४ $\frac{2}{3}$  ६ खा । भाषा—मस्कृत । विषय - स्राचार जास्त्र । २००० मा  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म० १०१४ । प्राप्ति स्थान । भट्टारकीय दि० जैन सन्दिर स्थान ।

**११३६. वंडक** — ८ । पत्र म० १२ । आ० १० ८ ८¦ । भाषा — क्रिटी । विषय । प्राचार शास्त्र । र०काल > ते० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन म० ६१८ । **प्राप्ति स्थान** — स्ट्रारकीय वि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

११४०, दडक- / । पत्र स०४ । आ०११ x र्ंड्डचा । भाषा — सस्कृत । विषय — धर्म । २०काल × । ले०काल स०१६१३ । पूर्ण । बेष्टून स०३१७ । महुरकीय दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

**F**99

११४१. बंडक $-\times$ । पत्रसं० २७। आ० ६ $\frac{1}{2}\times \frac{1}{2}$  इच्च । साया—हिन्दी। विषय— सावार शास्त्र। २०कार  $-\times$ । लं० काल $-\times$ । पूर्ण। बेहुतसं० ६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सिंहर बोरसंभी कोटा।

**११४२, बंडक प्रकरणः जिनहस युनि** । पत्रस० २६ । भाषा—प्राकृत । विषयः— धर्म । र०कालः—  $\times$  । ने०काल —  $\times$  । पूर्णः । बेष्टनम० ६०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रवायनी प्रविरंभरतपुर ।

११४४. दडक वर्सन × । पत्रतः ११ । आ० १० है × ४ है इस । आपा हिन्दी गय । विषय-प्राचार । र०काल × । ने०काल × । प्रपूर्ण । बेहनसः ११३ । **प्राप्ति स्थान** । दि० जैन प्राचन बोमानी कोटा ।

सिकोच-- १६ में ग्रागे पत्र नहीं है।

**११४५. वंडक स्तवन-गजसार ।** पत्रस०५। प्रा०११ > ५ इज्य । भाषा --प्राकृत । विषय--प्राचार । र०काल × । ले०काल × । पूर्गा । वेष्टुन मं० २१६ । **प्राप्ति स्थान---**दि० जैन महिर वोरमली कोटा ।

खिकोज—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। लिखित ऋषि श्री ५ घोमगा तस्य जिप्य ऋषि श्री ५ गोगाल जी प्रसाद ऋषि वत्तरी लिखित पठतार्थ बाई कुमरि बाई।

**११४६. प्रति सं० २ ।** पत्र स० ७ । प्रा० १० ४.४ इच्छ । ले० काल ४ । पूर्ण । **बे**ष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर** बोरमणी कोटा ।

विशेष---मस्कृत टब्बा टीका सहित है।

**११४७. प्रति सं०३** । पत्र ग०७ । ब्रा००} . ४ है डच्चाले० काला स०१७०६ । पूर्मा। वेष्टुन स०३१६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सदिर दबलाना (ब्रुंदी) ।

विशेष-- प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**११४८. दशलक्षराधर्म वर्सन**ः । पत्रस<sup>०३</sup>४ । ब्रा०८ ८ ६२ इञ्च । भाषा— सस्कृत,। विषय —धर्म । र०कालः । ने०बानः र । पूर्णः। वेटन स०१४४७ । **प्राप्ति स्थानः** भ०दि० जैन सन्दिर स्रजोरः ।

**११४६. दशलक्षरमधर्म वर्गन र ।** पश्चल ४३ । प्रा०६ ४६२ इच्च । भाषा— हिन्दी (गदा) । विषय—पर्म । २०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्म । वेण्टन स०११६४ । प्रास्ति स्थान—भ०दि० जैन मदिर, प्रजमेर ।

११५०. दशलक्षराधमं वर्शन-  $\vee$  । पत्र म० १८। म्रा० -  $\frac{1}{2}$   $\times$  ६२ इन्च । भाषा- हिन्दी । विषय- - धर्म । २०कास $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन म० ३६१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर लक्षर, जयपुर ।

११४२. दशलक्षरा भाषना—पं  $\sigma$  सदासुख कासलीवाल । पत्रतः २६। मा॰—१ $^{1}$  $^$ 

विशेष — मागीराम शर्मा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी । रत्नकरण्ड श्रावकाचार में में उद्देशन हैं ।

**११५३. प्रतिसं० २** । पत्र स० ३६ : ग्रा० १२३० ४ इश्व । ले० काल— ९. । पूर्ण । वेष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखावाटी (मीकर) ।

**११४४. प्रतिसं० ३** । पत्रसं० २७ । खा० १२५): ७ इ.च.। ले०काल स० १६७७ फागुन मुदी १० पूर्ण । बेष्टनस० १३७ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (मीकर)।

**११५५. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ७३ । आ० ६ ⋋६ इचा । ले०काल —У । पूर्यो । बेष्टनसं० ३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेव्हपथी मालपुरा (टोका ।

**११५६. प्रतिसं० ५ ।** पत्रस**०** ४६ । स्रा० १० हें ४ ६ हे ४२४ । ले०काल 🤫 । पूर्ग । बेष्टनम० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्बाल महिद उदयपर ।

**१०५७. प्रतिसं० ६** । पत्रम० २० । झा० १६ (४६) इस्त्रा निकाल । पूर्णा । वेष्टन स० ३५६।१२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियाका इंगरपुर ।

विशेष -- मोलह कारमा भावना का वर्शन है।

१९६० दर्शनसम्तितः । पत्र म०३। ब्रा०१६ ४१ द्वा भाषा प्राकृतः। विषयः—प्रमा रण्कालः ८। लेज्यालं म०१७६२ वैशास्त्र गरी ६। पूर्णः। वेष्ट्रतः १६४। प्रास्तिः स्थानः—दिञ्जैन मन्दिर्शनात्रज्ञे कामाः।

**१६६२. दर्शनसप्ततिका**— । पत्रम०७ । मा०१० ७ इङ्च । भाषा - प्राकृत । विषय धर्म । र०काल , । ने०काल ) । पूर्ण । वण्डन म० ६०। **प्राप्ति स्थान**----दि**०** जैन सीस्दर दवलाना (बृदी) ।

विशेष--- मूल के नीचे हिन्दी गद्य में अर्थ दिया है। ग्रांत में लिखा है---

इति श्री सम्यक्त्वसप्तातिका अवृति ।

१९६२ **दानसील भावना—भगौतीदास** । पत्र स**ं** २ । प्राच १०३४ ४ इ.ब. । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय—घम । र०कास ४ । ये०कान ४ । सपूर्ण । वेष्टन स०११०-६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर बीसपथी दीशा । **१९६३. बानशीततप भावना — मुनि ग्रसोग ।** पत्रस**े । भागा — प्राकृत । विषय—पर्म ।** र०काल— 🗶 । लेकाल सं०— 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि⇒ जैन सम्बनाय मन्दिर उदयपुर ।

## च तिम---

छदाइम छागा ग्रयागयमः ग्रमोग नामा म्रिग पूगवगा ।

सिद्ध तनि स्मरेय इमि जिगा,हीगा।हिय सुरि त्वमतु तगा । इति

**११६४. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ६ । स्रा० १० ४ ४ इञ्च । लेक्काल - - ४ । पूर्ण । बेटन स० ५१ – ५४ । **प्राप्ति स्थान** - - ६० जैन मन्दिर यडाबीनपथी दोमा ।

विशेष-- ४२ गाथाएँ है।

**१९६४. दानादिकुलकवृत्ति** — १४म० २०८ । भाषा — सन्द्रत । विषय धानार हास्त्र । २०काल — . । ल०काल ''। पूर्ण । वाटन म०६१० । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन प्रवायनी मन्दिर, भरतपुर ।

**१९६६. डिजमतसार** । पत्रस० २१ । ग्रा० १२५ ८ई इच । भाषा —सस्कृत । विषय — प्रसा ः काल— ४ । लेकाल ४ । पूर्ण । बेटन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सन्दिर भारता । राजरा ।

**१९६७. धर्म कृडिनियां—बालमुकुस्ट।** पत्रमु २६। ध्रा० १२१ च टव। भाषा -िरा। विषय धर्म। २०थाल । लेकाल मुश्री १६२१ प्रामीज मृदी १०। पूर्ण। वेस्टन मुश्री १६। फ्रा**निस्थान** दिल्जीन प्रवासनी मन्दिर प्रवासन

**११६८ प्रति सं०२ ।** पत्र म० १६ । ले०काल — 🗡 । स्रपूर्ण । बेष्ट्रनस**०२४ । प्राप्ति** स्थानः विकासन मदिर दीवानशी भरतपुर ।

**१९६६ धर्मद्वालः ।** पत्र स० १ । सा०६<sup>९</sup> ५ इच । भाषा—िध्रत्वे । विषयः— धर्म । र०कालः ९ । लेककालः । पूर्णः । वेष्ट्रस० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—िद्रिः जैन सदिर ज्वलाना (वृद्यी) ।

विशेष-- प्रोर भी डान दी हर्द है।

**१९७० धर्मपरीक्षा-- स्रमितिगति** । पत्र स० २०। स्ना० ११ - ४.६ च । भाषा-- सस्कृत । विषय-- पर्सा / र०काल स० १०३० । लेऽकाल स० १४३३ कार्तिक जुरी ४ । पूर्ण । जेवृतस० १४१ । **प्राप्तिस्यास-**--म (द० जैन मन्दिर (अजेसेर) ।

प्रणस्ति निम्न प्रकार हे .---

सबन् १४२७ वर्षे कानिक वृदि १ मोम महंबारी रक्षांन धी प्रजितनाथ कैयालग राजाधिराज-धी यज्ञयमन्त-विजयराज्ये धीमन् काष्ट्रधाये नदीनट्यच्छं, विद्यागले महारच में राममेनान्त्र भे रानशीति तत्त्वहुँ भ सब्यमंत्र तत्यहुँ बरणाधीर ग्रहावार्य में था मोमसीति तत् लिए ब्राह्माये थी बीरमेन धावार्य विस्तरोत म् विद्यानम् ज्ञयमंत व बीरम । ब. भागा । ब कात्ता । ब. गानीवा । ब. गाना । प्राप्तिक। वाहें जिनमनी प्राप्तिका विनयणिति । सा. जिनशिति । क्षित्वना वाहे नहीं । स्त्रु गानी । पहिन स्वस्ती । पहित वेसा । पुरु विजराज । एक नर्माह । एक वीमपाली क्षत्र वाला । **११७१. प्रतिसं०२ ।** पत्रसं०१४४ । ब्रा०१०<mark>३</mark> ४ ४ ३ इला । ले०काल स०१७३३ ब्रासोजबुदी ७ । दूर्या। बेष्टनस०१४४० । **प्राप्ति स्थान** – म०दि० जैन मन्दिर, ब्रजमेर ।

**११७२. प्रति सं. ३ ।** पत्र स० १०० । घा० ११क्वै४४ ४३ इ.च. । ले०काल स० १७२**१ ।** बेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० इत मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१९७३. प्रति स० ४ ।** पत्र स० ६ । मा० ११×४३ डब्ब । लं०काल × । मपूर्ण । वेष्टन स० १२०,१७ । **प्रास्तिस्थान**—दि० जैन म्रपयाल मन्दिर उदयपुर ।

**१९७४. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० १ से २६ । ग्रा० १० ४४ ¦ इका । ले० काल ४ । अपूर्ण । बेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रवतल मन्दिर उदयपुर ।

**११७४. प्रतिसं०६ ।** पत्र स० ११६ । ले० काल स० १६८७ कॉलिक बुदी १३ । पूर्ण । वैक्रन स० ४६–१६ । **प्राप्ति स्थान**-—दि० जैन मन्दिर सीमाणी करोली ।

विशेष—सबत् १६८७ वर्षे कासिक बाँद १३ क्षांतवासरे मोजमावाद मध्ये लिमन जोगी राषा । स्वस्ति श्री वीताराधादमाः सबस् १७१२ सामानेरी मध्ये जोगा क्षेत्रालं ठोल्या के दहुरे झार्थिका चन्द्रश्री बाई होरा । चेति नाहिंद्र—दम्मशिक्षा (धर्मपरीक्षा) हाग्त्र छठाई के प्रत के निगति । धर्मका चन्द्र श्री देहहुरै मेन्द्रों (कर्म) कुमणे के निमिन सिनि चेत्र वदी = भूमीवार ।

११७६. प्रतिसं०७ । पत्रस०११२ । आ०११ ३ ४ई डबा वेशकाल १ । अपूर्णा। वेष्ट्रस०६१ । प्राप्तिस्थान— दि०जैन पत्रायती मदिर करीती।

**११७७. प्रति सं० ६** । पत्र स०१०२ । ले०काल म०१७६६ वैमाय मुदी २ । पूर्ण । वैद्यन म० २० । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन बडा पदायती मन्दिर दीग ।

**११७८, प्रतिसं०६ ।** पत्र म०११० । घ्रा०१२ - ५ ४० खा। लेक्काल स० । पूर्मा। वेक्नस०स०३३ । **प्राप्तिस्थान**ं दि०जैन मन्दिरदीवानत्रीकामा।

विशेष---प्रति मण्ड है।

**१९७६. प्रतिसं० १०**। पत्र स० ६६। ले०काल स० १८४४ मार गदी १३। पूर्मा । **बेह्न सं**० २२७। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष- फरुवाबाद मे प्रतिलिपि की गई। म० १६२२ में भरतपूर के मस्दिर में चढ़ाया था।

**११८०. प्रतिसं० ११** । पत्र म० ८८ । २०काल ४ । ते० काल० ५० १७६२ सगसिर सृदी ६ । पूर्ण । बेपून म० २३४ । **प्राप्ति स्थान**ः दि० जैन प्चायती मन्दिर सन्तपुर ।

११८९. प्रतिसं० १२ । पत्र ग० ११८ । प्रा० १० - ४ इ.स. भाषा—सम्कृत । विषय-। लेक्सल स० १६६८ फासूस सुदी = । पूर्मा। वेषुत स० ३२७ । प्रास्ति स्थान दि० जैन सस्दिर बोरसमी कोटा

प्रणानि - सबन् १६६४ वर्षे कागूण वृदी - गृथ्वासरे मोजवा वात्तव्ये राजाधिशाज सहाराजा श्री सानसिक राजप्रवर्गमाने स्वविताय जिनक्षेत्रालये श्री मृत्यवरे यः स सन्देर कृद्धः भ मृभक्षट देवास्त्रपृष्टे पप्पनिदिदेव स्ववैतवाल दोसी गोच वाले सखवी रामा के बणवालो ने प्रतिविद्यं कराई थी। साने पण फट गया है। **११८२. प्रति सं० १३।** पत्र स० ८७। ग्रा०१० $\frac{1}{6}$   $\times$  ५ $\frac{3}{2}$  इच्च । ले०काल स० १०६६ मावण सुदी १। पूर्ण । बे०सं० १४६/३६ । **प्राप्ति स्थान**—पार्यनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

**१९८३. प्रतिसं० १४ ।** पत्र सं० ५४ । प्रा० १२ ४६ इ.च । ले०काल स० १८७८ साघ बुद्दी ७ । पूर्ण, । बेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रापिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

विशेष--- ग्रन्थ के पत्र एक कौने से फटेहये हैं।

**११६४, प्रतिसं०१४ ।** पत्र स० ६१ । घा०१३×६ इ.च । ले० काल स०१६७७ । पूर्ण। वे० स०१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पंचायती दुनी (टोक) ।

**११८५. ःतिसं०१६** । पत्र स०५ । ग्रा०१२ ४५ इ.च.। ले० काल ४ । पूर्णः । वेष्टत स०१७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर पार्थ्वनाथ वृदी ।

**११६६. धर्मपरीक्षा** - 🗶 । पत्र स० २६। प्रा० १०४४ दें इस्त्रा भाषा—सस्कृत ↓ विषयः—धर्म । र०काल—४ । ले०काल म० १४४६ शाके फागृत सुदी ४ । पूर्णा । बेय्टन स० १६७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष-- पार्थपुर नगर के पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

**१९८७. धर्मवरीक्षा भाषा — मनोहरदास सोनी।** पत्रसुर ६४। ग्राठ १२.४.५१ डश्व। भाषा - किन्दी। विषय — धर्म। रुकाल मठ १७००। लेक्काल — ापूर्ण। वेष्टन सठ १६९७। प्रास्ति स्थान — भठ दिरुजैन मन्दिर सत्रमेर।

**१९८६. प्रतिसं० ३** । पत्र स० १३८ । ग्रा० ६२ ९५ इ.च. । लेक्काल । पूर्ण । बेप्टन स० ३५ ४३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**१९६०. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ७३ । प्रा० ६<sup>५</sup> ५. ७५ इच्च । लेक्काल स० १७६८ । पूर्ण । यष्ट्रस स० २०१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन स्रप्रवाल सन्दिर उदयपुर ।

विशेष—गृटकारूप मे है।

**११६१ प्रतिसं० ४** । पत्र स० ११६ । आ ० ११६ । ६७७ । लेक्काल स० १६७२ । पूर्ण । वेप्रत स० ३३ ।**प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**११६२. प्रति सं०६** । पत्रस० १८२ । म्रा०७ १८६ इत्था । लेक्काल स०१८५२ । पूर्ण । वष्टन स०१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१९६३. प्रति सं० ७ ।** पत्रम० ६३ । ग्रा० १३ ४ ५१ डखा । ले०काल स० १६६० । पूर्णा। <sup>वेष्टुन</sup> स० १६७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन खब्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

# विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

मिति पौष सुदी ६ बृहस्पतिबार स० १८२० का श्रीमान परमपूज्य श्री राजकीर्ति जी तद् क्रिप्य पण्डितोत्तम पण्डित श्री जगरूपदासजी तद् क्रिप्य पण्डितजी श्री दुलीवन्दजी तद् क्रिप्य विपिक्रतं पण्डित देवकरसमान्ताय अजयगढ का लिलागितं पुन्यपवित्तं दयावन धर्मात्मा साहजी श्री तीलजी गोत्रं रांउका स्वात्मार्थं बोधनीय प्राप्ति भंवतु । ग्राम इन्द्रपूरी मध्ये ।

**११६४. प्रति सं० ६**। पत्रस० ६३। ग्रा० ११} ४ ६ इ.खा । ले०काल म० १६०७ क्रीणाल मुदी ३। पूर्ण । बेष्टनस० ३७**। प्राप्ति स्थान**ावि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलालटी (सीकर)।

१९६४. प्रतिसं० ६ । पत्रमं० ८५ । घा० १२ ८६ दश्च । ते०काल ---म० १८२५ कार्ति ह सुदी ८ । पूर्यो । बेष्टुन म० ६२।४२ । प्राप्ति स्थान--- घ० दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष सीताराम के पठनार्थ परशुराम लुडाडिया ने प्रतिविधि की थी।

**११६६. प्रतिसं० १० ।** पत्रस० ८४ । आ० १२८६¦ उश्व । लेक्काल *म*० १८३७ बैजाल मुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४६।४१ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मन्दिर भादवा (राज्ञ०)

विशेष - मुखदास रावका ने भारता मे प्रतिनिधि की थी।

**११६७. प्रति सं० ११**। पनस्क १४४। घा० १० - ५ इ.च.। लेबकाल 📐 । पूर्णा । बहुनस्र० ६०-७२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर नेरहतथी टीमा ।

विशेष - दीलतराम तेरापथी ने प्रतिनिधि करवायी थी।

१९६६ प्रति सं ० १२ । पत्रमारु ११३ । जिल्लान मरु १८५१ । पूर्ण । बेप्रुनमरु २०१०७ । प्राप्ति स्थान—दिरु जैन मन्दिर बडा बीमपथी दौमा ।

विशेष--महाराजा प्रतापीमह जी के णामनकाल में दीसा में प्रतिशिव की गई थी।

**१९६६. पति सं. १३ ।** पत्र पर्देश । आर्ग्स ६५ - ६५ डन्ब । ले**०**काल सर्ग्य ६ । **प्रास्ति** स्थान—दिव्जन मन्दिर सीमासी करोलो ।

१२००. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १०२ । प्रा०१२ - ४ ई.इ.स. । ले०काल ः । स्रपूर्णः । देष्ट्रस् स०१३० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सन्दिर करौली ।

**१२०१. प्रतिसं० १५** । पत्र २०७०। लेक काल सक् १८१२ प्रापाट सूटी ७ । पूरा । वेष्टन सक् ७ । **प्राप्ति स्थान** - दिक कैन बात प्रवासनी महिर (हीत) ।

**१२०२. प्रतिसं० १६।** एक स०१५८। लेक्सकस**०१**६१४। पूर्मा वेष्ट्रन स०१४। प्रा**प्ति-स्थार** दिञ्जैन पनालनी सदिर हण्डावाला का डीग्।

विशेष - सेवाराम पाटनी ने निस्त्राया था।

**१२०२ प्रतिसं० - १७** । पत्र म० ११६ । लेल्काल-स० १८६३ मादो वदी ६ । २२६ ुब्युत स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पश्चायती मदिर हण्डा थालो का डीठ ।

**१२०४. प्रतिसं०१६** । पत्र म० १३३ । ग्रा०१२ , ७¦ड-व । ले०काल — न०१≍१.. पूर्ण । बेष्टनस०१६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पश्चायती मदिर कामा ।

१२०**४. प्रतिसं० १६** । पत्रस० १०४ । प्रा० ११ है ४ ४ है इन्छ। ले**०काल** स० १८४१ भादवा मुद्दी १४ । पूर्णा। वेष्टन स०४७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर बैर ।

विशेष--वैर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१२०६. प्रश्तिसं०२० ।** पत्रसं०६३ । ग्रा०११ × म्हन्त । लेक्काल सं०१८२० । संगसिर सुदी १०।पूर्णा वेष्टन स०१४ । **प्राप्टिंत स्थाल**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर वयाना ।

**विशेष—**≖६ पत्र के स्रागे भक्तामरस्तोत्र है। ले० काल सं० १८३४ दिया है। प्रति जीएं। कीएं। है।

**१२०७. प्रतिसं० २१** । पत्रस० १६२ । ते०काल १८७५ सावन वदी २ । पूर्णा । वेष्टन स०४४ । **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन पत्रायनी मदिर भरतपुर ।

विशेष---जोधराज ने प्रतिलिपि करवाई थी।

**१२०८. प्रतिसं० २२ ।** पत्रसं० २२४ । ले०काल स०१७४८ । पूर्णं । वेष्ट्रन स०३२८ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रचायती सर्वित सरतपुर ।

विशेष--विद्याविनोव ने मागानेर मे प्रतिलिपि की थी। गुटका साइज ।

**१२०६. प्रतिसं० २३ ।** पत्रसं० १५६ । लेखन काल १८२४ । पूर्ण । वे**ह**नसं० ३२६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पदायती मस्टिर भरतपुर ।

विशेष-भरतपूर में जवाहरमिह जी के शासनकाल में प्रतिनिधि हुई।

**१२१०. प्रतिसं० २४** । पत्रस० २६ । ते०काल स० १७६१ । पूर्णं । बेष्टनस० ३३० । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पदायनी मन्दिर भन्तपुर ।

१२**११. प्रतिसं० २५ ।** पत्रस० ६८ । ले०काल स०१८१३ पूर्ग । वेष्टनस**०** २३१ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---नक्षकपुर म प्रतिनिषि हुई थी।

**१२१२. प्रतिसं०२६ ।** पत्र स०१२५ । ले०काल १८१६ । पूर्णा । बे**ष्टुन** स०३३२ । **प्राप्तिस्थान**—दि०जैन पत्रायतीसन्दिर भरतपुर ।

१२**१३. प्रति सं० २७ ।** पत्र म० १२२ । ले०काल 🔬 । पूर्मा । वेष्ट्रन **स०** ३३३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१२१४. प्रति सं०** २६ । पत्रस० १२६ । या० ११ 🗡 ७ इ.च.। ले० काल स० १६२७ । पृर्गो । बे**टुनस०** ५७ । **प्राप्ति स्थान** — प्रदवाल दि० जैन प्रकाशनी मन्दिर, प्रलवर ।

**१२१५. प्रति सं० २६**। पत्रस० ११३ । झा० १२८६ इत्था । लेवकाल म० १८६६ ज्याट मुरी १०। पूर्सा । बेष्टुन स०४६ ४७ । **प्राधित स्थान**ादिक जैन पत्राथती मन्दिर, झलकर ।

**१२१६ प्रति सं० ३० ।** पत्रस०-१०३ । ले०कान म० १६२२ कार्निक बुदी ७ । पूर्णा । वेष्टनग० १० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर खलवर ।

**१२१७. प्रति सं० ३१** । पत्रस**्** म्हा सा० १८९ चर्ड इखा । ले० काल--- ५ । पूर्ण । वेष्टनग० २१४ । **प्राप्ति स्थान** ------दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**१२१ म. प्रति सं०---३२ । पत्रस**० न६ । घा० १२१ैं ४६ इश्वाः ने०काल - ∴ापूर्णः । <sup>बहुत</sup> म० २१४ । **प्राप्ति स्थान**----दि० जैन मन्दिर बोरसती कोटाः । **१२१६. प्रतिसं० ३३ । पत्रस० १४**२ । स्ना० १० $\frac{5}{4} \times \frac{1}{4}$  इच्छ । ले० काल स० १६१२ । पूर्ण । बेब्रनसं० २८६ । प्राप्ति **स्थान** — दि० जैन मन्दिर, दबलाना (ब्रृंदी) ।

१२२०. प्रतिसं० ३४ । पत्रसं० मः० । ले० काल imes । पूर्णं । जीरां शीरां । बेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपूरा (टोक) ।

**१२२१. प्रतिसं० ३५** । पत्र स० १२ । ले० काल म० १६०१ द्यायाङ मृदी १३ । द्रपूर्ण । बेक्रन स०-३३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पार्ध्वनाथ टोडारायसिह (टोक)

**१२२२. प्रतिसं० ३६ ।** पत्रसर्थम् । ग्रा० प्र् $^{3}$   $\times$  ६ इश्वः । ०कालः  $\times$  । ले० कालः  $\times$  । प्रपूर्णं । बेष्टनसं०१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

**१२२३. प्रतिसं० ३७** । पत्रस०—१३४ । बार्ट 🗙 ५ इच्छा लेक काल मर्थ १८८५ । पूर्ण । बेष्टनस०—६४ । **प्राप्ति स्थान**ः -दि० चैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष--- भट्ट तोलाराम भवानीराम दसोरा ने प्रतिलिपि की थी।

१२२४. प्रति सं० ३६ । पत्रस० ६५ । प्रा० १०×७ इखा । ले० काल⊸ ० । अपूर्ण । बहुन म०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सडेलवाल मन्दिर आवा (उग्गियारा) ।

१२२**५. प्रतिसं० ३६ ।** पत्रस० २-१०४ । ग्रा०१० है 🗶 ६ है इखा । ले०काल स० 🙄 । पूर्ण । बेहुनुन्न ० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पत्रायती दूनी (रोक)।

१२२६, **प्रतिसं**ठ ४०। पत्र मर्० १०६। ग्रा०११०५ टखा लेक्काल । पूर्मा । वेष्टतस्व २ । **प्राप्ति स्थान**—दिजैन मदिर पचायतीदुनी (टोक)

**१२२७. प्रतिस० ४१ ।** पत्रस० १०७ । स्रा० १२ ५ ६ इ.च. । ले० काल स० १८४० कानण मुद्दी २ । पूर्णा वेद्रस्य स० १६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर कोटशो का नैसावा ।

**१२२६. प्रतिसं० ४२ ।** पत्र स० १०१ । ब्रा० ११ - ४ इञ्चा नेक्काल स० १६४० कासुण बढी ७ । पूर्णा वेष्ट्रन स० १४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन नेप्ट प्रयीमदिर, नैसवा।

**१२२६. प्रति स० ४३ ।** पत्र स० ११२ । स्ना० १० ′ ५ इल्डा । लेक्सल स० १६:४ । पूर्ण । बेहन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर श्री महाशेर स्वासी वंदी ।

**१२३०. प्रति स०४४ ।** पत्र स०६० । आ०१००४] टच । लेककाल स०१७४० पीप सुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्र स०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० पैन मन्दिर प्रादिनाथ बूदी ।

विशेष अरगप्रपुर में विनयसागर के शिष्य ऋषिदयाल ने प्रतिलिपि की थी।

**१२३१. प्रति सं० ४५ ।** पत्र २०६६ । ब्रा०१० २ ६१ इला । ने०काल — स० ११२० पोप सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०३४ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर पाण्येनाथ बोगान ब्रुटी ।

विशेष --- लोचनपुर में लिख गया था।

**१२३२. प्रति सं०४६ ।** पत्र म०६३ । ग्रा०१२ ) ६ इश्व । ले० काल—स०१८४६ ग्रपाट मुदी ६। पूर्ण । बेष्टुन म०३६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त ।

विशेष—पवाई माधोपुर के गढ़ रराष्ट्रभोर में झानेर के राजा प्रतापसिंह के शासन काल में समही पांद्रराम के पुत्र निहासचद ने प्रतिलिपि कराई थीं। पुस्तक पं० देवीलाल चि० विरघूचंद की है।

**१२३३. प्रति सं० ४७ ।** पत्र सं० १०४ । झा० १२<sub>१</sub>×७ इच । ले०काल—सं० १६७६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौमान कूरी ।

विशेष-वदेशी मे प्रतिलिपि हई थी।

१२३४. धर्मपरीक्षा वस्तिका-पद्मालाल सौधरी। पत्रसः १८२। प्रा०१०४७ इन्हा भाषा—हिन्दी गद्य । विषय —धर्म । २०काल स० १६३२ । ले० काल — × । पूर्ण । बेष्टन स०३१। प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर भी महावीर स्वामी, बंदी ।

**१२३५. प्रति सं२।** पत्र स०११७। घा० १२३ ४ ८ इ.च. । ने० काल म०—१६५१ श्रापाइ सुरी १४। पूर्णा । बेष्टन सं०५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बुरी ।

१२३६. धर्मपरीका माधा—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र स०२११। माधा—हिन्दी। भाषा— धर्म। र०काल— ४ । ले०काल स०१६४० वैसाल सुदी ३ । पूर्ण । बेहन स०३६। प्राप्तिस्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपर।

विशेष - भरतपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१२३७. **धर्मपरीक्षा भाषा सुमतिकोति**। पत्र सं∙ ७६। प्रा० १०४४ ¦ इश्वा भाषा — हिन्दी (पद्य)। विषय—षर्म। र०काल स०१६२६। ले०काल स०१६४६। पूर्णा। वेष्ट्रन स०१९। प्रा**प्ति स्थान**। दि० जैन ग्रप्रवाल मंदिर जुरवपुर।

**१२३६. धर्मपरीक्षा भाषा—दशरच निगोत्या** । पत्रस० ११० । प्रा० १२४४ इन्छ । भाषा — हिन्दी गख । र०कास स०—१७१६ फापुन बुदी ११ । ले०कास—स०१७१० । पूर्ण । बेष्टन स– ३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रीपनन्दन स्थामी बृंदी ।

**१२३६. प्रतिसं० २** । पत्र स० ३५ घा० १०<mark>२ ४४ इ.स. । से०काल स० १</mark>६२० माह बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन-प्रवायती मंदिर, करौली ।

**१२४०, प्रतिसं० ३** । पत्र स० २३४ । स्रा०१२ × ४५<sup>5</sup> इ.च. । लेखन काल—सं० १७४० । पूर्ण । वेप्टन म० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

## विशेष--गराण

संसार में भैता जीवा के मुखदुख की प्रातर होई केनी मेर सिरस्योंजे तौ जाग्गिज्यो । भावार्ष से योजु मसारी जीवाने दुखती मेन वरावर धर मुख न सरसी बरावरि जाग्गज्यो ।। २१ ।।

स्नित्स पाठ--साह श्री हेमराज मृत मानु हमीर दे जाएं। ।
कुल नि गोत आवक वर्म दसरवराज बलाएं। । १।।
सबस् सतरासे सही सप्टदन प्रधिकाय ।
फागुण तम एकादमी दूरण एगाम मुमाय ।। २ ।।
समं परीक्षा बचनिका मुन्दरदास रहाय ।
भाषमी समीन्त्र वसरक हति चित नाम ।। ३ ।।

इति श्री ग्रामितगति कृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी वचिनका बालवोध नाम ग्रपर नाम ताल्पर्ययार्थे टीका तस्य धर्मार्थ वजरथेन कृता समाप्ता ।

१२४१. धर्मपं**चिवशतिका—क ० जिरावास** । पत्र सं० ३ । प्रा० ११×५ $\frac{1}{6}$  इश्व । माषा— भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । र०काल—× । ज्रे० काल—× । पूर्सा । वेष्टन सं० १६६ ।

विशेष - ग्रादि अन्त भाग निम्न प्रकार है--

प्रनित्तम — जिल्लायम्म मोनबस्य प्रत्यात् हर्यह हिस्ताग्वरणः । इयः जातिः भव्यजीवा जिल्लायिक्ययः यम्मु प्रावरहि ।। २० ।। त्विम्मल दसत्यभत्ती वयम्पुपेहायः भवताः वित्यः । श्रते ससेद्रागाः करिञ्जदः इच्छहि मुन्तिवरण्याणीः । २४ ।। मेहा कुमुद्दाणं वर भवद् मात्रदः जात्यपन्तिमागः । यम्मवितासमुद्धः भिग्नदः जिल्लदान वर्षणः ।। २ ।। इनिवर्षः प्वविवानिका सम्प्रतामं ।

प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर दीवनजी कामा।

१२४२. धर्मप्रमनोत्तरी । पत्र स०१ । आ०८०६ ६ इख । आपा हिन्दी । र०काल — १ । लेक्काल स०१८६६ अयाद बुटी १२ । पूर्ण । बेष्टुनम०७४ । प्राप्ति स्थान----रिव क्रैन मन्दिर नरहण्यी मालपुरा (टोक) ।

विशेष- जन्म पत्र की साइज का लम्बा पत्र है।

१२४३, धर्ममडन भाषा—साला नथमल । पत्रस्य ७० । मार्थ २३ ६५ १०म । भागा हिन्दी । विषय —धर्म । ए० काल ४ । लेकन काल स० १६३६ पूर्ण । वेष्ट्रन म० १३०-४६ । प्रास्ति स्थान--दिर्ण केन मन्दिर कोटडियों का ४ गरपर ।

१२४४. धर्मरस्नाकर—जयसेन । पत्र मश्रहरू। प्राः १४४५ इत्यः। भाषा-संस्कृतः। विषय—धर्मः। रुकाल सरु १०४१ । लेक कालस्य १६३४ चैत सुदी ३ । पूर्णः। वे स १०३१ । प्रास्ति स्थान—भरु दिश्जीन महिर ध्रजमेरः।

विशेष - धजमेर मध्ये लिलित ।

**१२४५. प्रतिसं∘**२ । पत्रस॰ ६१ । घा०६ × ५३ डचा। ले०काल स०१६४ = कातिक ृदी ६ । पूर्णा। वेष्टनस०१२०२ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष - प० गोपालदास ने श्रजमेर मे प्रतिलिपि की थी।

**१२४६. प्रतिसं० ३**। पत्रस० १६५। ब्रा० ६×४-५ दश्व । ले०काल स० १७७४ बैगाल सुदी ७। बेष्टन स० ८७। **प्राप्ति स्थान** —गास्त्र भण्डार दि० जैनमन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---महात्मा धनराज ने स्वय पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

**१२४७. धर्मरसायन - पधानन्दि ।** पत्र सन्या १३ । भाषा—प्राकृत । विषय—प्यां । रिकाल— $\times$  लेखन काल-- $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ५०८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

**१२४८. प्रतिसं०२** । पत्र स०१०। घा० १० ४ १ देखा । ले० काला। पूर्णा। बेष्टन स० १५ । **प्राप्ति स्था**नः दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१२४६. धर्मगुक्तध्यान निरूपग्— ∨ 1 पत्र म०३ । भाषा- मस्कृत । विषय—धर्म । १०काल- \ 1 ले०काल \ 1 पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२।२४६ । **प्राप्ति स्थान**—सम्बनाय दि०जैन मन्दिर उदयप्र ।

१२५०, धर्मसपह श्रावकाचार - पं० मेधावी । पत्र सं०६२ । ग्रा० ११७५ इन्छ । भाषा—सन्द्रत । विषय-अद्याचार । २०काल स० १४४० । लेक्काल सं० १४२६ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० २०१ । प्राप्ति स्थान—सहारकीय दि० तैन मन्दिर खजार ।

**१२५१. प्रति स०२** । पत्र स०४५ । स्ना०१२ ८ ४ ¦ इ.ख. । ते० काल स०१ ३००० आवग्य सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टुत स०२६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर सादिनाथ वृदी ।

विशेष-- द्रव्यपुर नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में यज्ञकीति के जिप्य छाजूराम ने प्रतिलिपि की थी।

१२५२, प्रतिस०३ । पत्र स० २६ । प्रा० ६३ ८४, इञ्चा लिक्काल स०१६३५ । बेण्टन स० ८० । प्राप्तिस्थानः जान्त्र भण्डार्राद० जैन मन्दिरलक्कर, जयपुर ।

विशेष- महाराजा प्रतापमित्र के शासनकाल में वस्तराम के पुत्र सेवाराम ने नेमिजिनालय में जिल्हा था।

१२५३. धर्मसार—प**ा शिरोमिशावास ।** पत्रस० ३६ । आा० १०¦ ४ ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय धर्म । र०काल स०१७३२ त्रैशाल सुर्वा ३ । त्रे**०काल स०१**८५६ । पूर्ण । वेस्टन स०१६२२ । **प्रास्तिस्थान**—भ०दि० जैन भण्डार ध्रुसमर ।

**१२५४. प्रति स० २ ।** पत्रसः ४६ । ग्रा० १० ० ५ ४ उञ्च । ले**०काल स० १**७७६ व्ययहन मुदी २ । पूर्या । वेग्टन सम्या ५११ । **प्राप्ति स्थान**—मट्टारकीय दि० जैन भण्डार क्षेत्रमेर ।

**१२५५. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० ७२ । प्रा० ६ ८ ६ इञ्च । लेक्साल म० १६४६ भादवा भुदी = । पूर्या ।वेग्नुत म० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—भद्रारकीय दि० जैन मस्दिर ग्रजमर ।

**१२५६. प्रति स**०४ । पत्रस० ३४ । प्रा०१२  $\times$  ६ उञ्च । ने० काल स०१६६**१ चैत्र** सुदी १३ । पूर्णा । बेष्टन स० ८६-६ **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन सन्दिर नेरहपथी दौसा ।

विशेष—श्री नातूनाल दौसा वाले ने सर्वाई माधोपुर में प्रत्थं की प्रतिलिपि हुई थी। ग्राथकर्नाने सकलकीर्ति के उपदेश में ग्रांच रचना होना विग्या है।

**१२५७. प्रति स०५ । पत्रस**०४४ । या० १३ ४ ६ इञ्च । ले०काल म०१८५८ सावन सुदी १० । पूर्णा । बेष्टन म०१२८ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करौली । **१२५८. प्रति सं०६।** पत्र सं० ५३। बा० १३imes६२था। ले॰काल imes पूर्यं। बेष्टन स॰ १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रापती मन्दिर करौली।

**१२५६. प्रति सं०७।** पत्र सं०५६। प्रा०१्रै×६१ इचा। ले० काल स०१८५६ बैशाख सुदी १३। पूर्ए। वेष्टन सं०१४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करोली।

**१२६०. प्रति सं० ६ ।** पत्र स०४४ । आ ० ६  $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इ.च. । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० २६३ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष---७६३ पदा हैं।

**१२६१. प्रति सं० ६ । पत्र** सं० ६६ । क्षेण्काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । प्रा**प्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

**१२६२. प्रति सं० १०**। पत्र स० ४६। घा० ११ 🗙 ४ इ.आ.। ले०काल स० १८६४ । पूर्णः। बेष्टन स० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पदायती मन्दिर, कामा।

विशेष-हेमराज अग्रवाल सुत मोतीलाल शेखाबाटी उदयपूर में प्रतिलिपि करवायी थी।

**१२६३. प्रति सं० ११। पत्र**स० १३। **के॰काल**—१८७६। पूर्ण । वेष्टन स० ३७०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर मस्तपूर ।

**१२६४. प्रतिसं० १२ ।** पत्रस० ६६ । ले॰काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३७१ । प्राप्ति स्वान —वि० जैन पत्रावती मन्दिर, भरतपुर ।

**१२६४. प्रतिसं० १३ । पत्र**सं० ६६ ।ले**०काल स०** १८७६ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० ३७२ । **प्राप्ति स्थान—२० दि० जैन** पत्रायती मन्दिर, भरनपुर ।

विशेष--दीवान जोधराज के पठनायं लिखी गई थी।

**१२६६. प्रतिसं० १४ ।** पत्रसं० ४६ । स्रा० ६ 🥆 ५ इश्व । ले० काल 🖂 । पूर्ण । बेष्टन म०२ । **प्राप्त्त् स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर नैगृग्वा ।

विशेष सकलकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थ रचना की गई थी।

**१२६७. प्रतिसं० १५।** पत्रसं० ४२। मा० ११ 🗴 ७ इञ्च । ले०काल स०— १६५१। पूर्ण । बेब्रन स० २५। **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन मन्दिर नागदी बदी ।

**१२६८. प्रतिसं० १६ ।** पत्रम० ४७ । ग्रा० १० imes ७<mark>१ इज्य । लेक्काल</mark> म० १६५१ । पूर्ण । बेष्टुन स० २१० **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

**१२६६. प्रतिसं० १७ ।** पत्र स० ४८ । मा० १० × ७ इञ्च । ले० काल स ११५१ वंशाख शक्ता १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी व दी ।

**१२७०. बर्मसार**— $\times$  । पत्र स॰ २६। या॰ १२ $\times$ ५ है इन्न । माषा—हिन्दी (पत्र)। विषय—प्रमं । र०काल— $\times$  । ने० कान स॰  $\times$  । पूर्ण। वेष्टन स॰ ६५ । प्राप्ति स्थान—हि॰ जैन मन्दिर इन्दरण्ड (कोटा)।

१२७१ वर्षमाससंप्रह—सकलकोति । पत्र स०२६। प्रा०१२ $\frac{1}{2}$   $\times$  प्रदश्व । भाषा-— संस्कृतः । विषय-वर्षः । र०काल  $\times$  । ते०काल-स०१८२२ । पूर्णः । वेष्ट्रमस०६२-४०। प्राप्ति स्थान-–दि०जैन सन्विर कोटडियो का हुनरपुर । **१२७२. घर्नीपदेश-रन्तभूवर्ण।** पत्र स० १४८ । स्रा० १०६ ४ ४ ६वा । भाषा<u>-संस्कृत ।</u> विषय-- प्राचार । र०काल सं० १६६६ । ले०काल सं० १८०३ । पूर्ण । बेहनसं० २८६-११६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर कोटड़ियों का हूंगरपुर ।

ग्रतिसम पुष्पिका—श्री वर्मोपदेशनािन ग्रंथे श्रीमसकलकसापडित कोटीरहीदं भूतभूतत विख्यातकीितः महारक श्री त्रिभुवनकीितपदसिधत सुरिश्रीरत्नभूषण् विरिचते प्रह्नोदपादि सकल दीकाण्डल्ण श्रभवितः गमनोनाम एकादण सर्गः ।

देवगढ मध्ये भट्टारक देवचन्द जी हुंबड जाति लघु शासाया।

**१२७३. प्रति सं०२** । पत्र सं० ७४ । घा० १२ x ४१ इञ्च । के०कास स० १७७६ वैणास सुदी ४ । पूर्णा विकृतसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर घमिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष---मालपुरा के श्री पाश्वेनाय चैत्यालय में श्री भुवन मृष्णा के शिष्य पंडित देवराज ने स्वपञ्चार्यं प्रतिलिपि की थी।

१२७४. **यर्भोपवेस**—  $\times$  । पत्रस॰ १६। मा॰ ५ $^2_1$   $\times$  ६ $^2_2$  इञ्च । भाषा—हिन्दी गण । विषय—धर्म । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ १६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर, फतेहपुर सेलावाटी (सीकर) ।

१२७% धर्मोपबेश रत्नमाला-भण्डारी नेमिचंद । पत्रस० २३ । प्रा० १ ४ ४ इञ्च । भाषा —प्राकृत । विषय —धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल — $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० १०० । प्राप्ति-स्थान —दि० जैन मन्तिर, बोरसत्री कोटा ।

विशेष -- प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१२७६ः सर्मोपदेश श्रावकाचार-व.नेमिदलः । पत्रस० २० । ब्रा०१० $\frac{1}{2} \times \chi_0^2$  इंडेच । भाषा—सङ्ख्त । विषय —ग्राचार शास्त्र । र०कालः  $\times$  । तै०काल स० १६४८ प्राचाद सुदी १० । पूर्लः । वेष्टन सं०१३२७ । प्राप्ति स्थानः – भट्टारकीय दि० जैन सदिर, प्रजमेर ।

विशेष-इसका दूसरा नाम धर्मीपदेशपीपूष भी है।

**१२७७. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ३१ । ले०कालस० १८२४ । पूर्ण । बेष्टनसं० २६१ । प्रा<mark>प्ति स्थान</mark>—वि० जैन पत्थायती मन्दिर, मरनपुर ।

विशेष-यागा में केसरीसिंह ने निन्दी थी।

**१२७** - प्रतिसं० २ । पत्रस०३१ । मा० ६ $\frac{1}{7}$  $\times$  $\frac{1}{7}$  इञ्च । ले०कास —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०२२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर, दीवानजी कामा ।

**१२७६. प्रतिसं० ४** । पत्र स० ३१ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति -** स्वान — दि० जैन मदिर दीवान त्री कामा ।

**१२६० प्रतिसं० ५ ।** पत्र स० ६-२६ । ले०काल $-\times$ । सपूर्ण । बेष्टन स० २६४-। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१२⊂१. प्रतिसं० ६ ।** पत्र सं०३४ । म्रा० १० ४ ४<mark>३ इञ्च । ले०काल - सं०१८१२</mark> <sup>चेन बुडी १०। पूर्ण । बेष्टनसं०२ । प्रा**प्ति-स्थान** —दि० जैन मन्दिर दीवानची, कासा ।</sup> **१२८२. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २३। या० ११**र्दे⊁ ४२्टै इंख । ले० काल स० १६८१ भावना मुदी २ । बेष्टुन सं० १२५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**१२६३. प्रति सं**० म् । पत्रसं० २३ । प्रा० ११ $\frac{1}{8}\times$ ५ इ.च । भाषा—सस्कृत । विषय-प्राचार शास्त्र । र०काल —  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्ट्रन स०१२६ । प्राति स्थान— दि० जैन मस्टिर लक्कर जयपुर ।

**१२६४. प्रति सं० ६ ।** पत्र सं० २६ । आ० ११ $\frac{1}{6}$  $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  $\cdot$ । ले० काल  $\times$  । त्रेप्टन स० १०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१२६४. प्रति स०१०** । पत्र स०२४ । ले० काल—`∶। श्र**दू**र्णा । वेष्टन स०२० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पञ्चायती सन्दर डीग ।

१२६६. **धर्मोपदेश श्रावकाचार—पं० जिनदास** । पत्र स०११७ । ग्रा०१० ५. ४ इस्त । भाषा—सम्कृत । विषय—ग्राचार शास्त्र । १०काल— 📐 । ते० काल—५. । पूर्णः । वेषुन स० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बोसपथी दोसा ।

**विशेष**—साह टोडर केब्राग्रह से ग्रंथ रचना की गयी थी । प्रारम्भ म विस्तृत प्रणस्ति दीगई है।

**१२८७. धर्मोपदेश श्रावकाचार-धर्मदास ।** पत्र म०४४ । ग्राठ १०३ ' ४५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रावार ज्ञास्त्र । २०काल म०१४७६ वैज्ञाव सुदी ३ । ते० काल म०१६७४ कार्लिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स०१२ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर दीवान वेननदास पुरारी होग ।

## ः विशेष—चपावनी मे प्रतिनिपि की गयी थी।

१२६७. धर्मोपदेशसिद्धान्त रस्तमाला—मागचन्द । पत्रस० ७७। त्रा० २.५ १ इच । भाषा—द्वित्रदी गद्य । विषय—धर्म । र०कान म० १६१२ प्रापाद वदी २ । लेक्काच स० १६२६ मादवा मुदी १८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६७-११३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मध्यि नेमिनाथ टोडारायमिट ।टोक) ।

**१२८६, प्रतिसं० २** । पत्रस्य**० २६ । भाषा**—हिन्दी । विषय—पम । ले० काल स०१६५१ । क्रुपर्या । बेप्रन स० ७६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुर ।

१२६०. नमस्कार महास्थ्यः । पत्रभुष्यः । धारु० ४ ८ दुःस्य । आधा— सरकृतः विषयः — पर्मः । रुक्तालः — । । तेक्कालः — । पूर्णः । वेष्ट्रतं मरुरे१६ । प्रास्ति स्थामः— दिरुके मध्यवालं पर्वालनी मिटर स्वति ।

१२६१. नरक दुःख वर्गन-भूषरदास । पत्रस०५। सा००; ४ ७ इन्द । भाषा इन्दी । विषय—धर्म । रॅ०काल— ४ । ले•काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४६६ । **प्राप्तिस्था**नं— दि० जैन सन्दिर लेक्कर जयपूर ।

विशेष -- कविवर दानतराय की रचनायें भी है।

**१२६२. नवकार ग्रर्थ**— ४ । पत्र म० ३ । ग्रा०२ै ४ ४ डश्व । भाषा-द्वित्री (नख)। विषय—धर्म । र०काल ४ । ने०कान म० १७३३ काश्तिक बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३०१ । **प्रास्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर बनाना (बुंदी)। **१२६३. नवकार बालावबोध ।** पत्रसं० ४। माषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०काल  $\times$  लेक्काल —  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० ७२२ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपूर ।

१२६४. निस्यक्तमंपाठसंपह । पत्रसः १०। झा० ११४४ है इत्र । भाषा — हिन्दी (पत्र)। विषय — पर्म । र०काल —  $\times$  । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १८२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयप ।

१२६५. पंच परध्मेठी गुरा वर्णन $-\times$ । पत्रयः २३। बा० १० $\frac{1}{2}\times\xi^{\frac{1}{2}}$  इव । भाषा - हिन्दी (पद्य)। विषयः—प्रमं। २०कास  $\times$ । लेश्कास  $\times$ । धपूर्णः। वेष्टन स० १। प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर तेरह पद्यी दौसा।

विशेष-प्रनथ बही की साइज में है।

१२६६, **पंचपरावर्तन वर्**गन $\times$  । पत्रसं०  $\vee$  । प्रा० १२ $\times$ ४ ई इंच । भाषा—िहस्दी(गळ) । विषय—धर्म । २०काल— $\times$  । लेकलल— $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २८६ । **प्राप्ति स्थान**-िद० जैन मिन्टर दवनाना (बंदी) ।

१२६७. पर्वपरावर्त्तन वर्शन $\longrightarrow$  । पत्रस० २ । मा० ११ $\frac{1}{2}$  < ४ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा— हिन्दी (ग०) । विषय—पर्स । ं०काल— र । ते०काल— > । पूर्ण । वेष्टन स० २०७ । प्राप्ति— स्थान— दि० जैन मन्दिर वारमणी कोटा ।

१२६८. पचपरावर्तन वर्शन 💢 । पत्रस्य ६। माण ११ ८७ इन । भाषा — हिन्दी । विषय — चिनन यमं । १०काल — 💢 । ने०काल — र । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ७६/४६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

१२६६. पद्मप्रकार ससार वर्णन $-\cdot$  । पत्रस $_0 \times$ । ब्रा० १० $_2^+ \times$  ५ इक्षा भाषा-संस्कृत । विषय धर्म । ७०कान $-\times$  । ते०कान $-\times$  । पूर्ण । बेग्रुन स $_0 \approx$ ६ । प्राप्ति स्थान- शास्त्र भद्मार १० जैन मन्दिर लक्कर ब्रयुप् ।

१२६६. (क) प्रतिसं० २ । पत्रस० ३ । धार १०३ ५ ४} इच्छ । ले०काल 🗴 । बेष्टन स० इ.उ.। प्राप्ति, स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**१३००. पन्द्रहपात्र चौपर्द-भ. भगवतीदास ।** पत्रस०३। प्रा० १०४६३ इन । भाषा—हिन्दी । विषय धर्म । <sup>२०</sup> काल ४ । ले०काल — ४ । पूर्ण । वेष्टुन म० ⊏?–४४। **प्राप्ति**-स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपुर ।

ग्रावि---

नमां देव अस्टित की नमी मिद्ध शिवराय । नमें साथ के चरगा को जोग विविध के भाव । पात्र कुगात्र अपात्र के पनरह भेद विचार । ताकी हूँ रचना कहेँ जिन भ्रागम अनुसार ।।

भ्रन्तिम---विदेशो उस

गिरे तो इस मैं पुर निरधार मरुग करे तो चौथे सार । ऐसे भेद जिनागम मांहि

त्रिलोकसार गोमतसार द्वंथ की छाह।।

भाषाकरहिभविक इहिहेत

पाछि, पढत ग्रर्थ कहि देत ।

बाल गोपाल ढिह जे जीव

भैया ते स्ख लहि सदीव ॥

**१३०१. पद्मलंदि पंचर्विशति—पद्मलंदि** । पत्रस० १३२ । आ० १०३८ १ इव । आपा— संस्कृत । विषय—साचार शास्त्र । र०काल— × । ते०काल— × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११६४ । प्रास्ति -स्थान—दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**१३०२. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १३१ । प्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इ.च । ले०काल —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर प्रजसेर ।

विशेष — साहमञ्जूने इस ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई थी।

**१३०३ प्रति सं**ठ ३ । पत्र स∙ ⊏५ । झा॰ १२ × ५ इआ। ले०काल × । बेहनस० १२० । <del>प्रपूर्ण । **प्राप्ति स्थान** –</del> दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- ६५ से आगे पत्र नहीं है।

**१३०४. प्रति ॄसं०४** । पत्र स० १-५० । आ० १०६<sup>2</sup> ४ ४ है । ले•काल अर । वेष्टनस० ७६२ । **श्रपुर्ग । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सदिर लक्कर, जयपुर ।

**१३०५ प्रति सं० ५ ।** पत्र स०७–६६ । ग्रा०११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  । ले०काल < । विषय - ग्राचार प्रपूर्ण । वेष्टुत स० ६२२ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है। पत्र मोटे है। प्रति १६वी मतान्दी को प्रतीत होता है।

**१३०६. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ५३ । ग्रा० १० $^2_4$  × ४ ड च । लेक्सन — < । पूर्ण । बेहन स० १६०-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

**१३०७. प्रतिसं०७ ।** पत्रस० १४-१४ । घ्रा० १२-१८ १ इ.च. ने ब्कान--- । घपूर्णा । बेष्टन म०३०६,२४६ । **प्राप्ति स्वान**----दि० जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रतिजीर्ग है तथा सभी पत्र सील से चिपके हुए है।

**१३०६. प्रतिसं० ६** । पत्र स० १६२ । बा० १३ ४४ डच । ले०काल— ६ । घपूर्ण । बेष्टन स० ४०६/ २४४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उटगपुर ।

१३०६. प्रति सं० ६ । पत्र म० =०। ले० काल 🖟 । घपूर्मा । बेहनस० ४१०/२४४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**१३१०. प्रतिसं० १०**। पत्र स० ७७ । लेक्काल स० १४६१ । **प्रपू**र्ण । बेहनस० ४११/२४३ । प्रतिजीर्ण है एव प्रणस्ति निस्त प्रकार है ।

सवन् १५६१ वर्षे प्रयम श्रावरण बुदी २ शुक्रवासरे स्वस्ति श्री मूनसके मरस्वती गच्छे, बनात्कार गर्गे कुदकुदाचार्यान्वये मट्टारकश्री सकलकीति तत्पट्टे मूबनकीति तत्पट्टे श्री ज्ञानभूषण नत्पट्टे विजयकीति तरपट्टे गुभचन्द्र प्रवर्तमाने रायदेशे ईंडर वास्तव्य हुंबड ज्ञातीय भोडा करमसी भागी पूर्तानयो सुन हो साडा मेपराजवाजु डोभाडा चापा भावाँ वापलदे तथो नुत डोभडा तिहराज मार्या दाडसदे एने स्वजानावर-प्यादि कर्म क्षमार्थ स्वभावरूचने श्रीपदामदि पूर्वावणतिका निविश्वा ईंडर पुभरवाने श्री सम्बनायालये मुम्बिताया श्री विजयकीति निरामा प्रवर्त । प्रास्ति स्थान-दिव जैन सम्बनायमस्य उदयपुर ।

**१३११. प्रतिसं० ११।** पत्र सक् १४४ । ग्राक्ट×⊏ इ.च.। लेक काल सक् १७५३ ग्रामोज सदी १। पूर्णे । बेप्रुन सक—६१-६ । **प्राप्ति स्थान**—दिक जैन मन्दिर वहा बीमपयी दौसा ।

विशेष सम्कृत पद्यों के ऊपर हिन्दी अर्थ दिया हआ है।

**१३१२. प्रति सं० १२।** पत्रस० द४। ग्रा०- ६४६ है इश्वालेक्काल ४। पूर्णावेष्ठन स० ७४। **प्राप्ति स्थान** —कि जैन प्रवासनी मन्दिर करीली।

१३१३. प्रतिसं० १३। प्यस्त १३१। लेकाल म० १६१४। पूर्णं। बेष्ट्रनस० ७४। प्राप्ति स्थानः दि० जैन प्रवासती मदिर हण्डावालो का डीगः।

विशेष — प्रति संस्कृत टीका सहित है।

१६१४ प्रति सं०१४ । त्व म०७२ । द्या०१०} ४६३ इ.च.। ले०काल---स०१८३२ । पर्याः प्राप्ति स्थान-----वि० जैन मन्दिर दीवानजी कामाओ

१३**१५. प्रतिस० १५।** पत्रस० ५३। बा० ११<sup>२</sup>大火हेडखा विकाल— < । श्रमूसाँ। वेष्टनस० ३१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सन्दिर दीवानजी कासा।

**१३१६ प्रतिसं० १६** । पत्र स० ५७ । ग्रा० १३ × ५३ इला। ले० काल स० १७३२ । पूर्णा। वक्रतसं० १०७ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैत सन्दिर दीवानकी कासा।

**१३१७. प्रतिसं० १७** । पत्र स०३२ । आ ०० ४६१ टश्वा । ले∘काल स०१६३२ । पूर्णा । वेष्टन स०११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष-प्रति हिन्दी गद्य टीका महित है।

**१३१८. प्रतिसं० १८** । पत्र २०६४ । ले० काल स०१७४० ग्रामोज सूर्वा ११ । पूर्मा । बेष्टन स०४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरसपुर ।

**१३१६. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स०१६४ । ले० काल 🔀 । पूर्णा । बेष्टन स०१६ । **प्राप्ति** स्थान--वि० जैन मन्दिर दोवानजी भरतपुर ।

**१३२०. प्रतिसं०२०।** पत्र स०६६। झा०१२०५ ४ इच्चाले० काल० ⊠ायूगा। बेष्टन स० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर बोरसर्ली कोटा।

**१३२१. प्रतिसं०२१।** पत्र स०११४ । छा०११<sup>९</sup> ८४ ] डब्बा वेल काल स०१७३५ पीछ बुदी ४ । पूर्णावेहन स०१७५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा।

विशेष-इस प्रति को ग्राचार्य शुभकीति ततु शिष्य जगर्मात ने गिरधर के पठनार्थ लिखी थी।

**१३२२. प्रतिसं० २२ ।** पत्र सं० ६७ । प्रा० ११७ ४ इथ्ब । ले०काल 📐 । पूर्ण । तेष्टुन स० <sup>३३८</sup> । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । **१३२३. प्रतिसं० २३ ।** पत्रसं० १६१ । श्रा० ४imes६ इञ्च । ले॰कान सबत् १८२१ प्रापाढ बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**१३२४: प्रतिसं० २४ ।** पत्रस० ६७ । खा० ११ र्रे ४ र्वुडचा ले०काल स० १४०० पौष मुदी **४ ।** पूर्णा । वेक्टन म० २०० । **प्राप्ति स्थान**----दि० जैन मन्दिर बोरगली कोटा ।

विशेष प्रशस्ति—म० १४०० वर्षे पोषमासे गुक्कपक्षे पत्रमी भूगो आदोह श्री धर्नरेन्द्रगं चन्द्रप्रप्रमेश्यालयं श्री गृलसमे भारतीगच्छे बलास्कारगरी श्री कृत्वकृत्दाचार्यान्वयं महुरक श्रीपधानिद देवास्तरपट्टे महारक श्री ३ देवन्द्रकीर्तिदेवास्तपट्टे भ० विद्यानदिदेवस्तरनपट्टे भट्टारक श्री श्री श्री ......

**१३२५. प्रतिसं० २५ ।** पत्रस० १०६ । ग्रा० १०१≻ ५े डञ्च । ले०काल म० १७१४ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टुन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सं ० १७१४ मार्गांबर सुदी ११ लिखिल ब्रह्म नृत्यदेव स्वयमात्मा निमित्त नैरागुरमध्ये । सुर्रामह सोलखी विजयराज्ये शुभ श्री मूलसबे गरम्बनीगछे बलान्कारगणे भ श्रीषयकीनि ब्रह्म मुखदेव पठनार्थे । लिखिल मुखदेव ।

**१३२६. प्रतिसं० २६** । पत्र म० ६६ । ब्रा०१० ४४¦ उच्च । ले०काल स० १७६१ माघ वृदी ६ । पूर्यो केप्टन स० ४४ । प्रास्ति स्थान---दि० जैन सदिश द्वलाना (वृदी)

विशेष — प्रणमित । स० १७६१ वर्ष भी १९१८ प्रवर्तमात साथ साथे कृष्णपक्षे पर्शसीत को मुक्बामरे परितासमण्डित थी १०८ थी ध्रमरिवस्तको तन् शिष्य गर्गे थी ३४ थी रात्तवस्तको तन् शिष्य गर्गे थी ३४ थी रात्तवस्तको तन् शिष्य मृति संघविस्तेन लिखित नयस्प्वासग्रमध्ये साझ्बी थी प्रोधराजकी पुरतसायि लिखित तयस्प्वासग्रमध्ये साझ्बी थी प्रोधराजकी पुरतसायि स्वास्ति । श्री रस्तु ।

**१३२७. प्रतिसं० २७ ।** पत्र स० ११३ । ते० काल । १२मं । देशन मा ४५ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी)

**विशेष** —कठिन शब्दों के ग्रंथ दिये हुए हैं। प्रशस्ति बाला ग्रस्तिम पत्र तही है। प्रौत प्रार्थ। है।

**१३२८. प्रतिसं० २८** । पत्र मण ६७ । प्राण १३ - ५५ ०८ । तल कात मण्डेरतण अ पूर्ण । बेपून मण्डेरण **प्राप्ति स्थान**—विकासन तरहण्यी मन्दिर सम्पा।

विशेष--चन्दालाल बैद ने नैगाना ने मीरिंग में लिंग करना का लढाया था।

**१३२६. प्रतिसं० २६ ।** पत्तन्न ० २२। आर्थ १० ४ ४ इथा। लेक्काल सक १६०२ साघ वदी ३ । पूर्णा वेषून स**०** ३२२ । प्राधि स्थान । दिश्लोन ग्रदिश दक्ताना (व दी)।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

ध्यय सब्दसर्गेरमन श्रीदिक्षमादित्यराजे स्वत् १६०३ वर्षे मार बदि र एक्वानर । त्र सीभास्पदित्यवर्षे श्रीमद्भवयापपुरे ।। श्री मुन्तर्थे सरस्वतीमध्ये वतारकारणे श्री तु रकु रामाधीका भट्टारक श्री वयनविदेवास्त्रपद्धि मुद्दारक श्री प्रभावः देवा । तदामाधि महत्याच्याः श्री व्यवदासक्ति । विस्तराताचार-मैद्धातिकचक्रवदावार्थः श्रीतिमचरदेवास्त् विष्णारात्वावार्यः श्री वित्रवासक्ति । तद्मामाये महत्ववाल कुल कमलसापुनादः पद्धा तद्भायां पन्तो तयो स्थतु युव माहु सौता साथी देवल् । प्रथम पुत्र बाला नद्भायां कपुत्री । द्वितीय युव इत्तर । तद्भायां प्रथम। साहु वाषा दिनीय युव साहु दाना तद्भायां चाक श्रयम पुत्र यनपानु तद्भायां कही द्वितीय युव कोहः । तृतीय युव संता । नतुर्थ युव माग्नदान साहुपद्, तृतीय पुत्र हुलहुतद्भार्यासरो । तयो पुत्र ऊदा । एतेषा मध्ये साहु लोल पद्मनदि पचिवणतिका कर्मक्रमनिमल लिल्यावि ।

**१३२०. प्रतिसं**० **३०।** पत्रस्० ६१। ब्रा० १४ 🗴 ५५ दश्व । लेब्लाल क० १५६३। पूर्ण । वेष्टत स० २४-५७ । **प्रार्**ट, स्थाल —दि० जेन मन्दिर नेपिनाथ टोडारायमिह (टोक)

विशेष—स०१४६३ वर्षे चैत्र मुदी १ मोमे श्रीमृतमधे भ० श्री विजयकीर्ति तत् भ० श्री कृमुदचन्द्र (जमचन्द्र) त अ.ज. मोजा पाठनार्थ।

**१२२९. प्रति सख्या ३६ ।** पत्रस० ६७ । द्वा० १२ 🗴 ४ इच । लेक्काल म०१७६५ । पूर्मा । यहन स०२४७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

**१३३२. प्रति सं० ३२ ।** पत्रस० ५२ । द्या० ११ 🗴 ८ ड•वा। ले०काल 🖟 । अपूर्ण। वेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, पचायती दुनी।

विशेष - स्योवका दामा वालों ने प्रतिक्षिप की थी । शिवजीराम के शिय प० नेमीचट के पठनार्थ दूर्गी में टीरालाल कोटवारी ने टम भेंट स्वरूप प्रदान की थी । प० हीरालाल नेमीचट की पुस्तक ह ।

**१३३३. प्रति सं० ३३**। पत्रस**्ट ६**। छा० १११ × ४) इन्य । लेक्काल 🔧 । छपूर्ण । वेग्रन मुक्त २६६ । **प्राप्ति स्था**ल - दिक जैन महिर **अभिनन्द**न स्वामी, ब्रारी ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है। प्रन्तिम पत्र नहीं है।

१३३४. प्रति सं० ३४ । पशन्य ४४ –७६ । आ० ११ 🗶 ५ इन्छ । लेक्काल ः । अपूर्ण । प्राप्ति सम्याभ—वि० केन सदिन समिनदन स्वामी, वृदी,

**१३३५. प्रतिसं० ३५ ।** पणसल २०। ग्रा०१२ , ५ टच्च । लेककाल स०१७== पाष सुद्दी १।पूर्णा थट्टन ग०१०६। **प्राप्ति स्थान**लदि० जैन सदिर आदिलाथ वृद्दी।

विशेष - ५० छाः,राम न प्रतिविधि की थी।

**१३२६. पद्मनिद्यंचांवर्गातः टोका— ४** । पत्रन्न०१३५ । ब्रा०१२३ । अस्था। भाषा—सम्प्रन्तः । विषय—याचारणास्त्रः । र०कालः । ते०कालः म०१६६८ । पूर्णः । वष्टन ग०१२१५ । **प्राप्तिः स्था**नः भद्रारकीय दि०कैन मन्दिरः ब्रासंस्रः।

१३३६. पद्मतन्तिपर्वाविशतिका—ात्रसः २४७ । आ० ११ x ४ ३७ । भाषा— गरण्यः । विद्या— प्राचार शास्त्रः । र०कालः x । ले०कालः म०१६७१ आगादः बृद्धः २ । पूर्णः । वेष्टनम०११४ । प्रास्तिः स्थान---विर्णंत सविर्धाभतन्त्वा स्वासी बृद्धी ।

सेखक प्रशस्ति—स्यत् १६०१ वर्षे घाषाट युदी २ वार संमवासरे इरियालाइंसे पथ-बास्तव्ये सकब्बर नृत जहामीर जलावदी सरेमसाहि राजि प्रवर्तमाने श्री काष्ट्रासंघे माव्यात्वय प्रकरणन्ने प्रश्नास्त्र यी विजयमेनदेवास्तरपृष्टे सिद्धान्तजनसमुद्रविवेककलाधमनिनी-विकाशनंक-दिरणर्माण भट्टार्यः नयमेनदेवा तरपृष्टे गृहास्क श्री ग्रस्वमेनदेवा तरपृष्टे प्रहास्क श्री घमनकीसिदेवा नरपृष्टे पृहास्क श्री क्षेमकीसिदेवा नरपृष्टे श्री हेमकीत्तिदेवातत्तर्ष्ट्रे भट्टारक श्रीकुमारसेनदेवा तत्तर्ष्ट्रे भट्टारक श्री हेमबददेवा तत्तर्ष्ट्रे श्री पयनदिदेवा तत्त्र्य्ट्रे पंबमसङ्गावत्त्रवात्त्राचा पंबसिमित निमुनि-मृतात् देवा-विदेत-विद्यातमात् प्रव-रस-वाणी भट्टारक मण्डितित तत्त्र्य्ट्रे तिया पृत्रकार्यक्षात्रवात्त्रात्त्रात्त्र्यात्त्र व्याप्त्रकार्यक्षात्रवात्त्रात्त्र्यात्त्र विद्यात्त्रकार्यक्षात्रवात्त्रात्त्र्यात्त्र विद्यात्त्रकार्यक्षात्रवात्त्रम् विद्यात्त्रकार्यक्षात्रवात्त्रम् विद्यात्त्रम् विद्यात्तिः विद्यात्त्रम् विद्यात्त्रम् विद्यात्त्रम् विद्यात्त्रम् वित्यात्तिः विद्यात्तिः विद्यातिः विद्यात्तिः विद्यातिः विद्यात्तिः विद्यातिः वित्यातिः विद्यातिः व

**१३३६, पद्मानिदर्धर्चिकाति टीका**  $\times$  । पत्रस० २०७ । प्रा० ११  $\times$  ५१ इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल  $\times$  । क्रिप्तं । वेष्टनस० ७२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौसा ।

**१३४०. पद्मतंदिपच्छोसी मालग-जगतराय ।** पत्र स०१०४ । ग्रा० १० ४ १ इथा। भाषा —हिन्दी पद्मा विषय — प्राचार जास्त्र । र०काल म०१७२२ कानुन मुदी १०। ने०काल म०१०६१ कानुगा मुदी २। पूर्णा। बेष्टुन म०६१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेप्ह पथी दोमा।

**१३४१. प्रतिसं०२ ।** पत्र म०११८ । ग्रा०११ २ ४ इश्व । ले०काल २ । पूर्ण । वेष्टन म०८६ । **प्राप्तिस्थान— दि० जैन** पचायती मन्दिर करीली ।

**१३४२. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १०१ । आ० १२२२ ७ इखा । लेकाल स० १६६२ आसोज सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन सं०—७० । **प्राध्ति स्थान** —दि० जैन अध्वाल पचायनी मंदिर अलवर ।

**१२४३. प्रति सं० ४ ।** पत्र म० १३४ । म्रा० १०१/२ ४ इथा । लेब्जाल 🕟 । पूर्ण । बेहन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान**—दिव जैन प्रवायनी मन्दिर मन्दर ।

**१३४४. पद्मानंद पच्चीसी भावा—मन्नालाल खिन्दुका ।** पत्र मर्० २००१४ छ इ**ख । भाषा—राजस्थानी (हुडारी) गद्म । विषय—र्थम (आ**वार आरत्र)। र०काल मर्० १९१४ मर्गामर बुदी ४ । **लेवकाल × । पू**र्ण । वेष्टन सर्व १९७४ । **प्राप्ति स्थान**ः भट्टार्ग्याय दिव जैन मदिरस्यजेसर ।

विशेष--प्रति जीगां है।

**१३४५. प्रति सं० २ । पत्र स**० २४६ । बा० १३५% म इच । ले०काल स० १९६५ स्यावन मुदी २ । पूर्ण । बेष्टुन स० ६ । **प्राप्तिः स्थानः** चि० जैन मन्दिर फेसेहपुर केसाबाटी (नीकर) ।

**१३४६. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस०२४ । ग्रा०१४∵ ⊏ इ.च । ते०काल म० ११५८ सावन बुटी २ । पूर्ण । बेष्टन स० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पदायती मन्दिर ग्रानवर ।

१३४७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २८७ । आ० १२ ८ ८ च । ले०काल स० १६३३ चैन बुदी १ । पूर्यो । बेष्टन स० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायमिह (टॉक)

विशेष-भैम्लाल पहाडिया चुरुवाले संमदिगे के पत्रों ने लिखबाया था।

**१३४८. प्रतिसं० ५** । पत्र सं० २८३ । आ० १३ ८७ इला । ले**०काल म०** १६३० भ्रापाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बुंदी । विशेष—प० मिश्र नन्दलाल ने चन्द्रापुरी में प्रतिलिपि की थी। चुन्नीलाल रावका की बहु एवं मोनीलाल शाह की बेटी जानकी ने भेंट किया था।

१३४६. पद्मानदि पच्छोसी माखा  $\times$ । पत्रस $\circ$ ४२। प्रा $\circ$ ६ $\times$ ४ इत्त । भाषा—हिन्दी (पद्म)। विषय—चर्म।  $\circ$ ० काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेष्टनस $\circ$ १४७। प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मंदिर राजमहल टॉक।

**१३५०. पद्मानीद आवकाचार—पद्मानीत** । पत्रस० १४। म्रा० १३ ८ ६ च । भाषा— सस्कृत । विषय—साथार ग्रास्त्र । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेहनस० २०६। **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मन्दिर,  $\odot$ नेर ।

**१३५१ प्रति सं०** २ । ण्यस० ५६ । ग्रा० ११ $\frac{3}{2}$  $\times$  ४ $\frac{5}{2}$  इंच । ले० काल स० १७१३ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनस० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन, मंदिर ग्रजमेर ।

**१३५२. प्रति सं० ३** । पत्रस० १७ । म्रा० १०<sup>3</sup>, ४४३ इ.सा । ले० काल स० १८५४ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनस० १४६६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मदिर मजनेर ।

**१३५३ प्रति स०४** । पत्रस० ११ । झा० १०×७<sup>5</sup>, इन्ताः ले०काल----- प्राः पूर्णः । वेष्टनम०११० । **प्राप्ति स्थान**----दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

१२**५४. प्रति स०५।** पत्रस० ५६। ले०काल 🖂 । पूर्ण । बेष्टनम० १२ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर बडा प्रचायनी दीन ।

१३५५. पुरुषार्थं सिद्धाचुपाय—श्रम्तवन्द्राचार्यः। पत्रतः ११। ग्रा० १४४ इत्राः गाया-सन्द्रतः। विषय—धर्मः। र०काल— 🗙 । ने०काल— 🕟 । पूर्णः। वेष्ट्रनमः १४७२ । प्रास्ति स्थान— भट्टाप्त्रीय दि० जैन मन्दिर ग्रावंगरः।

विशेष---प्रनथ का दूसरा नाम 'जिन प्रवचन रहस्यकोष' भी है।

**१३ ५६. प्रति स०**२ । पत्र स०२ –१४ । ग्रा०१२ ४ ४ ३ डब्जा ले∘काल ४ । ग्रापूर्णा वेष्टन स०⊏ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark> दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**विशेष**—प्रथम पत्र नहीं है। ५ पत्र तक मस्कृत टिप्परंगी भी है।

१३४७. प्रतिसं० ३। पश्रस०४६। बा०११३ ८ ४६ै। लेवकाल स०१८१७ ज्येष्ट सुदी १४। वेष्टतसं०६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लकार, जयपुर।

विशेष---प्रति नैगासी कृत सम्कृत टीका सहित है ।

**१३५८. प्रतिसं०४** । पत्रस०८। मा०१०५,४४३ । ले०काल स०१७४७ भादवासुदी १६। वेष्टनसं०६१/५६ । **प्राप्ति स्थान**्दि जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशोध — द्रव्यपुर पतन मे स्रेमा मनोहर ग्रमर के लिए प्रतिलिपि हुई थी।

१३४६. प्रति सं० ४। पत्रस० ४२। घा० १३% ६ $\S$  इञ्च । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनस०  $^{40}$ । प्राप्तिस्थानं —दि० जैन मदिर नैरहपथी दौमा ।

**१३६०. प्रति स० ६। पत्रस०** २७ । ले०काल स० १८६१ मङ्गसिर मुदी ३ । पूर्ण । <sup>बेष्टनस०</sup>२१६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर । **१३६१. प्रति स० ७ ।** पत्रस० २६ । ब्रा० १२×५ है इश्वरा ले०काल स० १७५० । पूर्ण । तेष्टुन सं० १५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--कामा मे प्रतिलिपि हुई थी।

१३६२. प्रतिस्तरुमः। पप्रसरु११। लेश्कालः 🔬 पूर्णः। वेष्टनसरु१४५। प्राप्तिः स्थान—दिरुजैन मस्दिरदीवानजीकामाः।

**१३६३. पुरुवार्थ सिद्धायुगाय भाषा—महापडित टोडरमल ।** पत्रस० वर । आठ १२ै : ६दै इन्छ । भाषा —राजस्थानी (ढुडारी) गद्य । विषय —धर्म । र०काल स० १व२७ । ने० काल स० १व६५ सङ्ग्रासर नुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १५३४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर वजनेर ।

विशेष—इस ग्रंथ की अधूरी टीका को पड़ित दौलतरामजी कासलीवाल ने सबत् १८२७ में प्रा किया था।

**१३६४. प्रति स०२ ।** पत्रस०१२६ । ब्रा०११३ ४ ६ इ.च. । ले० काल स०१६४६ । दूर्गा। वेद्यनस०२४६ । **प्राप्ति स्थान** — स०दि० जैन मंदिर श्रजमेर ।

**१३६५. प्रति स०३ ।** पत्र स०१२७ । घा०१२५, ४६ इ.च. । ले०काल ४ । पूर्णा विष्टन स० ६३ । **प्र.स्ति स्थान**—दि० जैन सम्रवाल पत्रावती मस्टिग् सलवग् ।

**१३६६. शत स०४** । पत्रसः ७४ । ग्रा०१२ - ६ उलाने कलास स०१=६१ । ग्राम । वेग्रन स०१ । **प्राप्ति स्थान—**दि०जैन मदिर नेरद्वपथी दौसा।

**१३६७ प्रति स०५** । पत्र स० २१ । ब्रा० १२) - ३) तथा । ले० काल- ० । प्रपुरम । बेष्टन स० १२२ । प्राप्तिः स्थान----वि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

**१३६८. प्रतिसं०६** । पत्रस०१८८ । लेब्बाल २ । पूर्ण । बेप्टन स०१२२ । **प्राप्**ति-स्थान-- दि० जैन छोटा मन्दिर (बयाना) ।

**१३६६. प्रतिसं०७ ।** पत्रस०६६ । बा०१२ ४ ३७४ । तेक्काल २० १८१४ माघ मुदी १४ । पूर्मा । बेष्टुन म०२२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० तैन मन्दिर नागरी, बूदी ।

**विशेष**—चाकम् मे प्रतिलिपि हुई थी<sub>:</sub>।

**१३७०. प्रतिस० ६** । पत्रस० ६२ । बा० <sup>१३ ४</sup> ६ इल्डा ले०कात स**०** १८६१ । पूर्सा बेष्टन—क० ७३ । **प्रास्तिस्था**स-दिजैन मन्दिरश्रीमहाशीर बृदी ।

**१३७१. प्रति स०६ ।** पत्रसण्यस्य । प्रार्थः २०६३ प्रयम् । तेरुकाल गरुर्द्धः ४ । पृग्यः । बेष्टुत स०२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि**०** जैत तेरहपथी मदिर नैगाला ।

-विशेष--ब्राह्मसम्मनीताराम नासपुर मध्ये लिपि कृत ।।

**१३७२. प्रतिस० १० ।** पत्र स० ६९ । ग्रा० १३ - ४<sup>९</sup> डच्च । लेक काल गठ १६०६ । पूर्णावेषुन स**०** २४ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मदिर कोट्यों कानैगावा।

विशेष—लोचनपुर में भोगतराम जी धापाराम जी ठग ने बलदेव सट्ट से प्रति कराकर काटनां के मंदिर में भेट की थी।

**१३७३. प्रति संख्या ११**। पत्रस० १२४ । आ० ११ $\frac{1}{2} \times \mathbb{Q}^2$  डब्ब । ले**०का**ल । पूर्या । बेष्टन स० ४ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन म**दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

**१३७४. प्रति स० १२।** पत्रस० ८७ । ग्रा० १२३ ४ ५३ इञ्च । ले०काल सं० १८६२ । पूरो । बेष्टुन स० १०६/२४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्यतेनाय मन्दिर टन्दरगढ़ कोटा ।

विशेष -- ब्राह्मण भोपतराम ने सर्वाईमाञ्चोपुर मे प्रतिलिपि की थी। यह प्रतिउ रिण्यारा के मदिर के बास्ते लिखी गयी थी।

**१३७५. प्रति सं० १३ ।** पत्रस०--(२८ । घा० १२ % ५<sup>5</sup> इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । बेग्रन स० ७४. १७० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायनी मेदिर घलवर ।

**१३७६. प्रति स०१४** । पत्र २०१२ ४ । ले०काल स०१८२० । पूर्णा वेष्टन स०४६-१७० । प्रा**प्तिस्थान**—दि० जैन प्रचायनी सन्दिर ग्रालवर ।

१३७७. प्रति सं० १५ । पत्र स० १०४ । ले०काल × । स्रपूर्ण । वेष्टनस० ६५-१०४ । प्राप्ति स्थानं दि० जैन मन्दिर प्वायती सलवर ।

**१३७६. प्रति स० १६** । पत्र स० १६ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टन स० १६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानत्री भरतपुर ।

**१३७६, प्रति स**० १७ । पत्रस० ८० । वै० काल स० १८७२ । पूर्णा। वेष्टन स०३२२ । प्राप्ति स्थान दि० जेन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर ।

**१३६०. प्रति सर १६** । पत्रसर ७४ । लेकबाल सरु १६६५ । पूर्ण । बेप्टन सरु ३२३ । प्राप्ति स्थान दिक्जैत पत्रायती मदिर भरतपुर ।

**१३८१. प्रतिसं० १६** । पत्रसण्य ८० । धारु १२ ४ ६० । लेण्काल- ० । पूर्णा। वष्टन सण्यक्ति-स्थान -दिल्जन पत्रायती सन्दिरकामा ।

**१३८२. प्रति सं० २०।** पत्र स० १३ । ग्रा० १२ ५, ७ इश्वः । ले० काल स० १८७६ सावस्म अरी ४ । पूर्यः । वष्ट्रन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मदिर दीवानची काला।

विशेश — दोलतराम जी न टीका पूर्ण की थी। जाधराज ने प्रतिलिपि कराई थी।

**१३८३. प्रति स० २१ ।** पत्र न० १२६ । जेवन काल × । श्रपूर्णः । बेटन म० ३६ । **प्रास्ति** स्थान दि० जैन गचायती सदिन हण्डालालों का त्रीग ।

विशेष--प्रति जीगां है।

**१३७४. प्रति स** २२ । पप २० ८२ । पा० १२  $\times$  च इला । ले० काल स० १८७६ क्वार मुद्री २ पूर्ण । बहुत स० २ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर दीवान चननदास पुरानी दीए ।

**१३८५. प्रति सं० २३** । पत्र २० १०१ । प्रा० १२३ - ४५ इञ्च । ले० काल म० १८६० साप वृत्री ६६ । पुण्णे । बेपन म० १३६ । **प्राप्ति स्थान** - वि० जैने प्रचायनी मदिर करीती ।

**१३८६. प्रतिस० २४** । पत्र स० १०० । ब्रा० ११ रूँ दाले बतल स० १६४१ । पुर्मावेदन स**० २४**८४ । **प्राप्ति स्थान** दिब्बैन मन्दिर बताबीस पश्चीदीया ।

विशेष — रतनबद दीवान की प्रेरणा में संगतनगम ने टीका पूर्ण की थी । शिनवबम ने दोमा में प्रतिनिधि की । पुस्तक छोटीलाल जी विसाल ने दौमा के मन्दिर में चढाई । **१३८७. प्रति सं० २४ ।** पत्र स० १४२ । प्रा० १०२ ४ १ इञ्च । ले० काल स० १६१८ वैशास सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । **प्राप्ति रुषान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर सेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष—रपुनाय बाह्यरा ने प्रतिनिधि की थी। लाला मुखानन्द की धर्म पत्नी ने धनतत्रत चतुर्वजी उद्योपन में स॰ १९२९ भाववा मुदी १४ को वडा मन्दिर में चढाई।

**१३८६. प्रति सं० २६.**। पत्र स०१०८। प्रा०११ 🔀 ६१ इञ्च । ले० काल म० 🗸 । पूर्णु । बेल्टन सं० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल होक ।

विशेष - राजमहल माथे मा तेजपाल जी माई नार्गम जी तस्य पुत्र नेमलाल ज्ञाति शहेलवाल गोत्र कटार्या ने बाह्मण सुलसाल से प्रतिलिपि कराकर चन्द्रप्रभ चैत्यालय में विराजमान कराया।

**१३८६. पुरुषार्थसिद्ध पुषा भाषा**— × । पत्र मण्डर । प्रा०१२∴ण्डला। भाषा— हिन्दी ग**षा ।** विषय—थर्म । र०काल— × । ने०काल म०११८१। पूर्ण । वेष्टन म०५६। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर स्वामी बुंदी ।

विशेष - चदेरी में ( ग्वालियर राज्य ) प्रतिलिपि हुई । प्रति मुला साह केमन्दिर की है।

१३६०. परिकर्म विधि— $\times$ । गत्र स० ५३। प्रा० १० $\times$ ५ इश्व । भाषा—सम्बन् (पद्य)। विषय — धर्म । ग्र०काल — $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १०। **प्राप्ति स्थान** —प्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपर ।

विशेष - प्रत्येक पत्र पर १० पिक एवं प्रति पिक मे ३४ ग्रक्षर है।

**१३६२. पुष्पमल— । ।** पत्र सर्था आर्थि १० दे ४४ दे इ.च. भाषा — प्राकृत । विषय धर्म । र**०काल— >** । ले**० काल— ९. । पूर्ण** । वेष्टन म० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० बेन मन्दिर दबलाना (वृदी) ।

**१३६३, प्रतिकापत्र** । पत्र म०१। आ**षा**— हिन्दी। विषय— ग्राचार । र०कालः । त्रे०काल म० १६८६ । पूर्गे । वेष्टुन स०४६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती सन्दिर भरतपुर ।

१**३६४: प्रतिमा बहत्तरी—द्यानतराय।** पत्रम०६। घा०१०र्थे ३३०८। भाषा— हिन्दी। विषय—पर्मा रच्काल— रं। ले**०का**ल स०११०३। पूण । वहन स०४४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना।

**१३६५. प्रवज्याभिधान लघुवृत्ति**— × । पत्र म०२ से १० गकः । ग्रा०११ ५ टवा । भाषा — सन्दृत । विषय-— श्राचार जास्त्र । र०काल — ४ । लेक्काल स०१५⊏१ ग्रासीज सृदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन स०२११ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर बोस्सली कोटा।

६२६ ४. प्रश्नमाला मार्बा $-\times$ ा पत्र म०२०। सा०१२ $\times$ ६२ द्वाः भाषा-हिन्दीः। विषयः धर्मः। र०काल $-\times$ । ले०काल म०१६०७ पोष बुदी १२। पूर्णः। बेष्टन म०४। प्राप्तिः स्थान-दि० तैन छोटा मदिर बयाना

विशेष--- ला० तेजराम ने ग्रथ की प्रतिनिधि करवायी थी।

१३६७. प्रश्नमाला— × । पत्र सं०३६ । घा० १११ ×६३ इ.च.। माषा —हिनी । विषय— षमं । ८०काल— × । ले०काल— × । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । प्राप्ति स्थान—पि० जैन छोटा मन्दिर बळारा ।

विशेष--मुट्टान्टतर गिरणी में से पाठ संग्रह किया गया है।

**१३६८. प्रश्नोत्तर मालिका**— $\times$ । पत्र स० ४२। मा० ६ ५ ५ इखा। भाषा—सम्बन्धन । विषय—धर्मा ्०काल— $\times$ । ने०काल म० १८६०। पूर्ण। वेष्टन स० ५८ ३६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इसरपुर ।

प्रशस्ति – सबत् १८६० वर्षे जाके १७४४ प्रवर्तमाने उत्तरगोले उत्तरगवनगरे सूर्व ग्रीरम दिने महामगल्य प्रदेशे मामोत्तममासे उद्युट मासे कृष्ण पक्षे तिथी २ श्रीवदासरे उद्देशर मध्ये (कुणलगह) ब्राटिनाथ चैत्यालये महत्नालाये श्री रामकीति जी लिखित ग्रय प्रकानर मालिका सम्प्रण ।

१३६६. प्रश्नोत्तररत्नमाला वृत्ति—ग्रावार्य देवेन्द्र । पत्र स०१४३ । प्रा०१०  $\times$  ४ $\frac{1}{8}$ टख । भाषा—सन्द्रत । विषय—ग्रावार शास्त्र । रक्ताल्  $\times$  । लेक्ताल्  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०१४६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन संदर प्रादिनाय वंदी ।

विशेष —प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है। १४३ में प्राप्ते पत्र नहीं है। उत्याचार्य श्री देवेन्द्र विराधिताया प्रभोत्तर रत्नमाला वृत्ती परधनामवारमाया नागदत्ता कथा।

१४००. प्रति सं० २ । पत्र म. ० १४–१५१ । बा० ६१ूँ ४४} इश्व । ले० काल 🗴 । धपूर्ण । वेष्ट्रत म० ४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर आदिनाथ व दी ।

१४०१. प्रश्नोत्तर रत्नमाला —  $\times$  । पत्र म०१६ । प्रा० ह $\frac{1}{2}$ imes ६ तथा । भाषा - तिन्दी पत्र । विषय — धावार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ने०काल म०१६७१ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०४३७-१६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर, कोटिंडियों का द्वारपुर ।

१४०२' प्रश्नोत्तर **आवकाचार--भ. सकलकोत्ति**। पत्रसु०२०६। झा०११४ ५ इश्वा। भाषा-सन्द्रतः विषय—झाचार शास्त्रः। ४०काल ४। ले०काल स०१७०० कागुण सुदी ७। पूर्णः। वेष्टतसु०१३३६। **प्राप्ति स्थान** --भ०दि० जैन मदिर झजसरः।

विशेष-ले० काल के प्रतिरिक्त निम्न प्रकार घीर लिखा है-स०१ मह सुदी १४ को प्रजंभर मंउन. प्रथ् की प्रतिलिपि हुई।

**१४०३. प्रति सं०२।** पत्रस०११४। सा०६१ै-४ इश्वः। ले०काल स०१८४० आषाढ मृदी ८। पूर्णे। बेष्टनस०१२६४। **प्रास्ति स्थान**—प्र०दि० जैन सन्दिर स्रजमेर।

१४०४. प्रति स०३ । पत्रस०१५१ । लेब्बाल स०१६६५ माघ मुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रनसंक १२०६ । प्रास्ति स्थान—भवदिक जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**१४०५. प्रति स०४ ।** पत्रस० १३२ । मा० १० है ॰ ४ है इ.च । ले० कान × । पूर्ण । बेष्टनस० १०४४ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**१४०६. । प्रति स० ६ ।** पत्र म०६६ । ले०काल म०१४ प२ भादवा मुदी ११ भीम दिने । पूर्णा। बेटन स०६६० । **प्राध्ति स्थान** ---भ०दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

विशेष-श्री मूलसबै लिखित नानु मोजराजा सुन ।

१४०७. प्रति संब ६ । पत्र संब ७३ । तेव काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन संब ७४७ । प्राप्ति स्थान—मुख्यान प्राप्ति स्थान

**१४०८. प्रति सं०७ । पत्रस**०७२ । म्रा०१२×५ इन्छ । ले०काल स० १५४३ श्रावस बुदी । पूर्णे । वेष्टन सं०१२२ । **प्राप्ति स्थान**---जपरोक्त मन्दिर ।

श्रमस्तिः -राउल गङ्गदास विजयराज्ये स० १४५३ वयं आवग् मातं इत्यगक्षे मोमे निरपुरे श्री मादिनाय चेत्यान्यं श्री मूलसपे सरस्वतीगच्ये वलात्कारगण्णे भट्टारक श्री ज्ञानभूपण् साचायं श्री स्तनकीति इवक्रजातीय श्रीट उक्तार वाई रूपिण्णो मृत साइमा मार्या महिबलदे एते धमेशक्तोस्तर पुरतक निलापित । मृति श्री माध्यनिद दत्त ।

**१४०६. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०१२४ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०१७२ । **प्राप्ति** स्थान—भ०दि० जैन संदिर ग्रजमेर ।

**१४१०. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १६४ । घा० ६<sup>५</sup> ४४ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ग । वेष्टन स० ३१० । **प्राप्ति रुषान**—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर अवसर ।

**१४११. प्रति सं०४ । पत्रसः**०-१६ । या० १२ × ५, इश्च । ल० काल × । शपूर्ण । वेष्टन म०—१४१७ । **प्राप्ति स्थान**—महास्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

**१४१२. प्रति सं० ५ ।** पत्रस० १६ । म्रा०१०¦्र ८ ३है इचा। ल० काल र । स्रपूर्णा विद्युत्त स०—-१२८३ । **प्राप्तिः स्थानः** —-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजसरा

**१४१३. प्रतिसं०६ । प**त्रस० ५४ । द्या०१०, े.५ इञ्चाले० काल स०१०६५ फासूमा बुदी१३ । पूर्या। बेपून स०–११६६ । **प्रा**र्ट, स्थान- भट्टाकीम दि० जैन मन्दिर बनमर ।

**१४१४. प्रतिसं०७ ।** पत्रस०१६०। प्रा०१२(x)४८ दश्च । विषयः याचार णास्य । २०काल (x)। लेकाल स०१८१२ फापुन बुदी ११। पूर्णः। वस्त्रस०७१०। प्राप्ति स्थानं विक जैन मन्दिर सौगाणियो का करोली ।

विशेष--साहबराम सीगामी ने करीली में प्रतिलिप की थी।

**१४१५. प्रतिसं० म । पत्रस० १३२ । घा० १०**] ४ १९५ । ले० कात्र मण १६८४ पाप सुदी **१४ । पूर्ता । बेहन स० ३०म । प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर प्रांगनस्त्र स्थामा बुदी ।

प्रशस्ति -सवत् १६६४ वर्षे पौष मुदी १४ तिथी बुधवास्य भूगिस्तवादे महाराजाधिराज श्री माधवीसह वी राज्ये कोटा नगरे श्री महाशीर्यन्तायचे श्री प्रथमने नजानाथे बनास्यारमाते मण्डली स्वरूपक श्री प्रभावदेवा तत्पृहं भ० श्रावत्क्वीनिदेवा तत्पृहं भ० श्री देदेदश्कीलि वेदा नतपृहं भट्टास्तेन्द्र महास्व की नेरस्ववीनि तदास्त्रायं स्थानस्य मेगामात्री गोत्रं साह श्री सामा तद्मायं है ... "एतवा मध्ये साम्यस्वन्यनक नगात-गानिकाति सौक्यं दासंबंशांदिगुमावनिक्षित् साह श्री नादा तस्य माध्ये वर्षायं साहस्री नादा तस्य माध्ये वर्षायं

**१४१६. प्रतिसं० ६** । पत्र सं० ६१ । स्ना० १० × ५. इञ्चा ने ० काल स० १७२२ । पूर्णा । वेष्टन स० २६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रामनन्दन स्वामी वृदी ।

बिशेष-- त० वादिचन्द्र के पठनाथं लिखा गया था।

विशेष---चतुर्थ परिच्छेद नक है।

**१४१८. प्रति स०११ ।** पत्रस०१३४ । धा०१२ $\times$ ४२ देवत्र । ने०काल सम्या१८५७ माघ बुदी१०। पूर्ए। बेप्टन स०१०४। **प्राप्तिस्थान**—भ०दि० जैन मन्दिरपत्रावती दूली।(टोक)।

विशेष-श्री सन्तोपराम जी स्यौजीराम जी ने पडित सीनाराम से प्रतिलिप कराई थी।

**१४१६. प्रतिसं० १२** । पत्र स० १०१ । आ० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  = इन्त्र । ले० काल स० १५६७ । पूर्ग । वे० स० १४ ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

म्बरित सबन् १४१७ वर्षे द्वितीय चैतमामे गुस्तपक्षे द्वितीयादित रिवबामरे घण्डे चिनोई इसे यो चन्द्रप्रभवेत्यायके थी भूतमके शीसप्रवतीयक्षेत्र श्रीक्षानकारमणे श्री कुरवृह्यावार्यस्य महारक श्री पद्मतिदेवमन्त्रपट्टी भ० श्री देवन्द्रकीतिदेवमन्त्रपट्टी भ० विद्यातिदेवसन्त्रपट्टी भ० श्री मन्त्रित्रपट्टी रामन्त्रपट्टी भ० श्री तस्मीयन्दरेवास्त्रपट्टी म० श्रीवास्त्रदेवास्त्रपट्टी श्री महारक श्री जातमूबगदेवाच्यो समस्त्र । मृश्रुयाम सुमितकोतिना कमंश्रयाचं श्रीवकाषारां प्रशीलिक्टि एव स्तर २०००।

**१४२० प्रति स १३।** पत्र स०११६ । ब्रा०१०४ ४३ डखा। लेक्काल स०१७४२ वैगास्य वृदी ४। पूर्यो विष्टुत स०६०। **प्राप्ति स्था**न्⊷ दि० जैन महिर दबलाना बढी।

विशेष - प्रणस्ति निस्त प्रकार है --

सबन् १०४२ वर्षे बंशास बृदी ४ सोमबासरे श्री मूलसचे सरस्वतीगच्छे बतात्वारासी श्री हु वह शांबायांत्वये सुटारक श्री रमनव्द तत्पट्टे सुट्टारक श्री ह्यंचन्द्र तत्पट्टे सुट्टारक श्री शुभवन्द्र तत्पट्टे स्थायांत्वये सुट्टारक श्री शुभवन्द्र तत्पट्टे स्थायां स्थायां श्री शांवायां वी तांवायां वी त्यायां श्री तांवायां वी त्यायां श्री तांवायां वी त्यायां स्थायां स्थाय

**१४२१. प्रति स० १४** । पत्र स० ११ । प्रा० १२ ५ ६ इस्त । लेक्काल स० १६१० । पूर्ण । वहने स० १२८ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मधिर बोरसली (कोटा) ।

विशेष —प्रणस्ति सवत् १६५० समये बैणाल बुदी चज्जी ४ लिलाजित पुस्तक जगगा पाँडे आवक पिलत सेमकरण, मृत दुर्गीदास मुकाम हाजिपुर नगरे मध्य देवहरा सुख्य ।

**१४२२. प्रति स० १५ ।** पत्र म० १७० । द्या० ११ <sup>९</sup> १ इ.ख. । लेव्काल म० १८११ । पूर्ण । वैष्टत स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मीस्टीर बोरसल, कोटा ।

विशेष — पडित श्री भागंबदास के जिल्य नवितिष्ठराम नागरचाल देश में महाराज सरदारीसह जी वः जामनकाल में नगरग्राम में बतुबिकति नीर्थकर चैत्यालय में प्रतिलिधि की श्री ।

**१४२३. प्रति सं०१६ ।** पत्र म०१३० । लेवकान १–३२ । धासाउ बुडी ४ । पूर्य । बेहन म०२०७ । **प्रास्ति स्थान—दि० जैन** पकायनी मदिर भग्नप्*र* ।

१४२४. प्रतिसं०१७ । पत्र स०१२७ । ले॰काल स०imes। पूर्ण । बेष्ट्रन स०२१७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पत्रायती सदिर भरतपुर ।

**१४२५. प्रतिसं० १८** । पत्र संख्या—११६ । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । प्रा**प्ति स्थान**—वि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१४२६. प्रति सं. १६**। पत्र स०१७६ । द्या० ११×४ ¦ इस्ता ने०काल — × । पूर्ण । वै०सं० ३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मस्दिर दीवान जी कामा ।

**१४२७. प्रति सं. २०**। पत्र स०१४०। द्वा० ११४७ इच्चा ले०काल स०१८३६ माह बुदी ६। पूर्णा वे. स०२१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१२२८.प्रति सं० २१** पत्र स० ७६ । ग्रा० १३ $\$  × $\$  श्र्व । ले० काल स० १६६६ भाद्रपद । पूर्ण । वे० स० २४७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपूर लेखावाटी (सीकर) ।

**१४२६. प्रति स० २२ ।** पत्रस**० २**। फ्रा० ११ $imes X_{i}^{t}$  इच्चा ले०काल स० १७०८ । पूर्ण । **बेह**नस० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१४३०. प्रतिसं० २३ ।** पत्रस**० १४**८ । ग्रा० १२ imes ४  $\xi$  इञ्च । ले०काल imes । स्रपूर्ण । बेष्टुत स० २४६–४० । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन सम्भवनाय मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-दो प्रतियो का मिश्रस है। प्रति प्राचीन है।

**१४३१. प्रति सं२४** । पत्र स०२१४ । ब्रा० ११४१ इन्दानं ० काल ४ । अपूर्णा । वे० स० २३६ । **प्राप्ति स्थान —** दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदययुर ।

**१४३२. प्रतिस०२४ ।** पत्र स०६३-१४७ । आर०१२ 🗴 ४३ डचा। लेखन काल स० १६०३ पौष सुदी १० । अपूर्ण। वे० स०७४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष— ग्रलवरगढ महादुर्ग मे सलेमणाह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी । ग्रंथ लिखवान वाले की विस्तृत प्रणस्ति दी है ।

**१४३३. प्रतिसः. २६**। पत्र स०१–६७। स्रा०११३,४६ डल्बाले० काल ४ । स्पूर्णा वे० स०७४७। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

१४३४. प्रति स० २७ । पत्रस० ६७ । ग्रा० ११ ८७¦ उन्च । लेक्सल स० १८८२ मर्गामर मुदी १२ । बेष्टनस०—१६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--- किशनगढ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयपूर मे प्रतिःि को थी।

**१४३५. प्रति स० २८** । पत्र सं० ४२ । प्रा० १२×४३ । ल०कान म० १८१६ फाल्गुण कुदी ६ । वेटन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान** – शास्त्र भण्डार दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष- सवाई जयपूर में व्यास गुमानीराम ने प्रतिलिधि की थीं।

**१४३६. प्रति सं० २६ ।** पत्र स० ६० । ग्रा० ११¦ ४ ४ डखा। ले० काल 🕡 पूर्या। बेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान (बूदी)।

**१४३७. प्रति सं० ३०।** पत्र म० ६७। घा० १०१ ४ ४¦ दश्वा। ले०काल । पूर्यो। वेष्टन स० ५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ब्रप्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

१४३ द्र. प्रति सं०३१। पत्र स०६४। ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०६०। प्राप्ति स्थान — वि० जैन सप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

१४३६. प्रति सं० ३२ । पत्र स० ४६ । आर० ११ ४४ ई. इ.च.। ले० काल सं० १६६४ पूर्ण । बेब्रन सं० ११६ – ५७ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

प्रशस्ति – मवत् १६६४ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्त पक्षे १५ रवौ लिखित द०श्रा ठाकरमी तत् शीष्य शाचार्यक्री क्रमरेजन्द्र कीर्ति ....।

१४४०, प्रश्नोत्तर ासकाचार माया वचनिका- $\times$ 1 पत्र म० -६ । प्रा० १४ $\times$ ६ १ दश्च । भाषा—सम्बन हिन्दी (गव) 1, ाय—साचार जानत्र । २०काल  $\times$  । ले० काल— $\times$  । पूर्ण । बेष्ठन स० १८६ । प्राप्ति, स्थान— दि० जैन मन्दिर फेलेहपूर केलाबाटी (सीकर) ।

१४४९. प्रश्नोत्तर श्रावकाश्वार माया चयनिका—eta । यत्र म० ५४। ग्रा० $\{\circ_{i}^{2} \times i\}$  एवः । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय —ग्राचार ग्राम्त्र । र०काल imes । ते०काल—igwedge । पूर्ण । वेष्ट्र म० १८१ । प्राप्ति स्थान—दि० र्जन मन्दिर, फतेहपुर शेलावाटी (गीकर) ।

१४४२, प्रायश्चित प्रंथ  $\times$ । पत्र स०३२। ग्रा० ६ $\times$ ४६वा। भाषा — प्राकृत-हिन्दी ग्रा। विषय — प्राचार शास्त्र। र०काल  $\times$ । ते० काल म०१६०४ माघ बृदी ६। पूर्ण। बेष्टन म०३०। प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर नागडी बृदी।

१४४**३. प्रायश्चित ग्रंथ** - ४। पत्र म०३०। प्रा०६×४६चा भाषा—प्राकृत⊸मस्कृत । विषयः प्राचार शास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१६। प्रा**प्ति स्था**न— दि० जैन मन्दिर नागदी वृदी ।

विशेष भाजरापाटन के सभवनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४४४. प्रायश्चित शास्त्र-पुनि बीरसेन । पत्र म०१६ । प्रा०११४५ । भाषा --सम्बन । विषय--प्राचार शास्त्र । २०वतल × । ने०काल म०१६०४ द्विनीय ज्येष्ठ गुक्ता १५ । पूर्णः । वेष्ट्र स०१२० । प्रास्तिस्थान - दि० जैन मन्दिर राज्ञमहल टोक ।

विशेष — प्रथ समाप्ति के बाद लिला हुया प्रम — नकंत्र्याकरणे जिनेद्रवचने प्रस्थातमात्यो गुरु । श्रीमक्षलगुपंनगर्षवनर्मात्य थी गौरमेनांद्रस्य ।। मिद्राने विश्व पर्युक्त, मुर्विदितः श्री बीरमनां मुनिः । नैरोद्रविन विशोग्यमध्यम् श्री बीरमेनामिष् ।। नम्बत् १६०६ वर्ष प्रसम्बद्धार द्वितीय मुक्त १५ सोमवारे ।

१४४६ प्राय**श्चितशास्त्र— स्रकलकदेव ।** पत्र स०६। सा०११×४ई दश्च । भाषा— सम्कतः। विषय—प्राचारः। र०काल ×। ले०काल स०१४४६ फागुगा सुदी ४। पूर्णः। बेष्टन स० ११४९: प्राप्तिस्थान—सट्टारकीय दि० जैन सण्डार प्रजसेरः।

१४४६ प्रति स $oldsymbol{lpha}$  २ । पत्र स $oldsymbol{lpha}$  ७ । प्राप्त स $oldsymbol{lpha}$  १६८ । प्राप्ति स्थाम—दि॰ जैन मन्दिर पाध्वेनाय बुदी ।

१४४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । आ० ४imes५ इन्छ । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन म० प्राप्तिस्थान – दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौनान बुंदी ।

**१४४८. प्रतिसं०४ ।** पत्र स०६ । प्रा०६ $\frac{3}{7} \times 8\frac{3}{7}$  इन्द्र । लेक्काल स०१६६४ । पूर्ण । वेष्टुत स०३ । प्राप्तिस्**यान**----दि० जैन सन्दिर दबलाना बूदी ।

विशेष-सं० १८५५ लिपि कृतं प० रतिरामेगा । श्री चन्द्रप्रमाचैत्यालये ।

१४४६. प्रावाश्वित समुच्यय वृत्ति—नित्युके । पत्र स० १२ । घा० १३ ४६ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-घाचारशास्त्र । ने०काल ४ । ले०काल स० १४६४ । पूर्ण । त्रष्टन स० २०६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रवत्ताल मन्दिर उदयपुर ।

**१४५०. प्रति स**०२ । पत्र स०४४ । आ०१०३ ४५३ इचा ले∙काल ४ । सपूर्ण । वेष्टन स०४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

१४५१. बाईस सभस्य वर्णना— × ।पत्र स०६३ । सा०१०१ ५७३ ट्रच । भाषा— हिन्दी । विषय—स्थापा साहत्र । उस्ता × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०६७ । प्रास्ति स्थान - १६० वेत प्रयासी मन्दिर वयामा ।

१४५२. बाईस परीषह-मूधरवास । पत्र स० ३-१४ । ब्रा० ६ $\times$ ४ इश्व । माषा - हिन्ते । विषय - पर्म । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टुन स० ५४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन लोटा मन्दिर बयाना ।

१४५३, बालप्रबोध जिम्नतिका-मोतीलाल पन्नालाल । यत्र म० १४ । भाषा— हिन्दी । विषय—सर्म । र०काक म० १९७० । ले०काल ९ । पूर्ण । वेष्ट्रत म०६४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी भन्नपुर ।

१४५४. बृद्धिप्रकाश-टेकचंद । पत्र २० ६४ । आ० १३है ८६ हे इच । आपा - हिस्सी पत्र । विषय—वर्म । रक्ताल म० १८२६ ज्येष्ठ बुदी = । ले० कान म० १८२० फाल्गुण मुटी १० । पूर्ण । यप्रव म० १३४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फलेहपुर गेथावाटी (शीकर) ।

#### व्याविभाग---

मन दुख हर कर शिवसुरा नरा सकल दुखदाय । हरा कमें अप्टक ग्रीर. ने मिधा सदा सहाय ॥ त्रिभुवन तिलक त्रिलोक पति त्रिगुगात्मक फुलदाय ॥ त्रिभुवन फिर तिरकाल ते तीर तिहारे ग्राप ॥५॥

#### धन्तिम माग-

ममन प्रष्टादक सन जोय, प्रोर छशीन मिलावो होय। भाग जेठ वृद्धि घाटेगा?, वृष समापत को दिनवार ।१२२॥ या ग्रंथ के प्रवचार ने विशेष पूरव बृषि होय। छुद डाल जानें बनी ममुक्ते बुष्यक बोध ।१२२॥ नार्ने भो निज हिन बही, तो यह मील मनाय। बृषि प्रकास मुख्याय के बाढें यम मुभाय॥२४॥ पडौ मुनौ सीखो सकल, बुध प्रकास कहंते।

ताफल शिव ग्रघ नासिकै टेक लहो शिवसत ॥२४॥

इति श्री बुधप्रकाण नाम प्रश्न संपूर्ण । पडित कृपाराम चीवे ने प्रतिनिर्मिकी थी । विविध धर्म सम्बन्धी विषयों का सुन्दर वर्णन है ।

२**४५१. प्रतिसं० २** । पत्र म० ११५ । ग्रा० १२३ ४६ है इश्व । से० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय वदी ।

विशेष-प्रथम यह इन्दीर में लिखा गया फिर माइल में इसे परा किया गया ।

१४५६. **बृद्धिविलास-बस्तराम ।** पत्र स० १०१ । घा० १०६<sup>5</sup> ४५ इला । माया-हिसी पत्र । विषय — घमं । पत्रकाल स० १=२७ । ले० काल म० १८६६ कार्तिक मुदी १०। पूर्मा । वेष्ट्रन म० १२१– १०१ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दीक्षा ।

विशेष-इसमे जयपुर नगर का ऐतिहासिक वर्गान भी है।

१४५७. **बहाबाबनी-निहासचन्दः**। पत्र स०४। भाषा—हिन्दी। विषय—धर्मः। र०काल म०१⊏०१। ले०काल > । पूर्षः । बेष्टन म०७१२ । प्राप्ति स्थान—दि जैन पवायती मन्दिर भन्तपुरः।

विशेष --- मकसुदाबाद (बगान) में ग्रंथ रचा गया था।

४४६ म्ह महनीत्तरोपासकाचार-बुलाकीदास । पत्रस० ११६ । मा० ११६ ८ १८ इस्त्रा । प्रापा -- हिन्दी (पदा) । विषय ---मानार ज्ञास्त्र । र०काल स० १७४० वेजाल मुदी २। ने०काल गार -- १८०२ माध गुरी ७ । पुगो । वेहन स० २० । म्हास्ति स्थान -- महारकीय दि० जैन ज्ञास्त्र भक्षार स्त्रतर ।

**१४५६ प्रतिक्षं∘२ ।** पत्रक्ष०१६२ । ले०काल स०१६७६ मादो सुदी ४ **। पूर्ण** । वे**ष्ट**न स०२२६ । **प्राप्ति स्थान** —ीद०जैन पचायनी मन्दिर प्रत्नपुर ।

**विशेष** - प्रति दीवान ओधराज कासलीवाल ने शिखवाई थी।

**१४६०. प्रतिसं०३।** पत्रस०१४२ । लंबकाल स०१६१३ ग्रासोज बदी१२। पूर्ए। वैष्टनस०२६६ । **प्राप्तिस्थान**—र्विठर्जनयवायतीर्मास्वरभरतपुर।

विशेष निहालचन्द जनी द्वारा लिमी गर्या थी।

**१४६१. प्रतिसं० ४** । पत्रत्त० १२४ । प्रा० ११४ ८ इसा । ले० काल स० १८८८ कार्तिक वर्दा २ । पूर्णा । बे**ट्न स०** २४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन स्वप्रवाल पत्रावती मन्दिर ग्रलवर ।

१४६२. प्रति सं० ४ । पत्र म० १२१ । लेलन काल ग० १०३३ पौष वदी ४ । पूर्णा वेष्ट्रन स० ४४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायनी मन्दिर हण्डावाली का डीग ।

**१४६३. प्रति स**०६ । पत्र स०११६ । ले० काल स०१६२७ । पूर्मा । बेप्टन स०४६ । प्रास्ति स्थान -- दि० जैन मन्टिर तेरहसंथी बसवा ।

**१४६४. प्रति सं०७ ।** पत्र स० ११८ । चा० १० × ४३ इला । ले० काल म० १८५७ ब्राचाट सुरी १४ । पूर्ण । वे० स० ६३–६० । **प्राप्तिः स्थान**—वि० जैन मन्दिर, तेरहपंथी दौसा । विशेष — चिमनराय नेरापंथी ने इसकी प्रतिलिपि की तथा दौलतराम तेरापंथी ने इसे दौसा के मन्दिर में चढाया था।

ै **१४६५. प्रति सं० ६ ।** पत्र स० १२६ । लेब्काल स० १७६१ कार्लिक सुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० ४२-१४६ । **प्राप्ति स्थान**----दि० जैन पत्रायती मन्दिर, म्रलवर ।

**१४६६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र म०१६१ । ले० काल स०१ दब्ध पोप बुदी १४ । पूर्णा । बेष्टन स०४३-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवासती मन्दिर मनदर।

**१४६७. प्रति सं० १०।** पत्र स० १४२। द्वा० २ $\frac{3}{4} \times \frac{3}{7} \times \frac{3}{8}$  दखा । ले० काल म०१६०० चैत सुदी १। पूर्ण । बेष्टुन स० १०। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

१४६ न्. प्रति सं०११ । पत्र स० १–५७ । क्रा० $\sim$ ११ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ $\frac{1}{4}$  इत्थ । ले० काल  $\times$  । क्रपूर्ण । वे० स०१६६ । प्रापित स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

**१४६६. प्रति स० १२।** गत्र म० १२१। ग्रा० १२ $\times$ ४, इन्छ। ले० काल  $\times$ । पूर्ण। के० म० १४६-६। **प्राप्ति स्थाल**—वि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष — मानपुरा में शिवलाल ने लिपि की थी। स० १६३६ में नदलाल गोधा की बहू ने टोडा के मन्दिर में चढायाथा।

१४७०. प्रति स० १३ । पत्र स० १२७ । प्रा० १०२ 🔍 २१ इचा। ले० काल स० १८५० । दृशों । वे० २० ३६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवनाना (बुन्दी)

**१४७१. प्रति स० १४ ।** पत्र स० १०६ । आर० १२ <sup>.</sup> ६ इ.ख. । ले० काल × । पूर्णा। के० स० ३१६–११६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर कोटडियो काङ्गरपुर ।

१४७२. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १४३ । प्रा०११३ ५.४३ इवा । ले०काल स० १६२७ । पूर्ण । बेष्टनस० २००-६१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**१४७३. प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० ६६ । ग्रा० ११ 🗴 ७ डचा । ले०काल स० १५२३ श्रावमा सुदी १ । पूर्णा । वेष्टुन स**० ४०-२७ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज)

**१४७४. प्रति स० १७** । पत्रस० १३४ । प्रा० ८ॄे ४ ६¦ उचा । ले०काल स० १७४४ वैद्याल मुदी ४ । पूर्णे । वेष्टुससं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरस्ती ईरग् ।

१४७**५ प्रतिसं०१**६ । पत्रस०१३६ । प्रा०१२ ८ ५७ व । लेककाल ग० १७८४ सावसाबुदी १ । पूर्णावेद्यनस०१०२ । **प्राप्तिस्थान** -- दि० जैन पत्रावनी मन्दिर बसाना ।

१४७६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ६७ । ले० काल—स०१८७६ । पूर्ण । वेष्टनस० २४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-- जीग्रं-पानी में भीगे हुए पत्र हैं।

१४७७. प्रति स० २०। पत्रस० १४४। प्रा० १२ × ४) इन्छ । से•काल---म० १७६२ पौष वृदी १०। पूर्ण । वष्टन म० ४०३ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन मदिर बोरससी कोटा ।

१४७६. प्रतिसं० २१। पत्रसं० १२४। ग्रा० १२ × ४ इन्व । ते०काल म० १६१०। पूर्ण । बेष्टनस० ४६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक)। विशेष-पं० गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी।

**१४७६. प्रतिसं० २२ ।** पत्रस० १४१ । घा० १२  $\times$  ५ $^{2}$  इच्च । ले०काल सं० १८४१ पौष बृदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसावा ।

विशेष-कोट्यो के देहरा मे अजवासी के पठनार्थ पहित ग्रावेराम ने प्रतिलिपि की थी।

**१४८०. प्रति सं० २३ ।** पत्रसं० ८० । ब्रा० ११२ ४ **६ इला । लेक्सल—** सं० १६१० । पूर्या । बेबून स० १६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर चौबरियान मालपुरा (टोंक) ।

१४६१. मगवतीम्राराधना — शिवार्य । पत्रस्व ११ । म्रा० ११ ४ इन्छ । भाषा — म्राकृत । विषय — म्राचार भास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रसंक १२३ । **प्राप्ति स्थान** — भग्नाकीय दि० जैन मन्दिर स्रवमेर ।

**१४५२. प्रतिसं० २** । पत्रस० १२३ । आ० १२३ $\chi$  ४ $\xi^2$ , इ**स** । **ले॰**काल स० १७३२ चैत्र मृदी ६ । बेष्ट्रन सं० ५७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष --मालपुरा मे राजा रामसिंह के शासन काल मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१४८३. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० ६५ । र०काल 🗴 । **से०का**ल म० १५११ वैजाल मुदी ८ । पुर्मु । बेप्तस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग ।

प्रशस्ति—मनत् १४११ वर्षं वैशास विदि ७ गुरी पुष्यनक्षत्रे सकलरात्र-जिरोमुकुट-मासिक्य मरीबि प० घरीकुन चरणकमलपादपीठम्य श्री राणा कु भकर्ण मकल-साम्राज्य-घुरी विभागस्य समये श्रो म इलगर शुसन्धाने प्रादिनाथ चैत्यानये ......।

१४**८४. भगवती ब्राराधना टीका** । पत्र स० २०० । ब्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{3}{2}$  डल । भाषा-प्राहत-सम्ब्रत । विषय - ब्राचार । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६३२ म गमिर सुदी ० । पूर्ण । वेजून म० ४३ । ब्राफ्ति स्थान - भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

विशेष--प्रति टब्बा टीका महित है।

१४**८५. सगवती प्राराधना टीका** । पत्र स० २८१ । ग्रा० ११×५ इचा । साथा-प्राकृत । सम्बन्ध - ग्राधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $^*$  । बेष्टन स० १५४६ । **प्राप्ति-स्थान** —मट्टारकीय दि० जैन मदिर प्रवर्धन ।

**विशेष**—प्रश्निटव्या टीका सहित है। म०१६११ में यह प्रति सेठ जुहारमल जी सोनी के घर से वर्डाई गई थी।

१४६६. भगवती स्नाराधना (विजयोदया टीका) स्नपराजित सूरि । पत्र सन्या ११६ से १६६ । सा० ११  $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  इ.स. । भागा—सन्द्रत । विषय —स्नायार । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । स्मृर्ण । वेष्ट्र मुक्त २६६ । स्नारित स्थान— महान्कीय दि० जैन सदिर प्रजमेर ।

१४८७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११४ । से०काल स० १७६४ भादो बदी ६ । पूर्ण । <sup>बेहुत</sup>सं० ५८६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४ म. प्रतिसंठ ३ । यभस० ३३३ । झा० १२१ ४६३ इञ्च । ले० काल स० १८६४ चैत्र वृदी ७ । वेष्टन स०३० । प्रास्ति स्थान—शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---मोहनलाल ने गढ़ गोपाचल (ग्वालियर) में प्रतिनिधि की थी। श्रीराम के पठनार्थ पुनः बलदेव ने ग्वालियर मे पुस्तक निक्षी थी।

**१५३५. मिध्यारल निर्वध**—  $\times$  । पत्र स०३४ । आ० १२ $_{p}^{2}$  $\times$ ७ इस्त्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । र०कार- $\times$  । ले०काल स० १६६६ भारवा बुदी ५ ।पूर्ण । वेष्टन स०४५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शंखावाटी (तीकर) ।

विशेष--- चौत्रे छुट्टीलाल चदेरीवालो ने स्वर्र्ड मे प्रतिलिपि की थी ।

**१५३६. मिथ्यात्व निषेध— × १ पत्र स० ३६ । भाषा-**हिन्दी । विषय-वर्ष । र०काल 🏏 । मैठकान १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १७५ । **प्राप्तिस्थान** विठ जैन प्रवायती मीर्चर भरतपुर ।

१५३७. मिथ्यास्य निवेध । पत्र स० ३० । धा० १०१८ ५५ । आगा - हिस्टी (पत्र) । विषय - वर्षा । र०काम् — > । से०काल स० १८६६ आमोज मुदी १३ । पूर्मा । वेष्ट्रत । प्रास्ति स्थाम — दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

**१५३६. मिथ्यास्य निवेध ।** पत्र स०३६ । प्रा० १६ .५ उच्च । भागाः श्रिरी (पच) । विषय—धर्म । २०काल ≾ । ले•काल — ≾ । पूर्ण् । वेष्ट्रन स०६७ । **प्राप्तिस्यान** – दि० जैन छोटा मन्दिर वराना ।

१५३६. मुक्तिस्वयवर—वेसीचन्द्र । पत्रसः—३१६ । या०१३) ४ ४) त्व । भागा— हिस्ती (गयान्यः) । विषयः—धर्म । र०काल स०१६३४ कार्तिक वृदी १ । ले०काल स १८०८ माथ वृदी १४ । पूर्ण । वष्ट्रत स० -१३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जेन मन्दिर प्रतेष्ट्रक शेराकारी सीकर ।

श्रम्तिम - लसवार मी ब्रार भिया पुरसा इन्दीर जान ।

कार्तिक वद तीभी दिना स्वत उपनीमर्ग चीतीस मात । जा दिन में झार भियी पूरणा के दिन मात । याही बरम मात्रम बदी तेरम प्रत्नी प्रमान । स्वात नक्षण जिस दिवस स्वित त्रमा मजार ।। जग माता परसाद ने पूरणा भयी हु मार ।। ३ ।। इति श्री मुक्ति स्वयत्व परणा भयी हु मार ।। ३ ।। इति श्री मुक्ति स्वयत्व को यथ भाषा बच्चितका सुतूर्णा । वेणीचित्द सनुक्त क्षय्द का पुत्र फनटन का निवासी था ।

१५४०. **मुनिराज के छियालीस अन्तराय—भंग्या भगवतीदास ।** पत्रस**्र । आ०** १२०४३ च्या । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आवार शस्त्र । रज्जाल म**०**१७४ ज्येण्ट सुरी ४ । ने० कान . । पूर्ण । बहुन म०३४ । **प्राप्ति स्थान** - भट्टारकीय दि**०** जैन मन्दिर प्रजनेग ।

१५४१. मूला**बार सूत्र—बहुकेराचार्य ।** पत्रसः २० । प्रा०११ $\frac{3}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  दश्च । भाषा— प्राकृत । विषय—प्रापार झान्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन सं०४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर अवपूर ।

१५४२, मूलाचार वृक्ति — बसुर्वि । पत्रतः ६ मे २४७। प्राः० १२ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} \times \frac{1}$ 

**१४४३. प्रतिसं०२।** पत्र स०२६०। सा०११३,४४} इञ्च । ले०काल म०१७३०। पूर्णे। वेग्टन ग०१४४–७०। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डुगरपुर।

प्रशस्ति—म बन् १७३० वर्षे पीप बुदी ४ वृषे श्री मूलम पे मरस्वतीगच्छे, बलान्कारमाने श्री बुज्दकुन्दाचार्यात्वये म० श्री मकन्तर्कीतिस्तरम्बर्ध भट्टाम्क श्री पपनित तन्त्रष्टुं श्री देवेदर्कीनिष्ठपरिमान श्री उदयपुरे श्री कमवनात्र्यसंत्रात्वये हृबडजातीय यहत्त्रमान्ध्य गढीमा भीमा भायां वाई पुरी तथो पुत्र गढीमा, रग्न-क्षीहा मार्गा वर्धी तथो पुत्र लालवी राचवजी एनै स्वानावरण्य वर्धश्यार्थ श्री मूलाचार ग्रथ मृत्येन गहीला ब्रह्म श्री मण जी निष्णय ब्रह्म लाक्ष्यकारदन ।।

विशेष -- राजगढ मे प्रादिनाथ चैत्यालय म प्रतिनिधि हुई थी।

**१५४५. प्रति स०२।** पत्रस्क १०५। ब्रा०१३×६८७। ले∘काल स०१,६१ भेत्र तुरी ⊏ापर्णा वेषून स०२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चीगान बृग्दी।

**१५४६. प्रतिसं० ३।** गत्रस० १४०। आ० ११ $\S \times ^3$  उठ्य । लेल्गान १८२६ चय बुदी १०। पूर्ण । बेब्रुसं १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर अभिनशन स्थामी युदी ।

विशेष व्येतास्वर मीतीराम ने सवाई प्रयुप्र मे प्रतिनिधि की थी।

१४४७ मूला**चार भाषा— ऋषभवास निगोरया** । पत्रम**ः** २२२ । जा०१२ ८ ६७४ । भाषा—राजस्थानी (ठडारी) तथा । विषय—ज्यानार शास्त्र । र०काल म० १८०८ कालिक गुटी ७ । लेकाल चर्मा गुर्मा । वेष्टुनगर्भ>-१२६ । **प्राप्तिस्थान—दि**रु जेन पत्रायनी गरिटर फलपण् ।

विशेष—जगनिवकी सरकत टीका के बाधार पर भाषा ठीका की गई थी। एस व इर्जा आधा सब प्रथम नस्वलंक न प्रारस्त की थी तथा ६ प्रशिक्तर १ माथा तक भाषा टीका पर्स करने के पकरान् इतरण स्वर्धशन हो गया था फिट इसे ऋष्मश्रास न पूर्ण किया।

१५४८, प्रतिसंव २ । पत्रस्व ४६४ । साव १४ - ८ एका । तेववात सव १८७४ का स्वित ३० । पूर्ण । वेष्ट्रकार १०१ । प्राप्ति स्थान - दिव जेन मस्टिए फनस्ट्रम भनावर्ग, स्वीतर्ग ।

**विशेष** —शेर स० २४४४ भारवा गुरी = सदाराम गंगावतरा वास्रदेवजो (१८० फन्द्युर नियासी ने बदा मन्दिर में चढाया था। प्रति २ वेष्टनी में २ ।

१४४६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३०० । आठ १३ । ३५ एक । खेळगाय राज ११ ० । बेहुनसण १ । प्राप्ति स्थान---विज्ञेन मन्दिर प्रभिनस्त स्थामी, वृथी ।

**विशेष**ः इसमे मृतियो के चरित्र का वर्णन है। प गशसूब के युत्र िकार दार के वेचरा तार्या चरेणी से १४) ह में इस प्रति का खरीदी थी। १५१४. भावसंखह—वामदेव। पत्र स० ४२। झा० १४imes१ इत्रा भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। २०काल—imes। लेकाल—imes। पूर्ण। वेटटन स० ६१–३८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर।

विशेष---भ० विजयकीति की प्रति है।

**१५१५. प्रतिसं० २ ।** पत्रस**०** २३ । घा० १२ $\times$ ६ ै इन्त । ले०काल स० १८६१ भादवा चुदी ३ । पूर्ण । बेहुनसं० ४६ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहुपंथी दौसा ।

विशेष—पत्रों को चूहों ने खारखा है। नोनदभाम जी पुत्र हनुलाल जी ने दौसा के मन्दिर के बास्ने भोपत ब्राह्मरा से सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि करवाई थी।

**१५१६. प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ४१ । ब्रा० ११  $\times$   $\lor^2_2$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेक्टनस॰ ५३ । **प्राप्टित स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१५१७. प्रतिसं०४ ।** पत्रस०४६ । झा०११ ८४ है इ.च.। ले० काल स०१६०३ गौपा सुदी १२ । पूर्णावेष्टन स०२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर नागदी बृदी।

**१५९८ प्रतिसं०५ । पत्रस०६० । आ०१३** ≾५ी इल्खा । ले० काल स०१६३३ श्रावण मुदी १ । पूर्णु । बेट्टन स०१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर पार्ण्यनाथ चौगान, दूदी ।

१५१६. **भावसंग्रह**—**वेबसेन ।** पत्रस्त ३६। ग्रा० १०३ ८ ४) इञ्च । भागा—प्राहुत । विषय—धर्म । र० काल × । ते०काल म० १५४१ पीप बुरी ६ । बेप्टनम० १३० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन ज्ञास्त्र मण्डार मन्दिर लकार जयपुर ।

विशेष-मु॰ गयासुद्दीन के राज्य में कोटा दुर्ग में श्री वर्ड मान चैन्यालय में प्रतिनिधि हुई श्री ।

**१५२० प्रतिस०२** । पत्रस०३५ । ग्रा०१९ी ४ । ले०काल स०१६२२ आधार बुडी १४ । पूर्णा विष्टनस०१२४ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-वडवाल नगर के बादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिनिधि हुई थी।

**१५२१. प्रतिसं० ३ ।** पत्रसं० ६१ । घा० ११ 🗸 ५ इ.च. । ले०काल । पूर्यं । बेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा) ।

विशेष-प्रति प्राचीन है लिपिकाल के पत्र पर दूसरा पत्र निपका दिया गया है।

**१५२२. भावसंग्रह— श्रुतसुनि** । पत्र स० ०६ । ग्रा० ११ ८४ उच्च । भाषा-सम्हन । विषय—धर्म । र०काल ४ । ले०काल ४ । श्रुर्ण । वेष्टन स० ५५६ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन महिर शास्त्र भण्डार प्रजमेर् ।

**१५२३ भावसम्बह् टीका**— × । पत्र म०१६ । श्रा०१०,′४० हुन्। भाषा—सस्कृत । विषय—सर्म । र०काथ ⋋ । ले०काल— ः । पूर्ण । बठून स०२४० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**१५२४ मावसंग्रह टीका**—्.८ । पत्र म०१७ । ब्रा०१०.८४ हुट्खा भाषा—सस्कृत । विषयः—धर्मा र०काल्र—४ । ले० काल म०१६३२ श्रावण कृतना द । गुणं । वे०स०—२५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि०जैन मन्दिर ब्रजमेर । विशेष-सवाई जयपुर में प० केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

**१५२५. महादण्डक—विजयकोर्ति** । पत्र स० १६ । या० १ $\frac{2}{3}$  ४४ इचा । मावा—हिन्दी । विवय—धर्म । र०कास—स० १८२६ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७०८ । **प्राप्ति** स्थास—उपरोक्त सन्दर ।

विशेष---

सोरठा--- मवत् जानि प्रवीन भ्रठारामे गुग्गतीस लिख ।

महादडक सुम दीन, ज्येष्ठ चोथि गुरु पुस्य शुक्ल ।। गढ ग्रजमेर सुधान श्रावक सुख लीला करें

जैन घर्मबह मान देव शास्त्र गुरु भक्ति मन ।

इति थी महादडक कर्णानयोग भट्टारक थी विजयकीर्ति विरचिते ल**घु दण्डक** वर्णन डकतालीसमा अधिकार ४१ । स०१८-२६ का ।

**१५२६. मिथ्यात्वस्त्वन---बस्तराम** ।पत्र म०६३ । ख्रा०१२४५ हुच्च । भाषा--हिन्दी (पद्य) । विषय-चर्म । र०काल म०१६२१ पोष सुदी ४ । ले०काल म०१६६२ भाषवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्ठन स०१४०१ । **प्राप्ति स्थान**----भ०दि० जैन मन्दिर, णास्त्र भड़ार खब्रमेर ।

**१५२७ प्रतिसं०२।** पत्र स०६६ । स्रा०१२१ै > ५१ देखा । ले०काल ∵ा पूर्णा । बेष्टन स० १०६० । प्रा**रित स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

**१५२६. प्रतिसं० ३ । पत्रस०** ११६ । स्रा० ११ ४४ इन्छ । ले०काल स० १६५३ श्रापाढ मुदी ४ । पूर्ण । **वेष्टुन स०** ३२ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय टि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

विशेष - जयनगर मे मन्नालाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

**१५२६ प्रति स०४।** पत्र स०२४। ब्रा०११ $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इन्छः। ले०काल म०१८६३ ब्रायाह गुरी१०।पूर्णः। बेष्टुन म०८५। **प्राप्तिस्थान**—दि०जैन पत्रायनी मदिर कामाः।

**१५३० मिथ्यामतसंडन** । पत्र म०४। भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल— 🔀 । वे०काल — 🙏 । पूर्ण । वेष्टन म०६५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

**११३१ निश्वास्य निवेश ।** पत्र स०१६ । सा० १२३४ म्हे इन्द्रा भाषा—हिन्दी ग्रह्य । विषय—धर्म । १०काल , ८ । ते० काल ; । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४६ । **,प्रास्ति स्थान** —दि० जैन अध्यवाल पत्रासनि मिट स्थावन ।

१५३२. मिश्यास्य निषेध $-\times$ । पत्रसः ४४। ब्रा० १२ $\frac{1}{2} \times 4$  इखा। भाषा—हिन्सी गद्य । विषय—धर्मा । २० काल $-\times$ । ले० काल॰ $-\times$ । पूर्णः। वेष्टन स॰ ४। प्राप्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)।

विशेष —तनसुख प्रजमेरा ने स्वय पठनाथं प्रतिलिपि की थी। कुल लागत १।।।) 🚊 ।

११२२ मिष्यान्व निषेष--- ४ । पत्रस•२७ । घा० १०३,४ ८,५ इश्वा । भाषा--- हिन्दी गया | विषय--- वर्षा र०काल ४ । ले०काल स०१८६६ फानुगा मुदी१० । पूर्गा बेटून सं० ६३ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर पंचाबती दूनी(टोक)।

विशेष-पन्नालाल वैद अजमेरा ने लिखा ।

विशेष--- महात्मा शभुराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

**१४६६. प्रतिसं० ४।** पत्रस० २४६ । ग्रा० ११ ४६ इश्वः । लेब्बाल स० १७६६ कार्तिक बुदी **१**। पूर्णः । बेष्टन स० १७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रग्रवाल मदिर उदयपुरः ।

१४६०. भगवती ब्राराधना टीका —निव्यक्ति । पश्चत ४३६। आ० १० $\} \times 9$  इच । भाषा —प्राहत-सरहत । विषय — धावार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । देष्टन स० २६४ । प्राप्ति स्थान —मट्टारकीय दि० जैन शास्त्र मस्दिर धन्नेर ।

१**४६१. प्रति स० २ ।** पत्र म० ३०६ । श्वा० ११७७ इ.स. । लब्काल म० १८६६ । पूर्ण । बेष्टन म० ११३-७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायमिद्र (टाक) ।

विशेष--प० शिवजीराम की दुर्गी के चैत्यालय की प्रति है।

**१४६२. प्रति सं०३ ।** पत्र स० ६५२ । खा० ११ / ५१ इ.ख । ४०कार 🗡 । ले० काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टन स० ५४ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन सदिर दीवासत्री कामा ।

१४६२. भगवती प्राराधना भाषा—प. सदानुव कासलीवाल । पत्रन्व १४६ ४४७। प्राव १२०१८७ इन्छ । भाषा-राजन्यानी (बुकारी) गए। विषयः प्राचार । ०० जाल नव १२०६ भारता सुदी २ । नकाल—स्वव १६६१ कांतिक बुदी १० । प्रपूर्ण । वेष्टननव ४४। प्राप्ति स्थान - नव दिव लेन महिर प्रवृद्धि ।

**१४६४. प्रतिसं० २** । पत्रस**० १२४**। प्रा० १४×८) उथा । देलासन ग० ११६२ आदवा कृदी २२। दूर्मा । **बेप्टन स०४ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर फेन्स्यूर स्पार्टी (संक्रा) ।

विशेष—परमादीनाव गंशाधरनाव पद्मावती पोण्यात ने शिवन्द्रा (ग्रामरा)म प्रतितिपि करवार्रिथी।

**१४६५ प्रतिसं० ३** । प्यस्क ४४६ । मा० ११ ८ ८ ८ ४ । लेकबाव सक्र १८१४ मङ्गस्य वृदी ३ । पूर्णे । बे**शनसक्यान—पिकक्रीका** मिश्चिमास्या (प्राव्यः)

**१४६६. प्रति स० ४ ।** पत्र स० २६६ से ६६१ । ५७० ११ ८८ ३३ । । जान स० १८१०। सायाङ सुदी १४ । स्रपूर्ण । बेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्था**सः १८० ४६ वनायर्गः सः कराली ।

**१४६७. प्रतिसं० ४** । पत्र स० ६४६ । सा० १०८ - र्षु उच्च । स० सन् स० १८५० बाहीसर बुदी १० । दुर्गा । बपुन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान** -विञ्जैन प्राप्तः सर्वित्र वर्गाना ।

१४६८. प्रतिसं० ६ । पत्रस्य २०१८६३ । प्रत्यस्य १८११ । पूर्ण । वेस्तुर्गः १९२ । प्राप्ति स्थान--दि० जेन प्रचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-- वयपुर में जिल्लाकर ग्रन्थ भरतपुर । गरिवर के गर किया गया ।

१४६६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ७०० । घा० १९ - ८ वण्य । ो०रा १९६२ ० विद्युतस० २२ । प्राप्ति स्थान --विरुक्तिम मन्दिर, अलवश्चा

**१५०० प्रतिसं० म**ार्यत्र सर्० ६०० । याक्ष्मर १ १८० मा कि नाम १८**१०** । पूर्णा । बेटुन सर्व १३६ । **प्राप्ति स्थान** - दिव जैन पत्तास्की सदिर अवस्का **१५०१ प्रतिसं० ६** । पत्र स० ५१६ । ग्रा० ११ 🗴 ५ इक्ष । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । बेष्टुन स० १४ १० ।**प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दुनी (टोक)

**१५०२. प्रतिसं० १०।** पत्र स०४६०। ब्रा०१३× ६ क्षेड्रेड्या ने ० काल स०१६१२। पूर्णावेष्टन स०४४। प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मदिर कोट्यों का नैगवा।

**१४०३. प्रति स० ११** । एव स० ४६ । स्रा० ११ $\frac{3}{4}$  $\times$ ४ $\frac{3}{4}$  इन्त । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ११० । प्राप्ति स्थान  $\sim$ दि० जैन मदिर श्रीमहाक्षीर ब दी ।

**१५०४. प्रति सं० १२** १ पत्र स० ४२० । ग्रा० १२३ ४७ इल्ब । तेश्काल स० १६३० मिङ्गसर वृदी ४। पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन प्रवायती मन्दिर वयाना ।

विशेष - वयानः के पत्र श्रावकां ने मिश्र गनश महस्रा वाले से प्रतिलिपि करायी थी।

१**५०५. प्रति स० १३ ।** पत्र म० ३०१ । ब्रा० १०५ ४ ७३ इ.आ. । ले०काल ४ । ब्रपूर्ण । वष्टन म० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटामन्दिर वयाना ।

१५०६. प्रति स० १०। पत्र स० ४०५। प्रा० १२५ ४६ इन्हाः लेकाल ४ । पूर्णः। वेष्टन स ४६-२८। प्राप्ति स्थानः दि० केन मदिर कोटडियो का इंगरपुरः।

१५०७. प्रति सं०१५। प्याम०४२४। द्या०१२८६ इङ्च। लेब्बाल 😕 । पूर्ण। याहन स०६४। प्राप्ति स्थान—हि०जैन सहेलवाल सन्दिर उदयपुर।

१**५०६. प्रति स० १६** । पत्र स० २६२ । द्या० ११<sup>०८</sup>६ इच्छ । ले० काल ं। पूर्या । बेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर करोली ।

१५०६. भरबाहु सहितः - भरबाहु। पत्र ७०। प्रा० ६) ६ ६ इ.स. भाषा---मरकृत। विषय -- प्राप्तार बारतः । १० कारा --- शेर निर्वाण म० २४४६ । पूर्णः। बेष्ट्रन ५६/३५ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन मंदिर भादत्व। (राजः)

विशेष - फलयन्द बढानया ने प्रतिनिधि की थी।

**१५१०. प्रति स० २** । पत्र क० २०-७२ । आ० १०६ ५४५ इच्छ । लेक्सल 📐 । अपूर्ण । वेप्टन स० ६० ६६ । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान)

१**४११. भावदीपक भाषा**─ः । पत्र म० ४४ । ग्रा० १३ ≾६६ देखा । भाषा-हिन्दी सङ्घ । विषय—चमा १०काल ४ । ते० काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन भटित जोत्सली कोटा ।

**१५२२. भाव प्रदीपिका** —  $\times$  । पत्रस० ५०-२१५ । ब्रा० १२ $\times$ ५३ इञ्च । भाषा— सन्द्रत । विषय —धर्म । ७० काल  $\times$  । ले०काल > । प्रपूर्ण एवं जीर्म्ण । वेष्ट्रन स०६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर, तेरहस्परी दौसा ।

१४४० प्रतिसंo ४ ] पेत्रस० ३६१ । म्रा०<sub>१</sub>१३ ४७ इच्च । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वेष्टनसंo १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिरश्री सहावीर बंदी ।

**१५५१. प्रतिसं०५** । पत्रस०४४ ⊏ । झा०१५ ४ ६ इ.च । ले० काल स०१६५५ । पूर्ण। वेष्टतस०२० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोट्यो कानैसावा।

**१५५२. प्रतिसं० ६** । पत्रस० ४०८ । आ० ११र्५ × ६ इच । ले०काल स० १६०० । पूर्ण । वेष्टन सं० १२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष--फागी में प्रतिलिपि हुई थी।

१४४३. प्रतिसंo ७ । पत्रसः ४६२ । ब्राट ११४७ इश्व । लेटकाल मरु १६४१ । वेष्टन संक मुक्तेर । प्राप्ति स्थान-पार्शनाथ दिङ जैन मन्दिर, इन्टरगढ (कोटा) ।

विशेष---मांगीलाल जिनदास न गर्गणलाल पाण्ड्या चाटमु वाले मे प्रतिलिपि करवायी थी।

१४.४४. प्रति स० ६ । पत्रस० ३७२ । ले० काल १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरनपुर ।

विशेष—सगही भ्रमरचन्द दीवान की प्रेरगा। से यह ग्रंथ पूरा किया गया था। श्री कुन्दनलाल द्वारा इसकी अयपुर से प्रतिलिपि हुई थी।

**१४.५४. प्रतिसं० ६ ।** पत्र म० ४७४ । पा० १२ $\{ \times 9 \}$  इश्व । ले० काल स० १६३२ वैसाल सुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती महिर वराता ।

विशेष---गनेश महस्रा वालो न प्रतिलिपि की थी।

**१५५६. प्रतिसं० १० ।** पत्रसः० १-१५० । झा० १०१४ ७ हे इखा । लेक्सल 📐 । अपूर्ण । वेष्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवासती मन्दिर बयाना ।

**१५५७. प्रतिसं० ११ ।** पत्र स० ४०० । बा०-१३ई ≾७ड़ेडखा। ले० काल स० १६५१ फाणुन बुदी १ । बाटन स० ३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर, करोली ।

**१४.५ मित सं०१**२ । पत्र म०४३० । ख्रा०१२ ४ ⊏ इश्वा। लेक काल म०१६०४ । **अपूर्ण**ावेकम०१०/६ । **प्राप्ति स्थान**—वि०जैन मन्दिर मादवा।

१४४६- प्रतिसं० १३ । पत्र स० ३६२ । आ० १०%) ५५ इ.स. । ले० काल 🔧 । पूर्मा । वे० स० ४४ -२७ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर कोटडियान कुगरपुर ।

प्रशस्ति-सवत् ग्रठारहमै ग्रठ्यामी मास कातिग मे ।

स्वेत पक्ष समसी गृतिथि शुक्रवार है। टीका देण भाषा सथ प्रारम्मी सुनन्दलाल ।।

पूरन करी ऋषभदास निरधार है।

र्धन श्रीबट्टकेर स्वामी विर्णयत मूलाचार नाव प्राकृत ग्रथ की बमुनस्दि सिद्धात चक्रवर्शन विर्णयत प्राचार वृत्ति नाम सस्कृत टीका के धनुसार यह सक्षेपक भावार्य मात्र देश भाषा मय बचानिका संदूर्ण। ११६०. मोक्समार्ग प्रकाशक सहा—पं टोडरमल । पत्रसं • २८८ । धा • प्रॄे४७ है इंच । भाषा —राजस्थानी (हू डारी) गद्य । विषय—पर्म । र०काल स० १८२७ के धास पास । के •काल सं ०— १९२४ । धपूर्ण । बेष्टन स० १६०७ । प्राप्ति स्थान—सहारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजसर ।

विशेष — इसमे मोक्ष माग के स्वरूप का बहुत सुन्दर उग से वर्णन किया गया है टोडरमल जी की भ्रतिम कृति है जिसे वे प्रण करने के पहले ही शहीद हो गये थे।

१५६१. प्रतिसं० २ । पत्रस० २४७ । घ्रा० १० $\times$ ७ $\frac{1}{6}$  इ.च । से॰काल $-\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१७२ । प्राप्तिस्थान-दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूदी ।

१४६२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २३७ । झा० ११४४ इवा । ले∙काल — 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं०७ । प्राप्ति स्थान−दि० जैन ब्रग्रवाल मन्दिर नैसावा ।

१५६३. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १५० से ३२७ । मा० १३६८७ इवा । ले०काल—×। प्रपूर्ण । बेष्टन स०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—श्री प्रादिनाय महाराज के मन्दिर में श्री जवाहरत्तान जी कटारया ने भनतवत जी के उपलक्ष में चढ़ाया मिनी भाद्रपद शक्ता स० १६३६।

१५६४. प्रतिसं० ५ । पत्रस० २४६ । ध्रा० ११२ॄै ४६ इ.च । से∙काल — ४ । अपूर्ण । वैष्टतस० १२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल, टोक ।

विशेष -- अस्तिम पत्र नहीं है।

१५६५ प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४६ । घा० १३ $\times$ ७ इ'व । ते०काल $-\times$ । घपूर्णं । वेष्टनस० ४३ । प्राप्ति स्थान-द० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायमिह (टोक) ।

**१५६६. प्रतिसं० ७ ।** पत्रस० २०६ । म्रा० १२ $^1_7 imes ^2_7 imes ^2_7 imes = 1$  ले० काल $\bullet imes 1$  म्रपूर्ण । बेष्टुनसं० १२ । प्राप्टिः स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

१५६७. प्रतिसं० क । पत्र स० ४४३ । आ० ६ $\times$ ६३ इत्र । ले० काल सं० १८०५ आवाढ कृती ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपत्थी मालपुरा (टॉक) ।

विशेष--प॰ शिविधय ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी।

**१५६८. प्रतिसं० ६**। पत्र स० २६७ । ग्रा० ११×८ इन्ता । ले०काल स० १६२२ पौण सुरी १२ । प्रपूर्ण । वेण्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

१५६६. प्रतिसं० १०। पत्रस० २४६। घा० १३३४७ दश्वः। लेक्काल— × । स्रपूर्णः। वेष्टनसं० १० ७६। प्रास्टिस्पान—दि० जैन पचायती मदिर प्रतवरः।

१५७०. प्रति स० ११। पत्रस० २६७। ले०कास $-\times$ । प्रपूर्ण। बेष्ट्न सं० ११/६=। प्राप्तिस्थाम-दि० जैन पवायती मन्दिर ग्रलवर।

१४७१. प्रति सं० १२ । पत्रस० २१२ । लेक्काल —  $\times$  । पूर्णं । जीर्एं कीर्णं । बेष्ट्रन सं० १४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---माधोसिंह ने प्रतिलिपि करवाई थी।

**१५७३. प्रतिसं० १४। पत्रस**० ३०५। ले०काल × । अपूर्ण (२ से १८४ तक पत्र नहीं हैं)। वेक्नस० १३७। **प्राप्ति स्थान-**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर।

**१५७४. प्रतिसं० १५** । पत्रस० १०६ । ले०काल 🔀 । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० १६६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

**१५७५. प्रतिसं० १६ । पत्रस**० २३६ । म्रा० १३ ६ ६ इच्चा । लेक्काल स० १६३१ चैत बुदी २ । पूर्ण । बेहन स० १ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष--हीरालालजी पोतेदार ने प्रतिलिपि करवायी थी । बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी ।

**१५७६. प्रतिसं० १७** । पत्रस० २४० । म्रा० १२१४७१ इन्छ । लेक्काल स० १६०० । पूर्ण । बेगन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

**१५७७ प्रतिसं० १८ ।** पत्रस० २३० । ले०काल × । ध्रपूर्ण । वेष्ट्रनस०१२ (क) । **प्राप्ति** स्थान—दिगम्बर जैन मन्दिर बैर (बयाना) ।

१४७८. प्रतिसं० १६ । पत्र म० १६-६७ । ले०काल --× । अपूर्ण । वेष्टन म० ३०४ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर दीवानजी. कामा ।

**१५७६. प्रतिसं० २०।** पत्र स. ३१० । फ्रा० ११४८ १ इ.स. । ले०काल स० १८<sup>०</sup>७ । पूर्णा। वेण्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१५६०. प्रति सं० २१ । पत्रसं० २०२ । ले०काल 👙 । अपूर्ण । वेष्ट्रन स०१ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पचायनी मन्दिर हण्डावालों का डीग ।

१४८१. प्रतिसं० २२ । पत्रस० २०२ । ले०काव १ । अपूर्ण । बेष्टनसं०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रचायनी मन्दिर हण्डाबालों का होग ।

**१४८२ प्रतिसं०२३**। पत्रस०१४४-२६४। लेश्वाल स०१६१४ प्रापाट सुदी१२। सपुर्सावेहनस०५। **प्राप्तिस्यान**—दि०जैन पचायनी मन्दिर हण्डावाली का डीग।

**१५८३. प्रतिसं० २४ ।** पत्रस्० १४३ । ने०कान × । अपूर्ण । बेप्टन म० ४३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

**१५८४. प्रति स० २५ ।** पत्रस० <sup>२७६</sup> । घा० १२ हें ४ ४ हे इश्व । ले० काल ६ । पूर्ण । बेष्टनस०२ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन प्रवायती भदिर करीली ।

१५५५. प्रति स० २६ । पत्रस० १५७ । ग्रा० १११ 🗶 ६१ इ.च. (ते० काल 📐 ) ग्रपूर्ण । बेष्टनम० २४/२४ । प्राप्टिः स्थान—दि० जैन सीमार्गा मन्दिर करीली ।

**१५८६. प्रति स\circ २७ ।** पत्रस $\circ$  २४७ । या॰ १२  $\times$  ५ इत्र । ते॰काल स $\circ$  १८२६ । पूर्गी । वेष्टनसं $\circ$  ७१/६ । प्राप्तिः स्थान— दि॰ जैन मदिर भादवा (राज $\circ$ )

**विशेष**—साह जीवगण्याम ने भादवा मे प्रतिलिपि करवाई । दो प्रतिया का मिश्रग्ण है ।

१५८७. प्रति स० २ स्.। पत्रस०१८०। आ०१२३ ४ ६३ डच। ले०काल स०१८१८ श्रावम मुदी ४। प्रपूर्ण। वेष्टतस०२४। प्राप्तिःस्थानः ीद० जैन मदिर क्रेनेहपुर मेलावाटी (सीकर)। विशेष—हरिकिशन भ्रमवाल ने स्वय पठनायं व्यास सिवलाल ममाई (अन्बई) नगर मे कराई । प्रति पूरी नकल नही हुई है ।

१५८८. प्रति स० २६ । पत्र सं॰ २१२ । घा॰ १३ ${}^3\!\!\!/\!\!\!/\!\!\!/ \times$   ${}^2\!\!\!/\!\!\!/$  इख । ले॰काल स० १६७७ घाषाङ् बुदी ६ । पूर्णः । बेष्टन स० १०३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष — बीर सं० २४४६ भादवा सुदी ७ को जराबरमल मटरूमल ने बड़ा मन्दिर में चढाया।

**१५**⊭६. प्रति सं० ३० । पत्रस० २१० । ग्रा० १३ × ६<sup>2</sup>, इत्व । ले०काल × । अपूर्ण । वैष्टन स० १७५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बृन्दी ।

विशेष----२१० संधागे पत्र नहीं है।

१५६०. प्रति सं० ३१। पत्र स० २६१। प्रा० ११  $\times$  ६ $\frac{1}{2}$  इच्छ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

१४६१. प्रति सं० ३२ । पत्रस०२१० । झा० १०१ ×४१ डवा । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टन म० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

१५६२. प्रति सं० ३३ । पत्रस० ४०३ । ग्रा० १३ $\times$ ७ इञ्च । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । बेष्टत म० १५३/१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

१**५६३. मोक्षमार्ग बावनी — मोहनदास** । पत्र स० ७ । स्ना० ६ $\frac{2}{3}\times$ ५ इख । भाषा— जियमे । विषय — धर्म । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १८३५ मङ्गसिर मुदी ५ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरमती, कोटा ।

विशेष--- प्रथ रामपुरा (कोटा) में लिखा गया था।

**१५६४. सोक्ष स्वरूप** — ४ । पत्र स० २५ । ब्रा० १०×३ है इचा। भाषा —हिन्दी (गर्या) । र०कार ४ । ले० काल राष्ट्रांगी वेष्ट्रन स० १३६२ । **प्राप्ति स्थान** –स० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

१४९५ यरयाचार वृत्ति — बसुनिद । पत्र म०१३-३००। ग्रा०६ $\frac{2}{3} \times \frac{2}{3} \times \frac{2}{3} = 1 मापा—$ सन्द्रत । विषय — ग्राचार ज्ञावत । र०काल <math>< । ले० काल स०१५६५ । ग्रपूर्ण । बेष्टन म०२३४ । ग्राप्ति स्थाल — दि० जैन ग्रवताल मन्दिर उदयपुर ।

१५६६. रत्नकरण्ड भावकाचार --म्राचार्य समन्तमद्व । पत्रतः १३। मा० ११४५ इञ्च । भाषा---सन्कृत । विषय---भावक धर्म का वर्गत । र०काल ४ । ते० काल स० १५८३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०४२ । **प्राप्ति स्थान**----भ० दि० जैत मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-सस्कृत में सक्षिप्त टीका महित है।

**१५६५. प्रतिसं० ३।** पत्र स० ३०। र०काल  $\times$ । ले० काल स० १६५३। पूर्ण । वेष्टन स**०** ६६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पंचायती संदिर हण्डावालो का डीग ।

१५८६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १८ । घा० ५ $\frac{2}{3}$  $\times$  ह्वा । ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । बेष्ट्न स० १५३ । प्राप्ति स्थान—िव० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१६००. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० १४ । ले० काल स० १८४४ । बेष्टन स० ४४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१६०१. प्रति सं०६ ।** पत्र स०४ । ले०काल × । म्रपूर्ण । बेष्टन स ६० । **प्राप्ति** स्थान—वि• जैन मदिर दीवानजी मरनपुर ।

**१६०२. प्रति सं०७ ।** पत्रस० ⊏ । ग्रा० १२×५ इल्बा लेब्काल स० १६२१ । पूर्गो । **वेह**नसं०१५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

**१६०३. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ११ । फ्रा० १०३ × ५ इन्ख । लेक्काल × । पूर्ण । वेकनसं० **१**८/१३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती दुनी (टोक)

**१६०४. प्रतिसं० ६ ।** यत्र स २७ । मा० १०१ × ४ इञ्च । ने०काल म० ११४४ । बैणास वदि १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर, ग्रादिनाथ बुदी ।

**१६०४. प्रतिसं०१० ।** पत्र स० १४ । झा०१२×४ इल्ब । ले०काल 🤫 । पूर्ण वे०स०३४ । **प्राप्तिस्थान**—दि०जैन मन्दिर स्रादिनाथ वॅदी

**१६०६. प्रति सं० ११। पत्र स०१**३ । छा०१३ ८ ४ इन्छा। ले०काल ४ । पूर्या। वे० स० ३४४/१६० **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**१६०७. प्रति स० १२** । पत्र स० १८ । ग्रा० ६ 🖯 ४ इखा। ते० काल स० १६६६ । पूर्णा। वेक्रन स० ४५०/१६२ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर मध्यनमथ उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

स बत् १६६६ वर्षे फागुणा मुदी १५ श्री मूलमधे भट्टारक श्री वादिभूषण णिष्य क्रं वर्द्धमान पठनार्थ। प्रथं का नाम उपासकाष्ययन भी है।

**१६०⊏. प्रति स०१३** । पत्र सं०१६ । आ,०१२ ≾५१, डश्वः । ले० काल × । पूर्णः । वेकन स०२२⊏ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान बीकामा ।

**१६०६ प्रतिसं० १४ । पत्र स०** ३४ । स्रा० ६५ ५ ४ इश्वा । ले० काल ८ । बेग्रुन स० ६५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-प्रति सस्कृत व्याच्या महित है।

**१६१०. रत्नकरण्डभावकाचार टोका-प्रमाचन्त्र ।** पत्र स० २४ । घ्रा० ११ ४ ५ इश्व । ते० काल स० १४४६ । पूर्ण । वेष्टन ४ । **प्राप्ति स्थान** -- महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रवर्गर ।

**१६११. प्रतिसं० २** । पत्रस० १६ । ब्रा० १०  $\times$  4े इन्त्र । ले०काल  $\times$  । वेरटन म० २२ । प्रा**रित स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**१६१२. प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १८ । ब्रा० ११२ ४ ४ इच्च । भाषा— 🗴 । ले०काल सं०१५३३ वैसाल सुदी ३ । वेष्टनस०१०० । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१६१३. प्रतिसं∘ ४** । पत्रस॰ ४६ । ग्रा०१० ४ ८६च । ले०काल ४ **। ग्र**पूर्ण । बेहनस॰ २३ । **प्राप्ति स्यान**—दि॰ जैन मदिर ग्रादिनाय बूदी । विशेष -- प्रन्तिम पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

**१६१४. रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीका:**  $\times$  । पत्रसं $\circ$  १-२०। ब्रा $\circ$  ११ $^2_i \times V^2_i$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—प्राचार सास्त्र । २०काल $\times$ । ले॰काल $\times$ । वेष्ट्रन सं $\circ$  ७११। प्रपूर्त । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर ।

**१६१४. रत्मकरण्ड आवकाचार टीका** । पत्रस० ४६ । ग्रा० ६  $\times$  ५ $\frac{7}{4}$  इश्व इञ्च । भाषा—सरकृत, हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६४६ च्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वेकन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर कोटयों का नैशावा ।

विशेष—मयुरा चौरासी में लिला गया था। प्रति हिन्दी टीका सहित है।

१६१६. रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा-पंकसदासुख काससीवाल । पत्र स०२३१। ग्रा०१४४ = इच । भाषा-राजस्थानी (हुँदानी) गद्य । विषय-अवक धर्म वर्णन । र०काल स०१६२० चैत्र बुदी १४। लेकाल स०१६४४। पूर्ण। बेष्टन स०१४६६ । प्राप्तिस्थान-अविक जैन मन्तिर प्रजमेर।

विशेष -- धा० समन्तभद्र के रत्नकरण्ड श्रावकाचार की भाषा टीका है।

१६१७. प्रतिसं० २ । पत्र स० २४ । म्रा० ११ × ७ है इ.च. । ले० काल × प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२६ । प्राप्तिः स्थान — महारकीय दि० जैन सदिर श्रवमेर । विरोध — मदामुख कामलीवाल की लघ वयनिका है ।

**१६१६. प्रति स० ३**। पत्रस**० ४०१** । ख्रा० १२१ ४७३ इञ्च । ने०काल स० १६३४ बठ बुदी ६। पूर्णा । बेष्टनसं० ६। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडागयमिंह (टोक्त) ।

विशेष--विधेग मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१६१६. प्रति स०४** । पत्रस० १६६ । लेक्काल स०१६२१ । पूर्ण । बेष्टन स०५६७ प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भग्नपुर ।

**१६२०, प्रतिसं० ४** । पत्र स० ३३२ । ग्रा० ११% ४ हें इन्छ । ले० काल 긌 । अपूर्ण । वेष्टत २०३२१ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६२१. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ४४७ । ग्रा० १३ % ४ इन्छ । लेक काल स० १६४३ । पूर्ण । वैष्टुन म० =३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६२२. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० ४७३ । ने० काल स०१६२० । अपूर्ण । बेष्टन स०६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६२३ प्रतिसं० ६** । पत्र स० ३८४ । घ्रा० १०१ 🗴 ६ इख । ले०काल स० ११४४ । पूर्ण । वैष्टनस० १२४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

**१६२४. प्रतिसं० ६ । पत्र**स० २६१ । ग्रा० १०३ ४ = इंच । ले∘काल ४ । प्रयूर्ण । <sup>बेष्टन</sup> म० ७१ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन लख्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**१६२५. प्रति सं० १०**। पत्र स० ३२६। ध्रा० १४ $\frac{1}{2} \times 9$  हुंच । ले०काल स० १६२४ भादवा बुदी १४। पूर्ण । बेष्टन स० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रदिर फतेहपुर (क्षेत्रावाटी-सीकर) ।

थिशेष— सदामुख की स्वयं की जिल्ली हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी। यह षय स्व० सेठ निहालचद की स्मृति में उनके पुत्र ठाकुरदास ने फतेहगुर के बड़े मदिर में चढाया सबन् १६६४ ब्रापाढ सुदी १४।

**१६२६. प्रतिसं० ११** । पत्र स० ४१६ । द्या०१३ imes दश्यः। लेकाल स० १६४५ माघ बुदी ११ । पूर्णः। बेहन स० १७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष-प्रति सुन्दर है। द्वारिकाप्रसाद ने प्रतिलिपि की थी।

१६२७. प्रति सं०१२ । पत्र सरुया ४७०। ले० काल स०१६२१। पूर्गा। बेष्टन स०२७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फोलप्र शेलावारी (सीकर)।

विशेष--प्रति दो वेष्टनों में हैं। सदामुख कासलीवाल डेडाका ने गोहलाल पाडका चौधरी चाटसू वाले से प्रतिलिंगि कराई थी।

**१६२ म. प्रतिसं० १३ ।** पत्र स० ४३२ । द्या० १३× म्हन्य । ले०कार ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११/४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज )

विशेष - स्वयं प्रथकार के हाथ की लिखी हुई प्रति प्रतीत होती है।

**१६२६. प्रति सं० १४** । पत्र स० ३६६ । द्वा० १२ imes पुरु हुन्छ । ले० काल स० १६३**१** स्नापाट बदी २ । पूर्ण । बेहुन स० ३२ । **प्राप्ति स्थास**—दि० जैन प्रचायनी मन्दिर करौली ।

**१६२०. प्रति सं० १४ ।** पत्र स० २२७ । आग्० १२ 🗴 ७ <sup>2</sup> इल्ब । ले० काल 🗡 । अपूर्ण । बेष्टन स० १३३१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन प्रचायती मन्दिर करीली ।

**१६२१. प्रति सं० १६** । पत्र स० ४५२ । ग्रा० १२ imes ७) इच्च । ते० काल- <math> imes पूर्ण । वेष्टन म० ३३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचावती मन्दिर करोली ।

**१६३२. प्रति सं० १७।** पत्र स० ३०६–४५०। स्रा० १२३ ८ ७ इश्वाः ले०काल । स० १६३२ । अपूर्णावेष्टन स० १ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन पद्मायनी मन्दिर कामा।

विशेष - अन्वयगढ मे प्रतिनिधि की गई थी।

**१६२२. प्रति सं० १८।।** पत्रस० २१२। ग्रा० १२ $rac{1}{2}$  imes ५२ इश्वः। लेक्काल > । ग्रपूर्णः। बेष्टन स० ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायमा सन्दिर कामा।

विशोष---पत्र स० २१२ से आगो के पत्र नहीं है।

१६२४, प्रति सं० १६ । पत्रस० २४० । ग्रा० १२ × ७ इत्र । ते०काल ४ । ग्र**पूर्ण ।** बेष्टन म० १४५ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मुदिर बयाता ।

१६३४. प्रति सं० २० । पत्र स० ३६२ । षा० १३ 🗴 ०६ टच । ले० [काल 🔀 । धपूर्ण । वेष्टत म० १०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाता ।

विशेष---३६२ के आगे के पत्र नहीं है।

१६३६. प्रतिसं**०२१।** पत्र स०४००। ले०कान स०१६२१ **वैत बुदी १४। पूर्ण।** बेष्टन स०१७६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती महिर मरतपुर।

१६३७. प्रति सं•२२। पत्र सं०३२६। प्रा०१४ × ६ दचा। ते० काल × । पूर्णः। वेष्टन सं०२२। प्राप्ति स्थानः—दि०जैन प्रध्वाल पवावती सदिर प्रतवर। **१६३८. प्रतिसं० २३।** पत्र स० २४८। प्रा० १२<sup>२</sup>४ ७<sup>२</sup> इच्छा । ले० काल स० १६७४। पूर्णा । बेब्रन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सप्रवाल पचायती मन्दिर खलवर ।

**१६३८. प्रति सं०२४।** पत्र म०२९६ । प्रा०१३× द इला। ले०काल सं०१६३१। पूर्ण। बेष्टन सं०१२३। **प्रास्ट्रिस्थान**—दि० जैन खडेलवाल प्रवायती मन्दिर प्रलवर ।

**१६४०. प्रति स० २५।** पत्र स० ४०६। घा० ११ 🗴 ८ इञ्च । ले० काल 🌝 । पूर्णुं। बेष्टुन म० १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि**० जै**न खण्डेलवाल पत्रायती मदिर ध्रनवर ।

**१६४१. प्रति सं० २६।** पत्र स० ३६०। या०१३ imes दखा ले० काल स० १६२४। ब्रुपुर्त्ता वेष्टन स०४०। **प्राप्ति स्थान**—वि**० जैन** मदिर ब्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टॉक)।

**१६४२. प्रति सं० २७ ।** पत्र म० ४१४ । आ० १२ 🖂 महीच । ले० काल 🔀 । अपूर्ण । बेन्टन म० ३८ । **प्राप्ति स्थान**िद**०** जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायीमह (टोक) ।

विशेष--पत्र स० ४१४ से आगे नहीं है।

**१६४३. प्रतिसं०२ ⊏ ।** पत्र म०३६८ मे ५७०। आप०**११**० ७) इ.ख.। ले०काल ं । प्रपुर्गावेषुन स०२३३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

**१६४४. प्रति स० २६ । पत्रस**० ३८७। ब्रा० १२२ ७ इच । लेक्काल---स० १९६३ । पूर्ण । बेहुनस० १४ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर बधेरवालो का, श्रावा (उत्प्यारा) ।

विशेष चदेरी मे प्रतिनिधि हई थी।

१६४५. प्रति सं० ३०।पत्रस०२००। ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेप्टन स०१३ । प्रास्ति स्थात—रिक्जन ग्राप्याल मस्टिर नैगावा

**१६४६, प्रतिसं० ३१ ।** पनस० ५०६। ब्रा० ११ ८ औु इच । ले०काल-स्म० १६२४। पूर्ण । बेष्टनम० ३५। **प्राप्ति स्थान**-पदि० जैन मन्दिर, श्री महावीर स्वामी बुदी ।

**१६४७. प्रतिसं०३२ ।** पत्रस**०** ४६६ । प्राकार ११ 🔨 ॐ इश्वरा लेक्काल 🦿 । पूर्णा यक्त स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, श्री महाबीर स्वामी बुदी ।

**१६४८. प्रति सं०३३ ।** पत्रस०३४६ । झा०१४४८ इन्छ। ले०काल ८ । पूर्ण। बेट्तस०१४०। **प्राप्तिस्यान**-दि० जैन मन्दिर नागदी, बुंदी।

**१६४६.प्रति सं० ३४ ।** पत्रस० ४१३ । ग्रा० १२१ 🌣 ६१ इखा । लेककाल स० १६४५ । पृग्गं । बेष्टनस०-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्राभिनन्दन स्वामी, ब्रुदी ।

**१६५०. प्रति स० ३५ ।** पत्र स० ३२२ । ग्रा० ६४ × ७३ इश्वा । ले० काल स**०** १६६१ चंत्र वरी ⊏ । पूर्ण । वेष्टन स**० २४ । प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर पाध्वेनाथ चौगान बुदी ।

विशेष-चदेरी में चोबे दामोदर ने प्रतिलिपि की थी।

१६४१. रत्नकरण्ड आवकाचार भाषा वचनिका—पन्नालाल दूनीवाला । पत्रस्व १४ । या १२ $_2$  १ $_3$  १ $_4$  १ $_4$  १ $_4$  । प्रापा—गजस्थानी (हु दार्ग) गया । विषय—आवक वर्ष का वर्णन । र०काल स० १६२१ पोष बुसी ७। ने० काल स० १६४६। पूर्ण। वे० स० २० । प्रास्तिस्थान—दि० जैन मंदिर गजबहल (टोक)

विशेष—प० फतेहलाल ने इस टीका को गुढ़ किया धौर प० रामनाथ शर्मा ने इसकी प्रतितिपि की धी।

१६५२. रस्तकोश सूत्र ब्याख्या—  $\times$  । पत्र स०७ । प्रा० १० $\times$ ४} इच । भाषा— संस्कृत । विषय— धर्म । रुकाल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत सं० १७४ । प्राप्ति स्थान— म० वि० जैन मंदिर प्रजमेर ।

१६४३. रतनत्रय वर्णन $-\times$ । पत्र स०३७। प्रा०१२ $\frac{1}{5}\times \frac{1}{5}$  दखा । भाषा—सस्कृत । विषय—प्रमा । र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०८४। प्राप्ति स्थान—दि० वैव मिटर राजनशल टीक ।

बिशेष--पत्र २२ से आगे दश लक्षण धर्म वर्णन है पर वह अपूर्ण है।

१६५४. **साटीसहिता—पांडे राजमत्ल ।** पत्र स० ७७ । प्रा० ११४१<sub>,</sub> इन्त । भाषा— सम्कृत । विषय—प्राचार मास्त्र । र०काल स० १६४१ । ले० काल स०१८४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष---पत्र भीगे हए हैं।

**१६५६. प्रति सं०३।** पत्र स०७६ । ब्रा० १०<sub>६</sub> ×५ इञ्च । ले० काल म०१८८६ कासुसा सुदी ४। पूर्मा । वे०स०१२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दुसी ।

्रिकोष—- दूसी नगर में पार्थ्वनाथ के मन्दिर में पंडित जी श्री १०८ श्री मीतारामजी के जिप्स शिवजी के प≾नार्थ लिखी गयी थी।

१६५७. लोकोमत निराकरण रास-सुमितिकोत्ति । पत्र म०१३ । प्रा०१४ / ४४ ) इस्य । मादा—हिन्दी । विषय—चर्म । र०काल स०१६२७ चैत्र दुरी । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन म०२८१ । प्राप्तिस्थान—दि० चैत मन्दिर बोरसली कोटा ।

१६५६. **बसुनिट आवकाचार—ग्रा० वसुनिट** । पत्र सं०१७ । ग्रा०१० ४ १ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्राचार शास्त्र । २०काल ४ । ते० काल सं०१६१० माघ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन सं०२० । प्रा**प्ति स्थान**—भटारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

वशेष -- इसका दसरा नाम उपासकाध्ययन भी है।

**१६५६. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०११ । आ०१११ ४ ४ इन्छ । ले० काल 🗴 । पूर्णा । बेष्टन सं**०** १९२० । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

१६६०. प्रति सं० ३ । पश्चं० १६ । प्रा० ११imes६ है इन्छ । लेक्सल imes । पूर्ण । बेष्टनसं० ७०२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन महिर ग्रजमेर ।

**१६६१. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० ४४ । म्रा० ८ है ४६ इला ले०काल सं० १८६४ पीच बुदी ६ । वेष्टन सं० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लम्कर, जयपुर ।

विशेष -- महाराजा जगतीसह के शासनकाल में साह श्रों जीवगराम ने प्रागदास मोट्टाकावासी से संबाई जयपुर ने प्रतिनिधि करवाई थी। **१६६२. प्रतिसं० प्र** । पत्रस० २० । घा $^{o}$  स् $^{o}$  प्र<sup>क्ष</sup> । से॰काल imes । पूर्य । बेष्टन सं $^{o}$  २२५ । **आ**प्ति स्**यान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

**१६६३. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ४३ । श्रा० १२ ४ ८ इञ्च । ले० काल सं० १६८४ । पूर्णे । बेक्टन सं० १७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलावाटी (सीकर) ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है कीमत दा) है।

१६६४. बसुनिन्द भावकाचार भाषा—ऋषमदासः । पत्रः सं० ३४७ । प्रा०१ ४ ४६ इन्द्रः । भाषा—हिन्दी । विषय—प्राचार शास्त्रः । र०काल स०१६०७ । ले०काल स०१६२४ । पूर्णः । केटन सं०५० । प्राप्ति स्थान—दि० जन मदिर दीवान चेतनदान पूरानी ग्रीगः।

विशेष-- ग्रन्तिमः

गर्गदेश भल्लरि प्रथम पत्तन पुर स धनुष । भालाबार मुहावनी मदनसिंह तम् भूप ।। पृथ्वीराज मृत तास कै सौमितु पद कूंपाय। राजकर पाल प्रजा सबही कूं सुखदांय।। निसि पत्तन में शानि जिन राज सबक शानि । धाधि व्याधि हरै सदा कर्म क्षोभ को भ्राति ।। ताकी यति तिय भवन की सोमा कही न जाय। देखत ही श्रष्ट हरत है सूर सिव मग दरसाय।। पाण्वंनाथ की भूवन इक ऋषमदेव की धीर। नाना सोभा महित पुनि राजत है इसि ठौर ॥ मध्य जीव वदै सदा पूजे भाव लगाय। नर नारी गावे सदा श्री जिन गुगा हरवाय ।। तिमी पुरी में जाति के लोग वसी जुपूनीत। नामै हंबड़ जाति के वगवर देस जनीत ।। श्रीनेमिण्वरवंस सुत बाल सोम भ्राख्यात। सो चउभात नियुक्त है ताके मृत विख्यात।। नामिजदास बलानिये तार्क सूत दो जानि । नामैं श्रेष्ठ बखानिये पडित सुनौ बखानि ।। वासुपूज्य जिन जनम की पूरी राज सूत जानि । ···· फुनि ग्ररुस मृत लघु भ्राता जुकहानि।। सामैं गुरू भ्राता सही मृद एक तुम जान। सब जैनी मे बसत है दो सुत सुत श्रमिताम।। ताकूं श्री वसुनंदि कृत नाम श्रावगाचार । गाथा टीका बंघ कू पढि वैकू सुख काारे।। भट्टारक धामेर के देवेन्द्र की सि है नाम।

जयपुर राजै गुरानिधि देत भए ग्राभिराम।। नाकुं लखि मन भयौ विचार।

होय वचनिका तो मुख कार ॥

सब ही बार्च मुनौ विचारै ।

. सुगम जानि नहीं धालस धारै।।

सो उपायमन नहि करि लिखी ।

बालबोघ टीका चित सुखी ।।

वालबाव टा॰ यार्मै बुद्धी मद बसाय ।

फुनि प्रमाद मुरखता लाय ।। ऋषि पुरस्त नव एक पुनि माध पुनि सुभ स्वेत ।

जथा प्रथा प्रथम कुजवार, मम मगल होय निकेत ।।

**१६६५. बसुनदि आवकाचार बचिनका**— × । पत्र स० ४६६ । आ ० १२३ ४ ६ इश्व । भाषा — हिन्दी ग**ष्ट । विषय — भाषार** शास्त्र । र०काल स० १६०७ । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । बेस्टन स० ४७–२६ । **प्राप्ति स्थान — दि० जैन** मन्दिर कोटडियो का हुगस्पुर ।

> ऋषि पूररण नव एक पुनि माघ पूनि शुप्त सेत। जया प्रथा प्रथम क्जबार मम मगल होय निकेत।।

१६६६ वसुनिद स्नावकाचार माषा-दौलतराम । पत्र स० ४४ । घा० ११३ / ४ इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-साचार सास्त्र । र०काल स १०१६ । से० काल 📐 । पूर्णा । वेप्टन स० २४७ । प्राप्ति स्थान-विज जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष---मूल कर्ता था॰ वसुनन्दि है। प्रति टब्बा टीका सहित है।

१६६७. बसुनित्व आवकाचार साथा-पन्नालाल । पत्र स० १२७ । भाषा—(हरी । विषय—आवक घर्म । रे०काल स०१६२० कार्तिक सुदी ७ । ले०काल स०१६२० - दूर्गा । वेच्टन स०१६१ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१६६०. वसुनित्व आवकाचार भावा**—पत्र म० ३७०। ब्रा०११ $\times$ ६२३ इन्छ । भाषा— हिन्दी । विषय-प्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वंध्वन स० १५०१ । प्राप्ति— स्थान—म० दि० जैन भन्दिर अजमेर ।

**१६६६. असुनिन्दि आवकाचार भाषा** . । पत्र म० ३५१ । घा० १२ ८५ इख । **भाषा**— हिन्दी गद्य । विषय—प्राचार बास्त्र । २०काद: ८ । ले०काल ... । पूर्ण । येष्ट्रन म० १४१ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मस्दिर श्री महाबीर बुल्दी ।

विशेष--- मादि मन भाग निम्न प्रकार है---

#### प्रारम्भ---

जितराज धनन्त मुजनिधान मगल सिव सत । जितवाशी सुमरस्य मति बढें। ज्यो मुणाञ्चाल लिपक विस्मा बढें।। गुरू निर्धाय चरम्म चित लाव । देव मास्त्र गुरू मगल भाव ।। इनहीं मुमरि बस्मी मुख्यत । समोमरस्य जे जे विस्तार ।।

## ग्रन्तिम पाठ---

सोलहर्सं घटबीस मं माघ दर्सं सुदी पेखा । गुलाल बहा मिन नीत इती जयौ नंद को सीखा। कुरु देश हथनापुरी राजा विकस साह । गुजाल बहा जिन धर्म जय उपमा दीजे काह।

**१६७१. विचारखर्दित्रशकाबर्द्दारा-**पत्र त० १३ । भाषा--संस्कृत । विषय-वर्म । र०काल स०१५७८ । ले०काल स० १८८४ । पूर्ण । वेप्टन स०६४० । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पचायती मन्दिर मन्त्रपुर ।

**१६७**६. विचार सूखड़ो— पश्रम०४ । भाषा-सहकृत । विषय-धर्म। र०काल  $\times$  । निकाल स०१६७२ । पूर्मा । वेग्टन स०७३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पदायती मन्दिर मरनपुर ।

१६७३. बिद्वउजन बोधक-सधी पन्नालाल दूनीवाला । पत्र स०६३७ । झा०१३१ ४ ८, इ.स.। भाषा- नजन्यानी (इ.स.म.) नष्य- धर्म। र०काल स०१६३६ माण मुदी ४। लेकाल स०१६६६ कागृन मृदी ८। पूर्ण। बेटन स०४। **प्राप्ति स्थान—**दि०जन मन्दिर कतेहपुर शेलावाटी (जीकर)।

**१६७४. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ४४० । धा० १३ $_{7}^{2}$  $\times$  ८ $_{7}^{2}$  इच्च । ले०काल स० १६६२ श्रावस्स् बुदी ६ । पूर्ण । वेट्टन स० ४०० । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर लक्कर अधपुर ।

विशेष---रिषभचन्द बिन्दायक्याने प्रतिलिपि की थी।

१६७४. विवेक विलास-जिनवत्तसूरि । पत्रस० २३ । धा० ६ $\frac{1}{6} \times \frac{1}{3}$  इज । माषा— सम्हत-हित्यी । निषय-पर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १३१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर समिनन्दन स्वामी, ब्रूंदी ।

विशेष-संस्कृत पद्यों के साथ हिन्दी प्रथं भी दिया है।

**१६७६. विशस्थान** × । पत्रस० ३६ । भाषा—हिन्दी । विषय-घमं । र०काल × । के०काल स० १८७८ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रवासती मदिर भरतपुर ।

**१६७७. क्तनाम**—  $\times$  1 पत्रसं० १२ । घा० १०  $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  हञ्च । भाषा — हिन्दी (पद्य) । विषय-पर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिदर राजमहत्त टोक ।

**१६७८ ततनिर्णय** —  $\times$  । पत्रस० ४२ । प्रा० ११  $\times$  ८ इक्न । भाषा — सम्ब्रत । विषय-षमं । र०काल  $\times$  । ते॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० १५४६ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन संदिर छजमेर ।

१६७६ वतसमुख्यस— ×। पत्रस० ३१ । घा० ११ x xै रेज्या । भाषा-हिन्दी। विषय-पर्या र०काश × । नेप्सान स० १६३३ सावन बुदी १२ । पूर्णा बेष्टनसंग् २००। प्राप्ति स्थान—कि जैन मन्दिर वीरसली कोटा।

**१६८०. वतसार**—  $\times$  । पत्रस०७। घा०६  $\times$  ४ इच । भाषा-मस्कृत । विषय-धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १४४ । प्रास्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर चयपर ।

**१६८१. बतोधोतन आवकाचार-प्रश्नवेव ।** पत्रस० ४४ । आ०६  $\times$  ३ टच । भाषा-सस्कृत । विषय-प्राचार गास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्न सं० १०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर, पार्यनाथ चौगान बूदी ।

**१६६२. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०२६ । आ० १०५ ×४) इञ्च । र०कालः । ले० कालः स० १४६३ पर्यो । बेकनस०१६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन अग्रवान महिर उदयपुर ।

विशेष — बर्थं स वत्सरेस्मिन् स बत् १४६३ वर्षे गीय सुरी २ ख्रादित्यवामरे भी मृतम थे मरस्वनी गच्छे श्री क दक्तनाचार्यान्वये इ. मानिक लिलापित बाल्म पठनार्थं परापकाशय ।

स वतु १६५७ वर्षे बहा श्री देवजी पठनार्थ इद प्रश्नक ।

**१६८३. प्रतिसं०३ ।** पत्रस०३३ । प्रा०११ × ४१ डख । ले०काल स० १८८२ श्रावण बदी ३ । पूर्ण । **बेष्टनस० १४४ । प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन सदिर लक्कर जयपुर ।

**१६८४. वर्तो का स्योरा**— ४ । पत्रत० १ । ब्रा०११} ४ ४ इन्ह । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । तेष्टुन म०१४६७ । प्राप्तिः स्थान—मट्टारकीय विकासन प्रकार प्रकार ।

१६६५. वतो का ब्योरा— ४ । पत्र स०१६ । ब्रा०११४८ (१८%। आधा-हिन्दी। विषय—चर्म। र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण। वेष्टन स०११६२ । प्राप्तिः स्थान—सट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

**१६६६. तत स्योरा वर्**गन । पत्रस० ७ । ग्रा० ११३ × ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-प्राचार जात्व । र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वेष्टनस० ११४६ । <mark>प्राप्ति स्थान—</mark>महास्कोप्र दि० जन मन्दिरस्रजमेर । १६६७. शलाका पुरुष नाम निर्हाय-भरतदास । पत्रसं∘ ६१ । प्रा० ६४६ इश्व । माषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र०काल सं०१७६६ वैशास सुदी १४ । ले० काल स०१६६८ सावस सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन सं०३७३ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर दबसाना ब्रुदी ।

विशेष---कविनाम----

गोमृत केरो नाम तास मे दास जु ठानो । तासृत मोहि जान नाम या विश्विमन प्रानो ॥ सञ्चकर को श्वरी जोय, राग फुनि तामे ह्वीजे। यह कर्सा को नाम श्वर्ष पडित जन कीजे ॥

क्रालरापाटन के शांतिनाथ चैल्यालय मे ग्रंथ रचना हुई थी। कवि क्रालरापाटन का निवासी था। र०काल सम्बन्धी दोहा निम्न प्रकार है——

> णुभ एक गिरा हीरा शील उत्तर भेदन मे । मदवमु तार्पं धरया भेद जो होवे इनमे ।।

१६६६. **शास्त्रसार समु**ज्वय-  $\times$  । पत्रस्त  $\times$  । प्राप्त  $\times$  ३ ख । भाषा-सस्क्रत विषय-धर्म । रक्तार  $\times$  । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन मक १६ । **प्राप्ति स्थान**—दिव जैन पवायती मिदर दूनी (टोक)

प्रारम्भ — श्रीमप्रस्नामरस्तीत्र प्राप्तानत चतुष्ट्य । नःवा जिनाधिष वध्ये शास्त्रसार समुच्चय ॥१॥ भ्रम त्रिविधोकालः ॥१॥ द्विविधो वा ॥२॥ पत्रविधोवा ३॥ दशविधा कल्पद्रमा ॥

म्रन्तिम --

बतुराध्यायसपन्ते जास्त्रसार रामुब्बये । गठन त्रयोपवासस्य फन स्यात्मुनिभाषते ॥ श्रीमापनिन्दयोगीन्त्र सिद्धान बोधिबन्द्रसा । श्रीमकनुं विचितार्थं जास्त्रसारममुख्यये ॥२५ मुमुख् सुमतिकोत्ति पठनार्थं ।

**१६८६. सिव विधान टीका** -- Ү। पत्रसं० २। आ०६×४ इन्छ। भाषा-हिन्दी, सम्ब्रतः विधय-धर्मः (२०काल ४। ने०काल ४। पूर्णः । येष्ट्रन स**०१४४। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर देवलानः (इ<sup>°</sup>दी)।

**१६६०: शीलोपदेशमाला— सोर्मातलक ।** पत्रस० १३२ । म्रा०११×४ इख । भाषा— सम्कृत । विषय-मर्म । र०काल ∖ा ले०काल ∨ा पूर्ण । वेष्टन स०१४**८ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर बोरसपी कोटा ।

विशेष---प्रति टीका सहित है। एव प्राचीन है।

**१६९१. आवक्तिया**  $\times$  1 पत्रस० २७ । घा० ११ $\times$ ५ इन्छ । आपा—संस्कृत । विषय— प्राचार कास्त्र । र०काल  $\times$  । के० काल स० १८८५ माह सुरी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १४७० । **प्राप्ति** स्थान—सङ्गरकीय दि० जैन मन्दिर अजभेर ।

विशेष -- इति कल्पनाकरनम् थे श्रावक नित्य कर्म षट् तत्र षष्टमदान षष्टोध्यायः ।

- **१६९२, आवक किया**  $\times$  । पत्रस०१६। प्रा०१० $\times$ ४  $\frac{1}{2}$  इश्वः । भाषा-हिन्दी गवा। विषय-ग्राचार शास्त्र । र०कास्त्र  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टनसं०  $\times$  । प्रास्ति स्थान-िद० जैन मदिर ग्राभनन्दन स्वामी वृदी।
- **१६६३. धावक क्रिया**  $\times$  । पत्रसं० १६। घा० ६ $\times$ ६ इ.ख.। भाषा-हिन्दी। विषय-पर्यं। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स० २६/७५। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाववंनाय इन्दरगढ़ (कोटा)
- १६६४. श्रावक गुरा वर्रान ४ । यत्रस०३। माषा—प्राकृत । विषय -साचार शास्त्र । र०काल४ । ले०काल स०४ । पूर्ण । वेष्टन स०१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।
- १६९५. आवक वर्म प्ररूपरा।—  $\times$ । पत्रस० ११। ग्रा० १२  $\times$  ५ रख । भाषा—प्राहत । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$ । ने०काल  $\times$ । यपूर्ण । वेष्टन स० २७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन ग्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।
- **१६६६. आचकाचार** ...........। पत्र सः १५। स्रा० १० हुँ ४ भे<sub>दे</sub> इखा। भाषा— प्राकृत । विषय-साबार शास्त्र । र० काल स० १५१४ । ले० काल × । वे० स० ⊏१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-- मडल दुर्ग मे रचना की गई। ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति श्रधरी है।

- **१६६७. आवकाचार** × । पत्र स० ४ । घा० १२ × ४ इश्व । भाषा —सस्कृत । विषय— ग्राचार जान्त्र । र०काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण। वे० स० ३००/१४४। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।
- **१६६६. श्रावकाचार—उमास्वामी।** पत्र स०१६। प्राप्त प $^{2}_{0} \times c_{0}^{2}$  हत्र । भाषा—िहन्दी। विषय-प्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६६६ मादवा सुदी १। पूर्ण । बेष्टून म०६५७। प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मिन्दर ग्रजमेर ।

विशेज---प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

- १६६६. श्रावकाचार—प्रमितिगति । पत्र स० ७५ । प्रा० १२  $\times$  ५१ इ.च । भाषा सस्कृत । विषय—प्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० १४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर अपकृत ।
- १७००. प्रति सं० २ । पत्र सः ७४ । ब्रा० १० $_{3}^{2}$   $\times$  ५ इचा । भाषा—सस्कृत । विषय— ब्राचार बात्त्र । २०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६७० फाल्गुन सुदी = । वेष्टन सं० १४३ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।
- विशेष—जहागीर नूरमोहस्मद के राज्य मे—हिमार नगर में प्रतिलिपि करवाकर श्रीमती हेमरत्न ने त्रिभुवनकींनि को भेट की थी ।
- १७०१. श्रावकाचार imes । पत्रस $\circ$  २ । प्रा $\circ$  १०imes१ इ.स. । माषा-हिन्दी । विषय-प्राचार स्नास्त्र । र $\circ$ काल imes । ले $\circ$ काल स $\circ$  १८१७ प्रासीज सुरी १० । पूर्ण । वेष्ट्रनसं $\circ$ १वद-१२० । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

१७०२. **धावकाचार रास**—पवमा । पत्रसं० ११६ । धा० ११ $\times$ ६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—माचार शास्त्र । र०काल $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० १३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--प्रथम पत्र नही है।

प्रारम्म :--

समीसर्ग माहे जब गया

तिसाधानन्द भविष्यम् मन भया ।

मुखिकन जिय जयकार,

भेट्या जिनवर त्रिभुवन तार ॥

नीन प्रदक्षरणा भावे दीघ.

क्रान्टप्रकारि पूजाकीघ।।

जल गघ श्रक्षित पूष्प नैवेद ।

दीप घृष फल ग्रन्थ वस् भेद ।।

ग्रन्तिमः---

थायकाचार तस्य थावकाचार तस्य,

रास की उमि सशी परि। मिबजन मनरंजन भजन कमें कठोर.

निर्भर पच्च परसेप्टी मन धरि ।

नगर पश्च परमध्दा मन धार समरि सदा गरु निर्माण मनोहर

अनुदिन जे धर्म पार्लीम

बाली सर्वजनीचार जिन सेवक।

पदमो काहिते पामिस मवपार ॥२५

१७०३. श्रावकाराधन—समयसुन्दर । पत्रस० ३ । भाषा—सस्क्रत । विषय —श्रावक धर्म । रणकाल 📐 । ले०काल 🔀 । पूर्ण । वेष्टनस०६५२ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पत्राधती मदिर भरतपुर ।

**१७०४, प्रतिसं०** २ । पत्रस०४ । ले० काल ≾ । प्रपूर्ण । बे**ष्ट**नसं०६६१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन प्रचायती मन्दिर अरतपुर ।

१७०**४, बट्कर्मोपदेशरत्नमाला—ग्रमरकीति**। पत्रस० ८१ । ग्रा० १२१ ५६ इत्र । भाषा-प्रपन्न य । विषय-श्राचार णास्त्र । र०काल स० १२४७ । ले० काल स० १६०० चैत्र बुदी १ । पूर्णे । बेष्टनसं० १६०२ । **प्राप्ति स्थान**— महान्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**१७०६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ६-६३ । द्वा० १२ ४ ६६ श्वा । ले∘काल · । प्रपूर्ण । वेष्टुत स० ६६० । **प्राप्ति स्थान**—भद्राग्कीय दि०जैन मन्दिर श्रजमेर ।

**१७०७. प्रतिस⊙ ३**। पत्रसं० १०४ । ब्रा०१० ४ ४ डवा। ले० काल म० १६४२ फागुण मुदी २ । पूर्णावेष्टन स०७≍ । **प्राप्ति स्थान—** म०¦दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

विशेष -- नेलक प्रशस्ति सपूर्ण है।

१७०८. **बट्कबॉपदेशरत्नमाला—सकल सूचरा।** पत्र स० १३६। घा० १४४६ दश्व । भाषा—संस्कृत। विषय—झाचार शास्त्र। र०काल स० १६२७। ले०काल सं० १८५७ पीच बुढी १०। पूर्ण। वेष्ट्रत सं० ३२०। **प्राप्ति स्थान**—स० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

१७०**६. प्रति स० २ ।** पत्र सं० १०४ । प्रा० १० $\times$ ४ हुँ इश्वः । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर प्राभिनन्दन स्वामी बूँदी ।

विशेष---१०४ से ग्रागे पत्र नही है।

१७**१०. प्रतिसं० ३** । पत्रसं० १६४ । ले०काल स० १८२० चैत बुदी ६ । पूर्णे । बेष्टनसं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**बिशेष**—विराट नगर मे प्रतिनिधि की गई।

१७११. प्रतिसं० ४ । पत्रतः १२४ । ले॰काल—× । पूर्णः । वेष्टनसः ३७७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

१७१३. बट्कमींपवेशरत्नमाला भाषा—याण्डे लालचन्व । पत्रसं० १४६ । आ० ११ $\times$ ७ इ.स. । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—भाषार । २०काल स० १८१८ माह सुरी ५ । ले०काल स० १८८७ कार्तिक बुरी १२ । पूर्ण । वेटन स० १२२६ । प्राप्तिस्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—अजमेर पट्टे श्री १०८ श्री रन्नभूषरा जी तत् शिष्य पण्डित पन्नालाल तत् शिष्य पण् नतभ्रं ज इद पुस्तक लिलापित ।

ब्राह्मरण श्रीमाली सालगराम वामी किशनगढ ने ग्रजयगढ (ग्रजमेर) मे चन्द्रप्रभ चैरपालय मे प्रतिलिपि की थी।

१७**१४. प्रति सं०**२ । पत्रस०१७१ । ग्रा०६ $^2_1 \times \xi^2_2$  इचा ने० काल स०१६४७। पूर्णे । वेष्टन स०१६१६ । **प्राप्ति स्थान** — मट्टारकीयदि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

**१७१५. प्रति सं० ३**। पत्रस० १४२ । ग्रा० ११ $\times$ ६३ डख । ले०काल स० १६११ मगसिर बुदी ८। पूर्ण । बेक्टस० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गंगवावाटी (सीकर) ।

विशेष - हरिकशन भगवानदास ने दिल्ली से मगाया ।

**१७१६ प्रतिसं० ४**। पत्रस०-१६४। म्रा॰ १०३४१ इंच। ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेहुतस० ७१-२६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा।

१७१७. प्रति सं०-५ । पत्रस० १३५ । आ० १० $\frac{2}{3}$ ४७ $\frac{2}{5}$ ६ख । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ११० । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

१७१८. प्रति सं०—६ । पत्रस० ८५ । ग्रा० १३×६६ इ.च. । ले०कास स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । प्राप्ति स्थान —र्दि० जैन मन्दिर भ्रप्रवाल नैरावा ।

१७१६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १०४ । लेखन काल सं० १०६३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६४ । प्राप्ति स्थान-—दि० जैन मन्दिर तेरहरंबी बसवा । १७२०. प्रति सं० म । पत्र स० १२४ । घा० १२×६ है इ च । ले०काल स० १८८२ मंगसिर बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स० १४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर घलवर ।

**१७२१. प्रतिसं० ६** । पत्रस० १४३ । घा० १२ ४६ इ<sup>.</sup>च । से०काल स० १८१६ घाषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पंचावती बयाना ।

विशेष-श्री मिट्ट्राम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी थी।

१७२२ प्रतिसं० १०। पत्र स०१०६ । स्ना० १२ $\frac{5}{4} \times 9\frac{5}{4}$  इ.च । ले० काल  $\times$ । मपूर्ण । नेष्टन स०१४३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन छोटामन्दिर बयाना ।

१७२३ - प्रति स०११ । पत्रस०१३७ । ले० काल स०१८१६ वैसाख मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं• ५६ । प्राति स्थान— दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष-प्रित प्राचीन है तथा प्रशस्ति विस्तृत है।

१७२४. प्रति सं०१२ । पत्र स०१६१ । मा०११३ ४७ इञ्च । ले०कालसं०१८६४ भावबाबुदी ७ । पूर्ण । बेशून स०१२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मन्दिर राजसहल टोक ।

विशेष - राजमहत्त्र में वैद्यराज सन्तोषराम के पुत्र प्रमीवन्द, ग्रमयवन्द्र सोगानी ने प्रतिक्षिप करवायी थी।

१७२४. प्रति स० १३ । पत्र म० १६६ । घा० ६ $\frac{5}{4}$   $\times$  ६ $\frac{3}{6}$  इखा । ले० काल स० १०४६ घाषाढ तुरी १४ । पूर्ण । बेष्टन म० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष-प॰ देवीचन्द ने ब्यास सहजराम से तक्षकपुर से प्रतिलिपि कराई।

१७२६ प्रतिसं०१४ । पत्र म०१६१ । प्रा०१० $\frac{2}{9} \times \frac{1}{2}$  इच्च । ले० काल स०१६२७ कर मुदी ७ । पूर्ण । बेटन स०१४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पश्चायती करौली ।

विशेष-टेकचद विनायक्या ने करीली मे प्रतिलिपि कराई थी।

१७२७. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १४६ । प्रा० ११ $rac{1}{2}$  imes  $rac{1}{2}$  संकल सं० १६१६ मावन मुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४५,३६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर सौगासी करोली ।

१७२**न. प्रति सं० १६** । पत्रस० १८३ । घा० १०१ ४ ४ इ**था । ले∘काल ४ । पूर्ण ।** वैष्टन स०४७-४२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर सोगासी करीली ।

१७२६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ८७ । घा० ११  $\times$  ५ $^{3}$  इचा । ते० कात  $\times$  । घपूर्ण । वेष्टत स० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपूरा (टोक)

१७३०. प्रति स० १८ । पत्रतः १२२ । घा० १२ 🗴 ७} इञ्च । ले०काल — स० १६२६ । पूर्णे । बेप्टन स० १२७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बदी ।

१७३१. प्रति सं० १६ । पत्रसं० ६१ । ब्रा० १२ $^2_7$   $\times$  ६ $^3_2$  इञ्च । ले०काल सं० १६५४ । प्रणं । बेष्टन स० ४४ २६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर ।

विशेष-सनत १६५४ भाइन गुक्त पक्ष रिवनासरे लिखित भगडावत कस्तुरचद जी चोखचड़ ।

१७३२ प्रतिसं० २० । पत्र सं०१०४ । घा० १२ × ४१ इथा । ने०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०१६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लप्येलवाल मन्दिर उदयपुर । १७३३. बडसीतिक शास्त्र— $\times$ । पत्रसं० १२। ब्रा० ६ $^2_{\gamma} \times 5^2_{\gamma}$  इत्र । भाषा-सस्कृत हिन्दी। बिषय-धमं। र०काल  $\times$ । ले०काल स० १७१४ मगसिर गुरी १। पूर्णः। वेष्ट्रन स० ६४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष-- मुपार्श्वगरिंग के शिष्य तिलक गरिंग ने भडरूदा नगर में प्रतिलिपि की थी।

**१७३४. षडाबस्यक**— × । पत्र संख्या ३० । म्रा० १० × ४ डच्ड । भाषा–प्राहत । विषय–धर्म एवं म्राचार । र०काल — × । लेखन काल — × । पूर्ण । वेष्टन स०२४ । **प्राप्ति स्थान**– दि० जैन पाइवेनाथ मन्दिर रूटरगढ (कोटा) ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है

१७**२४, षडावस्यक बालावबीध टीका** — 🗶 । पत्र मु०२६ । स्ना०१० 🔏 ३४४ । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-भाषार शास्त्र । र०काल 🗶 । ले०काल स०१६१७ भाववा मुदी २ । पूर्ण । बेब्रन स०६८-६७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दीसा ।

विशेष - टब्बाटीका है। अहमदाबाद में प्रतिलिपि की गई थी।

पत्र १—नमो प्रसिहतास्-प्रसिद्धत नइ नमहारु नमस्कार । नमो सिद्धारा-सिद्ध नइ नमस्कार । नमो भ्रायरियास् प्राचार्य नइ नमस्कार । नमो उबङकायास्तं -उपाध्याय नइ नमस्कार । नमो लोए मध्य साहर्गानोक कहिता मनस्य लोक तेह साहि सर्व साधु नइ नमस्कार ।

१७३६, षडावस्यक बालावबोध— । । पत्र म०१६ । प्राठ १२, ४ ८०० । भाषा — प्राकृत-सस्कृत । विषय - प्राचार झारत्र । र०काल - । ले०काल म०१४७६ । पूर्ण । वण्न म०३२३ । प्राप्ति स्थान - दि०जेन मन्दिर बोरमणी कोटा ।

विशेष-मल प्राकृत के नीचे मस्कृत मे टीका है।

**प्रशस्ति**— स बन् १४७६ वर्षे श्राप्त्वन गृदि १३ गृरी ।

१७३७. षडावश्यक बालावबोध-हेमहस गरिए । पत्र म०४४ । प्रा०१०१४४६ इतः । भाषा---हिन्दी (पृत्रपती मिश्रित)। र०काल २ । ने०काल म०१४२१ । पूर्ण। बेठून म०२४० । प्राप्ति स्थान----- दि० जैन मन्दिर दबलाना बुदी ।

विशेष-- रचना का स्रादि अत भाग निस्त प्रकार है--

ग्रादिमाग---

पहिलाउ सकल मगलीक ताउ,

मृत श्री जिनशासनऊ सार ।

इग्यारह अग चऊद पूर्व न उद्धार,

तो देव श्वासनन् श्री पच परमेष्टि महामत्र नजकार ।

# श्रंतिम पुष्पिका ---

इति श्री तपागच्छ नायक सकल मृतिहित पुरदर श्रीमोममृत्दरसूरि श्रीजयबन्द्रसूरि पद-कमल संसेतिता शिष्य पहित हेमाहनर्गाणना श्राद्धवरात्मर्थनया कृतोऽय यडावस्यक वालावबीघ श्राचन्द्राकं नवात् । ग्रंथ सं०३३००। सं०१४२१ वर्षे श्रावण विदि ११ ग्विवासरे मालवमडले उज्जयिन्यां लिखित ।

**१७३८. षडावश्यकविवरस्**— $\times$ । पत्र स०२६। म्रा०१०  $\times$  ४ है इन्द्र। भाषा-सस्कृत विषय-म्राचार। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स०१३६१। **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर म्रजमेर।

१७३६. बोडश कारएा दशलक्षरा जयमाल-रह्मू । पत्र स०३६ । प्रा० ५४७ इञ्च । भाषा-प्रपञ्जा । विषय-धर्म । र०काल ४ । ले०काल म०१८८६ । पूर्ण । वेष्टन स०३५ । प्रास्ति स्थान-रि० जैन मन्दिर प्रायनी कामा ।

१७४०. **योडशकारएा भावना-प० सदामुख कासलीवाल** । पत्रस० ७२ । ग्रा० १२३ ४ ६ इच्च । माषा—राजस्थानी (कृढाडी) (ग०) । रकाल ४ । तेक्कान स०११६४ मादवा मुरी १४ । पूर्ण । वेष्टन स०१२७ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मंदिर लक्कर जयपूर ।

१७४१. प्रति स० २ । पश्च० ११० । ब्रा० ११३  $\times$  ४३ इञ्च । ने०काल  $\times$  । पूर्ग । बेरटन सम्या ४६३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१७४२. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६० । ब्रा० १४ $\frac{1}{2}$  imes म इञ्च । लेक्काल स० १६४४ । पूर्ण । बेपुन सं० ६२ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष – मागीराम शर्मानं दौमामे प्रतिलिपि की थी।

१७४३. प्रति स० ४ । पत्रस० २ मे २१४ । ले० काल स० १८६४ पूर्मा । बेष्टन स० २६८ प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भन्तपुर ।

विशेष—रत्नकर इधावकाचार से उद्धृत है।

१७४४. संदेह समुच्चय-ज्ञानकलश । पत्रस०१६ । प्रा० १२  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा – सन्कन । विषय-वर्म । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३२८ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दवलाना (बूर्यः ।

१७४५. सप्तदशबोल —  $\times$  । पत्र स $\circ$  ४ । प्रा॰  $\circ$   $\times$  ३ इश्व । भाषा –हिन्दी । विषय – धर्म ।  $\circ$  रुकाल  $\times$  । लेक्शन  $\times$  । पूर्ण । बेहन (म $\circ$  ३० । प्राप्तिस्थान — दि $\circ$  जैन मन्दिर देवलान (ब $\circ$ ी)

१७४६. सप्ततिका सूत्र सटीक — ४ । पत्र स०४४। प्रा०४४ है इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पर्म । र०कारा ४ । ले० काल म० १७⊏३ फागुगा सुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन स०३४६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना ब दी ।

विशेष---गुजराती मिश्रित हिन्दी मे गद्य मे टीका है। बुदी मे प्रतिलिपि हुई थी।

१७४७. समिकत बर्शन  $\times$  । पत्रस० ११। मा० १० $\frac{3}{4}$   $\times$  ४ इच । भाषा हिन्दी (गण)। विषयः—पर्म । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर स्वलाना बंदी ।

१७४६. **संबोध पद्मासिका-गौतम स्वामी**। पत्रस०१४। भाषा-प्राकृत। विषय-घमं। २०काल-सावन मुदौ २ | से०काल स०१८६६ फागुन बुदौ ४ | पूर्णः | वेष्टन स०२८६ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पंचायती मदिर भरतपर ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका महित है तथा श्रखंगढ़ मे प्रतिलिपि हुई।

१७४६. संबोध पंचासिका—  $\times$  । पत्रस० १४ । घा०१२  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इच । भाषा-सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १०२६ । प्राणी वेष्टन स० १३६६ । प्राणी वेष्टन स्थान— म० दि० जैन मंदिर सजमेर ।

१७५०. सबोध पंचासिका  $\times$  । पत्रस॰ १३। म्रा० १२  $\times$  ७ इस । भाषा-प्राहुत, संस्कृत । विषय-पर्म । र० काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स॰ १४ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन पनामती मन्दिर म्राल्य ।

१७५१: प्रति सं० २ । पत्रसः० २६ । ले॰काल 🔀 । पूर्णं । वेष्टन सः० ६५ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन प्रवासती मस्टिर खलवर ।

**१७५२. संबोध पंचाशिका-द्यानतराय ।** पत्रस० १२ । प्रा० १  $\times$  ७ इथा । भाषा-द्वित्वी । विषय-पर्म । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ५७६ । प्रास्ति स्थान- दि० जैन सदिर सकर जयपुर ।

विशेष-इस रचना का दूसरा नाम सबीय ग्रक्षर बावनी भी है।

१७५३. संबोध सत्तरी-जयशेखर सूरि । पत्र स०६ । ग्रा०१० $\cdot \times$  ५ रख । भाषा-प्राकृत । विषय—धर्म । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२७२ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन प्रधवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१७४४ सबीध सत्तरी—  $\times$  । पत्रसक्छ । ग्राव्ह २०  $\times$  ४ दे इञ्च । भागा-प्राहुत । विषय-पर्यो रक्काल  $\times$  । कुमें । वेष्ट्रत मक् १६० । प्राप्ति स्थान - दिव बैन महिर विभागी स्थान ।

१७४५, पंबोध सत्तरी प्रकररा- 🕆 । पत्रसः २ । घाः १ ४ ४ इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय —थमं । रःकाल ४ । लेकाल सः १६११ । पूर्णः । वेष्ट्रन मः ४१ । प्राप्ति स्थान — विक जैन मदिर दीवानजी कामा ।

**१७५६. संबोध सत्तरो बालावबोध**= , । पत्र म० = । या० १०  $\sim$   $\mathcal{E}_{p}^{p}$  इल । मापा हिन्दी (गद्य) । विषय —षर्म । २० काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेतृन स० ११० । **प्राप्ति स्थान** िद्द जैन मन्दिर दबनाना (ब्रुदी)

१७५७. सम्यक्तव प्रकाश भाषा-डालूराम । पत्र म० १२६ । भाषा — हिन्दी (पद्य) । विषय - घर्म । र०काल १८७१ चैत मुरी १४ । ले० काल १६३४ । पूर्मा । बेष्ट्रन स० १४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायदी मदिर भरतपुर ।

**१७५८. सम्यवस्य बत्तीसी-कवरपाल ।** पत्र स०६। भाषा—हिन्दी । विषय - धर्म । र०काल × । ले०काल × । पूर्णा । वेष्टन स०१०६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पत्रायती भन्दिर मन्तपुर। १७४६. सम्प्रवस्य सस्त्रवष्टि मेव –  $\times$  । पत्र सं० ६ । आ०६ $\times$ ४ वश्व । भाषा–प्राहत । विषय-पसं। र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१६६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन समित्र हीमान्यके काम ।

१७६०. सामर **धर्मामृत-पं० ग्राशाध<sup>०</sup> ।** पत्र स०१६ । ज्ञा०११ ४ १ है इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-श्रावक धर्म वर्णन । र०काल म०१२६६ । ले० काल स०१४६४ । श्रापाढ बुदी १२ । पूर्ण । वेग्न स०४१७ । **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मदिर प्रवमेर ।

विशेष---रितिवःसानगरे सूर्यमल्ल विजयराज्ये ।

**१७६१. प्रतिसं० २** । पत्र स०३ से १३७ । द्या० १० $\frac{1}{6}$  imes ४  $\frac{3}{6}$  इत्था । ले० काल imes । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि० जैन सन्दिर क्रजमेर ।

१७६२. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६३ । स्रा० १९५४ ४ देख । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेस्टन स० १०११ । प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६३. प्रतिसं० ४। पत्रस० ४६। ग्रा० १२ $\times$ ५% टखा लेक्काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० १०६७ । प्राप्ति स्थान—अट्टाकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष — प्रति सम्बूत टीका सहित है ।

१७६४. प्रतिसं० ४ । पत्र म० ४४ । ले∘काल स० 🔨 । अपूर्ण । बेष्टन स १०⊏६ । प्रास्ति स्थान—अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, धजभेर ।

**१७६५. प्रतिसं०६ ।** पत्रस० =२ । झा० ११ ×५ इञ्च । ले० काल स० १६५४ आपाढ सुदी ३ । पूर्यों । वेटन स० ५१२ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

१७६६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ५८ । आ० ११३४५ इस्त्रा ले० काल स० १६३५ कार्तिक मदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७४४ । प्रास्ति स्थान—मदारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष-मोजमाबाद में मा० हेमा ने प्रतिलिपि की थी।

**१७६७. प्रतिसं० म**ापत्रस० ५३ । प्रा० ११imes५ इ.च. ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५२ । **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

**१७६⊏. प्रतिसं० ६** । पत्रम० ४१ । ले०काल—४ । पूर्ण । बेष्टनस० १⊏ । **प्राप्ति स्थाम**— दि० जैन बडा पत्रायनी मन्दिर डीग ।

**१७६८. प्रतिसं० १०।** पत्रम० ६६-१४२ । ग्रा० १२imes१३ इथा । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टनम० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है। प्रारम्भ के ६५ पत्र नहीं।

१७७०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४३ । आर० १० ×४३ इच्छा। ले०काल स० १६५६ चैत्र सुर्दा ६ । पूर्यो । बेष्टन स० २०/१३ । प्राप्तिस स्थान — दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष - प्रति सस्कत टीका सहित है साह श्री भोटाकेनस्य भांडागारे लिखापित ।

**१७७१. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० १**३० । सा० १२ × ५३ ६ आः । ले०काल स० १८२० चंत्र बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्विर स्रादिनास सूरदी । विशेष महाराज माधवसिंह के जासन मे चरणावता नगरी मे प्रतिविधि की गयी थी प्रति सटीक है। १७७२. प्रतिसं० १३ । पत्रस० २० । ग्रा० १२ × ५ इख । ते०काल स० १५५७ कार्तिक वरी १। पूर्ण । वेध्टन स० ३६। प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर धादिनाथ बृन्दी।

**१७७३. प्रतिसं० १४ ।** पत्रस० ६६ । द्या० ६ $\frac{3}{4} \times ४ दश्य । ले॰काल सं० १५६० बैगाय$ बदी ४ । पूर्ण । बेवन स० ३२६ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायनी मंदिर भरतपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

गवन् १४८० वर्षे बेशाल बुदी १ बुधवासरे श्री भूतसाथे नद्यास्नाथे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे,
श्री कुंदकु दावार्याच्ये म श्री पद्मतिदेव तत्पट्टें म. श्री कुंपकदृदेवा तत्पट्टें म श्री जिनकदृदेवा तत्पट्टें
भट्टारक श्री प्रभावदृदेवा तत् किया मं ० श्री धर्मकदृद्यस्तदास्ताथे खण्डेलवातात्वये मूट् गोधे गा देव तद्भार्या
गौरी तत्पुत्र सा वाला तद्भार्या होती । तत्पुत्रा बत्वार प्रयस सा सरवाण स्पीराज सा हु गर मा. डाल । सा
गरवाण भार्या नरस्वती तत्पुत्र सा. होता, ताल्ह । सा होता भार्या टिपोत तत्पुत्र सा नाष्ट्र । मा. स्पीराज भार्या
लाली । तत्पुत्रा. टला खीवा हीरा, सा हु गर भार्या लाडी एतेषा मध्ये साह डालू नामा इंटणान्य थावकाण्ययन
लिखान्य धर्मकन्द्रपत्राय दत्त ।

**१७७४. प्रतिसं० १६**। पत्र स०३६। मा० १२×४२ । लेक्काल स० १६१६ वैशाख सुदी १४। वेटटन स०१६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सदिर लक्कर, जयपर।

विशेष—महाराजा माववसिंह के शासनकाल में जयपुर में पश्चित चोलचन्द के शिष्य मुखराम ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१७७५. प्रतिसं० १७ । पत्रस० १-७३-१३३ । झा० ११] ४ ५१ इश्व । ले०काल 🔀 । सपूर्ण । बेहुनस० ३७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर पार्वनाय जोगान वृदी ।

**१७७६. प्रति सं० १⊏ ।** पत्र स० १–४० । द्या० ११३<sup>3</sup> ४.४ इल्डा । ले०कान स० १७२४ । स्रपूर्त्ता बेट्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन स्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेच-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

रावत् १७२५ वर्षे माध सुरी = शुक्ते श्री मूलरा-ने सरस्वती गच्छे भ श्री देवेन्द्रकीति तदास्नाय स्नाचार्यश्री कल्यागकीति तत् शिष्य ब्रह्म साध जिप्पोरिंग्र पुस्तकः।

१७७७. प्रति सं० १६ । पत्र म० १३२ । ले० काल म० १४५२ । पूर्ण । वेध्टन स० १४,३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

चिरोय—रावन् १४५२ वर्षे कानिक बृदी ४ शनिवासरे गुभमस्तु घटेरा झानीय सार्घा नीउ भार्या नामधी तस्य पुत्र सार्घ दीमा भार्या रस्तार्धी सृत धनरात्र भार्यो ,तस्य पुत्र सीनापाल एनै- कर्मश्रयार्थे विवासित ।

**१७७६. प्रति सं० २०।** पत्र म०१४४ । घा०१२ 🗴 ५ इ.च । ले० काल स०१२७१ ज्वेष्ठ बुदी ४ । पूर्णे । वेष्टुन म०६१ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन प्रप्रवाल पचायती मन्दिर घलवर ।

१७७६. सागार धर्मामृत भाषा—  $\times$  । पत्र म०२१२ । ग्रा० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इत्त । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय—प्राचार शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६८० भ्राषाङ् बुदी १ । पूर्ण् । वेष्ट्रन स० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भ्रयबाल पथायती मन्दिर भ्रतवर । विशेष--- चदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

१७६०. साधु **ब्राहार लका**स् —  $\times$  । पत्र त०६ । प्रा० ११ × ५ इ.ख । आया-हिन्दी गया । विषय-धावार नास्त्र । रक्काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत त० २६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नारावि व दी ।

**१७८१. साधु समाचारी— × ।** पत्र म०४। भाषा—सस्कृत । विषय—साधु वर्षा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टुन स०६४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मदिर सरतपुर ।

१७६२. सारचतुर्विशतिका—सकलकोत्ति । पत्रतः १५० । मा० १० $\frac{1}{4}$ ४५ हे इत्थ । आषा - संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल  $\times$  । ले० काल । पूर्ण । वेष्टनसं० २५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

१७८३ . प्रतिसं० २ । पत्र स० १०४ । ग्रा० ११३ ४४ है इला । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १ । प्राप्ति स्थान ∼ दि० जैन मन्दिर | नेस्ट्रायी मालपरा (टीका) ।

१७८**४. प्रतिसं० ३**। पत्रस**०१००। घा०११**४५ इच्चा लेक काल म०१८७१। पूर्ण। वेकृतम् २२११। **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मन्दिर क्रीमनस्त स्वामी बुदी।

विशेष - कोटा मे प्रतिलिप हुई थी।

१७५**४. सारचीबीसी- पार्श्वदास निर्मात्या।** पत्रस० ४००। ब्रा० १३८४ ६ ३७ । भाषा हिन्दी । विषय-धर्म । ४०काल म० १६१८ कानिक मृदी २। ले०काल स० १८६८ माघ मृदी ८। पूर्व । बेटुनस० ६। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर छनेहपुर पेकावाटी (सीकर)

विशेष - जयगोविद ताराचन्द की बहित ते बड़ा मन्दिर में चढ़ाया था।

१७६६. प्रति सं**०२** । पत्रसः ४३६ । ब्रा०१२ ४ ७५ दश्वः । ले० काल स०१८४ । पूर्णः । वष्टनसः ४३६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन खण्डेलवाल पत्रायनी मन्दिर ग्रमलवरः ।

१७८७ **सार समुच्चय**—कुलभद्र । पत्रम० १७। घा०१० $\times$ ४६ इ.च.। भाषा-सन्कतः। विषय-धर्मः। ४०कारः  $\times$ । ले० कालः  $\times$ । वेष्टन म०१२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लक्कर, वयपर।

विशेष--पत्र बहुत जीगा है।

१७**६६. सारसमुख्य ।** पत्रतः १६ । आ०११ ८ ५ । स्था साहान्तरङ्ग । विषय-अर्थ । २०काल 🗸 । ले०काल 🔀 । पूर्ण । वेष्ट्रनस०१७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रसितन्दन खासी, वृद्ये ।

**१७८६. सार समुख्य ।** पत्रस० १६ । ब्रा० ११ ८४ इञ्च । <mark>भाषा</mark>-सम्कृत । विषय-धर्म । <sup>7</sup>० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १४६-७० । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मीदर कोटडियो का इंगरपुर ।

१७६०. सार सग्रह— × । पत्रस० २४७ । मा० १२० ४४६ इच्छा । भाषा-प्राकृत । विषय-पर्म । र०काल × । ने० काल × । अपूर्ण । वेष्ट्रनस० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर रीवानकी काम । विशेष-सस्कृत तथा हिन्दी में टीका भी दी हुई है।

१७६१. मुखविलास—जोखराज कासलीवाल । पत्र स०६४। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र०काल १८६४ मंगसिर मुदी १४। ले० काल स०१६३६। पूर्णं। वेष्टन म०४४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

विशेष--प० दौलतराम के पृत्र जोधराज ने कामा में सुखुविलास की रचना की थी।

१७६२, प्रति सं० २ । पत्रस० ३११ । ते०काल १८८४ पूर्णः । वेष्टन स० ४४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रवासती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-पोदकर बद्धारा से जोधराज ने कामा मे लिपि कराई थी।

१७६३. प्रति सं०३ । पत्रस० ३६४ । ले०काल imes । १८५६ । पूर्ण । वेस्टन स० ४४४ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष—जो यामे घलप बुद्धि के जोग ते कही घालर घर्ष मात्रा की भूल होय तौ विशेष कानी धर्म बुद्धि मोकुं धल्प बुद्धि जानि क्षमा करि धर्म जानि या कौ सोध के मुद्ध करि लीज्यो ।।

#### प्रारम्भ--

रामो देव प्ररहन्त की नमी सिद्ध महाराज। श्रुत निम गुर को नमत हो मुख विलास के काज।। येही चउ मगल महा ये चउ उत्तम सार। इन चव को चरगो गहं होह सुमति दातार

#### ग्रन्तिम---

जिन वारगी अनुस्वार सब कथन महा मुखकार । भले पथ ब्रनादि तें मारग पार्व सार ॥ मारग दोय श्रत में कहे मोक्ष ग्रीर सनार। सुख विलान तो मोक्ष है दुख थानक संसार ।। जिन वारगी के ग्रन्थ सूनि उमग्यो हरष ग्रापार । ताते सुख उद्यम कियौ ग्रथन के अनुसार ।। व्याकरणादिक पडयो नहीं, भाषा ह नहीं ज्ञान । जिनमत ग्रन्थन तं कियो, केवल भक्ति जुग्रानि ।। मुल चूक अक्षर अरथ, जो कुछ यामें होय। पडित सोघ मुधारिये, घमं बुद्धि धरि जोग ॥ दौलत सूत कामा वसी, जीघ कामलीवाल । निज सुख कारए। यह कियो, सुख विलास गुरामाल ।। सुल विलास सुलयान है, सुखक।रएा सुखदाय । सुख ग्रर्थ रोयो सदा, शिव सुल पावी जाय ।। कामा नगर सुहावनै, प्रजा सुखी हरवत । नीत सहत तहा राज है, महाराज बलवन्त ॥

जिन मन्दिर तहां चार है सोभा कहिय न जाय।

श्री जिन दर्शन देख तै धानन्द उर न हमाय।

श्री जिन दर्शन देख तै धानन्द उर न हमाय।

जिन वारणी सरवा करें पालडी नहिंदित।

एक सहस्र प्रक घाट सत घसी उपरचार।

सो समत सुम जानियो कुकल पत्र मुखार।।

मगितर निष पाची विषे उत्तरायां हिनहार।

सादिन यह पूरणा किसी धाव मुख को करतान।

सुन विलास इह नाम है सब जीवन मुखका।।

मुनी होंह राजा प्रजा सेवो धमं सदीव।

मृनी होंह राजा प्रजा सेवो धमं सदीव।

## धन्तिम मञ्जल---

देव नमो घरहन सकल सुखदायक नामी।

नमो सिद्ध भगवान भये जिब निज मुख ठामी।।

साथ नमी निर्वाध सकल परिज्ञ के त्यागी।

सकल सुख्य निज थान मोक्ष ताके प्रनुरागी।।

बग्दो सदा जिन धर्म को देय सर्वे मुख सम्पदा।

ये सार धार तिह लोक करो क्षेम मङ्गल सदा।।

मगिर सदी ४ स १८८४ में जोधराज करमलीवाल कामा के ने लिखवायाथा।

१७६४. **सुर्टाष्टतर्राग्णा—टेकचन्द**ा पत्रज्ञ० ६३४ । **झा० १२**१४७३ इञ्च। **माणा—** हिन्दी। विषय-धर्म। २०काल रा० १७३८। लेक्काल रा० १६१० पूर्ण। वेष्ट्रन स०३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी कामा।

**१७६५. प्रति सं०२** । पत्रस० ५६६ । ले०काल स०१६१० । पूर्णः । वेष्टन म०५६७ । प्रा<mark>प्ति स्थान</mark>— उपरोक्त मन्दिर ।

**१७६६. प्रतिसं∘ ३** । पत्रस० २६६ । ले० काल x । प्रपूर्ण । **बेष्ट**नस० ५३⊏ । प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

१७६७. प्रति सं०४ । पत्रस० ३१० । ब्रा० १५४८ इ.च.। लेकाल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लब्बेलवाल पचायती मन्दिर भ्रतवर ।

१७६८. प्रतिसं० १ । पत्र स० २-२०० । ग्रा० १२ $\xi$ ×६ $\xi$  इ.च । से०काल imes । श्रपूर्ण ।  $^{ ilde{a}gn}$  स० ३१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसत्ती कोटा ।

विशेष--२०० से झारे पत्र नहीं है।

१७६६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १४० । ग्रा० ११३ $\times$ ७३ इच । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । बेहन सं० ३/६६ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्यनाथ मंदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष-सवाई माघोपुर मे प्रतिलिपि को गयी थी।

१८०० प्रति सं०७ । पत्र सं०७०७ । आ० १०३ × १३ । लेक्सल स० १६०८ ज्येष्ठ मुदी ७ । पूर्णु । बेष्टुन स० १६ । **प्राप्ति स्थान** दि जैन मन्दिर तेरहपथी मालपूरा (टोक)

**१८०१ प्रति सं०६ ।** पत्र स०३१ । झा०१२×७ । ले०काल स० १०३३ । ब्रपूर्ण । बेष्टन स०४८१ । **प्राप्ति स्थान**— वि०जैन मन्दिर कोटडियो का द्वंगरपूर ।

१८०२. प्रति स० ६ । पत्रस० ४४७ । घा० ११ × ७ इश्व । ले०कान स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर, उदयपुर ।

**१६०३. प्रति सं० १०। पत्रसः ४३**५ । म्रा॰ १०१ × ६ इथा । **से**०काल स॰ १६१२ कार्तिक सदी ६ । पर्यो । बेग्न स॰ २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फ्तेहपुर शेखाबाटी (सीकर) ।

१८०४. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० ३०५ । घा० १४×११ इ.च. । ले०काल स० १८६१ स्रामोज सृदी ५ । पूर्ला । वेष्टुन स० ६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर, तेरहपथी दोसा ।

विशेष--नाउलाल तेरापथी ने पन्नालाल तेरापथी मे प्रतिलिपि करवायी थी।

१८०५. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ३५३ । प्रा० १२ ४७६ इ.च । ले०काल 🔉 । अपूर्णा । बेटन स० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर, करोली ।

१८०६. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १ मे ६३ । ने० काल 🔀 । अपूर्ण । येष्ट्रन स० ६६ । आस्टि स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर हण्डावालो का डीग ,

**१८०७. प्रतिसं० १५ ।** पत्रसं० ४६१ । घा० १३ 🗵 ७ ६०च । लेक्सल म० १६६३ । पूर्वो । बेहन स० १३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बंधेरवाली का घावा, (अगियारा) ।

१६०६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २४७-४७४ । आ० १२३ ४ ७/३व । लेक्काल म० १६२६ । अपूर्ण । बेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान – वि० जैन मन्दिर पत्रायती दूर्ना (टोक) ।

१८०**६. प्रतिसं० १७ ।** पत्र म० २६५ । आग० १४ ४७ इञ्च । ले० काल ४ । अपूर्ण । बेग्टन स० ४२,२३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर पचायती दुनी (टोक) ।

१८९०. प्रतिसं० १८ । पत्रम० ४३० । ग्रा० १३% ५ ६ ड व । ले० काल म० १६०८ गीय बुदी १३ । पूर्मा । बेष्टन स० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटधो का नैसवा ।

विशेष-- बन्देव गुजराती मोठ चतुर्वेदी नैन मध्ये लिखित ।

१८**१२. प्रतिस० १६ ।** पत्रस॰ ३८ । छा० १२ / ५ इ.च.। लेक्सल स० १६४४ । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ३२ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर थी महावीर वृंदी ।

**१८९२. प्रतिसं०२०** । पत्र स०५४४ । घा०१३ < ६ दंव । ने०काल स०१६२५ । पूर्णा। बेष्टन स०१३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बृदी ।

विशेष-लोचनपुर (नैगावा) में लिखा गया था ।

१८९३. प्रतिसं० २१। पत्र स०११। ग्रा०१०% ७ इश्व । ले० काल 📯 । मपूर्ण । बेष्टनसं० ३२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्धनाय चौगान बुदी । १८१४. सूतक वर्णन—म० सोमसेन । पत्र स० १७। ब्रा० १० $\times$ र्थ इ.च । भाषा—
सस्कृत । विषय—प्राचार प्रास्त्र । र०काल  $\times$  । न०काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । प्रास्ति
स्थान—दि० जैन प्रयमल पश्चायती मंदिर स्रलवर ।

**१८१४. सूतक वर्**शन $-\times$ । पत्र स०२। घा०११ $\times$ ५ इन्छ। भाषा-सन्दृत् । विषय- माचार शास्त्र । र०काल  $\times$ । ल० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स०४ $\times$ ७। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१८१६. सूर्य प्रकास—झा० नेमिचन्द्र । पत्र त०१११ । प्रा०१०१ ४४६ द्वा साथा— सन्दन । विषय—झावार शास्त्र । रकास्त्र ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१४६ । प्राप्ति स्थास (१०वेन मन्दिर नेमिनाथ टोडाराबर्सिस (टोक)

१८१७. सोलहकारएा मावना —  $\times$ । पत्र स०१। ग्रा०१० $\times$ ४३ इ.खः। भाषा-हिन्दी। विषय — धर्म। रु०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०२३४। **प्राप्ति स्थान** — म०दि० जैन सिटन प्रजेशः

**१८१८. स्वरूप संबोधन पच्छीसी**—  $\times$  । पत्र स०२ । भाषा—सस्कृत । विषय – धर्म । र०कान  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा वेष्टन म० ६५/२५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाय मन्दिर, उदयपुर ।

**१८१६. स्वाध्याय मक्ति** $-\times$ । पत्रत्व२ । घा० १० $\frac{1}{2}\times$ ४२ ँ इव । भाषा - सस्कृत । विषय—धर्म । २०काल  $\times$  । ने०काल म० १८४४ ग्रगहत बुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रत म० १३५ । **प्रास्ति** स्थान—दि० जेन मस्टिर राजमहत्त टोक ।

- 0 '--

# विषय - अध्यात्म चिंतन एवं योग शास्त्र

**१८२०. ब्रध्यात्मोपनिषद्-हैमचंद्र।** पत्र स०२०। झा०१०  $\times$  ४ दत्रा । माषा—सत्कृत। विषय—प्रध्यातम । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । सपूर्णः। वेष्टुन स०२६२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर, प्रभिनन्दन स्वामी, बुदी।

१८२१. ब्रध्यास्म कल्पद्गम—मुनि सुन्दरसूरि । पत्र स०७ । ब्रा०१० $\frac{3}{4}$  ×  $\frac{3}{4}$  हज । माषा— सःकृत । विषय—प्रध्यात्म । र०काल × । ले०काल × । वेष्ट्रन स०६२२ । प्राप्ति स्थान—दिः र्जन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**१८२२. ग्रध्यारम तर्रगिरगी—ग्राचार्य सोमदेव** । पत्र स० १० । ग्रा० ११३/४१ $_2$  इ व । माषा-सस्कृत । विषय—ग्रध्यारम । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । वेष्ट्रन म ६१ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१८२३. प्रध्यात्म बारह्सडो—बौलतराम कासलीबाल** - पत्र म० २०४ । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-प्रध्यात्म । र०काल स० १७६६ फागुगा मृदी २ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० ६१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपयी मन्दिर बसवा ।

विशेष —पाच हजार पद्यों से मधिक की यह कृति श्रध्यान्म विषय पर एक सुन्दर रचना है। यह श्रमी तक श्रप्रकाणित है।

**१६२४. प्रतिसं०**२ । पत्र स०६३। ले० काल 🖂 । अपूर्णः । बेष्टन स०४६**। प्राप्तिः** स्थान—दि० जैन तेरापथी मन्दिर बसवा ।

१८२४. प्रति सं० ३ । पत्र स० १३२ । ब्रा० १२ (६ टब्ब) ते० काल स० १८६० । पूर्मो । बेष्टन स० ४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर तेण्डपथी दौसा ।

विशेष---हतूलाल जी तेरहपथी ने माबोपुर निवासी ब्राह्मण भोगन से प्रतिनिधि करवाकर दौमा के मन्दिर में विराजमान की थी।

१८२६. प्रति सं०४ । पत्र म० १४६। ग्रा० १२३ / ७ इञ्च । लेक्काल म० १८३१ कात्तिक बुदी ४ । पूर्णे । बेष्टन म० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, दीवान चेतनदान पूरानी डीग ।

**१८२७. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० २१६ । ग्रा० १२ २. ६ इ.ख.। ले० काल स० १८७६ कागुण सुदी ७ । पूर्णा। वेष्टन स० १७−२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष-भवानीराम ने ग्रलवर मे प्रतिलिपि की थी।

**१८२५. प्रति सं०६।** पत्र म०१२६ । ले० काल स०१८०३ धामीज मुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स०४३३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

१६२६. प्रति सं० ७ । पत्र स० २६०। घा० १०% ६ इन्था। ले० काल 🗴 । घपूर्ण। वे० सं० १७२। प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर प्रश्नवाल उदयपुर। **१६३०. प्रति सं०६।** पत्र स०३२। सा०११ $\frac{1}{7}$   $\times$  ६ $\frac{1}{7}$  इला। ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। के० स० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर वैर (क्याना)

विशेष--४०० पद्य है ।

**१८३१. प्रध्यास्म रामायरा** —  $\times$  । पत्र स० ३३६ । ग्रा० १०  $\times$  ६ इ.स. । माधा-संस्कृत । विषय-म्रध्यास्म । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १८४४ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागरी बूदी ।

विशेष--श्रन्तिम पुष्पिका---

इति श्री ग्रध्यात्मरामायस्ये ब्रह्मापुरास्ते उत्तरन्तवे उनामहेश्वरसंवादे उत्तरन्तवे नवम सर्ग । ग्रध्यात्मोत्तरकावे यह सरूपया पर्शिक्षप्ता । उत्तर काड ।

**१८३२. ग्रमुप्रेक्षा सग्रह**—  $\times$  । पत्र स० ७ । ग्रा० ११  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी (प ) । विषय-चित्रन । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ७१० । **प्राप्ति स्थान**—अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रम्बरेर ।

विशेष--- नीन तरह से बारह भावनाथ्रो का वर्णन है।

१८६३, अनुभव प्रकाश-वीपचल्द कासलीवाल । पत्रसं० २५ । आ०१०४६ इन्थ । भाषा-हिन्दी (नद्य) । विषय-प्रध्यातम । र०काल म०१७५१ योष बुदी ५ । ले०काल े । पूर्ण । वेष्ट्रनस०२२-४५ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

१८३४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३६ । मा० १२  $\times$  ५ $\frac{1}{4}$  इन्त । ले०काल स० १८१२ चैन मृदी ६ । पूर्ण । बेष्टनस० २६ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन मदिर दीवानजी चेतनदास पूरानी डीग ।

१८३४. प्रति सo ३ । पत्रसंo ४० । प्राo १२ $^2_4$  imes ७ $^3_4$  इचा । ले॰काल imes । पूर्ण । बेहुत सo ३० । प्राप्ति स्थान—दिo जैन प्रचायती मंदिर कामा ।

१६३६. प्रति सं०४ । पत्रस०४७ । ने०कान 🖂 । पूर्ण । बेष्टनस०४३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्राथनी मन्दिर भरतपुर ।

१८३७. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४६ । आ० ८३ 🗴 ४३ इचा । ले० काल-- । अपूर्ण । वेष्टुनस० १६ । प्राप्ति स्थान-विः जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पूरानी क्षीग ।

१८३८. प्रसदभ्काय नियुत्ती × । पत्रसं० ४ । घा० १० × ४ इखा । भाषा-प्राकृत । विषय-प्रध्यात्म । र०काल × । से०काल → ∵ । पूर्ण । वष्ट्रन स० ४१७ । प्राप्ति स्थान— मट्टारकीय दि० जैन संदिर प्रवर्गर ।

**१८३६. प्रष्ट पाहुड — कुं दकुं दाचार्य ।** पत्र स० २२। प्राण्1 २ ४  $\frac{1}{2}$  इ.स. । मापा-प्राहृत । विषय-प्रध्यारम । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १८१२ । प्राप्त । वेष्टन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर दीवानजी, कामा ।

१८४० प्रति सं० २ । पत्रस० ५६ । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१८४१. झष्टपाहुड माया-जयवन्द छावडा ।** पत्रस०१७० । स्रा०१२ $\frac{3}{7} \times 5$  इंख । भाषा-राजस्थानी (क्रुंडारी) गवा । विषय-झप्यास्म । र०काल स०१८६७ भाषवा सुदी १३ । ले०काल

विशेष--- डीकमचन्द सोनी ने पुत्र दुलीचद के प्रसाद बढाघडा के मंदिर मे चढाया ।

**१८४२. प्रतिसं० २** । पत्र स०१४२ । ब्रा०११ $\times$ ७ $^1_2$ डख । ले०काल स०१८७७ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० स०१४६६ । **प्राप्ति स्थान** — मट्टारकीय दि० जैन मदिर ब्रजमेर ।

१ स ४ ३. प्रति सं० ३ । पत्र स० २७० । प्रा० ११  $\times$  ५ है उन्ना । लेक्सल स० १६१६ प्राणाड वृदी ६ । पूर्ण । बेप्रल स० २३ । प्राप्ति स्थास-किर्वाचन सिंहर प्राप्तिक स्थास-किर्वाचन

बुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स॰ २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ बैन मदिर पार्श्वनाथ बोगान बूंदी । **विशेष** —मध्य पीपसी बौठ बजार दौननराम ने स्पन्ने पुत्र के पठनार्थ अतितिष करबायी थी ।

१६४६ प्रतिसं० ४ । पत्र म० २०६ । घा० १३ ४६ इखा । ने०काल स० १६४० फागुन वदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० ६६/४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर सोगागियो जा करोनी ।

**१८४५. प्रति स\circ १** । पत्र स $\circ$  २६२ । ग्राठ ११ $\times$ ६ इश्व । ते०काल म $\circ$  १८७२ मावन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  २१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्**वाय**ती करौली ।

विशेष – ग्रलवर नगर मे जयकृष्णा ने प्रतिर्लिप की थी।

**१८४६. प्रति सं०६।** पत्र स०१७० । खा०१२१ ४ ७१ इ.च. । ले०काल स०१६२० । पूर्ण । बेष्टन स०१४० । **प्राप्टित स्थान**—दि० जैन मदिर छोटा बयाता ।

विशेष-शावक माधोदाम ने यह ग्रंथ मदिर में भेट किया था।

**१८४७. प्रतिसं०७**। पत्र स० २२६ । प्रा०१२१∑७ इश्व । ले०काल ⇒ । पूर्ण । बेष्टन स०११४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मंदिर पचायती कामा ।

१६४६. प्रति सं०६ । पत्र म० २४५ । ग्रा०११४७ इतः । ले०काल म० १२५० मायन मुदी २ । पूर्णे । वेष्टन स० ७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर जेलावाटी (गीकर) ।

विशेष—दिगम्बर जैन सरस्वती भण्डार मयुग के मार्फत प्रतिलिपि हुई थी।

**१८४६. प्रतिसं०६**। पत्र स०१६१। प्रा०१३ - ७३ इन्छ । लेक्सल स०१६०६ । पूर्ण। बे**ष्टन स०२१। प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मन्दिर पत्रायनी कामा।

१८५०. प्रति सं० १०। पत्र स० २२२। लेक्सल १८७३ ज्येष्ठ पुरी १३।पूर्ण। बेपून म० ३६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पनायती अञ्जपुर।

विशेष — जोधराज के पुत्र उमराविसह ने लिखवायी थी।

१८५१. प्रतिसं० ११ । पत्र स० २११ । ले० काल म० १८७२ माह मुदी ५ । पूर्ण । बेप्रत स० ३२४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन पवासती मन्दिर मरनपुर ।

विशेष -- भरतपुर मे प्रतिनिधि की गई थी।

१८६२ प्रति स०१२ । पत्र स०१६० । ते०काल १८६७ । पूर्ण । बेष्टत स०३६४ । **प्राप्ति** स्थान—दि०र्जन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- भरतपुर में विम्मनराम बजाज ने लिखवायी थी।

१म×देः प्रति स०१देः। पत्र स०११२ । प्रा०१देः}×पः १ दथा । ले०काल स०१६६२ । पूर्णः । बेष्टन स०५०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, व्ययपुर । विशेष — रिषभचन्द बिन्दायक्या ने लश्कर पाटोदी के मन्दिर जयपुर में महाराश सवाई माघोसिह के ज्ञासनकाल में प्रतिलिपि की थी।

**१८५४. प्रति सं० १४** । सत्र स० २८६ । ध्रा०१२ $\times$ ६ $^3_7$  इख । ले० काल स० १८७२ सावत बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ध्रयबाल पंचायती मन्दिर घ्रतथर ।

**१८५५. प्रति सं० १५** । पत्र म० १८६। घ्रा० १३×७<sup>3</sup> इला । ले०काल स १६३८ सावग्ग मुदी ८ । पूर्णे । बेष्टन म० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर घलकर ।

**१८५६. प्रतिसं० १६**। पत्र सस्या १८५। ग्रा० १२×८ इचा ।। लेखन काल म० १६४६। पूर्या। वेस्टन स० १६०-१२। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दरगढ़, कोटा

**१८५७. प्रति सं. १७** । पत्र स० २५४ । द्या० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4}$  इस्त्र । ले०काल स० १८८२ । पूर्ण । बे०स० ३४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मानपुरा (टोक) ।

विशेष-ग्राचार्य श्री मागावय नन्दि के णिष्य ने लिखा था ।

१८६८ प्रतिसं. १८ । पत्र स०१६० । ग्रा० १० ∵६ ३ दश्वाले ० काल ∨ । श्रपूर्णावं स० ११६ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

**१८५६. प्रति सं० १६** । पत्र स०२५१ । आ० ११४७ है इश्व । ले० काल म०१६४५ । पूर्म । वे० स० २३ । **प्राप्ति स्थान** — दि०<mark>जैन मन्दिर</mark> राण्वेनाथ टोडारावसिंह (टोक) ।

१८६०, प्रति सं० २० । पत्रस० २२२ । प्रा० ११ ४ ५३ इ.ख. । नै०काल स० १८८४ (शक स० १७४१) । पूर्ण । बेष्टुन स० ७६ । प्राप्ति स्थानः -- दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैगावा ।

विशेष — जोशी गोपाल ने लोचनपुर (नैगावा) में लिखा है।

**१८६१. प्रतिसं० २१ ।** पत्रस० १७६ । ग्रा० १३ ४ ६ डब्च । ले०काल स० १८२८ कार्तिक सृदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर दूनी (टोक) ।

विशेष-- मदामुख वैद ने ग्रपने पठनार्थ तिस्ती ।

**१८६२. प्रति सं २२** । पत्र म० २०४ । प्रा० १२१ूँ×६ इचा । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

१८६३. प्राप्तम प्रकोधाः पत्र स०३। प्रा०१० x ४ ऽत्यः। भाषा—सस्कृतः। विषय— प्रथ्यात्म । २०काल ≿ालेखन काल स०१६२० कार्तिक सृदी १ । प्रपूर्णः। वै०स०४ । प्राप्ति स्थान— भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजीरः।

विशेष— नैगसागर ने प्रतिलिपि की थी।

१८६४: आरम प्रबोध — कुमार कवि । पत्र स०१४ । झा०१० ४ ४} इ.च.। भाषा— सम्कृतः। विषय — क्रप्यात्म । र०काल् ४ । ले०काल स०१४७२ द्याश्विन बुदी १०। व०म०४३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - वीरदास ने दौवलागा के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

१६६४. प्रति सं० २ । पत्र स० ११ । प्रा० १०३  $\times$  ४३ इञ्च । ले०काल स० १४४७ फागुण  $\pi^{q1}$  ११ ।पूर्ण । वेष्ट्रन स०—६६ । प्राप्ति स्थान—६० जैन मस्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--श्रीपद्या नमरे खण्डेलवाल वंश गगवाल गोत्रे सघई मेठापाल लिखापित ।

१८६६. **प्रात्म संबोध**—रह्यू । पत्र सं० २१। प्राचा—प्रपन्न । विषय—प्रध्यात्म । र०काल ★ । ले० काल स० १६१०। पूर्ण। वेष्टन सं० ४१३। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पनायनी मन्दिर भरतपुर।

**१८६७. प्रति सं०२ ।** पत्र स०६ – २६ । द्या०११ ४४ इ.चा । ले० काल स०१४४३ । घपूर्स । वेष्टन सं०११८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

स॰ १४४३ वर्षे चैत्र मुदी ६ पुष्य नक्षत्रे बुधे घृतिनाम्नियोगे गौगोलीय पत्तने राजाधिराजा श्री\*\*\* राज्य प्रवर्त्तमाने जोतिश्रीलाल तन्द्रपुत्र जोति गोपाल लिखतं पुस्तक लिखिमिति । गुभ भवनु ।

१८६८ , प्रारमानुशासन — मुराभद्राचार्य । पत्र स० १-२०। प्रा०१२३ × ५३ इन्छ । माषा—सह्रत । विषय —प्रायास । १० काल —  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्न स० १४० । प्राप्ति स्वान —दि० जैन मन्दिर प्रवास उदयपुर ।

१८६६. प्रति सं० २ । पत्रस० ३४ । लेक्काल १६१० चंत मुदी १ । पूर्ण । बेहन म० ३ । भ्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रचायनी मन्दिर डीग ।

विशेष-प्रति जीर्स है तथा संस्कृत टीका सहित है।

१८७०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५० । घा० ११३ै×६ इच । ले०काल ∖ावेष्टन म०६०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

१८७१. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४६ । घा० १०१ $\times$  $\times$ १ दश्च । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेहन म० १०४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७२ प्रतिस**०५ ।** पत्रसं०५२ । घा०१०×४६ च । ले०काल × ।पूर्गा।बहुन स० ५५ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१८७३. प्रतिसं०६ । पत्रस० ४८ । आ०११३ ८ ४३ इ.च. । ले•काल 📐 । पूर्ण । वंप्रत स०१४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष ~प्रति के प्रारम्भ में प्राचार्यश्री श्री हैमचन्द्र परम गुरुम्यो तम ऐसा तिखा है। सस्कृत में कठित शक्दों के प्रथंभी दिये हुए है।

१८७४. प्रति सं०७। पत्रत० ११ २६। ग्रा०१२४५ इच। के•काल स०१७८३ मर्गामर सुदी ८। अपूर्ण। वेष्टन स०३२७। प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर दीवानत्री कामा।

विशेष -- मन शराम ने कामा मे प्रतिनिधि की थी।

१८७५. प्रतिसं∘ ६ । पत्रतु० ४७ । घा० १० ४५ इ.स. । ले∘काल स० १६८१ फागुगा बुटी १ । धपूर्ण । बेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

१८७६. ब्रात्मानुसासन टोका —टोकाकार पं० प्रभावनद्व । पत्रस० ८२ । ग्रा० १० ८ ४ रे इंच । मापा—पन्कृत । विषय—मध्यास्म । २०काल ४ । से०काल स० १४८० ग्रायाइ मुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स०२ । प्रास्ति स्थान —भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजनेर । विशेष - हिसार नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१८७७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ८१ । घा० १०३ ४४ इत्था । लेब्झाल सं०१४४८ पीच बुदी ३ । पूर्ण । बेब्रुनस० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष--गोपाचल दुर्ग मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

१८७८. प्रतिसं० ३ । पत्रतः ३३ । प्रा० १०३/४५ इञ्च । लेखन काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१८७६. प्रात्मानुसासन भाषा $\cdots$  । पत्र स० १-५० । प्राः० १२ X १ $\frac{1}{5}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—प्रध्यात्म । र०कास X । ले० काल X । वेष्टन सं० ७२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

१८८०. ग्राहमानुशासन भाषा— × । पत्रसः १६१ । ग्रा० १२ × ५ इच । भाषा—हिन्दी (गर्य) । विषय—ग्रस्थात्म । र०काल × । ले०काल सः० १६४२ फागुन सुदी ६ । पूर्णः। बेष्टनसः० ६७ । प्राप्ति स्थान—विः जैन सौगार्सी मंदिर करौली ।

१८८१. प्रात्मानुमासन भाषा टीका--- ४ । पत्रस० ११०। प्रा० ११३ ४ ६३ इत्था। भाषा---स्पन्नत हिन्दी। विषय अध्यात्म। रण्काल ४ । त्रेण्काल स०१८६० वैशाल मुदी १ । पूर्ण। वेष्टुन म०७०१। प्राप्ति स्थान-- भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर।

विशेष---रामलाल पहाड्या ने हीरालाल के पठनाथं पचेवर मे प्रतिलिपि की थी।

१८६२: प्रात्मानुशासन भाषा — टोडरमल जी। पत्र स०१४०। भाषा —हिन्दी। विषय — प्रध्यारम । र०काल ५ । ने० कान १६३१ पूर्णः । वेष्टन स०४३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-प्राचैगढ मे प्रतिनिधि हुई थी।

१८८३ । प्रतिसं०२ । पत्र स०१४६ । द्या०११ 🗴 ६ दुव्य । ले० काल स०१८२४ । पूर्णा वेष्टनस०२३ । **प्राप्ति स्वान**ः-दि० जैन मन्दिर भादवा (राज) । सम्रामपुर मे प्रतिलिपि की गई थी ।

१८८८ प्रतिस० ३ । पत्र सं०६८ । द्या० १२६ ४ ६३ इञ्च। ले०काल ४ । पूर्ण। वेष्टनस० २६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती सन्दिर कामा।

**१८८५. प्रति सं०४।** पत्र म०१४४। स्ना० १० $^3 \times 4^3_{\rho}$  इन्छ। ले० काल स०१८८७ गावन बुरी १४। पूर्ण। बेप्टन म०५। **प्राध्ति स्थान**ः-वि० जैन तेरहपयी मदिर मानपुर। (टॉक)

विशेष--श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर में जीवग्गराम कासलीवाल ने मालपुरा में प्रतिलिपि की ।

१६ द ६. प्रति सं० ४ । पत्र स० द७ । आ० ११ $\frac{7}{4} \times$  ५ इख । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनस० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर मालपूरा (टोक)

१८८७. प्रति सं० ६ । पत्र स० १३८ । घा० १३ imes ७ $\frac{1}{2}$  इख । ले०काल स० १८५२ चैत्र  $\frac{1}{2}$  सुरी २ । पूर्ण । बेष्टन सं० १२ । प्राप्ति स्थास–दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

१८८६ प्रति सं० ७ । पत्रसं० १२६ । घा० १३ imes ६ इञ्च । से०काल स० १८७५ भादवा  $^{3\hat{c}\hat{c}\hat{c}}$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रयवाल पंचायती मदिर, ग्रलदर ।

**१८८६. प्रतिसं० ८ ।** पत्रस० १६३ । ग्रा० ११ 🔀 ७ इञ्च । ले०काल म० १८७० <sup>ग्रं</sup>ष्ठ बुदी **११** । पूर्मा । बेष्टुनस० ७६ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन यग्रवाल पत्राप्ती मन्दिर यलवर ।

**१८६० प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १६० । ले०काल स० १८२० वैन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पश्चायनी मंदिर भरतपुर ।

विशेष---प० लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१८६१. प्रतिसं० १० । पत्रस० १०६ । ने०काल म० १८६० फागुन बृदी ४ । पुर्ण । बेष्टन सं० १६१ **. प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पश्चायनी मन्दिर, भग्नपुर ।

विशेष -- कुणलिंसह ने प्रतिलिपि करवाई थी तथा ग्रामेर की गई थी।

१८६२. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १४६ । ले०काल म० १८५६ । पूर्णा व्यूप्त म० ४२६ । प्राप्ति स्थास—वि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-स्यावल की गही मे प्रतिलिपि की गई थी।

**१८६३. प्रति सं० १२।** पत्रसः १८७। प्रा० ११,८४३ टखा के०काल म०१६५७ वैज्ञास मुद्दी १ (दुर्गो । बेपून स**० ११७। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवायती मदिर करीली ।

विशेष-- बुधलाल ने प्रतिलिपि की थी।

१८६४. प्रति सं० १३ । पत्रस० ८६ । प्रा० ११] ४ ६) उच । लेकाल - ग० १८३४ सावमा सुदी ८ । पूर्ण । बेहन स० ६३ । प्राप्ति स्थान—१द० जेन मस्टिर बीवान चेननदास पुरानी हीग ।

विशेष-जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

१८६५, प्रति सं० १४ । पत्रस० ६७ । या० ( 🗴 ६ उञ्च । ते०कातः । अपूर्ण । बेष्टुत स० ३१ । प्रास्टि स्थान—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर उन्दरगढ (कोटा) ।

१८६६. प्रति सं० १४ । पत्रस० १८ । ले०काल । धपूर्ण । वेष्ट्रन ४० २३ । प्राप्ति स्थान—पाधवैनाथ दि० जैन मिदर इन्दरगढ (कोटा)

१८६७. प्रति सं• १६। पथस० १३६। प्रा८ १२¦ 🗴 १ इथा। से•काल स० १८६८ तथ सुरी ७। पूर्वा विष्टन सं० १२४/७१। प्राप्ति स्थास— वावर्वताव दि० अँन सदिर इस्टरनद (कोटा)

**१८६८. प्रतिसं० १६क. ।** पत्रसु० ११८ । **या० १**२ ४६ | दश्च । **ने∙का**ल स० ११४८ कार्ति**ड.** सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टुन स० २१ । **प्राप्ति स्था**न- गार्थवताथ दि० ईन मन्दिर, इन्टरगट (कोटा)

**१८६६. प्रतिसं० १७** । पत्रस**०** ४७। ग्रा० १० ८६ इ.च.। वे०काल ( । पूग् । देष्टन म० ७३ । **प्राप्ति स्थान—**वि० जैन प्रकाल मदिर उदयपुर ।

**१६००. प्रतिसं० १८** । पत्रस० ११० । आ० १०, 🗴 ७३ ३ व. । त० कात 💥 । पूर्णा । वेष्ट्रनस० १२० । **प्राप्ति स्थान—दि० वैन** लण्डेलवाल मस्टिर उदयपुर ।

**१६०१ प्रतिसं०१६।** पत्रस०६१ । या० (८६ इञ्च । ले०काल स०१६३७ **चैत्र** मुदी १२। अपूर्ण । बेष्टनस०६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संदिर बोरमली (कोटा) ।

१९०२. प्रति सं० २०। पत्र म०२०३। छा०११ ्४ उश्व । ले० काल म०१८३६ स्रायाड सुदी १४ ।पूर्णे । वेष्टनस०१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती सण्डेलवाल मदिर उदयपुर । विशेष - धलवर मे प्रतिलिप हुई थी।

**१६०३. प्रतिसं० २१ ।** पत्र स० १२५ । ले० काल  $\times$  । प्रदूर्ण । वेष्ट्रनस० १६७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्रचायती खण्डेलवाल मन्दिर प्रलवर ।

**१६०४. प्रतिसं० २२ ।** पत्र स० १७३ । झा० १२ $\frac{1}{2} \times ६ इञ्च । ले०काल स० १६१० कार्तिक सुरी ११ । पूर्ण । बेष्टुनस०३६ ।$ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर मेखावाटी (सीकर)

विशेष — लाला रामदवाल फतेहपुर वासी ने ब्राह्मण हरसुख प्रोहित से मिर्जापुर नगर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

१६०**५. प्रति सं० २३ ।** पत्र स**० ११० । ग्रा० ११**४ = इल्डा । लेक्सल स**०** १८५७ । पूर्स । बष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फंतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

**१६०६. प्रतिसं० २४ ।** पत्रस० १३२ । **ग्रा० १४** × ५ इ.ख । ले० काल स० १८६० मगसिर सुदी ३ । पूर्ण । बेप्रन स० द−२० । **प्राप्ति स्थान — दि० जैन** मदिर बडाबीसपथी दौसा।

विशेष - उदैचन्द जुर्हादिया देविगिशे वासी (दौसा) ने प्रतिलिपि की थी।

**१६०७. प्रतिस्०२५** । पत्रस०७१ । प्रा०१२३ ४ ५३ इच । ले**०काल स०१**८५४ वैशास मुदी१४ । पूर्ण । बेष्टन स०४२-६२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सदिर बडा बीसपयी दौसा ।

१६**० म. प्रतिसं० २**६ । पत्र स० १७४। आ ० ११×४ इन्छ । लेखन काल × । पूर्ण । वेप्टन स० १२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन तरहपूर्धी मन्दिर दौसा ।

१६०६. प्रतिस०२७ । पत्रस० १२६ । क्रा०१२३ ५ ४ इन्छ । ले०काल ( । पूर्ण। वेष्टात्र०१०२ । प्राप्तिस्थानः दि०जैन नेपट्नियो मन्दिर दौसा।

विशेष-ंगावर्था विमनलाल न प्रतिविधि की थी।

१६१०, प्रति स० २६ । पत्रस० ६२ । आ० ११ ४ ७५ इञ्च । ले० काल स० १६६२ चैत मुद्दी ६ । पूर्ण । वेट्न रा० २५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पार्वनाथ टोडाराय(सह (टोक)

१६**११. प्रतिस**० २६ । गत्र म० १०६ । द्वा० १२×५३ डब्ल्ब । ले० काल स० १०६० । ्मो । यष्टन स० ६१-१०५ । द्वारित्**रथान**ा द० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडास्प्यसित्तः (टोक)

विशेष - दमकत स्थीबगम का व्यास फागी का ।

**१६१२. प्रति सरूरा ३०।** पत्र सं०१६२ । आर्थर ८ ६ ६ इत्चा। ले**०काल स०१**८३२ पौष वर्ध ३। पूर्ण । वेपन स०२८-११। **प्राप्ति स्था**ल—वि**० जैन मदिर** नेमिनाथ टोझारार्याम् ह (टोक)

विशेष-हरीमिह टोग्या ने रामपुरा (कोटा) में प्रतिनिधि करवाई थी।

**१६१३. प्रति स० ३१** । पत्रस० ११६ । ब्रा० १२४६ इश्वः । ले०काल स० १६६७ । पूर्णः । <sup>बेष्टन</sup>सं० १७२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

१६१४. प्रति स० ३२ । पत्रस० १७४ । ब्रा० १०३४ ५ $\frac{1}{2}$  इ.ख. । ले०काल स०१=६६ सावर  $\frac{9}{2}$ र । पूर्ण । बेष्टनस० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन नेरहपथी मदिर नैसावा ।

विशेष--लिखित पं० श्री ब्राह्मन भगवानदास जो बाचै स्नै की श्री जिनेन्द्र ।

**१६१४. प्रति सं० ३३।** पत्र स० ११८। ग्रा० १२१४ ६ इ.च.। लेक्नाल सं० १६१४ कार्तिक बुदी ११। पूर्णे। बेष्टुन स०४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर तेरहसंथी नैगावा।

**विशेष**-पुस्तक चपालाल वैद ने की है।

**१८१६. प्रति सं० ३४ ।** पत्र स• ११४ । ब्रा० १२<sup>9</sup>, ४६ इन्छ । ले० काल ४ । धपूर्ण । वेष्टन सं• ७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बृदी ।

विशेष--११४ से आगे पत्र नहीं है।

**१६१७. प्रतिसं० २५ । पत्र स०१**६२—२६२ । द्या० ६४५ इ.च.। ले०काल 🗴 । धपूर्ण । बेष्टुत स० २१७ । **प्राप्तिः स्थान**—वि० जैन मन्दिर नागदी दूदी ।

**१८१८ प्रतिसं० ३६ । पत्रस० १**२६ । झा० १०३ ४६ इच्चा । ले०काल ४ । पूर्णा। वेकनस० ७८–४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सदिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**१६१६. प्रति सं० ३७ । पत्र**स० ११७ । खा० १२४५ देखा । ले० काल स० १८४८ भादबा मुदी ४ । पूर्तो । **बेहुनसं० ४० । प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ख्रादिनाथ व दी ।

विशेष--- नवाई प्रतापसिंह के राज्य में सवाई माधोरूर में प्रतिलिपि हुई।

**१६२०. प्रतिस० ३८ ।** पत्रस० ७८ । आर्थ १२ × १<sup>3</sup> इञ्च । लेक्सल ४ । श्रपूर्ण । बेहनसं• ४१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर स्रादिनाथ बूदी ।

**१६२१. प्रति स० ३६ । पत्रस०** १३१ । घा० १२४ ५१ इच्चा ले० कालास म०१६३५ श्रावस सदी १ । पूर्या । वेष्ट्रनस**० ४ । प्रास्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ वृदी ।

विशेष—सवाई माधोपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**१६२२. । प्रति स०४० ।** पत्र स०१२६ । घा०१०४६ हेडचा ले०काल ४ । प्रपृर्णा। बेध्न म०१७ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मन्दिर घषवाल उदयपुर ।

**१६२३. प्रतिसं० ४१ । पत्र** स० १०४ । झा० १२ <sup>१</sup>८४ <sup>१</sup> दश्च । ले० काल ८ । स्रपूर्ण वेकन स० २१५ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष---१०४ से आगे पत्र नही है।

**१६२४ प्रतिसं०४२ ।** पत्र स०१४ । द्या०१० ४ ड्रै४ ७ ड्रैड था ले० काल x । पूर्ला। वेष्टत स०२१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर क्रीमनदन स्वामी बदी ।

विशेष—ग्रारम्भ के पत्र किनारे पर कुछ कटे हुये है।

**१६२५. प्रति सं०४३ ।** पत्र स० २४६ । या०११४६ इ.खा । ले०काल स०१६१४ । पूर्वा । बेष्टुन स०७ । **प्राप्ति स्थान**िद जैन मन्दिर पाण्येनाथ चौगान व डी ।

विशेच — साहजी श्री दौलतराम जी कामलीवाल ने लिखवाया था।

**१६२६. प्रति स० ४४ । पत्रस० १**-१३० । आ० ११ ४ ५ हेडल । ले० काल  $\times$  । पूर्स । बेहुनस० ६६४ । अपूर्ण । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

१९२८. प्रति सं०४६। पत्रसं०११७। ले०काल × । पूर्या । वेष्टनसं०८६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मन्दिर बसवा।

**१६२६. प्रतिसं० ४७** । पत्रस० १०३ । प्रा० १०३<sup>2</sup> ४४ इला। ले० काल स०१८०४ । पूर्णा। वेकनसं० - प्रा**प्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**१६३०. प्रति सं०४ ६ ।** पत्र स०६३ । घा०१०१४ ७ ई इ.ख. । लेखन काल स०१६०७ । ग्रासोज बदी ३ । पूर्या । बेष्टन स०१३०६ । **प्राप्ति स्थान**— मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

१६३१: ग्रास्मावलोकन—चीपचन्द कासलीवाल । पत्र स०१०६ । प्रा०११×४} इञ्च । भाषा−िल्दी गए । विषय-प्रथमाल । रकाल ४ । ले० काल सं≉१७२१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ०५। प्राणिक स्थान — च्यावती डिं० केन संदेश करने

**१६३२. प्रति सं०२।** पत्र स०१०५। ते० काल स०१६२७ प्राषाढ शुक्ता१। ग्रपूर्ण। वे० स०१४। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर, दीवानजी मरतपुर।

१९**३३. प्रतिस<b>०३** । पत्र स०५६ । प्रा० १२ ४ ६ <sup>3</sup> इश्व । ले०काल ४ । धपूर्ण । बेष्टन स०६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**१६३४. प्रति स० ४** । पत्रसं० ६१ । म्रा० १२३४७ इन्ध । ले**०काल** स० १८६३ ब्रामोज बुदी १३ । पूर्णः । बंधुत स० ८७ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर पचायती कामा ।

विशेष---जोधराज उमरावसिंह कासलीवाल कामा ने प्रतिनिषि कराई थी । सेढमल बोहरा भरतपुर वाले ने प्रचनेरा में प्रतिनिषि की थी । श्लोक स० २२४० ।

**१६२४. पतिसं० ४.।** पत्र म० १०७ । ग्रा० १०३  $\times$  ४५ै इञ्च । ले**०काल** म० १७६६ ग्रामोज मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन म० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मदिर, कामा ।

विशेष-श्री केशरीमिह जी के लिये पुस्तक लिखी गई थी।

**१६३६. ग्रालोचना** 🕆 । पत्र स० ७ । भाषा-हिन्दी सम्कृत । विषय-चितन । र०काल 🗴 । क्षेक्काल 🗡 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

**१६३७. ग्रालोचना**—  $\times$  । पत्रस॰ २ । ग्रा॰ १० $\frac{2}{7} \times \frac{3}{7}$  दख । भाषा-हिन्दी । विषय— चितत । २०कास  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स०—१७४–१२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष--- किये हुए कार्यों का लेखा जोखा है।

**१६३६. ब्रालोचनापाठ**—  $\times$  । पत्रस॰ १३। घा॰ ११ $\times$ ४ $^{1}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चिंतन । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰-१३७६ । प्राप्तिः स्थान — भट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर प्रजनेर ।

१६४०. इन्द्रिय विवरण् $--\times$ । पत्रस $\circ$ ३। प्रा० ११ $\times$ ४ इन्त । भाषा-प्राष्ट्रत । विषय—चिनत । २०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । स्रपूर्ण् । वेट्टन स $\circ$  २१४ ५४१ । प्राप्ति स्थान —िव $\circ$  जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

**१८४१. इष्टोपदेश. -पुज्यपाद ।** पत्रस०६ । प्रा०११ × ५ ६ खा । मापा-सस्कृत । विषय-प्रम्यास्य । ≺०काल ४ । ते० काल ४ । वेष्टन स० ४१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर सम्बन्धाः जयपुर ।

१९४२. कातिकेयानुप्रक्षा—स्वामी कातिकेया। पत्रस०२७ । झा० ६३ × ४३ इञ्चा भाषा-प्राकृत । विषय-प्रध्यात्म । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णा । वेष्टन ग० ११। प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

**१८४३. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ३२ । से०काल 🔀 । पूर्या । येष्टन स०४१ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

**१६४४: प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० २४ । ते∙काल स० १६१७ भादवा मुदी १२ । पूर्ण । वेग्टन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान** —भटारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

१९४**४. प्रतिसं० ४ । पप्रस्त० २८ । आ०** १२४५ इञ्च । लेक्सल म० १६१० । पूर्ण । वेष्टन म० १७=/१७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

विशेष---प्रतिजीगां है।

प्रशस्ति—स० १६१० वर्षे बैशाल बुदी १४ सोमे थी मूलमथे सरम्बत्तीगच्ये बलाल्याना थी कु दकु दाचार्याच्ये सहारक श्री विजयकीति नत्यहें भ्रहारक श्री गुभवन्द्र तर् किरम ब्र० कृष्णा ब्र० लीवा पटनार्थे हुवय गोत्रे बा. रामा मा० रमादे सु० खा० बचार्याण भा० परिमानदे टर पुरन्य, कंट श्रमार्थ निवासित ।

कठित शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं।

**१६४६. प्रतिसं० प्र** । पत्र स० २३ । घा०१२ ी <sub>-</sub> प्र इञ्च । लब्काल युव १६२८ । प्रयः । वेस्टन स० १२८ । **प्राप्तिः स्थान** — दिव जैन प्रदिर सम्रदाल उदयपुर ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है ---

मन ६ १६३८ वर्षे मार्गशिष विदि २ भीमे जयताया-शुक्त्यांन श्री तिनकेषााणे श्री सुनमधे बलात्कारमने श्री कुरकु दात्रार्थारये श्री पद्मकीति, सहनकीति, मुक्तकीति, जानभूगण विजयकीति, जुभकर, देवा मुम्निकीतिदेवा श्री गुणकीति देवास्वद् गुरु खाला ब्रह्म श्री सामल पटनार्थ ।

**१६४७. प्रतिसं० ६।** पत्र ग**०**७६। घा० ६ (४ इ.स. । ने० काल म० १५७२ मादवा मुदी ४। ग्रपूर्ण । बेपून स २६२। **प्राप्ति स्थान**- श्रयवाल दि० जैन मन्दिर उदयवर ।

**१६४ - प्रतिसंo ७** । पत्र म० १६ । ते० काल म० १६१३ । पूर्ण । बेट्टन म०६ । **प्राप्ति स्थान**—र्दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डींग ।

विशेष --सस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

**१६४६. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० ७५ । ग्रा० ५ × ६ इश्व । ले**०काल स०** १८६६ चैन बुदी ४ । पूर्यो । बेष्टन म० १४ । प्रास्तिः **स्थान**— दि० जैन मदिर बैर (बयाना) ।

**१६५०. प्रति स० ६ ।** पत्रस० २१ । आ० १०३ × ४ इञ्च । ले**०काल स०** १८११ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

विशेख - रत्नविमल के शिष्य ग० रामविमल ने प्रतिलिपि की थी।

**१६५१. प्रति सः १० ।** पत्रस०- ′ । ब्रा० १३ ४ ५ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ए । बेष्टुन स०३२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सदिर बोरसली कोटा ।

**१६५२ प्रति स०११** । पत्र स०२४ । झा०१० ×६ इश्वः । ले०काल × । झपूर्णः । वेष्टन स०१२६ । **प्राध्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी वृदी ।

१९५३ मित सं० १२ । पत्र स० ६-५६ । ग्रा० ११३ / ५३ इन्छ । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण। बेष्टन स० ५११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष प्रारभके ६ पत्र नहीं है।

**१६५४. प्रति सं० १३ ।** पत्र म०१३ । ग्रा० च्रेः . प्रदेवच्च । लेवकाल । पूर्णः । वधुन म०५६६ । **प्राप्ति स्थान**— वि०जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१८५५. प्रति स**० १४ । पत्रस० २० । धा० १० ⋋५ उल्ब । ले० काल × । बेष्टन म०६२ । प्रास्ति स्थान दि० जेन मस्दिर, लक्कर, जयपुर ।

विशेष - वही २ कठिन शब्दों के सम्भ्रत में ग्रंथ एवं टिप्पगी दिये गए हैं।

१९५६ प्रति स० १५ । पत्रत०२२ । बा०१०है०४ है इखा । भाषा-प्राकृत । विषय-ब्रायास्म । २०काल - । ते० काल - , । वेष्ट्रन स०६३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन भदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष --- मूर्ति लक्ष्मीचन्द्र ने कर्मचन्द्र के पठनार्थ लिखा था।

१६५७. प्रतिसं० १६। पत्रस० २४। छा० १० $^3$  imes ५ $^3$  दक् । ते० काल-स० १६३६ सार्व क्षोर्व सृष्टी १५ । वेष्ट्रन स० ६४। प्राप्ति-स्थान-- दि० जैन मन्दिर सक्कर, स्रयपुर ।

**१६५६. प्रति स० १७ ।** पत्र म० २० । बा० म<sup>०</sup> २० ४ दश्व । ते० काल ४ । ब्रपूर्ण । वेष्टन म० २०-४६ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन महिर बडाबीसपथी दौमा<sup>ँ</sup>।

१६५६. प्रति सं०१६ । पत्र स०४१ । लेखन काल × । पूर्ण । वेटन २०२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मेदिर डीग ।

१६६०. कार्तिकेयानुप्रकेशा टीका-शुभवन्द्रः। पत्र स०२ स६ । आ०१०१ × ४०० तत्र । भाषा-सस्कृतः। विषय-चितनः। र०काल स०१६००। ले०काल स०१७८६ मात्र सुदी ४। पूर्णा वेष्टन स०१०७६। प्राप्ति स्थान -- महारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेरः।

**१६६१. प्रति स**०२ । पत्र स० २०-१८४ । प्रा०१२imes ५ $rac{1}{2}$  इञ्च । ले०काल े । प्रपूर्ण । बेष्टन म**०** ३०१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर प्रश्निनन्दन स्वामी बुदी ।

**१६६२. प्रति स०३।** पत्र स०३२६। ले० काल स०१७६० कार्तिक मुदी १३। पूर्ण। वैष्टन सं०२६०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पचायती मरलपुर।

विशेष--सुरतनगर मे लिखा गया था।

**१६६३. प्रति सं०४** । पत्र स०२३६ । झा०१२ 🗴 ६ इङच । ले०काल स०१७६० । पूर्णा। बेष्टन सं०३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष--प्रति जीएां है।

**१९६४. प्रतिसं० ५।** पत्रस०२-१४५। ले० काल 🗴 । सपूर्ण । वेष्टन स०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर होता ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

१६६४. प्रतिसं० ६ । पत्र सख्या ४० । झा० १४्रे 📐 ६ट्ठे इच । लेखन काल स० १६२४ पीष सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० १५५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक) ।

विशेष — नेवक प्रवस्ति —
स्वाति श्री सवत १६२४ वर्षे पौव मानं शुक्त पत्ने दगन्या १० गिवो श्री बुधवारे श्री ई तावा
गुमस्याने श्री क्षम जिन वैस्थानये श्री मुत्तव्ये श्री सरस्वती गच्छे, श्री वनात्कारमणे श्री कुन्दकुन्दानायनिवय
महुराक श्री पद्मविद देशस्तरहर्ष्ट भ० श्री देवेन्द्र कोति देशस्तरस्ट्रे श्री विद्यानांद देशस्तरम्ष्ट्रे भ० श्री मिल
भूपगावेसात्तरस्ट्रे भ० श्री त्रक्षमेचन्द्र परमागुक देशास्तरस्ट्रे न० श्री बीरपाट देशस्तरम्ष्ट्रे भृद्राच्न श्री ज्ञान
भूपण गुरवो जयन्त्र तथारस्ट्रे भ० श्री प्रमानक स्वात्र स्वात्रस्तरम् श्री स्वात्रम् श्री मुमित कोतिना निवासिया।
स्वत्रस्तिन श्रीस्तेय टीका । सावार्ष रत्मभूषण जयन्त् । श्री कानिक्यानुर्थेश गरीका ममान्ता ।

१९६६. कानिकेषानुप्रेक्षा माथा— जयचन्द्र छावडा। पत्र म०१०६। घा०१६ ४६ इन्दा । भाषा — राजस्थानी (बूढारी) गढा । विषय — वध्यारम । र०काल स०१८६३ मावन वृदी ३। ले०काल स०१८६४ वैज्ञाल बुदी ३। पूर्णा वेष्टन स०१४७०। प्राप्ति स्थान— भ०१८० जैन मन्दिर प्रकोर ।

विशेष -- ग्रथ रचना के ठीक १ माह बाद लिखी हुई प्रति है।

**१६६७. प्रतिसं० २** । पत्र स० १०६ । ब्रा० ५<sup>९</sup> ४ ६<sup>९</sup> इञ्च । ले० कातः ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दि ब्रुप्रवालो का अलवर ।

**१९६ म. प्रतिसं० ३** । पत्र स० १०६ । ग्रा० १० ृँ ८ ७ इश्वा । लेकाल १८७१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**िद्धि जैन मन्दिर ग्रग्रवाची का ग्रलवर ।

**१६६६. प्रतिसं० ४** । पत्रसं० १३६ । मा० ११३ × ५३ इथा । ले० काल सं० १८६७ ।पूर्णः । वेष्टुनसं० ६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टोक्) ।

विशेष - जीवनराम कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

**१६७०. प्रतिसं० ५**। पत्रस० २३७।। ग्रा० १०×७ इ॰बा ले० काल स० १६५३। पूर्सा। वे**ष्टुनस०** ८८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन- मन्दिर श्री महाबीर बुदी।

**१९७१. प्रति सं०६।** पत्रस०६३। ग्रा०१३४८ इ.च.। ले०काल स०१९६१। पूर्या। वेष्टन स० ८। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन घगवाल मदिर नेगावा। **१९७२. प्रति स० ७ ।** पत्रस० २७ । ग्रा० ११ 🗴 ६ इचा । ले० काल । पूर्णः । वेष्टनसं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

१९७३. प्रति स० ६। पत्र स० १४७। घा० १२×६ इचा। ले०काल स० १६४६ ज्येष्ठ बुदी ४। पूर्वा। बेबन सं० १०४/४। प्राप्ति स्थान—पाइवेनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

४ । पूरा । बहुतस्तरु १०४/४ । प्राप्ति स्थान—पावनाथ दि० जन मान्दर इन्दरसद (कोटा) । १९७४ : प्रति सं० ६ । पत्र स० २३ । घा० ६१ ४६ १ दका । ले० काल सं० १८३७ चैत बुदी १२ । प्रपुरों । बेहुत स० ८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसती कोटा ।

१६७४. प्रति स० १० । पत्रस० १०८ । घा० ११ $\times$ ८ इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनस० १६४ । प्राप्ति स्थान—१० जैन पंचायती मन्दिर खण्डेलवाल घलवर ।

१९७६. प्रति सं० ११। पत्र म० ६१। ने० काल  $\times$ । सपूर्णः। बेष्टन सं० १६५। प्राप्तिः स्थानः—दि० जैन खण्डेलवाल प्रचायती सन्दिर धनवरः।

१९७७. प्रति सं० १२ । पत्रस० ४०१ । ले० काल स०१ ८६० । पूर्णा विष्टनस०१६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्राधनी मन्दिर सरतपर ।

विशेष--भरतपुर मे हेतराम रामलाल ने बलवन्तिसह जी के राज्य मे प्रतिलिपि करवाई थी।

१९७८. प्रतिसं० १३ । पत्रस० ११४ । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनस० ५३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर अरतपुर ।

१९७६. प्रति स० १४। पत्रस० १०८। ले० काल 🗴 । पूर्णः । वेष्ट्रनस० ५३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

**१६५०. प्रति सं० १६** । पत्र स० २३२ । ग्रा० १० imes ६ $rac{1}{2}$  इच्छा । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**ः—दि० जैन मन्दिर छोटा बद्याना ।

**१६८२. त्रतिसं०१६** । पत्र स०११२ । ग्रा०१२४७ इञ्च । लेव्काल स०१६६६ । पूर्स । वेप्टन स०१० । **प्राप्ति स्थान**-—विञ्जैन मेप्टिर पचायती कामा ।

विशेष-प्राकृत में मूल भी दिया हमा है।

१८५२. प्रति सं० १७ । पत्रम० १६२ । से०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

१६६३. प्रति सं० १८ । पश्वस० ४८ । या० १२  $\times$  ६ $^3_2$  इञ्च । ले॰काल स० १८६२ मादों सदी ५ । पूर्ण । बेट्टन सल्या ८४ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन प्रचायती मन्दिर करीली ।

विशेष-- चिम्मनलाल बिलाला ने नेमिनाथ चैत्यालय में इस प्रति को लिखवाई थी।

१६८४. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १०६ । द्वा० १० $\frac{1}{5}$   $\times$  ७ $\frac{1}{5}$  इञ्च । पूर्ण । बेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी बीमा ।

विशेष - १०६ से धारों के पत्र नहीं है।

१९६**५. प्रति सं०२०।** पत्रस०१४०। ग्रा०१२ × ४३ इञ्च। ले० काल स०१८६१ भादवा बुटी २।पूर्ण। वेष्टन स०६३। **प्राप्ति स्वान**—दि० जैन मन्दिर फरोहपुर क्षेक्षावाटी (सीकर)। विशेष—भी चोदरामुने चन्द्रपुरी मे प्रतिलिपि की थी।

**१६८६. प्रतिसं०२१। पत्रस०११**२ । ब्रा०१२ 🔨 ६३ डब्च। ले०काल स०१६१२ । पूर्ण ।वेष्टन स० ३४३-१३५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर ।

**१६८७. गुरातीसीभावता -** × । पत्र स० ४ । आ० ६) ४९ इआ । भाषा— हिन्दी । विषय--चितन । र०काल 🗴 । ले०काल 🔀 । ग्रपुर्गा । वेष्ट्रन म० २६० १६६ । प्रास्तिस्थान-दि० जैन मन्दिर सम्भवनाथ उदयपूर।

श्रन्तिम- उगरात्रीसीमावना त्तगांजे मत्य विचार ।

जेमनमाहि समरसि तं तरम ससार ॥

१६८८. गुरुष विलास—नथमल विलाला । पत्र स० ६१ । भाषा --हिन्दी (पत्र) । विषय ---**अध्यात्म । रचना काल १८२२ अवाढ बुदी १० । ले०काल १८२२ द्वि० ग्रयाश मदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०** २७१ । प्राप्तिस्थान-दि० जैन पवायती मदिर भरतपुर ।

१६८६. चारकवाय सज्भाय-पदासुन्दर । पत्रस० म । प्रा० १० × ४ इ.स । भाषा -हिन्दी । विषय — चितन । र०काल 💢 । ले० काल स० १७६३ गाँप ब्रुदी ३ । पर्मा । बेरटन स० ३० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष-ऋषि रत्न ने उदयपुर में लिखा ।

१६६०. चिद्रविलास-दीपचन्द कासलीवाल । पत्र स० ४४ । प्रा०१०१ ० ५ ३०च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय--- अध्यात्म । र०काल म० १७७६ फागमा बर्दी ४ । ल० काल । प्राम । वेष्टन सं० १०५० । **प्राप्तिस्थान**—भद्रारकीय दि० जैन मस्दिर प्रजमेर ।

१६६१. प्रति स०२। पत्र स०२४। आ०१२४४८ उच्च । लेबबाल स०१८५१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) । विशेष -- महात्मा जयदेव ने जीवनेर में प्रतिनिध की थीं।

१६६२. प्रतिसार ३ । पत्र सर्थ १४ । प्रार्टिक १०० वाल सर्थ १५० ज्याद सदी १३ । पूर्व । वेष्टन स० ३७/७ । **प्राप्तिस्थान** - वि० जैन अप्रवाल गन्दिर उदयपर ।

विशेष-प्रत्येक पत्र में ७ पिक एवं २२-२४ ग्रक्षण है।

१६६३**. प्रतिसंठ ४ ।** पत्र स० ६७ । ऋगः २ × ४] उल्ब । लेक्सल स० १७० । पृथ्ये । वेप्टन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

१६६४. प्रति सं० ४ । पथस० ५१ । या० १३ 🗡 😏 त्व । ने०काल म० १६०६ । पुर्सा । वेग्रनस॰ व । प्राप्ति स्थान-दि० जॅन प्रचायनी मन्दिर कामा ।

**१६६४. प्रतिसं०६ ।** पत्रम०४६ । धा०१०१ ७ उथा। ले०काल । गुरगा वष्टन ग॰ २५ । प्राप्ति स्थान-वि० वैन मन्दिर प्रवासनी बयाता ।

विशेष-- मोहनलाल कासलीवाल भरतपुर वाले न प्रतिलिप की थी । माह सुरी १४ म० १९३२ मे पौतदार चन्नीराम बैनाडा ने बयाना के मदिर में चहाया था।

**१६६६. प्रतिसं०७ ।** पत्रस०६६ । ले०काल २ । पूर्गा । वेष्टन स० ४११ । **प्राप्ति** स्थान-दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

विशेष - जोधराज कासलीवाल ने लिखवाया था।

**१६६७. प्रति सं० म**। पत्रम०६५ । ले॰काल स०१६५४ । पूर्ण । बेष्टनस०४१६ । **प्राप्ति** स्थान – दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपूर ।

विशेष - भुसावर वालो ने भरतपुर मे चढ़ाया था।

**१६६८. प्रतिसं०६।** पत्रसः०१४१। ब्रा०६×४३ इश्वालेककाल स०१८५४ । पूर्णः। वैष्टन स०१११। **प्रास्तिस्थान**—विक्जन मन्दिर बोज्सलीकोटा।

१६९६. प्रति सं. १०। पत्रस० ६६। प्रा० ५ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इखा ले०काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्टन स० ६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयवाल पनायनी मन्दिर ग्रनवर ।

२००**०. प्रतिसं० ११** । पत्रस $\sigma$  ६४ । प्राठ ६ $rac{1}{2} imes rac{1}{2} = rac{1}{2}$  लेक्सल म $\sigma$  १७४१ । पूर्ण । बेष्ट्र म $\sigma$  ६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर प्रचायनी खडेल**वाल ग्र**लवर ।

विशेष टम प्रति मे ज्वताकाल सं० १७४६ तथा लेखनकाल सं० १७५१ दिया है जबकि अस्य प्रतियां में ज्वता काल सं० १७७६ दिया है।

२००१. प्रतिसं० १२ । पत्र स०६६ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वेष्टन स०६४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पनायनी महिर लाईभवाल ग्रन्थर ।

२००२. चेनावस्पी ग्रंथ - रामचरस्प । एव म० ७ । ग्रा० १३ × १ दखा । भाषा — हिन्दी । विषय — गुभाषित एव श्रम्यास्म । २०कार × । ले०काल म० १८३३ । पूर्व । वेष्ट्रत म० १०७ । **प्राप्ति**-स्थान — ६० वेन महिर बोरसभी कोटा ।

## विशेष - यादिभाग---

प्रथम नमी समत्त कू. केर नमी सब साथ । कह एक बेनावणी सवाणी विश्व प्रयास । वेष्ट ब्लाट रण भीग सु इत्या नगा प्रथ्म । वेष्ट नीवन के पार्च कर्म वितावणी प्रथा। रामनरण उपरेण हिन करू व्या निकार । पत्रमा प्रथा विवास ।

चौकी - दिवाना चेत रेभाई, तुल भिर गलक चित्र छाई । जराकी फोज सित भारी, करेतन लट के स्वारी ।।

**ग्रन्तिम** रामचरणा जज राम कूरून करें समक्षाय ।

मृत्व सागर कू छोड़ के मत छीलर दुख जाय ।। सोरठा--- भरीयादक कलि जाय सबद ब्रह्म नाही कले ।

रामचरण रहत माहि चोरामी भट काटने ।। चोरासी की मार भजन विना छुटे नहीं। ताने ही हुणियार एह मीख सत्तगुरू कही ।।१२१॥ इति चेतावाणी ग्रंथ।

लिखित सुनेल मध्ये पर जिनदासेन परोपकारार्थ ।।

२००३: **छह्डाला-टेकचन्द ।** पत्र स० ६ । ग्रा० ८ ४ १ इञ्च । भाषा—हिरी । विषय-चिन्तन । २०काल ४ । ने०काल— ४ । पूर्ण । वेष्टन स० द्रद**ा प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर मादवा (राज.) ।

२००४. छहढाला—दौलतराम परलीवाल । पत्र स०१२ । घा० ६ ४ १ इव । भाषा—हिन्दी । विषय—विन्तन । र०काल स०१६६१ वैज्ञाल सुदी ३ । ने०काल— 🔻 । पूर्ण । वेहनसं०४४२ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

२००**४. प्रतिसं०२** । पत्रस०१४ । द्वा०७३ ४ ४३ इचालेक्काल ४ । पूर्ण। वेस्टन स०१३ । **प्राप्तिः स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेग।

विशेष-- चत मे बारहमासा भी दिया हथा है जो अपूर्ण है।

२००६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १७ । धा० ७ $^2_{
m c}$  imes  $^2_{
m c}$  इंडच्च । ले०काल imes । ध्रपूर्ण । बेस्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर छोटा बयाना ।

२००**८. प्रतिसं० ५ ।** पत्रस० २८ । म्रा० १२ < ६३ ट्रञ्च । ते० काल—स० १६६५ मगसिर सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर, फनेहपुर जेल्पाबाटी (गीकर) ।

विशेष--पं० जगन्नाथ चदेरी वाले ने प्रतिलिपि की थी।

२००**६. प्रति स० ६** । पत्रस० १० । ग्रा० ५ ४ ६<sup>2</sup> इ.च.। ले०काल ४ । पर्गा । बेग्टन स० १२७ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२०**१०. प्रति सं०७ ।** पत्रस० १० । ग्रा० ६/२ ४५ इ.च । ले०काल र । पूर्ण । बेस्टन स० ६७ १२ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मन्दिर भावता (राज०) ।

२०११. प्रति सं० म । पत्र स० १३ । प्रा० ११ ८ ७ इञ्च । ले०काल—स० १८४३ । पूर्गा । बेब्रनसं० ६३ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मदिर श्रीमहावीर वृद्धा ।

२०१२ छहडाला— **बुधजन** । पत्र स०२ । आ० १२×६ इच । भाषा—िहन्दी ग्राया । विषय—िचनन । र०काल स०१८५६ वैज्ञाल सृदी ३ । ले०काल स०१८६० आसोज सृदी १४ । पूर्णा । वेहनसं० ३६/१४२ । **आप्ति स्थान**—िद० जैन मदिर नीमनाथ जी टोडारासनिह ।

विशेष--प॰ उदैराम ने डिग्गी मे प्रतिलिपि की थी। प्रति रचना के एक वर्ष बाद की ही है।

२०**१३. ज्ञानचर्चा** × ।पत्र म०४७ । बार १२ रृे४ ६ टच । भाषा — मंस्कृत । विषय — धम्यास्म । न्वनातः ४ ते केन्द्रतः स० १०४४ पीप मृदी १४ । पूर्णा । वेहन स० १५४४ । **प्रास्ति** स्थास — महासमित्र दिव जैन मनिद स्वजेरे ।

२०१४. **ज्ञान वर्षस्य — वीपचव कासलीवाल** । पत्र सः २८ । घा॰ ११ × ५ इश्व । आषा — हिन्दी । विषय-प्रध्यात्म । २०काल × । ले० काल म० १८६५ कार्तिक मुदी ६ । पूर्णः । वेष्टुन सं० ३१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष---रामपुरा के कोटा मे प्रतिलिपि हुई थी।

२०**१५. प्रतिसं० २ ।** पत्र सं० ३१ । घा० ६imes ६ $^2_{\epsilon}$  ड॰ब । ले० काल imes । घपूर्ण । बेष्टन स॰ ३६ । प्राप्तिः, स्थान — दि० जैन तेरहपंथी मदिर नैगावा ।

विशेष---३१ से भागे के पत्र नहीं है।

२०**१६. ज्ञानसमुद्र—जोधराज गोदीका** । पत्र स॰ ३४ । प्रा॰ १० $\xi^2 \times \xi$  द्वा । भाषा— हिन्दी । विषय —प्रध्यातम । र०काल स० १७२२ चैत्र बुदी ४ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेकुन स० ४१/२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर मादवा (राज०) ।

**२०१७. प्रति सं० २** ३ पत्र स० २६ । घ्रा० १० $\frac{3}{5} \times 4\frac{3}{5}$  इन्छ । ले**०का**ल स० १८६५ घ्राषाळ बुढी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर कामा ।

विशेष —हेमराज ग्रग्रवाल के मुत मोनीराम ने प्रतिलिपि की थी । ऋपाराम कामा वाले ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२०**१८. ज्ञानास्पंत-श्राचार्य गुमचन्द्र ।** पत्रतः १४२ । **माः १०**१४ ४६ इस्त । भाषा--सम्कृत । विषय--योग । २०काल ४ । ने०कान स० १६५० ज्येष्ठ बुरी ७ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४०८ । प्राप्ति स्थान - भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

२०**१६. प्रतिसं०**२ । पत्रस० १४६ । झा० १०४ ५५ इ.च.। ले० काल 🗴 । पूर्ण् । बेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

२०२०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १४१ । ग्रा० ११३ $\times$ ४३ इता । ले० काल स० १४६५ मादवा बृदी २ । पूर्गा । बेष्टन स० १२४६ । प्राप्ति स्थान---मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष---नेत्वक प्रशस्ति विस्तृत है।

२०२१. व्रतिसं० ४ । पत्र स०२०६ । ब्रा०६८, ५ है इन्छ । लेश्काल स०१६१२ पीय मुदी१४ । पूर्ण । बेष्टन स०१०७६ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टापकीय दिल्जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष--प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२०२२. प्रति स० ४. । पत्रस० ७४ । घा० ११ × ४ ५ ड था। ले० काल स० १७७३ कार्तिक बुदी ४ । पूर्णा। बेष्टन स० ६०४ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष -- तक्षकपुर मे प० कर्पू रचन्द्र ने ग्रात्म पठनार्थ लिम्बा था ।

**२०२३. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १२० । घा० १०३ 🗶 ४३ इञ्च । ले० काल स० १७६७ फागुग्ग् वरी १३ । पुर्ण । वेष्ट्रनस० १२०६ । **प्राप्ति स्थान—**भ०**१**दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

**२०२४. प्रतिसं०७ ।** पत्रस० ६२ । घ्रा०११ 🗸 ५ इ.ख । ले० काल 🗴 । पूर्णा । बेहन सं० ११५४ । **प्राप्ति स्थान—** भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--- प्रथ चिपका हम्रा है। गुटका साइज मे है।

२०२६. प्रति सo ६। पत्रसo ७७–१४८ । आo ११ $\times$ ५ हुं इ.स. । नि०काल imes । पूर्ण । सेष्टनसंo १३०। प्राप्ति स्थान—दिo जैन सब्रवाल मन्दिर भरतपुर ।

विशेज-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**२०२७. प्रति स० १०** । पत्रत० २-१४ । ग्रा० १३ 🕆 ४५ इचा। ले० काल 🗴 । पूर्णा। बेष्टुन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन क्रमबाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-केवल योगप्रदीपाधिकार है प्रति प्राचीन है।

**२०२८. प्रतिसं० ११** । पत्रम० १३ । आ० ६  $\frac{1}{2} \lor ४ \frac{5}{4}$  छश्च । ले०काल । स्रपूर्ण । वेष्टन स० ४१-३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन स्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०२६. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ७६ । ग्रा० २ र्े ४५ हिच्छ । ले०काल ः । पूर्णा । बेष्टन म० १६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन ग्रग्रज्ञाल मन्दिर उदयपर ।

**२०३०. प्रति सं० १३** । पत्रम० ३-४३ । आ० १०१ ... दः व । ले०काल । अपूर्यो । वेष्टन त० २१७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०३१. प्रति सं० १४ । पत्रस० ७६ । ब्रा० ६} ४४) इश्च । ले०काल 🐦 । पूर्ता । बेप्टनस० १७२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन ६प्रवाल मस्विर उदयपर ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**२०३२. प्रतिसं० १५** १ पत्र म० १०७ । ग्रा० १०४ १ इश्व । ले०काल म० १७२६ कार्तिक बुद्दी ४ । पूर्ण । बेप्रमुत्त २ ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनस्तुर प्रेमाबाटी (मीकर)

विशेष—रामवन्द्र ने लक्ष्मीटास से जहानाबाद जीसहपुरा से पतिलिप कराई । कार्निक यदी ३६ स० १म७५ से अट्रमल्ल के पुत्र जानीरास ने बडा मन्दिर फनेटपुर में चढाया ।

२०**३३. प्रतिसं० १६** । पत्र स० ११ । छा० १० ४ ४१ डखा । ले०काल ∞ । पूर्मा । वष्टन स**० ५३ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर तरहराधी शीमा ।

विशेष ---केवल योगप्रदीपाधिकार है।

२०३४. प्रतिसं० १७ । पत्रम० ११७ । ग्रा० १२ ४ १) इला । लेक्काल म० १७५२ पूर्णे । बेष्टनस० १५। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०३**५. प्रति स०१६।** पत्र ग०१२७ । या०१२ ६ उचा ले**०काल** 'ा बहुत ग० १७४ । **प्रास्ति स्थान** — दि०ईत मस्टिग्दीयान्छ। कामा ।

२०३६, प्रति स०१६ । पत्र स०११८ । या०११ - ४, उच्च । लेक्कान स०१७०६ भादया मुदी २ पूर्ण । वष्टुन स०७१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर दीवानजी कामा ।

**२०३७. प्रतिसं०२०।** पत्र ग०८७ । ले० काल स०१६८६ क्षेप्र बृदी १२ । पूर्मा। बेष्ट्रन **२०**२४६ । **प्राप्ति स्थान**ंदि० जैन पत्राय ग्री मदिर भण्नपूर ।

विशेष --- सिरोज मेलिया गयाथा।

**२०३८. प्रतिसं० २१।** पत्र म० १२६। ले० काल 💢 । पूर्ण । बेष्टन म० २५६। **प्रान्ति** स्थान—दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर ।

**२०३६. प्रतिसं० २२** । पत्र म०१३३ । ले०काल 🗴 । पूर्गा । बेष्टन स०२**८० । प्राप्ति** स्थान—वि० जैन पत्रायती सन्दिर भरतार । **२०४०. प्रतिसं० २३** । पत्र स० २३ । आ ० १२ ४४ इ.च । ले∘काल स० १५४८ । पूर्या । बेष्टुन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति— भवत् १४४६ वर्षे वैभान मृदी २ गुरुवासरं गोपाचनगर हुगें महाराजाधिराज श्री मानांसहदेव राज्यप्रकांमाने श्री काष्टामधे महुरात्रय पुष्करमाणे महुरक श्री कृशकींनिदेवा तत्यहें भट्टारक श्री कृशकींनिदेवा तत्यहें भट्टारक श्री वशकींनिदेवा तत्यहें मर श्री मत्यकींनिदेवा तत्यहें महाभिश्चात श्रामम विद्यानुवाद-उद्घाटन सम्मीत तत्यिहताचार्थ श्री गुणमब्ददेवा तस्य स्मान्यांचे प्रशंकास्यये यगगात्रे मादिस ज्ञानाम्यंच व व निव्यापित कर्मस्वयानिक्षः।

२०४**१. प्रतिसं० २४।** पत्र स०१६६ । ग्रा०४ ८ ८ इच्छा ले० काल स०१७१४ फागुगामुदी१४ । पूर्मावेक स०१३६ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दि**र बोरमली कोटा।

विशेष—चन्द्रगुरी में महाराजाधिरात थी देशींमह के शासनकाल में श्री सावला पार्श्वताथ चैत्यालय में प्रतिनिधि को गई थी। सिरोजपुर सब्दे पडिंग सदारी लिखित ।

२०४२. प्रतिसं० २५ । पत्रस० १७१ । या० ६ $\frac{1}{2}$  <६ एख । लेक्काल स० १०३३ मङ्गसिर वदा १० । प्रांग । वेशन स० २०४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर प्रजाना (बुदी)

२०४**३. प्रतिसं० २६** । पत्र स० ५८ । आ० २५ ४ ६५ इच्चा । ले०काल स० १७५१ भादवा वृदी २ । पूर्ण । बेहुन स० १६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन महिर देवलाना (ब दी) ।

२०४४. प्रति सं०२७ । पत्र म०६२ । या०११ 🖰 ५ इ.ज. । लेक्कान म०१५४० आसीज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१००-७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनार टोडारायमिह । स्थित - प्राप्ति ।

मनन् १६४० वर्षे प्राणी माने मुन्त पक्षे दणस्य निश्री सीमे । रेह्र श्री बटाइ। मुभस्थानं श्री पाक्तेनाथ कंपानाथ मुन्तपे भारती नाहे श्री कृदकुदानवर्षे अ० श्री नदशीबद्ध देवास्तानहुं भ० श्री बीरचद्ध देवास्तानहुं भ० श्री आनक्षपमा देवास्तानहुं भ० प्रभावट देवास्तानहुं भ० श्री बादिचद्ध देवास्ताम् क्षित्व श्री श्री क्षीतिमानामा विश्वान ।

२०४**५. प्रति स० २८ ।** पत्र म० १४४ । ब्रा० ११) - ५ डःब । लेक्काल - ८ । पूर्मा । बष्टन म १२५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर पत्रावरी दूनी (डॉक) ।

२०**४६. प्रति सं० २६ ।** पत्र म० ११४ : ग्रा० १०५ : ६६ टज्य । लेक्काल स० १८३४ प्रपाद बुदी १ । पूर्ण । बेच्टन म० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैसादा ।

**२०४७. प्रति स० ३०।** पत्र स०३४७ । ब्रा०२ ४४ | दुश्व । ले०वान स०१८१२ मगसिर वृदी ७। पूर्मा । बेष्टन स०३ । **प्रास्ति स्थान**—नरहाशी टि० जैन मदिर नैसावा ।

विशेष---प्रतिटब्बाटीका महिल है।

२०४**६. प्रतिसं० ३१ ।** पत्र म०११६ । आ०१२ ८४ इ.स. । ल०काल ८ । पुग्गा। रष्ट्रत म०५२ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नागर्दी, यूर्दी।

विशेष -- ग्रन्तिम पत्र दूसरी प्रति का है।

२०४६. प्रतिसं० ३२ । पत्र स०१३० । श्रा०१०}४ ५३ इ.ख. । लेश्काल ४ । पूर्ण। बग्टन स०१ । प्राप्तिस स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी **२०५०. प्रतिसं० ३३** । पत्र स० ६६ । ग्रा० १३imes७ इत्था । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १७६ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रिप्तिनन्दन स्वामी, वदी ।

विशेष---४२ वी मधि तक पूर्ण।

**२०११. प्रतिसं० ३४** । पत्रस० ६३ । आ० १२ $\times$ ५ $^{\circ}$  इञ्च । ले॰काल  $\times$  । अपूर्ण । बेहन स० ११५ । **प्राप्ति स्थान**्दि० जैन मन्दिर आदिनाथ बंदी ।

विशेष--- द से आगे के पत्र नहीं हैं।

२०५२. **जानार्ग्य गद्य टीका—श्रुतसागर।** पत्र स० ११। प्रा० ११४४ हे दश्य । भाषा— संस्कृत । विषय—योग। रक्काल × । ले० काल स० १६६१ माघ मृदी १। पूर्णः। वेष्टुन स० १२०७ । **क्षारित स्थान**—म० दि० जैन मदिर ग्रजनेर।

विशेष--जोबनेर में प्रतिलिपि हुई थी।

**२०५३. प्रति सं० २ ।** पत्रस० ११ । ग्रा० ११×४१ इ.स. । ले० काल  $\times$  । प्रप्रकार के प्रकार १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मंदिर इन्दरमह (कोटा)।

२०५४. प्रतिसं० ३ । पत्रस०६ । ग्रा० १३१४४ इक्षा । लेक्सल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोग्सली कोटा ।

**२०५५. ज्ञानास्थंय गद्य टोका-ज्ञानचन्द**। यत्र म० $\times$ । घा० ११ $\frac{1}{2}$ -५ $\frac{1}{2}$  द्वा । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय—योग । र०काल स०१८६० माघ बुदी २ । ने०काल स०१८६० । पूर्ण । बेष्टन स०२३६-६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वगरपुर ।

२०**५६. ज्ञानार्र्णव गद्य टीका**—पत्र म०४ । घा०१० × ५ इला । भाषा-मम्कृत । वि० योग । र**०काल ×** । ले० काल × । वेष्टुत स०४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लम्कर जयपुर ।

विशेष---प्रति सस्कृत टिप्पग महित है।

२०५७. **ज्ञानार्शव भाषा**—टे**कचट ।** पत्र तुरु २६६ । श्रा० ११८७ द्रखा । भाषा-हिन्दी गण्य । विषय-योग । र०काल ४ । ले० काल -- ४ । अपूर्ण । वेष्टनम० ११ । **प्राप्ति स्थान**—र्दि० जैन मदिर श्री महाबीर वृदी ।

विशेष--- २६६ से ग्रागे पत्र नहीं है :

२०५८. ज्ञानार्श्य माखा ->1 पत्रसः २०६ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ४८ दश्व । आधा सम्हत-हिन्दी । विषय-योग । १०काल  $\times$  । ने०काल स०१६३० सादवा मुदी ८ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २२ । प्राधितः स्थान —दि० जैन मन्दिर पाध्वनाथ चौगान वृदी ।

२०४६ ज्ञानार्ग्य साजा-लिध्यितमल गरिंग । एवस० १६४। आ० १०३ ४४३ इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यास । र०काल म० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल स० १७६८ मादास सुदी १३ । पूर्णे । वेहनस० ७६ । प्राप्तिस्त्यान—दि० जैन प्वायती मन्दिर वयाना ।

विशेष-दूसरा नाम लक्ष्मीचद भी है।

**२०६०. प्रतिस० २।** पत्र स० ⊏१। प्रा०१२ ⋌६ इ**न्ध**ाले० काल स० १⊏१६। पूर्या। बेष्टन सं०१७। **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मंदिर भादवा (गज०) २०६१. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० १३६ । मा० १० $\times$ ४३ इ.स. । ले० काल सं० १८२१ आषाढ़ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० द४ । प्राप्ति स्थान—पंचायती दि० जैन संदिर करौली ।

विशेष—प्रतिम-दित श्री ज्ञानाएंवि योगप्रदीपधिकारे गुण दोष विचारे प्रा॰ गुभचंद्र प्रणीता-नुसारेण श्रीमानान्वये वदनिया गोत्रे भैया ताराचंद स्याभ्याच नया पडित लक्ष्मीचद्र विहिता सुखबीघनार्थ शुक्कम्यान वर्णन एकचल्यारिकत प्रकरण।

भ्रम्भवाल वशीय शोभाराम सिगल ने करौली में बुघलाल से प्रतिलिपि कराई।

२०६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । झा० ११३ ४ ६३ इ.स. । ले०काल १७६६ माघ सुदी ५ । पूर्णे । बेष्टन स० ६३ । प्राप्ति स्थान—पंचायती दि० जैन मन्दिर करौली ।

विशेष-- किसनदास सोनी व शिष्य रतनचद ने हीरापुरी में प्रतिलिपि की ।

२०६३. प्रति स० ४ । पत्रसं० १३४ । या० १२३४ ६ इञ्च । ले०काल सं. १८४४ । पूर्ण । बेक्रनस० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर, कामा ।

२०६४ प्रतिसं०६ । पत्र स०१४ । ले० काल स०१७६१ माघ सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ६३ । प्राप्ति रूयान –िद० जैन तेरहणयी मदिर बसवा ।

२०६५. प्रति सं० ७ । पत्रस० ११२ । घा० १३ × ४६ डंच । ले० काल सं० १७८० कागुरा बदी ११ । अपूर्ण । बेहनस० १८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष - १११ वा पत्र नहीं है।

२०६६ प्रतिस**० ⊏।** पत्रस०१४ ⊏। ले०काल १७८२ ग्रवाट मुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनम०३७८ । प्राप्टिःस्थान—दि०जैन पचायतीमन्दिर,भरतपुर ।

**विशेज** - न्वांहरी में लिखी गई।

२०६७ प्रति सं० हे। पत्र स० १११। ले॰ काल स० १७६४ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ३७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन, पश्चायती मदिर अग्तपुर।

२०६६. प्रति सं० १० । एव स० ४६ । वे० काल स० १७६४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ६६० । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन पश्चावती मदिर भरतपुर ।

२०६६ **झानार्ग्य भाषा-जयचन्द छावडा ।** पत्रस॰ २६० । घ्रा० ११×७ इश्व । माषा-हिन्दी (मण्छ) । विषय-योग । र०काल स० १८६६ माथ मुदी ४ । ले०काल स० १८६६ । **पूर्ण** । बेष्टनस० १६१४ । **प्राप्त्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

२०७०. प्रति स० २ । पत्रस० २३४ । ध्रा० ११ $\times$ ७ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२०७१. प्रति सं० ३ । पत्रस० २०२ । प्रा० १४  $\chi$  धूँ इव । ले०काल—सं० १९७१ माघ वृदी २ । पूर्यों । वेष्टनसं० ७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष-परशादीलाल ने सिकन्द्रा (ग्रागरे) मे प्रतिलिपि की ।

२०७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६६ । ग्रा० १३ × ७ द्वे इञ्च । ले०काल स० १६०१ दि सावस्य बुरी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० २।२ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सोगासी करौली । विशेष-- माधीसिंह ने मरतपुर में सेडूराम से प्रतिलिपि करवाई।

२०७३. प्रतिसं० ५। पत्रतः २२६। म्रा० १२ $^2_1 \times$ ६२ै इञ्च । ते०काल म० १८०७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीतो ।

विशेष--- तगर करीली मे श्रावक चिमनलाल विलाला ने नानिगराम ने प्रतिलिप करवाई ।

**२०७४. प्रतिसं०६ । पश्चस**० ३६४ । घा० १३ ४७ ट्रैंडल्डा ने०काल म०१८६८ । प्रगं। वेष्टनस० ३३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२०७५. प्रति सं०७ । पत्रसं०६०। ग्रा०१२हें×८ इञ्च । ते०काल म०१८६७ वैशास बुदी १०। पर्गा वेष्ट्रनस्र०६७ । प्रास्तिस्थान--- दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

२०७६. प्रति सं० ६ । पत्रस० १३४ । ब्रा० १२ $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ $\frac{1}{2}$  इच । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेग्रन सं० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, योटा वयाना ।

२०७७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २१२ । ले० काल ∴ा प्रपूर्ण । वेष्टन स०—१४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर छोटा वयाना ।

२०७८. प्रति सं० १० । पत्रस० २८८ । ले०काल १८७१ । ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स० ३६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२०७६. प्रतिसं० ११ । ण्यस० २०१ । लेश्काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टनस० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानबी भरतपुर ।

२०**८०. प्रति सं० १२ ।** पत्र स०्३५७ । आ० १२ ४६ इच । ले०काल— स० १८८० । पूर्तो । बेपून स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पचायनी मन्दिर अलवर ।

२०६१. प्रतिसं० १३ । पत्रम० २४६ । आ० १२३४७ इश्व । लं∘काल— ६ । पूर्गा । बेष्ट्रनसं० १६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन अग्रवाल प्रवासनी मन्दिर अलवर 1

२०६२ प्रतिसं० १४ । पत्र म० २६० । बा० ११८ ७ इ.च । ते० काल स० १६०० मामोज सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टुनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर चौर्घारयान मालपुरा (टोक) ।

विशेष - प० णिवलाल न मालपुरा में प्रतिलिपि की ।

२०६३. प्रतिसं० १४ । पत्र म० ३११ । आ० १३०, ७) इ.स. । लेल्काल म० १६७० पीघ सुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० ३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाव टोडारायांमह (टोक)

२०**८४. प्रतिसं० १६।** पत्र स० ३९०। प्रा• १०३ ८ ४६ इञ्चाले बाल ८. । पूर्णा। बेष्टन स० १०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर ग्रालवर।

विशेष-प्रति उत्तम है।

**२१८५. प्रतिसं० १७ ।** पत्र स० ४०० । घा० १०३  $\times$  ५२ इन्छ । ले० काल  $\times$  । घ्रपूर्ण । बेप्टन स० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

**२०६६. प्रतिसं०१६ ।** पत्र स०१३२ । झा०१२×६ इश्वर । ले०काल० × । पूर्स । वेष्टुन सं०४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैस्स्या । २०८७. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० २७१ । झा० १३×६ है इख । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी बूँदी ।

विशेष - केवल ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

२०८८. प्रतिसं० २०। पत्र स० ४४०। घा० ११ × ८ इचा । ले० काल स० १८८३ सावरण बुदी ८। पूर्णे । बेष्टन ग० ४१०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---कालुराम साह ने खुशाल के पुत्र सोनपाल मॉवसा से प्रतिलिपि करायी।

२१८६. तस्त्रत्रयप्रकाशिनो टीका— × । पत्र सं०१२ । माषा-सस्कृत । विषय-योग । २०काल × । ले०काल स० १७४२ । पूर्ण । वेष्टन स०१२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रक्रिनस्कर स्वासी, व द ।

विशेष—स॰ १७५२ वर्षे साह णुक्ला त्रयोदसी निधी लिखितमाचार्य कनक कीर्त्ति शिष्य पडिन राय मल्तेन गुरोनि । जानार्णय मे लिया गया है ।

२०६०. द्वादशानुमेक्षा-कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र म० ६ । द्वा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा- प्राकृत । विषय प्रध्यात्म । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेव्वन सं $\bullet$  ६३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

२०११. प्रति स० २ । पत्र म० १२ । या० १० ${}_0^2\times$ ५ इचा । ले०काल स० १८८८ वैशाख बुदी २ । बेप्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जै। मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष - माग्यकचन्द्र ने लिपि की ।

२०६२. **हादणानुप्रेक्षा-गौतम** । पत्र म० १ । घा० १० ४४ $\S$  इख । भाषा—प्राकृत । विषय — प्रशासना १०कारा—  $\vee$  । नि०काल  $\otimes$  । वेष्टन स० ६६ । **प्रास्ति स्थान** —म्रयवाल दि० जैन मन्दिर लक्षर जायपुर ।

२०**६३. ध्यानसार**--- रा पत्र म०१ । द्वा०१ ४६ इ.खा भाषा — सस्कृत । विषय — योग । र०काल — ≿ा ले० काल म०१६०३ । पूर्ण । वेष्टन स०१६ । **प्राप्ति स्थान —** दि० जैन मन्दिर पाल्येनाथ चौगान, दृदी ।

२०६४. निर्जरानुप्रेक्षा —  $\chi$  । पत्र स०१ । आ० ६ $\chi$ ४ $\xi$  इश्व । आषा—िहन्दी । विषय—अध्यास्त । र०काल— $\chi$  । तेर काल— $\chi$  । पूर्ण । वेस्टन स० २०६ । प्रास्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रु.टी) ।

२**०६४. परुचतकार्णमाध्य**  $-- \times$  पत्र म०२६। ग्रा०१०  $\times$  ४ $\stackrel{>}{}$  इञ्च । भाषा — प्राकृत । विषय — चित्रन । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१८८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाष्ट्रंताय, चौगान बुंदी ।

२०६७. परमात्मपुरारा-वीपखन्द कासलीबाल । पत्र सं० ३७ । ग्रा० १×६ इश्व ।

माषा—हिन्दी गद्याः विषय — प्रध्यास्म । र०काल — सं० १७८२ ग्रवाढ सुदी १। ले०काल ४ । पूर्णी। वेष्ठन सं० ६०। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर पंचायती कासा।

विशेष —दीपचंद साधर्मी तेरापणी कासलीवाल ने ग्रामेर मे स० १७८२ मे पूर्ण किया । प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

२०८**८. प्रति सं०२। पत्र** सं०२६। प्रा० ६<sup>2</sup>, ४५<sup>3</sup> इच्च । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४-४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर कोटकियों का इगरपुर ।

विशेष-पामेर में लिखा गया।

२०६६. परमारमप्रकाश—योगोन्द्रवेद । पत्र स०१२ । छा० ११ $\times$  $^3_2$  हज । भाषा— प्रपन्न सं | विषय—प्रध्यारम । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स०६६० । प्राप्तिस्थान— भद्रारकीय दि० जैन मंदिर प्रजमेर ।

**२१००. प्रतिसं०२ । पत्र** सं०१ त। द्या०१ $\times$ ४ $^2_7$  इत्थाने०काल $\times$ । पूर्ण। केव्रतसं०स०१४ । **प्राप्तिस्थान**—वि०जैन मन्दिरदीवानजीकामा।

**२१०१. प्रतिसं०३ ।** पत्र सं०१७४ । द्या० ७३ 🗙 ४ इ.च । ले०काल 🔀 । पूर्णा। बेष्टन स**०** ६**६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दि**र दीवानजी कामा।

**२१०२. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० ११ । घा० ११ $\frac{3}{3} \times 4\frac{5}{3}$  इच । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । के स० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

**२१०३. प्रतिसं० ५!** पत्र सं०२३ । ध्रा०६३ ४ ४} इल्ला । ले० काल म०१६२ ८ ज्येष्ठ सुदी **१ । बेब्रुत सं० ५५ । प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**२१०४. प्रतिसं०६** । पत्र स. २३ । आरा० ६र्डू ४ ४ ३ डचा। ले० काल स०१६२६ प्रयेष्ठ बुदी **१३ । बे० सं०४६ । प्राप्ति स्थान –** दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---रामपुरा मे प्रनिनिपि हुई।

**२१०५. प्रतिसं० ७** । पत्र म० ४ । आ ० १२ <sup>1</sup> ४६ इ.च । ले० काल ८ । प्रदर्गा। बेस्टन सं० ४०**५ । प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

**२१०६. प्रतिसं० म**। पत्र म० २० । सा० ११ × ४३ टश्च । ले ब्लाल 🕜 । पर्यो । बेस्टन म० ६**४ । प्राप्ति, स्थान**—दि० जैन मदिर ग्राभनदन स्वामी, बृदी, ।

**विशेष**—३४३ दोहे है ।

**२१०७. परमात्म प्रकाश टीका —पाण्डवराम**ाग्वन म०१४३। भाषा—सन्कृत। विषय— झच्यारम। र**०काल ×**। ले०काल म०१७५० वैशाग सुदी २।पूर्ण। वस्टन म०२३६। **प्रास्ति स्थान—** दि० जैन प्रवासनी मन्दिर सरतपुर।

**२१०८. प्रतिसं० २** । पत्रसः १७२ । लेक्काल ४ । पूर्णा । बेस्टन सक २४२ । **प्राप्ति स्थान**-दिक जैन पत्रायती मन्दिर मरतपुर ।

२१०६. परमात्मप्रकाश टीका— × । पत्रसः १४४ । याः १० × ८ द्वाः । भाषा— संस्कृतः । विषय—प्रध्यातमः । र०काल × । ले०काल म० १७६४ मगसिर सुदी २ । पूर्णः । वेष्ट्रनसं० १२१७ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैनः मन्दिर प्रजमेरः । २११०. परमारसप्रकाश टोका—बह्मदेव । पत्र सं० १७४ । बा० १२  $\times$  ६ इ.स. । भाषा— प्रपक्ष श सस्कृत एव हिन्दी (गद्य) । विषय—प्रध्यास । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १०६१ द्वि० चैत्र सुदी ४ । पूर्णु । बेष्ट्रन स० ४-१७४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मंदिर वङा बीसपंथी दौसा ।

विशेष—दौलतराम की हिन्दी टीका सहित है। देवगिरी निवासी उदैचन्द लुहाडिया ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

२१११. परसात्मप्रकाश टीका—  $\times$  । पत्रसं॰ १८० । प्रा॰ ६ $^2_{x}$  २ इ.ख । भाषा— सस्कृत । विषय—प्रध्यारम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्ट्रन स॰ १२६२ । प्राप्तिः स्थान—मट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

विशेष -- लेखक प्रणस्ति स्रति प्राचीन है। स्रक्षर मिट गये है।

**२११२, परमात्मप्रकाश टोका-त्र. जीवराज ।** पत्रस० ३४ । प्रा० ११×२ इच । र०काल स० १७६२ । ले०काल स० १७६२ माच मुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४३४ । **प्राप्ति स्थान**—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष—चननराम गोधाने चाटमू मे प्रतितिषि की वी। टीकाकानाम वालावबोध टीकाहै। प्रतितम प्रशस्ति—

> श्रावक कुल मोट मुजस, खण्डेलवाल बखागा। साहबडा साला बडी, भीम जीव कल मागा ।।१।। राजै तम् मृत रेखजी, पुण्यवत सुप्रमारण । ताकों कुल सिगार, मृत जीवराज मुवजारा ॥२॥ पुर नोलाही मे प्रसिद्ध राज सभा को रूप। जीवराज जिन धर्म में, समभ ग्रातमहूप ।।३।। करि ग्रादर वह तिन कन्छो, श्री ध्रमसी उपभाव। परमात्म परकास का, वास्तिक देह बनाय ॥४॥ परमात्म परकास सो सास्त्र ग्रथाह समद्र । मेठा श्रयं गम्भीर भरिए, दलै श्रम्यान दलिइ ॥५॥ सगरु ग्यान ग्रैवक संज पाये कीये प्रतद्य। ग्रर्थ रत्न धरि जतनम् , देखा परग्वी पद्य ॥६॥ मतरैसै बासिट समै. पखयज सगासार । परमात्म परकास की. वास्तिक कन्न्यो विचारि ॥७॥ कीरति सुदर सुभकला, चिरजीव जीवराज। श्री जिन सामन सानधे, सुधर्म सुभित्यसुराज ।।=।। इति श्री योगीन्द्रदेव, विरचिते तीनसौपैतालीस. दोहा पद प्रमारा, परमात्म प्रकास को बालाबोध । सम्पूर्ण सवत् १७६२ वर्षे माह बुदी ५ दसकत बखतराम गोधा चाटम मध्ये निखितं ।।

**२११३. प्रति सं० २** । पत्रस० ११ । ग्रा० ६२ ४ ६३ इख । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्टुन सं० ४५६ । **प्राप्ति स्थान**— भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**२११४. प्रति सं० ३**। पत्र स० ७४ । म्रा० १ $\times$ ६ इन्त्र । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० **१०२ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनायनी मन्दिर दुनी (टोक)

**२११५. प्रति सं०४ ।** पत्र स०४–६६ । ग्रा०१०×४ १ इङ्चा। ले० काल स०१६२६ । **प्रपूर्ण। बेष्टन स०६०। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक)

विशेष-सवाईजयपुर में ग्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिप हुई । जती गुगकीर्ति ने ग्रथ मन्दिर में पंचराया सुरु १६२६ में पुरु देवीचन्द्र ने चताया ।

**२११६. परमात्मप्रकास टोका** —  $\times$  । पत्र स०१२३ । प्रा०१० $\times$ ४३ डश्व । भाषा — प्रपन्नं म-सस्कृत । विषय — प्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१४२० वंशाल सुदी २ । प्रपृणं । वेष्ट्रन सं०२७ । प्राप्ति स्थान – प्रि० जैन सन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—१२२ वा पत्र नहीं है। टीका ८८०० श्लोक प्रमाग्य बताया गया है। गोपाचल में श्री कीर्तिसहदेव के शामन काल में प्रतिलिंगि हुई।

**२११७. परमात्मप्रकाश भाषा—पांडे हेमराज ।** पत्र म०१७४। ब्रा०-ट्रे, ६६खा । **भाषा—हिन्दी। विषय—प्र**म्यासम्। २०काल २ । ले० काल स०१८८६। पूर्णा। वेग्टन म०२४८-१००। **प्राप्तिः, स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटडियोका उत्तरपुर।

**२११**८, **परमात्मप्रकास भाषा** —  $\times$  । पत्रमः १०२ । आ० १६२ ६) द्वात । भाषा — हिन्दी । विषय — श्रव्यान्म । र०काल  $\times$  । स०काल  $\times$  । आपूर्ण । वेष्टुन २० ६/४० । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष--- ग्रन्तिम पत्र नहीं है ।

**२११६ परमात्म प्रकाश भाषा**— ४ । पत्र म० १-१४० । धा० १०५४ ४ है इ**४ ।** भाषा—हिन्दी गद्य । विषय — प्रध्यान्म । र०काल х । लेक्बाल ≿ । ष्रपूर्ण । वेष्ट्रन म ६१ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमङ्ग (टाक)

विशेष-प्रति सस्कृत टीका वहित है ।

२१२०. परमासमझ्कारा भाषा- > । पत्रतः ३८ । धा० ६८४ इञ्च । भाषा-हिन्दी यद्य । विषय-प्रधायम् । ४० काल ४ । ने० काल ४ । प्रपृत्तं । वेष्ट्रत तः ७७ । प्राप्ति स्थान-विक जैन महिन्द पार्थनाय टोडारायांन्द्र (टॉक)

रचियता-वृन्दावनदास लिखा है।

२१२१. परमात्म प्रकाश भाषा—बुधजन । पत्रस ५४। भाषा—हिन्दी । विषय — ब्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०२०। प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रवायनी मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

२१२२. परमात्मप्रकाश वृत्ति —  $\times$  । पत्रसः १६-१७% । म्रा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{2}{3}$  इन्त । भाषा – सस्कृत । विषय — म्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० १२० । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानको कामा ।

विशेष--प्रति प्राचीन है। म्लोक स०४००० है।

**२१२३. परमात्मप्रकाश माषा—बीलतराम कासलीवाल ।** पत्र स० २६४ । आ० १०३४ ६ इच्छ । माषा—हिन्दी । विषय — ग्रध्यात्म । २०काल  $\times$  । ते०काल म० १८६६ पीप बुरी ४ । पूर्ण । बेष्टनम० १२६४ । **प्राप्ति स्थान**—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर श्रवमेर ।

**२१२४. प्रतिसं० २** । पत्रस० १६२ । प्रा० ११ x ४ इन्त्र । ले०काल स० १८८२ मङ्गसिर सुदी ३ । पूर्यों । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन अग्रवाल पवायती मन्दिर भ्रलवर ।

विशेष - ब्रह्मदेव की संस्कृत टीका का हिन्दी गद्य मे अनुवाद है।

**२१२४. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १४४ । ग्रा० १२<sup>9</sup>१४ ७२ इ.ख. । ले०काल सं० १६०४ फागुरा सुदी ७ । पूर्या । बेप्टन स० ४ । प्रास्टिर **स्थान**--दि० जैन मन्दिर पत्रायती बयाना ।

२१२६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०१४६ । घा०१२४७ ॄै दखा ले० काल त०१६३४ । पूर्ण। बेष्टुत स०१२४ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर छोटा (बयाना)।

**२१२७. प्रतिसं० प्र**ापव स० २०२। आर्ण ११३ ×पर्युडच्या ले० काल स० १६२७ पीव मुद्री १ । पूर्यु। बेष्टुन स० २०,६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रवासती अलवर ।

**२१२६. प्रति सं० ६ ।** पत्र म० १७६ । ले० काल म० १६४६ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स**०** ७६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन प्रवायनी मंदिर प्रलबर ।

२१२६. प्रति सं० ७ । पत्रस्० १६१ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times \mathbb{X} \frac{1}{2}$  इन्त । लेक्काल स० १८८६ मगसिर नुदी १४ । पूग्ग । वेप्टन स० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैरङ्गधी मानपुरा (टोक)

विशेष--मालपुरा में श्री चन्द्रप्रम चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई ।

**२१३०. प्रति सं० म**ा पत्रस० ११⊏ । ग्रा० १२ ४ म् े इखा । ले**०काल स०** १८८२ मनसिर मुदी ११ । पूर्गा । यटन स० ११ । **प्राप्ति स्थान** —िवि० जैन तेरहपथी मन्दिर दीसा ।

विशेष-निम्मनलाल ने दौसा में प्रतिलिपि की ।

**२१३१. प्रति मं० ६**। पत्र स०२८७। द्या०१२१ ⊠ दश्वा। ले०काल ⊠ापूर्गा। वेष्टन ग०१३२ प्राप्टित **स्थान**---दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बृदी।

**२१३२. प्रतिसं० १०** । पत्र स० ६१-१२७ । ग्रा० ११× = इक्ष । ले० काल × । श्रपूर्ण । बेष्टुन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान**---सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

**२१३२. प्रतिसं० ११।** पत्र स०१६४ । झा० ११३ × द इश्वाने० काल स०१८६४ । पूर्ण। बेक्टन सं०१४१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक

विशेष-प्रोहित रामगोपाल ने राजमहल मे प्रतिलिपि की ।

**२१३४. प्रति सं० १२ ।** पत्रसं० ४०७ । ते०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टनस० २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-अक्षर काफी मोटे हैं।

**२१३५. प्रतिसं० १३ ।** पत्र सं० १६० । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेच्टन स० २६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मंदिर भरतपुर ।

**२१३६. परमात्मस्वरूप** —  $\times$  । पत्र स०२। प्रा०१० $\times$ ४ इत्र । भाषा — सस्कृत । विषय — सध्यास्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन स०३४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--२४ पद्य है।

२१३७. **पाहड दोहा—योगजन्द्र पुनि ।** पत्र स०६ । सा०६<sup>3</sup>ू ४४ <sup>3</sup> इच्या । माया— स्पन्न स । विषय—स्पन्नामा । रुकाल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१०६ । प्रास्ति स्थान— विक्र जैन मन्दिर बजा जोगप्यी दोसा ।

**२१३८. प्रतिकमरा**— × । पत्र स०४। ग्रा० १२४ इखा भाषा—प्राकृत । विषय— चिन्तन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४५१/२००। **प्राप्ति स्थान**—मभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपर ।

**२१३६. प्रतिकमरा**  $\times$  । पत्र स॰ १६ । भाषा —प्राकृत । विषय —िचन्तन । र॰काल  $\times$  । केलकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४५/४१५ **प्राप्ति स्थान** —सभवनाथ दि॰ जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१४०. प्रतिकमस्म — > । पत्रसः २३ । ग्रा० ११ × ५ इख । भाषा — संस्कृत-प्राहत । विषय — चित्ततः । र०काल > । ले० काल स०१८६१ । पूर्ण । वेष्ट्रास०१७० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

**विशेष**—संस्कृत टीका सहित है ।

२**१४१. प्रतिक्रमरा**—  $\times$  । पत्रस० १३ । ब्रा० १० $\times$ ६ १७ । भाषा—हिन्दी (गवः)। विषय — बर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूगां । वेष्टन स० २७ । प्राप्ति स्थान —याख्वेनाथ दि० जैन सन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

**विशेष** —प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

२१४२. (बृहर्ह्) प्रतिकमरण — × । जनस०८०। प्रा०११>५ दश्यः। माया—सम्कृतः। विषय—चित्रतः। रक्तालः ४। तेक्कालः ४। पूर्यः। बेष्टतमं०११४२। प्राप्ति स्थान-मट्टारकांग्र दि० केत्र मिटर प्रजनेरः।

२१४३. (वृह्यु) प्रतिक्रमरा --  $\times$  । पत्रसः १७ । घा० १०  $\times$  ४ : इत्था भाषा -- प्राहत । विषय -- वितन । २०काल  $\times$  । तं०काल म० १५७१ । पूर्णा । वेष्टन स० ६२१ । प्राप्ति स्थान -- महारकीय दि० जैन मदिर धजमेर ।

२१४४. (बृह्द्) प्रतिकम्पार् $-\times$ । पत्रस्व १ से २०। प्रा०१० $\xi$ ×५ रखः। माषा— प्राकृत-सस्कृत। विषय—चित्रत। र०काल ×। ले०काल स०१ प्रदर्श। पूर्णः। बेष्ट्रन स०१७६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसती कोटा।

विशेष--हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२१४५. (बृह् $\xi$ ) प्रतिकसरा। पत्र स०४–२०। द्या०१२ $\times$ ५ इच । साया — प्राकृत । विषय — विग्तन । र०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$  । त्रपृप्पं । वेष्टत स०१७१–४१७। प्राप्ति स्थान — संभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

२१४६. प्रतिकमसा पाठ $-\times$ । पत्र स॰ =। प्राः =  $\times$  ६ $^2$  इत्व । माषा-प्राङ्ग्त-हिन्दी। विषयः—चितन। २०कालः  $\times$ । ते० काल। पूर्णे। वेष्टन सं०१४०-२७७ प्रास्ति स्वानः—दि० जैन मनिवर नेमिनायः देशाराणितः (रोकः)

२१४७. प्रतिकसारा—गौतसस्वासी। पत्रस०१८०। सा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ १६व। साग— प्राक्तः । विषय—सर्थे। र०कास्  $\times$ । ले०काल स०१४६६ चैत सुदी १४। पूर्ण। वेष्टनसं०११ प्राप्तिस्थान-दिः जैन परित्र शैवानजी काम।

विशेष-प्रति प्रमाचन्द्रदेव इत संस्कृत टीका सहित है।

२१४ द. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १६। घा० १० $\times$ ४ है इत्था। ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं० ४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष - प्रति पृष्ठ १० पक्ति एव प्रति पक्ति ३६ मक्षर हैं।

२१४**६. प्रतिसं० ३।** पत्रस० ६६। प्रा० ११×४-३इख । ले० काल स० १७२६। पूर्ण । वेष्टुनसं० २१७/४१४ । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उटवपुर ।

विशेष --श्री प्रमाचन्द्र कृत संस्कृत टीका सहित है। प्रति जीएँ है। अन्तिम परिपका निम्न प्रकार है।

इति श्री गौतम स्वामी विरचित वहतु प्रतिक्रमरा टीका श्रीमतु प्रमाचन्द्रदेवेन कृतेय ।

मनत् १७२६ कार्निक वदि ३ मुभे श्री उदयपुरे श्री सभवनाव वैत्यालये राजा श्रीराजीनह विजय-राज्ये श्री मूलसथे सरम्बती गण्डं, बसातकार गर्छ। कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक पदानदिदेवा तत्यट्टे भट्टारक सकलकीति तत्यट्टे मट्टारक सुवनकीति"""थी कत्याराकीति क्रिय्य विभुवनचन्द्र पठनायं विषिकृत ।

२१५०. प्रतिकमरण् $-\times$ । पप्रस०३१। प्रा०१० $\times$ ६ इथा । माधा-प्राकृत । विषय-चितन । १०कान  $\times$ । ते० कान  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स०१६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेषाबाटी (सीकर)।

विशेष-१७ वा पत्र नहीं है।

२१४१. प्रतिकमस्य — imes 1 पत्रत० १७ । आ० १० imes 2 ६ च । भाषा — प्राकृत । विषय — वित्तन । रुकाल imes 1 तेकाल स० imes 1 प्रपूर्ण । वेष्टन स० १४१ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर विताल (बन्ती)

२१५२. प्रतिकमस्य टीका—प्रमाचन्द्र । पत्रस० २७ । भाषा—सस्कृत । विषय—धारम चितन । र०काल $\times$  । लेकाल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० । २७ । ४१६ । **प्रास्ति स्थान** —संगवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२१४३. प्रतिकमस्य सूत्र $-\times$ । पत्र सं०७। झा० १० $\times$  ४ इत्त्र । भाषा—प्राकृत । विषय—चितन। १०काल  $\times$ । लेकाल सा० १७०३। पूर्णः । वेष्टन सं० १४३। **प्राप्तिः स्थान** — मट्टाप्कीय दिव जैन मदिर प्रवानेर।

२१४४. प्रतिकमरण सूत्र— $\times$ । पत्रसं०२। मा०१०  $\times$  ४५ इचा। माषा— प्राकृत। विषय—विजन। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं०४६४। प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन सन्दिर प्रत्योर।

**२१४५. प्रतिकम्एा सूत्र**— $\times$  । पत्र स०३। ग्रा० १० $^2_2$   $\times$  ५ इन्छ । प्रापा—प्राहत । विषय— चिंतन । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्णा । बेष्टन स०४६७ । प्राप्ति स्थान—प्रदृगकीय दि० जैन मिटर ग्रायमेर ।

विशेष - गुजराती टब्बा टीका सहित है।

**२१५६. प्रतिकमरण सुत्र**— $\times$ । पत्र स० २०। घ्रा० १०  $\times$  ६ $^{\circ}$  इखा भाषा— प्राकृत । विषय— ग्राम्भक्तिन । र०काल  $\times$ । ने० काल  $\times$ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० २७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दक्लाना व दी ।

**२१५७. प्रवचनसार — कुदकुंदाचार्य**। पत्र ग०६२। भाषा—प्राकृत । विषय-प्रध्यान्य। र०काल × । ले०क.ल × । पूर्यो। वेष्टन स०३१६। **प्राप्ति स्थान** वि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर।

**२१४८. प्रवचनसार टीका—पं० प्रभावन्द ।** पत्र म० ४०। ग्रा० १२ ४ ६ इस्र । भाषा— सस्कृत । विषय —प्रध्यारम् । ४०काल् ४ । ले० काल म० १६०४ मगसिर गृदी ११ । पूर्णं । वेष्ट्रन स० ५६ । **प्राप्तः स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक) ।

प्रशस्ति—भी सबत् १६०४ वर्षे मगमिर मुगी ११ रबो। प्रचेह श्री बालमीरगुर गुभरवामं श्री मुनियुवत जिन बैरवानये श्री मुल मधे थी सरस्वतीगच्छे श्री वचानकारगणे थी कुरक् दावायित्यये भट्टारक स्वी प्रथमिद देवास्तरपट्टी सी देवनद्वीति देवास्तरपट्टी भ० श्री नामान्तर से सामान्तर से साम

विद्यानदीस्वर देव मिल्ल भूपरणसद्गुरु ।

लक्ष्मीचद च वीरेन्द् बढे श्री ज्ञान भूषण ।। १ ।।

**२१४६. प्रवचनसार टोका**—- $\times$  । पत्र स० ११७ । या० ११ . १ | उत्र । शाया—प्राकृत सस्कृत । विषय – प्रध्यास्म । र०काल— । । लेक्काल स० १४६४ कार्तिक युरी १३ । पूर्ण । बेस्टन स० १६२४ । प्राप्ति स्थान—भटारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**२१६०. प्रवचनसार टीका**—४। पत्रस० १२७। ग्रा० ६<sup>२</sup>. १८ उत्त । भाषा—सस्ति । विषय—प्राध्यास्म । र०काल ४ । ने०काल स० १७४४ मर्गामर मुदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ४१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेरहपथी मालपुरा (टोक)।

**२६६१. प्रवचनसार भाषा**—> । पत्रस० १४६। ग्रा० १२ × ४१ दञ्च । भाषा— हिन्दी (गर्च) । विषय—घन्याम । २०काल ४ । ले०काल स० १८५७ वैनास मुदी ११ । पूर्ण । वेहनसं० ६४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मस्त्रि तेन्द्रपत्री दोना ।

विशेष--तेरापथी चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

२१६२. प्रवचनसार भोषा— ४ । पत्रस० १४६ । प्रा० १२४६ इ.च.। भाषा—हिन्दी (गद्य)।विषय—प्रव्यात्म । र०काल ४ । ले० काल स० १०१७ प्रासोज मुदी ३ । पूर्ण । वेट्टन सं० ६०/ ४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)। विशेष-श्री विमलेशजी ने हु गरसी से प्रतिलिपि करवायी।

**२१६३. प्रवचनसार भाषा**— $\times$  । पत्रस० २०१ । आ० १२ $\times$ १ $_{c}^{1}$  इन्त । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय प्रध्यास्म । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७४३ । पूर्ण । वेष्ट्न सं० $^{\vee}$  । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

२१६४. प्रवचनसार भाषा—: $\times$  । पत्रस० १७२ मा० १ $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इच्न । भाषा—सरहत । विषय—सम्बारम । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टुन सं० १२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दक्लाना वृंदी ।

२१६५. प्रवचनसार भाषा बचनिका—हेमराज । पत्रस०१७७। घा०११ × ६ स्व । भाषा—हिन्दी (गण) । विषय —ग्रज्यास्म । र०काल म० १७०६ माघ मुदी ५ । ले० काल स०१८६५ । वेष्टनस०११७३ । प्राप्ति स्थान—भ०४० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२१६६. प्रतिसं० २ । पत्रस० २२० । धा० १२ × ५ है इ.च । लेब्बाल स० १८६६ ब्रायाड बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनस० २६ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन सन्दिर ब्रजमेर ।

**२१६७. प्रतिसं०३ ।** पत्र स०२६३ । प्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ७ $\frac{1}{6}$ ऽख । ले० काल स०१६४१ श्रगहन खुरी २ । पूर्ण । बेष्टनस०२६ ६३ । प्राप्ति स्थान— गलायती दि० जैन सन्दिर ग्रनखर ।

२१६ म. प्रतिसं० ४ । पत्र म० ३४४ । ले० काल 🕥 । पूर्ण । बेष्टन स० २७/६३ । प्राप्ति स्थान—पनायना दि० जैन मन्दिर ग्रलबर ।

२१६€. प्रतिसं० ४ । पत्र म० १७० । ग्रा०१२ × ५१ इच्छा लेक काल म० १८४० माघ सुदी १३ । अपूरा । वेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—चेरद्रपत्री दिक्कीन मन्दिर नैगावा ।

विशेष - बीच बीच में कुछ पत्र नहीं है। गगाविष्ण ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

२१७०. प्रतिस् ०६। पत्र ग०२८२। बा०१२५६ इश्वा । ले०काल १७८५ पूर्मा । बेप्टन स॰ ५४-३५ । प्राप्ति स्थान —ाद० जैन मस्टिर कोटडियो का इन्तरपुर ।

विशेष--गमदास ने प्रतिविधि को थी।

**२१७१. प्रतिसं० ७ ।** पत्र स० १६७ ।क्रा०१४ × ४२ँ टच । ले०काल र । **प्रपूर्ण । वेष्ट**न स० १३० । **प्राप्तिस्थान** ∼ दि० जैन मंदिर राजमहल टोक ।

**२१७२. पतिसंट ६ ।** पत्र सर्ट २३० । झार्ट १२ ४५ देखा । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सर्ट २५६ । **प्राप्ति स्थान** - दिरु जैन मन्दिर बड़ा बीम पथी दोसा ।

विशेष—पत्र १६० तक प्राचीन प्रति है तथा ग्रांग के पत्र नवीन लिखवा कर ग्रंथ पूरा किया गया है।

२१७३. प्रतिसं० ६ । पत्र सस्या १४४ । आ० ११ × ७ इचा । लेखन काल सं० १८३८ । पूर्या । बेघन स० २१२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन अग्रवाल मदिर डदयपुर ।

२१७४. प्रतिसं० १०। पत्रस० १००। भ्रा० १२३ ४६ इञ्च।। ले० काल सं० १७८८। पूर्ण। बेष्टन स० ११८/१७। **प्राप्ति स्थान**—सप्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर। **२१७५. प्रतिसं० ११। पत्रसं० ३०१। घा० ११** × ४ है इचा। ले०काल सं० १८५६। पूर्णे। बेष्टनसं० १०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—स०१८५६ भादवा कृष्ण १ रविवार उदयपुर मध्येमार जीवणदास खडेलवाल के पठनार्थ लिख्यो ।

**२१७६. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० १**६५ । ग्रा० १२ 🗙 ५ इचा । ले०काल 📐 । पूर्ण । वेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर महावीर स्वामी बृंदी ।

**२१७७. प्रति सं० १३ ।** पत्रसं० २०६ । सं०काल स० १७२४ । पूर्णं । वेष्टनस० ३१७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**२१७८. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० १६६ । ले०काल स० १७२४ । पूर्णं । वेष्टनस० ३१६ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपूर ।

विशेष — हेमराज ने ग्रंथ कामागढ मे पूर्ण किया। साह ग्रमरचन्द बाकलीवाल ने ग्रंथ निखाकर भरतपुर के मन्दिर मे चढ़ायाथा।

**२१७६. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० १४६ । ब्रा० १३imes६ डच । लेक्काल imes । ब्रपूर्ण । वेष्टन सं० २० । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर दीवान चेलनदास पुरानी डींग ।

२१८०. प्रति सं०१६ । पत्रसं०२४१ । प्रा०१० ४ ८ है इख । लेक्सल ४ । प्रपूर्ण । तेकृत सं०६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पूरानी डीग ।

**२१८१. प्रति सं० १७ ।** पत्र स० २४४ । ब्रा० ११३ ४ ४३ इ.ख । ने० काल स० १८७२ फायुन सुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करोली ।

विशेष-करौली मे प्रतिलिपि हुई।

**२१६२. प्रतिसं०१६ ।** पत्र सं०२१३ । घा०१२ 🗴 ५ इक्षा । ले० काल स०१७६५ । पूर्णाबेष्टन स०६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

**२१८२. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स० १४६ । श्रा० ११ 🗴 ४.ॄ इञ्च । ले० काल स० १७१६ चैत्र सुदी १३ ।पूर्ण । बेष्टन स० २४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—कामावती नगर मे प्रतिलिपि हुई।

**२१ च ४. प्रति सं०२०।** पत्रस० १७०। ले०काल म०१७४६ घासोत्र सुदी ७ । पूर्ण<mark>ं। बेष्टुत स०२४४ । प्राप्ति स्थान-</mark>दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**२१८४. प्रतिसं०२१** । पत्रस० १६४ । ले० काल म०१७४२ ज्वेस्ठ बुडी १३ । पूर्ण। बेहुत स०२४४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

**२१८६. प्रति स० २२** । पत्रस० २७१ । लेक्सल — स० १७८२ ज्येष्ठ बुदी १४ । पूर्ण । वेकन स० २४६ **। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

रिक्ष**ः प्रति सं० २३ । पत्रस०** २२६ । ब्रा० १२ × ४५ इञ्च । से०काल स० १७४४ ब्रासोज सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २३२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानवी कामा ।

रिक्षमः प्रतिसंग्रेषः । पत्र स०२०६ । घा०१२ 🗴 ५६ इ.च. । लेक्कान स०१७४४ । पूर्णः । बेष्टन स०१२० । प्राप्ति स्थान---दि० जेन मन्दिर दीवानजी कामा । **२१८६. प्रति सं०२५ ।** पत्र स०७० । ग्रा०१२×६ इंच । ले०काल × । प्रपूर्ण। बेष्टत सं०६७। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२१६०. प्रतिसं० २६ । पत्रस० २२६ । आ०११ $\times$ ७ $\frac{1}{2}$  इंच । ते०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रत स० ५८ । प्राप्ति स्थान—६० जैन पचायती मदिर कामा ।

२**१६१. प्रतिसं०२७ ।** पत्र सं०२१० । घा० १२६ै×७ढ्ढै इंच । ले० काल स०१६२६ फायुराबुदी १३ । पूर्ण । बेहुन स०५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पंचायतीकामा ।

२१६२, प्रवचनसार माया – हेमराज । पत्रस०६१ । झा०११  $\times$  ४ है इच्च । माया – हिन्दी (पदा) । विषय प्रध्यास्म । र०काल म०१७२४ झायाइ सुदी २ । ले० काल स०१८८५ मादवा बदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०१६१ । प्रांति स्थान – दि० जैन मन्दिर बढ़ा बीस पथी दौसा ।

विशेष-प्रतिनिधि दौनतराम निरमैचद ने की थी। इसको बाद मे काट दिया गया है।

२१६३. प्रति सं०२ । पत्र स०२२९ । ले० काल ४ । पूर्ग । वेष्ट्रन सं०६५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

२१**६४. प्रति सं०३**। पश्रस०४१। ले॰काल ×। पूर्ण। बेष्टन स०१२६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर आदिनाथ वृदी।

**विशेष**—-प्रथ जीएं एव पानी से भीगा हुया है।

२१६४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २११ । प्रा० ११ $\frac{1}{7}$ ४ ७ $\frac{1}{7}$  इन्थ । से०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—स० पचाय दि० जैन मंदिर बयाना ।

२१६६. प्रवचनसार वृक्ति-स्रमृतचद्र सूरि । पत्रस०२-६६। बा० ११ $\frac{1}{6}$   $\times$  ४ $\frac{3}{6}$  इच । साया-सम्ब्रुत । विषय-प्रध्यान्य । २० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेस्टन स० ५४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्राभानन्दन स्वामी, व दी ।

विशेष - प्रथम पत्र नही है।

२१६७ प्रति स० २ । पत्रस० ७१ । ले०काल १८०३ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर बडा पचायती डींग ।

**२१८८. प्रवचनसार बुल्ति**  $\times$  1 पत्रस० १८३ । ग्रा० १२  $\times$  ५ इ.ख. । भाषा—सम्ब्रत । विषय—प्रध्यान्म । र०काल  $\times$  1 ले०काल स० १४६० । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० २४० । प्राप्ति स्थान—म्यवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष---प्रथम पत्र नही हैं।

२१६६. प्रवचनसारोद्धार $--\times$ । पत्र स० १४६ । ग्रा० १० $\times$ ४ ६ख । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-भण्यात्म । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १६६६ । पूर्णः । वेष्ट्रन सं० ३२४ । प्राप्ति स्थान—र्दि० जैन मदिर दवलाना बुदी ।

विशेष-इति श्री प्रवचन सारोद्धार सूत्र।

२२००. प्रायश्चित पाठ—प्रकलंकवेब । पत्रस० ५-२७ । प्रा० १०  $\times$  ४५ इटच । मापा-सस्कृत । विषय-वितत । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेकृत स० २६६।१५७ प्रास्ति स्थान—संगवनाथ दि० जैन मंदिर स्वयपुर ।

**२२०१. प्रायम्बित विधि—पत्रसः ५**। भाषा—संस्कृत । विषय-वितत । २०काल  $\times$  ।  $\mathbf{q}$ एं। वेष्टुन स॰ २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पश्चायती मदिर भन्नपुर ।

२२०२. प्रायम्बित समुब्बय—निर्मुरः। पत्र स०१२ । ग्रा०१२ ४४डवः । माषा-संस्कृतः। विषय—चिततः। र०कालः ४ । ने०कालः स०१६६० पूर्णः। वेष्टृतं म०२७०/२४६ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर समवनाथ उदयपुरः।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबत् १६८० वर्षे पीष वित रवो श्री मूलसपे सरम्बती गण्डे बलाकार गमे भट्टारक श्री वादिभूषण तत्पट्टे भट्टारक रामकीति विजयराज्ये ब्रह्मगण्यमस्लाय झाट्टार सम् ग्रीयज्य शास्त्र राम विनासीक नत्परामा अनेक जीएनीतन मामाश्रीद्वरएपीराना जिन विश्व प्रतित्वत्यक्षेत्र धर्म कर्म कर्म मेला किनाना। कोट नगरे हुबडझानील वृत्त्वश्चालो संपर्यति श्री नवस्मागण्याता भावां नत्नात्रो हित्तय भाक्त कर्म रामाग्यते त्रांभावता स्व विनादास भाव स्व भोहला दे संव काह्मानजी मन सन् कर्षू रवे सन् मानगी मान भनापवरे वि आव मन

२२०३. प्रति स० २ । पत्र म० १-१०८ । प्रा० ११९ - १४५ ड्या । ने० कान 🗴 । वेष्ट्रन स० ७५७ प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, अगपुः।

२२०४. बारह भावना —  $\times$  । पत्र स०४ । धा० ६ $\S^+$ , ४.३०व । भाषा —हिन्दी (गर्य) । विषय — वितन । २०काल  $\times$  । छै० काल  $\times$  । धपूर्ण । बष्टन म०३३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मिन्दर दबलाना (बुदी) ।

२२०**५. ब्रह्माज्योतिस्वरूप - श्री धराचार्य।** पत्र म०४। प्रा० १०्रैं २ ४ इन्छ । भाषा— सस्कृत । विषय - ग्राच्यारम । र०काल × । ले०कान २ । वेग्टन स०्२२६४। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

२२०६, सबदीपक भाषा—जोधराज गोदीका—पत्रस० २१४। स्रा० १० $\frac{1}{2}$  ं ७ $\frac{1}{2}$  ठव । साथा—हिस्दी (गडा)। विषय—याँग शान्त्र। र०काल  $\times$  । लेककाल—स० १६४४ फागुगा मृदी =। पूर्णे। बेहनस० ६१। प्राप्तिस्**यान**—पाण्यंनाथ दि० जैन मदिर इन्टरगढ (कोटा)।

२२०७. अब वैराग्यशतक $-\times$ । पत्रस० ४ । ब्रा०१० $\times$ ६ डब्ब । आया-प्राकृत। विषय—िवतन । र०काल  $\times$ । ले०काल $-\times$ । पृर्ण । बेष्टन स०२७६-१४२ । प्राप्ति स्थान—िर० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वारपुर ।

२२०८. सथबद्गीता $-\times$ । पत्रम०६८। माग्य-सस्कृत। विषय-प्रव्यात्म। रचना कासimes। लेकाल $-\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टन स०३०। प्राप्ति स्थान-यनायती दि० जैन सन्दिर स्थानार्मो का बीग।

२२०६. भावदीपिका— पत्रस० १७७ । मापा-हिन्दी । विषय-ग्रय्यारम । र०काल 🗙 । लेक्सल— 🗙 । ग्रपुर्स । वेष्टन स० १६ । प्रास्ति स्थान-पत्रायती दि० जैन मन्दिर हण्डावालो का डीय ।

२२१०. मोक्षपाहुड— कुंबकुंदाचार्य। पत्रस० ३८ । बा० १०४६ इंच । माषा-प्राकृत । विषय— प्रत्यासमा रण्काल ४ । लेककाल स० १८१२ । पूर्ण । वेष्ट्रत ४० २४१-६५ । प्राप्तिः स्थान— वि० जैन मन्दिर कोट्टियो का खंगरपर ।

२२११. **योगशास्त्र—हेमचन्द्र** । प्रयस् ४१ । ग्रा०१०४४ हे इच । भाषा-सस्कृत । विषय-योग र०काल ५ । लेक्सल-स०१४५७ । पूर्ण । वेष्टन स०४६४ । **प्राप्ति स्यान-**भद्रास्त्रीय दि० जैन सन्दिर ग्रजंगर ।

सवत् १४६७ वर्ष भ्रापाढ नुदी ११ रची । भ्रागमगच्छे श्री उदय सूरिग्यो नम प्रवर्त्तनी लडाघइ श्री गरिंग शप्याणी जयशोगींग तथ्यापित पठनार्थ प्रक्षेत्रिकीबादधी ।

२२**१२. प्रति सं० २** । पत्रमं० ७-१४ । त्रा० १०४४ई दश्व । ले०काल — 🗴 । पूर्ण । वेष्टत म०२१५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मस्टिर दशलान (वृदी) ।

विशेष — इससे द्वादण प्रकाण वर्णन है। यहा द्वादण प्रकाण में पचम प्रकाण है। अतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति गरमहित श्री कुमारपाल भूगाल बिराजिने गृष्ट्यपिते ख्राचार्य श्री हेमचन्द विराविते अध्यासमीय-निपन्नामि मञ्जान पर्वर्षे श्री योगलास्त्रे ह्वादण प्रकाण समाप्तः ।

२२**१३. प्रतिसं० ३** । पत्रम० १८ । ब्रा० १०१ ४४१ इला । लेव्काल म० १५४४ बैगाल मुदी २ । पूर्ण । पर्रुग गंव २०७ । **प्राप्ति स्थान** — दिव जैन मन्दिर दवलाना (ब्रदी) ।

विशेष - सबन् १४.४५ वर्षे वैशास सुदी २ शुक्ते । श्रीमति मडन दुर्ग तसरे । महोपाध्याय श्री प्राणन मडन । शिष्येग लिलायिता मा० शिवदाम । सप्रविषि सहजन्दे कुने ।

२२१४ प्रतिसं० ४। पत्र स० १०। ब्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  द्व । लेक्काल —  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ७००। प्राध्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रवसर ।

२२१**४. योगसार—योगोग्द्रवेव** । पतस्य ७ । आ० १२४४ देव । आया-यगश्रय । विषय—क्रयान्म । रक्काल × । तेक्काल—स ०१६३१ चैत मुदी १ ।पूर्णे । वेष्ठन संय ५२ । **प्राप्ति** स्थान—मद्रारकीय दिव्जीन मन्दिर क्रयांन्स ।

विशेष—िर्मात चैत्र सुदी १ स वत १-३१ का लिखिन ग्राचार्य श्री राजकीति पटि। सवाई रोमसा भेंसलागा मध्ये।

**२२१६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १७ । घ्रा०११ ४ ४ ¦ इञ्च । ले०काल० स० १६६३ माह बुदी १४ । पूर्स । बेष्टुन स० १४३ । **प्राप्त्त्स्यान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा।

विशेष--- निल्वायतं श्री १०८ ग्राचार्य कृष्णदास वाचन हेतदे निवित सेवग श्राज्ञकारी सुलतान ऋषि कर्णपुरी स्थान ।

२२**१७. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ११ । ले० काल स० १७४५ ग्रासोज मृदी ४ । पूर्ण । वे**हन** सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष--कामा मे प्रतिलिपि हुई।

२२१८. प्रतिसं**० ४ ।** पत्र सं० ३० । ब्रा० ११ 🗙 ५ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टुन सं० ४२१/२२६ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन स मबनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

भ्रतिम पूष्पिका निम्न प्रकार है---

इति श्री योगसार भाषा टब्बा ग्रथं सहित सम्पूर्ण ।

**२२१६. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० २४ । प्रा० १० ${}_{1}^{2}$ ×५ ${}_{2}^{2}$  इन्थ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १६२-७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

२२२०. प्रति सं० ६ । पत्रस० १ । लेक्सल 🗴 । पूर्ण । बेहनसं० ४७८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

२२२१. योगसार वचनिका $\longrightarrow \times 1$  पत्र स०१७ । आ० ११ $\times$ ५ इच । भाषा $\longrightarrow$ हिन्दी (गद्य) । विषय — योग । र०काल  $\times$  । ते०काल स०१ $\sim$ ३२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२६२-११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटवियो का इंगरपुर ।

विशेष-नौगांवा नगर मे भ्रादिनाथ चैत्यालय मे ब्रह्म कर्गोफल जी ने प्रतिलिपि की ।

२२२२. **योगेन्दु सार —बुधजन** । पत्रस**्धा आधा**—हिन्दी । विषय—योग । र०काल १८६५ । के**०काल** × । पूर्णः । वेष्टनस०२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भग्नपुर ।

२२२३. बळानामि चकवित की वैराग्यभावना— $\times$ । पत्र तं० ०। ग्रा० १०  $\times$ ४ हे इ च । माया—हिन्दी । विषय—चितन । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८४। प्रास्ति स्थान—वि० जैन संदिर लक्कर जयपूर ।

विशेष---निम्न रचनाएँ और है--वैराग्य मण्भाय छात्र पवार (हिन्दी) विनती देवाबहा ।

२२२४. **बेरान्य बर्णमाला** × । पत्रस० १०। ब्रा० <sup>1</sup>८ ८ ६ इंडच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—वैरान्य चिंतन । र०काल ४ । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रयाल पंचायती मन्दिर सलवर ।

विशेष--- भन्त मे सज्जन चित्त बल्लम का हिन्दी ग्रथं दिया हुन्ना है।

२२२५. बैराग्यशतक । पत्रस० १। भाषा—प्राकृत । विषय—वैगय्य । र०काल्  $\times$  । क्षेण्यास स० १६५७ पौष वदी १४। पूर्ण । वेष्ट्रनस० ६४१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रचायती मदिर भरतपुर ।

२२२**६. प्रतिसं० २।** पत्र स०६। ले०काल  $\times$ । पूर्णे । बेष्टनस०४११। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष — टीका सहित है।

२२२७. बैराम्य शतक-यानिसह ठोल्या । पत्र स०२०। धा०१० $\frac{1}{2}\times \mathbb{Q}^2$  इन्छ । आशा—हिन्दी पद्य । विषय—िंवतन । र०काल स०१ न्द्रंध वैशास सुदी ३। ले० काल स०१ न्द्रंध जेन्द्र वदी ६। पूर्ण । वेष्टन स०१६७। प्रास्ति स्थान—िंद० जैन पनायती मन्दिर करोली ।

२२२८. शास्तिनाथ को बारह भावना imes । पत्र स०१२। प्रा०१२ imes ७ इ.स. । पापा-हिन्दी। विषय—चितन। र०काल imes। ले० काल स० १६४४ चंत बुदी २। पूर्ण । बेहन सं०४३।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बूदी।

विशेष---दसकत छोगालाल लुहाडया प्राकादी है।

२२२६. शील प्रामृत—कुत्वकुत्वाचार्य। पत्र स०४। प्रा॰ १०,१४६ इंब। माणा— प्राकृत। विषय प्रध्यात्म। २०कात 🗴 । ते० कात 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स २४४। प्रास्ति स्थान— वि० जैन मदिर सम्बर जनपुर।

विशेष -- प्रारम में लिग पाहड भी है।

२२३०. प्रति स॰ २ । यत्रस॰ ४ । आ॰ १२ $\frac{1}{2}$ ४६ इश्वः । से॰कातः  $\times$  । पूर्णः । बेष्टनसं॰ ३११ । प्राप्ति स्थानः —दि॰ जैन मन्दिर दीवानजी कामः ।

२२३२. ध्यावक प्रतिकमारा— × । पत्र सं ३-१४ । प्रा॰ १×४ इञ्च । मापा-प्राकृत । विषय-वितन । ७०शान ४ । ले०शान स॰ १७४४ माघ बृदि ४ । प्रपूर्ण । वेण्टन स॰ २७१ । प्राप्ति स्थान— दि॰ तैन मन्दिर, दवनाता वृदी ।

विशेष - मूल के नीचे हिन्दी में प्रर्थ दिया है।

२२३३, श्रा**वक प्रतिकमा**ग्—× । पत्र स०७ । प्रा०१०×४ इश्व । माषा—सङ्क । विषय—चितन । र०कान × । ने० कान × । पूर्ण । वे० स० ४६/६**६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर नादवा (गज०)

विशेष--प्रति जीसं है।

२२३४. **आवक प्र**तिकम्या— $\times$  । पत्र ग०६। धा० १३ $^2_i$  $\times$ ६ इत्र । माषा—संस्कृत । विषय—चिनन ) र०कान  $\times$  । ने० कान  $\times$  । पूर्ण । वे० स० ४०६। **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तस्कर जयपुर ।

२२२६. प्रति स० २ । पत्र म० २२ । । ते० काल स० १७६७ मार्ग सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० २४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनामती मन्दिर भरतपुर ।

२२३७ प्रतिसं० ३ । पत्र स० १६ । प्रा० १०६४ ८६ इ.ख. । ले० काल 🗴 । पूर्यः । बेष्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रजवाल मन्दिर उदयपुर ।

२२३ म. प्रतिसं० ४ । ण्यस० २६ । म्रा० ११ $\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{2}$  इच्च । ले०काल स० १७२३ । बेच्टन सं० १६४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —सिस्जगहर मध्ये पण्डित बिहारीदास स्वपटनार्थ सं० १७२३ वर्ष भाद सुदी ३ दिने ।

२२३६. प्रतिसं० ४। पत्रस० २८। मा० १२ $\frac{5}{4} \times 3$  इश्व । ते०काल स० १८१६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० ४४/४३ । प्रास्ति स्थाम—दि० जैन संदिर मादवा (राज०) ।

२२४०. प्रति स० ६ । पत्रसं० ५८ । प्रा० १२ × ५१ इञ्च । ले०काल स० १७४० । पूर्ण । बेहुतसं० ६८ । प्राप्टित स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४१. प्रति स० ७ । पन्न सं० ६ । घा० १२ हुँ ४ ६ इश्वा । ने०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२२४२, प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ७४ । ग्रा० १०१४४ १ इत्था ले०काल ४ । पूर्णी वेष्टन स०१४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानबीकामा ।

**२२४३. प्रतिसं० ६ । पत्र** सं० २३ । ले० काल स० १७२१ पौष सुदी १२ । पूर्ण । *वेष्टन ग०* १५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष --सागानेर मे प्रतिलिपि हुई । ग्रन्थाग्रन्य ६०८ मृतमात्र ।

२२४४. प्रतिसं० १० । पत्र स०३७ । ले० काल स०१७१२ मगमिर बुदी । पूर्ण । वेष्टन स०१४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष —देहली में शाहजहा के शासनकाल में सुन्दरदाम ने महात्मा दयाल से प्रतिलिप कराई।

२२४५. प्रतिसं० १६ । पत्र स० २३ । आ० १२ 🗴 ४५ इ.ज. । ले॰कान 🙏 । धपूर्ण । वेष्ट्रनसं० १८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४६. प्रतिसं १२ । पत्रस० ३१ । ग्रा०१०ॄे ४ ४ॄै इच । ले॰काल ∧ । अपूर्ण। बेष्टन सं०२६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२२४७. प्रति स० १३ । पत्र स० ६७ । आ० ११हे 🗴 ४ ट्रेडच । लेक्काल 🖈 । पूर्ण । वेष्टुन सं० १८७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

विशेष - प्रति प्राचीन है।

**२२४६. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० ४४ । ग्रा० ११ ६ इन्छ । ले० काल स० १६५१ चैत्र **भूदी १४** । पूर्णा । बेष्टुन स० १००/३६ । **प्राप्ति स्थान**—पाध्वेनाथ दि० जैन मन्दिर इनरगढ ।बोटा) ।

विशेष--- लिखत ब्राह्मास मेदावाम बान धावदा का । तिल्वाउन बावाजी ज्ञान विमलजी वन् विषय च्यानविमलजी निलत इंद्रगढ मध्ये ।

२२४६. प्रति सं० १४ । पत्र स०६२ । या०१२४४] इन्त्र । ते० काल स०१७६५ चैत सुदी६ । पूर्ण । वेष्टन स०६७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावार दूदी।

विशेष-सस्कृत टीका सहित है।

२२५०. प्रति स० १६। पत्र स०६७ । प्रा०१०} 🗴 ४१ इञ्च । ले०काल स०१७१७ मगसिर बुदी ११। पूर्ण । बेष्टन स०३२ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मदिर प्रादिनाय बुदी ।

विशेष-- ५० मनोहर ने लिखा ।

२२४१. प्रति सं० १७ । पत्र स०६२ । घा०६ 🔏 ६ इस । ने० काल स० १७६६ बेठ सुदी ८ । पूर्णे। वेष्टन स० ८२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पात्र्वेनाव चौगान बृंदी ।

**२२५२. प्रति सं० १६ ।** पत्र स० ३१ । घा०  $= \frac{1}{5} \times \pm \frac{1}{9}$  । ते० कात  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर मादवा (राजः)

२२५३, षटवाहुड टीका $-\times$  । पत्र स॰ २-७३। प्रा॰ ११ $\times$ ७ इश्वः। भाषा--हिन्दी गवः। विषय--प्रध्यासः। र०कालः  $\times$ । ले॰ कालः  $\times$ । प्रपूर्णः। वेष्ट्न स॰ २०४। प्राप्ति स्थान--दि॰ जैन मन्दिर नागदी व दी।

२२४४. **बट्पाहुड टीका—।** पत्र त्र० ६४। म्रा० १०×४ड्डै इश्व । म्रापा—हिन्दी । विषय— म्राच्यारम । र०काल × । ले० काल म० १७८६ । पूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर म्राभनन्दन स्वामी व दी ।

लेखक प्रशस्ति—सबत १७६६ का वर्षे माह बुदी १३ दिने । लिखत जती गगाराम जी मारापुर प्रामे महाराजाधिराज थी मवाई जयसिंह जी राज्ये ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२२**५५. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ५० । ग्रा० १० × ५ हे इन्त्र । लेक्सल स० १८२४ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १४५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी बुदी ।

सबत १८२४ वर्षे कार्तिक माले कृष्ण पक्षे तिथि ३ वार सतीचर वासरे कोटा का रामपुरा मध्ये महाराजा हरकृष्ण निषि कृता पांडेजी बस्तराम जी पठन हेतवे। गुमानसिंघ जी महाराव राज्ये।

प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२२४६. षट्पाहुड माषा--देवीसिह छाबडा। पत्र स०४०। घा०१३ ४ ६ इच । भाषा--हिन्दी (पद्य)। विषय -- प्रत्यात्म। २०काल स०१८०१ सावरा सुदी १३। ले० काल स० १६४२। पूर्ण। वेप्टन स०३१४, २२७। **प्राप्ति स्थान**--सम्भवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष-- उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई।

२२५७. प्रति सं० २ । पत्र म० २७ । ग्रा० ८ $\times$ ४ $\xi$  इन्ध । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वे० म० ११८ ८६ । प्राप्ति स्थान—गायंनाय दि० जैन मन्दिर इन्यरगढ (कोटा) ।

विशेष--राव्यगगवाल ने इन्द्रगढ में प्रतिलिपि की।

२२४ <br/>८. प्रतिसं०३ । पत्र स०३६ । प्रा०१९ $\times$ ५ इन्छ । ले० काल स०१८५० । पूर्ण । वं० स०४३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूदी ।

२२४६. षट् पाहुड माथा (रचनिका) — जयचन्द छावडा । पत्र स०१६३ । आ०१४ ४ ७ इव । भाषा — हिन्दों (गद्य) । विषय — प्रध्यास । र०काल मं० १८६७ भादवा सुदी १३ । लेखन काल × । वेष्टुत स० ७६ । प्रास्तिस्थानं — तेरहपथी दि० जैन मदिर नैस्पर्य।

२२६०. प्रति स० २ । पत्र स० १६६ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ $\frac{1}{3}$  दुखा । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टुन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरह पथी दौसा ।

विशेष — पत्रालाल साह बसवा वाले ने दौसा में प्रतिलिपि की । नातूलाल तेरापथी की बहू ने चढाया।

२२६१. प्रतिसं० ३ । पत्र स०१८० । धा० १०३ $\times$ ७३ इला । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन क्षप्रवाल पत्रायती मंदिर क्रलवर ।

षटपाहुड वृत्ति-अृतसामर । पत्रस० १८३ । आ० ११×५ इन्छ । भाषा-हिन्दी संस्कृत ।

विषय—मध्यात्म । र०काल 🗙 । ले०काल० 🗙 । पूर्णा । वेष्टन स०१०५३ । **प्राप्ति स्थान** -- म०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२२६२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० २०३ । ग्रा० १२×५१ इत्व । ले०काल स० १७८५ मगसिर सुदी ३ पूर्ण । वेष्टन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वागी बुदी ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति भपूर्ण है।

२२६३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३४ । घा० १० $\frac{3}{4}$   $\times$  ४ $\frac{3}{4}$  इचा आया—सम्हत । विषय— ध्राध्यारम । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टन स० १८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान वंदी ।

२२६४. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ६१ । ग्रा० ६३४४ ¦ इला । ले० काल म० १७७० । पूर्ण । बेष्टुन स० १४१,४० । प्रास्ति स्थान —पार्श्वनाथ दि० जैन मदिर इन्दरमढ, कोटा ।

विशेष -- लिखत साह ईसर ग्रज्मेरा गैंगोली मध्ये लिखी स० १७७० माह मुदी ४ शनीवारे ।

२२६५ प्रतिसं० ५ । पत्र सं० २३० । प्रा० १३ ४६ १ इ.च । ले०काल ४ । पूर्यो । वेस्टन सं० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवासती मन्दिर, कामा ।

**२२६६. प्रतिसं० ६ । पत्रस०** १६० । स्ना० १० $rac{3}{6} imes ime$ 

२२६७. **बोडशयोग टीका** — × । पत्र स० २०। ब्रा०१०×४ इच्च । भाषा—सन्कृत । विषय—योग । र०काल × । ले० काल स०१७०० पूर्ण । वेष्टन सं०१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बृंदी ।

लेखक प्रशस्ति—संवत् १७८० वर्षे श्रावण वदि ७ शती लिखत श्री गीडजातीय श्रीमद् नरेश्वर सुत जयरामेण घोवेर ग्राम मध्ये जोसी जी श्री मल्लारि जी गृहे।

२२६८, समयसार प्रामृत-कुंदकुंदाचार्य । पत्र स० १-४४ । या० १०४६ १ तथा। माषा-प्राहत । विषय-प्रथमस्य । "काल ४ । केवकात ४ । धपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । प्रास्ति इकास-कि तेन मनित कामा ।

विशेष-प्रति बात्मस्याति टीका सहित है।

**२२६८. प्रति सं० २ ।** पत्रस**०** ३४ । आ० १२ $^2_i \times$ ६३ इव । लेव्काल म० १६३२ काती **सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४१ । प्राप्ति स्थान**—तेरहपयी दि० जैन मन्दिर नैरावा ।

विशेष-इमका नाम समयसार नाटक भी दिया है। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

**२२७०. प्रति सं० ३**। पत्रस० १०७ । घा० १२ 🗴 ४ इला । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० **१**६८/२२७ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदययुर ।

विशेष--प्रत्याप्रत्य क्लोक सं० ४५०० । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

२२७१. समयसार कलशा— समृतचन्द्राचार्य । यत्रस० ६१ । मा० ११ $\frac{3}{7}$   $\times$  ५ इ च । माचा—संस्कृत । विषय—प्रध्यास्म । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० ४६२ । प्रास्ति स्थाल— सहारकीय दि० जैन मन्दिर, धजमेर ।

२२७२. प्रतिसं०२ । पत्रसं०२ । प्रा०१० $\frac{2}{7} \times \frac{1}{7}$  इच्च । ले०काल स०१६०१ वैशाख सुदी ६ । बेष्टन स०१६४ । प्रा**प्ति स्यान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

२२७३. प्रति सं० ३ । पत्रसं० १२ । ब्रा०१०४४ है इ.स. । लेक्काल ४ । पूर्णा वेष्टतसं०२४१-१०१ । प्राप्तिस्थान—दि०जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

विशेष--प्रति टब्बा टीका सहित है।

२२७४. प्रति सं० ४ । पत्रस० ३३ । द्या० ११ imes ५ $^2_{\xi}$  इश्व । ले०काल imes । धपूर्ण । बेहुतसं० १२४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर सप्रवाल उदयपुर ।

विशेष-पत्र १६ तक हिन्दी में धर्य भी है। ३३ से धागे के पत्र नहीं है।

२२७५. प्रति स० ५ । पत्र स० ७६ । प्रा० ६ $^2_4 imes 4$ ६ इ.च. । ते० काल imes । पूर्णः । वेष्टन स० २४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रधनाल उदयपुर ।

विशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है।

२२७६. प्रति स० ६ । पत्रस० १४ । ग्रा० १३ ४४ इखा । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० ४३४ । प्राप्तिस्थान----सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२२७७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १०१ । प्रा० १८imes४ इन्थ । ले॰काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टनस॰ ३१२/२१८ । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति बहुत प्राचीन है। पत्र मोटे है।

२२७८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३६ । आ० ११ × ५ है इ.च.। लेक्काल स० १७१८ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । प्राप्ति स्थान—रिंव जैन मन्दिर तेरद्र पथी दौसा ।

२२७६. प्रतिसं० ८ । पत्रस० ८६ । लेब्काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टुन स० २१३ । प्राप्तिस्**यान** — दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

**२२६०. प्रतिसं० ६**। पत्रस० २७। प्रा० १० $\frac{3}{7} \times 4\frac{3}{7}$  इच्च । **लेकाल** सं० १६५० वैशाख हुरी ७। बेष्टन स० ३६। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

२२ प्रतिसं० १० । पत्र सं० ४७ । आ० १० $\times$ ४ इख । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रत सं० १२ । प्राप्ति स्थान — दिगस्यर जैन मन्दिर पनायती इनी (टोक) ।

२२०२. प्रतिसं० ११ । पत्र सं०६७ । धा० ११×४६ इ.च.। ले०काल—× । धपूर्णः । वेष्टत ०६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटधों का नैसस्या

विशेष-४४६ श्लोक तक है। प्राकृत मूल भी दिया हुआ है।

२२ म**३. प्रतिसं० १२ ।** पत्र सं ४१ । मा० १० $\times$ ६ $\frac{1}{4}$  इत्या । ले०काल सं० १६imes६ कार्तिकी ७ ।  $\frac{1}{2}$ । वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपयी दि० जैन मन्दिर नैस्पत्रा ।

विशेष-- नैनपुर मे प्रतिलिपि की गयी।

२२८४. प्रति सं० १३ । पत्रसं० १५ । बा० १०४४ इंच । ले०काल स० १६३४ भादवा ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३४४ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन यन्दिर क्रमिनन्दन स्वामी बूंदी । २२८५. प्रतिसं० १४ । पत्रसं० २३ । धा०१३  $\times$  ५ $^3$  इंच । ते०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टनसं०७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, ब्रुदी ।

विशेष--टीका का नाम तत्वार्थ दीपिका है।

२२६६ समयसार कलशा टोका—नित्य विजय । पत्रसं० १३२ । ग्रा० १२ $\times$ ४ है इंच । ग्राम्स—संस्कृत । विषय—मध्यास्म । २०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १३१ । प्राप्ति स्थान कि जोन महिर दोवानको कामा

विशेष-अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

इति श्री समयसार समाप्त ।। कुदकु दाचार्ये प्राकृत ग्रंथ रूप मदिर कृत समयशार शास्त्रस्य मया भ्रमृत चन्द्रे ए। संस्कृत रूप कलणः कृतस्तस्य मदिरोपरि ।

> नित्य विजय नामाह भाव सारस्य टिप्परा । श्रानन्द राम सजस्य वाचनाव्यलीलिखमः।

प्रारम्भिक-

सिद्धान्नत्वालिखानीद मर्थ सारस्य टिप्परा ।

श्राएदराम सज्ञस्य वाचनाय च शुद्धये ।।

प्रति टब्बाटीका सहित है।

२२६७. समयसार टीका (ब्रध्यात्म तरिग्रागी)—अ० गुभवन्द्र । पथस० १२०। मा० १० $\times$ ४ $\frac{3}{5}$  इ.च.। माथा—सस्कृत । विषय—अध्यात्म । २०काल स० १४७३ धासोज सुदी ४ । ने०काल सं० १७६४ । पूर्णा । वेष्टत स० २८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष----

प्रारभ-मादिभाग-

मुद्धं सच्चिद्भूष भव्याबुजचन्द्रममृत मकलक । ज्ञानाभूष बदे सबं विभाव स्वभाव सयुक्तं । १ ॥ सुधाचन्द्रमुने विक्या पद्यात्युद्धृत्य रम्मागि । विद्युगोमि भक्तितोह चिद्रुगे रक्त विक्तम्य । २ ॥

ग्रन्तभाग--

जयतु जित विषक्ष पानितानेपशित्यों
विदित निक स्वत्त्वश्वीदितानेक सत्व ।।
अमुन्तिवपुत्रनीभः कुंदकु दो गरोण ।
अनुनिवपुत्रनीभः कुंदकु दो गरोण ।
अनुनिविवप्तदारिकार ।। १ ।।
सम्बक् मसार बन्नविवयत्वदिकानेमतमानगमानी ।
पापानोपभुम्मोद् गमन करा कुन्द कन्दीनवारि ।।
विद्वद्विवयादिनोदा कन्तिन मति रहो मोहनामस्य सार्था ।। १ ।।
विद्वद्विवयादिनोदा कन्तिन मति रहो मोहनामस्य सार्था ।। १ ।।
विद्वप्तिकार्तिन पत्रिजेगता विमल 'भौति प्रपद्म भूमात ।। २ ।।
विद्वपत्रीनीविवर्गना विमल 'भौति प्रपद्म प्रमात ।। २ ।।
विद्वपत्रीनीविवर्गना विमल 'भौति प्रपद्म विद्वपत्र ।। ३ ।।
वजप्रकृत्तिम्य मानन भारती मय मनिर्दान्तिवा पर बादिकः ।। ३ ।।

१ गुरुविवृत धर्म धुरोद वृत्तिधारक : ऐसा भी पाठ है।

इत त्राकुमनद्रम् मूलान्सूलनमहा।नक्षरमा श्रामदय्यात्मतरागगा टाका । स० १७६५ वर्षे पीय वदी १ शनी । लिखितः ।

२२६६ समयसार टीका (म्रात्मस्याति)—प्रमृतचन्द्राचार्यः । पत्रस् १९१ । म्रा॰ १० $\S \times \S^1$  हुआः । भाषा—प्राहृत सम्कृतः विषय—प्रध्यात्म । र० काल imes वे ककाल स० १४६३ मगिनर बृदी १२ । पूर्णे । बेहनस० १८ । प्रास्तिस्यान— भट्टारकीय दि० जेन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--प्रयाग्रन्थ म० ४५०० है।

## लेखक प्रशस्ति ---

म्बिटिस श्री सबत् १४६६ वर्षे सार्गङ्गा त्रयोदाव्या सोमवासरे अग्रहे श्री कालपी तमरे समस्त राजाववी समाज्यत विविज्ञिताशिक्तां प्रवक्त महाराजाियाज नुरवाम श्री सम्मुद्धाित विव्ययाख्य प्रवत्त माने सिम्मुद्धा सामज्यत विविज्ञिताशिक्तां प्रवक्त माने सहिमन् राज्ये श्री काशामेशायुराज्य पुष्कर गच्छे लोहाचार्याच्ये प्रीराणावार्य श्री अमन्तरीति देवाः तत्त्व पट प्रवासायो भट्टाग्ल करूपा श्री अमकीति देवा त्वय हु प्रेतिकार्यो सहाराण काशामेशायुराज्य काशामेशायुराज्य काशामेशायुराज्य हार्वाद्धा साम्याच्या स्वाच्या साम्याच्या साम्याच्या स्वाच स्वाच्या स्वाच्या साम्याच्या साम्याच्या स्वाच्या साम्याच्या साम्याच्या साम्याच्या साम्याच्या स्वाच्या साम्याच्या साम्याच्या साम्याच्या साम्याच साम्याच्या साम्यच्या साम्यच

निकाप्य संसार समुद्रो ताररणार्थं दूरितदृष्ट विष्वंस नार्थं शानावरणाद्यपृक कर्मक्षयार्थं श्री धर्महेतोः सुगुरीः धर्मचन्द्र वेवेम्य पुस्तकदानं दत्तं ।

२२८६. प्रति स०२ । पत्र सं०१७१ । ग्रा०१२ × १ है इला । लेक्सल स० १७३७ आपाठ सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० २४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

२२६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । बा० ११९ 🗓 ४ ६ इञ्च । ले०काल सं० १५७४ । पूर्ण । बेष्टुन सं० १६४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--प्रतिलिपि रोहितक साम में हुई। श्री हेमराजजी के लिये प्रतिलिपि की गई।

श्चान्तिम--विश्वक् कुल मडन हेमराज सोय चिरजीवत् पुत्र पौत्री ।

तधर्य मेतल्लिखित च पुस्त दानव्य मे तद्धि दुवे प्रयत्नात् ॥

२२६१. प्रति सं० ४ । पत्रस० १४३ । ले०काल स० १६५६ माघ सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० १६४ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

श्री मूलसपे भारती गण्डे बलात्कार म० विद्यानद्याननाथे श्री मल्लिभूयणदेवा त० प० म० श्री सदमीचन्द्र देवा तत्पट्ट श्री धमय चन्द्र देवा तत्पट्ट म० श्री रल्लकीति तत्गुक आता ब्रह्माश्री कल्यारणसागर-स्वेद पुस्तक काकुरबपुरे विक्रियेत नीत मृतकरीये देवनीतं धर्मलपुरस्य कल्याग् मागरेण पडित स्वामाय अरल' पठणाया

२२६२. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १६६ । आ० १२imes५ १ इख । ले०काल imes । बेष्टनसं० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयवाल मन्दिर जयपपुर ।

**२२६३. प्रतिसं० ६ ।** पत्र सं० १४३ । आ० १०३४ ४१ इखा । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६/४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करौली ।

२२६४. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १४३ । प्रा० १०} ४६ इथा । ते० काल स० १७८८ वैज्ञास वदी ११। पूर्ण । वेष्टत स० १३/२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करीली ।

२२६**५. प्रति सं० ८ ।** पत्रस्न ११२ । ले० काल imes । श्रपूर्ण । वेष्ट्रनस०४० । **प्राप्ति** स्थान—नेप्रप्रयो दि० जैन मदिर बसवा ।

२२६६. प्रतिसं०६ । पत्रस०१६४ । बा०१०हुँ 🗴 ४२ॄँ इ.च । ले०काल स० १८३० । पूर्णे। बेहन स०१४० । प्रास्थित स्थाम— वि० जैन मन्दिर घातिनाथ बृदी ।

२२६७. प्रति स० १०। पत्रस० १६। प्रा०११ 🗙 ५ इच । ले०काल स० १७३६। पूर्णे। बेहनस० ६०। प्राप्तिः, स्थानः—दि० जैन मदिर क्रमिनन्दनः वामी, ब दी।

विशेष-इस टीका का नाम ग्रात्मस्याति है। लवाग् मे ग्रा० ज्ञानकीति ने प्रतिलिपि की।

२३६ म. प्रति सं० ११ । पत्रस० १३२ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० २६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवायती मदिर मस्तपर ।

विशेष — तात्पर्य वृत्ति सहित है।

२२६६. प्रतिसं० १२ । पत्रतः २०२ । मापा --संस्कृत । विषय---प्रध्यात्म । र०काल 🗴 । ते० काल स० १४४० । पूर्ण । वेष्टन सं० ६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन पत्रावती मन्दिर दसवा । विशेष -- तात्पर्यं वृत्ति सहित है।

२३००. प्रतिसं० १३ । पप्रस० २३ । प्रा० १४ × ५१ इन्छ । ले॰काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० २१-६२ । प्राप्ति स्थान वि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

२३०१. प्रतिसं० १४ । पनस० १० । ग्रा० ११ x प्र इखा। लेक्काला सं० १६०७ सावरा बुदी है। पूर्या । वयन स० ३३५ **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष प्रशस्ति—सन्त् १६०७ वर्षे मानगा बृदि ६ त्वक नाम गगरे पातिसाहि श्लेमिसाहि राज्ये प्रवर्तमाने श्री शातिनाय जिन चैन्यालये श्री मुलस्पे नद्यास्नायं बलात्कार गरी सरस्वती गच्छे ... ... ... ।

२३०२. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १३ । ब्रा० ११ रे ४ ४ इञ्च । ले०काल ४ । ब्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० ११ । प्राप्ति स्थान दि० जेन मन्दिर, श्रादिनाय बुदी ।

२३०३. प्रतिसं०१६ । पन्नस०६ । ॥०१२ × ५१ इ'च। ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० १४। प्राप्ति स्थान दि० जैन सम्बन्धान मन्दिर उदयपुर।

विशेष---प्रतिपत्र १० पक्ति एव प्रति पक्ति प्रकार ३७ है।

प्रति प्राचीन है।

२३०४. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० १८७ । आ० ११  $\times$  ४ है इञ्च । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्ट्रस० ५०१ । प्राप्ति-स्थान—१२० जैन मोन्दर लक्कर जयपुर ।

विशेष—श्रान्तम पृष्ठ नहीं है पाउराजमल्ल कृत टीका एवं प० बनारसीदास कृत नाटक समयसार के पदा भी है।

२२०४. समयसार वृत्ति—प्रभाचन्द । पत्रस्य ६४ । प्रा० १२३ ४ १३ इश्व । भाषा— संस्कृत । निषय - श्रप्यात्म । २०४१त > । लेव्यात्म स०१६०२ मगमिर बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टतस० १९=१ । प्राप्ति स्थान- भट्टास्कीय विवर्णन मन्दिर स्रज्ञमर ।

२३०६. समयसार टीका—म० बेवेन्द्रकीति । पत्रस्क० १४ । घ्रा० द्रं ४४ इश्व । घाषा— सस्कृत । विषय-ग्रग्याम । २०कारा स० १७८६ भावया मुर्ग १४ । लेक्काल स० १८०४ वैद्याल सुदी १३ । पूर्ण । वेग्टन स० ३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रामिनस्त स्वामी बृग्दी ।

थिशेष — आ० कुररकुस्द के समयसार पर आमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्त्ति की यह टीका है जो प्रथम बार उपलब्ध हुई है।

प्रशस्ति---

बास्वब्ट युक्त सप्तेन्द्र युते वर्षे मनोहरे, णुक्ते भादपदेमासे चतुर्वस्था णुभे तिथी । ईसरदेति सद्ग्रामे टीकेय पूर्णतामिता ।

भट्टारक जगत्कीर्त्ति पट्टे देवेन्द्रकोर्त्तिना ॥२॥

दुः कम्मँहानये शिष्य मनोहर गिराकृता ।

टीका समयसारस्य सुगमा तत्ववोधिनी ।।३।। बृद्धिमदभिः बुधै हास्य कर्त्तव्यनो विवेकभिः ।

शोधनीय प्रयत्नेन यतो विस्तारता वृजेन् ।।४।।

बुधै संपाट्यमान च वाच्यमानं श्रुत सदा।

शास्त्रमेतळुमं कारि चिर सनिष्टतामुवि ।।५।। पूज्यदेवेन्द्रकीर्ति सशिष्येगा स्वात हारिगा ।

नाम्नेय लिखिता स्वहस्तेन स्वबद्धये ॥६॥

सबत्सरे बमुनाग मुनींद दमिते १७६६ भादमाने मुनन पक्ष चतुर्वमी तिथी इसन्दानगरे श्रीराजि भी प्रजीतिसङ्जी राज्य प्रवर्तमाने श्री चच्छ्यम चैत्यालये ""। भट्टारकजी श्री १०६ देनेज्ञकीतिनेत्रय समयसार टीका स्विधाय्य मनोहर कमनाइ पठनाय तत्ववीधिनी मुगमा निज्ञ बुद्धवा पूर्व टीका भवलोक्य निहिता बुद्धि मिद्धि गोधनीया प्रमादाद्वा धल्यबुद्धया यत्र हीनाधिक मवेत् तद्वीधनीय समानवीत् श्री जिन प्रस्थासने।

सवत् सरेन्द्रवसु णून्यवेदपुते १८०४ युते वर्षे वंशास माने णुक्तपक्षे त्रयोदस्था चढवारे चन्द्रप्रम चैत्यालये पिडतोत्तमपदित श्री चोलवन्दजी तत् जिष्य रामचन्देगः टीका लिचितेय स्वपठनार्थ फिलडी नगरे बाचकानां पाठकाना मगलावली सबोमवत् ॥

२३०७ समयसार प्रकरस्—प्रतिबोध । पत्र म०६। त्रा०१०३८४३ इ.स.। भाषा— प्राकृत । विषय—प्रध्याम । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । बेष्टन म०१७७/४८। प्रास्तिःस्थान— पार्यनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

२२०८. समसार माथा टीका—राजमस्त । पत्र म०२६८। या०१०्रे४४३ स्था। माथा—हिस्सी (मथ)। विषय—प्रध्यास्य। २०काल ४ । मे० काल ७, । पूर्ण। बेष्टन म०१२०। प्रास्ति स्थान—म०६० लेक मस्टिर प्रकार ।

विशेष--हिन्दी टब्बा टीका है।

२३०६ प्रतिसं०२ । पत्र स०१७६ । ब्रा०१२ ७ इञ्च । ले० कान स०१६०७ वैणाल सुदी १२ । पूरा । बेष्टन स०२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर वीधिष्यान मालगुरा (टोक)

विशेष--- प्रकवराबाद (प्रागरा) मे प्रतिविध हुई ।

२२१०. प्रति सं० ३ । पत्रस० २१० । आ० ११८.५ हुँ टच । लेकाल स० १७२५ भादवा सदी १ । पूर्ण । बेष्टन स० २६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

२३११. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २१४ । आ ० ृ१०४४ ट्रेडचा । ले० काल ४ । पूर्णं । बेष्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३१२. प्रति सं०४ । पत्रस० ६३ । मा० ६३  $\times$ ४२ इन्छ । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर मादिनाय हुँदी ।

२३१३. प्रति सं०६ । पत्र स०५७-२६४ । प्रा०६<sup>9</sup> ४ ६ इचा ले० काल ४ । प्रपूर्ण। बेष्टत स०१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धीभनन्दन स्वामी. बुदी । **२३१४. प्रति सं०७ ।** पत्र स०२३७ । ग्रा० १३ imes १ इता । ले० काल स० १०६० ग्रायाढ बुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स०६० । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष--कामा मे प्रतिलिपि हुई।

२३१४. प्रतिसं० ८ । पत्रस० १४४ । घ्रा०११३ ४४३ इञ्च । ले० काल स० १७४० । पूर्ण । बेष्टुन स०१६१ प्राप्ति स्थान—दि० जॅन घ्रयवाल मंदिर उदयपुर ।

२३१६. समयसार टीका—  $\times$  । पत्र स०२४ । भाषा— संस्कृत । विषय— प्रध्यात्म । रै० काल  $\times$  । के० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेप्टन स०४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर तेरङ्गंथी नेगावा ।

२३ (७. समयसार भाषा—जयचन्द छाबङा। पत्र सल्या ४९६ । बा० १९ ४ ७ ै इन्छ । भाषा—हिन्दी गय (बृहागी) । विषय—प्रत्यान्म । र०काल स०१६६६ कागुगा बुदी २ । पूर्ण । बेष्टुन स०२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष-महानन्द के पुत्र रामदयाल ने स० १६१३ भादवा सदी १४ को मदिर में चढाया था।

२३१८. प्रति स० २ । पत्र स० ३३६ । झा० ११० ४ ७१ इला । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । बेपून स० १२४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२३१६. प्रति स० ३ । पत्रस० ३६० । बा० ११×६ इश्व । ले०काल स० १०६६ पौष बुदी १ । पूर्ण । वेपन स० ७३-१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष - बलतलाल नेस्हपथी ने कालराम से प्रतिलिपि करवाई ।

२३२०, प्रति सं० ४ । पत्र म० १६८ । ग्रा० १२३ 🗴 ६ इन्छ । ले० काल स**० १८७६** बैशाल बुदी १० । पूर्या । बेष्टुन म० ८७ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर करौली ।

विशेष - यस्तराम जगराम तथा मूसेराम की प्रोरागा से गुमानीराम ने करौली मे प्रतिलिपि की ।

२३२१. प्रतिसं० ५ । पत्रस०२६६ । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । बेष्टन स० ५२५ । आस्ति स्थान---दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष भरतपुरनगरमे तिस्वागया।

२३२२. प्रतिसं०६। पत्र स० २१४। ते०काल स० १८७४।पूर्णः। बेष्टन स० ४२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मदिर भरतपुरः।

२३२३. प्रति सं०७। पत्र म०२४७ । घा०११ 🕆 ७१ डआ। ले०काल स०१६७६ माह सुरी १। पूर्ण । बेपून स०६० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन ब्रह्मवाल पचायनी मदिर ग्रलदर ।

**विशेष** -- जयपुर मं प्रतिनिधि हुई ।

२३२४. प्रति सं० क । पत्र सं० ३१६ । छा० १४ imes ७ $^3$  दश्च । ले० काल स० १६४३ माघ सुदी २ । पूर्ण । बेपुन स० ७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर झलदर ।

२३२४. प्रतिसं०६। पत्रस०३७२। ग्रा०१३ 🗴 ४ इन्छ। ले०काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टतसं०८६। प्राप्तिस्थान – दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२३२६. प्रतिसं० १०। पत्रत्त० ३०७ । प्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ $\frac{1}{2}$  इला । ते०काल सं० १९५४ । प्रार्ण । केष्टन सं० ६१/१ । प्राप्ति स्थान —पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर, इन्दरगढ (कोटा)

विशेष — मागीलालजी जिनदासजी इन्दरगढवालों ने सवाई जयपुर में जैन पाटणाला, जिल्प कम्पनी बाजार (मिर्ग्याहारों का रास्ता) में मारकन भोलीलालजी सेठी के स० १६५४ में यह प्रति लिलाई। लिलाई में पारिश्रमिक के ३२॥ = )॥ लगे थे।

**२२२७. प्रति स० ११।** पनस० २४४। आ० १०१५८ इन्छ । पूर्ण । बेष्टन म० ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचावती मन्दिर दुवी (टांग)

**विशेय---**पत्र गं० १-१५० एक तरह की तथा १५१--२४४ दमरी प्रकार की लिपि है।

२३२६ समयसार माया—रूपचन्दापत्र त० २२२। ब्रा० १२ ४ ५ ६ व । भाषा— हिस्सी (गद्य)। थिपय— ब्रध्यासम्। २०काल स० १७००। ले० काल 🗙 । पूर्णा युन्न ग० ४७। प्रास्ति स्थानः तेरहयशी दि० जैन मदिर नेगावा।

**विशेष** — महाकवि बनारसीदास कृत राभयसार नाटक की कियी गरा में टीका है।

. २३२६. प्रति सं० २ । पतस० ३११ । या० १०<sup>९</sup> ४४<sup>९</sup> इस्त । ते०काल स० १७३४ भावण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान —पार्ण्यनाथ दि० जैन मंत्र उत्तरन्तर (।।२१)

विशेष-प्रागरा में भगवतीदास पोलाड ने स्वपटनार्थ प्रतिनित की ।

**२३३०. प्रति सं० ३ । प**त्रसु० १७३ । आ० १०<sup>१०</sup>,३<sup>१</sup> ४७व । से०भास ग० १७६**४ वैकाल बुदी १** । पूर्ण । पेष्टुन स**० ३६७ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मधिक करताना (३८) ।

२३२१. समयसार नाटक--वनारसीदास । पत्र ४० १११ । ४०० 🖟 🐧 २४ । भाषा--हिन्दी (बळा) । विषय---श्रष्टास्य । १००४तः म० १६८३ प्रापीज गुरा १९ । तकसत्त 🗴 । पूर्ण । वेष्टुनस्य० १०६३ । प्राप्ति स्थान---भ० वि० त्रैन मन्दिर प्रजयर ।

् **२३३२. प्रति सं०२।** पत्र स०१४२ । त्रा०८) १ ४ इञ्चा लेञ्काल ८ । पूर्णा । वेष्टन स०१४=६ । **प्राप्ति स्थान**— महास्कीय वि० जैन सन्दिर संबंधर ।

२३३३. प्रति स ० ३ । पत्र त० २२४ । आ०११ ्र ४ ुटखा वि० कान् 🗴 । पूर्णा विष्टन स०६३ । प्राप्ति स्थान — महास्कीय दि० जैन मदिर अजनर ।

. २३२४. प्रति स०४ । पत्रस०६६ । आ०६८६ इथा । ने० कान स०१७३३ । बेहुन म० १४०० । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष--(गुटका स० २७६)

२३३**४. प्रति स० ४ ।** पत्र स० १०६ । आर० ७४ ५१ उच्च । ले० काल ४ । पूर्गा । बेष्टन स० ७६१ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**२३३६. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस**० १०२** । ले०काल स० १८६६ । पूर्यः । वेष्टनसं० २३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

**२३३७. प्रतिसं०७ ।** पत्रस० १४६ से २३० । झा० १०्रै×५ इश्वा लेक्काल स० १०१२ । पूर्णा । बेष्टन स० ३५−२० । **प्राप्टितस्यान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का ह्रगरपुर ।

विशेष--ब्रह्म विलास तथा समयसार नाटक एक ही गुटके मे हैं।

२३२ स्ट. प्रति सं २ म । पत्रस० ७२ । धा० ६३ × ६३ इञ्च । ले० काल सं० १८म० । पूर्ण । बेष्टन सं० १०२-४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटड़ियों का हुनरपुर । २३३६. प्रति स० ६ । पत्र सं० ४२ । ग्रा० म× ६३ दश्य । लेकाल सं० १८६४ ।पूर्ण । बेष्टन सं० १३२-६० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटिंडयो का हु गरपूर ।

विशेष-४२ पत्र के बाद कुछ पत्रों में कबीर साहब तथा निरजन की गोप्टि दी हुई है।

२३४०. प्रति सं० १० । पत्र त० १४० । ग्रा०७ ४४ १इखा । लेखन काल स० १६०४ । पूर्णे । वेस्टन स० १३स-६२ । प्राप्ति स्थान—ांद० जेन मदिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

२२४१. प्रति स० १०। पत्र म० १०। घा० ६ रे ४ ५ हथा। ले० काल 🗴 । स्रपूर्णः। वेष्टन सं० २१०- च ४। प्रास्ति स्थान - दि० जैन मधिर कोटडियो का हुंगरपुर।

विशेष -- १० से आगे पत्र नही है।

२३४२. प्रतिसं० ११। पत्र स० ६६। ग्रा० १० ४५ इञ्च । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ४। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मदिर अग्रवाल उदयपुर ।

२३४३. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६२ । का० १० 🗆 दुखा । ते० काल स० १७२६ मादवा सुदी ११ । पूर्ण । बेगून स ५१ । प्राप्ति स्थान - नगवाल दि० लैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रति पत्र ११ पक्ति एवं प्रति पक्ति ३३ प्रक्षर है।

खोखरा नशर में प्रतिनिषि हुई।

२३४४. प्रति सं० १३ । पत्रसं० ७३ । प्रा० ११४४ ुँ दश्व । लेक्सल स० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । प्राप्ति स्थान- प्रप्रयान दि० जैन मन्दिर उदवपुर ।

२३४५. प्रतिसं० १४ । पत्रसण् १८६ । ग्रा० ११४७ इञ्च । लेक्काल स० १७२= । पूर्ण । बेष्टुन सं० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रुग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- प्रति टब्का टीका सहित है। (हिन्दी गढ टीका)

२३४६. प्रतिसं० १५ । पन स० २६ । ग्रा० १०imes४ इख ले० काल । पूर्ग । येष्ट्रन स० १६० । प्रास्ति स्थान —दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेय-वनारमी विलास के भी पाठ है।

२३४७. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १२४ । या० ८imes६२  $^2$  दश्च । ले० काल स० १७४६ कार्त्तिक सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनस० २२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

(गुटकाकार न०१२)

२३४८. प्रति सं० १७ । पत्र स० ४६ । ग्रा० ११×५३ इञ्च । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रनसं० १०६ । प्राप्ति स्थान- सण्डेलवाल दि० जन मदिर उदनपुर ।

२३४६. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १७४ । घा० ११३ × ७३ इखा । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । बेष्टन स० ८८ । प्राप्ति स्थान—स्वडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

**२२४०. प्रतिसं० १६।** पत्र सं० २-६७ । झा० १०×४३ इश्व । ले० काल × । सपूर्णः । <sup>बेष्टन</sup> सं० १५२ । **प्राप्ति रूपान**—शण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

**२२४१. प्रति सं० २०** । पत्र स० ६६ । झा० १० रे ४ ६ इच्छा । ले० काल स० १८६३ सावण सुदी द । पूर्ण । बेष्टन सं० द७ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर फतेश्चर शेखावाटी (सीकर) । विशेष—सरावगी लिलमीचद ने लिलाया तथा भादवा मुद्दी १४ स० १८६३ में ब्रतीद्यापन पर फतेपुर के मदिर में चढाया।

२३५२. प्रति सं० २१। पत्र स०१२०। द्या०१४ $\times$  ६ $^3$  इश्वः। ले० काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स०१२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर मेखावार्टा (सीकर)।

विशेष-प॰ हीरालाल जैन ने बाबुलाल ग्रागरे वालो से प्रतिलिपि कराई।

२३५३. प्रति सं० २२ । पत्र स० ४० । ग्रा० १२ $\frac{1}{2} imes$  ६ इञ्च । ले० काल स० १६१४ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वे० स० २१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (मीकर) ।

**विशेष**---प्रतिसुन्दर है।

२३५४. प्रति सं० २३ । पत्रस०७० । बारु १३ 🗴 ६ इश्व । लेक्काल-स० १६१६ पीप बदी १३ । पूर्ण । बेष्टुनसं० ३६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मेखावाटी (सीकर)।

विशेष - व्यास सिवलाल ने जै गोविन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२३५५. प्रति स० २४ । पत्रस० १८० । आ० १  $\times$  ६ इच । ले० काल-स० १७४८ काती बदी १२ । पुर्य । बेहनसं०-१०७ । प्राप्ति स्थान-िद० जैन मन्दिर मादवा (राज०) ।

विशेष-जोबनेर मे प्रतिलिपि हुई।

**२३५६. प्रति सं० २५** । पत्रस० २२१ । ग्रा० १२३ × ६ इच । ने० काल--- स० १८५७ कात्तिक बुदी १ । पूर्ण । वेष्टनस० - २४ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर नेरहपथी दौरा।

विशेष-विमनलाल तेरहतथी ने प्रतिनिधि की।

२३५७. प्रति सं० २६ । पत्रस० ३–१० । प्रा० १०३  $\times$  ५३ इ.स. । ले० काल—  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टुन स० १०५–६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दीमा ।

२३५८. प्रति स० २७ । पत्रस० १३७ । ग्रा० ६ २ ४ १ ३ ८ था । ले० काल सं० १८५६ ज्येट्ठ बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनस० १३१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायली मन्दिर करोती ।

२३५६. प्रति सं० २८ । पत्र स० ३-३६६ । छा० १२ 🗢 ५५ दश्व । ले०काल— 🗵 । घपूराँ । बेष्टन स०६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर टीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

**बिशेश** - श्रमृतचन्द्र कृत कलामा तथा राजमल्ल कृत हिन्दी टीका सहित है । पत्र जीएं है ।

२२६० प्रति सं०२६ । पत्र स०६० । ग्रा०१० 🗴 ५ इञ्च । ले० काल 🗴 । ग्रापूर्ण । देवन स०१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२३६१. प्रति स० ३०। पत्रसः ७६ । ले०काल स० १६१७ ज्येष्ठ मुदी ४ । पूर्णे । वेष्टन म० २६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी, कामा ।

२३६२. प्रति  $\dot{\mathbf{t}}$ ० ३१। पत्र स० ६–१४४ । ग्रा०६  $\times$  ५ इश्व । ले० काल—  $\times$  । ग्राप्तं । वे० म० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२३६३. प्रतिसं० ३२। पत्र स० २०६। ग्रा० ११ $^{1}_{3}$   $\times$  ६ $^{1}_{4}$  इश्व । ले० काल स० १८४४ प्रयाद सुरी ११। पूर्ण । वं० सं०३५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेय-रिष्मदास कासलीवाल के पुत्र ने कामा मे प्रतिलिपि कराई।

२३६४. प्रति सं० ३३ । पत्रसं० १६४ । प्रा० १२१४ २ इच्छा । ले०काल 💉 । स्रदूर्ण । वेकन सं० २६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

२३६५. प्रतिसं० ३४ । पत्रसं० ७३ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर शैवानजी कामा ।

**२३६६. प्रति स० ३४** । पत्रस० १०३ । तै०काल स० १७२१ श्रासोज मुदी ६ । पूर्ए । वेष्ठन स० २६८ क । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२३६७. प्रति सं० ३६। पत्र स० ६३। घा० १०×६३ इला। ले०काल स० १८६०। पूर्ण। बेब्रन सं० २३। प्राप्ति स्थान---दि० जैन पंचायती मदिर कामा ।

विशेष ---जोधराज कामलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी।

२३६८. प्रतिसं० ३७ । पत्रस० १०६ । स्रा० १०  $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इ.स. । लेक्सल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेहुत स० ६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

२३६८ प्रतिसं०३६ । पत्रसं०३४७ । ले०काल स०१७४२ सावरण सुदी३ । पूर्ण। वेकनसं०१६ । प्राप्टि स्थान---- दि०जैन पंचायनी मन्दिर कामा।

विशेष-- पहिले प्राकृत मुल, फिर संस्कृत तथा पीछे हिन्दी पद्मार्थ है।

पत्र जीर्ग्शीर्गग्रवस्थामे है।

२३,७०. प्रति सं० ३६ । पत्र स० ६० । घा० १२ है ४६ है इस्त्रा ले०काल — 🗴 । पूर्ण । वेष्ठन स० १४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मदिर वयाना ।

२३७१. प्रति सं० ४० । पत्र म० १२३ । ग्रा० ६४५३ इच्छा । ले०काल सं० १७४८ माघ बुदी १० । पूर्ण । वेटन म० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती बयाना ।

विशेष — बेगमपुर में भवानीदान ने प्रतिनिधि की थी। १२३ पत्र के ब्रागं २१ पद्यों में बनारसोदास कृत मुक्ति मक्तावली भाषा है।

२३७२. प्रति सं० ४१ । पत्रस० ७७ । लेब्बाल स० १८५५ पूर्ण । वेष्ट्रनस० १७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर वयाना ।

विशेष - बयाना मे प्रतिलिपि हुई ।

२३७३. प्रतिसं० ४२ । पत्रसं०— ७० । लेखन काल स०१६२६ फागुण मुदी२ । पूर्ण। वेष्टन सं०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पचायती स्थाना।

विशेष—श्री ठाकुरचन्द मिश्र ने माधोसिह जी के पठनायं प्रतिलिपि करवायी तथा स० १६३२ में मदिर में चढ़ाया।

२३७४. प्रतिसं० ४३ । पत्र संस्था—४१ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पत्रायती भरतपुर ।

## विशेष--जीर्ग है।

**२३७५. प्रतिसं० ४४** । पत्र सं० २–५६ । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन स० ४५३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मस्दिर पंचायतती भरतपुर ।

२३७६. प्रतिसं० ४५ । पत्रसं० १६२ । ले०काल स० १८६६ पूर्ण । बेष्टन सं० ५२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७७. प्रतिसं ४६ । पत्रसः १४ । से०काल सं०१७०३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सः०४२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३७८. प्रतिसं० ४७ । पत्रसं० ६१ । ले॰काल स० १७३२ द्वासोज बुदी ४ । पूर्ण । बेहन सं० ५२६ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर पचायनी मरतपुर ।

२३७६. प्रतिसं० ४६ । पत्रस० २३ । से०काल $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपुर ।

२३ द०, **प्रति स०४६।** पत्रस० १५४। ले० काल 🗴 । पूर्णं। बेष्टनस०२४ द। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपर।

विशेष--हिन्दी प्रथं सहित है।

२३८२. प्रतिसं० ४१ । पत्र म०६०। लेब्काल स०१७७६ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०१२६। प्रास्तिस्थानः --शटेलवाल दि० जैन मन्दिर अनवर।

विशेष--प्रति का जीगोंद्वार किया हुमा है।

२३८२. प्रतिसं**० ५२** । पत्र स० ११७ । लेक्सल स० १९०१ पूर्ण । वेष्टन स० १२७ । प्राप्ति स्थान —गडेलवाल दि० जैन मदिर अलवर ।

२३८४. प्रति सं० ५३। पत्र स० १३। ले०काल----× । अपूर्ण । बेप्टन स० १२८। प्राप्ति स्थान - लेडेलवाल दि० जैन मन्दिर अलवर ।

२३८६. प्रति स० ४४ । पर ग० १४६ । या ०७  $\times$ ४ $\xi$  इश्वः । ले० काल स० १६०३ पूर्णः । वेष्य स० ३८१ । प्राप्तिस्थान—दि० जेन मध्य थे स्पति कोटा ।

२३ म.७. प्रति सं० ४६ । पत्र म० ३२ -७१ । आ० ६१ ४ ६ इश्व । ले०काल स० १८३१ द्वितीय वैशाल बुदी ८ । श्रपूर्ण । बेष्टनस० २०१ । प्राप्ति स्थान— दि जैन मन्दिर दयलाना (बृदी) ।

विशेष — रीलतराम चीधरी ने मनगाराम चीधरी की पुस्तक से उतारी । प्रतिलिप टोडा में हुई । २३८८. प्रति सं० ४७ । पत्र स० ११७ । ग्रा० ६४६ इच्च । लेक्काल स० १७३३ मारवा मुदी ६ । पूर्ण । बेपून सं० ३० । प्राप्ति स्चानं — दि० अन मन्दिर तेरह पथी मालपुरा (टॉक) ।

विशेष—कराँपुरा में लिखा गया।

्राह्म २३न६. प्रति सं० १५६ । प्रवस० ३-११६ । प्रा० ६ × ४ इच । लेक्सल स० १६४० पौष सुदी ४ । प्रपूर्त । वेष्टन स० १०६-१३७ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर, नेमिनाय टोडारायक्षिह् (दोक्र) 🌡 विशेष-सहजराम व्यास ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की।

२३६०. प्रति सं० ४६ । पत्रसं० ६८ । घा० १० ४४ इ.च. । क्षे•काल सं० १८६१ । पूर्णे । बेष्टन सं० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाय टोडारायसिंह (टॉक) ।

**२३६१. प्रतिसं० ६०।** पत्रसं० ६१। झा० ११ imes imes imes imes । संपूर्ण। बेहन सं० ७०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहत टोक।

विशेष--श्रंतिम पत्र नही है।

२३६२. **प्रतिसं० ६१ ।** पत्रसं० ८० । घा० १० × ४ इंच । ले०काल सं०१८२५ । पूर्ण । बेबन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहल (टॉक) ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवन् १८२४ वर्षे माह माने कृष्ण पन्ने प्रष्टमी दिने बुधवारे कतु भारा ग्रामे श्री मूनसपे सरस्वती गुष्ये बलात्कार गरो श्री कृदंकु दावार्यान्वये महारक श्री ५ रत्नबन्द जी तत्रहे महारक श्री ५ देवबन्द जी महारक श्री १०६ घमंबन्द जी तत्र शिष्य गोकलबन्द जी तत् लघ भाता ब्रह्म मेघजी।

ग्रंथ के ऊपरी माग पर लिखा है—

श्री रूपचन्द जीशिष्य मदासुख बाबाजी श्री विजयकीर्ति जी।

२३६३. प्रतिसं०६२ । पत्रस०१२८ । घा०६ 🗙 ४३ इच । ले० काल सं०१८४०। प्रपूर्ण । बेट्न स०८८ । प्राप्टिस स्थान —दि० जैन मदिर कोट्यों का मैरावा।

विशेष — प्रारम के ३० पत्र जिनोदय मूरि इ.त हसराज बच्छराज चौपई (रचना स० १६८०) के हैं।

**२३९४. प्रतिसं**० ६३ । पत्रस० ८१ । ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times ६ \frac{1}{2} ६०० । ले०काल स० १६३३ कार्तिक बुदी ११ । पूर्णे । बेष्टन स० ३४ ।$ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैरावा ।

विशेष---नैगावा मे प्रतिलिपि हुई।

**२३८४. प्रतिसं० ६४ ।** पत्रस० ११६ । प्रा० १० $\frac{7}{4} \times ५ ६ च । ले०काल स० १८६६ चैत्र कृषी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १० ।$ **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसावा ।

**विशेष** — नैएवानगर मे चुन्नीलाल जीने लिखवाया।

**२३६६. प्रतिसं० ६५ ।** पत्र स० ६४ । ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{6}$  इञ्च । ले० काल स० १७३३ मामोज मुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपूर्ण दि० जैन मन्दिर नैरावा ।

विशेष -पूजा की प्रतिलिपि पश्चित श्री शिरोमशिदास ने की थी।

२३९७. प्रति सं० ६६ । पत्रस०३३७ । ग्रा०१२४७ इत्र । ले०काल स०१९४३ । पूर्ण । बेष्टन स०१३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बृंदी।

२३६८ - प्रतिसं०६७ । पत्रस० २२ । लेक्शल स०१ - ६२ चेत सुदी६ । पूर्ण। बेक्टन म०१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर स्वामी बूदी।

. **२३८६. प्रति स०६ ८ ।** पत्र सं०१३२ । द्या०१०४४ इ.चा । ले० काल स०१८८७ । पूर्ण। वेष्टन सं०२०६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागरी बुंदी । २४००. प्रतिसं०६६ । पत्रस०१४०। प्रा०११imes७३ च । ले० कालimes। पूर्र्ण! बेहनसं०३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

विशेष -- हिन्दी गद्य टीका सहित है टोक नगर में लिपि की गई थी।

२४०**१. प्रति सं० ७०**। पत्रस० ६–१००। घा० ६imes४ इ.च। ले०काल स०१५४४ वैशाख बुदी ६। **प्रपू**र्ण। वेष्टन स० ३२१। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी बुदी।

**२४०२. प्रति सं० ७१।** पत्रसं० ३१। प्रा० ६ $\frac{5}{4}$  $\times$ ५ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेग्टन सं० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, पार्श्वनाथ चौगात खंदी ।

**२४०३. प्रति स० ७२। पत्रस०** ६६। ब्रा० ६ $\frac{3}{4}$  $\times$ ६ $\frac{4}{5}$  इन्धा ले०काल १८८२। प् $\pi$ ा केलन सं० १८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्धनाथ बुंदी।

**२४०४. प्रतिसं० ७३ पत्रस०** ६० । म्रा० १२imes६ $^2$  इश्वरा ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन म॰ २ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पावर्वनाथ चौचान ब्रुदी ।

२४०५. प्रतिसं० ७४ । पत्र स० ६१ । आ० ११ $\times$ ५१ हुन्छ । ले० काल स० १७०४ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१ । प्राप्ति स्थान्—दि० जैन सन्दिर आदिनाथ स्वामी मानपुरा (टोक) ।

विशेष-संवत् १७०४ कार्तिक बुदी १३ शुक्रेवार लखि हरि जी शुभ भवत् ।

२४०६. प्रति सं० ७४ । पत्र स० ४ से १४ । प्रा० ६३ ४ २३ इ.च. । ले०काल स० १८१४ कार्तिक । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ६ । प्रा**प्ति स्थान**---दि० जैन मंदिर चौधरियान (मानपुरा) ।

विशेष--- ५६ से बागे भक्तामर स्तीत्र है।

**२४०७. प्रतिसं०७६ ।** पत्र स०६६ । द्या०११ हे ४, ४ दश्वरा ले०काल ः । पूर्णः । वेहतस०४६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

२४०**८. प्रति स० ७७** पत्र स० १६। आ० ११३ ×५ दश्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । बेष्टून स० ५०३ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

२४०६. प्रतिसं० ७८ । पत्र स० १०१-१२६ । झा० १२ 🗴 ४३ इ.च.। ले० काल १६४६ । वेष्टुन म० ७५६ । अपूर्णः । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मस्टिंग् लक्कर, जयपुरः ।

**२४१०. समाधितंत्र—पूरुषपातः ।** पत्र म०६ । म्रा०६२ूँ ४५ $\S$  द्वा । भाषा - मस्त्रत । विषय— । संग र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्णा । बेष्टन म० ४५४ । **प्राप्ति स्थान** - म० दि० जैन मस्तिर, अपनेर ।

२४**११. प्रतिसं० २** पत्रसं० १४। ले०काल > पूर्गा । बेष्ट्रन स० २६६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

२४**२२ समाधितंत्र भावा— पर्यंतधर्मार्थां**। पत्र म०१४७ । झा०१२४६ <sup>2</sup>हे इखा भावा— हिन्दी. गुजराती । विषय—योग । र०काल ४ । ले०काल म०१७४४ फामुण बुदी ६ । पूर्ण । वेस्टन स०६६० । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२४१३. प्रतिसं०२ । पत्र स०१०० । प्रा०१२३ ४७ है इचा । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टुत सं०११६७ । प्राप्तिस्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर । **२४१४. प्रतिसं० २**। पत्र स० १५ मः। आ० ११ ४६ च । ते० काल १८ मर । पूर्ण । वेष्टन स० २२२-६०। **प्राप्ति स्थान-**--दि० जैन मन्दिर कोटबियो का हुंगरपुर ।

२४१**४. प्रतिसं०४** । पत्र स०१४४ । झा०११४४ इ.च । ले०काल स०१६६८ । पूर्णा बेष्टुन स०१७६ । **प्राप्ति स्थान**—प्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रणस्ति निम्न प्रकार है--

संबत् १६६८ मे वयं फागुण बुदी १२ दिने श्री परतापपुर शुनम्बाने श्री नीमनाथ कैरयालये कुट-कुदा वार्याम्बये भ० थी सकलकीर्ति तदाम्नाये भ० रामकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री पद्मनिदिशा श्रिय्य बह्म नागराजेन इद पुस्तक लिखिन।

२४**१६ प्रति सं० ⊻** । पत्रस० १८७ । ग्रा० ११२<sup>2</sup> × ४ इला । ले∘काल स० १७३७ । पूर्ण । बेष्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—प्रप्रवाल वि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--सागवाडा के श्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई थी।

**२४१७. प्रति सं० ६**। पत्र स० १७६। फ्रा० ११ imes ४ १ इन्छ । ले०काल स० १७०६ मगसिर बुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स० ३१०/२२६। **प्राप्तिः स्थान—दि० जैन** सम्प्र**नगय** प्रदिर उदयपुर।

विशेष - ५० मागला पठनार्थ ।

२४१८. प्रति स० ७ । पत्र स० १७८ । प्रा० ११ $\frac{2}{5} \times \frac{1}{5}$  इन्छ । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । वेष्ट्र स० १०६ । प्राप्ति स्थान—सण्डेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

२४**१६. प्रति स० ८। पत्र** स० २६६ । झा० १०३ × ४ इचा । ले**०काल स०** १८०८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति स्थान** —लण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

।वशाय — प्रशास्त ।नस्त प्रकार हः— सवत १६०६ वर्षे शाके १६७३ प्रवर्त्तमाने सामोत्तमे मासे फागुरामासे शुक्लपक्षे पचमीतियौ ।

२४२०. प्रति सं०६। पत्र स०१२१। ग्रा०१० $\times$ ५२ द्वः । लेक्सल स०१५७५ काती मुर्दा १४। पूर्ण । बेहुन स० ८८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपूर शेखावाटी (सीकर) ।

विसेष—फनेहपुर के डेडराज के पुत्र कवीराम हीराकस्मी ने प्रतिनिषि कराई। मानवा मे प्रस्टा नगर है वहा पोरवार प्रधावती धानीराम श्रावक ने घाटतले कुण्ड नामक गाव मे प्रतिनिषि की थी।

२४२१ः **प्रति सं० १०।** पत्र स० ११३। ग्रा० १४ $\times$ ६३ इ.च.। ले**०का**ल १८२७ वैशाल बुदी ४। पूर्णः। वेष्टन स० १/८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)।

जोबनेर में प्रौतलिपि की गई।

२४२२. प्रति सं०११ । पत्र स०१६३ । प्रा०१२ imes ६ इखा। ले० काल स०१६०५ । पूर्ण । वेष्टन स०४१ । प्राप्ति स्थान-— दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेष--ग्रारतिराम दौसा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

२४२३. प्रति सं० १२ । पत्र स० ११६ । ध्रा० १२ imes ६ इन्छ । ले० काल सं० १८५२ सावन बुरी २ । पूर्णे । वेष्टन स० १३–३३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपयी दौसा ।

विशेष--हीरालाल चांदवाड ने चिमनराम दौसा निवासी से प्रतिलिपि करवाई थी।

२४२४. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २०१ । घा० ६१ ४ ५ है इन्छ । ले०काल स० १७४८ सावन सुदी १० । पूर्णा । बेष्टन सं० १४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करौली ।

विशेष -- रामचन्द्र बज ने साह जयराम विलाला की पोथी से मानगढ मध्ये उतरवाई।

२४२५. प्रति सं०१४ । पत्र स०१३७ । घा०१२ $\frac{3}{4} \times 4\frac{3}{4}$  इच्छ । ले० काल स०१६१२ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं०३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पूरानी डीग ।

**२४२६. प्रति सं० १५ ।** पत्रस० ११३ । म्रा० १३×६ $\frac{1}{6}$  इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । **बेह**नसं० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानशी कामा ।

२४२७. प्रतिसं०१६ । पत्र स०२०१ । बा०१०१४४ १ डब्ब । ले० काल स०१६१७ । पूर्णावेष्टनसं०३४१ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२४२ **८. प्रति सं०१७।** पत्रस०१३६। ले० काल स०१७४१। पूर्यं। वेष्टनस०३४२। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष-वयाना में प्रतिलिपि हुई थी।

**२४२६. प्रति सं० १८ ।** पत्र सं० २२० । ग्रा० ११ $\times$ ४ $} इंच । ले०काल म० १७२६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।$ 

**२४३०. प्रति सं० १९** । पत्र स०१२ । घ्रा० १२×४३ इश्वाः ले०काल × । घ्रपुर्साः बे**हत सं०**३६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२४३१. प्रति सं०२०। पत्र स०३१६ । झा०११ ४४ इश्वः । ले० काल स०१७०५ । पूर्णः । बेष्टन सं०२४ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२**४३२. प्रति सं० २१** । पत्र स०१३४ । आ०११ ४७ है इखा । ले०काल स**१**८७७ आसोज सदी **१३** । पूर्ण । बेष्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती वासा ।

विशेष—जोधराज कामलीवाल काम। वालों ने सेढमल बोहरा भरतपुर वाले से प्रतिनिधि कराई थी । फ्लोक स० ४५०१।

**२४३३. प्रतिसं० २२** । पत्र संख्या २०६ । ब्रा० ११३/४४ देश्व । लेक्शल म० १७३० कार्तिक बुदी ११ । पूर्णु । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर बयाना ।

विशेष--काशीराम के पठनार्थ पुस्तक की प्रतिलिपि हुई थी। प्रति जीस्ं है।

२४३४. प्रति सं. २३ । पत्र स० १८२ । ले०काल स० १७७४ । पूर्ण । वे०स० २७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--गुटका साइज है।

२४३६. प्रति सं०२४ । पत्र सं०१४८ । बा० १ $\frac{3}{7} \times \mathbb{I}_{\frac{3}{7}}$  इत्थ । ले० काल स०१८३४ । पूर्ण । वे० सं०११६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रप्रवाल पंचायती मन्दिर स्रलवर।

२४३७. प्रति सं० २६ । पत्रस० १८३ । प्रा० ११ $\times$ ५ इन्छ । ले॰काल स० १८८२ प्रवाद सुदी = 1 पूर्ण । बेहन स० १८/१०२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रवायती मन्दिर प्रलबर ।

**२४३८. प्रतिसं० २७ । पत्रस०** २०८ । ब्रा० ११ imes ७ इञ्च । ले**०काल** स० १८२३ सावस्य सदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—साहजी श्री मोहरणरामजी ज्ञाति वचेग्वाल बागडिया ने कोटा नगर में स्वयंभूराम बाकलीबाल से प्रतिलिधि कराई ।

२४३६. प्रति सं २६ । पत्र सं०१७२ । ब्रा०१० ${}^{3}$ ४६ इला । ले० काल स०१७५१ धाषाढ बदी १ । पूर्सा । वे० स०१/६५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पाइवेनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष - कोटा नगर मे चन्द्रभागा ने बाई नान्ही के पठनार्थ लिखा था।

२४४०. प्रति सं० २६। पत्र सं० १८३ । ग्रा० ११३ 🗙 ५ इचा। लेखन काल सं० १७८१ ग्राचाड सुदी ७। पूर्ण । वे०स० ७६/६६। प्रास्ति स्थान —पाण्वनाय दि० जैन मन्दिर इन्टरगढ (कोटा)।

विशेष -- अतिम पत्र दमरे ग्रथ का है।

घरणी वसु सागरे दुहायने नभतरे च । नामस्यासितपक्षे मनतिथि सुरराजपुरोधर ।।

लि० चन्द्रभागोन बाई नान्ही सित शिरोमिंग जैनधर्मधारिगी पठनार्थ कोटा नगरे चौहान वंश हाडा दुर्जनसाल राज्ये प्रतिलिपि कृत । पुस्तक बडा मदिर इन्टरमढ की है ।

२४४**१. प्रति सं० ३०।** पत्र सं० १७६। ग्राऽ १३ × ६ है इन्छ । ले० काल सं० १६१ म पूर्ण। वे० स० ६०। **प्राप्ति स्थान**—पार्श्वनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष-सवाईमाधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

२४४२. प्रति स० ३१ । पत्रस० १८ । ग्रा० १० imes ४ $rac{1}{2}$  इञ्च । ले०काल imes । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रतसं $oldsymbol{o}$ —३४५ । प्राप्ति स्थानः—िद० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी) ।

२४४**३. प्रति सं० ३२**। पत्रम० ७१ । ब्रा० १००४ हुँ इ.च.। लेक्काल सं० १७६४ चैत सुदी ८। पूर्ण । **बेष्ट**नस० ७०--११४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टौडारायसिंह (टोक) ।

**२४४४. प्रति सं० ३३ ।** पत्र सं० ३१७ । प्रा० १०३ $\times$ ४ इन्थ । ले०काल स० १७७६ पौष बुदी ६ । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ३७ । **प्राध्ति स्थान—**दि० जैन तेरहथथी मन्दिर नैसाबा ।

विशेष —नाषुराम बाह्यए। जोशी बराहटे के ने प्रतिनिधि की । लिलाई साह मोहनदास ठोलिया के पुत्र जीवराज के पटनार्थ। चिमनलाल रतनलाल ठोलिया ने सं० १९०८ में नैराबा में तेरह्पंथियों के मदिर में प्रति चढ़ाई।

२४४५. प्रति सं. ३४ । पत्रस० १११ । प्रा० १३ $\times$ ६५ इचा । लेकाल स० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी ।

२४४६. प्रतिसं० ३५ । पत्र सं०१५७ । स्ना०१२ $\times$ ५ $^{3}$  ६ $^{4}$  । से०काल स०१७३६ मंगसिर सुरी ३ । पूर्णे । बेष्टन सं०१२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय बूंदी ।

विशेष-सावलदास ने बगरू में प्रतिलिपि की थी।

२४४७. प्रति सं० ३६। पत्र स०२६३ । घा०६ $\frac{9}{8}\times$ ५ इला । ले० काल स० १६२४। पूर्णै । तेष्ट्रत स०३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बुंदी ।

**२४४८. प्रति सं० ३७।** पत्र स० २११। प्रा० ११x४ $_{7}^{2}$  इच्छ । ले० काल स० १८८३ वैशास सुदी ३। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

**२४४६. समाधितत्र भाषा--नायूलाल दोसी ।** पत्रसः १०१-१४२ । बार १२३ ४ इ. इ.च. । भाषा--हिन्दी (गवा) । विषय-- योग । २०काल १६२२ चैत सुरी १२ । लेर काल सर्०१६४३ प्र. ज्येष्ट सुरी १ । अपूर्ण । वेषन सर्० ४६३ । **प्रान्ति स्थान**-भट्टारकीय दिर्व जैन मन्दिर अजसेर ।

२४५०. समाधिवंत्र भाषा-रायचंद । पत्रस०५७। सा०१०  $\times$ ४५ इच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—योग ग्राहत्र । ए०काल  $\times$  । ले०काल स०१६६३ । पूर्ण । बेष्ट्रन म०६३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर पंचायती दृती (टोक)।

## विशेष — ग्रन्तिस परा —

**स्थान** — दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपर ।

जैसी मूल श्री गुरु कही तैसी कही न जाय। पैपरियोजन पाय कैलखी जह चदराय।।

२४**५१. समाधितत्र मार्घा** — imes । पत्र स०६१ । प्रा०११imes्रे इन्था। भाषा-सम्कत-क्रिन्दी (गद्या)। विषय — योग मास्त्र । र०काल imes । ले०काल imes । प्रपूर्ण। वेषून स०२४५ । प्रास्ति

२४५२. समाधि तत्र भाषा— × । पत्र स॰ २४ । घा० १०३४४६ इन्ह । भाषा—हिन्दी (नख) । विषय—योग । र०काल × । ते०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स॰ २०७ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - २४ से ग्रागे पत्र नहीं है।

२४**५३. समाधितंत्र भाषा-मार्ग्यकचंद ।** पत्रसं० १८ । ग्रा० १२१ ५७ डवा । भाषा-हिन्दी । गद्य । विषय-प्योग । र०काल × । ले०काल स० १६४७ चैत सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टुनस० १४ । **प्राप्ति** स्थान-रि० जैन प्रप्रवाल प्रवासती मन्दिर स्रलवर ।

विशेष-वयभदास निगोत्या ने संगोधन किया था।

२४**५४. प्रतिसं**ठ २ । पत्र स०३ । म्रा०७३ ४६५ इत्थ । से०काल 🗡 । पूर्ण । बेष्टन स०१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म्रप्रवाल प्रचायनी मन्दिर म्रलवर ।

२४**४५. समाधिमरण् भाषा—द्यानतराय** । पत्र स०२ । प्रा०६×६े इन्त्र । <mark>भाषा—</mark>हिन्दी । विषय—चिनन । २०कालः × । ले**०**काल ×। वेष्टन स०६४५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन सदिर लडकर, त्रयपुर ।

२४५६. समाधिमरण भाषा —सवामुख कासलीवाल । पत्रस० १४ । प्राण १२ ४५ १ इख । भाषा —िहिन्दी (गद्य) । विषय —िवतन । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४१६ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर खबगेर । २४५७. समाधिसरसा भाषा— × । पत्र स०२७ । घा० ११×६२ हुन्छ । भाषा— हिन्दी । विषय — चित्तन । र०काल × । लेक्झल सं० १९१६ पीप बुदी १३ । बुर्ल । वेष्टन स०१४४६ । प्रातिकच्यान – भादि ० जैन पत्रित्र प्रवासेर ।

२४५६. समाधिमरएा माषा—  $\times$  । पत्र स० १४ । मा० १२ $\times$ ६ दख । भाषा— हिन्दी । विषय—चितन । र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१३ । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर सजमेर ।

३४५६. समाधिमरए। भाषा—  $\times$  । पत्र सं० १७ । म्रा० १० $\frac{3}{4}$   $\times$  ४ ६२४ । भाषा— हिन्दी ग० । विषय — चिनत । २०काल  $\times$  । ने० काल स० १९०६ । पूर्ण । बेष्टन स० २२-६६ । प्राप्ति स्थात – दि० जैन मदिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोक) ।

२४६०. समाधिमररण भाषा— ४ । पत्र त० १४ । भाषा—हिन्दी । विषय—िवतन । २०काल ४ । ले० काल ४ । पुर्णे । वेष्टन स० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मन्दिर बसवा ।

२४६१. समाधिमरण माखा— $\times$ । पत्र म०१४। ग्रा०१२ $\frac{1}{8}$  $\times$ ६ इख । भाषा—हिन्दी ग्रह्म । विषय—िवतन । र०काल  $\times$ 1 ले० काल स०१६१६ कार्तिक सृदि १४। पूर्ण । बेष्टन म०१०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर फतेष्ट्रपुर, शंखाबाटी (सीकर) ।

विशेष--मगवगी हरिकिसन ने व्याम शिवलाल देवकृष्ण से बम्बई मे प्रतिलिपि कराई थी।

२४६२. समाधिमरण भाषा —  $\times$  । पत्र स०११ । प्रा०११  $\times$  ५ इन्छ । भाषा — हिन्दी । (सछ) । विषय — प्रात्मवितन । रक्काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । स्पूर्ण । वेष्टन स०१६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन स्रवताल सन्दिर उदयपुर ।

२४६३. समाधिमरए स्वरूप  $\rightarrow$   $\times$  1 पत्र स० १३ । प्रा० १०६ $\times$   $\times$  ७ डख । भाषा  $\rightarrow$  हिन्दी । विषय  $\rightarrow$  योग । र०काल  $\times$  । ले०काल म० १५२० ज्यंष्ठ मुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४६ । प्रास्ति स्थान  $\rightarrow$  १० जैन पत्रायती मन्दिर बयाना ।

२४६४. समाधि स्वरूप-  $\times$  । पत्र सं॰ १६ । माया-सस्कृत । विषय-चित्तत । ए०काल-  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्न स० ६३/२५० । प्राप्तिस्थान-दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२४६५. समाधिमरए स्वरूप—  $\times$  पत्र स० २३ । मा० ११  $\times$  ५ इत्र । भाषा—हिन्दी गय । विषय—योग । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान वृदी ।

**२४६६. समाधिशतक—पूज्यपाद ।** पत्रसः ७ । स्रा० १२×१ हुँ इव । भाषा—सःकृत । विषय—प्रध्यात । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सः० १६५ । **प्राप्ति स्थान**—स्ट्राग्कीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

२४६७. प्रति सं० २ । पत्रस० ८ । घा० ६imes४ इ.च । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टनसं० ५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पत्रायती दूनी (टोक) ।

२४६ म. प्रति सं०३। पत्रसं० म। धा०१० $\frac{3}{7}$  $\times$ १ इंच । ते०काल  $\times$ । बेष्टन स० १५ प्राप्ति स्चान—दि० जैन सन्दिर सस्कर, असपुर।

२४६६. समाधिकातक टीका — प्रभावन्द्र । पत्र तः १० । ब्रा० १२  $\times$  ५२ इं वः । भाषा— सस्कृत । विषय— अध्यादम । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६६ । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर क्षत्रमेर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

**२४७०. प्रति सं० २ ।** पत्र सं० २६ । ग्रा॰ १२ $\times$ ४ इ'च । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १६२६ । **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२४७**१. प्रतिसं०३।** पत्रस०३०। ग्रा०११×५ इ.च.। ले**०काल** स०१७४७ । पूर्ण । वेष्टन सं०२६। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

२४७२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २-४२ । घा० १०४५ इंच । ले०काल स० १४८० । घपूर्ण । वेष्टन स० २४० । प्राप्ति स्थान— ग्रवताल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवन् १५८० वर्षे ज्येष्ठ मासे १४ दिने श्री मूलसये मृति श्रीभृतनकीति लिलापित कमेश्रयनिमित्त । **२४७३. प्रति सं० ४ ।** पत्र म०२१ । मा०११ रे ४ १ इला । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रीभनन्दन स्थामी, बुंदो ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२४७४. प्रतिसं०६। पत्र स०८। ते० काल 🗴 । पूर्णः । वे० स०२० '२२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदमपुर। गलमात्र है।

२४७५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १२। ग्रा० ११२ ४ ४ है इश्व । ने० काल स० १७६१ कार्तिक सदी २ । पूर्ण । बेहन सं० ६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

विशेष—बसवा मे जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी।

२४७६. प्रति सं० कः । पत्रस० ११ । प्रा०१० 🗴 ४ इ-ता । ले०काल । पूर्णः । वेष्टनसं०१४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रधवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

२४७७. समाधि शतक—पद्मालाल जीधरी । पत्रतः ६० । भाषा— हिन्दी । विषय— प्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसः १७ । प्राप्ति स्थान—रि० जैन सन्दिर दीवानजी भन्तपुर ।

२४७८. सामायिक पाट $-\times$  । पत्रस॰ । । भाषा-प्राकृत । विषय-प्रध्यात्म । र०काल $\times$ । ते॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस॰ ३९६-१४६ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मंदर कोटडियो का हु गरपुर ।

२४७६. प्रति सं०२ । पत्रस० ११ । घा० १२ 🗴 ६२ इ.च. । न०कान 🗴 । पूर्स । वेष्टन सं०४६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

२४ म. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १४ । प्रा०१० ४ ६ इ.च । ले०काल— स०१६०६ सावरण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मेलावाटी (भीकर) । विकोध — अन्त मे दोलतराम जी इन्त सामाधिक पाठ के प्रस्तिम दोहे हैं जो सं॰ १८१४ की रचना है। संस्कृत में भी पाठ दिये हैं।

२४८१. प्रति सं० ४ . पत्रसं० ६ । या० ७२ ४ ३३ इ.च. । केश्काल सं० १४८३ । पूर्ण । बेहुत सं० २४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरमली कोटा ।

संबत् १४८३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनौ नागपुर नगरे जयाराद गरिए लिखतं चिरनंद तात् श्री संघे प्रसादात् ।

२४८२. प्रतिसं $\circ$  ४। पत्रस॰ १४६। ले॰कान imes। प्रपूर्ण । बेहनसं $\circ$  २४५ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष-पृति संस्कृत टीका सहित है।

२४८३ प्रति सं० ६ । पत्रस० २४ । ग्रा० ८ ४ १३ इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन मन्दिर नागदी बुँदी ।

२४८४. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १४ । ले०काल सं० १७६२ । पूर्णं । वेष्टन सं० ८ **। प्राप्ति** स्वान — दि० जैन पंबायती मदिर डीग ।

विशेष — डीग मे प्रतिलिपि हुई थी।

२४ स.४. प्रति सं० म । पत्र स० १४ । ग्रा० ११ × ४ इ.च । वेष्टन सं०३७२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर सक्कर, जयपुर ।

२४८६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४८ । ग्रा० ११३/  $\times$ ४ इचा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन खण्डेनवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है । सेठ बेलजी सूत बाघजी पठनायं लिखी गयी ।

२४८७. प्रतिसं० १० । पत्र स० ११। ब्रा० ११×५ इन्छ । लेखन काल 🗙 । पूर्ण । वेप्टन सं० २८१–१११ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुँगरपुर ।

विशेष—सस्कृत मे भी पाठ है।

२४ मन. प्रति स० ११ । पत्रस० २१ । धा० १० $\frac{1}{2}$  imes ५ इख । ले०काल स० १६१२ मादवा बुरी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३७३-१४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

२४६६. प्रति सं० १२ । पत्रस० ७ । प्रा० ६ $\frac{1}{\epsilon}$   $\times$  ५ $\frac{1}{\epsilon}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । ।बेहन स० ४६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

२४६०. सामाधिकपाठ –  $\times$  । पत्र स० ३३ । सा० १२ $\times$ ६२ ६ च । माधा —संस्कृत । विषय –स्यात्म । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १६१३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५१२ । **प्राप्ति स्थान** — महास्कीय दि० जैन मन्दिर स्रजनेर ।

विशेष-प्रति हिन्दी मर्थ सहित है।

२४६१. सामाधिक पाठ $--\times$ । पत्र स० ७२ । माया --संस्कृत । विषय ---प्रध्यास । र॰काल  $\times$ । से॰काल स० १६४१। पूर्ण । बेप्टन सं॰ ६/४१०। प्राप्तिस्थान---संगवनाथ दि॰ जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स्वतित सबत् १६४१ वर्षे की मूलसचे सरस्वतीयन्त्रे घनोट हुने नन्द्रनाय चैरवालये भ०श्री ज्ञानभूषण प्रनाचन्द्राणा विश्वेषण उपाध्याव श्री घमेकीतिला। स्वहत्तेन लिलिन ब्रह्मप्रजित सागरस्य पुस्तकेद । ब०श्री मेघराजनतान्त्रेक्य ब०श्वकितनिक्यण

दर्शनविधि भी दी हुई है।

**२४६२. सामाधिक पाठ**— $\times$  । पत्रसं० १६ । प्रा० ६  $\times$  ४ $^{3}$  इ.ब. । भाषा—सस्कृत । विषय—प्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ता । वेप्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर पाष्ट्रंताथ चौगान व दी ।

२४६३. सामाधिक पाठ(लघु)— ४ । पत्र स०४१ । मा० १२४६ इत्त्र । भाषा—सस्कृत । विषय—मध्यासः । र०काल ४ । ले० काल स०१७४६ । पूर्ण् । बेय्टन स०२२१ । प्राप्तिस्थान— वि० जैन मन्दिर नागरी वदी ।

विशेष—सहस्रनाम स्रोत्र भी है।

२४६४. सामाधिक पाठ $--\times$ । पत्रस० १६। आ० ६८६ $^2_7$  इच । भाषा--सस्कृत । विषय--प्रध्यातम । र॰काल $--\times$ । ले॰काल $-\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६ $^2_7$ १२ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन पद्मायती मन्दिर हनी (टोक) ।

२४६५. सामाधिक पाठ $-\times$ । पत्र स०२०। भाषा-सम्झत । विषय-ग्रध्यास्म । र०काल $-\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स०४६१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर।

२४६६. सामायिक पाठ─× । पत्र स० ३ । ग्रा०११×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्राच्यात्स । रकाल × । नेक्काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मीन्दर बोग्मनी कोटा ।

२४६७. सामाधिक पाठ $-\times$ । पत्र स०१३। या०१० $\times$ ४२ देव । भाषा - सरहत । विषय-प्रध्यास । रक्कास $-\times$ । तेककाल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन २०२०। प्रास्ति स्थास-पार्थनाथ विकलेन सिंदर दरशराह कोट्यो

२४६८. सामाधिक पाठ $-\times$ । पत्र त०१७। आ० ६ $^2_7\times$ ६ इच । आया—सस्कृत । विषय—प्रध्यास । र०काल  $\times$ । लेकाल $-\times$ । पूर्णः। वेष्टन त०२४६-१०२। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु यरपुर ।

२४६६. सामायिक पाठ- $-\times$ । पत्रस० २३। प्रा० १० $\frac{1}{7}$   $\times$  १ दव । भाषा — सस्कृत । विषय — प्रध्यास । २०काल  $\times$ । ले० काल स० १६६६। पूर्ण । बेष्टन स० ११४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

२५००. साथु प्रतिकमरण सूत्र— × । पत्रस० ६। प्रा० १० ४४ ई दश्व । भाषा—प्राकृत । विषय—चित्रता र०काल × । ते० काल स० १७३० माघ दुरी १२। पूर्ण । वेष्ट्रत स०१०८-६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दोमा ।

विशेष--हिन्दी धर्य भी दिया हमा है।

२५०१. सामाध्यक पाठ(बहुद्)— $\times$ । पत्रसं० १४। मा० १० $\times$ ७ इन्छ । भाषा—संस्कृत । विषय —प्रध्यात्म । र०काल्  $\times$  । ले० काल  $\times$  । बेष्टन स० १७६-१६४। **प्राप्ति स्थान**—वि॰ जैन मीचर नेमिनाच टोडारायमिह (टोक) ।

२५०२. सामायिक पाठ (सघु) —  $\times$  । पत्र स०१। मा०१० $\times$   $Y_{\delta}^2$  इखा । माषा-सस्कृत । विषय—सन्वासा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०२६३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दसलाना (इदी)

२५०३. सामाधिक पाठ (लाक्षु)— × । पत्र स॰ ४ । घा० ५ ×६ इचा । भाषा — प्राकृत । विषय — प्रध्यातम । र० काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३०५–११७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुँगरपुर ।

विशेष-सम्कृत में भी पाठ दिये है।

२५०४. **सामाधिक पाठ— बहुमुनि** १ पत्र म० ११ । ग्रा० २imes६ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विदय—स्पर्यात्म । रकाल imes । ले० काल imes । पूर्ता । वेष्टत म० ६६ । **प्राप्तिस्थान** —दि० जैन मन्दिर कोरमणी कोटा

२**५०५. प्रति सं०२ ।** पत्र स०१७ । ग्रा०११×५ इन्दा । ले**०काल स० १**६१७ वैगास मदी ४ । पूर्या । वेष्टन स०३४ । **प्राप्ति स्थान**—नेन्द्रपयी दि० जैन मन्दिर नेगवा ।

२५०६. सामाधिक पाठ  $\times$ । पत्रस $\circ$  ४। भाषा — हिन्दी । विषय — ग्रन्थातम । रुवकाल  $\times$  । लेवकाल  $\times$  । पूर्ण । वेक्नस $\circ$  ७४३ । प्राप्ति स्थान-दिव जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

२५०७. सामायिक पाठ भाषा--जयचन्द छाबडा । पत्रस० ७० । ब्रा० ११ ४४ इन्ह । भाषा--हिन्दी (गय)। विषय-प्रध्यात्म । र० काल स० १८३२ वैशास सुदी १४ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वैधृतम० १२६४ । प्राप्ति स्थान-- महान्सीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२५०८. प्रतिसं० २ । पत्रस $\circ$  ३८ । ब्रा० ११ $\frac{1}{7} \times$  ५ इखा । लेक्सल स $\circ$  १८८७ माघ सुदी १३ । पूर्ण । बेहुन स $\circ$  ३०७ । प्रास्ति स्थान—भट्टारकीय दि $\circ$  जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

२**५०६. प्रतिसं० २** । पत्र स० ४५ । धा० ११ % ५२, इ.च. । लेक्काल ४ । पूर्मा । बेहन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान** - भटारकीय दि० जैन मन्दिर खलमर ।

२**५१०. प्रति सं०४** । पत्र स०१४ । धा०७ X ६ इच्च । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर व दी ।

विशेष -- जिनदास गोधा कृत सुगुरु शतक तथा देव शास्त्र गुरु पूजा और है।

**२५११. प्रतिसं०** ५ । पत्रतः० ६२ । घा० १०३ ४ ५३ इश्वः । ले०काल स० १६१८ चैतः बुदी ४ । पूर्णः । बहुन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**----दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर) ।

२**४१२. प्रतिसं० ६** । पत्र म० ४४ । द्या० ६ $\times$ ७ इन्छ । ले०काल म० १६२६ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर) ।

२५१३. प्रति सं० ७ । पत्र स० ४३ । प्रा० १२ ४ ६१ इन्हां । से०काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टन स० १३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लण्डेलवाल प्रचायती मन्दिर प्रतवर ।

२**४१४. प्रति सं० ६ ।** पत्र सं० २४ । ले॰काल 🗴 । पूर्यो । वेष्टन स ४४१ । **प्राप्ति स्थान** वि० जैन पंचायती मदिर भरतपुर ।

२५१५. प्रति सं० है। पत्र सं० २४। ले॰काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४२। प्राप्ति स्थान—वि० जैन पत्रायती मन्दिर (मरतपुर)।

२५१६. प्रति सं० १० । पत्र स० ४४ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४५४ । प्रास्ति स्थान दि० जैन पंचायती मंदिर मरतपुर ।

**२५१७. प्रतिसं० ११ ।** पत्र स**० ४८ । मा० १३**×६ इल्ब । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वेकन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर पाइवैनाच टोडारायसिंह (टोक) ।

२५१६. सामाधिक पाठ भाषा - म. तिलोकेन्द्रकोत्ति । पत्रसः ६८ । घा० ७४५ ६ स्था । भाषा - हिन्दी । विषय - प्रध्यारम । र०काल ४ । ते०काल स० १८४१ सावरा मुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३४ । प्राप्ति स्थान - भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२५१६. सामायिक पाठ भाषा— धक्नालाल । पत्रस० ३१ । धा० २ $\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय — धर्म । र०काल स० १६४५ धासीज बुदी ६ । ले॰ काल म० १६७५ जोष्ठ मुदी ६ । पूर्ण । बेकुन सं॰ १३६,२१ । प्रान्ति स्थान—पार्थ्वनाथ दि॰ जैन मदिर दन्दरगढ (कोटा)

विशेष—गोविन्दकवि कृत चौबीस ठाएगा चर्चा पत्र स० २७-३१ तक है। इसका र०काल स० १८८१ फागूएग सदी १२ है।

२५२०. प्रति सं०२ । पत्रस०२७ । प्रा०६ $\frac{3}{7}$   $\times$  ६ डञ्च । ले०काल स०१९४६ वैशास सदी १० । पूर्ण । बेष्ट्रन स०४/४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष—२५ से २७ तक चौबीस ठाएग चर्चाभी है जिसकी गोविन्दकवि ने स०१८१ में रचना की थी।

२५२१. सामायिक पाठ भाषा—श्यामराम । पत्रत्त० २३। भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यात्म । र०काल १७४६ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६० । प्राप्ति स्थान — जैन दि० पश्चायती मन्दिर, भरतपुर ।

२५२२. सामायिक पाठ—  $\times$ । पत्रस $\circ$  ४। प्राः १  $\times$  ४ $^{\circ}$  इञ्च । भाषा—िहस्री (गर्छ)। विषय—प्रध्यात्म । र $\circ$ काल  $\times$ । ते $\circ$ काल  $\times$ । पूर्ण । वैष्टन सं $\circ$  ७०। प्राप्ति स्थान—िद $\circ$  जैन मन्दिर दवलाना (बु दी)।

२५२३. सामाधिक पाठ-  $\times$  । पत्रस $\circ$  १। ग्रा $\circ$  ६ $\times$ ५ इत्तः। भाषा-हिन्दी गर्च। विषय-प्रध्यास्म । र $\circ$ काल  $\times$  । ते $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  १८७। प्राप्तिः स्थास-दि $\circ$ जैन मिदर प्रीप्तनन्दन स्वामी, बूदी ।

२५२४. सागायिक पाठ —  $\times$  । पत्रसः ७६ । मा॰ ६ $\frac{2}{5}$   $\times$  ५ ६ खः । भाषा - हिन्दी । विषय – प्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । से॰ काल  $\times$  । मपूर्ण । बेष्टनसं॰ ३३६ । मास्ति स्थान — ६० जैन मन्दिर मिनन्दन स्वामो, इंदी ।

२५२५. सामायिक पाठ संग्रह—  $\times$  । पत्र सं० ६४ । आ ० १२ $\frac{1}{8}$  ४ ६ इवा । भाषा-संस्कृत । विषय—प्रध्यात्म । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १०२७ प्राथाद सुदी ११ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ४७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-सवाई जयपुर में महाराजा पृष्णीसिंह के राज्य में विमनराम दोषी की दादीने नैग्यसायर से प्रतिलिपि करवाकर चढाया था।

मुख्यतः निम्न पाठो का सप्रह है--

बृहर सामायिक, भक्ति पाठ, जौतीसमितिषयमिक्ति, द्वितीय नदीश्वर मिक्ति, बृहर स्वयमुस्तोत्र, भ्राराधना सार, लघप्रतिकमण, वहत् प्रतिकमण, कायोत्सर्ग, पट्टावली एवं प्राराधना प्रतिबोध सार ।

२५२६. सामायिक प्रतिकम्पण् $--\times$ । पत्र त० १०५। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—प्रधास्म । र०काल  $\times$ । ले०काल सं० ११४४ पूर्णः। बेष्टन स० ३४६। प्रास्ति स्थान—रि० जैन मन्दिर रीवानजी कामा ।

२५२७. सामाधिक टीका—  $\times$ 1 पत्रसः १४०-७७ । घा० १३ $\times$ ५ इतः । भाषा—सस्तृत । विषय—प्रध्यात्म । र०काल । ते०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन सं० १७६/४१६ । प्रास्तिः स्थान—सम्मवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२८. प्रति स०२ । पत्रस०२-२६ । ले०काल 🗴 । प्रपूर्णं । बेष्टन स०१८०/४२० । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

२५२६- प्रतिसं $\circ$  ३ । पत्र स $\circ$  २-१७ । ले $\circ$  काल imes । अपूर्ण । बेष्टन स $\circ$  १८१/४२१ । प्रास्ति स्थान—सम्बनाय दि $\circ$  जैन मदिर उदयपुर ।

२५३०. सामायिक पाठ टीका—  $\times$  । पत्रस॰ ६० । प्रा॰ १२ प्र५ $^{\$}_{1}$  इवा । भाषा—िहन्दी सस्कृत । विषय—प्रध्यास्म । र०काल  $\times$  । लेक्काल म० १०२७ । पूर्ण । बेक्न स० २१-०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बडा बोनपथी दोता ।

विशेष --स्योजीराम लुहाडिया ने प्रात्म पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२**५३१. सामाधिक टीका**— imes । पत्रस० ७३। माषा—संस्कृत । विषय—प्रध्यात्म । र०काल imes । ले०काल imes । प्रपुर्ण । बेष्टनस० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन,नेरहपयी मदिर बसवा ।

२५३२. सामाधिक पाठ टीका —  $\times$  । पत्र सं० ११ । प्रा० ११३  $\times$   $^1_2$  इंच । आधा — सम्ब्रत । विषय — प्रध्यास्य । २०कान  $\times$  । से०काल सं० १०१४ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २०२ । प्राप्ति स्थान —दि० चैत सन्दिर बोरसली कोटा ।

खिरोष---सवत् १८१४ चैत मासे शुक्लपक्षे पचम्या लिपिकृतं पंडितः मालमचन्दं तत् शिष्य जिनदाम पठनार्थं ।

२४३३. सामायिक पाठ टोका— $\times$ । पत्रस $_0$ ४४ । प्रा $_0$ १३ $\times$ ४३ । माण $_{\overline{\alpha}}$ स्कृत । नाषा—सत्कृत । विषय-प्रध्यास । र०काल  $\times$ । ले०काल स $_0$ १७६० घाषाढ़ बुदी ७। पूर्ण । बेहून सं $_0$ १७३ । प्राप्ति स्थान—दि $_0$  जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष--प्रति जीसं है।

२५३४. सामाधिक पाठ टीका —  $\times$  । पत्र सं० ४५ । छा० १२ $\frac{1}{4} \times$  ७ इख । भाषा — सस्कत-हिन्दी । विषय — प्रध्यांस । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८२० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी. कामा ।

२४,२४. सामायिक टीका — ४ । पत्र त० ७४ । प्रा० ६ ४७ इचा । भाषा⊸सस्कृत-हिन्दी । विषय — प्रध्यास्य । रे०काल ४ । ले०कात २०६६ ४१ चैत सुदी १३ । पूर्ण। वेष्टन स०३/७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदि० दवा बीमपर्थी दीमा ।

विशेष---रतनचन्द पाटनी ने दौसा मे प्रतिलिपि की ।

३५३६. सामायिक पाठ टीका सहित— × । पत्रसः १००। ग्रा॰ रहे ४५ इच । मापा-हिन्दी । विषय-प्रध्यातम । र०काल × । ले॰काल स० १७८७ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पनायनी मन्दिर कामा ।

विशेष - जहानाबाद मे प्रतिनिपि हुई ।

२५२७. **सास्यमादना**— ४ । जन्नक ३। ग्रा० १२४४ ६७। भाषा—सस्कृत । विषय— इष्ट्यास्थ । २०कास ४ । ते०कास ≿ । पूर्ण । वेष्टन म० २६२/१६६ । **प्रास्ति स्थान**—समबनाय दि० जैन सदिन उदयपुर ।

२५३ **८. सवराक्षनुमप्रक्षा**—सूरत । पत्रस्व २ । प्राव ११ $\times$ ४ इखा । भाषा —हिन्दी । विषय —िचलत । रक्षाल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । बेष्ट्रम सक्दश्य । पूर्णः । प्राप्ति स्थान—दिव्जैन मन्दिर लक्कर जनपुर ।

विशेष-दादश अनुप्रेक्षा कः भाग है।

विशेष -- भ्राचार्य यग कीत्तिता स्वहस्तेत लिखित ।

२५४०. सरवगसार संत विचार—नवलराम । पत्रस०२७८ । मा०१०१ ४ ५१ टखा भाषा-हिन्दा । विषय-मध्यात्म । र०काल स०१८३४ पीष बुदी १४ । ले० काल स०१८३७ । पूर्णा । वेप्टत स० ५०५ । प्राप्ति स्थान—भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

विशेष--- (गुटका मे है)

प्रारम्भ — स्वजुक्त मुक्त पाँग, सहाँर करि वससी बुधि विवार । श्वजुक्तार गृह प्र. च, जो ताको कर् उवार । ताको कर्ल 'उवार सावि सता को त्याऊ । जकति जुकति परमागा, और प्रतिवृक्ष सुनाऊ । नवलराम सरग्री सदा, तुम पद हिरदे धारि । सत्युष्ठ मुक्त्यर महरू करी, वसती बुधि विवार । २५४**१. सिद्धपंचासिका प्रकर**्ग $-\times$ । पुत्रस०१०। प्रा०६२ $\times$ ४ $^1_2$  इख । भाषा- प्राकृत । विषय- प्रध्यारम । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टुन स०४६६ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--कोटा के रामपुर में महाबीर चैत्यालये में प्रतिलिपि हुई थी।

## विषय - न्याय एवं दर्शन शास्त्र

२४४३. **शक्सहरूती-आः विद्यानितः** । पत्र स०२४१ । सा०१२×४<sub>६</sub> दश्च । साथा-संस्कृत । विषय-जैन न्याया । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०१४६३ । **प्राप्ति स्थान**---भक्त दिक्केत निकट प्रवर्षण ।

विशेष-देवागम स्तोत्र की विस्तृत टीका है।

२५४४. प्रति स०२। पत्रस०२०४। घा०१२४४ हवा। ले∘काल ४ । पूर्णं। वेष्टन स० ३५६। प्राप्ति स्थान---- दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

२५४५. **प्रतिसं० ३।** पत्र स०२०१। ग्रा० १३  $\times$  ५ इञ्च । ले•काल  $\times$ । श्रपूर्णं  $^{\dag}$  बेष्टन स०१५६। ४८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाय मदिर उदयपुर।

विशेष — प्रति जीर्ग है। बीच में कितने ही पत्र नहीं है। भ० वादिभूषण् के शिष्य ४० नेमिदास ने प्रतिकिप की थी।

२५४७. ग्राप्त परीक्षा — विद्यानि न्व । पत्र स० १४३ । ग्रा० १२ $\times$ ५ इन्तः। भाषा – सस्कृत । विषय - दर्णन शास्त्र । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रयंज्ञान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-मृति श्री धमभूषण तत् शिष्य बह्य मोहन पठनार्थ ।

२५४८. प्रति स० २ । पत्र स० ७३ । प्रा० १२ 🗴 ५ इश्वः । ले०काल म० १६३५ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्यो । तेष्टुन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- प्रकबर जलालुद्दीन के शासनकाल मे अरगलपुर (ग्रागरा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

२५४६. प्रति सं० ३ । पत्र क० ६३ । म्रा० १२ × ५ इश्व । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११८३ । प्रास्ति स्थान—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२४.५०. प्रतिसं० ४ । पत्र म०६ । घा० ११ $\times$ ४ है इन्त्रः । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्णः । वेष्टुत स०२४/२३४ । प्रास्ति स्थानः—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२५५१. ब्राप्तमीमांसा—प्राचार्यं समन्तभद्र । पत्रसं० ५०। ब्रा॰ ११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय-न्याय । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$ । पूर्णं । वेष्ट्रन स॰ ३५० । प्राप्तिः स्थान—दि॰ जैन प्रयवाल मन्दिर उदयप्र ।

विशेष--गोविन्ददास ने प्रतिशिषि की थी । इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र मी है ।

२४४२- प्रति सं० २ । पत्र स० ३४ । ले०काल  $\times$  । धपूर्ण । बेष्टन सं० १४७/४१० । प्रास्ति स्थान – दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर । विशेष--प्रति प्राचीन है। "व्र. मेघराज सरावगी" लिखा है।

२५५३. प्रति सं० ३ । पत्रसं० २६ । घा० १२५/२८ इला । ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

२५४४. आप्तमीमांसा माचा—जयमन्य छाबडा । पत्रसं॰ ११६ । आ॰ १०० ४ ११ इञ्च । भाषा—राजस्यानी (हु डारी) गव । विषय—न्याय । र०काल सं० १८६६ चैत बुदी १४ । ले०काल सं० १८६६ चौत बुदी १४ । ले०काल सं० १८८६ माह बुदी १ । पूर्ण । वेष्टुनसं० १९८४ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

नोट-इसका दूसरा नाम देवागम स्तोत्र भाषा भी है।

२**५५५. प्रति स० २ ।** पत्रस० १०४ । झा० १०३ × ४ इचा । ले० काल × । पूर्णं । बेष्टनस० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२५५६. प्रति स० ३ । पत्र स० ७६ । घा० १०१४ ७ इ.च. । ले०काल स० १६६१ । पूर्या । बेधुन स० ५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूदी ।

विशेष-- चन्देरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

२४४७. प्रतिसं० ४। पत्र स० ६२। प्रा०११४४ इन्छ । ले० काल स० १६६० भादवा इटी १। पूर्ण वेष्ट्रन स० ४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रग्रवाल पत्रायती उदयपुर।

२४५८. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । बेष्टत सं० ३१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपुर ।

२५५६. प्रति सं०६। पत्र स०६१। ले०काल स०१८६। पूर्णं। वेष्टन स०३११। प्राप्ति स्थान---दि जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर।

२५६०. प्रति स० ७ । पत्र स० १०१ । घा० ११ imes imes imes imes imes इच्च । ले० काल सं० १९२५ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ५३/१९७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल प्रवासती मन्दिर अलवर ।

२५६१. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६७ । झा० १२ ४ ८ इश्वा । ले० काल स० १८६८ । पूर्णं । वेष्टुन स० ८० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष-साह धन्नालाल चिरन्जीव मांगीलाल जिनदास शुभंधर इन्दरगढ वालों ने जयपुर मे प्रति-लिपि कराई थी।

२५६२. प्रति सं० ६ । पत्रस० ५६ । घा० १२ ×५२ इन्छ । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष-- फागी मे प्रतिलिपि की गयी थी।

२५६३. प्रतिसं० १० । पत्रस० ६१ । घा० १२imes५६ व्या । ले०काल imes । पूर्ए । बेष्टनसं० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

२५६४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५६ । ग्रा० १२ × ७ है इला । लेखन काल सं० १६४१ सावन बुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्सुवतो मन्दिर करोली ।

विशेष--पुन्नीलाल बाह्याए ने अतिलिपि की थी।

२५६५. प्रति सं० १२ । पत्रस० ६० । ग्रा० १२ $\frac{1}{2} \times 9^{\frac{3}{2}}$  इंच । ले॰काल स० १९५२ चैत बुदी १३ । पूर्ण । बेट्न स० १०४ । प्राप्ति स्थान—दि० चैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष - बसुवा में सोनपाल बिलाला ने प्रतिलिपि की थी।

२५६६. प्राप्तस्वरूप विचार—  $\mathbf{x}$  । पत्र स०६। या० ११ $\mathbf{x}$ ४ $\frac{3}{2}$  इञ्च । भाषा—मस्कृत । विषय—याय । र०काल  $\mathbf{x}$  । ले० काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बेष्टुन स०६७ । प्राप्ति स्थान— पवायती दि० जैन मन्दिर प्रतवर।

विशेष-- ग्रात में स्त्री गुरा दोष विचार भी दिया हुआ है।

२५६७. **ग्रालाय पद्धति—वेबसेन ।** पत्र सं०७ । ग्रा० १२३ × ५३ दश्च । भाषा—सम्कृत । विषय—स्याय । र०काल × । ले०काल सं० १-६६ सावगा बुदी ऽऽ। पूर्ण । वेष्ट्रन म० ११७८ । **प्राप्ति** स्थान—स्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष — ब्राह्मण भोपतराम ने माधवपूर मे ताराचन्द्र गोधा के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२५६६. प्रति सं०१।पत्र स०५। ले० काल म०१८३० वैशाख बुदी१। पूर्याः। वे० म० १९७६। प्राप्तिः स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर।

२५७०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ११ । ब्रा० १० $\times$ ५ इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्गं । वेष्टनस० २६ । प्रास्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर सजमेर ।

े २५७**१ प्रतिसं०४ ।** पत्र स०११ । आ०६ × ७ इश्वा । ले० काल ४ । पूर्णे । वेष्ट्रत स०१७ । प्राप्टिस्**यान** —दि० जैन मदिर नागदी, बुदी ।

विशेष-ले॰ काल पर स्थाही फेर दी गयी है।

**२५७२. प्रति सं० ५ ।** पत्र स० ६ । प्रा० १० $\times$ ५ $^{\circ}$  इन्था । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । तहन स० २३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

**२५७३. प्रति स० ६ ३** पत्र स० ६ । छा० १० $^1_2 \times ^2$ डश्व । ले**॰का**ल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं• १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसानी कोटा ।

**२५७४. प्रतिसं०७ ।** पत्रस०१० । म्रा०१३ ४५ इखा । ले० काल स०१७७२ मर्गासर सदी १४ । पूर्ण । बेष्टनस**०१**१६ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष--सवन् १७७२ में सागानर (जयपुर) नगर में हुगरसी ने तीमनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी। कटिन शब्दों के सकेत दिथे हैं। छन्त में नवधा उपचार दिया है।

२५७५. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ७ । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० ७३१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-सस्कृत टीका सहित है तथा प्रति प्राचीन है।

२५७६. प्रतिसं ६ । पत्रस० १०। प्रा० ११३ ४४३ इ.स. । ले० काल सं० १७६४ । पूर्वा । बैष्टनस० १४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी क्रीन । २५७७. प्रतिसं० १० । पत्र स०६ । ग्रा० ११×५ इखा । ले॰काल स० १७६⊏ मादवा बदी ४ । पूर्ण । बेहन सं० २३६ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२५७८. प्रति सं० ११। पत्रस०८। म्रा०१० $\times$ ४ इन्छ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं० २०१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाय मन्दिर, उदयपुर ।

२५७६. प्रानिःंः पत्रस० ६ । ले० काल × । पूर्णः। वेष्टुनस०२१३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मदिर ।

२४६०. प्रतिसं० १३ । पत्रस० १६ । छा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इच्च । सावा—सस्कृत । विषय —स्याय । र०काल  $\times$  । तृष्णं । वेष्टनसं० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० र्जन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२५६१. प्रति स०१४ । पत्रस०६ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसं०१३६ । प्रास्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

२.५८२ प्रति सं० १५ । पत्रस० ६ । ग्रा० १११,४५२ इचा । ले०काल स० १७८६ । वेष्टुनसं० ६०७ । **प्र.प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

विशेष---कोटा नगर मे भट्टारक देवेन्द्र कीर्त्ति के शिष्य मनोहर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है ।

२५६२ प्रतिसं० १६ । पत्र म० १३ । ब्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ इञ्च । ले०काल — स० १७७६ मर्गामर सुरी ५ । पूर्ण । बेष्टन स० ५६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन सदिर सम्बद्ध जयपुर ।

विशेष --सागानर मे भ. देवन्द्रकीति के शासन मे प० चोखचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२५८४. **६श्वर का स्**ष्टि – **कतृं त्व खडन** —  $\times$  पत्र स॰ २ । प्रा॰ १३  $\times$  ४ इख । भाषा — संस्कृत । विषय — स्याय । र०काल  $\times$  । ते०काल —  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰ ४४४, ४०१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन संभवनाय मंदिर उदयपर ।

२५८५. उपाधि प्रकरण—  $\times$  । पत्र त० ३ । ब्रा॰ १०  $\times$  ४ इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय—दर्णन । २० ताल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० २१८/६४७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन समवताथ मदिर उदयपुर ।

२५८६. लंडनलाद्य प्रकरराः—  $\times$  । पत्रस०६५ । प्रा०६ $^2_{\gamma}$  ४  $^{\varsigma}_{\gamma}$  इञ्च । भाषा— सम्कृत । विषय—न्याय । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१४०८ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मिरिर प्रजमेर ।

२५८७. चार्वाकमतीक्षडी—  $\times$  ।पत्रस॰ १८ । घा॰ १०  $\times$ ६ $^1_2$  इञ्च । प्राचा—हिली । विषय - स्माम् । १०काल  $\times$  । ले॰ काल— स॰ १८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स॰ २०२ । प्राप्ति स्वान—दि॰ जैन मन्दिर प्राजमहल टॉक ।

विशेष--- प जयचन्द छावडा द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी 4

२४८८. तकंदीपिका —िवस्वनाथाश्रम । पत्रसं० १। ग्रा० १० $\times$ ४ है इ.च.। भाषा-संस्कृत (गर्छ)। विषय —न्याय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२४८६. **तकं परिभाषा—केशबिमध**। पत्रसं० ३४। झा० १११४४ हे घं । भाषा— संस्कृत । विषय—त्याय । र०काल 🗴 । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १४१६ । प्राप्ति स्थान— भटारकीय वि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

२५६०. प्रति सं०२। पत्र सं०२६ । द्या०१० $\times$ ४ है इञ्च । ले०काल—सं०१७२६ । पूर्ण । बेहुनसं०४०६ । प्रास्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मंदिर धजमेर ।

२**५६१: प्रतिसं० ३** । पत्र सं० २२ । झा० १०×४ इच । ले०काल × पूर्ण । वैकृतसं० १०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बदलाना (वृदी) ।

**२५८२ प्रति सं०४ ।** पत्र स०५४ । म्रा०१२<sup>3</sup>,४ ६ च । ले∙कालः स०१४६१ फागुणः सुदी१४ । पूर्णः । बेष्टुनसं०४७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लकार जयपुर ।

२**४६३. प्रतिसं० ४** । पत्र स०३ – ४४ । ब्रा०१० ४ ४<sup>8</sup> इच्च । ले० काल स०१६६४ । क्रपूर्णा वेष्टन सं०११ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन क्रप्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है— सबत् १६६४ वर्ष क्रमण पक्षे बेगाल मुदी २ दिने मालं ण्डवामरे मालविषये थी सार गपुर ग्रुप्त स्वाने श्री महावीर कैरतानये सरस्ती गच्छे बलात्कार गणे कु दकुंदाचार्यानये महारक थी रत्नचन्द्र उदाम्नाये स॰ श्री बेसा तत् क्रियम स॰ श्री जसराज तर् विषय ब्रह्माचारी भी रत्नपान तर्कमाणा निविता।

**२५६४. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२ ।** ग्रा० १०  $\times$  ५ इश्व । ले०काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेकुतसं० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी)

विशेष--प्रति टीका सहित है।

२५६५. तकं भाषा  $-\times$ ा पत्रस० ११ । ग्रा० १०imes  $\delta$  हस्त्रा । माषा -सहकृत । विषय-स्वाय । ए० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टनस० ४०४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन महिर ग्रजमेर

२५८६. तकं परिमाषा प्रकाशिका—चेन्नमृहु। पत्र स०६३ । ग्रा०१० ४ ४३ इखा। भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल । ले०काल स०१७७५ ज्येष्ठ मुदी ४ । पूर्णं । बेष्टन स०४७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर अयुर्ग।

विशेष—सुस्थान नगर के चितामिंग पार्श्वनाथ मंदिर में सुमति कुशल ने सिंह कुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२५९७. तर्कमाषावात्तिक—  $\times$ । पत्र स $\circ$  १ प्रा $\circ$  १० $\times$ १ $\gamma$  इङ्क । माषा—सङ्कत । विषय—दर्गन । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेप्टन स $\circ$  २६४ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$ केन मन्दिर प्रीमनन्दन स्वामी, बूंदी ।

२४६८, तकंसंघह-म्राजंमहु। पत्रसं०२४। मा०१० X ४१ इत्यः । भाषा—संस्कृतः। विषय—स्यायः । र०कालः X । स्रे०कालः स०१७६१ मायाङ् बुदी २ । पूर्णः । वेष्टतः स०३०२ । प्राप्तिः स्थान—स०दि० जैन संदिर प्रजसेरः। २५६६. प्रति सं० १ । पत्रस० ३ । लेक्सल सं० १८२० वैद्याख लूदी १ । पूर्एं । बेस्टन सस्या ३१४ प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

. २६००. प्रति सं०२। पत्र सं०१७। झा० ११×६ हुँ इला। ले॰ काल × । झपूर्ण। वेष्ट्रत सं०१७४-७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर।

२६०१. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । घ्रा० १० 🗙 ४ दञ्च । ले० काल स० १७४८ । पूर्ण । बेष्टुन सं० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रगवाल मन्दिर उदयपुर । ,

२६०२. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० १६। मा० १ ४ ४ इ.च.। ते० काल स० १७६६। पूर्णं। वेष्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय वृंदी।

२६०३. प्रतिसं० ४ । पत्र सम्बार १६ । घा० ६ 🗙 ४ इचा । लेखन काल स०१८६६ माघ सदी ११ । पर्गा । बेबन स०१३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पावर्षनाथ चौगान कदी ।

२६०४. प्रतिसं०६ । पत्र स०६ । आ०१२ $\frac{3}{4} \times \frac{3}{4}$  इचा मे० काल स०१८२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जपपूर ।

विशेष -- जयनगर मे श्री क्षेमेन्द्रकीर्ति के शासन में प्रतिलिपि हुई थी।

२६०**४. प्रतिस**०७ । पत्र स०७ । द्या० १२×४ इ.च.। ले० काल × । बेष्टन सं ४७२ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

२६०६. प्रति सच्या द । पत्र सं० ७ । ले०काल । पूर्णः वेष्टन सं० ६४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारार्यासह (टोक)

२६०७. प्रतिसं० ६। पत्रस० १४। ग्रा० ६ x ४१ इ.खा । ले० काल स० १८०१ ग्रगहन बुदी १२। पूर्ण । वेष्टनस० १। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

बिशेष--लिखित खातोली नगर मध्ये । प्रति सस्कृत टीका,सहित है ।

२६० द. प्रति सं० १०। पत्र स० ६। बा० ११ 🗙 ४ ६ इच्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-प्रति टीका सहित है।

**२६०६. प्रति सं०१९** । पत्र स०१७ । ले०काल । पूर्ण् imes । बेष्टन स०७४७ । **प्राप्तित** स्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

२६१०. प्रति सं० १२ । पत्रस० ११ । झा० १० imes ४ $^{\circ}$  इचा । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं० १३३२ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष--प्रति टीका सहित है।

२६२**१. प्रति सं० १**३ । पत्र स०६ । धा०११×५ इच्च । सै० काल स०१६६१ । पूर्ण । वेष्टतस०२३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्वामी बंधी ।

९६१२、 **वर्षानसार — वेबसेन ।** पत्र सं०६ । घा० ११२ॄ × ४२ॄ इच्च । प्राचा—प्राक्त । विषय—संगं । र०कास × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४६ । **प्राप्ति स्थान—**म० दि० जैन मीनर प्रकारित

- ं **२६१३. प्रति सं० २** । पत्र स० ४ । झा० १२ ४ ५ | इच्चा क्षे०काल ४ । पूर्ण । वेण्टन सं० १३२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर नागदी बंदी ।
- **२६१४. प्रति सं**० **३।** पत्र स०४। प्रा० १२ ${}^{\circ}_{1}$  $\times$ ६ इच्चा ले०काल स०१६२४। पूर्ण। बेष्टनसं०२१। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी बांदी।

विशेष--देवीलाल के शिष्य थिएथी चन्द ने प्रतिलिपि भालरापाटन में की ।

२६१४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ४ । घा० १२१ ४ ७ इव्य । ले०काल सं० ११२४ । पूर्ण । बेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थानं—दि० जैन प्रचायती महिर दीवानजी कामा ।

२६**१६. प्रति सं० ४ ।** पत्र स०४। का० १२×४ दश्वः । ले० कालः 🚿 । पूर्णः । वेष्टन स०२१६/४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्तिर उदयपर ।

**२६१७. प्रतिसं०६ । प**त्रस०२ । ले० काल 🗴 । मपूर्णं । बेष्टनस०२५७/८५ । **प्राप्ति** स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

२६१६. प्रति स०५७ । पत्र सं०३ । प्रा०१०३  $\times$  ४३ इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत स० १४६ । प्राप्ति स्थान $\pm$ दि० जैन सदिर लक्कर, जयपुर ।

२६१६. **डम्ब पदार्थ**— × ।पत्र स०१। धा०१०×४ इञ्च। भाषा—सस्कृत। विषय— तर्क(दर्णन)। र०कास × । ले० कान × । पूर्ण। वेष्टन स०११३। **प्राप्ति स्थान**—स०दि० जैन सदिरक्षजमें ।

२६२०. हिजबदनचपेटा—  $\times$ । पत्र स०१०। प्रा०१३  $\times$  ४ इखा। भाषा—सस्कृत। विषय-वार्यावयाद (स्याय दर्शन)। २०काल  $\times$ । वे० काल स०१७२४ । अपूर्ण। वेष्ट्रन स०४३२/५०७। प्राप्ति स्थान—दि० जैने समयनाथ मन्दिर उदयपुर।

२६२१. प्रतिसंकर । पत्र स०१६ । त्रे० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रम म०४३३/४०६ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

२६२२. नयसक्र—देवसेन । । पत्र ग०१४ । प्रा०१३ $\times$ ७ इश्र । भाषा —सस्कृत । विषय—त्याय । र०काल  $\times$  ।ते० काल स०१६४४ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन म०११२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर दुन्दी ।

विशेष---प्रति जीस्रं है।

२६२३. प्रति.सं०२ । पत्रस०४ - । ग्रा०१० ४६ हे इ.च.। ले०काल 🗴 । पूर्गा वेष्ट्रतस० २१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर राजमहल टोक ।

विशेष – प्रति जीग्रं है।

- ः ९६२४. नयलक सामा वलनिका—हेमराज । पत्र स० ११ । घा० ५३ 🗙 ६६ इला । भाषा —हिन्दी (गब) । विषय:-धनुँत । र०कास स० १७२६ फागुए। नृदी १० । ले० काल 🗙 । पूर्णः । वेष्टन स० ४६ । १८ । प्राप्ति हम्मान् —दि० जैन अवनाल मन्दिर उदयपुर ।
- २६२४. प्रतिर्सं० र शिक्षंता०.२७ । प्रा० ६ १ ४ ६ १ इच्छा । ले० काल ४ । पूर्णा । बेष्टन सॅर्० ६ । प्राप्ति स्थान —प्रवशल प्रवासती दि० जैन मन्दिर प्रतवर ।

२६२६. प्रतिसं• ३ । पत्र स० १३ । आ० १०× = इञ्च । ले• क्यूल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर, अलवर ।

२६२७. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १२ । घ्रा० १२ है ४४ है इन्ब । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

**ग्रान्तम पुष्पिका**—इति श्री पडित नरायग्गदासोपदेशात् साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका सम्पर्गा ।

२६२८. प्रति सं० ४ । पत्रस०२२ । प्रा०१०१ ४ ६ ६ इच्च । ले०काल स० १६४६ । पूर्ण । बेष्टनस०६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाय मदिर, ब्ल्टरगढ (कोटा)

**२६२६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र सं० ६ । ग्रा० १२ $\frac{3}{5}$  imes ६ इ.ख. । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टत स० ३६/२८ । प्राप्टिए**स्थान**—दि० जैन मन्दिर भारवा (राज.) ।

२६३०. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १७ । छा० ८३/७३ इञ्च । लेखन काल स० १९३४ । छपूर्म । वेष्ठन स० २०६ । प्राप्ति स्थान-चिर्णने मन्दिर दीवानकी कामा ।

विशेष—पत्र म०४ नही है। लाला श्रीलाल जैन ने य्तीराम ब्राह्मण, कामावाले से प्रतिलिपि कराई थी।

२६३**१ प्रतिसं०** ⊏ । पत्र स०१४ । धा०११ ४ ५<sup>3</sup> इञ्च । ले०काल ( । धपूर्ण । वेष्टनसं० ⊏० । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

२६३२. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १४ । घा० ११ 🔨 ५१ इ.खा । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानी डीग ।

**२६३३. प्रतिसं० १०** । पत्रस० १६ । आग् १०३<sup>५</sup> ४ ६ इञ्च । ले०काल स० १६३७ । पूर्गा। वेष्टुन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मस्दिर ग्रजमेर ।

**२३३४. नयसक साधा-निहालसःद** ? पत्र स०६४ । घा० १२  $\times$  ७ इन्छ । साधा-हिन्दी । विषय--न्याय । र०काल स० १८६७ मागंशीयं वदी ६ । ले० काल स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रवासती मदिर करीली ।

विशेष – महर कानपुर के निकट कपू फोज निवास । तहां वैठि टीका करी घिरता को धवकास ।। उवन प्रस्टादम ततक उत्तर सठ सठि सान । मारग विदं घटी विषे वार तनीचर जान ।। ता दिन पूरन मधी बडी हुएँ वित सान । र के माट्र निधि नहें रथी सुख मो उर सान ।।

्र टीका का नाम स्वम्ति प्रकाशिनी टीका है।

२६२**५. प्रति.सं० २** । पत्रसं० ४७ । घा० १४ × ५ इन्त । ले० काल × । पूर्ण् । बेहन सं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन पंचायती मंदिर बयाना । २६३६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४४ । बा० १२३४७ देखा । के०काल × । पूर्ण । वैकृतसं० ३२ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

२६३७. त्याय ग्रंथ— ४ । पत्र स० २-६४ । ब्रा० १०३ ४४ इख । आया-सस्कृत । विषय-दर्गन । र०काल ४ । ले०काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ३४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दकलाना (वंदी)।

२६३८. त्याय ग्रंथ —  $\times$  । पत्र स०६। ग्रा०१३  $\times$  ४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-र्जन न्याय । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स०४४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मंदिर उदयपर ।

२६३६. न्याय ग्रंथ— $\times$ । पत्रस० २-२३५। मा० १३ $\times$ ६ इस । भाषा-सस्कृत। विषय-जैन स्थाय । र०कास $\times$ । ले० काल— $\times$ । मपूर्ण । वेष्टनस० ४२०/२-६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयगर।

२६४० - स्यायव्यन्तिका--- सट्ट केदार । पत्रसः १६। प्राः १०४४ इख । भाषा-सस्कृत विषय-न्याय । १०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसः १४३७ । प्राप्तिस्यान--- भ० दि० जैन मन्दिर धनमेर ।

२६४१ . न्यासदीपिका-घर्मभूषस्म । पक्तः ३२ । ग्रा० ११ ४४ इच । माया-सरुवा । विषय-जैन न्याय । र०काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्णः । वेष्टनस० ३०० । प्राप्तिः स्थान — म० दि० जैन मन्दिर खब्जेन ।

२६४२. प्रति सं०१ । पत्र स०३० । ले० काल स०१८२५ भ्राषाढ बुदी ४ । पूर्णं। बेष्टन स०३२७ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मदिर ।

२६४३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३४ । घा० २ २४ १ इञ्च । ले०काल स० १०४२ आसीज सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ चौगान बुदी ।

विशेष - स्यौजीराम ने प० जिनदास कोटे वाले के प्रसाद से लिखा ।

२६४४. प्रति स० ३ । पत्रस० २४ । मा० ११ 🗴 १ इञ्च । ले० काल स० १७०१ । पूर्ण । बेष्टन स० १७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन बप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६४५. प्रति सं० ४ । यत्रस० २१ । प्रा० १२ $\frac{1}{2}$  imes ६ इश्व । ले०काल imes । वेष्ट्रन सं० ३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

२६४६. प्रति सं०  $\mathbf{x}$  । पत्र सं० २८ । आ० १२  $\mathbf{x}$   $\mathbf{x}_{7}^{1}$  इश्व । ले०काल  $\mathbf{x}$  । बेष्टन सं० ३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर ।

२६४७. न्याय दीपिका माथा वचनिका — संघी पन्नालाल । पत्र स०११ । प्रा० १२३ ४ ५१ इञ्च । पाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय — न्याय । र०काल स० ११३५ मगिसर वदी ७ । ले० काल सं०११३५ मगिसर वदी ७ । ले० काल सं०११४७ ।पूर्ण । वेष्टन स०४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर फतेहपुर वेक्षावाटी (सीकर) ।

२६४६. न्यायावतारवृत्ति—  $\times$  । पत्र त० ४ । प्रा० १० $\frac{3}{4}$   $\times$  ४ $\frac{3}{4}$  दश्च । भावा— संस्कृत विषय—न्याय । र०कास  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन त० २३१ । प्राप्ति स्थान – वि० जैन प्रयान मन्दिर, उदयपुर ।

२६४६. न्याय बोधिनी  $\times$ । यत्र सं०१-१७। घा०११ $\frac{3}{2}$   $\times$  ५ इख । माशा—संस्कृत । विष्य—न्याय । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । वेष्टन सं०७४४ । घपूर्ण । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर तककर, जयपुर ।

ध्यात्वा गोवद्धं नं सुधीस्तनृते न्यायबोधिनीम् ।।

२६५०. न्वायबिनिश्चय – ग्राचार्य ग्राक्तंकवेष । पत्रस $\circ$  १। भाषा — सत्कृत । विषय — व्याय । र $\circ$  काल  $\times$  । ते $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं $\circ$  ३१/४०५ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन सभवनाय मदिर उदयपुर ।

२६५१. न्यायसिद्धांत प्रमा—स्रनंतपूरि । पत्र स० २३ । प्रा० १० $\frac{1}{8}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इख । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । २०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स ७१४ । प्राप्तिस्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२६५२, न्यायसिद्धांतदीपक टीका-टीकाकार शशिषर। पत्रस०१२७। प्रा०१०४४} इञ्च भाषा—सन्कृत। विषय—न्याय। २०काल x । ले०काल x । पूर्ण। वेष्टन स०७१४। प्राप्ति स्थाल—भ०द० जैन मन्दिर स्रजमेर।

विशेष-एक १८ पत्रों की अपूर्ण प्रति भौर है।

२६५३. पत्रपरीक्षा—विद्यानित् । पत्रस ३३ । प्रा १२ ४ ५ ५ ॥ भाषा—संस्कृत । विषय-दर्मन । र०काल । ले०काल । पूर्णं । वेष्ट्रनस ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बेरासली कोटा ।

२६५४. परीक्षामुख-मार्शिक्यनंदि । पत्रस्त ४ । छा० १२ $\times$ ४ इथा । भाषा-सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनस० ३०२/१५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाय मन्दिर उदयपुर ।

२६५५. परीक्षामुख (लघुवृत्ति) —  $\times$  । पत्रसं० २० । मा० १०३  $\times$  ४३ ६व । मावा-सस्कृत । विषय —स्याय । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान—म० वि० जैन मिटर प्रजिप र

विशेष-पत्र स० ७ से 'भ्राप्तरीक्षा' दी गई है।

२६४६. परीक्षामुक्त भाषा-जयाचन्द छुबड़ा। पत्रस०१२७ । झा०१४ × ८० इत्त । भाषा-राज्यानी (हुंडारी) गया। विषय-दर्शन। र०काल स०१६६० । झे०काल स०१६४३। पूर्ण। वेष्ट्रत स०१३,६३। प्राप्ति स्थान--विकलेत व्यावती मदिर सजदा।

२६५७. प्रतिसं० २ । पत्र स०१८८ । लेकाल स०१८२२ जेठ कृष्णा ११ । पूर्ण । बेहन स०१२ । प्राप्ति स्थान-— दि० जैन मदिर दीवान जी भरतपुर ।

२६४८. प्रमास्गन्यतस्वालोकालंकार-वाविवेव सूरि । पत्र सं० ६६-१६६ । मा० ११ $\frac{3}{2}$   $\times^2$  इंद्य । भाषा—संस्कृत । विवद न्याय । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेकृत सं० ३२१ । विवेब —प्रति प्राचीन है ।

**२६५६. प्रवास्त्रनात्स्वालोकालंकार वृक्ति—रस्तप्रज्ञान्नार्थ** । पत्र स० २-६७ । घा० ११imes ४ $^{\circ}_{ imes}$  राज्य । काल imes । प्रत्यं । वेट्न स० २५१ । प्राप्तं । काल imes । प्रत्यं । imes । प्रत्यं । प्राप्तं । वेट्न स० २५१ । प्राप्ति स्थान— दिः जैन प्रयानाल मन्दिर उदयपर ।

विशेष - दो प्रतियो का सम्मश्रम है। टीका का नाम रत्नाकरावतारिका है।

**२६६०. प्रति सं०२** । पत्रस० ६६ । प्रा०१० $\frac{5}{2} \times V_0^2$  । लेक्सल स० १४४२ घासोज **वृदी १** । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—वित्र श्रीवत्स ने वीसलपुर नगर मे प्रतिलिपि की थी ग्रीर मुनि मुजागनगर के शिष्य प॰ श्री कल्यारा सागर को भेंट की थी।

**२६६१. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ७६ । ले**०काल स० १५०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१,**४६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन एव जीएाँ है। ग्रतिम पृष्पिका निम्न प्रकार है-

प्रमाणनयातस्वालकारे श्री रत्नप्रभविरचिताया रत्नावतारिकाच्य लघु टीकाच वादम्बस्य निक्यणी-यानामच्यम परिच्छेद समाप्ता । श्री रत्नावतारिकास्य लघुटीकेति । सवत् १५०१ माघ मुदि १० तिथौ श्री ५ मद्रारक श्री रन्नप्रभम्रि शिष्येण लिखिनमिद ।

२६६२. प्रमाणनय निर्णय-श्री यशःसागर गिर्णः। पत्रतः ११ । प्रा॰ १०  $\times$  ४) इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्याय । र० कान  $\times$  । ले॰कान  $\times$  । वेष्टन स॰ २७ । प्राप्तिस्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

२६६३. प्रमारा निर्शय—विद्यानंदि । पत्र म० ४० । घा० ११ ४४ इच । भाषा— सस्कृत । विषय—स्याय । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० २१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन क्रपदाल मन्दिर उदयप्र ।

विशेष प्रति प्राचीन है। मृति धर्ममूषण के शिष्य त्र० मोहन के पठनार्थ प्रति निकासी गयी थी।

**२६६४. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४६ । ले**०काल**  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन ग० २८८ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रावती मदिर भरतपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है प० हवंकल्यास की पुस्तक है। कठिन शब्दों के ग्रर्थ भी है।

२६६५. प्रमारण परोक्षा— विद्यानंद । पत्र म० ७४ । ग्रा० ११ $\times$ ४ इ.च । भाषा— संस्कृत । विषय—स्थाय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म०२२३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदसपुर ।

विशेष-- प्रादिभाग---

जयित निजिताशेष सर्वयंकातनीतयः । सरवयानयाधियाधस्यत् विद्यानंदो जिनेश्वरा ।। स्रय प्रमारा परीक्षा तत्र प्रमारा सक्षारा परीक्ष्यते ।

मुनि श्री धर्म भूषरा के शिव्य ब्रह्म मोहन के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

२६६६. प्रतिसं० २ । पत्र स०४७ । घा० १४० ४ ४ ६०वा ते० काल ४ । पूर्ण । केवन सं० ३३१,४६⊏ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन स भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---भट्टारक वादिभूषणा के शिष्य ब्र॰ नेमीदाम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

२६६८. प्रमारा परीक्षा माथा—जयचन्द छाबड़ा। पत्रसं० ६० । बा० १३ ४७ इंच। माथा—हिन्री ग०। विषय वर्णन । र०काल स० १६१३। ले०काल × । पूर्ण। वेष्ट्रन स० ११६। प्रास्ति स्थान—हि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बृदी।

२६६६. प्रमार्ग प्रमेय कलिका—नरैन्द्रसेन । पत्र स०१० । प्रा०११ $\xi \times \xi \ll 1$  प्राप्त—सन्कृत । विषय—दर्गत । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१७१४ फाल्युन सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० २६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जेन मन्दिर प्राप्तनस्व स्वामी बुदी

**विशेष**—श्रीगुणचद्र मृनि ने प्रतिलिपि की थी।

२६७०. प्रमारा मंजरी टिप्पराी—४ पत्रस०४। मा०१०४४; इख । जाया—सरकृत । विषय—स्वाग । २०काल ४ । ले०काल स०१६१४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०१४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन बप्रवाल मन्दिर उदयुग ।

विशेष---प्रशस्ति निस्त प्रकार है ---

म ० १६१५ वर्षे भादवा मृदी १ रवी श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्योपाध्याय श्री सकलभूष्याय पठनार्य ।

२६७१. प्रति सं० २ । पत्र स० २४ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मदिर भरनपुर ।

विशेष--प्रति प्रति प्राचीन है।

२६७२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २७ । या० ११imes४ इञ्च । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टनसं $oldsymbol{\circ}$ १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवतान मन्दिर उदयपुर ।

२६७३: प्रेमयरत्माला-धानस्त्वीयं। पत्रबरु ७०। घा० ११%६ इच । भाषा-सन्द्रुतः। विषय-स्यायः। २०कालः 🖈 । ले०काल स०१८६१ कार्तिक बुदी ८ । पूर्णः। वेष्ट्रनस०११८०। प्राप्तिः स्थानः — भ०दि० जैन मदिर खजमरः।

विशेष-परीक्षा मुख की विस्तृत टीका है।

२६७४ प्रतिसं० २ । पत्र स० ६३ । म्रा० ११ 🗴 ४ रृं इ.च । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । वेष्टनस० १६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष—उदयपुर में सभवनाथ जैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। धर्मभूषण के शिष्य ॥ भोहन ने प्रतिलिपि की थी। कही कही टीका भी दी हुई है।

**२६७४. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० ५३ । म्रा० १३×४ इत्वा । ले० काल × पूर्ण । बेष्टन स० १३६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२६७७. प्रति सं० १ । पत्र स०३३ । ग्रा०१२ × ४१ इश्वा । लेक्काल × । वेष्टन सं० ६८७ । ग्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर लक्कर जयपूर ।

२६७८. पंचपादिका विवरंग-प्रकाशास्त्रज भगवत । पत्र स॰ १८६ । प्रा॰ १० $\frac{1}{4}$  ४  $\frac{1}{4}$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्याय । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । धपूर्ण । बेवृत स॰ १११ । प्राप्ति स्थान-भ० दि॰ जैन मदिर अजेर ।

विशेष-पृष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्रीमत् परमहस परिवाजकान्यानुभव पूज्यपाद शिष्यस्य प्रकाशात्मज मगवन् कृतौ पचपादिका विवरसो द्वितीय सत्र समाप्तम् ।

२६८०. सहाविद्याः —  $\times$  । पत्र स०  $\times$  । प्रा० १३  $\times$  ४ द्वः । भाषा — सन्छन । विषय — जैन स्वाय । र०काल । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४४४/४०० । प्राप्तिः स्थानः — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

ग्रन्तिम पुष्पिका---

इति तर्क प्रवासीना महाविद्याभियोगिना ।

इति विद्यातकी ... ....शास्त्र समाप्त ॥

२६ द**१. रस्तावली न्यायपृत्ति—जिनहर्ष सूरि** । पत्रस० ४७ । भाषा —सस्कृत । विषय— न्याय । र•काल 🗙 । ले•काल । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष--जिनहर्षमूरि वाचक दयारत्न के जिप्य थे।

२६८२. विदाध मुक्समंडन — धर्मदासा । पत्र त०१०। प्रा०१२ $\times$ ५ १७। प्रा०१२ संस्कृत । तिषय — त्याय । २०काल —  $\times$  । ते० कान सं०१७६३ माघ मृदी १०। पूर्ण । वेट्यन स०२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

विशेष-अहा केसोदास के शिष्य बहा कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी।

२६५३. प्रति सं०२ । पत्रस०१६ । प्रा०१२imes५२ ५ $^{\circ}_{0}$  इश्व । ते॰कालimes । पूर्ण । वेष्टन स०२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर भादिनाथ स्वामी मालपुरा (टॉक)

२६६४. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । घा० ११३ ४४ हे इ.च । ले० काल स० १७१४ चैत बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

२६८५. प्रतिसं $oldsymbol{o}$  ४ । पत्र स $oldsymbol{\circ}$  २८ । प्राप्त । ले $oldsymbol{\circ}$  काल  $oldsymbol{\times}$  । पूर्य । बेष्टन स $oldsymbol{\circ}$  ४६७ । प्राप्ति स्थान—दि $oldsymbol{\circ}$  जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रति संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२६८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । घा० ११ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इञ्च । ले० काल स० १८१४ श्रावण सुदी १२ । वेञ्चन सं० ४६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-प्रति संस्कृत टिप्पग् सहित है।

२६८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ । प्रा० १३ $\frac{1}{6}$  $\times$ ५ $\frac{1}{9}$ ६२४ । लै॰काल  $\times$  । वेष्टन सं॰ ६८१। प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर लक्ष्कर लयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है।

२६८८. विदय्ध मुखमंडन-टीकाकार शिवचन्द । पत्र सं० ११७। प्रा० १० ४ ४ है इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-स्याय। र०काल ४ । से०काल ४ । प्रर्ण। वेष्टन सं० ३१८। प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बदी।

९६म**६. वेदान्त संग्रह**— × 1 पत्रसं०४१। घा० १२}×३¦ इचा। मापा—सस्त्रत । विषय—दर्वत । २०काल × । वे०काल × । प्रपूर्त । वेष्टनसं०४७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानकी कामा

२६६०. वट् बर्शन—  $\times$  । पत्र सं० ४। प्राः० १२ $\times$ १ इवः । माधा—सङ्कृत । विषय— न्याय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं० १७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान, इंदी ।

**२६८१. षट् दर्शन सम्बन**—  $\times$ । पत्र स॰ ६। भाषा–संस्कृत । विषय–दर्शन । र०काल  $\times$  । क्रें

२६६२. **षट् वर्शन विचार** । पत्र स॰ ३। घा॰ १० $\times$ ४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-दर्शन । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बुँदी ।

२६६३. **बट् दर्शन समुख्य** —  $\times$  1 पत्र सं० १०। ग्रा० १० $\times$ ४ $_{g}^{0}$  दश्व । भाषा —सस्कृत । विषय—दर्शन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन स० १२०४। प्राप्ति स्थान —मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, ग्रजमेर ।

२६६४. **बट् वर्शन समुख्यय — हरिचन्द्र सूरि।** पत्र स०२६। झा०११×४ इथा। भाषा — सस्कत। विषय-वर्शन। र०काल × । ले०काल स०१४४६। झपूर्ण। वेष्टन सं०६२३। **प्राप्ति स्थान**— दि० नैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष—पत्र सं०१६ पर स०१ ४४६ वर्षे श्रासोज वदि द—ऐसा लिखा है पत्र २६ पर हमजन्द्र कृत 'बीर द्वात्रिकात' भी दी हुई है।

२६६४. प्रति सं० २ । पत्रसं० २ । ले॰काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टन सं० १०४/४६६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन संमवनाय मन्दिर उदयपुर ।

**२६६६. प्रति सं० ३।** पत्र सं० ६। घा० १०×५३ इंच। ले०कान सं० १८३१ घासोज सुरी ११। पूर्ण। बेष्टन सं० २१२। **प्राप्ति स्थान—** वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा। २६६८ प्रति सं०४ । पत्र सं०३७ । बा०१२ ४६ इ.च. । ले० काल स०१६०१ । पूर्ण । वेष्टन स०२४४ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर प्रकिनन्दन स्वामी बृदी ।

विशेष - सवाईमाधोपुर मे नोनदराम बाह्माए। ने प्रतिनिपि की थी। प्रति सटीक है।

२६६६. प्रतिसं० ४। पत्रस०६। ते०काल स०१६३४।पूर्ण। वेष्टनसं० १०४/५०३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समयनाथ मन्दिर उदयपुर।

विशेष—मवन् १६३५ वर्षे तथा जाके १४६६ प्रवर्तमाने मार्गसिर सुदी जनी क० श्री नेनिदासमिद पुस्तक ।।

२७००. **यद् वर्शन समु**ङ्**वय टीका—राजहंस ।** पत्रस० २२-२२ । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । रुक्तल ४ । लेक्काल स० १४६० प्रासीज जुरी ४ । प्रमुर्ण । बेष्टनस० १३ । **प्रास्ति स्थान**— विज जैन पथावती महिर क्षेत्र ।

२७०**१. बट् दर्शन समुख्यय सूत्र टीका**—  $\times$  । पत्रस० ४४ । प्रा० १११ / ४१ टच । भाषा—सस्कृत हिन्दी । र०काल  $\times$  । ने॰ काल स० १६१० बैशाल बुदी । पूर्ण । बेहन ग० १७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, नागदी ब दी ।

२७०२. षट् दर्शन समुच्चय सटीकः  $\cdots$  । पत्र स०७। प्रा० ११ $\times$ ४ देख । भाषा—सस्कृत । विषय — न्याप । र०कास  $\times$  । से० कास  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०११ । प्राप्ति स्थान —िर० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

विशेष — प्रति अपूर्ण है। चौथा पत्र नहीं है एवं पत्र जीसां है।

२७०३ **. यट् बेर्झन के छिनव पास्तंड** — × । पत्र स०१। भाषा —हिन्दी गत्त । विषय — दर्गन । र०काल × । ते**०** काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०४०-१४६। **प्राप्ति स्थान** — रि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायनिह (क्षेक)

२७०४. सप्तपदार्थी—शिवादित्य । पत्र त०१४ । प्रा०१२ $\times$ ३१ इच । माया—सन्द्रन । क्षिय— दर्गन । र०कान  $\times$  । क्षेत्रकान  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस०२४६ । प्रास्ति स्थान —महारकीय दि० जैन मन्दिर अक्षेत्र ।

२७०**४. प्रतिसं० २ ।** पत्रस०६ । आर०६×४ इश्व । **ले०काल ×** । पूर्गा । बेष्टन स० ६८० । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त, मन्दिर ।

२७०६. सप्तर्भगी न्याय $-\times$ । पत्रम $\circ$ २। धा $\circ$ १२ $\times$ ४ दश्व। भाषा-सकृत। विषय-त्याय। रूकम $\times$ । ते $\circ$ काल  $\times$ । पूर्णं। बेहुनस $\circ$ ४४१/२६२। **प्राप्ति स्थान**-वि $\circ$  जेन सभवनाय सनिदर उदयप्र।

२७०७. सप्तभंगी बसुर्गन —  $\times$  । पत्रग्र०१२ । ग्रा०११  $\times$  ५६ व । माषा—स्वरुत । स्विप्य—न्याय । २०काव  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस०१६२ । **प्राप्ति स्थाम**—दि० जैन मस्दिर सेवानजी का

२७०५ सर्वेज सहारम्य — ४.1 पत्रस० २ । भाषा —सन्द्रत । विषय —र्यांग । र०काल × १ नै०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५५ ६४० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सभवनाय संदिर उदयपुर ।

विशेष - देवागम स्तीत्र की व्याख्या है।

२७०६. **सर्वजसिद्धि ।** पत्रस० २०। ब्रा० ११४४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—न्याय । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्टुन स० ४१४/२६४ । **प्राप्ति स्चान**—समबनाय दि० जैन मन्दिर उदसपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२७१०. सार संग्रह—वरवराज । पत्रसं० २-१०० । आ० ११ × ४ है इच । मापा— सस्कृत (गवा) । विषय—न्याय । र०काल × । ले०काल × । धपूर्ण । बेष्टन सं० १२ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन अयवाल मन्दिर उदयपुर ।

**२७११. प्रतिसं० २।** पत्र स०७। द्या०११ $\times$ ५ इश्वरा ले०कास $\times$ । प्रपूर्णं। बेष्टन स०२। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन व्यववान मन्दिर उदयपुर।

विशेष--इसका दुसर। नाम ताकिक रास भी है।

२७१२. प्रति स० ३ । पत्रस० ६३ । ग्रा० ११ $\frac{3}{2} \times 3\frac{3}{2}$  इच्च । ने०काल स० १६४२ । पूर्णे । वेष्ट्रन स० ३२/३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन चप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७१४. सांख्या सप्ताति  $\times$  । पत्र स $\circ$  ४ । घा०१०  $\times$  ४ $\frac{1}{4}$  इखा । भाषा—सन्कृत । विषय—दर्गत । १०काल  $\times$  । ते० काल स $\circ$  १६२१ आदवा बुदी १४ । पूर्स । बेएन स $\circ$  २६७ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — जयपुर नगर में प० चोलचन्दजी के शिष्य प० सुखराम ने नैर्णसागर के लिए प्रतिलिपि की थी।

२७१४. सिद्धांत मुक्तावसी—  $\times$  । पत्र स॰ ६० । आ० १०  $\times$  ४६ दश्व । भाषा— सस्कृत । विषय —स्याय । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १०१० मादवा बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३७ । प्राप्ति स्थान — भटारकीय दि० जैन सदिर अजमेर ।

२७१६. स्याद्वाद मंजरी – मिल्लवेस सूरी । पत्र स० ३६ । प्रा० ११ $\times$ ४ इन्छ । भाषा — सस्क्रत । विषय — दशंन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिलर बोरसली कोटा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

२७१७. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६७ । ग्रा० १०  $\times$  ४३ ६० । त्रे० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०५/६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष-प्रति प्राचीन एव टीका सहित है।

# विषय-पुराग साहित्य

२७१६ - प्रजित जिनपुरास्म - पंडिताचार्य अवस्मानिस्म। पत्र स० २१६। प्रा० १२३ ४ ५ इ.च. । भाषा -- सस्कृत । विषय -- पुरास्म। र०काल स० १७१६ । ले०काल स० १७६७ वैज्ञाल सुसी ४ । पूर्स । वैकृतसं० स० ४२६ । प्राप्ति स्थान -- म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--प्रति जीसं शीसं है ।

२७**१६. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०३४ । ले॰काल 🗴 । ब्रपूर्णं । वेष्टन स०४४**८ । प्राप्ति** स्थान—वि० उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--श्रजितनाय द्वितीय तीर्थंकर है। इस पुरास में उनका जीवन चरित्र विस्तृत है।

२७२०. **श्चादि पुराएग महात्म्य**— पत्र सं०२। श्चा०१० $\times$ ४ है इ.च। भाषा—सस्कृत। विषय—महात्म्य वर्णन। २०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वे०स० ७२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बुंदी।

२७२१. **भ्राविपुराग्—िजनसेनालाग्यं** । पत्र स०४४० । म्रा०१०३ ४५३ इला । भाषा— संस्कृत । विषय—पुराग्य । रंक्काल × । लेक्काल सं०१८७३ पौष बुदी । वेष्ट्रन स०१४० । प्रास्ति स्थान—भ० दिक्जैन मन्दिर म्रजभेर ।

२७२२. प्रतिसं० २ । पत्र स. ३६२ । प्रा० १२ ४ ६ इच । भाषा — सस्कृत । विषय-पुराएा । र०काल × । ले० काल स० १९५६ पूर्एा । वे० सं० १४४३ । प्राप्ति स्थान – उरोक्त मन्दिर ।

२७२३. प्रतिसं०३ । पत्र स०४८१ । ब्रा०१०३<sup>2</sup> ४४३ इ.च. । ले०काल स०१६८१ आर्थास्य सुदी१५। पर्या। बेल्टन सं०१५४३ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन मदिर धजमेर ।

२७२४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४०४ । धा० १२ $\frac{3}{4}$  $\times$ ७ इ.च. । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० २११ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर अजमेर ।

२७२५. प्रतिसं**० ४ ।** पत्र स० ७६२ । ग्रा०११ $\times$ ६ इ.च । ले०काल स० १८८५ वैशाख सुदी १४।पूर्णः। वेष्टन सं० १४६७ । प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**विशेष--**प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**२७२६. प्रतिसंव ५**। पत्रस॰ २८८ । घा० १११ × ६ इञ्च । लेक्सल × । धपूर्ण । वेष्टन स॰ २८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्नथाल मस्दिर उदयपुर ।

२७२७. प्रति सं $\sigma$  ६। पत्रस $\sigma$ ७। ग्रा० १२imes६ इन्छ । ले॰काल imes। प्रपूर्ए । वेष्ट्रनसं $\sigma$ २६/६। प्रास्ति स्थान— दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७२८ प्रति सं० ७ । पत्र स० ४४३ । आ० १२×८ इच । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स०६ । प्राप्तिस्थान—रिं० जन प्रथवाल मदिर उदयपुर ।

२७२**६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० ३५१ । ष्रा० १२× ८ इच्च । लेल्काल × । पूर्णं । वेष्टन स०३ । प्राप्तिस्थान—पंचायती दि० जैन मंदिर करौली ।

विशेष--ले॰ प्रशस्ति धपूर्णं है।

चांदनगाव महावीर मे गूजर के राज्य में पाण्डे मुखलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७२६ (क) प्रतिसं० ६ । पत्र स०४२४ । ध्रा०११ $\frac{2}{6}$  $\times$ ६ इचा ले० काल imes । पूर्ण। बेध्न स०६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

२७३०. प्रति स०१० । पत्र स०४६४ । घा० १०१४ ४ इन्छ । ले०काल स०१६६६ फागूस सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स०४६, २६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन सौगासी मन्दिर करौली ।

२७३१. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६०६ । ले० काल स० १७३० कार्लिक मुदी १३ बुधवार । ब्रपुर्णः प्राप्ति स्थानः—िद० जैन समवनाथ सन्दिर उदयपुर ।

विशेष प्रतिजीगंशीर्गहै।

प्रशस्ति - थी मृत्मभे मरम्बनीगक्ते बलास्कारगर्गे थी कु दक् दावार्यान्वये भट्टारक श्री सकत्व क्षीतं तत्त्रपट्टी मुक्तकीतं ते ० १० बातवृष्णा तत्त्रपट्टी भ० विवसकीति तत्त्रपट्टी म० गुमवाद तत्त्रपट्टी भ० मुमति क्षीतं तत्त्रपट्टी भ० गुणकीति तत्त्रपट्टी भ० वार्यप्रधा तत्त्रपट्टी भेकः राजकीति तत्त्रपट्टी भेकः क्षीतं तत्त्रपट्टी सेम्बनीति तत्रामान्यं आचार्यं कन्याणकीति तत् शिष्यं ब्रह्म श्री १ समजीत तत् कृति क्षायं ब्रह्मवारि नागाजित्यावं घटमदाबाट नगरं सारिमपुरे जीतल वैत्यालये इवडवातीय लघुणाकायां विवयागोत्रे माह श्री समजी तत्त्रपट्टी साम्यास्य हिन्दी स्वामायस्थीय कर्मश्रयार्थं श्री बृहदादिगुराग्। लिल्याप्य दन ब्रह्मवारणस्वामात्रायत् ।

२७३२. प्रति स०१२ । पत्र स०१८ । ले०काल ४ । क्रपूर्णावेस्टन स०४ । प्रास्ति स्थानः—दि० जैन वडा पनायती मन्दिर डीग ।

२७३३ प्रतिसं**०१३।** पत्रन० २४२ । द्या०१२ 🗙 ५ इ.च. । ले० काल स० १७४८ । पूर्ण । बेहरू स०४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेषः —गग्नामपुर निवासीसाहजी श्री द्यानतरायजी श्रीमाल जातीय नेइसकी प्रतिनिधि करवासीशी।

२७३४. प्रति सं०१४। पत्रस०२६६ । ब्रा० ११ $\S \times$ प $\S$  इखा। ले०काल स०१७२२ चैन स्री६५ पूर्ण। बेठून स०१३४। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर स्रमिनन्दन स्वामी, बूदा।

लेखक प्रशस्ति -

श्री भुवनभूषणेन स्वद्भतेन भट्टास्क श्री जनस्वीत्तिजितरूपदेशात् सामाप्रत्याः सध्ये सवत् १७२२ मधुमानं शक्तवक्षे वटी भृगुदासरे ।

२७३**४. प्रति सं०१४।** प्रमुक्त ३४१। ग्रा०१२३४ ४ इचा। ले०काल स०१८६१ माघ मुदी४। पूर्णावेष्टनस०६४। **प्राध्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदी, बदी

विशेष-- जयपुर में पन्नालाल विदूका ने प्रतिलिपि करवायी थी। प्रारम्भ के १८५ पत्र दूसरी प्रतिके हैं।

२७३६. प्रतिसं०१६ । पत्रक्ष० ६० । ग्रा०१२४ । देखा । ले०काल स०१६७६ जेष्ठ वदि - । प्रपूर्ण । वेष्टन स०२३ - । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर वोरसनी कोटा ।

२७३७. प्रति सं० १७ । पत्र स० १६६ । द्या० १२४६ इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्ण् । वेष्टतस० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा । विशेष--प्रति प्राचीन है।

२७३ म. आविषुरास् — पुष्पर्वत । पत्र स०२३४ । आ०१२४ ६ द्वा । साया — अपभ्र ता । विषय — पुरास् । २००० ताल ४ । तेरु काल स०१२३१ प्राप्ता । विष्टन स०१३१ । आपित स्थान-दिक्जेन मनिद्य अजसेर प्रथार।

**विशेष**—लेखक प्रणस्ति भपूर्ण है। मालपुरा नगर मे प्रतिर्लिप हुई थी। इसमे प्रथम तीर्थंकर स्नादिनाथ का जीवन वत्त है।

**२७३६ प्रतिस०२ ।** पत्रस०२ ६६ । सा०१२  $\times$  ५ इन्छ । ले०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टुतसं०३०७ । **प्राप्तिस्थान** —वि० जैन मन्दिर, स्राप्तनस्वा स्वामी बुदी ।

२७४०, स्नादिपुरास्य । पत्रस० १७२ । सा० ११ × ४ । भाषा सम्बन् । २०काल × । से० काल × । बेष्टनस० १०३ । प्राप्ति स्थान-जास्त्र भण्डार दि० जैन, मदिर जककर जयपुर । स्वितेस - रन्तकीति के जिल्ला के० राज्य प्रतिविधि कार्याची थी ।

२७४१. द्यादिपुरासा— भ० सकलकोति । पत्रस०१६७ । द्या०१०४४) इ.स. । भाषा— सस्कृत । विषय—पुरासा । र०काल ४ । नै० काल स०१८६० चैत सुदी ६ । पूर्सा वेष्ट्रनस०४६४ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन सदिर ग्रजभेर ।

विशेष-शी विद्यानदि के प्रक्रिय रूडी ने प्रतिलिपि की थी।

२७४२. प्रति सं०२ । पत्रस० २१६ । आ०१२ ४ ४ इश्वः । ले०काल स०१७७६ । पूर्सं । बेहुतस०५२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिग्राजमहुल (टोक) ।

विशेष — तक्षकपुर (टोडारार्थामह) मे प० विजयराम ने धादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

२७४३. प्रति सं० ३ । पत्रस०१८६ । बा०१२ $\times$ ५ $\S$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेब्रनस०५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्खनाथ वृत्ती ।

२७४**४. प्रति सं० ४** । पत्रस०१४६ । आ०१२८६ इत्था । ले०काल—स०१६०५ पूर्णः । बेष्टुतस०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर प्रसिनन्दन स्वामी, बृदी ।

विशेष-- बूदी मे प्रतिलिपि की गई थी।

२७४५. प्रति स० ५ । पत्र म० २२७ । या० १०५ ४ ८०च । ले०काल म० १७४२ । पूर्स । बेष्टन म० १० । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त ।

विशेष---भ० देवेन्द्रकीति के शिष्य ब० कल्यागमागर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिप की थी ।

२७४**६. प्रति स०६ ।** पत्र स०१६७ । बा०११२ ४६ बञ्च । ले०काल स १७७६ । पूर्ण । वेकनसं० ३३४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर, अभिनन्दनस्थामी, बूदौ ।

विशेष—मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७४७ **प्रतिसं०७ ।** पत्र स० १७६ । घा० १० 💢 ६ इथा । ले० काल सं० १६१० वैद्याख बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बुदी ।

विशेष---वृंदावती मे नेमिनाथ चैत्यालय मे प० चिम्मनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२७४८. प्रति सं० ८ । पत्रस० २१४ । प्रा० १०३ $\times$ ६३ इव । ले० काल सं० १५२४ । पूर्णे । बेष्टनस० ३२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर चौघरियान मालपुरा (टोक) ।

२७४**६. प्रतिसं०६**। पत्र स०२१४। द्या०१०३ॄं×५ इचा । ने०काल स०१६६७ वैशाल सुदी ७। पूर्णा। वेष्टुन स०३२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति – थो ह्यो स्वस्ति श्री सबत् १६६७ वर्षे श्रीवालमासे णुक्नपक्षे सप्तमी बुधवासरे सरूज नगरे यो पार्थनावर्षन्यालयं श्रीमहिगवर काष्ट्रासचे जैत गच्छे चारित्रगरी अट्टार्क श्री राममेनात्रये तदनुकेमण अरु मोमकीनि नदनुक्रमेसा चल रस्तप्रयम तत्यद्वाभरमा भट्टारक जयकीति विजयराज्ये तद् सिष्य कल जियदास त्व जिल्य पल दक्षरच निस्यत पठनार्थ । परमात्मप्रसादात् श्री गुरुप्रसादात् श्री पदावती प्रसादान ।

२७५ . प्रति सं० १० । पत्रस० १४१ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भग्तपुर ।

२७५१. प्रति सं० ११ । पत्रसः० २३८ । ले० काल सः० १६७६ मगसिर बुदी २ । पूर्णः । बेष्टुन मः० ५७ । प्राप्ति स्थान—िदः० जैन तेरहतयी मन्दिर बसवा ।

२७**५२. प्रति सं० १२ ।** पत्रस० १-३२ । ग्रा०१२×५३ इञ्च । ले**०काल** ×। श्रपूर्ए । बेष्टन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

२७५३. ग्रादिपुराग्य— ब्रo जिनदास । पत्रम० १८०। ग्रा० १०  $\times$  ५२ इखा। भाषा— राजस्थानी गर्य । विषय — पुराग्य । राजकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$ । पूर्ण् । बेष्टनस० ३८८-१४५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

२७५४ : प्रति स०२ । पत्रस०१६५ । घा०११४६ है इ.च.। ले०काल स०१८६२ । पूर्णं। वेष्टनस०४२ । प्राप्ति स्थान— दि०जैन मन्दिर अभिनदन स्वामी बुदी।

**विशेष** सरोलाग्राम मे प्रतिलिपि की गई थी।

२७४४. प्राविषुराण भाषा—पं० दौलतराम कासलीवाल । पत्र स० ६२४ । ष्रा० ११ ४ ८ डचा भाषा—हिन्दी (सच)। विषय—प्रयम तीर्यकर प्राविताय के जीवन का वर्णन । १०काल म० १६२४ । पे० काग म० १६७१ । पूर्णा । बेष्टनस० २२४ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जीन महिन्द प्रजयन ।

२७५६. प्रतिसं०२ । पत्र स०२०१ । ग्रा०१४imes७ इन्छ । ले० कालimes । ग्रपूर्ण । वेष्टन स०१५७३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त सन्दर ।

२७४७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १४० । प्रा० १० $^{\circ}_{1}$ र्रुष् $^{\circ}_{2}$  इश्वः । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० १०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेरहतथी दौसा ।

विशेष----ग्रागे के पत्र नहीं है।

२७४**८. प्रति स**० ४ । पत्र स० ३६४ । छा० ११imes६२ इ.स. । ले०काल imes। श्रपूर्ण् । वेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लहेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२७४६. प्रतिसं० ५। पत्र स० ४३। प्रा० १३imes७ इंच । ले॰काल imes। प्रपूर्ण । बेष्ट्रन स० ६०। प्राप्तिस्थान —दि० जैन खण्डेलवाल महिर उदयपुर ।

२७६०. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ११८ । घा० १३imes७ इन्थः । ले० काल imes । घ्रपूर्गः । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान--वि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**२७६१. प्रतिसं** द**ापत्र सल्या**६०१। ग्रा०१२  $\times$ ६१ इखा । लेखन काल स०१६१६। पूर्णा । बेष्टन स०२७८-११० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सविर कोटडियो का इन्तरपुर ।

विशेष---रतलाम मे प्रतिलिपि की गई थी।

**२७६२. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० २०४ । घा० ११९ ४८ इञ्च । ले० काल स० १६४० । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर पार्थनाथ टोडारायसिह (टोक)।

विशेष-६६ अध्याय तक है। मिल्लनाथ तीर्थंकर तक वर्ग्न है।

२**७६३ प्रति संख्या १०**। पत्र स० २९६-४२७ । आग्रा० १२×६ इंच । ले० काल स० १६१७ आयाख सदी मा प्रपूर्ण । वेष्ट सं ० २७ । **प्राप्ति स्था**स - मिर**्जे**न मदिर वडा बीसपथी दीमा ।

विशेष--रामचन्द छाबडा ने दौसा में प्रतिलिपि की की।

२७६४. प्रति सं० ११ । पत्र स० ४७३ । लेखक काल $\times$  । पूर्ग । वेस्टन सम्या ४२७ । प्राप्ति स्थान – दि. जैन पचायती मदिर मरतपूर ।

२७६५. प्रति सं० १२ । पत्र संस्था २ सं ३१८ । लेखन काल $\times$  । ब्रपूर्ण । बेन्टन संस्था ४२६ । प्राति स्थान—दि जैन पचायती सदिर भरतपुर ।

विशेष जयकृत्रग व्यास ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२७६७ प्रति स० १४। पत्र स० ४६६। या० १६४१० डच। ले. काल स०१८६७ गौय सदी ४। पूर्णा । वेष्टन स० ४४। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर पार्थनाथ टोडारायांमह (टांक)

२७६८. प्रतिस् ० १५ । पत्र सम्या ८८८ । प्रा० १२ ८४ ) इ.च । ले० काल ग० १८५३ कार्तिक बढ़ी १३ । धपूर्सा । बेस्टन सम्या २५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपथी मदिर, नैलावा

बिरोष-पत्र सम्बा ७०२ से ७७४ तक नहीं है। ब्राह्मण सालिगराम द्वारा प्रतिलिपि की गयी थी।
२७६९ प्रति संख्या १६। पत्र सम्बा ५६०। बारु १३ ८७ इन । ने० कान सम्बा १६०।

पूर्ण । बेटटन संख्या १५३ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मदिर श्री महाबीर बूदी ।

विशेय-लोचनपुर नैरावा मे प्रतिलिपि हुई थी।

२७७०. प्रति सं० १७ । पत्र सम्या ६२०। आ०-१२ × ६ १ डच। ले० काल स०१६८०। पूर्णा वेष्टन स०११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर मादिनाय बुदी।

विशेष---सेवाराम पहाड्या केशी वाले ने ग्रयने मृत के लिये लिखवाया था।

**२७७१. प्रति सं०१६**। पत्र सस्या ६२२। ग्रा०१४imes६३ इच । ले० काल स० १६०७ । पूर्ण । बेष्टनस० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्रीननन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष--प॰ सदामुख जी ग्रजमेरा ने प्रतिलिपि करवाथी थी।

२७७२. प्रति संख्या १६। पत्र स० १०१–४०७। घा० १० $\times$ ७ इच । ले० काल $\times$ । अपूर्ण । बेष्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दबलाना (ब्रुटी)

२७७३. प्रति सं०२० पत्र स० ६०२ । घा० १२ १४ ४ इंच । ले० काल स०१८६१ । पूर्ण । बेष्टन स०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

२७७४. प्रति सं०२१। पत्र स० ६२६। ग्रा०१०८७ इ.च.। ले० काल स०११४६। पूर्ण। बेस्टन स०४३। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर कोटयो का, नैसावा

२७७**४. प्रति सं०२२।** पत्र स०४ = से १३ = । द्या०१२ $\times$ ६ है इंच । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेब्रन स०३३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्वनाय मदिर इत्दरगढ (कोटा)

२७७६. प्रति सं०२३ । पत्र स०६२२ । छा०१२ $^{3}_{2}$  ४६ च । ले०कालimes । बेहन सं०२४२ । प्राधित स्थान—दि० जैन पार्यनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

२७७७. प्रति सं० २४ । पत्र स० ७१६ । ध्रा० १२ × ७३ इंच । ले० काल स० १६१६ साघ बुदी ११ । पूर्ण । बेटन स० १०७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती स्रग्रवान सन्दर, प्रलवर ।

२७७८. प्रति सं० २५ । पत्र म० ४१० । ग्रा०१५×७३ इच । ले० काल स०१६१० बैधास्य सुदी १२ । पुर्णः । वेष्टन म०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती ध्रप्रवाल संदिर, घलवर ।

विशेष---ग्रन्थ तीन वेण्टनो मे है।

२७७६. प्रति सं०२६ । पत्र स० ४०१ । ग्रा० १०१ ५६ इ.च.। ले० काल सं०१८७५ । पूर्णा वेग्टन सं०१३४ ।

विशेष—पाडे लालकाद ने प्रतिलिपि की थी । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मदिर, बयाना ।

२७६०. प्रतिसं०२७ । पत्र स०४५२ । ग्रा०१२ (७ इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टन स०१०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायनी मदिर कामा ।

२७८**१. प्रति सं० २८ ।** पत्र सः० ८८३ । ग्रा० १२ x ७ है इंच । ले० काल स०१८६६ । अपूर्ण । वेग्टन स०३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रावर्गी मन्दिर, कामा

विशेष — बीच के पत्र नहीं है।

२७<mark>५२ प्रतिसं०२ ६ । पत्र सं०२</mark>२२ । या०१३ ४६ १ँइ च । ले० काल ∵ । ब्रपूर्सावे० सं०३३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर दीवानजी, कामा ।

२७६३. प्रतिसं० ३०। पत्र स० ११३ । ब्राठ १३१ ६ उचा । ले० काल० 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पुचायती मन्दिर करोली ।

**२७६४. प्रति सं० ३१** । पत्र स**०** ४८५ । ग्रा० १२ imes ७ इन्ह्या । ले० काल स० १६०६ वैद्याल बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सीगाणी मदिर करीली ।

विशेष-करौली नगर मे नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी।

२७६४. प्रतिसं० ३२ । पत्र स० ७२० । प्रा० १२ $^1_2$  ४ ६ $^2_4$  इश्व । ब्रेक्शल  $\times$  । पूर्ए । बेष्टन स० ४/४ प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**२७८६. प्रतिसं०३३।** पत्र सं०११२३। ग्रा०१२४६ इच्चासे० काल 🗴 । ग्रपूर्ण। <sup>बेष्टन</sup> सं०२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बडाबीसपथी दौसा। २७६७. प्रति सं० ३४। पत्रस० ६०६। ग्रा० १५ imes ७ इच्च । ले० काल imes । पूर्ण । बेहन स०२। प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर) ।

बिशेष - दो बेप्टनो मे है। इसे श्री भगवानदास ने जयपुर से मगवाया था।

२७८८. प्रतिसं० ३५ । पत्र म० ३१८ । ब्रा० १३×६ है इश्व । ले० काल स० १६०६ मर्गामर सुदी १३ । पूर्ण । बेब्रन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष—पाडे जीवनराम के पठनार्थ रामगढ में बाद्यागा गोपाल ने प्रतिनिधि की थी।

२७**८६. प्रति सं० ३६।** पत्र स० २२६ से ४०६। ग्रा० १३×७ ड॰ब । ने० काल × । श्रपुर्लु । बेब्रन स० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेननदास पुरानी डीग ।

**२७६०. प्रति सं० ३७ ।** पत्र म० १२६ । घा० ११imes६ इखा । ले० काल म० १८२८ मावन बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १७८ । **प्रान्ति स्थान**—दि० जैन पत्रावती मन्दिर करीली ।

२**७६१. उत्तरपुरासा—गुराभद्राचार्य।** पत्र स०४५६। ब्रा०१०१४,४ इत्र । भाषा— संस्कृत। विषय— पुरासा १२०काल। ने०काल स०१७०४। पूर्या। **चे**ष्टनस०७४। **प्रारित स्थान**— महास्क्रीय दि० जैन सन्दिर ब्रज्नेर।

विशेष — मगवान ग्रादिनाय के पत्र्वान् होने वाल २३ तीर्यकरो एव ग्रन्य शलाका महापुरुषों का जीवन चरित्र निबद्ध है। सवत्सरे बाग्यरप्रमुनीदमित ।

२७६२. प्रतिसं० २ । पत्र स०२२० । ग्रा• ११ ⋋ ५ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ७२४ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

२७६**३. प्रति स० ३ ।** पत्र स० ४०६ । द्या० ११ × ५१ इ.खा । लेक्काल स० १७५० फागुन बदी म । पूर्णा । बेक्न स० ११७४ । **प्राप्ति स्थान** -- भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर खडमेर ।

विशेष---प्रति जीग्रं है

विशेष - करीली में लिखा गया था।

२७**२४. प्रतिसं०४।** पत्र म०३१३ । आ०१३,४४ इन्छ । ले० काल म०१६४६ फागुण बुदी १४ । खपूर्ण । बेष्टन स०१२६ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर राजमहल (टीक)।

विशेष — धाचार्य श्री विजयकीनि ने बाई गुमाना के लिए प्रतिलिपि करवायी थी।

२७६**५. प्रति सं० ५ ।**पनस० ३२४ । आ० १२ × ५ ३७व । ले०काल स० १७८५ आषाट सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टुनस० १२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्वजाय सन्दिर चौगान दुर्दा ।

**विशेष** - वृदी में **ज्योतियद** पुष्करने रावराजा दलेलसिंह के शासनकाल में स्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

२७६६ : प्रति सं० ६ । पत्रक्षण्डस्या । सा०१२ × १३ इ.स. । ले०काल ४ । पूर्णः । वेष्टन स० ६६ । प्रारिष्ट् स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ कृत्यो ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

२७९७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ३०० । ग्रा० १११ × ४१ इ.स. ने०काल सं० १८२५ प्र. सावन सुदी ४ । पूर्णा । वेष्टुन स० २४१ । प्रा**प्ति स्था**न—दि० जैन मन्दिर ग्रामिनस्द स्वामी वृदी । विशेष—पं∘ महाचन्द्र ने जीर्ण पुस्तक से शोधकर प्रतिलिपि की थी। दो प्रतियो का मिश्रण है। २७६**६. प्रतिसं० ⊏ ।** पत्र स० २२४ । प्रा० १२ ४७ इखा । ले∙काल सं० १६४३ । पूर्ण । बेष्टुन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

२७६६. प्रति सं० ६ । पत्रसं० २८४ । घ्रा० १२ $\xi \times \chi$ ै डन्ध । ने०काल स० १८११ मादवा बुदी ३ । पूर्ण । तेष्टुनस० ३=४/२८ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन पार्धनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

२८००. प्रतिसं० १० । पत्रस० ३६० । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनसं० १२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायती मन्दिर करोली ।

विशेष - कही २ कठिन शब्दों के अर्थ है।

२**८०१. प्रति सं० ११।** पत्रस० २३१। आ० १३ ×६३ इ.च.। ले० काल 🗴 । पूर्णः । वेद्यतस० १२७-४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर कोटडियों का द्वारपर ।

२६०२. प्रति सं० १२ । पत्र स० ११४ । म्रा० १३ $\times$ ५ $^3_g$  इंच । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेग्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२ द०३. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १६२ । ग्रा० ११ imes ५ इञ्च । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टत स० १३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन धप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०४, प्रति स० १४। पत्र म० ३४७ से ५४६। ब्रा० ११  $\times$  ५ $^{1}$  इख । ले० काल सं० १६४४ कार्तिक मुदी १। ब्रपुर्ग । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ब्रग्नवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — लेखक प्रणस्ति विस्तृत हैं। इसके ग्रांतिरिक्त एक प्रति ग्रौर है जिसके १–१२२ तक पत्र है।

२००४. प्रति सं० १४ । पत्र म० ४४,-२००। ग्रा० १० $\frac{3}{6} \times \frac{3}{7}$  इच्छा। ले० काल स० १०४०। पूर्ण। वे० म० २००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

२८०६. प्रतिसं १६ । पत्रसः ४०८ । ग्रा० ११ 🗙 ४ इ.च । ले०काल 🏃 । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

२८०७. प्रतिसं०१७ । पत्रस०३८४ । ग्रा०१२४४ इश्वा । ले०काल ⋋ । पूर्ण। बेष्टन स०३१० प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर।

**२८०८. प्रति स०१८**। पत्र म०२ $\sim$ ४५२ । ग्रा०१२ $\times$ ६इच । ले०काल स०१८३३ । श्रपूर्ण । बेष्टुन स०३६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सनत् १८२३ वर्षे वैज्ञाल मागे णुक्त पक्षे पत्तम्या तिथौ भौमवासरे मालवदेन मुसत्तर नगरे पडित ग्रालमचन्द तत् शिष्य प जिनदास तयोन मध्ये प० ब्रालमचन्देन पुस्तकः उत्तरपुराग् स्वयः……।।

**२८०६. प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० २८४ । ग्रा० १४×६ इचा । ले० काल स० १७८३ फानुस्। मुदी ४ । पूर्स । **वेष्टन स०** १२६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष— उदयपुर मे महाराएगा सम्रामसिंह के शासन काल में संभवनाथ चैयालय में प्रतिलिपि हुई यी।

२८१०. प्रतिसं०२०। पत्र स०२३१ । ग्रा०१२  $\times$  ५ इत्था । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । बेष्टन स०१२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। दो प्रतियो का मिश्रण है। कठिन शब्दो के ग्रर्थ भी दिये हुए है।

२**८११. प्रति सं० २१।** पत्रस० ४६४ । लंककाल स० १६२६ । पूर्ण । बेष्टनसं० २७३ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर भरनपर ।

२**८१२. प्रति सं० २२ ।** पत्रसं० ११५–२२० । ले०काल १६६६ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ६७० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

२६**१३. प्रति सं० २३ ।** ण्यस० ४१६ । ले०काल 📐 । पूर्ण । वेष्टनस० २४६ । **प्राप्ति** स्थान – वि० जैन मदिर दीवानजी भरतपुर ।

२**६१४. प्रति स० २४**। पत्रस**० ४३४। ले॰काल स० १७**२६ कार्तिक मुटी ६। पूर्ण । वेष्टन स० २२१ । **प्राप्ति स्थान**- उपरोक्त मन्दिर ।

२ **८ १४. प्रति सं०२४ ।** पत्रस०४०१ से ४३६ । ले०काल म०१⊂२२ । कपूर्णा वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

२८१६, उत्तरपुरास्य—पुरुषता । पत्र स० ३२४ । बा० १२५/४८ हुन्न । भाषा-प्रपन्न ग । र०काल x । ने ०काल स० १४३० कासिक मुदी १३ । पूर्ण । बेट्टन स० ११२ ८४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर ने रहत्यथी दोसा ।

त्रेसक प्रशस्ति — सवत १५३= वर्षे कात्तिक मुदी १३ चारिरववारे प्राव्यतनशत्रे मुननान गवामुहीन राज्य प्रविभाते नोडागदस्थाने श्री पार्कनाथ चैत्यालये श्री मुनसचे बलान्ध-राग्नी मरस्वतीरको श्री कृतर-कृत्याचार्यात्र्यये भट्टातक श्री पचनित्र देवा । तग्ग्हे भट्टातक श्री मुनस्वदेवता तत्रपृष्ट भट्टातक श्री जिलाबर्ट देवा तत् जित्य मुनि जवनित्द द्वितीय जिल्य मुनि श्री रन्तकीति । मुनि जैनिस्द तत् । जग्य ब्रद्ध प्रवत् द्रद जत्तरपुरागा जात्म भाग्य हस्तेन लित्तित जानावर्गी वर्मक्षयाये मुनि श्री महत्त्राचार्य रन्तनीति उन् जिल्य ब्रद्धा नरिक्षत जोग्य पटनार्थ ।

२८१७. उत्तरपुरास्य - सकलकोत्ति । पत्रस०१६२ । १२८८ ३४। भाषा -- सन्ध्रत । विषय -- पुरामा । र०काल । ते०काल स०१८८० गीय मुदी २। पूर्ण । वेष्ट्रन स०२०। प्राप्ति स्थान --दि० कैन मन्दर चेतनदास दीवान पुरानी डीम ।

२८१८. उत्तरपुरामा भाषा--- बुशालचन्द्र । पत्र म०२७१ । आ०१४ २०३च । भाषा --हिन्दी (पत्र) । विषय - पुरागः) । ८० काल स०१७६६ । लाककात स०१८६६ । पूर्णः। बेष्ट्रास०३२ । प्राप्ति स्थान--- पि० जैन मिंदर ठेक्कभी देवा।

विशेष -- जयपुर मे प्रांतालिय हुई थी।

२८**१६. प्रति सं० २** । पत्र स० ३१७ । आ० १४  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इला । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेण्डन सं० ११७ प्राणित स्थान —दि० जैन मन्दिर बडा बीमपथी दौसा ।

विशेष:-- भगवान आदिनाथ को छोडकर श्रेष तेईस तीर्थकरों का जीवन चरित्र है।

**२५२०. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स०४६६ । आ० ११ $\times$ १६ हुआ । ले०काल म०१६२४ पौप बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक

विशेष--राजाराम के पुत्र हठीराम ने जयपुर में बखता से प्रतिलिपि कराई थी।

२=२१. प्रति सं० ४ । पत्र सं०२७१ । मा० १४ × ६ है इश्व । ले० काल सं० १६४० कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टुन स०३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मंदिर नैस्वा ।

२८२२. प्रति सं० ४,।पत्र स०६३१ । ब्रा०६२,४७ इ.खा ले० काल स०१६४६ । पूर्णी वेष्टन सं०१३६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बृदी ।

२ द्वर ३. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४४१ । बा० १०३/४६ ई. इ.च.। ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । बेष्टन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महादीर वृदी ।

२६२४. प्रति सं० ७। पत्र सं० २०२–२४१ तक । झा० १४ $\times$ ६ $^2_7$  इख । ले० काल सं० १८६६ । अपूर्ण । बेष्टन सं० २००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनत्दन स्वामी बृंदी ।

**विशेष**— प्रारम्भ के २०१ पत्र नही है।

२८२४. प्रतिसं० मः । पत्र स० २६मः । ग्रा०११३ × ७३ इखाः । ने०काल × । पूर्यः । वेष्टनसं०२ । प्राप्ति स्थानः— दि० जैन सन्दिर चौधरियान मालपुरा (टीक) ।

२८२६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ४६१ । आर० १२ 🗴 ५ १ इञ्च । ने० काल सं० १८८२ । पूर्णा वेष्टन स० ८२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोट्यो का नैरावा ।

२६२७. प्रति सं० १० । पत्र स० २३४ । आ० १२ $\times$ ६ $^3_2$  इंच । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४-२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारार्यासह (टोक)

२८२८. प्रति सं० ११ । पत्र स० २६४ । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स॰ ७३ । प्राप्ति स्थान—िव० जैन पवायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष--जीगोंद्वार किया गया है।

२६२६. प्रति स० १२ । पत्र स० ४६६ । ग्रा० १२imes६इख । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

२८३०. प्रति स० १३ । पत्रस० ४१२ । धा० १३ imes ६ इञ्च । ले०काल स० १८४२ माघ बुदी ४ । पूर्ण । बेष्ट्रस० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष --फौजीराम सिगल ने स्व एव पर के पठनार्थ प्रतिलिपि करवाई।

२६३१. प्रति सं० १४ । पत्रस० १०४ । घा० १२imes हुन्थ । ले०काल imes । घपूर्ण । वेष्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--शान्तिनाथ पुराए। तक है।

२६३२. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १८८ । प्रा० १३ x ६ १ इ.स. । ते०काल स० १८७८ श्रावरा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २० । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर फतेहपुर ग्रेसावाटी (सीकर)

**विशेष** — पाडे सावतिसह जी मापमनके देहरा में दयाचन्द से प्रतिलिपि करवाई जो दिल्ली में रहते थे।

२८३३. प्रतिसं० १६। पत्र सं०३४६ । घा० १३४७ । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं∙ १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल पवायती मन्दिर प्रलवर । २ = ३४. प्रतिसं० १७ । पत्र सं० ३४४ । प्रा० १४ $\times$ ६  $\frac{1}{2}$  इश्वा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लण्डेलवाल पंचायती महिर प्रत्यत् ।

२६३१. प्रति सं० १८ । पत्रसं० २६७ । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी, मरतपुर ।

विषय--कृशलसिंह कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी।

२६३६. प्रति स० १६ । बेहनसं० ४०४ । ले० काल 🗴 । पूर्णं । बेहन स० ३४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपुर ।

२८३७. उत्तरपुरास्य भाषा—पन्नाताल । पत्र स॰ ४८६ । द्वा॰ १३ ४८ दृश्व । भाषा—हिन्दी । विषय पुरासा । र०काल स॰ १६३० । ले॰ काल स॰ ४ । पूर्स । वेष्टन स॰ १४४ । प्रास्ति स्थान— दि॰ जैन मंदिर श्री महावीर चृदी ।

२८३८. कर्गामृत पुरारा—भ० विजयकोति । पत्रस० ८६। घा०६) ४६ ३०व । नापा-हिन्दी (पदा) विषय—पुरारा । र० काल । ले०काल स० १८२६ पांच मुदी ६। पूर्ण । बेहनस० १०१० । प्रास्तिः स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजनेर ।

२८३६. प्रति सं० २ । पत्रसं० २४६ । बा० १८४ डङ्च । ले०काल ४ । पूर्णं । वेष्टनस० १०६ । प्रास्तिः स्थान म० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष — दसरा नाम महादडक करलानुयोग भी दिया है।

२६४०. प्रति स० ३ । पत्रस० ३६ । झा० १०८४ १ टब्ला । ले०काल 🙏 । धपूर्ण । वेष्टन सं० ११३५ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

२६४१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १३१ । ब्रा० १३ $\times$ ६ दश्च । ले० बाल  $^\vee$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३१६–३१६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मिन्दि कोटडियो का एगरपुर ।

२८४२, **गरुडपुराग्। पत्र**स० ६४। प्रा० १०४४ इच । प्राथा मस्कृत । विषय-पुराग्य र०काल ४ । ले०काल स० १८२४। पूर्ण । वेष्टन स० ६४। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन महिर पार्थनाय चौतान बुरी।

ँ **विशेष** — दशम अध्याय तक है।

२ क्ष्य ३. सरु प्रशास अप १ पत्र स० २२ । आ ० ११  $^{\circ}$   $\times$  ६ उत्थ । आया-सस्कृत । विषय-पुरास्स । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । सपूर्तं । वेष्टन स० ३१६ । प्रास्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्थामी, बुदी ।

२६४४. **जीबीस तीर्थकर मदा**न्तर  $\times$ । पत्रतः २। प्राः१२ $\S \times \$$  इल । मापा-हिन्दी (तय) विषय-पुराण् । २० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्णं  $\times$  । बेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान-दि० जैन** मदिर राजमहत्र (टोक)

२८४४. चन्द्रप्रभपुरास्य-सब्बुभचन्द्र। पत्रस्य ७२ । घा०१०१४४६४ इचा भाषा सस्कृतः।विषय-पुरास्य । र०४ । ते•कास स०१८२६ व्येष्ट सुदी ४ । पूर्सः । वेष्टन स०४२ **प्राप्तिः** स्**चात-**सर्विक जैन सदिर, सजसेर

विशेष-धाटवें तीर्थकर चन्द्रप्रम का जीवन वरित्र है।

२ द४६. प्रति स०२ । पत्रस०६० । ग्रा०११४ ५ है। लेक्काल सं०१८३२ चैत्र सुदी १३ । बेष्टत सं०१७३ । पूर्ण। प्राप्ति स्थान—दि० जैन म०लक्कर, जयपुर।

विशेष-सवाई जयपुर नगर मे भाभूराम साहने प्रतिलिपि की थी।

२६४७. चन्द्रप्रमपुरास् — जिनेन्द्रमूषस्य । पत्रसं० २४। धा० १२३ × ७३ इञ्च । माया-हिन्दी । विषय-पुरस्स । र०काल सबत १०४१ । ते०काल × । पूर्स । बेष्टन स० ६ । **प्रास्ति स्थान**— हिन्दी केत परास्त्री सहिर बसाना

विशेष-- इटावा मे ग्रंथ रचना की गयी थी। ग्रंथ का ग्रादि ग्रत भाग निस्न प्रकार है--

प्रारंभ — चिदानद मगवान सव णिव सुव्य के दातार।
श्री चन्द्रप्रमु नाम है तिन पुरास मुख्य सार।।१॥
जिनके नाम प्रताप से कहे सकल जजाल।
ते चन्द्रप्रभ नाम है करी.....पुर पार।।२॥

#### ग्रंतिम पाठ--

मूल सघ है मैं सरस्वति गच्छ ज्यू। बलात्कार गरा कह्यो महाराज परतछ ज्यू । भ्रामनाय कहै बीच कुन्दकुन्द ज्यु । कुन्दकुन्द मृतराज ज्ञानवर श्रापज्यु ।।२७।। भट्टारक गुग्गकार जगतभूषरा भये। विष्वभूषणमुभग्राप द्यान पूरनठये। निनके पद उद्धार देवेन्द्रभूषस्य कहे । स्रेन्द्रभूषम्। मुनराज भट्टारक पद लहे । जिनेन्द्र भूषमा लघु शिष्य बुद्धिवरहीन ज्यु । कह्यो पुरारग सुज्ञान पूररग पद जान ज्यू। सवत ठरामै इकतालीस सामले । सावन मास पवित्र पाप भक्ति कौ गलै।। सुदिह्वं द्वंज पुनीत चन्द्र रविवार है। पूरन पुण्य पुरारण महा मुखदाइ है। शहर इटावी मली तहा बैठक भई । श्रावक गुन सयुक्त बुद्धि पूरन लई।। इसके आगे = पद्य और है जिनमें कोई विशेष परिचय नहीं है।

इति श्री हर्षमागरस्यात्मज मट्टारक श्री जिनेन्द्रभूषण विरक्ति चन्द्रप्रभृपुराखे चन्द्रप्रभु स्वामी निर्वाण गमनो नाम षट्य सर्गः । श्लोक सं प्रमाण १०६१ ।

#### मध्य माग---

सब रितु के फल ले बाया तिन भेंट करी सुखदायी। राजा सुनि मनि हरवावै तब ब्रानन्द भोर बजावे॥२४॥ सब नगर नारि नर फ्राये बंदन चाले सुख पाये। चन्द्री सब परिजन लेई जिनवर चरनन चित देई।।२५॥

२६४६. प्रतिसं०२ । पत्रस०१२ $\frac{1}{7}$   $\times$  ७ $\frac{3}{4}$  इच्छ । से०काल सं०१८३२ । पूर्णं । वेष्टन सं०१३६ । प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

२६४६. चन्द्रप्रसचरित्र भाषा—होरालालः । पत्र सं०१६२ । घा०११ ४ ४६७ । भाषा-हिन्दी (नदा)। विषय—पुराण्। र०काल स०१६०६। ते०काल स०१६३६। पूर्ण्। वेष्टन सं०६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन व्यवेतवाल मन्दिर ज्वयपुर।

२६४०. जयपुरास् — इकामराजा। पत्र स० २६ । प्रा० १११ × ४ इका। माषा— संस्कृत । विषय—पुराषा ! रुकाल × । ते० काल स० १७१३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६२ । प्राप्ति स्थान— ६० जैन प्रवाल मंदिर उदयपुर।

प्रशस्ति-निम्न प्रकार है-

२**८५१. प्रति स०२**। पत्र सं० ८६ । ले० काल स०१८८८ मगसिर सुदी ६। पूर्ण । बेहन स**०२१२। प्राप्ति स्थान**–दि० जैन पचायती मन्दिर भरनपुर ।

विशेष--प॰ बस्तराम ने प्रतिलिपि की थी।

२८५२, त्रिषध्ट स्मृति— × । पत्र स०३१ । घा०११×५ इश्व । भाषा - मस्कृत । विषय —पुराण । र०काल × । ले०काल स०१६०६ । पूर्ण । वेग्टन म० ७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रावाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबत् १६०६ वर्षे श्री मंगिसर मुदी ३ गुरुदिने श्री म्लसभे सरस्वतीगच्छे बलात्काररागे श्री कुंदकुराचार्यात्वये भट्टारक श्री पथनदिदेवा तत्पट्टे म० श्री तकलकीतिरेवा तदत्वये व० श्री जिनदास नत्पट्टे स० शांतिदास व० श्री हसराज व० श्री राजयानन्तिक्षिताय कर्मस्यार्थ निमित्तः।

२८५३. त्रियिष्टिशलाका पुरुषचिरत—हेमचन्द्राचार्य । पत्रस० ६६ । सा० १४ $\times$ ४ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—पुराण । र०काल  $\times$  1 केकाल - म० १४६४ जैत्र मास । पूर्ण । वेष्ट्रनसं $\sigma$  १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर रीजानजी कामा ।

२८५४. त्रेसठशलाका पुष्क बर्सन— × । पत्रस० ७ । ग्रा०१०×४ इञ्च । भाषा– हिन्दी । विषय—पुरासः । र०काल × । ले०काल— × । पूर्यः । वेष्ट्रन स०२२६ । प्राप्ति स्थान— अञ्चारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष---इसमे नेसटशलाका पुरुषो का प्रयान् २४ तीर्यंकर १ नारायए, ६ प्रतिनारायएा, ६ बलमद्र एव १२ वर्कवितयो का जीवन चरित्र वरिंगत है।

२८४४. नेमिपुरारा मार्था—मागर्वेद । पत्रतः १६२। घा० १२४७ इञ्च । माथा-हिन्दी यद्य । विषय-पुरारा । रचना काल सत्य १६००। लेक्काल—सं० १६१४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६। प्रास्ति ककाल—कि को नामित्र की महावीर वर्षी ।

२**८५६. प्रतिसं**० २ । पत्र सं० १६० । मा० १३्रै ४७ इञ्च । ले० काल मं० १६६१ । पूर्ण । बेब्रुन स० ⊏६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष—चदेशी में लिखा गया था। नेमीश्वर के मदिर में छोटेसाल पन्नालाल जी गढवाल वालो ने चढाया था।

२८५७. प्रति स० ३ । पत्र स० १७० । म्रा० १ $^2_7 \times 0^2_7$  इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

२८४८. नेमिनाथ पुरास्स-क० नेमिरत्त । पत्रस॰ २६८। घा० १० $\frac{3}{7} \times \frac{3}{5} १ = 1$  भाषा—संस्कृत । विषय—पुरास्स । २०काल  $\times$  । ने०काल स॰ १६४४ चैत बुदी ७। पूर्स । बेष्टनसं॰ ६३४ । प्रास्ति स्थान--भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--इसका दूसरा नाम नेमिनाथ चरित्र है।

२**८५६. प्रतिसं०२** । पत्रस०६२ । द्या०११ 🗙 ५ इल्ब । ले० काल 🗴 । द्रपूर्ण । बेहन स०२६७ । **प्राप्तिस्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**२६६०. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० २२४ । आ० १० $\frac{1}{7} \times ४$ ३ इच । ले०काल सं० १८३० । पूर्ण । बेष्टनस० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष--प्रति जीर्ग् है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सबन् १८६० ना वर्षे द्वितिय चैत्र माने गुक्त पक्षे श्री बाग्यर देणे पृक्षं दपुर मध्ये श्री गातिनाथ चैत्यालयं । भट्टारक श्री ४ रन्तचन्द्र जी तत्पट्टे मट्टारक श्री ४ देवचन्द्र जी तत्पट्टे मट्टारक शी १००० श्री यमंचन्द्र जी तन्तिस्य ब्रह्ममेचजी स्वय हस्तेन निर्मिकृत ।

**२५६१. प्रतिसं० ४** । पत्र स० २-२२० । आ०६३ ×४३ दश्व । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन सं० ३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान, बूदी ।

२८६२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १६४ । आ० १०५४ ७ इचा । ले० काल स० १६२४ पीष बुदी ८ । पूर्ण । वंप्टन स० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, बृदी ।

विशेष—शिवलाल जी का चेला विरदीचद ने प्रतिलिपि की थी। यह प्रति जो जोबनेर में लिखी गई स॰ १६६६ वाली प्रति से लिखी गई थी।

**२६६३. प्रति सं० ५ क ।** पत्र सं० १२४ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$  इल्ब । ले० काल० स० १७६६ प्राणाढ बुदी ६ । पूर्णा । बेष्टन सं० १३२ । प्राण्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

विशेष---रत्नविमल के प्रशिष्य एवं मक्तविमल के शिष्य धर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी।

२६६४. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० १३५ । आ० १२ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इ.ख । लेकाल स० १९७३ । पूर्ण । बेष्टन सं० १८९० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपुर ।

२ व्ह $\mathbf{x}$ . प्रतिसं०७ । पत्र स०२४२ । प्रा०१० $\times$  ४ है इच्छा । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्णं । बेहुत स०१६ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर बैर ।

२६६६. प्रतिसं० ६। पत्र स०१४३ । ग्रा०११×४ $\xi$  ६खा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०२१४ । प्राप्ति-स्थान —दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

२८६७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २४३ । ले०कालस० १६४६ । पूर्ण । बेष्टनसं० १ । प्राप्ति स्थान—विगन्यर जैन पत्रायती मन्दिर डीग ।

२६६८. प्रतिसं० १० । पत्र स० १६५ । घा० १२६ ४६ इंच । ले०काल स० १८१७ डि. चैत सुदी १४ । वेप्टन स० १७-१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सीगाणी मन्दिर करौली ।

विशेष--लालचद के पुत्र खुशालचन्द न करीली में प्रतिलिपि की थी।

२८६६. प्रतिसं० ११ । पत्र स १३८ । ले०काल स० १६१४ । पूर्ण । वेप्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन तेरहपयी मन्दिर वसवा ।

२८७०. प्रति स० १२ । पत्रस० ८६ । आर० १३×६ ॄै इच । ले०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २७२-१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर कोटडियो का द्वगरपुर ।

२८७१. पद्मचरित टिप्प्ग् — श्रीचन्द मुनि । पत्रस्व २८ । द्वाव १० $\frac{3}{2}$   $\times$  ५ इच । भाषा — सस्कृत । विषय — पुराण । ७० काल  $\times$  । ते०काल स० १४११ चैत्र सुदी ११ । वेष्ट्रन स० १०२ । दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, ज्यपूर ।

लेखक प्रशस्ति — सबत् १५११ वर्षे चेत्र मुदी २ श्री मूलसचे बलालारमणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्तावायीगचे भट्टारक श्री पर्यानिटर्दवासत्त पट्टे भट्टारक श्री मुजबरटरेबासत्त्रपट्टे भट्टारक श्री जितच्य देवा मट्टारक श्री पर्यानिट शिष्य मृति मदनकीति नत् शिष्य ब्रह्म नरीमेय निमित्त नण्डेतवाराच्येतायक गोचे साह उचर तस्य भार्या उदयशी तथी पुत्र मास्त्रा सोडा डाल् एड शास्त्र कम्मेयय निमित्त ।

२८७२ पद्मनाम पुराग्—म० गुभचन्द्र । पत्रस० ११० । म्रा॰ १२४४ है इश्व । माषा— सम्कृत । विषय—पुराग् । र०काक्ष 🗴 । लेकाल 🗴 । बेष्ट्रन सं० १८७ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

विशेष-प्रारम्भ के ६५ पत्र नजीन लिये हुए है।

२८७३. प्रति सं०२ । पत्रस० ७१ । ग्रा०११ $\frac{3}{2} \times$  ५ इच्च । ले०काल स०१६५४ ग्रासोज सुदी२ । बेष्टुनस०१८६ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---भट्टारक अमरकीति के शिष्य द्व० जिनदास, पं० शान्तिदास ग्रादि ने प्रतिलिपि की थी।

२६७४. प्रति स०३ । पत्र स०१०७ । आ०१० $rac{1}{6} imes ५ ६ खा । ले० काल सं०१६२६ धामोत्र मुदी ३ । दुर्गो । बेप्टन स०१६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबलाना (बूंदी) ।$ 

२८७५. पद्मपुरास्य — रिविवेस्याचार्य । पत्रस० ५१२ । घा० १० $\frac{1}{3} \times Y_0^2$  इन्छ । आया — सस्कृत । विषय — पुगस्य । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६७७ सावस्य बुदी ६ । पूर्स्य । बे० स० ४०६ । प्रास्ति स्थान — ४० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विरोध—संवत् १६७७ वर्षे माके १४४२ प्रवर्तमाने आवण हुदी ६ मुक्बारे उत्तरानकावे प्रतिगतनामकोगे महाराजाधिराज रावश्री भावसिंह प्रतापे लिखत जोसी धनावक्स दुरिवाल ग्रान्वावती मध्ये ।

२८७६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४६० । घा० ११ $\frac{1}{9}$  $\times$  $\chi^2_p$  इच्च । ले०काल स० १८७६ पोष बृदी १४ । पूर्ण । बेष्टनस० १०४६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२८७७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४१२ । ग्रा॰ १२×४ है इ.च. । ले०काल स० १८८३ । पूर्ण। बेयन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर पंचायती दनी (टीक)।

विशेष--पडिन शिवजीराम ने लिखा था।

२८७८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ५६० । ग्रा० ११३ ४५३ इचा । ले०काल स० १८०३ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ८७/८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्यनाच मन्दिर इन्टरगढ ।

विशेष--रामपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

२८७६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २८६ । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० २२२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचायती मदिर मरतपुर ।

विशेष--- अगुद्ध प्रति है ।

२८८०. प्रति स० ६ । पत्रम० ३४६ । छा० १० $\times$ ४३ इवा । ले० काल स० १८१० कार्तिक मृदी १० । छपूर्गा । बेष्टन स० १४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर करौली ।

२६६**२. प्रतिस०७** । पत्र स०४७३ । ब्रा०११३X४३ इ.च. । ले०काल X । पूर्णे । बेष्टुन सं०६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

२८८२ प्रतिसं० ६ । पत्रस० ७-४८३ । घा०११×४ इश्व । ले०काल स० १४६२ । प्रपुर्स । बेष्टुनसं०१७८ । प्राप्ति स्थाने —दि० जैन ध्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबत् १५६२ वर्षे कार्तिक सुदी ६ बृधे प्रदोह गोरिलि ग्रामे प० नसा सुत पेथा भ्रानृ भीकम निवित ।

२ त्यत् प्राप्तान् न्य जिनदास । पत्रस्य ४४३ । ब्रा० १२ है ४६ हे इस । भाषा— सम्हत । विषय—पुराए । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रन संग्रेशिश । प्राप्तिः स्थान— भ० दि० जैन मदिर, सजमेर ।

२८८४. प्रतिसं०२ । पत्र सं ४३४ । झा० ११४४ ॄै इञ्च । ले०काल स० १८७१ क्वार सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनस० १०६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पंचायती दूनी (टोक)

२८८५. प्रतिसं० है। पत्र स० २८८ । प्रा० १२×६ इंच । ने०काल स० × । प्रपूर्ण प्राप्ति स्थान-दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्टरगढ (कोटा)

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थं दिये हैं। सं०१७३६ में भट्टारक श्री महरचन्द्र जी को यह ग्रन्थ भेट किया गया था। २८६६. पदमपुरास्य-मञ्बमंत्रीति । पत्र स॰ ३२६। प्राणः १८१४ ६ स्व । माया-संस्कृतः ।विषय-पुरास्य १०काल-४ । लेश्काल स॰ १७१४ । पूर्णः । वेच्टन सं०२७० । प्राप्तिः स्थान विश्वनंत्र मन्दिर बोरसनी कोटा ।

प्रशस्ति—सबत् १९१५ वर्ष भाद्रपदमाने शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री सिरोज नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालवे श्री ......।

२८६७. पद्मपुरास् — म० सोमसेन । स० २८२। ब्रा० १०१४ ४ इन्छ । भाषा — संस्कृत । विशेष — पुरास्। र०काल । से० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४३२ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन सन्दिर, प्रकोर

२८८८. प्रति सं० २ । पत्रस० २७६ । ते० काल $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० २२८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भग्तपुर ।

विशेषः -- जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

२८८६ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ३०१ । झा० १०४६ इच्चा ने० काल सं० १८६८ माघ सुदी ४ । पूर्णा वे० स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, राजमहन ।

विशेष — राजमहल नगर में प० जयचंद जी ने लिखवाया तथा बिहारीलाल धर्मा ने प्रतिलिपि की थी।

२६६०. पद्मपुराग् भाषा—दौलतराम कामलीवाल पत्र स० १८६। ग्रा० १३४८ इंच । भाषा—हिन्दी गण । विषय—पुराग् । र०काल स० १६२३ माथ मुटी १ । ले॰काल ४ । ग्रपूर्ग् । वेष्टन स० १४४२ । प्राप्ति स्थान—स० वि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

२ द्व**६१. प्रति स०** २ । पत्र स० ६४४ । द्या० १२ $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इन्था। ले०काल स०१ ५६० ज्येष्ट बुदी ६ । पर्यो । बेपून स०१७६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मदिर धत्रमेर ।

२८६२ . प्रति स० ३ । पत्रस० ६४३ । ले०काल स० १६३१ । पूर्ण । बेहन सं० । २६३ । प्राप्ति स्थान - भ० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

२८६३. प्रति स० ४ । पत्रस० १-२७५ । धा० ११४ ७६चा। ले०काल ४ । प्रपूर्ण । बेष्टनसं∙ ४५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष--- २७५ से आगे पत्र में नहीं है।

२**८६४. प्रतिसं० ५** । पत्रस० ७३७ । झा० १३×८ इश्व । लेकाल स० १६**१५ कार्तिक** सुदी ११ । पूर्ण । बेहनस० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन लष्टेलवाल मन्दिर झावा (उरिायारा)

**विशेष**---प० रामदयाल ने चदेरी मे प्रतिलिपि की थी।

२००६ प्रतिसंक ६ । पत्रसक ३६० । प्राक्ष ६ $\frac{1}{2}$  ४६ $\frac{3}{4}$  ६ $\frac{3}{4}$  र पूर्ण । वेष्टनसंक १२४ ।  $\times$  । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा ।

२८६६. प्रतिसं० ७ । बा०. १४ $\times$ ७  $^2$  इल । ते० काल स० १८७८ । पूर्ण । बेण्टन सं०८७४ । प्रीप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपयी दौसा ।

विशेष -- विमनराम तेरहपथी ने प्रतिलिपि की थी।

२८९७. प्रति सं० ६ । पत्रस० २२४-५२१ । मा० १३×७ इ.च.। ले०काल सं० × । मपुर्ता । बेष्टनसं० ८१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर मादवा (राज०)

२८६८. प्रति सं० १०। पत्र स० ६०७। प्रा०११×७% इन्व। ने० स० १६१४। पूर्ण । बे० काल स०२८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर)

विशेष--दो वेप्टनो मे है।

२८६९. प्रति सं०११। पत्र स०६३६। ग्रा०१२ $\times$ ६३ इचा। ले•काल स०१६२६ ज्येष्ठ सुदी१०। पूर्ण। बेष्टन स०७५। प्राप्ति स्थान—दि० जन मदिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर)

विशेष--- हो वेष्ट्रनो में है।

२६००. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ६२८ । झा० ११ ४८ इश्व । ले∙काल ४ ।पूर्णं। वेद्यन स० १२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०१. प्रतिसं० १३ । पत्रस०२४० । ग्रा०११ x ⊏ इञ्च । ले∙काल x । ग्रपूर्ण ।वेष्टनस० ८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०२. प्रति सं० १४ । पत्र स० ५३७ । फ्रा॰ १२ $^1_{2}$ ×६ $^1_{2}$ ६० । ले॰काल imes । पूर्ण । बेष्टुन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल मदिर उदयपुर ।

२६०२. प्रति सं० १५ । पत्र स० ७४७ । झा० १०४७¦ इला । ले०काल स० १८६३ । पूर्णं । बेष्टन स० २०१/⊏२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

२६०४. प्रति सं० १६ । पत्रस० ४२६ । ग्रा० १०३४ ७ इञ्च । ले॰काल स० १८४१ । पूर्ण । बेष्टनस० २१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन श्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

२६०**४. प्रतिसं० १७ ।** पत्रसः ४४६ । ग्रा० १०३४० है इंच । ले० काल स**० १८४४ ।** पूर्णे । वेस्टन स० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन श्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है— सं० १०५४ पौष सुदी १३ महाराजाधिराज धी सवाई प्रनापांमहजीराज्ये सवाईजयनगरमध्ये लिलापित साह श्री मानजीदासजी बाकलीवाल तत् पुत्र कवर मनसाराम जी विमनरामजी सेवारामजी नौनवराम जी मनोरखरामजी परमार्थ गुम सूत्रात् ।

लिखित सवार्डराम गोघा सवाईजयनगरमध्ये घ बावती बाजार मध्ये पाटोदी देहरे ध्रादि चैल्यालये जतीजी श्री क्रष्मासागरजी के जायगा लिखी।

२**६०६. प्रतिसं० १८।** पत्र सख्या ४७ । घा० १०×६ इ.च । ले•काल सं०१⊏२३ । घपूर्ण । वेष्टन स० ७४ ।प्रास्टि, स्थान—दि० जैन ग्रमवान मन्दिर, उदयपुर ।

२६०७. प्रति सं० १६ । पत्र स० ५६६ । घा० १२ imes ६ इला । ले० काल स० ११४३ । पूर्णे । बेष्टन स० १३१६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दुनी (टॉक)

विशेष-ऋषि हेमराज नागौरी गच्छवाले ने प्रतिलिपि की थी।

२६० म. प्रतिसं० २० । पत्र सं० १४२ । घा० ११ $\times$  न इञ्च । ले० काल स० $\times$  । घपूर्ण । बेहन सं० ४१।२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर पंचायती दुनी (टॉक)

**२६०६. प्रति सं० २१** पत्र सं० ४४६ । ग्रा० १४ $\times$ ६३ इच । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रग्रवाल मदिर, नैरावा

२६१०. प्रतिसं० २२ । पत्रस० ६०६ । घा० १३imes७ इ.ख । ते० काल imes । पूर्ण वेष्टन स० १३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर श्री महाबीर बूदी ।

**२६११. प्रतिसं०२३**। पत्रस०४०४ । ब्रा०१३× द इ.च.। ले० काल स०१६४६ । पूर्ण। वेष्टन स०१४२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बदी।

२**६१२. प्रतिसं० २४ (क)।** पत्र सख्या ३२४ से ५१६ । ग्रा० १३ 🗴 ७ इखा । ले० काल स**०** १८६२ । ग्रपुर्ण । बेष्टत स० २४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीसान बदी ।

विशेष---शेष पत्र स्रीभनन्दन जी के मदिर में है। सवाईमाधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

**२६१३. प्रति स०२४** । पत्र स०२–३२३ । झा०१३ ×७ इल्डाझ पूर्णा। ले०काल × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनत्दन स्थामी,बृदी।

विशेष--पत्र १ तथा ३२४ से अस्तिम पत्र तक पार्ण्वनाथ दि० जैन मदिर में है।

२६१४. प्रति सं २२४ । पत्रस० ६२६ । ब्रा०१११ ४ ४ ८०च । ल०काल म०१६६७ भाषाढ बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०१२ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मदिर नेरहपथी मानपुण (टॉक)।

२**६१५. प्रति सं० २६ ।** पत्रस० ६१३ । घा० १२ र्रे ४६ १ डखा । लेक्काल० स० रचैत्र बुदी १० । पूर्णः । बेष्टुन स० १०१—१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायमिह (टोक) ।

विशेष--शातिनाथ चैत्यालय मे लिखा गया था ।

**२९१६ प्रतिसं० २७** । पत्र म० ६०६ । ब्रा० १३ imes ७ टखा । ने० काल म० १६३३ । पूर्णे । बेष्टन स०१६५/७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्थनाथ मदिर, इन्दरगढ (कोटा) )

२६१७. प्रति सं० २६ । पत्रस० ७२ । आ० १२ × ७ डला । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन २० ३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मदिर इन्टरगढ (कोटा)

**२६१८. प्रति स० २६ ।** पत्रस०६५३ । प्रा०१९ 🖔 ४६ ४०० । ते०काल म०१८६६ वैज्ञास सुदी १०। वेष्टन स०१०९ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोरमली कोटा ।

विशेष—गुलाबचंद पाटोदी से सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि कराई थी ।

**२६१६. प्रतिसं० ३०** । पत्र स० ४०८ । छा० १४ ٪ ७ इखा । ले०काल х । पूर्णा । बेष्टुनसं० १९० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खण्डेलवाल पचायनी मन्दिर ब्रलवर ।

२६२०. प्रति सं० ३१ । पत्र स० ४४० । घा० १४ 🖂 ८ इञ्च । ले० काल 🗶 । पूर्यो । बेष्टुन स० ११८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन खण्डेलवाल पचायती मन्दिर ग्रनवर ।

**२६२१. प्रति स ० ३२** । पत्र स॰ ४६२ । ले० काल × । पूर्णं । बेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति** स्थान—उपरोक्त मदिर ।

२६२२. प्रति सं०३३। पत्र स०६७१ । ते०काल 🔀 । पूर्ण । वेष्टन सं०१२०। प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर। पुरास साहित्य ] [ २८३

२६२३. प्रति सं०३४ । पत्र स०४४१ । लेखन काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेप्टन स०१/६० प्रास्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल पश्चायनी मदिर ग्रमत्वर ।

२६२४. प्रतिसं०३४ । पत्र स०४४१ । ग्रा०११ × द इल्बा । ले०काल × । पूर्णा बेष्टुत स०१३२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन खण्डेलवाल मदिर धलवर ।

**२६२५. प्रतिसं० ३६** । पत्र स० ५१४ । ब्रा० १३ $\frac{1}{2}$ ४ म् डब्च । ले० काल सं० १६५६ फागुन बुदी १२ । पुर्गा । वेप्टन स० २६ । **प्राप्ति, स्थान**—वि० जैन ब्रग्रवाल पत्रासनी मदिर ब्रन्नवर ।

विशेष — ग्रलवर में लिखा गयाथा।

२६२६. प्रतिसं० ३६ (क)। पत्र स० द४६ । आ०१० ४७ इञ्च । ले० काल स०१ द७२ कानिक ग्रदी २ । पूर्ण । बेष्टन स ३४ । **प्राप्ति स्थान** -- जपरोक्त मन्दिर ।

२९२७. प्रति सं० ३७ । पत्रस० ५३६ । लेब्कान स० १८६३ माघ शुक्ला ५ । पूर्ण । बेस्टन स०२ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर दीवान जी, भरतपुर ।

**विशेष**--- प्रति जीग्गं है।

२६२८. प्रतिसं० ३८ । पत्रस० २०१ । ले॰काल imes । अपूर्णं । बेष्टन स० १४७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त सन्दिर ।

विशेष - ग्रागंके पत्र नहीं है तथा जी गाँहै।

२६२६. प्रतिसं० ३६ । पत्र म० ३०१ से ४८१ । ले० काल 🔀 । अपूर्ण । वेष्टन स० १६३ । प्राप्ति स्थान --- उपराक्त मन्दिर ।

३६३०. प्रतिसं० ४० । पत्र स० ४६४ । ले० काल स० १८६३ । पूर्ण । बेष्टनसं० १८० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

२६३१. प्रति सं० ४१ । पत्र स०२४३ । ले॰ काल 🔀 । ब्रपूर्ण । वेष्ट्रनसं० १६२ । प्राप्ति स्थान जरगेक मदिर ।

२६३२. प्रतिसं•४२ । पत्र स०४४१ । ले० काल 🖂 । पूर्णं । वेष्टन सं०१६३ । प्राप्ति स्थान — उपराक्त प्रदिर ।

२६३३. प्रतिसं० ४३ । पत्र म० २११-३४४ । या० १४ $\frac{5}{2}$  $\times$ ६ इन्थ । ले० काल  $\times$  । प्रयुग्ते । बेक्न स० १४ । प्रार्थित स्थान—दि० जैन पत्रायती मस्टिर बयाना ।

२६३४. प्रति सं०४४ । पत्र स०४७६ । ष्रा०१३  $\times$  म इन्छ । ने० काल स०१६२६ माप मुदी २ । पूर्ण । बट्टन म०१४म । प्रास्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर, ब्याना ।

२६२४. प्रति सं० ४५ । पत्र स०४५१ । घा०१४% ६ इवा । ले० काल स०१८८२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रचायती महिर बयाना ।

विशेष-जनी स्पाल ने बयाना में ग्रंथ की प्रतिलिपि की थी।

२६३६. प्रति सं० ४५ (क) । पत्र स० ४१६ । ब्रा० १४ ४६ इञ्च । ले० काल स० १८४६ मगसिर बुदी १० । पूर्ण । बेस्टन स०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष-वंर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**२६३७. प्रति सं०४६।** पत्रसं०७६७। द्वा०१३ $\times$ ७ इ.चा। ते०काल $\times$ । पूर्णं। वेष्टतसं०४। प्राप्ति स्थान—दि०जैन पचायती मन्दिर कामा।

२६३**८. प्रति स० ४७ । पत्र**सं० ४३८ । झा० १४ × ८ इखा । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्ट्रनसं०—३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

२**८३८. प्रति स०४८**। पत्रस० ७२७। ले० काल स०१८२६। पूर्णः। वेष्टनसं०४६। प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीगः।

२६४०. प्रति सं० ४६ । पत्रस० २०१ । ले० काल imes । श्रपूर्ण । बेष्टनसं० ६४ । प्राप्ति स्थान—चपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--प्रति जीर्ग है।

२६४१. प्रति स० ५०। पत्रसं० ३६४। ले० काल 🗴 । धपूर्णं । वेष्टनसं० ७२। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायती सन्दिर हण्डावालो का डीग।

२६४२. प्रति सं० ४१। पत्र स० ४-१०४ । धा० १४ $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इस । ते०काल $--\times$  । धपूर्ण । बेहुन सं० ६२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान चेननदास प्रानी डीग ।

२९४३. प्रति सं० ४२ । पत्र स० ३२२ से ७०६ । या० १३ imes ४ हुँ इञ्च । ले० काल imes । प्रपृष्टी । बेहुन स० ११८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर करोली ।

२९४४. प्रति सं० ५३ । पत्रस० ३२१ । आ०१३ ४ ४३ इथा । ले० काल ४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर करोली ।

**२६४५. प्रति सं० ५४।** पत्र सं० ५४४। ग्रा०१२ × ७३ इन्द्रा । ले॰ काल—सं० १९५६ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण। बे० म० १५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प वायती मन्दिर करीली।

विशेष--ग्रजमेर वालो के चौबारे जयपुर में लिखा गया या।

२८४६. प्रतिसं० ४४ । पत्र स० ४२६ । प्रा० १०३ ४ ६३ डच । ले०काल स० १९४४ प्राचाढ सुदी ११ । पूर्ण । वे० स०३१३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन सीमासी मन्दिर करौली ।

विशेष--छीतरमल सोनास्मी ने प्रतिलिपि की थी।

२**६४७. प्रतिसं० ५६।** पत्र स०६३६ । ले०काल स०१८३५ । पूर्ण । वेप्टन स०५। प्रा**प्ति स्थान**— वि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

२**६४८. प्रति सं० ५७ ।** पत्रस० ५२३ । घा० १४}४७ इ.च । ले०काल स० १८८२ । पूर्यों । वेष्टनसं० ५४१ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**विशेष**—-प्रथम पत्र नही है।

२६४६. पदापुरासा—जुशालचन्द काला । पत्रस० २६१ । घा० १२  $\times$  ६२ इत्त्र्व । भाषा—हिन्दी (पदा) । विषय—पुरासा । र०काल स० १७६२ पीप मुदी १० । ले०काल सं० १८४६ । पूर्ण । बेहनस० ७४२ । प्राप्तिस्थान—स० दि० जैन मन्दिर द्वजमेर ।

२६५०. प्रतिसं०२ । पत्र स०३४० । प्रा०१२ ४ ५३ इ.च. । ले∘काल स०१८४१ । स∙५० । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मंदिर कोट्यों का नैरावा। विशेष - ग्रलंशम बाह्यए ने नैएवा में प्रतिलिपि की थी।

२६५१. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २७२ । मा० १३ 🗙 ४ ६ है इ.च. । से० काल सं० १६०४ । प्रपर्ण । बेप्टन स० २५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन नेरहपथी मन्दिर नैरावा ।

२**६५२. प्रतिसं०४ ।** पत्र स०२१६ । झा०१२ ४ ७ॄे दच । ले०क.ल स०१६५१ श्रावसः बृदी ⊏ । पूर्सं। वेष्टन स०२०१ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-भीमन श्री विजयनके श्रीपुजि श्री १०८ श्री विद्यासागर सूरि जी तन् शिस्य ऋषिजी श्री बतुर्गुज जी त० सि॰ ऋषिजी श्री सावन जी तरपट्टे ऋषिजी श्री ५ रूपचंद जी त० शिस्य रिल्ब, बक्तराम नक्षत नानता ग्राम मध्ये राज्य श्री ५ जानिमसिंह राज्ये। कदर जी श्री नातालाल मार्यासिंह जी श्रीरतः।

२६५३. प्रतिसं० ५। पत्र स० २४५ । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्णं । बेष्टन स०५८ । प्राप्तिः स्थान—ित् जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष--प्रति जीगां है।

२६५४. प्रति सं०६। पत्रस०२३८। म्रा०१२imes६ इंच । ले०काल imes । स्रपूर्ण। वेष्टन स०८८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष--- २२६ से २३० तक के पत्र लम्बे है।

२६५५. प्रति सं०७ । पत्र स०४२१ । घा०११ $\times$ ५ $^1_2$  दश्च । ने०कान स०१६७६ सावन मुदी १०।पूर्ण । वेध्वन स०१६ ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल पचायती मदिर प्रलवर ।

२**६५६. प्रति स० ८ ।** पत्र स० १८५ । घा० ११रॄै × ७ है इचा । ले०काल स० १८७७ । पूर्ण । बेष्टन स० ६३ । **पास्ति स्थान**—वि० जैन मंदिर तेरहपथी दोसा ।

विशेष--तरापथी चिमनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२६५७. प्रति सं० ६ । पत्र म० ३२४ । ग्रा० १२१ ४ ७ है इचा । ले० काल स० १७८८ ग्रापाद सुदी १ । पूर्मा । वे० स० १०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहायी दौसा ।

विशेष--दौमा मे प्रतिलिपि हुई थी।

२**६५६. प्रति स०१०।** पत्र स०२६४ । आ०१३ × ६ इश्वाले ककाल स०१७६२ सावस्स् मुदी १ । पूर्यालेटन स०००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना।

विशेष—हिरदैराम ने ग्रथ की प्रतिलिपि करवायी थी।

विशेष- माधीसिंह के शासन काल मे नायूराम पोल्याका ने प्रतिलिपि की थी ।

**२६६०. प्रति सं० १२ ।** पत्र स० ३४६ । ले०काल स० १६०० । पूर्ए । वेस्टन स० १७६ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन प्रवासनी मन्दिर भरतपुर ।

२६६१. पाण्डवपुरास् — श्री भूषस्य (शिष्य विद्याभूषस्य सूरि) । पत्र सच्या ३०८ । म्रा० १०  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इन्त । भाषा —संस्कृत । विषय —पुरास्य । र०काल सं० १५०७ । ले०काल  $\times$  । पूर्स्य । वेष्य सं० २५ । प्रास्ति स्थान — म० दि० जैन मस्ति प्रजनेर ।

**२६६२. प्रतिसं० २** । पत्र स० २५२ । आ० १२ $\times$ ६ इच । ते० काल स० १८५४ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६७.। **प्राप्ति स्थान**—वि० जन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

**२६६३. प्रतिसं०.३** । पत्र सं० २६६ । ले०काल स० १६६८ मंगसिर मुदी । बेष्टुन स० २२६ । प्रा**रित स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-- ब्रह्म शामलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

२६६४. प्रति सं ० ४ । पत्र स० ११५ । घा० १२imes५ इन्छ । ले॰काल imes । घपूर्ए । वे॰ स० १ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन धप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — बीच २ के पत्र नहीं हैं। प्रत्येक पत्र में ११ पक्तिया एवं प्रत्येक पक्ति में ४५ ब्रक्षर हैं।

उक्त ग्रंथ के प्रतिरिक्त महारक सकलकीर्ति द्वारा विरक्तित वृत्रभनाथ परित्र एव गुराभद्राचाम कृत उत्तर पुरारण के बृटित पत्र भी है।

**२६६५ प्रति सं०५** । पत्रस० २२६ । **ग्रा**० १२ $\times$ ४  $^{2}$  इच्च । ले०काल म० १७३२ मगसिर बुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

विशेष---मनोहर ने नैस्वा ग्राम मे प्रनिलिपि की थी।

२६६६. **पाण्डतपुरासा—भ०गुभचन्द्र** । पत्र स०४१६। द्वा०११ ४ ४३ इखा । माषा— सस्कृत । विषय—पुरासा । १०काल स० १६०६ । ले०काल स० १७०४ चैत्र मृदी ६ । पूर्मा । बेष्टन स० ६४ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजनेर ।

विशेष - खण्डेलवालगोत्रीय श्री खेतसी द्वारा गोवर्धनदास विजय राज्य में प्रतिलिपि की सर्वी थी।

**२६६७. प्रति सं० २** । पत्रस० २०४ । म्रा० ११ $^{1}$  $\times$ ६ $^{5}$ इख । से०काल म० १८६६ भादव। सदी १ । पर्ग । बेठन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ बीगान व दी ।

क्षिशेष--माधवपुर नगर के कवंटाकपुर में श्री महाराज जगतिमह के गासन म भ० श्री क्षेमन्द्रकीति के क्षिप्य श्री मुध्यक्षीति तरपट्टे सुबंद्रकीति तदान्तायं साह मजुकचन्द जुहाडिया के व ग्र में फिजनदास के पुत्र विजयराम क मुश्रम गेगराज । ग्रम्थुराम के पुत्र वी--गोनदराम पन्नालाल । नोनदराम ने प्रतिनिधि करवाई थी।

यह प्रति बुदी के छोगालाल जी के मन्दिर की है।

२६६८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २२० । धा० १२ ४६ इचा । ले•काल स० १६७७ माघ णुक्ला २ । पूर्ण । बेग्टन स० ३११ । **प्राप्ति रथान**—दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनत्वन स्त्रामी बृन्दी ।

प्रशस्ति— सबत् १६७० वर्षे माघ मासे गुक्नपक्षे द्विनीया तिथी ध्रम्बावती बास्तव्ये श्री महाराजा भावसिय राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलसर्थे " ""म० श्री देवे द्वितिदेवा तदाम्नायं सम्बेलवालान्वयं भौसा गोत्रे सा० ऊदा भाषीं तृदलदे " " ! प्रशस्ति पूर्ण नही है ।

२६६६. प्रतिसं $\mathbf{o}$  ४। पत्र मं $\mathbf{o}$  २४ । प्रा $\mathbf{o}$  १४  $\times$  ४६ ख । ले $\mathbf{o}$  काल  $\times$  । पूर्ण । बेस्टन स $\mathbf{o}$  १६ । प्राप्ति स्थान —दि $\mathbf{o}$  जैन मन्दिर नागदी, बूदी ।

२६७०. प्रति से० प्र.। पत्र स० २०१। घा० १० $^2_4 imes ^2_5$  इन्ताः ले•काल स० १६३६ । प्राप्ताः । वेष्ट्रस्क ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

**विशेष** —्वृन्दावती नगर मे पं० सेवाराम ने लिखा। १--६५ तक के पत्र दूसरी प्रति के हैं। ६६ से १--६५ तक पत्र नहीं है।

**२६७१. प्रतिसं० ६** । पत्रस० १३६ । म्रा०१०३¦ ४६ इचा। ले०काल स० १⊏३४ ब्रापाढ मुदी ७ । पूर्यो । बेष्टनस० १६−२७ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर नेमिनाय टोंडारायॉमह (टोक)

विशेष-चम्पावती नगरी में श्री बदावन के शिष्य सीताराम के पठनार्थ लिखा गया था।

२९७२. प्रतिसं०७ । पत्रस० १४६ । म्रा० १२ × ४ इ.च.। ले०काल × । पूर्णा । वेष्टनस∙ ३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**२९७३. प्रतिसं० ८** । पत्रस० २५७ । ले० काल म० १६९७ । पूर्ण । वेष्टनस० २८/२० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष --- प्रति जीगां है।

पुन सबत् १७१२ की प्रणस्ति दी है। समवत दुबारा यही ग्रंथ फिर किसी के द्वारा महलाचार्य सुमतिकीर्त्ति को भेंट किया गया था।

२६७४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३५० । आ० १०३  $\times$ ४५ इन्छ । क्षे० काल  $\times$  । वेष्ट्रत स० १६९ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**२६७५. पांडवपुराग्—यशःकीत्ति** । पत्रतः २०-१६०, २०४-२४६ । आ० १२ $\times$ ५६%। भाषा—धप्रज्ञः । विषय—पुराग् । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्णं । वेष्ट्न स०२६ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेन्द्रथयी दौसा ।

विशेष --- प्रति प्राचीन एव जीग्रां है।

२९७६. पाण्डवपुरास्ग—बा जिनसास । पत्र स० १३१ । बा० १३४६ दश्व । भाषा— सम्कत । विषय-पुरागा । र०काल × । ले० काल स० १४२६ मगसिर मुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १६०६ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन महिर प्रजमेर ।

विशेष--प्रशस्ति महत्वपूर्णं है।

२९७७. पाण्डसपुरास् — वेबप्रसमूरि । पत्र स॰ ४६ से २६१ । आ॰ ६ $\frac{2}{3} \times Y_0^2$  इश्व । भाषा — सस्कृत । विषय — पुरास्। र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ११२१ । प्रास्ति स्थान — भ॰ दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२६७६. पाषडव पुरासा —  $\times$  । पत्रसं० १०१। आ० ११ $\times$ ० इ.च. । भाषा –िहन्दी (गया) । विषय –पुरासा । र० काल  $\times$  । क्षे०काल  $\times$  । स्प्रूसं । बेष्टन सं० ६३१ । **प्रास्ति स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन सन्दिर अजमेर ।

२६८०. **पाण्डवपुरास्—बृताकीदास**। पत्रस० १६२। म्रा० १२४८ इ<sup>.</sup>च । भाषा— हिन्दी। विषय — पुरास्। र० काल स० १७४४ मायाद मुदी २। से०काल स० १६४४। पूर्स। वेष्टन सं० १४७७। **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर म्रजमेर।

**२६८१. प्रतिसं० २।** पत्रस० २०४। घा० १०३<sup>2</sup> ४४३ इ'व । ले०काल स० १८७६। पूर्ण । बेबन सं० २१। **प्राप्ति स्थान** —भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**२८६२. प्रति सं० ३**। पत्र स०२१६ । घ्रा०१३×७ इश्वा ले०काल स०१९२४ । पूर्णी । बेष्टन सं० ६३–१६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर पंचायती दनी (टोक)

विशेष --सदासुख वैद्य ने दूनी मे प्रतिलिपि की थी।

**२८६३. प्रतिसं० ४** । पत्र सं० २४४ । ग्रा० १०×५ है इ'च । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण *।* वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर व दी ।

२६८४. प्रति सं० ४ । पत्र स०१८२ । ग्रा०११४७ॄै इच । ले०काल सं०१६४६ चैत बुदी ८ । पूर्ण । बेष्टन स २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्वनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष--हीरालाल ने प्रतिलिप की थी।

**२६८५. प्रति सं० ६।** पत्र सं० २२६ । आ० १२×५ हे इन्छ । ले० काल स**०१८४१ ।** पूर्ण । बेपन स ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैसाबा

२८८६, प्रतिसं० ७ । पत्रस० २६८ । आर० ११४४ १ इ.च. लेक्काल स० १८४१ । आयाद बुदी टापूर्ण। बेटुन स० ३२ । आरप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैरावा।

विशेष - ग्रन्वराम ने नैएवा मे प्रतिलिपि की थी।

२६८७. प्रतिसं० म । पत्र स०३७७ । ग्रा०१४४७ १इव । ने०काल स०१८६६ मादवा सुदी । १० ।पूर्ण । वेष्टन स०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मत्रवाल पवायती मदिर प्रलवर

२६८८. प्रति सं०६ । पत्र स०२३८ । ले० काल स०१७८२ धासोज बदी ६ । पूर्ण । वेष्टुन स०७८२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मदिर मरतपुर ।

२६८६. प्रतिर्सं० १० । पत्र.स० १४७ । प्रा० १२३ ४ ७३ इचा । ले० काल् ४ । पूर्सं । बेष्टन स० १४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना । २८६०. प्रति स० ११ । पत्रस० १८६ । प्रा० १४ 🗴 ७०ईदः व । ले०काल १८६३ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन सं० २२१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

२**६६१. प्रतिसं० १२** ।पत्रसं० २-६४ । घा० १२×६ इला । ले॰काल ×। घपूर्ए । वेहन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास, पुरानीडीग

२६६२. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ९६१ । ग्रा० । ११४४ है इला । ले० काल स० 🗙 । ग्रपूर्ण । बेष्टन सं० २८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर करौली ।

विशेष - अस्तिम दो पत्र आधे फटेहये है।

२६६३. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २६० । प्रा० १२imes६ हुं इ.स. । ले०कालimes । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन सीमाणी मन्दिर करीली ।

२८६४.प्रतिसं० १५ । पत्र स० २३२ । प्रा० १३ $\times$ ६ इन्छ । ले० काल सं० १०६६ प्रासोज बढी ६। पूर्ण । बेहुन सं० १२३ । प्राप्ति रूषान-िद० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष--पन्तालाल भाट ने प्रतिनिधि की थी।

२६६४. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० १६४ । बा० ११} ×५१ इञ्च । ले० काल० स० १८११ बाके १६७६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३२ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर वडा बीसपथी दौसा ।

२६६६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० २४२ । ब्रा० १२×५२ इ'च । ले० काल × । ब्रपूर्ण । वैकृत स० २।४ । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

विशेष - ग्रन्तिम दो पत्र नहीं है।

२६६७. प्रति सं॰ १८ ।पत्रतं० २४३ । घा० ११ है $\times$ ५हैं इख । ते०काल सं० १६२३ । पूर्णे । वेष्ट्रतः २८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेखावाटी (सीकर)

२९६६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २३४ । घा० १३ $\frac{1}{7}$  $\times$ ७ इ.च । ले॰ काल स० १९४३ छावाढ युदी । १४ । पूर्ण वेप्टन स० ४२ । प्राप्टिः स्थान -- दि० जैन मन्दिर फोहपुर शेक्षावाटी (सीकर)

२६६६. प्रति सं० २०। पत्रस० ३२६ । आ० १२ $^2_1 \times$ ६ इ.च । ने० काल स० १९११ बैशाख मुदी १ । पूरा । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मदिर ।

विशेष-- रामदयाल श्रावक फतेहपुर वासी ने मिर्जापुर नगर में प्रोहित भूरामल बाह्मए। से प्रति-निति कराई थी।

३००१. प्रतिसं० २१ । पत्रस० ११० । प्रा० १४ ४६३ इ.च. । ले०काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

३००२. प्रतिसं० २२ । पत्रस० ११८ । प्रा० १२ x ७ इञ्च । से०काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्टा सं० १७४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन लडेलवान पंचायती मन्दिर प्रलवर ।

३००३. प्रतिसं० ३३ । पत्रतं०१७६ । ते०काल सं०११५६ मासोज । पूर्ण । वेष्टन सं०१७६ । प्राप्ति स्वान---उपरोक्त मन्दिर । **३००४. पाण्डव पुराए। वक्तिका—पद्मालाल चीघरी ।** पत्रस० २४६ । घा० १३× ५ हुन्य । भाषा—हिन्दी (गढ) । विषय—पुराए। र०काल स० १६३३ । लेककाल स० १६६५ वंशाल बुबी २ । पुर्छ । बेब्रन स० १२११ । प्रास्ति स्थान—मद्रारकीय दि० जैन मन्दिर प्रवर्गर ।

३००५ पार्य्य पुरास्य —चन्डकीत्ति । पत्र स० १२८ । झा० १०४५ इख । आधा— संस्कृत । विषय —पुरास्य । र०काल स० १६५४ । से०काल सं० १६८१ फागुस बुदी ८ । पूर्स । वेहन स० ४४ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर तेरहाधी मालपुरा (टॉक) ।

विशेष—- आयार्थं चन्द्रकीित श्रीभूषण के शिष्य थे। पुराला में कुल १५ सर्ग हैं। पत्र १ से ५६ तक दसरी लिपि है।

३००६. पार्स्वपुरास्य-पद्मकीति । पत्र सं० १०८ । आ० १०४४ । इञ्च । आपा-अपभ स । विषय-पुरास्। र०कात स० १६६ । ते० काल स० १५७४ काती वृदी ३। पूर्स । वेष्ट्रन स० १७७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—चित्रकूटे रासाधीसहाम राज्ये "" अ० प्रमाचन्द्रदेवा राष्ट्रेलवानान्त्रये भीमा गोत्रे साह सहक भागी महाथी पुत्र साह मेषा भागी निषमी दितीय मा मा जीता। भागी जीनाशी नृतीय भा सा सूरज मार्वा गुर्वेदै ततुर्वे भागता सार्वा भागी पूनादे एत्रेया मध्ये साह मेथा पुत्र होगा ईमर महेमर करमसी इद पाव्येताव्यदिक मृतिशी नरेस्टकीसि योग्य पदाणित ।।

३००७. पार्कपुरासः—रहस्ना पत्रस० ८१ । सा०११, ४४ इचा । भाषा—प्राप्त सा । विषयः—चरित्र । २०काल × । ते० काल सं० १७४२ माष बुदी ३ । पूर्णा विद्यान २००० । प्राप्ति ≄सासः— किंद्र केन सिंदर कोन्यसिकोदाः ।

विशेष--१७४३ वर्षे माघ कृष्णा ३ चन्द्रवारे निन्ति महानन्द पुन्कर महास्मा पानव निवासी ।

३००८. पार्खपुरास्—वादिचन्द्र । पत्र स० १२२ । प्रा० ११४ ८) उच । भाषा—सङ्कत । विषय—पुरास्। २०कास ४ । ले० काल स० १०१० माथ मृती १ । पूर्ण । वेध्न म० २६६ । प्राधितः स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष - नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य प० वृत्तचन्द ने इस ग्रथ की प्रतिनिधि की थी।

**२००६. प्रति सं० २ । पत्र**स० ७३ । आग० १० 🗵 ६ च । ले०काल स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन प० २३४–६३ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुनरपुर ।

विशेष---नौतनपुर मे ब्र. नेमिचन्द्र ने ग्रथ का जीरागेंद्वार किया था।

३०१०. पुरास्पतार(उत्तरपुरास्प)—म० सकतकोत्ति । पत्र मं०१९२ । ब्रा०१०×४ई इ.ख । भाषा—संस्कृत । विषय—पुरास्प । र०काल × । ले०काल म०१६६० भाववा बुदी १५ । पूर्स । बेच्टत स०१४५६ । प्राप्ति स्थान—भहारकीय दि० जैन मन्दिर बजनेर ।

**३०११. प्रतिसं० २** । पत्र स०३४ । घा० १२ × ५ इ.च । ले० काल स०१८ हासोज सुदी १२ । पूर्णा बेटून स०१४५६ । **प्राप्तिस्थान**— स०वि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

. विशेष-मंद्रलाचार्य महारक विजयकीति की धान्नाय में साकशरितगर (सांभर) में महाराजा पृथ्वीसिंह के राज्य में श्री हरिनारायए। वी ने कास्त्र लिखनाकर पंडित माएकवन्द को मह किया या । ३०१२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २३६ । आ० १०४४ इ.च । ले० काल स० १७७० पीच बुदी २ । पूर्णी । वेल्टन स० १२ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बुदी ।

३०१३. पुरासासर — सागरसेन । पत्रस० ८२ । सा० ११ $\times$ ५ इख । भाषा — सस्कृत । विषय — पुगल । ० काल  $\times$  । ले०काल स० १६५७ । पूर्ण । बेष्टन सं० १०७३ । प्रास्ति स्थान — भटारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-- प्रणस्ति निम्न प्रकार है-

सवत १६५७ वर्षे भादवा बुदी १ वार णुकवार श्रजमेर गढ मध्ये श्रीमद्श्रकवरसाहिमहासुरवाण राज्ये लिखित च जोगी सुरदान साह धागुा तत्पृत्र साह निरमल ।

३०१४. **भागवत महापुराग्** — × । पत्रसं० १३३ । **प्रा०** १२×७ इत्रा । भाषा-संस्कृत । विषय — पुराग्ग । रक्ताल ४ । लेकाल सक् १८१२ । पूर्ण । वेष्टनसंक ७२ । **प्राप्ति स्थान** — दिक्**जैन** मन्दिर प्रक्रिनन्दन स्वामी वृद्ये ।

विशेष -३१ वें अध्याय तक पूर्ण है।

३०१४. भागवत महापुरास्य $-\times$ । पत्रत्य २०४। प्रा० १०२  $\times$ ४) इ.च.। मामा—सङ्ग्तः। विषय—पुराणा । ४० कालः। लेकालः  $\times$ । पूर्णः। वेस्टन स० १३। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मिट प्राप्तिः स्थान नामानः

विशेष -- दशमन्त्रध पर्वाद्ध तक है।

२०१६. सागवत सहायुरासा-- × । पत्रस० २-१४६। प्रा० ६×६ इञ्च । भाषा--हिन्दी गए । विषय —पुरागा । र०काल म० १७०० धावसा बुदी १० । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टनसं• ६०। प्राप्ति स्थान दि० जैन सन्दिर, धारिनाथ बुदी ।

३०१७. मागवत महापुरास्य भावार्य दीपिका (एकादश स्कंघ)—श्रीघर । पत्रसंक १२६। मा० १३ × ४ ४ च । भारा - सन्कृत । विषय—पुरास्य । र०काल × । ले० काल स० १८०६। पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर नागदी ब्रुंदी ।

३०१८. प्रति सं०२ । पत्रस० ३४ । ग्रा०१४ ४६ इल्ब । ले०काल 🗴 । ग्रपूर्णं । वेष्टन स० ११७ । प्राप्ति स्थानं — उपरोक्त भन्दिर ।

३०१६. मागवत महापुरास्य भावार्थ दीपिका (तृतीय स्कंध)—श्रीघर । पत्रसः १३२ । षा॰ १२ ४ ४ ४ ४ । भाषा - सस्कृत । विषय —पुरास्य । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी वृदी ।

३०२०. प्रति स० २ । पत्रस० ७७ । मा० १२ × ६ इख । ते०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११४। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर, नागदी बुंदी ।

३०२१. मागवत महापुराए। मावार्थ दीपिका (हादश स्कंघ) — श्रीघर । पत्र स० ४४। uा० १४ $\times$ ६ त्यः । भाषा — सस्कत । विषयं — पुराए। र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ए। बेष्टन u० ११४। प्राप्ति स्थान— दि० जैन संदिर नागदी, वृदी।

३०२२, मागवत महापुरास भावार्ष वीपिका (चतुर्थ स्कंघ) — श्रीधर । पत्र स० ६०। श्रा॰ १४ $\times$ ७ स्वः। भाषा — सस्कृत । विषय — पुरास । र०काल  $\times$  । क्षेण्काल  $\times$  । पूर्स । वेष्टन सं॰ ११३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३०२३. मागवत सहापुराएा मावार्थ दीपिका (हितीय स्कंघ) — श्रीधर । पत्र स० ३२ ।  $\pi$ । १४  $\times$  ७ इच । भाषा — सस्कृत । विषय — पुराए। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । अपूर्ण । वेष्टन स० ११२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२४. प्रति सं०२। पत्र स०४३। धा०१४×६ इंच। ले॰काल × । धपूर्ण। बेष्टन सं०११६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

३०२५. भागवत सहायुरासा मावार्थ देशिकता (सन्तम स्कंब) — श्रीधर । पत्र स०६४ । ग्रा०१५  $\times$  ७ इ.स. । भाषा —सस्कृत । विषय — पुरासा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०११० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर नायरी बूटी ।

३०२६. भागवत महापुरारा भाषार्थं दीपिका (यष्टम स्कंघ) — श्रीघर । पत्रस० ६२। मा॰ १४  $\times$  ६२ इवा । भाषा —सस्कृत । विषय —पुरारा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७७६ । पूर्णं । वेष्टनसं० १०६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागदी बूंटी ।

**३०२७. प्रतिसं० २** । पत्रस० ६२ । घा० १५ ४७ इच्च । ले०काल ४ । पूर्णा । बेष्टन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२८. भागवत महापुराग् भावार्थ दोषिका (ग्रन्टम स्कंथ) — श्रीघर । पत्रस० ५६ । मा० १४ $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इन्त । भाषा-सस्कृत । विषय —पुराग् । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ग् । वेष्टन सं० १०६ । प्राप्तिः स्थान —दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३०२६. सामबत सहा प्रास्त मावार्य वीपिका (नवस स्कंब)—श्रीघर । पत्र स० ४१ । सा० १४,४६ इस्ब वेष्टन स० १८७। प्रास्तिस्थान्य-विश्वन्त स० १८० । त्रोक्सल स० १८६१। पूर्णः ।

३०३०. सागवत सहापुरासा भावार्थ वीपिका (पद्म स्कंध)—श्रीधर । पत्र स० ६३। म्रा० १५ $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इन्त्र । भाषा—सस्कृत । विषय—पुरासा । रक्ताल  $\times$  । लेक काल स० १७४६ । दूसर्थ । वेस्टन स० १०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

२०२१. प्रति सं०२ । पत्र स०१६-२३ । मा०१४×६१ इ.च. । ले•काल × । म्रपूर्ण । वेष्टन सं०१०६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

३०३२. मागवत महापुरारा भावार्थ दीपिका (प्रथम स्कंघ) — श्रीघर । पत्रसं० ६०। ग्रा० १३×६ दच । भाषा — संस्कृत । विषय—पुरासा । उ०काल × । ले०काल सं० १८६६ । पूर्स । वेहनसं० १०४। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नागदी दृदी ।

३०३३. मागवर्त महायुराशा भावार्थ वीषिका (वशम स्कंघ)—श्रीघर । पत्र सं० १३७ । मा॰ १२×१६ इच । गाया—सङ्कत । विषय-पुराश । र॰ काल सं० × । ते॰ काल सं० १७४४ माच कृती ऽऽ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागती वृदी । विशेष—इद पुस्तक लिखित बाह्मए जोशी प्रह्लाद तत्पुत्र चिरंजीव मयुरादास चिरंजीव भाई गंगाराम तेन इदं पुस्तकं लिखित । जंबुदीप पटलस्थले । श्री केशव चरण सन्निच्चौ ;

३०३४. मस्लिनाथ पुरास्म $\sim \times$ । पत्रसं० २६ । आ० १२ $\frac{1}{8}$  $\times$ ५ $\frac{1}{8}$  इख । भाषा—संस्कृत । विषय—पुरास्म । रकास  $\times$  । लेकास  $\times$ । अपूर्स्म । वेष्ट्न सं० ६७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भारवा (राज०) ।

३०३५. महिलनाय पुरासा भाषा—सेवाराम पाटनी । पत्र सं०१०६ । ग्रा०१०३/४५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पुरासा । र०काल स०१८५० । लेवकाल सं०१८६४ फानुसा सुदी २ । पूर्स । बेहन स०२०६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३०३६. सहावण्डक —  $\times$  । पत्र स०४ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ इन्छ । भाषा — सस्कृत । विषय  $\times$  । एक सल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स०६०२ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर स्थानेर ।

विशेष — इति श्री जैसलमेर दुर्गस्य श्री पार्ध्वनाथ स्तुनिष्धकेड चकरण चेत सालाचक सहज्जीनि नाम महादङकेन सं० १६०३ प्रमास्त्रे विजयदामी विजये । जिल्ल्यतानि महादण्डक विदुषाक्षपरामेस्स् सामा नगरमध्ये मिनी ज्येष्ठ प्रतिबाहिचसे सं० १७५२ का ।

३०३७. महादंडक---भ० विजयकीति । पत्रस०१७५ । मा०६ $\frac{1}{4}\times$ ४ दश्व । भाषा---हिन्दी । विषय---पुराण् । र०काल स०१८३६ । लेकाल स०१८४० पूर्णः । वेष्ट्रन स०१४३६ । प्राप्ति स्थान----म० दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

विशेष--- किशनगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

३०३ म. प्रतिसं०२ । पत्र स०१८२ । घा० ६५ ४६ इचा । ले०काल ४ । पूर्ण । वेक्नसं०८१६ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर क्रजमेर।

विशेष-प्रथ मे ४१ ग्रधिकार है तथा अजयगढ़ मे प्रतिलिपि हुई थी।

३०३६. महापुरास्—जिनसेनाचार्य-गुरामद्राचार्यः। पत्रस०१-१४४ । झा०१३४ ४.१ इ.स. भाषा-सस्कृतः। विषय-पुरास्। २०कालः ४ । से०कालः ४ । झपूर्सः। वेष्टन स०३२१/२ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन समवनाय मन्दिर, उदयपुरः।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६-४१७ । घा० ११३ ४ ६ इच्छे ) से० काल 🗴 । घनूसं । वेस्टन पं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहसंघी दौसा ।

विशेष--बीच २ में कई पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन एवं जीए हैं।

२०४१. प्रतिसं० ३। पत्र सं० ३६६। मा० ११× ४० विकाल १८८०। पूर्या। वेष्टन सं० १२/८। प्राप्ति स्थान--- दि० जैन पंचायती मन्दिर दनी। (टीक)

३०४२, प्रतिसं ० ४ । यत्र सं० ६४० । ले॰ काल सं० १६६३ । पूर्ण । वे० सं ३- । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपंत्री मन्त्रिर बसवा। विशेष --रग्रथमीर के चैत्यालय मे प्रतिनिधि हुई थी।

३०४३. प्रति सं० ४ । पत्र स० ३८२ । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । नेष्टन स० २०७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन पर्वावती मदिर गरतपुर ।

२०४४. प्रति सं० ६ । एव स०१ से ४८४ । ले० काल स० imes । ब्रदूर्ग । वेष्टन सं० २८२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायनी मदिर सरतपुर ।

३०४**४. प्रति सं० ७ ।** पत्रसं० ४३४। प्रा० १२×४ॄै इख । ते**०का**ल स०×। प्रपूर्ण । वेष्टनसं∙ २३२ । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- ३७६ से ४३४ तक तथा ४३५ से ग्रागे के पत्र मे नहीं है।

२०४६. महापुरारण-पुष्पवंत । पत्र स० २४७ । झा० ११×४) इस्त्र । आषा-सप्रश्न । विषय | पुराए। १०काल । से०काल × । पूर्ण । बेष्टनत० ४२७ । **प्राप्ति स्थान**—अ० दि० जैन सन्दिर स्रजनेर ।

विशेष-प० भीव लिखित ।

३०४७. प्रतिसं० रं । पत्र स० ६४६ । घा० १०३४४३ इ॰ख । ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । प्राप्तिस्थान—रुपरोक्त मदिर ।

३०४८. प्रति सं० ३। पत्रम०३१४।म्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इच । ते०काल  $\times$ ।म्रपूर्ण । बेष्टनस०२६  $\times$ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर यडा बीसपथी दौसा ।

विशेष --बहुत से पत्र नहीं है।

२०४६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०११ । आ० ११३ॄं ४५१ृँ इश्व । ले•काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन स०२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौमा ।

विशेष -प्रति प्राचीन एव जीर्गा। पत्र पानी में भीने हये है।

२०५०. प्रति सं० ५ । पत्र स० २४७ । प्रा० ११ $^{3}$   $\times$  ४ $^{3}$  इन्दा से० काल स०  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्न स० ८३ । प्रास्ति स्थानं दि० जैन मंदिर फतेहपुर शेखाबाटी (सीकर)

विशेष-प्रतिप्राचीन है। प्रणस्ति काफी वडी है।

**२०५१. प्रतिसं**० ६ पत्र <sup>'</sup>स० १३८ । ले० काल imes । भ्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० २६/४ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

२०४२. महापुरास् चोपई—गगावास (पर्वतसृत)। पत्रस० ११। ग्रा०१०) ४४३ इ.स.। माषा—हिन्दी (वधा)। विषय:--पुरागः । २०कालः। ले० काल सं० १८२४ कार्तिक हुदी ४ । पूर्णः। वेष्टन म०३१३। प्रास्ति स्थार्मे—दि० जैन मन्दिर बलाना बृदी।

२०५३ प्रतिस्० २ । पत्रस० १० । ते०काल स० 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन संभवनार्थ मेर्डिस्टरं उदयपर ।

३०५४ सहाम्रोरत- ४ । पत्र सं० ६१ । आ० ११४४) इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय पुरासा (२०कास ४ । तेंश्वास ४ । अपूर्ण । वेष्टन सं० ५२ । प्राप्ति स्थान-दि० वेतं मन्दिर समिनन्दन स्वामी, बुंदी । विशेज--कर्णपर्व-द्राधिप संवाद तक है।

३०**५५. मुनिवत पुरासा—व्र० कृष्टणदास ।** पत्र स० १६६। ब्रावे १०४५ इश्व । भाषा— सस्कृत । विषय—पुरासा । र०काल ४ । ते० काल स० १६६१ । वृद्धा । वेक्टन स० ३६५। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--- चन्तिम पत्र जीर्गा हो गया है।

**३०५६, रामपुरास्—सकलकीति।** पत्र न०३४५। प्रा०१२ × ९६७। भाषा—सस्कृत। विषय—पुरास्। र०काल × । ले० काल स० १.७१। प्रस्तु। वेस्टन स०७६। **प्रास्तिः स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर स्रजनेर।

विशेष -- भट्टारक भुवनकीति उपदेशात् ह ढाहर देश दीर्धपुरे लिपीकृतं ।

**३०५७. रामपुराए—स० सोमसेन । पत्र स०** १८६ । ब्रा**० १२**४६ इश्व । भाषा— सस्कृत । विषय-पुराण । र०काल ४ । ले०काल । पूर्ण । बेपून स० १०५४ । **प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर क्रजोर ।

**२०५८. प्रति सं० २** । पत्र स० २२० । मा० १२५ ६ट्टै इला । लेंकाल स० १८६६ माथ मुदी १३ । पूर्यु । बहुत स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर म्रादिनाथ 'बंदी ।

३०**५६. प्रतिसं० ३**। पत्र सं०२७६ । ध्रा०११४ ५ इच्छ । ले० कोल स०१७२३ । पूर्ण । बेष्टत स०१८२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर ग्रुपिनस्दन स्वामी बदी ।

प्रशस्ति—मः ० ९७२२ वर्षे वाके १४८६ चंत्र मुटी ४ णूकवासरे अ'वावती महादुर्गे महाराज्ञधिराज श्रीः जयांमर राज्य प्रवर्गमाने बिमलनाथ बैल्यालये भट्टारक श्री नरेन्द्रकीति के समय मोहनदास भौगा के वशकों ने प्रतिचित्रि कराई थी।

३०६०. प्रतिस् ४ । पत्रस० १६४ । प्रा०११ ४ ५ १ इच्च । ले०काल १८५७ । पूर्ण । बेष्टुन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष - व दावती में पार्श्वनाथ चैत्यालय में सेवाराम ने प्रतिलिपि की भी।

**३०६१. प्रतिसं० ४** । पत्रस० २४० । लेक्काल स०१६४६ । अपूर्ण । वेष्ट्रन स०११ । प्रा**प्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दवलाना बृदी ।

**३०६२. प्रतिसं० ६** । पत्र स०३६-२४४ । घ्रा०१२×४ इञ्च । ले० काल 📐 । घ्रपूर्ण । वेष्टन सं**०४३ । प्राप्तिस्थान**—दि० जैन ग्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**३०६२. प्रति सं० ७ ।** पत्रस० २३६ से ३६२ । ब्रा० १२×५ <sup>क</sup>ृदक्ष । ले०काल म० १८४३ । क्र<u>पुर्ता</u> । बेकन स० २१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरा**ढ ।** 

३०६४. प्रतिसं० ८ । पत्र स० २६० से ३४४। घा० ११४ प्रे । से०काल ४ । अपूर्ण । वेकृत स० २१७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

३०६५. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २३७ । घा० १३imes६ खा । छे $_{f o}$ कहाल imes । पूर्ण । बेप्टर सं० ३२६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३०६६. वर्द्धमान पुरासा - × । पत्र स० १६६ । झा० ११३ ४७३ इ.च । भाषा - हिन्दी । विषय-पुरासा । र०काल -- × । से०काल सं० १६४१ ज्येष्ठ सुदी १२ । पूर्स । बेष्टन सं०४६ । प्रास्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बंदी ।

३०६७. **बर्द्ध मान पुरास्य माबा** —  $\times$  । पत्र सं०१४७। ब्रा०११४७ $\frac{3}{4}$  इचा । बाबा — हिन्दी गद्य । बिषय —पुरास्य । र०काल  $\times$  । ते०काल —  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०४१ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रतिनन्दन स्वामी । बूंबी ।

२०६ स. **बद्धं मान पुरारा** — कवि काता । पत्रसं० १०४ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  × ४ $\frac{1}{2}$  दवा । माया — संस्कृत । विषय — पुरारा । २०काल स० १००६ । ते० काल स० १४४० कागुरा सुदी है । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राणित स्थान** — दिंज नैत प्रिटर दीवानकी काला ।

# विशेष-लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

३०६६. बर्द्ध मान पुरार्ग्ग $-\times$ । पत्रस०२१४ । म्रा०१३ $\frac{1}{2}$  $\times$ ०६७ । भाषा-हिन्दी प्रष्ट । विषय-पुरांग् । रुकाल  $\times$  । ते० काल सं० १६३६ फागुन बदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०२७ । प्राप्ति स्थान-प्रप्रवाल पंचायती दि० जैन मन्दिर मलवर ।

३०७०. वहाँमानपुरास्—नवलशाहु। पत्र स०१४७। प्रा०१२१४७१ इत्र । भाषा— हिन्दी। विषय —पुरास् । र०काल स०१-२४। ते०काल ४। पूर्स । वेष्टनसं०२२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जेन प्रवास्त्री प्रदेश क्यान

विशेष - पुराण मे १६ अविकार हैं।

### प्रारंभिक पाठ---

ऋषभादिमहाबीर प्ररामामि जगरुगुरु ।
श्री बढ मानपुरायो जनवामि यह बबीत् ।
श्रोकार उच्चारकारि ध्यावत मुनिगण सोइ ।
तामैं गरिमत पचगुरु तिनयद बदी दोइ ।
गुण झानद सागर विमन विश्वनाथ भगवान ।
धर्मक मध्य वीर जिन बंदी विरा धरि स्थान ॥१॥॥

## म्र'तिम पाठ--

उज्ज्यंति विकम नृपति सवस्यर गिनि तेह । सत् प्रदार प्रचीस प्रविक समय विकारी एह ।।३२।। द्वारंब यें सूर्ज गिने द्वारंब प्रविद्धि कत । द्वारंबायी गासहि भनी चुक्तपण तिथि प्त ।।३३।। द्वारंबायी प्रविद्धा विकार वृद्धि जोग । द्वारंबाया चुक्तपण यादि जोग ।।३४।। रितबसत प्रफुल्ल भनि फागुसमय शुभ हीय। बर्द्धमान भगवान गुन ग्रंथ समापति कीय।

## मविकी लवता --

द्रव्य नवल क्षेत्रहि नवल काल नवल है और। भाव नवल भव नवल प्रतिबुद्धि नवल इहि ठौर ॥ काय नवल प्ररु मन नवल वचन नवल विसराम । नव प्रकार जत नवल इह नवल साहि करिनाम ॥

## झंतिम पाठ - दोहा---

पच परम गुरु जुग चरणा भवियन बुध गुन धाम । कृपावत दीर्ज भगति, दास नवल परनाम ॥४२॥

२०७१. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३६ । प्रा० १२imes ६ है इला । ले० काल सं० १६१५ सावन बुदी ११ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ६१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर घेलावाटी (सीकर) ।

३०७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ग्रा० १०३४ ५३ इला । ले०काल स० १६१७ । पूर्ण । बेठून स० ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर फतेहपुर मेखावाटी ।

विशेष — भगवानदास ने बवई मे प्रतिलिपि कराई थी। सं० १६२६ में श्री रामानद जी की बहू ने फोदुर के मेरिर इने चडाया था।

३०७३. बद्धं मान पुरास्य —सकलकोत्ति । पत्र सं० ६० । घा० १० $^1_i \times ^1_k$  इश्व । भाषा — सस्कृत । विषय —पुरास्य । ५०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११४ । प्रास्ति स्थान —वि॰ जैन मन्दिर श्री महावीर व दी ।

२०७४. प्रतिसं०२ । पत्रसं०१२१ । ग्रा०११४५ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्णः । वेष्टनसं०२०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दबलाना (ब्रुदी) ।

२०७५. प्रतिसं० ३ । यत्रस० १३ ८। घा० १०३ × ४३ इथ्या । ले० काल × । पूर्णा । वेष्ट्रतसं० २३६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३०७६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १३८ । घा० १२ ×७ ॄे इन्च । ले० काल सं० १७६५ । पूर्ण । वैष्टतसं० १ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

विशेष-- हरीली नगर में किसनलाल श्रीमाल ने लिखा।

३०७७. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२६ । झा० ११४८ इ.च । लेक्सल सं० १६०२ पूर्ण । बेष्टन सं० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३०७८. प्रतिस०६। पत्र सं०१०३। घा० ११×४३ इञ्च। ले० काल स०१४८८। पूर्ण। बेष्टन सं०२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रग्रताल मन्दिर उदयपुर।

विशेष---प्रणस्ति निम्न प्रकार----

संबत् १४८८ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १२ गुरू पं० नला सुद्ध पं० पेया आत अकिम----- सिखितं।

दूसरी प्रशस्ति---

स्थवीराचार्यं श्री ६ चन्द्रकीर्ति देवाः ब्रह्म श्रीवंत तत् शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येद पुस्तकं पठनार्यं ।

३०७६. प्रति सं०४ । पत्र स०२०६ । प्रा०१२४६ हे इच । भाषा – हिरी । विषय — पुरासा । र०काल स०१ दे२४ । ले०काल स०१६०६ । पूर्वा वेष्ट्रन मं०२३० । प्राप्ति स्थान — विक्तंत्र मन्दिर दीवानत्री कामा ।

विशेष---

कामा के मन्दिर मे दीवान चुन्नीलाल ने मेंट किया।

**३०००. प्रति सं० ४ ।** पत्रस० १०००। घा० २५/४७१ इञ्च । ले०काल स० १९४६ । पूर्ण । बेहनसं० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

**३०८१. प्रति सं०६।** पत्रस० १३०। ले०काल म०१८८६। पूर्णः। बेष्टनसं०७६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्वायती मंदिर मरतपुर।

. ३०६२. वर्द्ध मान पुरारण मावा—नवलराम । पत्रसं० २४३। प्रा० ११ ४७ इव । भाषा— हिन्सी पद्य । विषय —पुरारण । र०काल स० १६२१ धगहर नुदी । ले० काल स० १६०३ । पूर्ण । वेहन सं० ४१ । प्राप्ति स्थान—विठ जैन वचारती पन्दिर कामा ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति विस्तृत है वेश्य कूल की ८४ गोत्रो का वर्णन किया गया है।

बोहरा-

सौरहसे इक्याएवं प्रगहरा सुभ तिथि वार।
नृप जुभार बुदेन कुल जिनके राजमभार।
यह सक्षेप बखाएकिर कही पनिष्ठा धर्म,
परजाग जुन बाडी विभव तिए। उत्पनि बहुधमें।।

दोहरा---

क्षत्रसालवती प्रवल नाती श्रीहरि देस । सभासिह मृत हिइपति करिंह राज इहदेस ॥ ईति भीति व्यापै नहीं परजा श्रीत श्रागृद । भाषा पढहि पढावहि षट् पुर श्रावक वृद ।

पद्धशे खंद---

ताहि समय करि मन में हुलास, कीजे कथा श्री जिग्ग गुग्रहि दास।

बक्ताप्रमान बडी उर मान ।
तब प्रमु वह मान गुण्छान ।
करी भस्तवरण भाषा जोर ।
नवलसाह तज मदमण मोर ।
सकलकीति उपदेश प्रवाण ।

पितापुत्र मिलि एन्यो पुरास ।

# ग्रन्तिम दोहा---

पच परम जग चरमा निम, भव जमा बुद्ध जुत घाम । ऋषावत दीजे भगत दास नवल परमाम ॥

ग्रंथ कामापुर के पचायती मन्दिर में चढाया गया।

३०६३. विमलनाथपुरास्य — ऋ० कृष्टस्यासः । पत्र सं० २६६ । स्रा०१२४७३ इञ्च । माया — सस्कृत । विषय --पुरास्य । र०काल स०१६७४ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०१७३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फनेहपुर गेलावाटी (सीकर)

३०८४. प्रतिसं०२।पत्र स०१५१।घा०१०३४५३ इचा। ले०काल X। पूर्णा विष्टन सं०८/११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सौगाणी करीली।

३०८५. विमलनाथ प्राम् भाषा—पांडे लालचन्द । पत्र स०१००। मा०१४ ४ पर्टे इन्द्र । भाषा—हिन्दी पछ । विषय—पुरास । र०काल स०१८३७ । ले०काल स०१६३४ वैगाख दुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०३१ । प्राप्ति स्थान—प्रप्रवाल पवाजती दि० जैन मन्दिर खलवर ।

३०८६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ११८ । छा० ६१ ४६ इञ्च । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वेष्टन स०७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

२०५७. प्रतिस० ३ । पत्र स० १३७ । यो० १२  $\times$  ५ $^2_7$  इच्च । ले० काल स० १६३३ प्राणाढ बुटी ११ । पूर्ण । बेट्टन स० १७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मदिर करीली ।

३०८८. प्रतिसं०४ । पत्रस०११८ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०१७१ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — ब्रह्म कृष्णदास विरिवत संस्कृत पुरास के ब्राधार पर पाढे लालचन्द ने करीजी में ग्रथ रचना की थी।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

ग्रडिल्ल--

गढ गोपाचन परम पुनीत प्रमानिये, नहां विश्वभूषण भट्टारक जानिए। निनके शिष्य प्रसिद्ध बह्य सागर सही, ध्रमवार वर वंश विषे उत्पत्ति लही।

काज्य छन्द---

बात्रा करि गिरनार सिखर की प्रति सुख दायक । फुनि घाये हिडौन जहां सब श्रावक लायक । जिन मत को परभाव देखि निज मन थिर कीनों। महावीर जिन चरण कमल को शरणों लीनी।।

दौहा---

बहुर उदिध के शिष्य फुनि पांडेलाल श्रयान । खंद कौस पिंगल तनी जामें नाही जान । प्रभु चरित्र किम मिस विषय कीनों जिन गुरागान । विमलनाथ जिनराज को पूररा भगो पुराग ।। पूर्व पुरान विलोकि कै पाढेलाल प्रयान । भाषा वस्त्र प्रवश में रच्यो करीरी थान ।।

## चौपाई--

संवत् प्रष्टादश सत जान ताउपर पैतीम प्रमान । ग्रस्थिन सुदी दशमी सोमवार ग्रंथ समापति कौनौ सार ॥

३०८६. विष्णु पुरास्य- × । विष्यत् ७-४०। घा० ११ × ५१ इन्छ । भावा —हिन्दी । विषय-पुरास्य । र०काल × । ले० काल × । घपूर्स । वेष्टनसं० ६८। प्राप्तिस्थान—दि० जैन पंचायती मदिर बयाना ।

विशोज--पत्र स० ७-१ तक प्रठारहपुराण तथा १-४० तक विष्णुपुराण जिसमे प्रादिनाय का वर्णन भी दिया हुमा है।

३०६०. श्रीरोक प्रास्य—विजयकीति । पत्र स० ८१। भाषा-हिन्दी। विषय-पुरास्य। र०कात स० १८२७ कापुन बुदी ४। ले० काल स० १६०३ भ्रासोज सुदी ४। पूर्यः। वेष्टन स० ४४६। भ्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर।

३०११. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४४ । मा० ११ $\frac{1}{2}$  ४ $\frac{1}{2}$  इश्व माया—िहन्दी पद्य । विषय— पुराखा । र०काल स० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल स० १८८७ । वेष्ट्रन सं० ६६४ । पूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशोध — भट्टारक परिचय दियागया है। भट्टारक धर्मचन्द्र ठोल्या वैराठ के थे तथा मलयखेड के सिद्दासन एव कारजा पट्ट के थे।

३०६२. शास्ति पुरास्म प्रमाग । पत्र स० ८४ । घा० ११ × ४ हे इख । आधा — सस्कृत । विषय — पुरास्म । र०काल × । ले०काल स० १८४१ घाषाळ बुदी ४ । पूर्स । बेटन सं० ८ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बादिनाथ बुंदी ।

विशेष - उणियारा नगर मे ब्रह्म नेतसीदास ने ग्रपने शिष्य के पठानार्थ लिखा था।

**३०६३. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १२४ । ब्रा० ११९ ४६ इञ्च । ले०काल स० १५६४ फानुसा सुदी १२ । पूर्सा । बेष्टन स० ५१७ । **प्राप्ति स्थान**−म० दि० जैन मन्दिर छजमेर ।

२०६४. सान्ति पुरास्य-पं. प्रासाधर कवि । पत्र त० १०७ । प्रा० १२  $\times$  ५ इञ्च । प्राथा —— सस्कृत । विषय—पुरास्य । र०काल  $\times$  । ले० काल १५६१ प्रायाढ मुदी १४ । पूर्स । बेष्टन स०२०३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लस्कर, जयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति शच्छी है।

३०६५. **शांतिनाथ पुराएा—ठाकुर** । पत्र सं० ७४ । घा० ११ ४४ १ इञ्च । भाषा—हिन्दी हिन्दी । विषय-पुराएा । र०कान सं० १६४२ । ते० कान ४ । पूर्ण । वेष्टन स**० १६०४ । प्राप्ति** स्थान— स० वि० जैन मंदिर स्वमेर । ३०**६६. शान्तिनाथ पुरास् — सकलकोर्ति ।** पत्रसं॰ २०३। प्रा॰ १० ×६ इन्छ । माषा— विषय—पुरास्। २०काल × । ने॰ काल सं॰ १८६३ प्रायाड सुदी ३। पूर्य । श्रेष्टनसं॰ १६४। **प्राप्ति** स्थान—दि॰ जैन मदिर राजमहल टॉक ।

३०९७. प्रति सं० २ । पत्रस० २२४ । लेक्सल सं० १७८३ वैशाख मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं० २३७ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर पत्रायती भरतपुर ।

विशेष-इसे प० नरसिंह ने लिखा था।

**२०६८. प्रतिसं० ३**। पत्र स० २२७। स्ना० १२१ × ६ इवा । **ने०काल** सं० १७६८ मगसिर सुदी १। पूर्णा । वेष्ट्रन स० २८/१४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगारणी मन्दिर करौली ।

ारापूर्यावष्टनस०र≍/१डा प्राप्तिस्थान---। विशेष---प०नरसिंहने प्रतिलिपिकीथी।

**३०६६. शान्तिनाय पुरागु—सेवाराम पाटनी ।** पत्र स०१४७ । आ०१३३ ४ ८ १ इखा । भावा—हिन्दी । विषय—पुरागा । र०काल स०१८३४ सावन बुदी ८ । ले०काल स०१६६५ चैत्र बुदी ४ । पुर्णा । बेष्टन म०१३-२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रश्वाल पचायती मन्दिर प्रलवर ।

३१००. प्रतिसं० २ । पत्र स०१४६ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेप्टन स० ४२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

**३१०१. प्रतिसं० ३** । पत्र स०२२१ । ग्रा० १३× द इश्वाले० कात्र × । पूर्ण। बेष्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—ादि० जैन मंदिर श्री महाबीर बृंदी।

**३१०२. प्रति सं०४** । पत्रस०१६४ । ष्रा०१३ × ⊏ इश्वा ले•काल स०१ ८६३ माघ सुदी १३ । पूर्णावेष्टन स०१०१ । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन पंजायती मन्दिर बयाना।

विशेष — सेवाराम ने पं० टोडरमस्तनों के पथ का धनुकरण किया तथा उनकी मृत्यु के पत्रवात् अपपुर छोड़ के अने जाना जिल्हा है। काँव मालब देश के थे तथा मस्तिनाय जैल्यालय में ग्रंग गणना की थी। ग्रंग पत्रवानों देश द में हुई थी। कवि ने हुब इवशीय ग्रंबावत की प्रेरणा से इस ग्रंब की रचना करना जिल्ला है।

धालमचन्द बैनाडा सिवन्दरा के रहने वाले थे। देवयोग से वे बयाना में प्राये और यहा ही बस गये। उनके दो पुत्र थे क्षेमचन्द और विजयराम। क्षेमचन्द के नथमल और चैतराम हुए। नथमल ने यह ग्रंथ लिखाकर इस मन्दिर से चढ़ाया।

३१०३. शान्तिनाथ पुरास्म भाषा— $\times$  । पत्र सं० २४६ । प्रा॰ १३ $\times$ ६  $^{1}$  इस्त । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुरास्म । र० काल $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

३१०४. मुमतिनाथ पुरास्य - वीक्षित वेतवल । पत्र सं० ३-४२ । घा० १२४६ इन्छ । आयो -- हिन्दी पद्य । विषय -- पुरास्य । र०काल ४ । ले०काल सं० १८४७ चैत सुदी १० । पूर्स । वेष्टन सं० १२७ । प्रास्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बृदी ।

विशेष प्रन्तिम - मगवान सुमति पदार्शवदिन ध्यादमान सानंद ने । कवि देव सुमति पुराण यह, विरच्ये स्तित पद छुद ने । जो पढ़ धापु पढ़ाई धीरिन सुनति वाच सुनावही । कत्याण मनवंद्वित सुमति परसाद सो जन पांच ही । इति श्री भगवत् गुराभद्र। वार्यानुक्रमेरा श्री भट्टारक विश्वभूषरा पट्टाभरसा श्री ब्रह्म हर्पसानरात्मव श्री मट्टारक जिनेन्द्रभृषद्गीपदेशाद दीक्षित देश्वत कवि रचितन श्री उत्तरपुरासान्तर्गत मुमति पुरासे श्री निर्वास कल्यासा वर्सनो नाम पत्रमी प्रधिकार । भगवानदास ने प्रदेर मे प्रतिविधि की श्री ।

प्रारम्भ में त्रिभगी सार का अंश है।

३१०५. हरिवंश पुरास्य—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ४२६ । या० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$  प्र इवा । याषा—सन्कत । विषय -पुराग । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १२०६ । प्राप्ति स्थान—म॰ दि० जैन मन्दिर सजसर ।

२१०६. प्रति सुं० २ । पत्र सं० ४०६ । प्रा० १२ 🗶 ४ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रव स०१४ । प्राप्ति स्थान —उपरोक्त महिर ।

विशेष-नेखक प्रशस्ति वाला पत्र नहीं है।

२१०७. प्रतिकं ० ३ । पत्र स० १४० । झा० १०१ ×५१ हजा । ले० काल× । प्रपूर्ण । वे० सं∙ १२७६ । प्राप्ति स्थान—स्रपोक्त मन्दिर ।

**३१०८. प्रति सं० ४ ।** पत्रस० २६४ । ग्रा० १२ × ४२ इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

**३१०६. प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० ३१४ । बा० १२×४ इच । ते०काल १७४६ खासीज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स०६८/१**१ प्राप्तिस्थान**—वि० जैन पार्थनाथ मन्तिर इन्दरगढ़ ।

विशेष - राजराजा बुधिसह के बूदी नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**२११०. प्रतिसं० ६** । पत्र स० २१६ । ले०काल imes । पूर्वं । बेहन सं० २२० । प्रास्ति स्थान—वि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष --- तीन चार प्रतियो का सग्रह है।

दे१११. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ३१२ । मा० १२ × ४ इश्व । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रतसं० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर दीवानजी कामा ।

२११२ प्रतिसं० ६ । पत्रतः १६ । ब्रा० १२ ४ ६ द्या । ले० काल सं० १७११ । ब्रपूर्सा । वैष्टन स० १४१/७६ । सभवनाथमन्दिर जटवपुर ।

प्रशस्ति - स० १७११ वर्षे ज्येष्टमासे मुक्तपके श्री सागपनने श्री ग्रादिनाम चेल्यालये लिखित । श्री सरस्वती गच्छे बलारकाराएो श्री कुंदकुंदाचार्याच्ये म० श्री वादिनुषएा, तत्पट्टे म० श्री रामकीति तत्पट्टे महारक श्री पचर्नीद त० श्र. श्री देवेन्द्रकीतिस्तदाम्नाये ग्राचार्यं श्री महीचन्द्रस्तत्विच्य **व० वीरा** पठनार्यः।

२११२. प्रतिसं० ६। पत्र स०६५ । घा०१२३४५३ इन्छ । ले० काल ४ । घापूर्सः। वेष्टत स०३१७ । प्राप्तिः कृष्यास—दि०जैन सम्बन्ध सन्दिर उदयपुरः।

विशेष-- नीच के भूद्रेक पक नहीं है। तथा ६५ से भागे पत्र भी नहीं है।

३११४. प्रतिसं० १० । पत्र सं० २०२ । प्रा० १३imes imes imes imes इश्वा । से० काल imes । प्रपूर्ण । व्यवस् सं० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष-- प्रति जीर्ग है।

३**११४. हरिकशपुरारा माधा—खड्गसेन ।** पत्रतः १७० । प्राक १२४६ इल्ड । माधा— हिन्दी पद्या विषय – पुराण । रंकाल ४ । ने० काल तक १६१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर क्षेत्रसनी कोटा

विशेष--३१३३ पद्य हैं। गागरह में प्रतिलिपि हुई थी।

३११६, हरिवश प्रास्त महारक विद्यासूष्य के शिष्य श्रीसूष्य सूरि । पत्रसं । ३१४ । प्राः ११४ ६ व्यः । भाषा—सहतः । विषय—पुरासः । रक्ताव ४ । वेश्वात सः १७०१ भाषता बुदी १ पूर्सः । वेष्टवसं २५ -१४ । प्रास्ति स्थान—दिश् जैन मन्दिर कोटडियों का हू गरपुर । विशेष —राजनगर में मिला गया था ।

३११७. हरिवशपुरास्स्य न्यशःकीर्ति । पत्रसं० १८६ । प्रा० ११४४ इन्ह । मापा— प्रपन्न म । विषय—पुरास्स । ले०काल ४ । ले०काल स० १६६१ । पूर्स । वेष्टन सं० २४८/२१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन समवनाय मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति-सवत् १६६१ चैत्र सूदी २ रविवासरे पातिसाह श्री धनव्वर जलालदीनराज्यप्रवर्तमाने थी ब्रागरा नगरे श्रीमत् काष्टामचे माथुरगच्छे पुष्करगरो लोहावार्यान्वये मट्टारकः श्री श्रीमलयकीतिसूरी-श्वरान् तत्पट्टे सुजसोगाणिमुश्रीकृतहग्वलयानां प्रतिपक्षसिरिस्फोटान् प्रवीमव्याजविकासिना सुमालिनां कुबादेन्दीवरसकोचर्नकशीतक्ष्वीना सद्वत्यपेचनजलम्चां चारूचारित्रचरितां ' .... .................भ० ग्रामद्र देवा। तत्पट्टे वादीमकुंभस्थल विदारगौकः...... म**० श्री भानकीतिदेवा** तत्पट्टे...... भ • कुमारसेनदेवा नदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोयलगोत्रे इदानी श्रागरा वास्तव्यं मुदेसप्रदेसिवस्यातमात्यान् दानप्रतिश्रेयासावतारान् दीपकराइबल् तस्य भार्या शील तोयतर गिनि विनम्नवागेण्वरी साध्वी ग्रर्जु नदे तयो पुत्र पच । प्रथम पुत्र देवीदास तस्यभार्या नागरदे तत्पुत्र कुवर तस्य भार्या देवल तयोः पुत्र इय प्रथम पुत्र चन्द्रसैनि द्वितीय पुत्र कपूर । राइवल् द्वितीय पुत्र रामदास तस्यभार्या देवदत्ता । राइवल् तुनीय पुत्र लक्ष्मीदाम तस्य मार्या श्चनामिका । राष्ट्रबल् चतुर्थं पुत्र पेमकरणा तस्य भार्या देवल । राइवल् पचम पुत्र दोनदानेश्वरात् जैनसभाश्च गार हारान् जिनपृजापुर दरान् ...... साहु भ्रासकररा तस्य भार्याः.... ...साध्वी भौतिगदे तयो पुत्रः... ... साहु श्री स्वामीदास जहरी तस्य भार्याः .... साध्वी बेनमदे तयी पुत्र पंच । प्रथम पुत्र भवानी, द्वितीय पुत्र मरारी तस्य मार्यां नार गदे । तयो तृतीय पुत्र लाहुरी मार्या नवजवास तस्य भार्या लोहुगमदे तयो पुत्र त्रय गोकलदास तस्य भायां कस्तूरी पुत्र मुरारि । स्वामिदास तृतीयपुत्र पचमीप्रत उद्धरएाघीरान्.....साह प्रथीमल तस्यभार्या सुन्दरदे तस्य पुत्र मायीदास स्वामीदास चतुर्थं पुत्र साहु मयुरादांस स्वामीदास पचम पुत्र जिन शासन उद्धरराषीरावृ.... ... साह " ... ...। इससे श्रागे प्रशस्ति पत्र नहीं है।

३११५. हरिवंश पुरास्प—शास्त्रिवाहनं । पत्र संक १६७ । मार्थ १३ × ४ इच । माया— हिन्दी । विषय—पुरास्स । २०काल स० १६६४ । ले०काल— संक १७५६ कांश्रुस सुदी १३ । पूर्स । विष्टमसंक २६ । फ्रास्ति स्थास— १४० जैन पथायती मदिर वयाना ।

है है है है. प्रति सै० रे। पण सं० ४२। बेश्काल १७१४। पूर्वा के वेश्वन सं० १७४। प्राप्ति स्थान—वि० जैन पंचायती मंदिर मरतपुर। **३१२०. प्रति सं०३** । पत्रस० १३० । मा० १२१ॄे × ६२ॄै इञ्च । ले०काल स० १८०३ मंगसिर बुदी द । पूर्णः । बेप्टन सं०७० । <mark>प्राप्ति क्यान</mark>—दि० जैन मदिर कतेहपुर शेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष-शाहजहांनाबाद में प्रतिलिपि हुई थी।

धप्रवाल जातीय ववाल गोत्रे फतेपूर वास्तव्ये वागड देशे साह लालचर तत्पृत्र साह सदानद तत्पृत्र साह राजाराम तत्पृत्र इत्गिराययण पांडे स्वामी श्री देदेन्द्रकीर्ति जी फतेपुर मध्ये वास्तव्य तेन दिल्ली मध्ये पातमाह भोहम्मद साहि राज्ये सपूर्ण कारापित ।

विशेष--जयक्रप्ण व्यास फागी वाले ने प्रतिलिपि की थी।

३१२२. प्रतिसं० २ । पत्रसः ४६२ । मा० १३ × ४ है इवा । भाषा-हिन्दी (गया) । र०काल सं०१ चर६ चैत सुदी १५ । ले०काल स०१ च७२ घ्रासोज मुदी १३ । पूर्ण । बेटून स०७१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रतिदरस्रजभेर भण्डार ।

**३१२३. प्रतिसं० ३ ।** पत्रसः ४६८ । प्रा०१२१ ४८ इ.स. । प्रापा-हिन्दी गद्य । विषय-पुरासा । र०काक्ष सः०१६२६ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसः०४८ । प्राप्ति स्थान-पदि० जैन मन्दिर पार्वनाय टोडारायसिंह (टोक) ।

३१२४. प्रति सं० ४ । पत्रस० २०२ से ६१३। घा० ११४७, इश्वा । मापा-हिन्दी (गवा)। विषय—पुरासा । र०काल सं०१=२६ । ले० काल स०१=६३। घपूर्मा । बेष्टनस०१०६। प्रास्ति स्थान—र्व० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष—जोधरी डोडीराम पुत्र गोविन्दराम तथा सालगराम पुत्र मन्नालाल छाबडा ने राजमहल में टोडानिवासी बाह्मए। मुखलाल से प्रतिलिधि कराकर च द्रप्रथ स्वामी के मंदिर में विराजमान किया।

३१२५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ५३० । घ्रा० १३ $\times$ ६१ इथा । भाषा-हिन्दी गछ । विषय— पुराए। १०काल स०१८२६ । लेखन काल सं०१६६१ । पूर्णा वेष्ट्रन स०३७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सन्दिर श्री महाबीर ब्रुंदी ।

३१२६. प्रति सं० ६। पत्र स० ४४४ । प्रा० १२×६ $^{\dagger}$  इच । भाषा — हिन्दी गद्य । विषय— पुराश । र०काल स० १५२६ । ले० काल स० १५६३ । पूर्ण । प्रास्ति स्थान दि० जॅन मन्दिर ग्रिभिनदन स्वामी, वृदी ।

विशेष-- ग्रंथ का मूल्य १४) ६० ऐसालिखा है।

३१२७. प्रतिर्मेत ७ । पत्रस० ४४४ । मा० १२३ × ७६०च । माषा—हिन्दी गख । विषय—पुराग । र०काल संठ १०२६ चैत सुदी १४ । ते०काल स० १६६१ माघ बुदी १ । पूर्ण । बेहनसं० ४६ । प्राप्ति स्थान—हैंदे० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

३१२ म. प्रति सं० म १ पत्रस० ३०६। मा० १५३ ४६ इत । भाषा—हिन्दी गणा। विषय— पुराखा। र०काल स० १६३६॥ ने० काल १५६६४ वंत्राल बुदी २। पूर्ण। वेष्टनस० २०। प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेरहण्यी भारतपुर्व (टोक)। ३१२६. प्रति सं०६ । पत्र स० ६१७ । मा० १२४६ इच । माषा—हिन्दी (मदा) । विषय— पूराए। २०७८ स० १८२६ । ते० काल स० १८६१ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन स० ८,८६ । प्रास्ति स्थान—दि० पार्वनाथ जैन मन्दिर इन्दरसङ्कोटा ।

३१३०. प्रति स०१०। तत्र स०२१३। धा०१२३४६ इचा। धाषा-हिन्दी (नवा)। विषय-पुरासा। १००४८ स०१०२१। ले० काल ४। धपूर्सा । वेष्ट्रन स००००। प्रास्ति स्थान—दि० चैन पुरासि। स्थान प्रति स्थान ।

देश्देशः प्रति सं०११ । पत्र स०४२७ । ग्रा०१२ ४ महन्य । भाषा हिन्दी (गर्य)। र०काल स०१६२१ । ले० काल स०१६५३ । पूर्णा वेष्ट्रन स०१७४ । प्रारित स्थान—दि० जैन सं० पचायती मन्दिर प्रलवर ।

विशेष-कुंभावती नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

३१३२. प्रति सं०१२ । पत्र स०३२६ । घा०१६ ४ ७ इथा । भाषा-हिन्दी ग०। विषय-पुराण । ले० काल स०१८६४ पीष बदी १३ । र०काल स०१८२६ चैत सुदी १४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०३० । प्राप्ति स्थान —िद जेन प्रधवाल पंचायती मन्दिर धलवर ।

विशेष--- श्रीत दो बेष्टनों में है।

३१३३. प्रति सं०१३ । पत्रसं०४०६ । माचा-हिन्दी गद्य । विषय-पुरास्य । र०काल सं० १८२६ । ले०काल स०१८४२ मर्गासर सुदी ११ । पूर्स । बेहन सं०१४३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-- नवनिधिराय कासलीवाल ने प्रतिनिधि करवाई थी।

३१३४. प्रति सं०१४। पत्रसः ३१७। माषा-हिन्दी गणः। विषय-पुराणः। र०काल सं० १८२९ चैत मुधी १४। से० काल स०१८७४। पूर्णः। वेष्टन सं०१६६। प्राप्ति स्थान—दि० चैन पंचायती मन्दिर भरतपुरः।

**३१३४. प्रांत स० १४** । पत्रस० ४७४ । ले०काल १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर, भरतपुर ।

विशेष — कुंभावती में प्रतिलिपि हुई थी। स॰ १८६१ में मन्दिर में चढ़ाया गया।

दे१दे६ प्रतिसं०१६ । पत्र स० ४६३ । पा०१२१४७ इल्च । भाषा—हिन्दी गढ । विषय—पुरास । र०काल स०१०२६ चैत सुदी १४ । से०काल—स०१०५५ कार्सकसुदी १० । पूर्स । बेहन सं०६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन संवासती मंदिर बसाना ।

३१३७. प्रति स० १७ । पत्र स० ४६८ । ग्रा० १३४७ इ.च.। माषा—के०कान ४ । प्रपूर्ण एवं जीर्स्स । बेहन स० १ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन संदिर वेर भरतपर ।

ै११२ प्रति सं०१ द । पर्न तं० २२४ । प्रा०१२ $\frac{1}{2}$  ×  $\frac{1}{2}$  द प्राण —हिन्दी (गदा) । विवय —गुराए । र०कान × । तै०कान × प्रपूर्ण । वेष्टन तं० २४६ । प्राप्ति स्थान —दि० वंत मन्दिर सैवान जी कामा ।

**३१३६. प्रतिसं० १६**। पत्र स० ४८०। माषा—हिन्दी गद्य। विषय पुरागः । र०काल स० १८२६ । ले० काल स० १८३४। पूर्णः । वेष्टन स० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्यायती मन्दिर, हण्डावालों का डीगः।

३१४०. प्रति स०२०। पत्रस०२ से २४६। ले० काल 🗵 । घपूर्ए। वेष्टुन स०००। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मदिर हण्डावालों का डीग।

३१४१. प्रतिसं० २१ । पत्रस० ६०२ । घा० १२३ ४४ ३ इत्र । भाषा-हिन्सी नखा । विषय-पूरासा । र०काल कर १८२६ चैत सुदी १४ । ते० काल स० १८६५ वंशाल सुदी ४ । यूर्ण । वेष्टनस०४ । प्राप्तिक स्थान-किंठ कैप वस्तानी मेटिक करील

विशेष-- नगर करौली मे साहबराम ने गुमानीराम द्वारा लिखाया था। बीच के कुछ पत्र जीएां है।

३१४२ प्रतिसं० २२। पत्र स०१ -२०४। भाषा-हिन्दी (गत्र)। विषय —पुराणा। र०काल सं०१ =२६। लेककाल ४। धपूर्णा। वेष्टन स०१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहण्यी मन्दिर बनवा।

३१४३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ४४० । प्रा० १२६ ६६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-पुराए। रकाल स० १६२६ चंत मुदी १४ । लेक्काल स० १६६४ मात्र बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहबर शंलाबाटी (सीकर) ।

विशेष--जीवसाराम जी ने बाह्मए। विजाराम ग्रालाराम से प्रतिलिपि कराई थी।

**३१४४. प्रसिसं०२४। पत्र**स०४०६ । मा०१२ ४७) इचा । माया—हिन्सी (नवा)। विषय—पुराराः । ४० काल ४ । तेककाल स०१०२२। पूर्णायेष्टन सं००१६। **प्रास्ति स्थान**— विकतन मंदिर बजा बीसपथी दौरा।

विशेष--विमनलाल तेरहपथी ने प्रतिलिपि की थी।

**३१४५. प्रतिसं० २४।** पत्रस० ३२७ । सा० १३ × १० इञ्च । भाषा-हिन्दी ग० । विषय— पुरासा । र०काल स० १८२६ । ते० काल स० १८६० । पूर्स । वेष्ट्रन स० ६४ । **प्रास्ति स्थान**— दि• जैन मदिर तेरहपयी दोसा ।

विशेष--दौसा में प्रतिलिपि हुई थी।

३१४६. प्रति सं० २६ । पत्रस० २००। झा० ११  $\times$  ७ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (गवा)। विषय-पुराए। र०काल स० १८२६ चैत्र सुरी १४। ले०काल स०  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्ट्रन स० ६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सथ्येलवाल मन्दिर उदयपर।

३१४७. प्रति सं० २७ । पत्रसं० ४४१ । प्रा॰ १२१४६ १ इख । भाषा-हिन्दी गख । विषय-पूराएग । र०काल स॰ १८२६ । ले०काल स॰ १८५६ । पूर्ण । वेष्टन स॰ २९-१४ । प्राप्ति स्थान —िद० वैन सन्दर, कोटब्स्थो का द्वारुपर ।

३१४८. हरिवंश पुरास्य-वि० जिनवास । पत्रत०२४४ । ग्रा०१४ ४ ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरास् । र०कान ४ । ले०कान सं० १८४---(१) कामुस सुरी ६ । दुर्ख । वेहुचवं०१७४। प्राप्ति स्थान-वास्त्र नष्टार दि० जैन मन्दिर सकार, वयपुर ।

विशेष-- बूदी नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

. ३१४६. प्रति सं० २ । पत्रसं० २७७ । प्रा॰ ११३४६ इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६ । प्रारि-स्थान—दि० जैन मंदिर पश्चायती दूनी (टोक) ।

विशेष--प्रति उत्तम है।

३१५०. प्रतिसं०३ । पत्रसं०२०६ । ग्रा०६ रे⊀६६ वा । ले०काल ४ । ग्रपूर्ण । वैकनसं० ३१ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैनमन्दिर प्रजमेर ।

३१४१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १८६ । घा० १०४६ $^1$  इचा । माधा-संस्कृत । विषय-पुराए। १० काल  $\times$  । लेकाल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्ट्र सं० २६२ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मंदिर घजोर ।

३१५२. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ३६५ । आ० १३४६ इन्त । मापा-संस्कृत । विषय-पुरासा । र०काल ४ । ले०काल सं०१५६३ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०३४३ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर मजसेर ।

३१५३ पतिसं० ६ । पत्रसं० ३४३ । ग्रा० १२×५१ इचा । मावा-हिन्दी । र० काल × । ले०काल सं० १४८६ । पूर्णे । बेष्टन स० १३०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३१४४. प्रतिसं०७ । पत्रस०२०७ । प्रा० १३ $\times$ ४ ै इ.स. । माषा—संस्कृत । विषय-पुराए। ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । लेक्काल म० १८२४ । पूर्णा । वेष्टन सं०८० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन संदिर श्री महावीर बुदी ।

३१४५. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ३०६ । प्रा० ११६ ४५ इच्चा माया-संस्कृत । विषय-पुराख । र०काल ४ । ले०काल स०१६४७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पादिनाल वृदी ।

विशेष — मंत्रत् १६४७ वर्षे माद्रव मृद्धि १३ वृषवापरे श्री मृलसचे श्रीययावयानी ग्रुमस्थाने राजायिगत श्रीयत् सक्वत्रसाहिताच्ये बृद्धभा चेत्यालये सहैतवाल ब्रातीय समस्त पचाइतु बयाने को पुस्तक हरियण णान्त्रं पहित बुग प्रदत्त । पुस्तक लिसित बाह्यनु परासर गोत्रे पाढे प्रहुलादु तत्पृत्र मित्रसीनि लेखक पाठक दशत् । इद पुन्तक इत्सकृतवा पहित समाचन्द तदात्मक रचुनाय सबत् १७६७ वर्षे प्रवनि मासे कृत्या पक्षे तियो १ वृषयत् ।

३१४६. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० २६४ । घा० ११ $\times$ ४ इच्च 1 माषा-संस्कृत । विषय-पुराए । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर प्रीमनन्दन स्वामी, वंदी ।

३१४७. प्रतिसं० १० । पत्रसं० २२१। घा० १२  $\times$ ६ इञ्च । प्राथा—संस्कृत । विषय— पुराया । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैनमन्दिर स्वलाना (वंशी) ।

विशेष—मिनम २ पत्र फट गये हैं। प्रतिजीर्स है। सावड़ा गोत्र वाले श्रावक सुसतान ने प्रतिलिपि की थी। **३१४स. प्रतिसं० ११**। पत्रम०१२२ । प्रा०१० × ५२ ६व । भाषा-सस्हत । विषय— पुराए। र०काल × । से०काल × । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० २०३४ । **प्राप्ति स्थान** – वि० जैन मन्दिर दवनाना (वंदी) ।

**३१४६. प्रतिसं० १२। पत्रसं० १२३**-२२४ । घा० १०×५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पुरासा । र०काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० ३३७ । **प्राप्तिस्थान**-दि० जैन मन्विर दबलाना व दी।

विशेष - भन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

इति श्री हरिवश सपूर्ण । लिखित मुनि यमेबिमल यमोंपरेशाय स्वय वाचनार्थ सीमवाली नगर मध्ये श्री महावीर चैन्ये ठाकुर श्री मानसिंहजी तस्यामारय सा० श्री सुखरामजी गोन छावडा चिरजीयात् । संवत् १७१६ वर्षे मिती चैत्र हृदी ७ रिववासरे ।

**३१६०. प्रतिसं० १३**। पत्रसं० २७०। प्रा० १२ $\times$ ५ इन्छ। भाषा संस्कृत। विषय-पुरास्। **र०काल**  $\times$ । से**०काल**  $\times$ । पूर्यं। बेष्टन स० २१७–६२ प्राध्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारावर्लिह (टोक)।

**३९६१. प्रतिसं० १४।** पत्रसं० २०६। धा०१३×६ इला। भाषा—सःकत । विषय— पुराण । र०काथ × । ले०काल स०१८४४। पूर्ण । वेष्टन स०१०२-७।**प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नेमिनाच टोडारायिसह (टोक) ।

विशेष — तक्ककपुर में प॰ शिवजीराम टोडा के पठनायं प्रतिलिपि हुई थी।

**३१६२. प्रतिसं० १४ ।** पत्रस० २२२ । घा० १० $^{1}$  $\times$ ४ डख । भाषा $^{-}$ सस्कृत । विषय $^{-}$ पुराण । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६/१२ । प्राप्ति स्थान $^{-}$ दि० जैन पार्थनाथ भितर इन्दरगढ ।

३१६३. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० २२४ । प्रा० १२ $\times$ ६ इ च । भाषा –सस्कृत । विषय ्युरासा । २०काल  $\times$  । वेलकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७/१० । प्राप्ति स्थान — दि० जैनवावधैनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

३**१६४. प्रतिसं० १७** । पत्रस० २४४ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय— पुराए। र०कालं × । ले∘काल स० १६०६ वैज्ञाल बुदी १४ । पूर्णं। वेष्ट्रन सं०३३६ । **प्राप्ति** स्थान— दि० जंन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष--नैनवा वासी सगही श्री हरिराज खडेलवाल ने गढ़नलपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३९६५. प्रतिसं० १८ । पत्र स० २७१ । प्रा० १० $, Y \times \frac{1}{2}$  इच्च । मापा सस्कृत । विषय-पुरासः । र०कार  $\times$  । ले० काल स० १७७६ फागुन सुदी १० । पूर्सः । दे० स० १६१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- बादशाह फर्ड कसाह के राज्य में परशुराम ने प्रतिलिपि की थी।

रै९६६ प्रतिसं०१६। पत्र सं०१से१२७। भाषा-संस्कृतः। विषय पुरासः। र०कासः ≭ा लेखन काल ×। सपूर्णः। वे०स०१० **प्रास्तिः स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर डीगः। **३९६७. प्रति सं० २०।** पत्र सं०३१०। प्रा०१० × ४} इ.स्व । भाषा-संस्कृत । विषय-पुरासा । र०काल × । ते० काल सं० १६१६ । पूर्स । वे० स०१६६ । **प्रास्तिस्थान** — दि० जैन प्रस्वाल मन्दिर उदयपुर ।

३१६६. प्रतिसं० २१ । पत्रसं० २२३ । प्राः० ११४४ ६ व । मामा-संस्कृत । विषय — पुराण । १० काल 🗴 । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेट्न सं० १३७ । यथाय प ६६६४ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन सम्यान मन्दिर उदयपर ।

३१६६. प्रति सं० २२ । पत्रसं० ३१७ । या० १०० $\frac{3}{5} \times 1$  है इंच । भाषा सस्कृत । विषय-पुराए। १० काल  $\times$ । से•काल सं० १८१८ । पूर्ण । बेप्टन स० १०५–५१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटिड्यों का इंगरपुर ।

३१७०. प्रतिसं० २३ । पत्र सं० २१७ । घा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४६वा । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराए। र० काल  $\times$  । ले० काल १६६२ । पूर्ण । वे० स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सहैजवाल मदिर उदयपर ।

३१७१. प्रति सं० २४ । पत्र सं० २६३-२६२ । घा०११४४ इ.ख.। आपा-हिन्दी पद्यः। विषय-पुरारा । २०काल ४ । ले० काल सं० १६६४ । पूर्णः। वेष्टन स० ३६४,७६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन सभवनाय मदिर उदयपुरः।

विशेष स० १६=५ वर्ष फागुण मुदी ११ णुकनासरे मानवदेशे श्री मुक्साचे सरस्वतीमच्छे कुंद-कुरनाचार्याव्ये महारक श्री सकलकीति तत्त्हें म० रत्नकीति तत्त्वहें म० यहां स्थानित तत्त्वहें म० मृत्युच्य तत् स्थानवन्त्र तत् म० सक्तचन्त्र तत्त्वहें म० रत्नच्य तत्त्राच्नाय ह० श्री कंसा तत् शिष्य धाचायं जयकीति ताल गोसल भायां दमनी। तत् पुत्र सा० चया भा० कता तत् पुत्र मा० गरीत भायां गगदे पुत्र झा० मुनीचन्त्र तिस्तित। सा १६६५ वर्ष फागुण बुदी १ सोमे मुजानपूरै पाय्वेनाय चैत्यावने ह० जेसा शिष्य व्यक्तीति शिष्य झा० मुनि चन्द्र केन ब्रह्म भोगीदासाय मुक्त आते हरिवा पुराण स्वहस्तेन निवित्वा स्वज्ञानावरणी कर्मकार्यार्थ तत्त । राण्यर नगरे निवित्तं। श्री धावार्थं भुवनकित तत् शिष्य ह० श्री नारायणुदासस्य इत पुरसक।

**३१७२. प्रति सं० २४ ।** पत्र सं० ३६६ । झा० ११×४३ इखा । भाषा संस्कृत । विषय— पुराए। १०काल × । ले० काल सं० १४४६ । झपूर्ण । बेष्टन सं० २४७/६ । **प्रा**प्तिः **स्थान**— दि० जैन संगकनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशिष-- ६० से २७६ तक के पत्र नहीं है।

प्रशस्ति—संबत् १९५८ वर्षे पौत्र मुद्दी २ रवी श्री मुलसवे बलात्कारमणे कृ दक्त दावार्यानये म० श्री पद्मतिविद्या तत्पट्टे म० श्री सकलकीति तत्पट्टे आप्रवनकीति तत्पट्टे आप्रवनकीति तत्पट्टे आप्रवन्धिया तत्पट्टे श्री विजयकीति गुरूपदेवात् वायरदेवे नुपामात्याने राज्य श्री उद्यक्तिह्वी राज्ये श्री भादिनायवंद्यालये हु इड क्रातीम विरक्तां के सोसी भागा मार्या सारू युत सम्यवत्यादिदादमवद्यतिपालक दोसी भाइमा भा० देसति सुक्त भावस्यदेता दोसी नेमियास मार्या टवक् भागु दो सतीथी मा० सरीयादे भा० दो० देवा भागां देवतदे तेवा पुत्र भावस्यदेता दोसी नेमियास मार्या टवक् भागु दो सतीथी मा० सरीयादे भा० दो० देवा भागां देवतदे तेवा पुत्र भावस्य त्यासका एतं हरियब पुराह्यां तिवास्य दत्तां । बद्धा राजा पढ़नार्यं ।

३१७३. प्रतिसं० २६। पत्र स०४०३। झा०१० × ४ इचा। बाषा-संस्कृत। विषय-पुरासा। र०काल ×। ले० काल स०१६०१। पूर्ण। वेष्टन स०१४४/१०। प्राप्तिस्थान---दि० जैन संमयनाथ मन्दिर उदसपुर।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स्वत् १६०१ वर्षे कार्तिक मासे ग्रुवनपके ११ गुक्रे श्री मुलदाचे सरस्वतीगच्छे बसात्कारमधे श्री कुत्यकुत्वाचार्याच्ये अपूरुतक श्री भुवनकीति तत्यहुँ भट्टाक्य श्री झानभूष्यादेवा तत्यहुँ भट्टाक्यकीतिदेवा तत्यहुँ भट्टाक्यकीत्री स्वत्यहं भट्टाक्यकीय स्वीत्य वाधदरेगे ग्रुयाजीगा स्वी श्री स्वत्यावयं प्रभूष स्वत्यावयं स्वाप्तयं स्वत्यावयं स्यत्यावयं स्वत्यावयं स्वत्यावयं

३१७४. प्रति सं० २७ । पत्र स० २३० । प्रा० १० $^2_1 \times 4^3_2 \times \pi$ ा भाषा-संस्कृत । विषय-पुरास् । र०कार  $\times$  । के० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रस्थान मन्दिर उदयप्र ।

प्रगस्ति निम्न प्रकार है ---

सवत् १६५३ वर्षे माप गुडी ७ वृधे श्री मृत्साचे मरस्वतीगच्छे बलात्कारागी कुन्दकुन्दाचार्याच्ये मट्टारक श्री सकनकीतिदेवा तत्पट्टे भुवनकीतिदेवा तत्पट्टे झानभूष्यादेवास्तपट्टे मट्टारक श्री विजयकीतिद्रत भ० कुमतिकीतिदेवास्तत्पट्टे म० गुणकीतिदेवास्तत्पट्टे मट्टारक श्री वादिभूष्ण तादान्ताये श्री कुनकारे श्री सम्प्रवताय चैत्यालये श्रीमचेन इद हरिवज्ञपूराण निखावि स्वज्ञानावरणीकर्मकायार्षे ब्रह्म लाहकाय दत ।

**३१७५. हरिवांस पुरारा—शुसातचन्द ।** पत्र स० २२३ । भाषा—हिन्दी प**छ । विषय—** पुरागा । र०काल स० १७८० । ले० काल स० १८५२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर पश्चायती दनी (टोक) ।

विशेष-फागी में स्योबक्स ने प्रतिलिपि की थी।

**३१७६ प्रति सं० २।** पत्रस० २१८। आ० १२×६ इ.ख.। विषय-पुरारा । र०काल स० १७५० वैज्ञास मुदी ३। ले०काल × । अपूर्स । वेष्टनस० २५०। **प्राप्तिः स्थान**---भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**३१७७ प्रति सं० ३**। एत्रस० २३६। घा० ११ ४६<sup>5</sup> हथा। प्राथा हिन्दी (पद्य)। विषय-पुरागा। र०काल स० १७६०। ने० काल स० १६२६। पूर्ण। बेष्टनस० १६१८। प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर सजसेर।

३१७८. प्रति सं० ४ । यत्र सं० २१४ । प्रा० १०३ ४ ४ है इचा। त्राचा-हिन्दी (पदा)। र०काल स० १७८० । ले० काल ४ । पूर्ण । बेहन स० १३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर राजमहत्त (टॉक) ।

विशेय---प्रति जीर्ग् है।

३१७६. प्रति सं० ४ । पत्रस० २६६ । घा० १०१४४१ हरूव । माया—हिन्दी (पदा) । विषय—पुराण् । र०काल सं० १७६० वैनास सुदी ३ । लेसन काल सं० १८३४ पीय सुदी ११ ३ पूर्ण् । बेष्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान--तेरह्यंथी दि० जैन मन्दिर नैर्ण्या । विशेष---महाराजा विशनसिंह के शासन में सदासुख गोदीका सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

**३९६०. प्रति सं०६।** पत्र स०२२२। सा० १३ $\frac{1}{2} \times \mathbb{Q}^2$  इ**खा**। भावा—हिल्दी (पद्य)। विद्यय—पुरासा, र फलास स०१७५०। लेक मान स०१ स३१ सँत बुदी १३। 'पूर्स । वेष्टम स०११ । प्राप्तिक स्थान—हिल्लीन मिदर भी महावीर वंदी।

३१ म**१. प्रति सं०७ ।** पत्र स० २३१ । मा० ११ ४५ <sup>१</sup>, इच्च । माया—हिन्दी पद्य । र०काल स०१७ म० । ले० काल सा१म ६० श्रावण मुदी १ । पूर्ण। वेटन स०१**१ । प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर नागदीवृदी।

३१६२. प्रति सं०६। पत्र । स०२४१। प्रा०१२ $\times$ ६ इथा । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पुराएं। र०काल  $\times$ । ले०काल स०१६४०। पूर्एं। बेष्टनसं०४६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैगावा।

३१६३. प्रति स० ६ । पत्रस० २७६ । घा० १०) ४ ४ इञ्च । मापा—हिन्दी पय । विषय — पुराग् । २० काल स० ९७६० वैशाल सुदी २ । तेण्डाल स० १८३६ माह मुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १०३-२०६ । प्राप्तः स्थान—दि० जैन मदिर नेमनाथ टोशरप्रसिद्ध (टीक)

विशेष—स्वत् १११५ में साह हीरालाल जी तत्पुत्र जंकुमार जी अभैजन्द जी ने पुण्य के निमित्त एवं कर्मक्षयार्थं टोडा के मन्दिर सावलाजी (रैंग्ए)के में चढायां था।

३१ स्४. प्रतिसं० १०। पत्र म०२१७। घा०११ ४६ इ.खा ने०काल स०१ स्४४ कार्तिक मृदी ४ । पूर्णा वेहन स०११६/७३। प्रास्तिस्थान —दि० जैन मन्दिर नैमिनाच टोडारायसिह (टोक)। विशेष — बन्दोम — बन्दोम मधुरा के पास में पटेल माहिब के सक्कर में पार्थनाथ चैत्यालय में प्रतिसिक्ति हुई थी।

३१ स.५. प्रति स॰ ११ । पत्र सं० २०१ । मा० १३ $\times$ ६ इंच । प्राया—हिन्दी पद्य । विषय — पूराए । २०कान सं० १७८० । क्षेण्काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४२ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**३१८६. प्रति सं० १२ ।** पत्रसं० २२३ । प्रा० १३×६ इन्द्र । भाषा-हिन्दी पद्य । लेक्सल × । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

ं **विशेष**— २२३ से बागे पत्र नहीं है।

३१ चथः प्रति स० १३। पत्र स० २४२। मा०११३ $\times$ ६१ दश्चः । माथा—हिन्दी पद्य। विषय—पूराए। र० काल स०१७८०। ले० काल  $\times$ । पूर्णः वेष्टनस०१६। प्राप्तिस्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करोती।

३१८८. प्रति सं० १४ । पत्र सं० २३१ । माषा—हिन्दी । विश्वय—पुराता। र० काल सं० १७५० वैशास सुदी २ । पूर्ण । वेहन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान दि० जैत क्यायती मन्दिर करोती । विश्वय—रावत १७६३ वर्ष सैनास मासे सुक्त पत्ने दितीया सनी विश्वितोयं ग्रंथ । साथमी प्रीकत

सुसलाल चेला श्री सुरेन्द्रकीर्ति का जानी।

विशेष - कुन्दनलाल तेरापयी ने प्रतिलिपि की थी। दोहा---

देश हुं डाड सुहावनी, महाबीर संस्थान । जहाबैठ लेखन की भी धर्मध्यात चित द्वान । तीन सिक्तिर मधीर प्रति सीमैं। गीरदचह कोर मन मोहे।। बन उपवंत सोभन ग्रधिकार। मानौ स्वनंपुरी ग्रवनार ॥ । दर्शन करन जात्री ग्रावै। घमं ध्यान ग्रति प्रीति बढावै ।। श्री जिनराज चरन सो नेह। करत सकल स्ख पाव तेह ।। चन्दनपुर ग्राकबर पर जानि । मन्दिर दिग जैसिंह पर म्रानि ।। नदी गम्भीर चौशिरदा मानि। पडित दो नर है तिस थान ।। सुखानन्द सोभाचन्द जान । ता उपदेश लिखी परान ॥ मार्ग सद दोज सो जान ।।६।। ंता दिन लिख पूरन करौ सो हरवश सोसार।

पढं मुनं जो भाव सी जो भवि उतरे पार ।। **३१८६. प्रति सं**० १५ । पन्नस**० २३८ । मा० १२**हे×६ ६७४ । **से०काल स० १८७८ मादवा** बुदी ऽऽ। पुर्णं । वेष्टन सं० १४७ । **प्राप्ति, स्था**न—दि० जैन पश्चायती मन्दिर करौली ।

३१६०ं प्रतिसं० १६ । पत्रस० ३३७ । मा० १२३ ×६ ३ इला । माव-हिन्दी पत्र । विषय— पुरासा । र०कारा स० १७८० वैशास सुदी ३। मपूर्स्य । वे० स० ४६ **। प्रास्ति स्थान**—दि० जैन सीमानी मन्दिर करोती ।

३१६१. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २६७। माया—हिन्दी । विषय —पुरासा । र०काल स० १७८०। ले० काल × । धपूर्ण । वेष्टनस० ८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मन्दिर बसवा।

३१६२, प्रतिसं ०१८ । पत्रस० १८४ । धा० १२ $\times$ ८३ इच । भाषा – हिन्दी पख । विषय—पुराहा, १२० काल स० १७८० बेशाल सुदी २। ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं० ४–१४ । प्राप्ति स्थान्तिः त्रि॰ जैन मन्दि राज्य बोतायथी दीता ।

३१६६ प्रतिसं• १६ । पत्रसः १४४ । प्राः १२४ म इत्या । भाषा-हिन्सी । विवर्ष---ं पुराए। १० काल सः १७८० । ले०काल ४ । पूर्ण । बेहनसं• ६३ । प्रान्तिस्थानि वि• जैन । मन्दिर तेरहपरी दोसा । ३१६४. प्रतिसं० २०। पत्रसं० ३१४ । प्रा०११४४ इ.च.। भाषा — हिन्दी विषय— पुरासः । र०काल स०१७६०। लेशकाल सं०१६२६ । पूर्स। वेष्टनसं०१७१। प्राप्ति स्थान— दि० जैन लवेजवाल मन्दिर उदयपुर।

३१६५. प्रतिसं०२० (क) । पत्रसं०२४०। प्रा०१० $\frac{1}{2}$ ४६ ६ इन्त । माषा-हिन्दी पद्य । विषय—पुराए। र०काल सं०१७८०। लेक्कालस०१८६४ कार्तिक बुदी ५। पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१४-६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डंगरपुर।

विशेष---भालरापाटन मध्ये श्रीकारिताय चैत्यालये श्रीमुलसचे बलात्कारगरो श्रीकृन्दनाचार्यान्वये ।

**३१६६. प्रतिसं० २१** । पत्रस० १६० । ग्रा० १२ ×६ इल्डा भाषा−हिन्दी । विषय—पुरासा । र० काल स०१७८० । **के०काल ×** । पूर्यो । बेष्टन सं०४२/२५ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मदिर भादवा ।

३१९७. प्रतिसं० २२ । पत्रस० २२७ । मा० १०२ ४४२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय— पुरासा । र० काल सं १७८० । से०काल स० १८२८ । पूर्सा । वेष्टन स० १७/२१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, मादवा (राज०) ।

**३१८६. प्रतिसं० २३।** पत्रस० २६५। माषा—हिन्दी। विषय — पुरास्। १ र० काल १७६०। से**०काल** × । पुर्सा । बेष्टन स० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन बढा पचायती मन्दिर, डीग ।

विशेष-४-४ पक्तियों का सम्मिश्ररा है।

**३१८६. प्रतिसं० २४ ।** पत्रस० २०६। ग्रा० १२६ ४ ४६ इस्त । प्राया—हिन्दी प्रव विषय — पुरारा । र०काल स० १७०० । ले०काल सं०१८१ । पूर्य । बेष्टन स०३४ । प्राप्टिस्**स्थान** — दि० जैन महिर दीवानजी चेतनदास परानी डोग ।

३२००. प्रतिसं० २५ । पत्रस० २३० । मा० १२१ ४ ६००च । माषा — हिन्दी (पद्य)। विषय – पुरासा। र०काल स० १७०० वैज्ञाल सुदी ३। लेक्काल स० १७६२ कार्तिक सुदी.. रविवार। पूर्से। बेपून स०२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर वयाना।

विशेष-- प्रंथ श्लोक स० ७५०० । बयाना मे पं० लालचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी। श्री खुशाल ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवायी थीः।

३२०१. प्रतिसं० २६। पत्रसः १८१ । माषा—हिन्दी विषय-पुराण । र० काल १७८० वैज्ञाल मुरी २। ले॰काल म० १८६६ कार्तिक मुदी १३। पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन पनायनी मन्दिर सरनपुर ।

विशेष--सुललाल बुधसिंह ने भरतपुर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३२०२. प्रतिसं० २७ । पत्रमं० ३०३ । भाषा-हिस्सी पद्य । विषय-पुरास् । र०काल स०१७००। ले० काल सं० १-१७ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जन पत्रायतो मन्दिर भरतपुर । विशेष —सागरमल्ल ने मरतपुर मे लिखवाया था ।

३२०३. प्रति सं० २८ । पत्र स० २६४ । प्राचा-हिन्दी । विषय-पुराए । र०काल सं०१७६० । वैगाल सुरी ३ । ले०काल सं०१७६२ । पूर्ण । वेष्टनस०१६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती सविर भरतपुर ।

- ` देर**०४. प्रति सं० २६।** पत्र स० २६२। से०काल स० १६१४। पूर्ण । बेष्टन स० १६**१।** प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मंदिर मरतपुर ।

# विषय -- काव्य एवं चरित

३२०**४. सकलंक चरित्र — ४ ।** पत्रसं∘ ४१ । सा० ८१ ४६ इता। भाषा—हिन्दी गया। विषय — चरित्र। रुकता ४ । ते० काल स० १६८२ वैशाल मुदी २ । पूर्ण। वेष्टन स०१०६। **प्राप्ति** स्थान — किं**ल प्र**स्ताल प्रपालनी मण्डिर सम्बद्ध

३२०६. प्रमुक्त शतक— × । पत्रस० १-६। प्रा०१० रे४६ खाः भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले०काल स० १६२० । वेष्ट्रन स० ७२३ । प्रास्ति स्थान — द० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

विशेष-देवकुमार कृत संस्कृत टीका सहित है।

३२०७. **प्र'जना चरित्र—भृवनकोति।** पत्र सं० २४ । भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र•काल १७०३ । ले॰काल स॰ १६६० । पूर्णं। बेष्टनसं० ७१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर मस्तपूर ।

३२० म. **क्रांजना सुन्दरी सउपई - पृष्यसागर ।** पत्र सं० २२। धा० १३ ४४ इ.च । प्रापा-हिन्दी (पदा) । विषय-काव्य । र०काल स० १६८६ सावरा सुदी ४ । ते•काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३८४ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

धन्तिम भाग---

ते गाडु दीर्घ दीपताड साच उर मक्तार।
वीर जिग्नेसर रो जिहा तीरण ग्राड्य उदार।।
तामुगाटि मनुक्रम आलस सागर तूर।
विनयराज कमैसागर वाचक दोह सतूर।।
तामु सीम पुष्पसागर वाचक गाएँ एम।
ग्राजनामुन्दर चउपई परण्यचले प्रेम।।
संवत सोल निवासीर्य आवण मास रसाल।
मुदि तिथि पचम निगंनी कृदि युद्ध मंगल माल।।
।। सर्वेगाया २४६।।

३२०६. प्रति सं०२ । पत्र सं०१७ । घा० १०×४ है इ.चा ले० काल सं०१७२१ कालिक मुदौ । पूर्णावेष्टन स॰ ७३२ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष -- मेडतापुर में प्रतिलिपि हुई थी।

३२१०. अंबड चरित्र—  $\times$  । पत्र सं०३-४० । या० १५ $^{\circ}$   $\times$ ५५ इचा । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेहन सं०६७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर दबसाना (ब्रृंदी) ।

विशेष--श्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है--

ग्रबड बतुर्यं प्रादेश समाप्त ॥

३२११. ग्राविनाथ चरित्र —  $\times$  । पत्र सं $\circ$  ३५ । ग्रा $\circ$  ०,२  $\times$ ४१ इ.स. । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं $\circ$  ०,२०। प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि $\circ$  जैन मन्दिर ग्रजीर ।

विशेष--रचना गुटका के ब्राकार मे है।

३२१२. द्यादिनाथ के दस मब—× । पत्रसं० १० । भाषा-हिन्दी । विषय-जीवन चरित्र । र०काल × । ले०कान × । पूर्ला । वेष्टन स० ४२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती भरतपुर ।

**विशेष** — पत्र ४ के बाद पद सग्रह है।

विशेष-- विनाम्बरनाथ के धनुसार 'धन्ना शालिमद्र' चरित्र दिया हुया है।

३२१४. ऋतु संहार —कालिदास । पत्र । सं० २१ । प्रा० १० $\times$ ४३ इख । भाषा —सस्त्र । विषय—काव्य । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १८५२ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय स्थानी मालपुरा (टोक) ।

३२१४. करकण्ड चरित्र—मुनि कनकामर । पत्र स० ३-७७ । ग्रा० १०;  $\times$  १६७ । भ्रापा—ग्रप्प म । विषय —चरित काव्य । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १८४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी बुदी ।

३२१६. करकण्डुचरित्र— म**ागुमच**न्द्र । पत्रसं० ४८ । प्रा० ११×४} इञ्च । मापा— संस्कृत ।विषय— चरित्र । र०काल स० १६११ । लेक्काल स० १६७० । पूर्ण । बेष्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति जीगां है।

३२१७. प्रति सं० २ । पत्रस०१४-१६१ । द्या०११×४ इथा । ले०काल सं०१४७३ । पपूर्ण । बेबनसं०१६२/४४ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १४७३ वर्षे श्री भ्रादिजिनवैत्यालये श्री मृतसंवे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याच्ये महारक श्री पद्मतिवदेवा तत्पट्टे भट्टारक देवेग्टकीतिदेवा तत्पट्टे म० विद्यानिन्ददेवा तत्पट्टे भ० लक्ष्मीचन्ददेवा स्तेषां प्रतक्तं ।। श्री मिल्लभुष्यण पस्तकमित्रं ।

**३२१८. काव्य संग्रह**— × । पत्र सं• १४ । घा० १०×४-१ इचा भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल सं• १६४८ सावन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स• १८६-७**७ । प्राप्ति** स्**यान**—दि• जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

विशेष--मेघाम्युदय, वृत्वावन, चन्द्रदूत एवं केलिकाव्य आदि टीका सहित है।

३२१६. प्रति सं०२। पत्र स०६। सा०७×५६ चा भाषा—सस्कृत। विषय काष्य। र०कान ×। ने०कान ×। धपूर्ण। वेष्टन सं०६०। प्राप्ति स्थान—दि० जन सन्दिर कोट्यों का नैराया।

विशेष---नवरत्न सम्बन्धी पद्य है।

३२२०, प्रति स०३ । पत्रसं∘२ । के∙काल ×। प्रपूर्ण। वेष्टन स०६४ । प्रास्ति स्थान---वि० जैन मंदिर कोट्यो कानैसावा।

३२२१. किरातार्जुनीय—मारिव । पत्र स०१००। प्रा०० $\{x \ Y\}$  इश्वः। भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल X । ले० काल X । पूर्णः। वेष्ट्रन स०४७०। प्राप्ति स्थान—भ० कि जैन मन्तिर प्रजीर ।

३२२२. प्रति सं०२ । पत्र स०१०२ । झा०१०३ ४४ इचा। ले०काल ४ । पूर्ण। वेष्टुनसं० १२६१ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन मन्दिर झजमेर ।

३२२३. प्र**तिसं**० ३ । पत्र स० ४४ । ग्रा० ११ ४४ <sup>2</sup>, इंच । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १२३६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मदिर अजमेर ।

३२२४. प्रति स० ४ । पत्रस० १३४ । छा० ६  $\times$  ६ इथा । ले०काल स० १७६= वैशाख सदी ६ । पूर्णे । बेष्ट्रन स० ११३६ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष--- प्रजमेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३२२५. प्रति स०५ । पत्र स०४४ । ग्रा०१० $\times$ ४ इ.च । ले० काल $\times$  । बेप्टन स०२२६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

३२२६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ११२ । प्रा० ११ imes ४ $^3$  इन्त । ले० काल imes । वेष्ट्रन स॰ २६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

विशेष-सामान्य टीका दी हुई है।

३२२७. प्रतिसं०७ । पत्र स०१४४ । मा०१२ॄे ४६ इञ्च । ले० काल ४ । बेष्टन सं० २६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — मंघकुमार साधु की टीका सहित है।

३२२८. प्रतिसं० ८ । पत्र स० १०। ले० काल 🔀 । पूर्णा (प्रयम सर्ग है ।) बेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान-— दि० जैन पंचायती मन्दिर हाण्डावालो का डीग ।

३२२६. प्रति सं०६ । पत्रस० ४३ । आ० ११×५३ । क्षे०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं०२०३। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मंदिर घमिनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष-धर्ममृति शालिगराम के पठनार्थ द्विज हरिनाराए ने प्रतिलिपि की थी।

३२३०. प्रतिसं० १० । पत्रसं० १० । मा० ६×६८ इन्छ । लेक्काल × । सपूर्ण ।वेष्टन सं० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर प्रीपनन्दन स्वामी बूंदी ।

३२३१. प्रति सं०११ । पत्र सं०१४४ । प्रा०१२ $\frac{3}{2} \times 3$  ६ खा । ते० काल स०१७६४ प्राचाड सूदी २ । पूर्ण । वे० सं०६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष--प्रति व्याख्या सहित है।

३२३२. प्रतिसं० १२ ।। पत्रस० ११४ । ग्रा० ५३ ४४ ६ चा ले० काल १७४० ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्णा । वेष्टनसं०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर नागदी बृंदी ।

विशेष--- लिपि विकृत है--- १ द सर्ग तक है।

३२३३. प्रतिसं०१३ । पत्रसं०७६ । झा० ६×५ इला । से०कालुस०१६०७ चैत सुदी ७ । पूर्णं। वेष्टन स०६ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी ।

विशेष---११ सर्ग तक है। कहीं २ सस्कृत मे शब्दार्थ दिये हुये हैं।

३२३४. प्रतिसं०१४ । पत्र सं०१२१ । ग्रा०११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इंच । ले०काल  $\times$  । ग्रपूर्ण। बेष्टुन स० ८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

३२३**४. प्रतिसं०१४** । पत्रस० ४६ । ष्रा० १०×६ इच ले**०काल** × । पूर्ण । बेष्टन स०१८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पारवेनाथ चौगान बुदी ।

विशेष---११ सगं, तक है।

३२३६. प्रतिसं०१६। पत्र स०३२ । मा०११३ $^1$ ४४ $^2$  इंच । ले० काल imes । पूर्सा । बेष्टन स०१८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३२३७ प्रतिसं० १७ । पत्रस० ×ां ले० काल सं० १७१२ भादवा सुदी ३ । पूर्णा । वेष्ट्रनसं० २४२–६६ । प्राप्ति स्थान-—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वंगरपूर ।

विशेष-प॰ भट्टनाथ कृत सस्कृत टीका सहित है

प्रशस्ति -- सबन् १७१२ वर्षे भाद्रपद मासे गुक्ल पक्षे तृतीयां " " लिपि सुक्ष्म है।

३२३६. कुमारपाल प्रबन्ध—हिमबन्द्राचार्यः। पत्रसं० ६-२४। प्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ४ $\frac{1}{6}$  इश्वः। भाषा-सस्कृतः। विषय-काव्यः। २०कालः  $\times$ । ले० काल $\times$ । प्रपूर्णः। बेहन सं० १६०। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ व दी।

३२३६. कुमार संमय — कालिदास । पत्र सं० ६६। प्रा० १०३ ×४। इस्त । मापा — सस्कृत । विषय — काव्य । र०काल  $\times$  । लेलन काल सं० १७८६ । वेष्टन स० २८३ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

विशेष -- टौक नगर मे प० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३२४०. प्रतिस०२ । पत्रस०३२ । झा०१० $_{i}^{0}$  X ४६०४ । ले०काल X । बंहन स०२०४ । प्रास्तिक स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

. १२४१. प्रति सं०३ । पत्रसं०४३ । प्रा० ८ $\frac{3}{6}$  imes ३ इञ्च । ने०काल imes । बेहन सं० २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

३२४२, प्रतिसं० ४। पत्र स० ७४। मा० ११×४१ इन्स । ले०काल स० १६४० पीष सुदी ७। पूर्ण । बेष्टन सं० १६०। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर राजमहल (टीक)।

३२४३, प्रति सं० ४ । पत्र स० २४ । धा० १२ ४ ४ इन्ह । से०काल सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन २२४ । प्राप्तिस्थान— दि० जैन मदिर राजमहल (टींक) ।

विशेष-श्री चपापुरी नगरे बाह्य चैत्यालये प० वन्दावनेन लिपि कृत ।

३२४४, प्रति सं०६ १ पत्र सं०४२ । प्रा०११ $\times$ ५१ दश्व । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०२४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर नागदी बुदी ।

विशेष-सात सर्ग तक है।

३२४**४. प्रति सं०७।** पत्र स०६०। प्रा०१०१,४४३ इथा। ले॰काल स०१७१६ ज्येष्ठ सुदी ६। पूर्णा। वेप्टन स०६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोग्सली कोटा।

विशेष — गुकवासरे श्री मूलसथे सरस्वतीगच्छे बलात्कारमणे भट्टारक जयकीर्ति के शिष्य पंडित गुणवास ने लिखा था।

३२४६, प्रति सं० द । पत्र स०३०। ग्रा०११×४ इञ्च। ले०काल स०१६६६। पूर्ण। वेष्टन स०१३५। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

प्रशस्ति—सवत् १६६६ वर्षे घाषाढ बुदी द्विनीया शुक्रे श्री खरतरगच्छे मट्टारक श्री जिनचंद्र सूरिभि: तत् शिष्य सोमकीति गरिए तत् शिष्य कनकबद्धंन मृति तत् शिष्य कमल तिलक पठनार्थ लेखि ।

३२४७. कुमारसंमय सटीक—मल्लिनाय सूरि । पत्र म० ११४ । ग्रा० ११ $\times$ १ इच । मापा—सम्हृत । विषय—काव्य । २०काल $\times$  । ले० काल $\times$  । पूर्ण । वेट्टन स० ५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय बूदी ।

विशेष-सातसर्ग तक है।

३२४६. प्रति सं० २ । पत्रसः ७६ । ब्रा० ११ $\times$ ४ $^2$  इश्व । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३२४६. क्षत्र दुडासिंह्य - बादीसिंसह । पत्र स०४६ । मा०१३ × ४ इञ्च । प्राथा --संस्कृत । विषय -- काव्य । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स०३४६ । **प्राप्ति स्थान**---विक जीन मिटर वोगसी कोटा

३२५०. **संडप्रशस्ति काव्य**—  $\times$  । पत्र स०४ । भाषा — सस्कृत । विषय—काव्य । र०कास  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०११०/२६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समयनाय मिदिर उदयप्र ।

३२५१ः प्रतिसं०२ । पत्र स०४ । के॰काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स०१६१/२७० । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० अँग ,मदिर उदयपुर ।

३२४२. गजसुकुमाल चरित्र—जिनसूरि । पत्र सं० २० । घा० १० ४४ है इस । बाया— हिन्दी (पदा) । विषय - कथां। र०काल स० १६६६ वैशाल सुदी १ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ७३१ । प्राप्तिः स्थान--महारकीय वि० जैन मन्दिर घनभेर। ३२५३. गर्जासहरूमार चरित्र —विनयचन्द्रसूरि । पत्रसं $\bullet$  २-३३ : धा $\bullet$  १× ४ $\frac{1}{2}$  इख । भ्राया —संस्कृत । विषय —चरित्र । र $\bullet$  कास  $\times$  । ले $\bullet$  कास सं $\bullet$  १७४४ । प्रपूर्णः । बेहन सं $\bullet$  १०२ । प्रारित स्थान —दि $\bullet$  जैन मन्दिर राजमहल टॉक ।

विशेष---प्रथम पत्र नही है।

ग्रन्तिम पुरुषका एव प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

इति श्री चित्रकीयगच्छे श्री विनयचन्द्र मृरि विरचिने गर्जीसह कुमार चढित्रे केवली देशना पूर्वभाष-स्मृता वर्णन दीक्षा मोक्ष प्राप्तिवर्णनो नाम पत्रम विश्राम सम्पूर्ण ।

स० १७५४ वर्षे भ्राप्तिन सुदी ६ मनौ श्री नृहत्त्वरतरगच्छे, पीपल पक्षे श्री क्षेमडाधिज्ञास्त्राया बाचक मनंबाचना धर्मश्री १०० जानराजनी नत् किय्य सीहराजनी तद् विनय पंडित श्री असरवन्द जी क्रियर रामचन्द्रे नोलेक्षित्रह भूयात् । श्रीनेदपाटदेने विजय प्रधान सहाराजाविराज महाराणा श्री जैतिहजी कृतस्त्री असरीक्षत्र विजय राज्ये बहुतिन श्री गोटनवास्त्र वन्त्रस्ति ।

३२४४. गुरावमा चरित्र—माशिक्यसुन्दर सूरि । पत्रस० ७४। माथा—सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल × । ले०काल स० १८७४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६०१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन ववागती मंदिर भरतपर ।

विशेष---मिरजापर में प्रति लिखी गई थी।

३२४४. गौतम स्वामी चरित्र—धर्मचन्द्र । पत्रतः ४२ । घा० ११६/४४ इञ्च । माषा— संस्कृत । विषय —चित्र । २०काल स०१७२६ ज्येष्ठ तुदी २ । लेकाल स'०१०१७ वैशाल स्वी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं०१०४० । प्रास्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

विशेष---श्रजयगढ में जिनवैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३२५६, प्रतिसं० २ । पत्रसं० ५२ । घा० ११३,४४३ इंच । ले०काल ४ पूर्ण । केव्रतस०१५६४। प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मदिर प्रजोर ।

२२ ५७. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४४ । घा० ११  $\times$  ५ $^2_8$  इत्थ । ले०काल स० १८४० माह बृदी १ । बेष्टन सं० १४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष—सवाई प्रतापिसह के शासन काल मे श्री बस्तराम के पुत्र सेवाराम स्वयं ने प्रतिलिपि की थी।

३२५ फ. प्रति सं०४ । पत्र सं०३४ । घा० १३० ४४ है इश्वा ते० काल स०१७२६ ज्येष्ठ मुदी२ । बेष्टन स०१५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---प्रति रचनाकाल के समय ही प्रतिलिपि की हुई थी। प्रतिलिपिकार प० दामोदर थे।

३२४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४०। या० १२ × ३ है इचा से •कास × । पूर्णं। बेहन सं० ६५। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर नेसावाटी (सीकर) ∤

३२.४.६. प्रति सं० ६ । पत्रसं० ४०। प्रा० १०×४ इचा ने∘काल × । पूर्ण । बेहन सं० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेप्रावाटी (सीकर) ।

विशेष---भगवन्ता तनसुखराय फतेहपुर वालों ने पुरोहित सोतीराम से प्रतिक्रिय कराई थी।

**३२६०. प्रतिसं० ६ं।** पत्रस० १६ । बा० ११×६ इला । ले० काल सं० १८४२ । पूर्णं। वेष्टुल सं० ३६४ । **प्राप्ति, स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष-सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३२६१. घटकपॅर काब्य—घटकपॅर । पत्रस $_0 \times 1$  प्रा० १० $_{1}^{2} \times 1$  डवा । भाषा—सस्कृत । विषय—काब्य । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रनसं० ३०१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर । '

विशेष -- प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३२६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । मा० १०५ $\times$ ४ ६ च । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टनसं० ३१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर सक्कर, अयुपर ।

३२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ग्रा० १०३ $\times$ ५ इन्छ । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स० ३११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३२६४. **प्रतिसं०**४ । पत्रस०५ । झा०१२ ४ ४ १ इ.स. । ले**०काल स०**१६०४ । पूर्णः । वेष्टनसं०६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी ब दी ।

३२६५. **चन्दनाचरित्र—भ० गुमचन्द ।** पत्रस० ३० । प्रा० १०४४) इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल X । ले**०काल** X । पूर्ण । वेष्टन स० १२३७ । **प्राप्ति स्थान—**मट्टारकीय दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

३२६६. प्रतिसं० २) पंत्रस० २३। प्रा० ११ $\times$ ५ $\frac{3}{6}$  इंच । ले० काल स० १८३२ आषाड युदी ११। पूर्स । बेहन सं० १७२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, लक्कर जयपुर ।

विशेष-जयपुर के लक्कर के मन्दिर में सुखराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

३२६७. सन्द्रदूत काय्य-विनयप्रम । पत्र सं०१। मा० १० $\frac{3}{6}$   $\times$   $\chi^2_{\xi}$  इंख । माषा— सन्द्रत । विषय—काव्य । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १५२५ म्राषाउ । वेष्टुन स० १०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वक्कर, जयपुर ।

३२६६. खन्द्रप्रमचरित्र—यशःकीित । पत्र स० १२१ । आ० ६ $\frac{1}{7}$  $\times$ ४ $\frac{1}{7}$  इख । भाषा— प्रपन्न ग । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । म्रुपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा ।

३२६६. चन्द्रप्रभु चरित्र-बोरनींद। पत्रसं०६७ । प्रा०१०१ ४ १५ दव । भाषा--सम्कृत । विषय--काव्य । '२०कारा स०१०६२ । क्षे काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टत स०४२० । प्रास्ति स्थान--भट्टारकीय दि०जीन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष — जीर्राकीय प्रति है।

३२७०. प्रति तं ०.२.। पत्र स०१२२ । घा०११हे ४४ इ.च । से०कास स०१६७६ मादवा सुरी १२। पूर्ण । बेष्टन स०६४४ । प्रास्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मस्दिर खबसेर ।

। ३२७१. प्रति संव है । पत्र सक् १२ । घा॰ ५ $\times$ ६ ई द्वा । ले॰काल  $\times$  । बेष्टन संव ६४३ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन नक्कष्टुं निवार जयपुर ।

हेबल प्रथम-दिलीय सर्ग जिसमें न्याय प्रकरण है-द्रिय है। प्रथम सर्ग अपूर्ण है।

३२७२, प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३६ । घा० १० $_{4}^{2}$ imes६ इत्थ । त्रे० काल सं० १८२६ वैशास सुदी २ । पूर्ण । बेहन स०२३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामाः ।

विशेष-दीर्घ नगर जवाहरगज में चेतराम लण्डेलवाल सेठी ने प्रतिलिपि कराई थी।

३२७३. प्रति सं० ४ । पत्रस० १२३ । प्रा० १२४४ हेच्य । ले० काल ४ । पूर्ण । वेक्टनसं० २०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानत्री कामा ।

**३२७४. प्रति स०६।** पत्र स०१२०। ले० कालसं० × । पूर्ण। बेष्टनसं० द**१। प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा अलग २ अध्याय है।

३२७४. प्रति सं० ७ । पत्रस० ११६ । ले० काल स० १७२६ मादवा सुधी २ । पूर्ण । बेष्टुन सं० ३६-४१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३२७६. प्रति सं० द्रापत्र सं०३-२०४। झा०११×४६च । ले०काल स० १६०६। झपुर्ला । बेबून स०३६७/२२ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

सन्त् १६०८ वर्षे प्रापाद मासे मुक्त पक्षे ११ तिथी रिववासरे सुरताए श्री सहसूर राज्य प्रवर्तमाने श्री गंबार शन्दिरे श्री पाश्वेताय जैन्यालये श्री मृतसने संरक्तती यच्छे बलात्कारण हो कृदकु दाचार्याक्वये— इसके पाने का पत्र नहीं है ।

३२७७. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३–६४ । घा० ११ $\times$ ४ इखा। ले० काल सं १७२२ घासोज सुदी १३ । धपूर्स । बेष्टन सं० २६७/२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-वीच २ में पत्र चिपके हुए है तथा कुछ पत्र भी नहीं है। प्रति जीएां है।

प्रशस्ति—स० १७२६ में कल्यागुकीर्ति के शिष्य ब्रह्मचारी राघ जिष्यु ने सागपत्तन में श्री पृष्ठजिन चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिविधि की थी।

३२७८. प्रति सं० १०। पत्र स० ८४। घा० ६३ ४७ इला। ले० काल स० १८६६। पूर्ण। वेष्टन सं० ४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ जीगान बूदी।

विशोध — प्रगस्ति—मिती वैशाल बुदी ६ मंगलवार दिने संवत्१८६६ का शाके १७६४ का साल का। लिली नगरणा रायमिंह का टोडा में श्री नेमिनाथ चैल्यालये लिली ख्राचार्य श्रीकीर्तिजी

**३२७६. प्रति सं० ११ ।** पत्रस० द६ । ग्रा० १२× द<sub>र</sub>ै इच । ले० काल स० १६<u>४६</u> माबाढ मुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान**—नाण्यंनाय दि० जैन मन्दिर इंदरगढ ।

३२००. चन्त्रप्रम चरित्र—सकलकीति । पत्रसं० २२-४२ । घा० १२हे ४४हे इच । माधा-सस्कत विषय—चरित्र । र०काल ४ । ले०काल स० ४ । घपूर्ण । वेष्ट्रनस० ३१६ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन ग्राप्ताल मन्तिर उदयपर ।

३२ स्टर, सन्द्रप्रम सरिज—हीरालाल । पन स० २३२। प्रा० १२३ ४७० इ.स. । माथा — हिन्दी प० । विषय-चरित्र । र० काल स० १६१३ । ले०काल सं १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्वान—दि० जैन मन्दिर फेतेहपुर गेसावाटी (सीकर) ।

विशेष-प्यारेलाल ने देवीदयाल पण्डित से बडबत नगर मे प्रतिलिपि कराई।

३२८३. चन्द्रप्रम काव्य माषा टीका । पत्र स०१३३। भाषा—हिन्दी । विषय— काव्य । र० काल × । ले०काल × । कपूर्ण । वेप्टन स० ३४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपर ।

३२६४. **चन्द्रप्रम कांध्य टीका**। पत्र स० ५०। माषा—हिन्दी विषय—कांब्य। र० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वे०सं० १५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

३२८५. **चारदत्त चरित्र—दीक्षित देवदत्त** । पत्रस० । १४२ । माया—सस्हत । विषय— चरित्र । र० काल × । ते० काल स० १८४७ । पूर्ण । वे. स० २७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष--रामप्रसाद कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी।

३२६६, जम्बूस्वामी चरित (जम्बूसामि चरित)—महाकवि बीर। पत्र स॰ ६६। प्रा॰ १०४४} इञ्च। भाषा—प्रपन्नं शा विषय—काष्य । र०काल स० १०७६। से०काल × । पूर्ण। वेष्टन सं॰ ११३। प्राण्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

३२८७. जब्बृस्वामीचरित्र—म० सकलकीति । पत्र स० १२ । प्रा० १० है ४४ है इस । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल ४ । ले०काल स० १६६६ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२६२ । प्राप्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**३२ दर, प्रति स० २** । पत्र स० ४३ । प्रा**० १०**२ ४ ४ } इञ्चाले ० काल ४ । पूर्ण । वेष्टुत स० १३३३ । **प्राप्ति स्थान** – महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजसर ।

**३२८६. प्रति सं०३। पत्रस० ११२** । आ०१०१ ४४३ इ.स. । ले०काल स०१८०६। पूर्यो । बेहनस०३४५ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-- उग्रवास मध्ये श्री नयमल घटायितं । लण्डेलवाल लुहाडिया गीत्रे ।

३२१०. प्रति सं० ४ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६६४ । पूर्णं । वेष्टन स० १२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर डीग ।

२२६१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ७६ । झा० ११ै, ४४ इचा । के० काल स० १७०० माघ इदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० ३२४/४२ । प्रास्ति स्थान—सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — प्रति जीएं है। बीच में कुछ पत्र नहीं हैं। संवत् १७०० में उदयपुर में संभवनाथ महिर में प्रतिलिप हुई थी।

३२८२. प्रति सं०६। पत्र सं०६६। घा०११×५ इला। ते० काल सं०१६६७। यूर्छ। वेष्टुन सं०१७४। प्राप्ति स्थाल—वि० चैन व्यवाल मन्दिर उदयपुर।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

संबत् १६६७ वर्षे भाववा सुदी १ दिने श्री बाग्वरदेशे लिखितं पं॰ कृष्णादासेन ।

३२६३, प्रति सं०७। पत्रसं०११। ग्रा०११×५ इन्छ । से॰काल × । पूर्ण केष्टन सं०२५३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर, उदयपुर।

३२६४. जम्बूस्वामी चरित्र—बह्म जिनवास । पत्र सं० १३ । या० ११४४ हे स्व । माषा— संस्कृत । विषय चरित । र०कास ४ । से०कास स० १७०६ कार्तिक सुदी ४ । वेष्ट्रन सं० ३ । पूर्ण । प्रास्ति स्थान—मटास्कीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष-- विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है।

३२६४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८४ । घा०११×५ इन्छ । से०काल × ।पूर्ण । वेष्टन सं०१४५० । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

३२६६. प्रति सं० ३ । पत्रस० १२१ । घा० ६३ 🗶 ४ इचा । ले०काल सं० १६२६ मगसिर मुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४०१ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

३२९७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १०६ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  दख । भाषा — मस्कृत । विषय — चित्र । २० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० २०४ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयगर ।

३२६६. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ७४ । ले•काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३२६६. प्रतिसं० ६। पत्र सं०६=। घा० १०३ × ४३ इश्वः। ले० काल स० १६७०। पूर्ण। बेष्टन स० २६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३३००. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ६२ । धा० ११ 🗴 ५ इश्व । ले० काल स० १६४१ आसीज सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बूंदी ।

प्रशस्ति — सवत् १६४१ वर्षे भ्राप्तिन सुदी ६ शुक्रवासरे समधाक्षः देशे राजाधिराजः श्री मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्री मृलसधे सरस्वती गच्छे बलात्कार गरो श्री कृदकुँदाचार्यान्वये ।

३३०**१. प्रति सं० ६ ।** पत्र स० १४४ । आ० ६२ ४ १६वा । सै०काल स० १६७४ आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वेस्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान —** दि० जैन मदिर नागदी ब्रुदी ।

विशेष—भट्टारक मुरेन्द्रकीति के गुरू आता कृष्णाचन्द्र ने दौलितराव महाराज के कटक में मिला गया।

३३०२. प्रति सं० **१** । पत्र सं० १६ । घा० १० ४५ ६ खा । से० काल ४ । पूर्ण । बेहन स० ⊏१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, चौनात ब्रुदी ।

२२०२. प्रतिसं० १०। पत्रसं० ११६। घा० १०४४ इच्छा। ले० काल सं० १६३२। पूर्णं । वैष्टनसं० १३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाथ चौगान बूंदी।

विशेख- चम्पावती में प्रतिलिपि की गयी थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२२०४. प्रति सं० ११ । पत्रस० ८८ । प्रा० १० रे ४ १६वा । ले०कान अ । पूर्व । वैष्टनसं० २०४-८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हूं नरपूर । ३३०५, सम्बूस्तामीचरित्र-पाष्टे जिनदास । पत्र तं० २-४६ । ता० १०१ ×५१ इच । बाबा —हिन्दी (५०)। विषय —चरित्र । र०काल तं० १६४२ मादवा बुदी ४ । ले०काल × । पूर्ण । वेकृत तं० २१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष -- प्रति अश्द है।

्र**३०६. प्रति सं०२।** पत्रसं०६७। धा० ८ ४ इच्चाले०काल स०१८८६। सपूर्ण। वैकासं०६७। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

विशेष -- प्रतिजीर्ग है। कामा मे प्रतिलिपि हुई थी।

३३०७. प्रति सं० ३ । पत्रस० १३० । झा० ४ दे × ४ दे इन्छ । ले०काल स० १८२२ मार्गशीर्ष सुदी ११ । पूर्ण । वेप्टन स० १०४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

विशेष — प्रति गुटकाकार है । स्वानीराम ने सवाई जैपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र १२७ से चौबीसी बीनती विनोदीकाल लालचंद कृत स्रोर है।

**३३००. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० १२५ । घा० ६ $\times$ ५ $^3_7$  इख । ले॰काल स० १६२५ फापुन सुदी १ ।पूर्ण । बेष्टन सं० फ/४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती हूनी (टोक) ।

#### ग्रस्तिम---

- सवत सोलासै ती भए, वियालीस ता उपरि गए।
  - भादो बुदि पाची गुरुवार ता दिन कथा कीयो उचार।। अकबर पातसाह कउ राज, कीन्ही कथा धर्म के काजु।
  - कोरं धर्म निधि पासा साह, टोडर सुत ग्रागरे सनाह।। ताक नाव कथा ईह घरी, मधुरा पासे नित ही करी।।
- , रिखवदास भ्रर मोहनदास, रूपमगदु घरु लक्ष्मीदास । धर्म बुद्धि तुम्हारे हियो नित्य, राजकरहुँ परिवार सजुत ॥ पढं मने जे मन दे कोय. मन बख्डित फल पार्व सोय ॥१॥

मिती फागुन मुदी १ शुक्रवार स० १६२५ को सदा मुख बैंद ने पूर्ण नगर मे प्रतिलिपि की थी।

३३०६. प्रति सं० ५ । पत्र स० २६ । घा० ११ $\frac{1}{2} \times$  = इश्व । ने०काल स० १८५४ । घपूर्ण । वे॰ सं० ४८/२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

**२३१०. प्रतिसं ६ । पत्रसं०** २५२ । झा० १३ × ६ व इत । लेक्सल स० १६२० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (क्षीकर) ।

विशेष-सं ० १८४१ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

३२११. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० २८ । खा० ११ $\frac{3}{6}$  $\times$ ६ $\frac{3}{6}$  स्व । ले०काल सं० १६६५ मगसिर बुदी द । पूर्ण । बेष्टन सं० १४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर फतेहपुर केसावाटी (सीकर) ।

विशेष--प्रति सुन्दर है।

३२१२. प्रति सं० कः । पत्र सं० ३६ । प्रा० ११४ ४१ है इंच । ले० काल सं० १७४५ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन सं० १४७ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा । विशेष—तावर्णक मागरा में प्रतिसिधि हुई । ३३१३. प्रतिसं० १ । पत्रसं० २०। आ० १०३४ ७ इला। ले० काल स० ११४४ कार्तिक सवी १४ । पूर्णः वेष्ट्रनसं० ६/७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर धनवर

**३३१४. प्रतिसं० १०।** पत्र स० २१ । ले॰काल सं० १६२६ । ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्णं । बेष्टुन सं० ७/४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर ग्रस्वर ।

३३२५. प्रति सं० ११ । पत्रस० ६२ । ग्रा० ११×४३ इचा । वे०काल × । अपूर्ण । वेबनसं० १०१ । प्राप्ति स्थान—दि० कैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष — प्रति प्राचीन है।

३३१६. प्रतिसं० १२ । पत्रस० २३ । प्रा० १२ $\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$  स्था । ले०काल स० १६०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जन छोटा मन्दिर वयाना ।

३३१७. प्रति सं० १३ । पत्रस० २४ । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहणवी मन्दिर बसवा।

३३१८. प्रति सं० १४ । पत्रस० १८ । प्रा० १२ $\frac{1}{2}$ ४६ इंच । ले॰ काल स० १८०० माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६/४३ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

३२**१६. जम्बूस्वामी चरित्र – नायूराम लमेवू ।** पत्रसं० २६ । ग्रा० ११ × ७५ इस । भाषा-हिन्दी ग० । विषय —चरित्र । र०काल × । ले० काल सं० १८६६ श्रवाह सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टुन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलावाटी (सीकर) ।

विशेष-हरदत्तराय ने स॰ १६६१ कात्तिक मुदी १५ अप्टाहिन का पर चढाया था।

ं३३२०. जम्बू स्वामी चरित्र— $\times$ । पत्र सं०  $\mathbb R$ । भाषा-हित्यी । विषय-चरित्र । र०काल $\times$ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ७३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

३३२१. जम्बू स्वामी चरित्र— $\times$ । पत्र स०२०। प्रा०२० $\frac{3}{4}\times V_0^2$  दख । भाषा-हिन्दी गर्ध प्रमाव । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१८२६ । पूर्ण । वेष्टन स०२७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

विशेष — सवत् १८२६ जेष्ठ बृदी ५ वार सोमे लखीवे साजपुर मध्ये लीखत झाराजा सोना ।

३२२२. **जस्बू स्वामी चरित्र**— X। पत्र सं०६। प्रा०६ X ४ इ.ख.। भाषा-हिन्दी (ग०)। विषय-चरित्र। र०काल X। ने०काल स०१७४८ माह सुदी ११। पूर्ण। वेय्टन म०६६। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (खंदी)।

३३२३. जम्बू स्वामी चरित्र—  $\times$  । पत्र सं० ७ । प्रा० ११  $\times$  ६ इव । प्रावा-हिन्दी । विषय-चरित्र । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ६४/५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाक्लप्त सन्दिर इन्दराङ (कोटा) ।

३२२४. जम्बू स्वासी चरित्र— $\times$ । पत्र सं०१३४। प्रा०१०  $\times$  ४ इञ्च । माथा-प्राकृत-सम्ब्रत । विषय-चरित्र । रुकाल $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टुन सं०१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन संबेधवाल क्रीस्टाउदकपूर ।

विशेष ---बीच २ में पत्र नहीं हैं।

३३२४. जसकुमार चरित्र--ज. कामराज । पत्र सं० ६१ । प्रा० ११ × ४ इञ्च । भाषा--संस्कृत । विषय--चरित्र । र०कान × । ते०कान × । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३१० । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन अपवाल ,मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- ११ से आगे के पत्र नहीं है।

३३२६, प्रति सं०२ । पत्र स०१३२ । घा०६३ ४ ४३ इ.स. । ले० काल सं०१६९६ पीष सदी१२ । प्रपूर्ण । वेष्टन सं०२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली।

विशेष - पत्र स॰ दर से ६४ व ११२ से १३१ तक नहीं है।

भरतपुर नगर में पाण्डे वखतराम से साह श्री चूढामिए। ने प्रतिनिधि कराई थी।

३३२७. जसहरचरिज-पुष्टवर्ता । पत्र त०६१ । प्रा०६० १४ इंच । भाषा-ध्यप्तमंत्र । विषय-काल्य रकाल्य ४ । तेक्काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टनसंकरुष । प्रास्ति स्थान-दिक्षीन मन्दिर वीवान वीकामा ।

३३२**द. प्रतिसं० २** । पत्रसं० ६३ । ग्रा० १० $\frac{3}{7} \times \frac{3}{7}$  इच्य । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वैकृतस० ५ । प्राफ्टिर **स्थान** — दि० जैन मदिर दवलाना (बंदी) ।

३३२६. जसहर खरिछ— × । पत्रसः २६ । म्रा॰ ११२ ४ १ श्वा । साषा—प्रपम्न व । विषय—काव्य । र०काल × । ले०काल सः० १५७६ मासीज सुदी ७ । पूर्ण् । बेष्टनसं० ६७० । प्राप्ति स्थान—भटारकीय दि० भैने मदिर मजमेर ।

विशेष-प्रति सस्कृत टिप्पण सहित है ।

३३३०. जितदत्त चरित्र —गुराभद्वाचार्य। पत्र सं० ४३। प्रा० १२ $\{ \times V_i^2 \le u \mid \pi \mid u = \pi \in \pi$  । तिषय —काव्य। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । वेष्टन सं० १६४। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

३३३१. प्रतिसं०२ । पत्र सं०४४ । झा०११×५ है इच्चाले०काल 🗴 । बेहन सं०१६४ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

३२३२. प्रति सं०३। पत्रस०४४। म्रा०६४५ इन्छ। ने०कान ४ ।पूर्णं। वेष्टनसं० २२५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा।

३३३३. प्रति सं०४ । पत्र स०३६ । झा०१२ 🗡 ४३ इच । ले० काल सं०१८६२ । पूर्ण । वे० स०२३४ प्राप्ति स्थान — ति० जैन मन्दिर मनिनन्दन स्वामी ब दी ।

विशेष-कोटा के रामपुरा मे श्री उम्मेदसिंह के राज्यकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

३३३४, प्रति संस्था ५। पत्रसः ३६। प्रा० १२४६ इत्य । ले॰कास ४ । पूर्ण । बेष्टन संर १२१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर मनिनस्त स्वामी बंदी ।

विशेष--- यह पुस्तक सदामुख जी ने जती रामचन्द्र को दी थी।

३२३४. प्रतिसं०६ । पत्र स०६१ । प्रा०६<sup>5</sup>, ४४<sup>5</sup>, इन्य । ले०काल ×्रा **प्रपूर्ण । वेस्टब** सं०७⊏ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा । ३३३६. प्रति सं०७। पत्र सं०४३। घा० १०३ $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं०३४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन श्रग्रवान मन्दिर उदयपुर।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

३२२७. प्रतिसं**० ८ ।** पत्रस० ५० । घा० ११३/४४ इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन सम्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---भगवतीदास ने प्रतिलिपि की तथा नैमिदास ने संशोधित की थी।

३३३ ⊏. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३६ । आ० १२ १ ×१ ४ इ.च. । ले० काल सं० १६१६ मगसिर इदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० ११६ । प्राप्तिः स्थानः — दि० जैन प्रवाल मन्दिर उंदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति पूर्ण है। गिरिपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३३३६. जिनदत्त चरित्र—प० लाख् । पत्र स०१६४। प्रा०११४५ है स्था। भाषा— प्रपन्नं । विषय — चरित्र । र०काल स०१२७४ । ले॰काल ४ । प्रपूर्ण । जीएंग् झीएं। वेष्टन स०६८ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन सदिर वडा बीसपंथी दौता ।

३३४०. प्रतिसं०२ । पत्रस०१००-१४६ । प्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इश्वा । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेवन स०६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बीसपथी दौसा ।

३३४१. जिनदस्त चरित्र—रस्तमूष्या सूरि । पत्रस० २८ । भाषा — हिन्दी । विषय — वित्त । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रमूर्ण । वेष्टनस० ८८/७३ । प्रास्टिः स्थान-दि० जैन सम्मवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — हासोट नगर मे ग्रथ रचना हुई थी।

३३४२. प्रति सं०२ । पत्रस०२३ । ले० काल स०१८०० । पूर्ण । बेष्टन स० ६६/७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

३३४३. प्रतिसं० ३। पत्र स० २६। ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स० ६७/७१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मंदिर उदयपुर।

३३४४. जिनवस चरित्र—  $\times$  । पत्र सं०६२ । प्रा०१२ $\xi$   $\times$ ७ इञ्च । प्राथा-हित्दी पद्य । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल सं०१६८६ ज्येष्ठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं०१६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रदिर फतेहपर शेक्षावाटी (शीकर) ।

३२४४. जिनदत्त चरित्र-विस्वसूत्रस्य । पत्रस० ७१ । झा० ११२/४४३ इथा । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेहनस० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर बयाना ।

प्रारम्भे---

श्रीजिन बन्दौ भावसों तोरि मदन को बागा। मोह महातम पटल को प्रगट भयो मनु भानु ॥ १।३

मध्यम भाग---

विनतासों वार्तें कहें भाभी हमारो देस । सुमर ग्राम चम्पापुरी वन में कियो प्रवेश ।।

### चौपई

दम्पति बन मे पहुचे जाइ सूर्य श्रस्त रजनी भई बाह । कहौ प्रिया बनवारि मिटाइ, समनु करौ विस्मै सुखपाई ।।३६।। ...

## धन्तिम पाठ---

सबत समहसे घस्तीस, नाम प्रमोदा ब्रह्माबीस, बमहून विद पार्च रिबदार, प्रश्लेष ऐन्द्र जोग सुधार । , बहु चरित्र पूर्ण जब भयो, प्रति प्रमोद कविता चिन ठयो, यह जिनदत्त चरित्र रसान, तामै भासी कथा विशाल । भव्यकजन गढियो चितुताह

भव्यक्तभा पाढवा। पर्युताह पठत मुनत सम्मक्त्व ढिठाई । धर्म विरुद्ध छन्द करि छीन, ताहि बनायो पम्यो परबीन । सब्य हेत मैं रच्यो चरित्र, मुनी मच्य चित्र दे वृष मित्र । याकै मुनत कुमति सब जाइ, सम्मक्विटिट पुत्र होर माइ ।।६४।। याकै मुनत पुष्प की वृद्धि, याके सुनत होरे ग्रह गिर्द्धि । याति मुनी मध्य चितलाइ, याके सुनत पाप मिट जाइ । याति मुनी मध्य चितलाइ, याके सुनत पाप मिट जाइ । याहि सुनत सुन्न सम्मति होई, याती मुनत रोग नहीं कोइ । याकै सुनत दुन्न मिटि जाई, याके सुनत सुन्न होई माइ ।।६६।। मर नारि मन के सुनी, ताको जसु तिलोक में मर्ग मो ।

# छप्पै

म्या सागर मेर लोट आसपति मंया।
आहा। विषयु महेत तोच निधि गोरी झगा।
ओतो जिनवर धर्म तागा शुक्र सकत सोभा।
जो ती तिहा प्रव यह श्री जिनदत्त चरित।
विश्व मृत्या भाषा करी मुनियो मेलिजन मित्त।।
विश्व मृत्या भाषा करी मुनियो मेलिजन मित्त।।
६८।।
सिथ्य मृत्या थी।

३३४६. प्रति सं०:२ । पत्र स० ७८ । आ० ११×५ इचा। लै० काल स० १६२३ चैत बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पंचायती मदिर करौली ।

विशेष-सोमचन्द भोजीराम भग्नवाल जैन ने करीली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३३४७. प्रतिसं० ३ क्षापत्र स० ४२ । मा० १२३ ४४ ई इन्ता लेश्काल 🗴 । पूर्णा विष्टन स० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वैर ।

३३४८. प्रतिसं० ४ । पर्क सं. १०४ । घोर्ल ६२.४४ई इका लेक काल स०१८७४ झगहन बुदी १० । पूर्ण । वेक संबद्ध/८ ∜ अस्तित स्थान स्थिलिक सम्बद्ध समामणी करोली । विशेष-वजलाल ने गुमानीराम से करीली में प्रतिलिधि करवाई थी।

े ३३४८. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ७१ । ले०काल स० १००० चैत शुदी ११ पूर्ण । बेष्टन सं० ३६० । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचार्यनी मन्दिर भरतपुर ।

३२४०. प्रति सं०६। पत्र स०८७। ले०काल × । पूर्णं। वेष्टन स०३६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

**२२४१. प्रतिसं० ७ ।** पत्रतः ४१ । प्रा०१३ ४ ६<sup>9</sup> इच्च । लेकाल स० १६५६ धासोज बुदी ४ । पूर्ण । बेपून स० ६३/८ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन पनायती मन्दिर, खनवर ।

**३३५२. जिनदस्त चरित्र भाषा—कमलनयन ।** पत्र स०६६। ग्रा०१०१ × द**ःव।** भाषा--हिन्दी। विषय कथा। र०कारा म०१६७०। लेकाल × । पूर्ण। वध्न स०२८३। **प्राप्ति** स्यार;— (०दि० जैन मंदिर क्रजमेर।

विशेष-- ० ७ ६ १

गगन ऋषीश्वर रध्यपुनि चन्द्रतथा परमान । सब मिल कीजे एक हे सबतसर पहिचान ॥

३३५३. जीवन्धर चरित्र —  $\times$  । पत्र सन् १४० । मान-११ $\times$ ४. इन्छ । भाषा — सस्कृत । विषय — चरित्र । जन्मार  $\wedge$  । ले काल सन् १६०४ । पूर्ण । वेस्टत सन् १२४ । प्रास्ति स्थान—दिन् जैन मन्दिर श्री महाशोर वृद्धी ।

३३४८ जोबन्धर चरित्र - गुमचन्द्र । पत्र स०११६ । प्रा०११×४ हे इच । भाषा— सन्द्रता । विषय - चित्र । उचारा स०१६०७ । लेव्काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४४ । प्राप्ति स्थान-म०१६० जेन मन्दिर प्रजनर ।

देने प्रश्न. प्रति सं०२ । पत्रमः वर्षः । सा०१११ × प्रदश्यः । लेवकालः × । सपूर्णः । वेस्टन स०६६ । प्राधित स्थान—ंद० केन अग्रवाल मन्दर उदयपुरः ।

३३४६ प्रतिस० ३ । पप्तक ७६। ग्रा० १२ × ६१ इश्व । से०काल × । पूर्ण । बेटन स० २०६ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर बोरसजी कोटा ।

३३४७. प्रति सं०४ । पत्रस्० ११ । घा०११४४ इ.ख । ले•काल स०१६१४ ।पूर्ण् । वेष्टन स०६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पवायती दनी (टोक)

प्रशस्ति— नवर १९१४ वर्षे कान्युन बुरो द बुधे थी मूनमर्ग बनात्कारमणे सरस्वतीमच्छे कुन्द-हुन्दाचार्थाव्य अद्गुनक थी विजयसीतिहेश तत्त्व भ भ श्री शुनवन्द्र देवालस्य शिष्य आचार्य भी विस्त-कीत्तिस्य क्रिण आहा गोरान उठाव्यं अविश्व प्रदास प्रकेश मीमा राज सुनैवित चरणार्शाव्य अनुरासेत्व्य सकत सःशी वर्तिन राजन प्रमान एवं श्री शिका प्रवाहरणि विराशि सक्तिस्त मुक्त श्रावकत्रन समृत मुद्र गाम्यकत्वादि द्वारण वर प्रतिपालक पर् जीवनकाय द्योगतिति चानुर्यं गुणाल कृतिब्द्ध सदास्य गुवीता प्रतिपालन पुरेगी विराशित गिरामु गिरपुरे जिन पुत्रनाया गळ्द गच्छदिनः बहुमि स्त्रीपुर्यं नित्योत्तस्वै विराशिकी निर्देशित किल नीता वित्तान श्री श्रादिताय चेत्रावन्त्रे हुज्ञान्ये स्ववनांत्रण्या गिर्मासन सम्बन्धी समसी तस्य भाष्य प्रमा नयों मृत प्रचन विजयनवी शयण शिक्ति चर्नुविद्यानवृद्यावार्गिक जनदान महोसक्व वत्रत सतिति विहित-पुत्रव-परस्परा पवितित निज्ञकत्वाकाय पूर्वसम सम्बन्धी औदा तस्य भ्राया जीवादे तमोष्ट्रव कपमाल तस्य मार्नुं स० वयमाल मार्या जयतादे तस्य मगनी पूर्व पुष्पासित पूर्ण तसित त्रलाण तस्त्रमना समुद्रं गरणोष्ट्रा पश तिलकोपमा सीजेन सीता समामाश्राविका अयवंती द्वितीया मगनी मांका निमित्व जीवंचर वरिष्ठ मारुन तिकारण्यत्त कर्मस्वार्य ।

३३५ द्र. जीवन्धर चरित्र—रहुषु। पत्र सं० १८५। धा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इख । माथा— धरफ्रं य । विषय — चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १६५ द्र भावा बुदी ७ पूर्ण । बेस्टन सं• ६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष — ग्रकबर के शासनकाल में रोहितगढ़ दुगें में वालचन्द सिंगल ने मडलाचार्य सहसकीर्ति के लिए पाडे केसर से प्रतिलिप करवायी थी। प्रशस्ति काफी बड़ी है।

३३५६. जोनम्बर चरित्र—दोलतराम कासलोदाल । पत्रस० ६०। मा०१० $\frac{1}{7}\times \mathbb{Q}_2^2$  इच्च । माषा -हिन्दी (पद्य)। विषय—चित्र । २०काल स०१८०५ प्रापाड मुदी २। ले०काल सं०१८०५ । पूर्ण । वेष्ट्रनस०२२०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रध्वाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—स्वय प्रकार के हाथ की लिलि हुई मूलप्रति है। इस प्रथ की रचना उदयपुर धानमडी प्रप्रवाल जैन मन्दिर में सं १८०५ में हुई थी। यह प्रथ सब तक प्राप्त रचनाओं के प्रतिरिक्त है तथा एक सुन्दर प्रबच्च काव्य है।

३२६०. जीवन्थर चरित्र प्रबन्ध- सहारक यशःकीत्ति । पत्र स० २१ । भाषा-- हिन्दी । विषय-- चरित्र । र०काल  $\times$  । ले॰काल स० १८६३ सादवा बुदी १४ । पूर्ण । बेप्टन स० १०७/६१ । प्राप्तिः स्थान-----दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—रितिसारीय में मुरमवाम में चन्द्रप्रमु चैत्यानय में हमडकातीय लघुणालाइ में बाई ज्येही साराचन्द्र बेटी श्री गुजरदेश मुमेई (मुबई) यामे ज्ञानावरसक्तं क्षयार्थ शास्त्रदाना करनाव।

३३६१. जीबन्धर चरित्र—नथमल विलाला। पत्रसं० १०४। मा० १४१८ - १ इत्र । माबा—हिन्दी पद्या विषय—चरित्र । र०काल स० १८३५ कार्तिक मुदी १। ले० काल 🔀 । पूर्व । वेक्तस०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर भेलावाटी (मीकर)।

विषय—गोरखराम की धर्मपत्नी जडिया की माता ने बीर स०२४४२ में बडे मदिर फनेहपुर में चढ़ाया था।

३३६२. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४४ । धा० ६४६ इश्व । ले० काल ४ पूर्ण । बेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मंदिर पार्थनाथ चौगन बूदी ।

३३६३. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६३ । घा० १२ ४६ इन्त । ले० काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनसं० १५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूदी ।

३३६४. प्रति सं०४ । पत्रसं० १६१ । धा० ११ $\frac{3}{4}$  $\times$ ५ $\frac{3}{4}$  इ.च. । लेक्शल imes । पूर्ण । वेक्तसं०१७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पंचायती करौली ।

बिरोष - करौली मे वृथलाल ने लिखवाया था।

३३६५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ११४ । घा० १२×६३ इन्छ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टुन सं०६४–११४ । प्राप्ति स्थान—अ० दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपंथी दौसा ।

विशेष-तेरापंथी विमनशास ने प्रतिलिपि की थी।

३३६६. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ८७ । ग्रा० ११× ५ हे इश्व । ले० काल × । ग्रपूर्ण । बेष्टुन स० १३४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा ।

विशेष -दौसा में प्रतिलिपि हुई थी।

३३६७. प्रतिसं०७ । पत्र स०१०४ । ले० काल सं०१९३२ । पूर्णावेष्टन सं०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

३३६८. प्रति संव ८ । पत्र स० २१३ । प्रा० १३ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इचा । लेक्सल संव १८६६ भदबा सबी ८ । पूर्ण । बेस्टनस० १०/६ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर सौगानी करौली ।

३३६६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १३७ । घा० १३×६ इच । ले०काल सं० १८३६ मादवा बुदी ३ । बपूर्या । बेपून स० ६० । प्राप्तिस्थान - दि० जैन पचायती मदिर करोली ।

विशेष--पत्र २ से ४६ तक नहीं है। नयमल विलाला ने अपने हाथों से हीरापूर मे लिखा।

३३७०. प्रति सं० १० । पत्रस० १८४ । घा० ११ है 🗴 ४ ैइन्ड । लेब्काल सं० १८३६ भादवा इदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

> विशेष - सवत् प्रष्टादस सतक गुनतालीस विचार । भादो वदी तृतीया दिवस सहसरस्म वर बार ।। चरित्र सुलिस पूरन कियो हीरापुरी मक्तार । नषमस ने निजकर थकी. धर्म हेत निरवार ।।

३३७१. प्रति सं० ११। पत्रस० १३० । ले० काल स० १८११। पूर्ण । बेष्टन सं० ६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचावती मन्दिर हण्डावालो का डीग।

विशेष-गोपालदासजी दीघ (डीग) वालो ने ब्रागरे मे प्रतिलिपि कराई थी।

३३७२. प्रति सं० १२ । पत्रसं० ११ - १४६ । म्रा० १२  $^{1}_{2}$  ४७ $^{2}_{3}$  इञ्च । से०काल  $\times$ । म्रपूर्ण । वेष्टनस० ७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायती मन्दिर बयाना ।

३३७३. प्रति सं०१३। पत्र स०१२७ । प्रा०१३imes१३ इन्छ । ले० काल स०१८६७ भारवा मुदी ८ । पूर्णा । वेल्टन स०४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष---प्रालमचन्द के पुत्र लिमानंद तथा विजयराम खडेलवाल बनावरी गोत्रीय ने बयाना में प्रतिविधि की । हीरापुर (हिण्डोन) के जती बसल्त ने बयाना में प्रतिविधि की की थी ।

३३७४. प्रति स० १४ । पत्रस० १४२ । प्रा० १२  $\times$  ६  $\frac{3}{7}$  इन्छ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनस० १२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर बयाना ।

विशेष - प्रशस्ति वाला ग्रतिम पत्र नही है।

२२७५. प्रतिसं०१६ । पत्रस० १२६ । घा० १२५  $\times$  ७३ इचा। ले० काल १९६६ चैत्र बुरी ५ पूर्स । बेहनसं० ४८० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन, मदिर लक्षर जयपूर ।

वियोज - बद्रीनारायरा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

३३७६: प्रतिसं० १६ । पत्रसं० ८४ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्णं । बेष्टनसं० ७८१ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन प्रथायती मंदिर मरतपुर । ३३७७ प्रति सं०१७ । पत्रतः १४६ । घा० प्रे×६१ इवा । ले० काल × । पूर्णं। वैक्रनसं०७ । प्राप्ति स्थान - दि०वैन स्रग्रवाल प्रवासती मदिर घलवर ।

**३२७ ८. प्रति स०१ ८।** पत्र त० १११। ग्रा० १२४ म इञ्चाले ककाल १६६२ भा**दवा इटी १**३। पूर्णावेहन स०६४ २०४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर अलवर।

३३७६. प्रति स० १६ । पत्रतः ११७ । ले०कालस० १६६८ मर्गामर बुदी ६ । पूर्णं । बेष्टनसं० ६४/२०४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पणायती मन्दिर ग्रन्वर ।

३३८०. प्रति स० २०। पत्र स० ६७-१०७। घा० १२४८ ६०च । लेक्काल ४ । अपूर्ण । वैकृत स० द४।। प्राप्ति स्थान → टि० जैत महिरर कोट्ये। का नैस्पृया ।

**३३८१. प्रति स० २१ ।** पतस्य १२० । बा० १३<sup>3</sup> ४६<sup>1</sup> उष्टव । ले०काल स० १६०५ । पूर्ण । बेप्रनस्य ४७ । **प्राप्ति स्थान**- तेरहपुषी दि० जैन मस्टिर सैगाना

३३६२ सारकुरास्चरित्र— गुरदात । प्रस्तुः ६२ । आपः १० ४४ । इत्र । आपा— सपक्षं श । निप्त— अभित्र । प्रस्तुत्र ४ । सेव्याल सं० १६२४ । स्रपूर्ण । बेहुनस० १४१ । प्रास्ति स्थार— किंद्र के प्रसिद्ध किंद्रा को कामा ।

३३म३. प्रतिसंत २ । यह सन ६६ । प्रारु २०४६ एवा । लेकाल मन १४६४ फाल्युस हुदी १४। एमा १८५ मन २०१ । प्राप्तिहस्याम— पिरु जैन मन्दिर देशानाजी नाम। विकोय- विकास प्राप्त में देशकासको सोनाएकारे मास बीकेंग एकती ठूलो छापन विवासितम् ।

३३ - ४ . प्रतिस्त ३ । पनतः ३ - ४० । आः १० १४ ४ १० व । लब्बाल ८ । प्रपूर्णः । वेषुन संक १४ । आस्ति, स्थाने - प्रदानकील दिव्योग मन्दिर अजनेरः ।

विशेद-पादि ग्रन्त भाग नहीं है।

३६६५. % मिचरिट—महाकवि दामोदर । पनतः ६२ । या० ११ × ५ ६व । भाषा— धपम्र श । निपन-६११व । ०७३४ × । ते०कात × । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० २६ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन सदिर तेक्ट्रवी दोशा ।

विशेष--- ६२ में आगे पत्र नहीं है।

३३८६. त्रियध्टिशलाका पुरध्चरित्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्रतः १६-११७ । आपा— सस्द्रतः । विपय—चन्त्रित्र । २०६६। ४ । ले॰ काल ४ । ध्यूष्णं । बेष्टन सः ६६ । प्रास्ति स्थान— सेरहयथो दि॰ जैन मन्दिर बसवा ।

३३८७. **दोपालिका चरित्र —** × । पत्र स०४। घा०६×४} इच्या भाषा–सस्कृत । विषय — चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०५२४ । **प्राप्ति स्थान**—सहारकीय दि० जैन मन्दिर अजभेर ।

विशेष--मुनिशुभकीति लिखितं।

३३८६. बुधंट काव्य × । पत्रतः ६। ग्रा० ११ र ४ ६ व । माषा — सन्छतः । विषय — काव्य । २०काल × । लेश्काल × । वेष्टन स० ३१४ । पूर्ण । प्रास्तिः स्थान — वि० जैन मदिर, स्थान एत

३३६०. **धन्यकुमार चरित्र-गुराभद्राचार्य** । पत्र सं०४० । घा० ११४४ इच्च । भाषा— संस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनस० ६८ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टारकीय वि० जैन मन्दिर स्रजभेर ।

३३६१. प्रतिसं०२ । पत्र स०६३ । आ०११×४६च । ले०काल स०१४६५ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्णः । देष्टन स०२१ या प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर दीकानजी कामा ।

विशेष —देवनाम नगर मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे श्री सूर्य सेन के राज्य में व श्री रावत दैरसङ्ग के राज्य में काकृतीकाल गोत्र वाले साठ फौरात तथा उनके वशकों ने प्रतिनिधि करायी थी।

३३६२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४२ । प्रा० ११ 🗙 ४ इश्वः । ले०काल स० १४६४ । पूर्णं । वेष्ट्रत स० ७६/३२ । **प्राप्ति स्थान**— पार्थलाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरनढ (कोटा) ।

विशेष---प्रशस्त निम्न प्रकार है---

सवा १९८५ वर्षे ज्येष्ठत्वी १९ वृहस्पतिवासरे श्री मृतसर्थे नद्यास्ताये सलारकारमधी सरस्वतीपच्छे कुंदणुदाचार्यास्त्रे प्रष्टाच श्री पर निर्देशस्त्राष्ट्रे स० श्री कुंप्यर देवासदास्त्राचे ६ टेर तस्त्रास्त्रे काचा बावनाश्चित्राच देलार ह्यार्थे ६.६ सि.स.च नाचू डि. स्टह तृत्ये यागा । नाचू प्राची नदराश्ची द्विनेमा तृत्युत्त प्रमा । शन्त्रा शर्मा नारस्ये । स्टार वर्षे प्रस्ति चित्रे । नाचू इद बास्त्र निलाप्य सण्डाचार्ये श्री धर्मचार्यं वत्ता । यह प्रस्तक इत्याव सदिय की है।

३३६३. प्रतिस्त ४ । पत्र स०४४ । घा०१० $\frac{9}{3} \times \frac{9}{3}$  इच्या । ले० काल स०१६७६ भादवा सुदी २ वेष्टन स०१६६१ । प्रास्ति स्थान  $\cdot$  दि० जैन महिर लस्कर ज्ञयुर ।

िस्शोष – जहांगीर के राज्य में चम्पावती नगर मे प्रतिलिपि हुई । प्रशस्ति दिस्तृत है ।

३२६४ प्रतिसं० ५ । पनत० ४० । घा० ६ $\times$ ४ इच । भाषा—मस्कृत । वियय —चरित्र । र०काल  $\times$  । ते०कालस० १५६२ ज्येष्ठ मृदी १० । वेष्टनस० १६३ । प्राप्ति स्थान—दिगम्बर जैन मन्दिर सकर, जयपूर ।

विशेष — हरू नपुर नगर के ने मिलिन चैरयालय मे श्रुतवीर ने प्रतिलिपि की ।

३३६५. प्रतिसं०६ । पत्र स०४१ । छा०११×५ इंच । ले०काल सं०१६०५ माह बुदी ६ । वेष्टन स०१६० । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष —लेखक प्रगस्ति विस्तृत है। तक्षक गढ़ में सोलकी राजा रामचंद के राज्य मे श्रादिनाथ चैरयालय मे श्रातिलिप हुई।

३३९६. घन्यकुमार जरिश्र— सकसकोति । पत्र स १६। ग्रा० ११  $\times$  ४ $^2$  १२ । भाषा— सस्त्रत । विषय—चरित्र । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १६७३ । पूर्ण । वेप्टन स० ६४२ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३३६७. प्रति सं० २ । पत्रसं० १३ । ले॰कास × । पूर्णः । बेष्ट्रनसं० ४०३/४७ । प्राप्ति स्थान—सभवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर । ३३८८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २४ । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४०४/४८ । प्राधित स्थान---सभवनाथ दि० जैन सन्दिर उदयपुर ।

३३६६. प्रतिसं $\bullet$  ४। पत्रसं $\bullet$  ४३। ले॰काल  $\times$ । पूर्णं। बेहन सं $\bullet$  ४०४/४०। प्राप्ति स्वास-संगवनाय दि॰ बैन मन्दिर उदयपुर।

३४००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २-३४ । लेक्सल × । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ४०६/४६ । प्राप्ति स्थान — सभवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

३४०**१. प्रति सं० ६ ।** पत्र सं० ७० । म्रा० ११  $\times$  ५ $\frac{1}{7}$  इन्त । ले० काल  $\times$  । बेण्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

३४०२. **प्रतिसं०७ १** पत्रसं०५३ । झा०१०×६<sup>2</sup> इल्बा । ले० काल स०**१**८६७ । पूर्ण । वे० सं०३८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर फ्रांभिनन्दन स्वामी बंदी ।

विशेष--वंदी में पं॰ नन्दलाल ने प्रतिलिपि की ।

३४०३. प्रतिसं० मा पत्र स० ४१। आ० १०३४४३ इखा। ले० काल स० १६६७ पूर्ण । केप्टन स० ममा। प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी, बुंदी।

विशेष-चंपावती मे ऋषि श्री जेता जी ने प्रतिलिपि करवायी।

३४०**४. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० २० । ग्रा० १३×५ हे इख । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । बेष्टन स०६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्खनाथ बृंदी ।

विशेष --वृन्दावती में नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की गई।

३४०**४. प्रतिसं० १०।** पत्र स०४२। झा०१२४६ इखा। ले० काल ४। पूर्णं। वेष्टन स०११७। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर पास्त्रनाथ चौगान वृदी।

३४०६. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ६-४० । ब्रा० १२ $\times$ ५ $^{\circ}$  इख । लेक्काल सं० १७४० माघ सुदी  $\times$  । पूर्ण । बेष्टून सं० २१३ । प्राप्ति स्थान—पार्यनाय दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

३४०७. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ३७ । झा०१२ 🗡 ६ इव । ले०काल सं० १७६८ फागुण सुदी १२ । पूर्णा वेष्टुनस० ६८ । प्राप्ति स्थान वि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टॉक)

विशेष--प० केशरीसिंह ने सवाई जयपुर मे लिखा।

श्रन्तिम प्रशस्ति—पातिसाह श्री महम्द साह जी महाराजाधिराज श्री सवाई जयसिंह जी का राज में लिखो सागा साह के देहरी जी मध्ये प० बालचंद जी के शास्त्रमुं उतासी छूँ जी।

३४०**८. प्रतिसं० १३।** पत्रस० ४७। आ० १०३ × ४ इच । ले०काल स० १८५८ जेष्ठ वटी १३। पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ८५। **प्राप्ति स्थान** - दि० जैनमन्दिर वोरसली कोटा।

विशेष -- प० शम्भुनाथ ने कोटा में लिखाया।

३४०**६. प्रतिसं० १**४ । पत्रसं० ६० । ले०काल स० १७४२ वैसाल बुदी २ । पूर्ण । बेष्टुनसं० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-कनवाडा नगर मे प्रतिलिपि हुई।

३४१०. प्रतिसं०१४,। यत्र सं०३०। आ०११४४ ६°व । ले०काल सं०१८२ श्रावसः सुदी २। पूर्णः। बेष्टन सं०४७-३०। **प्राप्ति स्थान-**--दि० जैन सन्दिर बड़ा बीसपंपी दौसा।

विशेष-देवपुरी में प्रतिलिपि हुई।

**३४११. प्रतिसं०१६** । पत्र सं०४२ । सा०११<sub>२</sub> × ४२ इचा। से०काल सं०१६३४ पूर्णं । बेष्टुन सं०१२४-४७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हंगरपूर ।

प्रशस्ति - संवत् १६३१ वर्षे भासोज बुदी ४ शनी श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगरो सद्दारक श्री कुंदकुदाचार्यांच्ये भट्टारक श्री सकलकीर्ति तत्पट्टे म० श्री बसकीर्ति तत् शिष्य मडलाचार्य श्री गुराचंद्र तत् शिष्य भाषार्यं श्री रत्तचद्व तत् शिष्य बहा हरिदासाय पठनार्यं ।

३४१२. प्रति सं ०१६। पत्र स०२४। घा०१२ $\frac{3}{7}$  $\times$ ६ इवा। ले॰काल स०१८७१। पूर्ण। वे॰ स०४३-२४। प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर कोटिंबयों का हंगरपर।

विशेष-- लिखी भरतपूर माह मिती जेठ नदी १ नार नीसपतनार सनत १०७१।

३४१३ प्रति सं० १८ । पत्र स० ४५ । म्रा० ११ $\times$ ४ $^2_2$  हवा । ले०काल स० १७२८ पूर्ण । वेष्ट्र स० ४८–३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वारपुर ।

प्रशस्ति-स० १७२८ वर्षे श्रावरा वदी ४ । शनी रामगढ मध्ये लिखीत ।

भ० विजय कीति की यह पुस्तक है ऐसा लिखा है।

३४१४, घन्यकुमार चरित्र—का नेमिदस । पत्र स०२४ । ग्रा०१०है ४४ है इस । प्राचा—संस्कृत । विषय—चरित्र । ट०काल ४ । लेकाल स०१७०२ चैत्र सुद्धी १ । पूर्ण । बेहन स०४१३ । प्राप्तिः स्थान—भ०दि० जैन मदिर ग्रजनेर ।

३४१४. प्रतिसं० २ । पत्रस० २३ । घा० १० ४ ६ इच्छ । **ले०काल** ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ८५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

३४१६. प्रतिसं० ३। पत्रस०२०। प्रा०१२ $\times$ ५ इखा। लेक्कास स०१४६६ वैशाख मुदी ७। पूर्ण। वेटन स०३१८। प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन सन्दिर ज्वयपुर।

विशेष-प्रति जीसं है।

३४१७. प्रतिसं० ४। पत्र स० २४। म्रा० ११३४ ४३ इश्व। ले० काल स० १७२६ मासीज बुदी १४। वेग्टन स० १४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

विशेष - बालकिशन के पुत्र जोसी नायू ने कोटा में महाबीर चैत्यालय में प० बिहारी के लिए प्रतिनिधि की।

३४१८. प्रति सं० ४ । पत्र स० २६ । आ० ६ $\frac{1}{2} \times 4$  दश्व । ते•काल स० १७६३ माघ बृदी ५ । वैष्टतस० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — फलायनगर के पार्थ्वनाथ चैत्यालय में क्रा॰ टेकचंद्र के शिष्य पाण्डे दया ने प्रतिलिपि की।

३४१६. प्रतिसं०६। पत्र स०४३ । घा०६४४१ इखा । ले० काल सं०१७२४ मगसिर बुदी ४। बेष्टन स०१६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—्रीडौली नगर के पाव्यंनाथ चैत्यालय से श्री आधार्य कनककीत्त के शिष्य प० रायमस्ल ने स्वयंत्रायं प्रतिनिधि की ।

३४२०. प्रति सं०७ । पणसं०४१ । धा० ६२४४ देवच । ने० कालस०१७७१ । पूर्णः। वेष्टासं०४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैव सन्दिर पार्चनाय कृती ।

विशेष---धंवावती में प्रंय तिक्षा गया था । भ० तरेन्द्रकीर्ति की धास्त्राय में हमीरदे ने ग्रंथ निकवाया । ३४२**१. प्रति सं० ⊏ ।** पत्रसं∘ २७ । धा० १० ४ ४ है इचा। ले॰ काल सं० १७०३ पौष बुदी १२ । पर्गा। बेहन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन प्वायती मन्दिर दूनी (टोक) जीर्गा।

विशेष - बहा मतिसागर ने स्वयं श्रपने हाथों से लिखा।

३४२२, प्रतिसं०६। पत्र स०१८। ग्रा०१० ९४४ इ.च. । ले० काल स०१६६८ पूर्ण । वेपन स०१४८-७०। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटिंडयो का द्वारपुर ।

प्रशस्ति—जबन् १६६६ वर्षे कार्तिक मृदि २ रबी प्रतापपुरे भी नेमिनाय वैत्यालये महारक श्री बादिभूरण नन्मोग्य प्रावाये श्री जयकीति तस्त्रीय्य ४० सदराज पठायं उत्तरवर गोत्रे सारु ख्राख्य मार्यी कामका नन्भो दुन सारु सतीय तस्य भायां जयती दि० पुत्र श्री वत तस्य भायां करमहती एते स्व ज्ञानावर्णी कर्मा क्षायां

३४२३. **धन्यकुमार चरित्र — भ० मिल्लिनूचर्गा ।** पत्रस०२० । ब्रा०११ ×५ इन्त्र । भाषा सम्बन्धन । किया — चरित्र । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रनस०२३६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन भदिर पार्थनाय चौगान बूदी ।

विशेष--- त्रति प्राचीन है।

३४२४. घन्यकुमार चरित्र —  $\times$  । पत्रतः  $\times$  । छा० १२ $\times$  $^1$  इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय — चित्रत । २०काव  $\times$  । ते०काव  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्ट्रनसः १७=/५३ । प्राप्तिः स्थान — पार्थनाय दि० जेन मिर्टर स्थार (कोटा) ।

३४२**५. बन्यकुमार चरित्र – कुशालचन्य काला ।** पत्रतः ४०। आरः ११४४ । इत्त्व । भाषा – हिन्से । जिप्य – चरित्र । र०काल 🗙 । लेक्काल म० ११५७ । पूर्ण । वेय्टन स० १४४१ । **प्राप्ति स्थान** नदारकीय दि० जैन मन्दिर श्रवसेर ।

३४२६. प्रतिस० २ । पत्र स०४२ । ग्रा०११ े्×=ॄै इश्वः । ले० काल × । पूर्या । बेष्टन स०३४ । प्राप्ति स्थान --भट्टारकीय दिः जैन मन्दिर श्रजमेर ।

३४२७. प्रति सर्वे । पत्रतः ६१। श्रा०१०ॄै ४५ॄै इका ले∘काल ४ । पूर्णावेष्टन स०२०। प्रक्ति **स्थान** — तेरहवत्री दि० जैन मदिर नैस्पता ।

विशेष-- ग्रतिम पद्य निम्न प्रकार है --

चद कुशाल कहै हित लाय,

जे ज्ञानी समभै निज पाय ।

सुधातम लो लावत भ्रान,

श्रमुभ कमं सब ही मिट जात ।

प्रारभ के तथाबीच २ के कई पत्र नहीं है।

३४२**०. प्रतिसर्वर ।** पत्र सन्४२। घा०६९९४ इचा। ले० काल स०१६७६। पूर्णा। बेष्टन स० २०। **प्राप्ति स्थान**—प्रवताल दि०जैन मन्दिर नैस्पता।

३४२६. प्रति सं० ४ । प्यत्न०३४ । षा० १२) ४ ६ १ इ.स. । लेक्काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर कोटलो का (नैग्ग्बा)

३४३० प्रतिसंक ६) पत्रसः १७ । भाग ११ 🗶 १ इस । लेक्सल सं ८१६०३ । पूर्ण । वेष्ट्रत सं ०६६ । प्रास्ति स्थान —दिक जन मदिर, पत्रायती दूर्गी (टीक) ।

३४३१. प्रति सं०७ । पत्रसं०३१ । ग्रा०११×५ इश्वः । ले० काल × । पूर्णः । बेहन सं ६१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मदिर तेरहपंथी मालपूरा (टोक)

३४३२. प्रति सं० व पत्र स०१६ । घा०१०१ ४५ इंच। ले० काल ४ । घपुर्ण। बेब्रन सं २३८ । प्राप्ति स्थान-दि जैन मंदिर राजमहल टींक ।

३४३३. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६६ । घा० १०१ × ५१ इ.च । ले० काल स० १८६२ फागन सुदी ७ पूर्णः । वेष्टन स०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल टोंक ।

विशेष - धमीचन्द के लघु आता आयचन्दजी ने राजमहल के चन्द्रप्रम चैत्यालय में ब्राह्मण सूख-लाल बाम टोडा से प्रतिलिपि करवाई।

३४३ ड. प्रति सं० १०। पत्र स० २६। ग्रा० १४×७} इंच। ले० काल स० १६०७ मादवा ब्दी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मदिर श्री महावीर बूदी ।

३४३५ प्रतिसं०११। पत्र स०६३। ग्रा०१०×७ इ.च। ले०काल स०१६५५। बेहनसं० २२२ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मदिर नागदी बुदी ।

३४३६. प्रतिसं० १२। पत्र स० ६६। आ० ६३ ×४३ इच। ले० काल स० १=७४ सावन सूदी १५ । पूर्ण । वेप्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर करौली । विशेष-नेमीचन्द्र ने गुमानीराम से करीली मे प्रतिलिपि कराई।

३४३७. प्रति सं०१३ । पत्र स०४१ । ग्रा० ६ रे×६ इंच । ले० काल सं०१७०० बैशाख सुदी १। पूर्ण । बंग्टन स० ७३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पचायती मंदिर करौली ।

विशेष -- प्रवावती नगरी मे प्रतिलिप हुई ।

३४३ द. प्रति सं०१४ । पत्र स० ६४ । ब्रा०६×४० देव । ले० काल सं०१८१६ माध शीर्षस्दी १३ । पूर्णावेस्टन स०१ ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर क**ौ**ली।

३४३६. प्रतिसं०१४ । पत्र स०४५ । आ०१३ ४ ६० इला। ले० काल स०१८८७ ग्रवाड सुदी = ।। पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर करौली ।

३४४०. प्रतिसं० १६ । पत्र सं० ३४ । ले० काल 🗶 । पुर्ण । वेस्टन सं० १७ । प्रास्ति स्थान-दिः जैन पचायती मदिर श्रीगः।

विशेष - करौली मे प्रतिलिपि हुई। मन्दिर कामा दरवाजे का ग्रन्थ है।

३४४१. प्रति सं०१७ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेप्टन सं० १६ । प्राप्ति स्थान -- दि॰ जैन पचायती मन्दिर शीग ।

३४४२. प्रति सं०१ दा। पत्र सं० ४०। धा० ११× द इ.च। ले० काल सं०१६२१ फागुन षुदी ३ । पूर्ण । वे० स. ० ३१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

दे४४३. प्रतिसं०१६ । पत्र सं०३४ । घा०१२ रें ४६ ड्रेंडचा । ले० काल० ४ । पूर्णी। वेष्टन सं० ४० । **प्राप्ति स्थान—**्दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

३४४४. प्रति सं० २०। पत्र सं० ५४। ग्रा० १० ४६ इचा। ले० काल सं० १६१२। पूर्ण ३ वेष्टन स॰ २४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

३४४४. प्रतिसं० २१ । पत्र स० ३४ । ग्रा० १४ ×२ १ इच । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ४४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन ग्रवसल पद्मायती मन्दिर जनवर ।

३४४६. प्रतिसं० २२ । पत्र स०६३ । बा० १०४६ इचा। ले० काल स० १६०७ वैशाख सुदी २ । पूर्ण। वेष्टून स०४७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन ग्रप्रवाल प्वायती मदिर ग्रनवर।

३४४७. प्रतिसं० २३ । पत्र स०६६ । ब्रा०६ $^1_1 \times ^2_1$  इन्छ । ले० काल स०१६४१ । पूर्सं । वेष्टन सं० ६४ । प्रास्ति स्थानः — दि० जैन ब्रग्नवाल मन्दिर ब्रलवर ।

३४४ द. प्रतिसं० २४ । पत्र सख्या ४४ । स्ना० ११३ imes १५ इख । सखन काल imes ।पूर्ण । बेक्टन स० १४, १०५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर ग्रनवर ।

३७४६. प्रतिसं० २५ । पत्रस० ३६ । ले० काल  $\times$  । ब्रदूर्गः । थेष्टन स० १५/१०४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचासती मन्दिर ब्रलवर ।

३४ ४० प्रति सङ्घा २६ । पत्र स० ३६ । ले० काल 🗴 पूर्ण । वेग्ट म० ३६७ । प्राप्ति स्थान — ४० जैन पचायती मदिर भग्तपुर ।

३४५१, प्रति स० २७ । पत्र स० ५२ । लेखक कालimes । पूर्ण । बल्टन स० २६ । प्रास्ति स्थान—दि, जैन तेरङ्गधी मदिर बसवा ।

**३४५२ धन्यकुमार चरित्र वचनिका**— × । पत्र स०३४ । या०१०, : १ै, :च। भाषा-हिन्दी । विषया—चित्र । र०कारा × । ले० काल × । पूर्ण् । वेग्टन स० १४४६ । प्रार्टि, स्थान — मद्रारकीय दि० जैन मदिर क्रजमेर ।

३४५४. धः कुमार चरित्र भाषा $\times$ । पत्र सण्या २३। धा० ११ - ६०४। भाषा - हिची। विषय—र्गर्य । २०१८ -  $\times$ । से० काल ग० १६६४ मात्र गुदी १२। पूर्ण । भेष्टन म० १६। प्रास्ति स्थान—रि० जैन भेदर दीजान चेननदास पुगनी डीग ।

३४५**५. घरमकुमार चरित्र माया**— ४ । पत्र सँग्या १०० मा० ७ ४७ १०० आपा हिस्दी । मिरा । अस्ति । स्वकार × । पूर्ण । ते० काल स० १८१० । यहनस० १२ । **प्रास्ति स्थान** दि० जैन प्रपत्नी महिर कामा ।

३४४६. धर्मदत्त चरित्र — दयासागर सूरि । पत्र त० १-१७ । बा० १०४% इच । भाषा—हिन्दी । विषय परित्र । १०काल ४ । ने०काल ४ । क्यूगुं। बेट्टन त० ३४४ । प्राप्ति स्थान—दि जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

३४५७. थर्मदत्त चरित्र—माशिष्यमुन्दर सूरि । पत्र स० १० । प्रा० ११४४ इच । भाषा—सस्हत । विषय—चित्र । ८०कात ४ । ते० कात स० १६६६ ब्रामोज सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन सं०१४६। प्राप्ति स्थान दि० जैन मदिर राजमहत टोक ।

विशेष — माणिक्यमुन्दर सूरि घाचार्यमेस्तुग सूरि के शिष्य थे। लिखित गुणसागर सूरि शिष्य ऋषि नाषू पठनार्थकसराणापुर मध्ये। ३४५८. धर्मशर्मान्युतय — सहाकवि हरिचन्द । पत्र संख्या ६६। घा० ११४४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय —काव्य । २०काल ४ । ते० काल स० १५१४ । पूर्ण । वेष्टन स० २८६/१४ । प्राति स्थान—रि. जैन समननाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रतिप्राचीन है। पत्र केवी से काट दिये गये है (ठीक) करने की।

प्रशस्ति—सबन् १४१४ वर्षे घाषाठ मुदी ६ गुरौ दिनं घोषाविले वृक्षे औ चन्द्रप्रभ चल्यानये श्री मूलसचे बलात्कार गयो सरस्वती गण्डे श्री कु दकु दालार्यान्वये भट्टारकीय श्री प्रधनदिदेवा तत् भिष्य श्री मदन क्रीतिदेवा तत् भिष्य श्री नवरणानदिदेवा तश्रिमन इद पुस्तक हु वडजातीय श्रावकीः लिखान्यदत्तं । समस्त प्रभीष्ट भवतु । भ०श्री ज्ञानभूषण तर् शिष्य मुति वेशी विचातकीति पठनाषं । प०पाहृना समस्ति ॥ भ०श्रीष्टभवटदेवा तत् शिष्य देव श्रीपाल पठनाष्टं यदत्त ।

३४५६ प्रतिस०२ । पत्र सक्ष्या ११२ । म्रा०१०×४ इच । ले० काल × । पूर्ण। वेष्ट्रत सक्ष्या २६२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

३४६० प्रतिसं०३ । पत्र स०६४ । झा०१०} ४४ १६२व । ले० काल ४ । सपूर्ण । जोगं। बेहन स०७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौना ।

विशेष-४६ पत्र तक सस्कृत टीका (सक्षिप्त) दी हुई।

३४६१. धर्मशर्माम्युवय टीका – यशःक्रीति । पत्रतः १६२ । प्राः १३ $\frac{1}{2}$  ४ इञ्च । भाषा — सस्क्रत । विषय — काल्य । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७० । प्रास्ति स्थान — म० दि० जैन भट्टाकीय मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष - धर्मनाथ नीर्थंकर का जीवन चरित्र वर्णन है।

३४६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ७४ । ले०काल 🗴 । श्रपूर्णः । बेष्टन स० ११७१ । प्राप्ति स्थान---भट्टारकीय दि० जैन मस्टिर श्रजमेर ।

३४६३. प्रति स० ३ । ण्यस० १११ । ले०काल स०१६३७ । सावरा सुदी ७ धपूर्ण । वेष्ट्रनसं० १९७२ । प्राप्तिस्थान भट्टारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमर ।

विशेष-- प्रजमेर के पार्श्वजिनालय मे प्रतिलिपि हुई। २१ सर्ग तक की टीका है।

३४६४. प्रति स० ४ । पत्रस० १८८ । या० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{1}{2}$ इका लेक्काल  $\times$  । श्रपूर्ण । बेष्टन स० २२२ । प्रास्ति स्थान $\cdots$ दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३४६४. प्रति स० ५ । पत्रस० १०२ । बा० १० $\times$ ४  $\xi$  इचा । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेहन स० १४१ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन प्रादिनाथ मन्दिर बु री ।

विशेष - टीका का नाम सदेहध्वात दीपिका है। १०३ से आगे पत्र नहीं है।

३४६६. नलोदय काव्य-कालिदास । पत्र स० २३ । ग्रा० १० $\times$ १ इख । भाषा -सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$  श्रूपूर्ण । वेष्ट्रन स० २३-२२४ । प्राप्ति स्थान -द० जैन मन्दिर नेमिकन्द टोडारायसिंह (टोक) ।

३४६७. नलीवस टीका —  $\times$ । पत्र सं० १-२३। प्रा० ११ $\xi$  × र्र दे भाषा -संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वेष्टन सं० ७६०। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष --- टीका महत्वपूर्ण है।

३४६८ नस्तोबय टीका—रामऋषि पत्र स० ७ । माषा—संस्कृत विषय—काव्य ।र० काल सं०१६६४ । ते० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० ७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर हण्डा— बालो का डीग ।

विशेष-- प्रतिम चकेराम ऋषि विद्वान् बुद्ध कालात्मक जा सुधी।

नलोदयीमिया टीका शद्धा यमक बोधिनी।

रचना स॰ । ४६६ वेदागरस चन्द्राठ्यो वर्गे मासे तु माघवे । शुक्ल पक्षेतु सप्तम्यां गुरौ पुब्ये तथोद्रूनि ।

३४६६. नलोदय काष्य टीका-रविदेव । पत्र स०३७ । ग्रा०१०४४ इथा । माशा-संकृत । विषय—काव्य । र०काल । ले०काल ४ । पूर्णु । बेष्टन स०१३६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृदी) ।

विशेष -- रामऋषि कृत टीका की टीका है।

३४७०. प्रतिसं०२ । पत्र स० ३६ । ले० काल स०१७५१ । पूर्णावे० स१६१ । प्राप्ति स्थात—दि० जैन सन्दिर प्रभिनन्दन स्वासीखुदी ।

विशेष — प्रवावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगर्कीति की ग्राज्ञानुसार दोदराज ने स्वपठनायें प्रतिलिपि की थी ।

३४७१. प्रति स० ३। प्रयत्त० ३१ । म्रा० १११ै ४६ इथा । बेष्टन स० २१४ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — इति वृद्ध व्यासारमञ मिश्र रामपिदाधीच विराचिताया र्गवदेव विराचित महाकाव्य नलोदय टीकाया यमकवी ेन्द्रा ननराज ब्रह्म नाम चतुर्थ आग्वास समाप्त ।

३४७२, नागकुनार चरित्र — मस्लिबेस्पसूरि । पत्र स०२३ । सा०११४४ इस्त । मापा — संस्कृतः विषयः चरित्र । २०कार ४। लेशकाल स० १६३४ । पूर्णः । बेष्ट्रन स० ३८८/१२७ । प्राप्ति स्थान — दि० केन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

(बशेल — प्रकारन निम्न प्रकार १ — सबन् १६३४ वर्षे कागुन बुदी ११ भोमे श्री शातिनाय चैल्या-सर्वे श्री न्द्रशास्त्रम रेन री १८१७ रे बिखा हो भट्टाग्क श्री रामसेनाम्ब्ये भ० श्री मुवनकीति खाचार्य श्री जय-सेन तत् शिष्य म्० कल्यागसीति बद्रा श्री बस्ता विश्वित ।

सबत् १८८४ वर्रे मार्ग शोर्थ बुदी ४. लो शीशीलचन्द्र तत् शिन्यास्मी वाई पोहोनां तथा ब्रह्मा श्री मेघराज तत् शिन्य वर्ण सबजी पठनार्थ ६५ नामकुमार चरित्र प्रदत् ।

२४७२. प्रति स $\circ$  २ । पत्र ग $\circ$  २३ । प्रा $\circ$  २४ ५ १ इख । ले $\circ$  काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स $\circ$  २४४ । प्राप्तः स्थान—दि $\circ$  जैन स्ववाल म $\circ$  २४४ । प्राप्तः स्थान—दि $\circ$  जैन स्ववाल म $\circ$  २४४ ।

विशेष—मुमर्तिकीर्ति के गुरु भाराश्री सकलभूषरा के शिष्य श्री नरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ लिखागयाथा।

३४७४. प्रति स० ३ । पत्र स० २४ छा० ११ १४ ४ १ इखा । र०काल ×ा ले०काल सं∙ १६४४ । पूर्ण । वेटन स० १४६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन इग्राल मन्दिर उदयपुर ।

३४७५. प्रतिसं०४ । पत्रस०२३ । प्रा० ११ रे ४४ हे इथा । ले० काल सं० १६६० । पूर्णे । बेष्टनसं०१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर सम्कर जयपूर । ३४७६. नासकुमार चरित्र — विवुधरत्नाकर । पत्र सं $\sigma$  ३२ । बा $\sigma$  ११३ ४ ६ इव । भावा — संस्कृत । विषय चरित्र । र $\sigma$ काल  $\times$  । ले $\sigma$ काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्ट्रन सं $\sigma$  १३६, १६ । प्राप्ति स्थान – दि $\sigma$  जैन पाधनाय संदिर, इन्दरगढ़ (कोटा) )

३४७७. प्रति स०२ । पत्रस०४६ । घा०६१४४ इञ्च । लेक्काल स०१८८३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२४४ । प्राप्ति स्थाम — दि०जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष--गोठडा मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३४७⊏. प्रति सं०३ पत्र सं० ४२ । बा०११×४३ इ.च.। ले०काल सं०१६६१ फागुरा सदी१५ । पूर्णावेष्टन स०३४ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन व्यप्रवाल मदिर, नैरावा।

विशेष-प० रत्नाकर ललितकीति के शिष्य थे।

३४७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स०४७ । बा० १३ र्×४ इ.च । ले० काल सं०१८७४ चैत सुदी ६ । पूर्णा विषटन स०४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नागदी बूदी ।

विशेष — ब्राह्मण चिरजी ने उिण्यारा मे प्रतिलिपि की थी। पं० निह्यलचन्द ने इसे जैन मन्दिर में रावराजा भीमांसहजी के शासन में चढाया थी।

३४८०. नागकुमार चरित्र—नथमल विलाला । पत्र संग्रंग प्रा० १२४४. इञ्च । भ्रापा—हिन्दी पत्र । विषय —चरित्र । राज्यात साथ १८३७ माह सुदी ४ । लेव काल संग्रंग १८७६ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेस्टन साथ १४६ । प्राप्ति स्थार —दिव जन पत्रावती मन्दिर करीली ।

विशेष - नेमिचन्द्र श्रीमाल ने करौली मे गुमानीराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

३४८१. प्रति सं०२ । पत्र सस्या १०६ । घा०११ ४ ५ इच्छ । ले०काल स०१६६१ फाल्गुन सुदी ⊏ । पूर्ण । वेष्टन स०१६ । प्राप्ति स्थाः,—दि० जैन मन्दिर पार्धनाय चौगान बदी ।

३४ त्र प्रतिस०३ । पत्र स०४ त्। ग्रा०१११ॢँ×५ । से०काल × । श्रपूर्ण् । बेष्टन स० ५६/६६ । प्राप्तिस्थान – दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष -- श्रन्तिम पत्र नही है।

३४८३. प्रति स० ४। पन त० १०७। बा० ११ ४ ४१ । ले० काल सं० १८७६ सावरण सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दोसा ।

विशेष -- मोतीलाल की बहने प्रतिलिप कराई।

३४८४. प्रतिसं० ४ । पत्रतः ७४ । घा० ११३४ ८ इख लेक्सल स०१८७७ द्वि ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्णं । बेटन स०६ । प्राध्ति स्थान—-दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष--जसलाल तेरहपयी ने पन्नालाल साह बसवा बाले से देविगिरि (दौसा) में प्रतिलिपि करवाई ।

३४८५. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ८० । आ० ११३ ×५३ इन्छ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६२/८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर वडा बीस पंथी दौसा ।

२४८६. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ४९-१६ । मा० १०३ ४ ५ ६ खा । क्षे० काल ४ । मपूर्ण । वैद्युत्त सं० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पंथी दौसा ।

विशेष--विम्मनराम तेरहपथी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी ।

३४८७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६४ । घा० १२imes१३ इच्च । ले० काल सं० १८३६ प्र० चेf B सुदी १५ । पूर्ण । बेहन सं०६४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी द्योग ।

विशेष -- १४३७ छंद है।

प्रथम जेठ पुगं गुदी सहस्ररस्म वर वार। ग्रंथ मुलिल पूरन कियो ही गापुरी मकार। नयमली निजकर वकी ग्रंथ लिख्यो घर प्रीत। भूलकूक जो यामें लली तो मुख कीजो मीत।। प्रति ग्रंथकार के हाथ की लिखी हुई है।

३४८८. प्रति सं० ६। पत्र स०६९ । आ०१२४६ इचा। ले० काल स०१८७७ आवाढ कुदी ३। पूर्ता। बेष्टन स०४६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मदिर बयाना।

विशेष--करौली मे गुमानीराम ने ग्रथ लिखाकर बयाना के मन्दिर मे विराजमान किया।

३४८**९. प्रति सं० १०**। पत्रस० ७७। ले॰काल ×। पूर्णं। वेप्टन स० ३६८। **प्राप्ति** स्थान— वि० जेन पत्रायती मन्दिर भरतपुर।

३४६० प्रतिसं०११। पत्र स०५३। प्रपूर्ण। वेष्टन स०३६६। प्राप्ति स्थान---दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

३४६**१. नेसि चरित्र—हेमचन्द्र**। पत्र स०२६। प्रा०१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इखा। भाषा —सन्छन। विषय - चित्र वारक्षाल ×। लेक्काल ×। प्रपूर्ण। 'बेष्टनस०२३६। प्राप्ति स्थान —िय्वर्जन मन्दिर धनि स्वर्गनामी, बृदी।

विशेष -- २६ से ब्रागे पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है। त्रिपिट शलाका चरित्र में से है।

३४६२. नेमिचन्द्रिका माषा— × । पत्र स०२०। ६२ ४६३ । भाषा —हिन्दी पद्य । विषय—विश्व । र०काल स०१८८० ज्येष्ठ सुदी ११। ने०काल स०१८८६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । बेष्टन म०३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिदर सोगाणी करोली ।

३४६३ ने**मिजिन चरित्र – ज्ञ. नेमिस्ता** । पत्र स० ६२ । धा० १२ $\times$ ४ इख । भाषा — सरकत । जियद —चरित्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वृष्टन स ४२७ । **प्राप्तिस्थान**—भ० दि• जैन मन्दिर ग्रज । र ।

३४६४. प्रतिसं० २ । पथस० १७४ । झा० १० $\frac{1}{2}$ ४५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेस्टन स० १२५६ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर स्थान ।

३४६५. नेसिद्भत काव्य — सहाकवि धिकम । पत्र संस्था १३। ग्रा० १०, ४४ हे इश्व । भाषा-सन्द्रतः । थिषा काव्य । २०कात ४ । लेखन काल स० १६८६ कार्तिक बुदी ६ । पूर्णः । बेष्टन स० २४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बन्दी ।

विशेष—र्यात थी कवि विकम मट्ट विरचिन मेघदूता तत्पाद समस्यासपुक्त श्रीमनोमिचरिता— मिघाना बाव्य समाज । स० १६=६ वर्षे कांतिकावित नवस्या ६ प्राचार्य श्रीमद्रस्तकीत्ति तश्किष्येण लि∙ विजयहरूरा ।

पुस्तक प० रतनलाल नेमिचन्द्र की है।

३४६६. प्रति सं० २ । पत्रसं० २४ । मा० १२ रें ४७ इचा । ले•काल स० १८८६ घासीज सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर फतेहपुर वेलांबाटी (सीकर)

विशेष प्रति हिन्दी भनुवाद सहित है।

३४९७. प्रति सं० ३ । पत्रस० १४ । ग्रा० ११×५ैु। ते०काल सं० १६८५ कार्तिक बुदी १ । बेष्टन सं० १५३ । पूर्ण। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मं० सकर, जयपूर।

३४६⊏. प्रति सं०४ । पत्र सं०१४ । धा०१०३ ४ ४३ इश्वा । ले•काल ४ । बेष्टन स∙ १४४ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

३४६६. **नेमिनाथ चरित्र**—  $\times$  । पत्रस्क १०६। आ० १० $\times$ १६खः। भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल । प्रपूर्ण । वेषृतसंक ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (व री)

विशेष --- प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है

३५००. नेमिनाथ चरित्र—×। पत्र सं० ६६ । प्राधा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल×। ले० काल ×। प्रपूर्ण । वेष्टनस० ६१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

३५०१. नेमिनाथ चरित्र— $\times$  । पत्र सं० १०३ । भाषा-सस्कृत । विषय चरित्र । र०काल $\times$ । ले० काल  $\times$  । भापूर्ण । वेष्ट्रन स० ५८७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैनपचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — हिन्दी में अर्थ दिया हुन्ना है तथा नेमिनाथ के श्रतिरिक्त कृष्ण, बसुदेव व जगसिन्य का भी बसाँन है।

३५०२. नेिमनिर्वाग्य-- वास्मृष्ट् । पत्रस० ६३ । प्रा०११ $\times$ ५ इच । भाषा-- सस्कृत । विषय---काव्य । र०काल  $\times$  । से०काल स०१ ५३० वैद्यास बुदी १० । पूर्णे । बेष्टन म०१०७, ५७ । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन पार्यकाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष रामपुरा मे गुमानीरामजी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई।

३५०३. प्रति सं०२ । पत्रस०६६ । प्रा० १२ $\S \times$ ६ इञ्च । ते० काल स० १७२६ कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । देशन स० २०१ । प्राप्तः स्थान-- दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

३.५०४. प्रति स० ३.। पत्रस० ६-६१ । ग्रा० १० ४. ६. इञ्च । ले० काल स० १७६६ । भ्रपूर्ण । बेधन रा० २३७। **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — सबन् १७६८ वर्षे कात्तिक बुदी म मूम पुत्रे श्री उदयपुर नगरे महाराएगा श्री जगर्तासहजी राजवी लिखतद केतसी स्वपनार्थ।

३५०५. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६६ । झा० २ $\times$ ५३ इच्छा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ५७/४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सौगास्त्री करीली ।

३५०६. प्रतिसं० ५। पत्रस० १०६ । मा० ६३ ४४ इ.च. ते० काल स० १७१५ । पूर्ए । वेष्टन सं० २७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भ्रभिनन्दन स्वामी वृदी ।

विशेष स० १७१५ मेरपाट उदयपुर स्थाने श्री प्राविनाय चैत्यालयें साहराज राए। राजीवह विजयराज्ये श्री काश्चासंचे नन्दीतटगच्छे विजयगये मट्टारक राजसेन सोमकीर्ति, यकःकीर्ति उदयसेन त्रियुवन कीर्ति रस्तमूचया, जयकीर्ति, कमसकीर्तिः भुवनकीर्ति, नरेण्डकीर्ति । प० गगादास ने लिखा ।

३५०७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७०। ग्रा० १२ ४ ४ इचा ते० काल सं० १६७६। पूर्णी। वेष्टन स० ४०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोडा।

। **५० ३०४ । प्राप्त स्थान—ाद० जन मा**न्दर बारमला काटा । **विशेष** —सक्तु १६७६ ब्रह्म श्री बालचन्द्रेन लिखितं ।

रे**४०६. प्रतिसं**र ७। पत्र स० ४२। प्रा० १०∮ ४४० इञ्च। ले० काल स० १०४२ ज्येष्ठ बुरी ७। पूर्ण। वेष्टन स० १४४। प्राप्तिः स्थान —दि० जैन मदिर लक्कर अयनुर।

३४०६. **नैषष्ट चंदित्र टीका** —  $\times$  । पत्र त०२ ६ । प्रा० १३  $\times$  ४) इश्व । भाषा — संस्कृत । विषय — काव्य । २०काल  $\times$  । से क्रांत  $\times$  । प्रार्ण । बेटून त० ७४३ । प्रास्ति स्थान—दि० र्जन मन्दिर, लक्कर, जयपूर्र ।

३४१०. **नैवधीय प्रकाश — नर्रासह पांडे ।** पत्र स० ८ । ग्रा० १० ४४ **} इ.स. । आया —** संस्कृत । विषय — काव्य । र०काल × । ते ०काल × । ग्रपूर्ण । वेय्टन स० ४६८ । **प्राप्ति स्थान — दि०** जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

विशेष-प्रति जीएँ एवं श्रपूर्ण है।

३५११. पद्मवरित्र —  $\times$  । पत्र सं॰  $\times$  । प्राः १३ $\times$ ४ ६ था । भाषा — सस्कृत । विषय — विरव । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰ २४२/७४ । प्राप्तिः स्थान — विर्णंन सभवनाय मिरिर उदयपुर ।

३४१२ वयाचरित्र —विनयसमुद्रवाचक गरिए । पमत० ६४ । प्रा०१११४४१ इच । भाषा—हिन्दो । विषय—चरित्र । २०काल ४ । ते० काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०२४४ । प्राप्ति, स्वान— दि० जैन समवनाय संदर जदरवरर ।

विशेष --- प्रति प्राचीन है।

३५१३ पद्मानंदिमहाकाव्य टीका—प्रह्लाद । पत्र सं०१३६ । माया—सम्कृत । विषय— काव्य । र० काल × । लेखन काल सं १७६६ चैन मुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०३ । प्राप्ति स्थान —दि० कौन प्रथायनी मन्दिर बसवा ।

विशेष--- जनुवा ग्राम मे प्रतिलिपि हुई।

द्दति थी पदमवाचार्य विरचित्रे महाकावरीका सूत्र सार्व्स् । तस्य धनपालस्य विष्यस्तेतः विष्येस् नाम्नाप्रहरुगदेन थी पत्रनदिन पूरे सामार्यं कृते काव्यस्य टिप्ससक प्रकट सानद ।

३५१४. परमहंस संबोध चरित्र —नवरंग । ध्यम् ७ १० । म्रा० १० ४ । इञ्च । भाषा—संस्कृत । ध्यय —चरित्र । २० कान  $\times$  । से० कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्न स० २६६ । प्रास्ति स्थाम—रि० जैन मान्यर बोमस्ती कोटा ।

३५१५ परमहत संबोध चरित्र —  $\times$  । पत्र त० २६ । घा० १० $\frac{3}{7} \times 5^3$  इ व । भाषा — प्राप्तत । विषय —चित्र । २० काल्  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन त० २६६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मंदिर बोरमची कोटा ।

३५१६. पवनंत्रम चरित्र — भुवनकोत्ति । पत्र स० २४ । मा० ११ ४४ हे रच । माषा — हिन्दी । विषय — चरित्र । १० काल् 📯 । से०काल् ४ । मापूर्ण । वेष्टन स० २०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा । ३५१७. पाण्डवचरित्र—वः जिनदास । पत्र सं०१-३१ । मा०१०  $\times$  ४ । स्वा । संस्कृत । विषय—पुराए। १०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वे० सं०२५३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दयलाना (वृदी) ।

विशेष--- ग्रथ का अपर नाम नेमिन्राण भी है।

३४१८. पाण्डव चरित्र —वेतप्रसमूरि । पत्र स० ३६६ । पा० १२ × ४) इन्त । माथा---संकृत । विषय --चरित्र । २०६१त × । ने० काल सं० १४४४ । पूर्ण । वे० सं० १ । प्रास्ति स्थान---क्ति औन मिटित दीवानजी कामा

विशेष -- प्रणस्ति स्मिन प्रकार है---

सवत् १४५४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ७ सप्तमी शुक्रवारे श्री पाण्डव चरित वयरमरोन लिखितं मद्वाहडीय गच्छे श्री सरिप्रभसरीराग योग्य ।

३५१६. पारिजात हरस्य-पंडितालार्यं नारायस्य । पत्र सं०१२ । आ०६३ $\times$ ४३ इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । से॰काल स०१०६५ । पूर्ण । वेष्टन स०५० । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर दवलाना (बंदी) ।

विशेष--श्रतिम पृथ्विका निम्न प्रकार है--

इति श्रीमत् विकुलतिलकश्रीमन्नारायस् पडिताचार्यं विरचिते पारिजात हरस्ये महाकाव्ये तृतीयं स्वासः । श्री कृत्सापंगमस्तु ।

इन्द्रगढ मे देवकररा ने प्रतिलिपि की थी।

३५२०. पारवंचरित्र —तेजपाल । पत्रसं० १०१ । झा० १०४५ इच । माषा—झपझंव । विषय—चरित्र । र०काल म० १५१५ कार्तिक दुरी ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ३५४ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैनमन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--- प्रतिम पत्र नही है।

द्यादिभाग---

गणनयतवसायरज बारिज सायक, गिक्वमवासय सुद्दिश्यलज । पर्गार्विव तियकर कदयरा सुद्दयक रिसहु रिसीसर कुल तिलज ॥ देविदेहिए। क्षेत्ररो सिवयरो कल्याया मालापरो । स्राग जेरा जिंज विरं क्रायहियो कम्मटु डुट्टा । स्वोभीय तास जिरिष्ट सम बरो बोच्छ चरित तहो ॥१॥

तीसरी सधि की समाध्य निम्न प्रकार है -

ध्य सिरि पासचरित्त रहय कइ तेजपाल साएाद प्रागुमिराय मुहद् धूर्घात सिवराम पुत्ते रा जउराहि मारामहरो पासकुमारे विवाहदेगेहे रिगुवकीला वण्एगए तद्दभी सभी परिसम्मतो ।

३५२१. पार्क्यपुरासा-प्रा० चन्द्रकोति । पत्रस० १२५ । घा० न ४ ६ इञ्च । सामा-संस्कृत । विषय-चरित्र । २०कास ४ । ले०कास सं० १८२६ वैशास बुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १४५३ । प्राप्तिस्थान-पर० दि० जैन पन्दिर प्रजमेर । ३५२२, पार्श्वनायचरित्र— भ० सकलकीति । पत्र सं० ११६ । प्रा० १० हे X ४ है इवा । बादा—संस्कृत । विषय – वरित्र । २०काल X । ले०कान X । पूर्ण । वेष्टन स०२३३ । प्राप्ति स्वान— भद्रास्कीय दि० जैन मंदिर प्रजनेर ।

३५२३, प्रति स०२ । पत्रतः २३ । घा०१२३ × ४३ इता । ले०काल × । पूर्णं । बेहुतसं०१०२४ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

३५२४. प्रतिस् ०३ । पत्रस०१६२ । घा०६ 🗶 ५ इला । ले०काल स०१८४७ ज्येष्ठ कुदी ५ । पूर्णा वेष्टनस०१५४४ । प्राप्ति स्थान— मट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर अजमेर।

३ **५२ ५. प्रति स**०४ । पत्रत० ६८ । म्रा०१२ ४६ इच्चाले० काल ४ । पूर्गावेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मन्दिर पास्वेनाथ चौगान बुदी।

विशेष --- २३ सर्ग हैं।

३५२६, प्रति सं० ५ । पत्रतः १४१ । प्रा० १२ × ५३ इश्व । ले० काल स० १८०६ मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० ५७ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन सन्दिर नागदी बृदी ।

विशेष -- टोडरमल वाकलीवाल के वजाजों ने ग्रंथ लिखबाया था कीमत ४(1) रु०

**३५२७. प्रति स०६** । पत्रस०११२ । घा०१३ ४५ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्णा। **देवन स०१**७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३५२८ प्रति सं०७ । पत्र स०७ । आ०१०४६१ दुखा । लेक्काल— ४ । पूर्ण । बेष्टन स०८५ १२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३५२६ प्रति स० ६ । पप्तरु ३० से ७० । ग्रा०१० 🗴 ६ १ इञ्च । ले० काल 🗴 । भ्रष्युर्ण । बेष्टनस०१४४ । प्रास्तिस्थान — दि० जैन प्रश्रवाल मदिर उदयपुर ।

३५३०. प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । ग्रा० १० $_{1}^{2}$  ४ ६ $_{1}^{2}$  इन्छ । ले० काल imes । प्रपूर्ण केव्टन स० ६४४ । प्रप्रित स्थान - दि० जैन मस्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष -- प्रति तृशीय सर्गतक पूर्ण है।

३५३१. पार्श्वनाथ चरित्र— १. । यत्र स०२७। ग्रा०१०° ४४° इश्व । भाषा — सस्कृत (गद्य)। विषय — चरित्र । '०७कः स०१६२० ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ए' । वेस्टन स०१८२। **प्राप्ति** स्थान – दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृदी ।

३५३२. पार्श्वनाथ **चरित्र**—  $\times$  1 पत्र स०११२ । या०११ $\xi \times \xi$  इन्छ । **भाषा**— संस्कृत । विपय-चरित्र । २०नात्  $\times$  1 सेवनान स०१२०। पूर्ण । वेप्टन स०११६ । **प्राप्ति** स्थान— सङेशवान दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३५३३. पास्त्रपुरास् - मूथरदास । पत्र सक्या १०४ । मा० ६ × ४ इन्छ । माषा--हिन्दी पद्य । विषय--पुरास्। २०काल स० १७०६ मायाद सुदी १ । लेकाल सं० १८६२ चैत्र मुदी १ । पूर्ण । वेस्टन स० १४७१ । प्राप्ति स्थान - म० दि० जैन मन्दिर स्रजसेट ।

विशेष-- साखूरामध्ये लिपिकृत प० विरधीचन्द पठनार्थं।

३४३४. प्रतिसं०२ । पत्र स० ८६ । प्रा०१० ४ ४ इला । ले० काल सं०१८६४ । पूर्णी । वेष्टत सं०३४२ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर स्रवसेर । ३५३५. प्रतिसं० ३ । पत्र सं०१२६ । घा० १४५ इचा । ले०क.ल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०१५३३ । प्राप्ति स्थान – भट्टारकीय दि० जैन सदिर धजमेर ।

३५३६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ५७ । ते० काल स० १८८१ वैशास सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं०१५४२ । प्राप्तिः, स्थान—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धजनेर ।

३५३७. प्रति सं० ४ । पत्रसं० ६३ । ग्रा० १२<sup>९</sup> ×५३ इ.च. । ले० काल स० १६४६ । पूर्णा वेस्टन स० ३१३ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन ग्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

३५३ म. प्रति स ०६ । पत्र सं० १२६ । स्ना०१ × ४' इला । ते० काल सं०१८४७ पौष सुदी ६ । पूर्ण । वेटन स० २६० १०४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर कोटडियों का हुगरपुर ।

विशेष--नौतनपुर ग्राम मे ग्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

३५३६. प्रति स० ७ । पत्र स० १३ । प्रा० ११ ४ ५ १ इ.च. । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन स० १९१ – ७६ । **पाप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर कोटेडियो का हूगरपूर ।

३५४०. प्रति सं० म । पत्र स०१०० । ग्रा०१२ $rac{1}{2} imes imes rac{1}{2}$  इंख । ले॰ काल स०१६३२ चैत सुदी १०। पूर्ण । वे० स०५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर गेलावाटी (सीकर)।

३५४१. प्रतिसं० ६। पत्रस० ७७। ग्रा० १२३४६ होत्र । ले० काल स० १८५५ वैशास मुदी १३। पूर्ण । बेटन स० ५७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)।

विशेष---रामवक्स ब्राह्मां ने रूपराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३५४२. प्रतिसं० १० । पत्र सस्या ६४ । घा० ११ $\times$ ५ $^{3}$ इ च । त्ने•काल स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३/२४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर, भादवा (राज०)।

३५४३. प्रति सं० ११ । पत्र स०६५ । घा० १२  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इखा । ले० काल सं० १८२५ । पूर्णे । बेष्टन स०२५ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष-- नालसोट मे प्रतिलिपि हुई थी।

३५४४. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६१ । ले० काल सं०१६१ । पूर्ण । जयपुर मे प्रतिलिपि हुई । प्राप्ति स्थान —िंद० जैन मदिर भारवा (राज०) ।

३.४४ प्रतिसं० १३ । पत्रस० १०६ । ले॰काल स० १०४६ माघ मुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान —तेरहपथी दि० जैन मन्दिर बसवा ।

३१४६. प्रतिसं० १४। पत्रस०७४। ले॰काल imes। स्पूर्णः। वेष्ट्रनसं०६४ । प्राप्ति स्थान—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर बसवा।

३५४७. प्रति सं० १५। पत्र स० ११५ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन स० २३ । प्राप्तिः स्थान—तेरहपथी दि० जैन मदिर बसवा ।

२४४८. प्रति सं० १६। पत्र स० ७४। ग्रा० १२४५ इचा। ले०काल सं० १७६४ फागुन बुदी ७। पूर्णे। बेहुन स० १६ २२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पथी दौसा।

विशेष-यती प्रयागदास ने जयपूर में प्रतिलिपि की।

३५४६. प्रति सं० १७ । पत्रसं० १६ । घा० १२ रे४६ इञ्च । से॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टुनसं० २३-१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

१५५०, प्रति सं०१८ । पत्र स०६४ । धा०१२ रे ४ ६ इचा । ले•काल ४ । पूर्ण। वेष्टन सं०१११ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मदिर नेरहपथी दौता ।

विशेष-चिमनलाल तेरहपथी ने प्रतिलिपि की ।

३४**५१. प्रति स० १६।** पत्रस० ६७। ब्रा० १९३ ×५ ३ इच । ले॰काल स० १६३२। पूर्णे । बेष्टन स० ४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

विशेष---नन्दलाल सोनी ने प्रतिलिपि की थी

३५५२. प्रति सं० २०। यत्रस० ७६। झा० १३ × रेु ७ इश्वः। ले०काल स० १६०० लावसा सुदी १३। पूर्णः। वेष्टुनस० ३५४। प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा। विशेष —सञ्जलाल सजभेरा ने अनवर मे प्रतिलिपि की थी।

**३५५३. प्रतिसं० २१ । पत्रस०** ६६ । ले०काल स० १८३७ । पूर्ण । वेट्टन स० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

३४४४, प्रति सं० २२ । पत्रसः० ६४ । प्रा० ६ ३४४ , इश्वः । ले० काल स०१७६२ । पूर्णः । वेहन सं० २४० । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**३५५५ प्रतिसं० २**३ । पत्र स० २०६ । ब्रा० न्हें $\times$ ४ है दश्च । ले०काल स**१०६६** श्वासोज मुदी २ । पूर्ण । वेप्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सोगानी करोती ।

**२४४६. प्रतिसं० २४** । पत्रस०। झा०१०ॄे४ ४ इखा । ले० काल स०१८१४ मंगसिर **दुदी ६**। पूर्ण । वेष्टन स०१४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मंदिर करीली ।

विशेष— १डराज के पुत्र मगनीराम ने पाडे लालचन्द में करौली में लिखवाया ।

३४४७. प्रति स० २४ । पत्र स० १४। प्रा० १०१ ४ ४१ दुख । ले०काल० स० १८४३ । पूर्णे । बेष्टन स० ४२। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवानओं चेतनदास पुरनी डीग ।

**३४४८. प्रतिसं० २**६ । पत्रस० ७३ । ब्रा० १२ ¦×६८च । ले•काल स० १८७० ।पूर्स । वैष्टन स० ७४ । **प्राप्ति स्थान**्दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुगनी डांग ।

विशेय--- जीवारामजी कामलीवाल ने सूरतरामजी व डनके पुत्र लिन्द्रमनसिंह कुम्हेर वालों के पठनार्ष वेर में प्रतिलिपि करवाई थी।

२४४६. प्रतिसं० २७। पत्रस० ८७। लेब्कालस० १८४४। पूर्मा । वेष्ट्रन स०४७। प्राप्ति स्थान—दिञ्जनपनायती मन्दिर हन्द्रावलो का डीग ।

विशेष-- प्रागदास मोहावाले ने इन्दौर में कासीरावजी के राज्य में प्रतिलिपि की थी।

दे५६०. प्रतिसं० २८। पत्र स० ६४। ले० काल स० १८७४ झावाढ़ वदी १०। पूर्ण । बेष्टन स० १४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

दे¥६९. प्रति सं० २६ । पत्र स० १०२ । ग्रा० १२×४१ दृष्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०३ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिरस्वलाना त्रृंदं, । ३५६२. प्रतिसं० ३०। पत्रसं० ७६ । आ० १२३ ४ ३६३ इंच । ले०काल सं० १८८४ मासोज बुदी १ । पूर्ण । बेहन सं० ८६-७३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ ।

३४६३. प्रति सं० ३१। पत्रसं० ६३। घा॰ १०३ × ६ इचा। ले० काल × । पूर्ण। बेष्टनसं० ६६। प्राप्ति स्थान—वि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

३५६४. प्रति सं० ३२। पत्रसं० १९७। झा० १० × ५ इंच । ले०काल स० १८८४ पूर्या । बेहनस० २२७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३५६५. प्रतिसं०३३ । पत्र सं० ८६ । घा० ६६ ४६ इ.च. । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । प्राप्ति स्चान—दि० जैन पंचायती मन्दिर प्रलवर ।

३४६६. प्रतिसं० ३४ । स० ११४। ले० काल 🗴 । पूर्गं। वेष्टन सं० १६३ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन लडेलवाल मन्दिर भलवर ।

३५६७, प्रति सं० ३५ । पत्रस० ६४ । घा० १२ $\frac{1}{7}$  $\times$ ७ इच्च । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेस्टन सं० ४,८० । प्राप्तिस्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर घलवर ।

३५६८. प्रतिसं० ३६ । पत्र स० ६६ । ले०काल सं० १६५८ । पूर्ण । वे० स० ४/१४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर म्रालवर ।

३५६६. प्रतिसं० ३७ । पत्र स० ६५ । द्या॰ १२ $\times$ ५३ दश्व । ले०काल सं १८६७ प्रापाढ बुदी ३ । पूर्ण । बेरटन म० १०५ । ।प्राप्तिः, स्थान— दि॰ जैन पचावती मन्दिर स्रवदर ।

३५७०. प्रतिसं० ३६ । पत्रसं० ५६ । ले•काल सं १६४५ पौष बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स॰ १०६ । प्राप्ति स्थान — दि० चैन पचयती मन्दिर ग्रलचर ।

३५७१. प्रतिस० ३६ । पत्र स० १२६ । ले॰ काल सं० १८१४ भादवा मुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १६३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती मदिर मरतपुर ।

विशेष -- पाडेलालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

३५७२. प्रतिसं०४० । पत्रस०६६ । ले०काल स० १८६५ । पूर्ण । बेष्टन स०१७७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर जयपुर ।

३५७३. प्रति सं० ४१ । पत्र स० ६१ । ते•काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन स०३१६ । प्राप्ति स्थान-— दि० जैन पत्रायती मदिर मरपुर ।

३५७४. प्रति सं० ४२। पत्रसं० १६। ब्रा० १०४५ इला। ले∘काल स० १८८४। पूर्ण। वेष्टनस० ६१। प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन पवायती मन्दिर बयाना।

विशेष — स॰ १८८८ मगसिर मुदी ४ के दिन नथमल खडेलवाल ने इस ग्रंथ को चन्द्रप्रभ के मिंदर में भेंट दिया था।

देश ७४. प्रति सं०४ दे। पत्र सं०१० ६। ब्रा०६ ४६ इ.च्या ते ० काल सं०१ ८२ ६। पूर्ण। वेष्टत सं०१२ । प्राप्ति स्थान — विज्जैन मन्दिर वैर।

ने**५७६. प्रति सं०४४** । पत्र सं०६६ । घा० १०<sub>१</sub> ×६<mark>१ इ.च. । ले० काल × । पूर्ण ।</mark> वेष्टन सं०१३७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा सन्दिर बयाना । ३५५७७. प्रति सं० ४५४.।पत्र स⊤दश्यामा ११५<sup>°</sup>४५ इल्बाले क काल स०१८३४ । पूर्णी केच्टन सं०१०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर दीवानजी कामा।

३५७८. प्रति सं० ४६। पत्र सं० ८२। मा० १२ १८ ६ इ.स.। ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० २ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती दीवानजी कामा ।

३५७६. प्रति सं० ४७। पत्र स० २०४। घा० १०८७ इञ्च। ने० कान सं० १६५३ मंगसिर बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन स० ५४। प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर नागदी बुंदी।

विशेष-प्र'ठालाल समा ने प्रतिलिपि की ।

३ ४ ८० प्रति सं० ४८ । पत्र स० ५३ । आ० १२  $\} \times ६ \}$  इच्च । ले० काल सं० १८६६ पौक्ष सुदी १२ । पूर्ण । बेय्टन स० २२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन नेरहवयी मदिर नैसाबा ।

विशेष—लिखाइत साहाणी श्री भैरूरामजी गणजान तत्सुत्र चिरजीव कवरजी श्री जैनानजी पठनार्थ। यह प्रथ १०७३ में तेरापशी के मन्दिर में चढाया था।

**३५८१. प्रति सं०४६।** पत्र स०७२ । घा०११×७ इ.च.। ले० काल स०११५६ । पूर्ए। बेबन सं०१००। प्राफ्टिस्**स्थान** — दि०जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी।

३४८२. **प्रतिसं० ५०।** पत्रस० ५६। मा० १० है ४५ है इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६। प्रा**प्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

३ ४८२, प्रति स० ४१ । पत्र स० ७७। मा० १२ ४ १ इञ्च । ले० काल सं० १८४० मगसिर सुटी ३ । पूर्णा वेष्टन स० ३१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोट्यो का नैरावा।

विशेष -- नैरावा मे ब्राह्मण सीताराम ने प्रतिलिपि की थी।

३५८**४. प्रति सं० ५२।** पत्र स० २६। मा० १० ४६ इखा ले० काल स० १६१४ श्रावस्त सुदी १। पूर्णा वेष्ट्रन स० २४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोठ्यो का नैस्पना। विशेष —साह प्रशालाल स्रजनेरा ने प्रतिलिपि की थी।

३४८४. प्रतिसं ० ४३ । पत्र स० ८६ । मा० १२ × ४, इश्व । ले०कान × । पूर्ण । बेहन स० ३६ १८ । प्रान्ति स्थान --दि० जैन मन्दिर पचायती देनी (टोक)

३५८६. प्रतिसं० ५४ । पत्र स०१४४ । द्वा० १२  $\times$  ५ $^2$  इञ्च । ले० काल स०१८८६ । पूर्णे । बेप्टन स०३७/१८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर दुनी (टोक)

विशेष - सर्वेमुख गोबा मालपुरा वाले ने दीवान ग्रमरचन्दजी के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

३५८७. प्रति सं० ६५ । पत्र स० ४४ । ले॰ काल  $\times$  । धपूर्णं । वेष्टन सं० ६ । प्राप्ति स्थान— र॰ जैन मन्दिर खडेलवालो का, प्रावा (उिग्यारा)

विशेष -- जन्म कल्यागुक तक है। ३५८ -- प्रति सं० ५६। पत्र स० ५५। घा० ६ रै ४६ है इश्वा। ले० काल ४ ।} पूर्ण। बेष्टन स० ३१। प्राप्ति स्थान --- दि० जैन मन्दिर राजमहल टॉक।

विशेष - पद्य सं० ३३३ है।

सबन् १८७६ चैत्रमासस्य शुक्तपक्षाः राजमहत्त मध्य कटारया मोजीराम **घन्द्रप्रभ चैत्या**-लये स्थापित । ३४८६. प्रति सं० ४७। पत्रस० ७०। ले॰काल सं० १६५७ सावण बुदी १४। पूर्ण । वेष्टन सं० ३२। प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर राजमहल टॉक।

विशेष-लिखित प० लखमीचन्द कटरा ग्रहीरों का फिरोजाबाद जिला ग्रागरा।

३४.६०. प्रति स० ४.६ । पत्रसं० १३३ । मा०१०, ४.४ इञ्चा⊩ से०काल स० १८४६ सावरा सुदी १३ । पूर्णा वेष्टनस०१२७ । प्रास्तिः स्थान-—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष--तक्षकपुर मे व्यास सहजराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३५८१. प्रतिसं०५६ । पत्रस०६३ । झा०११ ग्रद्ध । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १७ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर पार्चनाथ टोडारायसिंह (टॉक)

३४६२. प्रतिसं० ६० । पत्र स० १२४ । बा० ११३ imes ४ ै इञ्च । के०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० ११०/६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टॉक)

३५६३. प्रति सं० ६१ । पत्र स० ६१ । प्रा० ११३४७ हुँ इंच । ले० काल स० १६०४ फापुन बुदी १ । पूर्ण । वेस्टन स०५०-⊏० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाफ टोडारायसिह (टोक)

विशेष—टोडारायिसह के श्री सावला जी के मन्दिर में जवाहरलाल के बेटा विसनलाल ने ब्रती-द्यापन के उपलक्ष में भारता सरी १४ म० १६४८ को चढाया था।

३५६४ प्रतिसं<sup>°</sup> ६२ । पत्र स॰ ११६ । आ॰ १० रे ४५ द्वा । के काल । अपूर्एं । वेष्टन स॰१७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर तेरहपथी मालपूरा (टॉक) ।

३५६५. प्रति सः ६३ । पत्रसं•६-। धा०१२ 🗴 ५६ इञ्चाः ले० काल स०१६२६ । पूर्णे । बेष्टन म०३५ । प्रास्तिस्थान – दि० जैन मदिर तेरहपथी मालपुरा (टोक) ।

विशेष-धनराज गोधा रूपचन्द मत के पठनार्थ लिखा गया था।

३४.६६. प्रति स० ६४ । पत्र स० ३-१२० । खा० ६×६ इला । ले० काल स० १⊏८४ । जीएाँ शीएाँ। अपूर्ण । बेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान−दि० जैन मन्दिरते** रहपंथी मालपुरा (टोक)

३५६७. प्रतिसं० ६५ । पत्र स० ५२ । घा० १२ 🗴 च इवा । लेकाल सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टनस० २२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन भन्दिर चीघरियान मालपुरा (टोक) ।

३५६८. प्रतिसं० ६६ । पत्रस० १३५ । ग्रा० १०३,४४३ इचा ले० काल स० १८८६। पूर्स । बैष्टन स० ४४ । प्रास्टित स्थान—दि० जैन मन्दिर, पार्थनाथ चीगान बुदी ।

३५८६. प्रति सं०६७ । पत्र स०५७ । ग्रा०११४७ इन्छ । ले० काल सं०१८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं०१०६ । प्राधित स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बुंदी ।

विशेष-- बूदी मे प्रतिलिपि हुई थी।

६६००. प्रतिसं० ६६ । पत्र स०६३ । ग्रा० १३×४६ इचा । ले०काल सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन मन्दिर झादिनाथ बुंबी ।

विशेष - खडार में लिक्षमणदास मोजीराम बाकलीवाल का बेटा ने बिख चढायो ।

३६०१. प्रतिसं० ६८ । पत्रसं० १०१ । या० १३ × ४ १ स्था । ने०कृत्व सं० १८३१ प्रापाढ बुदी १ । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर सकर जयपुर ह

विशेष--दासगीती के जीवराज पांड्या ने लिखा वा 🗜

३६०२. प्रति संं ७ ७० १ पत्रस० ७६ । सा॰ १२४४ इन्छ । ले॰ काल स० १८४१ झाषाढ बुदी १० । पूर्ण । बहुनसं० ७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर झादिनाथ वृदी ।

विशेष --रगुथभीर में नाथुराम ने स्व पठनार्थ लिखा था।

३६०३. प्रतिसं० ७१ । पत्र स० १७ । ब्रा०१२१४६ हेस्स्य । ले॰ सं०११७४ । पूर्णे। दे०स०२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष---इन्दौर में प॰ बुद्धसेन इटावा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

३६०**४. प्रति सं०७२** । पत्रस०१४८ । घा०१×४ इचा । ले∙काल स०१८३३ । पूर्णे । वेष्टन स०२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर प्रमिनन्दन स्वामी बुदी ।

३६०४. प्रति सं० ७३ । पत्रस० ४६ । क्षे॰काल स० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन म०३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर रीवानजी भरतपुर ।

३६०६. पारबंपुरासा — ४ । पत्रस० २४७ । भाषा — हिस्दी (गद्य) । विषय —पुरासा । र० काल ४ । से॰कास ४ । पूर्ण । बेष्टन स०६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहस्यी मन्दिर । समसा ।

३६०७. प्रकृष्मचरित —महासेनाचार्य । पत्रतः ६६ । आ०११४४ हुँ इंच । भाषा— सस्कृत । विषय -चरित । र०काल ४ । ते•काल तः १४३२ । पूर्ण । वेष्टन तः ४६ । प्राप्ति स्थान— सण्येनवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- भट्टारक ज्ञान भूषए। के पठनाथं लिखी गयी थी।

३६०**६. प्रति सं० २**। पत्रस० १२६। घा० १०×४ॄ इन्द्र । ले०काल सं० १४६६। पूर्णे । बेष्टन स० १६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रसिनन्दन स्वामी बृंदी ।

विशेष - छीतर ने इ० रतन को मेंट दिया था।

प्रशस्ति—सबत् १५८६ वर्षे चैत्र सुदी १२ श्री मृतसये बलात्कारगणी सरस्वती गच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्यात्वये महारक श्री जिनचन्द्र तलाहे म० प्रमाचन्द्र तदाम्नायं खडेलवालात्वये बाकतीवाले गोत्र स० केस्ता तदभायी करमा " · · · · · · · ।

३६०६ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६४ । ब्रा० १२ $\frac{2}{6}$  × ५ $\frac{2}{9}$  डच । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । बेष्टन स० १७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

३६**१०. प्रख्-लनचरित्र | सोमको**ति । पत्र स०१७२ । ग्रा०१०}४४} इंच । आवा— सस्कृत । विषय चरित्र । र०काल स०१४३१ पौष मुदी १३ बुधवार । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स१४३४ । प्रा<mark>पित स्थान</mark>—अट्टास्कीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

३६**११. प्रति सं० २ ।** पत्र सं० १४६ । म्रा० १०१४ ४ हे इल्बाले० काल ४ । पूर्णा। वेष्टन सं४४६ । प्राप्ति **स्थान**— प्रहारकीय दि० जैन मन्दिर श्रजनेर ।

३६१२. प्रतिसं० ३ । पत्रस्० १७३ । बार १०४४ हुइ व । से०काल स०१८१० पौष बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० १०२, ३४ । *ब्राप्ति स्थान*—दि० जैन यन्दिर पावर्षनाथ इन्दरस्क (कोटा) । काव्य एवं चरित ] [ ३५३

विशेष —वशस्य पत्तनस्य रामपुर मध्ये श्री नेमिजिन चैत्यालये प्रासांवर मनस्य व्याधान्वये पटोड गोत्रे सा॰ श्री ताराच दजी श्री लघु भ्रातृ सा॰ जगरूपजी कियो कारापित जिन मन्दिर तास्मन् मिदरे चतुर्माधिक इत ''''' ।

३६१३, प्रतिसं०४। पत्र सं०२३७। ग्रा० १२४५ इ.च.। ले० काल स०१८१० कार्तिक सदी १४ ।पूर्ण। वेष्ट्रन स०३०४। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मंदिर बोरसली कोटा।

३६१४ प्रति सं०५ । पत्र स०१६५ । ले० काल × । पूर्णं । वेष्टन सं०२१ । प्राप्ति इच्यान—दि० जैन पदायती मदिर कीग ।

३६१५८. प्रतिसं०६ । पत्र सं० १६२ । घ्रा०११ ४ ४ दृक्ष्या। र०काल स०१६३१ । से०काल स०१६७५ । पूर्ण। वेष्टन सं०१६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

३६१६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७३ । ले० काल सं० १६६६ । पूर्णं । बेष्टन सं० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर हण्डावासों का डीग ।

विशेष-प्रलवर में लिखा गया था।

३६१७. प्रति सं० म । पत्र सं०२२०। ग्रा०११४ ५ इ.च. । ले०काल स०१६१४ माह सुदी ५ । पूर्णावेष्टन स०१२४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मंदिर पाण्वेनाय चौगान बुंदी ।

विशेष-धट्याली मे प्रतिलिपि कराई । मुनि श्री हेमकीत्ति ने सशोधन किया । प्रशस्ति भी है ।

३६१८. प्रति सं०६ । पत्रस०१४४ । घा०६३४४ इच । से०काल स०१८२० मगसिर बुदो १२। पूर्ण। वेष्ट्रनस०३३६। प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)। विशेष—दबलाना में प्रतिलिपि हई।

३६१६. प्रद्युम्नचरित्र—शुभवन्द। पत्र सं० १७ । घा० १०३ × ४ इच । भाषा— सस्कृत । विषय —चरित्र । र०काल × । ने०काल × । घपूर्ण । वेष्ट्रनत० २० । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ग्रामिनन्दन स्थामी व दी ।

विशेष- केवल श्रन्तिम पत्र नही है।

३६२०. प्रशुक्त लीला वर्सन—शिवकाद गिर्मः । पत्र स॰ २६१ । भाषा —सस्कृत । विषय — चित्रः । २०कालः  $\times$  । लेकालः  $\times$  । लेकालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्नः स०६०२ । प्राप्तिस्थान—दि॰ जैन पचायती मिरिर भरतपुरः ।

३६२१. प्रद्यानम्बरित्र—  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४२ । धा $\circ$  १० $^1_i \times ^1_j$  इत्रः । भाषा-स स्कृत । विषय — चित्र्य ।  $\sigma$  काल $\times$  । लेकाल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं $\circ$  १६१ । प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि $\circ$  जैन मन्दिर प्रजंगर ।

३६२२. प्रशास्त्र चरित्र— × । पत्र स० ७६-२१४ । घा०१४×७ इश्व । भाषा —हिन्दी गव । विषय-चरित्र । र० काल × । ले०काल स० १६४७ । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० २०७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्खनाथ चौगान ब दी ।

विशेष---प्रारम्भ के ७५ पत्र नहीं हैं।

२६२२. प्रदाप्तन चरित्र—  $\times$  । पत्र सं०१ त्यः। धा०१२  $\times$ ६ इवः । आया —हिन्दी गर्यः। विषयः—चरित्रः। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्णः। वेष्टन सं०७१। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मदिर श्री महानीर बंदी ।

३६२४. प्रश्चृष्म चरित्र—  $\times$  । पत्र स० २२४ । भाषा – हिन्दी । विषय — प्रीतन चरित्र । रक्ताल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १७० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुर ।

३६२**४. प्रदान्न चरित्र टोका** — × । पत्रसं० ७४ । बा० १४ ×७ इत्व । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय — चरित्र । र०काल × । ले० काल × । प्रपृर्ण । वेष्ट्रन स० ११४ । **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूंदी ।

३६२६ प्र**दान्न चरित्र रत्नचंद्र गरि**ग । पत्रन० १०४ । घा० १०४४ डख । भाषा-सरक्रत । विषय-चरित्र । र०काल ४ । के**०काल** स० १८६४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १३७-३२ । **प्राप्ति स्थान -**दि० जैन मन्टिर नेमिनाथ टोकारावर्सिंह (टोक) ।

३६२७. प्रद्युम्न बरित्र वृत्ति-देवसूरि । पत्र म० २ मे १०४। भाषा सस्कृत । विषय— बरित्र । रुकाल  $\times$  । सेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६११। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनायती मन्दिर भरतन्त्र ।

३६२६. प्रश्चुम्म चरित—सघारु । पत्रस्य २२ । आ० ११ $\times$ ४ $^{\dagger}$ दल । भाषा —हिन्दी । विषय—चरित्र । राजाल स० १४११ । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दिक जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष—दि० जैन घनिश्य क्षेत्र थी महाबीरती द्वारा जनवरी ६० मे प्रकाशित । इसके सपादक स्व० पं० जैनसुखदास जी त्यायतीर्थ एवं डा० कानुरजन्द कासलीवाल एम ए पी एव, डी है।

**३६२६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ४० । आ० १२८६ हुँ इस्त्रा ले**०काल स० १८८१ वैशाख बुदी** १० । अपूर्त । बेष्टन सं० ७७ । **आप्ति स्थान**— पचायती दि० जैन मन्दिर कामा ।

विशेष — कोज एव क्रस्य प्रतियों के श्राधार पर मही र०काल सं० १४११ भारवा मुदी ५ माना गया है जबकि इस प्रति में र०काल स० १३११ भारवा मुदी ५ दिया है। बीच के कुछ पत्र नहीं है तथा प्रति जीतों है।

**३६२०. प्रशुक्नचरित्र—मझालाल ।** पत्रस० २४१। ग्रा० १३ $\times$ ७ $\frac{3}{2}$  इखा । भाषा—हिन्दी (100)। विषय— चरित्र । र०काल स० १६१६ ज्येष्ठ बुढी ४। ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ४७६ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन मस्दिर लक्कर वयपुर ।

३६३१. प्रयुक्त चरित्र भाषा—ज्वालाप्रसाद बस्तावर्रासह। पत्रस० २११। या० ११ $\frac{1}{7}$ ८ द इ व । माषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । र०काल स० १६१४ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन सं० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर चीवरियान मालपूर। (टोक)

विशेष — प्रंथ की भाषा प्रयम तो ज्वाला प्रसाद ने की लेकिन सं० १६११ में उनका देहान्त होने से चन्दनलाल के पुत्र बक्तावर्रमिंह ने १६१४ में इसे पूर्ण किया ।

मूलग्रंथ सोमकीर्ति का है।

३६३२. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३०३ । ब्रा० १२ ४ ५ इञ्च । ले०काल सं० १९६१ । पूर्ण । बेष्टनसं० २७ । प्राप्ति स्थान — प्रवत्तात्र दि० जैन मन्दिर, नैतावा ।

३६३३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१६ । प्रा० १२ imes ६ ६ व । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० १४७/ १२७ । प्राप्ति स्थान — लण्डेलवाल दि० जैन प नायनी मन्दिर प्रलबर ।

३६३४. प्रति सं०४ ।पत्रसं० २६३ । लेक्बाल सं०१६६१ । पूर्णे । वेष्टन स०१४८/४० प्रास्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन पंचायती मन्दिर अलवर ।

३६३४. प्रतिसं०४. । पत्रस०११७ । घा०१४ × ⊏ैृइश्वः । ले०काल × । पूर्ण। बेष्टन स०२४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर झलवर ।

३६३६. प्रति सं० ६ । पत्रस० १७६ । ग्रा० १३ imes ६ इत्र । लेकाल सं० १९६४ मासीन बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० १५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, फतेहपुर वेलावाटी (सीकर)

विशेष—संवत १८१५ में पन्नालाल जी ने प्रारम्भ किया एवं १८१६ मे बक्तावर्रासह ने पूर्ण किया ऐसा भी लिखा है।

३६३७. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २८७ । ले॰काल सं० १९४६ सावग् बुदी ८ । पूर्ण । बेहन स० १५ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर पात्रवंनाय टोडारायसिंह (टोंक) ।

३६३ म. प्रद्युन्नचरित्र भाषा—कृषालचन्द्र । पत्र स०३० । ग्रा० १२ $\frac{3}{6}$  $\times$  ६ व्या । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ४७ म. प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

३६३६. प्रशुष्टनचरित्र माषा—  $\times$  । पत्र सं० ३६४ । प्रा० १३  $\times$  स इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय—चरित्र । २०काल  $\times$  । ले० काल स० ११४१ । पूर्ण । बेप्टन स० ६ । प्रास्ति स्थान — २० जैन मन्दिर भारवा राज्ञ ।

विशेष--इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई।

**३६४०. प्रद्युम्न प्रबंध— भ० देवेन्द्रकोति । पत्रस०**२३ । प्रा०१०४६ इखा । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय—काव्य । र०काल स०१७२२ चैत सुदी ३ । ले०काल सं०१८६४ काती बुदी ६ । पूर्णे । वेष्टनस०३६८ ६६ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष देवेन्द्रकीर्ति निम्न ग्राम्नाय के भट्टारक थे-

थी मुम्मचे प्रद्वारक मकालकीत तर्त्व विषय भुवन कीति तत्त्वट्टे ज्ञानभूषण तत्त्वट्टे विजयकीति तत्त्वट्टे महान्क मुमचन्द्र तत्त्वट्टे भक्तमित कीति तत्त्वट्टे मुणकीति तत्त्वट्टे वादिभूषण तत्त्वट्टे रामकीति तत्त्व. पपनदि मिर त. प देवेटकीति------

स्रादि स्रत भाग निम्न प्रकार है— स्रादि भाग— नोहा।

सकल मध्य गुलकर चरा नेमि जिनेक्वर राय ।
यदुकुल कमल दिवस पति प्रणमु तेहुना पाय ।
जगदवा जय सरस्वती जिनवाशी तुम्म काय ।
प्रतिदात वाशी प्राप्त को भू भू श्री मुक्तमाय ।
प्रतिदात वाशी प्राप्त को भू भू श्री मुक्तमाय ।
प्रतिसामाण —
तक्षपटकमाल कमल बहु श्रीय देनेन्द्रकोति गच्छद्वस्तरे ।
प्रयुक्त प्रवंच रच्यो तिमि मविचाश मण्य जो निकासीसरे ॥४३॥
संवत सतर वाशीस सृदि चैन तील बुण्वार रे ।

माहेश्वरमाहि रचना रची रहि चन्द्रनाथ ग्रह द्वार रै ॥४४॥

सुरव वासी सवपति क्षेगमजी सुरजी दातार रे । तेह ग्राग्रह वी प्रद्युम्न नो ए प्रवध रच्यो मनोहार रे ।।४५।।

## दहा---

मनोहार प्रबंध ए गुध्यों करी विवेक ।
प्रकुम्न गुणि सुत्रे करी स्तवन कुनुम प्रनेक ।।
भविष्या गुण कठे घरी एह प्रप्ते हार ।
थिरे मनत तक्षी घणी पुण्य उत्यों नहीं गर ।।
भणे भणोव सामनो निले निलावे एह ।
देवेनद्र कीर्ता गळ्यांति कहें स्वतं मुक्ति लहें तेह ।।

इति श्री प्रचुच्न प्रबंध सपूर्णं श्री दक्षम् देशे झरूपनर ग्रामे पं० सुक्ष्यालेन प्रक्रीहरू जेनेन्त । ग्रंथ का अपर नाम प्रचुच्न प्रबंध भी मिलता है।

३६४१. प्रति सं० २ । पत्र स० ३६ । प्रा० १०४४ } इन्छ । ले० काल स्वेतामा — हिं बुदी । पूर्वे । बेहन स० १३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर स्वमाना (कृदी) । विशेष— महारक श्री स्थान—दि० जैन प्रतिविधि की थी ।

प् ३६४२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ५७ । झा० ६ १,४४ १ दख । ले० काल २५ ४ - क्रुसी । वेष्ट्रत सं० ४६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बृदी ।

विशेष- ब्रह्म श्री फतेचन्द ने लिखवाया था।

३६४३. प्रबोध चंद्रिका—  $\times$ । पत्र स० =-२२। प्रा० १०  $\times$  ४) दल । भाषा—सहस्रत। विषय—काव्य ! "० काल  $\times$ । ले० काल स० १=१४ कार्तिक बुदी २। अपूर्ण । बेट्टन स० १२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी बुंदी।

३६४४. प्रबोध चंद्रोदय—कृष्ण भिष्ठ । पन स० ३६। या० १०  $\times$  ४' इख । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १८८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरस्ती कोटा ।

३६४**४. प्रभंजन चरित्र**—  $\times$  । पत्र स०२ से ४२ । ग्रा० ६ $^3$  $\times$ ६ इन्द्र । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेहनस० १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

३६४६. प्रभंजन चरित्र— $\times$  । पत्रस० २१ । ब्रा० १२ × ४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय— चरित्र । र०काल  $\times$  । ने० काल स० १६२३ छासीज सुदी १ । बेष्टनस० १४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जबपुर ।

विशेच---ग्रा० श्री लखमीचन्द्र के शिष्य ५० नेमिदास ने स्वय के पटनार्थ लिखवाया ।

३६४७. प्रश्न बब्दि शतक काथ्य टीका-टीकाकार पुष्य सागर । पत्रसः ७४। झा०११ ४ ४ इ.च.। भाषा—सङ्गत । विषयः—काव्य । टीका स०१६४०। लेकाल स०१७१४ मावन मुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन सं०२३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । ३६४८. प्रीतिकार चरित्र—सिंहनन्ति । पत्रसं० १६ । बा० ११ $<math>^{3}$  $\times$ ६ $^{5}$ १ इस । भाषा—संस्कृत । विषय-चरित्र । २० काल  $\times$  । ते०काल सं० १६१० । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२८ । प्रास्ति स्थान—भद्रारतीय दि० जैन मन्दिर बजभेर ।

३६५०. प्रतिसं०२। पत्र स०१ से २१ तक। म्रा०१०३ ४४३ इथा। से०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं०१३६०। प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर।

३६४**१. प्रति सं०३।** पत्रस०२३। प्रा०६ ४ ६इला।ले∘काल सं०१६०७ फागुण सुदी ११। पूर्ण। बेष्टन स०२५३। **प्राप्ति स्थान**---पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

३६५२. प्रीतिकर चरित्र—जोधराज गोबीका। पत्र सं०२३। प्रा॰ ६३ ४ ६३ था। प्रापा—हिन्दी। विषय—चरित्र। र०काल सं०१७२१ फागुण सुदी ४। ले०काल सं०१८८७। पूर्ण। वेष्ट्रत स० १४६६। प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

३६५३. प्रति सं० २ । पत्रस० १० । घा० ११imes६ इन्छ । ले•काल imes । घपूराँ । वेष्टन सं० ७० । घारित स्थान—दि० जैन मन्दिर, तेरहपंथी मालपुरा (टोक) ।

३५४४. प्रति सं०३। पत्र स०३०। घा०११३/४४, इन्या। ले**०काल** सं०१८८५ । पूर्ण बेष्टन सं०५०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर तेरहपयी मालपुरा (टोक)।

**३६५५. प्रति सं०४ ।** पत्र स०६५ । प्रा०११ $\times$ ५ हे इस्त । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०६२ । प्राप्ति स्थान—पदायती दि० जैन मन्दिर प्रलवर ।

३६५६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ४४ । ते०काल सं १७६१ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

बिशेष--जोधराज मनीराम के पुत्र चांदवाल ने भोजपूर में लिखा।

३६४७. प्रति सं०६। पत्र सं०३३। ले०काल सं०११०२। ध्रपूर्ण। वेष्टन स०३२१। प्रास्तिस्थान—दि० जैन पदायती मन्दिर भरतपुर।

**३६५८. प्रति सं०७** । पत्र स० ६६ । झा०६्रै × ५ इञ्च । ले०काल सं०१७८४ फानुस् बुदी ४ । पूर्से । वे०स०४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प चायती मन्दिर बयाना ।

३६५६. बसंतवर्गन—कालिदास । पत्रसं०। १७। मा०६ $\times$  ४ $\xi$  इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय—काव्य । र० काल $\times$ । ले० काल सं० १८६६ सावरा सुदी १० । पूर्ण । वे. स० १४३०। प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर मजभेर ।

३६६०. बारा घारा महाचीपद्वेश— क० रूपजी । पत्रसं० १० । माषा — हिन्दी । विषय – चिरत्र । २०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १०८/१४३ । **प्राप्तिः स्थान** — समबनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - चौबीस तीर्थकरों के जरीर का प्रमागा, वर्ण ग्रादि की पंधीं में संक्षिण वर्णन है।

धादि धत भाग निम्न प्रकार है .—

प्रारंभ — भोनम सिद्धं का बारा बारा वर्गपद लिख्यते ।
प्रथम वृषम जिन नित्तनुं जे जुन धादि सार ।
भव एकादश उज्जना भव्य उतारण गरा।?।।
इह प्रथम जिनद दुल दावानत कद
भव्यक्तव विकाशनपन्द मुणकाधिव धारणचन्द ॥ २ ॥
सरस्वती निवलीनम् जेह तान ध्यार।
मनवाकु जेहसीफती कविजन लाम सार ।। ३ ॥
श्री मुससम्, बहामएं।। सरक्तीमच्छे सार ।।

इस से श्राये म० पद्मनंदि, सकलकीति शुवनकीति, ज्ञानभूषण, विजयकीति गुभवन्द्र, सुमितकीति गुराकीति की परम्परा धौर उसके बाद

बलात्कर शुभगरा भण्यो श्री कुदकुंद सारि ।। ४ ।।

वादीभूषण् नेह अनुक्रमि रामकीरतिज सार। पद्मनिद निवलीस्तवृ चेल रहित सुखकार। तेहना शिष्यज उजलो करि बार बार विचार। ब्रह्मरूपजी नामिमण्यो सुणज्यो सज्जनसार।।

समतभद्र देमेज कवि गुरगभद्र गुरगघार तेहनागुरग मनमाहि धरि कवि बोलु मुखकार ।

## ग्रन्तिय---

चध्दसूरज बहुतारा आसा रामयक्षनाक निर्वासा स्वार क्षिये चोपे रहो प्रामांबर करिटनी कही ।।६३ ।। सत्तर उक्त बीम दूहा सही सात्री सप्ता मित्रोए कही ब्रह्मण्यी केरे प्रमागा सुस्ता भगागा पत्रकत्यासा ।।

इति महाचौपई वधे ब्रह्मारूपजी विश्वते ग्रप्टकाल स्वरूप कथानाम तृतीय उल्लाम. । इति बारा प्रारा महाचौपई वधे यमान्त: ।

स्वय पठनाय स्वयं कृत स्वय लिखित । महिमारणा नगर प्रादि जिन चैत्यालये कृता । इसमे कृल तीन उल्लास है—

१ कालश्रयस्वरूप

२. चतुर्थं काल वर्णन स्वरूप

३. श्रष्टकाल स्वरूप वर्णन ।

३६६१. **अहवाहु चरित्र—रस्तर्नादः** । पत्रस० २४ । प्रा० ६४५१ इत्रा । माषा —संकृत । विषय—चरित्र । र०काल ४ । ले०काल स० १८४३ । पूर्णः । वेष्टन स० १२३३ । **प्राप्तिः स्थान**— महारकीय दि० जैन मन्दिर सजमेर ३ **३६६२. प्रतिसं० २।** पत्र स०२१ । घा० ११ × ४. इञ्च। ले० काल स० १६२७ । पूर्ण। वेष्टन सं० ११४० । **प्राप्तिस्थान**— भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--- कही २ कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं।

३६६३. प्रति सं०३ । पश्रस० २६ । मा०१०४६ इश्वर । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०३७ । प्राप्ति स्थान — द० जैन मन्दिर क्रभिनन्दन स्वामी, युदी ।

३६६४. प्रतिसं० ४ । पत्र स०२०१ । स्रा०६×५१ दश्व । ले०काल सं०१८०८ । पूर्ण । बेहन स०८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धनिनन्दन स्वमी बूदी ।

३२६५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २४ । प्रा० १९३ $\times$ ५ $\frac{1}{5}$  ६% । तेश्काल स० १८३२ फागुण मृदी १९ । पूर्ण । बेष्टर स० १७१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

३६६६. प्रतिसo६। पत्रसo२४। ग्राo१० $^3$  $\times$ ४ ६२४। ले॰काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसंo१२४ । प्राप्ति स्थान—दिo जैन पचायती मन्विरनदूनी (टोक)

**३६६७. प्रतिसं० ७ ।** पत्रस० २ ६ । आर० ११ ४ ५ इ.आ. । ले० कालसं० १८२५ । पूर्गा। वेष्ट्रनसं० ८० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रनवर ।

३६६८. प्रतिसं० ८ । पत्रम०२७ । स्रा० १२imes५३ इन्छ । ले० काल स० १८१६ फागुरा बुदी ४ । पूर्ण । वेस्टन सं०४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

३६६६. प्रतिसं**० ६** । पत्रस० ३१ । म्रा० ६×४ डचाले ०काल × । पूर्णा वेष्टन स० १५० । प्राप्ति स्थान --- दि० जैन अधवाल मदिर उदयपुर ।

३६७०. प्रति सं० १०। पत्र स० ३३ । ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times \mathbb{Y}_{q}^3$  इच्छा। पूर्ण ले०काल  $\times$  । बेष्टन स० १५६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

३६७१. प्रतिसं० ११ । पत्रस० २-१६ । ग्रा० १२ × ५३ इ.च । ले०कास सं० १७६० माध सुदीग्र १३ । पूर्ण । बेष्टनसं० ७५२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

३६७२. मद्रवाहु चरित्र भाषा— किशनसिह पाटनी । पत्र स०४३ । ग्रा०१२ 🗶 इ.ख.। भाषा—हिन्दी (पया) विषय—चरित्र। र०काल स०१७८३ माघ बुदी ८। से०काल स०१८८२ माह सुदी १२। पूर्ण वेष्टन सं०१४८२। प्रास्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर।

विशेष--- किशनसिंह पाटनी चौथ का बरवाड़ा के रहने वाले थे।

३६७३. प्रति सं० २। पत्र स० १६। घा० १३४७ इवा। ले० काल सं० १६०५ पौष सुदी ५। पूर्ण वेष्टन स०४१। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर लेखावाटी (सीकर)

३६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ह्या० ६ $\frac{1}{2}$  imes ६  $\frac{1}{6}$  हज्य । ते०काल imes । पूर्ण । वेहन सं० ७३–४२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपूर ।

**३६७६. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० ३६ । ले० काल स० १६७४ । पूर्ण । बेष्टन स० १६ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुंदी । ३६७७. प्रतिसं०६। पत्र सं०१६। श्रा०१०है×४ हुँद्वचाले० काल स०१६७६ मादवा बुदी १२। पूर्णा वेष्टन सं०६८। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पाश्वेनाय चौगान बूदी।

३६७८. प्रति सं०७ । पत्रसं०३४ । झा०१०४६ इचा । ते०काल स०१६४० । पूर्णं। वेष्टन स०८ । प्राप्ति स्थान-—दि० जैन स्रग्रवाल मन्दिर नैस्स्या।

३६७६. **प्रतिसं**० स १ पत्र सं० ३२ । ब्रा० ६ 🗶 ५ इञ्च । ले० काल स० १६०० । पूर्ण । वेक्रन सं० १ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैस्तुवा ।

> विशेष — लोचनपुर गुन साम में सिवराज जिनवाम । बुद्धि प्रमाश लिल्यो मुझे जिपये श्री जिननाम ॥ १ ॥ साइ करो मुझि ऊपरे, दोषहरो भगवान । सरश नगरा सारिकत्वहु घ्याऊं श्री जिनवार्शि । प्रमामश्रम बनाय के मार्व विनती एह । देव घर्म श्रुत सामृ को चरण नम् धरि नेह ।। समव है प्वालाल ने प्रतिविधि की थी ।

३६ म**ः प्रतिसं∘ ६ ।** पत्र स०२ मः। प्रा०१०×७ इश्वालेञ्काल सं०१६०२ । पूर्ण। वेष्टुत स०४ ४ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो कानैस्था।

विशेष---महाराजाधिराज श्री रार्मासहजी का राज मे बूदी के परगरी नैए।वा मध्ये ।

**३६८१. प्रति सं० १०**। पत्र सं० २६। घ्रा० ११×७ इश्वा । ले**०काल स०** १६६२ । पूर्ण । वेष्टन १० । **प्राप्ति रुथान** — दि० जैन मदिर वघेरवालों का (उगियारा)

३६८२. प्रति सं० ११ । पत्र स० ४३ । आ० १० $\times$ ७ इन्छ । ले०काल १८८२ । पूर्ण । वेष्ट्रत स्थान—दि० जैन सदिर राजमहल (टीक)

३६५३. प्रति सं० १२ । पत्र स० २१ । ग्रा० १२४८ इश्व । ले०काल  $\times$  ।पूर्ण । येण्टन स० ६१/५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्द्रराख (टीक)

विशेष-भेलीराज ज्ञानि सावडा चम्पावनी वाले ने माधीराजपुरा मे प्रतिलिपि कराई थी।

३६८४ **प्रतिसं० १३।** पत्रस० ४१। आ० १०८४ ै इञ्च । र०काल स० १७८३ माघ बुदी ८। ले०काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टनस० ७६। । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर प्रलबर ।

**३६० ४. प्रतिसं० १४ ।** पत्रस० २० । झा० १२<sup>3</sup> ४ ७ ३ डवा । ले०कास ४ । पूर्ण। बेष्टनस० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बैर ।

विशेच-- ५६५ पद्य है।

२६८६. प्रतिसं०१४ । पत्र स०१७। ग्रा० ६ $^1_2$ ४ ्द्रैड्याले० काल स०१८१३ प्रासोज सुदी १०।।पूर्ण । बेष्टन स०४२।प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है-नुम सबत् १८१३ वर्षे आक्षोज मारी सृक्कपक्षे दशम्पा रिववासरे क्षण्येनवालानवे निरवरवास गोत्रे आवकपुनीत श्री उदैरामजी तस्य प्रश्नावनामकारक श्री वृरामलजी तस्य पुत्र काव्य एवं वरित ] [ ३६१

इय ज्येष्ठ पुत्र लीलापती लघुमृत बनारसीदास पौत्रज राघेकृष्ण एतेषां साहजी श्री चुरामिएाजी तेनेदंशास्त्र लिखापितं।

> वोहा-च्रामिन ने ग्रन्थ यह निजहित हेत विचार। निलवायो भविजन पढो ज्यो पार्व सुखसार।।

३६८७. प्रति सं० १६। पत्र सं०८८। ले॰ काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन सं• १०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष — उपगृहन कया ऋषि मण्डल स्तोत्र, जैन शतक (सं० १७६१) बीस तीर्यकरों की जसड़ी सादि भी है।

३६८८. प्रतिसं० १७ । पत्रस० ४१ । ग्रा• १० ४१ इला । ले०काल स० १८५७ मधाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टुनस० १२-६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष -- चिमनलाल तेरहाथी दौसा ने प्रपिलिपि की थी।

३६८६. प्रतिसं० १८ । पत्र स० ४४ । ले० काल १८२७ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३७ । प्राप्ति
 स्थान—दि० जन मन्दिर तेरहतथी बसवा ।

विशेष --- कामागत में भोलीलाल ने प्रतिलिप की थी।

३६.२०. प्रतिसं० १९.। पत्र सं०४१। मा० १२ ४५ इ.चा। ले० काल स०१८५२ वैचाल मुदी १। प्रपूर्ण। वेष्टुन स०१७ १। प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौसा।

विशेष-चहों ने खारखा है।

३६६१. मद्रबाहु चरित्र माया—चंपाराम । पत्र सं० ४३ । आ० १० $^1_2 \times 1$  इञ्च । भाषा—हिनी (गद्य)। विषय--चरित्र । र०काल स०१६६४ सावन सुरी १४ । ले०काल स०१६२६ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण । बेहनस०६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर ग्रेखावाटी (सीकर)

विशेष-बाह्मरण पूष्करसा फतेराम जात काकला मे प्रतिलिप की थी।

सबत् ,१६२ मादवा सुदी १४ को ब्रनन्तव्रतोद्यापन के उपलक्ष में हरिकिसन जी के मन्दिर में चढायाथा।

३६६२. प्रति सं०२ । पत्र स०२३ । ग्रा०११ % ६ १ इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं०५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राप्तनत्वन स्वामी बंदी ।

३६६३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ७१ । घा० १०१ ४ ६१ इला । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । बेष्टन स० १४४ ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाव्यंताय मदिर, इन्दरगढ (कोटा)

३६६४. प्रति सं० ४ । पत्रस० ५६ । झा० ८्रै ४६ ६चा । ले० काल स० १६२३ झायाढ सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टनस० ४२, ५५ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाय इन्दरगढ (कोटा)

**३६६४. प्रति सं० ४ ।** पत्रस०३४ । द्या०१३४६ इञ्च । ले०काल सं०१८६६ । पूर्ण । वैद्युत सं०१४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली (कोटा) ।

३६६६. मद्रबाहु चरित्र भावा—  $\times$  । पत्र स० ८१ । प्रा० १ $\times$ १ $\xi$  इञ्च । भाषा—हिन्दी गर्ध । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । से० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४० । प्राप्ति स्थान— वि॰ जैन मन्दिर श्री महावीर दृंदी ।

३६९७. भद्रबाहु जरिज सटीक —  $\times$  । पत्र स० ४१ । प्रा० १२ × ७  $\frac{1}{2}$  इस । भाषा — हिन्दी गद्य । विषय — चरित्र । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १९७७ माघ सुदी = । पूर्ण । वेटन स० १४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैनमन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष---रत्नन्दि कृत संस्कृत की टीका है।

३६९८. **भविष्यदस् चरित्र—श्रीघर ।** पत्रसः ६४ । मा० १०३ ४४ इञ्च । माणा— म्राप्त्रं सः विषय—चरित्र । रुकाल ४ । लेकाल स० १६८४ च्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । प्रास्ति स्थान—महारकीय वि० जैन सन्दिर प्रजमेर ।

**३६९९ प्रतिसं०२ ।** पत्र स०६२ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेप्टन स०१९६ । प्राप्ति स्थान – भटारकीय दि० जैन मन्दिर सजमेर ।

३७००. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल स० १६१३ मादवा मुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०१। प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

विशेष —तक्षकमहादुर्गं मे मडलाचार्यं ललितकीत्तिदेव की ग्राम्नाय मे सा हीरा भौमा ने प्रतिनिधि करवायीं थी ।

**३७०१. प्रतिसं०४ ।** पत्रस०६३ । ले०काल १६४३ । पूर्गा । वेष्टन स०४६, ६७ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर समवनाय उदयपुर ।

## प्रशस्ति---

सवत् १६४३ वर्षे श्रावण बुदी ५ तिथी रिवासरे श्री चन्द्रावतीपुर्यी श्री ब्रादिनाथ चैत्यालये श्री सुन्नाचे सरस्वतीमच्छे बनात्कारगणे श्री कुरबुक्त्याचार्यान्यं श्री रहारक श्री सकलकीत्त्रदेवा तत्तरहुं भ० भुवन-कीतिदेवा तत्तरहुं भ० क्षानुम्पणदेवा तत्तरहुं श्री विश्वयकीतिदेवा तत्तरहुं भ० श्री गुमचन्द्रदेवा नत्तरहुं भ० श्री गुमचने तत्त्र विश्वयक्तितिदेवा तत्तरहुं भ० श्री गुमचने तत्त्र विश्वयक्तितिदेवा तत्त्रहुं भ० श्री गुमकीति तत् विश्वय ब्रह्म मेगराज पटनार्थं। मिरोजवास्तव्यं परवार ज्ञाती चौभरी माह तद्भायों भडा तथो पुत्र चर्ममारपुर परावत दानसीत पुत्रादिगुण मयुक्ता चौभरी वाघराज तद्भायों भानतती ताम्या ज्ञानावर्णी कस्त्रसार्थं श्री श्रीवयदत्त पत्रमी चिरित्रे हेश्विस्यादत्त ।

३७०२. प्रति स० ४.। पत्रसं० ४४.। आ० १० $\frac{3}{4} \times 1\frac{3}{5}$  इच । लेब्काल स० १७३१ मर्गामर बुदी व । पूर्ण । बेष्टन स० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर स्रादिनाथ बूदी ।

**विशेष**— प०ल धमीदास ने स्व पठनार्थलिखाथा।

**२७०२ प्रतिसं०६ ।** पत्रस०२६–४६ । म्रा०१२imes१६ खा । ले०कालimes । म्रपूर्णः । **बेह**न सं०७०**६ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिरलक्कर जयपुरः ।

२७०४. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ८८ । या० १०३ 🗶 ४ इचा । ले० काल स० १४४६ श्रावस्। बुदी ४ । पूर्णे,। बेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दुनी (टांक)

प्रशस्ति—सन्त १५५६ वर्षे श्रावण मान्ने इध्यापने प्रति पांचयो वृत्र दिने गयारे मन्दिरे श्री पार्थनाय वैत्याचये श्री मुलबर्धे सरस्वतीगच्छे बलात्कारणो श्री कुरबकुन्दावार्यान्वये अ० श्री सकलकीर्ति तरपट्टे अ० कुनक्तीति तरपट्टे अ० श्री ज्ञानभूषण तिष्व्यय मृति श्री गुणामूषण पटनार्थं बाई धातिका मदनश्री ज्ञानावराणीय कर्मानवार्या निवासिक प्रविध्यस्त विषय ३७०४. प्रतिसं० क । पत्रस० क्ष । मा०११४ ५ इच्च । ले० काल स०१६४६ । पूर्ण । बेष्टन सं०३६७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति—सं० १६४६ काती सुदी ४ गुरुवारे खडडक्ष देशे भेदकी पुर नगरे राजाधिराज मानस्यथ राज्ये प्रतिक्षिप हुई थी।

३७०६. प्रतिसंठ ६ । पत्र स०५० । ग्रा० १२ १४ ४ है इन्दा । ले०काल 🗙 । पूर्ण । बेष्टन स∙ २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रृंदी) ।

३७०७. प्रतिसं० १० । पत्र सं० २–६६ । द्या० १२imes४ है इञ्च । ले० काल imes । सपूर्ण । बेबुन स० २२२ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३७०**८. प्रति सं० ११।** पत्रस०१-७५। ले० काल स०१६१०। पूर्या। बेष्ट्रन स०१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर डीग।

३७०**६. प्रति सं०१२**। पत्र स०६७ । ले०काल स०१४६२ वैद्याख सुदी१०। पूर्ण । वेब्टन सं०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

संवत् १४८२ येणाल मुदी १० श्री योगिनीपुरे साहिशादा मुगदलान राज्य प्रवर्तमाने श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्कर गरो मावार्य श्री मावसेन देवास्तत् पट्टे श्री गुराकीर्ति देवास्तत् शिस्य श्री यशाकीर्ति देवा उपदेशेन लिलापित ।

३७१०. प्रतिसं० १३ । पत्र स० ६३ । ग्रा० १२ $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इच । ले•काल स० १६३१ वैशास सुदी ६ । पूर्णे । वेष्टन स० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

३७**११. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० १-८८ । घ्रा० ११ $^{9}_{4}$  ×  $^{9}_{4}$  इश्व । ले०काल  $\times$  । घ्रपूर्ण । वेष्टन स० न४ । **प्राप्तिस्थान**—प्रग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- = पत्र से धागे के पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

३७१२. **भविष्य दस्त चरित्र**—  $\times$  । पत्रस० १६ । ब्रा० १० $\frac{3}{4}$  × ५ ऽख । भाषा—सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १४३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिष्ठ (टोक)

३७१३. सविष्यदत्त चौपई—क्र० रायमस्त । पत्रस॰ ४२ । घा० १० $\times$ ४३८ इख । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । र०काल स० १६३३ काती मुदी १४ । ले० काल सं० १७६४ वैशाख सुदी ८ । पूर्णे । वेष्ट्रन स० १२४५ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३७१४. प्रति सं $\sigma$ २। पत्र सा४०। प्रा०१२imes५१ इ.स. । ले० काल सं०१६४५ काती सुदी १४। पूर्ण । बेस्टन स $\sigma$ २० $\sigma$ । प्राप्ति स्थान—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

२७१**४. प्रति सं०३ ।** पत्र स०७० । द्या० ५<sup>2</sup>,४६ इ.च. । ले०काल सं०१८४५ । **पूर्णं।** वेष्टनसं०१०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल, टॉक ।

विशेष — महारमा ज्ञानीराम सवाई जयपुर वाले ने प्रतिलिप की । लिखायित पं० श्री देवीचन्द श्री राजारामस्यक्ष के श्रेडर मध्ये । ३७१६. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४४ । ग्रा० १० $rac{1}{2} imes rac{1}{2} = 1$  ले० काल स० १५३० । पूर्ण । केश्न स० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्थामी मालपुरा (टोक) ।

लेखक अशस्ति—मिति मादवा बुदि ११ वर दीतवार सवत् १८२० साके १६६४ प्रवर्तमान मट्टारक श्री १०८ श्री सुरेन्द्रकीति जी प्रवृतमान मृत्याचे बताकार गरी गुरसती गच्छे झाम्नाये श्री कुँद-कुन्दाचार्ये लिखिनार्यं साहा नाषुराम सोनी जानि सोनी। तिलतु रुडमन गोया। श्री ग्रादिनाय के देहुरा।

३७१७. प्रति सं० ४,।पत्रस० ५३ । झा०१० ४ ४ है दश्व । ले०काल ४ । झपूर्एं। वेष्ट्रनसं० ५०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष - ईश्वरदास साह ने प्रतिलिपि की ।

३७१८. भुवन भानुकेवली चरित्र ४। पत्रस०३७। घा० १०४४ ट्रेड्स । भागा-सस्कृत। विषय-चरित्र। र०काल ४ .से•काल स०१७४७। पूर्ण। वेप्टन स०१५। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना बुंदी।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

इति श्री भवनभान केवलि महाचारित्रे वैराग्यभय समाप्त ।

सबन् १७४७ वर्षे झाने १६१२ मिति फागुल बृदि १पडितोत्तम स्त्री ५ स्त्री सब्दमी विमलगित्त क्षित्र्य परित्त किरोमिण् पडित स्त्री ५ स्त्री र गविमत्त्राणि क्षिप्य समर विमल गरिष् क्षिप्य गरिष् भी रत्नविमल म्, पठनार्थ मणबतगढ़ नगरेपातिसाह श्री धीरणमाह विजेशज नवाब धस्तवागी नामे राजश्री साहुलमिहजी राजे निस्तत ।

३७११. भोजप्रबंध—पं० बल्लाल । पत्रस०४०। घा०१३ ४६ इत्र । भाषा—सस्हत । विषय-कान्य । र०काल स०१७४४ । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४६३ । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३७२०**. प्रति सं०**२ । पत्र स० ७४ । प्रा०१०<sub>२</sub> × ५ इश्वर । ले०काल सं०१⊏६६ । वे० सं∙ २६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३७२१. भोज चरित्र – मवानीवास व्यास । पत्रस $\circ$  ३४ । प्रा $\circ$  १० ४४ $\frac{3}{8}$  इंच । प्रावा — हिन्दी । विषय —काव्य । र $\circ$ काल X । से $\circ$ काल स $\circ$  १८२४ । वेष्टून स $\circ$  ६७२ । प्राप्ति स्थान — हि $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—गढ जोधाए। सतील धाम श्राई दिलाई। पीर परकल्याए। गुजम गुगा गीत गबाई।। भोज चरित तिए। मु कक्को कवियाग सुल वावे। स्थाम भवानीदास कर्वन कर बात् सुलाई।। मुगा। प्रका चारण प्रते भोजराज बीन कक्को। कल्याणदास भूगाल को पर्म ध्वजाधरी कक्को।

इनि श्री भोज चिन्त्र सम्पूर्ण । सबत् १६२५ वर्षे मित कातिम बुदि ४ दिने बाबीबारे लिखित । पचायक विजेयस श्रीमन्नामपुरे श्री पार्थांनाथ प्रसादात् । ३७२२. मोजप्रबंध —  $\times$  । पत्र त०२०। ग्रा०१ $\times$ ४ इन्थः। माथा — सन्हत । विषय — काव्यः। र०कालः  $\times$ । ते०कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्टनं स० -३। प्राप्तिः स्थानं — दि० जैन मदिर दवलानाः (इ.वी.) ।

३७२४. मिरिणपति चरित्र—हरिचन्द सूरि । पत्र सं० १८ । भाषा—प्राङ्कत । विषय-चरित । र०काल स० ११७२ । ले० काल  $\times$  पूर्ण । वेष्टन स० ४६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर मरतपुर ।

३७२५. भयस्परेहाचरित्र—  $\times$  । पत्रसं० ७ । मा० ११ $\times$ ५ हुन्त । भाषा—हिन्ती (पद्य) विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ते० काल सं० १६१६ काती बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी) ।

३७२६. सलयसुन्दरोचरित्र—जयितलक सूरि। पत्र स०६७। मापा — सम्ब्रत । विषय-चरित्र। र०काल × । ते०काल स०१४६० माघ सुदी १ सोमदिने। पूर्ण। वेष्ट्रन स०६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पनाधनी मन्दिर वसवा।

३७२७. सलयमुंदरी चरित्र भाषा—ग्रस्तयराम लुहाडिया । पत्रस० १२४ । माषा-हिन्दी (पदा) । विषय-चरित्र । रुकाल 🗴 । ले० काल सं० १७७४ कार्तिक बुदी १२ । पूर्ण । बहुनस० ६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष---प्रारंभ --

रिषभ ग्रादि चौबीस जिन जिन सेया ग्रानन्द ।

नमस्कार त्रिकाल सहित करत होय सुखकंद ॥

३७२ म. सिल्सनाव चरित्र— म० सकलकीति । पत्र सं०२७ । प्रा० ११ ${}^2_i \times {}^1_i \times {}^2_i \times {}^1_i$  माषा -- संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल  $\times$  । ले॰काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्रास्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३७२६, प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । आ ० १०४४ इच्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रनस० २७८ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

३७३०. प्रति सं० ३ । पत्र स०४१ । प्रा०११×४ $\frac{1}{2}$  इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०७३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

३७३१. प्रति सं० ४ । पत्र स०४१ । प्रा० १० x imes 1 हुवा । ते॰काल स० १६२३ घ्रासोज बुदी १४ पूर्णे । बेष्टन सं० २४४/२४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष--दीमक लगी हुई है।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबत् १६२३ वर्षे धाववित १४ गुके श्री मूलसबे महारकश्री सकसकीति तरपट्टे भ० श्री भुवनकीति तरपट्टे म० ज्ञानभूषण तरपट्टे भ० विजयकीति तरपट्टे भ० गुभचन्द्र तरपट्टे भ० श्री ग्रुमतिकीति स्तदास्नाये गिरिपुर वास्तम्य द्ववडकातीय का॰ सादया भार्या सहिजनार्द तयो मृत सम्यक्तवपानीय प्रकालित पापकर् न सङ्गी-कृत द्वारयवतनित्यम । दानदत्ति सर्तापत त्रिविषपात्र विहित श्री शत्रु अयेताओरेत तु गी प्रमुख तीर्थ पात्र नमस्त गुरुणरणादेव. को जावड तद्मार्या शितेवशील संपन्ता दानपुत्रापरायरणातावण्य अतयेवंता वचनामृतवापिका अविका गोरा नाम्नी द्वितीय भार्या पुहुणुदे तथो पुत्र को सामलदात एतं. ज्ञानावरणी कर्म अयार्थ य॰ कर्ण-सामराय श्री मक्षिनाण चरित्र सांतिवायप्रदत्तं।

**३७३२. प्रतिसं० ४**.। पत्रस० ७६। ले॰काल १६२२ ब्राणाढ सुदी २। पूर्ण । बेष्टन सं० २२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पत्रावती भरतपुर ।

विशेष-- भरतपुर मे पन्नालाल बढजात्या ने लिखवाई थी।

३७३३. मिललनाथ चरित्र— सकलमूबर्ग । पत्र स०४१ । आ०११ $\frac{1}{4} \times \mathbb{Q}_{\frac{1}{4}}$  इख । माषा— सस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल्र  $\times$  । ल० काल् स०१०० फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनस०१३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्थामी (बुदी) ।

३७३४. मिल्लिनाथ चरित्र भाषा—सेवाराम पाटनी। पत्रसः ४१। प्रा०११४७३ इञ्च। भाषा—हिन्दी।विषय—चरित्र। र०काल स०१८५० भारता बुरी ५। लेक्काल स०१८८४। पूर्णं। बेष्टन स०१०। प्राप्ति, स्थाल-दि० जैन मन्दिर रीबानजी कामा।

विशेष—कामा में सदासुख रिपभदास ने प्रतिनिधि की थी।

प्रारम्म --

(नमः) श्री मिक्कनाथाय, कर्ममङ्गविनाशने । श्रनन्त महिमासाय, जगत्स्व।मनिनिश ।।

पद्य---

मिल्लिनाथ जिनको सदा बदो मनवचकाथ ।
मञ्जलकारी जगत मे, भव्य जीवन सुन्यदाय ।।
मञ्जलमय मञ्जलकरण, मिल्लिनाथ जिनराज ।
ग्राप्त स्यो में ग्रथ यह, सिद्धि करो महाराजि ।।२॥

हिन्दी गद्य का नमना---

समस्त कार्यकरि ज्यात गुरूनी लेकिंग्डन्ट बडी विभृति मृप्ववत पुरुनी लेक्सावता हुआ । तहा राज क्रागरा के विशे बडा सिहासन पाइ हवं करि सर्वाङ्ग भूषित इन्द्र वैठनी हुई ।

## ग्रन्तिम प्रशस्ति---

रामसुल परमानीमळ, जोचराज मगहि बुदिमळ । दीपबर गोधो गुगवान होन बारणा मिलं कही बलानि ॥१॥ माईलगण बरिज की भाषा, करो महा इह प्रति विस्थात । पढें मुने सावरमो लोग, उपजे पुष्प पाप क्षप होत्र ॥२॥ तब हमने यह कियो विचार, वचनकर जाया प्रतिसार । कीचे रचता सुगम प्रमार, सब जन पढें मुने सुनकार ॥३॥ मायाबन्द को नंदन जानि, गोतपारणी सुककी लानि । कैवाराम नाम है सही, भाषा कि को जानी रहि ॥४॥। श्रस्य दुद्धि मेरी श्रमि कर्स्यों, कवि जन सु विनती द्रम मस्पी ।
भूल कुल जो लेंद्र सुधार, इहि प्रस्य मेरी प्रवचार ॥५॥
भूम वास शोसा का जानि, डीगमाहि मुलवात बलानि ।
महाराज रस्प्रजीत प्रवच, जाटखंश मे प्रतिवनत्व हा ॥६॥
प्रजा सबै मुलसी प्रति वमै, पर दल ईति मीतिनद्री लसौ ।
न्यायवत राजा श्रति भली, जैवतो महि मंद्रल लसौ ।
सवन् प्रस्टादणगत जानि, धीर पनाम श्रमिल ही मान ॥
भादीमास प्रथम पक्षि माहि, पाचे सोमवार के माहि ।
नव इह यह संस्टारी नियों, लविजन मन वाद्वित पल लियो ॥

३७३५. प्रति सं० २ । पत्र स० २६ से ६४ । ले० काल स० १८५० । श्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ४८ । प्रास्ति स्थान—दि जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डींग ।

३७३६ प्रति सं०३। पत्र स०४६। आ०१०३४६ इंच। लेक्सल स०१८५० भादवा बुदी५। पूर्णं। बेष्टनस०२६०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जीकामा।

विशेष--स०१६५० भादवा बुदी ४ सोमवार डींग सहर में लिब्यो सेवाराम पाटनी मयाचन्दजी का जानावरणी कर्मक्षयार्थ।

प्रति रवनाकाल के समय की ही है। तिथि तथा सवत् एक ही है।

**३७३७. प्रति सं० ४**। पत्रस० ६४ । ग्रा० १०×५ है इख । **ले**०काल स० १८८३ काती मुदी ऽऽ। पूर्ण । वेष्टन सं० ७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पश्चायती मन्दिर कामा ।

विशेष —कामा मे सदागुज कासलीवाल ने प्रतिलिपि की । महाराजा सवाई बलवतिमह जी के शासनकाल में फीजदार नाथूराम के समय मे लिाला गया था ।

३७३८ सहाबीर सत्ताबीस भव चरित्र— $\times$ । पत्र स० ३। प्रा० १ $\times$ ३ $^{3}$ १ द । भाषा— प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टनसं० २३७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

विशेष-जिनबल्लभ कवि कृत संस्कृत टीका सहित है।

३७३६. महीपालचरित्र—चीरवैव गरिए। पत्र स० ११। प्रा०११ ४ ४ इश्वः। भावा— प्राकृतः। विषय—चरित्रः। र०काल ४। ले०काल स० १७३६। पूर्णः। वेष्ट्रन सं० २००। प्राप्तिः स्थान—वि० जैन मदिर दीवानजी कामाः।

३७४०. सहीपाल चरित्र—चारित्रभूषण । पत्र स० ५० । बा० १० ४४ हुँ इच । भाषा— सस्कत । विषय—चरित्र । र०काल सं० १७३१ श्रावण सुदी २ । ले० काल सं० १६४२ माघ सुदी । पूर्ण । वेष्टन स० १०४६ । प्रास्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर खजभेर ।

विशेष---ग्रजमेर में प्रतिलिपि हुई।

३७४२. प्रति सं०३। पत्र स०४८। प्रा०६२ ४१ इन्छ। ले०काल स०१८६१ भाववा बुदी १०। पूर्णे। बेष्टुनसं०४/८०। प्राप्ति स्चान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोबारावसिह (टोक)। बिरोष—०० मोतीनाल ने प्रतिलिपि की थी।

३७४३, प्रति सं०४ । पत्रस० २६। आ०१२}४ ६३ इचा। ले०काल स०१७८३ सावरा बुदी ७। पूर्ण। बेद्यतसं०७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैरावा।

विशेष-- उग्यारामध्ये रामपुरा के गिरधारी ब्राह्मण ने जती जीवग्रराम के कहने से लिखाया था।

३७४४. प्रतिसं**० ५ ।** पत्र स०४२ । प्रा०१०}४६ इञ्च । ले०काल स०१६३३ । पूर्णं । वेष्टनसं०७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर राजमहल टोक ।

३७४**५. प्रति सं०६।** पत्र स०३६। म्रा०१०३४४३ इश्व। ले० काल स०१८२६। पूर्ण। वेष्टन स०२४०। **प्राप्ति स्थान** —पार्यनाथ दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

३७४६, **प्रसिसं०७।** पत्र स०४०। घा०१०×४, इश्वर। ले०काल स०१६५४ कार्तिक **बुदी** १३। पूर्ण। बेस्टन स०६। प्राप्तिः **स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

विशेष—कोटानगर के रामपुरा शुभ स्थान के पं० जिनदास के शिष्य हीरानन्द के पठनार्थ प० सालचन्द ने लिखा था।

३७४७. महोपाल चरित्र माषा—नयमल दोसी। पत्र त०६६। प्रा०१० $\times$ ६ रृथ। माषा—हिन्दी गत्र । विषय—चरित्र । र०काल स०१६१८ ब्रासोज बुदी ४। ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत सं०४। प्रारित स्थान—दि० जैन मन्दिर पास्वेनाथ चीगान बृदी ।

विशेष--- दुलीचन्द दोसी के सुपीत्र तथा शिवचन्द के सुपुत्र नथमल ने ग्रंथ की भाषा की थी।

३७४**८. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०४३ । घ्रा०१३ × ८ इच्चा ले०काल स०१८६८ । पूर्ण। वेष्टन स०४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर पार्थनाथ चौनान व दी।

विशेष-प्रतापगढ नगर मे अतिलिपि हुई थी।

३७४६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६१ । आ० ११ ४७ इन्छ । ले० काल 🗴 । पूर्णं । वेस्टन स० १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर अग्रवालो का नैगावा ।

३७५०. प्रति स०४। पत्र स०६८ । स॰० ११४७ इश्वर। ले०काल 🗴 । पूर्णा वेष्टन स० ३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

२७४१. प्रति स०४ । पत्र सं०१३२ । आ० १२४५ इस्व । ले० काल स०१६३४ श्रावस्स बुदी १२ । पूर्ण । वेश्न स०३३२-१२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

३७५२. प्रति सं०६। पत्रस०४८। बा॰ ११imes६६ । ले॰ काल स०१६५६। पूर्स। बेष्टनस०११४-५६। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

३.७४३. प्रतिसं०७ । पत्र म०७२ । प्रा०६×७१ इल्डाले०काल ×।पूर्षा । बेष्टनसं० ⊏। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मस्दिर ग्रन्नकर।

३७४४. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ६१ । छा० ११४७ ६ च । ले० काल सं० १६४८ प्रासीज बुदो ६ । पूर्ण । वेप्टन सं० ५७ । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टॉक्) । ३७४४. प्रतिसं० ६ । पत्र सं०४७ । घा० १३ ४७ है इला । ले०काल स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टत सं०१७० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी (बूदी) ।

३७४६. महीमट्ट काव्य — महीमट्ट । पत्रसं॰ ७२ । ग्रा॰  $\xi_y^1 \times x_y^2$  इ.स. । माया — संस्कृत । विषय — स्थाकरणः । २० काल  $\times$  । त्रणं । ब्रेट्न सं॰ १६६ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मिलर पर्कताच इन्दरता (द वि

३७५७. सुनिरंग चौपाई—लालचन्द । पत्रसं० ३३ । भाषा—हिन्दी । तथय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर, भरतपुर ।

३७५६. मेघवूत—कालिवास । पत्रसं॰ २६। मा॰ ६ $\times$ ४} इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र० काल  $\times$  ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं॰ १२६६ । प्राप्ति स्थान—स॰ दि॰ जैन मन्दिर स्वजेर ।

३७५६. प्रति सं०२ पत्र स०१७ । झा०६×४२ इश्व । ले० काल × । झपूर्णं । वेष्टन सं० १६०३ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्तिर धजमेर ।

३७६०. प्रतिसं ० ३ । पत्र स० १४ । घा० १२ × ४ १ इ.स. । ले० काल × । वेष्टन स० १३४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

३७६१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १० । मा० ११३ $\times$ ४३ १ व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण बेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रतिनन्द स्वामी, बृंदी ।

३७६२. प्रति सं० ४ । पत्रस०१४ । प्रा० १२ × ४ इन्थ । ले०काल × । पूर्ए । बेष्टनसं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिदन्दन स्वामी, इ.दी ।

३७६३. प्रति स०६ । पत्र स०१७ । ब्रा०१० 🗴 ४६ च । ले० काल 🗴 । पूर्ण ।वे० सं• ७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर समिनन्दन स्वामी बृंदी ।

३७६४. प्रति सस्या ७ । पत्रसं० ६ । म्रा० १imes ४ इन्त । ले०काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० २२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना वृदी ।

३७६४. प्रतिसं० द । पत्र स०१७ । प्रा०१०१४ ४ है इथा । लेल्सल सं०१६१६ फामुसा खुदी १३ । प्रपूर्ण । वेस्टनस०३०६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

३७६६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३४ । घा० १०ॄे ४५ इचा । ले०काल ४ । पूर्या। वेष्टन सं० ३०८ । प्राप्ति स्वान – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-सजीवनी टीका सहित है।

२७६७. प्रतिसं० १० । पत्र सं०२८ । ग्रा०८२ ×४ इथा। ते० काल सं०१६८७ । पूर्णं । वेष्टन सं०४७ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मस्दिर दवलाना (वृंदी)

विशेष-प्रशास्ति निम्न प्रकार है.-संबर् १६८७ वर्षे बैशाख मासे सुनतपक्षे एकादस्यां तियो भीम-सासरे वृं वीपुरे चतुर्विसति झातिना सारंग घरेण लिखिलं इदं पुस्तकं । ३७६८. प्रतिसं० ११ । पत्रसं० १७ । घा० १२ 🗴 ४ इश्व । ले०काल स० १८१६ । पूर्ण । वैक्रनसं० १३४ । प्राप्तिः, स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

३७६८. प्रतिसं ० १२ पत्रस० ४७ । ले०काल x । ब्रपूर्ण । वेष्टनस० ५२० । प्राप्ति स्थान--दि० जैन पंचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष-सस्कृत टीका सहित है।

विशेष---प्रति जीर्ग है।

३७७०. प्रति सं० १३ । पत्रस० २३ । आ० १०% ४५ ३ इश्व । ले० काल 🗴 ।पूर्ण । वेष्टन सं० १८४-७७ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, हुनरपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन एव टीका सहित है।

३७७१. मेघदूत टोका (संजीवनी)—मल्लिनाथ सूरि । पत्र स० २-३३ । घा० ६३  $\times$  २ $\frac{1}{2}$  इच । भाषा—सम्कृत । विषय—काव्य । र०काल  $\times$  । ले० काल स १७४७ । प्रपूर्ण वेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रथवाल मदिर उदयपुर ।

**बिशेश**—ग्रन्थाग्रन्थ स० १७०० प्रशस्ति निम्न प्रकार । है—सवत् १७४० वर्षे मगसिर मृदी ६ । दिने लिखित शिष्य लालचन्द केन उर्वेपुरे ।

३७७२. मृगावती चरित्र—समयसुन्दर । पत्र स०२-४६ । द्या० १०४४ है इच्च । पापा-हिन्दी (पद्य) । विषय चरित्र र०काल स०१६६ । ले०काल स०१६६७ फाग्रुस मुदी २ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०४५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

३७७३. मृगावती चरित्र × । पत्रतः ३२ । मा० १०४४ इश्व । भाषा — हिन्दी । विषय – चरित्र । रकाल × । तेकाल × । मृत्युर्ण । बेष्टन तः ११४-६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर करा नीमर्पणी दौसा ।

३७७४. यशस्तिलक चम्यू—मा०सोमवेब । पत्र म०४०४। मा०१११ ४ १ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय — काव्य । र०काल सं० ६६१ (शक) वि० स० १०१६ । ले० काल स०१६४४ । पूर्ण । वेकृत सं०१ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर मजसेर ।

३७७५. प्रतिसं० २ । पत्रस० २४४ : ले० काल imes । पूर्एं । वेष्ट्रन स० २७ । प्राप्ति स्थान- भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३७७६. प्रतिसं०३ । पत्रसं०२६४ । ग्रा०१२ ¦४५ इञ्च । ले० काल स०१ ५७६ पीय सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर प्रादिनाथ बुदी ।

विशेष-महात्मा फकीरदास ने खधारि मे प्रतिलिपि की थी।

३७७७. प्रति स० ४ । पत्र स० २७० । स्रा० १२imes४ इ.च । से० काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २३ । प्राप्टिः, स्थाम—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

**३७७८. प्रतिसं० ४.।** पत्रस० ३६२ । म्रा० १२ $\times$ ४ $\frac{1}{7}$  इ.च.। ने० काल स० १७१६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन म० ३१६ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टीबानजी कामा ।

विशेष — सरवाड नगर मे राजाधिराज थी सूर्यमल्ल के ज्ञासन काल मे प्रादिनाय चैल्यालय मे श्री कनककीर्ति के शिष्य प० रायमल्ल ने प्रतिलिपि कौ थी। सस्कृत में कठिन झब्बो का अर्थ मी है। ३७७६. प्रति सं० ६ । पत्र स० २०१-२८२ । घा० ११ 🗵 ५ हुँ इथा । ले० काल स० १४६० बैगास बुदी १२ । घपूर्ण । बृष्ट स० ३२४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष---नेमिचन्द्र मुनिना उद्दत हस्ते लिखापित पुस्तकमिद ।

३७००. यशस्तिलक टिप्पस् $-\times$ । पत्रसं० ३४३ । प्रा० १२ $\times$ ८ इखा। माषा-संस्कृत। (गर्षा) विषय-काव्य र०काल  $\times$ । ले० काल सं १६१२ । प्रषाढ सुदी १३। पूर्णः । बेष्टन सं० १२१। प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

३७६१. यशस्तिलक चम्यू टीका—श्रुतसागर । पत्रसं० २०। प्रा० ११  $\times$  ७ है इस । माया— सस्कृत । विषय— काव्य । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६०२ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण वेष्टनसं० १०१ । प्राप्तिः, स्थान–दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपूर

विशेष — सवार्ड मार्नासह के शासन काल में अयपुर के **नेमिनाय चेल्यालय** में (लक्कर) विजयचन्द की मार्यो ने ब्रष्टाह्निका त्रतोद्यापन में प० ऋोक्त्राम से ब्रितिलिपि करवाकर मन्दिर में भेट किया ।

३७८२. यशोधर चरित्र—पुरुषदंत । पत्र स० ७२ । घा० ११ 🗙 ४ ्रै इञ्च । माषा— ग्रपञ्जं ग । विषय—चरित्र । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १२५५ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष--स ० १६२६ में चादमल सौगानी ने चढाया था।

३७८३. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८६ । झा० ११ ४४६% । ने० काल स० ११६४ । पूर्ण । बेष्टन स०४८८ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

प्रशस्ति — सबत् १५६४ फागुरा सुदी १२ । श्री मूल सभे सरस्वती गच्छे क्रुटकुंदाबार्यान्वये श्री धर्मचन्द्र की ग्राम्माय मे खण्डेलवाल हरांसह की मार्या यागस्वती ने ग्राचार्य श्री नेमिचन्द्र को जानावरसी क्षयार्थ दिया ।

३७८४. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १०७ । ब्रा० १२ 🗴 ४ १ इञ्च । ले०काल स० १५४६ पूर्ण । वेष्टुन स० २८६।३२ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन सम्भवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — पर्णास्त निम्न प्रकार है — सबत् १५४६ व र ज्येष्ठ वृदी - भीमे श्री मृतसर्थे सरस्वती गच्छे श्री कुद कुदावायांग्वयं भट्टारक श्री सकलकीति देवातत्पट्टे मट्टारक श्री भुवनकीति देवातत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूष्ण देवा तद्भाष्ट्र भ्रा० श्री रत्नकीतिदेवा तत् श्रिष्य ब्रह्मान्त सागर उपदेशेन श्रीमती गद्यार मिन्दि श्री पार्वनाय वैत्यात्वे हुबड आतीय श्री थना सार्या परोपकारियी द्वादशानुप्रेक्षा चितन विधायिनी शुद्धशील प्रति पार्विनी मात्री नाम्भी स्वश्रंय श्रे०से श्री यशीवर महाराज चरित्र लिखाप्य दक्त ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थ शुभ भनत्। कल्याराभूषान्।

३७८५. यशोधर चरित्र टिप्पसी —प्रभावन्द्र । पत्रसः '१२ । धा० ११४४ इन्ह ॥ भाषा सस्कृत । विषय — चरित्र । २०काल ४ । ले० काल स० १५७४ । प्रपूर्ण । बेप्रनस्क ४८७ । प्राप्ति स्थान — जैन दि० मन्दिर सम्भनाय उदयपुर ।

प्रमस्ति—सवत् १५७४ ज्येष्ठ मुद्दी ३ पुथे श्री हतपत्तने श्री वृषम चैत्यालये श्री मृतसंघे श्री भारती गच्छे श्री हु दहु दाजायांच्ये भ० श्री पधनदि त. प. देवेन्द्रकीति त. म. विद्यालदि तत्यहुँ भ. मस्तिमूक्स् त. प. म. तस्मीवन्द्र देवाना शिष्य श्री झानवन्द्र पठनार्थ श्री सिंहपुरा जाने श्रीष्ठि माला श्रीष्ठि नाथव सुता वार हस्साह तस्या एक जम्म निर्माल निल्लास्ति । ३७८६. यशोषर चरित्र पीठिका—  $\times$ । पत्रस०१८ । प्रा०११ $\times$ ६ इश्वः। भाषा— संस्कृतः। विषय—चरित्रः। र० काल  $\times$ । ले०काल स० १६८६ । पूर्णः। वेष्टनस० २६४। प्राप्तिः स्थान—सप्रवाल वि० जैन मन्दिर उदयपुरः।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

ं सबत् १६८६ श्रावरण बदो ११ दिने श्री मूलसबे भट्टारक श्री परानदी तद् गुरुग्रता ईख बहाचारी लाडयका तत् विषय बहा श्री नागराज बहा लालजिल्लाना स्वहस्तेन पठनार्थ।

३७८७. यशोबर चरित्र पीठबंब—प्रभंजनगुरु । पत्रस०२०२ । ग्रा०१४ $^{1}$  इञ्च । माया-सत्कृत । विषय—परित्र । र०काल  $\times$  । ले॰काल स०१६४४ । पूर्ण । बेष्टन स०४५४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

संबत् १६४४ फागुरा सुदी ११ सोमे श्रीसूरपुरे श्री ग्रादिनाव चैत्यालये क० कृष्णा प० रामई म्यास्यां निस्त्रापितं।

**ग्रान्तिम पृष्टिपका**—इति प्रमंजन गुराश्चरिते (रचिते) यशोधरचरित पीठिका बधे पचम सर्ग ।

३७८८. यशोधरचरित्र — वादिराज । पत्र स०२-२२। प्रा०११ × ५ इश्व । भागा—सस्कृत । विषय — चरित्र । र०काल × । से०काल स०१६६२ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०३२७ । प्राप्ति स्थान— प्राप्ताल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष — सबत् १६६२ वर्षे माह सुदी १३। जनौ श्री मृलस्ये सरस्वती गच्छे बलात्कारगरी ची कुन्दकुन्दाबार्यान्वये भट्टारक श्री बादिभूषरा तत् ज्ञिप्य प० बेला पठनार्थ ज्ञास्त्रांमद साहराम लिखतीमद । लेखक पाठकयो सुभ भवतु ।

३७**८९. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०२०। प्रा० १imes४<sup>३</sup> डच । ले•काल स०१४८१ । पूर्ए। वेष्ट्रत सं०४८५ । प्रा**प्ति स्वान**—सभवनाय दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

संवत् १५-१ वर्षे श्रावरा वृत्रो ७ दिने श्री मूलसर्वे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये महारक श्री पद्मनिद तरपट्टे महारक श्री जिजवन्द्र देवा तदाम्नाये गोलारान्डान्वये पं० श्री वनस्याम तत्पुत्र पृष्ठित सुक्षानन्द निजाध्ययनार्थमिद ग्रंथ लिखापित ।

३७६०. सशोधर चरित्र---वासवसेन । पत्रसः ४१ द्वा० १० र्रे × ४१ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय--वरित्र । र०कान × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । प्रारित स्थान----भ० दि० जैन मन्दिर, प्रवमेर ।

३७६**१. प्रतिसं०२ ।** पत्रसं० ७६ । मा० १०३ ×४ है इवा। ले० काल सं०१८०३ । पूर्यो। बेष्टन स०१४२ । प्राप्तिः स्थान— ५० जैन मदिर घमिनन्दन स्वामी बुदो।

विशेष - जयपुर नगर में महाराज सर्वाई ईश्वरसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई।

३७६२. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १७ । प्रा० १० $^2_1 \times ^2_1$  इन्ज । ले०काल  $\times$  । बेष्टन स० ७६३ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३७६३. यसोघरचरित्र—पद्मनामकायस्य । पत्रसं० ६०। प्रा० १०३४ ५ इञ्च । मापा— संस्कृत । विषय—परित्र । र०काल ४ । ले•काल सं० १८६५ पोष सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४४१ । प्राप्ति स्थान – मट्टारकोय वि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३७६४. प्रतिसं०२ । पत्रमं०७६ । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं०२७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपर ।

३७६४. प्रति सं० ३ । पत्रस०४१-७० । घा०११ है ४४ है इस । भाषा-संस्कृत । विषय-परित्र । र०काल ४ । ले०काल सं०१०४१ फागुए। सुदी १ । बेष्टनस०१४६ । प्रपूर्ण । प्राप्तिस्थान-वि० जैन मदिर लक्कर, जयपर ।

३७६६. यशोषर चरित्र—पदाराज । पत्र सं० १-४० । प्रा० १२ $\times$ ४३ । मापा—सस्कृत । विषय —प्रारंत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्ट्रन सं० ७४२ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपर ।

३७६७. यशोषर चरित्र—साचार्य पूर्णदेव । पत्रसं० १८ । मा० १३ ४ इला । मावा— सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल ४ । ले० काल स० १६७४ म्रासोज बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

विशेष -- पाडे रेखा पठनार्थ जोशी भ्रमरा ने प्रतिलिपि की ।

३७६ म. प्रतिसं० २ । पत्रस० २८ । आ०६ १ $\times$ ४ इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनस० १६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष ---लेखतं पद्म विमल स्वकीय वाचनार्थं

३७६६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १३ । ब्रा० १० ४ ४ इंच । बेष्टनसं० १४७ । पूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्ष्कर, जयपुर ।

विशेष--कहीं २ कठिन शब्दों के प्रथं भी दिये गये हैं।

३८००. **यशोधरव्यरित्र—सोमकीति** । पत्र सं० २८ । ग्रा० ११४४ इखा । माया—संस्कृत । विषय—चरित्र । र० काल ४ । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं०४८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० समयनाथ जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सबत् १६५६ वर्षे चेत्र सुदी ३ भीमे जवाद्या नगरे राजधिराज श्री चन्द्रमाण्याच्ये श्री झादिनाथ चैत्यालये काष्ठासचे नन्दीतदगच्छे श्री रामसेनान्यये म० सोमकीति म० यसाः कीति त० भ० उदययेन त०म० विश्वनकीति तलप०भ० रस्तभूषण् झाचार्य श्री जनसेन श्री जयसेन जिष्य करूवाण्यकीति तत् ज्ञिष्य करू

३००१. यशोधर चरित्र—सकलकीर्ति । पत्रसं० २२ । आ० ६ $\frac{5}{4}$   $\times$   $\frac{5}{4}$  इन्छ । आधा—संस्कृत । विषय —चरित्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ११४२ । प्राप्ति स्थान—महास्कीय वि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**२००२. प्रतिसं० २**। पत्रसं० २८ । मा० १२×५ इञ्च । ले•काल्व×। पूर्ण । बेष्टनसं० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मंदिर ग्रजमेर । ३८०३. प्रतिसं० ३ । पत्ररा० ६१ । म्रा० १०ॄ४४ । उचा ने० काल स०१८४६ । पूर्णे । वेष्टनस०२८ । प्राप्ति स्थान— बग्रवाल दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष - उदयपर नगरे श्री तपागच्छे ।

३ त०४. प्रति सं०४ । पत्र स०२ त। प्रा०११ ४ ४ इन्छ । भाषा—सस्कृत। विषय -चरित्र। २०काल ४ । ले० काल स०१६४४ । पूर्ण। बेप्टन स०१ त। प्रास्ति स्थान—अग्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपर।

३८०५. प्रति स०५ १ पत्र स०५४ । म्रा०१०४४ इ.खा ले०काल सं०१६४१ । पूर्णं । बेष्टन स०१६१ । प्राप्ति स्थान—म्यमबाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबन् १६४१ वर्षे पौष मुद्री ७ भीमे ईलहुनं मध्ये जिल्ला भेला श्री धर्मदास जिल्ला नहराय सघ जीवनाथ वास्त्रव्य हुँवड ज्ञातीय कोठारी विज्ञातन् भाषां र गा मुत्र जे म ग जीवराज इद पुरतक जानावरणी कर्मक्षयार्थं मृति व्यञ्चला दत्ते जिल्लापित ।

३६०६. प्रतिसं०६ । पत्रस०३६ । प्रा०१० $\frac{1}{2} \times 3\frac{1}{2}$  इख । र०काल  $\times$  । लेक्सल स०१६७१ । पूर्ण । वेष्टन स०३६२-१३१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मान्दर कोटडियो का द्वांगरपर।

प्रशस्ति—मध्यत् १६७६ वर्षे कार्तिक सुदी : निविधन पुरत्तक रामपुरा ग्राम श्री ग्राध्निय चैन्यावये श्री मुलस्य पे नारमणी मच्छे कु दक् दानार्याच्या श्री १ सकत्वयत् रायद्द सच्छ भार पूर्धर भः श्री पुरन्तवय नत् शिष्य श्रद्धा जुनरा बागड देंगे वासतव्य हुँबड जातीय मा० श्रीजा मार्था सिरमा भान् श्रीया मचीडा कह्म जुनरा क्सोश्यार्थ इट स्कोधर पुरन्तक निवासित । मुत्त भन्तु ।

३८०७ **प्रति सं०७ ।** पत्र स० ३४ । सा० १०∜ > ६ इ.च. । ले०काल प्रसे । बेटून ५. । स० ५१–४२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भादता (राज०) ।

३८०८. प्रति स० ८ । पत्र स० ६२ । धा० १३ ⋉ ५ } इ.च । ले०काल ्राप्यां । बेहनस० २६ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर बैर ।

३ म०६. प्रति सं०६। पत्रम०१२। ह्या०१२८५ $|| 3 \pi |$  । विषय - भिष्य । प्रकास । । विषय - भिष्य । प्रकास । । विषय - भिष्य । प्रकास । । पूर्ण । भेष्ट्रन स०१०३/१म । प्राधित स्थान---याण्यनाथ (द० जैन मन्दिर एडिस्सद (कांटा) ।

३**८१०. प्रतिसं० १० ।** पत्रसण् २४ । सा० ८१, ४५ इस्र । लेक्सल स० १६४० । पूर्मा । वेष्ट्रसम् ९०१,१८ । **प्राप्ति स्थान**—गाव्यंताप दि० जैन मन्दिर उन्दरगढ (काटा) ।

**३६११ प्रतिसं०११ ।** पनस०६९ । घा०१०<sup>°</sup>,×४<sup>°</sup>ॄडख । लंक्नाल स०१८८० । वेष्टनस०६८ । **प्राप्ति स्थान**—दिक्जीन मन्दिर पनायती दूनी (टोक) ।

विशेष---टाडानगरे श्री श्याम मन्दिर प० शिवजीरामाय चौ० शिववक्सेन दत्त ।

२७१२. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ६० । झा० १११ ४४ इश्व । ले० काल स∙ १६२१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टनस० ११ । प्राप्ति स्थान —िंद० जंन मन्दिर नागदी बुदी । ३ द १३. प्रति सं० १३ । पत्र स० ३४ । आ० १२ ¦ ४ ६१ इल्ब । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । बेब्ब स० ३२ । प्राप्ति स्थान —तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैसाबा ।

विशेष — स॰ १६२० मे भादवा मुदी १४ को घाभीलाल ऋषभलाल बँद ने तेरहप्रथियों के मन्दिर में चढाया।

३**८२४ प्रतिसं०१४ ।** पत्रस० ४४ । प्रा०१०×५१ इच्चाने०काल स०१६११ । पूर्ण। बेहुनसं०५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर पार्थनाथ त्रुदी।

विशेष—वृदी मे प्रतिनिपि की गई थी।

३**८१५. प्रतिसं० १५ ।** पत्र स० ४० । घा० ११ 🗴 ५ इव्य । ले० काल स० १७५४ द्वि० ज्येष्ठ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २३४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर स्रमिनन्दन स्वामी, बृदी ।

**विशेष**—तुननपुर मे मनि श्री लाभकीत्ति ने धपने शिष्य के पठनार्थ लिखा ।

**३८१६. प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० ५४ । धा० ६ $\frac{1}{2} \times 3$  ्डे इख । त्रे०काल स० १८७७ प्र० उमेर्स्य बुड़ी ८ । पूर्ण । त्रेष्टनस० १०१ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर प्रक्षिनस्दन स्वामी, बूदी ।

सवत् १५४७ का वर्षे ज्येत्ट कृष्णपक्षे अष्टम्या शुक्रवासरे श्री नेमिनाय चैल्यालये वृद्धावनी मध्ये लिखितं प ट्रागरमीदावजी तस्य शिष्यत्रय सदामुख, देवीलाल, मिवलाल नेपा मध्ये सदामुखन लिपि स्वहस्तेन ।

े इद्शुख्यशोसर चरित्र × । पत्र म० २२ । ग्रा० ११×४३ ६ श्रा माया— मन्त्रत । विषय-वरित्र । । २०काल × । ने० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४१२ । प्रास्ति स्थान— महास्त्रीय दि० जैन मोत्तर ग्रजीर ।

३६१६ यशोषर चरित्र -- 📯 । पत्रस० २ से २० घा० ११३ ×५ इख भाषा --सन्छत । विषय - चरित्र । र०काल 📐 । ले०काल स. १६१५ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रनंस० १५६१ । प्रास्ति स्थान -- महारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

३ द १६. यहोधर चरित्र—  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४१ । छा $\circ$  ११ $\S \times \$$ ै है रुव । भाषा म्म स्कृत । विषय-चित्र्य । रुकाल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १०७१ । प्रास्ति स्थान — महारकीय दि $\circ$  जैन मदिर अवसेर ।

३८२०. यशोधर चरित्र—  $\times$  । पत्रस०२०। प्रा०११ $\times$ ४, इत्व । मापा-सन्द्रत । तिवस— चरित्र । र० काल  $\times$  । तेककाल  $\times$  । पूर्ण । वष्ट्रन स० २४०। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रमिनस्दर स्थानी वर्षे ।

३८२१. ब्रशोधर चरित्र × । पत्रस०१४ । मा०११४६ इत्र । माण-सस्कत । विषय-चरित्र । रब्यात ४ । लेब्सल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० १४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर श्री महातीर डूंदी ।

विशेष-दबलागा में प्रतिलिपि बुई । ३२७ श्लोक है ।

प्रारम्भ—प्रणस्य वृषभ देव नोकलोक प्रकाशकः। प्रतस्तन्वरोपदेष्टारा अगत गूज्य निर जलः।। प्रहृतनिक जगतपुज्यानस्य स्थाति वृप्रस्तमिषः। मदा सातान विषव विषय प्रशाततः।। २।। प्रतिस्त—पस्याद्यापिच निष्पोप गूर्स् देवोमहो तने। अगत मन्त्रिर मुहुतं कीरिस्तभी विराजते।। २२६ सो व्याप्री सुवत मच्चत सन्यानाभक्ति कारिस्सा। ३८२२ यसोधर चरित्र —  $\times$  । पत्रस॰ १३ । म्रा० ११  $\times$  ५ इख । माणा-सस्कृत । विषय-चित्र । २० काल  $\times$  । ले०काल सं० १८२६ म्रासीज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०  $\pi$  । प्रास्ति स्थान-चि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी) ।

३६२३. यशोधर चरित्र x । पत्रस० ११०। मा० ११४५ इला । माण-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल x । लेक्झल स० १८४५ चंत बुदी १२ । पूर्ण । वेप्टन स० १३६ । प्रास्ति स्थान--वि० जैन मदिर नागदी बंदी ।

३६२४ **यशोघर चरित्र—विकसमुत देवेन्द्र** । पत्र सं० १३४ । प्रा० १०१ै ४५ रखा । माषा-हिन्दी (गच) । विषय—कथा । र०काल सं० १६६३ । ले० काल सः १७३१ । पूर्ण । वेष्टन स∙ ४३६-१६४ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वनस्पर ।

**२८२४. प्रति सं०२। पत्रस०१**७१। मा०१० × ४१ इञ्च। ले०काल स०१८३१। पूर्मा। वेष्टन स०**४०-३१। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इनरपूर।

विशेष -- प्रतापगढ मे लिखा गया ।

३८२६. **यशोधर ।** पत्रस० २२। आ० ११३४४ इचा । लंकाल स० १६७० । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १४४-६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का हु गरपर ।

> दोहा-सबन् सोरह से श्रीधक मत्तर सावन माम । मुक्तसोम दिन सप्तमी कही कथा मुदुशास ।। माइस्स-प्रपारवाल वर वस गोसना थान को । गोइस गोत प्रसिद्ध चिन्हना थ्वान को ।। माताबन्दा नाय पिना मंगे मन्या ।

परिहान (द) कही मनमोहन ग्रगन गुन ना गन्यों ।। ६३ ।।

विशेष - प्रत्य में दो चित्र है जो सस्कृत ग्रन्थ के श्राधार पर है।

३८२७. प्रति सं०२। पत्रस०३६ । आ०११ ४६ इञ्च । भाषा---हिन्दी । विषय---चरित्र । र०काज स०१६७० सावन मुदी ७ । ते०काल स०१८४२ प्रयाद मुदी ७ । पूर्ण । बेष्टनस० ४२। २४ । प्राप्ति स्थान--- ४० जैन मन्दिर कोटडियो का इ.परपुर ।

**३८२८. प्रति सं०३।** पत्र स० २५ । प्रा० १२ ४८ इङच । ले० काल × । पूर्ण । वेस्टन स०६६।२० **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन प्लायती मध्यर प्रलबर ।

३८२६. प्रतिसं० ४ । पतस० ४२ । लेक्शल स० १६४३ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेस्टन स० ६७। १७८ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन पनामती महिर प्रलवर ।

२८२०. प्रति सं० प्रः। पत्र म० ३४ । ले० काल स० २६११ । पूर्णः। बेष्टुन स० ६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर ग्रसंबरः।

३ म ३१. प्रति सं० ६ । पत्रसः ४६ । ले०काल स० १६२६ आसोज सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टन स० ६६/१८ । प्राप्ति स्थान $\sim$ दि० जैनवचायती मदिर खलबर ।

३ म २२ प्रतिसं० ७ । पत्र स० ४२ । झा० १० × ४ इल्डा । ले० काल स० १७६४ प्रवाड मुदी २ । पूर्णः । बेष्टन स० ५३ । प्राप्ति स्थान — बि० जैन मन्दिर बयाना । विशेष-चुडामिण् के वश में होने वाले सा. मुकुटमिण ने शास्त्र लिखवाया ।

३८३३. प्रति सं० ६ । पत्र स० २२ । ले०काल स०१८६७ चैन सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बयाना ।

३६६३४. प्रतिसं० ६ । पत्र सं०४५ । ब्रा०११×५ है इंच । ले० काल स०१८१० । ब्रपूर्ण । बेच्टन स०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर वैर !

३**८३५. प्रतिस० १०।** पत्रस० ४६। लेश्काल स०१८२०पौष मुदी ७।पूर्ण।वेष्टन स०४३। **प्राप्ति स्थान**िद०जैन मन्दिर बसवा।

३८३६. यशोधर चरित्र भाषा—खशालचन्द काला। पत्र सं०६१। मा० ११४४ इन्छ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चित्र । र०काल म०१७६१ कार्तिक मुदी ६। । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१४८१ । प्राप्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

३८३७. प्रतिसं०२ । पत्रस०४१ । ग्रा०१२ ४८ इञ्चाले०काल १९६० । पूर्णी वेष्ट्रनस० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्रवाल मदिर नैसावा ।

विशेष--- मवाई जयपुर में प्रतिनिधि कराई थी।

३८२८. प्रतिसं० ३ । पत्र म० ७३ । प्रा० ६imes ४ ्इ.च । ते०काल imes । प्रपृर्ण । वेष्टन म० ४४ । प्राप्तिस्थान-–दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैगावा ।

विशेष-- ७३ से ग्राग के पत्र नहीं है।

३८३६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ८३ । ग्रा० १ $\times$ ४ $\S$  इ.च । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण ।वेष्टन स० १९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैसावा ।

३८४०. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ४६ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनम० १३ । प्राप्ति स्थान—र्व० जैन मदिर कोटडिया का नैसावा ।

**३८४१. प्रतिसं०६ ।** पत्र म०८४ । ग्रा०१०≻४ है डचाले० काल ⊠ा पूर्णावेष्टन म०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर राजमहल टोका

**३८४२. प्रति सं०**७ । पत्रस० स०३६ । ग्रा० १३ × ५ इखा । ले० काल स०१८३० । पूर्यों । बेष्टनस०११ **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बुदी ।

देन्हें दे, पनस० १०। प्रा०११ ८५ी दुखाले० काल स० १८७६। पूर्या बेष्टनस०४३। प्राप्ति स्थानः दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दनः स्वामी, बदी।

**३८४४ प्रतिसं०** ६ । पत्र म०४६ । स्रा०१० ुँ× ८ । इश्व । ले० काल स०१६२५ फागुन सुदी ४ । बेप्टन म०६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन पवासती मन्दिर दूनी (टोक) ।

२ म् ४ ४. प्रति स० १० । पत्र स० ७३ । स्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इला । ले०काल स० १६४५ । वेष्टन स० २४२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्टरगढ कोटा ।

रेम्प्रें प्रति सं**० ११।** पत्रस० ४४। लेकाल स० १८०० वैणाल बुदी १०। पूर्ण। बेष्टन म० ४७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर। ३८४७. प्रति स० १२ । पत्र स० ५५ । ग्रा(० १०५ँ×५ ' इंच । ले० काल स०१८१६ । बेहन सं० ⊏ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन मन्दिर बैर ।

३६४६. प्रति स०१३। पत्र म०३४। ने०काल स०१६२ भावन मृटी १५। पूर्णं। बेष्टन स०६।प्राप्ति स्थान—दि०जैन प्वायती मन्दिर करोली।

विशेष— स्वामी सुन्दर सागर के ज्लोद्यापन पर पाण्डे नुनाशम के लिप्य पाण्डे माकजन्द ने प्रतिनिधिकीथी।

३८४६, प्रति सं० १४ । पत्र स० ६६ । द्या० १०  $\times$  ५ $^{\circ}$  इन्च । ले० काल स० १८१७ भावना सदी ५ । पर्यो । बेप्रन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पराध्यी मन्दिर करीनो ।

३८५०. यशोधर चरित्र भाषा—साह लोहट । पत्र स० २००६ । ग्रा०० ५ ४४ १ ट्रख । भाषा-हिन्दी (गृज) । विषय-चरित्र । र०काल स०१७२१ । ने०कान म०१७४६ आसीत्र गृदी १३ । पृग्गं । वेष्ट्र स०१७० । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर देवनामा (वृदी) ।

विशेष-मुनि शिवविमल ने इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की थी। कवि ने बूदी मे ग्रन्थ रचनाकी थी। इसमे १३६६ पद्य है।

३८५१. यशोधर चरित्र भाषां —  $\times$  । पत्रतः ३२ । घा०१२ , ६ इतः । भाषा — क्रियो । विषय - चरित्र । २० ताल्  $\times$  । ले० काल्  $\times$  । घर्ष्णं । वस्त स० १२ (६) । प्रारित स्थान — दि० जैन मिल्य भावता ।

३८५२. यशोधर चरित्र भाषा— × । पत्र ग० १००४ । ह्या० ६ ५ ६) इत्व । भाषा—हिन्दी प० । विषय—वित्र । र०काल × । ले०काल ∴ । ह्यपूर्णा । वेष्ट्रत स० ८८-६० । द्वास्ति स्थान—हि० जैन मदिर बडा बीसपथी दीमा ।

३८५३. यशोधर चौपर्दः - < 1 पत्रसु० ६२ । ग्रुग् ६ $\times$ ५ इश्व । गाया—हिन्दी । विषय चित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वे०स० १८६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागरी ब्रुदी ।

६५४४. **रघुवस—कालिदास** । पत्रस० १०८ । ग्रा० १०<sup>९</sup> × ४ दख । <mark>भाषा</mark> सम्बन्धा विषय-काव्य । रुकाल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वेण्टन स० १४७६ । **प्राप्ति स्थान—** भद्रानकीय १० केन मन्दिर कार्यो

३ म ५ प्रतिसं० २ । पत्रस० १०६ । प्रा० ११) × ४ । इ.च । से०काल स० १७२७ माघ बृदी ८ । पूर्ण । बेप्टन स० ६७० । **प्राप्ति स्थान** — भट्टाम्सीय दि० जैन सन्दिर खजमेर ।

३म**५६. प्रति सं० ३ ।** पत्र म० २२ म १०८ । छा० १० (४) इच्छ**ा** ले**०** काल ८ । अपूर्ण । बेटून म० २२२ । **प्राप्ति स्थान—**वि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

३६४७. प्रति स० ४ । पत्र म० ६७ । ष्रा० ११४४ ए ७७ । ले० काल स० १६३ <sup>ल</sup> । पूर्णे । वेस्टन स० ६६-४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर कोटडियो का दुसरपर ।

प्रशस्ति सब्त १६६ स्था वर्षे मास बैशाल वटी ३ गृश्वार्यक टेश्याद नगरे सांस्त्रनाच चैत्यालये श्री मृतवाचे सरस्वतीयच्छे, बलालारमसे श्री कृंदहुंदाचार्यास्य प्रहारक श्री ध्यसरक्षद्र तत्सट्टे अक श्री हर्षचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री गुभचन्द्र तत्पट्टे भ० ग्रमरचन्द्र तत्पट्टे महारक श्री रतनचन्द्र तत्पट्टे महारक श्री १०६ देवचद्र जी तन् जिप्य क फनेचन्द्र जी रखुवण काव्य लिलापित ।

३८५८. प्रति स०५ । पत्र स०६० । द्या०१०है×४१ इक्षा से०कक्तम स०१७६६ प्रगहन सुदी१५ । पूर्ण । बेष्टन स०२४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी।

विशेष---लण्हरा नगर मे प्रतिनिधि हुई।

३८५६. प्रति स०६ । पत्रस०१६ । प्रा०६×४ इघ्च । ते०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ७६ । प्रार्थाः स्थान - दि० जैन मदिर पावर्षनाथ टोडारायसिह (टोक)

३८६०. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २-२७२ । झा० १०४४ है इला । ले० काल 🗴 । झपूर्ण । वेकृत स० १७ २२० । प्रार्∴स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष - प्रति प्राचीन है लगभग स० १६०० की प्रतीत होती है।

३६६१. प्रति स० ६ । यनस० ११३ । घा० १०३४४) इच । तेक्काल स० १८४१ । प्राचाद गरी ४ । पुर्स । वेदन म० २२२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दवनाना व दी) ।

विशेष - इन्द्रगर म ने महाराजा श्री सन्मतिसिंह जी विजयराज्ये लिपिकृत ।

३८६२. प्रति स० ६ । पत्रस० ६१ । ले॰काल स॰ १६६३ । पूर्णं । वेष्टन स० ३२४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाता (बुदी) ।

३८६३. प्रति स० १०। पत्र म० ३८। प्रा०१० $\forall^2 \times \xi^2_0$  इ.स. ले० काल imes । प्रपूर्ण । बेष्ट्रतस०३४०। प्राप्तिस्थान - ५० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

३६६४. प्रति सं० ११ । पत्र स० २० । श्रु० ११ $\frac{3}{2} \times \frac{1}{2}$  इश्व । ले०काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । बेष्टन म० २३४ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर ग्रिभनन्दन स्थामी बदी ।

३८६४. प्रति सं० १२ । पत्रन० १४ धा० १० $\{\times \$\}$  इजा । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० १२१ (१) । प्रास्ति स्थान - दि० जेन मॉदर अभिनदन स्वामी, बूदी ।

विशेष — द्वितीय समे तक है।

३८६६ प्रतिस० १३ । पत्रस० ८ । आ०१०३ ४७ इश्व । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० १९ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मस्दिर नामशे दरी ।

विशेष - दिनीय समें तक है।

३८६७ प्रतिसं० १४ । प्यस्० १२४ । ग्रा० १२ ४ ५३ इखा । ले० काल 🗴 । बेष्ट्रनसं० ६२८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - प्रति प्राचीन है।

२८६८. प्रति सं० १४ । पत्र स० १४२ । घा० ११ ४ ४ इन्छ । ले० काल ४ । धपूर्ण । वेष्ट्रन म० २२४ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

२८६६. प्रति सं० १६ । पत्रस० ४-१३ । लेखन काल सं० १७१५ प्रपूर्ण । बेष्टन सं० २२७ । प्राप्ति स्थान - – दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

विशेष---प्रारंभ के ३ पत्र नहीं हैं।

३८७०. प्रति सं० १७ । पत्र स० ७२ । आ० ८२ ४ ४ इ.च. । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दुनी (टोक) ।

३६७१. प्रतिसं०१६ । पत्र स०१६०। लेक्बाल स०१७६० फागुगा मुदी११ । पूर्णा वेष्ट्रन स०५२ । प्राप्तिस्थान — दि०जैन तेरहपथी मन्दिर वस्वा।

**विशेष**—रगाछोडपूरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

३६७२. प्रति स० १६ । पत्र स० २१ । लेखन काल 🔀 । अपूर्य । वेग्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रवायनी मदिर हण्डा बालों का डीग ।

३८७३. प्रतिसं०२०। पत्र स०२२। ले∘काल ×ा पूर्ण। वष्टन म०७७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावाली का डीग।

विशेष-मिल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित केवल ६ वा ग्रध्याय है।

३८७४. प्रति स० २१ । पत्र स० २६ । प्रा० १० ४ ६ डल्ब । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १८५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाथ चौगान वृदी ।

विशेष — ४ मर्गतक है।

३८७४. रथुवंश टोका—मिल्लिनाथ सुरि । यत्र म०६१ सं६०। ब्रा०१० ८ ४०च । भाषा—महरून । विषय—काव्य । ४०काल ४ । लेकाल ४ । अपूर्ण । वेष्ट्रन स०१३–२२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर नेमिनाथ टोडायर्थास्ट (टोक) ।

विशेष--टीका का नाम सजीवनी टीका है।

३८७६ प्रतिसं०२ । पत्र स०१४ । ग्रा०१० ८ ४ डब्ब । ले०काल ८ । ग्रापूर्ण । यपूर्ण स०८८ । प्राप्ति स्थान∼ दि० जैन मदिर मादिनाथ ब दो ।

३८७७ प्रति सं०३ । पत्रस०१६२ । आा०११ 🗸 ४, दुःवा । ले०काल स०१८४६ माप मुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस०६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जेन मन्दिर आदिनाथ वृटी ।

विशेष-- माथु सरगदराज दादूपथी ने बृन्दावती म प्रतिलिपि की थी।

**३८७८. प्रतिस०४** । पत्रस०१६४ । घा०११ँ ४४ इच्च । ले०काल स०१८७६ श्रावरा बुदी २ । बेष्टन स०२६४ । **प्राप्तिस्थान**—दि०जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३८७६. प्रति सं० ६। पत्रस० ६० । खा० १० $\times$ ४३ इखा । लं० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ६७–६२ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर तेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष--हितीय सर्ग तक है।

**३८८०. प्रति सं∘ ७ ।** पत्र स० २८१ । झा० १०<sub>४</sub>४४ हुन्छ । ले०काल स० १७१५ कानिक बुदी ४ । पूर्ण । बेप्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोपसनी कोटा ।

प्रशस्ति — सबन् १०१४ वर्षे णाके १६०० प्रवनं माने निगतं श्री सूर्ये कानिन माने शुक्तपक्षे प्रवस्या तियो बुधवामरं वणपुर स्थाने बामपुष्य कैरबालये श्रीमन् कारतासचे नवीतटपाच्छे विद्यालये महारक श्री राममेनात्वये महारक श्री त्रिबुबनकीति म० रतनभूषसा त० म० जयकीति त०भ० कमलकीति तत् पट्टीभरसा महारक श्री ४ मुबनकीति गदास्नाय प्रवतामयर महलावार्यं श्राचार्यं श्री वेक्षवमेन तत्स्हे महलावार्यं श्री विश्वकीर्ति तस्य लघु भ्राना स्राचार्य रामचद्र ब० जिनदास ब० श्री बलभद्र बार्ड लक्ष्मीमिन पडित मायाराम पडित भूपन समन्वितान श्री बलभद्र स्वय पठनार्थ लिखन ।

**३८८९ प्रतिसं∘ ६ ।** पत्र म० ५०। ले०काल × । पूर्ण । वैष्टन म० ७६ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

३८६२. रघुवंश टीका—समय सुन्दर । पत्र स० ३६ । प्रा० १० x ४ । इन्छ । भाषा— सस्कृत । विषय—काव्य । र०काल स० १६६२ । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० १४३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बृदी) ।

३६६३. रघुवंश टीका—  $\times$  । पत्रतः २-६४ । आ० ११  $\times$  ५ $^1$ दुवः । भाषा—सस्त्रतः । विषयः—काच्यः । र०कालः  $\times$  । ले०कालः  $\times$  । सपूर्णः । वेष्टनसः १४७-६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपूरः ।

३८६४. रघुवश काट्य वृत्ति—सुमति विजय । पत्रस० २१६ । प्रा० १० $\times$  ४ इत्र । भाषा- सरकृत । विषय-काव्य । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनम० १६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रिमनस्त स्वामी ब दी ।

**ग्रन्तिम प्रशस्ति—**इति श्री रघुवमे महाकवि कालिदासकृतौ पडिल सुधनिविजय कृताया सुगमान्यत्रवोधिकायाभेकोनीवज्ञाति सर्ग समाप्ता ।

> श्रीमन्न दिविजयाल्यानां पाठकानाम भूधर । शिष्य:पृण्यक्मारेति नामा सपुण्यवारिधिः ॥१॥ तस्याभवतः विनेयाश्च राजसारास्त् वाचकाः । मज्जनोक्तक्रियायका वैराग्यरसर जिला ॥२॥ शिष्यम्लामु तेषा तु हेमधर्मा सदाह्वयः गुग्गाभिष्टा वभूव शिप्रदिश माधमङले ॥३॥ सप्रत तदिनयश्च जीया सधी धनाचेडं । पाठकवादिव् देन्द्रा श्रीमद विनयमेरव सुमतिविजयेनेव विहिता सुगमान्वया । वत्तिर्बालबोधार्थ नेषा शिष्येगा यीमता ॥५॥ विक्रमास्ये पुरे रम्ये भीष्टदेवप्रसादत । रघकाव्यस्य टीकाय कृता पुर्गामया गुभा ॥६॥ निविग्रह रसशशिसवतसरे फाल्गन सितै--कादश्या तिथौ सपुर्ण कीरस्तु मगल सदा कर्न हीमान ॥७॥

# ग्रंथाग्रंथ १३००० प्रमारा

प्रारम्भ-प्रगण्य जगदायीज गुरु सदाचारनिरमल । वामागप्रभव जान्वा वृत्ति मन्यादि दर्ध्येय ॥ सुमतिविजयास्येन कियते मुगमान्यया । टीका श्रीरषकाव्यस्य ममेय जिण्हेतेवे ॥२॥ २८८५ प्रति स०२। पत्रस० १४६। ब्रा० १२ x ११ इन्छ। ले०काल X । अपूर्ण। वेष्टनसं० २२५। प्राप्ति स्थान —पार्धनाय दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा।

३८६६. रथुवंश काट्य वृत्ति —गुरावितय । पत्रस०४१। प्रा० १र्डु ४६ इला । भाषा — सक्त । विषय—काव्य । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१३३४। प्राप्ति स्थान — भट्टान्कीय दि० जैन मन्दिर प्रवनेर ।

विशेष -- तृतीय ग्रधिकार तक है।

३८८७. **रबुवशसूत्र** — × । पत्र स०६२ । आ०१० **×** ४डच । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ते०काल × । अपूर्ण । बेष्टन स०४४६ । **प्राप्ति स्थान**—शहास्कीय दि० जैन मन्दिर कर्यान ।

३ समस्य रहनपाल प्रबन्ध — कारु श्रीयति । पत्रतरु ६२ । बारु १३४४ । इत्था । भाषा — हिन्दी गरु । विषय - करित । रुकाल सरु १७३२ । केक्सल सरु १८३० । पूर्ण । वेष्टन सरु ३२७ - १३२ । प्रास्ति स्थान — दिरु जैन सन्दिर कोटडियों का इंगरपर ।

३८८६ प्रतिसं० २ । पत्र म० ५६ । ले० काल 🗴 । पूर्णः । वेष्टन स० १६-११ । प्राप्ति स्थान--- ५० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

३८६०. रसायन काव्य —कवि नायूराम । पत्रस० १८ । आ०६ $\times$ ११ इच्छ । भाषा— सस्क्रत । विषय —काव्य । २०काव्र  $\times$  । ले० काल्य० । पूर्णं । बेष्टुनस० ३५७-१४४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोट्यियों का उपस्पर ।

३८६१. राक्षस काव्य  $\times$  । पत्रस० ५ । बा० ११  $\times$  ५ ६ न । भाषा-नगर्त । विषय-काव्य । २०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । वेठन म० ३०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लग्कर वसपुर ।

३८**६१.(क) प्रति स**० २ । पत्रस्त० ४ । ग्रा० १०  $^{+}$  ४६ इन । भाषा - मन्द्रत । विषय - काव्य । १० कार्स  $\times$  । ले**०काल**  $\times$  । बेष्टत स० ३१२ । **प्रान्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर लक्ष्य  $\tau$ , जयपुर ।

३५६२. प्रतिसं० ३ । पत्रत्व० ४ । आ० १०,  $\times$ ६ इल । आपा - सम्कृत । विषय -काल्य । र०काल  $\times$  । वि० काल  $\times$  । वेल्टन में २१३ । प्रार्तिः, स्थान —वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

३८६३. राघव सांडवीय - धनंत्रयः । पत्रस्य २६६ । यार्थ १२ ४ ६ इ.स. । भाषा-गस्का । कि.स्निकायः । २०५७तः ४.। लेश्वाल स्थार्थः । पूर्णः । वेष्टतः स्थार्थः । प्राप्ति स्थान—१३० की महिर प्रारिताव यशे ।

ग्राकानाम दिस्मान काट्य भी है।

विशेष - वपान ने गमः भ प्रतिनिधि हुई थी। चाटमु मध्ये कोटिमाहिल देहरे प्रादिनाथकैयान्ये द्विमयान गांधा भी पुरतक परिनगत्र-जिरोमींग प० शेरराज जी के शिष्य पहित देवावर के ज्यासान के तार्ट जिल्लायों मान महास्मा वहुँ।

प्रांत संस्कृत टीका सहित है।

३८६४. राघय पाण्डवीय टीका—नेभीचन्द्र । पत्रस $^{\vee}$ ०६ । प्रा $^{\circ}$ १९ $^{\vee}$ १ इच । माया—संस्कृत । विषय—काव्य । र०काल  $\times$  । ले०काल स $^{\circ}$ १६५६ । पूर्ण । वेष्ट्रत स $^{\circ}$ १२३० । प्राप्ति स्थान—गृहारकोय वि $^{\circ}$ अंत मन्दिर, ग्रजमेर ।

विशेष - गेरपुर नगर में राजाधिराज श्री जगन्ताय के शासन में खडेलवाल ज्ञानीय पहाड्या गोत्रवाले डाङकी नार्या लाडमदे ने यह ग्रंथ लिखवाया था।

पाण्डलिपि में द्विसधान काव्य नाम भी दिया हम्रा है।

३८६**४. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०४८ मा आर०१२४४ इ.चा ले० काल स०१८२३ । पूर्णा बेस्टन स०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष--जयपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

३८६६. राघवपाण्डवीय टीका-चरित्रवर्द्ध न । पत्र स० १४-१४५ । ग्रा० १० ×४५ दश्च । भाषा—मन्द्रत । विषय—काव्य । र०काल × । ने० काल × । श्रपुर्स । वेष्ट्रन स० १२६ । प्रास्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्वयोन—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्वयोन

३८६७ **राधव पांडवीय** — कविराज पडित । पत्रत० ५० । धा० १० × ४१ तथा । मापा - मन्द्रत । विषय – काव्य । र० काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रत स० १७१ । प्राप्ति स्थान — महाक्वीय दि० जैन भन्दिर प्रवसेर ।

विशेष — र्यंत थी हतथरसीप्रमृत कादबकुलनिलक चक्रवन्ति थीर थी कामदेव प्रोत्साहित कथिराज पहित विराधित राधवपाण्डवीये महाकाक्ष्य कामदेव्याके थीरामय्विष्ठिर राज्यप्राप्ति नाम प्रयोदन्न सर्ग । ग्रथं ग० १०७० ।

३८६८. राघव पांडवीय टीका —  $\times$  । पपस० १–४४ । स्रा० ११  $\times$  ४ इष्टम । भाषा स्थान । विषय-काल्य । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४८१/१८ । प्रास्ति स्थान—सम्बनाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

देम्ह<mark>र, वरांग चरित्र तेजपाल ।</mark> पत्रस**्**थे। या० ११×४¸ डब्च । भाषा-ग्रपञ्ज । विषय-पित्र । र०काल × । केक्सल <sup>×</sup> । पूर्ण । वेष्टन म०११६ । **प्राप्ति स्थान**—रि०जैन प्रपायनी मन्दिर करीली ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

३६००. **यरांगचरित्र—मट्टारक वर्द्धमानदेव ।** पत्रस० ७६ । प्रा० ६ $^1_i \times ^1_j \times ^2_k$  इख । भाषा —संस्कृत । विषय—चित्रत्व । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १६१२ पीप सुदी २ । पूर्ण । बेष्टनस० १२०१ । प्रा**प्ति स्थान**— मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

३६०**१. प्रति स०२ ।** पत्र स० ११ । आ० ११ $\frac{3}{4} \times$  ५ इञ्च । ले० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टन सं० २४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अग्र राल सन्दिर उदयपुर ।

**३६०२. प्रतिसं० ३।** पत्र स० ४४ । बा**०** ११ 🗴 ४ इञ्च । ले० काल स० १६८० । पूर्ण । वेष्टन स०१४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन लडेलवाल मस्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्त प्रकार है---

सबन् १६६० वर्षे श्री मूल पठे सास्वतीगच्छे बलात्कारणमे श्री कुल्कुन्दाचार्याच्ये घ० श्री गुण-कीनि तत्तरहें भ० वादिभूषण तत्पहें भ० रामकीनि तन् गुरूश्राता पुण्यमाम श्री गुणामूषणा चराग चरित्रविद पदनार्थ। **३६०३, प्रतिसंठ ४ । पत्र**स० ६ । म्रा०१२ ५ ४ <sup>°</sup>ृडच । ने०काल स०१६६० ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्णा। बेष्टन स०२६ । **प्राप्तित स्थान**— वि० जैन मन्दिर भादवा ।राज०) ।

विशेष--राजमहल नगर मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

३८०४. प्रतिसं० ४ । पत्र स. १८ । प्रा० १२ $\frac{1}{9}$  $\times$  ५ इश्व । ले० काल स० १८६६ सावन बुदी १२ । पूर्ता । वे० स० ६१/४२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर मोगास्मी करीली

विशेष—करोली में लिखा गया था।

**३६०५. प्रतिसं०६** । पत्रस० ७६ । म्रा० १०३/५ ४३ इ.च. । तर्रकान स०१६२३ । **पूर्ण ।** वेष्टुतसं०१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर करीती ।

विशेष—सोमचन्द श्रीर भोजीराम सिघल ग्रग्रवाल जैन ने करौली मे प्रतिलिपि करवासी थी।

३६०६. प्रतिसं०७ । पत्र स० ५७ । ले०काल 🟸 । पूर्या वेष्टन स०२२६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--दयार।म के पठनाथं लिखी गई थी।

**३६०७. प्रतिसं० म**ापत्र स० ६माने० काल स० ६म१४ घाषाढ बुदी १३। पूर्ग्गा वे**ष्ट**नसं० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- प० लालचन्द जी बिलाला ने प्रतिनिपि की थी।

**३६० म. प्रतिसं०६ ।** पत्रस० ७ ४ । आर० ६ ४ ४ इ.ख.। ले० काल स०१६३ मादवा बुदी ४ । पूर्णा । **बेप्टन स०** ७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष --गोठडाग्रामे चन्द्रप्रभ चैत्यालये लिखित ब्यास रूपविमल शिष्य भाग्यविमल ।

३६०६. प्रतिसं० १०। पत्र स०६२ । ब्रा० ११३४४ दुं इ.स. । ले० काल रा० १५४६ स्राप्त्रित बुदी ११ । बेष्ट्रन स०१६४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-मः १४४६ वर्षे याध्यन बुदि ११ मुम्यासः नितिन मायुरान्वय कायन्य श्री माइ द तत् पुत्र श्री मूजर श्री हिर अयपुर नगरे । जनवानी मुनिनान ग्रहमद मारि तत्पुत्र मुनिनान महमदसाहि राज्य प्रवेनमाने ।

**३६१०. प्रतिसं० ११ ।** पत्र म० ४० । धा० १० ५ १ इष्टत्र । ते० बाल १६०० वैशास्त्र बुदी ४ । पूर्ण । अपूत्र ग० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपूर ।

विशेष नागानेर में राव मागा के राज्य में लिखा गया था।

**३६११. प्रतिसं०१२ ।** पत्र स०७० । प्रा०१२ ४ ५ इखा । ले०काल स० १६४५ ग्रापाढ बुदी ४ । पूर्णा । बेटन स०१६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जंन मन्टिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--जयपुर प्रतिनिर्गप हुई थी।

३**६१२ प्रतिसं०१३।** पत्रस०३२। ग्रा०१२४५३ डब्च। ले०काल ''। पूर्या। वेष्टनस०१०२। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर लक्कर जयतर।

विशेष—पणस्ति वाला पत्र नहीं है।

३८९३. **वरांग चरित्र—कानलगयन** । पत्र म० १२१ । ब्रा॰ २८४१ ड्रड्ड । **भाषा**-हिन्दी । विषय-पोल्या रणकार । ये॰ काल स० १६५८ कालिक बुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन म**०** ६६१ । **प्राप्ति** स्थान—ग॰ दि॰ जैन मोटर बज़केर ।

## विशेष-- प्रथ प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

जाति बुढेनेबस पटु. मैनपुरी मुक्बास ।
नागप्तार कहावते, कासियों तमु तानु ॥
नदराम दक साहु तह, पुरवाधिन सिर मौर ।
है हत्वद नुरास नह, वैच कियाधर धौर ।
तिनहीं के मुत दोय हैं, साथू निनकेनाम ।
क्षितपति दुनों कंजहरून, वर्ष भाव उर साम ।
क्षतु मुत कीनों कुत कथा भाषा करि चित त्याय ।
मङ्गल करी भयीन की, हुने सब युख्याय ।
एन समें घरने चित्त वेदास कियों तु पराम मफारी ।
हीगामल चुत लालजी तासी तहा धमं सनेह बादा धमिकारी ।
हा निनकों उपयोह (पायके कीनी कथा दिव सी; मुविवारी ।
होह स्वरा सब मौ मुख्यायन राम बराग की कीरित आरी।

दोहा--

सबन नवइते सही सतक उपरि फुनि भाषि । युगम सप्त दोउघरी धकवाम गति सालि । इह विधि सब गन नीजिये करि विचार मन बीच । जेठ मुदी पूनी दिवस पूरन करि तिहि खीच ।।

टनि लिपिकृत प० साखूरिणस्य ध्रमीचन्द शिष्य जूगराज बाराबकी नवाबगजमध्ये सवत् १६३८ का कानिक कृरणा ७ ।

३६**१४. वरांग चरित्र—पांडे लालचन्द्र** । पत्रस० ६६ । झा० १२ $\frac{3}{6}$  ४६ $\frac{3}{6}$  इच । भाषा— हिन्दां पद्य । विषय—चरित्र । र०काल म० १६२७ माह मुरी ५ । ले०काल स० १६६६ माघ सुदी ५ । पूर्यों । बेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सौगासी करीली ।

विशेष -- बजलाल ठोल्या ने गुमानीराम से करोली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३८१४. प्रति सं० २ । पत्र स० ८५ । प्रा॰ ११३ूँ  $\times$ ४३ूँ इन्छ । ले० काल स० १८३५ श्राषाढ सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन म० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचावती मंदिर करौली ।

**३८१६. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० १०४ । म्रा० ११×५ $\frac{1}{6}$  इ च । ले० काल स० १६३३ वैशाख सुदी ७ । म्रपूर्ण । बेप्टन स०४ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन प्रवायती मन्दिर करौली ।

विशेष—१०३ वा पत्र नहीं है। मोतीराम ने अपने पुत्र प्रारासुख के पठनार्थ बुधलाल से नगर स्वाबल में लिखवायाथा।

२०१७. प्रतिसं० ४। पत्र स० १२। घा० ११२ ४६ इक्ता। ते•काल स० १८८२ भादवा बुरी ६। पूर्ण । बेष्टुन स० २६। प्राप्ति स्थान---दि० जैन प्रग्रवाल पंचायती मन्दिर प्रलबर ।

विशेष - अलवर मे प्रतिलिपि की गई थी।

**३६१८. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० १०१ । ग्रा० ८<sub>२</sub> ४६ इ.ख. । ले० काल स० १८७४ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टनसं• ५७ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन पचायती मदिर बयाना । विशेष-पाढे लालचन्द पाढे विश्वभूषण के शिष्य थे तथा गिरनार की यात्रा से लीटने समय हिंडीन तथा श्री महावीरजी क्षेत्र पर यात्रार्थ आये एवं नवमल विलाला की प्रेरणा से बंध रचना की । इसका पूर्ण विवरण प्रशस्ति में दिया हुआ है ।

३९**१६. बड्दमास् (बर्द्धमान) काव्य-जयमित्रहल ।** पत्रस० १-५५ । धा० १० ४ ४ है इन्ह । भाषा-धप्तम्भ स । विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेपृन म० १६ । प्राप्ति स्थान-रि० जैन मन्दिर तेरहपथी दोना ।

विशेष---पचम परिच्छेद तक पर्गा है।

**३.६२०. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०४६ । ब्रा० ११४ ५ दश्च । ले० काल म० १५४६ पौप बुदी २ । पूर्यो । बेष्टुन स०२५० । **प्राप्तिः, स्थान** —वि०**,'जै**न मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- गोपाचल दुर्ग में महाराज मानसिंह के राज्य में जैसवाल जातीय साधु नाइक ने प्रतिनिधि करवार्ज थी।

३**६२१. बद्धंमान चरित्र—श्रोधर ।** पत्रम० ७६ । म्रा०११ / ४४ / टख । भाषा-चपक्र न । विषय -चरित्र । र०काल : ४ । ले० काल : ४ । अपूर्णः । वेष्टनस०११ /१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर देनी (टोक)

विशेष --- १० वा परिच्छेद का कुछ खण नहीं है।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

३६२३. बद्धंमान चरित्र—मुनि पद्मनित्द । पत्र म० ३५ । मा० ६ $\zeta \times \psi$  इख । आपा - सस्कृत । विषय — चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  पूर्ण । वेष्ट्रन स० २८ । प्राप्ति स्थान—दि० अँन मस्दिर ग्रादिनाय वृदी ।

विशेष — इति थी बद्धं मानकथावतरे जिनरात्रिवतमहानस्पप्रदर्णके मुनि पद्मनन्दिविरचितं मुन मुखनामाकिते श्री बद्धं मान निर्वाण गमन नाम द्वितीय पश्चिद्धेदः समाप्तः ।

३६२४. वर्द्धमान चरित्र—विद्यामुबर्ग । पत्रस॰ २३६ । सा॰ १० $\times$ ५ $^3$  उच । भाषा — सरकृत । विषय—चित्र । २० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन म॰ ६०/३८ । प्राप्ति स्यान — दि॰ जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

३६२४. बद्धं मान चरित्र—सकलकोत्ति । पत्र म०१४५-२१० । प्रा०१२ $\times$ ४) उत्त । मापा—सस्कृत । विषय-वित्त्र । रुकाल्  $\times$  । ले० काल् स०१६५६ बेहु मुदी २ । प्रकृषे । वेष्टन मं०३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बुंदी ।

विशेष —मालपुरानगरे माधवसिंह राज्ये चन्द्रप्रम चैन्यालये ••• •• • • • • • • विश्वत । प्रति जीर्ण हो चुकी है ।

**३८२६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १०३ । स्रा० १२√४६ इचा । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स**०**३४ : **प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर** पाण्वेनार चौगान व दी । ३६२७. प्रति सं० ३ । पत्र स०५-११ । का० ११×५ इन्छ । ले० काल × । घपूर्ण । वेष्टन स०३०४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

३६२ स. प्रति सं० ४ । पत्र म०१३२ । प्रा०१०३ ४४ है इख । ले० काल स०१ स्थः चैत्र मुदी १४ । पूर्ण । बेहन स०१६४ २१ । प्राप्ति स्थान—िंद० जैन पास्वेनाय मन्दिर इत्वरणढ (कोटा) ।

विशेष -- इन्द्रगढ मध्ये महाराजा शिवदानसिंह के राज्य में ज्ञान विमल ने प्रतिलिपि की थी।

३६२६. बलि महानरेन्द्र चरित्र— $\times$ । पत्रस० ६६। माघा—सस्कृत। विषय—जीवन चरित्र। ए०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टनसं० ५६४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भन्तपर।

३६३०. विकास चरित्र—रामचन्त्र सूरि । पत्रस० ४६ । प्रा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{6}$  इच । भाषा— म $\frac{1}{16}$  स्वास—परित्र । र०काल स $\frac{1}{16}$  र० जैन सिंदर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

३६३१. विकम चरित्र चौपर्ड—भाऊ कवि । पत्रस्य २५ । ब्रा० १० $\times$ ४ $^{3}$  ६ व । भाषा– इन्दी । विषय-वरित्र । र०काल  $\times$  ने०काल स १४=६ । पूर्ण । बेव्रन स०२=२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मरिर दवलाला बुदी ।

विशेष-प्रादि धन्त भाग निम्न प्रकार है-

प्रारम्भ—दूहा—नमी नमी तुम्ह बन्डिका तुम गुन पार न हु ति । एककित्त लिड मुमरना मुख सम्पनि पानति । तद्देल महिष्मपुर विधित्र देशका भीडवामान । जारण पन्न निकासना तत्र हृदिया तमु प्रारा ।

ग्रन्तिमभाग--

स बन् पनर भठासिङ निधि बिल तेरह हु नि । मगसिर मास जाण्यो रविवार जने हु ति । वडी तराट पसाड सबहुउ प्रवस्त्र प्रमाण । उवभाय भावे भगुद वातज भावा टाग । इति विक्रमवरिक चौपई ।

३६३२. विजयचन्द चरिय $\longrightarrow \odot$ ापत्र संश्चा । आ०१०  $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  दश्च । भाषा-प्राहत १ विषय-चरित्र । २००४०  $\times$ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेटन संश्चार २६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रमिनस्टन स्वामी, बुदी ।

३८३३. **युषमनाय चरित्र—सकलकोति** । पत्र स०१४६ । घा०१२ र्हे ४६ इच । माषा— सस्कृत । विषय-चित्र्य । र०काल ४ । ने०काल म०१६३६ फानुग सुदी १४ । पूर्ण 1 वेष्ट्रनस० १२७३ । **प्राप्ति स्थान** --भटारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमर ।

**२६३४. प्रतिसं० २।** पत्रस० १८६। ग्रा० १०४४ इला। ले**०का**ल सं१७६३ ग्रासीज सुदी १४। अपूर्णा वेष्टन स०२४६। **प्राप्ति स्थान**— महान्त्रीय दि० जैन मन्दिर ग्राजमेर।

विशेष —सासवाली नगर मध्ये राजः श्री मानसियास्यमत्रिगो धर्ममूर्तयः सा श्री सुलरामजी श्री बलनरामजी श्री दोलतरामजी तेषां सहायेन लिलिन । मनिधर्मविमल ने प्रतिलिपि की थी । **३६३५. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० २०६ । ब्रा० १०३ ४४ १ इला । ले०काल स**०** १६७४ । पूर्य । वेष्ट्रन सं० ७१६ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मदिर घजमेर ।

विशेष—सबत् १६७४ मगिसर सुदी ३ के दिना भ्रादिपुरासा सा नानी भीसो बेगी को घटापितं बार्ड भनीरानी मोजाबाद मध्ये ।

**३६३६. प्रति सं०४ ।** पत्रस०४८/८०। स्रा०१० $\frac{3}{2}$ ४ ट्रंडच। ले•काल imes। पूर्यं। वेष्टुन स०४४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वैर।

**३८३७. प्रतिसं० ४** । पत्र स०६ – ४७ एव १०३ से १३७ । म्रा०११ × ४ इला । ले•काल ४ । मपूर्ण। वेष्टन स०४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर वैर ।

**३९३८. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स०१८६ । ब्रा० ११**४.** ५ इल्बाने० काल स०१७६६ । पूर्ण । वैष्टत स०२०६।१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — स० १७६६ कार्तिक मुदी ११ को उदयपुर में भी रागा जगतिसह के शामन काल में क्वेतांबर पृथ्वीराज जोषपुर बाले ने प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थाग्रन्था। ४६२८। रोहीदाम गांधी ने ग्रन्थ भेर दिया था।

**३६३६. प्रति सं० ७** । पत्र स० १०६ । ग्रा० १० ×६१८ इञ्च । ले०काल स० ११०-४२ । प्रा**रित स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, हांगरपुर ।

**३६४०. प्रतिस**ंक मा पत्र स०१७१। घा०१० है 🗴 ४१ डब्बा ने० कान सं०१७४१ घाषाढ बुदी मा पूर्णा वेष्टन स०१४५। **प्राप्ति स्थान** — दि० जन मदिर लक्कर लस्पुर।

**३६४१. प्रति स ० ६ । पत्रस**० १४८ । प्रा० ११ ई.४ ६ इच । ले**०**काल स० १५७५ । पूर्ण । बैष्टन सं० १०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का नैस्पता ।

विशेख—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सवन् १५७५ वर्षे आध्वन मामे कृत्यापक्षे प्रचया निशे श्री गिरिपुरे पौथी लिखी । श्री मूलम थे सरस्वनीगच्छे बलान्कारगणे श्री कु दकु दाचार्यान्वयं म० विजयकीत तत् शिष्प था. हेमचन्द्र पठनार्थ धादिपुरास्। श्री मे थेन लिखाप्य दत्तं ।

**३६४२. प्रति सं० १०** । पत्रस० १३४ । म्रा० १०३ 🗶 ५ ३ इञ्च । ले०काल 🤫 । पूर्स । वेष्टन स० ५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैस्पता ।

विशेष--१३४ से धागे के पत्र नहीं है।

**३६४३. प्रतिसं० ११ । पत्र सं०** २४७ । ग्रा० १०४ ६ है इञ्च । ले० काल म०१६२२ भ्रासोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स०२०४ । **प्राप्ति स्थान**—६० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३६४४. विद्वद्मूष्णकाय्य $--\times$  । पत्र स० १४ । आ० १० $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इस्त । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसभी कोटा ।

३८४**४. शतश्लोक टीका**—मल्लभट्ट । पत्रस $\circ$  ११ । आर् $\circ$  ११ $\S \times \S$  इख । माषा—संस्कृत । विषय—चित्र । रुकाल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । धूर्ण । वेष्टन सं $\circ$  २४७ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

काव्य एवं चरित ] [ ३=६

३६४६. शांतिनाथ चरित्र —  $\times$  । पत्रस० १२८ । सा० १० $\frac{1}{5}$  ×४ $\frac{1}{5}$  इत्थ । आधा-सम्हत ग्रह्म । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टनसं०२४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सितर दीवालजी कामा ।

विशेष — श्वेतास्वर ग्रास्नायका ग्रथ है। १२८ में ग्रागे पत्र नहीं है।

३९४७. शांतिनाथचरित्र—प्रजितप्रसमूरि । पत्र स० १२६। श्रा० १० $\times$  ४६ इला । भाषा— सस्कृत । विषय-चित्र । ए०काल स० १३०७ । लेखन काल  $\times$  ।पूर्ण । बेष्ट्रन स० १६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्तिर दीवानजी कामा ।

**३३४८. प्रतिसं० २** । पत्रस० १०६ । झा० ११×४१ इच्च । ले० काल म० १०५१ । पूर्ण । वेग्टन स० ४०१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

३६४६. शांतिनाथ चरित्र—म्रागांद उदय । पत्रस० २७ । मा० १०१े ४४ १ डब्च । भागा-क्रिती (गद्य) ।विषय-चरित्र । र०कास मं१६६६ । लेकाल स० १७६६ स्रावण बुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ३२७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना बुदी ।

३६**५०. शांतिनाथ चरित्र—भावजन्द्र सूरि** । पत्रम० १२० । **धा० १०**४४ ६ श्व । भाषा— भग्कृत (गरा) । विषय-चरित्र । २०काल ४ । ले० काल १४३६ भाववा बुदी है । पूर्ण । वेष्ठुनम० १५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सण्डेलवाल पवायती मन्दिर सलवर ।

विशेष-भावनन्द्र मृरि जयचन्द्र मृरि के शिष्य तथा पार्व्वचन्द्र मृरि के प्रशिष्य थे।

३**६५१. प्रति सं०२** । पत्रस०१२⊏ १७२ । ग्रा०१०१ ४५१ इचा ले∘काल ४ । पूर्ए। वेबन स०१४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

३६**५२. शांतिनाय चरित्र—सकलकोति** । पत्र स०१६३ । आ०१२ $\times$ ५ इच । आया — सग्कृत । विषय —चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१८६६ भाववा सुदी १४ । पूर्ण । बेप्टन स०१२५१ । **प्राप्ति स्थान** —भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष--- ग्रजमेर नगर मे नेमीचन्द जी कासलीवाल ने प्रतिलिपि करायी थी।

३६५३, प्रतिसं०२ । पत्र स० १६७ । ब्रा०१०imes ४६ इ.च. । ते० काल स०१६७० ब्रायाढ मुदी११।पूर्ण । वे० स०७१३ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष---महारोठ नगरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिंह जी राज्ये प्रवतंमाने मिडत्यासाखे महाराज श्री महेसदाम जी श्री दुर्जनलाल जी प्रवतंमाने खडेलवाल जातीय ला० सिभुदाम जी ने प्रतिलिपि कराई।

**३६५४. प्रति सं० ३ । पत्रसः० १**६७ । आ० १० $\times$ ४ $^2_7$  दख । **मे०**काल  $\times$  पूर्ण । बहुत स॰ १५७५ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मदिर झजमेर ।

२६५५. प्रतिसं० ४ । पत्र स०१ द६ । द्या०१०१ $\times$ ४ $\frac{1}{6}$  दख । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं०१ प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमें ।

**२९४६- प्रतिसं० ४** । पत्र स० १२४ । म्रा० १२×६ॄै इ**ला । ले०काल १८०६ कातिक बुदी** १२ । पूर्ण । बेष्टन सं० १०४**१ । प्राप्ति स्थान**—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर, ग्राकसेर । **३९५७. प्रति स० ६ ।** पत्रतः ३२४ । ग्रा० १० $^3$  ४  $^3$  इचा । ले० काल स० १७२६ पौष बुदी ११ । पूर्एं । बेप्टन प० २४४ । **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष -- जोधराज गोदीका के पठनाथं प्रतिनिधि हुई थी।

**३८५⊏. प्रति स० ७** । पत्र स० १⊏३ । ग्रा० १०१ ४ ४३ डक्ष । ले**०**काल १६६० । पूर्गो । वेष्टन स० १००/४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर ।

श्रास्ति—सबत् १६६० वर्षे घाषाड मृदि १२ गुक्ते सागवाडा गुभस्थान थी ध्रादिनाथ चैरमालये भी मृत्वाथे सरदवनीगच्छे अलात्कारायणे श्री कु दक्तु दावायीनये महत्तावार्ष श्री गृत्यवट तरस्ट्र महत्तावार्ष भी जिनवड तत्रपृष्टे म० श्री सकलबन्द तदान्याये स्थविदानार्थ थी मास्तिभूगण ध्रावार्थ थी हेमफीन्ति तत् यिष्य वार्ड कनकाण बारसे चीतीस श्री धातिनाथ पूराण ब० श्री भीत्रां ने निवागी दत्त ।

**३६५६. प्रति सं० ६ ।** पत्र स० ६-१६६ । **छा० ११** ×४ $\frac{1}{2}$  ×५ इश्च । ले० कालम० १६१० । अपूर्ण । बेष्ट्रन स० ३७२।**१५ प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयदुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबन् १६९० वर्षे बाके १४७४ प्रवर्तमाने मेदपाट मध्ये जनाञ्चन्याने आदोक्यर चैर्यालये लेखक सहजी तिस्यत । श्री मुलसपे सरस्वती पच्छे बलात्कारमाने कुटकु दाचार्याच्ये भट्टारक श्री प्रधानिद तत्पट्टे भ० श्री सफलकीति तत्पट्टे भवनकीति तत्पट्टे भट्टारक श्री जानमूषमा तत्पट्टे श्री विजयवीति तत्पट्टे भ० श्री कुभक्तद्र तदामायं ब्रह्म श्री जिम्मदास तत् पाट ब्र० श्री गातिदात तत्पाट ब्र० श्री हमा तस्य किया बाई भवनवती बाई श्री वतस्ती चरणाक्रमल सभुननावरया चैली बाई श्री वतस्ती चरणाव्या ५ दर पुस्तक विकासित ।

**३६६०. प्रति स० ६ ।** पत्रस० १४४ । आ० ११ × ४०७४ । लेक्कान स० १५६४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४१६ । **प्राप्ति स्थान**-सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

प्रमस्ति—मन्द् १४६४ वर्षे भादवा गृदी ११ णुक्ते थी गृजनथे थी गिरिपुरे थी प्रादिनाय कैत्यालं हु वड मानीस सदला गोवे बुहरा गोषा भाषा माणकारे तस्य पूर्वा रमा तस्य प्रमारे गांधी बाह्य मार्या नाथी थी मानिनाथ कैरित लिबाय्य तन । कर्म कथा ये गृम मन्द्र । कुरकु राजायीत्य महरारक थी मककाकीति तन्पर्ट में ० थी सुवनकीति तन्पर्ट भ० जातभूषणा तन् विषय माचार्य थी नीमबन्द्र त. ए थी नुगाकीति । मर्टारक थी प्रानिभि स्व क्षमारा प्रदत्त पुनर्कानि ।

किनारो पर दीमकं लग गई है किन्तु ग्रन्थ का लिखा हुशा भाग मुरक्षित है ।

**३६६१. प्रतिसं० १० ।** पश्चल ४० मे १२८ । आ० १३ 🗴 ५ इन्च । ले**०काल 🗴 । अपूर्ण ।** बेहुन म० १७३ । **प्राप्ति स्थान**—सम्भवनाथ दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति ब्राचीन है।

३६६२- प्रतिःकं ११ । पत्रस०१६६ । स्ना०११४४ इञ्च । तं०काल ४ । पूर्ण । वेष्टतस०१४१ । प्राप्ति स्थान चिठ जैन सण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष-- प्रत्य मे १६ ग्राधिकार है। प्रत्थाप्रत्य स ० ४३७५ है।

३६६३. प्रति सं० १२ । पत्र ग्र० १०-१४० । प्रा० १० $\times$ ४ | इञ्च । ते०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टत स०१३० । प्राप्तिः, स्थान— दि० जैन मंदिर ग्रादिनाय बूदी ।

३६६४. **शांतिनाथ चरित्र - मुनिदेव सूरि ।** पत्रस० ११८ । प्रा० १०,५४४६ इन्य । आषा-सस्हत । विषय — चरित्र । र०काल ४ । ले०काल सं० १४१३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । प्राप्ति-स्थान-चण्डेनवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

३६६५. शांतिनाथ चरित्र माषा—सेवाराम । पत्र स० २३० । ग्रा० ११४६ १ टखा । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र०काल स० १८३४ श्रालगा बुदी ६ । ले० काल स० १८६७ । पूर्ण । बेग्रन म० १-६ । प्राप्ति स्थान - महारकीय दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ड तरपुर ।

#### विशेष--

देण दूराहड आदि दे म बोधे बहुदेम,
रबी रबी प्रत्य कठित टोडरमल्ल महेण ।
ता उपदेश लवास लही मेवाराम सवात,
रब्यों प्रत्य सचिमांत के हुए दुई स्विकात ।। २३ ।।
म बत् अप्टादम शतक फुनि चीनीस महात ।
मावन कृरण आदमी पूरत कियो पुरान ।
प्रति अपार मुक्सी बेत नगर देखाड़ सार,
शावक बोसे महाभानी दान प्रयस्त मतियार ।। २४ ।।

३६६६. शालिभद्र चरित्र -प० धर्मकुमार । पत्रतः १४। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  ४ दश्च । भाषा-सम्कृत । विषय -चित्र । र०काल  $\times$  ने०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुन स० २०२ । प्रास्ति स्थान--- दि० जैन मिदर लक्कर जयपुर ।

३६६७. **शालिसद्र चौपई — जिनराज सूरि ।** पत्रम० २६। भाषा–हिन्दी। विषय∽वरित्र। र०काल स १६७⊏ ग्रामोज बुदी ६। ले० काल स०१७६६ चैत बुदी ६। पूर्णा≀ वेष्ट्रन स०६४०। **प्राप्ति** स्थान– दि० जैन पथायती मन्तिर भरतपुर।

३**९६८. प्रति सं० २** । पत्र स० २४ । ले० काच स० १७६६ **। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४०० । प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरनपुर ।

३६६६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २१ । ले॰काल म० १७६६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५६१ । प्राप्तिः स्यान---- दि० जैन पत्रायती मंदिर भरतपुर ।

**३६७०. प्रतिसं०४** । पत्र स०१६ । म्रा०११ $\times$ ४ $\frac{3}{4}$  इञ्च । ले०काल स०१८७८ । पूर्ण । वेहनस०१६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कामा ।

३**६७१. प्रिगुपालवध--माध कवि** । पत्र ग० १६ । आ० १२×४ '}्डच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्र स० १४६७ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मदिर क्रजनर ।

विशेष -- ४ समंतक है।

३६७२. प्रतिसं० २ । पत्र स०७० । म्रा०१० ४ ४ इश्वः । ले∘काल ४ । ब्रापूर्गः । वेहन स०१४४० । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

**३९७३. प्रतिसं०३** । पत्र स०३६ – १६२ । घा०११ है×४ इश्वा। ले० काल × । मपूर्ण। वेष्टन सं०६० । **प्राप्ति स्थान**---भ०दि० जैन मदिर ग्रजमेर।

**३८७४. प्रतिसं० ४ । प**त्रस० २०७ । ग्रा० ११×६ इश्व । ले०काल स० १८८० । वेष्टनस० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि जैनमन्दिर लक्षर, जयपुर ।

विशेष — सम्कर के मन्दिर में प० केशरी सिंह के शिष्य .... ने देवालाल के पढ़ने के लिए प्रति~ लिपि की थी।

३९७५. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०६ । म्रा० १२ $rac{1}{2}$ imes ५ इच ।ले०काल स० १६३६ । वेष्टन स० २६७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-जयपुर नगर मे श्री ऋषभदेव चैत्यालय में प० जिनदास ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी।

३९७६. प्रतिसं०६ । पत्र स ४ । म्रा०१० ई ४ ४ इचा । ले०काल ४ । प्रथम सर्ग पूर्ण । वेष्टन स०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बंदी ।

**३६७७. प्रतिसं०७ ।** पत्र स०१७ । ग्रा० १०imes ७ ६२४ । ले० काल imes । प्रपूर्ण । वेष्टन स०३४/१६ प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर दुनी (टोक) ।

३**६७८ प्रतिसं० म । पत्र**स० ६ । ग्रा० १० $imes rac{1}{2}$  दशा । लेक्काल imes पूर्ण । वेष्ट्न स० १८६-७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

३६७६. शिशुपालवध टीका—मल्लिनाय सुरि । पत्रस०२२। प्रा० ११% ६ १ इस । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । २०काल × । ले०काल × । धपूर्ण । बेहृत स०२६६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर स्रोमनन्दन स्वामी, बुदी ।

३**६००. श्रीपाल चरित्र**—रस्मे**सल**रापत्र स०३०। ग्रा० ६२०४ इत्था । भाषा-प्राकृत । विषय-कथा । र०काल स०१४२०। नेककाल स०१५६६ चेत गुरी १३। पूर्णा । बेष्टन स०५१४। प्राप्तिसथान निरुक्त के परिरक्षित्रन्दत स्वामी, बदी।

विशेष — स॰ १६६६ वर्षे चैतिसत त्रयोदस्या तिथी गृह दिने । गरिगगरा गर्धासपु रावमाण गरीन्द्र गरिग श्री रूपचन्द्र शिष्य मृक्ति चदगा लिनेखि । पुस्तक चित्रजीयल । लिखित धनेरीया मध्ये ।

३**६८१. प्रति सं० २ ।** पत्र स० ६४। ले० काल स० १८८४ आसीज सुदी १ । पूर्ग । वेष्टन स० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

विशेष--हिन्दी ।गुजराती मिश्रित) ग्रथं सहित है ।

३६**८२. प्रति सं०३ ।** पत्र स० ६१। ने० काल स० १८७६। पूर्णं । बेष्टन म०६०३। **प्राप्ति स्थान**-—दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरनपुर ।

३६६३. श्रीपाल चरित्र—प० नरसेन । पत्र म० ३७। ग्रा० ११ ×५ इश्वा । भाषा-श्रपञ्च छ । विषय-चिंग्न । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ७७ । प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

३६६४**. प्रति सं०२।** पत्र स०४६। प्रा०१०×४ इञ्च। **भाषा-प्रभ**जंश। विषय— वरित्र |। र०काल ×। लेक्बाल ×। पूर्णं। वेष्ठन सं०१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा। ३८ त प्रेमाल चरित्र — जयमित्रहल । पत्र स०६० । प्रा०११  $\times$  ४ दे इस्त । सावा - प्रयक्ष म । विषय – चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६२३ घाषाढ़ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष--मैरवदास ब्राह्मस ने प्रतिलिपि की थी।

३९८६. श्रीपाल चरित्र—रहुत्रू। पत्र सं० १२४। ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इच । माया—ग्रपभ म । विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६०६ ग्रासोज बुदी १४। पूर्ण । वेष्टन सं० १४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ व दी ।

विशेष — गुरुवामरे कुर जागत देते श्री मुर्ग्यप्य शुभस्याने मुलितान श्री सलेमसिह राज्य प्रवर्तमाने श्री काह्यसमे माग्नुराज्ये गुरूकर गर्गे उस्पमायाप्रवीमा तसीनिध महारक श्री उद्धरसेनदेवा तस्पर्टू भ० श्री धमंसेनदेवा तन्पर्टू श्री गुराकीनि देवा तत्पर्ट्ट भ० श्री वक्षोकीस्तिदेवा तत्पर्ट्ट श्री मलयकीसिदेवा तन्पर्ट्ट भ० श्री गुराभक्षप्रदेशिया तत्पर्ट्ट भानकीतिदेवा।

३६८७. श्रीपाल चरित्र—सकलकोलि । पत्र स० ३४ । मा॰ ११४४ इचा । माषा-सस्हत । विषय-चरित्र । र०काल स० १४ वी शताब्दी । ले० काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स० २०४-६४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

प्रशस्ति — स वत १६६४ वर्ष महामृदि १० सोमे श्री मृतसंघै सरस्वतीगछे बलात्कारगणे श्री कृत्वकृत्यावार्यात्रयं मट्टारक श्री सककीतिस्तरच्ये सट्टारक श्री रामकीतिस्तरच्टे मट्टारक श्री पमति स्वारागांव ब्रह्म श्री लाख्यका तिस्तव्य मृत्य तालिष्य महा मोहलाय श्रीईटर वास्तव्य हुँवड तालीय गण गोवे नचु माख्या तबोली धालिराज सार्वा उत्तमदे तयो मृत लाघा तथा लट्टूजी एर्न स्वज्ञाना-वरणीय कम्मे श्रयार्थ श्रीपालको चरिक तिलाय्य रत ।

३६८८८. प्रति सं० २ । पत्र स०४६ । घ्रा०११४४ इञ्च । ले० काल स०१८३१ । पूर्ण । वेप्टन स०११२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

३८**६६. प्रति सं**० ३ । पत्र स० ४४ । ग्रा० ११३ $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इच्च । ले० काल स० १७६८ । वेष्टन स० २०० । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति ग्रच्छी है।

**३६६०. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० ३६ । ब्रा० ११४५ इञ्च । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । बेष्टन स० १०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष---प्रथाग्रथ स० ८६४ । प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

स ०१६४८ वर्षे श्रावण मुदी ८ शनिवासरे बडोद शुभस्माने श्री मूनस पे सरस्वतीपच्छे बलात्कार गणे श्री नेमिजिनवेत्यालये म० स्रमयनदिदेवाय तित्ताच्य प्राचार्य श्री रत्नकीर्ति पठनायं। श्रीपालचरित्र लिखिन जोसी आनार्दन।

२९६१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २२ । प्रा०१२imes४१ इ.स. । से०काल सं०१८७८ स्रावस्स सुरी ४ । पूर्यः । वेष्ट्रन स०७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) ।

विशेष-टोडा नगर के श्री सावला जी के मन्टिर में प० शिवजीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी। प्रति जीर्स है। **३६६२. प्रति सं० ६** । पत्रस० ४३ । फ्रा० १० 🗴 ४.१ृँ डब्च । ले०काल स० १६३६ । पूर्यों । वैष्टत स० ३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैसावा ।

**३६६३. प्रति स**० ७ । पत्रसं० ३६ । ब्रा० १२  $\times$  ४ इञ्च । ले०काल स० १७७३ माघ मुदी  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २१४ । प्राप्टिः स्थान—दि० जैन मन्दिर नागढी बुदी ।

विशेष---प॰ मयाराम ने परानपूर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

**३६६४. श्रीपाल चरित्र--वर्ण नेमिदत्त** । पत्रस्य ६६। ब्राव्ह $\{x, x'\}$  इख । भाषा--सरकृत । विषय-चित्र । राज्याल सर्व १४६४ ब्रायाड मुदी १ । लेज्याल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसर्व १४३६ । **प्राप्ति स्थान**--मट्टारकीय दिव्जैन मन्दिर क्षजमेर ।

**३८६४. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ६० । ग्रा० ११  $\times$  ५ $^{\circ}$  घुल्य । ले०काल स० १६०४ मर्गामर सुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—मट्टारकीय दि० जैन मदिर क्रजमेर ।

**३८८६. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० ६८। म्रा० १२ × ५ इच । ले० काल स० १६३२ सावत **बुदी १२ । पूर्ण ।** बेट्टन स० १३१६ **। प्राप्ति स्थान**—सट्टारकीय दि० जैन मंदिर अजमेर ।

**३६९७. प्रतिसं०४ ।** पत्र स०५४ । आ०१२ imes ४, इ.स. । ले०काल ग०१६१६ । पूर्गा । वेष्टुन स०१७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वैर ।

**३९९८. प्रति सः ५ ।** पत्रस० ६३ । ते० काल स० १६१६ । पूर्यो । बेप्टन स० २७५ । **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

**विशेष**---भरतपुर में ब्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिनिधि की गई थीं।

**३६६६. प्रति स०६** । पत्र स०६६ । ग्रा०६ ैं ४४ ेइ उ.। ले० काल स०१००५ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर दबलाना बुधा।

४०००, प्रतिसं० ७ । पत्र म० २४ । आ० ६२ ४ ५) इन्छ । लेक्काल ४ । अपूर्ण । बेहुतस० १०६-१७४ । प्राप्ति स्थान-स्वि० जैन मन्दिर नीमनाथ टोडारायसिह (टाक) ।

४००१. प्रतिसं० द । पत्र स०१३४ । झा०१० ४४ । इत्रा । ले० काल स०१६७६ जेष्ठ सुदी ४ । पर्यो । बेष्टन स०४०,२१ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचावती सन्दिर दुनी (टाक)

४००२. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६६ । लेखन काल ४ । पूर्गा । वे०स० १४७ । प्रास्तिस्थान-दि० जैन मन्दिर नागदी, बुदी ।

४००**३. प्रतिसं० १०**। पत्र स०४७। प्रा० १२ ¦४६ इला। ले० काल स०१६०५। पूर्ण। वे० स०१०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनन्दन स्वामी, बुदी।

विशेष--प॰ सदामुखजी एव उनके पुत्र विभनलाल जी को बू दी में लिखवाकर भेंट किया था।

४००**४. प्रतिसं० ११ ।** पत्रस० ५४ । ग्रा० ६८५५ हे इख । से०काल 🗡 । पूर्या । वेस्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर प्राप्तनन्दन स्वामी, बुदी ।

विशेष — सिद्धचक पूजा महारम्य भी इसका नाम है।

४००**५. श्रीपाल चरित्र—पुरासागर** । पतस० १६ । भाषा-सम्हत । विषय-चरित्र । र•काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म॰ ३३४ । प्रास्तिः स्थान — दि॰ जैन पचायती मदिर मस्तपुर ।

४००६. श्रीपाल चरित्र—  $\times$  । पत्र स० ११। श्रा० १०  $\times$  ४ $१ ६ था । माया—सस्त्रत । विषय—चरित्र । र०काल <math>\times$  । ले०काल स० १६१० मावरण सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनसं० १८० । प्राप्ति स्थाल—दि० जैन मदिर फतेल्पुर गेलावाटी (शोकर)

४००७. प्रति सं० २ । पत्र स० १ से २१ । भाषा — सम्कृत । विषय — चरित्र । ८०काब  $\times$  । क्रेफ्काल  $\times$  । प्रपुर्णा । बेवन स० ७०१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपर ।

४००⊏. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० ६६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मंदिर भरतपुर ।

४००६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १३ । ग्रा० १० ४६ १ इ. व । से०काल ४ । ब्रपूर्ण । बेष्टन स० २०/१६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पचायती मन्दिर दुनी (टींक) ।

४०१०. प्रतिसं० १ । पत्रस० १०६ । घ्रा० १२४७ इ'व । साथा—सस्कृत । विषय— वरित्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । घ्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लडेल-वालो का ग्रामा (उगिमारा) ।

विशेष -- बीच के बहत से पत्र नहीं हैं। १०८ में ब्रागे भी पत्र नहीं हैं।

नोट--पृथ्यास्रवकथाकोण के फुटकर पत्र है और वह भी भपूर्ण है।

४०११. <mark>श्रीपाल चरित्र—परिसल्ल ।</mark> पत्रस०१३७ । घा०१०४६ है इ.च. । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र०काल स० १६४१ घाषाढ बुटी ४ । लेक्काल स०१६१० घासोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टुनस०१४६४ । **प्राप्ति स्थान**—म**०**दि० जैन सन्दिर प्रजसेर ।

विशेष -- कवि ग्रागरा के रहने वाले ये तथा उन्होंने वही रचना की थी।

४०**१२. प्रतिसं० २।** पत्रक्त० ६१ । प्रा० १३×८ इ च । ले० काल स० १६११ श्रावरण बुदी ४ । पृर्गा । वे० स० १- । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष -- प्रति ग्रच्छी है।

४०१**२. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४६ । घा० १३imes ५ $rac{1}{3}$  इत्व । ले०काल स० १८६६ घाषाड सुदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेल्पुर केसावाटी (सीकर)

विशेष --- मोहम्मदशाह के राज्य में दिल्ली की प्रति से जो मनसाराम ने लिखी, प्रतिलिपि की गई।

४०**१४. प्रति सं०४ ।** पत्र म० द१ । ग्रा० ११\४६ है इख । ले**०काल स० १६१७ भा**दवा वदी २। पूर्ण । बेहन म०६३ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर फतेहपर शेखाबाटी (सीकर) ।

४०१**४. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० १८० । ग्रा० १०∑७ इच । ले•काल स० १६६६ फागुरा मुदी १२ । पूर्ण । जीर्ण शीर्ण । वेष्ट्रन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

**४०१६. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स०१२० । ग्रा०  $\mathbb{L}^3_1 \times \mathbb{L}^3_2$  इच्च । ले० काल स०१६२६ । पूर्ण । वे० स०१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंत्री दौसा ।

विशेष--दौसा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०१७. प्रति सं० ७। पत्र स० १२४ । ग्रा० १०×६ हे इन्हा ले० काल स० १८८४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १२२/३७ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर बढा बीसपयी दौसा । **४०१८. प्रतिसं० ६ ।** पत्रसं० १६ । ले०काल स० १७७४ फागुरा सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौसा ।

विशेष -- जादौराम टोग्या ने प्रतिलिपि की थी।

४०**१६, प्रति सं० ६ । पत्र** स० १६७ । ग्रा० १० ४४ है इञ्च । ले० काल स० १८२० कार्तिक **बुदी** २ । पूर्ण । बेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन गवायती मन्दिर करौली ।

विशेष—डेडराज के बडे पुत्र मगनीराम ने करौली नगर में बुबलाल से लिखवाया था। प्रतिजीर्गाहै।

४०२० प्रतिसं० १०। पत्रस० ११७ । स्ना० १३ 🗴 ६ै इन्छ । ने०काल स०१८८६ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । बेष्टुन स०१६१ । प्राप्टित स्थान—दि० जैन पचासती मन्दिर करीली ।

विशेष---गुमानीराम ने करौली मे प्रतिलिपि की थी।

४०**२१. प्रति सं० ११** । पत्र स० ११० । फ्रा० म 🗴 ६ है इच्चालेश काल 🗴 । पूर्णावेष्टन सं• १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मल्दिर करीली ।

४०**२२.<sup>६</sup>प्रति सं० १२।** पत्र स० ९६१ । झा० ५<sup>2</sup>ु ४१<sup>2</sup>, इक्ष । ले० काल ⊠ । पूर्ण । बेष्टन सं• ३१/४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सीमाणी मन्दिर करौली ।

**४०२३. प्रतिसं० १३ ।** पत्रस० १४० । द्या० १० ४४ है उच्च । ले० काल स० १८८३ । पूर्ण । वैक्रनसं० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौमाणी मदिर करौली ।

विशेष—बयाने मे प्रतिलिपि हुई तथा खुशालचन्द ने सौगागी के मन्दिर मे चढाया।

**४०२४. प्रतिसं० १४ । पत्र स०** ६५ । लेखन काल रा० १६५७ थावमा गुक्ला ६ । पूर्ण । वेपून स**० १० । प्राप्ति स्थान**----दि० जैन पत्रायनी मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

४०२५. प्रतिसं० १५ । पत्र सं० १२६ । आ० ११४७ इन्त । लेक्काल ४ । पूर्णं । वेष्टन स• ३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर कामा ।

४०२६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १३० । आ० १२ ४७ ॄै इ.ख. । ले० काल × । अपूर्णः । वेग्टन स० १४३ **। प्राप्ति स्थान** —दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष--पन्नालाल बोहरा ने प्रतिलिपि की थी।

**४०२७. प्रति स० १७** । पत्र स० **१**१७ । म्रा० ११ $\times$ ६ । ले०काल सं० १६१८ भादवा मुदी ५ । पूर्ण । वेष्टुन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष - बयाना में लिपि कराकर चन्द्रप्रभ मन्दिर में चढाया ।

४०२६. प्रति स० १६ । पत्रसं० १४६ । ग्रा० १०४४} दश्व । ले० काल स० १७६६ मावसा मृदी १ । पूर्यों । वेष्टुन स० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बैर ।

**४०२६. प्रतिसं० १६ । पत्र**स० ६६ । प्रा० १२ $\times$ ६ $^{\dagger}$  इश्व । ले० काल स० १६०४ प्रथम **र्चन** सुदी २ । पूर्णे । बेटन स० २०। **प्राप्ति स्थान**——दि० जैन पचायती मन्दिर बयाता ।

विशेष--- प्रप्रवाल जातीय नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी। कुल पद्य स० २२६० है।

४०**३०. प्रतिसं० २० ।** पत्र स०१०३। लंक्काल स०१⊏⊏० माघ बुदी ४ । पूर्ण। वेस्टन स०२१। **प्राप्ति स्थान**—वि०जैन पचायती सदिर वयाना। विशेष--धागरा मे पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०**३१. प्रतिसं० २१ ।** पत्र स० १२३ । घा० ११×५ इ.चा । ले० काल स० १८८६ फागुण बुदी १० । पूर्णा । वेष्टनस० ५०२ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--महुवा में साह फतेचन्द मुन्शी के लडके विजयलाल ने ताराचन्द से लिखवाया था।

४०३२. प्रतिसं० २२ । पत्र स० २०४ । । ले॰ काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

४०३३. प्रतिसं० २३ । पत्र स० १००। ले० काल १८४४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५८१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-भीमराज प्रोहित ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४०३४. प्रति सं०२४। पत्रसं०१४५। ले०काल स०१६२६। पूर्णं। वेष्टन स०५६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर।

विशेष-भरतपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०३ ५. प्रति स०२४ । पत्र म०६७ । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टत स०५६५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायनी मंदिर भरतपुर ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

४०३६ **प्रतिसं०२६।** पत्र स०१०१। ग्रा०१२३४ ७ इला। ले०काल स०१६०३ ब्रेष्ठ सुदी१४।पूर्ण।बेष्टन स०१०। **प्राप्ति स्थान**—प्रग्नशन दि०जैन मन्दिर पलायनी स्रलवर।

४०३७. प्रति स०२७ । पत्रसं०१४२ । ग्रा०६ $rac{3}{2} \times \S^3$  इञ्च । ले•काल सं०१८७२ । पूर्ण । बेष्टन म०४६ प्राप्ति स्थान—दि० जैन ध्रवल पश्चायती मदिर ग्रलदर ।

४०३६. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १२१ । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । बेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान—र्दि० जैन मदिर, दीवानजी मन्तपुर ।

विशेष-वनवन्तिसह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

४०३**६. प्रति सं० २**६ । पत्र सस्या ११० । खा० १२ × ७ इश्व । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन लण्डेलवाल पचायती मदिर झल**वर** ।

४०४०. प्रतिसं० ३०। पत्र स०१३१ । झा०८३ 🗴 ६३ इचा। ले० काल 🗴 । पूर्सा। वेष्टन सं०१। प्राप्ति स्थान—दि०र्जन मन्दिर, चौघरियो का मालपुरा (टॉक)।

४०४१. प्रतिसं० ३१ । पत्रस० १४३ । स्रा० ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इञ्च । ले० काल स० १८७७ फागुगग बुदी १४ । पूर्गा । वेष्टन म० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोंक)

विशेष—प० रामलाल ने प० चोली भुवानीवक्स से शाहपुरा मे करवाई थी।

४०४२. प्रतिसं० ३२ । पत्रस०११६ । ग्रा०१२X६ इ.च. । ले०काल X । पूर्णः । बेष्टन स०४६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर, राजमहल टोकः ।

विशेष---२२०० चीपई है।

४०४**३. प्रति सं० ३३ ।** पत्र स० १६४ । ग्रा० १२×९<sub>१</sub> दुख । ले० काल स० १८७६ । पूर्णे । वेष्टन स० द४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक) । विशेष--रावराजा श्री चाँदसिह जी के शासनकाल दूगी मे हीरालाल स्रोक्ता ने प्रतिलिपि की ।

४०४४. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० ५७ से १११ । ग्रा० ११ $^3_1 \times$ ६ इख । ले॰काल imes मपूर्ण । वेष्टन स० ४६, २५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पचावती दूनी (टोक) ।

' ४०४५. प्रतिसं• ३५ । पत्रस०१२४ । बा० ६३ ४६१ इचा । ले०काल सं०१८६० काती मुदी ४ । पूर्ण । बेप्नसं• ४७ । प्रास्तिस्चान--दि० जैन मदिर कोटयो का नैसमा।

विशेष—साह नदराम ने श्रावा मे ग्रंथ निखा। स॰ १८६५ में साह रोडलाल गोपालसाह गोठडा वाले ने नैगावा में कोटयों के मंदिर में चढाया।

४०४६. प्रतिसं० ३६ । पत्रत० १०४ । छा० १२ $rac{1}{4} imes ag{1} = rac{1}{4}$  कल्काल imes 1 पूर्ण । बेप्टन स० १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बूदी ।

४०४७. प्रति सं० ३७ । पत्र म० १२६ । ग्रा० १२ ४ ६ इञ्च । ले० काल स० १६७२ । पूर्ण । वेक्रन म० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्री महावीर वृंदी ।

विशेष--वन्दावती में लिखा गया था।

४०४८ प्रतिसं० ३८ । पत्रम० १७ । ग्रा०१० × ६५ दञ्च । ने०कान स० १६०६ । वर्ण । वेष्ट्रन स० ५८ । प्राप्ति स्थान —तेरहपथी दि० जैन मन्दिर, नेगवा ।

४०४६. प्रति स० ३६ । पत्र स० १४ । ग्रा० १५ × ६ इच । ले०काल म० १६०२ । पूर्गा । वेष्टन स० ७०/४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर मादवा (राज०) ।

बिशेष-प्रति शृद्ध एव उत्तम है। फागी मे प्रतिनिधि हुई थी।

४०५०. श्रीपाल चरित्र—चन्द्रसागर । पत्र स०५०। प्रा०१०ई 🗶 ६ दश्व । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय —चरित्र । र०काल स०१६२३। ले०काल स०१६४४। पूर्ण । केटन स०६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दर फनेहपुर गेलावाटी (सीकर)।

### विशेष-- ग्रादिभाग---

सकल शिरोमिण जिन नमू तीर्थकर बोर्थाम ।
पक करमाणक जेह लाग्ना गाम्या जिवनद हें जा ११।
ब्रुवभंतन या देकिर गीनम प्रनिम्म स्वर्गि ।
ब्रुवभंतन या देकिर गीनम प्रनिम्म स्वर्गि ।
ब्रुवभंतन या देकिर निम्मू परिमान ।।२।
जिन, मुल ली जे उपनी, सारदा देवी मार ।
तिह करण प्रणामी करी, मार्य बुद्धि विशाल ॥३॥
पुरेर-कीर्ति पुरु गएपानी करीन तेह प्रवदात ।
तेह पाट प्रनियानन सकलकीर्ति गुणाता ॥
तम पद कमन भ्रमर सम चन्द्रमागर नित्यार ।
श्रीपाल नरेंद्र नमो कहुँ चरित्र रसाल ॥

#### श्रन्तिम भाग---

काप्टा सघ सोहामणु, उदयाचल निमभाग्।
गछ तट नदी तट रामसेन धामनाय बलाग्।।

तद श्रनुकमे हुवा गछपति विद्या भूषमा सुरि राय । तेह पाटे ग्रांति दीपता श्री श्री भूषमा यतिराय ।।२१॥

- श्रोटक तेह पाटे प्रति सोमना चन्द्रकोत्ति कीलि ग्रपार। बादी मद गजन जनु केलगीसह सम मनुधार ॥२२॥ नेह पाटे बन्जिलोमना राज्य कीलि विद्याभडार। लक्ष्मीमेन ग्रनि दीपना जेह पाटे ग्रनसार ॥२३॥
- चाल-तेह पाटे प्रति दीपता इन्द्रभूपण प्रवतार ।

  मुरेन्द्र कीलि गुरु गच्छपति तेह पाटे प्रवतार ।

  कीलि देश विदेश में जाग प्रागम प्रगार ।

  तेह पाट मुग्विर मही सकलकीलि गुगुधार ।।२४।।
- त्रोटक-मुगाधार ते मकल कीति ने मृत्यिर विद्यागृगा भडार । नक्षमा द्वापिणजकस्या कत्ना बोहोत्तर ततु घार ॥१२॥ स्थाकमा तर्क पुरागा मागर बादी भद्र ते निवार । गुग्ग सन्त नेद्व राजनाति कोर्डन पार्वे गार ॥१६॥
- चाल ब्या तेह पट कमल मोहामणुं मधुकर सम ने जाणि । इन्द्राचन्द्र सागर कहे बाल स्थाल सम धार्मा। ब्याकमां तर्कपुरागन ने नहीं जाला अदि । सक्त मनि करण ब्यु कहते हैं कवि सूण क्षमत असेद ।।२७।।
- श्रोटक—श्रीपाल गुगतं धनि घगा मुफ्तसनि प्रत्यध्यार। कविताजन होसिन कीडे तुन्हे गुगुतगी भड़ार।।२८।। बाल कर मति जीय एमें पटचना रची प्रपार। जेससी ते वित सामनेते लेल हे मीच्य भड़ार।।२६।।
- चाल सोजन्यानयर सोहामसु दीसे ते मनोहार। सासन देवीं ने देहरे परतापुरे ग्रपार। सकलकीनि तिहाराजता छाजता गुण भडार॥ बह्म चन्द्रसागर चनारची तिहाबेसी मानाहार॥३०॥
- बोटक मनोहार नगर मोहामणु दीने ते आ कडनाल । श्रावक तिहार विल गोभना भेवाडा नामे विलाह ।।३१॥ पूजा करे ते नित्य प्राते बच्चाग सुग्गे मनोहार । नागकुमार जिम दीपता श्रावक प्राविका तेह नारि ॥३२॥
- खाल—ग्रथ मध्या नम्हे जागज्यो पबदण सत प्रमाण । तेह ऊपन बनि शोभता साठ बलीस ते जागि ।। ढाल वशीस ते सोभती मोहती भवियण लोक । साभलता मुख ऊपजे, नामे विथल ते शोक ।।३३।।

श्रोटक---श्रोक नासे जाय जिता पामे रिद्धि भंडार । पुत्र कतत्र सुभ सपजे जयकीत्ति होड प्रपार ॥३४॥ मन प्रमीते जुसाचले जे पूजे ते मनोहार। मन बाह्यित फल पामीइ स्थर्ग मुगति लहे घवतार ॥३१॥

मन वाछित फल पामीइ स्थर्ग मुगति लहे भवतार ।।३ चाल-सबत शत अश्वादश त्रय विशति अवधार ।

तेह दिवसा पूरण थयो ए प्रंथ गुभ सार ।।
श्रीपाल गुण श्रमम श्रपार केविल सिद्ध चक्र भवनार ।
तुम गुण स्वामी श्राण्यो श्रवर इच्छा नहि सार ।।
मुफ सेवक श्रवपार ज्यो रीज्यो प्रविचल थान ।
बहा चन्द्रसागर कहे सिद्धक महाचाम ।।२।।
माघ मास सोहामणो थवल परव मनोहार।
त्रीज तिर्थि श्रीत सोमतो गुभ तिथि रविवार ।।३।।

इति श्री श्रीपाल चरित्रे मट्टारक श्री सकलकीत्ति तत् शिष्य श्री ब्रह्मचन्द्रसागर विर्रावने श्रीपाल चरित ।

मालव देश तलपुर में मनिसुवतनाथ चैत्यालय में पहित नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

४**०५१, श्रीपाल चरित्र**—× । पत्र स० १२ । भाषा —हिन्दी (पद्य) । विषय —विस्त्र । र०काल < । ने०काल × । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष—प्रति गुटका आकार है। ११४ में आने के पत्रों में पत्र सम्या नहीं है। इन पत्रों पर पत्र मगल, है जिनमहस्रनाम तथा एकीभाव स्तोत्र आदि का सम्रह है।

४० ४३. श्रीपाल चरित्र— × । पत्र स०१४ से ३०। सा०११ क्रै४ ४३ डावा । शाया-हिन्दी गर्याः तिपय---चरित्र। २०काल × । से० कान ४ । स्रपूर्ण । बेहन स०७६ । **प्राप्तिस्थान**— हिन्दी गर्याः तिप्तर्भानिकार

४०**४४. श्रीपाल चरित्र**— $\times$  । पत्रल० २७। ग्रा०१३४७ इन्त्रा भाषा-हिन्दी गढा। विषय—चित्रता र०काल  $\times$ । ले०काल स० १९३६। पूर्ण। वेष्टनस० ७१। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी।

४०५५. श्रीपाल चरित्र— $\times$  । पत्र स॰ २६ । ग्रा॰ १२ $\times$  दृश्व । भाषा-हिन्दी (गर्छ) । विषय-चित्र । र०काल  $\times$  । ते॰ काल स॰ १६६१ । पूर्ण । बंग्टन सं॰ ३३ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन प्रथमल गरिन नैसावा ।

४०५६, श्रीपाल चरित्र— × । पत्र स० ४७ । ग्रा० ६ ४६ है इन्छ । साथा-हिन्दी गढ । विषय-वरित्र । र०काल × । से० काल स० १०४१ सावरा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर बैर । काव्य एवं चरित ] [ ४०१

विशेष--- मंग्रही ग्रमरदाम ने प्रतिलिपि की थी। कथाकोष में में कथा उद्धृत है।

४०५७. श्रीपाल चरित्र— $\times$ । पत्रस०४१ । प्रा०  $= \frac{3}{2} \times \frac{3}{2}$  इंब । भाषा -हिन्दी गर्छ । विषय—चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६६२ भादवा बुदी ३ । श्रपूर्ण । वेष्टन स० ४६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — रिखबचन्द विदायक्या ने जयपूर मे प्रतिलिपि की थी।

४०५६. श्रीपाल चरित्र —  $\times$  । पत्र स० ३४ । ग्रा० १०  $\times$  ७ इश्व । भाषा -हिन्दी गर्व । विषय-चित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर न।गरी व दी ।

४०**५६. श्रीपाल चरित्र** × । पत्र स० ५६ । भाषा-हिन्दी । विषय-जीवन चरित्र । र०काल ⋋ । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । बेष्टन स० ५७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

४०६०. श्रीपाल चरित्र—  $\times$  । पत्र म०३६ । ब्रा० म $\times$  ५ ६% । भाषा-हिन्दी। विषय-चित्र । र०काल  $\times$  । मे०काल स०१६२३ वैज्ञाल बुदी ५ । ब्रपूर्ण । वे०स० ३३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभ बनाय मिदर उदयपुर ।

विशेष-कृत पद्य मं० ११११ है।

संबन् झठारे सनसठे सावण मास उत्तम । कीमन पक्ष की सल्मी रबीबार मुभवण ॥ ११०६ ॥ तादिन पूरण निलंगे चित्र सकल श्रीपान । । पढो पदायो व्रथत मन वृहरक विचान ॥११०६॥ नगर उदयपुर रुबडो सकल मुखा की धाम । तहा जिन मन्दिर भोगही नानावित म्रीसराम ।१११०॥ ताहा पारिम जिनराज को मन्दर मृत मोहत । तहा निल्मो गृयन्थ ही बरनो जम जयवत ॥ ११११ ॥ इति श्रीपान कथा मृत्यों।

नगर भोडर मध्ये श्री रिव्यवदेवजी के मन्दिर, श्रीमन् काष्ट्रास घ नदितटमच्छे विद्यागरो स्राचार्य श्री राममंग तलाट्टे श्री विजयमेगा तलाट्टे श्री भ०श्री हेमचन्द्रजी तलाट्टे भ०श्री सेमकीति तत् सिष्य प. मञानाल निच्यत । म०१६२३ वैज्ञाख वदी थ ।

प्रारम्भ में गौत्तम स्वामीका लक्ष्मीस्तोत्र दिया है। प्रागे श्रीपाल चरित्र भी है। प्रारम्भ का पत्र नहीं है।

४०६**१. श्रीपाल चरित्र**—लाल । पत्र स० १४२ । भाषा —हिन्दी । विषय -चरित्र । र०काल स० १८३० । लेक्काल स० १८८६ । पूर्ण । वेग्टन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मन्दिर भग्नपुर ।

४०६२. **श्रीपाल प्रबंध चतुरुपदी**— पत्रस०४। माषा-हिन्दी। विषय ४ १ र०काल ४ । <sub>स्त</sub> से॰काल स०१६६६। पूर्ण। बेस्टन सं०६६७। **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर। ४०६३. श्रो स्थिकचरिश— म० शुभचन्द्र । पत्रस० १२७ । मा० १० $\times$ ४३ इ.स. । माषा-सस्कत । विषय-चरित्र । र०कान  $\times$  । से•कान स० १६७७ भारवा मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर भजमेर ।

विशेष--जांजी श्रीधर ने अम्बावती मे प्रतिलिपि की थी।

४०६४. प्रति सं०२ । पत्रस० १०१ । ले० काल 🔀 । स्रपूर्ण । बेष्टनस०१३२ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मंदिर अजमेर ।

४०**६५. प्रति सं० ३ ।** पत्रस**० १००** । श्रा० १० $\times$ ४) इञ्च । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । केइनसं० १२२३ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**४०६६. प्रति स० ४** । पत्रस० १४ । बा० १२ रे ४५ हश्व । ले०कालस० १८३६ । पूर्ण । वैक्रनस० ३२३ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

**४०६७. प्रति स० ४** । पत्र स० ७४ । आ० ११३  $\times$  ४० इञ्च । ले०काल सं० १०१० । भादवा मुदी १४ । पूर्मा । बेपून स० १३६६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त सन्दर ।

विशेष---गुलाबचन्द छावडा ने महारोठ नगर मे प्रतिनिधि की थी।

४०६६. प्रति स० ६ । पत्रस० ७६ । ब्रा० १०१४ ४ इञ्च । ले०काल ⊼ापूर्ण । बेष्टनस० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

४०६६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १४६ । आ० ११%४ इ.स. । लेक्सल स० १८४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रीमनन्दग न्यामी, दूरी ।

विशेष—कोटा नगर के खुरयालाडपुरा स्थित शान्तिनाथ चैत्यालय म आ० विजयकीनि त्रितिष्य सदामुख चेला रूपचन्द पंडित ने प्रतिनिधि की थी।

४०७०, प्रतिसं० मा पत्र सं०६० । श्रा०१३>.५ इश्व । लेक्काल स०१००२ कागुगा बुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन स० ५७ । प्राप्ति स्थान----वि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष — सवाई जयपुर में नैसासागर ने प्रतिलिपि की थी।

४०७**१. प्रतिसं० ६।** पत्रस० १०४ । घा० ११३ × ४ प्रच । लेकाल 📈 । पूर्या । वेष्टुत स० ७४ । **प्राप्तिः स्थान** — दि० जैन मन्दिर पचायनी दूनी (टोक) ।

**विशेष--**प्रति जीगां है।

४०**७२. प्रति सं० १०**। पत्रस० ६०। धा० ११×६ इचा। ले०काल म० १६२३ । पूर्ण। वेष्टुन स०४७ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मदिर।

विशेष--दौसा के तेरहपंथियों के मदिर का ग्रंथ है।

४०७३, प्रतिसं० ११ । पत्रस० १४७ । घा० १० है ४७ दिया । ने० काल स० १७८२ वैज्ञास बुदी ४। पूर्ण । बेष्टुन स० १३७ ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इस्दरगढ (कोटा)।

४०७४. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १३४ । घा० ७३ ४४) इन्छ । ने० काल म० १७२७ कालिक सुदी ११ ।पूर्णे । यष्टन स० २१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरम्सी कोटा । प्रशस्ति — स बत् १७२७ वये महामागत्य कार्तिक मासे सृकुलपक्षे तियौ एकादणी धादित्यशामरे श्री मृत्यसथे सरस्वतीगरेहे बलात्कारमणे कुंदकु दावार्य तदाम्नायं भट्टारक श्री सकलकीर्ति तिलाप्य पंडित मनोरयेन स्वहत्नेन हृवड जातीय स्वपठनायं कर्मक्षयार्थः।

४०७**४. प्रतिसं० १३** । पत्रस० १८ । आ० ११  $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इच्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेकनसं० ३६८ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४०**७६. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० ६८-८६ । ब्रा० ११×४ इश्व । ले० काल सं० १६६४ मगसिर बृदी १३ । ब्रपुगं । बेठून स०४०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

प्रशस्ति – स वत् १६६४ वर्षे मगमिर वदि १३ रवो श्री मूलसचे सरस्वतीगच्छे बलात्कारमणे भी सरोजनगर मुगायंत्राथचंत्यालय भट्टारक श्री नरेन्द्रकोत्ति तत् शिष्य प० बूलचन्द तत् शिष्य प० धालमचन्द्रः

४०७७. प्रतिन्स्तः १५ । पत्र स० ६४ । ग्रा० ११ ४४ इ.च. । लेक्सल स० ४ । श्रपूर्णः । वष्टन स० ७४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४०७ म. प्रतिसं० १६। पत्रस० १२६। लेक्सल स० १६२४ चैत्र सुदी २।पूर्ण। बेष्टनस० २३२।प्राप्ति स्थानः दि० जैन पचायती मदिर भन्तपुर।

विशेष--- धाशाराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४०७६. प्रतिसं० १७ । पत्रस० १८२ । ले०काल 🗴 । अपूर्ण । बेष्टनस० १० । प्राप्ति स्थान – ८० जैन बटा प्रवासनी मन्दिर जीग ।

४०८० प्रतिसं० १८ । पत्रस० ७७ । ग्रा० १०१ × ५१ इ.च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४०८१. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४४ । झा० ११×५ इच । ले० काल ४ । झपूर्ण । बेष्टन म० ११६ । प्राप्ति स्थान—रिंव जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

४**०५२. प्रतिसं० २०।** पनस० २२-१४२। श्रा०१० $\frac{3}{2} \times 3^{\circ}_{2}$  इखा ले०काल स० १६६२। **प्र**पूर्ण । बेप्टन स० २३४। **प्र.प्ति स्थान**—दि० जैन ब्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४०८३. प्रतिसं० २१ । पत्रसः० १२१ । ग्रा० ६×५ इच । ले०काल स० १६६५ वैशाख सुदी ३ । पूर्णे । वेष्टुनसः० २६३ । प्राप्ति स्थानः —दि० जैन भ्रष्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- ब्रद्ध श्री लाड्यका पठनायं ।

४०**८४. प्रति सं० २२ ।** पत्रस्क ६१ । ग्रा० १२  $\times$  ४ $\frac{1}{9}$  इश्व । लेक्सल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टनसंक ६३ । प्राप्ति स्थान—दिक जैन प्रयाना मदिर उदयप्र ।

विशेष — प्रति प्राचीन है। बीच के कुछ पत्र नही हैं। इसका दूसरा नाम पद्मनाभ पुरास भी है। ४०८५. अर्थे स्थिक चरित्र भाषा—भ० विजयकोत्ति। पत्र स०१२। प्रा०१२३४८ इसा।

४००६४, अर्थिएक चरित्र भाषा—मश्चित्रकालि । पत्र स०६२ । प्राः १२१४ ८ इन्छ । भाषा-हिन्दी पर्यः विषय-चरित्रः । र०काल स०१,५२४ । ले०काल ४ । शूर्णः । वेस्टन स०२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर धनिनद्दन स्वामी वृदी ।

## प्रशस्ति--

गढ प्रजमेर सक्त सिरदार । यट नमोर महा प्रिकार ।।
मूलताब मृति लिकिय काग्राव । सट्टारक पट्ट नो भव भाव ॥
सारद गव्छ तम्मु निमार । बचानकार नम्म जानुमार ।।
कुन्दकुन्त मुस्त्र्या सही । यट अनेक मृति सो थ्या सही ।।
रत्नकीति पट विद्यानद । नमु पट मृहेहकीति सदमुद ।।
प्रतन्तकीति पट पारि भया । तमु पट भूदन भूपरा चिर जीया ।।
विजयकीति भट्टारक जाति । इह भाषा कीति परमारा ॥
संवद भठरारस्य सत्तवीत । फागुरा सुदी सातते सु जमीस ॥
बुधवार इह पुरमा भई । न्याति नयम वृद्धत पामू पर्व ॥
गोत पाटती है मितराय । विजयकीति मटारक यादा ॥
वज्यक्त परा औम मृते जाति । बडजाय्या तम् गोत पिछाति ।।
विजोकेन्द्र कीति रिपराज । निति प्रति सायन यातम काज ॥
वजयक्ति नित्र प्रता । भी वेताइ देता नम्म प्रता ॥।।।।।।
समोकेन्द्र कीति रिपराज । निति प्रति सायन यातम काज ॥
वजयक्ति निव्यान मुत्राग । औ वेताइ देता नम्म प्रता ॥।।।।।।।

४०**८६. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०१२८ । आ०११८.५ टब्ध । ले०काल । पूर्णा। वे०स० २७४ **। प्राप्ति, स्थान**— दि० जैन मदिर पार्थनाथ बीगान वृद्या ।

विशेष-पति नवीन है।

**४०८७. प्रतिसं० ३** । पत्र म० ७१ । द्या० ५,५ ८ ७ इन्ड । ल० काल स०१६८१ पृत्य । वेष्टन स०४६ । **प्राप्ति स्थान**ः -दि० जैन मन्दिर श्रादिनाथ दृदी ।

४०**८६. प्रतिसं० ४।** पत्रस० ६६ । आ० ८) ६ ४३ टच । ले० काल म० १६६४ फागुण बुदी ७। पूर्णे । बेबुन म० १२७६ । **प्राप्ति स्थान**— म० ६० जैन मन्दिर पत्रमर ।

४०**८६. प्रतिसं० ५** । पत्र स० ६६ । आ० १० ४ ४ ८० । ल०काल ग० १६२६ सावस्प बुदी **१४** । पूर्सः । बेष्टन स० २७६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जेन मन्दिर क्षत्रमेर ।

विशेष —ग्रजबगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

४०६०. प्रति सं ०६ । पत्र म०७७ । सा०१० १४ ४ ) इथ्या से० बाल म०१८८४ चैत्र बुदी ३ ।पूर्णा वे० म०११ । प्राप्ति स्थान—उपराक्त मन्दिर ।

विशेष--पद्म स० २००० है।

**४०६१ प्रति सं० ७** । पत्र स० ६२ ते ११० । आ० १२) , ६ इव । लेकाल स० १८७६ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७-२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन मन्दिर पत्रावती हुनी (टाक) ।

विशेष—दूनी में रावरी थी चादिसह जो के राज्य में मास्मिकचन्द जी सबी के प्रताप में क्रोफा हरीनारायमु ने प्रतिनिधा की थी। काव्य एवं चरित ] [४०५

४०६२. प्रतिस० म । पत्र स०१०१ । स्रा०११ imes ५ $rac{1}{2}$  इ.स. । ले० काल imes । प्रपूर्ण । बेष्ट्र स०११ । प्राप्तिः स्थान—वि० जैन मंदिर राजमहल (टोक) ।

४०६३. प्रति सं० ६ । पत्रसः० १५२ । ग्रा० ११ 🗙 ५ इचा । विषय-चरित्र । ले०काल सः० १८६१ कागुता बुदी ११ । पूर्गा। बेष्टन सः० ३३ । प्राप्ति स्थान–दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष---सथोक (सतीष) रामजी सौगागी तत् ग्रमीचन्द ग्रभैचन्दजी राजमहल मध्ये चैत्यालय चन्द्रप्रभ के में बाह्मग स्थलाल वासी टोडारायांसह में प्रतिलिपि कराकर चढाया था।

४०**६४, प्रतिसं० १० ।** पत्रस० १२० । झा० ६  $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  दुख । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । बेग्टन स० २१८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष—नक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

४०**६५. प्रतिसं० ११।** पत्र स०६१ । स्रा०१५ ⋋७ इश्वः । ले० काल स०१६०१ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स०१६३ । **प्राप्ति स्थान** — वि० त्रैन मन्दिर राजमहल टोक ।

४०६**६. प्रति सं० १२**। पत्र स० ७= । आ० १२×= इन्छ । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैत पास्तेनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

४०६७. प्रतिसं० १३ । पत्र स० १५३ । आ० १० $rac{2}{5}$ imes५ छन्छ । ले० काल म० १६६४ । पर्म । बेपून म० ६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मदिर अलवर  $rac{1}{5}$ ।

४०**६ द. प्रतिस ०१४** । पत्रस०१२६ । आर०१०३ ×७६च । ले०काल स०१६२७ आरमोज पृटी ३ । पूर्या वेष्टन स०१० **। प्राप्तिस्थान**—दि० अग्रवाल प वायतीजैन मन्दिर अलवर ।

४०**६६. प्रतिसं० १५** । पत्रस० ६६ । ग्रा**०** ६५ ६ इ**ल्डा । ले०**काल स० १६३० चैन वर्धा ३ । पूर्मा । बेहन स० ३७ । **प्राप्ति स्थान**— उपशेक्त मन्दिर।

**४१००. प्रतिसं० १६ ।** पत्रस०=५२ । ग्रा० १२ 🗴 ७} इच्य**ा ले**०कालम० १६१८ स्रापाढ सुदी ७ । पर्गा । बेपून स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती सन्दिर बयाना ।

विशेष-वयाना में धनराज वाहरा ने प्रतिनिधि की थी।

४**१०१. प्रतिसं० १७ ।** पत्र स० १२७ । ने० काल स० १६१३ । पूर्ण । बेष्टुन स० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवासनी सन्दिर हण्डावालों का डीग ।

**४१०२. प्रति स०१**८ । पत्र स०१०८ । प्रा०१३ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५३ $\frac{1}{2}$  । ते० काल स०१८३१ भदवा सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टुन स०५२ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर फतंहपुर गेलाबाटी (शीकर) ।

विशेष--- शमशाबाद (ग्रागरा) में ईश्वरं,प्रमाद बाह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

४**१०३. श्रे रिएक चरित्र भाषा—दोलतराम कासलोबाल** । पत्र स० २४ । भाषा—िहन्दी । विषय-चरित्र । २०काल  $\times$  । से०काल स० १८६६ । पूर्ण । वेस्टन स० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—िह० जैन पचावती महिर भरतपुर ।

४**१०४. श्रे रिएक चरिश — बौलतग्रीसेरी ।** पत्रग० १७२। प्रा० ११ - १<sup>९</sup> ट्या । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय —चरित्र । र०काल स०१ =३४ सगसिर सुदी ७। ते० कात ८०१८२१ । पूर्त्य । वैक्ष्यस०६०। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी । विशेष---- वा) कल्दार में स०१६६२ में लिया गया था।

४१०५. श्रेरिएक प्रवन्ध—कल्याएकीत्ति । पत्र स० १७ । आ०१० ४ ६ ६ अ । भाषा-हिन्दी पणः । विषय-चरित्र । र०काल म० १७७५ झासोज मुदी ३ । ले०काल स १८२६ चैत वदी १३ । पूर्णा । वेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर फतेहपुर गेलावाटी (सीकर)।

#### द्यादिभाग--

ऊँ नम. सिद्धे स्य -- श्री वषभाय नम । बोहा--सूखकर सन्मति शुभ मनी चोबीस भो जिनराय । ग्रमर खचरनि करि ः मेवित पाय ॥१॥ ते जीन चरुण कमलनमी हृदय कमल धरी नेह । जिन मल कमल थी उपनि नम बाग्बादिनी गूगा गेह ॥२॥ गुरग रत्नाकर गौतम मृनि वयरा रयगा अनेक। तेमध्यि केता ग्रही रचु प्रबंध हार विवेक॥३॥ श्री मुलसम् उदयाचिल, प्रभाचद्र रविराय । थी सकलकीर्रात गरु धनकमि, नमश्री रामकीरित ग्रभकाय ।।<।। तम पद कमल दीवाकर नम, श्री पधनदी मुलकार। बादि बार्ग केशरि श्रकलक एह प्रवतार ॥५॥ नीज गरू देव कीरति मूर्नि प्रशाम चित्र घर नेहा। मङ्लीक महाश्रीगीक ना प्रवन्त रच्न गुगा गेट ।३६।। नमी देवकीरान गरु पाय ॥ जिन० भावि०॥ ६॥ कल्यामा कीरति सुरी वंगे रच्यो रेश लाल लो० ।। ए श्रोणिक गण मिणहार ।। जिन्जमाविक।। वागड विमल देश शोभते रे ॥ लाल लो ॥ तिहाँ कोट नयर सुरकार ॥ जिन् भावि ॥ १० ॥ धनपति विमल बसे भगा रे॥ तात ता॥ धनवत चतुर दयाल ॥ जिल् ॥ भावि ॥ विहो बादि जिन भवन सोह।मगारं।। नान लो ।। नशिका तोरमा विशाल ।। जिन् भावि ।। ११।। उत्सव होयि गावि माननी रे म लाल लो म वाजे डौल मृदग कमाल ।। जिन् ।। भावि .। भ्रादर बद्धासिथ जी नरोरे ।। लाल लो ॥ तहाप्रविध रच्यो गरममाल ॥ जिन० ॥ भावि० ॥ १२ ॥ सतन सतर पर्चोतिर रे ॥ लाल ला० ॥ ग्रामो सूदि श्रीज र्गव ॥ जिन० भावि०॥ ए मानलि गर्भव विस्थि भावमुर । लाल लो ॥ ते तहि मगलाचार ।, जिनदेवरे भावि जिन पद्मनाभ जाराज्यो ॥१३॥ काव्य एवं चरित ] [ ४०७

इति श्री श्रोशिक महामडलीक प्रबन्ध स पूर्ण।

## ग्रस्तिम---

मनोहर मलसघ दीपतो रे।। लाल लो।। सरस्वती गन्द्र शृंगार ।। जिन० भावि०। १४।। पटोधर कुंदकुंद सोमनोरे ॥ लाल लो ॥ जिंगा जलचर कीधा कू दहार।।जिन० भावी०।।४।। ग्रनुकर्मम सकल कीरतिह वरि ॥ लाल लो**०**॥ श्रीज्ञान भूगाप सुभकाय ॥ जिन० भावि०॥ ६॥ विजय कीरित विजय मुरी रे।। लाल लो० ।। तस पट शुभचंद्र देव ॥ जिन०॥ भवि०॥ गभ मित्री समितिकीरति रे ॥ लाल लो० ॥ श्री गगकीरति करू सेवा। जिन० भावि।। श्री वादि भएगा वादी जोयतो ।। लाल लो ॥ रामकीरति गछ राय ॥ जिन् ।। भवि ।। तम पट कमल दिवाकक रे। लाल लो।। जेनो जस वह नरपति गाय ॥ जिन० भावि० ॥७॥ सकल विद्या नगे बारिय रे।। लाल लो।। गळपति पदानंदि राय । जिन् ।। भावि ।। ।। एसह गछपति पदनमी रे ॥ लाल लो ॥

प्रशस्ति—मंबत् १८२८ का मामोन्नम माने चैत्रमान कृप्यपक्षे तिथि त्रोदमी बार अहस्यतवार मूर्यपुरिपक्ष्ये नद्रमभ चैत्यानये श्रीमक पुरागा संपूर्ण। श्री मृतसभ्ये बतात्काराणी सरस्वतीगञ्ज कुन्दकुन्दा-वार्यान्वर्य महारक श्री नरेट्यकीति जी नरगृहे भरहारक श्री विमानकीति जी तत्यर्हे भरहारक श्री राजेन्द्र कीति तत्यर्हे भरहारक श्री रोनेटकीति स्वहतेन जिपि कृते कम्मेदायाचे प्रजावे।

४**१०६. प्रति सं० ७ ।** पत्रस० १७१ । घा० १०४७ इञ्च । ले**०का**ल म ० १६५६ । पूर्ए । वेष्टनस०४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बुंदी ।

४१०७. श्रीस्पकचरित्र--लिखमीदास । पत्र म० ८४ । ब्रा० ११ × ५ है इसा । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । ४० काल मं० १७४६ । लेकाल मं० १८४१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०० । प्रास्ति स्थान---भ० डि० जैन मंदिर क्रजमें ।

**४१०८. प्रति सं० २।** पत्रस०१८ । घा०१२ ४ ६ इश्वा । ले०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रस स०१७०। **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन पत्रायती मन्दिर करौली । ४१०६. प्रति सं० ३ । यत्रस० १०४ । ले०काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टनस० २४ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन बडा पचायती मन्दिर डीग ।

४११०. प्रतिसं० ४ । पत्रम० १०३ । ग्रा० ६ ४ ५३ इ.ख. । ले० काल स० १८६४ आसीज सुदी १४ । पूर्ण । वेग्टन स० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपयी मालपुरा (टोक) ।

४**१११. प्रतिसं० ५ ।** पत्र स०६७ । घा०१०६ ४ ५ इ.च. । ले० काल० ४ । पूर्णी । बेष्टन स०२३६ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दि॰ दबलाना (बृदी) ।

**४११२ प्रतिसं०६** । पत्र स०५६ । ग्रा० १२४५ हुँ इस्त्र । ले० काल ४ । पूर्ण । बेप्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल पचावती मन्दिर अलवर ।

४**११३. प्रतिसं०७ ।** पत्र स०१२१ । आर्फ हें ४६ हैं डबा। लेक्काल स०१८७६ धाषाढ सुदी २ । पूर्णावेष्टन स०३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अण्याल पत्रायनी सम्दिर अलवर ।

**४११४. प्रतिसं० म ।** पत्र स०६४ । ब्रा०११×५३ इच्छ । ते० काल म०१६२२ प्रामायण सुदी१ । पूर्णावे० स**३१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर वयानः ।

विशेष--- ग्रन्तिम भाग । - -

सोरठा —

देस द्वृदाहर माहि राजस्थान प्रावावनी । भूप प्रभाव दिपाहि राजिस्य राजे निहा ॥११॥

दोहा - -

ता सभीप सामावती धन जन करि भरपूर ।
देवस्थल महिमा धर्मा भना गरपत सुन ।।६६॥
पडित देवर्थ्य मुक्तम गृत गरानग्द नम् नाम ।
सा उपदेश भाषा रची भविजन को विनारम ।।६६॥
सदत सनराम उपरे नेतीम उपेष्ठ मुद्री पदा ।।
दिख्य विचम प्रमा लही महत्त्ववार मुभद्र ।।६४॥
फर्म जिल्ल मुग्गवाम मं लस्मीदाम निज बोध ।
मृत्यो जुन्यो सदा बीड बुधजन तीर्थ्या सीपि ।।६४॥
हर्ति विमान वरित्र सुगु।

बिलराम के पुत्र सालिगराम बोहरा ने बयाना में अन्द्रप्रभ चैत्यानय में यह ग्रथ ऋषि बसत से हीरापुरी (हिडोन) में निखबाकर चढाया । सालिगराम के नेता के उद्यापनार्थ चढाया गया ।

४११६. प्रतिसं० १० । पत्र सं० १४८ । आ० ४३ × ४३ इ.स. । ले० काल स० १८०० माह बुटो ४ । पूर्णा । वेष्टन सं० ६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष---प्रति गुटकाकार है। रचना पड़ित दशरथ के पुत्र सदानन्द की प्रेरस्सा से की गई थी।

**४११७. प्रति स० ११।** पत्र स० १४४। ग्रा० १२×४ इश्व । ले०काल स० १८६०। पूर्ण । बेल्टन सं० ७६-८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

४**११६. प्रतिसं० १२।** पत्रस० १४२। म्रा० ६×५ इच्छा ले० काल स० १०२६ पोप सुदी ११। पूर्ण । वेष्टुन स० ११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर भादवा (राज०) ।

विशेष-कौठीग्राम में सुखानन्द ने प्रतिलिपि करवाई थी।

४११६. सगरचरित्र— दीक्षित देवदस्त । पत्रस०१६ । झा०१२  $\times$  ६ इञ्च । भाषा— सम्हत । विषय —चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । देहनस०१०६१ । **प्राप्ति स्थान**—म०१६० जैन मिटिन् प्रतिर ।

४१२०. प्रति सं० २ । पत्र स० ६ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०६२ । प्राप्ति स्थान भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजसेर ।

४**१२१. सीताचरित्र—रामचन्द्र (कवि बालक**) । पत्र स० १०४ । प्रा० १२×५३ इ.च.। भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय — चित्रत्र । र०काल स० १७१३ मङ्गासिर सुदी ४ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—अट्टाक्कीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

४**१२२. प्रति स०२** । पत्रस० १२४ । प्रा० १२**४ ५**ई डख । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्टन स०७१ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन सन्दिर प्रसिनन्दन स्वामी बदी ।

विशेष--मागानर में प्रतिलिपि की गई थी।

**४१२३. प्रति स**ं० **३।** पत्र सं० ११४ । ग्रा० १२ $\times$ ८ इच । ले**०** काल स० १६२३ ज्येष्ठ मुदी ७। पूर्ण । वे० स० २३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहबुर भेलाबाटी (सीकर)।

४१२४. प्रति सं०४ । पत्र म०१३६ । ब्रा०१२ ४६ इ.च.। ले० काल 🗡 । पूर्णा । वेष्टन स०१५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन महिर बैर ।

४**१२५ प्रतिसं०५** । पत्रस्० १४७ । खा०१० ${}^2_1$  $\times$ ५ $^3_2$  इच ।के०काल स०१८४१ । धपूर्ण । बेष्टन स०१५६ । प्रा**प्ति स्थान** – दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- ४६ वा पत्र नही है।

४**१२६ प्रतिसं०६** । पत्र स०२३ ८ । म्रा०४ × ४ इ.च । ले० काल स०१७६० मगसिर बुदी १४ । पूर्वो । वेप्टन स०१२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

**४२७. प्रति स**ं०७ । पत्र स॰ २३८ । म्रा०६imes६ ६ च । ले० काल स० १७६० मगसिर बुदी १imes। पूर्ण ।वेष्टनस० ११४ । प्रा<mark>प्ति स्थान—</mark>दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष-जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१२८. प्रतिसं० ८ । पत्र स०११४ । ने०काल imes । पूर्एं । वेष्टन स०७१ ४० । प्राप्ति स्थान---दि० जैन तेरहपथी मन्दिर दोसा ।

विशेष-सदासुख तेरापथी ने प्रतिलिपि कराई थी।

४१२६. प्रति सं० ६ । पत्र स० १११ । प्रा० १२×६ इचा । ले०कान स० १७४६ माघ सुदी १ । पूर्ण । बेहनसं० ६-२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपंथी दौसा । विशेष-दीपचन्द छीतरमल सोनी ने बात्म पठनार्थ प्रतिलिपि कराई।

४१३०. प्रतिसं० १०। पत्र स० २६६। ग्रा० द 🗴 ५ १था। ले० काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन स० १७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर टीवानजी कामा।

विशेष--- प्रति जीर्स है । गुटका साइज में है ।

**४१३१. प्रति स० ११ ।** पत्रस० ११-१२८ । ब्रा० ११ $^2$   $\times$  ४ $^2$  इन्छ । ले० काल  $\sim$  । **प्रपूर्**स । वेष्टनस० २७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष दोहा--

कियो ग्रथ रविषेगानै रघुपुरागा जियजान । बहै ग्रग्थ इनमें कह्यो रामचन्द उर ग्रान ॥३०॥ कहै चन्द कर जोर सीम नय ग्रत जै।

सकल परभाव सदा जिस्तिन्दि जै। यह सीताकी कथा सुनै जो कान दे।

गहै आप निज भाव सकल परदान दे ॥३१॥

**४१३२ प्रति सं०१२**। पत्र स० २०। आ०११८,४१ै उन्या ति० काल ग० १००७। वैशास सुदी २ ।पुरा । ४० म०**४ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर यथाना ।

विशेष-- बयाना म प्रतितिषि, की गई थी।

४१३३. प्रति सं०१३। पत्रस०१६०। लेक्कातः , ! श्रपूर्णः वेष्टुग स०१०। प्राप्ति स्थान—दि० जेन मदिर वयाना ।

४१३४, प्रतिसं० १४ । पत्र स०१०६ । छा०१२५ - १५ इ.च. । ले० कान 🔑 । पूर्ण। वे० स०१३ । प्राप्ति स्थान—दि० तैन पचायती मन्दिर वयाना।

विशेष---श्लाक स० २५०० ।

४९३५. प्रति स० १५ । पत्रस० १६४ । लेब्बाल स० १७८४ । पूर्म । वष्टन स० ५७२ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन मन्दिर पचायन भरतपुर ।

विशेष-गृटका साइज है तथा भाकरी में प्रतिनिधि हुई थी।

४१३६. प्रति स० १६ । पत्रम० १२६ । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वष्टन स० ५७३ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पत्रावनी मंदिर भरतपुर ।

४१३७. प्रति सं०१७ । पत्र स०१२६ । ले० काल स०१८१४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०१७४ । प्रास्ति स्थान—दि० जेन पचायनी मदिर भण्नपुर ।

४१३६. प्रति सं० १६ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १८४६ । पूर्णा । बेस्टन स० ५७५ । प्रास्ति स्थान - दि० कैन प्रवासती मन्दिर भग्नपुर ।

४**१३६ प्रतिस**ं**०१६।** पत्रम०१६३ । बा०६१ ४७ इत् । लेक्काल स०१८७७ आसोज बुडी १०। पूर्णे । बेटनस०४६ । **प्राप्तिस्थान**— प्रवशल दि० जैन पत्रायः∫ मदिर स्रवदर । ४१४०. प्रतिसं० २० । पत्र स० १०१-१३२ । छा० ६ ४ ६ ¦ ४ व । ले० काल स० १६२६ । प्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहत्र टोक ।

विशेष -- राजमहल मे चन्द्रप्रम चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

४१४१. सुकुमालचरिउ—पुनि पूर्णमद्र (गुराभद्र के शिष्य) । पत्रस० ३७ । प्रा० ६४४ इ.स. । भाषा— प्रपन्न श । विषय - चरित्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६२२ भादवा बुरी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रस्त ७६ । प्राप्टिः, स्थान—भट्टारकीय दि० जैनमन्दिर ग्रजमेर ।

४१४२. प्रतिसं०२।पत्रस०४७,।मा०६४५६च । ले०काल४।पूर्णं।वेष्टनसं०६५६। प्रास्तिस्थान-भ०दि०जैनसन्दिरम्बनेगः।

४१४३. प्रतिसंव ३ । पत्र संव ३८ । आव ४३  $\times$ ४ इन्त । लेक्सल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन सव १२८ । प्राप्ति स्थान— दिव जैन मन्दिर दवलाना (ब्रृंदी) ।

विशेष -- इसमे ६ सधिया है । लेखक प्रशस्ति वाला अस्तिम पत्र नही है ।

४१४४. मुकुमालचरिउ —श्रीधर । पत्र म० १-२१ । ग्रा० ११४४ इंच । माषा-ग्रपश्च श । विषय—वास्त्र ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेण्टन स० १८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मंदिर नेरद्यार्थ दीमा । जार्ग जीगां ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। पत्र पानी में भीगने से गल गये हैं।

४१४५. मुकुमालवरित्र — भ० सकलकोत्ति । पत्र म० ४४। खा॰ १२ $\times$ ५ इ'च । भाषा— मग्रः । विषय — चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१५३७ पौप मुदी १०। पूर्ण । वेस्टन मं ०६८६ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मादि प्रजमेर ।

विशेष---प्रशस्त निम्न प्रकार है ---

मनत् १८३७ वर्षे पीप मुदी १० मूलमधे बलात्कारमसे सरम्बनीयक्षे कुन्दकुन्दाचार्यान्यं भट्टारक भी पर्यानदिदवा सम्पद्ध मे ० कुमनाइयेवा तम्पट्टे म० जिन्तब्ददेवा तत् जिप्य मुति थी जैनटि तदास्माये मढेपवालान्य श्रीष्ठ सोभे ४० बीलमा मार्या थेटी तस्मुता स० बाहू पार्थ्यं बाहू मार्या इल्हू तस्मुत्र सा० सोल्हा बालियाज, भोशा, बोबा, चापा, एनेषा मान्य बालिराजन इद सुकुमाल स्वामी प्रथ सिलाप्यत । प० ग्रामुयोगु पठनार्थं निमिल मणित ।

४१४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल स०१७३१ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति रूथान — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४१४८. प्रति सं० ४ । पत्र स० ४७ । ब्रा०१२imes५५ ५ इन्छ । ले० काल imes । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर झादिनाय व दी ।

४१४६. प्रतिसं० ५ । पत्रस॰ २० । घा० १० × ४ $^{3}$  इन्छ । ले० काल  $\times$  । घपूर्ण । वेष्टुनसं० २१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बंदी)

४**१५०. प्रति सं० ६** । पत्र स**०** २३-४३ । फ्रा० १० $\times$ ४ $_{g}^{2}$  दृश्व । ते० काल स० १७५७ मावग् बदी म । श्रपुर्स्स । वेष्ट्रन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलाना (बुदी)

विशेष---लाखेरी ग्राम मध्ये.... " ....)

**४१५१. प्रतिसं०७ ।** पत्र सं० १०० । आ ० ६imes ४ इच्छ । ले० काल स० १ ५७६ वैणाख सुदी ४ । पूर्यो । वेष्टुन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

विशेष-हरिनारायण् ने प्रतिलिपि की थी। धर्ममूर्ति जैन धर्म प्रतिपालक साहजी सोलाल जी प्रजमेरा वासी टोडा का ने दूनी के श्रादिनाथ के मन्दिर में चढाया था।

४१५२. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४ । ग्रा० ८्रै४० है इच । ले० काल त० १८७६ भादबा बुदी १२ । पूर्ण । बेग्टन स० १ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मदिर दूर्नी (टोक)

विशेष-हरीनारायन से संहतलाल अजमेरा ने प्रांतलिय करवाई थी

पडित श्री णिवजीराम तत् जिप्य स्दामुखाय इद पुस्तक लिश्यापित । ध्रजमेग्य गोत्र साहजी श्री श्री मनसारामजी तत्पुत्र साह शिवजालेन ।

४१**५३. प्रतिसं० ६** । पत्र स०४८ । घा०११ . ४ उच्च । ले०काल 🔀 । पूर्गा । बेहन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

विशेष-- विमलेन्द्रकीतिदेव ने लिखाया था ।

**४१५४. प्रति स० १०।** पत्रस० १६। आ० ११ (५ इ.च. । ले० काल स० १५०६ । पूर्यो । **बेष्ट**न सं० १६--१२ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगप्पुर ।

विशेष-दो प्रतियो का मिश्रग है।

मंबन् १६०६ वर्षे माघ शुक्तपक्षे पचम्या तिथी गुरुवासरे श्री सुलसंधे सरस्वतीगच्छे बलान्कारगणे कुंदकुदा · · · क्षयार्थ लिलाप्य दत्तं । ब्रह्मा दत्तं प्राचार्य श्री हेमकीति तत् शिष्य ब्रह्मा सघराज प्रेसी शुभ भवत । लि पसंदान लिलापित सहात्मा लिलसीचन्द तासुजी ग्रुत खरतर गच्छ ।

४१५५. प्रति सं० ११ । पत्रस० ६० । ले० काल ⊠ । अपूर्ण । वेष्ट्रनस० २२४८ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन संभवनाय मन्दिर उदयपुर । विरोष—प्रति प्राचीन किन्तु जीसाँ है ।

**४१४६. प्रति स० १२** । पत्रस० १४ । ने० कान म० १४६७ । पूर्ण । वेष्टनस० २० ४२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन सम्भवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--ग्रन्थाग्रन्थ स ० ११०० है।

प्रशस्ति—सबत् १४=७ वर्षे भादवा सुदी १० भृगी अद्योह देजुलियाम वास्तव्यं भेदपाट ज्ञातीय शबदोसन जिम्बिता।

बाद में लिखा हमा हैं—

श्री मृलसर्थ भ० श्री शुभचन्द्र तत् शिध्य मृनि वीरचन्द्र पठनार्थ। स०१६४१ वर्षे माहसूदी १ शनी महारक श्री गुसकीति उपदेशात् ""। ४१**५७. प्रति सं० १३ ।** पत्रस० ५६ । ब्रा० १०<sup>३</sup> ४४ <mark>१ इख । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेकनस० १६२ । प्राप्ति स्थान</mark>—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**४१५८. प्रति स०१४** । पत्रसं०४४ । प्रा०१२imes४५ । इञ्च । ले० काल imes । पूर्ग । बेष्टुत स०२२५ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन श्रम्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- नवम मर्ग तक पूर्ण है। ग्रान्तिम पूष्पिका निम्न प्रकार है---

भट्टारक श्री सकलकोति विरक्षिते श्राचार्यश्री विमलकीति तत् शिष्य ब्रह्म गोपाल पटनार्थ। জুম মৰतु।

**४१५६. प्रति सं० १५ ।** पत्र म० ३६ । स्ना० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ $\frac{1}{5}$  इखा । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेहुन म० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—प्यि० जैन प्रवनाल मन्दिर उदयपुर ।

४१६०. सुकुमाल चरित्र—नायूराम दोसी । पत्रस० ६१ । ब्रा०१२३ × ४ डब्च । भाषा-हिन्सी (गवा) । विषय-चरित्र । र०काल मं० १६१६ । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १२१ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन लडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

४**१६१. प्रति स**०२ । [पत्र स०७१ । झा०१०१ × ५<sup>5</sup> इच्च । ले० काल × । पूर्ग । वेप्टन स०१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहपूर केलाबाटी (सीकर)

४**१६२. प्रतिसं० ३** । पत्र स०७२ । स्ना०१३ 🗴 ८ इश्व । ले०काल स० १८५६ । पूर्ण । वेप्टन स०१०२ । **प्रास्तिःस्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

४१६३. सुकुमाल चरित्र माबा—गोकल गोलापूर्व । पत्र स०४२ । प्रा० ११ × ५१ इन्छ । भाषा-दिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल म०१८७१ कार्तिक बुदी १ । लेक्काल स०१६३८ । पूर्ण । वेटन म०८७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बुंदी ।

विशेष--- प्रनितम पुष्पिका----

इहि प्रकार इहि शास्त्र की भाषा का संशेष रूप मद बद्धि के ग्रनसार गोलायब गोकल ने की।

४**९६४. प्रतिसं० २।** पत्र सम्या६३ । ग्रा० ११ 🗶 ७ हुँ इखा लेक्काल 📈 । पूर्णा। वेग्टन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन मन्दिर ग्रिभनन्दन स्वामी बृदी ।

**४१६५. प्रतिसं० ३ ।** पत्र सं० ४५ । घा० १३ 🗴 ७ इच्छा । ले० काल सं० १६५७ । पूर्गा । वेप्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपत्री मन्दिर नैसावा ।

४१६६. सुकुमाल चरित्र वचिनका— $\times$  । पत्र सस्या ७२। म्रा० १२ $\vee$ ः उच । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सस्या १२४। प्राप्ति स्थान— दि० जॅन मदिर श्री महावीर चुँदी ।

४१६७. सुकुमान चरित्र वचनिका— × । पत्र स०७७ । ग्रा० १० ४७ दश्व । भाषा-हिन्दी (गर्व) । विषय-चरित्र । र०काल × । ते० काल स १६४५ प्रामोज बुदी ७ पूर्ण । वेष्ट्रतस० १२७२ । प्राप्ति स्थान—भद्रारकीय टि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-चन्द्रापुरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४१६६. सुकुमाल चरित्र माया—४। पत्रस० ६२। भाषा हिन्दी। विषय-जीवन वरित्र।
र वस्त्र ४: विकाल स०११४२। पूर्ण। वेष्टतस० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती
मन्दिर भनवप्र।

४१६६. सुकुमाल चरित्रा भाषा- × । पथस०६० । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०काल × । वे०काल × । पूर्ण । बेपून स०११७१ । प्रास्ति स्थान---दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डालालो का. डीग ।

४१७०. सुकुमाल चरित्र- $\times$  । ण्यस० ५३। घा॰,१२ $\times$ ५ है इच । माषा-सस्स्त । विषय-वरित्र । २०कार  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनंस० ३२७ । प्राप्तिस्थान—महारकीय दि० जैन मदिर धर्जार

४१७१. सुकुमाल चरित्र $-\times$  ।पत्रस० ११। प्रा० १० $\frac{1}{3}\times V_0^2$  इन्छ । भाषा-सम्ब्रत ।विषय-वित्त । २०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । बेठून स० १४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भणवाल मन्दिर उद्यहः ।

विशेष - ११ से भागे के पत्र नहीं है।

४**१७२. सुकुमाल चरित्र—** × । पत्रसं० ६२ । ब्रा० ११% ४ । भाषा-सरवृत । बिषय -वरित्र । रककास × । **लेक्काल** × । बेटुत सक २०१ । **प्रास्ति स्थान**-दिक जैन मन्दिर लगकर जयपुर ।

४१७३. सुकुमाल चरित्र  $\sim$   $\chi$  । पत्र संबद्धा ११ $\chi$ १६ इचा आपा - सस्तृत । विषय —विरा । रंकताल  $\chi$  । लेक्काल  $\chi$  अपूर्ण । बेपून मंग्र १३७ । **प्रास्ति स्थान** —विर्क्ष जैन पचामती मन्दिर करोली ।

४१७४. पुकुमाल चरित्र ं स० यशःकीति । पत्र स० ४६ । आ० ११ ४७ इ. था । भाषा – हिन्दी । विषय -विन्ता । र०कात 🗴 । ले० काल स० १८८५ मगसिर सुदी ५ रिवयार । पूर्ण । वेष्टन स० ४२६ । प्राप्ति स्थाम दि० जैन समयनाथ मन्दिर उदयपुर ।

मुनिस्वर गामकार बस्सर, में मार्गियर कुन्त मास । पद्मी दिवशार मुगोंने पूर्ण करने करदोताल । विद्यमान गटी मुननेज कवित्र करणा नहि सान । स्वरूप जीवनेज हिन कारणो करपो प्रवय बसात । गद्धनीयक सर्वे नवस्त्री मानतः। भण्डार । पद्मकीति ए कथा प्रवय वर्णों म कर्स्सो हिनकार ।।

सावला ग्राम म प्रतिलिपि हुई थी।

काव्य एव चरित ] [ ४१५

४१७४. सुस्तिमान—जगन्नाथ । पत्र स०४४। प्रा० १०१८४ १ इन्छ । भाषा-सम्ब्रत । विषय—काव्या (२०वाल ४ । ते० काल स० १७६७ । पूर्ण । वेष्टनस०६६२ । **प्राप्ति स्थान** - अहारकील किन्नेन सीटर स्रक्षेत्र ।

४१७६. सुदंसस्य चरिउ-नयनिदा । पश्च० १-६६-१०६ । प्रा० १०¦४४¦ इंच । भाषा-धपभ्रज ग । विपय-≒िश । १०काल स ११०० । ने० काल × । म्यूर्स । वेष्टन स० २६० । प्रास्ति स्थान विज्ञ जैन प्रदिर विधारणी कामा

४१७७. सुदर्शन चरित्र— स० सकलकोति । पत्रस० २-४६ । आ० ११  $\times$  ४ इञ्च । आषा — सम्बन् । विषय — चरित्र । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १६७२ चैत सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० २६६, ४१ । आपित स्थान— सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदवपुर ।

#### प्रशस्ति--

सवन् १९७२ वर्षे चैत मुद्दी ३ भीमे थी मुलस्थे सरस्वतीगच्छे बलात्कारसमे कुल्यकुट्यावार्याच्ये भट्टारक गुरमकीरिवेदा तरल्ट्रें भव वादिसुरमावेदा तत्यहुँ भव श्री रत्तकीतिदेदा प्राचार्य श्री जयकीति तत् जित्य इता श्री सवरःजार तिरितृष वास्त्रव्य गट्ट्यावच्छा सार्या हुआसम्बद्धि सुत्र पव काहानजी भार्या कमुखदे नार्या मुद्दिन्दिन्य स्वजातावार्मी कमंद्रायार्थ दल ।

४१७६. प्रति सं० २ । पत्रस $^{33}$ -४४ । घा०११ $\times$ ५ दञ्च । ले० काल  $\times$  । घपूरां । बहुत स $^{32}$ -१० । प्रार्टि-स्थान । दि० जैन प्रजवाल मन्दिर उदयपुर ।

४१७६. प्रतिसं० ३ । यतकः ६३ । प्रा० ११×५ इत्था । ले० काल × । पूर्णः । बृष्टन स० २२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाय चौगान बुंदी ।

४१०० सुदर्शन चरित्र—सुसुश विद्यानिन्दि । पत्र म० ७३ । प्रा० ६ $\times$  ५ दच । भाषा—सम्बन्त । विषय —पश्चि । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १८३५ चैत्र शुक्ला १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान — भट्टान्बीय दि० जैन मदिर खजमेर ।

४**१६१. प्रतिसं० २** । पत्रस० ७७ । ग्रा० १० × ४ है इ.च. । ले० काल स० १६७३ । पूर्ण । वेस्टन स० १२५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष वृदावती नगर मे श्री नेमिनाथ चैत्यालय मे श्री हूगरती के शिष्य मुखलाल ने प्रतिलिपि की थी।

४१८२. प्रति सं०३ । पय स०१-२४ । ं प्रा०११२ रे४ ४ इन्द्र । लेक्काल 🗴 । बेष्टन स० ७४० । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान — दि० जैन् मंदिर लक्कर जयपुर ।

४१६६३. सुदशंनचरित्र—दीक्षित देवदस्त (जैनेन्द्रपुरास्प) । पत्र स०१०४ । भाषा—सन्gत । विषय—चित्र । र०काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्ट स०२३४ । प्रास्ति स्थान —दि०जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

्रित श्रीमन्मुमुतु दिव्य मृति श्री केजवनचनुक्रमेसा श्री म्हारक कविभूषण गृहाभरण श्री बता हर्ष मागरात्मन श्री भ० जिनन्द्रभूषमः उपदेजाम् श्रीदीक्षित देवदन कृते श्रीमिजनेन्द्र पुरासान्यगेतः श्रीपचनम् स्कारकलन्यावर्णः श्री मुदर्जन मृति मोश्र प्राप्ति वर्णनो ताम एकादकोधिकारः।

४९८४, प्रति स० २ । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १८४८ वैसाख सुदी १० । पूर्ण । बेप्टन स० २३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्वायनी मन्दिर भरतपुर । ४१ इ.**४. सुदर्शन चरित्र — क्र० नेमिटल** । पत्र स०७६ । ग्रा० १०<mark>३ x ४ इत्था</mark> । नापा— सस्कृत । विषय—चित्र । र० काल x । लेक्काल x । पूर्ण । वेष्टन स०६६२ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मिटल ग्रवार ।

**४१८६. प्रति सं० २ ।** पत्रस० ६३ । मा० ११ रे. ४ ४ इन्छ । ले**०काल स०** १६०४ भाववा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २३४ । **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन पाक्ष्वेनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष —इद पुस्तक ज्ञान।वरणी कर्मक्षयार्थ पुस्तक श्री जिनमन्दिर चहोडित रामचन्द्र सुत मवानी-राम प्रजमेरा वास्तव्य वृदी का गोठडा झनार मुख्यर्वक इन्द्रगढ वास्तव्य ।

४**१ म७. प्रतिस० ३।** पत्रस० घम । आ० १० ४ ४ है । ले**०**काल सं० १६१६ भादवा सुदी १२ । वेष्ट्रत म० २०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म० लक्कर, अथपुर ।

विशेष---प्रशस्ति बच्छी है।

४१८८. सुदर्शनचरित्र साधा—पशः कोर्ति । पत्रस्० २८ । आ० १० $^{\circ}$  ४८ इच । भाषा— हिन्दी (पत्र) । र०कान स० १६६३ । ले०कान  $\times$  । पूर्ण । वैष्टुन स० २८५ । प्राप्ति स्थान—अट्टाग्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

## विशेष- प्रारंभ-

प्रथम सुमरि जिनराय महीतल सुरासुर नाग खग । भव भव पानिक जाय, सिद्ध सुमति साहस वर्ढे ॥१॥

दोहा।

इन्द्र चन्द्र की चक्कवे हिर हलहर फनिनाह । तेउ पार न लिह सकै जिनगुग्य क्रयम क्रयाह ।।२।।

## चौपई---

मुम्हों सारद जिनवर वानि, करी प्रणाम जोरिकार पान ।
मूरख सुमर्र पडित होय, पाय पक किंद्र धाने भीय ।।३।।
जो कवि कवित कहें पुरान, ने मानेहि मो देव की प्रानि ।
प्रथम मुमरि सारद मन घरें, तो कतु कवित बुद्धि को घरें ।।८।।
हसजढी कर बीना जामु, किंद्र बुद्धि लघु जाग्यी तासु ।
मुक्तामान गई माग सवारि, ऊपयो मूरज किंग्न पसारि ।।४।।
ध्रवतिह कु डल रननि लचे, नौनिति सकिन ध्रापनी दर्च ।
ध्रदेखरा कठ कठ मिनी, विना मकिन ध्रापनी घरी ॥६॥
उद्यक्षरा कठ कठ मिनी, विना मकिन ध्रापनी घरी।।६॥
उत्यक्षरा प्रदूषम हिथे, विषना कहै तिनोई किये।

सोरठा---

विद्या और भड़ार जी मांगे सौ पावही । कित श्रायौ समार जायहि वर तेरो नही ॥=॥ -

बोहा-- मन वच कम गुरू चरण निम परहित उदित के सार।
करहु सुमित जैनदको होइ कविस विस्तार ॥६॥

## चौपई ---

मुक्त गोतम गएपवरदे ब्रादि, द्वादणाग समृत धास्त्राद ।
मुमति मुत्त पात्र तथ धीर, ते बदी जो ज्ञान गम्भीर ॥१०॥
गएपवर परपावन गुएकद, महारक जसकीति मुनिद ।
तापर प्रगट रहाँग जग जानु लीला कियो सौन को बास ॥११॥
नाम सुवेमकीति मुनिराइ, जाके नामु दुरित हरि जाय ।
ताद्वि पत्रव भून सागर पाए, श्रियुवनकीति कीर्ति विस्त्रार ॥१२॥
ताद्वि पत्रव भून सागर पाए, श्रियुवनकीति कीर्ति विस्त्रार ॥१२॥
नैनानन्द्र आदि जो कही, तैसी विधि बाची चीपई ॥१३॥

#### म्र'तिम पाठ---

सोरठा- छद भेद पद भेद हों तो करू जानै नहीं।

ताकी कियो न लेद. कथा गई निज भक्ति वस ।।१६८।।

बोहा ग्रगम ग्रागरो पवरूपुर उठ कोह प्रसाद।

नरे तरिङ्ग नदी बहे नीर ग्रमी सम स्वाद ॥१६६॥

चौपर्द

भाषा भाउ भनी जाँह गैन, जानै बहुन गुणी सौ प्रीत ।
नागर नगर नोग सब मुखी, परपीड़ा कारत सब दुखी ।१८०।।
यन कर पूरत तुग प्रवास, मबहि िन मेक वर्ष के दास ।
छ्वाशीस हमाउ बस, प्रकट रनटन वैर विष्वस ।११।
तस्मत बस्मत पूरो परचड, मुर नर तृष मानहि सब दंड ।
नाम काम गुन प्राप्तु वियोग, रिव पींच साबु विधाता योग ।१२।।
जहाँगर उपमा रोजे काहि, श्री सुस्तान भू दीसे साहि ।
कोस देम मन्त्री मित गुह, छुत चमर सिधामन रूढ ।१३।।
करो प्रतीग प्रजा सब ताहि, बरनो कहा इति मित प्राहि ।
सबत सोजहर्स उपर त, अंशिठ जानह बरस महत् ।१२०४।।

सोरठा- माघ उजारी पाल, गुरवासर दिन पश्चमी ।

बच चौपई भाषा, कही सत्य सामरती ॥२०५॥

बोहा-- कथा मुदर्शन सेठ की पढ़ें मुनै जो कोय। पहिले पावें देव पद पाछ सिवपुर होय।।२०६।।

इति सुदर्शन चरित्र भाषा सप्रांम्

४१ स्६. सुमाहु चरित्र — पुष्पसागर। पत्र स०४। धा० १०र्रे ४४ रे इच्च। मादा — हिन्दी। विषय — चरित्र। रकास स०१६७४। से०काल ४। पूर्ण। बेहन सं०३३७। प्रास्ति स्वान — च० दि० जैन मन्दिर प्रवनेर।

## विशेष -- ग्रन्तिम---

सबत सोल चडोतर बरमड जेमलमेर नयर मुत्र दिबमह । श्रीवित हव मूरि पुरु सीमद पुत्रमागर उबस्कार जगागडा। श्री जित नाशिक सूरि झारमड पुत्रह चित्र मगीउ लब लमई । पास पसार् हरिपि युग्ता सिमि बाउ नितृ मगाना ।। ॥ इति सम्राह नित्र सुग्राम् ॥

४**१६०. सुमौभ चरित्र—ररनचन्द्र ।** पत्रसु० ५६ । आ०११ ∖ ४ुँ इचा। भाषा— सस्कृत । विषय—चरित्र । र०काल स०१६६० भादवा गुडी ४ । तं०काल ⋌ । पूर्णे । वेष्टनस०२४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी वदी ।

४**१६१. प्रति सं० २ ।** पत्र स० २६ । आ० १२) ४६ इला । तं० काल स० १८३८ ज्यष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टुन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

४१६२, सुलोचना चरित्र—वादिराज । पत्रसः ६४। आ०११ ८४ इन । भाषा सम्बन्ध । विषय-चित्र । र०काल 🗴 । ले०काल स०१७६४ । पूर्ण । वेस्टन स०३७ । प्राप्तिस्थान ---दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

४**१६३. मुपेरा चरित्र** ४ । यत्र म० ४४ । आ० १० ,६१ इता । भाषा-मन्द्रत । विषय चरित्र । र०काल ४ । ले•काल १६०६ आषाट मुझी १४ । पूर्ण । वेष्टन म० १३५ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर नागदी बुदी ।

विशेष---कोटा में लिखा गया था

४१६४. सभवजिन चरिज--तेजपाल । पत्रम० ६२म ४१ । भाषा प्राप्त म । विषय -चरित्र । रुकाल 🗙 । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । बहुत म० ११ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन बटा प्रचालना मन्दिर होता ।

४१६५, हनुमच्चरित्र - ब्रुट ग्रजित । पत्रतः १८। या० १० ८४) इञ्च । भाषा--सस्कृत । विषय-चित्र । रक्तान् × । नेक्तान् म०१६०४ पीप गृदी ११ । पूर्ण विद्यान् २ । प्राप्ति स्थान-- दिल्जैन मन्दिर दीवानत्री कामा ।

विशेष---टोडागढ मे रामचन्द्र के शासन काल मे प्रतिनिधि हुई थी।

४१६६ प्रतिसं०२ । पत्र स०७४ । ग्रा०१३ 大火ूँ इच्छा ले० काल 🗴 । पूर्मा । बेस्टन स०४० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीधानजी कामा ।

४१६६. प्रतिस**्४ ।** ण्यस० ६३ । आ० १२ x श्र. दःन । उ० काल १६१७ पीप लुरी ६ । पूर्मा । **बेष्टनसं० १**२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन, मदिर बोरमली कोता ।

विशेष — फागुई वास्तव्यं कवर श्री चरत्रभौति राज्य प्रवर्तमान : तिनाप वैत्यालयं लण्डेलवालान्वयं ग्रजमेरा गोवे सधी मरज के ववलो ने प्रतिलिति की थी। ४१९६. प्रतिस० ५। पत्रस० ८५। ग्रा० १०१४% है। ले० कालस० १६१० मानाढ बुदी १३। पूर्यो । बेष्टनस० १४६। प्राप्तिस्थान--- दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

विशेष-- ग्रलवर गढ में लिपि की गई थी।

४२००. प्रतिसं० ६ । पत्र स०७४ । आ०१३ $\times$  ६ $^1$  इन्थ । ले० काल स० १८१७ बैकाल सुदी १०। पूर्ण । वष्ट्र स०२२ २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सीमानी मन्दिर करौली ।

विशोध — कल्यागपुरी (करीली) में चन्दप्रभ के मन्दिर में लालचन्द केपुत्र लुझालचन्द ने प्रतिलिपि की थीं!

४**२०१. प्रति स० ७ ।** पत्र स० ६४ । घ्रा० १२३/२४ इश्वः । ले०काल स० १६३७ । पूर्णे । वष्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्बेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०२. प्रतिसं० ह । पत्र म० ४-३६ । ले॰काल  $\times$  घपूर्ण । वेष्टन स॰ ४४/३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति प्राचीन है।

४२०३. ह्नुमर्स्चरित्र --ब्र० जिनदास । पत्रस० ४१ । ब्रा०१२१ ४४ १६व । भाषा--मन्द्रत । विषय-चरित्र । २०काल ४ । लं०काल स०१४६२ । पूर्ण । वेष्टनस०२६७ । प्रास्ति स्थान--वि० जैन ग्रववाल मन्दिर उदयपुर ।

४२०४, हनुमान चरित्रा—म्ब. ज्ञानसागर । पत्रसः २४ । म्रा० १०४४ इ.च.। भाषा-हिन्ती । विषय - चरित्र । रक्ताल मः ० १६३० ग्रासोत नृती ४ । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनसः० १८४ ४० । प्राप्ति स्थान —सभवताव दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति जीलं हे स्वना का स्रतिम भाग निम्न प्रकार है---

श्री ज्ञाननावर ब्रह्म उचिर हत्यूमन नुगाह श्रपार । कर शोंडी करि बीनती स्वामी देव्यो गुग सार ॥ सम्बन् गोलशीनि वर्षे श्रव्यनीमास मफार । शुक्त पद्म पंचमी दिन नगर पालुवा सार । श्रीलनाथ श्रुवनु रुच्युं रास भन्नु मनोहार । श्री संधानिम्ह गुगानिल् स्वामी सेल करणु अयकार । हुँवड स्थानि गुनिल् साह ध्वानुल भागा । श्रमारविड घण उपनव्ह भी शाननामार बह्म मुलागा ।

इसमें आगे के अक्षर मिट गये है।

४२०**४. हनुमञ्चरिशः यशःकीति** । पत्रतः १११ । भवा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । २०काल सं० १८१७ । ले० काल × । पूर्णः । वेष्टनस० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हंगरपुर ।

४२०६. **हनुमान चरिञा**— ४ पत्रस० ११०। भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । धपूर्ण । बेष्टनस० १५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहसंबी मानपुरा (टोक)। ४२०७. हरिश्चन्द्र चौपर्द--कनक सुन्दर । पत्र स० ११ । भाषा- हिन्दी । विषय-चित्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । प्राप्ति स्थान—हि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--हरिश्चन्द्र राजा ऋषि रागी तारा लोचनी चरित्रे तृतीय लड पूर्ण ।

४२०६. होली वरित—पं० जिनदास । स० २१। प्रा० ११ , ४ १ हे व । भाषा-सस्हत । विषय-चरित । र०काल सं० १६०६ । ले० काल सं० १८१४ ज्येत मुदी ३ । पूर्स। वेस्टन स० ११४ । प्राप्ति स्थान—म० वि० जैन मन्दिर ग्रज्येत ।

विशेष--ग्रजबगढ मध्ये लिखित ग्रा० राजकीति पठनार्थ चि० सवाईराम ।

४२०६. प्रतिसं०२ । पत्रस्त ४ । द्वा०६×६ इत्था। ले०काल स०१६४० जेत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेस्टन स०६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रचाननी देनी (टोक) ।

विशेष---ग्रजमेर में लिखा गया थी।

४२**२०. होलिका चरित्रा**— × । पत्र सं∘ै। प्रा० र × ६<sup>५</sup> इच्च । भाषा-स स्कृत । विषय-चरित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० ग० १८३ । प्रार्थित स्थान—दि० अँग पार्श्वनाथ चौमान व दी ।

# विषय -- कथा साहित्च

४२**११. ग्रगलदत्तक कथा-जयशेलर सूरि**। पत्र म० १। ग्रा०१४  $\times$  ४ इचा मापा-सस्कृत । विषय कथा। र०काल  $\times$ । ले०काल स० १४६८ माघ मुद्री ११ रविवार । ग्रपूर्ण । बेष्टन स० १२६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मंदिर दीवान श्री कामा ।

४२१२. ग्रठारहनाते का चौढालिया-साह लोहट—पत्रस०२ । ग्रा० १०  $\times$  ४ इश्व । भ्रापा-हिन्दी । विषय-कथा । २० काल १८ वी मनान्दि । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १४८६ । प्राप्ति स्थान—भट्टाक्कीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४३१३ प्रठारह नाते की कथा--वेवालाल । पत्रस $\circ$  ४। या $\circ$  ११३ ×४ दःव । साया-हिन्धी (प $\circ$ ) । विषय कथा । र $\circ$  काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं $\circ$  ४४७ । प्राप्ति स्थान-वि $\circ$  जैन मन्दिर लक्ष्यर जयपुर ।

४२१५ अनन्तचतुरंशीवतकथा— बुशालचन्द । पत्र स०७ । ग्रा० ११  $\times$  ४ दश्व । मापा—हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१५-१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीनपथी दौसा ।

विशेष-भाइपर सुदी १४ को श्रनन्त चतुर्दणों के ब्रत रखने के महात्म्य की कथा।

४२१६ प्रतिसं० २ ।पत्रस० ६ । ग्रा० ११ 🗙 १ इखा । ले० काल 🗙 । पूर्णा । तेष्ट्रनस० ७७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर पाथ्येनाथ चौगान बूदी ।

४२१७. ग्रनन्तचतुरंशीवतकथा—  $\times$  । पत्र स $\circ$  ४ । ग्रा $\circ$  १  $\times$ ४ $^{\circ}$  इक्ष । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स $\circ$  १५२१ पौष बुदी ४ । पूर्णः । बेष्टनसं $\circ$  १५२६ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि॰ जैन मंदिर प्रजमेर ।

४२१८. प्रानंतव्रतकथा— म० पदानिद । पत्र त० ६ । प्रा॰ ११ $\times$ ४ इच । माया-सस्कृत । विषय-कथा । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वष्ट्रन स०३४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मिदर यादिनाथ वंदी ।

४२१**६. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०५ । ले०काल × । पूर्णं । **वेष्टनसं०**१३ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark> ---दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

४२२१. **प्रनत्ततकथाः जानसागर ।** पत्रस०४। प्रा० ११४५ देड्य । माघा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल 🔀 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मंदिर वयाना ।

विशेष--ऋषि ख्णालचन्द ने प्रतिलिशि की थी।

४२२२. ग्रमन्तवसकथा - त्रक ध्रुतसागर । पत्र स्वक्षे । श्राव्य ११ $\chi$  ४ इच । प्राप्त — संस्कृत । विषय—क्षेत्र । २०काल  $\chi$  । त्रक कान  $\chi$  । पूर्ण वेष्टन सक्वर ६६ । प्राप्ति स्थान—दिव् जैन सेटिन प्रकृष्ट व्यवपुर ।

४२२३. प्रतिरुद्धहरस् (उदाहरस्ग)—रत्नमूचस्ग सूरि । पत्र स०३२ । प्राणः ११×४५ इत्त्व । भाषा-हिंदी । विषयः -करा । र०कालः  $\times$  । त०काल म०१६६६ । पूर्णः । वेष्टनः  $\times$  । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ सदिर उदयप्रः ।

विशेष--ग्रादि ग्रन भाग निम्न प्रकार है--

प्रारम---दुहा

परम प्रतापी परमतः परमेश्वर स्वरूप । परमटाय को लही जे शकला अक्ष समय । सारदादेवी सुन्दरी सारदा तेहन नाम। थीजिनवर मूख थी उपनी सनोपम उमे उत्तमा टाम ।। क्रमा : " नव क्रोडि जी मृनिवर प्रान महत् । तेह नगा चरण कमल नम् जेहता गृण छै अन्त । देव सरस्वती गुरु नभी कहं एक कथा विशोद। भवियस जन सहै सामलो निज मन घरी प्रमीद । उपाहरराजै जन कहि में मिथ्यानी लोक। ग्रमिक्धि हरिकारि ग्रामधो नहनी बचन ए फोक ।। श्रद्ध पुरास्य जोड करी कथा एक एक सार । भवियमा जन सह साभनो द्यतिनधि हरणा विचार ॥ बात कथा सह परहरी परहरी काज निकास ।। ण्ड कथारस सामलो चिल घरो एक ठाम । १६६॥ मध्यभाग---उत्पाबोलि मध्री वास्मि, सामल सर्वात् सृखनी खासा । लखी लखी तु देशाडि लोक, ताहरी म मागति संघली फोक ।।५७।। अरे जिन त्रेथीय तस्या ज वश अनि वीजा रूप लक्ष्या परसास । भूमि गोचरी केरा रूप नगमि तेहरित एक सरूप ।।।६८।। द्वारावनी नगरी को ईस जेहनि बहजन नामि सीम । राजा समुद्रविजय विकात, नेमीएवर केरो ते तात ॥५६॥ एह श्रादि हरिवशी जेह कपटि लिख्या पाडवना देह । तेह माही को तेहिन निवगिम, लखी तुकामुभति नमी ।।६०।।

जरासिष केरो सुत युवा, श्रनि जो जजीउ ते ते नवा। रूप लब्दी देख्या ज्या नाम केहि महयी नवि पोहचि ग्रास। बमुदेव केरा मुदरपुत्र, जिसे घर राज्या घरना सत्र। सुन्दर नारायसा निरास रूप देखास्या ने ग्रभिरास।।६१॥

#### प्रश्लिय---

श्री गिरनारि पाडियो मिद्ध त्रगुपद मार । मख ग्रनता भोगवे ग्रकल ग्रनत ग्रपार ।।१।। उपाधि मन चितव्यु ए ससार ग्रमार। घडी एक करि मोकली लीबो सयमभार।।२॥ लिग छेदु नारी तस्म, स्वर्गिहिरास्रदेव। देव देवी कीडाया करि पुत्रीश्री जिनदेव ॥३॥ ग्रांगिरुघ हरसाज साभलो एक जिल्लसह ग्राज । जिनपुरामा जोई रच्यू जिथी सरिबहकाज ॥४॥ श्री ज्ञानभूषण ज्ञानी नमुजे ज्ञान तरणी भड़ार । तह तगा मुख उपदेश थी रच्यो प्रस्थित्रहरण विचार ॥४॥ समितिकीरित मुनिवर नम्जि बहजनित हिनकार । मात तत्व नित चितवि जिन शासन ध्रुमार ॥६॥ दक्षिण देण नो गछपति श्रीधर्भचन्द्र यतिराय । नेहमा। चरमा कमलन की कथा कही जदराय ॥७॥ देव सरस्वती गुरुतभी कह आस्मिरध हरणाविचार। रत्नभूसमा सुरिवर कहि श्री जिन शासन सार ॥६॥ करि जोडी कह एटल, तब गुगाडों मुक्त देव। विज कामि मागु नहीं भवे भये तुम्हारा पद रेव ।।६।। रचना इबहरस कह या सामलो सहजनसार। श्री रत्नभूपरा गरीमर कोंड बरतो तम्ह जयकार ॥१०॥ इति श्री श्रनिक्च हरण शी रन्तभूषण पूरि विर्याचत समाप्त ।

# प्रशस्ति---

४२२४. ग्रनिरुहहरुए कथा—ब्र० जयसागर । पत्रस्त ४६ । प्रा० ६ $^1$  ४ ४ उच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १७३२ । ने०काल स० १७६६ । पूर्ण । बेष्टन स० २८६/६५ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० त्रैन समबनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष-- ग्रतिम भाग निम्न प्रकार है |

श्रनिरुष स्वामी मुगतिगामी कीव तेह बखारा जी। भवियस जन जे भावे भसाने पामे सख खासा जे ।।१।। ग्रल्पश्रत हैं काइ न जारण देज्यों मुम्स ने ज्ञानजी। पुर्णं सुरि उपदेशे कीथी धनिरुव हरुए सरवानजी ।।२।। ... कविजन दोष मा मुफ्ते दीज्यो कहूँ हूँ मुक्ति मान जी । हीनाधिक जे एहमा होवे सोयज्यो सावधानजी ४।३।। मलसघ मा सरस्वती गच्छे विद्यानद मुनेदजी। तस पट्टे गोर मल्लिभूषण दी हे होय अनद जी ॥४॥ लक्ष्मीचन्द्र मूर्नि श्रुत मोहन बीर चन्द्र तस पाटेजी । ज्ञानभयमा गोर गौतम सरिखो सोहं वश ललाट जी। प्रभाचन्द तस पाटे प्रगट्धो हुँबड चागी विडिल विक्षात जी । बादिचन्द्र तस अनुक्रम सोहे वादिचन्द्रमा क्षात जी ।। तेह पाटे महीचन्द्र भट्टारक दी उनर मन मोहे जी। गोर महिचन्द्र शिष्य एम बोले जयसपार ब्रह्मचारजी । श्रनिरुध नामजे नित्य जपे तेह घर जयजयकार जी। हासोटे सिहपूरा शुभ ज्ञाते लिख्यू पत्र विशाल जी। जीवधर कीनातरों बचने रचियों जू इये डाने जी ।।२।। दहा--श्रनिरुध हररणज मैं करयू दुख हररा ऐसार। सामला मुख ऊपजे कहे जयसागर ब्रह्मचारजी।।

इति श्री भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म श्री जयसागर विरक्षिते अनिरुद्धहरणाच्यात। यनिरुद्ध मृक्ति गमन वर्णानी नाम चतुर्थोऽधिकार संपूर्णमस्तु ।

सयन् १७६६ मा वर्षे धावणमात्रोत्तम मानं गुमकारि शुक्तपत्ने द्वितीया भृगुवागरे श्री परतारापुर, नगरे हैवड जानीय लघु घाखाया माह श्री भेषत्री तस्यास्मज माह त्यालजी स्वहस्तेन लिखितमिद पुस्तक ज्ञानावर्गी क्षवार्थ ।

**४२२५. प्रतिसं० २ ।** पत्रस्त० २७ । नि० काल म० १७६० वंत बुदी १ पूर्ण । वेष्ट्रनस**०** २४०/६६ । **प्राप्ति स्थान** — समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४२२६. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३६ । ब्रा० ११ ४४ इ.च । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

४२२७. **प्रपराजित ग्रंथ (गीरी सहेश्वर वार्ता)** । पत्र स॰ २ । माषा — सस्कृत । विषय— सवाद । र० काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस॰ ४३८/३६२ । **प्राप्ति स्थान**—समयनाथ दि० जैन सन्दिर उदयपुर ।

४२२८ अभयकुमार कथा—  $\times$  । पत्र त० ६ । प्रा० १० $\times$ ७ इख । भाषा-हिन्दी पत्र । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनत० ८० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी तुरी ।

क्रान्तिम—श्रमयकुमार तजी कथा पढि है सुरिए जो जीव । सुगांदिक सुख भोगि के शिवसुख लहै सदीव । इति श्रमयकमार काव्य ।

४२२६. ग्रभयकुमार प्रबंध —पदमराज । पत्रस० २७ । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कवा । र॰काल सं० १६५० । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्ट्रनसं०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती अंदिर बसवा ।

#### विशेष---

सवत् सोलहसइ पचामि जैसलमेरू नयर उललासि । जन्तर गद्यनायक जिन हस तस्य सीस मुण्यत सह । श्री पुष्पमागर पाठक सीस पदमराज पमणह सुवनीस । वृत्तप्रधानजिनकद मुण्यिद विजयभान निरूपम म्यानन्द । भगाइ गणाइ जे चरिन महत रिद्धिसिद्ध सुखते पामन्ति ।

४२३०. प्रवंती सुकुमाल स्वाध्याय—यं० जिनहृषं । पत्र स०३ । प्रा०११४४ है इंच । प्रापा—हिन्दी । विषय—क्या । र०काल स०१७४१ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०११। प्राप्ति स्थान—प्र० वि० जेन महिर बोरससी कोटा ।

४२३१. प्रसोक रोहिस्सी कथा— $\times$ । पत्र स०३७। द्या०१० $\cap \chi_0 \times \chi_2 \times \chi_3 = \frac{1}{2} \square \text{Reg} - \chi_0 = \frac{1}{2} \square \chi_$ 

४२३२. प्रष्टावक कथा टीका-विश्वेश्वर । पत्रस० ४६ । प्रा० १०×४ $} इच 1 भाषा—मन्त्रत । विषय —कथा । २०काल <math>\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २६६ । प्राप्ति स्थान—द० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष - सबत् १७२ " माह मासे कृत्ण पक्षे तिथि २ लिखित सारंगदास ।

४२३३, प्रष्टांग सम्यवस्य कथा — त्रः जिनदास । पत्र सं० ५५ । प्रा० ६  $\times$  ५ इच । मापा- हिन्दी । वियय-कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । यूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६१/६४ । प्राप्ति हथान – १० केन भरनाथ महिन्द उदयार ।

४२३४. मण्टाह्निकास्नत कथा -- × । पत्र स०६ । मा०१०१ × ४१ इ.च । भाषा — सस्कृत । विषय — कता । रुकाल × । ले० काल स०१७८१ फानुगु बुदी १०। पूर्ण । बेहुत स०४३६ । माप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

विशेच--प० रूपनन्द नेवटा नगरे चन्द्रप्रम चैत्यालये ।

४२**२४. ऋष्टाङ्गिका बत कथा** —  $\times$  । पत्रस॰ ११ । झा॰ १०  $\times$ ४ इचा । माषा — सन्कन । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२४७ । **प्राप्ति स्थान** — महास्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४२३६ **प्रस्टाह्मिका व्रत कथा**— 🗶 । पत्रस० ११ । ग्रा० १० ४५ इ**च ।** प्राया-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल 🗴 । ले**॰काल** 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० २३६ । **प्राप्ति स्थान** - स्ट्रारकीय दि० बैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४२३७. प्रस्टाहिकावत कथा — X। पत्र त० १८। घा० १ X रो इता। भाषा-सस्कृत। विषय—कवा। र०काल X । ते०काल X । पूर्वा । वेष्ट्रन स०२०४। प्राप्ति स्थान—महास्त्रीय 1 358

४२३८, म्राट्साहित्रत कथा - × । पत्रतः १४ । मा० १०×४३ दश्व । भाषा -- सस्कृत । विवास — कथा। रव काल X । लेक काल X । पूर्ण । विद्यंत संव ६६४ । प्राप्ति स्थान — महुरकीय दिः जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४२३६. प्रष्टाहिकावत कथा— × । पत्रतः ६। घा० १० रे रे प्रेंच । भाषा-सम्बतः। निषय-क्या। र०कात X । से कहाल X । पूर्ण । बेहन स॰ २२ । प्रास्ति स्थान — हि॰ जैन मन्दिर

४२४०. प्रस्टाह्मिकावत कथा—म० शुनवन्त्र । पत्रम० = । आ०१० रे ८०० र भाषा —सस्कृत । विषय — कथा । र०काल 👋 । ले० काल 🔀 । वेष्ट्रन सं० २३१ । पर्गा । प्रास्ति स्थान कोटयों का नेगावा ।

४२४१. प्रतिसं २ । पत्रम् ० १ । मा० ११ रे ४५ इ.च. । ने० काल ग०१८३० । पूर्ण । दि॰ जैन मन्दिर लग्नर जयपुर ।

विशेष - जगपुर नगर में बल्द्रप्रम बैस्थानय में प० योलबदबी के जिला १० समबस्त्र थी न बेस्टन स॰ २३४। प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मंदिर लम्बन बरापुर।

४२४२. प्रतिसं २ । पत्रसः ४ । प्राः १११ ४३) क्व । ने०कान ४ । पूर्ण । वेष्ट्रामः कथाकी प्रतिलिपिकी थी।

२३५ । प्रास्ति स्थान दि० जैन मन्दिर, लक्ष्मर जगपुर ।

४२४३. प्रतिसं**० ४ । पत्रस० १७ ।** चा० १०९४ १ इ.च.। ले० काल ग० १८६४ । पूर्ण । वेहनसं ०३०४। **प्राप्ति स्थान** — दि० जन मन्दिर पार्खनाथ योगात बृदी श्री।

विशेष —सक्कर वे नेमिनाय चैत्यालय में भार्कु राम न प्रांतिलीय की । ४२४४. **काटाहिकावत कया - व. जानसागर।** पत्र स०५०। घा० १०४ ६<sup>९</sup> इटन। मामा-हिन्दी (पदा)। विषय-कथा। २०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । गुर्मा। वेष्टत २० ६३०। **प्राप्ति** 

४२४५. प्रतिसं०२। पत्रस०१०। सा०६३ ४६ इला। तेश्काल 🕢 । पूर्ण । वेष्ट्रन स्थान - महाकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

सं॰ ३१६-११७ । **प्रास्ति स्थान**िद० जैन मन्तिर कोर्टाध्यो का हूमरपुर । ४२४६. प्रतिसं ३ । पत्र सं ०४। आ०१२४६ इख । लेश्काल स०१८६५ । पूर्ण ।

बेहुन स॰ २८६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (वृदी)। ४२४७. प्रतिसं० ४ । पत्र स०३। आ० १२ ४५६ इथा । ने ब्लास X । पूर्ण । वेष्ट्र स०

४३ । प्रास्ति स्थान—दिः जैन मन्दिर पास्थेनाथ टोडारावसिंह (टोक) । ४२४८. ग्रह्मधनवमो कथा— × । पत्रस०७। शा०८ ८४ इखा प्राचा-सस्तृत । विषय-कथा। र०काल X । ले०काल स० १८२३ आसीज मुदी १३ । पूर्ता । वेष्ट्रनस० १२४ । प्रास्ति स्थान-

दि॰ जैन मिन्दर नागदी वृंदी ।

विशेष-स्कथ पुरास में से है। सेवाराम ने प्रतिलिपि की थी।

४२४६. ग्रादित्यवार कथा— पत्रस० १०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। २०काल imes।  $\hat{q}$  काल imes।  $\hat{q}$  प्रां । बेष्टनस० ४४५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपूर।

विशेष -- राजुल पश्चीसी भी है।

४२५०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० से २१ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेण्टन स० ४४६ । प्राप्ति स्थान —िव० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

४२**५१ म्नादित्यवार कथा - पं० गंगादास** । पत्रस्व० ४१। म्रा० ६४६ इला । माया-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७५० (शक स० १६१४) **लेक्काल स० १६११ (शक स०** १६७६) पूर्णे । वेष्टन म० १५२५ । **प्राप्ति स्थान —** महारकीय दि० जैन सदिर श्रवमेर ।

विशेष - प्रति सचित्र है। करीब ७५ चित्र हैं। चित्र ग्रच्छे हैं। ग्रथ का दूसरा नाम रविदत कथा भी है।

४२५२. प्रति सं०२ । पत्र स०१ । प्रा०१०१४५ इचा लेल्काल सं०१६२२ । पूर्ण । वेष्टुन स०१७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर प्रतिनन्दन स्वामी बूदी ।

४२५२ प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६ । ग्रा० १०३ ४५६च । ले०काल स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टनस०१८ । प्राप्ति स्थान – वि० जैन मदिर ग्रीभनन्दन स्वामी बुदी ।

४२४४. प्रतिसं० ४ । पत स० १८ । घा० १० ४ ७ इश्व । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० १ -२ । प्राप्तिस्थान--- दि० जैन मदिर कोटडियो का हु गरपूर ।

विशेष- प्रति मचित्र है तथा निम्न चित्र विशेषत उल्लेखनीय है-

पत्र १ पर - प व्यंनाथ, सरस्वती, धर्मचन्द्र तथ गगाराम का चित्र, बनारस केराजा एव उसकी प्रजा

पत्र २ पर मितसागर श्रेष्ठि तथा उसके ६ पुत्र इनके प्रतिरिक्त ४६ चित्र श्रीर हैं। सभी चित्र कथा

पर म्राधारित है उन पर मुगल कथा का प्रभुत्व है । मुगल बादशाहो की वेशभूषा बतलायी गयी है । स्त्रिया जहमा. बोडनी एव कावनी पहन हुये है कपडे पारदर्शक है अग प्रत्यन दिखता है ,

# द्यादि भाग---

प्रगामु पास जिनेसर पाय, मेवन सुख सपनि पाय। बद्दु वर दायक सारदा, यह गुरु चरन नवन गुग सदा। कथा कहुँ रविवार जक्षाणी, पूर्व प्रथ पुराणे भाणी। एक चित्त सुने जे साभने नेहने दुख दालिब्रह टले।

# ग्रन्त भाग---

देश बराह विषय सिरागार, कार जा भव्ये गुरावार : चदनाय मन्दिर मुखकंद, भव्य कुरुम भामन वर चद्र ॥११०॥ भूतमय मतिवत महंत, वर्मवत सुरवर प्रति सत। तस पद कमन दल भक्ति रस कूप, वर्मभूषण रद रोवे भूप ॥१११॥ विष्णाल कीर्ति विमल मृत्य जाएा, जिन शासन पंकज प्रगट्यो मान । तत पद कमल दल मित्र, धर्मचन्द्र पृत वर्म पवित्र ॥११२॥ तेहनो पडित गग दास, कया करी अविष्य उल्हास । शाके सोलासत पप्रसार, मृदि प्रायाद बीज पविवार ॥११३॥ घल्प बुद्धि थी रचना करी, क्षमा करो सज्जन जित घरो । भरो मुखे भावे नरत तेह घर होये मगलाचार ॥१४॥ इति धर्मचन्द्रनचर पढित गग दास विरचित थी रविवार कथा सगुर्ण ।

४२५५. ग्रादित्यवत कथा—माऊकवि । पत्र स०१०। ग्रा० १०४४) इश्व । गापा— हिन्दी । विषय—क्या । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण वेष्टन स०६१४ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर प्रजोर ।

विशेष-इस का नाम रविवृत कथा भी है।

**४२.५६. प्रति सं०२ । पत्र** स०६ । म्रा०६ $\frac{1}{7} \times \frac{1}{7}$  इल्ड । लेक्काल म०१७५० माह बुदी है । पूर्ण । बेष्टुन स०२०६ । **प्राप्ति स्थान**— थि० जैन मन्दिर क्रिभिनवन स्वामी, यूदी ।

विशेष-रामगढ में ताराचद ने प्रतिलिपि की थी।

**४२५७. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० ६ । ख्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बष्टन स•२०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर प्रसिनन्दन स्वामी, ब्रुदी ।

४२,५६. प्रति स०४ । पत्र स०१९ । आ०१२४ इला । ले० काल स०१६०८ वैद्याल सुदी ⊏ । पूर्णा वेष्टन स०२६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पार्थ्वन।थ घोषान सूदी ।

विशेष-प० सदामुख ने नेमिनाथ चैत्यालय मे लिखा था।

४२**५६. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १५ । ब्रा० ६**८ ४ इच्च । सं०काल ८ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० १६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्थ्वनाथ चौगान बढी ।

४२६०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १३ । घा० १२ $^7_i imes १$  ६ २व । ले०काल imes । पूर्णः । वेष्टनस० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अप्रवात मन्दिर उदयपुर ।

४२६**१. प्रतिसं०७ ।** पत्र स०१६ । ले**०काल स०१**८५० आयाः सुदी १४ । पूर्ण । बष्टन स**०**४४३ । **प्राति स्थान** दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

विशेष--नेमिश्वर की बीनती तथा लघु सुत्र पाठ भी है। भग्तपुर में लिखा गया था।

४२६२. श्रादित्यवार कथा—त. नेमियतः । पत्रतः १७ । प्राः १० $\times$ ५ इत्त । भाषा—हिन्दी, (गुजराती का प्रभाव) । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल पूर्यः । बेष्ट्नतः ५२१ । प्राप्ति स्थान—स्ट्रारकीय दि॰ जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष -- प्रादि ग्रन्त भाग निन्न प्रकार है--

म्रादिमाग---

श्री शांति जिनवर २ नमते सार । तीर्वकर जे सोलमुं वाद्यित फल बहुदान दालार । सारदा स्वामिणि वली तबुं बुढिसार म सरोइ माता । श्री सकलकीति युव प्रणामीने श्री युवनकीति प्रवतार दान तण फल यरणव्ं ब्रह्म जिल्हास कहिमार श्रह्म जिल्हास कहिमार ।।

#### द्यन्तिभाग-

श्री मुलसध महिमा विरमलीए, सरस्वती गच्छ सिर्गुगारती। मिलमुक्य अति मलाए श्री नहमीचन्द मुरिराय ती। नेतृ पुठ चरणकमल गमीए, ब्रह्मा निमदत्त भिए चयती। ए त्रवये मबियगकरिए, तेल हिसी प्रभारती। ३०।। मनवद्भित सपदा लहिए, ते नर नारी मुजायती। इम जायी पास जिएलगो, ए रिवत करो भिन माराती। ए द्वारामा मार्ग तिहां, व्यो जयो पाश्र्म जिल्यदती। माराती करो हम माराती स्वारमण मार्ग जिल्ला माराती।

#### बस्तू---

पास जिगावर पास जिगावर बालबहाचारी। केवलगाशी गुणनिलो, भवसमुद्र तारण समरम्ब । तमु तगुण प्रदित बन सो के करि भवीसगु सार। ते भव सकट भजिकरिमुल पामिद्र जमितार॥ टिल श्री पार्थनाष्टितसारनी क्या समान्त।

४२६३. **मादितवार कथा—मुरेन्द्रकोर्ति ।** पत्र म० १३। मा**या**—हिन्दी । विषय-कथा । रक्ताल स० १७४४ । लेक काल स० पूर्ण । वेग्टन म० ४४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

विशेष -- राजुल पच्चसी भी है।

४२६४. ग्राराधना कथा कोश— $\times$  । पत्र स० ६६ । ग्रा० १ $\frac{3}{2}$   $\times$   $\frac{3}{2}$  इश्व । भाषा-सास्कृत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०४७६ । प्राप्तिः स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजंगर ।

विशेष-- ग्राराधना संवधी कथाग्रो का सग्रह है।

४२६६. स्राराधना कथा कोश—पत्रस० १०४। सा० १०४६ ै्ड्ख । प्राथा —हिन्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जन प्रयवाल पंचायती मन्दिर स्रलदर ।

४२६७. **म्राराधना कथा कोष--** × 1 पत्रसं॰ १६८ । माषा--संस्कृत 1 विषय--कथा । र॰काल ×। ते०काल × 1 पूर्ण । बेहुन सं॰ ६२ । **प्राप्ति स्थान**-वि० जैन संमवनाथ मन्दिर उदयपर 1 विशेष -- प्रति प्राचीन है।

४२६ म. आराधना कथाकोश — बस्तावर्रासह रतनलाल । पत्रस०२६२ । आ०१० $\frac{1}{2}$  ५ इ व । माया—हिन्दी । विषय — कथा । र०काल स०१ म्ह ६ । ले० काल स०१६३२ वंशाख सुदी १२ । । पूर्ण । वेकृतस०१४ । प्राप्ति स्थान —िद॰ जैन अप्रवाल पंचायती मदिर धननर।

४२६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० २६२ । ले० काल स० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

४२७०. **प्राराधना कथाकोश—ब० नेमिदत्त।** पत्रस० २४७ । प्रा० ११४५ इच । मापा-सम्बन्न । विषय-कथ । ८०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ४३० । **प्राप्ति स्थान**— अद्भारकीय दि० जैन मदिर प्रजनेर ।

४२७१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६२ । खा० ११ र्¦ ४४ है इञ्च । ले०काल ४ । स्रपूर्ण । बेष्टन स० १३६५ । प्राप्ति स्थान—प्र० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

४२७२. प्रतिसं० **३।** पत्र स०२६०। ले० काल स०१८११ चैत बुदी ४। पूर्ण वेष्टन स० २६३। प्राप्ति स्थान---दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--भरतपुर में लिपि की गई थी।

४२<mark>३३. ग्राराधना कथाकोश-श्रृतसागर</mark> । पत्रस० ११ । ग्रा० १२ $^{\dagger}$ ×१ $^{\dagger}$ ऽश्व । भाषा-सम्कृत । विषय —कथा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति** स्थानः-वि० जैन मन्दिर प्राप्तन्दन स्वामी, व दी ।

विशेष-पात्र केशरी एव अकनकदेव की कथाये है।

४२७४. **प्राराधना कयाकोध—हरिषेण् ।** पत्रस० १३८ । प्रा० १२४५ है उत्ता भाषा—सम्प्रन । विषय—सभा । र०काल स० १८६ ले०काल x ।पूर्णे । बेधून स० १६८ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर सुशकर जयपुर ।

४२७५. **प्राराधनासारकथा प्रबंध** --प्रसाचन्द्र । पत्र स० २००। ग्रा०१०८४ द्वा । माषा---सन्द्रन । विषय - कथा । २०काल × । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२६१ । प्राप्ति स्थानः---रिऽ जैन श्रयवाल मन्दिर उदगपुर ।

४२७६. प्रतिसं०२ । पत्रस०१-६२ । प्रा०११×५ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्गं। वेष्टन २०७२० । प्रास्ति स्थान — २० दि० जैन मन्दिर लक्कर अवस्र ।

४२७७. म्नाराभना चनुष्यदी —धर्मसागर । पत्र स०२०। १८४४ दश्व । भाषा-हिन्दी पञ्च । विषय—कथा। र०काल ४ । ले०काल स० १६६४ म्नामेज सुरी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर चौथरियान मालपुर। (टोक)

४२७८. **एकावसी महात्म्य**— ४ । पत्र स० १०। झा० ११४५ १ चा । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा। ४०काव ४ । ले०काव स० १६२१। पूर्ण । वेष्ट्रन स १५८। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी व दी।

विशेष--कद पुराश में से है।

४२७६. एकादशी महास्थ्य × । पत्र सच्या १०१। मा० ११×५ इचा। भाषा-सस्कृत । विषय महास्थ्या । रुकाल × । लेखन काल स० १०५२ वैशाल नुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । प्राप्ति झ्यान—वि० जैन मन्दिर नागदी (वृदी)।

४२६०. एकादशी स्रत कथा—  $\times$  । । पत्र साथ । स्रा० ह $\frac{2}{3}\times$ ४ इश्व । मापा-प्राहत । विस्म—कथा। र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वैण्टन स०१४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- इसका नाम 'सबतऋषिकथा' भी है।

४२**८१. ऋविदत्ता चौपई—मेघराज।** पत्रस०२२। ब्रा०१०)×४६ै इच। भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा। र०काल स०१६५७ पीप मुदी ४। लेक्काल स०१७६६ ब्रासोज मृदी ११। पर्यो । वेपन स०२१६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना बृदी।

४२८२. ऋषिमण्डलसहास्म्य कथा— $\times$ । पत्र स०१०। धा०१२ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$  इखा। भाषा—मस्कृत। विषय—कथा। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०२३७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

४२८३. कठियार कानडरी चौपई—मानसागर ।। पत्र स०४। प्रा० १०४४ १ इ.च.। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। र०काल स०१७४७। ले० काल स०१८४०। पूर्ण। बेव्रुनम० २१। प्रारित स्थान—दि० जैन संदिर बोरसली कोटर।

४२६४. कृषण् कथा—वीरचन्द्रसूरि । पत्रसं० २ । ब्रा० १२४५ इन्छ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । २०फाल ४ । ले० काल 💢 । पूर्णः । बेष्टनस० ३०७ १०४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर मभवनाथ उदयपुर ।

विशेष - ग्रन्तिम--

14, .

दाभनो तब दुखि उथयो नरक मातमि मरीनिगयो।

जपि बीरचन्द्र सुरी स्वामि एम जागि मन राखो गम ॥३२॥

४२०५. कथाकोशः —  $\times$  । पत्र स० ४१-६० । प्रा० १० $\times$ ६ इखः । भाषा-सस्कृतः । विषय-कथा । र०कालः  $\times$  । ले० कालः  $\times$  । प्रपूर्णः । बेष्टन स०३२०/१६७ । प्राप्ति स्थानः सभवनायः दि० जैन मदिर उदयपुरः ।

४२**८६. प्रतिसं० २** । पत्र स० ८ । ते० काल स० १७२०। पूर्ण । वेस्टन स० १६०/५६४ । **प्राप्ति स्थान**—संभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४८ तथ. कथाकोश — चन्द्रकीति । पत्र सल्या १४-६६ । आ० १० > > × ६ द । आपा -- संस्कृत । विषय — कथा । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान** -- वि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपर ।

विशेष-शन्तम भाग निम्न प्रकार है---

श्रीकाष्ठसचे विबुधप्रपूज्ये श्रीरामसेनान्वय उत्तमेस्मिन् ।

विद्याविभूषायिध सूरिरासीत्

समस्तनस्वार्थकृतावतारः ॥७१॥

तत्पादयकेरुहचचरीकः

श्रीभूषग्ग्सुरिवरो विभाति।

सघ्नष्ट हेत् वत सत्कथाच ।

श्रीचन्द्रकीतिस्त्विमकाचकार ॥७२॥

इति श्री चन्द्रकीत्यांचार्यविरचिते श्री कथाकोगे षोडधकारणव्रतोपाख्याननिरूपणं नामसप्तमः सर्गे ।।७।।

४२८६ क्याकोश— क नेमियत्त । पत्र स०२२०। ग्रा० १२ $^{9}$  $\times$ ६ स्था । भाषा— सस्कृत । विषय – कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१७४३। पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१०२ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

४२८६. प्रतिसं०२ । पत्र संख्या १७३। ग्रा०११ ४४ इ.च.। लेखन काल सं०१७६३ श्रावरण सुदी१३। पूर्णावेष्टन स०२२६। प्राप्ति स्थान — दि०जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष-मालपुरा मे लिखा गया था।

४२६० प्रति स्०३ । पत्र सं०२४७ । ब्रा० ११ ४४ । इंच । ले•काल ४ । पूर्एं । बेष्टनसं० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४**२६१. प्रति सं० ४ ।** पत्र स**० १**४४-२१६ । **ग्रा० १०** $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इन्थ । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टुन स० १८७ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृदी) ।

४२६२. कदावाकोशः—मारामस्ता पत्र त० १२६। बा० १३८५ी, इ.स. । माया—किन्दी (व्या) । विषय-कथा र० काल × । लेक्शल त० १६४३। पूर्ण । बेष्टन व० ४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन क्षप्रवाल परायती मदिर धनवर ।

४२६३. क**याकोशः — मुमुक्ष रामच**न्द्र । पत्र स॰ ४४ । ग्रा० १० ×५ इच । भाषा-सम्कृत । विषय —कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । व्यूप्तं । वेष्ट्रन सं० २५ । प्राप्ति स्थान वि० जैन मिंदर नागदी, बू थी ।

४२६४ , क्याकोशा— श्रृतसागर । पत्र म०६६ । घा०१२४५ । इच्छा भाषा— सस्त्रता । विषय— क्या । र०काल ४ । ने० काल स०१६२० पीष मुदी १४ । पूर्णा । वेष्ट्रन स०१६०१ । प्राप्ति स्थाम— म०१० जैन मन्दिर खन्नोर ।

४२६**४. कथाकोश**—हरिथेषा । पत्र स० ३४० । आ० ६ ४५ इ.च । आया-सम्ब्रत । विषय-कथा । र०काल ४ । से**०का**ल ४ । पूर्ण । बेट्स स**० ६०। प्राप्ति स्थान**—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अमेरे ।

४२६६. कथाकोशा— ४ । पत्र स० ७८ । म्रा० १०३ ४७ इखा भाषा—हिन्दी (पत्र)। विषय—कथा। र०काल ४ । ले०काल ४ । स्रपूर्ण । बेप्टन स० १८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर फतेहबुर शेलाबाटी (सीकर)

विशेष --- १, २ एव २ वापत्र नहीं है।

४२६७. प्रति सं० २ । पत्रस० ७६ । झा०११ है ४५ १ इख । ले० काल स० १६११ । धपूर्य । वेष्टन स०१६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जेनमन्दिर फोहपुर गेलावाटी (सीकर)।

विशेष-४७ से ४१ तक पत्र नहीं है।

```
निम्न कथाओं एवं पाठों का संग्रह है।
    कथाकानाम
                          कर्ताका नाम
 १. ब्रादिनाथजी का सेहरा— लिनतकीत्ति— र०काल × । हिन्दी पत्र १से द ।
       विशेष -- बाहर्वाल राम भी नाम है।
 २. द्रव्यसग्रह भाषा टीका सहित---
                                        × ।--- × । प्राकृत हिन्दी । पत्र = से २६ तक ।
 ३. चौत्रीम ठाग्गा---
                                        × 1 --- × । हिन्दी। पत्र २६ से २६ तक।
                                        र०काल स०१७६६ हिन्दी। पत्र
 ४. रत्नत्रय कथा ---
                      हरिकच्या पाडे
                                        २६ से ३१ तक।
                                        र०काल × । हिन्दी । पत्र म० ३१ से ३४ तक ।
 ५. धनन्तवत कथा---
                                        र०काल स०१७६५ । हिन्दी पत्र स०३४से३६
 ६, दशलक्षरम व्रत कथा
                                        र०काल १७६२ । हिन्दी । पत्रस० ३६ से ३६
 ७ द्याकम्श पचमी कथा
                                        र०काल स० १७६८। हिन्दी पत्र स० ३६-४१
 ८. ज्येत्र जिनवर कथा
 ६ जिन गृशः सपत्ति कया
                                        र०काल 🗴 । हिन्दी। पञ्च ४१ से ४६ तक
                        ल लि कि ति
१०. सुगवदशमी कथा---
                                        र०काल × । हिन्दी। पत्र ४६ से ५३ तक। घपर्शं
                         हेमराज
११ रविव्रत कथा---
                         ग्रकलक
                                        र०कालास० १६७६ । हिन्दो । पत्र ४३-४४
                                        र० काल स०१७७१ । हिन्दी। पत्र ४४ । अपूर्णं
१२ निर्दोबसमभी कथा—
                        हरिकृष्स
                                        र०काल 🗴 । हिन्दी । पत्र ५४ से ५८
१३, कर्मविषाक कथा ---
                         विनोदीलाल
१४ पद--
                                        पत्र ४६-४६
१४. समोसरन रचना--
                         ब्रह्मगुलाल
                                        पत्र ४६ से ४३। र०काल १६६८
१६ घट दशेन
                            Х
                                        पत्र ६३ पर
१७. रविव्रम कथा -
                         भाऊ कवि
                                        पत्र ६३ से ७१ तक
१८ पुरदर्शवधान कथा---
                        हरिकृप्स
                                        र० काल १७६८ फाल्गून सुदी १०। पत्र ७१-७२
१९. नि शत्य ग्रन्टमी कथा---
                                        र०काल × । पत्र ७२-७३
२० सख्टचौय कथा --
                        देवेन्द्रभवगा
                                        र०काल × । पत्र ७३ से ७४
```

४२६ म. कथाकोशः —  $\times$  । पत्र स० २७६ आ० १२  $\times$  ५ $^3$  इख । भाषा —हिन्दी । विषय —क्रवा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण वेष्टन स० १३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन तैरहाथी मंदिर दौता ।

र०काल सं० १७५७ पीप बुदी १०। पत्र ७५-७६

स्रेन्द्रभूपस्

४२६६. कथासंग्रह—  $\times$  । पत्रसः ५३ । ग्रा॰ ६ $\times$ ४२ इञ्च । मापा —संस्कृत । विषय— कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३४६ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन पद्धिर प्रविते ।

# विशेष--- निम्न कथाओं का संग्रह है --

२१ पचमीवत कथा —

पुष्पाञ्जली, सोलहकरएा, मेघमाला, रोहिएवित, लब्बिबिवान, मुकुटसतमी, सुगंघदशमी, दशलसए। हवा, प्रादित्यवत एव श्रावएादादशी कवा । ४६००. प्रतिसं०२ । पत्र स० ६ । ग्रा०१०४४ है । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन स० ७३४ । प्राप्ति स्थान – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-प॰ मुमितमुन्दरगिए। भरलेखि श्री रिग्गानगरे।

धन्यकुमार, शालिभद्र तथा कनककुमार की कथाए है।

**४३०१. कथा समह** $-\times$ । यत्रस**० १**२४ से २०४। म्रा० ११५् $\times$ ०९ डचा। भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। २०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । यूर्णं। वैष्टनस० १४४। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर जीत्रस्ति कोटा।

¥२०२. कथा संग्रह— × । पत्रस० ८६ । ग्रा० १० ४४ ! इ'व । भाषा —सस्कृत । विषय-कषा । रक्काल × । तेक्काल × । ध्यपूर्ण । बेष्टनस० १०४ । प्राप्ति स्थान—दि० वेन मदिर दक्काना (राज्य

**४३०३. कथा संग्रह—** × । पत्रसः ......। भाषा—सस्कृत । विगय-कथा । वेष्ट्रनसः ४६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

- १ श्रष्टाहिनका कथा-भ० स्रेन्द्रकीनि । स्स्कृत
- २. पुष्पाजलिवत कथा— श्रुतसागरः।

३. रत्नत्रय विधानकया--

४२०४. कथा संग्रह— $\times$  । । पत्रत० २८। ग्रा० १० ५६५ ह न । भागा ।  $\{p(x)\}$  । विग्न कथा । र०काल  $\times$  । से॰काल स० १६४१ । पूर्ण । वैष्ट्रन स० २४। प्रास्ति स्थान — दि० जेन प्रयवास मन्दिर, उदम्पूर ।

विशेष - भारामल की चार कथान्रो का मग्रह है।

४३०४. कथा संग्रह— $\times$  । पत्रसः० ३७-४६। भाषा-मन्त्रनः। विषय-कथा । रजनाल । किकाल $\times$  । भागूर्णः। वेदन स० १४६/१०६ । मास्ति स्थान—विज्ञाने समावनाथ मा वर उपयपुरः।

४२०६. कथा संग्रह— $\times$  । । पत्रस० १६ । आ० १५  $\times$  ४ इथा । भाषा- सन्द्रता । त्रस्य- कया । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन स० १४८ १०७ । प्राप्तिः, स्थान वि० जैन सभवनाथ मिदर उदयपुर ।

विशेष-निम्न कथाग्री का सम्रह है।

१ ग्रष्टाह्निका कथा	संस्कृत		भपुरणं
२	भ० पद्मनिद		.4
३ —लब्धि विधान	प० ग्रभ्रदेव	0	पुर्गा
४ – रूक्मिस्सी कथा	छत्रमेनाचार्य	n	W
५ भारत्र दान कथा	ग्रभ्रदेव	u	
६ जीवदया	भावसेन	u	
७त्रिकाल चौबीसी कथा	प० ध्रभ्रदेव	at .	**

४३०७. कथा संग्रह—imes। पत्र स० २१: आधा-प्राष्ट्रत । विषय – कथा । imes० कात्र imes । वेल कात्र imes। प्रेश । द्वापित स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

४३०८. कथा सम्रह—विजयकीति । पत्रतः १८ । मा॰ १०३ ४४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय — कथा । ८०काल स० १८२७ सावरा बुदी ५ । ले०काल सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६४४ । प्राप्ति स्थान–महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - कनककुमार, धन्यकुमार, तथा सालिभद्र कुमार की कथाए चौपई बध छद मे है।

४३०६. कलिचौदस कथा — म० सुरेन्द्रकोति । पत्रस॰ ५। मा॰ ११ $\times$  ४१४। भाषा — हिन्दी पद्य । विषय — कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ १०२। प्राप्तिस्थान — हि॰ जंन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३१०. कार्तिक पंचमी कथा। पत्रस्व १। प्राव १० $^1_1 \times ^1_2 \times ^2_3 \times ^3_4$  कथा। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०१६४।२०२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष--प्रति प्राचीन है। १७ वी शताब्दी की प्रतीत होती है।

४३११. कार्तिक सेठ को चोडास्यो × । पत्रस० ४ । प्रा० १० ×४१ इ.च । भाषा-हिन्दी विषय—कत्रा । २० काल × । से०काल × । पूर्णं । वेष्टन सं० १३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर उदलाना व दो ।

४३१२ कार्तिक महारम्य — 🗴 । पत्र म० ८। प्रा० ६ र्हे ४५ है इस्र । मापा—संस्कृत । विषय—क्या (जैनेनर) । र०काल ४ । लै०काल मं० १६७२ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वेध्दन सं० ८-१७ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर टोडारायसिह (टोक)

विशेष —पद्मपुरारा से ब्रह्म नारद सवाद का वर्णन है।

४३१३. **कालक कथा**  $-\times$  । माया--प्राकृत । विषय-कथा । र० काल $\times$  । से•काल  $\times$  ।  $\mu$ प्र्सं । वैष्ट्रन स० ४४०-३१/२०२-०३। प्रास्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — दो प्रतियों के पत्र है। फुटकर है।

४**३१४. कालाकाचार्या कथा—श्री मारिगक्यसूरि** । पत्रम० ४ । ग्रा० १० × ४ डख । मापा-मस्कत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टत सं०४६६ । **प्राप्ति स्थान**— महास्कीय दि० कैन महिरु श्रवसंग ।

४३१४. कालकाचार्य कथा—समयसुन्दर। पत्रसः० ११। मा० ११ ४४. इ.च.। माषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ≿। वे०काल सं० १७१४ वैशास चुरी १। वेहनस० १२६। पूर्ण। प्राप्तिकथा—कि.च.वेच प्रदिच्छोत्रसर्थी की.च.

विशेष--देनवाडा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४३१६. कालकाचार्य प्रवध — जिनसुस्रमूरि । यत स० १६ । प्राचा — हिन्दी । विधय — कवा । रुकान  $\times$  । लेकाल १८६६ । यूर्स । वेष्टन स० ७३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवासती मंदिर प्रतानाः

विशेष -- प्रति जीर्ग है।

विशेष — भ्रन्त मे लिखा है-इति कु दकु दस्वामी कथा । या कथा दक्षरमुद्धं एक पडित छावसी माभरी मयो उक भन्तार उतारी है ।

४३१६. कौमुदी कथा —  $\times$  । पत्रस॰ ४६-१०४ । प्रा० ११ $^1_7$   $\times$  ५ १ दश्व । भाषा-सम्ब्रत । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनसं॰ २६ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

४**३१९. कोमुदी कथा**— × । पत्रस**० ६०।** माषा-सम्कृत । विषय-कथा । र०काल × । से**०काल स** १७३६ । प्रपूर्ण । वेष्टनस**० ६। प्रास्ति स्थान**— दि० जैन पनायती मदिर डीग ।

४३२०. कौमुदी कथा— $\times$  । पत्र सं० १३६। घा० १० $\times$ ६ इन्छ । मापा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ने०काल स० १८२६ माह सुदी ४। पूर्ण । बेप्टनस० २६७। प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर चौगान (बुंदी) ।

विशेष—राजाधिराज श्री पातिसाह प्रकबर के राज्य में चन्यानगरी के मुनिमुबतनाथ के चैत्यालय में प्रतिचिपि हुई थी। स॰ १६६२ की प्रति से लिखी गयी थी।

४३२१. गर्जासह चौपई—राजमुन्दर । पत्रस॰ १६। था॰ १०ैं ४४ै इश्व । भाषा— हिन्दी (पद्य)। विषय कथा। र०काल स॰ १५४६। ले॰काल х । पूर्ण । वेद्यनस॰ ४। प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपर।

विशेष — प्रत्येक पत्र पर १७ पक्तिया एव प्रति पक्ति मे ३५ ब्रक्षर है। मध्य सारा—

> —नगर जोइनः धादियो कुमर वे मावा होत । नारी ते देवह नहीं, जोबद दम दिन देति । १४६ ॥ मिनिचतद कारण दियउ केणा होगा बान । पणजोनद सह तेहता पारि बुढि मुदिभाल । १४७ ॥ नरमित बूरना पदौ बैठ्या नारी माहि ॥ पत्नी माही बाइन सही गोवड पत्त हाहि । १४६ ॥ बड पार्न प्रजानि चाइन सही गोवड पत्त हाहि ।

४३२२. गुरा**सुन्दरी चउपई—कुशललाम ।** एव स० ११। घा० १०५ ४४६ इटन । मापा-राजस्थानी । विषय कथा । र०काल स० १६४८ । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । बेष्टनस० २७०। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४३२३. गीतम पृष्ट्या—× । पत्र स० ६७ । आ० १४६ दश्व । भाषा-सस्कृत । विषय— क्या । र०काल × । ले० काल स० १६१० । पूर्ण ।वेट्न स०३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरह्पशी मन्दिर नैस्था ।

४३२४. चतुर्दशी कथा—डालूराम । पत्र स० २१। प्रा० ६४४ इन्छ । आपा-हिन्दी। विषय-कथा। रक्ताल स० १७५४। ले० काल ४। पूर्ण। वेग्टन स० ६७३। प्राप्तिः स्थान—अट्टारकीय दि० जैन मदिर प्रजमेर। ४३२५. खंदराजानी ढाल—मोहन । पत्र स० १ । ध्रा० ६ $\frac{3}{4}$ ४४ इख । भाषा—हिन्दी । विषय—कवा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० २०६/६६० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाष मन्दिर उदयपुर ।

४३२६. चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह—म० नरेन्द्रकोत्ति । पत्रसं० २४। घा० ११४४३ इत्व । भाषा—रजस्वानी । विषय—कथा र०काल स० १६०२ । ले०काल ४ । पूर्णं । बेष्ट्रनसं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

## ग्रादि भाग--

सकल जिनेश्वर भारती प्रग्नभीनं गग्धर लहीय पसाउ । लोए श्री चन्द्रप्रभ वर निमन नरामर गायस्यू तेह वीवाहलीए।।१।।

# मध्य साग-

जडने बोलावे मान्त लक्षमणा देवी मात्। उठोरे जिनेश्वर कहिए एक बात ॥१॥ सामीरे देखीजें रे पुत्र साहिजे मदा पवित्र। रजमुभदामे वछ निरमल गात्र।

#### ग्रन्तिम माग---

विकमराय गछ्ये सवन् भोल वय सवरसर जाग्र वैणाल वदी मनी समसी दिन सोमवार मुक्रमाण मुकरदेश सोहामगो सहीसान नयर मुसार। विवाउ लउ ज्वउ सवरनी छादिण्वर भवन मक्तार।। श्री मुक्तमय गद्धपि छुभवन्द महुराक्त सार। तथ्यदक्षल दिवाकक, श्रीय मुम्मिनबीरित सवतार।। गुरु श्राना तम जागाङ श्रीय सक्लभूषणा मुरी देव। नरेरद्रक्लीरती गुगेवर कहे, कर जोडित यद सेव। के नरवारी भावे मुर्ग, भग्येंद मुग्गें यह गीत।।

इति श्री चन्द्रप्रभ स्वामिनो विवाह सपूर्ण । ब्रह्म श्री गोतम लखीतं । पठनाथं ब्रह्म श्री रूपचन्दर्जा ।

४३२७. चन्दनमलयागिरी चौपई—भद्रसेन । पत्रसं० २०। माया—हिन्दी पश्च । विषय—
कथा। र०काल १७वी जनाव्दी । लेकाल स० १७६० जेष्ठ सुदी १३। पूर्ण । बेहन स० १/१। प्रास्ति
स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

प्रशस्ति—सवत् १७६० वर्षे मासोतममाने जेष्ठ मासे गुक्त पक्षे त्रयोदणाम्या तिथी सौमवासरे इद पुस्तकं लिलापित कार जा नगर मध्ये श्री चन्द्रप्रम चैत्यालये लेखक पाठकसी शुम्र भवत् ।

प्रति सचित्र है तथा उसमे निम्न चित्र हैं---

٤.	राधाकृष्ण		पत्र १ पर
٦.	राजा चन्द्रन रानी मलयागिरी		٤
Э.	महल राजद्वार		8
٧.	राज्य देम्या सवाद		२
Ģ	राजा चन्दन कुल देवता से बात पूछ छै	-	3
٤.	रानी मलियागिरी राजा चन्दन	,,	₹
٥.	रानी मलियागिरी और राजा चन्दन सायर के तीर		¥
ξ.	,, ,,		¥
3	i, पार्थ्वनाथ के मन्दिर पर		٩
٤٥.	साय <b>र मीर गौ</b> उ चरावे छ		¥
88	चोवदार सोदागर		Ę
85	रानी बनवड में नकडी बीनवे	-	Ę
₹ 3	रानी मलयागिरी एव चोबदार		હ
68	<i>n</i>		=
84	मलियागिरी को लेकर जाते हुए		3
₹ €	रानी मलयागिरी एव सौदागर		१०
१७	वीर, सायर नदी नीर ग्रमरान्यु		११
8=	राजा चन्दन स्त्री	_	<b>१</b> २
₹€.	र जा चन्दन पर हाथी कलश ढोलवे		१३
२०	राजा चन्दन महल मा जाय छै	-	१४
٦१.	राजा चन्दन धानन्द नृत्य करवा छै		१६
23	राजा चन्दन भलो छै	***	१६
₹₹.	नीर सायर मीला छै रानी मलियागिरी	*****	<b>१</b> ६
२४	राज्य चन्द्रन रानी मनियागिरी मौदागर भेट कीथी	****	१ ও
२५	राजा चन्दन, के समक्ष मायर नीर पुकार करें छैं	-	१८
₹€.	वन्दन मलियागिरी		38

४३२८. **बदनवष्ठीव्रत कथा --ख्सालबन्द** । पत्र स०६ । द्वा०१२४४) इ.ख । भाषा-हिन्दी । विषय --कशा । र०काल ४ । से० काल स०१८५८ । पूर्ण । वेष्टनस०१४४ । **प्राप्ति स्थान--**-दि० जैन मन्दिर नागरी बुदी ।

४३२६. चपावती सीलकत्यागावे—मुनि राजचन्द । पत्र स०६ । छा०११ ४ ५ इच्च । भाषा—िहन्दी पद्य । विषय —कथा । र०काल स०१६च४ । ले०काल ४ । अपूर्ण । बेष्टनस०४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन स्रवेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४३३०. घारमित्रों **को कया**— × । पत्र स॰ ६६। प्रा॰ ११४५ इख । भाषा—सस्तृत । विषय—कया । ८०काल × । ले॰काल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६२। **प्राप्ति स्थान—दि॰ जेन** मंदिर वोरसनी कोटा । ४३३१. **चारदत्त कथा**—  $\times$  । पत्रस०५। प्रा०११ $\times$ ४५ इञ्च । भाषा – सस्कृत । विषय—कथा। र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  ।। पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान**—प्रप्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- प्रति प्राचीन है।

४३३२. चारवत्त सेठ (एामोकार) रास - बर्ग जिनवास । पत्रस्व ३५ । घा० १० ४ ५ इच । भाषा — हिन्दी । विषय — कथा । र०काल ४ । ले०काल स० १७५४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३०३ । प्राप्ति स्थान — सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

४३३३. चारुवस्त प्रवश्य— कल्यासाकीति । पत्रसः । १३ । म्रा० १०३ ४५ ६ थ । मापा— हिन्दी (पत्र) । विषय—कथा । र० काल स० १६६२ । ले० काल स० १७६५ । पूर्ण । वे स० २७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बाल मदिर उदयपुर ।

४३२४. चित्रसेन पदावतो कथा—गुरासाधु। पत्र स०४४। भाषा – सस्कृत। विषय— कथा। र०काल स्वत १७२२। तेक्काल स०१६६६ झामोज सुदी ३। पूर्ण। वेष्टन स०५६६। प्रास्ति स्थान-–दि० जैन प्वारनी मन्दिर भरतपर।

विशेष -- हिन्दी ग्रथं महित है।

४३३५. चित्रसेन पद्मावती कथा—पाठक राजवल्लम ।पत्र ग०२५ । म्रा०६ $^3$  $\times$ ४ इच । म्राग-गन्यत । विषय-न्वय । ७०काल स०१४२४ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१६२ । **प्राप्ति** स्थान-दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृदी) ।

४३३६. प्रति सं०२ । पत्र म० ४२ । ग्रा० १० ${}^3_2$  imes ४ $^3_3$  ६व्ज । ले० काल imes । पूर्ण । बहुन स० ३०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बढी ।

विशेष--कल ४०७ पद्य है। प० हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४**३३७. प्रतिसं० ३ । पपस० २** । ब्रा० १० ४४ इ.च । ले०काल स० १६४१ फागुसा बुढी १० । पूर्सा । बेष्टनसं० २३२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति भच्छी है।

४३३६. चित्रसेन पद्मावती कथा —  $\times$  । पत्र स०२१ । भाषा — सहकृत । विषय — कथा । एकाल स० १४२६ । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रत स० ६३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैत प्रवायती मन्त्रि भरतपुर ।

४३३६. खेलगासतीरो चोडालियो—ऋषि रामचन्द । पत्र स०४। म्रा०६ $\times$ ४६ च । भाषा—गजस्थानो । पिपय—कथा । र०कान  $\times$  । केंने काल $\times$  । पूर्ण । बेस्टन स०१६७। प्रास्ति स्थान-दि० जैन महिर दबलाना (व ही)

४३४०. चोबोली लीलावती कथा --जिनचन्दा पत्र स०१४ । प्रा०११ 👋 है इच्च । भाषा -- हिन्दी प्या । विषय ---कथा । र०काल स०१७२४ । ले०काल स०१८४६ । पूर्ण । वे०स०३३६ । प्राप्ति स्थान --- दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४३४१. चौबीसी कथा —  $\times$  । पत्रस्व ७। भाव १० $\times$ ५ इच्च । भाषा - सस्कृत ्विष्कृ कथा। र० काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टतस्व २४३। प्राप्ति स्थान — दि० जैने मन्दिर सकर, जयपूर।

४३४२. चौबोसी तत कथा—  $\times$  । पत्र स० २०। ब्रा० १४ $\times$ ७ इथा। आया—हिन्दी पद्य । विषय—कथा। र०काल  $\times$ । ले०काल । पूर्णः। बेष्टन स० २२। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागरी बुदो ।

४३४३. जम्बूकुमार सर्ज्याय $-\times$  । पत्रसंक १ । आ० १०३ $\times$ ४ इख । आषा - हिन्दी । विषय-कया । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४२ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा ।

४३४४. जम्मूस्वामी श्रध्ययन—पद्मतिलक गरिए । पत्र स०६३ । प्रा० २, ४४, इख । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र०काल ४ । ते० काल स० १७८६ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २०० । प्राप्ति स्थात—दि० जैन मन्दिर दवलाना व दी ।

विशेष-ाद्मसुन्दरगिंग कृत हिन्दी टब्बार्थ टीका सहित है।

४२४५. जम्मूस्वामी कथा— × । पत्र स०४ । ग्रा०१०१४४१ इन्या आपा—हिन्दी (गद्य)। विषय —कवा। र०काल × । लेक्काल । श्रपूर्ण । वेट्न स०२६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दबलान (बंदी)

४३४६. जम्मूस्वामी कथा — × । पत्रसः ३१। घा० ११४५ इ.च.। भाषा-हिन्दी (तथ) । विषय—कथा। र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६। प्राप्ति स्थान—खण्डेलवान दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४३४७. जम्बूस्वामी कथा-प० दोलतराम कासलीवाल । पत्र म० २ से २७ । मा० ११ $\chi$ ६ इन्त्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय -कथा । र० काल  $\chi$  । ले॰काल  $\chi$  । प्रयूर्ण । वेष्ट्रन स० १५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पात्रकेनाथ टोटारार्घासह (टोक) ।

विशेष-पुष्यास्तव कथाकोश में से है। प्रथम पत्र नहीं है।

४३४८. जिनद्तः कथा $-\times 1$  पत्र स०२४ । प्रा०११  $\times$  ४६७ । प्राप्ता — मस्त्रत । विषय — कथा ।  $\tau$ ० काल  $\times$  1 ते० काल स० १४०० जेष्ठ बुरी ७ । पूर्ण । बेटन स०६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पराधती देशे (टोक)

प्रशस्ति—सबत् १५०० वर्षे जेष्ठ बृदि ७ रबी गुजार मन्दिरे श्रीसचे महारक श्री पद्मनीत्व तिष्ट्यस्य श्री देवेन्द्रकोति, जिन्ह्रस्य विद्यानीत्व तहीतित वर्ण हर्रदेवेन कर्मश्रवार्षे लिलापित ।

'श्रेष्ठि अर्जुन सुत भूठा लिलापित म० श्री ज्ञानभूषरास्तापट्टो म० श्री प्रभवद्वाराा पुस्तक । ये शब्द पीछे लिले गर्वे गालुम होते हैं ।

## प्रारम्भ---

- . महामोहतमछन्न भुवनाभोजभाननः।
  - सतु सिड्यगना सङ्गमुखिन सपदे जिनाः ॥१॥
  - यदा पता जगद्वस्तु व्यवस्थेय नमामि ता । जिनेन्द्रवदनाभोज राजहसी सरस्वती ॥२॥
    - जिनन्द्रवदनाभाज राजहसा सरस्वती ॥२॥ मिथ्याग्रहाहिनादण्ट सद्धर्मामृतपानत ।
    - भाश्वासयति विश्व ये तान् स्तुवे यतिनायकान् ॥३॥

#### प्रस्तिम--

कृत्वा सारतरं तपो बहुविष शाताश्चिर चार्गिका । कन्यं नाम्तमबापुरेत्पनरता दत्तो जिनाश्मितः । यत्रासौ सुस्रसायरानरगर्गा विज्ञाय सर्वेषिते । स्योच्य तत्र जिनादि बदनपुराः प्रोताः स्थिति तन्वते ॥६८॥

#### ६ सर्ग हैं।

४३४६. जिनदत्त चरित — गुराभद्राचार्य । पत्र स०४७ । घा०१२४७ है इच । माषा— सस्कृत । विषय — चित्रत । र०काल ४ । ले०काल स०१६३० । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२२६ । प्रास्ति स्थान—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

विशेष - इसका नाम जिनदत्त कथा दिया हुन्ना है।

४३ ५०. प्रतिसं० २ । पत्र स०३ घा १० ४४ ४ है इञ्चा ले० काल सं०१६८० । पूर्ण । केवन स०३ ६६९ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

४३५१ जिनदत्त कथा भाषा —  $\times$  पत्रसः १८। ग्रा॰ १२ $\times$ ७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २० जाल  $\times$  । ले० काल स॰ ११६२ । पूर्ण । बेष्टनसं॰ २२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर, बोरमली कोटः ।

४३५२. जिनरात्रिवत महास्म्य — मुनि पद्मानिर । पत्र स॰ ३६ । म्रा॰ ११  $\times$  ५ इश्व । भाषा — सम्कृत । विषय – कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल स॰ १५१४ पीप बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स॰ ६७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी काम।

विशेष द्वितीय सर्गकी पुन्यिकः निम्न प्रकार है---

४३५३. जिनरात्रि विधान — ×ापत्र स०१४। प्रा०१०४४} इवा। भाषा-संस्कृत। विषय कथा। '०काह ४। नै०कान ×। पूर्ण। बेष्टन स०६२। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर दीवानकी काम।

४३५४. ज्ञातृष्ठमं कथा टीका---  $\times$  । पत्रस० ६६ । आ॰ १०  $\times$  ४ े ६थ । भाषा-प्राकृत सम्बन्ध । विषय कथा । २०काल  $\times$  । के०काल स० १८७४ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । वेष्टत स• १०६/७४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भाइवा (राज०)।

विशेष - वरापुर मध्ये नयगेखर ने प्रतिलिपि की थी।

४३.५. दोला मारूगी चौपर्र $-\times$ । पत्र स०१४। घा०१२  $\times$  ४ $\xi$  इंच । माषा-राजस्थानी (पदा)। विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ने०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । बेष्ट्रन स०५७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

४३५६. सामोकार मंत्र महास्म्य कथा—  $\times$ । पत्र सं० ६२६ । घा० १३ $\times$  ७ $\frac{1}{2}$  इख । मापा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० १३३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फ्लेहपुर शेकावाटी (सीकर) ।

विशेष -- सचित्र प्रति है । चित्र मृत्दर है ।

४३५७. ताजिकसार—  $\times$  । पत्रतः ६। द्याः १० $\times$ ४ $\S$  इतः । गायः—सन्कृतः । विषयः— स्वाः । रुक्तालः  $\times$  । ते० कालः  $\times$  । पूर्णः । बेष्टन स्तः ११६६ । प्राप्ति स्थान—स्ट्रान्कीयः दि० जैन मन्दिर प्रावेशः ।

४३५८. त्रिकाल चौबीसी कथा—प० ग्राप्नदेव । पत्रस० ४ । ग्रा० १०५  $\times$  ४ $_{0}^{2}$  इख । माया—संस्कृत । विषय-कथा । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनम० २४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४३,४६. त्रिलोकवर्षम् कथा—खडगसेन । पत्रस०१८४। प्रा०११ ' ४५ ' इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान कथा । र० काल म० १७१३ चैत्र मुरी ५ । ले० काल × । पूर्णः । बेष्टनस० १४४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४३६०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४६ । प्रा० १२९ ∑४४ । ने० कान स० १७७७ धामाज सदी १४ । पर्ग । बेहनस० ४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनायनी मन्दिर बयाना ।

विशेष--केशोदास ने प्रतिलिपि की थी।

**४३६१. प्रति सं० ३ ।** पत्र स०१७६ । झा०१०<sup>९</sup> ४४. डिखा नि० वाल स०१८४६ झामोज सदी ६ गरवार । पूर्णा विष्टुत स०१११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजसङ्खटोक ।

विशेष-- लिलायिन देवदीदाम जी निस्तत त्याम सहजरामेगा नक्षकार मध्ये ।

इस प्रति में रचना काल स० १७१८ सावण सदी १० भी दिया हुआ है

**४३६२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० १८० । आ० १०**४५) इल्ब**ा** तेरुकाल म १८६३ मावण बुदी ७ । पूर्णा । वेष्टुन मरुषक । **प्राप्ति स्थान** —दिरु जैन मन्दिर राजमण्य टाक

विशेष--बाह्मण मुखलाल ने राजमहल में चन्द्रप्रभ नैत्यालय म प्रतिलिधि की थी ।

**४३६३. प्रति स० ४.। पत्रस**० कर । प्रा० १२ . ८ ६० ठवा लेवकाल स० १७६३ मगीसर सदी १४ । पूर्ण वे**ष्ट्रनस० ४.। प्राप्तिः स्थान-दिव्योतन स**स्टर राजसहल टीका।

४३६४. प्रति सं० ६ । पत्रसः १४७ । आ० १२८ ४) दश्व । ल० काल स० १६३२ कास्तिक मुदी ६ । पूर्णे । वेष्ट्रनस० १११-८६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर नीमनाथ टोडारायसिट्ट टोक ।

विशेष -- स्रतराम चौकडाइत भौमा चाकर् वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४३६५. प्रतिसं०७ । पत्र स० १६८ । ग्रा० १० ४४) इ.स्य । ले० काल स० १८३० । पूर्या । बेष्टुत स० ६६ । प्रास्ति स्थानः -- दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ चीगान बुदी ।

४३६६. प्रतिसंब्दा पत्रसः ११३ – १३६ । लेब्बाल सब् १७४७ । ब्रयूर्णा । बेप्टनस्व १६६ । प्राप्तिस्थान — दिव्जैन तेरहपत्रीमदिर बसवा।

४३६७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १४२ । घा० ११ × ६ । इटच । ले०काल × । पूर्ण । वेवनस० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सब्धेनवाल मदिर उदयपुर ।

४३६८. प्रतिसं०१० । पत्र स०११४ । ले०काल × । पूर्या । वेग्टन स०२७ । प्राप्तिः स्थान—स्थाबेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर । ४३६६. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १६५ । आ० १०×४२ हज्या । लेवकाल स० १८०० । पूर्ण । बेष्टुन स०६६-४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

४३७०. प्रति सं०१२ । पत्रस०१६४ । आ०६ २४ ५ इला। ले०काल सं०१८२२ घ्रापाढ मृदी१३ । पूर्यः । बेष्टनस०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन घ्रज्ञान प चायती मन्दिर घलवर ।

विशेष -- ग्रानन्दराम गोवा ने जयपूर में प्रतिलिपि की थी।

४३७१. प्रति सं० १३ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १६२४ सावत बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचावती मन्दिर भरतपुर ।

४३७२, प्रति सहरा १४। पत्रस०७६। ले॰काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टन स॰ ३७४। प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन प्रचायनी मन्दिर भरतपुर ।

४३७३. त्रिलोक सस्तमी व्रतं कथा—त्र० जिनदास । पत्र स० ७ । घ्रा० ११  $\times$  ४ ६७३ । भाषा —हिन्दी । विषय-नत्रा । २०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । विष्टनस० ३१३, १२४ । प्राप्ति स्थान—सभवनात्र दि० जैन मदिर उदयपर ।

४३७४, दमयंतो कथा – त्रिविकम भट्टा पत्र स०१२१ । श्रा०१×४६ इन्या भाषा — सम्बत् (गदा) । विषय —कथा । २०कास ४ । लेक्सात स०१७५७ श्रावण मुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०१८४ । प्राप्तिक स्थान – टि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुटी) ।

विशेष - इन्द्रगढ में मूनि रत्नविमल ने प्रतिलिपि की थी।

४३७४. दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र स० २७ । प्रा० १२ $\frac{1}{2} \times 9$ , द्वत्र । भाषा—कथा । 
रक्काल  $\times$  । लक्काल  $\times$  । पूर्ण । केष्टन स० १२८८ । प्राप्ति स्थान—महास्कीय दि० जैन मस्दिर 
प्रकीर ।

४३७६. प्रतिसं० २ । पत्र स० २७ । घा० १०३% ४३ इखा । ले०कालस० १८३६ । पूर्ण । बैष्टुत स० ६८ । प्राप्ति स्थान - दि० जैत सबैतवाल मन्दिर उदयपुर ।

४३७७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २ ने २४ । धा० १३ $\} \times ७ इखा । ले०काल <math>\times$  । ध्रपूर्ण । बैष्टनस० १२२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर फनेहपुर गेखावाटी (सीकर) ।

**विशेष**— १,१० एव ११ वा पत्र सही है।

४३७६ प्रति सं० ४ । पत्रस० २६ । आ० १२१८७३ इ.च.। लेक्सल सं० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६७-७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का हुगरपुर ।

४३७६. पतिसां० ५ । पत्रतः० २७ । श्रा० १२५ँ ४ = इला । ले०काल स० १६४३ । पूर्णं । वेष्टनस०६ । प्राप्तिकस्थान- ग० दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

४३६०. प्रति स० ६ । पत्र स० २२ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन तेरहपथी महिंदर बसवा।

४३८१. प्रतिस०७ । पत्र स०२८ । ले∘काल x । पूर्य । वेष्टन स∙२७ । प्राप्ति स्यान—दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा ।

४३८२. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ३४ । प्रा० १०३ ४७ इचा । से०काल ४ । पूर्णं । वेष्टन ६० १०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवासती मदिर कामा । ४**३ म. २. प्रति सं० ६** । पत्र स० ५५ । ग्रा०१२ ३ ४ ५ ३ इ.च.। ले० काल स० १६०७ । पूर्णः । बेष्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

४२६४. प्रति स० १०। पत्रस० ३६। मा०१० ४६३ इथा । लेकाल स० १६२८ घासीज बदी ८। स्रपूर्ण । बेष्टन स० ४४। प्राप्ति स्थान—सीगार्ण दि० जैन मदिर करीली ।

विशेष — प्रथम पत्र नही है।

४३८५. प्रतिस**० ११।** पत्र स० ५८ । आ० ६ × ५३ इच । ले० काल स० १६५६ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टुन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचावती मन्दिर करीली ।

विशेष - चिरजीलाल व गुजरमल वैद ने करौली मे प्रतिलिपि की थी।

४३ म ६. प्रतिसं० १२ । पत्रस०४१ । प्रा० १० $\frac{3}{4} \times 1^{\frac{3}{4}}$  इःख । लेक्शल स० १६२७ चैत्र मृदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० ७२ १६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रनखर ।

विशोष--- पत्र स २३ और ३६ की दो प्रतिया और है।

४३८७. प्रतिसं० १३ । पत्रस० २८ । आ० ११ ४७ हे इथा । लेव्काल स० १६६१ कॉलिक सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० १०१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर पाण्वेनाथ चीमान बूदी ।

४३८८. प्रति सं० १४ । पत्र स० ४६ । घा० ५३ ४६ दे इखा । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सभिनन्दन स्वामी बूंदी ।

४३८६. प्रति सं० १४ । पत्रस० २४ । झा० १३ 🗴 ७ दञ्च । ले०काल 🔀 । पूर्ण । वष्टन स० ६० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर यूदी ।

४३,६०. प्रति सं०१६ । पत्रसं०३२ । घा०१०४७ इल्डा ले०काल म०१८६१ । पूर्णा वेकनसं० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर, नागदी वडी ।

४**३६१. प्रति सं० १७** १ पत्रस० २३ । ब्रा० १२३ 🗶 ८ इञ्च**ा** ले**०काल 🗶 १ पूर्ण**ा **वेष्ट्रतसं० ५३७ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर असपूर ।

४३६२. दशलक्षम् कथा— × । पत्तन ३। छा० १० ×४) इत्ता । मापा-सम्कृत । विषय-कथा । रुकाल × । तें∘काल × । पूर्णे । वेपून न०६७। **प्राप्ति स्थान**—सहारकीय दि० जैन सन्दिर ग्राजीर ।

४३६३. दशालकारण कथा —  $\times$  । पत्रसंग्धा । १० $\S \times Y$  । इत्या भाषा-सस्कृतः। विषय-कथा १०कानः  $\times$  । तेशकानः  $\times$  । पूर्णः। नेष्टनं सग्दरः । प्राप्तिः स्थानं — दिग्जेन मन्दिरं लक्करं जयपुरः।

४३६४, **दशलक्षरा कथा—हरिचन्द ।** पत्र स॰ १० । घा० ११४४३ इस्थ । भाषा-घपम्र स । विषय-कथा । र०काल स॰ १४२४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स**॰ १४**६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष आगे तीन कथाए और दी हुई है

प्रारम्म - ग्रो नमो वीतरागाय ।

वदिवि जिए। सामिया निव मुह गामिय

पयडमि दह लखगामि कहा।

सासय मुह कारण प्रविग्रहितारण भवियहिण सुगृह मत्ति यहा ॥

#### ग्र'तिम--

सिरि मुलसथ बलत घारगीम । सरसइ गच्छवि संसार मिए।। यहचंद पोम नदिमवर', सहचन्द्र भडार उप पद्मधरं 11 जिसाचन्द मूरि सिजियडयसा, तह पट्ट सिहकीर्ति विस्तरस मृति क्षेमचन्द सरि मयमोहहरा, श्री विजयकीत्ति तवस्वीरा तेरा ।। धारिजय समदगासिरे पयगामियं पांडल हरियद विजयसहिय ।। जिरग ब्राइगाह चोइहरय। विरहय दहलक्खमा कह सूवयं ।। उबएसय कहिय गुगुग्गलय । पदहमइ चडबीस मलय। भादव मुदी पंचिम ग्राइ विमन । गुनवारु विसारयरण खतु ग्रमल ॥ गोवागिरि दुग्ग हागाइय । तोमग्ह वस किल्हण समय। वर लबका वमहितल। जिगादास सुधस्य पूरा हण्यालय'।। भज्जावि सुमीला गुग सहिया। गादमा हरिपार बृद्धि स्मिहिय ।। ए। वह जे पढ़िह पढ़ाबहिय। वाबहि बलास्पहि दखसहिय ॥ ते पावहि स्रगर स्कथकर ।

### धत्ता---

सासय मुहरन् अवस्मिहिबन्त् परम पुरिन्मु आराहिमगा । दह धम्मह भाउ पुग सय हाउ हरियंद समिमिय जिस्मवरसा ॥ इति दस लाखस्मिक कथा समाज ।

पाछे पूरमुमोल्बलच्छियंबर।

इसके ब्रतिरिक्त मौनवर्गकथा (सम्कृत) रत्नकोर्ति की, विद्याघर दशमीवत कथा (मस्कृत) तथा नारिकेर कथा (ब्रपभ्रंश) हरिचन्द की ग्रीर है।

४३६४. **दशलक्षाम् कथा-व**० जिन**दास ।** पत्र स०१६ । झा० ४ ४४ इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-कवा । र०काल ४ । ले० काल स०१६४७ । पूर्ण । वेष्टन स०४४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर । ४३६६, दशलकरण कथा । पत्रतः ६ । भाषा-हित्यी । विषय-नवया । रक्तात × । केक्सात नव १६६६ । सूर्ण । बेहुमसक २१३ । प्रास्तिः स्थान-- दिव्यंत्र- प्राप्ता मिदर भरतपुर । चिष्य - न्यत कथा क्रीय में ते तो गई है । प्रयावति कथा भीर है।

४३६७. दान कथा — भारामत्त्व। पत्र स० ८ । ग्रा० ११ ४५ इख । भाप हिन्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$ ।पूर्ण । वेष्टा स० ३६६/८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३६ द्र. प्रति सं० २ । पत्रम० १० । ले० काल  $\times$  पूर्य । वेष्टन स० ४००/६६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४३८६. प्रति स० ३ । पत्र स०२०। ग्रा०११×७३ इन्छ । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्टन स०११ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर वेषेरवालो का ग्रावा (उत्स्थिरा)

विशेष --सीलोर ग्राम मे प्रतिनिधि की गई थी।

४४०० प्रतिसं० ४ । पत्रस० ५६ । द्या०७ ४ ५ इन्छ । ले०काल 📯 । पूर्ण । बेष्टनस० ६७ । प्राप्तिस्थान —दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा।

४४**०१. प्रतिसं० ५ ।** पत्र ग० २६ । प्रा० १० ौ × ६ ्डब्ब । न० कान स० १६२६ । पूर्ण । वैष्टुत स० १४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन तेरहाकी मन्दिर नैगावा ।

४४०२. प्रति सं० ६ । पत्रतः २–३४ । ले॰काल  $\times$  । खपूर्णः । वेग्टनः स॰ ४५ । प्राप्ति स्थानः —दि० जैन तेन्द्रस्थीः मध्यिरं नैस्यतः ।

४४**०३. प्रतिसं०७ ।** पत्र म०३२ । स्रा०६ <sup>१</sup>४. ६ इञ्च । ले०काल सं०१६३७ । पूर्गा । केष्ट्रम स०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन सम्याल मन्दिर नैगावा ।

४४०**१. प्रतिस**ं **० १** । पत्र स०३७ । या० ६४६ इश्व । ले० काल १८६१ । पूर्ण । बेटन स०७७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर गागदी वदी ।

४४०६. प्रसि**सं० १०।** पत्र स०२४। धा० ११५७ इश्वा । ले० काल 🔀 । अपूर्ण । बेप्टन म० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चीगान बुडी ।

४४०७ **प्रतिसं० ११ ।** पत्र स० ३० । स्रा० १० र् ४७ ्रॅं इञ्च । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । बेप्टन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय बूदी ।

४४० म. प्रति स०१२ । पत्र स०२२ । घा० १४६ इ.स. । ले०काल 🗴 । पूर्णे बेष्टन स० १४१ । प्राप्तिस्थानः — दि० जैन मदिर श्रीमहावीर वृदी ।

४४०**६. प्रति सं० १३।** पत्र स० २६। घा० १०१८७३ इन्छ । ले**०**काल १६३७। पूर्ए। बष्टन स० १४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर ब्रुदी।

४४१०, प्रति सं० १४। पत्र सं० २०। घा० म् 💢 ६ इचा से •काल 🗶 । पूर्णावेष्टर्ने सं 🕹 १४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहादीत वृंदी। ४४११. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २८ । या० ११] ४६ है इञ्च । से०काल १६३० माह बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टनस० ७१ १८४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पवायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष - १८ पत्रों की एक प्रति और है।

४४१२. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २६ । घ्रा० १०३ ४ ६ ई इच । ले०कान स० ११५६ । पूर्ण । केवनसं० ३३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४४**१३. प्रतिसं० १७ ।** पत्र म०२६ ।ले० काल स०१६**२६** ।पूर्णं 1 वेष्टन स०६२ । **प्राप्ति** स्थान---दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर बसवा ।

४४१४, प्रति सं० १८। पत्र स० २४। ले० काल स० १६२६ पूर्ण । बेष्टन स० १२४। प्रास्तिःस्थान—दि० जैन नेरहपथी मदिर बसवा ।

४४**१४. प्रति सं० १६** । पत्रस०२६ । ग्रा०१२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इस्र । **ले०काल**  $\times$  ।पूर्ण । बेष्टनस० ५३५ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४४१६. दान कथा:—  $\times$  । पत्र स०६४। प्रा०६ $\times$ ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा।  $ilde{r}$  । तं० काल स०१६२४। पूर्ण । वेष्टन स०१००। प्राप्ति स्थान—वि० जैन सिंदर भावता (शत्र०)

विशेष---- निशि भोजन कथा भी दी हुई।

४४१७, **दानशील कथा—भाराम**ल्ल । पत्र स०७०। माषा हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ४ । ले० काल ९ । पुर्णे । त्रेष्ट्रन स०६। **प्राप्ति स्थान**—दि**०लैन मदिर** दीवानत्री भरतपुर।

विशेष-कटमर मे लिखागयाथा।

४४**१८. दानशील सवाद—समयसुन्दर।** पत्र स० ७। ब्रा० १ × ४ इश्वा । शाया— इत्ही । विषय —क्या । र०काल ४ । ले०काल × । पूर्ण । बेप्रन स० २६१/१७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सभवनाथ पन्दिर उदयपुर ।

विशेष--कोट ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी।

४४**१६. दानडी की कथा** —  $\times$  । पत्र स० ५ । घा० १० $\times$ ४ है इन्छ । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय—कथा । र०कान  $\times$  । ने० कान  $\times$  घपूर्ण । वष्टन स० ३३८-१३२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सन्दिर कोटडियो दूगरपुर ।

४४२०. **हादशत्रत कथा—पं० प्रभ्रदेव ।** पत्र स०६ । प्रा० ११ $\S \times$  ४ इश्व । भाषा—सम्कृत । विषय—कथा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनन० २३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अपपुर ।

४४२१. द्वादशस्त्रत कथा ( ग्रक्षयनिधि विधान कथा) —  $\times$  । पत्रकः ३६ ६ ग्रा॰ १० $\cdot$  ४ इवः । भाषा-सः स्कृतः । विषय-कथा । २० कान  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन सः० २५६ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४४२२. द्वादसन्नत कथा—  $\times$  । पत्रस०६। प्रा०६ $\times$ ५ इश्व । भाषा— मंस्कत । विषय-कथा। र०काल  $\times$ । जे०काल स०१६४५। पूर्णं। बेष्टनस०२०४। प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजोर।

विशेष--- प्रजयर्गंड मे प्रतिलिपि हुई थी।

४४२३. द्वि<mark>ढप्रहार—लाबन्यसमय ।</mark> पत्रस० १ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल×। से०कास × । पूर्ण । वेष्टन स० २००/५६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयसुर ।

विशेष-- प्रादि प्रत भाग निम्न प्रकार है--

#### ग्राटि माग---

, पाय प्रण्मीघ सरसति वरसति ववन विलास ।
मुनिवर केवल घरगार सुमहिम निवास ।
सुरे गायसु केवल घर ते मुनिवर द्विवस्तर ऋषिराज ।
सीहतरी परि समम पाली जिसह सार्या मविकाल ।
कवस दीगपुर मातिगात कुण किमए प्रगट्ट नाम ।
किंदिस किंदिस मुनिवर्ग मातिशा भाव थरी भितराम ।।

### ग्रन्तिम---

सिरि धीर जिल्लेमर सामिन मोहइ सार । मगलकर केवलनाणी दिढ प्रहार तुरै दिढ प्रहार । केवल केर मुणिडमार खरिज लेखाई धार त्याह उतारि काया करी पवित्र । दिला्ष पुरस्दर समय रतन गुरु सुन्दर तमु पाय पामी । सीस लेल लावण्यनमय इस जगह जयवित्र मामी ।

र्डात द्वित प्रहार । ४४२४. दोषमालिका करुप<sup>……</sup> । पत्र न ०६। घा०१०४४ इ.च । भाषा — सस्कृत । विषय — कया।र० काल ४ । ते०काल म०१७७३ ज्येष्ट मुदी १३। पूर्ण । वेष्टुन सं०२६५ । **प्राप्ति** स्थान — विष्कृत मन्दिर लक्कर जयार ।

४४२५. दीपावली कल्पनी कथा—  $\times$  । पत्रत०२४। प्रा०११ $\times$ ५ $\S$ ०वः । भापा— हिन्दी (गर्छ)। विषय—कथा। र०काल  $\times$ । लेकाल स०१६३६। पूर्णे। वेष्ट्रन स०१६५। प्रास्ति स्थान—दि० जैन कप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

४४२६. देवकोनोदाल —  $\times$  । पत्रतः १८ । आ॰ १८ $\times$ १ दश्व । आया—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेग्टन स॰ ११२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर देवलाला (ब्रुदी) ।

४४२७. देवीमह.स्म्यः— imes । पत्रस०६। प्रा॰ ५imes४६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०कात $rac{1}{3} imes$  । से०कात imes । पूर्ण । वेष्टन म०४२। प्राप्ति स्थान-----वि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

विशेष-जैनेतर साहित्य है। मार्कडेय पुराश में से ली गयी है।

४४२ म. **धन्नाच्छपई—मितिशेखर** । पत्रस० १४ । मा० १०**३ ४४ इच । भाषा**—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स० १६७४ । ले०कालस० १६४० । पूर्ण । वेष्टनसं० ११२/६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपथी दौता । प्रारम्भ---

पहिलज परामीय पय कमल वीर जिरादह देव। मविय सुगौ धन्ना तरगो चरिय भरगज तलेवि जिरावर चिट्ट परिभासीज सासरिए निम्मल धन्म । तिह धूरि पससिज जिह नुटइ सवि कम्म ॥२॥

पत्र = पर-

बहुय बचन मिन हरिपयो निसिभरि धनसार। नीमरियो घ्रागिल करी, सहुबह परिवार ॥६४॥ गामि २ घरि २ करह जिउ काम वराक। तऊन पुरुउ हव वरुउ, घिग विग कर्म विपाक।

धन्तिम पाठ-

श्री उबएम गछ मिगगारो, पहिलउ रयसाप्पह गराधारो । गूरा गोयम ग्रवतारे ॥

जय एव सूरिद प्रसीधउ, तामु पट्टि जिरिए जिर जमु लीघी । सयम सिरि उरिहारो ॥२७॥

बनुक्रमदेव गुप्ति सूरीय, सिद्ध सूरि नर्माह तसु सीस ।

मुनिजन सेविय पाय । तासु पट्टि सयम जयवंतउ, गछनायक महि महिमा वतउ । कक्कमूरि गुरुराय ॥२८॥

सयहब्वि ब्यागी पतिसा गसाहारी, गुरावतशील मृत्दर वासारि । वरीय जेसि ग्रसामी ।

तामु सीस **मितशेखर** हरिषहि, पनरहसय चउदोत्तर वर्गामहि । कीयो कवित्त ग्रति चमो ॥२६॥

कीयो कवित्त ग्रांत चर्गा ॥२६ एह चरित धन्ना गउ भाविहि, भएाड गुगाई जे कहड कहावइ ।

जं सपत्ति देइ दान । ने नर मन बिछ्य फल पावड । घरि वटटा सवि रापद ग्रावइ । बिलसङ नवर्ड रिधान ।।३०।।

इति घन्ना चलपई समाप्ता ।

सवत् १६४० ... बुदी ६ शनिवारे । खेतइ रिषनो माइई लिख दीइ ॥

४४२६. **धर्मपरीक्षा कथा—देवच**न्द्र । पत्र स०२६ । ग्रा०१२ ४५ इच । भाषा-सस्क्रत । विषय कथा। र०काल ४ । ले० काल स०१६५५ फागुन मुदी २ । वेप्टन स०१२२ । **प्राप्तिः स्थान** -वि• जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - जगन्नाथ ने ग्राचायं लक्ष्मीचन्द के लिए प्रतिलिपि की थी

४४३०. **धर्म बृद्धि कथा** —  $\times$  । पत्रस० प-१३०। श्रा० ७ $\times$ ४ इच । भाषा — हिन्दी। विषय—कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल सं० १८४२ वैशाल बुदी १। पूर्णं। वेष्टन स० ७०। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मदिर प्रादिनाथ बुंदी।

४४**३१. धर्मबृद्धि मत्री कथा—बख्तराम ।** पत्र स०१७ । या० ६<sup>3</sup>, ४८ दे इ**. व. भाषा—** हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल स०१६६० भासोज बुदी ६ । ले०काल स०१६७४ सावसा सुदी २ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६१४ । **प्राप्ति स्थान**—सहारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-धर्मयुक्त बृद्धि को मत्री के रूप मे सलाहकार माना गया है।

४४३२. नरकनुडाल—गुरासागर। पत्रस० २। घा०१०८४ इञ्च। भाषा— हिन्दी। विषय—कथा। १०कात ४ । ले०कात्र० ४ । पूर्णः। बेष्टनस० २६। प्राप्तिः, स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमची कोटा

४४३३ नलदसयंती चउप $\{-\times 1$  पत्रसः ५६ । म्रा० १ $\times$   $\xi$  द्वा । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेग्टन स०११७ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाला वृदी ।

४४३४. नलदमयंती सबोध—समयसमुन्दर । पत्र त० ३०। धा० १ $^1_2$  $\times$  ४ $^1_2$  इथा । गापा—हिन्दी । विषय—क्या । र०काल स० १६७३ । ले० काल स० १७१६ मगिर मुदी ११ । पूर्म । बेप्टून म० १३६५ । प्राप्त स्थान—महारकीय वि० जैन मन्दिर, प्रजमेर ।

विशेष--- ग्रजयगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

रचना का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है---

मवत मोजनिहुन्दद मास बसान ग्रह्मार । नगर मनोहर मेठनो जिहे। यामपुर्व्य जिलाद । नामुक्य नीर्वनर प्रमाद गाह गरनर गृह ग्रह । नासुक्य व्यवधान निर्माधनि मनुष्ठ कम लहेड । वक्ताय उम कहेट ममयमुक्टर कीयो स्माह नन्मी । चवाई नायस्यति कियो चवामालाम चिन्तन्मी।

इति श्री नल दमयती सम्बन्ध भाषसदेव हात सातकोटी स्वगं वृष्टि ।

४६**२५. नलोपास्यान**— ४ । पत्रत० ४७। या० १२००३ इचा भाषा-मण्डना। विषय-कथा। रकाल ४ । वे० काल ४ । यगुर्ग। बेष्टनस०४२५। **प्रास्ति स्थान**—भट्टाकीय दि० जैन मन्दिर खनमेर

विशेष— राजानल की कथा है।

४४३६ नामकुमारचरित्र— मिल्लवेर्गः । यत्रस् २२। या० १० $\frac{3}{6}$  $\times$ ५ इखः । भाषा-सस्कृतः । विषय-कथा । र०कालः  $\times$  । ले०काल म० १६७५ त्रासांज मृदी १ । पूर्णः । वेष्ट्रनः स० ७० । प्रास्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मिल्दि अजसेर ।

**४४३७. प्रति सं० २ ।** पत्रस० २**६ ।** आ० ६ है ४४ डचा । ले०काल स० १८३० चैत्र सुदी ४ । ब्राप्तुर्गा । बेब्रुन स० ६८२ । **प्राप्ति स्थान**—सहारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष-इमका श्रपर नाम नागकुमार कथा,भी है।

४४३६. प्रति स० ३ । पत्रस०३६ । छा० ६imes imes imes 1 ले०काल imes 1 पूर्म । बेष्टत स० ३४६ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय टि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४४३६. प्रति स०४ । पत्र स०२७ । झा०१२imes ५ इब्ल्व । ले० काल imes । पूर्णं । वेष्ट्रन स०२६७/१४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयपुर ।

8 8 8

विशेष--प्रति प्राचीन है।

४४४०. प्रतिसं० ४.। पत्र स० २–१४.। झा० ११ 🗴 ४ इञ्च। ले० काल 🗴 । झपूरों। बेष्टन स०२४३, १४४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन संसवनाथ मन्दिर उदयपूर।

४४४**१. प्रति स०६।** पत्रस०३-२७। ते**०**काल म०१६१८। स्रपूर्णः। वेष्टन स०२४४/ १३३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मनवनाथ मन्दिर उदयपुरः।

प्रशस्ति—सवत् १६१६ वर्षे गुरु कोटनगरे श्री चन्द्रप्रभ चैरवालये महारक श्री शुभचन्द्र शिष्य मृति वीरचन्द्रेगा जातावरग्गी कसंक्षयार्थं स्वद्रस्तेन लिचित शुगमस्तु । ब्रह्म धर्मदाम ।

४४४**२. प्रतिसंo ७** । पत्र म०२-२०। ग्रा०१०×४ डञ्च । ले**०का**ल × । ग्रपूर्ण । बेष्टन म०२३६-१२६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उटयपुर ।

४४४३. प्रतिसंठ । पत्र म०२०। ले० काल १६०७ । अपूर्ण । बेवृन स०४७, १२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

**विशेष**— प्रशस्ति अपूर्ण है। "ब्रह्म नेमिरास पुस्तकमिद।"

४४४**४. प्रति सं० १ ।** पत्र म० २⊏ । ग्रा०१० ४४ ¦ इश्व । ले० काल म० १७१४ । पूर्णा । वेष्ट्रन म० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्रबाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सवन् १७१४ वर्षे भारी माने कृष्णपक्षे १ युघे श्री भूनसपै बलात्कारनारी सरस्वतीगच्छे कु दकु दाचा-यांच्यं नन्पर्टु भट्टारक श्री पद्मकीति तन्पट्टे श्री सकलकीति साधु श्री दारकादाम ब्रह्म श्री परमस्वरूप प्रनानरामेखा निर्मित । तनितपुर ग्रामेषु सध्ये श्री पाध्वंनाथ भैन्यालय श्रम भवत् ।

४४४५. नामश्रीकथा — ब० नेमिटल । पत्रस० २०। प्रा० १० $\frac{1}{8}$  ४४ ह्वा । भाषा-सस्कृत । विषय कथा । २०काल  $\times$  ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३६ । प्राप्ति स्थान — महास्कीय दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

४४४६. प्रति स० २ । पत्रस० ४१ । आ० १००० ४५६ इ.स. । ले०काल म० १६०८ । पूर्ग । वेष्टनस० २२, १२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियो का, डूनरपुर ।

प्रशस्ति - मवत् १६०८ वर्षे पीच मुदी १४ तिथी भृतु दिने श्री धनोधेन्तुंगं श्री धादिनाय घेंत्यालये मुन्तवे भारतीपच्छे त्रवानकारमणे भी कु दकु दानार्वान्त्रये भ० पचनदिवेश तत्त्रहुँ भ० देवेन्द्रकीतिवेशस्त्रस्त्रह भ० श्री विद्यानदिवेश तत्त्रहुँ भ० श्री भारतिभूषगुदेश तत्त्रहुँ प० श्री लक्षीवदेश तत्त्रहुँ म० श्री वैरियददेश श्री जिनवन्देन निकारित ।

४४४७. प्रति सं० ३ । पत्र स० १६ । ग्रा० १०४ ५ । इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० १२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मदिर चौगान बुदी ।

४४४ म. प्रतिसं० ४ । पत्र त० १ म.। ग्रा० १०imes ५ हरू । ले० काल त० १६४२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन त० २४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति सुन्दर है।

४४४**६. निर्भरपंचमी विधान** - × पत्र सं०३। प्रा०११×५६ हज्जा। माषा-प्रपक्षंग। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्णा । वेष्ट्रन स**०** ६१। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

४४**५०. निर्दोधसप्तमी कथा—बहा रायमल्ल** । पत्रस० २ । घा० १२ $\times$ ५ हथा । प्राप्त-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्गं । वे० म० ५१-१८६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

श्रन्तिम--

जिनपुराण मह इम सुण्णाौ, जिहि विधि ब्रह्मरायमल भण्यौ ॥४६॥

४४४१. निशामोजनकथा— किशनसिंह । पत्रम० २-१४ । ब्रा०१४ × ६० इत्रा । स्राध्या— हिन्दी। विषय-कथा । र०काल स० १७७३ सावन सुदी ६ । ले० काल स० १६१८ । प्रपूर्ण। वेक्टन स० १९७६ । प्राप्तिक स्थान— दि० जैन मिटर दयाना।

विशेष---धादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है---

माधुर बसंतराय बोहरा को पश्यान ।
समझे करवाणराज पाइनी बजानिय ।
रामपुर बाम जाकी मृत मुनदेव मुधी ।
ताको मृत कुण्डामिह कविनाम जानये ।
तिहि निजमोजन स्वजन व्रत कथा मुनी
ता कीरी बीधई मुसागम प्रमानिय ।
मुख्युकि स्वसर व्रद स्वता

#### छत्पय

प्रथम नार्गाश्रय चिन्न दव साथा मय मोहे सिक्तिदि शिव्या नेमिदन करना दुग जोहें। ना धनुनार जुरबी वर्षानका दनरथ पहित। वन निष्मोजन त्यनन करना जोए गृण महित। चौघई कथ तिह एक्प की कियो कियानीहह नाम कवि जो पहन मुनय सरकान कर धनुकम शिव लह सबि ॥४॥

### दोहा

सबत सर्वेत प्रिथिक सत्तर तीन मुजान। श्रावन सित जटबार भृग हर पूर्णता ठान।।६॥ कथा माहि चौपई च्यारमे एक बखानी इकतीसापन छप्पन दोय नव बोधक जानी। सब इक ठीर किये चारसे सन्नह गनिये मुज मित नचु कञ्च छद रूपाकरए। न भनिये। बढ घट जबरन पद मात्र जो होय नखबिमो दीननी कर मुद्ध पढ़ेंवे नज कर जीर कर कवि विननी॥ रचना दुसरा नाम 'नामधीकथा भी है

४४५२. प्रतिसं० २ । पत्रम० ३६ । षा० १० $\times$ ५ $^2_3$  इंब । लेक्शल स० १८१२ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । बेप्टन स० १०६ (ध्र) । प्राप्ति स्थान—य दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

**४४५३. प्रति सं०३।** पत्र मं०४२ । आ०६ $\times$ ४३ डल्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैनपचायती मन्दिर करौली ।

४४५४. प्रति स०४ । पत्र स०३२ । या० १४६ इश्व । ले० काल स० ११४० । पूर्ए । वेग्टन स०७२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टॉक)

४४**५५. प्रतिस०५ । पत्रस०५**२२ । आग् ०१२×५३ इ.च । **के∘काल स्०**१६७६ भादवा बदी २ । पूर्ण । बेष्टुन स०६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रन्तकर ।

४४५६. प्रति सं०६ । पश्रस० २६ । लेब्बाल मि० १६०४ -वैशाल बुदी १२ । पूर्ण । वेट्टन म० २० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवायती मन्दिर अलवर ।

४४५७. प्रति सं० ७ । पत्र म० १७ । ले० काल म०१८१६ । बेप्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायनी मन्दिर खलवर ।

४४५ म. प्रति स० म । पत्र स० ३१ । आ० १० रे ४५ इ.ख । ले० काल स० १८४७ बुदी १३ । पूर्यों । बेष्ट्रनस० ६६ ।**आप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का नैग्रवा ।

४४५६. प्रति स० ६ । पत्रस० २३ । ले०काल स० १८४४ पूर्ण । वेष्ट्रनस० ५७६ । प्रास्ति स्थान---वि० जैन पचायनी मदिर भरनपुर ।

४४६०. निशि भोजनकथा—भारामल्ल । पत्र स० १३ । झा० १०र् ४६ ॄै इत्ता । भाषा— हिन्दी । विषय–कथा । र०काल ≾ । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३३० । प्राप्ति स्थान— दि०जैन मन्दिर दीवनजी कामा ।

४४६**२. प्रति सं**० **३।** पत्र स० १७ । ग्रा० १०imes ३५ इ.चा। ते० काल स० १८०२ । पूर्ण । बेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर नैगुग्या।

४४६३, प्रति सं० ४ । पत्रस० १३ । ले०काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टनस०४३ । प्राप्ति स्थान— तेरहपंत्री दि० जैन मन्दिर नैगावा ।

४४६४. **प्रतिसं० ४.।** पत्रस० १२ । श्रा०१२×६ इचा। भाषा-हिन्दी। पद्या विषय-कथा। र०काल × । से०काल सं० १६५७ । पूर्णा। वेष्टनस० १६८। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बृंदी। ४४६५. प्रतिसं०६ । पत्रस०२-१४ । ब्रा०१२४७ इन्छ । लेक्झाल स १६३७ । पूर्ण । बेष्टन म०१७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्री महाबीर बुदी ।

४४६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २१ । ले० काल स० १६६१ । पूर्णः । वेष्ट्रन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर नागरी व दी ।

४४६७. प्रतिसं० ६ । पत्र ग०२६ । स्रा०७ है 🗴 ४५ इ.च.। लेक्काल स.० १६१८ स्नगहन बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनसं०११६ । प्राप्ति स्थान-— दि० जैन मन्दिर खिननदन स्वामी, बूदी ।

४**४६०. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १३ । आ० १०×७३ इला । ले०काल सं १६३५ सावन बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**—दिः जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

विशेष - दां प्रतियों का मिथगा है।

४४६**६. प्रतिसं० १०।** पत्रस• २१। ग्रा॰७ ४ ५<sup>६</sup> इचा। ले० काल स० १६६१। पूरण । वेष्टन स० १२७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीमान वदी।

विशेष-वदेरी मे प्रतिनिधि हुई थी।

४४७० प्रतिसं० ११ । पत्र स० १४ । आ० १०३ 🔨 ७३ इन्छ । ले० काल 📌 । पूर्ण । बेष्टन स० १०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर आदिनाथ बंदी ।

४४७**१. प्रति सं० १२।** पत्रस० ७। ग्रा० ११४४ इन्छ । ले० काल 🐇 । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४०१ ६७। प्रा**प्ति स्थान**—समबनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७२, प्रति स० १३ । पत्र स० ६ । ले० काल imes । पूर्ग । य० स० ४०२ १०० । प्राप्ति स्थान—-वि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७३. निश्चिमोनन कथा—  $\times$  । पत्र सु०११ । प्रा० ६ $\frac{9}{4} \times 2\frac{1}{2}$  इन्द्रा । भाषा - हिन्दी (पद्य) । विषय — कथा । रुकाल  $\times$  । नेकाल म०१६४७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० =१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैस्पुता ।

४४७४, नंदीश्वर कथा — शुभचन्द्र । प्रसः गव स०११ । या० १०.४४ है इन । भाषा — सम्कृत । पिरयः — कथा । ४० काल ४ । ते लेकाल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६० । **प्राप्ति स्थान** — यायवान प्रवारी हिठ अंत महिन्दु स्वार्वर ।

विशेष --दमं श्रष्टाह्निका कथाभी कहते है।

४४७**५. नंदीस्वर वत कथा।** पत्र स० नर । या०१२३/४६३ इस । आषा—सस्कृत । विषय-कथा। र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेग्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**----व्यवाल वि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४४७६. मंदीस्वर तत कथा — 🙏 । पत्रसः २-६। ग्रा० १०१ ४५% इन्त । आपा-सम्हदः । विषय-कथा । र०काल 🗴 । ले०काल स० १८२७ ज्येष्ठ बुदी २ । अपूर्णे । बेष्ट्रन स० २६२ । प्राप्ति स्थान—१८० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान वृदी ।

विशेष-- जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४४७७. नन्हीस्वर कथा—  $\times$  । पत्रम० ६ । ग्रा० १०  $\times$  ४ $\frac{3}{5}$  इव । भाषा—सस्त्रत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० २०६/६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इनरपूर ।

४४७६. पंचतंत्र—  $\times$  । पत्रम० २ : ६३ । आ० १० $^3$   $\times$  ४ $^3$  द्व । आषा-सस्कृत । विषय-कवा । र० शाल  $\times$  । लें० नाल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन म० ६४६ । आफ्ति स्थान-महारकीय दि० जैन सिंवर क्राजेन :

४४७**६. प्रतिसं०** २ । पत्रस० १०३ । आ० १०३ ४ ४) इत्था। **ले०काल** ४ । पूर्णा । बेष्टन म० ११३३ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन सन्दिर अजसर ।

४४ ह. ०. पद्मिकिया टिप्प्स – प्रमाचन्द्र । पत्र म०२-२० । बा० १०  $\times$  ४५ इस । भाषा-ब्रुपन्न स, सन्द्रत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । ब्रुप्सं । बेप्टन म०२१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर टांडारायितह (टोक) ।

४४६१. प्रचपरकी कथा — ब्रह्म विनय । पत्रस०६। ब्रा०१०३ $\times$ ४३ इन । भाषा-हिन्दी प०। विषय कथा । र०काल म० १७०७ सावण मुद्री २। ले०कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन म० १६२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फ्लंहपुर शेखानाटी (सीकर) ।

विशेष--रधुनाथ ब्राह्मण गुजर गाँड ने लिपि की थी।

श्रन्तिम---

मनार्म मनोतर कही नावग बीज उजानी सही। मन माहे चरियो जानद , सकन गोठ मुनकरी जिला द । मुनम पाइ महलनार , सहावली जीवो जिलार । मुनम पाइ महलनार , महावली जीवो जिलार ।। माथ निषाडो रहे प्रतुत, मेवा करें बईरा भूत । महावती संगुजनी धार, मेवें बरणा किरत है लार ।। नाथ निषाडो रहे प्रतुत, मेवा करें बईरा भूत । महावती संगुजनी धार, मेवें बरणा किरत है लार ।। नाथ जिल्ला विश्वास कही चार, करी कथा मव जन हितनकार । धानक्षुण है प्रानद थानि, भला महाजन घरम निधान ।। देव आहब गुरु माने धारा, गुरुषाहक र सकलमुझाण । पाच गरवी कथा परवान, हितकर वही भविक हित लागि ।

४४६२. **पद्मास्यान**—विष्णुदत्त । पत्र स०१६६। त्रा०१० $\frac{2}{7} \times 2$  इन्छ । भाषा-सम्बन्ध । विषय-काषा । रकारा  $\times$  । तेरु काल स०१६५२ । पूर्ण । वेरु स०१६/१२ । प्राप्ति स्थान—दिक त्रेन मन्दिर प्रवायती द्वती (टॉक) ।

विशेष — सहजराम व्यास नं तक्षकपुर में प्रतिलिपि की थीं। होगीपुर (दूर्ना) में पार्थ्वनाथ के मन्दिर में नेमीचद के पटनार्थ लिखा गया था।

४४८३. पंचालीनी ध्याह्—गुरासागर सूरि । पत्र स०१ । बा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इख । भाषा~ हिन्दी पद्य । विषय-कथा । ४०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०२४८ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन संदिर प्रमिनन्दन स्वामी, बुदी ।

विशेष--- २४ पद्यों में वर्गन है।

**ग्रन्तिम**—सप्ताग्मी हालमइ प्रवालीनो व्याह ।

कहि श्री गुरासागर सृरि जी गजपुर माहि उछाह ।

४४६४. परदारो परशील सङ्भाय-कुमुदचन्द । पत्र स०१। आ०१० ४४ देख। भाषा--- हिन्दी। विषय--कथा। र०काल ४। ने०काल स०१७१७। पूर्ण। बेष्टनसं०२४३। प्राप्ति स्थान---- दे० जैन प्रदिर बोरमली कोटा।

४४६४. परदेसी राजानी सज्भाय $-\times$ । पत्र स०१ । आ०१०  $\times$  ४) डव । भाषा-हिन्दी । विषय-क्का । ५०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२४४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन
सन्दिर योग्याले कोटा ।

४४८६, पर्वरत्नावलि---उपाध्याय जयसागर । पत्रस० २०। आ० ११८६ दथा । भाषा-सस्कत । विषय-त्रत कथा । र०काल स० १७४६ । ले० काल स० १८५१ पीप सुरी ४ । पूर्ण । बेष्टनस० १२५। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर बोरसनी कोटा ।

विशेष —काटा के रामपुरा में वासुपूज्य जिनालय में प० जिनदास के शिप्य हीरानद ने प्रतिलिपि की।

४४८७. परेय विधान कथा —  $\times$  । पत्रस॰ ७ । छा० १० $\frac{2}{5}$   $\times$  ४ इ.च । भाषा — सस्कृत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ स्वानी मानपुरा (ट्रांक) ।

४४८८. पत्यविधान कथा— खुशालजन्द काला। पत्रस०११६। आ० १०८७ इच । भाषा---हिन्दी (पद्य)। र०काल स० १७८७ फागुग, वृदी १०। लेकाल स० १६३८ मावग मुदी १२। पूर्या। बेठून स० ६३। **प्राप्ति स्थान**--- पत्रायनी दि० जैन सन्दिर ग्रलवर।

विशेष-अक्षयगढ़ मे प्रतिलिपि की गयी।

४४ म ६. प**ल्यविधान बतोद्यापन कथा—श्रुतसागर ।** पत्रस्क १६ । आ॰ १२  $\times$  ५ $^{\circ}$  इच्च । भाषा—सहङ्ग । विषय—चत्रा । रक्कार्स  $\times$  । लेक्काल स० १८२६ कानी मुद्री १ । पूर्ण । बेष्टन स०६६ । **प्राप्ति स्थान**—महास्कीय दि० जैन मन्दिर श्रजीमर ।

४४६०. पस्यक्रत फल $-\times$ । पत्रस०११। प्रा०११ $\times$ ४ूँ इञ्च । भाषा—मन्त्रन । विषय—स्था।  $\pi$ ० काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्ण ।बेष्टनस० ६६३। प्राप्तिः स्थान—भट्टान्कीय दि० जैन मिटर प्रत्योगः।

४४६१. पुष्पास्त्रव कथाकोश — मुमुख्र रामचन्द्रः । पत्र स० १४६ । स्रा० १०३ 🗶 इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा र०काल 🗶 । ले०काल स० १६४० वैद्याख सुदी ३ । पूर्णः । बेष्टुन स० १०७२ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । ४४६२. प्रतिसं०२ । पत्रस०१३४ । द्या०६ $\frac{1}{2}$ imes ५६२४ । द्वा । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं०१०६५ । प्राप्ति स्थान — भट्टीरकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

४४**६३. प्रति स० ३।** पत्रस० ११४ । स्रा० १३<sup>२</sup>४ ४ ६२४ । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष-- बूदी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४४६४. प्रति स० ४ । पत्र स० १५६ । झा० १२३४ ४ १३३ च । लेब्बाल स० १८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । बेपून स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष - जयपुर नगर के लश्कर के मन्दिर में साह सेवाराम ने प० केशव के लिए प्रतिलिपि की थी।

४८६५. प्रति स० ५। पत्र स० २४६ । प्रा० १०हैं  $\times$  ४हैं उन्थ । ने० कालम० १६६४ चैन सुदी १। पूर्ण । बेप्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

४४६६. प्रतिस०६ । पत्रस०१०३। घा०१२ $\times$ ५ इश्व । ले०काल  $\times$  । घपूरा । बेष्टन स० ४१६ । प्राप्ति स्थान-द० जन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

४४६७. प्रतिसं०७ । पत्रस० २३८ । म्रा०१०  $\times$  ४३ डश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६२–३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडागर्याम्ह (टोक)

४४६६, प्रतिसं० ६ । पत्रस०१६७ । धा० १० $\frac{3}{4} \times 4\frac{3}{7}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेकृतसं०१२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

४४६६. प्रति सं० ६ । पत्रम० १४८ । ग्रा० ११४५ इञ्च । ले०काल ४ । ग्रपूरों । बेहनसं० १२ । प्राप्तिः, स्थान— दि० जैन मदिर दीवानजी कामा

४५००. प्रतिसं० १०। पत्र स०ः । ग्रा० १३ × ४३ हच । ले०काल स० १४६० बैशाख मुदी ४। पूर्णा वेष्टन स० ११४। **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन ग्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष---प्रणस्ति निम्न प्रकार है ---

स्विन्ति श्री भूतमधे गरण्वतीगच्छे बलात्कारगर्गा श्री कु बकु दाचार्याचान्वये भ० सकलकीति तत्स्ट्रे मुद्दारक श्री बुनवन्धीत तत्पट्टे भ श्री बातभूराग तत्प्युं भ० श्री विजयकीति तत्पट्टे श्री शुभवन्द्र प्रवर्गमाने सवन् १५६० वर्षे वोगाल गृदी ४ णुके देडर वास्तव्यं हु बक्त आतीय साह लाला भाषां श्राविका दाडिमदे तथीः श्रुभी बाई पार्नाल तथा ईष्टर वास्तव्यं हु बक्त आतीय दो देवा लचु आता दो हासा तस्य भाषीं श्राविका हामलदे एतास्या पुण्यास्वकातिकाभियान यन्य ज्ञानावरणादिकांशवार्थं इक तेत्रपालार्थं निकाषित श्रुभ ।

४५०१ पुण्यास्त्रवकथाकोश भाषा—दौतलराम कासलीवाल— $\mathbf{x}$ ा पत्र स० १४७। म्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इत्र्थ । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—कथा । र०काल स० १७७७ भादवा बुदी ५ । ले०काल स १६५५ मागिर बुदी १२ पूर्ण । बेष्टुन स० १५४५ । प्राप्ति स्थान—भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष - कवि की यह प्रथम कृति है जिसे उन्होंने ग्रपने ग्रागरा प्रवास में समाप्त किया था।

४**५०२, प्रतिसं० २**। पत्रस० २०० से ३८८ । प्रा० १०१४७३ इञ्च । ले**०काल 🗴** । अपूर्ण । वेष्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । ४५०३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २०० । ग्रा० ११४७ इन्थालं० काल 🗴 । श्रपूर्ण । वेष्टन स० १६१६ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर श्रतमेर ।

४५०४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २४४ । प्रा० १० $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इन्त्र । ले०काल स० १८५१ ध्रायाढ बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० ५५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष-पुस्तक हेमराज क्रती की है। छवड़ा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४५०५. प्रति स० ५ । पत्र स० २१० । झा० १० ×५ इन्त्र । ले०काल × । झपूर्यः । बेष्टनस० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर (बृदी)

४४,०६. प्रति सं०६ । पथ स० १२५-३६४ । द्या० १०६६ इ.ख.। ले०काल ४ । अपूर्ण। वेष्टन स०१५३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

४५०७. प्रति सं०७ । पत्रतः २४३ । बा० १०ॄँ ८ न्है टखा । ले० काल स०१६३४ प्राप्तीज सदी १४ । पूर्णा विष्टुत स०४१ । प्राप्ति स्थान—(द० जेन पार्थनाथ मदिर टोडारायसिह (टोक)

विशेष-भैरलाल पहाडिया चुरु वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५० म्म्यतः संबद्धाः पत्रस्य २२७। आ०१०३४६ इच्छाः लेल्हाल् 🔀 । धुर्गाः वेशुनुस्य । १०मा । प्राप्तिः स्थान--- दिवजन पत्रायता दुनी मन्दिर (टोक)

विशेष - अन्तिम पष्ठ आधा फटा हुआ है।

४५१०, प्रति सं० १० । पत्र म० २२२ । आ० १३ > ६ इ.ज.। ते० कारा म० १६२३ वैज्ञास इदी ७ । पूर्ण । बप्टन म० २१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मस्दिर चोवरियान मालपुरा (टी.ह)

**४४.११. प्रति सं० ११ ।** पत्रस० २४६ । सा० १० ८ ६ इच्च । लेकाल म० १००३ । पुर्सा । वे**वत स०** २६ । **प्राप्ति स्थान - – ४० जैन मन्दिर** जीवस्थित मालपुरा (टोक)

४**५१२. प्रति स० १२** । पत्र स० २३७ । या० ११ ८६ । तत्व । ते०काल ... । अपूर्ण । वेकृतस० ७६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मल्दिर कार्टाउयो का नैगावा

**विशेष** - गुटकारूप में है लेकिन ग्रवस्था जीर्माहै ।

४**४१३. प्रतिसं०१३** । पत्रस०२४६ । या०११×५६च्छ । लेक्काल स०१८३२ । पूर्णा । वेष्टन स०१०१ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मंदिर भादवा (गज०)

४**५१४. प्रतिसं० १४।** पत्रस० १२५। ल०कान 🔀 । श्रपुर्गा । वेष्टन स० ४। **प्राप्तिस्थान**— दि० जैन वडा-पनायती मन्दिर डींग ।

४**५१५. प्रति सं०१५** । पत्र म० २६१। ले० काल म० १६७० ज्यान्ठ बुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स०२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचावती बडा मंदिर डींग ।

४**४१६. प्रति सं० १६।** एव मख्या १४१। ले०काल स० १८८२ ब्रासोज सुदी ४। पूर्ण । बेष्टत सं**० ८२। प्राप्ति स्थान**- दि० जैन नेप्रसायी सरित दसया । ४४.१७. प्रतिसं० १७ । पत्र स०३५२ । द्या०१२ 🗴 ५ १ इ.ख । ले० काल 🗴 । पूर्णा। वेष्टन सं०१०३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना।

विशेष - बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी।

४५१ **. प्रतिसं०१ ः ।** पत्रस० ३२६ । ग्रा०१०imes७ इञ्च । ले० काल स० १८६६ ग्रायाबबुदी २ । पूर्णा । वेय्टन स०६६-१२ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष--थाएग निवासी गोपाललान गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

४**५१६. प्रतिसं० १६** । पत्रस० २२५ । झा० ११×५ु इन्छ । लेक्काल स० १७८८ मगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष---खोहरी में लिखा गया था।

४५२०. प्रति सं०२०। पत्र स०१८७। घा०१२१४७१ इश्वः। ले० काल ४ । धपूर्णः। वेष्टन स०३४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

४५२**१. प्रतिसं०२१।** पत्रस०१-३६। बा०१२×१ इच्छा लेक्काल × । स्रपूर्णा विष्टन स०४५। प्राप्तिः स्थान — दि०जैन मदिर वयाना ।

४५२२. प्रतिसं० २२ । पत्र सं०२८४-३८४ । ले०काल स० १८७० चैत मुदी ६ । प्रपूर्ण । वेष्टनस० ४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैत मन्दिर वयाता ।

विशेष -- जीवारामजी मिश्रा वैर वालो ने प्रतिलिपि कराई थी।

४५२३ प्रतिसं०२३ । पत्र म०२००। आ०११ × ५१ इत्था। ले०काल × ।पूर्ण। वेष्टुन स०४४६ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिरलक्कर जयपुर ।

विशेष--ग्रन्थ प्रणस्ति अपूर्ण है किन्तू महत्वपूर्ण है।

४५२४, प्रति स० २४ । पत्रस० १६३। प्रा० १२३ ४७% इङ्च । लेक्सल स० १६२६ पौष इदी ५ । पूर्ण । यपून म० १५२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन छोटा मदिर ख्याना ।

४५२५. प्रति सं० २५ । पत्र स० २३६ । ते० काल सं० १९६६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरनपुर ।

४५२६ प्रतिसं० २६ । पत्र म० २६५ । ले०काल स० १८१३ । पूर्णः । बेष्टन सं० ३०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मस्दिर भरतपुर ।

विशेष - बेनीराम चांदवाड ने ग्रन्थ लिखवाया था।

४४२७ प्रति स०२७। पत्र सं०१४६। ले॰काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स०३१४। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन प्रवायती मंदिर भरतपर।

४५२६. प्रति सं० २६ । पत्रस० १३४ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ३२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

४५२६. प्रतिसं० २६ । पत्र सं० १०६ से २२३ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वेष्टुन सं० ३२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर । ४५३०. प्रतिसं० ३०। पत्र स० १२६। ले॰ काल १८८६। पूर्ण। वेष्टन स॰ ३२६। प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर।

४**५३१. प्रतिसं० ३१।** पत्रस० २०१। घा० १३ × ५१ इङच । ले०काल स० १८७१ आषाढ सुदी ७। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन अग्रवाल पचायती मन्दिर, धलवर ।

४**५३२. प्रति स०३२।** पत्र स०२ ८०। ले०काल म०१८६६ आपाद मुदी ७। पूर्ण। वेष्टन स०४७/४४। **आस्ति स्थान**— दि० जैन पश्चायती मदिर झलवर।

४५३३. प्रति सं० ३३ । पत्र स० २६० । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टुत स० ४८/८५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रायती मदिरै ग्रानवर ।

४५३४, प्रतिसं० ३४। पत्रस० २६०। घा० १२ x ४ देवा। लेक्काल स० १८५८ चैत्र णुक्ता ६। पूर्यो। बेष्टुनस० १४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल पचायती मंदिर खलवर।

४**५३५. प्रतिसं० ३५ ।** पत्र स०५०६ । प्रा०११३/४५ इला । ले०काल म०१६५२ । पर्यो । बेक्रन म०२१२-६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्रगण्य ।

४५३६, प्रति सं० ३६। पत्र म०३०५। घा०१२३८६ इ.व.। गे० बाल म०१८८४ ग्रासोज मुदी १०। पूर्ण। येटन म०३५ **ं प्राप्ति, स्थान**—टि० जैन मन्दिर फतेहपूर जेपाबाटी (मीकर)। विशेष—कतेहपुर वासी हरकटराय भवानीराय प्रयक्षाल गर्ग ने मित्र राधाकृत्या मे मानर्गा त्यार मे प्रतिक्षित करवार्ष थी।

४५३७. प्रति सं० ३७ । पत्र म० १-१८६ । द्या० ६ x ४ १ दश्व । ले०काल । प्रयुग्गं । वेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (पूरी) !

४५३८. प्रतिसं० ३८ । पत्र म० ३३६ । ग्रा० ११८ ७) । ले० काल म० १८५३ मावाग बुदी ३ । पुर्मा । बेट्टन म० ६-७५ । **श्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर गावर्षनाय इन्टरगढ (कोटा) ।

४**५३६. प्रति स० ३६ ।** पत्रस० २३४ । बा०१०¦ ८४ डचा। ले०काल स०१८४६ । पूर्णा। वेकनस० ८५/४४ । **प्राप्ति स्थान**--वि० जैन मन्दिर कोर्टाटगो का इसग्पर ।

विशेष---शरगढ नगर मे श्राचारजजी श्री मुखर्कीतिजी बाई रूपा चि० तर् शिष्य पडित मानक चन्द लिखी।

४५४०. पुष्पास्त्रवकथा कोशा— ४ । पत्रम० ३२७ । ग्रा० १२१ र ५० हुँ छ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-क्षा । र ० काल ४ । ४० काल म० १६१६ वेगाच मुद्दी ७ । पूर्ण । वेगुनम० १७६ । प्रास्ति क्ष्याल—हि० केष पत्राची मिदिर करीती ।

४४४९. पुष्पास्त्रकथा कोशां — ४ । पत्र म० ६८४. । आ० ७}४३१ इ.स. । भाषा-हिन्दी । के० काल स० १६७० भारो गृदी ४ । पूर्ण । बेष्टन न०४१,४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगासी मन्दिर करोती ।

विशेष — लकडी का पुट्टा चित्र सहित बडा मृन्दर है।

४५४२. पुण्णासम्बक्ता—पं० रह्यू। पत्र स०१-८१। भाषा-प्रपन्न ग। विषय-कथा। र•काल ४। ले० काल ४। प्रपूर्ण। बेष्टन स०११७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा। विशेष-भीम लगेने गे बक्षां पर स्थानी किर गई है। कथा साहित्य ] [ ४६१

४४४३. पुरंदर कथा— मावदेव सूरि। पत्र स०७। ग्रा०११रॄे×४ इत्वाशाला—हिन्दी पद्याविषय— कथा। र०काल ×। तेलान काल ×। पूर्णा वेल्टन सं०१०३ ६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन महिन्द वहा बोनाथी दोना।

४५४४. प्रतिसं० २ । पत्र स० १३ । ले०काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६८१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर सरनपुर ।

४५४५. पुरपांजिल कथा सटीक $-\times$ । पत्र स०४। प्रा० १०१४ म $^1_0$  इन्छ। भाषा— प्राकृत-सस्कृत। विषय—कथा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० १२६०। प्राप्ति स्थान- महास्कीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका महिन जीएाँ है।

४४१६, पुष्पांजि**त विधान कथा**— × । पत्रस० ११। या० ११×४३ इ.च.। भाषा— सन्कतः । विषय—कथा । २०काल × । ले० काल ×। पूर्णः । बेष्टन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—अप्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- वानगराय कृत रतनथय पूजा भी दी हुई है।

४५४८. पुष्पांजली तत कथा---गंगादास । पत्र स० ८ । आ० १०३ ४५६ ६ च । आषा---सस्कृत । विषय - कथा । र०काल ४ । लेकाल स० १८६८ फागुण मुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७४/ १०४ । प्राप्ति स्थान---(द० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडागयसिंह (टोक) ।

४४४६. पुष्पांजि**त तत कथा—मेधावी** । पत्रस० ३१ । प्रा० १०३ $\times$ ४३ व्या । माषा— सस्कृत । विषय—कथा । र०काल स० १४४१ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० दद । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर रोवानजी कामा ।

४५५०. पूजा कथा (मैंडक की) स० जिनदास । पत्रस० ६। ह्या ०११ ४४ इन्त । भाषा -हिन्दी। विषय-कथा। र०काल ४ । ने० कान ४ । पूर्ण। बेष्टन स० ३०५-१०६। प्राप्तिः स्थान— सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

४४४१. प्रत्येक बृद्ध चतुष्टय कथा— × । पत्र स०१४ । झा० १० ×४१ इन्छ । भाषा— संस्कृत । विषय—कथा । र०काल × । लेब्काल स०१७०३ भादवा । पूर्ण । वेष्टन स०११४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४४५२. प्रष्टुम्न कथा प्रबन्ध—म० **देवेन्द्रकीत्ति ।** पत्र स०५५ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७६२ चैन सुदी ३ । ले०काल स० १८१२ । पूर्षा । वेष्टन स० २५८ १०३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वारपुर ।

गुटका साइज है। मलाश्यढ में श्राराद ब्राह्मरण ने प्रतिलिपि की थी।

४४४३. प्रियमेलक चौपई-- × । पत्रस०८०। ग्रा०४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय--कथा । र० काल 🔀 । से०काल 🗴 । ध्रपुर्ण । वेष्ट्रन स० ३७४ । प्राप्ति स्थान-समवनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

विशेष-- गृटका है। दान कथा मे प्रियमेलक का नाम ग्राया है एक दान कथा ग्रीर भी दी हुई है। ४४४४. प्रियमेलक चौपई-समयसन्दर । पत्र स० ६ । ग्रा० १०३×४३ इन्छ । भाषा-राजस्थानी (पद्य)। विषय - कथा। र० काल सं० १६७२। ले०काल सं० १६८०। पूर्ण। वेपन स० १३। प्राप्ति स्थान-वि० जैन मदिर सेरहपथी दौसा ।

### मंगलाचरश--

प्रराम सद्गुरु पाय, समरु सरसती सांभरगी। दान घरम दी पाप, कहिसि कथा कौतक भरगी। घरमा माहि प्रधाना, देता रूडा दीसियट । दीघउ बरसी दान, ग्रस्तित दीक्षा ग्रवमरह ।:

# सोर्राठया दोहा-

उत्तम पात्र तउ एह, साधन इदी जउ स्भः तउ। लहियइ लाखि श्रद्धेह, श्रटलिक दान जउ श्रापियइ ।। श्रति मीठा ब्राहः र. सरवरा देज्यो साधना इ । मुख लहिस्यउ श्रीकार, फल बीजा सरिया फलउ ॥४॥ प्रथिवी माहि प्रसिद्ध, सरिगपुर दान कथा सदा । प्रियमेलक अप्रसिद्ध, सरस घरणु सम्बन्ध छई।। मुख्य मिलड जड सेवग् मृखुता जेउ घस्यड । उमारण सहि ग्रंगित्र के मुक्त बचिन को रस नहीं ।।

х राग वमराडी ढालछठी जलालीयानी-तिरए ग्रवसीर तर सीथ दूरि, रूपवती करड **ग्र**रदास । जीवन मोराजी कुली री काया तावड ग्राकर उरि । पापिग्पी लागी मनड प्यास ॥१॥

पासीरि पात्रउहतरसी थई विस्। एक मद नख माय जीशा। कठ सूकड काया तपडरि जीभड़ बोल्यंड न आया। ×

# दुहा--

कथा घाट मुकी किठर कातर्राहतकुमार। नगर कुमर ते निरखता निरखी त्रिए द्वे नारि॥ के इक दिन रहता थका विस्तरी सगलइ बाद । कुमरी किया त्रिए। तपस्या करइ परमारथ न प्रीछना।। बोल एक बोलइ नहीं दिव्य रूप बुध दह। मन पान को ग्राम्सि घई नउते खापइ तेह ॥

×

राजामती ब्रावी रली माचउ एह नउ मत्त । जिम तिम बोली जेइ जइंचिट पट लागी चिन्त ।)

#### चरितम वशक्ति--

सवत सोल बहुत्तरि मेडता तगर मकार।
प्रियमेलक तीरथ च उणहरी कोषी दान स्विकार ॥
कवर उमावक कोलकीर ' जेसलमेरा जागा।
कत्रुर औद्योश जिल्ला प्रवाद मुल्लात्वा ॥
इना चोउपई एक विजेप छहरि मगबट मालति ॥
दोशी पदगर वह देख जोरि नहि मगदर माली ठाम।
वीजी पदगर्द वह देख जोरि नहि मगदर मुली ॥
आया मकलवद मुन दिसारि मगयरमुदर तमु सीम ॥
जयवता गृक राजिया श्री जिलावद मुरीर राय।
ममसमुदर तमु मिलिंब करी इस भगाइ उनकास ॥
ममसमुदर तमु मिलिंब करी इस भगाइ उनकास ॥
ममसमुदर तमु सिलंब मामनता सु विनोद।
ममसमुदर कहा भागवता भावना सु विनोद।

सर्वयाथा -- २०३० । इति श्री दानांपिकार त्रियमेलक तीर्थ प्रवध सिहलमुत चउपई समाप्त ।। सबत् १६⊏० वर्षे मार्थसर सुदी १४ दिन लिखन वरथमान लिखन । (बाई भमरा का पाना) ।

४५,५५. पुष्पसार चौपई—पुष्पकीति । पत्रसल ७ । ब्रा० १० ४४ दे इस्त । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रुकाल म० १६६० मगसिर मुदी १० । ते० काल म० १७०० । पूर्ण । वेष्टन म० २८६ । प्राप्ति स्थान— १२० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष-यह सागानेर में रचा गया एवं जाउरण ग्राम में लिखा गया था।

४५४६, **बुधारुमी कथा**— × । पत्रस० ३ । घा० १२८५ इश्व । माषा-सम्कृत । विषय-कथा । र०काल ≿ा ले० काल स० १६४० भादवा बुदी ७ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४**१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष--- जैनेतर माहित्य है।

४४५७. **वैतालपर्चावशतिका - शिवदास ।** पत्र स०३६ । ब्रा० १०४४ उचा । साया— सस्कृत । विषय--- कथा । प्रकाल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१४३**४ । प्राप्ति स्थान**—स० विष्ठ जैन मन्दिर क्रजमेर ।

४**५५८. प्रतिसं० २** । पत्र म० ४२ । खा० १० ४ ४डश्व । ले**०काल ४ । पूर्ण** । वेष्टन म० ३०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

विशेष--- २४ वहानियों का सम्रह है।

४५५६. **बैतालपच्चीसी**— ४ । पत्रस० २०। सा०१० ४४ ¦ इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय — कथा । 7० कान ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस०१=६ । **प्राप्ति स्थान** — सट्टास्कीय दि० जैन प्रदिर सबसेर । ४५६०. प्रति सं० २ । पत्र स० ७ । घा० ११×४ $\frac{1}{2}$  इन्त्र । ले०काल  $\times$  । घपूर्ण । बेष्टन स० २१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी)

विशेष --- प्रति प्राचीन है।

४५६१. बकसीर कथा — (धनदत्त सेठ की कथा) नशमल। पत्रस॰ ३३। नाया— हिन्दी। विषय कथा। र०काल स० १७२५ प्रापाठ मुदी ३। लं०काल स० १६१६। पूर्ण। वेष्ट्रन स० ६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

**४५६२. मक्तामरस्तोत्र कथा**— × 1 पत्र म०१२ । भाषा -सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टत स०३२/५०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संभवनाथ मदिर जुदयपर ।

४६६२. भक्तामरस्तीत्र कथा—विनोदीलाल । पत्र मण्डरण्डा साण्डर् ४ ६ है हत्त्व। भाषा—हिन्दी (प प्.)। विषय—कथा। र०काल सण्डरण्डमात्रम् सुदी २ । ले०काल ४ । पूर्णः। वेष्टत सण्डर् र। प्राप्ति स्थान—दिल्जैन स्वयत्त्रमा स्वर्दार्गण्या

४५६४. प्रतिसं० २ । पत्र स० २०६ । घा० १२ × ५१ दश्व । से०काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । येष्ट्रन स० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेरहपथी दीसा ।

विशेष — बसवाम श्रितिकांप हुई।

४६६५. प्रति सं∘ ३ । पत्रस०१६३ । प्रा०१० ॄं ४ ६ डब्ब । ते० काल ४ । पूर्ण ।
वैष्टत स०६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर थी महाबीर बढी ।

४५६६. प्रति स०४। पत्र स०२०४। आ०११८५ इच्छा। ले० काल । पूर्ण। बेप्टन स० ८३। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महातीर बदी।

४५६७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०६ । आ० ११३  $\times$  ५ ३ इच्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

४५६६. प्रतिसं ० ६ । पत्र स० फुटकर पत्र । या० १०५४६ इव्य । ले० काल 🗶 । स्रवृत्तं । वैष्टन स० १२ । प्राप्ति स्थान — श्रवताल पवायनी दि० जैन मन्दिर स्रलवर ।

४५६८. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १८७ । ब्रा० १२ × ७ इ.च । लेगन काल स० १६१४ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे०स० ७३ । प्रास्ति स्थान-प्रवशल पनायती दि० जैन मिल्ट बलवर ।

४५७०. प्रतिसं० मः । पत्र स० ३१८ । ले० काल स० १८६६ चैत सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० १४४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-- नालजीमल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

४५७१. प्रतिसं ०६ । पनस० १४२ । आ० १३ ४६ इन्छ । लेकाल स० १८३६ चैत बुदी ६। पूर्ण । वेष्टन म० १०। प्राप्ति स्थान ~िंद० जैन पनायती मन्दिर बयाना ।

विशेष - श्लोक स० ३७६० । प्रधान ग्रानन्दराव ने प्रतिलिधि की थी ।

४५७२. प्रतिसं० १० । पनस० ४१ । मा० १०८५ इचा । ले०काल 🗴 । भपूर्ण । बेप्टन स० ४५ । प्रास्तिः स्थान---पनायती दि० जैन मदिर कामा ।

४४७३. प्रतिसं० ११। पत्र स० १३८। मा० ११×४३ द व । लेक्सल स० १६०४। दुर्सा । वैष्टन सं० ८४। प्राप्ति स्थान—दि० जेन मन्दिर फतेहपुर मेखाबाटी सीकर । कथा साहित्य ] [ ४६५

विशेष—प० क्षेमचन्द ने प्रतिलिपि की थी। स० १६२६ मे धनन्त चनुदंशी के बतीद्यापन में साहजी सदाराम जी के पौत्र तथा चि० ग्रमीचद के पत्र जोखीराम ने ग्रंथ मन्दिर फतेहपुर में विराजमान किया।

४५७४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १७६ । ग्रा० १०%६ इ.च । से०काल स० १६५४ कासिक सुदी ११ । पूर्स । वेष्टनस० २५/२६ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन सीगागी मदिर करीली ।

विशेष-- २ प्रतियो का मिश्रम है।

४**५७५. प्रतिसं० १३ ।** पत्र स० १६२ । ब्रा० ६३ ४ ६ $\xi$  इच । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३६-२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

४**५७६ प्रति सं० १**४ । पत्रस० स० २१३ । द्या**० १**२ ४ ५३ डचा। ले० काल सं० १८०२ । पूर्यो । बेष्टतस० २४ **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सण्डेलबाल मन्दिर उदयपुर ।

४५७७. प्रति स**० १५ ।** पत्रस० १६६ । स्ना० १३ ${}^3\chi = {}^3_1$  इज । ले० काल  $\chi$  । पूर्ण । बेक्रन सं० १० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर बेखावाटी (सीकर) ।

४५७६ मनतामर स्तोत्र कथा—नशमल । पत्र स॰ ६१ । आर्०६ ४ १ है इ.स. भाषा-हिन्दी पद्य । विषय कथा। २० काल स० १८२६ जेट मुदी १० । ने० काल x । पूर्णावेष्टन स०७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर करीली ।

विशेष-करौली में लिग्धी गई थी।

४**५७६. प्रति स**०२ । पत्रस०५२ । घा०११ × ४ है इला । ले०काल स०१८२६ । पूर्सा। बेष्टुत स०१२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन खंडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष--कल्यारापुर में बाबा रतनलाल भौता ने प्रतिलिपि की थी।

४**५ ८०. प्रति सं० ३ ।** पत्र स०१६८ । लेकाल स०१६२१ । पूर्ण । वेष्टन स०१२२ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पचायती मन्दिर ग्रस्तद ।

४**५६१. प्रति सं**० ४ । पथ स० ४७ । ग्रा० १०% ४६ इञ्च । ले०काल स०१६३० फागुन मुदी ७ । पुर्यो । **बेब्रन स०१२३ । प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष बगानीसन छावडाने करौनी मे प्रतिलिपि करवाई थी।

४५६२. सद्रबाहुकथा—हरिकिशन । पत्र स०३६ । स्ना०१२ × ४१ इव । भाषा नित्री पद्य । विषय कथा । २०काल × । ले० काल स० १८७५ सावगा सुदी ३ । पूर्ण । बेप्टन स०१४७ । प्राप्ति स्थान—विः जैन मदिर थी महाबीर वृंदी ।

४**१८३. भरटक कधा** —  $\times$  । पत्र न० १३ । ब्रा० ११ $\times$ ४ $^3$  दुख । भाषा-सरकृत गर्य । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  पूर्ण । वेष्टत स ० १४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलदाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- २७ कथाएं है।

४५८४. मिलसयस्तकहा—धनपालः । पत्र स०२-६० । स्रा०११ $\times$ ५ इत्था भाषा— सपभंशः । विषय—कथा । र०कालः  $\times$  । ले०कालः  $\times$  । स्रपूर्णं । वे०सं०६५७ । **प्राप्ति स्थान**— महास्कीय दि० जैन मन्दिर म्रजमेर । ४**५८५. प्रतिसं० २** । पत्रस० १३८ । ग्रा० १० imes 4ृङ्खा । ले०काल imes । प्रपूर्ण । वेष्टुनस० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ जूदी ।

४५८६. भविष्यदस् कथा— त्र ० रायमस्त । पत्रतः ००। घा० ६३ × ४ डलः । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । २० कान म० १६३२ कार्त्तिक मुदी १४ । ते०काल म०१८२६ माथ बुदी २ । पूर्णं । बेध्दन स० २५ । प्राप्ति स्थान —पनायती दि० जैन मन्दिर बयाना ।

४**१८७. प्रतिसं०२** । पत्र स०४६ । आ०१०×६<sup>9</sup> इन्छ । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । बेष्टन स०१०१ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटयो का नैगाना ।

४५६६. भविष्यदस्त कथा—  $\times$  । पत्र स० ३१ । आ० ११३  $\times$  ६ $) इज्य । भाषा-हिन्दी । विष्य-कथा । र०काल <math>\times$  । ले० काल  $\times$  ।अपूर्ण । वेष्टुन म० १३३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन अधवाल प्रवासनी महिर अलवन ।

विशेष--३१ ने आगे पत्र नहीं है।

४५८६. मधुमालती कथा— × । पत्र म० २८-१५६ । ग्रा० ६ × ५ दश्व । भाषा-हिस्ती प० । विषय-कथा । २० काल ४ । ले० काल स० १६२५ वैशाल तुवी १३ । अपूर्ण । वेष्ट्रन म० ३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडागायगितः ।

४५६० मनुष्य सबदुलंस कथा— ्रा पत्रस्व २ । बाव १०० ८ ४ ३ ६०० । सापा-सस्कृत । विषय-कथा । रवकान ४ । तेव कान ४ । पूर्ण । बेष्ट्रनस्व २७४ । **प्राप्ति स्थान**—विव जैन सन्दिर बारमधी कोटा ।

४५६१. मलयसुन्दरी कथा—जयतिलकसूरि । पत्र म० २-५६ । प्रा० १२  $- \ell_0^2$  पत्र । भ्रापा—सम्ब्रत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । रो० काल स० १५२० । वेष्टुन म० ७६५ । सपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — ग्रंथ म० ६३२ । मबत् १५२० वर्षे माघवदि मशले तिस्थित वा कसल स्टाप्टसादात् त. पाचाकेन गडामासी प्रतु। शुभमस्यु।

४५.६२. मलयमुन्दरी कथा--- ८ । पत्रसः ४० । ग्रा० ११ ४ ६) इ.स. । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । रजकाल ४ । लेक्काल सक ४ । श्रपूर्ण । वेष्ट्रन सक २० । प्रास्ति स्थान । दिव वैस मन्दिर तेरहपथी दीमा ।

विशेष --४० से आगं पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है।

४५६३. महायस**बिद्याधर कथाः—व० जिनदास** । पन सः १० । आ०१० × ४८ ट्रा**ब** । भाषा—हिन्दी (पदा) । तिषय-कथाः । र०काल × । ले०काल भागप्पं । व०ग०१≂ । **प्राप्ति** स्थान – कडेलवाल दि० हैन मन्दिर उदयपुर ।

१५६४, महावीरनिर्वास् कशा $\leftarrow$  (। पत्रसः ५। प्राः ७  $\times$  ५ इतः । आया-सस्क्रतः । वियत-कशाः र विकास  $\times$  । वेश काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्ठतसः २०१। प्राप्ति स्थानः – दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुरी ।

४५६५ माघवानल कामकंदला चौपई—कुशललाम । पत्र स० २-१२ । प्रा० १० ४ ४८६च । नापा-राजस्थानी । विवय-कथा । रज्जान स० १६१६ कामृग मृत्री १४। ने० काम स० १७१४ । प्रपूर्ण । चेष्टन स० २५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर दबनाना । विशेष --नाई ग्राम मध्ये लिखत ।

४५.६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३१ । पा० ६ $\times$ ५३ हल्ब ।ले० काल स० १८०३ चैत्र बुदी ५ । पूर्णे । बेष्टन स० १५६ । प्राप्ति स्थान—(द० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

850

४५६७. माघवानल चउप $\S - \times$ ापत्रस॰  $\sim$ । खा॰ ६ $\frac{3}{4} \times 4\frac{1}{2}$  इचा। भाषा—हिन्दी पदा। विषय—कथा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टनसं०७०६ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि॰ जैन मान्दर अजमेर।

विशेष - प० जगजीवन क्शल ने प्रतिनिधि की थी।

४५६**८. मुक्तावली बत कथा —सुरेन्द्रकीस्ति ।** पत्रस० ४ । झा० ११ ४४ इखा । माषा—हिन्दी । विषय-मध्या । पूर्ण । बेष्टन म० ११६ ! **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

विशेष — गुरेन्द्रकोत्ति सकलकोत्ति के शिष्य थे।  $ilde{x}$ १६८ - मैष्यकुमार का चौडात्या— गणेस। पत्र स $\circ$ २। म्रा $\circ$ १०  $\times$ ४१ इचा। भाषा- हिंदी। विषय कथा। राज्याल  $\times$ । ते $\circ$  काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टत स $\circ$ १। प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मिंद बोरानी बोटा।

४६००. मोन एकादशी वत कथा—जहा ज्ञानसागर । पत्रस० १२६-१६६/३१ पत्र । ग्रा० ११४-१६५/३१ पत्र । ग्रा० ११४-१६ । भाग हिन्दी (पद्य) । विषय्-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १८६६ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दोसा ।

विशेष —दीननगवजी तरापथी की बहु ने लिखा था।

४६०१. मृगवमंकथा —  $\times$  । पत्रस्त ४ । म्रा० ११ $\xi$   $\times$   $\chi_{\eta}^2$  इ.स. । मापा — सस्कृत । विषय – कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १६६/२२ $\chi$  । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नैमिनाय टांडारावसिङ (टांक)

विशेष - गिरधरलाल मिश्र ने देवडा में प्रतिलिपि की थी।

४६०२. मृगापुत्र सज्काय $--\times$ । पत्र स०१। प्रा०१० $\times$ ४ इ.स.। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल  $\times$ । वेकलाल  $\times$ । पूर्छ। वेहन स० २४१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरासी काटा

४६०४. रतनाहमीररी बात $-\times$ । पत्रस० २४-४१। झा०  $\times$  ४ उत्थ । भाषा-राजस्थ नी गद्य। विषय-कया। २०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन स० ४४०। **प्राप्ति स्थान**-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजनेन ।

विशेष-- वडे ग्रन्थ का एक भाग है।

४६०५. रत्नपाल खउप $\xi$ — साबतिलक । पत्रतः १२ । प्राः १० $\times$ ४ इत्व । भाषा -हिन्दी । विषय—कथा । र०काल स० १६४१ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २५३ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष---प्रति जीर्ग् है।

४६०६. रस्तन्नयम्बतकथा—देवेन्द्रकीति । पत्रम०६। आ०१२ $\times$ ५३ इच । भाषा-सस्हत । विषय-कथा। र०कारा  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्श। वेग्टन म०१४६६। प्राप्ति स्थान – भट्टारकीय दि० जैन मदिर स्रजेमर ।

४६०७. रस्तत्रश्रक्षया—मुनि प्रभाजन्द्र । पुत्रक्षः । ग्रा॰ ११ x ४३ इश्वः । भाषा-सस्तृतः । विषय-पूजाः । र०कालः  $\times$  । ले०कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनः स॰ ६६ । पारितः स्थानः—दि॰ जैन स्थेलवासः मन्दिर उदयपुरः ।

४६०६, रस्तत्रयकथा— $\times$  । तत्र स०४। प्रा० ११ $\times$ ४ ्रे इस्त्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०कार  $\times$  । ते० काल म० १८६० मगस्सिर बुदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १०७ । प्रास्ति स्थान — मद्रारकीय दि० जैन सन्दिर अन्तेर ।

४६०६. ररनशयकया— × । पत्र स०४। आ०११४० ६ च । भाषा-सस्कृत । । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स० १६३६ आसीज मुदो ११। पूर्ण । बेष्टनस० १२१४। प्रास्ति स्थान-स्थापकीय दि० जैन मदिर अजेग ।

४६११. रस्तत्रप्रकथा टब्बा टीका सहित । पत्रतः २ । प्रा०११ $\frac{3}{2} \times \frac{1}{2}$  टब्ब । भाषा — संस्कृत । विषय नथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० ६०-२०० । प्राप्तः स्थान — दि० जैन सन्दिर टोडागयसिह (टोक)

४६१२. रस्तत्रयक्षया— $\times$  । यस्त०६। ब्रा० ११ $\times$ ५ इच । भाषा -हिन्दी । विषय -कथा । र०काल्  $\times$ । ले० कान  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन म० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपयी मिन्दर मालपुरा (टोक)

४६१३. रस्तत्रप्रविधानकथा—त्रः श्रृतसागर । पत्र स॰ ६। प्राः ११ $\times$ ४२ च । भाषा—सस्त्रत । विषय—कथा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स॰ २३६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

४६१४. रस्तत्रश्चिष्णानकथा-पद्मतीद । पत्रस्व ७ । सा० ११ × १ इ.च.। भाषा-मस्कृत । विषय-कथा । १०कान × ते०कान × । पूर्ण । वेग्टन म० ३२७।१३४ **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयोग ।

४६१४. रस्नशेखर रस्तावतीकथा । पत्र स० १६। ग्रा० ११  $\times$ ४ $\}$  इन्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—क्या । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेन्टन स० २१२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर प्राप्तिनन्द स्वामी बूदी ।

४६१७. रविवारकथा—रङ्घ् । पत्रस०४। भाषा-ग्रपन्न सा। विषय-कथा। र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्णः । वेष्टुनस० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

४**६१८. रिविचार प्रबन्ध—क िननदास** । पत्रस**्**र। ग्रा० ११ x ४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ले०काल स० १७३४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

#### प्रशस्ति--- निम्न प्रकार है----

सबत १७३४ वर्षे ब्रामोज सुदी १० णुक्ते श्री राजनगरे श्रो मुलसधे श्री ब्रादिनाथ चैन्यालये भट्टारक श्री क्षेमकीर्तिरतदारनाये मृति श्री धर्म भूषसा ततृ जिप्य ब्रह्म बाघजी लिखित ब्रह्मरायमारग पठनार्थ ।

४६१६. रविवतकथा--मुरेन्द्रकीर्ति । ण्यसः १४। प्रा॰ ६ $\times$ ४. इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल स॰ १७४४ । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ २५० । प्राप्तिस्थान—दि० जैन महिर बोरसली कोटा ।

#### म्रादिभाग---

प्रथम मुमरि जिनवर चौबीम चौरहरो बेचन मुनि ईस । गुमरी मारद भनित अनत, गुरु देवेडकीलि महस्त ।। मेरी मन दक उपत्री भाव, रविश्वत कथा करन को चाव । मेरी तुक होन जु सक्षद करों, तुम गत पर कवि नीककै घरो ।।

#### श्रन्तिम माग---

गुरेन्द्रकीति प्रव कही रिव गुन रूप प्रनूप सब । पिड नुमु कवि गुपवर लीजें, यूक मुखाक श्रव गढ गोराकल गाम नो, गुभवान बलानी । मबत तिकम भूष गई, भली मत्रह में जानो ॥ नो जपन प्रवालीम जेट मुदी रसमी जानो बार जो मगलबार हस्त नक्षत्र जु परियो तव । हरि विबुध कथा मुरेस्टर रचना मुखत पुनजु प्रनन्त ॥

४६२०. रविद्यतकथा-विद्यासागर । पत्रस०४ । घा० १४४ इच । माषा-हिन्दी ।विषय-कचा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १८-१६८ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टोंक)

#### यारस्थ--

पचम गुरु पद नमी, मन घरी जिनवाणी।
रविवत महिमा कहु ससार गुन म्राग्य द्वाराणी।।
पूरव दिसि सोहे गुरेण, काश्मीर मनोहार।
बागारसी नेह मध्य सार नगर उदार।।१।।
स्यायवत नरपनि निहा सप्तार्थ सोहे।
पूरवाल नाम मोहामरणो गुणी जनमन मोहे।।

तेह नयरे धन करो करी धनवत उदार। मतिसागर नामे सुश्रेष्ठी शुभमनि भडार।।२॥

### ग्रस्तिम---

विधि जे बत पालि करि मन भावज धारणह ।
समिकत फंत मुरग गति गया कहे जिन इस बाएगे ।।
मन वस काया मुद्धे करी बत विध जे गार्व ।
ते नरनारी मुख वहे मिंग मागृक पावर ।।३६।।
श्री मुत्तसरे महण हवी गछ नासक सार ।
धमयचंद्र सूरि वर जयो वह भव्याचार ।।
तेह एद प्रगृमीन कहे सति मुत्तांवत बाएगी ।
दिवानाय वेद मुगा मिंन आएग द बाएगी ।।३६।।
इति रविजन कथा सुरगं

४६२१. रक्षाबंधनकथा -- ब्रु० ज्ञानसागरः। पत्रस्य २ । ब्रा० १०३४ है । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय---कथा । रुक्तल × । लेक्काल स० १८७६ पीप सुदी ६ । ब्रेट्ट स्थानि--स्थान---भद्रारकीय दिव्यंत सन्दिर अजसर ।

विशेष - प॰ देवकरसा ने मौजमाबाद में प्रतिनिधि की थी।

४६२२. रक्षाउचनकथा-- विनोदीलाल १ पत्र म०  $^{\circ}$ ा भाषा-- क्रिट्री (पछ) । विषय $\cdot$  कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल म० १६१७ । पूर्ण । बेपून म० १७६ । प्रास्ति स्थान -- दि० जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर ।

४६२३. रक्षाबंधनकथा—  $\times$  । पत्र स० ७। आ० १३)  $\times$  ८ इध । आपा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६२। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चीमान बूंदी।

४६२४. रक्षाबधनकथा— × । पत्र स० ६ । ग्रा० ८ ¦ ४४ इःच । भाषा सन्द्रन । विषय– कथा । र०काल २ । ले**०काल स०** १८७७ प्रापाट बुटी १० दुर्गा । बेप्टन स० ११६२ । **प्राप्ति स्थान —** भद्राक्तीय दि० जैन मंदिर अवसर ।

४६२५. रक्षाबंधनकथा— $\times$  । पत्रस्त १ । प्राः ११ $\frac{1}{2}$  ४ १ व । भाषा— हिन्दी । विद्यय—कथा । र०काल  $\times$  । गे०काल स० १८८० कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टुनस० ११४७ । प्राप्ति स्थान—स्थाधिय दि० जैन मन्दिर प्रजनर ।

४६२६. रक्षाविधान कथा -सकलकोति । एव स० ४ । प्रा० ११३ $\times$ ४३ इखा । माषा - सस्कृत । विषय -कथा । र०काल  $\times$  । वेनकाल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० ६६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर प्रजनेर ।

४६२७. प्रतिसं०२। पत्रस०४। मा०१२४४ इच । ले०काल स०१८१७ माघ सुदी१। पूर्णे। वेप्टन स० ११३। प्राप्तिस्थान---- दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वमी बूदी। ४६२८. प्रतिसं० ३ । पत्र म० ६ । ग्रा॰ ५×४ इश्व । ले॰काल × । पूर्ण । बेप्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

४६२६. रात्रिविधानकथा—ः ४ । पत्रस० २ । भाषा-सरहत । विषय-कथा । र०काल ४ । ले० काल ४ । प्रपुर्स । वेष्ट्रन स० १०३।५**० प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का, हुगरपुर ।

४६३०. रक्षांख्यान--रत्ननिदि । पत्रस० ४। आ० १०र्४४ इञ्च । भाषा—सस्का । विषय-कथा । र०काल ४ । ले०काल स० १७०४ । पूर्ण । बेप्टनस० ११४ । **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन अध्याल मन्दिर उदयपुर ।

४६३१. राजा विक्रम की कथा— ६ । पत्र स० ३६ । ग्रा० १० ४४ द्रञ्च । भाषा-हिन्दी प० । विषय-कथा । रुकाल ४ । लेक्काल ४ । अपूर्ण । वेष्ट्रन म० १००-६ । प्राप्ति स्थान—दिक जैन मन्दिर बडा बीसपथी दीमा ।

विशेष-ग्रागं के पत्र नहीं हैं।

४६३२. राजा ह**रिखंद की कथा**— ⊠ापत्रस**ः** २३। धा॰ प्र¥पॄे देखा भाषा-हिन्दी । विषय-कथा ार्यकाल ा से काल ४ । पूर्णा । **बेप्टनसं∘** २७**५ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सदिर कोशसकी कोटा ।

४६३३. रात्रिभोजन कथा—बहा नेमिदस् । पत्र म०१६। ब्रा०११४४) उत्र । भाषा— सम्बन्त । निषय-वथा । रक्काल × । नेक्काल म०१६७७ । पूर्ण । बेग्रन स०२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन स्वेतवान मन्दिर उदयपुर ।

प्रणस्ति निम्न प्रकार है --

मतन् १६७३ वर्षं कातिक मुद्दी ११ गुरी थी मुलगभे सरस्वती गच्छे बलात्कारयणे थी कु दकु दा-वार्यात्वयं भ० थी णुभक्तद्र तत्पट्टे भ० मुमतिकीनिदेवा तत्पट्टे भ० थी गुणुकीनिदेवा तत्पट्टे वारिभृषस्य तत्पट्टे भ० श्री रामकीनिदेवारयदास्ताये ब्रह्म थी गेपराज तत् शिष्य शिवजी पठनार्थ ।

४**६३४. प्रतिसं० २** । पत्रस**० ६ । छा० १२ % ५<sup>5</sup>, इन्त**ा निकाल म० १७६६ । पूर्ण । **बेक्नस**० २५१ । **प्राप्ति स्थान**— प्रथवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

**४६३५. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १२ । या० १०×४ इन्छ । ले०काल स० १०२६ फागुगा बुदी १३ । पर्गा। बेक्नस० १४३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

विशेष -- भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने पं० जिनदास को प्रति दी थी।

४६३६, रात्रिभोजन कथा—भे० सिहनंदि । पत्रस० २१ । आ० १२५ ४ ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल- ४ । वे० काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० ४४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन प्रवासी मंदिर करौली ।

विशेष-पत्र १६ से भक्तामर एवं स्वयभुस्तीत्र है।

४६३७. रात्रिभोजन चौपई—सुमितिहंस । पत्र स०११ । प्रा०१०४४ ृत्व । भाषा-हिस्दीपद्य । विदय–कथा। र०काल स०१७२३ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१२१ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेरहणधीदौमा।

### प्रन्तिम--

रात्रि भोजन दोष दिखाया, दीनानाथ बताया जी ।१।। श्रचल नाम तिहाँ रहवाया, दिन दिन नेज सवाया जी।।२।। धन २ जे नर ए ऋत पाल इ, भोजन त्यागी टाल इ जी। नव २ तूर सदा तिया भाखइ विलसइ लील विसालइ जी। सतरह सड तेवीस बरसङ हे जह हीयड उहरसङ्गी। मगसिर बढि छटि वर बूध दिवसड चउपई कीश्री सबसइ जी ॥३॥ श्री खरतर गछ गगन दिगादा श्री जिमा हरण मीरदा। माचारिज जिन लर्बाध मुस्मीदा, उदया पुनिम चदाजी । श्री जिग्गहरच सूरिद मुसीसइ, सुमति हस सुजर्गायइ जी। पद उबभाग्र घरत निमि दीमै भासै विभवा वोसडवी । विमलनाथ जिनेस प्रसादह जाय तार्राण सुनसादह जी। रिद्धि बद्धि सदा ग्रागादह सघ सकल चिर नदह जी। ग्रमरसेन जयसेन नौरदा थापः परमानदा जी। जयसेना रागी मुखकदा जस साम्बी रवि चदा जी। साथ-शिरोमिंग गुग गाया संगला रद मिन भावा जी । जीभ जनम सफली की काया भिंहह सुगर्ग मन्हाया जी ।। ६।।

### द्यादिभाग-

सुबुधि नवधि नव तिथि समृद्धि स्वाप्तपद श्रीकर । पासनाह पयपगावता वमु उस हुवड विसनार ।। श्री गुरु सानिधि नही रमगी भोजन पाय । कहिस्यु शास्त्र विचार सु भगवत म थ उपाय ।।

४६३८. राजिमोजनत्याय कश —श्र तसागर। यस्त २२। ब्रा०१० ४४ इश्व । माया-सस्कत । विषय-कथा। रक्काल ×। लेक्काल म० १७४८ ज्येष्ठ बुशे ४ । पूर्णे । बेष्टुनमं० १४६२ । प्रास्ति स्थान--महटारकीय दि० जैन मन्दिर ब्रजनर ।

४६३६. रासवशरसायन-केशराज । पत्रम० ६४ । सा० १०१,४४१ इ.स. । भाया-हिस्सी प० । विषय-कथा । रक्काल स० १६० कालीय सही १३ । तं० काल स० १७३० । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ६४-६३ । प्रास्ति स्थान —१० जेन मन्दिर वा बीन पथी होता।

> चिशेष — प्रारम्भ का पत्र पटा हुया है प्रतः ११ वें पत्र ने प्रारम्भ किया जाता है। जबूर्तापह केश्व भरत भलत, लाग्नगरी थानिक निरमलंड। निरमलंड थानिक पुरी लंका होग तंत्र गांधम जुड़। प्रजिता जिनवर सागद बार्ड मृत्य खात्र हुई। महारक्ष मृत्र पार्ट थागी प्रजित स्थामी हालिए।। चरम्ण पामी मोक्ष पहुँतंत्र चन्ना मृतिवर सालिए।।११।।

राक्षस राजा राजकरी घरणड धवसर जाएी।
तप संयम तराउ धवसर जारी।
पुण्य प्रारणी देर राजन मृत मरणी
राज धापी पही सयम नही मोज सोहामणी।।
धनस्याता हुया मूर्णत समद दलया जिन तरण।
कीति धवल नरेहरी केड रास धाइवर सगढ़।।१८॥

### प्रश्तिम--

सवत सोलै अगीडरे, आछउ आसो माम निथि तेरिस । धनरपर माहि ग्राणी ग्रनि उल्हास, सीता ग्रावै रे घरि राग ।।ढाल।। विद्वयं गछि गछ न यक गिरुड गोतम नउ ध्रवतार । विजयवा विजय ऋषि राजा की यह धर्म उद्घार ॥ धर्ममृति धर्मन उ घोरी धर्मतणो भडार। लिमा दया गुगा केरउ सागर सागर क्षेत्र उदार ॥६१॥ श्री गुरु पद्म मुनीश्वर मोटौ जेह नउवश। चउरामी गछ मे जागी तउ प्रगट पगाइ परमस ।।६२।। सस पटोचर गुग्गकरि गाजै गुग्ग सागर जयवत । कद्दनुतन कलप तरु कलि में सूरि शिरोमिंग सन ।।६३।। ए गुरुदेव तरगौ मुपयाइ यथ चढिउ मुप्रमासा । ग्रथ गुले गिरि मेरु सरील उनवरस माहि बखाए। ॥६४॥ एव वासवि ढाल संघति वचन रचन सविसाल । रामयको रे रसायण नामा ग्रंथ रवित्र सुरसाल ।। कवि जन तउकर जोडिकरेरे पहिन सुधरदास । पाचा श्रागे तउ विच वउ जल हु श्रद्दम्। श्रव्यास । श्रक्षर भने ढाल जुभने रागज भगड जोड़। बाचता रे चमन ने भो रस नही उपजड़ कोड़ ॥३७॥ श्रक्षर जारगी ढाल ब जारगी का गज जारगी एह । पाचा आरो बाव मार्था उठाजि बिड अति नेह मध्या। जय लगमायर नाउजल गाजै जब लगसूरिज चाद । केशराज कहें तब लिंग ग्रंथ करत ग्रानद ।।६६॥

### कानडा--

रामलक्ष्मरा क्षते रावण सभी सीना नी चरी। कही भाषा चरित साखी अचन रचन करी खरी।। सघ रंग विनोड वक्ता क्षते श्रोडा मुख मणी। केशराज मुनिद जपै सदा **हर्ष वर्षा**मणी।।३००।। ४६४०, रामसीता प्रवध-समयमुन्दर । पत्र स०१-७६ । घा०१० $\times$ ४ इच्छ । भाषा-हिन्दी पछ) । विषय-कथा । ७० काल  $\times$  । ने० काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०१७४ । प्राप्तिः स्थान--वि० जैन मन्दिर दवल ना (वृदी) ।

४६४१. रूपसेन चौपई— × । पत्र स० २२ । आ० १० × १३ डखा । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेट्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष--- २२ से ग्रागे पत्र नहीं लिये हये है।

४६४२, रूपसेन राजा कथा—जिनसूरि। पत्रसः ४३ । स्राः  $\xi^1_* \times V^2_*$  इथा । भाषा— सस्कृत । विषय कथा । रंकान  $\times$  । वे॰ कान  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स॰ २१३ । प्राप्ति स्थान—िव॰ जैन मन्दिर बोरमती कोटा ।

४६४३. रोटतीज कथा—  $\times$  । पत्र सं०१ । ग्रा० ११  $\times$  ४ $१ १ १ १ । भागा—स स्कृत । विषय-कथा। १० वान <math>\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वे० स० १२४६ । प्राप्ति स्थान—भट्टास्वीय दि० जैन प्रक्रिय प्रकोर ।

४६४४, **रोटतीज कथा**— ४। पत्रस**्**२। घा० १०<sup>9</sup>, ४,१८४ । भाषा-मन्कृत। विषय-कथा। १० काल ४। लेकाल ६। पूर्ण । बेष्टनस०१६८ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टास्कीय किंठ जैन मध्य प्रकार।

४६४५, रोटतोजकथा— \ । पत्र न०३। प्रा०१०×४३ इत्व । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा। र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । केटन स०२३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर पार्थनाथ सीमान युदी ।

४६४६, रोटतीज कथा—  $\times$  । पत्र म०३। था०  $\mathcal{E}_{i}^{0} \times \mathcal{E}_{i}^{0}$  टब्ब । भाषा—मस्कृत । विषय—कथा । रूकार्ग  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० ५६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन सोगाणी मन्दिर करोनी ।

विशेष ---

मजन सन गुनर्धसमें ता ऊपर नव जान। भारो मुद त्रिनिया दिना बृद्धवार उर खान ॥६३॥ एक रान दिन एक मैं नगर करीली माहि। चुकी वैदराग ही करी कथा मुखदाय ॥६४॥

४६४६ रोहतीजकथा—गुरानिट । प्रत्रकः २ । आ०१०१  $\times$  ४३ इन्छ । प्रापा–सस्कृत । विषय–कथा । रुक्त  $\times$  । लेककल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस०६२ । प्राप्ति सानः—दिव जैन मन्दिर प्राप्तिन्दन स्वार्ग वंशे ।

४६४६. प्रतिसं०२ । एवं स०६ । या०७ 🗙 ५ इन्छ । ले०काल स०१६५३ । पूर्ण। वेष्टुन स०६१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर प्राप्तनन्दन स्वामी ददी । ४६५०. रोहिस्पी कथा—  $\times$  पत्रस०१६ । म्रा०१ $\xi$ १४ $\xi$ इल्च । भाषा-हिन्दी (नष)। विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्स । वैष्टनस०१३७० । प्रास्ति स्थान—भट्टास्कीय दि० क्षेत्र मन्दिर स्रजनेर ।

४६**५१. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १४ । ले०काल स० १८७३ पौष बुदी १३। पूर्ण । **वेष्टनसं०** १२७१ । प्रा**प्ति स्थान**—अट्टारकीय दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

४६५२. रोहिस्सी**वत कथा—सानुकी**ति । पत्र सं॰४ । प्रा० १० $\frac{3}{6}$   $\times$  ५ इख । प्राप्त १० $\frac{3}{6}$   $\times$  ५ इख । प्राप्त स्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६५३. रोहिएपी वत कथा— x । पत्रस० ११ । प्रा० १० १४ ४ । इख । भाषा -हिन्दी (मध)। विषय-वथा। २० काल × । ले०काल म० १८६४ वैभाल मुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ११६४ । प्राप्ति स्थान — भद्राकीय दि० जैन मन्दिर ध्वमेर ।

४६५४. रोहिरागी वत प्रवाय—प्रश्न वस्तुपाल । पत्रसः १४ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रक्ताल सः १६५४ । लेक्साल 🔀 । पूर्ण । वेष्टन सः ११/१३१ । प्राप्ति स्थीन—सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है एव पत्र चिपके हुए हैं। श्रादि स्रंत भाग निम्न प्रकार हैं।

## प्रारंभ वस्तु छंद ---

यांगु पुरुष जिन नमुंते सार । तीर्थकर जे बारमो सन बहित बहु दान दातार सार ए। सम्मा बरण सोरामणो तेथ्या दिपि मृत तार ऐ। बाल क्रांचारी स्वडो सत्तरि काय उन्नत सहुनन। बम् पूज्य राम नाथनु नियुष्ण विजयतेथी मान कुलि निरमन। जन समाइ जालोमि कठिन कनाई-तुबिचार।

#### रागमहहार--

तह पद पक्क प्रमामीन रास कह रसाल । रोटिमो वन नामो मिलो सुमाग्यो बाल गोपाल ॥१॥ सारदा स्वामिन वर्ता सुब सह मुक्त लागू पाय । विधन मित्र वूरिट जिल्लाम निर्मेत मित्र याचि ॥१॥ भावन विजन गहु सामनो कह बीमनी कर जोडि । सवन सभानि निर्मेल हुकैन पाडि सोडि ॥१॥

# घंतिम-दूहा

पुत्री ग्राधिका जेह तारे स्त्री लिंग करीय विशास । सरिंग गया सोहामणा पाम्पा देव पद वास ॥१:॥ पुत्र प्राठे सयम लीयोरे वासु पुत्र्य हसूसार । स्वर्ग मोक्ष दो पामीया तप सासते सार ॥१॥ रोहिस्सी कथा बत साभनीरे श्रीस्तिक राजा जास्ति । नमोस्तु करी निज बानिक गयो भोनित मुख निरवास ।३।। नर नारो के बन करि मादना भावि वग । अशोक रोहिस्सि विध ते लहि उपज्य पुष्य प्रमग ।।४।। साबकी नयर मोहामाना राय देश मभारि। रास करीसि कडडो कथा नस्सि श्रनुसारि।।४।।

वस्तु--

मूलस्रथ महम्म २ सन्मती गच्छ सणगार । ब्लात्कार गग्ने प्राप्ता गुनवन्द्र गान्य मत्रीयवर । तस्य पद्यक्त माकृतर गुग्गानीर्गत मार मुख्कर । तस्य पद्यक्त मकृतर गुग्गानीर्गत गुव्चिमाल । तस्य वर्गो नगी सदा बॉलि बहा बस्तृपाल ।

वोहा---

विक्रमराय पिंह सुगो सबच्छर मोतमार । चोवनो ने जागीद भाषात सास गुरकार ।।१।। इकेत पत्र मोहानगो रे नृतीयानि सोमनार। भी नीमीजन भुजन भनु गन पुल्ह चौतार।।१। पहि स्थान से सामित पति सामा बहु साव। बह्यवस्तुमान सुधु कहि तेहानि भव जन नाव।।३॥

इति रोहिए। वन प्रबंध समान्त ।

४६४४. लिब्धिविधान कवा--पं० प्रमुदेव । पत्रस्य ११ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। रक्ताल ४ । लेक काल स०१६७७। पूर्ण । बेप्टन स०४०७, १२१ । प्राप्ति स्थान-सम्बनाध दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है ---

विशेष -- फतेहपुर में लिखा गया था।

सबत् १६७७ वर्षे भ्रामोज नृही १३ नुके श्री मुलमधे सरम्बतीयच्छे बलात्कारमणे कुंदकुदा-वार्याच्ये महागक श्री शामकीतिदेशस्त्रास्तामा क० श्री मेधगत तत् शिषय त्र० सन्त्री पटनार्थ। श्री हत्वा प्राकारे श्री पार्यनाय चैत्रात्ये कोटारों जनी भागां जमाणित तथी मृत कोटारी भीमकी इसं लिखा विभाव क्या तिच्यत त्र० श्री मेदराज तत् जिल्याय तता।

४६५६, लब्बिविधानात कथा—िकशनसिंह । पत्रसः १७ । ग्रा० १० ४६ १४ । भाषा-िहन्दी प० । विषय-कथा । र०कान स० १७६२ फागुग गुरी ६ । लेक्सल स० १६१० मयस्रिर वदी २ । पूर्ण । बेस्टन स० १३१ । प्राप्ति स्थान—िंदर जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

४६५६. प्रति स० ३ । पत्रसं० २२ । धा० ६ $\S \times \S$  इञ्च । के०काल imes । पूर्ण । बेहुतसं० ३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सीमाणी मन्दिर करौली ।

४६५६. लक्ष्मी सुक्रत कथा —  $\times$  । पत्र सं०७ । ग्रा० १०  $\times$  ४ है इस । भाषा - सस्कृत । विषय-कथा । र० कान  $\times$  । ले० कान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस्०११८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन ग्राप्रवाल प्रयावती मन्दिर ग्रान्तरः

विशेष--कनक विजयगरिए ने प्रतिलिपि की थी।

४६६०. बर्द्धमान स्वामी कथा: मुनि श्री पद्मनिन्द । पत्र स०२१ । प्रा०११  $\chi$  ४ $\chi$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\chi$  । लेकाल मं०१५३७ फ ल्युन सुदी  $\chi$  । बेहन स०१६०। प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर लक्षकर जयपुर ।

४६६१. **जनकशाकोश** — श्रुतसागर । पत्र स० स७ । स्रा० १२ $^2_i$   $\times$  ५ $^3_i$  इच । भाषा— सन्द्रत । विषय — कया । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६३ । **प्राप्ति स्यान** — दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष--२४ वत व बाबो का समह है। ब्र तिम पल्यवतिवान कथा अपूर्ण है।

४६६२. प्रति स० २ । पत्रस० १४४ । प्रा० १०३ × ५३ इन्छ । लेक्सल 🗴 । पूर्ण । बेप्टन न० ५६ । प्राप्ति, स्थान-—वि० जैन मदिर अभिनन्दन स्थामी बूंदी ।

४६६३. प्रति स० ३ । यत्रस० ७२ । बा० १२imes१ । लेक्सल imes । बेटून स० १७० । ब्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान — दि० जैन म० लक्कर, जयपूर ।

विशेष--प्रथम ७ पत्र नवीन लिखे हुए है तथा ७२ से धारे पत्र नहीं है।

४६६४, प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२८ । ले॰काल १७६८ चैत बदी ११ । पूर्ण । बेप्टन स० ४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रचायनी मन्दिर डीग ।

४६६५. त्रतकशाकोश—देवेन्द्रकोति । पत्र सं॰ ७६। प्रा॰ १२ $\frac{3}{7}$  ×  $\frac{1}{7}$  दवा । साधा— सस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ने॰ काल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ १०७४ । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४६६६.— प्रति सं०२ । पत्र स०१३३ । झा०१०३ ४६६चा । ले०काल स०१ ८ ॥ मगसिर बुटी ८ । पूर्णा । वेष्टन स०१८१ । प्राप्ति स्थान— भट्टाप्कीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४६६७. **प्रतिसं० ३।** पप्रस॰ २-६२। द्या० १२<sup>\*</sup> ४४<sup>\*</sup> इखा से०काल सं०१८७३। पुर्या । बेष्टन म० १२६-५६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का **इ**'गरपुर ।

४६६८, ख्रतकथाकोश—ख॰ नेमिदसः । पत्र स०१६८ । ब्रा॰११ $\times$  $\times$  $\frac{1}{2}$  डला । मापा—सस्कृत विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल स०१८५३ । पूर्णं । वेष्टन सं०१६३ । प्राप्ति स्थान—मद्रारकीय वि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४६६६. **बतकराकोश-मिल्लमूबरा** । पत्र स०१६६। ब्रा०१२५५३ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय कथा। र०काल × । ले० काल स०१६०६ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेप्टन स०१०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुँदी । ४६७०. **बतकथाकोशः —मु० रामचन्द्र।** पत्र सं०११०। घा० ११ $^2$ २.५ इच । माया-संस्कृत । विषय कथा कोश । र० कार  $\times$  । ले० काल स०१७=३। पूर्ण । बेष्ट्रन सं०१४ । प्रास्ति स्थान —दि० जेन मन्दिर पार्चनाव, चौगान **व**ंदी ।

४६७१ स्वतकवाकोश्च सकतकोति । पत्र सं० ४६ । स्रा० १२ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । माषान संस्कृत । विषय-कवा । र० काल  $\times$  । ते० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०१ । प्राप्ति स्थान | दि० जैन लडेरवाज मदिर उदयपुर ।

विशेष—लिले प्रधीराज प०लेनसी साहदत्त। स०१७६६ ब्रावाड बुदि ३ बुवे उदैपुर रास्ता अगर्तासहराज्ये।

४६७२. **ततकयाकोश — पं० ग्राप्नदेव ।** पत्रस**० १०**४। ग्रा० १२४४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय का ।। र० काल ४ । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६४४१३४ । **प्राप्ति** स्थान — वि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष --दीमक ने खारखा है। प्रणस्ति-सबद् १६३७ वर्षे मगसिर मुदी ७ रबी। देन महावजी खिलानुमोठ नेदी पाटणी। उठ श्री जबारती पठनार्थ।

४६७३. **बतकथाकोश** —  $\times$  । पत्र स० ८० । प्रा०१११ँ ४४ इच्छ । भाषा-सम्बन्धा । विषय-कथा। १० काल ४ । मे० काल स०१८२६ भारता बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०११३८ । प्राप्ति स्थान—स्टारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजेपेर ।

विशेष - कथामी का सम्रह है।

४६७४ व्यतकथाकोश —  $\times$  । पत्रसु० २१२ । ब्रा० १ $\xi$  ४ $\xi$  ६ $\xi$  दश्च । भाषा-सम्बन्ध । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । २०काल स० १८३२ व्यापाड सुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४८ । प्राप्तिः स्थान — भट्टास्कीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-माह्यराम जी गूजर गौड ने अर्जनगर मे प्रतिलिशि की थी।

४६७५: व्यतकथाकोय $-\times$  । पत्र स० १०६ । प्रा॰ १० ४ ७, इ.स. भाषा-सहकृत । विषय-कथा ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वट्टन स० २३० । पूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---विभिन्न कथात्रो का सप्रह है।

४६७६. **प्रतक**थाकोष $--\times 1$  पत्र स० ४४ । म्रा० ११ $\times$ ४ इखा । सामा-सस्कृत । विषय-कथा । २० कान-  $\times$  । ते० कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४०-२३। **प्राप्ति स्थान** -१६० जैन मन्दिर कोटहियों का ुगरपुर ।

विशेष---निम्त बन कशास्रों का सम्रह है -

₹.	प्रत्टाह्निकाबन कथा	सोमकोति ।
₹.	प्रनादत कथा	ललितकीर्ति
₹.	रत्नत्रय कथा	,,
٧.	जिनरात्रिकथा	

٧.	ग्राकाण पचमी कथा	n
٤.	दशलक्षाणी कथा	,
७.	पुष्पाजलि व्रतकथा	,,
۲.	द्वादश वृत कथा	"
.3	कर्मनिजेरावत कथा	"
<b>१</b> ٥.	षट्ग्स कथा	"
११.	एकावली कथा	,,
१२.	द्विकावली ग्रत कथा	विमलकीर्ति ।
१३.	मृतः।वलि कथा	सकलकीर्ति ।
१४.	लब्धि विधान कथा	प० अभ्रः।
<u>۲</u> ۷.	जेष्ठ जिनवर कथा	श्रुतसागर।
₹€.	होली पर्वकथा	,,
	चन्दन पष्ठि कथा	,, u
	रक्षक विधान कथा	ललितकीति ।

४६७७. ब्रतकथाकोश $-\times$ । पत्रस०१२४ । ब्रा०११ $\times$ ६ इथा । भाषा-सस्हत । बिपय-कथा। र०काल  $\wedge$ । ले०काल स०१८४१ पीष बुदि १ । पूर्णः। बेष्टनस०२१४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मंदिर इन्दरगढ (छोटा)।

४६७६. स्नतकवाकोश $-\times$ । पत्र स०६। स्न०१३ $\frac{1}{4}\times$ ७ $\frac{1}{4}$ दञ्जः । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । २०६१त  $\times$  । ले० काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टन स०११२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर स्थानन स्वामी दुंदी ।

विशेष -- ६ठा पत्र आधा लिखा हुआ है आगे के पत्र नहीं लिखे गये मालूम होते हैं।

४६७६. व्यतकथाकोश्चर् $\times$ । पत्रस०२-६२। या०१० $^*$ ४५ $^*$ ६२४। माया-सस्कृत। विषय-कथा। २०काल $\times$ । नं०काल $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स०२६७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर प्रभिनत्दन स्वामी नुदी।

# निम्न कथाओं का सग्रह है---

१. नदीश्वर कथा	रत्नपाल	बपूरां
२. पोडशकारए। कथा	ल <b>लितकी</b> ति	पूर्ण
३. रन्नत्रय कथा		ä
४ रोहिग्गीवत कथा	11	
५. रक्षाविधान कथा	n	
६- धनकलश कथा	и	$\alpha$
७ जेष्ठजिनवरकथा	4	84
<ul><li>प्रक्षय दशमी कथा</li></ul>	**	11
६, पट्रस कया	शिवमुनि	"
१० मुकुट सप्तमी कथा	सकलकीर्ति	и

११. श्रुतस्कधकथा	×	н
१२ पुरन्दर विधान कथा	X	"
१३. श्राकाश पचमी कथ	×	"
१४. कजिकावत कथा	ललितकीर्ति	u
१५. दशलाक्षामिक कथा	ललितकीर्ति	पूर्ण
१६. दशपरमस्थान कथा	0	u
१७. द्वादशीवत कथा	×	e
१८. जिनगत्रिकथा	×	и
<b>१</b> ९. कर्न <i>ि जै</i> राकवा	×	"
२०, चतुर्विणति कथा	श्रभकीति	"
२१. निर्दोप सप्तमी कथा	×	"

४६००. **बतकथ कोश**— $\times$  । पश्च० १६२ । श्रा० १ $\times$ ६ छवा । मापा-संस्कृत । विषय-कथा । र०कान  $\times$  । छे०काल  $\times$  । ध्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० ४५ । **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन पार्थनाथ मदिर जोगान वृदी ।

४६.द**१. वतकथाकोश**—× । पत्र स० ६८ । था० ११ र्रे×४्रे द्वा । भाषा*—सम्बन* । विषय—कथा । २०काल × । ले०कालभा० १७७० माथ मुदी १३ ।पूर्म । वेष्ट्रन स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**-वि० जैन पार्थ्य ॥ व चौगान मदिर बृदी ।

४६६२. **सतकथाकोश**— $\times$  । यत्र स०फुटकराभाषा-सस्कृत । विषय — कथा। र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रकृषों । वेष्टुन ३७५।१३६ **प्राप्ति स्थान-दि० जैन सभव**नाथ मदिर उदयपुर ।

४६ प. स्वतक याकोशः — बुझालचन्दा। पत्रसञ्जरा । आः ०१ 🗶 ४५ देवः । आपा – हिन्दी (पद्य) । विषय - कद्या। र०काल स० १७८० छातुमा दृदी १३। ले०काल 🗶 । पूर्णा । वेष्ट्रन स० १६६। प्राप्ति स्थान — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर छत्रनेर ।

विशेष -- निम्न कथाग्री का सग्रह है---

श्रकाण पत्रमी. सुग्यदशमी, श्रावणद्वादशीजन, मुकावलीजन, नदूकी सप्तमी, रत्नत्रय कथा, तथा चतुर्दशी तथा ।

४६८४ प्रति सं०२। पत्र स०१६१। ग्रा०१० $\frac{1}{2}$ ४६ इश्व। ले० काल स०१६१४ कार्तिक मुदी १०। प्रणं। बेण्टन स०१४०-७२। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडाराय्सिंह टोक)

४६६५ प्रतिसं०३ । प्यतः०१२२ । घा० ११ ४ ४ हुँ इश्वाले० काल १८४१ । पूर्सा। वेष्टनस०५७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक)

्थिरोप —टोडा में महारक थी। महेन्द्रकीति की ग्राम्नाय के दयाराम ने महावीर चैरयाल में प्रतिलिपि की थी।

४६८६, प्रतिसं० ४ । पत्रकः ६८ । ग्रा० १०१४ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसः० १०६ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मदिर राजमहल (शिंक)

विशेष---२३ कथाको का सब्रह है।

४६८७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १३२ । ग्रा० १०४ ६ इ.स. । ने०काल ४ । अपूर्ण । बेष्टन स० ८१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायती मन्दिर देनी (टोक)

४६ म. प्रति स०६ । पत्र स० ७४ । ग्रा० १२ ४७ ॄै इश्व । ले०काल ४ । पूर्णं। वेष्टनसं० १५म । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

४६८६. प्रतिसंठ ७ । पत्र सठ १३५ । ग्रा० १० रे ४ ४ १ [इश्व । ले०काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० ७२४६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन तेप्हपथी मदिर दौसा ।

विशेच -- ग्रामें के पत्र नहीं है।

४६६०. प्रति स० ६ । पत्रतः १४२ । घा० ११४४ है इन्छ । ले०काल १६०६ । पूर्ण । वैकृतसं० ७२।३६ । प्राप्तिः स्थान –दि० जैन मन्दिर भादग (राज०)

विशेष -- जयपूर में नाय नाल पाण्डभा ने प्रतिलिभि की थी।

४६६१. प्रति सं०६ । पत्र स०११६ । ले०काल 🗴 । पूर्णः । वेष्टन स०७२३ । प्राप्ति स्थान— ४० जैन पत्रायनी महिर भरतपुर ।

४६६२. प्रतिसं०१०। पत्र सन्या११०। ग्रा०१२  $\times$  ४ै. इ.च. । भाषा—सस्कृत। विषय— कथा। र०कार  $\times$ । लेखन काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०३५ म**ाप्रित स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना बुदी।

**विशेष**—मृलकर्ना श्रुतसागर है ।

विशेष--जहानाबाद जैमियपुरा मध्ये लिखावत साहजी -

४६६४. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २६६ । ग्रा० स्ट्रै $\times$ ६ $^{9}$  इन्छ । ले०काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०२७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर जीनान बुदी ।

विशेष — इस कथा सबह में एक कथा पत्र ६४ से ७६ तक पत्यवत कथा घनराज कृत है उसका आदि अन्त निम्न प्रकार है---

## श्रादिमाग --

प्रथम नमां गग्एपति नमो सरस्वती दाता।
प्रशामी सत्तुर पाप प्रगट दीशी न्यान विख्याता।।
पव परम गुरु सार प्रणाचि कथा ग्रागोपम।
भावी प्रत ग्रनुसार विविध बातन में प्रनूपम।।
श्रुतसागर बहा जुं कही पत्य विधान कथानिका।
माथा प्रतिद सो कह सुली भव्य श्रुकुमनिका।।

# दोहा--

द्वीप मांही प्रसिद्ध श्रति, जनूदीपवर नाम । भरत क्षेत्र तामै सरत, सांहे सुख की घाम ॥

#### ग्रन्तिम भाग--

विकस नृप परमासि, सतरासे चौरासी जीएँ।

सास आखाड शुकरा परससार ।

रणमी दिन घरु भी गुडवार ॥२४६॥)

शाचारिक चिट्ठ दिनि परमिषि ।

वरकोति महोसल जसिर्मिड ।

ता निप हर्पकीति भीवमी,

मोहे बुद्धि बृहस्पत्ति सी १२६६॥

अतमागर मधित कर गहर,

पत्य नाम महिसल मखदेह ।

ताकी भाषा करो धनराज,

पहित भीवगण हिस्सान मधुरित जती समाज ।

वहां चित्रध्वस सम्तर्भन मधुरित जती समाज ।

बजा अर्थेता विविध्यन गम करे धनराज ॥

इति श्री श्रुतसागरकृत बनकशाकोण भाषाणा प्राचार्य श्री चन्दकीनि नन् णिष्य भीवसी कृत पस्य बनक्या सपर्ण ।

४६**६४. प्रतिसं० १३ ।** पत्र स० ११४ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसं०६१२ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-महात्मा रावेलाल इय्यागढ वाले ने प्रतिनिधि की थी।

४६९६. प्रतिसं० १४ । पत्रसः० ४४ । या० ११) 🗴 ७ इञ्च । ले०काल स० ११८२ । पूर्ण । वेजनसं० ११३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन होटा मन्दिर यमामा ।

विशेष-मुख्यत निम्न कथाओं का सम्रह है। सुकुटमध्यमी, प्रक्षयनिधि, निर्दोष सप्तर्मा, सुग्रव दशमी, श्रावण द्वादणी, रत्तत्रय, ग्रमतचत्रदेशी, यादि प्रतो की कथाएँ हे।

४६८७. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १२३ । घा० र 🗴 ५ ै इन्हा । ने०काल स०१६७१ । पूर्ण । वेवनसं० २२८-१२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटटियो का द्वारपूर ।

विशेष-जोधराव ने प्रतापगढ में लिगा था।

४६६६. ततकथा कोश $\times$ । पत्र स०६-१६। आ० १०X४ इत्र । भाषा-हिन्दो । विषय-कथा । र०कात $\times$ । ते० काल $\times$ । श्रपूर्ण । वेष्ट्र- स० २६४-१२०। **प्राप्ति स्थान**- दि**०जैन** सभवनाथ मदिर उदयपर।

४६९६. वतकथारासो —  $\times$  । पत्र स०१४ । या०१३ $\times$ ५ है दश्च । भाषा-हिन्दी गवा । विध्य-कथा । र०काल र । ले० काल म०१६६२ बेस्ट गुरी १०। पूर्ण । वेष्ट्रनस०२१२ । **प्रास्ति स्थान**- दि० जैन मन्दिर पाध्वताथ घाणान बुडी ।

विशेष-- ग्रानन्दपुर नगर मे जिल्ला गया था।

४७००. व्रतकथा सम्रह्—  $\times$ । पत्र स०११ ! भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र०कालimes । क्षेत्रपूर्ण । बेष्टन स०१३ । प्रार्थित स्थान-र्नाट० जैन पचायती मन्दिर हण्डावाली का डीग ।

४७०**१. प्रतिस**ं०२ । पत्र स०६ – ७३ । स्रा०११ 🗙 ५ इ.आ. । ले० कात्र 🗴 । स्रपूर्ण। वेष्टन स०७१ ६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर।

४७०२. स्नतकथा संग्रह— × । पत्र स०१४ । स्ना०१०×४ इप्ता । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल × । ने० काल स०१६६४ । पूर्ण । वेप्टन स०११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर सोमसी कोटा ।

विशेष--मन्य कथाएं निम्न है--

शोलकात कथा — मलुका। र० काल सं० १८०६।

कह मलुकी सुगो समार हूँ मूर्य मत दीगा अपार । प्रामोजा मुद बार्ट कही, थाकचन लाग सोमही ।। जोडी गाव सातडा टान, सम्मन प्रटाराई क माह । मूडी हुत सो दूर करो, वाकी गुघ सुनी रही घरो ।।

२. सुगंघ दशमीध्यत कथा—मकरंद । २० काल १७५८ । सर्वेन घडानवे धावण तेरस स्वेत । मृहवानगपुरी करी मृगयो भविजन हेत । कथा कही लघु सनीनी पट्ट पदावनी परवार ॥ पाउच गाव मकरंद ने पटिल लेही सभात ॥

३. रोहिस्पीवल कथा — हेमराज । र० काल १७४२ । रोहस्पी कथा मृत्यां भई, ज्यो पूरव परमासी गई । हेमराज ई कही विचार, गुरू सकल ब्रास्त्र ग्रव थारा ।। ज्यो वृत फला .... में लही, गोविष्ठ ग्रथ औपई लही । नगर बीरपुर लोग प्रवीत, द्या दात तिलको मन लीत ।।

४. नंदीश्वर कथा - हेमराज।

यह बन नत्योडवर की कथा।
होगाज परगामी यथा।।
सहर इटावी जनम थान।
आवक करें धर्म गुज प्यान।।
मुने सदा जे जैन पुरान।
मुगे लोक की रार्थ मान।।
निहिंहा मुगे धर्म सम्बद्ध ।
कीनी कथा चौपई बंध।।

५. पंचमी कथा—सुरेन्द्रभूष्ठरा । २० काल सं० १७४७ । भव वृत करे भाव सो कोई । ताको स्वर्ग मृत्ति पद होइ । सत्रहसे सत्तावन मानि ।
संवत पीय दर्श वदि जानि ।।
हिस्तकांतपुर मे पट्ट सची ।
श्री मुरेन्द्रभूपरा तह रची ।।
यह त्रत चिचि प्रतिपानी जोड ।
सो नर नारि धानपति होड ।।

विशेष-सीगोली ग्राम मे प्रतिलिप हुई थी।

४७०३. वत कथा संग्रह—  $\times$  । पत्र म० १। प्रा० १० $\xi \times 1$ , इख । मापा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स० १०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

विशेष---निम्नलिखित कथाए है।

१. दशलक्षत्रत कथा — हरिकृष्ण पाडे । र० काल स० १७६४ । पत्र स० २ तक ।

ग्रन्तिम--

संसी कथाकोण में कही, तैसी यथ वीपई सही।
समझ पर पैकट मारित सबता भारत प्रवास जाति॥
तापरि यम भागी कोग विक्यात।
द्यापमं पाले गुमगात।।
सब श्वासा पूजाविधि करें।
पाजदान रे मुहत सुने ॥३४॥
मन सैं यस बुधि जब भर्ट।
हरिकृष्ण पाढे कथा खर रहें।
यो इह सुने माब धरि कोय।
इहि सुन माब धरि कोय।
इहि सुन माब धरि कोय।
इहि सुन माब धरि कोय।

- २ ग्रानतवात कथा— × । × । पत्र सं०३ ने ४
- रतनत्रय कथा—हिरकृष्ण पाडे । र० काल स० १७६६ सावन सुदी ७ । पत्र स० ४ से ७
- ४. ग्राकाशपचमीकथा---,, । पत्र ७ से ६
- ४, पचमीरास कथा --- × । × । पत्र मां० ३
- ६. श्राकाणपचमी कथा -- × । र० काल १७६२ चैत सुदी २ । पत्र ३

४७०४. **बसुदेव प्रबस—जयकोत्ति** । पत्रसः १४। मा० ११×५ इ**श्व । माणा— हिन्दी पद्य ।** विषय—कथा । र०कारा × । लेक्सल सः० १७३४ ज्येष्ठ मुदी १० 1 पूर्ण । बेष्टनसः० ६३। **प्राप्ति स्थाल** दि० जैन अपवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-पादि अन्त माग निम्न प्रकार है-

#### म्रावि भाग--

द्यो नमः सिद्धेभ्यः । राग सोरठा।

बूहा--

इन्द्रबरसा सह घोप नानेन्द्र जाति देव । पच गरमेप्टी जे प्रसाकनीतिहृती सेव ।।१।। बमुदेव प्रवध रचु भने पुन्द तरागे फन जेह । देवणास्त्र गृह मन घरी मन्द्रि सह ॥१।। हरिवण फुल मोहाम्ग्यु ध्यम्ब वृष्टि राय । मोरीपुर सोहिये थकी वागव सम गुभगाय ।।३।।

श्रन्तिम माग--

श्रीमूलसमे उजागजी, सरस्वनी गच्छ मुजाराजी। गुराकीरति गुरापामजी बंदू वादिभूषरा पुण्यधामजी ॥१३॥

दूहा---

ब्रद्धा हरण गुण घनुसरी कहा, धाल्यान । मण्डमो मृणस्यो भावमी लिसस्यो मुख सतान ॥१॥ कोट नगर कोडामस्सी वासे श्रावक पुष्यवत । चैत्यालुं धादि देवनु धर्म समुद्ध समसत ॥ निहा जिनकर सेवाकरी बसुदेव तप कल एह । जयकीर्गत एम रच्छुं घरसी यहा नेहू ॥

इति श्रीवमुदेव ग्राच्याने तृतीय सर्ग सपूर्णं । सवत् १७३५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १० क० श्री कामराज सत् जिप्य क० श्री वाघजी लिखित ।

४७०**५. प्रति स**० २ । पत्रस० १४ । घा० ११४४ इचा। ले०काल सं∙ १६७५ । पूर्णा। वेष्टन स० १८६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन स्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४७०६. बिकसलीलायती चौपई—जिनचन्द्र । पत्र सं० १७ । घा० १०×४६ इस्त । माषा-हिन्दी । विषय – कथा । र०काल स० १७२४ घाषाड मुरी ७ । ले० काल स० १७६८ माघ मुरी ८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७४६ । प्राप्तिः स्थान—अ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--लिखित चेला खुशाल बीजन लिपी कृता दरीबा मध्ये ।

४७०७. विद्यरभी चौपई—पारसदत्त । पत्र स०१४। भाषा—हिन्दी । विदय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल रा०१७६५ । पूर्ण । वेप्टन स०६३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

४७०८. विरहरण **चौपर्द—कवि सारंग ।**पत्र स० ४२। ग्रा० १० x ४ दख । आषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा। २०काल स० १६३६ । ले० काल x । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्रास्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दौसा।

#### प्रारम्म--

प्ररामु सामिणि सारदा, सकल कला मुपसिद्ध । बह्या केरी बेटडी, ग्रावे ग्रविकल वृद्धि ॥१॥ ससर ग्रलापड नादरस हस्ति बजावड बीगा। दिनि दिन ऋति आसाद भर, भयल म्रामर लीगा ॥२॥ आर्थिक मारी बाज लगि, बहा रूट्र हरिमात । श्रलख श्रनत अगोचरी मूळण जगत्र जिल्यात । ३॥ कासमीर मुख महागी, नेवव पुण्ड ह्यास । सिद्धि बृद्धि मगलकरड, सरम बचन उल्हास ॥४॥ श्री सहगुरू सुपनाउ कर, समर्था अनुपम नाय । जास पसाइ पामीइ, मन बिछत्त सदिकाम ॥५॥ नारी नामि ससिकला नेह तस्यु भरतार । कवि विस्त्रमा गुर्गा वर्सानु सील तमाद ग्रधिकार ॥६॥ सील सबि मुख मपजइ सीलै सपनि होउ। इह मिव परिभवि मुख लहड, गीन तगा फन जोड । ७॥ सील प्रभावि भापदा टानी पाप कलक । कवि विश्हरम् सून्य विलासिया सुराज्यो मुकी सक ॥६॥

## धन्तिम---

ए कबि बिल्हणनी चुन्छे भगाउ एक मनावड । तास घरे नव निधि विश्वार क्षिमाना मुख सपित करह ।। विरही तथा विरह दुख दश्द, मनगमती था थमार्ग मिल्ड ॥

समभई श्रोता चतुर गुतासा । मूरिसाम लहा भाग छजासा॥

## बोहा-

सुज्जारणासिच गोठ की, लाहु बिहु परेह । झहुरा पूरा करइ पूरा अभा रेड ॥४ ।

## श्लोक —

स्रक्षमुलमारास्य मुखनन्मारा यो किंगवतः । ज्ञानलबदुर्जिदाश ब्रह्माधि नर नर जयति ॥५॥ वर पर्वनदुर्गेषु अश्री बनचरी मह । या मूर्वजनसम्बर्ग गुरेररणवर्गविषि ॥६॥ पङ्जिशीय वर शत्रु मा मूर्यो हिनकारक । वानरेस्य हतो राजा विद्या चीरेस्य रक्षितः ॥७॥

## चौपई---

हुंस कोइ सय करिंग्ड तथा।

मित घनुसारि बिच कथा।

उद्व प्रधिकु प्रक्षर जेह।

पडित मध्य कर सो तेह।।=।।

### बूहा--

श्रीसम्बाह्य गञ्जवर विद्यमान जयवंत ।

जानमानर मृरी प्रद्यह गृहिर महागुणवत ॥

ताम गर्छि प्रति विद्युच हाति प्रमुख्य गृहमीस ।

विमार गर्द पर्माण पित कहड प्राशी मनह जनीस ॥

ए गुगा ज्यालद वर्ळार महन सोल ।

गृद्य निक्ष वास गुरु प्रमुल निद्य ॥

श्री जवालेगुरि प्रगट केनिन कारणा विद्व ॥

मन्तरा जामु मन्तरे हित सनि घाणा ।

रिद्व वृद्धि पासड मही कुणल सेस कल्यागा ॥

बीच बीच म स्थान चित्रों के लिए छोड़ा गया है।

४७०**६. बिष्णुकुमार कथा** — × 1 पत्रस**्ट ५। प्रा०** न्हें × ४<mark>१ इश्व । मापा-सस्कृत ।</mark> विषय-कथा। रक्काल × । अक्काल सर्व १६२४। पूर्ण । बेष्टन सर्व १३**५। प्राप्ति स्थान** — सट्टारकीय टिक जैन मन्दिर प्रवर्गर।

४७१०, प्रति सं० २ । पत्र म० ४ । ग्रा० ११ ४ १ इश्व । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । बेस्टन स० प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेरहपदी मालपुरा (टोक)

४७११. शालिमद्र चौप $\xi$ — × । पत्रतः २२ । प्राः ११×५े, द्वः । माषा – हिन्दी पद्य । विषय-क्या । २०काल × । क्रिया मार्गः । वेष्ट्रतसः १०६ । प्राप्ति स्थान—दिः जैन प्रयवाल प्रचावती मन्दिर स्रवार ।

४७१२. शालिभद्र चौपई —जिनराज सूरि । पत्र म० २६ । या०१०×४ दश्व । भाषा-हिस्सी (पद्य)। विषय —कया। र०काल स० १६७८ । ले० काल × । पूर्ण । वेशन सं०२४ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन पार्थवाय मन्दिर उन्दरगढ कोटा।

४७१३. शालिभद्र चौपई — मनसार । पत्र स० २७। भाषा — हिन्दी । विषय — कथा । र० काल स० १६०८ प्रापाट बुदी ६। नै० काल स० १७६६। पूर्ण । बेष्टन सं० २२६। प्राप्ति स्थान — संगवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष —श्री सागवाडा में ग्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

## ग्रन्तिम—

सोलहसम ब्रेडोनिर वरस्यद ब्रासू वहि छठि दिवसद्वी।

श्रीजिनसिह सूरि सीष मनसारइ भविषण उपगारइजी । श्री जिनराज बचन श्रनुसारइ चरितइ कहया सुविचारइजी ॥

४७१४. **शासिमद्र चौपई - विजयकोर्सि ।** पत्र म०४६। आ०१०<sup>3</sup>४८ इख । आपा— हिन्दी । विषय - कथा । र०काल स०१८२७ । ले० काल १६७२ । पूर्ण । वेट्रन स०२८३ । **प्राप्ति** स्थान—स्टारकोष्ट टि० जैन मन्दिर अजेमेर ।

विशेष —दान कथा का वर्गन है।

४७१**५. शा**जिमद्र **धन्ना चोपई - सुनित सागर ।** पत्र स० २०। ग्रा० १०४४ इच । भाषा—हिन्ती । विषय—कथा । र०काल ४ । जिल्लाल स० १८२६ चैत्र सदी ११ । पूर्ण । बेप्टन स० ३१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैत मन्दिर बोरमली बोटा ।

विशेष - ब्रहानपूर मे प्रतिलिपि की थी।

४७१६ **शालियह घना चौपई - मनसार** । पत्रत्व० २० । श्रा० १०९५ ४ इख । शापा— हिन्दी पद्य । शियप **कवा** । र०काल १६०० ग्रामीत बुरी ६ । ले० कात १७४५ आके १९१० । पूर्ण । बेस्टन स० ७०३ । **शास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जवरूर ।

४७**१८. प्रतिसं० २ । प**त्रस० ३४ । घा० १० $\times$ ४ देख । ने०कान > । पूर्स । वेप्टन स**०** ७४४**। प्राप्ति स्थान** — महारकीय दि० जैन मदिर खनमेर ।

चिक्रोच —सेठ मूलजन्दजी सोनीने सब्दा१११५ ग्रापाद सुदी२ की बडा घडाकी नशिया में चढायाचा।

४७**१६. प्रति स ० ३** । पनसक ४० । या० =ै ४६ इखा | लेक्काल 🔀 । पूर्णा | बेष्टन सक १२७५ । **प्राप्ति स्थान** —महारकीर दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

४७२०. प्रति स० ४। पत्रन्० ४४। ले० काल स० १९५३। पूर्ण । वेस्टन स० ३०। प्रास्ति स्थान—दिश्यने तेस्हायी मन्दिर बसवा।

४७**२१. प्रतिसं० ५** । पनत० २२ । बा० १२ 🗸 म<sup>9</sup> इखा । लेक्काल म० १८६२ चैब बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन म० ७०/१६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनावनी मन्दिर सलवर ।

विशेष - पत्र स० ३६ और ३३ की दो प्रतिया और है।

४७२२. प्रतिसं०६ । पपत्त०४० । ले० काव स० १२०१ । पूर्ण । वेष्टन स० ४५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर ।

४७२**३. प्रतिस**० ७ । पत्र स० ४२ । द्या० ११ ४ ६ इ.ख । ले० काल 🗶 । **या**पूर्ण । वेष्टन स० ७ । प्राप्ति । स्थान—दि० जैन मन्दिर बँर ।

४७२४. प्रति स० म । पनतः ३१ । प्राः १२ ¦ ४६ } इश्व । ले॰काल imes । पूरां । बेष्टन स॰ ६म । प्राप्ति स्थान—वि॰ जैन छोटा मंदिर बयाना । ४७२५. प्रति सं०६ । पत्र स०५३ । ले० काल स०१८६३ । पूर्ण । वेष्टन सं०७० । प्राप्ति स्थान—दि जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

४७२६. प्रति सं० १० । पत्र स०३२ । घा० १० $^3\times$ ६ $^3$  दश्च ।  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्णे । बेष्टुन म०३३३ । प्राप्ति रूयान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

४७२७. प्रति स० ११। पत्रतः २७ । प्राः हैX६ $\xi$  इवा । ७०क लX । ले०काल स० १८६० कानिक मुद्रो ११। पूर्यो । बेयून ४० ७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दर भादवा (राज)

विशेष--सरवगाराम सेटी ने प्रतिशिव करवायी थी।

४७२ म. प्रतिस्०१२ । पत्रस०१३ । ले०कोल 🔀 । श्रपूर्णा वेष्ट्रनस०७/४६ । प्राप्ति स्थान – टि॰ जैन मटिर बसवा।

४७२६ प्रतिसंठ १३ । पतस्ठ २ -३६ । झा० १०१ ४६ इन्छ । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । पैकृतस्ठ ७० । प्राप्ति स्थान—िक जैन तेरह पथी मन्दिर नैसावा ।

४७३०. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ४८ । ब्रा॰ १२३ 🗶 १ इन्थे । ले॰काल 🗴 । पूर्णे । वेष्टनसं० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विषय — ततमुख श्रजमेरा स्वाध्याय करने के लिये प्रति ग्रपने घर लाया ऐसा निम्न प्रकार से लिखा है—

"तनमृष्व श्रजमेरो लायो वाचवा ने गरु स० १६५४।

४७३१. प्रतिसं० १५ । पत्र स०२४ । घा०१३४ ६ इचा । र० काल ४ । ले०काल सं० १६५३ । पूर्ण । बेष्टन ४५ २४ । प्राप्टिन स्थान — दि० जैन पचायती मदिर दुनी (टोक)।

४७३२. प्रतिसं० १६ । पत्रस० ३२ । झा० १ $\times$ ६ इच । र०काल $\times$  । ले०काल स० १६१० पूर्णं । बेहनस० ७२ १२३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष- केकडी ने गरोशलाल ने प्रतिलिपि की थी। पदा स० ५४७

४७३३. प्रतिसं० १७। पत्र सं० २५। ग्रा० १२४८ इ.च.। ले० काल स० १६४४। पूर्ण । बेष्टसं० १६/७६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष--- १६६ पद्य संख्या है।

४७३४. प्रतिसं० १६ । पत्र स०३२ । प्रा०११imes५६ ६ खाः ले०काल imes । पूर्णं । वे० सं४० । प्राप्ति स्थान—िव० जैन मदिर प्रतिनन्दन स्वामी, जूदी ।

४७३४ प्रतिसं० १६ । पत्र स०२२ । प्रा०१२ $\$^2\times$  म्हल्था ले० काल imes । पूर्या । वेष्टन स० ५३६ । प्राप्ति स्थान—द० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४७३६. शीलकथा—imes । पत्र स० १० । ग्रा० १०imesथ इब । भाषा-हिन्दी । विषय-कवा । र०काल imes । पूर्ण वैष्टन स० १२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज.)

विशेष---प्रति जीरां है।

४७३७. शीलकथां —  $\times$  । पत्र स०१४ । झा०७ $^{3}$   $\times$  १ $^{3}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय — कथा । र० काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । स्मूर्ण । बेष्टन सं०४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा यन्दिर बयाना ।

४७३६ . शीलकथा—भैरौँसाल । पत्र स०३६ । ब्रा० १२ $\S$  ×४ $\S$  इख । भाषा – हिन्दी पत्र । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । बेठन स०४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्राधती मन्दिर करीली ।

शील कथा यह पुरसा भई।
भैरोलाल प्रगट करि गहि।।
पढें मुनी थव जो मन लाई।
जन्म जन्म के पानिन जाई।।४१।।
मील महातम जानि भवि पालटु मृत्र को शम हुदें हरूल बह धारिक लिली जो उनम नाम।।४६।।

दति श्री शीलकथा सपर्गा लिखते उत्तसचन्द व्यास मनारग्या का ।

४७३६. शोलतर्राग्सी— (मलयमुन्दरी कथा) श्रस्तवराम जुहाडिया। पत्र त० ६८६ श्रा १० $\frac{2}{5} \times 2\frac{3}{5}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी (प.) । विषय— कथा। २०कास  $\times$  । ले० काल स० १८६ सावत बुदी ५। पूर्ण । बेट्न स० ४०७ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मस्टिंग्लकर जयपुर ।

विशेष---प्रारम्म के ४३ पत्र नवीन है। ग्रागरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७४०. प्रतिस०२ । पत्रस०७७ । आर०१०१ ४ ५ इन्छ । ले०काल० र । छतूसौ । बेक्तस०५०६ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---ग्रन्तिम पत्र नही है।

४७४१. शीलपुरंबर चौपई— ४ । पत्रस० १० । बा०१०४४ है इखा । भाषा-द्रिन्दी (व.)। विषय-कथा । र०कान ४ । ते•कान स० १७२० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन महिर बबलाना (वृदीः ।

विशेष — मुनि ग्रमरविमलगरिंग ने बीकानेर में प्रतिलिपि की थी।

४७४२, शीलसुन्दरीप्रवथ—जयकीति । पत्रस०१६। ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$  × १ इञ्च। भाषा-हिन्दी (पत्र)। विषय-कथा। र०काल × । ले०काल स०१६८०। पूर्ण। बेहनस०२४२। प्राप्ति स्थान—प्रवाल दि० जैन मदिर उदयपुर।

४७४३. शो**लोपदेश रत्नमाला**—जसकोत्ति । पत्र म०११ । प्रा०११४४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स०१२० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन अप्रवाल प्रवायती मदिर अनवर ।

विशेज -गुजराती भाषा में टिप्पण है। जसकीति जयसिंह सुरि के शिव्य थे।

४७४४ . शीलोपदेश माला—मेरुसुन्दर। पत्र स०१८६ । या० स्ट्रै ४४६ इखा । भाषा— सहरूत । विषय-कणा । र०काल ४ । ते० काल स०१८२६ भादवा बृदि २ । पूर्ण । तेष्ट्रन स०२३६ । प्राप्ति स्थान—द०र्जन मदिर यभिनस्थत स्थामो, तूरी । ४७४५. श्रीपाल सौभागी घाल्यान—वाविचन्द्रः । पत्रसंग्रः २ । आग्रः ११ ४ ४ ६ च । भाषा—िहन्दी (पद्य) । विषय - कथा । रण्काल सण्यः १६५१ । लेण्काल सण्यः ५६६० कार्तिक बुदी ६ । पूर्णः । बेहनसण्यः १४६, ७२ । प्राप्ति स्थान—सभवनाय दिण्जेन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - उदयपूर मे प्रतिलिपि हुई थी । प्रति ग्रत्यन्त जीएाँ है ।

४७४६. प्रति सं०२। यमस्० ३०। घा० १०१४६ व । ले०काल स० १७४३। पूर्ण । बेहनसं० ६२। प्राप्ति स्थान-दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयदर।

४७४७. प्रतिस० ३ । पत्रतः २ -३६ । ब्रा० ११ ४४ इन्द । ले० काल स० १८१६ । ब्रपूर्ण । वेष्टन स० ३४७ । प्राप्ति स्थान — टि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४७४६. श्रुतावतार कथा— $\times$  । पतस $\circ$  १। प्रा $^{1}$ १९  $\times$   $^{3}$ १ इंव । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । ५०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  ४४६ । प्राप्ति स्थान - दि॰ जैन मदिर सक्कर जयपुर ।

४७४८ क. प्रतिसं० २ । घा० १६४४ है दुवा। ले० काल स० १८६३ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टत स० ४४६ । प्राप्ति स्थान — ६० जैन मदिर लक्कर जयपूर ।

विकोच—महाराज सवाई रामसिंह के राज्य में जयपुर में लक्कर के नेमि जिनालय में प० फ्रांफ्रूराम ने पनिलियि की थी।

४७४६. श्रोरिएक महामांगतिक प्रबन्ध —कत्यास्मकीति । पत्र स० ३६ । प्रा० ११ ४४ है इ.स. भाषा हिन्सी (पदा)। विषय कथा । २०काल म० १७०१ । ले० कान स० १७३१ । पूर्स । वेस्टन म० १४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन श्रयवान मदिर उदयपुर ।

४७५०. बटावश्यक कथा—  $\times$  । पत्र स०६। धाः १० $\times$ ४ $^{\circ}$  इंच । भाषा हिन्दी । विषय कथा । ५०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । धपूर्ण्। वेष्टत स० १६४ । **पाप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर बोग्सली कोटा ।

विशेष -- ग्रन्तिम पत्र नहीं है। ५ कथा तक पूर्ण है। प्रति प्राचीन है।

४७५१. सगर प्रबन्ध — आरं० नरेन्द्रकीर्ति । पत्र स०१० । आ०११  $\times$  ५ इख । माषा-हिन्दी (प $\pi$  । विषय कथा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स०१६४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सम्यान संदर ४२१५७ ।

४७५२. सदयबच्छ सार्वालिंगा चौपई —  $\times$  । पत्र स० १२ घ्रा॰  $= \frac{3}{2} \times \frac{5}{2}$  इञ्ज । भाषा — हिन्दी । विषय कथा । ४०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । ब्रुगुर्ण । वेप्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान चेननदास पुरानी डींग ।

विशेष-पत्र ६ तक है धारो चौबीम बोल है वह भी धपूर्ण है।

४७५३ सप्तव्यसन कथा—प्रोमकीर्ति । पत्रस० १०२। घा० ११ × ५१ इङ्च । भाषा— सस्कृत । विषय-कथा । २०कास स० १५२६ माघ मृदी १। लेक्काल स० १८३६ ग्रगहन मृदी १३। पूर्ण । वेप्टन स० ५ २६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

विशेष - लाखेरी नगर मध्ये लिखित बाबा श्री ज्ञानविमल जी तत् शिष्य रामचन्द्र ।

४७**५४. प्रतिसं० २ । पत्र**स० ११२ । ब्रा०६३<sup>2</sup> ४६ इ.च.। ले० काल सा १८८३ । पूर्ण । बेष्टन सं०७८ । **प्राप्ति स्थान**—-दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

ग्रन्थादस्य २०६७ श्लोक प्रमारा है।

४७५५. प्रति स०३। पत्रस०२/११६। प्रा०१०४४) इन्छ । ले०काल स० १७३६। पूर्वा । बेपून स०३५२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन भ्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—सबत् १७३० वर्षे प्रथम चैत्र बुदी १ रवि दिने यहा श्री धनसागरेण लिखित स्वयमेव पठनार्थ।

४७४६. प्रतिसं∘४ । पत्र स॰ ६६। ग्रा० ११×५ॄँ इचा। ले॰ काल सं∘१६६० ज्येष्ठ सुदी१४ । पूर्सा। वेटन स॰ २०५। प्राप्ति स्थान — दि० जेन ग्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवन् १६८० वर्षे ज्येष्ठ माते मुक्त पक्षे पृश्चिमा तिथी भीम भेलसा महान्याने श्री चन्द्रप्रभ बैत्या— त्ये श्री मृत्तसवे मरस्वनीभच्छे बलात्काराखे श्री कुंदकुँदाचार्याच्ये भ०श्री सक्तक्वीनिरंदा २० श्री भुवत क्वीतिदेदा भ०श्री जानभूरणदेरा भ०श्री विवयकीतिदेदा भ०श्री सुम्बन्ददेदा भ०श्री मुम्पांतकीति ४०श्री मुख्यकीतिदेदा भ०श्री वर्धस्भूष्टणदेदा भ०श्री रामकीतिदेदा भ० पद्मनाः तत् क्विर्यक्षा स्वयं विवयत् ।

४७५७. प्रतिसं० ६ । पत्र स०७६ । आ०११८४ हुँ इ.च.। लेब्बाल स०१६०५ । पूर्ण । वेकृत स०१४४–६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुनरपुर ।

विशेष-प्रणस्ति निम्न प्रकार है-

सबत् १६०५ समये ग्राज्विन बुदी ३ वृथवासरे श्री तीर्थराज प्रयाग ग्रामे सलेम साहिराज्ये ।

४७**५८. प्रतिसं०६ × ।** पत्र सं०६३। ग्रा० १२ × ५ दन्ता लेक्काल म० १६१६। पूर्यो । बेष्टन म०१४४ ६६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मदिर कोटडियो का दुगरपुर । ।

## विशेष-प्रशस्ति निम्त प्रकार है-

प्रशस्ति— मनन् १६९१ वर्षे प्रापाय बुदी ६ भीमे पूर्व भारपद तक्षत्रे श्रीमन् क'ट्रासधे नदीतरमच्छ्रं विद्यामणे श्रीरामनेमान्यये श्री वादीमकु भरपविदारणोक्ष्यवान भ्रष्टारणः श्री मोमजीदिश्व तरपष्टुं अद्योदकारकारचित्रप्रतिपात्रका भ्रष्टारकः श्री विजयनेनदेवा नापपुः भ्रष्टारकः श्री विजयनेनदेवा नापपुः भ्रष्टारकः श्री विजयनेत्रियोचा मात्तं च्छात्रकार भ्रष्टारकः श्री कमनन्त्रितियोचा नारपुः चित्रप्रति श्रूपाद्रकार पट्यापानिवास भ्रद्दारकः श्री रत्तरकीतिदेवा तत्त्वद्रः चरित्रचूडामणि भर्द्दारकः श्री महेटसेनदेवा तत्त्वद्रायर ध्रष्ठप हिम् करोसम् सम्बद्धाः स्वद्धाः स्

४७५६. प्रति सं० ७ । पत्रस० १४२। ब्रा० १०३४ ४/ इस्र । ते० काल स० १६५६ । पूर्ण । बेष्टन स० २४३-६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरवुर ।

विशेष--उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७६०. प्रतिसं० का पत्र स०७६। ग्रा०१० ५४ ५ इ.चा। ले० काल सं०१०५२ । पूर्ण। वेष्ट्रन स०७५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रालवर।

विशेष --शेरगढ में दयाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

४७६१. प्रति सं० ६ । पत्र स० ६७ । प्रा० १० ४४ इचा । ले० काल सं० १७५१ माह मुदी १ १ पूर्ण । बेहुन स० ४२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जन मदिर बोरसली कोटा ।

४७६२, प्रति सं० १० । पत्रस० ६७ । ग्रा० ११ 💢 ४ है इश्व । से ब्रह्म स० १७८५ पीय मुदी १० । पूर्ण । बेबून स०७७६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर दुनी (टोक)

विशेष - बन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी।

४७६३, प्रतिसं० १९ । पत्र सं० ११३ । आ ० ६३ ४६ इ.च.। ले० काल स० १६२४ फागुरा बुदी ४ । पूगा । बटून स० १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी बुदी ।

४७६४, प्रतिसं० १२ । पत्र स० १८ । मा• १२ × ५ र्रेड्स । ले०काल स० १८२४ । पूर्ण । वष्टन स० २१२ । प्रास्ति स्थान—दि०जैन मदिर नागदी, बूदी ।

विशेष--- १० गुलाबचदजी ने कोटा में प्रतिलिपि की थी।

४७६५. प्रतिसं०१३ । पत्र स० २५ । ग्रा०१३ 🗴 ५२ इक्या । ले०काल 🗴 । पूर्णा । बेष्टनस० १०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी, बूंदी ।

विशेष --निम्न प्रमस्ति दी हुई है

िर्मात ग्रामात्र गुक्ता प्रतिपदा सोमवासरान्त्रित लिखित नग्न कोटा मध्ये लिखापित पडितोत्तम पडितजी श्री १०८ श्री गित्रनालत्री तस्त्रित्य श्री रस्तलालजी तस्य लघुभ्राता पडितजी श्री वीरदीलालजी तन् शिष्य श्री नेमिलाल दबलागा हालाने।

४७६६. प्रतिसं०१४ । पत्र स०१०६ । ग्रा०१×४ इ.चा । ते० काल × । श्रपूर्ण । तेष्टन स० २२६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर ग्रभिनन्दन स्वामी बृदी ।

विशेष-पत्र बडे जीग्एँ शीर्ए है तथा १०८ से बागे नही है।

४७६७. प्रतिस० १५ । पत्र स० ३२ । प्रा०६ ४ ५ १ इ.च. । से∙काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

४७६८. प्रतिसं० १६। पत्रस० ३४ । ले॰काल 🗴 पूर्ण । वेष्टनसं० ७०३ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुर ।

४७६८. सप्तब्यसन कथा — भारामल्ला । पत्रस० ७४ । छा० १२ ४६ है इ.स. । लेक्सल स० १८२४ । पूर्ण । बहुनस० ४०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचावती मन्दिर झलवर ।

४७७०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १०१ । म्रा० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इटच । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टतस $\bullet$  ६८-११६ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारार्यासह (टोक्)

४७७१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १६५ । का० ११ $\times$ ४ $\S$  उथा । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । बेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष -- राजमहल नगर में सुखलाल शर्मा ने तेजपाल के लिये लिखा था।

४७७२. प्रति सं० ४ । पत्रस० १०७ । ग्रा० ११४ ५ इचा । ले०काल ४ । पूर्णं । वेष्टनसं० १३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर चौधन्यान मालपुरा (टोक)

४७७३, प्रति सं० ४ । पत्र स० १२६ । क्रा० ११ $\times$ ७ इञ्च । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वै० सं० २२३ । प्राप्ति स्थान -वि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष --चंदेरी मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७७४. प्रति स० ६ । पत्रस० ११४ । ब्रा० १३<sup>९</sup>४८) डब्ल । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३७४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर काउद्दर ग्रेलावाटी (मीकर)

४७७**५. प्रति स० ७।** पत्र स० १२४। ग्रा० १० ४ ७ उच्च । ले॰काल स० १६६१। पूर्ग । वेष्टनस० २० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर श्री महाबीर बढी।

४७७६. प्रति संग्रम । पत्र सग्र १०० । ग्रा० १२ रे ४६ इ.च । लेक्काल स्व० १६४० । पूर्णे । येष्टन स्वर्थ । प्रास्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

४७७७. प्रतिसं**० ६** । पत्र म० ११३ । थ्रा० १३<sup>5</sup>% ६<sup>5</sup> इन्त्र । ले०काल स० १८६७ । पूर्ण । वेष्टन स० १३३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पदायनी मन्दिर करौली ।

. ४७७६. प्रतिसं० १०। पत्र स० ६१। ब्रा० ११ $(\times \times)^2$  इत्त्र । लेक्कालस० १६७१ ब्रामोज बुदी १०। पूर्ण । वेष्टन स० ३६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन ब्रवहाल मन्दिर नैसाहा ।

विशेच-गुरुजी गुमानीराम ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४७७६. सप्तटयसन कया  $- \times$  । पत्रस० ७५ । भाषा-हिन्दी । विषय-कया । २०काल  $\times$  । स्रवृष्टी । बेप्टनस० ५४ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन तेन्ह्रवंशी मस्दिर मालपुरा (टीक)

४७८० सम्यक्त कीमुदी—धर्मकीति । पनस० ३३। प्रा० १० $\times$ ५ इ.च. भाषा-सस्कृत । विषय-गणा । २०काल म० १६७८ भादश यु ते १०। लेक्काल म० १६६५ । पूर्ण । वेटन स० २०-१२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर काटडियो का हू नरपुर ।

## श्रन्तिम--

थी भूलसपेवरसक्छे बलाकारमामे वने ।

ह कु दर प्रवासने मुनिका कारीनियाक्
तरदा कु नामां के मंदी हिंगुनि रहान
तेनाय रीको प्रवासनियाक्
मध्यि रमवासके वर्ष भाइण्यामित वर्षाय पुरावारीय वर्षाय म्हण्य बुद्धिना ॥४॥

प्रवास रमवासके वर्ष भाइण्यामित वर्षाया गुरवारीय वर्षाय स्वास्त्र ।

त् भी य कुरवासित किविद आगद्धा प्रमादन ।

त् भी य कुरवासित में मनेवा सहनो गुगा ।

विषय वरस्व प्रवासने मनेवार मनी ।

तिवस्त्र वरस्व मनेवार स्वासनो निर्माद । ॥७॥ इति थी। सम्पन्तवकौमुदीग्र थे उदितोरूप महाराज सुबुद्धि मत्रीश्रेष्ठी ध्रह्मदास सुवर्ण खुर चौर स्वर्गनसनवर्णन नाम दणम स्थि ।।

४७६१. सस्यकत्व कौमुदी - ब्रह्मखेता । पत्रसं० १८३ । ग्रा० १२०४९ इस्त्र । माषा-सस्कृत । विषय-कथा । राज्याल ४। ले० काल स०१८०६ । पूर्ण । वेष्टनसं०६१ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर पार्धनाथ चौगान बुदी ।

४७६२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १४३ । प्रा० ११×६} इञ्च । माया-सम्झत । विषय कया । रकतात × । ते० काल म० १८६५ वेषाल बुदी १३। पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन पार्क्षनाथ मान्य रुपराव (स्था) ।

४७६३ प्रति सं० ३ । पत्र स० १२४ । प्रा०११ 💢 ४ इख । लेक्काल स० १६७३ श्रावरण मुदी ३ । पूर्मा । बेठून स० ७७ । प्राप्ति स्थान—दिठ जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष---प्रणस्ति प्रपूर्ण है।

४७६४ प्रतिसं०४ । पत्रस०१६२ । ग्रा०१२ 🗴 ५ इञ्च । ले॰ काल स०१६२६ ग्रासोज मृदी २ । पूर्ण । वेष्टुन स०१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर राजमहत्र (टोक) ।

लेखक प्रशस्ति— श्री मुनसर्थे सरस्वतीगन्ने बनात्कारमणे श्री कु दकुराचार्यान्वयं भट्टारक धर्माचरहत्री तत् नि ब्रह्म गोकरकी तत् लबु भ्राता ब्रह्म मधनी लीखित। श्री दक्षिणदेशमध्ये अमरापुर नग्री। श्री गानिनान नैत्यालये।

४७६५. प्रति स॰ ५ । पत्र म० १२० । आ॰ १२ × ४६ इला । ले॰ काल स० १७४६ । पूर्यो । बेक्टन ग० २ । प्राप्ति स्थान – दि॰ जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष — थी जिनाय नम सबत् १७४६ वर्षे मिनि भ्राध्विन कृष्णा पच्च्या भीमे । लिखित सावलराम जोगी बराह्य मध्ये । लिखापिन पाढे व दावन जी ।

४७८६. प्रतिसं० ६ । पत्र स०१० । घा० १२ $\frac{1}{2} \times ६ इवा । ले०काल सं० १८५१ चैत्र मुदी १२ । पुर्रा । बेटन स० १२६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोंक) ।$ 

विशेष - साताराम ने स्वपठनाथं चाटमु नगर मे प्रतिलिपि की थी।

४७८७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १४४ । ग्रा० ११ × ४ है इखा । ले०काल स० १६३४ ब्रासीज कुदी ८ । बेस्टन स० ८७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष - धर्मचन्द्र की शिष्यरारी ब्रा० मस्तिक ने लिखबाकर श्रीहेमचन्द्र को भेंट की थी।

४७ दन. प्रतिसं० म । पत्र सन्धा ४१ । घा० १० $rac{7}{2} imes rac{7}{2}$  इन्त । ले०काल स० १६६६ पीष बुदी १४ । बेग्टन स० दन । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लग्कर जयपुर ।

विशेष - प केशव के पठनार्थ रामपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४७८१. सम्यक्षरदकौमुदी—जोधराज गोदीका। पत्र म०६२। ब्रा०११ 🗙 ४, इश्वा। भाषा-हिन्दी (पद्म)। विषय कथा । र०काल सं०१७२४ फाग्ग्ग वृदी १३ । ले०काल सं०१८६६ कार्तिक बुदी १३। पूर्णे। वेप्टन स०१२। प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर। ४७६०. प्रतिसं० २ । पत्र सख्या ४८ । ले० काल स० १८८५ कार्तिक बुरी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन सख्या १४८ । प्रान्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष--किशनगढ में लहाडियों के मन्दिर में प० देवकरस्य ने प्रतिलिपि की थी।

४७**६१. प्रतिसं० ३** । पत्र स०१४६ । झा०११ 🗴 ७, इन्छ । ले० काल स १६१० । पूर्ण । बेष्टुन सं०१६२० । **प्राप्ति स्थान** — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर झजमेर ।

१७६२. **प्रतिसं० ४ ।** पत्र स**० ६३ ।** ब्रा० १० ×६ इ.स. । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । के० सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर प्रभितन्दन स्वामी बुदी ।

४७**६३. प्रतिसं० ५** । पत्र स० ६४ । आ० ११ 🗴 ७ दःवः । ले० काल सं० १८२३ पूर्णे । वेष्टन स० ३३/१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रवायती दूनी (टोंक) ।

विश्रोज—सदामुख ने दूनी मे प्रतिनिषि की थी । स० १९३१ मे पाच उपवास के उपलक्ष में अभयवद की यह ने चडायाथा।

४७६४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६३ । आ० १० $\frac{3}{2} \times \frac{5}{2}$  इन्छ । ले० काल स० १६३३ भादवा बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन सं० १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोष्टयो का नैणवा ।

४७६**५. प्रतिसं०७** । पत्र म० ५४ । ब्रा० १२ 🗴 ६ इ.ख.। ले० काल सं० १६५६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वेषुत स० ६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटबो का नैसावा ।

४७६६. प्रति सo ६। पत्र सo ७७ । प्राo १० $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इख । ले० काल सo १७५७ कात्तिक बुदी १२ । पूर्ण । बे० संo २१-१४४ । प्राप्ति स्थान—्िर्व नैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायभिट्ट (टोक) ।

विशेष ---दयाराम भावमा ने घामीराम जी की पुस्तक में फागुई के तरह पथियों के मन्दिर में प्रतिविधि की थी।

४७६७ **प्रति सं०६**। पन स०७७। स्ना० १२×४ी दश्या । लेब्काल स०१८३५ वैसाल सुदी ११। प्रपूर्ण। वेष्टुन स०५१२। **प्राप्ति स्थान**— (० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

४७६८ प्रतिस्त १०। पत्रस॰ ६२। घा० ११ × ४३ इन । ले॰काल स॰ १०६६। पूर्ए । वेष्टन सं० ५८/८२। प्रास्ति स्थान - दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरनाइ (कोटा) ।

विशेष -- टोडा का गोउडा मध्ये लिखित ।

४७६६ प्रतिसं० ११। पत्र स० ७२। ले० काल स० १८८०। पूर्या। वेट्टन स० ६३। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर टेस्टरगढ कोटा।

४६००. प्रति सं०१२ । पत्र स० ४१ । ले० काल स०१८६६ चेत्र सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टतस०६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्चनाथ मदिर इन्टरगढ (कोटा)।

४८०१. प्रतिसं० १३ । पत्रत्त० ४१ । ग्रा० १२ $\times$ ४ $^{\circ}$  इंच । लेक्काल स० १८६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्णः । वेष्टन सं० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाच्येनाथ मन्दिर इस्टरगढ (कोटा) ।

विशेष-। रोतमदासजी भग्नवाल के पुत्र ताराबद ने प्रतिलिपि कराई थी।

४००२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ११ । ग्रा० १२ $\frac{1}{4} imes n$  दश्व । ले०काल imes। पूर्ण । बेष्टनसं० १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन स्रम्याल पत्रायती मन्दिर झलवर ।

४८०३. प्रतिसं० १५ । पत्रस० ८५ । आ०६ × ४३ इञ्च । ले०काल सं०१८४१ । पूर्ण । बेष्ट्रतसं० ५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अप्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर ।

४८०**४. प्रति सं० १६।** पत्र स० ६२। घा०१२ ४७ इ<sup>.</sup>च। ले० काल सं० १९४१ सावरा बुदी १२। पुर्गः। बेष्टन स० ३१/१४४। **प्राध्ति स्थान**—दि० जैन पनायती मन्दिर घलवर।

४८०४. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १८६२ पौष बुटी ८ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२(क)/१४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर प्रलवर ।

४८०६, प्रति स० १८ । पत्रस० ७७ । ले०काल स० १८७७ पौष सुदी १४ । पूर्णं । बेष्टन स० ३२ (ख) १७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर अलवर ।

४८०७. प्रति सं० १६ । पत्र स० ११ । ते० काल स० १८८४ । पूर्णं । दे० स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर मरतपूर ।

४८०८. प्रति सं०२० । पत्र स०४१ । ले०काल स०१८३० । पूर्स । वेप्टन स०५७० । प्राप्ति स्थान—दि० जॅन पचायनी मंदिर भरतपुर ।

४८०६. प्रति स० २१ । पत्र स० ६२ । ले॰काल स० १७६६ । पूर्ण । बेस्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--मनसाराम ने प्रतिलिपि की थी।

४६१०. प्रति सं० २२ । पत्र स० १११ । ग्रा० ६ $\times$  ४ $\frac{1}{6}$  इच्छ । ले० काल स० १५४१ । पूर्ण । वेष्टुन स० ६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मंदिर बयाना ।

४**८११ प्रतिसं० २३।** पत्रस०६३ । आ० १०१ 🗴 ६ इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं०२४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

४६१२. प्रतिसं० २४। पत्र स०३६। ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टन स० २५ । प्राप्ति स्थान—नवायनी दि० जैन मन्दिर बयाना।

४८१३. प्रतिसं० २४ । पत्रस० ४७ । झा० १३×४ है इच । पूर्ण । बेस्टन स० १७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मदिर करोली ।

४८१४. प्रतिसं० २६ । पत्र स० १०१ । ब्रा० १ $_{3}^{2}$  ×  $_{7}^{4}$  इश्व । ले०कान सं० १६१० कांतिक बदी २ । पूर्ण । बेहुतस० ६० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सौगाणी मदिर करोली ।

विशेष-करौली में लिखा गया था।

४**८१४. प्रति स० २७ ।** पत्रसं० ४६ । ग्रा० १२ 🗴 ६ इख । ले०काल स०**१८६०** कागुन सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स० ६६–३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सौगासी मन्दिर करीली ।

विशेष - सेबाराम श्रीमाल ने गुमानीराम से करौली मे प्रतिलिपि करवाई थी।

४८१६. प्रति स० २८ । पत्रसं० ४४ । ने० काल स० १८४६ । पूर्णं । वेष्टनसं० ८४ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा। विशेष--नोनदराम लहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

४८**१७. प्रति स० २६**। पत्रस० ४० । घा० १२  $\times$  ४, इन्त । ले० काल  $\times$  । पूर्ग । बेक्टनसं० २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

४८१८. प्रति सं० ३०। पत्रस० १४। म्रा० १२४७ इचा। ले॰काल ४। पूर्ण । वेष्टन सं० ३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास प्रानी धीग।

विशेष -- डीग नगर मे प्रतिलिपि की गई थी।

४८**१६. प्रति स० ३१। पत्रस**० ७०। ग्रा० १२×६ इच। ले० काल स० १६११। पूर्ण । वेष्टन स० ४५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास प्रानी डीग।

४८२०. **प्रति सं० ३२।** पत्र स० ६४। घा० ६४६ी इ.च । ले० काल स० १८४६ गीप सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर तैरहपथी दौसा ।

विशेष -- सेवाराम ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

४८२१. प्रतिसं० ३३ । पत्रस० ७१ । घा० १३ × ४३ इ.ख.। ले० काल स० १८६१ डि० नंत्र बुदी म. । पूर्णः । बेक्टनस० १४ - २४ । प्राप्तिः स्थान-—दि० जैन मन्दिर बडा बीस पृथी दीसा ।

विशेष --देवगरी (दौसा) निवासी उदैचन्द जुहाडिया ने प्रतिनिधि की थी।

४६२२. प्रतिसं० ३४ । पत्रस० ६६ । ब्रा०१२ 🗴 ६ इ.च. । से॰काल म०१६६१ भावता बुदी ७ । पूर्मा । बेष्टन म०३७-७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बडा बीसवथी दीमा ।

विशेष---प्रमन महाराजाधिराज महाराजा श्री सवाई पृथ्वीसिह जी का मे दोवान ग्रार्गतिसिह खिद्दको मुसाहित सुम्यालीराम बाहरो । लिखी सम्पचद लिद्दका को बेटो पिरागदास जी सिन्दूको ।

४६२३. प्रतिसं० ३५ । पत्र सं० ४८ । आ० १३ % ६) दश्व । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टत स० २८८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोट्टियो का इंगरपुर ।

विशेष-भीलोडा ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

४६२**४. प्रति सं० ३६ ।** पत्र स० ६७ । ग्रा० १२८४) इच । ले**० काल 🗴** । पूर्ण । बाटन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान—द**० जैन मंदिर फतेहपुर जेलावाटी (सीकर)

४८.२५. प्रतिसं० ३७ । पत्र सं० ⊏३ । आर०१०४६ डच । ले० काल स०१८⊏२ । पूर्ण। वेस्टन सं०७३ । प्राप्ति रूषान—दि०जैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष—राजमहल मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६२६. सम्यक्त्व कौमुदी भाषा—मुनि दयाचद । पत्र म०६१ । आ०११ 🗙 ५२ ६७ । भाषा—हिन्दी गढ । विषय—कथा। र०काल स०१६००। ने० काल स०१६०२ प्रायाद बुदी ४ । पूर्णः। वेष्टन स०६७-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर वङ्गः बीसपथी दौसा ।

४६२७. सम्पन्नत्व कौमुदी — विनोदीलाल । पत्र सं०११२ । घ्रा०१२ ४६ इच । आवा— हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । र०काल स०१७४६ । मे० काल म०१६२६ । पूर्ण । वेस्टन सं०११४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर । ४८२६. सम्यक्त्य कौमुदी—जगतराय । पत्र स० १०२ । घा० १० $\frac{3}{4} \times \frac{1}{7}$  इचा । माषा-हिन्दी । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७२२ वैशाल सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन सं० १७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर टीवान जी कामा ।

विशेष-प्रशस्ति मे लिखा है-

काशीदास ने जगतराम के हित ग्रथ रचना की थी।

४८२**६. प्रतिसं० २** । पत्रस० ११६ । घा० १२ ४ ६ इच । ले० काल स० १८०३ । पूर्ण । बेष्टुतसं० १५ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीग ।

४८३०. सस्यक्त्य कौमुदी कथा×ापत्र त० ६३। झा० १०×४३ इचा। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। २०काल ×ाने० काल ×ा पूर्ण। वेष्टन स०१०४७ । प्रास्ति स्थान—सट्टास्कीय विश्वतेन मंदिर स्वतेर।

४६२१. सम्यक्त्व कोमुदी कथा—  $\times$  । प्रसः ० ८६ । प्राः १०  $\times$  ४ हे इस । भाषा- सम्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रनसं ० ६६४ । प्रास्ति स्थान— भट्टान्कीय दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

४६३२. सम्यक्त्य कौमुदी कथा  $-\times$ ा पत्र स० १२२। प्रा० १०३ $\times$ ५ ${}^{1}_{5}$  इन्व । भाषा- संस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १६५३ माह सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६६२ । प्राप्ति स्थान-भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

४६३३. सम्यवस्य कोमुदी कथा—  $\times$  । पत्रस० ६४।म्रा० ११  $\times$  ४३ इश्व । भाषासरहत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १५६३ । प्राप्ति स्थानभद्रारकीय वि० जैन मदिर स्रजमेर ।

४८३४. सस्यक्तव कौमुदी कथा—  $\times$  । पत्र स० ८६ । प्रा०१०  $\times$  ६ $\xi$  इस । माषा— सस्कृत । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ले० काल स०१८१२ पोप सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ४०२ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० कैन मन्दिर प्रकार ।

४६३५. सस्यवस्य कोमुदी कथा --  $\times$  । पत्र स० १३५ । ब्रा० १२ $\times$ ५ इ.च. । प्राप-सस्कृत । विषय कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६५६ । चैत्र मुदी ५ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० २३-१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का द्व गरपुर ।

विशेष --ग्राचार्य सकलचद्र के भाई प० जैसा की पुस्तक है।

प्रशस्ति—सबत् १६६८ वर्षे चैत्र सुदि १३ दिने लिपी इन्त पूज्य श्री १०४ विशानसोमसूरि शिष्य सिंहसोम लिपि इन्तं ।

४८३७. प्रति सं०२। पत्र स०१२६। ग्रा०१३×७ इ.च.। ले० काल सं०१८८५। पूर्ण। वेष्ट्र सं०११४-४५। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त। ४८३६. सम्यक्त कौमुदी कथा —  $\times$  । पत्रम० ५२। आ० ११२  $\times$   $^1$  इस । माषा-सम्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४८३६. सम्यकस्व कौमुदी कथा। पत्रस० १३४। ग्रा० ११ ४ ४१ इन्छ। भाषा-सम्कृत। विषय-कथा। २०काल ४। ले०काल स० १८३७ श्रासीज वदी १३।पूर्ण। वेष्ट्रनस० १६२। प्राप्ति स्थान-प्रिक जैन प्रधारती मदिर करोसी।

विशेष- वैगाव जानकीदास ने डालचद के पठनार्थ करीजी से प्रतिजिपि की थी।

४८४०. सम्य**बत्व कोमुदीं कथा**— X । धन स० १००। या० है X १ इस । माया-सम्ब्रत । विषय-कथा। <sup>२०</sup>काल X । ते० काल X । पूर्ण । बेष्टन स० २३। **प्राप्ति स्थान**—पंचायती दि० जैन मदिर बयाना ।

४८४१. सम्बद्धस्य कौमुदी कथा—× । पत्रसः १-३४,६६ शाया-सस्कृत । विषय—धर्म । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । बेष्ट्रनस०२४१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जेन पत्राथती मन्दिर भरतपुर ।

४८४२, सम्यक्तव कौमुदी कथा— × । पत्रतः १६ । मा० १० ८४ इख । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । से०काल × । सपूर्ण । यष्ट्रन स० १७८ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

४८४३. सम्यक्तकां मुद्री कथा —  $\times$  । पत्र म० १०७ । आ० १०  $\times$  ४) इश्व । भाषा-संस्कृत । विवय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७४५ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६७ । आस्ति स्थान - दि० जैन मिर्ग बोग्सली कोटा ।

प्रशस्ति —सबन् १७४४ वर्षे पीष माने गृहन पक्षे त्रयोदण्या निश्चौ भोमवासरे श्री होरापुर निर्वित सकलवरिंग नगेन्द्रगणि श्री ४ रत्नमागर निर्द्धस्य गणिगगोनम सगरिंग श्री बतुरमागर तन्त्रिश्च गणि गणालकार गणि श्री राममागर तस्त्रिस्य पहिन गुमिनगत्ररे**ग्**।

४४६४. सम्प्रक्तकासुदी —  $\times$  । पत्रस० ११३ । आ० १२  $\times$  ४ इच्च । भाषा -सस्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । बेष्टुनसं० ६२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मस्दिर दबलाना वृदी ।

विशेष—सवत् १७४६ वर्षे मिती कानिक जुनशा तृतीयाया ३ भीमत्रासरे लिखितमिद चोबे रूपसी स्वीवसी ज्ञानि सिनावट वणश्टा मध्ये नित्वायत च पाटडया मयाचद माधो मृत् ।

४८४४. सम्बद्धकतेमुदी कथा—  $\times$  । पत्रस्य ४० । आ० ११  $\times$ ५ इन्द्र । सापा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर राजमहत रोक ।

विशेष — लिखित कृपि कपूरचन्द नीमच मध्ये । प्रति प्राचीन है ।

४६४६. सम्यवस्य कौमुदी कथा —  $\times$  । पत्र स०२-६२ । धा०१०  $\times$  ४ है इन्छ । माषा— संस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१-६६ फायुग्ग मृदी ३ । ध्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैग्गवा । कथा साहित्य ] [ ५०१

विशेष — प्रति हिन्दी गद्य टीका सहित है। महोपाध्याय मेघविजयजी तत् शिष्य प० कुशलिबजय जी तत् शिष्य कदिविजय जी शिष्य प० भ्रवन विजयजी तत् शिष्य विनीत विजय गींए। लिखित ।

४६४७. सम्यक्तव कौमुदो कथा— $\times$ । पत्रसः १४३। मा० ११ $\times$ प्रं इश्व। भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। २०काल  $\times$ । जे० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टुनसं० १३६–२११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाय टोडारायमिह टोक।

४८४८. सम्बद्धस्य कीमुदी कथा —  $\times$  । पत्रस॰ १६। आ० ६१४४ इख । नापा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १७२१ फापुन बदी ४। पूर्ण । बेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर प्राप्तिन्दन स्वामी, वंदी ।

विशेष-माह जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४८**५०. सम्प्रक्त्व कौमुदी कथा—** × । पत्र स० ५५ । या० ११**३ ×** ५ इश्व । माषा— सस्कृति । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २१६ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर पार्थनःथ चौगान, बुदी **।** 

विशेष--प्रतिप्राचीन है।

४८.५१. सम्यक्तव कौमुदी कथा— $\times$  । पत्रस्य ४४। प्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४६% । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस्य ६६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर जीगान युरी ।

४८५२. सम्यक्त्व लोलाबिलास कथा—विनोद्योलाल । पत्र स० २२६ । ग्रा० ६ $\frac{1}{2}\times 0^{\frac{1}{4}}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । २०काल । ले० काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बदी ।

४६५३. सम्यग्बर्शन कथा— $\times$  । पत्र स०१२६ । ग्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ कृष्ट । भाषा सस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ७६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिटर लक्कर जयपुर ।

४८५४. सिद्धचक कथा—सुमचन्द्र । पत्रस० ४ । प्रा०१११ू ६ इचा भाषा-सरकृत । विषय-कथा । रक्कात । × केक्कान स०१६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्रास्ति स्थान—दिव जैन कोटा पिति वयाना ।

४**८५५. प्रति सं०२** । पत्रस० ४ । ग्रा० १२ 🗶 ४ <sup>‡</sup> इस्त्र । ले०काल स०१८४२ । पूर्णु । केकृतसं०२५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पात्रवैनाथ मदिर चौगान बूंदी ।

४८६६. सिद्धचक कथा— श्रुतसागर । पत्रतः २३ । या० ११ ४ ६ इन्च । भाषा सस्तृतः । विषय—कथा । रुकालः ४ । नेक नात स० १४७६ चैत्र सुदी ७ । पूर्णः । वेष्ट्रनसं० २७२ । प्रास्तिः #धात—हि० जैन महिर दीवानजी कामा । विशेष--- प्रार्था ज्ञानधी ने प्रतिलिपि करायी थी।

४८५७. सिद्धचक कथा - म० सुरेग्द्रकोति । पत्र स० ४ । मा० १४ × ६ इच । मापा-संस्कृत । विषय-कथा । र०काल × । ले० काल स १८७६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन पनायती मन्दिर दनी (टॉक)

विशेष-प्रशस्ति में निम्न प्रकार भट्टारक पर परादी है देवेन्द्रकीर्ति महेन्द्रकीर्ति क्षेमेन्द्रकीर्ति भीर सुरेन्द्रकीर्ति ।

४८५८, सिद्धचकदत कथा—नेमिचन्द्र पत्रसः १८६ । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र०कान 🗴 । ते॰ काल 🗴 पूर्ण । वेष्टन स॰ ७७-३० । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर नेमिनाथ

विशेष-प्रन्तिम पुष्पिका निम्न इकार है---

इति विद्वदर श्री नेमिचन्द्र विरोचिते श्री सिद्धचकमार कथा संबंधे श्री हरियेग् चक्रघर वैराग्य दीक्षा वर्णनी नाम सप्तम सर्गे ।।७।।

४८५६. सिद्धचकत्रत् कथा —नथमल १ पत्र तः २६ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । ते० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन सं० २००१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागरी बुदी

विशेष-जादराम छावडा चाकसुवाला ने बोली में प्रतिलिपि करवाई थी।

ग्रन्थ का नाम श्रीपाल चरित्र है तथा ग्रष्टाह्मिका कथा भी है।

**४८६०. प्रतिसं० २ ।** पत्र स.० १३ । ग्रा० १२ $\frac{1}{2} \times G$  ्टैहचा । ले०काल  $\times$  पूर्णः । वेष्टन स<sup>3</sup>४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मर्ग्निद लक्ष्कर जयपुरः ।

४६६१. प्रति सं० ३ । पत्रस० ७ । प्रा० १२ ×७ } इञ्च । त्ते•काल म० १८४२ कार्तिक मुर्दा ५ । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन पचायनी मन्दिर करीती ।

४८६२. सिहासन बत्तीसी-ज्ञानचन्द्र । पत्र स० २६ । ब्रा० १० $\frac{1}{2} \times$ ४ इ.स. । भाषा-सस्कृत । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० $\frac{1}{2}$ १८२ । प्राप्ति स्थान—धि० जैन मन्दिर दशनाना बुदी ।

४६६३. सिहासन बत्तोसो—विनय समुद्र। पत्र म० २६ । प्रा०१० $\times$ ४इ॰ब । माषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—कथा । र०काल म०१६११ । लेक्काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०७४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)

विशेष-इसमे ४१ पद्य है। रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है-

## श्रादि माग—

श्री सारदाई नमः । श्री गुरुत्यो नमः । संयल मगल करएा ग्रादीमः । मुनयसा दाइस्सि सारदा सुगुरु नाम नियः । चितवारिय नीर राइ विक्रम तराउः । सत्तसील साहस विचारीयः ।। सिहासन बत्तीसी जिनउ सिद्धसेन गराधारि। भास्यु ते लबलेस लहि दायइ विनइ थियार ॥१॥

#### बुहा---

सिहासन सौहरा सभा निर्णि पुनत्नी बत्तीम ।
मोजराइ ब्रागलि करइ विकमराइ सतीस ।।२॥
ते सिहासन केहनउ किरिए आप्यु किम भोजि ।
लाग्नउ केम कथा कही ते सभक्तव्यो वोज ।।३॥

#### ग्रन्तिम---

पास सतानी पूणे बारिट्ट बेसी गुरु मरिया अपि जिट्ठ ॥
रसगण्यह सूरीसर जिसा अनुक्रमि कर्यु मुरियुग्ग निमा ॥३७॥
तामु पाटि देवपुर्धन गुरुबद्द तहन्द र पाटिह तिद्व मुरिय ॥
तम् पाटि देवपुर्धन गुरुबद्द तहन्द र पाटिह तिद्व मुरिय ॥
स पद विजयवन कर्यु मूर्रि, तम पताइ मह आसाद सूर्द्व ॥
सम्बन्धां तहन्त मरा, हुपं समुद्र जिम्मो निधि मुद्रा ॥३६॥
तम् प्यक्तमल कमल मण् भूम, विजय समुद्र बाचकमन रंग ॥
सबद् मोगहर बरण्ड प्यार, निधासण बस्तीमी सार ॥४०॥
नेड बोधव एह प्रवथ, मुक्सती मह चोउपह विष्

इति सिधासराबत्तीसी कथा चरित्र सपगं

४६६४, सिहासन बनीसी—हरिफूला। पत्रस० १०३ । घा० १२४५३ इश्वा भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा। र०काल स० १६३६ । लेक्काल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान—रि० जैन खण्डेलवाल तेरहपयी मन्दिर दौसा।

#### प्रारम्भ---मगला चरमा ।

धारादी थी रिषभप्रमु जुगलाधर्म निवारि । कला कहो विकामनगी, आम माकड विक्तार ॥ साकी बरयो दान धी दान वडी ससारी । विकि विशेष जिए मामारी बोल्या पलप्रकार ॥ ग्रमुष्ठ पुगत्र दान चिट्ठ प्राग्री मोल नजीग । ग्रमुक्या धरि तकुं चित एविह दाने भोग॥

#### पत्र ७२ पर कथा ६

हिनमारारे नयरी, भोज निरेमम । सिवासरा रे झावे सुभ महून बरु।। तब राबारे दशमी बोर्नेऊ मही। विक्रम समरे होवें तो वैसे सही।। चंद-

बैसे सही इम सुबरी पूछ भोज ततिखरण पूतली। किम हुयो विकमराय दाता मर्गो ते हरखे चली।। नबरी श्रवतीराय विकम सभा बैठो सन्यदा। घन खड योगी एक श्रायौ कहें बनमाली तदा।

श्चन्तिम-प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं.--

लित अही र ने साहर गुरु गोयम समी,
निति उदी रे श्री जिनवद मूरि यय नमी ।
तमु गर्ड रे सप्रति गुएग पाठक तिली ।
वसु गर्ड रे सप्रति गुएग पाठक तिली ।
वसु गर्ड रे सप्रति गुएग पाठक तिली ।।
वसु ग्रा तिली तमु सीस बीत सपर्ग प्रापद करी ।
दे सैस बाल सडेह नयरी सदा ने प्रापद करी ।
संवत् मोलह सी छत्तीम मे बीत प्राप् विद कथा ।
तिहि कहिय मिधास्तस बनीमी कही हीर सुग्री यथा ।
पण चरित रे दृहा गाहा चोन्द ।
सह प्रकेश वाजीन से वाजीनशर्द ॥
सामू बनी ह सन्न सं मुलि मान छोडिय ध्रापगो ।
ने सामन गार्क हर्व मिलतो तेह निरसी प्राप्तां
प चरित सामिल जेय मानव दान ग्रापी ।न करं
ने पृष्य परार्थ गुणी थार्ग गिर्ध पार्थ वह पर्र ।

इति श्री कलियुग प्रधान दानाधिकार थी विकाराय श्री मोजनरिंद मिम्रासण विनीनी चौपई सपूर्ण। नि॰ थी जिनजी की सानाजाद नारहोराम गोवी वासी सुरतगढ को, पढेंत्या दर्ने थी जिनाय नम-बच्या। भूत्यो नृक्यो सुमारि लीज्योजी मिनी द्वितीय भादना मुटी १० दी तबार स० १८०६ का। निखाई बह्य श्री थी रूममासर जी विराज वैराटमध्ये। श्रुम भवनु।

४८६५. सिहासन बत्तोसी —  $\times$  । पत्र स० २१ । घा० ११ $^3_2$  $\times$ ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय क्वया र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन स० १४८५ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

४८६६. सिहासन बत्तीसी —  $\times$  । पत्र स० १६ । भाषा-हिन्दी । विषय -कथा । ७० काल  $\times$  । ले० कप्त्र  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प वायती मन्दिर भरतपूर ।

४६६७. सिहासन बत्तीसी $-\times$ । पत्रसः १२३। ग्रा० १ $\times$ ४ $६वः। भाषा-सस्क्रतः। विषय-कथा। र०काल<math>\times$ । ले०काल सः १६४४ चैत बुदी १०। पूर्णः। वेष्ट्रन सः १६८। **प्रास्ति स्थान**-दि० जैन सन्दिर नागरी (बुदी)

विशेष--चपापुरी में लिखा गया था।

४६६६. सिहासन बत्तीसो—  $\times$  । पत्र सं० १० । ग्रा० १० $\times$ ४ ६ खाः नाया—हिन्दी एवः । विषय—कथाः १०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन सं० ३२। **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रार्तिना स्थाने, मल्दिए (टोक)

४८६६. सुकुमार कथा—  $\times$  । पत्रस० ८ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इच । आधा — संस्कृत । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २७१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन श्रववाल मन्दिर उदयपुर ।

४८७०. सुकुनानस्वामी छुंद--कः वर्मदासः । पत्र सं०३ । मा० ११ ४५ इन्द । मावा--हिन्दी । विषय --कवा । र०काल ४ । ने०काल स० १७२४ सावणः बुदी २ । पूर्णः । बेक्नसं० २२१/४५ प्राप्ति स्थान --दि० जैन सभवनायः मन्दिर उदयपर ।

िषशेष— क∘ शिवराज ने कोट महानगर मे प्रतिलिपि की थी। क. घमंदास सुमतिकीति के जिप्य थे। ४६७१. सुखसंपत्ति विद्यान कथा— × । पत्र स०२। ग्रा०१०३×४८ इत्थ। भाषा— माहत। विपय कथा। र० काल × । ते० काल × । पूर्ण। वेष्टन स०१३०। प्राप्ति स्थान—दि० कैन सनिटर दीवानकी कामा।

विशेष - प्रति प्राचीन है।

४८७२. सुखसंपत्ति विधान कथा—। पत्रस०२। प्रा० ६ $\times$ ४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कया । र० कान  $\times$  । ने० कान  $\times$  ।, पूर्ण । वेष्टन स० १८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर रीवानजी कामा ।

४८७३. सुगन्धदशमी कथा—राजचन्द्र। पत्रस०६। म्रा० १२ $\times$ १ इला । माषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, नागरी बरी ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

४८७४. सुगन्धदशमी कथा — खुशालचन्द्र । पत्र स० १२ । प्रा० ११ $\times$ ६ इच । भाषा — हिन्दी । विषय — कथा । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १६१४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२४/६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ इन्दराव (कोटा)

४८७५ प्रतिसं० २ । पत्र स० ११ । म्रा० १० है × ४ है । ले० काल स० १६१२ प्राजीज बुगी ६ । पूर्ण । बेल्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्टरगढ (कोटा)

विशेष--- लिखित सेवाराम वधेरवाल इन्दरगढ मध्ये ।

४८७६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १२ । आ० १०imes ४ है इश्व । ले० काल स० १६४४ भादवा सुदी १० । पूर्ण । बेप्टन स० ४४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

विशेष-- पुन्दरलाल वैद ने लिखी थी।

४८७७. प्रति सं०४ । पत्रस०७ । मा० १२१४७१ इञ्च । ले०काल स०१६२७ मादवा बुदी १४ । दुर्गा । बेष्टनस०७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान वेतनदास पूरीनी जीम ।

विशेष-शीगवाले मोतीवाल जी बालमुकत्वजी जी के पुत्र के पठनायं भरतपुर मे प्रतिसिधि हुई थी। ४८७८. प्रति सं० ४ । पत्रस० १३ । घा० १३ ४ १ । से०काल ४ । पूर्ण । वेहनसं० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सोगाणी मन्दिर करोसी । ४८७६. प्रतिसं०६ । पत्र स०१५ । द्वा०६४६ इश्वः ले०काल ४ । पूर्गा । वेष्टन सं० २४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

४८६०. सुमधदशमी कथा— $\times$ । पत्र स०४। भाषा—िहिदी । विषय्—कथा। र०काल  $\times$ । के काल  $\times$ । पूर्ण् । बेटन स०५०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचात्रती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — नृतक त्रिचार भी है।

४८६१. सुमाधित कथा —  $\times$  । पत्रस० १७१। छा० ११ $\times$ ४ टन्त्रः। भाषा-सस्कृत । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० २०२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर दोग्सली कोटा ।

विशेष- इससे आगे पत्र नहीं है। रत्नचूल कथा तक है।

४८६२, सुरसुन्दरी कथा— $\times$ । पत्रस० १७। प्रा० १०  $\times$  ४) इञ्च । भाषा – हिन्दी । विषय—कथा । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । स्पूर्ण । तेप्रनम० ७४/४२ । प्रास्ति स्थान—दिः चैन मन्दिर कोटक्यों का इंगरपुर ।

४८६३, सेठ सुदर्शन स्वाध्याय — विजयलाल । पत्र स०३। प्रा०११३ ४४ इटच । भाषा — हिन्दी। विषय — कया। र०काल स० १६०२। ने० काल स० १७१७ आगाउ युदी ६। पूर्ण। वे० स० १७२। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा।

विशेष — मुर्यपुर नगर में लिखा गया था।

४**८८४. सोमबती कथा** — । पत्र म०६। आ०११४५ इच्छा। भाषा सम्प्रतः। विषय-कणा। र०काल 📐 । ते०काल 📐 । पूर्णा। बेहुत म०४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नगरी बुदी।

विशेष—'महाभारते भीष्म युधिष्ठर सवादे' म से है।

४८८**४. सीभाग्य पंचमी कथा** — 🗶 । पत्र ग्र०१०। भाषा—सरहूर। विषय—कथा। २०काल स० १६४४। लक्काल म० १८६०। पूर्ण। वेष्टन म०६८२। **प्राप्ति स्थान**—दिल्जैन पत्रावनी सिंहर प्रस्तरा

विशेष-- हिन्दी टिप्पस महित है ।

४८६६. मंघजूल--- × 1 पत्रस०<sup>3</sup>, ७-१०। ग्रा० १०×४ इञ्च । भाषा - हिस्दी (पद्य)। विषय---कथा। र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण। वेष्टन म० ३५६। **प्राप्ति स्थान** - ग्रववाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४८६७. संबादसुन्दर् $\times$ । पत्रसः ११ । ग्रा० १० $\times$ ४ हुःच्यः । भाषा—सस्कृतः । विषय—कथा। २०कानः  $\times$ । ले०कानः  $\times$ । पूर्णः। वेष्ट्नः स०५२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीनान बूक्षाः।

विशेष — जारदारचपित सवाद, गगादारिध्यपः मवाद, नोकलक्ष्मी मवाद, मिह हस्ति सवाद, गोबुमचणक मवाद पञ्चित्रिय सवाद, मृगमदचन्दन मवाद एव दानादिचनुष्क सवाद का वर्णन है।

प्रारम्भ---

प्रगाम्य श्रीमहावीरं वदमानपुर दरम् । कृर्व्वे स्वात्मोपकाराय ग्रथ सवादमुन्दरम् ॥१॥ ४८६६ स्थानक कथा —  $\times$  । पत्रस०६६ । प्रा० ११  $\times$  ४६ख । भाषा-संस्कृत । विषय—कथा । २० काल  $\times$  । लेलकाल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० ३६० । प्राप्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर कोरानी कोटा ।

श्रन्तिम पृष्टिपका - इति श्री एकादश स्थाने करुणदेवकथानक संपूर्ण । ११ कथाये है ।

४८८६ हनुमत कथा — बहा रायमल्ल । पत्रस० ३६ । मा० १०३ × ६३ ६०० । माषा-हिन्दी प. । विषय कथा । र०काल स० १६१६ । लेकाल म० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर तेरहपथी दोगा ।

विशेष-ज्ञानचद नेरापथी दौसा वाले न प्रतिलिपि की थी।

४६६०. प्रतिसं० २ । पत्रस० २७ । म्रा०१०४४ । इत्या । से•काल ४ । पूर्ए । बेष्टन स० १७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन म्राग्वाल पत्रायती महिर म्रालवर ।

४**८६१ प्रतिसं० २** । पत्र स० ५६ । आ० १२ 🗶 ६चा । ले॰काल सं० १६५० । पूर्ण । वैग्टन स० ७७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर ब्रुदी ।

विशेष--जैन पाठणाना जयपुर मे प्रतिनिधि हुई थी।

४६२२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ७० । ग्रा० ११ 🗵 ५ देखा । ले•काल 🔈 । पूर्ण । वेष्टन स० ७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रनवर ।

४८६३. हरिश्चन्द्र राजा की सङक्ताय —  $\times$  । पत्रस्त १। ग्रा० १० $\times$ ४ $\xi$  इथ । नापा— हिस्दी । विषय—कथा । ७० कान  $\times$  । ने० कान  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० २२४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दबलाना (जूदी) ।

४६६४. हरियेए। चक्रवर्ती कथा – विद्यानित । पत्रस० ५। ब्रा० ११ $\times$ ४ ै इश्व । भाषा – सस्कत । विषय नक्षा । २०काल  $\times$  । तेककाल  $\times$  । पूर्ण । जीएं । वेष्ट्रन स० १८३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर नेमिनाथ टोडाराब्रिस (टोक) ।

४८६५. होली कथा । पत्रस $\circ$  ३ । झा $\circ$  ११ $^2_9$   $\times$  ५ $^1_9$  इख । भाषा -मंस्कृत । विषय-कथा । र $\circ$ काल  $\times$  । बेष्ट्रस $\circ$  १७६ । **प्राप्ति स्थान** - दि $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४८६६, प्रतिसं० २ । पथम०४ । धा० ११×५ इ.च. । ले० काल ४ । बेस्टन म०१८० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मदिर ।

४८६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । घा० ६×४} इञ्च । ले०काल म०१६७४ । बेष्टुनस० १<१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर, लक्कर जयपुर ।

विशेष — मोजाबाद में रामदास जोशी ने प्रतिलिप की थी।

४८६८. होली कथा —  $\times$  । पत्रसं० ३। प्रा०११  $\times$  ५ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय — कथा। र० काल  $\times$  ले० काल सं०१८७८ पीय बुदी ११। पूर्ण । बेष्टनसं०१५७। प्राप्ति स्थान —म $\circ$  दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४८६६. होली कथा। पत्र स० ३। झा० १९ ४६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। र०काल ×। ले०काल स० १८६०। पूर्ण। वेग्टन स० १७७-७५। प्राप्तिक स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर।

४६००. होत्ती कथा— मृति गुमचन्द्र । पश्वतः १४। प्राः ६३,४४३ इश्वः । भाषा -हिन्दी (पदा) । विषय—कथा । र०काल सं० १७४५ । लेकाल सं० १८६४ । पूर्णः । वेष्ट्रन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोकः ।

विशेष — इति श्री धर्म परीक्षा ग्रथटतै द्भृत भाचारिज शुभचन्द्र कृत होली कथा सपूर्ण । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

> श्री मुलसंघ भट्टारक संत, पट्ट ग्रामेरि महा गुरावत । नरेन्डकीर्ति पाट सोहत, गुरेन्द्रकीर्ति भट्टारकवत ॥११६॥ ताके पाटि धर्म को थम, सोहै जगतकीर्ति कुलथम । क्षमावत शीतल परिनाम, पडित कला सोहै गुगा धाम ॥११७॥ ता शिष्य श्राचारिज भेषः लीया सही सील की रेख। मनि शभचन्द नाम प्रसिद्ध कवि कला मे श्रधिकी बृद्धि ।।११८।। ताके शिष्य पडिन गुगाधाम, नगुराज है ताको नाम । मेघो जीवराज ग्रन जोगी, दिव चोग्नो जसो गुभ नियोगी ।।११८।। देस हाडौती सुवसै देस, तामे पूर कृजड कही : ....। ताकी शोभा ग्रधिक ग्रपार, नीमया सोहै बहुत प्रकार ॥१२०। हाड।वशी महा प्रचण्ड, श्री रामस्यय धर्म की भाड । ताके राज खणाली लोग, धर्म कर्म को लीहा म जोग ।।१२१।। तिहा पौगा छनीमुं कीडा करै, आपगो मार्ग चिल मे घरै। श्रावक लोग बसँ निहथान, देव धर्म गृह राग्य मान ॥१२२। श्रीचन्द्रप्रभ चैतालो जहा. ताकी मोभाको लगकटा। तहा रहे हम बहोत खुण्याल, धावक की देख्या ग्रम चाल । तातै उदिय कियो णूनकर्म, होली कथा बनाई परम ।। भाषाबध चौपई करी, संगति भलीतै चितमे घरी।।१२४।। मृति शशचन्द करी याकथा, धर्मपरीक्षामे छी जथा। होंनी कथा सनै जो कोई, मुक्ति तग्गा, मुख पार्व सीय ।। संबत सतरासौ परि जोर, वर्ष पचावन अधिवत और ॥१२६॥ साक गरिए मोलाछैबीस, चैन मृदि सानै कहीस। ता दिन कथा संपूरण भई, एक मो तीस चौपई भई।। सार्यादन मे जोडी पात, दोन्य दिसा कुशलान ।।१२७।।

स वत १८६४ में साह मोजीराम कटारया ने राजमहल में चन्द्रप्रम चैत्यालय में प्रतिलिपि कराई थी।

४६०२. प्रतिसं०२।पत्र स० मा शा०११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{2}$  स्था । ने क्सल सं०१ मन्द० फागुरा सुदी १।पूर्या । वेष्टर स०१६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहस्र (टोक) ।

४६०३. होलोपर्यकथा—  $\times$  । पत्रस॰ २ । आ० १ हु $^2$   $\times$  ४ इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । येष्ट्रन सं॰ ६०८ । प्राप्ति स्थान—भ० ६० जैन मन्दिर धजमेर ।

४६०४. **होती पर्व कथा**—  $\times$  । पत्रस०२ । आ०१०३ $\times$ ४३ दश्व ,। माषा—सस्त्र । विषय—कथा। र०काल  $\times$  । ते•काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टन स०६६२ । **प्रास्ति स्थान**—स०६० जैन मन्दिर प्रजानेर

४६०५. होलीरज पर्वकथा—  $\times$  । पत्रस $\circ$  २। प्रा $\circ$  १२ $\times$ ४ इश्व । मापा—सस्तृत । विषय—कया । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  २ $\in$ ३/११५ । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ वि $\circ$  जैन मदिर जवयुर ।

 $\star$  ६०६. होत्तेपिर्वकथा—  $\times$  । पत्रस॰ ३ । घा० ११् $\times \chi_{\times}$  इत्त्व । भाषा-हिन्दी (पत्र) । विषय-कथा । १०काल $\chi_{\times}$  । लेकाल  $\times$  । यपूर्ण । बेष्टन म० ४१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मिटर प्रविष

४८०७. होलीरेणुकापर्व—पंष्टित जिनदास । पत्रसं० ४० । ग्रा० ११×४१ इखा । भाषा— मस्कृत । विषय—कथा । र०काल स०१४७१ ज्येष्ठ मुदी १० । ले०कालस०१६२८ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । बेक्टन स०२३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-विशेष-विशेष जातीय साह गोत्रोत्पन्न श्री पदारथ ने प्रतिलिपि करवायी । फागुई वास्तव्ये ।

४६०**८. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ३६ । प्रा० १० है ४४ ¦ ले०काल सं० १६१५ फागुसा सुदी १ । वेष्ठन स० १७८ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-- नक्षकगढ मे महाराज। श्री कल्याए। के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६०६. हसराज बच्छराज जीपई—जिनोदयसूरि । पत्र स०२६ । ग्रा० १०३ ४ ४१ इत्व । भाषा—हिन्दी (पत्र) । विषय—कथा । र० काल 🙏 । लेक्काल स०१६७५ प्रासीच मुदी १ । पूर्ण । वेगृन सं०३४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृंदी)

विशेष---मिभल ग्राम मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६१०. हंसराज वच्छराज चौपई $\rightarrow \times$ । पत्रस० २-१६ । घा० १०  $\times$  ४ $^{3}$  इख । भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-कथा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । यपूर्ण । वेष्टन स० ७०३ । प्राप्ति स्थान-भ० टि० जैन मन्दिर प्रजभेर ।

# विषय -- व्याकररा शास्त्र

४६११. **अनिटकारिका**—  $\times$  । पत्र सं० १६। आ०१० $^3$   $\times$  ४ $^5$  इ.च । साधा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १७४४ पीप बुरी ६ । पूर्ण । बेप्टन सं० १४६४ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर श्रवमेर ।

४६१२, प्रनिटकारिका—  $\times$  । पत्र स० ३ । प्रा० १० $\times$  ४ $^1_2$  इच्च । मापा—संस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । वे०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टनस० २५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

४६**१३, प्रतिसं०२ ।** पत्र म०४ । ग्रा०१०<sup>3</sup>, ४४<sup>3</sup> इश्वा । ले० काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन म०२६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६१४, **प्रनिटकारिका** — × । पत्र स०४। ग्रा० ११×४ इघ्यः । भाषा-सस्का । विषय-व्याकरम्म । र०काल × । ले०काल स०१६५२ प्रापाड मुक्ता द । पूर्णः । येष्ट्रन स०१४ । प्राप्ति स्थान—रि० जैन मन्दिर थोरसली कोटा ।

विशेष-धीचद ने प्रतिनिधि की थी।

४८१**५. धनिटसेटकारिका** —  $\times$  पत्रस $\circ$  ३ । प्रा॰ १०  $\times$  ४ इच । भाष-सस्त्रत । विषय-व्याकरण । र $\circ$  काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं $\circ$  २३१,५५५ । प्राप्ति स्थान — सभवनाय रि $\circ$  जैन मस्दिर, उदयपुर ।

विशेष-भट्टारक थी देवेन्द्रकीति के शिष्य द्र० मोहन ने प्रतिलिपि की थी।

प्रति सम्कृत टीका सहित है।

४**८१६. प्रतिसं० २** । पत्र स० ३ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २३२/५६४ । **प्राध्ति स्यान**—पश्चनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६**१७. ग्रनेकार्थ संग्रह—हेमराज** १ पत्र स० ६४ । भाषा–संस्कृत । विषय व्याकरणा । १०काल ४ । ने०काल ४ । प्रपूर्णा । बेष्टन स०२४ । **प्रास्ति स्थान**—स भवनस्थ दि० जैन मस्विर उदसङ्घर

**विशेष** - प्रशस्ति निम्न प्रकार है - -

थी मुलसपे अट्टारक श्री सजलकीर्ति त० म० श्री भुवनकीर्ति त० भ० श्री ज्ञानभूषण देव स्तर्शिष्य मृति ब्रनतकीरि । पुस्तकीयद श्री गिरिपुरे लिखायित ।

४६१६. **प्रस्थायार्थ** - > । पत्रस्व ४। या०१०<sup>3</sup>, ४४<sup>3</sup> इखा माया - सस्कृत । विषय --याकरणा । ००४।त > । ते० काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० २७४ । **प्राप्ति स्थान** -- महास्कीय कि जैन महिर प्रकोर ।

४६**१६. ग्रह्मयार्थ** —  $\times$  । पत्रस्त ४ । ग्रा० १०३ ×४३ दश्वः । भाषा — सस्कृत । विषय — व्याकरण । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

४९२०. ब्राल्यात प्रक्रिया—ब्रानुमूति स्वरूपाचार्य । पत्रस०१० । ब्रा०१०४४ स्व । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाय भौगान व दी ।

४**६२१ प्रतिसं०२ ।** पत्रस०६३ । बा०६<sup>3</sup>,> ५० खा। ले० काल स०१६७६ फागृन मुदी ४ । पूर्यों । बेष्टनस०११८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाथ बूटी ।

विशेष - सवाईमाधोपुर में प्रतिलिप हुई थी।

४६२२. प्रतिसं० ३ । पत्र म० ३० । घा० ११४४ एवा । ले॰काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेप्टन स० १३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूदी ।

४६२३. उपसर्ग वृत्ति '  $\cdots$  । पत्रस० ४ । सा० १० ! × ४ ! दश्च । भौधा-संस्कृत । विषय – व्याकरण ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टन सं० २५० । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४६२४. कातन्त्रहपमाला—शिववर्मा । पत्र म० ६४ । द्वा० १० $\frac{3}{4}$  × $\frac{3}{4}$  इला । माला— सस्कृत । विषय-- व्याकरण । २० काल × । ले॰कान × । सपूर्ण । बेगृत म० दर्थ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर नागरी ब दी ।

विशेष -- ६५ ने बागे पत्र नहीं है।

४६२५. प्रतिसं० २ । पत्र म० २६ । प्रा० ११×५ इष्टम । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० २९६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

४६२६ कातन्त्रविकससूत्र—शिववसी । पत्रस० ८ । आ०१०१X४१६७ । गापा-सस्कृत । विषय-ध्याकरण । र० काल X । लेक्काल स०१६६१ । पूर्ण । वेष्टन २०२६७ । प्रास्ति स्थान--- २० वि० जीन सदिर अजीर ।

विशेष---ग्रवचूरि सहित है।

४६२७. प्रति सं० २ । पत्रम० ४ । ब्रा० ११ ४ ६२३ । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन म० ४२४/५७२ । प्रास्ति स्थान — सभवनाथ दि० जैन मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष - ग्रन्तिम प्रशस्त-

टोन श्री कातस्त्रसुत्र विकमसूत्र समाप्तं । प० ग्रमीपाल लिखित । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

४६२८. कातन्त्रतरूपमाला टीका—दौर्ग्यासह । एव म० ७३ । द्वा० ११ $\times$ ४) दुश्च । माषा—सम्हत । विषय—व्याकरण । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पर्गा । वेष्टुन सं० ३६६–१४१ । प्रास्ति स्यान— दि० जैन मदिर कोटडियो का हु वरपुर ।

४६२६. कातस्त्ररूपमाला वृद्धि—भावसेन । पत्रस्य ६६ । या० १० $\frac{9}{4}$  $\times$ १ इण्य । भाषा—सस्कृत । विषय- व्याकरण् । रक्शांच  $\sqrt{1}$  वे० काल  $\times$  । पूर्णः । वेग्टन स०५० । प्राप्ति स्थान - भठ दि० जैन सन्दिर प्रजमेर ।

४**६२०. प्रति सं० २** । पत्रस० ११७ । प्रा० १४/८५ इ'च । ले**०काल सं०** १४४४ । पूर्य । वेष्टन स० २०६/४७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सगवनाथ मन्दिर उदयपुर । विशेष -- प्रति शुद्ध एवं सुन्दर है।

प्रशस्ति—संबद् १४४५ वर्षे भाषात बुदी १४ भोमे श्री कोटस्याने श्री चन्द्रप्रभ जिनचैत्वालये श्रीमुलसंगे गाण्यतीमञ्जे बतात्कारणो श्री कुण्यकुण्यावायावये महारक श्री पर्यनदिदेशा तरण्डे भ० श्रीसक्त श्रीतिदेशा तरण्डे भट्टारक श्री बुजनकीतिदेशा तरण्डे भ० श्री जानभूपणदेशा तर्त्वाच्य बहु। मर्रासह जोग्य पदनार्थं गाण्ये परक्त शानावर्णों कमंश्यायां स्थानास्य शक्त्या तिवित । गामं भवत ।

४८३**१. प्रति सं० ३ ।** पत्रस० १३६ । मा० १२४४ इन्ड । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेकृत स०४२७ ५७**१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समयनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष - भागे पत्र फटा हुमा है।

प्रशस्ति--- निम्न प्रकार है--

४६३२. **कारक**खंडन—भोठम । पत्र स० १ । घा० ११ $\times$ ४) इचा । भाषा-सम्ब्रत । विषय-ध्याकरण । र० काल  $\times$  । ले काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर पावनाथ चौगान वंदी ।

विशेष-अन्तिम पुष्पिका-

इति भी भीष्म विरचिते बलबघक कारकखंडन समाप्त । प्रति प्राचीन है।

४६३३. **कारकविचार**— × । पत्रस०६। श्रा०१४४६ च । भाषा—संस्कृत । विषय— व्याकरण । '०काल × । ले०काल स०१६८८ । पूर्ण । वेष्टुनस०१३४। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन महिर राज्ञमञ्ज टोक ।

विशेष -- मालपुरा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४६३४. **कारिका** $--\times$ । पत्रस**्ट**। भाषा सस्कृत्। विषय-व्याकरण्। र० काल $\times$ । के० काल स्ट १८६५। पूर्ण्। बेपूनस**्ट १८**६६। प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपुर।

४६३५. काशिकावृत्ति - वामनाचार्य। पत्र स० ३५ । छा० ६५४४ इख । भाषा— सस्कृत । विषय - व्याकरस्म । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १५६७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २०२/६६७ । प्राप्ति स्थान - द० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्रि —सन् १४ बापाडादि ६७ वर्षे शाके १४३२ प्रवर्तमाने आश्वन बुदि मासे कृष्णापक्षे तीया तिथी अगुवामरे पुस्तकमिद लिखित ।

४६३६. कृषंतप्रक्रिया - श्रनुभृति स्वरूपाचार्य । पत्र स० १६। प्रा० ११×७ इवा । साप-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । लेक्साल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भीमनत्वन स्वामी बूंडी । ४६३७. कियाकलाप – विजयानस्य । पत्रस्त १। ग्रा० १० $\times$ ५३ द च । भाषा — संस्कृत । विषय — ब्याकरण । र० काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं० २४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्राप्तेनाथ महिन् , इन्टरगत (कोटा) )

४६३६. चतुष्क बृत्ति टिप्पग्--प० गोल्हग् । पत्रस० २-६२ । ग्रा० १३ $\times$ ४६व । शाय--सहकृत । विषय - व्याकरण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४०८/२६० । प्राप्ति स्थान --दि० जैन समयनाथ मन्दिर, उदयपुर ।

विशेष - प्रति प्राचीन है। बन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री पडित गोल्हरण विरचिताया चतुष्क वृत्ति टिप्पिशाकाया चतुर्यपादसमाप्तः

४६३६ चुरादिगरा—  $\times$ । पत्रस० ७। ग्रा० १० $^{1}$  $\times$ ५ इच । भाषा — सस्कृत । विषय — व्याकररा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टनस० ६७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६४०. जैनेरहच्याकरस्य — देवलंदि । पत्र स० १३२। आ० १२ $\times$ ७ $^{1}$  इञ्च । भाषा— सस्कृत । तिषय — व्याकरस्य । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । देवृतस० १४७६। **प्राप्ति स्थान**— प० दि० जैन मन्दिर अजनर ।

विशेष-- प्रथ का नाम पचाध्यायी भी है। देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है।

४६४१. प्रति स०२। पत्र स०२०१। प्रा०११  $\times$  ४५ इ.स.। ले॰ काल  $\times$ । अपूर्णं। वेष्टुन म०११२। प्राप्ति स्थान— ग०दि० जैन मदिर प्रजमेर।

४**८४२. प्रति सं**० ३ । पत्रस० ८६ । झा० १३×८ इखा । लेक्काल स०१६३४ माघ बुदी २ । पूर्ण । बुट्ट स०८२ । **प्राप्टिः स्थान—दि० जैन स**न्दिर श्री महाबीर बुदी ।

४६४३. तस्वदोषिका—  $\times$  । पत्रस० १८ । आ० १९ $\xi \times \xi_0^2$  इश्व । भाषा—सस्कृत । विषय—ब्याकरम्म । २० काल । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेघून स० २४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर सक्तर जयपूर ।

विशेष- मिद्धान्त चन्द्रिका की तत्वदीपिका व्याख्या है।

४६४४. तद्वितप्रक्रिया — स्रनुसूतिस्वरूपाचार्य । पत्रस० ६४ । प्रा० १० $\times$ ५ इच । भाषा — सस्कृत । विषय न्य करण । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिटर दवलाना (वू दी)

४६४५. तद्धितप्रकिया—महोसट्टी । पत्र स०१६ । प्रा० १ $\times$ ४ इच । प्रापा—सस्कृत । विषय—स्थ करण । र० काल  $\times$  । ले० काल स०१ ५६५ । पूर्ण । वेण्टन स०११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (त्रुदी) ।

४९४६. तद्धितप्रक्रिया —  $\times$  । पत्र स० १६-४२ । मा० १० $\times$ ६ $^1_1$  इख । भाषा — संस्कृत । विषय — व्याकरस्म । र०कालः  $\times$  । से०कालः  $\times$  । मपूर्णः । बेष्टन सं०२६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान बूरं. ।

पत्र चिपके हुए है।

४१४७. प्रति सं० २ । पत्र म० ७१ । प्रा० १ $\frac{1}{2}$   $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इच । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर बोग्मली कोटा ।

४६४ स. तर्कवरिमाया प्रकिया—श्री चिन्नमहु। पत्रसु०४६। प्रा०१०४४) दश्व। माया—मुस्कृत । विषय—व्याकरणा। र०कात ४ । ने०काल ४ । पूर्णा । बेहृतसु०६६ ४६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिश्यों का इंगरपुर।

४६४६. धातु तरिगिशी—हर्षकीति । पत्रस० ४६। बा० १०८४ इच । भागा—सम्बन्धा । विषय— व्याकरण । र०काल स० १६६३ । ले०काल स० १७४६ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २५३ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन महिर प्रभिनन्दन स्वामी वंदी ।

विशेष- स्वोपन टीका है। रिसीमध्ये स्थलीदेशे। महाराज श्री ग्रांपुमाह राज्ये लिखित ।।

 $\chi$ ह् $\chi$ ०. **धातुतर्राग्गी**—  $\chi$ । पत्रम० ४२। ब्रा०१० $^{1}\chi$ ४ $^{1}$ इल्डा भाषा—स्स्कृत। विषय—व्याकरण। रुकाल $\chi$ । लेक्सल स०१६६२ सगसिर सुरी ६। पूर्ण। देस्टन रा०१३१६। **प्राप्ति स्थान**— ५० दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर।

४६**४१ धातुनाममाला**— ४ 1 पत्र म०१२। ब्रा०११, ४४) राज्य । गाया सम्क्रम । विषय—व्याकरमा । २०काल ४ 1 । ले०काल ४ ।पूर्ण । वेष्ट्रन स००६५-१०६ । **प्राप्ति** स्थान - दि० जैन मदिर कोटडियो वा इंगरपर ।

४६५२. धानुपद पर्याय — १ । पत्र ग० ६ । आ० हर्नु ४५ द्वा । आधा-सरवृत । विषय— व्याकरमा । रुकाल × । ते० काल × । पूर्ण । वेट्न ग० ११०० । प्रास्ति स्थान- २०. ६० जीव महित अवसर ।

४६५३, धानुपाठ—पाणिनी । पत्र ग०१७ । या० १८८८ इता । आषा -सस्तत् । विषय-स्थाकरण । रज्काल ×ा ते० काल ग०१६२४ वैशाल वृदी ऽऽ।पूर्ण । वेग्टन ग०१५८) प्राप्टिह स्थान—दि० जैन मंदिर वीरमणी कोटा ।

विशेष - प० णिवदास मुत श्री नायेन लिखित ।

४६५४. घातुपाठ—शांकटायन । पत्रसः १३ । मा० ११ × ४० व । भाषा-सास्कृत । तिस्य व्याक्षरम् । र०काल × । लेक्सल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २० । प्रास्ति स्थान—दि० अंत स्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- जाकटायन व्याकरण में से हैं। प्रशस्ति निस्त प्रकार है---

मनम् १७२६ वर्षे बैजायः बुदी १३ णुक्ते श्री बाउड नगरं श्री ग्रादिनाव पंचालते श्री मूलमधे मरस्वत्रीत्रकः बनात्कार गण श्री कुद कुदावार्वान्व भट्टाकः श्री बादिशुगणदेवानतृष्ट् १० श्री रामसीति देवानत्तर्द्दे मं श्री गामनंदिदेवान्यन्द्द्रे भ श्री देनस्वभीतिदेवातदान्तायं ,ग्रावार्यं श्री कस्वाण्याकृति तिच्छत्वाचार्यं श्री विभूतनक्षरे गं गाकटायनं क्याकरणं वानुगाठ आनावरणान्धं सवार्थं । प्रभावतः।

४६ थ्र. धातुगठ—हर्षकीिन । पत्रस० १४ । आ०१० ४४ ¦ इञ्च । आषा सस्हत । विषय-व्याकण्ण । र०काल स०१६९३ । लेक्काल स १७६२ । भारवा गुरा४ । पूर्ण । बेष्टनस०१३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर द्यादिनाथ बुदी । विशेष --- प्रतिम---

खडेलयाल सद्ध शे हेर्मामहाभिष मुधी : तस्याभ्यर्थन पाथेय निमितो नदताश्चिरम् ।

४६५६, धातुपाठ $-\times$ । पत्र स०१०। आ०११ $\times$ ४ $^1_7$  इन्छ । माषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रक्काल  $\times$ । तक्काल स०१५० आसोज सुदी प्राप्त । बेष्टुनस०१४२५ । **प्राप्ति** 

विशेष-भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य प० शिवराम के पठनार्थ लिखा गया था ।

४६५७. धातुपाठ—  $\times$  । पत्रस० १०। प्रा० १० $\times$  ५ इक्ष । भाषा—सस्कृत । विषय-व्याकरम । प्रकाल  $\times$  । वे०काल  $\times$  । पूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर नेमिनाथ होकारावसिट होकी ।

विषय - केवल चुरादिगम है।

४६५८. **धातु शब्दावली**  $\sim \times$  । पत्र स॰ ३०। म्रा॰ ७ $\frac{3}{2} \times ५<math>\frac{3}{2}$  इख । भाषा —सस्क्रत । विषय—स्याकरण । २० साल्  $\times$  । ले० काल्  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २१४: ५६ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन सिंदर कोटडियो ना दुगरपुर ।

४६५६. धातु समास — × 1 पत्रसः २६ । धाः ११ × ४३ इञ्च । भाषा —सङ्क्त । विषय व्याकरमा । राज्यारा × । लेज्काल सः १६६१ । पूर्ण । वेष्ट्रन सः ६५ । प्राप्ति स्थान—मट्टारकीय दिः जन मन्दिर प्रजार ।

४६६०. निदाननिरुत्त —  $\times$  । पत्रस० ३। ह्या० १० $\times$ ४) इन्त । सापा सस्कृत । विषय— व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनम० १४। **प्राप्ति स्थान** —यण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

४६६१. पंचसधि—  $\times$  । पत्र म०१४ । प्रा० ८ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{3}{2}$ उन्ध । भाषा-मस्कृत । विषय— व्याकरण । ००काल  $\times$  । लेलन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०५८ । प्राप्ति स्थान—प्रयवाल दि० जैन सम्बर्ग उदस्पर ।

४६६२. पंचर्साध $-\times$ । पत्रस्व ४। श्राब्द $\times$ ४ इत्रवः। भाषा मस्कृतः। विषय-व्याकरम्। २०कालः  $\times$ । लकाल म०१६१६ स्रापाउः बुरी १४। पूर्णः। बेष्ट्नस्व०१४६। प्राप्ति स्थानः—दिव जैन मन्दिर देवलानः च मे

विशेष-मग्रह ग्रथ है। भाग्य विमल ने प्रतिलिधि की थी।

४६६३. पंचसिक्त-  $\times$  । पत्रसुष्ण । म्रा० ६ $\S$  $\times$  $extbf{x}$  ५ इख । भाषा सुरुत्त । विषय – स्थाकरण । ४०० जल  $\times$  । पे० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसुष्ण २३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर देवलाना (तृ.सी) ।

४६६४. पंचसिध $-\times$ ा पत्र सं० १४ । घा० १० $\times$ ४ इच । भाषा -सहरुत । विषय-ध्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६०१ । पूर्ण । बेष्टन स० २१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दवलाना वृदी ।

विशेष--प्रति जीर्गावस्था मे है।

 $\mathbf{x}$ ६६५. पंचर्षि —  $\times$  । पत्र स० १३ । ग्रा० ११ $\frac{1}{6}$   $\times$  ६ १७ । भाषा-सस्कृत । विषय-ब्याकरसः । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रमूर्सं । वे० स० १२४ । प्रास्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

४६६६. पाशिमनी व्याकरश्—पाशिमनी । पत्रस० ७४७ । प्रा० १२ $\times$ ४ इन्छ । मापा—सन्द्रत । वियय—व्याकरण । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  धपूर्ण । वेष्ट्रन स० २६४,४१४ । प्राप्ति स्थान—सम्भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष—थीन में कई पत्र नहीं है। प्रति प्राचीन है। इसका नाम प्रकिया कौमुरी व्याख्यान समनवसाद नामक टीका भी दिया है।सस्कृत में प्रसाद नामी टीका है। ग्रथाव थ १४६२४।

४६६७. पातंत्रील महाभाष्य—पातंत्रील । पत्रसः २६३ । या० १००६ १०० । प्रापा— सस्कृता विषय—व्याकरण । २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसः २२७ । प्राप्ति स्थान – टिक जैन मस्टिर क्रमिनस्टन स्वामी बंदी ।

४६६६ प्रक्रिया **कौमुदी—रामचन्द्राचार्य ।** पत्र न०१२ । आ०११८४३ इन्च । नाया— सस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल 🗴 । लेवन काल 📐 । श्रपूर्ण । वेगृन २०७१२ । **प्राप्ति स्थान**— २० दि० जैन मन्दिर स्रुप्ति ।

**४६६६. प्रतिसं० २** । पत्रम० १०४ । ग्रा० ६ $rac{1}{2}$ imes ४ डे ड थ । ले० काल स $^2$  १७१२ मर्गामर मुद्री १३ । पूर्ण । वेग्टन स० २७० । **प्राप्ति स्थान**— स० दि० जैन मदिर श्रवसंर ।

विशेष - माहिजिहाबादे लिखित भवानीदास पुत्र रएछोडाय ।

४६७०. प्रक्रिया कौमुर्वी— × । पत्र स० ५३ से ११७ । घा० १०५ ४% इन्छ । भाषा— सरकृत । विषय — व्यानरण । र०काल × । लेक्काल × । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १७ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

४६७१ प्रक्रिया कौमुदी —  $\times$  । पत्र स॰ १-७६ । प्रा॰ ६ $\frac{3}{4} \times \frac{3}{4}$  इञ्च । भाषा —सस्तुत । विषय—व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स॰ २४७ । प्रास्ति स्थान — वि॰ जैन मन्दिर दवलाना वृदी ।

विशेष-पाणिनि के अनुसार व्याकरण है तथा प्रति प्राचीन है।

४६७२, प्रक्रिया कौमुदी— X । पत्रस० १७६ । झा० १० X४६ थ । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल X । ने० काल X । पूर्ण । येष्टन स०६७१ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन सन्दिर स्राप्तेर ।

४९७३ प्रकिया संग्रह—४ । पत्रस० १६६ । ग्रा० ११ १४४ इन्छ । प्राप्त सम्बन्धन । विषय-व्याकरण । र०कास ४ । त० काल स० १६२४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३१४ । प्राप्ति स्थान — ग्रवदाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

४८७४. प्रक्रिया श्यास्या— चन्द्रकीित सूरि । पत्र स० २४-१४६ । आ० १५  $\times$  ७ इच । भाषा—सस्कृत । विषय – व्याकरण । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेद्वनस० ४४ । प्रास्ति स्थात-दि० जैन मन्दिर चौवरियान मालपुरा (टीक) ।

व्याकरण शास्त्र ] [ ५१७

 $\times$ ६७५. प्रबोध चिन्निका— बैजल सूपति । पत्रस०१५ । प्रा०१२  $\times$  ७६७ । भाषा— संस्कृत । विषय व्याकरण । र०काश  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२५३-१०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का दुगरपुर ।

४६७६. प्रबोध चिद्रिका —  $\times$  । पत्र म० २०। या० ११ $\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{7}$  इश्व । मापा-सस्कृत । विषय-व्यावरण । र०काल  $\times$  । ले०काल म० १८८० । पूर्ण । वेष्टुनसं० १६५ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन पर्यकाण मन्तिर इन्दरगढ ।

विशेष — सबन् १८८० शाके १७४४ बाहुन स्थाम पक्षे तियो ६ षष्ट्या शनिवासरे लिखत मुनि सुन विमन ग्यान्म पठनार्थ निर्पि इत गोठडा ग्राम मध्ये श्रीमद लाखन जिनालय ।

४९७७. प्रसाद संग्रह्स  $\times$  । पत्र स०१६-१०, ५-२३ । ब्रा०१२ $\times$ ५ इञ्च । भाषा-सम्ब्रह्स । विषय—व्याकरण । २०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०३३/३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६७८. प्राचीन व्याकरण् —पिएानि । पत्र म० ५६। घा० ६२ ४५ हुन्द । भाषा— सर्छन । विषय न्याकरण् । रककाल ४ । लेककाल स०१८२७ प्रवाह मुदी ६ । पूर्णं । वेष्ट्रन स०६६६ । प्राप्ति स्थान-भ०दिक जैन मन्दिर प्रवर्भर ।

४६७६. प्राकृत स्थाकरस्य-चंड कवि । पत्रस० २६। प्रा० १० ४४ हुन्छ । भाषा— प्राकृत । विषय — व्याकरस्य । उ० काल ४ । ले०काल स० १८७६। पूर्ण । बेष्ट्रनस० १६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर स्थानन्दन स्वामी वृदी ।

४६८०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १४ । स्ना० १०६ 🗙 ४३ इश्व । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रत स० १४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४६ म. ल**्धिसद्धांत कौम्**दी — **मट्टोजी दोक्षित ।** पत्र म० प२ । आ०६ ४४ इखा । माषा-सस्कृत । विषय—व्याकरण । ४०काल ४ । ने० काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स**० ११४ । प्राप्ति स्थान**— मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४**९५२. प्रति सं०२।** पत्रस**० १**९४। श्रा० १२ $\times$ ४ इश्वः। ले० काल  $\times$ । पूर्णः। बेष्टन सं० ११६६। प्रास्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

४६६२. प्रति स० ३ । पत्रस०१६ । ग्रा० १०imes१ इखा । र०काल imes । लेकाल imes । प्रपूर्त । बेप्टन स० १३४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दबलाना बूंदी ।

४६ म् ४६ त्रित सं० ४ । पत्र स० ४८ । खा० १२  $\times$  ५ १ इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० ७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर कामा ।

४६८५. महोमट्टी प्रकिया—प्रमुपूर्ति स्वरूपाचार्य । पत्रसं० ५६ । प्रा० ११% ४४ । इञ्च । भाषा—सःस्कृत । विषय—व्याकरण । र०काल ४ । ले०काल० स०१६०० । पूर्ण । बेष्टनस० ८२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भन्दिर नागदी बुदी ।

४६६६ महोमट्टी व्याकरए--महोमट्टी । पत्रतः ६१ । प्रा०६ १४६ इच । भाषा--सस्कृत । विषय - व्याकरए। २०काव ४ । केकाल ४ । धपूर्ण । वेष्टन सं०११७ २६६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर टोडाराविह । ४६८७ प्रति सं०२।पत्र स०२०। आ०१०४६ इञ्च। लेकाल ४। अपूर्ण। वेष्टन स०७४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पवायती मंदिर कामा।

४६ कस. प्रति सं० ३ । पत्रस० ११ से ४२ । छा० ११ imes ४ इञ्च । ले० काल imes । छापूर्ण । वेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

४६ ६६. **राजादिगरा वृ**त्ति —  $\times$  1 पत्रस० २२ । आ० १२ $\frac{1}{2}$  ४ $\frac{1}{2}$  इत्त । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याक्तरमः । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । स्र्यूर्ण । वेष्टन स० २०६ । प्राप्ति स्थान — स्रयति दि० जैन मन्दिर, उदयद्ग ।

४६६०, रूपमाला—भावसेन त्रिविवदेव । पत्रह० ४६। आ० १० $] \times 4'$  इत्र । भाषा-सस्क्रन । विषय-स्थाकरण् । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्णं । वेष्टनसं० १४२ । प्राप्ति स्थान—र्व० जैन मी-रर दीवानजी कामा ।

४६६१. **रूपमाला** —  $\times$  । पत्रस० ५०। ब्रा०१० $\times$ ५ इ.ख । भाषा-सरकृत । विषय-ब्राकरण । रूकाल्  $\times$  । लेक काल्  $\times$  । पूर्ण । बेहत स०२१७ । **प्राप्ति स्थात** — भट्टारकीय दि० केत मन्दिर प्रकार ।

४६६२, रूपावली—  $\times$  । पत्रत्न १०६ । आ० १० $\times$ ४  $१ ६७ । आपा-सम्भ्रत । विषय— व्याकरण । २०काल <math>\times$  । ले० कान  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्ट्रतसंग्रहे । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहत्त, टीक ।

४६६३, लघुउपसर्गवृत्ति —  $\times$  । पत्रसं॰ ६ । प्रा॰ १० $\S \times \emptyset$  ुँडश्व । भाषा-सम्क्रत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २४० । प्राप्ति स्थान —िर० जैन अध्याल मन्दिर उदयपुर ।

४६६४. सञ्चातकटीका — मट्टोरपल । पत्रस० ६० । आ० ६ $\frac{7}{5}$  ४ ६७ । भाषा – सस्कृत । विण्य-व्याकरण । र०काल  $\times$ । ते ० काल स० १४६५ आषाढ मामे ७ शनी । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २०३/६८६ । प्रास्ति स्थान –नगभवनाथ दि० जैन मदिर उदगपुर ।

विशेष -- बसवा मे प्रतिलिपि हुई थी।

ां । श्री मन्त्रोणुनीयनपाणश्चीय अट्टारक श्री हर्यकीति सूरि विरोधनाया साधीशासियास्या लघु नाममाश्रा गणाना । सुसन् १८३१ वर्षे वाके १७०० मिनी भादता मुक्त पक्षे बार दीतवार एके नै सुर्णा कियो । भीवराज पार ।

४६६६, लयुक्तेत्र समास — × । पत्रसक ३२। प्राक्त ११ ×४ है इच । माया-प्राह्त-सस्टा । विषय-क्यारणः । रकलाल × । लेक काल सक १६६२ प्रातीज जुदी ११ । पूर्ण । वेप्टत सक १७४ । प्राप्ति स्थान - रिक जंत व्यापनी मंदिर करीनी ।

४८६७. सपुरीखर (शब्देन्दु)—  $\times$  । पतस्व १२४। ब्राव ११  $\times$  ध्रे द्वे द्वा । मापाः सस्कृत । विषय-व्याकरणः । रक्काल  $\times$  । सेक्काल  $\times$  । बेष्टनसक ६६६। **प्राप्ति स्थान**—दिव जैन मन्दिर सम्बन्दर तम्बर, जयपुर ।

४६६८. लघूसिद्धांत कौमुदी - वरदराज । पत्र स०६३ । आ०११ ४४६ ८४ । भाषा — सस्छा । विषय व्याकरण । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१०३२ । प्राप्ति स्थान— भट्टारकीय दि० जैत मन्दिर प्रजनेर ।

४६६६. प्रति स० २ । पत्रस० १६८ । ग्रा० १० ४ ४) दश्य । लेकाल स० १८३६ । पूर्ण । बेष्टुत स० २१४ । प्रास्ति स्थान--दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

५०००. प्रति सं० ३ । पत्र स० ३२ । आ० ११ imes १ $^{\circ}$  ६२ । ते० काल imes । सपूर्य । वकुत म० २४–१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का हु गरपूर ।

५००१.**बाक्य मजरी**— × । पत्रम० ३० । मा० १४४ उथा । माणा-सन्कृत । विषय— स्वातरणा । रक्षाल × । लेक काल म० १६२१ । पूर्ण । वेष्ट्रन ग०७१ । **प्राप्ति स्थान**—दिव जैन मन्दिर बोज्यगी कोणाः

५००२. विसर्ग संधि—  $\times$  । पत्रस० १२ । मा० ६ $^{\circ}$   $^{\circ}$   $^{\circ}$  ५ इ.स. । भूषा-संस्कृत । विषय-स्माकरण । र० काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेप्नृत स० १२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर देवलाना व दी ।

५००३ शाकटायन स्याकरस्य—शाकटायन । पत्रसः ७७१। सा० ११ × ५२ इत्र । भाषा-सरका । विषय-व्याकरण । रज्याल × । लेज्काल म० १६८१ । पूर्ण । वेष्टनसं ०५६ । प्राप्ति स्थान— दिव जैन स्रवाल सन्तिर उदयहर ।

प्रशस्ति — निम्न प्रकार है - सबद् १६८१ वर्षे जेष्ठ मुदी ७ ग्रु समाप्तीय ग्रन्थ ।

प्रकार प्राप्त स्थापाली -- ४ । पत्र सक् १३ । भाषा—मन्द्रत । विषय—स्याकरण । रक्काल ४ । विकास - । पूर्ण । बेदन सक् ७४४ । प्राप्ति स्थान -- कि जैन प्राप्ती मन्दिर भरतपुर ।

प्रवर्धः प्राव्दं भेदप्रकाशः—महेरसर । पत्र स० २-२० । ब्राव् १३५ ४६ इन्त । भाषा— मन्द्रतः । तिषय - व्याकाणः । २०कालः ४ । के०कालः स० १४४७ । ब्रपूर्णः । वेष्ट्रतः स० ११२ । प्राप्तिः स्थान—दिव जैन ब्रव्यालं मन्दिरं उदयपुरः ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबन् १५४७ वर्षे बापाट बुदी १४ दिने निलितं श्री मूलसघे भट्टारक श्रीज्ञानभूषण गुरूपदेशात् इत्रज्ञ जन्तीन श्रीष्ठ जटता भार्या पाच पुत्री श्री धर्मणि ।

५००६ षट्कारक-विनश्चरनीदि श्राचार्य । पत्रस० १७ । ग्रा॰ ११४४) हल्ल । भाषा-सरकृत । विजय-स्थानरण । र०काल ४ । नै० काल शक म०१४४१ । श्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०१७१८ । प्राप्ति स्थान- वि० जैन मदिर नीमनाथ टोडाराजीवह (टोक)

विशेष--- प्रतिना पुष्पिका--- इति थी महान बोडाम्मण्य पट्कारक समात्ता विकवस्त्रदि मह वार्ग विश्वितीय सम्बन्धो । काक १५४१ कर्णाटक रेग भीरभोतानारे आवार्य थी गुराबद्र तत्त्वहुँ महत्ताच स भीमत महारक थी सक्तान्द्र शिष्य ब्रह्म थी बीरवासन नितिन बोहक रक ॥

४००८. बट्कारिका— × । पत्र स०४। ब्रा॰ ११×५ हुन्छ । भाष —सस्कृत । विषय—व्य करण । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेस्टन स० २६८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर अवसूर ।

५००६. बट्कारिका —  $\times$  । पत्र स०५ । मा० ११ $\times$ ५ $^2$  इख । भाव — सरकृत । विषय — व्याकरण । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण् । वेष्टनस० २६८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सफ्कर, जयपूर

५०१०, **पष्टपाद —** ४ । पत्र स० ६ । सा० ११ ४ ६ इन्छ । भाषा -सस्कृत । विषय -व्याकरण । र•काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २६८ । **प्राप्ति स्थान** — प्र० दि० जैन मदिर स्रवमेर । विशेष - कृदन्त प्रकरण है ।

५०१**१. सप्तसमासलक्षरा----** × 1 पत्रम० २ । घा० ११ × ५ इच । भाषा-मस्कृत । विषय---च्याकरण । ८०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वेष्टुनस० ४२३/५७७ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन सभवनान मन्दिर उदयपुर ।

५०१२. संस्कृत मंजरी—वरदराज । पत्र स॰ ११ । म्रा० ११ ४६ ६ च । भाषा-सम्बन्ध । विषय-व्यास्त्रण । र०काल  $\times$  । ते० काल स ० १८६६ भाववा बुदी  $\mathbb R$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ८२ । प्राप्ति स्थाल-४० जैन मन्दिर प्रादिनाथ (ब दी)

४०१३. संस्कृत मजरी× । पत्रस० १० । बा० ६) ४४} दश्च । आया-स स्कृत । विषय— व्याकरण । रुक्कान ४ । के•काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १०३३ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन सन्दिर क्षजीर ।

५०१**८ संस्कृत संजरी**— $\times$  । पत्र स०४ । धा०१० $\{x}$  ४ $\}$  इच्छ । भाषा – सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२३७ । प्रास्ति स्थान—अट्टान्कीय दि० जैन सन्दिर स्थानरः

४०१४. संस्कृत संजरी— × । पत्रस० ४ । ग्रा० १० × ४) इ.च । भाषा सस्कृत । विषय न्याकरण । १०काल × । ले०काल स० १९४३ । पूर्ण । बेप्टन स० १४४ । **प्रान्तिस्थान** — दि० जैन पार्वसंख्य सन्दिर चौगान बुदी ।

५०१६. संस्कृत मजरो $-\infty$ । पत्र स०१३। प्रा०६  $\times$  ५ इच । भाषा -मम्हृत । विषय-ध्याकरण । ः श्रव  $\times$ । ते० कान स०१६१ । पूर्ण । वे० स०१४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाय मन्दिर बोगान बुदी ।

प्रतश्**ष्रतिसं०२** । पत्रस०१२ । ग्रा० ५×५ इखा । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान —उपनेक ।

५०१८. सस्कृत मंजरीं— × । पत्रस्त ७ । था॰ ११ × ४ इख । माप — सस्कृत । विषय-व्याकरण रच्कात × । ले०काल स० १६३४ । पूर्ण बेष्टनसं० ६८ । प्राप्टिः, स्थानः—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोह ।

५०१६. संस्कृत मंजरी— $\times$ । पत्रसः ६। मा० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । मापा संस्कृत । विषय—स्थाकरण । २०काल  $\times$ । लेक्सल स० १८६६ कानी सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स२४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाय मन्दिर इन्दरसङ (कोटा)

५०२०. प्रति सं०२ । पत्रस०४ । ले० काल स०१८४७ । पूर्ण । बेष्टनसं०२४७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष-लाबेरी में प्रतिलिपि हुई थी।

४०२१. समासचक $-\times$ । पत्रस० =। आ $\circ$  १ $^3_{
ho}$   $\times$   $^3_{
ho}$  इञ्च । आया—सस्कृत । विषय— स्थाकरण । र $\circ$  काल  $\times$  । ते $\circ$  काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  १६३५ । प्राप्तः स्थान—महारकीय रि $\circ$ जैन प्रतिष्ट प्रजीत ।

**५०२२. समासप्रकिया**  $\times$   $\times$  । पत्र स० २६ । धा० १० $^3$   $\times$   $^4$  रुङ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र॰काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १३१७ । **प्राप्ति स्थान** — मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

%०२३. समास लक्षरा — ∴ । पत्रस०१ । ग्रा० १०×४ इच । भ्राषा-सस्कृत ।विषय-व्याकरण । र०काल × । ले०काल । वेष्टन स० ३५१-५६० । प्राप्तिः स्थान दि० जैन सभवनाथ मन्दिर क्रमेटा

विशेष – संस्कृत टीका सहित है।

४०२४. सारसिद्धान्त कोमुबी $-\times$ । पत्रस॰ २३। प्रा० १० $\frac{2}{5}\times \ell_{\gamma}^2$  इ व । भाषा -सस्तृत । विषय—व्याकण्या । २०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६-७७ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मिटिंग् कोटडियों का हुगरपुर ।

**४०२६. सारस्वत टीका**—  $\times$  1 पत्र संस्था ७६ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$ दःव । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । २०काल  $\times$  । लेलन काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २३८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी) ।

५०२७. सारस्वत चिन्न्नका—झनुसूतिस्वरूपाचार्यः । प्रतः ४४ । आ० ११ $\times$ ५३ दश्च । भाषा-सस्कृतः । विषयः—व्याकरणः । र०कालः  $\times$  । ले० काल $\times$  । झपूर्णः । वेग्टन स० १२४ । **प्राप्तिः** स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहलः टोकः ।

विशेष-प्रति सम्कृत टीका सहित है।

४०२ म्. सारस्वत टीका — पुंजराज । पत्रस्व १६३ । या० १० $\times$ ४ इ.च.। भाषा — संस्कृत । विषय — ब्वाकरण । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वष्टन त्र०२४३/४६६ । प्राप्ति स्थान — स भवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष — पुंजराज का विस्तृत परिचय दिया है। नमदबनमम्बरस्तत्विज्ञानपार्थः। सुजनविहित तापः श्रीनिध्ववीतादोयः। प्रवनिपतिचारण्यात् प्रोवधीमे च मत्री। मफत्लमिकास्था श्रीण्यासाद्वयाद्व । पतित्रता जीवनधर्मपत्नी धन्यामकूनामकुटबमान्या । श्रीपु जराजास्थमसूत पुत्र मुजं चेतेस्तेश्वारितः पवित्र ॥१४॥

२४ पद्म तक परिचय है। अस्तिम पद्म निम्न प्रकार है---

योग रुचिर चरित्रो गुरोविचित्रेरीप प्रसभ ।

दिग्दताबल दताबली बलक्ष शस्तमृते ।।२३।। साम टीका व्यरचम्दिमा चारु मारस्वतस्य ।

व्यक्तिश्वना सम्पकृताय पु अराजा नरेन्द्र ।।२४।।

गभीरार्थमचित विवृत्ते स्वीयसूत्रै पवित्रमेनः।

मध्यस्यत इह मुदास् प्रसन्ना ॥२४॥

श्री श्री पुजराजकृतेय सारस्वत टीका संपूर्णा। तः० गोपालन तः० कृत्माय प्रदर्सा । ग्रथा ग्रंब ४५०० । प्रति प्राचीन है।

५०२६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७२ । ब्रा० ११२ ४ ६३ इसा ने०कान ⋋ा बंददा म० ४०० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- प्रति बहुत प्रःचीन है।

५०३०. सारस्वत दोषिका बृत्ति—चंद्रकीति । पत्र म० २६०। प्रा० १० रे ८ ४० ठच। भाषा—म स्कृत । विषय—व्याकरण । पूर्णा । र०काल हा । त० काल म० १०३१ व्यासाय पृशी ३। वेष्ट्रनस्क०१९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान वृदी ।

विशेष-महात्मा मानजी ने मवाई जयपुर के महाराज सवाई पृथ्वीसिंह के राज्य में लिखा था।

५०३१. प्रति सं० २ । पत्रस० ४१ । आ० १०५ 🏋 🗳 इन्त्र । चे० काल 🔧 । प्रापूर्ण । वेदनस० १०५ । प्राप्ति स्थान-चिठ जैन मन्दिर ग्रीभन्दन स्वामी वृदी ।

**विशेष** – ४१ संग्रागे पत्र नहीं है।

५०३२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २०१ । खा० १ ्॑र४ः डच । ले० काल 📯 । पूर्ण । बहुन स० ४ । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन मंदिर दबलाना (जूरी) ।

४०३३. प्रतिसंव ४ । पत्र सव २०२ । साव १.১४) दश्च । नेव कान ८ । पूर्ण । बेट्यन सव २६१/१९४ । प्राप्ति स्थान—विव जैन मन्दिर कोडियों का हु राष्ट्र ।

**श्रन्तिम पुष्पिका**—उति श्री नागपुरीय वपागच्छापिराज २० श्री वन्द्रकीत्तिसूरि विर्वाचनाया सारस्वत व्याकरमा दीपिका सम्पूर्ण ।

५०३४. प्रतिसं० ५। पत्र सम्या १८२। श्रा॰ ११¦×४३ इच । ले० काल म० १८५१ पीय बुदी १। पूर्ण । पेथ्टन स० १६४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

५०३५ सारस्वत धातुपाठ—स्रमुमूतिस्वरूपाचार्य । पत्रस० ७ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$ ४ $\frac{3}{2}$  इन्त । भाषा—सम्हत । विषय — व्याकरण ।  $^{-2}$ ०काल  $\times$  । के०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत स० ४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भन्दिर दवलाना (बूँ दी) ।

 $\dot{\mathbf{x}}$ ०३७. सारस्वत प्रक्रिया— अनुसूतिस्वरूपाचार्यः । पत्र स०१०१ । झा०१० $\times$ ४२ इन्छ । भाषा—संस्कृतः । विषय-व्याकरणः । र०कालः  $\times$  । गे०कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनः स०१४२४ । प्राप्तिः स्थान— अ०६० जैन सदिर अजनेरः ।

विशेष -- इस मन्दिर में इसकी ११ प्रतिया ग्रीर है।

५०३ द, प्रति स०२ । पत्र स० ७४ । ग्रा० १२ 🗴 ४ इश्वः । ले० काल स० १६४३ । बेछन स०६०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्ष्कर जयपुर ।

५०**३६. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० ३२ । घा० ११ $\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$  इल्बा । ले० काल स० १८६७ । बेग्रन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५०४०, प्रतिसं**० ४। पत्र स०६० से १२६ । लेक्काल स०१७२६ । स्रपूर्ण । बेप्टन स० ६२,४६६ **। प्राप्ति स्थान**--सभवनाथ दि० जैन सल्दिर उदयपुर ।

विशेष — प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

सबन् १७२८ वर्षे पौप मामे कृष्ण पक्षे पचम्या नियौ बुधवासरे देवगढे राज्य श्री हीरसिंघराजन मृद्रश्री कल्यामा जी मनिधाने जिलिनमिद पुस्तक रामकृष्णीन बागडगच्छेन वास्तव्येन भट्ट मेवाडा ज्ञातीय "" "" लिखन ।

५०४१. प्रति सं० ५ । पत्र स०२४ । आ०११४७ इञ्च । ले०काल ४ । प्रपूर्ण । बेष्टन स०८१ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर नागदी ब दी ।

५०४२. प्रतिसं०६ । पत्र स०६६ । घा०११ ैं ४७ इस्त्र । ने० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०२६० । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी ब दी ।

**५०४३ प्रतिसं०७ ।** पत्रस० ३२-६१ । प्रा० १२ $\times$ ५ $^{\downarrow}$  इच्च । ले०काल  $\times$  । **फ**पूर्ण । बेष्टनस० २०७ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर स्रीमनन्दन स्वामी, बुदी ।

**५०**४४. **प्रतिसं**० मः । पत्र स० ५१ । म्रा० १० $\times$ ४२ हुँ इच । ले० काल  $\times$  । म्रपूर्यः । वेष्टन स० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—६० जैन मन्दिर प्रसिनन्दन म्बामी, बूदी ।

विशेष - ६१ से ग्राग पत्र नहीं है । प्रति प्राचीन है ।

५०४५, प्रतिसं० ६ । पत्र म १२ । ग्रा० ६ ; १४ ४१ इला । लेक्काल ४ । ग्रापूर्ण । वेष्टन म० १६६ । प्राप्ति स्थान—िव० जैत मन्दिर श्रीसनस्त स्वामी, व दी ।

५०४६. प्रतिसं० १०। पत्रस० ००। ग्रा० ११४ ५ इच्चा ले० काल स०१६७० । पूर्ण। वण्टन स०५६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर पार्थनाथ चीमान खुदी।

**५०४७. प्रतिसं० ११।** पत्रस० पत्र म० १३ । प्रा० १३ $\frac{7}{2} \times 4\frac{7}{6}$  इल । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २१७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पाश्वेनाथ जीगान बूदी ।

५०४६. प्रति सं० १२ । पत्र म० १० । प्रा० १० $\frac{9}{8}$  $\times$ ७ इक्ष । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २४६ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

५०४६. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० १७ । प्रा० १०४५ इवा । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहणवी मन्दिर नैसावा । ५०५०. प्रतिसं० १४ । पत्रस० १२८ । आ० १२४६ इ.ख.। लेक्काल ४ । पूर्ण । बेहन स० ३१७। **प्राप्ति स्यान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

५०५१. प्रति सं० १५ । पत्र स० ४५ । का० ६५ ४ ५ हुःख । ले० काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टत स० १६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फ्लेहपुर शेलावाटी (सीकर) ।

५०५२. प्रतिसंव १६ । पत्र स०६४ । आ० ११६ × ३६ इ.च. । ले० काल 🗴 । पूर्ण् । वेष्ट्रसुक ३१६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन. मन्दिर दीवानजी कामा ।

**५०५३, प्रतिसं० १७ ।** पत्रस० २५ । ब्रा० १०<sup>5</sup>६ ×५ इल्डा । ले०काल × । ब्रपूर्ण । वेष्टन स० ३०७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

- ५०५४. प्रतिसं० १८ । पत्रस० २० । घा० ११ $\frac{1}{2}$  ४ ६ $\frac{1}{2}$  इस्त्र । ले० काल स० १६०६ ब्रामोज बदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ३६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष —कामा मे बलवन्तमिह के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

**५०५०. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स**० ६**४ । आ० १०४ ५<sup>5</sup> डब्ब । ले० काल स० १८६२ फानुग्य बदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० ७१ । प्राप्तिः, **स्थान**—दि० जैन पचायनी मदिर कामा ।

५०५६. प्रति सं० २०। पत्रस० ६२ । ले० काल स०१६६४ । खपूर्मा । बेहन स०५१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५०५७. प्रति स०२९। पत्र स०४५। स्रा०६ $rac{3}{2}$  $\times$  $^{3}$  इचा । ल० काल  $\times$  । पूर्मा । बहुत स०१९७ । प्राप्ति स्थान—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर दृत्दरगढ ।

**५०५६. इतिसं० २२ ।** पत्र स० १०६ । झा० १०<sup>६</sup>४५ है इन्छ । **से०**काल स० १६४० । पूर्यो । बेष्टुत स० २०७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त सन्दिर ।

५०५६. प्रति सं० २३ । पत्रस० १६ । स्रा० ११ $\times$ ४ $\xi$  इन्त । से०काल  $\times$  । पूर्गा । वेष्ट्रन स० १२६ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

५०६०. प्रतिसं० २४। पत्रस०२-६५ । ले०काल सं०१८५। अपूर्णा विष्टनस०१३०। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

५०६१. प्रतिसं० २५ । पत्र स० १४-५८ । आ० १०१ ४ ४१ दश्व । ले∘काल ४ । स्रपूर्ण । वेष्टन स० २४१ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मदिर दबलाला (बुंदी)

५०६२. प्रति स० २६ । पत्र स० ६३ । घ्रा० १० ४ ४ इच ।ले० काल ४ । घ्रपूर्ण । बेस्टन स०४२ । प्राप्ति स्थान—दि० तैन मदिर दवलाना (ब्रुंदी) ।

**५०६३. प्रतिसं० २७ ।** पत्र म० १३६ । ले०काल स० १७७३ पूर्गं । बेष्टन म० ४६ । **प्राप्ति** स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

मंबन् १७७३ वर्ष चैत्र मासे मुन्ने मृननपरो नियो तृतीयाया ३ मृणुवासरे तिनित रुद्धानहारमा गढ ग्रंबाबती मध्ये निवाइन ग्रारमार्थे पठनार्थ पाना १३६ श्लोक पाना १ मे १५ जो के लेखे ज्लोक ग्रक्षर बलीम का २००० दो हजार हुआ। तिलाई रुपया ३।।।) बाचे जीने श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्रीराम श्री **५०६**४. **प्रति स**ः **२८ ।** पत्रसः ४६ । स्रा०६ $\frac{3}{7} \times 2^{\frac{3}{7}}$  इञ्ब । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०५४ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मदिर ।

विशेष — प्रथम वृत्ति तक है।

**५०६५. प्रति स० २९**। पत्र स० ६ । ग्रा० ≒ै ४४ ¦ इश्वा। ले० काल स० १८६० । पूर्गा। वेष्ठन स० ७। **प्राप्ति स्थान**⊷दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टोक)।

विशेष--विसर्ग सन्धि तक है । द्रव्यपूर (मालपूरा) मे प्रतिलिपि हुई थी ।

**५०६६. प्रतिसं० ३०**। पत्र स० १०४ । द्या० ६ $\frac{3}{8} \times 4\frac{3}{9}$  इक्ष । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेव्रन स० ४ । **प्राप्ति, स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मानपूरा (टोक) ।

**५०६७. प्रतिसं० ३१** । पत्र स०४४ । स्रा०१० ६ इन्था । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वेष्टन स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायिमह (टोक) ।

**५०६८. प्रतिसं० ३२ ।** पत्र स० ७**४ ।** ग्रा० १११ ४ ४ इखा । लेखन काल स० १६३८ पीप बटी ८८ । पूर्ण । व० स० ६५–३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।

प्रशस्ति— मवत् १६३८ वर्षे पीप बृदी १५ णुके आ मृत्यस्ये सरस्वतीपच्छे बलात्कारगणे मागवाडा पुरोनास्थानं भी आदिनाय चेत्यावते श्री कुत्वकुत्त्वाचार्याच्ये मानूदाक श्री पप्रमत्त्वदेव तत्पट्टे भ० श्री मकत्वर्गीनिदेवा तत्पट्टे भ० श्री भुवनकीत्ति देवा तत्प्यप्टे भ० श्री वाम्मूदागादेवास्त्रदेष्ट्र भ० श्री विजयकीत्ति देवास्तराष्ट्र भ० श्री शुभवददेवारत्यस्ट्टे भ० श्री मुमतिकीत्ति देवान्त भ० श्री मुसलीत्ते गृहपदेशात् स्वास्त्र पञ्जाश्य तारस्यन प्रशिवा विविधत स्वजानावर्गी शयार्थ स्वपटनार्थ । श्री णुभसत् ।

५०६६. प्रतिसं० ३३ । पत्र स०६०। ग्रा०११ 🗴 ४ इचा । ले० काल स०१६६४ । पर्गा । ये० स० ३७२ -१४२ **। प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**५०७०. प्रतिसं० ३४ ।** पत्रस० ३६-६७ । म्रा० १२imes६ इ.स. । ते०काल imes । पूर्ण । वेप्टन स० २५६-१०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

**५०७१. प्रतिसं० ३५** । पत्र स० ६६ । झा० ११×५ इच । ले०काल 📐 । पूर्ण । बेष्टन स० ६१-४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर कोटडियो का हुगरपुर ।

५०७२. प्रक्किसं० ३६। पत्र स० ५४ । ते० काल  $\times$  । पूर्मा । वेष्ट्रन स० ४६३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--छोटी २ पाच प्रतिया और है।

**५०७३. प्रतिसं० ३७ । पत्र स० १४७ । ग्रा० १**,४४ इञ्च । **ले०काल** 🗴 । ग्रापूर्ण । वेष्टत म० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

**५०७४. प्रति स० ३६** । पत्र स० न७ । झा०११× ४ <sup>‡</sup> इख । ले०काल स०१६३५ । पुर्णावेशन स०१४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर (राजमहल) टोक ।

विशेष--विद्वान् दिलमुखराय नपसदन (राजमहल) मध्य लिखित ।

५०७५. प्रति स० ३६ । पत्र स० ५१ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टुन स० ८३ । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन पनायती सन्दिर हण्डावालों का डीग ।

विशेष---प्रथम वृत्ति तक है।

५०७६. प्रति सं० ४० । पत्रस्व ७१–१५३ । आ० १०३  $\times$  ४३ इश्व । लेक्सल  $\times$  । बेष्टुन स० ७१४ । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर लक्कर जयपूर ।

४०७७. सारस्वत प्रक्रिया —  $\times$  । पत्र स्तः १। ब्रा० ५ $_1^2$   $\times$  ५ $_2^2$  इच । भाषा –सस्तः । विषय -व्याकरण । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेषृत स० ४६–१४७ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायमित (टोक) ।

४०७६. सारस्वत प्रक्रिया—  $\times$  । पत्रस० १३ । ब्रा० ५ $\frac{3}{4}$  $\times$ ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्यावरण । रवकाल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ४७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर राजमहल टांक ।

विशेष - पचसिंघ तक है।

४०७६. सारस्वत प्रक्रियाः —  $\times$  । पत्रसः १० । या० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—सन्द्रत । विषय—स्थाकरण । रे०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसः ३१ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन सदिर प्रसिनत्वन स्वामी व दी ।

५०८०. सारस्वत प्रक्रिया वृत्ति—महोभट्टाचार्य । पत्रस०६७ । भाषा —मस्कृत । विषय -व्याकरण । १० काल × । क्षेत्रकाल × । पूर्ण । वेष्ट्रनस०४० । प्राप्ति स्थान—हि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावानो का क्षीय ।

५०**६१. सारस्वत वृ**त्ति—  $\times$  । पत्रसं० ६३ । म्रा० १० $_2^2 \times ^2$  इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्यावरण । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १४६५ फागूण मुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी) ।

विशेष--जोबपुर महादुर्गे राय श्री मालदेव विजयराज्ये ।

विशेष--- भन्द एव धातुको के रूप है।

५००३. सारस्वत व्याकरण वीपिका—मट्टारक चन्द्रकीति सूर्। पत्र म० १२८। म्रा०११८४ इ.च.। भाषा-सन्कृतः। विषय-व्याकरणः। र०कालः ८। तेककालः मं०१७१० भादवा वदी १०। पृर्णः। वेष्ट्रन म०३४६। प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुरः।

५०६४. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५३ । स्रा० ११ $\times$ ४ $| इञ्च । ले० काल <math>\times$  । श्रपूर्ण । बेट्टन स० २४६ । प्रास्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

५०६५. सारस्वत व्याकरण पंच संधि — अनुसूति स्वरूपाचार्य । पत्रस्त ६ । प्रा० १० $\times$  ४ हे दृख । भाषा — सस्कृत । विषय — व्याकरण । र०काल  $\times$  । प्रेणं । विष्टुन म० ३६६ । प्राप्ति स्थान — ६० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४०६६. सारस्वत वृत्ति —नरेव्ह्रपुरी । पत्र संख्या ७०। घा० ११ ४५ है इंच । माषा— सस्हत । विषय-व्याकरण । २०काल ४ । ते०काल ४ । वेष्टन स० ३१६ । प्रापित स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर जवपर । ५०८७. सारस्वत सुत्र—  $\times$  । पत्रस०७ । घा० १२ $\times$ ५ इञ्च । माषा — सस्कृत । विषय— व्याकरण । र० काल  $\times$  । लेक्सल स० १७२० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६१/५६५ । प्राप्ति स्थान— सम्बनाय दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

श्रन्तिम पुरिपका इस प्रकार है— इति श्री भाग्तीकृत सारस्वत मूत्र पाठ सपूर्णम् ।

प्रशस्ति — मवत् १७२० वर्षे पीप मुदी ४ वृषे थी कोटनगरे आदीश्वरवेत्वालये थी मूलसचे सरस्वनीगच्छे बलात्कारगरो कुन्दकुन्दाचार्यात्वयं सट्टारक थी पदानदिदेवा तलाट्टे स० थी देवेन्द्रकीतिदेवा तदास्नायं स्नावार्यं श्री कत्याराकीति तत्तिमध्य इ० तेत्रपालेन स्वहस्तेन मुत्र पाठी लिखित ।

५०८६. सारस्वत सुत्र— अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्रस०४ । म्रा०१० $\times$ ४ इन्छ । भाषा— सम्ब्रत । विषय—व्याकरण । २० काल  $\times$  । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२३० । **प्राप्ति स्थान—** भट्टास्वीय दि० जैन मन्दिर अवगेर ।

५०**८६. प्रति सं०२ ।** पत्रस०३ । ले० काल स०१८८३ । पूर्या। वेष्टुन स०२३१ । **प्राप्ति** स्थान — भटटारकीय दि० जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

५०६०, प्रतिसं० ३ । पत्रस० १६ । प्रा० १२ है ५६ हवा । लेकाल म० ४६-१८५ । वेष्णुस० ३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

४०**६१. सारस्वत सूत्र— ४. ।** पत्रम० ११ ।ष्रा० २००४ है इश्वः । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । रचकाल विकास भाषा पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११०१ । **प्राप्ति स्थान—**भट्टारकीय दिव जैन महिर ग्रजनर ।

४०६२. प्रति स०२ । पत्रस०६ । आ०१०,५४३ इत्था भाषा —गम्कन । विषय— त्याकरण । रज्काल ⋋ । जेञ्काल → । पूर्ण । वेष्टनस०११८ । प्राप्ति स्थान—अट्टारकीय दिञ्जैन मन्दिर प्रजनेर ।

५०६३, प्रतिसं० ३ । पत्र म०३२ । ले०काल 🗴 । पूर्गो । बेष्टन स०४६२ । प्राप्ति स्थान—दिरुजैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर ।

५०६४. प्रतिसं०४ । पत्र म०३ ≒ । ले० काल x । अपूर्ण। बेष्टुन स०२२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बदी।

विशेष-- ३० मे आगे पत्र नहीं है।

**५०६५. सारस्वत सूत्र पाठ**— ं. । पत्र स० ४ । आ० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—सम्बन । विषय न्व्याकरसा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६६१ । वेग्नन न० ६१६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिर लक्कर, व्यवर ।

विशेष-सवत् १६६१ वर्षे भाद्रपद सुदि १० दिने लिखित आकोला मध्ये चेला कल्यागा लिखित ।

**५०६६. सिद्धांत कोमुदी**— ४ । पत्र स० १३५ । झा० १०३ ४ ४<sup>2</sup> इच्छा । ले० काल . । अपूर्ण । बेपून स० ३४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर लक्कर जयपुर ।

५०६७. प्रति स० २ । पत्रस० १८२ । ने० काल ∀ा पूर्मा । बेहनस० ४१८. १५६ । प्रास्तिः स्यान—दि० जैन मंदिर कोटडियो का ड्राग्पुर । ५०६⊏. प्रतिसं० ३ । पत्र स०१४ । घा॰ १०४४ इञ्च । ले० काल स०१४५० । पूर्ण । वेष्टन स०४३४ । प्राप्ति स्थानी—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वगरपुर ।

प्रमस्ति— ५० १४४० वर्षे धाव्यिन माने गुननपक्षे जयोदस्या तियो रिववानरे घरी ४६३ भाइपदे नक्षत्रे घरी ४० व्याधात योगे घरी १७ दिनहराइतय लिखित श्री सिरोही नगरे राउ श्री जगमाल विजय राज्ये प्रशिमापचे कद्योगीवालगच्छे **यगास्ययाम** श्रीसवांशस्त्रीरस्तरपट्टे भ० श्री गुगुसागरन्तिस्तरपट्टे श्री विजयसमूरीएगा विषय यूनि वस्मीतिकत लिखित ।

५०६६. सिद्धांत कौमुदी (कृतन्द म्रादि) —  $\times$  । पत्रस्व १-६ । म्राप १२ $\times$ ६ ६% । म्राप — सःकृत । विषय — व्याकरण । र०काल  $\times$  । त्रे कितल  $\times$  । म्राप्त स्थान — दि० जैन पत्रापती मन्दिर कामा ।

**५१००. सिद्धांतचिन्द्रका —रामचन्द्राश्रम** । पत्रस्य ४६ । ब्राव ११५ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इख । भाषा — सह्हत । विषय —व्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६६४ । प्राप्ति स्थान — टटास्कीय दि० जैन मन्दिर ग्रजभैर ।

**४१०१. प्रतिसं० २**। पत्र स० ६६ । बा० ११ $\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$  इल्बा। ले० काल स० १६२६ डितीय आपाड सुदी १। पूर्ण। बेष्टन सं० ६७७। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**५१०२. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० १८ । ग्रा० १० ४६<sup>%</sup> इच्छा। ले० काल स० १८८४ । पूर्ण । बेष्टुन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**— स० दि० जैन मंदिर प्रजमेर ।

**५१०३. प्रति सं०४** । पत्रस०१२६ । घा०१०८५ इ.च । ले० काल 🗴 । पूर्सा । बेष्टन स०१३२३ । **प्राप्ति स्थान**—म०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**५१०४. प्रतिसं० ४ । पत्र**स० ५६ । ग्रा० १०३ ८४ १ दश्व । से०काल म० १०४७ माप सुदी १ । पूर्ण । बेपून म० १००६ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर श्रजमर ।

**५१०५. प्रति स**० ६ । पत्र स० ६४ । ब्रा० ११ $_{p}^{2} \times s_{p}^{2}$  इश्च । ले० काल स० १७६४ मगतिर सर्दी १५ । पूर्ण । बेष्टन स० १३१६ । **प्राप्ति स्थान** — स० दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

**५१०६. प्रति स**० ७ । पत्र स० ६० । ब्रा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इक्त्व । ले० काल $\times$  । पूर्ग । बेष्टन स० ५२/३३ । **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन मन्दिर कोट्टियो का हु गरपुर ।

**५१०७. प्रति स० ६** । पत्र स० ६६ । आर० १० x ४¦ इश्व । ले० काल म० १८८५ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ २५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रावनी मन्दिर क्रलवर ।

विशेष -- मूनि रत्नचन्द्र न प्रतिलिपि की थो।

**५१०८. प्रतिसं० ६**। पत्र स० ४५। ग्रा०६ुँ ४ ४६ इश्व । ले•काल स० १८८६। पूर्ण । बेष्टन स० १६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थ्वनाय मन्दिर उन्दरगढ (कोटा)

**५१०६. प्रतिसं० १०** । पत्र स० ६१ । आ० १० $\times$ ५ इञ्च । ले० काल  $\times$  । आपूर्ण । वेष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान** पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)

विशेष --सिद्धान्तचन्द्रिका की तत्वदीपिका नामा व्याख्या है।

५११०. प्रति सं० ११ । पत्रस० १०२ । घ्रा० ६ $\frac{1}{6}$  $\times$ ४६ व्यव । ले०काल  $\times$  । घ्रपूर्ण । बेष्टनसं० ५५ । प्राप्ति स्थाम—दि० जैन मंदिर दबलाना (बृदी)

५२०२. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ११ । घा० १२ १४ ५ इ.स. । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेहन स० ७ । प्राप्ति स्थान — छोटा दि० जैन मिंदर बयाना ।

**५२०३. प्रतिसं० १२।** पत्रस० १३। द्या० १० $\frac{5}{7}$  $\times$  ५ इन्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ग । वेष्टन स० ६ । प्रास्तिस्थान-दि० जैन प्रवायती मन्दिर बयाना ।

**५२०४. प्रतिसं० १३** । पत्र स०२४-३३ । ब्रा०१२ $^{3}_{7}$ ४६ इञ्च । ले० काल imes । श्र**पूर्ण ।** बेष्ट्रत सं०६६ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन पचायती मदिर कामा ।

५२०५. प्रति सं० १४ । पत्र मध्या १३ । प्रा॰ १२×४३ । ले०काल 🖈 । वेष्ट्रन स० २१३ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

**५२०६. प्रतिसं० १५ ।** पत्र स० १० । प्रा० ६ $\frac{1}{2}$ र्ञ अः । ले० काल स० १७६६ । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५२०७. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १५ । प्रा० १० ४ ५ इ.ख. । ने०काल स० १६१६ मासोत सुरी ७ । बेबन स० २१७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — प॰ द्वार द्वाराप्रतिलिपि की गई थी। सम्बत् १६१६ वर्षे प्राध्विन मुदी मप्तम्या लिखित प॰ इगरेगा।

५२०**८. प्रति स० १७** । पत्र स० १७ । म्रा० ६×४<sup>3</sup> दुखा । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । बेहुतसं• २२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर दबलाला (ब दी) ।

५२०६. प्रतिसं० १८ । पत्र म० १६ । षा० ६२ ४ ६ इख । ले० काल म० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जेन मन्दिर दवलागा बंदी ।

**५२१०. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स० १८ । प्रा० १०  $\times$  ४ डब्ल्ब । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रसिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष - मालपुरा में तिला गयः था।

**५२११. प्रतिसं०** २० । पत्रस० १४ । द्या० १०१ै× ५ इल्डा ले०काल × । पूर्णा वेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—ाद० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बृदी ।

**५२१२. प्रति स० २१** । पत्र स० १७ । ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$  ×४ इश्व । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**— रे० जैन मन्दिर प्रस्तिनदन स्वामी बूदी ।

**४२१३. पतिस० २२।** पत्रस० ४६-१०१। म्रा० १०३×४ इच्छा। ले**०काल स० १७५०** श्रावण बुदी ११। म्रपूर्ण । वप्रत स० ५६। **प्रा**पित **स्थान**— दि० जैन मदिर म्रादिनाथ बुदी ।

**५२१४. प्रतिसं० २**३ । पत्र स०१२ । श्रा०६×४ इञ्च । ले०काल स०१७३७ । पूर्ग । बेष्टनस० ६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाण्यैनाथ चौगान, बुटी ।

विरोष — १०१७ वर्षे मानीनतमासी पोरमासे कृष्णपक्षे सप्तमी तिथी पुनाली गामे मुनि सुगण हर्षे पठन कृते। विद्या हर्षेण लेखिना।

५२१५. प्रतिसं०२४ । पत्र स०१ । ग्रा०११ imes४ इश्वा । ले० काल imes । पूर्णं । बेष्टन सं०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

४२१६ प्रतिसं० २५ । पत्र स० १३ । ले०काल 🗴 । घपूर्ण । वेष्ट्रन स० ४०२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पत्रायनी मन्दिर मरनपुर ।

**५२१७. प्रतिस० २६ ।** पत्र स० ४७ । ग्रा० १० $\times$ ४३ इञ्च । ले०काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जै। श्रप्रताल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — प्रति प्राचीन है।

५२१ स. नाममाला-- नन्ददास । पत्र म०२०। भाषा-- हिन्दी । विषय-- कोत्र ।  $\tau$ ०काल  $\times$  । लेखन काल म०१८८८ । पूर्ण । वेष्टन स०४६७ । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन पद्मावती मदिर भरतपुर ।

५२१६. नाममाला—हरियतः। पत्र स०३ । आ० १०३४६३ इत । भाषा-सकतः। विषय—नोश । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

५२२०. नाममाला—बनारसीदास । पत्रसु० ६। ब्रा० १२५५ है रूच । भाषा - किसी पत्र । विषय—काण । र०काल मुक्क प्रकार मुद्दी १० । लेक काल कुठ १८६१ प्रकर्भन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सुक्क १४५ । प्राप्ति स्थान—दिल्जैन पत्रावती मन्दिर करोली ।

**५२२१ प्रतिसं०२** । पत्रस०१२ । ग्रा०१०४५ इञ्च । ने० कान ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११४ । **श्रा**र्फ **स्थान** — दि० जैन नेरस्पयी मन्दिर दौसा ।

विशेष-नाममाना नक पूर्ण है तथा प्रनेकार्थ माना अपूर्ण है।

५२२२. नामरत्नाकर —  $\times$  । पत्रस० ६१ । सा० ६ $\times$  ४ $\langle$  उ.च.। जाणा —िहनी । विषय – कोण । र० कारा ग० १७६६ । ते। केनल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १७६ । प्रास्ति स्थान -- भ० दि० जैन मिदर प्रजनेर ।

५२२३. नामलियानुशासन—ग्रा० हेमचन्द्र । पत्र स० ६६ । आ० ६ $\times$ ५ इन्छ । भाषा-फरकृत । विषय-कोश । र०कान  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स० ६४४ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर क्रमंग ।

**५२२४. प्रति सं २।** पत्रस० १२०। प्रा० १० $\{X | Y\}$  इश्वा । ले०काल |X|। पूर्णं। बेप्टनस० १३६२ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५२२५. नामिलिगानुमासन वृत्ति—  $\times$  । पत्र म०१३ । प्रा०१०५४ दे इ.स. । भाषा-सास्कृत । विषय-कोण । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्राप्ते । वेपटन स०२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सम्बेलवाल मन्दिर उदयुर ।

५२२६. नार्मालगानुशासन—ग्रमर्रासह । यत्र म० १४४। घा० १२४५ इंच । भाषा— सस्कृत । विषय—काष । र०काल ४ । ले०काल स० १००६ घासोज मुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ११६ । प्राप्ति स्थान—ग० दि० जन मन्दिर धर्जार ।

विशेष -- कालाडेहरा में साह दौलतराम ने श्री अनन्तकीर्ति के जिप्य उदयराम को भेट में दी श्री।

५२२७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११४ । झा० ६४ ४ इच्च । ले०काल स०१६२७ वैद्यास सुदी ३ । पूर्णे । वेटनस०१४५२ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन सन्दिर स्रजमेर । विशेष -- तृतीय लड तक है।

५२२६. पारिएनोटिलगानुशासन वृत्ति —  $\times$  । पत्रसः १६ । स्रा० १० $^{\dagger}$  ×  $^{\dagger}$  १२ १ साम – सन्कृत । विषय —कोश । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १६६ ... ...। पूर्ण । वेष्ट्रन स० २७१। प्रास्ति स्थाने — २० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

४२२६. सान संजरी --नन्ददास । पत्रस० २० । झा० १४६ इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-कोष । र०काल ४ । ने० काल स० १८८६ । पूर्ण । बेगुन स० ११ । प्राप्तिः स्थान —दि० जैन मन्दिर राजसङ्ख्योर ।

५२३०. लिसानुमासन (शब्द संकीर्स स्वरूप)—धनंत्रयः। पत्र ग०२३। भाषा-मस्कृतः। विषय-कीरः। २०कालः  $\times$ । ले० कालः  $\times$ । सपूर्णः। वेपूनः स०५० ५६६। प्राप्ति स्थान—समवनाय कि जेन मन्द्रिय प्राप्तः

विशेष — इति श्री धनज्यस्य कृती निषदसमये शब्दसकीग्रंस्वरूपे निरुपणो द्वितीय परिच्छेद समाल । मूर्व श्री कत्य ग्रासीर्शिमर पुस्तक ।

प्रात प्राचीत है।

५२३१. निगानुसारोद्धार— ४ । पत्र म॰ रे॰ । भाषा-सम्कृत । विषय — कोश । र॰काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वश्न म॰ ६१/५६४ । **प्राप्ति स्थान**-दि॰ जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर । विशेष — धनि श्राचीन है । लिपि सन्म है । प॰ सन्चाद ने प्रतिनिधि की थी । स॰ तेजपाल की

पुस्तक है।

४२३२. **बचन कोशः बुनाकीदासः।** पत्र म०२४२ । ग्रा०१४<sup>\*</sup>,४४<sup>‡</sup> दृखः। मापा—हिन्दी (म्या)। विषय - कोगा र०काल स०१७३७ । ते०काल × । पूर्णावेष्टनस०१ । **प्राप्ति स्थान—** दि०जैन मन्दर श्रामहावीर जो।

५२३३. प्रति सर २ । पत्र मर २८२ । ह्यार १४४ । द्वार १४४ । पूर्ण । वेप्टन सर २०१९ । प्राध्नि स्थान चिर जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

४२३४ **वें**दक प्रयोग— ४ । पत्र स०६। आ०६ ४ ४ इच । आपा-सर्गत । विषय-कोश १८०आत ४ । ले० काल ग०१४५७ आवाढ बुदी १०। पूर्णं । बेट्टन स०११७ । **प्रास्ति स्थान —** प्रयवात रि० जैन महिर प्रयुप्त ।

विशेष - प० जेमा निवित्र ।

 $\chi$ २३५. शब्दकोश—भनंदास । पत्रम०६ । स्रा०६ ै  $\times$ ६ दश्च । भाषा —सस्कत । विषय - कोश । र०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस०१६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन स्रीभनन्दन स्वामी, बुरी ।

## विशेष —प्रारम्म—

मिडोपधानि भवदुः समहागदाना, पुण्यात्मना परमकःग्रंदमायनानि । प्रक्षालनैक मनिलानि मनोमलानां, सिद्धोदने प्रवचनानि चिरं जयन्ति ॥१॥ ५२३६. शब्दानुशासनवृत्ति—  $\times$  । पत्रस० १७ । म्रा० ११ $\frac{1}{2} \times$ २ $\frac{1}{2}$  इला । मापा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-व्यावरण । रक्शाल  $\times$  । लेक्शाल । पूर्य । बेष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

 $\chi$ २३७. शरदीयनाममाला—हर्षकीति । पत्र स २५ । प्रा॰ १० $\times$ ४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स १२५४ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर फ्रजमेर ।

५२३६. सिद्धांतरस शब्दानुशासन $-\times$ । पत्रस $\circ$  २७ । प्रा $\circ$  १०?  $\times$  ४; इख । भाषा-सस्कृत । विषय—कोश । र०काल  $\times$  । ले० काल स $\circ$  १८८४ वैशाल बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स $\circ$  ६४० । प्राप्ति स्थान—४० दि० जैन मन्दिर अजभैर ।

४२३६. हेमीनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० २-४१ । प्रा० १०३ ×४ इख । भाषः— संस्कृत । विषय-कोण । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १२८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर रवलान (वृदी) ।

## विषय--ज्योतिष, शकुन एवं निमित्त शास्त्र

५२४० घरहंत केवली पाशा—  $\times$  । पत्रस० ६। घ्रा०६  $\times$  ५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-णकुन णास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६७६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । बेहन सं० १६६ । प्राप्त काल—प्रिक जैन मन्दिर फतेहरूर मेसाबाटी (भीकर)।

५२४१, झरहत केवली पाशा—  $\times$  । यत्र स०४१ । झा० द  $\times$  ६ इख । साधा-संस्कृत । विषय-शकृत शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६१७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर थी महाबीर वृदी ।

५२४२, ब्रारिष्टाध्याय —  $\times$  । पत्रस० ७ । आ० ११ $\S$  $\times$ ५ इञ्च । भाषा-प्राञ्च । विषय-ज्योतिस ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । वेक्टनस० १३४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर।

४ २४३, ब्रध्टोत्तरीदशाकरए—  $\times$  । यत्रतः  $\times$  । या॰ ११ $\frac{1}{8}$   $\times$   $\times$  १ इच । भाषा— सस्कृत । विषय -ज्योतिय । २०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सः ११२८ । प्राप्ति स्थान— भटटानकीय दि॰ जैन मन्दिर बजनर ।

५२४४. ग्रहगँसा विधि----  $\times$  । पत्र सं०२ । घा० ११  $\times$  ५५ दश्व । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ज्योतिय । रुकाल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर प्राप्तिन-दन स्वार्भा वृदी ।

५२४५. म्र गस्पर्शन —  $\times$  । पत्रम०१। म्रा०६ $\times \cdot \times \cdot \cdot$ 

५२४६. स्रंगिबद्याः— imes । पत्रस० १ । ग्रा० ११imes५ ६% । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल imes । ले०काल imes । वेष्ट्रन स० ३२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

५२४७. श्रंतरवशावर्शन $\longrightarrow \times 1$  पत्रस० १०-१४ । प्रा० १० $\times$ ५३ दश्च । भाषा-सम्ब्रत । विषय-क्योनिय । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । षपूर्ण । वेष्टन स० २५१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाला (बंदी) ।

४२४६. **ग्राशाधर ज्योतिर्य य**—**ग्राशाधर ।** पत्र सं०२ । ग्रा० १२  $\times$  ४ इश्व । माया—संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० १६४/५५२ । प्राप्ति स्थान—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- अन्तिम भाग निम्न प्रकार है।

म्रासीर्शिष्टः सनिहितादिवासी, श्रीमुद्गलो ब्रह्मविद्यांबरीष्टः । तस्यान्वयो वेद विदावरीष्ट श्रीमानुनामारविवत् प्रसिद्धः ॥१६॥ तस्योत्पन्नप्रथमतनयो विष्णुलामा मनीषी । वेदे ज्ञान्त्रे प्रतिहतमतिस्तस्य पुत्रो वभूव । श्रीवस्तास्यो घनपतिरसौ कल्पवृक्षोपमान । तस्यैकोमूत प्रवन्तनयो रोहितास्यामृविद्वान् ॥१७॥ तस्याद्यमुनुगैगुकाञ्चभानुराणाधरो विष्णपदाबुरकः । सदोनमान कुरुतं सचेद चकार देवज्ञ हिताय णास्य ॥

दृत्याणाचरोज्योतिस्थ समाप्त ।

४२४६. कट्ट विचार —  $\times$  । पत्रस्०२ । या० ११ $\S$   $\times$  ४ दख । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रस० ८१३ । **प्राप्ति स्थान** — द० जैन मधिर लक्कर जयपुर ।

विशेष - जिस बार को बीमार पड़े उसका विचार दिया हमा है।

१२५०. **कालज्ञान**— ≻ा पत्र स०१६। घा०१० ४७ इखा । भाषा सस्तृत । विषय-निमन्न ज्ञास्त्र । '०काल ×। ले० काल ×ा बूर्णं। वष्टन स०२१४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सदिर राजमहत्त्र रोक।

विशेष ---प्रति सटीक है।

५२५१, कुतूहलरस्तावली—कत्याम् । पत्र स०६। ब्रा०१२४४ इस्तः । भाषा-सन्द्रतः। विषय-व्योगितः। र०कालः  $\times$  । ले० कालः  $\times$  । दूगः । वेष्टत २०२१३/६४४। प्रास्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ सन्दिर उदयपुरः।

५२५२. केशवी पद्धति—श्री केशव देवज । पत्र स०५२ । बा० १ $^{1}$   $\times$   $^{1}$   $^{2}$   $^{2}$   $^{2}$   $^{2}$  । भाषा-सन्त्रन । विषय-ब्यांतिप । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेग्टन स०२०३ । प्राप्ति स्थान—गार्थनाय दि० जैन मन्दिर उन्दरगढ (कोटा ।

**५२५३. प्रतिसं० २** । पत्रस० ६ । घा० २) ४ ५ इचा। लेक्काल म०१८७२ चैत बुदि ६ । पूर्ण । बेस्टन म०२०५ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मस्टिर ट्रस्टनह (कोटा) ।

केपल ग्रथम सर्गहे।

४२४४ कोरमसूची— > । पत्रस्त २ । साव १२ > ४ इच । भाषा सहस्त । विषय— ज्योतिय । १० आत्  $\times$  । लेकाल  $\times$  । प्रपूर्ण । यहन स० १६६/४५१ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन सभवनाथ सन्द उदस्त्रप्त ।

४२४५ गरापित मुहूर्न —राञ्चल गरापिति। पनन०१०७। प्रा०११४५६ इत्व । भाषा-सस्कृत । विषय अभेतिप । २०६०। 🖈 । निरुक्तान म०१६५१ प्रापाउ मुद्दी ४। पूर्ण । वेष्ट्रन स०३२१। प्राप्तिः स्थान -(२० जन मन्दिर दवनामा (३ ती)।

४२४६. ग्रीस् नतामनालः—्रिटाम । पत्रसः ७। त्राः १०, ४४) इस । सापा-सस्त्रतः। विषयः ज्योतिषः। १००तः ४। ते०काल ४। पूर्णः। वेष्टनं सः० १४१। प्राप्तिः स्थान— वि० जैन मन्दिरः ग्रीसनदनः स्वाभी, वृतोः।

विशेष - सर्यग्रहं ग्रीयकार तक है।

५२५७ **गांम नगेरमा — गांऋषि ।** पत्रसं∘ ६ । झा०६ ४ ४६खा । भाषा—सस्कृत । विषय ज्योगिय । र०कास ४ । से०कास ४ । पूर्ण । येण्टन सं∘ ६७ । **प्राप्ति स्थान—भ∘ ६० जैन** मन्दिर क्रजमेर ।

५२५६. गुरुष्यित विचार— $\times$  । पत्र स०६। प्रा० ११ $\times$  ५ै, इवा । भाषा-म स्कृत । विषय-क्योनिय । रुक्ताल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन महित राजमञ्ज टोक ।

५२६०. गौतम पुच्छा  $-\times$  । पत्र स० १० । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । रचता काल  $\times$  । ले० काल स० १७६० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०३ । प्राप्ति स्थान – दि० जॅन पचायनी मदिर भरनपुर ।

 $\chi^2 = \chi^2 = \chi^2$ 

५२६२. यहसाव प्रकाश —  $\times$  । पत्र स०५ । बा० १३ $\frac{1}{3}$  ×ू ५ इंच । भाषा — म स्कृत । दियप-व्योतिय । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेप्टन स० १६६/५५० । प्रास्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मादर उदयपुर ।

५२६३. यहराशिफल $--\times$  । पत्र म०२। भाषा सम्बद्धा । विषय-ज्योतिम । रक्काल  $\times$  । ये० काल स०१७६६ । पूर्ण । वेष्ट्र म०११५ ५५३ । प्राप्ति स्थान—स भवनाथ दि० जैन मिदर उदयप्र।

४२६४. ग्रहलाखन - गणेशादैयज्ञ । पत्र स० २१ । आ० १०  $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  तथा । नापा- गरकृत । विषय ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनम० ६६३ । **प्राप्ति स्थान** — म० वि० जैन मदिर अर्जमर ।

५२६५. प्रतिसं०२ । पत्र स०१३ । ते० काल म०१६३० । पूर्ण । तष्टन स० २७१ । प्राप्ति स्थान - दि० जॅन मन्दिर प्रभिनस्दन स्वामी बुदी ।

विशेष - पुस्तक दूगरसी की है। एक प्रति अपूर्ण और है।

५२६६. ग्रहलाघव - देवदत्तः (केशव ग्रात्मज) । पत्र म०१३ । बा०६ $\frac{3}{2} \times \frac{3}{2}$  इत्थ । भाषा—सम्प्रत । विषय—ज्योतिय । र०कार्ध × । ले०काल × । पूर्ण । वेग्टन स०१६ । प्रास्ति स्थान—वि॰ जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

**५२६७. प्रहलाधद**—  $\times$  । पत्रस०१६ । आ०१०१५ ५ दुंडला । भाषा-सस्कृत । विषय— ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेशन स०१२६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बुदी ।

**४२६**८. प्रति सo २ $-\times$  । पत्र गo ३। प्राo ११ $^3_2 \times$ ५ $^3_2$  इश्वः । लेo काल  $\times$  । बेष्टुन सo६८४ । प्राप्ति स्थानः - दिo जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

 $\mathbf{x}$  २६६. ग्रह**राविचार**—  $\times$  । पत्र २०२ । मा० ११२  $\times$  ४१६ च । माया—हिन्दी । थियय – ज्योतिय । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टनसं० ६०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४२७०. चमस्कार चिंतामसी—नारायस्। पत्र स० ११ । द्रा० ११ $\frac{1}{3}$   $\times$  ५ $\frac{1}{3}$  इन्छ । माया-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । प्राप्ति स्थान—अहारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५२७१ प्रति सं० २ । पत्र स० १ । ग्रा० १ ४४ इन्छ । ने० काल म० १८३४ सगसिर सुदी ३ । पूर्वो । बेष्टन स० १११७ । प्राप्तिः स्थान----भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - ग्रजयगढ मे पं० गोपालदास ने प्रतिलिपि की थी।

**५२७२. चमस्कार जिन्तामिए**  $-\times$  । पत्रस**्**रिः प्रा०११३ $\times$ ५ इच्च । भाषा— संस्कृत । विषय - ज्योतिप । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेषृत स०३२३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर अप्युर ।

५२७३ प्रति सं०२ । पत्रस०६ । ग्रा०६४ ५ इञ्च । ले०काल ४ । पृगं। वेहनस०२३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

४२७४. चमस्कारफल---  $\times$  । वश्रतः ६ । मा० १० $\times$ ४ इन्छ । भाषा --- मस्तत । विषय -- ज्योतिय । १० काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म० २४ । प्राप्ति स्थान --- दि० जैन मिदर देवलाना (वृती)

विशेष--विभिन्न राणियो काफल दिया हुन्ना है।

**४२७४ जन्द्रावलोक**  $\times$  । पत्र म० १२ । प्रा० ६ $\times$ ४ $^{\circ}$  दञ्च । मागा-सम्फ्रन । विषय — ज्योतिय । ए० काल  $\times$  ७ ले० काल स० १८६६ कार्तिक बुरी २ । पूर्ण । वष्ट्रनस० १४०२ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर अवनेर ।

५२७६. प्रति स०२ । पत्रम०१-११ । प्रा०११ ×६ इश्वः । ले०काल 🗸 । बेहनसं० ७०० । प्राप्ति स्थानः दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

१२७७. चन्द्रावलोक टीका—विश्वेसर श्रवरनाम गंगाभट्ट। पत्र स०१३०। भाषा— सस्कृत । विषय अंगित्र । २००४ल ४ । से० काल स०१६६५ । पूर्ण । बण्टन स०७६१ । प्राप्ति रचाम दिल्लीन ज्वायती महित भाषापुर ।

विशेष -- बलबन्तीसह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

४२७८ चन्द्रोदय विचार— ८ । पत्रम०१-२७। मा०६५%४ इखा । भाषा--हिन्दी । विषय---प्रोशिय । र०काल ४ । न॰काल ४ । अपूर्ण । वष्टनुस० ४१ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन छोटा मेदिर चयाना ।

४२७६. चोघडिया निकालने की विधि $-\times$ । पत्रसः ४। ग्रा० १० $\times$ ७ इन्छ। भाषा-हिस्सी। क्षिय प्रशेषिप। ४० काल  $\times$ । प्रशं। बेष्ट्रन सः १३६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

४२००. **छोंक दोष निवारक विधि**  $-\times$  । पत्र स० १ । । भाषा –हिन्दी । विषय-ज्योतित । र० कात  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६७३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पत्रायती महिर भरतपुर ।

**५२०२. प्रतिसं० ११** । पत्रस० ११ । घा॰ १२ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  स॰ । से•कास  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ७ । प्राप्ति स्थान— छोटा दि॰ जैन मदिर बयाना ।

**५२०३. प्रतिसं० १२ ।** पत्रसं० १२ । प्रा॰ १० $\frac{1}{7}$  $\times$  ५ इञ्च । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ५ । प्राप्तिस्थान-दि० जैन प्वायती मन्दिर बयाना ।

५२०४. प्रति सं० १३ । पत्र स०२४-३३ । आ०१२१ ४६ इञ्च । ले० काल ४ । अपूर्ण । वेष्ठन स०६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर कामा ।

**५२०५. प्रति सं० १४।** पत्र सख्या १३। धा॰ १२ $\times$ ५ $^{3}_{7}$ । ले॰काल  $\times$ । वेष्टन स॰ २१३। **प्राप्ति स्थान** — दि॰ जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

**५२०६. प्रतिसं० १५ ।** पत्र स० १० । घा० ध् $_2^2 \times x_3^2$  इश्व । ले० काल स० १७६६ । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५२०७. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० १५ । खा० १०४५ इन्छ । ले०काल स० १६१६ घासीज सुदी ७ । बेष्टत स० २१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - प $\circ$  हू गर द्वाराप्रतिलिपि की गई थी। सम्बत् १६१६ वर्षे आध्वित सुदी सप्तम्या लिखितं प $\circ$  ढ गरेगा।

५२० म. प्रति स० १७ । पत्र स० १७ । घा० ६ ४४ १ इला । ले०काल स० १६१४ । पूर्ण । बेष्टतस० २२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी) ।

५२०६. प्रतिसं० १८ । पत्र स० १६ । प्रा० ६ $\frac{1}{7}$   $\times$  ५ इन्छ । ले० काल स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४४ । प्राप्ति स्थान—रिंव जैन मन्दिर दबलाना बूदी ।

**५२१०. प्रतिसं० १६ ।** पत्र स० १८ । ग्रा० १०  $\times$  ४ इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रीभनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष --मालपुरा में लिखा गया था।

**४२११. प्रतिसं०** २० । पत्रस० १४ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$ X ५ इश्व । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहाबीर बूदी ।

**५२१२. प्रति सं० २१ ।** पत्र स० १७ । ग्रा० ६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ इञ्च । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । बेष्टन स० ३६३ । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन मन्दिर प्रसिनन्दन स्थामी बूदी ।

**४२१३. प्रतिसं० २२ ।** पत्रस० ४६-१०१ । म्रा० १०३४४ इल्ब । ले**०काल** सं० १७५० स्रावण बुदी ११ । ब्रपूर्ण । बेष्टन स० ६६ । **प्रा**प्तिः **स्थान**—दि० जैन मदिर म्रादिनाय बुदी ।

**५२१४. प्रतिसं० २**३ । पत्र स०१२ । धा०६×४ इञ्च । ले०काल स०१७३७ । पूर्ण। वेष्टनसं०६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सन्दिर पाण्येनाय चौगान, ब्रूदी ।

विशेष — २०१७३७ वर्षे मानोतममासो पोयमासे कृष्णपक्षे सप्तमी तिषौ पुनाली पामे मुनि सुगण हर्षे पठन कृते। विद्या हर्षेण लेखिता।

५२१५. प्रतिसं० २४ । पत्र स०६ । म्रा०११ × ४ इश्व । ते० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ९८ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर बोरमजी कोटा । ५२१६. प्रतिसं० २५ । पत्र स० १३ । ले०काल × । स्रपूर्ण । वेष्ट्रनस० ५०२ । प्राप्ति स्थान —द० जैन प्रवायती मन्दिर मरतपुर ।

**५२१७. प्रतिसं० २६।** पत्र स०५७ । द्या० १० $\times$ ४ $^{3}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । स्रदूर्ग । वेष्टन स० ३२३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैं र स्प्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष --- प्रति प्राचीत है।

**५२१६, नाममाला**—**नन्ददास** । पत्र स०३०। भाषा—हिन्दी । विषय—कोण । र०माण  $\times$  । लेखन काल स०१६४६ । पूर्ण । वेग्टन स०४६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन परायती मंदिर भरतपुर ।

४२१६. नाममाला—हरिवत । पत्र स० ३ । गा० १०६४ ४१ द्रख । भाषा - सस्क्रन । विषय—कोण । र०कारा ४ । ल०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

१२२०. नाममाला—बनारसीटास । पत्रन्तर है। या १२८४ है ह न । भाषा —हिन्दी पत्र । विषय—कोण । रक्ताल स्व १६७० आसोज मुदी १०। लेक नाल मक १८६१ प्रकर्चन बुदी ४। पर्णा। वेकन सक १४४ । **प्राप्ति स्थान**—टिक जैन पत्राविती मन्दिर जगोनी ।

**५२२१ प्रतिसं०२** । पत्रस०१२ । झा०१०६५ उठव । ले० काल 🔀 । पूर्ण । घेटन सं० ११४ । आर्टिट स्थान — दि० जैन तेरहणधी मस्दिर दौना।

विशेष--नाममाना तक पूर्ण है तथा प्रतेकार्थ माता अपूर्ण है।

४२२२. नामरस्नाकर — × 1 पत्रस्य०६१। धा०१×४९ द्वाः भाषा—िश्योः। विषय-कोता । रुकारा स्वरुप्तर्भः। तेल्कान × । पूर्णः। बेहनस्वरुप्यः। प्राप्ति स्थान ⊶भ० दि० जैन मन्दिर ग्रामेरः

४२२३. नार्मालगानुशासन—ग्रा० हेमचन्द्र । पत्र म० ६६ । ग्रा० ८ $\times$ ४ इ.च. भाषा-सन्द्रत । विषय-कोत्र । र०काल $\times$  । ले•काल $\times$  । पूर्ण् । वैष्टन म० ६४४ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्राप्तर ।

५२२४, प्रति सं २ । पत्रसः १२० । या०१०३ $\times$  ४ $^{\dagger}$  इत्थ । वे०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रनसं• १३९२ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

४२२४. नार्मालगानुशासन वृत्ति—  $\times$  1 पत्र म०१३। आ०१० $\times$ ४ इत्र । भाषा— सास्कृत । विषय-कोण । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । आपूर्ण । वेष्टन स०२। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सम्बेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

४२२६. नार्मालगानुशासन—स्वमरसिंह। पत्र त०१४४। ब्रा०१२४५ इच। मापा— सस्कृतः। विषय—कोषः। र०कालः ४ । लेक्कालः स०१८०५ स्रामोत्र मुदी १४। पूर्णः। बेष्ट्न म०११५। प्राप्ति स्थान—प्र०दि० जैन मन्दिर बजनेरः।

विशेष — कालाडेहरा में सार दीलनराग ने श्री अनलकीति के क्रिय्य उदयराम को भट में दी थी। ५२२७. प्रतिसं∘ २। पत्रस॰ ११४। घा० १×४ दुरूच। लेक्काल स०१८२७ वैशाख सुदी ३। पूर्ग्य। वेष्टन स०१४५२। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर। विशेष --- तृतीय खड तक है।

४२२८. पारिमनीर्योलगानुशासन वृत्ति —  $\times$  । पत्रतः १६ । प्रा० १०३  $\times$  ४३ इत्य । प्राप – सङ्क्रन । विषय —कोण । ५०काल  $\times$  । ले०काल स० १६६ . . . . । पूर्ण । वेष्टन स० २७१ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मिन्दि सबसेर ।

१२२६. सान सजरी—नन्ददास । पत्र सं० २० । आ० ६ $\times$ ६ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय – कोष । २०काल  $\times$  । ते० काल स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

४२३०. लियानुशासन (शब्द संकीर्ण स्वरूप) — घनंत्रय । पत्र स०२३। भाषा-सम्कृत । विषय-कोष । ए०काल ४ । ले०काल ४ । अपूर्ण । वेष्टन स०८० १६८ । प्राप्ति स्थान—सभवनाय दि० जैन मन्दिर ग्रजनर ।

विशेष — इति श्री धनजयस्य कृतौ निषटसमये श्रादशकीर्णस्वकरे निरुपसो द्वितीय परिच्छेद समान । मृ० श्री कत्य स्पाकीर्शिमद पुस्तक ।

प्रतिप्राची उदे।

४२३१. तिशानुसारोद्धार— ४ । पत्र म०१०। भाषा-सास्कृत । विषय—कोण । र०काल ४ । रेक काल ४ । तुर्मा । वधन म० व्हेश्यरेथं । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मनवनाय मस्टिर उटयपुर ।

विशेപ—प्रति प्राचीन है। लिपि मुक्ष्म है। प० सुरचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी। स० तेजपाल की पुस्तक है।

५२३२. वसन कोशः जुनाकोदासः । पत्र स०२४२ । प्रा०१४, ४४६ डखा साया —हिन्दी (उद्या) । विषय – कोत्र । २० काल म०१७३७ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनस०१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दर व्यानहानीर कुरी ।

५२३३. प्रति स० २ । पत्र स० २०२ । घा० २×५ । इत्ता लेवकाल स १८५६ । पूर्ण । वेप्टन स० २७९ १११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर को टडियो का इसरपुर।

५२३४. **बंदिक प्रयोग**— × । पत्र स० ६ । ग्रा० ६ × ४ इ.च । भाषा-सस्कत । विषय-कोश । ० काल र । ते० काल स० ११५७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११७ । **प्राप्ति स्थान** — भ्रम्यतान दि० जैन सदिर उदयपुर ।

विशेष -प० जेमा लिग्पित ।

४२३४. शब्दकोश—थर्मदास । पत्रस०६ । स्रा०६ $\frac{3}{7}$ ४६ $\frac{3}{7}$ ६७ ॥ भाषा —सस्कत । विषय – कोण । र०कात  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं०१६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन अभिनन्दन स्वाभी, बूंरी ।

विशेष —प्रारम्भ—

मिद्धौपधानि भवदु स्वमहागदाना, पुण्यात्मना परमकर्णरसायनानि । प्रक्षालनैक सनिलानि मनोमलानां, सिद्धोदने प्रवचनानि विर जयस्ति ॥१॥ ५२३६. शब्दानुशासनवृत्ति  $\sim \times$ । पत्र सं० ५७। घा० ११ $\frac{3}{7} \times 3$ ृ इथा । घाणा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल  $\times$ । ले०काल । पूर्ण । बेष्ट्रन स० २११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

 $\chi$ २३७. शारदीयनाममाला—हर्षकीति । पत्र स २४ । ब्रा॰ १० $\times$ ४ इ.च । भाषा- सस्कृत । विषय-कोग । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स १३४४ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर स्रजमेर ।

**५२३६. सिद्धांतरस शब्दानुशासन**— $\times$  । पत्रस० ३७ । धा० १० $\frac{3}{4} \times \frac{1}{2}$  रुख । भाषा-सस्कृत । विषय—कोल । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८६४ वैकाल बुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६४० । **प्राप्ति स्थान**—२० वि० जैन मन्दिर छजनेर ।

४२३६. हेमोनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स॰ २-४१ । प्रा॰ १०३ ×४ इच । भाषः— संस्कृत । विषय-कोत्र । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्त । वेष्ट्रन स॰ १२८ । प्राप्ति स्थान—िं॰ जैन सन्दिर दबलाना (व दी) ।

## विषय-ज्योतिष, शकुन एवं निमित्त शास्त्र

४,२४० **प्रस्**तं **केवली पाशा** —  $\times$  । पत्रस० ६ । ग्रा०६  $\times$  ५ ६ खा भाषा-सस्कृत । विषय-सकृत शास्त्र । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १६७६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६६ । प्राप्ति सान-पदि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखाबाटी (शीकर)।

५२४१. ग्ररहत केवली पाशा—  $\times$  । पत्र स०४१ । ग्रा० म  $\times$  ६ इश्वः । भाषा— संस्कृत । विषय-ब्राकृत बास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६१७ । पूर्णः । वेष्ट्रन म०२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्री महावीर वृदी ।

५२४२. ग्ररिस्टाध्याय—  $\times$  । पत्रस $\circ$  ७ । ग्रा॰ ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय- ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टनस $\circ$  १३४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर सफकर जयपूर ।

 $\sqrt{2}$  २४३. ग्रस्टोत्तरीवशाकरएः —  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४ । ग्रा $\circ$  ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५१ ऽत्रः । भाषासस्कृत । विषय-उथानिय । र०काल  $\times$  । लेक्नाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं $\circ$  ११२८ । प्राप्ति स्थान—
भटटारकीय दि॰ जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५२४४. ग्रहर्गरा विधि—  $\times$  । पत्र सं०२ । ग्रा० ११  $\times$  १ $\frac{1}{2}$  इख । माया-हिन्दी गदा । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१२० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर प्राप्तिनन्दन स्वामी बुंदी ।

प्रथप् प्रयास्पर्यान  $\times$  । पत्रस० १। प्रा० ६ $\frac{5}{7} \times \frac{7}{9}$  इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । ७० काल  $\times$  । ले •काल स० १६१६ । वष्टन स० ३३१। प्रास्तिस्थान — दि० जैन मन्दिर नक्कर, जयपुर ।

४२४६. स्रंगिबद्याः—imes । पत्रस० १ । या० ११imes५ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल imes । ले०काल imes । वेष्टन स० ३२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

४२४७. श्रांतरदशाखराँन—  $\times$  । पत्र स० १०-१४ । श्रा० १० $\times$ ४३ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्णं । वेष्टन स० २४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दलाना (बूँदी) ।

५२४८. **भाशाधर ज्योतिय य-भाशाधर ।** पत्र स०२ । मा० १२ ४ ४ इख । भाषा— संस्कृत । विषय-च्योतिय । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्णः । वे० स० १६४/४५२ । **प्राप्ति स्थान**— संभवनाष दि० जैन मन्दिर उदयपर ।

विशेष--- श्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है।

त्तपा नाग निष्म प्रकार है। आसीहिष्टि सिहितिदिसांती, श्रीमुद्दमलो ब्रह्मबिदावरीष्टः। तरयान्वयो वेद विदावरीष्ट श्रीभानुनामारविवद् प्रसिद्धः ॥१६॥ तस्योत्पन्नप्रथमतनयो विष्णुरामा मनीयो। वेदे मास्त्रे प्रतिहतमतिस्तस्य पुत्रो बभूतः। श्रीवत्सास्यो वनपतिरसी कल्पवृक्षोपमान । तस्यकोभूत प्रवस्तनयो रोहितास्यामुविद्वान् ॥१७॥ तस्याद्यमुत्गंगाकाञ्जभानुगणाधरो विष्णपदावुरकः । सदोक्तमाण कुरते सचेद चकार देवज हिताय णास्त्र ॥।

इत्याशाघरोज्योनिग्रंथ समाप्त ।

**५२४६. कठट विचार** —  $\times$  । पत्रस० २ । म्रा० ११ $^{7}_{1}$   $\times$  ५ इच्छ । मापा -हिन्दी । विषय- ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० =१३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मिंदर सक्कर जवपूर ।

विशेष-जिम बार को बीमार पड़े उसका थिचार दिया हुआ है।

**१२५०. कालज्ञान**— × । पत्र म० १६। घा० १० ×७ इन्छ । भाषा सरकृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र**०काल ×** । ले० काल × । पूर्ण । वेटिन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सदिर राजमहल टोक ।

विशेष -- प्रति मटीक है।

**५२५१. कुतुहलरत्नावली**—कत्या**गा** । पत्र स०६। ब्रा०१२ $\times$ ४ इच्छ । भागा-मन्त्रन । विषय-क्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूग्ग । वेष्टन स०२१३ ६५४ । प्राप्तिर स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्तिर उदयपुर ।

५२,५२. केशवी पद्धति—श्री केशव दंबज । पत्र म०५२ । ब्रा० १ $^{1}$  ५  $^{1}$  ५७ । भाषा-सरकृत । विषय-व्योतिष । र०कान  $\times$  । ते० कान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२०३ । प्राप्ति स्थान—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर उत्यग्त (कोटा ।

**४२४३. प्रतिसं०२।** पत्रस०६। प्रा०६¦ 🗴 ५ डखा। लेक्सल स०१२७६ चैत युदि६। पूर्मो। वेष्टन स०२०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)।

केवल प्रथम सर्ग है।

**४२४४ कोरमुची**—> । पत्रस**०**२। खा०१२×४६७ । भाषा सम्हत । विषय-ज्योतिया र ०काल × । केरकाल × । अपूर्ण । वेष्टन स०१६६/४५१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

४२४५ गरापित मुहूर्स —रावल गरापित । पत्रस्य १०७ । आ० ११ (५) इया । नाषा -सम्कृत । विषय-च्योतिय । रकार 🗴 । तेण्काल म० १८५१ आयाद सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन म० ३२१ । प्रास्तिः स्थान —दिव जैन मन्यिर ययताना (४ दी) ।

५२५६. गरिएतनाम नालः—इरिदास । पत्रसः ७। ग्रा०१० $^{\circ}$   $\times$   $\times$  $^{\circ}$  ऽच । भाषा-सरकृत । विषय-ज्योतिष । २०कारा  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्मा । वेष्टन स०१४१ । प्रास्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, बू यो ।

विशेष —सर्वस्य अधिकार तक है।

४२४७ गर्गमनोरमा — गर्गऋषि । पत्रसं∘ ⊏ । आः०१४ ४ इच्च । भाषा—सस्क्रत । विषय ज्योतिष । र०काल ४ । ले०काल ४ ∫ पूर्ण । वेष्टन स०ष्ठ **। प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर खन्नेर । पूर्प्रः सभैचक्षवृत—  $\times$  । पत्रस० १४ । प्रा० ११ × ४६ दश्य । भाषा—मःकृत । विषय— ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेषृत म० २३२ । प्राास्ति स्थान— सप्रवाल दि० जैन महिरा उदस्पर ।

४२५६. गुरुष्यदित विचार $--\times$ । पत्र स०६। स्रा० ११ $\times$  ४, इन्छा। भाषा-स स्त्रत । विषय-च्योतिय । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स०१००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर राजमहत्त टोक ।

प्रद्०. गौतम पुच्छा —  $\times$  । पत्र म० १० । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । रचना काल  $\times$  । ले० काल स० १७६० । पूर्ण । बष्टुन म० १०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

 $\chi$ २६१. ग्रह्मवचवर्गन $\longrightarrow \times 1$  पश्च०२। ग्रा०१० $\times$ ४ इश्व। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष रक्कालः  $\times$ । क्लेक्कालः  $\times$ । पूर्णः। बेष्टनम०२०४। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दक्ष्णनाः (ब्रुदी)

५२६२. यहमाव प्रकाश —  $\times$  । पत्र स० ५ । आ० १३ $\frac{9}{4}$   $\times$  ५ इंच । भाषा — स स्कृत । विषय —क्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६५/५५० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मध्य उदयपुर ।

४२६३. यहराशिफलः —  $\times$  । पत्र म०२। भाषा संस्कृतः । विषय-ज्योतिषः । रण्कालः  $\times$  । के काल ग०१७६६ । पूर्णः । वेष्ट्तं स०१६४ ४४३ । **प्राप्ति स्थान**—संनवनायं दि० जैन सदिर उदयप्तः ।

भू२६४. ग्रह्लाघव-गणेशदैवज । पत्र स० २१ । ब्रा० १० ४ ५.ट्रे डबा भाषा-सन्देन । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बष्टनस० ६६३ । प्राध्ति स्थान-भ० दि० जैन मदिर घणभर ।

५२६५. प्रतिसं०२ । पत्र स०१३ । ते० काल स०१६३० । पूर्णं । तेष्ट्रन स० २७१ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन सन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी व दी ।

विशेष - गुस्तक इगरसी की है। एक प्रति अपूर्ण और है।

५२६६. बहलाधव - देवदन (केशव फ्रांत्मज) । पत्र म०१३ । प्रा० १ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ दश्व । भाषा—मन्द्रत । विषय—अ्थोतिष । र०काल × । लेकाल × । पूर्यं । वेष्टन स०११८ । प्राप्ति स्थान—१२० केन मिरिर पार्थनाथ इन्दरगढ ।

५२६७. यहलाध्य $--- \times 1$  पत्रस०१६। मा०१० $\frac{1}{4} \times 1^{\frac{1}{4}}$  दख । भाषा-सन्द्रत । विषय-- ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रत स०१२६। प्राप्तिः स्थान-िद० जैन मन्दिर मिनन्दन स्वामी व दी ।

५२६**८. प्रति स**०२— $\times$  । पत्र स०२ । बा० ११ $^3_1 \times$ ५२ दश्व । ते० काल  $\times$  । बेष्टुनस०६५४ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

५२६६. प्रहर्**एविचार**— × । पत्र सं०२ । आ० ११, ५४, ९चं । आषा—िहन्दी । विषय-ज्योतिष । २०काल × । ले० काल × । वेष्टनस०६६३ । आस्ति स्थान—दि० जेन मन्दिर लक्कर, जयपुर । . १२७०. **चमरकार चिंतामस्**।—नाराधस्। पत्र स॰ ११ । सा॰ ११ $\frac{1}{3}$  ४ $\frac{1}{3}$  ६छ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०कान्  $\times$  । ले० कान्  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०६६ । प्राप्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

५२७१. प्रति सं०२ । पत्रसं०६ । घा०६×४ इन्छ । ने० काल स०१८३४ मगसिर सुदी ३ । पूर्णे । वेष्टनसं०१११७ । प्राप्तिः स्थान—मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष -- प्रजयगढ में प० गोपालदास ने प्रतिलिपि की थी।

५२७२. चमस्कार चिन्तामिश् —  $\times$  । पत्र सं० ११। ब्रा० ११ $\xi \times \xi$  इञ्च । माया— संस्कृत । विषय — ज्योतिश । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेषृत स० ३२३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

**५२७३ प्रति सं०२** । पत्रस०६ । म्रा०६ ⋋५ डब्ल्च । ले०काल ४ । पूर्गा। **बेहन स०**२३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

**५२.७४. चमस्कारफल**—  $\times$  । जनस $\circ$ ६ । मा $\circ$  १० $\times$ ५ इख । मा $\circ$ 1 निषय— ज्योतिय । र $\circ$ काल  $\times$ 1 से $\circ$ काल  $\times$ 1 पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$ २४ । **प्रास्ति स्थान**—हि $\circ$  जैन मन्दिर दबलाना (बूँदी)

विशेष--विभिन्न राणियों का फल दिया हुआ है।

**४२७४. चन्द्रावलोक** —  $\times$  । पत्र स० १२। प्रा० ६ $\times$ ४ $^{\circ}$  इञ्च । नाया—सम्इत । नियम— ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ते० काल स० १८६६ कार्तिक बुदी २। पूर्ण । तेष्ट्रनस० १८०२ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

**५२७६. प्रति सं० २ ।** पत्र स०१–११। प्रा०१२ $\frac{1}{2}$ ६ इश्व । ने० कान  $\times$  । वेष्ट्रन स०७०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर लक्कर जयपुर ।

४२७७. चन्द्रावलोक टोका—विवयेसर प्रयरनाम गंगाभट्ट। पत्र म०११०। प्रापा— संस्कृत । विवय-ज्योतिय ।,र०काल ४ । ले०काल स०१८१२ । प्राप्तै । वेष्ट्रन स०७६१ । प्राप्ति रचार ि राजवावती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--वलवन्तसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

४२७६. चन्द्रोदय विचार—  $\times$  । पत्रसः १-२७ । ग्रा० ६ $^1_1 \times ^2_2 \times ^2_3 = 1$  भाषा—हिन्दी । विचय—ज्योतिय । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टम $^1_4$ सः २१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन छोटा मंदिर वयाता ।

४२७६. चौघडिया निकासने की विधि—  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४। प्रा $\circ$  १० $\times$ ७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय ज्योतिय । र $\circ$  काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुन स $\circ$  १३६ । प्राप्ति स्थान — दि $\circ$  जैन मन्दिर राजमहुन टोक ।

५२ स्ट. **छींक दोष निवारक विधि** —  $\times$  । पत्र सं० १ । प्राप्ता-हिल्दी । विषय-ज्योतिय  $\bullet$  र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्णा वेष्टन सं० ६७३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवासती मदिर भरतपुर ।

४२८१. जन्मकुण्डली —  $\times$  । पत्र स० ७। प्रा० १० $\times$ ४ $^2_{\nu}$  इख । भाषा-सःस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३६४-१४६ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर कोटडियो का इनग्पर ।

१२८२. जन्मकुण्डली ग्रह विचार —  $\times$  । पत्र सं. १ । प्रा० ११  $\times$  १ इस । भाषा — संस्कृत । विषय — ज्योगिय । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० सं० ३६ । प्राप्ति स्थान — स्रोहेनवाल वि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५२८३. जन्म जातक चिन्ह—  $\times$  । पत्र स० ६ । ब्रा० ७ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६१% । भाषा—सन्छत । विषय—न्योगित । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । बेप्टन स० २०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाछनेशथ, जीमान **य**ंदी ।

विशेष —सागवाडा का ग्राम सुदारा मे प्रतिलिपि हुई थी।

५२८४. जन्मपत्री पद्धति—  $\times$  । पत्रसः ४८ । आः १२ $\times$ ५ १७ । भाषा-सस्कृत । विषय-क्योनिष । रः काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसः ८७ । प्रास्ति स्थान—दिः जैन मन्दिर आदिनाथ व री ।

विशेष-द्याचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

५२८५. जन्मपत्री पद्धति —  $\times$  । पत्रस॰ १०। ब्रा॰ १० $\times$ ४) इत । माणा—सस्कृत । विषय —ज्यानिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

५२८६ जातकः—नीलकांठ। पत्र स० ३६। घा० १० $\times$ ६ स्थः। भाषा-सस्कृत। विषय- ज्योतिष। र० काल  $\times$ । लंकाल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स० २७७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रिमनस्त स्वामी वंदी।

४२८७. जातकपद्धति— केशव दैवज्ञ । पत्र स० ११ । पा० ११६ ४६ इन्छ । भाषा-सास्कृत । विषय--ज्यातिष । २०काल ४ । ने० काल स० १७८८ चैत मुदी ७ । पूर्ण । बेहन स० ६७४ । प्राप्ति स्थान—भ० टि० जैन मास्य प्रजोर ।

५२ प्रमृत स्थान - १६ । प्रमृत १६ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  प्रख । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५४ । प्राप्ति स्थान - दिः अन सडेलव ल मन्दिर उदयपुर ।

५२८६. जातक संग्रह $--\times$ । पत्रस॰ ६। घा० ६ $\times$ ४ $^{3}$  हुख । भाषा—सम्ब्रुत । विषय— ज्योतिय । ग०काल  $\times$ । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन स० १४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रवमेर ।

५२६०. जातकामरएा – हुं हिराज दैवज्ञ । पत्र स० ६२ । घा० ६ $^{\circ}$   $\times$  ५ इन्च । भाषा — सस्कृत । विषय — ज्योतिष । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १६६ । पूर्ण । वेष्टन स० १८६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर प्राप्तन्दन स्वामी वृदी ।

विशेष—द्वंगरसीदास ने नेमिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी। ग्रथ का नाम जातक – माला भी है। **५२६१. प्रतिसं० २** । पत्र स० ६६ । ब्रा० ११९ ४५ । इत्ये । लेक्काल स० १७६६ सगसिर बुदी २ । पूर्णे । बेहन १६६ । प्राप्टिः **स्थान** —दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

**५२६२. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १३ । द्या० १२ ४ ६ इच्छा । ले०काल स० १८७८ - भादवा बुदी १**१ । पूर्ण । बेट्नस० ११७ ५७ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर कोटडियो का इ.सरपुर ।

१२६३. जातकालंकार-- ४। पत्र स० १७ । बार ६ १ ४४ । इन्हां भाषा-सम्बन्धः । विषय-ज्योतिषः । रुकतालः १ । लेक्कालः स० १६०३ चंतः मुदीः । पूर्माः। वेष्टनं म० १४०३ । प्रास्तिः स्थान—भरुदिकंतं मन्दिरं संबन्धः ।

**५२६४. प्रतिसं०२ । पत्र स०२०।** म्रा० च<sup>2</sup>ु×५्रेडचा ले०कातम०१८१६ सावन बुटी १ । पूर्णावे०म०१०६६ । **प्राप्ति स्थान— अ०**दि० जैन सदिर बजनगर।

**५२६५. प्रतिसं० ३ ।** पत्र म०१४ । ब्रा०११३ ८५ उच्च । ते० कातः । पूर्णं । येष्टन म० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी, ब्रुंदी ।

**५२६६. जोग विचार**— 🔀 । पत्रस**ः** १६। मापा-सस्कृत । विषयः ज्यांतिषः । रच्यालि १८ वस्ति 🤾 । सुर्णः । बेकुतसः ६६७-१४६ । **प्राप्ति स्थात**—(दः जैन मन्दिर कार्रार्थ्या का हु गरपुरः ।

**५२६७. ज्ञानलावर्गी** —  $\times$  1. पत्र स०२-८। आ० १०×४ ३वा। भाषा. सग्यत । विषय—उत्रीति । र०काल  $\times$  । ते० काल.  $\times$  । अपूर्ण । बेठून ग०४५२, २५३। **प्रास्ति स्थान**—िद० जैन सभवनाथ मन्दिर उदसपुर ।

५२६६. जानस्वरोदय—चरनदास । पत्र २०१६ । ग्रा०६ ४ ८० । भाषा —सस्र । विषय—शकुत शास्त्र । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वष्टत २०४४ । प्राप्ति स्थान—दि० भेन मिंदर ब्रादिनाथ स्वामी, मारापुरा (टीक)

**५२६६. ज्योतिविद्याफल**— ४.१ पत्रसः ३.१ भाषा-भग्नुत । विषयः नर्गातिष । रज्जाल ४.१ वेज्जाल ५.१ पूर्णः । वेष्टनः सञ् १६६/४४४ । **प्रास्ति स्थान**—दिञ्जैन मनवनाथ मन्दिर उदशपुर ।

**५३००. ज्योतिषप्रंय— मास्कर। चार्य।** पत्र म०१२ । ग्रा०१०imes६ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल imes। लेकाल imes। पृथ्यं। वेष्टन म०१६५। **प्रास्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी।

**५३०१. प्रति स० २।** पत्र स० ३३ × २०। छा० ६ १ × ४१ ड-ब । ले०काल० × । पूर्णा। बेष्टन स० १०१-४६ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० औन मन्दिर कोटडिया का इगरपुर।

विशेष-ज्योतिषोत्पत्ति एव प्रश्नोत्पत्ति ग्रध्याय है।

५३०२, ज्योतिषप्रंथ- ्रापत्र स०४ । आ०१००८६ है इचा। भाषा—हिन्दी। विषय — ज्योतिषार काल ४ । लेककाल ४ । अपूर्णावेष्टन स०३ । प्राप्ति स्थान--हिक्जैन तेन्ह्रपथी मदिरदोमा।

**५३०३. ज्योतिषप्रंथ** --  $\times$  । पत्र सं० १६। ग्रा०११  $\times$  ५६च। भाषा-सस्कृत। ले॰काल  $\times$  । पूर्ण। प्रेप्टन स० १६४। **पाप्ति स्थान** दि० जैन मंदिर फतेहपुर जलावाटी (सीकर)

**५३०४. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० २—१० । खा० १०imes ४२ इञ्च । लेक्सल imes । खपूर्ण । चेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन खप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५२,०५. ज्योतिषग्रन्थ माथा—कायस्थ नायूराम । पत्रस० ४० । ब्रा०१२  $\times$ ६ इत्थ । भाषा—हिन्से । विशेष —ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

५२०६ ज्वोतिष रस्तमाला—केशव । पत्रस० ७६ । ब्रा० ८.५५ इश्व । मापा-सन्कृत । विशेष — ज्योतिष ।र०काल ४ । लेकाल स० १८०६ । पूर्ण । वेष्टुनसं० २२६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर प्रभितन्दत स्वामी, बदी ।

४३०७. ज्योतिष रतनमाला -श्रीपतिमट्ट । पत्रसः ८ २३ । मा० १० 🗙 ४ इश्व । भाषा-सम्कृत । विशेष --श्योतिष । २०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रसं० ८१ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ वर्षी ।

विशेष —हिन्दी टीका महित है।

५३०८. प्रति सं०२। जनस०११०। ग्रा० १००० हैं ४४०। उत्तरा ने०कान म०१८४७। पूर्ण। वेष्टनसं०१४४। प्राप्ति स्थान–दि० जेन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी वृदी।

**५३०६. प्रतिसं० ३** । पत्रस**०** ३२ । छा० १२ $imes rac{1}{3}$  इच्च । ले० काल स० १७८६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स्थादनाय बूदी ।

विशेष - प्रति हिन्दी टीका महित है ।

५२११ ज्योतिष रस्तमाला टोका— प० वैज्ञा मूलकर्ता पं० श्रोपतिमट्ट । पत्रम० ११६ । मा० ११४५ इञ्च । भाषा-मस्कृत । विषय ज्योतिष । २०काल ४ ते०काल स० १४१६ । पूर्ण । वेष्टन म० ११६ । प्राप्ति स्थान—(२० जंन मन्दिर म्रादिनाथ व दी ।

श्चित्सम पुष्पिका य्योनिषरस्त्रमालातिप्रथरा श्रीपतिमध्येय तस्यामृटीका प्रकटार्थ युक्ता दिनीमीमबाडबालाबीआणीयान्त्रये वाच्य देति प्रसिद्धो गोत्रसभूत्रानिजलात्वत्रेतः। सोमध्यर च सुरू हस्तु वैज्ञा बालावजोय राचकार टीका । देनि श्री श्रीपति भट्ट विरक्तिया ज्योनिष पडित वैजाहन टीकाया प्रतिष्ट प्रकरमानि वर्ष प्रकरण समाजः ।

प्रशस्ति - सबत् १४१६ प्रवर्तमाने गृहादगोर्ग मध्ये मोमन नाम सबत्गरे ॥ सबत् १६४१ वर्षे चैत सुरी प्रति पदा १ मगलवारे चपावती कोटान् मध्ये लिखिन प्रकटण राज्ये जिखित पारासर गोत्रे प० सेमचद प्राप्तज पुत्र पठनार्थ मोहन लिखित ।

५३१२. ज्योतिष शास्त्र - हरिभद्रमूरि । पत्र स० ४६ । ब्रा० ११ $\frac{7}{3} \times \frac{1}{3}$  इथा । भाषा - सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । वेकृत स० १०६४ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

५२१२. ज्योतिष शास्त्र — चिंतामिश् पंडिताचार्य । पत्र स०२१ । या० ११  $\times$  ७ दश्व । माया — सस्कृत । विषय — ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेहन स० ५०५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इ गरपुर ।

५३१४. ज्योतिय शास्त्र— $\times$  । पत्र सं०१०। प्रा०१०  $\times$  १ इत्र । भाषा सस्तृत । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । दे० स०१२४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर प्रात्री ।

५३१५. ज्योतिय शास्त्र  $\times$  । पत्र स० १३ । प्रा० १०  $\times$  ४) इण्य । भाषा-सरकृत । विषय - ज्योतिय । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १११६ । प्राप्ति स्थान-महान्कीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५३१६. ज्योतिय शास्त्र—  $\times$  । पत्रस०६ । प्रा० १ $\times$ ४२ हुं व । भाषा—सस्कृत । विषय-ज्योतिय । १०काल  $\times$  । कुल्हा वेस्टन स० १०६६ । **प्राप्ति स्थान**—५० दि० जैन सिंहर क्रायोति

५३१७. प्रति सं०२ । पत्र स०१६ । ग्रा०६३ ४४ इचाः न्वकाल ४ । लेकाल ४ । ग्रपुर्णा विष्टुत स०४३६ । प्राप्ति स्थान—भवदिक जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**५३१८. प्रतिसं० ३** । पत्र स० ११ । या० ११×५१ इश्व । ले०काल २ । पूर्ग । बेप्टन स० १०६१ । **प्राप्ति स्थान---भ०** दि० जैन मन्दिर मृजमेर ।

**५३१६ प्रतिसं० ४।** पत्र स० १६। म्रा० ६्रे ४ ४३ इ.ख.। ले•काल स० १८३१ श्रावण मृदी ८ । वेक्रनसं० ३३०। प्राप्ति स्थान-—दि० जैन मंदिर लक्ष्कर, जयपुर ।

५३२०. प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । आ० ११ 🗴 ४ इन्छ । लेल्काल 🗴 । पूर्ण । वेस्टन स० २६१ । प्रास्ति स्थान—संभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर ।

**५३२१. प्रतिसं० ६ ।** पत्र सं० ६ । आ० १०३ ४४ है इश्व । ले०काल स० १८६५ कानी सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ३०३ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेष--- २ प्रतियो का सम्मिश्रस् है । नागढ नगर मे प्रतिलिप हुई थी ।

४३२२. ज्योतिषसार—नारचन्द्र । पत्र स० ७ । या० १ $\frac{1}{7}$   $\times$  ४ इत्त । भाषा-मस्त्रत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्णं । वेष्टन स० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी, बुदी ।

**५३२३. प्रतिसं॰ २** । पत्र स॰ १४ । सा॰ ११ $\frac{1}{7}$   $\times$  ५ $\frac{1}{7}$  इश्व । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेस्टन स॰ ११३१ । प्रास्ति स्थान — अट्टारकीय दि॰ जैन मन्दिर अजमर ।

५३२४. प्रतिसं०३ । पत्र स०७। प्रा०११४५ इन्छ । ने०काल स०१८१८ । पूर्णं। बेट्टन स०२०२। प्राप्ति स्थान— दि०जैन मन्दिर वीरमली कोटा।

**५३२५. ज्योतिष सारस्मी** —  $\times$  । पत्रसंग्रहा प्राग्धिक्ते  $\times$  १०३  $\times$  १२३। भाषा-सस्कृत । विषय-क्योतिष । रूकमाल  $\times$  । तेण काल सण् १८६५ । मानवा मुदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन सण् १२३५ । प्राप्त स्थान — भण् दिण जैन मन्दिर स्रजभैर ।

४३२६. ज्योतिषसार संग्रह—मुंजाबित्य । पत्रस०१६। म्रा० ८ ४३ दृब क । भाषा— संस्कृत । विषय-ज्योतिय । २०काल ४। ते०काल स०१८५० प्रायाद सुदी २ । पूर्णे । बेहुन स०१४७३ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । १२२७. ताजिकसार—हरिमद्रगरिए। एव सं० ४०। घा० १२४१ इखा । भाषा—सस्कृत । विषय-च्योतिष । र०काल X । ले०काल स० १८१४। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रविद्य बोरमसी कोटा ।

**५२२६ प्रतिसं०२।** पत्र संख्या ३२ । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेण्टन स०२७६ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर ग्रिमिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष-दो प्रतियों का मिश्रण है।

५२२६. **ताजिक ग्रंथ** - **नीलकंठ** । पत्र स०२६ । ग्रा० क्ट्रै $\times$ ५ इञ्च । भाषा— मस्कृत । विषय-प्रोतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स०२६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्राप्तिनद्दत स्वाभी वृद्दी ।

५३३०. ताजिकालंकृति — <mark>बिद्याधर । पत्र</mark>स० १२ । प्रा० ८ ४ ६ इश्व । भाषा संस्कृत । विषय-ज्योतिष : र०काल ४ । ले०काल सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्ट्रत स०२०० **। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्द्रिर ग्राभनस्तर स्वामी बंदी ।

**विशेष**— विद्याधर गोपाल के पुत्र थे।

५३३१. तिथिदीपकयन्त्र $-\times$  । पत्रस॰ ६४ । मा॰ १० $\times$ ५ इञ्च । माया-हिन्दी। विषय गरिगत (ज्योतिय)। रण्काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ २३ । प्रास्तिस्थान—दि॰ जैन मेरिटर देवलाला (खेटी)।

५३३२. तिथिसारिएगि—  $\times$  । पत्र स० ११ । मा० १० $\} \times \forall \}$  इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० ६७३ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन सर्वटर ब्रजनेर ।

५३३३ दिनचर्या गृहागम कुतूहल — भास्कर । पत्रस $\circ$  ७ । प्रा० १०  $\times$  ४ $\xi$  इञ्च । मापा-सस्कृत । विषय -व्योतिष । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं $\circ$  ५४= । प्राप्ति स्थान — भ० दि $\circ$  जैन मंदिर अजमेर ।

५२,३४. दिन प्रमारण --  $\times$  । पत्र स० १। ग्रा० १०  $\times$  ४,३ इन्छ । भाषा -सम्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेण्टन स० ३१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५२२५. बुद्धिया महर्त्तः—  $\times$  । पत्रस० ८ । म्रा० ६ $\times$  ४ इखा । माया-सस्कृत । विषय-ज्योनिय । २० काल । ने० काल स० १८६२ आवरण बुदी २ । पूर्णे । बेष्टनसं० २०७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाना बुंदी ।

विशेष—इति श्री शिवा लिखितं दुगडयो मुहुर्त्त ।

**५३३६. प्रति स**० २ । पत्र स० ४ । ने० काल स० १८२० श्रावसा । बुदी ८ । पूर्स । बेष्टन स० २०८ । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन भन्दिर दबलाना (बुंदी) ।

५३३७. दोषावली—  $\times$ । पत्रस्र०२। ग्रा०१ $\times$ ४३ डञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र०काल $\times$ । ले०काल स०१६७३ जेठ सुदी१। पूर्ण। वेष्ट्रन स०१७,२६४। **प्राप्ति** स्यान—दि०जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिंह (टोक)। विशेष-साहीसेडा में लिखी गई थी।

५३३६. द्वादशराणि संकातिफल—  $\times$  । पत्र स०७ । प्रा०११  $\times$ ४५ इन्छ । माषा— संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन स०५०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वारपुर ।

४३३६. द्विप्रह योगफल—  $\times$  । यत्र सस्या १ । आ॰ ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ ६७ । भाषा-सस्कृत । विषय-अ्योनिय । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । तप्टन स॰ ३२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अवपूर ।

४३४०. नरपति जयचर्या—नरपति । पत्र स० ४३। आ० १० × ४.] इ.च.। सापा-सस्कृत । विषय-च्योतिष । र० काल स० १४२२ चैत मृदी १४। ले•काल × । पूर्ण । बेब्रुनस० ३४६-१३६। प्राप्ति स्थान—द० जैन सन्दिर कोटडियों का हुगरपुर।

५३४१. नक्षत्रफल —  $\times$  । पत्र म०२ । स्ना०१० $\times$ ँ इन्त्र । भागा-गर्कुत । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । बेष्टन स० ३१७ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मिन्दिर लक्षर, जयपुर ।

५३४२. नारचन्द ज्योतिष —नारचन्द । पत्र ग०१४। या०१०] , ४] दवा भाषा— सम्बद्धा विषय-ज्योतिष । र० काल ४। ने० काल स०१६४७। पूर्ण। बेप्टन स०१०६७। प्रास्ति स्थान--भ०दि० जैन मन्दिर बजनर ।

विशेष ---प्रशस्ति निस्त प्रकार है---

स बन् १२४७ वर्षे द्वामु त्रिदि च दि० प्रति लीघी । पातिमाह श्री ग्ररूवर विजयराजे । मेडना मध्ये महाराजि श्री बलिभद्र जी विजयराज्ये ।

**४३४३. प्रतिसं०२।** पत्र स० ३। बा० १०४ ४१ इखा। लेक्काल सा० १६६६ कार्तिक बुदी १३। पूर्णा। बहुत स० १३२६। **प्राप्ति स्थान**—स**०** दि० जैन सन्दिर खनसर।

४**३४४. प्रति स०३** । पत्र स०२३ । खा०६ ४३ हे इला। लेक्काल ६ । पूर्णावेष्टनस० ६७४ । **प्राप्ति स्थान** — स० दि० जैन मन्दिर छजनेर।

५३४४. प्रतिसं०४ । पत्र स०३१ । ले∘काल ४ । अपूर्ण । वष्टन म० ७६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पदायदी मंदिर सरतपुर ।

विशेष — देवगढ मे प्रतिनिधि हुई थी।

**५३४६. प्रति स**० ५। पत्र स० २२ । आ० १०३ ४. १ व्या । ले०काल **४** । पूर्ण । **वेष्टन स०** १३द । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फनेहपुर जेला गाटी (सीकर) ।

विशेष - एक स्पूर्ण प्रति स्रोर है।

५२४७. प्रति स०६ । पत्र स०२-७२ । ब्रा०१०ॄे ४४ दश्व । ले० काल 🗴 । ब्रपूर्ण । बेष्टुत स० ७६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर ब्रादिनाथ ब्रुदी ।

विशेष -- प्रति सटीक है।

५३४**८. प्रतिसं** ७ । पत्र स ० २२ । या० २ ट्रै ४ ४ है इंच । ले० काल स० १७४६ फाल्युन ७ । पूर्मा । बेहन सं ० १२८ । **प्राप्ति स्थान** —पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर इन्द्रस्मद (कीटा) । **५२४६. प्रतिसं० म**ा पत्र स**०** ३३ । प्रा० ११  $\times$  = १ इच्च । ले० काल स ० १७१६ प्रासोज मृटी १३ = । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गुरुपुर ।

५३५० निमित्तशास्त्र— × । गत्र स०१-१२। आ०१०१ + ४२ इच्च । आया-संस्कृत । विषय-व्योतिष । र०काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वेष्ट्रस स०७३३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५३५१. नीलकंठ ज्योतिष – नीलकंठ । पत्रस०५। ग्रा०  $= \frac{1}{4} \times 8$  उच्च । भाषा-सम्कृत । विषय — ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन म०६७१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

५३५२ **नेमित्तिक शास्त्र—मद्रबाहु**। पत्रम०५७। स्रा०११ है ४४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्यांनिष । रक्काल × । लेक्काल स० १६८०। पूर्ण । बेष्टन स०३७। **प्राप्ति स्थान -** दि० जैन पत्रावती मन्दिर कामा ।

५३५३. पचदशाक्षर—नारद । पत्रस०५ । आ०२, ४ ४} इज्ल । भाषा-सन्कृत । विषय-व्योतित । र०काल ं । ले०काल ं । पूर्ण । वेष्टनस०७५० । प्राप्ति स्थान— महारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमर ।

५६५४. पंचांम $-\times$  । पत्र स० ५६। आ० ११ $\times$ ७ उच । भाषा-सम्बन्त । विषय-क्योंश्वर । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । **प्राप्ति स्थान**- दि० जैन पनावती सदिर कामा ।

विशेष -- स० १६४६ मे ४६ तक के है ४ प्रतिया है।

**१२१५. सं० १८६०।** गत्र स० १२। घ्रा० १० $\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{1}{2}$  ड्या । भाषा— सरहत । विषय— ज्योतिय । २०कास  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर बोरसली कोटा ।

**४३४६. पंचाय**—  $\times$  । पत्र स०६ । झा०६ $\times$ ६ है उञ्च । भाषा-सस्हत । विषय + ज्योतितः । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । स्रुप्तं। बेष्टन ४४। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपथी मदिर दीसा ।

**५३५७. पचाम**— $\times$  । पत्रस०१२। म्रा०७ $_{7}^{2}$  $\times$ ५ द्वा । भाषा —िहिन्दी । विषय -ज्योतित । रक्ताल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १५१। प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर नेमिनाथ होडारायमिह (टाक्त)

विशेष---स०१६१६ का पंचाग है।

**५२५८. पचाशत् प्रश्न—सहाचन्द्र ।** पत्रस०६। घा० ७१ × ३ हे दश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले०काल स०१८२४ धानोज बुदी १४। पूर्ण । बेष्टनस०४२१ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन सन्दिर ग्रजभेर ।

**४३४६. पंथराह शुमाशुम**े । पत्र स०२। ब्रा० १३imes४ इञ्च । भाषा-सस्क्रत । विषय– ज्योतिय । र०कालimes । ले०कालimes। बेष्टन स०३२२ ।**प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर योग्मली कोटा ।

% २६०. पत्य**विचार**— × । पत्र स०२। मा० प्रॄे × ४ इश्व । भाषां हिन्दी । विषय-ज्योतिय । र०काल × । **ले०काल** × । पूर्ण । बेष्टन स०२१० । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर अजसेर । ५३६१ पत्य विचार— $\times$  । पत्र सं०२ । ध्रा० ११  $\times$  ५ $^{3}$  हुन्ध । यापा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । रकाल  $\times$  । लेक्सल  $\times$  । ध्रपूर्ण । बेष्ट्नस० ३१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिदर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-चित्र भी है।

**१३६२ प्रति सं०२**। पत्र स०२। प्रा०११ $\times$ ५३ इन्छ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५३६३ प्रतिसं०३।** पत्रस**०१**। प्रा०६× ५ इन्छाले० काल × । पूर्णा वेष्टनसं• ३२१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

१३६४, पाराशारी टीका —  $\mathbf{x}$  । पत्र स० ७ । ग्रा० ६ $\mathbf{x}$ ४ $_{i}$  इन्त्र । भाषा – मस्त्रत । विषय – ज्योतिष । ग्रा०  $\mathbf{x}$  । ते० काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । वेष्टन म० १४०१ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दर स्रजनेर ।

**४३६४.पाशा केवली** — **गर्गमुनि** । पत्र स० २३ । प्रा० १० $\frac{3}{6}$ (४.) उठ्य । भागा-मस्तृत । विषय-निमित्त गास्त्र । **र०काल** × । ले० काल स० १८४३ । पूर्ण । वेस्टन ग० १३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लम्बर, जयपुर ।

विशेष---वेमिनाय जिनालय लण्कर, जयपुर के मन्दिर में फाभुराम ने प्रतिलिपि की थी।

**५३६६.—प्रतिसं०२ ।** पत्र स०१० । ब्रा०१०<sub>क</sub>ै≾५ इल्डा ले० काल स० १६०१ । पूर्मा वेष्टन स०५३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५३६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११।१० ग्रा० $imes \xi^2$  इश्रा । लेक्काल ः । पूर्ण । बेष्टत स० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५३६८. प्रति सं० ४ ।** पत्रस० ६। आ० ४×४ ¦ इञ्च । ले०काल स० १८२३ । पूर्णः । बेष्टनसं० १३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन वण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**५३६६. प्रति स० ५ ।** पत्रस० १० । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनग० २६-४५५ । **प्राप्ति** स्थान - ति० के पश्चनाथ महिर जनवपुर ।

५२७०, प्रति सं० ६ । पत्रस० ८ । या० १४४ । लेक्सल 🗴 । पूर्ण विष्टुन म० २८५ । स्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सदिर बोरगली कोटा ।

५३७१. प्रतिस० ७ । पत्रस० १४ । आ० १२×४ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रनस० १०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५२७२. प्रति स० ८ । पत्रस० १६ । घा० ११ × ४ देवा । ले०काल स० १८१७ घासोज सुरी १। पुर्णा । वेपन स० १०, ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाय मन्दिर इदराढ (कोटा)

४३७३. पासाकेवली —  $\times$  । पत्र स०४ । घा० १०  $\times$  ५ ६ व्या भाषा –सस्कृत । विषय – निमिन स्रास्त्र । ८०काल  $\times$  । ते० काल स०१८२४ घासीत्र बुदी १४ । पूर्णः । वेष्टन स०१८११ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर घजमेर ।

विशेष -पंडित परममुख ने चौमू नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

४३७४. प्रतिसं०२। पत्रस०१६। ले॰काल स० १६४० पीप बुदी ४। पूर्गा वेल्टन सं० १११२। प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि॰ जैन मदिर स्थानेर।

**५२७५. प्रतिसं० २** । पत्र स० १० । मा० ६ $^1$  $^1$  $^2$  $^3$  इच्च । लेक्सल स० १०२० श्रापाढ मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४४। **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि० जैन मदिर स्रजमर ।

५२७६. प्रतिसं०४ । पत्र स०६ । थ्रा०१२ $\times$ १३ दश्व । ते०काल स०१६२७ । पूर्ण । बेष्टुन स०३६ । प्राप्ति स्थान — दि०जैन पार्थनाथ मन्दिर टोडारार्यासह (टोक)

विशेष - प० जीहरी नाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

५३७७. प्रतिसं० ५ । पत्र म०.६ । ग्रा० १०३ ४४ है इ.च. । ले० काल सं० १८३३ । पूर्णा। वेष्टन स०१६७ । प्राप्ति स्थान – दि० तैन मन्दिर राजभहल (टोक)

४३७८. प्रतिसं०६ । पत्र स०८ । ब्रा० १ ४४ इचा ने क्काल स०् १६११ । पूर्ए । बेहन स०६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर ग्राभिनन्दन स्वामी बदी ।

५३७६. प्रतिसं०७ । पत्रम० १० । घा० १३imes imes imes व्या । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन स $oldsymbol{\circ}$  २६८–१०६ । प्राप्ति स्थान —-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

५३८०. प्रति स० द । त्रवरः २२ । प्राः ११ ४ ४ । वेः । तेः । तान स० १६६७ । पूर्णः । वोगः । वेष्टन स० १५८ । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन धप्रवान प्रवायनी मन्दिर झलवर ।

४३ द१. पाशाकेवली भाषा— × । पत्र न० ४ । आ०६२, ४ ४, इश्वा । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त नास्त्र । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन त०६३३ । **प्राप्ति स्थान—**म० दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

**५३६२. पाशाकेवली माघा** —  $\times$  । पत्रस $\circ$  ६ । म्रा० ६ $\times$ ४ ६ व । माषा-हिन्दी । विवय-निमित्त भाग्व । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस $\circ$ १४२२ । **प्राप्ति स्थान** — भ $\circ$  दि $\circ$  जैन मन्दिर प्रजमेर ।

 $\chi$ ३८३. पाशाकेवली भाषा। पत्रसं० ६। भाषा-हिन्छः । विषय-तिमिन शास्त्रः । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १६२६ । पूर्णः । वेष्टनस० ४३० । प्राप्ति स्थान—पंचायती दि० जैन मन्दिर भरनपुर।

५३६४. प्रतिसं० २ । पत्रस०१५ । लेकाल स०१६१३ । पूर्ण । वष्टनस०४३१ । प्राप्ति स्यान—पत्रावती दि० जंन मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- टोडा में लिपि हुई थी।

**५३०५. प्रतिसं० ३**। पत्र स० २४। ले०काल सं०१८२१। पूर्ण । वेष्टन स० ४३२। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

४३=६. **पाशाकेवली**— × । पत्र संस्या ११ । द्वा० ४×४ दश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त बास्त्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सस्या ४३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन छोटा मंदिर वयाना । **४३८७. पाशाकेवली**  $\longrightarrow \times$  । पत्र स० ११। ब्रा॰ ५ $\frac{1}{2}$   $\times$ ४ इला । भाषा-ितन्ती । विषय-ितिमत्त शास्त्र । २०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । वेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान** —िद॰ जैन छोटा सन्दिर वयाना ।

**४३८६. पाशाकेवली** —  $\times$  1 पत्रस्क ६ । आ० १० $\frac{3}{8}$   $\times$   $\frac{1}{8}$  इख । भाषा-हिस्दी पत्र । विषय-जकुन शास्त्र । रक्शाल —  $\times$  । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । वेटन सक १६४ **। प्राप्ति स्थान** — दिक जैन सदिर पार्वनाथ चौगान यु दी ।

**१२८६. पात्राकेवली** — '' । पत्र स० १२ । आ० ६<sup>3</sup> × १<sup>3</sup> ट्या । आपा-हिन्दी । विषय-स्थीतिष । रज्कान '' । ले० काल '× । पूर्ण । बेग्टन स० ४५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटिंडियों का इंगरपुर ।

**५३६०. पुरुवोत्पत्ति लक्षस्**-  $\times$  । पत्रस**्** । आ० १० $^{1}$   $\times$   $^{2}$  हज्ज । भाषा-सम्बन्ध । विषय-व्योतिष । १०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ११२ । **प्राप्ति, स्थान**— दि० जैन प्रस्थित सम्बन्ध ।

५३६१. प्रश्न तुझामरिए — × । पत्र त० २१ । या० च्हे ो ४ हे उथा । भागा-सम्बन्ता। स्वया-क्योतिया । राज्याता × । ले० काल स० १६०६ चैत वृदी ७ । पार्ग । वृद्य स० १३०४ । प्राप्ति स्थान-भ० १४० केन मन्तिर स्वयोर ।

**५३६२. प्रश्नसार**— ४ । पत्र स०१० । या०१० ४ ४ ४ । भाषा-सम्बर्ग । विषय-च्योतिमा १०कान ४ । ने०कान ४ । पूर्ण । वेशन स० १४६२ । **प्राप्ति न्यान**—य०दि० जैन सन्दिर खण्डोण

५३,६३, प्रत्नावली—श्री देवीनंद । पत्र ग०३ । या०१२ ४ ४ ७ ३ थ । भाषा सन्तृत । विषय-णकुत णाग्व (ओपीतप) । रजलाल × । लेल्काल न०१६२२ । पूर्ण) वेष्टन स०६२ ) प्रास्ति स्थान—किंत्रीक मनिष्ट स्वकोण ।

**५३६४ प्रश्नावली**—  $\times$  । पत्रस्क १३ । सा० १० $\frac{3}{2}$   $\times$  ५ $\frac{3}{2}$  ह च । भाषा गम्कृत । विषय-निमित्त ज्ञास्त्र । रक्काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । वेष्टुन स० १३५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**५३६५ प्रश्नोत्तरी** —  $\times$  । पत्र स $\circ$  ४ । प्रा॰ ६ $\times$  ४ इञ्च । नागा-हिन्दी । विषय-जकुत शास्त्र । राज्यात  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन स $\circ$  १३३ । प्राप्ति स्थान — वि॰ जैन मन्दिर प्रचायनी दृती (टोक) ।

विशेष—पहिले प्रम्ने किया गया है ग्रीर बाद में उसका उत्तर भी लिख दिया गया है। इस प्रकार १६० प्रभनों के उत्तर है।

पत्रों के ऊपर की छोर की ब्रोर पक्षियों के-मोर, बनक, उल्लू, सरगोश, तौना, कोयल ब्राहि रूप में है। विभिन्न मण्डलों के वित्र है।

**५२६६. प्रश्न शास्त्र** imes । पत्रस० १४ । बा० ११ imes ४ इ.स. । सापा-सन्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल imes । ले०काल स० १६४० पोष मुदी ६ । वेष्टन स० २२६ **। प्राप्ति स्थान** । दि० जैन संदिर लक्कर, जयपुर । ५३६७. बत्तीस लक्षरा छप्पय-गंगावास । पत्रस०२। बा०१० ४ ६ इच । भाषा-हिन्दी। विषय शकुन शारत्र। र०काल ४ । लेक्सल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१७६-१७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)।

५३६६ ससन्तराज टोका-महोपाध्याय श्री मानुचन्द्र गिर्ण । पत्रतं०२००। ष्रा०१०} ४१ इचा । भाषा-सन्दत् । विषय शकुन शास्त्र । रण्काल ४ । ते० काल स०१६४८ श्रावस्य बुदी ७ । वेष्टन स०२४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर असुर ।

विशेष - प्रशस्ति ---प्री णत्रु जयकरमोचनादि मुकृतकारि महोपाध्याय मानुबन्द्रगरिण । विरिचिताया वसन्तराज टीकाया च व प्रभावक कपन नाम विश्वतितमो त्रर्ग ।

५३६६. बालबोध ज्योतिष —  $\times$  । पत्रस०१४। त्रा० ५ $^{5}$  ४ ६% । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टुन स० ३८६-१४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर इ गणप ।

१४०० **बालबोध—मुंजादित्य।** पत्रस०१४ । प्रा० २ $\frac{3}{8}$  × ४०६७ । भाषा-सस्कृत। विषय-अंतिय। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वण्टन म०१०६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर क्रावर्भर ।

१४०<mark>१. प्रतिसं० २ ।</mark> पत्र स०११ । ब्रा०७' × ४ ृडः । ले० काल स०१⊏२०। पूर्ण । वेष्ट्रत स०१७१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृदी) ।

५४०२. प्रति सं० ३ । पत्रस० १७ । झा० ६×६ इसा । लेक्काल स० १७६⊂ झासोज सुदी १४ । पूर्ण । बहुत स० २६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सदिर दबलाना (बुदी) ।

विशेष — निमित छात्र विमल शिष्य वाली ग्राम मध्ये ।

५४०३. बहातुस्पकरस्य — भास्कराचार्य । पत्र स० १० । आ० १०  $\times$  ४ इश्व । भाषा – संस्कृत । विषय-ज्योतिष । ज्वकाल  $\times$  । लेव काल स० १०४४। पूर्य । वेष्ट्रनस्व ३५०। प्राप्ति स्थान — दिव जैन मंदिर बोजसानी कोटा ।

प्रशस्ति—मवन् १७४४ वर्षे चंत्र मुदी २ णनो लियत स्ति नदलाल गौडदेशे सूर्दनगर मध्ये प्रत्सार्थी लिखन ।

५४०४. भडली-— ्र । पत्रस०५६ । म्रा०६ $\times$ ४ $\S$  इत्र । भाषा-सम्भृत । विषय-ज्योतिष । २०कान  $\times$  । ले०कान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

**विशेष** — भडली बात विचार है।

विशेष--३४ पद्य है।

४४०६. प्रतिसं०२ । पत्र स०१२ । स्रा०१० $^{1}$  $\times$ ६ इंच । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० ५३२ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**१४०७ मडली**—  $\times 1$  पत्रसं० २२ ४२। मा० ६ $\times$ ६ इथा। भाषा — हिन्दी । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल सं० १६२० भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७३। **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा।

४४० म् सडलो पुरास्प $-\times$  । पत्र स॰ १३ । बा॰ ११ $\frac{2}{7}$   $\times$  ६ $\frac{2}{7}$  इन्न । भाषा हिन्दी प॰ । बियय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  : ले०काल स॰ १८५८ वैज्ञाल बुदी ५ । पूर्ण । बेट्टनसं॰ १४२ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर फतेहदुर शैलावाटी (सीकर) ।

५४०६ सङ्क्तो वर्ग्यन १ पत्रसः १६। भाषा-हिन्दी । विषय 🗙 । ब्रपूर्णः । वेष्ट्रनसः २०५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायनी मदिर मस्तपुर ।

**५४१० सडलीवाक्यपृष्छा**  $\sim \times 1$  पत्रस०  $\times 1$  मा० १० $^{5}\times$ ५ इस । भाषा-हिन्दी (पदा) । विषय-ज्यातिष निमित्त । र० काल  $\times 1$  ले०काल स० १६४४ पीप मृटी १३ । पूर्मा । बहुन म० १३६७ । **प्राप्ति स्थान**  $\sim$  २० दि० जैन महिर प्रजमेर ।

विशेष -- निस्त जोसी सुरदास धुजुंन मृत ।

**१४११ भड़ली विचार**—  $\times$  । पत्र स०१। प्रा०११  $\times$  ६ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-क्योतिय । र०काच  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१४७-२५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारार्गसिह (टोक) ।

पूर्वश्च मङ्गली विचार— प्रः। पत्रस्य ४० ग्रा० १०४४ इश्व । भाषा हिन्दी । विषय-ज्योतिप । र०काल ४ । लेक्नल स० १०४७ । पूर्ण । ये० म० २०१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर फ्लेहपुर शेलाबाटी (मीकर) ।

५४१३. सङ्क्षी विचार -- × । पत्रस०५ । आ०१०×४ इञ्च । गापा-हिन्दी प०। विषय-ज्योतिष । रक्काल × । लेक्काल × । पूर्ण । येष्ट्रत स०५४५ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन सन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**५४१४ महबाहु संहिता— महबाहु** । पत्र स ० १६ । साठ २६  $\times$ ४५) इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स ० १२०० । प्राप्ति स्थान— ग० दि० जैन महिटर फ्राजमेर ।

५४४१ प्रतिसं०२ । पत्रस० ६४ । मा० प×६ॄँ डश्व । लेकाल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४२६ । प्राप्ति स्थान — भद्रारकीय दि० जैन मन्दिर क्रजमेर ।

५४४६ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६६ । घा० १२ x ६ इ-ख । ले०काल x । पूर्या। वेष्टन स० ५४३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१४१७ प्रतिसं० ४ । पत्र स०६२ । प्रा०१३  $\times$ ५ $^3_2$  इच्च । ले०काल स०१८६६ श्रावस्स्य है । पूर्णः । वेष्टन स०१५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फेतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।

विशेष-स्पलाल जी ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि करवाई थी।

्र४१८. सावफल— × । पत्र स ०१४ घा०११×४ इश्वा भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल सं०१८६६ । पूर्ण । वेष्टत सं०३६-१४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिट (टौक) । **५४१६ भाविसमय प्रकर्**ग--पत्र स० ६ । भाषा-प्राकृत सस्कृत । विषय- $\times$ । रचना काल  $\times$ । तेण्डन स० ४६० । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५४२० भुवनदीपक-पदाप्रससूरि। पत्र सं०१४। छा०१०४५ दृष्टवा आया—सास्कृत। विषय-ज्योतिया रज्याल ×ालेञ्चाल सं०१४६६ भाववा बुदी ६। पूर्ण। वेष्टन स०१२४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर खजमेर गण्डार।

५४४२१ प्रतिसं०२ । पत्र स०१२ । प्रा०१०४४ १ इल्बा ले० काल ४ । पूर्णावेष्टन सं०१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

 $\chi$ ४२२. भुवन दीपकः—  $\times$  । पत्र स० १०। आ०१० $_{x}^{2}$  $\times$  $_{y}^{2}$  इख । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेरटन स०१४१ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन सहिर बोरससी कीटा ।

५४२३. भुवनदीपक टीका—  $\times$ । पत्र म०१६। या०१० $\times$ ४ $\xi$  इखा भाषा—सस्कृत। विषय—स्योतिय। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं०१६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरगली कोटा।

४४२४. भुवनदीयक वृत्ति—सिंहितिलक सूरि । पत्र स०२४। ग्रा०१० $\frac{5}{4}$ × $\frac{1}{4}$  इत्थ । भ्रापा—महकृत । थियय —ज्योगिय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष- रम युग गुर्गेन्दु वर्ष १३२६ शास्त्रे भुवनदीपकं वृत्ति । युवराज वाटकादित् विशोध्य बीजापुरे लिलिना ॥११॥

**५४२५ भुवनिवचार** —  $\times$  । पत्र स०२। ग्रा० १० $\frac{5}{5}$  $\times$ ५ इख । भाषा — सस्कृत । विषय — ज्योतिय । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म०५३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर स्थेडनवाल उदयप्र ।

विशेष--प्रित हिन्दी प्रथं सहित है।

४४२६. सकरंद (मध्यसम्न ज्योतिष)—  $\times$  । पत्र म॰ ६ । भाषा—सस्कृत । विषय— ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰ ६६, ४६२ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५४२७. पुरुर्तेचितामिर्ग-जिमस्त । पत्र स०३६ । त्रा०१०३४४३ दश्च । भाषा-सस्त्रत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१८७१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१४४७ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

४४२८. सहर्तीचतामिए — वैवनराम । पत्रस० १७ । बा०११४५ इन्छ । भाषा — सस्कृत । विषय — ज्योतिष । २० काल म० १६५७ । **ले०काल** ४ । पूर्ण । वेष्टन सं• १६३ **। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ग्रामनन्दन स्वामी, बुदी ।

**५४२६. प्रति सं० २ ।** पत्रसं० १६ । स्ना॰ १३imes६३ इञ्च । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन सimes१६६ । प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**५४३० प्रतिसं०३।** पत्रम० न्द्र**। आ०**१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ दश्च। ले०काल स०१ न्द्र१। पूर्णं । बेष्ट्रन स०१६२। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर दबलान। (ब्रवी)

भू ४३१. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ५१ । प्रा० ६३ ४४३ इन्छ । ले०काल स० १८७६ । पूर्ण । बेष्टन स० २०० । भ्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्टरगढ ।

विशेष—सवत् १८७६ शाके १७४४ मासानाम मासीत्तम श्रावग्गमासे शुभे शुक्तपक्षे १ भृगुवासरे चिरजीव सदासुख लिपिकृत करवाराज्य शुभेग्रामे ।

**४४३२. प्रति सं० ५** । पत्र स० ७४ । आर० ७<sup>3</sup> ४४ / ट्रश्च । ले० कात्र म० १८७८ । पूर्ण । वैकृत स० ३३५ १२१ । **प्राप्ति स्थात** —दि० जैन मंदिर कोटडियो का इ.गरगर ।

**४४३३. प्रति स०६।** पत्र स०६६। ब्राठ ७<sup>९</sup> ४ ८ इन्छ । लेव काल ( ) अपूर्ण । वेष्टन स०३३६ १२०। **प्राप्ति स्थान –** दिव जैन मदिर कोटडियो का इंगरपूर ।

विशेष---भागकचन्द्र ने किशनगढ़ में प्रतिनिधि की थी

५४३५. प्रति सं०२ । पत्रस०३६ । या०११४४ उञ्च । ले०काल ∴ । प्रपूर्ण । बेष्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर राजमहत्र (टोक) ।

४४३६. प्रति सं०३ । पत्रसः० ४० । बा० १९ ं≾४ दण्य । ल० काल × । बेष्टन स० ३२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर लकार जयगर ।

**५४३६ महूर्गतस्व**ः  $\times$  । पत्रसः २ । भाषा—गरण्यः । विषयः—ज्यांतिष । र०काल्  $\times$  । त्रव्यक्तः । व्यक्तं । वेटन स०१२७ ५४६ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark> -दि० जैन सभवनाथ मन्दिर जययुर ।

५४३६. सृहर्सम्काबली - परसहस परिवाजकाचार्य । पत्रस० ७ । घा० ६००४) इत्य । भाषा--सम्क्रत । विषय-- ज्योतिय । र० काल 🗴 । य० तत्व 🗴 । पूर्ण । वेग्टन स० १४४६ । प्रास्ति स्थान--भ० दि० जैन मदिर प्रजसेर ।

४४४० प्रति स०२ । पत्रस०१० । ने० कात्र स०१८७७ । पूर्णे । वेष्टन स०१४५० । प्राप्ति स्थान---भ०दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

४४४१. प्रतिसं० ३ । पनस० ११ । लेक्काल ग० १६७७ । पूर्ण । बेष्टनस० ७४६ । प्रास्ति स्थास—र्द्याः जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-हिन्दी ग्रथं सहित है तथा नखनऊ मे निखी गई थी।

५४४२. प्रति सं० ४ । पत्रम० १३ । घा० ० ; > ४ इख । ले०काल स० १८४१ । पूर्ण । बेहन स०१६६ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहगुर शेखाबाटी (सीकर) ५४४६, प्रतिसं०५ पत्रस० ८ । घा०१०४ ६ इन्धा लेक्काल । पूर्ण वेष्टन स०१७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान बृदी ।

५४४४. मृहुर्त मुक्ताबिल—  $\times$  । पत्रस० १। आ० १०  $\times$  ४ $\xi$  इला । भाषा-सस्कृत । विषय- ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेपून स० ३३५ । **प्राध्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४४४५ मृहत् मुक्ताबिल—  $\times$  । पत्रस० १२ । प्रा० ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इव्य । भाषा – सस्कृत । विषय-प्रयोतिय । र०काक्ष  $\times$  । लेकाल स० १६५४ । पूर्ण । वेग्टन स० २४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर गाव्येनाथ चौगान व दी ।

१४४६ मुहूर्त सृक्ताविति—  $\times$  । पत्र सं० १२। ब्रा० १२ $\times$ ४ इख । साथा सम्कृत । विषय-ज्योतित । र०कास  $\times$  । ते०कास  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर जैस्मानी कोटा ।

१४४७ मृहर्ग मृक्ताविलि—४ । पत्रम० २-७। ग्रा० ५ ४ इच्छ । ग्राघा-सस्कृत । विषय-ज्योतित । र०काल ४ । मेलकात म० १६२० प्रथम ग्राघाड मुदी १०। पूर्ण । वेस्टन स०२७ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर देवलाना (यदी)

**५४४८ महर्स्स विधि**→ राषत्रम०१७। ग्रा०११४५३ च । **भाषा-स**रकृत । विषय-ज्योतिष । न्वतात ×ालेवकाल ⋋ापूर्णा वेषटन स०२१६। **प्राप्ति स्थान-दिव्जैन मन्दिर** राजमहल (टोक)

विशेष--विशालपुर मे प्रतिनिपि हुई थी।

प्रथप्र**ः मेघमाला—शंकर ।** पत्रस० २१। झा० १० रे ४५१ इखा । भाषा—सम्कृत । विषय— ज्योतिय । र०काल ≾ा ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष-प्रनितम प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

इति श्री शकर कृमेघ मालाया प्रथमोध्याय ।

इति श्री ईश्वरपावेती संवादे सनिष्यरमता संपूर्ण। सिति ग्रापाढ णुक्त पक्षे सगलवारे स० १८६१ ग्रादिनाथ चैत्यालये। द० पंडिन जैचन्द का परते सुखजी साजी की सु उतारी छै।

**५४५१. मेघमाला**—  $\times$  । पत्र स०६। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । २०काल  $\times$  ।  $ले॰काल <math>\times$  । पुर्गः । वेष्ट्रत स॰ ४२२-१५६ । **प्राप्ति स्थान**-दि॰ जैन मन्दिर कोटडियो का इ गरपर ।

५४५२. मेघमाला (भडलीबिचार)—×। पत्रस्व ६। आ० ६×४ इख । भाषा-मस्कृत । विषय—ज्योतिय । र०काल ×। ल० काल स० १६६२ । प्रपूर्ण । बेष्टनस०१३४ । प्राप्ति स्थान – रि० जैन खदेतबाल मन्दिर उदयपुर ।

**१४५३, मेधमाला प्रकरा**ग— $\times$  । पत्र स० १४ । ग्रा० १२ $\times$ ५ इथा । मापा सन्छः । विषय-ित्रिम्स ज्ञास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स०२=२५३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयप् ।

विशेष-भडलीविचार जैसा है।

 $\chi\chi\chi\chi$ . योगमाला —  $\times$  । पत्र स० ६ । या० १०  $\times$  ४ ६ खा । भाषा –सन्कृत । विषय — ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बंधन स० २२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दबलाना (ब्रुदी)

४४४४ योगातिसार—भागोरथ कायस्य कानूगो । पत्र स० ३४ । आ० १०४४ इन्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिय । र०काल ४ । ले०काल म० १८५० शासोज मुदी १ । पूर्ण । वे०स० १११४ । प्राप्ति स्थान—भंदारकीय वि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष — सेवग चित्तौडवासी बेह्या मालवा देश के नोलाई नगर मे प्रतिलिपि की थी।

**५४५६. योगिनीदशा** —  $\times$  । पत्र स०६। ब्रा० ११  $\rangle$   $\times$  ५ इन्छ । भाषा- सस्कृत । विषय- ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल । पूर्ण । वेष्टत स० ११२६। **प्राप्ति स्थान**-- महारकीय दि० जैन मन्दिर क्रतमेर ।

१४५७. योगिनीदशा— × । पत्रसु० ८ । प्रा० ६२ × ४२ इख । भाषा-सुरुत । विषय— ज्योतिष । र०काल × । ते०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डेगरपर ।

५४५८. रस्तर्बामिण् — × । पत्र स० ७ । आ० ११ रै ४४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतप । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन म० २००-४६४ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४५६. रत्नदीपक — × 1 पत्र स० ११। ब्रा० १० रे ४५ है इस । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल × । ले०काल स० १८७६ कार्तिक गुरी ७ । पूर्ण । वेट्रन स २०१ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन पावर्षनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

**५४६०. रत्नदोप**— $\times$  । पत्र स० ८ । म्रा० ८ $^{\dagger}$  $\times$ ६ इ.ख । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३१ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन मन्दिर दवलाता (बृदी) ।

४४६१. रत्नवीपक-ः। पत्र स० ७ । सा०१३ ४४ इखा । भाषा----पत्कृत । विषय--ज्योतिष । ८०काल ४ । केकाल स० १८४६ । गूर्ण । वेष्टन सं० १६१० । प्रास्ति स्थान----भट्टारकीय
कि जैन महिन्य स्त्रवेर ।

५४६२. प्रतिसं०२ । पत्रस०६ । हा०११  $\times$  ५ इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३४१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

४४६३. प्रतिसं० ३। पत्र स० ७ । प्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$  ७ $\frac{1}{6}$  इश्व । लेब्बाल  $\times$  । प्रपूर्ग ।बेपून स० १७ । प्राप्ति स्थान— द० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रदी)

१४६४. रत्नमाला — महादेव । पर स० ४६। ग्रा० १०४४ इंच । प्रापा-सस्कृत । विषय-क्योतिय । र०काल ४ । ते०काल स० १४६६। पूर्णा । वेष्ट्रन स० ४७७ । **प्राप्ति २वान**—दि∙ जैन संभवनाव मदिर उदयपुर ।

विशेष-प्रतिम पृष्पिका निम्न द्रकार है---

प्रसस्ति—स्वास्ति सवत् १४८६ वर्षे कार्तिक बुदी ११ एकादाच्या तिथी भौमवासरे घवेह लागू रिक पुरे बाल्तच्य मट्ट मेदपाटेजातीय ज्योतियी कडूमात्मज रगकेन खास बादादि समस्त भ्रातृसा पटनाय नच शिक्ना पठनाय परोपकाराय रतनमान फलपण्यस्य भाष्य लिलेल ।

१४६५ प्रति सं०२। पत्र स० १३०। ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन स० ४७८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

भू४६६. प्रति सं०३ । पत्र स० १६-६० । छा० ११४५ इ.च । ले० काल 🗴 । छापूर्ण। वेष्टन सं०२३० । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन पार्थनाथ सन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष-प्रतिप्राची है।

स्वि के ग्रन्त में निस्त प्रकार उल्लेख है-

ण्डवर् वाक्यप्रमाराणप्रवाणारुमने वेदवेदागवेन्, मून् धी लूशिगस्याचुन वरण्रारीनः धी महादेवनामा तत् प्रोक्ते रत्नमाला रुचिरविवरिष् सज्जनाना भोजयानो दुर्जनेन्द्रां प्रकरण्मगमन् योग मजा चनुर्व ।

५४६७. रमल --  $\times$  । पत्रस० ३ । प्रा० १०  $\times$ ५ $^2$ ६ च । भाषा-हिन्सी । विषय — ज्योतिष । ग्रुकाल  $\times$  । लेकाल म० १८७८ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १००० । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर क्षत्रसर ।

**५४७०. रमल प्रश्ततंत्र—देवज्ञ जितामश्चि**। पत्र मं० २३। घ्रा० ५ $\times$ ५ $^{1}$  इन्त्र । सम्बन्धः विषय -ज्योतिय ।  $^{2}$ ० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्णः । बेष्टन स० २६७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर ग्रमिनन्दन स्वामी, ब दी ।

४४७१. रमलशकुनावली —  $\times$  । पत्रतः  $\times$  । घा० १०  $\times$  ५ इच । भाषा — हिन्दी । विषय — ज्योतिष । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १३६ । प्राप्तिस्थान दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ कौगान वृदी ।

४४७२. रसल शकुनावली — × । पत्र स० ७ । प्रा० ८ १४४ इञ्च । भाषा —हिन्दं. । विषय-ज्योतिय । र०कल् × । से०काल सं० १८५३ । पूर्णं । बेष्टन स० ८०-४६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु परपुर ।

भिन्तम---- इति श्री मुसलमानी शकुनावली संपूर्ण । संवत् १८५३ का मिती चैत बुदी १२ सुखकीरत वाचनार्थं नगर सेललेका मध्ये । १४७३. रसल जास्त्र — ४ । पत्र स० ३४। ग्रा०६ १४७ इन्द्र । गादा-सस्कृत । विषय ज्योतिय । र०काल ४ । ले०काल ५०१८६६ वैज्ञान बुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२१४। प्रास्तिस्थान — भडारकीय दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष— লিলিল নিবাঙী विद्याधरेन ठाकुर शीभैव्यक्सजी ठाकुर श्री रामबक्सजी राज्ये कल्लेडीमध्य ।

५४७४. रमलशास्त्र —  $\times$  । पत्र स० २५ । म्रा० १  $\times$  ४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । रक्ताल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुन स० ३३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

१४७१. रसलकास्त्र  $\times$  । पत्रस्तः ४१ । प्राः ११  $\times$  ७ इ.च. । प्राः । विषय ज्योतिय । र०साल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्यः । वेष्ट्रन स० १०४ । प्राध्ति स्थान । द० जैन मन्दिर कोटडियो का इसरपुर ।

विशेष-- प्रश्नोत्तर के रूप में दिया हुया है।

४४७६. राजावली—४ । पनस० ११ । म्रा० १३ ४ ४ ) इन । भाषा — गन्तन । विषय— ज्योतिय । २०काल ४ । से०काल स० १०२१ माप गुर्म ७ । पूर्ण । बेट्न स० १३६ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन मिटर प्रिमेश्यर स्थानि । वर्ष ।

द्वि सबस्मर फल समाप्त ।

१४७७. राजावली— × । पत्रम० १६ । झा० १०४४ दःव । भाषा-मस्तृत । विषय-व्योतिय । रकाल × । लेकाल स० १६३६ श्रावस्य बुटी २ । पूर्ण । बेटन स० २३२ । **प्राध्तिस्थान**-दि० जैन पार्थवाथ मन्दिर इन्टरगढ (कोटा)

विशेष-इति पष्टि (६०) सवत्सरनामानि ।

४४७६. संवत्सर राजाविल —  $\times$  । पत्रस० ४ । छा० ६ $\times$ ४ $^1_{\nu}$  इञ्च । आया — सस्कृत । विषय - क्योनिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रस० ४४३ ।  $\times$  प्रास्तिस्थान - दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ड सन्पूर ।

५५७६. राहुफल $\longrightarrow$  । पत्रस्न ६ । बा॰ १० $\times$ ४ $^1_2$  इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस्न ६३६ । प्राप्ति स्थान $\longrightarrow$  महारकीय दि॰ जैन महिर क्रजंग ।

१४६०. राशिफल $-\times$ । पत्र स०५। ग्रा० १ $\times$  ४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । ग्रपूर्ण। वेष्ट्रन स०३११। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रप्रवाल मिंदर उदयप्रः।

४४६१. राशिकलः — रापत्रसञ्जराष्ट्राः १ एकः । भाषा-हिन्दी । विषयः — ज्योतिष । रुवसालः ४ । से०काल सञ्जरीहरू । पूर्णः । वेष्ट्रन मं० २१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दवणाना (वृदी) ।

५४८२. लागुजातक—महोराल । पत्र स०६-४४ । घा० ६४४ इखा भाषा —सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र०काल ४ । ले०काल स०१८०६ भाषवा सुदी ३ । प्रप्रां । बेष्ट्रनसं०१७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्यनाथ चौगान वृदी ।

४४८३. लघुजातक— । पत्रस० ६। प्रा० ११११४४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । राज्काल ४ । ले० काल स० १७१७ द्वि ज्यष्ठ मृदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १५८६ । **ध्राप्ति स्थान** —म० विरु जैन मन्दिर स्रजमर ।

**५४८४. लग्नसन्द्रिका—काशीनाथ** । पत्रम० ३३ । प्रा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इच । मापा-सस्कृत । विषय-अर्थोतिप । र०काल  $\times$  । नेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १७ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर प्रश्निन-दन स्वामी वृदी ।

५४६५ प्रतिसं०२ । पत्र स०३२ । ग्रा०२ ¦ ४४६च । ले०काल स०१८५२ । पूर्ण। वेष्ट्रन स०२८८ । प्राप्ति स्थान⊶ दि० जैन मन्दिर प्रश्निनन्दन स्थामी बृदी ।

**१४८६. प्रतिसं० ३** । पत्र स० १८ । धा० ८ $\frac{1}{3} \times \frac{1}{3}$  दुश्च । ले०फाल स० १८७८ । प्राप्त स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी) ।

विशेष --गांठडा में प्रतिनिपि हुई थी।

**५**४६७ **प्रति स**०४ । पत्रस०७४ । ग्रा० १० imes ४ इ.च. । त्रे० काल imes । ग्रपूर्ण । वेष्टुनम० २५६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

१४८६. प्रति स० १ । पत्रस० २४ । या० ११ imes ५ $^{3}$  इ.ख । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन म० ४६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर देवलाना (बृदी) ।

**१४६६. प्रति स० ६ ।** ण्यस० १२ । आ० ७५ँ  $\times$ ६ँ इ.च । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन म० १६२ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मदिग् द्वाराहा (वृदी) ।

४४६०. वर्षतत्र—तीलकंठ। पत्र स०६६ । ग्रा०११! ×४] इच । मापा-सम्कृत । विषय-ज्यांतिय । रक्शतः ८ । ते० काल ४ । पूर्णा । बेष्टतस०१०६२ । प्राप्ति स्थान—पठितः जैन महिद्य स्रदेश ।

४४६१. प्रतिसं०२ । पत्रम०३६ । धा०१२४४ इ.चा। ले०काल म०१८४४ । पूर्णा। वैष्टनम०३४२ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

X ४६२, वर्षफल—बामन । पत्रस० ३ ६ । ब्रा० १० $\frac{3}{7}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इव । बापा-सस्टत । विषय-व्योतिय । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । बेप्टन स० ७१३ । ब्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

 $\chi$ ४६३. वर्षफल —  $\times$  । पत्र स०६ । ग्रा०११ $\xi \times \chi$ ६२७ । भाग सस्कृत । विषय— ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स०१०७-१८० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

४४६४ **वर्षमावफल**— X । पत्र म०६ । घा०६है×४ इच । माषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल X । ले० काल X । पूर्ण । वैग्टन स० ४०४ । **प्राप्ति स्थान** — भ०दि० जैन संदिर धवरोत्र । **५४६५. विवाह पडल**—  $\times$  । पत्र स०२४। घा०१० $\times$ ४ है इ.च.। भाषा सम्कृत। विषय-ज्योतिय । र०काल > । ले० काल स०१७६३ । पूर्णः। वेपटन सं०१५२ । प्राप्ति स्थान—खण्डेलवाल दि० जैन मंदिर उदयपुर ।

विशेष---प्रश्निम प्रगस्ति ।

दिति थी विवाह पडल ग्रंथ सम्पूर्ण। लिखिनेय सकल पडित शिरोमिंग प० थी जसवत सागर गरिए जिय्य मृति विनयमागरेण्। सदत् १७६३ वर्षे थी महावीर प्रसादान् णुभनवत्।

१४६६. वृत्व सहिता—परम विद्यराज । पत्र स०१४३ । प्रा०११  $\times$  ( इश्व । भाषा— संस्कृत । विषय – क्वोतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स०२२० । प्राप्ति स्थान— पार्थनाथ दि० वैन मदिर इन्दरगढ ।

५४६७. **बृहज्जातक** × । पत्र स.० १-१० । ग्रा० ११३ ×५ ६ च । भाषा-म स्कृत । विषय-ज्योतित । २०कात् × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स.०७०६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मस्दिर लक्कर, जयपर ।

**४४६६. बृहज्जातक** —  $\times$  । पत्रस**०** ४२ । प्रा० ११  $\times$  १ े ४२व । भागा-मस्कृत । विषय-ज्योतिय । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्ट्रन स०२०२ । **प्राप्ति स्थान** नोद० जैन मिन्दर अभिनन्दन स्वामी बुदी ।

४४६६. प्रतिसं० २ । पत्रस० २० । झा० १० ४४ दश्य । ले० कालः ४ । स्रपूर्णः । वहन् स० २०३ । प्राप्ति स्थान—उपशक्त मन्दिर ।

५५००. बृहज्जातक (टीका) —वराहिमिहर । पत्र स० ८६ । प्रा० १२ × ४० ४ । भाषा — स्टब्स्त । विषय — ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । अपूर्य । वेउन स० २६४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्राभिनन्दन स्वाभी, बूदी ।

४५०१, शकुन बर्मन— × । पत्र म० १६। ग्रा० ६,४४ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिय (त्रकुन नाम्य) । रक्तान × । नेश्कान ४ । पूर्य । बेष्टन स० १७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन कोटा मन्दिर वयाना ।

५५०२. शकुनविचार— × । पत्रस० ६। आ०६ रें ४ ६ इत्र । भाषा—सस्कृत । विषय-शकुत जास्त्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१७४ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

५५०३. शकुन विचार—  $\times$  । पत्र स० १ । ग्रा०११  $\times$  ५ इश्च । भाषा—सस्त्ता। विषय—ज्योगिय । र०कारा  $\times$  । ते० काल  $\times$  । वेण्टन स० ६११ । प्राप्ति स्थान—दिन जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

x१० ४. शकुन विचार — x। पत्रतः २। भोषा —संस्कृतः । विषय-शकुन वास्त्रः । रक्तालः x। लेक्तालः x। पूर्णः । वष्टन स० ७७१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुरः।

५५०५. शकुन विचार — imes । पत्रस०२-१०। प्रापा-सस्कृत । विषय-मकुन । र०काल imes । ले० काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन स०७००। प्राप्ति स्थान — वि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपुर ।

**५५०६, शकुन विचार**—  $\times$  । पत्र स०१। भाषा-संस्कृत । विषय-अ्योगिय । र०काल  $\times$  । लेलन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन न० १६२/५५६ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाथ दि० जैन मन्दिर उदययुर।

विशेष--- आचार्य श्री कल्यासाकीति के शिष्य मुनि भुवनचद ने प्रतिलिपि की थी।

५५०७, शकुन विचार—  $\times$  । पत्र स॰ ३ । घा० ६ imes ४ इच । साया-हिस्सी । विचय – क्योतिस । रुक्ताल imes । ते० काल imes । पूर्ण । वेप्टन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**— स्ट्राप्कीय दि० जैन महिर ब्रज्जेंग ।

४५०६. शकुत विचार $-\times$ । पत्रस० १२। श्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिय । २० काल  $\times$ । ये० काल  $\times$ । पूर्ण । बेहुनसं० ५०/२५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मध्यर देती (टॉक)।

५५०६. शकुनावली— गौतम स्वामी । पत्रस० ३ । आ० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$   $\frac{3}{2}$  इव । भाषा— प्राकृत । सग्कत । विषय—िर्गामन शास्त्र । र० काल  $\times$  । वेष्ट्रनस० १३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन गरिर लक्कर, जयपुर ।

**५५१०. प्रतिसं० २ ।** पत्रम० ३ । या० ११  $\times$  ५ दश्व । ले० काल  $\times$  । वेप्टन स० १३३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

५५११. शकुनावली —  $\times$  । पत्रस्त ६ । आ० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-सम्बन्न विषय- ज्योतिप । २० बात्र  $\times$  । ते०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० २७०-१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मिन्दर कोटडियो का उनग्यर ।

५५१२. प्रतिसं० २ । पत्रस० न । आ० १०×०ुँ इख । **से०काल** सं० १८८७ । पूर्ण । वेष्टन स० २५४/१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटबियों का ३ गण्पुर ।

५५१३ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४ । ग्रा० ६३ ४५ इच्छा ले०काल सं० १८७५ । पूर्गा । ६८८न स० ४६५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इत्यस्तर ।

 $\chi \chi = \chi = -1$  प्यस्त १४। प्रात्त ११८  $\chi = -1$  प्रात्त । जाया —हिन्दी । विषय — ज्योतिय । रक्कार  $\chi$  । लेक्काल सक् १६६२ चैन मृदी ११ । वेष्ट्रन स**० ६**३६ । **प्राप्ति स्थान** – दिव्जैन मन्दिर स्थान प्राप्ति ।

१५१६ . प्रतिसं० २ । पत्रतः १६ । आ० १० 🗆 ४५ है इ.च.। ले० काल 🗵 । वेण्टन स० ६४० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मदिर ।

५५१६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ६ । मा० १०३ ४४ इञ्च । ले०काल 🗴 । बेटुनसं० ६७१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर, लश्कर जयपर ।

**५५१७. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० २ । घा० १० $^3_1 \times 9^3_2 \cong 1$  से**०काल**  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिह (टोक) ।

१११८. । पत्रस० ४ । ग्रा० ७ ४ १ इच । ले॰ काल स॰ १८२० सावरण बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टत सं॰ २०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी) ।

विशेष--गोठडा मे प्रतिनिपि हुई थी।

४.५१ ६. सीझबोघ - काशोनाया । पत्रत० द-२६ । द्या० ६१,४१} दत्र । भाषा–सस्तर । विषय — ज्योतिषा । र०काल ४ । ते०काल ४ । युग्या । वेष्ट्रनस० १०३१ । **प्रास्ति स्थान** — म० दि० जैन मस्तिर अवसरे ।

५५२०. प्रतिसं० २ । पत्र स० १० । घा० १० ४४ १ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्गा। वेष्टुन स० ४६० । प्रास्तिस्थान—स० दि० जैन मन्दिर अजनेग ।

**४५२१. प्रति सं० ३** । पत्रस० ३६ । ग्रा० १० ४ ४ <sup>१</sup> इन्य । ले**०**काल ४ । पूर्ण । बेष्टन म० ६४४ । **प्राप्ति स्थान** -- भ० दि० जैन मस्टिर ग्राजमेर ।

४**४२२ प्रतिसं०४ ।** पत्र स०४३ । आ०६<sup>1</sup> ४५३ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स०६३२ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष - गुटका साइज मे है।

**४५२३ प्रति सं०४ ।** पत्र स०५ । चा स०६८ ४९ दुःचा । लेक काल स०१६६६ वैद्यास वृदी १९ । वृगो । वेद्रन स०६६६ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष — किशनगढ मे प्रतिनिषि हुई थी।

**४५२४. प्रतिसं० ६** । पत्र स० १४ । ब्रा० ६<sup>०</sup>८४ है उच्च । ले०काल १६०३ । पूर्ण । बेष्टन स० १९१८ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

**४५२५. प्रतिसं० ७।** पत्र स० ३४ । घा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इ.ख । ले० काल  $\times$  । बेपून स० ३०४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

१५२७. प्रतिसंव ६ । पत्र गर्परा । प्राव १३ 🖂 ७ है इचा। लेक्काल संव १६६० भारता बुटी १५ । पूर्णा वेपटन सर्व ७१ । प्राप्ति स्थान - दिव जैत छाटा मन्दिर बयाना ।

विशेष--ला० नवमल के पठनार्थ बयाना में प्रतिनिधि की गई थी।

४५२ स. प्रतिसं**० १० ।** पत्रस० ३० । धा० १ ४४ । इत्था । ते० काल स० १६४१ चैत्र सुक्ता ११ । पूर्ण । बरुन स० २४२ । **प्राध्ति स्थान** दि० जैन सदिर राजमहत्त्र (टाक) ।

५७२६. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ६६ । घा० चर्ने ⊀४ इंच । वेश्काल स० १८५५ । पूर्ण । वष्ट्रन स० १०० । प्राप्ति स्थान — दिश्जैन मन्दिर फनश्युर केलावाटी (सीकर) ।

१५६०. प्रति स० १२ । पत्र म० १३ । ब्रा० ५×५ इचा । ने० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६० । प्राप्ति स्थान । ६० जैन मन्दिर स्थानन्दन स्वामी, बडी ।

४४**३१. प्रतिसं० १३** । पत्रस० ११ । आ २ ६ ८५% दखा । ले**०काल × । पूर्ण । बे**ष्टन स० २४३ : **प्राप्ति स्थान** — पंठ जैन मन्दिर श्रीमनस्दन स्वामी, बूंदी ।

४.५३२ प्रतिस०१४ । पत्रस०३० । ग्रा०६३ ४५३ इ.स. । लेक्सलस०१८२० यैद्याल सुरी २ 'ं गं।वेष्टनस०१६५ । प्राध्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ दूदी । प्रभु३३, प्रति सं० १४ । पत्रस० १४ । ब्रा० १०३ 🗴 ४३ इश्व । ले० काल 🙏 । पूर्णा । बेहुतस० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष--हिन्दी में टब्बा टीका है।

**५५३४. प्रति सं० १६ ।** पत्र स० २० । आर० १०×४ इञ्च । ले०काल स० १७४७ । पूर्ण । बेष्टुत स० ३४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरमनी कोटा।

५५३५ प्रतिसं० १७ । पत्रस० १६ । ग्रा० १० ⋋ ४ इश्वा । ले०काल ;४ । पूर्णा । बेष्टन म० ३५६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दवलाला (बृदी) ।

४५३६. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ३३ । सा० ११ $\times$ ४३ उथा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन ५० ३०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दवलाना (बृंदी) ।

५५३७. त्रतिसं० १६ । पत्र सब्या २१ । ब्रा० १० 🛠 ४ देव । ले० काल 🗴 । पूर्ग । बेरदन स० २०६ । **प्राप्ति स्थान** --वि० जैन पश्चिताय मन्दिर इन्दरगढ । रे

५५३६. प्रतिसं० २०1 पत्र स० २१-३२ । फ्रां० ६<sup>3</sup>,४४ दश्व । ले० काल 📐 । ब्रपूर्ण । नेस्टन स० २१६-६६। **प्रास्ति स्थान**ः दि० जैन सन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

४५३६. षट्पंचाशिका - सट्टोरपल । पत्रस्य ४। ब्रा० ५ ×  $Y_2^0$  ६वा । भाषा -- सस्कृत । विषय -- क्योनिप ।२० काल स्य १६४२ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स्य १३०**५ । प्राप्ति स्थान** -- स्य दि० जैन महिर सर्वार ।

१५४०. प्रतिसं० २ । पत्र म०४ । प्रा० १२४४ इञ्च । लेश्काल स०१६२६ ग्रागाट बुदी ६ । पूर्मो । बेहन म०११६१ **। प्राप्ति स्थान** --म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष - प्रश्न भी दिये है ।

५५४४९. प्रतिसं० ३ । पत्र म० २२ । ग्रा० ६९५४% हुन्छ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन म० १०७० । प्राप्ति स्थान – भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष --- प्रति सम्कृत वृत्ति सहित है ।

५५४२, प्रति सं० ४ । पत्र स०२-६ । आ० १०१४४) दश्व । ले० काल 🗴 । बेष्टन स० ७०४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

**५५४३ प्रतिसं० ५** । पत्र स० २ । घा० ११ ४५<sup>3</sup> दश्व । लेव्काल स० १०२५ मगसिर सुदी ७ । वेष्टन स० २२० । **प्रास्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

५५४४, प्रतिसं० ६ । पत्र स०२ । प्रा०१० $\times$ ४ ई इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्एं । बेष्टुन स० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, बोरसली कोटा ।

विशेष -- शेरगढ मे पं० हीरावल ने लिखा था।

५५४५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ६ । आ० ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इ.च. । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । बेष्टुनस० २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष — लिलित मुनि धर्म विमलेन भीसवाली नगर मध्ये भिनी कार्लिक बृदी २ सबत् १७६८ वर्षे गुरुवासरे सपूर्ण ।  $\chi\chi\chi$ ६, **बहुबर्गफ**त—  $\times$  । पत्र त०१३। प्रा०११ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  द्वा । भाषा—सस्कत । विषय—ज्योतिया र ठकाल  $\times$  । लेकबाल स०११०५ फानुस्य बुदी १२ । पूर्ण । बेप्टन स०११२७ । प्राप्त मध्यान—  $\to$ ० दिन जैन मस्दिर प्रवर्षर ।

४४४७. षष्ठि योग प्रकरस्य —  $\times$  । पत्रस० = । प्रा० १०३ $\times$ ४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । वेष्टन स० ३३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपूर ।

**५५४६. षष्टिसंबतस्सरो—दुगंदेव ।** पत्रम० १३ । ब्रा० १०४४ इन्द्रा भाषा—सस्हत, हिन्दी । विषय—ज्योतिय । र०काल ४ । ने० काल म० १६६४ भगसिर मुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्चनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष--- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

१६६५ वर्षे भगसिर सुदी १५ शनिवारे, माइरणा ग्रामे निष्यवता श्रीनक्ष्मीविमल गार्गे ।

५५४६. षष्ठि संबस्सरफल—  $\times$  । पत्रस० २ । घा० १  $\times$  ४ दश्व । भाषा-सन्द्रन । विषय— ज्योतिय ।  $\tau$ ० कान  $\times$  । ते० बाल  $\times$  । वेष्ट्रनस० ३२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपर ।

४४५०. सप्तवारघटो — × । पत्रस० १४०। बा० ११ × ४ दश्व । भाषा —सस्तृत । विषय —ज्योतिष (गिमृत) । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रत स०३६४। प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रदिर बोरमली बोटा ।

४४५१ समरसार — रामचन्द्र सोमराजा । । पत्रस्क १। छा० १२  $\times$  ६ इत्र । भाषा – संस्कृत । विषय — न्योतिष् । ए० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन संव १६७ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन सम्बर्ग स्रोतिस्थान स्वांसी, बंदी ।

**५५५२. साठसंबत्सरो** — imes । पत्र स० ७ । भाषा-मस्कृत । विषय-चन्नीतिष । र० काल imes । त्रेण काल imes । पूर्ण । बेहुन स० १७१२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- संवत्सर के फला का वर्णन है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सवन् १७१२ वृर्गे बैशाल बुदी १४ दिनोमागपत्तने श्री ब्रादिनाय चैरयालय ब्रह्म भीरास्थेन लिखि गॉमद ।

४५५३. साठ संबदसरी—  $\times$  । पत्र स०२७ । घा०१० $^1$   $\times$  ४ $^1$  दुख । भाषा—मस्कृत । विषय—ज्योनिय । रककाल  $\times$  । लेककाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२२३-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर कोटिंडियो का ह गरपुर ।

विशेष - सवत्मरी वर्णन दिया हुया है। प्रति प्राचीन है। भ० विजयकीर्ति जी की प्रति है।

४५५४. सार्कि संबदसरी—  $\times$  । पत्रस॰ ६। बा॰ १० $\times$ ४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स॰ ३०६-१४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर कोर्टियो का **ह**ंगरपुर ।

**५५५५. साठ संबत्सरी** —  $\times$  । पत्रस $\bullet$  ११ । भाषा-हिन्दी । विषय — ज्योतिष । र $\circ$ काल  $\times$  । ते $\circ$  काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं $\circ$  ६८/५३४ । **प्राप्ति स्थान** —दि $\circ$  जैत समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

४४४६. साठि सबत्सरी— $\times$  । पत्रस० १० । प्रा० ११ $\times$ ४ इञ्च । भाषा —िहन्दी पद्य । विषय — ज्योतिय । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्नस० ४५७- $\times$  । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर कोटडियों का इ गरपूर ।

५५५७. प्रतिसं०२ । पत्र स०४ । प्रा०१२ ४७ इ.च.। ले० काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन स० ४८८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर कोटडियो का इगरपुर।

४४४६. साठिसवस्सरप्रहफल—पण्डित शिरोमिशा । यत्र स० २१ । प्रा० १२ $^{3}$  ४ $^{2}$  इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय —ज्योतिय । र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । वेष्ट्रत स० ६११ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

५५५६. सामुद्रिक शास्त्र —  $\times$  । पत्रस० १० । ग्रा० १० $rac{1}{2}$  ४६ $rac{1}{2}$  इञ्च । भाषा —सस्कृत । विषय —सक्ष्मा शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६६ । प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमर ।

विशेष--- गरीर के ग्रामी पामी की देखकर उनका फल निकालना ।

४४६०. सामुद्रिक शास्त्र  $-\times$  । पत्र स॰ १२ । घा० ६ $\frac{1}{2}\times 3\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा — सरकृत । विषय — लक्षण शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १६०२ भादवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६७६ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर धर्णम ।

५५६१. सामुद्रिक शास्त्र $-\times$ । पत्रस० ६। ग्रा० ६ $\frac{1}{2}\times Y$  इच । मापा—िहन्दी विषय-लक्षमा णास्त्र । र०काल  $\times$ । ते० काल स०१७६५ चैत्र । पूर्णा । वेग्टन स० १०३६ । प्राप्ति स्थान—भ०द० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

४४६२. सामुद्रिक शास्त्र— × । पत्रस०५६ । म्रा००० ४४६ व । भाषा-सम्बन्न । विषय-कसाग शास्त्र । र०कान ४ । ले०कान ४ । वेष्टनस० १२७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जेन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष--प्रति हिन्दी ग्रथं महित है।

४४६३. सामुद्रिक शास्त्र — × । पत्रस० २४ । आ० ११×४ इत्य । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षण गात्रत्र । २०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १११४ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

%४६४. सिद्धांत शिरोमिण —भास्कराचार्य । पत्रस०७ । आ०१०×४) इचा । नाषा— सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल ४ । ते० काल । पूर्ण । बेष्टनसं०४४७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मंदिर ग्रजीय । **४५६६. सूर्य ग्रहरा** —  $\times$  । पत्र स० १ । द्वा० ८ × ५ इन्च । भाषा-सस्तृत । विषय ज्योतिष । **र०**काल  $\times$  । त्रे० काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन म० ५४१- $\times$  । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मदिर कोटिक्यों का इंगरपुर ।

५५६७ संकटदशा —  $\times$  । पत्रस् $\circ$  १०। छा० १० $\times$ ४९ इस । भागा-सस्कृत । विषय — ज्योतिय । र०काल  $\times$  । ले० काल स १६२६ । पूर्ण । वेष्ट्रत स $\circ$  १५–२६२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायित $\chi$  (टोक) ।

विशेष-सबन्भर का पूर्ण विवरमा है।

४४६६ सबरसरी— × । पत्रस० १७। घा० ६×४ डचा भाषा-हिन्दी (वध) । विषय-ज्योतिष । रजकारा ४ । ले० काल स० १=२४ ज्येष्ठ मुदी ४ । पूर्ण । येट्रन ग० २१ । प्राप्ति स्थान--वि० जैन मन्दिर दवलाना (व दी) ।

विशेष—गवन् १७०१ में १८०० तक के भी वर्षों का फल दिया है। माउडा याम में भपक्रिमल के के शिष्य भाग्यविमल ने प्रतिविधि की थी।

५५७०. स्त्री जन्म कुडली— ८ । पत्रम०१। ग्रा०१० ८ १ इस । भाषा-मन्यतः । विषय—च्योतिम । र०काल ४ । ले० नाल १ । पूर्ण । बेप्टन म ४३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमणी कोटा ।

 $xy \circ ?$ . स्वर विचार —  $\times 1$  पत्रसं २ । आ० ११  $\times y$  े उत्थ । भाषा िस्सी (सद्य) । विचय-तिमित्त भारत 1 र काल  $\times$  । तेवकाल + । पर्या । यहन सं ० ६ । प्राप्ति स्थान — उत्व तंत्रत्व विचयति मित्र व्याप्ता ।

४५७२. स्वयन विचार — ४ । पन म०१। आ०१३ ६ ३ न । भागा – हिन्ते । तिमय-निमित्त शाखा । २०काल ४ । नै०कान । । पूर्णु । येष्ट्रन म०२००। प्रास्ति स्थान—हि० क्रेन मन्दिर निमाल दोशायांग्रह (दाहो ।

विशेष- - स्वप्त के फलो का वर्गात है।

प्रभुष् ३ स्वष्नसती टीका - गोबर्छ नाचार्य । पत्रस० २६४ । छा० ६ हे ४ ८ इन्छ । भाषा-सरकृत । विषय-निर्मिन शास्त्र । रण्काल ४ । लेकाल स० १६६० पोष मुद्री २ । पूर्ण । बेहन म० २६४ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

५५७४. स्वप्ताध्याय — ४ । पत्रस०५। या०१ ४ ४ इञ्च । भाषा — गण्यत् । विषय — तिमित्त शास्त्र । र०कास ४। **से०का**ल स०१८६८ पीय दृदी ६। पूर्ण । वेष्ट्रनस०३६। प्रास्ति स्थान— दि० जैन छोटा गरिर वयाना ।

विशेष-वयाना मे प्रतिलिपि हुई थी।

४५७४ स्वप्नाध्यायी— × । पत्रसं० २-४ । म्रा० ११४४ इत्था । भाषा-सस्कृत । विषय– निमित्त सास्य । र०काल ४ । ले० काल ४ । स्रपूर्ण । बेष्टन स० २१६/६४६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन समयनाय मंदिर उदयपुर । १५७६, स्वरनाध्यायी— $\times$ । पत्रस० ११। प्रा० ५ $\frac{3}{8}$   $\times$   $\frac{3}{8}$  इच्च । भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टनस० १३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रीभनस्तर स्वामी, बुदी ।

विशेष--१४६ एनोक है।

४५७७. स्वरनावली— ....... । पत्र स० २१ । प्रा० १०  $\times$  ५  $\frac{1}{5}$  इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय—िर्नाम नावत्र । ए० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मध्रिर लकर, जनपुर ।

११७६. स्वरोदय — । पत्रस० = । आ०६ रे ४४ इच । भाषा —सम्कृत । विषय-तिमिन भाग्व । २०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१४२३ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन सन्दर अवसर ।

विशेष --नागिका के रचरी सबधी ज्ञान का विषय है।

४५८०. स्वरीदय - ४। पत्र स० ५। ग्रा० ११%४) इस्त । भाषा-मस्तृत । विषय-निमित्त शास्त्र । १०कात ४ । लेकबाल स० १७८५ वैशास्त्र मुदी ६ । पूर्णे । बट्टन स० १०४६ । प्राप्ति स्थान - स० ६० केन महिर प्रतिस्त ।

४५८१ स्वरोदय टीका —  $\times$  । पत्र स० २७ । प्रा० ११ $^\circ_1 \times \xi$  इञ्च । भाषा-सम्कृत । विषय -िर्माम ज्ञारम । र०काल  $\times$  । । ले०काल स० १८०६ वैद्याल बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० २४१ । प्राप्ति स्थान - द० जैन भदिर धमिनन्दन स्थामी बूदी ।

५५८२. स्वरोदय  $--\times$ । पत्र स० १८ । घा० १०×४३ इस्त । भाषा-सम्कृत । विषय— निर्मान भाग्य । २०कात  $\times$ । के० काल  $\times$ । पूर्य । वेठन म० १०६ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन मण्टिर दबलाता (वू रो) ।

िचिशेष - १२ ले १७ पत्र नहीं है। पवन विजय नामक ग्रंथ से लिया गया है।

५५६४. स्वरीदय $-\times$ । पत्रस० ३२। आ० १ $\times$ ६ $^1_7$  इश्वः । आपा-सस्कृत । विषय- शिमल शस्त्र । र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्णः । वेष्ट्रनस० २२०-१२ । प्राप्ति स्थान-िद० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगग्पुर ।

४४-५. स्वरोदय—  $\times$  । पत्रस० २७ । प्रा॰ ७ $\frac{1}{2}\times$ ५ इञ्च । भाषा सस्कृत । विषय-निमित्त सास्त्र । २० काल  $\times$  । ले॰काल स १६०५ । पूर्ण । वेष्टुनस० २२४-१२२ । प्राप्ति स्थान— दि० जेन मिंदर कोटडियो का इंगरपूर ।

इति पवनविजयमास्त्रे ईम्बर पावंती मवादे तस्य भेद स्वरोदय संपूर्ण ।।

४४.६६. स्वरोदय—मुनि कपूरचन्द । पत्रसं०२७। धा॰ < x'हे इखा भाषा-हिन्दी। विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल  $\times$ । लेक्काल स०१६२३ चैत सुदी। पूर्णे। वेष्टन स०७३६। प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष - कृष्ण ग्रसाढी दशम दिन शुक्रवार सुखकार ।

सबत वरणा निपुरगता नदचद धार ।

**११८७. स्वरोदय — चरगादास ।** पत्र स० ११ । ब्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{3}{2}$  इच । मापा-हिन्दी (प ) । विध्य-निमित्तज्ञान । र०काल  $\times$  । ले० काल म० १६२५ । पूर्ण । वेष्ठन म० ३३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी) ।

विशेष —रराजीत के शिष्य चरसदास दूसर जाति के थे। ये पहिले दिल्ली मे रहे थे। गोरीलाल काह्मस दवलाना वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५८६. स्वोरदय — प्रहुलाद । पत्र स० १४। प्रा० १ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  दञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८५६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३३६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी) ।

बिशेष --- जती दूदा नं मात्रदा में प्रतिलिपि की थी।

ग्रादि ग्रंत भाग निम्न प्रकार है-

मोदक सघ मूसो वाहागा। मूघये ससि मुस्बर मुल पागी।

मुर सर जटा साला सुकी कठ। ग्रस्था गोर गजबालमो देवो कुगाइ सुभवागी।

श्रन्तिम— पाठक देत बलानी भाषा मन पवना जिहि दिङ करि राख्यै। पश्म तत्व प्रहलाद प्रकास जनम जनम के तिमिन विनास । पङ सुने सो मकन कहाव गुरु के चरण कमल (सरनाव ।)

ऐसामत्र तत्र जग नाही जैसाज्ञान सरोदा माही।

दोहा--

मिसर पाठक के कहे पाई जीवन मूल। मरणमूल जीव तह सदा श्रनुकुल।

इति श्री पदनजय सरोदा ग्र.थ.।

५५८६. होराप्रकाश $--\times$  पत्र स॰ ८ । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६१४ । पूर्ण । प्रास्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु नरपुर ।

४५६०. होरामकरंद — × 1 पत्र म० ५६ । आ० ५ १ ४ इ.स. । भाषा-समृक्त । विषय— ज्योतिय । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १००५ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

४५६१. होरामकरंद-गुराकर । पत्र स०४६ । भाषा-सस्कृत । विषय-च्योतिष । र०काल× । ले० काल ∴ । प्रपूर्ण । वेष्टनस०११७ । प्राप्ति स्थान वि० जैन संभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

## विषय--ग्रायुर्वेद

४४६२ धाजीर्सं मंजरी-स्थामतलां । पत्रस०१२ । बा०१२ ४६ इच्च । माया-हिन्दी । विषय-बायुवेद । रुक्कान स०१७०४ । लेव्काल स०१६२३ । प्रसी । वेष्टनसंव ५३३ । प्रास्ति स्थान-कि जीन मिट प्रयोग ।

विशेष-- कृति का ग्रतिम पाठ निम्न प्रकार है--सवन् सतरेसी चतुर परिवा ग्रगहन मास ।

स पूर्ण **ममरेज** कहि कह्यो अजीर्ण नाम ॥६८॥ सब देमन में मुक्टमिशा **बागडदेस** विख्यात ।

सहर **फतेपुर** श्रतिसण् परमिद्धि श्रति विख्यात ॥६६॥

क्यामखान को राज जहां दाता सुर भूजान ।

न्यामतलां न्यामते निपुरा धर्मी दाता जान ।।१००॥

तिनि यह कीयो ग्रंथ ऋति उकति जुवित परधान । श्रजीरंगं ताम यह नाम धरि पढंजो पडित श्रानि ॥१०१॥

म्रजारण ताम यह नाम धार पढ जा पाडत म्रानि ।।१०१।।

वैद्यकशास्त्र की देखि करी नित यह कीयौ बखान।

पर उपकार के कारगाँ सो यह ग्रंथ सुखदान ॥१०२॥ पर उपगार को सगम कीयों मोरू महीघरराज ।

तालगि पूरतम थिर रहै सदा " जि महाराज ।।१०३।।

इति श्री ग्रजीर्गानाम ग्रंथ सपूर्ण । स॰ १८२३ वैशाख बुदी ह । लिखत नगराज महाजन पठनार्थ ।

४५८३. अमृतमंजरी—काशीराज । पत्र स०४ । आ० ११३ ४५ इच्च । भाषा-सन्कृत । विषय-आयुर्वेद । र०काल ४ । ते० कान ४ । पूर्ण । वेष्टन म०४३२ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर अयुर्वेर ।

विशेष--हिन्दुर्गे (किणनगढ) मध्ये श्री चन्द्रप्रभ चैन्यालये।

५५६४. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४ । या० ६imes४ इचा । ते०काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० २०५~ ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिश्यो का हु गरपुर ।

४५६५. श्रम्तसागर— महाराजा सवाई प्रतापसिह । पत्रस $\circ$  २३१ । श्रा $\circ$   $\circ$   $\overset{2}{\circ}$   $\times$   $\overset{4}{\circ}$  इन्छ । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शायुर्वेद । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रन स $\circ$  १०-८ । प्राप्ति स्थान—(द $\circ$  जंग मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

**४५६६. प्रतिसं० २**। पत्र स० १४ । झा० १० ४६ इ.चा । ले० काल 🗴 । सपूर्ग् । बेष्ट्रनसं० २१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाथ चौगान बंदी ।

विशेष — स्त्रियों के प्रदर रोग के लक्षरण तथा चिकित्सादी है।

**५५६७. प्रतिसं० ३।** पत्र सं० १६४ । घ्रा० म् ँ ४६ इ.आ. । ले० काल × । पूर्णा । बेष्टन स०५४२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर । विशेष—अमृतसागर प्रथ में से निम्न प्रकरण है। अजीम रोग प्रमेह रोग चौरामी प्रकार की बाय, रक्त पित्त रोग। जबर लक्षण, शहय चिकित्सा, अतीमार रोग, सुद्धरोग, वाजीकरण, आरि।

**४४६६. प्रति सं०४** । पत्रस० २६६ । आ० १३ ५६ इ.च. । ले० काल ४ । अपूर्ण । बेष्टन स० ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर कोटयो का नैसावा ।

विशेष-पत्र स० २६० में आगे के पत्र नहीं है।

ሂሂ**६६. प्रति मः ५।** पत्रसः० २०० । आर०१२ ५ ७ इञ्च । ले०काल सः०१६०५ चैन वृद्धी २। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन खण्डेनचान पचायनी महिर अनवर ।

विशेष — ग्रंथ मे २५ तरन (ग्र॰याय) है जिनमं ग्राप्तुर्वेद के विभिन्न विषयो पर प्रकाण डाला गया है।

**५६००. प्रवध्**त— > । पत्र स०१३ । झा०१० < ४½ ट्वा । माया-मशत । विषय-फ्रायुर्वेद । रक्ताल × । तेशकाल × । पूर्ण । वेष्ट्रत स०१६०। **प्राप्ति स्थान**-भश्र रिक्शन सन्दर प्रकार ।

५६०१. म्रांख के तेरह दोष वर्गन —  $\times$  । पत्र म०६ । म्रा०६  $\times$  १ $^{\circ}$  रज । भाषा — हिन्दी । विषय — म्रायुर्वेट । २०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२०५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर ब्यलाना (ख दी) ।

विशेष — गुटकाकार है। तीसरे पत्र में प्राप्तुवेंट के अन्य तुम्ले भी है। दिनका विवार चौषडिया भी है।

**४६०२. ग्रात्मप्रकाश —ग्रात्माराम** । पत्र न० १४० । ग्रा० १३ ्रं ६ुँ इन्त । भाषा— हिन्दी । त्रिपय-श्रावृद्ध । र०काल × । ने० काल न० १६१२ बैजाप्य मुदी १२ । पूर्ण । यष्टन स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्ष्यनाथ मन्दिर उन्दरन्ध (कोटा) ।

**५६०३. प्रायुर्वेद ग थ** —  $\times$  । पत्र ग० २४ । षा० ११ $\frac{1}{2}$  × ५ $\frac{1}{2}$  रवः । भागा-सन्दन् । विषय-आपूर्वेद । रक्तान्  $\wedge$  । लेपन काल  $\times$  । ष्रापूर्ण । वे० ग० २४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर दवलाना (चुरी) ।

्र**६०४. आयुर्वेट ग्रथ**— ्रापन स०६६ । ग्रा०० ४४ इ.चा । भाषा-क्रिकी । विषय-ग्रायवेट । रुक्ताल × । लेक्काल × । आपूर्ण । वे० स०२७७ । **प्राप्ति स्थान--**दि० जैन मन्दिर दवलाला (वृदी) ।

**विशेष—**ग्रायभेंद के नस्थे है।

४६०**४. श्राष्टुर्वेद ग्रन्थ**—पत्रस०१६ । भाषा मरकृत । विषय-वैद्यकः । रचना कात 🗴 । ले**०का**लः 🌣 । ग्रपूर्णः । वेष्टन म० ७६२ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन प्रचावनी मस्दिर भ*रतपुर*ः।

४६०६, **प्रायुर्वेद प्रंथ**— ४ । पत्र म० २३ । खा० १० ४४ इच । भाषा-सम्बद्ध । विषय-यायुर्वेद । २०काल ४ । अ०काल ४ । पूर्ण । बेटन स० १७०-१७६ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मदिर नेविनाय टोडारायरिह (टोस)।

४६०७ **बायुर्वेद ग थ**— \lambda । पत्र स०१६ । बा०१० 🗙 ४६ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-बायुर्वेद । रक्कालः 🗙 । ले० काल 🗙 । ब्रयूर्गं । बेष्टन स०४४/६ । **प्रास्ति स्थान** —बयबाल दि० जैन मन्दिर उदयवुर । विशेष--वेष्टन स० ६ मे समयसारनाटक एव पूजादि के फुटकर पत्र हैं।

४६०६, **ब्रायुर्वेद गंथ**— ४ । पत्रस० ८० । आ०१्ँ४४) इटच । भाषा-हिन्दी । विषय-ब्रायुर्वेद । र०काल ४ । से०काल ४ । अपूर्ण । वष्टन स० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर स्रवनि ।

४६०६. **श्रायुर्वेद के नुस्खे** ४ । पत्र ग॰ १६ । मा॰ ११ ¦ ४ १३ इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-श्रायुर्वेद । र०काल ४ । ले•काल ४ । वेष्टन स॰ ६१४ । श्रपूर्ण । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

विशेष~-पत्र फुटकर है।

४६१०, **श्रायुक्टंद के नुस्के** — × । पत्र स०६। आ०७ ४६} डब्ल्च । मापा-हिस्ती । विषय-आयुक्टंर । रुकाल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१६ । **प्राप्ति स्थात**— दि० जैन मन्दिर राजमस्य (टोक) ।

५६**११. प्रायुर्वेद निदान— × ।** पत्रस० २२ । ब्रा० ११४४ ई-इच । मागा—नस्कृत । विषय—प्रायुर्वेद । रक्काल × । से० काल × । स्रपूर्णा । बेहनस० ५४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर कोरडियों का इयरपुर ।

५६१२. **ब्रायुवेंदमहोदाध**—सुख**देव ।** पत्रत०४०३ । भाषा-सस्कृत । विषय-ब्रायुवेंद । रक्ताल । लिकतात्र सक्ष्मिक शेवक्या । प्रेष्ट वेद्यसम्बद्धाः ४०६ । **प्राप्ति स्थान**- दिव जैन मन्दिर काटडियो का द्वारपुर।

५६१३. ग्रापुर्वे दिक शास्त्र $\cdots\times$ । पत्र स० ८४। या०११ $\times$ ५ दश्च । भाषा — हिन्दी ग०। विषय — यागर्वे । २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । यपूर्णं। वेहन सं०८६ । प्रास्ति स्थान ंदि० जैन मन्दिर नामदी वृदी।

पूर्दश्य, स्रोषधि विधि —  $\times$  । पत्र स० ४-२४। सा० ६ $\times$  ४ | दुःव । भाषा- हिदी । विषय-प्रायुर्वेद । र० काल  $\times$  । ते०कान स० १७८६ भाववा सुधी २ । स्रपूर्ण । वेष्ट्रत स० ३५० । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर देवलाना (वृदी) ।

**५६१५. ऋतुवर्धा**—वाग्भट्ट । पत्रस्व ६ । आ० ११४६ ! इ.स. । आपा-सस्कृत । विषय-अ।पुर्वेद । २०काल ४ । ने० काल ४ । अपूग्म । वेष्टन स०४४ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन पाव्यंनाथ मदिर इन्दरनष्ट (कोटा)।

५६ १६. कर्म**बिपाक** - बीर्रासहदेव । पत्र स० १२ । ब्रा० १८४६ इत्यः । भाषा-मस्कृतः । विषय-प्रापुर्वेदः । रु०कालः ४ । ते०कालः म० १८५३ त्र्येष्ठ बुदी १ । पूर्णः । वेष्टृतः स० १७४ । प्राप्तिः स्थान----भ० दि० जैन सदिर अवसेर ।

विशेष—2ति श्री तोमरवजवतसमूरि प्रभूत श्री वीर्रामहदेवविरचिते वीर्रामहावलोक ज्योति णास्त्र कर्म विपाक श्रापुर्वेदोक प्रयोगीभिश्वकाष्यायः ।

५६**१७. कालज्ञान** ─ ४ ।पत्र ग०२४ । सा०११४**४** टच । गापा-सस्कृत । विषय-श्रापुर्वेद १२०काल ४ ।गे०काल सं०१६१० । पूर्ण । वेष्ट्रग०२१२ **। प्रास्ति स्थान**ा दि० जैन मन्दिर स्वजनेर । ४६१८. **कालज्ञान** × । पत्र सं॰ २६ । घा॰ ६५ ४३५ डिम । माया - संस्कृत । विषय-घायुर्वेद । र०काल × । ले०काल स ०१६०२ मावन बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स॰ १६२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीलान बुदी ।

विशेष -- व्यास गोविदराम चाटम ने कोटा मे लिखा था।

५६१६. कालज्ञान— $\times$ । पत्रसुरु । बार् ११ $\times$ ५६च । भाषा—सस्कृत । विषय— धायुवँद । २० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टुन सर्व ४६ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर नागरी वु री ।

**५६२०. कालज्ञान** —  $\times$  । पत्र स० ११ । प्रा० ११ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ $\frac{1}{4}$  इख । भाषा — सरकृत । विषय — प्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २१४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पाश्वेनाथ मंदिर इत्दरगढ ।

**५६२१. प्रतिसं०२।** पत्रस०३३ । द्या०१० $_{2}^{3}$ , ५,५ प्रज्ञ । ले०काल स०१८७८ मगसिर बुदी६। पूर्ण। बेष्टन स० २१८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष - चिर जीव सदास्य ने प्रतिलिपि की थी।

४६२२. कालज्ञान—  $\times$  । पत्रस्क १६ । ब्रा० १०  $\times$  ४ $\frac{7}{5}$ ६ च । भाषा—सस्कृत । विषय— ब्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । तै०काल २० १६ ६० । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१२-८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटिक्यों का इनस्पर ।

निर्मित्रकत कानकुरुत्र ब्राह्मणा शालिग्रामेग्ग् नगर मारवाड मध्ये सवत् १८८० मिनी थावस्य बुदी २ णुक्रवारे ।

**४६२३. प्रति स०२ १** पत्र स०२–१३ । धा०१० $^4_1 \times 6^1_1$  दश्च । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण 1 बेष्टन स०२०६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

४६२४. **कालज्ञान माषा — लक्ष्मीवस्त्यम** । पत्र म०१३ । ब्रा०११४४<sup>3</sup> टचा भाषा— हिन्दी । विषय प्रायुर्वेद । र०काल ४ । ले० काल स०१८८२ वैकाल सुरी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०१५८३ । **प्राप्ति स्थान** — य० दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

**५६२५. कालज्ञान भाषा**—  $\times$  । पत्रस० १३ । ब्रा० १८४६ च । भाषा — हिन्दी । विषय— ब्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्रन स० १६२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पावर्वनाय मन्दिर चौगान वृदी ।

%६२६. **कासज्ञान सटीक**— × । पत्र स० ३३ । ग्रा० ६) ×४३ इ.ख । मापा सन्छन-हिन्दी विषय—प्राप्तुर्वेद । रककाल × । ने० काल × । पूर्णे । वेष्टन स० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—प्रद्वारकीय दि० जैन मन्दिर प्रकोद ।

विशेष -- ७ वे समहेश तक है।

४६२७. कृमि रोग का क्योरा—  $\times$  । प्रत्नतः १ । ग्रा० १० $\times$ ६ इख । भाषा—िहत्ती । विषय —ग्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं० १२ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

४६२६. कुटरीचिकित्सा—  $\times$  । पत्र स॰ ६। मा॰ ११ $\times$ ५ इच । भाषा-हिन्दी । विषय- स्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १४५३ । **प्राप्ति स्थान**— महारकीय दि० जैन सहिर छजमेर ।

५६२६. नुरारत्नमाला — सिश्रमाख। पत्र स०४-६५। प्रा०११४४ हुन्द। माता — सरकृत वियय — सायुर्वेट। र०काल ४ । ले०काल। पूर्ण। बेष्टनसं०१२६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पण्डेनाच सिटट स्वरणक।

५६३०. चन्द्रोदय कर्ष्य टीका—कविराज शङ्क्ष्यर । पत्रस० ६ । या० १०  $\times$  ७ इस । भाषा—सम्प्रत । विषय धायुर्वेद । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १०० । प्राप्ति स्थान—दि० गैन मंदिर प्रनिनन्दन स्वामी वृदी ।

५६३१. चिकित्सासार —धीरजराम । पत्र स०१२६ । प्रा०१२  $\times$  ५२ हे श्वः । भाषा — सस्कत । विषय - प्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । लेक्काल स०१०६० फायुरा बुदी ११ । यूर्ण । बेप्टन स०१० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन भट्टारकीय मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष - अजयगढ नगर मे प्रतिनिधि हुई थी।

ग्रजभेर में पद्रस्थ भट्टारक भूवनकीति के शिष्य प० चतुर्भु जदास ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

५६३२. जोटा की विधि—  $\times$  । पत्रस्त १ । प्रा० १०३ $\chi$  ४७ इल । मापा—हिन्दी । विषय-धागुर्वेद । प्रकाल  $\times$  । लेश्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस्त्रश्च ६६ । प्राप्तिः स्थान—दिश्जैन मन्दिर गजमहल (टोक) ।

**४६३३. ज्वर त्रियती शार्ङ्गधर**। पत्रस० ३३। धा०१ $\times$ ४३ इच । भाषा-स स्कृत । विषय--- प्रापुर्वेद । रज्जाल  $\times$  । ले**॰काल स०** १८८६। पूर्ण । वेष्ट्रन स० २११। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन महास्कीय मन्दिर प्रजांनर ।

विशेष--कप्रागढ में देवकरमा ने प्रतिलिप की थी।

४६३४. ज्वर पराजय— ×ापत्र स० १६। ग्रा० १० ×४ इथा। भाषा-सस्कृता विषय— प्रापुर्वेद । र०काल ×ाले०काल ×ा अपूर्णा। वेष्टन स०७। प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजोर।

५६३५. बोषावली -  $\times$  । पत्रसः २-४ । मा० १० $\times$ ५ इस । भाषा —िहिन्दी । विषय — मामुर्वेद । २० काल  $\times$  । के०काल  $\times$  । मपूर्ण । वेष्टन सः० ३६-२१ । प्राप्ति स्थान —िदः० जैन मन्दिर कोटिंडयो का हुनन्दुर ।

४६३६. ब्रव्यपुरा शतक —  $\times$  । पत्रम०३३ । ब्रा० ६ $\frac{3}{8}$  $\times$  $^{1}$  $^{2}$  $^{2}$  $^{2}$  $^{3}$  $^{3}$  $^{3}$  $^{4}$ 

५६३७. नाडीपरीक्षा— × ।पत्रसं∘ ४ । बा०११ × ५ ) इ.च । भाषा-सस्कृत ।विषय− बापुर्वेद ।र०काल × ।ले० काल त०१११६ ।यूर्पावेष्टन तं०१४४ ।य्रापिस स्थान अ०दि० जैन मन्दिर सक्रोतः ४६३८. प्रति सं०२। पत्र स०८। ग्रा०९ है ४४ इचा ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ४। प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

विशेष-पहिले सम्बन्त में बाद में हिन्दी पद्य में ग्रंथ दिया हुग्रा है।

**४६३६. प्रति स० ३**। पत्रस०३। प्रा० ८×४ इचा । ले**०**काल म० १८६४। पूर्ण । बेष्टन स० ८४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ख दी) ।

१६४०, निघंदु— $\times$ । पत्रस्त १६८। या॰ ६ $\frac{1}{2}\times 2^3$  इञ्च । भाषा—सस्क्रत । विषय— श्रायुर्वेद । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनस० १०३४। प्रास्तिः स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर श्रवंगर।

**५६४१. प्रतिसं०२** । पत्र म०३ से १२७ । ग्रा०१० 🗙 ४ुंइञ्च । ले० काल 💢 । प्रपूर्ण । वेष्टुन स०५६ । **प्राप्ति स्थान**— स०६० जैन मन्दिर ग्राजमेर ।

५६४२ - प्रतिसं**० ३** । पत्रस० ६५ । ग्रा० १२ ] ५ ५ इन्छ । ले० काल ९, । पूर्णा । बेप्टनंस० १३१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रजसेर ।

**५६४३. प्रतिसं० ४** । पत्र स० ५० । या० ६×४ दुःख । ले**०**काल १७४५ प्रथम ज्यह सुदी ६ । बेष्टुत स० २२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सक्कर त्रयवर ।

५६४४. प्रति सं०५ । पत्रस० ७० । ब्रा० ६ ¦्६ ट-ब । ले०काल स०१८८८ साघ लुटी १० । पूर्णा । बेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सन्दिर राजगहल (टोक) ।

५६४५. निषंदु—  $\times$  । पत्रस०४६ । या० ६ $^{\circ}_{1}$  <५ $^{\circ}_{2}$  द व । भाषा—सम्ब्रन । विषय— आयुक्त । र०काल  $\times$  । न० काल  $\times$  । पर्गं । वेष्टन ग०२१६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

**५६४६**, द्र**तिसं०२।** पत्र म०४६ । स्रा०१०४४<sup>8</sup> दृश्वा । **के०काल म०**१७५३ कालिक सुदी ७। पूर्णु । बेपून स०२२१ । **प्राप्ति स्थान**—उपराक्त मन्दिर ।

५६४७. निघटुटीका— × । पत्र स० ४-१३ । ग्रा० ११५ ४ ५६ टच । भाषा-सरहत । विषय— प्रापुर्वेद । २०काल × । लेखन काल × । ब्रदुर्सा । वेष्टुन स० २५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुदी) ।

विशेख-प॰ दिलसुख ने नुपहर्म्य (राजमहल) में प्रतिलिपि की थी।

**५६४६. निदान भाषा—श्रीपतभट्ट ।** पत्र न० ६२ । ग्रा० ५ है×४ इल्ला । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—ग्रापुर्वेद । र०काल स० १७३० मादवा मुदी १३ । ले०काल स० १८१० ग्रामीज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ । **प्राप्ति स्थान –** भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--- प्रथकार परिचय---

गुजराती श्रौदीच्यकुलरावल श्रीगोपाल ।। श्रीपुरुषोत्तम तास सृत ग्रायुर्वेद विसला ॥

## तासो मृत श्रीपतिभिषक हिमतेषा परमाद । रच्यौ ग्रथ जग के लियं प्रभु को श्रासीरवाद ॥

**५६५०. पथ्य निर्माय** —  $\times$  । पत्र स० १ । मा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इ च । माया — हिन्दी । विषय — म्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेप्टन स० १५३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मिदर पार्थनाथ चौगान व दी ।

**५६५१. पथ्य निर्माय** —  $\times$  । पत्रस्क ८४ । म्रा० १२ $\times$ ५५ूँ । भाषा-सस्कृत । विषय-मायुर्वेद के० काल  $\times$  । श्रपुर्ण । बेष्टुनस्क ४३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

५६५२. यय्यापथ्यनिर्णय —  $\times$  । पत्र स०१६ । आ०१०३ $\times$ ४३ इत्था । भाषा-सस्तृत । वषय — आपृत्तेदा /०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्णा । वेष्ट्रन स०६६७ । **प्राप्ति स्थान** — भ०दि० जैन सिंदर क्राजेन :

**५६५३. प्रति स०२ ।** पत्र स०१७ । ग्रा०१०×५ इ.ख.। ले०्काल स०१८७१ चैत्र सुदी ५ । पूर्णा । बेपून स०३४३ । **प्राप्ति स्थान**⊸ वि**०**जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

**५६५४. प्रति सं० ३** । पत्रम० ६ । ग्रा० ११ $\frac{2}{3} \times 4\frac{3}{9}$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । **वेष्ट्रनसं०** २२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पावर्वनाथ मस्टिर इन्द्रसम्ब कोटा) ।

४६४४ प्रतिसं ४ । पत्र म०२१ । ने० काल 🔀 । पूर्ण । बेष्ट्रन स०२२६ । प्राप्ति स्थान - दि० जेन पार्थनाथ मदिर इन्द्रसाक्ष (कोटा) ।

४६४६. पथ्यापथ्य विचार— > । पत्र स० ५२ । धा० १.४४ दे डब्च । भाषा-सस्कृत । विषय—मापृवेद । र०काल ४ । तो काल स० १८८४ । पूर्ण । बेष्टन स० २६० । **प्राप्ति स्थान—भ०** टिंठ जैन महिन्द मुजीर ।

विशेष - करमगढ मध्ये लिखापित ।

४६४७. परधापस्य विद्योधक - वैदा जयदेव । पत्र स० २०२ । प्रा० च्रे/४६३ इत्य । भाषा-मरहत । विषय प्राहुर्वेट । र०काल ८ । ले० काल स० १६०४ वंशाल सुरी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । प्रातिक स्थास-- ०० दिक कोल संगटर व्यक्तीर ।

५६५६. पचामृत नाम रस $--\times$ । पत्रस० १०। ग्रा० १२  $\times$  १ व र । भागा --सरहत । विषय — आवृते । र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । संपूर्ण। वेष्टन ५० ४३४। **प्राप्ति स्थान** -भ० दि० जैन महिर प्रकोर ।

विशेष--१० पत्र से आगे नहीं है।

५६५६. प्रकृति विच्छेद प्रकर्ण—जयित्सक । पत्रस $\circ$  ३। प्रा $\circ$  १ $^2\times$ ४) इच । भाषा—सन्क्रत । विषय-प्रायुर्वेद । र $\circ$  काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टतस $\circ$  १२४३ । प्राप्ति स्थान—भ $\circ$  दि $\circ$  जैन मन्दिर प्रजमर ।

**५६६०. पाक शास्त्र**— $\times$  । पत्रसं० १२ । आ० १० $^1_*$  $\times$ ५ ६ च । भाषा—सस्कृत । विषय — प्रापुवेंद । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १६५–५०। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष--विविध प्रकार के पाकों के बनाने की विधि दी है।

४६६१. वाल चिकित्सा— $\times$ । पत्रत०२०। ग्रा०१० $\times$ १} इव । मापा-सस्कृत । विषय-ग्रायुर्वेद । रक्ताल  $\times$ । लेक्काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५/५०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इगरपूर ।

४६६२. बालतत्र— $\times$  । पत्र स० २६ । छा० ११  $\times$ ६ इंच । भाषा—सल्लुन । विषय— प्रायुवेंद । २० काल  $\times$  । ले०काल स० १७५६ । बेष्टन सं० ४३१ । प्राप्ति स्थान — महारकीय दि० जैन मन्दिर अञ्जेंग ।

**४६६३. वालतंत्र भाषा—प० क**त्याग्गबास । पत्र स० ६६ । आ० १२ $\times$ १ $_{7}^{3}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८६६ भाषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेक्रनस० ६२० । **प्राप्ति स्थान** — महारकीय दि० जैन मन्दिर अर्थम ।

४६६४. **बंधफल** —  $\times$  । पत्र स०१ । , प्रा० ११ $\times$ ४ इञ्च । भाषा —सन्धृत । विषय-श्रापुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयप्र ।

४६६४. बंध्या स्त्री कत्य $-\times$ ा पत्रम०१। छा०१० $\xi \times Y_{\xi}^2$  दश्वा मापा-क्रिशी। विषय-ष्यायुवॅद । र०काल $\times$ । ले० काल $\times$ । पूर्णा। वेष्टन स०२२३। **प्राप्तिः स्थान**- म० दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रदी)।

विशेष-सतान होने भ्रादि की विधि है।

४६६६ सावप्रकाश—साविभिश्रः । पत्रसः १४३ । ब्रा॰ १३४६ द्वः । भाषा-सन्द्रनः । विषय-प्रायुर्वेद । र०काल ४ । ने० काल ४ । पूर्णः। वेष्टनस०१३ । प्राप्तिः स्थान— दि०जेन सदिर नागदी व दी ।

**विशेष** — प्रथम गड है।

**५६६७. प्रतिसं० २** । पत्रस० २३० । प्रा० १४ ्६<sup>5</sup> डचा ले०कान × । पूर्णा । वेष्टनस० १४ । **प्राप्तिस्यान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष---मध्यम खड है।

**५६६** मा**वप्रकाश**— $\times$ । पत्र स०६। मा० १३ $\frac{1}{2}$   $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय-म्रायुर्वेद १ र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । स्रपूर्ण । वैद्यनस०२२८। **प्राप्तिस्थान** दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

**५६६६. मावप्रकाश**—  $\times$  । पत्र स॰ २-६४ । भाषा-सम्कृत । विषय-ब्रायुर्वेद । र**०काल**  $\times$  । के० काल  $\times$  । ब्राप्ट्रमं । वे० स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तरहपथी मन्दिर बमवा।

**४६७०. माधवनिदान—माधव ।** पत्रस०२१० । आ० ११२ॄ४८ इन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय— । र०काल ४ । ते०काल स० १६१६ घासोत्र मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स०३६ । **प्राप्ति स्थान**— भद्रारकीय दि० जैन सदिर अवसर ।

**५६७१. प्रतिसं०२ ।** पत्र म०७६ । प्रा०१०३, ४४३ इन्था ले∙काल स० १७१० । पूर्ण। बेस्टन स०४४६ । **प्रास्तिस्थान**— म०दि० जैन मस्टिग् प्रवमेर ।

विशेष---प्रति टब्बा टीका सहित है ।

५६७२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १२६ । झा० १०×४१ इञ्च । ले० काल स० १८५५ ।पूर्ण । वेध्टन स० ५२६ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर धजनेर ।

५६७३. प्रति स० ४ । पत्रस० १२८ । घा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इ.स. । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस॰ १५६६ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जन मन्दिर अजमेर ।

५६**७४. प्रतिसं**० ४ । पत्र स० ४६ । म्रा० १० ४ ४ इञ्च । ले०काल सं० १८२२ । म्रापूर्ण । बेन्टन म०३५६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन स्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५६७४ प्रतिसं० ६ । पत्रस० १११ । प्रा० १० ४४ इञ्च । लेक्काल सं० १८७४ ज्येष्ठ मुदी २ । पूर्णु । येष्ट्रन स० १३३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय बूक्षी ।

५६७६. प्रति स०७। पत्र स०५६। मा०१२imes५७, ५ $^{\circ}$ १०० काल imes। पूर्ण। वेष्टत स०५६। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर पंचायती दूनी (टोक)

४६७७. प्रति सं० म । पत्र स०म्६ । ग्रा०१०८ ४ है इञ्चा, ले० काल स०१९२२ ज्येष्ठ मुदी ७ । पूर्णा । वेष्टन स०१९६ । प्रास्ति स्थान—दि० तैन मदिर बोरमली कौटा ।

विशेष-ऋषि मायाचद ने शिवपुरी मे प्रतिलिपि की थी।

५६७८. प्रतिसं० १ । पत्रस० २८ । आ०  $= \frac{3}{2} \times 4^3_{\phi}$  इन्त्रा । से०काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टुन स० ६५० । प्राप्तिः स्थान— ६० जैन मदिर लक्ष्कर, जयपुर ।

्र६७६. माधव निदान टीका—वैद्य वाचस्पति । पत्रतः १३६ । ग्राः १२४ ५ ३ दश्य । भाषा—सन्द्रतः । विषय— प्रायुर्वेद । र०काल ४ । ले०काल स० १६१२ माघ सुदी ४ । पूर्णः । वेष्टनसं० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर स्रादिनाथ वृदी ।

विशेष .. दयाचन्द ने चपावनी के श्रादिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

 $\chi \xi$ म**० मूत्र परीक्षा**— $\times$  । पत्र म०२ । प्रा० १०  $\times \chi_{\sigma}^{2}$  इञ्च । माषा—सम्ब्रत । विषय— प्रापृर्वेद । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४३ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

५६न १. सूत्र परीक्षा — × । पत्र स०४ । ब्रा० १०१ ४५ ६ द्व । भाषा—सस्कृत । विषय—प्रायुवेद । र०काल × । ले०काल स०१८८० पीय सुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०११६६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर ब्रजमेर ।

५६६२. सूत्र परीक्षाः— $\times$  । पत्र स० ५। प्रा॰ ५ $\frac{1}{2}$ ८४ $\frac{1}{2}$ ६२६ । भाषा—सस्कृत ।विषयः—वैद्यकः । २०कालः  $\times$  । ले० काल स० १७५४ । पूर्णः । वे० स० ३१२ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन मन्दिर दवलाला (वदी ।)

४६८३. योगांचतामिर्ग् — हथंकोति  $\times$  । पत्रस० १८० । प्रा०११५ $^2$  $^4$  $^2$  १७ । प्राप् सस्कृत । विषय — प्रापृवेंद । र० काल । ले० काल स०१८८८ । पूर्णः । वेष्ट्रन सं०१५६४ । प्राप्ति स्थान – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**५६६४. प्रति स०२** । पत्र स० ५० । आग् १२ $\times$ ५ $\frac{1}{4}$  इत्व । **ले०काल**  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टत स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवायती मदिर कामा ।

विशेष-- प्रति टीका सहित है।

**५६८५. प्रति सं०३।** पत्र स०५१ । ग्रा० ८३.४५३ इत्ता । ले**०**काल स०१८७३ । पूर्ण । वेष्टन स०२७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष - बन्दावती ग्राम मे नेमिनाय चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी ।

**४६८६. योगचितामिए**न $\times$ । पत्रस०६६। ब्रा० १२ $\xi$  ५५ $\xi$  इल्ब। माषा—सस्कृत । विषय-श्रायुर्वेद । २०काव  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टत स० १६३-५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का डगरपुर ।

५६६७. **धोर्गीचतामिला टोका—ग्रमरकोति ।** पत्र स० २५६। घा० ८<sup>१</sup> ५४३ इन्छ । भाषा-सरकृत । विषय—प्रापृर्वेद । २० काल २० । ले० काल स० १६२७ मगीगर मृदी १४ । पूर्ण । वेय्टन स० १३०६ ।**प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

१६८८ योगतर्गिग्गी—शिमत्त सह । पत्र म०११४ । ग्रा० १०८४ है दश्च । भाषा-सस्कृत । निषय—प्रापुर्वेद । र०काल 🗴 । लेकाल स० १७७४ ग्रापाट मुदी १ पूर्ण । बेहन स०१७६ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

१६६६. योगमुक्तावली— × ।पत्रस० १।सा० १०१ - ४) इञ्च । सापा-सर्वन । विशेष -- मापुर्वेद । ते०काल ४ । पूर्ण वेष्टनस० ⊏ । प्राप्ति स्थान -- म० दि० त्रेन सन्दिन्धानी-

**४६६०. योगशत** —  $\times$  । पत्र स० १३ । आ॰ र $\frac{3}{2}$   $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इङ्च । भाषा — सस्तत । विषय – आयुर्वेद । प्रकाल  $\times$  । लेक्सल स० १७२६ कार्तिक बुद्दी ६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२४४ । प्राप्ति स्थान – भ० दि० जैन मस्दिर श्रजमेर ।

विशेष -- पचनाइ मे प० दापचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

४६९१. योगशत — × । पन न० ६ । या० १०} ४४ } दश्च । भाषा - मस्कृत । विषय— योगगान्त । रक्काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेद्यत स० १७० । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन सोन्दर क्रावेग

५६६२. योगशत —  $\times$  । । पत्रसः १४। ब्रा० १२ $\times$ ५२ इ.स. । भाषा —सस्कृत । विषय — ब्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$ । अपूर्ण । वेष्ट्रन मः० ११०८ । प्रास्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर अजनेर ।

५६६३. योगशत—  $\times$  । पत्र स०२-२२ । धा०१०  $\times$  ४ ६ खा । माणा-सस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । र०काल  $\times$  । लं० काल स०१६०६ । ब्रगूर्ग् । वेष्टन स०६७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर राजसक्ष्त (टोक)

विशेष -- प्रति प्राचीन है तथा जीगां है। ग्राघे पत्र में हिन्दी टीका दी हुई है।

टोका – श्लोक १६-–

वाता जुः। ध्याल्याः वायः ३ मिलांगः किरमालो । काढो किर एगढ को तेल ८४ माहि धालि पीवणाया समस्त कारीर को वातरक्त भाजदः। वासादि क्वायः रसाजन-ध्याल्या-रसर्वति भीलाई जड । मधुः। भावतः के घोवणः माहिधालि पीवणीया प्रदरु भाजदः। ४६६४. योगशत टीका— × । पत्र स० ३०। स्रा० ११×४ दश्व । भाषा— संस्कृत । विषय— ऋषुर्वेद । र०काल × । ले०काल स० १७७६ कार्तिक सुदी १०। वेष्ट्रन स० १३७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैनमन्दिर स्रादिनाथ चूदी ।

विशेष - प्रारम-

श्री बर्खं मान प्रिगिपत्य मूधर्न समतभद्राय जनाय हेतोः श्री पर्रोमेन सुखबोधनार्थं प्रास्टयने योगणतस्य टीका ॥

श्रन्तिम- तपागच्छे पुन्यास जी श्री तिलक मौभाग्य जी केन लिखपित भैसरोडदुर्ग मध्ये ।

४६६४. योगशत टीका -- $\times$ ।पत्र त० ३१। आ० १० $\frac{1}{2} \times X^{\frac{1}{2}}$  इखा भाषा — सः स्कृत । विषय – आयुर्वेद । २०काल  $\mathbf y$ ा ले० काल सः १८४४ । पूर्णः । वेष्टन स० २१६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन संदिर पार्थनाय उत्तरगढ ।

विशेष—१०५४ बैजाये सितं पक्षे तिथै। द्वादश्या दानविमलेन लिपि कृत नगर इन्दरगढ मध्ये विजये राज्ये महाराजा जो श्री सुनमानसिंह जी—

५६६६. योगशतक—धम्बन्तरि । पत्रस० १६ । बा० १६ ११ हुन् । भाषा—म स्कृत । विषय - बायुर्वेद ।र०काल १८ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रत न० १०७५ । प्राप्तिः स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर क्रजार ।

विशेष---नेमीचद ने निखवाया था।

५६६ में गोगशतक $-\times$ । पत्रस० १५ । आ० ८ $_{>}$  $\times$  $^{3}$  $_{>}$ ड्रञ्च । भाषा-स स्कृत । विषय— आयुर्वेद । रकताल  $\times$ । लेक काल स० १८७२ फागुरा मुदी ४ । पूर्गा विष्टुन स० ४४२ । **प्राप्ति स्थान**— भट्टास्कीय दिव जैन मन्दिर स्रजनेर ।

विशेष-चेला मोहनदास के पठनाथं कृष्णगढ (किणनगढ) मे प्रतिलिपि हुई थी।

५६६६ योगसार संग्रह(योगशत)—४। पत्र स० ३१। आ०५४३ हुँ द्वा आपा— सम्कृत । बिराय — आपुर्वेद । र०काल ४ । ले०काल स० १६२०। पर्गावेस्टन स० ५२६ । प्रास्ति स्थान—अ० दि० जैन मदिर स्रजोर।

५७००. रत्नकोश—उपाध्याय देवेश्वर । पत्र म० २६७ । स्रा० ११४८ इथा । भाषा-सम्कृत । विषय — म्रायुर्वेद । रक्काल х । ले० काल स० १६२१ ध्यागढ मुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १२७७ । प्रास्ति स्थान— भ० दि० जैन मदिर स्रवमंग ।

१७०१. रसर्वितामिएा—  $\times$  । पत्रतः १६। या० १हे $\times$  ४ दश्च । भाषा-सस्कृतः । विषय-ग्रापुर्वेदः । र०कातः  $\times$  । ते०कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनस० ४४१ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजनेरः ।

५७०**२, रसतरिंग्गी—भानुबत्तः ।** पत्र स**०**२४ । प्रा०११% प्रदेबन्दा भाषा-सस्कृतः । विषय-प्रापृबेदः । र०कालः ४ । ले०काल स०१६०४ वैद्याखबुदी २ । पूर्णः। बेग्टनः सं०१२६३ । प्रा**प्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर अवमेरः। **५७०३. प्रति सं०२ ।** पत्र स०३१ । घा०११ ४ ६ इच्चाले क्लाल स०१ ८५२ । पूर्णा बेष्टन सं०२०२ । **प्राप्ति स्थान — दि० जै**न मदिर ग्रभिनन्दन स्वामी खुदी।

विशेष-व्यास श्री सालिगरामजी ने ब्राह्मण् हरिनारायण् गूजर गौड से प्रतिलिपि करवायी थी।

४७०४. रसतर्रागस्ती - बेस्गीदत्त । पत्र स०१२४ । प्रा०१० $\frac{3}{2}$  $\times$ १ $\frac{3}{7}$  इच्च । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रापुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१०४५ भादो बदी ५ । पूर्णे । वेष्टन स०२०४ । प्राप्ति स्थान—दि० नैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी. वंदी ।

५७०५. रसपद्धति —  $\times$  । पत्रस० ३६ । म्रा० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ष्रायुर्वेद ।  $^{\prime}$ ० काल  $\times$  । ले काल स० १८२६ वैशाल बुदी १० । पूर्ण । वेल्टन स० ५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर म्रादिनाय बंदी ।

विशेष-अहा जैन सागर ने ग्रान्म पठनार्थ लिखा ।

५७०६ **रस मंजरी - मानुदत्त** । पत्र स०२५ । ग्रा० १०×४६ व । भागा—सन्द्रन । विषय-प्रायुर्वेद । र०काल ⋉ । ले०काल ⋉ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१⊏२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर वोरमली कोटा ।

१५०७. रसमंजरो—शालिनाथ । पत्रस०४४। ब्रा० ११४४ इन्दा भाषा-सस्कृत। विषय-आयुर्वेद। र०काल 🗴 । ले० काल स०१६२६ ज्येष्ट बुटी ४। पूर्ण । वेष्ट्रनस०४४४। प्राप्ति स्थान—न०दि० जैन मदिर क्रवमेर ।

५७०८. रसरस्नाकर—निस्यनायसिद्धः पत्रसः ७१। प्रा० १०४६ इवः । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रापुर्वेरः । र० कालः  $\times$  । लेकालः स० १८७१। पूर्णः । वेष्ट्रनं स० ३५१ । प्राप्ति स्थान—भ० वि० जैन मन्दिर प्रजनेरः ।

५७०६. प्रति स० २ । पत्रस० २–१६ । घा० ११ $\times$ ४ इञ्च । भाषा—सम्कृत । विषय— सायुर्वेद । ७० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । स्र्रेग् । वेष्ट्रन स० ३६६/२०७ । प्रास्ति स्थानः दिरु जैन सभवताल र्राः उदयपुर ।

५७१० रसररनाकर—रत्नाकर । पत्रस्त १८ । आ० १२  $\times$  ४ इन्छ । भाषा-सस्कृत १ विषय-प्राप्तुर्वे । - ०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । प्रपूर्णं । वेष्टनसं० २३३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मनिर इन्दरसङ् (कोटा) ।

५७११. रसरत्नाकर —  $\times$  1 पत्रस० ६० । या० १०  $\times$  ४ इञ्च । भाषा सत्कृत । विषय — प्रायुर्वेद । रण्काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रनसं० २०३ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

४७१२. **रामितनोर -नयनमुल** । पत्रस० १०० । मा० ५×१ इख । मावा-हिस्दी । विषय-म्रायुर्वेद । र०काल × । ने०काल स० १८०८ फागुए। मुदी ७ । पूर्ए । वेष्टन सं० ४२७ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मस्टिर म्रजनेट ।

विशेष---प॰ दीपचन्द ने आसी नगर मध्ये लिखित ।

**५७१४ प्रति सं०२** । पत्रसं० ६३ । घा० १० $\frac{1}{7}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ हका। २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णे । बेहुनस० १३५६ । **प्राप्ति स्थान**— स० दि० जैन मदिर धनसेर ।

५७१५ प्रति सo ३ । पत्र सo १८ । ग्रां० १२imes६ इज्ज । ले०काल सo १८६६ डिनीय वैज्ञाल बुरी २ । पूर्ण । बहुत सo २४१ । प्रास्ति स्थान—दिo जैन मंदिर राजमहल (टॉक) ।

५७१६. प्रति सं० ४ । ष्यसं० ११४ । बा० ११ ं × ५ इञ्चा ले०काल म० १७३० । पूर्णे । बेष्टुत स० २०६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर धर्मिनस्य स्थामी, तूदी ।

विरोप--मवन् १७३० वर्षे प्रामोत्र मुदी १० रविकार निवन्न रोहिको पोवी निव्ही माहुदा वेटा करीर वेटा नावचर जं बास्तरियम जानी बोरलक्ष्या वासी मोजी भोषा का गुड़ी। राज माबोसिह (जिल्ही) हाडा बुटी राव थी भावनित जो दिलो राज पानिसाही घोरणसाहि राज प्रवर्तन।

५७९७, रामिबनोद— × । पत्र म०५१। या०१०×४¦ इला । भागा-सस्क्रत । विषय-ग्रापुत्रेद । रक्ताल × । ते० काल × । पूर्णा विष्टन म० ११३ ११ । प्राप्ति स्थान — अपवाल दि० जैन मदिर जदसपुर ।

५७१६. स्वजनप्रप्रतिसंख — ४ । पत्रस्य १६ । आ ० १८ ४५ है उच्च । भाषा-सम्बन्धा । विषय — प्रापुर्वेद । रण्यात् ४ । ते० काल स० १६६० कालिक बुदी १ । पूर्ण । बेष्टनस० ४३५ । प्राप्ति स्थान — २० दि० जैन सन्दिर सन्तेर ।

विशेष--मोतीराम ब्राह्ममा ने मोतीनाथ जी के देवरा मे लिखा था।

५७१६. लाजनपथ्य निर्मात्र —  $\times$  । पत्रसः १२ । याः ११  $\times$  द इश्व । मापा-सम्हन । विषय-बाग्नुवें । रक्षाल  $\times$  । लेक्काल मार्क १६४४ वैद्याल वदी १४ । पूर्मा । वेष्टन सर्व ४६६ । प्रास्ति स्थान — ५० दिव की मन्दिर प्रतमें र ।

**५७२०. बंद्यक ग्रंथ**—  $\times$  । पत्र स० ६७ । आ ० १३  $\times$ ६ इखा । मापा-हिन्दी । विषय-मायुर्वेद । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन महिर फ्रजमेर ।

१७२१. वंद्रक प्रंच $-\times$ । एवस० ४२। ग्रा० १ $^{\circ}$  $\times$ ६ $^{\circ}$ ६ छ । भाषा - सस्कृत । विषय-भाषुबंद। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेगृन स० २२६-२१। प्राप्टिः स्थान-िद० जैन मन्दिर कोटडियो का ड सरदर।

५७२२. वंशक ग्रंथ— $\times$  । तत्र सं०२। ग्रा०१० $\times$ ४ $\xi$  इश्व। भाषा—हिन्ती । विषय— ग्रायुक्त । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाब टोडारालसिंह (टोंक)

विशेषं--प्रायुर्वेदिक नुसले दिये हुये हैं।

**४७२३. वैद्यक्तप्रंथ**—  $\times$  1 पत्र स० ४ । धा० १० ् $\times$   $4 \ge$  इस्त । भाषा - मस्त्रत । विषय धायुर्वेद । र० काल  $\times$  1 ले० काल  $\times$  1 पूर्ण । वेष्टन म० १४-६२२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - कम स॰ १६/६२३ से २४/६३० तक पूर्ण प्रपूर्ण वैद्यक पथी की प्रतिया है।

**५७२४. बैद्यक नुस्ले**- $\times$  । पत्र स० ४ । आ० ५े ,४६ इत्य । भाषा-नस्कृत । विषय-बैद्यक । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण ।बैष्टनस० १२४६ । **प्राप्ति स्थान** -भ० दि० जैन मस्टिर ब्रजमेर ।

**५७२५. वैद्यक नुस्ले**— $\times$  । पत्र स $\circ$  ४। भाषा न स्कृत । विषय - प्रायुर्देद । २०काल  $\times$  ।  $\hat{\mathbf{R}}$ ०काल  $\times$  । पूर्णे । बेप्नत स $\circ$  ४०० । **प्राप्ति स्थान** - दि $\circ$  ईन मन्दिर कोटडियों का उमस्पर ।

५७२६. प्रतिसं० २ । पत्र म० ६० । ले०काल ८ । पूर्ण । बेहन स० ४०१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ड सरपुर ।

**४७२७. वेद्यक शास्त्र—** ४ । पत्र म० २०३ । प्रा०२९ ४ ५५ राज्य । आण-हिस्सी (गद्य) । विषय-अधुर्वेद । र०काल ४ । से०काल स० १८६२ चैत वृद्य ८ । पुर्ण । वस्त्र म० ७११ । **प्रास्ति** स्थान—भ० दि० जेन मन्दिर प्रवर्गर ।

**६७२८. वेशक प्राहेश**—  $\times$  । पत्रस**्ट**ाश्रा० १६ $^{\dagger}$  ५ $^{\dagger}$  १८ । तापा - सम्भा । विषय-श्चायुर्वेद । रक्काल स ०  $\times$  । केक्काल  $\times$  । पूर्ण । वष्ट्रत स० २२७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० अंत पार्थ्वताय मन्दिर इन्दरन्द (फाटा)

**५७२६. बैद्यक समुख्यय**—× । पत्रस० ५१ । घा० ६ ४ ५ ठळ्य । भाषा - हिन्दी । विषय — बैद्यक । र० काल 🗴 । ते बकाल १६६० फागुगा मुदी १५ । पूर्मा । बेहन म० १७८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलागा (ब दी)

**सिशेष**—दिनिकामडले पालवयाममध्ये लिलित ।

१८६०. **वैद्यक्तार**— ×ापत्रस० ०२ । या० ०,५ ४६ है इस्र । साला - सस्कृत । विध्या-प्रावेशुद । र०कान ×ा त्य०काल स.०१६४३ वर्गानक मुदी २ । पर्मा । बेष्टन स० ३००१ । **प्राप्ति** स्**यान** — दि० जैन सन्दिर कोटडियाका इनस्पुर ।

१७३१. वैद्यकसार—हर्षकीति । पत्रसः ११ से १६१। बार १२ × ४ है इन्छ । भाषा-सम्कृत । विषय—प्रापुर्वेद । रुरु काल ४ । लेज्काल मरु १६२५ चैत्र वृती ३ । ब्रवृत्ती । वेद्यनसरु १७७ । प्राप्ति स्थान—भरु दिरु केन मन्दिर अवसेर ।

५७३२. प्रति स०२ । पत्रस०३४ । आ०१०४४ हुँ इ.च.। ले•काल ८ । स्रदूर्णा। बेष्टन स०२५२ । प्रास्ति स्थाने—अ०दि० जैन मन्दिर ब्रजमेर ।

५७३३. प्रति सं० ३ । पत्रस० १७४ । या० ११ $\frac{3}{5} \times ५$ े डञ्च । ते०काल  $\times$  । वेध्यत स० ३४९ । प्राप्ति स्थान—र्द० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति मिटा रखी है।

४७३४. वंद्य जीवन—लोलस्बराज । पत्रस० ४१ । प्रा० ६ ४ ६ उश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पापुर्वेद । लेक्शल स० १६१२ । पूर्ण। वेष्टुनस० २६६ । प्राप्ति स्थान—प्र० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । **५७३५. प्रति स**०२ । पत्र स०२७ । घा०६ $\xi \times Y_{\xi}^2$  इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१२४० । प्रास्टिः स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५७३६. प्रतिसंब ३ । पत्र मब्दा लिक्काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसब्ध १२४१ । प्राप्ति स्थान—भवदिव जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५७३७. प्रति स०४ । पत्र स०१४ । ग्रा०११४५ पुँडच । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टन सं∙ १६४-६० । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

५७३ **म. प्रति स० ६ । प**त्र स० १२ । आग० ११ ४४ <sup>†</sup> इच्चाले० काल ४ । पूर्णे । वेष्टनस० १५६६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

५७३६. प्रति स०६ । पत्रस०१६ । ह्या०१११ ४१ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्गा । बेब्रुनस० १५४ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर स्रजमेंट ।

५७४०. प्रतिसं० ७ । पत्र म० ५३ । ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इञ्च । ले० काल स० १७५३ कार्तिक वृद्धि ७ । पूर्ण । बेशून म० २२२ । प्राप्ति स्थान—पार्वताय दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ ।

५७४१. प्रतिसंव स् । पत्र सव १७ । घाव ११५५ ४१ इन्छ । लेव काल सव १८८७ मंगस्ति सुदी ५ । पूर्ण । वेष्ट्रन सव २२३ । प्रास्ति स्थान—दिव जैन पार्व्यनाथ मन्दिर इन्द्रस्यह ।

५७४२. प्रति सं० ६ । पत्र स० २४ । प्रा० ११४५ इन्छ । ले०काल स० माघ सुदी ७ । पूर्ण । बेपून स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बृदी) ।

५७४३. प्रतिसं० १० । पत्र म० १३ । घा० १० $\} \times ४ \}$  इ.ख. । सै० काल स० १८०१ पौष मुदी ११ । पूर्ण । नेप्टन म० ३०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

विशेष —वानोनी नगर मे प्रतिनिपि हुई थी।

५७४४ प्रतिसं० ११ । पत्र म० १२ । ग्रा० १२ 🗴 ४ १ इञ्च । ने०कान स० १६७६ । पूर्ण । वेष्टन स० ८५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

५७४५. प्रति स० १२ । पत्र म० ३६ । ब्रा० १० ४५) इञ्च । ते•काल स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टम म० २३४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

विशेष -- िन्ते प्रयं गरित है।

५७४६ प्रतिसं० १३ । पत्रस० १२ । ग्रा० ११×४; इला । लेक्काल स० १८०६ । पूर्स । वेष्टन स० १३२ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

५७४७. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २३ । ग्रा० ११४ ४३ इञ्च । लेक्जल सं० १८२३ । पूर्ण ६ वष्टन स० २२४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर धभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष---साहपुरा के शातिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

५७४८. प्रति स० १५ । पत्रस० २ से १६ । घा० १०४४ इश्व । ले० काल स० १७१७ ६ पपूर्ण । बेहनसं० २ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक) । ५७४६. बैद्याजीवन टीका — हरिनाथा। यत्र सं०४८। ब्रा०११ $\times$ ४ इखा। भाषा-स स्कृत। विषय-आवृदेद। २०कास  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्ट्रन म०१२३६। प्रास्तिः स्थान — भ०दि० केन सिंहर स्वदेद।

४७५०. प्रतिसंव २ । पत्रसव २७ । ब्राव १२ x ४ , इन्छ । सेव्काल 😗 । पूर्ण । बेय्टन सव १४४ । प्राप्ति स्थार्ग—भव दिव जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५७५१ प्रति सं०३ । पत्रम०४१ । आ०११ ४ थे इच । भाषा —सस्तृत । विषय— क्यापुर्वेद । र०काल ४ । पंक काल ४ । पूर्ण । बेहुत स०४०० । प्राप्ति स्थान —भ०दि० जैन मस्दिर ग्रजनेर ।

१७५२. प्रति स॰ ४ । पत्रस॰ १६ । ले॰कान स॰ १८३१ । पूर्ण । वेष्टन ग॰ ४१० प्रास्ति स्थान— भ० दि० जैन मेरिस खबमेर ।

५७५३. प्रति स० ६ । पत्रस० २१ । प्रा० १०१ × ६ इन्छ । लेक्काल > । येष्ट्रन म०३३८ । प्राप्ति स्थान—४० जैन मन्दिर लक्कर, जशपर।

५७५४. प्रतिसं०६ । पतस्य २१ । प्रा०१०५ँ४५ उत्ता । ले०काल र । बेष्ट्रस्य ०३४० । प्राप्ति स्थान ∼ दि० जैन मदिर लक्कर, ज्युर ।

**५७५५. बैद्यानीवन टीका** — रहमट्टी पत्रसल्दश्चाया ११८८) इन्च । भाषा-सास्त्रन । विषय — म्रापूर्वेद । २००४०६ ४ । ते० कावल सल्दल्य लाग्य बुदी ३ । पूर्ण । बेट्नसल्दर्श ३ । प्राप्ति स्थान — सल्दल्य जैन मन्दिर प्रवर्गर ।

५७५६ प्रतिसं०२ । पत्र ग०४६ । लेब्बाल स०१८८५ प्रथम द्यापाट बुदी ऽऽ। पूर्णा। बेक्रत स०११६७ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - पर्वत्रकारमा ने किश्वनगढ़ में विमनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

५ ७५७ विद्यक्त प्रतम्म सद्गर्स — ४ । पत्र म० १०। घा०११ है४६ इच । भाषा — सम्बन्ध विषय — प्राप्तेर । प्रकार ा निरुकान प्राप्तां। वेष्ट्रन स० १०६३ । प्राप्ति स्थान — अट्टास्कीय विरुक्ति सर्वर अवसर ।

प्रथप्नः वैद्यामनोत्सव—केशवदासा । पत्र म० २४-४७ । आ० ५<sup>9</sup>×६<sup>9</sup> इखा । आया— सम्बन्धा । विषय —धापुर्वेद । र० काला × । लेक्बाला × । अपूर्णः । वेष्ट्र स० ३६६-१४० । **प्रास्ति** स्थान — दि० तैन मस्टिर कोटडियो का हु गरपुर ।

प्रथप्रह. प्रति सं २ २ । पत्र म० ३ । घा० १३ ४ ५ इञ्च । ले०काल 🗴 । घपूर्ण । वेष्ट्रनसं ० ३३-१३६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

५७६०. **बैद्य मनोत्सल — नयनमुख**ा पत्र स०१४ । आ०६३ ४४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय — प्रापृर्वेद । र०कारा म०१६४६ आधाद मुदी २ । ले० काल स०१६०० भादवा मुदी १ । पूर्ण । बेहुन स०१०७७ । **प्राप्ति स्थान** — महान्वीय दि० जैन मन्दिर धन्मेर ।

५८७६१ प्रतिस० २ । पत्रस० ११ । ग्रा०१० रे×५ हेडचा ले∘काल स०१६६१ । पूर्णा। वेष्टन स०१०२६ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर धजमेर । ५७६२. प्रति स० ३ । पत्र ग०४८ । ग्रा०६४६ इञ्च । ले० काल स०१८१२ ग्रापाढ बुढी ८ । पूर्ण । बेष्टुन स०५०६ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५७६३, प्रति सं०४ । प्रति २३० । या०६ $\times$ ४ $^{\circ}_{i}$ इश्व । ले०काल स १६३४ । पूर्ण । बेष्टुन न० ६६४ । प्राप्ति स्थान—भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर घजनेर ।

विशेष — गुटका साइज में है। ५७६४, प्रति स० ५। पत्रम० २६। फ्रा० १०३/४४ इचा ने० काल स० १⊏६७ माह बुरी २ । पर्गावेष्ट्रस० ४७३। प्राप्ति स्थानं — महारकीय दि० जैन मदिर सजमेर।

प्रथम प्रशास करते हैं। यज सब विश्व प्राप्त १०४१ है इस्ता ने कहान सब १८६४ समसिर बुदी १ । पूर्णा बहुत सब ६९६१ । प्राप्ति स्थान मब्दिक जैन सन्दिर अवसेर ।

विशेष -- प० क्षेमकरण ने किशनगढ में प्रतिलिप की थी।

१७६६. प्रति सं०७। पनसः १७। प्राठ १० $^1$  प्राठ १० $^1$  प्र $^1$  हजा। ने काल सः० १०११ ज्येष्ठ गरी १। पर्मा । उट्टन सः० २४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर राजमहन (टीक)

विशेष िन्धी कुम्यानी रामपुरा मध्ये पडित कु गरसीदास ।

४७६७. प्रति स० ६ । पत्र स० १६ । स्रा० ११ $rac{1}{2}$ imes६ इच ।ते० काल imes । पूर्गं । वेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान – वि० जैग मदिर दबलाना (बूदी) ।

प्रश्रह वैद्यारत मापा - गोरवामी जनार्वन भट्ट । पत्र त० ३० । घा० ५ $\frac{3}{2}$  ×  $\frac{1}{6}$  इत्त्व । भाषा — नःकृत । विषय — नार्वेद । ७० काल  $\times$  । वेश काल  $\times$  । पूर्ण । वेशनस० २४६ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन मन्ति गाजमञ्ज (टोक)

विशेष - लिखिन साधु जैक्टरगमहनजी श्री प्रतीदासजी भाडारेज का णिप्य किशनदाम ने लिखी हाटोनी शेरगढ मध्ये ।

४७६६. वैद्यन्त भाषा —  $\times$ ागत म०४७। आ०१० $\times$ ६ै इच्च। भाषा-किसी (गढ़ा)। विषय — आपूर्वेदारक्काल  $\times$ । लेक काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन म०४६६। **प्राप्ति स्थान** — म०दिक जैन भित्रक करेगे

५७७०, बेद्यवरुलम — : । पत्रस० २६४ । आ० ६४४ इला । भाषा-सस्कत । विषय-ब्राह्यवेंद । २०कास :: । ले० काल : / । पूर्य । बेप्टनसं०६ । **आप्ति स्थान** — मट्टारकीय दि० जैन मदिर मजनेर ।

विशेष - प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

५७७१. प्रति सं० २ । पत्र स० २५ । घा० १० 💥 ६ इञ्च । ले०काल 🗴 । ब्रपूर्ण । बेष्टुनसं० २८ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर पार्थ्वनाथ इन्दरगढ (कोटा)

५७७२. बैद्य बल्लभ—हस्तिरुचि । पत्रस० ५६ । सा० ८×४१ इचा । भाषा-सस्कृत । विषय-बागुर्वेद । रुकाल स० १७२६ । ले०काल स० १६११ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष - भ्रन्तिम पुरिपका निम्न प्रकार है-

इति मुरादिसाहि गुटिका स्तमनोपिन--

श्रीमत्तपार्याभोजभासनैक नभोमांग । प्राजीदयरूजिनामा बभूव विदुषायगो ।। तस्यानैक महाशिष्या हितारि रूचयो यग । जगनमान्यसभायाया पर्वाप्य क्षानुबन । स्रायो तैया थिणुना हम्म्निज्ञता सई य बन्भोय य । रस ६ नतान २ भूनिन्दु १ वर्षे स० १७२६ कागव विद्वितीय ।।

इति श्रीमत्तवागच्छे महोपाच्याय हिन्छवि तत् जिप्य हिन्छिव कवि विरविते वैग्रवत्ने श्रीययोग निरुषणो नामा श्रुप्टमोऽस्थाय ।

५७७३. वैद्यवस्तम —  $\times$  । एव म०३२ । म्रा०  $= \frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$  इस । भाषा नम्कृत । विषयम्रागुवेंद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे०स०२२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ
मन्दिर चीगान व दी ।

५७७४, प्रतिसं०२ । पत्र स०३३ । आ०८ ३४४, डचा न०कान ग०१६५० । पूर्णे । वेष्ट्रन स०२७ । प्राप्ति स्थान - वि०जैन मन्दिर स्थिनन्दन स्थामी वृदी ।

५७७५. बैद्यबल्लम टीका —  $\times$  । एत्र म०३६। ब्रा० १३ $\times$ १ $^{\dagger}$  इच्च । भाष — हिन्दी । विष्य— बैद्यक । ए०काल  $\times$  । ले०काल स० १६०६ बंगाल मुदी १ । पूर्ण । वेट्यन स० १३५७ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर अत्रभेर ।

विशेष - प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

५७७६. प्रतिसं०२ । पत्र म०१४ । आ०६<sup>2</sup> ४४ दृद्धः । ले•काल ≻ । पूर्णः । <sup>हे</sup>ष्टन स० ४४३ । प्रास्ति स्थान— भ०दि० जैन मदिर अजनेरः।

५७७७. **बेग्रविनोद**— 📐 । पत्रस• १६ । प्रा० १०, ४४ इज्ब । भाषा-म*न्यत* । विषय-प्रायुर्वेद । २०काल ४ । न०काल स० १८८६ व्यष्ट णृ १४ । पूर्ण । बेप्नस• १६६ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष -- लिखिन ५० देवकरमा हिन्दुमं (किशनगढ) मध्ये ।

१७७८, वंससेन सूत्र -- वससेन । पत्र म० ४७१ । प्रा० १२×६ इला । भाषा --सन्हत । विषय ---प्रायुक्ट । र० काल × । लेकाल स० १७६६ प्रापाट बुरी ३ । पूर्ण । वष्टन ग० ७० । प्रास्ति स्थान - पार्थनाय दि० जैन मन्दिर इन्दरन्द ।

विशेष--- प्रादिभाग एव ग्रांतम पुष्पिका निम्न प्रकार है --

प्रारम-- : नत्वा शिव प्रथमतः प्रसिपय्य चडी

बाग्देबना तदनुता पद गुरुण्च सम्रह्मने किमपि यत्मुजनास्तदत्र चेनो विद्यासु मुचित् मदनुग्रहेए।।१.। म्राय्वींद ] [ ५६१

### पुरिवका---

इति श्री अगरेन ग्राथिते चिकित्मा महार्गावे सकल वैद्यक शिरोमिण वसमेन ग्रांथ सम्पर्गा।

५७७६. शाङ्क्तीधर—  $\times$  । पत्रम० १०। ग्रा॰ १०  $\times$  ४) दश्व । माणा-सम्कृत । विषय-श्रापुर्वेद । रे०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन म० ६४२ । प्रास्ति स्थान-- दि० जैन मन्दिर ग्राजनेर ।

विशेष — हरिदर्ग (किजनगढ़) के लुहाइको के मन्दिर में प० देवकरण ने लिखा था।

४७८० शार्जुं घर दीपिका — ग्राडमस्ल । पत्रसः ६४। बा०१२३४६ इन्त । भाषा — भगकृत । विषय — ग्रापुर्वेद । रक्काल 🔀 । लेक्काल म०१६२१ वैत मुदी ४। पूर्ण । बेप्टूनसं०१२३१ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैत मल्दिर ग्रजनेर ।

विशेष -- ग्रजमर नगर मे प्रतिनिधि हुई थी।

१७६१. शङ्कोधर पढ़ित —शाङ्कोधर । पत्रतः १११ । बार् १० $^{3}$  ४५ दश्च । भाषा - सम्मन । विषय — प्राप्तवेद । रूकाल  $\times$  । केरकाल  $\times$  । बपूर्ण । बेपूनसंर्व २२१ । प्राप्ति स्थान — दिरु औन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

४७६२. जार्ज्ज्ञधर सहिता—जार्ज्ज्ञधर । पत्र म०२१। आ०११४५ हुण्या गापा-सम्बन् । विपा- बायवेंद्र । रुकाल ४ । ते० काल ४ । सपर्गा । वेष्ट्रन म०२२० । **प्रान्ति स्थान** — विरुज्जन मन्दिर अञ्चनर ।

५७६३ प्रतिसंठ२ । पत्र सरु१३ । ग्रारु६ ४४३ च । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सरु१३०२ । प्रास्तिस्थान----भुरुविक जैनुमन्दिर ग्रजसेर ।

५७**८४: प्रतिसं० ३** । पत्र स० १२५ । आ० ११×४ उञ्च । ले**०** काल×। बेप्टन स० ३३६ । प्रास्ति स्थानः दि० जैन मदिर लश्कर, जयपर ।

५७८४. प्रतिसंव ४ । यत्र सव १७० । ग्राव ११ 🗶 ४ उचा । नेव काल सव १८२७ म्रायाह नुदी १२ । वष्टन सव ३२७ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

५७८६. प्रति स० ६ । पत्रस० ५७ । ले० काल ∨ । पूर्ण । बेष्टनस० ४१ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन पत्रायती मदिर हण्डावासो का डीग ।

५७८७. प्रतिसं० ६ । पत्र म० ४२ मे १६ । आ० १०हे ४४हे इरूच । से०काल ४ । अपूर्ण । बेष्टन म० १८३ । प्राप्ति स्थान -- ४० जैन पार्धनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ कोटा ।

५७८८ **श्वासभैरवरस**—  $\times$  । पत्रस०२-१५ । भाषा—संस्कृतः । विषय—प्रायुर्वेद ।  $^{7}$ ० काल  $\times$  । से $^{1}$ ० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेपूर्ण म०८ । **प्राप्ति स्थान**—तेरहपथी दि० जैन मन्दिर बसवा ।

५७६६. सम्निपातकसिका -- × । पत्रस० १७ । सा० १० रे ४६ इच । भाषा-सम्ब्रत । विषय-सातुर्वेद । रबकान × । ने० काल स० १८६३ मंगिनर मुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३३ । प्राप्ति स्थान – भटटारकीय दि० जेन मन्दिर ब्रजभेर ।

१७६०. **सिश्रपातकलिका**— ४। पत्रस०२२ । घा० ५४३ है दख । भाषा – सस्द्रत। विषय-भायुर्वेद। र०काल ४ । ले•काल ४ । धपूर्ण । वेष्टन स०४४० । **प्राप्ति स्थान** — स० दि० जैन मन्दिर कक्षणे विशेष -- १६ व २० वा पत्र नही है।

५७६१. सिन्निपातकित्वका —  $\times$  । पत्रतः ० । म्रा० १० $\times$ ४¦ इश्वः । भाषा-सरहतः । विषय-प्रायुर्वेद । र०कालः  $\times$  । ले० कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्रन स०२२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प प्रवेनाथ प्रतिर इत्यस्त (कोटा) ।

५७६२. संतान होने का विचार—  $\times$  । पत्र स०७ । ग्रा॰ न $\times$ ५१ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-प्राय्वेद । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन २० २११-५७ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मिर्टर कोटिंग्यों का दू मण्यूर ।

५७६३ स्त्री द्वावस्य विधि —  $\times$  । पत्र म०७। धा०७ $\times$ ४ $_{2}^{2}$  ट्रच्च । भाषा-सस्त्रत । विषय धावुर्वेः। र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्ट्रत म० =१७। पूर्ण । प्राप्ति स्थान—६० जैत मन्दिर सक्कर जवपुर ।

**५७६४. स्वरोदय — मोहनदास कायस्थ** । पत्रत्त० १२ । ग्रा०१२ $\times$ ५ दल । भाषा – हिन्दी । विषय — ब्रायुर्वेद । र०काल स० १६६७ मर्गातर गृत्री ७ । लेक्काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ६१२ । **प्रांति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेषः --इसमे स्वर के माथ नाडी की परीआ का वर्णा है - कवि परिचय दोहा---

कषित मोहनदास किंव काइथ कुन घटिछात । श्री मांगे के कुन हिम कनोते के अस्थात । नैमलार के निकट ही कुरस्थ गांव विश्वात । तहा हमारो वानू निर्धा आती मम नाव । सहा नमारो के रच्ची व्यपित खगी गांत, विकमते हीते वस मारंग मुद्र विदि साव ।।

इति श्री पवन विजय स्वरोदये यथ मोहतदान कायय प्रहिटाने विरक्षिते भाषा ग्रयः निवृत्ति प्रवृत्ति मार्गे खड ब्रह्माङ शान तथा कुमाकुम नाम दक्षिण स्वर ता भग निवार काल मानन मनूर्ण ।

प्र७६५. हिकमत प्रकास—महादेव । ण्यस० ५६१ । भाषा संन्कृत । विषय-विश्वक । र०काल 🖂 । ले०काल स० १८३१ । पूर्ण वेष्टनस० ७६६ । प्राप्तिः स्थान —प्वायती दि० जैन मदिर

# विषय--ग्रलंकार एवं छन्द शास्त्र

४७६६. ग्रलंकार चंिका—ग्रप्यग्रीकित । पत्र सं०७६। ग्रा० ११ $\times$ १ $^{\dagger}$  इचा । ग्रापा—सम्ब्रुत । विषय-ग्रलकार । २०काल  $\times$  । से०काल  $\times$ । अपूर्ण । बेष्ट्रनसं०२३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय व दी ।

प्र७६७. कवि कल्पनुम—कवीन्दाचार्य । पत्रस० ६। घा० १० रे ४ ४ दे दल्ला। माषा— सस्कृत । विषय-ग्रनकार । र०काल 🗶 । ले०काल 🗶 । पर्एं। वेष्ट्रनस० २७२। प्राप्तिर स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

५७६८. **कुव जयानस्य — प्रप्यपनिक्षित ।** पत्र स० ७७ । घा० १० रे ४५ इ.व.। भाषा - सस्कृत । विषय - रस मिद्धान्त । र०कारा ४ । ने० काल स० १८५४ वैज्ञाल बुदी ६ । बेष्टन स० २०६। **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मिर्टर लक्ष्कर, जयपर ।

विशेष -- लक्कर के इसी मन्दिर में प० केशरीसिंह ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करवाई थी।

५७६६. प्रतिसं० २ । पत्र स०१० । छा०६×४२ै । ले०काल × । वेष्टन स०२११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---कारिका मात्र है।

४८००. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४३ । घ्रा० १० ३ ४ ४, इश्वा । भाषा—सस्कृत । ले०काल 🗡 । पूर्ण । वेष्टन स० १३८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर धादिनाथ बृदी ।

विशेष — प्रथ कानाम धलकार चन्द्रिका भी है।

५ द्वर है. प्रति सं०४ । पत्र सं०६। ग्रा०११  $\times$ ५। ले० काल  $\times$  । वेष्टन स०२० ६ प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लगकर जयगर ।

४ ६०२. प्रति सं० ४ । एव ५० १४ । ब्रा० १ $\frac{3}{7}$   $\times$  ५ $\frac{3}{7}$  । ले० काल  $\times$  । येग्टन स० २०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

४.५०३, प्रति स० ६ । पत्र स० १२ । आ ० ६ रे ४ ६ खा । ले०काल स० १६२२ आपाड बुटी १ । पूर्ण । बेस्टन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूटी) ।

५६०४. छुंदकोश टीका— चंद्रकीस्ति । पत्र सं० १७ । घा० १०  $\times$  ४ ६% । भाषा– प्राकृत-संस्कृत । विषय-छुद शास्त्र । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २१४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन संदिर धरितन्दन स्वानी बूदी ।

४८०५. छंडरत्नाविल—हरिराभवास निरंजनी । पत्रस०१७। प्रा०१२ 🗴 ४ ४ व्या। भाषा-हिन्दी। विषय-छत्र शास्त्र। र०काल स०१७६५। ले० काल स०१६०६ सावस्य सुरी प। पूर्स । वैष्टुनसं०१४३३। प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन सदिर अजनेर।

विशेष-प्रथ तथा प्रथकार का वर्णन निम्न प्रकार है।

ग्रथ छदरत्नावली सारथ याकौ नाम । भूषन भन्तीते भरयो कहै दास हरिराम ॥१०॥

x & & & ?

सवतसर नव मुनि क्षणि नभ नवमी गुरूमान । डीडवान हड की पतहि ग्रंथ जन्म थल जानि ।।

५८०६. प्रतिसं०२ । पत्र स०२४ । आर्थण ४ ५ है इन्छ । ले०काल स०१६३५ ज्येष्ठ मुदी ४ । पूर्ण । बेहन स०४५३ । प्राप्ति स्थान—न० दि० जैन मन्दिर श्रजसेंग ।

५८०७. प्रतिसं० २ । पत्रस० २-२४ । आ०५×६६च । ले०काल ४ । धपूर्या । वेटन स० १३१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मंदिर वयाना ।

विशेष--- ५-१०५ पद्य तक है।

५८०८. छुड**बुत्तरत्नाकर टीका-पं० स**ल्ह्स्सा । पत्र स०३६ । भाषा-सरङ्ग । निषय-छुट शास्त्र । रुकाल ४ । से**क्काल स०१**५६४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०७६, ६०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाव भदिर उदयपुर ।

४६०६. म्र'तिम—इति पडित श्री सुल्हरा विरिचितायां छदोवृत्तौ पर् प्रत्यास्याय प्रश् समाप्तः ॥

सब र १४६५ वर्षे भाद्रपद माने कृष्णपक्षे १ प्रतिपदा गुरौ श्री मूलसथे।

१८१०, छंदानुसासन स्वोपज्ञ वृत्ति – हेमजन्द्राचार्य। पत्र न०६० । या०१४ ४ ४ ३७ । भाषा-सन्तर्ग । विषय-छर शास्त्र । र०काल ४ । ले०काल स०१४६० । यपूर्ण । बेष्टनस०३३२ १९७ । प्राप्ति स्थान-–रि०जैन सणकान सन्दिर जदनपुर ।

विशेष - प्रतिम पुरिपका निस्त प्रकार है— इत्याजार्य क्षी हेमचन्द्र विरोचनाथा स्वोपज्ञ छ।तृज्ञायनवृती प्रस्तारादि व्यावसं नाम पद्गोत्याय समाप्त ।

प्रशस्ति—सत्रत् १५६० वर्षे कार्तिकमासे महमागाकेन पुराक लिखितः। महान्मा श्रीगुगनदि पठनार्थः।

५६११. छांदसीय सूत्र—सट्टकेदार । पत्रम० १ । घा० ११  $\times$  ४  $^{\circ}$  इश्व । मापा-मम्कृत । विषय-छः भाग्व । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । घ्रपूर्ण । वेष्टन स० २२७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रयाल मन्दिर उदयपुर ।

५६१२ नदीय छुद्र--नंदिताङ्ग । पत्रस० - । ब्रा० १० ४४ दृखा । साया-प्राकृत । विषय-छुद्र ज्ञान्त्र । र०वात ४ । तं०काल स० १२३ - ब्रागोज बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनस० ४३ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर दीवाजजी कामा ।

विशेष-्४ गाथाएँ हैं।

५८२३. विगलकास्त्र—नागराजा । पनस्य ११ । ब्राट १०१ ×४१ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-द्वर बास्त्र । रक्ताल × नेरकाल × । पूर्ण । वेशुनस्य ३४२ **। प्राप्ति स्थान—दिरु जैन मर्दिर** क्रामिनन्दन स्थामी बूदी । ४८१४. पिगल सारोद्धार $--\times$ । पत्रस $\circ$  २०। खा $\circ$   $-\frac{1}{2}\times$ ५ इन्छ । भाषा-सस्कृत। विषय-छंद शास्त्र। र $\circ$ काल  $\times$  ले $\circ$ काल स $\circ$  १६६१। पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १७३–१३३। प्राप्ति स्थान--कि $\circ$  जैन मंदिर नेमिनाथ टोडागर्यासह (टोक)।

विशेष--जयदेव ने प्रतिलिपि की थी।

्रदश्यः पियलरूपदीप भाषा— × । पत्रसः १ । धाः ६२ ४४ हे इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-छ्रद्य शास्त्र । रच्काल सः १७७३ भादवा सुदी २ । लेच्काल सः १८८६ । पूर्णः । वेष्ट्रन सः १८६ । प्राप्ति स्थान-तिः जैन पार्थनाथ सन्तिः इत्दरगाद (कोटा) ।

विशेष -सोरठा-दिज योखर तेन्य तिस में गोत कटारिया ।

सूनि प्राकृत सौ बैन तैसी ही भाषा रची ।।५८॥

बाहा---बावन वरनी चाल सबं जैसी मोमें बढ़।

बावन वरना चाल सब जमा माम बुद्ध । भूलि-भेद जाको कह्यां करो कबीव्यर मुद्धि ॥५५॥ सबन मनर्गमै वरप उर तिहलरै पाय । भारी गवि दितीय गरू भयो यथ मखदाय ॥५६॥

इति श्री रूपदीप भाषा ग्रथ मतूर्ण । सवन् १८८६ का चैत्र मुदी ७ मनलवार लिखित राजाराम ।

**५६१६. प्राकृत छंद — 🖂 ।** यत्रक्ष २ । घ्रा० ११४५ इन्द्र । भाषा —प्राप्तन । विषय —छ्द्र । २० काल 🔀 । ले०काल 🗴 । पूर्ग्स । वष्टुन स० ११३४ । **प्राप्ति स्थान**— स० दि० जैन सन्दिर खजेसर ।

४६१७. प्राकृत छन्दकोशः —  $\times$  । पत्र स०७। प्रा०१२ $\times$ ६ $^{\circ}$  दख । साया —सस्कृत । विषय — हन्द । र०काल  $\times$  । स०काल  $\times$  । वेष्टतस० ४५६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर सम्बन्द, जयपूर

**५८१८, प्राकृत लक्ष्यम्—चड कवि ।** पत्रस्क २०। प्रा० १० $\S \times \ell$  इङ्ग् । भाषा सम्कृत । विषय—ध्द शास्त्र । २०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । वेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२४७ । प्राप्ति स्थान – म० दि० जैन मन्दिर प्रवर्गेन ।

**५२१६. बडा पिगल**— > । पत्र म०२७ । ध्रा०१ $^{5}$ ×४ $^{7}$  टच । भाषा सम्रुत । विषय- छन्द । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन मं०१७२-१६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

५८२०. भाषा भूवस्य—जसवतिसह। पत्र म०१४। छा०१ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ ६७। भाषा – हिन्दी (पद्य)। विषय—जनकार जानत्र। ५०कात  $\times$ । ले०कात  $\times$ । पूर्यं। वेष्टत स०८२। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मनिदर राजमहत्र टोक।

विशेष - धन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

लिलन निय घर पुरुषके हाव भाव रस धाम । अलंकार सजोग है भाषा भूषण नाम ॥ भाषा भूषण प्र थ को जे देखे चित लाइ । विविच धरण सहित रस संपुक्त सब बनाइ ॥३७॥.

इति श्री महाराजाधिराज धनवंधराधीण जसवंतस्यंध विरचिते भाषा भूषण सपुर्ण ।

**१८२१. रसमंजरी—मानु ।** पत्रस० २१ । प्रा० १०  $\times$  २५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—रस प्रकार । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६३/२२४ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपर ।

विशेष -- प्रति प्राचीत है।

x म.२२. रूपदीपक पिराल $-\times$ । जन्न तुरु। प्रा० २ $^1_2$   $\times$   $^1_3$  इन्छ । भाषा —हिरी। विषय — छुट भास्त्र। र०काल स० १७७३ भादवा सुरी २। लेकाल स० १६०२ सावरा सुरी ६। पूर्ण । बेहुत सं० १०१२। प्राप्ति स्थान — म०दि० जैन मदिर अवनेर। इसका दूपर नाम पिराल रूप दोण भाषा भी है।

५८२३. वाग्महालंकार वाग्महा। पत्र स० २१। घा० ११×५ इच । भाषा—सस्कृत । विषया—प्रानकार । र०काल ×। ले०काल म० १९०४ वैशास मुदी १३। पूर्ण । वेटटन स० १२५७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजमेर ।

विशेष—ःसकी एक प्रति और है। वेप्टन सं०४८१ है।

५६२४ . प्रति सं०२ । पत्र स० ३१ । ग्रा० १०४४ ॄै इश्व । ले० काल 🗴 । ब्रपूर्ण । बेप्टन स० ११२४ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

१८२१. प्रतिसं० ३ । पत्र त० १४ । ग्रा० १०×४ है ३ न । ले० काल स० १७६७ चैन मुदी २ । पर्मा । बेहन स० २०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मस्टिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

विशेष पडिन ल्यालचन्द ने तक्षकपूर में लिखबाया था।

५६२६. प्रतिसं० ४ । पत्रस०२६ । आर०१०×४ ¦ इला। ले०काल × ।पूर्णा। बेष्टन स० १३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागडी बूदी।

५६२६, प्रतिसं० ५ । पत्रस० २१ । आ०६ $\times$ ४ $\}$  दश्च । ले० काल स० १६२६ । पूर्ण । बेष्टुन स०१६२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसशी कोटा ।

किशेष — लिखापिन पहिन जिनदासेन स्वपटनार्थ ।

५६२६. प्रतिसं०६ । पत्रस०१६ । छा० १२४४ इन्त्रा मे०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० ३२६/५५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

५८२६ प्रतिसंo ७ । पत्रसo १० । ल०काल सo १५६२ आयाढ बुदी १३ । पूर्एं । बेबूनसंo ३२४/४५६ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त सन्दिर ।

५ ६२०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ७ । छा० १० $\times$ ४ हे दश । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १८५/७७ । प्राप्ति स्थान — ६० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

५६३१. प्रति सं० ६ । पत्र स०१७ । घा० ११ $\frac{3}{6} \times 4\frac{5}{7}$  इचा ने०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ४५१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।

४८३२. प्रति सं० १०। पत्रसं० ११ । घा० ११३/४४ है इचा। ले०काल 🗴 । घपूर्ण । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर । ४८३३ प्रति सं० ११। पत्रस० १८। ध्रा० १९३४ ४३ दुवा । ले०काल स० १८१६ घ्राषाढ बदी ६। घपुर्सा । बेक्टनस० ४४४ । प्राप्ति स्थान-—दि० जैन सन्दिर लक्कर जयपुर ।

५८३४. प्रतिसं० १२ । पत्रम० ८६ । ग्रा० ११४५ इञ्च । ले०काल ४ । मपूर्ण । वेष्टुन स० १३४ । प्रान्ति रूपान—दि० जैन ग्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

१८३५. प्रति सं० १३ । पत्रस० २३ । ग्रा० १०३ ४४३ इ.चा । ले० काल 🗴 । पूर्णं । बेहनस० १६ । प्राप्ति रूपान — दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा ।

४८३६. प्रतिसं० १४ । पत्र सं० २३ । प्रा० ११ x ६ इञ्च । ले० काल x । पूर्ण । वेष्टन प ० २१४ । प्राप्ति स्थान—दिः जैन ध्रवलाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रांत संस्कृत टीका सहित है।

१८३७. **बाम्मट्टालंकार टोका—जिनवर्द्ध न सूरि**। पत्रस्व ४। मा॰ ११३ ४ ६ इव । माषा-संस्कृत । विषय अनकार । रक्काल ४ । सेक्काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसक १११८ । **प्राप्ति स्थान—** भक् दिव जैन मन्दिर अनकेर ।

४८३६. बाग्मट्रालंकार टोका— वादिराज (पेमराज मुत)। पत्र सं०४६। प्रा०१२४५ इ.ख.। आपा-मस्कृत। विषय प्रतकार। र०काल स०१७२६। लेकाल सं०१८२ भादवा मुदी ४। पर्मु। बेजन म. ४५३। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

ा बहुत सं. ब्युटा । प्राप्त स्थान — । दर्गन मान्दर लक्ष्कर जयपु विशेष — टीकाकानाम कविचडकाभी दिया है।

४८४०. **वाग्महालंकार टोका**— × । पत्र सं ३। प्रा॰ १० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भागा-स स्कृत । विगय-प्रकाकार । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**—महारकीय दि. जैन मन्दिर प्रकाम ।

५६४१. बाग्महालंकार टीका— $\times$ । पत्र स. २७। प्रा॰ १० $\times$ ४३ इ.च.। भाग-संस्कृत । विध्य-प्रमकार । र०कान  $\times$ । ले० कान स. १७५१। पूर्ण । वेष्टन सं. ३२२। प्राप्तिस्थान—दि० जैन प्रप्रवान मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—निम्न प्रकार है।

स . १७४१ वर्षे माधमाने शुक्लपक्षे तिथौ दशस्या चन्द्रवासरे श्री फलेहपुरमध्ये लि । ले. पाठकयो शुभं । प्रति सुन्दर है ।

१८४२. **वाग्मट्रालंकार वृ**त्ति—  $\times$  । पत्र म० १७ । घा. १० $\times$ १ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय— सलंबार नास्त्र । र०काल $\times$ । ले.काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्टन सं. ११८ । प्राप्ति स्थान— म. दि. जैन मन्दिर प्रजमेर ।

५ ५२३, वास्महासंकार वृत्ति—सानप्रमोद वाचकगरिए । पत्र स. १७ । प्रा. १२ $\times$ ४३ इंच । मारा —संस्कृत । विषय—प्रतंकार । रकाल सं. १६६१ । ले,काल  $\times$  । पूर्ण । १४२ । प्रास्ति स्थान—दि. जैन मन्दिर प्रादिनाथ वृदी ।

५ ५ ४४ . **बृतचिन्द्रका** — कुरुएक **वि ।** पत्र सं २ -४४ । म्रा० ६  $\times$ ६ . इच । भाषा हिन्दी (पदा) । विषय-छुद शास्त्र । र.काल  $\times$  । ले काल स . १ -१६ । म्रपूर्ण । वेष्ट्रन स . ३५३ । प्राप्ति स्थान भ . दि. जैन मन्दिर छजमेर ।

विशेष - पूष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री कृष्णकवि कनानिधि कृत वृत्विदिकाया मात्रावर्ग वृत्त निरूपण नाम द्वितीय प्रकरण । मात्रा छंद एवं वर्ण छद ब्रलग २ दिये है ।

मात्रा छद २१६ एवं बर्गा छद ३८० है।

४**८४४. बृत्त रत्नाकार** - ४ । पत्र ग १ । या ६ /४४ | इच । भाषा-प्राकृत । विषय — छद जाहत्र । रुकत्त ४ । पर्मा । वेष्टन स**.** १६६ । **प्राप्ति स्थान** --दि. जैन मन्दिर देवलाना (व दी)

्रद्र**४६. बृत्त रत्नाकार— सह केदार**ापत्र म०० । ग्रा०२ ¦४४ इचा भाषा—न स्कृता विषय—छदणस्त्रा र०काल ४ । लेकाल स० १०१६ माह सुदी १० । पूर्णा वेट्न स० १२४२ । प्राप्ति स्थान—न. दिर्जन मन्दिर धन्नेर्ग

**५८४७ प्रतिसं०२** । पत्रस्वास्तानः १० ४ ४ दुः इत्याः लेवनालः ४ । पूर्णः । वेष्ट्रनस्व १९६१ । **प्राप्ति स्थान** --सः दिव जैनः मन्दिर स्रवसंगः ।

६६४६ प्रतिसं० ३ । पत्र स० ११ । आ० १० ] ४.४ । ले०काल स० १७७६ मात्रण बुदी ऽऽ । पूर्ण । बेग्टन म० ११६० । **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मन्दिर स्रजमर ।

१८४८. प्रतिसंव ४ । प्रमुक्त १ । याव १०४५ दश्च । लेव काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस्व १६४ । प्राप्ति स्थान — गव्दिव जैन मन्दिर अजनेर ।

**१८५०. प्रति सं० १ ।** पत्रस० ४ । घा० १० $\frac{1}{2} \times 4^n$  इच्छ्य । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनस० २६४-१०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का छ गर्ग्यर ।

**४८५१. प्रतिसं० ६** । पत्र स ०१८ । या०१० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इञ्च । ले० वाल  $\times$  । पूर्ण । ये० स०१८६-८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर कोटडियो का हुनरपूर ।

४८५२ प्रतिसं० ७ । पत्र स.०.२४ । घा० १९३४ ४ इञ्च । ले० काल 🗴 । वेष्ट्रन स.०.४५६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर लक्ष्यर, जयपुर -

१८५३ प्रतिसं० ६ । पत्रस० १० । धा० ११ $\frac{3}{2} \times 1$ ्रद्धा । ले० काल स० १५३६ ज्येष्ठ बदी ४ । बेग्रन स० ४५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन भन्दिर लक्कर जगपुर ।

विशेष — मबाई जयपुर के ब्रारिनाथ चैत्यालय में विद्वान् कुल्लादास के शिष्य जिनदास के पठनार्थ लिला गया था।

५६५४ प्रतिसं० ६ । पत्रस० ३ । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

४६४५. प्रतिसं० १० । पत्र स०१२ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०७२, ६०६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सम्बनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष--- छह प्रतियाँ भीर है जिनके बेप्टन स० ७३/६१० से ७८/६१६ है।

४८ म.४६. प्रतिसं०११ । पत्र सं०५७ । त्रा०११ ४ इ'च । ले० काल ४ । पूर्ण। बेष्टन स०६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोग्मली कोटा।

प्रमुख प्र**ात सं० १२ ।** पत्र स० १४ । ग्रा० १० x ६ इच । ले० काल स० १८२६ मगसिर मुदी ४ । पूर्ण । वष्टन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

५८५८. प्रतिसं०१३ । पत्र स०१४। ग्रा०१२  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ले०काल स०१६४० माध सुरी २। पूर्ण । बेपुन स०६/१६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष —हुम्बड जातीय बाई जी श्री बाई त भट्टारक वादिचन्द्र के जिल्य बह्या श्री कीर्तिसावर की प्रदान किया था।

४८५६. प्रतिसं० १४। पत्रसः०१६। घा०१० 🗴 ५ इचा। ल०काल स०१७२०। पूर्णः। वेष्टनस०८०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रमिनन्दन स्वामी, यूंदी।

४८६०. प्रतिसं**०१४ ।** पत्रस०<sup>२७</sup> । आ०११ × ६ इखा । ले०काल × । पूर्णा । वेष्टनस०११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर क्रादिनाथ बृदी ।

**१८६१. प्रतिसं० १६।** पत्र स०८। प्रा० १०१  $\times$  ४१ इञ्च । ले०काल  $\times$ । प्रपृर्ण । बेष्टुत स० १२२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी) ।

४८६२. **बृतरस्ताकर**—कालिदास । पत्र स० ८। त्रा० ११ 🗴 ५ इख । भाषा—सस्कृत । विषय छन्द्र शास्त्र । ४० काल 🗴 । लेक्काल स० १८१६ । पूर्ण । बेष्टुन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वाभी बुंदी ।

विशेष—भानपुर में रियभदाम ने प्रतिलिपि की थी।

४८६३, बुलरस्नाकर टीका—पं० सोमचन्द्र । पत्र स०१४ । भाषा—सर्वन । विषय— छुद बास्त्र । र०काल म०१३२४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन ७१ । प्राप्तिः स्थान - दि० जन समयनाथ गदिर उदयपुर ।

विशेष - रचनाकाल निम्न प्रकार है।

श्री विकाममृषकाल नदकर कृषीटयोनि कृषीटयोनि श्री सम्बं (स. १३२४) समग्र किलोटेरिये बित्तरिय मुख्य वोषा करी ।

४८६४, वृत्तरत्नाकर टीका—जनार्दन विवृध । पनस० २८ । प्रा० ११ ×४, इजा पापा-सस्कृत । विषय – क्षर शास्त्र । । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० ११६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सन्दिर प्रार्टिनाथ वृदी ।

विशेष—प्रशस्ति इति श्री जनार्दन विव्ध विरक्तिताया भावार्थ दीपिकाया वृक्तरनाक्ष-२ टीकाया प्रस्तागदिनिक्यमा नामा परटो प्रध्याय ।

**४६६. वृत्तरत्नाकर वृत्ति—समयमुंदर।** पत्र न०४२। ग्रा०१० $\frac{1}{2}$ ४ $\frac{1}{2}$ ६ छ। । प्राप्त १० $\frac{1}{2}$ ४ प्राप्त स्थान—दि॰ जैन मदिर ग्राम्त्रन्त । विषय-छद शास्त्र । र०काल  $\times$  । ते॰ काल  $\times$  । । प्राप्त प्राप्तन्त स्थान—दि॰ जैन मदिर ग्राप्तन्तन स्वामी वृदी।

**प्रत्यिम.पुष्पिका**—इति वृत्तरत्नाकरे केदार शैव विरिविते छादीस.समयसुण्टरोपाध्याय विरिविते सुगम वृत्ती षटोऽप्याय ।(७५०।।

**५६६७. प्रतिसं० २ ।** पत्र स०३० । द्या०१० imes ४ इन्छ । ले० काल imes । सपूर्ण । वेष्टन सं० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पारुर्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५८६८. **बृत्तरत्नाकर वृत्ति —हरिमास्कर ।** पत्रस**ः** ३७। प्राः ११४५) इश्व । माषा-संस्कृत । विषय खुद शास्त्र । र०काल × । से०काल सः १८४७ पीप मुदी १० । पूर्ण । वेष्टनसं० २६६ । प्राप्ति स्थान —दिर्जन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४८६६. शब्दालंकार दोषक —पौंडरीक रामेश्वर । पत्र स०१८ । ग्रा०१०३ ४५३ इस । भाषा – सस्कृत । विषय — मलकार । २०काल  $\times$  । ले० काल स०१८२७ चंत्र मुदी १४ । वेष्ट्रन स०२१० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

४८७०, श्रुतबोध—कालिवासः । पत्रस०६ । झा०११४४६ व । भाषा—सस्ट्रान । विषय—छद शास्त्र । र०काल ४ । ले०काल स०१८६८ । पूर्ण । वेष्टन स०१४१८ । प्रास्ति स्थान— म० टि० जैन मटिर झजेर ।

५६७१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५ । ब्रा॰ ६४४ } इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेप्टन स० १२६५ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

५६७२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २ । प्रा० १०३ 👋 ४३ इचा । ले०काल 🗴 । पूर्णः । बेप्टन स० ६६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

५८७३. प्रति स०४ । पत्र स०४। ले॰काल॰ 🗴 । पूर्एं। येष्ट्रन स०२५०। प्राप्ति स्यान--- दि॰ जैन पचन्यती मन्दिर मरतपुर ।

**५८७४. प्रतिसं० ५** । पत्र स०६ । घा० १० $\frac{3}{7} \times 6^{\frac{1}{7}}$  इल्बा । ले० काल स०१८४४ । पूर्स्स । वैष्टन स०२७०-१४१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर कोटडियो का इन्स्पुर ।

५८ ५ ५ फ़्रिसं**० ६** । पत्र स०७ । धा० १ 🗴 ५ इच । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० २६७-१०६ । **प्राप्ति स्थान**िद० जैन सदिर कोटडियो का ह्रगरपुर ।

५ ८७६. प्रतिसं० ७ । पत्रस०६ । प्रा० ६ $\frac{1}{7}$  ४  $\frac{1}{7}$  इत्य । प्राथा-सस्क्रत । विषय-छर । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८३५ । पूर्ण । वेष्टन स० २४८-८६ । प्राधित स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

विशेच-सागंपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

४८७७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४ । प्रा० १० $}$  ४ ४ १ इ.स. । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १४६ । प्राप्ति स्थान—ंदि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

४८७८. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६ । प्रा० १० ४४ इला । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष --इन्दरगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

१८७६. प्रतिसं० १० । पत्रस० ४ । ग्रा० १०४ ४३ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेप्टन स०३६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी) ।

विशेच-भ० देवेन्द्रकीति ने प्रतिलिपि की थी।

१८८०. प्रतिसं० ११ । पत्र स० ३ । आर् १०३/४४ है इश्व । ले०काल х । पूर्ण । वेष्टन सं• ३१० । प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी) ।

४८६६ प्रतिसं० १२ । पत्र स०४ । घा०१० है - ४ इखा । ले०काल स०१६६२ । पूर्ण । वेष्टतसं० ६६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दयलाना (ब्रुदी) ।

विशेष-प्रशस्ति निस्त प्रकार है---

सबत् १०६२ स्रापाटमाने णुक्त पक्षे तृतीयार्था गुरुवासरे सवाई जयपुर मध्ये हरचन्द लिपिहतं बाचकाना ।।

१८८८ - प्रतिसं० १३ । पत्र स० ५ । ग्रा० १०१४ ४ इञ्च । ले०काल स० १८७७ । बेप्टन स० २०७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१८६६ २ प्रतिसं० १४ । पत्रस्य ६ । आतः हैं ४४ है इज्य । लेव काल मव १८७७ । पूर्ण । वेष्टन संव ११० । आर्थ्य, स्थान - दिव जैन अध्याल प्रचायती मध्यर अलवर ।

४८६४. प्रति सं १४। पत्रसः १५। घा० १४६ इश्व । ने०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसः ४९। प्राप्ति स्थानः दि० जैन मन्दिर घादिनाथ स्थामी मालपुरा (टोक)

५६६५. प्रतिस० १६ । पत्रस० ४ । झा० ६ , ५६ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौचन्यित मालवुरा (टोक)

४८८६. प्रति सं० १७ । पत्र स०४ । प्रा० १४६ इश्व । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन मन्दिर कोटयों का नैसाया ।

**५**८५**७. प्रतिसं० १८ ।** पत्र स०४ । स्रा० १० $\times$ ६ $^{5}$  ६ च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स**०** २१/१६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर पश्चायनी दुनी (टॉक)

**५८८८. प्रतिसं० १६ ।** पत्रस० ३ । धा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इख । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० २५४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मंदिर प्रतिनन्दन स्वामी, बुदी ।

 $X = \mathbb{R} \in \mathbb{R}$  शुल्बोध टीका — मनोहर हार्मा । पत्रसः १४ । या० ७ $\frac{1}{2} \times 8$  दल्वा । भाषा — संस्कृत । विषय — छन्त शास्त्र । २०काल  $\times$  । वेल काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सः २३४ । **प्राप्तित स्यान** — भ० दि० जैन पहिन्द प्रस्तेप्त ।

X=00. श्रुतबोध टीका — वरशम्मं । पत्रस० १२ । प्रा० ११ $\times$ ६ इचा । भाषा सस्त्रत । विषय - छन्द शास्त्र । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १९३३ वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६-१२ । भारिस स्थान — दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

५ ६६ १. श्रृतकोध टोका — हवंकीस्ति । पत्र स०२०। प्रा०११३, ४४३ हरून । भाषा-संस्कृत । विषय — छन्द शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६०१ भाष्या सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन सं०२६ ॥ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय स्वामी मालपुरा (टोक)

 $\chi_{E}$ ६२.  $v_{2}$  गारदीपिका — कोसट सूपाल १ पत्र स०६ । या० १० $\times$  ४ ट्रे इञ्च । सावा — सस्कृत । विषय — रस स्रवकार । र०काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० १०१ । **प्राप्ति** स्थान — (इ० जैन सन्दर दबलाना (ब्रुदी)

५८६३. संस्कृत मजरी—  $\times$  । पत्र स०६। ब्रा०१० $\times$ ४ इश्व । नाषा—सम्कृत । विषय— छन्द । र० नाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० २४४-६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का पूर्णपुर ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

६०२ ]

# विषय--नाटक एवं संगीत

४८६४. इन्द्रिय नाटक — × । पत्रस०१६। आ०१२×७३ इच। भाषा —हिन्दी पद्याः विषय---नाटक । र०काल स०१६४४ । ल० काल × । पुर्गा विष्टन स०१४० । प्राप्ति स्थान----दि० जैन मन्दिर राजमहल (टीक)

विशेष-नाटक की रचना ग्रंथकार न अपने शिष्य तिलोका पाटनी, राजबल्लभ नेमीचन्द फलचन्द पटवारी खेमराज के पुत्र ग्रादि की प्रेरिता में ग्रापाढ मास की ग्रण्टाख्निया महोत्मव के उपलक्ष में स० १६४५ में केकड़ी में की थी। रचना का ग्रादि ग्रन्त माग निग्न प्रकार है।

#### ध्रादि माग--

परम पृत्रप प्रमेस जिन मारद श्री वर पाय। यथा शक्ति तुम ध्यानतै नाटक कहू बनाय ॥

x इक दिन मनमदिर विर्थं सुविधि धारि उपयोग।

प्रकट होय देखहि विविध इन्द्रीन को अनुयोग ।।

#### प्रस्तिम भाग-

जिय परमान त्रिय भेट बनाई । णुम श्रर श्रणुभ बृद्ध युगाई। नाटक ग्रमुभ शुभई दोय जारु। शृद्ध कथन धनुभव हियमा रू।। मो नाटक पुरसा रस थाना. पहिन जन उपयोग लगाना । उतपत नाटक की विध जा 1 । विद्याशिष्य के प्रेम लखान । ध्रप्टाह्निक उत्सवजिन राजा। साद मास का हम्रा समाजा। शक्र तिथि ग्यारस मज पासा । ग्राये शिष्य नाटक करि भ्रासः ।ः गोत पाटगी नाम निलोका. राजमल्ल नेमी बन्द कोका। फूलचन्दजी है पटवारी, कहे सब नाटक क्यों कही सुखकारी ।। क्षेमराज मृत बैन उचारी, इन्द्री नाटक है उपकारी। धर्म हेत् यह काज विचारयो,

नाना धर्थ लेय मन घारयो ।।

लाज त्याग उद्यत इस काजा, लह्य भेद वेद न श्रसमाजा । पारल क्षमा करो बूधि कोरी, हेर बर्धकुल्याय घटोरी ।: नीर बूद मधि सीप समाई, केम मुक्त नहीं हो प्रभुताई। कर उपकार सुधारह बीरा, रित एह नीह तूम धीरा ।।७।1 कविनाम ग्रहगाम बतःया, श्रर्द्ध दोय चौपई पर गाया। मगल नृपति प्रजा सब माजा, ए पुरसाभयो समाजा ॥=॥ नादो चिरजीवो साधर्मी, भ्रन्त समाधी मिली सतकर्मी । धर्मशासना सब मुखदायी, रहो ग्रम ड यु होय बहाई ॥ उगगीसो पचान विपै नाटक भयो प्रमान । गाव केवन्दी धन्य जहा रहे सदा मिलमान ।।

४८६५ ज्ञानसूर्योदय नाटक वादिबन्दसूरि। पत्रन०३७। ग्रा०८,४५१। भागा— सस्कृत। विषय — तटक। १०७०ल स०१६४८ मात्र मुदी ४। ले०काल स०१८००। पूर्ण। वेकृत स∙ १२६४। प्रास्ति स्थान— म०१२० जेन मन्दिर, प्रजनेंग।

भूस्हर् प्रति सं०२ । पत्रम०४३ । आ०११×५ है इञ्च । ले॰काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टन स० १२५६ । प्राप्ति स्थान - म० दि० जैन मदिर अजेमर ।

५८६७ प्रतिसं०३ । पत्रस०३१ । प्रा०१२ ४५१ इ.च । लंक्काल स०१८२८ आयाड सुदी७ । पूर्णाचेष्टन स०८४ । प्राप्ति स्थान—िद०जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष—केणरीसिंह गे पनिलिश की थी।

४,६६८. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३६ । या० १२ ४ ४, दश्च । ले०काल स० १७६२ कालिक सुदी ३ । पूर्यो । बेष्टन स० २४१ । प्राप्ति रूथान – दि० जैन मन्दिर दीशनजी कामा ।

प्रम**६६. प्रति सं० ५** । पत्र स० ३३ । झा० ११×५ इश्व । ले० कात स० १७३० श्रासोज बुदी ५ । पूर्ता । बेष्टन स० ५२ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन पवायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष - व्यावर नगर मे भातिनाय चैत्यानय मे प्रतिनिधि की गयी थी।

५६००. प्रति स० ६ । पत्र स०६६ । प्रा०६ट्टै ४४; इञ्च । ले० काल स० १८७४ माघ बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० १३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती प्रदिर करौती ।

विशेष-- गुमानीराम के सुपुत्र जीवनराम ने लिखकर करौली के मन्दिर में चढाया था।

१६०१. जानसूर्योदय नाटक भाषा—सागचन्द । पत्रसं० ६०। घा० १० १४६% इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—नाटक । र०काल स०१६०७ भादवा मुदी ७। ले०काल स०१६२६ ज्येष्ठ सदी २।पर्गा। वेग्टन स०६२। प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मदिर घजमेर।

५६०२ प्रति स०२। पत्रस० ११। मा०१०४५ देवचा ले०काल स०१११६। पूर्ण। वेस्टन सं०३५७। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा।

१९०३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४१ । ले॰काल नं० १९२२ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन बडा पत्रायती मन्दिर होग ।

५६०४. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १०४ । ग्रा० १२ ४५ इन्च । ले०काल स० १९१५ मादवा सुदी ३ । पूर्ण । बेठन स० १० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

**५६०५. प्रति सं० ५ ।** पत्रतः ४५ । मा० १०१४६१ डज्व । ले० काल १६२६ । पूर्णं । बेष्टन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मंदिर बयाना ।

१९०६ प्रति सं०६ । पत्रस० =३ । बा० ११ ४४ , इन्या । ते०काल सं०१६३७ जेम्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेटून स० ८१ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेहपुर वेक्षावाटी (सीकरः

विशेष — पालमग्राम मे श्रावक ग्रमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । लाला रिलबदास के पुत्र रामचन्द्र ने जिल्हाबा था ।

५८०७. प्रतिसं० ७ । पत्र त० ८४ । प्रा० १० ४६ इ.च. । लेब्काल स० १६४१ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । बेप्टन स० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर स्वामी बूंदी ।

४६०८. प्रतिसं० ८ । पत्रन० ४४ । सा० १२ रे ४८ इल्ब ।ने० कान स० १६३६ वैशाय बुदी ४ । वेटन स० २८ १०८ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पचायती मन्दिर सनवर ।

५६०६. प्रतिसं० ६ । पत्रत्त० ७२ । धा० १६ $\frac{1}{2}$  ४ ८ इञ्च । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रत सं० १०३ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन ध्रधवाल पचायती मन्दिर धलवर ।

५६१०. प्रतिस० १०। पत्र स० ५६। घा० १०) ४७ इश्वा ले० काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन स० १०४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रग्रवाल पचायती मन्दिर प्रलवर।

प्रदेश प्रति स० ११ । पत्र स० ६२ से अकाल स० १६१४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १६ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन प्रवासकी मदिर हण्डायालों का डीग ।

५६१२. ज्ञानसूर्योवय नाटक - पारसदास निगोत्या। पत्र म० ७६। या० १९ ४८ है इन्दा भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र०काल २० १६१७ वैज्ञाल बुदी ६ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वेप्टन स० ४३६ । प्राप्ति स्थान-विर्णंत मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

५६१३. प्रतिसं० २ । पत्र स०५० । घा० ११३ ४ = १ इ.ख । ले०काल ४ । श्रपूर्णं । वेष्टुन स०५३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मस्दिर लक्कर, जयपूर ।

४**६१४. प्रति स**०३ । पत्र स०१०४ । म्रा० ६×६ इच्छा। ले० काल स०१६१४ । पूर्ण। वैध्टन स०४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर कामा।

४६**९४. प्रतिसं० ४।** पत्र सं० ४०। ब्राठ १२ ४४ ७ इक्त्य । लेक्सल स १६३४। पूर्ए । वेष्टुन स**० २४। प्राप्ति स्थान-**-दि० जैन मंदिर चौषरियान मालपुरा (टीक्र)। **५९१६ प्रति सं०५।** पत्रस० ४७। ग्रा० १२×५३ इच्छा। ले०काल स० १६३६ (ना० २-४-१⊏२२)। पूगा। बेष्टन स०११४-८७। प्राप्ति **स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

विशेष --राजा सरदारसिंह के राज्य मे प्रतिलिपि हुई थी।

**५६१६. प्रति सं०६ ।** पत्र स०३५ । म्रा०११/ म्हल्ब । ले०काल म० १६३६ फागुस बुदी ७ । बेब्रन म०२२३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

५६१ = ज्ञान सूर्योदय नाटक $\cdots \times 1$  पत्रस० १७ । भाषा -हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टुनस० २६,१७३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रायनो मस्दिर फलबर ।

१८२०. प्रबोध चंद्रीवय नाटक — कृष्णमिश्रा । प्रसः ७० । या० १३३ ४५ १८स । भाषा — सन्द्रत । विशेष — नाटक । २०काल ४ । लेकाल म० १७६१ । पूर्ण । वस्टन म० १४५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनस्या स्वामी वृद्ये ।

विशेष - दीक्षित रामदास कृत संस्कृत टीका गहित है। बीच में मुल तथा ऊपर नीचे टीका है।

स० १७६५ वर्षे लिपिकृतं वधनापुर मध्ये भ्रविराम गठनायं प्रहोत (प्रोहित) उद्देशम ।

**५६२१. प्रतिसं० २** । पत्रस० ६८ । छ० ११ $\times$ ५ $\xi$  उच । ले० काल  $\times$  । पूर्म । वेघ्टन स० ११ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

विशेष—इति श्री मदभट्ट विनायकात्मत्र दीक्षितः रामदासः विरचितं प्रकाशास्य प्रवोध चन्द्रोदयः नाटक ब्याख्यान जीवन्मुक्ति निरुपण् नाम पण्टाकः ।

**४६२२. सदनपराजय — जिनवेबसृरि** । पत्रस० १२ । घ्रा० १०  $\times$  १ इस । भाषा सम्ब्रह्म **।** विशेष — नाटक । र०काल  $\times$  । ले० काल स १६२० छानोज गृदी ११ । पूर्ण । येष्ट्रन स०२४० । **प्राप्ति** स्थान — महारबीय रि० जैन मन्दिर प्रजनर ।

५६२३. प्रति सं०२ । यतस० ७४ । घा० ११ ५ ५ टल । ले०काल स० १८४१ वैशाख मुदी ३ । पूर्ण । वेटनस० ३६६ । प्राप्ति स्थान—स० दि० प्रन मन्दिर अवसर ।

विशेष - प्रति हिन्दी टीका महित है।

५६२४. प्रतिसं० है। पत्रस० ४६। प्रा० ११८४) इश्व । ले० काल स० १६०७ फालगुन बुदी ५ सोमवार । पूर्ण । बेप्टन स० ८३। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयवुर ।

५६२५. प्रतिसं०४ ः । पत्र स०३५ । घा०११ ८४) इच्छ । ते० काल स०१८०० ज्येष्ठ सुरी १२ । बहुन स०८४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लाकर, जयपूर ।

विशेष—सवारा नगर के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प० भ० महेन्द्र कीर्ति ने प्रतिनिधि कराकर स्थय ने संगोधन किया था।

५६२६. प्रतिसं० ५ । पत्र म०३७ । ग्रा०११४५ इ.च । ले०काल स० १६२६ मंगसिर बुदी ४ ) पूर्ण । बृष्टुन स०,१७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रशस्त्र विम्त प्रकार है---

मन् १६९६ वर्षे मार्गवार वरि ४रवी श्री मूल्यमे सरम्बतीमञ्चे बलात्कारणे कु वह राज्याभियये 
क उपनित तराहे महारक मकलकाति तराहे मुजनकाति तराहे भहारक आनम्भ्यणदेवा तराहे स्कृतक 
विजयकातिकेवा तराहे महारक कुमक्यकेवा तराग्रहे महारक मुस्तिकतिकेवा तत्त्र कुमा साम्याभियो 
मकलभूपण कुणकेणात् शिष्ण १० हम्बा पठनार्थ भीलोडा बास्तव हु बडडातीय दो. भूला भार्या वा. पृतिनि 
तयो तुन पर्मभाभुग्यर जिनगुजापुरदर छाहारभयभीगम्यणास्त्रदानिकारणैकतत्त्र जिनणालनभूगण 
हार दो. एकर भार्या मक्यदे एतेया मध्ये दो सकरस्त्रेत स्वजाना वरस्यो कर्म क्षयार्थ श्री मदन पराजय नाम 
हार दो. एकर भार्या मक्यदे एतेया मध्ये दो सकरस्त्रेत स्वजाना वरस्यो कर्म क्षयार्थ श्री मदन पराजय नाम 
हार दो त्याया दत्ते।

बा. जिवदास तत् जिप्य पहित बीरभाग पठनार्थ।

५६२७ प्रति स० ६ । पत्रस० ३२ । ब्रा० १०३ ४ ४३ इला । लेक्सल स० १६६० वैद्याल मुदी ६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुदी ।

प्रशस्ति — सवत् १६६० वर्षे मिनी वैशाय नागं शुक्त पक्षे नवस्या तिथी रिववासरे श्री मूलसचे नव्यास्ताये मरस्वत्रीपच्छे कु बकु दाचार्यस्वयं मङ्गलाचार्यः श्री नेमिचन्द्र जी तृत्यष्ट्वे मङ्गलाचार्यः श्री यश कीर्ति नांच्छाय ब्रह्म गोपालदास स्नेनलिपकृतांमद सदनपराजयाह्नव स्वास्परत्नार्थं कृतसम्बद्ध सच्चे ।

५६२८. प्रतिसं० ७ । पत्रसः ५१ । या० १० है 🗴 ५ इन्त्र । लेक्सल सः० १०४२ चैत बृदि ३ ।पुर्गा । वेप्टन सः० ३२८ । प्राप्ति स्थान — दिव्जैन मन्दिर वार्थनाथ चौगान बूदी ।

५६२६. प्रति सं० ६ । पत्र स० ३१ । घा० १०३५६ इ.च । ते० काल 😕 । पूर्ण । बेष्टनसं० १३७ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ योगान बुदी ।

५६३०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ८६ । या० ६imes४६) इ.च.। ले० काल imes । पूर्ग । बेष्टनस० १३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्य्वनाय चौगान वृदी ।

५६३१. प्रतिसं०१०। पत्र स०५१।लं०काल 🔀 । पूर्याः वेष्टन स०५५-३५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

५६३२. मिथास्व खंडन नाटक वलतराम साह । पत्र मं० १८३ । मापा हिन्दी । विषय -नाटक । र०कारा म० १८२१ पोष मुदी ५ । लेक्काल सा १९१२ खासोज मुदी १२ । पूर्यो । वेन्टन स० १४६ । प्राप्ति स्थान वि० जैन पचायती मदिर मस्तपुर ।

४६३**३. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १०६ । घा० १०३ ४४ है दश्व । ले**०काल स०** १०५७ प्रायाड मुरी १४ । पूर्ण । बेटून स० ६६-६७ । प्राप्तः स्**यान**---दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) । विरोध ---तिककुर मे प० जिवजीराम ने महजराम व्यास से लिखवाया था ।

५८३४. प्रतिसं० ३ । पत्र स०१६ । झा०१ ४ ६ इ.च । ले०काल ४ । झपूर्ण् । बेष्टन स० १२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टांक) ।

५६३५. प्रतिसंव ४ । पत्र सव १६ से ११६ । प्राव ६२,४ ६ इच्चा । लेव काल सव १८४७ । प्रपूर्ण । बेप्रत सव १६३ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मदिर राजमहल टोका ।

५६३६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १०१ । आ० १० imes ५ इथा । ले० काल स० १८८८ । पूर्यो । बेष्टन स० ५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पनायती दूनी (टोक) ।

विशेष - दूनी के जैन मन्दिर में सा० १६३६ में हजारीलाल ने चढाया था।

**५६३७. ब्रक्तिसं० ६ ।** पत्र स० ६१ । ब्रा० १० × ५ है इन्जा न्से लेक्सल म० १८७६ प्रथम ब्रासीज सुदी = । पूर्ण । बेष्टुन स० ७३ । **प्रााप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पत्रायती दूरी (टोंक) ।

विशेष -- महात्मा गुमानीराम देवग्राम वासी ने तक्षकपूर मे प्रतिलिति की थी ।

५६३८. प्रतिसं० ७। पत्र स० ३६ । घा० १३ ४ ४ ई इश्व । ले० काल 🗴 । घपूर्ग । बेपून स० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बंदी ।

५६३६. प्रतिसं० म । पत्र स०५६ । घा०१११४४ है इच । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । बेष्टन स०२७० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर पाप्रनेताय चौगान ब दी ।

**५६४०. प्रतिसं० ६** ।पत्रस० ४४ । आ० १२ × ५<sup>3</sup> द्वः । ले०काल × । अपूर्ण । वेप्टन स० २३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर वोगसली कोटा ।

**५६४१. प्रतिसं० १०** । पत्रस० १२७ । प्रा० ६ $(X \times Y)$  इ.च. । ले०काल  $(X \times Y)$  । पूर्ण । वेग्टन स० १८६ ६७ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**५.६४२ प्रतिसं० ११** । पत्रम० ६३ । प्रा० १२ $\frac{1}{2}$  प्रदेश । के०काल  $\times$  । पुर्यो । वस्टन स० ४६-३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

५६४३. प्रतिसं० १२ । पनस० ११५ । आ० ११ × ५ इचा । ने० काल मा १८६१ आयाः ह बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०-४७ । प्राप्ति स्थान—िंद० जैन मन्दिर बडा बीम पथी दीमा ।

विशेष--शद्ध एव उत्तम प्रति है।

१६४४. **१३,।** पत्र स० २६ । आ० १२४६ इश्व । ले०काल स० १६५७ जेठ सुरी १४ । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० ५० । प्रा**प्ति स्थान**-दि० जैन सम्बाल प्रचायती मन्दिर म्रलवर ।

**५६४५. मिश्यास्य खंडन नाटक —** ४ । पत्रस० २४ । ग्रा० १२ ४ ८ ८ खा । मापा-हिन्दी गदा । विषय—नाटका । र०काल ४ । वे० काल स० १६४५ । पूर्ण । और्ण । वेष्टनस० २०-७८ । **प्रास्ति** स्थान- दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडाराय(सह (टोक) ।

५६४६. हनुमन्नाटक—िमश्र मोहनदास । पत्र स० २७ । घा॰ १३ $\times$ ६% दख । भाषा- सस्क्र । विषय-नाटक । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २०० । प्रारित स्थान—- दि० जैन मिरिर प्रिश्निदन स्वामी, बूदी ।

विशेष -- प्रीत सटीक है ।

**५६४७. तालस्युरज्ञान**—  $\times$  । पत्र स०६। घा०११  $\times$ ५ इत्थ । भाषा नस्कृत । विषय-संगीत । २०कास  $\times$ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०४२२ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन समवनाय मन्दिर उदयप्र।

म्न तिम प्रशस्ति—हित श्री मावभट्टमगीनरामानुष्यवन्द्रवाण्ति विरक्ति वतमुपैण्यन्निति शत-पषस्य प्रथम श्रात प्रभावः । विश्वति पद तालाः ।

**१६४८.. राग्नमालां**  $\times$  । पत्र त० १ । प्रा०१०  $\times$  ४ इच्च । माषा सस्कृत । विषय-राग रागितयां के नाम । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स० २१२ । प्राप्ति स्थान  $\longrightarrow$  दि० जैन मदिर सक्कर, जयपुर्तः ५६४६. रागरागिनी (सचित्र) —  $\times$  । पत्र स० ३० । घा० १०  $\times$  ७२ इचा । विषय-संगीत । पूर्ण । वेप्टन स० ३–२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

विशेष--३० राग रागनियों के वित्र है। वित्र मुन्दर है।

**५६५०. रागमाला**— × । पत्रसं० ५ । भाषा-हिन्दी । विषय-संगीत । र०काल  $\times$  । ले**०** काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०४१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

५६५१. सभाविनोद (रागमाला) — गंगाराम । पत्र स०२४। घा० ५ $\frac{3}{8}$   $\times$  ४ इख । भाषा-हिन्दी पछ।। विषय-सगीत । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१२५४। प्राप्ति स्थान—भा० वि० जैन मस्टिर प्रजमेर ।

### विशेष--ग्रादिभाग--

गावत नावत घापही डौरु में सब घ्रग । नमो नाथ पैदा कहै सीस गग घरचग ।।१।। हिंगु चाबै घ्रगम ग्रांत मनस्य की गम नाहि । विषट निकट समही रहे बोलैं घटघट माहि ।।

### धातिम-पट राग प्रभाव कवित्त -

भैरव ते थाती थित विरद किरत जात।

मान कोण गाये गुनी संगत जरातु है।
हिंडोर की खालगर्त हिंडोर झाथ भोटा लेन
दीगर गाये गुनी दीपक जरातु है।
श्री मैं इह गुन प्रकट बलातत है मुकी।
कथ हमी होन फिर हुनमान है
गुगाराम कहें मेयदाय को प्रमाव
इस मेय करमातु है।
इति थी समाविनोद रामाला प्रभा पूर्ण ।

**४६५२. सगीतशास्त्र**—  $\times$  । पत्र स० ६१-६४ । प्रा० १२  $\times$  ४६७ । माषा-सस्कृत । विषय-सगीत । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेहन स० ४६४/६१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बनाय मन्दिर उदयपुर ।

**५६५३ संगोतस्वरमेद**—  $\times$  । पत्र स०४ । म्रा० १२  $\times$  ४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-संगीत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । म्रपूर्ण । बेष्ट्रन सं० ४६४/६१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संमवनाय मन्दिर उदयपुर ।

-----

## विषय -- लोक विज्ञान

विशेष - प्रति पत्रते कागज पर है। एक पत्र पर २७ पत्तिया है। ब्रान्तिम पुरिपका िग्न प्रकार है—रृति चन्दपयात्ती सूत्र। ग्रंथायथ २००॥ ग्रांतिम - थी गुशारापुर्या प्राबाट ज्ञाति मकटमजनिष्ठ।

जीतारः सथपितः समलसद्धमंत्रमंतः ॥१॥
तस्यानुः कः विज्ञाद्द्याद्वारातीनगुगकनिता ।
तस्यानुः कः विज्ञाद्द्याद्वारातीनगुगकनिता ।
त्रान्तान्यः मृत्वित्यां लयास्यः, सम्प्रज्ञातं समृद्धः ॥
आतु न्तराणा मृत्या सायुक्य सोगीयभृति वर्षुकुद्भवृतः ।
रामीआति स्या मृज्याति गुण्यान्वित्य जातं ॥३॥
प्रवित्त करतः यस्य गमनं गमन अमन्य असन्यान्ततुमतो ।
श्री जवयस्त्र गुण्याम्परदेशं नावयनं रचन ॥४॥
तिज्ञवन्धी मुद्देशं निद्देशं मानूबित्रमान्यातः ।
नत्रान्तिमः वास्य विद्देशं सर्वाद्याव्य ॥४॥
निरामान्यः भीमस्यद्रप्रजन्मागनुत्रस्तिः ।
रोतिमः स्वित्ति मिनार्षः १४०२ विद्वाता मन्तनीयद्योगिननान् ॥६॥
सरारातः सन्तिमान्वर्शकन्य मृत्यः ।।॥

**५६५५ जम्बूदीय परम्मास**— × । पत्र स०१३१ । सा०१०४४ दुंद्रच्य । भाषा-प्राकृत । विषय तोषाचितान । २०काल ४० ल०कान ४ । पूर्ण । यस्त स०१३ । पूर्ण । **प्राप्ति स्थान**— वि•्जन / उत्तराल मन्दिर उद्धार ।

विशेष-- प्रात प्राचीन है।

५६५६. प्रतिस $\bullet$  २ । पत्रस $\bullet$  १६६ । ले॰काल imes । पूर्ण । वेस्टन imes । प्राप्ति स्थान— दि $\bullet$  जैन प्रचायनी मंदिर अन्तपुर ।

५२५७. जम्बूहीय संघयिंग्-हिरमद्ग सूरि । पत्रस०६ । आ०१० $\times$ ५ इ.च.। भाषा— प्राकृत । विषय—गरिगत । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१००७ आसीज मुटी ७ । पूर्ण । बेस्टन स०६६–१२२ । प्राप्ति स्थान—रिं० कैन महिर नेमिनाथ टोशगयिंग्छ (टोक) ।

विशेष - सम्कृत टब्बा टीका सहित है ।

५६५८. तिलोय पश्मासि प्राचार्य यतिवृषमः । पत्रसः ३१६ । आरः १२१४७ हुई सः । भाषा-प्राकृतः विषय-लोक विज्ञानः । राज्यालः ४ । लेक काल सक १८१४ माथ सुदी ह । पूर्णः। बेहुनसंक २११ । प्राप्ति म्यान-दिव जैन सहिद वीवान जी कामः। विशेष--प॰ मेथानी कृत सस्कृत मे विस्तृत प्रशस्ति है। कामा में प्रतिनिधि हुई थी।

भू ६५६. प्रतिसं०२ । पत्र म०३४६ । झा०११×५ इश्वः । ले०काल स०१७६६ वैशास इदी ६ । पूर्णा वेषून म०१३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवान जीकामा ।

विशेष —श्राप्ताल जातीय नर्रासह ने प्रतिलिपि की थी । पत्र सं० ३४० -३४६ तक मेघावीकृत सवत् १४१६ की विस्तृत प्रणस्ति वी हुई है ।

५८६०, प्रति स०३ । पत्र स०२७ । ब्रा०११×६ है इन्द्राः ले० काल स०१७५० । पूर्यः । वैष्टन सं०५० । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर दीवानजो कामा ।

५६६१. जिलोक दीपक —वामदेव । पत्र सक्द ६ । भाषा-सहस्त । विषय-लोक विज्ञात । रक्काल  $\times$  । तेव काल मंक १७१५ सावन मुदी १ । पूर्मा । वेष्टन संक २५५ । प्राप्ति स्थान—दिक जैन प्रवासती मन्दिर भगतार ।

विशेष-- श्रीत सचित्र है।

विशेष - स्टिट्या है।

५९६२ प्रतिसं०२ । पत्र स०६२ । द्या०१२×७३ इच्च । ले०काल स०१७३४ कार्तिक सदी१०। पूर्ण। बेप्ट स०२१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा।

विशेष-भ० रत्नकीति ने प्रतिनिधि की थी। प्रति सचित्र है।

५६६३ प्रतिसं०३ । पत्र स०२३ ७२ । ग्रा०१२ 🕆 ६ इञ्च । ने०काल 🗙 । श्रपूर्ण । वेष्टत स० ६१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन छोटा सन्दिर बयाना ।

५६६४ प्रतिसं० ४ । पत्र म०१-३२ । ले० काल 🗴 । ऋपूर्ए । वेष्ट्र म० ८२ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

५१६६५. प्रतिसं० ५ । पत्रस० १०१ । घा० १३ ४ ६ इ.च.। ले∙काल स० १५७२ । पूर्ण। वेष्टन स० १३२ । प्रास्तिस्थान - दि० जैन घयशाल मदिर उदयपुर ।

विशेष --पप ४० पर एक चित्र भी है अभ्यन्तर परिषद् इन्द्र के रनिवास का चित्र है। वस्एाकुमार सोमा, यम, आदि के भी जित्र हैं।

४६६६. त्रिलोक प्रज्ञरित टोका —  $\times$  । पत्रस॰२४ । ग्रा॰११ $\times$ ४ इ.च । माधः+प्राकृत संस्कत । विवय-लोक विज्ञान । र॰काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं०१४६ । प्रास्ति स्वान — भ॰ दि॰ कृत मन्दिर श्रजोर ।

विशेष--पनि ग्रन्ही है।

१६६७. त्रिलोक वर्णन—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ११-५६ । भाषा—संस्कृत । विषय— लोक विज्ञान । २०काल ४ । ने० काल ४ । प्रपूर्ण । वेण्टन स० ६१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पद्मावनी महिर सरन्पर ।

विशेष--हरिवंश पुराण में में है।

 $\chi$ ६६ ६. त्रिलोक वर्गन $\longrightarrow \times$ । पत्रसं० १०। प्रा० ११ $\chi$ १ ६ व । मापा $\longrightarrow$ प्रकृत । विषय $\longrightarrow$ लोक वर्गन । र०काल  $\chi$ । लेकाल म० १५३० प्राचाय सुदी ७। पूर्ण । बेष्टन सं० १८६ । प्राप्ति स्थान  $\longrightarrow$ द० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारार्सांसह (टॉक) ।

४६६६. त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्यः पत्रसः ६६। ग्रा० ११४४, इ.च। भाषा—प्राकृतः। विषय—सिदान्तः। र०कासः ४। ते० काल सः० १६६१। पूर्णः। वेष्टन सः० ४७४। **प्राप्ति स्थान—रि०** जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुरः।

विशेष—प्रणस्ति इस प्रकार है— स॰ १६६१ वर्षे मूलसचे भट्टारक श्री वादिभूषण गुरुपदेशात तत् शिष्य व॰ श्री वर्द्धभाग पठनार्थ।

५६७०, प्रति सं०२ । पत्रस०१७ । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेब्रुन स०६४,१६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर ।

५६७१. प्रति स $\cdot$  ३ । पत्रस $\circ$  ७८ । छा० ११imes४ इञ्च । क्षेत्र काल स $\circ$  १६६७ पीष बुदी १० । बेग्टन स $\circ$  २५१ ६३० । **प्राप्ति स्थान**—रिव्जैन सम्बनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष थी गिरिपुर (हू गरपुर नगर) में श्री ब्रादिनाथ नैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

५६७२. प्रतिसं**० ४** । पत्र स०२६ । घा०१० ४४ दुव्यः । । ले०काल ४ । पूर्णः । बेष्टन स०१७१ । **प्राप्ति स्थान**-भ०दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

**५६७३. प्रतिसं० ५** । पत्र स० ३–१४ । ब्रा० १० $^1 \times 4^1$  इन्द्राः ने कतान  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टनस० २६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अन्दिर ब्राभनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष -- १४ यथी के चित्र दिये हा है।

५१७४. प्रतिसं०६ । पत्र स०१६ । धा०१०,  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  हका । ले० काल स०१६६२ बैगाल सुदी १५ । पर्यः । वस्त स०३७ । प्राप्ति स्थान । दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाथ बूदी ) ।

विशेष अञ्चारी कंणवराज ने ग्राम सालोडा मे प्रतिनिधि की था। प्रति हिन्दा ग्रथं सहित है।

५६७५. प्रतिस० ७ । पत्र स० २२ । प्रा० ११ -४ ] इन्छ । ल० काल म० १५१८ काती सुदी ३ । पूर्ण । व० ग० ६७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर धादिनाथ बुदी ।

विशेष प्रशान-सतत् १४१० वर्षे कानिक मृदी ३ मगनवारे देवसाह नगरे रावन भीजा मोकल राज्ये श्री मुलगरे बलास्कारगणे सरस्वतीगरुँ श्री कुन्युन्दासार्थान्ये भट्टारक श्री जिनवन्द्रदेवा तस्य शिष्य महातमा शुभवन्द्रदेव जिल्लापिन श्री श्री तमिनाव चैत्यालये मध्ये । बस्तिक पुत्र माहराजेन वास्ते ।

५९७६. प्रतिसं० म. पत्र म०१-२०। ग्रा०१२×५३ इ.ख । ले∘काल × । बेष्टुन स०७४८ । स्रपूर्ण । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

प्रशुख्यः प्रतिसं० १ । पत्रस० २७ । झा० १४ ४ ७ इञ्च । ले० काल स० ११३२ मंगसिर दुदी १२ । पूर्ण । बेहुनस० ३१ । प्राप्ति स्थान-—दि० जैन मन्दिर तेरहपथी नैस्स्वा ।

विशेष--चन्दालाल बैंद न स्थय अपने हाथ से पढ़ने को लिखा था।

५६७८. प्रतिसं० १० । पत्र स०६० । घा०१२ ४ ५६ वश्व । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेकनस०१८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थ्वनाथ इन्दरगढ ।

विशेष---प्रति सस्कृत टीका साहित है। साह रोड्ड समद्रा का वेटा मनस्या ने ज्ञान विमल की प्रति से उतारा था।

५६७६. प्रतिसं० ११ । पत्र सं० १०५ । मा० ६३ ४४३ इच । ले०काल स० १७५६ घासीज बुदी ८ । पूर्ण । बेष्टन स० १४/१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पास्थैनाथ इन्दरमङ् (कोटा) ४६८०. प्रतिसं० १२ । पत्रसं० ८४ । ग्रा० १३×६ है इच्छ । ले० काल स० १७८६ पीप मुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन म० १४८/२ । प्रास्तिः स्थान—िंद० जैन पार्वनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा) ।

५६८६. प्रतिसं० १३ । पत्र स०२८ । ब्रा०१३ ४५ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०३१८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष—६३ शलाका के चित्र हैं।

्रश्चन्द्र. प्रतिसं० १४ । पत्रस० २६ । ग्रा० १० र्रे ४ र्रेडच । ले० काल स० १४३० चैत बुदी ५ । पूर्ण । बेष्टुन स० २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष - अध्वेतवान ज्ञानीय पाटनी गोत्रोत्पन्न स॰ तोत्हा सार्या तोल्ही तथा उनके पुत्र खेती पीत्र जिनदास टीला, तथा बोटा ने कसंक्षय निमित्त प्रतिलिपि करवाई थी।

५६ म.२. प्रतिस्**० १५ । पत्र स० ५१ । प्रा० ५ ५ २ ३ इ.स. । ले० काल स० १५२७ चैत्र** बुदी १३ । पूर्ण । ये० स० १६४ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६६४. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० २६ । आ० १०३×४३ इ.च.। लेक्सल 🗴 । पूर्ण । वेस्टन म०१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

५६८६. प्रतिसं० १७ । पत्र स० ७२ । ग्रा० १२ हे ४५ इच । ले०काल स० १६०६ । ग्रपूर्स । वेष्ट्रन स० १०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सप्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रति टीका सहित है किन्तु सब पत्र अस्त ब्यस्त हो रहे है ।

५९८६. प्रतिसं० १६ । पत्र स० घ३ । प्रा० १९ $\{\times \lor\}$  इखा । ले० काल स० १५४४ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० १२३ । प्राप्ति स्थान—ध्रप्रशास दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

५६६७ त्रैलोक्यसार संहष्टि—  $\times$  । पत्रसः पुटकर । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञात । रक्ताल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन मक २६४-६४/२०५-२०६ । प्राप्ति स्थान---दिक जैन समजनाथ गन्दिर उदयपुर ।

१६८६. त्रिलोकसार—  $\times$  । पत्र स० १७४ । म्रा० ११५ $\times$ १ है इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान । र० काल  $\times$  । ले० काल स० १६५६ पीप बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १५७ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मदिर म्रादिनाथ बूदी ।

विशेष-- प्रशस्त--

सवत् १६५६ पोप वदि चतुर्थी दिवसे वृहम्पतिवारे श्री मूल्सवे नंद्यान्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुरस्कुरशालायांत्रवे भट्टारक श्री पपनदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री णुमचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री त्रावादते देवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभावन्द्रदेवा तत्पट्टे ग० श्री चन्द्रकीनित्तरतान्नाये खडेनवालान्यये संबदा गोत्रे प्रवाबती मध्ये राजा श्री मार्गासप प्रवर्तमाने साह प्रण्याज तद्भाये प्रथम चण्डसिरि द्वितीया सुहागिण प्रथम मार्गास्था

१९६६. प्रति स०२ । पत्रस०६–६६। ग्रा०११ $\S \times$ ४ $\S$  इचा ने० काल स० $\times$ । ग्रयूग् । बेष्टन स०४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तैरहपंथी दौना ।

**५६६०. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० २-३१ । घा० १०४५ इ.च. । से**०काल** स० १७४१ । अपूर्ण । वेष्टन स० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपूरा (टॉक) ५६६१. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १२३ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० २५७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन भ्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

५६६२. प्रति सं० ५ । पत्रस्व ६ । ग्रा० १० ४ ५२ इ.च. । ले•काल 🗴 । श्रपूर्ण । वेष्टनम० १४१ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन अभवाल मदिर उदयपुर ।

५६६३. त्रिलोकसार सटीक —  $\times$  । पत्र स० १० । प्रा० १२ $\times$ ० दुख । भाषा — प्राकृत - स स्कृत । विषय — लोक विज्ञात । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टनसं० १६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अवज्ञान मंदिर उदयपुर ।

४६६४. त्रिलोकसार भाषा —  $\times$  । यत्र स० ३१ । बा० १४६ इच्छ । भाषा — हिन्दी गया । विषया—पू विज्ञान । २०काल  $\times$  । लेकाल स० १८६ ज्येष्ठ मृदी १ । प्रपूर्ण । वेष्ट्र स• ७१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर प्लायती दुनी (टीक)

विशेष---मालवा देश के सिरोज नगर में लिखा गया था।

५६**६५. प्रति स० २ ।** पत्रस० ३४-४३ । ग्रा० १२×६ इञ्च । ले**०काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर दवलाना (ब्रुदी)

५६६६. प्रतिस्त ३ । पत्रसः ६ । प्राः ११४४ । इञ्च । ले॰काल ४ । प्रपूर्ण । बेहनसं ० २४४ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन महिर बोरमली कोटा ।

५६६७. प्रति स०४ । पत्रस०२१ । ग्रा०१०×४ दश्व । लेक्नाल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१२० ।प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

विशेष — त्रिलोकसार में से कुछ चर्चाए है।

५६६ द. जिलोक सार $-\times$ । पत्र स० ११४। ग्रा० ११  $\times$  १३ इत्र । भाषा—सम्कृत। विषय — लोक विज्ञान। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । श्रपूर्ण। वेटटन स० १२२/१७। प्रास्ति स्थान — दि० जैन सप्रवास मंदिर उदयपुर।

विशेष -- ११५ से आग के पत्र नहीं है।

५६६६. त्रैलोक्ससार टीका – नेमिचन्द्रगिए । पत्रस० २२ । आ० १०४४ } इच । भाषा— सरकृत । विषय – लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल स० १५३१ ग्रायाद सुदी १३ । बेष्टुन स० १०५ । प्राप्ति स्थान—१७० जेन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

६००० प्रति सां०२। पत्र स०३०। ग्रा०१० $\frac{1}{2} \times \sqrt{2}$  इश्वः। ले०काल  $\times$ । वेष्टन स०१०६। प्राप्ति स्थान-थि० जैन मन्दिर लक्कार, जयपुर ।

६००१. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ८६ । धा० ११ $\frac{1}{2} \times 1$  ह्या । ले० काल स० १५८६ मादवा मुदी १ । पूर्ण । नेपूर म० १८२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-वपावती नगरी में सोलकी राजा रामचन्द्र के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

६००२. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ७१ । ग्रा० १०३ × ४६ इ.ख । ते•काल स० १५४० कागुन मृदी ३ । बष्टन स० १८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- जोशी थी,परसराम ने प्रतिलिपि की थी।

६००**३. प्रति सं० ५ ।** पत्र स० ६५ । द्या० १०% ४४ ४ हुआः । **से०का**न स० १८८३ ग्रासोज बढी ६ । बेप्रन स० १८४ । **प्राप्तित स्थान**— वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६००४. त्रिलोकसार टोका—साथवचन्द्रत्रिविध । पत्रस० १४६ । ग्रा०१२ ४४३ इस्थ । प्रापा-स स्कृत । विधय लोकविज्ञान । र०काल ४ । लेकाल स० १४८८ सावरा मुदी १४ । पूर्ण । केकृत स० ६२ — . । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नीमनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

प्रशस्ति—सवत् १४०६ वर्षे श्रावण गृदि चतुरंशी दिने गृहवारे श्री मुलमधे सरस्वती गछे बलात्कार गर्गो श्री कुन्दकुन्दाचार्यात्वये महारक श्री पश्चनिदस्तराष्ट्री भ० श्री सकलकीति देवास्तरपट्टी महारक श्री मुबन-कोति देवास्तरपट्टी ग० श्री ज्ञानभूषण् देवा .......।

स० १⊏२१ फाग्ग मूदी १० को प० सुवेसा द्वारा लिखा हुआ एक विषय सुची का पत्र ग्रीर है ≀

६००५. द्रतिसं० २ । पत्र म० २२६ । ग्रा० १०८४ हुँ इञ्च । **के०**काल स० १४५१ कामुस् सुदी १३ । पूर्म । बेहुन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष — व्हटेनवान जातीय बाकलीबान गोत्रोरपन्न साह लाखा मार्या सम्बग्धी के वश में उत्पन्न नेता व ताथु ने ग्रंथ की लिंग करवायी थी।

६००६, प्रति सं०३ । पत्रस० १६ । र०काल × । ले० काल × । पूर्णा । बंधनस० २५ । प्राप्ति स्थान— पनायती दि० जैन मन्दिर हीय ।

६००७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ६० । ब्रा० १२१ ४ ४ है इखा भाषा-सन्कृत । विषय-लोकविज्ञान । र०काल 🗶 । ले० काल स० १७१५ फागुग वदि ४ । पूर्ण । वेस्टन स० १५४ । प्रास्ति स्थास—च्यावनी दि० जैन सन्दिर करोली ।

विशेष -- २ प्रांतया और है। नर्रासह अग्रवाल ने प्रांतिलिप की।

६००६. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ६८ –११७ । ब्रा० १२५ ४ ७ इञ्च । ले० काल 🗴 । ब्रपूर्स । बेटुन म० ७३६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६००६. प्रति स० ६ । पत्रस० १४५ । ग्रा० १३×५३ इच्छ । ले०काल स० १७२१ । पूर्गा । बेष्टुन स० १७३ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन ग्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६०**१०. प्रति सं०७** । पत्र ग०१६४ । प्रा०११¦×४ इला। ले० काल × । पूर्स। येष्टन त०७६ । **प्राप्तिः स्थान** --- दि० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशोष — दो प्रतियों का सिश्रमा है। ६० में म्रागेदूसरी प्रति के पत्र हैं। यह पुस्तक फ्राचार्य चिश्रवनचन्द के पटने की थी। प्रति प्राचीत हैं।

६०**१९. त्रैलोक्यसार टोका—सहस्रकोति** । पत्र स० १७ । **प्राया**ः सस्कृत । विषय-लोक विकान । र०काल × । ले० काल १७६३ । भूषों । वेष्टन स० २२ । **प्राप्ति स्थान—**पचायती दि० जैन मंदिर डींग ।

६०१२. त्रिलोकसार चर्चा— x । पत्रसं०६३। ग्रा० १६×८ इत्र । माझा-प्राकृत । विषय-चर्चा । र०काल x । ले०काल x । पूर्ण । वेष्टन म०१४२१। **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मस्दिर प्रजमेर । ६०१३. त्रैलोक्य दोपक—वासदेव । पत्र स =१। ग्रा० २०४१२ इस्त्र । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक-विज्ञान । र०काल ४ । ले० काल स० १७२१ फाल्गुन मुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जनपुर ।

विशेष -- प्रति बढे ब्राकार की है। कोटा दुगे में महाराज जगतिसह के राज्य में महाबीर चैत्यालय में जगसी एव सावल सोगास्त्री से लिखवाकर भ० नरेन्द्र कीर्ति के शिष्य बालचन्द्र को भेंट की थी। प्रति सचित्र है।

**६०१४. त्रेलोक्य स्थिति बर्गान** —  $\times$  । पत्र त्र १२ । प्रा० १२  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इखा । भाषा - छिन्दी गर्य । विषय-लोक विज्ञान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ जोगान बदी ।

६०**१५. त्रिलोकसार— सुमतिकोति** । पत्र स०१५ । ग्रा०१२ ४६ ६ व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-नोक विज्ञान । रुकान स०१६२७ भाष सुदी १२ । ते० काल स०१६५६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६२२ । **प्राप्ति मध्यान—** ७०० के निष्टित प्रकार ।

**६०१६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस**० १**३ । प्रा० १०×५ इला । ले०काल म० १७६३ स्रापाछ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४० । **प्राप्टिः स्थान** ⊸दि० जैन मधिर दवलाला (ब्रुदी) ।

**६०१७ प्रतिसं०३। पत्र म०११।** प्रा०१०  $\times$  ४हुँ इश्व । ले० काल म०१७६२ फालगुन मुदी १२। पूर्स । बेट्टन स०१९०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

**६०१म. प्रतिसं० ४** । पत्र स०२–४४ । स्रा०६ $\frac{1}{7}$   $\times$  ४ $\frac{3}{7}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टनस० १२७ । प्रा**प्ति स्थान** —वि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुवी) ।

६०१६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ११ । ले०काल 🔀 । पूर्णं । बेष्ट्रनस० ४१०-१४३ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मदिर कोटडियो का इंगरपर ।

**६०२०. त्रिलोकसार—सुमतिसागर** । पत्रस० १०६ । माषा सम्ब्रुत । ४० काल × । ले० <del>काल</del> स० १७२४ वैकाल मुदी ७ । पूर्णे । वेष्टुन स० मह**ा प्राप्ति स्थान**—दि० जैन नेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६०२१. त्रिलोकसार वचनिका $\leftarrow \times 1$  पत्रसः ३७६। प्राः १२३  $\times$ ६े इ.च.। भाषा  $\leftarrow$  हिन्दी गद्यः। विषय  $\leftarrow$ लोकविजान । र०काल्  $\times$ । ले०काल्  $\times$ । पूर्णं 1 बेष्टुन स०१ द२ $\gamma$ ६२। प्राप्ति स्थान $\leftarrow$ पाववंताथ वि॰ जैन मन्दिर इन्दरगढ कोटा ।

**६०२२. त्रिलोकसार पट**  $\times$  । पत्र स०१ । ग्रा० २५  $\times$  १३ इख । विषय  $\times$  लोक विज्ञान । २०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २७३-१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डंगरपुर ।

विशेष — कपडे पर तीन लोक का चित्र हैं।

६०२३. त्रिलोकसार— $\times$ । पत्र सा $\chi$ । ग्रा० १२ $\times$ ६ हे इख । भाषा हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान। र०काल $\times$ । ले० काल $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टन स०१७२–७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्टियों का द्वारपुर।

६०२४. त्रिलोकसर्थम् - लडमलेन । पत्र स० १४६ । घा० १२ 🗴 ५३ इत्त्र । घाषा — हिन्दी पद्य । विषय-लोक, विज्ञान । र०काल स० १७१३ । ले०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११५१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पंचायती हुनी (टोक) । ६०२५. प्रतिसं०२ । पत्रस० २७०। ग्रा०१० x ५ इथा। लेश्काल सं०१ ६९६ पीष सवी२ । पूर्णा बेहुनस०१४०७ । प्राप्ति स्थानः – विश्वन मन्दिर अजमेर मण्डार ।

**६०२६. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १२१ । घा० १२×५ $\frac{3}{2}$  इन्छ । ले० काल सं० १५४६ पीष ब्रुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २१७ । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी) ।

६०२७. प्रतिसं० ४। पत्रसं०६०। झा०१० $\times$ ६ $^1_2$  इन्छ । ले०काल imes। झपूर्ण । बेष्टन स०६३। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागरी ब्रुंदी ।

विशेष -- ६० से आगे पत्र नहीं है।

६०२ म. प्रतिसं**० ५** । पत्र स०११२ । प्रा०१० ४ ६ व्हा । लं० काल स०१७६० वैशाख बुदो ७ । पूर्ण । बेट्न स०१४४ । प्राप्ति स्थान—पत्राधती दि० जैन मन्दिर करीनी । इसका दूसरा नाम विलोक चीपाई, विशोकतार दीएक भी है ।

विशेष—स० १७६८ वर्षे वैज्ञास माने कृत्या वक्षे सप्तन्था गृहवासरे श्री मूलवर्षे बलात्कार गणे सरस्वती गंद्र कु रहुप्ताथानंभे बजनडवरें ने कहवाहा गोवे राजा जैतीसव राज्ये कामवनसम्य । भट्टारके श्री विश्वभूरागरेदास्वत्याट्टे भट्टारक श्री देशद्र पूरागरेदास्तरपट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्र मूसएरेदास्तरिस्प परिवर राजा रामेगा सकवनसंभवाशं श्रीमक्षेत्रीक्षवारमाणा क्रांग्रेश निवित्त ।

प्रथ डिलावटीपुर सुभस्यानं तत्र निवास कानु सोगानी जाति साहत्री मोहत्वरान तस्य मार्या हीरा तत्त्रुप्त हो पेरो जनका नस्य भाषी प्रताने तत्रुप्त भी गिराम द्विगिर जनकास्य भारता चल्ए नेपा मध्ये साह जगक्येग्ग निवापित स्वजानावर्गी अदार्थ। श्रीमितिज्ञोकरीयक नाम ग्रंथ नित्य प्रगुमति। सर्वे प्रय सस्या १००६।

६०२६. प्रतिसं०६ । । पत्र सच्या ३२० । घ्रा०६×६ इन्त । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । ले० काल स०१७३२ । पूर्णा । वेष्टन सच्या दद२ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन भन्दिर मजसेर ।

६०३०. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० १५० । या० १२ × ५ इञ्च । भाषा -हिन्दी (पषा) । ले०काल स०१६४१ । पूर्ण । बेध्टन सं० ५ । प्रास्ति स्थान—तेरहपथी दि० जैन मदिर नैए।वा ।

६०**२१. त्रिलोकसार भाषा** - × । पत्र स० २४२ । ग्राठ १२ ×६१ इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-कोक विज्ञान । २० काल स० १८४१ । लेक्काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१४ । प्राप्ति स्थान—मद्रारकोय दि० जैन मदिर खत्रमेर ।

विशेष--- लिखत महात्मा जयदेव वासी जोवनेर लिख्यौ सवाई जयपुर मध्ये।

कटि कुवरी करवे डाडी, नीचे मुख घर नयण्। इए। सकट पुस्तक लिख्यों, नीके रखियों सयण्।। ६०३३. त्रिलोकसार माया—महापंडित टोडन्मल । पत्र सं०२४२ । भाषा-राजस्थानी द्व डारी गर्छ । विषय-तीन लोक का वर्णन । २० काल 🗙 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०२५१ । प्रास्ति स्थान— दि० वेन पचायती पांस्टर भरतपुर ।

विशेष - भरतपुर में विजयपाल चादवाड ने लिखवाया था।

६०३४. प्रतिसं० २ । गत्र स० १४१ । प्रा० १२  $\times$  ६ इन्छ । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन घ्रयाल मंदिर नैसावा ।

६०३५. प्रतिसं०३ । पत्रस०२०७। ग्रा०१२ ४ ७ डबा। ले० काल स०१८६१ । पूर्णं। वेष्टन स०१२२ । प्राप्ति स्थान—-- बि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

६०३६, प्रति स०४। पत्रस०२३४। धा०११×७ डवा। ले० काल स०१८८३ धासोज बृदी ५। पूर्णा व्यक्त स०१२,६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायनी मन्दिर धलवर।

६०३७. प्रतिसं० ४.।पत्र स०२०६। ब्रा०१०१ × ७ डवा । ले०काल ४ । पूर्णा । वेष्टन स०१०४ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा ।

६०**३६ प्रतिसं०६।** पत्रस०२०६। धा०१४४८६७ । ने० काल सं० १९७३ घाषाढ बुदी११ । पूर्णा वेप्टन स०१०४। **प्राप्ति स्थान**ाद० जैन सदिर फनेक्पुर जेलाबाटी (सीकर)। विदेश्य-मुनवारीनाल स्लामगढ जि०ण्टा थाना निस्त्रोती कला से प्रतिलिपि हुई थी।

६०३६ प्रतिस्व ७ । पत्रसः ४१८ । ग्रा॰ ११ $\frac{1}{2} \times 9^{\frac{3}{2}}$  इञ्च । ले०काल म० १६२३ सामीज सुदी ६ । पूर्ण । बेप्टन स० २४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फोहपुर शैलाबाटी (मीकर) ।

विशेष—स्वारं जयपुर मं लिखा गयाथा। प्रति मृन्दर है।

६०४०, प्रति सं० मा पत्रस० २४१। मा० १२ ४६ ५ इ.स. । लेक्सल स० १६०३ ज्येष्ठ इदी ४। पूर्णा । बेप्टनस० २मा प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फनेहपूर जेलावाटी (सीकर)।

६०४१. प्रतिसं० ६ । पत्र स० २४० । प्रा० १२ ४ ६ इ.ख. । सापा-हिस्दी । विषय-लोक विज्ञान । २० काल ... । २० काल स० १८१६ ग्रामोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । **प्राप्ति स्थान-**दि० जैन सदिर भावता ।

६०४२ प्रतिसं० १०। पत्र म० ३६४ । ग्रा० १२  $\times$  ६ $\}$  इञ्च । ने० काल स० १८८३ ।  $\frac{1}{2}$  पूर्ण । नेप्रन स० २८-१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

प्रशस्ति— श्री मृतसमे सन्स्याी गर्को बनात्कारगरी गुन्दकुन्दाचार्यान्वये बागड पट्टे म० श्री नेमिचद क्वं नृत्यहुं म० श्री रन्तवन्द जी तन् क्विया प० रामचन्द्र सदारा नगरे पास्वजिनचेत्यालये साह जी श्री बत्ताजी व्यवस्था नन् धार्य सांसावाई इद पुस्तक दन्त ।

६०४३ प्रति स० ११ । पत्र स० २४६ । घा० १४×७ इ.च. । ले०काल 🗴 । सपूर्ण । वेस्टन सं० २१ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाव चौगान बूदी ।

विशेष--- ग्राग के पत्र नहीं है।

६०४४: प्रतिसं० १२ । पत्रसः० १०८ । आ०१४.४७ इञ्च। ले०काल स०१६०२ भादवाबुधी १। पूर्णा विष्टत म०१४२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)। विशेष — मालपुरामे लिखा गया था।

**६०४५ फुटकर सबैध्या**  $\times$  । पत्र स. ०२२। भाषा हिन्दी पद्य । बिषय-नीन लोक वर्णन । रक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन सं० ४२४-१६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटिडियों का हु गरपुर ।

६०४६, मूकंप एवं मूचाल वर्णन  $\times$ । प्रत्न ७ १। ग्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ दव । भाषा-हिन्दी गद्य । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$ । ध्रपूर्ण । बेष्टन स०२०२ । प्राप्ति स्थान-प्रति० जैन मन्दिर फलेहपुर बेखाबादी (सीकर) ।

६०४७. संघायिस्स-हेमसूरि । पत्र स०४६ । आ०६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इच । आषा-आकृत हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र०काल  $\times$  । लेक्कान  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स०१२४७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडान्यसिंह (टोक) ।

विशेष--प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

**६०४६ क्षेत्रन्यास** — 🗙 । पत्र स०३ । फ्रा०१० 🗴 ६ इख । भाषा- हिन्दी । विषय-सोक विज्ञान । उरुकान 🔀 । लेक्सल 🗴 । पूर्ण । वेग्टन स०२१३ । **प्राप्ति स्थान--** दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

६०४६. क्षेत्र समास— × । यत्र स०२३ । या०१०४४ इ-च । भाषा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । र०काल × । ले०काल स०१४३६ । पूर्ण । वटन स०२६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन मन्दिर ग्रापनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष - प्रणस्त-मवत् १४३६ वर्षे वैणाल सुदी ३।

## विषय -- मंत्र शास्त्र

६०५०. ग्रात्म रक्षा संब्र $\times$ । पत्र स० १ । ग्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इच्च । साधा—संस्कृत । विध्य-मत्र शास्त्र । ७० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४३४ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपर ।

६०५१. ग्रोंकार वचनिका $- \times 1$  पत्र सन्या ५। ग्रा० १२ $\langle \times Y \rangle ^2$  इच । भाषा-हिन्दी। विषय-मत्र शास्त्र । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० ११/१६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर भारवा (राज ) ।

६०५२ गोरोचन कल्प-  $\times$  । पत्र स०१। ग्रा० १० $\times$ ५९ इंच। भाषा-हिन्दी । विषय-मत्र। र० काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टनस० ३६३-१४३। प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इनरपुर।

६०५३, घंटाकर्स कल्प--  $\times$  । पत्र स० १० । भाषा-सम्कृत हिन्दी । विषय - मत्र सास्त्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्म । वेष्टन स० ४२१-१५६ । प्राप्तिः स्थान-- दि० जैन मिन्दर कोटडियो का इंगरपुर ।

६०**५४ घंटाकर्स कल्प---** × १ पत्र स०६। झा०१२×६१ इन्छ । भाषा-शिन्दी, सम्बूत । विषय-मण शास्त्र । र०काल × । ने० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२५५-१०२ **प्रास्तित्स्थान**----दि० जैन मन्दिर काटिष्ट्रों के। द्वारपुर ।

विशेष-- (३ यत्र दिये हुए है। यत्र एव मत्र विधि हिन्दी मे भी दी हुई है।

६०४४ घटासस्यों करूप ×ापसरु ११। बारु १०, ४५, इञ्चा भाषा-सस्तत । विषय-स्त्र बास्त्र । ४०कार ४। तैककाल सरु १६५० चैत सुरी १। पूर्ण। बेस्टन सरु ४२४। **प्रास्ति स्थान-**विरुक्तिसर लक्कर, त्राष्णुः।

विशेष — सवाई जयनगरे लिखित ।

६०५६. घटाकरण मंत्र—  $\times$  । पत्र स ६२ । प्रा० ६ $^{1}$   $\times$  ३ $^{1}$  इक्ष । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनस् ० १०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यां का नैगाला ।

६०५७. घटाकरण मंत्र विधि विधान—  $\times$ । पत्र स०६। घा० १२  $\times$ ६% इन्छ । भाषा- सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६१४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२७७-१०६। प्राप्ति स्थान—द० जैन मन्दिर कोटडियों का डूगरपुर ।

६०५ म. जीन गायत्री—  $\times$  । पत्रसं० १ । आ० १० $; \times \vee_0^2$  इश्व । आषा संस्कृत । विषय-मंत्र ग्रास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन स०४२७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर । ६०५६ ज्ञान मंजरी—  $\times$ । पत्रस० २६ । सा० १० $\times$ ४ इला । जाया—सम्ब्रत । विषय— मत्र ब्रास्त्र । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २०१/२२३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर सम्बनाथ उदयप्र ।

विशेष -- त्रिपुर सुन्दरी को भी नमस्कार किया गया है।

६०६०. त्रिपुर सुन्दरी यंत्र —  $\times$  । प्रतः ते । प्राः १० $\frac{3}{4}$   $\times$  ६ रख । भाषा-सरकृत । विषय-मन्त्र गास्त । र० काल  $\times$  । त्रेणं । वेष्टन स० ४२५ । प्राप्तिः स्थान--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जवपुर ।

विशेष--- यत्र का नित्र दिया हमा है।

६०६१. त्रेलोक्य मोहन कवच — । पत्रतं० २ । द्वा० १० $\frac{1}{2}$   $X^2$ ेृ इच । माया—सस्कृत । विषय-मन्त्र ग्राम्त्र । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेहनसं० २०६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर सम्बन्ध जयपुर।

६०६२ **श्रैलोक्य मोहनी मंत्र**— × । पत्रस० ३ । प्रा० ६ × ४६२६ । भाषा-सरकृत । विषय-मन्त्र । २०काल × । से०काल × । पूर्ण । वाटन स० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्राप्तनन्त्र स्वामी वदी ।

६०६६. तवकार सत्र नाषा—  $\times$ ायत्र स०१। स्ना० २ $_i^2 \times V_i^3$  इख । भाषा-प्राकृत । विषय-सत्र । २० कान $_i \times$  । ले०कान $_i \times$  । स्रपूर्ण । वैष्टन स०१४५। प्राप्ति स्थान—सण्डेलवान दि० जैन सदिर उत्थपुर ।

विक्रोध -- ३ मन्त्र ग्रीर है। ग्रन्तिम मन्त्र नवकार कथा का है।

६०६४, पूर्णं खम्म मन्त्र— × । पत्रस०७। झा० १०४६ इचा । साया-क्रिन्दी । विषय— मन्त्र । रक्ताल × । तेक्ताल × । पूर्णं । वेष्टनस० ४४६- × । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटब्रिजो सा इनपद्म।

६०६५. बावन वीरा का नाम —  $\times$ । पत्र म०२। घा०११ $\times$ ५ दुख। भाषा —सस्कृत। विषय —मन्त्र शास्त्र। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं०४२६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्त्रिन लक्कर, जयपुर।

६०६६. बालत्रियुर सुन्दरी पद्धति— × । पत्रस० ६। प्रा० ११ ×५ डश्च । भाषा— सस्कृत । विषय — मन्त्र शास्त्र । र०काल × । ले०काल स०१८७६ फाल्मुण सुदी ८ । पूर्ग । बेहनस० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६०६७. **बोजकोय**— × 1 पत्र स॰ ४०। आ।०६<sup>3</sup>, ४७ इ.च.। भाषा-मस्कृतः। विषय--मन्द्र शास्त्रः। र०कालः × । ले०कालः स॰ १६६३ । पूर्णः। वेष्ट्न सं० ६८। **प्राप्तिः स्था**न---दि० जैन पंचायती मन्दिर प्रस्तरः।

६०७०, प्रतिसं० २ । पत्रस० २३ । घा० १४× ७, इङ्च । ले०काल स० ११२१ माह सुदी १२ । पर्गा । बेक्रन स**० १०२ । प्राप्ति स्थान**िद० जैन प्**वा**यती मन्दिर प्रलवर ।

६०७**१. प्रति सं० ३** । पत्र स०२४ । प्रा०११×४ । इञ्च । ले० काल स०१६८५ । **प्रार्ण ।** वेष्टन स०३६५-१४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोटडियो का इनरपुर ।

प्रशस्ति—सन्तृ १६=५ वर्षे माह माने कृष्ण पक्षे २ दिने श्री मूल सबे मोडी बामे पार्थनगध चैत्यालये म० नकलचन्द्र तत्पट्टे भ० खूवचन्द्र तदास्ताये ब्र० श्री जेना तत् बाद्य आ० जयकीति जिखित ।

६०७२. सातृका निषंदु—सहीधर । पत्रस $\circ$ ४। प्राः ११  $\times$  ५६ व । भागा सरक्त । विषय—सन्त्र ज्ञान्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  ६१५ । प्राप्ति स्थान —िद $\circ$  जैन मन्दिर लक्कर, जयार ।

६०७३ मोहिनो मत्र $-- \times 1$  पत्रस॰ २२। प्रा॰ ५ $\times$ ४ इच । भाषा -सन्तृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टुनस॰ १८३। प्रास्ति स्थान दि० जैन मन्दिर नागरी बंदी ।

६०७४. सत्र प्रकरण् सूचक टिप्पण् — साबसेन शैबेस्ट्रेब । पत्र स०६ । बा०११  $\times$  ५ इञ्च । साया—सन्कृत । विषय—सन्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेहुन स०५०१ –  $\times$  । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर कोटिइयो का हु गरपुर ।

ग्रस्तिम—इति श्री परवादिगजकेसरि वेदवादिविध्वमक भावतन श्रीवचदेवेन जिनसहितया मन्त्र प्रकरण सुबक टिप्पणक परिसमाप्त्र । श्री नेत्रनन्दि मूर्तिना निवापित ।

६०७५ मंत्र यंत्र —  $\times$  । पत्र स०२ । म्रा० १२ $\times$ ५ इन्त । भाषा—सस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स०६२१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६०७६. संब शास्त्र —  $\times$  । पत्र संब १। आ०६  $\times$  ६ इथा । भाषा हिन्ती । विषय-मन्त्र शास्त्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ह गरपुर ।

विशेष---चामु डादेत्री का मन्त्र है।

६०७७ **मंश शास्त्र** — 🗶 । पत्रस**०**६। मध्या-हिन्दी सस्कृत । विषय-सन्त्र शास्त्र । २०काल ् । ले० काल् 🗴 । पूर्ण । वेहन सं**०** ५६३ । **प्राप्ति स्थान** —दि**०** जैन पचायती सदिर भरनपुर ।

**६०७८. मंत्र शांस्त्र-** × । पत्र सं० २। आ० ११×४ इच्च । मापा-सस्कृत । विवय-मन्त्र शास्त्र । रक्कान र । त्री० काल × । पूर्य । बेष्टन सं० २६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर संभवनाय उदयगर ।

६०७६. **संज संग्रह — × ।** पत्रसं० १४ । ब्रा० १२×४ हे इच । आषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय — सत्र ज्ञान्त्र । रूकाल × । **ले०कान स**० १६०४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४६१ । **प्राप्त स्थान —** दि० जैन मस्टिर कोटेडियों का हुंगरपुर । प्रशस्ति—सवत् स्पाद जयनगरे मूलरांचे सारदा गच्छे सूरि थी देवेन्द्रकॉर्ति जी तस्य शिष्य राम-कीर्ति जी प० लक्ष्मीराम, मन्तालाल, रामचन्द, लक्ष्मीचन्द, प्रमालनचन्द, श्रीपाल पठनार्षः ।

६०६०. **सांगाकरप**--- imes । पत्रस०२ । भाषा-सस्कृत । विषय-मत्र शास्त्र । र०काल imes । केंक काल imes । पूर्ण । वेण्टन म०६६३ । प्रार्गिः, **स्थान** --वि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०६२. यंत्रावली — अनुपाराम । वश्व.० ७० । आ० ६ ४४ इन्त्र । आया — संस्कृत । विषय -मत्र आस्त्र । र०काल 🗴 । ले० काल ४ । अपूर्ण । वेष्टन म० २०५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर अभिनन्दन स्वामी, बुदी ।

प्रारम्भ---

दक्षिरम्मुक्तिगुरु प्रमास्य तदीरित श्रीतांडबस्था । यत्रावली मकमयी प्रवस्ताव्य व्याकुमेंहे मज्जनरजनाय ॥ जिवनाडव टीकेयमः(पाराम सजिता । यत्रकल्पमद्र ममयी दलोडोभीग्ट मतान ॥२॥

६०६३. विजय यत्र—  $\times$ .। पत्रस० १। आ० ४ $\times$ ४ $^{\circ}_{\sigma}$  दस्त । विपत्र—यत्र । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । पूर्य । त्रेष्ट्र स० ६२५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--- कपडे पर बाहु ही बाहु लिये हैं। कोरो पर मत्र दिए हैं।

६०८४ विजयमञ्र $-\!\!\!\times\!\!\!1$  पत्रसः २ । आ० १×४) इत्त्र । भाषा सस्क्रत । ते० काल सullet ११४१ । पूर्ण । बेहुन सullet २३७ । प्राप्तिः स्थानः—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान शूदी ।

६०८५. विद्यानुशासन-पनिलगेग् । पत्र स०१०२-१२६ । बा० ११ $\times$ ४ इश्व । भाषा— सास्कृत । विषय - मत्र शास्त्र । ७० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । ब्रपूर्ण । वेष्टन स०४३७/२१५ । प्राप्तिः स्थान-पि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६०८६. विविध मत्र सग्रह—  $\times$  । पत्र स० १२० । माषा—संस्कृत । विषय—मत्र शास्त्र । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स० ४१५-१५५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इनग्युर ।

विशेष -- विविध प्रकार के मत्र तत्र सचित्र हैं तथा उनकी विधि भी दी हुई है।

६०८७ शास्ति पूजा मंत्र— × । वत्रतः ६। प्रा० १०द्वै ४ ४द्वै इश्व । याषा- संस्कृत । विषय-सत्र प्राप्तः । २०काल × । ने०काल × । वेष्ट्रनसं० ४४४ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन यदिर लक्कर, जयपुर ।

६०= ६ वह प्रकार संत्र -- × । पत्र स० ३ । झा० १० × ५ इख । भाषा—िहती । विषय—मत्र । र०काल × । ले० कान × । पूर्ण । वेष्टन स० १०६० । **प्राप्ति क्ष्या**न—भट्टारकीय दि० जैन सन्दिर सजोर । ६० ६६. संबर्जनादि साधन — सिद्ध नामार्जुन । पत्र सं० ६६ । प्रा० ६४४  $\xi$  इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय — सत्र शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नामदे इंदी ।

श्चन्तिम पृष्टिपका-इति श्री सिद्ध नागार्जुन विरचिते कक्षयुटे सवाजनादि साधनं पजदश पटल ।

६०६०. सरस्वती मंत्र—  $\times$  । पत्र स०१। झा०१०ः,  $\times$ १ इत्र । भाषा-हिन्दी । विषय-मत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०४४०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जम्पूर ।

६०६१. संध्या संत्र—गौतम स्वामी । पत्रसं० १ । प्रा० १० $\frac{3}{2}$  ४ ६ द्वा । भाषा—सस्त्रत । विषय—मत्र लारत । २०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष-मत्र संग्रह है।

६०६२. यंत्र मत्र संबह-निम्न यंत्र मंत्रों का संबह है-

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

सवन् १६१६ वर्षे फाल्युन मुदी ३ गुरुवागरे प्राक्ष्विन नक्षत्रे श्रीमूनम ३ नद्याम्नायं बनाकारमण् सरस्वतीनच्द्रं थी कुन्दकुत्वाचार्यास्वये मडलाचार्यं श्री ३ धर्मश्रीतिस्यु विष्य बह्य श्री लाहड नित्य प्रणानीत बातेनवहनु निद्यस्य यत्र लिखित ।

६०६३. २ जितामारा यंत्र बडा — × । पत्र म०१। प्रार्० रेट-४६ इख । भाषा-सरकृत । विषय—यत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टुन म०२। **प्राप्ति स्थान** —दि० जेन तेन्ह्रपणी मन्दिर नेरावा ।

विशेष--कपडे पर है।

६०६**४. ३ धर्मचक यंत्र**— ४ । यत्र म०१ । ग्रा० २४ ×२४ इला । भाषा—मास्कृत । र•काल<sub>,</sub> × । ले॰ काल स॰ १६७४ । पूर्ण । बेष्टन सं०३ । प्राप्ति स्**यान**—दि॰ जैन मन्दिर तेरहपंथी नैसावा ।

विशेष--प्रगस्ति निम्न प्रकार है ---

सबन् १६७४ वर्षे वैशाख मृती १५ दिने श्री ॥१॥ नागपुर मध्ये लिखापित । शुभ भवन् ॥ सपढे पर सब है ॥

६०६५. ४ प्र**कृष्टि संडल यत्र** —  $\times$  । पत्रसः॰ १ । ग्रा॰ २१ $\times$ २३ इत्वः । भाषा — सस्कृतः । विषय — यत्र । २०काल  $\times$  । लेकाल सः० १४=४ । पूर्णः । वेप्टन सः० ४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जन मन्दिर मेगावा ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

श्री श्री श्री शुभवन्द्र सूरिस्योनमः । मय संवत्सररेस्मिन श्री नृप विक्रमादित्य गताब्दः सवत् १५८५

बर्षे कार्तिक बदि ३ णुभदिने श्री रिवि मङल यत्र बहा अञ्जू योग्य प० प्रहेदासेन शिष्य प० गणमल्लेन लिखिता। शुभ भवत्। कपडे पर यत्र है।

६०६६. ५ म्रहाई द्वीप मंडल —  $\times$ । म्रा॰ ४२ $\times$ ४२ इञ्च । पूर्णे । प्राप्ति स्थान —िद॰ जैन तेरहपथी मन्दिर नैशाव।

विशेष--यह कपडे पर है।

६ नंदीश्वरद्वीप मंडल— × । यह पत्र २४×२४ इश्व का है। **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन तेरहणंथी मन्दिर नैशाबा ।

विशेष-इसमे अजनगिरि आदि का आकार पुराने मडल से सं० १९०६ में बन्ध्या गया है।

---- 0 :----

## विषय -- श्रंगार एवं काम शास्त

६०**१७. ग्रांगारंग-कत्याग्मस्त्य ।** पत्र स० ३०। ग्रा० १२८१ । इत्रा । भाषा-सस्कृत । विषय-काम माम्य । २०काल ४ । ले० काल स० १२०७ । पूर्य । वेष्टन स० १४ **। प्राप्ति स्थान-**भटारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

बिशेष -- मूल कर्नाचे मूजराती भाषा में अर्थ दिया हवा है।

६०६**१. प्रतिसं**ठ ३ । गत्र सठ ४३ । लेक काल सठ १७६७ । पूर्णा । वेस्टन सठ २०४ । प्रा**प्ति स्थान**—विक केन प्रवासनी सदिर अस्तपुर ।

**६१००. कोकमंजरी**— **प्रानंद** । पत्र म० २६ । ब्रा॰ १०'  $9 \times 9 \times 1$  भएगा-हिन्दी । विषय— काम ब्राह्म । ए० काल  $\times$  । गै॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टन म० १७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

६१०१, कोकाशास्त्र—कोकदेव । पत्र मण्डा था १०/४४ व । भाषा छिन्दी । विषय— काम बान्त्र । २०वसः । ते०काल 🔀 । पूर्ण । वेग्रुनम०२१० । **प्रास्ति स्था**न—पदण्जैन मन्दिर दक्ताना (व दो)

**विशे**य —रणशभीरमें राजा भैरवसेन ने कोकदेव को तुलाधा श्रीर काकशास्त्रकी स्वता करवायी थी।

६१०२, कोकसार — ४ 1 पत्रस० ३६। प्रा०१० ४६ डिया । भाषा —हिन्दी । विषय — काम वास्त्र । २०काल ( । ति०काल ४ । अपूर्ण । वेष्ट्रनसं०२३७ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दर्सर (केटा)

विशेय---गामृदिक गास्त्र भी दिया हथा है।

६९०३. कोकसार । पत्र म०२ । धा०१०४२ है दश्चाभाषा हिन्दी ले० काल 🗴 । ध्रपूर्ण। बेष्टुन स०२३६ ३३ । प्राप्टिः स्थान—दि० जैन मन्दिर कोर्टाबर्धाका हुनस्पुर ।

६१०४. प्रेम रस्ताकर—  $\times$  । पत्र स० १३–४७ तक । ध्रा० ५ $\times$ ४% हुन्न । माया—हिन्दी पछ । विषय - - गूरंगार । र० काल  $\times$ । ते० राज स० १८४६ जेग्ठ सुदी ११ । ध्रपूर्ण । ये० सं० १०८ । प्राप्ति स्थान दि० जैन प्लारती मन्दिर करोती ।

**विशेष**— इसकी पाच तरङ्ग है । प्रथम तरङ्ग नहीं है ।

६२०५ विहारी सतसई— विहारीसाल । पत्र म०१४६ । घा०६३ ४६ इखा आया— हिन्दी पद्य । जिल्ल्य—गृगार । ७० काल स०१७६२ कॉनिक वृदी ४ । ने० काल स०१८६२ पीघ बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०१५ । प्राप्तिः स्थान —दि० जैन मन्दिर चौधरियान मासपुरा (टॉक)

विशेष-विद्वारी सतसई की इस प्रति में ७३५ दोहे हैं।

**६१०६. प्रतिसं०** २ १ पत्र सं०२ – ४०। छा०६ × ४ १ ड॰ छ। ले०काल × । छपूर्या। बेष्टन सं०३६१ । **प्राप्ति स्थान**-—वि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी, ब्रुदी।

६१०७. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० ७० । लेक्काल 🔀 । अपूर्ण । वेस्टन सं० ७६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रचायती मस्टिंग भग्नपुर ।

६१० - **बिहारो सतसई टीका** — X। पत्र म०२७ । आर० ६×६ इला। आया-हिन्दी। विषय-श्रृगार बर्णन। २०काल X। ले० काल X। प्रवृगा। वेग्टन स०३४३। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्द्रिर बोरसली कोटा।

विशेष —पहिले मूल दोहे किर उसका हिन्दी गय में अर्थ तथा फिर एक एक "श्व में अर्थ को धौर स्पाट किया गया है।

**६१०६. सामिनी विलास—प० जगन्नाथ।** पत्र स० २ ने २२। भाषा—सस्कृत । विषय— काम शास्त्र । र०वराव × । स० काल स० १८७६ । अपूर्ण । वेग्टन स० ७६० **। प्राप्ति स्थान**— वि**०** जैन पत्रायनी सदिर भरतपुर ।

**६११०. प्रतिसंठ २ ।** पत्र म० २४ । ग्रा०११ × ४ इन्छ । ले० काल म०१६-३ माह मदी १४ । पूर्गा । बेष्टुन स०३०६ । **प्राध्ति स्थान**ा दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष — मरोजपुर में चिनामिगागुष्वंनाथ चैन्यालय में प० वूलचर ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६९११. भ्रमरगीत मुंकुंदरासः । पत्र मु० ३२। आ० ६. ४४६ दृश्वः । भाषा—िहित्दी । विषयः —िवरहः (विद्योगः गृःगारः) । २० कालः ४ । ले० कालः ४ । पूर्णः । वेष्ट्रन स० ३७ । प्रास्ति स्थानः—िवर्णतं मन्दिरं दीवानं चेननदासं प्राती शीगः ।

विशेष - ७५ पद्य है। २५ वे पत्र मे उप। परित्र है जिसके केवल १४ पद्य है।

६११२. मधुकर कलानिधि— सरमुति । पत्र म०४० । द्या०१०१, ४.५१ इ.च.। भाषा— हिन्दी ।विषय-श्रृगार । ४०काल स०१६२२ चैन सुदी १। ले०काल ४ । पूर्गा । वेष्ट्रन स०४७३ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त सन्दिर ।

विशेष---प्रेतिम प्रशस्ति तथा रचनाकाल सबयो पद्य निम्न प्रकार है। इति श्री मारस्वत सरि मधकर कलानियि मपुगामु।

सबन श्रठारह से बाबीस पहल दिन चैन सदी

गुक्रवार ग्रंश उल्हास्यो सही ।

श्री महाराना माधवेण मन कै विनोद हेत

स्रसति कीनो यह दूध ज्यो जमे नहीं ।।

**६११३. माधवानल प्रबन्ध**—**गागपित** । पत्र स०५२ । बाठ ११ ४४ इच्च । <mark>भाषा—</mark> हिन्दी प. । विषय—कथा (शृगार रम) । र०काल स०१४६४ श्रावण बुदी ७ । ले०काल सं०१६५३ थेठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

६११४. रसमंजरी—  $\times$  । पत्र स०७। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इख । प्राप्त -हिन्दी (प.) । विषय— श्रृंगार रस । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० १७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६११५. रसमजरी— मानुदल मिश्रा । प्रतः ४१ । घा०११×५ इश्वा । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रृगाग । २० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स∙ ५५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--गोपाल भट्टकत रसिक र जिनी टीका सहित है।

६११६. प्रति स०२ । पत्र स० ७४ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले० काल × । पूर्एं । वेष्टन स० ५६१ । प्रास्तिः स्थान—हि० जैन मस्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-भट्टाचार्य वेग्गीदत्त कृत रसिकरं जिनी व्याख्यासहित है।

६११७. रसराज—मितिराम । पत्रसं० १७ । ग्रा० ६ ४ ६ इत्र । भाषा-हिन्दी पत्र। विषय—पृंगार । र०काल ४ । ले०काल स०१८६६ फाल्गुस सुदी ४ । पूर्स । वेष्टनस०४२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मिरिर धारिनाय स्वामी मालपुरा (टॉक) ।

६११ स्. रसिकप्रिया—सहाराजकुमार इन्द्रजीतः । पत्र सं०१३ सः । श्रा०६  $\times$  ६ इन्त । भाषा–हिन्दी । विषय-श्रुगार न्म । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१७५६ । पूर्ण । वे०स०५०१ । प्राप्ति स्थान—भहानकीय दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**६११६. प्रतिसं० २** । पत्र म०६-६४ । ले० काल म०१७४७ मंगसिर मुदी १२ । प्रपूर्ण । बेप्टन स०६१ । **प्राप्तः स्थान**— दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६१२०. प्रतिसंठ ३ । पत्रसंठ ७१ । झा० ६ 🗴 ५ इल्डा। ले०काल स०१६८५ । पूर्ण। वेध्टन स० १६१ । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

६१२१. ष्ट्रांगर कवित्त —  $\times$  । पत्र मं०  $\times$  । प्रा० ११ $\times$ ६६ व । भाषा-हित्दी । विषय-ग्रुगार । ०० जाल  $\times$  । ने० जाल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टन सं० ४६imes । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

६१२२. भ्युं नार शतक—मनुं हरि । पत्र स०६ । ग्रा० ६ $\times$  ४ $^{\circ}$  इन्त । भाषा-सस्कृत । विषय-भुगार स्म । र०कास  $\times$  । तेककास  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स ३/१६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेतिनाथ टोडारायसिह (टॉक) ।

विशेच---१०२ पद्य है।

६१२३. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १२ । घा० १०६ ४६ इ.च. । ले०काल 🗴 । बेष्ट्रन स० ४६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६१२४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २०। आ० ११४४ इश्वा ले०काल ४ । बेष्टन सं० ४६० । प्रास्तिस्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर।

विशेष---प्रति टिप्पण सहित है।

६९२५. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४० । मा० १०६ ४ ६ ६ खा । नै०कान ४ । बेष्टन सं० ४६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--श्लोक स० ५५० है।

६१२६. सुन्दर भूरे गार— महाकवि राजा। पत्र स० ३२। घा० ०३४ ४ १ इ.स.। भाषा— हिन्दी गर्या। विषय—पूरागा र०काल ४ । तेककाल स० १००३। पूर्णा। वेष्ट्रकुलं० १६१–७१। प्रास्ति क्ष्यान—पिठके सन्दिर कोटीहर्यों को इसपर।

यह मुदर मिगार की पोथि रिच विचारि।

चूक्यौ होइ कडू लघु लीज्यो मुकवि सुधारि ॥

इति श्रीमत् महाकविराज विरचित मुदर सिगार सपूर्ण ।

सवत् १८८३ वर्षे ग्राके १७४८ प्रवर्षमाने पौष मामे ग्रुवल पक्षे तिथी २ शनिवातरे सामकाले लिखीत ।

६१२७. प्रतिसं० २ । पत्र स०७ । मा० १०imes१३ द च । ने० काल imes । पूर्ण । प्रेष्टन सं० ३६३-१४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

६१२ म. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २४ । प्रा० ६ $rac{1}{2} imes rac{1}{2} rac{1}{2}$  इञ्च । से०काल imes । पूर्ण । बेहनस० २७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबनाना यूदी ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

६९२६ प्रतिसं० ४ । पत्र सं०११-६२ । ग्रा०७ ४ ६ इक्स्य । लेक्षेत्र काल ८ । ग्रापूर्ण । वेष्टन सु०६२ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर पाष्ट्रवेनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

६१३०. प्रतिसं० ४.। पत्र म०२४ । घा० १०४४ है इश्वा । ले•काल स०१७२८ । बेष्टन स०६१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जबपुर ।

विशेष-- अंत में मुन्दरदाम कृत बारहमामा भी है। प्रन्य की प्रतिलिपि मालपुरा में हुई थी।

६१३१. सुन्दरभृंगार—सुन्दरदासः । पत्र स०४७ । आ० ११४६ इ.च.। भाषा—हिन्दी ए.। विषय---प्रगार । र०काल ४ । ले०काल स०१८४६ । पूर्ण । वे० सं०४७२ । प्राप्ति स्थान— दि० कैन मन्दिर सफ्कर जयपुर ।

विशेष -- नेमिनाथ चैन्यालय में प० विजयराम ने परा किया था।

६१३२. प्रति स०६ । पत्रस०४२ । आ००८४५ इथा । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टन स०८ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

----: 0 :----

## विषय -- रास, फागु वेलि

**६१३३. प्रजितनाथ रास—व० जिनदास ।** पत्र स०४० । ग्रा० १२ $\times$ ४) दश्व । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय—रास । २०काल  $\times$  । क्षे०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२२४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रवान मंदिर उदयपुर ।

विशेष-- मादि मन्त भाग निम्न प्रकार है--

#### प्रारम--वस्तु छद--

सजिन जिनेसर, स्रजित जिनेसर।
पाय प्रशासि सुतीर्थकर स्राति तिरमला
मन बाहिल फलदान मुभकर।
गाएगर स्थाभी नसरकर
सरस्वित स्वाभिगा च्याङ, निरमर।
श्री सकलकीरति पाय प्रशासि
स्निष्ठवन कीरिन भवनार।
रास करिशङ्खे निरमकी
स्वरा ब्राह्मस्वास्त्र स्थानस्वरा

#### भास यशोधर---

मिवयम भावेइ मुगुमा चग मिनधारे श्रानन्यु । श्रीजन जिस्सेमर चारित्रमार कह गुगाचन्द ।।

#### ग्रन्तिम---

श्री सफलकोरित गुरु प्रसामीन मृति मजनकोति मजनार । रास कीचो में निरम्ल मजित जिल्लोगर मार ॥ पदर्द गुरुगद जे सामनद मति घरि सबिबान भाव । तहसद रिद्ध घरे मारा पामर जिल्लारु ठानी ॥ तहसद रिद्ध घरे मारा पामर जिल्लारु ठानी ॥ सज्ञा सामस्य साति निरमलु भवि भवि देउ मुक्तमार ॥ बद्धा जिल्लासाम् इस बीनकेड भी जिल्लास मुमृति दातार ।

इति श्री ग्रजित जिल्लानाथ रास समाप्त ।

६१३४ प्रमरदत्त मित्रानंद रासो — जयकीति । पत्र स०२७ । प्रा०१२ ४ ६ इञ्च । मापा-हिन्दी (पत्र) । विषय-रामा साहित्य । २०काल म०१६६६ । ले०काल ४ । पूर्ण । केटन म०१३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहत्तथी दीमा ।

बिशेष ~ प्रति नवीन है।

**६१३५. फ्राबिपुरासा रास—का जिनदास।** पत्रस**ः १८०। फ्रा०१०**४६२ इ**व** । भाषा– हिन्दी पद्य । विषय–पुरासा । र०काल १४ वी सताब्दी । ले०काल स⇒ १८३१ मादवा बुदी १२ । पूर्स । वेक्टनसं०११८–४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर टोडागयसिंह (टोक)।

६१३६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । आ० १२ ५६३ इङच । ले०काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेग्टन स० ४२६-१६१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुनग्पूर ।

६१३७ श्रादिनाथ फागु—स० ज्ञानभूषण । पत्रत०३-११ । ब्रा० ११  $\times$  ४ डब्च । भाषा-शिली । विषय-फागु माहित्य । २०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  अपूर्ण । बेष्टुन स० ४५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-शाचार्य नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य ब्र० शिवदात ने लिपि की थी।

**६१३६. प्रति स**०२ । पत्र स०२६ । ग्रा०१६<sup>9</sup> ४६ इञ्च । ते० काल स०१६६६ । पूर्ण । वेष्टन स०६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन क्रयवाल मदिर उदयपुर ।

प्रणस्ति निम्त प्रकार है ~~

भवत् १८६८ फाल्मा नुदी १४ रविवासरे श्री सल वर नगरे मुल<mark>संघे सरस्वती गच्छे कु दकु दाचार्या-</mark> च्ये भट्टारक श्री १०८ श्री श्री चन्द्रकीति तिजयराज्ये तत् शिष्य पडित श्री गुलावचन्द्र जी लिखित ।

६१३६. प्रति सं० ३ । पत्र म०२८ । ब्रा०१२ ४.४ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्णा विष्टन म०३७१ ४४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेष-- कुल ४०१ पद्य है।

६१४०. श्रावाडभूतरास — ज्ञानसागर । पत्रस० १२ । प्रा०१० ४४ देश्व । भाषा-दिस्ती । विषय-कथा १०काल ४ शेक्शाल ४ । पूर्ण । वेटनग० ३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोम्मसी कोटा

६१४१. इलायचीकुमार गस—ज्ञानसागर। पत्र स०१०। ग्रा०६  $\times$  ४५ इ.च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय कथा। २०काल स०१७१६ सातोज गुरी २। ले०काल स०१७२० बेष्ठ माल। पूर्या। वेष्ट्रन स०६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मधिर बोरसली कोटा।

**६१४२. प्रति सं० २** । पत्र स०१४ । धा०११ $\times$ ४ इञ्च । लेक बाल  $\times$  । पूर्ण । बेस्टन स० ३३२ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मिंदर बोरसली कोटा ।

६१४३, प्राजस्मा रास $-\times$ । पत्रक्षः १४। प्रा० १०  $\times$  ४ इखा। भाषा-हिन्दी (पद्या)। विषय-चित्रः । रूक्काल  $\times$ । केक्काल सं० १६०७ माघ बुदी २ । पूर्णः। बेट्टन ,म० ३७। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर दवलाना (बूदी)।

६१४४. **ग्रंजना मुन्दरी सतीनो रास** —  $\times$  । पत्र स० ४–१७ । ग्रा० १०  $\times$  ४ ६ खा। माषा—हिन्दी पद्य । विषय-कद्या। र० काल  $\times$  । ले० काल स० १७१३ कागुन बंदि ७ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ४८६ । **ग्रुप्**रित स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू नरपुर ।

६ १४६, कर्म विपाकरास—ब॰ जिनदास । प्रा॰ १०६  $\times$  ४, इस्र। प्रापा-हिन्दी पद्य। विषय-राम । र॰ काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण । वष्टन म॰ ६६-४२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मिदर कोर्टावर्ण का इ गरपुर।

६१४७. करकुंडनोरास—बह्य जिन्दास । पत्र स॰ २१ । ब्रा० १०Xर्भे इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—क्ष्मा । र० काल X । से०काल स० १६२१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

विशेष — सबत् १६२१ वर्षे भट्टारक श्री १०० धम्मंबद्र जी तत्सीस व. गोकलग्री लिखीत तत् लघू भ्राता व मेघजी पठनार्थ ।

६१४६. गौतमरास-  $\times$  । पत्रस $\circ$  ३ । धा $\circ$  १०ceil <math> imes १३ १३ । आधा-हिन्दी । विषय-क्या । रुक्ताल imes १७ काल स $\circ$  १६०४ । पूर्ण । वेष्टनस $\circ$  १३२१ । प्राप्ति स्थान-िद $\circ$  जैन सिंद खडों imes भावत ।

६१४६. **चतुर्गति रास—बोरचन्द।** पत्रस०१ । प्रा० १ ४ ४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय—चारगतियो का वर्णन । र॰काल ४ । ले॰ काल स०१-११ । पूर्ण । बेहुनस०१०३ । प्राप्टित स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६१४०. **चारवत्त अंकोनो रास - भ यशःकोति**। पत्रम०३-४२ । ग्रा० ६१४६ स्वा। मापा-हिरो । विषय-कथा १ र०काल सं० १८७४ ज्येष्ठ मुत्री १५। ने०काल स० ११७६। धरूर्गा । वेष्टन सं० २२३ ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उत्ययुर ।

विशेष — भी भूलसभे बनात्कारगणे भारतीगच्छे कुंदकुंदावार्याच्ये म्रीण्यर सकलकीति सुवनकीति तत्पट्टे मानस्वाण तत्पट्टे विवयकीति तत्पट्टे गुभकर हत्पट्टे मुभितिकीति तत्पट्ट गुगकीति तत्पट्टे वादिभूत्यण तत्पट्टे रामित्रकीति तत्पट्टे वादिभूत्यण तत्पट्टे रामित्रकीति तत्पट्टे व्यवस्थिति तत्पट्टे वेवेरकीति तत्पट्टे कोरेन्द्रकीति तत्पट्टे नरेन्द्रकीति तत्प्तर विवयकीति नेमित्यर जी म० चरकीति पट्टे कीरियाम रहिते गण्डस्पित यस कीर्ति ने सदय देश में भूलेव गाव में भादि जिनस्वर के भाग पर रचता की थे।

बबेला में भ० यशः कीर्ति के शिष्य खुशाल ने प्रतिलिपि की थी।

**६१५१. चिद्र पश्चित्तन फागु**— $\times$  । पत्रस**े** २२ । आ० १२ $\times$ ४३ इ.ख । आया-हिन्दी (पद्य)। विषय-चिन्तन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१=० । प्रास्ति स्थान— दि० जैन प्रयवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२४२. चंपकमाला सती रास $-\times$ । पत्रस्त० १। मा० ६ $\frac{1}{5}\times$ ४ $\frac{1}{5}$  इव । माषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टनसं० २६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दवलाना (ब्रुदी)।

६१४३. जम्बूस्वामीरास—बहा जिनदास । पत्रस० ७३। घा० १०४४ हुँ इस । माया— राजस्थानी पत्र । विषय-कथा । र०काल ४ । ने०काल स० १६२१ पीष बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष —सवत् १६२१ वर्षे पोस वदी ११ जुकवासरे श्री मूलसबे सरस्वतीगछे बलात्कारगरी श्री कुन्दकुन्दावार्याक्वये भट्टारक श्री १०६ रत्नवन्दकी तत्पट्टे भट्टारक श्री १०६ देवचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री १०६ घम्मवन्द्र जी तत् शिष्य ब्रह्म गोकल स्वहस्ते लखीता । स्व ज्ञानावर्शी कम्म झयार्थे ।

११४४. जस्बूस्वासी रास — नयविमल । पत्र सं०२४ । ग्रा०११ $\times$ ४ इ.च । भाषा-हिन्दी (पदा)। विषय-कथा । एकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म०३३३ । **प्राप्ति स्थान—दि०** कैन महिन्द अभनते कोटा ।

**६१५५. जिनदत्तरास**—रत्नमूबर्ग। पत्र स० २०। घ्रा० १० $\frac{1}{2} \times 4$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य)। विद्यय-क्रया। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० १६६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन घ्रव्यान मन्तिर उदयपुर।

विशेष-ग्रादिभाग निम्न प्रकार है-

सकल मुरागुर पर निम नमू ते जिनवर राय गणवरणी गोतम नमूं, बहु भूनि सेवित पाय ।११। मुक्कर मारिग वाहनी, भगवती गवनी तार । तेह नगा चरण कमल नमू, जे बेखा पुरनक बार ।१२। श्री जानमूबण जानी नमूं, नमूं मुमति कीति मुरिद । दक्षण देणनी महापनि नमू, श्री गुरु धर्मवन्द ।१३। एह तथा चरण कमल नमि, कहूं जिनदत्तवरिड विचार । भवित्राण जनसह सामली, जिम होर हरिष्ठ कपार ।१४।

### धन्तिम भाग---

. मूलसघ सरसतीगछि, सोहामएो रे,

काई कुंदकु दयति राय । तिथा ग्रनकारी ते बलात्कारगणी.

जारापिरे ज्ञान भूषरा निम पाय ।।१॥ श्री सुरिवर रे समिति कीरति पदनमीरे

नमी श्री गोर ध्रमचन्द्र । श्री जिनदत्त रास करिवा मिन उपन्नो रो, काइ एक दिवासी भ्रानंद ।।

बूहा---

देवि सरस्वती गुरू नमीमि कीघी रास सार। इस्मो होइ ते सावज्यो पूरो करज्यो सुविचार। श्री हासोट नगरे सुशासम् श्री धादि जिनद भवतार। तिस्मि नयरे रखना रखी श्री जिन सासनि श्रुंगार। धामो मास सोहामणो मुदि पंचमी बुधवार।
ए रचना पृरी करी हामलो मिववन सार।।३॥
श्री रत्नभूषाग पूरिवर कही वे बांचे जिनदनए रास।
श्री रत्नभूषाग पूरिवर कही वे बांचे जिनदनए रास।
जिनदनने परि सूख लही पोहोचि तेहने घास॥४॥
भणि भणिव ए मही जिबि जिल्हाचि रास।
तेह धरि नविजिध सर्वाज पूजना जिन पात।।१॥
भविष्यण जन वे सामिल रास मनीहर सार।
श्री रत्नमण्या मुरीवर कही तेह धरि मनलावार।।६॥

**६१४६. प्रति स**०२ । पत्र स०४० । ग्रा०११ $XY_2^{\dagger}$  इच्छ । ले० काल म०१६६५ । पूर्ण । बेप्टन स०३३१–१५६ । **प्राप्ति स्थान**—वि०जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष-सवत् १६६५ वर्षे फाल्ग्सा मासे कृष्मापक्षे १२ बुधवारेमा लिखितमिदं जिनदतः राम ।

**६१५७. जीवंघर रास—बहा जिनदास ।** पत्रम० ७४ । आगु० ११ $\times$ ४ उन्द । भाषा-हिन्दी । विषय-चित्रत्र । रक्ताल  $\times$  । लेक्जाल  $\times$  । सपूर्णः । वेष्ट्रत्र स० ४१८/६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जेन समस्ताथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- एक वटित प्रति ग्रीर है।

**४१४८. प्रतिसं० २** । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टुनम० ५०/४६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन स भवनाथ मंदिर उदयपुर ।

विशेष -- मेवाडदेश के गेगला ग्राम में ग्रादिनाथ चैत्यालय में स॰ १८६४ में प्रतिलिपि हुई थी।

**६१५६. जोगोरासा** — जिनदास । पत्रतः ३ । ग्राः ११४४ । इतः । भाषा- हिरो (पत्रः) । विषय—प्रध्यास । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनसः २५६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

**६१६०. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० २ । श्रा० १०३ × ४३ इञ्च । ले० काल 🗙 । पूर्ण । बेष्टन स० ६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दबलाना (ब्रुदी) ।

६१६१. दानफलरास- **ब**० जिनदास । पत्रम० र । मा०११ $\times$ ७ इव । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय —कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन म०१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्रोडेबवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — लुब्बदत्त एव विनयवती कथा भाग है।

द्मन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री दान फलचरित्रे ब्रह्म जिनदास विरचिते लुब्यदत्त विनयवती कथारास । १६२२ वर्षे श्रावस बुदी ११ तिथी पडित रूपचन्दजी कस्य वाचनार्थाय ।

६१६२: द्वीरवीशील गुरारास—झा० नरेन्द्रकीलि । पत्र स० १३ । ग्रा० ११ × ६ इंच । मापा—हिन्दी (पद्य) । विषय—कथा । र०काल × । ले०काल स० १६२० । पूर्ण । वेप्टन स० १८४ । प्राप्ति स्थान— दि० जेन ग्रायतल महिर उदयपुर । **६१६३. धन्यकुमार रास—क** जिनदास । पत्रस० २६। घा० ११ $\times$ ६ दश्च । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय—रास । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० २०३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**६१६४. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०३३ । लेब्बाल स०१६४५ । पूर्णं । बेब्टन स०३३/४**१ ।** प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयदुर ।

र १६५. धर्मपरोक्षारास—वि० जिनदास । पत्र तं० ३-२८ । घा० १७४४ इञ्च । आपा— हिन्दी । विपर —कथा । र०काल × । ले० काल स० १६३५ । अपूर्ण । वेष्टन स० १४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर देवतान (विदी) ।

विशेष - प्रशस्ति निम्त प्रकार है।

सबन् १६५१ वर्षे जंग्ठ सुरी १० स्वरित श्री मुलगरे सरस्वनीमच्दे बलाकारमणे श्री कुन्दकुत्पाचार्या— स्वयं भट्टारक श्री पद्मादिदेवास्तरपट्टे भ० श्री सकलकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भ० श्री कुनकीर्पिदेवा तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषणदेवा तत्पट्टे श्री विजयकीर्तिदेवा तत्पट्टे श्री णुनकरद्रदेवा तत्पट्टे श्री सुमितकीर्तिदेवास्तरपट्टे भ० श्री गुगकीर्तिदेवास्त्रप्रामायं ब्र० जिनदाम तत्पट्टे ब्र० श्री शानिदास तत्पट्टे ब्र० श्री हेमराज तत्पट्टे ब्र० श्री राजपाल तहीर्तिता विज्ञान विज्ञान विच्नशण बाई श्री रूडीये चर्मपरीक्षा रास ज्ञानावर्णीय कर्मक्षयायं पडित देवीराम पत्रपार्थं।

**६१६६. धर्मपरीक्षारास – सुमितिकीर्ति** । पत्र स०१६३ । आ०११४७ इखा । आपा— हिन्दी पदा । विषय — पर्म । र०काल स०१६२५ । ले०काल स०१६३५ । अपूर्स । वेष्ट्रन स०४०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मुद्धि वोरमली कोटा ।

**६१६७. प्रति सं०२।** पत्र म०३६ । झा०१०×६ इश्वा ले**०काल** × । ऋषूर्एं। बेष्टन स०२६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर बोरमली कोटा।

**६१६८. प्रति स० ३**। पत्र म० १७८। ग्रा० १०४५ इखा। लेल्काल स० १७३२ चैत्र बुदी ४। पूर्ण । वेग्टन स० १७० १११९ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समबनाथ मदिर उदयपुर ।

विशेख - ग्रहमदाबाद मे प्रतिलिपि हुई थी।

६१६६. धर्मरासो $\cdots \times 1$  पत्र म० १० । ब्रा० १० $\frac{1}{2} \times 2^{\frac{1}{2}}$  इच्च । भाषा—िहन्दी पद्य । विषय — धर्म । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । बेग्टन म० ४६ । **प्राप्ति स्थान** —िद० जैन मन्दिर भादिनाथ बुदी ।

६१७०. ध्यानामृत रास— त्र० करमसी । पत्र म०३२ । घा०१०४४ इला । भाषा— हिन्दी । विषय — कथा । र०काल ४ । ले० काल स०१८१६ । पूर्मा । वे०स०२६१-११४ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मदिर कोटडियो का हुगरपुर ।

६१७१, नवकाररास—द्र० जिलादास । पत्रस० २। प्रा० १०१ $\times$ ४ $\frac{1}{6}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ११६२ । प्राप्ति स्थान-मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर प्रजीर ।

विशेष - एामोकार मंत्र सम्बन्धी कथा है।

६१७२. नागकुमार रास-व० जिनदास । पत्रसं० ६। घा०११४४ इंच । भाषा--हिन्दी पद्य । विषय---रास साहित्य । र०काल १५ वीं जताब्दि । ले०काल सं०१८२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन लण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१७३. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३१ । ले०काल स० १७१४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४२/१३० । प्राप्ति स्थान-— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१७४. नेमिनाधरास—पुष्परतनमुनि । पत्रस०३ । झा० १०४४ है इ.च. भाषा—हिन्दी। विषय—क्या । २०काल स०१४८६ । ले०काल 🗴 । पूर्णा विष्टनस०७३६ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष--ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है।

ग्रादि भाग-

सारद पय प्रणमी करी, नेमितमा गुण होइ घरेवि । राम भणु रत्तीयामण्ड, गुण गुरुबड गाइनू सवैवि ॥१॥ हुँ बिलहारी जादव एक, रम उरवई छडवालि । प्रपराघ न मइ को कीयड, काइ छोडड नवयोवनवाल ॥२॥ सोरीपुर कोहामग्गड, राजा समुदिवजय मड ठाम । मित्रावेदी राग्णी तमु तमुण, क्षमोण रूपइ रम समाणु ॥३॥

श्रन्तिम पाठ---

सजम पाल्यज सातसइ वरम सहसनज पूरज पूरज प्राज । प्रासाज सुरी घाठमी मुकती पहुना जिन्मवरराय ।।६६।। सबन पनरविक्षासिक राग रिवंज धागणी मन आह । राजगढ मक्गा तिनज मुरु थी नदिवद्धं न सुरि सुपसाई ।।६७।। प्रह उठीनद प्रमायिद की यादवयहन गिरिनारि । मनविक्षत फन ते ते लहुद हरिषिद जो गावद नरनारि ॥६६॥ समुद्रविजय तन मुण्य निनंज सेय करद जसु मुर नर बृग्द । पुष्प रतन मुनियर माण्ड थी सथ सुपसन नेमि जिल्लर ।।६६॥

**६१७५. प्रतिसं०२** । पत्र म०२ । घा० ६×४ इश्वः । ते०काल × । पूर्णः वेष्टन सं**०** ४६८ । **प्राप्ति स्थान** – भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६२७६. नेमिनाथ विवाह लो—खेतसी । पत्रसः १२। प्राः ११ $\times$ ५ इञ्च । प्रापः निहस्य प्राः । विषय—विवाह वर्णन । रक्काल कि १६६१ प्रावरा । लेक्काल स्वः १७६३ क्रांतिक बुदी १४ । पूर्णं । बेहनसंक १८६ । प्राप्ति स्थान—विक् जैन मन्दिर फतेहपुर खेखावाटी (सीकर)

६१७७. नेमिनाथ फागु—विद्यानंवि । पत्रत० ४०। म्रा० १० $\times$ ४ $^3$  इञ्च । म्राषा—हिन्दी पद्य । विषय—फागु । र०काल स० १८१७ माथ सुदी १। केकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १/३३ । म्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक) ।

विशेष--प्रति बहत सन्दर है तथा ७६६ पद्य हैं।

६१७८. प्रतिसं० २ । पत्र स०४४ । ब्रा० ६१ ४४ । इता । लेकाल सं०१८३१ माघ सुदी १३ । पूर्ता । वेस्टन स०७६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

६१७६. नेमीश्वररास—द० जिनदास । पत्र स० १६५ । बा० द्र४६ इव । भाषा-हिन्दी । विध्य-रास साहित्य । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १५३/५३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६१८०. परमहंस रास— क० जिनदास । पत्र स० ३८ । घा० १०३ ४४३ इञ्च । माषा-हिन्दी । विवय — स्पक काव्य । र० काल ४ । ले० काल स० १८२६ छ्वेष्ठ मुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रनसं• १६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन लण्डेलवाल मदिर उदयपुर ।

६१६**६ १. पल्यवियान रास— म० गुभचन्द्र** । पत्र स०४ । ब्रा० १०<mark>१</mark> ४४ इन्छ । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय—क्या । र० काल ४ । से० काल ४ । पूर्ण । वेप्टन सं० १**१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रतियर बोपसली कोटा ।

प्रारम्भ--

श्री जिनवर कर मानस करी, पत्य विधान रे भाई कहिंद्यू कर्म विषाक हर।
ए पुष्य तथा तिधान रे भाई, ब्योहरगिर उपवास,
पत्य तथा बिला च्यार छह छठार।।
पाप पक हुर करि करा मिक सेह ठार।।१।।
भादवा मास वदि ६ वडी सूर्य प्रभ उपवासी।
भाई उपवास पत्य तथाजकत तस्य सर्व मृदामुर दासार।।२।।

धन्तिम---

एसि परसारय साबो, माया मोह मे बाघो ॥ शुभवन्द्र मट्टारक बोलि, शुद्धो धर्म ध्यान धरी बाघो ॥ पल्य ५ वस्तु ।

छटोसदवत २

मुगित दातार भगाती सिव सुख मपित । उपित घम घाणद कद हो धनत पत्य उपवास कल सकत विपुल निर्मन घानद कंदह । भट्टारक पुभवन्द्रमणि के मणा निवली रास । प्रमुक्त कुमन दिनवार लक्ष्मी होइ तस दास ।। है।। इति पत्य विवानरास समाला ।

संबत् १६६० श्री मूलसघे फागए। बदि ५ दिने उदयपुरे पं० कानजि लिलितोयं रासः ४० लाल जी पठनार्थं।

**६१८२. प्रति सं० २ ।** पत्र स० ६ । प्रा० १० $\frac{1}{4}$  ×  $\frac{1}{4}$  इसा । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अष्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**६१८३. प्रतिसं०३ ।** पत्रसं०६ । आर०१० ४ ४ डचा ले०काल ४ । पूर्णावेष्टनस**०** ३२२ <sup>१</sup>१२२ । **प्राप्तिस्थान** – दि०जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६१६४. प्रति सं०४ ।** पत्र सच्या ६ । ले०काल  $\times$  । पूर्यो । वेष्टन स० ३२३/१२३ । **प्रास्ति** स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—पहिले पत्र के उत्पर की छोर 'नागद्वा रास' नागदा जाति का रास जानभूषण का हिन्दी में दिया है। यह ऐतिहासिक रचना है पर अपूर्ण है। केवल प्रनित्म २२ वा पद है।

श्रन्तिम --

श्री ज्ञान भूषण मुनिवरि प्रमुगियाकी घुरास मैं सारण हवुथ जिल्हार कहीय वसुिल श्रीप्रथ

माहिरास रच्च धनि रूवड्ड हवि मिशा जो नर नारे।

भगिसी मगावेजे सामने ते नहिसीइ फन विचार।

इति नागदारास सम्पर्ग ।

**६१८५. पाणीगालन रास**—ज्ञानभूष्ण । पत्र स० ८। आ० १०  $\times$  ४३ इ.स. भाषा — हिस्दी (पदा)। विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३५७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१८६. पोषहरास - ज्ञानभूषण । पत्र स० २-६ । प्रा०१० ४४ इत्य । भाषा- तित्री । विषय-कथा । २०काल  $\times$  । प्रेति । प्रपूर्ण । वे० स०२७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयुर ।

६१८७. प्रश्नु स्तरासो — बहारायमस्त । पत्रस० २०। प्रा०११  $\times$ ६ दश्च । भाषा — हिन्दी । विषय—क्या । र०काल मं०१६२८ । ते०काल  $\times$  । । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४४-  $\times$  । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर वडा वीस पथी दोगा ।

विशेष -- गढ हरसीर में ग्रन्थ रचना हुई थी।

**६१८६. बृद्धिरास**—  $\times$  ।पत्रस० १ । धा० २ $\frac{1}{2} \times C^{\dagger}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-विविध । १० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्गं । बेष्टुनस० २१४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृद्धी) ।

विशेष -- इसमे ५६ पद्य है। य तिम पद्य निम्न प्रकार है---

गालि मद्र गुरु सकत्य हुए ए सबि सीम्य विद्यान ।

पावि ते सिय रापदाण तिस धरि नवय विधान । १६।।

इति बुद्धिगस संपूर्ण ।

६१८६. बाहुबलिबेलि—वीरचन्द सूरि । पत्रस० १०। ग्रा॰ ११ $\times$  ४३ इङ्म । भाषा—हिन्दी (प्रया) । विषय-कन्ना । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १७४४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १७ । प्राप्ति स्थाम-रि० जैन लण्डेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१६०. बंक दूल**रास— म० जिनदास ।** पत्र स० ६ । ग्रा० ११४४ ६२४ । भाषा - हिन्दी (पद्य)। जिपर—कता - २०काल 🗶 । ले०काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन अप्रवास मन्दिर उदयदुर । विशेष---उपा ० श्री गुराभुषमा तनु जिप्य देवसी पठनार्थ ।

**६१६२. प्रति सं० २ ।** पत्र स० ११ । मा० ११ imes ५ दश्च । ले० काल imes । पूर्ण । बेप्टन स० १८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६१६४. मिविष्यदत्तरास—विद्यामुबरासूरि । पत्रसः २१ । द्वा॰ ११ $\times$ ४, इञ्च । भाषा– हिन्दी पद्य । विषय-कवा । र० काल म० १६२३ स्रपाद मुदी १४ । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—वि० जन मन्दिर बटा बीम पथी दीमा

६१६**५. मुनि नुरारास बेलि--क गांगजी** । पत्र स० १०। आ० ६×४३ टला। भाषा— हिन्दी पद्य । र० काल × । ले० काल स० १६१४ । पूर्ण । बेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

६१६६. मृगापुरावेति—  $\times$  । पत्रस० २ । ग्रा० १० $\times$ ४ | इख । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मधिर दवलाना (व दी) ।

स्**१६७. यशोधर रास—वार्जनतास ।** पत्र स०२६ । प्रा०११ × ५ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-रास (कवा) । रक्ताल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०११६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मदिर पार्वताथ चौगान व ही ।

**६१८८. प्रतिसं० २** । पत्र स० २४ । सा० ११ × ६ इल्बा । ले० काल स० १८१७ । पूर्ण । वेष्ठन स० २०२-८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जंन मन्दिर कोटडियो का इगरपुर ।

६१६६ प्रति सं० ३ । पत्र स० ४४ । धा० १०३,४४३ इश्व । लेक्सल स० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६-३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

प्रशस्ति—स० १६२२ वर्षे पीप मासे णुक्त पक्षे सोमवासरे कुश्वनगढ मध्ये श्री पाश्वेनाथ चैत्यालये भी मूलवर्ष सरस्तीमच्छे बनात्कारमणे श्री कुदकुदाचायांच्ये बागड पट्टे भ० श्री १०० रननचन्द्र जी तराष्ट्रे स० श्री १०० देवचन्द्र जी नताट्टे भ० श्री १०० धमंचन्द्र जी तत् शिष्य पडित मुखराम लिखित। श्री कल्यागामता।

६२००. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ३४ । ग्रा० १० 🗴 ४ ट्रै इञ्च । ले० काल सं० १७२६ । पूर्णा वेष्टन सं० १४२ -६६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वारपुर ।

६२०१ रत्नपाल रास—सूरकार्व । प्रस०२०। आ०१  $\times$  ४,इ.ख । भाषा-हिन्दी तथा। विषय-रास । र० काल स०१७३६ । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०२६५-११४ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन सन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

६२०२. रामखन्द्ररास— ब्रह्म जिनदास । पत्र स०३२०। प्रा० १० $_2^* \times V_2^*$  इथ । माषा— राजस्थानी । विषय—राम काव्य । र०काल स० १५०८ । ले० काल स० १८२४ । पूर्ण । वेष्टन सं०६। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बुंदी ।

विशेष---

संबत् १५ घठारोतरा मागसिर मास विसाल शुक्त पक्ष चडरिय दिने, हस्त नक्षत्र रास कियो तिसा गुरामाल ।

वस्त बंध - रास कियो २ श्रतिसार मनोहार ।

अपनेक कथा गुणी बागलो, रात तणो रास निरमल, एक जिल करि साभलो भाग धरी मन माहा उजल,

श्री सकलकीरि पाय प्रगामीने बद्धा जिनदास भरासे सार

पडे गुगो जो सामले तहिने द्रव्य श्रपार ।

इति श्री रामवन्द्र महामुनीश्वर राम सपूर्णं समाप्त ।

भव्रवा गाव में प्रतिलिपि की थी। विशेष — इसका दूमरा नाम रामराम/रामसीताराम भी है।

६२०३. रामरास — वाजिनदास । पत्रसः ४०४ । खा० १२४६ इञ्च । भाषा-राजस्थानी विषय-रामकाच्य । र०काल स १४०८ । ले०काल स० १७४० । वेष्ट्रनसं ० ६-६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का क्षंत्रस्य ।

प्रशस्ति—सवर् १७४८ णांके १६१३ वर्गे ध्रायाड पर मासे णुग्न पत्ने त्रयोदणी तिथी रिवसावरे प्रजापति कसत्वरे तिसिक्त रामराम स्थामीनो श्री देउनगांगे गुगस्थाने श्री मूलसवे सेनाएो पुरूकराएऐगांन्ना श्रीकृपभरेताथम्य पहाचली श्री जिननेन भट्टारक तत्वर्ष्ट्र स्टूगरक श्री नामत्वनद्व साह श्री खर्चन मुन रत्नकेल निस्तित माह श्री जयवंते सा, मान प्रवाद कुटंड जन्म वन साती वेरेरबानाच् गोज साहल ।

विशेष -इसका दूपरा नाम रामधीतारास । रामवन्द्र रास भी है ।

६२०४. रामरास—माधवदास । पत्रस० ३६ । ग्रा० १० ४४ ६ छ। प्राथा-हिन्दी पप विषय-कथा। र०काव ४। से०कान स० १७६० वैशाल मुदी ७। पूर्ण । बेष्ट्रनस० ६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन सण्डेनवाल मन्दिर उदयपुर।

६२०५. **रुक्निरि**णहरूरणरास--रस्तभूषरणसूरि । पत्र सं०२-६ । आ० ११ 🗴 ५ ६७ । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । रुक्ताल ४ । लेकाल स० १७२१ । अपूर्ण । वेष्टन स०२४१/७५ । प्रास्ति स्थान--दि० जैन समनगण मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — प्रत्य का प्रतिन्म भाग एव प्रशस्ति निन्न प्रकार है।
श्रावस्स विदे रे भुन्दर जासी कि वती एकादशी रास
सूरय माहि रे एह रचना रची जिहा बादि जिन जनदीश
जे नर पिरे प्रसिस भसाविस तेहिन घर मंगलाचार
श्री रत्न प्रयस मुरीवर इस कहिसी बादि जिसस जयकार।
इति श्री क्विमसी हरूस समारता।

प्रशस्ति —स्वत् १७२१ वर्षे वैज्ञाल सुदी १३ सोमे श्री सामग्रङा सुप्रस्थाने श्री ब्रादिनाथ चैरयालये श्री मुमसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गर्से कु दकु दाचार्याम्बये २४० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे देवेन्द्रकीति तदाम्नाये श्री मृनि घर्मप्रयण तत् लिप्य क्र वाधजी जिल्लित ।

६२०६. रोहिस्पोरास—क**ाजनदास** । पत्रस०२४ । प्रा०११ $\times$ ४१ इस्त । साथा— राजस्थानी । विषय-रास । २० काल  $\times$  । ले०काल स०१६न२ । पूर्ण । वेष्टुन स०२०५-१११ । प्राप्ति स्थान—दिव्जन मन्दिर कोटांडयो का इनस्पर ।

प्रसित्त —सवन् १६-२ वर्गे कार्तिक मासे शुक्त पक्षे चतुर्थी सोमवासन्दिने लिखितीय रास । श्री मूलसभे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण तत्यहे भट्टारक श्री प्रभावन्द्र तत्यहे भ० वादिबन्द्र तत्यहे श्री महीबन्द्रणो शिष्य पालीसाह पठनाथ ।

६२०७. वर्ड मान रास—वर्ड मानकिव । पत्र स॰ २३ । घा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इछ । भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय -कथा । र॰ काल म॰ १६६४ । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३६३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन अपयाल मन्दिर उदयुर ।

६२०६. विज्ञु सेठ विजया सती रास - रामचन्द । पत्रस० २-५। म्रा०११४४ इन्च । भाषा —हिररी पय । पिपय - कथा । र०काल स० १६४२ । ते० काल स० १७४४ । म्रपूर्ण । बेप्टन स० १०२-६ । प्राप्तिर स्थान --दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौना ।

६२०६. बतवियानरासो—बिलाराम । पत्रस०२४। प्रा०१२×६२ इख । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । राकाल म०१७६७ । ले० काल म०१६६१ । पूर्णे । वेण्टन स०४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दर तेरह पथी दोसा ।

विशेष - ब्राह्मग भोपतराम ने माधोपुर मे प्रतिनिधि की थी।

**६२१० प्रति सं० २** । पत्रस**० २४** । आ० १० ४६ इच्च । ले० काल स० १८६४ मगसिर सुदी **१** । पृग्गे । बेष्टुनस० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर केसावाटी (सीकर) ।

६२११. शिखरिगरिरास — ४ । पत्रस०१३ । आ० १०३४४३ इश्व । भाषा — हिन्दी । विषय — माहात्म्य । २०काल ४ । ले० काल स० १६०१ श्रावण मुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४८० । प्राप्ति स्थान — न० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**६२१२ शोलप्रकासरास—पद्मविजय** । पत्र सं० ४६ । प्रा० १० $\times$  ४ इञ्च । माया-हिन्दी पद्म । विषय—सिद्धान्त । र० काल स० १७१७ । ले० काल स० १७१६ । पूर्ण । वेष्ट्नसं० १७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर दबलाना (बू यी) ।

६२१३. शोलमुर्वशनरास— ४ । पत्र स० १४ । आ० १० 🖔 ८ ६ ख । नापा—हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नंगावा ।

६२१४. श्रावकाचाररास—जिल्लाका । पत्र स०१३६ । आ० ११×४ $\frac{1}{2}$  इश्व । भाषा— हिन्दी पद्य । विजय—प्राचार मास्त्र । र०काल सं० १६१५ भादवा मुदी १३ । ले०काल सं० १७५३ माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रत स०१४-२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीस पंधी दौसा । विशेष —शीमता काष्टा संगे भवामित वारी साह घरेसीय मार्गा ध्रमृथदेगी लहोडा (सुहाडिया) मौत्रे सुत धार्तीसह कमीमताथं सामितपट्ट मध्ये श्री मिल्लनाथ चैरवालये ५० न्यास केकर सागर लिखी— धामीर का रणा आ।) साडा जगा बैक्का केववा ।

**६२१५. श्रीपालरास — बर्जनवास** । पत्रस० ३७ । घा० १० $\frac{7}{4} \times Y_0^2$  इला । माया-राजस्थानी । विषय-काव्य । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १९१३ मगसिर बुदी १२ । वेष्ट्रन स० ३०२ । प्राप्ति स्थान-विर्कृत प्रग्रवान मदिर उदयपर ।

विशेष-संवत १६१३ वर्षे मगसिर बृदि १२ सनौ लख्यत बाई ग्रमरा पठनाये ।

**६२१६. प्रति सं० २ ।** पत्र स० ३३ । प्रा० ११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १८१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अप्रवाल मंदिर उदयद्ग ।

**६२१७. प्रतिसं० ३।** पत्र स० ३६। ग्रा० १०३/४४३ इथा। ले० काल स० १८८२ फागुन सुदी ५। पूर्ण। बेप्रन स० ५७-३६। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर।

प्रशस्ति --मबन् १८२२ वर्षे फागुन गुदी ५ दिन गुरुवासरे नगर भीलोडा मध्ये शातिनाथ कैत्यालये अ० श्री रत्नचद तत्पट्टे अ० श्री देवचन्द्र तत्पट्टे अ० श्री १०६ श्री धर्मचन्द्र तत् शिष्य प० मुखराम लिश्नित ।

६२१८. श्रीपालरास — बहुा रायमल्ल । पत्र स०१२-४७ । ग्रा०६  $\times$  ४ इत्र । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल स०१६३० । ले० काल  $\times$  । अपूर्णः । बेप्टन म० ७५ । प्राप्ति स्थाल— दि० जैन मन्दिर पार्थनाव टोडारार्थाम्ह (टोक) ।

६२१९ प्रति सं० २ । पत्रस० २१ । प्रा० १० $\times$ ४ $<math>\frac{1}{2}$  इत्व । ते० काल स० १७४५ सावस्स सुदी ६ । पूर्स । वेहन स०४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर रन्दरगढ (कोटा)

विशेष — मुंभतू मे लिखागयाथा।

६२२१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४६ । ले०काल × । पूर्गा । बेष्टन स० ७२८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२२. प्रति स० ३ । पत्र सं० ४६ । ले०काल म० १८६२ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२२४. **श्रोराक प्रबन्ध** रास**—ब्रह्मसंघजी।** पत्र स०६३ । ग्रा०१०२/४४ इच्चा भाषा— हिन्दी पद्यः। विषय—कद्याः। र०काल स०१७७४ । ले०काल सं०१न्४३ । पूर्णे। बेष्टन स०४३६-१६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर। **६२२५. श्रे (एकरास — बहा जिनदास** । पत्र स० ६२ । ग्रा० ६ $\times$ ४ इन्छ । भाषा — हिन्दी । विषय — कथा । र०काल  $\times$  । ते०काल स० १७७० । पूर्ण । वेष्टन स० २६८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति - सबत् १७७० प्रवर्तमाने प्रपाठ मुदी २ गुरुवासरे भ० श्री सकलकीर्ति परम्परान्यये श्री मूलसाथे सरस्वतीगच्छे भ० श्री विजयकीर्ति विजयराज्ये श्री प्रमादाबाद नगरे श्री राजपुरे श्री हुबड वास्तव्य हुबडजाती उन्नेदर गोत्रे साह श्री ५ घनराज कसनदाम कोटडिया लक्षित ।

**६२२६. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४४ । ग्रा० १०४४ है इश्व । ले०काल स० १७६० भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** ग्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२२७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४० । ग्रा० १०३ × ४ इन्छ । लेब्साल सा० १७६६ श्रासीज सुदी १ । पूर्णे । बेपुन स० १९७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

विशेष -- पत्र ३८ से पोषधरास दिया हुम्रा है। ने० काल स० १७६६ काती सुदी १४ है।

६२२ द. अर्थे रिएकरास — सोमविमल सूरि । पत्र स० २६ । ब्रा०१० ४४ इज्व । माषा — हिन्दी पद्य । विषय — कथा । र०काल स० १६०३ । ले०काल × । धपूर्ण । वेष्ट्रन स० । ६६ – ६ प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दोमा ।

विशेष-- २६ से आगे के पत्र नहीं हैं। प्रशस्ति दी हुई है।

प्रारम्भ--

सकल कृद्धि मंगल करण, जिल्ला चउवीस नमेवि ।
ब्रह्मा पृत्री सरसती माय पय पलमेवि ।।१।।
गोयम गण्हर नइ नमुं विश्वन विल्लामण हार ।
सोहम स्वर्गि नमु सदा, जनु णाला विस्तार ।।
सार सदा फल गुरु त्या, दुई अविचल पृष्ट ।
अनुकींम प्वावक मह, जसु नामिह गहुगृहु ।।३।।
हेम विमल तणु दीपतु, औ हेम विमल मूरिद ।
तेह तल्लो चल्लो नमी, हीयइ घरी आण्ड ।।४।।
चद परिचडती कला, समह जेइ नइ नामि ।
सोभाग हरिल मूरिद वर, हरिण्ड तामु प्रणाम ।।४।।
मूरल मक्षर ज कदइ, ते सवि मुगुह पसा ।।

वस्तु ---

सफल जिएाबर २ चलएा बदेवि । देवि श्री सरसति तएगा पाय कमल बहुभत्ति जुलउ प्रशामी गोयम स्वामि बर शुग्रदाय, पय कमलि रत्ताउ श्रीणक राजा गुएनिस्तु निर्मल बुद्धि विवास । रचि सुरासहुँ नेहु तसु सुरिक्ष्यों चति हस्साल ।। ग्रन्तिम--

तप गछ नायक गराधर एहा, सोम मुन्दर सूरि राय । तस पाँट गछपति वेद सू एमा, सुमित सुन्दर सुरि पाय ।। तम् शाला मोहाकरू एमा रत्नशेखर सूरिंद । तस पट गयगा दीपावता एमा लिखिमी सागर सुरिचद ।। मुमति साधु सुरीपद एमा, धजमाल गुरु पाट । सोभागी सोहामग्री एठा ए महा, जमु नामिइ' गह गटमु हेम परिइ जगवल्लहु एग्गए मा श्री. हेमविमल सूरि। सोभाग हरस पाट घर मा. नामि सपद भूरि मु॥ सोम विमल सुरि तास पाटि मा, पामी सू गृह ए साय। श्री वीर जिनवर मधी एमा गायू श्रे शिक राज ॥ भुवन द्याकाण हिम किरगा मा सबत् १६०३ इगि। ब्रहिनागि। सू। भादव मास सोहामगाइ एमा, पहेवि चडिउ प्रमाग्ति । कुमरपाल राय थापी उ एमा कुमर गिरपुर सारसु। सानि जिग्लंद मुपसाउ लए मा, रचु रास उदार मु । ७८॥ चुपई दूहा वस्तु गात मा, सुवि मिलीए तु मान स् । वसइ ग्रसी ग्रागला एमा, जारणु सहुइ जारए । ग्रधिक उछउ मद भगाउ एमा जे हुइ रास मभारि।। ते कवि जन सोधी करी, ग्रागम नइ ग्रनुसारि ॥७६॥ जेनरनारी गाईंसउ सुरणसिई ब्रार्गीरग। ते मूख रापद पामइ स ए मा, रग चली परिचग। जालगइ मेरु मही धरु ए, मा जालगि इ ससि तार। ··· चउ जपूए मामगल जय २ कार ॥ ६०॥

६२२**६. बट्कमंरास**—**क्तानभूषरा ।** पत्र स०१०। म्रा० म्र्रै × ५ इचा। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-कथा। र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रवेजवाल मन्दिर उदयपुर।

६२३०. प्रतिसं० २ । पत्रस०४ । घ्रा०१२ ४ ५ इव । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णं। वेष्टन स०३६ । प्राप्ति स्थान−दि० जैन मन्दिर ध्रादिनाथ बूंदी।

६२३१. सनत्कुमार रास— ऊर्दी। पत्र स०३। ग्रा०१०४४ इ.खा भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र०काल स०१६७७ सावरा मुदी १३ । ले०काल स० १७६२। पूर्ण । बेष्टन सं० ३१८/६२। प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मदिर उदयपुर।

विशेष--रचना का भ्रादि अन्त भाग निम्न प्रकार है।

प्रारम्स--

मुख कर सती सर नमुं सद्गुरु सेव करूं निसदीस । तास पसार्य अध्यासरु सिद्ध सकल मननी जगीस ।

×

×

सनस्कुमार सहामगाउ उत्तम गुगा मिगानउठागा। चक्रीसर चत्रथ उसही चतुर पर्गो सोहै सपराण। ×

× ग्रन्तिम—

सोनहसब् सत्तरोत्तरः मानवा मुख तेरतः प्रवचार ;
उत्तराम मागे सावेषार्थ वित्त वकी कीच्छ उद्धार ॥=२॥
पासवन्द मुख्यम नमी हरच वरीए रचीच्छ रासः ॥
कृषि ते उत्तरी हम कहे भागद तिहा भीर मागल लिख निवासः ॥=२॥
इति श्री अनल्कुमार रास ममान्तेति ।
सवन् नतरं से बास्त्रे नेयरष्ट मुख्याम ।
सीरभी मुख्याद थी निवल जटमल राम ।

६२३२. सीताशीलपताकागुरा बेलि— प्राचार्यं जयकीति । पत्र सं० ३१ । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल स० १६०४ । ते० काल स० १६७४ । पूर्णं । वेष्टन स० १३/१४१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उरयपुर । यह मुल पाहुलिपि है ।

विशेष--- ब्रादि ब्रन्त माग निम्न प्रकार है--

प्रारम-गग ग्रासावरी-

सकल जिनेक्वर पद सुगल,
प्रानि हृदय कमिल घर तेह ।
सिंद्ध समूह गुण अरोपम मिल
प्रमामिल पर ते एह ॥१॥
सूरीवर पाठक मुनी गहु
प्रानि भगवती भुवनाधार
सरस सिंद्धांत ममूहिल
जिन मुखा प्रगटी प्रतार ॥२॥
श्चित लो घनादि गराधर होण
प्रति समून मिल्टा विस्तार ।
श्चारा उल्लहि सहुव बन्दिव
बेल्ल शान की कहि कसीसार

× श्रातिम–

सीता समरग् जिनवर करी भ्रानि सह लोक प्रति कहि बाज पर पुरुष ज्यों नि इच्छये होय तो भ्रमन्य प्रकट करे साज । इस कही जब भ्रमत्वाचिष्ठ तेज भ्रमन्य गर्व जल थामि । जब जय गब्द देव उच्चिरि पृत्रि प्रमुमी सीता तराग पाय । मुद्र बार्ट गुरु की दोक्षा नेद तम जब करी वर्म व्यान । समाधि सन्यासि प्रयोगिन नवी दवर्ग सोलमि यथो इन्द्र जासि । ःसागर वाबीस तरग् त्रायमुलही मुख्य समुद्र भीलत । श्रागिल मुगत्य बधुवर धई सुभ बवत गुरग् कीडत ॥३१॥

### दूहा---

सकलकीरति धादि सहु गुराकीति गुरामाल । वाटिभूषरा पट्ट प्रगटियो रामकीर्ति विशाल भे११। । इस्साहरला परसादवी जयकीर्ति कही सार ।

- क्का हरला परसादया जयकात कहा सार ।
   कोट नगरि कोडामिंग श्रादिनाथ भवतार ।।२।।
- सानत् सोल चउ उत्तरि सीता तसी मुसा बेल्ल । ज्येष्ठ मृदि तेरम बुधि रची भगी कर गेल्ल ।।३।। भाव भगिन भगि मृत्या सीता सनी गुरा जेह । जयकीरित मृत्ये कही गुच्च प्रेची पनहि तेह ।।४।। सुद्ध भी सीता शील पता सा ।

गुरंग वेल्ल ग्राचार्य जयकीर्ति विरचिता ।

सबत् १६७४ वर्षे प्राणाढ मुदी ७ गुरी श्री कोट नगरे स्वजानावरणी कर्मक्षयार्थ ग्रा० श्री जयकीतिना स्वहस्ताभ्यां लखितेयं ।

६२३३. सीताहररणरास—जयसागर । पत्रस० १२६ । ग्रा० ६×४ इच । माषा-हिन्दी (पदा) । विषय-कथा । र०काल रा० १७३२ वैत्राल मुदी २ । मे०काल रा० १७४४ वैशाल सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० २३० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रथवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इस के कुल म प्रधिकार हैं। ग्रन्त मे रामचन्द्र का मोक्ष गमन का वर्णन है। ग्रंथ का ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्म --

सकल जिनेश्वर पद नमुं सारद समक माय । गराधर गुरु गौतम नमु जे त्रिपुवन वदिन पाय ॥१॥ महीचन्द गुरु पद नमी रामचन्द्र धर नारि । मीता हुरगा जह कह सामल ज्यो नरनारि ॥२॥

धन्त मे प्रत्य प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

रामचन्द्र मुनि केवल यह नो सिद्ध ययो सवतार जी। ते गुण कहते पार न पाते समरता सौब्य खगर जी।।१। भूलसम सरमति वरगच्छे बलात्कारणण् सःरजी। विद्यानदि गुरु गोयम सरसो प्रणुमु बारोबार जी।।२।।

- गधार नगरे प्रत्यक्ष प्रतिशय कलियुगे छै मनोहारजी ।
   तेह तगो पाट मलिभूषण विद्याना वहिपार जी ॥३॥
- तह तेण पाट माल मूचण विद्याना वाहपार जा ।।३।।
   लक्ष्मीचन्द्र ने ग्रनुकामे जास्यो लक्ष्मस्य पहित कामजी।
  - बीरचन्द मट्टारक वासी साभलतां सुख्याम जी ॥४॥ ज्ञानभूषसा तस पाटे सोहै ज्ञान तथो मडार जी।
- ' लाड बसे उद्योतज की घो भव्य तणो ग्राधार जी ॥४॥

प्रभावन्द्र गुरू तेहने पट्टे वाए। ग्रमी रसाल जी। वादिचन्द्र वादी बहु जीत्या घर सरसति गुग्।पाल जी ।।६।। महीचन्द मूनिजन मनमोहन वागी जेहे विस्तार जी। परवादीना मान मुकाव्या गर्बन करे लगार जी ॥७॥ मेहचन्द तस पाटे सोहे मोहे भवियस मन्त जी। व्यास्यान वाणी श्रमीय समागी सामला एके मन्नजी ॥६॥ गोर महीचन्द्र शिष्य जयसागर रच्य सीता हरण मनोहार जी। नर नारी जे भए। सूधासे तस घरे जय जय कार जी ।६। ह बड बस रामा मतोषी रमादे तेहनी नार जी। तेह तगो पुत्र ज्याम सुलक्षण पष्टित के मनोहार जी ।। १०३३ तेह तसी श्रादर सीता हरना ए की बूमन उल्लाम जी। माभलता गाता मुख होसी सीता भील विमाल जी ॥११॥ सवत मत्तर बत्रीसा बरमे वैशाख मूदि बीज सार जी। ब्धवारे परिपूर्गज रच्य सुरत नयर मकार जी ॥१२॥ ब्रादि जिसेमुर तसे प्रसादे पद्मावती पसाय जी। माभलता गाना ए सहने मन मा ग्रानन्द थाय जी ॥१३॥ महापुरास तमो अनुसारे कीधू के मनोहार जी। कविजन दोस म देसी कोई सोध ज्यो तमे मुखकार जी ।. १४॥ मुक्त भ्रालमूने उजमबढ्यु सारदाये मित दीघ जी। तेह प्रमादे ग्रथ ए कीधो श्याम दानेज सतीध जी ॥१५॥ सीता सील तस्मो ए महिमा गाय सह तरनार जी। भाव धरी जे गाते अनुदिन तस घर मगल चार जी। १६॥

दहा--

भाव घरी जे भरों सुरों सीतासील विसाल। जयसागर इम उच्चरे पोहचे तस मन ग्रास।

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ग्र० जयसागर विराचिने सीताहरगुख्याने श्री रामचन्द्र मुक्ति गमन कर्मन नाम षष्ठोषिकार समाप्ता । गुम । ग्रंथाग्रंथ २४४० लिखन मवन् १७४५ वैशाख सुदी १ गुरौ ।

**६२३४. प्रतिसं० २** । पत्र स० ८६ । आ० ११३४४ इञ्च । ते० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६-८१ । **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हू गरपुर ।

६२३५. सुकौशलरास — बेस्पीदास । पत्र स०१७ । ब्रा०१० $^{\circ}$   $\times$ ४ $^{\circ}$  इंच । ब्राया — हिन्दी पद्य । विषय — चिरत । र०काल  $\times$  । ले०काल सं०१७२४ । पूर्ण । वेष्टनसं०११६-५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रदिर कोटडियो का हु गरपुर ।

श्रन्तिम-

श्री विश्वसेन गुरू पाय नमी,

् श्रीनवी **बह्य** वेग्गीदास । परम सौख्य जिहा पायीइ,

तेथु मगति निवास ॥

इति सकोशल रास समाप्ता ,

प्रशस्ति—सवन् १०१४ वर्षे थी माघ वदी ४ णुके श्रीम्रहमदाबाद नगरे थी मीतवनाय चैत्याचये भी काष्टावये नदीतट गच्छे विद्यागरी भ० रामसेनान्वये भ० श्री विद्याभूषरावेदास्तराष्ट्रे भ० श्री भूषरा देवास्तराय्टे भ० श्री चंदकीत्तिदेवास्तरपट्टे भ० श्री ५ राजकीत्तिस्तन्ध्रस्य द्व० श्री देवसागरेन निकाणितं कर्मस्त्रार्थं।

६२३६. सुदर्शनरास — त० जिनदास । पत्र स०४-१७ । प्रा०११ $^{1}$ 

विशेष-- प्र० नेमिदास की पूरतक है पडित तेजपाल के पठनार्थ लिखी गयी थी।

**६२३७. प्रतिसं० २** । एत्रस० १६ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इन्त्र । लेक्सल स० १७२६ माह मुदी २। पूर्णे । बेहनस० ३८६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन श्रम्रवाल मदिर उदयपुर ।

६२३ स. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २ – २०। आ.० १०३ ४ ६ इ.च. । ले० काल ४ । ऋपूर्ण । वेष्टन स० ६२ ३ द**ा प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष - ग्राचार्य रामकीति जी ने ईलचपुर मे प्रतिलिपि की थी।

**६२३६. सोलहकारण रास—वः जिनवास** । पत्र स० ६ । प्रा०१०४६ इत्व । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय-रास । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन प्रप्रवान मन्दिर उदयपुर ।

६२४०. प्रतिसं० २ । पत्र स०६ । आ०११ $\times$ ४ै, इञ्च । भाषा-हिल्दी गद्य । विषय-कथा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३६१-१३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

६२४**१. प्रति स० ३** । पत्र स० १० । आ० ११  $\times$  ५ $^{3}$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३५७ १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ङ्गरपुर ।

६२४२. स्थूलसद्भनुरास—उदयरतन । पत्रस०६ । प्रा०६×५ इच्छ । भाषा-हिन्दी। विषय-रागा रंकाल् × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टन स०१४६० । प्राप्ति स्थान—सट्टारसीय दिक जैन प्रतिरंक्षतार ।

६२४६. हुनुसंतरास — का जिनदास । पत्रस०४१ । प्रा० १० $\times$ ४६ दश्व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय – रास । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १७०४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६१–४४ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मदिर कोटिंडयो का हु गरपुर ।

प्रशस्ति—संबन् १७०५ वर्षे भादपर वर्षि द्विनीया बुधे कारला नगरमध्ये सखीतं । श्री मूलसभे सरस्वतीगच्छे बलात्कारमत्ते कृत्वकृत्व सार्यान्यं भ० देवेन्द्रकीत्ति तत्पट्टे भ० धर्मचन्द्र तत्पट्टे भ श्री धर्म-भृषण् त प भ. देवेन्द्रकीत्ति त प. भ० कृषुदचन्द्र त. प. म. श्री धर्मचन्द्र तदास्नाये ब्याद्ये लवाल ज्ञाति पहर सीरा गोत्रे ज्ञा. श्री रामा तस्य पुत्र ज्ञा. श्री भेषा तस्य भाषी हीराई तयो पुत्र ज्ञा. नेमा तस्य भाषी जीवाई तयोः पुत्र मा श्री भीतलमेषा हितीय पुत्र मा. भोजराज तस्य भागीं सोनाई तथो पुत्र मा. श्री मेषा ऐतंवा मध्ये श्री भोजा साक्षेण मट्टारक श्री पधानीन्द तिज्ञहस्य ब. श्री बीरिन पठनार्थं ज्ञानावराणी कर्मक्षयार्थं हनुमान रास लिखापिन गुम भयात्।

६२४४ प्रति सं०२। पत्र स०६७। प्रा०११ $\times$ ५ इन्छ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं०२७३। प्राप्ति स्थिनि — दि०जैन प्रप्रवाल मदिर उदयपुर ।

६२४४. हनुमन कथा रास — ब. रायमल्ल । पत्र स०४१ । ग्रा०१२४ ८ इन्छ । भाषा — हिन्दी (पत्र । विषय गर्म। ४०काल स०१६१६ वैद्याल बुरी ६ । ले० काल स०१६६१ । पूर्ण । वेस्टन स०२८ । प्राप्तिस्थान — दि० जैन प्रयुवाल मन्दिर नैसावा ।

विशेष—उगाही करके मिनी काती सुदी १ स० १६६१ को जयपुर में लिखा गया।

६२४६. प्रति स०२ । पत्रस०४२ । घा०१२×६ इञ्च । लेक्सल ×। पूर्मा । बेष्टन स०१०१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पवायनी दुनी (टोक) ।

६२४७. प्रतिसं० ३ । पत्र म०६-३३ । प्रा०१३ 🗴 ७ इञ्चा । ले०काल मं०१६६६ । पूर्यो । वे० ग०१३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

विशेष --फार्गमे प्रतिलिपि की गयी थी।

६२४६, प्रतिसं०४ । पत्रस०३४ । आ०१२ ४ ६ इ.च.। ले०काल स०१६८६ । पूर्णः। वेप्टन स०५३ । प्राप्ति स्थान —दि०जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष श्योबन्म ने फागी मे प्रतिलिपि की थी।

६२४६. प्रतिसं० १ । पत्रस० १०५ । आ० × । ले॰काल × । अपूर्ण । बेष्टनस० १६ । प्राप्ति स्थान । दि॰ जैन मन्दिर नेरहनश्री मालपुरा (टोक) ।

६२५०. प्रतिसं०६ । पत्रस० ८१ । आ० × । ने० काल × । अपूर्णं । जीर्णं । बेष्टनस० ५७ । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मानपुरा (टोक) ।

६२५१. प्रति स० ७ । पत्रम० ८३ । ते० काल १६२५ । पूर्ण । वेष्टन स०४० । प्राप्ति स्थान—र्विठ जैन मन्दिर दीवानजी नरतपुर ।

६२५२. प्रति स० ६ । पत्रस० ३७ । लेक्सल स० १८८६ द्वासौज बदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० ५३० । प्राप्ति स्थान—(४० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - भग्तपुर म लिखा गया था।

६२५३. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ५४ । ले०काल स० १६५४ । पूर्ण । बेष्टन स० ५३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

६२५४ प्रतिसं०१०। पत्रस०४४ । मा०६×५ इन्छ । ले०काल स०१७४२ । पूर्ण । बेब्रनस०२३६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष--प्रति जीर्स है।

६२४४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ८४ । स्रा॰ ८ ४ ६ इञ्च । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानवी कामा । षिप्रोय — गुटका के माकार में हैं। पत्र ७६ तक हनुमान चौपई रास है तथा मागे फुटकर पद्य हैं। ६२५६. प्रति सं० १२। पत्र स० ४४। मा० ११, ४६ ३ इसा। ने० काल सं० १११८ मादवा सुदी १२। पूर्ण। बेष्टुन म० १६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

६२५७. प्रति सं० १३ । पत्रस० ६७ । प्रा० ८ ु ४ ५ रेडच । लेकाल सं० १८१२ चैत बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टुनस० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष — वैर ग्राम मध्ये लिखित । प्र'तिम पाठ नही है। पदा स० ८७० है पत्र स० ६८-७० तक पंच परमेटी गए। स्तवन है।

६२५८. प्रति स० १४ । पत्र स० ५६ । घा० १० है x ४ इञ्च । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पत्रायती मदिर करौनी ।

विशेष-हीरापुरी मे लालचन्द ने लिखा था।

६२५६. प्रति स० १५ । पत्र स०४० । ग्रा० १० $\frac{3}{7} imes 0$  । त्रे० काल imes । अपूर्ण । बेष्टन सं० ३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेब्रपर ऐखावाटी (सीकर) ।

विशेष---२५-२६ वा पत्र नही है।

६२६०. प्रति स**०१६**। पत्र स०४७ । ग्रा०१ $\times$ ५ $\frac{1}{2}$ इङ्च । ले०काल $\times$ । पूर्ण । बेक्नसं०११। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर केलावाटी (सीकर)।

**६२६१. प्रति सं० १७ ।** पत्र स०४३ । प्रा० ११४४ इन्त । ले० काल स०१८६२ बैगाख बदी १४ । पूर्ण । बेहन सं० ६६/३४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)।

६२६२ प्रति सं० १८। पत्र स० ५६। प्रा० १० ४६ हु इथा। ले० काल स० १६२८ प्रासीज बटी ८। पर्मा। वेप्टन स० ४४। प्राप्ति स्थान—सीगाएं। दि० जेन मंदिर करोली।

६२६३. प्रति सं० १६ । पत्रस० ७० । आ० १२ ४४ इश्व । लेक्सल म० १८३७ । पूर्ण । केक्स स० ४४६-३६ । प्रास्ति स्थान--वि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--गाव स्वामी मध्ये लिखितं। पं० जसरूपदास जी।

६२६४. प्रति सं० २०। पत्रस० ७६। आ० ७३ 🗵 १३ इञ्च । लेक्काल स १८१५ । पूर्ण । बेष्टनसं० २०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन संदेलवाल मदिर उदयपुर ।

# विषय -- इतिहास

६२६४. उत्सक्क-पत्रिका— × । पत्रसः २ । मा० ६२,४४३ द्वा । माषा-हिन्दी । विषय-पत्र लेखन इतिहास । र०काल ४ । ने०काल स ० १६३० । पूर्ण । वेष्टनसं० २१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर पार्थनाथ चौगान व दी ।

विशेष--सागत्वपुर की पत्रिका है।

६२६६. कुन्दकुन्द के पांच नामों का इतिहास —  $\times$  । पत्र स० ६। प्रा॰ ११ $\times$ ६ इन्द । माधा —हिन्दी । विषय — इतिहास । २० काल  $\times$  । ले० काल १६६६। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६०/६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर मादव। (गज॰)

विशेष--इन्दौर मे प्रतिलिपि हुई थी।

६२६७. कुलकरी--  $\times$  । पत्र स॰ २४। प्रा॰ १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इखा । मापा—सस्कृत । विषय—कुलकरों का इतिहास । र० काल  $\times$  । ले० काल स॰ १६०५ कॉलिक सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स॰ १२०- ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष--- उदयपुर मे लिखा गया था।

६२६८. गुरावली —  $\times$  । पत्रस॰ २८ । मा॰ १३ $\times$ १ $\frac{1}{2}$  इख । भत्ता-सल्कृत । विषय — इतिहास । र॰ काल  $\times$  । लं॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस॰ १८५ : प्राप्ति स्थान — म॰ दि॰ जैन मन्दिर मजैर ।

६२६६. गुर्बाबलीसज्भाय—  $\times$  । पत्र स० १०। आ० १० $\times$ ४ इच । माषा—प्राकृत । विषय—इतिहास । २०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सङ्कावाल मन्दिर उदयपूर ।

६२७०. ज्ञातरास—भारामस्ल । पत्रस० २४ । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल×। ले० काल × । पूर्ण । बेहुनस० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन बढा पत्रायती मन्दिर डीग ।

विशेष--मधाधिपति देवदन के पुत्र भारामल्ल थे।

६२७१ **चौरासी गोत्र विवररण**—  $\times$  । पत्र स० द । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल  $\times$  । ले०काल १८६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । प्रा**प्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६२७२. प्रतिसं० २ । पत्र सस्या ६ । ग्रा० ११imes६९७ । ते काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष-चौरासी गोत्र के प्रतिरिक्त वश, गाव व देवियों के नाम भी हैं।

६२७३. **बौरासी जयमाल (माला महोत्सव)**— विनोदीलशल । पत्र स०२ । घा० ११४४ इञ्च । माया-हित्दी । विषय-इतिहास । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ६१६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर । ६२७४, चौरासीजाति जयमाल— ×। पत्रतं० ७। धा० ७, ४५ इत्र। भाषा-षष्ठ। विषय— इतिहास। २०कात ४। ले०काल ४। पूर्ण। बेहनस०१०६ प्रास्ति स्थान-जैन मन्दिर कोन्दरारी सीकार)

६२७५. चौरासी जाति को बिहाडी—  $\times$  । पत्रसः  $^{3}$  । प्राः  $^{6}$   $^{5}$   $^{7}$   $^{7}$   $^{7}$   $^{7}$   $^{7}$  । विषय — इतिहास । र० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रत स॰ ६७५ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन सन्दिर सकर जयगर ।

विशेष- चौरामी जातियों की देवियों का वर्शन है।

६२७६. जयपुर जिन संविर यात्रा—पं० गिरधारी । पत्र म० १३ । ब्रा० ६ै ४६ इश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—प्राप्ता वर्णन (इतिहास) । र०काल ४ । ते० काल स० १६०८ । पूर्ण । वेष्टन म० ४३६ । प्राप्ति स्थान—अटारकीय वि० जैन मन्दिर ध्वमेर ।

६२७७ तीर्थमाला स्तयन—  $\times$  । पत्रस $\circ$  । प्राः १० $^3$  इ॰व । भाषा—हिन्दी पद्या विषय —हिन्दाम । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$  १२२ । प्राप्ति स्थान — दि $\circ$  जैन मन्दिर उदगपर

विशेष-- म० १४२६ वर्षे माघ बृदी ६ दिने जुत्रवारे लिखित ।

६२७८. निर्वाह्म काण्ड गाथा— 🗴 । पत्रसः ४ । प्राः ११४५ इन्छ । भाषा—प्राङ्क । विषय—इतिहास । रञ्जाल 🗴 । वेञ् काल 🗴 । पूर्ण । बेच्टन स० ११-१६ । प्राप्ति स्थान—दिञ्जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्थमिह (टोक)

६२७६. प्रतिसं• २ । पत्रसः २ । धा० १११४६ दश्च । लेक्काल 🔀 । पूर्ण । बेष्टन म० ३६ । प्राप्ति स्थानं —िक् जैन पत्रायमी मन्दिर करोनी ।

६२८०. निर्वास कांड माषा—भैया समस्तीदास । पनस० ५ । ब्रा० ११ ४ ५ हज । भाषा—हिन्दी पत्र । विपय—इनिहान । रण्कान म० १७४१ । लेक्काल × । ब्रूसं । बेट्टन स० ५६ । प्रास्ति स्थान —हि० जैन सन्दिर तेरहवयी दोगा ।

विशेष -प्राकृत निर्वाग काण्ड की भाषा है।

६२६१. पदानंदिगच्छ की पट्टावली—देवाबहा। पत्र स०७। ग्रा०११ x ४ टब्ब । भाषा-हिन्दी । विषय — इनिहास । र०कान x । ते०कान x । पूर्ण । वेष्टन म०३४२/४१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सगवनाथ उदयपुर ।

विशेष--रचना निम्न प्रकार है-

जिरुमी भव्य पक्ज दर्ग हथि गुर इन्द्र समान ए जासीएन्डु। नदीनाय मुनापनि पुत्र किस्ट कृषिल हथि विस मारोए्ड्। यज्ञान कि यथ निकरन कुं एह जान कि भानु वरवारोए एड्। देवजी बद्धा वासी विर गद्ध नायक पचनिद जन मानियेडु। ११। व्याकरण द्वर यलिकिति काम्य सुनकं पुरास निद्धात परा। मवतेज महावत पचिमिति कि मारुपेर चरस्या प्रयर। योर थान कि जान गुमान नहिं तीज जाम नीय तहस्सा चीवरा। रामकीति पुरेषर पचनिद नहिं दोजी बद्धा सेवो सुनरा। १२।।

बादि गजेन्द्र तिहा जुर्भाङ जिहा पंचनदि मगरजन गजे। कौरव किचक त्याहाजुलांड ज्यहा भीम महा भड हाथ न बजे। रामकीति के पट्टपयोज प्रबोदनक् रविराज सुरजे। चैर्चजी ब्रह्मवदि गच्छनायक सारदागच्छ सदा ए छाजे ॥३॥ बादि कमत फरिंग दरवागार्थान बादिकरी सभस्तिह भयो है। बादि जलद समिरमा ए गुरु बादिय बृद को भेद लयो है। राय श्री सघ मिलि पद्मनदि कुरामकीति को पट्ट दयो है। ब्रह्म भरो देवाजी गुरजी याकू इन्द्र नारद प्रसाम कियो है ॥४॥ राजगुरु पद्मनादि समोवर भेघ कर्यनहि पावनहि। साको निरंतर चाहत चातक तोकृपाट जिन धावतहि। मेघ निरन्तर बरपन निरन् भारथि दानिक गाजनुहि। थ्रो दान समिमून सामन गोर कल्यामा मृनि गुमा गावतहि ॥५॥ श्रीमलस्य समागार पञ्चनदि भटारक सकलकीति गरुसार । भूवनकीति भवतारक ज्ञानभूषस्य गुरुवय विजयकीति सूभचन्द्र । समितिकोति गुराकोति बदो भविष्यम मनरगह तसपद्वे गुरु जासिख । श्रीवादीभवगा यतिराय पुजराज इमि उच्चड गुरु सेविनस्पति पाय ॥६॥ पचमहावतमार पचममिति प्रतिपानि ।

मुनित्रय मुनकार भोह मोहा हिर टारिन ।
पनाचार विचार भेद विज्ञान मुजारी ।
मानम त्याय विचारनार मिळात जनागी ।
मुजार्य पट्टि निगुग थी चारिश्यण बदे सदा ।
पुजार्य पट्टिन हम उच्चरे मुक्यण सेवो मुदा ।
सवन निसाण घनायन गोजन माननी नाद जु महूल गायो ।
विज्ञा के तेज रहे घरि हेज हु उत्यादिष्य व्यव मायो ।
विज्ञा के तेज रहे घरि हेज हु उत्यादिष्य व्यव मायो ।
विज्ञा के तोव जीम मुजरात नान जुनमानी को मान मायो ।
वहे वर्षभूषण पचार्वि मुह पाटण माहि जुनामो करायो ।
एकरावार पिर रहे करगी कथनी एक उद घरे ।
एक लोग के कारण चारण में एक मत्र चारि ।
महिस्त विर्मित् एक स्वादिक नाम विकल्कार ।

इसके द्यागे निम्न पाठ धीर है-

नेमिपच्चीसी कत्यास्पकीति हिन्दी चौबीस तीर्थंकर स्तुती ,,

६२६२, पट्टाबली— $\overset{\times}{\times}$ । पत्रस**्धाः १०**४८ इत्रः। भाषा—हिन्दी गण्यः। विषय— इतिहासः। र०कालः  $\times$ । ले०कालः  $\times$ । पूर्णः। बेट्टनं स०४६। प्राप्तिः स्थाने—दि० जैन मन्दिर नागदी दूँदी। विशेष — श्वेताम्बर पट्टावली है। सबत् १४६१ जिनवर्द्ध न सूरि तक पट्टावली दी हुई है।

६२८६. प्रतिसं० २। पत्र सं० २४ । घा० ६ $^2_7$ ×५, इखा। ले० काल स०१८३० सावन बुढी १२। पूर्ण। बेष्टन सं०१३६ र। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष - श्वेताम्बर पट्टावली है।

६२८४. प्रतिक्ठा पट्टाबली — x । पत्रसं० १८ । प्रा० ११  $\times$  ६ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन स० १८१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)

६२  $\mathbf{x}$  **... महारक पट्टावली**  $- \times \mathbf{1}$  पत्र स $\circ$   $\mathbf{x}$  ।  $\mathbf{y}$  ।  $\mathbf{x}$  ।  $\mathbf{x}$   $\mathbf{x}$  । भाषा - हिन्दी । विषय — इतिहास । र० काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । बेष्टन सं० ६७४ ।  $\mathbf{y}$  ।  $\mathbf{x}$  ।  $\mathbf{x}$  एकर जयपुर ।

विशेष-सं० १०४ भद्राबहु से लेकर स० १८८३ म० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट तक का वर्णन है।

६२८६. भट्टारक पट्टावली—  $\times$  । पत्र सं० २० । घा० १।।  $\times$  ४ इञ्च । भाषा—िहन्दी । विषय—हिन्दाम । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४३४ । प्राप्ति स्थान—समवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - सवत् १६६७ से स० १७५७ तक के भद्रारको वर्णन है।

६२ दथ. भट्टारक पट्टावली —  $\times$  । पत्रस॰ २-६ । प्रा॰ १०  $\times$  ४ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । रकाल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वे॰ स॰ ३६०—१४३ । प्राप्ति स्थान —िद॰ जैन मन्दिर कोटिडियो का ब्रु सन्पर ।

६२८८ सहारक पट्टाबली— । पत्रसं० ११ । ग्रा० १० ४७ इन्छ । साया —िहन्दी । विषय-इतिहास । २० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २८०—१११ । प्राप्ति स्थान—-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

६२८६. मुनिप्ट्रावसी —  $\times$  । पत्र स॰ ५५ । म्रा॰ ११ $\times$ ५ इश्व । माषा-हिन्दी । विषय— इतिहास । २०कान  $\times$  । ले॰कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स॰ १४४८ । प्राप्ति स्थान — म॰ दि॰ जैन मदिर भवेभर ।

विशेष-सवत् ४ से सवत १८४० तक की पट्टाविल है।

६२६०. प्रश्नंथियन्तामित्।—राजशेखर सूरि। पत्रसंब ६०। द्याव १४४४ दश्व । भाषा-सस्कृत गर्या । विषय दिनहाम । रब्बाल ४ । लेव्काल सब् १४०५ व्येष्ठ मुदी ७ । पूर्ण । वेष्ठनसंब १२४ । प्राप्ति स्थान — दिव्यंन मन्दिर दीवानजी कामा।

विशेष —ढिल्ली (देहली) में मुहम्मद शाह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

६२६१: प्रवध चिरतामिए — प्रा० मेरुतुंग । पत्रस्त ४६। प्रा० १४४४ इ.च. । भाषा — सस्कृत । विषय- इतिहास । २०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६२६२ महापुरुष चरित्र—मा० मेरूनुग। पत्रतः ४२। मा० १४४४ इकः। भाषा— सस्कृतः। विषय काव्यं (इतिहास)। र०कास ४। ने०कास ४। पूर्णः। बेट्टन स०१२१। मास्तिः स्थास—टि॰ जैन मन्दिरं दीवानजी कामा। विशेष--प्रति प्राचीन है।

६२६३. यात्रा बर्गन — × । पत्रसः ११ । मा० ११ × ७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय -वर्गन । र०काल स० १९०६ । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६-४८ । प्रास्टिर स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) —

विशेष — गिरनार, महालीर, चौरासी, सौरीपुर ग्रादि क्षेत्रो की यात्रा का वर्शन एव उनकी पूजा बनाकर ग्रावं ग्रादि चढाये गये है।

६२६४ यात्रावली—  $\times$  । पत्र स $_0$  ४। आ $_0$  १० $_2$   $\times$  ४ $_2$  इख । आषा-हिन्दी (पत्र) । विषय—इतिहास ।  $_7$ ० काल  $\times$  । से $_9$ काल सं $_0$  १६३२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स $_0$  १६८ । प्राप्ति स्थास— दि $_0$  जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

विशेष - १६३२ भादवा मूदी ६ की यात्रा का वर्ण न है।

६२६५ विकमसेन चउपई—विकमसेन । पत्र स० ५७ । मा० १०३ 🗴 ४ दश्व । माषा— हिन्दी (पदा) । विषय-इतिहास । र० काल सं० १७२४ कार्तिक । ले० काल स० १७५६ मगसिर मुदी ११ । पूर्मा । वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६२६६ विरदाखली—  $\times$  । पत्र स० ५ । आ० ६ ,  $\times$  ४ १ इच्छ । साया-हिन्दी । विषय- इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सन्दिर नैमिनाथ टोडागर्यासह (टोक) ।

विशेष-इसमे दिगम्बर भट्टारको की पट्टावली दी हुई है।

६२९७ विरदावली—  $\times$  । पत्र स०७ । आ० १० $\times$ ४ इत्व । भाषा-सस्कृत । विषय— इतिहास । २०काल  $\times$  । ते० काल सं० १०३७ मार्गशीर्य सुदी १३। पूर्ण । वेश्त सं० २५३ । प्रास्ति स्थान—(द० जैन मन्दिर बोरनली कोटा ।

विशेष-सुरतिविदर (सुरत) मे लिखा गया था।

६२६८ वृहद् तपागच्छ गुरावली—  $\times$ । पत्र स०१४ । आर्॰ १० ${}^1$ १० ${}^1$ १० ${}^1$ १० ${}^1$ १०३ प्रच्या भाषा—सरकृत । विषय—इतिहास । र०काल  $\times$ । ले॰काल स० १४६२ चैत्र सुदी ५। पूर्णः । बेष्टन स० १२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सप्रवाल पचावती मन्दिर प्रतवर ।

विशेष--१४६६ तक के तयागच्छ गुरुओं का नाम दिया हुआ है। मुनि सुन्दर सूरि तक है।

६२६६. बृहत्तयागच्छ गुर्बाबली—पुनि सुन्दर सूरि । पत्र संख्या १ से ४५। माया-संस्कृत । विषय-इतिहास । र०काल ४ ले॰काल स० १४६० फागृन सुरी १०। प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४६१। प्राप्ति स्थान—पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

६३०० शतपदी —  $\times$ । पत्र सं० २१-२४ । आ० १२  $\times$  ४ $^{2}$  इत्त्रं। भाषा — संस्कृत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । विषय-इतिहास । वेषून सं० ७०५ । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान — उपयोक्त मन्दिर

विशेष - पथेताम्बर प्राचार्यों के जन्म-स्थान, जन्म-संबत तथा पट्ट संबद् ग्रादि दिये है। सं. ११३६ से १४४४ तक का विवरण है। ६२०१. श्वेतांबर पट्टावली—  $\times$  । पत्र सं॰ ५ । ब्रा० १०  $\times$  ४  $^{\circ}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ २०० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाला (वंदी) ।

विशेष-महावीर स्वामी में लेकर विजयरत्न सुरि तक ६४ साधुग्रो का पट्ट वर्ण न है।

६३०२ **ध्रातस्कंघ — ब० हेमचन्द्र।** पत्र मं०१०। स्ना०१० $\times$ ४। इञ्च**। भाषा**-प्राष्ट्रत । विषय – इतिहास । १० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । वेट्टत स०७४। **प्राप्ति स्थान —** णास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६३०३ प्रतिस० २ । पत्र सं०५ । ग्रा० १०३ ४४ ई । भाषा-प्राकृत । विषय-इतिहास । र०काल ४ । ले०काल ४ । वेष्टन स०७५ । प्राप्ति स्थान---गास्त्र नण्डार दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६२०४. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । ग्रा० ११४५ इश्व । ले०काल ४ । पूर्ण । बेप्टन स० २४७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर ग्रामिनस्य स्थामी बुंदी ।

विशेष-पं० सुरजन ने प्रतिलिपि की थी।

६३०**५. प्रतिसं० ४।** पत्रस**०**४। ले०काल 🗴 । पूर्णः । वेष्टनम० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर उदयदुर ।

६२०६. **श्रुतस्कध सूत्र**—  $\times$  । पत्रस**०२**९। मा०१०<sup>3</sup>, ४४<sup>3</sup>, दश्वा भाषा-प्रा<u>त</u>्ना । विषय-इतिहास । रब्बाल  $\times$  । लेब्बल स०१६६८ चैत्र सुदी १२। पूर्ण । **बेह**न संब्ध्व । **प्रास्ति स्थान**— विक्जन मनिर्वर ।

विशेष - चपावनी नगर मे ऋषि मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी।

६३०७. **श्रुतावतार** —  $\times$  । पत्र स० ५ । प्रा० ११  $\times$  ५ डज्च । भाषा-सम्ब्रुत । विषय — इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णा । वेष्टन स० ५४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मदिर दुनी (टांक) ।

६३०६. श्रुताबतार —  $\times$ । पत्रस०४। घा० १२ $\times$ ४ इच । भाषा-सम्ब्रत । विषय— इतिहास। र०काल  $\times$ । वे**०का**ल स० १७०६। पूर्ण । वेष्टन स० २५४/११६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उद**सपुर**।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

म बत् १७०६ वर्षे मागशीर्ष मासे शुक्तपक्षे सन्तमी दिवसे श्रहिमदाबाद नगरे प्राचार्य श्री कल्याण कीनि नत जिप्य श्र० श्री तेजपान लिखित ।

६२०६. श्रुताबतार— X । पत्र स०४। ग्रा०११ X४ इन्छ । माधा-साकृत । विषय-इतिहास । र० काल X । से०काल X । पूर्ण । थेष्ट्रन स०४१७/४०० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन स भवनाथ मिर उदयप्रर ।

६२१०. सट्टारंक सकलकोतिनुरास - व० सामान । पत्र सं० ११ । घा० ११  $\times$ ४६ च । माषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २१४/४१० । प्रास्ति स्थान—संगवनाथ मन्दिर उदयप्र ।

विशेष--- प्रन्तिम भाग----

चउवीस जिल्लेसर प्रसादि

श्री मुवनकीर्ति नवनविन नादि ।

जयवता सकल प्रच करवारा करए।

इति श्री मट्टारक सकलकीतिनुरास समाप्तः । श्राविकाबाई पृतलि पठनार्थ ।

६३११. सम्मेदशिखर वर्गन $-\times$ । पत्रसः  $\times$ । प्राः १२ $\frac{2}{8}$   $\times$  ५ $\frac{5}{8}$  डंब । माषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । से॰काल सः ११६२ । पूर्ण । बेष्टन सः ४३० । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर सकर जयपुर ।

विशेष — प्रारंभ में लघुसामायिक पाठ भी दिया है।

६३१२. सम्मेदशिखरयात्रा बर्गन—पं० गिरधारीलाल । पत्रस०७ । म्रा०१२ ४ ५. इ.च । भाषा —हिन्दी । विषय—डितहास । २०काल स०१०६६ भादवा बुरी १२ । लेक्काल ४ । पूर्ण । वेष्टुन स०६१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रजमेर मण्डार ।

६३१३, सम्मेद शिखर विलास – रामचन्द्र । पत्रत०७ । धा० ८ × ४ दच । त्रापा– हिन्दी । विषय– इनिहाम । २०काल × । ने०काल स० ११०४ । पूर्ण । बेष्टनस०४३/८८ । प्राप्ति स्थाम – १०० वेन मण्टि पाल्य (राज०) ।

विशेष--प्रेमराज रावका ने प्रतिलिपि की थी।

६३१४. संघ पराष्ट्रक टोका - ब्र**ाजनवल्लम सू**रि । पत्र स०२०। म्रा॰११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा-सरकृत । जिपय-इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेहन स०४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजो कामा ।

६३१४. प्रति सं०२ । पत्रस०२१ । ले॰काल × । पूर्णं । वेष्ट्रन स०४६ । प्राप्ति स्थान— तक्त मन्दिर ।

६३१६. संवयट्टप्रकरस्म । पत्र स०७। आ० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ Yृँ इश्वः । भाषा सस्कृतः । विषय-इतिहास । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स०७४१ः। प्राप्ति स्थान--दि० जैन मंदिर प्रकरि भण्डारः।

६३१७ संबदसरी- × । पत्र सु०४ । आ० १० ई × ५ इत्र । भाषा-हिरी । विषय-इतिहास । रक्काल × । ले० काल स०१८१७ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१३११ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन मन्दिर अजभेर ।

विशोष—स॰ १७०१ से लेकर स०१७४४ तक कावर्णन है। लिखित क्रार्यानगीनासमत १⊏१७ वर्षे।

# विषय -- विलास एवं संग्रह कृतियां

६३१त. भ्रागम विलास—द्यानतराय । पत्र स०३१२ । प्रा० १०४६ इञ्च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय – सयह । र०काल स०१७५४ । ले० काल म०१६३१ । पूर्ण । वेशत स०४१-३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपर ।

विशेष — कृष्णगढ मे श्वेताम्बर श्री कन्हीराम भाऊ ने प्रतिलिपि की श्री । इसका दूसरा नाम धानत विकास भी है ।

६३१६. कवित्त— X(1 पत्र स०६। मा०६ $\frac{1}{2}X^2$ र्द्धे इश्वः। भाषा—हिन्दी पद्यः। विषय— सुभाषितः। र०काल X। ले०काल X। प्रपूर्णः। बेष्टनसं०२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वबलाना (व दी)

विशेष-दो कवित्त नीचे दिये जाते है --

कचन भड़ार पाय नैक न मगन हुने । पान नव योवना न हुने ए बनारसी । कान अधिकार जाणी जगत बनारा सोई । कामनी कनक मुद्रा दुद्द कू बनारसी । दोउ है विनासी सर्देव तु है प्रतिनासी । जीव याही जगतवीच पड़वो बनारसी । याको तु सग त्याग कुर मूं निकस मागी । प्रारंग सरे कहे लागी कहन बनारसी ।

 $\times$   $\times$   $\times$   $\times$ 

किते निनी बैठी है डाकिसी दिल्ली। इत मानकरी पति पडम मु। पुथ्वीराज के समी महाहित हिल्ली। हेम हमाऊ धकंचर बच्चर। साहिजिहा सुभी कीनी है भल्ली। साहिजिहा सुसी मन रग। तउ विरची साहि और ग मिल्ली । कोटि कटाम कहै तक्सी वै किते ......

६२२१. प्रतिसं०२ । पत्र स०१। ग्रा०१०×४ इच्छा। ले० काल × । पूर्ण। बेहन सं०२०३। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (युदी)

विशेष-समयसार नाटक के कवित्त है।

६३२२. कवित्त-सुन्दरदास । पत्रम०३। ग्रा०१०१४५ इखा। माषा-हिन्ती पखा। विषय-सुभाषित । र०काल ४ । ने०काल स० १८७४ । पूर्ण । बेष्टन सं० २१६ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर पार्थनाथ, चौगान **ब**ंदी ।

विशेष--प॰ रननचन्द के पठनाथं लिखा गया था।

६३२३. कवित्त एवं स्तोत्र संग्रह $-\times$ । पत्रतं० ६० । ग्रा०११ $\times$ ५ इव । भाषा —हिस्दी काव्य । विषय-संग्रह+ र० काल  $\times$  । लेक्बल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेस्टन स० ७११ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर लच्कर जयपर ।

विशेष-भागगोविन्द स्तीत्र, नवरत्नकवित्त, गिरधर कु डलियां है।

६३२४. गुराकरंड गुराबली—ऋषिदीय । पत्रस०३१ । आर्गर० ४४ देव । भाषा— हिन्दी । विषय — गुरापित । रण्यालस०१७५७ । लेण्याल स०१८१७ । पूर्ण । वेष्टनसं०६७४ । प्राप्ति स्थान — भद्रारकीय रिण्जैन मन्दिर अवसर ।

विशेष - मिनी ग्रापाढ बुदी ११ म० १८१७ का श्रीमत श्री मकलसूरि शिरोमिण श्री मडलाचार्य श्री १०८ श्री विद्यालय जी नद् जिल्य प० श्री घर्षरामती विधिक्त । जिल्य मुरि श्री रामकीति पठनार्य ।

६३२५. चमत्कार षट् पंचाशिका —महात्मा विद्याविनीद । पत्र सं०४। घा० १११.४५६ इ.स. १ भाषा —मस्त्रन । विषय —विवित्र । २० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१७८-१८६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिंह (टोक) ।

६३२६. ग्रंथसूची शास्त्र भंडार वढलाना—४ । पत्रस० १ । ग्रा० २७४५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय — नृवी । र० कात ४ । ने०काल १६६६ ज्येष्ठ मुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स०३३१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूडी)

विशेष-वहीं की तरह मूची बनी हुई है।

६३२७. **चम्पा शतक --चम्पाबाई**। पत्रस० २३। घा० १०४८ हुँ हश्व। साया--हिन्दी पद्य। विषय---सग्रह। रक्काल ४। लेक्काल सं०१९७४। पूर्णं। बेष्टन स० ८२६। **प्राप्ति** स्थान---दिक जैन मन्दिर लक्कर, जयपर।

६३२ ६. चेतनबिलास -परमानन्व जौहरी । पत्रस० १७० । प्रा० १२  $\times$  ७ है इस । भाषा-हिन्सै गद्ध-पद्य । विषय-विविध । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर भेलाबाटी (सीकर)

विशेष -- ग्रंथकार के विभिन्न रचनाओं का संग्रह है। अधिकांश पद एवं चर्चायें हैं।

६३२६. प्रति स० २ । पत्रस० १७३ । घा० १२×८ इंच । से०काल × । पूर्ण । बेहन सं० २७६ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर । ६३३०. **चौरासी बोल**— × । पत्र स०१०। ग्रा०११३ ४६ इञ्च । भाषा—िह्नरी (गर्य)। विषय—पर्म। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन स० १७६-७४ । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगण्युर।

६३३१. जैन विलास—सूचरदास । पत्रस० १०४ । ग्रा० ८४६ इख । माया-हिन्दी पख । विषय—विविध । र०काल × । ले०काल स० १६६६ माघ बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष-भूयरदास के विविध पाठो का सग्रह है। मिट्टूराम ने ग्रंथ की प्रतिलिपि करायी थी।

६३३२. ढालसागर—पुरासागर सूरि । पत्र त०१२६। भाषा—हिन्दी पर्ष । विषय— विविध । र०काल × । ले० काल त०१६६६ । पूर्ण । वेष्टनतं०१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बसवा ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

सवत् १६६६ वर्षे कार्तिक मासे शुक्र मासे चतुर्दश्या तिथौ देवली मध्ये लिखितं।

६३३३. ढालसंग्रह—जयमल । पत्र सं० ३६ । भाषा-हिन्दी । विषय-फुटकर । र०काल×। के॰काल × । ग्रपुर्गा । वेपून स० २०७/६६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संस्वनाथ मन्दिर उदयपुर ।

निम्न पाठो का सग्रह है---

पन्देणीनी ढाल जयमल हिन्दी र०काल सं० १=७७ धपुर्गं।

धन्तिम---

मवत प्रठार में सतोत्तर रे बुर तेरम मास प्रपाव । मिथ प्रदेशीरायनी एक हीय सूत्र थी काढो रे ॥४६॥ पुज फानडीप्रमाद थी रेतव सिय प्रपरदास । तास सिस जेमल कहें रे खोडे सलार नापसोरे । पति पाटेशीनी मिल समाणना

२. मृगोलोडानी चरित्र जयमल हिन्दी ले०काल स० १८१५ अपूर्ण

इतिमरगालोढानो चरित्र समान्ता ।

३. सृबाहु चरित्र जयमल हिन्दी श्रपूर्ण

६३३४ हष्टान्त शतक $-\times$  । पत्र त०२३। आ० १० $^1_2 \times ^2_3$  इन्छ। आपा—संस्कृत । विषय—विविध । र० काल  $\times$  । ते०काल स०१६४२ फायुरा बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन म०१६५ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर वोरमली कोटा।

विशेष-पो शी पडित जिनदासजी की छै।

६३२ **४. दोलत विलास --दोलतराम** । पत्रस**०२७ । धा०१२** ४७ ६ खा । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल ४ । ले०काल स०११६४ ग्रामाद्य सुदी १० । पूर्ण । बेष्टन स०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्राप्ताल पत्रायती मन्दिर प्रलबर ।

६२३६. बीलत विलास—बौलतराम पल्लोबाल । पत्रस्व ४२। प्रावः १२१ ४७३ इचा । भाषा—हिरी पद्य । विषय—सग्रह । र०काल ४ । लेक्काल ४ । प्रपूर्ण । बेष्ट्रन संव ४१/११६ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन पनायती मन्दिर प्रतवर । विशेष - दौलतराम की रचनाथों का संग्रह है।

६३३७. धर्मविलास— द्यानतरायः । पत्र सस्या १७२ । आ० १४×७ इ'च । भाषा-हिन्दी पत्र । विषय-सम्रह । र०काल स० १७६१ । ले० काल म० ११३७ प्रासोज बुदी ५ । पूर्ण । वेप्टन स० २६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पार्वनाल मन्दिर टोडागार्मास्त (टोक) ।

विशेष--रामगोपाल बाह्यमा ने वेकडी में लिखी थी।

६२३८. प्रतिसं० २ । पत्र स० ४८ । घा० ११×४ इश्व । ले० काल स० १७८६ पीष बुदी १०। पूर्ण । वेष्टन म० ८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६३२६. प्रति सं०३। पत्रसः०१४०। द्या० १३×५५ इश्वः। ले० काल × । श्रपूर्णः। बेष्टन सं०७१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

६३४०. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २८७ । ग्रा० १२ $imes ^3_{
m g}$  इञ्च । ले०काल स० १८५८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर थी महावीर बुंदी ।

६३४१. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २४४ । ब्रा० ११ ४४} इश्व । ले० काल रां० १⊏=३ मगमिर सुदी ४ । पूर्ण । बहुनम० ६६१ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष—जयपुर नगर के कालाडेहरा के मन्दिर में विजेशाम पारीक साभर निवासी ने प्रतिलिपि की थी।

६३४२. प्रति सं०६ । पत्र स०२६१ । घ्रा०४×६ इक्षाले • काल × । पूर्णावेष्टन स• ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैस्पना ।

६३४३ प्रतिसं० ७ । पत्र स० १८७। ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

विशेष-भरतपूर में लिखा गया था।

६३४४. प्रति सं० ६ । पत्र स०१७० । ग्रा०१२×६३ डच । ले० काल स०१८२८ ग्रावाड बुदी २ । पूर्ण । बंस्टन म०७ प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मंदिर ।

विशेष -- १४६ फुटकर पद्य तथा धन्य रचनायो का सग्रह है।

६३४५. प्रति स० ६ । पत्रस० २७३ । घा० ११ imes imes

६३४६. प्रति सं० १०। पत्र स० २५०। ले०काल स०१८७८। पूर्ण। वेष्टन स०६२। प्राप्ति स्थान— दि० जन पत्तावती मदिर हण्डावाली का शेग।

६३४७, प्रति सं० ११ । पत्रस० २७८ । प्रा॰ १२ $\xi \times \psi_{\xi}^2$  इश्वा । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेकनसं० १३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन प्लायती मदिर कामा ।

६३४६, प्रति सं०१२ । पत्र स०२३१ । प्रा०१०१४६ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण। बेष्ट्रतसं०१३० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन छोटामस्टिर बयाना।

**६३४६. प्रति सं० १३ ।** पत्रसं० २६३ । घ्रा० १०<sup>६</sup>४ ५ इच्च । ले**० काल** स० १७६५ । पूर्यो । वैष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचावती मन्दिर बयाना । विशेष — बयाना में केशोदास कासलीवाल के पुत्र हिरदैराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में ग्रंथ लिखवायाथा।

६३५०. प्रति सं०१४ । पत्र स०२६० । ले० काल स०१८०४ ज्येष्ठ मुदी६ । पूर्णं। वेष्टन स०३३७ । प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-प्रति जीग्रं है।

६३५१. प्रति सं० १५ । पत्रसः० १६६ । लेक्काल सः० १८६७ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३३६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- नानकराम ने भरतपूर में लिखी थी।

६३५२. प्रति नं० १६ । पत्र सं० २६६ । ले० काल सं० १८७७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४०६ । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

६३५३. प्रतिसं० १७ । पत्रस० २०६ । ले०काल स० १८७७ सावन सुदी ७ । पूर्ग । बेस्टन स० ४१० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष — परमानन्द मिश्र ने घममूर्ति दीवान जोधराज के पठनार्थ प्रतिलिपि की सावन बुदी ७ को ।

६३५४. प्रति सं० १८ । पत्रस० ७८ । ब्रा० १२३ × ७ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टतस० १२३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर फनेहपुर गेलावाटी (सीकर) ।

६३**४५. प्रति स**ं **१६।** पत्रस०२०१ । प्रा०११३४७ इला। लेब्काल ४ । पूर्ण। वेष्टन स०१०१ **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रग्रवाम प्रवायती मन्दिर प्रस्तवर।

६३५६. प्रति सं० २० । पत्रस० १०१ । ग्रा० १२३ $^2$  ५ ७ $^2$  इश्व । ले०काल स० १९१२ माह मुदी ५ । पूर्ण । बेप्टन स० ५६ ०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर प्रलबर ।

६२**५७. प्रतिसं० २१** । पत्रस० १७० । ग्रा० १२३ ४८ इच्छ**ा ले० काल ४ । पूर्यो ।** वेष्टनस० ४२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

६२**५ ८. प्रतिस०२२।** पत्रस०२४ । आ०६×६ इञ्चाले बलाव स०१६४४ । पूर्णा वेष्टुनस०७६ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैत मन्दिर नागदी ब्रुटी ।

६२५६. प्रतिसं०२३ । पत्र म०२०३। ग्रा०११ $\frac{1}{2}$  $\times$   $0^{\frac{1}{2}}$  इल्डा । ले॰काल स०१६३३ श्रापाट सुरी १४ । पूर्ण । बेष्टन म०६२–२३। प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौसा।

विशेष - जयपूर मे प्रतिनिधि की गई थी।

६३६०. प्रति सं० २४ । पत्र स० १५१ । घा० १२३ ४ ६ इन्छ । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनसं० १०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर तेरहर्षयी दौसा ।

विशेष -- नारूलाल तेरापथी ने चिमनलाल तेरापथी से प्रतिलिपि करवाई थी।

६३६१. प्रति सं० २४ । पत्र स० ३६ । प्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ ६थः । से०काल  $\times$  । प्रपूर्णः । बेष्टन स० १२६-४४ । प्राप्ति स्थान---उपरोक्त मन्दिर ।

६३६२. निरयपाठ संग्रह—  $\times$  । पत्र स॰ २४ । ब्रा॰ १० $\times$ ६२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पाठ सग्रह । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४५ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर कोट्यो का नैशावा ।

विशेष ---निम्न पाठी का संग्रह है---

भक्तामर स्तीत्र, तत्वार्थं मृत्र, महस्रनाम-स्तीत्र, एव विषापहारस्तीत्र भाषा ।

६३६३. पद एवं ढाल $-\times$ । पत्र मध्य-२६। प्रा०१०  $\times$  ४२ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पद । एकाल $\times$ । ले॰ काल $\times$ । पूर्ण। वेष्टन तुरु १७३। प्रास्ति स्थान-दिरु जैन मन्दिर दलाना (वर्ष)।

विशेष-- निम्न रचनाओं का मण्यतः सग्रह है--

नेमि व्याहलो--हीरो हिन्दी। र०काल स०१८४०।

विशेष-- वूदी मे नेमिनाथ चैत्यालय मे ग्रथ रचनाकी थी।

सज्भाय - जैमल

विशेष---कवि जैमल ने जालोर में ग्रंथ रचना की थी।

हिन्दी

रिष जैसल भी कह जालोर मे है.

मृतर भाषे सो परमासा है।

पद---धजयराज

पद पदमराज गरिंग

६३६४ पद संग्रह— खुझालचन्द । पत्रत्त० १ । प्रा०६ "  $\times$  ७ ६% । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल  $\times$  । अंत्रुगं । वेष्ट्रन स० ६१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैगाया ।

६२६५. पद सम्रह—र्चनसुस्र । पत्रस० १ । सा० ११ imes ६ २ व । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ४०काल imes । स्रपूर्ण । वेष्टन म० ४६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

६३६६. पद सग्रह—देवाब्रह्मा । पत्रस० ६६ । ग्रा॰ १२  $\times$  ४ $\xi$  इञ्च । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-पर सग्रह । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्न स॰ १४१ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मदिर पार्वनाथ चौगान बूदी ।

विशेष - देवाब्रह्म कृत पद, विनती एव अन्य पाठो का सग्रह है।

६३६७. प्रतिसं०२ । पत्र स०३६ । ग्रा०१०imes६३ इला। ले०काल imes1 पूर्ण। वेष्टन सं०१५२ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर।

६३६ द्र. पद संग्रह - देवालह्म । पत्र स० ४०। घ्रा॰ ७४६  $\frac{1}{2}$  इन्द । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पद संग्रह । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनस्त स्वामी दूरी ।

६३६१. पद संग्रह (गुटका)—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ६६ । ग्रा $-\frac{3}{4}$  ६  $\frac{1}{4}$  इश्व । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पद । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० ६१ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर श्री महावीर वंदी ।

विशेष---गुटका सजिल्द है।

६३७०, **पद सपह—होराजन्य।** पत्रस० ३७। मा॰ १३ $\times$ ४६ ञ्च। भाषा – हिन्दी। विषय— भजतों का सप्रहः र०काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्ट्रन स॰ ४७/४१। प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर भाववा (राज॰)

विशेष — ८० पदो का सम्रह है।

६३७**१. पद सप्रह**— × । पत्र स०१३२ । द्या०५३ × ४. इ.च । भाषा-हिन्दी पद्या। विषय-पद । र०कान × । ते०कान × । पूर्णा। वेष्टन सं०३७६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वोरसनी (कोटा)।

विशेष---विभिन्न कवियों के पदों का सग्रह है।

६३७२. **पत्र संग्रह।** पत्र स०२ से ६६। ग्रा०१०२ × ४ इ.चा ले०काल × । पूर्णी। वेष्ट्रन स०१६२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसलो कोटा।

विशेष - प्रथम पत्र नहीं है। विभिन्न कवियों के पदों का वर्णन है।

६३७३. **पद सग्रह**। पत्र स॰४-३४। द्या० ६ 🗙 ७ इ.च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० २४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सदिर बोग्सशी कोटा।

६३७४ **पदसंग्रह**।पत्र स०२८ । ग्रा०६×४ इच्छा ले०काल × ।पूर्णावेष्टन स० ७८।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर कोट्यो कार्निणवा।

विशेष --- किशनचन्द्र धादि के पद है।

६२७**४. पद सग्रह ।** किशनचन्द, हुउंकीर्ति, जगतराम, देवीराम, महेन्यकीर्ति, भूवरदास श्रादि के पदो का सग्रह है। पूर्ण, । बेष्टन म० ७१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मदिर कोट्यो का नैणवा ।

६२७६. **पद सग्रह।** पत्रत्त० ३४। ब्रा०६ X ४२ इञ्च। ते०काल X । पूर्ण**। बेहनस०** १८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदी, बुदी।

६३७७. **पद सग्रह।** पत्रत्त० ५७ । ग्रा० ५ ४ ४ इखा। ले**०काल ४ । श**पूर्णः । बेष्टन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लेस्डपर्शानैणवा।

विशेष-ग्रथ जीगां ग्रवस्था में हे तथा लिपि खराब है।

६३७८. पद सग्रह । पत्र स० ६२ । ग्रा० ३ रें ४३ इश्व । ले॰ काल स० १८६८ चैत्र बुदी १० । पुर्ण । बेवन स० ७८ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय ब दी ।

६३७६. पद सग्रह। पत्र म०६६ । आ०१२ $\times$ ५ $^{\circ}_{i}$ ६च । ले० काल  $\times$ ।पूर्ण। बेष्ट्रन सं०१६२१ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष — विभिन्न कवियों के पदो का सग्रह है।

६३ म०. पद सम्रहा पत्र सं०६ । या० ६ $\frac{2}{9}$   $\times$  ४ इ.चा. ले० काल  $\times$  । पूर्णा बेष्टन सं०४ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६३८९. पद संग्रह। पत्रस०६८। म०१० $\{x\} \times x$ हंच। ले० काल  $\times$ ।पूर्ण। वेष्टन सं• २६७। प्राप्ति स्थान – टि० जैन महिर बोरसली कोटा।

६३८२. यद संग्रह । पत्रस० १३ । भाषा-हिन्दी पद्य । बा० १०४४ इंच । ले०काल ४ । पूर्यों । बेष्टनस० ८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-- ब्रह्म कपूर, समयमुन्दर, देवा ब्रह्म के पदों का सग्रह है।

६३८३. पद संग्रह । पत्रस० ६० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स**०** ४५१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मस्दिर भरतपुर ।

विशेष -दीलतराम देवीदाम ग्रादि के पदी का संग्रह है।

६३६४, पद संग्रह । पत्र स० १६२। भाषा-हिन्दी पद्य । ध्रा०११imes६३ ६७४ । ले० कालimes वेष्ट्रन स०२० । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर वैर

विशेष--मुख्यतः निम्न कवियो के पदो का सम्रह है--

नवलराम, जगराम, द्यानतराय श्रादि ।

६३८५. पद संग्रह । पत्र म० १६ । माया-हिन्दी पद्य । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विशेष--- निम्न कवियों के पद एवं रचनाए मुख्यतः सग्रह में है---

यगोदेवसूरि पुरिसा दाशी पास जी भेटरा श्रधिक उल्हास

हे प्रमु ताहर सनमुख जोडवे ग्रमृत नयग् विकास ॥

गुराभद्रसूरि नमस्कार महामत्र पत्र

राजकवि उपदेश बत्तीसी

समयसन्दर पद

महमद

वीतराग तेरा पाया सरमा।

गुरमसागर हृष्या बलिभद्र सिज्भाय ।

मेघकुमार सिज्मःयः। ग्राजित देवसृरिः पचेन्द्रिय सिज्भायः।

पचेन्द्रिय सिज्भायः। पचवोल चौबीस तीर्थंकर स्तवनः।

महमद जीवमृत सिज्भाय ।

पद पदनिम्न प्रकारहै—

भूलो मन भ्रमरा काई भ्रमें भ्रमें दिवसने राति।
मायानो बाध्यो प्रास्तीयो भ्रमें परिमल जाति।
कुम काचो काया करियती तेहना करो रे जलका।
विरासता बार लागं नहीं निमल राखो मक्र ॥२॥
प्रस्या हुगर जेवडी मरियो पगला होठ।
पर सची ने काई मरो करियो देवनी बढि।
कीना छोड़ कीना बाखह कीना साथ ने बाप।
प्रास्ती जांबी छै एकलो साथ पुष्प व पाय। विश

मूरिल कहै धन माहरो घोले धान न लाय । वस्त्र बिना जाइ पैठिस्यो लखपति साकड माहि । लकपित खपपित सब गये गये जाला न लाल । गरब करो गोलें बेसते भये जल बिल राल ॥६॥ भव सायर भव हुन्न भरपो तरिनों छे तेह । बिज मे बीहरू सबल छे तर मे घमो मेह । उत्तर नपी प्राग्त चालिबों उत्तरि बोळें पार । प्राग्त हारम बगरियों दीवल लीज्यों लार ॥ मेहमद कहे वस्त्र बोहरी ये जो बगू चाले ग्रापि। बाहा धरणा उत्ताह क्यें लेला गापि हाव ।

**६२८६. पद संग्रह**— imes । पत्रस**०** २२ । ब्रा० १२imes४ इ.ख. । भाषा-हिन्दीले० काल imes । ब्रुप्तं । बेष्टुतसं० ४३- imes । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बडा बीस पथी दौसा ।

**६३८७. पद सग्रह—** $\times$  । पत्रस**०** १८ । झा० १२ $\times$ ६ इख । ले•काल $\times$  । पूर्णः । बेष्टन स० २२७-६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष—नवल, मूघर, दीपचन्द, उदयराम, जादवराम, जगराम, धनकीति, दास वसत, लालचन्द जोघा, धानत बुषजन, जिनदास, धनश्याम, भागचन्द, रतनवाल ब्रादि कवियो के पद है।

६२८८. पद सग्रह—४। पत्रस० ६६ । ले०काल ∴ा पूर्णः । बेष्टन स० ४००-१५७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डू गरपुर ।

६३८६. पद सग्रह— $\times$ । पत्र स०१ । ब्रा०६ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ $\frac{1}{3}$  इञ्च । ले०काल  $\frac{1}{2}$  । पूर्ग । बेहन सं०६१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर ।

विशेष—नयन विमल, विमल विजय, णुभवन्द्र, ऋषभस्तवन, ज्ञान विमल । गोडी पाष्ट्यंताय स्तवन रचना सवत् १६६२ है ।

**६३६०. पद सग्रह**—imes । पत्र स $\circ$  ६ । प्रा० ६ imes ४ इञ्च । भाषा- हिन्दी पद्य । ले॰काल imes । प्रपूर्ण । वेष्टन म $\circ$  १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मदिर दवलाना (बु दी) ।

विशेष-- बनारसीदाम जोधराज मादि कवियों के नीति परक पद्यों का सम्रह है।

६३६१. पाठ संग्रह्स -  $\times$  । पत्र म० ७०। ग्रा०११  $\times$   $\chi^2_{\gamma}$  देख । भाषा-हिल्दी पश्च । विषय-सग्रह । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स० १११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्रवाल पचावती मदिर धलवर ।

विशेष--विभिन्न पाठो का सग्रह है।

६३६२. पाठ संग्रह $-\times$ । पत्र स०२०। क्षा०१२ $\times$ ५ इखा भाषा-प्राकृत-सस्कृत । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेटुन स०३७६। **प्राप्त्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष—भाव पूजा, चैत्य भक्ति, सामायिक ग्रादि है।

६**३६३. पाठ संग्रह—** × । पत्र स०१२७ मे १७६ । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । श्रपूर्स । वेष्टनसं० ६१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचाथनी मन्दिर मरनपुर ।

६३९४. **पाठ संग्रह**— $\times$ । पत्रसं० १२ । माषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$ । पूर्णः । बेष्टन स० ४४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष — त्रिमुबन गुरु स्वामी की बीनती, भक्तामर स्त्रोत्र भाषा, कस्याए। मन्दिर स्तोत्र भाषा, पच मंगल आदि पाठ हैं।

६३६४. **पाठ सग्रह**— $\times$  । पत्र स० १८–११३ । ब्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$   $\frac{1}{2}$  इखा । भाषा-सस्कृत । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्णे । वेष्टन स० २६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

**६३६५ पाठ संग्रह**— $\times$ । पत्र स॰ २३१ । ले॰काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । बेप्टन सं॰ २५ । **प्राप्ति** स्थान—दि॰ जैन मन्दिर बैर ।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है---

भ्रादिपुरास्	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	पत्र १८४	भपूर्ण ∤
उत्तरपुरागा	गुराभद्राचार्य	18	5	**
षट् पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	२७	,,
कर्मकाण्ड	नेमिचन्द्राचार्य	,,	6	11
कलिकुण्डपूजा		संस्कृत	×	**
चौबीस महाराज	पूजा.,	हिन्दी	११	`,,

६३६७. पाठ संग्रह्— $\mathbf{x}$ ा पत्रस० १४ । ग्रा० १२ $\mathbf{\xi}$ × ६ $\mathbf{\xi}$  इखा । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर फतेहपुर केखावाटी (सीकर)

विशेष -- तत्वार्थ सुत्र, भक्तामर स्तोत्र एव गोम्मट स्वामी पूजा हिन्दी) आदि है ।

६३९८ पाठ सग्रह $-\times$ ा पत्रस० २१ । म्रा० $\}१०<math>^3_1 \times s^3_2$  इखा । भाषा-सस्क्रर-हिन्दी । ले० काल  $\times$ । पूर्णा । बेष्टन स० ६६/६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

विशेष — मुख्यत निम्न पाठो का सम्रह है।

१. भन्तामर स्तीत्र २ –कल्याग् मन्दिर स्तीत्र ३ –दानणील तप भावना कुलक (प्राकृत) हिन्दी में अर्थ दिया ह्या है।

**६२८६. पाठ संग्रह —** × । पत्रस० ११० । म्रा० त ४६ इश्व । ले**०काल** × । पूर्ण । बेष्टन स० १४/ ⊂७ । **प्राप्ति स्थान**—रि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

विशेष--- निम्न पाठो का सग्रह है।

१- नरक बर्गान पत्र ४ २- समवशरण बर्गान १३ ३~ स्वर्ग बर्गान १४ ४- गुगमस्थानबर्गान १२

५-चौसठऋद्धि वर्गान १७ ६-मोक्ष सख्य वर्गान १६

७- द्वादश श्रुत वर्गान १७

५- अकृत्रिम चैत्यालय वर्णान ६

६४००. पाठ सम्मह— imes । पत्रस० १६०। म्रा० ६imes ५ इ.च.। भाषा-ोहन्दी । ले० काल imes । पूर्णे । बेष्टन स० १६०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर नागदी बूँदी ।

विशेष-विभिन्न पाठो का संग्रह है।

६४०१. पारस विलास—पारसदास नियोत्या । पत्रस० २७७ । ग्रा०११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ० इ.च. । प्राण् । प्राप्त । विषय—पारसदास की ग्वनाधो का सग्रह । र०कास  $\times$  । लेकान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४०४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कन, जयपूर ।

६४०२. पार्स्वनाय कविल्ल—सूचरवास । पत्रस० ३। प्रा० १० $\S \times Y$  इश्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १००६ । प्राप्ति स्थान—अ० दि० जैन सदिर प्रजसेर ।

६४०३. बनारसी विलास— सं० कर्ता जगजीवन । पत्रसं० ६४ । प्रा० १० ४ ६६ च । माषा-हिन्दी । विषय-स यह । संग्रह काल स ० १७०१ । ले०काल स० १६४६ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १४७१ । प्रास्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर ग्रजबेर ।

विशेष - बनारसीदास की रचनाथी का सग्रह है।

**६४०४ प्रतिसं०२ ।** पत्र स०१३३ । ब्रा०६ै ४७ इञ्च । ले∘काल स० १६२६ वैणाख सुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स०१३३ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन मंदिर ग्रजमेर ।

**६४०५. प्रति सं० ३ । पत्र**स० ११६ । ग्रा० १२×५ इञ्च । ले० काल स० १७४३ । पूर्ग । बेष्टन सं० ११७,७० । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन पाश्वेनाय मन्दिर इन्टरगढ़ (कोटा) ।

६४०६. प्रति सं ०४। पत्र स०२-१०६। ग्रा०११×४१ इत्व । ले० वाल × । ग्रपूर्ण । वेष्टुन स० ३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मंदिर दवलाना (कोटा)।

**६४०७. प्रति स० १** । पत्रस० १६२ । ले०काल x । पूर्ण । वेष्टनस० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

६**४०८. प्रतिसं०६**। पत्रस०१३४ । म्रा०११ ४ ७¦ ३०७ । ले०काल स० १७४३ श्रावसा सुदी ७। पूर्यः । बेष्टन स०४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० मन्दिर चेतनदाम दीवान पुरानी डीग ।

६४०६. प्रति सं०७ । पत्र स० १३१ । प्रा०१२ imes१३ इ.ख. । ने०काल imes । पूर्ण । बेष्टुन सं०१०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवान जी कामा ।

६४१०. प्रति संख्या मा पत्रस० ७मा आ०१४×म् दृद्धाः ते∘काल स०१८मध्याढ सुदी १२ । पूर्णां विष्टुन स०१० :। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायनी मन्दिर कामा।

विशेष-कामवन (कामा) मे प्रतिलिपि हुई थी।

६४**११. प्रति सं० ६** । पत्र स० ६४ । ले०काल स० १८६३ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४४ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

६४१२. प्रति सं० १०। पत्र स० १४७। ग्रा० १० ४४} इश्वः। ने०काल स० १८६० फागुन बुदी ६। पूर्ण। बेप्टन स० २४१। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष—कोटा नगर मध्ये वासपुत्र्य जिनालये पहिन जिस्सदान उपदेशान् लिखापितं सदेलवालान्वये कासलीवाल गोत्रे धर्मज साह जैनरामेरा स्वपटनार्थ ।

६४१३. प्रतिसं० ११ । पत्र सं०४६ । ग्रा० १०४६ इ.च. । ले० काल स० १७८७ ग्रावाड बुदी ३ । पूर्णः । बेष्टन स० १३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर दबलाना (बूदी) । ६४१४. प्रतिसं०१२ । पत्रस०१४८ । ग्रा०१imes७ $^{\dagger}$  इच्च । ले० काल imes । पूर्छ । बेहनस०६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्थायती मदिर बयाता ।

विशेष--१२४ पत्र के ग्रागे रूपचन्द के पदो का संग्रह है।

६४१**४. प्रतिसं०१३** । पत्रस०४४ । प्रा०१३१ 🗴 ६१ इथा । ले०काल स०११०६ फागुरा बुदी ७ । पूर्णः । बेष्टन स०४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैसावा ।

विशेष -- साह पन्नालाल ग्रजमेरा ने प्रतिलिपि की थी।

६४**१६. प्रति सं० १४ ।** पत्रस० १६४ । झा० १०  $\times$  ७ इन्छ । ले० काल स० १८०५ । पूर्णे । वेष्टन स० ६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर बधेरवालों का स्रादा (उल्लियारा) ।

विशेष -- नर्रामहदास ने लिखा था । समयसार नाटक भी है ।

६४१७. प्रति सं०१४ । पत्र स०८१ । घा०१० ४ ४ इञ्च । ले० काल सं०१८८४ । पूर्या । वेष्टन स०२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बुदी ।

६४१८. प्रति स० १६ । पत्रसं० १०२ । ग्रा० १०२४ ५ इखा । ले०काल स० १८८७ कालिक बुदी र । पूर्या ।

विशेष-ज्योनाल जी ने पन्नालाल साह से प्रतिलिपि कराई थी।

६४९६. प्रतिसं०१७ । पत्र सं०६६ । आर०१३ ४ ६ इचाने०काल ४ । पूर्ण। वेय्टन स०१४≍ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

६४२०. प्रतिसं०१ कापत्र स०६४ । घा०१२ ४४ इचा। ले० काल स०१ ८५४ । पूर्णा। वेष्टत स०५२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर घादिनाय बूदी।

६४२**१. प्रति सं० १६ ।** पत्रस० ७६-८० । प्रा० ६ $\times$ ४, ढुटच । ले**०काल** स० १७३८ । पूर्णे । वेष्टन स० १०६-५२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का कुंगरपुर ।

६४२२. **बुद्धि विलास—बस्तराम साह।** पत्र स० ८६। प्राः श० ४४ इञ्च। भाषा— हिन्दी पद्य। विषय—विविध । र०काल स० १८२७ । ले०काल × । वेष्टन स० ८२७ । स्रपूर्णः । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

६४२३ **ब्**यजन विलास —ब्यजन । पत्रस० १००। मा० १२ई ४ ७ई इख । भाषा-हिन्दी पद्म । विषय - मुर्भापित । र०काल स० १६२१ काती सुदी २ । ले०काल स० १६४४ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेक्टन सं० ४६६ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर, लक्कर जयपुर ।

विशेष-सवाई जयपुर मे प्रतिलिनि हुई थी।

६४२**४. प्रतिसं० २**। पत्रस० ७१। र०काल स० १८७६ कालिक सुदी ४। ले**०**काल स० १९२४। पूर्णे। वेप्टन स० १४६। आप्ति **स्थान—दि०** जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६४२५. प्रति सं ३। पत्रसं• ८४। ले॰काल सं॰ ११२४। पूर्णं। प्राप्ति स्थान—िद॰ जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

६४२६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ७४ । आ० १२ $\frak{7}\times$ ६ इन्छ । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनसं० २७ । प्राप्ति स्थान—िरं० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६४२७. ब्रह्म बिलास —भैया भगवतोदास । पत्र सं० १३२ । प्रा० १४ $\times$ ७ इच । मापा— हिन्दी । विषय —सम्रह । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १११७ प्रासोज बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष - गोपाचल (ग्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी।

**६४२ द. प्रति सं०२।** पत्र सं०१६६। ले० काल सं०१ द७६ प्र० ग्रामोज मुदी ७। पूर्ण। वेष्टुत स०१४७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैत पचायती मंदिर भरतपुर।

६४२६. प्रति सं०३। पत्र स०१४८। ले० काल स०१८१४ कालिक सुदी १५। पूर्णे। वेष्टन स०१४०। प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर।

६४३०. प्रति सं०४ । पत्र स०१०१ । ले०कान 🗴 । पूर्या। वेष्टन स०१५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मंदिर भरतपुर ।

**६४३१. प्रतिसं० ५।** पत्रसं० ६४। र०काल १७४४। ले०काल स०१६२४। पूर्ण। बेष्टनस० १७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प बायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष-तुलसीराम कासलीवाल बँग्का ने भरतपुर में महाराजा बलवनीमह के शामनकाल में प्रतिलिपि की थी। भरतपुर वामी दीवान गर्जामह धरने पुत्र माथोसिह गौत्र बैंग्र के पठनार्थ लिपि कराई।

६४३२. प्रतिसं०६ । पत्र स०१०२ । म्रा०१३ 🗴 ७३ डखा ले० काल 🗡 । श्रपूर्ण । वेक्रन स०११४ । प्राप्ति स्थान-–दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

**६४३३. प्रतिसं०७** । पत्र स० १४४ । प्रा० १२ $\frac{1}{2} \times 0^{\frac{1}{2}}$  डख । ले**०काल** स० १६२६ पोप बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० ५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मदिर बयाना ।

विशेष - ठाकूरचन्द ने माधीसह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६४३४, प्रति स० ६ । पत्रस० ६४ । नै०काल 伏 । घ्रपूर्णः । वेष्टनस०५६ । प्रास्तिस्थान — दि० जैन पत्रायती मदिर वयाना ।

**६४३४. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० २३४ । ब्रा० १ $\frac{1}{2}$ ४ ६ इष्ठच । ले० काल स० १८६२ ब्रावाड सुदी द । पूर्ण । बेष्टन स० ६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्र।यनी सन्दिर कामा ।

विशेष — कामा निवासी ऋषभदास के पुत्र सदासुखजी कासलीधाल ने सवन् १८८२ में प्रतिलिधि की थी।

**६४३६. प्रतिसं० १० ।** पत्र स० १०० । ग्रा० १३×६ इश्वा । ले० काल स० १८६२ फागुगा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टुन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पाध्वेनाथ मन्दिर इन्दरगढ ।

विशेष-नैगुवा में बाह्मरा गिरधारीलाल ने प्रतिलिप की थी।

**६४३७. प्रति सं० ११** । पत्र स० १०७ । प्रा० १४ ¦ ४८ इश्व । ले० काल स० १८६६ पीय मुदी ४ । पूर्ण । बेष्टून स० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेटपुर शेखाबाटी (क्षीकर)

विशेष - देवकीनन्दन पोहार ने प्रतिलिपि की शी।

**६४३ म. प्रतिसं० १२।** पत्र स० २२०। ब्रा०१२×५ इश्वः। ले० कालः स० १६१७ भादवा सुदी २। पूर्णः। वेष्ट्रन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

६४३**६. प्रतिसं० १**३ । पत्र स० १४० । ग्रा० १२×७ इञ्च । ले० काल स० १६४१ भादवा बदी १४ । पर्गा । वेष्ट्रन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

10

६४४०. प्रति सं० १४। पत्रस० २००। ग्रा० ११×४ इश्वः। ले०कास ×। ग्रपूर्णः। वेष्टन म० ३४३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

**विशेष**—२०० से ग्रागे पत्र नहीं है।

६४४**१ प्रति सं०१५ ।** पत्रस०१२२ । ग्रा०१०है×५ै इख । ले०काल स०१६६६ । पूर्ण । वेष्टुतस०१०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

उदयपुर सेर बसे मुभयान , दीपे उत्तम मुरग समान । ब्रह्म विलास यथो भाग, सीलीयो ना माही जिन स्वास । निक्वाधिन साहा बेट्यीचर, जान चीतोडा नाम प्रसिद्ध । वाचनार्थ भव्य जीवनताई, मेलो जिन मन्दिर माई । स्वत् प्रशुदास का जान, ता उत्तप नील्याएग बस्थान । जगहन मदी दशमी मार पूरो लिखो रजनी पनिवार ॥

६४४२. प्रतिसं०१६ । पत्रस०२३३ । ग्रा०७३ ४ ४ इ.च. । ले० काल स०१८१७ । पूर्ण। वैष्टनस०१०२ ७६ ।

विशेष --- नन्दराम बिलाला ने प्रतिलिपि की थी।

६४४**३ प्रतिसं०१७।** पत्र स०१३७। ग्रा०१२४५} डञ्च। ले० काल स०१८५०। पूर्णे। त्रष्टन स०१०२। **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर तेरहपयी दौसा।

विशेष--नातृलाल तेरहपंथी ने चिम्मनलाल तेरहपयी से प्रतिलिपि करवाई थी।

६४४४ प्रति सं० १६ । पत्रस० २२६ । ग्रा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  >%। ले० काल स० १६३४ कार्लिक मुदी ५। पूर्णे । बेहन स० २१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

६४४**५. प्रतिसं० १६** । पत्र स० १६४ । ग्रा० १०×५६ इ.स. । ने०काल १६०४ ग्रामोज सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६४६<mark>४. प्रतिसं०२० ।</mark> पत्र स० १२५ । ब्रा० १२५ ६ इच्च । ले० काल स० १६१३ आदवा मुदी २ । बेष्टुन स० १२३ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

विशेष — चैद्यपुर मे लिखा गयाथा।

६४४७. प्रतिसं० २१ । पत्र सं० ५७-११४ । आ०११ ४४ इच । ले० काल स०१६५२ आवाढ बुदी ७ । धपूर्ण । बेप्टन स०१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपयी नैरावा ।

६४४६, प्रतिसं० २२ । पत्र स० २११ । घा० ६×७ इचा । ले०काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्यो । वेग्टन सं० ८७-६० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विजेख---रतनचन्द्र पाटनी ने दौसा में प्रतिलिपि की थी।

६४४<mark>६. प्रतिसं० २३ ।</mark> पत्रस० ४४ । म्रा० ११×६ इला । ले० काल स० १७८७ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । बेस्टन स०१६६ । प्रा**प्ति स्थान**---दि० जैन पचायती∤मदिर करौली ।

**५४५०. प्रतिसं० २**४ । पत्र म० २४४ । ग्रा० १२ $\times$ ५ १ इंच । ले**०काल** स० १८५४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी **डी**ण ।

विशेष-डीग में प्रतिलिपि की गई थी।

६४५१. प्रति सं० २५ । पत्र सं० २१६-२४६ । झा० १२४५) इश्व । ले०काल सं० १७६६ मासौज मुदी ६ । श्रपूर्ण । वेष्टन स० ७३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी बीग ।

६४५२. प्रतिसं० २६ । पत्रस० १३२ । प्रा० १२५% ६५ इ.स. । ले०काल स० १०६१ । पूर्ण । वेष्टन स० १२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैसावा ।

६४४३. प्रति सं०२७ । पत्रस०२०६ । आर०११४६ इञ्च । ले०काल स०१७६२ हितीय ज्येष्ठ सुदी । पूर्णे। बेष्टुन सं०५१६ । प्राप्ति स्थान — स० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष--प्रति सन्दर है।

६४४**४. प्रतिसं०२ ८ ।** पत्र सं०१४६ । झा०११×४ इच्छा। ले० काल स०१८४० । पूर्ण। बेष्टन स०६४३ । **प्राप्ति स्थान**— स०६० जैन सन्दिर ध्रजमेर ।

६४५५. प्रतिसं० २६ । पत्र स० ११७ । घा० १०<sup>१</sup>,४५<sup>३</sup> इश्वा । लेव्काल स० १६४५ । पूर्ण । वेष्टन सं० १५६ ७१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का दुगरपुर ।

६४४६. प्रतिसं० ३० । पत्रस० १४४ । ब्रा० १०१<sup>3</sup>४५ इ.चा लंश्काल स० १⊏१२ । पूर्णा । वेष्ट्रनसं० ३४−२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ड्रगप्पुर ।

६४५७. प्रतिसं० ३१। पत्रस० १०१। ग्रा० १०३५४७ इखा। ले०काल स० १८७३ भादवा बुदी द। पूर्णा। बेष्टनसं०४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर ग्रनवर।

६४४ म. प्रतिसं० ३२ । पत्र स० २३४ । धा० ७ ¦ ४४ ¦ डञ्च । ले० काल स० १६४१ माघ बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टुन स० म१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन प्रध्रवाल पचायती मदिर प्रलबर ।

६४५**६. प्रति सo ३३।** पत्रसo ६६। ग्रा० १२ $^{1}_{c}$ imes0 इन्छ। ले० काल सo १६७७ सावत सुदी ४। पूर्ण। बेष्टनसo ६२। प्राप्ति, स्थान — दि० जैन ग्रग्याल प्लायती मंदिर ग्रल्यर।

विशेष—जिल्द सहित गुटकाकार है।

् ६४६०. प्रतिसं० ३४ । पत्र स०२०८ । झा०१२४ ५ इञ्च। ले•काल स०१६२३ । पूर्ण। बेष्टन स०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बृदी ।

र्ट ६४६१. प्रतिसं० ३५. । पत्र स० २६४. । धा० ६४. ५ इ.च. । ले० काल स० १६१७ । पूर्ण। ईष्टन स० २८१ । प्राप्ति स्थान-----वि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी सूरी ।

े ६४६२. प्रतिसं० ३६ । पत्रसं० १६६ । ग्रा० १२×५ हे इच । ले० काल स० १७६६ भादवा मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बैर ।

विशेष -- चौबे जगतराम ने प्रतिलिपि कराई थी।

६४६४. मूचर विलास—मूचरदास । पत्र स०४६ । घा०११४६ इच्च । गाया – हिन्दी पद्य । विषय — सबह । र०काल ४ । ले०काल ४ । स्वपूर्ण । वेप्टन स०१४३ । **प्राप्ति स्थान** — वि**०** जैन मन्दिर श्री महावीर बुदी ।

६४६५. प्रति सं०२ । पत्र स०६२ । घ्रा०१३ x ७, इल्ब । ले० काल सं०१ मम्ह । पूर्ण । वेष्ट्रन स०७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६४६६. प्रतिसं० ३। पत्र म० ६३। ले०काल स० १६४१। पूर्णः। बेहन स० १६४। प्राप्तिः स्थान--वि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर।

६४६७. प्रतिसं०४। पत्रस०६। प्रा०११ x ५१ देखा ने०काल स० १८०५ मंगसिर सुदी६। पूर्णा वेष्टनसं०७६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर संखाबाटी (सीकर) विशेष—सिम्न रामद्याल ने फकत नगर से प्रतितिषि की थी।

६४६८. मनोरथमाला गीत - धर्मभूषणा। पत्रसः ५ । भाषा—हिन्दी। विषय—गीत सण्ह। रक्काल × । लेक्काल × । पूर्णा वेष्ट्रनसं० ७०/४७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपः।

६४६१. मरकत विलास—मोतीलाल । पत्र स० १४८। भाषा —हिन्दी । विषय — धर्म । र०काल  $\times$ । ले० काल १९८५ ग्रासोज बुदी ७। पूर्ण । बेष्टन स० २७। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर रीवानजी मन्तपर ।

विशेष -- प्रति सन्दर है।

६४७०. मार्गकपद संग्रह— मार्गकचन्द । पत्र स० २-४२। घा० ११  $\times$  ६ $^{3}$  इंच । माषा— हिन्दी (पद्य) । विषय—पद । र०कान  $\times$  । ले० कान स० १६४५ फागुस मुदी २ । श्रपूर्स । वेष्टनसं• २२२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन श्रयवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- प्रथम पत्र नही है।

६४७१. **मानवाबनी** —  $\times$  । पत्र स॰ २६ । ग्रा॰ १२ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  द च । नाषा —पुरानी हिन्दी पद्य । विषय—स्कृट । र॰काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २७ । **प्राप्ति स्थान** —दि॰ जैन मंदिर तेरहाथी दौसा ।

६४७२. मानविनय प्रबंध—× । पत्र स. ७ । घा० १०×४ है इव भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय—स्कुट । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स ४६३ । **प्राप्ति स्थान**—म०दि० जेन मन्दिर स्रवोत्र ।

विशेष—कौनो पर फटा हुग्राहै।

६४७३. यात्रा समुच्चय— × । पत्र स० ४ । घा. १×४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय— विविध । र०काल × । ले.काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

६४७४. रत्नसंग्रह—नन्नुमलः । पत्रः सः ६६ । ग्राः १३३ ४ ८ इच । श्रापा—हिन्दी गत्रः । र.कालः सः १६४६ मंगतिर सुदी ४ । ले०कालः स० १६६७ चैत बुदी ४ । पूर्णं वेष्टनसंग १२ । प्राप्तिः स्थान—दिः जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

## विशेष---

प्रारम्म — वोहा — प्रथम वीर सन्मति चरण, दूतीया सारदा माय ।

> नमूरतन सप्रह करन, ज्यौ भववन नसि जाय ।। प्रथ समृह विचारते, तिनहीं के प्रनुसारि । रत्न चर इम काण्ने, पठन सनत भव पार ।।२।।

ग्रन्तिम---

णुभ सुधान मुह्वतपुरा, जिला झलीगढ जान। जैली श्रावक जनन की, जन्म भूमि मुक्त मान।।=।। मैडू वासी श्रावक, जैसवाल कुल भान। वण इध्वाक मु उसके भोलानाय प्रधान।।ह।।

चौपई--

मुन गोपालदास है तास, पुत्र युगल तिनके हम तास। धनुज गरोजीलाल वरवानि, दुजा भगवता गुरु मानि।। उर्फ लक्तव नन्तूमल कह्यो, जन्म मुफल जिन वच पढि भयो। भुल चक धीमान सम्हार, प्रत्यमती तस्त्र दया विचार।।

सोरठा—

रतन पुज चुनि लीन, पढी पढाली सजन जन। कर्म वध हो शीन, लिखी लिखावी प्रीतिधर।। प्रव मपूर्ग कीन, सबत् सर विकल्प तनी। एगल सहस में हीन, प्रवंशनक चब में मनी।।

गीतछंद ---

मर्गामा जु णुक्ता पत्रमी बुणवार पूर्वाषाढ के।
दिन कियो पूरण रतन सम्ह जुग मुक्लानि के।।
सन्मान स्रव परिमान सारे है भी जिन्यानि के।
सप्ती तरफ गे जुछ नहीं में जिल्ला भविजन जानि के।
।। इति सी रतन सम्बन्धान

लिखत लाला परमादीलाल जैनी सामिन नगले सिकटरा जिला ग्रागरा पोस्ट हिम्मतपुर मिती चैत कृष्णा ४ मनिवार स० १६६७ विकम । रामचन्द्र बलदेवदास फतेहपुर वालो ने जैन मन्दिर मे चढाया हस्ते प० हीरालाल ग्रासोज सुदी ४ स० १६६७ ।

६४७४. लक्ष्मी विलास --पं० लक्ष्मीचंद्र । पत्रस० १२० । घा० १२ हे ४७ इख । माषा--हिन्दी पद्य । विषय --संग्रह । र०काल ४ । ले० काल स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन स० १२० । **प्राप्ति** स्थान -- दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान बुदी ।

विशेष-वैद्याय मत के विरोधी का खण्डन किया गया है

६४७६. विचारामृत संबह— × । यत्र सं. ६३ । प्रा० १०१ ×४९ एव । माया-संस्कृत । विषय-सम्रह । र०काल × । ले काल सं. १५६१ । पूर्ण । वेष्टन सं. २२० **। प्राप्ति स्था**न --- दि. जैन मन्दिर बोरसली कोटा । ६४७७. विचारसार घडशीति —  $\times$  । पत्र सं. ३। झा. १० $^3$  $\times$ १ $^3$ ृ इंच । भाषा-सस्कृत । विचय—स्फुट । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६४० । पूर्ण । वेष्ट्रन स. ७४० । प्राप्ति स्थान—भ० दि. जैन मन्दिर सजसेर ।

६४७८. विनती संग्रह —देवतहा । पत्र स० ७३ । ग्रा० १० $\times$ ६ इव । भाषा —हिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । बेष्टन स० २८७ । प्राप्ति स्थान— दि. जैन मन्दिर दबनाना (ब्.वी) ।

६४७६. विनती संघह $- \chi$ ा पत्र स० ३-१० । घा० १०  $\times$  ४ ६ च । भाषा-किन्दी । विषय-पद । र०काल  $\times$  । ले•काल  $\times$  । घपूर्ण । वेष्टन स० ४६३ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

वशेष--पाठो कासग्रह है --

१--च उबीम तीर्थंकर विनती-जयकीति । हिन्दी । पत्र ३ ४ ग्रादि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है--

प्रारंभ -

सकल जिनेश्वर प्रशामीया सरसती स्वामीशा समरिमाय । वर्तमान चउवीमी जेह नव विधान वोलेह तेह ।

ग्रहितम—

काण्डासथ नदी तट सच्छ यनी त्रिभुजनकीनि सूरिस्थर स्वच्छ । रत्नभूषण रिवनल गछपित सेन जुभकर मोहमनी । जयशीति सूरि पद धार हुई धरि करयु एही विचार । भणि मुस्ति अवीयरामार, ते निश्चतरमी ससार ।।२।।

इति नव विधान चउवीसी तीर्थकर वीनती सपूर्ण ।

२ परमानन्द स्तवन ३ बाहबलीखद स स्कृत बादिचन्द्र २ ५ **मलो**क हिन्दी

प्रारम्भ--

कोसल देश प्रयोज्या सोहि, राजा वृषभतग् मनमोहि। घरि हो दीसि घ्रनोपम राग्गी, रूप कलाघाती एन्द्राग्गी। जसोमति जाया भरतकुमार, बाहुबली सुनदा मल्हार। नीलजमः नाटिक विभाग, बन्यु वैरागह चित्तिनिरज्य।

ग्रन्तिम---

सिद्ध सिद्ध युगती भरतार, बाहुबली करुसहु जयकार । तुभ पाये लागि प्रभाचन्त्र, वाशी बोलि वादिचन्द्र 11६०॥

इति बाहुबली छद सपूर्ण ।

४ गुरासीसी भावना

ग्रन्तिम---

भोगभलाजे नरलाहि हरिष जु देइदान । समफित विएगा शिवपद नहीं जिहां भनत सुखठाम ।। ए गुरात्रीसी भावना भराकि सुधु विचार।

ज मन माही समरिमी ते तरसी समार ॥३१॥

इति उगरातीसी भावना सपूर्ण

६४००. विनती संग्रह—देवाब्रह्म — $\times$  । पत्र स० १६। मा० = १४ इसा । भाषा—हिस्दी । विषय— स्तवन । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सकर, जयपूर ।

विशेष-- तीयंकरो की विनतियाँ है।

६४६१. विनती एवं पर संग्रह—वेवाबहा । पत्र स०११२ । ग्रा० १०४४) इश्व । भाषा-हिन्दी पदा । विषय-स्तवन । र०काल ४ । ले॰काल ४ । अपूर्ण । वेष्टन स० ३०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, ब्रुदी ।

विशेष -- १६ पद एवं भजनों का संग्रह है।

६४६२, **विनती पद संग्रह**—  $\times$  । पन स०४। म्रा० १२ $\times$ ६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद स्तवन । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लक्कर, जयपर ।

विशेष--- त्र • कपूर, जिनदास जगराम आदि के पद है।

६४**८२, विनती सग्रह—** ४ । पत्रस०६ । आ०११हे ४ १} इच्च । भाषा-हिन्दी गय। विषय—स्तोत । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस०१२२-५७ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष — भूपर कृत विनितयों का सम्रह है।

६४८४. विवेक विलास—जिनदत्त सूरि । पत्र त० १४-७० । या० १० $^{1}$ ४४. इञ्च । आया—हिन्दं । विषय विविध । र०काल ४ । ले॰काल ४ । पूर्णं । वेष्ट्रन स० २१५ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन महिर नेमिनाय टोडाग्यनिह (टोक)

६४६६. **शास्त्रमुची**— × । पत्र स०१०। भाष्म—हिन्दी । विषय—मूची । र०काल × । के∘काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४१२−१४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हू गरपुर ।

६४८७. शिखर विलास--लोलचन्द । पत्रसः ४७ । बा० १०४६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय--महत्त्रस्य वर्णन । र०कोल स० १८४२ । ले०काल सं० १३४७ । पूर्ण । बेष्टन सं० , ४०,१०० । प्रास्ति स्थान--दि० जैन पत्रायती मन्दिर प्रतयर ।

६४६६, श्लोक संग्रह—  $\times$ । पत्र रु०६। आ०१० $\times$ ४ | इत्र । भाषा—संस्कृत । विषय— फुटकर । र०काल  $\times$ । के०काल  $\times$ । अपूर्ण । वेष्टन सं०३३४ । **प्राप्तिः स्थान—**दि० जैन सन्दिर दक्ताना (बृदी) ।

६४८६. श्लोक संगह—×। पत्रस० २४। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्णः। बेहन स० ४४०-१६५। प्राप्टिः स्थान-—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंभरपुर।

विशेष-विभिन्न प्रंथों में से क्लोक एवं गाथाए प्रक्तों के उत्तर देने के लिए सम्रह की गई हैं।

६४६०. **ध्रायकाचार सूचिनका** —  $\times$  । पत्रसं० ४ । ग्रा० ११ $\times$ ४ इच्च । भाषा —हिन्दी । विषय — सूची । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १४८ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीमान वृदी ।

### विशेष--थावकाचारों की निम्न सची दी है।

१, रत्नकरण्ड श्रावकाचार	समन्तभद्र	फ्लोक स०	१२५
२. श्रावकाचार	वमुनन्दि	"	५२६
३ चरित्रसार	चामुण्डराय	,,	७६५
४. पुरुषाथंसिद्धगपाय	<b>ग्रमृतचन्द</b>	,,	१६२
५. श्रावकाचार	द्यमितिगति	1)	१०५०
६. सागारधर्मामृत	ग्राशाचर	,,,	१२६२
७. प्रश्नोत्तरोपासकाचार	सकलकीर्ति	11	8888

६४६**१. यम विलास** imes ime

६ः ६२. श्रोल बिलास—  $\times$  । पत्र स०२० । ग्रा० १२ $\cap \times \chi_2$  इन्य । भाषा—सरहत । विषय—सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८३० चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० १२१६ । प्रास्ति स्थान—महारकीय दि० जैन मन्दिर ग्रावेर ।

६४६३. षट्त्रिशांति—  $\times$  । पत्रसः १०। म्रा० १० $\times$ ५३ दंच । भाषा-सस्कृत । विषय— विविध । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं०६३८ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

६४६४. खर्ट्|ब्रश्तिका सूत्र-  $\times$  । पत्र स० १-७ । आ०११ $\times$ ४ दश्व । आपा-सस्कृत । विषय-कृटकर । र०काल  $\times$  । ले•काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टुनस० १८२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

६४९५. प्रतिसं० २ । पत्र स०५ । ले० काल imes । पूर्ला । वेष्टन स०१८३ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- ४० तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

६४**६६. बट्पाठ—** × । पत्र स॰ ४६ । आ॰ १२×७ दश्च । आषा-हिल्दी (गद्य) । विषय— संग्रह । र॰काल × । से॰काल म॰ १६३६ । पूर्गा । वेष्टन सं॰ १३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्वडेलवाल पद्मायती मदिर क्रलवर ।

विशेष -- निम्न पाठो का संग्रह है---

दर्भन पच्चीसी, बुधजन छत्तीसी, बचन बत्तीसी तथा ग्रन्य कवियो के पदो का संग्रह है।

६४६७. **सरम्भाय एवं बारहमासा**— × । पत्र स०१। ग्रा०१०×४६ च । माषा— हिन्दी। विषय — स्कृट १०काल × । ले०काल × । पूर्ण। बेटून स०२४०। **प्राप्तित स्थान**—दि• जैन मदिर बोरसली कोटा।

६४६८. सबैया--सुन्दरदास । पत्रस०६ । छा०१० $^{\prime}$ imes६३ द्वा । साषा—हिन्दी । विषय— र०कालimes। ले० कालimes। पूर्णं । बेष्टनसं०२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष--- २७ सर्वया तथा ३३ पद्य हसाल छद के हैं।

६४६६. सारसंयह--सुरेन्द्रमूषरा । पत्र स०७ । धा० ६४४) इख । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० स० २६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चीगान व दी ।

६५००. मुखविलास -जोधराज कासलीवाल । पत्रस० २४२ । घा०१३४८ इत्था । भाषा-्रित्यी पदा विषय -मृक्ति सम्रहारक्काल स०१८६४ मगसिर सुदी ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं०२३ २१। प्राप्ति स्थान-्यिक केन पत्रायनी मन्दिर प्रलयर ।

६**५०१ प्रतिसं० २**। पत्रस०७७ । ब्रा०१३×५३वा । ते०काल<sup>५</sup>् । पूर्गा वेश्तस० ३२.६०। **प्राप्ति स्थान**---दि० जैनमन्दिर भादवा (राज०)

विशेष--कविकी विभिन्न रचनात्रों का संग्रह है।

**६५०२. संग्रह**—  $\times$ । पत्रस्व ६४। स्ना० ६ $\times$ १ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । र०काल  $\times$  । त्र्ष्यं । वेष्ट्रनस० ५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पत्राथनी दूनी (टॉक )।

विशेष --जैन एव जैनेतर विभिन्न ग्रंथों में से मुख्य स्थलों का सग्रह है।

६५०**२. सग्रह ग्रन्थ** — × । पत्रस० ७ । ग्रा० १० ×४ हेच्य । भाषा — सस्कृत । विषय — सग्रह । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०३१० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर पाक्ष्वेनाय चौगान वृद्यो ।

विशेष---विविध विषयों के श्लोकों का सग्रह है।

६५०४. संग्रह ग्रन्थ — 🟏 । पत्रस०१४ । धा०१०४६ १ इन्छ । ले०काल स०१६२०। प्रपृर्ग । वेप्टन स०६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

१ मदनपराजय हिन्दो । घपूर्णः । २. ज्ञानस्वरोदय चरगणदास रगाजीत हिन्दी । पूर्णः । र०काल स०१८६६ ।

## ग्रन्तिम—

सुखदेव गुरुकी दया सु साध तथा मुजान। चरएादास रराजीत ने कह्यो सरोदे जान।। इहरे मे मेरो जनम, नाम रराजीत कखानो। मुरुनी को मृत जान जाति दूसर पहचानो।। बाल अवस्था माहि वहुर दली मे आयो। रमित मिले मुखदेव नाम चरणदास कहायो।।

इति ज्ञान सरोदो सपूर्ण सं० १८६६ को साल मे बरगायौ ।

भूलोय में प्रतिलिपि हुई।

२. बारह भावना ४ ग्रकृतिम बंदना ५ बज्र पजर स्तोत्र ६ श्रुतबीघ टीका ७. जिनपजर स्तोत्र प. प्रस्ताबिक श्लोक १. दणलक्षरण मङल पूजा १० फुटकर क्लोक ११ चतुर्गत नाटक—सालूराम।

### द्यादि भाग---

ष्ठिण्हित नम् 'सिरनाय पुनि सिद्ध मकल गुलदाई । धवारण के गुन गाऊ पर उपाध्याय मिर नाऊ । सिरनाय मकल उपाधि नासन गर्य साधू नम् सदा । जिनराय भाषित धर्म प्रस्मृ विधन व्यापे न हैं कदा । य परम मानल रूप चवपद लोफ में उत्तम प्रही । जब नटन नाटक जगत जीय वेजक पर तटक मही ।

#### ग्रन्तिम--

ई विधि जीव नटवा नाच्यों, सब्द चौरामी र ग राच्यों । इक इक भेष न माही, नाचि काल अनत गुमाहि ।। बीरयो अनंतकाल नाचतं उच्छमध्य पाताल में । ज्यों कमें नाच नचावन जिय नट स्थां नवत बेहाल में ।। असे इसे इसे कुमग बजिय निच जान नृति बेहाल में ।। चिर रूप झालराम गाहि ज्यों होया निच के मूल आप ।

१२. बाईस परीयह हिन्दी। चि॰ साल ने पार्श्वनाथ मन्दिर में प्रतिलिपि की थी।

६५०५. संग्रह इन्थ- ×। पत्र स०२। आ०११४६ इश्व। ले•काल × । पूर्ण। बेष्टन स० १३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थनाय चीगान बुदी।

विशेष-चौदह कला, पच्चीस किया आदि का वर्णन है।

६५०६. स्फुट पत्र संग्रह—  $\times$  । पत्रस० १४ । प्रा०  $c_1^1 \times c_2^2$  इ.च । प्रापा—सस्कृत । विषय—सुमापित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ३३६–१३२ । **प्राप्तित स्थान—दि०** जैन मदिर कोटडियो का हुनस्पुर ।

६५०७, स्फुट पाठ संग्रह—  $\times$ । पत्रस० १६। ग्रा॰ ६ $\times$ ४ इंच । भाषा—हिन्दो । विषय— सग्रह । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८२० । अपूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ ४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष--विविध पाठो एव कथाओं का संग्रह है।

६५०६, **स्फुट संग्रह** — 🗴 । पत्रस० ५२ । भाषा — हिन्दी । विषय — सग्रह । र०काल 🗴 । ने०काल 🗴 । पूर्यो । वेंष्टन ४४६ **। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

विशेष---निम्न पाठ हैं।

बाईम परीयह वर्णन, कवित छड्डाला, उपदेश बत्तीमी तथा कृपण पचीमी है।

---:0:----

## विषय -- नीति एवं सुभाषित

६५०६. म्रक्ष**र बाबनी—केशववास (सावष्यरस्न केशिव्य)**। पत्रसं० १४। प्रा० १०४ ४-६ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य: विषय-सुमापित। र०काल स० १७३६ सावण सुदी ४ गुरुवार। **ले०काल सं०** १६६६ वैशाल बुदी ४। पूर्ण: वेष्ट्रन स० ७४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा सम्दिर बयाना।

विरोष-- पश्वसः १३ से राजुल नेमी बारहमासा केशवदास कृत (सः० १७३४) दिया हुन्ना है। श्रीतकाल सर्वयाभी दिया हमाहै।

शक्षर बावनी का ग्रादि श्रन्त भाग निम्न प्रकार है--

### द्यादि माग---

म्रोकार सदा मुख देवत ही जिन सेवत प्रेंख्ति इच्छित पार्व । बावन म्रक्षर माहि जिरोमसी योग योगीसर इस ही ब्यावें । ध्यान में जान में वेद पुरागा में कीरिन जाकी सब मन भावें । केमवदास को शैत्रिये दौलन भावन साहिब के गुगा गार्व ॥६॥

### ग्रन्तिम--

बावन प्रक्षर जोय कर भैया गाबु पच्यावहि मैं मल धार्व। सतरसौत छत्तीस को श्रावरण मुदि पांचे मृगुवार कहार्व। मुख सीभाग्यनी कौतिन को हुवै बावन श्रक्षर जो गुरा गावे। लावण्यरत्न गुरु सुपसावमु केशवदास सदा सुख पावे।।

इति श्री केशवदास कृत ग्रक्षर बावनी सपूर्ण ।

६४१०. श्रक्तरद्वावनी—  $\times$  । पत्रस० १४ । आ० १३  $\times$ ७ इन्तः भाषा—हिन्दी । विषय— सुभाषित । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाय मन्दिर उदयपूर ।

विशेष-- पत्र से आगे अध्यात्म बारहखडी है।

६५११. स्रङ्क् बतीसी--चन्दा । पत्र स ०३। सा० १० $\times$ ४, दश्च । माषा -हिन्दी । विषय-सुमासित । र०काल सं० १७२६ । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० २६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्यनाथ इन्दरगढ (कोटा)

विशेष-आदि ग्रन्त भाग निम्न प्रकार है-

×

प्रारम्भ--

योमकार प्रपार है जाको घरिये घ्यान । सबै वरतुकी सिद्धि ह्यूँ भरु घट उपजे जात । कथा कामिनि कतक सो मिति बाधै तू हेत । ए दोऊ है ग्रांति वुरे ग्रान्ति तरक मे देत ॥

× × × ×

वित्तक माभ करता पुरुष करन छोर सौ छोर। जनम मिरानो जात है छाडि चन्द जम डोर 11३४॥ सबत सबह सै अधिक बीत बीमर प्राठ। काती बुदि दोहन को कियो चन्द इह पाठ 11३६॥

पारवंताय स्तृति भी दी हुई है।

६४१२ इन्द्रनंदिनीतिसार—इन्द्रनंदि । पत्र स०६ । आ० १२४४ इञ्च । भाषा–सरकृत । विषय-नीति । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेप्टन स० ३८०/८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समजनाय मन्दिर उदयपुर ।

६५१३- प्रतिसं०२ । पत्र सं• ७ । लेश्कान 🗴 । पूर्णा । वेस्टन स ० ३६१/८८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६५१४ प्रतिसं० ३ । पत्र स०७ । ले०काल × । पृर्णं । वेग्टन स० ३६२/६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदगपुर ।

६५१५. उपदेश बावती — किशनदास । पत्र म०११। प्रा०१० दे४ इस्त्र । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय — मुगापिन । र०काल स०१७६७ धामोज मुदी १०। ने० काल स०१८८० । पूर्ण । वेट्टन स०२१४ ८६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मंदिर कोटडियो का द्वेगरपुर ।

विशेष --

श्रीय सपगज लोकानाह्य सांत्राज गुर,
निनकी हुणा ज कविनाद गाड पावनी।
त्वात सत्तर सताहै विजय दशमों गो,
य को समापन भड़ है मम मावनी।।
साथ बीग ग्यानमा की जाड़ श्री ग्वनवाई,
तज्यों देह ताये एह ग्वी पर बावनी।
मन बीन मिन जीनी तत्वों हो वें रूषों वीती,
वाषक क्लान मीनी उपदेश वावनी।।

६५१६. उपदेश बीसी—रामचन्द ऋषि । पत्र मं० ३ । धा० १० १४, इत्व । आषा-हिन्दी । विषय-सुग्राधित । र०काल स० १८०८ वैशाल सुदी ६ । ले० काल स० १८३६ चैत्र बुदि । पूर्ण् । वेष्टन सं• १९४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर वोरसली कोटा । धंतिम---

समत ग्रठा रैनीसै ने ग्राठ,

वैसाख सुद कहै छै छठ।

युज जैमलजी रा प्रतापम्,

तीवरी माहै कहै छै रीप रायचन्द ।

छोडो रे छोडो समार नो फद, त चेत रे।।

(दीवरा पेठ तुरकपूर माहे लीखी छै। दसकत सरावक वेला कोठारी रा छै।

६५१७. ज्ञानचालीसा — × । पत्र स० २२ । ग्रा० १ × ४ दे इश्व । भाषा-हिन्दी (पत्र) । विषय — गुर्भाषित । र०काल × । से०काल स० १९१५ वैशास बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टत स० १९२५ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर अवभेर ।

६५१८. ज्ञान समुद्र—जोधराज । पत्रस्व ३७ । प्राव १० १ ४४ हे इत्व । भाषा-हित्सी पत्र । विषय-मुभाषित । रव्याल सब १७२२ चैत्र मुदी ४ । लेव काल सब १७५२ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । बेहन सब १६२ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर दवनाना (बुदी)

विशेष - हिण्डोनी ग्राम मे प्रतिनिधि हुई थी।

६५१६. चतुर्विषदान कवित्त--- बहा ज्ञानसागर । पत्र स॰ ३ । आ॰ ६ $\frac{1}{2}$  ×  $\frac{1}{2}$  ६७ । मापा-हिन्दी पछ।। विषय-मुभाषित । र०काल × ६ है० काल × । पूर्ण । बेष्टन स॰ १-१५० । प्राप्ति स्थान-----वि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिह (टोक)

विशेष-दान, पन्त्रीन्द्रय एव भोजन सम्बन्धी कवित्त है।

६५२०. चारावय नीति—चारावय । पत्र स० २० । घ्रा० ७ १ ४ ५ १ इन्छ । माघा-सस्कृत । विषय-नीति शारत । रक्काल ४ । नेक्कान स० १८६६ । पूर्य । बेट्टन स० ७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर टोडाशयसित (टोक)

६५२**१ प्रति सं०२** । पत्र स०२४ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं०**१५ । प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपयी मन्दिर बसवा ।

६५२२. प्रति **म**ः ३ । पत्रस्यः १६ । ध्रा० १०imes ४ $\stackrel{?}{\downarrow}$  इञ्च । ले० काल imes । ध्रपूर्णः । वेष्टन म०६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर कोट्यो का नैरावा ।

६५२३. प्रतिसं०४ । पत्र स०७ । घा०५ 🗡 इन्छा । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं०४८३ । प्राप्ति स्थान- वि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

६५२४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० ११ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इश्व । ले०काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० २१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहयंथी यान्दर दीना ।

विशेष — ११ से मागे पत्र नहीं है।

६५२४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १२ । घा० ११×४ ट्रै इन्त । ले०काल स० १५६२ । पूर्स । वेष्टन स० १५२/६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ भन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति—

सत्तत् १४६२ वर्षे भाश्वन बुदो १ शुभे लिखितं चासायके जोशी देइदास । शुममस्तु । नीचे लिखा है— ग्राचीर्यश्री जयकीर्तितत् शिष्य ब्रह्म संवराज इदं पुस्तक।

**६५२६. प्रति सं०७** । पत्र स**० १०। म्रा०** १२imes५ इ.च.। ले० काल imes । पूर्णः। वेध्टन स० ८८। **प्राप्त्ट, स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागरी बढी।

विशेष-वृहद् एव लघु चाएक्य राजनीति शास्त्र है।

६५२७ प्रतिसं० म । पत्र स० ७ म । ग्रा० ४ $^{3}_{1} imes ^{3}_{1}$  इश्व । ले०काल स० १७४४ क्रायाढ बुदी १२ । पूर्णः । बेच्टन स० १६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

६५२ स्. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १५ । बा० १०३ 🗙 ५ इ.ख.। ने० काल सं०१ स७३ पीष सुदी द। पूर्याः बेष्टनसं० २०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर।

**६५२६. प्रति सं० १०।** पत्रसः ३-२३। ब्रा० १०×५<sup>3</sup>, इञ्च । ले०काल × । पूर्णः। वेक्नसं• ३२६-१२२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्रगरपुरः।

६५३०. जैनशतक—भूधरदास । पत्रस०६-४०। ग्रा०६ ×४) इत्रः। भाषा—हित्दी। विषय —मुर्मापित । र०काल स०१७६१। ले० कान स०११२८ । घपूर्यं। वेण्टन स०१६८। प्रास्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर।

६५३१. प्रतिसं० र । पत्र स०२ । आ०११ × ६ डञ्च । ले०काल × । श्रपूर्ण । बेष्टन स०४३२-२३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

६५३२. प्रति सं० ३ । पत्रस० स० १४ । या० १० 🗴 ५१ इखा । ले०काल स० १८४७ ग्रापाढ बुदी ३ । पूर्गः । बेष्टनसं० २६८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर योरमली कोटा ।

विशेष—निलापित सेरगढ मध्ये निलि हरीस्यघ टोग्या श्री पार्थनाथ चैरयाले निलापित । पहित जिनदास जी पठनार्थ ।

६५३३. प्रति सं०४ । पत्रस०१७। ग्रा० १०४५ इश्वर। ले० काल स०४ । पूर्ण। बेष्टतस०३११। प्राप्ति स्थान— उपरोक्त मन्दिर।

६५३४. प्रतिसं० ५ । पत्र स० १८ । आ० १० ४ ६ खा । लेबकाल सं० १६४० । पूर्ण ।वेष्टन सं०३-२ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टॉक)

विशेष — श्री हजारीलाल साह ने ब्रष्टमी, चतुर्दशी के उपवास के उपलक्ष में दूनी के मन्दिर मे चढाई थी।

६५३५. प्रतिसं०६। पत्रस०१८। घा०१३४७ इञ्च। ले०काल स० १९४४ भादवा बृदी १। पूर्या। बेष्टनस०११८। प्राप्ति स्थान-—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष-पुस्तक किमनलाल पाडया की है।

६५३६, प्रतिसं∘ ७ । पत्र स॰ २० । घा० १०४४ है इला। ले० काल सं० १९३६ ब्रितीय सावरा बृदी ५ । दूर्णा । बेष्टन सं० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैरावा।

विशेष -- भ्रम्नवालों के मन्दिर की पुस्तक से उतारा गया है।

६५३७. प्रतिसं० म । पत्र स०१ मा । १८ । धा० १८४५ है इ.स. । लेल्काल सं०१६३४ । पूर्ण। वेष्ट्रन सं०३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी दूंती। 娇

६५३६ प्रतिसं०६ । पत्र सं०३ – १६। ग्रा० १०४६ इञ्चा से० काल स० १६१०। बपूर्सावेबन स०२६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्यनाय मन्दिर वृदी।

विशेष-- नगर भिलाय मे प्रतिलिपि हुई थी।

६५३६. प्रतिसं० १०। पत्रस० ३१। प्रा० १० $rac{1}{2} imes १ ४ ६ च्या । ले० काल<math> imes$  । पूर्गं ।वेष्टन स० १४४। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पाध्वेनाथ मन्दिर चौगान वृदी ।

विशेष--- इसके अतिरिक्त द्यानतराय कृत चरचाशतक भी है।

६५४०. प्रतिसं० ११ । पत्र स० १६ । घा० ११  $\times$  ५ $\frac{1}{4}$  इन्था । लेक्सल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १५० । प्राप्ति स्थान वि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

६५४१. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १२ । घा० १३ imes६ इथा । ने०काल स० १८१ । पूर्ण । जीर्ण । बेष्टनस० ७२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्थनाथ मंदिर टोडारायसिंह (टींक)

६५४२, प्रति सं० १३ । पत्रस॰ १८ । सा० १०१ × ५१ इञ्च । ले०काल × । पूर्ए । बेष्टुनस० १०८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर फतेहसुर शैलाबाटी (सीकर)

६५४३, प्रति स० १४ । पत्रस० १७ । आ० ११×६ इ.स. । लेकाल स० १७८७ । पूर्ण । वेष्ट्रा म० १६५-१२१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडार्सासह (टोक)

६५४४, प्रति स० १५ । पत्रस०१७ । स्रा० ६८४ इञ्च । ते०काल स०१६४३ । पूर्छ । वेष्टुत म०१६५-७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

६५४५. प्रतिस**० १६ ।** पत्रस० १२ । म्रा० १२ 🗴 ६ इञ्च । ने०काल स० १६४६ । पूर्ए । वेष्ट्रनस० ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मदिर इन्दरगढ (कोटा)

६५४६. प्रति स० १७ । पत्रस० ६१ । ले०काल स० १७६६ । पूर्णः । वेष्टन स० ३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी सरतपुर ।

विशेष--गृटकामे है।

६५४७ प्रति सं० १८ । पत्र (स०८ । आ० १०५ × ५ इन्छ । लेक्काल × । वेष्टन स० ६८२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६५४६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १२ । प्रा० ६४७ इखा । ले०काल स० १६६६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६४४६. प्रतिसं० २०। पत्र स०१६। घा०११×५ इन्द्र । ले०काल स०१६५६ । बेष्टन सं० ७२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**६५५०. प्रति सं० २१ ।** पत्रस**० १**५ । घा० १२imes५ इत्यः । **ले०काल** स० १८८५ सावस्स सुदी १३ । बेष्टन सं० ६०९ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-दीवान सगही अमरचन्द खिन्दुका दसकत हबचन्द अग्रवाल का ।

६५५१. जैन शतक दोहा —  $\times$  । पत्र सं०२ । आ० १०३ $\times$ ५३ इख । भाषा-हिन्दी पत्र । विषय-मुनापित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । दूर्ण । वेष्टन म० १६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्क्सनाथ मंदिर चौगान बुंदी ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

श्रीमञ्चन्द्रगञ्छे उपाध्यायजी श्री लिखमीचन्दजी तत् शिष्य वा.श्री सं (सो) भावन्दजी तत् शिष्य लालचन्दजी लिखत । सं० १७६१ वर्षे बैशाल सुदी २ सोम श्री उदयपुरे मद्र भूयात् ।

६५५३. **दोहा शतक**— × । पत्र स०४। माषा हिन्दी (पद्य) । विषय-गुभाषित । र०काल × । नेककाल × । क्रपूर्ण । वेप्रन स०७०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

विद्या भनप्रमा समुद्र जन घ भगमो घोकास । उत्तर पत्र ने देवगत पार तरी पृथ्वीराज । देहै। कीमु कील साजना भीउन भाने ज्याह । प्रजाकट प्रमोहरा दूष न पाणी स्थाह ।।१।। किहां कोचन किरा घ व वन किहा ददुर किहा मेह । विसारिया न किरे गिया गणा मनेह ।१६॥ कम्मु कानी नृग भारवे मोगी प्रामी जरित । वह बहेश डीकरा निवदीया गिरम ।।१॥।

६५५४. हट्टान्त शतक – कुमुमदेव । पत्र स० ६। धा० १०  $\times Y_0^2$  इथा । भाषा —मस्कृत । विषय —मुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर प्रिनिन्दन स्वामी, बुदी ।

६४४**४. धर्माम्त सूक्ति सं**यह— × । पत्रसक्ष धः । प्राठ १०×४ हुन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय सुभाषित । रक्काल × । लेक्काल × । पूर्ण । वष्ट्रन सक्ष ४६ । **प्राप्ति स्थान**—ंदिक जैन पन्नायती मन्दिर करीनी ।

६५४६. तथरस्त बाज्य $--\times$  । पत्र म०१ । ग्रा० ६ $\frac{2}{3}\times 2$  े इञ्च । भाषा-नस्कृत । विषय-सुमापित । ४०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान** —रि० जैन मन्दिर देवलाना (ब दी)

विशेष - विक्रमादित्य के नवरत्नों के वाक्य है

६५५७. नसीहत बोल — × । पत्रसः १ । घा० १२ हे ४ ५ ६ दश्व । मापा हिन्दी । विषय-मुगाबित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । यष्ट्रन स० १३५६ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर ग्राप्तेर

६४४.५. नीति मंत्ररी—  $\times$ । पत्रस० ६। म्रा० १२  $\times$  ४) इन्त्रा । माषा-हिन्दी प०। विषय-मुभाषित । र०काल  $\times$ । ने० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर सकर, जयपुर ।

६४४६. नीति वाक्यामृत—म्रा० सोमदेव । पत्र सं०३० । म्रा० १२ $\times$ ४८ इया । भाषा – संस्कृत । विषय-नीति शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०१४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन म्रग्रवाल मदिर उदयपुर ।

६५६०. नीति स्लोक —  $\times$  । पत्रमं॰ १-१९,१७ । म्रा० स् $\frac{3}{6}$   $\times$ ४ इ.च । भाषा-सस्त्रत । विषय — नीति । र०काल  $\times$  । के०काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टनसं॰ ६१० । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मध्यर तकर जयपुर ।

६५६१. नीतिसार—ग्रा० इन्द्रनिष्ट । पत्रस० ६। ग्रा० १२ × १ इखा भाषा-सस्त्रत। विषय-नीति । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३८।। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर।

नेशक प्रशस्ति—संवत्सरे बनुवाण यमि मुधाकर मिते १७५६ वृद्राबतीनगरे श्री पाश्वेनाच वृंग्यालये श्री मुलसभे नदालाये बनात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुराचार्यांच्ये भ० श्री नरेन्द्रकीतिस्तच्छिया प्राचार्यवर्ष ५ श्रीमहृदराष्ट्रसण् शिष्य पद्यित जी ५ तुनसीदास णिष्य युच तिसोकचद्रेसँग शास्त्र स्व-पटनार्थस्युत्रेन निधनं।

६५६२. ब्रितिसं०२ । पत्र स०१२ । प्रा०१० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इन्हा । केल्काल स०१०५० चैत्र माम सही १२ । पूर्ण । बेवन स०४७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर लक्कर, जबपुर ।

६५६३. प्रति सं० ३ । पत्रस० १४ । मा० ६ ४ ५३ डश्व । ले०काल ४ । पूर्ण । बेहनस० ४२ । प्राप्ति स्थान— द० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६५६४. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ६ । आर० ११३ 🗴 ५३ इच । लेक्काल स ११७१ । पूर्ण । वेटन सु० २०७ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर स्रजंगर ।

६.६५ नद बत्तीसी—नदकवि । पत्रस०४। प्रा० १० $\times$ ४ ं इ च । भाषा-सस्कृत । विषय— गीति । र० काल  $\times$  । ले॰काल स० १७६१ सावन मुदी १० । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०१६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन नेपहतथी मन्दिर दौना ।

विशेष -- नीति के श्लोक हैं।

६५६६ परमानंद पच्चीसी— ४ । पत्र सं०२। ग्रा०१०×६३ इन्ता 'भाषा—संस्कृत विषय—सुभाषित । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ६२-४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का ह गरपर।

६५६७. पंचतन्त्र-- विष्णुशर्मा । पत्र स० ६१ । म्रा०१०  $\times Y_{\xi}^{2}$  इख । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति शास्त्र । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वीधानजी कामा ।

६५६८. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १८ । प्रा० १० 🗴 ४ इचा । ले०काल 🗴 । स्रपूर्ण । बेष्टन स० २०६/५८४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

**६५६६. प्रतिसं० ३।** पत्रस० २३। ग्रा० १२ ४ ६ इथा। ले० काल सं०१८५६। पूर्ए। बेष्टुत सं०७४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी, बुदी।

विशेष --- महद्भेद तक है।

६५७०. प्रति सं०४ । पत्रस०१०२ । घा०१०३ ४४ है इन्था । ले० काल ४ । सपूर्ण । बेष्टन सं०२७७ । **प्राप्ति स्थान**— हि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । विशेष---१०२ से भ्रागे पत्र नहीं हैं।

६५७१. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १२३। द्या० १०×४ इत्थ । ले•काल स० १८४४ द्यायाढ सुदी १ । पूर्या । बेप्टन सं० ८०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजहमल (टोक) ।

विशेष—दौलतराम बधेरवान शास्त्र घटायो प्वाच्यान को सहर का हामलक हाडौती सहर कोटा को लाडपुरो राज राएगावताजी को देहुरो श्री शानिनाथजी को आचार्य श्री विजयकीर्ति न घटायो पडिता नानाछता ।

६५७२. प्रतिसं०६ । पत्रस०२३ । ब्रा०१२ ४६६ च । ले०काल 🗴 । पूर्णै। वेष्टन स० ७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धीभनन्दन स्वामी ब्रुदी।

६५७३. प्रतिसं०७ । पत्रस० ११२ । ग्रा० १०  $\times$  ४ इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ५२ । प्राप्तिः स्थान—उपरोक्त मंदिर ।

६५७४. पंचास्थान (हितोपदेश)— 🗴 १ पत्र म० ८३। ग्रा० १०४६ इस्थ । भाषा— संस्कृत । विषय—नीति शास्त्र । र०काल ४ । ले० काल म० १८८६। पूर्ण । बंग्टन सं० ६२/३० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थ्वनाय इंटरगढ (कोटा)

विशेष -- ऋषि बालकिशन जती ने करवर में प्रतिलिधि की थी। मित्र भेद प्रथम तन्त्र तक है।

**६५७५. प्रकाप्रकाश बर्टीश्रक्त ।** — **रूपसिह**। पत्रस०४। प्रा०६५  $\times$  २ $\frac{3}{2}$  ६व। भाषा---संस्कृत । विषय — मुप्तापित । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०३२४ । प्राप्ति स्थान — म०दि० जैन मन्दिर अत्रमेर ।

**६५७६. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—ग्रमोधहर्ष।** पत्र स॰ ३। ग्रा॰ १२ $\times$ ४ इश्व। भाषा-सस्कृत । विषय-मुभाषित । र०काल $\times$  । ले०काल स॰ १६१६ । पूर्णः । वेष्ट्रन स०२५४ ६६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति – सबत् १६१६ वर्षे पप मुदी २ दिने स्वस्ति श्री प्रहमदाबाद शुभ रूपाने मोजमपुर श्री ग्रादिजिन चैत्यानये लिसित । बर्ज सवराजस्येद ।

६५७७ प्रश्नोत्तर रत्नमाला - ब्रमोघहर्ष । पत्र म ०४। घा० १० $^1$ ×५ ६७। भाषा— सस्कृत । बिपय--- मुर्यापत - र०काल $\times$ । ले०काल स० १६१७ फाल्गुग बुदी ११। पूर्ण । वेण्टन स०७६। प्राप्ति स्थान--- थि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष — बागडदेश के सामवाडा नगर में श्री भ्रादिनाथ जिन चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

६५७ ८. प्रतिसं०२ । पत्र म०२ । आ०११ $\times$ Y्ढेद्दश्वा । ले०काल $\times$  । बंगून स०७ ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६५७६. प्रश्तोत्तर रत्नमाला—बुनाकोदास । पत्रस $\circ$  २ । प्रा $\circ$  १० ×४ $\sharp$  इन्छ । माषा—संस्कृत । विषय —मुर्मापित । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  ११० । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बूंदी ।

६५०. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—विमललेन । पत्र स०२। प्रा० ६ $\frac{3}{2}$   $\times$ ४ $\frac{3}{2}$  इच । भाषा— सस्कृत । विषय —सुभाषित । । २०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । वेष्ट्रन स०६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर । ६५६ २. प्रश्नोत्तर रत्नमाला —  $\times$  । पत्र स० ५७ । ग्रा० १ $^2_{g}$  ४२ $^2_{g}$  इन्थ । भाषा — सस्कृत । विषय — सुभाषित । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जोगान बुदी ।

विशेष--प्रति जीसं शीसं है।

६५६२. प्रस्ताबिक श्लोक—  $\times$  । पत्र स०२२ । या०११ $\times$ ४ है इश्वः । भाषा—सस्त्रत । विषय —मुभाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६६० मगीसर सुदी २ । पूर्णं । वेष्ट्रन स०४४२ । प्राप्ति स्थात—स०६० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६५८३. प्रस्ताबिक स्लोक —  $\times$  । पत्र स० २४ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  $\times$ व्ह । भाषा — सस्कृत हिन्दी । विषय — मुभावित । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स० ४८६ । प्रास्ति स्थान — दि० र्जन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

६५६४. प्रस्ताबिक श्लोक —  $\times$  । पत्र स०६। धा०६ $\times$  ५ इश्र । सापा — मस्कृत । विषय — मुभाषित । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेषृत स०१४। प्राप्ति स्थान — दि० अने मन्दिर पार्थनाथ चौगात वादी ।

६५८५. प्रस्तावित श्लोक —  $\times$  । पत्र स०२ । का० १० $\times$ ४ इश्व । भाषा — सस्कृत । विषय — गृगावित । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१८६६ । पूर्ण । बेष्टत सं०३६ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन सङ्ग्रेवाल मंदिर उदयपुर ।

६५८६. **बावनी — जिनहर्ष** । पत्र स० ४ । प्रा० १० ४ ५ इञ्च । भाषा — हिन्दी । विषय — सुभाषित । र०काल स० १७३६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७२ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर श्रवमेर ।

६५८७. **बाबनी—दयासागर ।** पत्र स॰ ३ । धा० ६ $\frac{3}{7}$  $\times$  $\frac{3}{9}$  इन्त्र । भाषा—हिन्दी **। विषय —** सुभाषिन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० १०८६ । प्राप्ति स्थान — स० दि० जैन मन्दिर मजैर ।

विशेष--मुक्ति मुक्तावली का पद्मानुवाद है।

-و ع

सवत् चद समृद कथा निधि फागुगा के वदि तीज मलीया । श्री दयासागर बावन ग्रक्षर पूरगा कीघ कविन तेवीया ॥५५॥

**६५८.म. बावनी—क्र० साराक ।** पत्र स० २-६ । ग्रा० ६ imes ४ इच । प्राया—हिन्दी । विषय—सुर्भागिन । र॰काल imes । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं० ४६२/२८५ । **प्राप्ति स्थान**—दि**॰** जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर ।

## विशेष---ग्रन्तिम माग

बहाचारि मराक इम बोलइ। सघ सहित गुरु चिरजीबहु।। इससे ग्रागे ज्ञानभूषएा की वेलि दी हुई है।

## धन्तिम भाग--- निम्न प्रकार है।

मेवकरि सहु सघ ग्रदा जम महिमा मेरु समान । श्री जानभूषण गुरु साइताथ दब थाकनु की जई ज्ञान । ग्रमीयपाल माह कर जो नट बोलड एणा परिकास । स्वामीद वेलि बनीवलीए तलव गामु उत्तम भरोदि उवास ॥ इति वेलि समाप्ता ।

६५८६. बुधजन सतसई— बुधजन । पत्र स०२१ । झा०११४५ हेड्स । आपा-हिन्दी । विषय-मुभाषित । रब्कान सं०१८८१ ज्येष्ठ बुदी ६ । ले० काल स०१२०६ । पूर्ण । वेष्टन स०१११० । प्रास्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर अवभेर ।

६५६०. प्रतिसं० २ । पत्र स० २० । प्रा० १०३ ४ ६ देखा । ले० काल स० १६२६ चैन नुदी ६ । पूर्यो । बेष्टनुस० २१६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष - मुकाम चन्द्रपुर मे लिया गया है।

६५६**९ प्रतिसं० ३।** पत्रस० २३ । ब्रा० १९<sup>5</sup> ४ = इञ्च । ने०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६= । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पनायती मन्दिर खलवर ।

६५६२ प्रतिसं०४ । पत्र स०२-५। ले०काल स०१६५८ । पूर्णा अपून म०२६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पत्रायती मन्दिर भूलवर ।

६५६३, प्रतिसं०५। पत्र ग०२४।। ले॰काल स०१६४५। पूर्ण। वेष्टन स०१००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवासती महिर अनवर।

६५,६४, प्रति स०६ । पत्रस०३० । ग्रा०११४ ७ इ.चा ले० काल स०१६६१ । पूर्गा वेष्ट्रत स०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बुंदी।

६५६५. प्रतिसं०७। पत्र स०२६। ग्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ $\frac{1}{2}$  $\times$ १० के काल  $\times$ । पूर्ण। बहुत स०१०३। प्राप्ति स्थान—पिठ जैन पत्रायनी मदिर करीनी।

६५६६ प्रतिसं० मा पत्र स०२मा आ०११ 🗙 ५१ देञ्चा ले०काल 🗙 । पूर्णः। बहुन सं०११२ । प्राप्ति स्थान— दि०जैन घषवाल पत्राधनी मन्दिर छनवर ।

६५६७ प्रति सं० ६ । पत्रसः० १०७ । लेब्काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसंब ३३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर दीवानशी भण्तपुर ।

विशेष —गुटके रूप मे है।

६५१६ म् **ब्र्धिप्रकाश रास—पाल**। पत्रस० ३। ग्रा**० १० ४** ४ दे इखा भाषा-हिन्दी प**ष्टा** विषय-मुपापित। र० काल × । ते०काल × । पूर्ण । बेप्टन सं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—भट्टारकीय दि० जैन मंदिर सजमेर ।

उद्धर्ए--

मृन्द्रो मति चालै सीयालै। जीमर मति चालै उन्हालै।। बामए। होय प्रएग सायो । अत्री होय रिएग म मार्गा बाय ॥२०॥ कावय होग र लेलो मूलें । एनी रू कियाहीन तोलें ॥२१॥ प्रात्तुचिसार तरणें। बिचार । प्रात्तुच्या साथे हम्म सुता । मरणें पाल पुरुषोत्तम मुता । इति व्यवकाश रास संपूर्ण ।

६५६६ मर्नृहरिशतक—मर्नृहरि। पत्र मं०३३ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इख । मापा— सस्कृत । विषय—मुप्तापित । २०काल । ले० काल स० १०१६ पीत मुदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६७२ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६६००. प्रतिसं० २ । पत्रस० ११ । ४ झा० १०४४ इथा। लेक्काल ४ । झपूर्णा। वेष्टनस० १२८० । प्राप्ति स्थान—ग० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष---१३ वा १४ वा पृष्ठ नही है।

६६०१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३ मा ले० काल  $\times$  । पृग्तं । वेष्टनस० १२५२ । प्राप्ति स्थान—उपयोक्त सन्दिर ।

६६०२. प्रतिसं० ४। पत्रस०२७। ब्रा०६×४ इच । ले॰काल सं० १७४६। पूर्ण। वेष्टनम० १३२८। प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर।

६६०३. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २-४५ । ले० काल 🗴 । श्रपृर्ण । वेष्ट्रन स० ७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपत्री मन्दिर बसवा ।

६६०४. प्रतिसं० ६ । । पत्र संस्था ३५ । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सस्था ७५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष --सस्कृत टीक सहित है।

६६० **४. प्रतिसं० ७** । पत्र सं० १० । ग्रा० १२ ४ ६ इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेस्टन सं० १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बूदी ।

विशेष शतक त्रय है।

६६०६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ३५ । धा० ६२ ४ ५ है इसा। ले० काल स० १८०४ ∤ पूर्णे। वेप्टन स० २३५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्थनाय मन्दिर चौगान बूदी।

विशेष-मूल के नीचे गुजराती मे अर्थ भी है।

६६०७. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० २१ । घा० ११ × ५ इञ्च । ले० काल स० १८६६ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । बेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी)

विशेष-गोठडा ग्राम में रूप विमल के शिष्य भाग्य विमल ने प्रतिलिप की थी।

६६०८. प्रति स० १०। पत्रस० २४। ग्रा० ११×४ इश्व । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३३६ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन सन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बुंदी ।

६६०६. प्रति सं० ११ । पत्र स० ३२ । प्रा०१२ $\times$ ७ $^{\dagger}$  इन्त्र । ले० काल  $\times$  । पूर्यं । वेष्टन स० १११ । प्राप्टि स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर दुनी (टोक)

६६१०. भर्तृं हिर शतक माया— $\times$ । पत्र स० २६ । घा० ११ $\times$ ५ इथा । माया-हिन्दी पद्य । विषय—नीति । २० काल $\times$ । तेशकाल $\times$ । अपूर्णं । वेष्टन सं० १०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मिद्र धारिताथ व दी

विशेष-नीति शनक ही है।

६६११. मतुंहिर शक्क टोका — × । सल्पत्र २६ । धा० ११३ × ४३ डव । माया --सत्कृत । विषय-नीति । ४० काल × । तेल्काल स० १०५६ । पूर्ण । वेष्टनस० २३१ । प्रास्ति स्थान — स्वित् केत पाक्कील मण्डिर डस्टराज्य (कोटा)

विशेष--- भर्त हरि काव्यस्यटीका श्री पाठकेन विदधेध्यनसार नाम्ना ।

**६६१२. मर्तहरि शतक टीका**—  $\times$  । पत्रसः ४६। भाषा-सःस्कृतः । विषय— गुभाषितः । रुकालः  $\times$  । क्षेकालः  $\times$  । पूर्णः । बेष्टुनसः ७ ४६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पत्रायती मन्दिर भगनपुर ।

६६१३, मर्नृहिरि शतक माथा—सवाई प्रतापसिह । पत्रस० २२ । घा० १२ ४ १ ३ ४ । भाषा-हिर्दा (पत्र) । २०काल ४ । ते० काल स० १०६२ । पूर्ण । वेप्टन स० ४४१ । प्राप्ति स्थान -भठ टिठ जैन मनियर अजीर ।

६६१४. मनराज शराक-मनराज । पत्र सं०७। प्रा०१२ × ४ इथा । भाषा --हिन्दी । विषय-मुगापित । र०काल × । ने०काल । पूर्ण । बेप्टन स०४६८/२४७ प्राप्ति स्थान -- दि० जैन संभव नाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- ग्रन्तिम भाग----

समय मुजाबन समय पन समय न बार बार । स्तिल्ल बहीत मुर्रावेलरि इह श्रुद्खाति गयारि । समयवेतुमसिक तथि मुंशीत जुकती । एहती गुणी पिद नहि चप्पत गवकन्तद्व ज्ञमीं । पड़ित कुंमुल देनि प्रिक्त हिस सान करती । स्राप्त तथा चारे महि दालियम नीर मरती । स्त्र नाता चारे महि दालियम नीर मरती । स्त्र नाता समुख कुनुष इह जग जुट्टिए निव मती । श्रीमानुकती निव मगलो हो कह कीई सथर चली ।

कुल ३-४ पद है।

विशेष--स० १६२७ भादवा सुदी ३ गुरी दिने सागवाडा ग्रामे पुस्तिका लेखक श्री राजवन्द्रें ए।

६६१६. राजनीति समुख्यय — चारणवय । पत्रस०६। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ १ इव । भाषा — सन्द्रत । विषय — नीति । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २६१ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन सदिर प्रजीर भण्डार ।

६६१७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ ।ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० २८० । प्रास्ति स्थान-भ० दि० जैन भन्दिर ग्रजमेर मण्डार ।

**६६१८. राजनीति सर्वया**— **देवीदास** । पत्रसः १८६ । प्राप्ता-हिन्दी (पद्य)। विषय— राजनीति । र०काल  $\times$  । से०काल स० १८३२ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन तेरहप्यी मन्दिर ससवा।

भादि अन्त भाग निम्न प्रकार है---

×

प्रारम्भ--

नीतिही तै घमं, घमंतं सफल सीघि
नीतिहीते प्रादर मभाति बीचि पाइसो ।
नीति तै घनीति छटं नीतिहीते नृख लूटं
नीतिहीते कोल भती बकता कहाइयो ।
नीति हीते राज राजें नीति हीते पासा ही
भीति हीते राज राजें नीति हीते पासा ही
भीति हीते गोउलड माहि अस गाइयो ।
छोटन की वडो करें बडें महा बडें घरं
तालें सबही को राजनीति ही सुहाइयो ।

घ तिम--

जब जब गाढ परी दासित को
देवीदास जब तब ही धाप हरि जूनै कीनी है।
जैसे करट नरहरि देव तु दयानिधान
ऐसी कीन मबतार दयारम भीनी है।
मातानि पेटते स्वरूप घर और ठीर
सेतो है जिसन ऐसी और की प्रवीन है।
प्रहुताद देशु जानि ता घर कै बाधे

×

स्रापु यावर के पेट मैं ते ब्रवतार लीनो है।।१२२।। इति देवीदास कृत राजनीति सर्वया संपूर्ण।

६६१६. **राजनीति शतक**—  $\times$  । पत्र स॰ ५ । घा० ११ $\times$ ६ इञ्च । भाषा—सरकृत । विषय—मुर्भाषित । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्यं । वेण्टन स॰ २८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६६२०. लघुचाराक्य नीति (राजनीति शास्त्र)—चाराक्य । पत्र सं० ११ । घा० ११४.४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—राजनीति । र०काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० स० १४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्यनाथ मंदिर जीयान यूंदी ।

विशेष--वृहद् राजनीति शास्त्र भी है।

६६२१. लुकमान हकीम की नसीहत— $\times$ । १ पत्रत०७। ध्रा०१२ $\times$ ४६ इञ्च। भाषा— हिन्दी। विषय—सुभाषित। र०काल  $\times$ । ले०काल स० १६०७ श्रावस्स तुरी ६ । पूर्स। वेष्टन सं० ३३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिदर छोटा वयाना।

विशेष — प्रथम पाच पत्र तक लुकमान हकी मकी नसीहते हैं तथा इससे धागे के पत्रो मे १०० प्रकार के मूर्लों के भेद दिये हुए हैं।

६६२२. बज्जवली — पंज बल्लहा पत्र सर्वाता १८ हे×४ हेइ खा। भाषा — प्राहत । विषय — गुमाणित । रुकाल ×ा नेक काल ×ा पूर्ण । बेष्टन संब १३६१ । प्राप्ति स्थान — भव दिव र्जन मन्दिर बनमेरा

६६२३. विवेक शतक — वार्गासह ठोल्या । पत्र स० ६ । आ० १०३ $\times$ ६३ इश्व । आपा — हिन्दी पद्य । विषय — सुभाषित । २०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६६ । प्राप्ति स्थान — विक जैन विषयो गरिंदर करीनी ।

६६२४ **बृग्द शतक**---क**वि वृग्द ।** पत्र स०४। आ० १०३४६ है इ.च.। भाषा--- क्रिशे (पद्य)। विषय -- मुभाषित । र०काल × । ले०काल । अपूर्ण। वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन पार्यकाथ -- मंदर टोडारार्याम्ड (टोक)

६६२५. सङ्जन चित्त बत्लम—मिल्लिषेरा । पत्रस०३ । आ०१०४४ हेचा । भागा— सस्कृत । विषय—मुभाषित । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णः । वेष्टनग०३०६ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्दिर सजसर ।

६६२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३ । ग्रा० १२४४ इश्व । ले०काल स० १८०६ कार्तिक बुदी द । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ ।प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर दीवाजी कामा ।

६६२७. **सज्जन चित्तन वल्लम**—४ । पत्रस० ३। मा०६३४४ई दल्ला । मागा-मस्त्रत । विषय—मुप्रागित । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णा । वेष्टन स० ६०७ । **प्राप्ति स्था**न-स० दि० जैन मंदिर स्रातोर ।

६६२ म. सङ्जन चित्त बल्लभ भाषा— ऋषभदास । पत्रकः १२ । घा० १२ ४४ । इत्था। भाषा-तिरुधी गद्याविषय-सुभाषित । र०काल × । ले०काल × । पूर्णा। येष्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान—दि० तैन गरिस्र श्री महावीर खंदी।

६६२**६. सङ्जनिक्त बल्लम माबा** — **हरगूनाल** । पत्रसु०२२ । धा०१०  $\frac{1}{2} \times 4^{3}$  इल । माषा- हिन्दी (ग्रञ) । विषय — मुमाषिक । २०काल स०१६०७ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० १२—८४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवादनी मन्दिर अनवर ।

विशेष — लेखक करौली के रहने वाले थे तथा वहां में सहारत-पुर जाकर रहने लगे थे। ग्रंथ प्रणस्ति दी हुई हैं।

६६३०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १६ । ग्रा० १११ ४७ इञ्च । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । बेट्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर । ६६३१. सप्तत्यसन चन्द्रावल—ज्ञानभूषस्म । पत्रस०१ । झा०१२ $\times$ ४ इच । भाषा— हिन्दी । विषय —गुभागित । र०कान  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० २१०-६४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सम्बनाष मन्दिर उदयपुर ।

६६३२. सर् भावितावली (सुभावितावली)—सकलकीत्ति । पत्र म• २६ । घा० १२४ ६ इश्व । भाषा-सरहतः । विषय—सुभावित । र०कान × । ने० काल स० १७०२ काल्गुन बुदी ७ । पूर्ण । वेग्रन स० ७१ । प्रान्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--महाराजीसह के शासनकाल में साह पायू ने श्रम्बावती गढ़ में लिपि की थी।

६६३३. प्रतिसं०२ । पत्र म०२३ । प्रा०१०१४ ६ इच्छा ले०काल स०१७ । पूर्सा वेष्ट्रसुरु ७२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--चम्पायनी महादुर्ग में प्रतिलिपि हुई लेखक प्रणस्ति बहत विस्तार से है।

६६३४.प्रति सं०३ । पत्र स०३४ । ले०काल स० १६१० । पूर्ण । बेष्टन स०१७ । प्राप्ति ' स्थान—दि० जैन पत्तायनी मदिर हण्डावालो का डीग ।

६६३४. सर्माधितावली —  $\times$  । पत्र स० १६ । आ० १९३ $\times$ ४३ इन्छ । भाषा —  $+ + + \pi$ त । तिपर — गुभाधित । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स०६६६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६६३६. सद्भाषितावली— $\times$ । पत्रस० १-२४। प्रा० १०२४ इञ्च । भाषा —सन्द्रत । रियन—गुभाषित । २०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । प्राप्त । वेष्टन म० ३४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६६३७. सद्माषितावली— $\times$ । पत्र मं० ४२ । आ०६ $\times$ ५ इव । माषा-सरकृत । तियय-सुनापित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टनस० २६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६६३६. सद्भाषितावली— $\times$  । पत्र स० २६ । घा० ११  $\times$  ५ इव । माषा-सन्कृत । विषय-सुमापित । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । केण्टन सं० १२१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

६६३६. सदमाधितावली—imes। पत्रस० २५ । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०कालimes। ले॰काल imes। पूर्ण । वेष्टन सं०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन वडा पचायती सन्दिर डीग ।

६६४०. सद्भाषितावली माथा—पन्नालाल चौधरी— × । पत्र सं० ११६ । घा० ११३ ×७३ इचा भागा-हिन्दी (गदा) । विषय — मुनापित । र० काल सं० १६३१ ज्जेव्ड मुदी १ । ले०काल ×। पूर्ण । बेष्टन म० १५६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेब्रपुर खेलावाटी (सीकर)

६६४१. प्रति सं० २ । पत्रस० १०२ । आ० १३ई ४७ इञ्च । ले•काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी ।

६६४२. प्रतिसं०३ । पत्र सं०६१ । झा०१३ ४ ७३ इञ्च । ले० काल स०१६४२ । पूर्णं। बेष्टन स०३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रथवाल मन्दिर नैसावा। ६६४३. प्रति सं० ४ । पत्र स०६६ । ब्रा० १२ ४ ७ । इत्या । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टतस० २०३ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मदिर श्री महावीर ब्रुंदी ।

विशेष-इन्दौर में लिखा गया था।

६६४**५. सारसमुज्वय** —  $\times$  । पत्रस० १०। आ० ११ $\times$ ५ इ**च । भाषा** — सस्कृत । विषय-सुमापित । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८८०। पूर्ण । वेष्टनसं० १४ **प्रास्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६६४६. **सारसमु**च्चय— × । पत्रस० २२ । आ ० १० १४ ६ च । भाषा— सस्कृत । विषय-सुमापित । र०काल × । ले०काल स० १६५२ कार्तिक शुक्ला १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ३४२ । **प्राप्ति** ,**स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर अपनेर ।

६६४७. **सारसमु**च्चय $-\times$ । पत्र स०१६। ब्रा०१० $\frac{1}{2}\times \frac{1}{2}$  इश्व । भाषा—सरकृत । विषय—पुभाषित । र०काल $\times$ । ते० काल $\times$ । पूर्णं। वेष्टतः स०३२८। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन स्वयंति गरिवर उदयपर ।

६६४८ सिन्दूर प्रकरण—बनारसीवास । पत्र त० २४। आ० १२ $\}$   $\times$ \$ ३% । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय —सुनापित । र०काल  $\times$  । त०काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० १६६ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फतेहपुर केमावाटी (मीकर)

६६४६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ६२ । आ० ६४६ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन म० ७० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सीमानी करीली ।

विशेष -- १= पत्र से समयनार नाटक वधधार तक है आगे पत्र नहीं है।

६६५०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ५-२१। ब्रा०१० ४ ६ इ.च.। ले० काल 🗴 । ब्रपूर्ण। वेप्टन स० ७६। प्रास्ति स्थान —दि० जैन छोडा मन्दिर वयाना।

६६५५१: प्रतिसंo ४ । पत्र स०१३ । बा०१० ४६१ डज्च । ले० काल स०१६०८ चैत सुदी१२ । पूर्णावेष्टन स०६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन छोटामन्दिर बयाना।

विशेष -- गरोशोलाल बैनाडा ने पुस्तक चढाई थी।

६६५२. प्रति सं० ५.1. पत्र स०१४। घ्रा०१०imes६ इ.च.। ते० काल म०१८६१। पूर्ग। वेष्टुत स०६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भेमिनाथ टोडारायर्सिह (टोक)।

६६५३. प्रतिसं०६ । पत्र सं०१८ । घा०११ $\times$ ४३ दश्य । ले०काल $\times$  । ब्रपूर्ण् । बेष्टन सं०५६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक) ।

६६५४. प्रतिसं० ७ । पत्र स० २-२२ । घा० ७ ४ ४ ई इञ्च । लेक्काल सं० १८०८ । पूर्ण । बेपन स० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोट्यों का नैसवा ।

६६५५. प्रतिसं० द्व । पत्र स० १५ । घा० ११५ × ५३ इ.स. । ले० काल  $\times$  । घपूर्ण । वेष्टन सं० ६३४/६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर प्रलबर ।

६६५६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० २१ । प्रा० ११ ४४ इंच । ले∙काल ४ । पूर्ण। वेष्टन स० ⊏ ६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंत्रायती मदिर करौली ।

विशेष---प्रति नवीन है।

६६५७. प्रतिसं० १० । पत्र सं० २-१३ । घा० १×४ इञ्च । ले०काल स० १६६६ मादवा सुदी १५ । घपुर्गा । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दशलाना (बूदी) ।

विशेष--प्रथम पत्र नहीं है।

सवत् १६६६ वर्षे भादवा मुदी १५ सोमवासरे श्री ध्रागरा मध्ये पातिसाह श्री साहित्रहां राज्ये लिखित साह रामचन्द्र पठनार्थं लिखिन वीरवाला ।

६६५ म. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १६ । ले० काल स० १७१७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पद्मायती मन्दिर हण्डावालो का दीग ।

६६५६. सिन्दूरप्रकरण भाषा—  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४१ । ग्रा $\circ$  ११ ४५ इन्छ । भाषा—हिन्दी (ग्राह्य) । विषय-सुनापित । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स $\circ$  १२ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन तेरहपथी मन्दिर नैस्स्य।

६६६०. मुगुरु शतक—जोधराज । पत्र स०६ । झा०११४५ इथा । भाषा-हिन्दी । विषय-मुभाषित । र०काल स०१८५२ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०७३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मालपुरा (टोक)

६६६१. सुर्वे द्विप्रकाश — थानसिंह । पत्र स० ७६। ग्रा० ११ ४ ४ ६०० । भाषा-हिन्दी पर्या। विषय-मुभाषितः। रक्ताल स० १८४७ फामुन बुरी ६। ले० काल स० १८०० ज्येष्ठ बुदी १३। पूर्ण। येष्टन स० ६३। प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रवायनी मदिर करीती ।

**६६६२ प्रति सं०२।** पत्र स० ११६। ग्रा०१३×६ दश्व । ले० काल स० १६०० कार्तिक सदी १।पूर्म । केन्तु स० ५०। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन प्रथायती मस्दिर ख्याना ।

६६६३. सुमाषित —  $\times$  । पत्रस० १७ । द्या० १ $\times$ ४ इच । भाषा — मन्कृत । विषय — सुमायित । - ज्ञाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ४७० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्मर जयपर ।

६६६४. प्रति सं० २ । पत्र स० २५ । घा० १० १४ ६ इवा । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वेब्टन स० ६४६ । प्राप्ति स्थान—म० वि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६६६४. प्रति सं० "३ । पत्रस० १६ । या० ५ × ४ इन्छ । लेक्काल × । पूर्ण । बेष्टनसंक ४६४ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

६६६६ सुमाधित बोहा —  $\times$  । पत्र स० २-४२ । आ० १ $\times$ ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुमाधित (०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टन सं० २७८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दोवानजो कामा ।

६६६७. सुभाषित प्रश्नोत्तर रत्नमाला—इ० ज्ञानसागर। पत्रस०१४१। द्या०१०४५ इच । माषा—सस्कृत। विषयं —सुमाषित। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन सं० ६६१। प्राप्ति स्थान—भ० वि० जैन मन्दिर प्रजमेर। विशेष - सुभाषित प्रश्तीतरमाणिक्यमालामहाग्रंथे ग्र० श्री ज्ञानसागर सग्रहीते चतुर्थोऽधिकारः।

६६६ म. मुभाषित रत्नसदोह— ग्रमितिगति । पत्रस० ११४ । प्रा०७ ५४४ इ.स. । भया— सस्कृत । विषय — मुभाषित । र०काल × । ले०काल स० १४६४ कार्तिक सुरी ६ । पूर्ण । वेहनसं∙ १२०३ : प्राप्ति स्थान -- भ० वि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६६६. प्रति स० २ । पत्रस० ७४ । प्रा० ११ $\sqrt[3]{x} \times \sqrt[3]{x}$  इला । ले० काल स० १४७x मगसिर सुदी १ । पूर्ण । बेपून म० ७४६ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६६७०. प्रति स० ३ । पत्रस० ७१ । ग्रा० १० १ ४ हुँ इञ्च । लेक्सल स० १५१० । पूर्ण । केवन सं० ७०६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६७१. प्रतिस०४ । पत्रस०६५ । श्रा०१२ ×५ १ इञ्च । ले० काल स०१८४७ । पूर्ण। वेटटन स०१६०० । प्राप्तिस्थान— म०दि॰ जैन मदिग् अप्रमेर।

६६७२ प्रति स० ४ । पत्रस० ४६ । ले० काल स० १८२७ ज्येष्ठ बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—ग्रामाराम ने भरतपूर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

६६७<mark>३. सुभाषितावती — सकसकोति</mark> । पथ स० ४२ । झा० ६४ १ इन । भाषा *— सन्धून* । विषय — मुभाषित । र०काल ४ । ले० कान ४ । पूर्ण । वेग्टन स**०** २६३ । **प्राप्ति स्थान**— ४० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष-ग्रंथ का नाम मुभापित रत्नावली एवं सद्भाषितावली भी है।

६६७४. प्रतिसं० २ । पत्रस० २३ । आ० ६imes४ इञ्च । ले०काल imes । पूर्ग् । बंददन स० १४२६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

६६७४. प्रतिसं० ३ । पत्र म०५१ । घा० ११४४ ६२० । ले०काल स०१६६७ भादवा बुदी ४ । पूर्मा । बेप्टन स०१८६५ । प्राप्ति स्थान --म०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष - मडलाचार्य यश कीर्ति के शिष्य ब्र॰ गोपाल ने प्रतिलिपि की थी।

६६७६. प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । प्रा० १० $\} \times ४$  देखा । लेक्साल० imes । पूर्णः । बेहन स० १८३ । प्राप्ति स्थान—- भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६७७. प्रतिसं० ४.। पत्र सं० २२ । बा० ११ ४.४ इ.च. । ले० काल स० १८३२ चैन मुदी १० । पूर्ण । बेटन स०१०४१ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर अजमेर'।

विशेष---सिकदरा मे हरवशदास लुहाडिया ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६६७८. प्रतिसं० ६ । पत्र सं०१८ । धा०६ 🗶 ५ इ.च । ले०काल 🗶 । पूर्णा । देष्टन स० ११०२ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मदिर सजमेर ।

विशेष -- प्रति जीएं है ।

६६७९. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ३३ । आ० १११ ४ ५१ इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बूंबी । ६६ म्हार्तसं० म । पत्रस० २१ । स्रा० १० रे ४ रे ड्रांच्या । लेश्काल स०१५ म ४ । पूर्णी। वेष्ट्रत स० ३१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धर्मिनव्यत स्वामी वृदी।

प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षं धामोज मुधी १५ बुधवार नयत श्री मूलराभे महामुनि भट्टारक श्री सकतकोति देवातरपट्टें भ० श्री ५ श्रुवनकोत्ति श्रातृ धाचार्यं श्री ज्ञानकोति क्रिय्य धाचार्यं श्री रत्नकीति तस्य क्रिय्य धा॰ श्री यशकोति तत् क्रिय्य ब्रह्म विद्याधर पठनार्थं उपासकेन लिखाप्य दत्त ।

६६८**१. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस० १४ । ब्रा० १×५१ इख । ले**०काल म० १**०५६ बेठ मुदी **१ ।** पूर्या । बेठन म० ४१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

६६८२, प्रतिसं० १० । पत्रस० ६ । घा० ६×४ ट्रै इश्व । ले० काल सं० १७४८ माघ शुक्ला ८ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर धादिनाथ वृदी ।

६६८३ प्रति स०११। पत्रसः ४०। ग्रा॰ १२४५ इत्याः लंब्काल ४। पूर्णः। वेष्टन स० ६०। प्राप्तिः स्थान-विक्जन मन्दिर पाण्यैनाय चौगान खुरी।

६६०४. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० २-३७ । स्ना० १०×४ इ.च । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६६८५. प्रति सं० १३ । पत्रस० ४१ । घा० १२ × ५१ इ.च. । ले०काल सं० १७१८ मासोज बुरी १ । पूर्यो । वेष्टनसं० ३०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष—मोजमाक्षाद मं ऋषभनाथ चैत्यालय में पड़ित मगवान ने स्वयं के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६६६६. प्रतिसं० १४ । पत्र स० २२ । धा० ६ $\times$  ५ १ इच्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेक्न स० १६३–७७ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर कोर्टाडयो का हु गन्पुर ।

६६८७. प्रतिसं० १४ । पत्र स० १० । प्रा० १२ × ५ ६ इ.स । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति जीमं किन्तु प्राचीन है। प्रति की लिखाई सुन्दर है।

६६८८. प्रतिसं० १६ । पत्रस० २५ । घा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इश्व । ले०काल स० १८७६ मगसिर सुदी ७ । पूर्णे । बेष्टनसं० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टॉक)

६६म६. प्रतिसं० १७ । पत्र स० २४ । घा० ११२ × ५ट्टै इख । लेक्काल स० १६२२ माघ बुदी ऽऽः पूर्ण । वेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती मन्दिर दीवान जी कामा ।

विशेष-प्रतिलिपि दिल्ली में हुई थी।

६६८०. प्रतिसं० १८ । पत्रसं० ७६ । ले०काल सं० १७२२ चैत बुदो ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ४७ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन तेरहगयी मदिर बसवा ।

विशेष-दौसा मे प्र'तलिपि हुई थी।

६६८१. प्रतिसं० १६। पत्रस० १७। धा० १० $\times$ ५ इंच । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलना (बूंदी)

६६६२. प्रति सं०२०। पत्रसं०३३। ग्रा०६ $\frac{2}{9}$  $\times$  $\frac{2}{9}$  इञ्च। लेक्काल स०१८३१ वैशास बदी ५। पूर्ण। बेष्टनस०४३। प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)।

विशेष -- भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य ब्रह्म मेघजी ने प्रतापगढ नगर मे चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

६६६३. मुर्माषितरस्ताबलि — × । पत्र स० १७ । प्रा० ६४४ इचा । मापा — सस्कृत । विषय — मुशपित । २० काल × । ले० काल स० १७५८ प्रायाड मुरी २ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ६८७ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--प० सुन्दर विजय ने प्रतिलिपि की शी।

६६६४. सुभावितावली—कनककोत्ति । पत्र त०३३ । आ० ११३४६ इख । भाषा— सस्कृत । विषय—मुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टत सं० ११८ । प्राप्ति स्थान— किंठ जैन तेरहराथी मन्दिर दोसा ।

६६६<u>%. सुमाधितावली</u>— ४ । यत्रतः १४ । द्याः १०४ ५ इत्य । भाषा—सस्कृत । विषय-नृगापित । रकाल ४ । सेक्काल ४ । । पूर्ण । बेहनसंक ४० । प्राप्तिः स्थान-४० दि० जैन सरिक्त कालीय ।

६६९६. सुभाविताबली— $\times$  । पत्र स० ६ । प्रा० ६ $\times$ ४६७ । भाषा - सम्झन । विषय—सुभाषित ।  $\tau$ ःकान  $\times$ । ने० काल  $\times$ । पूर्ण । वेप्टन स० ४६०-२६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।'

६६६७. प्रति सं० २ । पत्र स० ८ । ले० काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टुन स० ४६१-२८४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन समयनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६६६ म्मापितावली — बुलीचन्द । पत्र स॰ १७ । झा॰ १३ $\times$  ६ $^{\circ}$  इ च । भाषा हिन्दी पद्य । विषय - सुभाषित । र०काल स॰ १६२१ ज्येष्ठ मुदी १। ते॰काल स॰ १६४६ भादवा बुदी १४ । सुन्। । वेपन स॰ ६२ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन पचायनी मन्दिर जनवर ।

६६६६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ७५ । र०काल स० १६२१ । ले०काल स० १६४२ । पूर्ण । बेक्नस० ५४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पनायती मन्दिर मन्तपुर ।

६७००. सुमाधितावली माषा—खुशालचद । पत्रस० २-६४ । ग्रा० १० ४४ इचा । माषा-हिन्दी (पदा) । विषय —सुमापित । र०काल स० १७६४ सावगा सुदी १४ । लेक्काल स० १८०२ चैत सुदी ४ । पूर्णा । बेष्टन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पदायती मन्दिर बयाना ।

विशेष -- भ्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है--

धीतराम देवजू कहा। सुभाषित ग्रंथ।
स्वारि स्थान धारक गर्छी रूकी सुभाषणी।
इन्द्र घरणीन्द्र जकवीत भाषिक हेवतु है
तीनलोक के मोह को सुदीपक कहायजी।।
साधू पुरुष् के देन प्रमृत सम निष्ट धैन
पर्वं दीज पावन सुभाषि कलदायजी

सर्वेजिन हितकार जामें मुख है प्रपार ऐसी ज्ञान तीरब प्रमील चितलायजी। बीहा— सतरार्स चौराखबे श्राव्या मास मकार। मृदि चवदित पूरण भयो दह श्रुन ग्रांत मुलकार सबलांतह पद्मा तहो। तदन राजाराम।

तीन उपदेशे में रच्यो श्रुति खुशाल श्रमिराम ॥ इति सभाषितावलि ग्रथ भाषा खुशालचन्द इति सभाष्तम् ॥

६७०**१. प्रति सं०२ ।** पत्र सस्या ३३ । आ० ५ ४४ <sup>१</sup> डचा। ले०काल सं०१ ५१२ आसोज <sup>।</sup> यदी ११ । पूर्णा। बहुत स० १४ । **प्राप्ति स्थान**ादि० जैन सौगाणी मन्दिर करौली।

६७०**२. प्रतिसं० ३** । पत्रस**०** ६३ । घा० १०×५ै इत्वा । ले०काल स० १८६६ पीप बुदी २ । पूर्मा । बेशनस० १२१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायनी मन्दिर करोली ।

विशेष—छवीलचन्द्र मीतल ने करौली नगर मे पार्श्वनाथ के मन्दिर में प्रतिलिपि कराई थी।

६७०**३. सुमाधितार्गव—शुभचंद्र।** पत्रस०११३ । आ० १ $\times$ ४२ दश्च । भाषा -स स्कृत । विषय—मुमाधित । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१८६६ सावन मुदी १३ । । पूर्ण । वेष्टन स०६२-५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सीमानी मन्दिर करीली ।

६७०**४. प्रतिसं०२।** पत्रस०२४७। ले० काल स० १९३०। पूर्णा। विष्टनस० ४३९। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६७०५. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४१ । प्रा० १० $^1_{i}$  $\times$ ४ $^1_{i}$  इञ्च । ले० कालं १७४४ । पूर्ग् ।बेष्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रधान मन्दिर उदयपुर ।

६७०६. सुभाषितास्ग्वं $-\times$ । पत्रस $\circ$ ४५। स्राज ११ $^1_2$ ४६ इस । भाषा-सन्द्रत । विषय-सुभाषित । २०काल  $\times$ । ते०काल स $\circ$ १७२४ माप सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स $\circ$ ११२। प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन प्वायती मदिर दुनी (टोक)

६७०७. सुभाषितार्गंव - $\times$ । पत्रसं० ४६। ब्रा० १२  $\times$  ४६ इख । भाषा—सरकृत । विषय—सुभाषित । र०काल  $\times$ । ले०काल स० १६०७ भारवा बुदी ६ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्षर, जनपुर ।

विशेष - चम्पावती महादुर्ग मे प्रतिलिपि हुई । लेखक प्रशस्ति बहुत विस्तार पूर्वक है ।

६७०८. सूर्तिः सुक्तावली--प्राचार्यं मेरूनुंग । पत्रस $\circ$  ३। प्रा $\circ$  १४imes४ इञ्च । माषा $\circ$  संस्कृत । विषय-काव्य । र $\circ$  काल imes । ले $\circ$ काल imes । पूर्ण । वेष्ट्न स $\circ$  १२४ । प्राप्ति स्थान — दि $\circ$  जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-महापुरुष चरित्र का मूलमात्र है।

६७०६. सृक्तिमुक्तावली-मा० सोमप्रभ ।पत्रस० ६ । प्रा० ६ $\frac{2}{\chi} \times \frac{2}{3}$  इञ्चा भाषा-सस्कृत । विषय-सृगापित । २०कास  $\times$  । से०कास  $\times$  । पूर्ण । वैष्टन स० १४१ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर प्रकार । विशेष-दो पंतिया भीर है।

६७१०, प्रति सं० २ । पत्रस० ६ । ग्रा० १० १४४ है इश्व । लेक्काल । पूर्ण । बेष्टन स० ११६७ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६७१**१. प्रतिसं० ३** । पत्र स० ७ । घा० १०× ४ इ.च. । ले०काल × । पूर्ण । बेप्टन स० १३४० । **प्रास्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर मजमेर ।

६७**१२. प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० २८ । म्रा० १०×५ इन्छ । ले०काल सं० १७म८ । पूर्ण । बेहुनसं० २८८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर श्रजमेर भण्डार ।

६७१३. प्रतिसं० ४.। पत्रस० ८ । प्रा० ६ $\frac{\pi}{4} \times 3^{\frac{\pi}{4}}$  इञ्च । लेश्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ६६८ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर प्रजनेर ।

टब्बाटीका सहित है तथा प्रति जीसां है।

६७१**४. प्रतिसं० ६** । पत्र स०१६ । आ०१०×५ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०१८७ । **प्राप्ति स्थान** ---म०दि० जैन मन्दिर सजमेर ।

६७**१४. प्रति स**० ७ । पत्र म० ११ । ग्रा॰ ६×४ इच्छ । ले० काल × 1 पूर्ग । वेष्टन स० १४२६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६७१६, प्रति सं॰ क्षः। पत्र स॰ ६ । ग्रा॰ ११ हे ४५ है इञ्चः। ले॰कालः 🗴 । पूर्णः। बेष्टन स॰ १३ च्६ः। प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेरः।

६७१७, प्रतिसं०६ । पत्र स०१०। थ्रा०११४४ ¦ इन्द्रा लेल्काल स०१६११ । पूर्ण। वेष्टन स०१२७४ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

६७१८. प्रतिसं०१०। पत्रस०१४। मा०११४४ इ.खाले० काल x । धपूर्णावेष्टन स०२३७/२३२ प्राप्तिः स्थान—वि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर।

६७१६. प्रतिसं० ११ । पत्र स०७ । ग्रा० ११×६ इञ्च । ले० काल सं० १७७८ । ग्रपूर्स । वेष्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन श्रवताल मन्दिर उदयपुर ।

६७२०. प्रतिसं० १२ । पत्रस० १४ । घा० ११% ४४ इच । ले० काल म० १६४० । पूर्णे । बेष्टनम० १०० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन अध्याल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रशस्ति निम्न प्रकार है -

सवत् १६४० वर्षे श्रावणः बुदी ६ दिने लिखितः शिष्यः ॥०टीलाः ॥० नःधूकैपाठेगोइन्दः शुभ भवतुकल्याणमस्तु।

६७२**१. प्रतिसं० १३ ।** पत्रस० १३ । आ० १०<sup>3</sup>४४ इथा । लेक्काल स० १७२६ । पूर्ण । वेष्टन स० २११ । प्राप्तिः स्थान—वि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष—संवत् १७२६ में सावरण सुदी १० को श्री प्रतापपुर के झादिनाय चैरयालय से प्रतिलिपि की गई थी।

६७२२. प्रतिसं० १४ । पत्र स०१०। आ०१० × ५३ इ.च । ले० काल × । सपूर्ण । वेष्टन सं० १४४ । प्राप्ति स्थाम—दि० नैन सप्रशल मन्दिर उदयपुर । ६७२३. प्रतिसं० १४ । पत्र स०११ । झा०१०३ ४ ५६ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६७२४. प्रति स० १६ । पत्रस० २० । प्रा० १० $\frac{1}{2}$  ४. १ व्या भाषा — सस्कृत । विषय — सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१७२६ चैत्र सुदी ४. । पूर्ण । बेष्ट्रत स० ६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

विशेष— मोहम्मद शाह के राज्य में शेरपुर में चिन्तामिए। पार्श्वनाथ के चैत्यालय में हारिक्षेम ने क्वरहार्थ प्रतिलिपि की थी।

६७२**५. प्रतिसं० १७ । पत्रस० १४** । आग० १२४ ६ इथा । **ले∘काल** स०१ द४४ प्रयम श्रावसा सदी ५ । पूर्मा । बेप्टन स० ६२ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

विशेष ---११--१२ वापत्र नहीं है।

६७२६. प्रतिसं० १८ । पत्र सं०१५ । सा०१०¦४४ हे इला। ले० काल ४ । पूर्सा। वे० सं०१३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---१५ से ग्रागेनही लिखागया है।

६७२७. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १२ । प्रा० १२४६ ६ च । से०काल स० १८४६ । पूर्ण । बेग्टन स० ६१० । प्राप्ति स्थाने— दि० जैन मन्दिर सम्बर, जयपुर ।

६७२८. प्रतिसं० २० । पश्यक २-१५ । फ्रा० ८ै्४ ३ै इ.च । ले०काल ४ । ग्रपूर्स । बेहन ग० ७१६ । प्रास्ति स्थान – दि०जैन मिंदर लक्कर, जयपुर ।

६७२६ प्रतिसं०२१ । पत्र स०१०। आ०१×६ इन्छ । ले० काल स०१८८७ । पूर्ण। वेष्ठ स०३२५-१२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुनरपुर ।

६७३०. ब्रीतसं०१२। पत्रस०१२। घा०१०४४ हुँ इच्छा से केकाल स०१७३१ श्रावस्य शक्ता १ । युर्ण | बेट्टन स०३७-१४२। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंनग्यर |

६७३१ प्रतिसं ० १३ । पत्रसं ० १२। घा० १० है ४४ । इल्ब । लेक्सल X । पूर्वी । वेच्टन सं ० १२६-५७ । प्राप्ति स्थान-विच जैन मन्दिर कोटडियो का हु नेपपुर ।

६७३२. प्रतिसं०१४ । पत्र सं०१४ । घा०१० $rac{3}{4} imes rac{3}{4}$  इश्व । ले० कालimes । पूर्ण । बेष्टन स०१४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-भट्टारक गुभचन्द्र शिष्य मुनि श्री सोमकीर्ति पठनार्थ स्वहस्तेन लिखित ।

६७३३. प्रतिसं० १५ । पत्र स० १४ । मा० १० ४४ ६०४ । ले० काल ४ । पूर्गा वेष्टन स० २६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

६७३४. प्रतिसं० १६ । पत्रतं० १० । आ० १०१४ ४ इन्त्रः । ले॰काल स० १६०३ । पूर्णः । वेष्टन सं० १३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

लेखक प्रशस्ति—सन्त १६०२ वर्षे गाके १४६८ प्रवर्तमाने महामांगस्य भादपदमाने गुक्तपक्षे दत्तम्यां तिवी रविवासरे तक्षक महादुर्गे राजांविराज सोलकीराउ थी रामचन्द विजयराज्ये |थी ऋषभ जिन चैत्यालये की मूलसवे बलात्कारगणे सरस्वतीयच्छे\*\*\*\*\*\*\*\* मंडलाचार्य यम्मै तदाम्नाये सण्डेलवालान्त्रये वैद गोत्रै..... साह घोषा तस्य पौत्र सा. होला तद्धार्या खीवगी इद शास्त्र लिखाप्य मूनि श्री कमल-कीर्तिये दत्ता

६७३४. प्रतिसं०१७ । पत्रस०५ । आ०१३ × ५ इश्व । ले० काल स०१८८६ । पूर्ण। देशन स० १०५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६७३६. **प्रतिसं०१**८ । पत्र सं०३५ । ब्रा०६३ 🗙 ४३ इल्डाले० काल स०१७६५ । पूर्णा वेष्ट्रन सं० १२६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन ग्रग्रवाल पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष - मेडता मे प्रतिलिपि हुई थी।

६७३७. प्रतिसं० १६ । पत्र स० १६ । घा० ६ १×४ १ इच्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १३१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन अग्रवाल प्रवायती मन्दिर धलवर ।

६७३८. प्रतिसं०२०। पत्र सं०१३। ग्रा०१० x ४ इ.च । ले० काल x । पूर्ण । प्राप्ति **स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर कामा ।

विशेष---प्रति जीरां है।

६७३६. प्रतिसं २१ । पत्र स० १६ । ग्रा० महै 🗙 ४ ी इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेप्टन स० प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-दो प्रतियां ग्रीर हैं।

६७४०, प्रति स० २२ । पत्र स० ११ । ग्रा० १०१ 🗴 ४९ इञ्च । ले० काल स० १६६८ काती सदी ११। पुर्णं। वेष्टन स० ६४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानशी कामा ।

विशेष-पृति संस्कृत टीका सहित है।

६७४१. प्रतिसं० २३ । पत्रस० १७ । ग्रा० १३ × ४३ इन्छ । ले०काल स० १६४५ काती सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन सं० २३७ । प्रास्टि स्थान — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

६७४२. प्रतिसं० २४ । पत्र स० २२ । ग्रा० १०×४१ इश्वा । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मदिर दीवानजी कामा ।

विशेष -- प्रति हर्पकीति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

६७४३. प्रतिसं०२४ । पत्रस०१६ । प्रा०१०×४ " इ.च.। ले०काल स०१६६६ । पूर्ण। बेष्टन स० १२२/२४। **प्राप्ति स्थान** ---दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ इन्दरगढ कोटा ।

विशेष -- प्रति हवंकीनि कृत संस्कृत टीका सहित है।

सवत १६६६ वर्षे फागुमा बदी ग्रमावस्यासोमे पाटमा नगरे लिखितेयं टीका ऋषि लक्ष्मीदासेन ऋषि जीवाय वाचनार्थ। इन्दरगढ का बढा जैन मन्दिर।

६७४४. प्रतिसं० २६ । पत्रस०३६ । मा० १०×५ इन्त । मावा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल 🗴 । ले०काल स० १८२७ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १२१/२६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पारवंताय मन्दिर इन्दरगह (कोटा) .

विशेख--करबांड ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।

**६७४५. प्रतिसं० २६** । पत्र सं० १० । बा० १२ $\times$ ५ इख । भाषा —स स्कृत । विषय –सुमा- ' चित । र० काल  $\times$  । ले०काल सं० १७८१ । पूर्ण । बेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान** —वि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर हत्त्रपत्र (कोटा)

६७४६ प्रति सं० २७ । पत्र सं० १० । घा० १० $\frac{1}{2} \times V_0^2$  इचा । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स**०** ११५ । **प्रा**प्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (कंदी) ।

६७४७. प्रतिसं० २८ । पत्रस० १ । मा० १०४५ इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-सुनाषित । २०काल ४ । जे०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी) विशेष —ध्यान विसल पठनार्ष ।

६७४८. प्रतिसं० २६ । पत्रस० १० । झा० १० ४४ दश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-मुमा-पित । र०काल ४ । ले० काल स० १४६२ माघ बुदी ३ । पूर्ला । वेष्ट्रनसं० ५८/८६ । **प्राप्ति स्थान**— टि० जैन मंदिर भावता (राज०)

विशेष-प्रति जीगं है। बीर मट्टारक के लिए प्रतिलिपि की गई थी।

६७४६. प्रतिसं० ३० । पत्रस० १। प्रा० १० ४४ । इण्च । मण्या-संस्कृत । विषय-सुमा-पित । र०काल ×। ले० काल स० १६६६ कालिक बुदी १४ । पूर्ण । वे**ष्ट्रनसं०** २२२ । प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ग्रुविनस्टन स्वामी वृदी ।

विशेष – ग्रहमदाबाद में लिखा गया था।

६७**५०. प्रतिसं० ३१**। पत्र स०३-१५। झा० १०<sup>९</sup>,४७ इश्व। भाषा-सम्कृत। विषय-सुभाषित। र०काल ४। ले० काल स०११०४। पूर्णं। वेष्टन स०२५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान वृंदी।

विशेष — मूल के नीचे संस्कृत में टीका भी है। वृत्दावनी में नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी।

६७४१. प्रतिसं० ३२ । पत्रस० ३० । घा० ६४५ इन्छ । ले० काल स० १६४५ । पूर्णं । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

६७५२. प्रति स० ३३ । पत्रसं० २४ । घा० १० 🗴 इन्त । ले०काल 🗵 पूर्ण । बेष्टन सं० ६३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर पार्यनाय, चौगान बृदी ।

६७**५३. प्रति सं० ३४।** पत्र सं०७६ । ग्रा० १०४५ इखा । ले०काल स० १७१७ काल्तिक बुदी १४ । पूर्ण । बेहन स० १० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बृदी ।

विशेष---भौजमाबाद मे लिखा गया था।

६७५४. प्रतिसं० ३५.। पत्र स० १७। घा० ६ $\times$ ५ इ.च । सावा—संस्कृत । विषय-सुमा-पित । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१८७६ भादवा बुदी १०। पूर्ण । वेष्ट्रन सं०२११। प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

६७४४. प्रतिसं० ३६। पत्रसं० १३। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  हत्व । प्राया-संस्कृत । विषय-सुमा-पित । र०काल $-\times$  । ते० काल स० ११४४ प्रापात बुदी १२। पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मंदिर राजमहल (टॉक) विशेष-कोटा स्थित वासूपुज्य चैत्यालय में समवराम ने स्वपटनार्थ प्रतिलिपि की थी।

६७५६ प्रतिसं० ३७ । पत्र सस्या २१ । ले०काल ग०१७६५ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन म० २०२ । प्राप्ति स्थान — दि० जेन मन्दिर भरतपूर ।

विशेष---मन्दरलाल ने सुरत में लिपि की थी।

६७५७. प्रतिसं० ३८। पत्रस० २७। लेकाल स० १८६२ चैत्र मुदी ४। पूर्ण। वेष्ट्रन स० २०६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेच--भगतपुर में लिखी गई थी।

**६७५८. प्रतिसं० ३६ ।** पत्रस० १६ । ले•काल स० १८२५ घाषाढ स<sub>ु</sub>दी १२ । पूर्मा । वेष्टुत ग० २८७ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष-भूत्रो पर दूदा कृत हिन्दी गद्य टीका है । केसरीसिह ने प्रतिलिपि की थी ।

६७५**६. प्रति सं० ४०।** पत्र स०११। ले०काल स १६४२। पूर्मा। बेग्टन स०२७६। **प्राग्ति** स्थान — दि० जैन पचायनी मदिर भरतपुर।

**६७६०. प्रति स० ४१।** पत्रस० ३२। ले०काल स० १८७२। पूर्णः । वे**ह**नस० ७१८। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायनी मदिर भरतपुर ।

विशेष -- प्रति हपंकीति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

६७६**१. प्रति स० ४२ ।** पत्र म० ६६ । झा० ८ ४ ४<sup>3</sup> इच्चा ले∘काल स० १६५२ । पूर्ण । वेग्टन स० ५८ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटामिल्दि वयाना।

६७६२, प्रतिसं० ४३ । पत्रक्ष० १३ । आ० ११३४५ इञ्च । ले० काल स० १८४७ माह सुदी ८ । पूर्व । बेपून स० २३ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन मस्दिर बैर ।

६७६३. सूक्तिमुक्तावली टीका—हर्षकीक्ति । पत्र स०३४ । प्रा०१० $\times$ ४ इञ्ज । भाषा—सम्हत । विषय-पुर्भापत । र० काल  $\times$ । ले० काल म०१७६० प्रथम सावस्य सुरी ४ । पूर्स । बेष्टन स० ४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बर्ध पार्थनाथ दन्तरगढ कोटा ।

विशेष-ग्रमर विमल के प्रणिष्य एवं रत्नविमल के शिष्य रामविमल ने प्रतिलिपि की थी।

६७६**४. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०४४ । आ०१०३,४४३, इ.आ. । ले०काल स०१७५० माघ बुदी १ । पूर्लावष्टन स०१४८ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन मदिर अजमर ।

विक्रोध-माकभरी वास्तव्ये श्राविका गोगलंदे ने रत्नकीर्ति के लिए लिखवाया था।

**६७६५. प्रति स० ३ ।** पत्र स० २६ । ने०काल × । पूर्ण । **वेष्टन सं० ६४३ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--नागपूरीयगच्छ के श्री चन्द्रकीति के शिष्य श्री हर्षकीति ने संस्कृत टीका की है।

६७६७. सूर्तिक मुक्तावली माथा— मुन्दरलाल । पत्रस० ४६ । घा० १२४४ हे इथा । भाषा – हिन्दी (गदा) । विषय –मुर्भापत । र० काल स० १७६६ ज्येष्ठ बुदी २ । ले० काल म० १६३४ । पूर्ण । बेष्टन स० ⊏१ । प्राप्तिक स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर अनवर ।

विशेष-रचना सवत् के निम्न सकेन दिये है-

६६७१ 'रसयग सराणशि'

६७६**८. सुक्तिमुक्ताबली माघा—सुन्दर।** पत्रस०४४ । प्रा०१३×४ इश्व । भाषा-हिन्दी गद्य। विषय—मुभाषिता र०काल 🗙 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस०१२ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर श्री महावीर बुँदी ।

६७६६. सूक्तिमुक्तावली टीका —  $\times$  । पत्र स० २-२४ । भाषा — सम्ब्रन । विषय — मुभाषित । र०काल  $\times$  । ल०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन स० ७५३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर भरनपुर ।

६७७० प्रतिसं० २ । पत्र म०२६ । ग्रा० ६ै ४४ इन्दाः भाषा-सस्कृतः । विषय-सुभाषितः । र०कालः ४ । ल०कालः स०१८३६ ज्येष्ठ बुदी ३ । पूर्णः । बेष्टन स०६८५ । प्राप्ति स्थान – भ०दि० जनगरितः प्रजयरः ।

६७७१. सूक्तिमुक्तावली भाषा— 🗴 । पत्रस० ६६। घा० ११३४४ इख । भाषा—हिल्दी । (गदा) । विषय-मुत्रापित । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० १५२ १६ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन पार्थवनाथ भदिर इन्टरगढ (कोटा)

६७७३. सूक्तिसंग्रह $-\times$ । पत्रस० १०। भाषा—सम्ब्रतः । विषयः—सुभाषितः । ए०काल $\times$ । सै०कालः  $\times$ । पूर्णः । बेष्टनः स० २४६ । प्राप्ति स्थानः—दि० जैन पनायती मन्दिर भरतपुरः ।

६७७४. सूक्ति संग्रह—  $\times$  । पत्रस० २७ । आ० १० $\times$ ६ इच । आपा-सस्कृत । विषय— सुभाषित । र०कारा  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुग स० ३२७-१२२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियां का इ गर्युर ।

६७७५: संबोध पंचासिका –  $\times$  । पत्र स॰ १३ । बा॰ ११ $\frac{1}{7}$  $\times$ ४ $\frac{1}{7}$ इव । भाषा — प्राप्त । विषय — सुभाषित । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोरसर्ली. कोटा ।

६७७६. संबोध संतारानु दूहा—वीरचन्द । पत्रस० १। घा० ६ $\times$ ४३ इञ्च । साषा— हिन्दी । विषय—सुभाषित । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८३७ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनसं० ७० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । ६७७७. हरियाली कृष्यय—गंग । पत्र सं० १ । या० ६ $^1$  ×  $^2$  है इंग । भाषा-हिन्दी गय । विषय — पुभाषित । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १०६-५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इ गरपुर ।

६७७८. हिलोपदेश—बाजिद । यत्र सं० १–२१ । आ० ११ $\times$ ५ इन्त । भाषा—हिन्दी पर्य । विषय— नीनि णास्त्र । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २५५ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दक्ताना (ब्रंदी) ।

६७७६. हितोपदेश---बिष्णुशर्मा । पत्र सं • ३-६० । आ० १०३/४ ६ इन्च । आया---संस्कृत । विषय-नीति एव सुभाषित । र०काल ४ । ले०काल सं ० १६४२ । सपूर्ण । वेष्ठन सं० ३६० । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृंदी) ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६७८०. प्रति स० २ । पत्रस०५४ । आ० ६३४४ इ.ख । माषा-संस्कृत । विषय न्या। २०काल ४ । ले०काल । अपूर्ण । वेष्टनसं० २०० । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौषान बुंदी ।

६७**५१. हितोपदेश चौपई**—  $\times$  । पत्रक्षं० ६। मा० ६× ४ दश्व । भाषा - हिन्दी गद्य । विषय-मुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण। वेष्टन स०१५०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्थ्वनाय चोगान वृदी ।

# विषय--स्तोव साहित्य

६७८२. **ग्रकलंकाष्टक-प्रकलंकदेव ।** पत्र स० ४-८ । ग्रा० १२ ४४ इ**च ।** भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । श्रपुर्णं । वेष्ट्रन स० ४४५/४६७२ । **प्राप्तिः स्थान**---दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - एक प्रति वेष्टन सं० ४४६/४३८ मे और है।

६७६३ प्रतिसं०२। पत्रस०२। आ०१३३  $\times$ ६६%। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तीत्र। रुक्तात्र  $\times$ । ले० कात्र  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०४१०। प्राप्ति स्थान—६० जैन सन्दिरलक्कर, जयपुर।

६७८**४. प्रतिसं० ३ ।** पत्र सं०३। झा०६४५ इच । नाषा-सस्कृत । विषय स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स०१२३। प्राप्ति स्थान-वि० जैन मदिरबोरसली कोटा ।

६७८५. प्रकलकाष्टक मावा — जयचन्द छावड़ा। पत्र स०११। छा०११३ $\times$ ८ इच । भाषा हिन्दी पद्यः। विषय - स्तोत्र । र० काल  $\times$ । ले० काल स०१६२६ फाल्गुस मुदी १४। पूर्णः। वेट्टन स०३६-३२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर सलवर।

६७६६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६ । ले॰काल स० १६३० । पूर्ण । वेष्टन सं० ३७-३२ । प्रास्ति स्थान-चि० जैन प्रवायती मन्दिर अलवर ।

६७८७. ग्रकलंकारटक माषा— सवामुखजी कासलीवाल । पत्र सं० १४ । गाणा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । रक्काल सं० १६१४ सावन सुदी २ । ले० काल स० १६६२ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४२४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन प्रवायती मंदिर भरतपुर ।

६७८८. प्रति सं०२ । पत्र सं०१० । लेक्सल × । पूर्णं । वेष्टन सं० ४२५ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

६७६६. प्रतिसं०३ । पत्र स०६। ले० काल imes । पूर्णं। वेष्टन स०४२६ । प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मन्दर।

विशेष-प्यारेलाल व्यास ने कठ्मर मे प्रतिलिपि की थी।

६७६०. प्रतिसं०४ । पत्र स०१६ । घा॰ ५ $\times$ ६ $^2$ ६वा । से॰काल सं०१६३६ श्रावस सुदी १३ । पूर्स । बेष्टन स०६५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६७६१. प्रति सं० ४, । पत्र सं० ११ । प्रा० १२ दे $\times$ ७दे इ.स. । ले०काल स० १६२६ श्रावसः सुदी ११ । पूर्सः । बेहन सं० ३४ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन पंचायती मंदिर बयाना ।

विशेष — सं० १९३२ में हिण्डोन में प्रतिलिपि करवाकर यहा मन्दिर में चढाया था।

६७६२. प्रति सं०६ १ पत्र सं०१६ । आ० ११×५३ इ.च. । वैश्कास × । अपूर्ण । वेष्टन सं०११ । आफ्लिस्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर दीवानजी कामा । **६७६३. प्रति सं० ७** । पत्र स० म । प्रा० १३  $\times$  ७ $^{3}$  हन्द्र । ते० काल स० १६४१ कातिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

**६७६४. ग्रकलंकदेव स्तोत्र भाषा-—चयालाल बागडिया** । पत्रस० ४४ । ग्रा० १० <sup>3</sup> ४ ७ इ.ख. । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १६१३ । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर चौगान वृदी ।

विशेष —परमतस्विति नामा टीका है । श्री चपालान जी बागडिया भागरा पाटन के उड़ने वाले थे।

## प्रारम्म--

श्री परमात्म प्रस्पय करि प्रस्त श्री जिनदेव वानि । ग्रथ रहित सद्गुरु नमी रत्नवय ग्रमलान । श्री ग्रक्तक देव मुनीमपद मैं निमही सिरिनाय । जानोद्योतन ग्रयंमुस कहू कथा सुखदाय ॥

# धन्तिम---

थावरण कुरुरणा मुतीज रांव नयन ब्रह्म ग्रहचन्द्र । पूररण टीका स्तोत्र की कुत स्रकलक द्विजेन्द्र ।। सिद्ध सूरि पाठक बहुरि सर्व साधु जिनवानि । स्रक्ष जिनवर्ध नमी सदा मगलकारि यमलान ।

माराठ ग्राम में पाण्यताथ चैत्यालय में विरधीचंद्र ने प्रतिनिधि की थी।

६७६५. प्रजित्त्वांति स्तवन — निर्वेष्ण । पत्र म ४ । ग्रा० १८४३ इत्व । भाषा प्राकृत । विषय स्थात । २०काल 🗴 । ने० काल म० १७६० ग्रासोज बुदी २ । पूर्ण । वेग्टन म १५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (व दी)

६७६६. **प्रजित गांति स्तवन** —  $\times$  । पत्रस**० ३ । या० १०** $\frac{1}{2}$  ×  $\frac{1}{2}$  इख । भाषा सम्कृत । विषय — स्तांत्र । ४०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । यपूर्ण । बेष्टनस० ३३१ । प्रास्ति स्थान — प्र० दि० जैन मन्दिर प्रजनर ।

विशेष-दिनीय एव सोलहर्वे नीर्थकर ग्राजितनाथ ग्रीर शानिनाथ की स्तृति है।

६७६६. ग्रह्ठोतरी स्तोत्र विधि — × । पत्र स०४ । भाषा-हिन्दी । विषय — स्तोत्र । र०काल × । लेवन काल × । श्रपूर्ण । वेहन स० ६२४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भनपूर्ण ।

६७६६. सम्बात्मोपयोगिनी स्तुति—महिमाप्रम सूरि । पत्र स॰ ४। घा॰ ११ $\times$ ४ ड द। मापा—हिन्दी (पद्य)। विषय्-स्तीत्र । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन स॰ ५० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन वहेनवाल मन्दिर जदयपुर ।

६६०**१. ग्रपामार्जन स्तोत्र** —  $\times$  । पत्र स० १२ । ग्रा०  $= 6\% \times 10^3$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७७६ । पूर्ण । वे० स० २३३ - ६२ । **प्राप्ति स्थान**— कि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गपपुर ।

६८०२, **ग्रांसजज्ञाय कुल**— × । पत्रस० २ । माषा— प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । लेक्काल × । । पूर्ण । बेकुन स० ६५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रावती मदिर मरतपूर ।

६ ६०३. **आरएंद श्रावक सधि - श्रीसार ।** पत्र स०१४ । ब्रा० १०३ 🗶 ४२ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुजराती । विषय—स्तवन । र०काल स०१६६७ । ते०काल स०१६३० श्रावण सृदी ३ । गृर्गा । बेप्टन स०१२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

#### पारम्भ

बर्द्धमान जिनवर चरगा नमता नव निधि होई। मधि करू ग्रागुदनी, मभिलज्यां बह कोई॥१॥

# ग्रन्तिम---

मत्रत् रिमि मिषिरस मिन तिगापुरी मई कीयो बौमास ।
ए सबस कीयो रिलिया मग्गी, मृग्ग माथाई उरहाम ।।२।।
रतन हरव गुरु वाचक माहरा हेमनन्द मुलकार ।
हेमकीरित गुरु वाचक में कहह प्रभग्गद मृति धीमार ।।१२।।

इति श्री ग्रागद श्रावक सधि सपूर्णे ।

६८०४. **ग्रादिजिन स्तवन** — कल्या**ग सागर।** पत्रस**्**र। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन।
। र॰ काल ४। ते॰ काल ४। पूर्ण। वेष्टनस॰ ७२१। प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन पवायती
मन्दर भरतपुर।

६८०५. **ष्रादित्य हृदय** स्तोत्र —  $\times$  । पत्र स० ८ । ष्रा० १० $\frac{1}{2}$  ×६ $\frac{3}{6}$  ६२। भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  ।ले०काल स० १६२८ । पूर्ण । वेष्टनस० ६६ । **प्राप्ति** स्थान —दि० जैन मन्दिर दीवन चेतनदास पुरानी डीग ।

६८०६. म्रादिनाथ मंगल—नयनसुख ४ । पत्र स०६। म्रा०११४५६ इञ्च । भाषा— हिन्दी विषय—स्तोत्र । र०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४८ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पार्थनाथ मन्ति इन्द्रस्यक्ष (कोटा)

विशेष-- प्रस्तिम भाग निम्न प्रकार है--

प्रादि जिन तीरद मुनो तिनके प्रनुमवारि चिरित्त व्यायो । भाग भज्यो नव जोग मिल्यो जगरामत्री ग्र'बकु नीकं सुनायो वो उपदेश लगो हमें कुमुषभाव परे जीव में ठहरायो कहें सेंग मुख सुनो भवि होय श्री ग्रादिनाथ जी को मंगन गायो ।...६।। ६८०७. **भाविताथ स्तवन — मेहउ**। पत्र स० २। म्रा० ५ $^2_{\ell} \times \ell$  इञ्च । भाषा-हिन्दी। विषय—स्तोत्र । र०कास स० १४६६ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहुन सं० ७६। **प्राप्तिस्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृ'दी) ।

विशेच-मृति श्री माणिक्य उदय वाचनार्थ । राउपुर मंडन श्री ग्रादिनाय स्तवन ।

६ म. **काविनाथ स्तुति**— ४ । पत्र सं०२ । मा० १० ४ ५ इश्व । भाषा — हिन्दी (गद्य) । विषय-स्तवन । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णं । वेष्टनस० ३१३ । **प्राप्ति स्थान**— ४० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-भगवान श्रादिनाथ की स्तृति है।

६८० **धानिनाथ स्तोत्र** । पत्रस**ं** १३ । धा० १० 🗙 ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय— स्तोत्र । र०काल 🗴 । ले०काल सं० १६०२ भावता बुदो ११ । पूर्ण । बेष्टन सं० २१० । **प्राप्ति स्थान**-वि० जैन मदिर ग्रामनन्दन स्वामी बुदो ।

चिशेष — इति श्री शकुजयाधीश श्री नामिराय कुलावतम श्री गुगारिदेवस्थयोश्य भव स्तवन समूर्ण मिति मई सबत् ।। श्री श्रमण् समस्यान्त्रबर तदतु । स० १६०२ वर्षे भादवा बुदि ११ सोम दिने सम्माइडीयगांदे पूर्व महारक श्री परसागर पूरि तलाहुं श्री तयकीत्ति तस्युट्टें श्री महीसुन्दर सूरि तलाहुात कार विजयमान श्री ४ सुमयसागर वा श्री जयमागर सिलत श्राविका मही पुटनार्थ ।

६६१० **प्रानन्द लहरी**—अंकराखार्य । पत्रस० ३ । प्रा $\circ$  ५ $^{\circ}$  ४६ इख । भाषा-स*न*कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण् । वेष्टन स० २०७ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजनकृत (टोंक)

६८११. श्वाराधना— $\times$ । पत्रम्नः  $\times$ । प्रा० ११  $\times$  ४ $१ १ १ १ वर्षा । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । ए०काल <math>\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २६६ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन ध्रयवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष--टव्वा टीका महित है।

६६१२. **बाहार पंचलारा।** पत्रस०६। बा०१०×४} इञ्च। भाषा आकृत । विषय--स्तोत्र। र॰काल X। ले॰काल X। पूर्ण। वेष्ट्रन स० ४८६। **प्राप्ति स्थान--**भ० दि० जैन मन्दिर क्रमेरा

६२१३. उपसर्गहर स्तोत्र —  $\times$  । पत्र स० १। प्रा० १० $^1$   $\times$  १ इच । भाषा-प्राज्ञत । विषय-स्तोत । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४४१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६६१४. उपसर्गहर स्तोत्र— $\times$ । पत्र स०१। म्रा०१०  $\times$  ४१ इ.च । भाषा—सन्द्रत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं०१। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६८१४. एकांक्सरी छंद $--\times$  । पत्रस० २ । मा० ६ $\times$  ५ है इन्छ । माषा हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रुक्ताल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० २०२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्रप्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६८१६. एकादशी स्तुति—गुराहषं। पत्रस०१। प्रा०१०  $\times$  ४ है स्था। भाषा-हित्ती। विषय-स्तवन। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स० २२७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिथर दबलाना (वृदी)

६८१७. **एकीमाव स्तोत्र—वादिराज ।** पत्रस॰ ६। ब्रा॰ १०४४ इन्छ । भाषा —सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । बेहनसं० ६०६ । **प्राप्ति स्थान –** भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६१६. प्रतिसं०२ । पत्र स०७ । प्रा०६्ै ४५ इंड्या । ले० काल 🗴 । पूर्गा । येष्टन स०१४२७ । प्राप्ति स्थान -- म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष - प्रति सस्कृत टीका सहित है।

६८९६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४ । मा० १० ४ ४ ट्वै इ.च. लि०काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टनसं० ४६६ । प्राप्ति स्थान - भ० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

६८२०, प्रति सं० ४ । पत्रस० ४ । प्रा० १०३ ४४ इन्छ । ले०काल 🗇 । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ८५ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर स्रोभनन्दन स्वामी, बुदी ।

६८२१, प्रतिसं०५ । । पत्र स०२३ । आ० १०३ ४४ डखा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी गद्या। ले०काल x । पूर्णा। बेटून स०८६ । आपित स्थान—उपशेक्त सन्दिर ।

६८२२. प्रतिसं०६ । पत्रस०८ । ग्रा०११ ४ ५३ डच । लेक्काल स०१६४२ । पूर्ण। वेष्टन स०२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ग्राभनन्दन स्वामी, बूदी।

६८२३. प्रतिसं०७ । पत्रस०८ । धा० १०२ ४४ इच । ले० काल 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रस०२६ । प्राप्ति स्थान-व्यक्ति जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८२४. प्रति सं० ८ । पत्रसं० ४ । प्रा० १० $\frac{1}{4} \times V_0^2$  इख । भाषा-संस्कृत । ले•काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान--उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष --- प्रति हिन्दी टीका सहित है।

६८२४. प्रति सं०६ । पत्रस०४ । आ०१० ४ ४ हुँ इख । तेश्काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १७४-४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाध्वेताय मन्दिर इत्यराह (कोटा) ।

विशेष निर्वाग काण्ड गाया भी दी हुई है।

६ दर्भ प्रतिसं० १०। पत्रस०४। आ० १२ ×५ इ.च. ले० काल ×। पूर्ण। वेग्टन स० २०६-६४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का डूंगरपुर।

६८२७. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १० । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूरा । बेहनसं० १७५ १४० । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर, नेदिनाय टोडारायसिंह ( टोक ) ।

६ म् ९ म. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ७ । आ० ११ ४ ५ हे इ.च. । ले० काल स० १७४४ । पूर्गा। वेष्टन सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानशी कामा ।

विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

६८२६. प्रतिसं० १३ । पत्रस० २ । प्रा० १३ $\frac{1}{7}$  $\times$ ६ इश्व । से०काल imes । बेहन स० ४२१ । प्राप्ति स्थान—जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६८३० **एकोमाव स्तोत्र टीका**  $\times$  । पत्र म०७। ब्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इन्छ। मापा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ले॰काल स०१६३२ धामोज मुदी १०। पूर्ण। बेष्टन स०१५६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर जैलाबाटी (सीकर)।

६ द ३१: एकी भाव स्तोत्र टीका  $\times$  । पत्रस० १६ । आ० १०५  $\times$  ४३ टब । भाषा —सस्कृत विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । वेष्ट्रनस० ३६१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मिस्टिंग लक्कर त्रयपुर ।

६८३२, प्रतिसं०२ । पत्रस०८ । घा०११ $\times$ ५ $^{\circ}$  इश्वः । ले० काल $\times$  । वेप्टन स०३६४ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष- श्लोक १७ तक की राजस्थानी भाषा टीका सहित है।

६८३३. एकीभाव स्तोत्र भाषा— × । पत्र स०११। प्रा०१२ / ४ इ.च.। भाषा हिस्सी प०। विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले० काल स०१७६४ मगमिर मुदी ११। पूर्ण। बेग्टन म०६२ । प्राप्ति ≭खान—दि० जैन मदिर स्रादिनाथ, व.दी।

विशेष-कर्मप्रकृतिविधान एवं सहस्रताम भाषा भी है।

६८३४. **एकोभाव स्तोत्र भाषा**— ४ । पत्र म० ३१ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्योत्र । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रत म० ४११-१४४ । **प्राप्ति स्थान** स्विक जैन मदिर कोर्टको का इंगरपर ।

विशेष - सबीध प्रचासिका भाषा भी है।

६८३५ एकीभाव स्तीव्र भाषा— प्रयरक्षाः । पत्र सं०४ । झा० १०४५ इत् । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय- स्त्रोत्र । २०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णः । वेष्टन स०७० । प्राप्ति स्थान—िद्रि० जैन सन्दिर पार्थनाथ चोगान, युदी ।

६ ८३६, एकीभाव स्तोत्र वृत्ति - नागचन्द्र सूरि । पत्रस० ८ । प्रा० १०  $\times$   $V_{\delta}^{2}$  इञ्च । भाषा सम्ब्रुत । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । वेष्ट्रनस० ३६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, बयपुर ।

६६३७. ऋद्धि नवकार यत्र स्तोत्र-imes। पत्रम०१। भाषा-सम्कृत। विषय-स्तोत्र। रचना-कालimes। विष्य-स्तोत्र। रचना-कालimes। पूर्ण। बेष्टन म००९१। **प्राप्ति स्थान**—पत्रायनी दि० जैन मन्दिर, सरतपुर।

६८३८, ऋषभदेव स्तवन—रानिंहि मुनि। पत्र स०१ । प्रा०१०४४ इंच । भाषा—हिन्दो । विषय—रानुनि । र०काल स०१६६६ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स०२८८ । प्राप्त स्थान—दि० जैन मन्दिर, दवनाना (वृदी) ।

विशेष—विकसपुर मे ग्रन्थ रचना हुई थी।

६८३६. ऋषिमण्डल स्तोत्र—गौतम स्वामी। पत्र ग०१६। प्रा०६३ ४ १ इख। प्राणा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०कान ४। ले०काल स०१८६३। पूर्णं। वेष्ट्रन सं०२६६। प्रास्ति स्थान—स्टि०र्जन सस्टिर पार्श्वनाथ योगान, बूदी। विशेष-प्रति टब्बा ठीका सहित है। उस्मियारे में प्रतिलिपि हुई थी।

६ म्४०. प्रति सं०२ । पत्रस०७ । घा०१३ ४७ ३ इन्छ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेय्टन स० ४२ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर पाष्यंनाथ चोगान, ब्रुटी ।

६ न ४ १. प्रति सं० ३ । पत्र स० ४ । ग्रा०  $-c_y^2 \times y^4_1$  इ.स. भाषा सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १.८० भादवा बुती २ । पूर्णा । बेप्टन स० १०८६ । **प्राप्ति स्थान** — म० वि० जैन मदिर, ग्रवनेर ।

६८४२. प्रतिसं० ४ । पत्रस० २ । बा० १० $\times$ ४१ इन्छ । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । तेरकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० १८६ । प्राप्ति स्थान-भ० दि० जैन सन्दिर, स्रजसेर  $\downarrow$ 

विशेष-- लिखित सिकन्दरपुर मध्ये ।

६८४४. प्रतिसं० ६ । पत्रस०६ । ग्रा० ११imes८ । भाषा —मस्कृत । विषय —स्तोत्र । २० काल imes । प्रां

**६८४. प्रतिसं०** ७ । पत्रस० ७ । गापा-सन्द्रन । विषय स्त्रोत्र । र०काल ४ । ले**०का**ल स० १७२१ माह सुरी ११ । पूर्ण । वेट्रन स० ४१६-१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष--देनगढ मध्ये श्री मन्तिनाथ चैत्यालये श्री मूल सप्ते नद्यामनाये भ० णुभचन्यजी तदामनापे मण्जमगजनी बहा मावजी विश्वत ।

मध्दे, प्रतिसंबद्धाः पत्र श्राह्मः १०३ ५८ दुः । भाषा-सम्ब्रुतः । विषय-स्तोत्र । रक्षालः  $\times$  । सन्तर्भ कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्यः स्वरुः । प्राप्तिः स्थानः स्वरंजवान दि० जैन मन्दिर, उदयपुरः ।

६६४७. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ६ । घा० १० ट्रै ४४ इच । भाषा-सन्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल ४ । लं०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० १७४ ४१ । प्राप्ति स्थान—पाववंताथ दि० जैन मदिर, इन्दरगढ (कोटा )।

६स४ स. **ग्रन्तरिक्ष पार्श्वनाय स्तवन—भाव विजय वाचक** । पत्रस० ४ । ग्रा० १०४५ ६ च । भाषा-डिटरी-(पद्य) । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले० कान ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १५४ **। प्राप्तिस्यान**—दि० जैन मन्दिर, दवलाना ( बूदी ) ।

विशेष-इसमें ४४ छन्द है तथा मुनि दयाविमल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

६ न ४ ६. ग्रन्तिरक्ष पार्यताय स्तवन—लावण्य समय । पत्र सं०२ । या० १० $\frac{1}{2}$  ४ पृष् ६ व । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टून स० २६० । प्राणित स्वान—वि० जैन मन्दिर, दबलाना (बंदी) ।

% ५५०. करुगारिक—पद्मतिव । पत्र स० १ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times v_0^2$  इञ्च। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स० ४२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

६८५१ कर्मस्तवस्तोत्र—  $\times$ । पत्रसं० ६। ग्रा० १० $\times$ ४ं: इंच। भाषा—प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन सं०१३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

६ म. ५२. करवारा करपढ़ म—वृत्वावन । पत्र स॰ २३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । ए० काल  $\times$  । ले०काल १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ११२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्तावनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-सकट हरसा वीनती भी है।

६ ५ ६३ कल्यारामिवर स्तवनाव वृरि — गुरूपरत्सूरि । पत्र स० १२ । घा० ६ ५ ६६ ३ वा भाषा – सस्कृत । विषय – स्तोत्र । २० काल  $\times$  । ले० काल १६३२ काती बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्न स० १४३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर फनेतपुर केसाबाटी (सीकर) ।

६६५४. कल्याम् मन्दिर स्तोत्र-- कुमुबचन्द्रः । यत्रसः ६। आ० १०  $\times$  ४ इश्वः । आपा-सस्कृतः । विषय—स्वोत्र । २० कालः  $\times$  । क्षेण्कालं  $\times$ । पूर्णं । वेष्ट्रनः स० ६०४ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर अजमेरः ।

विशेष-प्रति दव्वा टीका सहित है।

६८५५. प्रति स० २ । पत्रस० १६ । आ० १०×४३ इञ्च । ले० काल स० १७०० । पूर्ण । वेट्टन स० ७०५ । प्राप्ति स्थान—म० वि० जैन मन्दिर अजमेर ।

विशेष—प्रति टब्बाटीका सहित है। पडित कल्याग् सागर ने धजीशांगढ़ (प्रजमेर)नगर मे प्रतिलिपि की थी।

६८ ५६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३ । प्रा० १० $\frac{1}{4}$  ४  $\frac{1}{4}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस॰ २३३ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६८५७. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १४ । घा० १० $\times$ ४ । इंच । ले०काल  $\times$  । पूर्णे । बेष्टन स० २५३ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

६८५८. प्रति सं० ४ । पत्रस० ४। ग्रा० १०४४ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० १६४ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मदिर धजमेर ।

६८५६. प्रति सं० ६। पत्रस० ६। घा० ६४५ इचा। ले०काल सं० १८२३ प्रथम चैत्र सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन स० ४२। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष—प्रतिहिन्दी टब्बा टीका सहित है। प्रतिपत्र मं६ पक्तियां एव प्रति पंक्ति मे ३१ प्रकार हैं।

संवत १८२७ मे प्रति मंदिर मे चढाई गई थी।

६ ६ ६०. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ११ । आ० ११imes ६ ६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर म्रादिनाय बूदी ।

विशेष - मूल के नीचे हिन्दी टीका है।

६**८६१. प्रतिसं० ८** । पत्रस**्थ ।** ग्रा०११×४ इश्व । ले०काल ×।पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष-प्रति प्राचीन है एवं सस्हत टीका महिन है।

६८६२. प्रतिसं• ६ । पत्रसः ४ । ग्रा० १०४४ इञ्च । ले० काल 🗙 । पूर्ण । बेष्टन स० १०० । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन मन्दिर दवलाना (बंदी)

६ म ६३ - प्रति स०१०। पत्र स०४ । धा॰१० $\times$ ४ ेृ इखा । ते० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टम सं०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

६ म्हर्प**ः प्रति स० ११।** पत्रस० २४। या० म ४६ इश्वा । ले**०काल स० १** म्हर् चैत्र बुदी ३ । पूर्णः । बेष्टन स० २०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक)

विशेष- प॰ गुमानीराम ने बसतपुर में श्री मुगरसिंहगी के राज्य में मिश्र रामनाथ के पास पठनार्थ जिल्हा था ।

६८६**४. प्रतिसं० १२ ।** पत्र स० २ । म्रा० ८४६ इन्छ । ने०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८६६. प्रति स०१३ । पत्र स०६। ग्रा० १०×३ॄँ दुवा। ले० काल स०१८१४ वैशाख मुदी १३ । पूर्ण। वेप्टन स०६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौसा।

विशेष --- दयाराम ने देवपूरी मे प्रतिलिपि की थी।

६८६७. प्रतिसं० १४ । पत्र स०३ । ग्रा० १०×४ इञ्च । ले०काल 🗙 । ध्रपूर्ण । बेष्टन स० १०१-६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर वहा बीसपथी दौसा ।

विशेष--ग्रागे के पत्र नहीं है।

६८६ ८. प्रतिसं० १५ । पत्र सं० ५ । घा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इला । ले० काल  $\times$  । पूर्ण् । बेष्टन स० ११४–६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर यहा बीसपथी दौसा ।

विशेष--सरकृत टीका सहित है पुण्यसागर गरिएकृत ।

स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर द्वारा रचित लिखा हुमा है।

६८६६. प्रतिसं० १६ । पत्रस० १। प्रा० १०imes१० इ.स. । लेकाल imes । पूर्ण । बेष्टन स० २२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

विशेष-प्रति प्राचीन है तथा कमलप्रभ सूरि कृत संस्कृत टीका सहित है।

६६७०. प्रतिसं० १७ । पत्रसं० ४ । बा० ११ ४ ४ इच । ले•काल् ४ । पूर्णे । बेष्टन स० ४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मंदिर उदयपुर ।

६८७**१. प्रतिसं० १**८ । पत्र सं० ४। ने०काल imes। पूर्णं । वेष्टन सं० ५०७ । **प्राप्ति** स्थान-दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर । विशेष--प्रति सटीक है।

६८७२ प्रति सं० १६ । पत्रस० ३ । ले० काल 🔀 । पूर्णं । बेष्टनस० ७१३ । प्राप्तिः स्थान-दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

६८७३. प्रति सं० २०। पत्र स०६। प्रा॰  $\mathfrak{t}_{q}^{2} \times \mathfrak{t}_{q}^{3}$  दश्व । ले०काल  $\times$  । बेष्टन स०६७०। प्राप्ति स्थान -दि०जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

६८७४. प्रति सं० २१ । पत्रस० ७ । ग्रा० १११ 👋 १ दश्व । ले० काल स० १७५७ । पूर्ण । बेष्टनस० २७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — प्रति व्यान्या सहित है।

६८७**५. प्रति सं० २२** । पत्र स०४ । ग्रा० १० ४४ इण्ड । ले०काल ४ । पूर्गा । वेश्वन स० ३७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---२६ से आगे के श्लोक नहीं है।

६८७६, **प्रति सं० २३ ।** पत्रस**्३ ।** प्रा० १३<sup>3</sup> ×६ इश्वाः ले०कालः र । पृर्गः। वेष्टन स० ४०४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सदिर लक्कर, जयपुर ।

६**८७७. प्रतिसं० २४ ।** पत्र म० ५ । आ० १०१ ८४) इञ्च । ल०काल × । पूर्ण । वेस्टन म० ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर लख्कर, जयपुर ।

६८७८. प्रतिसं० २५ । पत्रस० २ । ब्रा० १० 🗙 ४ी इञ्च । भाषा—सम्ब्रत । विषय—स्तोष । र० काल 📯 । से०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन म० १६० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

६८७६. प्रतिसं० २६। पत्रम० १०। घा० १०४८ इस्तः। भाषा-सन्द्रतः हिन्दी। विषय-स्तोत्रः। २०वाल्  $\times$ ा ले**०** काल्  $\times$ । पूर्णः। वेष्ट्न म० २०। **प्राप्ति स्यान**—दि० जैनमन्दिर दवलानः (वर्षी)

विशेष-प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

६८०. कत्यारा मन्दिर स्तोत्र टीका - हुषंकीति । पत्रस्व २१। ब्राव्दी ४४ है इस्य । भाषा—सम्बन्धा विषय — स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल स० १७१७ ब्रालोक मुदी ४ । बेयुतस्व ३८४ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मुदिर लक्कर, जयपुर ।

६६६२ प्रतिसं० २ । पत्र म० १६ । स्रा० १० $\{ \times 8 \}$  इश्व । ले० काल स० १६२७ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । बेटन स० ३६६ । **प्राप्ति स्थान** –दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

विशेष--बुध केशरीसिंह ने स्वय लिखी थी।

६८८२. कल्यारम मन्दिर स्तोत्र टीका—चरित्रवर्द्धन । पत्र सल्या = । त्रा० १०  $\times$  ५ ६ च । भाषा = रंहरून । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ग । वेप्टन स० १८६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर दक्लान। (बूंदी)

६८६३ कत्या**रा मन्दिर स्तोत्र टीका**  $\times$  । पत्र मं ०७। पा० १० $\times$ ४ इञ्च । माषा ~ सम्ब्रुत । विषय-स्तोत्र । रं० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१६०। **प्राप्ति स्थान—भ०** दि० जैन मन्दिर ग्रजीमर ।

६८६४. कल्याग्गमिन्दर स्तोत्र टीका—  $\times$  । पत्रस०२-१० । क्या॰ १ $\frac{1}{2}$ ४ $\frac{1}{2}$ ६५ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ले० काल स०१७४४ माह सुदी १२ । प्रपूर्ण । बेष्टनस०१२५ । प्रास्ति स्थानः—वि॰ जैन मदिर दवलानः (बूदी)

विशेष-हिण्डोली नगरे लिखित ।

६ स्तर्भ. करुयाग्ममिन्दर स्तोत्र टीका---  $\times$  । पत्र स० २०। ग्रा० न्हे  $\times$  ४ है इश्व । भाषा-सम्ब्रत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १७५१ मावण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । प्राप्ति स्थाम — दि० जैन मदिर दवलाता (बृदी) ।

६८६६. कल्याग्मिन्दिर स्तोत्र टीका— $\times$  । पत्रस० २६१। म्रा० ६ $\times$ ४ इव । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-स्तात्र । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स० २५१ । प्राप्ति स्थान-दि० अव मन्दिर श्रांशनस्त स्वामी, वृदी ।

विशेष-पत्र १६ से धाग द्रव्य संग्रह की टीका भी हिन्दी में है।

६८७७ कल्यार्गमन्दिर स्तोत्र टीका— × । पत्र स०२। ब्रा०,१० × ८ हु इ.च. । भाषा-साकृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २०काल स० × । ले०काल स० × । पूर्ण । बेष्ट्रन सं०१८७-७७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

बिशेष--हिन्दी टीका सहित है।

६८८६ कल्यारामिदिर भाषा — बनारसीदास । पत्रस०२ । बा० ६ $\frac{1}{2} \times 1$  ३२७ । भाषा — हिंग्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । लेक्बल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन म० ५६२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मिर्टर लक्बर जयवर ।

विशेष-- ग्रात में बनारसीदास कृत तेरह काठिया भी दिया है।

६८८६. **कल्यासम्बद्धर स्तोत्र भाषा**— X । पत्र म०२। स्ना०१०¦X५ इञ्च । भाषा-सन्द्रन, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल X । ले० काल स०१८२५ कातिक युदी १२ । पूर्ण । वेस्टन स०२० । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली, कोटा ।

विशेष--नन्दप्राम मे लिखा गया था।

६८६०, कल्यारणमन्दिर स्तोत्र भाषा--- श्रव्यपाज श्रीमाल । पत्रसु० २१ । ब्रा० ११×४५ देवच । भाषा--- क्रिन्दी गदा । विषय --- स्तोत्र । रुकाल सु० ४ । लेक काल ४ । पूर्ण । वैष्टन सु० २३३ । प्राप्तिः स्थान--- दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६ म् ६ ९ प्रति सं०२ । पत्रस०२२ । झा०१२ $\times$ ४ ई डखा। ले० काल स०१७२२ बैत्र वृदी ४ । पूर्ण। वेष्ट्रत स०१० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडाबीस पंथी, दौसा।

६८६. कस्यासामित्दर स्तोत्र बचिनिका—प० मोहनलाल । यत्रत० ४० । छा०  $-\frac{1}{2} \times \times \frac{3}{2}$  देखा । भाषा — हिन्दी । विषय—न्तोत्र । र०काल स०१६२२ कार्तिक बूदी १३ । ते० काल स०१६६४ मावन बूदी ७ । पूर्ण । वैष्टन स०१३१३ । **प्राप्ति स्थान**—म०दि० जैन मन्दिर ज्ञजमेर ।

६=६४ **कत्यास्मानिदर स्तोत्र वृत्ति— देवतिलक ।** पत्र स० १२ । भाषा-सस्कृत । विषय— स्तोत्र । रचनाकाल 🗶 । लेखनकाल १७६० । पूर्ण । वेष्टनस० ७२४ । प्राप्ति स्थान—पत्रायती दि० जैन मदिर, भरनपुर ।

विशेष--टोक मे लिपि हुई थी।

६८६ ५. कस्यारण मन्दिर स्तोत्र वृक्ति — गुरुदत्तः । यत्र स०२० । प्रा०१२  $\times$  ४ है इश्व । माषा — सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६४० मगसिर मुदी १५ । वेष्टन स०३६७ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्यः, जयपर ।

६८६७ कल्याए। मन्दिर स्तीत्र बृत्ति—  $\times$  । पत्र स० २२ । मा० ११  $\times$  ४ $^{\circ}$  ६ च । मापा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेप्टन स० २१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्टिर दबनाना (व दी) ।

विशेष--- २२ से आगे के पत्र नहीं है।

६ स्हस्म क्षेत्रपालास्टकः —  $\times$  । यत्र रा० ६ । आ० १० $\frac{1}{2} \times \frac{3}{2}$  छत्र। प्राप्तान्त्रगङ्गी । विषय-स्रोत्र । २० काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णुं। वेस्टन श० १३३१ । प्राप्तित स्थान भ० दि० जैन सिंहर, स्रावीर

६८६६. कृष्णश्रीतभद्र सरुफाय — रतनिसह। पत्र म०१। ध्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  4े इच । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तुति। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेग्टन म० २२१। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर देवलाना (वृदी)।

**६६००. गर्भवडारचम-—देवतदि** । पत्र स० ५ । ग्रा० ५<sup>२</sup> ४४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-सोत्र । २० काल ४ । ले० काल स० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर, ग्रावमेर ।

६६०**१. प्रतिसं०**२ । पत्रस**०३ । छा०११×४ है इक्षा ने० काल × । पूर्ण ।वेष्टनसं०** ६६ । **प्राप्ति स्थान—भ**० दि० जैन मदिर अर्जासर ।

**६८०२. प्रति स**० ३ । पत्रस० १४ । घा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इञ्च । ले०काल $\times$  । घपूर्ण । बेष्टनसं० २७ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६६०३. प्रतिसं० ४। पत्र स० ४। घा० ११ $_{2}^{2}$  $\times$ ४ इन्छ। ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टनसं० ८७-४६ । प्राप्ति स्थान----(द० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपुर ।

६६०४ **गीत गोविय—जयदेव** । पत्रसः० ४-३७ । ग्रा० १२×४ इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल×। ले•काल स० १७१७ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० १९० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा । ६८० **५. गुरामाला — ऋषि जयम**रुल । पत्र स०६ । घा० ११३ × ५ ६ खा भाषा –हिन्दी । विषय — स्तोत्र । र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टन स० २६१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाक्ष्वनाय इन्दराख (कोटा) ।

विक्रोक---- निम्न पाठ धीर है।

महाबीर जिनवृद्धि स्तवन	समयसुन्दर
चित संभूकी सज्भाय	×
स्तुति	भूघरदास
नवकार सज्भाय	×
चौबीस तीर्थकर स्तवन	×
बभगावाडि स्तवन	×
शानि स्तवन	गूलसागर

६२०६. गुराबलो स्तोत्र $-\times$ । पत्र स०१०। ग्रा०६ $rac{1}{2} imes imes^2_i imes^2_i$  इत्र । भाषा--सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल imes। ले० काल imes। धपूर्ण। वेष्टन स०१४३। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन महिराको सम्बोतिकोटा।

६६०७ गुरु स्तोत्र—विजयदेव सूरि । पत्र सं०२ । ग्रा० १०  $\times$  ४ इश्व । माषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३३६-४०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर समवश्य उदगपर ।

विशेष-इति श्री विजयदेव मूरि स्वाध्याय सपूर्ण ।

६६० द. गोपाल सहस्र नाम—  $\times$ ा पत्रस० ३१ । प्रा०  $^{\vee}_{2} \times ^{\vee}_{2}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रीकृष्ण, स्तोत्र । र०काल  $\times$  । त्रे० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मदिर बयाना ।

६८०६. गोम्मट स्वामी स्तोत्र—  $\times$  । पत्र स०६। प्रा० १०  $\times$  ७ इञ्च। भाषा— संस्कृतः। विषय—स्तोत्रः। २०कासः  $\times$ । त्रेक्कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्टुनः स०२१५-६७। प्राप्तिः स्थानः — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुरः।

६६१०. गौडीपाश्वेनाथ छंद — कुगललाभ । पत्रस्व १ । श्रः० १२  $\times$  ४ इ.स. । माषा — हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रक्काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वे० सं० ३६४, ४७२ **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६८**११. गौतमऋषि सङ्ग्राय**— X । पत्रसः १ । ग्रा० १०<sup>2</sup>, ४४<sup>2</sup>, ६४व । आघा-प्राकृत । विषय-गोत । ८०काल X । ले०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वंदी)

विशेष-- लिखित रिषि हरजी । बाई चापा पठनार्थ ।

६६१२. गंगा लहरी स्तोत्र—सहु जगन्नाथ । पत्र स०६। म्रा०६¦ ४४६ स्था। गाया-सम्बन्न । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ते०काल स०१८२५ ज्येष्ठ दुदी ६। पूर्ण। वेष्ट्रन सं०१००। प्राप्ति क्याल-सिक्क वर्षास्त्र कोस्प्रस्ता कोरा विशेष--- गिरिप्र मे प्रतिलिपि हुई थी।

- **६८१३. चकोश्यरीदेवी स्तोत्र—** । पत्रसः ६ । बार ११<sup>2</sup>, ४४<sup>3</sup>, इश्वा । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । रुकाल ४ । लेक काल स**ः** १८७६ । पूर्ण । बेष्टनसः १३८८ । **प्राप्ति स्थान**— भक्टिक जैन मन्दिर अकोर ।
- **६६१४ चतुर्देश भक्तिपाठ। पत्रस० २०। धा० १०×६** है इस्य । भाषा-मन्त्रत। विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल स० १६०४ मगमिर मुदी ८ । पूर्ण । वेष्ट्रन म०२३ १४ । **प्राप्ति** स्थान--दि० जैन पनायनी मन्दिर दुनी (टांक)
- **६६१४. चर्तुविध स्तवन**  $\times$  । पत्रस**०**१। प्रा०१०ै  $\times$ ४ देखा । भाषा सम्ब्रत । विषय स्पीत । रकाल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सक् १२२ । **प्राप्ति स्था**न दिव जैन प्रवासनी महिर प्रवद ।
- **६६१६. चतुर्विसति जयमाला— माधनन्दि ततो** । पत्रसं० १। ब्रा० १३<sup>1</sup>४६ दशः। भाषा संस्कृतः। विषय-स्तंत्रः। रकातः ४ । लेकालः ४ । पूर्णः। वेष्टतं स० ४१४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर, वर्षपुरः।
- **६२१७. चतुविशति जिन नमस्कार**  $\mathbf{x}$  । पण म०३ । भाषा-सरकुर । भाषाय सरवन । रक्काल  $\mathbf{x}$  । तेक्काल म०  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स. ६६७ । **प्राप्ति स्थान** दि जैन मन्दिर भरनपुर ।
- ६६१६. चतुर्विशति जिन स्तवन ४ । पत्र म ० १ । ग्रा०१०¦ ४५ ७ व । भागा प्राकृत । विषय—स्वयन । र०काल ४ । ल०काल म० १८६५ । पूर्ण । येष्ट्रन स०१०० ११० । प्रास्ति स्थान— दि. जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिष्ट (टोक)
- ६११६. चतुर्वियाति जिनस्तृति 🔀 । पत्रसः ४ । भाषा –सम्प्रतः । विषयः स्थवनः । रजनातः 🗡 । तेजनातः सः १६६२ । पूर्णः । वेष्ट्रतः सः । प्राप्तिः स्थानः (१० वेस प्रचायतीः मन्दिरं सर्वपुरः)
- ६६२० चतुर्विशति जिन स्तोत्र टीका जिनसभसूरि— । पत्रम०६। प्रा०१०,४६ी इश्व । भाषा—सन्कृतः विषय—स्तोत्र । २०काल ४ । लेकाल ४ । पूर्णः । बेष्टनस०२३६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर प्राभिनन्दन स्वामी, वृदी ।
- विशेष बीच में श्लोक हैं तथा उत्पर नीचे सम्झन में टीका है। गरिंग वीर्यवजय ने प्रति— लिपिकी थी।
- ६६२**१. प्रतिसं०२** । पत्र स०१ । आ०१२ ४४ इश्वः । ले० काल 📐 । पूर्णः । वेष्टन स० ३४६/४६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्टिर उदयपुर ।
- ६६२२. चतुर्विशति जिन दोहा— ४ । पत्र म०२ । घ्रा०१०४४ टखा । भाषा—हिन्दी। विषय —स्तवन । र०काल ४ । ते०काल स०१६२६ माहसुदी२ । पूर्णा वेष्ट्रन स०१३८ । प्राप्ति मधाम—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)
- ६६२३ **चतुर्विद्यति स्तवन** ४ । पत्रस०२-१३ । भाषा सम्ब्रन । विषय स्तवन । २०काल ४ । के० कान ४ । पूर्ण । वेध्टन म०७६७ । **प्राप्ति स्थान** —रि० जैन पंचायनी मन्दिर भरतपुर ।

६६२४ **चतुर्विशातिस्तवन**—पं**० जयतिलका ।** पत्र स०१ । ग्रा०१२४४ इ.ख । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र , २०काल ४ । कृष्णा । बेष्टन स०३६६/४७४ । **प्रास्ति स्थान**— किं जैन सनवनाव मन्दिर उक्ष्यपर ।

६८२५. चतुर्विशति स्तुति—शोमनपुनि । पत्रतः ६ । ग्रा० १०४५ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल ४ । लेकाल सः० १४८३ ग्रासोज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायोनह (टोक) ।

विशेष--इति बढंमान स्तृति. ।

मध्य दशस्य **संकाशद्वं ग** निवासी देवविसुतः सर्वदेवस्तरयात्मवन शोभन मुनिना विहित। इसाश्चतु-विवाति जिनस्तुत्व तद्यज पडित घनपाल विहिता विवरण नृगरेण त्रयमवद्गीणर्महायमकवडनरूपाणा नासास्त्रीना लेगकोऽनील । सबनु १४८३ वर्षे आग्वीन सा. व. ४ ।

६६२६. चतुर्विशति स्तोत्र--प० जगन्नाथ । पत्र स० १४ । ग्रा॰ ११ $\times$ ६ इच । भाषा $\sim$  सस्क्रत । विषय -- स्तोत्र । २० काल्  $\times$  । सं०काल्  $\times$ । पूर्णः । बेष्टनस० ६० । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर आदिनाप व दी ।

विशेष - प्रांत सटीक हे । ५० जगन्नाथ भ० नरेन्द्रकीति के शिष्य थे ।

६९२७. **चन्द्रप्रमु स्तवन—प्रानन्दघन ।** पत्र म०२ । भाषा—दिन्दी । विषय—स्तवन **।** २०काल × । ते०काल ४ । पूर्ण । वेप्टन म०७७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर भन्तपुर ।

६९२६. चित्रबंध स्तीत्र — 🗶 । पत्रस्त १ । ग्राप्ट १० ८४ दश्व । भाषा-सम्बन्ध । विषय— स्तीत्र । रुकतात्र ४। तेक कात्र ८ । पूर्ण । वेष्ट्रनसंक ११२० । प्राप्ति स्थान— भट्टाश्कीय दिव जैन सर्विर सर्वोगः ।

विशेष-स्तीत की रचना को चित्र म सीमित किया गया है।

६६२६. चित्रबन्ध स्तोत्र— > । पत्रस०२। सा०१०, ४४हे इञ्च। भाषा—प्रकृत । विषय—रनोप्र । रुकताल ⇒ । ले०काल ⇒ । वेष्टन स०३७६। **प्राप्ति स्थान** - दि०जैन महिर सक्कर, जयपुर

६६३०. खित्रबन्ध स्तीत्र—  $\times$  । पत्रस०२। छा० १० $\{\times \times_0^2 \in \mathbb{R}^2 \mid \text{मापा —संस्कृत } \}$  विषय —स्तीत्र। १०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । वेष्ट्रन स०४३०। **प्राप्ति स्थान** —दि० जेन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष ---महाराजा माधर्वासह के राज्य मे श्रादिनाथ चेंध्यालय मे जयनगर मे प० केशरीसिंह के पठनार्थ प्रतिलिगि हुई थी। प्रजन्ति ग्रज्ञाहि ।

**६६३१. जिन्तामीए पार्यनाथ स्तोत्र**— $\times$  । पत्र स० १ । त्रा० १२ $\frac{1}{2}$ ्र इक्ष । आषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । वेष्टन स० ४१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० त्रैन मन्दिर सक्तर, जयपुर ।

५६३२. चेतन नमस्कार —  $\times$ । पत्र स० २। मा० ६ $\frac{3}{5}$  $\times$  $\times$  $\frac{3}{5}$  इक्त । भाषा -हिन्दी । विषय – स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेपून स० २१४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिल्टर बोरसली कोटा ।

६६३३. चंदसबदना—  $\times$  । पत्रस०  $\times$  । प्रा० १०  $\times$   $\times$  है इच । मापा–प्राहत । विषय— स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४६० । प्राप्ति स्थान— मट्टारकीय दि० जैन मन्दिर धजीर ।

विशेष--प्रति सस्कृत टब्बा टीका सहित है।

**६९३४. चैत्यालय वीनती—दिगम्बर शिष्य**ा पत्रस्त० ३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल $\times$  । ले० काल $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० द४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

## धन्तिम परा---

दिगम्बर शिष्य इम भरोइ ए बीनतीमइ करीए। चो प्रमुमो ग्रनिवास सफल कीरती गुरु इम भरो ए।

विशेष-हिन्दी मे एक नेमीश्वर बीनती और दी हुई है।

६६३५. **चौरासी लाख जोनना बिनती—सुमतिकीर्ति ।** पत्रसं∘ ६ । ग्रा० १०ै,४४६ इञ्ज । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल ४ । ले**०काल** ४ । पूर्ण । वेष्टन म०१६३ । **प्रास्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

> श्री मूलमय महत्मत गुरु लक्ष्मीचन्द । बीरचन्द विबुचवत ज्ञानभूषण मुनीद ।। जिनवर बीनती जो भएँ। मन घरी श्रानद । युगनी मुनी कर ते लहे परमानद ।। मृमतिकति गांव कहिए त्याजी जिनवर वेव । समार माही नहीं प्रवर्षों (पास्पी सिवजक हेत ।

इति चौरासी लक्ष जोनना वीननी राष्ट्रणं ।

६८३६. चौबीस तीर्थंकर वीनती—देवाबह्य । पत्र म० १६ । घ्रा० १२ $\times$ ४, इ.च । माषा—हिन्दी । विषय स्तवन । र० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर ।

६६३७. चौबोस तीर्थंकर स्तुति— ४। पत्र स०२। घा० १०हे४५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र∙काल ४। ले०काल ४। वेष्ट्न स०३५८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

६६३६. **चौबीस तीर्थंकर स्तुति (लञ्ज्वयंभू)**— ४ । पत्रसं०३। ग्रा० ५ ४६<sup>5</sup> इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०काव ४। ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मदिर धनमेर ।

६६३६. चौबीस सहाराज की विनती—चन्नकवि । पत्र स० ६-२३ । आ० ६ $\frac{1}{4}$ ४६ इख । माषा-हिन्दी । विषय-स्ततन । र०काल  $\times$  । ने० काल स० १८६० प्राप्तोज सुदी १४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

करवाई थी।

६८४०. **चौबीस महाराज को बोनती** -- हरिचन्द्र संघी । पत्र सं०२४ । भाषा—िहिन्दी । विषय—िवनती । रंककाल  $\times$  । लेककाल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०२०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर सरनपुर ।

विशेष-कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है। प्रति प्राचीन है इसके ग्रांतरिक्त निम्न और हैं-

१- जिनेन्नपुरासा—दीक्षित देवदत्त । भाषा-सस्कृत । र०काल ४ । ले० काल १८४७ । पूर्ण । **विशेष**—बहाचारी कथ्सा मागर ने कायस्य रामग्रसाद श्रीवास्तव ग्रटेर वालो से प्रतिलिपि

२- पुजा फल--- × ।

३- सदर्शन चरित्र-श्री भट्टारक जिनेन्द्रभूषरण ।

बिशेष —श्री शोरीपुर बटेश्वर तै लश्करी देहरे में श्री प० केसरीसिंह के लिए श्रुतज्ञानावरएी कर्मक्षवार्थ बनाई थी।

६६४१. चौसठ योगिनी स्तोत्र— $\times$ । पत्रस० २। ग्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{3}$  इश्वः। भाषा-सस्कृत । विषय—मनोत्रः। र०काल  $\times$ । ले०काल स०१८७६ कालिक सुदी ११। बेष्ट्रन स०४२८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

**विशेष**— लिपिकार प० भाभूराम ।

६६४२. चौसठ योगिनी स्तोत्र—  $\times$  । जन्न २ २ । बा० ११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाछ्येगाय चौगान ब्रु दी ।

विशेष — ऋषि मडल स्तोत्र भी है।

**६६४३, बन्द्रप्रम छंब-वा० नेमचन्द**ा पत्रस्क ४६। आ०६ १४६ इ.च.। भाषा-हिन्दी। विषय-स्पत्रन। रक्ताल सक् १८५०। लेक्काल ४ । पूर्णा विष्टन स**०** ७१/४२ । **प्राप्ति;स्थान**—दिक जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर।

६६४४, छुंद देसंतरी पारसनाथ—लखमी बल्लभ गरिए। पत्रस० ६। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल ×। ले०काल ×। खपूर्ण। वेष्टन स०७१४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

६९४५. जयतिहुयरा प्रकरण — ग्रभयदेव । पत्र त० ३ । ग्रा० १० $\times$ ४ इश्व । भाषा — प्राकृत । विषय — स्तवन । र० काल । ले० काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन त० ४४३/२६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

ग्रन्तिम---

एयम दारिपजतदेव ईम न्हवण भट्टसवन झ्रण्लिय । गुगगहण तुन्ह मंगीकरिय गुणिगण सिद्धः ॥ एसह पत्तीमपु पासनाह वभरणपुर त्रियद्धः । मुणिवर थी सभयदेव बिनवयह साण्यियः॥ इति श्री जयतिहयण प्रकरण शश्यो ॥

- ६८४६, **क्षिनदर्शन स्तुति**.— ×1 पत्र म०३ । सा०११×= ६ञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय -स्तोत्र । ७० काल × । लेक्काल × । पूर्सी । वेष्टन स०४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन नेरहमधी मन्दिर होता .
- ६६४७. जिनपाल ऋषिकाचौढलिया—जिनपाल । पत्र स०२। आ०१० $\times$ ४ डञ्च। आग-हिन्दी। विषय-स्तृति । र०काल  $\times$ । केशकाल स०१६६४ । पूर्ण । बेग्न स०२६२। प्रास्ति स्थान—दि० नैन-प्रदिर दक्लाना (ब्रेपी) ।
- **६६४८. जिनींपजर स्तोत्र—कमलग्रम।** पत्र म०३। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०कारा 🗸 । ने०कान ×। पूर्णः। बेट्टन म०६६६। **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।
- ६९४६ जिनपिजर स्तीत्र । पत्र स०१। भाषा-सस्कृत । तिपय-स्तात्र । र० काल ४ । ले॰काल । पूर्ण । वेष्ट्रतस० ६८५ । **प्राप्ति स्थान**--दि॰ जैन प्रचायनी मन्दिर भरतपुर ।
- ६६५०. जिनपिजर स्तोत्र— 🔀 । पत्रस० ६ । झा० ६ ८ ६ इत । भागा-गरहन । विषय-स्तोत्र । र०काल 🔀 । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० ४६ । प्रास्ति स्थान - वि० जैन मन्दिर तेरवपश्री टीमा ।
- **६६५१. जिनिपनर स्तोत्र**  $-\times$  1 पत्र मे० ४) स्ना० ६ $\frac{1}{2}$   $\mathbb{Z}$  द दुख । भाषा-सस्हत । विषय-स्तोत्र । रक्ताल  $\mathbb{Z}$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१७३ ८८ । **प्राप्ति स्थान** —पार्ण्यनाथ दि**० जैन स**दिए इस्टरणक (कोटा)

विशेष परमानदस्तीत्रभी हः।

- **६६५२. जिनरक्षा स्तोत्र** एव म०५। या० ५८३ इत्व । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗴 । य० काल 🔀 । पूर्ण । वेष्टत म०१व । **प्राप्ति स्थात-**वि० जैन छोटा मदिर बमाना ।
- ६६**५३. जिनवर दशेन स्तवन पद्मनिर्द।** पत्रमु०४। ब्रा० ≒्रे ४ ४ इखा भाषा-प्राकृत । विषय-स्तात । र०काल '४ । ले**०काल** । बण्टन सु० ३६०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर लक्कर, जयपुर।
- ६६५४ जिनशतक '। पथ ग०१०। ग्रा०८ दे 🗶 २ दश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीय । रुकताल 🗴 । तेक काल '। पूर्ण । वेस्टन म०११२। **प्राप्ति स्थान**—दिक्जैन सन्दिर पार्थनाथ जीवान, यदी ।
- ६६**५५. जिनशतक ` ।** पत्रम० २६ । प्रा० १२ ४५ हैं इन्ध**ा भाषा-स**स्कृत । विषय-स्तोत्र । रण्काल ४ । सै०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १५७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मंदिर दीवानकी काम ।
- ६६५६ जिनसमबशरग्रामंगल नयमल । पत्र स०२४। धा०१०ुै×५६०च । भाषा हिन्दी । विषय -पत्रका । र० काल स०१६२१ वैशाख सुरी १४। ले० काल × । पूर्य । बेष्टन सं०२२ । प्राप्ति स्थान — दि० बैन पचायनी मदिर बयाना ।

विशेष—नथमल ने यह रचना फकीरचट की सहायना में पूर्माकी थी औरसाकि निम्न पद्य में पता लगताहै—

> चन्द्र फकीर महायतै मूल ग्रंथ श्रनुसार । समोसरत रचना कथन भाषा कीनी सार ।। २०१ ॥

पद्यों की स० २०२ है।

1.

६९४७. जिनदर्शन स्तवन भाषा —  $\vee$ ा पत्र स०२। आ०६ $\frac{1}{4}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इट्टा भाषा - हिन्दी (पद्य)। विषय-स्तवन । २० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण। वेग्टन स०१५१। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सदिर दबलाना (बूदी)

विशेष--मूलकर्ना पदानदि है।

६**६५८. जिनसहस्रनाम-- प्राशाधर** । पत्रस**्**४ । प्रा० २३ × ४ई दृष्टच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तात्र । र०काल ( । से**०का**ल × । पूर्णा विष्टुन स०६४७ । **प्राप्ति स्थान**----म० दि० जैन सन्दिर प्रशोर ।

**६६५६, प्रति स**० २ । पत्र स० २५ । छा० १३ , ६ इञ्च । ले०काल स०१८६५ कानिक बदी ६ । पूर्सावेटन स०४८२ । **प्राप्ति स्थान** भ०दि० जैन मन्दिर अप्रवेर ।

विजेब---प्रशिसम्बत दीका महित है।

६६६०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १ । ब्रा० १०१ 📯 ५ उन्त्र । भाषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्यो । बेष्ट्रनस्० ६६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लब्कर जयपुर ।

**६६६१. प्रति सं० ४ ।** पत्र स० ६ । सा० १०<sup>९</sup> ४. ४} इला । ते० काल स० १६०६ (णक) । पूर्ण । त्रेष्ट्रस्थ । **प्राप्टित स्थान** — प्रप्रवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर ।

६६६२. प्रति सं०५ । पत्र स०७ । आ०९० है ८४ है डब्बाले० कार ∞ा आपूर्णा वेष्टन स०५७ । प्राप्ति स्थान—पार्थनाथ दि० जैन मन्दिर उन्दरगढ (कोटा)

६९६३. प्रति स०६ । पत्रस०१४ । झा०१२ ४४ ड॰व । ल०काल ≿ । पूर्णः । बेष्टनस० २०१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । टीकाकार रस्वनीर्ति शिष्य यशकीर्ति । उपासको के लिए लिली थी । प्रति प्राचीन है ।

६६६४. प्रतिसं०७। पत्र स०१०। झा०१२×४६चालेक्काल × ।पूर्एं। बेष्टनस० ३०६**। प्राप्ति स्थान** उपरोक्त मंदिर।

६**६६५. प्रतिसं० ⊏ ।** पत्र स०६ । स्रा०१० 📐 ४ डब्ब । ले० काल 🔀 । पूर्गा । वेस्टन स० २८३ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बवलाना (बुंदी)

**६९६६. जिनसहस्रताम— जिनसेनाचार्य** । पत्र स०३ ग्रा० ६२ ४४ दश्व । भाषा—सस्कृत । विषय— स्तोत । रुवज्ञान ४ । ले० काल ४ । पूर्णा । वे० स० २०३ । **प्राप्ति स्था**न— भ० दि० जैन मन्दिर श्रावेत । ६८६७ **प्रतिसं०२** । पत्रस०६ । प्रा०११×५ इच्च । ले०काल× । पूर्ण**ा वेष्ट**नसं० १२३४ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६६**८ प्रति सं०३।** पत्र सं०१३। घा० १×४ इञ्च। ले॰काल × । पूर्ए। बेष्टन स०४७१। **प्राप्ति स्थान** — म०दि० जैन मंदिर प्रजमेर।

६६६६. प्रति सं० ४ । पत्रस० १६ । प्रा० ११ ४ ४ है इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १६२ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६६७०. प्रति सं० ४ । पत्र सं०११ । द्या० ८ ४ ४ इल्डाले० काल 🗴 । पूर्णा वेष्टन स० १३०४ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

**६९७१. प्रति स० ६** । पत्रस० ३६ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस० १६३ । **प्राप्ति** स्थान—वि० जैन श्रंतायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-भक्तामर ब्राटि स्तोत्र भी है।

६९७२. प्रति सं० ७ । पत्रस० २८ । ले•काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन म० १४ । प्राप्ति स्थान  $\sim$  वि० जैन पत्रायती मन्दिर भरनपुर ।

विशेष --दो प्रतिया ग्रीर है।

६९७३. प्रति स० द्वापत्रस०१० । ग्रा० १०३ ४४ हुँ इच्छाले०काल ४ । पूर्णावेष्टनस० १३० । प्राप्त्रिः स्थान — दि० जैन पचायती मन्दिर क्रलवर ।

६९७४. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ११ । ग्रा० ११ ×४३ इञ्च । ले० काल स० १६०४ । पूर्णे । बेष्टन ग० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

६८७५. प्रति सं० १० । पत्र स० १२ । घा० ह $^3 \times ^4$  इश्वा । ले०काल स० १६३७ । पूर्ण । वेग्टन स० २४१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन सन्दिर पार्स्ताथ चीगान ब्रुदी ।

६८७६, प्रतिसं० ११ । पत्र म० ११ । ग्रा० ८४६ है इंच । ले०काल ४ । पूर्ण । बेप्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

६६७८. प्रतिसं० १३ । यत्र स० २४ । घा० ६१ ४४ इन्हा लेक्कान 🗴 । पूर्णा विष्टन स० ६७ ः। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैसावा ।

६६७६. प्रतिसं० १४ । पत्र स०२१-३४ । ग्रा० १२१४४ हुँ इश्वः । ले० काल 🗴 । मपूर्णः । वेष्टन स० ७५४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६८.०. जिन सहस्रनाम टीका—स्मरकीति  $\times$ । पत्रस० ६४ । बारु १२ $^1_x$  ४ $^1_y$  इत्य । भाषा—सस्रत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले०कान  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १२८६ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मदिर अजनेर ।

विशेष -- मृत्य ७ रु दस प्राना लिखा है।

स्तोत्र साहित्य ] ७२६

**६६८१. प्रतिसं०** २ । पत्र स० ७५ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इ व । ले०काल स० १६६२ मगसिर **शु**री ६ । पूर्ण । वेप्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर केखावाटी (सीकर)

६८६२. प्रतिसं० ३ । पत्र स०७७ । आ०१×५ इ॰ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

६६ स्**३. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० १४३ । झा० प्र्रे ४ १ इश्वः । ले० काल 🗶 । पूर्णः । वेष्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर दीवाना कासा ।

६६**८५, प्रतिसं० ५ ।** पत्र स० २ - म् । म्रा० १२ × ५ हे इच । **मे०काल** स० १७४२ मंगसिर इदी १४ । ब्रपुर्णे। बेग्रन स० ३२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दीवानजी काम।।

६६८५. जिनसहस्र नाम टीका—श्रुतसागर । पत्रस० १८७ । ग्रा० १२४६ इस । माषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । राज्काल ४ । ले० काल स० १६०१ ब्रासोज सुदी ६ । पूर्ण । बेष्ट्रनसंक ३६३ । प्राप्ति स्थान—२० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

६८८६. प्रतिसं०२ । पत्रस०१०१ । द्या०१३ × ५३ दश्वा । ले•काल स०१४६६ । पूर्सा । वैश्रन स०७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबत् १५६६ वर्षे पौष बुदी १३ भौभे परम निरग्नंबाचार्य श्री त्रिभुवनकीर्युपदेशात् श्री सहस्र नाम लिखापिता । मगनमस्त ।

६९८७. प्रति सं०३ । पत्र स०११० । ग्रा०१२ $rac{1}{2}$  imes६६८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर ग्रादिनाथ बुदी ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

६६८८. प्रति संख्या ४ । पत्रस० १०६ । घा० ११ ४ ४ है इला । से०काल अ । पूर्ण । बेष्टन स० २४० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रिमिनन्दन स्वामी, बदी ।

६६**८६. प्रति सं० ४** । यत्र स० ७३ । ग्रा०१२ 🗙 ४ इ॰वा ले० काला पूर्या वे**हनसं०** ३६० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६८६०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १३७ । झा० ११ x ४ /३२७ । ले०काल x ।पूर्ण । वेष्टुनसं० १३२-६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का द्वांगरपुर ।

६९९१. जिनसहस्त्र नाम वचनिका— × । पत्र स०२८ । घा०१०×४ इंच । भाषा— हिन्दी। विषय—स्तोत्र । र०काल्,× । ले० काल ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्णः। बेहन स०६ । **प्राप्ति स्थान**— वि• जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

६९६२. जिनस्मरण स्तोत्र— $\times$  । पत्रस $\circ$  १। भाषा—िहन्दी । विषय—स्तोत्र । र $\circ$ काल  $\times$  । ते $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं $\circ$  १६। **प्राप्ति स्थान**—िद $\circ$  जैन मन्दिर दीवानजी मस्तपुर ।

६८६३. जैनसायत्री— $\times$ । पत्रसं०  $\times$ । ग्रा०  $\times$ २ $^{1}{7}$  इंच। साया—संस्कृत । विषय—संस्कृत । र०काल  $\times$ । सं०काल स० १६२७ कार्तिक बुदी  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन सं० १०१६। प्रास्ति स्थान—म० दि० जैन मस्टिर ग्रजमेर ।

६८६४. ज्वाला मालिनी स्तोत्र × । पत्र सं०२० । घा०० × २३ इन्छ । भाषा - संस्कृत । विषय --स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनस० १४३६ । **प्राप्ति स्थान--**भ० वि७ जनसन्तर प्रजमेर ।

६६६५. ज्वाला मालिनी स्तोत्र—  $\times$  । पत्र सं॰ ५ । म्रा० ११ $\times$ = इश्वः। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णः। वेष्टुन स॰ ४५ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर तेरह्वयथी दौसा ।

६६६६. तकाराक्षर स्तोत्र— $\times$  । पत्रस० २ । प्रा० १०३ $\times$ ५ इन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६२२ । पूर्ण । बेष्टन स० २५४ । प्रास्ति स्थान— २० दि० जैन मन्दिर प्रवसेर ।

विशेष--- प्रत्येक पद तकार से प्रारंभ होता है।

६९९७. ताराग तराग स्तुति (पंच परमेष्टी जयमाल)—×ापत्र स०२। बा०६०५ इ.च.। भाषा—हिन्दी पद्यः विषय-स्तोत्र । ग०काल ×ा लेककाल ×ा पूर्णा वेष्ट्रत स०५३० ×ा प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का हॅनस्युगः

६६८ तीर्थ महास्म्य (सम्मेद शिक्षर विलास)— मनसुल्यरायः । पत्र ग० ११०। बा०१०) ४ ६९ टक्का भाषा— हिस्सी । विषय्—महास्य स्त्रीया । रक्काल स० १७४५ ब्रामीज सुदी २ । पूर्णा वेष्टम ग० ७६ × । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बहाबीसपथी दीमा ।

विशेष-- ज्ञानचद नेरापथी ने प्रतिनिधि की थी।

६९६६. **त्रिकाल संघ्या ब्याख्यान**— ×। पत्र सं०६। घा०११×४ इका भाषा-सस्कृत। विषय–स्तोत्र । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१५४**। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बोरमनो कोटा।

७००० **थंभरा पार्यताय स्तवन**—४ । पत्र म ०३। भाषा— प्राकृत । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वैष्ठन म ०६७२**। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पवासती मस्दिर मरतपुर।

७००१. दर्शन पच्चीसी—पुषानीराम । पत्र स०११। ब्रा०  $\times$  ६ इंच । प्राधा-हिन्दी प्रधा । विषय-स्वयन । ः प्रान  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । वेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ६ ध्वाल पचायती मदिर अनवर ।

विशेष--ग्रारितराम ने संशोधन किया था।

७००**२, प्रति सं०२** । पत्रसं०६ । आ०१२×६३ डंच । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १२७ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन ब्रग्रवाल पत्राग्रती मन्दिर ग्रलवर ।

७००३, दर्शन स्तोत्र—म० सुरेन्द्र कीत्ति । पत्र सं०१। प्रा० १० $\xi$ ×१, इन्छ । भाषा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल X। ते० काल X। वेष्टन २०६६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

७००६. नवकार सवैद्या—विनोदीलाल । पत्रम० १२ । ग्रा० ७ $\times$ १ इख । भाषा–हिन्दी पद्य । विद्य-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्तं । वेष्टन स० २४६-१८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इँगरपुर ।

७००७. **नवप्रह स्तवन**  $\times$  । पत्रस० १३ । या० १० $\times$ ४ इञ्च । माधा-प्राकृत, सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । यपूर्ण । वेष्ट्नस० २२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाला (व दी)

**चिशेष**— ३ से ६ तक पत्र नहीं हैं। श्रति संस्कृत टीका महित है।

७००८, नवप्रह स्तोत्र—भद्रबाहु। पत्र स०१। ग्रा०६्री ४४६ इस । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २३८ । प्राप्तिः स्थान-र्नाट० जैन महिर पार्थनाय जीगान वर्षो ।

७००६. नवप्रह स्तोत्र—  $\times$  । पत्रस०१ । प्रा०१०  $\times$  ४ $\frac{2}{9}$  इङ्ग । माया—सम्ब्रत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले•काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ४२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर लक्ष्यः, जयपुर ।

७०**१०. तवग्रह पार्श्वनाथ स्तोत्र**—  $\times$  । पत्र स० १ । ग्रा० १ $\frac{2}{3}$   $\times$  ४ इश्च । जाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ४४३ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७०११. निर्वासा काण्ड भाषा—भैया भगवती दास । पत्रसन् २ । आ० १०३ 🗶 ५ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । रन्काल सन् १७४१ । आमोज मुदी १० । पूर्स । बेष्टनसं ० ६०१ । प्राप्ति स्थान—दिन्जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

७०१२ प्रति स०२। पत्र स०२। घा०१  $\times$  ५ है इन्ना । ले० काल  $\times$  । बेष्टन स०६६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लम्कर, जयपुर ।

७०१३. नेमिजिनस्तवन—ऋषिवद्धंन । पत्रस०१। या०१०५ × ४ इच । आषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल × । से०काल × । पूर्णं। वेष्टन स०४६। प्रास्ति स्थान—दि० जैन खढेलवाल मन्दिर उदयपुर।

७०**१४. नेमिनाथ स्त्रंब—हेमचंद्र।** पत्रसं० १६। घा० ६<sup>2</sup>, ४ ४ इखा भाषा-हिली। विषय-स्तोत्र । र०काल ४। ते०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४३ ६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हांगरपुर।

विशेष-बोरी मध्ये संभवनाथ चैत्यालये लिखितं ।

७०१४. नेमिनाथ नव मंगल-विनोदीलाल । पत्रसः व । माधा-हिन्दी । विधय-स्तवन । रक्ताल सं० १७४४ । लेक्नाल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टन स० ४६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपर ।

७०१६. पद्मावरारे गोरा —समयसुन्दर । पत्रस० २ । आ० $\times$ ५ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्म) । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन स्वदेशवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--३४ पद्य हैं ।

७०**१८. पद्मावर्ती स्तोत्र** —  $\times$  । पत्रसं० ४६ । मा० ३  $\times$  ३ दञ्च । भाषा — सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १८८० । पूर्ण । वेष्टन स० ६६२ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर स्रजंभर ।

७०**१६. पद्मावती स्तोत्र**— $\times$  । पत्र स० ४। प्रा० ११ $\frac{1}{2}$   $\times$   $\frac{1}{2}$  इन्व । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६२२ । **प्राप्ति स्थान**—अ० दि० जैन सन्दिर प्रजमेर ।

७०२०. पद्मावती स्रोजि $-\times$ । पत्रस० २४। प्रा॰ १ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र र०काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहनसं॰ ६१३। प्राप्ति स्थान - म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७०२१. पद्मावती स्तोत्र —  $\times$  । पत्र सः ४ । मा॰ ११  $\times$  ५ है इत्र । भाषा — सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकान  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सः १०० । प्रास्ति स्थान—दिः जैन मंदिर सजनेर ।

७०२२. पद्मावती स्तोत्र—× । पत्र स० २ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल× । के०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पनायती मदिर भरतपुर ।

७०२३. पद्मावती स्तोत्र $-\times$ । पत्रसं॰ १०। भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र। र०कान  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टनस॰ २४४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपूर।

७०२४, प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । के०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन सं० ३४५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पद्माधती मन्दिर भरतपुर ।

७०२५. पद्मावती स्तोत्रा— $\times$  । पत्र स॰ ७२। मा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  ७ दश्व । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ १४६/७२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन ् पार्खनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष--यत्र साधन विधि भी दं. हई हैं।

७०२६. परमज्योति (कल्याम् मन्दिर स्तोत्र) भाषा—बनारसीहासः । पत्र स० ४। प्राः १२ $\times$ १ $_2^2$  इत्रः । भाषः—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं० ६०४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

७०२७. परमानन्व स्रोजि $-\times$ । पत्रसं॰ २। म्रा॰ १ $\times$ ६ इञ्च । मावा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । ८० काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं॰ २५ । प्राप्ति स्थान-कि जैन छोटा मिल्ट बयाता ।

७०२ द्व. पात्र केशरी स्तोत्र—पात्र केशरी । पत्र सं०५। मा० १२ ४६ इन्छ । माषा— —संस्कृत । विषय स्तोत्र । र० काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रत सं०३७० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७०२६. पात्र केशरी स्तोत्र टीका — X । पत्र स० १४। बा० १२ X ४ इश्व । भाषा— सस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल X । लेक्शल स० १६६७ बासोज बुदी ६ । पूर्ण । बेहन स० ३४४,४३४ प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०**२०. प्रतिसं० २** । पत्र स० १४ । ले०काल 🗴 । ब्रयूर्णं १ वेष्टन सं० ३५६/४३५ **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

७०**२१. पाश्वेजिन स्तुति— ×** । पत्र स**०१** । ग्रा०११×४ इ**च । भाषा** -सस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जेन<sub>्</sub> खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७०३२. पार्श्वजिन स्तोत्र—जिनप्रभ सूरि। पत्रस् ४। मार्थ ह $\{ \times x^3 \in \mathbb{R} \mid \mathbb{R$ 

विशेष-इति जिनप्रभ कृत पारसी भाषा नमस्कार काव्यार्थ।

७०३३. पारर्थं जिन स्तोत्र— $\times$  । पत्र स०३। ग्रा॰ ११ $\times$ ४ $१ व १ माणा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल <math>\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स॰ १६। प्राप्ति स्थान—म॰दि॰ जैन मन्दिर मजीर ।

७०**२४. पारवंदेव स्तवन—जिनलाभ सूरि ।** पत्र स० १७ । भाषा—हिन्दी । विषय— स्तवन । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ६४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर ।

७०**३५. पाष्ट्यंनाय छंद**—ह**र्षकोति**—  $\times$  । पत्र स० ४ । आ. ६२ $\times$ ४ $\frac{1}{5}$  इ.च । आपा– हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले.काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन सं० २०५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमङ्ख (टोक)

विशेष---२५ छद है।

तेरीवन जाऊ सोमा पाउ बीततडी सुखंदा है। क्या कहुं तोसूं सगत्मा बहोती तीमु मेरा मन उलैकडा है। सिद्धि दीवासी तिह रहवासी सेक्क बल सदा है। पत्राब निसाणी पासकप्राणी गुण हुपंकीति गवदा है। ७०३६. पार्श्वनाथ झंद--सब्धरूचि (हर्षरिच के शिष्य) । पत्र स. २ । प्रा० १० $\frac{1}{2}$ ४ $\frac{1}{6}$  इंच । नापा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं०३४५ । प्राण्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर दबनाना (दृदी)

७०३७. **पार्श्वनायजो को निशानी — जिनहर्ष** । पत्रशं० ४। प्रा०११ $\times$ ५ इञ्च । भाषाहिन्दी । विषय—स्तुति । र०काल  $\times$  । तें०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनसं० ३४१/४०६ । प्रास्ति स्थान--दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

ग्रन्तिम पद्य निम्न प्रकार है।

े तहा सिद्धादावासीय निरदावा सेवक जस विलवदा है।

घुघर निसागाी सा पास बलागाी गुरग जिग्गहर्प सुरादा है।।

**७०३ म. प्रति सं०२ ।** पत्र स०१४ । स्रा०७३ ४४ इन्दा। ले०काल स०१७६७ । पूर्ण। वेष्टत स०१२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुंदी।

७०**३६ पास्कंस्तवन**— ∷ापत्र स०१। स्ना०१०≾४्टै इन । माषा—संस्कृत । विषय— स्त्रीव । रक्काल × । ते०काल × । पूर्णः वेष्टन स०११८६ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन संदिर स्रुवनेर ।

७०४०. <mark>पार्श्वनाथ स्रावन— ४ । पत्रसः०१ । धा०११४४ इ.च । भाषा—हिन्दी पछ।</mark> रक्ताल ४ । लेक्नाल ४ । पूर्णा वेष्टनसः०१०४-६ । **प्राप्तिः स्थान** - दि० जैन मन्दिर वडा बीनपथीदीमा।

७०४ १. पास्वै ाय स्तवन $-\times$  । पत्रसः १ । ग्राः १० $\chi$ ४ इश्वः । भ्राः । सम्बन्धः । विषय-स्तवन । र०कालः  $\times$  । ते०कालः  $\times$  । पूर्णः । बेप्टनः म० ३६०/४६८ । प्राप्तिः स्थानः - दि० जैन मन्दिरः सभवनाथ उदयपुरः ।

७०४२ **पार्श्वनाथ स्टायन** — । पत्र स०३। आ०११४४ इञ्च । साथा — संस्कृत । विषय-स्त्रोत्र । रे०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । बेप्टन म०६०४ । **श्राप्ति स्थान** — भ०दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष - कही २ कठिन शब्दों के ग्रथं दिये हैं।

७०४३. पार्थनाथ (वेसंतरी) स्तृति —पास कवि । पत्रस० ३ । भाषा —सन्हत । विषय — स्तवन । र०काल × । लेकाल स० १७६८ । पूर्ण । वेष्टनस० ७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर तेरहपथी वसवा ।

विशेष-रचना का आदि अन्त माग निम्न प्रकार है।

श्रादि भाग---

मुजजत सपी सारवा मया करी मुक्त माय। तीमु प्रसन मुजजत तरणी कुमरणात श्री भावे काय। स्वालिदास सरिया किया रक्त बकी कविराज। महिर करे माता मुने निज सुत जाणि निवाज।।

## प्रन्तिम भाग---

जर्प सको जगरीस ईस त्रम भवरा प्रश्नित । ब्रद्गमुत रूप धृतुष्ट फिरा मिंग निर महित । घर घागा सह धाग्नु उद्योध मींप पविनाई । प्रकट सान पानाल सरग कीरति मुहाई । सिर्गालिक में वा पानु तन पूरण प्रश्नु केंकु ठपुरी । प्रयोधन पास किवराज डम नवीसो छट नेतरी।

इति श्री पार्श्वनाथ देसनरी छद सपुर्ण ।

७०४४. पाश्चेताथ स्तोत्र —  $\times$  । पत्र स०४ । बा० १२ $\frac{1}{2} \times 9$  हुन्छ । मापा — सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१-६२ माघ मुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१११ । प्रास्ति स्थान — दि० जेन मस्तिर प्रभिनत्वन स्वामी वृदी ।

७०४५. पाष्टवंताच स्तोत्र—  $\times$  । पत्र स० १ । प्रा० १३ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६ इ.च । भाषा—सस्त्रत । विषय —स्तोत्र । ए० काल  $\times$  । वेष्ट्र सं० ४१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नकर, जयपुर ।

७०४६. प्रतिसं०२ । पत्र स०२ । स्रा०११४४ ट॰व । ले०काल 🗴 । वेष्टन स०४३२ । प्राप्तिस्थान – दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपूर ।

७०४७. पाश्वेनाथ स्तीत्र (लथ्) — × । पत्र स०१ । आ० १० ×४५ इत्व । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तीत्र । २०काल × । लेक्सल स० १६६२ वैजाल मृदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३२६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

७०४८. **पार्श्वनाथ स्तोत्र—पद्मानंदि**। पत्र स०६। प्रा०१० $\frac{3}{4}$ ४४ $\frac{3}{4}$ इत्र। भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०कान  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनस०६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुदी)

विशेष-पत्र ३ से सिद्धित्रिय तथा स्वयभू स्तोत्र भी है।

७०४६. **पास्वंताय स्तोत्र--पर्याप्रमदेव** । पत्र स०१ । स्रा० १० $\frac{2}{8}$   $\times$  ४ इ**च**ा भाषा-संस्कृत । विषय--स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१४ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन मन्दिर बोरमसी कोटा ।

७०५०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० १ । या० १२ $\times$ ४ है इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल स० १८२२ । बेष्टन स० ६६० । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--पत्र पर चारो ओर सस्हत टीका दी हुई है। कोई जगह खाली नहीं है।

७०**५१. पोयह गीत —पुष्यलाम** । पत्र त०१। घा० १०३ × ४५ इंच । भाषा -हिन्दी। विषय -स्तोत्र । र०काल X । ने०कान X । पूर्ण । वेष्टन म० ६६ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन सहिर देवलाना (वंदी)। ७०**४२, पंच कत्यागाक स्तोत्र**—× । पत्र सं० ६ । प्रा० प्रदे<sup>×</sup> ४ दे इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३२२ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन महिर मजनेट ।

७०**५३. पंच परमेरुते गृर्ग---**  $\times$  । बेष्टन सं० ७ । घा० ११  $\times$   $^1_{7}$  इला । याथा—संस्कृत । विषय—स्तोत । रक्ताल  $\times$  । लेक्ताल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपूर ।

७०५४. यंच परमेष्ठी गुरा वर्गन $-\times$ । पत्र स०२०। बा०  $-\frac{2}{9}\times V_0^2$  इंच । माषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—स्तवन । रक्ताल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १७६-४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाय टोडारायसिंह (टोक)

विशेष-इसके ब्रतिरिक्त कर्म प्रकृतिया तथा बारह भावनाओ श्रादि का वर्गन भी है ।

७०**५५. पंचमगल—रूपचन्द** । पत्र स०६ । धा० १० $\mathbf{x}$  ५ ६७ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय-स्तवन । र०काल  $\mathbf{x}$  । ले०काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । वेष्टन म० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ध्रम्रवान मन्दिर उदयप्र ।

७०**५६, प्रतिसं० २**। पत्रस० ५। ब्रा० १०४६ $\}$  इन्छ । र०काल $\times$  । ते०काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४/६२ आस्टि **स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

७०५७. प्रति सं ३। पत्रस॰ ६। घा॰ १० $^1_1 imes 1^4_2 imes 1^4_3$  १। पूर्ण । बेष्टुनसं॰ २१६ प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बूंदी ।

७०५८. प्रतिसुं० ४ । पत्रस्य १८२३ । ग्रा० १९ २४ ४३ दश्वा । लेक्सल ४ । सपूर्णः । बेष्टनसंय ८७ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बूदी ।

७०५६. प्रतिसा० ५ । पत्र म०१२ । घा० ६ ४४ इ.च. । ने० काल ४ । पूर्ण । वेस्टन स० १८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर मादिनाय बुदी ।

७०६०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४ । प्रा० १०५४ ४ इला । ले०काल । पूर्ण । बेष्टन स० २०२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जुदी ।

७०६**१. प्रति सं०**७ । पत्रसः ०८ । ग्रा०६ 🗴 ५<sup>5</sup> इञ्च । ले॰काल । पूर्ण । बेष्टन स०४७ । **प्राप्ति स्थान** — दि॰ जैन श्लोटा मदिर बयाना ।

७०६२. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ११ । पूर्ण । ले०काल 🗴 । बेष्टन सं० ४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-एक प्रति ग्रीर है।

७०६३ प्रतिसं० ६ । पत्र सं० ७ । आ० ६२ ४ ७ इचा । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स**०** १४४/६८ । प्राप्ति **स्थान**—वि० जैन पाध्वेनाय भन्दिर इस्टरगढ । (कोटा)

७०६४. पंजबटी सटोक । पत्र सं०३। मा०१२ $\times$ ४ $^{3}$  इञ्च । माषा—संस्कृत । विषय—स्तोत । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टन स०४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० **पैन म**न्दिर लक्कर जयपर ।

विशेष--चौबीस तीर्थंकर एवं सरस्वती स्तुति सटीक है।

७०**६५. पंजस्तोत्र**— × । पत्रस० २१ । घा० ११ x ४ रेड्ड का भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल x । तेष्काल x । पूर्णं। वेष्ट्रन स० ७५ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोम्बर्ताकोडः

७०६६. पंचस्तोत्र—  $\times$  । पत्र सं० ७३। प्रा० १० $\times$ ५ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जन मन्दिर राजमङल (टोक)

विशेष - प्रति टीका महित है।

७०६७. पंचस्तोत्र ब्याल्या ४। पत्रस० ११। माला—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४। से•काल ४। पूर्ण । बेष्ट्रन स०३६/४४१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०६ म. पंचमीस्तोत्र—उदय । पत्र सं०१। घा०१० $ilde{x}$  १६वा। नाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र०काल  $ilde{x}$ । ते० काल  $ilde{x}$ । पूर्ण। बेष्टन सं०६७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन संदिर दबलाना वृंदी।

विशेष--धन्तिम पद्य निम्न प्रकार है--

नीम जिरावर तमित गुरवर निध वधूवर नायको । धाराद धाराी भजन प्रांगी मुल सतित दायको । वर विवुष धूवरा बिगत दूपरा श्री शकर सीभाग्य कवीण्वरो । तस सीम जपड उदय डींग परि स्वाल मधि मगल करो ।

इति पचमी स्तोत्र ।

७०६९. पंचवस्यारम् — imes। पत्रसं० १। म्रा०१०imes४, इत्र । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल imes। पूर्ण । बेष्टनसं०२३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बूदी)

७०७०. प्रबोधबावनी — जिनरंग सूरि । पत्रम० ८ । भाषा – हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रुकाल स० १७६१ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ४७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

७०**५१. बगलामुली स्तोत्र**— $\times$  । पत्र सं० ३ । घा० ६  $\times$   $^{3}$  ुं इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० १२४८ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर धक्रमेर ।

७०७२. **बारा धारा का स्तवन—ऋषमी (रिखब)**। पत्र सं०४। ग्रा० १०१ × ४ दे इ.च.। भाषा—हिन्दी। विषय – स्तुति। र० काल स० १७५१ मादवा सुदी २। ले०काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं०६१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना बूदी।

विशेष-अन्तिम कलश निम्न प्रकार है-

भलत वन कीधो नाम लीधो गोतम प्रश्नोत्तर सही। संबत् सतरे इंदचद सुभादवा सदी दोयज मही। तपगच्छ तिलक समान मदगुरु विजयसेन सूरि तर्णू । मागरमृत रिषभो इम बोले गाप श्रालोवे श्रापगा ॥७१॥

इति की बारा ग्राग को स्तवन सपूर्ण।

७०७४. प्रति सं०२ । पत्र स०६ । ग्रा०४ x ४ इत्था । लेक्काल 🗴 । पूर्णा। वेष्टन सं० १४४४ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष — हिन्दीटब्बाटीकासहित है। प्रति प्राचीन है।

७०७५. प्रतिसं० ३ । पप्र स०१५ । घा० १०×४ इ.च. । ले०काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टन स०१७६५ । प्रास्ति स्थान— भ०दि० जैन सन्दिर स्रवसेर ।

विशेष-- प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७०७६ प्रतिसंव ४ । पत्र सर्व । मार्च १०३ 🗶 ५ इचा । लेव्हाल सर्व १८७० माह सुदी १३ । वर्षा । वेकन सर्व २५२ । प्रास्ति १६याल—दिव जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-पद्मनदिकत पावर्वनाथ स्तीत्र भी है।

७०**७७. प्रतिसं० ५**। पत्रस० ६। क्रा० ११३,×४ इखा ने०काल स० १७४७ । पूर्मा। वेक्रनस० ३४३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मस्टिर लक्ष्यर जयपुर ।

विशेष - प्रांत दिल्पमा महिल है । प० तिलोकचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

७०७**८. प्रतिसं०६** । पत्र स०२७ । ब्रा०६×४ ] इञ्च । ले० काल स०१८१२ पोष सुदी बुदी ४ । पूर्णः बेष्ट्रन स०८१ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन सदिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रति सटीक है प० लालचन्द्र ने अपने लिये लिखी थी।

७०७६, प्रतिसरु ७ । पत्रसः ० । झा० ० ४ ६ १ इ.च. । ले०काल ४ । पूर्णा । वेष्ट्रसं ०६४२ । प्राप्ति-स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

• **विशेष** ५प्रतियः श्रीर है।

७०८० प्रतिसं०८ । पत्र स०८ । स्रा०६ १ × ४ १ ६घ्यः । से॰काल × । पूर्यः । बेट्न स० १०० । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन छोटामस्दिर बयाना ।

विशेष — दो प्रतिया ग्रार है।

७०**८१. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ६ । घा० ६३ ४५३ इचा । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १७२१४७ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाथ सन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७०६२. प्रतिसं० १०। पत्रस०६। स्ना० ११ 🗴 ५ इच । ले० काल स०१६६५। पूर्णः। वेटन सं०१६७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक)

७०८३. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ८ । घा० १०३ ४४ इत्व । ले०काल स० १७२० मगसिर बुदी १ । पर्यो । बेजनसं० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेय--- भाषार्थः रामनन्द तत् शिष्य श्री रायवदास के पठनाथं गोपाचल में प्रतिलिपि हुई थी । ७०८४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० २२ । या० १२×६ इखा । ले० काल × । पूर्णः । बेहनसं० ३२४ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन मदिर बोरमनी कोटा । विशेष --- प्रति कथा तथा टब्बाटीका महित है।

७०**८ ४. प्रतिस**० १३ । पत्रस० ७ । ब्रा० १०३ × ४ इ.च. । ले० काल × । पूर्णा । बेष्टन स० ४/२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रवासनी मन्दिर दुनी (टोक)

७० द६. प्रति सं० १४ । प्रतः ०१८ । आ.० २ ४ ६ इच्छा । ले० काल ४ । पूर्णा। बेष्टन स० ११ । प्राप्तिः स्थान — अग्रवाल दि० जैन पद्मायती मन्दिर ग्रव्यदा

विशेष -- प्रारम्भ में श्रादित्यवार कथा हिन्दी में श्रीर है।

७०**०७. प्रति सं० १५।** पत्र स०६ । झा० ७×६ इञ्च । ले० काल स० १६५१ । पूर्मा । वेष्टन स०१७१-७३ । **प्राप्ति स्थान** ाद० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

७०८८. प्रति स० १६ । पत्रस० ७ । ग्रा० १ ५४४ । तेश्वाल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनसंक ६४-३६ प्राप्तिः, स्थान - दि० जैन मन्दिर कोटडिया का ध्रंगरपुर ।

विशेच-हिन्दी व गुजराती टब्बा टीका महित है।

৬০ছে प्रतिसं० १७ । पत्र स० २१ । আ॰ १० '४७ इच । ले॰काल स० ११५१ । सपूर्ण । वेटन स० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—हि॰ जैन मन्दिर कोट्यों का नैराया ।

विशेष — मुख्यत निस्त पाठांका सम्रह और भी हे—तत्वार्थ सूत्र, कल्याए। मन्दिर, एकी साव । बीच के ११ में १६ पत्र नहीं है।

७०६० प्रतिसं०१६ । पत्रस० २-२४ । ले०काल x । प्रपूर्ण । वेष्टलस०६। प्राप्ति स्थान--- दि० जैन तेरहपश्ची मन्दिर बसवा।

**विशेष** —प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७०६१, प्रति सं० १६ । पश्रम० १ । प्रा० ६×४ इञ्च । भाषा-सस्का । विषय-स्तीत्र । ले•काल × । खप्गो । वटन म० ४७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७०६२ प्रतिसं २०। पत्रस० २-१६। घा० ११×६ इ.च. लेक्काल 📐 । स्पूर्ण । बेष्टन स० ४३३ । **प्राःत स्थान** —दि० जेन सभवन थ. मन्दिर उदवपुर ।

**विशेष** – प्रति सरकत टीका महित है।

७०६**३. प्रतिसं० २१** । पत्र स०१६ । स्रा०१०imesद च । ने०कान imes । पूर्गा वेष्ट्रत स० १११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन क्षत्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- कही कही हिन्दी में शब्दों के ग्रर्थ दिये हैं।

७०६४, प्रति सं० २२ । पत्र म० ४ । घा० ११×४ इ.च । ले० काल स० १७५८ । पूर्णे । वेष्टन स० २६७ । प्राप्ति स्थानः दि० जैन धप्रवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष-घटा करां यत्र भी है।

७०६५. प्रति सं० २३ । पत्रस०१२ । धा० ६४ इञ्च । ले० काल स०१६६० । पूर्ग् । वेष्टन ४४ ६६ । प्रास्ति स्थान दि० जैन मदिर सादवा (राज०)

विशेष - भादवा में भवरलाल चौधरी ने लिप की थी।

७०६६. प्रति सं० २४ । पत्र स० ११ । प्रा० ११ $\times$ ७ इञ्च । ले० कात  $\times$  । पूर्या । बेष्टन सं० २५/६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर भादवा (राज०)

विशेष-प्रति हिन्दी अर्थ सहित है।

७०**२७. प्रतिसं० २४।** पत्रस० ८। ग्रा० ८×४ इञ्च। ले॰काल ×ा पूर्ण। वेष्टनसं० १८८। **प्राप्ति स्थाम**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

विशेष--एक प्रति और है।

७०६८. प्रतिसं० २६ । पत्र स०६ । ग्रा०७ १४ ४ ई इश्व । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १६१ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलाबाटी (सीकर) ।

विशेष — उमास्वामि इत तन्वार्थनुत्र भी है जिसके ३२ पृष्ठ हैं । श्राच्युराम सरावगी ने मदनगोपाल सरावगो से प्रतिनिधि कराई थी ।

७०**६६. प्रतिसं**० २७ । पत्र स० ४ । घा० ८ ४ इथा । **से०काल** ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४८-१३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिन नेमिनाथ टोडानगर्वसिह (टोक)

विशेष — कही २ कठिन शब्दों के ग्रथं दिये हैं।

**७१००. प्रति स० २८ । पत्रस० ८ ।** আ० ८. ४४ ॄे इञ्च । ले०काल स० १६४८ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनसं० १५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन सडेलवाल पचायती मदिर अलवर ।

विशेष—इस प्रति मे ५२ पदा है। प्रति स्वर्णाक्षरी है। भ्रत्निम चार पद निम्न प्रकार है—

> नाथ पर परमहेव वचोभिदेयो । लोकत्रयेपि सकलार्थं वदस्ति सब्वं । उच्चैरतीय भवत. परिघोषयेनी । नैदर्गभीर सरद दमयः सभाया ॥४६॥ वृद्धिदिव सुमनसा परितः प्रपातः । त्रीतिप्रदा सुमनसा च मधुवताना, प्रीती राजीव सा सुमनसा सुकुमार सारा, सामोदस पदमराजि नते सदस्या ॥५०॥ सुप्ता मनुष्य महसामपि कोटि संख्या, भाजा प्रभापसर मन्बह माहसति। तस्यस्तमः पटलभेदमशक्तहीन, जेनी तन् द्युतिरमेष तमो पहुती ।।५१। देवत्वदीय शकलामलकेवलाव, बोधानि गाद्य निहयद्ववरत्नगणि। घोष. स एव यति सज्जन तानमेने, गभीर भार भरित तब दिव्य घोष: ।।५२॥

७१०१. प्रतिसं० २६ । पत्र म० ७ । ले० काल सं० १६७६ । पूर्ण । बेपून स० ७३३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-सम्हत टीका गहित मिर्जापुर में प्रतिलिप हुई। महार में ५ प्रतियां भीर हैं।

७१०२. प्रतिसं० २०। पत्र सं०६ । घा० १००ुँ ४४०ुँ इला । ले०काल स० १८७२ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स०१२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर घमिनन्दन स्वामी, बुंदी ।

७१०३. प्रति सं०३१ । पत्र स०२४ । आ०११४७ इ.चा । ने०काल स०१६६४ । पूर्ण । वेष्ट्रत स०१४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर घमिनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष — ४६ मश्र यत्र दिये हुए है। प्रति ऋदि मत्र सहित है।

७१०**४. प्रति सं०३२।** पत्र स०१०। घा०१०×४ इच्चा। ले० काल सं०१६०८। पूर्ण। बेष्टन स०२२१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ लोगान बुंदी।

७**१०५. प्रतिसं० ३३** । पत्र स०६ । आ० १०१ ४६ डञ्च । ले० काल सं० १६०४ । पूर्मा । बेष्टन स० २२४ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मंदिर ।

विशेष --- व दी में नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिनिधि हुई थी । संस्कृत में संकेतार्थ दिए है ।

७१०६. प्रति सं० ३४ । पत्रस०४ । ले॰काल × । पूर्णे । वेष्ट्रन स० २२**४ । प्राप्ति स्थान**-ज्युरोक मन्दिर ।

विशेष-प्रति प्राचीन एव जीर्ग है। ३ प्रतिया और है।

७१८७. प्रतिसं० ३४ । पत्र स० मः । प्रा० म्ह्र्रे ४२ हुँ इञ्च । ले० काल स०१८३४ । पूर्ण । वेष्य स०१२० । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृंदी ।

विशेष -- स्वराधारों में लिखी हुई है। श्लोकों के चारों स्रोर भिन्न २ प्रकार की शीन वाईर है।

७१० ६ भक्तामर स्तोत्र भाषा ऋद्धि मत्र सहितः — × । पत्रस० ७ । झा० ६३ ४४ ६ खा। भाषा-हिन्दी (पदा) । विषय-स्तोत्र एव मत्र ज्ञास्त्र । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ११६ ६ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर स्रवमेर ।

७१०६. भक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र सिहार—  $\times$  । पत्र स०२६ । द्या०१३ $\times$ ७१ इन्थ । माषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते० काल स०१६२० । प्रपूर्ण । बेष्टन स०२२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष - प्रति जीएाँ है।

७१**१०. प्रति सं० २।** पत्र सं० २४ । प्रा० १० ४६ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्लं । बेष्टन स० १६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर शैलावाटी (सीकर)

**७१११. प्रति सं० ३ ।** पत्र स०१–२४ । आ०६imes६ $^1_x$  इञ्च । ले० काल imes । स्रदूर्णं । बेहुन, सं०१३४–६२ । प्रा**प्ति स्थान** – दि० जैन मंदिर कोटडियों का ड्रंगरपुर ।

७११**२, प्रति सं० ४** । पत्र स० २३ । मा० १०×६ इच । ले० काल × ) स्रपूर्ण । देस्टन स० १३५-६२ प्रास्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

७११३. प्रति सं० ५ । पत्रसं० ४६ । घा० ६×६६वा। ले० काल × । पूर्णं । बेष्ट्रन सं० ३८६-१४४ । प्रास्ति स्थान—वि० जैन मदिर कोटडियो का हंगरपुर ।

७११४, प्रतिसं० ६ । पत्र स० २४ । घा० १० $^2_i \times ^2_i$  इन्छ । ले० कास  $\times$  । पूर्ण । वेष्टतस० ६३/४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर पार्थनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७११**४. प्रति सं०७ ।** एव स०४५ । द्या० १०imes४ इश्वः । ले० काल imes । ब्रपूर्एं । वेष्टन स०२५४ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रूटी)

७११६. प्रतिसं० म । पुत्रस० १-२६ । ग्रा० १०×४ ¦ इश्व । ले•काल × । श्रपूर्ण । वेष्टन स० ३७० । प्राप्ति स्थान—(६० जैन मन्दिर दवलाना (बृदी)

७११७. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ४२ । घा० ६imes६ इञ्च । ले०काल imes । घपूर्एं । बेष्टनसं० ३४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर दीवा 4जी कामा ।

७११**८ प्रतिसं०१०।** पत्रस०८६। धा०६<sup>९</sup> ४४ डखा। ले०काल म०१८४६ भाववा बुरी १४। पूर्ण। यटन स०७३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैसावा।

**७११६. प्रतिसं० ११** । पत्र म० १६ । ग्रा० ६ रें ४४ इचा । लेब्बल स० १७६२ फाल्गुन सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर नागदो बूटी ।

७१२०. प्रतिसं० १२ । पत्र स०२७ । बा०१० रे ४७ है इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०६० । प्राप्ति स्थान— वि० जैन महिरा श्री महाशीर बंदी ।

विशेष--वोवे जगन्नाथ चदेरीवाने न चन्द्रपुरी मे प्रशिविष की थी।

७१२१ मक्तामर स्तोत्र ऋद्धि मत्र सहित —  $\times$ । वत्र स०२४-६६ । घा०४४४ ८०० । मापा-सन्कृत । विषय-स्तोत । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । श्रपूर्ण । वेष्टन म०७४। प्राप्ति स्थान—वि० जैन सन्दिर ग्राप्ति। ये वी।

७१२३. भक्तामर स्तोत्र ऋदि मंत्र सहित— ४ । पत्र सन्याथ । बार्घ ५ ४६ द्वा । भाषा–सस्त्रा । विषय+शत स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । वेष्टन सर्घ६० । प्राप्ति स्थान— दिर्जन मन्दिर लक्कर, वयपुर ।

७१२४. सक्तासर स्तोत्र टीका—श्रमरप्रम सूरि । पत्र म०१०। भाषा—स्स्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । ले०काल स०१६१२ । पूर्ण । वष्टन स०४६०। **प्राप्ति स्था**ने – दि० जैन पद्मायती मदिर भरतपुर ।

७१२५. प्रतिसं०२ । पत्र स.०२ ८।। ले० काल स०१ ६ ६ ६। पूर्णं। वेग्टन स० ७४४ । प्राप्ति स्थान—र्द० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष-पत्र स०१६ में जीवाजीव विचार है।

७१२६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ६ । आ० ६ ¦ 🗙 ४ इचा । ले०काल 🗴 । पूर्णः। वेस्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बंर ।

विशेष —टीका का नाम मुखबोधिनी है। केवल ४४ सूत्र हैं। प्रति श्वेताम्बर ग्राम्ताय की है।

७१२७. सकासार स्तोत्र टीका - × १ पमस० २६ । घा० १०३ x ४३ इच्छ । ले०कास x । पूर्ण । वेष्टनस० २४७ । प्राप्ति स्थान --- भ० दि० जैन मस्दिर सत्रतर । स्तोत्र साहित्य ]

680

विशेष--टीका का नाम सुख बोधिनी टीका है।

७१२मः प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । छा० ११ रे ४ ५ हुङ्च । **लेक्सल 🗴 ।** छपूरा । बेष्टनसं० १४३ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर छजमेर ।

७१२६. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ११४ । या० ९०० ४५ १ इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १३२४ । प्राप्ति स्थान — स० दि० जैन मन्दिर सबोर ।

७१३०. प्रति स०४ । पत्र म०६७ । ग्रा० ८ ४ ४ १ इ.च. । ले० काल 🗶 । सपूर्णा । वेप्टन स० १८६ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७१६**१. प्रति सं०५ ।** पत्र स०१२ । म्रा०१०×४ इ**च । से •काल सं०**१६६७ । पूर्ण । वेष्ठन स०१३२ । **प्राप्ति, स्थान** – दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुदी)

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवत् १६६७ वर्षे ग० श्री गढु श्री जिस्हदास शिष्य ग० हांविमल लिखितं नरायसा नगरे स्वय पटनार्थ।

७१३२. प्रति सं० ६ । पत्र स० १२ । या० ६१ ४६१ इच । लेल्काल सं० १६३२ काती बुदी ६ । पुर्णु । बेटन स० १५४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर फ्लेडपर शेखाबादी (सीकर)

७१३**३. प्रतिसं**०७ । पत्र स०५ । मा०१०१ ४४ १ इच्छा ले**० काल ४** । धपूर्ण। बेष्टन स०७१२ । प्रास्ति स्थान— टि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर।

७१३४. प्रतिसं० ८ । पत्र स०११ । धा०११४७ 'इञ्च । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रत स० १४६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रीभनन्दन स्वामी, बुदी ।

७१**२५. प्रतिसं० ६ ।** पत्रस**० ४१ । या० १०**ी ४४१ इ.च.। ले० काल 🗙 । पूर्ण । देष्टुनसं० २० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाञ्चेनाथ चौगान बुदी ।

विशेष -- हिन्दी टीका भी दी हुई है।

७१३६. प्रतिसं०१०। पत्रस०१४ । झा०१० $\times$ ४३ डवा। ले०कालः  $\times$  । झपूर्णः । बेष्टन स०२६४ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मदिर दबलाना (ब्रुदी)

७१३७. प्रतिसं० ११ । पत्र स०२१ । आ० ११ $\times$ ४ हुँ इस्त्र । ले० काल स०१८४० सगहन बुदी १ । पूर्ण । बेटन म० १८१/४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष -- लानेशे ग्राम मे प्रतिलिशि हुई थी।

७१३ स. प्रतिसं० १२ । पत्र स०१४ । मा०१०imes१ $^2$ इञ्च । ते०कालimes । पूर्ण । बेप्टन ए० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७१३६. प्रति स० १३ । पत्रस० २६ । ग्रा० १२imes६ इस । ले० काल imes । पूर्ण । बेप्टन स० १३/३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवस्त पचावती मन्दिर धलवर ।

विशेष-सत्रों के वित्र भी देरले हैं।

७१४०. प्रतिसं० १४ । पत्रस० ८० । बा० ६ र्रं ४ ६ खा । ले∙काल メ ⊮ प्रपूर्ण । बेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना । विशेष--गुटकाकार मे है।

७१४**१. प्रतिसं० १**४ । पत्र स $\circ$  ३६ । घा $\circ$  ६imes४ $^{1}_{4}$  इख । ले $\circ$  काल सं $\circ$  १६५ $\circ$  ज्येष्ठ बुदी १४ । पूर्ण । वेल्टन स $\circ$  ७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

७१४२. प्रतिसं० १६ । पत्रसः० ४० । ग्रा० १२४७ है इंच । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेट्टन स० ६६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा ।

७१४३. **प्रतिसं०१७।** पत्रस०२४। द्या०११x७ इश्वाः ले०काल स०१६६६। पूर्णं। वेष्टुनसं०८६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलाबाटी (सीकर)

विशेष--प्रति स्न्दर है।

७**१४४. प्रतिसं० १**८ । पत्रस० २४ । द्वा० १०×४६च । ले०काल × । पूर्णं । वेष्ट्रत स० २६३-११५ । **प्राप्ति स्थान**—दिञ्जैन मदिग् कोटडियो का इनग्पूर ।

७१४५ त्रतिसं०१६। पत्र स०२७। ब्रा०६ $\frac{1}{2}$ ४६ $\frac{1}{4}$  इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्गं । बेहन स०४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७१४६. मृतिसं०२०। पत्रस०२४। लेक्सल $\times$ । पूर्गः। वेटन स०४५०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुरः।

७१४७. अक्तामर स्तोत्र बालावबोध टोका—×ाण्य म०२-३४। ग्रा०१२×४० उन्ता । भाषा-संस्कृत-हिरी । विषय-स्तोत्र । र०काल ×ा ले०काल म०१६४४ श्राषाढ बुदी ७। पूर्ण । बेहन स०१४३ । प्राप्तिः स्थान-प्वि० जैन मन्दिर घादिनाथ बृदी ।

७१४ म अक्तामर स्तोत्र बालावबोध टीका —  $\times$  1 पत्र स०११ । द्या०१२ $\times$ ६ स्था। आया-हिन्दी गद्या। विषय स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ने०काल स०१ ५३६ । पूर्ण । बेष्टुन सं०३५६ । प्रास्ति स्थान —दि० औन मन्दिर दवलाना (बुरी)

७१४६ भक्तामर स्तोत्र भाषा—ग्राजैराज श्रीमाल । पत्रस० २४ । प्रा० १० $\times$ ५ $^1$  दञ्च । साथा—सङ्कत हिन्दी । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २०५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७१५०. प्रति सं० २ । पत्रस० १३ । ले॰काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६७ । प्राप्ति स्थान—-दि० जैन प नावती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

७१५१. मक्तामर स्तोत्र माया—नथमल बिलाला । पत्रसं० ५२ । ग्रा० १०४५ इन्छ । भःमा—हिन्दी । बिषय—स्तोत्र । र०काल सं० १०२६० रेष्ठ मृदी १० । ले०काल सं० १००४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । बेष्टनस० १५० । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

७**१५२ प्रति सं०२।** पत्रसं०५०। घा०११×५३ इन्छ। ले० काल सं०१०६५५ । पूर्यो। वेष्टुत सं०१३६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक)

विशेष-प्रति ऋखि मत्र सहित है। तक्षकपुर में प्रति लिपि हुई थी।

७१५२. प्रति स०३ । पत्रस०२-४४ । ग्रा०११ × ६ ; इञ्च । ले०काल × । श्रपूर्स । बेष्टनसं०१४-३४ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर बडाबीसपथी दीमा

७१४४. भक्तामर स्तोत्र माया- जयबद छाबङा । पत्र स० ३६ । झा० म्रै ४ म्र्रे इंच । माया--हिन्दी । विषय--स्तोत्र । र०काल स० १८७० कार्तिक बुदी १२ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ६९७ । प्राप्ति स्थान---४० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष - लानभोट वासी प० विहारीलाल बाह्मए ने प्रतिनिध की थी।

७१**५५. प्रति स० २** । पत्र स० २६ । ले० काल स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति** स्थान—दिः जैन प्रवायकी मदिर भरतपुर ।

७१६६. प्रति स० ३ । पत्रस०२० । झा० १३ ×८ } इञ्च । ले० काल स० १६५६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्रवाल प्रचायती मन्दिर झनवर ।

७१५७. प्रति स०४ । पत्र स०२२ । म्रा०१२ ४ ८ इन्छ । लेक्साल० स०१८०८ ॥ पूर्ण । बेष्टतः स०१७२ । प्राप्ति स्थान -- दि० जैन खडेलवाल पचायनी मन्दिर अलवर ।

विशेष — दीवान वालगुकन्दर्जा के पठनावं प्रतिलिपि की गयी थी। एक दूसरी प्रति २० पत्र की स्रोर है।

७१५६. प्रतिसं० ५। पत्र स०२०। आ०११×५ै इखा ले० काल स०१६६४ मगसिर बुदी १०।पूर्ण। बेप्टन स०१२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फनेहपुर शेलावाटी (सीकर)

७१**५६. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ३८ । प्रा० ११ 🗴 ४} दंच । ले०काल स० १६५४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६५ । **पाप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

७१६०. सकामर स्तोत्र साधा— X । पत्र स०४। ब्रा० १०३ X४३ डवा। भाषा— हिन्दी (पद्य)। विषय स्तोत्र । रुकाल X । ले० काल X । पूर्ण । वेटटन स०२-४। **प्राप्ति स्थान**— — म० वि० जैन प्रदिर अजभेर ।

## धावि भाग-चौपर्द

ग्रमर मुकुटमिए। उद्योत । दुरित हरए। जिन चरणह ज्योत । नमह त्रिविवयुग ग्रादि ग्रगर । भव जल निधि पर तह ग्राधार ।।

प्रन्तिम---

गत्तामर की भाषा भली । जानिपयो विचि सत्तामिली । मन समाय **जिप करहि** विचार । ते नर होत **जयशी** साह ।।

इति श्रीभक्तामर भाषा सपूर्ण।

**७१६१. भक्तामर स्तोत्र भाषा**—imes । पत्रस॰ ५० । भाषा–हिन्दी । विषय–स्तोत्र । र०कालimes । ले०कालimes । पूर्णः । बेटुन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--अन्तिम पत्र नही है।

७१६२. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका — विनोदीलाल । पत्र सं० १७३ । झा० ६२ ४ ४३ इञ्च । माषा-हिस्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल सं० १७४७ सावल वृटी २ । ले० काल १८४३ सावल दुरी म । पूर्ण । वेष्टुन स० २१४ । प्राप्ति स्थाम—दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर इन्दराद (कोटा) । विशेष -- प्रति कथा सहित है।

७१६३. प्रतिसं० २ । पत्रस० २३० । ले०काल स०१८६५ फागुन मुदी २ । पूर्ण । वेष्टन स०५ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर दीवानजी सन्तपुर ।

विशेष-- कम्हेर नगर में लिखा गया था।

७१६४. प्रतिसं० है। पत्र स० १७३। ले॰काल 😗 । धपूर्णः। बेष्ट्रन स० १। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवानजी मरतपुर।

७१६५. प्रतिसं०४। पत्र स० १२०। ले० काल 😗 । पूर्ण । वेशन स०४१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरनपुर।

विशेष - १६२६ में मन्दिर में चढाया था।

**७१६७. प्रतिसं०६ । पत्रस०१**३६ । प्रा०१२ ४८ ६९४ । ते०काल म०१६६६ । पूर्ण । केक्तस०१७३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खंडेलवाल प्रवासनी मन्दिर मुखदर ।

७१६६. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १६६ । आ०१३ ४७ इला । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । येप्टन स०१४२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मस्दिर नेमिनाथ टोडारायरित (टॉक)

७१६६. प्रतिसं∘ प्राप्तसः १८६। ग्रा०१२४७ इञ्चातेककान स०१८७६। पूर्या। वेष्ट्रतस०६२। प्राप्तिस्थान—दि०जैन पचायनी मन्दिर वयाना।

७१७०, प्रतिसं० ६ । पत्रम० १७४ । ले॰काल imes । स्रपूर्ण । येष्ट्रनस० १३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पत्रास्ती मन्दिर हण्डायालो का डीग ।

विशेष--- ६५ से भागे पत्र नहीं है।

७**१७१ प्रतिस०११।** पत्रस० २२६। ग्रा०१२ ॄेर् उड्याले क्लाल स०१८६५ । पूर्ण। बाह्यस्य स०१४। प्राप्तिः स्थाना—दि० जैन पचायती सन्दिर कासा।

७१७२. मक्तामर स्तीत्र टीका—संख्यिद्धं न । पत्रस० २१ । धा० १० × ४ ६ इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ता । बेप्टन म० ७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

७१७३. भक्तामर स्तोत्र भाषा टीका — हेमराज । पत्र स०७६ । धा०६ ४ ६ इच । भाषा — हिन्दी । विषय स्तोत्र । रब्बाल ४ । नेब्काल स०१७७० । पूर्णा वेहर स०१५०४ । प्रास्ति स्थान — स०दि० जैन मन्दिर अवमेर ।

भक्तामर टीका सदा पठै मुनैजो कोई।

हेमराज सिव सुख लहै नन मन बख्रिल होय।

विशेष — गुटका ग्राकार मे है।

७१७४. प्रतिसं० २ । पत्र स०१४ । ग्रा० ७ $\S \times ilde x$  इश्व । ते० काल imes । ब्रपूर्ण । बेष्टनसं० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डींग ।

विशेष-- हिन्दी पद्य सहित है।

७१७५. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ४ । घा० ६ $rac{3}{2}$  imes  $rac{3}{2}$  स्व । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टनसं० १२३–५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

**विशेष** — हिन्दी पद्य टीका है ।

७१७६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० ४ । आ० १० 🗶 ४ इश्व । । ले० काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टन स० २४७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर इन्दराड (कोटा)

विशेष -- हिन्दी पद्य है।

७१७७. प्रतिसं० ५ । पत्र स० २८ । ले०काल स० १८६६ ज्येष्ठ शुक्ला ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० १५४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पवायती सन्दिर भरतपुर ।

विशेष--जोधाराज कामलीवाल ने लिखवाई थी। हिन्दी पद्य है।

७१७८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ११२ । आ० ४३ × ५३ इचाः लेकाल स० १८२० माध बुदी ४ । पूर्णः वेष्टन स० १२० । प्राप्ति स्थान – दि० जैन छोटा मन्दिर वयानाः।

**विशेष**— वाटिकापूर में लिपि की गई थी। प्रति हिन्दी गद्य टीका महित है। गूटकाकार है।

७१७६. प्रतिसं०७ । पत्र स० ६६ । ग्रा०६ $\times$ ४ ेृ इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेध्दत स०३४५ । प्राप्ति स्थान वि० जैन मन्दिर दीवान जाकामा ।

विशेष---हिन्दी गद्य एव पद्य दोनों में ग्रर्थ है।

७१८०. प्रतिस० ६ । पत्रस० २६ । ग्रा० १०×४ ॄं इचा । ले∙काल सं०१७२७ । पूर्मा । वेष्ट्रन स०२४३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

**विशेष**—हेमराज पाड्या की पुस्तक है।

**७१८१. भक्तानर स्तोत्र भाषा टीक**(-- × । पत्र स० २०। प्रा० ११क्वे ४ ५ इश्व । भाषा—सरकृत, हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रब्कान ४ । ले० काल न०१८४४ मगमिर सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टनस०१६७ । **प्राप्ति स्थान**—स० दि० जैन मदिर प्रजमेर ।

विशेष---प० चिमनलाल ने दुलीचद के पठनार्थ किशनगढ़ में प्रतिलिपि की थी।

७**१८२ भक्तामर स्तोत्र टीका — गुराकर सूरि।** पत्र स० ६४। गाया- मरमूत। विषय-स्तोत्र। रक्ताल × । तेकाल × । पूर्ण। वेषुन स० ६०४। **प्राप्ति स्थान** —रि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर।

७**१८२. प्रति सं० २** । पत्र स० ५४ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन बडा पचासनी मन्दिर डीग ।

७१८४ भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—कनक कुशल । पत्रस० १४ । ग्रा० १०८४ इ.च । माया-सम्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल स० १६८२ ग्रासीज मुदी १ । पूर्ण । त्रेष्ट्रनस० २६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मिटर चीमान वृदी ।

विशेष —वैराठ नगर में विजयदशमी पर रचना हुई थी। नारायना नगर में तयनरूनि ने प्रतिनिधि की थी।

७१=५. भक्तामर स्तोत्र वृक्ति — रस्तवन्द्र । पत्र स०२४। मा०११ $\frac{1}{2}$  ४ इवा । भाषा — संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१२६१ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

७१८६. प्रतिसं०२ । पत्रस०४६ । स्रा०११४४ ६ च । ले०काल स०१७४७ बगहन सुदी ७ । पूर्यो । बेष्टन स० ३७४–१४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वारपूर ।

७१८७. प्रति सं ३ ३ । पत्रस० ४६ । प्रा०१३४ ८ । इञ्च । ले० काल स०१८३४ पौष बुदी ६ । पूर्ण । वेप्टन सं०१७ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मदिर खजमेर ।

विशेष — सिद्धनदी के तट शीवापुर नगर में श्री चन्द्रप्रभ के मन्दिर में करमसी नामक श्रावक की प्रेरिए। से ग्रंथ रचना की गयी। प्रतिनिधि कामा में हुई थी।

**७१८८. प्रतिसं० ४** । पत्रस**० १४**-४३ । ले०काल सं०१८२४ । घपूरों । वेष्टनसं० ६३ । **प्राप्ति** स्यान—दि० जैन पत्रायती मदिर कामा ।

विशेष-प्रति जीगाँ है।

७१८६. भक्तामर स्तोत्र बृत्ति—बिंग्रायमस्त । पत्र सन् ४७। ग्रावन् ४ ३० है स्व । आधा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रक्ताल संग्रेश्यायाः सुदी ४ । लेन्काल ४ । पूर्णे । तेष्ट्रन सन् १३१३ । प्राप्ति स्थाम—भन्विक जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**७१६०. प्रतिसं० २**। पत्रस**० ४७**। ग्रा० १० × ४<sup>१</sup> इच्चा लेक्काल स० १७४६ भाववा सुदी ६। पूर्णा वेष्टुनस० १४१४। प्रा**प्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७१९**१. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० ६४ । प्रा० १० $imes imes^2$  इ.ख । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टनस० ३४८ । प्रा**रित स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७१६२. प्रतिसं० ४ । पत्रस०४२ । बा०१०४४ इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष--भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य अरु मेघ ने प्रतिनिधि की थी।

७१६३. प्रतिसं० ४. । पत्र स०३७ । ब्रा०६१ ४४६ इ.चाते० काल सं०१७६३ माहमृदी ४.। पूर्णावेष्टन स०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यो कानैसावा ।

७१६४, प्रतिसं०६ ।। पत्र सस्या४८ । या० १०३ ४४ इच्च । ले० काल सं०१७४१ सावन सदी ४ । पूर्ण । बेष्टन सत्या३८६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष---बगरू ग्राम में सवलसिंहजी के राज्य में प० हीरा ने ग्रादिनाथ चैत्यालय में लिपि की थी।

७१९५. प्रतिसं० ७ । पत्र स० ४३ । या० १० $\frac{1}{2} \times Y_{2}^{2}$  इञ्च । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेण्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर धर्मिनन्दन स्वामी बूबी ।

विशेष वृदवादिमध्ये पं॰ तुलसीद्वादसी के शिष्य ऋषि प्रहलाद ने प्रतिलिपि की थी।

७१६६. प्रतिसं० मा पत्र सं० ४२। ग्रा०६ 🗙 ४% इच्छा ले० काल 🗙 । पूर्ण। केष्टन स०३४५। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ग्रीभनत्दन स्वामी सूदी।

७१**६७. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ३६ । झा० ६ ४ ६ इञ्च । से० काल स० १८६६ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स० १५६ । प्राप्ति **स्थान**—हि० जैन मन्दिर दबलाना (बूंदी)

विशेष-- अत्र विमल के पटनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

७१६ स. प्रति सं० १० । पत्रसं० ३४ । घा० ७३ ४४ ई इथा । ने० काल सं० १७८२ वैशासक इदी १२ । पूर्ण । बेटन सं०७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दवलाना (वृंदी) । ७१९६. प्रतिसं० ११। यत्र स० ३६। मा० १० $\frac{3}{4} \times \frac{3}{4}$  इचा। ले० काल स०१ ६३५ कार्तिक सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन स० ६३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

७२००. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ४१ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ इञ्च । ते० काल स० १०१७ माघ बदी १३ । पूर्तः । येष्टन स० ६४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-नाथुराम बाह्यए। ने लिखा था।

७२०१. प्रतिसं० १३ । पत्रस० २-३७। ले० काल स० १७३६ । अपूर्णं । वेट्टन स० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर डीग ।

विशेष-कामः मे प्रतिलिपि हुई थी।

७२०२. प्रतिसं०१४ । पत्र स० ३३ । म्रा० ११×४ इ.च. । ले० काल स० १६७२ । पूर्णः । बेष्टन स० २४१ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन म्रप्रवाट मन्दिर उदयपुर ।

७२०३. प्रतिसं० १४ । पत्र स० २४ । घा० ११ × ४ | दश्व । ने० काल स० १७१३ । पूर्ण । बेष्टुत स० ७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७२०४. प्रतिसं० १६। पत्र स०४३। ले॰काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन स० ४३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर।

७२०५. भक्तामर स्तोत्र वृक्ति—  $\times$  । पत्र सं० ४४ । ब्रा० न्हे $\times$ न इन्ह । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तात्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनस० १२६७ । प्राप्ति स्थान – भ० दि० जैन मन्दिर ब्रक्मर ।

७२०६. प्रतिसं० २ । पत्र स० ७० । आ० १० 🗵 इचा । ले०काल 🗴 । अपूर्ण । बेष्टन स० १२४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मंदिर आदिनाथ बूदी ।

विशेष---कथा भी है।

७२०७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २४ । म्रा० ११ × ५ इल्ब । ले० काल × । पूर्णा । बेष्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी युदी ।

**विशेष** — पुस्तक पं० देवीलाल चि० विरघू की छै।

७२०**८, प्रति सं०४।** पत्रसं०२४। ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन स०४१८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर मस्तपुर ।

विशेष -- टीका सहित है।

७२०६. मक्तामर स्तोत्र वृत्ति $--\times$ । पत्र सं०१६। भाषा-संस्कृत । २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णा विदेश स्वर्णाः

७२१०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ८ । ले॰काल 🗵 । स्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ४३७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है तथा ३६ वी काव्य तक टीका है। ग्रागे पत्र नहीं हैं।

७२११. भक्तामर स्तोत्रावपूरि— ×। पत्र स०२-२६। प्रा०१×५ इखा । नाया— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १०काल ×। ले०काल सं०१६७१। प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३११/४२४-४२१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ गन्दिर उदयपुर । विशेष--- प्रन्तिम पुष्पिका---

इति श्री मानत् गाचार्यकृत भक्तामर स्तोत्राय चूरि टिप्पण्क संपूर्णं कृत ।

प्रशस्ति-- रूहतगपुर वास्तव्य चौधरी वसावन तत्वपुत्र चौधरी सूरदास तत् पुत्र चौधरी सौहल सुख चेन दार्गालपुर वास्तव्य लिखित कायस्थ माधुर दयालदास तत्वपुत्र सुदर्गनेन । सबत् १६७१ ।

७२१२ भक्तामर स्तोत्राव बूरि $-\times$ । पत्र सं०१११। ब्रा०१० $\times$ ४ | इखा भाषास्तोत्र । २०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्णं। बेग्टन स०२६२-१०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर।

विशेष--श्वेताम्बर स्नाम्नाय का ग्रथ है। ४४ काव्य है।

७२१३. भगवती स्तोत्र— ४ । पत्रस०३ । ग्राट ६५ % ४,५ इत् । भगवा—हिस्टी । विषय— स्तवन । २०काल ४ । लेकबाल ४ । पूर्णा वेष्टनस०२२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मस्टिर बोरसभी कोटा

७२१४. भक्त गोविन्द स्तोत्र—  $\times$  । पत्रस्त १ । छा० १२ $\times$ १ इन । भाषा—सग्रुत । विषय -स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्ट्न स०४६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७२**१४. स्वहर्-स्तोत्र (गुरुगोता)**— । पत्र स०४ । छा०४  $\times$  ३२ ६ व । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल X । ने० कान X । पूर्ण । वेष्टनम०५४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

७२**१६. मवानी सहस्रताम स्तोत्र**  $\times$  । पत्रतः १६। याः १८५१ हरूच । भागा--गम्हत । विषय---स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० कान  $\times$  । पूर्ण । बेठन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान**-म०
वि० जैन मन्दिर प्रजीन ।

विशेष -- ग्रन्तिम दो पत्र मे रामन्क्षा स्तीत्र है।

७२**१७. संवानी सहस्रनाम स्तोच**ः—×। पत्रम०२-२८। भाषा—सम्कृत। विषय—स्तोष। र०काल × । ले**०काल** स०१७६७ पीप सुदी ७। चपूर्ण। वेष्टन स०२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहाथी मन्दिर सम्बा।

विशेष-भादमोडा मं प्रतिनिपि हुई थी।

७२१८, **मारती** लाबुस्तवन—भारती। पत्रसः ७। ग्रा०१०<sup>1</sup>ू×ृर्दे दश्व। भाषा— सम्कृतः। विषय—स्तोत्रः । २०कालः 🗴 । ले०कालः 🗴 । पूर्णः । वेष्टन स०३६७ । **प्राप्ति स्थान—**दि० जैन मन्दिर लाकर जयपुरः।

विशेष -- प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७२१६. (बिति) भावनाष्ट्रक $--\times$ । पत्र स०१। ब्रा०१३ $/\times$ ६ दश्व । भाषा सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णे । वेष्टन स०४११। प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७२२०. भावना बत्तीसी—श्राचायं श्रमितगति । पत्रस० २। ग्रा० १३५ ४ ६ इञ्च । भाषा— सम्बत्त । विषय —स्तोत्र । १० काल 🗴 । ले०काल 🗴 । वेष्टन स० ४०३ । **प्राप्ति स्यान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर । स्तोश साहित्य ] [ ७५१

७२**१. भाव शतकः—नागराज** । पत्रक १७ । छाऽ १०<u>४</u>४६ **२व । भाषा—**सामृत । विषय -स्त्रवत । रकान ४ । नेव काल ४ । पूर्ण । बेष्टन म० २०७ । **प्रास्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सकार, जनपर ।

विशेष--१= पर्व है।

७२२२. प्र**तिसं०२।** पत्र म०५। ग्रा०१०५४ इच्चा से**०काल ×**ा बेप्टन स०२२६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

विशेष---१०१ पदा है। ग्रंथ प्रशस्ति भच्छी है।

७२२३. **भूपालचतुर्विशतिका—भूपाल कवि** । पत्रसन्ध्री भाषा—सस्कृत । विषय—स्त्रोत्र । रुकाल 🔀 । लेक्काल 🔀 । पूर्ण । वेष्ट्रन संच्यान भाषित स्थान—सव्हित की मन्दिर कालस्य ।

७२२४. प्रति स० २ । पत्रस० १३ । आ० ६०३ इञ्च । लेकाल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ६८६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**७२२५. प्रतिसं०३ ।** पत्र स०४ । आर०११८.४ इञ्च । ले०काल ६ । पूर्गावेष्टन सं० ६३ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर घणिनन्दन स्वामी बूदी ।

७२२६. प्रतिसं० ४ । पत्रस०४ । ग्रा० १०८ ४४ डब्ब । ले० काल स०१६०७ । पूर्ण । वेष्टन स०४१ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन खडेलवाल मन्दिर ब्दयपुर ।

सबत् १९०७ वर्षे श्रावण् बदि ८ श्री मूलमधे बलान्कान्गणे महारक मकलकीनिदेवा तदाम्नाधं त्रक जिनदास ब्रह्म वाघजी पठनार्थ ।

७२२७. प्रति सं० ४ । पत्रस० १४ । प्रा० ११) ८४ इल्या निकाल म० १७१७ । बेप्टनस० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन गन्दिर लक्कर, जयपर ।

विशेष — - नुव्यसीदाम के साथ रहने वाले निलोकचन्द्र ने स्वयं निली थं. । कही २ सम्कृत टीका भी है ।

७२२६. प्रतिसं०६। पत्रसं०६। आ०१० $\frac{7}{2}$ ४९ इन्छ । ले०काल imes । वेरटन स० ३६२। प्राप्ति स्थान— दि० जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष -- टब्बा टीका सहित है ।

७२२६. प्रतिसं० ७ । पत्र सं० ४ । ग्रा० १० $\frac{1}{2}$  × ५ डखा । ले० काल  $\times$  । वेष्टुन स० ३६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्षर, जयपुर।

७२३०.प्रति सं० ६। पत्र स०२। धा०१३३ँ८ ६ स्व । ले० काल 🔀 १ वेष्ट्रत स०४०१। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

७२३१. भूपाल चतुर्विशतिका टीका—मट्टारक चन्द्रकीति । पत्रस०१०। ग्रा०६३ ४ ६३ ६ च । भाषा-—सस्त्र । विषय—न्तोत्र । र०काल ४ । ते०काल स०१६३२ कालिक बुटि २ । पूर्णा । बेष्टनस०१०६ । प्रास्ति स्थान--दि० तैन मन्दिर पतेहतुर बेखावाटी (सीकर)

७२३२. मूपाल चौबोसी माथा—ग्रक्षयराज । पत्र म० १६ । घ्रा० ११४ ४१ दुःच । भाषा -हिन्दी । विषय-स्तेत्र । र०काल 🔀 । ले० काल 🔀 । पूर्ण । वेष्टनस० २३४ । प्राप्ति स्थान्—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा । ७२३३, प्रति सं०२ । पत्रस०१२ । घा०११४६ इ.च. । लेक्सल सं०१७३३ काती बुदी ४ । पूर्यों । बेट्न स०४९३ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--- प्रति प्राचीन है इसकी प्रति सांगानेर मे हुई थी।

७२३४. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १२ । धा० ११imes४ $^3$  इश्व । ले०काल imes । बेष्टन स० ६७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर, जयपुर ।

७२३५. प्रतिसं० ४ । पत्रस॰ २७ । ग्रा॰ १०३ $\times$ ४३ इन्छ । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेण्टन स॰६२ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वामी बुदी ।

७२३६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० २-१७ । ब्रा॰ ११ ं×४ ुँ इञ्च । ले०काल स० १७२३ चैत्र बुदी १ । अपूर्ण । बेष्टन सं० ४३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मदिर बडा बीसपथी दौना ।

विशेष -- ईश्वरदास ठोलिया ने सम्रामपुर में जोशी श्रानन्दराम में प्रतिलिपि कराई थीं।

७२३ म. **सैरवाध्टक** —  $\times$  । पत्र सं० १४ । ग्रा० १२  $\times$  ६ डव । मापा-सस्कृत. हिन्दी । विषय - स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण ः वेष्टन स० २७/६७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर मादवा (राज०)

७२३६ संगल स्तीत्र— ×। पत्र स०२। द्या०१०×४ द्वा । आपा—सम्कृत। विषय-धर्म। र०काल ×। ते०काल ×। पूर्ण। वेष्ट्रन स०६२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोट्यों कानैसाव।

७२४०. मिश्मिप्रज्ञजो रो छुन्व—राजरत्न पाठक । पत्र स० २ । प्रा० ८४६ दश्व । भाषा— हिन्से पद्य । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्न स० ३७५/१४२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का डूनरपुर ।

> समरवाडापुर मडगो ग्रतुलवली भ्रागरमा शरगा राजरत्न पाठक जयो देव जय जय करगा

७२४**१. मल्लिनाथ स्तवन-धर्मासह**। पत्रस० ३। ग्रा० १०४४ इच । मापा---हिन्दी। विषय---रतनन । र०काल रा० १६०७ । ले०काल ४। पूर्ण । बेष्टन स० ३३६-४०६। **प्राप्ति स्थान**--वि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

## विशेष-अन्तिम भाग निम्नप्रकार है।

श्री रतन सच गणीन्द्र तमपट केणवत्री कुलबद ए। तस पटि दिनकर तिलक मुनिकर श्री विजयो मुणिद ए॥ घर्मांतह मुनि तस जिच्य भेगी घृष्या मिल्ल जिख्य ए॥४१॥ सबत नय निषि रस गणिकर श्री दीवाली श्रीकार ए। भूगार महबर नयरमुन्दर बीकानेर मभ्तर ए। श्रीसम बीनती सरस जाणी कीयो स्तवन उदार ए। श्रीमिल्लाजिनबर सेवक जननि सदाशिव सुखकार ए ।

इति श्री मिल्लनाथ स्तवन सपूर्णें। भार्या जवसादे पठनार्थं।

७२४२, सहासर्हाव्स्तवन —  $\times$  । पत्र स०२। ग्रा०१० $\times$ ४ $\frac{3}{6}$  दश्य । भाषा—संस्कृत । विषय—स्नोत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । वेष्ट्रन स० ३५७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७२४३. सर्होब स्तवन—  $\times$  । पत्र स॰ १ । घा० १० $\times$ १ इन्छ । भाषा- सरहत । विषय— स्तोत्र । र०काल  $\times$  । तेर काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

विशेष--प्रति सम्कृत व्याख्या सहित है।

७२४४, सहित्त स्त्रान $-\times$ । पत्र स० ६। ग्रा०१२ $\times$ १) द व। भाषा-मस्कृत। विषय-स्त्राता २० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ता। बेष्टनसं०१८६। **ग्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मोबानजी काम।

७२४५. महाकाली सहस्रनाम स्तोश— × । पत्रसं ०२६। प्रा० ६×४ ' इच । भाषा— सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स० १७६४ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ८८४ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर प्राप्तेर ।

विशेष-गृटका साइज में है।

७२४६. महाविद्याचकोवरी स्तोत्रा—  $\times$  । पत्र स॰ १२। श्रा० १ $\times$  $^{2}$ द इ.च.। आपा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०काल  $\times$  । ले॰ काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १२०। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर पार्थनाथ इदरगढ (कोटा)

७२४७. महाविद्या स्तोत्रा मश्र—४। पत्र स०३। घा० १०१४४:इख । भाषा—मस्कृत । विषय—मत्र कास्त्र । १०काल ४ । केलाल ४ । पूर्णः । वेष्ट्र स०१८४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७२४६ महाबोर स्तवन — जिनवल्लम सूरि । पत्र सं०४। भाषा— माज़त । विषय— स्तोत्र । र० काल х । ते०काल । पूर्ण । वेष्टन स०६११ प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचावती मदिर मस्तपुर ।

विशेष---प० चोला ने प० हर्ष के पठनार्थ लिखी थी।

७२४६. महावीर स्तवन — विनयकीत्ति । यत्र सं०३। ग्रा०१० $\times$ ४ इंच । भाषा हिन्दी । विषय स्तवन । र०काल  $\times$  । क्षेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३३४-४०४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन समवनाथ सन्दिर उदयपुर ।

श्चन्तिम भाग --

इति श्री स्पाद्वाद सुनक श्री महाबीर जिनस्तवन संपूर्ण ।

७२५०. महाबीरनी स्तवन—सकलचन्द्र । पत्रत० २। मा० १०४४) इश्व । मावा - हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मस्दिर बोरसली कोटा । ७२५१. महावीर स्तोज वृत्ति—जिनप्रसमूरि। पत्रसः  $\mathbf{v}$ । प्राः १० $^{3}$ २४ इञ्च। भाषा— मस्कृतः। विषय— स्तोजः। र०कालः  $\mathbf{x}$ । त्रे०कालः  $\mathbf{x}$ । पूर्णः। वेष्टनः सः० १७३। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिरः प्रमिनन्दन स्वामी, पृथी।

७२४२. महाबीर स्वामीनो स्तवन —  $\times$  । पत्र म०१। प्रा०१० $\times$ ४३ इ.स.। भाषा— हिन्दी। विपर-सोत्र। रक्काल  $\times$ । वेठ काल मं०१८४० चेत्र मुरी १। पूर्ण। येउन स०२। **प्राप्ति** स्थान— कि तेन मदिर बोग्गलो शेदर।

विशेष-- भौरङ्गावाद में लिखा गया था।

७२५३. सहिम्न स्तोश—पुष्पदंताचार्यः। पत्रसः १ । ब्रा० ११४४ इखः। भाषा—सन्कृतः। विषय—स्तोत्रः। २०कालः ४ । ले०कालः ४ । पूर्णः। वेष्टनसं•४५२। प्राप्तिः स्थानः—भ० दि० जैन मन्दिर सबसेरः।

७२**५४. प्रतिसं०२** । पत्रस०६ । ग्रा०११ 🗙 ५ ग्रैइन्डाले**० का**ल 🗙 । पूर्णा विष्टनस० ३३६ । प्राप्ति स्थान- भ०दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

विशेष-प्रति जीसं है।

७२**५५. प्रति स०३।** प्रस०७। আ०६४ ५ इञ्च। ले०काल 🔏 । पूर्ण। बेष्टनस० १५६। **प्रास्ति स्थान**— (० जैन मन्दि<sup>र</sup> दबलाना (बुदी)

७२५६. प्रति स०४ । पत्रस०२–६ । धा०६३,४४३ इ.स. । ले•काल 🗴 । धपूर्णः । बष्टन म०२७२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दबलाना (ब्रुदी)

७२५७. प्रति सं० ४ । पत्रस० १० । आ० ११×६ । इञ्च । ले०काल × । पूर्गः । बेठून स० १९४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर यभिनन्दन स्वामी बूदी ।

७२५६. मानभद्र स्तवन — मार्ग्यक । पत्र सं० ५ । या० १०४४ र् इच । माषा – हिन्दी । विषय – स्तोत्र । ००काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वेप्टन स० २५०। प्राप्ति स्थान — दि० जैन वार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७२५६. मार्लण्ड हृदय स्तोत्र— × । पत्रसः २ । मा० १०३ × ६ इञ्च । भागा सस्कृत । विषय- बैदिक माहित्य । र०काल × । ले०काल स० १८८६ फागुण मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० १३१० । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर अत्रमेर ।

७२६०. **भूनि मालिका**— × । पत्रस०२। आ०१२ × ४६वा। भाषा-हिन्दो। विषय— स्तवन। रक्काल × । वेककाल × । पूर्ण। वेष्टन स०२६३। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोप्रकारी कोरा।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

७२६१, मूलगुरासज्ञाय-विजयदेव । पत्र स० १ । प्रा०१० / ४४ इ.च. । प्रापा-हिन्दी । विषय - स्तुति । २०काल ४ । लेक्काल ४ । पूर्गा वेष्टन स०४४ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन खल्केलवाल मन्दिर उदयपुर । ७२६२. सांगीतुंगी सङ्भाय—ग्रमयजन्द्र सूरि। पत्र स०३। ग्रा० १०  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इख । माषा-हिन्दी (ग्रा) । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१४२। प्राप्ति स्थान—दि० गैन मन्दिर दवलाना (बदी) ।

७२६३ यमक बघस्तोत्र — × । पत्र स॰ २ । म्रा० १२ × ६ इवा । माणा —सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । लेकाल × । पूर्णा विष्न स० । २०२ प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागशे वदी ।

विशेष --- टीका सहित है।

७२६४. यमक स्तोत्र—  $\times$ । पत्र स०६। छा० १० $\times$ ५१ हन्तः। भाषा —सःकृतः। विषयस्तोत्रः। र०काल  $\times$ । ले०लका  $\times$ । वेष्टुनस० ६०। प्राप्ति स्थान – २० जैन प्रवासी पन्दिर
देवी (टोक)

विशेष - पार्थ्वनाथ स्तवन यमक ग्रलकार मे है।

७२६५. यमक स्तोत्राष्टक—विद्यानदि । पत्र स०६। ग्रा०११  $\times$  म त्व। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टर्न सं० २४४ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर ग्रजनेर ।

विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है। ग्रहंत परमेश्वरीय यमक स्तीत्राष्ट्रक है।

७२६६. रामचन्द्र स्तोत्र $-\times$ । पत्र स०१ । धा०१२  $\times$  ४ इञ्च । भाषा - संस्कृत । विषय - स्तोत्र । रुकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहुन स० ३६५-४७३ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन सभवनाथ सदिर उदस्पर ।

अ२६७. रामसहस्र नाम — × । पत्रस∘ १७ । झा० ६ १े ४४ १ै उचा साथा संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ने०काल स० ९००६ वैत्राल बुदी ८८। पूर्ण । वेष्टन स० ९१०। प्राप्ति स्थान— म० ६० औन मिटर बोरसनी कोटा

निस्ति चिरनीव उपाध्याय मयारामेगा श्रीवरामध्ये बास्तव्य ।

७२६ द. रोहिस्सी स्तबन — imes । पत्र स॰ २ । प्रा० १०3 imes १3 imes १ आवा — हिन्दी (पद्य)। विषय — स्तीत्र । १०काल imes । ले॰ काल imes । प्रदूर्स । वेटून स॰ ३६०। प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन प्रप्रताल मन्दिर उदयपुर।

७२६६. **लक्ष्मी स्तोत्र—पदाप्रमदेव** । पत्र स०१। ग्रा०१३ै,४६ इखा भाषा-सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । वेष्टन स०४०२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

७२७०. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मप्रसदेव । पत्रसं०७१ । म्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इन्त । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टन सं० ४४२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर सक्कर अयपुर ।

७२७१. सक्सीस्तोत्रा $-\times$ । पत्र स०२ । घा०७ $; \times$ ४ इ.ख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२५० । प्रास्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर फजनेर ।

७२७२. **लक्ष्मी स्तोश—** × । पत्र स० ६ । ग्रा० १र्डे × ४३ दश्व । भाषा-सम्मृत । विषय— स्तोत्र । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्टनस० ७४८ । **प्राप्ति स्थान—**भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

७२७३. **लक्ष्मी स्तोत्रा गायक्री**— $\times$ ा पत्रसं०२। माषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले०काल स० १७६७। पूर्ण। वेष्टन स० १६। **प्राप्ति स्थान**—(द० जैन तेरहपथी मदिर बसवा।

विशेष-पश्लीवाल गच्छ के सूखमल ने लिपि की थी।

७२७४. **लक्ष्मी स्तोश टीका** — × 1 पत्रत्त० ४। नाषा—सस्कृत। र०काल ×। से०काल सं० १८६० भादवा सुदी १२। पूर्णु । वेष्टुन स० २८। **प्राप्ति स्थान**िद० जैन पचायनी मन्दिर भग्तपुर ।

विशेष-भरतपूर में लिखा गया था।

७२७**४. लक्ष्मो स्तोश टीका**— $\times$  । पत्रम० ७ । ग्रा० ११ $\times$ ४ $^{!}$  इन्छ । प्राप-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रूर्ण ।थेप्टन स० १६७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मिल्दर बोरसली कटा ।

विशेष -- सरोज नगर मे पं० मृतचन्द ने लिखा सं० १८४ ....।

७२७६. **लक्ष्मी स्तोत्र टोका**—  $\times$  । पत्र म० ४ । धा० प्र $\times$ ४) इल्ला भाषा— सम्बुत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से•काल । पूर्ण । बेष्टनस• २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७२७७. लपुशांति स्पोत्र—  $\times$  । पत्रतः १। ग्रा० १० $\times$ ४ इश्व । भाषा-सःहत । विषय— स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १५०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७२७६. लघुस्तवन टीका—भाव शर्मा। पत्र स०३-३६। ग्रा०११;४४; इखा। माषा— सस्कृत। विषय-विधान। र०काल स०१५६०। ले०काल स०१७७०। ग्रपूर्ण। वेष्टन स०७५१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर।

विशेष — धवावती में नेमिनाय चैस्यालय में भ० जगतकीति से शिष्य दोदराज ने घपनी ज्ञान नृद्धि के लिए टीका की प्रीतिष्टिं सपने हाथ में की थी। इसही के साथ सबत् १७७०, चैत्र बुदि ४ की, ४० तथा ४१ से पृष्ठ पर विस्तृत प्रशस्ति है, जिसमें लिखा है कि जगतकीति के शिष्य पं० दोदराज के लिए प्रतिलिपि की गई थी।

७२८०. लघु स्तवन टीका— x । पत्र स० x । नाया—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल x । ले०काल x । पूर्ण । वेष्टन स०६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

७२६१. लघुस्तोत्र विधि — × । पत्र स०७ । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । से•काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६३ । प्राप्टित स्थान —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर । ७२८२. लयुस्वयं मूस्तोञ—देवनंदि । पत्र स॰ १ । प्रा० १०३ × ४३ इन्न । भाषा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेपृन स०६०३ । प्रास्ति स्थान—ग० दि० नैन मन्ति प्रावरेर ।

७२६३. प्रतिसं०२ । पत्र सं०७ । ग्रा० ७ $\times$ ५ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०२४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान व दी ।

विशेष---दशलक्षण घर्म व सोलहकारण के भी कवित्त हैं।

७२८४. लयुस्वयंत्र् स्तोश टीका—  $\times$  । पत्र स० ३३ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १७८४ कात्तिक बुदि ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ४७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायनी मितर भरतपुर ।

७२८५. वळ्यपंत्रर स्तोश यश सहित $-\times$ । पत्र स०१। वेष्टन सं०७७-४३। प्राप्ति स्थान -वि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर।

७२ स. इ. वदना जलाडी — ४ । पत्रतः ६ । मा॰ १२ ४ ५ इचा । माणा-हिन्धी (पद्य)। विषय-स्वतः । र०काल ४ । ले० काल स॰ १६४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७१ । प्रास्ति स्थान — दि॰ जन मदिर भी महाथीर बुंदी ।

७२८७. वर्द्धमान विलास स्तोत्र—जगद्मुषरा । पत्रस०४ से ४८ । भाषा—सकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ने•काल × । ब्रपूर्ण । वेष्ट्रन स०२२ (क) । प्राप्ति स्थान—दि० जैन वडा पत्रावती मन्दिर होग ।

विशेष — ४०२ पद्य है। मट्टारक श्री ज्ञानभूषण, पट्टस्थितन श्री मट्टारक जगनुभूषणेत विरुचितं वर्द्धमान विलास स्तोत्र ।

४०१ वा इलोक निम्न प्रकार है।

एता श्रीवदं मानस्तुरित मतिबिलसर् वदं मानातुरागान्, व्यक्ति नीता मनस्या वसति तनुषिया श्री जगरभूषर्गन् । यो भीते तस्य कायार् बिगलति दुरितं स्वासकाशप्रगान्नो, विच्या हृद्या नवद्या मवति विद्यसिता कीर्तियहामसक्सी ॥४०१॥

७२८८. **वर्द्धमान स्तुति**—४। पत्र स०१। भाषा-हिन्री । विषय-स्तवन । २०काल ४ । ने० काल ४ । पूर्णु । वेष्ट्रन स०६४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

७२८१. **बसुधारा स्तोत्र**— × । पत्रस० ८। प्रा० ७३ ४४ इचा । पाषा— संकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टनसं०१४६३ । प्रा**प्ति स्थान—** २० वि० जैन मन्दिर प्रजीर ।

७२६०. **बसुधारा स्तोत्र— ४ ।** पत्र सं० ५ । बा० १०×४ ई इच । भावा—सस्कृत । विषय—पूत्रा । रक्काल ४ । लेक्काल ४ । पूर्ण । वेटन सं० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सप्रवाल पंचायती मन्दिर स्रलवर । ७२९१. **बसुधारा** स्तोत्र— $\times$  । पत्र स०४। प्रा० १२ $\times$ ६ इश्व । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्टन स० ७३५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

७२६२. विकारवर्डितिशिकास्तवन टीका—राजसागर । पत्रस०६ । ग्रा०१० $\times$ ४३ इ.स. । गापा —प्रकृत हिन्दी। विषय —स्तोत्र । ए० काल  $\times$  । ले०काल स०१६०१ । पूर्ण । बेष्टन सं०२६२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन गन्दिर दवलान (बंदी) ।

७२६३. विद्या विलास प्रवन्ध-स्वात्तासुन्दर । पत्र स०१७ । सा०१०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पत्र) । । विषय-स्तोत्र । र०काल स०१४१६ । ले०काल × । पूर्णं । वेष्ट्रन स०१४० । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर दवलाना (वंदी) ।

७२६४. विनती ब्रादीश्वर—त्रिलोककीत्ति । पत्र स० २ । ब्रा०  $^{\downarrow}$  २ ३  $^{\downarrow}$  इन्त । भाषा—हिन्दी । विषय —स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मिटर ब्रजमेर ।

बिरोष— धार्विजनवर सेविये र लाल । पूलेबगढ जिनगत्र हितकारी रे । त्रिभुक्तवाद्वित पूर्वरे लाल । सार्रे धातमकात्र हितकारी रे । भाविजनवर .........

७२६५. विनती संग्रह — देवाब्रह्म । पत्र स॰ ११ । घ्रा० ११ ५ ४ डब्ब । घाषा-हिन्दी पर्ष । विषय स्तयन । र०कृत्व्  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६५ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मिन्दर प्रार्थनाथ बूदी ।

७२**६६. प्रति सं० २ ।** पत्र स० २२ । ग्रा० १२ 🖂 १ इन्छ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेग्टन स० ५५-७१ । **प्राप्टिट स्थान**—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीसपत्री दौसा ।

विशेष--विनितियों का सम्रह है।

७२९७. प्रतिसं• ३ । पत्र स॰ ३१ । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टुन स॰ ४०४ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन पत्रासरी मदिर भरतपूर ।

७२९८. **विवापहार स्तोत्र सहाकवि धनज्ञ। पत्र स०७। आ०१०४८**) इखा भाषा-संस्कृत । थियस—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टुनम० १२६१ । **प्राप्ति स्थान—**स० विक जैन भन्दिर अजभेर ।

७२.६६. प्रतिसं० २ । पत्र स०७ । ग्रा०१०३४ ४ दखा ले∙काल ४ । पूर्ण। वेष्टन स० ९४० । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष:- स्तोष टीका सहित है।

७२००. प्रति सं० ३ । यत्र स० ३ । झा० १० $^3_{
m V}$ ४ $^3_{
m F}$  इःथ । ले०काल imes । बेष्टन स० २४४ । प्राप्ति रूपान-दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३**०१. प्रतिसं० ४** । पत्रस० ३ । घा० १३<sub>२</sub> ४ ६ इश्व । ले०काल 🗶 । वेष्टुल स० ४१४ । प्रा**प्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३०२, प्रति स० ४। पप्रसः ४। प्राः १० ४४¦ इता लेकाल ४। पूरां। बेष्टन म० १४। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बुंदी।

७३०३. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ६ । घा० १० $rac{2}{5} imes rac{2}{5} imes rac{2}{5} = rac{2}{5} = 1$  ले० काल imes । पूर्गा । बेप्टन स० ३२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर चौगान व दी ।

विशेष---प्रति हिन्दी टीका सहित है। जिनदान ने स्वयं के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

७३०४. प्रति सं० ७ । पत्र स० ३ । ग्रा० १०४४ ४० वा ले० काल 🗴 । श्रपूर्ण । बेपृत स० २७० । प्राप्ति स्थान—र्दिठ जैन नभवनाथ अन्दिर उदयपुर ।

७२०५. विवापहार स्तोत्र साषा— $\times$  । पत्रसं॰ ६ । सा॰ १०५ $\times$ ५) इञ्च । सापा-हिन्दी गद्य । विपय-स्तोत्र । रुकाल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । धर्मुणं । वेष्टुनस॰ ७३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सिंदर ठीमवर्षी दीना ।

७३०६. विद्यापहार स्तोश टोका—नागचन्द्र । पत्र स० १३ । ब्रा॰ ६३ ४ ६५ इश्व । सापा -गम्कृत । विषय -स्तोत्र । २०काल ४ । ले० काल स० १६३२ काती मुदी ३ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १४४ । प्रास्ति स्थान वि० त्रेन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७३०७. प्रति स० २ । पत्रस० १२ । झा० १००°४४ १ दश्व । ले•काल ४ । बेधून स० ३८३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३० म. प्रति सं०३ । पत्रस०१७ । बा०११५ $\times$ ४ $^2_2$  इञ्च । से०कास $\times$  । बेष्टनस०३६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष - ग्राचार्य विशालकीति ने लिखवाई थी।

७३०६. विवापहार स्तोश टीका — प्रभाचन्द्र । पत्र म०१६ । भाषा - सस्हात । विषय— स्तोत्र । रकाल 🗴 । लेक काल स०१७३१ । पूर्ण । वेग्टन स०४१७--१५६ । **प्राप्ति स्था**न—-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वसपुर ।

७३१०. विवायहार स्तोत्रा टीका  $\times$  । पत्र सं० १४ । आ० ११  $\times$  ६ है इस । भाषा-सस्कृत । पद्य । विषय-स्थात । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १७०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६२ । प्राप्ति स्थान- भ० दि० जैन मन्दिर अजभेर ।

विशेष-- विजयपुर नगर मे श्री धर्मनाथ जैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

७३११. विवायहार स्तोत्र टीका—  $\times$  । पत्र स० १० । प्रा० १०३  $\times$  ४३ इ.ख.। भाषा— सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन स० ३३० । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर दवलाना (इ.वी)

विशेष-६ वा तथा १० से आगे पत्र नहीं है।

् ७३६२. विचापहार स्तोत्र भाषा—ध्यस्यराज । पत्रतः ३० । धा० १० $\times$  ४ दःव । भाषः - हिन्ती नच । विचय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले॰काल सं० १९४२ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । प्राप्ति स्थान—- दि॰ जैन मदिर ध्रमिनस्य स्वामी (बृंदी)

७३१३. प्रक्ति सं०२ । पत्रसं०१-२० । प्रा०१२×४) इथा। लेक्सल स०१७२३ चैत्र सुदी१ । पूर्ण। बेट्टन स०१२ × । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ाबीम पथी, दौसा।

विशेष--साह ईश्वरदास ठोलिया ने बात्म पठनार्थ झानन्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

७३१४. प्रति सं० ३ । पत्रस॰ १४ । ब्रा॰ ११ $\times$ ५ै इञ्च । ले॰काल स॰ १७२० मगसिर सुदी १९ । पूर्ण । बेष्टनंसं॰ २३४ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर दीनानजी (कामा)

७३१५. विषापहार माषा – ग्रचलकोस्ति । पत्र स० ३२ । मापा-हिन्दी। विपय-स्तीत्र । र०काल  $\times$  । ते०काल । पूर्ण । बेष्टन स० ४७४ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पवायती मदि२ भरनपुर ।

७३१६. बीराराग स्तवन $-\times$ । पप्तकः १। धा० १२ ×४ डच । प्रापा-सस्कृत । विषय-स्तवन । २०काल  $\times$ । लुंकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ३५६-४७६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३१७. **बीरजिनस्तोत्र---ग्रमयसूरि** । पत्रसं० --- । भाषा-प्राकृत । विषय -स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्णं । बेट्नसं० ३६२ । **प्राप्ति स्थान**----वि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपूर ।

७२१ स. **वीरस्तु**ति— $\times$  । पत्रस $\circ$  ४ । षा $\circ$   $\circ$  ४  $\rbrace$  ङ्व । भाषा प्राष्ट्रत । विषय-स्तीत । र $\circ$  कान  $\times$  । लेककाल स $\circ$  १८४४ । पूर्ण । बेहनस $\circ$  २२३ । प्राप्तित स्थान — अ $\circ$  दि $\circ$  जैन मन्दिर भ्रजीत ।

विशेष-दितीयागम्य वीरस्तृति सुगडाग को षष्ट्रमो ग्रध्यायः । हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

७३१६. बृहर्शाति स्तोत्र— $\times$  । पत्रतः १। मा॰ ११ $\times$ ५ इश्वः। भाषा सस्कृतः। विषय-स्तोत्रः। र०कासः  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णः। बेष्टन स॰ ३८ः। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुरः।

७३२०. **बृषमदेव स्तबन** — नाराग्राग । पत्र सख्या ३। प्रा० ७ $\frac{1}{2} \times \sqrt{3} \le 9$  । भाषा — हिन्दी पद्य । विषय— स्तवन । र०काल  $\times$  । ले०काल म० १७५३ । पूर्ण । बेग्टन स० ११८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिरार दवलाना (बूदी)

७३२१ **वृवम स्तोत्र — ए० पद्मानिद**  $\times$  । पत्र म'० ११ । म्रा० १० $\frac{1}{2} \times$  ५ इञ्च । भाषा — संस्कृत विषय-स्नोत्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स ० ३४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-श्री पद्मनन्द कृत दर्शन भी है। प्रति संस्कृत छाया सहित है।

७२२२. बृहर् शांतिपाठ 🗴 ।गत्र त० २। मा०१०४४) दश्व । भाषा सस्कृत । विषय - स्तीत्र । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० २०३ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मदिर शेरतली कोटा ।

७३२३. **शत्रुं जय गिरि स्तवन**—केशराजा । पत्र स०१ । ग्रा०१० $\frac{5}{4} \times Y_0^2$  दञ्ज । आया – हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०६३ । **प्राप्ति स्वान**—दि० जैन मन्दिर दबलान (बंदी)

## विशेष —

श्री विजयगच्छपति पद्मसागर पाठ श्री गुरामागरः । केशराज गावद सबि सुहावद सहगिरवर मुखकरः ॥३॥

इति श्री शत्रुजय स्तवन ।

७२२४. शत्रृंजय तीर्थस्तुति —ऋषमदास । पत्रस० १ । झा० १० $\times$ र्भ $^2_{ij}$  इञ्च । माषा – हिन्दी । विषय –स्तुति । र०काल स० $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०७० । प्राप्तिः स्थान — वि० जैन मन्दिर दबलान (ब दी)

विशेष—निम्न पाठ ग्रीर है ---

ग्रहमाता ऋषि सज्भाय

भारांदचंद

हिन्दी स्तवन (र०कालस०१६६७)

चद्रपूरी मे पार्श्वनाथ चैत्यालय में रचना हुई थी

७३२५. शत्रु जय मास—विलास सुन्दर । पत्र स०१। ग्रा०१०३ × ५ इस्त । मापा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रंककाल स० × । तेककाल × । पूर्णः। वेष्टनस०४७ । प्राप्तिस्यान—दि० जैन सक्टेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२६. शाश्रुजय मंडल स्वाहकर । पत्रसं० १ । घा० १०  $\times$  ४ इश्व । भाषा स्वास्त । विषय-प्राहत । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २२६ । प्राप्ति स्थान स्विर स्वाना (वृदी)

७३२७. शत्रं जय स्तवन — × । पत्रस० ४। माषा-संस्कृत । विषय — स्तवन । २०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्ट्रसं० ७२७ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

७३२६. शांतिकर स्तयन—  $\times$  । पत्रस $\circ$  २ । प्राः १० $\times$ ४ इंच । भाषा – प्राहुन । विषय—स्त्रोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्न स $\circ$  ३४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन खढेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३२६. शांतिजिन स्तवन — गुरासागर  $\times$  । पत्र स० १ । ध्रा० १० $\times$ ४ इ.स. । प्राप्ति हिन्दी (पद्य । विषय — स्तोत्र । २०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३५४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दवनान (वृदी)

७३३०. **शांतिजिन स्तवन** । पत्र सं०३-८ । घा० १० $\times$ ४ इन्त्र । भाषा—प्राकृत । विषय— स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन स० २६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर देवलान (श्रु रो)

विशेष--- मूल के नीचे हिन्दी में ग्रर्थ भी दिया है।

७३३१. शांतिनाथ स्तवन — उदय सागरसूरि । पत्र स०१ । घा०१० $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  । हिन्दी । विषय-स्तोत्र । । र० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ६५ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना (दूरी)

विशेष-सीमधर स्तवन धूजमलदास कृत ग्रीर है।

- ७३३२. **शांतिनाय स्तथन—पद्मनंदि** । पत्रस० १ । आ० १२ × ४ इख । भाषा सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टनस०३६१-४६९ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।
- ७३३३. शांतिनाथ स्तवन मालदेव सूरि । पत्र स०३७ मे ४७ । भाषा सक्कत । विषय स्तवन । र०काल  $\times$  । कपूर्ण । बेष्टनस० ६१७ । प्रास्ति स्थान दि० जैन प्रचायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-- ग्रारम्भ मे दसरे पाठ है।

- ७३३५. शांतिनाथ स्तोत्र— $\times$  । पत्र स०१२ । आ० १० $\times$ ४६ इन । भाषा-नम्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ३५ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मिन्दर, दबलाना (बुदी) ।
  - विशेष--प्रति सम्कृत टीका महित है। श्लोको के उत्तर तथा नीचे टीका दी हुई है।
- ७३३६. शांतिनाथ स्तोत्र-- $\times$ । पत्रस० ४। प्रा० १०५ $\times$ ६५ इ.स. भाषा म्हन्त । बियय—स्तोत्र। र०काल  $\times$ । लेक्सल  $\times$ । पूर्ण । बेपून स० २१। प्राप्ति स्थान ादि० जैन महिर कोश्लो का नैसावा ।
- ७३३७. **शास्त्रतजिन स्तवन**— $\times$ ाणत्र मण्या प्रशः १०imes ४ उच्च । भाषा—्य कृत । विषय-रनोत्र । २०काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० म०१३५ । **प्राध्ति स्थान**—्दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुरी)
- ७३३ म. शिव मिंबर स्तोत्र टीका  $\times$  । पत्रस० २ सं २४ । बा० ५  $\times$  ४ इव । भाषा सस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टुन म० २५७ । प्रास्ति स्थान -- दि० जैन महिर बोग्सली कोटा ।
- ७३३**६. शीतलनाय स्तवन-रायचंद ।** पत्र मं०१ । ग्रा०१०×्री इञ्च । भाषा—हिल्दी । विषय–स्तवन । र०काल × । ले०काल × । एग्गें । वेष्टन स० ७२१ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।
- ७३४०. श्रोपालराज सिज्काय सेमा । पत्रस०२ । श्रा० ११० $\times$ ४) इस । भाषा- हिन्दी । विषय-स्तात्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर दवलाना (वृंदी)
- ७३४**१. स्वेतास्वर मरा स्तीत्र सग्रह**— $\times$  । पत्रसं०६ । ब्रा०११ $\times$ ५ इ.च. । माया— प्राकृत । विषय-स्तीत्र । र०काल  $\times$  । वै०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स०६९५ । प्रास्ति स्थान—िवः जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
  - विशेष --सप्ति जिनस्तोत, भयहर स्तीत्र, लधुणाति स्तीत्र, श्रजितणान्ति स्तीत्र एव मत्र ग्रादि है।

७३४२ शोमन स्तुति —  $\times$  । पत्र स०६ । ग्रा० १० $\times$ ४  $\frac{1}{2}$  इस्त्र । भाषा —हिन्दी । विषय—स्तवन । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर बोरसनी, कोटा ।

विशेष - चीबीस तीर्थंकर स्तृति है।

७३४**६. स्लोकावली** — X । पत्रसु० ६ । ब्रा० ६ X ४ इल्ब । भाषा-सस्कृत । विषय— स्तोत्र । रे०काल X । ले०काल स० १६२० ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनस० ६७-४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इत्तरपुर ।

विशेष-श्री मडलानार्यं श्री रामकीरत जी पठनार्थं ग्राम उद्देगढमध्ये ब्राह्मशा भट्ट-

७३४४. वट त्रारामय स्तवन — जिनकीत्ति । पत्रस्व ३ । माया — सम्बृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ते०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टनम्व ६१४ । प्राप्ति स्थान-दिव जैन प्रवायती मन्दिर मरतपुर । विजेश — केवन तीमरा पत्र ही है ।

७३४%. षट्पदी -- शंकराचार्य । पत्र स॰ १। घा० ११  $\times$  ५ इञ्च । साथा---सरकृत । विषय --- स्तवत । र०काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेटन स० ५७५ । प्राप्ति स्थान --- दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७२४६. षष्ठिशतक — भडारी नेमिचन्द्र । पत्रस० ६। प्रा० १०  $\times$   $X_{\xi}^{k}$  दख । भाषा — प्राकृत । विषय - स्तांत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६०६ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । बेहन स० ३१६ । प्राप्ति स्थान — स० दि० जैन सन्दिर ग्रजमेर ।

७२४७. सकल प्रतिबोध —दौलतराम । पत्र स०१। ग्रा०१० 🔉 ६ इथा। आपा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स २७७-१४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोर्टाडयो का हुगरपुर।

७३४ म. **सङ्फाय—समयसुन्दर—** × । पत्रस**ः** ४ । ब्रा०१०<sup>3</sup>४५ डच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले•काल × । पूर्गा । वेष्टन सं०६५६ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७३४६. सप्तस्तवन imes । पत्रस्त १५ । म्रा० ६imes३ $^{\circ}$  इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र  $f \iota$  र०काल imes । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टुनस्त ४८६ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन सदिर म्रजसेर  $f \iota$ 

विशेष---निम्न स्तवन है----

उवक्षायागहर, तीजईपोत, कल्यासमंदिर स्तवन, ग्रजितशातिम्तवन, पोडशधिया स्तवन, बृहद्शाति स्तवन, गोतमस्टक ।

७३४०. समन्तभद्र स्तुति—समन्तभद्र । पत्र स०२६ । प्रा०६×४३ इश्वर । भाषा—संस्कृत । विषय स्तोत्र । र०काल ४ । ते० काल स०१६१६ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०६६१ । प्राप्तिस स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष-कः रायमल्ल ने प्रंथ की प्रतिलिपि की थी।

७३४१. समनः मद्र स्तुति— ×। पत्रसं∘ ६३। ग्रा॰ ८४६ द्वः। भाषा म्प्राङ्गत-सस्ङ्गत । विषय-प्रतिकशमा एव स्तीत्रः। र०काल ×। ते०काल स०१६६७। पूर्णः। वेष्टन सं०३। प्राप्ति स्थान— दि० जैन ध्रप्रवाल मदिर उदयपुर।

विशेष — सन्त् १६६७ वर्षे वैज्ञास मुदी ४ रबौ श्री मृतसचे सन्स्वतीमच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० श्री गुणकीतिदेवास्तरपट्टे भ० वारिभूषण् गुरूपदेणात् ब्रह्मगोपालेन श्री देवनन्दिना इंद बहावस्थक प्रदत्त गुम भवत् ।

इस ग्रन का दूसरा नाम षडावण्यक भी है प्रारम्भ में प्रतिक्रमण भी है।

७३५२. समन्तमद्र ष्टुिरा— $\times$ । पत्रतः ६१। ब्रा० १२४५ $\frac{1}{2}$  इत्रा । प्रापा—सन्त्रतः। विषय-स्तोत्रः। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टनसं० ३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रयवाल मंदिर उदयपरः।

विशेष --- २ पत्र बध त्रिभगी के है तथा प्रतिक्रमण पाट भी है।

७३**५३. समन्ताभद्व स्तृति**— × । पत्र स०३३। घा० १०, ४४, इच । भाषा सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले०काल स०१६६४ पीप बुदी ६ । बेष्टन स०३५६ । **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-प्रति सम्कृत टीका सहित है । प० उदयसिंह ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

७३४४. समयशरस्य पाठ—रेखराज । पत्रस्य ६०। बा०१० $^{1}$   $\times$ ७ इन्द्रः। भाषा-सम्ब्रग । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$ । ले०काल स०१०५६ कार्तिक मृदी १४। पूर्ण । वेष्ट्रन सं०४६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७३४५. समबशरण मंगल — मायाराम । पत्र म०२६ । माया-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल सं०१६२१ । ले० काल स०१६५४ मावन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स०३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मंदिर भरतपुर ।

विशेष---मरतपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

७३५६. समबसरग्रास्तोत्र-- विष्णुसेन । पत्र स० ६ । घ्रा० ८ ४६ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🔀 । ले०काल स० १६१३ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६० । प्राप्तिः स्थान--- दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ योगान बुदी ।

७३.४७ प्रतिसं०२ । पत्र स०४ । ग्रा०१२ है ४६ है स्था। ले∙काल स०१ स्२७ माघ सुदी ११ । पूर्णा वेष्ट्रन स०४७६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३५८. समयशरणः स्तोत्र— ४ । पत्रस० १ । प्रा०६ र्हे ४४हुँ इञ्च । भाषा - सस्कृत । विषय—स्नोत्र । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६४ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजभेर ।

७३५६. समवशरण स्तोत्र— x । पत्र स० ६ । भाषा-प्राकृत । विषय -स्तोत्र । र० काल x । के काल x । पूर्ण । बेस्टन सं० ६६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७३६०. समबसरण स्तोत्र । पत्रसं∘ ६ । ग्रा०१० × ४३ इक्ष्य । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं०२३३ । **प्राप्ति स्थात**—दि० जैन मदिर प्रभिनन्दन स्वामी वंदी ।

७३६१. समबसरण स्तोत्र —  $\times$ । पत्र स०६। प्रा०१२ $\times$ ५६ इच्च। भाषा-सम्ब्रत। विषय — स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६२४ प्रापाद बुदी १।पूर्ण । बेष्टन स०१६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ इ.दी ।

**बिगेष**—टब्बा टीका सहित है।

७३६२. समवसरण स्तोश— $\times$ । पत्र स०६। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० ६५/४३६। **प्राप्ति स्था**त—वि० जैन समवनाथ मन्दिर च्रदयपुर ।

७३६३. समबसरण स्तोश—  $\times$  । पत्र स०११ । ग्रा०११ $\times$ ४० देख । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तेशि । र०काल  $\times$  । क्षेत्रकाल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टुन स०१८८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रतिस्थानमान्त्रकाल । प्राप्ति स्थान

७३६४. सम्मेदशिखर स्तवन —  $\times$  । पत्रस $\circ$ ६। आ०५ $\times$ ६ इच । आपा —हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स $\circ$  ४६५ । प्राप्ति स्थान— ६० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७३६५. सरस्वती स्तवन—×। पत्रस० २ । भाषा—सम्कृत । विषय-स्तवन । र०काल ४ । ने०काल × । पूर्ण । बेष्टन स० ७१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपूर ।

विशेष — म्तवन के पूर्व यूलिभद्र मुनि स्वाघ्याय उदयरन कृत दी हुई है। यह हिन्दी की रचना है। रुकाल सरु १७४६ एवं लेकाल सरु १७६१ है। प्रति राधरापर ग्राम में हुई थी।

७३६६. सरस्वती स्तोत्र—प्रश्वलायनः । पत्र स०२। त्रा० ५ $\times$ ४ इंच । भाषा सस्कृतः । विषय-स्तोत्र । र०कालः  $\times$  । ले॰कालः  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनं स०३६२/४७०। प्राप्ति स्थान—६० जैन मन्दिर समयनाथः उदयपुरः ।

७३६७. सरस्वती स्तुति—पं० ग्राशाधर । पत्रसं० १–६। ग्रा० १२ $\times$ ४ इथ । माया-सस्कृत । विषय —स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टनसं० १६६/४६५ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३६८. सरस्वती स्तोश— $\times$ । पत्र स०१। प्रा०१० $^{3}_{i}$ प्रभू हुत्र । प्रापा-सम्ब्रत। विषय – स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णः। वेष्टन स०३६४। प्राप्ति स्थान—ंद० जैन मिन्दर सक्कर, जयपुर ।

**७३६८. सरस्वती स्तोत्रा— ×** । पत्र सं०३। ग्रा० ११३४ ४ इक्च । प्रापा— सस्क्रत । विषय—स्तोत्र । र०काल ≺ । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं०४४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पार्यनाव चोगान. व दी ।

७३७०. सर्वेजिन स्तुति । पत्र स॰ ६। भाषा —सस्कृत । विषय —स्तवन । र०काल 🗴 । ले॰काल 🗶 । पूर्ण । बेष्टन स॰ ६४८ । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन पचायती मदिर भरतपुर । ७३७१. **सलुरगारी सरुफाय —बृधसंद ।** पत्रस०२। स्रा० स्ट्रै ४ ४ द्वे इरूव । भाषा — हिन्दी। विषय –स्तीत्र । र०काल ४ । ले०काल सं०१६४१ ब्रावाड बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं० १७१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

## विशेष--- लिखतग बाई जमना।

७३७२. **सहस्राक्षी स्तोश-** स्राप्त । पत्रसं०२-६। घा० द्र ४ ३<sup>5</sup> ६श्व । माथा—सस्कृत । विषय—स्तीत्र । र०काल ४ । लेकालस० १७६२ मासीज सुदी १०। पूर्ण । वेष्टन स०१६५/४६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७३७३. साधारण जिन स्तवन—सानुचन्द्र गिर्ण । पत्र स०६ । घा० ६ ४ ४ ५ इस । भाषा स्तरकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । ले०काल मं० १७७० चैत मुदी १४ । पूर्ण । वेष्टनस०३२६ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष ---प्रति सस्कत टीका सहित है ।

७३७४. साधारण जिन स्तवन— $\times$  । पत्र सं॰ १ । ग्रा॰ ६ $\times$ ३ १ च । प्रापा-सरहत । विषय स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जंन अडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७३७५. साधारण जिन स्तवन वृत्ति —कनककुशल । पत्र स $\circ$  ३। प्रा $\circ$  ६  $\times$  ४ इत्त । भाषा-सन्कृत । विषय-स्तवन । र $\circ$  काल  $\times$  । ल $\circ$ काल स $\circ$  १७४५ माघ बुदी १ । पूर्ण । वेट्टनग $\circ$  २७० । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर दवलाना (व दी)

७३७६. **साधु बरदना – ब्राचायं कुंबरजी।** पत्रस०६। मा०१०५ ४६ इखा भाषा— हिन्दी। विषय रतृति। र०काल ४। ले**०काल** स०१७४१ मधाढ बुदी ८।पूर्ण। बेस्टन स०१३। **प्रास्ति** स्थान-टि० जैन मन्दिर बेर्ग

विशेष -- म्राल्हरणपुर मे प्रतिलिपि की गई थी।

७३७७. साधु वस्दना —वनारसीदास । पत्र स०३ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टुन स० ५०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

७३७८. सिद्धगिरि स्तवन— सेमविजय । पत्रस०२ । झा०१०×४ इचा । भाषा - सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल × । ले०काल म०१५७६ प्रथम चैत सुदी २ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०१४-५०४ । प्रास्ति स्थान-४० जॅन मन्दिर निमनाय टोडारावांसह (टोक)

७३७६. सिद्धचक स्तुर्ति —  $\times$  । पत्रस० १। म्रा० १० $\times$  ४ $^{\circ}_{i}$  इच । भाषा – प्राकृत । विषय-स्वत । रक्काल  $\times$  । तेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२२६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दक्ताना (चुरी)।  $^{\circ}$ 

७२८०. सिद्धमक्ति— $\times$  । पत्र सं० २। प्रा० १० $\times$ १ इच । भाषा—प्राहत । विषय— स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० १५२ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन मदिर दबलाना (बंदी)

७३८१. सिद्धिदण्डका स्तवन— $\times$ । पत्रसः १। आ० १  $\times$  ४ है इथा। भाषा-प्राकृत । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स॰ २-१५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारार्यामह (टोक)

विशेष---१३ गाथाए हैं।

७३८२ **सिद्धिप्रय स्तोत्र —देवनन्दि** । पत्र स० ३ । प्रा० ११४८ इश्वर । भाषा—मन्द्रत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४३ **। प्राप्ति स्थान—**भ० दि० जैन मन्दिर प्रविदेश

७३६३२ प्र**तिसं०२ ।** पत्रस०१४ । लेक्काल स०१६३२ । पूर्गा । बेष्टन म०२४४ । **प्राप्ति** स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेय-प्रति मस्कृत टीका महित है।

७३८४. प्रतिसं०३ । पत्रस०१२ । लेब्बाल 🗴 । पूर्णः। वय्टन स०२४६ । प्राप्ति स्थान-उपरोक्त मन्दिरः।

विशेष - कल्यामा मन्दिर एव भूपाल स्तोत्र भी है।

७३८५: प्रतिसं० ४ । पत्र स० १२ । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २४८ । प्राप्तिः स्थान-उपरोक्तः मन्दिर ।

विशेष---प्रति सटीक है।

७३८६. प्रति स० ४ । पत्रस० २ । ले०काल × । पूर्गा । बेष्टन स० २५१ । प्राप्ति स्थान—-उपरोक्त मन्दिर ।

७३८७. प्रतिसं०६ । पत्र स०१०। लेब्बाल 🔀 । पूर्णा । बेप्नुस०२६६ । प्रास्ति स्थान— उपरोक्त मदिर ।

विशेष-- प्रति टीका सहित है।

**७३८८. प्रतिसं० ७ ।** पत्रसा० १२ । स्रा० १०×५ हुँ इन्न । ने०काल स० १६०३ । पूर्ण । वेष्टन स० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

**७३८६. प्रतिसं० ८ । प**त्र स०४ । झा० १०×४<sup>5</sup> इल्ब । ने० काल स०१८८० सावसा सुदी ३ । पूर्यों । बेष्टनस०१०८ । **प्राप्ति स्थान**— म०दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

बिशेष-प्रति टब्बा टीका सहित है।

७३६०. प्रति सं०६ । पत्रत०४ । प्रा०१० × ४ डचा । ने० काल स०१७४६ ग्रपाठ मुदी १० । पूर्ण । बेब्रनस०६१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर (कामा)

७३**६१. प्रति सं० १०**। पत्र स० ६। ले० काल imes। बेहन स० ५**१०। प्राप्ति स्थान —** दि० जैन ध्वायती मन्दिर अस्तपुर ।

विशेष--टीका सहित है।

७३९२, प्रति सं० ११ । पत्रसं० ६ । प्रा० २है ४४ है दखा ने० काल × । पूर्या । वेष्टनस० ३७३ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर लक्कर, जगपुर । विशेष--प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है।

**७३६३. प्रति सं० १२** । पत्र स० ३ । घा० १११<mark>,</mark> ४.४ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्ण । **वेहनसं∙** ३७४. । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७२**६४. प्रति सं० १३**। पत्र स०२। म्रा० १३५ू × ६ इच्छ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । तेष्टन स० ४१३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्ष्कर, जयपुर ।

७३६**४. प्रतिसं० १४ ।** पत्र स० ६ । प्रा० १०३ $\times$ ४ $\frac{3}{6}$  इश्व । ले० काल  $\times$  । पूर्ए । वेष्टन स० २२० । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दक्लाना (बुंदी)

विशेष -- प्रति सस्तृत टीका सहित है ।

७२६६. प्रतिसं० १५ । पत्रस० १३ । लेक्सल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन स० ४६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

विशेष -- हिन्दी धर्थ सहित है।

७३.६७. प्रति सं०१६ । पत्र स०७ । मा०१०४ ५ इ.ख । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोग्सली कोटा।

विशेष-इन्दौर नगर मे लिखा गया । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

७३८६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका --- ग्राशाघर । पत्रस० १० । प्रा० ११४४) इथा । भाषा-सस्हत । विषय --- स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल स० १७०२ ज्येष्ठ सुदी १२ । येष्ट्रन स० १६२ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर दीवानजा कामा ।

७३६६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र टीका —  $\times$  । पत्र स०११ । ग्रा० ६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४३ इन्छ । भाषा— संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०काल  $\times$  । वे० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०१२२७ । प्राप्ति स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७४००. सिद्धिप्रिय स्तोज शोका $\cdots \times 1$  पत्रसं०६। प्रा०१२ $\times$ ४े इख । भाषा—संस्कृत । विषय $\cdots$ स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल स०१७६० फागुन सुदी १। वेष्टन स०३६३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-प्रति टोक मध्ये लिखी गई थी।

७४०१. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा---खेमराजः। पत्रस०१३। आ०१२४४] इञ्च। भाषा-हिन्दी पद्यः। विषय-स्तोत्रः। र०काल × । लेकाल स०१७२३ पौष सुदी १०। पूर्णः। बेष्टनस०११। प्रास्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर वडा बीमपथी दीसाः।

विशेष-साह ईश्वरदास ठोलिया ने बाहम पठनार्थ ग्रानस्दराम से प्रतिलिपि करवाई थी।

७४०२. सीमंबर स्वुति  $-\times$ । पत्र स०१२। घा०६ $\times$ ६१ इञ्च। माया—सस्कृत। विषय—स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं०२७/४१। **प्राप्ति स्यान**—दि० जैन वंबायती मन्दिर दुनी (टोक)

७४०३. सीसंघर स्वामी स्तवन—पं० जयवंत । पत्र सं०३ । घा० १०४४ इचा । शाया-हिस्सी । विषय-स्तुति । र०काल х । ले०काल х । पूर्ण । बेष्टन स०२४०/४०७ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - रचना का ग्रन्तिम भाग निम्न प्रकार है--

साजु शिरोमिए जागीइ श्री विनयमङन उवकायरे। तास सीस मुिए धागली बहुला पडित राय रे।। ध्रासो सुदी ४ नेमिदिनि शुक्रवार एकाति रे।

कागल जयवत पडितिइ लिखी उमा भिमग्रसिइ रे ॥

इति श्री सीमाधर स्वामी लेख समाप्तः । श्री गुरासोशाय्य सूरि लिखित । इसी के साथ पहित जयवत का लोचन परवेश पतग गीत भी है। प्रति प्राचीन है ।

७४०४. सीमंघर स्वामी स्तवन—  $\times$  । पत्रसं०  $\times$ । प्राः० ११ $\times$ ४ इन्छ । भाषा -हिन्दी । विषय -स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं । वेष्टनसं० ४३०। प्राण्ति स्थान—दि० जैन खण्डेनवाल मन्दिर उदयपुर ।

७४०५. सुन्दर स्तोश $-\times$ । पत्र स०१०। प्रा०१० $\times$ ४ इश्व। भाषा सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले॰काल स०१६५२। पूर्ण। वेष्टन स० ५७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रश्वाल मन्दिर उदयपुर।

विशेष---प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवत् १६५२ वर्षे श्रावरण सुदी ११ रविवारे विकमपुर मध्ये लिपिकृत । प्रति संस्कृत टीका सहित है।

७४०६. सुप्रभातिक स्तोश $-\times$ । पत्र स०२। ग्रा० १३ $^2_{
m c}$ ४६ इत्र । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स०४१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लकर, जयपुर ।

७४०७. सुप्रमारिक स्तोत्रा $-\times$  । पत्र स० १ । ब्रा० १३ $^1_i \times$ ६ इथा । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४१७ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

७४० द. सुमझ सङ्भाय —  $\times$ । पत्र स०१। मा०१० $\times$ ४ दःख। भाषा — हिन्दी। विषय — स्तवन। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०२८६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसती कोटा।

७४०६. सोहं स्तोश—  $\times$  । पत्रसं० १ । घा० १०३ $\times$ ६ $^3$  इन्छ । भाषा—सरहत । विषय— स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाश्वेताय चौगान, द्वारी ।

७४१०. स्तवन — गुरासूरि । पत्रस० १ । मा० १०३ ४४३ इञ्च । भाषा -हिन्दी । विषय — स्तुति । र० काल स० १६४२ । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर देवताना (वृत्ती) विशेष-- अयवतीपुर के आनन्दनगर में ग्रथ रचना हुई।

७४११ स्तवन —  $\times$  । पत्र स०२। ग्रा०१०३  $\times$ ४३ द्वः । भाषा-सम्हत। विषय-स्तवन। र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स०१२/४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ रोजाराज्यिकः (रोक)

७**४१२. स्तवन — घारणंद ।** पत्र स०३ – १०। भाषा – हिन्दी। विषय – स्तवन । र०काल ×। लेककाल ×। प्रपर्णा। वेष्ट्रनस०१७। **प्राप्ति स्थान** — दि०जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा।

क्रिकोड — इमके ब्रांतिरिक्त नदियेग गौत्तम स्वामी ब्रांदि के द्वारा रचित स्ववन भी है।

७४१३. स्तवन पाठ—  $\times$  । पप्रस० ६ । आ० १ $\times$ ६ इश्व । भाषा—सः स्कृत । विषय स्तोत्र । १० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २५/१५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्रचाननी मन्दिर दनी (टोक)

७४१४, स्तवन संग्रह—  $\times$  । यत्र स०६ । आ०६ $\times$ ४६ इच । भाषा हिन्दी-सरहन । विषय-स्तवन । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०३७०-१४१ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन मदिन कोटिंडियो का श्रारपुर ।

७४**१५. स्तोञ पारवं (यंत्ररा)** — × । पत्रस्व २ । म्रान्द १० ४४ है इस्त । भाषा — हिन्दी । विषय — स्त्रोत्र । रकाल × । लेक्सल × । पूर्ण । वैष्टन स० २११ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर प्राप्ति-हन रवामी व ही ।

७४१६ स्तुति पंचाशिका—पाण्डे सिहराज । पत्र स०२-६। प्रा० १०४४) इत्त्र । प्रापा-सम्कृत । विषय— स्नोत्र । २०काल × । जे०काल म०१७७६। पूर्ण । वेष्ट्रत म०३१४ । प्राप्ति स्थान-२० दि० जैन मस्टिर स्रजनर ।

७४**१७. स्तुति संग्रह** - × । पत्रसं० १ । मापा—हिन्दी । विषय—स्वत । र०काल × । नेकाल × । पूर्या । वेष्ट्रस ० ६०६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन प्लायनी मन्दिर भरतपुर ।

७४**१८. स्तुति सग्रह—** 🔀 । पत्र स० २-६६ । भाषा-सस्कृत । विषय-सग्रह । र० काल 🗙 । ले०काल 🗙 । पूर्ण । वाटन स० ७०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर सरतपुर ।

७४१६. स्तोज्ञा— × । पत्रस०६ । ग्रा० म् २ ४४ है इ.आ. । भाषा—सन्ध्रत । विषय — वैदिक साहित्य । २० काल × । ल० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०४७ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर प्रवर्भर ।

७४२० स्तोत्र— × । यजतः १६ । भाषा—सःकृत । विषय—स्तोतः । र०कातः × । ने० कातः × । ग्रपूर्षः । ग्रपूर्वः । ग्रपूर्वः । अपनि स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर हण्डावातों का डीलः ।

विशेष--हिन्दी अर्थ सहित है।

७४२१, स्तोश चतुष्टय टीका—झाशाधर । पत्र त०३३ । आ०११ ४४ इख । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेट्टन स०४०६ । प्राप्ति स्थान—म० वि० जैन महिर अजोर ।

विशेष-- वृतिरिय वारीन्द्र विशालकीर्ति मट्टारक त्रिय मून यति विद्यानंदस्य ।

७:२२. प्रांत सं० २ । पत्रस० ३१ । घा० १२imes५१ इंच । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टन सं० ४१स/४३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

इत्याणाधर कत स्तोत्र टीका समाप्ता ।

कृतिरिय वादीन्द्र विज्ञालकीर्ति भट्टारक प्रियणिष्य यति विज्ञानदश्य यद्वभी निर्वेदस्योवृषः १ बोधेन स्फुरता यस्यानुप्रहतो इत्यादि स्तोत्र चतुरुय टीका समान्ता ।

७४२३. स्तोत्रा शयो — × । पत्रसः १० । मा० १० १४१ इ.च । भाषा —सस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०काल × । ने०काल × । वेष्टनसः ३७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर । विशेष —सिद्धियित, एकीभाव तव कल्यासा मन्दिर स्तोत्र है ।

७४२४ स्तोगपाठ —  $\times$  । पत्र स० म् । प्रा०१० $^{\circ}$ ४४  $^{\circ}$ ६ख । आषा — प्राकृत-सस्कृत । विषय — स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेधून सं० ३१३-११७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटिंडियो का हु सरदूर ।

बिशेष — उपमनंहरस्तोत्र, मयहर स्तोत्र, प्रजितनाथ स्तवन, तथु शांति घारि पाठो का सम्बह है।  $\mathbf{W} \times \mathbf{X}$ , स्तोत्रय टोका —  $\times$  । पत्रस्त २४। म्रा० ११ $\times$ ४३ इ.स.। भाषा-सस्कृत । विषय – स्तोत्र । रिकाल  $\times$  । त्रेक्शल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० १०६। प्रास्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर प्रजीत ।

विशेष--- निम्न स्तीत्र टीका सहित है ।

१. भक्तामर स्तोत्र २. कल्यारा मदिर स्तोत्र तथा ३. एकीभाव स्तोत्र ।

७४२६. स्तोश सग्रह— × । पत्रस० ८८ । प्रा० १० ई ४५ इश्व । भाषा—संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० कान × । ले०कान स० १६०५ भ्रासोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० ७२१ । प्राप्ति स्थान— २० दि० जैन मन्दिर प्रजोर ।

विशेष - निम्न पाठो का सग्रह है-

भक्तामर, कल्यासाधिर, भूपालबीबीसी, देवागम स्तोत्र, देवपूजा, सहस्रताम, तथा पच मञ्जूल ( हिस्दी ) ।

७४२७. स्तोश संग्रह—  $\times$  । पत्रस० ६ । ग्रा० १० $\frac{7}{4}$   $\times$  ५ इञ्च । भाषा -सस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर ग्रजीर ।

विशेष -- भन्तामर एव सिद्धित्रिय स्तोत्र संग्रह है। सम्मान्य टिप्परा भी दिया हमा है।

७४२६. स्तोश सग्रह— $\times$  । पत्रस० १० । भाषा—सम्ब्रत । विषय—स्तोत्र । र० काल  $\times$  । क्ष्णं । वेष्ट्रस० १०१ । प्रास्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष---निम्न स्तीओं का संग्रह है।

एकीभाव वादिराज संस्कृत विषापहार धनजय ,, भूपालस्तीत्र भूपाल ... ७४२६. स्तीज संग्रह—  $\times$  । पत्र सं० ४ । सा० १० $\times$ ४३ इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-स्तात्र । २० काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण ई। बेपून स० ११६६ । **प्राप्ति स्थान**—प्र० दि० जैन मन्दिर प्रजीर ।

. विशेष-पार्श्वनाथ एव महावीर स्तीत्र है।

७४३०. स्तोश संग्रह—  $\times$  । पत्रसं०४७ । ब्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इञ्च । बाला-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ७० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स० १४२० । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर ब्रजमेर ।

विशेष-भक्तामर, कल्याग् मदिर, तत्वार्थं सुत्र एव ऋषिमष्टल स्तीत्र है।

७४**३१ स्तोण सग्रह**—  $\times$  । पत्र स०४। मा० ६ $\frac{3}{4}$  $\times$ ५ इ.च.। माथा सस्कृत । विषय—सग्रह । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बुदी ।

विशेष -- निम्न पाठी का सम्रह है।

(१) नवरत्न कवित्त (२) चतुर्विशनि स्तुति (३) तीर्थकरो के माना पिता के नाम (४) मज गोविद स्तोत्र (५) शारदा स्तोत्र ।

७४**३२ स्तोत्र संग्रह**— ४ । पत्र स०४१ । ग्रा०५४ ५,ँ इश्वा । गाषा-मस्कृत । विषय— स्तोत्र । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्णा । वेष्टन म०६३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर राज-महल (टोक)

विशेष - निम्न स्तोत्रो का संग्रह है---

रुह्मनाम स्नोत्र जिनमेनाचार्य सस्कृत कल्याग्मिदिर , कुमुदचन्द्र ,, भक्तामर ,, माननुङ्गाचार्य ,, एकीभाव ,, बादिराज ,,

७४३३. स्तोत्र संग्रह—  $\times$  । पत्र स० ७ । ग्रा० १० $\frac{2}{5}$   $\times$  ५ इ च । प्रापा-हिस्दी । विषय स्तोत्र । ७० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जवपूर ।

विशेष - एकी भाव भूधरदास कृत तथा परमज्योति बनारसीदास कृत है ।

७४३४. स्तोत्र संग्रह— $\times$  । पत्रस० ४ । ग्रा० १० $\frac{3}{8}$   $\times$   $3\frac{3}{8}$  इन्छ । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । वेष्टन स० ४४१ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष — चके स्वरी एवं क्षेत्रपाल पद्मावती स्तोत्र है।

७४३५. स्तोत्र संग्रह— $\times$  । पत्र रा० १५ (१६–३०) । ब्रा० ६ $\times$  ६२७ । भाषा-सस्कृत । विध्य-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन रा० ६६९ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कन, जयपर ।

**७३३६. स्तोत्रसम्बह**— × पत्रसं∘ ३ । आ ० १००० ४६ व । भाषा –सस्कृत । विषय स्तोत्र । २०काल × । ले०काल ×। पूर्णा । वेष्ट्रन स० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० त्रैन मदिर लक्कर जयपूर । विशेष---महालक्ष्मी, चक्रेश्वरी एवं ज्वालामालिनी स्तोत्र ।

७४३७. स्तोत्रसग्रह —  $\times$  । पत्र सं० ७ । मा० १० $\frac{1}{6}$   $\times$   $\frac{1}{6}$  इंग । मापा—सस्कृत । विषय— स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० ४३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

विशेष---ज्वाला मालिनी, जिनपंजर एव पचागुली स्तोत्र है ।

७४३ म. स्तोत्र सम्ब्रह्—  $\times$  । पत्रस० १६। म्रा० ११३  $\times$  ५३ इखः। भाषा-संस्कृतः। विषय-स्तोत्रः। र०कालः  $\times$  । ले०कालः  $\times$ । पूर्णः। वेष्टनं स० ४१। **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुरः।

१. भूपाल चौबीसी	भूपाल कवि	पत्रस०६
२. विषापहार स्तोत्र	धमंजय	" E-88
३. भावना बत्तीसी	ग्रमितगति	''११-१६

७४**३६. स्तोत्र सम्रह——**  $\times$  । पत्रस० ३ । मा॰ १० $^1_2 \times ^2_2$  इला । साम्रा-सन्कृत । विषय-स्तोत्र । ए०काल  $\times$  । ते॰काल । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर लक्षर जयपुर ।

विशेष--- नघु सामायिक, परमानन्द स्तीत्र एव गायत्री विधान है।

७४४० स्तोत्रसंग्रह—  $\times$  । पत्रसं० ६-४० । घा० ५ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । घपूर्ण । वेष्टन स० ३१७-११८ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वंगरपुर ।

विशेष--जैन सकार वर्णन भी है।

७४४ १. स्तोत्र सग्रह— $\times$  । पत्रस० १७ । प्रा० ५ है  $\times$  ५ $\frac{1}{2}$  इन्त्र । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६७ मे ६६ तक -४८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वारपुर ।

विशेष---तीन प्रतिया है। ऋषि मण्डल स्तोत्र, पद्मावती स्तोत्र, किरातबराही स्तोत्र, त्रैलोक्य मोहन कवच श्रादि स्तोत्र है।

७४४२. स्तोत्रसंग्रह— $\mathbf{x}$  । पत्रस० =७ । ब्या॰ र $\frac{1}{7} \times \frac{1}{3} हल्ला । मापा-सस्कृत-हित्ती । विषय-स्तोत्र । र०काल <math>\mathbf{x}$  । सेकाल म॰ १७१२ । पूर्ण । बेकृतस० १०२ । प्राप्ति स्थान—िद० जैन सक्कवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति जीर्स है।

सबत् १७६२ मिती ज्येष्ठ सुदि चतुर्देशी लि॰ पंडित खेतसी उदयपुरमध्ये ।

े **७४४३. स्तोत्र संग्रह**—  $\times$  । पत्र स०२१। आ०५  $\times$  ५ डच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्त्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०७ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष-परमानन्द, कल्यारा मदिर, एकी माव एवं विषापहार स्तोत्र है।

७४४४. स्त्रीत्र संग्रह —  $\times$  । पत्र स॰ २३ । धा०१०  $\times$  ४ $^2$  इच । माया-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । २० काल  $\times$  । ते॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस॰ १२ । प्राप्ति स्थान – दि॰ जैन मन्दिर कोक्ष्रो का तैनावा ।

विशेष-- निम्न पाठो का संग्रह है--

4 14 1 1 1 W 1 1 1 1 1 1 1 6 6		
सरस्वती स्तोत्र		संस्कृत
सरस्वती स्तृति	ज्ञानभूषरा	u
क्षेत्रपाल स्तोत्र		и
दशनक्षरण स्तोत्र		ar ar
महाबीर समस्या स्तवन		u
बद्ध मान स्तोत्र		м
पार्थ्वनाथ स्तोत्र मत्र सहित		n
पार्श्वनाथ स्तोत्र		
चितामरिए पार्खनाथ स्तोत्र		**
चन्द्रप्रभ स्तोत्र मत्र सहित		и
बीजाक्षर ऋषि मडल स्तोत्र		
ऋषि सदल स्तीव	गीतमस्यामी	

७४४**५ स्तोत्र संग्रह—** ४ । पत्र स०७ । म्रा०११ ४ ६ दे इच । मागा-सःकृत । विषय— स्तोत्र । रचनाकाल ४ । के० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर कोट्यों का नैगावा ।

विशेष--- निम्न स्तोशो का सग्रह है---

पार्खनाथ स्तोत्र		सस्ऋत
स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	4
क्षेत्रपाल स्तोय		"
पार्ग्वनाथ स्तोत्र	राजसेम	
चन्द्रप्रभ स्तोत्र		
लघ भक्तामर स्तोत्र		"

नमो जोति मुर्ति त्रिकाल त्रिसिष । नमो नरिकार नरागध गण ।। नमो तो नराकार नर भाग बागी । नमो तो नराषार स्राधार जागी ।।

७४४६. स्तोत्र संग्रह $-\times$ । पत्र स०१६। ग्रा०१० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$ इङ्च। भाषा—सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। वेष्टन सं०१६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरस्ती कोटा।

विशेष -- कल्यारा मदिर, विधापहार एवं लक्ष्मी स्तोत्र मपूर्ण है।

७४४७. स्तीत्र संग्रह—  $\times$  । पत्र स०१८ । आ० १ $\times$ ४ इञ्च । भाषा—प्राहृत-सरकृत शिवय—ग्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्ट्रन स०१८ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बबलाना (व दी)

विशेष---मुख्यतः निम्न स्तीत्रो का सम्रह है।

भगदर स्तोत्र, ग्रजितशाति स्तोत्र एवं भक्तामर स्तोत्र ग्रादि ।

७४४ द. स्तोत्र संग्रह—  $\times$  । पत्र मं  $\circ$  ६ । आ० १० $\times$ ६ इस्त । माषा—तस्कृत । विषय— स्तात्र । ७० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०२१७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलान (बंदी)

विशेष--निम्न स्तोत्रों का सम्रह है।

स्वयभू स्तोत्र समन्तभद्र सस्कृत महाबीर स्तोत्र विद्यानदि नेमि स्तोत्र

७४४६. स्तोत्र सग्रह—  $\times$  । पत्रस०६ । आ० ६ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ ३०च । आपा—संग्रहन । विषय—संग्रह न । विषय—संग्रह न काल  $\times$  । ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०१४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर दबलान (ब्रुह्मी)

विशेष - निम्न स्तोत्रो का मंग्रह है---

स्वयभु सोत्र, भूपालचनुविशति स्नोत्र, सिद्धिप्रिय स्नोत्र एव विषापहार स्तोत्र का संग्रह है।

७४५०. रतोत्र संग्रह— $\times$  । पत्र स०२१ मे ३६। भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टन स०६७१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायती मन्दिर, भरतपुर।

विशेष--गुजराती में ग्रर्थ दिया हमा है।

७४५१. स्तोत्र संग्रह—  $\times$  । पत्र स० १६ । भाषा— हिन्दी-म-कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेप्टन स० ११३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवासनी सदिर भरतपुर ।

## विशेष —

नवकार मत्र, जिनदर्शन, परमजोति, निर्वाण काण्ड भाषा, भक्तामर स्तोत्र एव लक्ष्मी स्तोत्र हैं।

७४५२. स्तीत्र संबह्न $-\times$ । पत्र म०१४। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तीत्र। र० काल $\times$ । तेर काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन सं०३५७। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पत्रायती मन्दिर मन्तपुरः।

विशेष-एकी माव, विपापहार, कल्याण मन्दिर एव भूपाल चौबीमी स्तोत्र हैं ।

७४५ ३. स्वयंसू स्तोत्र—समन्तमह । पत्र सं०२४ । घा०१२ $\times$ ६ इत्रा । माषा—सम्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन सं०४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी जयपुर ।

७४५४, प्रतिसं० २ । पत्र स०४६ । प्रा० ६३ ४५ इला । ले० काल स०१८१६ मगसिर बुदी १ । पूर्ण । बेकुन सं० २३५ । प्राप्ति स्थान--वि० जैन मन्तिर बोरमली कोटा । विशेष-पारम्भ में सामायिक पाठ भी है।

७४५५. स्वयंसू स्तोत्र (स्वयंसू पञ्जिका) — समन्तामद्वाचार्य । पत्र स०११ । घा०१२ $}{\chi}$  ५ १ चः । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\chi$  । ले०काल स०१७६२ । वेष्टत सं०६३० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लस्कर, जयपुर ।

विशेष — इसमें टीका भी दी हुई है। टीका का नाम स्वयम् पंजिका है। बर्षेन भागवीतेन्दु कृते दीपोत्सवे दिने।

स्वयंभूषिका लेखि लक्ष्मग्रारुखेन घीमता ।।

७४५६. स्वयंभू स्तीत्र टीका—प्रमाजन्द । पत्र सं० ६१ । ग्रा० १४४ इच । भाषा—

सस्कृत । विषय-स्तीत्र । रुकाल ४ । ले० काल स० १५२० । पूर्णः । वेप्टन स० ८१ । प्राप्ति स्थान—

ग० विज जैन महिर. ग्रजोर ।

विशेष-मंथ का नाम कियाकलाप टीका भी है।

७४**५७. प्रतिसं० २** । पत्रस**० १**५२ । मा० ११४४ ¦इच । ले•काल स०१७७७ । पूर्ण। वेष्टन सं०२६६ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

**७४५ स. प्रति सं० ३** । पत्रम० ४६ । प्रा० १२१ै ×५१ै इचा। ले०काल म० १७०२ । पूर्ण । वेष्ठत म० २४१ । **प्राप्तिः, स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष - अलवर मे प्रतिलिपि की गई थी।

७४**५६. प्रति सं० ४ । पत्रस० ६६ । घा० ११**×४<sup>3</sup> इत्थ । ले०काल स० १६६५ भादवा बुदी ७ । पर्यो । वेप्टन सं० १४ **। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर दीवाओं कामा ।

विशेष-रोहतक नगर मे आ० गुरगुवन्द ने प्रतिलिपि करवायी थी।

७४६०. स्वयंमू स्तोत्र माथा - द्यानराराय । पत्रस०४६। ग्रा०१२ $\times$ ४, इला । माषा - हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१६२३ । प्राप्ति स्थान---भंकि जैन सन्दर, प्रजमेर ।

७४६**१, होवालो — रिश्व।** पत्र म०१। ग्रा०१० $\times$ ४ हुँ इःश्व। भ्राचा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन म०२७४। **प्राप्ति स्थान—**वि० जैन मन्दिर वजनाना (बूदी)

---:0:----

विशेष-साध्वी श्री भागा सज्भाय भी।

# विषय -- पूजा एवं विधान साहित्य

७४६२ प्रकृतिम चैत्यालय जयमाल—भैया भगवतीबास । पत्र स॰ ३। घा० ६२०४४ इ'च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल स० १७४१ मादवा सुदी ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १०१२ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मंदिर प्रजमेर ।

विशेष- बक्रिम जिन चैत्यालयो की पजा है।

७४६३. छक्तिम चैत्यालय पूजा—चैतसुख । पत्रतः ३६ । ग्रा० १३  $\times$  ६ $^1_4$  इश्व । माणा—हिन्दी । विषय पूजा । र० काल सं० १६२० । ले०काल स० १६६४ । पूर्ण । येष्ट्रन सं० ४५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

७४६४. ग्रकृतिम चैत्यालय पूजा-महिलासागर । पत्र स०२०। आ०१०१.४४ दश्व। भाषा-सास्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२८५ । **प्राप्ति स्थान-**वि० जैन मन्दिर ग्राभिनन्दन स्वानी वृदी ।

७४६५. ब्राक्ट्रित्रम चैत्यालय पूजा— ४ । पत्र सं० १७७ । घा० १२ १४ ४ ६ इ. । माषा— हिन्दी पद्य । विषय — पूजा । र०काल स० १०६० । ले०काल सं०१६११ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६६ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सण्डेलवाल प्रवासती मन्दिर धलवर ।

७४६६. ग्रकुप्रिम जिन चैरवालय पूजा— लालजीत । पत्रस॰ २२६ । ग्रा० १३४७ इश्व । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल सं० १८७० कालिक मृदी १२ । ले०काल स० १८८६ वैशास मृदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस० १४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रप्रवाल पंचायनी मदिर ग्रलवर ।

७४६७. प्रति स० २ । पत्रस० १२६ । ग्रा० १०२×६ ; इला । ले० काल स० १८७७ । पूर्ण । वेप्टन स० १०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर बयाना ।

विशेष—-नक्ष्मणुदास बाकलीबाल खुमेरबाले ने महात्मा पन्नालाल जयपुर बाले से झागरा में प्रतिलिपि करवाई थी।

७४६८. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १५६ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायनी महिर प्रण्डावालो का डीग ।

विशेष --- ग्रागरा मे प्रतिलिपि की गई थी।

७४६**६. प्रति सं**० ४ । पत्र स०१४५ । घा०१३ × ७} इला । ले०काल स०१६२ म । पूर्णे । वेष्टन सं०४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पूरानी डीग ।

७४७०, प्रति स० ४ । पत्रस० १४७ । ते०काल स० १९०४ । पूर्ण । बेष्टन सं० ३०४ । प्राप्ति स्थान---- दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

म तिम प्रशस्ति---

पूजा धारम्य ढ्यो, काशी देश हर्ष मयो, भेलपुर ग्राम जैनजन को निवास है। श्रकीतंम मन्दिर है रचा चारि सै श्रठावन । जेतिन को सपाठ लालजीत यौ प्रकास है।

७४७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं०१६७ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३२७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

७४७२. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १७६ । घा० २२ 🗡 ६ इखा । क्षे०काल 🗙 । पूर्गे । वेष्टन स० ११-३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर, कोटडियो का द्वारपुर ।

७४७३. प्रतिसं० ६ । पत्रम०१११ । प्रा० ११ ¦ ४६ हुँ इखुं। ले० काल स०१८६१ सावन सुदी १२ । पर्गा । बेब्रनस०१०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर फनेब्यर भेलावाटी (सीकर)

्। । बष्टनस्य १०४ : आस्ति स्थान—ादण्यन मादर् फतह्युर शलावाटा (साकर) - **विशेष**—श्रायक केदारमलजी न फतेह्युर में सोनीराम भोजग से प्रतिलिपि कराई थी ।

७४७४, **ग्रक्षस्यदशमी पूजा** —  $\times$  । पत्र स॰ द । ब्रा०१० $\times$ ४ इ.ख । साया—सम्ब्रत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ ३६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरमसी कोटा

विशेष--मुक्तावली पूजा भी है।

७४७५. ग्रहाई द्वीप पूजा $-\times$ । पत्र स०१७६। ग्रा०  $-\frac{1}{2}\times \frac{1}{2}$  इस्त । भाषा -स स्कृत । विषय -पूजा । २० काल  $\times$  । से काल स०१६१४ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । येष्ट्रन स०१३४/३७ । प्रास्ति स्थान -१० जैन पार्थनाथ सस्दिर इन्दरस्य (कोटा)

७४७६, **स्रटाई द्वीर पूजा**—डालूराम । पत्रस०२–३०। ब्रा०१४×८ डञ्च । मापा— हिन्दी। विषय—पुजा : २० काव स०१८८७ ज्येष्ठ मुदी १३। ले**० काल रा०१**६३१ प्रापाठ मुदी ६। पूर्ण। **वेक्रनस**०१०५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायनी मन्दिर वयाना।

विशेष - इंग्वरी प्रशादणमां समणाबादवालो ने प्रतिनिधि की थी।

७४७७. प्रतिसं० २। पत्र स० ११३। फ्रा० १२ × ६ इंच। ले० काल स० १६३१। पूर्ण। बेष्टनस० १७। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुर। (टोक)

७४७८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १११ । छा० १२३ ४४ देश । ले० काल स० १६६३ । पूर्णु । बेपून स० ५२३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष-छोटे दीवानजी के मन्दिर की प्रति से रिपभचन्द बिन्दायक्या ने प्रतिलिपि की थी।

७४७६. ब्रहाईहीप पूजा—स० सुसचन्द्र । पत्र त॰ २६८ । झा॰ ११४४ इ.च । भाषा-सस्त्र । विषय—पूजा । र०कान ४ । ले०काल स० १६२४ सावग् बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० ३५१ । प्राप्ति स्यान--दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७४८०. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६७ । आ०११३ ४७ इ.च. । ले०काल स०१८६० ग्रामाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेग्टन स०१७ **। प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मदिर तेरहपथी दौमा ।

विशेष-१ से २ द तथा ६ ४ व ६६ पत्रो पर मुन्दर रगीन बेलें हैं।

बल्यतलाल तेरापथी नंदौसा मे प्रतिलिपि करवाई थी।

७४८ १. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३७३ । ले॰काल स० १८७४ । पूर्णं । वेष्टनसं० २४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायर्ता मन्दिर कामा । विशेष-- जोधराज कासलीवाल कामा ने प्रतिलिपि कराई थी।

७४८२. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०२४३ । थ्रा०१३१ै×७१ इञ्च । ले॰काल सं०१९११ । पूर्ण । वेष्टुन सं०१६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन लम्बेलवाल पत्रायती मन्दिर प्रलवर ।

७४८३. **श्रदाईहोप पूजा** लालजीता। पत्रस०१३७। घा०१३४६ इ.स.। भाषा-हिन्दी (पदा)। विषय—पूजा। २०काल ४। नेशकाल स०१६५० भादों मुदी ३।पूर्णः। बेष्ट्रन स०१२५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्लायती मन्दिर करीली।

७४८४. ग्रहाईद्वीप पूजा —  $\times$  । पत्र स०३६ । ग्रा०११ $\times$ ५ इख । भाषा —संस्कृत । विषय —पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०२५२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष-- ग्रहाई द्वीप पूजा के पहिले और भी पूजाए दी हैं।

७४८५. प्रतिसं० २ । पत्र सस्या १४० । १२ $\frac{3}{6}$  $\times$ ६ इश्व । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २१/४६ । प्राप्ति स्थान - दि॰ जैन सोगाणी मन्दिर करोली ।

७४८६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २१५ । ग्रा० १२५ ×७३ इन्हा ने०काल स० १६०६वेठ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४/३३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सीमासी सन्दिर करीची ।

७४८७. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०२४० । म्रा०२३४६ है इ.च.। लेक्काल स०१८८८ पौप सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टन स०१११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर करौती ।

विशेष—रामचन्द्र ने नानगराम से किरौनी नगर में दीवान बुर्यासग जी के मन्दिर में प्रति-लिपि करवाई थी।

७४**८ म. प्रति सं० ४।** पत्र स० १०४। म्रा० १०% ४७ इक्ष**।** ले०काल म० १८४२। पूर्ए। वेप्टन स० ११२। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर।

७४**८६. प्रति स**०६ । पत्रस०१४४ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनस०७० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पर्यायती मदिर हण्डावालो का डीग ।

७४६०. स्रनतबतुं दशी पूजा-श्री सूबस्यति । पत्र स०२४ । भाषा —मस्कृत । विषय— पूजा । र०काल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती महिर हण्डावासी का डीग ।

७४६**१. झः न्तचतुर्वशी पूजा**—शान्तिदास । पत्रस० ११ । बा० १२४६ इचा । भाषा— सम्कत । विषय—पूजा । र०काल ४ । ले०काल सं० १७६७ वैशास मुदी ४ । वेष्टन स० ६१४ । प्राप्तिः स्वान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष--नरायरा नगर मे भ० जगत्कीत्ति के शिष्य बुध दोदराज ने प्रपने हाथ से प्रतिनिधि की थी।

७४६२. झनन्त चतुर्वेशी पूजा— × । पत्रतः १४ । झा० १०×६ इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्यो । वेष्टन सं० १२= । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी । ७४६३. धनन्तचतुर्वेशी पूजा—  $\times$ । पत्र सं०१०। प्रा०११ $^{3}$ ×४ $^{3}$  इन्थः। भाषा—सस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन म०३३२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान व दी।

७४६४. ग्रनस्त्वतुरंशी तरा पूजा—  $\times$  । पत्र स०२७ । प्रा० ११४५ इञ्च । मापा— संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१३७० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७४६५. धनन्तचतुर्वशी तत पूजा—विश्वसूषरण । पत्रस०१४ । धा० ६३ ४४ । साथा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १३६८ । प्राप्ति स्थान—५० दि० जैन मन्दिर, अवसेर ।

७४**६६ स्नतत जिनपुजा— पं० जिनदास** । पत्रसं० २६ । झा०१०्रे×४ इश्वः । भाषा-सन्द्रत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स०१६२३ सावरण मुदी ४ । पूर्णः । वेष्ट्रन स०४६ । **प्राप्ति** स्थान – दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर टोडारायसिंह (टोक)

७४६७. <mark>प्रनन्तनाथ पूजा--भीमूषरा । पत्रस० १३ । आ० १०</mark> ४४ हुन्छ । भाषा-*नम्जन* । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल स० १५२४ मगसिर बृदी १ । पूर्ग । वेष्टनसं० ४१६ । **प्राप्ति** स्थान---भ० दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

७४६**८. प्रतिसं० २** । पत्रस० १६ । ले० काल स० १८७६ भादवा बुटी ८ । पूर्गा ।वेष्ट्रनस० १४३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर स्रजमेर भण्डार ।

७४६**६. प्रतिस० ३।** पत्रसं० १६। घा० १२ ४ प्र्रैइञ्च। ले०काल स० १८७६ भादवाबुदी ८. । पूर्णाबेष्टतस० ६ प्र<sup>३</sup>। प्राप्ति **स्थान**— दि० जैन मन्दिर क्रजमर ।

७५००. प्रतिसं० ४ । पत्रम० १-२२ । लेब्काल ४ । सपूर्ण । बेहनसं० १० । प्राप्ति स्थान-दिः जैन तेरहपंथी मन्दिर बमवा ।

७५०१. **ग्रनन्तनाथ पूजा—ामचन्द्र**ी पत्र स०५। ग्रा०६<sup>5</sup>,४ ८<sup>5</sup> इश्वाभाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय— पूजा। र० काल ४ । ले०काल स० १६६१ । पूर्या। वेष्टन स०६३ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

७५०२. **छन-लनाथ पूजा**— $\times$  । पत्रस०२४ । छा०१० $\times$ ४ है इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विदाय— पूजा। र०काल $\times$ । ल० काल $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०१००७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फ्रजिय भण्डार।

७५०३: झनन्तनाथ पूजा —  $\times$ । पत्र सं०१३। झा०१३  $\times$  ५ इचा। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल स०१-६५३ नाइवाबुदी ७। ले०काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स०१०२। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान, दूवी।

७५०४. ग्रनत्ताथ पूजा $-\times$ । पत्र तः १६। ग्रा०१०४५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० कान  $\times$ । लेककाल  $\times$ । पूर्ण । वैष्टन स॰ २४७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन संदिर ग्रीमनस्त स्वामी (बूदी)।

७५०५. धनन्तनाथ पूजा  $\times$  । पत्रस० २७ । ध्रा० ६ $\times$ १ $\frac{1}{6}$  इच । माषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल सं० १०६६ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मिदर दवलाला (बुदी)

७५०६ ध्रनस्तनाय पूजा $-\times$  । पत्र स॰ २१। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-सस्क्रत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ते० काल स० १६२५ मादवा बुरो १३ । पूर्ण । बेशून स० १३७ । प्राप्ति स्थान—दि० तैन मदिर प्रधिनस्वर स्वामी, (बुंदी)

विशेष नागदी के नेमीक्वरजी के मन्दिर में गुरुजी साहब शिवलालजी की प्रेरेग्गा से ब्राह्मग् गिर-धारी ने प्रतिलिपि की थी।

७५० म. श्रनन्तनाथ पूजा मडल विधान—गुराचनद्राचार्य । पत्रम० २२ । प्रा० १२ हे २६ इञ्च । भाषा-नम्ह्रम । विषय-पूजा । रज्जाल 🗴 । लेज्जाल मंग्र १६२० । पूर्ण । वेष्ट्र म० २५६ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर श्रीननस्त स्वामी, (ब्रु दी)

७५०६. प्रतिसं० २ । पत्रस० २६ । घा० १२ × ५ दख । ले०काल स० १६३० । पूर्ण ।वेष्टनस० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूटी

७५१०. प्रति सं० ३ । पत्रसः० ५६ । ग्रा० १०%४ इव्य । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० २४६ । प्राधित स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७**५११ प्रतिसं०४।** पत्र त०२ मे २७। आ०११४७ इन्धा ले०काल स०१६२१। पूर्मा । बेष्टन स०२४/१५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)

७**४१२. प्रतिसं० ५** । पत्र स० ४१ । झा० ११ × ५ इन्छ । ले**०का**ल × । पूर्ग् । वेष्टनस० ४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर क्रिगनन्दन स्वामी (ब्रुंदी)

७५**१३. प्रति सं० ६।** पत्र संख्या २६। ग्रा० १० 🗴 ५ इ.ख.। ले०काल सं० १८७६ पूर्ण । वेष्टन स० १२८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

७**५१४. प्रतिसं० ७** । पत्रस० ४२ । बा० ५<sup>२</sup> × ५ इ.खा ने० काल स० १६२० । पूर्ए । वेष्टनसं० ३०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पाध्वेनाथ चौगान बृदी ।

विशेष-श्री शाकमागपुर में रचना हुई थी। नेमीसुर चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

७४१५. म्रनन्त पूजा विधान । पत्र स० २। मा० ११  $\times$  ५ $^2$  हजा । माया- —संस्कृत । विधाय-पूजा । र० काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेटन सं० ५८, २६२ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर निमाथ टोडारायिह (टोक)

७**५१६. झनन्त बरा कथा पूजा**—लिल्सिकीत्ति । पत्रसं∘ ६ । झा॰ ११४४ इच । माषा– संस्कृत । विषय पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १६२२ । **प्राप्ति स्थान**–दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ७५१७. **धनन्तवता पूजा - पाष्ट्रे धर्मदास ।** पत्रस० २७ । आ० द ४ १ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । लेकाल म० १६६३ । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन सप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७५१८. अन्नतात्रत पूजा—सेवाराम साह । पत्रस०३। ग्रा०८१४६ इच । भाषा - हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल स०१६४७। पूर्ण। वेष्टनस०६५०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर !

७५**१६. प्रतिसं० २** । पत्र स०३ । ग्रा० ११ × ५ है इश्वर । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन सं० ५ दर्गः प्रा**प्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७४२०. अनन्त्रांतरा पूजां  $\longrightarrow \times$  । पत्रसः १४ । याः ११  $\times$  ११ । प्राप्ति स्थान - सत्या - सत्य - सत्या - सत्य - स

७५२१. **अनन्सत्रत पूजा**  $-\times$  । पत्र स० ७। ग्रा० ५ $\frac{1}{7}\times$ ४ $\frac{3}{7}$  ड्या । भाषा — तिस्दी । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० १४६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर भण्डार ।

७५२२. ग्रनस्तवरा पूजा — × । पत्र मं० १४। झा० ११ × ४ ! इखा। भाषा —सस्कृत । विषय — पूजा। रक्काल × । के० काल स० १८८० सावरा। बुदी १४ । पूर्ण। वेष्ट्रन म० ११०। प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

७४२३. अनन्तवता पूजा— × । पत्रम० २०। आ १२×४ हे इच । भागा-मन्कन । विषय-पूजा। र०काल ×। लेकाल स० १६६४। पूर्ण । बेष्टन म० २५/१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्वायती मन्दिर इनी (ोक)

ै ७४२४. **ग्रानलबत पूजा** — × । पत्रम० २३ । ग्रा० ६<sup>3</sup>, ४६ इला । भाषा नसस्का, हिन्ती । विषय — पूत्रा । र०काल × । ले०काल स० १६० म । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६६ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर नागदी बृंदी ।

विशेष-- १४ पजायें है। जयमाल हिनी में है--- कड़ी २ ब्राप्टक भी हिन्दी में है।

७५२५. ग्रनन्त सत् पूजा — × । पत्रसः १८ । भाषा —सस्कृत । विषय —पूजा । र०कास × । ले० कान × । ग्रपूर्ण । वेष्ट्रनसः २३ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन तेरहपथी भन्दिर बगवा ।

७५२६. ग्रानन्तदत पूजा  $- \times 1$  पत्र स० १३। ग्रा० १३  $\times$  ६ इ.च । भाषा -सस्कृत 1 विषय—्यूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्गं । बेष्टनस० ११३ । प्राप्ति स्थान—िय० जैन महिर बोरसली कोटा ।

७**१२७. श्रनस्त्रतः पूजा** — × । पत्रम० १७ । घा० १४ ×४ इश्व । भाषाः मस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले•काल × । पूर्णः । बष्टन म० ४१५ । **प्राप्तिः स्थान** —दि० जैन मदिर कोटडियों हुगरपुर ।

७५२८. **झनस्तवरा पूजा** — ४ । पत्रस० १२ । घर० १० ४ ६ इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा र०काल ४ । से०काल स० १८०१ मादवा सुरी ८ । पूर्ण। वेष्टन सं० २४३ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर राजस्थान (टोक) विशेष--प्रति जीखं है।

७५२६. झनन्दावरा पूजा- — ४ । पत्र सं०६ । झा० ६४६ इचा । भाषा-सस्कृत । विषय— पूजा । र०काल ४ । ले०काल क० १०६६ माबस्य मुती १०। पूर्णा । वेष्ट्रन सं०७४-१०६ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोटारायसिंह (टोक)

७५२० झनन्तवत पूजा—  $\times$  । पत्रतः १-२१। ब्रा॰ ७ $\frac{3}{4}\times \xi^{\frac{3}{4}}$  इश्वां भाषा-हिन्दी गय । विषय — पूजा। र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णं। वेग्टन स० १४५—२५६ । **प्राप्ति स्थान** — दि॰ जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडागायसिह (टोक)

विशेष---प्रनिम पत्र नहीं है।

७५३१. ग्रानिकरा पूजा उद्यापन— सकत्किश्चि । पत्र म०१६। ग्रा०१० × ४) इञ्च । भागा-सरकृत । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल म०१६६६ भ्रामीज मुदी ७ । पूर्ण । वेप्टन स० १९७२ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मदिर म्रजभैर ।

७५३२. प्रति सं० २ । पत्र ग० ४१ । ले०काल स० १६२६ मगसिर गुदी ६ । पूर्णं । बेहन सं० १३७६ । प्राप्ति स्थान—चपरोक्त मन्दिर ।

७५३४. ग्रानःतवरा विधान—शान्तिरास— $\times$ । पत्रस०२४। ग्रा०१० $^{3}$  $^{2}$  $^{4}$  $^{5}$  भाषा- $^{5}$ र्थः १०३५। प्रा०१० $^{3}$  $^{5}$  $^{$ 

विशेष-- शिववक्स ने दौमा में प्रतिलिपि की थी।

७५३५. ग्रनन्तवरोद्यापन—नाराधण् । पत्र म० ५०। ग्रा०६  $\times$  ६ इञ्च । नाया—सस्कृत । विषय-पूजा । ग०काल  $\times$ । लेकाल स० १६५५ । पूर्णं । वेष्ट्रन सं० ५१६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वंगरपुर ।

७५३६. ग्रनन्तवरा**शियन**— × । पत्रस० २ से ३२। ग्रा०११×५ इश्वा । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेटटन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगानी मदिर करोली ।

विशेष--प्रथम पत्र नही है।

७**५३ - प्रमिषेक पाठ** — × । पत्र स० ४ । प्रा० - ॄे × ७ इन्च । भाषा— संस्कृत । विषय -पूजा । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६४७ **। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर । ७४.३६. **श्रमिषेक पाठ**— × । पत्रस०७। ग्रा०१०३/ ×५ इंच । माषा-मस्कृत । विषय — पूजा । र॰काल × । ले॰ काल सं॰ १६०६ । पूर्णा । वेष्टनसं॰ २०६ । **प्राप्ति स्थान** — वि॰ जैन मन्दिर ग्रामिनावन स्थामी (बुंदी) ।

विशेष - घृताभिषेक पाठ है।

प्रशस्ति—संबत् १६०६ वर्षे मार्गसुदि नवसी बृहस्पतिवासरे उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे धृत गुण् भ्रारम पठनार्थं विस्ति प० ज्योति थी महेम भोषा सुत ।

७५४०. ग्रस्मिषेक पाठ $-\times$ । पत्र स॰ ४७। प्रा० १०  $\times$  = इश्व । भाषा सस्कृत । विषय-पूत्रा। २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६५। प्राप्ति स्थानदि० जैन खंडेलवाल मदिर उरसपुर ।

७४४१. प्रसिवेक पूजा— × । पत्र स॰ ३ । ग्रा॰ १० × ५१ इचा । भारा-सम्बन् । विषय-पूजा । र० काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६० । प्रास्ति स्थान— दि० जैन भदिर कश्हपुर शेखाबाटी (सीकर)

७४४२. ग्रमिषेक पूजा —िवतोदीलाल । पत्रस० ५ । या० ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  १७ । मापा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन स० १६० । प्राप्ति स्थान—िद० जैन मन्दिर फनेहपुर मेखादाटी (मीकर)

७५४**३, स्रभिषेक विधि** × । पत्रम**ं** ४। द्वा १०३ × ५ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले० काल । बेष्ट्रन स० ५६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूर ।

७५४४**. घरटहरस सहा-ग्रबं— ४ ।** पत्रस**ः १। धा**० ५४६ इ.च.। सावा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काच ४। ले० काल ४ । पूर्णा। वेष्टन स० ६६४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मदिर लक्कर जयार ।

७५४५. प्रष्टाह्निका पूजा—सकलकोत्ति । पत्र स॰ ११ । प्रा॰ ११  $\times$  ४५ इ.ज. । भाषा— सन्द्रतः । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स॰ १६२, ५१ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन पार्वनाथः मेन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७५४६. **ब्रष्टाह्निका वृतोद्यापन-मोभावन्द** । पत्र भ २० । ब्रा० ११र्डे ४४<sup>2</sup> इव । भाषा-सस्टा । पियय पूजा । रुकाल ४ । लेकाल स०१६९७ चैत सुदी १ । पूर्ण । वेटन स०४१ । **प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

७५४७. ग्रस्टाह्निका पूजा— $\times$  । पत्रसं० २०। ग्रा० न्हें  $\times$  ६हें इव । साया—संस्कृत । विषय पूजा । र०काल स०१८७६ कार्तिक बुदी ६। लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स०११४७। प्राप्ति स्थान—प्र- दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष -दो प्रतियो का मिश्रए है।

७५४६. **स्ट्राह्मिका पूजा** — × । पत्रस० १५ । घा० न × ६ इञ्च । भाषा — संस्कृत । विषय-पूजा । र०कास ×। से •काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ६७६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जेन सन्दिर प्रजनेर भण्डार । ७१४६. सन्दाह्मिका पूजा— x । पत्रसं ०१३ । प्रा० १० x १ इत्तर । नाया-हिन्दी । विषय — पूजा । र०कास x । ले०काल x । पूर्ण । बेष्टमसं ०१३८३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर स्रजोर प्रकार

७४५०. ग्रस्टाह्मिका पूजा— $\times$ । पत्र स०११। प्राः १० $^{\circ}_{7}\times$ ४ $^{\circ}_{7}$  इञ्च । साथा—सस्कृत । विषय—पूजा । ४०काल  $\times$ । ते०काल सं० १६२०। पूर्ण । वेष्टुनस० ४७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रिभनन्दर स्वामी, बर्दी ।

७१.५१. फ्रट्टाह्निका पूजा— × । पत्र स०३ । घा०११ × ४ इन्छ । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल । ले०काल × । पूर्णा विष्टन सं० ३३७ ३३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७४५२. **अस्टाह्मिका पूजा उद्यापन—गुभज्तः १** । पत्रस० १२ । आ० ११ ४ ४ इश्व । मापा– सन्कृत । विषय-पूजा १०काल  $\times$  । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । बेहनसं० ७७ । प्रास्ति स्थान— दि० जैन सहेनवाल मंदिर उदयपुर ।

७४५३. ब्रष्टाह्निकापूजा—स० सुमचन्द्र । पत्रस० ४ । ब्रा० ११×५ इञ्च । भाषा-सम्ब्रत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ११४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ष्रयशल मिंदर उददपुर ।

७५५४ प्रतिसं० २ । पत्रस० ६ । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टनसं० ४५४ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन पत्रायती मन्दिर मरतपुर ।

७४५**४. प्रष्टाह्मिका पूजा —सुमतिसागर** । पत्र म० ८। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल ४ । ने०काल स०१८५८ चैत मुदी ६ । पूर्ण। वेप्टन स०११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

७४४६. म्राट्टाह्निका पूजा—द्यानतराय । पत्रसं० १६ । मापा—हिन्दी । विषय — पूजा ।  $^{7}$ ०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० १२८ । प्राप्टित स्थान — दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--- २ ६० १५ धाना लगा था।

७५५ स्न. ग्रष्टाहिका मंडल प्जा — × । पत्र सं० ६ । ग्रा० १० ४७ इञ्च । भाषा — हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०७६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन तेरहपथी मन्दिरदौसा ।

७५५६. कष्टाह्मिका वतोद्यापन पूजा—पं० नेमिखबंद्व। पत्रस० ३५ । ग्रा० ६४६ इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १३१ । प्राप्ति स्थान—दि० बैन मन्दिर पथापती दुनी (टॉक) ७५६०. **ब्रष्टाह्मिका पूजा**— × । पत्रस०२७। ब्रा० ८<sup>°</sup>, ४६ इश्वा भाषा—हिन्दी प**ष्ठ ।** विषय—पूजा । र०काल × । लेक्काल स०१८८६। पूर्ण । वेष्ट्रन स०४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपूर्वी मन्दिर मालपुरा (टोका)

७**५६१. झल्टान्ट्रिका पूजा**- 🗙 । पत्र स० १५ । झा० १३ ४७ इश्व । र०काल स० १८७६ । ले० काल स० १८८५ । पूर्ण । बेट्न स० ४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहृतथी मालपुरा (टोक)

७**५६३ म्रस्ट प्रकारी पूजा**—्× । पत्र स**० ४। भाषा**—हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स**० ६**८६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

७१६४. ग्राटप्रकारी प्जा जायमाल $-\times$ । पत्रस० ११। ग्रा० १३ $\times$ ६ इव । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । २०काल  $\times$ । ले० काल स० १८६४। पूर्ण । वेष्टन स० १६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्राभिनस्वन स्वामी, बुदी ।

७**५६५. ग्रसङ्भाय विधि ।** पत्र स**०२। भाषा**—हिन्दी । विषय पूजा । २०काल imes । लेवकाल imes । पूर्यो । बेष्टन स०६७७ । **प्राप्ति स्थान**—दिव जैन पत्रायती मदिर भग्तपुर ।

७५६६ द्याकार शुद्धि विधान – वेवेन्द्रकीर्ति । पत्रस $e \in \mathbb{N}$  १६८५ । प्राप्त स्वर्ता । विषय-विधान । २० कान  $\times \mathbb{N}$  । पूर्ण । वेष्टन स $e \in \mathbb{N}$  २६१-१४८ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोर्टाव्या का हु गरपुर ।

७५६७. ग्राठ प्रकार पूजा कथानक— $\times$  । पत्र म॰ दश् । याया—प्रकृत । विषय —पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१८७६ । पूर्ण । वेष्टन स०६ ४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७४६ ६ आ दित्यजिन पृज्ञा—केशवसेन । पत्रस॰ ६ । आर०११ ४६ ६च्च । भाषा-सस्तृत । विषय—पृज्ञा । र०काल ४ । लेक्काल म०१६४६ । पूर्णा विष्टन स०४३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरधुर ।

७५६६. झादित्य जिन्नपूजा—में० देवेन्द्रकीस्ति । पत्रसः १७ । झा०१०४६ इ.स. । भाषा— संस्कृत । विषय ृजा । २०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५२५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गण्पुर ।

विशेष-इसका दूसरा नाम ग्रादित्यवार वस विधान भी है।

७५७०. प्रति स०२ । पत्र स०१६ । प्रा०१०४४ ई. इ.च. । ले०काल स०१६१६ श्रावसा सुदो ६ पूर्णा। वेप्टन स०१२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटामन्दिर बयाना।

७४७१. म्रादित्यवार वतोद्यापन पूजा—ज्ञायसागर । पत्रसं०१०। प्रापा—सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल स०१०१६ । पूर्ण । वेष्टन सं०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर । ७४७२ **स्रादित्यवत पूजा:** ×। पत्र स०१२ । स्रा०१० रे४४ इञ्च । साया—संस्कृत । विषय—राजा । र०काल ×। ने०काल स०१८३६ जेठ बुदी ६। पूर्ण । वेष्टन स०४१ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर बोरसभी कोटा ।

विशेष-पं शासमबन्द ने सिखा था।

७५७३. झादित्यवत पूजा — × । पत्रत०४ । या०१०×५१ इत्त्रः । भाषा —संस्कृत । विषय—ाजा । रकान× । ते० काल× । पूर्णं । बेष्टन सं०६१२ । प्राप्ति स्थान — भट्टारकीय दि० जैन सरिट ग्रावरेग

७५७४. इन्द्राध्यज्ञ प्राा- म० विश्वमूष्या । पत्रसं० १११ । प्रा॰ १२ $\times$ ६ इच । माषा- सस्क्रत । विषय प्रजा । र॰काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वे॰ स॰ १५६ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन प्रप्रशाल पवायनी मन्दिर उद स्पृर ।

७५७५. प्रतिसं० २ । पत्रग० ११८ । ब्रा० ११८/४५ 'इडच । ले० काल सं० १८८३ फागुए। बुदी २ । पूर्ण । बेप्रन स० १२७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्वायती मन्दिर दुनी (टोक)

७**४७६. प्रति सं**० ३ । पत्रस० ११२ । घा० ११ ४७ है इला । ले० काल सं० १६८४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १०३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर दीवानजी कामा ।

७४७७. इन्द्रध्वल पूजा  $- \times 1$  पत्र स० ६०। म्रा० १२ $\times$  ७ $\frac{1}{2}$  इल । भाषा —सस्कृत । विषय — पूजा । र०कान  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १५७। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मदिर फनेहपुर गेलाबाटी (सीकर)

**विशेष** — ग्रथ कालागत मूल्प १३।~) है ।

७५७६. **इकवीस विधि पूजा.—** ४ पत्र म० १३। भाषा — जिन्नी गुजराती। विषय — पूजा 1 र०काल × 1 ले० काल म० १८७६। पूर्णा। वेष्टन स० ६५१। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर भन्तपूर।

७५७६. ऋबिसंडल पूजा — शमजन्द । पत्र स०१८ । भागा—मस्कृत । विषय—पूजा । रक्तान ४ । लेक्कान ५०१८६ जेठ सुरी ११ । पूर्ण । वेटन स०१० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर भरतपुर ।

७५८०. ऋषि मंडल पूजाः-विद्याभूषरा। पत्रतः २०। ग्रा०११४४ इञ्च। भाषा— सस्त्रन । विषय—गुजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णः । वेष्टनसं०१⊏३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६८-१. ऋषि संडल पूजा-गुर्गानिद । पत्रसं० २१ । आ०१०४५ डञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय — पृजा । २० कान ४ । ले०काल सं०१६११ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२८२ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन सन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बुदी ।

विशेष - बुंदी में नेमिनाथ चैत्यालय में पं० रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७५८२. प्रतिसं० २ । पत्रस० २ -२४ । मा० ११ ×५ इ.च.। ले०काल × । मपूर्णे । वेष्टन सं० ५१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

७५६४. ऋषिमंडल पूजा माषा—दौलत श्रोसेरी । पत्र स०१२। ग्रा०१२३ ४६३ इत्र । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय-पूजा । र० काल स०१६००। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फेनेहपुर भेलावादी (सीकर)

७५८५. प्रति स० २ । पत्रस० १५ । घा० न $^2_i \times ^3_j$  इश्व । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० न । प्राप्ति स्थान— ६० जैन मन्दिर चीधरियान मालपुरा (टोक)

७४६६. ऋविसंडल पूजा —  $\times$  । पत्र स॰  $\times$  । घा॰ ११ $rac{1}{2} \times rac{1}{2}$  इखा । मापा — सस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ १४३ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर स्रादिनाथ वृदी ।

७५६७ ऋषिमङल पूजा— 🗙 । पत्र स०५। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। २०काल 🗴 । क्षेत्रकाल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०३७/३६६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- ६ प्रतिया और है जिनके वेष्टनसं० ३८ ३६७ मे ४३/३७२ तक है।

७४८६ ऋषिमंडल पूजा — × । पत्र स० १७ । ग्रा० ११×७ दश्व । मापा —ग्रस्तृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६२२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर नागदी वृदी ।

७५८६. ऋषिमंडल पूजा — 🗴 । पत्रस० २ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टुनस० ७२६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७५६०. ऋषिमंडल पूजाभाषा— × । पत्रस०१३। ब्रा०१०×५ इन्ता। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। २०काल × । ले० काल स०१ ६६४ फागुराबुदी ४। पूर्ण। बेहन स०१२३२। प्रास्ति स्थान—प्र० दि०जैन मन्दिर ग्रजमेर।

७५६१. ऋषिसंडल यत्र पूजाः— × । पत्रसः०१४ । झा०११३/×४३ दश्वः । भाषा— सम्ब्रुतः । विषय-पूजाः र०कालः × । ले०कालः × । पूर्णः । बेष्ट्रन स०१६७ । प्राप्ति स्थानः— दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ वदी ।

७५६२. ऋषिमंडल स्तोत्र पूजा— × । पत्रसः १७। मा०११४७३ इच । भाषा— सस्कृत । विषय—पूत्रा । २०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०४८६ । प्राप्तिस्थान—दि० जैन कोटडियो का इंपरपुर ।

विशेष-प्रतापगढ़ में पं॰ रामलाल ने प्रतिलिपि की थी।

७५६३. **अ कुरारोपएं विधि — आशाधर** । पत्रसं॰ ६ । आग् ६ $\frac{2}{5}$   $\times$   $\frac{2}{5}$  इख । आया — संस्कृत । विषय — प्रतिस्टा विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णे । वेस्टन स० ३६३ । प्राप्ति स्थान — ५० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७५६४. प्रतिसं० २ । पत्रसं०६। ग्रा०१०×४६चा। भाषा—संस्कृतः। विषयः— प्रतिद्वा विधानः। २०कालः ४। ने० काल ४। वेष्टन सं०२६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुरः। ७५**६५. प्रतिसं० ३** । पत्र स०६ । आ०० ४६ ५ इ.च । र०काल ४ । ले० काल स०१६४ । पूर्ण । बेपून स०१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रमिनग्दन स्वामी, बूंदी ।

७५६६. झंकुरारोपरा विधि—इन्द्रनिन्द । पत्रस० १४६ । घा० १२ 🗙 ६ इंच । माषा-सन्कृत । विधय-विधान । र० काल 🗴 । से०काल स० १६४० वैशाल शुक्ला ४ । पूर्ण । बेठून स० २६७-१९७ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

७५९७. **कमल चन्द्रायम्। सतोद्यापन**— ×। पत्र स०१०। ग्रा० १०×६ इचा माघा-सस्कृतः । विषय-पूजा । रुकाल × । ले० काल × । पूर्णः । वेष्टन स०५२३ — × । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर नोटडियों का इंगरपुर ।

७५६ ६. कर्म दूर उद्योषन — × । पत्र संब्हे । प्राव्ह ११ ४७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय— चुत्रा । रुकाल × । सेक्सल संब्हे १९६५ । पूर्ण । बेष्टन मक्ष्य ११३ । **प्राप्ति स्थान** — दिव जैन महिर गत्रमस्य (दोक)

७५६६ कर्मबह्न उद्यापन—विश्वमृष्यम् । पत्र स० २६। ग्रा० १०१८४ देश्वा भाषा-सन्द्रतः । विषय-पृत्राः १ र० काल 🗴 । लेश्काल 🗴 । बष्टत म० २६०। प्राप्ति स्थान—विश् जैन महित बोरमली कोटाः।

७६००. कर्मदहन पूजा—टेकचंद । पत्रस०१७। घा०११ 🗙 ७ इवा। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पद्या । र०काल 🗙 । त्रेणकाल 🗙 । पूर्ण। वेष्टनसंग् ७३। प्राप्ति स्थान—दिन्जैन महिर नागरी दृषी।

७६०१. प्रतिसं०२ । गत्र स०१३ । प्रा०११ $\times$ ७ इन्सः । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनः स०१२०। प्राप्ति स्थानः — दि० जैन मन्दिर नागदी बूँदी ।

७६०२. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० १८ । घा० १० ४ ७ इन्दा । ले०काल ४ । पूर्गे । बेष्टनसं० १०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी दूदी ।

७६०**३. प्रतिसं०४ । पत्रस०२३** । आ०६ × ६ इल्डालेक्काल × । पूर्णा । बेहन सं० ७३-१०७ । **प्राप्तिस्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक)

७६०४. प्रति सं० ४, । पत्र स० ४७ । आर० १० र्२४४ इन्च ने० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं० ७२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचार्येती मन्दिर मस्तपुर ।

७६०५. प्रतिसं० ६ । पत्रतः २२ । ले॰काल स० १६६२ । पूर्ण ।वेग्टन स० ५१७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पवायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०६. प्रति सं०७ । पत्रसं०१६ । मा० १२ 🗴 ६ इत्र । ले० काल 🗴 । पूर्ए । बेहनसं०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौघरियान मालपुरा (टोक)

७६०७. प्रति स॰ म । पत्रसं॰ २० । मा॰ १४७ इत्व । लेब्काल स॰ १८८६ । पूर्ण । वेस्टन सं॰ ३१ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर तेरहर्षणी मालपुरा (टोक)

७६०**द, प्रति सं० ६ ।** पत्रसं० २५ । झा० ६ 🗙 ७ इ**च । ले०काल** स०१८८२ श्रावस्य बुदी ३ । पर्सो । बेकुन स० ३७ । **प्राप्ति थान**—दि० जैन तेरहरंथी मन्दिर भालपुरा (टॉक) विशेष-रामलाल पहाडिया ने प्रतिलिपि की थी।

७६०**६ प्रतिसं० १०** । पत्रस० २१ । धा० १० × ४१ इ.च । ले०काल स० १६२७ । पूर्एं। वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संदिर कोट्यो का नैगावा ।

७६१०. प्रतिसं० ११ । पत्रस० २० । म्रा० ११} ४४ } इञ्च । ले०काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टुनसं० ५६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७६**११. प्रतिसं० १**२ । पत्रस०४१ । ग्रा०१२३ ४ ८३ इश्व । ले०काल स०१६४६ चैत सुदी ४ । पूर्ण । बेट्टन स०४२८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

७६१**२.प्रति स० १३ ।** पत्रस० ६६ । ले०काल स० १८८४ । पूर्या । वेप्टन स० २१ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष - सदासुख रिप श्दास द्वारा प्रतिलिपि कराई गई थी।

**७६१३. प्रतिसं० १४** । पत्र स० २२ । द्या**० १**१  $\times$  ४  $\S$  इञ्च । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत स० २६७ । प्राप्ति स्थान — भः दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७६१४. कर्मबहन पूजा—शुभवन्द्र । पत्र स०१८ । प्रा०१० $\times$ ६ इत्र । भाषा—सस्त्र । विषय—पूजा। र०काल  $\times$ । ते० काल स०१६३८ । पूर्ण। वेष्टन स० ५३०। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन सन्दर कोटडियों का हुनरपुर।

७६१**४. प्रतिसं०२** । पत्रसं०१ ः । ष्रा०११ ४,६ इ.च । ले०काल ४ । पूर्णं। बेष्टनसं∙ ६८ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark> — दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष-हरविशदास लुहाडिया ने सिकन्दरा मे प्रतिनिधि की थी।

७६१६. प्रति सं०३ । पत्र म०१०। द्या०११ॄै×४ॄँ इच्छा। ले० काल × । पूर्णं। बेष्टन सं०६४। प्राप्ति, स्थान — दि०जैन मन्दिर स्रादिनाध दूदी।

७६१७. प्रति सं०४ । पत्रसः १२ । द्वा० ११×५ इंच । ले०काल स० १७६० वैशाख बुदी १ । पूर्यो । बेपून स० ६८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मस्टिर नेरहपत्री मालपुरा )टोका)

विशेष--ग्रा॰ ज्ञानकीति ने नगर मे प्रतिलिपि की थी।

७६**१८. प्रतिसं० ४**। गत्रन०१७ । घा०११ ४८/४ इखा भाषा-सम्क्रन । विषय-पूजा। र०काल ४ । ले**०का**ल स०१६७३ । पूर्णा । वेष्टन स०१६६ **। प्राप्ति स्थान** —वि० जैन मन्दिर द्ववलाना (वृदी)

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सबन् १६७३ वर्षे ब्रामोग नृदी ११ पुद मागवाडा नगरे श्री ब्रादिनाव चैरयातये श्री मूलनये सरस्वनी गच्छे महलाचार्ये श्री रत्तकोति तत्तपट्टे महलाचार्यं श्री यम.कीति तत्तपट्टे मे काहाचन्दा तकम का क्षी बिनवन्द्र मक सकलचन्दानवये सक श्री रत्तचन्द्र महलाचान्वये सक श्री रत्तचन्द्र महलाचान्वयं सक श्री रत्तचन्द्र महलाचान्वयं सक श्री रत्तचन्द्र महलाचान्वयं सक स्वाताचे तत्तपुत्री सा काला भागों कटु सान ब्रायंशी भागों इन्ही तत्तुत्र वलमदास स्वस्वनानावरणी कर्म क्षायां इक श्री ठाकरा कर्मदहन पूजा लिखाप्यनं दत्त ।

७६१६. प्रति स $\mathbf{o}$  ६ । पत्र स $\mathbf{o}$  २२ । घा॰ १० $\mathbf{j}$  × ६ $\mathbf{j}$  ६२० । ले० काल स $\mathbf{o}$  १६१६ घाषा $\mathbf{g}$ सी १३ । पूर्ण । बेहन स $\mathbf{o}$  ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

७६२०. प्रति स०७ । पत्र स०१७। लेल्काल स०१६१४ झावाड सुद्धी १०। पूर्ण । वेष्टन सं०१८६-२७८। प्राप्ति स्वान-वि० जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर।

७६२१. प्रति सं० ६ । पत्र स०१७ । आ० ११३ ४४ इच्च । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वेवन स०१४२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन स्रम्बाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२२. प्रतिसं० ६ । पत्र सं० १५ । मा० १२ ४ ४३ डचा । ते०काल 🗴 । पूर्णा । बेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन भ्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२३. प्रतिसं० १०। पत्रसः० १६ । झा० ११ × ४ इश्वा । ले० काल सं० १७३१ × । पूर्ण । वेष्टन स० २७४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन झववाल मदिर उदयपुर ।

विशेष--भाडोल नगरे लिखापित लिलतकीर्ति धाचार्य ।

७५२<mark>४. प्रतिसं० ११ ।</mark> पत्रसं० १४ । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०२०० । **प्राप्ति** स्थान—वि० जेन सम्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६२५. कमं दहन पूजा— × । पत्रसः १२। म्रा० ११ई ४५, दृश्वा भाषा--सस्कृत। विषय--पूजा। रब्सान × । ले० कान स० १८८० सावमा वृती १०। पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १४५। प्रास्ति स्थान---भ० ४० जेन मन्दिर अजगर।

७६२६. प्रति सं०२ । पत्र स०६ । घ्रा०११×५ इ.च । ले०काल स०१८२८ । पूर्ण । बेहुन स०२४५ । प्राप्ति स्थान — स० दि० जन मदिर घजमेर ।

७६२७. प्रतिसं० ३ । पत्र स० १२ । ग्रा० १२ ×५ १ है इ.स. । लेक्काल सं० १८६२ सावस् सुदी ६ । पूर्ता । वेष्टन स० १०२० । प्रास्ति स्थान— स० दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

७६२ ⊏. प्रति सं० ४ । पत्रस० २३ । ब्रा०१० ट्रै×१० देखा । ले•कालः 🗴 । पूर्णः । वेष्टन स०१४३ ⊏। प्राप्तिः स्थान—अ० दि० जैन मन्दिर धत्रमेर ।

७६२६. प्रतिसं० ४.। पत्र स०२३ । घा०१०है×४ है इन्ता ले० काल × । पूर्ण। वेष्टनसं०१२२४ । प्राप्तिस्थान—भ०दि० जैन मन्दिर अजभेर ।

विशेष--मूल्य ४॥ -। लिम्बा है।

७६३०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० १२ । झा० ११×४ इचा ने०काल × । पूर्णा वेष्टनसं० ३३ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।

७६३१. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १८ । प्रा॰ १२imes४ दश्व । ते॰ काल imes । पूर्ण । बेरटन सं० २१५ । आफ्टि, स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

७६३२, प्रति सं० ⊏ । पत्रसं० २२६ से २७० । ले०काल × । पूर्णे । बेष्टुन सं० ६६ । प्राप्ति स्थाम—दि० जैन पत्रायती मन्दिर मन्तपूर ।

विशेष - यशोनदि की पवपरमेरठी पूजा भी आगे दी गई है।

७६३३. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ११ । लेश्काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० ६० । प्राप्ति स्थाल—- दि० जैन पश्चायती मन्दिर भरतपुर ।

७६३४. प्रति सं० ११। पत्र सं० ६। ले० काल ×। ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १८७/३४०। प्राप्ति स्थान — दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

७६३५. प्रति सं० १०। पत्र सं० १७। ले०काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन स० १८६/३३६। प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर सभवनाथ उदयपुर।

विशेख-प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवत् , ५६२ वर्षे आसो विदि ५ भूमे गुजैरदेरे बीजापुर गुनस्थाने श्री गांनिनाव चैत्यावये श्री मुलतंषे नदिवये सरस्वतीगच्छे बलात्वारायों थी कुरकुदाबार्यान्वये म्हारक श्री पधनरिदलरपु म० थी सकल कीत्तिदेवा तत्तरहुँ म० श्री गुजैनतंत्रित तदानाये भ० श्रीजात नृत्यतःतरहुँ म०श्री विज्ञाति रासिःतरहुँ म० श्री ग्रम पारदेवास्त्रासनाये चन्द्रावती नगरे नागडहा जातीय साह धाना भार्यी बाख मृत पडिन राजा पठनार्थे।

७६**३६. प्रतिसं० १२ ।** पत्रस० १७ । म्रा० १२×५ ृँ इश्वा । ले०काल स० १८१६ मापाढ सुदी ⊏ । पूर्ण । वेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान —** दि० जैन मन्दिर बँर ।

विशेष - महादास अग्रवाल ने प्रतिलिपि करवाई थी।

७६**३७. प्रति सं०१३**। पत्रस०२७। स्रा०१११ॄँ×४ृृैद्रञ्च। ले•काल ग०१६१३। पूर्या।बेष्टन स०६६**। प्राप्ति स्थान**⊸ दि० जैन सौगाएं। मदिर करोली।

**७६३ ट. प्रतिसं० १४** । पत्र स० १७ । ग्रा० ११ × ५ट्ठे इश्व । लेक्काल स० १८४१ । पूर्ण । बेष्टन स० १८० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भ्रमिनन्दन स्वामी, ब्रु दी ।

७६३**८ प्रतिसं०१४ ।** पत्र म०१७ । द्या०१२ × ५<sup>3</sup> इच्छा । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दवलाना (बुढी)

७६४०, प्रतिस० १६ । पत्र स० १६ । घा० ६४६ इञ्च । ले∘काल १६५० । पूर्ण् । बंध्टन स० १७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन प्राप्ताल मन्दिर नैसावा ।

विशेष - नैस्तवा में प्रतिनिपि हुई थी।

७६४१. कर्मदहन पूजा विधान — × । पत्रस०३० । ब्रा०१०×६१ दव । माया — हिन्दी (पदा) । विषय — पूजा । २०काल × । सं∘काल स०१६३३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ⊏६/३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नेरहाथी दोसा ।

७६४२. प्रतिसं० २ । पत्र स० २७ । ग्रा० १० $\times$ ६ $^{9}_{4}$  इ.च. । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०–३१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेन्द्रपथी दौसा ।

७६४३. कर्म निर्जरणी चतुर्वशी विधान —  $\times$  । पत्र सं०१०४। बा०१० $\frac{5}{4} \times \frac{3}{6}$  दश्व । भाषा — संग्कृत । विध्य — प् जा । र० काल  $\times$  । ले०काल सा०१६२८ । पूर्ण । बेप्टन स०१०६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान वृदी ।

७६४४ कलकाबिधि— × । पत्र स०६ । घा०१०३८४६ इन्छ । माधा-सस्कृत । विषय—
पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०३७७ । प्रास्ति स्थान—मट्टारकीय वि० जैन
मंदिर मजनेर ।

७६४५. कलशारोहरण विधान— $\times$ । पत्रसं० १२ । ग्रा०  $-\times$ ६३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय विधान । र० काल $\times$  । ले०काल स० १६४८ । पूर्ण । बेष्टनसं० १६२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्राप्तिनस्यानी व दी ।

विशेष - पं० रतनलाल नेमीचन्द की पुस्तक है।

७६४६. कलशारीहरण विधि—  $\times$ । पत्रत० १४। प्रा०६  $\times$ ६ इश्वः। प्राचा-सस्कृतः। विधय-विधातः। र०कालः  $\times$ । ले०कालः  $\times$ । पूर्णः। बेष्टनसं० ३८६–१४६। प्राप्तिः स्थानः दि०जैन मन्दिरं कोटडियो का इंगरपरः।

७६४७. कत्यासा मन्दिर पूजा—वेदेग्द्रकोति । पत्रस०६। घा० ११३ ४ ४२७। भाषा-सस्कृत । विषय पुजा। र०काल ४ । ले०काल स०१८६१ । पूर्स । वेध्नस०१०४ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर प्रशिनन्दन स्थामी दृदी।

विशेष - ५० मदामुख ने जम्बू स्वामी चैत्यालय मे पूजा की थी।

७६४ म. करुयास संविर पूजा $--\times$ ायत्रस० १२। आर० १०  $\times$ ६ इत्त्व। प्राया-संस्कृत श्विषय-पूजा २० काल  $\times$ । ले० काल स० १६३ म. पूर्सा वेष्टन स० ५३२। **प्रास्ति स्थान-**िद**०** जैन मंदिर कोटडियो का हुगप्युर।

७६४६. कलिकुण्ड पूजा—×। पत्रसं० ३। घा० १०३ र ५ इश्वः। माणा मस्कृतः। विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्णः। वेष्ट्रन स० १२३६ । **प्राप्तिः स्थान**— वि० जैन मदिर अजमेर मण्डारः।

७६५०. कलिकुण्ड प्जाः $-\times$ । पत्र स०६। स्रा०१० $\times$ ४ हे इश्वः। भाषा-सन्द्रतः। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्णः। बेष्टन स०१४६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर स्रजीर भण्डाः।

विशेष --पदावनी पूजा भी दी हुई है।

७६५१. कलिकुण्ड यूजा —  $\times$  । पत्रसं• ३। म्रा॰ ६ $^1_2$  $\times$ ६ इन्त्र । भाषा सस्कृत । विषय— यूजा । र०काल  $\times$  लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन २० ६५१ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७६५२. कलिकुण्ड पूडाा— × । पत्रस०२। ग्रा०१४०५ दृश्वः। भाषा- सस्कृतः। विषय-पूजा र०कालः × । ले०काल × । पूर्णः । बेष्टन स०१०४-५०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर कोटडियों का हुगरपुरः।

७६५३. **कांजी वतोद्या**पन— रस्नकीति । पत्र सं०४। ग्रा०१०३,४५ इत्था। भाषा संस्कृत । विषय पूजा। रक्काल । लेक्काल स० १८६६ ग्रासोज बुटी ६। पूर्यो। वेष्टन स०४७। **प्राप्ति** स्थान-दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

विशेष--पं० चिदानन्द ने लिखा था।

७६४४. कजिकावतोद्यापन —मुनि लिलितकीति । पत्र स०६। स्ना०१० ४४६ च । भाषा—सस्कृत । त्रिषय—पूत्रा । रुकाल ४ । ले० काल सं०१७६२ स्रषाड मुदी १०। पूर्ण । बेष्टन स० ३८०। प्राप्ति स्थान – दि० भ० जैन मन्दिर स्रजभेर ।

**७६५५. प्रतिसं० २** । पत्रस० ५ । घा० ११: $\times$ ४० हुँ इच्च । भाषा-हिन्दी पद्य । २०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुनस०१६३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ब्रादिनाय बूँदी ।

विशेष — महाराज जगर्तासह के जासन काल में सर्वार्डमाधोपुर से समरवद कोटेवाले ने लिखा था। ७६४६, कुण्डसिद्धि— ×ा पत्र सं०६। आ०११ × १ दश्वा प्राया-सस्कृत। विषय-विद्यात । र०काल ×ा ले काल ×ा पूर्ण। वेष्टनसं०२३२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर कोणात्र वी।

विशेष-- मडप कुण्ड सिद्धि दी गयी है।

७६५७. **कोकिला बतोद्यापन**— × । पत्रस०१२ । ग्रा०६ × ५ इञ्च । भाषा — सम्सृत । विषय— पूजा । र०काल × । ले•काल स०१७०४ । पूर्णा विष्टन स०२६२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सम्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- गृटकान ६ मे है।

७६५६. **गराषरवलय पूजा—सकलकीति ।** पत्र स० ८ । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल ४ । पूर्ण । वष्टन स० २-३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाथ महिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

७६५६, प्रति स०२ । पत्रस०४ । ले०काल स०१६७३ श्रपाढ मुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनस० ३–३१७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (यु दी)

विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबन् १६७३ वर्षे ग्रापाढ बुरी ६ गुरी श्री कोटणुसस्थाने श्री ग्रादिनाथ कैरयालये भ्राचार्ये श्री जय-कीरिना स्वज्ञानवन्गी कर्मक्षयार्थं स्वहस्तास्या लिखितेय पुजा । श्री हरखाप्रसादत् । ब्र० श्री स्तवराजस्येद ।

७६६०. प्रति सं०३ । पत्रस०६ । आ ०१२ 🗴 ६ इचा से०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन ग० ७२० । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मदिर श्रजमेर ।

७६६१. प्रति स० ४ । पत्रस० १२ । म्रा० १० 🗴 ४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल 🔀 । क्रेक्सल 🔀 । पूर्ण । बेष्टन स० १४२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

७६६२. **ग्राधरवलय पूजा** × । पत्रसं० ६ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । के•काल × । पूर्ण । त्रेष्ट्रत सठ १/३२० । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर । ७६६४. गराधरवत्वय पूजा विद्यान $-\times$ । पत्र त० १०। द्वा० १२ $\times$ ६ इश्व । भाषा - संस्कृत । विषय - पूजा । र०काल  $\times$ । ले० काल त० १८८७ ध्वावसा बुदी ५ । वेष्टन सं० १७। प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७६६५. गिरनार पूजा – हजारीमल । पत्र त०४३ । द्या० ११५५ ८ दश्व । भाषा — हिन्ती (गर्य) । विषय — पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म०११४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सबेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

**७६६६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० मन । ग्रा० १० 🗙 ६५ इ.खा । ले० काल स० १९३७ ज्येष्ठ सुदी १२ । पुर्गा । वेपन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रग्नवाल मन्दिर नैगावा ।

विशेष — हजारीमल के जिता का नाम हरिकिशन था। वे लक्कर के रहने वाले थे। वहा तैरहरण सैती थी। दौलनराम की सहाय से उन्हें ज्ञान प्राप्त हुन्ना था। वे वहा में सायपुर म्राकर रहने लगे ये गोयल गोत्रीय प्रयवाल थे।

७६६७. **प्रतिसं० ३ ।** पत्रसं० १२ । **ले**०काल 🗴 । पूर्ण । बेहन सं० ७३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

७६६ म. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । फ्रा० १० 🖁 ४७ । हे॰ काल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बृदी ।

७६६६. गुरावली पूजा—गुमचन्द्र। पत्रस० ३। प्रा०१०  $\times$  ४ इच । भाषा-सस्कृत। विषय— पूजा। र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्गा। वेष्ट्रन स० ६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

७६७०. गुरावली समुच्चय पूजा — 🗙 । पत्र सं०२। ग्रा० १२ × १.) इंच । भाषा — सम्प्रन । विषय पूजा । २०काल 🗴 । ने०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०१० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मानवूरा (टोक)

७६७१. गुर्वावली (चौसठ ऋद्धि) पूजा—स्वरूपचन्द बिलाला। पत्रसु०३०। आ०६ है ४१ डे डच्च। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। २०काल म० १६१०। ले० काल 🔀 । प्रपृणै। वेष्टनसं० १२४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पवायनी। मन्दिर बयाना।

विशेष-- ग्रन्तिम पत्र नही है।

**७६७२. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०४५ । घा०१०×६-३ इचा । लेब्काल स० १६२३ । पूर्णे । वैष्टन स०१०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती सदिर बयाना ।

७६७३. गुरु जयमाल — ब्रं जिनदास । पत्रस०४ । ब्रा०१० $\times$ ५ इश्व । भाषा-हिन्दो पथ । विषय-पूजा । रुक्तल $\times$  । लेक्लल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१६७-६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशोष हिन्दी गद्य मे अर्थभी दिया है।

७६७४. **शोरस विधि** —  $\times$  । पत्र स॰ २ । म्रा०१० $\frac{2}{9}$  $\times$ ५ दश्व । मापा—संस्कृत । विषय— विधि विधान । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पास्वेनाथ मन्दिर भौगान बुढी ।

७६७%. गृहशांति विधि—वर्द्धमान सूरि । पत्रस० १२ । प्राधा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स०१८४६ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६७४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६७६. क्षरावित क्षेत्रपाल पूजा —िवश्वसेन । पत्र स० ६ । प्राण १२ $\times$ ६ इश्व । भाषा—सम्ब्रुत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १८६१ मगसिर मुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक)

७६७८. प्रति सं० २ । पत्रसं० ४ । या० १०४६ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० १२० । प्राप्तिस्थान—दि० जैन मदिर कोटडियों का इंगरपुर ।

७६७६. प्रति सं० ३ । पत्र स०११ । ग्रा०१०४६ इ.च । ले०काल सं० ११८४ । पूर्ल । बेष्टुतस० ३४४-१३२ । प्राप्तिः स्थानः— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

७६८०. प्रति स०४ । पत्रस०२ । घा०१० ४४ इश्व । ले०काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टनसं० २२०। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी)

#### प्रारम---

सकलभुवनपूज्य वढाँमानजिनेन्द्रं। मुरपतिञ्चनेत्रेय त प्रणम्यादरेगा।। विमनत्रतचनुदृष्या गुभोषोतन च। भविकजनमुखार्थ पचमस्याः प्रवस्ये।।१॥

### श्राहितम---

ज्ञारत्राच्ये पारगामी परममितमान मंदलाचार्यमुख्यः । श्रीविद्यनवीनामानित्रल गुगानित्रः पूर्गम्नित्रसिद्धः ।। सहिष्ट्या सप्रधारी विश्वुषमणे हुपं सवानदत्रो । साक्षीवे राम नामा विविदमुनकरोत् पूजनाया विधे । श्रीजयसिक्षुपरम मत्री मुख्यो गुणी सताम् । श्रावकस्तागबदास्यस्यने हत्त समुद्धतं ।।२।। सर बसर समुहिश्य पूर्वेगास्त्रानुतृति । श्रतीकोतनसेनेन कारित पुष्पवेतने ।

७६८२. प्रतिसं० २ । पत्र सं०११ । झा०११४६ इ.च । ने०काल ४ । पूर्ण । बेहनसं० १३४६ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मंदिर धजमेर । ७६८**३. प्रतिसं०३** । पत्र स०१०। ले०काल सं०१८०० भादवा बुदी ११ । पूर्णः। वेष्टनः सं० १२५०। **प्राप्ति स्थान—** स०६० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७६८४. **खतुर्विशांति जिन पूजा**— × । पत्र म० ११४ । ग्रा० १२४ ५२ इस्त । भाषा – हिन्दी । विषय-पूजा । ८०काल × । लेकाल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टनसं० १६२४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७६८५. प्रतिसं०२ । पत्र स०२८ । धा० १३ × ६ ३ इल्ब । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१६४ । प्राप्ति स्थान— म०दि० जैन मन्दिर झजमेर ।

७६८६. **चतुर्विशति जिन शासन वेवी पूजा** — 🗴 । पत्रसं० ३-६ । माया — संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ३८२/३७३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन समयन थ मन्दिर उदयरर ।

७६८७. चंदनवष्ठीदात पूजा — विजयकाँत्ति । पत्र स०४। ब्रा०१२ $\times$ ४ है इंच । माघा-सस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्य । वंप्टन स०१४४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० र्जन मन्दिर नागदी, बुदी ।

७६८८. चन्दनवष्टिपूजा— पं० चोखचन्द । पत्र सं०६। ग्रा० १२ ४ ५३ इ.च. भाषा—-सस्कृत । विषय पृत्रा । र० काल ४ । ले•काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस०६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्रवतान मन्दिर उदयपुर ।

७६ स. सन्दन्त घटोद्यत पूजा —  $\times$  । पत्र स० ६ । धा० १२ $\frac{1}{2}$  ६ इंच । भाषा — सन्कृत । विषय — पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० ११४ । **प्राध्ति स्थान** — दि० जैन पनायती सदिर करौली ।

**७६८०.चमस्कार पूजा — राजकुमार ।** पत्रस० ४ । घा० १२३ ४ ४<mark>३</mark> इत्रा । आपा-हित्ती (पदा) । विवयन-पूजा । र०काल ४ । ते० काल स० १६६६ । पूर्ण । वष्टन स० ४२६ । **प्राप्ति स्थान**— वि० जैन मध्यर सफकर जयपर ।

विशेष--चमत्कार क्षेत्र का परिचय भी झागे के दो पत्रों मे दिया गया है।

७६२१. प्रतिसं० २ । पत्र स० ३ । घा० १२ 🗴 ६ इता । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल 🗴 । ले०काल स० १६६४ । पूर्या । वेष्टन स० ५७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७६९२. चमरकार पूजा-- × । पत्रस०२ । मा० ६४१ इचा । माषा-संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेहन सं०१४१ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर नागशी यूंरी ।

७६६३. खारित्र शुद्धि पूजा—श्रीमुखरण । पत्र स० ६४ । झा० १०३ ४ ४ इच्छ । भाषा— सस्कृत । विषय - पूजा विधान । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०३६० । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मंदिर धनिनन्दन स्थामी बुंदी

७६६४, प्रति सं० २ । पत्रसं० ११४ । ले॰काल स० १८१६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वष्टन स० ६८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर । बिरोब — रक्षिण स्थित देवांगरि में श्री पाण्वेनाथ चैत्यालय में मन्य रचना की गई थी। पाढे लालचन्द ने लिपि कराकर भरतपुर के मन्दिर में रखी गयी थी।

७६९४. **चारित्र शुद्धि विधान—स०शुभचन्द्र ।** पत्रस० १०। प्रा० ५ $\frac{1}{4}$  $\times$ ४ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय —पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६०३ । पूर्ण । वेग्टन स० ६२४ । **प्राप्ति स्थान**-वि० जैन श्रजमेर भण्डार ।

विशेष--गृटका में संग्रहीत है।

७६९६. प्रति सं०२ । पत्रस०३२ । द्या०६०है ४४ है इचा लेक्काल ४ । पूर्णा वेष्टनसं∙ ४२४ । प्राप्ति स्थान— भ० वि० जैन मन्दिर बजमेर ।

७६९७. चिन्तामिरा पार्श्वनाथ पूजा—शुभचन्द्र । पत्रस० २-१४ । आ० ११ × ४ इचा । भाषा-सन्द्रन । विषय-पूजा । र०काल × । ल०काल × । अपूर्ण । वेष्ट्रनस० १५६ । प्रशित स्थान— दि० जैन मन्दिर नागदी व दी ।

७६८**न, प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ७ । **ग्रा० १**० × १ इञ्च । ले० काल स० १६०८ । पूर्ण । बष्टत स० ५०२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोट्डियो का हुगरपुर ।

प्रशस्ति—सबन् १६०८ वर्षे चैत्रमासे कृष्णपक्षे ५ दिने वाग्वरदेशे सिरपुरवारनस्य श्री प्रादि-तःय चैत्यालये लिखितं श्री मूलसये म० विजयकीसिस्तत्यट्टे भ० श्री णुभचडदेवा तत् शिष्य प० मृरदासेन निजापित पठनार्थं प्राचार्य संस्कीति ।

७६८६. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ११ । ग्रा० १० ४ ५) इञ्च । ले० काल स० १८६१ सायन सुदी १३ । पूर्ण । बेष्टुन स० १०२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय बुदी ।

७७००. चिन्तामिए। पाश्वंनाथ पूजा  $\times$  । पत्र ग०१। प्रा०११  $\times$  ५ दश । भाषा- सम्कृत । विषय- पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० १२०५ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

७७०१. चिस्तामिंस्स पार्श्वताच पूजा—  $\times 1$  पत्रम० ११ । घा० १०  $\times 4$  इस । भाषा— सस्कृत । विषय — पूजा । २० काल  $\times$  । ले०कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोस्मली कोटा ।

७७०**२.प्रति सं० २**। पत्र स०२०। ग्रा० म्हेimes४ ्डश्च । ले०काल imes **। अ**पूर्ण । बेष्टन स० २२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मौगानी मदिर करौली ।

धन्तिम पत्र नहीं है।

७७०३, चतुर्विशति पूजा— म० शुमचन्द्र । पत्रत०३-२६। घा०१०४४ ३व्य । मापा-सन्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल १६६० । घपूर्ण । वेष्टन सं० ३०३ । घाप्ति स्थान— रि० जैन प्रयवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबत् १६६० वर्षे बाषाढ सुदी ४ गुरुवारे श्री मूलसमे महारक श्री वादिभूषण गुरुगदेशात् तत् शिष्य इ० श्री वर्द्ध मानकेन लिलापिन कर्मक्षयार्थ । ७७०४. प्रतिसं० २ । पत्र स०५६ । ले० काल स०१६४० कार्तिक मुदी ३ पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मदिर भरनपुर ।

७७०५. चतुर्विशति जिन पूजा— $\times$ । पत्रतः ५-५६ । प्राः १८७ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल  $\times$  । ने० कालसः १६६७ । प्रमूर्ण । वेष्टनसः १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमनाथ टोडारायसिंह (टोक)

७७०**७. प्रतिसं० २।** पत्रस**० ४६ । आ० १०**१०५ इञ्च । लेक्कान 🗙 । बेस्टन स० २७३ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन मन्दिर तक्कर, जयपुर ।

७७० म. चतुर्विशति जिन पूजा मार्थित १८ । प्रा० १० १ ४४ है दश्वा भाषा मध्यत । विषय – पृजा । रक्काल ४ । लेक्काल सक् १६३४ ज्येष्ठ बुरी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स्व ७४ । प्राप्ति स्थान –दिक जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान बुदी ।

७७०**६. चतुर्विशति तीर्थकर पूजा** — 🗸 । पत्रस० ६८ । प्रा० १०३ 🗶 ४ इश्व । आपा — सम्कृत । विषय —पूजा । २०काल 🗶 । से**०का**ल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन म० २७६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान बंदी ।

७७१०. सतुर्विशति जिन पूजा  $\times$  । पत्र म ०४१। प्रा० १०  $\times$  ५ इ.स. । भाषा-स स्कृत । प्रा। र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपृष्णं । वेष्टन स० १५६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बुंदी ।

विशेष---४१ से द्यागे पत्र नहीं है।

७७**११. प्रतिसं०२ ।** पत्रस०४४ । आर०१० 🗙 ५ दश्वा लेक्काल मे० १६५७ । पूर्गा वेष्टत म०१६० । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त सन्दिर।

७७१२. **चतुविशति तीर्थंकर पूजा** $-\times$ । पत्रस॰ १३७। प्रा० न $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{1}{2}$ १३ व। भाषा-सग्कत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । ले**०काल**  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टन स॰ २६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

७७**१३. चतुर्विशति जिन पूजा**— × । पत्रम० ४०। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ≾ । ले०काल × । पूर्णा। वेष्टनस० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरत्वंथी मन्दिर बमवा।

७७**१४. चतुविशति पंच कत्यासक समुस्चयोद्यापन विधि—क्र० गोपाल ।** पत्रस० १३ । क्रा०११×४३ इञ्च । भाषा सस्क्रन । विषय—पूजा । र०कान × । ले० कान स०१६६४ । पूर्णं । वेकन स०३१६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन क्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-इति ब्रह्म भीमाग्रहान्ब्रह्म गोपाल कृत चनुर्शिति पच कल्याणक समुच्चयो द्यापन विधि ।

७७१५. **चतुर्वशो प्रति सासोपवास पूजा**— × । पत्र न०१६ । ग्रा० ११ × ४ इच । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा । र०कान × । ले०कान × । पूर्ण । वेग्टन न०१६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पार्वनाव मन्दिर चोगान वृदी । ७७१६. चौबीस तीर्थंकराष्टक—× । पत्रस० २०। झा०६ × ४ इखा आया-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पारवंनाथ मन्दिर चौगान बंदी ।

७७१७. चौबीस तीर्यंकर पूजा—बस्तावरलाल । पत्र सं० ६६ । आ० १२ $\frac{1}{2}$   $\times$  ७ इच । प्राण-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल स० १६२२ कार्नुष्ठ मुदी ७ । ले० काल स० १६२२ कार्निक मुदी १४ । पूर्ण । बेहुन स० १०७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्यायती मंदिर बयाना ।

७७**१८. प्रति सं० २ ।** पत्र सं० ६७ । घा० ११×५ी इञ्च । ले०काल १६०३ । पूर्ण । बेहन सं० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर चौर्धारयान मालपुरा (टोक)

७७**१६. प्रति सं०३।** पत्र सं०४७। ले० काल सं०१६४६। पूर्ण । वेष्टन सं० ६४। प्रा**प्ति** स्थान – दि० जैन पत्रायती मंदिर भरतपुर।

विशेष — प्रतिलिपि किशोरीलाल भरतपुर वाले ने कराई थी। तुलमीराम जलालपुर वाले ने प्रति-लिपि की थी।

७७२०. प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । घा० ६ २ ४ ६ देव । ले०काल स० १६४७ वैद्याल बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ । प्रास्टिः स्थान – दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

७७२**१. चीबीस महाराज पूजन— वृक्षोलाल । पत्रस० ४७ । भाषा**-हिन्दी । विषय पूजा । र०काल स० १९२७ । ले०काल स० १६१४ । अपूर्ण । नेष्टनस० २६७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

७७२२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०२ । घा० ११ × ५ इचा । ले०काल स० १६३० । पूर्ण । बेण्टन स० १२३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष--प्रति नवीन है।

७७२३. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४६ । ते० काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन स० ६१ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर।

७७२**४. प्रतिसं०४** । पत्र स० ६४ । ग्रा० १०×६ है इच । लेकाल स० १६३४ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ७० । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी होग ।

विशेष — चुन्तीलाल करीली के रहने वाले थे। पूजा करीली में मदनगोपाल जी के शासन काल में रखी गई थी। प्रतिलिपि कोट में हुई थी।

७७२ थ्र. प्रतिसं० ४ । पत्र स०६२ । ले०काल स०१६१७ । पूर्ण । बेष्टन सं०१८६ । प्राप्ति स्थान — टि० जैन प्रवासनी मन्दिर सल्दर ।

७७२६. चौबीस तोथँकर पूजा--जवाहरलाला। पत्र० सं०४०। मा०१२८० स्वा। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०कल स०१६६२। ले०काल स०१६६२। पूर्ण। वेष्ट्रन स०२६। प्राप्ति स्थान--- दि० जैन छोटा मदिर वयान। ७७२७. चौबीस तीर्थंकर पूजा— देवीदास × । पत्र स० ४३ से १३ । भाषा -हिरी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १६२१ मावन मुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६६-२४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर टोडारायीसह (टोक)

## प्रश्तिम---

समत भ्रष्टादस घरौजा उपर इकईस । सावन सदि परिवा सुरविवासर घरा उगीस ।। बासव धरा उगीम संगाम नाम मद गोडो । र्जनी जन वस बास बौडछे सोपूर ठोडौ ।। सावथ सिंघ सुराज ग्राज परजासवथ बतु। जह निरभै करि रची देव पजा घरि सवत ।।१।। गोलारारे जानियौ बस खरौ बाहीत । सोनविपार मुबैक तम पूर्त कामिल्ल मुगोत। पूर्नि कासल्ल मुगोन सीक-सीक हारा खेरी ।। देस भदावर माहि जो यु वरन्यौ तिन्हि केरी। केलि गांमके वसनहार मतोव सुभारे ।। कवि देवी सपुत्र दुगुई गोलारारे। सेवत श्री निरगथ गुर फरू श्री धरिहत देव ॥ पहत सूनत सिद्धान्त श्रत सदा सकल स्वमेव । त्क ग्रक्षर घट बड कह ग्ररू श्रनर्थं मृहोइ। ग्रन्प कवि पर कर छिमा घर लो नै बुधि सोइ ।।

इति बर्तमान चौतीमी जिनपुता देवीदास कृत समाप्त ।।

७७२८. चौबीस तीर्थकर पूजा — मनरंगलाल । पत्र स० ४२ । घा०१२१ँ ४ ८० है साम-मामा-हिन्दी । विषय पत्रा । र०काल स०१८८७ मगिनर मृटी १० । ले०काल स०१६६४ । पूर्ण । वेष्टन स०५२४ प्रास्ति स्थान — रि०जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७७२६, प्रति स० २ । पत्रस० ५० । मा० १२ ¦ × ६ ¦ इश्व । ले०काल सं० १९६५ । पूर्ण । वेष्टन स०५२५ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

७७३०. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४४ । ले० काल स० १६०८ । पूर्ण । बेष्टन सं० **११ । प्राप्ति** स्थान —दि० जैन प्रवासनी मदिर हण्डावाली का डीग ।

७७३१. चोबीस्त तोथंकर पूजा--रामसन्त्र । पत्रतः ६१। आ०११ × ६ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल × । से०काल स०१६७३ चैत सुदी १०। पूर्ण । वेष्टन स०१०२८ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर प्रजमेर भण्डार ।

विशेष-नेरोजपुर के जयकृष्ण ने निखबाया था। इसकी दो प्रतिया भीर हैं।

७७३२. प्रति सं०२ । पत्र स०२२ । घा०११×५१ इ.च.। ले०काल × । घपूर्णः । बेष्टन सं० १६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर । ७७३३. प्रति सं० ३ । पत्रसं० ७४ । प्रा० १०×४३ इ.ख.। ते०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० १७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन ग्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

७७३४. प्रतिसं०४ । पत्र म० ५४ । प्रा०१० $\frac{1}{2} \times \xi_1^2$  इला । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ००। प्राप्ति स्थान— दि० जैन लडेनवान मन्दिर उदयपुर ।

७७**३ ५. प्रतिसं० ५** । पत्रम० ६६ । आर० ११ ४ ५ <sup>१</sup> ६ श्वाले क्लाल सं० १८१६ मगसिर सुदी २ । पूर्णा विकास ० २ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर वैर ।

विशेष- महादास ने प्रतिलिपि की थी।

७७३६. प्रतिसं०६। पत्र स०४७। ले० काल म० १८८८। पूर्ण । बेप्टन स०८४। प्राप्ति स्थान-वि० जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर।

७७३७. प्रतिसं० ७ । पत्र स० १६६ । लेञ्काल स० १८८८ । पूर्ण । वेल्टन सं० ८० । प्राप्ति स्थान--विञ्जन पत्रायती मन्दिर भरतपर ।

विशेष-स० १६६५ में नियाकर इस ग्रंथ की चढाया था।

७७३ द. **चौबीस महारज पूजन—हीरालाल ।** पत्रस० ३५। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र•काल × । ले॰काल × ।पूर्ण । बे**ष्टनस॰ ६१। प्राप्ति स्थान—**दि० जैन पत्रायनी मन्दिर भरतपुर।

७७३६. **चौबस तीर्थंकर पूजा**—रा**मचन्द्र।** पत्रस०७७। ग्रा० ११४७ इ.ख.। भाषा-विषय-पूजा। १०काल 🗴 । से०काल स०१ पर्ध। पूर्ण। बेष्टन स०२०४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन हिन्दी। प्रचायनी मन्दिर नागदी वृदी।

७७४० प्रति स०२ । पत्रस०६२। द्या०१२२४६ हुःच्या ले०काल सं०१६४४। पूर्ण। बेष्टुन स०४१। प्राप्ति स्थान— दि० जैन पत्रायती मदिर कामा

७७४१. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ४१ । झा० ११×६ है इल्बा । ले०काल सं० १६११ । पूर्ण। वेष्टन स० ड⊻ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर श्री महावीर दृदी ।

७७४२ प्रतिसं०४ । पत्र सं०७३ । आर०१०४७ इञ्च । ले०काल ४ । पूर्गा वेष्टत स० १०३ । प्राप्ति स्थान --उपरोक्त सन्दिर ।

७७४**२, प्रतिसं० ४ । पत्रसः १**३३ । झा० ११×६१ इ.च. । तेरकाल सर १८२८ ज्येष्ठ सुरी २ । पूर्यो । बेष्टुनसर २६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानती (कामा)

७७४**४. प्रतिसं०६ ।** पत्रसं०१०-६०। ले०काल । श्रपूर्ण। वेष्टनसं०१६। **प्राप्ति स्थान**— कि० जैन पंचायती मन्दिर वयाना।

७७४**४. प्रतिसं० ७।** पत्रसण्यक्ष । ले॰काल 🔀 । पूर्गा । वेस्टनमण् १७ । **प्राप्ति स्थान** – द्विक जैन बडा प्रचायनी मन्दिर डीग ।

७७४६, प्रतिसं० म । पत्रस० २० । मा० ६४६) इत्त्व । ले॰काल 🗴 । स्रपूर्ण । बेष्टनस० ७१ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष -- प्रारम्भ का पत्र नही है।

७७४७. ब्रतिसं० ६ । पत्रस० १२०। घा० ७३ ४ ६३ इचाले •काल स० १६१३ । पूर्ण। वेष्टन सं० ६०। प्रास्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर।

विशेष---डोग मे प्रतिनिधि हई थी।

७७४८. प्रति सं० १०। पत्रत० =६। ब्रा० =ै्×७ इखा निकाल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६६। प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुगनी डीग ।

विशेष - गुटका जैसा बाकार है।

७७४६. प्रतिसं० ११। पत्रम०४१। घा० १२imes६ इश्वा। ले०कालimes। पूर्ण। बेष्टनसं० ६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन घप्रवाल प्रवायती मन्दिर घनवर।

विशेष - गृटकाकार है।

७७५०. प्रतिसं० १२ । पत्र स० ४४ । ग्रा० १०×६ दृँ इञ्च । ले० काल स० १६०४ । पूर्ण । वेष्टन स० १४२ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मदिर ।

**विशेष** —चार प्रतिया ग्रीर है।

७७**५१. प्रति** सं० १३ । पत्रस० ८४ । म्रा० १३ x ७ इन्छ । ले०काल सं० १६४६ । पूर्यो । वेष्टतसं० ४५ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन तेरहपथी मन्दिर नैसावा ।

७७५२. प्रतिसं० १४ । पत्र स.०.६१ । ले० काल स.०.१८६६ । पूर्गः । वेष्टन स.०.४६ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन तेरटपथी मन्दिर नैसावा ।

विशेष -- ब्राह्मण भैकराम उग्लियारा वाल ने चतुं श्रुं जजी के मन्दिर के सामनेवाले मकान मे प्रतिसिधि की थी। साहजी ग्रमोदरामजी ग्रग्रवाल कासल गोत्रीय ने प्रतिलिधि करायों थी।

७७५३. प्रतिसं०१४ । पत्रस०१४६ । ग्रा०६ रे४६ इच । लेक्काल स०१६२४ । पूर्णं । वेष्टन सं०४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर चौशरियान मालपुरा (टोक)

विशेष—साहमल्ल के पुत्र कुवर मशाराम नगर निवासी ने कामवन मे प्रतिलिप कराई थी।

७७५४, प्रतिसं० १६ । पत्रस० १०३ । म्रा० ५३ ४ ४३ इश्व । लेकाल म० १८५४ सावन बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनस० ६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपूषी मन्दिर मालपूरा (टोक)

७७**४५. प्रतिसं**० १७ । पत्रस० ४७ । स्रा० १०imes६ इ.च । ले०काल स० १६२४ । पूर्ण । बेष्टन सं० १८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सप्रवाल मधिर नैस्प्रवा

७७४६. प्रतिसं०१६ । पत्र स०१२ । ग्रा०१०४६ है इश्वाले० काल ४ । श्रपूर्ण । बेहन सं०२४ । प्राप्ति स्थान –दि० जैन श्रप्रवाल मन्दिर नैसावा ।

७७४७. प्रतिसं० १६ । पत्र म० १४३ । ग्रा० ७ ४ ५ हे इख । ले० काल स० १८२४ । पूर्यो । बेष्टुन स० १८७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल पचायती मन्दिर प्रलवर ।

७७**५८ - प्रतिसं**० २०। पत्रेस० १०४ । घा० ११×५ इश्व । ले०काल स० १६०५ । पूर्णः । वैष्टत सं० ३६८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबसाना (खदी)

विशेष — इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि हुई थी।

७७५६. प्रतिसं० २१। पत्र म०७१। ले० काल स० १०६६ । पूर्ण। बेष्टन स०३६६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर दबलाना (बृंदी) विशेष - देवेन्द्र विमल ने कुन्दनपुर मे प्रतिलिपि कराई थी।

७७६०. प्रति स० २२ । पत्रस० घन । घा० ६ 🗙 ७ इश्वा ने० काल सं० १६७१ । पूर्ण। बेष्टन सं०२४४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७७६**१. प्रतिसं० २३**। पत्रस० ५६। घा० १३ ४ ६ है इ.स. । लेल्काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस० १४७/८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पाश्वेनाथ मन्दिर इन्दगढ (कोटा)

७७६२. प्रतिसं० २४ । पत्र स० ११ । प्रा० ११ 💢 २ १ इवा । ले०काल सं० १९६० ।पूर्ण । बेक्रन सं० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन खडेलवाल प्रवायती मस्टिर ग्रलवर ।

विशेष --- २ प्रतिया और है जिनकी पत्र स॰ कमण. ६० और ६१ है।

७७६३. प्रतिसं०२५।। पत्र सं० ७८। ग्रा० ६४६ इथा। ते० काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन सं०१६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर वीधरियान मालपुरा (टोक)

७७६४. प्रतिसं० २६। पत्र स० ५४। ग्रा० ६<sup>5</sup> ४ ६<sup>5</sup> इञ्च। ले॰काल सं० १६१२ मगसिर बुदी ६ । पूर्ण। वेष्टन म० १४। प्राप्ति स्थान-पि० जैन मदिर कोट्यो का नैसाव।

विशेष--शोचनपुर नैसावा मे प्रतिलिपि की गयी थी।

७७६५. प्रतिसं० २७ । पत्र स०५०। ग्रा० १०४६ । देश । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वेट्टन स०५१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैस्तुवा ।

७७६६. प्रतिसं० २ ८ । पत्र स०७६ । द्या० ११४४ १ इ.च. । ले०काल 🗴 । पूर्एं । बेहन सं०३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मस्दिर बचेर वालों का ब्रादा (उशियारा) ।

७७६७. प्रतिसं० २६ । पत्र स० ८६ । ले०काल स० १६०१ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वेषेरवालो का ग्रावा ।

विशेष—यावा में फर्तिमहजी के शासन काल में मोतीराम के पुत्र रावेलाल तस्युत्र कान्हा नोर-खंडया वचेरवाल ने प्रतिलिपि की थी।

७७६८. प्रतिसं० ३० । पत्र सं० ६४ । ब्रा०—१०४५ दश्या लेक्सल-सं० १८६४ । पूर्ण । बेब्रन सं०४ । प्राप्तिः स्थान – दि० जैन मन्दिर लख्डेलवालो का बाबां (उल्लियारा)

७७६९. प्रतिसं० ३१ । पत्र स०-१० । प्रा॰ ६imes६ हुँ इचा । ले॰काल imes । पूर्ण । बेष्टन संimes०१४५ । प्राप्ति स्थान- दि॰ जैन पवायती मन्दिर करौली ।

७७७०. प्रति सं० ३२ । पत्रस० ७१ । घा० ११ है×५ हुं इच । ले० कान सं०-१६२६ कार्तिक सदी १३ । पूर्त्ता वेटन स० २४६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

७७७१. प्रतिस० ३३ । पत्र स० =०। ग्रा०११×१. दुञ्च। ले०काल स०-१६५३। पूर्याः वेष्टन स०२४१। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

७७७२. प्रतिसं० ३४। पत्रस० ७३। या० १२ }४४, इचा । ले०काल स० १६६८। पूर्ण । वेक्रनसं० २४२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

७७७३, प्रतिसं० ३५ । पत्रसं० ७५ । ग्रा० १०१ 🗶 ५ इ.च । ते० काल सं० 🗴 । पूर्ण । बेहुत सं० ११५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन जैन मन्दिर राजमहल (टाँक) । ७७७४. प्रतिसं० ३५ । पत्र सं० ७६ । आ० ६ $\times$ ७ इला । ले०काल सं. १६२१ आसीज सुदी १ प्रपूर्ण बेहन सं०—१५२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टौंक ।

विशेष — प्रथम पत्र नहीं है।

७७७५. प्रतिसं० ३६। पत्रस० १२। आ० १२×६ इश्व। ते॰काल स० १६०७ श्रपाड बुडी ११। पूर्ण । बेष्टनस० ६६/११२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टौक)

७७७६. प्रतिसं० ३७ । पत्र सं० ४६ । या० ११ $^3_i$   $\times$ ७ इखा । ले० काल सं० १६०५ मगिसर बुदी ६ । पूर्णा । वेष्टन म० ११४-५१ । प्राप्ति स्थान —िद० लेन मदिर नेमिनाथ टोडारार्वासह (टॉक) ।

विशेष—वैष्ण्व रामप्रसाद ने तक्षकपुर मे प्रतिलिपि की थी।

७७७७ प्रतिसं० ३६ । । पत्रमः० ४६ । ब्रा० १२ १४६ इच । ले०काल 🗴 । पूर्यः। बेष्टन मं०—२८/१६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वगरपुर।

७७७ प्र. प्रति स० ३६ । पत्र स० ६६ । ले० काल 🗴 । घपूर्णं । वेष्टन सं० ४०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

७७७६, प्रति सं० ४०। पत्रस० ७०। ग्रा० १२×६ इञ्च । ले० काल स० १८७४।पूर्ण । वेष्ट्रन स०- १८/५७। प्राप्ति स्थाने---दि० जैनमस्दिर भाववा (राज०)

७७८०. प्रति सं० ४१ । पत्र म० ८६ । द्वा० ११ 🗙 ६ दव । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० ६७-५८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर भारता (राज०) ।

७७८**१: प्रति स० ४२** । पत्रस० ८१ । आ०१२ ४५ १ इला। ले०कान अ । पूर्णा। बेष्टनसंक १३३–३० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेपहमधी दौसा।

७७६२. प्रति सं० ४३ । पत्र स०६६ । धा०६४६ इ.च. । ने०काल सं० १८६२ चैत सुदी २ । पूर्णे । वेटटन स०१५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर तेपहुषयी दौसा ।

विशेष -- पत्र ६३ वें से द्याने ग्रन्य पूजाएं भी हैं।

७७६३. प्रतिसं० ४४ । पत्रस० ६१ । आ०  $= \frac{1}{6} \times \frac{1}{6}$  इचा । ले० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन स० ४४ । प्राप्तिः, स्थान—वि० जैन मदिर तेरहपथी दौता ।

७७६४. प्रतिसं ४५ । पत्र स॰ १०६ । आ॰ १२४५ इच्च । ले॰ काल स॰ १८६० आपाउ मुदी १ । पूर्ण । बहुन स॰ ७ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर नैरहुपथी दौसा ।

विशेष-पत्र स० १० मे १०६ तक चौबीस तीर्यकरों की विनती है।

७७८५. प्रतिसंठ ४६ । पत्रस० ४६ । प्रा० १४६ घं। ने० काल स० १११४ पीप मुदी १४ । पूर्णा विकृतसंठ ४१-७२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेरहपथी दौसा।

७७८६. व्रतिसंo ४७ । पत्रस० ६१ । आ० ११४५ इला। से०काल सं० १८५१ बैगाल मुदी ७ । पूर्वा । बेटून स० ४४-८० । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मदिर तेरहपथी दौसा।

विशेख — दौसामे प्रतिलिपि हुई थी।

७७८७. प्रतिसं०४ म । पत्र सं०७४ । बा० म्यै ४६ इच्छ । ले०काल स०११२१ । पूर्ण । वेष्टन सं०१२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीखपंषी दोसा । विशेष - स्योबक्स ने प्रतिलिपि की थी।

७७ दन. प्रतिसं० ४६ । पत्र स० द५ । झा० १० $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ इञ्च । ले०काल सं० १९०६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टुन स० १२६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर फतेतुपुर शेखावाटी (सीकर)

विशेष--एक प्रति स्रीर सपूर्ण है।

७७८६. चौबोस तीर्घं कर पूजा—श्रीलाल पाटनी । पत्रस० ५७ । श्रा० १० २४६ इच । माषा—हिन्दी पद्य । रक्ताल स० १६७६ । लेक् काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २७२ । प्राप्ति स्थान—दिक जैन मन्दिर पार्थनाथ चोगान व दी ।

७७६०. **चीबीस तीर्थकर पूजा वृग्दावन ।** पत्रस० ८२। प्रा०१०×१} इन्त्र । मापा-हिन्दी। विषय —पूजा। २०काल स०१ स्थ्या। से०काल १६२६ मादवा सुदी १३। पूर्ण। येष्ट्रन स० ११४४। **प्राप्ति स्थान**— २० वि० जैन मन्दिर अजमेर।

७७६**१. प्रतिसं० २** । पत्रस० ६६ । .मा० ११२ूँ ४६ है इञ्च । लेक्सल स० १८५५ । पूर्ण । वेष्टुनसं० ११० । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

७७६२. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ८४ । ग्रा० १९>४२) इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बहुन स० १४५/१०५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दरगढ (कोटा)

७७**६३. प्रति स०४** । पत्र स०**१०१** । झा०१२×५ इच्छा। ले० काल रा०१६३० । पूर्णे। वेप्टन स०१२ ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बडाबीसपथी दीमा।

७७६४. प्रति सं० ४ । पत्र स० ७४ । घा० १ $\times$ ६ इन्छ । लेकाल स० १६०७ वैशाल सुरी १२ । पूर्ण । वष्ट्रन स० २२ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर चौधरियान माळपुरा (टीक)

७७**६५. प्रति सं० ६** । पत्र स० ६४ । घ्रा० १९४५ इश्व । ले० काल ४ । घ्रपूर्ल । वेष्टन स**०** ५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक)

विशेष--- यन्तिम पत्र नहीं हैं।

७७**६६. प्रतिसं० ७** । पत्र स.० १८१ । ले० काल स० १८६४ । पूर्णा । वेष्टन स० १३४ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन पचायती सन्दिर भरतपुर ।

विशेष-इसकी ४ प्रतिया श्रीर है।

७७६७. प्रतिसंक मा पत्रसर म्या प्राक्ष १०४४ इत्वा तिकाल सर् १९१३ वैत बुदी ४ । पूर्यो । बेटन सक् १७१ । प्रास्ति स्थान--- विक जैन मन्दिर फतहपुर शेखावाटी (मीकर)

७७६८. प्रतिसं० ६ । पत्र स० ४७ । मा० १२ ४८ इश्व । लेश्काल स० १६८३ प्र० चैत्र सुदी ६ । पूर्णे । बेष्टनस० १७४ । प्राप्ति स्थान -- निः जैन मिर फलेहपुर शेलावाटी (सीकर)

७७**६६. प्रतिसं० १०।** पत्रम० १०८। ब्रा० १२<sup>9</sup> ४८ इच्छा। ले**०काल स०** १६२६। पूर्ण ४ वेष्टन स० १२३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी।

विशेष---एक प्रति और है।

७८००. प्रतिसं० ११। पत्र स० ७७। आ० १२ ४६ इचा । ले०काल सं० १६१२ । पूर्ण । बेष्टन स० ५-५। प्राप्ति स्थान --दि० जैन मदिर कोटडियों का द्वंगरपुर । विशेख--इसकी दो प्रतिया और हैं।

प्रशस्ति—सनत् १६१२ माह सुदी १३ लिखापित मनौराय जैचन्द गैबीलाल श्री हू गरपरना नाम्ब श्री ज्ञागमपुर में हस्ते नौगमी ग्र पुनमचन्द तथा गादि पुनमचन्द लिखित समादि ग्रागमेरचन्द ।

७८०**१. प्रतिसं० १२** । पत्र सं० १०६ । ब्रा० १०४५ इका । **के०काल स०** १६२१ । पूर्णे । केटन स० २८३ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर पार्थनाथ, चौगान बदी ।

७**५०२. प्रति सं० १३** । पत्रस० ५३ । झा० १०×६२ इ**ख । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण ।** बेब्रन सं० १५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर क्रशिनन्दन स्वामी, बुदी ।

विशेष--नैगावा मे प्रतिलिपि हुई थी । साह पन्नालाल वैद बूदीवाले ने ग्रामिनदनजी के मन्दिर मे ग्रथ चढाया था ।

७८०३. प्रति सं० १४ । पत्रस० ६२ । झा० १३ 🗵 ५ व । ले० काल 🗵 । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ४५५ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७८०**४. प्रति सं० १४** । पत्र त०६१ । झा०१३ ४ ८ इञ्च । ले० काल स०११६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मन्दिर जवकर, जयपूर ।

७८०**५. प्रति स०१६** । पत्रस०३७ । द्या०१२३<sup>९</sup>४७३ टचा। ने०काल 🗴 । ब्रपूर्ण । **बेष्टनस०** ६ । प्राप्तिः स्थानः— दि० जैन छोटः मन्दिर बयाना ।

विशेष---मिल्लनाथ तीर्थंकर की पुजा तक है। एक प्रति और है।

७६०६ प्रतिसं० १७ । पत्र स० ६२ । या० १०४७ इश्वा । ले०काल 🗴 । पूर्गा । वेल्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल पचावती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष - दो प्रतिया ग्रीर है।

७८०७ प्रतिसं० १६ । पत्रसः० १०१ । स्रा० ११×६ इन्ह्या । ले० काल स० १६१४ । पूर्णः । वेष्ट्रतसं० २६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रूंडी)

७८०८. प्रति सं० १६ । पत्रस० ४४ । आ० १०३ ४६३ इञ्च । ले•काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० ७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बेथेरवालो का ग्रावा (उणियारा)

७८०**६. प्रति सं२० ।** पत्रस० ५२ । ले॰काल ४। अपूर्णं। बेष्टन स० ५५ । **प्रा**स्ति **स्थान**— दि० जैन पचासती मन्दिर हण्डाबालो का डीग ।

विशेषः – महाबीर स्वामी की जयमाल नहीं है।

७ म् १०. प्रतिसं० २१ । पत्र स० ५६ । या॰ ११imes६ इ.च । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

७६**११, प्रति सं० २२ ।** पत्रस० १०१ । आ० १३×४२ हंच । ले० काल म० १६६४ चैत्र सदी १४ । पूर्ण । वेटन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर वडा बीसपथी दौस्का।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

७६१२, प्रति सं० २३ । पत्रस० ४० । मा० १२, ४८ इङ्च । ले० काल स० १६०० । पूर्ण । वेस्टन ३२/४६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मदिर भादवा (राज०) ७८१३, प्रति सं० २४ । पत्र स० ४६ । मा० १२×४ १ इञ्च । ले० कात × । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मदिर करोली ।

विशेष-एक प्रति ग्रीर है।

७६१४. प्रति सं० २५ । पत्रतः ४७ । ष्रा०११ $\frac{1}{2} \times 9^{\frac{1}{2}}$  इच । ते०काल सं०१८६१ सावन बुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन स०१५ ३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सीगास्मी मन्दिर करौली ।

७८**१४. प्रतिसं०२**६ । पत्रस०४६ । धा•१३×६६ च । ले० काल स०१६११ पौष सुदी ४ । पूर्णं । वेपून स०२६/३७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सौगरणी मन्दिर करौली ।

विशेष—एक प्रतिश्रौर है।

७**८१६. प्रति सं**०२७ । पत्र सं०६०। ग्रा०११४७ इल्डाले० काल स०११६३ । पूर्स। वेष्टुत सं०४ ८ । **प्राप्ति स्था**त—दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैसावा।

विशेष--कीमत ३) स्पया बधेरवालो का मन्दिर स० १६६४।

७८१७. प्रति सं० २८ । पत्रस० ७१ । घा०१०४६ है इसा। लेक्झाल स०१६३३ काती सदी १ । पूर्णे । बेष्ट्न स० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर नैस्पता ।

विशेष-एक प्रति और है।

७८१८. प्रतिसं० २६ । पत्रस० ४४ । घा० १३ रे ४७ है इचा। ले॰काल ४ । पूर्णा। वेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पंचायनी मन्दिर दूनी (टोक)

**७८१६. प्रति सं० ३०**। पत्रस० ५८। ग्रा०१२ ४६) इङ्च । ले•काल स० १८६७ । वेष्टुनस०६ ३। **प्राप्ति स्थान**— दि०जैन पचायत मन्दिर दूनी (टोक)

विशेष —श्रीहजारीलाल कटाग ने दशलक्षण बतोखापन के उपलक्ष मे स०१६४३ भादवासुदी १४ को दुनों के मंदिर में चशायाया।

७८२०. प्रतिसं० ३१ । पत्र स०७७ । घा०११×६ । इत्व । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ८६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महाधीर व दी ।

७८२**१ प्रतिसं० ३**२। पत्रस० ५६। घा० १० ! ४६ ! डचा। ले०काल म० १६२१ फागुन बुदी ३ । घपूर्णः। बहुतस० १०७ । **प्राप्ति स्था**न – दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बूदी।

विशेष--- ५५ से ५८ तक प्रचनही है।

७८२२. चोबोसतोर्थं कर पूना —सेवग। पत्रम० ७१। ग्रा० १०४४ ट्रै इस्त्रा गाया-हिन्दी पद्या विषय—पूत्रा । २०काल × । ले० काल स० १७७४ । पूर्णा वेष्टन स० १२६६ । **प्राप्ति स्थान**— म० वि० केन मन्दिर ग्रावनेर।

७६२३. **प्रतिसं**० २ । पत्र म० ४२ । मा० ६<sup>9</sup> ४ ६ इचा । ले०काल सं० १८६१ । पूर्ण । बेष्टन स० १६८ ७३ । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मदिर कोटडिया का हुंगरपुर ।

७८२४. खौबोस तीर्थंकर पूजा - सेवाराम । पत्र सं० ४४ । घा० १०३ ४ ४ १व । माया-हिन्दी (पद्य) । विवय-दुजा । २०काल म० १८४४ मर्गामर बुरी ६ । ले०काल मं० १८४४ पृपीव सुरी १३ । पूर्णे । वेष्टन स० १०४ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन स्रहेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

## विशेष ---

तिनम्यु को तेवनजु हो बलतराम इहनाम ।
साहगोप आवक्त्यूषी गुरू मिडत कवि राम ।।
तिन मिय्यात खड़न रच्यो पुलि पिल जिनमत के ग्रंथ ।
युष बिलाल दूवी रच्यो पुलि पुरी के पथ ।
तिन को लयु मुत जानियो नेवपाराम मुनाम ।
लिल पुजन के ग्रंथ बहु रच्यो ग्रंथ प्रमिराम ।
ज्येग्ट आत मेरो किंव जीवनराम मुजानि ।
प्रमु की रनृति के पद रचे महागिलवर प्राणि ।
तामैं नाम घरवी जु है जगतीनन गुरू लानि ।
तिन की पाय सहाम को कियो ग्रंथ मह जानि ।।

एक प्रति और है।

७६२५. प्रति सं० २ । पत्र स०६२ । घा०११ x ४१ इन्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेप्टन सं० १२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर द्वोरसणी कोटा ।

७८२६. प्रतिसं० ३ । पत्र स०६४ । त्या० ११ ४४ । ला०काल सं० १६१७ । पूर्ण । वेष्टन स०३८ । प्रास्ति स्थान - दि० जैन पार्चनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७८२७ प्रतिसं० ४। पत्रस० ११। या० ६ै, ४४ इश्वा ने०काल स० १८८४ कार्तिक सुदी ४। पूर्णे । वेष्टनसं० ३०-८३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वडा बीस पथी दौसा।

विशेष-हुकमचन्द बिलाला निवाई वालो ने प्रतिलिपि की थी।

७८२६. प्रतिसं० १ । पत्रस० ४२ । या० १२  $\times$  १ $_{1}^{2}$  इन्छ । ले०काल स० १८६२ भादवा बुदी २ । पूर्णे । बेष्टनस० ४०-८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दौसा ।

विशेष - विमनराम तरापथी ने प्रतिलिपि की थी।

७**८२६. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ५६ । प्रा० १० 🔆 🗶 इञ्च । ले॰ काल स**० १६०१ । पूर्ण ।** बेष्टुन स० १८ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मदिर पार्श्वनाथ टोडारार्यांमह (टोक)

**७८३०. प्रति स०७ ।** पत्रस०६० । ग्रा० ११×४ इल्बाले० काल स० १६२८ । पूर्या वैष्टनसं०६८ । प्रास्तिः स्थान - दि० जैन मदिर राजमहल (टॉक)

विशेष—मं० दिल १स ने राजमहल में प्रतिलिपि की थी। तेलो मेत्या श्री शिवचन्द जी चैत बुदी ७ सं० १९२२ के चन्द्रप्रभ चैत्यालय में चढाया था।

७६३१ प्रतिसं० ८ । पत्र स०४२ । सा० ११×७३ इञ्च । लेक्सल स० १६४८ । पूर्ण । बेष्टन स० १७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रमिनन्दर स्वामी, बुदी ।

विशेष — बूदी में प्रतिलिपि हुई थी।

७६३२. प्रतिसं० र । पत्र स० १३। घा० ११३४ १ इथा । ले० काल स० १६२२ । पूर्णी । वैष्टन सं० १४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) ७८३३. प्रतिसं० १०। पत्रस० ६४ । आ० १००० ४ ६ च । ले० काल सं० १८४५ । पूर्ण। बेस्टन स० २४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर, जयपुर ।

७६३४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० १२ । ग्रा० ११×५३ इचा । ले०काल स० १८५६ धाषाढ बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स०२४० । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

७ म. ३४. प्रतिसं० १२ । पत्रस० ४३ । आ०१०} ४७ इला। ले०काल सं०१८२६ माह सुदी १४ । पूर्ण। बेष्टुनस० ४८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर श्रादिनाथ बृदी।

७८३६, प्रति सं० १३ । पत्र स० ४३ । ब्रा० ११×७, इश्वा । ले० काल स० १६५७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर त्रुरी ।

७८३७. प्रतिसं० १४ । पत्र स० ६-४४ । छा० १२×४३ इंच । लेक्सल स० १८६० । पूर्यों । बेप्टन स० १६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संदिर पाण्येनाथ चौगान, बुदी ।

**७८३८. प्रति सं०१४ ।** पत्र स०२७ । ब्रा०१०×६ है इन्द्रा ले० काल सं० १८४७ । पूर्स। **बेह**नसं०७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर नागदी, बृंदी ।

७८३६. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४६ । ग्रा० ११} ४४ } दखा । ते∙काल स० १८६३ थासोज सुदी १ । पूर्ण । बेष्टन स० ६३ – द५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टॉक)

७ क्ष**ं ४०. प्रति सं०१७ ।** पत्र स० क्ष्रं। आरा० क्ष्रे×६ देश्वः। ले०काल स०१६०३ माहसुदी ११ । पूर्ता। बेरटन स० ४३ । **प्राप्ति स्थान**—सीगासी मदिर करौली।

७६४१. चौबीस तीर्थंकर पूजा—हीरालाल । पत्र स० ६२। म्रा० १०४० इन्छ । भाषा— हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल ४ । लेकाल स० ११२६ चैत्र मुदी ३ । पूर्ण । बेष्टन स० १६४ । प्रास्ति स्थान—सण्डेलयाल प्रवादती मंदिर म्रलवर ।

७६४२, **बौबीस तीर्यकरों के पंच कत्याग्**क—×। पत्र स० १६ । झा० ६×४१ इत्र्य । भाषा-हिन्दी (पद्य) विषय-पूजा । र०कात × । ले०काल × । त्रपूर्ण । वेष्टन सं० ३ । प्राप्ति स्थान— जैन मन्दिर बैर ।

७६४४. **खर्तुविशति तीर्थंकर पंचकत्यारगक पुजा---जयकीत्ति** । पनसं० १२ । झा० १०३४४: इन्छा । मापा-संस्कृत । विषय-पुजा । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १८४ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन खंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

ग्रन्तिम---

देवपल्ली स्थितेनापि सूरिगा जयकीतिना । जिनकल्याणकानां च, प्जेयं विहिता शुप्ता । सट्टारक श्री पद्मनंदि तन् जिच्य बह्य रूपसी निमितं । विशेष-- प्रति प्राचीन है।

७**८४५. चौस्ट ऋद्धि पूजा—स्वरूपजः** । पत्रसः २८ । झा० १२४८ इङ्क । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १६१० । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० २२१ । **प्रा**प्तिः स्थान—दि० जैन मणवाल मन्तिर उदयपुर ।

७६४६, प्रति सं०२ । पत्रस०३३ । ग्रा०१०४७ है दश्व । ले० काल—४। पूर्ण । वेष्टन सं० १६०। प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी, बृदी ।

७८४७ प्रति स० ३ । प्रतः स० २४ । घ्रा० ११३ ४ ६ इल्डा । ले० कालः स० १६३६ । पूर्णः। केटन सं० ५ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुदी ।

**७८४ ८. प्रति सं०४ ।** पत्रम०२४ । सा०११ ४७ इश्वाते० काल स०१६५**७ । पूर्ण।** वेकनसं०१७७ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर धमिनस्दन स्वामी. ब दी।

विशेष पुस्तक साह घन्नातालजी चिरजीनाल जी नैरावा वालों ने लिखा कर नैरावा सुद्धप्रप्राप्त के मन्दिर भेट किया । महननाना २) हीगलू २≈)

७८४६. प्रतिसं० ५ वन स० ५० । घा० ८ ४६<sup>9</sup> इला । ले०काल स० १६°२३ । पूर्ण । जीर्ण बेष्टुन स० ७१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन सोगाणी मन्दिर करौती ।

७८५० प्रतिसं०६ । पत्रस० २०। घा०१३ ४८६ चाले०काल स०१९६४ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर वटा बीस पथी दौसा ।

७८५१. प्रतिसं० ७ । यत्र स०४७ । घा० १४६ इ.च । ते० काल 🗴 । पूर्णं। वेप्टन स० १२६ × । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर वडा बीन पथी दौमा ।

७८५१. प्रतिसंब्दापत्रसव २०। ग्राव १३ 🗴 ८ ५ इ.च.। लेब्काल 🗴 । पूर्णा विष्ठन सव १०६ । प्रास्ति स्थान—दिव जैन तेरक्षणी मन्दिर दौसा।

७८५२, प्रति मारही पत्रस्व ३१। प्रा०११४ ५ इक्ता लेव काल सव १६६३। पूर्ण । वैष्टन संव ३६ २०। प्राप्ति स्थान – दिव जैन पत्रायती मदिर दूनी (टोक)

विशेष--प॰ पन्नालाल के शिष्य मुन्दरलाल ने बमुवा मे प्रतिलिपि की थी।

७६५३ प्रतिसं० १०। पत्रस०२०। धा०१४ × ६' इन्द्र। लेब्काल सं०१९५६। पूर्णं । बेष्टतस०१०८ प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्री महावीर बृंदी।

७८५४, प्रतिसं० ११ । पत्रस० १८ । ले०काल स० १६८० । पूर्णं । वेष्टुनसं० ४८ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपुर ।

७८५५. प्रतिसं० १२ । पत्रसः २४ । घा० १२ ' ४७ है इच । ले० काल सः० १६६१ । पूर्णः । वेष्टनसं० ५५४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

७८५६. प्रति स० १३ । पत्रस० २६ । ब्रा० १३ ४ ८ ट व्हेड्स्य । ले०काल सं० १६८६ । पूर्ण रे वैष्टनसं० ५६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर

७८५७. प्रति स० १४ । पत्र स० ४३ । घा० १हे ४६१ इक्षा ले० काल स० १६७२ सावन सुरी १४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३१६ ।प्राप्ति स्थान—दि० जैन पाव्यंनाय मदिर चौगान बूंदी । विशेष-सडल का चित्र भी है।

७८५८. प्रति सं० १४ । पत्रसं० ५८ । घा० १० $^3_1 \times ^3_2$  इञ्च । ले० काल imes । पूर्एं । बेष्टन सं० ३१६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

७६५६. प्रतिसं० १६। पत्र स० २६। घा० १२ ४५) इ.स.। ले० काल सं० ११७४। पूर्ण । वेय्टन स० ६४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन श्रप्रवाल पत्रायती मदिर अलवर।

विशेष-एक प्रति और है जिसमें २४ पत्र हैं।

७८६०. प्रतिसं० १७ । यत्र स० ३६ । ले०काल सं० १८४० । पूर्ण । वेष्टत सं० २ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती सदिर हण्डावालो डीग

७**८६१. प्रतिसं० १८** । पत्र स० २४ । ग्रा० १२४८ इञ्च । ने० काल 🗴 । पूर्णं । नेपृत स० ३७ ।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्वनाय मन्दिर टोशारायसिंह (टोक)

७६६२. प्रतिसं० १६ । पत्र स० ४६ । ग्रा॰ १०४७ इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेप्टन सं० ४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

७६६३. प्रतिसं० २०। पत्रस० ३६ । झा० ११३ ४७ इखा से० काल सं० १६७० घासीज बुदी १० । पूर्णा । बंष्टनसं० ४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टॉक)

विशेष—हीरालाल के पुत्र मूलचद सौगाएंगी ने मन्दिर मंडी मालपुरा मे लिखा था।

७८६४. प्रति सं० २१। पत्रस० ४६। झा० ११४६ इङ्च । ले०काल स० १९३६ कार्तिक इदी ५ । पूर्ण । वेष्टनसं०४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्चनाथ मन्दिर टोडारायसिह (टोक)

७६६५. प्रतिसं० २२ । पत्र मं० ५-४१ । ग्रा० ८ १ × ६ इञ्च । ले०काल सं०१६३४ माह सटी ५ । ग्रपुर्स । वेप्रन स०१८५ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह ।टॉक)

७६६६. जस्बूद्वीप स्रकृत्रिम चैरमालय पूजा— जिनदास । पत्रस०३। प्रा०१२४७ स्व। भःपा—सस्कृत । विषय—पृजा। र०काल सं०१४२४ माघ मृदी ५। ले०काल ४। पूर्ण। वेष्टनसं∙ ११७। प्राप्ति स्थान -- दि० जैन प्वायती मन्दिर बयाता।

विशेष--रचना सम्बन्धी श्लोक

माद्रे व्याचार द्रव्येके वर्तमानजिनेशिना । फाल्गुगो मुक्लपंचम्यां पृजेय प० रचितामया ।।

७८६७. प्रति सं०२ । पत्र सं०४२ । घा०१२ ४६ । इत्था। ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेहन सं०४० । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर देर ।

विशेष-लक्ष्मीसागर के शिष्य पं॰ जिनदास ने पजा रचना की थी।

७८६८. सम्बूदीप पूजा—पं० जिनदास । पत्रसं० ३२ । माघा—संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं० १८१६ माघ बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० २२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंजायती मन्दिर भरतपुर। विशेष-पं • जिनदास लक्ष्मीसागर के शिष्य थे।

७८६८. **जम्बूस्वामी यूजा**— × । पत्रस०२७ । सा०१२×७ इ**स । भाषा**-हिरी (पदा)। विषय-पूजा। र०काल × । ले० काल सं०१८६० । पूर्णे। वेष्टनसं०६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहतको मिदर दीसा।

७८७०. **जम्बूस्वामी पूजा जयमाल ।** पत्र स० १०। माथा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६१२ । पूर्ण । बेष्टुन स० ३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर हण्डावालीं का द्वीग ।

७८७१. जयविधि — X। पत्रतः ६। ग्रा० ११ X ४२ ६ खा भाषा-संस्कृत । विपय-पूजा । रुकाल X लेकाल सं० १६२१ । पूर्ण । वेष्टन स० ११८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पार्थनाथ भन्दिर जीगान वृदी ।

विशेच—-पूज्य श्री जुनिगाढिका बागड पट्टे सागावाडान्वयेका श्री १०८ राजेन्द्रभूपराजी लिपि कृतम् स० १२२१ सागवाडा नगरे

७८७२. जल**यात्रा पूजा विधान**— × । पत्रस०२ । घा०१० हे×५६ वा । मापा-संस्कृत । । विषय-पृजा। र०काल × । लेक्सल × । पूर्णै। वेष्टन सं० ६४८। **प्राप्ति स्थान** - म० दि० जैन मन्दिर श्रजमेर ।

७६७३. जलयात्रा विधान— × । पत्र स० २। घा० १०१४४३ इंस्व । माया—सम्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २३२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर ग्रांभनन्दन स्वामी, वृदी ।

७६७४. जलयात्रा विधि— $\times$ । पत्रस० २। प्रा० १० $\times$ ६ इथा। भाषा-सरकृत। विषय-विधात। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टत स० ३४६-१३२। प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर।

७८७४. जलहर तेला उद्यापन— $\times$ । पत्र त० ११। प्रा०७  $\times$  ४ ३६२० । भाषा-सम्बत । विषय-पूत्रा । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन त० ६६१। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

७८७६. जलहोम विधान— × । पत्र सं० ४ । घा० १० ×६ इचा । भाषा-सत्कृत । विधय— विधान । र०काल × । ते० काल सं०१६३८ । पूर्ण । बेटन स०३४४-१३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटब्रियो का द्वारपुर ।

विशेष — सल्बर में लिखागयाया।

७८७७. जासहोम विधान—X । पत्र सं० ४ । या०११४७ इंच । नापा—सस्त्रतः । विधान-विधान । र०काल X । ले०काल X । पूर्णा । वेष्टन सं० ४२७–६१ । **प्राप्ति स्था**न—दि० वैन मदिर कोटडियो का हंगरपुर ।

७८७८, जजहोमिबिध-X । पत्र सं० ४ । ग्रैसा०८ X७ इटल । भाषा-संस्कृत । विषय-वियान । ८०काल X । ले०काल सं० १६४० । पूर्ण । वेष्टन सं० ५४२ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर कोटदियों का द्वंगरपुर । ७८७६ जिनगुरासंपत्ति अतोद्यापन पूजा × । पन स०६। आ०१२ ×६ इच । आवां-सस्कृत । विषय पूजा । रे०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स०७२१ । प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

७८८०. प्रतिसं० २ । पत्रस० ८ । ग्रा० १०३ × ४ इञ्च । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टनसं∙ ३८६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर भण्डार ।

**७८८ १. प्रति सं० ३** । पत्रस० स० ५ । ग्रा० १०×५ इ.च । ले०काल स० १८६० मादवा **इ**दी १४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ बृदी ।

७८६२. प्रति सं०४ । पत्रस० ७ । ग्रा० १० ५ ५६% । ते० काल 🗴 । पूर्गं । बेष्टन स० ६३-४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडोरायसिह (टोक)

७८८३. प्रतिसं० ५ । पत्रस० ६ । या० ११×५ इन्छ । ले॰काल × । प्रपूर्ण ।वेष्ट्रमसं० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टोक)

विशेष - केवल प्रथम पत्र नही है।

७६६४. जिन पूजा विधि — जिनसेनाचार्य । पत्रस्व ११ । म्रा॰ ११ $\times$ १ इच । माया-सस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १८६५ कार्तिक सुदी १ । पूजा । वेहनसं॰ ४१-२७ । प्राप्ति स्थान — पार्श्वनाथ जैन मन्दिर इत्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष -- लिखापित भ. देवेन्द्र कीर्ति लिपि कृत महात्मा शभुगम ।

७८८५ जिन सहासियेक विधि - ग्राशाधरः। पत्र स० २४। ग्रा० १०४४ इञ्च । भाषा सस्कृतः। विषय-विधानः। र०कालः ४ । ने०कालं म० १८३७ समसिर बुदी ४। पूर्णः। वेष्टनं स० २८३। प्रास्तिः स्थानः—दि० जैन सेदिर बोग्मली (कोटा)।

विशेष-सरत मध्ये लिखापित श्राचार्थं नग्न श्री नरेन्द्रकीर्ति ।

७६६६. जिन सक्तरूप - आशाधर । पत्रसः १३४ । सा० १२४४, इसा । मापा -संस्कृत । विषय विधान । २०काल सः० १२८५ । **से०कान ×** । पूर्ण । वेष्टुन सः० ११३ । प्रार्थित स्थान -दि० जैन सन्दिर पार्थनाथ सीमान सुधी ।

**विशेष**—मावनढ में प्रतिलिपि हुई थी। प्रति प्राचीन एवं सम्कृत में ऊपर नीचे सक्षिप्त टीका है।

७८८७, प्रतिसं० २ । पत्र म० ६४ । ग्रा० १३ ४६ इ.च. । ले०कान सं० १८४६ पीष सुदी १४ । पुर्वो । बेब्रन म० ५ ३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर देती (टीक) ।

७८८८, प्रति सं० ३ । पत्र स० ६७ । ने० काल १५१६ श्रावण बदी १५ । पूर्ण । बेण्टन तां० १ । प्रास्ति स्थान — বি॰ जैन पचायनी मन्दिर (बडा) डीग ।

७८८६. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १४७ । आ० १२ × १६ हेश्वा । लेक्सल सं० १७४७ । माघ सुदी २ । पूर्णे । बेष्टुनस० ११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायनी मन्दिर दूनी ।

विशेष-कही सस्कृत टीका तथा शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं।

७८२०. जिन सहस्रनाम पुजा—सुमति सागर । पत्रस० २८ । प्रा० १२ ×६ रख । भाषा-सक्त । विषय-पुजा । र०काल × । ते० काल स० १८१२ माघ बुदी १४ । पूर्ण । वेहन स० २३६ । प्राप्ति म्थान-पुजा । त्रिक तेमाचा ।

७८१. जिनसंहिता— भ० एकसिन्धः । यत्र स० २१६ । छा० १११ $\times$ ४ इचा । भाषा—् संस्कृतः ।विषय-विधानः । २०कालः  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्ट्न सं० ११५ । प्राप्तिं स्थान—दि० जैन मन्दिर पास्वेताथ चौगान वृदो ।

७६६२. जैन विवाह पद्धति — जिनसेनाचार्य । पत्रसं० ४६ । प्रा० ११३४ ८ इञ्च । भाषा-मस्कृत । विषय-विधान । र०काल 🗴 । ते०काल सं० ११४२ बैणाल गुरी २ । पूर्ण । बेष्टुनसं० ३०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवानजी (कामा)

विशेष---प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीका काल स॰ १६३३ ज्येष्ठ बुदी ३ ।

७**८६३: प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ३४ । प्रा० १०<sup>५</sup> ४४) इच्च । ले०काल 🔉 । पूर्ण । बेष्टन स० १२१ । प्राफ्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

विशेष--प्रति हिन्दी ग्रथं तथा टीका सहित है।

७८**६४. प्रति सं०३ ।** पत्रसं०२८ । म्रा०१२<sup>†</sup> ४७ इञ्च । ले०काल स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टुत सं०२२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जन मन्दिर श्रीभनन्दन स्वामी वृदी ।

विशेष- बीच में सस्कृत क्लोक है तथा ऊपर नीचे हिन्दी टीका है।

७८**६४. प्रतिसं०४ ।** पत्रम०२६ । ग्रा०१२×७ इञ्च । ले०काल स०१६६३ । पूर्यं । बेहन स०५२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० तैन मदिर श्री महाबीर बूदी ।

७८ **६६ प्रतिसं० ४.**। पत्रस० २६। घा०११×४.) इञ्चालेककालासं० १६६८ । पूर्णा वेष्टन स०२१-१२ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन मंदिर कोटडियों का डूंगरपुर ।

विशेष--पडित फतेहलाल विरचित हिन्दी भाषा मे प्रथं भी दिया हुआ है।

७८६७. प्रतिसंव ६। पत्रसव ४६ । ग्रा० १२४७ इत्त्र । लेक्सल संव १६३३ । पूर्स । बेष्टन सव १०६/१४ । प्राप्ति स्थान--दिव जैन पार्धनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

७८६८ . प्रतिसं० ७ । पत्रसः० ४४ । ग्रा० ११३ ४८ इथा । ले०काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टन सं० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रग्रवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

७६६६. जैन विवाह विधि —  $\times$  । पत्रसं॰ ३। मा॰ ११ $\times$ ५ इस । मापा -सन्तत । विषय — विधि विधान । र॰ काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ ११ $\times$ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर वयपूर ।

७६००. **जेव्ठ जिनवर व्रतोद्यापन**— × । पत्रसं ०६। ग्रा० १०३/५५ इश्व । भाषा - सस्कृत । विषय-पूजा । र०कान × । ने०काल × । पूर्णं । वेष्टनस० २७४। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७६०**१. तयोग्रहरा विधि**— X। पत्रसं० १। भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल X । सै॰काल X । पूर्ता । बेष्टन सं० ६७६। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

७६०३. **तीन चीवीसी पूजा**— X । पत्रसंग् ७ । सा०११ x ५ हे इखा भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । २०काल X । से०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर स्वक्रीर भण्डार ।

७६०४. तोन चौबीसी पूजा-श्रिभुवनचन्द । पत्र स० ६। प्राः० ११४४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रेक्काल ४ । ले॰ काल स० १८०१ प्रपाढ बुदी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० ४३ । प्राप्ति स्थान-विष्यं जैन मन्दिर बोरालो कोटा

७६०**४. तीन चौबोसी पूजा — वृत्व स्वन ।** पप्रस० १४२ । मा० १०४७ हे इब । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय-पूजा १०काल × । ने०कान स० १८७०। पूर्ण । बेष्टनम० १६१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सडेनबान प्रवासती मन्दिर सन्वर ।

७६०**६. प्रति सं० २ ।** पत्रस० म्या ले० काल स० १६४२ । पूर्णः । बेष्टनस० १६२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, अयपुर ।

**७६०७. तीन लोक पूजा—टेकचंद** । पत्रसं∘ २०२ । घा० १२३ ४६३ इस्व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० १०२० धपाः बुदी ४ । ले०काल स० ११६६ फालगुण सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रिमनस्त स्थामी बुदी ।

विशेष---प॰ नीमलाल जी ने बूदी में प्रतिलिपि कराई थी।

७६०**म. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० ३२५ । **घा० १४ ८** ⊏ृहला । ले० काल सं० १६७१ । पूर्णे । वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर चोधरियान मालपूरा (टॉक)

विशेष - चौधरी मांगीलाल वकील ने प्रतिलिपि करवाई थी।

७६०**६. प्रतिसं० ३**। पत्रस० ३७४ । ग्रा० १६ 🗴 ६ इन्छ । लेकाल स० ११६७ माह बुदी २ । पूर्ण । बेष्टम स० २६ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन ग्रयबाल मन्दिर नैसुवा ।

विशेष — प० लक्ष्मीचन्द नैसावा वाले का ग्रंथ है। स० १८६८ मे उद्यापनार्थ चढाया पन्तालाल चम स्थान (१) बेटा जदनस्य का।

७६१०. प्रतिसं० ४ । पत्रत्त० ३४४ । मा० १२३% ६३ इ.च. ने०काल स० १६३८ म्रायाद बुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं० २३ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन नेरहपथी मन्दिर नेंगवा ।

७६**११. प्रति सं० ४।** पत्र स० ४०४ लेक्काल स० १६१२ । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर मरतपुर ।

७९**१२. प्रति स० ६** । पत्रस० २०८ । म्रा० १२ ४ ७} इ.च । ले०काल सं० १९३४ चैत मुदी २ । पूर्यो । वेद्वन सं० ६२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन परायती मंदिर करोली ।

७६१३. तोन लोक पूजा— नेमाचन्द पाटनी । पत्रतः ६४० । घा॰ १३ ९८ ६ खा । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल × । ले॰काल स॰ १६७६ मगसिर सुदी १४ । पूर्ण । बेहनस॰ १६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मंदिर घादिनाथ स्वामी मालगुरा (टॉक) विशेष — धन्नालाल सोनी के पुत्र मूलचन्द सोनी ने म्रादिनाध चैत्यालय मे प्रतिलिपि करवाकर मैंट की थी।

७६१४. तीस चौबीसी पूजा— म० शुभख $\pm$ ड । पत्र स० ७४ । द्या० १०imes४ इ. व. भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । बेहन स० १३७५ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर स्रजमेर ।

७६१**४. प्रति सं० २** । पत्रस० ११ । झा० १० $\times$ ४ है इंच । ले०काल सं० १७२८ बैशाल सुदी १४ । पूर्णा । केप्टन स० २०० । **प्राध्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर स्रजमेर ।

विशेष---ग्रन्था-ग्रन्थ सं०१५००।

७६**१६. प्रतिसं० ३ ।** पत्र स० ४४ । ले॰ काल सं॰ १८४६ । पूर्ण । वेष्टनस॰ ८८ । **प्राप्ति** स्थान—दि॰ जैन पचायती मन्दिर मरतपुर ।

विशेष -- सुखरामजी वसक वाले ने प्रतिलिपि की थी।

लिखत दयाचन्द वासी किशनकोट का बेटा फतेहचेन्द छात्रडा के पुत्र सात केरिनिसह के कारण पाय हम भन्तपुर में रहे।

७६१७ प्रति सं०४ । पत्रसं० २६ । ने० काल सं० १७६६ माघ मृदी १३ । पूर्ण । वेष्टनसं० १२ । प्राप्तिः स्थान दि० जैन पनायनी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष -- प्रति का जाएगेंद्वार हुमा है।

७६१ म. प्रति सं० ५ । पत्रस० ६१ । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० म३ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

७६१६. प्रति सं० ६ । पत्र म० ३-४४ । प्रा० १०३४४ इञ्च । ले०काल स० १६४४ । प्रपुर्ण । बेष्टुनस० १७२ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

स बत् १६ ग्रापाशादि ४८ वर्षे ग्राण्यन मृदी ७ गुरी श्री विद्यापुरे शमस्याने त्र० तेजपाल व० पदमा पंडित माङ्ग् वानुमासिक स्थिति चतुर्तिशतिका पूजा लिखापिना । व० तेजपाल पटनार्थ मृनि धर्मदत्त लिखितं कियद गीक गच्छे ।

७६२०. प्रति सं० ७ । पत्रस० २-४७ । ले॰काल  $\times$  । सपूर्या । वेष्ट्रन स० ३७६।२६७ । प्राप्ति स्थान--- दि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

७६२१. प्रतिसं० ⊏ । पत्र स० १०७ । झा० म× ६ इश्वः । ले० काल सः १८४५ आदो सुदी ११ । पूर्णः । वरटन स० म६ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर चेतनदास दीवान पुरानी डीगः।

विशेष-गृटका साइज है। लानजी मल ने दीर्घपुर में लिखा था।

७६२२. प्रतिसं० ६ । पत्रत० १०। छा० १०४५ इच । ले०काल — ४ । घपूर्ण । वेष्टत स० ६६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्त्रिर बोरसली कोटा ।

७६२३. प्रति सं० १०। पत्र सं० ७२। घा० १०४५२ इखा लेकाल—४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २४८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूंदी । ७६२४. प्रतिसं० ११ । पत्रस० ४२ । प्रा० ११३ 🔀 इखा । लेकाल स० १७८० चैत्र बुदी म । पूर्णे । बेहन स० ४८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर आदिनाय बुंदी ।

विशेष---मालपुरा नगर मे पार्थनाथ चैत्यालय मे प० योषराज के पठनार्थ लिखा गया था।

७६२५. तीसचौबीसीपूजा—पं नसाधारमा । पत्रस० ३१ । ब्रा० १२ र्रे ४७ रु इला । भाषा-सस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । र०काल स० ४ । ते०काल स० १८५२ ब्रासोज मुदी १३ । पूर्णु । वेट्टन म० ८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग ।

७६२६. तीस चौबोसो पाठ—रामचन्द्र । पत्रसं० ७६ । ग्रा० १२ $\frac{1}{2}$  $\times$ ७ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ग्राप-हिन्दी पर्य । विषय-पृजा । र० काल सं० १८८३ चैत वदी ५ । लेकाल स०११०८ सावन वदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स०११५ । प्राप्त स्थान—दि० जैन मन्दिर फनेहपुर शेवावाटी मीकर ।

विक्रोच — रिक्वरीयमाद क्रमां ने प्रतिलिपि की थी।

७६२७. प्रतिसं० २ । पत्र स०६४ । प्रा० १४ है ४ म्हे इञ्च । ले॰काल स० १६२६ भारव सदी ११ । पूर्ण । वेप्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-- लाला कल्याराज्य ने मिश्र श्री प्रसाद श्यामलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

७६**२८. तीस चौबीसी पूजा—वृग्दावन ।** पत्र स० १२७ । ब्रा० ११६/ ४५ इन्छ । माषा -हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल—४ । ले•काल स० १६२६ कार्तिक मुदी १३ । ब्रपूर्ण । वेष्टन स० १०-२१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडागर्यासह टोक ।

विशेष---१०४ का पत्र नही है।

७६२६. प्रतिसं०२ । पत्रस०२६६ । घा०१०× ५ै इच्चालै० काल स० १८६४ । पीप बुदी१४ । पूर्णावेन्टन म०१२५ । प्राप्ति स्थान— হি০ जैन पंचायती मन्दिर बयाना।

विशेषः - गुटका नाइज मे है।

७६३०. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ११० । म्रा० १२ $\frac{1}{2} \times ६<math>\frac{1}{2}$  इन्छ । ले०काल स० १६१० म्रामीज मुदी ५ । पूर्ण । बेष्टनस०४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर बयाना ।

विशेष---बयाना मे प्रतिलिपि हुई थी।

७६**३१. प्रतिसं०४**। पत्रस०१०८। झा०११४६ इला। ले० काल— <। पूर्ण वेष्टन स० २०१। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पास्वेनाथ टोडारायसिह टोक।

७६३२. प्रतिसंठ ४.। पत्र सं० १०६ । घा० १०४ ७ इ.च.। ले० काल स० १६४ ६ । पूर्ण । वेदन सं० ३६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

७६३३. प्रतिसं०। ६। पत्र सं० १०७। प्रा० १५ $\times$ ६३ इथा। लेक्सल सं० १८८६ माघ सुदी ११। पूर्ण। बेष्टन स० २७,१६। प्राप्ति स्थान—६० जैन मन्दिर कोटडियो का डूंगरपुर।

विशेष-- प्रतापगढ़ में पंडित रामपाल ने लिखा था।

७९३४. तीस चौबीसी पूजा $-\times$ । पत्रसं०। बा० १६ $\frac{2}{5}\times 6\frac{3}{5}$ ड्ख । भाषा-हित्दी । विषय $-पूजा।र०काल <math>\times$ । से०काल सं० १८८५ कार्तिक बुदी १० पूर्ण। बेष्टनसं० १३६७। प्रास्ति स्थान-प्रजमेर भण्डार।

**७१३६. तेरह द्वोप पूडाा**—लालजीत । पत्र स० १६६ । प्रा० ११ै, ४८ इञ्च । माषा-विषय—पूत्रा । र०काल स० १८७० । ले० काल स० १८६७। पूर्ण । वेष्टन स० १३६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर मण्डार ।

विशेष--कृष्णगढ मध्ये लिखिपितं ।

७६३७. प्रतिसं०२ । पत्र स०११४ । बा०१४४६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजः । र०काल स०१६७० । ने०काल म०१६१६ । बैशाख बुदो १० । पूर्णः । वेष्टन स०१५६ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर राजमहल टोकः ।

७६३८. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २१७ । झा० १२४६) दश्च । लेक्काल सं० १६६० । पूर्ण । वेष्टन स० ४३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरह पथी मन्दिर नैसावा ।

विशेष—भट्ट रामचन्द्र ने नैगावा मे प्रतिलिपि की थी। घानीलान जी के पुत्र सावलरामजी भाई सोदान जी चि० फलचन्द्र श्रावक नैगावा वाले ने प्रतिलिपि करवाई थी।

७**८३८ प्रतिसं०४** । पत्र स०१७४ । क्षा०१३ ४ ६} इञ्च । ले० काल स०१६०३ । **पूर्ण ।** वेष्टुत स०६६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर, बुबी ।

७**९४०. प्रतिसं० ५**। पत्र स०२०२। द्या० १०४४ <sup>१</sup> इश्वाः ले०काल स. १९०६ पूर्णः । वेष्ट्रनसं०६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर मादवा राजस्थान ।

विशेष — मारोठ मे अर्थाराम ने प्रतिलिपि की थी।

**७६४१ प्रति सं०६।** पत्र स०२०६। प्रा०१०×६ इ॰वाले० काल स०१८२४। पूर्ण। बेष्टन स०१६६। **प्राप्ति स्थान**—वि०जैन मन्दिर श्री महाबोर, बृदी।

७९४२ प्रतिस०७ । पत्रस०१६३ । ले॰काल १९६४ । पूर्णा वेष्ट्रन स०७१ । प्राप्ति— स्थान—दि० जैन प्रवायनी मन्दिर हण्डावालो का डीग ।

७**९४३ प्रति सं०। प्रा**ापत्रस० १६६ । ह्या० १३४७<sup>3</sup> इ.च । ले० काल स० १६०७ । पौष सदी । पूर्ण । बेब्रन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दीवानजी कामा ।

विशेष-प्रति उत्तम है।

**७६४४. प्रति सं०६ । पत्रस०**१४०। ग्रा० १२१्रै×८ट्टै डञ्च । ले० काल स० १६२३ । श्रासीज सुदी २ । पूर्ता। बेप्टन स०१४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर लेल्याबाटी सीकर ।

७६४५. तेरह द्वीप पूजा स्वरूपचन्दा । प्रसः ११७ । म्राः ११५ ४७ $\frac{1}{5}$  इञ्च । भाषा – हित्दी । विषय-पूजा । २०काल $-\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसः १०४/६६ । प्राप्ति स्थान— विर्णंन मन्दिर भारता ।

७६४६. तेरह द्वीप विद्यान $-\times$ ।। पत्र सं० ५४। प्रा० १० $\times$ ४ $} इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल <math>\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नागदी, (इ.दो) ।

७६४७. तेरह द्वीप पूजा विधान— $\mathbf{x}$  । पत्र स० १३६ । आ० १२ $\frac{1}{5}$  $\mathbf{x}$   $= \frac{1}{5}$  सक्त । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । २०काल  $\mathbf{x}$  । ते० काल स० १६६१ मादवा वदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं० १०७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर फतेहपुर नेसावाटी सीकर ।

विशेष-परशादीलाल पद्मावती पुरवाल ने सिकन्द्रा (मागरे) से प्रतिलिपि की थी।

७६४८. त्रिकाल सौबोसी पूजा—  $\times$  । पत्रस्व ११। म्रा० ११ $\frac{3}{7}$   $\times$  ५ $\frac{1}{7}$  दश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । वै० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० । प्राप्ति स्थान— ४० दि० जैन मन्दिर म्राविनाथ स्वामी मालपुर। (टोक) ।

७६४६. त्रिकाल **चर्तुविशति पूजा**—त्रिभुवनचन्द्रा पत्रस०१४। प्रा० १११४४ इश्व। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा १०काल ४। ते०काल ४। पूर्ण। वेष्टन स०६४। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर धीमनन्दन स्वामी बुदी।

७६५०. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा—×। पत्र स०११। ब्रा० १२×५ इश्व । भाषा– सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०६/१८ । प्राप्ति, स्थान—म० दि० जैन मंदिर टाडागायीसह (टोक) ।

७६५१: त्रिकाल **बतुर्विशति पूजा**— × । पत्रस० १६ । प्रा०६२ ४४ इथा । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १०६/१७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष — तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

७६४२. त्रिकाल चतुविसति पूजा—imes। पत्र सं०२२। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०कालimes। एर्ण। बेष्टनम०६६। प्राप्ति स्थान—दि०जैन पनायती मन्दिर मरतपुर।

विशेष-भन्तामर स्तीत्र तथा कल्यामा मन्दिर पूजा भी है।

७६५३. त्रिकाल चतुर्विशति पूजा— $\times$ । पत्रस० १३। प्रा० १० $\times$ ४ इखा भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल $\times$  । ले•काल $\times$ । पूर्णं । वेष्टन स० २२२ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर राजमञ्ज (टोक) ।

७६४४. त्रिकाल **चतुर्विशति पूजा** — म**० शुभचन्द्र** । पत्र म० १६ । प्रा० १३ ×६ इखा । स्राया-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन सोगाणी मदिर करीली ।

- ७६४७. त्रिरंचासत क्रियावतोद्यापन—  $\times$  । पत्र सं $\circ$  १ प्रा $\circ$  १० $\times$ ६२ इस । प्रापा- सं $\circ$ कृत । विषय पुत्रा । र $\circ$ काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं $\circ$  ४१६ । प्राप्ति स्थान— दि $\circ$  जैन मन्दिर कोटिडियो का इनरपुर ।
- ७६४ म. त्रिः चिस्तत् कियावतोद्यायन  $\times$  । यत्र स० ४ । द्या० १२ $(3 \times 5)$  स्थः भाषा-सम्क्रतः । विषय-पूजा । रज्जातः  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्णः । वेण्टन स० ३६६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मदिर सजीर भण्डार ।
- ७६४६. त्रिपंचाशत् क्रियात्रतोद्यापन  $\times$  । पत्र सं०६। द्वा०१० $\times$ ७३ इञ्च । भाषा— सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन क्षप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।
- ७६६०. त्रिपंचासत् कियावतोद्यापन $-\times$ । पत्रतं० १। प्रा०११है $\times$ ४) इखा भाषा- सम्प्रतः। विषय-प्रता । २० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन स०१६८। **प्राप्ति स्थाल**-वि० जैन मन्दिर प्रादिनाय वृदी ।
- ७६६१. त्रिलोक विद्यान पूजा- टैकचन्द । पत्रस० ३०३ । सा० १३× ८ इ.च. भाषी-हिन्दी पद्यः विषय-पूजाः र०कालः स० १६२६ । लेळकालः स०१६४२ । पूर्णः । वेष्ट्रतः स० २६ । प्रास्ति स्थान---विर्णंत मन्दिरं श्री महासीर वृदी ।
- ७६६२. त्रिलोकसार पूजा नेसीचन्द्र । पत्रस० ६६१ । आ० १४४ ८ | इस्त । भाषा हिन्दी पद्य । विषय — पूजा । र०काल ४ । ते०काल सं०१६८४ चैन सुदी १३ । बेष्टन स०३ । प्रास्तिः स्थान - दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टॉक)
- ७६६३. त्रिलोकसार पूजा महाचन्द्र । पत्र स० १६६ । मा० १०३ ४७ इ.च.। मावा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल स० १६१४ कार्तिक बुदी पाले काल सं० १६२४ कार्तिक मुदी १४ । पूर्वो । वेपटन स० १०६ । प्राप्ति स्थान--वि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष प्रभावनद्व सीकर के रहने वाले थे। समेद शिखर की यात्रा से लौटते समय प्रतापगढ़ में ठहरे तथा वहीं प्रन्य रचना की थी।

**७६६४. प्रतिसं० २** । पत्र सं०१७२ । घा०१० हुँ ४ ७ इ.चा। ले० काल स०१६२४ कार्तिक सुदी१४ । पूर्णं। बेहुन सं०१४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर धालवर।

विशेष—मद्रारक भानुकीर्ति के परम्परा मे से प० महाचन्द थे।

७**६६५. प्रतिसं**० ३ । पत्रस० १९६ । ग्रा० १० १ ×६३ इ.च । ले० काल मं० १६२५ । पूर्णा। वेष्ट्रत सं० १९५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल पवायती मन्दिर ग्रलवर ।

७६६६. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १६१ । प्रा० १३ ४ ६ है इञ्च । ले०काल ४ । अयूर्ग । बेहन स० ३६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर ।

७६६७ त्रिलोक पूजा - शुभवन्य । पत्र सं० १६६। ब्रा० १४६ इसा । माया-सम्बन्त । विषय-पूजा । रक्काल 🗶 । लेक्काल स० ११४२। पूर्ण । नेष्टनसं० १०। **प्राप्ति स्यान** -- दिक् जैन पास्त्रनाथ मंदिर चौगत बुदी। ७६६**८, प्रतिसं०२ ।** पत्र सं०१३१ । प्रा०१२३ ४४, इ.च. । ले०काल स०१८३० । पूर्यं। वेष्टन सं०२१ । **प्रास्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर वैर ।

**७६६६. प्रतिसं० ३ ।** पत्रस० १४७ । झा० १२×७ ; इश्वा । ले०काल स० १६१२ । पूर्ण । बै**ष्टनस**० २०० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पचायती मन्दिर धलवर ।

७९७०. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १२६ । ले॰काल सं० १९६३ । पूर्णः । बेष्टन स०२०१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैनः खण्डेलवाल पचायती मन्दिर ग्रलवर ।

७**६७१. प्रति सं०५ ।** पत्र स०४२ । प्रा०१२×५ इच्चाले०काल 🗴 । पूर्या । बेहन स० ३३० । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन ग्राप्रवालः मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

७६७२. त्रिलोकसार पूजा—सुमितसागर । पत्र स० ६२। मा० १२ $^{\circ}$  ४६ $^{\circ}$  दञ्च । भाषा— सरकृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६५३ । पूर्ण । वेष्ट्रनम० १२०-४७ । प्राप्ति स्थान— रि० जैन मिटर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष — उर्देचन्द ने स्थोजीराम बीजावर्गीय खूटेटा से दब्यपुर (मालपुरा) मे प्रतिसिष कराई थी। ७१७३. प्रतिसं० २ । पत्रस० १०१ । से०काल सं० १८१४ । पूर्ण । बेट्टन स० ७१ । प्रास्ति स्थान— दि० जेन पंचायती मन्दिर भरतपुर।

विशेष-गटका माइज है।

७६७४. **त्रिलोकसार पूजा** — X । पत्रस**० १० । बा**० ११४६ इ.च.। माण-हिन्दी पद्य । विषय-पुजा । र०काल X । ले०काल X । क्षपूर्ण । वेष्ट्रनस० २४३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान बुदी ।

विशेष--नित्य पूजा स ग्रह भी है।

७६७५. त्रिलोकसार पूजा— $\times$ । पत्रस० ८। ग्रा० १२ $\times$ ६) इ.च.। माषा-सन्त्रत। विषय-पूजा । र० काल  $\times$ । के॰काल  $\times$ । पूर्ण । बहुन स० १७३–७३। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर कोटहियो का हू गण्यूर ।

विशेष -- जयमाला हिन्दी में है।

७६७६. त्रिलोकसार पूजा —  $\times$ । पत्र सं० २२२। ग्रा० १२ $\times$ ६ इन्ध । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय – पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० ११४६ । पूर्ण । वेष्टन स० १६०–७६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मदिर कोटस्यो का हु गरपुर ।

७९७८. जिलोकसार पूजा— × । पत्रसः० १०३ । मा० १ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ने०काल स० १८६१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन पंचायती सदिर दुनी (टोक) ७६७६. ति**लोकसार पूजा** — × । पत्रसं० १३१ । झा० द×६ इञ्च । मापा —सम्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १ददद फागुण बुदी १ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १३४ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन लडेनवाल पचायती मदिर अलवर ।

७६००. त्रेलोक्यसार पूजा $-\times$ । पत्र सं०७६। प्रा॰ ११ $\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$  इञ्च। भाषा-संग्रुत । विवय-पूजा र०काल  $\times$ । ले० काल स०१ व्यक्ष मगसिंग् बुदी २। पूर्ण। वेष्टन सं० वह। प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

७६**८ १. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १३२ । ले॰काल 🔀 **।** पूर्ग । वेष्ट्रन सं० ६० **। प्रास्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर अजनेर भण्डार ।

विशेष-- उत्तर वाली प्रति की नकल है।

७६६२ त्रेलोक्यसार पूजा $-\times$ । पत्र सं० ६१। ग्रा०१२ $\times$ ६२ दुखा । नापाभ्यस्कृत । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । सेकाल स०१६६७ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । बेप्टन स०७२२ । प्राप्ति स्थान-भ०६० जैन मध्य प्रज्ञनेर ।

७६८३: श्रेपन किया उद्यापन । पत्रसं०४। बा०१०५४६ इत्था । मापा-तस्कृत । विषय-पूजा । र०काल 🗴 । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स० ४२०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रजमेर भण्डार ।

७६८ ः त्रेपन किया वतोद्यापन —  $\times$  । पत्र म० छ । ब्रा० १० $\frac{3}{4}$   $\times$  ४ $\frac{3}{2}$  इश्व । भाषा — संस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ३४१ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मण्डिर प्रिमिनस्त स्वामी बृदी ।

७८**८५. प्रति सं०२।** पत्रस०६। ब्रा०६ ${}^{3}_{4}$ × ${}^{3}_{7}$ दश्व । ले•काल × । पूर्णः । बेष्टन सं० ३५२। **प्राप्ति यान**—उपरोक्त मन्दिर।

७६८६. त्रेषनिक्रियातत पूजा— वेवेन्द्रकोति । पत्र स०६। घा०११×५ इन्स । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × ने० काल स०१७६० वैशाल बुदी ६ । पूर्ण । बेष्ट्रनस०६७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन तेन्द्रपथी मन्दिर मालपुरा (टॉक)

विशेष--- प्राचार्य जानकीति ने ग्रपने शिष्य भानकेशी सहित वासी नगर में प्रतिसिपि की थी।

७९८७. त्रिश्चसतुर्विशति पूजा—शुभवन्द्रः। पत्रस०७८। मा०१०४४ है इखा भाषा-सस्कृतः। विषय-पूजा। र०कालः ४ । ले•कालः ४ । पूर्णः। वेष्टनसं०९८२ । प्राप्ति स्थान—भ० दि• जैन मन्दिर ग्रजमेरः।

७९८ म. प्र**तिसं०२** । पत्र स०४४ । आ०११३ $^2$ ४६ इ**था। भाषा**-सम्कृत । विषय-पूजा। २०काल x। ले० काल x। पूर्ण। वेप्टन स०४२४ । **प्राप्ति स्थान**—भ०वि**०**जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

७९८६. दश दिक्पालाचैन विभी— $\times$ । पत्रस०२। आ०१० $\times$ ४-६ दश्व। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल $\times$ । लेकाल सं० $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं०३४०-१३२। **प्राप्ति स्था**ल—दि० जैन मन्दिर कोटक्रियों का द्वारपुर।

७६६०. **वशललाग उद्यापन पूजा** —  $\times$  । पत्रस० ४१ । प्रां० ७५  $\times$ १ इत्य । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

७६६२. दशलक्षरा उद्यापन पूजा — × । पत्रस०१-४ । झा०१२×५} इच। भाषा-सम्कृतः विषय-पूजा । २०काल × । ले०काल × । झपूर्णः वेष्टनसं०७३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

७६६३. **दशलक्षम् उद्यपन पूजा** —  $\times$  । पत्र स०४४ । स्रा० ११ $^{\circ}$ ×४ $^{\circ}$ दश्व । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ते० काल सबत् १६३३ सावन सुदी ७ । पूर्णः । बेठ्न स०३६ – ७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बडा बीसपथी दीसा ।

७६६५. दशलकारण जयमाल — × । पत्र स० १४। ग्रा० ११×४३ हवा भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रुकाल × । से० काल स० × । पूर्ण । वेष्टन स० ६१-७ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मदिर ग्रजमेर ।

७६६६, दशलकास्य जयमाल — $\times$ । पत्र स० ४। प्राः ११ $\times$ ५ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल स०  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टृत स० १६८ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर दशलान । बूंदी ।

७६६७. दशलकारा जयमाल पूजा — माव शर्माः। पत्रसः १२। प्रा०१०  $\times$ ४० हेवाः। भाषा-प्राकृतः। विषय-पूजाः। २०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टतः सः ११४। प्राप्ति स्थान— दिः जैन मन्दिर प्रभितन्दन स्वामी बुदीः।

७६६ ६ प्रति स०२ । पत्र स०६ । छा०१० 🖂 ५ इ.च.। ले०काल स० 🗵 । पूर्णा। बेप्टन स०६ ५ ६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष-समामपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

७६६६. प्रति सं० ३ । पत्रस० ६ । आ० १० $\frac{1}{2} \times \mathbb{E}_{\frac{1}{2}}$  इंच । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

=०००**, प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० ६ । छा० ११×४ ) हुखा ले**०काल** × । पूर्ग । बेष्टन स**०** १**८५ । प्राप्ति स्थान** — दि० जैन लण्डेलबाल मन्दिर उदयपुर ।

८००१, प्रतिसं० ५ । पत्रसं० ६ । प्रा० ११×४० इत्था । लेव्काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स० १७० । प्राप्तिस्थान-—दिव जैन मन्दिर बोरसली कोटा । प्रति संकृत टब्बा टीका सहित है ।

८००२. प्रतिसं० ६ । पत्रस०१० । ले०काल सं० १७१४ । पूर्ण । वेष्टन स०२२ (क) । प्राप्ति स्थान—वि० जैन पचायती मदिर क्षेग । विशेष — नृतपुर में विमलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी। गाथाओं पर संस्कृत टीका यी हुई है।

ष्ट००३. प्रतिसं०७ । पत्रस०२२ । घा० १२ ४६ है इन्छ । ले•काल स० ११४५ । पूर्ण । बेहनसं०७६ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर पाश्वेनाथ चौगान बृंदी ।

**८००४. प्रति सं**ठ द । पत्र सं०१३ । घा॰ १० है×५ इञ्च । लेठ काल स०१८४६ । पूर्ण । बेहुन स०३२० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पावनाथ मन्दिर चौगान बृदी ।

विशेष-सवाई प्रतापसिंह जी के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

**८००५. दशलक्षम्। जयमाल**  $\times$  । पत्रस**०** ६ । म्रा० १२ $\times$ ४ हे इच्च । भाषा प्राकृत । **विषय** पूजा ।  $^{\circ}$ ० काल  $\times$  । ले०काल स० १७२१ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । बेष्टन स० १२३ । **प्राप्ति स्थाय** — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सबन् १७२१ वर्षे कातिक प्राप्त कुलागपक्षे द्वितीया दिवसे श्रीमत् परमपूज्य श्री श्री १०८ श्री भुषणाजीतन्पट्टे मंडलाचार्यश्री ४ धर्मचन्द्रजीतदास्नाये निवित पाण्डे उद्याराजगढ मध्ये ।

६००७. दशलक्षर्ण जयमाल × । पत्रस॰ १३। ब्रा॰ १२<sup>1</sup> × ५५ इन्छ । भाषा — प्राकृत । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० १२६६ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

६००६. दशलक्षर्ण जयमाल  $\times$  । पत्रस०२०। धा०६ $\frac{5}{4} \times \frac{5}{3}$  इन्त्रः। भाषा— प्राकृतः। विषय-पूजाः र०काल  $\times$  । ले॰काल स०१६१४ । पूर्णः। बेष्टनस०१४६ । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन छोटा मन्दिर बयानाः।

विशेष - रत्नत्रय जयमाल भी है। हिन्दी ग्रथं सहित है।

८००**६. दशलक्षरा जयमाल ४ ।** पत्र स० ५ । भाषा प्राकृत । विषय पूजा । र० काल ४ । ले०काल ४ । धपूर्ण । वेष्टुन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मदिर वसवा ।

विशेष--प्रति सम्कृत टीका सहित है ।

म०१०. दशलक्षरण जयमाल  $\times$  । पत्र स० - । धा० १२ $\times$ ५ ६ञ्च । सःषा प्राकृत । विषय धर्म । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष - गाथाची के ऊपर हिन्दी में छापा दी हुई है।

६०११. दशलक्षरण जयमाल × १ पत्रतः ६ । मा० २३ ४ ५३ व्ह । भाषा प्राहृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल सं० १६४१ श्रावण बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनसं० २४ । प्रास्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा । विशेष - वृशालचन्द ने कोटा मे लिखा था।

५०१२, दशलक्षरा जयमाल—ररष्ट्र । पत्र सं० ४ ते११ । घा०१०  $\times$   $^{1}$  इस्त । माता— ग्रम्फ स । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । मपूर्ण । बेष्टन स० १३-२२४ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह टोक) ।

६०१३. प्रिति स०२ । पत्रस०६ । ब्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इच्चा ले०काल स०  $\times$  । पूर्गा वेक्ट्रस० ५४–६७ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाच टोडारायसिंह (टोक) ।

द**०१ः. प्रतिसं० ३**। पत्र स०१४। ले० काल स०१८५२। पूर्णं। बेष्टन स०४३। **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पचायनी मस्दिर मरतपुर।

विशेष--हिन्दी टीका सहित है।

६०**१५. प्रतिसं०४** । पत्र स०५ । लेञ्काल 🗴 । पूर्णावेस्टन स०५५ । **प्राप्ति स्थान** दिञ्जैन प्रवासती मन्दिर भरतपुर ।

बिशेष - भरतपूर में मनि कल्यागा जी ने प्रतिलिपि लिखी थी।

द**०१६. प्रतिसं० ५ ।** पत्र स०१४ । आर०११ ४ ४ डघ्वाले० काल ४ ।। पूर्यावेष्टन प्रं∙३१ । **प्राप्तिल रुक्शान** दि० जैन मदिर बडाबोसपथी दौसा।

८०९७ प्रतिसं०६ । पत्रस०१२ । प्रा०११×५ इच्चाले ब्लाल्×ा । पूर्णावेष्टनस∙ १०२ । प्राप्टिः स्थान---दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, बूदी ।

विशेष -- सस्कृत टब्वा टीका महित है।

६०१६. प्रतिसं० ७ । पत्रस० ११ । बा० १० ४४३ इन्छ । के•काल ४ । ब्रपूर्ण । वेष्टनस० १२० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर ब्रमिनन्दन स्वामी, ब्रौ ।

विशेष-- हिन्दी टीका सहित है। प्रन्तिम पत्र नहीं है।

८०१६. प्रतिसंब्दापत्रसब्दा १२×६ इ.स.। लेक्काल सब् १८४२ प्रथम भाववा सुदी दापूर्णा विद्यास २०१६०। प्राप्ति स्थान—दिव्जैन मन्दिर राजसङ्ख्या होक।

विशेष -- हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

८०२०. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १० । आर० १२ ४६ इ.च. । ले० काल सं० १७८८ । पूर्ण । बेक्रन सं० ७८ ४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक) ।

विशेष-प्रति हिन्दी छाया सहित है। तृगा मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मंप० मोहनदाम के पठनार्थ लिखी थी।

द्म**०२१. प्रतिसं० १० । पत्रसं०** म । घा१० रे ४ ४ देवला लेक काल मक १८०० काती गुरी द्मा पूर्णा वेष्टन सक २६ । **प्राप्ति स्थान**—दिक जैन मंदिर दवलाना बूटी ।

६०२२. प्रति सं० ११ । पत्रसं० ४ । प्रा॰ ६३ ४ ४ ६ खा । ले०काल 🗴 । बेष्ट्रन सं० २११ । पूर्वा । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दक्ताना (वृदी) ।

्र ८०२३. प्रतिसं० १२ । पत्र स० १२ । ले॰कास × । पूर्ण । बेष्टनसं० ३१ । प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा । विशेष -- प्रति टीका सहित है।

६०२**४. प्रतिसं०१३।** पत्र स०१०। ले०काल सं०११०४ भादवा बुदी३ । पूर्णा वेष्टन सं०३२।

विशेष--- बतुम्रा मे चन्द्रपभ चैत्यालय में प्रतिलिहि हुई।

ष्ट०२५. प्रतिसं०१४ । पत्रस०१८ । ले॰ काल × । पूर्ण । बेहनस॰ ७३ (म्र) । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पंजायती मन्दिर भरतपुर ।

८०२६. प्रतिसं**० १५ ।** पत्रस० १८ । ले॰काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनस०७३ (व) । **प्राप्ति स्थान** उपरोक्त मन्दिर ।

द०२७. प्रति सं० १६ । पत्रस० १७ । ले॰काल स० १६३७ । पूर्या । बेष्टुन स० । ७३ (स) । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायनी मन्दिर भरतपुर ।

६०२६ दशलक्षरण जयमाल--पत्र स०२०। घा०१२ ४४ १ डच। प्रापा-- टोकृत । विषय-धर्म। र०काल ४ । लेक्सल स० १८६४ सावण सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टनस० ३८ । **प्राप्ति स्थान--**भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

**६०२६. दशलक्षरा जयमाल** —  $\times$  । पत्रसं० ३४ । मा०१३  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इन्नः । तावा-मपन्न म विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$ । पूर्णः । वेष्टनसं० ११८ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---मग्कृत टब्वा-टीका सहित है ।

६०३०, दशलक्षरण जयमाल— $\times$ । पत्र सं०२६ । मा॰ ११ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  डब्ल  $\cdot$  भाषा-हिन्दी पद्य । विषय—पूत्रा । २०काल  $\times$  । ते० काल । पूर्ण । वेष्टनस०३२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिद्य स्थानेम

**६०३१. दशलकारा जयमाल**— $\times$  । पत्र स० २६ । भाषा-हिन्दी  $\mathbf 1$  विषय-पूजा  $\mathbf t$  र०काल—  $\times$  ।ले०काल स० १८६४ पूर्ण । बेष्टन स० ३१२ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६०३२. दशलक्षरा पूजा जयमाल—×। पत्रतः १४। घा० १२×५ इला। माषा— हिन्दी पद्यः। विषय-पूजा । ∙०काल ×। ले०काल ×। पूर्णं। बेष्टनस० ३१७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर पार्थनाथ चीगान व दी।

= ६०**३३. प्रतिसं**०२ । पत्र स०३७ । ग्रा० १०×६ है इश्वा । ले०काल स० १६४७ । पूर्ण । वैष्टनसं०३१⊂ । **प्राप्ति स्थान** — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष - बाह्मण् गूजर गौड कृष्णचन्द्र ने बूंदी में लिखा था ।

६०३४. दशलक्षरा धर्मोद्यापन - × । पत्र स० १२ । मा० ६३ × ६ दख । माषा — संस्कृत । विषय — धर्म । २०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन सं० ४२२ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर भवतर ।  $\mathbf{x}$ ०३ $\mathbf{x}$ . दशलक्षरण उद्यापन विधि —  $\mathbf{x}$ । पत्र स०२ $\mathbf{x}$ । प्राप्त ह $^3$  $\mathbf{x}$  $^3$  इंख । भाषा — सस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\mathbf{x}$ । से०काल  $\mathbf{x}$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०३११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पास्तेनाथ घोगान वृदी ।

 $\mathbf{x} = \mathbf{x} + \mathbf{x} +$ 

क्ष**्रभः प्रतिसं०२।** पत्र सं०५ । आर्थ १२ ×७ इ.चा। ले० काल स० १६४७ । पूर्ण। वेष्टन स०५५३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मंदिर लक्कर, जयपुर।

द०देदः प्रतिसं० ३ । पत्र म०५ । घा० १०४६ है इन्छ । ले∙काल ४ । घपूर्ए । बेहन मं∘ ३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ बोगान बुँदी ।

विशेष-दूसरे पत्र में भक्तामर भाषा हेमराज कुत पूर्ण है।

६० देश त्वसाल स्वाविधान — टेकचन्द्रा पत्रस० ४२ । सा० १३ ४७ इञ्च । साथा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले०काल ४ । पूर्गा । बेष्टनस० ७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी, व दी ।

प्रतर्भर दशस्थार मंडल पूजा--डाल्राम । पत्रतः ३४ । घा०११४४ इन्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रज्जाल स०१८२१ । लेज्जाल ४ । पूर्ण । बेष्टनस० १००/६२ । प्रास्ति-स्थान---विज्जन मन्दिर भादवा राज्ञ० ।

द्र**०४१. प्रतिसं० २** । पत्रस० ३० । स्रा० १२% ४८ इ.च. । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस० १०८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रवाल मदिर उदयपुर ।

८०४२ दशलक्षरम् विधान पूजां—× । पत्रस० २६ । सा० १०३ ४४ ६ खः । भाषा— सस्हत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । बेप्टन स०४८ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाय टोडारायसिह (टोक) ।

६०४३ . **बक्तकारण विधान पूजा** × । पत्र स०२५ । ग्रा०११ × ६ इञ्च । भाषा हिन्दी। विषय-पूजा । र०काल × । **ले०काल** स०१६१० । पूर्ण । वेष्टन स०६२/६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० र्जन मन्दिर मादवा (राज.) ।

विशेष — मारोठ नगर में प्रतिलिपि की गई।

६०४५. दशलक्षस्य तत् पूजा × । पत्र सं० १६ । म्रा० ६×४१ दखा । भाषा-हित्यी (पद्य)। विषय — पूजा । र० काल × । लेक्काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० १३७७ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर भजेरे ।

८०४६. **बशलकारा पूजा--विश्व सूबरा**। पत्र सं०३० । आ० ११४६, इञ्च । आषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल सं०-१७०४ । ले० काल सं०-१८७ मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११९ । **प्राप्ति स्थान-**--दि० जैन पंथायती मंदिर बयाना । विशेष - चूरामन बयाना वाले ने करौली में ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई थी।

८०४७. प्रतिसं० २ । पत्र स० १६ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टन सं०१२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पंचायती भरतपूर ।

-60%र. दशलक्षरा ब्रतोद्यापन पूजा—सुव्रतिसायर । पत्र सं०१६ । द्वा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ इख । माषा-सम्ब्रत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । प्राप्तिः स्थान—स० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

८०४६. प्रतिसं० २ । पत्रस० १४ । या० १०१ × ५ है इला । ने०कान × । पूर्ण । बेष्टनसं० १६६-७३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटाइयो का इगरपुर ।

८०५०. प्रति सं० ३ । पत्र स० ६ । झा० १५×४ इचा । ते० काल सं० १८४४ पूर्ण । वेष्टन स० ५१२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

द्र**०५१. प्रति सं०४** । पत्रस्०१६ । प्रा०१०४६ इत्र । ने०काल स**०१**९३६ **। पूर्ण ।** बेष्टन स०५२७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटेडियो का हुगरपुर ।

८०६२. प्रतिसं० ४.। पत्रस० २०। घा० १४ ४४ इथा। ले∙कान ४.। पूर्व। वेष्टनसं० ६५। प्राप्ति स्थान—र्दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वृदी।

विशेष-मवाई माधोपुर में भालरापाटन के जैनी ने प्रतिलिपि कराई थी।

८०५३ प्रांत स०६ । पत्र स०२१ । ब्रा०१० $\frac{1}{2}$  ५ ६ ख । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०७२ । प्राप्ति स्थान—दि०जैन मन्दिरनागरी (ब्रुदी)

८०५४. प्रति सं०७ । पत्र स० १७ । झा० १३ ४.५ ६ चाः लेब्सल स० १९३३ । पूर्णं । वेप्टन स० ५७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सभिनन्दन स्वामी बुंदी ।

८०**५५. प्रति सं**० ८ । पत्र स० १४ । घा० १०४६ इ.आ. । ने०काल सं० १८६७ मादवा सुदी १ । पूर्णे । बेठुन स० २५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाय त्रुदी ।

विशेष-सुमित सागर श्री अभयनन्दि के शिष्य थे।

द**ुर्धः, प्रतिसं∘ ६**। पत्रसं∘ २६ । घा० १२ ४६ इचा। ले०काल × । पूर्णः। बेष्टन सं० १४६ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मन्दिर राजमल (टोक)

विशेष -- गूलाबचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

द०४७. प्रतिसं० १०। पत्रस० २८। लेक्काल सं० १७६६। पूर्ण । वेष्टन स० ६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मंदिर मरतपुर।

म०५म. प्रतिसं० ११ । पत्र स०२४ । प्रा० महे ४६ हे इख । ले०काल सं० १६५२ । पूर्ण । वेष्टुत स०१म२ । प्राप्ति स्थान-निक जैन लखेलवाल पंचायती मन्दिर प्रलवर ।

म०**५६. प्रतिसं० १२** । पत्रसं० १२ । मा० १२×७ इन्त्र । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेप्टन सं०२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौसा ।

विशेष - भागे बोडश कारण उद्यापन हैं पर अपूर्ण है।

६०६०**, प्रति सं० १३ ।** पत्रस०११ । घा० १०×५ इ.च । ले०काल × । पूर्ण । बेस्टन सं० २०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मनवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--- प्रशस्त---

श्री ग्रमयनन्दि गुरु शील सुसागर । सुमति सागर जिन धर्म धुरा । ७।।

प**्रक्षात्रक्षात्र करोद्यापन पूजा—मुधीनागर** । पत्र स०२४ । म्रा॰ ६४५ इच । प्रापा-सस्क्रत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २७६ **। प्राप्ति** स्थान — दि० जैन मन्दिर दक्ताना (ब्रदी)

८०६२. दशलक्षरा द्वतोद्यापन. — × 1 पत्रसं०१४ । आ० १११४४ इचा । माया— सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८८० आषात्र सुदी ८ । पूर्णं । बेष्ट्नसं०१३४१ । प्राप्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर अवसेर ।

६०६**३. प्रतिसं०२ । पत्रस०१०** । ले०काल 🗴 । पूर्णः । बेष्टन स०१३५२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मदिर क्रजोर भण्डार ।

**८०६४. दश लक्षरण बतोद्यापन**  $\times$  । पत्र सं० १२ । बा० ११२्नै  $\times$  ६ इ व । माया  $\sim$  सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० १३४६ । **प्राप्ति स्थान**  $\sim$  म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर मण्डार ।

विशेष--- लिखित बाह्मण फौजूराम ।

प्रदर्भ दशलक्षाम् **बतोद्यापन पूजा—भ० ज्ञानभूषम् ।** पत्रस• ३७। भाषा-स-स्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स• १६१६ सावन सुदी ११ । पूर्मा । वेष्टन स• ५६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन पनामती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष—भरतपुर के पचो ने करौली मे प्रतिलिपि कराई थी।

क्र**०६६. दशलक्षम्। ब्रतोधापन पूजा – रडध्ने ।** प्रवस०२६ । ब्रा००} ४६ हुङ्खाभाषा – श्रपञ्जाणः । विषय-पूजा । २०कालः ४ । त०कालास० १६४२ । पूर्णः । वेग्टनः स०१६२ । **प्राप्ति स्थान** — १६० जैन प्रवासती मदिर म्रलवर ।

विशेष-- ६ प्रतिया ग्रीर है।

प्रवर्षः **दशलक्षरम् वतोद्यापन** −× । पत्रस्व २० । म्झा० १०३ × ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल × । ले०काल स० १६४६ । झपूर्णः । वेष्टन सं० १४ । प्रास्तिः **स्थान** —दि० जैन मन्दिर कदियों का नैसावा ।

००६०. **दश लक्षरण वतोचापन** —  $\times$  । पत्र स०२५ । श्रा०१० $\times$ ६ इञ्च । भाषा हिन्दी (पर्छ) । विषय पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल स०१०५० भादवा सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स०६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन तेरहरथी मन्दिर नैस्ता ।

प्रदर्भ **दशलकारण अतीखापन — ×** । पत्रस० ४६ । ग्रा० १० ×६ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल स० १६५२ । पूर्ण । बेष्टनसं० १६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन अग्रवाल मन्दिर नैणवा । म् ०७०. **दशलक्षरा, वतोद्यापन**— × । पत्रसं∘ ३० । म्रा० १०१ ×६१ इ.च. । माया-हिन्दी । विषय-स्तुति । र०काल × । **से०काल स**० १९५० । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३२ । **प्राप्टिः,स्थान**—हि० जैन प्रक्रवाल मन्दिर नेणवा ।

विशेष —िलसी माली कवरलाल ने लिखाई घासीराम । चि० भंवरीलाल भारवाडा ने ग्रधवालो के मन्दिर में चढाई थी ।

६०७**१. बशलक्षस्य बतोद्या**पन— $\times$  । पत्रम० १६ । ्या० १० $\times$ ५१ इच । माया—मंस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान, **ब**ंदी ।

८०७२. **दशलक्षरा पूजा उद्यापन**— × । पत्रस० २१ । घा० ८ ४ ६ खा। भाषा–सस्कृत । विषय—पूजा । र**०काल** × । ने०काल सं०१ ८४४ सावसा मुदी १४ । पूस्रा । वेष्टन सं०२०६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष - ग्राचायं विजयकीतिजी तत् शिष्य सदामुख लिपिकृत ।

६०७३. दशलक्षरण् पूजा उद्यापन $\longrightarrow \times 1$  पत्र स० २३ । आ० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इख । आषा— सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १८१७ । पूर्णः । बेष्टन स० १३३/३१ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ क्षररगढ (कोटा) ।

विशेष--मिति चंत्र सुदी २ भृगुवासरे वृन्दावती नगरं मुपाधवंचेन्यालये निस्ततं स्वहस्तेन लिखत भिवविसल पठनार्थं स०१६२७।

८०७४. **दशलक्षरा पूजा उद्योपन**—४ । पत्रस० ५। प्रा० ५२<sup>२</sup>४ <sup>५</sup>३ इज्य । भाषा— सम्इतः । विषय—पूजा । र० काल ४ । ले०काल ४ । अपूर्यः । बेष्टन स०११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

विशेष--प्रति प्राचीन है।

८०७६, दशलक्षम् पूजा —  $\times 1$  पत्रस॰ ११। आ० १० $\frac{1}{6} \times \frac{1}{6}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । ते०काल स० १०५० आवण् सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० १०५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्वताण चौगान वृदी ।

द्र ०७७ दश लक्षरा पूजा। — ×। पत्र स० १६ । प्रा० १० ×१ रे इरूव । साया — मस्कृत । विषय — पूजा । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (वंदी)

६०७६. दशलक्षरा पूजा —  $\times$  । पत्रस०६। ब्रा०११ $\times$ १३ इख । माषा — प्राकृत । विषय— प्रजा । रक्शल  $\times$ । वेश काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०१०७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बूदी)

८०७६. दशलकारा पूजा  $-\times$  । पत्रसं० २८ । छा० ११ $\times$ ७ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ७० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपर ।

प्रवास प्राप्त प्रवास प्रवास प्रवास प्रवास प्रवास विश्वस्था । प्रवास विश्वस्था । प्रवास विश्वस्था । प्रवास विश्वस्था । विषय-पूजा । र०काल ४ । ते०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर पार्थनाथ इन्द्रस्यक (कोटा)

विशेष -- दो रूपये तेरह खाना में खरीदा गया था।

प्रवास स्वास पूर्वा — ४ । पत्र स० ४४ । प्रा० ११४४ इ.च. । भाषा — संस्कृत । विषय — पूजा । र०काल ४ । ले०काल सं० १६०३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरद्वपथी मदिर दीक्षा ।

प्रवास प्रका प्रका — × । पत्र त०६७ । प्रा०६×६८ इन्छ । भाषा-हिन्दी पदा । विषय पूजा । र०क्यत × । ले० काल × । खपूर्य । बेष्टन त०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जॅन मदिर प्रमिनत्त स्वामी बंदी ।

क्र**० इ.स. स्थापीक ग्रंग** — ४ । पत्र स० १ । ग्रा० १० ४४ है इ.च । गाया सम्कृत । विषय पूजा १२० काल ४ । ने० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर बोरसनी कोटा ।

८०८**५. द्वादस पूजा विधान**— 🗙 १ पत्र स॰ ८ । मा॰ १३ ४ ६ रख । भाषा—मस्कृत । विषय-पूजा । १० काल 🗴 । ले०काल 🗴 । धपूर्यां । वेष्टनस॰ १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन म<sup>र्</sup>स्टर माहिनाय व दी ।

विशेष--- द से धारे पत्र नहीं हैं।

स०स्६, द्वा**दश वत पूजा—देवेन्द्रकोति।** पंजस०१४ । प्रा० १०र्¦×४२्दे सन्व। माषा— संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६। **प्राप्ति स्थान**— हिं<sub>ठ जैन मंदिर सकोर भक्षार्थ</sub>

**६०६७ द्वावश वत पूजा**— <mark>भोजदेव</mark> । पत्रस० १६ । म्रा० १० $\frac{5}{2} \times ४$  इन्छ । माया— सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । विष्यन स० २६३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर मिन $_{\mathbf{4}}$ रत स्थानी खंदी ।

८०८८. द्वादश स्तोधापन — × । पत्र स० १६ । प्रा० १२ × ५ ६ वा । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तेत्र । रुकाल × । ले०काल स० १८५६ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० २६-१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोझारायसिह (टॉक)

विशेष - टोडारायसिंह में लिखा गया था।

६०६**६. हादशांग पूजा**—  $\times$  । पत्र स०७ । घा० ६ $\times$ ६ : इंच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन स० ११४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सजमेर मण्डार ।

**८०६०. दीपावित्त महिमा—जिनग्रमसूरि** पत्र सं०२१। माषा-सम्कनः विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं। वेष्टन स०६२३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर।

८०६१. दीक्षापटल— × । पत्र स०७ । ग्रा० ६×४ इन्त । भाषा-सस्कृत । विषय— विधान । रक्काल × । से•काल स०१६२७ । पूर्ण । वेष्टुनस०२४६ । प्रास्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर प्रकोर ।

**८०६२ दीक्षाविध**—  $\times$  । पत्र त०३। प्रा०११ $\times$ ५ इख । भागा-सन्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनस० १६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मिरर पार्थनाथ चौगान बुंदी ।

५०६३. दीक्षाविध $-\times$  । पत्रसं०१४ । ग्रा०१० $\times$ १ ६ आ । माषा-सम्ब्रत । विषय-विद्यान । रुकताल  $\times$  । लेक काल स०११२४ ज्येष्ठ मुरी । पूर्ण । वेक स०१२ **। प्राप्ति स्थान**—रिक जैन मन्दिर रीवान चेतनदास प्रानी औग ।

००**६४. दुखहरएा उद्योपन—यश कोति ।** पत्र मं० र । ग्रा० १०४६ इन्य । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६३८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ५३१ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।

**८०६४. देवपूजा**— $\times$  । पत्रस**्**४ । ग्रा०५ $\times$ ४ । छत्र । भाषा-स्कृत । विषय-पूजा ।  $\sim$  भाज  $\times$  । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन स० ६४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

**८०१६. देवपूजा**— × । पत्र स०११। भाषा —हिन्दी पद्य । विषय-पुजा । र०काल × । लेकाल × । पूर्णा । वेष्टुनसं०१६६ । प्राप्तिः स्थानः—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टोंक)

**८०६८. देवपूजा**— पत्रस० ११ । प्रा० ६ imes ६ इन्त्रः । भाषा क्रिन्दी गर्व । विषय-पूजा । रक्काल imes । तूर्ण् । बेष्टन स० ३७६—१४२ । **प्राप्ति स्थान**ः—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।

विशेष--हिन्दी श्रर्थ सहित पजा है।

प्रहरू. वेवपूत्रा भाषा—पं० जयचन्द छाबड़ा । पत्रस्य २१। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा। र०काल ४। ले०काल स०१६१६। पूर्णं। वेष्टन स०४६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर दीवानजी भरतपूर।

**८१००. देवपूजा साथा-देवीदास** । पत्र सं०२३ । प्रा०१२ $^{3}\times$ ६ $^{3}$ ६२४ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल स० $\times$  । ले० काल  $\times$  पूर्ण । वेष्टन सं०४६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन तेरहपणी मन्दिर दौना ।

विशेष--पत्र २१ से दशलक्षरण जलड़ी है (बपूर्ण)।

- द**१०१. वेवशास्त्र गुरु पूजा—द्यानतराय ।** पत्रस०६ । ब्रा०१०३४ ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०११४३ । प्राप्ति स्थान—भ०दि० जैन मन्दिर अजमेर ।
- **८१०२. देवगुरुशस्त्र पूजा जयमाल भाषा**  $-\times$  । पत्र स० २०। म्रा० १२ $\frac{7}{4}$  प्र $\frac{9}{5}$  इत्त्र । भाषा-हिन्दी पथ । विषय -पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १६ ० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११० । प्राप्तिः स्थान दि० जैन मन्दिर फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ।
- **६२०३. वेबसिद्ध पूजा**  $-\times$  । पत्र स० १४ । घा० १२  $\times$   $\mathbb{Z}^2$  इत्त्व । भाषा-सस्कृत ।विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । लं०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ७१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्ध्वनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।
- **८२०४. धर्मचक पूजा—खरुगतेन ।** पत्रस॰ २१ । बा॰ ११ ′८ ५ उचा । भाषा-सम्बन्धा विषय-पूजा । र० काल ४ । से०काल स०१६०२ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६० । **प्राप्ति स्थान** —हि॰ जैन पार्वनाथ मंदिर इन्दरमङ (कोटा) ।

विशेष-- प० भागचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

विशेष-मिट्टूराम अग्रवाल ने यह ग्रथ महादास के लिये लिखाया था।

६९०७. धर्मस्तमः वर्द्धमानसूरि । पत्र स०३७ । आपा —सन्कृत । विषय × । २०काल × । लेखन काल ∧ । पूर्ण । वैष्टन स० ४९६ । प्रास्ति स्थान—दि० र्जन पवायती मस्टिर मस्तपुर ।

विशेष—-ठऱ्याचार्य श्री वर्डमानसूरिकृते श्राचारदिनकरे उभयधर्मस्तभे बलिदान कीर्निनो नाम बटलिक्समो उहेण ।

- ६१०६. **धातकीखड होप पूजा** × 1 पत्र स०२० । धा० १२ × ५} डख । मागा— सस्कृत । विषय— पत्रा । ७० काल × । ले० काल × । बेष्ट्रन स० ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर सक्कर त्रयपुर ।
- ६१०६. ध्वजारोपस्मृतिधि — $\times$  । पत्रमं ० । आ० ५ $\times$ ६ $\xi$  ६%। भाषा-सन्gन । विषय-विधान । r०काल $\times$  । ले॰काल स॰ १६४५ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४३७ । **प्राप्ति स्थान**-भ० दि० जैन मिदर स्रजेमेर ।
- ह्रश्रुः स्वजारोपएपविधि—— ४ । पत्रसं∘ १२ । आ० १२ × ४ इव । भाषा-सस्त्रत । विषय-विधान । र०काल × । वेशकाल × । पूर्ण । वेष्टन स० २००-११७। प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ह्र गरपुर ।

- दर्दरः स्वजारोपस्यविधि × । पत्रस० १८ । ष्रा० द×६१ इवा । भाषा-सस्कृत । विषय — विषान । र०काल × । ले०काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६१ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर प्रीक्तनस्य स्वामी बुदी ।

विशेष--- लखमीचन्द सागलपुर नग्र बालो ने प्रतिलिपि कराई थी।

- $\mathbf{x}$ ११३. ध्वजारोपग्राविधि  $\mathbf{x}$  । पत्र स०३ । स्रा०१०५ ४४ इश्व । भाषा –सस्कृत । विषय —विधान । र०काल  $\mathbf{x}$  । लेकान  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बेहन स०१४ = । प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्राप्ति कोरासने कोरा ।
- **६११४ नवकार पूजा** × । पत्र स॰ २२ । घा० १०×५ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय— पूजा। र० काल × । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण्। वेष्टन सं० १३३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नागतीव दी

विशेष-- अनादि मत्र पूजा भी है।

**६११४. नवकार पंतीसी पूजा**  $- \times$  । पत्रस**०**२ । ग्रा०६ $rac{1}{2} \times rac{1}{3} \ z = 1$  भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । से०काल स० १८१७ माघ बुटी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ४२**१ । प्राप्ति** स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

विशेष -- श्रिनित चिमन सागरेण । समोकार मत्र में पैतीस ग्रक्षर है और उसी श्राधार पर रचना की सर्वी है।

- **८११६. नवकार पेतीसी पूजा**— $\times$  । पत्रस०२१ । स्ना०११३ $\times$ ४ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०३४५ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर प्रक्रियनस्वामी जूंदी ।
- **६११७. नवकार पैतीसी व्रतोद्यापन पूजा** सुमितिसागर । पत्र स०१४ । भाषा- सस्कृत । विषय पूजा। र० काल  $\times$  । ते० काल स०१६६६ प्राप्त सुदी ४ । पूर्ण । वय्टन स०५१ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पंत्रायों मदिर भरतपुर ।
- **विरोध**—रिव सोम एव राहुकेतु स्नादि नवप्रहो के स्ननिष्ट निवारए हेतु नो तीर्थकरो की पूजाएं है।

दश्य ०. नवग्रह पूजा — × । पत्र स० ४ । आग्र० १०३ × ४ इंग । भाषा-सस्कृत । विषय — पूजा । र०काल ४ ० कंक सावरण मुझी १० । पूर्णावेष्टन स० १४४ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मटिर अप्रजेर ।

**८१२ नवग्रह पूजा**  $\times$  । पत्र स॰ ४ । झा॰ १०२  $\times$ ४ इन्च । माषा -सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । जूलं । वेष्टन स॰ २७६ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगन वृदी ।

**६२२२. नवप्रह पूजा।** पत्र स० ७ । आ० १०×४ है इखा भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल × । ते०काल स० १६२२ । पूर्ण । बेष्टन स० १५७/५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्ध्वताथ मन्दिर इन्टरगढ (कोटा)

**८२२.२ नवप्रह पूजा** । पत्र सं १५ । मा० १०३×४ $\frac{2}{3}$  इन्छ । मापा-सरकृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १६०६ माघ बुदी १२ । पूर्ण । बेप्टन स० १६०/४४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पावंताथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

**८१२४. नवप्रह पूजा**— $\times$  । पत्र स० ७ । सा० ८ $\times$ ६२ इ.ख. । मापा—सहकृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेण्टन स० ३११~११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर कोटडियों का हू गरपुर ।

विशेष-पद्मावती जाप्य भी है।

द**१२५. नवप्रह पूजा**— X । पत्रस० ६ । ग्रा• ११ X ७ दश्च । भाषा—गरकृत । विषय— पूजा । र०काल X । ले॰ काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स॰ X । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बुदी ।

**६२२६. तसग्रह पूजा**— $\times$ । पत्र स०२। ग्रा०६ $\times$ ३ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६४-३६२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पश्रनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६१२७. प्रति सं० २ । पत्र स०३ । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०२६४/३८१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समयनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६२८६. नवप्रह पुत्रा— $\times$ । पत्रस० ४। प्रा० १२ $\times$ ४ है इश्वः। भाषा—सम्कृतः। विषय-पूत्राः। र०काल $\times$ । पे०काल $\times$ । पूर्णः। वेष्टनं सं० ६६। प्राप्तिः स्थानः दि०जैन पत्रायती प्रदिर करीली।

दश्दः. नवसह पूजा — × । पत्रसं• १३ । आ० १२ × ६ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। ८०काल × । ते•काल × । पूर्ण। बेष्टन म० ६५ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर दुनी (टोक)

विशेष-शातिक विवान भी दिया हुआ है।

६१३०. **नवग्रहपूजा**— X । पत्र स०२३ । झा०१० X ६ इखा। भाषा–सस्कृत । विषय— पूजा । र०काल X । ले० काल सं०१ ६६४ । पूर्णं। वेष्टन सं०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर नैए।वा। स्१३१. नवप्रह पूजा- × । पत्रतं० ७ । घा०६ × ६१ इ.चा । प्राचा-संस्कृत । विषय-पूजा । रूकाल × । ने० काल स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० १७६ (घ) । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सबैतवाल पंचायती मेविड सलवर ।

म १३२. नवप्रह पूजा — मनसुखलाल । पत्रसं० १६ । प्रा० ५3 ×७ इथा । माषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल स० १६३४ । पूर्ण । बेष्टनस० १०७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर फेलावाटी (मीकर)

दश्करे. प्रति सं०२ । पत्र स०१६ । प्रा०११×७ इश्वर । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० १७४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन लडेनवाल मंदिर उदयपुर ।

द १३४. **नवग्रह पुजा**— × । पत्र मं० १७ । आर० १० × ४ इश्व । भाषा —हिन्दी । विषय— पूजा । र०काल × । ले० काल म० १८३४ कार्तिक बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० २०३ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर छजभेर ।

६१३५. नवग्रह पूजा  $\sim \times$  । पत्रस० ८ । या० १० $\times$ ५ $^2$  दश्व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय- पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० ७३ । प्रास्ति स्थान—दिं जैन मदिर पार्श्वनाथ चौगान बूदी ।

द १३६. नवग्रह पूजा— × । पत्रस० २६ । ग्रा० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय— पूजा । र०काल × । लेक्काल स० १९७६ भारवा बुदी १३ । पूर्ण । वेप्टनम० १९६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुदी ।

विशेष--गृटका साइज में है।

**६२३७ नवप्रह पूजा** —  $\times$  । पत्रस० १०। मा० ७ $\times$ ४ इख । माषा-हिन्दी पद्य । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेप्टन स० १८६७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारार्यासह (टोक)

**६१३६. नवग्रह ग्ररिष्ट निवाररा पूजा** $--\times$ । पत्र स॰ ४१। ग्रा० ६ $\times$ ६) इत्त्व । भाषा-हिन्दी पद्य । विवयः पूजा। र० काल  $\times$ । लेक्काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन सं० १७६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सब्हेलवाल प्रचायती मदिर ग्रनवर ।

विशेष -- निम्न पुजाओं का और समृह है

नदीश्वर पूजा, पार्श्वनाथ पूजा, रत्नत्रय पूजा। (सस्कृत) सिद्धचक पूजा, शीतलनाथ पूजा। स्गन्व दशमी पूजा, रत्नत्रय पूजा।

**८१३६. नवप्रह पूजा विधान**— $\times$ । पत्र सं॰ १०। ग्रा॰ ६ $\frac{1}{6}$  $\times$   $\chi^2_{\gamma}$  इख । भाषा - हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स॰ १६११ । पूर्ण । वेष्टुनसं० ३१२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ चौगान बूंदी ।

**६१४०. सबग्रह विधान** —  $\times$  । पत्र स०२०। ब्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ने० काल सं०१६५७। पूर्ण । त्रेगृन स०१६०। **प्रारित स्थान** — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बंदी ।

**६१४१. न्हवरा विधि—ग्राशाधर ।** पत्र म० ३० । ग्रा० ११ $\times$ ५ इञ्च । ग्रापा—सस्कृत । विषय पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३१२-११७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर।

**८१४२. न्हावरा पाठ भाषा —बृध मोहन** । पत्रस० ४ । सा. १० $\chi$ ४) इत्त । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । र०काल  $\chi$  । ले.काल  $\chi$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ८३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (रोक)

विशेष---श्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है---

श्री जिनेन्द्र श्रीभवेक पाठ संस्कृत भाषा सकतकीर्ति मुनि शिष्य रच्यो वरि जिनमन ग्रामा । ताको श्रयं विचारि घारि मन मे हुलसायो । वृष मोहन जिन न्हवन देसभाषा मे गायो ।

इति भाषा न्हावरा पाठ सपर्ण ।

**८१४३. नाम निर्एय विधान**—  $\times$  । पत्र सं० ११। ग्रा० १०  $\times$  ५ १ इञ्च । भाषा — हिन्दी गद्य । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर फोहरार शेखावाटी (सीकर)

विशेष -- दश बोल और दिये है।

**८१४४. नित्य पूजा** —  $\times$  । पत्रस० २० । ग्रा० **१**२imes६ छः । भाषा–सन्द्रत । विषय-पूत्रा । र०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन छोटा मदिर बयारा ।

**६१४५. निरस पूजा** — X । पत्रस० ६२ । बा० ६ र्ं ४६ इञ्च । भाषा-मास्त्रत । विषय-प्जा। र०काल × । ले०काल स० १६५४ । पूर्णा । वे**ष्टनसं० ७ । प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर श्री महावीर वर्षी ।

**८१४६. निरम् पूजा**  $-\times$  । पत्र म०२०। ग्रा०६ $\times$ ४, इश्व। भाषा हिन्दी । विषय- पूजा। रणकाल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूजा। वेष्टन स०१७२ । **प्राप्ति स्थान** —दि० र्जन महिर दीवानकी कामा।

**६१४७. निरस पूजा** । पत्रम० १२ । आ०११ ४ ४३ इ.ख.। भाषा—िहन्दी पद्या । विषय— पूजा । २०काल ४ । ले० काल ४ । वेष्ट्र म० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुर। (टोक)

दश्यतः नित्य पूजा— < । पत्रस० २से १२ । भाषा हिन्दी (पदा) । विषय—पूजा । र०कान ⋌ । लेकान × । पुर्ण । वश्य म० ११ प्राप्ति स्थान —दि० जैन नेरहाथी मदिर वसवा ।

६१४**६. नित्य पूजा**  $-\times$  । पत्र स०५०। ब्रा०६ $\times$ १. इश्वा। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। २० काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०१६०। प्राप्ति स्थान —दि०जैन मन्दिर बूदी।

द १५०. निस्य पूजा— × । पत्र स० ३३ । घा० १×६ इच भाषा— हिन्दी-संस्कृत । विषय— पूजा । र०काल ४ । ले० काल स० ११६६ । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पाध्येनाथ चौगान बुदी । **८१५१. निरयपुत्रा पाठ—ग्राज्ञायर ।** पत्र सं०२०। प्रा०११३  $\times$ ७३ इखा । भाषा— संस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०१५१० । **प्राप्ति - स्थान**—वि० जैन यन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।

विशेष — मूल रचना में श्राशाधर का नाम नही है पर लेखक ने ग्राशाधर विरचित पूजा ग्रथ ऐसा उल्लेख किया है।

**६१४२. निरुष पूजा पाठ**— $\times$  । पत्र म० ६-२५ । मा० ६ $\times$ ६ इञ्च । भाषा-संस्कृत, हिन्दी । विषय-पूत्रा । र० काल  $\times$  । ले**०काल**  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्ट्रन म० २४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

**६१४३. निरय पूजा पाठ संग्रह**— $\times$  । पत्रस० २२ । आ० ६ $\frac{3}{6}$  ×  $\frac{1}{6}$  इख । मावा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ६१ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन स्रोटा मन्दिर बयाना ।

दश्धरं नित्य पूजा भाषा—पं क्रातामुख काझलीवाल-पत्र म० २१ । धा० १३१ ४ ८३ इख । भाषा हिन्दी नचा विषय-पूजा । र०काल म० १६२६ माह मुत्री २ । लेकाल स० १६८६ कालिक बढी दा । पूर्ण । येष्ठत म० ४६१ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दर लक्कर, जयपुर ।

द्ध १४.४. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३६ । बा० ११ ४७ डब्ब । ले० काल स० १६४१ । पूर्ण । वेष्टुन स० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्री महाबीर, बूदी ।

विशेष-नयनापुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

दश्पर, प्रति स० ३ । पत्रस॰ ३६ । घा॰ १२×५३ टब्ज । ले॰काल सं॰ १६२८ भादवा बुदी ८ । पूर्मा । बेहुतस॰ १ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर वयाना ।

द्धर्थ**ः प्रतिसं०४** । पत्रस०४० । ग्रा० ११३ ४६ इ.च । लेक्काल स० १६४० । पूर्ण । बेष्टतस०७४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन सण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

द्रश्रद प्रतिस्र प्रश्निष्ठ । प्राप्त २५ । घा० १०३ ४ ८ इ.चा । ले० काल स० १६३६ उबेस्ट मुदी ७ । पूर्या । बेहन स० ३६,८७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बडाबीस पथी दौसा ।

द**१५६. प्रतिसं० ६**। पत्रस० २४ । आ० १२ $\frac{1}{8}$ imes द ङक्त । ते०काल म०१२४६ । पूर्मा । बेष्टनस० ११४, ६४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पार्थनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा) ।

द १६०. नित्य पूजा भाषा— × । पत्र स० १५ । झा० १०, रे ४१ इच्छा । भाषा - हिन्दी गढा । विषय-पूजा । २०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं∘४७ । **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन सन्दिर बडा बीस पथी दीमा ।

द**९६१. निस्य पूजा पाठ संग्रह— × । पत्र**स० ६०। ब्रा०१११¦×६ दश्व । माषा — हिन्दी, सस्त्रन । विषय—पूजा पाठ । र०काल × । ले०काल स० ११४७ । पूर्म । बेष्टनस० १३६-५२ । **प्राप्**छि **स्थान**—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिह (टोक) ।

- दर्दरः नित्य पूजा वचनिका—जयवन्य छाबडा। पत्रस० ४२ । मा० ८ ट्रे×७ है इचा। भाषा—हिन्दी गढा विषय—पूजा। र०काल × । ले० काल स० १६३४ । पूर्णा वेष्ट्रन स० १३६ । प्राप्ति स्थान—टिठ जैन प्रधवाल पंचायती मदिर प्रलवर ।
- **८१६३. नित्य पूजा संग्रह**  $\times$  । पत्र स०७४ । प्रा० ६ $\times$ १२ $\S$  इच । भाषा सस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १४३ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पंचायती मन्दिर मनवर ।
- दर्द× नित्य नियम पूजा × । पत्र स०१४ । बा०१० है×७ है इच्च । प्रापा—संस्कृत । हिन्दी । विषय पूजा । र०काल । ले०काल × । स०१६४२ पीय बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । श्रास्ति स्थान — दि० जैन पार्थनाथ मदिर चौगान बुदी ।

विशेष-श्री कृष्णताल भट्ट ने लोचनपुर में लिखा था।

 $\mathbf{r}$  १६५. निरंप नियम पूजा— $\times$ । पत्रस० १४। ब्रा० १२  $\times$  ७ इश्व। भाषा—िहन्दी-सस्कृत । विषय पूजा । २० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । ब्रपूर्यं । ब्रेष्ट्रनस० १३३। प्राप्ति स्थान—िद० जैन छोटा मदिर बयाना ।

विशेष--प्रतिदिन करने योग्य पुजाब्रों का सग्रह है।

**८१६६. नित्य नियम पूजा** —  $\times$ । पत्र स० ४३ । धा० १२  $\times$  ६ छ। गाया नमस्कृत हिन्दी । वियस — पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । धपूर्णं। बेष्टनस० १०२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महावीर य दी ।

विशेष - ४३ से भागे पत्र नहीं है।

द१६७ निस्**य नियम पूणा** — × । पत्रस० १६ । ब्रा०६२४४३ टल । माणा हिन्दी-सस्क्रत । विषय पूजा । •०काल • । ले० काल × । पूर्ण । **बष्टनस०** ५४। **प्राप्ति स्थान—दि०** त्रैन पार्थनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा) ।

विशेष-जुतो की पुत्राएं भी है।

- ६१६६. निस्य नियम पूजा-  $\times$  । पत्र म० ४८ । या० ११ $\times$ १े इंच । माया-सस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मंदिर फतेहपुर शैलावाटी (सीकर) ।
- **८१७०. निरंध निधम पूजा**  $\times$  । पत्र सं०१०। म्रा०११  $\times$  ५ $\S$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०५६२ । **प्राप्तिः स्थान** दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- ६९७१. नित्य नियम पूजा- $\times$ । पत्र स॰ २४ । भाषा-सस्कृत । विषय---पूजा । र०काल  $\times$  । क्ष्णै । वेष्टन स॰ २१ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन पत्रायती मिवर भरतपुर ।

**८१७२: नित्य नियम पूजा**—-×।पत्र स०२२। प्राचा—सम्कृत । विषय-पूजा । र०काल ×। ते• काल सं• १८२२। पूर्ण । वेष्टन स ३१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--मायाराम ने प्रतिलिपि की थी।

दश्चेत्र. निरय नैमित्तिक पूजा— × । पत्रस० १०६ । ग्रा० ७ × ७ डल्ब । माधा-संस्कृत । हिस्दी । विधय-पूजा । ले०काल सं०१८६ । पूर्ण । वेष्टन स० २१ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन पाव्यनाय मन्दिर चीगान. (वंदी) ।

विशेष-वजरगलाल ने बुदी में लिखा था।

६९७४. निर्दोध सप्तमी वत पूजा—द्र० जिनदास । पत्रस० २१ । बा०१० ै $\times$ ५ इन्ज । भाषा—हिंग्दी पद्य । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २६० । प्राप्ति—स्थान—दि० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

६१७५. निर्दोष सप्तमी ज्ञतोद्यापन—×। पत्रस० १६। मा० ११४४ इता । भाषा— सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल ×। ले० काल म०१७४६ । पूर्ण । वेक्क्नसं० ४३५/३५४ । प्राप्ति-स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६९७६. निर्वारा कांड गाया व पूजा**— **उदयकोत्ति**— पत्र सं० ४ । शा $\bullet$  ६ $\times$ ३ हुँ इस्त्र । भाषा-प्राक्षन, सन्कृत । विषय-पूजा । र $\bullet$  काल  $\times$  । ले $\bullet$ काल स $\bullet$  १६२३ । पूर्ण । विष्टत स $\bullet$  १६६ । प्राप्ति स्थान— दि $\bullet$ की सन्दिर फोन्डपूर शेलाबाटी (सीकर) ।

**८१७७. निर्वास्पकाण्ड पूजा** - 🗶 । पत्रस्य २ । ब्रा० १२ <sup>५</sup> ४७<sup>5</sup> ६ जा भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रक्ताल सर्थ १८७१ भादवा बुदी ७ । ले० काल । पूर्ण । वेष्टन सर्थ १८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नक्कर जयपुर ।

विशेष--श्रत में भैट्या भगवती याग कृत निवार्ण काण्ड भाषा भी है। इस अण्डार में ३ प्रतिया भौर भी है।

**६१७६ निर्वारण कल्यारण पूजा**— × । पत्रस० ११। घा० ११ × ४ इ.ख**ा भाषा-**सस्कृत । थियय-पूजा । ग० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० १३५३ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर फानमेर ।

विशेष--भगवान महाथीर के निर्वाण कल्यासककी पूजा है।

दश्छर. निर्वाशासित्र यूजा— $\times$ । पत्र सर् १२। प्रार्थ ६ $\frac{1}{3}$  ५ ६ $\frac{3}{3}$  ६ माया-हिन्दी। विषय—पूजा । रेक्सल सर् १८७१ मारो सुरी १। लेक्सल सर् १८८६ जेठ बुदी १०। पूर्ण । बेष्टन सर् ५६। प्राप्ति स्थान — दिर्जन पंजायती मदिर करीली ।

विशेष-नानिगराम ग्रग्रवाल से देवीदास श्रीमाल ने करौली में लिखवाई थी।

दश्त०. निर्वार्ग क्षेत्र पूजा—×। पत्र स० १७ । या० ७२ ४५ इच । भाषा-हिस्दी पदा। विषय—पूजा र•काल ४ । ते० काल सं० १८८५ चैत वदी ६ । पूर्ण । वेष्टनस० ३६ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन सीमानी मन्दिर करीली ।

विशेष-लल्लूराम प्रजमेरा ने प्रलवर में प्रतिलिपि की थी।

- ६१६२. निर्वाश क्षेत्र पूजा- × । पत्रस० १२ । प्रा० ११ × ४३ इञ्च । माया-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०कान स० १६०१ । ले०कान स० १६३० । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १२६ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मिटर बडाबीन पथी दौना ।
- ६१६२. निर्माण क्षेत्र पूजा— × । पत्रम०६ । मा० ६५ ४६ इच्च । भाषा हिन्दी। विषय-पूजा । रुकाल × । नैक्काल स०१६६२ भ्राषाढ बुदी ७ । दूर्ल । बेहन स०२६ । प्रास्ति — क्षणान-पिक केन सिट्य भाववा राज ।
- ६१६३. निर्वास क्षेत्र पूजा $-\times$ । पत्रकः ११। मा॰ ११ $\times$ ७३ इश्वः। भाषा-हिल्दो। विषय-पूजा। २०काल स० १६७१। ले॰काल स० १६६६। पूर्णः। बेष्टन स० ६२४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नशकर, जयपुर।
- **६१८४ निर्वास क्षेत्र पूजा** × । पत्र स० १६ । झा०१३ × ४१ द्वा भाषा—हिस्सी गया। विषय-पूजा । र०काक्ष स०१६३१ भाववा सुदी ७ । **ले∘काल** × । पूर्ण । बेष्टन सं० ६२४ । **प्रास्ति∼** स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- **६२८५. निर्दारा क्षेत्र मंडल पूजा**  $\times$  । पत्रम० ४४ । या० १२  $\times$  ४६ १८च । भाषा-हिम्दी पद्य । विषय — ूजा । र०काल स० १६१६ कार्तिक जुदी १३ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बहुन म० १०३ । **प्रार्थित स्थान** — दि० जैन मन्दिर थी महालीर बुदी ।
- **८१८६. निर्वारा क्षेत्र मण्डल पूजा**  $\longrightarrow$  । पत्र सं ० २२ । ह्या० ११ ${}_2$  × १ ${}_3$  ६ च । भाषा-हिल्दी पद्य । विषय-पूजा । २०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेटन म ० ४६४ । प्राप्ति स्थान—िह० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।
- ६१६७. निर्दाण मंगल विधान—जगराम । पत्र गु०२६ । आ० १३८ ४, इङ्च । आपा-हिन्दी । विषय-पृत्रा । रे०काल स०१६४६ । ले० काल ग०१६३१ पूर्ण । बेष्ट्रन स० ११४ । प्रास्ति-कथान—दि० जेन मन्दिर बोरसयी काटा ।
- **८१८८. प्रतिसं० २** । पत्र स॰ ३६ । ग्रा० ११ $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ इ.स. । ले० काल म० १८६६ भादी मुदी १२ । पूर्स । बेइन स० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मानपुरा (टोक) ।

विशेष-पत्र ३४ से ग्रागे श्रीजिन स्तवन है।

- द्दश्यः प्रतिसं० ३ । पत्रसं० २२ । प्रा० ध्रै४६इ व । ले∘काल सं० १६४४ । पूर्गाः बेष्टन स०२० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर जूंदी ।
- $\mathbf{c}$ १६०. निर्दे मंगल विधान—  $\mathbf{x}$ । पत्रस्य  $\mathbf{c}$ । ग्राः १० $\mathbf{x}$ ६ $^{2}$ ६वः। भाषा–सस्त्रतः। विषय–विधान। र०काल  $\mathbf{x}$ । लेक्शल  $\mathbf{x}$ । पूर्णः। बेष्टनस्य २६८–११७। **प्राप्ति स्थान** मर्श्वर जैन मंदिर कोटडियो का इंगरपुरः।
- द**१६१. नदीश्वर जयमाल** X। पत्रसु० ६। धा० १० रे ४५ इ.ख.। भाषा प्राकृत । विषय पूजा । र०काल × । ल०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०६२४ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर सजनेर ।

६१६२. नंदीश्वर जयमाल—  $\times$ । पत्रम० ७ । ग्रा० ५ $\frac{1}{6}$   $\times$   $\frac{1}{9}$  इथा । प्रापा—प्राफ़्त । विषय— पुजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १३२४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर प्रजीन मण्डार ।

विशेष-प्रशन्ति संस्कृत टीका सहित है। ब्राप्टाल्लिका पर्व की पूजा भी है।

- **८१६३. नंबीस्वर द्वीप पूजा** ४ । पत्रम० १६ । भाषा हिन्दी । विषय पुजा । र०काल स०१६७६ कानिक बुदी ४ ।ले० काल स०१६४१ । पूर्ण् । वेष्टनस०७/३३२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपर ।
- **८१६४. नटीश्वर द्वीप पूजा**  $\times$  । पत्रस० ७३ । ग्रा॰  $\times$  । भाषा । विषय-पुजा । गुजाल  $\times$  । येक्सल  $\times$  । पूर्ण । बेट्टन म० १७० । प्रास्ति स्थान दि० जैन मन्दिर फतेहपुर मैसावार्टी (मीकर)
- **८१६५. नदीश्वर द्वीप पूजा** × । पत्रस० ११ । भाषा सरकृत । विषय-पूजा । र०काल > । ले•काल स०१८६० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जब तेरहपशी मन्दिर बसवा ।
- **८१८६. नंदीस्वर द्वोप पूजा**  $\times$  । पत्र सु० ५२ । आ० ७३  $\times$ ४३ इन्छ । आषा–हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म० ९०/०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)
- द १६७. नदीश्वर द्वीप पूजा— × । पत्र स० १४ । भाषा-हिन्दी (पत्र) । विषय—पूजा । र०काल स० १८६१ । ले०काल स० १८६० । पूर्ण । वेटटन स० २४ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन तेरहप्यी मन्दिर बनवा ।

विशेष--- तीर नगर में प्रतिनिधि हुई थी।

- **६१८** म. **नदीश्वर द्वीप पूजा उद्यापन**  $\times$  । पत्र स०१०। प्रा०६्रै  $\times$  ६३ इ**था। भाषा** सम्ब्रत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१७३०। पूर्ण । वेष्टन स०२६४। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन पार्वताथ मन्दिर चौगान व दी ।
- **८१८६. तंदीश्वर पंक्ति पूजा—स० शुभाचन्द्र।** पत्रम० ४-२२ । ग्रा० ११ $\times$ ४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । श्रपूर्ण । वेष्टनसं० २८०,३४७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन सभवनाथ संदिर उदयपुर ।
- ६२००. **नन्दीश्वर पंक्ति पूजा** $--\times$ । पत्रस $\circ$ ६। भाषा--सस्ङ्त। विषय-पूजा। र $\circ$ काल  $\times$ । ते $\circ$ काल  $\times$ । पूजाँ। वेष्टनस $\circ$  ४५६। **प्राप्ति स्थान**-दि $\circ$  जैन प्रयायी मन्दिर भरतपुर।
- ६२०१. नदीस्वर पक्ति पूजा— $\times$ । पत्र स॰ ६। म्रा०१० $\times$ ४ इञ्च। भाषा सरकृत। विषय— पूजा। र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स॰ २७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महवाल मन्दिर उदयपुर।
- ६२०२. मंदीश्वर पंक्ति पूजा— $\times$  । पत्रसंश्री । धार्ण १० $\times$ ७ इन्छ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । रक्ताल  $\times$  । लेक्ताल स्र १६०१ प्रामोज बुदी १ । पूर्ण । बेष्टनसंश्या प्राप्ति स्थान—दिव्जैन तेरहरंथी मन्दिर दौना ।

५२०३. नंदीश्वर पंक्ति पूरा। —  $\times$  । पत्र स० १३ मा० १२ $\times$ ४ इन्छ । भाषा — सस्कृत । विषय-पुणा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ३५३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर मिननटन स्वाभी बुदी -

द२०४. नदी**रवर पंक्ति पूजा** — × । पत्रस० ४ । फ्रा० ११×४ इ**च** । भाषा-स स्कृत । विषय — पूजा । र० काल ×। ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०३६० । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर सर्जमेर ।

=२०५. नंदीश्वर वतोद्यापन— × । पत्रस० ४ । मा० १५ ×४ ६व । माषा-संस्कृत । विषय-पृजा । र०काल × । ले० काल स० १६४४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०५१३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

द२०६. नदीश्वर द्वीप पूजा—×। पत्रस० १०। म्रा० १०१४ ४० इटच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुजा । र०काल ४ । ले०काल स०१८०५ । पूर्ण । वेष्ट्रनस० २०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पाव्यंताय चौगात वृंदी ।

६२०७. नंदीश्यर पूजा—टेकचन्द । पत्र स० ३६। प्रा० १२×६ इखा भाषा-हिस्सी गया। विषय-स्तोत्र । र०काल ग० १६६५ सावन सुरी १० । ले०काल × । पूर्ण । वेण्टन स १२६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

द२०म. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४१ । ग्रा० १२३ ४६३ इंच । ते∙काल ४ । पूर्ण । बेष्टन म० १०६ । प्राप्ति स्थान म० दि० जैन ग्रमवाल मदिर उदयपुर ।

६२०६. प्रति सं० ३ । पत्रस० ४७ । ग्रा॰ १९ $^{3}_{7}$ ४५ $^{3}_{8}$ ६२४ । ले०काल स०१६०४ सावसा मुदी ६ । पूर्या । बेट्टन स०१४ । प्राप्टिर स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टॉक)

द्व२१०. प्रति सं० ४ । पश्चल ४३ । प्रा० १० $\frac{1}{6}\times$ ४  $\frac{1}{6}$  इत्यः । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । वेग्टन स० ५०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

६२११. नदीश्वर पूजा -- डालूराम । पत्र सं० १६ । आ० ११३ ४७ ६७ । माधा हिन्दी । विषय --पूजा । ०काल म०१६७६ । लेक्काल स०१६४१ । पूर्ण । वेष्टन स०१७४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

दर्शर, प्रति सं० २ । पत्रस०१४ । आः० १२ र्४ ८ इत्त्रः । ले०काल स०१६३४ । पूर्णः । बेष्ट्रसं०१७७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन स्रडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

द२१३. प्रतिसं० ३ । पत्र सं० २ । घा० १२३४ ८ इन्छ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स∙ १७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन लडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--धानतराय कृत है।

६२१४. प्रति सं० ४ । पत्रसं० १५ । घा०१२ ४७ हथा । ले∙काल स०१६१७ । पूर्ए । वेष्टन सं०१२८ । प्रास्तिस्**यान**—दि० जैन सबेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

६२१५. प्रति सं० ५ । पत्रतं० १४ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टनसं० १४६ । प्रास्ति स्थान-दि० जैन सक्षेत्रवाल मन्दिर उदयपुर । **६२१६. प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २४ । मा० १० ४ ६<sup>9</sup> इ.च । ले**०काल** स० १९६२ । पूर्ण । बे<u>ट</u>नसं० १३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन खडेलवाल मदिर उदयपुर ।

विशेष - प्रामेट के ब्राह्मण् किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

६२१७. प्रतिसं० ७ । पत्रस० १६ । ग्रा० १२ है इश्व । ले० काल सं० १६८३ । पूर्ण । वेष्टन स० २१७-८७ । आस्थ्रि स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

**८२१८. तंदीश्वर पूजा**---**रत्नतंदि** । पत्र स०१६ । ग्रा०६२,४१२ ह**च**ा भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०१६४ । प्राप्ति स्**थान**----दि० जैन मन्दिर दवलाना वंदी ।

६२१६. संदीक्ष्वर पूजा--×ापत्र स०१२ । घा०११×५ इन्द्राः भाषा-सस्कृतः । विषय-पूजा। र०काल ×ाले०काल ×ापूर्णः । वेष्टन स०३५७ । प्राप्ति स्थान--भ०दि० जैन मन्दिर क्षजमेर ।

६२२०. नदीश्वर पूजा $-\times$ । पत्र ४० ४। धा० १० $\frac{1}{7}\times$ ५ १४वा। भाषा-प्राकृत-सस्कृत। विषय- पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन ५० १८७७ । प्रास्ति स्थान---भ० दि० जैन महित सबसेर ।

द२२१. नदीश्वर पूजा—  $\times$  । पत्रस०२ । ब्रा० १२ $\times$ ४ े इंच । भाषा—स्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ११ । भाषित स्थान—दि० जैन मन्दिर ब्रादिनाय स्वामी मालपूरा (टोक) ।

द२२२. नंदीश्वर पूजा $-\times$ । पत्रसं ०७। प्रा० १० $\times$ ६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$ । ले०काल स० १६२१ मर्गासर बुदी १४। पूर्ण । बेष्टन स० २६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दक्ताना बुदी ।

विशेष — मुरोज नगर में पार्श्वनाथ जैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी । प० आलमदास ने जिनदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

६२२४. संदीश्वर पूजा $-\times$ । पत्र सं०३। मा० ११ $\times$ ५ इन्थ । भाषा-प्राहत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत सं० ७६-१०८ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर नेमिनाब टोडारायसिह (टोक) ।

६२२५. संबोध्यर पूजा— $\times$ । पत्रस०६०। मा०१० $\times$ ७ इञ्च। साथा—हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०३६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

६२२६. नदीश्वर पूजा (बड़ी) — × । पत्र स०६७ । आ०६×७६७ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पास्थनाय चौसान बुंदी । ६२२७. नंदश्किर पूजा विद्यान —  $\times$ 1 पत्र स॰ ४४ । ब्रा॰ ११ $\frac{1}{2}$   $\times$  ६ स्वः । भाषा सस्कृत । विद्यम-पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल स० १६३४ सावला बुदी ४। पूर्ण । वेष्टन स० ४६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष --- इस पर वेष्टन सम्या नही है।

६२२८. नंदीस्वर द्वीप उद्यापन पूजा — × । पत्र स०१७ । म्रा० ८ × ४ इन्छ । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०कान स०१८५७ चैत बुदी ७ । पूर्ण । वेन्टन स०७६-४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर टोडारायसिंह (टोक) ।

विशेष--प० शिवजीराम की पुस्तक है तक्षकपूर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

द२२६. नम्दीश्वर द्वीप पूजा—पं० जिनेश्वरदास । पत्रम० ६७ । मा० १२ ४ ६ इन्छ। भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल ४ । ले० काल स० १८६१ । पूर्ण । बेष्टनस० ४६/१०२ । प्राप्टित स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

= २२०. **संदीक्ष्यर द्वीप पूजा**---लाल । । पत्रस० ११ । म्रा० १० $\times$ ६े इख । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० २६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तैरहपशी मन्दिर नैसाना ।

द२**१. नन्दीस्वर द्वीप पूजा**— विर**धीचन्द्र।** पत्रस०४४। प्रा० द×६ इव। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल स०११०३। ले**०काल स०११०४। पूर्ण**। वेष्टन स०१०६ द३। **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन मन्दिर भादव। (राज०)।

विशेष--विरधीचन्द्र मारोठ नगर के रहते वाले थे।

**८२३२. नन्दीस्वर द्वीप पूजा** -- 📐 । पत्रस० ३३ । भाषा नेहन्दी । विषय-पूजा । र०काल 🗵 । ले०काल 🔀 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**-- दि० जैन पनावती मन्दिर भरनपूर ।

विशेष —दौनतराम कृत छहुदाना तथा नित्य पूजा भी है।

 $\mathbf{x}$  २३३. **नेमित्तिक पूजा सम्म** $\mathbf{x}$  । पत्रत० ५२ । ग्रा० ११ $\frac{3}{6}$  ४ $\frac{3}{6}$  इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\mathbf{x}$  । ज काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बंद्दनस० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर प्रादिनाय स्वामी मालपुर (टोक)

विशेष निस्त पुत्राधो क संग्रह है -

दश लक्षण् पूजा, सुख सपिन पृजा, पजमी बत पृजा, मेधमाला बतौद्यापन पृजा, कर्मकूर बतौद्यापन पृजा एव अनन बत पूजा ।

 $\mathbf{z} \sim \mathbf{z} \times \mathbf{z}$  भैमित्सक पूजा सग्रह—  $\times$  । पत्र स० ६१ । प्रा० १२ $\frac{1}{2} \times \mathbf{y}$  हजा । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । (० काल । सं०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १२० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फेसलवाटी (सीकर)

विशेष-दश लक्षरा, रत्नत्रय एव सोलह कारण ग्रादि पूजाये हैं।

६२३५. **पक्ति माला** — × । पत्र स॰ ६२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पुत्रा । र०काल × । ले∘काल स॰ १७६६ । प्रपूर्ण । बेष्टन सं∙ ६३० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर । विशेष--- बीच २ के पत्र नहीं हैं। सल्या दं. हुई है।

६२३६, पच कल्यासाक उद्यापन—गूजरमल ठग । पत्र म०७४ । आ०७४१ इच । आपा—हिन्दी (पदा) । विषय-पूजा । र०काल ४ । ने० काल । पूर्ण । वेष्टन मं० ६४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर कोट्यो का नैसावा ।

दरेषु. पंच कत्याराक उद्यापन— × । पत्रस० ३१। प्रा० १० x ४ र्डे इःच । भाषा-हिन्दी (पद्य) । जिवय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० ११४० । पूर्ण । वेष्ट्रन मं० द७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैगावा ।

**८२३८. धंच कल्यास्मक पूजा—टेकचंद** । पत्र सं०३३ । आ० १२० ४४ १६०० । **प्राप्ति स्थान**— हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६८४ । पूर्से । वेष्टनम० ६०० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

क्षर**३६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० २२ । ले० काल स० १६२२ । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन नेप्रताथी मस्दिर बसवा ।

६२४०. प्रतिसं०३ । यत्र स०१६ । श्रा०११४७ इञ्चा ो० काल ४ । द्यपूर्ण । वष्टन स० ३०। प्राप्ति स्थान—रि० जैन मन्दिर पाश्वेनाय चौगात व दैऽ।

द्ध**४१. पंच कत्याराक पूजा—प्रभाचन्य** । पत्रम० १३ । घा० १०४७ इ.च.। भाषा— सरकृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । **ले**ककाल सं० १०३८ । पूर्ण । वष्टनम० १७ १२ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोटडियो का धूगरपुर ।

विशेष—िश्वित नग्न सम् वरमध्ये । निष्णापित पडित जी श्रीलाल विरजीव । श्रुभ सथन् १६३६ वर्गे शांके १६०३ प्र० मास पौष बुदी १२ ।

६२४२. पंच कल्यास्पक पूजा — पं० बुधजन । यत्रस० ३४ । प्रा० १०४६ इथ्व । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल स० १६३३ प्रयाद मुदी २ । पूर्ण । बेष्टल स० ६०-३४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैत बडा बीसाभी मन्दिर दीसा ।

विशेष--- शिववक्स ने प्रतिनिधि को थी।

६२४३, **एांच कल्यागाक पूजा**—रामचन्द्रा। पत्रसं०१६। झा०६४५ इश्वा । मापा हिन्दी। विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल स०१६२२ व्येष्ठ मुदी१३ । पूर्णा। वेष्टन स०१४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्वायनी मन्दिर वयाना।

विशेष - कुभेर नगर मे प्रतिलिपि हुई थी। चौतीस तीर्थकरों के पच कल्यागक का वर्शन है।

द२४४. पच कस्यासाक—वादिभूषसा (भुवनकीति के शिष्य) । पत्र स० १६ । आ० १०२४४) इच । भाषा—सस्कत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले•काल सं० १७१३ । पूर्स । वेष्टनसं० ५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लक्षेत्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

दर्**४५. पंच कल्याराक पूजा—सुधा सागर** । पत्रतः० १४ । ग्रा० १२ ८५१ हुन्छ । भाषा–संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले**०का**ल ४ । पूर्ण । वेग्टन म ०४४ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर माभनस्वर स्वामी बूंबी । ६२४६. प्रतिसं० २ । पत्र स० १६ । झा० ७ ! ४ १ इश्व । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १२६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर पार्थनाथ चौगान बूदी ।

विशेष-प्रयम ५ पत्रों मे भागाधर कृत पच कल्यासक माला दी हुई है।

ष्परेष ७. प्रति सं० ३ । पपस० २४ । घा० १० १ ४४ } इला । से०काल स०१ व४४ । पूर्ण । वैष्टुन स०६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोकः)

विशेष - सदासुख ने कोटा के लाडपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

लोकाकास ग्रहोत्तमे मुजिनयो जातः प्रदीपस्सदा । सद्गरनत्रय रन्नदर्शनपर पापे धनी नाशक. । श्रीमछी श्रवणोत्तमस्यतनुनः श्रनवाट वशोनयो । हसारवाय नतः प्रयच्छतु सताग्रः श्री मृवाशागर ।

६२४६, प्रतिसंo ४ । पत्रस०२१ । प्रां० ६ ४६ इब । ले∙काल सं० १६०३ । पूर्णा । बेष्टन स० ७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

विशेष -- गुजरानी ब्राह्मण हीरालाल ने प्रतिलिपि की थी।

८२४**६. प्रति सं० ५ ।** पत्र ६०१२ । ले०काल स०१६०२ । पूर्गा। वेन्द्रन स०५४ । **प्राप्ति** स्थान— दि० जैन तेरहपथी मदिर बसवा।

६२५०. प्रति स०६ । पत्रम०२१ । ले॰काल म० १६२० । पूर्ण । वेष्टनस०५५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपयी मदिर समया ।

६२५**१. प्रति सं०७ ।** पत्रस० २१ । ब्रा०१० : ४५ इच्च । गे० काल स०१७५ प्याप मुदी ११ । पूर्ण । बेक्न सं०२७३ । **प्राप्ति स्थान** ः दि० जैन मस्दिग्दीबानजी कामा ।

चन्**५२. पंच कल्याग्यक पूजा** — सुमति सागर । पत्र स० १४ । म्रा० १४ ×६० इत्र व भाषा — सन्छन । विषय — पूजा । र०काल ४ । ग० काल म० १८१७ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्रान्ति स्थान** — दि० जैन प्यायते। सदिर वयाता ।

विशेष—महाराष्ट प्रदेश में बल्लभपुर में पभोध्वर औरशालय में ग्रन्थ रचना हुई थीं । लातचन्द पाढें ने करीती में भूरामल के लिये प्रतिकिप की थीं ।

ष्पर्**भ प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १४ । सा० १३ ¦ ४ ६ कुंडल्ड । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स**०** ४०–४४ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन सीनास्ती मस्टिर करीली ।

६२४**४. प्रतिसं० ३** । पत्रस० १६ । ले०काल × । पूर्ण । बेप्टनस० १२३ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पत्रायती मन्दिर भग्नपूर ।

द२४५. **रांच कत्यारा पूजा चन्द्रकोत्ति** । यत्रत०२६ । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बंष्टन स० १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

८२५६. **रांच कल्याराक पूजा** — × । पत्रम० १६। ग्रा० ११८४४ हे वं । प्राया-सस्कृत । विषय —पूजा। २०काल × । ले०काल × । पूर्ण। वेप्टन स० १४६ । **प्राप्ति, स्थान** — दि० जैन मन्दिर प्रारिताय वृदी ।

करेदार पंच करवाराक पूजा $-\times$ । पत्रतः १७। घा॰ ११ $\frac{1}{5}$  $\times$ ५ इच । सापा -सस्कृत । विषय- पूजा । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस०२०६। प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर पाण्वेनाथ चौगान वृदी ।

६२४६. **एंच कल्यास्पक पूजा**— $\times$ । पत्र स०१६। प्रा०१०<sup>५</sup>×५ $^2$  इन्छ। माधा—सस्कृत । विषय—पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्स। वेष्ट्रन स०६३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबताना (दूरी)।

दर्६०. **रांच कल्यास्पक पूजा**— × । पत्र म० १४। ग्रा० १० ४७ <sup>†</sup> डश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्स । बेष्ट्रनस० १०७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर।

स्ट्रि. पंच कल्यार्गक पूजा—४ । पत्रमः २४ । ब्रा० १०४४ है इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल ४ । ले०काल स० १००१ धासोज बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स० ३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसणी कोटा ।

द २६२. **ांच कल्याग्यक पू**जा —  $\times$  । पत्र स० १४ । क्रा० ६ $\frac{7}{6}$   $\times$  ६ इञ्च । माषा संस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल स० १६१७ बैगाल मृदी ७ । पूर्ण । वेष्टत स० २७६ । प्राप्ति -स्थान — दि० जैन मदिर बोरमली कोटा ।

६२६३. पंच कत्यास्पक विधान—सट्टारक सुरेन्द्र कीर्ति  $\times$  । पत्रस $\circ$  ४६ । आ $\circ$ ६ $\times$ ४ ६७ । भाषा सम्कृत । विषय-पृजा । र $\circ$ काल  $\times$  । ले $\circ$  काल  $\times$  । पूर्स । बेठुन स $\circ$  २३४ । प्राप्ति—स्थान वि $\circ$  जैन सन्दिर बोरसी कोटा ।

 $\mathbf{c}$  २६४. **ांच** करवााग् क पूजा— $\mathbf{x}$  । पत्र स० १८ । छा० ११ ४७ । इन्छ । भाषा - हिन्दी । विषय - पजा । ए० काल  $\mathbf{x}$  । ते० काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बेष्टन स० १२२४ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर छजनेर ।

६२६५. पं**च क**ल्यासा पूजा—×। पत्रत० १३। झा० १०×४ इच्च । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वेच्टन स०३७३। **प्राप्ति स्थान** स०दि० जैने पदिर भाजने।

द२६६. एांच कल्याग्यक प्जा— × । पत्र स०२०। झा०१० १४५ हेच । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४७१ । प्राप्ति स्थान— भ०द० जैन मंदिर क्रजोर।

दर्६७. रांच कल्यास्मक पूजा— × । पत्रसं∘ ३७ । घा० १०४६ इच । आषा हिल्दी पच । विषय-पूजा र०काल × । ले०काल सं० १६०७ भादवा बुदी १३ । पूर्स । वेष्टन स० १० । प्राप्ति – स्चान—दि० जैन तेरहांपी मन्दिर नैसावा ८२६८. पंच कत्यारणक पूजा— × । पत्रस० ११ । प्रा० १४ ६ इच । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । रणकाल ×। लेकाल ×। पूर्ण । वेष्टन स०३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर पाव्येनाव रोजाराशील (देशिक)।

स्२६६. पंच करुयास्यक् पूजार—४ ।'यक् स० १३ । धा० ७३,४४३ दख । भाषा-हित्यी । प्या ।विषय-पत्रा । रक्काल ४ । ले० काल ४ । धपूर्यो । वेष्टन स० द० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दवलागा (वंदी) ।

विशेष-- तप कल्यागुक तक ही पजा है। ग्रागे लिखना बन्द कर दिया गया है।

**८२७१ एांच कल्याराक पूजा** —  $\times$  1 पत्र स०२२ । भाषा-हिन्दी । विध्य-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६०४ कालिक बुदी २। पूर्णा । बेट्टन स०१२**४। प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पचायनी मटिर भन्तपर ।

विशेष - दो प्रतिया भीर है।

द२७२ **ांच क**रव्या**गक पूजा** — × । पत्र म०६ । प्रा०१० रूँ ४ ँ इत्र । भागा हिन्दी । विषय—पूजा । <sup>र</sup>०काल × । ले॰काल म०१६६२ । पूर्ण । वेष्टन म०६२ । प्रास्ति स्थान—दि० क्रीत सम्बेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

८२७४. पंच कल्यास्पक पूजा $-\times$ ापत्रस० १४। प्रा० १२ $\times$ १२७। साप्ति-7स्ती । विषय-पूजा । 7० काल  $\times$ । ले०काल स० १८३६। पूर्ण । बेष्टनस० ६६-६०। प्राप्ति स्थान-विक जैन मन्दिर शदश (राजस्थात) ।

द्र**ेश् ४. एंच कत्याराक पूजा** — × । पत्र संश्वेश प्राश्वेश ४ । प्राश्वेश स्थान — दिश्वेश प्राण्यानिहासी । विषय-पूजा । रञ्जाल × । लेञ्चाल × । पूर्णा । वैष्टन सण्ड १८२ । **प्राप्ति स्थान** — दिश्योन पत्रावती मदिर करोली ।

विशेष-प्रति गृटकाकार है।

द्ध २६ . तंच कत्यास्पक पूजा-- ४। पत्रस० ३४। मा० १० ४४ है इस । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । २०काल ४ । ले० काल सं० १९८४। पूर्ण । वेष्टन स० ३४३/१३२। प्राप्ति स्थान--रि० जैन महिर कोटडियों का हुंगग्युर ।

६२७७. **रांच करुयाराक पूजा**— × । पत्र स०२७ । प्रा० १×६ इच । भाषा-हिन्दी पद्य । विदय-पूजा । र०काल × । ने०काल सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । **प्राप्ति स्थान**---वि० जैन महिर पार्यनाथ चीमान वृदी । द२७८. पं**व करुपाराक पूजा**— X । पत्रस० १७ । धा० १है X ६ इज्व । भाषा-हिन्दी, खा । विषय-पूजा । र० काल X । लेक्काल X । पूर्णे । वेष्टनस०१३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ध्रम्रवाल प्रवासनी मन्दिर धन्वर ।

६२७६. प्रति सं०२ । पत्र स०४६ । घा०१२ $\times$ ७ इञ्च । ले०काल $\times$  । घपूर्ण वेष्टन सं०१४४ । प्राप्ति स्थान —उपरोक्त मन्दिर ।

द२६० पंच कन्यास्यक विधान — हरीकिशन—× । पत्रसः २१ । ब्रा० १४४७ इखा । भाषा हिन्दी-गया । विषय-पूजा । र०काल स० १८६० बपाद मुदी १५ । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बुडी ।

६२६१ **पंच क**ल्या**ए। इत टिप्पस्** $-\times$ । एवं १०४। झा० $-^{\vee}$ । आपा-हित्वी। विषय-पूजा विभाग । र०काल $-\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्सं। बेष्टन म० ४१०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इमारपुर।

 $\pm 2 \pm 2$ , **पंचलान पूजा** - पत्र म**०** १। भाषा-हिन्दी । विषय -पूजा । र०काल -- × । लेकाल -- × । पूर्णा । बेवन स० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**-- कि० जैन पचायनी मन्दिर भरतपुर ।

स्२स्ट २ संबपुत गुरामाला पूजा— मि गुभवन्द्रा । पश्चन १६ । पा०११ ८४ दे भ्या । भाषा— संस्कृत । विषय नृता १० काल अाले ० काल अापूर्णा । बेष्टन स०१२ । प्राप्ति स्थान— विठ जैन मिन्दर बोग्यानी कोटा ।

स्ट्रस्थ. पंच परमेठी पूजा — भ० देवेन्द्रकोति । पत्रस०७। घा०१४६ इ.चा । भाषा — सस्कृत । विषय-प्जा । २०वाल ४ । ले०काल स० ११३२ । पूर्ण । वेग्टन स० ४११ । प्राप्ति-स्थान—वि० जैन मन्दिर कोटडियो का इयरपुर ।

दर्द्भ प च परमेष्ठी पूजा — यशोनिन्दि । पत्र स० ३२ । बा० ११ × ४ इला । माषा – सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । त० काल स० १६५२ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३४२ । प्राप्ति स्थान – भ० वि० जैत मन्दिर स्वभेग !

द्भद्भ प्रति सं० २ । पत्र म० ३५ । ग्रा० १२ $\{x, x\}$  इश्व । ले०काल सं० १८५७ घाषाढ बुदी १३ । प्रगं । बरटन म० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फ्रादिनाथ स्वामी मालपुरा (टोक) ।

विशेष - प० शिवलाल के पठनार्थ रामनाथ मट्ट ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी।

 $\mathbf{c} \mathbf{<} \mathbf{c} \mathbf{<} \mathbf{.} \mathbf{ y}$  **तिसं० ३।** पत्र स० ३१। आ० १३ $\mathbf{ \times } \mathbf{ x}$  ह्वा। ले॰काल  $\mathbf{ \times }$  । पूर्ण । वेस्टन स० १५७। प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन लडेलवाल पवायती मन्दिर ग्रलव $\mathbf{ z}$ ।

द्दरद्दः प्रतिसं० ४ । पत्रस० ३६ । घा० १४७ इत्था । ले०काल ४ । पूर्णा । वेष्टनसं० ८५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रमवान प्वायती मदिर ग्रतवर ।

८२८६. प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४० । घा० ११ ×६ है इन्छ । ले०काल स० १८१७ भारवा सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनस० ८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष - उदयराम के पुत्र रूरों ने ग्रंथ की प्रतिलिपि बयाना में करायी थी।

दरेह०. प्रतिसं०६ । पत्र स० २६ । ले० काल सं०१ ६ ४६ जेठ मुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन सं० १६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन पवासती मदिर भरतपुर ।

 $\mathbf{c} \in \mathcal{E}(\mathbf{c}, \mathbf{x} | \mathbf{c}, \mathbf{c})$  । पत्रस० २४ । द्या० ११ $\frac{1}{2} \times \mathbf{v}^2$  इश्वर। ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहुतस०  $\mathbf{c} \in \mathbf{c}$  ।  $\mathbf{x} | \mathbf{c} \in \mathbf{c}$  जैन मंदिर बोरसली कोटा।

दर्दर, प्रतिसं० द । पत्र स० ३८ । ग्रा० १०} ४६ इञ्च । से∙काल ४ । पूर्णं । बेप्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पचायती मन्दिर करौली ।

दर्**६३. प्रतिसं० ६ ।** पत्र स० २८ । घा० ११×५२ इश्व । ले० काल स० १८३५ जेठ सवी ७ । पूर्ण । बेपून स० २५१ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर प्राप्तनत्वन स्वामी, बुदी ।

दरहर्षः प्रतिसं० १० । पत्र स० २७ । ग्रा० ११×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टत म० ६३८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर लक्कर,जयपुर ।

द्द**र्धः प्रतिसं०११**। पत्र स०३७। ग्रा०१०ै,४४ इञ्चाले० काल स०१६०४। पूर्ण। वेष्टन स०४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थ्वनाथ सन्दिर चीमान वदी।

६२**६६ प्रतिसं० १२ ।** पत्र म० २७ । ग्रा० १०<sup>१</sup>, ४७} इन्**व ।** ले०काल × । पूर्ण । वेष्टत सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान** । दि० जैन अग्रवाल मस्दिर उदयपुर ।

६२६७. पंच परमेष्ठी पूजा— भ० शुभचन्द्र। पत्रतः २४। प्रा० ५ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$ र्थः। भाषा— सस्कृतः। विषयः— पूजाः। र०कालः  $\times$ । ले०कालं स० १७६७। पूर्णः। वेष्ट्रनं स० ४५। प्रास्तिः स्थान— दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटाः।

## श्रांतिम प्रशस्ति---

श्रीमुल सबे जननदस्य।

तया भयछी विजादिकीर्ति।

तत्तपट्टधारी णुभचन्द्रदेव ।

कल्यानमात्मा कृताप्तपृजा। १२।

विशेष-श्री लालचन्द्र ने लिखा था।

द**्द्र एंच परमेष्ठी पूजा – टेकचन्द**। पत्र स० ७। ग्रा० द×६ै इचा ग्रापा-हिन्दीपद्या विषय-पूजा । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा विष्टन सं० २२५/६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वंपरपुर ।

दरहरु. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३३ । भा० ११ × ४ ३ इञ्च । लेश्काल स० १८६६ । पूर्सा । वेकनसं० २६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लडेलवाल मदिर उदयपुर ।

द्भु००. प्रतिसं० ३ । पत्र सं०१४ । आ ०१२×६ इञ्च । ले० काल स०१८८६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खण्डेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-- उदयपुर में नगराज जोशी ने प्रतिलिपि की थी।

द्र ३०१. प्रति स०४ । पत्र स०३३ । ले० काल सं०१८५५ । पूर्णा । वेष्टन स०३७८/३०७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

द्ध २०२, प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३३ । घा० ११×४ इश्व । ले॰कालसं०--१८३५ । पूर्ण । बेष्टुन सं० ४४६-३१० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपूर । द्ध३०३. प्रति सं०६। पत्र स०१२। ले०काल × । प्रपूर्णः । वेष्टन स०१२२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

क्रदे**०४. प्रतिसं० ७ ।** पत्र सं० ३४ । ग्रा० १र्हे×४१ इला । ले० काल × । पूर्णा । वेप्टन सं० १४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रप्रवाल पचायती मन्दिर श्रलवर ।

द्ध**रु. प्रतिसं∘ ६ ।** पत्रस॰ १५ । ग्रा० १२ ×७ ृँ इच । **ले∘काल स०** −१६३५ फागुरा सुदी ६ । पूर्ला । वेष्ट्रन स० ५० । **प्राप्ति स्थान**—िद० जैन मन्दिर श्रीमहावीरजी (वृदी) ।

विशेष - ईगरदावामी हीरालाल भावसा ने लिखवाया था।

द२०६. पञ्च परमेष्ठी पूजा—डालुराम । पत्रस० ४० । बा० १०३ ४४३ इसा । माथा— हिन्दी पद्य । विषय-पूजा। र०काल म० १०६२ मर्गामर बुधी ६ । केश्काल स० ११४८ कार्तिक श्रुदी २ । पुर्गा । बेहुन स० २ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन पार्थनाय मंदिर टोझारप्रसिद्ध (टोक्र) ।

८२०७. प्रतिसं० २ । पत्रस० ३१ । या० ८×६६७। । लंक्काल स० १८८९ वासोच बुदी १० । पूर्ण । बेहन स० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहथवी मन्दिर मल्लूरा (टोका !

द्देवद, प्रतिसंव ३ । पत्रत्तव २० । धाव १२३ ४ व दश्व । लेक्सल सव १६६१ प्रापाद मुरी ६ । पूर्म । बेटन सव ४५७ । **प्राप्ति स्थान**--- दिव जैन मन्दिर तक्कर जयपुर ।

द्म३०**६. प्रतिसं∘४** । पत्र स०२२ । घ्रा० १४ ×७ <sup>‡</sup> इला । ले∘काल स०१६६१ । पूर्ण। बेष्टुन स०४५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरडवधी मदिर नैस्सुवा ।

= ३१० प्रति सं० ४ । पत्रस० ४७ । आ०१० र्रे ४ र्रेड्ड व । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २४४ । प्राप्ति स्थान — द० जन मदिर पाव्वनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

द**३११. प्रतिसं० ६** । पत्र स० ४१ । आ० ५३ ४६ इचा। ले०काल स० १८७६ श्रावरण बुदी १२ । पर्णं । बेब्रन स० २७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०) ।

विशेष-भादवा मे प्रतिलिपि हुई थी।

 $\mathbf{c}$  ३९२, **रांच मंगल पूजा**  $\times$  । पत्र स० २४ । आ० ११  $\times$  ११ हुन्छ । माचा हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । कें बकाल  $\times$  । दूर्ण । बेष्टन स० २०४-१११ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन मस्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

६२१३. तंच परमेष्ठी पूजा—बुधजन । पत्र स०१६ । प्रा०१० $\times$ ६ $^2$  इच । आधा-त्रिन्दी । विषय—पूजा । र०कान  $\times$  । ले० कान  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन ग०१३० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर तैसा ।

ह्र **१४. ांच परमेष्ठी पूजा** — ४ । पत्र सं० १३ । घा०६ दे ४ १ रे इंच। भाषा-सस्कृत। विषय — पूजा। र०काल ४ । ले० काल स० — १८६६ । पूर्ण। बेष्टन सं० ३६५ - १४४ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मंदिर कोटडियो ना हुषरपुर।

८३१४, पांच परमेष्ठो पूजा × । पत्र त० १६ । घा० ११ × १ इच । विषय-पूजा । भाषा— संस्कृत । २० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन तं० ३६४-१४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर । **८३१६. पंच परमेठ्टी पूजा** × । पत्रसं० ४०। भाषा-सस्कृत । र०काल ×। ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ११४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-कृ मावती नगरी मे प्रतिलिपि की गई शी।

दर्श**ः पंच परमेष्ठी पूजा ४ ।** पत्रस॰ २४ । भाषा --मस्कृत । विषय --पूजा । ले॰काल -रेद४७ । पूर्णे । बेष्टन स॰ २३ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

६**२१६ पंचपरमेठठो पूजा** ४ । पत्रस० २-४ द्या० १०<sup>5</sup>, ४४<sup>5</sup> हज्या भाषा-—संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल स० १६६४ । अपूर्ण । बेष्टृनस० ३४६ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन अग्यसल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

नागराज लिखत । सबत् १६८५ वर्षे ग्रापाड माने कृष्णपक्षे पचमी(दने ग्रवागरे लिखत ।

दरेहर, **पंचपरमेष्ठी पूजा**  $\times$  । पत्र म० ४। ग्रा० १४  $\times \sqrt{\frac{1}{2}}$  इस । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत म० २७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन अथवाल मंदिर उदयपुर ।

**८३२०. पंच परमेष्ठी पूजा** × । पत्र ग०२ । भाषा-मस्कृत । विषय प्रजा । २०कान × । लंब्बाल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सब् ३७६-३०८ । **प्राप्ति स्थान** ---दिब् जैन समवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

६३२**१. प्रतिसं० २ ।** पत्रसः० ४ । ले०काल 🗴 । पूर्यो । वेष्टनं स० २७६-२०६ । **प्राप्ति** स्थान—दिव्योन सभवनाथ मन्दिर उदयपर ।

विशेष-गावार्यं सोमकीति ने प्रतिनिधि की थी।

द3२२. **रांच परमेष्ठी पूजा** × । पत्र स० ६६ । झा० १० र्रे> ४ ' इश्व । भाषा—सस्त्रत । विषय — पूजा । र० काल × । लेकाल । पूर्ण । वेल्टन स० १४७ । **प्राप्ति स्थान** ⊸दि० जैन मदिर दनलामा (व दी) ।

विशेष--देवेन्द्र विमल ने प्रतिलिपि की थी।

६२२२. **एंच परमेरठी पूजा** । पत्रम० ३६ । घा० ० है थ. प्रेडिया भाषा सम्का। विषय --पूजा। र०काल X । ले०काल × ः पूर्णः वेष्ट्रन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**---दि० जैन सन्दिर खादिनाब वटी ।

६३२४. **एंच परमेष्ठी पूजा**  $\times$  । पत्रस**्ट १** सा० ११ $\frac{3}{2}$  $\times$ १ $\frac{1}{2}$  डच । भाषा-सहस्त । विषय--पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्ट्रन स**०७ । प्राप्ति स्थान** ---दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय स्वामी मालपूरा (टोक) ।

६३२५. **रांच परमेरठो पूजा**—  $\times$  । पत्र स॰ ३५ । सा॰ ६ $\dagger$   $\times$ ६ $\dagger$  इञ्च । भाषा— हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले॰ काल स॰ १६७४ भादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेण्टन सं० ११४६ । **प्राप्ति** स्थान— म॰ दि॰ जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

द २२६. **रांच परमेष्ठो पूजा** × । पत्रतः २६ । झा० ६×४ु इश्व । भाषा—हिन्दी (पत्रः) । विषय—पूजा। र०कास सं० १८६८ मगीसर सुदी द । लेकाल सं०—१८८६ अंधेष्ठ बुदी ४ । पूर्णः । वेष्टत स० १२०० । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर अजनेर । **६२२७ पंच परमेग्ठी पूजा** × । पत्रस० २६ । **घा**० १४६**६ छ। प्राणा**-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल → × । ते०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ११३७ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर स्रजनेर ।

६३२६. रांच परमेरठी पूजा $+ \times 1$  पत्रस्० १३। ब्रा०१३ $\times$ ५ इचा। भाषा-हिन्दी। विषय-- पूजा। २० काल  $\times 1$  लेकाल  $\times 1$  अपूर्ण। वेष्टनस० ११/६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिन भावता (राज०)

विशेष - प्रति चुहों ने खारखी है।

६३३१. एं**च परमेश्टी पूजा** — ४ । गत्रम० ४२ । ओ० १०} ४४ इआ। भागा-हिस्टी यस । विषय-पूजा । ग्रकाल ४ । से क्वाल ४ । सपूर्ण। वेष्टर म० १४ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन वडा विभागी महिस्ट दोना ।

६३३२. **शंच परमेठी पूजा**— $\times$  । पत्रसः ३७। प्राः ११ $\times$ ६ दश्च । माषा-हिन्सी गद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰काल म॰ १८१८ । पूर्ण । बेपून म॰ १२४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन अग्रवान पनायनी भन्दिर प्रमुबर ।

**म३३३ प्रतिसं०२।** पत्र स०४२। आर०१११ू ४४ , इत्यानिककाल ×ा पूर्णा। बेष्टन स० १२१। प्रास्तिः स्थान—दि० जैन अध्यक्षल पत्राधनी मन्दिर असवर।

**८३३४. प्रति स०३** । पत्रम०४४ । ग्रा० ८<sup>3</sup>, ४६ढे डङ्ख । ने०काल स०१६४६ कार्तिक बुदी ४ । पूर्यो । बेष्टन स०१४७ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त मन्दिर ।

६३३५. पंच परमेष्ठी पूजा - 🗙 । पत्रस॰ ५० । सा० १२३४७. । उरुव । भाषा-हिस्सी पद्य । विषय-विकास । र०काल 🗴 । ले॰काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनस॰ ७२ । प्रास्तिः स्थान- दि० जैन सजवाल पचायती मन्दिर सलवर ।

 $\mathbf{x}$  ५२६. **एंख परमेष्ठी पूजा** —  $\mathbf{x}$  । पत्रम ० ३६। मा० ११ $\mathbf{x}$ ६) इ.ख । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल सं० १६६२ । लेकान स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टनम० १४६ । प्राप्ति स्थान दि० जैन सक्कवाल प्रचायती मन्दिर स्रलय ।

विशेष---ग्रलवर मे प्रतिलिधि की गई थी। एक प्रति और है जिसकी पत्र स० ५४ है।

६३३७. रांच परमेष्ठी पूजा — X । पत्रतः १२। आः ६४६ हे इतः। आया — 'यरी। विषय-पुजा। रक्ताल सं०१६६२ मार्गणीर्षं बुरी ६। लेक्काल ४। पूर्णः। बेष्टनण्डः २, १४। प्रास्ति स्थान — दिः जैन पंचायती मन्दिर दूनी (टॉक्) ६३६. पंच परमेष्ठी नमस्कार पूजा— $\times$ । पत्रसः ७। मा॰ ६ $\frac{1}{2} \times$ ४ इचा । माषा— संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । स्पूर्ण । बेष्टन स॰ ३६१ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

६३३६. राजवालयतो तोर्थकर पूजा— $\times$ । पत्र स॰ १०। छा॰  $\mathtt{e} \times \mathsf{v}$  देखा भाषा— हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन स॰ १६७। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

६३४०. **पंचमास चतुर्वशी व्रत पूजा**— ×। पत्र स०६। घा० ८ है×६ ६७। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वेष्टन स० १६४। **प्राप्ति स्थान**—रि० जैन मिदर राजमहल (टोक)

६३४**१ पंचमास खतुर्दशी बतोद्यापन—स० सुरेन्द्रकोर्ति** । पत्र स० ४ । घ्रा० ११. ४५ इ.च. भाषा–सन्द्रतः । विषय-पूजा र०कालः ४ । ले० कालः ४ । पूर्णः । वेष्टनं स० ५६ । **प्राप्ति** स्थानं - दि० जैन मन्दिर पास्त्रेनाथ चीनानं दृदी ।

द्र३४२. प्रति स०२ । पत्रस० ६। प्रा०१्रै×४१ इञ्च । ले०काल × । पूर्रो । बेष्टनसं• दर्श प्रास्ति स्थान — दि० जैन मंदिर प्रधिनन्दन स्वामी बुंदी ।

द्रश्रः **रोचमास चुर्वेशो त्रनोद्यापन**— ४ । पत्रस्व ४ । प्रा० १०, ४५ ६ व । भाषा− सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ने काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ~१८ ३४ । **प्राप्ति स्थान**—वि• र्जन सीगाणी मन्दिर करोली ।

६३४४. पंचमासः चतुर्वशी क्षतोद्यापन---  $\times$  । पत्रम० ८ । प्रा० १०,  $\times$ ६ $^{\circ}$  इत्थ । भाषा-- सम्ब्रुत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बंद्यनस० ४१ । प्राप्ति स्थान----दि० जैन पचायती मन्दिर करीली ।

दश्प्रे. पंचमास चतुर्दशी स्तोद्यापन विधि--- × पत्रस० ४७ । धा० १०×४२ हरूव । भाषा-मम्कृत । विषय-पूजा । २०काल × ले० काल स० १८८६ सावरा मुदी १३ । पूर्ण । वेष्टुत स० १२० । प्राप्ति स्थान-- दि० जीन पश्चार्य मन्दिर करोची ।

विशेष — वृत्रनाल गोकलचन्द देंद्र ने पचायती मन्दिर के लिए बालमुकुन्द से प्रतिलिपि करवार्ड थी।

**६३४६. रांचमी विधान**—  $\times$  । प्रथम० १३। धा० ११ $\times$  ७ इ.च. । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ११२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

६ ३४७. **पंचमी ब्रत पूजा क**ल्याम् सागर । पत्रतः ६ । ब्रा० १० ४८ ६ च । भाषा -सस्कृतः । विषय पूजा । २० काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनं सं० ६६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर प्रापनन्दनं स्थामी बूंदो ।

वन्तिम पाठ---

तीर्यकरा सकलल कहितकरास्ते । देवेन्द्रवृदमहिता सहिता गुराीर्थ । क् दावती नभकता वकता जिवानी
कृषेतु गुद्ध वनितासुन वित्तजानि ॥१॥
जगति विदित्त कीर्ते गामकीर्तेषु शिष्यौ
जिन्पतिषदभक्ती हर्षनामा सुधरि।
रचित उदयमुकेन कल्यारा भूमने

उदयमुतेन कल्यारा भूम्ने विधिरूप भवनी सामौक्ष सोख्य ददातु॥२॥

 $\mathbf{c}$ ३४८. **राजभी कत पूजा** —  $\times$ । पत्रस**० ३। या० ११** $\times$ ५ इ.ख.। प्राया-मस्कृत । विषय-पुजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३५६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सजमेर भण्डा ।

६३४६. **रांचमी वती पूजा**— $\times$  । पत्र म० ६ । प्रा०११ $\times$ १६ च । भाषा—सस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टेन स० १४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर राजमहल (टोक)

द३५० पं**चमी तत पूजा**—× । पत्रस० ४ । धा० १०१×४} इखा भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । बेहन स० '४४४ । **प्राप्ति स्थान**—म० दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ स्वामी व दी ।

विशेष — महाराज श्री जगतसिंह विजयराज्ये कोटा वांसी धमरचन्द्र ने सवाई माधोपुर में निम्मा था।

दर्**४१. रांचमी बत यूजा** — × । पत्रस० ७ । आ० १० × ६ इखा । भाषा सस्कृत । विषय— यूजा । र०नाल × ले०काल । पूर्यों । वेष्टन स० १६७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बूदी ।

६२५३. **ए चमी बत पूजा**  $-\times$  । पत्र स॰ ६। ग्रा०१२ $^{\circ}$ ×४<sup>३</sup> इञ्च। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। २०काल  $\times$ । लेकाल म॰ १६२४ पौष मुदी २। पूर्ण। बेष्टन स॰ ६४ ६४। **प्राप्ति** स्थान – दि॰ जैन मंदिर नीमनाथ टोडारायमिह (टोक)

विशेष चाटमु मे हु गरसी कासलीवाल वासी फागी ने प्रतिलिपि की थी।

६३५४. पंचमी बतीद्यापन - हवं कर्रयास्म । पत्रस॰ ६ । प्रा॰ १२ $\frac{1}{2}$ ४६ इच । माषा— संस्कृत । विषय पुजा । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्न सं॰ १०१ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पचायती मन्दिर करोली ।

६२.४४. पं**षमी वतोद्यापन**— × । पत्र स॰ ६। झा॰ ११.४४ है इञ्च । माबा सस्कृत । विषय-पुत्रा । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स॰ ३५१ । प्राप्ति स्थान— म॰ दि॰ जैन मन्दिर सजनेर । ६३४६. पंचमी ब्रतोद्यापन—× । पत्रसः ४ । ग्रा० १०३४६ दखा । भाषा सस्कृत । विषय पुजा रब्काल × । लेब्काल × । पूर्ण । बेब्रुनसंब् ७३७ । प्राप्तिः स्थान—भव्यादिकं जैन मन्दिर प्रजारे

विशेष-महात्मा नियलाल किशनगढ वाले ने धजमेर मे प्रतिलिपि की थी।

६३५७ पंचमी बतोद्यापन—  $\times$  । पमत० ६ । स्रा० ६ $\times$ १ै दश्व । भाषा-सम्प्रत । विषय-पूजा । र०कान  $\times$  । ले०कान  $\times$  । पूर्ण । बहुन स० २०६ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर राजमहन (टोक)

८३५८, **पद्मरो ततोद्यापन**— X । पत्रत०७। द्या० १०१ X१, डब्ब । भाषा-पस्कृत । विषय पूजा । र०काल X । लेक्काल X । पूर्ण । वेष्टनस०१७/३४ । **प्राप्ति स्थान** - दि०जैन मीमामी मुख्य करोली ।

६२५६. पंचमी द्रतोद्यापन —  $\times$  । पत्र स० १० । घा० १ $\times$ ४ है इन्त । भाषा संस्कृत । विषय पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६७ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पत्रायनी प्रतिक कोती ।

 $\mathbf{c}$ ३६० पंचिमी व्रतोद्यापन पूजा- नरेन्द्रसेन । पत्रसः ११ । ब्रा० ११४४) इत्य । क्रामा-संस्तृत । क्राम्य-पृजा । राज्यार  $\mathbf{x}$  । सेन कान  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । वेष्ट्रन म०३७-१६४। प्राप्ति स्थान—दि० केन मिन सेमान्य टोडारायिन्द्र (टॉक) ।

विशेष - ज्वाला मालिनी स्त्रोत, पूजा एव आरती है। ज्वालामालिनी क्रियम की देवी है। पूजा तथा आरथी नरमेन कुत भी है जिनका नाम मनुजेक मेन भी है।

द ३६१. पंचमी बतोद्यापन पूजा—हर्षकींति । वत्रस० ७। घा० हर् ४६ उचा भाषा— सस्कत । विषय-पूजा । र० काल ४ । त्र० काल स० १८०८ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २८४ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर ववलाना (बूधी)

द3्द२ द्रतिसं०२ । पत्र न०६ । र०काल ४ । ले० कान स०१८२१ । पूर्ण । बेटन स० ६० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

द ३६३. पंचमी वतोद्यानन विधिः -- × । पत्र स०७ । स्रा० १०×६ इ.च । भाषा— सम्कृत । विषय पूजा । र०काल ४ । ले०कान स० १८७४ माघ मृदी १ । पूर्ण । वेष्टन स०१७६ । प्रास्ति स्थान-- वि० जैन मन्दिर फतेहपुर गेलाबाटी (भीकः)

विशेष-एक प्रति और है।

६३६४. पंचमेल पूजा—सुम्रचन्द्र । पत्रसंग् १४ । आ० १२१ ४ ७१ इञ्च । नाया—सम्कृत । विषय-पूजा । २० काल ४ । ले० काल स० १९१४ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० १३६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रयदाल पत्रायती मंदिर असवर ।

विशेष - नधीरा।पुरा वासी बंसतलाल ने लिखी थी।

६३६५. संचमेक पूजा—पं ० संगादासः । पत्र स०१३ । धा०१०४४ है इञ्च । भाषा— सस्कृतः । विषय—पूजाः र०कालः ४ । ते० कालः ४ । पूर्णः । बेहन सं०२४ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिरं प्रविनन्दनं स्वामी बृदीः । द ३६६. पंचिने रूपुत्रा—म० रस्तचंद । पत्र म० १। प्रा०१२ ४ १ इखा । भाषा-सस्तृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । लेबकाल स० १०६० पोष सुदी १ । पूर्णा विष्टनस० ४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रादिनाय व दो ।

विशेष - सर्वाई माघोपूर मे जगतसिंह के राज्य मे लिखा गया था।

द३६७. प्रतिसं० २ । पत्र सं० ४ । घा० ११ है ४ ६ है इच्छा ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सं∙ १३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बुदी ।

म**२६म. प्रतिसं० ३।** पत्रस० ४। ग्रा० १२४४ इच्चा ले०काल सं० १≖३म। पूर्णा ६ वेष्टनसं० १४२। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर नागदी ब्रुवी।

६३६६. प्रति सं० ४ । पत्रस०६ । ले०काल सं०१६५६ । पूर्ण । वेप्रन म० ५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बनवा ।

विशेष -- दोनो ओर के पुठ्टे सचित्र हैं।

**८३७०. पंस्तेरु पूजा**-imes। पत्रसं० २ । द्या $\circ$ १० $^1$ १× $^1$ १ इला। भाषा–सम्कता विवद-पूजा। र०कालimes। लेकालimes। पूर्ण। बेवन स०३७२। **प्राप्ति स्थान** — म०दि० जैन मन्दिर अजनेर।

दश्धः पंचमेरु पूजा- $\times$ । पत्र स०२-६ । आ०६ $\times$ ४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पूर्ता। र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपृष्णं । वेष्ट्रन म०६३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायनी मंदिर दूती (टोंक) ।

६२७२. पंचमेश पूजा — टेकचन्द्र । पत्र स० ७ । आः ११ $\colon \text{X}$  ६ छ । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय - पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन मं० २४५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर पारुवेनाथ इन्दरगढ (कोटा) ।

द ३७३. पंचमेरु पूत्रा—डालुराम । पत्र स०२४। आ०११-६ इन्त्रः । भागा हिन्दी पद्य । विषय~पूजा। र०काल स०१८७६। लेकाल स० ४। पूर्णं। बेष्ट्रन स०११६-८६। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टारु)।

६३७४. **एंचमेरु पूजा— दघानतराय** । पत्रस॰ ३। घा॰ ७ॅ४६ इखा भाषा -हिन्दी। णिषय -पूजा। र०काल ४। ले०काल ११४२। पूर्णा। बेष्टन स०६६६। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

**६३७६. प्रतिसं०७।** पत्र सं०२। ले० काल 🔀 । पूर्णं। बेष्टन सं०२०। **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन पचायती मन्दिर मरतपुर।

म दे**७७. यं चमेर पूजा — मुखानंद**ा पत्र सं०१६। मा०१०} ×७ इ.चा भाषा - हिन्दी प**द्या** विषय - पूजा। र०काल ×। ले० काल स०१६३२ कार्तिक बुरी १४। पूर्णे। बेष्टन स०१३६। प्रास्ति स्थान — दि० जैन मग्रवाल पंचायती मन्दिर मलदर। विशेष - थी रिमकलाल जी ग्ररूपगढ वाले ने स्थीवक्स से प्रतिलिपि करवायी ।

स्वेधनः **पंचमेर पूजा**— × । यत्र स० ३६ । घा० १×६ ह**वा** । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । रुकाल × । ले० काल १८७७ । पूर्णः । वेहनस० १३६ । **प्रास्ति स्थान**— म० दि० जैन मन्दिर ध्वतेर ।

स्टरे**९६. पंचमेरु पूजा-** × । पत्रसं∘ ३३ । द्या० १२ × स इञ्च । भाषा-हिन्दी पदा। विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १६७१ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रकाल मन्दिर नेणवा।

विशेष-मोनीलाल भौसा जयपूर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

६३८१, पश्चमेर पूजा विधान—×। पत्र म०४४। ग्रा०१४६ इत्रा। भाषा-मस्त्रत। पिषय—पूजा।र०काल ४। ते०काल ४।पूर्ण। बेट्रन स०२४६। **प्राप्ति स्थान**—- दि० जैन महिर कोमसनी कोटा।

दद्दर्शस्थान पुत्रा विधान—टेकचन्द्र । पत्रसः ४६। झा० १११ ४४ उचा । साधा-हिन्दं। विध्य—पुत्रा ।२०कात ४ । लेक्कान स० १६४४ । पूर्णः । वेष्ट्रनसः० ५७२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर सम्बन्ध जयपुर ।

६३६३. पंचमेरु मंडल विधान $-\times$ । पत्रस $\circ$  ४४। ब्रा $\circ$  १ $^{\circ}$   $\times$ ७ इख। भाषा-हिन्दी। विध्य-पूजा । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन ग०२६६। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मिद्दर बोरसनी कोटा।

द ३ द ४. पंचमेरू तथा नन्दीस्वर हीपा पूजा—पानमल । पत्र म० ११ । प्रा० ८ १४ ६ इ.च. । भाषा- िन्दी । विषय-पुजा विधान । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । बेप्रन स० ६५४ । प्रास्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--प० शिवजीराम ने महेश्वर में प्रतिलिपि की थी।

६३६६. पद्मावती देव कल्प मंडल प् जा-इन्द्रनिट । पत्रतं १६ । माया-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४७ । प्रास्तिस्थान--दि० जैन गंबावती मन्दिर भरतपुर ।

 $\pi$ ३८७. **षद्यावती पटल** $-\times$ । पत्रतं॰ ३२। ग्रा॰ ७ $\frac{1}{2}$ imes६६ स्व । माया-संस्कृत । त्रवय-पूजा । र॰काल imes। से॰काल imes। पूर्ण । वेष्टन सं॰ ८२६ । प्राप्ति स्थान-भ॰ दि॰ जैन मन्दिर सबसेर । विशेष-- गुटका भाकार मे है।

ददेदद, पद्मावती पूजा—टोपसा। पत्र सा ०३७। ब्रा० ६×५ है इंच। प्राथा सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×ा ले० काल स०१७४६। पूर्मा। वेट्टन स०३१०-११७। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुँगरपुर।

६३६६. पद्यावसी पूजा —  $\times$  । पत्रसः २ । माः १२ $\times$ ६ इश्व । माया — सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स॰ १०६७। पूर्ण । वेष्टनसं॰ १४२६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर स्वलेर अण्डार ।

द ३६०. पद्मावतो पूजा — × । पत्र स० २६ । घा० रुहै ४५ इच । भाषा⊸गस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ने० काल × । पूर्णै । वेष्टन स० १३७३ । प्राप्ति स्थान— २० दि० जैन सिन्दर अजमेर भण्डार ।

ह्न **६१. पद्मावती पूजा**— × । प्रभातः २२ । बारु हैं ४४ है इखा । भाषा- ५ स्कृतः । विषय - पृजाः रञ्कालः × । लेञ्कालः × । पूर्णः । वेष्टन सः १०६३ । **प्राप्ति स्थात**— भ≉दिञ्जैन मन्दिर क्रजनेर ।

 $\mathtt{c3e}$ २. पद्मावती पूजा—  $\times$  । पत्रस० २२ । ग्रा०  $\mathtt{c}^1_i \times \mathbb{Y}^2_i$  इला भाषा पस्ता । प्रकाल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मिर्पर फतेहपुर शिकर) ।

विशेष-जैनतर पूजा है।

६३६३. पद्मावती पूजा— ×। पत्रस० १४ । आ॰ १३५४६ दे इखा । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । राजका ×। लेजकाल स० ११५६ । पूर्ण । बेष्टन स० २१ । प्राप्तिः स्थान—र्विट जैन ध्रपताल मन्दिर नेपाता ।

६३६४. पद्मावती पूजा— $\times$ । पत्रस०२६। स्रा०७ $^3$   $\times$ ५ $^3$  इल्ब । शाया-सस्वत। विषय-पूजा। २० काल  $\times$ । त्रं काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०१६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वेलावाटी (सीकर)।

विशेष-वांक्षागीत (हिन्दी) ग्रीर है।

६३९%. पदाबती पूजा विद्यान— X । पत्रतः २२ । या॰ १० $\frac{1}{2}$   $\times$ १ $\frac{1}{2}$  रूप्तः । स्मान्तः । देशकाल X । से॰काल X । पूर्णः । बेष्टनसं॰ ५४६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटक्षियों का द्वारपुर ।

६३६६, पद्मावती पूजा स्तोत्र $-\times$ । पत्र स०६। प्रा०१० $\frac{1}{2}\times \frac{1}{2}$  इच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । र०काल $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२१ । प्राप्ति स्थास—दि० जैन पार्थनाय चौपान बुंदी ।

... ६२९७ पद्मासती संडल पूजा- × पत्रसं० १२। सा० १०४४ हस्त्र। सामा-सस्हत, विषय-पूजा। र०काल × । से०काल × । पूर्ण। वेष्टन म०१३६७। प्राप्ति स्थान-भ०१० जैन सन्दिर कामेर। ६३६६. पद्मावती स्रतः उद्यापन— $\times$ । पत्रसः ७४-६५। भाषा सस्कृत । विषय-पूजा। रे० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टनसः ४१३-१५४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिरः कोटडियों का हु गरपुरः।

६६९६. पत्य विचार—  $\times$  । पत्र म० १ । भाषा-सस्कृत । विषय — पूजा । २०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ७६६ । प्राप्ति स्थान— दि० जन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

प्रकार तस्य विधान $-\times$ । पत्र स॰ १। ग्रा॰ १२ $\times$ १ इन्छ । भाषा हिन्दी । विषय-पूजा। रुकाल  $\times$ । ते॰ काल  $\times$ । पूर्वी। वेप्टन स॰ ६७। प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मंदर बोरसली काल।

म्४०१. यस्य विधान $-\times$ । यत्र स०६। म्रा०१ $\times$ ४६२व । भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा। र० काल $\times$ । ते० काल $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्न स०१४६४। **प्राप्ति स्थान**-म० दि० जैन मन्दिर भाजेश ।

६४०२. पत्य विधान पूजा—विद्यासूष्यग् । पत्रम० ६। म्रा० १० $\times$ ४ इन्छ । भाषा—सस्कृत । निषय—पूजा । ७० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन म० १६४ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर दवलाना (ब्रुदी) ।

६४०**३. परुपविधान पूजा**— × । पत्रस० ७ । द्या० ११हें ×६ इ.च. । भाषा सम्कृत । विषय-पूजा । प्रकाल × । लेक्काल स०१६६६ । पूर्ता । वेष्ट्रत स०१३४४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर ग्रजीवर ग्रवार ।

६४०४. परय विधान पूजा $-\times$ । पत्रस्तुः  $\times$ । प्राप्तः १० $\frac{1}{8}$ × $\frac{1}{2}$  इत्त्रः । भाषां सस्कृतः। विषय-पूजाः। र० कालः  $\times$ । ल० कालः  $\times$ । पूर्णः। वय्टन स० १२४६ः। प्राप्ति स्थानः —म० दि० जैन मन्दिर प्रजनेरः।

म्४०**५. परुष विधान पूजा**—४ । पत्रस० मा श्रा० ११४४ हे द्वा भाषा-सम्हत । विषय पूजा । र० काल ४ । से०काल स० १८६० श्राध्विन बुरी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रनम० १४५ । **प्राप्ति-स्या**न—१४० जेन मन्दिर श्राविनाथ बुर्धा ।

क्ष४०६. परुष विधान पूजा-म० रत्निति । पत्रस्व ० । प्रा०११-४ इव । माषा-सस्कृत । विषय-पृत्रा । २०काल × । २०काल स०१ व्यथ् । पूर्ण । बेष्टनस० ३६१ । प्राप्ति स्थान-म० दिव जैन मन्दिर मुजमेर ।

६४०७. प्रति स० २ । पत्र स० १४ । प्रा० १२imes५ ६%। ह्या । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ६५/६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

क्ष४०६. प्रति सं० ३ । पत्रस० ११ । घा० ११×४ इ'च । ते०काल स० १६२७ । पूर्णः । वेष्टन स० २७६/३४३ । प्राप्ति स्थान --- दि० जैन संभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--मं ०१६२७ वर्षे भादवा बृदि सार्तामदिनो सागवाडा सुनस्थाने श्री प्रादिनाथ चैत्यालये सातिम बृहस्यांतवारे श्री मूल सपे घाचार्य श्री यक्षकीति प्राचार्य श्री गुराचन्द्र इ० पूजा स्वहस्तेन लिखित ।  $\alpha$ ४०६. प्रतिसं० ४ । पत्रस०७ । प्रा० ६ $\times$ ६ इला । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल म०१८५६ श्रावरा मुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स०५४ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ व थे ।

८४१०. प्रतिस० ५ । पत्रस० ११ । ग्रा० ११ ४४ है इला । ते•काल स० १६४० आवग सुदी ११ । पूर्ण । बेटुन स० ४६ । प्राप्टित स्थान-—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष-मालपुरा में ब्राचार्य श्री गुगाचन्द्र ने प० जयच द में लिख्या था।

म**४११. प्रतिसं० ६** । पत्रस०११ । ष्रा०१०×४ इल्ब । ले०काल × । पूर्ण । वेस्टन स**७** २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमञ्जल (टोक) ।

विशेष-- प्रति प्राचीत है।

क्ष**४१२. परुष विधान—शुभचन्द्र** । पत्र स०५ । प्रा० १० $\frac{2}{7} \ge \sqrt{\frac{2}{3}} \ge 3$  इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रुकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । पेरुटन सं०४६० । **प्राध्ति स्थान**—-भ० टि० जैन सन्दिर श्रवनर ।

**८४१३. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०७ । मा० १६×५ इच्छा ले० काल स०१६०८ ज्येष्ट सुदी र । पूर्णा वेष्ट्रत स०६५ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन रुप्रपाल भदिर उदयपूर ।

विशोध पडित जीव घर ने प्रतिलिपि की थी।

**८४१४. प्रतिसं० ३** । पत्रम० ६ । खा० १० ृं ४ ४<sup>९</sup> ६ च । ले० काल ४ । **अपू**र्ण । तेष्टन स० ३४४ । **प्राप्ति स्थाल**—दि० जैन स्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — प्रति प्राचीन है।

क्ष**४१५. प्रतिसं०४।** पत्र म० ७ । प्रा०११×४५ दश्च । वेश्काल × । पूर्ण । वेष्टन स०६२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

**८४९६. प्रतिसं० ४ ।** पत्र स० ११ । स्रा० १० ४ ५} इल्ब । ले० काल स० १६५८ । पूर्गा । वेष्टन स० २०० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन स्रग्रवान मन्दिर उदयपुर ।

विशेष— प्रत्येक पत्र मे ११ पक्तिया तथा प्रति पंक्ति में ४२ ब्रक्षर हैं। उद्यापन विधि भी दी हुई है।

द्वेष्ठ प्रति सं०६। पत्र स०१०। ले० काल 🔀 । पूर्णं । बेष्टन स०२७४। प्राप्ति – स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

८४१८. प्रति सं०७ । पत्रसं०६ । ने०काल imes । पूर्ण । वेष्टन स०२७७,३४४ । प्रास्ति-स्थान---दि० जैन सनवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — गुरु श्री स्रमयचन्द्र शिष्य शुभ भवतु । दवे महारायजी लिखित ।

द्ध**४१६. प्रतिसं∘ ६ ।** पत्रस० ६ । ले० काल स०१६४३ ज्येष्ठ बुटी ४ । पूर्ण । बेष्टनस० २७६/३४४ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

बिशेख—प्रथम पत्र पर एक चित्र है। जिसमें दो स्त्रिया गव एक पुरुष लड़ा है। सामे दाली स्त्री के हाथ में एक कमल है। मेबाडी पगड़ी लगाये पुरुष सामने लड़ा है। वह भी एक हाब को ऊचे उठाये हुए है। ब्रोडनियों के छोर लंबे तीसे निकले हुए हैं।  $\mathbf{x}$ ४२१. पत्य विधान स्रतोद्यापन एवं कथा — श्रृतसागर । पत्र सं० १८८ । प्रा॰  $\mathbf{x}^1_i \times \mathbf{x}^1_j$  इच । भाषा—सङ्क्रत । विध्य-पूजा एवं कथा । र० काल  $\mathbf{x}$  । ले० काल सवत् १८८० । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ १०६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पदायती मन्दिर दनी (टोंक) ।

क्षेत्र १. पत्य यत पूजा — × । पत्र स० २ । मा० १०×४ इ.च । भाषा न्यस्त्त । विषय -पूजा । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ३७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रजमेर भाषारा

 $\mathbf{c}$  ४२२. **पश्चपरवी पूजा— बेणु बह्मचारी।** पत्र स०७। मावा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्णं। बेल्टन स० ४६६। **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन प्रवायनी मन्दिर भरतपुर।

विशेष - प्रारम्भ मे ज्ञान बनीमी ग्रादि हैं।

दोज पत्रमी श्रप्टमी एकादशी तथा चतुरंशी इन पाच पर्वों की पूजा है।

८४२३. पार्श्वनाथ पूजा —वेवेन्द्रकीति । पत्र सः १४ । आ० ८४६३ ६ज्व । भाषा-सस्कृत । विषय —पूजा । रे०काल ४ । ले०काल सः० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन सः०११४३ । प्राप्ति स्थान — भः० दि० जैन मदिर खजार ।

विशेष-अमरावती मे प्रतिलिपि हुई थी।

क्षेत्रेष्ठ, पाश्चेताय पूजा—वृदांवतः। पत्रस्त० ३ । छा० १२%६ इत्या । मापा-हिन्दी पद्य । विषय-एका । १००काल 🗴 । लेकाल स० १६३२ । पूर्ण । वेष्टत स० १८६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फोटपर गोवाबाटी (मीकर)

६४२५. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । धा० ६ रे ४६ इश्व । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेहन स० ६१ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

८४२६ पिडविष्ठाद्धि प्रकरणा— × । पत्रस० ४ । घा० १० ४४ डचा। भाषा-सस्त्रन । विषया विशास । रेक्सल × । लेक्सल × धपूर्णे । बेष्टनस० ४०० । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन सन्दिर स्रजीतः

स्थर**ः, पिष्डविशुद्धि प्रकररण**—×। पत्रस्य मा प्राप्त । विषय-पुता । रवनान × । लेक्सल सव १६०१ झपाड बुरी १ । पूर्ण । वेष्ट्रन सव १३२ । **प्राप्ति -**स्थान—दिव जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायांसद्व (टोक) ।

विशेष--प॰ सन्तिकत्रण ने महिननगर मे प्रतितिपि की थी।

८४२६. पुष्पाह्वाचन— × । पपसं०६। ग्रा०१०×६ इच । भाषा —सस्कृत । विषय-विषात । र०काल × । वे० काल × । पूर्ण । बेहनसं० ३४७-१३२ । प्राप्ति स्थात —वि० जैन मन्दिर कोटडिगों का टुगरपुर ।

 $\mathbf{x}$ ४३९, पुष्पाह्वाचन $-\times$ । पत्रस० २ । प्रा० २ $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ इक् । भाषा-संस्कृत । विषय - विषात । र० कान  $\times$  । से०काल स० १८६४ चैत सुदी १५ । पूर्ण । बेष्टनस०  $\times$  । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर राजमङ्ग (टोक)

मध्ये २. पुण्याह वाचन— ४ । पत्रस० ७ । प्रा० १० १,४४) इञ्च । भाषा सस्हत । विषय-विभाग । २०काल ४ । ले०काल स० १८८१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २७१ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मन्दिर सक्कर जवपुर ।

विशेष - प॰ केशरीसिंह ने शिष्य ने प॰ देवालाल के लिए प्रतिलिपि की था।

६४३३. प्रतिसं० २ । पत्रम० ६ । मा० ११४४ इच्छ । ले०कान सन् १७७३ । पूर्ण । वेष्ट्रधसं० २७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

क ४३४. पुष्याह्वाचतः — × । पत्र स०२६। प्रा॰ ६२ ४४ इच । साधा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०कालः × । लेक्कालः स०१८६४ पोष बुदी११। पूर्णः । वेष्टनसं०१४२ । **प्राप्ति स्थान** दि०**र्वनः** मन्दिर पाष्ट्रनाथ चौगान वृदी ।

- दंश्य, पुरंबर व्यतोद्यापन - सुरेग्डकीर्ति । पत्रसः २ । ग्राः १२ $\times$ ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १८२७ । ले•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ५६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पत्रापनी भरित दुनी (टोक)

विशेष -- नेमीचदजी के पठनार्थ प्रतिनिधि हुई थी।

क ४३६ पुरस्दर व रोद्यापन — × १ पत्रसः २। मा० १० रे×१र्ड ६ व । भाषा न्सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल × । दे०काल स० १११३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १८८ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर प्रामिनस्त स्वामी व दी ।

**६४३७. पुण्यमाला प्रकररा** —  $\times$  । पत्रमः २२ । प्रा० १२ $\times$ ४ उत्त । भाषा प्राकृत । विषय-विधान । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ ४२१/२४६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - कंशवराज की पुस्तक है। प्रति प्राचीत है।

८४३८ पुरुषांजिल जयमाल $-\times$ । पृत्तः ७ । मा॰ १० $^1$ ४ $^1$ १ $^2$ = । भाषा-हित्तै । विषय-पृत्रा । र० कान  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टनसं०११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

६४४०. पुष्पाञ्जाल पूजा—भरु महीचन्दा पत्र सं०५। म्रा०१२ ४६ इचा भाषा— संस्कृत । विषय-पूजा र रकाल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ३०४। प्रास्ति स्थान-दि० जैन पार्वनाथ मन्दिर चोगान वृदी ।

६४४१. पुष्पाञ्काल पूजा— म० रस्तबन्द्र । पत्रसः १७ । घा० १० 🗙 १ स्था । माणा— संस्कृत । विषय-पूजा । रक्कान 🗶 । लेक्कान संव १६४६ । पूर्ण । बेष्ट्रनसंव ३७६ । प्राप्ति स्थान— म० दिव जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष - पट्टरण सहर मध्ये शिपिकृतं ।

क्ष४४२. प्रतिसं०२ । पत्रस०६ । प्रा०१०८४ र्वे इश्वः । ले० काल ४ । पूर्ण । बेहनस० ४७७ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मदिर अजमेर ।

**८४४३. पुष्पा-ज्जाल पूजा** —  $\times$  । पत्र स० १ । ग्रा० ११ $\times$ ४५ इस्त्र । भाषा सम्कृत । विषय पूजा । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर बोरससी कोटा ।

६४४४. पुष्वाञ्जलि पूजा—  $\times$  । पत्रम ० ६। म्रा० ११ $^1_1\times$ ५५ इन्छ । भाषा-सन्भृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  ने० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० १५ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन मन्दिर प्रादिनाय स्वामी मानपुरा (टोक)

६४४५. पुष्पाञ्जलि दतोद्यापन—गगादासः । पत्रतः ५ । घा०१२४७ इच । भाषा-संस्कृतः । विषय-पूजा । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्णः । बेष्टन स० १३५ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन सन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

चंड४६. प्रतिसं०२ । पत्रस०६ । आर०१०ः¦४५ इश्वासे०कालास०१७५३ । पूर्णा केष्ट्रसं०१०१ । प्राप्तिस्थान---दि० जैन मस्टिर राजमहल (टोक)

विशेष-इति भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य प० गंगादास इत श्री पूष्पाजिल व्रतोद्यापन सपूर्ण ।

सवत् १७५३ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्तमाने आण्यन मासे कृष्णपक्षे दशमी तिथौ शनिवासरे लिखिता प्रतिरिय । सघथी उनराज मथुरादास पटनार्थ । श्री श्रमदाबाद मध्ये निखित । पां० कुणल सागर गींगा ।

द्व४४७. प्रति सं० ३ १ पत्र सं०१३ । आ० ६×४ इञ्च । ले०काल स० १८७६ वत बुदी ६ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ मालपुरा (टॉक)

६४४६. प्रति स०४ । पत्रसं०१० । ग्रा० १×४ इल्डा ले∙काल × । पूर्णः। बेष्टन सं∙ ३१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

द्ध४६, प्रति सं०५ । पत्र सं०१६ । घ्रा०६४६ खाले०काल ४ । पूर्णा । वेष्टन सं० ६२ । प्राप्ति स्थान—(द० जैन पवायती मन्दिर यूनी (टोक)

द्ध४५०. प्रति सं०६ । पत्रसं० ६ । मा० १२×५ है व । ले० काल × । पूर्ण । वेहनसं० १०७ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पाश्वेनाथ मन्दिर चौगान वृदी । स्थ्रभ्रः पुरुषांजलि कातोद्यायन टोका— × । पत्रसुक्ष । साक १२ ४ ६ इचा। माया-संस्कृत । विषय पूजा । रक्काल × । लेक्काल सक्१६६१ सावन बुदी २ । पूर्ण । बेष्टनस्क१३४७ । प्राप्ति स्थान — भक्टिक जैन मन्दिर स्रजनेर ।

द४५२. पूजाध्टक — ज्ञानसूच्या । पत्रस० १४ । घा० १२ ४४ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुजा। र•काल ४ । ले०काल स० १५२८ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४८/३७१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

## ग्रन्तिम पृ!६५का---

इति भट्टार्येक श्री भुवनकीर्ति शिष्य मुनि ज्ञानमूष्या विरचिताणा स्वकृताष्टक दशक टीकामा विद्व-अजन बल्लभा सजाया नदीण्यर द्वीप जिनालयार्चनवर्णागीय नामा दज्ञानोधिकार ।

## प्रशस्ति --

श्रीमद् विकमभूषराज्य समयातीत । सवत् १५२८ वसुद्रीडिय श्रोती समिनदायने गिरिपुरे नास्रेप-वैत्यालये । श्रीति श्री श्रुवनादिकीति मृतियस्तस्याधिर । सेवितास्थो ज्ञासंबसूमसःमृतिन। टीवर ग्रुभेय कृता ।

म**४५३. प्रतिसं० २ । पत्र**सं० २० । धा० १० × ४६ इ.च । ले**०काल** । धपूर्ण । वेस्टनस**० ४४**६/ २**=६ प्राप्ति स्थान**— दि० जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष-प्रति जीखं है एवं ग्रन्तिम पत्र नहीं है।

दर्थर्थः पूजास्टक — हरवाचन्द्रः पत्रस० ३ । भाषा -हिन्दी । विषय पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टुन म० ६६४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन पचायती मदिर भरतपूर ।

६४५५. पूजास्टकः  $\times$  । पत्र स० ४ । छा० ११ $\times$ ६ इश्व । भाषा- हिन्दी ।विषय- पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टत स० ६२१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन महिर सक्कर जयवर ।

विशेष -- म्रादिनाथ पूजास्टक, ऋषभदेव पूजा तथा भूघरदास कृत गुरु वीतनी है।

**८४५६. पूजा पाठ** -- × । पत्र स० ४। भागा सस्कृत । विषय पूजा । र०काल ≺ । **ले∙काल** × । श्रदमंग । बेट्न स० ४४ ४५० । **प्राप्ति स्थान**ादि जैनसभवनाक्ष मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

द्र४५७. पूजापाठ संग्रह × । पत्रस० १४ । ग्रा० १२ × ५३ इ.स.। भागा — हिन्दी । विषय— पूजा। र०काल × । ले०काल स० ११३८ । पूर्ण । बेष्टन स० १४४६ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

प्रथम पूजापाठ सम्रह्— × । पत्रस० ७० । मा० ६४१ इञ्च । जापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १४४४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मदिर मजमेर मण्डार ।

विशेष--दशलक्षरा पूजा तथा घोडवकाररा पूजा भी है।

६४५६. पूजापाठ संग्रह— $\times$ । पत्र तं०५३। प्रा०७ $\times$ ५ इञ्च। प्रापा हिन्दी। विषयपूजा। र०काल  $\times$ । लेक्काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० १२/८८। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर
भादवा (राज०)।

 $\mathbf{x}$ ४६०. **पूजापाठ संग्रह**—  $\mathbf{x}$  । पत्रस० २१६ । ग्रा० ६ $\mathbf{x}$ ७ इचा । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\mathbf{x}$  । ले० काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहणबी मिदर नैशावा ।

विशेष - सामान्य नित्य नैमित्तिक पूजाओ एव चौवीसी तीर्थंकर पूजाओ का सग्रह है।

े विशेष नवयहस्तोत्र एव अन्य पाठ हैं।

८४६२. यूजापाठ संग्रह—  $\times$ । पत्र स०७०। ग्रा०६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इ.च। भाषा-सन्ध्रत । विषय-पूजापाठ । १० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेटन स० ३१०-१४७ । प्रास्ति स्थान — वि० जैन मन्दिर कोटिजियो का द्वारपूर।

विशेष-विभन्न पूजाएं एव स्तोत्र है।

८४६३. पूजापाठ संग्रह्—  $\times$  । पत्रम० ३७ । सा० ९ $\times$ ६१ द्वतः । भाषा- मन्द्रन । विषय- सम्बद्धः र० काल  $\times$  । स्वकाल  $\times$  । स्वपूर्णः । वेग्टनम० २३२-१२ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

विशेष - जिन सहस्रनाम (जिनसेन) संश्वती पूजा (त्र॰ जिनदास) एवं सामान्य पूजाओं गा सप्रह है।

८४६४ **पूजापाठ संग्रह—** × । पत्रम०१८ । **ग्रा० ६**१४७ इचा । मापा —िहादी सम्मा। विषय-संग्रह । र०लाव × । वे० काल स० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स० २३८ । प्राप्तिः स्थान –दि० जैन मन्दिर कोऽियों का हुगरपुर ।

विशेष--२७ पूत्रा पाठी का सग्रह है।

द्व४६६, पूकाषाठ सम्रह-— × । पत्र मं∘ १०१ । मा० ७×६ है इश्व । भाषा-हिन्दी सस्क्रत । विषय-पूजारनीय । रण्काल × । लेण्काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २३०-१२४ । **प्राप्ति स्थान**—विश् जैन मन्दिर कोटिजयो २। द्वगरपुर ।

विशेष---भनामर स्तोत्र भाषा टीका तथा मत्र ऋदि भादि सहित हैं।

८४६७. पूजा पाठ सग्रह्म-  $\times$  । पत्र सं० १३२। मा० ८ $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$  इ व । माषा - सस्कृत । विषय-पुजा पाठ । र० कान  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ३२६-१२७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर ।

विशेष-विभिन्न प्रकार के स्तीत्री एवं पूजा पाठों का संप्रह है।

द४६८. पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रसं० १६ । मा० द×े इञ्चा भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र०काल × । ले० काल । पूर्ण । देष्टन सं० २०७-द४ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वंगरपुर । ८४५६. पुजा पाठ संग्रह— $\times$  । पत्र स०७० । बा० ८ $\times$  ४ $\xi$  इख । भाषा-सस्क्रन-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४३०-१६३ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रतिर कोटडियो का द्र गएए ।

**८४७०. पूजा पाठ संग्रह** । पत्रस्व ४६ । घा० ७ $\times$ ६ इन्च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पुजा पाठ । रब्कान  $\times$  । ले॰ काल $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस्व ४६६-१६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोर्टाडगो का इनगपुर।

क्षप्रश्र. पुजा पाठ संग्रह्ण $-\times$  । पत्र स०१११ । था० १० $\times$ १ इश्व । भाषा-सरकृत । विजय-सगद्र । २०काल $\times$  । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टनसं०५११ । प्रास्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर कोटदियों का हुपरपुर ।

८४७२ पूजा पाठ सग्रह—× । पत्रस० २३ । शः १२×६ इखा । आपा-हिन्दी प्रष्ठ । विषय-सग्रह । २० काल × । लेकाल स० १६१४ कास्तुम कुने १२ । ूम्स् । वेष्ट्रन म० १२४ । भीदिर स्थान—दि० जैन मन्दिर फतहपुर मेलावाटी सोकर ।

क्षप्रकृत, पूजा बाठ संग्रह् —  $\times$ । पत्रत० ४६ । छा० १३ $^1$  $\times$  क $^1$  इञ्च । भाषा-सहत्त-हिन्दी विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ते क्काल स० १६६७ पीप बुदी १० । पूर्ण । बेष्टनसं० ११३ । प्रश्नेति स्थाफ — जैन सन्दिर पत्रेहपुर भेलावादी (सीकर)

विशेष भाग्तवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा लिखाया गया है।

८४७४. **पूजा पाठ संग्रह**—× । पत्र स॰ ८०। घा॰ ६×६ है इश्व । **भाषा**-सस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन पर्यायती सन्दिर करोली ।

विशेष--मामान्य पूजा पाठो का सम्रह है।

क्षप्रथः पूजा पाठ संग्रह्— $\times$  । पत्रतः ६२ । सा० क्रे $\times$ ्रेप्रदेख । माधार्णहन्ती । विषय— संग्रह । र० काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० १८५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मदिर करीली ।

द्धपुर, पूजा पाठ संग्रह— × । पत्रस० ६ से ४८ । आ० ७२ ४६ है इच । भाषा-हिन्दी संरहत । विवय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । सपूर्ण । वेष्टन स० ७७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पचारती मन्दिर करीनी ।

विशेष --गुटका साइज है।

६४७७. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्रस० २३ । घा० १३ × ७ है इश्वा । माषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-—पूजा । र०काल × । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टनसं० ४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रवासती मन्दिर करोजी ।

विशेष--- निमित्त नैमितिक पुजाबो का सम्रह है।

६४७६. पृश्चा पाठ सग्रह—imes । पत्रस० ५२ । भागा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल imes । अपूर्ण । बेष्टन स० २६२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर ।

८४७६, **पूजा पाठ संग्रह**—>। पत्र स० १७२ । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्न स० ६१ । प्राप्ति स्थान—जपरोक्त मदिर ।

८४८०. **पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्रस० ७२। माषा−हिन्दी सस्कृत । विषय-पृजा । र०काल × । । ले०काल × । पूर्ण । वेटत स० १४। **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर।

 $\mathbf{x} \mathbf{x} \mathbf{c} \mathbf{x}$ . पूजा पाठ संग्रह  $-\mathbf{x}$ । पत्र स० १०६ । भाषा — हिन्दी सस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\mathbf{x}$ । लेकाल  $\mathbf{x}$ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रायनी मदिर भरतपुर ।

८४६२. **पूजा पाठ संग्रह**— $\times$  । पत्र स० १०७ । भाषा-हिन्दी, सन्कृत । विषय-सग्रह । र०काल  $\times$ । ने०काल  $\times$ । पूर्ण । बेरटनस० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पानायनी मन्दिर भरतपूर ।

**८४८३. पूजा संग्रह— x** । पत्रस**० १४२** । म्रा० १० $\times$ ६े इश्व । भाषा हिन्दी सम्ब्रत । विषय-पुत्रा पाठ । र०काल  $\times$  ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३८० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोरसली कोरा ।

**८४८४. पूजा पाठ संगह** — ४। पत्रस• ६३। घा॰ ६¦>४५ व । भाषा—हिन्दी । विषय-पुजा । ले॰कान सं• १६५४ । पूर्ण । बेट्टन म॰ ३६६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बरसनी कोटा ।

विशेष — दुली चन्द के पठन र्यंबूदी नगर मे लिखा गया है।

**८४८.४. पूजा पाठ स**र्गह  $\times$  । पत्र स० १४४ । घा० ६ $\times$ १ इञ्च । भाषा सस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन स० ३७८ । प्राप्ति स्थान दि० तैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष-सामन्य पाठी का सग्रह है।

८४८६. **पूजा पाठ संग्र**ह - × । पत्र स० ६१ । झा० १०२४४ । इन्छ । भाषा-हिन्दी सम्कृत । विषय-पुत्रा पाठ - २००।ल × । क्यू लां । वेष्ट्रन स० १७७ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुदी)

विशेष -- प्रति जीलं है

**८४८७ पूजा पाठ स्था**त - ४१ गण्य० २२६ । ग्रा० ७ १४१ दुखा । भाषा हिस्ती-सरहन । विषय-पुजा । २०काल ४ । ले•काल ४ । पूर्स । बेप्टन सं० ७२ । **प्राप्ति स्थान** —ांद० जैन पार्थनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोट)

**८४८८. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्र स० १। म्रा० ८ $\times$ ६ इखा । माषा-हिन्दी विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । पूर्णा । बेप्टन स० ५५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

विशेष - गुर्वाविल पूजा एउ क्षेत्रपाल पूजा है।

द४द१. युजा पाठ संग्रह — × । यत्र स० १०४। ग्रा० ७३ × ६ इचा । माया-हिन्दी-सस्त्रत । विषय-पूजा पाठ । २०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पार्श्वनाथ मंदिर इन्दरगढ़ (कोटा)  $\mathbf{x}$ ४६०. **पूजा पाठ सग्रह** $-\times$  । पत्र स $\mathbf{v}$ ४। ग्रा० १३  $\mathbf{x}$ ६ इ**ल**ा भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-साग्रह । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । प्रापूर्ण । बैठ्न स $\mathbf{v}$ ७२। प्राप्ति स्थान-दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मासपुरा (टोक)

 $\mathbf{r} \cdot \mathbf{\hat{x}} \in \mathbf{\hat{x}} \cdot \mathbf{\hat{y}} = \mathbf{\hat{x}} \cdot \mathbf{\hat{y}} \cdot \mathbf{\hat{x}} = \mathbf{\hat{x}} \cdot \mathbf{\hat{x}} \mathbf{\hat{x}} = \mathbf{\hat{x}} \cdot \mathbf{\hat{x}} = \mathbf{\hat{x}} \cdot \mathbf{\hat{x}} = \mathbf{\hat{x}$ 

६४६२. पूजा पाठ सग्रह $-\times$ । पत्र स० २ से २०३। प्रा० ७है  $\times$  ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पत्रा पाठा र०काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स० १४३-२६६। प्राप्ति स्थान--- हि० जीन गांदर नेनिनाथ टोडारार्थासह (टोक)

८४६३ पूजा पाठ सगह— × । पत्र स० १४६। भाषत-सस्कृत-हिन्दी । विश्वय-सग्रह । र०काल × । ले०काल × । अपूर्ण । वेष्टनस० १३० (ब) र । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर नेमिनाथ रोडाराविष्ट (टोक)

## विशेष -- निम्न गाठ है---

- महाणान्तिक विधि— x । संस्कृत । तैकाल स० १५२३ वैणाल बुदी ६ । पत्रस० १-६१ नेतवा पत्नने मृत्यामा अलाउदीन राज्य प्रवर्तमाने ।
- २ गागवर बलय पूजा-× । पूर्णः । ले०काल स० १४२३ पत्रस० ६२-१४० । ६६ मे ११२ तक पत्र साली है ।

₹.	माला गेहण—× ।	सम्झत ।	पत्र १४१–१४३
٧.	कलकुण्ड पूजा × ।	,. I	पत्र १४४-१४५
u	गाराज्ञिका प्रजा≂४ ।	1	पत्र १४६–१४७

८४६४. पूजा पाठ संगह—×। पत्रस० २४४। था० ७३,४४, दश्व । भाषा-मस्कृत, हिन्दी। विषय सग्रह । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन गं० १३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्यानह (टॉक) ।

 $\mathbf{x}$ ४६%. पूजा पाठ संग्रह— $\times$ । पत्र सं०७२। ग्रा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{6}$  डज्व। भाषा-हित्सी, सम्ब्रत । विषय —्गूजापाठ। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । गूएँ। वेष्टुन स०६७। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक)

 $\mathbf{x} \times \mathbf{y} \in \mathbf{y}$  जा **पाठ सग**ह्— $\times$  । पत्रस॰ ४–६६। स्रा॰  $\mathbf{x} \times \mathbf{y} \in \mathbf{y}$  । स्वाप्त स्थान— विषय—सग्रह्म। र०काल— $\times$ । ते०काल स॰ १६५१। प्रपूर्ण। बेष्टनसं॰ ६१। प्राप्त स्थान— वि॰ जैन पार्वनाय मन्दिर टोडारायर्षिह (टोक)।

 द४६७. पूजा पाठ संग्रह्— ४ । पत्र म० ६०-१०१ । ग्रा० ६० ४ । इज्य । माया-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र०काल ४ । वे०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७१ । प्राप्ति स्थान— वि० जैन मन्दिर पार्ण्वनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

स४६८. पूजा पाठ संग्रह- > । पत्रस० १२७ । मा० १०×४ इञ्च । भागः हिन्सै, संस्कृतः विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६४८ । पूर्ण । वेष्टन सं०२ । प्रास्ति स्थान → दि० जैन सत्रवाल मन्दिर नैराया ।

विशेष--नैग्वामे प्रतिलिपिकी गयी थी।

५५००. पूजा पाठ संग्रह —  $\times$  । पत्र म० १२६ । घ्रा० १ $\times$ ६ इच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत । विषय-पूजा पाठ र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेग्टन स० ७१ । प्राप्ति स्थान दि० जैन तेरहपयी मन्दिर नैस्था ।

६५०१. पूजा पाठ संग्रह— × । यमस० १३० । झा० ५×५ इन्छ । भाषा हिन्दी, सस्कृत । विषय पूजा पाठ । र०काल × । लेक्काल र । अपूर्ण । वेष्ट्रन म० ७२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर नेगावा ।

 $\mathbf{x}$ ५२२. **पूजा पाठ सं**ग्रह— $\mathbf{x}$ । पत्र स० १३६। घा० ५ $\mathbf{x}$ ४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय- शूजा पाठ । र०काल  $\mathbf{x}$ । लेकाल  $\mathbf{x}$ । पूर्ण । वेष्ट्रस० ७४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहथपी मन्दिर नेमाना ।

 $\mathbf{x}$  ५२३. **पूजा पाठ संग्रह**  $- \times 1$  पत्र स**ंश** ४०। श्वा० १० १ श्रव्या भाषा-हिन्दी । विषय - संग्रह । र०काल  $\times$  । त्रे० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन संग्रं७ ४। प्राप्ति स्थान - दि० जैन तेरहणशी मन्दिर नैसावा ।

**विशेष**---पूजा पाठ सग्रह है।

६५०४. पूजा पाठ संग्रह—  $\times$  । पत्रस०७०। ग्रा०६xप्र्यूं इन्त्र । मापा-हिन्दी, सस्कृत । विषय-पूजा पाठ । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन तेरहपथी मन्दर नेसावा  $\cdot$ 

विशेष-सामान्य पूजा एव पाठो का संग्रह है।

दंश्वर, पूजा पाठ संग्रह,— ४ पत्रस० ६१ । घा० १०४४, देश । भाषा हिन्दी-सस्कृत । विषय-पुत्रा पाठो का संग्रह । र० काल ४ । से कताल स० १६७ माच मृदी ४ । पूर्ण । बेष्टुन स० ७२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैसावा ।

न्द्र०७. पूजा पाठ संग्रह.— $\times$  । यत्रस० १८७। ग्रा० ६ $\times$ ४ $^1$  इश्वः। ग्राण-सस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा पाठो का सग्रह। २०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन सं० ७४। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोट्यो का नैश्वर।

प्रश्न पूजा पाठ संग्रह—× पत्र स० १४४। ग्रा० ६×४१ इ.च । भाषा-हिन्दी पथ । विषय-पूजा । र०काल × । ल० काल × । ग्रपूर्ण । बेष्टन स० ६० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर कोट्या का नेरावा ।

x = x = x = x । पत्र संग्रह—x । पत्र सं॰ २-२-४ । प्रा॰ १x = x = x = x = x सावा-हिन्दी- सस्हत । विषय सग्रह । र० काल x । से॰काल x । प्रपूर्ण । बेहुन सं॰ २१४ । प्राप्तिः स्थान—वि॰ जैन मंदिर राजमहल (टॉक) ।

विशेष--नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है।

६११०. पूजा पाठ संग्रह—  $\times$  । पत्र स० ६४। ग्रा० ६ $\times$ १ इव । भाषा-प्राहत-सस्कृत । विषय-संग्रह । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० २४० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) ।

विशेष-पंच स्तोत्र, पजा, तत्वाथं सुत्र, पच मगन ग्रादि पाठो का सग्रह है।

**८५११ पूजापाठ सग्रह**— $\times$  । पत्रस्र० ४१। प्रा० ११५ँ $\times$ ४ इन्द्र । माग्र-सस्कृत । विषय $\sim$  पाठ सग्रह । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेपून स० १६६ । प्राप्ति स्थान — दि० ौन मिदर राजमहल (टॉक) ।

**८५१२. पूजापाठ स**ग्रह $-\times$ । पत्रस० ३४। म्रा० ११×५ ८७। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय-पूजा स्तीत्र श्राद का सग्रह। से०काल  $\times$ । स्रपूर्ण । कंशन त० २५१। प्राप्ति स्थान—िद० जैन मदिर राजमहल (टोक)।

**८५१२. पूजापारु सग्रह**—  $\times$  । पत्र तुरु ?  $\sim$  ३२ । छात्र ६ $\frac{1}{2}$   $\times$  ७ इश्व । भाषा-सम्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । ५०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । स्रपूर्ण । वेष्टनसं० १०६ । **प्राप्ति स्था**न — दि० जॅन मन्दिर श्री महावीर वृदी ।

**८५१४. पूजापाठ संबह—४** । पत्र स० ७० । ब्रा० १९४६ इश्व । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । विषय-सम्रह । ले० काल ४ । पूर्यो । बेष्टन म० २०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष -- बुदी में प्रतिलिपि हुई थी। निम्न पाठ एवं पूजाये है--

मगलपाठ, सिद्धपूत्रा, सोलहकाराग पूजा, भक्तामर स्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र सहस्रताम एव स्वयम् स्तोत्र । ६४१५. पुजापाठ सुप्रह — 🗙 । पत्रस० २७६ । धर० ६३ ४६ इन्छ । भाषा -सस्कृत । विषय –

पूजा । रक्काल×। नेक्काल ×। पूर्ण । बेष्टन सक् १७२ । **प्राप्ति स्थान** — दिक् जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

**८५१६. पूजापाठ सग्रह** — imes। पत्र स० ८०। ग्रा०१० $rac{1}{2} imes$  द इन्द्र । भाषा सस्क्रत-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले० काल imes । ग्रप्सं । बेष्टन स० १६३ । <mark>प्राप्ति स्थान</mark> – दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी ।

विशेष— नित्य नैमिनिक पूजा तथा स्तोत्र है।

**८५१७ पूजापाठ सग्रह**—  $\times$  । पत्रम० ५६ । ग्रा० १० $\times$ ४ इख । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रतस० ७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी बृंदी ।

विशेष -- नित्य पुजापाठ एव तस्वार्थ सुत्र है।

**८५१८. पूजापाठ सग्रह**— × । पत्र स०४७ । प्रा०१४६ इत्था । भाषा-हित्दी सस्कृत । विषय-पूजा स्तीत्र । र०काल × । लेकाल स०१८५७ जेठ बुदी १ । पूर्या । वेस्टन स०१६ । **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ व दी ।

विशेष -- नित्य पूजा पाठ सम्रह है।

**८५१ १. पूजा ाठ संग्रह**— $\times$ । पत्रस $\bullet$  १-६६ । प्रा $\bullet$  १२ ६ ६ व्य $\bullet$  माथा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-संग्रह । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं $\bullet$  १४६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर प्रादिनाथ बृंदी ।

१ पच मगल

विशेष-सामान्य पूजा पाठ सग्रह है।

५१२०. पूजा पाठ संयह— ४ । पत्रस० ५१ । सा० १२ ४० १ इल्डा । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय-पृजा । १०काल ४ । ले•काल ४ । पृर्णः । बेट्टन स० ५३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर झादिनाय वृदी ।

विशेष— २५ पूजा पाठो का सम्रह है।

**५५२१. पूजा पाठ संग्रह**— × । पत्रस•६६ । झा० १० × ५ इल्बा भागा-पूजा स्तोत्र । र•काल × । ले० काल स० १६१६ जंठ मुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन स० २० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जॅन मन्दिर झादिनाय वृदी ।

विशेष-- शिवजीलान जी ने लिखवाया था।

**६५२२. पूजा पाठ संग्रह—** × । पत्रस० ११० । ग्रा० १३×६ इञ्च । भाषा-सन्कृत । विषय-पूजा स्त्रोत्र । र०काल × 1 ले० काल ४ । पूर्या । बेट्टन स० ६६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० चैन मन्दिर ग्रादिनाथ बूदी ।

बिशेष-3ूजा एव स्तोत्र छादि पाठी का सग्रह है।

**८५२३. पुजा पाठ संग्रह**— × । पत्रस्य देश । प्रा० १०१८ ४१ इच । भागा-गरहत्व । विषय-पुजा स्वात्र । १०काल : ४ । ते०काल : ४ । । पूर्णे । बष्टनस० ३४८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर क्रमिनस्यन स्वामी वृदी ।

खिरोच—िन्न पूजा पाठो का एक एक का ब्रलग प्रथम स्थाह है। गुटका ब्राकार में ६ पुन्तके हैं-चन्द्रप्रम पूजा, निर्वाणक्षेत्र पूजा, गृह पूजा, भक्तामर स्तीत्र, चतुविश्राति पूजा, (रामचन्द्र) नित्य नियम पूजा एवं भक्तामर स्तात्र।

द्र**२२. पूजा पाठ संग्रह**— ४ । पत्र स० ११६ । घा० ६ ४६८ इ.ज. । आपान्हिन्दी पद्य । विषय-सग्रह । ले० काल स० १८७८ वैमास बुदी ६ । पूर्ण । वष्टन स० ३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जॅन मन्दिर चीवरियान मालपुरा (टोक) ।

१∘.	क्षेत्रपाल स्तोत्र		×ι	<i>"</i> २२
.3			शातिदास ।	., २१
	चौसठ योगिनी स्तोत्र		×	सस्कृत २०
	रामचन्द्र स्तोत्र		×	पत्र स० १६ । स्स्कृत
	कषि मडल स्तोत्र		×	İ
-	भक्तामर स्तोत्र		मानतु ग	9
٧.	विषापहार	-	ग्रचलकीति	
₹.	परम ज्योनि	* ***	**	पत्र १-१६ तक
		~~	बनारमीदास ।	į
· ·	44444			i

```
पूजा एवं विधान साहित्य ]
```

८७४

```
सस्कत । २३
११. न्हबरा
                          --- मृनि शुश्चन्द ।
१२. क्षेत्रपाल
                                                               हिन्दी पद्य । २४
         क्षेत्रापाल की विनती लिख्यते :---
         जैन को उद्योत भैग समकति धारी।
                    माति मूरित भाषा जन मूलकारी ॥ जैन० ॥ टेर
         पुषरियालों केम सिदुर तेल छवि को।
                    मोतिया की माला कावी उग्यौ भानू रवि को ॥१॥
         सिर पर मुकट कृण्डल काना सोहती।
                    कठी सोहे धुगधुगी हीय हार मोहती ॥२॥
         मृत्व सोहं दाता नै तंबील मृत्व चूवती ।
                    नैगा रेखा काजल की तिलक सिर सोहतो ॥३॥
         बाजबंध भी रस्या प्रौच्यानै पौचिलाल की ।
                   नवपह प्रागुल्या नै पकड्या डोरि स्वान की ॥४॥
         कटि परि घुघरा तस्यौ लाज पाट कौ।
                    जग घनघोर बालै रमे फर्मि थाट की ।३४।।
         पहिर कडि मेखलापग तलि पावडी।
                    चटक मटक बार्ज खट्या मोर्ड भावडा ॥६॥
         छडी लिया हाथ में देहरा के वारगाँ।
                   पूजा कर नरच रखवाली के कारगाँ॥।।।।
         नृत्य करें देहरा के बारेएकज लाप के।
                   तान तीडे प्रभ धार्न जिन गरा बगाय के ।। = 1।
         पहली क्षेत्रपाल पूजे तैल काबी बाकुला।
                   गुगल तिलाट गुल ग्राठौ टब्य मोकला ॥६॥
         रोग मोग लाप घाडि मरी कौ भगाय दे।
                   वालका की रक्षा करें ग्रन धन पत दे ॥१०॥
        गीत पहली गाय जौ रक्षाय क्षेत्रपाल कौ।
                   मृति मुभवन्द गायो गीत भैंह लाल कौ ॥११॥
१३. चतुर्विशति पूजाधक — × ।
                                                               संस्कृत । पत्र सं० २४
१४ वदेतान जयमाल
                          --- माघनदी।
                                                               संस्कृत । पत्र स० २६
१४. मुनिश्वरो की जयमाल - वर् जिल्दास ।
                                                                हिन्दी। पत्र स०३२
१६. दण लक्षरा पूजा
                                                                संस्कृत ।
१७. सोलहकाररा पूजा
                          - × 1
१८. सिद्ध पूजा
                                 ×
१६. पद
                         - वनारसीदास ।
                                                               हिन्दी। पत्र सं०३७
```

```
श्री चितामणि स्वामी सांचा साहिब मेरा।
        सोक हरै तिह लोक का उठ लीजत नाम मवेरा ।।
२० रत्नत्रय विधान
                                  × 1
                                                               सस्कत पत्रसं०४१
२१. लक्ष्मीस्तोत्र
                         - पद्मप्रभदेव।
                        -- लोहट ।
२२. युजाष्टक
                        --- भूधरदास ।
     पचमेरु पुजा
२३
                                                                              ५ ०
86
    सरस्वती पजा
                       --- जान भूपरग ।
                                                                              ХX
        विशेष--प० शिवलाल ने वैसाख मुदी ६ रविवार स० १८७६ में मालपुरा नगर में भीतों के बाम
के मन्दिर में स्वयुक्तार्थं प्रतिनिधि की थी।
     तत्वार्धसत्र
24
                        - उमार स्वामी।
                                                              सम्कतः।
                                                                              ڊ وا
٦€.
     सहस्रवाम
                       --- ग्रामाधः ।
                                                                              ξو
     विनर्ती
                       --- रूपचन्द्र।
وچ
             जय जय जिन देवन के देवा.
             मुरनर सकल करै तुम सेवा।
                        -- रूपचस्य ।
                                                               हिन्दी ।
२८. पद
             द्यव में जिनवर दरमगा पायो।
                        -- कनकर्वाति
     विनर्ना
             बटौ श्री जिनराय मन वच काय करेजी ।
                        --- रायचन्द्र ।
                                                               हिन्दी ।
३०. विनती
             ग्राज दिवस घनि लेखें लेख्या.
             श्रीजिनगजभनामुक्षेत्रया।
    विनर्ता
                        — य० जिनदास ।
                                                               हिन्दी। ..
31
        प्रारम्स-स्वामी तु ब्रादि जिगाद करो विनती ब्राप तसी।
        ग्रन्त - श्री सकलकीर्गत गुरु वदि जिनवर बीनती।
               त मगौ ए प्रद्रा भगगौ जिनदास मुक्ति वहांगरण ते वरे ।।

 तिर्वाण काण्डभाषा -- भैया भगवतीदास ।

                                                               हिन्दी। पत्र स०७९
        विशेष्ठ - १० शिवलाल जुनी वाकलीवाल शिष्य ग्राचार्य माशिकचन्द ने मालपूरा में भीम के वास
के मन्दिर मे गवाई जर्बासह के राज्य में प्रतिलिपि की थी।
                                                               हिन्दी। पत्र सं० ७६
33
     धारती
३४, पंचमवघावा
             पञ्च बधावाम्हाके जीव स्रति भाषातो ।
             भवें हो अस्टित सिद्ध जी की भावना जी ।।
                       --- कुमुदचन्द्र।
                                                               हिन्दी। पत्र स० ६१
३४. विनती
       प्रारम्म-द्निया भागर भील बिल्थी।
                 भगवंत भगति नहीं सुधी ।।
```

स्रन्तिम---नही एक की हुई घरणा की भरतारी,

नारी	कटन	कुमदचन्द	कीरण	सगि	जलसी	धरग	परिवा	नारी भ	

₹€.	पचमगति वेलि	-	हपंकीति ।	हिन्दी	। पत्र स	€⊇ 0
				र० का	ल स॰ '	६३३
₹७.	नीदडली		किमोर ।	हिन्दी	। पत्र स	o = <b>E</b>
३⊑.	विनती		भूधग्दास ।	,,	,,	59
	हमारी करुए	स नै 1	जिनराज हमारी।			
₹₹.	भन्दामर भाषा	_	हेमराज	हिन्दी	। पत्र स	0 55
٧٥,	बोनती		रामदास	,,	,,	\$3
٧१.	वाननी		<b>ग्रजै</b> राज	n	,,	€ ५.
४२	जोगीरासा		जिर <b>गदा</b> स	,,	,,	€ 🕏
¥3.	पद		श्रजराज, बनारमीदस्स, एव मन्त्रः	т "		
88.	लूहरी		मृन्दर ।	"		33
	सहैस्यो हे ये	म्माः	र ग्रमार ।			
٧٧.	रविवार कथा		भाऊ।	.,	,,	309
84.	शनिश्चरदेव की कथा		× ı	हिन्दी गद्य ।	पत्र स०	११२
83	पाण्वंनाथाष्ट्रक		विष्वभूषमा ।	संस्कृत ।	,,	११३
85.	स्वण्डेलवालों के गोत्रः।	28				
33	बधेर वालों के गोत्र –	. <b>y</b> ?				

डर बचरवालाकगात्र—४५ ४०. ग्राग्रवालो केगोत्र—१६

**६५२६. पूजाराठ संग्रह**— $\times$  । पत्र स० ६० । ग्रा० १२ $\times$  ५ ८७ । ग्रामा —हिन्दी सस्कृत । विषय—पूजा । ले० काल १६४३ । पूर्ण । बेष्टन स० २ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर वयेरवालों का प्रावा (अणियारा)

विशेष---- निमित्त नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है । लोचनपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

 $\pi$ प्र२७. पूजापाठ सग्रह $-\times$  । पत्रस $\circ$  ६३। प्रा $\circ$  १८ $\times$ द इक्ष । माया-हिन्दी । विषय-पत्रा पाठ ।  $\circ$  काल  $\times$  । ले॰काल । पूर्ण । वेष्टनस $\circ$  ५६/१२ । प्राप्तिः स्थान—दि $\circ$  जैन मन्दिर भादवा (राज $\circ$ )

विशेष-पंच मगल, देवपूजा बृहद् एवं सिद्ध पूजा आदि का संग्रह है।

**८१२८. पूजापाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्र स० ४१। ग्रा॰ १२ $\times$ ८ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। रक्ताल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वैष्टुन म० १०६। प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन तैरहपथी मन्दिर दीमा।

विशेष-सामान्य पाठों का सम्रह है।

म् ५२६. पूजा पाठ संग्रह— $\times$ । पत्रसं० २ – ४१। ग्रा० १० $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$  इन्छ । माषा  $\cdot$ हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । सपूर्ण। । प्राप्ति स्थान — दि० जैन खडेलवाल मन्दिर उदयपुर।

६५३०. पूजा पाठ संग्रह $-\times$  । पत्र स० ६६ । घा० १० $\frac{1}{7}$  ४ ६ $\frac{1}{7}$  ६६८ । भाषा- मस्हत, हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । वेलकाल  $\times$  । पूर्व । वेष्ट्रन स० ७५ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन सण्डेलवाल मंदिर उदयपुर ।

**६५३१. पूजा ााठ संग्रह**— $\times$  । पत्र स० ७६ । प्रा० १२ $\times$ ६ इच । माषा—सस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० २० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ध्रपवाल मदिर उदयपह ।

**८५३२. पूजा पाठ संग्रह**—  $\times$  । पत्रस० १०५ । ब्रा० ११ $\frac{1}{8}$  $\times$ ६९ । भाषा-संस्कृत । विषय-पत्रा । र०काल  $\times$  । प्रे०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनस० २७० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयवर ।

**८५३३. पूजा भाठ संग्रह** — ४० पत्रम० ४३ । ग्रा० ११५ ४५६ देखा । भाषा-क्रिटी म स्कृत । विषय-पुजा र० काल × । **ले•**काल × । पूर्ण । बेष्टन म० ६६३ । **प्राप्तिः स्थान** – दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपर ।

विशेष --- नित्य उपयोग में ग्राने वाले पजा पाठो संग्रह है।

**८५२४. पूजा पाठ संग्रह**—  $\times$ । पत्र सं० १२३४। प्रा० १२ $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इखा। साथा—सन्कृत-किदी। विषय—पूजा । रक्ताल  $\times$ । लेक्ताल  $\times$ । पूर्णे। बेष्टन स० ७६६। प्रास्ति स्थान वि० जैन मन्दिर लक्कर. जयपुर ।

विशेष — डममे कुल १५२ पूजा एव गाठो नग्नह है। प्रारम्भ मे सूची दी हुई है। कही २ बीच म से कुछ पाठ बाहर निकले हुए है। निष्य नैमिनिक एजाओं के सर्तिरक्त बन पूजा, स्रलोधापन, पच स्वाथ, बन क्या स्राहि का समूह है। काण्डास्य के भी निम्न गाउ है —

ग्रनन्त पूजा . श्री भूषण् काष्ठा संबीहृत, प्रतिष्ठाकत्य काष्ठा सघ का, प्रतिष्ठा नियक काष्ठा सघका, सकतीकरण् विधि काष्ठा सघ की, ध्वजा रोपण काष्ठा सघ. होम विधान काष्ट्रा सघ का, बृहद् ध्वजा पीरण काष्ट्रा सघ का ो

उमा स्वामी कुन प्लाप्रकरणांभी दिया है। पत्रस० ३१० पर १ पत्र है जिसस प्लाकिन आर मुहकरके और कैंसे करना चाहिए इस पर प्रकाण टानागया है। यह अथ लक्डी की रमीन पेटी से विराजमान है

लकड़ी के मुन्दर दर्जनीय पुट्टी जिनमें मृत्यर देख बूटि तथो पार्थनाथ व सरस्वती ित्र है इसी गद्द. में हैं। ब्रांब कालों हम महित ४ पुट्टी है। २ कागज के मखिब पुट्टी भी दर्जनीय है।

द×द× पूजापाठ संघह— > । पत्रस० २७ । आः० ६×६ इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय – पूजा । र०कालः × । ले०कालः ४ । पूर्णे । वेष्टन म० ६४१ । **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मन्दिर लक्कर जबकृर ।

विशेष -- नित्य नैमित्तिक प्जाश्रो का सग्रह है।

 $\mathbf{x}$  ६६६. **पूजा पाठ सम्ब**ह $\mathbf{x}$  । पत्र स॰ ४४ । आ॰ ११ $\frac{1}{2}$  $\mathbf{x}$ १६ व्हा । माया—मस्त्रत । विषय—पत्रा पाठ । र॰ काल  $\mathbf{x}$  । ले॰ काल सं॰ १६११ । वेष्टन स॰ ६०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर लक्कर ज्यपुर ।

दश्के७. पूजा पाठ संग्रह—  $\times 1$  पत्रम० २-४६ । ग्रा० १ $\frac{1}{4}$  ४ $\frac{1}{4}$  इक्ष । भाषा—मस्कृत-हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टनस० ३७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन महिर बोल्सली कोटा ।

दश्चे द्रा पूजा पाठ तथा कथा संग्रह—×। पत्र स०२०६। भाषा-हिन्दी सम्कृत । विषय पूजा पाठ। र०काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण। विष्टन स०१००। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती महिर भरतपुर।

विशेख -- विविध कथाये पूजा एवं स्तीत आदि है।

 $oldsymbol{x}$  ६ पूजा पाठ विधान $\longrightarrow$  । पत्रस० १६ । भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\chi$  । लेक्काल  $\chi$  । पूर्णा । वेष्टुन स० ३८३ ३७४ । प्राप्ति स्थान $\longrightarrow$  दि०जैन सभवनाथ मंदिर उदयपुर ।

च्यू४०. पूजा प्रकरशा -- ×। पत्रम० १३ । धा० १ ४४ इश्व । भाषा-मस्कृत । विगय-पूजा । रठकाल - । लेक्काल ग० १८६६ चैन मृदी ६ । पूर्ण । वेग्रन ग० ८४ । प्रास्ति स्थान—ाद० जैन पचापनी मदिर दुनी (टोक)

विशेष--- गश्त्री गुमानीराम न प्रतिनिष की थी।

 $\mathbf{z}$  ४४१. पूर्य पूजक वर्गन — X । पत्रसं ६ । या० १०  $\mathbf{x}$  ६ १८७ । भीषाः जिन्दी भेदा । विपय-पूजा । २० काल  $\mathbf{x}$  । लेक्काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । वटनम० २१४ । प्रास्ति स्थान — दि० अन मन्दिर पाञ्चनाथ जागान व दी ।

द्ध्यर्थ, पूजा विधान - पं० श्रीशाधर । पत्रम० २१ । भाषा-मस्कृत । विषय - पूजा । र०काल × । त्रे० कात्र × । पूर्णा । थप्टन म० ६ व्हेप्४ । प्राप्ति स्थान - दि० तेन समयनाथ सन्दिर दृदयपुर ।

विशेष -- प्रांग्जां है।

६५४६३. प्रति सं०२ । पत्र म० ४५ । प्रार्ग ११ $\times$ ४ $\frac{1}{5}$ ६-त्र । लेक्बाल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनम० ७६ । प्राप्ति स्थान — दि० जेन मदिर पार्थनाय चीगान यूदी ।

द्ध४४. पूजा विधान— × । पत्रस०६। आ०६ हें ४६ इच । भाषा-हिन्दी गव । विधय— विधान । २०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टनस०१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पश्चिगदत रवामी वृदी।

**८५४५. पूजाविधान**— $\times$ । पत्रस०५६ । आ. ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ इ.च.। भाषा-सन्द्रन । विश्य ।वरात । २०काल  $\times$ । द्वर्ष । वेष्ट्रन स.०५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहण्य (शेह)

**८१४६. पूजासार** —  $\times$  1 पत्रस० ०१। आ० १२ $\frac{1}{6}$  $\times$ ६ दखा। भाषा-सस्तृत । त्रियय — पूजा। t० काल  $\times$  1 के काल स० १८६३ वैशास बुदी १४। पूर्ण । वेष्टनसं० १०२५। प्रास्ति स्थान — भ० दि० जैन मदिर अजरेर ।

दश्४ द्र. पूजासार समुख्यय— × । पत्र म० ६३ । घा० ११ × ४ इवा । माया—संस्कृत । विषय~पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६०७ कातिक सुदी थ । पूर्ण । वेष्टनसं० ११७६ । प्रास्ति स्थान— भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर भण्डार ।

**६५४६. पूजासारसमुख्यम** $\times$ । पत्र स० १०१। आ० १२ $\xi \times \xi_0^2$  इला। नापा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल  $\times$ । लेक्काल स० १६६१ व्यंष्ट बुदी ४ । पूर्ण। वेष्टन सं० १२१  $\xi$  प्रास्ति स्थान-दि० जैन सदिर प्रादिनाथ बूदी।

विशेष - मथुरा मे प्रतिलिपि हुई थी। संग्रह ग्रंथ है।

**ग्रन्तिम पुष्पिका**—इति श्री विद्याविद्यानुवादोपासकाध्ययन जिनसहिता चरणानुयोगाकाय पूजागार समुच्चय समाप्तम् ।

**८५४०. पूजा संग्रह— सानतराय**ा पत्रस० १४ । घा० १२, रूप् हे इच्चा। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। २०काल × । ले०काल स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टनस० ५५२ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर सक्कर केवदुर ।

**विशेष**---निम्न पृजाश्चो कासग्रह है----

दशलक्षरण वत पूजा, अनन्त वत पूजा, रत्नत्रय वत पूजा, सोलहकाररण पूजा।

**८५५१. पूजा संग्रह — धानतराय**ापत्र स० ११। आ० ६२४१ इ**था। भाषा**-हिन्दी। विषय -पूजा। र०काल > । ले० काल स० १६५४। पूर्ण। वाटन स० ६६७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयगुर।

**८१४२. पूजा सग्रह—** × 1 जनस० १८ । झा० ११४४} इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल × । ले०काल स० १०८० सावस्य बुदी ६ । पूर्या । वेहन सं० १०४ । **प्राप्ति स्थान**ः— भ० दि० जैन मन्दिर प्रजसर ।

**८१५३. पूजा संग्रह**—  $\times 1$  पत्रम**ः** ३६ । श्रा० ६ $\frac{1}{2} \times \mathbb{E}^1$  डन्द्र । आया-सस्कृत-हिन्दी । विषय - पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल मन् १६४७ फागुगा गृदी १० । पूर्मा । वेष्टन म० ६६४ । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मिन्दिर श्रजमेर ।

विशेष --पडित महीपाल ने प्रतितिपि की थी।

दप्रश्रं, पुजा सप्रह— × । पत्र स०१० । आ०० ≍६ इश्वः । भाषा-हिन्दी । विषय— पूजा । र०काल × । ले•काल × । पूर्णः । यष्ट्रस० ४६२ । आफित स्थानः—दि० जैनः मन्दिर नश्कर, जवपुरः।

विशेष-सोलह कारण, यन मेरु, अन्टाह्मिका आदि पूजाओ का मग्रह है।

**८५८५ पूजा स ग्रह**—  $\times$  । पत्र स॰ १६। आ॰ १२ $\times$ ६ दश्वः । आया-हिन्दी। विषय-पुत्रा । र०काल  $\times$  । ले०काल सं॰ १६६१ । पूर्णः । वेष्टनस० १५७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संदिर लक्कर, जयपुर ।

विशेष---निम्न पूजाओं का सम्रह है---

श्चनन्त्र अति पूजा सेवार

दशलक्षरा पूजा	द्यानतराय	1,
पचमेरु पूजा	भूघरदास	1,
रत्नत्रय पूजा	द्यानतराय	,,
धन्टाह्निका पूजा	धानतराय	,,
शार्तिपाठ		,,

**८५५६. पूजा सग्रह** —  $\times$  । जन्न ०१०। म्रा० ६ $\times$ ६ $\frac{1}{4}$  हसा। नावा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६५३। पूर्ण। वे० स०६५३**। प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर सकर जग्रर।

स्प्रप्र**७. प्रति सं०२ । पत्र**स०६ । प्रा० ४३ ४४३ इ.च. । ले० काल ४ । पूर्छ । वेष्टन सं० ६५६ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

द्धप्रद. प्रति सं० ३ । पत्र म०६ । औ०१० हैं ४७ इस्च । ले० कालुस० १६६३ । पूर्ण । बेहन स०६६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन धन्दिर लक्कर, जुपहुर ।

विशेष - वानतराय कृत दशनक्षरा पूजा तथा भूषरदास कृत पन्ध मेरू पूजा है।

म्द्र**५६ पूजा सग्रह**— × । पत्र स ० ३६–६३ । ग्रा० १२३ ×६ इखा । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७५५ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर सक्कर, जयपुर ।

विशेष---नित्य नैमित्तिक पुजाब्रो का सग्रह है।

**८१६०. पूजा संग्रह— गांतिदास ।** पत्रसं० २-७ । ग्रा० ६ $\times$ ४१ृँ इच । गापा-हिन्दी तदा । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल ।श्रपूर्ण । वेष्टन स० २६६ । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर देवलाना बंदी ।

विशेष — प्रजितनाथ, सभवनाथ की पूजाए पूर्ण एव वृषभनाथ एव ग्रिभिनन्दननाथ की पूजाये प्रपूर्ण है।

**८५६१. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्र स० २४-१४६ । झा० १२ $\times$ ५ , इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बेर ।

=  $\pm$  ५२२. पूजा संग्रह— $\times$  । पत्र स० १४३। ग्रा० ७ $\frac{1}{2}$  $\times$  ४ $\frac{1}{2}$  इत्त्वः। भाषा—सस्कृत-हिन्दी। विषय—पूजा। र०काल  $\times$ । ते० काल सं०१६२०। पूज्यं। वेष्टन स०५०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर कामा।

विशेष - चौबीस तीर्थंकर पुजाओं का संग्रह है।

 $-4 \xi \xi$ , पूजा संग्रह—  $\times$  । पत्र सं० १६ । आ० ११ $\frac{1}{2} \times \xi^2$  इंच । भाषा-हिल्दी । विषय— पूजा । ए० काल  $\times$  । अपूर्ण । बेष्टन स० ३६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर काला ।

प्रश्चिष्ठ पूजा संग्रह— × । पत्र स० ४१ । ग्रा०१२ × ६ इन्च । भाषा — हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्णा । वेष्ट्रन स० ४१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चेतनदास पुरानी डीग ।

विशेष--वृत्दावन कृत चौबीसी तीर्थकर पूजा एव सम्मेद शिखर पूजा का सग्रह है।

स्प्रदेश, पूजा सम्ब्र $-\times$ ा पत्र स० २७। ६।० ११ $\times$ ४३ देखा । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा । रेककाल  $\times$  । केक्सल  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टन स० २७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वीजनाजी काम ।

**८५६६. पूजा सम्रह**— $\times$  । पत्र सं २७६ । प्रा० १२ $\times$ ७ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पृजा । **१०काल**  $\times$  । पूर्णा । वेष्ट्रन स**०** १४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन अध्वाल प्रचायती मन्दिर प्रसवर ।

विशेष --नैमित्तिक पुजाओं का सग्रह है।

 $\mathbf{x}$  ६६७. पूजा सम्बद्ध $-\times$  । पत्र मंग्र १२६। मार्ग १३२५ इन्छ । मार्गा - क्रियी -प्रश २० काल  $\times$  । तेर्ग काल सर्ग १६६७ । पूर्ग । वेष्टन सर्ग ६६६ । प्रास्ति स्थान -ित्र केल स्वेशन प्रशासित स्थान -ित्र केल स्वेशन प्रशासित प्रशासित स्थान -प्रशासित स्थान -प्रशासित स्थान प्रशासित स्थान -प्रशासित स्थान -प्रशासित स्थान -प्रशासित स्थान -प्रशासित स्थान -प्रशासित स्थान -प्रशासित स्थान स्यान स्थान स्य

विशेष--मुख्यत निस्त पत्राओं का सग्रह है। जो विभिन्त वेष्टनों में बर्च है।

मुगन्य दशमी पूता, रन्तत्रयक्षन पृत्रा, सम्मेदशिषर पूता, (२ प्रति) घोमठ ऋद्वि पूता (२ प्रति) घोषीगतीर्थकर पूत्रा-रामचन्द्र पत्र स॰ १४४। निर्वाण क्षेत्र पूता (३ प्रति) धनल्तवन पूत्रा (४ प्रति) सिद्धचक पूत्रा।

६५६६. पूजा सम्म $-\times$ । पत्रम $-\times$ । प्राप्त ११ $\frac{1}{4}$  $\times$ १ $\frac{1}{4}$  इञ्च । भाषा-सम्भुत । विषय — पूजा । रुक्ता  $\times$  । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । बष्टन सक्तर । प्राप्ति स्थान-किक जैन भैक पद्मायनी सम्बर्ध सन्दर ।

विशेष — मस्यत निम्न पत्राधी का सग्रह है।

श्रनक्ष पूजा	सम्बुःस	पत्र १३
पचरुत्यासम्बर्जा	,	२२
n	.,	२२
ऋषि मडल पूत्रा	1)	२५
रत्नत्रय उद्यापन	11	68
पूजासार	*/	<b>5</b> 2
कर्मन्वज पूजा	**	१६-१७

 $= \frac{1}{2} \frac$ 

विशेष — निम्न पुजाओं का संग्रह है।

पंच कल्यासक पूजा	संस्कृत	पत्र १३
रोहिग्गी व्रतोद्यापन पूजा	.,	१३

सार्खं इय डीप पूजा	.,	१५
सुगध दशमी	"	<b>१</b>
रत्नत्रय वत गजा		ŧ×

६८५७०. पुजा संग्रह— ४ । पत्र सं०१४० । ग्रा॰ च दे४६ । दंच । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय— पूजा रक्काल ४ । ले० काल स०१६६७ । पूर्णा वेष्टन सं०१६० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन स० पंचारी-मेदिर प्रतावर ।

विशेष-- ग्रनवर में प्रतिनिधि हुई थी।

**८५७१. प्रति सं० २** । पत्र स० १८० । **ले०काल स०** १६५३ मादवा बुदी ३ । पूर्ण । बेष्टनस० **१८१ । प्राप्ति स्थान** — उगरोक्त मन्दिर ।

**८४७२. पूजा सम्रह**— × । पत्रम० ४२ । मा० ६ रै × ६ इन्त । आपा—हिन्दी पद्य । विषय -पूजा । र०काल × । ने० काल स० १८६४ म्रमहन मुद्री ६ । पूर्ण । वेप्टन स० १६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पाण्येनाथ मन्दिर टोडारायोस≤ (टोक)

५५७३. पूजा सम्रह $-\times$ । पत्रस०१७। म्रा०६ $\times$ ४ इञ्च। भाषा-सन्हत। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । से०काल स०१६३६। पूर्ण। बेष्टन म० २००। प्राप्ति स्थान-—दि० जैन मन्दिर नागदी, वर्षी।

**८५७४. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्र म०४०। ग्रा० ११ $\times$ ५ इन्छ । भाषा-मस्कृत । विषया— पूजा । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १५७ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर नागदा (वृदी) ।

विशेष--- जातिपाठ, पावर्षीजन पूजा, अननजन पूजा, जातिनाथ पूजा, पश्चमेर पूजा, क्षेत्रपाल पूजा एवं चमस्कार की पूजा है।

**८५७५ पूजा सबह** —  $\times$  । पत्र मं० ४१। ब्रा० ११ $\times$ ४१ इञ्च । भाषा – सस्त्रत । विषय – पूजा । र० काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन म ० ४६ । प्राप्ति स्थान — द०जैन मन्दिर नागदी वृंदी ।

**८५७६. पूजा संग्रह**  $\times$  । पत्रतः २२ । मा० ७ $\times$ ४ $^{1}$  इखा । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १०५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर श्रीमहावीर बृदी ।

म्प्रे७७. पूजा सम्रह— × । पत्रस० २ । म्रा० १३×६ इथा । मामा-सस्कृत । निषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स०१८६० पीय सुदी १ । पूर्णा वेष्टनसं० ८४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर मादिनाथ (वृंदी) ।

**विशेष -- प्रक्षय**निधि पूजा सौक्य पूजा, रामो पैतीसी पूजा है।

न-५७८. पूजा संग्रह— $\times$ । पत्र सं० ४७-१४८। ग्रा०११×४, इश्वा भाषा-संस्कृत । विषय~पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स०६५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाय (क्वंती) ।

विशेष--- तीस चौबीसी पूजा शमचन्द एव घोडपकाररा पूजा सुमति सागर की है।

**८५७६. पूजा सम्रह**— $\times$  । पत्र स**०** २४ । म्रा० १० $\times$ ६ इ.च । माया-हिन्दी । विषय-पूजा। र०काल  $\times$  । ले० काल मं० १६४४ । पूर्णं। वेष्ट्रन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर तेरहपयी नैसला।

विशेष - नैसाबा में प्रतिलिपि की गयी थी। दशनक्षण पूजा, रत्नत्रय पूजा खादि का सग्रह है।

स्प्रस्. पूजा संघह- — × । पत्रस० ११-२२७। सा० १३ ×७] इखा । माया-सरकृत । विषय-पृजा । रुकाम × । ते०काल × । धपूर्ण । बेट्टत म० १३४। **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मीस्टर फनेहपुर गैकाबाटी (मीसर)।

विशेष — पुजाओं का सग्रह है।

८५८२. पूजा सग्रह.— ४ । पत्रस० १०० । ब्रा० ११ रेऽ ६ रेड्स । भागा शहरी पद्य । विषय-पूजा । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० १४१ । प्राप्तिः स्थान —ीऽ० अने मिश्यर फनेहपुर शेषवावादी (मोकरः ।

विशेष—ितिवध पुजाओं का सग्रह है।

्दथ्द३. पूजा सम्रह—४ । पत्र म०१६ । व्या०४४ ५ है दक्त । भाषा न्सहलन हिन्दी । विषय-पूजा । से•काल म०१६४४ वैमाल मृती १ । गर्मा । धंतृतम० ६० । प्राप्ति स्थान—६० वैत विषयनपूजा । से•काल करीली ।

विशेष—उद्देमागर के पठनार्थ विस्मनलाल ने प्रतिलिपिकी थी । पत्रपरमष्टी पूजा ययोनिद इस्त भी है।

विशेष-- बुझीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

८६८६. पूजा संग्रह— × । पत्र म०३-५७ । या० ६×६ इश्वः । भाषा गरुहन । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । घपूर्ण । वेष्टन स०३६२ । प्राप्ति स्थान — ६० जैन प्रजवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष--नित्य नैमितिक पुजाए है।

द्र**८.४. पूजा संग्रह—** × । पत्रसं० ७६ । ग्रा० १२ × ४.१ इसा । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ४०(व) । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन ग्रग्रवाल मन्दिर जववपुर ।

विशेष--- निम्न पूजाओं का संग्रह है। रत्नत्रय पुजा, दशलक्षण पुजा, पचमेरु पुजा, पचपरमेशी पुजा। **८५८७. पूजा संग्रह—** × 1 पत्रमं० ३५ । आ० १० × ४ इ**श्व । आघा-**सस्कृत । विषय— पुजा । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० १५४ । **प्राप्ति स्थान**—पडेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर ।

विशेष--- नित्य नैमित्तिक पूजायों का समह है।

**८५८८. पूजा संग्रह × ।** पत्र स॰ ६०। भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल × ।ले० काल स॰ १६४० । पूर्ण । वेष्टुनसं० १६१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — नित्य नैमिलिक पूजाए तथा भाइपद पूजा सब्रह है। रगलाल जी गदिया साहपुरा वालों ने जयपुर में प्रतिलिपि करा कर उदयपुर में नाल के मदिर चढाया था।

द्रप्रच. पूजा संबद्ध — 🗴 । पत्रस० -२ । आ० १० ४५ इन्छ । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।विषय – पूजा । २०ताल 🗴 । त्रेक्शल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३२ । प्राप्ति स्वातः—दि० जैन नेरहपथी मन्दिर रोगा ।

८५६० पूजासंग्रह्⊶ × ग्यत्रम०७९ । भण्या-हिन्दी पद्य । कियन-पूजा । र०काल × । केवकाल म०१८८६ । पूर्वा । बेठून म०६५ । प्रास्ति स्थान—नेट० जैन तरहपर्वी मन्दिर दौना ।

**८५६१. यूजा संग्रह.**  $-\times$  । पत्र म**०**११ । भाषा नास्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । क्रिकाल  $\times$  । पर्ता । वैवृत म० ७३० । **प्राप्ति स्थान**—वि० जैन मन्दिर मरतपुर ।

**८५६२. पूजा सग्रह**— ४ । एव स० १६ । भाषा-सरकृत-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ४ । केवकाल ४ । एमो । केटन स० ४७० । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन-प्रवासनी मन्दिर सरनपुर ।

**८५६३. पूजा सग्रह**—  $\times$  । पत्र म० ७४ । भारा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । कुर्णा । रहुत म० ८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायनी मस्टिर अस्त्रपुर ।

विशेष-छह पुजाओं का सम्रह है।

**८५६४. पूजा संबह**— < । पत्र स० ३४। भाषा-सम्क्रत । विषय~पूजा । र०काल × । ले•काल × । श्रामा । वेष्ट्रस०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पनायनी मन्दिर ।

**८५६५. पूजा सम्रह**— imesः पत्रस**्थां** । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल imes । त्रुर्गा । वेष्टनम**० १४ । प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पत्रायनी मन्दिर मन्तपुर ।

 $\pm$  ५६६. पूजा संबह्—imes । पत्र सं $\bullet$  ५३-१०३ । भाषा-सन्द्रतः । विषय-पूत्रा । र०काल imes । ले $\bullet$  काल imes । वर्गा । वेस्टन सं $\bullet$  ५६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर अन्तपुर ।

**८८९७. पूजा संग्रह**—imes। पत्रस $^{\circ}$ ४०। भाषा-सम्कृत । विषय-पूजा । र $^{\circ}$ काल imes । के काल सं $^{\circ}$ १८६७ । पूजी । **हैवेहन सं^{\circ}७०। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी मन्दिर मरतपुर ।

विशेष-- नित्य नैमितक पूजाएं हैं।

**८५६८. पूजा संग्रह**— $\times$ । पत्र स॰ १६७। मापा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । सै॰काल  $\times$  । पूजी । बेष्टन स॰ ६२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

**८५८६. पूजा संग्रह**—  $\times$  । पत्रसं० ५ से ३५ । माथा-हिन्दी-सन्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पुर्णा । वेष्टन सं० ६७ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पथायती मन्दिर भरतपुर ।

६६००. पूजा संबह— × । पत्र सं०७० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल × । ले० काल × । पूर्गा । वेष्टन स०६६ । प्राप्ति स्थान --दि० जैन पंचायती मन्दिर भरनपुर ।

**८६०१. पूजा सग्रह** $+\times$ । पत्र सं०१४। मा० ११imes५ छन्न। भाषा सर्ह्न । विषय-पूजा । र०कालimes। ले० काल imes। पर्गा। वेष्टन स०१४। **प्राप्ति स्थान**ः-दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा।

**८६०२. पूजा संग्रह**— < 1 पत्रस० १७८। घा० ६×४, इन्छ । भाषा-हिन्दो सम्प्रत । विषय-पूजा । र०काव × । लेकान स० १८३३ भारवा बुरी ७ । पूर्ण । बेष्टन स० ३५६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर बोरसनी (कोटा) ।

विशेष—प्रत्ये में नवरीक्षा की चउपई सोमग्रीम् कृत है जिसकी रचना काल स० १०५० है। तथा कसबुद्रिकी थीपई है।

मानव देश के समनेर नगर के जिन चैत्यालय में आलमचन्द्र द्वारा लिला गया था।

६६०३. पुजा क्याह $-\times$ ा पत्रस०६६ । घा०७ $\times$ ४ इचा । बाया-सल्कृत । विषय-पुजा । रब्सान  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ३६० । प्राप्ति स्थान--४० दि० जैन मदिर बारसली (कोटा) ।

विशेष--- निम्नलिखन पूजाएं है---

श्चनतत्रत पृजा, अक्षयदक्षमी पूजा, कलिकुण्ड पूजा, शास्ति पाठ (भ्राणावर), मुक्ताबील पूजा, जलयात्रा पूजा, प्रथमेरु पजा तथा कर्मदहन पृजाः।

**६६०४. पूजा संग्रह** –  $\times$  1 पत्रस० १५६। स्रा० ६ $\times$  ४, इच्च । साया-हिन्दी, सम्कृत । विषय-पूजा । र०काच  $\times$  । न०काच० म १६८१ मादवा बुदी ३। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३६२। **प्रास्ति स्थान** — दि० नैन मदिर बोरसक्षी (कोटा) ।

विशेष — ४० पूत्रामों का सम्रह है। जिनासींग पार्श्वनाथ-मुभवन्द्र, गुरुपूत्रा-रननवन्द तथा सिद्ध सन्ति विधान-प्राणायर कृत विशेषन : उन्नेचनीय है।

६६०**४. पूजा संग्रह—** × । पत्रस०७-७४ । ग्रा० १०×६ ६%। भाषा–सन्हन । विषय — पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वैष्टन सं०३६३ । **प्राप्ति स्थान—**भ०दि० जैन मन्दिर बोरसर्जी (काटा)।

विशेष--- पूजायो का संग्रह है

 $\mathbf{E} \in \mathcal{O}_{\mathbf{x}}$ . **पूजासत्यह**—  $\times$  । पत्र स०७० । घा॰ १० $\times$  ४ इश्व । भाषा — हिन्दी । विषय-पजा। र०काल  $\times$  । लेखन काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० २३३ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर बोन्सली कोटा ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठों का सग्रह है।

**८६०७ पुत्रा सग्रह**—  $\times$  । पत्रस० १० । घा० १० $\times$ ६ $\xi$  इख । भाषा हिन्दी-सस्त्रत । विषय-सग्रह । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेहन सं० ११० । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)

विशेष--विभिन्त प्रकार की ३८ पूजाओं एवं पाठों का सम्रह है।

विशेष--पृत्यत. निम्न पुजाओं का सम्रह है-

रत्नत्रय पूजा, (प्राकृत) कर्मदतन पूजा, (,,,) (अपूर्ण)

**६६०६. पूजा संग्रह—** × । पत्र स०१२। घा० ११.८४] डळ्च। भाषा—हिन्दी । विषय— पूजा । र०काल ४ । तेरकाल × । पूर्णुं। वेष्टन स० १३७-६२। **प्राप्ति स्थान**--दिरु जैन मस्दिर कोटडियो का इसरपुर।

विशेष-पनमेर द्यानन एव नदीश्वर जयमान भैया नगद्वभीदास कुन हैं।

६६१० प्रतिमा स्थापना —  $\times$  । पत्र स०२१। मा० ११ $\times$ ४५ इखा। भागा-प्राकृत । विषय-विषि । रक्सल  $\times$  । लेक्सल  $\times$  । पूर्ष । वेष्टन म०१५१० । प्राप्ति स्थान—दिवर्जन मन्दिर कोटडिया का हु गरपुर ।

विशेष-श्री ग्राम श्री थानेदा नगरमध्ये निस्ति पश्डिन सुखराम ।

प्रारम---

वित्या व गराभीरा श्रृत स्कय च । ऐद पूरि नाराचार्य निय मक्त्या नमान्यत् ।।१॥ श्रृप श्री नेमिचन्द्राय प्रतिष्ठा भारत मार्गतः प्रतिष्ठासस्तदा चुन राजाना स्वय भागना ॥२॥ इन्द्र प्रतिष्ठा ।

म् ६६१२. प्रतिष्ठा तिलक---मा० नरेन्द्रसेन । पत्रस० २७ । मा० १२×६ इघ्न । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल ४ । ले० काल ४। पूर्ण । बेष्टनसं० ३१-१८ । प्राप्ति स्थान---वि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

विशेष—मृति महाराज थी १०८ महारक जी श्री मुनीन्द्रकीर्ति जी की पुस्तक । निध्यित जाती हुँबँड मृतसकी सकडा वम् करन्दरबंद तत् पृत्र चीकचन्द ।

६६१३. प्रतिष्ठापद्धति— ४ । पत्रस० ३६ । घा० १०४४ दे इवा । भाषा-संस्कृत । तिषय— विधान । र०काल ४ । से०काल सं० १०२४ कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४७४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन संदिर प्रजमेर भण्डार । ८६१४. प्रतिरठा वाठ— काशासर। पत्रसं∘ १६। घा० १२३४६ कन्य। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ४। से०काल स० १८६४। पूर्ण। वेष्टन सं०६८६। प्रास्तिस्थान—अ०दि० जैन मन्तिर प्रकोर।

म्**६१४. प्रतिसं०२** । पत्रस० २३ । ले०काल स० १८६४ । पूर्णे ।**वेष्टन सं० ४१ । प्राप्ति** स्थान—दि० जैन सभवनाथ भदिर उदयपर।

विशेष - मडल विधान दिया है।

स्वन् १८६५ के बैशान बुटी ६ दिने सोमवासरे श्री दक्षिण देशे श्री गिरबी ग्रामें बैश्यानये श्री मूलसाचे सरस्वतीगच्छे बलात्काराली कुन्दकुन्दाचार्यान्वयं भ० यश कीनि देवा त० ५० म० सुरेस्टकीनि तत्पट्टे गुरु स्नाना पं० व्यानकन्द लिखिन ।

६६९६. प्रति स० ३ । पत्रस० २० । ले०काल 🗴 । पूर्णा । बेष्टन स० ३४,३६१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन समबनाय मन्दिर उदयपुर ।

**८६१७. प्रतिसं० ४**। पत्रस० ६२-१६४ । ले०काल  $\times$  । धपूर्ण । वेष्ट्रन स० ३४ ३६० । प्रा<mark>प्ति स्थान</mark>---दि० जैन सम्बनाय मन्दिर उदयपुर ।

**६६१६. प्रौंत सं० प्र**ोगत्रम० १३ । घा० १२३ ४ ८३ इखा ले० काल ×ा पूर्णा । वेष्ट्रनस० ३०/१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरगुर ।

८६१६. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ७७ । ते०कात х । धपूर्ण । बेष्टनस० १६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन बटा पचायनी मन्दिर डीग ।

विशेष-प्रति जीगाँ है।

६६२०. प्रतिस्ठा पाठ—प्रमाकरसेन । पत्र स०४२-६५। आ०१ $\chi$ ४६ $\chi$ ६५ द्वा । भाषा - संस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\chi$  । ले०काल  $\chi$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० ७४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर लक्कर जयपर ।

६६२१. प्रतिष्ठा पाठ— ४ । पत्रस० २७ । ग्रा० ११४५ है इश्व । माधा-हिन्सी गया। विषय-विधान । र०काल ४ । ने०काल म० ६८१३ । पूर्ण । बेष्टनसं० ६६-६४ ।प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारार्थान्द्र ।टोक) ।

विशेष - शातिसागर ब्रह्मवारी की पस्तक से विदय नेमिचन्द्र ने स्वय लिला था ।

 $\mathbf{c}$ ६२२. प्रतिष्ठा पोठः  $-\times$ । पत्रम० १३३ । प्रा० १२ $\times$ ४  $\frac{1}{4}$  इल्बा । भाषा-सस्कृत । विषय-विद्यान । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टुन स० ५४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर प्राप्तिनस्तर स्थानी बंदी ।

विशेष---प्रारम्भ एव बीच के कितन ही पथ नहीं है।

६६२३. प्रतिष्ठापाठ टोका (जिनसज्ञ कल्प टोका)—परशुराम । पत्रस० १२६ । धा० १२×६ इत्ताः सामा-संस्कृत । स्पिय-स्थित । स्काल × । ते० काल × । स्रपूर्णः । बेष्टनसं०३४/२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन स्रम्यालः सदिर उदयपुर ।

विशेष--१२ पक्ति और २४ अक्षर है।

 $\mathbf{x} \in \mathbf{7}$  ४. प्रतिष्ठा पाठ बचितिका $\longrightarrow$  ४ । पत्र स॰ ११६ । प्रा॰ ११ $\times$  ६ इन्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय  $\longrightarrow$ विष्ठान ४० काल  $\times$  । से॰काल सं॰ १६६६ बैंगाल बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स॰ ११ $\times$  । प्राप्तिस स्थान $\longrightarrow$ वि॰ जैन मन्दिर फलेहपुर गेलावाटी (सीकर) ।

विशेष —नटवरलाल शर्मा ने श्रीमात् माहाराजाधिराज श्री माधवसिंह के राज्य में सवाई जयपुर नगर में प्रतिलिधि की थी।

८६२५. प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह्स--- $\times$ । पत्र सं०१०। ग्रा० १२ $\times$ ७ इखः। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्ण। बेष्टनसं०३१४-११७। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इनग्पर।

विशेष-प्रतिष्ठा मे ताम आने वाले मंत्रों के विधान सचित्र दिये हये हैं।

६६२६. प्रतिष्ठा मंत्र संग्रह—×। पत्रस० ६७ । बा०११ ४६ इला । माषा–सस्कृत-हिन्दी। विषय–विषान । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्णः। वेष्टन सं० ३१५-११७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर कोटडियो का ठगरपर।

**विशेष** — पहिले विभिन्न ब्रेतांद्यापनो के चित्र, तीर्थंकर परिचय, गुगास्थान चर्चा एवं त्रिलोक वर्णन है इसके बाद मत्र हैं ।

विशेष-४५ यत्रो का सप्रह है।

**८६२८. प्रतिष्ठाविधि—प्राप्ताधर** । पत्र स०७ । प्रा॰ १२ $\times$ ४ै इंच भाषा-सन्द्रत । विषय-विधिवधान । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रत स० १७८ । प्राप्ति स्थान -दि० जैन मन्दिर पार्थनाय चौगान वंदी ।

**८६२१. प्रतिष्ठाधिध** —  $\times$  । पत्र स० २। भाषा-हिन्दी । विषय — प्रतिष्ठा । २० काल  $\times$  । के॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६५४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मंदिर भरतपुर ।

**६६२०. प्रतिष्ठासार सप्रह**—**धा० वसुनदि ।** पत्र स०२६ । धा० ११ $\times$ ४ $\stackrel{1}{\sim}$  दश्व । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । र० काल  $\times$  । ले**० काल** स०१६२१ । पूर्ण । वेष्टन सं०१४६ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रजोर अण्डार ।

विशेष--मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य ग्राचार्य श्री नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी।

**६६३१. प्रतिसं० २** । पत्रस० २६ । सा० १०३ × ४३ इक्टच । ले० काल सं० १६७. । पूर्ण । वैष्टनसं**०** ६३४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर स्रजमेर अण्डार ।

प्रशस्ति-निम्न प्रकार है-

सवत् १६७१ वर्षे श्री मूलसचे भट्टारक श्री गुरासेन देवाः धार्याका बाई गौतम श्री तस्य क्रिष्य पण्डित श्री रामाजी जसवन्त बचेरवाल ज्ञानमुख्यमंडला चमरीया गोत्रौ।

म्ब्देर- प्रतिसं० ३। पत्रसं० सं० १२ से २२। धा० १०×४३ इथा। ले०काल ×। धपूर्णं। वेहनसं० ७४१ । **प्रास्ति स्थान**— वि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर। म् ६२३३. प्रति सं०४ । पत्रस०१म-२४ । प्रा० १० ४५) इला। ले० काल × । पूर्स। वेष्टन सं०११४ (क०स०)। प्राप्ति स्थाम—(द०जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष--- प्रथम १७ पत्र नही है।

**८६३४. प्रतिसं० ४** । पत्रस० २७ । म्रा० १२ × ५<sup>9</sup> इखा । **ने०**काल स० १८६१ ज्येष्ठ बुदी ३ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ११० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपुर ।

६६२**४. प्रतिसं०६** । पत्र स०३०। धा०११×६३ इ.खाले क्काल स० १६४६ । पूर्णा वेष्टन स० ७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर ग्रीमनन्दन स्वामी बृदी ।

विशेष-- प० रतनलाल जी ने बंदी में प्रतिलिपि की थी।

**८६३६. प्रति सं० ७** । पत्र सं० ३३ । प्रा० १३ × ७ डवा। ले० काल । पूर्ण । बाटन स० १०४ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर श्री महावीर बुंदी ।

=६३७. प्रति सं० सः । पत्र स०२४ । द्या०१२ % ६३ इत्या । ले० काल ≾ । पुर्ता। बेष्टन स० ३०४ –११७ । प्राप्ति स्थान—्दि० जैन मन्तिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

**८६३८. प्रतिसं० ६ । पत्रस**् ३६ । **लेक्काल** सः १८७७ फागुगा गुरी ७ । पूर्णः । बेष्ट्रनस्र २**६ । प्राप्ति स्थान** —दिः जैन पत्रायती मन्दिर हण्डावाला का डीग

६६३६. प्रतिष्ठासारोद्वारः (जिनयज्ञ कल्प) — प्राशास्त्र । पत्रस० २-१२१ । आ० १०५५ इश्वः । भाषा-सम्कृतः । विषय-विष्यतः। र०काल × । लेकाल × । अपूर्णः। तपुत्रस० २०१ । प्रास्ति स्थान—दि० तैत प्रप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

८६४० प्रोषय लेने का विधान— × 1 पत्र म ०२। मा०११ ×४ टखा भागा हिन्दी। विषय-विधान । र०काल × । ने० काल स०१८४७ । पूर्ण । वेष्टन स०१६४–१६१ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)।

 $\mathbf{x} \in \mathbf{x}$  **१. सह्यप्**जा—  $\mathbf{x}$  ३ पत्रस**०**७। ग्रा॰ ५३  $\mathbf{x}$  ४ ६ खः। भाषा सस्कृतः। विषय-पूजा।  $\mathbf{x}$ ० कालः  $\mathbf{x}$ । ले०कालः  $\mathbf{x}$ । पूर्णः। तेष्टन स०१०४६। प्राप्ति स्थान— भ०६० जैन मन्दिर धजीरः।

८६४२. बारहसी चौतीस वत पूजा—सुभवन्द्रः। यत्र स० ७१ । घा०१२ ४ ५ इत्यः। आसा-संस्कृतः। विषय-पूजा विधानः। र०कानः ४ । ले०कालः ४ । पूर्णः। वेष्टन स०१३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रजमेरः।

६६४३. बारहसी चौतीस कात पूजा —श्रीमुषस्य । पत्रस० ७६ । बा० १२.४४. इ.च. । माधा-संस्कृत । विषय-पृजा । र०काल ४ । ले० काल स० १८४३ माधाः बुटी ६ । पूर्णः । बेहनस० ४५० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर

क्रिय-सवार्ड जयनगर के भादिनाथ चैत्यालय में सवाई राम गोधा ने प्रतिनिधि की थी।

६६४८. बिस्ब प्रतिष्ठा संडलन्स × । पत्र सं०१। झा० द ४६ इत्र । भाषा-सस्हत । विषय-विषान । र०काल × । ले•काल × । पूर्णे । वेष्टन स०३०द/११७ । प्राप्ति स्थान - दि० जेन मन्दिर । कोर्टाडणे का हुगण्युर ।

विशेष--- महल का चित्र है।

६६४५. बीस तीर्यंकर जयमाल—हर्षकीति । पत्र स० २ । घा० ११४५ इथा । भाषा— हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले•काल १६५१ । पूर्ण । वष्टनस० ६३५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर अधुर ।

**८६४६. बीस तीर्थंकर पूजा** - जौहरीलाल । पत्र सर्व ४५ । घार १३ $^{1}$  ४५ $^{2}$  इल्ब । माषा -हिन्दी । विषय-पूजा । रुकाल सर्व १६४६ मावन मुदी ४ । लेव काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुन संव ४८६ । प्राप्ति स्थान -- दिव जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**८६४७. बीस तीर्थंकर पूजा—यानजी ग्रजनेरा**। पत्रस०७३। ग्रा० १९५४ ४०३ स्त्रा भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र०काल म० १६३४ ग्रासीज मुदी १। ले०काल म० १६४४ मगसिर बुदी १३। पूर्वा। बेहुन म० ४६५। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर (जयपुर)।

विशेष-- श्रन्तिम पृष्ठ पर पद भी है।

**८६४८. बोस तीर्थंकर पूजा**— × । पत्रस०४। प्रा०१ ४६ इच्च । भाषा-'हिन्दी पत्र । विषय-पूजा। र०काल × । ले०काल × ।पूर्णा। भेष्टन स०१३७४। **प्राप्ति स्थान** ⊸ दि० जैन महिर लक्कर (अयुर्)।

म्हर्परः **बोसः तीर्यंकर पूजा** — ≻ । पत्रमु० १७ । भाषा हिन्दी पद्या विषयः पूजा । र०काल ४ । ले०काल स० १९४२ । पूर्णः । **बेष्टनस०** ४२ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

**८६५०. बीस विदेह क्षेत्रपूजा— बुग्नीलाल** । पत्रम० ३६ । प्रा० १२ $\times$ ६ डब्ल । मापा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ल० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रावनी मन्त्रिर करीनो ।

**६६४१. बीस विवेह क्षेत्र पूजा** — **शिखरचंद** । पत्र स०४१। आ०६ १८८ ई डब । भाषा — हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल म १६२८ जेठ मरी १ ले काल स०१६२६ वैम ल सुरी ७ । पूर्स । वैष्टुनस० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सोगाणी मदिर करीती ।

**८६४२ बीस विरहमान पूजा** र⊀। पत्रस०४ । आर्थ १०४६ इ.च.। आर्षा सस्कृत । विषय – पूजा। र०काल ४ । ते० काल म० १६३८ फाल्गृन कुरी १ । पूर्णा । वेग्टन स०५२४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपर ।

विशेष--विदेहसेत्र बीम तीर्थकरो की पूजा है।

म्द**४३ भक्तामर स्तोत्र पूजा** नंदराम । पत्रस०२०। या०१३,ँ४५ इखा भाषा-हिन्दी। विराय-पूजा। र०काल स०१६०४ वैमाल मुती १०। ले०काल सं०१६०४ कार्निक मुती १०। पूर्णा।वेष्टन स०११६। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पत्रायती मन्दिर वयाना।

विशेष--- प्रयोजीराम बयाना वाले से बब्सीराम ने प्रतिलिपि कराई थी।

क्दश्रं ४. सक्तामर स्तोत्र पूजा— सोमसेन । पत्र स० १३ । आ० १० $\times$ १ $\int$ ६ छ । भाषा— संस्कृत । विषय—पुजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं० २८२ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**६६४४. प्रति सं०२** । पत्र स०१७ । ग्रा० ६२,४४३ डवा । ले०काल स०१६२८ फाल्गुए। सुरी१४ । पूर्ण। वेष्टन सं०११४४ । **प्राप्तिः स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर । स्६५६, प्रति सं०३। पत्रस०१४। घा०११४४३ इच्चालै०कालसं०१७४१ चैत बुदी ४। पूर्यों । वेस्टन स०१४। प्राप्ति स्थान----दि० जैन मन्दिर धादिनाय बूंदी।

विशेष-करवर नगर मे पं० मायाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

म्द्रप्र**७. प्रतिसं० ४** । पत्र स० १० । मा० ११×४ इचा। ले∘काल सं० १६०४ श्रावसः मुदी ६ । पूर्णं । वेष्टनस० ४२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ह्र नरपुर ।

क्र६५क प्रतिसं० ५ । पत्रसः० १२। झा० १२ × ६ इञ्च । ले०काल + । पूर्ण । वेष्टन स० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर थी महावीर व दी ।

द६६०. सस्तामर स्तोत्र पूजा $--\times$ । पत्र स० १६। मा० ६ $\frac{3}{4}\times$ ६ इच । भाषा-- सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल $\times$ । ले० काम सं० १६१४। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३६। प्राप्ति स्थान- दि० जैन सोगाणो मदिर करीली ।

 $\mathbf{c}$ ६६१. सक्तामर स्तोत्र पूजा $-\infty$ ा पत्रसः १०। आ० १ $\times$ ४३ इखा भाषा-सन्द्रतः । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ने०काल स० १८२७ ज्येच्छ मुदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ३४१ । प्रास्ति स्थान-प्रि० जैन मन्दिर प्राप्तनन्दन स्वामी बुदी ।

विशेष — अजमर मे प्रतिलिप हुई थी।

६६६३. सक्तामर स्तोत्र उद्यापन पूजा—केशब्सेन । पत्रस० १७ । झा० २¦४४१ इचा। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०कास ४ । ले० काल सं० १६६७ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३-२४ । प्राप्ति स्वान—दि० जैन मन्दिर पचायती दूनी (टोक)

विद्योद्य— मधुरा निवासी चंपालाल जी टीग्या की धर्मपत्नी सेराकवरी ने भक्तामर क्रतोद्यापन में चढायाथा।

द्ध्इ. सक्तामर स्तीत्र पूजा— × । पत्रसं० ११ । मा० १० × ४- इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १८४० । पूर्ण । वेष्टन स० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टीक)

द्ध्द्भः भुवनकीर्ति पूजाः— × । पत्रसं∘२ । झा० १३ × ५ इ.च. । भाषा∹सस्कृतः । विषय-पूजा । र०कालः × 1 ले० कालः सं०१ ६६० । पूर्णाः । वेष्टनः सं०१६११ । **प्राप्तिः स्थान**— भ० दि० जैन निकारं काजमेरः ।

विशेष मट्टारक मुवनकीति की पूजा है।

६६६६ महामिषेक विश्वि— × । पत्रस० ३३ । धा० ११ ×४० हेवा । माषा-सस्कृत । विषय — पूजाविधान । र०काल × । ले०काल × । पूर्णा वेष्ठनसं० २४६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर प्रश्निनन्दन स्वामी दृषी ।

**८६५७. महाभिषेक विधि**  $\times$  । पत्रस**० २**-२३ । घा० १०३ ×४६ द्वा भाषा संस्कृत । विषय-विधि विधान । रण्काल  $\times$  । लेण्काल स० १६२४ पौष बुदी १४ । ध्रपूर्ण । वेष्टन स० ३१४ । प्रास्तिस् धान-विध वैज मन्दिर दीवानजी (काम।)

विशेष-सारमगपुर मे प्रतिनिधि हुई थी। म० १६४५ मे महलाचार्य गुराचन्द्र तत् शिष्य ऋ० जेसा क० स्थारणा ने कमेक्षयार्थ प० माराक के लिये की थी।

 $\mathbf{c}$ ६६६. **सहाकोर पूजा-जुन्ताबन**। पन स० ४। ग्रा० १० $_{1}^{2}$ ×४ इंच। ग्रापा-हिन्दी पद्य। विषय—पुजा। र०काल ×।। ले० काल ×। पूर्ण। वेट्टन स० ४०। **प्राप्ति स्थान** – दि० जैन बडा बीमध्यी ग्रेडन स्थान

**८६६. महाशांतिक विधि**— $\times$ । पत्रसं• ६५ । आ० १० $^{3}$ ×६५ इखा । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । १० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  ।  $\mathbb{R}^{\frac{1}{2}}$ । वेष्ट्रन स० २३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन भ्रणवाल मन्दिर उदयपुर ।

द६७१. मासात चतुर्वशी ब्रतोद्यापन— ४ । पत्रम० १६ । ब्रा० १०र्≟४४, इ.च.। भाषा– सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । से०काल सं० १८७२ वैज्ञाल सुदी २ । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० २० ३४ । प्रास्ति स्थान—विव जैन सौगासी मन्दिर करोती ।

**८६७२. मासांत चतुर्वशी वतोद्यापन** $--\times$ ा पत्रसं० ११। प्रा० १० ४६ $^3$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । लेकाल $\times$ । पूर्ण । वेट्टन स० ३१४। **प्राप्ति स्था**न—दि० जैन मन्दिर पार्चनाय चौगान बंदी ।

द६७३. मांगीतुं गी पूजा—विश्वमूथस्य । पत्र स० ११ । घा० ११ ४४ ¦ इथा । भाषा – संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ६० १९०४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २७७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर अयपुर ।

**८६७४. मुक्तावली तत पूजा**—  $\times 1$  पत्रसं॰ २ । प्रा॰ ६ $\frac{1}{8} \times \frac{1}{9}$  इच । माया–संस्कृत । विषय— पूजा । र०काल  $\times$  । के॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ ६४-६५ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन मदिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोंक)

विशेष-भट्टारक सकलकीति कृत मुक्तावली गीत हिन्दी मे धोर है।

 म्ह्फ्ष्मी, भुक्तावित स्रतीद्यापन— × । पत्र स० १२ । मा० १×६३ इन्था । माया-सम्ब्रुत । विषय-पुत्रा । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । वेग्टन स० १०० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोट्डियो का इंग्यप्त ।

६६७७. मुक्तावित बतोद्यापन --  $\times$  । पत्रसः १४ । म्रा  $\times$  । साया-सम्कृत । वियय-पूजा । रक्ताल  $\times$  । लेक्ताल रा० १८६६ जंगठ मुदी ७ । पूग्यं । वेष्ट्रनसः० १०-३६ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक)

विशेष -- गुमानीराम ने देवगोद वास्तव्य मे प्रतिलिपि की थी ।

८६७८. मुक्तावित बतोद्यापन × । पत्रम० १४ । म्रा० ११२४ इञ्च । भागा सस्कृत । विवय-पूत्रा र०काल ∴ । ले०कान × । पूर्ण । बेष्टनम० ८०-१४ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नेमिनाय दोडारायसित (टोक)

विशेष-प० शिवजीराम के शिष्य मदासूख के पठनार्थ लिखी गई थी।

**८६८०. सेघमालिका व्रतोद्यापन**— $\times$ । पत्र म०६। म्रा० १० $\times$ ६ इश्व । मापा-सम्ब्रुत । विषय—पूजा । २०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । म्रपूर्ण । वेष्टनस०४३३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का डूगरपुर ।

द६८२. **सेघमाला तत् पूजा** × । पुत्रसंग्धाः । १०४८ १ द्वाः भाषा-संस्कृतः । विषय-पूजाः। २०काल × । ले० काल ४ । पूर्णः। वेष्टुन संग्ये ० १२ । **प्राप्ति स्थान** --दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायमितः (टोकः)।

६६६३. **याग संडल पूजा**— > 1 पत्रम० ४ । या० ११ × १ इञ्च । भाषा-सम्ब्रत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल > । पूर्णे - २२२४० १४६ । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाथ चौगान वृंदी ।

द्रदर्भ याग संडल विधान—प० धर्मदेव । पत्र स० ४०। आ० २ $\frac{1}{2}$  ६ $\frac{1}{2}$  इस्त । भाषा-संस्कृत । विध्य-विधान । ७०४वल  $\times$  । ल० काल स० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन स० ३२०-१२० । प्राप्ति स्थान—विश्व की मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

 $\mathbf{c} \in \mathbf{c} \times \mathbf{x}$  साम मण्डल विधान  $- \times 1$  पत्र सं० २५-५३ । आ० १० $\times$ ७ इ.स. १ माया - सस्कृत । विषय -पूता । र०काल  $\times$  । ल० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ४८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लागरी वृदी ।

 $\pi \in \mathbb{R}$  . रत्नत्रय उद्यापन—केशबसेन । पत्र स० १२ । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times 4$  े इन्त । मापा— सम्ब्रत । विषय पृजा । र० काल  $\times$  । लेव्काल स० १०१७ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । बेप्टन सं० ३७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरमली कोटा ।

विशेष--प॰ भ्रालमचन्द के शिष्य जिनदास ने लिखा था।

्रद्भासः रत्नत्रयः उद्यापन पूजाः —  $\times$  । पत्र म०६ । ब्रा०११ $_7 \times 5_7^2$  इञ्च । भाषा-सरकृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल स०१६०० सावरा बुदी २ । पूर्सः । वेष्टन स०१३६६ । प्राप्ति स्थानः — भ०दि० जैन मन्दिर म्रजमेर ।

**६६६६. रत्नत्रय उद्यापन पूजा** —  $\times$  । पत्र स० २६ । घा० १० $\times$ ६ $\frac{1}{2}$  इथा । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६४६ ब्रासाढ बुदी १४ । पूर्ण । बेष्टन स० ४० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोट्यों का नैयावा ।

विशेष--नैरावा मे धन्नालाल जी छोगालालजी धानोत्या श्रावः वालो ने प्रतिलिपि कराई थी।

८६८०. रत्नश्रय उद्यापन विधान— ४ । पत्रम०३२ । प्रा०११४७ इच । भाषा-हिन्दी पद्य / विषय-पृत्रा । र०काल ४ । त० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०१०६ । प्राप्तिः स्थान — दि० जैन मध्यर प्रभिनन्दमः स्वामी. वर्षी ।

६६२. रत्नवय जयभाल $-\times$  । पत्र स॰ १६ । या० ६ $\frac{1}{2}\times 2^3$  इन्त्र । भाषा सम्प्रत । विषय-पूजा र०काल  $\times$  । लेक्काल स० १८७२ वैद्याल मुद्दा १४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रवासनी मन्दिर वयाना ।

विशेष — खुशःलचन्द नं बयाना में प्रतिलिपि की थी। श्लोको के ऊपर हिन्दी में ग्रयंदिया हमा है।

द्ध है  $\mathbf{x}$  रतनवय कथमाल $\mathbf{x} \leftarrow \mathbf{x}$  । पत्र संब्ध  $\mathbf{x}$  । प्राप्त १००३ । प्राप्त १००३ । प्राप्त स्थान — भ ०दि० जैन भिष्य चुका  $\mathbf{x}$  । प्राप्त स्थान — भ ०दि० जैन भिष्य चार्य भ

विशेष प्रति टब्बा टीका सहित है।

**६६६४, रस्तत्रय जयमाल**— × । पत्र सं०६। फ्रा० ६×४ इ**वा** भाषा-प्राकुत । जियय – पूजा। र०काल × । ले०काल × । पूर्णा । वेष्टन स०६७७ । **प्राप्ति स्थान** — म०दि० जैन मदिर ब्रजोत्त ।

**८६९४. रत्नत्रय जयमाल**—× १ पत्रस**े। या० १०**२४४ इचा । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा। र०काल x । ले०काल x । पूर्ण । बेष्टनस० २७० । **प्राप्ति स्थान**—दि० गंग मस्रि पार्थ्यनाय चौमान बुदी।

**८६८६, रत्नम्य जयमाल**— × 1 पत्रस० ६ । या० १०×४३ दश्व । अप्तः— ००७ त सम्झत । विषय-पूजा । र०कान × । ले० कान स०१८०४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४३ । प्राप्ति ४४३ – दि० जैन प्रचायती मन्दिर करोली । ६६७. रत्नत्रय जयमाल— × । पत्रस० ४। भाषा प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । धपुर्ण । वेष्टनसं० ३४। प्राप्ति स्थान---दि० जैन तेरहपयी मन्दिर उदयपुर ।

६६६६. रत्नवय जयमाल  $-\times$ । पत्रतं० ११। प्राः  $=\frac{3}{6}\times \S^{\frac{1}{6}}$  इञ्च । भाषा-हित्ती । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । से०काल सं० १६६३ प्राप्तत बुदो २ । पूर्ण । बेष्ट्रनस० ६६३ । प्राप्तिस स्थान- भ० दि० जॅन मन्तिर प्रजमेर ।

विशेष -- मागीलाल बडजात्या क्चामगा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

६६६६. रत्नत्रय जयमाल भाषा — नयमल । पत्र सं १ १०। घा० १२ $\times$ ७ इ.स. भाषा — हिन्दी । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० १६२४ फानुसा मुदी २ । पूर्मा । वेस्टन सं० ४६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६७००. **रस्तत्रय पूजा**—स० पद्मानस्य । पत्रस० १६। मा० ११ x ४ दख ।भाषा-सम्ब्रुत । विषय-पूजा ारकाल x । से० काल x । पूर्ण । वेष्टन स० ३५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन महिर कोरमनी कोरा ।

ष्प्र**ः रस्तत्रय पूजा**— xा पत्रसं० १४ । घा० ११ x ७ हुँ इचा भाषा-सस्कृत । विषय— पूजा । र०काल x । ले०काल x । पूर्ण । बेष्टन सं० १४७६ **। प्राप्ति स्थान**— स० दि० जैन मन्दिर ध्रजमेर ।

= ७०**२. रस्तत्रस्य पूजा**----× । पत्र स०१२ । झा०१२-१४४ १ इलाः माषा-संस्कृतः । विषय-पूजाः र०कालः × । ते•कालः × । पूर्णः । वेष्टनसं०३६८ । **प्राप्ति स्थान**----भ०दि० जैन मन्दिर झजमेर।

स्७०३. रस्नम्मय पूजार -- ४.। पत्र स० १४ । घा० < > ६१ इच्छा गापा-संस्कृत । विषय-पूजा। रक्काल ४ । ने० कान ४ । पूर्ण। वष्टन सं०११४ । प्रास्ति स्थान-—रद० जैन तेरहाथी सन्दिर दोसा।

=७०४. रत्नम्रम् पूजा 🗴 । पत्रस०५ । म्रा०१२४६} इत्ता । भाषा स्तस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले•काल । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १६⊏-११० । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाप टोडारायसिङ् (टॉक्)

ष्ठ**०५. रतनत्रध**ाजा । । पत्रस०२२ । ग्रा० ११×५३ इ.स. । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल स० १८२३ । पूर्णा । वेष्टन स० ५२० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपुर ।

विशेष-सवाई जयपुर म लिखा गया था।

८७०६. रत्नत्रयपुला---×। पत्रस० १६ । घा० ---×५२ हजा। भाषा संस्कृत । विषय---पूजा । र•काल × । ते•काल × । पूर्णा । वंग्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान---वि॰ जैन मन्दिर राजमहत (टॉक)

८७०७. रत्नव्रय पूजा -- ×। पत्रसं० १६ । झा० १०×५ इच्च । भाषा संस्कृत । विषय— पूजा । र०काल अर्थ । ले०काल स०१८७६ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०१०८ । प्राप्ति स्थान —वि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) स्७० स्. रस्तम्रस्य पूजा— × । पत्रस० ६ । सा० १०३, ४१३ इ.च. । साथा-सम्इतः । विषय-पूजा। रक्ताल × । ते० काल × । पूर्ण। बेष्टनसं० ११/३४ । **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन सीगासी संदिर करोती

६७०**६. रस्तत्रय पूजा** $-\times$ । पत्रस० २६। माषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । के०काल। पूर्ण। त्रेष्टनस० ६। **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पंचायती मंदिर हीग।

विशेष-दोहा शतक-रूपचन्द कृत तथा विवेक जखडी-जिनदाम कृत हिन्दी मे भौर है।

**८७१०. रत्नत्रय पूजा** —  $\times$  । पत्र सं० ४ – २५ । भाषा — सस्कृत । विषय पूजा । र०काल  $\times$  । केश्काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन स॰ ६०/३१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन समबनाय मंदिर उदयपुर ।

द७१२. रस्तत्रय पूजा— $\times$  । पत्रस० १६ । क्यं० १२ $\times$ ७ इन्छ। साथा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० ११० । प्रास्ति स्थान – दि० जैन मन्दिर प्रसिनन्दन स्वामी वंदी ।

६७**१३. रत्नत्रय पूजा जयमाल** —  $\times$  । पत्रसं० १७ । माषा-प्रपन्न ग विषय-पूजा  $\mathbf 1$  र० काल  $\times$  । लेकाल १७६६ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन स०१३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मंदिर मरनपुर ।

८७१४. रत्नमय पूजा—टेकचन्द । पत्र सं०२६। घ्रा० १४×६१ इस्र । भाषा-हित्ती। विषय पूजा। र०काल ४। ले०काल स०१६२६ फागुए। सुदी १४। पूर्ण । बेहन स०३६। प्रास्ति -स्थान —वि० जैन तेरह पथी मन्दिर नैलवा।

**८७१४. प्रतिसं० २** । पत्रस० ३५ । द्या० १३ $\frac{1}{2} \times V_{\gamma}^2$  इस्त । ले० काल स० ११७२ । पूर्णे । वेष्टन म० १४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्बेलवाल मदिर उदयपुर ।

**८७१६. रत्नत्रस पूजा— द्यानतरास** । पत्र स० ८ । सा० ११ ४ ४ ६ व । भाषा-हिन्दी प**स ।** विषय-पूजा । र० काल 🗶 । ले०काल ≿ । पूर्ण । बेष्टन स० ६२ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर तेरहपेथी मालपूरा (टॉक) ।

८७१७. प्रति सं० २ । पत्रसं० ६ । ग्रा०१०४४} इंच । ले०काल स० १६६१ । पूर्णं। बेष्टन सं०१०३ । **प्राप्ति स्थान** – दि०जैन ग्रग्रबाल मन्दिर उदयपुर ।

**५७१८. रत्नत्रय पूजा माथा**—× । पत्रस० १२। मा० ११२ूँ× इङ्च । मावा-हिन्दी । विषय पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन स० ११४६ । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मंदिर म्रजमेर ।

**८७१६. रस्तत्रय पूजा**— × । पत्रतं० ४६ । या० ६×५ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र•काल × । ले०काल सं० १६४० । पूर्ण । बेष्टनसं० १० । प्राप्तिः स्थान— दि० जैन प्रप्रवाल सन्दिर नैस्सा क्ष**्र र रत्नप्रस पूजा** —  $\times$  । पत्र त० २०। द्या० १२ $\times$ १५ इ.ज.। साथा-हिस्टी यद्य । विषय-पूजा । ग० वाल  $\times$  । लेक्जल स० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन स० २६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर चीचियान मानपुर (होव) ।

७५१. रस्तत्रय पूजा $-\times$ । पत्रस॰ २०। मा० ११ $\times$ ० एखा। भाषा-हिस्सी । विषय-पूजा। र० साल  $\times$ । तै० काल  $\times$ । पूर्णे। वेष्टनस॰ ६२/६१। **प्राप्ति स्थान** – दि॰ जैन मन्दिर भादवा (गजस्थान)।

ष्ठ७२२. रत्नत्रय पूजा — × । पत्र सं०३६ । सा० ११×६ इचा । सासा-हिस्दी । विषय-पूजा । र० नाल × । से क्साल सा० १६६२ माग सुदी १ । पूर्ण । वेप्टन सं० ११६ । प्रास्ति स्थान— विज जैन महिन्दे नेदस्पर्धा दोगा ।

विशेष-दांमा मे प्रतिलिपि हुई थी।

च्छ**्रे. रस्तत्रस पूजा** - X । पत्रस० १६ । झा० १० X ६ इचा। भागा हिन्सी पद्या । चिराय -पूजा। र० काल X । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३३ । **प्राप्ति स्थान** -- दि० जैन मस्दिर श्री महावीर बुंदी।

द्र**७२४. रत्मत्रय पूजा**—× । पत्र स० २३ । साया-हिन्दी । विषय-प्त्रा । ले०काल ४ । पूर्यो । बेठून स० २० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायनी सदिर भरतपुर ।

६७२४. रत्नत्रय पूजा विधान—४ । पत्र तक १६ । याक १०}ं ८८ॄं १-ता ) आया-संस्कृत । विध्या—पृत्रा । रक्तास—४ । तेक काल ४ । यूग्तं । वेष्टन मक ६११ । **प्राप्ति, स्थान**— भक्त कि जैसे महिन्द प्रजमेर ।

 $\pm$ ७२६. रस्तत्रय पूजा विधान—पत्र स० १६ । बा०  $\pm$ ८ूँ ५१ इच । भाषा-सम्बद्ध । विध्य-पूजा । र०काल— $\times$  । लेकाल— $\times$  । पूर्ण । वेश्त स०६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मस्दिर ब्रादिनाय स्वामी मानपुरा (टोक) ।

च ७२७. रश्नित्रया मंडल विवान — × । पत्र मं∘ ३८ । मा॰ १४×४६ इत्या । माषा — हिन्दीपद्य । विवय-पूजा १२०कान × । से॰ कास सं०१९४० चैत्र मुदी२ । पूर्णा विष्टन स०३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर तेरहपथी मानपुरा (टोक)।

विरोध - फ्लबन्द सौगासी ने प्रतिलिप की भी।

द्धरुद, रस्तराय मंडल विधान—X। पुत्रश्च १०। मा०द्री ४७} इ.व। भाषा-हिन्दी। विध्य-पूजा। र०काल ४। ले॰काल X। पूर्णी। वेष्टन सं० ७३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सम्बेशनाल मन्दिर उदयपुर।

८७२६. रस्तत्रय विधान (वृहद) — × । पत्र सं०६। झा० १०३४७ इ.स.। माया-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १०४ । प्राप्ति स्थान-वि• जैन घपवाल मन्दिर उदयपुर।

= ७३०. रस्तत्रम विचान—×।पत्र सं०२४। मा० १२×६ है इला। भाषा-हिस्सी पदा। विचय—पूत्रा। रकतत×।लेककाल स० १६३० पीप बुरी १३। पूर्णा नेष्टन स० १७७। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्तिर फनेहपुर लेकावाटी (सीकर)। विशेख स्योबनस शावक ने फतेहपुर में लिपि कराई थी।

क्ष**्र १. रत्मत्रय विधान—** × । पत्रस० ११ । ब्रा० १०<sup>5</sup> ४ ६० वा भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा ≀ रुकाल × । से •काल सं० १०६६ ब्रामोज बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं० १८८ । **प्राप्ति -**स्थान—दि० जैन मदिर फतेहपुर भेलावाटी (सीकर) ।

**८७३२. रस्तश्रय विद्यान**— $\times$  । पत्र० स० ४५ । या० ११ $\times$ ५ दश्व । भाषा-हित्ती । विवय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ६३/६४ **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर भाववा (राजस्थान) ।

८७३३. रत्न**लय विघान** — × । पत्रस्त०१ । धा० १३×४ इच । भाषा-सम्ब्रुत । विषय-पूत्रा र०काल × । से०काल × । पूर्णा वेष्ट्रन स०४३६/३८७ । प्राप्ति, स्थान — दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८७३४. रस्तन्नय विधान— $\times$ । पत्रस $\circ$ ३६; घा० १० $\times$ ६) इथा। भाषा—हिन्दी । विध्य—पूजा। र $\circ$ काल  $\times$ । ले $\circ$ काल म $\circ$ १६४३। पूर्ण । बेहुन सं $\circ$ २११। प्राप्ति स्थान—कि $\circ$  जैन मदिर पार्श्वनाथ जोगान व दी।

**६७३५. रत्नत्रय विद्यात**— $\times$  । एत्रस $\bullet$  ४७ । ध्रन्० १२ $\times$ ६ इच । शिया-सम्बन्धी । विषय-पूजा । र $\bullet$ काल  $\times$  । ले $\bullet$ काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रनसं $\bullet$  २६ । **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन मंदिर नागरी ब दी ।

**८७३६. रत्नत्रय विद्यान**— $\times$  । पत्रस**०३। ग्रा०१३** $\times$ ५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १६६ '१८७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायमिङ ।

६७३७. रत्नम्रय धतोद्यापन— $\times$ । पत्रसं० १२ । मा० १२ $\times$ ४ $^*$  इश्वः। भाषा-सस्कृत । विषय—पूजा। र०काल $\times$ । ले०काल $\times$ । पूर्णं। वेष्टनस०२५२ । प्राप्ति स्थान—ैद० जैन मन्दिर लक्कर, अग्रपुर।

**८७३८. रत्नशय शतोवधापन**— × । पत्रसं• १४। आ॰ १२ ×४ है इञ्च ।भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल स०१८५६ मादो मुदी ३। पूर्ण । वेण्टन म० २६।१४। **आप्ति** ∼ स्थान-दि० जैन मन्दिर पंचायती दनी (टॉक)।

ष्परेह. रविदात पूजा—स० वेवेन्द्रकीति । पत्र स० १ । ग्रा० ११ रे ४ इत्रा । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । रक्तान ४ । लेक्नाल स० १८५० । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३८८ । प्राप्ति स्थान— भ० वि० जैन मदिर ग्राज्येर ।

ष्**४४०. प्रति सं०२ ।** पत्र सं०६ । म्रा० १०×५ इञ्च । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० २५४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर पास्वेनाथ चौगःत बुंदी ः

५७४१. रिविधत पूजा $-\times$ । प्रथस० १०। प्रा०१० $\times$ ४ इच । भाषा संस्कृत । विषयपूजा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० २२१। प्राप्ति- स्थान-दि० जैन मन्दिर
रावमहल टोक।

प्रथप र रिवटात पूजा एवं कथा—मनोहरदास । पत्रसं∘ २०। घा० १३ ४४३ इन्छ । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा एवं कथा। र०काल ४ । तेकाल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ५७ । प्राप्ति— स्थास—दि० जैन मन्दिर दीवान चेननदास पूरानी डीग ।

द७४३, रिविधतो**द्यापन पूजा--रत्नभूषरा** । पत्रसं∘ द । म्रा० १०४६ इञ्च । सावा-संस्कृत । विषय-पूजा · र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन संदिर पार्वनाथ चौगान वृदी ।

द्ध७४४. प्रति सं० २ । पत्र स० १३ । घा० १०३ ×६ है इ.ख.। ले∙काल × । पूर्ण् । वेष्टन सं० १४४, ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हंगरपुर ।

६७४५. रिवधतोद्यापन पूजा—केशवसेन । पत्र सं०६। झा० १२×५० इञ्चा भाषा— सस्हतः । विषय-पूजा । र०कातः × । सै०कातः × । पूर्णा । वेष्टन स०१०० । प्राप्ति स्थान ---विरु जैन मन्दिर पंजायती करोली ।

६७४६. रेवा नदी पूजा— विश्वसूचरा। पत्रसं०६। ग्रा० ११ $\times$ ६ $^{\circ}$ ६ था। भाषा-सम्बन्धः । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टन सं० २७८। प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर।

विशेष-नेवा नदी के तट पर स्थित सिद्धवरकूट तीर्थ की पूजा है-

६७४७. रोहिएसी धात पूजा—  $\times$  । पत्र स०६। ग्रा० ११ $\frac{3}{2} \times$ ६ दश्रः। प्रापा—सम्क्रतः। विश्वस—पूजाः। र०कालः  $\times$ ा ले०कालः  $\times$ । पूर्णः। बेष्टन स०१३४५। प्राप्ति स्थान—-भ०दि० जैन संदिर ग्रजमेरः।

द्ध**४८. रोहिसी शत पूजा**---× । पत्र सं० ४ । प्रा० १०४१ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन स०३०४ । प्राप्ति स्थान----भ० दि० जैन मन्दिर धनभेर ।

 $\mathbf{x} \in \mathbf{v} \in \mathbf{v}$  **रोहित्सी बत पूजा।** पत्र सं०२१ । मा० ६ $\times$  ४३ इंच । भाषा-हिन्सी (प्रष्टा)। विषय – पूजा। रक्ताल  $\times$  । लेक्नाल  $\times$  । पूर्ण। वेष्टन सं०२७८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मिदर पार्चनाथ चीमान, जूंदी।

विशेष-मूल पूजा सकलकीति कृत है।

८७४०. रोहिस्पी स्नत संडन विधान—  $\times$  । पत्र सं $\circ$  २०। मा०  $\circ$   $\circ$   $\times$  ४ इ.स.। भाषा— संस्कृत हिन्दी। — विषय पूजा। र०काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं $\circ$  २००। प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन सन्दिर पाश्चेनाय चौगान बंदी।

स्७५१. रोहिस्सी बतोक्यापन--वादिकन्त्र। पत्रसं∘ २१। घा०१० ४४ है इ.च.। भाषा--संस्कृत । विषय पुका। र०काल ४ । ले०काल सं०१७१३ संगसिर सुदी ४३ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं०१०२। प्राप्ति स्थान---दि० केन सप्रवाल मन्दिर उदयपुर। म्हण्ये स्त्रोहिश्गी स्तरोद्यापन—× । पत्रस्क १६। म्हा० ६×६ इचा । माया—संस्कृत । विषय—पूजा । र०कास × । ते० काल सं० १८६८ । पूर्ण । वेष्टनस० ११ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर पास्वेनाय चीयान वृदी ।

विशेष-प्रति जीर्ग है।

६७**५४. रोहिएगी बातोचापन पूजा**—  $\times$  । पत्र स० २०। मा० १० $^1$  $\times$ ४ इचा । साथा- सस्कृत-हिन्दी थियय-9जा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$ । पूर्ण । वेप्टन स० १६४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर राजमहल (टोंक)

 $\mathbf{x}$ ७४%. रोहिस्सी वतोद्यापन — केशवसेत —  $\lambda$ । पत्रस्व १७ । स्राव १४ × ४ ६४ । भाषा — सस्कृत । विषय-पुत्रा। २०कान  $\times$ । वे० कान  $\times$ । पूर्व । वेष्टन म० १३१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मिल्ट बोरस्सी कोटा।

ष्ट**७५६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १३ । आ० १२ × ४ दै इ.च.। ले० काल × । पूर्गा विष्टन सं० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लक्षर,जयपुर ;

५७५७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १० । प्रा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इन्त । ले०काल  $\times$  । पूर्गं । बेप्टनस० ६१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर-।

८७४८. प्रति स० ४ । यत्रस० १६ । घा० १० $\frac{3}{7}$  $\times$ ५ इख । ले०काल imes । पूर्ण । वेग्टन स० ११ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टॉक)

मध्य १८. प्रतिसं० ४ । पत्रसं० ४ । सा० ११ x ७ दर्खाने० काल x । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० २५४ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चीमान वंदी ।

प्रधर्भः सम् पंच कस्यास्यक पूजा — हरिमान । पत्रस० १७ । घा० १२ × ७ है इचा । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं० १६२६ । ले०काल सं० १६२० मार्गमीयं बुदी व । पूर्ण । वेष्टन सं० ४२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायनी मन्दिर करौली ।

विशेष — भीकालाल छावड़ा की वहिन मूलोबाई ने पंचायती मन्दिर करीली मे सं० १८८१ में चढाई थी।

**८७६१ लघुशांति पाठ — सूरि शानदेव ।** पत्रसं० १ । आ० १०४४ इचा । नाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६२०। **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष -- प्रारम्भ में पार्श्वनाथ स्तवन दिया हुआ है, जिसे घण्टाकर्स भी कहते हैं।

क्ष**५२. लघुशान्ति पाठ**— $\times$ । पत्र स०३। ब्रा०१० $\times$ ४ इञ्च। नाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रक्ताल $\times$ । तेरुकाल $\times$ । पूर्ण। वेष्ट्रन सं०१६६/४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्यनाय स्वरत्न (कोटा) ८७६३. लघुशान्तिक पूजा--पदानिङ । पत्रसं ३८ । प्रा ११३  $\times$  १ इस । भाषा- सम्कृत । विषय- $\Delta$ जा, र॰काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं ॰ ३६ । प्राप्ति स्थान-- दि॰ जैन मदिर कोठ्यो का नेगावा।

**८७६४ लघुशान्तिक विधि**- $\times$ । पत्र स०१७। झा०१० $^{1}_{2}$  $\times$  $^{1}_{2}$  इन्ना भाषा-संस्कृत। विषय-विषान। र०काल  $\times$ । ले०काल स०१४४६। पूर्ण। वेट्टन स०६२७। प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर वयपुर।

## विशेष---प्रशस्ति---

सबन् १५४८ वर्षे चेत्र बुदी १० गुरु दिने श्री मूलसधे नद्यास्ताये स० गच्छे, बलान्कारास्ते श्री कुन्द-कुन्दाचार्यास्वयं भ० पद्मनस्टिदेवा तत्पट्टे भ० श्री धुभचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत् (लाग्य भ० रत्नकीतिदेवास्तत् (लाग्य ब्रह्मा मोद्रुराज ज्ञानावरस्तो कर्मक्षयार्थं लिखापित ।

## ज्ञानवान ज्ञानदानेन निभयो ऽ मयदाननः । श्रभयदानान् मुखी नित्यनिर्व्याधी भैषत्र भवेन

८७६५. लघु सिद्धचक पूजा — म० शुमचन्द्र । पत्रस० ४६ । घा०११८४ इत्त । भाषा-सम्बत्त । विषय-पूजा । रक्ताल × । लेक्ताल × । पूर्ण । बेब्नुसं०२४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**६७६६. सधुस्तपत विधि** —  $\times$  । पत्रस॰ १ । धा॰ ६ $^1_2 \times 1^1_2$  इत्र । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र॰कान  $\times$  । में•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ४५ । प्रास्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर राजमहल (टोक)

द७६७. **लिक्सिकानोद्यापन पूजा**—× । पत्रस० ११ । झा॰११×४ इञ्ब । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले० काल स० १६१० । पूर्ण । वेष्टन स० ४४,२४ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन प्रवादनी मंदिर दुनी (टोक)

ष्ठ**६६. लक्षिषविधान—ऋ० सुरेग्द्रकोसि** ।पत्रस० १०। घा० १०} × ४ इच । मापा-सम्हत । विषय–bबा । र०काल ४ । ले**०काल** स० १८६८ फायुग्ग बुदी १४ । पूर्ला । वेष्टन स० १४-१०४ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायमिह (टोक)

= ७६६. सिंध्यविधान —  $\times$  । पत्र स $\circ$  ४ ११ । झा० १० $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इश्वः । आपा-सस्कृतः । विषय-पूजाः । २०कालः imes । ले० कालः imes । झपूगं । बहुनस $\circ$  ६४६ । **प्राप्ति स्थान** — अ० दि० जैन मन्दिर अक्सरः ।

८७७१. स्रविधिविधान उदयापन पाठ। पत्रसः १२। मा० ६ दे×६ इच । भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा एव विधान । र०काल ∧ । ले० काल सं०१६०५ भादवा सुदी द । पूर्ण । बेष्टन स०१६६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक)। ८८७२ सर्घिष विधान पूजा—हर्षकीति । पत्र छं∘२। घा० १० ४४ इ.ख.। भाषा-सन्छन्। विषय—पूजा। विश्वता ४। लेकाल ४.। पूर्णाविष्टन स० १४२। **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मस्तिर राजन्य तरोक)

६७७३. लब्बि**विधान पूजा** —  $\times$  । । पत्रस**ः** १३। प्रा॰ ६३ ४४, इ.च । भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । से०काल स०१ ८०६ भावना बुदी १० । पूर्ण । बेष्टन मं०१२२ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पनायनी मदिर बयाना ।

६७७४. **सर्वध विधानोध्यापन पाठ**—  $\mathbf{x}$  । पत्रस्व ७ । झा० १० $^{\dagger}_{2} \times \mathbf{u}^{\dagger}_{3}$  इव । मापा– सस्कृत । र० काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०१६/३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सीगानी संदिर करोनी ।

ष्ठ७५% वर्तमान चौबोसी पूजा—चुकोसाल । पत्रस॰ ७१। ब्रा॰ १२१ै४७१ इया। माया-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल 🗶 । से० काल 🗶 । पूर्ण । वेटन स० ४६ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन प्रचामनी महिर करोती ।

ष्ठ**७६. वर्तमान चौबोसी पूजा**— × । पत्र स० १११ । स्रा० १० र्रे ४६ रे इस्त्र । साया हिन्दी पद्य । विषय-पूजा र ७० काल × । ने० काल भं∘ २११७ पौष युदौ १३ । धूणौ । वेट्रन स० १३० । प्राप्ति स्थान - दि० जैन मध्यि नेरहपथी दौसा ।

६७७७. वर्धमान पूजा -- सेवकराम । पत्र स०२ । प्रा०११ $\times$ ६५ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल १८४६ । पूर्ण । वेष्टन म० ६६६ । प्राप्ति स्थान --- दि० जैन मदिर लक्कर जयपुर ।

८७७८. बसुधारा $-\cdot \times$  पत्रस $\bullet$  । आः ६ $\times \times$  ६%। भाषा-सस्कृत विषय - विशि विश्वान । र०काल  $\times$  । ले०काल स $\bullet$  १७५३ । पूर्ण । बेष्टन स $\bullet$  २८६ - १२६ । प्राप्ति स्थान — वि $\bullet$  जैन मन्दिर नैमिनाथ टोड.गयसिह (टॉक) ।

ष्प्रथण्डः **वास्तुपूजा विधान** — × । पत्र स० प्रशिशः घा० १३ ४४ इ.च.। भाषा-संस्कृत । विषय –विधान । र०कालः × । ले•कालः × । अपूर्णः । वेष्टन स० ४३७,३८८ । आरप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर ।

ष्ठ्यक्. **वास्तुपूजा विधि**— × । पत्रसं∘ ६ । मा० ६ ¦ × ६ इ.च.। माया-सस्कृत । विषय -पूजा। र०काल × । ले०काल स० १६४४ भादवा सुदी १३ । पूर्णा विष्टन सं० १२१३ । प्राप्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर मजभेर ।

द**्र वास्तु पूजा विधि**— × । पत्र स०७ । घा० ५ × ६१ इ.च । भाषा-विध न । विषय-विधान । र० काल × । के०काल × । पूर्ण । वेष्टनस० २६६/११७ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर कोटडियों का ब्रंगरपुर ।

**८७८३. विवेहलेत्र पूजा**—  $\times$  । पत्रमं० ३८ । म्रा॰ ११ $\frac{3}{4}$  $\times$ ८ ६ च । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ६७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर खडेलवाल उदयपुर ।

८७८४. विद्यमान बीस विरहमान पूजा—जौहरीलाल । पत्रसं० ८ । प्रा॰ ७१४५१ इश्व । माषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४७३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर सक्कर जवपुर ।

**८७८५. विधमान बीस तीर्थंकर पूजा— ग्रमरचन्द्र ।** पत्रसं० २८ । ग्रा० ११ × ५१ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल स० १६२५ फाल्गुस सुदी १। ते०काल सं० १६२५ । पूर्य । वेप्टन स० १८४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सक्षेतवाल पचायती मन्दिर ग्रनवर ।

**८७८६. प्रतिसं० २**। । पत्रसं० २६ । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

**८७८७. विमानपंक्ति पूजा**—×ा पत्रसं∘ ४। मा॰ ११×४ इंच । माया—सस्कृत । विषय-पूजा।र० काल ×। लेकाल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ३३८/३३४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाय मनिर उदयपुर।

ष्यप्रमान स्विमान रास्ति पूजा  $-\times$ ा पत्रस्त हा प्रा १० $\times$ ६ इञ्चा भाषा-सस्त्रन। विषय-पूजा। र०काल  $\times$ ा ले०काल स०१६३ मा पूर्ण। वेष्टन सं०२०१/१९७। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हूं गरपुर।

**८७८१. विमानपंक्ति पूजा**— × । पत्रसं∘ ७ । ग्रा०१०हे×४<u>१</u>डच्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काम × । ले०कास × । पूर्ण। वेष्टन स० ५० (घ)। **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन प्रथमसम्प्रतिस्व उदयपुर ।

६७६०. बिमान पंक्ति उस्तोदघापन —श्राचार्य सकलमूबर्ण । पत्रसं०६ । घा० ११ × ४  $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनस० ३२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सवपाल मन्दिर उदयपुर ।

ष्ट**७६१. प्रतिसं० २** । पत्र स० ६ । ग्रा० ११ ४४ ६ स्था। र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्यो । बेष्टन सं० २७४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन ग्रवचाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--श्राचार्यं नरेन्द्र कीर्ति के पठनार्थं प्रतिसिपि हुई थी।

८७६२. विसान सुद्धि पूजा— $\times$  । पत्रसः ११ । प्राः १० $\frac{1}{4} \times \mathbb{Q}_{q}^{2} \times \mathbb{Q}_{q}^{2}$  ६वा । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । से०काल स० १८२७ । पूर्णः । वेष्टन सं० १२२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पात्रजेनाय मन्दिर चीगान (वृदी) ।

विशेष - सरोले ग्राम में लिखा गया था।

८७६३ विमान मुद्धि झांतिक विधान—खन्द्रकोति । पत्रसं०१४ । बा० ८४६ १ द्या । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०कान ४ । ते•कान ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०३०३/१९७ । आप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटवियों का हुगरपुर । ८७६४. विवाह पटल $-\times$  । पत्र स॰ ११। घा० १० $\times$ ४ ६%। प्राचा-संस्कृत । विषय-विषान । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं०२३ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन पार्थनाथ मंदिर इन्दराद (कोटा) ।

द्ध€५. विवाह पटल—×। पत्र सं० २७। भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल ×। से०काल सं० १७८७ द्वि० भादवा बृदी १। पूर्ण । वेष्टन सं० ४५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपंपी मन्दिर बसवा।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है

= ७६६. विवाह पटल —  $\times$  । पत्र सं० ७। प्रा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय विधान । र०काल  $\times$  । ने० काल स० १६६६ । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १७३ । प्रास्ति स्थान—म० दि० जैन मटिर प्रजमेर ।

८७६७. विवाह पटल— 🗴 । पत्रमं० ६ । ग्रा० १० ४४ प्रैह्स्य । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल 🗴 । से॰काल 🗴 । पूर्ण । बेट्टन सः० १०६८ । **प्राप्तिः स्थान-**-भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजनेर ।

विशेष - श्री हरिदर्ग मध्ये लिपिकृत ।

**८७६ म. विवाह पद्धांत**— × । पत्र स० १६ । भा० ६ रे ४ ६ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-विवात । र०काल × । ले० काल सं० १८६७ श्रांतरा बुदी २ । पूर्ण । बेवृत स० २८० । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पार्खनाथ मन्दिर चौतात बुंदी ।

**८७६६. विवाह विधि**— $\times$ । पत्रस० २७ । प्रा० १ $\times$ २ इन्त्र । भाषा-सस्कृत । विधय-विधान । र०काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टनसं० २२१/६६७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

क्षत्र ० . प्रतिसं० २ । पत्र स० १-११ । से०काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २२२ ६६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

प्रवार्भ से विद्या पूर्व क्रास्ट्यताका स्थापन नवग्रह पूजारू× । पत्र स० १ । घा० ११×६} इच । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । २०काल × । ने०काल × । पूर्ण । वेप्टन स० २०२-११७ । प्रापित स्थान-भ० दि० जैन मन्दिर कोट्डियो का ब गरपुर ।

मन्दर स्वत निर्माय × । पत्रसं∘ ४० । मार्ग १३×५१ इ.स. । भाषा संस्कृत । विषय-विधि विधान । र०काल × । से०काल सं० १६५२। पूर्म । बेष्टनस० ३२२ । प्राप्ति स्थान वि० जैन मन्दिर पार्थनाय जीगान ब्रोते ।

प्यत्न स्वत पूजा सञ्चह— × । पत्र सं० २०६ । झा० १० रे×५ इच । आपा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १८०६ श्रावरण सुदी ५ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६१ । आप्ति स्थान-वि० जैन मदिर पार्यनाम चौतान बृंदी ।

मन्दर्भः सतः विधान— $\times$  । पत्र सं० १६ । धार्० १० $\frac{1}{4} \times \frac{1}{6}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय-विधान । र० काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १०४६ । प्रास्तिस्वान—पर० दि० जैन मियर अजनेर ।

×

विशेष -- वतो का ब्योरा है।

a=0. ग्रस्त विद्यान $-\infty$  । पत्रसंत्र Y=0 । ग्रा०  $0 < x^2$ , x=1 भाषा-शस्कृत । विद्य-विद्यान । र०काल  $\times$  । ले०काल संत्र १८६२ । ग्रापूर्ण । वेष्टन संत्र ७४१ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर व्यपुर ।

विशेष--पं० केसरीसिंह ने जयपुर मे प्रतिलिपि कराई थी।

स्मत् द्वात विद्यान— × । पत्र म०१६ । मा० १०×५ दवा । माचा— संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । लेक्काल × । पूर्णः । बेष्टन स०२६१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौमान दृदी ।

स्ट०**७. वत विधान**— × । पत्र स० ४ । म्रा० १२×४ दश्व । मापा— सन्कृत । विधाय -विधान । र०काल × । ले०काल । पूर्ण। वेष्टन सं० ४४६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर।

ह्मद्भारत विद्यान पूजा--- ग्रमरचन्य । पत्रसं० ४२। प्राप्त १्रै ४७ टच । भाषा हिन्दी। विषय---पूजा। र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णा विष्टन स० ६ । प्राप्ति स्थान--- टि० जैन पवायती मन्दिर वयाना।

विशेष-प्रारम्भ का पाठ-

बन्दो श्री जिनराय पद, ग्यान बुद्धि दातार। बन पत्रा भाषा कहो, यथा मुश्रुत श्रनुसार।

×

×

धन्तिम पाठ---

तीन लोक मांहि सार मध्य लोक को विचार । ताके मध्य दीपोर्दाच ग्रसस प्रमानजी। सब दीप मध्य लसै जंबू नामा दीप यह ताकी दिला दस तामै भरत परवान जी। ताम देस मेवात है बसव स्ब्दी लोग नगर पिरोजपूर फिरकी महान जी। जामे चैत्य तीन बने पूजत है लोग घने बसत आवग वहां बड़े पुरुववान जी ॥१॥ मुलसंघी संघलरी सरस्वतीगच्छ जिसे गरासी विलातकार कुन्दकुन्द ग्रानजी। ऐसो कुलमाना है वश में संडेलवाल मोत की लुहा हया रुच करी जिनवानी जी। किसन हीरालाल सूत ग्रमरचन्द नित इस्त के स्थाल वृत छंद यो बखान जी। यामें भूल-चूक होय साध लीज्यो प्राग्य लोग मेरो दोष खिमा करो खिमा बड़ो गुए। या उर मानो जी ।।२।। द्यत्य है. सतसार —  $\times$  । पत्र सं० ६ । ग्रा० १० $\frac{3}{4}$   $\times$  ५ द का । नाषा –सस्कृत । विषय — वत विश्वान । र०काल  $\times$  । ले० काल सा० १८१६ । पूर्ण । वेष्टुन मं ० १७४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

क्रद**ः ततोद्यापन संग्रह**— $\times$  । बेष्टन स॰ ३३-१८ । **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर **कोटडियो** का डुगरपुर ।

विशेष — निम्न सप्रह है —		
१. जिनगुरा सम्पत्ति वतोद्यानन	सुमति सागर ।	संस्कृत
२. कर्मदहन पूजा	विद्याभूषम ।	
३. षोडशकारसा वतोद्यापन	मुनि ज्ञान सागर।	
४ भकामर स्तोत्र मडल स्तवन	× ı	n
५. श्रुत स्कथ पूजा	वीरदास ।	**
६. पञ्च परमेष्टि पूजा विधान	यशोनन्दि ।	,,
७, रस्तत्रयोद्यापन पूजा	भ० केशवसेन ।	
= पञ्चमीवनोद्यापन पूत्रा	>	,
६. कजिका वृतोद्यापन	यश∵कीर्ति ।	,
१०. रोहिग्गी वतोद्यापन	×	
११. दशलक्षमा वतोचापन	×	,,
१२. पत्य विघान पूजा	श्रभयनन्दि ।	"
१३ पुष्पाञ्जिली व्रतोद्यापन	×	**
१४, नवनिधान चनुर्दश रत्न पूजा	लक्ष्मीमेन ।	,,
१५. चिन्तामिंग पात्र्वनाथ पूजा	विद्याभूषरण ।	,,
१६. पच कस्यागक पूजा	×	,,
<b>१</b> ७. सप्त परमस्थान पूजा	· ×	"
१६. भ्रष्टाह्निका वत पूजा	<b>ब</b> ह्य सागर।	,,
१६. ग्रष्ट कर्मचूर्ग उद्यापन पूजा	×	***
२०. कवल चन्द्रायस पूजा	• जिनसागर •	ÿ,
२१. सूर्यव्रतोद्यापन पूजा	व० ज्ञानसागर	,,,
२२ हवन विधि	×	,,
२३. बारहरी चौबीसी व्रतोद्यापन	×	, ,,
२४. तीस चौबीसी वतोद्यापन	म० विद्याभूषरा ।	
२५. भ्रनस्त चतुर्दशी पूजा	भ० विश्वभूषस्।	"
२६. त्रिपचाशत क्रियोद्यापन	×	,,

स्तर ११. जतोद्यापन पूजा संग्रह— × । पत्र सं० १२-६६ । सा० १०-४६ इच्या । सावा-संस्कृत । तिषया— पूजा । र०कास × । ले० काल १८२१ । पूर्णे । तेष्टनसं० ६३ । प्राप्ति स्थान — दि० चैन सनिवर कोमस्त्री कोटा । रत्ननिव कृत परुष विधानोद्यापन, न दीश्वरवतीद्यापन, सप्तमी उद्यापन, वेपनक्रिया उद्यापन जिनमुख् सम्पत्ति वतीद्यापन, वारह वतीद्यापन, पोडणकार्यः उद्यापन, चारित्र वतीद्यापन का सपह है ।

प्रदर्श सतों का ब्योरा— × । पत्र स० १२ । घा० ७ × ५ इच । आघा — हिन्दी । विषय-विधान । र०काल × े ने०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० २४१ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर पाष्ट्रवेनाथ इन्दरगढ (कोटा)

- ६२ . ब्रह्यु गुराबली पूजा – स्वरूपचन्दा । पत्रसं ० ६२ । म्रा० ६ $\frac{1}{2}$  ×  $\frac{1}{2}$  इच्छ । मावा – हिन्दी पद्य । विषय पूजा । र०काल स० १६१० सावन मुदी ७ । **के॰काल** स० १६३४ । पूर्ण । बेष्टन स० १७ । प्राप्ति स्थान – दि० जैन पचायती सन्दिर करीली ।

विशेष—श्रीवनलाल गिरधारीलाल के तृतीय पुत्र किशनलाल ने नगर करौली में नेमिनाथाय चैरयालय मे प्रतिर्लिप करवायी थी।

मन्दि अति सं०२ । पत्रसं०२ मा०१४ x इञ्च। ले०काल रा०१९१०। पूर्ण। बेष्टत सं०३ ६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर नागदी बूदी।

**००१४. बृहत् पुष्पाह बाचन**  $\times$  । पत्रस• ४ । मा० १२ $\times$  ४ हुँ हजा । मापा - सम्ब्रत । बिषय-विधि विधान । से•कास स• १०१५ । पूर्ण । वेष्टन स• १६३ ६० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पार्थनाप सन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

स्दर्भः **बृहद् पूजा संबह**— ×। पत्रस० २१६ । ग्रा० स्ट्रे× ६३ इच । भाषा सम्क्रत-प्राकृत । विषय-पूजा । र०काल ×। ले०काल स० १८२१ फागुन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । प्राप्ति स्थान— वि• जैनवचायती मन्दिर करोली ।

विशेष--नैमित्तिक पुजाओं का सम्रह है।

 $\mathbf{u} \in \mathbf{r}$ ७. **बृहद् रांच करुयारएक पूजा विधान**  $\longrightarrow \mathbf{r}$  । पत्रसं॰ २२ । प्राः  $\mathbf{e}_{i}^{2} \times \mathbf{v}_{i}^{2}$  इच । प्राया-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २५० । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मदिए प्रमिनन्दन स्थामी दृषी ।

 $\mathbf{c}$ स्त्र, बहुत् शांति पूजा— $\times$ । पत्रतः १२। याः  $\mathbf{c}_{i}^2 \times \mathbf{v}_{i}^2$  इखा । माषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । के काल  $\times$  । सपूर्ण । बेहन सं० १३१२ । प्राप्ति स्थान— भ०दि० जैन मन्तिर धजनेर ।

द्धदश्च. बुहद् झान्सि विद्यान— धर्मदेव । पत्रकं २६ । घा० ११४४ इञ्च । आवा— सस्कृत । विषय-विद्यान । र०काल ४ । ते०काल सं०१८८२ चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४३४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन यन्तिर तक्कर जयपुर ।

विशेष — वरक प्राप्त के प्रादिनाध चैत्यालय में ठाकुर वार्घसिंह के राज्य में ऋफूराम ने प्रतिलिपि की थी।

द्र⊏२०. बृहत् शास्ति विधान—×। पत्र स० ५ । आ० १०×४ है दश्व । भाषा—सस्कृत । विध्य-—विधात । रुकाल × । केकाल × । पूर्ण । वेष्टत सं० ३०१ । आस्ति स्थान—वि० जैन पार्चनाव मन्दिर जीमान कुरी । स्मर १९ जुहब् शास्ति विश्वान— × । पत्रसं∘ ३ । धा॰ १९ है × ४ हे इच । भाषा-सस्कृत । विध्यय— पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्णा वेष्टन सं∘ १६६ । प्रास्ति स्थान— रि० जैन मनिर बोरसली कोटा ।

प्रवन्तर. बृहद् शास्ति विधि एवं पूजा संग्रह— × । पत्र सं∘ २६ । ग्रा॰ १०३ ×४ इचा । ग्राषा-सस्क्रन । विषय-पूजा । २०काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वेष्टन स॰ ३६ । प्राप्ति स्थान— वि॰ जैन मंदिर बोरसजी कोटा ।

a=2 , बुहद् बोडशकारस्य पूजा $-\times$ । पत्रतं • ४५। प्राः १० $^3\times^4$  १ त्वा भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टनसं • २७४। प्रास्ति स्थान - दि॰ जैन सन्दिर शैथानजी कामा ।

मन्द्र**४. वृहद् सम्मेद शिक्षर महास्म्य --मनसुक्तागर** । पत्रसं∘ १३७ । ग्रा० १२४४५ इ.च. । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय---पूजः । र०कान ४ । लेककान सं० १६३० मात्र सुरी १४ । पूर्णः । वेष्टन म० १२१६ । **प्राप्ति स्थान**----भ० रि० जैन मन्तिर स्रज्येनं ।

 $\mathbf{x} = \mathbf{x} \cdot \mathbf{x}$ 

### विशेष -- प्रशस्ति -- प्रच्छी है ।

जयपुर नगर में लक्कर के मन्दिर में प० केणरीसिंह जी के जिष्य ऋडूराम देवकरण ने प्रतिलिपि की थी।

८६२७. शत्रुं जय उद्घार—नयनसुन्दर । पत्र स० ६ । मा० ६ $\frac{1}{4} \times V_{\pm}^2$  इञ्च । भाषा हिन्दी । विद्य-पूजा । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १८१४ । पूर्ण । वेष्टन स०१६१५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सहसाल मन्दिर उदयपुर ।

 $\mathbf{x}$  द्व  $\mathbf{x}$  साहस्त्र पूजा —  $\times$  । पत्र सं॰ ४३-६३ । प्रा॰ ७२/४४ है इला । सावा निहन्दी विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । लेलकाल सं॰  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं॰ ६८-४८ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर भादवा (राजस्थान) ।

६६२६. **शास्त्र पूजा** —  $\times$  । पत्र स॰ ७ । म्रा० ९० $\times$ ६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र•माल  $\times$  । ले०माल स॰ १६६४ । पूर्ण । वेष्टन सं०६८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर पाध्वंनाथ टोडारावसिंह (टॉक) ।

द्धद **३०. शांतिकामिवेक**— × । पत्र सं० १४ । म्रा० १०६ ४४६ इ'च । भाषा—सम्हत । विषय-पूत्रा । २० काल × । ले॰काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सक्कर बसपूर ।

विशेष-नैशावा मे प्रतिलिपि हुई थी।

६६६२२. झान्ति पाठ—प० धर्मदेव । पत्र सं० २१ । घा०११×५ इत्व । भाषा—सम्कृत । विषय-पुत्रा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ती । बेष्टन स० ३६० । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्तिर अस्त्रोर ।

द्रदर्शे. **सान्ति पाठ**—× । पत्रस० २ । धा० द×६ इञ्च । आधा सस्कृत हिन्दी । विधय-पृजा । र० काल × । ले० काल स० १६६१ । पूर्णे । वेष्टन स० ६६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० चैन जास्त्र भण्डार मन्दिर सक्कर, जयपर ।

६६३४. शांतिक पूजा विधान— $\times$ । पत्र स०५। प्रा० १० $\times$ ४३ इच । आया-सस्कृत । विषय-पृत्रा । २० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३०६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिन्दर पार्थनाय, चौगान बुंदी ।

द्रदर्भः शांतिक विधान — वर्मदेव । पत्रत० ४७ । घा० दर्भ ४२ देव । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र०काल × । ने०काल सं०१द५६ चैत्र वदी १० । पूर्णा । वेष्टनस०११७७ । प्राप्ति-स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

क्रक्र **इ. प्रतिसं० २ १** पत्रस० २७ । घा० १०ई ४ ५ इचा । लेब्काल स० १८६४ साह बुदी ६ । पूर्ण । वेग्टन सं० २४–११ । **प्राप्ति स्थान —** दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिह (टॉक) ।

विशेष — टोडारायमित मे प० श्री वृत्दावन के प्रशिष्य एवं मी गराम के शिष्य श्योतीराम ने प्रतिनिधि की थी।

६६३७. **शान्तिक विधि** माराप्तिक २ । पश्रस्क २ । साथा-संस्कृत । विषय विधि । २०काल × । लेक्काल × । पूर्ण । वेष्टुन सक × । प्राप्ति स्थान चित्र जैन पंचायती मदिर भरनपुर ।

द्रद्रद्र **शांतिसकं पू**र्जा > । १४ म०३। ग्रा० १० ४४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । **के•काल** ४ । पूर्ण । चंद्रन सं० १४१८ । **प्राप्ति स्थान**—म०दि० जैन मन्दिर अजनेर ।

६६४०. **शांतिवक पूजा** × । पत्रसं∘ ४ । ब्रा॰११३ ४६३ इञ्च । भाषा-सस्हत । विदय-पूजा । र० काल × । ले०काल × । पूर्मा । वेष्टनसं० ३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोळ्यों का नेसला ।

दंद**४१. शांतिचक पूजा** ×ाणत तं∘ ४। प्रा० १ है×५ है स्था भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। <sup>र</sup>०काल ×ाले काल स०१८४६ प्राणाढ सुदी १२। पूर्ण । वेष्टन सं०४४-६१। प्रास्ति-स्थान—दि० जैन मंदिर नेमिनाथ टोडारार्थासह (टॉक)। विशेष -- राजमहल नगर मे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे मुखेन पडित ने प्रतिलिपि की श्री।

६६४३. शांतिचक विधि — X । पत्रस०४ । आ० ११४४ इ.ख । भाषा-संस्कृत । विधय-पूजा । र०कान X । से•कान X । पूर्ण । बेष्टनस०३० । प्रा**प्तिः स्थान**—वि० जैन मन्दिर बोरसनी कोना ।

=  $\pm 8\%$ . **शांतिचन्द्र मंडल पूजा** —  $\times$  । पत्रसं० ४। ष्रा० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-मस्कत । विषय—पुत्रा । र० काल  $\times$  । ते०काल सं० १६४ $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ५०६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर कंटिडियो का इनगपुर ।

**६८४६. प्रतिसं० २ ।** पत्रस० ४ । लेजकाल स० १८०६ अपाढ बुदो १० । पूर्मा । बेपून स० १४१/५७ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त अस्टिर ।

द्रदर्भ **। शान्तिनाथ पूजा**  $-\times$  । पत्रस० १३ । ग्रा० ७ $\times$ ६ इख । श्रापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १७०/७३ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन निंदर कोटडियों का इंगरपूर ।

द्रदर्भद्र, शांतिनाथ (बृह्द्) पूजा-व० शांतिदास । पत्र स०१६ । झा०१२४८ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । २०काल ४ । ने०काल ४ । पूर्ण । बेष्टनम०३६२-१४८ । प्राप्ति स्थान-वि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपुर ।

क्षत्र ४६. शान्तिसंत्र —  $\times$ । पत्र स० ४। प्रा० १० $\times$ ४३ इ.च.। भाषा— सस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$ । ले०काल सं० १६२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३४१/१३२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

द्रद**्रभः शांति होम विधान—द्याशाधर।** पत्र स०४। या०१२×५५ इञ्च । भाषा— संस्कृत । विषय-विधि विधान । र० कान ४ । ले० कान ४ । पूर्ण । वेष्टन सं०१०३ । प्राप्ति-स्थान—दि० जेन पंचायनी मन्दिर करीती ।

८८४१. प्रतिसं० २ । पत्रस० ४ । प्रा० ११×६ ३ इला । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ५० । प्राप्ति रूषाल — टि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

प्रदर्भरः सीतलनाथ पूजा विधान—× । पत्रस॰ ६। मा॰ ११×५ दचा । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल× । से०काल× । पूर्ण । बेष्टनसं० १३८० । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर स्वसेर ।  $\mathbf{u} = \mathbf{x} \cdot \mathbf{x}$ . शुक्लपंत्रमी सतीक्षोपन —  $\mathbf{x}$  । पत्रस्व ११ । प्रावः १२४४ इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पृत्रा । २०काल  $\mathbf{x}$  । ले०काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । बेष्टनसंव २३६/३५१ । प्राप्ति स्थान — दिव्यंन समननाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - मट्टारक वादिभूषण के किया क॰ बेला के पठनायं प्रतिलिपि हुई थी प्रति प्राचीन है।

द्रदश्चर शुक्लपंचमी बतोद्यापन— $\times$ । पत्र सं० १०। आ० ११२  $\times$  ५३ हजः। मापा—सस्कृत । विषय-पूजा १० काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । वेहन सं० १७७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्वनाथ जीगान, (ब्रु दी) ।

यद्ध्यः सुरुलयंत्रमी यसोद्यापन $-\times$ । पत्र सं॰ १। भ्या॰ १० $\times$ ६ हे इत्र । भ्यान-सस्हत । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । लेलन काल स॰ १६३८। पूर्णं। बेष्टन स० ४१७। प्राप्ति स्थान -१६० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर।

प्रतप्त स्वापंत्रमी वातीद्यापन —  $\times$  । पत्र सं० ७ ूँ आ० १०  $\times$  ६ इन्य । भाषा नसकृत । विषय – पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० ५२६ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुंगरपुर ।

क्ष्मध्यः **आह विधि—रत्नशेखर सूरि । पत्रसं** १६६ । बा० १० $\times$ ४ $\frac{1}{4}$  इव । माया-सस्कृत । विषय विधि विधान । र०काल सं०१४०६ । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४-२०८ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिंह (टॉक) ।

स्दर्भ क्षा**यक कातः विधान—सभ्यवेव ।** पत्रस० ११ । सा० १०कृे×६े इखा आपा-सम्हत । विषय-विधान । र०काल × । ले०काल स० १७६५ माध मुदी ११ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४०२ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर धनमेर ।

६८६०. स्नुत यूक्ता $-\times$  । पत्रसं०४। स्ना०११ $\times$ ५ इ.च.। माया-संस्कृतः। विषय-पूजाः। २०कालः  $\times$ । त्रेण कालः  $\times$ । पूर्णां विष्टुत सं०३६३। **प्राप्ति स्थान**-म०दि० औन मन्दिर स्रजनेरः।

द्यद्भ स्था सुद्धा — × । पत्रसंग्धा शाश्री १० १ × ४३ दश्या । माषा – सस्कृत । विषय - पूजा । र०काल × । क्रेक्सल × । पूर्णा । बेष्टन संग्देश्या प्राप्ति स्थान — भग्नीय जैन सन्दिर प्रजमेर ।

द्रदृद्द्द्र, श्रृतं पूर्वा— ×। पत्र स० ४। द्रा० ११४ १, इ.च । भाषा–सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । लेकाल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ६१७ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

 $\mathbf{u} = \mathbf{u} \cdot \mathbf{u}$  ,  $\mathbf{u} \cdot \mathbf{q} \cdot \mathbf{u} = \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} = \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} - \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} = \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} - \mathbf{u}$  । विषय-  $\mathbf{q} \cdot \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} = \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} + \mathbf{u} \cdot \mathbf{u} \cdot \mathbf{u}$  ।  $\mathbf{u} \cdot \mathbf{u}   ।  $\mathbf{u} \cdot \mathbf{u}   ।  $\mathbf{u} \cdot \mathbf{u}   ।  $\mathbf{u} \cdot \mathbf{u}   ।  $\mathbf{u} \cdot \mathbf{u}   ।  $\mathbf{u} \cdot \mathbf{u}  

द्यद**्धः, श्रातस्कंय पूजा—कानभूष**रम् । पत्रसं∘ ६ । मा० १०×६ दे कथा भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०कान × । से०कान स० १८६१ ज्येष्ठ सुदी२ । पूर्णे । वेष्टन सं०१०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सादिनाथ बूंदी ।  $\mathbf{u} = \mathbf{c} \cdot \mathbf{x}$ . श्रांतरकंघ पूजा — त्रिभुवनकीर्ति । पत्रतं । राषा — संस्कृत । विषय -पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं॰ ४/३१८ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन संभवनाथ मन्तिर उदयपुर ।

८८६६. प्रति सं०२ । पत्रसं०२ । ले०काल सं० $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं०५/३१६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन संमयनाथ मन्दिर उदयपुर ।

८८६७. श्रुतस्कन्य पूजा—भ० श्रीमूबर्गः । पत्र स॰ १६ । घा० १५ $\times$ ४ इंब । माषा-संस्कृतः । विषय-पूजा । र०कालः  $\times$  । ले०कालः सं० १७३१ । पूर्णः । वेष्टन सं० ५१४ । **प्राप्तिः स्थान**— वि० जैन मन्दिर कोटडियों का द्वांगरपुर ।

विशेष-वहारादुरमध्ये पं० भोमजी लिखित ।

प्रमुख्य स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप

ष्प=६६. अनुतस्कन्य यूजा— × । पत्रस०६ । घा०११ ४४ इ.च । भाषा-संस्कृती । विषय-पूजा। र०काल × ले०काल × । पूर्ण। वेष्टन यु०१४ प्र। प्रप्रप्ति स्थान—दि० जैन पार्श्वनाथ मन्दिर चौगान बृंदी।

६८७०. श्रुतस्कन्ध पूजा $-\times$ । पत्र स॰ ४। घा॰ १ $\frac{3}{7}\times$ १ $\frac{3}{7}$  इञ्च । आय्-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । क्षे०काल  $\times$  । धपूणं । बेष्टन स० १० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन धप्रवाल मंदिर उदयपुर ।

विशेष-एक प्रति भौर है।

क्ष्मण्ड क्ष्मण्ड पूजा —  $\times$  । पत्र स० १। प्रा० ११ $\frac{1}{2} \times$  ६ इन्त्र । प्राचा-संस्कृत । विषय — पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर बोस्सनी कोटा ।

म्मा प्रकार काल ४ । ते काल संक्षेत्र पुत्रा मार्थ । प्रकार काल ४ । ते काल संक्षेत्र । प्रकार स्थाप । प्रकार स

विशेष—प॰ शिवजीराम ने झपने शिष्य चैनसुख नेमीचन्द के पढ़ने के लिए टोडा में प्रतिलिपि की थी।

सद्ध है. **श्रुतस्कंध पूजा** — ×। पत्रसं∘ दो झा०११ × ४ इन्द्रा। साथा – संस्कृत । विषय – पूजा। र॰ काल ×। क्षे० काल ×। पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३५६। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रिनन्दन स्वामी बृदी।

ष्य प्रश्निक स्वास्तिक पूजा — × । पत्रसं∘ रिः। सा० रिः रे× रे रूचा । सावा-संस्कृत । विषय-पूजा । रुकाल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनसं∘ ६६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचासती मन्दिर हुनी (टॉक) म्मण्यः **श्रुतः स्कथः पूजाः विधान —बालवन्तः ।** पत्रस्यः ३४ । धा०११% ४५ इत्यः । सापा-हिन्दी पद्यः । विषय-कथा । रक्तालः ४ । ले० कालः स० १६४४ ज्येष्ठ बुदीः ६ । <mark>पूर्णः । बेहुनसं०</mark> १२६ । प्राप्तिः स्थानः—दि० जैन मन्दिरं श्री महावीरं वृंदी ।

विशेष-हजारीमल्ल साहिपुरा के रहने वाले थे।

६६७७. श्रुत स्कंध मण्डल विधान— $\times$  । पत्रस० १ । प्रा० २२ ४११ ै इन्छ । भाषा— सस्कृत । विषय—पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेपून स० ६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मन्दिर इनी (टॉक) ।

विशेष---मण्डल का नक्शा दिया हमा है।

६६७६. खोडशकारम् जयमाल---×। पत्रम० १०। मापा-सस्कृतः। विषय-पूजाः। र०काल ×। ले०काल स० १६३२ । पूर्णाः। बेल्टन स० ४६ । प्रास्ति स्थान --दि० जैन पत्रापती मन्दिर भरतपुरः।

विशेष-ऋषि रामकृष्णा ने मरतपुर मे प्रतिनिधि निस्वी थी।

दद्रद० **घोडगकारम् जयमाल**—× । पत्रम•र । ग्रा०१२×४० डवा । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल ≻ । से•काल स० १७६२ भादवा बुदी १४ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं०१२२६ । **प्राप्ति** स्थान—भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजसेर ।

स्तर्भ **बोडसकारम् जयमाल**— × । पथमं० ४१ । आ० १३ × ४ इला । भाषा-प्राहतः । विषय-पूजा । र०काल × । ले∙काल स० १६४० भावता बुरी १० । पूर्मा वेष्टनसं० १०४ । प्रास्ति स्थास—वि० जैन मन्दिर सजमेर

विशेष-गौरीलाल बाकलीबाल ने स्वपठनार्थं प्रतिसिपि की थी । टब्बा टीका सहित है ।

ददद२. **बोडशकारण जयमाल**— × । पत्रतं॰ १० । भाषा-प्राकृत । विषय-पृता । र० काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष-सस्कृत में टीका है।

स्द्रस्द ३. **बोडशकार्ग जयमाल**~ × । पत्र स० १२ । मा० ११×४ इत्था भाषा–सस्कृत । विषय – पूजा। २० काल × । ले० काल स० १७१५ माह मुदी १३ । पूर्णा। बेट्न स० १२२ । **प्राप्ति** इच्चान — दि० जैन पचायती मन्दिर दूनी (टोक)।

स्द्रहर, **बोडयकाररा जयमाल-रह्यू** । पत्रसं∘ १२ । माया ग्राफान । विषय-पूजा र०काल × । तं०काल स०१८५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० × । **प्राप्ति स्थान**— दि० जेन वचायती मनिर मरतपुर। विशेष--गुमानीराम ने भरतपुर मे प्रतिलिपि की थी।

**८८८५ प्रतिसं०२** । पत्र स०२७ । घा० ११ $\times$ ६े इश्वालं ० काल  $\times$  । पूर्णं । वेप्टन सं० ३ $ilde{4}$ १८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष -- कही २ सस्कृत मे शब्दार्थ दिये है।

क्रम् थेडिसकारस्य पूजा— $\times$  । पत्र स॰ २४ । मा॰ ११ $\times$ ४ इश्वः । माया-सस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्य । बेट्टन स॰ २७६ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

दददः खोडसकारस्य पूजा—  $\times$  । पत्र स० १२ । ग्रा० १२ $\frac{1}{2} \times \mathbb{V}_2^2$  ऽखः । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णः । तेष्ट्रन सं० ११३ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचास्ती। मदिर करीनी ।

=== ६. षोडगकारस्य पूजा अंडल विधान —टैकचन्द— $\times$  । पत्र त० ४१ । प्रा० १२ $\times$ ६ इच्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-पूजा । २० केल  $\times$  । पे० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन त० ६२ । प्रास्ति स्थान —दि० जैन प्रथवान मन्दिर उदयपुर ।

स्प्तरूर प्रति सं०२ । पत्रस्०५३ । घा० ६ $\frac{1}{2} \times 9\frac{1}{6}$  इखा । ले॰काल स०१६५८ । पूर्ण । वेष्टनसं०१२ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर धनिनन्दन स्थामी, बूदी ।

क्रक्टरे. प्रतिसं० ३ । पत्र स० ४२ । लेब्बाल स० १६७३ । पूर्ण । बेहुन २६० ३६३ –१४८ । प्राप्ति स्थान—दिव जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

==६२. षोडसकार ए स्रतोद्यापन = ज्ञानसागर — $\times$ । पत्रस० २३ । धा० १२ $\frac{1}{2}\times$ ७ स्व । माधा =संस्कृत । विषय =पृत्रा । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १२३= । पूर्ण । बेप्टन स० ५२= । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मिरर कोटडियो का इ सम्पर ।

द्रदर्शे. खोडशकाररा दतोद्यापन पूजा—सुमति सागर । पत्रस० ३२ । घा० ११४६० इन्छ । माषा—सम्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ : ल० काल स० १६१७ भादवा मृदी ४ । पूर्णे । वैष्टासं०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन छोटा मदिर क्याना ।

विशेष--प्रन्तिम पाठ निम्न प्रकार है--

प्रवस्ति नाम मुदेशमध्ये विज्ञालकालेन विश्वाति भूनले । सुकानिनायस्तु जयोस्तु निरंत, मुञ्जेनकेया परवेत तत्र ॥१॥ श्रीसपपुले विषुत्तेपद्गरे ब्रह्मी प्रगादे बलगालिन गर्छ । तस्त्र स्वाति यो गोतम नाम येवा त्वये प्रशाती जिनचन्द्र सूरि ॥२॥ श्रीपपानन्दिभंवतापहारी वेदेन्द्रकीतिम् वनैककीति । विद्यादिनीदिवस्तरिलसुष्यः सदम्यादिवस्त्री भयसन्द्रदेत ॥३॥ तरपट्टे प्रथमनन्दिसी रत्नकीति गुरा।प्रस्पी । जीवाद भट्टारकी लोको रत्नकीति जगोत्तम ॥४॥ सुमित सागरदेव चके पूजा मद्यापहा । बस्तेवनालान्दये यः प्रह्लादी ह्रारदास्पुदी ॥४॥ कर्तापरोधपूजाया मुसस्वर्षदाप्रस्पी ।

सुमतिसागरदेव श्रद्धाषोडशकारणे ॥६॥ इति योडशकारण वृत्तोधापनपाठः । पञ्जाशद्यिकैः श्लोकैः वद्गतै प्रमित सहन् । तीर्वक्रस्परपूजाया सुमतिसागरोदितः ॥७॥

स्म£¥. प्रति सं० ३ । पत्र स० २१ । प्रा० १२ ४ ५३ इ.स. । ले०काल स० १८६७ पानुस् इटी १२ । पूर्स्स वेस्टनसं० स्१-१०३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनश्य टोझारायमिह (टोक) ।

विशेष--- प्रभवकर के शिष्प मुमितिसार ने पूजा बनाई । प्रभवकर की पूरी प्रशन्ति दे रखी है । टोडा में क्याम कैत्याखय मे प्रतिनिधि हुई थी । नाषुरामजी लुहाडिया ने नासिरदा में मन्दिर चढाया था।

८८६६ प्रतिसं० ४ । पत्र स० २६ । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० ५८ । प्राप्ति स्थान— दि॰ जैन पंचावती मन्दिर भरतपुर ।

द्रदृष्ठ**ः बोडशकारम्। वतोद्यापन** । पत्र स०२१ । घा० ६ॄ४५ॄ इञ्च । भाषा सस्द्रत । विषय—पूत्रा । र०काल ४ । ने० काल रा० १७४३ । पूर्ण । वेष्टन स०३४४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सन्दिर भ्राप्तनस्त स्वामी बुँदी ।

६६६ स. सकलोकरण् विधान $--\times$ । पत्र तंत्र २। प्राप्तः १० $\times$ १२ त्यः। भाषा-वंत्रतः। विषयः पूजा। २०कालः  $\times$ । जे॰कालः  $\times$ । पूर्णं। बेष्टनस०३६४। प्राप्तिः स्थान--भ० दि० जैन मन्दिर

८८६. सकसीकरस्— × । पत्रसं• २ । मा० १२३ ४६ रचा आवा-सस्कृत । विषय-पूजा । र•कान × । ले॰कान × । पूर्ण । बेष्टन सं• ६८८ । प्रास्ति स्थान— म॰ दि॰ जैन मन्दिर सक्तिर ।

ह्ह००. सकलीकर्ला— × । पत्रसं० ३। घा० ११×६ इन्य । माथा-संस्कृत । विषय-विधि विद्यान । १०कास × । से०कास ×। पूर्ण । वेष्टनसं० ५३७ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मस्दिर कोटदियों का द्वेगरपुर ।

द्धशः सकलीकरसा— × । पत्रसं∘ ४ । धा०-१०×६ । प्राप्तः संस्कृतः । विषय-विचान र ठकासः ४ । ले० काल ४ । पूर्णः । वेष्ट्रन सं०१०३ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन घादिनाय अनिद दूंची ।

ह्र हु० २. सकलीकरण विद्यान × । पत्र सं०३। घा० १० हुँ ४४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विद्यत-विद्यान । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । लेहन सं० ४२६ । प्राप्ति स्थान—दि० र्थन मंदिर सक्कर, जनपूर । ष्य ८०३. सकलोकरण विधान— $\times$ । पत्र सं॰ २। मा॰ १० $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4}$  इच्न । भाषा-सस्कृत । विषय—विधान । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ २१। **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन मन्दिर राज्यहल (टॉक) ।

८६०४. सकलीकरस्य विधि— $\times$ । पत्र स० १ । प्रा॰ १२ $\times$ ५ इच । साथा-हिन्दी । विषय-विधान । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णा । वेष्टन स० १६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन नेमिनाथ सदिर टोडारायसिंह (टोक) ।

६६०५. सकलीकरस्य विधि— $\times$  । पत्रसं० २। प्राचा-संस्कृत । विध्य-विधान । र०काल  $\times$  । । ने०काल सं० १६६४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३४६-१३२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटबियों का द्वंगरपुर ।

प्तर्कर, सकलोकरस्य विधि— $\times$  । पत्र सं $\circ$ ३४ । प्राथा—सस्कृत । विषय—विधान । र $\circ$ काल  $\times$  । से $\circ$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं $\circ$ २७ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन पार्यनाय मन्दिर चौनान वंदी ।

विशेष-- प्रन्त मे शान्तिक पचा भी है।

६२०७. सकलीकरस्य विश्वि $-\times$  । पत्र सं० ४। प्रा $\circ$  १२४१ । प्राप्त । स्वयं –विद्यान । र०काल  $\times$  । लेकाल सं० १६११। पूर्ण । वेष्टनसं० २४६। प्राप्ति स्थान —दि० जैन पाक्षेत्राय मन्दिर चौगान (बृदी) ।

क्षरुक्त सक्तिकारण् विधि—  $\times$  । पत्रस $\circ$  ३ । प्रा $\circ$  १०२ $\times$ १ इव । मापा-सस्कृत । विषय-मत्रशास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण् । बेष्टन स $\circ$  १३८ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान (बुंदी) ।

६६०६. प्रतिसं० २ । पत्र म०३ । ले०काल 🗴 । पूर्णः । वेष्टन म० १६७ । प्रास्ति-स्थान—वि० जैन पार्थनाथ मन्दिर चौगान (व दी) ।

६६१०. सस्तर मेदी पूजा —  $\times$  । पत्रतः २ । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । र०काल —  $\times$  । ते० काल सं० १८००। पूर्ण । बेष्टनसं० ३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पदायती मन्दिर भरतपूर ।

स्द**११.सप्तर्षि यूजा—विश्वजूषरा** । पत्रतं० ४६ । म्रा० १०ई  $\times$  है इव । प्राया—संस्कृत । विषय-पूजा । रक्ताल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । प्रमूर्ण । वेष्टन सं० १२७१ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रथमेर ।

द्ध १२. प्रतिसं० २ । पत्र सं० १४ । ले०काल रा० १८४२ । पूर्ण । बेहन सं० ६१ । प्राप्ति— स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

**६६१३. प्रति सं०३।** पत्र सं०७। ले० काल 🗴 । सपूर्णं। बेष्टन स०६२। प्राप्ति-स्थान— उपरोक्त मन्दिर भरतपुर।

दृह**्थः, प्रति सं**० **४** । पत्रसं० ३ से ६ तक । ले०काल स० १८५२ । घपूर्णः । बेष्टन स० ३६ । **प्राप्ति स्थान—वि० जैन** पत्रायती मंदिर भरतपुर ।

क**६११. प्रतिसं० ५ ।** पत्रसं० १० । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं० ६४ । **प्राप्ति स्थान**— उपरोक्त संदिर मरतपुर । ८१६. प्रति स०६ । पत्र स०१०। ले० काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टनस०६४ । प्राप्ति स्थान-उपरोक्त मन्दिर मरतपुर ।

**८६१७. प्रति सं०७** । पत्र स०१२ । लेञ्चाल । पूर्णं। वेष्टन स०६६ । **प्राप्ति स्थान** — दिञ्जैन पचायती मदिर भरतपुर ।

म**६१म. प्रतिसं**०म । पत्र स०१७ । ले०काल × । पूर्ण ।वेष्टन स०५३ । **प्राप्ति स्थान** दि० जैन तेरहपथी मन्दिर बसवा ।

६६२०. सप्तर्षि पूजा $-\times$  । पत्र स० ११। झा० ६ $\times$ ६३ इञ्च । भाषा – संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१६३६ भादबा बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स०१७७ । प्राप्ति स्थान-प्र० पचायनी मन्दिर उदयद्र ।

८६२१. सस्तिष्य युकाः  $\times$  । पत्र स०६। प्रा०११ $\times$ ५ $^3$  १०० । भाषा-मस्त्रतः । दिवयः -पूजा । र०कालः  $\times$  । ले०कालः स० १७६८ । पूर्णः । बेष्टनसं० १६१ १८ । प्राप्तिः स्थानः --- दि० जैन पार्थनाथ मन्तिर इन्दरगढ (कोटा) ।

विशेष-सवत् १७६८ भट्टारक श्री १०८ जगत् कीर्ति शिध्येग दोदराजेन लिखित ।

**६६२२. स-तिव पूजा**— मनरंगलाल । पत्र स० ३। द्या० १२ $\times$ ६ इञ्च । प्राया-िन्दी पद्य । विषय-पूजा । रक्काल  $\times$  । लेक्काल स० १६५६ । पूर्ण । बेच्टन सं० २०६ । **प्राप्ति १थान**— दि० जैन मन्दिर नागदी (बुदी) ।

म्ह२३. प्रतिसं०२। पत्रस०४। छा०६ $\chi$ ४७ $\xi$ दंव। से०काल  $\chi$ । पूर्गः। बेप्टन सं०-११३। प्राप्ति स्थान—दि० जैन सन्दिर ध्रीभनन्दन स्वामी बूंदी।

 $\mathbf{x}$ ६२**४. सर्साव पूजा - स्वरूपच**न्द्र । पत्र स०११ । मा०६ $\mathbf{x}$ ६५ इत्राः भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । २०कोल स०१६०६ । लेक्काल  $\mathbf{x}$  । पूर्ण । वेस्टन स०१७८ । प्राप्ति स्थान —ख० प्रजाननी मन्दिर घनवर ।

विशेष -- एक ग्रेन्स येति १२ पत्रो की और है।

स्ट२५. सस्तवण्मस्थान पूजा गंगादास । पत्रसं०१ । मा० १२×६ इ.च । भाषा— मंस्कृत । विषय-पूजा । २० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० १६० र । प्राप्ति स्थास —िव० जैन मन्दिर टोकागयसिंह (टोक) ।

६६२६. सस्तवरसस्यान पूजा — 🗴 । पत्र सं०४ । घा० १०४४ इच । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं०३६६ । प्राप्ति स्थान—ग० दि० जैन मन्दिर प्रतनेर ।

= ६२७. समयसररण पूजा—पन्नाश्लाल । पत्रसं० ७४। ग्रा० १२ $\times$  = इंच । जावा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल म० १६२१ ग्रासीज दुरी २। से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टॉक) ।

विशेष---- ६४५ पद्य हैं।

क्टरिक, प्रतिसं० २ । पत्रम० १क्ष । या० ११ $\frac{1}{2}$ ४ $\frac{1}{3}$  क्षा । ते० काल स० १६३३ वैशास बुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्यनेगथ टोडारायसिंह (टोक) ।

**८६२६. प्रतिसं० ३ ।** पत्रग० १४० । म्रा० १२ रे ४६ इचा ले•काल स० १६२६ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । बेहुन स० ११३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष--प० लामचन्द ने मथुरा में घाटी के मन्दिर में प्रतिलिपि की ।

क्ट **२०. प्रतिसं० ४ ।** पत्रसं० १४३ । आ० १०३ ४ ४ इच्च । ले०काल स० १९२६ घाषाढ बुदी २ । पूर्णे । बेधुनस० ६२ **। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

**८६३१. प्रतिसं० ४.।** पत्रस० ६६.। स्रा० ११¦्४८ इ.च.। ले०काल सं० ११८३.। पूर्ण। वेष्टनसं० ४४०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

स्टिनेरे. समबसरण पूजा—रूपवन्दा । पत्रस० १७ । घा० १२ ४ ६ इवा । भाषा-सस्त्रत । विषय-पुजा । र०काल ४ । लेक्काल सं० १८६४ सावन मुदी १० । पुर्ण । वेष्टन मं० ३४, १७ आस्ति— स्थान—रि० जैन प्वायती मन्दिर दुर्ना (शोक) ।

 $\mathbf{x}$ ६३३ प्रति सं०२ । पत्रस० १६४ । बा॰ १० $^1_1 imes \mathbf{x}$  ७ इञ्ज । ले०काल imes । पूर्ग । वेष्टनसं०४१ । प्राप्ति स्थान—दि० कैन मन्दिर क्रमिनन्दङ्ग्स्वामी बूदी ।

म्ह् ३४. समस्रारण पूजाः — विनोदीलाल लालचन्द । पत्रस० ४६ । ग्रा० ११३ ४६ है इस । भाषा-हिन्दो । विषय पूजा । रक्काल स० १८३४ माह बुदी ⊏ । लेक्काल х । पूर्ण । बेष्टन स० १०२६ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मदिर प्रजमर ।

८६३५. प्रतिसं० २ । पत्र स० ६२ । ग्रा० १० $^3_2$  ×  $^3_2$  इ.ख । ले०काल imes । पूर्ण । वेध्टन स० १३६६ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैनमन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष-- भीर भी पाठ सग्रह हैं।

द**्दर, प्रति सं० ३।** पत्र सं० ४४। प्रा० १२, ४६ इञ्चाले काल स० १६६८। चैत सुदी १४ । दुवर्स । वेवन सं० १२६७। **प्राप्ति स्थान** - भ० दि० जैन मंदिर स्रजमेर ।

८६३७. प्रति संठ ४ । पत्र सं० १३२ । घा० १०४६ १ इंच । ले०काल स० १६२३ । पूर्ण । वेष्टन स० ११ । प्राप्टिः स्थान – दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

विशेष - भीर भी पाठों का संग्रह है।

स्ट्रिस, प्रति सं० ४ ।। पत्र स० ११६। घा० ११४४ इचा। ले∘काल सं० १८८६ मादवा बुदी २ । पूर्णा वेस्टन सं० १०३/७० । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर भादवा।

बिशेष — देवली ग्राम के उदैराम बाह्मए। ने प्रतिलिपि की थी।

कह**३६. प्रति सं०६** । पत्रस०३४ । लेक्शल स०१ मन्द पूर्ण । वेस्टन स०७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंत्रायती मन्दिर भरनपुर ।

ष्ट्र४०. प्रतिसं० ७ । पत्रसं० ६६ । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रनस० १२७ । प्राप्ति स्थान —िद० जैन पंचावती मन्दिर सरतपुर । क्रहर्भ १. प्रति संक। पत्रस० ४१ । घा० १३२४ ८ इन्छ । से०काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती संदिर करीली ।

विशेष —स्योलाल श्रीमाल के पुत्र गैदालाल सुगनचन्द ने लिखवा कर करीली के नेमिनाव चैरयालय में चढाया था।

म**६४२. प्रति सं० ६** । पत्रसं० १४२ । प्रा० ब<sub>र</sub>ै ४६ <sup>१</sup> इच्छ । लेकाल सं० १९५० । पूर्ण । वेष्टन स० ४२ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौषरियान मानपुर। (टोंक) ।

विशेष-- लाजूलाल जी छावडा ने मालपुरा में प्रतिलिपि करवाई थी।

८६४३. प्रतिसं० १०। पत्र स०१४२ । धा० ४३  $\times$  ५ $^{\circ}$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन एं० ४३ । प्राप्ति रुवान – दि० जैन संदिर चौषयान मालपुरा (टोक)

विशेष -- लालजी कनहरदास पद्मावती पुरवाल सकूरावाद निवासी के वह लड़के थे।

स्टि४८. प्रतिसं० ११। पत्र स० १०४। घा० १२२ ४६र्ट इका। ले०काल х । पूर्ण। बेष्टुन स० १३७। प्राप्ति स्थान—दि० जैन ग्रप्नवाल पनायती मदिर घलवर।

स्ट४्४. प्रतिसं० १२ । पत्र सं० ३४ । प्रा० १२¦४७ इञ्च । ले०काल स० १६६३ । पूर्ण । बेष्टन सं० १४७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन धप्रवाल पंचायती मन्दिर ग्रलवर ।

विशेष -- लालजीन भी नाम है।

६९४६. प्रतिसं० १३ । पत्रसं० ११४ । आ० ११३४ इन्छ । ले०काल × । पूर्ण । बेहुन सं० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सबैसवाल मदिर उपरपुर ।

क्ष्टिक्ष प्रतिसं० १४ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १६२४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १७० । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष-- निलित गुरु उमेदबन्द लोकागच्छ का ध्रवमेर मध्ये सुलतातवी हरभगतवी ध्रवमेर के हस्ते लिखाई थी।

६८४६, प्रतिसं० १५ पत्रस० ७१। बा० १४×६ इचा। ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन स० १५२ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर नागदी बृदी ।

 $\mathbf{x} \in \mathbf{Y} \in \mathbf{X}$  सित सं० १६ । पत्रस्य  $\mathbf{x} \in \mathbf{x} \in \mathbf{X}$  स्था । ले० काल सं० १६४ । प्रास्ति स्थान —दि० औन मन्दिर पारवेनाथ चौगान बूंदी ।

८६५०. प्रतिसं•१७ । पत्रस• ४२ । मा॰१० ¦ ४५ इला । ते•काल ४ । पूर्ण। वेष्टन सं• २६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर श्रीमहावीर बूंदी।

द्ध १४. प्रतिसं० १६ । पत्रसं० ४३ । झा० १४ 🗙 ७ इञ्च । ले०काल सं० १८७८ । पूर्ण । बेष्टुन सं० २८६-११३ । प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हूं गरपुर ।

दृष्ट्यूर, प्रति सं० १६ । पत्रसं० १२३ । ग्रा० ६ रे् ४६ इ.च. । ले०काल स० १८६४ । पूर्ण । वेक्तसं० ३० । प्रास्ति स्थान — ग्र० दि० जैन मन्दिर वैर ।

स्थ्रभ मितसं० २० । पत्रसं० ६६ । धा० ११४६ इस । से०कास सं० ११४२ आवरा कुरी १२ । पूर्ण । बेष्टन सं० १३० । प्रास्ति स्थान—दि जैन मन्दिर फतेकुपुर बेसाबाटी (सीकर) विशेष — माई चन्दहंस जैसवाल लाइसेडा (धागरा) ने कलकत्ता अगरतत्त्वा में प्रतितिधि की थी। दश्कर प्रति सं० २१। पत्रतं∘ ४४। घा० १३४ द इचा। ले∘ काल सं० १११६ सावन बुदी ६। पुर्यो। बेष्टन सं० १०२। प्राप्ति स्थान — दि० जैन सदिर फतेहपुर वेस्तावाटी (सीकर)

म्ह्र्थ्यं प्रतिसंव २२ । पत्रसव ७१ । साव १०३/४७, इ.च. । लेवकाल संव १६२६ । पूर्ण । वेष्टन संव १६० । प्राप्ति स्थान—दिव जैन लंडेलवाल पंचावती मन्दिर ससवर ।

विशेष---४२ पत्र की नित्य पूजा और है।

महप्त समझतरम् पूजा $-\times$ । पत्र म०२७। मा०१३ $\times$ ६ इतः। भाषा-संस्कृते। विषय $-पूजा। रुकाल <math>\times$ । नै० कान  $\times$ । पूर्णं। वेष्टर सं० ४४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रदिर वेगमनी कोटा।

स्थ्यमः समवसरम् पूजाः— ४। पत्रसः ३६। प्राचा-नस्कृतः। विषय-पूजाः। र०कालः ४। ने कालः। पूर्णः। वेष्टनः म० ३२। **प्राप्तिः स्थान—दि० जैन** पत्राधनी मन्दिर भरतपुरः।

म्ह४६. समवशरण पूजा—X३ पत्रस० १७ । म्रा॰ ११X६ इज । माषा-सस्कृत । विषय— प्रजा । र० काल X । पूर्ण । बेष्टुनस० २०१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तक्कर जवपुर ।

**६६०. समबसरए पूजा** —  $\times$  । पत्र स० १७०। प्रा० ६५  $\times$  ५ इचा । माषा-हिल्ही । विषय-पूजा। र०काल  $\times$  । से० काल स० १६२३। पूर्ए। वेष्टन रा०३६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्राप्ति स्थान —दि० जैन मन्दिर प्राप्ति स्थान —दि० जैन

विशेष - वृदी में लिखा गया था।

**८६१. समबसरए। पूजा** — × । पत्रसं ०३२ । धा ०११ × ५ इच । माषा-सस्कृत । विषय- पूजा । र०काल × । ते० काल × । पूर्ण । बेष्टनस० ३५७ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्राप्तन्दन स्वामी बूदी ।

**ष्ट६२. समबसररण पूजा** —  $\times$  । पत्रत० ११। धा० ११ $\times$ ५ इन्त्र । भाषा-हिन्दी । विषय-  $^{3}$ ता । र०काल  $\times$  । ले $^{6}$ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ११३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भावता (राज् $^{6}$ )

म्द्रिने. समबसरण विद्यान—पं० हीरानन्द्— ×ापत्र सं० २४। घा० ११ ४४ इचा। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-पूजा। र०काल सं० १७०१। ले०काल स० १७४१ पीय सुदी ४। पूर्ण। वेहन सं० ४०। प्राप्ति स्थान— दि० जैन तेरहपंथी मन्दिर दौदा।

विशेष-वनहटै नगर में जोशी सांबलराम ने प्रतिलिपि की थी।

स्टि६४. समबसरसायुजा— ×। पत्ततः ३४। द्वाः ११×५ इञ्च । त्राधा-हिन्दी। विषय-पत्राः र०काल × । ने० काल × । पूर्णः वेहन सं० १९३। प्राप्ति स्थान—प्र० दि० नैन संदिर सन्वेदः म्ह**६५. समबसरण् पूजा ---×।** पत्र स० १००। घा० १२४८; इश्व। माबा-हिन्दी पद्य। विध्य-पूजा। र०काल ×। ले० कान सं०१६७२। पूर्ण। बेष्टन स० ३२३। **प्राप्ति स्थान**--दि० जैन मन्दिर पावर्षनाथ चौगान बृंदी।

विशेष -- मीर भी पाठ है।

८६६६. समबसराण की झाचुरी— $\times$ । पत्रस $\circ$  ४। प्राः १० $\frac{1}{2} \times 4^2$ , दश्वा आया-संस्कृत । विषय-पूजः ।  $\tau$ ० काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्णः । वेष्टन सं $\circ$  ४०। प्राप्ति स्थान-—दि० जैन मिटर बोरससी काँटा ।

स्ट६७ समबसरण चौबोसी पाठ--- चार्नासह ठोल्या। पत्र म० २६। प्रा० १०१/८१ इ.च.। भाषा-हिन्दी पद्या। विषय-पूजा। र०काल स० १८४० ज्येष्ठ मुर्गर। ने०काल स० १८४६ माथ बृदी २। पूर्ण। वेष्टन स० १६४। प्राप्ति स्थान---दि० जैन प्वायनी मदिर करीती।

विशेष --- करौली मे रचना हुई। सेवाराम जनी ने प्रतिनिधि की थी।

स्ट्रिस्स समयसररण संगत चौदीसी पाठ— ×ापत्र स० ११। ग्रा० १४ १ इञ्चा। भाषा -हिन्दी पदा । विषय-पूजा । र० काल स० १८४६ केठ बुरी २ । ले०काल ∵ । पूर्ण । बेहन सं० ११ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन पंचायती मन्दिर करोली ।

विशेष — उसके कर्ता करीली निवासी थ लेकिन कही नाम देखने में नही ग्राया । ३३द ग० ४०४ ७ । श्रावक के उपदेश सौ सनस्वति परमाना ।

थान करौरी में भाषा खंद बनाया ।

**८६६. समबसरण रचना** $-\times$ । पत्र म० ५१। प्रा० ६८५ इव । भागा-हिन्दी गय। विषय-पूजा एवं वर्णन । र०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्टन म० ६६। प्राप्ति स्थान- कि जैन सन्दिर नागदी बुदी ।

विशेष-समतसरमा के अतिरिक्त नके स्वर्ग मोझ मभी का वर्गन है।

सह्थ०. समयश्रृत पूजा— शुमचन्द्र । पत्र स० ३६ । चा० १२ ८ ४.३ दश्व । भाषा-सस्त्रः । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं०२० । प्राप्ति स्थान —दि० जैन म<sup>(दर</sup> समिनदन स्वरमी वंदी ।

द्रह७१. समबश्रुत पूजा— × । पत्र सं० ४२ । आ० ५२ . ६ इ.च.। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्वा । वेष्टन सं० २२६ । प्रास्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

=६७२. सम्मेवशिक्षर पूजा—य० सुरेन्द्रकीरितः। पत्रम०१। या० ११े,४४ इत्त्रः। सम्बा–सस्कृतः। विषय-पूजा। र०कालः ४ । ले० कालः ४ । पूर्णः। वेष्टनसं०२७६। प्रास्ति स्थानः — वि० जैन मन्दिर सक्करे वयपुरः।

द्ध ६७३. सम्बेदशिखर पूजा — × । पत्र सं० १७ । भाषा—मस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । से०काल × । अपूर्ण । बेष्टतसं० १२ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन तेरहपंदी मन्दिर बसवा ।

क्रहेश्वरं, सन्मेदशिक्षर पुजा-निवासाः। पत्र सं० १२ । आ० ७३ ४१३ इञ्च । आगा-संस्कृतं । विषय-पूजा । राकाल × । तेवकाल × । पूर्ण । बेहुन सं० १४१-६८ । प्राप्ति स्थान-ंदिव जैन मनिर कोटियों का हुनिपुरः। ्र **८८७४. प्रतिसं**० २ । पत्र सं० १७ । घा० ६३ × ६ हे इ.ख. । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ६८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली ।

**८९७६. प्रति सं० ३ ।** पत्र स० ६ । प्रा० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ ७ इच्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टत स० ४२/१६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिंह (टोक) ।

८६७७ प्रति सं०४ । पत्रसं०२४ । धा०७<sup>3</sup>,४४<sup>3</sup> इंच । लेऽकाल स०१८८४ फारुगुन सुदी ७ । पूर्लं । वेघ्टन सं०३७ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर सौगासी करौली :

म्ह्रेशम् सम्मेदशिखर पूजा—सेवकरामः । पत्रस्व २३ । ग्राव १०३ ४६३ इञ्च । भाषा— इन्दी । विषय-पूजा । रक्काल संव १६११ मात्र बुदी ४ । लेक्काल मव १६११ । पूर्णा । वेष्ट्रन संव ११४ । प्रास्त्र स्थान —दिव जैन प्रवासनी मन्दिर बसाना ।

विशेष-नाई के मन्दिर में मुखलान की प्रतिनिधि की थी।

८९७६. सम्मेदशिखर पूजा — संतदास । पत्र स०३ । घ्रा० १०३ ८ १ ६७ । भाषा - हिन्दी । विषय - पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेग्टन स०५७ - । प्राप्ति स्थान – दि० जैन ॐकर लकर जयपुर ।

**८६०. सम्मेदशिलर घूजा—हजारीम**रूल । पत्रसं∘२४ । आ०१२८४ इ.ख.। माषा-रिन्दीपद्य । विषय पूजा। २०कास ४ । ले**०कक्षे** मं०१६३२ । पूर्णे। वेष्टन मं००**१ । प्राप्ति स्थान**— रि०र्जन मन्दिर धीमहावीर बूरी।

विशेष — मबुरादास ने साहपुरा में प्रतिलिपि की थी। सहसमल्ल विनती करे हे किरपानिधि देव। धादागमन मिटाइये धरजी यह मुन लेव।।

**८६८१. सम्मेदशिलग्यूजा—ज्ञानचन्द्र**ः पत्रः स**०१४** । घा० ५×६२ ६ व.। भाषा-हिन्दी पद्यः। विषय-पुत्राः। र०काल स०१६६६ चैत मुदी २ । ले० कालः स०१६६६ । पूर्णः। वेस्टन सं०१४२ । **प्राप्ति स्थान—**(६० जैत मन्दिर प्रिप्तितन्त्रः स्वामी, बृदी ।

प्रोरम्भ--शिवर समेद मे बीग निनेश्वर सिद्ध भये । भीर मुनीश्वर बहुत तहा ते जिब गये।। बंदू मन बंच काय नमू जिर नायके। तिष्ठे श्री महाराज सबे इन भ्रायके।।

धन्तिम--- उन्नीसी छासठ के माही ।

स्थत विक्रम राज कराही ॥ चैत मुद्दी दोग्रज दिन जान ॥ देश पंजाब लाहोर शुभ स्थान ॥

पूजा शिसर रची हरवाय।

नमें ज्ञानचन्द्र शीश नमाय ।।

इसके प्रतिरिक्त निर्वाण क्षेत्र पूजा ज्ञानचन्द्र कृत और है जिसका र०कास एव सेसन काल भी नहीं है ।

विशेष -- बूदी नगर वासी गैंदीकाल के पुत्र संतलाल छावडा ने प्रतिलिपि करके ईश्वरीर्मिह के शासनकाल में भेट की थी।

 $\pi$ ६ $\pi$ २. सम्मेबसिस्स पूजा—जबाहरलाल । पत्रस०२७ । आ० ६ $\frac{1}{2} \times \cup \frac{1}{2}$  स्वा । प्रापा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल सं० १८६१ वैद्याल सुदी । लेक्काल स० १८५६ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४१ । प्राप्ति स्वान—दि० जैन मन्दिर प्राप्तिन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष — कवि छत्रपुर के रहने वाले थे। मुक्तागिरि की यात्रा कूंगये धीर धमरावती में यह ग्रन्थ रचना करी।

ग्रमरावती नगरी विषे पुत्रा समकित कीन।

छिमाजी सब जन तुम करो मोहि दोस मत दीन ॥

प० भगवानदास हरलाल वाले ने नन्द ग्राम में प्रतिनिधि की थी। पुस्तक प० रतनलाल नेमीचन्द्र की है।

द्धरुप प्रतिसं० के । पत्रस० २३ । घा० ११×६ इञ्च । ले०काल सं० ११४६ । पूर्ण । बेहुतसं० २०७ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मंदिर नागदी, यूटो ।

विशेष - २-३ प्रतियो का मिश्रए। है।

क्र£क्ष≼. प्रतिसं० ४ । पत्र स० १४ । मा० ११ ॄं४६ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्ण। बेब्रन स० २ क्ष्र(१११ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो काङ्गणपुर ।

क्ष्टक्ष्यः, प्रति स० ५ । पत्र स० १० । आग० ११ ४ ५ हे इ.च । ले० काल ग० १६५४ वंशाय बदी १० । पूर्णः । वेप्टन स० ५०० । प्राप्ति स्थान—वि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपूरः ।

स्ट्रस्द, प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ग्रा० १०×६ इला । लेक्सलस०-१८४३ धागाऽ सदी १ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० १६४ । प्रास्ति स्थान- वि० जैन लब्हेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

स्टक्ष्फ, प्रतिसं० ७ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १११४ । पूर्णाः बेष्ट्रन म० ६६ <sup>०२८४</sup> । प्राप्ति स्थान - दि० जैन समबनाथ मंदिर उदयपुर ।

८६८८. प्रति सं०६ । पत्रस०१७ । ले०काल × । पूर्सा वेहन सं०३४४ २६४ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन समयनाथ मंदिर उदयपुर ।

द्धह्द ६. प्रतिसं० ६ । पत्र स० १२ । मा० १२ ई ४० इञ्च । ले•काल ४ । पूर्णा । बेष्टन म० १७६ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर फ्तेष्ठपुर शेखावाटी (सीकर) ।

द्धहरू प्रतिसं० १० । पत्र सं० १७ । ग्रा० ११ ४६ इ.च.। सं० काल सं० १६४६ । पूर्व । बेष्टन सं० ७/४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्तिर दूनी (टॉक) ।

विशेष — प्रमरावती में रचना हुई। मुन्नालाल कटारा ने हजारीकाल गंकरलाल के पठनार्थ व्यास रामवनस से दूनी में प्रतिलिपि करवाई थी। संवत् १६४३ में हजारीलाल कटारा ने घनन्वत के उपलक्ष में दूनी के मन्दिर में चढाई।

द्ध ६६**१. प्रतिसं०११** । पत्र सं०१२ । झा०१२×५ इच्चा। ने० काल सं०१८६१ । पूर्ण। वेष्ट्रन सं०१०६ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन** मन्दिर बीवानवी (कामा) ∦ म**६६२. प्रतिसं० १२।** पत्र सं० १६। मा० १०×६३ इल्डा ने०काल स० १६२६। पूर्ण। केष्टन सं० ३४। **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन सप्रवाल मन्दिर नैसावा।

विशेष -- निम्न पाठों का सम्रह भीर है---

नवग्रह स्तोत्र, पार्श्वनाथ स्तोत्र, भूपाल चतुर्विशतिका स्तोत्र ।

म**६६३. प्रतिसं० १३**। पत्रस० १६। मा० १०३ ×७ इ**च।** ले० काल ×ः पूर्णः। बेष्टनस० ४३। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन तेरहपथी मन्दिर मालपुरा (टॉक)।

**८६६४. प्रतिसं० १४** । पत्र सं० ७ । ले०काल सं० १६२६ धाषाढ सुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स० १३१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--लालजी लुहाडिया भरतपुर वाले ने प्रतिलिपि करवाई थी।

**८६६५. सम्मेद शिखर पूजा— मागीरण ।** पत्र स॰ २६ । भाषा-हिन्दी । विश्व-पुणा । र०काल  $\times$  । ले० काल स० १६३७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन शंचायती मिरिंग् मरतपुर ।

द्ध ६६६. सम्मेद शिखर पूजा—चानतराय— × । ६०५० १६ । म्रा० १०४६ इच्छा । भाषा -हिन्दी (पण्डा) विषय-चरित्र । र०काल स० १८३५ । ले०काल × । घपूर्ण । वेष्टन स० ८५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ने≳को का नैगावा ।

**६६६७. सस्मेद शिखर पूजः** - **मुम्बजन ।** पत्रस्य १६। ब्राव १० $\times$ ६% डबा । साया-(g-2)। विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । लेक्काल  $\times$  । पूजं । वेष्ट्रन स० ७६ । **प्राप्ति स्था**न—दिव जैन लंडेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

द्ध दिन सम्मेव शिखर पूजा—रामपाल । पत्र म० ११। ग्रा० ९४६ इचा भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा। र०काल स० १८-६। वि०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन म० २४७-१०२। प्रशस्ति स्थाल— दि०जैन मन्दिर कोटडियों का दुगरपुर।

**ग्रन्तिम**---मलसघ मनुहार मट्टारक गुण्वन्द्र जी।

तम पर सोहे सार हेमका वाह्यपती मही ॥
मक्तकीति प्राचारण जी जाती ।
तिन के जियन कहे मन बातो ।
रामपाल पंदित मन स्यावे ।
प्रमु जो के गुण बहुविच गावे ॥
सहुर प्रतापगढ़ जातो रे माहे ॥
सहुर प्रतापगढ़ जातो रे माहे ॥
सोडा टेककर तिहा रह्याई ॥
समेद जिस्तर की यात्रा प्रावे ।
ता दिन वे पूजा रचावे ॥
समय प्रावार साह में मोर द्वियासी लाय ।
समय प्रावार साह में मोर द्वियासी लाय ।
समय प्रवार साह में मोर द्वियासी लाय ।
समय प्रवार कुण मानेये रामपाल गुण गाय ।
सिलीयों पं रामपाल स्वहरीया ।

जुगादीके सुगह में पिडत वरवान जी ।। रतनवन्द ताको नाम बुद्धि को निघान जी ।। ताको मित्र रामपाल हाथ जोर कहत है। हेस्यारण मोकू दीजिये जिनेन्द्र नाम लेत है।

**८६६६ सम्मेद शिखर पूजा---लालखन्द ।** पत्रसं० ८३ । झा०६×५ इश्व । माषा -हिन्दी, । विषय-पूजा । र०कान सं० १८४२ फागुग सुरी ५ । ले० काल स० १८४५ बैशाख बुदी ऽऽ । पूर्ण । वेष्टन स०**४ । प्राप्ति थान**---दि० जैन मन्दिर नेरहपथी नैगावा ।

विशेष — लालचाद भ० जगत्की निके शिष्य थे।

ग्रन्तिम-प्रणस्ति निम्न प्रवार है-

×

काष्टासप क्षीर माषुरगच्छ पोकरगण कहां गुनगच्छ । जोहाचार्य ब्रामनाय जो कही हिसार पद मनोक्षा मही ।।३२.। महारक सन्वीति जानि, सब्य पयोज प्रकाणन मान । सामु पट्ट महोन्दकीन नयो विद्यागुरग महार जुभयो । देवेन्द्रकीति तत्पट्ट बलान, शील क्षियोमाण कियाबान । तिनके पट्ट परम गुणवान, जानकीति महारक जान ।

इति श्री सम्प्रेटकियारमहारूपे लोहाबार्यानुसारे भट्टारक शगरकीति तर क्रिप्य जानकार विरक्षिते सहकूट वर्णनो नाम एक विकाति नम सर्गः ।

**१०००. प्रतिसं०** २ । पत्रस० ६० । घा० १२ है×६ है इरुच। ले०काल स० १६१३ । पूर्ण। वेष्ट्रनसं० १० । प्राप्तिः **स्थान** —िट० जैन छोटामदिर वयाना ।

**६००१. प्रतिसं०।** ३ पत्रसं० ३६ । आ० ६१ ४ ⊏ै इचा। ले०काल स० १६७० फागुरा सुदी ६। पूर्ण। बेष्टल स० १६२। दि०। प्रास्ति स्थान— दि० जैन पार्यनाथ मन्दिर उन्दरसढ कोटा।

६००२. प्रतिसं० ४ । यत्रसं० २६ । तेश्काल स० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन स० ५१ । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मस्दिर हण्डावालों का बीग ।

६००३. प्रतिक्षं० ४ । प्रथलं० ४ । ग्रा० १३×४ हे इ.च. ते०काल स०१६०६ घाषाव सुदी ४ । पूर्णं । बेहुनसं० ४८ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिरफतेहपुर शेलावाटी (मीकर)

**१००४. प्रतिसं० ६ । पत्र** सं०४७ । **प्रा० १०३** $\times$ १ $^{3}$  इन्द्र । ने० काल सं० १८५४ आसोज मुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर फ्लेब्स्युर जेलाबाटी सीकर ।

विशेष-रेवाडी मे प्रंथ रचना हुई । देवी सहाय नारनील वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

६००**५. प्रतिसं०७**। पत्रसं० ४४। ब्रा० ११३ ४५३ इन्द्र । लेक्काल स०१११५ पीय मुदी । पूर्ण । बेष्टुन म०५० । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर फतेहपुर केलाबाटी ।

विशेष---

**ग्रन्तिम प्रशस्ति—इति श्री** सम्मेदिशिवरमहान्ये लोहाचार्यानगारेगा भट्टारक श्री जगत्कीनि तत् शिष्य लालचन्द विरचिने सुवर्णभद्रकूटवर्णनीनाम विश्वतिका संपूर्ण । जीवनराम ने फनेहपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

**२००६. प्रतिसं० ⊏**।पत्रस**० ५० । ग्रा० ६**×५ इला। ले०काल ⋌ । पूर्णा । बेष्टन सं० २२० <sup>°</sup> ११४ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन समबनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६००७. प्रतिसं०६** । पत्रस०६६ । प्रा० १×७ डला। ले∍काल म० १८८६ । प्रपूर्ण। त्रष्टन स० । ३४७ । **प्राप्ति स्थान—ढि० जे**न मस्दिर, दीदानजी कामा ।

६०० म्. सम्मेद शिखर महास्म्य पूजा—सोतीराम । पत्रस० ४२ । भाषा  $\pi$ ित्ती, पद्य । विषय-पूजा । २०कान मं० १८४१ भादो मुदी ६। ते०काल स० १८४८ वैमाल मुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ५६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**६००६. प्रति स० २ ।** पत्रस० ७२ । ले०काल स० १२२०। पूर्गा । बे**छ**नस० ४६६ । प्रा**रित स्थान** — दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

**६०१०. सम्मेव शिखर पूजा**— × । पत्रत० ७ । मा० १०१२ ६१ इ.ख । भाषा-हिन्दी, पद्य । विषय-पुजा । र०काल × । ले०काल म० १७६३ । पूर्ण । वेष्ट्रन मं० ६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्यताथ जीगान वृदी ।

**६०११. सम्मेद शिखर पूजा**— ×ापत्र स०१२ । आ०१२२ प्रृंडच्या भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा र**०काल** ×ाले० काल म०१६४४ धामोज बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन म०११४५ । **प्राप्ति-**स्थान—भ०दि० जैन मदिर अजनेर ।

**६०१२. सम्मेद शिक्षर पूजा**— × । पत्रस०३० । धा० १२४ ४५ इन्ड । भाषा—हिन्दो, पद्य । विषय-पूजा । रक्ताल × । लेक काल × । धपूर्ण । बेट्टन स०१∼१० । **प्राप्ति स्थान**— स०दिक कैन मन्दिर प्रकार ।

**६०१३. सम्मेद शिखर पूजा**— × । पत्र न० ८ । प्रा० ८×६ इथा । भाषा-हिन्दी । विषय-पृजा । र•कृत्व × । ने०काल स० १६४६ प्रामोज नृदी १२ । पूर्ण । येष्ट्रन मं० १६६६ । प्राप्ति स्थान-म• दि• जैन मन्दिर प्रजमेर ।

**६०१४, सम्मेद शिलर पूजा**— ्रायत्र म०१०। घा०१०४५<sup>2</sup> इन्द्रा, भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा र**०काल सं०१**=६१। ले० काल म०१६००। पूर्ण। वेष्टन म० २०। **प्राप्ति, स्थान**— दि० जैन मंदिर प्रमिनन्दन स्वामी युँदी।

- ६०१%. सम्मेव शिखर पूजा—  $\times$  । पत्र सं॰ १८ । धा॰ १२ $\times$ ६ इच । भाषा—हिन्दी, पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले॰ काल सं॰ १६१२ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं॰ १-५ । प्राप्ति स्थान दि॰ जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।
- १०१६. सम्मेव शिखर पूजा $-\times$ । पत्रस० १८। घा० ७ $\frac{3}{5}\times Y_0^2$  इन्छ। प्राथा—हिन्दी, गत्त । विषय-पूजा। र०काल  $\times$ । लेक्काल  $\times$ । पूर्ण । बेहुतसं० १६८। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर नैमिनाय टोडारायसिह (टीक)।
- ६०१७. सम्मेव शिखर पूजा $-\times$ । पत्र स० १६। घा॰ ० $^2\times$ ६ इ.ख.। आषा-हिन्दी गयः। विषय-पूजा २०काल  $\times$ । से०काल स० १६४२ कार्तिक सुदी १। पूर्णं। वेष्टन सं० ७१–१२४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नेमिनाय टोडारायसिह (टोक)।
- ६०१८. सम्मेद शिखर पूजा $-\times$ । पत्र स• १८। मा० ११ $\times$ ४ देड सामापा-हिन्दी पदा। विषय-पूजा। र०कान  $\times$ । ते० कान सं०१६३३। पूर्ण। वेष्टन स०१९८। **प्राप्ति स्थान**-
- ६०१६ सम्मेव शिखर पूजा—  $\times$  । पत्र स०६४ । द्या० १० $\frac{1}{2} \times$  = इव । माषा-हिन्दी । विषय— पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल सं०११०४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १४-६१ । प्राप्ति स्थान- त्रिक जैन मदिर मादवा (राज०) ।
- १०२०. **सम्मेव शिखर पूजा** × । पत्रस० ४३। प्रा० ६ × १ इच । भाषा—हिन्दी, 'या । विषय पूजा । र० काल × । ले०काल स० × । पूर्ण । वेष्टुन सं०१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जेन मन्दिर कोठकों का नैगावा ।
- ६०२१. **सम्मेद शिखिर पूजा** ४. । यत्रस∘ ⊏ । माद्या-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल सं• १८७७ । ने० काल × । पूर्मा । बेष्टन स० १३० । **प्राप्ति स्थान** - दि० जैन पंचावती मन्दिर भरतपुर ।
- ६०२२. **सम्मेद शिखर महास्थ्य पूजा—ममग्रुखसा**षर । पत्र स०१००। ब्रा० १२४६ इ.च.। मापा—हिन्दी, पद्यः। विषयः —पूजाः । २० कालः ४ । ले० कालः सं०१ ८६८ । जेठ सुदी १४ । पूर्णः। बेष्टनं स०१००-८२ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन म**दिर तेरहपथी दौताः।

विशेष-ज्ञानवन्द छावडा ने प्रतिलिपि की थी।

- ६०२३. सस्मेद शिखर महास्म्य पूजा— मनसुखसागर । पत्रसं∘ ६३ । प्रा॰ १०्रे×६३ इ.च.। माषा—हिन्दी पद्य । विषय - पूजा । र० काल × । ले०काल स० १६०७ । पूर्ण । बेहनसं० ४५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मंदिर श्रीमहाबीर कुँदी ।
- ६०२४. सत्मेव शिखर महारूप —दीक्षित देवदल । पत्र तं० ७६ । माण १११ ४६ १ इच । माचा-संस्कृत । विषय-पत्रा एवं कथा । र०काल × । ले०काल स० १८४१। पूर्ण । वेष्ट्र सं० २६० । प्राप्ति स्थान-मा० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

- **६०२६. सम्मेव शिखरमहास्म्य**— $\times$  । पत्रसं॰ २१।मा०  $=\times$ ६ इच । भाषा-हित्ती । विषय-पूजा । र॰ काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ ५६। प्रास्ति :चान दि० जैन मन्दिर पाण्वेनाच स्त्यरगढ (कोटा) ।
- १०२७. सम्मेदाचल पूजा उद्यापन $-\times$ । पत्र सं० व । ग्रा० १३ $\frac{1}{2}\times\xi^{\frac{1}{2}}$  १७३ । माषा संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$ । लेकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १०३ । प्राप्ति स्थान दि० जैन मन्दिर पास्तेनाय जीगान व दी ।
- **१०२६. सम्यक्स्त चितामणि**— $\times$  । पत्र स० १२२६ । प्रा० १२ $\times$ ६ इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । के•काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० २७६ । प्राप्ति स्थान —दि॰ जैन प्रप्रवाल मंदिर उदयपुर ।
- ६०२६. सरस्वती पूजा $-\times$ । पत्र स०७। म्रा० ११ $\times$ ४२) द्वा । माषा-संस्कृत । विषय- पूजा । रक्काल  $\times$ । तेक्काल  $\times$ । पूर्ण । बेहनस० ४२। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा।
- **६०२०. सरस्यतो पूजा—संघो पद्मालाल** । पत्र स० ११ । घा० १२ है ४८ इञ्च । प्रापा— किन्दी । विषय पूजा । र० काल स० १६२१ अंग्रेष्ठ मुदी १ । ले० काल स० १६६५ झाषाढ बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ४६० । प्राप्ति स्थान—दि० जॅन मन्दिर लण्कर जयपुर ।
  - विशेष रिपभचन्द विन्दायक्था ने लश्कर के मन्दिर के लिये जयपूर मे प्रतिलिपि की थी।
- ६०३१. सर्वजिनालय पूजा ( कृत्रिमाकृत्रिमचैरयालय पूजा )—माघोलाल जंसवाल । पत्र स० १६। घा० ५ $\times$ ७ इत्त्र । साधा-हित्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूजा । वेकन स० १२। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर चोषरियान मालपुरा (टोक) ।
- **१०३२. सहस्रगुरा पूजा— म० धर्मकी**र्ति । पत्रस० ६१ । ष्रा० १२ $\frac{1}{4}$ ×७ $\frac{1}{9}$ रजा भाषा— मस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । से•काल स० १८७६ मागसिर बुदी ३ । पूर्ण । बेप्टन सं० १७ । प्रा**प्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोंक) ।

### विशेष - प्रशस्ति निम्न प्रकार है --

इति भट्टारक श्री ललितकीतिस्त्रिष्य भट्टारक श्री घमंकीर्तिवरित्र श्री सहस्रगुरा पूजा सपूर्ण। निक्यत महास्मा राथाकृष्ण सवाई जयपुर मध्ये वाभी कृष्णगढका। मिति मनसिर बुदी ३ मुक्तार स०१६७६।

- **१०३३. प्रति सं०२।** पत्र स० ७२। प्रा०११ $} \times ७००० १४$  इच्चा लेक्काल स १९३१ बैशाल  $^{1}$ प्री १ पूर्ण । बेहुन सं०४६५। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर जयपूर ।
- **१०३४. सहस्रमुश्यित पूजा** × । पत्रसंग् ६१ । घा० ११हुँ ४६इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०कास × । से०काम स०१८८६ भारता बुरी ४ । पूर्ण । वेष्टनसंग् १३४२ । प्राप्ति— स्थान—या० विक् जैन मन्दिर प्रजसेर ।
- **१०३५. प्रतिसं० २** । पत्र सं० ४६ । ले०काल सं० १८८६ ब्रासीज सुदी ८ । पूर्यो । बेष्टन सं० <sup>१९८३</sup> । **प्राप्ति स्थान—**म० वि० जैन मन्दिर ब्रजमेर अण्डार ।

**६०३६. सहस्रगुरिएत पूजा – म० गुभचन्द्र ।** पत्र स०१२७ । घा०११४४ इचा । साथा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल स० १७४१ ज्येग्ट बुदी १२ । पूर्ण । वेहन सं०७६३ । प्रा**टित स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर क्षजमेर ।

विशेष--ग्रा० कल्यागकीर्ति के शिष्य प० कबीरदास के गठनार्थ गृटका लिखा गया था।

६०३७. प्रतिसं० २ । पत्र त० १२ । ले॰काल त० १६६८ । पूर्ण वेष्टन सं०६ । प्रास्तिः स्थान —दि० जैन पचावती मन्दिर डीग ।

विशेष — मानसिंह भी के शासन काल में थासेर में प्रतिनिधि हुई थी। बाई किसना ने कितका। वतीखापन में चढाई थी।

**६०३६. सहस्रगुरगी पूजा— सङ्ग्रसेन** । पत्र स० ८७ । घा० १२ ४४ दला । भाषा- हिस्सी । विषय-पूजा । र०काल ४ । ले० काल स० १७२८ । पूर्ण । वेष्टन स० २४६ । प्राप्ति स्थान—दि० ंत मन्दिर सककर जयपुर ।

विशेष—प्रशस्ति शब्दी दी हुई है।

**१०४०. सहस्रताम पूजा — धर्मचन्द्रमुनि** — ४ । पत्र मरु ४०। सार १२ ४ ६) र न । भाषा–सस्कृत । विषय–पृजा । रुकाल ४ । गिरुकाल सरु१६६१ चैन मृदी ३ । पूर्णा विष्टुन मरु१-४ । **प्राप्ति स्थान**—दिरु जैन तेन्द्रस्थी मन्दिर दीक्षा ।

विशेष-स्वाई मायोपुर मे प्रतिनिधि की गई थी।

**६०४२. सहस्रमाम पूजा — चैनसुख**ाषत्र म०३६। ग्राण १२४६) इ.खः भाषा हिन्दी। विषय-पूजा र**०काल ४। से०काल स०१६६३**। पूर्णा बेष्टनम०४४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर सरकर, जयपुर !

१०४३. साद्धं हमद्वीप पूजा — विष्णुकूष्णा । तत्र म०११६ । आ०१२४४ । द्वारा । संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल ४ । ने क्लान म०१६६१ । पूर्णा । वेष्ट्रम० ४७६ । प्राप्ति स्थान - विष्कृत मिदर सरकर, अयपुर ।

६०४४. सार्द्ध द्वयद्वीप पूला - शुन्तवस्त्र । पत्र सं०१३०। ब्राण १०४१ इत्व । मापा -संस्कृत । विषय-नूत्रा । र०काल ४ । ले०कान स०१८६८ सावन मृरी १ । पूर्ण । बेष्टन सं०१४ । प्राप्ति स्थान — प्र० ति० जैन मन्दिर सजसेर ।

ह०४५. प्रति सं०२ । पत्रसं०६३ । झा० १०४५ १ इला । ने० काल ४ । पूर्सी । वेष्टन सं०१⊂६ । प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

ह**ंडर्स, प्रतिसं० ३** । पत्रसं० ३०० । घा० ६<sup>3</sup>,४६ दश्व । ने०काल ४ । पूर्ता। नेष्टन म० ३ दक**ा प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर नरसली कोटाः। १०४७. प्रतिसं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले॰काल सं० १८२६ प्रापाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ११६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रवायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष--- ग्राशाराम ने भरतपुर में लिखा था।

६०४८, प्रतिसं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ मुदी ११ । पूर्ण । वेष्टनस∙ ११७ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**६०४६. प्रतिसं० ६** । पत्रसं० २५६ । ले०काल स० ११६३ । पूर्ण । वेप्टनसं**० ११६ । प्राप्ति** स्थान—उपरोक्त महिरु ।

**६०५०. प्रतिसं० ७** । पत्रम• १०८ । घ्रा० ११ ८.५ इश्वः । लेक्काल स०१८७० । पूर्णः । बेस्टन स०११ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर बैरः ।

**६०५१. प्रतिसं० ६** । पत्रस० १४४ । लेकाल 🔀 । पूर्ण । वेष्टन म० ४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पत्रायती मस्टिर इल्डाबाली का डीग ।

६० ५२.२. सा**उँ इयद्वीप पूजा— सुधा सागर**ः प्रत्रस्त ६८ । प्राचा-सस्कृतः। विषय-पूजाः। २०कालः × । ने०कालः स०१ ८५५ कामुलः पुरो ४ । पूर्णः । केष्ट्रनः स०५६ । **प्राप्तिः स्थान**— १८० जैन नेरक्षप्री मन्दिर वसवाः।

**६०५३. साह्यं द्वयद्वीप पूजा**— 🗶 । पत्रस० २०१। आधा-सम्कृत । विषय-पणा । र०काल ा जिल्काल 📐 । पूर्णा । वेष्टुन मरु ७५ । प्रास्तिः स्थान—दिल्जीन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**६०५४. सार्ह्ध होप पूजा**—× । त्रत्रस० ८८। ग्रा० १२३४७ ६०व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । १०काल ४ । ने०काल स० १८६५ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० १११ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कतेहपुर शेखावाटी (मीकर) ।

विशेष — षय मबन्यराम्म नृगति विक्रमादित्य गताब्द मवत् १०६५ मिनी फाल्गुण बुदी ६ वार धादित्यवार । श्री काष्ट्रामधे मादुराख्ये पुण्करणान्णे हिमारपट्टे भट्टारक श्री विभुवनकीतिदेवारपट्टे भट्टारक श्री क्षेत्रकारितेवारपट्टे भट्टारक श्री क्षेत्रकारितेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्ददेवा तत्पट्टे भट्टारक विकामिते वर्तमाने पित्रि निमत । प्रथवालकाते सहर वानी धर्मभूति कंपावार मुख्यक पुण्यप्रभावक धर्मश्र नाला दुनीचन्द तत्पुच लाला ग्राम्म तत्पुच लाला प्रसामन तत्पुच गंगाराम तत्पुच बहालिमह तेनेद धदाईद्वीप पूजा विकामित्वा दत्ते तेन जनावर्षी कर्माश्रे निमतायं ज्ञान्य स्थारित ।

पं॰ रामचन्द्र ने प्रतिक्षिण की थी तथा उनके शिष्य मुखराम ने घर्मपुरा के पाश्यंनाथ चैरयार्थ स्थापित् ।

**१०५५. सार्ह्य द्वोप**  $-\times$  । पत्र स०१०२ । मा० १०५ $\times$ ६ इला । भाषा-संस्कृत । विषय- qत्रा । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  : मपूर्ण । बेप्टन स०११६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पंचायती मन्दिर बयाना ।

चितेय — सं॰ १६२६ या १६६१ की प्रति से प्रतिसिप की गई है। प॰ घाकाराम ने अस्तपुर में श्रीतिसिप की थी। ६०५६. **साढाई य द्वीप पूजा** — × । पत्र सं∘ १६६ । घा० १३ × ७२ इश्व । भावा - संस्कृत । विषय पूजा । र०काल × । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० १४८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन धपवाल पनायती मंदिर अलवर ।

**६०५७. प्रति सं० २** । पत्रसं० १२३ । मा० १० है×५ इच्छ**ा से०काल × । पूर्ण । बेह**नस**०** १४६ । **प्राप्ति स्थान**—उपरोक्त मन्दिर ।

**६०५ म. प्रतिसं० ३** । पत्र सं० ३१४ । प्रा० ११ $\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$  इ.ख । ले० काल सं० १८७३ । पूर्णे । वेस्टन स० १४० । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

**१०५६. प्रति सं०४ । पत्रसं०**६२ । आ०११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ६ $\frac{1}{2}$ ड॰व । मे•काल स०१८७६ योग मुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स०१४१ । **प्रास्ति स्थान**—उपरोक्त प्रतिर ।

**६०६०. सिडकूट पूजा** $--\times$ । पत्रसं० १०। प्रा० १२ ४६ इचा। भाषा-सस्कृत । विषय -पुजा। र०कात  $\times$ । ते० काल स० १८८७ ज्येष्ठ गुरी १। पूर्णः। बेष्टनस० १८। प्राप्तिः, स्थान -(८० जैन सिटर स्राहिताय स्वामी मालपूर। (टॉक)।

**६०६१. सिद्धलेन पूजा—बौसतराम।** पत्रम० ८४ । प्रा०१०१ू४७३ इ.च.। प्रावा-हिन्दी। विषय-पूजा र० काल स०१६६४ । ले०काल ४ । पूर्ण। वेष्ट्रत म०१६ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पंचामती मन्दिर काम।

विशेष --श्रन्तिम पद---

संवतसर दस धाठ सत नब्बंबार मुघोर । धमुनीमृतदोयज भनो रिबंबार विर मोर ।।४४ ॥ तादिन पूजा पाठ करि पर्ड मुने जे जेव । तपादै गुल स्वासंत निज्ञातम रस पीव ।।४४ ॥ सोमानन्द मुनन्द है जोवत सोहनवाल । नाहो नंद मुनन्द है दौलतराम विसाल ॥४६॥

१०६२. सिद्धकोत्र पूजा----प्रकाशकान्द्रः। पत्रस० ४७ । घा० ११४६ स्व । साथा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १११६ । के•कात्र सं० १६४५ । । पूर्ण । वेष्टन स० ४८ । प्राप्ति स्थान ---वि० जैन मन्दिर राजमहत्त (टॉक) ।

१०६३. सिद्धकोत्र पूजा--- ×ापत्रसं∘ १०। प्रा० १० हे×६ हे इत्वा प्राचा हिस्ती । विषय-पूजा १ रक्कास ×ा केक्बाल सं० १६३६ मालोज नृदी १४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ । प्राप्ति स्थान --वि० जैन तेस्ट्रॉवी मन्दिर नैएका ।

ह०६४. सिद्धकोत्र पूत्रा- — ४ । पत्रस० १६ । घा० १० ४ ६ इ.च. । भाषा-हिन्दी पद्या । विदय-पूजा । र∘ंकाल ४ । ले०काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर क्षयकाल नैरावा ।

१०६५. प्रति सं०२ । पत्रसं०१ मः लेञ्काल स०११३१ । पूर्णः वेष्टनसं०१४ । प्रास्ति स्वास---दि० वैन सम्बाल सन्दिर नैरावा । विशेष-- लोवनपुर (नैरावा) में प्रतिलिपि हुई थी।

**६०६६. सिद्धक्षेत्र पूजा**— ×ा पत्र सं०१द। झा०१३ × ५३ इश्वा। भाषा-हिन्दी पद्या विषय-पूजा। र०काल ×ाले० काल सं०१६३६। पूर्ण। वेष्टन सं०२१०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन प्रदिर पार्चनाय चौनान बृंदी।

**६०६७. सिद्धकोत्र पूजा**—  $\times$  । पत्र सं० १। प्रा० ११  $\times$  प $^{-1}$  इंड्य । माषा-हिल्दी । विषय-पूजा । रुकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्टन स० १२० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मंदिर लक्ष्कर जयपुर ।

**१०६८. सिद्धक्षेत्र मण्डल पूजा—स्वरूपचन्व ।** पत्रस० १६ । ग्रा० ११×८ इचा । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल सं० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४४१ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

ह०६६. सिद्धस्यक पूजा—पं० झाशासर । पत्रस० ३। मा० ११  $\times$  ५ इस्त । भाषा-सम्हत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं०६५ । क्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर प्रमिनन्दन स्वामी बुदी ।

**६०७०. सिद्धचक पूजा — धर्मकोति ।** पत्र र॰ १३६ । भाषा –सस्कृत । विषय –पूजा । र०काल र । ते० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६६ । **प्रास्ति रचानः**—दि० जैन नेरहपंची मन्दिर बसवा ।

१०७२. सिद्धचक पूजा—स. सुमचन्द्र । १७४० ७० । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । के•काल स० १८२४ मगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सोगानी मन्दिर करोली ।

विशेष---पत्र चलग झलग है।

**१०७३. प्रतिसं० २** । पत्रस० ६२ । छा० १हुँ ४ ६ इश्व । ले०काल स० ११२६ वाके । पूर्ग । वैक्रनसं० १४**१ । प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पचायती मन्दिर करोली ।

**२०७४. प्रति स० ३** । पत्र स० १० । ने०काल X । पूर्ण । वेष्टनस० १५६ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर सरतपुर ।

**१०७४. प्रसिसं०४** । पत्रसं० ८ । ग्रा०१०×४३ इच्च । ले०काल स०१४८३ कार्तिक सुदी १०। पूर्ण ।**वेष्ट**नसं०१३ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर दीवानजी कामा ।

**१०७६. प्रसिक्षं० ४** । पत्रसं० २३ । प्रा० १२ है ४ प्रदे ४ व । लेक्शल स० १६८५ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्षा । **वे**ष्टनसं० ४८८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**२०७७. प्रति सं०६** । पत्र सं०१ १। धा०११ ४ ४ इ.चा ने० काल > । धपूर्णी। बेष्टन स्० २४६ । **प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रप्रवाल** संदिर उदयपुर ।

विशेष -- समयरससमग्रं पूर्णभावं विभावं,

जनितसुणिवसार यः स्मरेत् सिद्धचकः ॥ प्रस्तित नर मुपूज्य सौमचन्द्रादि सेव्य । भजति

६०७८. सिद्धचक पूजा-संतलाल । पत्रस० १३१ । प्रा० १३४८ इञ्च । आषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र०काल ४ । से०काल स० १६६१ । पूर्ग । वेष्ट्रन स०४८ । प्राप्ति स्थान-विक र्जन मन्दिर श्रीमहावीरजी वृंदी ।

विशेष —इन्दीर मे प्रतिलिपि हुई थी।

**६०७६. प्रतिसं० २ ।** पत्र स० १०५ । घा० १२ $\frac{1}{2} \times \mathbb{G}_{q}^{2}$  इच्च । ले०काल स० १६८६ घाषाढ सुदी ११ । पूर्ण । र्यप्रन स० ४१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर राजमहल (टोक) ।

तुरा ११ विश्वा प्रश्निम वर्ण वर्षा आस्ति स्थान — १६० जन मान्दर राजमहल (टाज विशेष — ग्रजमेर वालो के चीबारा में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी।

६०**८०. प्रति सं० ३**। पत्रस० १-१०३। आ० १३८८ इखा लेक्काल ×ा अपूर्णा बेहुतसं० १४७२। **प्राप्ति स्थान** --वि० जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारायसिह (टोक)।

**६०८१. प्रतिसं०४।** पत्र स०१४३। प्रा०१३×८ इ.स.। ल० काल स०१६६७ कानिक बुदी३।पूर्ण। बेस्टन स०१४८ र०।**प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायसिह (टॉक)।

**१। प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर चौधरियान मालपुरा (टीक) ।

६० द**२. प्रतिसं०६**। पत्र सं०१४२। म्रा०१२×⊏ैृडक्षा ले० काल ४ । पूर्णः। वेक्टनसं० ⊏०ऽ। **प्राप्ति, स्थान**—दि० जैन मन्दिर लण्कर जयपुर।

विशेष--पत्र स०१२४ में ग्रामे २६ पुष्ठों से पंचमेरु एवं नंदीश्वर पता दी गयी है।

**६०८४. सिद्धचक पूजा** —  $\times$  । पत्र स० ६१। प्रा० १२ $\times$ ६ इन्त । भाषा-हिन्दो । विषय-पूजा । २० काल  $\times$  । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन स० पृंजासती मन्दिर प्रस्तर ।

६०**⊏५. सित्छ पूराा**— ×ा पत्र स० ४ । ग्रा० १०१ँ×६१ इस्व । भाषा-सस्कृत । विषय-पुत्रा । र०काल × । लेककाल × । पृग्ये । बेष्टन स० ७२३ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर ऋजमेर ।

६० इ.६. सिद्ध पूजा -- × । पत्र म००। घा० ११है×६१ इ.ख । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । लेकाल × । पूर्ण । वष्टत स०६ । प्राप्ति स्थान - दि० जैन भन्दिर मादिनाथ स्वामी मालपूरा (टोक) ।

६०८७. सिद्ध पूजा $-\times$ । यत्र त० २। भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$ । ल०काल  $\times$ । धपुगं । वेष्टन स० २८१/३७४। प्राप्ति स्थान -दि० जैन संभवनाथ मदिर जदयपुर ।

२०८८. सिद्ध पूजा भाषा— $\times$ । पत्र सं० ५ । ग्रा॰ ५ $\times$ ५ ह्वा भाषा—हिन्दी यद्य । विषय—पूजा । र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन सं०२००। प्राप्ति स्थान —दि० जैन सदिर राजसङ्ख (टॉक)।

**६०८६. सिद्ध भूमिका उद्यापन — बुधजन** । पत्रस० ४ । द्या० १२१ै ४७ इ.ख. । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० काल स० १८०६ । ले०काल स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन स० ४२७ । **प्राप्ति –** स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियो का दूसरपुर ।

**६०६०. सुबन्ध दशमी पूजा**—  $\times$  1 पत्रस० ८ । ब्रा॰ १ $\times$  3 दश्व । भाषा- $\{ \chi \Lambda \}$  विषय-पूजा । र०काल  $\times$  1 ते०काल  $\times$  1 पूर्ण । वेष्टन सं० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तरक्षणी मन्दिर मालपुरा (टोक) ।

६०६२. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । घा० ≒ ६ूँ इश्वाले ० काल ४ । पूर्गावेष्ट्रनसं० ४७० । प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

**६०६३. सुतक निर्णय—सोमसेन** । पत्र म० १६ । आ० ६४४ इखा आषा-सस्त्रत । विषय-विधान । र०काल ४ । लेकाल ∴ । पूर्ण । वेष्टनस० ३२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० धी मध्यर पार्क्ष्रताथ चीमान व दी ।

६०६४. सूतक दर्गन—  $\times$  । पत्र म०१। प्रा०११ X ३ ६था। भाषा-सस्कृत । विषय-विधान णास्त्र । २० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पृग्ये । वेष्टनसं०१००। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ चौगान बुंदी ।

**६०६६. सोनागिरि पूजा**—  $\Sigma$  । पत्रस्य ६। श्राव ६ $\frac{2}{3} \times \frac{2}{3} \times \frac{2}{3}$  रच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस्य ६२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन छोटा मन्दिर बयाना ।

**८०६७. सोनागिरि पूजा**— × । पत्र स०४ । आ ६×६ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र•काल सं०१६६० फागुग बुदी १३ । ले० काल स०१८४६ । पूग्में । वेष्टन स०५६६ । **प्राप्ति—** " स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

६०६८. सोलहकारण उद्यापनः -सुमितिसागरः। पत्रम० १६ । प्रा० १२ ४५६ इन्छ । भाषा-सस्कृतः। विषय-पूजाः। र०कालः ४ । तै०कालः स०१६६७ । पूर्णः। वेष्टनः स० २५ । प्रास्ति– स्थान-—दि० जैन मन्दिर वीधरियान मालपुरा (टोक) ।

विशेष--नाथराम साह ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६०६६. सोलहकाररा उद्यापन—प्रमयनन्दि। पत्र म० २७। मा० १०१८४४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ४ । ले०काल मं०१-१७ वैद्याल बुदी १। पूर्ण। वेष्टन म० ४४। **बान्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर बोरमती कोटा।

विशेष-सरोज नगर में मुपार्थ्व चैत्यालय में प० ग्रालमचन्द के शिष्य जिनदाम ने लिखा ।

- ह१००. **सोलहकारएा उद्यापन** × । पत्र सं २०। घा० स्ट्रै×६ इ**४।** भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी इंदी ।
- **६१०१. सोलह कारएा जयमाल भ० देवेन्द्रकीति ।** पत्र रा० २३ । भाषा संस्कृत । विषय — पूजा । र०काल १६४३ । ले० काल १८६० । पूर्ण । वेष्टन स० ८८ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पचासती मन्दिर भरतपुर ।
- ६१०२. सोलहकारण जयमाल—×। पत्रतः १६। धा० १०४५ इञ्च । माषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रेक्शल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१३ । प्राप्तिः स्थान—म० विक जैन मदिर प्रजमेर ।

dista-

मोलहकारण पष्टयमि गुरागरण मायरह । परावरिण तित्थकर धमह दुवयकर ॥

- ६१०४. सोलहकारण जयमाल—रह्यू ापत्र सं०७। घा० १२४६ इच । माषा— सपक्षंत्र। विषय-पूत्रा। २०काल X । ले०काल X । घपूर्ण । वेष्ट्रन सं०४६ X । प्राप्ति स्थान — १२० जेन बस क्षेत्रपद्यो मन्दिर दोसा।

विशेष -- गाथाओं पर हिन्दी अर्थ दिया हुमा है।

६१०६. सोलहकारण जयमाल $-\times$ । पत्र स०२८। प्रा० १३imes६२ ॥ भाषा-प्राइतः ।वषय-पूत्रा। र०काल imes। ले०काल imes। पूर्ण। वेष्टन स० ४६। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रतिदर प्रयायनी करीली।

विशेष-- रत्नकरंड एवं प्रकृतिम चैत्यालय जयमाल भी है।

- **६१०७. सोलहकाररा पूजा** × । पत्र सं∘ ११ । झा० १२ ×६ इञ्च । आघा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ए । बेष्टन सं० १६ । **प्रास्ति स्थान** - दि० जैन संविर झादिनाथ स्वामी मालपुरा (टीक) ।

विशेष-हीरालास बड़जात्या ने टोंक में लिसवामा मा।

- .११०६. सोलहकारता पूजा विधान—टेकचस्व। पत्रतं०६। या० न×६ इचा। माषा— हिन्दी। विषय-पूजा विधान। र०काल × । ते०काल × । पूर्णं। वेष्ट्रन सं० ५६१। **प्राप्तिः स्थान**— दि० जैन मदिर सक्कर जयपुर।
- ६११०. प्रसिक्तं० २ । पत्र स० ५१ । घा० १० ४६ देवा। ते०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं∙ ४ । प्राप्तिक स्थान—दि० जैन संदिर कोटकों का नैसावा।

विशेष-भट्ट शिवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

- ६१**११. प्रति सं० ३** । पत्रसं० ७४ । ग्रा० १०३४ ५ ३ इञ्च । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टन सं० ७४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन नेरहयंत्री मन्दिर दौसा ।
- ह**११२. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस० ४६ । झा०१२ है×६ है इस । ले०काल सं० १६६७ चैत सुदी १ । पतां । बेबन सुव १३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर नागदी बृंदी ।
- **१११३. सोलहकार** स्**पूजा**  $\times$  । पत्र सं० २७ । झा० १०  $\times$  ४ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । लेक काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० २११/३२४ । **प्राप्ति स्चान** दि० जैन समजनाय प्रस्तिर उदयपुर ।
- ६११४. सोलहकारण पूजा—×। पत्रसं∘२-१७ । म्रा०११×४३ दशाः मापा-संस्कृतः। विषय-पूजाः। र०कालः ×। ले० कालः × । म्रपूर्णः। वेष्टनः स०४३ । प्रास्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर बोज्यलीकोटाः।
- ६११५. सोलहकारएा मण्डल पूजा— $\times$ । पत्रसं० ४० । घा० ११ $\times$  ६ इंच । भाषा— सस्कृत । विषय पूजा । र०काल $\times$  । से०काल म० १६११ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० ४)६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज्र०)

विशेष-मारोठ में भ बाराम ने लिखवाया था।

- **८११६. सोलहकार** सण्डल विधान $-\times$  । पत्रस० ६०। धा० ११ $\frac{1}{2}$ ४ $\frac{1}{2}$ ६% माधा-हिस्दी । विध्य पूजा । र०काल  $\times$  । लेक्काल स० १६४४ सावरा बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन सं० १३४४ । प्राप्ति स्थान- म० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।
- **६११७. सोलहकारण क्रतोद्यापन पूजा** $\times 1$  पत्रसं० १६। प्रा० ११ $\times 0$  इञ्च 1 भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । एकाल  $\times 1$  ले० काल  $\times 1$  पूर्ण । वेष्टन स० १५३ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन सन्दिर नामदी बुदी ।
- ६११८. सीलहरूरण क्तोबापन पूजा—×। पत्रसं∘ ३२। मा॰ १०×७ इच। भाषा-हिन्दी (पत्र)। विषय-पूजा। र०काल ×। से०काल ×। पूर्ण। वेहन सं०७८ ७८। प्राप्ति स्थान---दि० जैन तेरहत्थी मन्दिर दोसा।
- **६११६. सोलहकारस्य बत पूजा विधान** ×। पत्रसं∘ ६। घा॰ ११ ×५ इ.च.। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-पूजा। र०कास ×। ते० काल ×। धपूर्य। वेष्टन सं० ६६-६। **प्रास्ति स्थान** — दि॰ जैन बडा क्षीसपंथी सन्दिर दीसा।

**११२०. सीस्य कास्य कारोद्धापन विधि** $-\times$ । पत्रम० ६। बा० १०१ $\times$ ४१ $^{1}$  इखा। माषा-सम्ब्रत । विषय-पूजा । २०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन म० ६११ । **प्राप्ति स्थान**—भ० वि० जैन मदिर सजमेर ।

**६१२१. संयारा पोरस विधि**— $\times$  । पत्र स० १ । प्रा० १० $\times$  ४ है इश्व । आपा–प्राकृत । विषय—विधाय । ले० काल १६४३ । पूर्ण । बेष्टन स० ६० । प्राप्ति स्थान— दि० बैन मन्दिर दबलाना व दी ।

**बिशेष**---पठनार्थ विरागी रूपाजी ।

**६१२२. संबारा विधि** $--\times$ । पत्र स०१२। आ०१०×्ँद्व । प्रापा-प्राकृत । विध्य-विधान। र०काल  $\times$ । ले०काल । श्रपूर्ण । वेग्टन स० ४६६। **प्राप्ति स्थान**--म० दि० केन मन्दिर श्रवपेर।

विशेष--टव्वा टीका सहित है।

**६१२४. स्तोत्र पूजा** — imes । पत्र मं ० ६। भाषा हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल imes । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ७२४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**६१२५. स्वयन विधि**—imes। पत्र स**० ५। भाषा**—सस्कृतः। विषय-विधि । र०कालimes। तुर्गः। वेष्टुन स० ५४। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पचायती मन्दिर हण्डावालो का इं.गः।

**१२२६. स्नपन श्विधि बृहद्-** × । पत्रम० ११ । भाषा-सस्कृत । विषय-—विधान । र०काल × । ले०कान स० १५५७ कार्तिक मुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० २३८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० अंन प्रक्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

**६१२७. होम एवं प्रतिष्ठा सामग्री सुवी**— × । पत्रसु० २०। आ० १२ × ४३ इते । सासा-हिन्दी-सस्कृत । विषय—पूजा । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ३०७–११० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुगरपुर ।

**११ पूर्ण** । वेष्टन स० २ १ प्रवस्त २ । मा० १२ ४ ४ है इल्डा ने विकास स० १६४० चैन मुदी १ । पूर्णा । वेष्टन स० २४२ । प्राप्ति **स्थान**—दिव्जैन मन्दिर पार्यनाथ चौगान बुंदी ।

विशेष --- पडित देवालाल ने चाटसु में प्रतिलिपि की थी।

**११३०. प्रति सं०३ ।** पत्र स०६ । झा० १२ ४ ५ १ इञ्च । ले० काल ४ । पूर्णा। लेशून सं०३२१∼१२० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हुगरपुर ।

 $\boldsymbol{\epsilon}$ १२२, होम विधान $-\times$ । पत्रसं० १० । धा०  $(0) \times \mathbb{Y}_{q}^2$  दला । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस०३७४ । **प्राप्ति स्थान** -दि० जैन मन्दिर सजनेर । **६१३२. होम विधान**— $\times$ । पत्र सं०६। खा० ८ $^{1}$  $\times$ ६ इत्व । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेस्टन स०११७४ । **प्राप्ति स्थान**—भ०दि० जैन मन्दिर खजमेर ।

**६१३३. होम विधान**— $\times$  । पत्र सं० २३ । ग्रा० १२ $\times$ ७ इख । भाषा-प्राहृत-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$ । पूर्य । वेष्टुनस० =० । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर कोटडियों का इंगरपर ।

ें **११३४. होम विधान** —  $\times$ । पत्र सं० २-८। भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । र०काल  $\times$ । क्रिकाल  $\times$  । पूर्णा। वैकृतसं० ४३१/३८७। प्राप्ति स्थान---दि० जैन संभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

**६१३५. होम विधि**— $\times$  । पत्रस०८ । घा० ११ $\times$ ४१ इस्त्रा । माया—संस्कृत । विषय-विभाग । र० काल  $\times$  । से•काल । पूर्ण । बेष्टन स० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

**६१३६. होम विधि**— $\times$ ा पत्रतः ६३। ग्रा॰ ६ $\times$ ४३ इचा भाषा-सस्कृत विषय-विद्यान । २०काम  $\times$  । से०कास सं० १६६०। पूर्ण । वेष्टन स०१७। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर पार्चनाथ चौपान बंदी।

## गुटका -- संग्रह

### ( महारकीय दि॰ जैन मन्दिर अजमेर )

	<b>९१३७. गुटका सं०१ । पत्र सं०७० । बा०१२</b> × ६ दै इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले∙ काल स
<b>१</b> ८३४	माह सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन सं०२३ । <b>प्राप्ति स्थान</b> — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष—विभिन्न पाठों का सम्रह है। मुख्यतः खण्येलवालों की उत्पत्ति, ६४ गोत्र तथा निम्न रास हैं।

भविष्यदत्तरास — त० रायमञ्ज सुदर्शनरास — "

**११२ स. गुटका सं०२ । पत्रसं∙ १**३१ । घा० ११×५ इ.च. । भाषा -सस्हत⊷प्राहत । ले०काल ×ाँपूर्णः । वेष्टनसं०४२ ।

विशेष -- सामान्य पाठी का संग्रह है। गुटका प्राचीन है।

**६१३६. गुटका सं० ३ । पत्रसः०** १६८ । ग्रा• ५imes६९ दश्यः । माया-हिन्दी । र०कालः imes । पूर्णः । वैष्टन सं॰ ११६ ।

विशेष — बहा रायमल इत विभिन्न रामाधो का संग्रह है।

**११४०. गुटका सं०४ ।** पत्र स० ११४ । ग्रा० ६३ ×५ ६ञ्च । भाषा–सरकृत ∉स्टी । स० काल × । ग्रपूर्साः वेष्टन स० २२७ ।

विशेष---पूजा पाठ संग्रह है।

श्रीपाल रास

**६१४१. गुटका सं०५ ।** पत्र सं०७६ । ग्रा०६×४ हे इ.ख । भाषा-किन्दी । ले० काल स० १८७३ चेत सुदी५ । पूर्णा विष्टन स०२४१ ।

विशेष-हिन्दी पदों का संग्रह है।

१९४**२. गुटकासं∘६ ।** पत्रस०४ ⊏ । मा०६ ४४ देइ च । माया–हिन्दी । ले≉काल ∵् । पूर्यो । बेष्टन स०२४२ ।

विशेष--विविध पूजाओं का सम्रह है।

**११४३. गुटका७ ।** पत्रसं०१२ मः। आर्० ५४ ४६चाः। भाषा—हिन्दीः। ले०काल स०१ ६०० । पूर्णं। केष्टनसं० ३६३ ।

विशेष---

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है---

नाम प्रथा नाम सावा १—मधुमासती कथा— चनुर्मुज--- हिन्दी

. से क्लाल सक् १८०७।

#### पद्य सं० घटते ।

२--दिस्सी के बादशाहों के नाम-X।

**१९४४. गुटकासं० ८।** पत्रसं० १६० । घा० १६ ४६ इचा। भाषा-हिन्दी । से०काल 🗙 । पूर्णे । वेस्टन सं० ३१४ ।

विशेष — स्तोत्र, पूजा एवं हिन्दी पदों का संग्रह है।

**६१४४. गुटकासं० ६** । पत्र सं०२७४ । घा० ६२<sup>2</sup> ४६ इश्वाभाषा−हिल्दी।ले∘कालसं० १६६७ मंगसिर मुदी१२ । पूर्णावेष्टन सं०३६५ ।

विशेष--- निम्न प्रकार संग्रह है---

**६१४६. गुटका सं०१०**। पत्रस० २०२। श्रा० ६x ४-३ इञ्च। भाषा-क्रिन्दी। र०काल x । क्रे•काल x । पूर्णी। बेष्टन सं०५०२।

•काल × । पूर्ण। वेष्टन स०४०२ : विशेष-—हिन्दीपदों कासग्रह है ।

द्वादशानुप्रे का

हर्पचन्द्र ग्रादि कवियो के पदों का सग्रह है। पद सग्रह की दृष्टि में गुटका महत्वपूर्ण है।

£ १४७. गुटका सँ० ११ । पत्र सं० ४६ । आर० ५imes ४६ च । भाषा-हिन्दी । र०काल imes । ले० काल सं० १८७६ । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०५०३ ।

विशेष-स्तोत्र एवं भ्रन्य पाठों का सग्रह है।

**११४ म. गुटकासं०१२ ।** पत्र स०१०म । श्रा•म्}×५६२व । माषा~हिन्दी। ले० काल × । पूर्णः । वेहन सं०५०४ ।

विशेष--गुरास्थान चर्चा ग्रादि है।

हु१४६, गुटका सं० १३ । पत्र स० ११८ । मा० १०४६ इचा। भाषा–हिन्दी । से०काल ४ । पूर्ती वेस्टन सं० ४०७ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है---

समयसार — बनारसीदान महाबीरस्तवन — समयमुन्दर (बीर सुनो भेरी बीनती कर जोड़ि है कहो मनमी बात बालकनी परिविनऊ) ६१५०. मृद्यका सं०१४ । पत्रस० स्माधा० ५×५ इका। भाषा−हिन्दी-संस्कृत । र०कान ×ाले∙काल ×ापूर्णावेष्टन सं०५० स्।

विशेष-प्रति जीगों है। पूजा पाठ सम्रह है।

 $\xi \xi \chi \xi$ , गृटका सं०  $\xi \chi$  । पत्र सं० २००। ग्रा०  $\xi \chi \chi \xi \xi \xi$  व । मापा—हिन्दी-सस्कृत । लेब्काल सं० १८२ । पूर्ण । वेष्टन स० ४४१ ।

. विशेष —स्तंत्र एव सामान्य पाठो के प्रतिरिक्त क्षमा बत्तीसी, (समय सुन्दर), जीव विचार टब्बार्थ मी/न. क्विरयर्डात्रशिका टब्बार्थ, पद सम्रह (भव सागर) सीमधर स्तवन (कवि कमल विजय), धर्मसाथ स्तवन (प्राग्यद्यम)।

गृटका म्बेताबरीय पाठी का है।

६१४२. ग्टका स०१६ । पत्रस०१६८ । घा०६४६ इथा। मापा∺सस्कृत । ले•काल - ापूर्णा वेष्टन स०५५३ ।

विशेष-पूजा पाठ सग्रह है। गुटका जीएां है।

**६१५३. गुटका सं० १७**  $\times$  । पत्र स॰ ३३। आर० ५ $\times$  ३३ इ.ख.। भाषा-हिन्दी । ले० काल ग० १७७४ चैन सुदी ११ । पूर्ण । बेष्टन स० १५४।

विशेष --- निम्न पाठी का संग्रह है----

१-- शत्रु जय रास -- समयमुन्दर

२ -- मडोबर पात्रवंनाथ स्तवन --- सुमित हेम

३--- ऋपभदेवस्तवन

**११५४, गुटका सं० १८** । पत्र सं० ७३ । मा० ५२/४५/१ इञ्च । माया-सस्कृत । ते० काम म०१५७५ मादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन स ४४५ ।

विशेष-विभिन्न ग्रंथों मे से पाठ हैं सामान्य पाठो का संग्रह है।

**६२४४. गुटका सं० १६**ा पत्रसं० १४४ । झा० ६३४ ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १८०७ । पूर्णै । वेष्टन सं० ४४७ ।

विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है।

भक्तामर, एकीभाव, सूक्तिमुकावली, नीतिशतक (भतुंहरि) স্থাবशतक (সনুंहरि) कवित्रिया (कंशवदास)।

६१५६ गुटकासं०२० । पत्र स०६७ । घा० ११४७ इ.च. । मावा-प्राकृत-सस्कृत । तं०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स०५५६ ।

विशेष---मामायिक ग्रादि सामान्य पाठो का संग्रह है।

६१५७. गुटकासं०२०। पत्र स०१४०। घा०११६े ४७३ इथ्या। भाषा—हिस्सी। ले० काल स०१८५८ फापुंग सुदी२। पूर्णा वेष्टन सं०१४६।

निम्न पाठों का संग्रह है-

मविष्य दल कथा श्रीपान राम **इ**० रायमस्ल

सूदर्णन रास	ब्रह्मराय मझ	
निर्दोष सप्तमी कथा	n .	
प्रद्युम्न राम	रायमल्ल	
नेमीप्रवर राम	"	
हनुमत चौपई	n .	
शालिमद्र चौपई	जिनराज मूरि	
<b>जीलपच्चीसी</b>		
स्थूलभद्रको नदरस	anners .	
ग्रकलकनिकलक चौपई	म० विजयकीर्ति	<b>₹०काल म० १८२४</b>

**६१५८. गुटका सं० २१। पत्रस**० ७०। घा० ५ × ८१ टश्च । भाषा-मस्कृत । ले०काल ग०-१७८४ । पूर्ण । बेट्टा स० ५६०।

विशेष - चौरासी बोल-हेमराज के तथा पूजा-पाठ सम्रह है।

**६१५६ म्टकासं० २२।** पत्र स० १५६ । झा० ५ै, ४३० टचाभाषा~लियी । ले० काल ७ × । पूर्णा । बेटन स० ५६१ ।

विशेष---पदों का सम्रह है।

**१९६०. ग्टकास०२३ ।** पत्रसं∘द । स्रा० द×६ ३ खाभाषा-क्रियी। ले॰ काल रा० स् १=द६ । पूर्णा वेष्टनसं॰ १६२ ।

विशेष---नेमिनाथ के नवमंगत एव पाठ प्रादि है।

**६९६१. गटका सं०२४। पत्रम०** ४६ । स्रा० ७ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इ.स. । भाषा-दिल्ला सहस्त । लेकाल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० ५६३ ।

विशेष—भ्रायुर्वेदिक पाठो का सबह है। इसके प्रतिरिक्त २४ पत्र में काल जान मटीक है। हिन्दी में अर्थ दिया हुसा है।

**११६२, गृटकास०२४,।**पत्रस०६२। ब्रा०४,}×४ डब्ल्वः। भाषा-हिन्दी।ले०काल स०१८६६ ।पूर्णा।वेष्टनसं०५६४।

विशेष -गोम्मटमार में से चर्चायों का सम्रह है तथा पत्रावती पूजा भी दी हुई है।

**९९६३. गुटका सं०२६ ।** पत्र स०२४२ । घा० ६२,४६२, इ.च. । माया—म-कृत, हिन्दी । वे∘काल स०१७१६ । पूर्णी वेष्टनस०४६४ ।

विशेष---निम्न पाठीं का संग्रह है---

भक्तामर स्तीत्र, तत्वार्थं मूत्र एव पूत्राओं के अतिरिक्त भाउ कृत रविवान कया, बर्णायमत्त्व कत नेमिनाथ रास एवं वालियद चौपई आदि का सब्रह है।

**६१६४. गृटका सं०२७** पत्र सं०६४ । आर०३ ४३ इञ्च। भोषा⊸सस्कृत । ले०काल स०१६९ । पूर्णा वेष्टन स०५६६ ।

विशोध —स्तोत्र भादिका संग्रह है तथा ग्रांत में कुछ मन्त्रों का भी सग्रह है ।

हरेदर्भ. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २६५ । मा॰ दरे ×६रे इचा । मापा हिन्दी । ले॰काल सं० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन स० ५६७ ।

# विशेष — निम्न प्रकार संग्रह है —

१—४२ प्रारम्भ मे इन्द्रजालविद्या 8---30 चक्रकेवली 78-84 शकुनावली संकाति विचार-७६ पत्र तक धनोदूका सकुन ६८ पत्र तक कोक शास्त्र सवत्सर फल १४६ तक सामुद्रिक शास्त्र १५० तक ससार वचनिका १७३ तक रमल णास्त्र ग्रागे जन्म कुण्डली भादि भी है।

गुटका महत्वपूर्ण है। **१९६६. गुटका स**० २९। पत्रसं० ३७१। घा० ८२<sup>२</sup>४६२ इथा। प्राथा-हिन्दी । लं∘काल स०१७२८। पूर्ण। बेष्ट्रन सं०५६८।

# विशेष-निम्न रचनाओं का संबह है।

<b>बिशेष</b> —निम	न रचनाओं का संबह	संबह हैं। भाषा	रचना सं०	पत्र स॰	विशेष
नाम ग्रथ पार्वनाथरास	ग्रंथकार कपूर्चन्द	हिन्दी	१६६७	3<−4€ €0−€४	६४ पद्य
नेमीसुर का राम	पुष्परत्न	"		६५-८० ८१-१०१	
जैनरास प्रद्युम्नरास त्रैलोक्य स्वरूप	इ० रायमझ सुमतिकीति	n n	१६२७	१०१-११६	
त्रलाक्य रेक्ट. जीपई शील बसीसी	स्रक हुमल	37		-	पत्र सं० नहीं लगी है
भविष्यदत्त कथा	इ० रायमझ विमल कीर्ति	"	3009	१८७-७३ १७४-१८१ १८१-६४	_
नद बत्तीसी निर्दोष सप्तमी कथा यसोधर चउपई	ब्र० रायमझ 	'' '' লিપিকাল	सं० १७२=	१६५-२०६ जीवनपुर म २२०-२२६	ध्ये लिपकृत म
ग्रादित्यवार कथा	माउ कवि			. 440-111	•

सीतासतु	भगौतीदास	हिन्दी पद्य	\$64.	२३०-२७० ग्राचाट सुदी ३	
क्येष्ठ जिनवर कथा	<b>व</b> ० रायमल	हिन्दी	१६२५	२७१-७४	
				सांभर में रचनाकी	गयी थी
चन्दनमलयागिरि कथा	चन्द्रसेन	,,		२७४-६४	
<b>मृगीसं</b> वाद	देवराज	,,	1543	२=६−३०१	_
				चैत सुदी ९ र	वेवार
वसुधरि चरित्र	श्री भूषएा	,,	3009	307-378	
हनुमंत कथा	<b>क∘</b> रायम@	,,		₹ <b>२२</b> – <b>५५</b>	
<b>पाशाकेद</b> ली		.,	_	₹44-€•	
मालीरास	जिनदास	**		3 6 5 - 6 8	_
गौतम पृच्छा		,	_	३६५-३७१	

# सीता सतु--मगौतीदास

#### म्राहि माग—

ऊर्कार नमी घरि माऊ, मुगति वरगींग वरु जगराऊ । सारदपदपदपक्त सिरनाऊ जिहप्रमादि रिधिमिषि निधि पाऊ।। गुरुमुनि महिदमेन भट्टारक, भव संसार जग्मीय जले तारक। तामुचरणानीं होत धनदो, बढदवृत्ति ह्मि दृतिया चदो।।

### मध्य भाग--

# सोरठा---

सीय न हुइ भय भीय करे रूपि रावरा घरो । हरि करि सरह विसाय भूत प्रेत वेताल निसि । ५६।।

## स्रोपई---

सम्मु उपममुं करइ द्वामा, सो सुमरइ चिति लखिमनरामः।
गद्य रीन रवि उत्यो दिनेम्, हुइ निरास घरि गयो लगेन् । ४० ।।
बालु पीडत तेल न लहिये, फीए। मस्त्रीकमीए। जिवतन गहिये।
सतिय पयोहर को करि छावइ वहीन परिस तिन को जीग जीवइ।। ५८।।

## प्रन्तिम--

बिल विकम नृप करन सम मुखर सुभा मुजारा। भक्तवर नंदरा भ्रति वली सयल जगति तिस भ्रारा।।६६।।

## सोरठा---

देस कोमु गज बाजि जामु नमहि नृग छत्रपति । जहांगीर इक राजि सीता सतु मह मनि कीया । ६७॥ गुरु गुए। चंदुरिसिंदु बखानिए । सकल चन्द्र तिह पट्टि जगतमहि जानिए । तासुपट्टिजस धामु खिमागुगा मंडणो । परुहा गुरुम्णि महिंद सेण मैंणद्र म खंडणौ ॥६८॥

## ग्रडिल्ल--

पुरः मुनि भहिंदसँगा मगोती, रिसि पद पकज रेग् भगोती। कृष्णदास वनि तनुज भगोती, तुरिय गृह्यो बतु मनुज भगोती। १९०॥ नगरि चृहिये वासि भगोती, जन्म भृमि चिरु धानि भगोती। अध्याल कृत वग लगि, पडितपदि निरसी मिम भगोती। ७०॥

## चौपई--

जस्मिनपुर पुरर्गन प्रति राजद, राह पौरि तिन नौभति बाजह । बसीह महाजन घन धनवन, नागरि नारि पवर मनिवन ११७१॥ मोतील्टि जिनभवन, विराजह, पिंडमा पास निर्मान घष् भाजद । श्रावक समून गुजान दयाल, यह जिल जानि करीह प्रतिपाल ११०२॥ विनय विवेक देहि रिगि दान्, पर्वहत गुना करीह गनमान् । करिज करणा निरमन धन् देशे, प्रति प्रवीग जगमाहि जनु नेही ११०३९॥ करिज जिनहर चौ सथ निवासू, नह नार्व भगत भगोनीदासू। सीना सनु जिनि कहमी बरानी, छह भेद गद सार न जानी।।७४॥

### बोहरा-

पदहि पटाविह सृनि मनहि, लिखहि लिखाबहि गोह। सुर २२ तप लग पद् लहड, मुकति वरहि हिंग मोहु ॥७४॥

### सोरठ---

बरमी पावस मेह बाजह तृर धनद के 1
दर्गन करमा मनेह बर घर मनल गाइयो ११०६१।
फूनि हा नवसतसह बसु चारिमु मेवत जानिये ।
स्माड मुकल मीस तीज दिवस मीन धानिए ।
सियुन रासि रिव जोड़ चन्दु दूजा गन्यो ।
परु हां कविम भगौतीदासि धानि सीय मनु मन्यो ११६७०।
इति श्री पद्म पुरास्ये मीना सनु मंद्र्यों समापना ।
सन्द १७३० का दुनीक मादर्यद माने कृष्ण् ।
एक्य एकादयमां पुरुवासारे निष्पकृतं महारमा ।
असा मृत करसा जोवांग्र सम्ये ।।

मृगी संवाद—(वेष्टन सं० १६०) इ.स. मृगी संवाद लिख्यने—

# दृहा-

सकल देव सारव नमी प्रग्गामू गीतम पाइ। रास भागी रलिया मगी, सहि गुरु तगुरे पसाइ।।११। जबू द्वीप मृहावर्गो, महिधर मेर उत्तर। जहिये दक्षिण दिसा भनी मरब क्षेत्र मुजरा।२।। नगर निरोपम निहा बस कललीपुर विरक्षात। देखी राजा नट नुपण, किती कह प्रवदान।।३।।

#### मध्य माग---

कोई नर एक जिमावे जाति, सह कोई वर्स एकिए पाति । पक्समा कारी ब्योग करें, तिहके पायि सूर्य वर हरे।।११३।। सावा मागान ने देई खान, मार्थ मार्ग नान्हा बान । सामू सुमरा ने जो दसे, सा नारी बागुनि होइ मेरे ॥११४॥ घरि खावें चो निरथन पर्गो, विकान वो नर्ज स्थानि तरी। सुन्वे हुएं दूर्व सताप, रहुति लागे निह नो पाप ॥११४॥

#### ग्रन्तिम पाठ---

इहां थे मिर कहा जाइसी, त्यौ भाजे सन्देह।
केवली भाषा समली, इहा ये मिर सब गह ॥२४०॥
जप तप सजम भादरो टाल्यो मैंग्रे दुख ।
मुक्ति मतोरब पामिसी, जद्भी बहुला मुख्या।२४६॥
सबत मोलसे तंसके चैत्रमुदि रिवचार।
नवमी दिन भना भावस्यो गस पन्धी जुलिचार।।२४६॥
बीजायल माजग पदा पाम मूर देवगाज।
श्री धननदन दिन दिने, देड मामीम मुकाज।।२५०॥
इति मुगी सवाद कथा समाय।।

संबत् १७२३ का वर्षे मिति वदि ५ मुकवार लिखित पाडे वीरू कालाडेहरामध्ये ।

बसुष्टरि चरित्र (वेष्टनस०५६८) स्रादि भाग---

कंनमो बीतरागाय नमः

# बोहडा---

सान्द्र मार्माण पर नमी गल्पति लागी पाय ।
कहिम कथा रिजयावरणी, गोतम तर्णा पसाय ।।११।
जबूदीर मृहाबग्गी, लख जोतन विसतार ।
मध्य मृहरसण् भेर है, दिखरण दिसा सुबसार ।२१।
प्रतक्षेत्र जन भर तहां दिखरण देस सुबसाल ।
बन वाणी जिन भवन छति, नवी तीर मुभताल ।।३॥
कुसम नगर छति तोमती कोट उनग छावाल ।
बाग वाप बहु बावडी तहा भोगी लील विसास ॥४॥

मध्य माग-

धति धारणंद हुवो तिरणावार, धारण्द दोऊ वीर धारार। श्राय पहुता तब तर बारि, गावै गीत सुभग नर नारि। बाजें बाजा बहु भ्रतिसार, भ्र गि उवटरणा करें कुमारि । जल सनानि जवादि भवीर, घरक उद्योत तिसी वम् भीर ।। मोजन भगति भई सुमराइ, विजन वृदं बहुत बरगाय। मोदक मेवा मिठाइ पकवान, जीमै बाला वृद्ध जवान ।। सीतल जल सुवास सवाद, पीवत तृषा ग्रीर जाय विषाद ।। त्रिपत्या इन्द्री तत्पर वैंगा, नर नारी स्नेह रस नैंगा।।

#### ग्रन्तिम भाग-

बाग बाप नदि ताल सुभ, णुम श्रादग धर्मचेत । पोसो सामायक सदा, देव पूज गृह हेत । ग्रक्षर मात न जाए।ही हांसि तजो कविराव। सुर्गा कथा नैसी रची, लील कनूहल भाव। सतरामै निडोतराय कातिग मूभ गुरुवार। सेत सत्तमी कथा रचीपढत मुख्त मुखसार। एकसउ तरेपन दोहडा सोरठ ग्यारह्सार। इक्यासी भ्रम एक सत सुघ चाउपई मुढार। इति स्वरि चरित्र समाप्त ।

**९१६७. गुटका सं० ३०. ।** पत्र स० ३६६ । आ ० ६३ 🗙 ५ देखा भाषा-सस्कृत । ले० काल 🗴 । पूर्णं । देष्टन स० ५६६ ।

विशेष--निम्न पूजाओं का संग्रह है--

त्रेपन किया पूजा

कमंदहन पूजा

धर्मच ऋपूजा

बृहद् योडशकारण पूजा

दशलक्षरा पूजा पद्मावती पुजा मादि

**११६८. गुटका सं० ३१**। यत्रसं० ४२० । स्ना० १×६ इ.च । भाषा-हिन्दी सस्कृत । से॰ काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ५७० ।

विशेष-पूजा पाठ स्तीत्र कथा भावि का संग्रह है।

**११६१. गुटका सं० ३२ ।** पत्रसं० १२४ । घा० ८ ४ ६ इचा । भाषा-हिन्दी । से०काल स० १६११ । पूर्वी । वेष्ट्रन सं० ५७१ ।

विशेष--हिस्दी पदों का संग्रह है।

मस्य पाठ निम्न प्रकार है-

पारसनाथ की सहेलो-सहा नाषू

नेमिनाथ का बारहमासा-हर्षकीर्ति

देवेन्द्रकीति जखडी

**६१७०. गुटका सं० ३३ । पत्र** सं० ३७ । श्रा० ५×४ इश्वर। भाषा–हिल्दी–सस्कृत । ले०काल × । पूर्णा वेष्ट्रन सं० ४७२ ।

विशेष-- चौबीसठाणा चर्चा ग्रादि का सग्रह है।

**६१७१. गुटका सं० ३४।** पत्र स०११८ । ग्रा०१५×४ इञ्च। **माषा**−हिन्दी। ले∘काल मं०१७६३। पूर्यो। बेष्टन स०१७६३।

#### <del>Cardon</del>

14414				
	यादवराम	पुण्य रत्न	भाषा किन्दी	पत्र ६−१३
	दानशील तप भावना	समयसुन्दर	,	१०१
इनके श्रति	रक्त ग्रन्थ स्तोत्र एवं पदे	भादिकासग्रह है।		

**६१७२. गुटकास**० **३४** । पत्र स०१६४ । घा० ६४६ इश्वा भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्गा । बेष्टन स० ५७४ ।

#### विशेष ----

बावनी	छीह्न	हिन्दी	रचना म० ११८४	१३ गद्य
स्वप्नशुमाशुभ विचार	-	12	and the second	यत्र ४६-५०
चतुर्विशति जिनस्तुति		**	-	40-84
बावनी	बनारमीदास	,,		१७२-११=
जीदल की बावनी का	ग्रन्तिम वटाः—			

चौरासी ग्रागले सोज पनरह संवत्सर ।

शुक्लपक्ष अप्टमी मास कातिग गुरु मासर।

हिरदे उपनी बुधे नाम श्रीगुरु को लीह्नौ। सारद तरगो पसाइ कवित सपूरण कीन्हौ।

तहा लगि वस नाथ सुतन भग्नवाल पुर प्रगट रवि ।

बावनी वसुधा विस्तरी कर ककरण छीहल कवि ।।

**६१७३. गुटका सं०३६ ।** पत्र सं०४२ । घा०६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्णं। बेष्टन सं०५७५ ।

विशेष---गुगस्थान चर्चा का संग्रह है।

**६१७४, गुटकासं० ३७** । पत्रसं० ४७ । घा० प<sup>3</sup>×६ इथ्या भाषा—हिन्दी । ले०कालस १७४० पूर्णावेष्टनसं० ६७६ ।

विशेष - ग्रबजद केवली पाशा है।

**६१७५. गुटकासं०३ ६।** पत्रसं०१२ । ग्रा०११ ४६६ चा। भाषा-हिन्दी-। ले० काल ४ । ग्रपुर्ए। वेकृत स०५७७ । विशेष--१४८ पद्य है। बीच-बीच मे चित्रों के लिये स्थान छोड रखा हैं मधुमालती कथा है।

**६१७६. गुटका सं० ३६**। पत्र सं० ३०६। ग्रा० ६imes४ दृंदश्व । माया—हिन्दी—संस्कृत । लेब्काल १८३० श्रावरण सुदी। पूर्णा वेष्टन स० १७८।

विशेष--पूजा पाठ सग्रह है। बीच के बहुत से पत्र त्वाली है।

**६१७७ गुटका सं०४०। पत्रस०** २६४। ग्रा० ५ × ४ इश्वा मापा−हिन्दी –सस्कृत । ले०काल × । पूर्णः । बेष्टन स० ४७६ ।

विशेष-- 3जा एव स्तोत्र संग्रह है।

**६१७ ज. गुटकासं० ४१** । पत्रस० १० से २६४ । घ्रा० ७३ ×७३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६५ चैत सूदी १० । घ्रपूर्ण। बेष्टन स० १८० ।

विशेष--- निम्न पाठो का संग्रहतै---

takin inin itol	11 (1466	
धर्म परीक्षा	हिन्दी	मनोहर मोनी
ज्ञानचिन्नामिग्	23	मनोहरदास
चौबीस तीर्थंकर परिचय	**	-
पचाम्यान भाषा	21	
(मित्र लाग एव सुहुद्द भेद)	,,	
प्रतिसटीक है।		and the same of th

**६१७६. गुटकास० ४२** । पत्रस० ३१६ । घ्रा० ८<sup>गु</sup>×६ इश्वराभाषा-हिन्दी। ले० काल ८। पूर्णावेष्टन स०५८१।

विशेष-गुटके में पूजाएं स्तोत्र, एव पद्य ग्रादि का सग्रह है।

**११००. गुटका सं० ४३ । पत्र स० १**४० । आ० ६४४ इ.च । भाषा-संस्कृत । ले०काल 🔀 । पूर्ण । वेष्टन म० ५८२ ।

विशेष--- निम्न पाटी का सम्रह है---

सम्यक्तवकीपुरी, बुध मिजनस्तोत्र, प्रश्नोत्तरस्तमाला(णकराचाय), बोडणनियम एव धन्य पाठ है। कृद्ध पाठ जननर ग्रंथों में से भी हैं।

ह**ृष्ट १, गृटकास० ४४ ।** पत्रसं• १७६ । ग्रा० ४ x ४ डब्ल्व । साया-सल्कृत-हिन्दी। ले•काल · । पूर्ण, । बेष्टन स० ५६३ ।

विशेष--- पद स्तांत्र एव पूजा पाठ धादि का समह है।

**६१८२. गृटका सं०४५** । पत्र स०६ ⊏ । घा०६ ¦्र४ ¦ इश्वरामाया-संस्कृत–हिन्दी। से•काल ग०१६४१ । पूर्णावेष्टन स०५ ⊏४ ।

विशेष — यहाँ एव महाँ का संग्रह है। मुख्य मत्र शत्रुवाटन, सतानोपवार, गर्भवन्थन मत्र, वणी-करए, शत्रुकीलन, सर्पमत्र, बालक के पेटबच, झाव्यों की वशीकरएा मंत्र, शाकिनी संत्र, क्लबकोपवार आदि मंत्र दिये हुए है।

**६१८३. सृटका सं०४६।** पत्रस∙ २६०। ब्रा॰ ७ ४५, इल्डा मावा-संस्कृत । ले•काल ४ । पर्सा । वेष्ट्रन स०४८४ । विशेष - पूजा एव स्तोत्र झादि का संग्रह है।

**६१८४. गुटका सं०४७ । पत्रस०**४२ । स्रा० प<sup>2</sup>्र६ इचा । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन म**०**४८६ ।

विशेष-- स्तोत्र, पूजा, ग्रमरकोश एव ग्रायुर्वेदिक नुस्ते श्रादि का सग्रह है।

**६१८५. गृटकासं० ४८** । पत्रम० ३६ । झा० ६×४ द्वश्व । माषा−हिन्दी । ले∘काल × । पूर्णु । बेप्टन स० ४८७ ।

विशेष--नददास की मानमजरी है।

६१८६६ म<mark>टकासं०४६।</mark> पत्र सं०५०। झा०६<sup>3</sup>, ४४ इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले∘कालस ० १८८४ । पूर्णायटन स०५८६।

विशेष-- निम्न पाठी का सम्रह है।

नीतिणतक हिन्दी सवाई प्रतापसिह ्रागार मजरी ,, सवाई प्रापसिह

**६१८७. गुटकासं०५०** । पत्रस०१४२ । आ०६ १८६११ दश्वा भाषा–हिन्दी । वे०काल ≻ । पूर्णा। बेस्टन स०५८६ ।

विशेष-- नन्वार्थ गुत्र हिन्दी टीका सहित है। राजस्थानी भाषा है।

**६१ सन्. गुटकास० ५१।** पत्र सु०६६ । म्रा०६×५१ इश्वा। भाषा−हिन्दीसस्कृत। ले०काल × । पूर्णावेष्टनस०५६०।

विशेषः - - पृजाएव स्तोत्र सग्रह है।

**६१८६. गुटका स० ५२** । पत्रस० ११० मा० ५ $\times$ ४ $^{\dagger}$  इश्व । भाषा-सस्कृत । ले०काल  $\times$  । पर्यो । बेहनस० ५६१ ।

विशेष - पृजा पाठ सग्रह है। गुटका जीगां है।

**६१६०. गुटका सं० ५३ ।** पत्र स० ६२ । ग्रा० ११imes प्रै उला। भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १८२० माटवासुदी १४ । पूर्ण। वेष्टन स० ५६२ ।

निम्न प्रकार संग्रह है---

निम्न प्रकार स	प्रह है- <del></del>			
ग्रन्थनाम	ग्रत्थकार	भाषा	पद्म स०	विशेष
बारावाना प्रतिबोधसार	सकलकीर्ति	हिन्दी	४४	
पोसह रास	ज्ञानभूषण	0		
मिष्यादुवकड्	ब्र० जिसादास	,,,	58	
धमंतर गीत	पं॰ जिनदास	,,		
जोगीरास	जिरगदास	11	86	
द्वादमानुत्रेदा	प॰ जिनदास	**	१२	
n	ईसर	1)	१२	
पाणीगालण रास	ज्ञानभूषरा	**	₹₹	
सीलामग्रा रास		"	<b>१३</b>	

exa ]				
बहुंगति चुपई	_	हिन्दी	ध् <i>२</i> १ <b>१</b> ७	_
नेमिनाथराम	ग्रभयचन्द बीरचन्द	n n	€'9	_
सबोधन सत्तावणी भावना दोहाबावनी	पं० जिएादास गुमतिकीर्ति	r. ,,	₹₹	_
जिनवर स्वामी विनती गुराठारणांभीत	ब्रह्मवद <b>ं</b> न ग्रभयचन्द्र	,		
सिद्धचक्रगीत परमात्म प्रकाश	योगीन्दु	श्चपभ्रं ज	१०१ १४	_
ज्येष्ठ जिनवरनी विनती शेपन कियागीत	स्र० जिनदास भुभचन्द्र	11	<b>હ</b> <b>१</b> ૨	_
मुक्तावलीगीत भालोचना गीत	— शुभचन्द्र	,,	<b>२३</b>	_
ग्राचार्य रत्नकीति वेलि यद सग्रह	_	"	विभिन्न करि पद	प्रयोके
44 446				

**६१६१. गुटका स० ५४** । पत्रसं० ६२ । घा० ६×५३ इच । भाषा-हिन्दी-सास्कृत । लेकाल × । पूर्णं । वेष्टन सं० ५६३ ।

× । पूरा । बच्दन सर् २८२	•					
निम्न संप्रह है—		भाषा		पद्य स	•	विशेष
ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	हिन्दी		88		
<b>गूर्वावलि</b>		-		७२		
श्रो शिक पच्छा	भ०गुसकीति	,,		<b>१</b> २		
चितामीम् पाप्रवनाय विनती	प्रभाचरद	"				
भावना विनती	क्र० जिनदास	"		२८		_
<b>ग्</b> रावेलि	भ० घर्मदास	"		હેર		
गुर्गमाण जिलाप्टक		37				
		सस्कृत				
कांचगडल स्तोत्र	<b>ब</b> ० ज्ञानसागर	हिन्दी				—सस्कृत, हि
रोहिग्गियत कथा	HO STATE	901 TTO	ξ×X	इ-स	। भाषा-	- 6(80)

हरहर. गुटका सं∘ ५५। पत्रसः ७०। मा॰ ६×६ इवा । माथा—सस्कृत, हिन्दी । ले ब काल सं १६४५ चैत्र बुदी २ । पूर्णा विष्टन सं ४६४ ।

विशेष-सर्वया बावनी एव सुभाषित ग्रन्थ का सग्रह है।

६१६३. गटका सं० ४६। पत्र मं० ११४ । आ० ४×४६ इथा। माथा-हिन्दी, संस्कृत । ले० काल 🗴 । पूर्गा । वेष्टन स॰ ५१५ ।

विशेख-स्तोत्र, जोगीरासा, नाममाला श्रादि का संग्रह है।

हरहरू. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १२३ । ग्रा० ५×५ इथा। मापा-हिन्दी, संस्कृत ३ ले॰काल 🗴 । पूर्णं । बेष्टून सं॰ ४१६ ।

विशेष---निम्न पाठो का संग्रह है---नेमिनाथ रास मुनि रत्न कीर्ति हिन्दी भक्तामर स्तोत्र संस्कृत मानतु ग कल्याए। मन्दिर कुमुदचन्द एकी माव वादिराज धनंजय विषायहार नेमिनाथ वेलि ठक्कुरसी हिन्दी म्रादिनाय विनती सुमतिकीति मनकरहा जयमाल

**११६५. गुटका सं०५**६ । पत्र सं०२०३ । घा० ८ देु×५ इला । भाषा —सस्कृत, हिन्दी । ते० काल स०१६६६ । पूर्ण । बेष्टन सं०५६७ ।

# निम्न पार्टी का संग्रह है-

कालावलि	_		<del></del> -
चन्द्रगुप्त के स्वप्न	<b>ब॰ रामम</b> ल्ल	हिन्दी	
चौबीस ठ।सा			
खियालीस ठाएगा		,-	
कर्मों की प्रकृतिया		n	
तत्वार्थं सूत्र	<b>उमास्वाति</b>	♦स्कृत	_
पचस्तोत्र	_	,,	
प्रचुन राम	<b>इ० रायमल्ल</b>	हिन्दी	ले० काल स १७०४
सुदर्शन रास	"	,,	र०काल स०१६३७

हे १६६, गुटका सं० ५६। पत्र सं० ११४। ग्रा० ६४४ इ.चा। माया—संस्कृत, हिन्दी। विषय-स्यह। ले० काल स० १६५७ फागूए। सुदी ११। पूर्णा। बेष्टन सं० ५६८।

# निस्न प्रकार संग्रह है--

६९६७. गुटकासं०६०। पत्रसं०१४२। ग्रा०६×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी, संस्कृत श वै•कास × । पूर्ण। वेष्टन सं०४६६।

विशेष-मक्तामर स्तोत्र माथा एवं घन्य पाठों का संग्रह है।

**८१८ म. मृटकासं०६१** । पत्र सं०१४० । घा०६ ४६ इञ्चा भाषा हिन्दी। ले० काल सं∙ १ = ६० घासीज सुदी चायूर्णा वेष्टन सं०६०० । विशेष - बायुर्वेद शास्त्र माषा है। ग्रन्थ ग्रन्छा है।

मन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

इति श्री दुजुलपुरारो वैद्य शास्त्र भाषा हकीम फारसी संस्कृत ममुत विरंचते चुरन समापिता।

**६१६६**. गृटका सं० ६२ । पत्रसं० ३४ । ग्रा॰ ७imes४ इन्द्रः । भाषा-हिन्दी । र०काल imes । ले•काल सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टनसं० ७५१ ।

विशेष--- प० मुशालचन्द काला द्वारा रचित व्रत कथा कोष मे से दशलक्षाग्, शिलरजी की पूजा, कथा एवं सुगन्घ दशमी कथा है।

६२००. गृटका सं० ६३ । पत्रसं० १७४ । ब्रा० ७×४ इचा । भाषा~हिन्दी । र०काल ×। ले० काल 🗴 । पूर्गा वेष्ट्रन स० ७५२ ।

f	नेम्न	पाठों	का	संग्रह	ŧ	
धर्मबुद्धि	पाप	बुद्धि	चीप	ई		

जिनहर्ष हिन्दी र०काल मा० १७४२ णालिमद्र चीपई जिनराज मुरी १६७= चन्द्रलेहा चौपई रामबल्लभ १७२= ग्रामीत सृदि १० हमराज गच्छराज चौपई जिनोदय मृरि ले ० काल ग०१८६२। मुबनकी निके शिष्य पं० गगाराम ने प्रतिलिपि की थी।

कानडरे कढियागा। मृगी सवाद चौपई

8.38.3 धपूर्ण

**६२०१. गुटका सं० ६४**। णत्रसं० १५६। ग्रा० ७×५३ इन्त्र भाषा हिन्दी सम्कृत। ले ० काल 🗴 । पूर्ण। वेष्टन स० ७५३।

विशेष-पूजा स्तीत्र एवं पदीं श्रादि का सग्रह हैं

६२०२. गृटका सं० ६४ । पत्रसं० १६ । मा० ७×५ इवा । माषा- सस्कृत हिन्दी । ले०काल 🗙 । पर्गं वेष्ट्रन सं० ७१५ ।

विशेष-ज्याउना शाबद समूह सग्रह है। धानु एव शब्द लिखे गये है।

हर०३. गुटका सं० ६६ । पत्र स० ८४ । मा० ६×६ इआ । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८४४ । पूर्ता । बेष्टन स० ७५६ ।

विशेष--बलनराम साह द्वारा रचित मिध्यात्व खडन नाटक है।

१८२ श्र. गुटका सं० ६७। पत्रस० १४२ । मा॰ पहें 🗴 🛂 इ.च.। माया-हिन्दी। ले० काल 🗙 । पूर्णं। वेष्ट्रन सं० ७५७ ।

विशेष-गायुर्वेदिक नश्लों की महत्वपूर्ण सामग्री है।

**९२०५. गृटका सं० ६८ ।** पत्र स० १९५ । घा० ६३ ×५३ इ॰ । मापा-सस्कृत । ले०काल सं० १६४१ । पूर्ण । त्रेष्ट्रन सं० ७५८ ।

विशेष-- प्रनुभूति स्वरूपाचार्यं की सारस्वत प्रक्रिय। है ।

प्रशस्ति -- निम्न प्रकार है---

सवत् १६४१ वर्षे भादवा सुदी १३ सोमवासरे धनिष्ठानसन्ने श्री मूनसंघे बनात्कारगस्ते सरस्वती गण्डे नद्यानगरे म ० पदानिष्देश तरपट्टे म० सुमचन्द्रदेश तरपट्टे म० जनकन्द्रदेश तरपट्टे म० प्रभावन्द्र देश हितीय णिप्य रन्नकीतिदेश तरपट्टे म० सम्बन्धिय शिष्य प्रभावन्द्र देश हितीय णिप्य रन्नकीतिदेश सारस्वत प्रभिन्न्या निवासित । निलल जाकमान्नद्री छाड्का ।

**६२०६. गुटका सं० ६६ ।** पत्रम० ६६ । ग्रा० ६ $\times$  $^{\downarrow}$  ६ ख । भाषा—हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेण्टन स० ७५६ ।

विशेष—िनम्न प्रकार सम्रह है। कल्याए। मन्दिर भाषा, नेमजी की विनती एव कानड कडियारानी चौपई म्रादि का संग्रह है।

**६२०७. गुटका स० ७० ।** पत्र सं० २७ । ग्रा० ७ x ५ र्ट्ड इञ्च । साषा−हिन्दी । ले•काल × । पूर्णा वेष्ट्रन ग० ७६० ।

विशेष --- प्रायुर्वेदिक नुस्यों का समह है।

**६२० म. गुटका सं०७ १**। पत्रस०३२२ । झा० ५<sup>९</sup> ×५ इ.च.। माषा–सस्कृत हिस्दी। ले•कौल ×। पूर्णा वेकृत स०७६१ ।

विशेष —नत्वार्थमूत्र, स्तोत्र पद्मावनी स्तोत्र, कथाश्रो, मुक्तवलीरास (मकलकीनि) स्रोलहकारस्य रास (सकलकीनि) पर्मगरिंग, गौनमस्टच्छा ग्राटि का सम्बह है ।

**६२०६. गुटका स० ७२ ।** पत्र रुं०६८ । ग्रा०६×४ डघ्च । भाषा∽हिन्दी प्राकृत । ले०काल स०१८५३ कार्तिक मटी२ । पर्सावेक्टन म० ७६२ ।

विशेष-गामायिक पाठ एव ग्राग्तमीमासा (मुल) ग्रादि का सग्रह है।

**६२१०. गुटकासं० ७३** । पत्रसं० ४० । ध्रा० ४ x ४ इ.ख । भाषा−हिन्दीसस्कृत । ले० काल ⋉ । पूर्णा वेष्ट्रनस० ७६३ ।

विशेष - प्रत विधान, एवं त्रियचाशनिक्षया प्रतीद्यापन तथा क्षेत्रपाल विननी है।

६**२११. गुटकास**० ७४ । पत्रस॰ ३० । घा० ६×५ इ.चा। भाषा-हिन्दी । ले**०काल स०** १-६६ मर्गानर बुती १३ । पूर्णा। बेष्टन स० ७६४ ।

विशेष --- निम्न पाठो का सम्रह है---

शत्रुंजय मडल, भ्रादिनाथ स्तवन (पासचन्द सूरि) है।

**६२१२. गुटका सं० ७**५ पत्रस० २६। घा॰ ५×३ इचा । भाष—हिन्दी। ले•काल ×। पूरु। बेष्टन स० ७६५।

विशेष — सुभाषित पद्यो का संग्रह है। पद्य सं०१६६ हैं।

**६२१३. गुटका सं**० ७६ । पत्र सं० ४१ । घा० ६imes ४२ ६ खा । भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्णा । बेकुन स० ७६६ ।

विशेष--निम्न पद्यों का सग्रह है--

नेमिनाथ स्तवन

रूपचन्द

हिन्दी

रामचन्द्र

विनती

ब्र त्मसंबोध	_	हिम्दी
राजुलय पश्चीसी		,,
विनती	बालबन्द	,,
उपदेशमाला	ana.	
राजुलकी सज्काय	<del>-</del>	,,
· .		

६२१४. गुटका सं० ७७ । पत्र स० १०३ । घा० ६imes४ इ॰व । माया-हिन्दी । से०कास imes । पूर्ण । बेहन स० ७६८ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठी मादि का संग्रह है।

**६२१५. गुटका सं० ७**६ । पत्रसं० १७० । द्या० ५ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६ इन्त । माषा-हिन्दी, सस्कृत । मे०काल imes । पूर्ण । बेठून सं० ७६६ ।

विशेष—निम्म पूजा पाठो का सम्रह है देवसिद्ध पूजा, सोलहकारण पूजा, कलिकु ड पूजा, जिल्ला-मिल पूजा, नन्दीश्वर पूजा, गुरावसी पूजा, जिनसहस्त्र नाम (जिनसेनाकःयै) एव ग्रन्य पूजाएं।

**६२१६. गुटका सं० ७६** । पत्रसं० १९२ । घा० ३१ × ५१ इ.चा। माथा∹हिन्दी । ले०काल × । पूर्यों । बेष्टन स**० ७७१** ।

विशेष निम्न पाठो का म	पह है	
स्तभनक पाव्यंनाथ नमस्कार	संस्कृत	श्रभयदेव तृरि
प्रजितशांति स्तवन	23	नन्दिपेमा "
धजित शांति स्तवन	"	
मयहर स्तोत्र	11	-
धादिसप्त स्मरम्	हिन्दी	
मक्तामर स्तोत्र	संस्कृत	मानतु गाचार्य
गौतम स्वामी रास	हिन्दी	र०काल स० १४१२
नेमिनाथ रास	"	energy.
नेमीक्दर फाग	n	
(3	वेतांबरीय पाठों का संग्रह है)	

ह२१७. गुटकास० ६०। पत्रसं∘ १४२। झा० ⊏ X ७ इञ्च । भाषा— घपघंगः। पूर्लः। के∘काल x । पूर्णः। बेहन सं०७७२।

विद्योद्य — महाकदि बनपाल की सविसय कहा संग्रहीत है इसकी लिपि सं॰ १६४३ ज्येष्ट सुदी ५ को हुई थी ।

मेदनीपुर शुभस्यानो मङलावायं धर्मकीर्ति देवाम्नाये सन्देलवासान्यये पाटनी गोत्रे धार्यकाश्री सीसन्त्री का पटनार्थः

**६२१८. गुटका सं**ः । पत्रसं॰ ५-१०२ । सा॰ ६ $rac{3}{4}$  इष्टच । साथा-हिस्दी । ले॰काल imes । पूर्यो । बेहन सं॰ सं॰ ७७३ ।

विशेष-हिन्दी के सामान्य पाठों का संग्रह है।

६२**१६ गुटका सं० ६२** । पत्रसं० १२४ मा० ६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ६ $\frac{3}{4}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । लं**०कास**  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ७७४ ।

विशेष -- प० दीपचन्द रचित प्रात्मवलोकन ग्रंथ है।

६२२०. गुटका सं० द्र३ । पत्रसं० २४४ । प्रा० ८ ४७ इञ्च । भाषा−हिन्दी-संस्कृत । ले०काल सं०१६४० चैत मुदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं० ७७४ ।

विशेष - निस्त पाठों का संयह है---

जिनसहस्रनाम	संस्कृत	<b>भागा</b> घर
पच स्तोत्र	,,	
रत्नकण्ड श्रवकाचार	**	समन्तभद्र
तत्वार्थसूत्र	**	उमास्वा <b>म</b> ा
जीवसमास	हिन्दी	-
गुरगम्यान चर्चा	**	Peter
चौबीस ठाग्गा चर्चा	**	
मट्टारक पट्टावली	**	
खण्डेलवाल श्रावक उत्पत्ति वर्णन	,,	Post
वतों का व्योरा	n	Plants.
पट्टाबली	,,	

६२२१. **गुटकासं० ६४।** पत्रस० ६६। ग्रा०७×४ इश्वरा भाषा∸हिन्दी। ले∘काल× । पर्मा । वेष्टनस०७७६।

विशेष--सामान्य पाठो का सम्रह है।

१२२२. गुटका सं० ५ ४। पत्रस॰ ४६। ग्रा॰ ६ $\frac{7}{4}$   $\times$  ४ इ.स.। भाषा-पुरानी हिन्दी। ले॰काल स॰ १४८० चैत्र सुदी १। पूर्ण। बेष्टन सं० ७७७।

**विशेष**—निम्न पाठी का संग्रह—

उपदेशमाला धर्मदासगरिए शीलोपदेश माला अर्थसह मुनि संबोह मलरि जयशेलर स्वोध रसायसा नयनन्द मूर्रि

प्रशस्ति-निम्न प्रकार है-

सबत् १४८० वर्षे चैत्र बुदी ६ तिथी बा॰ श्रीसागर शिष्य मु॰ रत्नमागर निस्तर श्री क्राह्मस्से स्थानतः श्री हीक कृते एषा पुस्तिका कृता।

**८२२३. गुटका सं० ८६ ।** पत्रस० ७६ । प्रा० ६३ ४६ इ.च । माषा निहन्दी -सस्कृत । विकास सं० १८१७ इ० सावरा सुदी १। पूर्ण । बेष्टन स० ७७८ ।

विशेष---निम्न प्रकार संग्रहहै---

मायुर्वेदिकनुस्त्रे — हिन्दी पत्र ११२ –

जिनपजर स्तोत्र	कमलप्रभ सुरि	सस्कृत	£ 9
शातिनाथ स्तोत्र	***	.,	88-8X
वर्द्ध मान स्तोत्र		n	१५
पार्वनाथ स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	,,	24-20
चौबीस तीर्थकर स्तवन		हिन्दी	<b>१</b> ८२४
म्रादित्यवार कथा		,,	8X-X8
पार्श्वनाथ चिन्तामरिए रास			8X-8E
उपदेश पच्चीसी	रामदास	,,	86-X3
राजुलपच्चीशी	विनोदीलाल	14	XX-£3
क्त्यारा मन्दिर भाषा	बनारसीदास	.,	<b>६२-७</b> ०

६२२४. **गुटका सं**० ⊏७ । पत्रस० ४४ । घा० ७ × ५ इन्त्र । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले०काल स० १⊂३४ । पूर्ण । बेहुत स० ७७६ ।

# **विशेष** — मुख्य निम्न पाठो का साग्रह है —

भक्तामर स्तोत्र	मः नतुं गा नार्यं	सम्बत
भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी
धादित्यवार कथा	मु० सकलकीति	हिन्दी
		(र०काल स १७४४)
<del>कृ</del> षगापच्चीमी	विनोदीलाल	हिन्दी

विशेष-- ब्रादित्यवार कथा ग्रादि ग्रन्त मांग निम्न प्रकार है--

#### ग्रादिमाग--

स्रय मादित्यवार व्रत की कथा निव्यते —
प्रथम मुमरि जिनवर वोबोस, चौदहरी भेगन जेनुनीम ।
सुमरी सारद भक्ति प्रनन्त, गुरू देवरहचीनि नहत ।
मेरे मन इक उपस्थो भाग, रिवयन कथा कहन की चाछ ।
सुमहीन जु स्रक्षम करी तुम गुनीवर कबि नीके घरी ।
×

## ग्रन्तिम पाठ---

हा ज़ संबद् विकमराइ यने समझी मानी।
ता उत्तर चवालीस नेठ गुनी दगमी वाली।
वास जु संगलवार हुन्य लिहु जु परी मुम बत यह परिवदत कथा जुनेन्द्र रचना मुम करीयी। बारबार ही कहा कही रविवद कक जु सनत। घरनेद्र प्रष्टु दया करी दीनी लिख सननत।।१०६।। गर्म बोत सम्बाल तिहु नगरी के जो वासी। साहुसन की मुतु साहु माऊ कुषि जुमासी। तिन जुकरी रविव्रत कथा मली तुकै जुमिलाई। तिनिकै बुधि मैं कीजियौ सोवे पूरे गुनवत।

कहत मुनिराइजू, सकलकीर्ति उपदेश मुनौ चतुर सुजानजू ।।१०७।।

इति श्री ब्रादिस्यवार वत की कथा सपूर्ण समाप्त । लिखिन हरिकृष्णदास पठनार्थ लाला हीरार्मान ज्येष्ठ बुदी ६ सं• १०३४ का ।

**६२२५. गुटकासं० ८६।** पत्रस०४६। ग्रा० ८×६६वा। माषा−हिन्दी । ले० काल×। पूर्णा वेषूनसं० ७५०।

बिशेष --- प्रस्ताविक दोहा, तीर्थकर स्तृति, भट्टारक विजयकीति के फिर्यों का ब्योरा, भट्टारक पट्टा-वक्षी एव पद समह भ्रादि है।

**६२२६. गुटका स**० ६६। पत्र स० ४-२६। ग्रा० ६imes६ इल्.।भाषा-हिन्दी। ले॰काल imes। ग्रपूर्ण। बेप्टन स० ७६१।

विशेष--- भूंगार रस के ३६ से ३७६ तक पद्य है।

ह२२७. गुटकासं०६०। पत्र स०६०। झा० द×६ इला। भाषा-सस्कत-हिन्दी। ले•काल ⊱ा पर्या। वेष्टन स०७८२।

विशेष — सोनद्रकारण भावना, पट्दश्य विकास, पट्नेया गाया, नरक विवरस- वैनोक्स स्मन, रामाष्ट्रक, नेमिनाथ अपमान, नदीव्यर अपमान, नदीवार्य वर्णन, नीनिमा⇒ (समय भूषसा), निदताङ्ग छुद जिसमी, प्रायक्तिन पाठ झाँदि पाठो का समृद है !

ह२२८. गुटकासं० ६१ । पत्रम० ७६ । झा० ७×६ इथा । भाषा−हिन्दी । र०काल × । ले० काल × । पूर्णावेस्टन म० ७६४ ।

विशेष -- व गयमल्य की हनुमत कथा है।

**६२२६. गुटकासं० ६२ ।** पत्र म०१०७ । द्रा० ७२,४४ इं**वा।** भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल × । पूर्या।वेष्टनस०७६४ ।

विशेष — नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है।

६२३०. गुटकासं०६३ । पत्रस० ⊰४ । झा०८×४३ इ.च. । भाषा-हिन्दी । र०काल × । के∘काल × । पूर्या। वेष्टन म०७८६ ।

विशेष--धनेक कवियों के पदों का संग्रह हैं।

ह२३१, गुटकासं०६४ । पत्रसं०१३०। ग्रा०५३,४६३व। माषा-हिन्दी–सस्कृत। लेककाल × । पूर्ण।वेष्टन स०७८७।

विशेष-सम्कृत एवं हिन्दी मे सुभाषित पद्यो का सग्रह है।

**६२३१. गुटकासं०६४ ।** पत्र स०२ –३४ । झा०४<sup>६</sup>४५ इ.च. भाषा–मस्कृत । ले**०काल** ४ । पर्यो । वेकृत सं०७६६ ।

विशेष-धायुर्वेद के नुस्कों का संग्रह है।

हरु३, मुटकासं० ६६ । पत्र सं० १२६ । घ्रा० ६४४ ¦ँ ६ च । माषा-हिन्दी । ले∘काल सं० १७५० द्यासोज सुदी १ । । पूर्ण । वेष्टन सं० ७८६ । विशेष--- निम्न प्रकार संग्रह है :---

पत्रस घि (प्रित्रया कौमुदी) समयमुद्धर के पद एव दानशील उपभावना नेमिनाव बारहवाता, झान-पत्रवीसी (बनारसोदास) अमाखतीसी (समयसुद्धर) एव विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है गुटका संग्रह की हिष्ट से महत्वपूर्ण है।

€२३४. गुटकासं० ६७ । पत्र सं० ३१२ । घा० ६१ ४ ५ दश्व । मावा—हिन्दी संस्कृत । के∙काल सं० १७०२ माह युदी १ । पूर्ण । बेष्टन सं० ७६० ।

विशेष -- जोबनेर मे प्रतिलिपि की गई थी। निम्न रचनाधों का साग्रह है।

पवस्तोत्र, तत्वार्षमूत्र, गुरास्थानवर्षा जोगीरासा, बड़ा कत्याराक, भाराधनासार, खूनड़ीरास (विनय-वन्द्र), चौबीसठारा, कमंत्रकृति (नेमिचन्द्र) एव पूजाभ्रो का सम्रह है ।

६२३५. गुटकास०६६ । पत्रसं०२२६ । घा०६४ ४ है इ.च.। भाषा−हिन्दी । र०काल 🗴 । ले∘काल ४ । पूर्णावेशून सं०७६२ ।

विशेष - प्र० रायमल्ल की हनुमत कथा है।

६२३६, **गुटका स०६६। पत्र**सं०१८०। म्रा०६४५ इ.च.। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। **के॰काल** स०१६४२ फालगुण सुदी १ पूर्णे। बेष्टन सं०७६३।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है--

प्रतिक्रमण — पत्र स० १-६१ गुर्वावली — पत्र स० ६२-६५ प्रारायनासार — — चेषकुमारगीत (पूनी) — — इत्यादि पाठों का संघह है।

६२३७. गुटकासं० १००। पत्रसं०१०८। ग्रा० ७ 🗙 र्रेड्डच्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । के०काल स०१४७६ माम मृदी१५ । पूर्णावेष्टन स०७६४ ।

विशेष - संयरोठा ग्राम में लिखा गया था । निम्न पाठों का शंग्रह है-

	प्राकृत	२७ गावा	
	,,	२४ ,,	
	,,	¥¥ ,,	
योगीन्द्	सपभ्रं ग	३४२ पद्य	
_	(ले• व	गल स० १५६१ म	षाउ बुदी १)
-	शस्कृत		
-	प्रवस्त्रं स		
सकलकीर्ति	संस्कृत	३९० पद्म	
जिनदास	हिन्दी		
	  सकलकीति		, २१ ,, , ४६ ,, योगीन्दु अपभंश २४२ एव (ले० काल स० १५२ फा सम्बद्धाः स्वपभंश सकलकीर्ति संस्कृत ३९० एवा

हरदेद. **युटका सं० १०१**। पत्रसं० ३१६। सा० १२×४ है इ.च.। सावा−हिस्टी-संस्कृत । के•काल × । पूर्ण । नेष्टन सं० ७६६।

विशेष --सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रों के सतिरिक्त निम्न महत्वपूर्ण सामग्री भीर है--

श्रष्टाह्मिका कथा विश्वभूषरग श्रष्टाह्निका राम विनयकीति धनन्तचतुर्दशी कथा भंरू र० काल स० १७६७ चौरासीजाति की जग्रमाला **व**० गुलाल दशलक्षमा कथा धौसेरीलाल र० काल स० १७८८ धादित्यवार कथा पूष्पाञ्जलि कथा धाचार्य गुराकीर्तिका शिप्य सेवक मुदर्शन सेठ कथा र०काल १६६३ मुगांकलेखा चउपई भानुचन्द र० काल स० १८२५ सम्यक्त्व कीमुदी चौरासी जाति की जयमाल का० गुलाल भादि भन्त भाग निम्न प्रकार है ---दोहा -- जैन धर्मे त्रेपन किया दयावर्म सयुक्त । इक्ष्वाक के कूल बंस मैं सीन ज्ञान उतपत्त ।। मया महोछव नेम की जुनम्बढ गिरिनार। जान चौरामी जैनमत जुरे छोहनी चार ॥

#### धन्तिम पाठ---

प्रगटे लढमी मोर्ड धर्म लगै।

करि जन्म विधान पुरारा ग्रह दान निमित्त धनै खरनै ग्रह वहै। सुभ देहरे जत्र सुविब प्रतिष्ठा सुभ मंत्र जल सुमत्र रखनै।।

भ्रथता कोई कारमा संगल चारमा विवाह कुटब अनत पर्गे।

किह ब्रह्म गुलान गर्ड लगो से प्रगर्ट लक्ष्मी सोई घर्म लगे ॥ इति श्री चौगमी जाति की जयमाल सम्पूर्ण ।

६२३६. **गुटकास० १०२**ः पत्रसं०४४ । ग्रा०७×४ॄै इञ्चः। भाषा∹िस्दी। ले०काल × ।पूर्याः वेष्टनस०७६६ ।

विशेष —महापुरारण चउपई (गगादास) एव घन्य पाठो का संग्रह है।

**६२४०. गुटका सं०१०३ ।** पत्र स० ३६ से द४ । द्या० ६×४ है इन्या भाषा-सस्कृत । ले**∘काल** × । पूर्णावेष्टन स० ६६७ ।

विशेष--- दारुण सप्तक एव महापुराण में से ग्रभिकार करूप है।

**६२४१. गुटकासं० १०४** । पत्रसं० २२ दाधा० ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-प्राकृत—संस्कृत । ले० काल  $\times$  । पर्एं। बेष्टन सं० ७६६ ।

विशेष - मुख्यतः निम्न पाठो का सम्रह है।

मक्तामर स्तोत्र मानतुं गाचार्य संस्कृत रात्वार्यं मुत्र उमास्वामी "

64.1		[ 4: 2 M 21 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2
समयसार नाटक वैद्यमनोत्सव	बनारमीदास नयनसुख	हिन्दी
	•	
हरहरः गुटका स स॰ १८४४ सावण मुदी ४।	<b>ं १०५ ।</b> पत्रस॰ ३६ । झा॰ ६ ४ ६ ट्रै इञ पूर्णावेष्टन स॰ ७६६ ।	चा माषा−।हन्दाः स∙काल
<b>विशेष</b> — निम्न पाट		
कृपराजगावरा (ब॰ गुलान) स	। मयिक पाठतथा जोगारास द्रादि ।	
६२४३. गुटकासं पूर्गावेष्टन स॰ ५००।	० <b>१०६। पत्रस०</b> १४६। झा० ७×६ इ <b>न्छ</b> ।	माषा-हिन्दीः ले∘काल ×ा
विशेषनिम्न पार	ों का संग्रह∗है—	
मधुमालती कथा	चनुभुं बदास	हिन्दी गद्य स० २१६
श्चर्मपालरी बात		ले•काल मक स० १८३६
बीरविलाम	नथमल	हिन्दी
सावित्री कथा		हिन्दी गद्य
		ले•काल गक स० १८४५
६२४४ गुटकासं	० <b>१०७।</b> पत्र म०२० से ३६। ग्रा० ७×	६ इ.च । भाषा-हिन्दी ।
ने∘काल × । अपूर्णं। वेष्टनः	त्र द०१ ।	
विशेषनिम्न पाठी का स	ਬਰ ਹੈ	
	गकपोत कथा एवं चन्दनमलकार्गिर कथा।	
हर्४५. गृटका सं	० १०६६ । पत्र स० १४-१२६ । झा० ५४६	इश्व । भाषा-द्वितो-संस्कृत ।
ले •काल। पूर्णावेष्टन सं०		
	ाठों के ब्रातिरिक्त निम्न पाठों का सब्रह है	
परमात्म प्रकाश	योगीन्द	
सप्ततत्वगीत		
चउदह गूगागीत		
बाहुबलि गीन	कल्यासकीर्ति	
नेमिनाथ बेलि	ठक्कुरसी	
पंचेन्द्रीवेलि	ठक्कुरसी	
पद	ठ <del>क्क</del> ुरसी	
दप	बूचा	
बमएां गीत		
वर्मकीर्ति गीत		
<b>बुवनकी</b> ति गीत		
वशालकीति गीत	चेत्रह	
क्ष्मिति गील	none.	रक्षाल (संव १६६०)

नेमीश्वर राजुन गीत व्यक्तीति गीत रत्नकीर्ति

६२४६. गुटकासं० १०६ । पत्रसं० ११८ । घा० ८ x ४ इश्व । सावााहिल्दी । ले०काल स∙ १७४४ चैत सुदी १। पूर्मा । बेष्टन स० ८०३ ।

विशेष - रवित्रत कथा (भाउ) पंचेनद्रीवेलि, एवं कक्का बत्तीसी ग्रादि पाठों का संग्रह है।

६२४७. गुटका सं० ११० । पत्रस० ४० । ग्रा० ६ x ५ इन्छ । भाषा–सस्कृत । ले०काल x । पूर्णं । वेष्ट्रन सं० ८०४ ।

विशेष-सामान्य पाठी का सम्रह है।

६२४ ८. गुटकासं० १११ । पत्रस० १४२ । द्रा० ८imes५ $^2_1$  इश्वा । भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टनस० ८०४ ।

विशेष-पूजाएं, स्तीत्र, तत्वार्यसूत्र, कर्मप्रकृति विषान (हिन्दी) धादि पाठों का सौप्रह है।

६२४६. गुटकासं०११२ । पत्र स०६० । घा० द×४१ इच्चा भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्णा विष्टतस०६०६ ।

विशेष - गुटका जीमाँ है । ब्रायुर्वेदिके नुस्खों का सम्रह है ।

६२% ०. गुटका सं० ११३ । पत्र म० ७ । धा० ५imes६ ६ था । भाषा-हिन्दी । २० काल imes । पूर्ण । बेप्टन म० ६०७ ।

विशेष-धर्मवृद्धि पापवृद्धि चौपई एव ज्योतिसगार भाषा का सम्रह है।

६२**५१. गुटका स० ११४** । पत्रस० ६३ । द्या॰ ५ $\times$ ७} इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १७६७ पीप मुद्दी १ । पूर्ण । वेष्टन स० ६०६ ।

विशेष —भूधरदास कृत पारुवंपुरामा है।

६२४२. पुटकासं० ११४ । पत्र स०६४ । घा०१०४४ इञ्च । मापा⊢हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा । बेटनस०२०६ ।

विशेष — सामान्य चर्चाम्रो के म्रांतरिक्त २५ मार्यदेशों के नाम एव मन्य स्फुट पाठ है।

६२ प्रदेश गुटकास ०११६ । पत्रस०१७४ । ब्रा०५ $\times$ ४ इ.च । भाषा-हिन्दी। ले०काल $\times$ । पूर्णं। वेष्टन म०८१०।

विशेष—बनारमीविलास, समयसार नाटक, सामायिकपाठ भाषा तथा मक्तामर स्तोत्र धादि का संग्रह है।

६२.४४. युटकास० ११७ । पत्रस० १३८ । मा० १०×५ इ.च.। भाषा-हिन्दी। ले०काल सं०१ द१२ पीष सुदी १३ । पूर्णा वेष्टन स० ⊏११।

विषय--- बनारसीदास कृत समयसार नाटक तथा धन्य पाठ विकृत लिपि मे हैं।

६२ प्रप्रः गुटका सं०१ १६ । पत्रसं०४ ५० । प्रा०६  $\frac{2}{5} \times 5 \frac{7}{5}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । कैक्काल  $\times$  । पूर्णः । बेष्टनस० ५१ २ ।

विशेष--- निम्न पुजाओं का संग्रह है ---

सहस्रमुणित पूजा	मुभ चन्द्र	सस्कृत
सोलहकारगः पूजा		,,
दशलक्षम्। धर्म पूजा	and the second	,,
कलिकुण्ड पूजा		,,
कमंदहन पूजा	<b>गु</b> भ चन्द्र	,,
धर्मचक पुजा	· —	**
तीस चौबीसी पृजा	शुभ चन्द्र	,,

इनके भ्रतिरिक्त प्रतिष्ठा सम्बन्धी मामग्री भी हैं।

**६२४६. गुटका सं०११६ ।** पत्र स०१४६ । मा० ५४७ इ.ख । भाषा–हिन्दी–सस्कृत । ले∘ काल × । पूर्ण । वेस्टन स० ६१३ ।

विशेष-सामान्य पूजा स्तोत्र एव पाठों का शग्रह है।

**६२५७. युटका स० १२०। पत्रसं**० ४१। ब्रा० ८४४, इ.ख.। मापा-शस्कृत-हिन्दी। लेल्काल × । पूर्णा वेष्ट्रनस० ६१४।

विशेष - दर्जन पाठ, कल्यासा मन्दिर स्तीत एवं समाधान जिन वर्णन ग्रादि पाठी का साग्रह है।

**६२५ ६. युटका सं० १२१ ।** पत्रस० २४ । आ.० ४३ $\times$ ५ इञ्च<sub>ा</sub> भाषा संस्कृत । ले०नाल  $\times$  । पूर्ण । बेवृनस० ६१४ ।

विशेष--कण्टार्वाल, गतवस्तु ज्ञान, श्रीकविचार, कालगाए। एवं तिथि मत्र ग्रादि है।

**६२५६. गुटका सं० १२२ ।** पत्र स० ६६ । आ० ५३ ४४३ दश्व । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले∘काल स० १८५६ । पूर्ण । वे**ष्टन सं०८१६** ।

विशेष---नित्य पूजा पाठी का राग्रह है।

हर्द०. गुटका स० १२३ । पत्रसं० १६२ । धा०७×६ दञ्च । भाषा−हिन्दी । के०शाल स० १⊏६७ ज्येष्ठ बुदी १३ पूर्ण । बेष्टन सं० ६९७ ।

विशेष--नाटक समयसार (बनारमीदास) तत्वार्थ सूत्र, श्रीपाल स्तुर्ति आदि का राग्रह हैं।

ह**्ह्, गुटकासं० १२४** । पत्र सं० १४७ । घ्रा० ६ ४ ३ <sup>2</sup> इच्छ । भाषा∽संस्कृत, हिन्दी । ले∘काल ४ । पूर्णा वेकृत सं० द?द।

विशेष-गृटके में स्तोत, अक्षरमाना, तत्वार्थमूत्र एवं पूजाओं का संग्रह है।

ह**२६२. गुटकासं०१२५ ।** पत्रसं०१२६ । आर्थ ७<sup>3</sup>,४४<sup>3</sup>, इंच । भाषा-हिन्दीसस्कृत । ले•काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स०६२०।

विद्रोच जिनसङ्ग्यताम (भ्राज्ञाघर) एव अकुरारोपस, मकलीकरस विधान तथा प्रस्य पाठी का संघड् है ।

**१२६३. गुटका सं०१२६** । पत्र स०१५३ । घा० ४,×४ इरूचा भाषा-संस्कृत । ले० कात ×। पूर्णः वेकृत स० ≂२१ ।

विशेष —सामयिक पाट, तत्वार्षमूत्र, समयतार गावा, श्रीराधनासार एव समन्तभद्रस्वृति का संग्रह है।

१२६४ . गुटका सं० १२७ । पत्रसं० १४६ । घा०६imes इथा। माथा सस्कृत । से०काल imes । पूर्ण । बेष्टन स० २२२ ।

विशेष--पुजाश्री का सग्रह है।

**१२६५. गुटकासं० १२ द्वः। पत्र**सः० ४२ । म्रा•६imes६२६ द्वः। भाषा-हिन्दी। ले॰ कालimes। पूर्णं। बेष्टुन स॰ द२३ ।

विशेष-स्दरदास कृत सुन्दर श्रृंगार है।

**६२६६, गुटकासं० १२६ ।** पत्र स०६–६२ । झा०४ ५ूँ×४ इ**-वा। भाषा**-सस्कृत । ले० काल ⋉ । झपुर्सा। वेष्टन स०६२ ४ ।

विशेष--रत्नावली टीका एव श्कदेव दीक्षित वार्ता (अपूर्ण) है।

**६२६७. गुटकासं०१३०।** पत्रस०६०। घा०६ $\times$ ४ $\xi$ ६९४: माधा-हिन्दी। र०कालimes। ले०कालimes1 पूर्ण। बेष्टन स०८२६।

विशेष-- हिन्दी पद संग्रह है।

**१२६⊏. गुटकासं० १३१** । पत्र स०२४ । आर्थ ७२¦×४० ७७। भाषा−हिन्दी। लंश्कान्त ८ । पूर्या वेष्ट्रन स०५२७ ।

विशेष -- हंसराज बच्छराज चौपई है।

**६२६६ गुटकासं०१३२** । पत्र सं०६६ । ध्या•६४५ इश्वा ले॰काल 🗴 । शूर्ण । वैष्टुन स०६२६ ।

विशेख--नेमिकुमार येलि, सामायिक पप्ठ, भनिषाठ एवं मूर्वावरि आदि पाठो का संग्रह है।

६२७०, **गुटकास० १३३ । पत्र**स० ⊏६। स्रा० ⊏ॄै×६ इथ्या भाषा-हिन्दी। ले० काल ४ । पूर्णी वेक्टनस० प<sup>३</sup>०।

विशेष -- निम्न पाठों का मग्रह है---

कोकसार, रमराज (मनीराम) एव फुटकर पछ, दृष्टात शतक, इक्क चिमन (महत्राज कुवर सावत सिंह) ग्रादि रचनाम्रो का सम्रह है।

**६२७१. गुटका सं० १३४ ।** पत्रस• १६६ । झा० ६ $\frac{1}{2} \times \mathbb{Y}_{7}^{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । वि• काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० १६३३ ।

विशेष-- निम्न पाठो का संयह है--

मत्र तंत्र, ग्रादित्यवार कथा, जैनवदी की पत्री, चौदस कथा (टीकम) ।

**१२७२, गुटकासं० १३४.।** पत्रस० २२६ । घा०५ ४ ४ इञ्च। माया संस्कृत–हिन्दी। ले•काल ४ **। पूर्ण। बेहनस०** ६३२ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठी का संग्रह है।

**६२७३. गुटकासं०१३६** । पत्रसं०१०० । बा० ६४ ५ डब्चा भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्णा वैष्टन स०८३६ ।

विशेष-- सामान्य पाठी का सप्रह है।

६२,७४. गुटका सं०१३,७ । पत्र स०६४ । घा०७×४, देइ खा आया – हिन्दी । ले० काल सं०१ ⊏१० बैशास सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ⊏३७ ।

विशेष--- निम्न रचनाधों का संग्रह है---

श्रीपालरास---व रायमल्ल

प्रद्य म्नरास — इ॰ रायमल्ल

६२७५१. गुटकासं० १३६ । पत्र स० १६४ । भ्रा० ६४५ इश्वर । भाषा-हिन्दी । क्रे•काल ४ । पूर्ण । वेस्टन स० ६३६ ।

कवि हेम

इक्तरी छंद

स्यूलभद्र सज्भाय —

पचमहली गीत छीहल

बलभद्रगीत ग्रमयचन्द्रमुरि

ग्रमर मृत्दरी विधि ---

चेतना गीत समयसुन्दर

सामुद्रिक शास्त्र भाषा ---

डसके प्रतिरिक्त ज्योतिष सबधी साहित्य भी है।

६२७६, **गुटकासं० १३६ । पत्रस० ४६**८ । ग्रा० ७x ४ इ.चा । भाषा-हिन्दी-सरहत । विषय-पृजासद्भरालेक काल x । पूर्णा । वेष्टनसं० ८३१ ।

विशेष —सामान्य नित्य पूजायों के स्रतिरिक्त धर्मजक पूजा, बृहद सिद्धनक पूजा, सहस्रनाम पूजा, तीम चौधीसी पूजा, बृहद्द पचकत्याणुक पूजा, कर्मदहन पूजा, गराजरवसय प्णा, दण स्त्राण पूजा, तीन चौबीसी पूजा प्रादि का सबह है।

६२७७. गुटका सं०१४० । पत्रम० ८४ । झा० ५ै ४४ इन्थ । भाषा–उन्हत । ले०काल ४ । पूर्यो । बेहन स० ६४० ।

विशेष -- विभिन्न प्रकार के मत्र एवं यत्रों का संग्रह है।

 $\epsilon$ २७द्र. गुटका सं० १४१ । पत्रस० १७६ । आ० ७imes६२ख । भाषा सस्कृत । विषय— से॰काल imes । पर्ण । वेष्टत स० ५४१ ।

विशेष --- निम्न पाठो का मग्रह है---

प्रशृम्नरासी द्व० रायमल्ल ज्येष्ठ जिनवर कथा ,,

निर्दोष सप्तमी वृत कथा ..

वह सारह

६२७६, गुटका सं०१४२ । पत्रस०३४ । धा० ⊏ै्र५ ३ इञ्च। मापा-हिन्दी । लेकाल सं०१७३६ । पूर्ण। बेष्टनसं० ⊏४२ ।

विशेष --- निम्न पाठों का संग्रह है --

नेमिनाथ रास इक रायमल्ल

पद हेमकीति

वैरी विसहर सारिखी।

**१२८०. गुटका सं० १४३ ।** पत्र सं० म्६ । ब्रा० १४ ४ डश्वा । भाषा सस्कृत हिन्दी। ले०काल × । पूर्णा वेष्टन स० म४३ ।

विशेष-सामान्य पूजा एवं स्तोत्रो का संग्रह है।

**६२८१. गुटकासं० १४४ ।** पत्र स०२३। स्रा०७}्रे×६ इञ्चाभाषा–संस्कृत । ले०काल ×। पूर्णावेष्टन स० ८४६ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

**१२८२. गुटकास० १४५** । पत्र **सं∘** ३८ । घा० १०} ४६ इ.चः । भाषा-हिन्दीः वे० काल ४ । पूर्णावेष्टनस० ८४६ ।

विशेष - गुरम स्थानवर्चा है।

ह**२ ६२ , गुटकासं० १४६ । पत्रस० २४०** । ब्रा०६,ँ४(५ ६ च । माषा-सस्कृत-हिन्दी। से**०काल × । पूर्ण**ावेष्टन स० ६४७ ।

विशेष --- निम्न पाठो का सम्रह है---

कस्यागमन्दिर स्तोत्, पच स्तोत्र, मरुजनै चिनवण्लभ, मामयिक पाठ, तत्वार्थमृत्र, वृहत् स्वय-भू स्तोत्र, ग्राराधनासार एव पट्टावलि ।

 $\xi$ २८८४, गुटकास० १४७ । पत्र म० ७२ । द्या० ६ $rac{1}{3}$  $imes \xi$  ४२ $rac{1}{3}$  वञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । वे० काल imes । पूर्ण । वेहनस० ६४८ ।

विशेष — मामान्य ज्योतिष के पाठों का संग्रह है।

६२ तम् मुटका सं० १४ त् । पत्र स० १० त् । ग्रा० ६ $\frac{1}{2} \times \mathbb{V}_{i}^2$  इञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । सेवजास  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० त्र४६ ।

विशेष -- सामान्य पाठी का संप्रह है।

. १२ ८६ ६ . **युटकासं० १४ ६** । पत्र सं० ३१ । ग्रा०६ ४६ है इ.च. । भाषा-हिन्दी⊸सस्कृत । ले•काल χ. । पूर्णावेष्टन स०६५० ।

विशेष-भक्तामर स्तोत्र, पद्मावती पूजा, एव कवित्रिया का एक भाग है।

६२८८७, गुटका सं० १४० । पणसं० ६ । घा० ५ ४५ है इ.च । भाषा-हिन्दी । लें ब्काल स० १६२० माथ सूदी १२ । पूर्वी। वेष्टन सं० ६५१ ।

विशेष-- लुकमान हकीम की नसीहतें हैं।

**६२८८. गुटकास० १५१। पत्रस० १५। ग्रा०८×**४१ इक्च।भाषा-हिन्दी। लेक्काल × ! पूर्णा। बेष्टनस० ६५२।

विशेष--सोलह नाररण पूजा एवं रत्नचक पूजाओं का सप्रह है।

६२ न. गुटका सं०१ ४२ । पत्र स०६० । बा० ४ ई $\times$  २ हे इन्छ । भाषा-सस्कृत । ते०काल सं०१६०१ । पूर्ण । वेशून सं०६४३ ।

## निम्न पाठों का संग्रह है---

युगादिदेव स्तोत्र जिनदर्शन सप्तम्यसन चौपई एव हिन्दी पदो का सग्रह है।

**६२६०. गुटका सं० १५३ ।** पत्र स**० २६ । ग्रा० ५\frac{1}{4}\times५ इ.च. । भाषा**—हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन सं० ८५५ ।

विशेष-देवगुरुधों के स्वरूप का निर्एय है।

**६२६१. गुटका सं०१५४। पत्रस०** ४४ । सा० ४×३३ इआ। भाषा- हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण। वेष्ट्रन स० ६५४।

# निम्न प्रकार संग्रह है-

धष्टकर्मं प्रकृति वर्णन पचपरमेष्ठी पद एवं तत्वार्धनुत्र है।

**६२६२. गुटका सं०१ ५५ ।** पत्रस०१६० । प्रा० ५ $\times$ ६ इश्वा भाषा-हिन्दी । ले० काल स०१६४२ कार्तिक सदी १४ । पुर्णा । बेक्नसं० ६५६ ।

# विशेष---निम्न रचनाओं का संग्रह है।

मविष्यदत्त रास	हिन्दी	<b>ब</b> ० रायभल्ल
प्रद्युम्न राम	27	<b>व</b> रायमल्ल
भादित्यवार कथा	19	भा ऋ
श्रीपःल रासो	,,	<b>ब</b> ० राययस्ल
सुदर्शन रास	**	11

### वासली मध्ये लिखित इति हीरा

**६२६३, मुटका सं०१४६ ।** पत्रस०१६०। द्या० ४×४ इ.च.। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले०काल × ।पूर्णा वेप्टन स० ६४७।

विशेष-सामान्य पाठी का सग्रह है।

**१२६४. गुटकासं० १५७** । पत्रसं० ६६ । झा०६×५३ इच्चा भाषा~क्रिन्दी । ले०काल × । पूर्या । बेष्टन स० ६५८ ।

# 

पद्मावती स्तोत्र टीका मंत्र महित कर्म प्रकृति स्थोरा तथा घण्टाकर्एं कल्प, प्रष्टप्रकारी देवपूजा है।

ह**्रह्×. गुटकासं० १५**६ । पत्रस्न० १८६ । द्वा० ८×६ ६००च । माषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णावेटन सं० ८४६ ।

## विशेष-मैया मगवतीयास के ब्रह्मविनास का सम्रह् है।

हरहर, गुटका सं० १४६। पत्रसं० १६६। ग्रा० ७३/४६ इन्ब । भाषा-हिन्दी। ले०काल स० १७६७ पोष बुदी बुधवार। पूर्ण। बेहल सं० ५६०। विशेष--तत्वार्धसूत्र भाषा टीका एव अ० रायमल्ल कृत नेमीश्वर रास है।

**६२६७. गुटका सं० १६० ।** पत्रस० २३४ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १७२४ माघ बदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ८६१ ।

विशेष - निम्न पाठी का सप्रह है।

मर्वार्थसिद्धि — पूज्यपाद भालापपद्धति — देवसेन

६२९६. गुटकासं०१६१ । पत्र सं०६६ । ब्रा०५×४ इचा भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले•काल × । पूर्णा विष्टन म०६६२ ।

**विशेष**-—निम्न पाठी का संग्रह है ।

नीत शास्त्र संस्कृत चारास्य नेरहकाटिया हिन्दी बनारसीदास इष्टक्षतीरी , बुचयन प्रध्यास्य बत्तीसी , बनारसीत्रस तवार्ध सुत्र , उत्पादमीर

६२.६६. गुटकासं०१६२ । पत्र स०६४ । ग्रा०४imes४ ६२० । भाषा–मस्कृत-हिन्दी। ले•कालimes। पूर्ण। देण्टन म०६६४ ।

विशेष - मामान्य पाठ, मन्तामर स्तीत्र मत्र सहित एवं मत्र शार्त्र का संग्रह है ।

**६३००. गुटका सं० १६३** । पत्रम० १८६ । ग्रा॰ ६×५ इश्व । भाषा—सम्कृत-हिन्दी । लेब्बाल 🗙 । पूर्ण । बेटन स० ८६३ ।

विशेष—बद्धाविलास एव बनारसी विलास के पाठों का रायह है। इसके अतिरिक्त रस्तकुष्टरास (२०काल स० १५०१) एवं सुम्रा बहुनारी भी है।

रत्नबुडरास - पद्य रा० ३१२

द्यादि द्यंत भाग निस्त प्रकार है--

## प्रारम्भ दोहा---

सरस्वति देवि पाण नमी, माणु चित पसाव।
रतनबृड गुणा वर्णाउ दान विषड् वमु नाम ।।१।।
जबूदीप माहि अछद्द, मरत क्षेत्र अधिवण।
तामनी नयगी तिहा, राजा अजित नीरद ।।२।३
तिसा नयगी जे जिन वसह, वरस्स अठारह लोक।
भोग पुरवर भोगबह, मुख सापति सुस्त्रीक।।३।।

## स्रोपर्र---

सरोबर बाडि करी आराम, तिहा पाष विकरतु अभिराम । विवध उप छाइ तिहि वन साहि वसनइ वास वसइ परवाहि ॥४॥ पोह मिदर पोलि पगार, हार श्रोण निव लागद गार।
चित्रह रमण हर तोरणमान, लकानी परिकाक कमाल ॥१।।
करोटियज दीमार प्रति क्या, नव नव उछा नव नवरण।
कोटियज दीमार प्रति क्या, लाग्नेमरी नीत गही का मणा ॥६॥
माइड दोसी भविका पट्ट, भगाग दीमद सोनी यह।
माणिक वउक जब बहरी रहा, हीरद माणिक मोती सहा।।।।
मुद सीया फोफलीया सोनार, नाई तेली न लट्ट पार।

तथोली मरदठ घविटि, एक माडइनी सत फडहट्टा ।।८।।

#### मध्य भाग-

हाब घलाविउमानो पाहि वस तउ किंह काउ छट माहि। माहाराज सीमेलिज्यों तम्हे, कुमर कहड घमरामण् धर्म्छ ।।२६२॥ मालो प्रीछ्वीडते तलद, नुक्वार धाविउ ते तलद। कुमर कहिय धर्म्हे मानिउनु गामि, कसी पाद चाड भाउ कामि॥२८२॥

#### ग्रन्तिम माग---

नगर माहि न्याय घेरज हुउ, स्वोटा लोक ने साच शयउ। करी सजाड घाले वाभगां। हुई वाहुगा तगा पुरागाी। यम घटा मोकला बीवरी, बालउ कुमर सवाहरणज भरी। चान्या बाहुमा वायतद भारिम, खेम कूमल पहुता निर्वामि । बाहमा वस्तु उनारी धर्मी, छाबीसकोडि हिय द्रव्यह संस्थी। हीर बीर धन सांबन वह, साध्य लखित रण घटा बहु। रशा घटा नइ सहग मजरी, आगइ परशावड रत्न गुन्दरी। नव नव उछ्दानव नव रग, भोगभोग वह ग्रांतह सूचग। तिमा नगरी आव्या केवली, तिहा बाद साथ सर्व मिली। मिरिएचुड निहां पूछाइ सिउ, कहुत बेटान उकरम हुई किसउ। रतनबृह तउ सम्बाउ विचार, पात्र दान दीघउ निश्चितार । दान प्रभावइ एवं जि रिघि, दान प्रभावइ पामीइय सर्वमिधि ॥३०७॥ दानसील तप भावन सार, दान तराउ उनाम बिस्तार। दानइ जस कीरति विस्तरह, दान दीयता दूरत भरइ ।।३०८।। पनरङ्ग एकोस्तरङ्ग नीयनु सबध, रहनसूड नउ ए सबध। बहल बीज, भाइ वह रनी, कवित नीयन मगुरेवती ।।३०६।। बढ तप गच्छ रत्न मृरिद उदभत कला ग्रमिनज्यादे। तास सेवडक इम उचरइ, षट् पद चरण कमल धरामरइ ॥३१०॥ सर्वेशुक्त हुद्द दूराष्ट्र मरणह, नर नारी वेर्ह दूराुणह् । तेहु परि लक्षमी सदाइ मयह, वंद सूरज जा निमंज तयह ॥१११॥ ए मंगल पहुज कत्यारा, भराउ मर्गावहुजा सन्ति मारा । रस्त्रवृद्धनाउ वारिजनार, श्री सथनड करज जय जयकार ॥१११॥

इति श्री रत्न चूडगम समाप्त ।

मिति वैशास बदि ४ संवन् १८१७ का। वीर मध्ये पठनार्थ चिरजीवि पडित सवाईराम ।। सुवा बहलरो (वेष्टनसं० ८६३)

मुवा बहत्तरी की कथा लिस्यते-

किर प्रणाम श्री सारदा, प्रापणी कुढि परमाण् । मुक सिणक वार्तिक करी, नाई ते देवोदान ।११। बीकानेर मुहाबनी सुख सपति पी टोर । हिटुचानि हिन्दु घरम, ऐसो सहर न सीर ।।२।। निहा तपे राजा करम, बंगन को पनिसाह । ताक कुंबर प्रयूपीसह, दाता सूर सुबाह ।।३॥ निन मोको धाता दर्द मुयमन्त होर के कहा । सस्कृत हती वार्तिक सुक सप्तित वर्ष रेदे। ४।।

#### श्रथ कथा प्रारम्भ---

एक मेहुपुर नाम नगर । ते थि हरदलवागियों वसं । ते पैरे घरि मदन मृन्दरी स्त्री घरु मदन बेटो । तो पैरे सोमस्त साहरी देटी प्रभावनी नाम । सोमदत्त प्रापकी स्त्री प्रभावनी सेती लागो रहें । माता पितारी कहियो न करें । ताउ राउ वे मदन नू देगान ताई हरिदल एक मुनो एक सारिका मगाई । सी पुष्पा गमर्चरी जीव घगोरा सराय हुनी भूतो । हुनो घर मालती गयवंगी रो जीव घगोरा सराय हुंती सारिका हुई । सो जुई जुई गयवर रहें । एक दिन मदन रो घार देवि णुक घर सरिका मदन प्रापै बात कहें छूँ ।।

# बोहा---

जो दुख मान पिता तवी श्रश्युबात जो होड। तिय पाप करता हरि देह सपडानि होइ।।१॥

# बात मदन पूछियौ-

बार्ता ब्रपूर्ण है—१२ वीं बात तक पूर्ण है १३ वीं बात वहोडि तेरमैं दिन प्रमावती ग्रुंगार करि एपि समै सुवानुं पूछीयों ये कही तो जायौ, मुबै कह्यों।

## बोहा---

जो भाव प्रभावती सो मोनु न महाय।
पिणमारग जाता देखिका ज्यो होय बुद्धि सुहाय।
करि हैं सो तु जायकरि अधिरज बुद्धि विचारि।
बाह्यण आर्म देशिका जिस हो कीये प्रकास।।२४॥

#### बार्ता---

तहरा प्रभावनी कोनी मारग बहुता दिभका किनी बुद्धि उपार्ड सरु बाहुता सार्ग किन्नु प्रकार कीयो वा कहें। स्रमिताया नाम माग्र ते विजि लोचन नाम बाहुतग्र । यावरो पटेल । तिस्तरं टीभका नाम स्त्री । तिस्तरं कामरी स्रमिताया । परिंग के हरे माटी । हुविहुतो कोई मर्थ नहीं । एक दिन दिभका । यहों ले पागी ने गई हुती । परिंग मेरि ले स्रावना एक बटाउ बुवान सरूपदीठो बेहनु की डार्र तार्ट स्वाचिनी सैन देवुलायों। स्तर पूछियो नू की गर्छ। बेहर करी हूं भाट हों। सार्ग मागण ने बाबो हो । टिभका कह्यों स्वाजि गार्नि माहरे ही एक स्वाची ।

**६३०१. गुटका सं०१६४ । पत्रस**०६२ । आर०६ ४४ डका। मापा—ंहरी । ने० हात्र स० १६८६ पौष मुद्री १०। पूर्णा वे**हन स०** व६४ ।

#### विशेष-- निम्न रचनाथी का संग्रह है।

बुद्धिप्रकाश		कवि घेल्ह
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	_	क्ष० गायमल्ल
द्वादणान्त्रे क्षा	***	ब्र० जिनदाम
लेक्या वर्णन	-	
'रेमन' गीत		श्रीहन
ज्येष्ठ जिनवर वृत कथा	design for	<b>व०</b> रायमल्ल
मेचकुमार गीन		पूनो
मनकरहा जयमाल	name.	_

# बुद्धिप्रकाण कवि घेल्ह पत्र स० १६-२६ तक

मूलो यंथ न जायह भीहालो जीवा यंथी न जाह उन्हालो । सावग्यी भारवी गाय न जाजे ग्रासोजा मी भीयन सोजी ।।१६।।। ग्रायांचीतो किम नीहि लाले, ग्राय पिक्वाच्या की साथी न जाजे । जाय दिसाविर राती न मोजे, चालतपथी रोस न कीजे ।।१७।। श्रवकरि न्हाय उतरी चे पार्ट कम्या न वेशी गरपके साटे।। पाहुर्स्स थावा ग्रायट योजे, पामगा साक भगति करीजे

दानदेय लखमी फल लीजे, जुनो डोर ने कपड लीजे ॥१८॥ पढ़न होय की सिही बैचालै वचन घालि तूम जो रालै। विगाज न कीत्र स्नास पराय, स्नारभज्यौ काम त्यौ नीरवहि ।।१६।। नित प्रतिदान सदाही दीजे, दग्गा ऊपरि ब्याज न लीजे । थरिही स् राखी हीस् कूल नारि, मुऋत उपाय मंतोपास्तरी ॥२०॥ विरासे घीयउ हिस हसीन्याय, बीरासी बह ज परिचरि जाय । वीरगरी पुत पछोकडी छाडी, बीरगसी गय गवाडी भीडो । २१॥ वीग्गरी विगा अमुवार घोडो, बीग्गरी मेवग आहर थोडो । बीरमसौ राजु मत्री नो थोडो, अचरीलट न बोलसिक्डो ॥२२॥ बुद्धि होड करिमो नरजीबो. मधीमा कै घरि पासी न पीव । हरियन कीजे जेब्टडी पाणी, ग्रमानीयनै सुकाल न जासी ।।२३।। मत्र न कीजे हीयडी कुडी सील बीगा नारी गा पहराय चुडी। ऐसी मीत्र मुस्पीरी पुल्या, लाज न कीजे मागत करवा ।।२४॥ बाह्यमा होय सबेद भगावी, बावग होय सन्ध्रम्य ग्रथपाजीवी । वाण्या होय सबीगाज कराबी, कायध होय, सलेखी भगावी ।/२४।। कुल मारगौ जूगा छोडी करमा, संगलीसील्य सूर्जेजे धरमा। बुधी प्रगाम पढ़ीर विचारी, बीरो न ग्राबी कर्ईंट सहसारी ॥२६॥ तमी भीव्य मूर्गं सहकोय, कहता मुशानापुनी जुहोय। कहौ देल्ह परपोत्तम पूत्ता, करौ राज परिवार राजुला ॥७२॥

सबन् १६६६ मिती पोष मुदी १० बुधीप्रगाम समाप्त । लिखिन पडिन रुडा, लिखामनं पडित सिम्बनी।

**६३०२. गुटकासं० १६५।** पत्रसं∘ १३८ । घा॰ ५×५ इ॰वा। माया-सस्कृत हिन्दी। ले∘काल ×।पूर्णावेद्यनसं॰ ६६६ ।

विशेष — निम्न रचनाश्रोका संग्रह है—

ले॰काल स॰ १६८७ ज्येष्ठ बुदी ग्रमावस । अपूर्ण । वेष्टनसं० ८६७ ।

तत्वार्थं सूत्र		उमास्वामा
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा	-	सदासुम्य कासलीबाल
१३०३. गटका सं० १६६।	पत्रस० १४-११०। ग्रा०	६३ × ४३ इ॰बा माया-हिन्दी।

विशेष--निम्न पाठी का संग्रह है--

मादित्य**वा**र कथा -- भाऊकवि

<b>बनुप्र</b> ेका		योगदेव
मादिनाथ स्तवन	reason.	सुमतिकीति
जिनवर व्रत कथा		व॰ रायमस्त

गृटका जोबनेर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे पं० केसो के पठनार्थ लिखा गया था।

**६२०४. गुटका सं० १६७ ।** पत्रस० १३४ । झा० ४ $\frac{1}{2} \times X$  इन्य । मापा-हिन्दी-सस्कृत । से० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० ६६ ।

विशेष —सामाधिक पाठ, भक्तामर स्तोत्र, जोगीरास तथा भक्ति पाठ श्रादि रचनाग्रो का सग्रद्ध है।

**६३०५. गुटका सं० १६६।** पत्रस० ६५ । मा० ६×३ इ.च. । मापा−हिन्दी-सम्कृत । ले•काल ४ । पूर्यो । बेपून सं० ६७० ।

विशेष - नित्य पूजा पाठणवं मंगल ग्रादि पाठो का संग्रह है।

६३०६. **गुटका स० १६**६। पत्र स० १००। घा० ५×४ ६०। माषा-सन्द्रता लेककाल × । पूर्यो । बेष्टन स० च७१।

विशेष--धायुर्वेद एव मंत्रशास्त्र सम्बन्धी सामग्री है।

ह३०७. गुटकासं० १७०। पत्रस० १३६। घा० ७% ४ इचा सामा हिन्दा-सम्कृताले० काल XI पूर्णवेष्टतम० ६७२।

विशेष--मामान्य पूजाएं स्तीत्र एव पाठी का सब्र ह है।

**१३०६. गुटका सं०१७१** । पत्रस० १०६ । झा० वर्र् ×६६*०*व । भाषा क्रिकी-सस्क्रत । के**०का**ल × । पूर्णा । वेष्टन स००७३ ।

विशेष - सामन्य पूजा पाठ, ब्रायुर्वेदिक नुस्ते, काल ज्ञान एव मत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है।

**६३०६. युटका स० १७२** । पत्रस० ६० । घा०  $a_2^2 \times b_2^2$  इन्छ । प्रापा-तिन्दी । से०काल स० १७६० पाँच वसी ८ । पूर्ग । वेष्टन सं० ६७४ ।

विशेष--- निम्त रचनाओं का संग्रह है---

शानिभद्र चोपई	हिन्दी	जिनराजसूरि
राजुलपश्चीमी	,,	विनोदीलाल
यंचमगल पाठ	n	रूपचन्द

**६३१०. गुटका स० १७३** । पत्र स० ११४ । ग्रा० ३ $\frac{1}{2}$   $\times$  ३ $\frac{1}{2}$  टखा माया-संस्कृत । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० ५७४ ।

विशेष-स्तोत्र एव मत्रशास्त्र का साहित्य है।

६३,१११. गुटकासं० १७४ । पत्रस०३३ । घा० ६×३ ॄँ इच । भाषा-सस्कृत । ले०काल × 1 पूर्ण । बेष्ट्रनस० ⊏७६ ।

विशेष -- भक्तामर स्तोत्र एव पूजा पाठ सग्रह है।

**६३१२. गुटकास०१७५।** पत्र स०११०। धा० ६imes५५ हच । सापा-हिन्दी-सम्कृत। लेकालimes। पूर्ण। बेष्टनस०८७।

विशेष – त्रेपन किया (हेमचन्द्र हिन्दी पद्य) पद, भक्तिपाठ, चतुर्विज्ञति स्नोत्र (समतभद) भक्तामर स्नोत्र (साननु राजार्य) ग्रादि का सग्रह है।

**६३१३. गुटकास० १७६ ।** पत्रस० २१६ । ग्रा० ५५ ४ ४ इल्डा भाषा⊸सम्कृत हिन्दी। ले०काल × । गुर्मा वेकनस० ६७६ ।

विशेष - मामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रों का माग्रह है।

**६३१४. ग्टका सं० १७७ ।** पत्रस्र० २७२ : झा० ४६ ६ इ.च । **भाषा** –हिन्दी । ले•काल -मा० १६२७ काली सुदी ४ । पूर्ण । बेष्टन स० ६७६ ।

विशेष—धजमेर के जिवजीदास के पटनार्थ किशनगढ में प्रतिनिधि की गई थी। कर्णामृत पुराण (मट्टारक विजयकीति) तथा दानशीलतप भावना (अपूर्ण) है।

**६३,९५. गुटकासं० १७ म**ापत्रस० ६६ । ग्रा० ४३,४३, डब्च । भ्राषा−हिन्दी सम्कृत । ले•कालस०१६६० ग्रावमामुदी१२ । पूर्मा। वेस्टन स० ६६० ।

विरोष — पूजा स्तोत्र, चर्चाए, चौबीस दष्टक, नवमगत ग्राटि पाठो का सग्रह है। ग्रजमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

**६३१६, गृटका सं०१७६ १** पत्र स० ६०। घा० ७ ४ ४ १ इ.च.। भाषा-सस्कृत । ले० काल ४ । पूर्ण । **बेहुत स०** प्रदर्श

विशेष—पस्य विधि, शेपनिकयापूजा, पस्यवत विधान, त्रिकाल चौकीसी पूजा ग्रादि का संग्रह है।

**६३१७. गृटका सं०१८० ।**पत्रस०४० । ग्रा० ६x ४१ ृँ६ख । माषा-हिन्दी ले∙काल × । पूर्ण । बेहनस०८८३ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ सम्रह है।

**६३१⊏. गुटका सं०१⊏१**।पत्रस० २६ । घा०६×४ ृेडखा भाषा–हिन्दी। ले० काल सं०१⊂७३ माह सुदी१४ । पूर्ती। वेप्टन सं०⊏ ⊏५। विशेष-सामृद्रिक भाषा शास्त्र है।

६३,९६. युटकासं०१,६२ । पत्रस०७०। मा० ५.४४ ३, इ.च.। माया-हिन्सी। ले∙काल-४.। पूर्णावेष्टन म० ६८७।

विशेष--- मत्तामर स्तोत्र मत्र सहित, एव धनेकार्थ मंजरी का सबह है।

€३२०. गुटका सं० १⊏३ । पत्रस० ४०~२४४ । घा० ६×३ इश्वा । भाषा-हिल्दी । ले०काल × । पूर्णा वेस्टन स० ⊏=६ ।

विशेव-- मुक्ति मक्तावली, पदसग्रह तथा मत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य है।

६३२१. गुटकासं० १८४ । पत्रस० ६ । श्रा० ७ x ५ इ.च.। भाषा-हिन्दी । ले०कालसं०— १७८४ मगसर मुदी ६ । पूर्णे। बेष्टनसं० ६६१ ।

विशेष-वीज उजावलीरी युई है।

६३२२. **गुटका सं० १८५।** पत्रस० १६६। ग्रा० ८×६ इश्वा । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनस० ८६३ ।

विशेष---नित्य प्रति काम में भ्राने वाली पूजाए एवं पद हैं।

**६३२३. गुटका सं० १६६ । पत्र स०** २०० । ग्रा० ६ $\times$ ४, हेड्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी **ले॰काल** स० १६४१ भादवा बुदी म**ा पूर्ण । बेहन स०** ६६४ ।

#### विशेष---

६३२४, गुटकास०१८७ । पत्रन०६२ । प्रा०६ $\times$ ४ $\}$  इन्द्र । भाषा-किन्दी ।ले॰काल $\times$ । पूर्णं। बेष्टन सं०८१४ ।

विशेष —खुणालचन्द, खानतराय, ग्राधि कवियों के पद, नया धर्म पाप संवाद, चरला चौपई प्रादि का संग्रह है।

**६३२४. गुटकासं० १८८** । पत्रसं०२६८ । आर०४×४१ इ.च. । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ने० काल × ।पर्णाकेकनसं०८६६ ।

विशेष-सामान्य पूजाओं के भ्रतिरिक्त वृन्दावनदास इत चौबीस तीर्थंकर पूजा भादि का संग्रह है।

. १२२६. गुटका सं०१६६ । पत्रसं०६४ । ग्रा० ४२,४४६ इच्छ । भाषा-हिस्सी । ते०काल ्र× । पूर्वा । बेष्टनसं० ⊏६७ । विशेष--- मंत्रतत्र एव घायुर्वेद के नुस्लो का संग्रह है।

६३२७ गुटका सं० १६० । पत्र स० २४० । प्रा० ४× इच्च । भाषा–प्राकृत-सस्कृत । से∙काल सं∙ १६४० फागुण बुदी ⊏ । पूर्ण । बेष्टन सं० ⊏६⊏ ।

विशेष--मुख्यतः निम्न रचनाधों का संग्रह है।

<b>भाराधना</b> सार	प्राकृत	देवसेन
संबोध पचासिका	-	****
दशरथ की जयमाल		
सामायिक पाठ	सस्ङ्रत	
तत्वार्यसूत्र	,,	उमास्वामी
पंच स्तोत्र	**	_

**६३२६. गुटकास**० १९१ । पत्र स० २२७ । द्या० ५३ $^{3}$  $\times$ ४ $^{1}$  इश्वर । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले॰ काल  $\times$  । पूर्णः । वेप्टन स० ५६९ ।

विशेष---मामान्य पूजा पाठो, श्रायुर्वेद एव ज्योतिष शादि के बंधो का सम्रह है।

६३२६. गुटकासं० १६२ । पत्रसं० २२६ । घा० ६imes३१ ६ख । माषा –संस्कृत । ले०कासimes । पूर्ण । बेहन स० ६०० ।

विशेष--तीम चतुर्विशति पुजा त्रिकालचतुर्विशति पुजा आदि का समृह हैं।

६३३०. गुटका सं० १६३ । पत्रस० ६२ । प्रा०५×४२ ह्या । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १६६० बैशाल सुदी । १४ । पूर्ण । वेल्टन स० ६०१ ।

विशेष — गुराबिल, चितामिण स्तवन, प्रतिक्रमण, सुनाधित पद्य, गुरुधो की विनती, म० धर्मचन्द्र का सर्वया प्रदिका सग्रह है।

**१३२१.** गुटकासं०१६४ । पत्र स०३२४ । झा०  $=\frac{1}{2}\times$ ५ इत्था भाषा=६स्कृत । ले० काल सं०१==० माघ सुदी १२ । पूर्णा । वेष्टन स०६०२ ।

विशेष —पाण्वंताय स्तवन, सम्यक्त कौमुदी कथा, प्रश्नोत्तर माला, हनुमत कवच एवं वृन्दावन कवि कृत सतसई, मुभाषित ग्रंच म्रादि पाठो का समृह है।

६३३२. गुटकासं०१६४ । पत्र स०१ दन्। ग्रा०५३, ४५ ६खा भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ने•काल ४ :पूर्णावेष्टनस०स०१०३।

विशेष — जिनसहस्रताम, प्रस्ताविक श्लोक, भक्तामर स्तांत्र एवं बडा कल्याए। स्रादि पाठों का सम्रह है।

६३३३. **गुटकासं० १६६** । पत्रस० ७० । घा० ५×४ इ.च. भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले**०कास** ×। पूर्णे । बेष्टन स० १०४ ।

विशेष-सामान्य पाठों का संप्रह है।

६३३४. गुटकासं०१६७। पत्र स०६६। ग्रा०६×४१ इ.चा भाषा⊸हिन्दी। ले०काल स० १⊏३६ भारताबुदी १३ । पूर्णावेष्टन स०६०६।

विशेष — जैनरासो, मुदर्शन रास (ब्रह्म रायमल्ल) शीलरास (विजयदेव स्रि) एस भविष्यदत्त चौपई ब्रादि का समृह है।

ह**३३ ४. गुटकासं०१ ६ त**ापत्र स०८६ । घा०४ × ४ १ दशाः भाषा-हिन्दी-सस्कृतः। के**०का**ल स०१ द६३ घामोज सदी१ । पूर्णावेष्टनसं०६०७ ।

विशेष---नित्य प्रति काम में ग्राने वाले स्तीत्र एवं पाठी का संग्रह है।

**६३३६. गुटका सं०१६६ ।** पत्रस०१६-१३६ । ग्रा०६×५इच्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल सं०१८६२ घासीज मुदी**१** । पूर्ण । बेष्टुन सं०६०६ ।

विशेष-- प्रालोचना पाठ, सामायिक पाठ, तत्वार्थ सुत्र प्रादि पाठो का सग्रह है।

**६३३७. गुटका सं० २००** । पत्र सं० ५०। ग्रा० ५३ 🖂 ४३ इ.ख.। भाषा−हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्णे । बेष्टन स० ६१०।

विशेष - विभिन्न महीनो में झाने वाले एकादशी महातम्य का वर्गान है।

**६३३६. गुटका सं० २०१।** पत्र स० दर्श खा० ६२ॄं ४५ौडवा। भाषा-सम्कृत । ले० कात स १८६७ खाबाड मुद्दी १०। पर्यो । बेष्टनम० **१११**।

विशेष--जिनमह्यनाम (भाषाधर) एव नत्वार्थ मुत्र (उमास्वामी) भादि पार्श का मण्ड है।

**१३३१ मुटका सं०२०२। पत्रस० २०-७०। बा०** ६४६ डब्ल्व। भाषा-सिबी-सर्मत। लेक्काल म**०१**६२३ भावता मुदी ४। पूर्णा। **बेहनस०**११२।

विशेष --- निम्न रचनाश्रो का सग्रह है ---

सबोध दोहा	हिल्दी	सुप्रभाचार्य
संबोध पंचासिका	,,	र्गातमस्वामी
गिरनारी गीत	,	विद्यानंदि
लाहागीत	,,	resis
वास्तुकर्मं गीत	79	
माति गीत	71	
सम्यक्तव गीत	,,	
धमिनन्दन गीत	**	
श्रष्टापद गीत	<b>92</b>	
नेमीम्बर गीत	**	
चन्द्रप्रम गीत	21	
सप्तऋषि गीत	**	विद्यानिद
नववाडी विनती	41	

**६३४०. गुटकास**० २०**२।** पत्रस० ३०-१४२। ग्रा० ६ $\times$ ४ इश्वा भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले॰काल स०  $\times$ । पूर्णं। वेष्टनस० ६१३।

विशेष --पवस्तोत्र एव ग्रादित्यवार कथा है।

६३४४९. गुटकासं० २०४ । पत्र स० ५२ । प्रा० ६२ ४६ इथा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले∘काल म०१८०१ प्रापाट सुरी ६ । पूर्णाविष्टनसं० ६१४ ।

विशेष ---भक्तामर स्तीत ऋदि मत्र एव वचनिका सहित है।

६२४२. गुटका सं०२०५ । पत्रसं० ६० । ग्रा॰ ६imes४२ १ दश्व । मापा-सस्कृत । ले•काल imes । पूर्ण । वेष्ट्न म० ६१६ ।

विशेष--फुटकर क्योक, जिनसहस्रनाम (श्राशाधर) मागीनु गी चौपई, देवपूजा, राजुलपश्वीसी, बारहमाना श्रादि का मग्रह है।

६३ : ३. ग्टका सं० २०६ । पत्रस०२६ । घा०  $- \times Y$ ृै इचा । मापा-सस्कृत । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेस्टन स० ११७ ।

विशेष -- नित्य प्रति काम ग्राने वाले पाठी का संग्रह है।

€३४४. गृटका सं०२०७ । पत्रस०२४ । ब्रा०७४४ इंच । नापा-सम्कृत । ले∙कास ४ । पूर्मो । वेष्टन म०११८ ।

विशेष---तत्वार्थं मुत्र एव एकीभाव स्तोत्र धर्यं सहित है।

६३४ ४. गुटकासं० २०६ । पत्रस०२३४ । ध्रा०४ ×४ ५ इ.च.। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰काल × । पूर्ण । बेष्टुनस०६१६ ।

विशेष--पूजा पाठ एव स्तीत्र ग्रादि वा सग्रह है।

**६३४६ गृटकास०२०**६ । पत्र स०२०६ । ग्रा०४१<sup>°</sup>×४२<sup>°</sup> इच्चामापा—हिन्दी-सस्कृत । ले•कालस०१७६४ । पूर्णा वेष्टनस०६२० ।

विशेष --मामान्य पूजा पाठ सग्रह है ।

६३४७ गुटकासं०२१०।पत्रस० ७६ । ग्रा०६×४ॄंदञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । लेक्काल स०१८०६ ज्येन्ट बृदी४ । पूर्या वेष्टनसं० ६२१ ।

**विशेष** — मक्तामर स्वोत्र, कल्यांगा भदिर भाषा एवं तत्वार्थं सूत्र मादि पाठों का संग्रह है।

६३४ द. गुटका सं०२११ । पत्र स०१०० । घा० ६४५ ३ इ.च.। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ने०काल× । पूर्याः बहुन स०६३३ ।

विशेष---निम्न रचनाग्रो का सग्रह है। मुनीश्वर जयमाल (जिनदास) प्रतिकमएा, तत्वार्थ सूत्र, पट्टावलि, मुठमत्र, प्रतिकमएा, तत्वार्थ सूत्र,

£ ३४ €. गुटकास० २१२ । पत्र स०१५० । ग्रा०५×६ ३ इंच । भाषा— संस्कृत-हिन्दी। ले०काल× । पूर्णा वेष्टन स०१२४ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्र भादि का सग्रह है।

€३५०. गुटकासं० २१३ । पत्रसं० १२४ । बा० ६×४३ व्यवः। भाषा-हिन्दी। ले०काल स०१=२३ भादवाबुदी । पूर्णः। वेष्टनसं० ६२४ ।

विशेष---निम्न रचनाओं का संग्रह है।

नेमीम्बर रास — **ब**• रायमल्ल कृरण्जी का बारहमासा -- जीवण्णाम स्नाल पश्चीसी -- "--

**६३५१. गुटका सं० २१४** । पत्र स० ६२ । ग्रा० ६×६ इश्वर । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल ×। पूर्ण । वेष्टन स० ६२६ ।

विशेष —सोलहकारण जयमाल, गराधरवलय पूजा जिनसहस्रनाम (प्राशाधर) एव स्वस्त्ययन पाठ भादि का सम्बद्ध है।

**२३५२. गृटका सं०२१५ ।** पत्रस० ६०। ग्रा०६×४ इ.खा मापा-हिन्दी। ले०कान स०१८११ ब्रापाढ बुदी ११ । पूर्सावेष्टन सं०६२७।

विशेष-- प्रटारह नाता का चौढाल्या (लोहट), चन्द्रगुप्त के १६ स्वान, नेमिराजमति गीत, कुमित सञ्काय एव माचू बन्दना खादि पाठो का संग्रह है

**६३५३. युटका सं०२१६** । पत्र स०१६० । प्रा**०** ५ $\times$ ६**३ इ**.च । भाषा-हिन्दी । ने०काल स०१७६२ मामित्र मृदी ६ । पूर्गावेटन स०१२६ ।

विशेष——गामिकेत पुराण, (१६ प्रस्थाय तक) एवं मीता चरित्र (कवि वालक प्रपूर्ण) आदि रचनाओं का सग्रह है।

**६३५४. गृटका सं० २१७ ।** पत्रस० १५० । द्या० प<sup>2</sup>, ४६ इच्छ । भाषा∼हिन्दी सस्कृत । ले० काल स०१७७७ पीप बृदी ७ । पूर्णा । बेष्टन सं०६२६ ।

विशेष--निम्न स्तोत्रों का सग्रह है--

भक्तामर स्तोत्र भाषा	मस्कृत-हिन्दी	हेमराज
कल्यारा मदिर स्तीत्र भाषा	••	बनारसीदास
तकीश्राव स्तोत्र भाषा		name of the same o

**६३४४. गृटका सं० २१**८ । यत्रस० २६२ । ब्रा० ६ $\frac{2}{5}$  $\times$ ५ $\frac{2}{5}$  इ.च । भाषा-हिन्दी । ने०काल स०१७६६ कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । नेष्टन सं० १३० ।

विशेष—निम्त रचनायों का संग्रह है।

मांगीतुंगी स्तवन	हिन्दी	हिन्दी पत्र ३०-३५
कुमति कं। विनती	,,	,,
ननद मौजाई का ऋगड़ा	,,	,,
धक्षर बत्तीसी	**	j
भ्रान पश्चीसी	4	10

परमज्योति		हिन्दी
निर्दोष सप्तमी कथा		"
जिनाष्ट्रक		,.
गीत	विनोदीलाल	,,
भादिनाथ स्तवन	नेमचन्द (जगत्कीति के,शिष्य)	11
कठियारा कानडदे चउपई	मानसागर	**
नवकार राम		,,
धठारह नाता	लोहट	हिम्दी
धर्मरायो	जोगीदास	"
त्रेपन कियाकोश		,,
कक्का बत्तीसी		
ग्यारह प्रतिमा बर्णन		"
पद सग्रह	विभिन्न कवियों के	,,
सप्ाव्यसन गीत		19
पार्थ्यनाथ का महेला		,,

६३.५६. गुटकासं० २१६ । पत्रसं० १७४ । घा० ५५ ×६ ६ व्या। भाषा-हिन्दी सम्बन्त । लेब्कालस० १७४० ग्रामोज बुदी १० । पूर्ण। वेष्टनसं० ⊏३१ ।

विशेष--- प्रायुर्वेद एव मत्र शास्त्र में सम्बन्धित साहित्य का प्रच्छा संग्रह है।

**६३५७. गुटका सं०२२०** । पत्रस०१५० । घा०६२ ं×४३ इश्वः । माषा—हिन्दी–संस्कृत । नै•काल स०१८१ । पूर्ण। वेष्टन सं०६३३ ।

### विशेष-- निम्न रचनाओं का सम्रह है।

सारसम्ब्य ग्रंथ		सस्कृत
सुकुमाल सज्भाय	मन्तिहर्ष	र०काल १७४१
35	(मि॰ जिनहर्प)	
बोधसत्तरी		हिन्दी
ज्ञान गीता स्तोत्र		
समोकार रास		
चन्द्राकी	दिनकर	

**ृद्धः, गुटकासं० २२१** । पत्रसं० ६१ । घा० ६<mark>१</mark> ४४ ¦ इला। प्राया-संस्कृत । ले०काल × । पूर्णः। बेष्टन सं० ६३४ ।

विशेष--तत्वार्थं सूत्र, ज्ञानिवन्तामिंग एवं ग्रन्य पाठो का सग्रह है।

६२,४६. गुटकासं० २२३ । पत्रसं० २१३ । घा० ६३,४४ इ.चा। भाषा-संस्कृत । ले० काल स०१६२२ यषाढ सुदी११ । पूर्णा वेष्टन स०६३४ ।

विशेष--ज्योतिष साहित्य एव स० १५८२ से स० १७०० तक का सवत्सर फल दिया हुआ है।

€३६०. गुटकासं२२३ । पत्र स० ७२ । झा० ६×४ इ.च.। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पर्सा । वेष्टन स० ६३६ ।

विशेष-- शकुनावली लघस्वयभू स्तोत्र, पष्टिसवत्मरी म्रादि पाठो का संग्रह है।

**६३६१. गुटकासं० २२४** । पत्रम० ६० । घा०७३४६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल स०१७३५ फागुरा बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स०६३७ ।

### विशेष -- निम्न रचनायो का सप्रह है--

तीस चौवीमी	श्यामकवि	हिन्दी	र०काल स १७४६ चैन सुदी ४
विनती	गोपालदाम	,,	_

इसके ब्रतिरिक्त बन्य पाठों का भी सबह है।

**६३६२. गुटका सं० २२४** । पत्र ग० १७५ । प्रा० ६३ ४ ४३ इ.च.। माषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १९१४ माघ मुदी १। पूर्णा। बैच्टन स० ६३ ⊏ ।

विशेष—निम्न रचनाग्रो का सम्रह है।

मक्तिपाठ		सस्कृत
चनुर्विशति तीर्थंकर जयमान		<b>हिन्दी</b>
चतुर्दम गुगम्थान देलि	<b>स</b> ० जीवधर	हिन्दी
चेतन गीत	जिनदास	,,
लागालाभ यन सकल्प	महादेवी	सस्कृत
सिद्धिप्रिय स्ताव	देवन(द	,,
परमार्थ गीत	रूपचन्द	हिन्दी
परमार्थं दोहाजनक	रूपचन्द	,,

**६३६३. गुटकासं० २२६** । पत्रस० ६७ । झा० ६<sup>3</sup>, ४६ इश्वा भाषा-सस्कृत−हिन्दी। ले∘कालस०१६२४ झाषाद्रमृदी ४ । पूर्णा वे<del>ष्टनसं</del>०६३६ ।

विशेष -- मक्तामर स्तांत्र, विषापहार, पचमगल, तत्वार्थ सूत्र ग्रादि का सग्रह है।

६३६४. युटकासं० २८ । पत्र स०४६से ७६ । झा०८×५० देखा। भाषा∹सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्यो । तेप्टन स०६४० ।

विशेष--- अमलक्षरा पूजा, अनंत वत पूजा, एव भक्तामर स्तोत्र आदि का संग्रह है।

६३६५. शृटकासं० २२ सः । पत्रस० ३ सः। ग्रा० स×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले∙काल स० १७६६ । पूर्णे। बेष्टन स० ६४१ ।

विशेष --- निम्न रचनात्रो का संग्रह है।

कर्मप्रकृति भाषा वनारसीदास हिन्दी मृगीसवाद देवराज र०स०१६६३ ,,,

ह३६६. गुटका सं०२२६ । पत्रस०१ व्हा आ० ७३ × ५ इला । भाषा-प्राकृत-सस्कृत । के० काल स०१६ वर्णसावरण बुदी१० । अपूर्णावेष्टन स०६४२ ।

विशेष---मृख्यतः निम्न पाठो का सम्रह् है---

प्राराधना सार देवसेन प्राकृत गरमागर प्रकाण दोटा योगीन्द्रदेव प्रपञ्च ण प्रदारणानुप्रका - प्रपञ्च प्राप्ताप पदित देवसेन सम्भूत प्रपुरादुद कुन्दकुन्दराचांप्र प्राप्तन

**१३६७. गटकासं०२३० ।** पत्र स०६८ । आर्०६्<sup>\*</sup> ×४<sup>\*</sup> इ.ख.। मापा∸हिन्दी । ले० काल ⊼ा पूर्णा । बेष्टुन स०१४३ ।

विशेष — ग्रायुर्वेद के नुस्ते है।

६६६ स. गुटकासं० २३१ । पत्रस० ७०। प्रा० १८८७ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सम्कृत । के० काल म०१६३ स्थामोज बुदी ६ । पूर्ण। बेष्टनसं० ६४४ ।

विशेष-वहद सम्मेद शिलर पूजा महात्म्य का सग्रह है।

१६६१. गुटकासं० २३२ । पत्रस० ४१५ । घा० ४२ ४४ | इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्णः । वेष्टन स० १४४ ।

विशेष---निम्न पाठो का समृह है।

नाम ग्रंथ	ग्रथकार	भाषा	पत्र स॰	विशेष
नेमीण्वर रास	का० रायमञ्ज	हिंदी	8-86	र० सं० १६४४
				फागुरए सुदी ४
चेतनपूद्रगल धमाल	बस्ह	,,,	¥0-00	पद्य स० १३०
गील महिमा	सकल भूषए।	,,	€0-00	पद्य स० १६
बीरचन्द दूहा	लक्ष्मीचन्द	n	७४-८६	पद्य स० १६
पद	हखंगिए	,,	≂ಅ	पद्य स० ७
नेमीक्बर राजमति	सिहनदि	,,	६१	पद्म स०४
चातर्मास				ले०काल सं०१६४५

विलिभद्र गीत	सुमतिकीर्ति	हिन्दी	£ ₹	_
मेघकुमार गीत	पूनी	,,	€¤	
नेमिराजमति बलि	ठकुरसी	n	<b>११</b> ३	<b>₹</b> १
कुपरा घट्पद	,,	n	१२०	
पद	**	.,	१२६	
पद	साहरण्	**	35\$	
पद	बूचा	**	<b>१३०-३</b> ३	_
पचेन्द्रीवेलि	ठकुरसी		680	
योगीचर्या	-	,	444	ersen
गीत	<b>बू</b> चा	,,	<b>१</b> %७	market .
भ० वर्मकीर्तिभुवन	· <u>-</u>	,,	१६५	-
कीर्तिगीत				
मदनजुद्ध	बूचाकवि	,,	\$=¥	पद्य सं० १५⊏
•	**		(र० सं० १५ वह	से०काल स०१६१६)
विवेक जकडी	जिरगदास	,,		
मुक्तिगीत		,,		
<b>पोपहरास</b>	ज्ञानभूषग्	••	388	*****
शीलरग्स	विजयदेव सुरि	,,	३६५	£Ę
नेमिनायराम	द्रह्म रतन	,,	303	
पद	बूचा	"	4=2	
<b>प्रादिनाथ</b> विनती	ज्ञानभूषरा		3 E X	
नेमीश्वर राम	भाऊकिव		¥8X	-
चत्रांतियेलि	हर्षकीति		-14	
	garage.	••		

€२७०. गुटका सं०२३३ । पत्रसं० ५८ । घा०१३×६, इच्चामापा-हिन्दी-सन्छत । ले•काल स०१८६६ माघ गुरी १४ । पूर्ला। बेहन स०६४६ ।

## विशेष-पुजाबो एव पदों का मब्रह है।

६२७**१. गुटकासं०**२३४ । पत्र स०४०३ । ग्रा०७×६३ इला। भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्णः। बेष्टन स०४६७ ।

## विशेष--निम्न पाठी का सबह है।

सीवामनु	मगवतीदास	हिन्दी	पत्र सं •
भीलबलीसी	-	,,	1-43
राजमतिगीत		.,	44-4a
बावनी छपई			

खहडाल		हिन्दी	
पद एवं गीत	भगवतीदास	,,	७० तक
पद एव राजमति सतु	-	19	
भादित्यवार कथा		**	
दयारास	गुलाबचंद	*,	
<b>चूनडी</b> रास	भगवतीदास	,,	*****
रविव्रत कथा	-	**	_
<b>सीचड</b> रास	_	,,	
रोहिए। रास	-	,,	
जोगगा रास	_	,,	_
मन <b>क</b> रहारास		••	
वीर जिस्पद		**	
दशन्क्षरम् पद	-	,,	
राजावित		,,	
विभिन्न पद एव गीत	_	; <b>,</b>	१७६ पत्र तक
बरएजारा गीत	*****	••	
राजमित नेमीश्वरढाल		**	
समयसार नाटक	बनारसीदास	**	
चतुर बराजारा गीत	भगवतीदास	,,	
भ्रगंलपुरजिन बदना		**	
जलगालन विधि	<b>व</b> ्गुलाल	,,	_
गुलाल मधुराबाद पच्चीसी		,,	
बनारमी विलास के पाठी	बनारसीदास	,,	
का सग्रह			

६३७२. गृटका स० २६५ । पत्र सं० ⊏२ । घा० ७४ ४ ६ खा । माषा−हिन्दी । ले० काल स∙ १७४⊏ / १७६० । पूर्गा। बष्टन स० १४७४ ।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है --

नेमीम्बर के पंककल्यासक गीत, सन्भाव, बुद्धिरासो, प्रावादमूति घमालि, घमरासो ब्रादि धनेक पाठों का मबद है।

६३७३. गुरुका सं० २३६। पत्रस० २४। घा॰ ८×६ इश्वा। भाषा-सम्कृत । ले॰काल × । पूर्णे। बेष्टन स० १४७५।

विशेष -- निम्न पूजा पाठों का संग्रह है---

पद्मावती स्तोत्र, पद्मावती पूजा, पद्मावती सहस्रनाम, पार्श्वनाय पूजा, पद्मावती झारती, पद्मावती गायत्री झादि पाठों का सद्मह है।  $\mathbf{\epsilon}$ ३७४. **गटका सं**०२३७ । पत्र सं०१०० । ब्रा० ६ $^{3}_{2}$ imes६३७४ । माषा-सस्कृत । ले० काल स०१६४५ माह सदी १२ । गूर्ण । वेष्टन सं०१४६५ ।

विशेष-ज्योतिष सबधी पाठो का संग्रह है।

**६३७४. गृटकास० २३ ⊏ । पत्रस० १२०**। ग्रा० ⊏ै्×५२, इश्वर । भाषा-हिन्दी-संस्कृत। ले० काल म०१६४० फागुण बुटी७। पूर्ण। **बेष्टन सं**०१४६६।

विशेष - नाटक समयसार एवं त्रिलोकेन्द्र कीर्ति कृत सामायिक भाषा टीका हैं।

ह३,७६. गुटका सं० २३,६ ।पत्रस० १२६ । आ.० ८×६ टला। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । क्री∙काल स०१८८४ फागुग बृदी ६ । पूर्णा वेष्टन सं०१४८७ ।

### विशेष-- मन्यतः निम्न पाठो का सग्रह है।

नाम ग्रथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
व्रत विधान रामो	दौलत राम पाटनी	हिन्दी	र• स० १७६७
प्रायण्चित ग्रथ	ध्रकलक स्वामी	सम्बृत	
ज्ञान पच्चीसी		हिन्दी	-
नारी पच्चीमी		**	
बस्घारा महाविद्या		संस्कृत	
मिथ्यात्व भजन राम		हिन्दी	- march
पचनमस्कार स्तोत्र	उमास्वामी	सम्कृत	

६३७७. गटका सं० २४०। पत्रस० १४४। ग्रा० द्रै ४६६च। भाषा-हिन्दी। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०१४८८।

विशेष--पद संग्रह है।

**६३७६. गुटकास० २४१** । पत्र स० १०६ । ग्रा० ४×४ इञ्च । भाषा*-हिन्*दी । र०काल ४ । ले• काल × । पूर्णा । बेष्टन सं १४६० ।

विशेष-पदो का सप्रह है।

६३७६. गुटकासं० २४२ । पत्र सं० ६६ । घ्रा० ६ × १ दश्व । भाषा - –सम्कृत । र०कान × । ले० काल स०१७२६ । पूर्ण । बेष्टत स०१४६१ ।

विशेष---पूजा पाठ सम्रह है।

६३ म.०. गुटका सं० २४३ । पत्रस० ३०म । घा० ६×४ १ इला । भाषा संस्कृत-हिन्दै। । र•काल × । ले॰ काल स॰ १६६२ फागुण बुदी १ । पूर्णे । वेष्टन सं० १४६२ ।

विशेष — सागवाडा नगर मे प्रतिलिपि की गयी थी। पूजा पाठ एव स्तीत्र संग्रह है।

६३८६. युटकास० २४४ । पत्रसं∘१७० । आ.० ६५ँ×१३ हञ्चा। भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० × । पूर्ण । बेहन सं०१४६३ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

६३ दर. युटकासं० २४ ४, । पत्रस० ७० । घा० ११ ४ ६ दे इस्य । भाषा−हिन्दी । र०काल 🗴 । ले० काल स०१ ८६४ पीप सुदी ४, । पूर्णा बेष्टन स०१४६४ ।

विशेष भरतपुरवासी पं॰ हेमराज कृत पदी का सम्रह है।

**६३ म. त. पृटका सं० २४६।** पत्रस० ६७। द्या० ५ $\times$ ६५ इ.च.। भाषा-हिन्दी। **ले•काल**  $\times$ । पूर्ण। वेस्टन स० १४६५।

विशेष-हिन्दी पदो का सग्रह है।

**९३८%. गुटकासं० २४७**। पत्रस० ४०। द्या०६×५१ँ इन्द्र। भाषा∽हिन्दी । विषय – संबद्दः। सेवकाल ×ः पूर्णुः। बेष्टनस०१४६६ ।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

६३८ प्रतिसं० २४ म । पत्र स० १३४ । प्रा० १०४४ इ.च. । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १६३४ ब्रामोज सुदी ४ । पूर्णा विक्रत सं० १४६७ ।

विशेष-- मट्टारक सकलकीति, बह्मजिनदास, जानभूषरा सुमतिकीति खादि के पदो का सग्रह 🕏 ।

६३ म् प्रतिसं० २४६ । पत्रसर १९७ । ग्रा० ६४ ४ इंच । माषा-हिन्दी । ले०काल म०१८६ व्यंष्ठ मुरी ३ । पूर्णा वेष्टन म०१४६८ ।

विशेष-- पूजा पाठ सग्रह है।

**६३८७. गुटका २५**० । पत्रस० ४१ । ग्रा० १imes६ इ**श्व ।** विषय-हिन्दी । ले**०काल** imes । पूर्णे । वेष्टनस०१४६६ ।

विशेष-पूजा पाठ एव स्तीत्र संग्रह है।

€२ेन्द्र- गुटका सं० २५१ । पत्रस० १३ ⊏। ग्रा० १० हे×६ इ.च. । माषा∽हिन्दी । ले•काल सं० १७६३ । कामृण मुदी १३ पूर्ण। बेटन स० । १५०१ ।

विशेष-- स्तयन तथा पूजा पाठ सप्रह है।

€३८८. युटकास०२४२ । पत्रसं∘ १२७ । घा० ४३, ४४ डचा । भाषा-हिन्दी ले∙काल ४ । पूर्णे। वेष्टनसं०१४०२ ।

विशेष--- निम्न रचनाओं का संग्रह है।

मध्टाह्मिका पूजा---

भवन्ति कुमार रास-(जिनहर्ष) र० स० १७४१ भ्राषाढ सूदी = ।

६३६०. प्रति सं०२४३ । पत्रसं०६० । प्रा०१×४ ६०४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णे । वेष्टनसं०१४०३ ।

विशेष--सामान्य पाठों का संबंह है।

**६३६१, गृटका सं०२५४**। पत्रसं०२०२। धा० १०४४ इश्वरा भाषा−हिन्दी। ले०काल ४ । पूर्णा वेष्टन सं०१४०४।

विशेष-ज्योतिष शास्त्र सबधी सामग्री है।

**६३६२. ग्टकास० २४४ ।** पत्र स०२०० । फ्रा०४ ×४ इञ्च । भाषा−हिन्दी । ले० काल स०१६४३ कार्तिक सुदी १०। फ्रपुर्गा विष्टन स०१४०६ ।

विशेष-- निम्न पाठों का संग्रह है।

वीरनाथस्तवन, चउसरएपपम्म, गजसकुमालवरित्र, बाबनी, रतनवृहरास, माघवानल चौपई छादि पाठों का सग्रह है।

**६३६३. गृटका सं० २५६।** पत्रस० ३६। म्रा० ५१ ४६ इखा भाषा—सम्कृत । ले० काल × । पूर्ण । बेहन स०१४०७ ।

विशेष-मनतन एवं रमल आदि का सम्रह है।

**६३,६४. गुटकासं०२,५७**। पत्रस• ५७। झा• ६×५ इचा। भाषा—हिन्दी।ले∘काल ×ापूर्याचेहनस•१५००।

विशेष-पुजा पाठ सग्रह है।

**६३,६५ गुटका सं०२५⊏। पत्रस० ७२ । सा०४ र्र्× ४ इला । भाषा**-हिन्दी, गंहान । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन म०१५०६ ।

विशेष-- पूजा पाठों का सबह है।

६२,६६. गुटकासं० २५६ । पत्र म० १७४ । झा० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेब्बाल × । पूर्ण । बेहनसं० १५१० ।

विशेष-हिन्दी के मामान्य पाठों का संग्रह ।

**६३.६७. गुटकास०२.६०**। पत्र स०६२। आरा॰ ७४.५ इ.च. भाषा-हिन्दी। ले० काल – स०१⊏३ ⊏। पूर्ण। वेष्टनसं०१५११।

विशेष-वैदा मनोत्सव के पाठी का मंग्रह है।

€३६६८. गुटकास०२६१ । पत्रस०१००। ग्रा० ६×५ इ.खा भाषा— हिन्दी। ले०काल × । पूर्णावेष्टन स०१५१२ ।

विशेष-गुगास्थान चर्चा एक रत्नत्रय पूजा है।

६२.६६. **युटका सं०२६२ । पत्र सं०२**४ । ग्रा० ५×४.३ ६०वा। भाषा⊸संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन स०१४.१३ ।

विशेष-ग्राचार्यं केणव विरचित षोडवकारम्। वतीश्रापनपूजा जयमाल है।

६४००. **गुटका सं० २६३ ।** पत्र स० ७३ । ध्रा॰ न $^2_2 \times Y^2_4$  इश्वर । माया—हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन सं० १४१४ ।

विशेष-निम्न पाठी का संग्रह है--

चन्द्रगुप्त के मोलह स्वप्न, धर्मनाथ रो स्तवन (गुग्सागर) उपदेश पच्चीझी, (रामदास) शालिसद्र धन्ना चउपई (गुग्सगर)।

£ ४०**१. गुटकासं०**२६४ । पत्र स०१०७ । ग्रा०१×६ इच्चा मावा−हिन्दी,। ले० काल × । पूर्णावेष्टन स०१४१५ ।

विशेष - गुरमस्थान चर्चा एव धन्य पाठो का सग्रह है।

 $\xi$ ४०२. गृटकास०२६४ । पत्रस०१३४ । झा० ७imes४६२४ । भाषा—हिन्दी । के॰काल स०१८६० पीष सुदी ४ । पूर्णावेष्टनसं०१४१६ ।

विशेष--मृश्यतः रसालुकवर की वार्ता है।

 $\epsilon$ ४०**३. गुटका सं० २६६ ।** पत्र स० १३० । ब्रा० ६ $rac{1}{2} imes v^2_{\epsilon}$  इश्वा । भाषा-हिन्दी लेशकाल imes । पूर्ण । बेष्टन स० १४९७ ।

विशेष-- विभिन्त कवियों के हिन्दी पदों सग्रह है।

६४०४. **गुटकासं०२६७** । पत्र स∙ १२७ । ग्रा॰ ६×१ दचाभाषा-हिन्दी।ले० का**ल** ×। पूर्णावेष्टन स०१४१ = ।

विशेष-- ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

**६४०५. गुटका सं० २६** ६ । पत्र म० १२३ । ग्रा॰ ६ $^1_2 \times 7^1_4$   $^2$ क्षा । माषा–हिन्दी । लेल्काल  $\times$  । पूर्वा । बेपून सं० १४१६ ।

विशेष-- शालिभद्र चीपई के प्रतिरिक्त विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों का सप्रह है।

**६४०६. गुटकासं०२६६** । पत्रसः १४४ । सार्वस्ट्रे×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी । ले०कालimes । पूर्णः । वेष्टमः सर्वश्ररु ।

विशेष--विभिन्न कवियों के हिन्दी पदों का सम्रह है।

६४०७. गुटकासं०२७० । पत्रस०२=२ । घा० ४२,४४३ दश्वा भाषाः सस्कृत∹हिन्दी । ले•काल स०१६६० । पूर्णावेटन सं०१५२२ ।

विशेष--- १ जाएं एव बहा रायमल कृत नेमि निर्वाण है।

**१४०८, गुटका सं० २७१**। पत्र स०१४०। घा० ८ ४६ इञ्चा भाषा—हिन्दी। ले∘काल ×ापूर्णावेष्टन स०१४२३।

विशेष-सामान्य पाठ एव धायुर्वेदिक नुस्से हैं।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर नागदी-बुंदी।

ह¥०६ गुटका स० १। पत्रसं∘ १९५ । ग्रा॰ १४४ इला । भाषा–सस्कृत–हिन्दी। ले∘काल × ।पूर्यावेष्टन स० १६३।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

६४**१०. गुटका सं० २।** पत्रस० २१६। घा० ६४६ इञ्च । सावा-हिन्दी−सस्कृत । ने०कान×।पूर्ण । वेष्टनसं• १६४।

विशेष-पूजा स्तोत्र एवं भ्रन्य पाठी का सग्रह है।

**६४११. गुटका स** $\circ$  ३ । पत्रस $\circ$  २१२ । धा॰ ५imes५ इचा । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले $\circ$ काल imes । पूर्ण । बेब्रन सं $\circ$  १६२ ।

विशेष-गुग्तस्थान चर्चा श्रादि का सग्रह है।

**६४१२. गुटका सं०४।** पत्र स०३४। आ०६ x ४ इञ्च। भाषा— हिन्दी। ले० काल x । पूर्णं। बेहन स०१८७।

विशेष--ग्रायुर्वेद के नुस्ले है।

**६४१३. गुटका सं० ४।** पत्र स. ० ११८ । ग्रा० द ४ ६ इ.ख.। भाषा—सस्कृत-हिन्दी। ले∘काल ४ । पूर्णा वेट्टन स० १८६ ।

विशेष-पूजा पाठो का मग्रह है।

६४१४. गुटकासं०६ । पत्रस०४० । ग्रा०१०×५ इचा। भाषा –सस्कृत, हिन्दी। ले०काल × । पूर्णावेष्टनस०१⊏६।

विशेष --पूजा पाठ सम्रह है।

**६४१५. गुटका सं०७। पत्रसं०७६। ब्रा०५**×४३ृँ इच्चा भाषा−हिन्दी। ले∘काल×। पूर्ण। वैकृतस०१८५।

विशेष-पूजा पाठ एव पद संग्रह है।

**६४१६. सुटका सं० ८** । पत्रसं०४६ । **धा०** ५ $\frac{1}{2}$ ×४ इ.खः । भाषा–हिन्दी । ले० काल × । पूर्णः । वेष्टन स०१६२ ।

विशेष-गृटका दाद पथियों का है। दादृदयान कुन सुमिरण एव विनमी की ध ग है।

६४**१७. गुटका सं० ६** । पत्रस० ७६ । ब्रा० ५ ${}^{\downarrow}_{i} \times 5^{\downarrow}_{i}$  इन्च । भाषा-सस्कृत । से•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनम० १७५ ।

विशेष - मुभापित संग्रह है।

६४९६. गुटका सं० १० । पत्रस० १४० । घा०  $\pi_2^2 \times \xi$  इ.च. । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । के०कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० १७६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६४१**६. गृटकासं०११** . पत्रसं०६२ । मा० ५×५३ इञ्च । भाषा–संस्कृत । ले०काल स० ¶१४४१ कालगुण बुदी १२ । पूर्ण । बेष्टन स०१७७ ।

. सम्पर्यत्वेत पूजा संस्कृत बुधसून। २. सुस्यक बारित पूजा , सरेहसेत । ३. स्थातक दिवि , प्रमेदेव । ६४२०. गुटकासं० १२ । पत्रसं० ११ त। घा० ७ ४ ५ हे इला । भाषा–सस्कृत−हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णा वेस्टनसं० १७ त।

१८२१. गुटका सं० १३ । पत्रस० १२६ । घा० ६ $\frac{1}{5} \times 5$ , इन्छ । आधा—सस्कृत-हिन्दी । क्रेन्डाल $\times$  । पूर्ण । बेरटन सं० १७६ ।

विशेष--सामान्य पाठो का संग्रह है।

१. सतोप जयतिलक

बूचराज बुचराज हिन्दी

२. चेतन पुद्गल धमालि

६४२२. **गुटका सं०१४** । पत्रस०६२ । घ्रा०६×६ ¦ृे इश्वाभाषा-सस्कृत⊸हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णावेष्टन स०१७४ ।

विशेष--ग्रादित्यवार कथा एव पूजा सग्रह है।

१४**२३. गुटकासं० १४ ।** पत्र स०२४२ । झा**० ६**४५ इश्वा भाषा–सरकृत-हिन्दी । ले•काल × । पूर्णा वेष्टनसं० १७३ ।

भूवनदीपक भाषा टीका महित पदानिद मृदि । सरङ्गत निकास सन् १७६० हिन्दी
 भैजावस मार मृमिनिकोति सस्कृत ।
 भीतावस मार काकीनाथ ,,
 भम्मसमार नाटक बनारसीयम हिन्दी पदा

ह×२४. **गृटका स० १६** । पत्र स०४–१७ । घ्रा०१०} × ⊏ इचा । भाषा–सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ता । **बेह्न सं०१**६४ ।

विशेष---नित्य पूजा पाठ एव स्तोत्र मग्रह है।

ह४२५, सुटकासं०१७ । पत्रस०२०६ । म्रा०१×४ दश्वा भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्णं। बेहनस०६६ ।

विशेष-समयसार नाटक एव भक्तामर स्तोत्र, एकीभाव स्तोत्र ग्रादि भाषा में है।

६४२६. गुटका सं०१८ । पत्रसं० ८-३०४ । आ० २४८ इश्व । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । से०कास ४ । भारूषो । वेष्टन स०६४ ।

**विशेष** —-पूजा स्तोत्र मादि है इसके ब्रतिरिक्त विमलकीर्ति कृत बाराधाना मार है—-जिसका मादि बन्त भाग निम्त है।

प्रारम्म--

श्री जिनवर वाग्गि नमित्रि

गुरु निर्पाथ पाय प्ररामेवि ।

कहूं ग्राराधना सुविचार

संखे पड्सारोधार ॥१॥

हो क्षपक वयग्। भवधारि ।

हवेइ चात्यु तुं भवपार।

हास्युं भट कहूं तक्त भेय धुरि समकित पालिन एहु।।

### मन्तिम---

सन्यास तरा। फल जोड ।

हो सारगिरपि सुख होइ।

वली श्रावकनु कुल पामी

लहर निरवाण मुगतइगामी ।।

जे भड सुग्इ नरनारी,

तं जोइ भवनइ पारि ।

श्रीविमल कीरति कह्युविचार ।

श्री ग्राराचना प्रतिबोध सार ।।

१८४२७. गुटका सं०१६ । पत्रसं०३८ । ग्रा०१३imes१६ श्वा । भाषा-हिन्दी । के॰काल imes१ पूर्णे । बेष्टन स०३१ ।

विशेष - गुरास्थान वर्षा एव ग्रन्थ स्फुट वर्षाएं हैं।

प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर श्री महाबीर बृंदी।

**६४२.. गुटकासं०१।** पत्रसं०४४ । ग्रा०१० $\frac{5}{4}$  ×७ इ.च.। भाषा–सस्क्रन–हिन्दी। ने० काल × । पूर्णं। वेष्टनसं०१६६।

विशेष --पूजा पाठ संग्रह है।

**६४२६. गुटका सं०२।** पत्रमं० १४४ । घा०१०×६ इ•खा माषा−हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा वेष्टम स०१६४ ।

विशेष-निम्न पाठ है:---गुग्गस्थान चर्चा, मार्गग्गा चर्चा एव नरक वर्णन

६४२०. **गृटका सं० ३** । पत्र स० ४०८ । द्या० १०imes६ ६२व । भाषा–सस्कृत । ले•काल imes। पूर्ण । बेष्टन म० १५६ ।

बिशेष-पूजाओं का सग्रह है।

६४**३१. गृटका सं०**४ । पत्र सं०२१२ । घा० १०<sub>२</sub> x ७ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । के•काल स०१६५७ । घपूर्ण ।

विशेष-- नित्य पूजा पाठ एव छहढाला, ध्यान बत्तीसी एवं सिंदूर प्रकरण है।

६४३२. गृटका सं०५ । पत्रसं० १४१ । झा०१३ रू ८ दृ इल्ड । भाषा-संस्कृत-हिली । के•काल × । पूर्ण । बेहम सं०६८ ।

विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा तथा पाठों का संग्रह है।

बुटका संपह ] [ ६६३

**६४३३. गुटका सं०६** । पत्रस० ४४ । प्रा०१०१२ ४७ इश्वर । भाषा-संस्कृत । ले**०काल ४ ।** पूर्यों । बेष्टन सं०६⊏ ।

विशेष — निम्न लिखित पाठ है---

 য়िছाध्याय (२) प्रायश्चिन भाषा (३) सामायिक पाठ (४) शांति पाठ एवं (४) समतभद्र कृत बृहद् स्वयंभ्र स्तोत्र ।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी बंदी।

 $\xi$ **४३ ह**ें. गुटका सं० १ पत्रस० ३६ । द्या० ७imes६ इन्छ । भाषा-हिन्दी ।ले०काल imes । पूर्यो । बेव्रन म० ७६ ।

विशेष -- निम्न पाठ है -- चर्चाणतक कलयूग बत्तीसी भादि है।

६४३५. गुटकास० २ । पत्रसं०५६ । ग्रा०६४५ है इन्खा भाषा−हिन्दी प०। ले०काल स० १७=० फागुगावदी १०। पूर्णा वेष्टनस०७५ ।

विशेष- निम्न पाउ हैं--

१. विहारी सतमई - पत्र १-५४ पद्य स०६७६

२ रसिकंत्रिया --- ,, ५५-५६

 $\mathbf{E}$ ४३६. गुटकासं० ३ । पत्र स०६४ । घा० ५imes५ ६४ । भाषा-हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्णे । बेष्टन सं० ७३ ।

विशेष - पद एवं विनती संग्रह है

**६४३७. गुटका सं०४** । पत्र सं० ७२ । ध्रा०६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्णावेष्टन म०७१ ।

विशेष--धात् पाठ एव चौबीसी ठाएग चर्चा है।

**६४३ म. गुटकासं० ४** । पत्र स० ६० । ग्रा० ७×४ इ.चा । सामा-हिन्दी सस्कृत । **ले∘काल** × । पूर्ण । वेष्टन स० ७२ ।

विशेष--पूजा स्तोत्र सवह है।

**१४३६. पुटकास०**६ । पत्रसं•११६ । द्या०७×५ इ.चा। भाषा~सस्कृत-हिन्दी । ले•काल × । पूर्णा। वेष्टन स०६⊏ ।

ह४४०, गुटका सं०७। पत्र स० ४७४। प्रा० ६४४ इन्द्रः। भाषा–सस्कृत-हिन्दी। कै∘काल ४। पूर्णावेशन सं०६६।

विशेष ---पुजा पाठ संग्रह हैं।

**१४४१, गुँटकासं० ६ ।** पत्रसं०२७२ । घा०७ ४६ इञ्च । भाषा हिन्दी−सस्कृत । ले•काल ४ । पुर्णा वेष्टन म०४६ ।

विशेष-- नैलोक्येश्वर जयमाल, सोलहकारण जयमाल, दशलक्षण जयमाल, पुरपरयण जयमाल प्रादि पाठों का संयह है।

**१४४२ , गुटका सं**० ६ । पत्र सं० ४० । मा० ७ × ४ इ.च । भाषा−हिन्दी−सस्कृत । ले०काल × । पूर्णा वेष्टन स० ४५ ।

विशेष-कल्यारा मन्दिर भाषा एवं तत्वार्थ सूत्र का संप्रह है।

६४४**३. गुटका सं० १०।** पत्रस० ३१८ । ग्रा०६×६ इ.च. । माचा-हिन्दी-संस्कृत । ले**∘काल** × । पूर्ण । बेष्टन स०४४ ।

विशेष - पूजा पाठ स्तीत्र ग्रादि का सग्रह है।

६४४४. गुटकासं० ११ । पत्रसं० ४४ । घा० ६×६ इञ्च । भाषा-सस्क्रन-हिन्दी । ले∙काल ×। घषुर्णा। बेप्टन स०२६ ।

६४४५. गुटका सं० १२ । पत्रसं० २६ –२१७ । ग्रा० ६×६ इवा। भाषा नहन्दी-सस्कृत । क्रे•काल । ग्रपूर्ण । बेष्टन स० २१ ।

विशेष-पूजायें स्तीत्र एवं सामान्य पाठी का संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर अभिनन्दन स्वामी बुंदी।

**१४४६, गुटकासं० १।** पत्रम० ३५३ । घ्रा० ५२, ४४ दे इञ्च । भाषा-सस्कृत-प्राहत । से० काल स०१७१० ।पूर्ण । **वेष्ट्रस०** ३६६ ।

विशेष---निस्त पाटी का संबद है।

<b>।वश्य-</b> निम्न पाठा का	<b>सद</b> हर।	
१. ज्ञानमार	प ग्रनन्दि	प्रान-त
२. चान्त्रिमार	×	
३. हादमी गाथा	×	3.5
४. मृत्युमहोन्सव	×	मग्रन
५. नयचक	देवमन	**
६. श्रष्ट्रपाहुड	कुन्द <u>ह</u> ≈द	<b>সা</b> হৰ
७. त्रैलोक्यसार	नेमिचन्द	***
ष. <b>श्रुतस्क</b> त्र	हे <b>मच</b> न्द	**
६. योगमार	योगीन्द्र	ग्रपभ ग
१०. परमास्म प्रकाश	,,	"
११. स्वाभी कानिकेयानुप्रका	कात्तिकेय	<b>प्राकृ</b> त
१२. भक्तिपाठ	×	प्राकृ <i>न</i>
१३. वृहद् स्वयभू स्तोत्र	समतभद्र	मस्कृत
१४. संबोध पचासिका	×	प्राकृत
१५. समयसार पीठिका	×	सस्कृत
१६. यतिभावनाष्ट्रक	*	,,
१७ वीतराग स्तवन	पद्मनन्दि	n
१८. सिद्धिप्रिय स्तीत्र	देवनन्दि	"
१६. भावना चौबीसी	पद्मनन्दि	11
२०. परमात्मराज स्तवन	×	"
२१. श्रावकाचार	प्रभावन्द	11
२२. दशलाक्षरिएक कथा	मरेन्द्र	

२३. प्रक्षयनिधि दशमी कथा	×	सस्कृत
२४. रत्नत्रय कथा	ललितकीर्ति	",
२५. सुभाधितार्गाव	मकलकी <b>र्</b> त	,,
२६. ग्रनन्तनाथ कथा	×	i,
२७. पाशाकेवली	×	li .
२८. भाषाष्ट्रक	×	11

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ भी है।

६४४७. गुटका सं०२ । पत्र स०१७२ । घा० ५ $^1_2 \times 4^1_2$  इश्व । माषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहुन म०३६७ ।

विशेष-- श्रायुर्वेदिक नुमयो का सग्रह है।

६४४ द. गुटका स० ३ । पत्रसं० ३४६ । ग्रा० ६ ४ १ े इल्डा भाषा−सस्कृत−प्राकृत−हिन्दी । ले० काल स० १७१२ पीप बुदी ४ । पूर्णा। बेष्टतसं० ३६८ ।

विशेष — निम्न पाठो का संग्रह है।

१−समयसार नाटक बनारसीदास हिस्दी पद्य २–बनारसी विलास

ले • काल १७१२ पीष वदी ४ । लाहीर मध्ये लिलापितं।

३-चोबीमधाणा चर्चा — "

४-सामाधिक पाठ — सस्कृत

५-तवार्थ मृत्र उमास्वामि संस्कृत

६-रवार्थमार — प्राकृत

७-परमानद स्तोत्र — संस्कृत

६-म्बार्गण्या मृत्रनद हिन्दी ४२ पद हैं।

ग्राराधना सार, सामायिक पाठ, ग्रष्टपाहड, भक्तामर स्तोत्र ग्रादि का सग्रह ग्रीर है।

**६४४६. युटका सं**०४ । पत्रस०४०। धा०११ $\times$ १२ ह्वा। भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल  $\times$  । पूर्णं। वेस्टन स०३६४ ।

विशेष -- लिपि विकृत है। विभिन्त पदो का सम्रह है।

६४५०. पुटकासं०५ । पत्र स०७८ । ध्रा०६ ४४ इचा। भाषा−हिन्दी - सस्कृत । ले० काल ४ । भपूर्रो । बेहनसं०३६२ ।

विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

**६४५१. गुटकासं∘६।** पत्र स०२०। प्रा०६४५ इञ्च। माषा-हिन्दी। ले०काल ४। पूर्णं। बेष्टन सं०३२३।

विशेष--कोकशास्त्र के कुछ पंश हैं।

**६४५२. गुटकासं० ७ ।** पत्रस० ४६ । म्रा० ६×४२ दश्व । नाषा∽हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्णा । बेष्टन म० ३२४ ।

विशेय-नामान्य पाठो का संग्रह है।

**६४५३. गुटका सं**० ⊑ । पत्र सं०६-६४ । ग्रा०५×५ इश्वा । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । श्रपुर्या । वेस्टन स० ३२५ ।

विशेष-- श्वे • कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है।

**६४५४. गुटकासं० ६** । पत्रसं० ६० । ग्रा० ६ ४ ५ इ.च. । भाषा-हिन्दी पर्या ले०काल ४ । पूगा वेष्टन स० ३२६ ।

विशेष—स्तोत्र पाठ एव रविव्रत कथा, कक्का बत्तीसी, पर्चेन्द्रिय विलि ग्रादि पाठा का सग्रह है।

**६४४५. गुटकासं० १०** । पत्रसं० ५२ । घा० ≒्रै×६ इ.च.। भाषा∽हिन्दी पद्याले ०काल × । पूर्वाविष्टन सं०३२७ ।

विशेष--पूजास्तीत्र सादि का सम्रह है।

**६४५६. गुटका सं० ११** । पत्रमं० १७६ । द्वा० ५ $\S \times$ ४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेटन स० ३२८ ।

**बिहोस**— नन्वार्थमृत्र, सामायिक पाठ स्नोत्र, जेस्ट जिनवर पूजा, नीय चौदीसी नाम प्रादि पर्धे का सम्रह है।

**६४५७. गुटका सं० १२** । पत्र स० १६१ । द्या०  $4\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{4}$  इ.च । भाषा — सम्भ $\alpha$  । केठ काल  $\times$  । पूर्ण । बेटटन सं० ३२६ ।

विशेष-गामायिक पाठ, पञ्च स्तीत्र, लक्ष्मी स्तीत्र ग्रादि का सग्रह है।

१४६ । **गुटका सं० १३** । पत्रस० १४६ । ग्रा• ७४४ इश्व । माषा-सस्कृत । ले∘काल ४ । पूर्ण । वेस्टन स॰ ३३० ।

विशेष---महस्रनाम स्तोत्र, प्रतिष्ठापाठ सम्बन्धी पाठो का संग्रह है।

६८५६. युटकासं०१४ । पत्रस०१४१ । घा०६ × ५ इ.च. । माषा–सम्कृत । ने० काल × । पूर्या । वेष्टनसं०४३१ ।

विशेष —सहस्रनाम, सक्तनिकरण, गंधकुटी, श्न्यतक्षण, लघुस्तपन, रत्तत्रपपूजा, मिद्धचक पूजा। प्राट्टक-पदानर्दीकृत, प्राटक मिद्धचक पूजा-पदानन्दी कृत, जलयात्रा पूजा एव धस्य पाठ हैं।

ग्रन्त में सिद्धचक यत्र, सम्यग्दर्णन यंत्र, सम्यग्दान यंत्र, गंचपरमेष्टि यत्र, सम्यक् चारित्र यत्र, दशकक्षरण यत्र, लधु शान्ति यत्र प्रादि यंत्र दिये हॅंथे हैं ।

**१४६०. गुटका रो० १४। पत्रसं० ११४** । धा० १ $\times$ ४ $_{p}^{2}$  इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । लेककल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुन सं० ३३२ ।

विशेष -- रसिक प्रिया-इन्द्रजीत, योगसत-प्रमृत प्रभव का संग्रह है।

**६३६१. गुटका रां० १६**। पत्र स०११४ । ग्रा०६×६ इ.चा। भाषा–हिन्दी। ले०काल × । पूर्णावेष्टन स०३३३ ।

विशेष---सामान्य पाठों का संग्रह है।

**६४६२. गुटका सं० १७ ।** पत्र स० ⊏ । ब्रा० ६×७ इ॰ख । साथा–संस्कृत–हिन्दी । र०काल × । जे०काल × । पूर्णा । वेष्टन स० १८६ ।

विशेष -- दर्भन स्तीत्र, कल्याम् मन्दिर स्तीत्र तथा दव्य संग्रेह है।

**१४६३. गुटकासं०१ ⊏**। पत्रस० २१ । घा० १२×६३ इ.च.। भाषा–संस्कृत–हिन्दी। र०काल × । ने०काल × । पूर्णावेष्टनम० ११०।

विशेष--पूजा एव यज्ञ विधान द्यादि का वर्णन है।

**६४६४. गुटका सं० १६ ।** पत्रस• १८६ । ग्रा• ७×५२ इश्वाः भाषा–सस्कृतः । ले०काल ×। पूर्माः वेष्टनः स• ३६ ।

विशेष--पूजा एव प्रतिष्ठादि सम्बन्धी पाठ है।

**१४६५. गुटकासं**०२०। पत्रस०२ ८६। ब्रा०६ $\xi^2 \times x^3$  इला। भरमा-सस्कृत हिन्दी। लेककाल $\times$ । पूर्णावेष्टन स०३५।

विशेष-पूजा पाठ सम्रह है।

१४६६. गुटकासं० २१ । पत्रस०७२ । ब्रा० ६४५ ३ थ्वा भाषा-हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्णा । बेप्टन स०३४ ।

विशेष---पूजा पाठ स्रादि का मग्रह है

**६४६७. गुटकासं० २२** ।पत्र स० प−७०।ग्रा० ६४६ इ.५७ । भाषा–सस्कृत ।ले०काल ४ । श्रपुर्या।बेष्टन स०२६ ।

**१४६ द. गुटका सं० २३ ।** पत्रस०४ द । घा॰ **१॰**३imes६ इञ्च । माषा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰काल imes। पूर्ण । बेष्टनसं० द ।

विशेष--चौबीसी दण्डक, गुग्गस्थान चर्चा आदि का सग्रह है।

# प्राप्ति स्यान-दि॰ जैन मन्दिर पार्श्वनाय चाँगान बुंदी ।

ृह¥६६. गुटकासं० १ : पत्रसं०२-१६४ । घा०६ ४६३ इ.ख.। माषा— सम्कृत-हिन्दी। श्रे•काल×ापुर्या। वेष्टनसं०३३४ ।

विशेष---निम्न पाठों का मंग्रह हैं।

(१) प्रतिक्रमण् (२) भक्तामर स्त्रोत्र (३) शांति स्त्रोत्र (४) गौतम रासा (४) पुग्य मालिका (६) श्रद्युजयरास (सभयमुरदर) (७) सूत्र विधि (८) मगलपाट (१) कृप्ण णुकल पक्ष सरुकाय (१०) धनाभी ऋति सरुकाय (११) नवकार रास (१२) बुद्धिरास (१३) नवरस स्तुति स्यूलप्रहकुत। **६४७०. सूटका सं०२** । पत्र सं०१०७ । धा० म $^1_2 \times \S^1_2$  इञ्च । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेध्टन स०३३३ ।

विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है। पत्र फट रहे है।

६४७**१, गुटकासं३।** पत्रस०४१। ग्रा०७४७ इ-चामाषा–संस्कृत– हिन्दी। ते०काल ४ । पूर्णा वेष्टतस०२३१।

विशेष---पूजा पाठ सम्रह है।

६४७२, गुटका सं०४। पत्रसं० १८। ग्रा०६ॐ४८ॐ इचा। भाषा-हिन्दी। ले•कान ४। पूर्या। बेष्टनस०३३०।

विशेष-धर्म पश्चीसी, कर्म प्रकृति. बारह भावना एवं परीपह म्रादि का वर्णन है।

र्रुप्र**ः गुटका रो०५**। पत्रस० २४१ । घा० ⊏्रैप्र६ इचा। भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले•काल स०१ ⊏३३ बैजाल बुरी ४। पूर्ण्। बेष्टन स०२६५।

विशेष-- जयपुर मे प॰ दोदराज के शिष्य दयाचन्द ने लिखा या। निम्न पाठ है--

(१) तिकाल चौबीसी विधान

(२) मौरुव पुता।

(३) जिनसहस्रनाम-ग्राणाधर

- (४) वृहद् दणलक्षमा पूजा-----वेज्ञवंतन ।
- (४) पोडण कारमा बतोद्यापन
- (६) मविष्यदत्त कथा-ब्रह्म रायमञ्ज,

(६) द्वादश व्रत मडल पूजा।

(७) नदीय्यर पक्ति पूजा। (६) ऋषिमङल पूजा-मुगगनन्दि।

६ ४७४ . गुटका सं०६ । पत्रस०६४ । घा०६×६ इश्वः । भाषा-हिन्दी। ले∘काल स० १६४४ श्रावण मुदी १० । पूर्णावेशन सं०२६४ ।

विशेष-पारसदाम कृत पद सबह है, तीस पूजा तथा बन्य पूजाये है ।

६८७**५. गुटका सं०७** । पत्र सं०२१ । ग्रा०१०∫ ४५ इ.च.। भाषा–सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा। बेष्टन स०२६३ ।

विशेष-जेव्द जिनवर पूजा एव जिनमेनाचार्य कृत सहस्रनाम स्नोत्र है।

६४७६, **युटका सं० ⊏ ।** पत्रस० १⊏० । ग्रा० ११×६ इन्ता । भाषा-स∗कृत-हिन्दी । ते० काल ः । पूर्णा । केष्टनस०२६२ ।

विशेष -- सामान्य पूजा पाठ सवह है।

 $\mathbf{E}$ ४७७. **गुटका रो**० ६ । पत्र सं० १६८~३०१ । घा० ६ $\frac{1}{2}$  $\mathbf{x}$   $\frac{1}{2}$  इन्त । भाषा-सस्कृत । लेकाल  $\mathbf{x}$  । प्रपूर्ण । बेहनस० २६१ ।

विशेष-स्तोत्र पाठ पूजा धादि का सबह है।

६४७८ म्. पुटकासी० १०।पत्रस० १७१ । मा० ६४ ५ है इचा। भाषा-संस्कृतः। ले०काल स० १७१७ । पूर्णावेहन सं०२ ⊏६ । विशेष-पूजा पाठ सब्रह है।

६४७६. गुटका सं० ११। पत्रस० १६४। ब्रा० ५३ ×४ इश्वा भाषा-हिन्दी। ले०काल म० १८६६ चैन बुदी १४। पूर्णा। वेप्टन स० २८८।

विशेष - रामविनोद भाषा योग शतक भाषा प्रादि का सबह है।

**१४ ८०. गुटकासं० १२ ।** पत्रस० १०६ । झा० ८×६ इ.च.। भाषा~सल्कृत-हिन्दी । देश काल स०११६८ । पूर्ण।वेष्टुनसं०२०६।

विशेष—गुटकेकानाम सिद्धान्तसार है। ग्राचार शास्त्र पर विभिन्न प्रकार से विवेचन करके दश ६र्मका विस्तृत वर्णन किया गया है।

**६४८६ गुटकारां०१३** । पत्र स०५–३२ । ब्रा०६ ४४ इञ्चाभाषासम्ब्रत्∼हिन्दी। लाकताल × । पूर्णावेशन स०२८५ ।

विशेष--नपु एव वृहद् चाग्यस्य नीति गास्त्र हिन्दी टीका गहित है ।

**१४ प्रकासी० १४ । पत्र** स० ५७ । स्रा० ५४६ इला। भाषा सरकृत । ले० कान ⋉ । पुर्याविकास० २५४ ।

**विशेष** — ग्र कुरारोपण विधि, विमान णुढि पूजा तथा लघु शान्तिक पूजा है।

**६४६३. गुटका सं०१४** । पत्र स० ४० । आर्० १०imes६ दश्व । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले**०काल** imes । अपूर्ण । वेष्टन स०२४४ ।

विशेष--- निस्य नैमिन्तिक पूजा सग्रह है।

१४ म. गुटकासं०१६ । पत्र स०१४५ । ग्रा०१०६७३ इ.ख.। भाषा–हिल्दी, सस्कृत । ले∘काल 🗴 । पूर्णा विकास ०२४४ ।

विशेष-- निम्न पाठो का सम्रह है--

१-एकीभाव स्तोत्र २-विषापहार १-नतवार्थ सुत्र ४-छहडाला ४-मनामर स्तोत्र टीका ६-मृत्यु महोस्सव ७-मोक्ष मार्ग बत्तीसी दौलत कृत ६-मृत्य कृषय पच्चीसी ६-नरक दोडा १०-सहस्रवाम ।

**१४ ८ १. गुटका सं० १७** । **पत्र स० ८० ।** म्ना० ८×६ १ इ.ख । भाषा–हिन्दी, मस्कृत । के**०** काल  $\times$  । पूर्ण । **बेष्टन सं०** २२० ।

विशेष---नित्य पूजा पाठ व तत्वार्थ सूत्र ग्रादि है।

**१४८६. गुटका सं०१८ ।** पत्र स०२३ । आर० ६×५ इञ्च। मावा-हिन्दी पद्यः। ले∘काल स०१६२३ । पूर्यः। वेष्ट्रन स०२१५ ।

विशेष---

१. सहस्रनाम भाषा--वनारसीदास

२. द्वादणी कथा -- त्र० ज्ञानसागर

**६४८७. गुटका सं०१६**। पत्र स० ⊏ाम्रा०६×५ इश्वा भाषा-हिन्दी,संस्कृत । ले० काल × ।पूर्णावेष्टन सं०१७४।

विशेष--परमात्म प्रकास, पंच मगल, राजुल पञ्चीसी, दशलक्षण उद्यापन पाठ (श्रुतसागर) एव तीर्यंकर पूजा का सबह है।

६४८८. पुटका सं०२०। पत्र स०३१२। द्या०११४४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी, सस्कृत। ते०काल ४ । पर्गा। वेग्रन स०७४।

विशेष-पचस्तोत्र तथा पूजाओं का सप्रह है।

ह४८६६ **गुटकासं०२१।** पत्रस०११०। द्या० ६×६ॄै इश्वा भाषा-हिन्दी,सस्कृत। से∙कालस०१६५२। पूर्णावेष्ठतस०६८।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैंन तेरहपंथी मन्दिर नै गवा

६४६०. **गुटकास० १**। पत्रस० १०१। प्रा०६×४ इ.ख.। भाषा∹प्रकृत । ते०काल ४। पूर्गावेशनस० १५।

विशेष-मन्यत निम्न पाठो का सग्रह है-

ग्ररिष्टाध्याय प्राकृत — ग्राचार गास्त्र ,, —

र्ट४६१. गुरकासं०२ । पत्र स०११७ । ग्रा०६ ८४ ६ञ्च । भाषा−हिन्दी, सस्कृत । ले∘काल × । अपूर्ण । बेष्टनस०१७ ।

ग्रा०नेमिचन्द्र

विशेष -पूजाओ एव स्तीशी का मग्रह है।

 $\mathbf{E}$ ४६२. **गुटकासं**० । पत्रसं०२-६५। ग्रा०६ $\mathbf{x}$ ४ $^{\dagger}_{\mathbf{y}}$  इच्छा। भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले०काल  $\mathbf{x}$ । प्रपुर्या (बेष्टनस०१६।

विशेष---पुजा पाठ संप्रह है।

त्रिलो इसार

६४६३, गुटकासं०३ । पत्र स०१४८ । ग्रा०१०x ५ इचा। भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले०काल स०१८७७ । पूर्ण। बेष्ट्रकं०१६ ।

विशेष -- मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है---

श्रीपाल चरित्र भाषा		हिन्दी	-
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	
मविष्यदत्त चोपई	बहा रायसल्ल	हिन्दी	

**८४६४. गुटकासं**०४ । पत्र स० १६⊏ । झा० ६×४ <mark>है इला। भाषा---हिन्दी-संस्कृत।</mark> ले०काल × । झपूर्णावैष्ठन स०१६ ।

**६४६५. गुटकास० ५** । पत्र सं∘ १४६ । ग्रा॰ ७×५ इ.च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले॰ काल × । भपूर्ण । वेष्टन सं∘ २०।

विशेष-ग्रायुर्वेद, मत्र शास्त्र ग्रादि पाठों का संग्रह है।

£४६६, गुटकासं०६ । पत्रसं० १७६ । घा० ४,५ ४४ इ.च । साथा-सल्कृत हिन्दी। से०काल स० ४ । पूर्ण। बेष्टनसं०६२ ।

विशेष - प्रायुर्वेदिक नुस्यो का धच्छा सपह है।

**६४६७. गुटकास०७ ।** पत्रसं• १३६ । झा० ६×५ १ इ.च । भाषा-हिन्दी । ले∙काल × । पूर्णा विष्टनस०६४ ।

विशेष -- पूजा पाठ तथा स्तीत्रो एव पदी का सग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि • जैन पंचायती मन्दिर दुनी (टॉक)।

६४६ स. गुटका स० १ । पत्र स०१८ मा भाषा –सस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०१०६ ।

विशेष--- नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है।

१४६६. गुटकास०२ । पत्रस०७२ । घा० ५ $\times$ ४ दे इ.स. । भाषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्णे । बेष्टनस०१२६ ।

विशेष-प्रति जीर्ग है तथा लिपि विकृत है। मुख्य निम्न पाठ है।

१-धुचरित	परमानन्द	पत्र १-४ ।	र०काल १८०३ माह सुदी ६।
२-सिहनाभ चरित्र		<b>४</b> –६ ।	१७ पद्य हैं।
३ - जंबुक नामो		६-७ ।	७ पदा है ।
४-सुमाबित सबह		७-१५ ।	३५ पद्य हैं।
<b>५-सुमा</b> चित सब्रह		१६-२८ ।	१२५ पद्म है।
६-सिहासन बत्तीसी		२६-७२ ।	

£ ५००. युटका सं० ३ । पत्रसं० २०४ । घा० १४ ५ इचा। माचा−संस्कृत−हिन्दी। ले० काल पूर्ण। केष्टन सं० १३० ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठों का सग्रह है। कहीं २ हिन्दी के पद भी हैं।

**६५०१. गुटका सं० ४**। पत्र सं० ४४। घा. ७४४ इ.च । माषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल ४ **। पूर्ण** । वेष्टन सं० १३२ ।

विशेष-पूजा पाठ संबह है।

**६५०२. गुटका सं०५ ।** पत्रसं० ७-२६ । झा० ⊏्रै×६ इचा। भाषा-संस्कृत । ले∙काल ⋉ । ब्रपुर्सावेष्टन स०१३२ ।

विशेष-नत्यार्थं मत्र सहस्रताम स्तीत्र, धादि पाठो का सप्रह है।

६५०३, गुटकासं०६ । पत्रस०११५ । म्रा०७ ५ ४ डचा भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले∘काल ४ । पूर्वाविकृतस०१३४ ।

विशेष-- पूजा पाठ सम्रह है।

**६५०४. गुटका सं० ७ ।** पत्र स०६ च से १२५ । प्रा०६×४ इश्वा । माषा सम्कृत-हिन्दी। ले॰ काल× । प्रायमं । वेग्टन स०१३५ ।

विशेष—पूजा पाठ सम्रह हैं।

**६५०५. गुटकार्स० ⊏ ।** पत्रस० १६२ । ध्रा० ७ ४५ **६७। भाषा~स**स्हत-हिन्दी । ले० कस्त्र × । पर्सा । वेब्रन स० १३६ ।

विशेष - निषि विकृत हैं। पूजा पाठ सम्रह है।

**६५०६. गुटका सं० ६** । पत्रसं० ७१ । **बा०** ७ ४ ४ डचा। भाषा-हिन्दी~सम्झुन । ले०काल ५ । पूर्णुं । बेष्टन स**०** १३७ ।

विशेष-नामान्य पाठ हैं। पट्टी पहाडे भी हैं।

६५०७. ग्टकास० १० । पत्रस० ६६ । धा० ६ ८ ४ इथ्य । भाषा - संस्कृत-हिन्दी । लेल्बरल × । पूर्ण । बेष्ट्रम स० १३म ।

विशेष-सामान्य पाठी का संग्रह है।

**६५० मटका सं०११।** पत्र सं०२२ । ग्रा०११ $\times$ ५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल  $\times$ । श्रमुर्ख। वेटन म०१३६

**६५०६. ग्टकार्स० १२** । पत्र स० ६६ । घ्रा० ६४५ इ.च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । लेकाल 🗴 । पूर्ण । वेस्टन स० १४० ।

विशेष- निम्न पूजा पाठों का संग्रह है-

(१) अन्तामर स्तोत्र (२) ब्रकृतिम चैन्यालय पूजा (३) स्वयम् स्तोत्र (४) वीस तीर्णकर पूजा (४) तीस चौचीसी पूजा एव (६) सिद्ध पूजा (द्यातनशय कृत) ।

६ ४.१०. गृटकार्स**ः १३। पत्रस**ः १४४.। ग्रा०६ ४.६ इ.चा। भाषा-हिन्दी। ले∘काल स० १⊏०१। पूर्ण। बेष्टन स०१४१।

विशेष-साहिपुरा मे उम्मेदसिंह के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी।

(१) सुन्दर शृंगार	सुन्दरदास	पत्र १-५७।	हिन्दी
(२) विहारी सतसई	विहारीदास	४८-१२४ ।	हिन्दी
(३) कलियुग चरित्र	बाग्	135-251	
		र०काल सं० १६७४	

#### प्रारम्भ

पहल् शुमरि गुर नागपित को महासाय के पाय ।। आके शुक्रियत ही सर्व । पाप दूरि है आय ।। सबत मोबामें चोहोत्तरिया चेत दाद उशिष्यारें श्री यक सर्थों सानवाना, को तब कविना धनुसारि ।। सब समुभी शब के मनमाने शब को लगे मुहाई । मैं कवि बान नाम ते लागी आलय की शरणाई ।। स्राभ्त जांति मर्याया पाठक बान नाम जग जार्न । राव कियो राजांचिराज यो महानिय मनमाने ।। किन चरित्र जब सामित रैस्पों किन चरित्र तब की नो के तु को राजांचिराज यो महानिय मनमाने ।।

(४) कलि व्यवहार पश्चीसी	नन्दराम	पत्र १३०-१३४	हिन्दी
		२४, पदा हैं	
(५) पचेन्द्रिकाब्गौरा	- manual	पत्र १३४-३७	11
(६) राम कथा	रामानन्द	१३७-१ <b>५</b> ०	11
(७) पश्चिनी बग्वास		१४३ तक	11
(८) कविस	बुक्यवं बूदी।	१४५ तक	H
६५११, गटका <b>स</b> 1०	18 1 dates 438 1 atte	४ × ४   दे~व । भाषा-हिन्दी	। ले० काल

**६५११. गुटका ह**ाँ० **रे४ । पत्रस**० १३६ । ग्रा० ५ $\times$ ५ १५व । गापा-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन म० १४२ ।

#### विशेष निम्न पाठ है---१ सर्वेगा कुमृदचन्द वश म० ४ २ सोलह स्वप्न छप्पय विद्यासागर 11 8 ३. जिन जन्म महोत्सव षट् पद 11 11 23 ४. सप्तव्यसन 11 ५. दर्शनावकसर्वया 11 11 88 ६. विषापहार छुप्य 11 80 11 ७. भूपाल स्नोत्र खप्पय ।। २७ 11 वीस विरह्मान सर्वेया 11 38 11 ६. नेमिराजमती का रेखता विनोदीलाल 11 88 १० भन्ना ४२ पद्य हैं तानुसाह ११. प्रस्ताविक सठीया 30 × १२. छप्पय ४ पद्य हैं × १३. राजुल बारह मासा गंगकवि १३ पद्य हैं १४. महाराष्ट्र माथा द्वादश मासा चिमना १३ पदा हैं १४. राजुल बारह मासा २६ पदा हैं **बिनोटीबा**स

## प्राप्ति स्थान-दि० जैन खएडेलवाल मन्दिर-श्रावां

६५१२. **गुटका सं०१ ।** पत्र सं०७ ⊏ । म्रा०११×६ इ.चा। भाषा~संस्कृत~हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण। वेष्ट्रन स०३ ।

विशेष-- नित्य नैमित्तिक पूजाओं का सग्रह है।

£५१३. गुटका सं०२ । पत्र सं०६० । ग्रा०७ ४४ इचा। भाषा–सस्कृत–हिन्दीः विषय⊸ पुजास्तोत्र । ले० काल ४ । पर्सं। वेष्टनस०२ ।

विशेष-सामान्य पूजा गठ संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि० जैन बधेरवाल मन्दिर-प्रावा

**६५१४. गुटकासं० १। पत्र सं० १५६। ब्रा० ६२, ४४ इ.च**। भाषा-हिन्दी-सम्क्रत । ले०काल ४.। पूर्वा। वेस्टन सं०४।

**विशेष** — सःमान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

**६५१५. गुटकासं० २** । पत्रस० १७६ । ग्रा० ६×४२, इ.च. । भाषा-हिन्दी-संस्वत । लेब्काल × । पूर्णावेष्टन स०५ ।

विशेष -- प्लापाठ सग्रह है। बीच के कई पत्र स्वासी है।

**६५१६. गुटका सं०३ । पत्रम०७४ । धा०६**४७ इथा । मावा-मस्कृत-हिन्दी । ने०काल ४ । पूर्णे । बेष्टन म०६ ।

विशेष---पजापाठ सग्रह है।

६५१७, गुटकासं०४ । पत्रस० ६६ । प्रा०६×४१ इ.च.। आया-सस्तर-स्तिरी । विषय-पूत्रासग्रह।ले०काल x । पूर्णावेष्टनस०६।

## प्राप्त स्थान-दि॰ जैन मन्दिर, राजमहल (टोंक)

६५१६८. **गुटकासं० १** । पत्रसं० ७६ । घा० ५ x ४ इ.च.। भाषा-संस्कृत–हिन्दी। ते०काल × । ब्रपूर्ण। वेष्टनस० १७४ ।

६५१६. युटकासं० २ । पत्र सं११ । मा० ५×४ इ.चा । मावा–संस्कृत, हिन्दी। ले०काल × । पूर्णावेष्टन सं०१७५ ।

विशेष-सामान्य पाठों का संबह है।

६५२०. गुटका सं० ६। पत्र सं० ७५। ग्रा० ६३ ४६ इञ्च। मावा—हिस्दी। ले० काल सं० १६६९। पूर्ण। बेण्टन सं० १७६।

विशेष--वीबीस तीर्थंकर पूजा गुटकाकार में है। पत्र एक दूसरे के जिपके हुए है।

६५२१. गुटका सं० ४। पत्रसं० ८४। ग्रा० ६ ४ ५ इञ्च । आषा-संस्कृत, हिन्दी। ने० काल ४। पूर्ण। बेहन सं० १७७।

**६५२२. गुटका सं० ५** । पत्र सं० ५६–१२२ । घा० ७×६ इल्ला। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णा। वेष्टन स० १७⊏ ।

विशेष-- मस्यतः निम्न पाठों का सम्रह है---

भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्यसूत्र, सामायिक पाठ श्रादि ।

**६५२३. गुटकास॰ ६ ।** पत्र सं॰ २८ । क्रा॰ ६imes५imesदश्च स्था भाषा—सल्कृत, हिन्दी। क्षे॰कासimes। पूर्णावेष्टन स॰ १७६।

विशेष--- निम्न रचनाश्रो का सग्रह है---

प-बस्तोत्र		संस्कृत
सहस्रनाम स्तोत्र	भाषाधर	,,
तत्वार्थम्त्र	उमास्वामी	,,
विषापहार स्तोत्र भाषा	धचलकीर्ति	हिन्दी
चौबीस ठागा गाथा		प्राकृत
शिखर विलास	केशरीसिह	हिन्दी
पचमगल	रूपचन्द	,
पूजा सग्रह	_	,,
बाईस परीषद बर्गन		हिन्दी
नेमिताथ स्तोत्र	-	सम्कृत
भैरव स्तोत्र	शोभाचन्द	हि-दी

६५२४. गुटका सं ७ । पत्र म० ३-६४ । ग्रा० ७४६ दञ्च । माणा—हिन्दी । ले०काल х । ग्रपूर्ण । बेहन म०१६० ।

विशेष---मन्यत निम्न पाठी का सग्रह है---

चौदामतीशैकर स्तृति	देवाब्रह्म	हिन्दी
धठारह नाता कथा	ADD. MAY	n
पद संग्रह		,,
खण्डेलवासी की उत्पत्ति		,,
चौरासी गोत्र वर्णन		*,
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	<b>ब</b> ० रायमल्ल	,,

**६५२५. गुटका सं० ८ ।** पत्र स॰ १२ । ग्रा० ६imes १ $rac{1}{2}$  इश्व । भाषा-संस्कृत । ले०काल imes । पूर्ण । बेण्टन सं० १८१ ।

विशेष--- शेसठ शालाका पुरुष वर्णन है।

**६५२६. गुटका सं० ६** । पत्र सं० २५६ । झा० ७ 🗙 ६ इञ्च । भाषा−संस्कृत, हिन्दी । ले०काल ※ । पूर्ण । बेहन सं० १⊂२ ।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है---

सत ब्रष्टोत्तरी कवित्त	भैया भगवतीदास	. हिन्दी
द्रव्य सब्रह भाषा	**	"
चेतक कर्मचरित्र	13	,,
ग्रक्षर बलीसी	19	19
बहा विलास के श्रम्य पाठ	**	•

वैद्य मनोत्सव	तयनसुख	हिन्दी
पूजा एव स्तोत्र		संस्कृत हिन्दी
तत्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	सस्कृत
भायुर्वेद के नुस्त्रे		हिन्दी

**६५२७. गुटका सं० १०।** पत्र स० ६४ । ग्रा• ५imes४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १८३ ।

विशेष—सामान्य पाठो का सब्रह है। तत्वार्थ सूत्र, भक्तामर स्तोत्र ब्रादि भी दिये हुए है।

**६५२ म. गुटकासं०११ ।** पत्र स०१४२ । ग्रा०६ × ४६ चा भाषा हिन्दीसस्कृत । ले० काल × । पूर्णा विकृत स०१ म.४

विशेष --गुटके मे ३८ पाटो का मग्रेत है जिनमें स्नीत्र पूजाए तावार्थमूत्र ग्रादि सभी मग्रतीत है।

**६५२६. गुटकास० १२।** पत्र स० २४-७२। घा० १२×४ इन्थाभाषा-सस्कृत हिन्दी। ले•काल × । घनुर्सावेष्टन सं० १८५।

विशेष -- पाशा केवली एव प्रस्ताविक ग्लोक ग्रादि का सग्रह है।

**६५३०. गुटका सं०१३** । पत्रस•६-१२ ६३ से १०० । घा०६ $\times$ ५ उथा । मापा- $\mathbb{R}^{n}$ ी निकास  $\times$  । घपूर्ण । बेष्टन सं०१८६ ।

विशेष-प्रायुर्वेद नुम्यो का सप्रह है।

६ ४ द**१ मुटका सं०१४ ।** पत्र स०२ - ६० । स्रा०६ ४ ४ इ.चा। भाषा-सस्कृत । ले० काल ४ । स्रपूर्ता। बेप्टन स०१६७ ।

विशेष--पत्रस॰ २-३० तक पचपरमेष्ठी पूजा तथा आयुर्वेदिक नुस्से दिये हुए हैं।

**६५३२. गुटका सं० १५ ।** पत्र सं० १६१ । ग्रा० ६imes६ ६ इंच । भाषा-मस्कृत-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्ण । बैष्टन म०१८८ ।

विशेष -- निम्न पाठी का मग्रह है---

पंच स्तोत्र		संस्कृत
तत्वार्थं सुत्र	उमास्वा <b>म</b>	
इष्टोपदेश भाषा		हिन्दी
सहस्रनाम	जिनसेन(चार्य	संस्कृत
ग्रालाप पद्धति	देवसेन	सस्कृत
श्राप्तर बाबनी	कबीरदाम	हिन्दी

मक्षर बावनी का म।दि माग निम्न प्रकार है —

### प्रारम्म---

बावन प्रथर लोक त्रयी सब कुछ इनही माहि। भीर क्षरैंगे छए। छिए। सों मक्षर इनमें नाहि।।१।। को करु प्रकार कोरत धावा, जह प्रवोल तह मन न लगावा। वेल खले न काई।।२।। तुरक नरीकम जोइ के, जल वो है तल लगे न काई।।२।। तुरक नरीकम जोइ के, हिन्दू वेद पुरागा। मन समक्ष्माय कारणे क्यों में कछ येक जान ।।३।। ऊकार खादि में जाना, लिलकों मेरे नाहि न माना। ऊकार जम है वोई, तिस लिल मेरना न होई।।थ।। कका किरगा कवल में धावा, ससि विकास तहा सपुर नावा। प्रजे नहा सुमुम रस पावा जकह कहांगे नहि जानिय माना।।४।।

### मध्य माग

ममा मन रयो काम है मन मनै मिधि होइ। मन ही मनस्यो कही कवीर मनस्यो मिल्यान कोई।।३६॥

#### ग्रन्तिम साग---

वावन शक्षर तेरि मानि एक धक्षर सक्या न जानि ॥ " सबद कबीरा कही बूभी जोड़ कहा मन रहें ॥४१॥

इति बावनि ग्यानसपृर्गा।

**६५३३, गुटकास० १६६** पत्रस० ३-६३ । प्रा०२ ,४ उखा भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स०१६८६ **। प्रमुखं । तेष्टनस० २**२६ ।

विशेष---माधारम् पूजा पाट सग्रह एव देवाब्रह्म कृत मान वह का भगवा है।

**६५३४. गुटकासं०१७ । पत्रस०**१४ । स्ना०६×४ दश्वा। भाषा-हिन्दी⊸गस्कृत । ले**०का**ल म०× । कपूर्णः । वेष्ट्रनस०२२२ ।

**विशेष** — पूजा पाठ संप्रह है।

**६५३५. गुटका सं०१६ ।** पत्र सं०१६ । घा०६×७ दखा भाषा–सम्कृत । ले०काल स० १८८७ । पूर्णे, वे**ष्टन सं०**२३० ।

विशेष--- मुल्यतः निम्न पाठों का सग्रह है ---

सप्पवि पूजा श्री भूषण सस्कृत धनन्त वन पूजा गुभवन्द्र ग गणपर वनव पूजा — , तत्त्वार्ष मूज उमास्वामि ,

**६५३६. मुटका सं०१६** । पत्र सं०१६ । आ०११ $\times$ ५ दश्या । भाषा-सस्कृत । ले**०का**ल  $\times$ । भूपूर्ण । बेष्टनसं०२३१ ।

विशेष-- नित्य नैमित्तिक पूजाओं एवं पाठों का सग्रह है।

पद्मनदिस्तृति

६ ४ ३ ७. गुटकासं० २०। पत्रसं० ४४ । घा० ११ ४४ इ.च. । भाषा⊸संस्कृत-हिन्दी । से •कास ४ । घपुर्यो । बेकनसं० २३२ ।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठो का सम्रह है--

चतुर्विशति जिन-षट्पद बध स्तोत्र

घमंकीति

हिन्दी संस्कृत

६५३ स. गुटकासं०२३ । पत्रस० ३०। घा०५ ४४ ६ खः। भाषा –हिन्दी। के∙काल ४ । घपुर्लं। वेबनसं०२३४ ।

विशेष-ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी बातों का विवरए। है। भडली विचार भी दिया है।

६५३६. गुटका सः ० २२ । पत्रसः १६ । म्रा० १० $imes^2$  इन्छ । भाषा –हिन्दी-सस्कृत । से॰काल imes । पूर्ण । बेहन सं० २३४ ।

विशेख—दोहामतक परमारम प्रकाश (योगीन्दुदेव) द्रव्य संबह भाषा तथा धन्य पाठो का सग्रह है।

६५४०. गुटकासां० २३ । पत्रस० १५ । घा० ११×५ ६२४ । भाषा हिन्दी–संस्कृत । क्रे-कालसं०१८६० वंशाल बुटी१४ । पूर्णं। वेष्टनसं०२३६ ।

विशेष--ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है ।

**६५४१. गुटकास**ं० २४ । पत्रस० ५७। ग्रा० ५४, इश्वाः माया–सस्कृत–हिन्दी। ले∘काल ४ । ग्रपूर्णः। वेष्टनस०२४४।

**६५४२. गुटका सं०२५** । पत्रसं०१६० । ग्रा०१४imes६ इ.स. । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्ण । बेहन सं०२५५ ।

विशेष — ६६ पाठों का सम्रह है जिसमे पूजाएं स्तोत्र नित्यपाठ ग्रादि सभी हैं।

प्राप्त स्थान--दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ, टोडारापसिह ।

६५४३ गुटकासं० १ । पत्रस०११३ । ग्रा०७४४ इ.चा। माद्या−हिन्दी–संस्कृत । ले∙कास स०१६४१ । पूर्णा वेष्टनसं०१२२ र ।

विशेष---पूजा पाठ सग्रह है।

६५४४४. गुटकासं० २ । पत्रसं० १३ । घा० ६×५ ६ श्वा। भाषा−हिन्दी-सस्कृत । ले∙काल × । पूर्णावेष्टनसं० १२३ र ।

विशेष-पूजा स्तोत्र एव हिन्दी पद संग्रह है।

६५४ ४. गुटका सं०३ । पत्रस० । घा० ७ $\frac{1}{2} \times 9\frac{3}{2}$  इन्छ । आया-हिन्दी-संस्कृत । से०कास  $\times$  । पूर्णः वेष्टन सं०१४ र ।

६५४६. गुटका सं० ४ । पत्रसं०४४-१५० । घा० ६imes४६ ६ थ । मापा-हिन्दी-संस्कृत । सैं०काल imes । घपूर्ण । बेहनसं० १२४ ।

विशेष--पूजमादि सतोत्र है।

६४४७. गुटकास० ४. । पत्रसं∘ १४६ । झा॰ ६४४ इ.च । सामा-हिन्दी सस्कृत । ले∘कास ४. । बपूर्सं। वेष्टनस० १२६ र ।

विशेष--पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६५४ ⊏. गुटकास०६ । पत्रसं०१२७ । ग्रा० ⊏ ४६ इ.च.। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । के∙काल ४. । अपूर्णा जीर्गा वेष्टनसं०१२७ र ।

६५४६. गृटका सं० ७ । पत्रस० १७५ । ग्रा० ८४६ इ.च. । भाषा−हिन्दी~संस्कृत । ने•काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० १२८ र ।

१५५०. सुटकासं० द । पत्रस० ५-७५ । ग्रा० ७imes ४ हे इन्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । के०काल imes । पूर्ण । बेष्टनस०१२६ र ।

विशेष—७२ पद्य से ६६४ पद्य तक वृंद सतमई है।

६५.४१. गुटकासं० ६ । पत्रसं० ११७ । घ्रा० ६४४ इ.चा । भाषा–हिन्दीपद्याक्षे∙काल ४ । पूर्या । बेष्टन सं० १३० र ।

विशेष-रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

६५५२. गुटकासं०१० । पत्रस० ⊏-६१। ग्रा०४्रै×४ इचा। भाषा सस्कृत-हिन्दी। के∘काल ×। पूर्णावेष्टनस०१६०।

**विशेष** — हिन्दी में पद संग्रह भी हैं।

६५५३. गुटकासं० ११ । पत्रस० २६ । ग्रा० ५×४ इचा। भाषा-हिन्दी ।पद्य ले∘काल ×। पूर्णे । बेहनस० १८६६ ।

**६५५४. गुटका सं० १२** । पत्रस० ८–६१ । घ्रा४ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ दश्व । माया-सस्कृत । **ले॰काल** $\times$ । घपूर्यः । बेष्टनस० १६१ ।

विशेष -- भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र, पद्मावती पूजा वर्गेग्ह का सग्रह है।

**६५५५. गुटका स० १३ ।** पत्रस० ३३-१५१ । ग्रा० ४३-४४३ इथा । भाषा-सस्कृत । के•काल × । घपूर्णं । देष्ट्रनसं० १६४ × । १. पूरुष जातक ३३ से ३८ २. नारिपत्रिका ३६ से ४१ ३. भुवन दीपक ४२ से ६१ ४. जयपराजय ६२ से ६६ ५. षट पंचाशिका ६७ से ७३ ६. साठि संवत्सरी ७४ से १२३ ७. कूपचक १२४ से १३४

१४१ मे १४६ तक पत्र नहीं है।

६५५६. गुटकासं० १४ । पत्रसं० १०–५२ । द्या० ६×६ डचा । भाषा⊸संस्कृत-हिन्दी । कै•काल × । क्रपूर्ण । बेष्टन सं०२०५ ।

विशेष-पूजा तथा स्तोत्र संग्रह है।

**६५५**८ **गुटका सं० १५** । पत्र स० ११२ । ग्रा० ५imes४ इन्छ । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । से॰काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० २०६ ।

विशेष--तत्वार्थ मूत्र, भक्तामर स्तीत्र एव पूजा पाठ का मग्रह है।

**६५५६. गुटका सं० १६।** पत्र सं० ८८ । ब्रा० ४ $\frac{1}{2} \times ४$ हे इश्वा । भाषा-सस्कृत । ले०काल स० १५६५ माह सुदी ११ । पूर्णे । बेष्टन स० २०७ ।

१-तीस चौबीसी पूजा---१-६८

२-त्रिकाल चौबीसी पूजा---६८-८८ तक

६५६०, पुटका सं० १७ । पत्र स० १० । ग्रा० ६imes५ ६%। भाषा–सस्कृत । ले०काल स० १०६२ । पूर्णा। बेस्टन स० २०६ ।

विशेष---मक्तामर स्तोत्र है।

**६५६१. नुटकास० १⊏** । पत्र म० ११४ । ग्रा० ७×४ ्रैडश्व । भाषा−सम्बन्न । ले० काल र । बुर्मा वेष्टन स० २०६ ।

विशेष---पत्र १--२१ तक पूजा पाठ तथा पत्र २२--११४ तक कथाये है।

**६५६२. गुटका एं० १६ ।** पत्र स०४८ । ग्रा० ७×५ इ.च. । सापा-संस्कृत-हिन्दी । ् र०काल × । ले०काल × । पूर्णावेष्टन स०२१० ।

**९५६३. गुटका सं० २०।** पत्रम० १०७। ग्रा० ६१×५ इचा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। लेक्काल ६ । पूर्णा वेष्ट्रन स० २११।

६५६४. गुटकासं० २१ । पत्रस० १६–६६ । झा० ७×४ ॄँ इङ्च । मापा–हिन्दी गध । ले०काल ⋉ ।पूर्णा।वेस्टन स∙ २१२ ।

विशेष--पदो का संग्रह है।

**६५६५. गुटकासं०२२** । पत्रस० १४–१४६ । द्या० ६x४. ॄं इश्वर । भाषा-संस्कृत-हिली। ले**०काल ⋉ । पूर्ण । बेहन सं०२१३** ।

	पत्र संख्या	
१पूजा पाठ स्तोत्र	१-११२	हिन्दी संस्कृत
१श्रील बत्तीसी-ग्रकमल	११२-१२१	हिन्दी
ले० काल म०१६३	६ पौष सुदी १४ ।	
३हसनखा की कथा	858-838	<b>ਵਿ</b> ਜ਼ਤੀ

६ ४६६. गुटका सं०२३ । पत्र स०१४ । ब्रा॰६imes४ ६ इ.च.। भाषा सस्कृत । ले०कालimes । पूर्णे । बेष्टन स०२१४ ।

विशेष---पुजा पाठ संग्रह है ।

# प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाय टोडारायसिंह

**१५६७. गुटका स०१।** पत्र म०५०। ग्रा० म×५३ इन्द्रा भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्या । बेस्टन म०६।

विशेष---नित्मनैमित्तिक पजाओं का सग्रह है।

**६५६ म. गुटका सं० २ । पत्रसं०**२२१ । ग्रा*ग* १२ x = डश्व । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले• काल × । पर्गा । बेप्रन स०१० ।

१-देव पूजा  $\times$  । २-णास्त्र पूजा — पूजपरास । ३-णास्त्र पूजा — पानतराय । ४-सीलह कारण पूजा  $\times$  । १-नानद्र कारण पूजा (शक्त) । ६-दललदागु पूजा - णानतराय । ७-सन्य पूजा — णानतराय । ६-मिद्र क्षेत्र पूजा । १०-तलार्थ मूज । ११-स्नोग । १२-जोगीरासा- जिनदाम । १३-परामचं जक्तो । १४-अध्यास पंदी-जारसीयास । ११-परामचं दोहाशनक-रूपपेद । १६-बारह सन्ये आ-डालूराम । १७ वर्षाण कं खाननराय । ११-जेन सतक-भूपरदास । १६-जारह सन्ये आ-वानराय । २०-पच पर्यसच्ये गूल वर्णन-डालूराम २०काल १६६५ । २१-जान सन्याननराय । २०-पच पर्यसच्ये गूल वर्णन-डालूराम २०काल १६६५ । २१-जान सन्याननराय ('०काल १७५६ साह मुद्री ७) २२-पद सप्रह । २२-जलिया सम्रह । २४-म्यू सुर्यो । २४-मृयु सुर्योच्या । २५-मृयु सुर्योच्या । २५-स्वीप्रदास । १६ ।

**६५६६ गुटका सं० ३ ।** पत्र स.० २३२ । ग्रा० ६imes५ इश्वर । मापा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल imes । पूर्ण । बेष्टन स.० ११ ।

१--- चर्चममाधान -- भूघर निश्रः।

२---भकामर स्तोत्र---मानतु गाचार्य ।

३ -- कल्याग् मन्दिर स्तोत्र ।

६५७०. गुटकास० ४ । पत्रस० १८६ । ग्रा० ५२ ४ ६ खा भाषा हिन्दी-सस्कृत । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टन म० १२ ।

विशेष —सामान्य पूजा पाठ सम्रह है।

**६५७१ युटका सं० ५** । पत्र स०  $\times$  । ब्रा॰ ५ $\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰ काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २१ ।

विशेष-पद संग्रह एवं घनञ्जय कृत नाममाला है।

**६५७२. गुटका स०६।** पत्र सं∘ ६४। ग्रा० ७४५ इ.च.। माचा हिन्दी। ले० काल सं० १⊂६६ सावरा बदी १०। पूर्या। वेष्टन स०२२।

💂 १—मगाविलास—× । २७३ पद्य है।

विशेष—चि० लक्षमीचन्द के पठनार्थ व्यास रामबक्स ने रावजी जीवए। सिह डिगावत के राज्य में दूर्णी प्राम में लिखा या। ले०काल सं० १८६६ सावए। बुदी १०।

२--दोहे--तुलसीदास । ६८ दोहे हैं।

३---कुण्डलियां---गिरधरराय । ४१ कुण्डलिया हैं।

४—विभिन्न छन्द—× । जिसमे बरवै छद-४०, झडिल्ल छद-२०, पहेलिया-४० एवं मुकुरी छंद २६ हैं।

५--- हिय हुलास ग्रथ----× । ७१ छद हैं।

**६५७३ गुटका सं∘ ७ ।** पत्रस∘ ⊏ । घा० ⊏ ४६} इश्व । साणा−हिन्दी गद्य । र**०काल** × । ले०काल × । पूर्णा वेष्टन म० ४० ।

विशेष—प्यावनी मत्र, खण्डेलवाल जाति की उत्पत्ति तथा वंशावली, तीर्घंकारो के माता गिना के नाम, तीर्धंकर की माना नया चन्द्रगुप्त के स्वध्न है।

**६५७४. गुटका सं०८ ।** पत्रस० २६४ । द्या०८×७ ॄँ इञ्च । भाषा हिन्दी–संस्कृत । ले•काल × । पूर्ण । वेष्टनसं∙ ७३ ।

विशेष-चौबीस ठाएग चर्चा एव स्तोत्र पाठ पूजा आदि हैं।

६५७५. गुटकासं०६ । पत्रसं०६ ४ । प्रा०६ × ७ हेइञ्च। भाषा−हिन्दी। ले∘ काल म० १८६७ । पूर्वावेषुन स०७४ ।

१-ग्रादित्यवार कथा---भाऊ कवि

२-चन्द्रगुप्त के मोलह स्वप्न

३ पद सग्रह--देवाब्रह्म

४ खण्डेलवालो के ८४ गोत्र

५ - साम बहुका भःगडा--- देव। ब्रह्म

**६५७६. गुटकासं० १०** । पत्र स० ११-११६ । घा० द×६ इश्वा। भाषा-ऋिदी पद्य। ने०काल स० १८४६ मात्र मुदी ५ । **घपूर्ण**ा वे**ष्टन म०** ७६ ।

विशेष---बनारमी विलास है।

६५७७. गुटकासं० ११ । पत्र स०४४ । धा०७४४ है इचा। भाषा-हिन्दी पद्या ने०काल ४. । पूर्णाबेष्टन स०७६ ।

विशेष-पद सग्रह है।

ह्×ू७८८. गुटकास०१२ ।पत्रसं०३२ ।म्रा०४ ४४ इला। भाषा-हिन्दीपद्याते० काल ४ । पूर्यावेष्टनसं०८०।

विशेष -- भक्तामर स्तोत्र एव कल्याए। मंदिर स्तोत्र हिन्दी मे है।

६५/७६. गुटकासं० १३ । पत्रस० १६ – ४६ । घा० ५२/, ४४, दवा । भाषा हिन्दो गर्या ले•कालस० × । प्रपूर्ण। वेष्टनस० ≂१ ।

विशेष-सामान्य पाठी का संग्रह है।

# दि॰ जैन मन्दिर दवलाना (बुंदी)

६५ क. गृटका सं० १ । पत्रम०२५० । घा० ७ $\frac{1}{2}$  ×६ $\frac{1}{2}$  इश्वः । आया-हिन्दी । से० काल x । प्रपूर्ण । बेहन सं० २७६ ।

विशेष-प्रति जीर्गं घीर्णं है तथा बहुत से पत्र नहीं हैं। मुख्यतः पूजा पाठों का सम्रह है।

**६५८६ गुटका सं०२** । प्यस०२०६ । झा० ६४४ इ.च. । माषा–हिन्दी । ले०काल ४ । झपुर्गावेष्टन सं०३७७ ।

विशेष — गुरास्थान चर्चा एव भ्राय चर्चाम्रो का सम्रह है।

**६५८२. गुटका सं० ३**। पत्रस० ४-१३८ । ध्रा० ६ $\frac{9}{4} \times \xi^{\frac{9}{4}}$  इख ! माषा- हिन्दी । र० काल सं० १६७८ । ले०काल  $\times$  । ध्रपुर्ता । बेष्टन स० ३७८ ।

विशेष - मतिसागर कृत शालिभद्र चीपई है जिसका रचना काल स० १६७८ है।

**६ ४.⊏३. गुटकासं० ४ । पत्र स०**२८ । श्रा०६४ ५ इचा। भाषा⊷हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्याः वेष्टन म० ३७६ ।

विशेष--धनपतराय का चर्चा शतक है।

**६५८४. गुटकासं०५** । पत्रस०११५ । म्रा०६×६¦ इ.च.। भाषा–सरकृतः। ले० काल ×।पूर्णा । बेष्टनस०३८० ।

विशेष -- निम्न पाठों का सग्रह है।

समवशरम् पूजा रूपचन्द हिन्दी समवशरम् रचना —

ह्म्प्रन्थः, गटकासं०६। पत्र स०१७४। स्रा०४४३ है द्वा । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । क्षेत्रकालस०१७६२। पूर्णा विष्टुत स०३६१।

विशेष-पूजा पाठों के अतिरिक्त मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है-

र्जन रासो — हिन्दी सुदर्जन राम श्रष्टा रायमल्ल , जोगीरासो जिनदास ,,

**१५८६. गृटकासं०७ । प**त्रस० १५० । घा० ८१ ४४ इ.चा मावा—सस्कृत, हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा। वेप्टन स० ३-२ ।

विशेष--प्रति जीर्ग है ।

रामविनोद एव धन्य ब्रायुर्वेद नुस्खो का संग्रह है।

£ ५६ च. गृहका संब्दापत्र संब्दापत्र संब्दापत्र स्थापत्र प्रस्ति । भाषा – हिन्दी, संस्कृत । ले•काल सब्दे ५६३ । पृर्मा। बेबुन संब्दे देव रे।

विशेष - मुल्यतः निम्न रचनाम्रो का सम्रह है-

श्रीपाल रास	बहा रायमल्ल	हिन्दी	The same of the sa
पंचगति की बेलि	हर्षकीति	,,	(ले∙काल स० १७६३)
एकी भाव स्तोत्र भाषा	हीरानन्द	н	(ने॰काल स० १७६४)
ग्राषाढभूति मुनि का चोढाल्या	कनकसोम	,, (र०का	ल म० १६३ ⊏ । शे•काल सं० १७६६ )

६५८८. गुटका सं ०६। पत्रस०१६०। ग्रा० ८३×६ इचा भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७१० ब्रापाड सुदी १५ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३८४ ।

विशेष--- निम्न रचनाओं का सम्रह है---

समयसार नाटक बनारसीदास

हिन्दी

इतिहासमार समुच्चय

(ले०काल सं०१७१०)

(ले० काल म०१७० = ग्रवाड मुदी १५)

६५८६. गृटका सं० १०। पत्र सं०४-५४ । ग्रा० ८४५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले • काल 🗴 । अपूर्ण । वेष्टन स० ३६५ ।

विशेष--पूजा पाठ सप्रह है।

६५६०. गृटका सं० ११। पत्रस० ६८। ग्रा० ६ ¦ ४६ ¦ दञ्च । भाषा −हिन्दी, सश्कृत । ले० काल 📐 । श्रपूर्णं। वेष्टनस० ३८६ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

**६५६१. ग्टकासं०१२ ।** पत्रस० १७ । ग्रा०५१ॄँ×७१ृँ इचा। **माषा**-प्राकृत । वे०काल × । पूर्णा वेष्टनसं∙ ३८७ ।

विशेष-- प्रतिक्रमस्य पाठ है ।

१**५६२. गटका स० १३** । पत्रस० ५-२४८ । ग्रा० ५३ ×४३ इन्त । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले•काल × । श्रपूर्णा विष्टुन स०३८८ ।

विशेष-पूजा स्तोत्र एव भादित्यवार कथा भादि का संग्रह है।

**६५६३ गुटका सं० १४** । पत्रस० १२८ । मा० ८ ¦×४३ इश्व । भाषा-हिन्दी, सस्कृत । ले • काल स॰ १७५३ आसोज बदी १४ । पूर्ण। बेष्टन स॰ ३८६ ।

विशेष--मृन्य पाठों का मग्नह निम्न प्रकार ने है--

नेमिनाथ स्तवन		हिन्दी	१४ पद्य
		(र०काल स०१७२४)	)
मुभद्र कथा	[मधो	हिन्दी	२३ पद्य
श्रतिचार वर्णन			
ग्रन्थ विवेक चितवस्ती	मुन्दरदास	n	<b>४६ पद्य</b>

## ग्रन्तिम पद्य निम्न प्रकार है-

सकल सिरोमनि है नर देही नारायन को निज घर येही जामहि पद्ये देव मुरारी भइया मनुषच बूक सुम्हारी ।।११।। चेतसि कैसो माई चेतह जिनि उहका वैराम दुहाई जु पुकारी

भइया मनुष जु बूभ तुम्हारी ।।५६॥

विवेक चितामरिंग मुन्दरदास हिन्दी **ग्रात्मणि**च्यावरिंग मोहनद:स शीलबावनी मालकवि कृष्ण बलिभद्र सिज्भाय विजयदेव सूरि शीलनागम ,,

इनके भ्रतिरिक्त भ्रन्य पाठो का सग्रह भी है।

**६५६४. गुटका सं० १५** । पत्रस० ३०६ । ग्रा० ६ ४ ५ इश्व । भाषा-हिन्दी । ले•काल ४ । पूर्ग । वेष्ट्रन स० ३६० ।

विशेष-मृत्यत निम्न रचनायो का सग्रह है-

प्रद्यम्न चरित कवि सधार

हिन्दी भ्रपूर्ग विशेष—स्दर्यस्य है। प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं है।

कर्मविपाक बनारसीदाम हनुमत कथा व० रायमल्ल जम्बुस्वामी कथा पाडे जिनदास श्रीपाल राम ब ॰ रायमस्ल

**६५६५. गटका स०१६।** ।पत्रम०१७६। ग्रा०६×५३ उञ्च । भाषा-हिन्दी, सस्क्रत । ले० काल × । पर्गा । वेष्टन सं० ३६१ ।

विशेष-पुजा पाठ संग्रह है।

**६५६६. ग्टका सं०१७ ।** पत्र स० ७४ । ग्रा० ७३ ४४३ इल्ब । भाषा-सस्कृत । ले० काल × । पूर्णावेष्ट्रनसं• ३६२ ।

विशेष-सामान्य पाठी का संग्रह है।

६४६७. गृटका सं० १८। पत्रस० १२०। ग्रा० ६×७ इच । मापा-हिन्दी । ले•काल ×। पूर्णे। बेष्टनस० ३१३।

विशेष-सामान्य पाठी का सग्रह है।

**६५६८. गृटका सं० १६।** पत्रसं० १०१। ग्रा० ६×७ इचा। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन सं० ३६४ ।

विशेष - निम्न रचनाग्रों का सग्रह है-

भाषा भूषरा टीका नारायगदास

(र०काल स० १८०७)

श्रलकार सर्वया कुथखाजी

(नरवर मे लिखा गया)

हिस्दी

**६५६६. गुटकासं**०२० । पत्रसं० द१ । ग्रा० ६×४ <sup>ह</sup> इ.च. । भावा–हिन्दी-संस्कृत । ले∙कालस०१८ ७६ ।पूर्णा बेष्टन स० ३६४ ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

ह६००. गुटकासं० २१ । पत्रस॰ ३२१ । घा० ४ × ६ इचा। माया-हिन्दी । से∙काल × । पूर्णं। बेहन सं० ३१६ ।

विशेष -- निम्न रचनाग्रो का सग्रह है--

श्रीपालरास इ.० रायमल्ल हिन्दी पद्य (१८१ से २५०)

भ्रन्य पाठो का भी समझ है । ६६०१. गुटका सं० २२ । पत्र स० १६० । घा० ४×५ इ.च.। भाषा-हिन्दी, सल्कृत । ले०काल ४ ∤ पूर्णा वेष्टन स० ३६७ ।

विशेष--निम्न रचनाम्रो का संग्रह है--

हितोपदेश दोहा हेमराज हिन्दी — (२०काल स०१७२४)

इसके अतिरिक्त स्तोत्र एव पूजा पाठ सग्रह है।

**६६०२. गुटकास०२३ ।** पत्र स०७४ । झा०७ $\frac{1}{2}$  ×६ $\frac{1}{2}$  इ.च.। मापा — सस्कृत । से०काल  $\times$  । पूर्णः वेष्ट्रन सं०३६६ ।

विशेष —शब्दरूप समास एव कृदन्त के उदाहरण दिये गये हैं।

६६०**३. गुटका स०२४** । पत्रस० ६⊏ । घा० ७ ४ १ इ.ख.। भाषा-संस्कृत । ले० काल ४ । अपूर्णा वेष्टन स०३६६ ।

विशेष --सामान्य पूजा पाठ सम्रह है।

६६०४. गुटकासं०२४. । पत्रस०७० । झा०६४७ इ.च.। भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले∙काल४। पूर्णा वेष्टनस०४०० ।

विशेष-मृत्यतः निम्न बायुर्वेदिक ग्रन्थो का सग्रह है -

राम विनोद प० पद्मरग हिन्दी

(ब्रिय्य रामचन्द्र) योगाँचनामिंग हर्षकीर्नि संस्कृत —

अन्य आयुर्वेदिक रचनाएं भी हैं।

६६०**५. गुटका सं० २**६ । पत्रसं० १२६ । ग्रा० ५३ॄ × ४३ॄ इश्वर । मावा—संस्कृत-हिन्दी । **ले∘काल** × । पूर्ण । वेष्टन स०,४०१ ।

विशेष - सामान्य पूजा पाठो का संग्रह है।

६६०६. **गुटका स०२७ ।** पत्र सं०६० । घा० १३,४४३ इ.चाः म्रामा−हिन्दी । ले∘काल × । पूर्णः । वेष्टन स०४०२ ।

विशेष--निम्न रचनाओं का संग्रह है--

सर्वया

रराकपुर ग्रादिनाथ स्तवन		हिन्दी
रतनसिंहजीरी बात	_	n
६६०७. गुटका सं० २८	। पत्रस ० ६६ । घा० ५×	४ इ.च.। भाषा-हिन्दी – संस्कृत । ले० काल
🗙 । झपूर्णं । वेब्टनस० ४०३ ।		
विशेषविभिन्न कवियो व	के पदो ए पाठो का संग्रह है	1
६६०८. गुटका सं० २६	। पत्रस० २६ । भा० ७३×	७ <sub>दे</sub> इञ्चाभाषा-सस्कृताले ∙काल ×।
पूर्णं । वेष्टन स०४०४।		
<b>विशेष</b> सामन्य पूजा पाठ	संग्रह है।	
६६०६. गुटका स० ३०	। पत्रसं० ६४ । झा० ६×	४ <sub>१</sub> इ <b>-ख। माषा</b> −प्राकृत संस्कृत । ले <b>०काल</b>
🗙 । पूर्गाविष्टन सं०४०५ ।		
<b>विशेष</b> निम्न रचनाग्रो क	ग सग्रह है—	
बसुघारा स्तोत्र	worm	संस्कृत
बुद्ध सप्तिति यत्र		p
महालक्ष्मी स्तोत्र		n
६६१०. गटका म० ३१	। पत्रसं० ३४ । ग्रा॰ ५	🗶 ४ इञ्च । भाषा — संस्कृत । ले० काल
🗴 । पूर्णः । बेष्टन स० ४०६ ।		
विशेष—म्वामी वाचन पार	ठ है ।	
६६११. गुटकासं० ३२	। पत्रस॰ ६३ । ग्रा॰ ४३×	(३६ इञ्च । भाषा-सम्कृत । ले०काल स•
१८३६ द्यापाढ मुदी १४ । पूर्णा । बेष्ट-	नसं∘ ४०७।	
<b>विशेष</b> —विष्णुमहस्रनाम ए	व भादित्यहृदय स्तोत्र है।	
६६१२. गुटकासं० ३३	। पत्रस० १७ । झा० ६>	(४ इ~च । माषा−संस्कृत । ले∙काल × ।
पूर्णं । बेष्टन स० ४०८ ।		
<b>विशेष</b> —पूजा पाठ साप्रह	है।	
६६१३. गुटका सं० ३४	। पत्रसं० १५ । ग्रा० ४३)	(३ इ~व । भाषा∽हिन्दी।ले०काल 🗙 ।
मपूर्ण। वेष्टन स० ४०६।		
<b>विशेष</b> पदो का संग्रह है	t	
६६१४. गुटका सं० ३४	। पत्रसं० ६६ । झा० ४	×३ इ.चामाषा~सस्कृताले०काल×।
पूर्णे । वेष्ट्रन स० ४१० ।		
<b>विशेष</b> मुख्यतः निम्न पा	टों का संग्रह है	
पंचपरमेष्ठी गुरा		संस्कृत
गुरामाला	_	हिन्दी
बादित्यहृदय स्तोत्र		(पद्य सं० ६५ हैं)
निर्वाण कांड		संस्कृत
	भगवतीदःस	हिन्दी

 $\mathbf{E}$ ६१४. गुटका सं० ३६ । पत्रस०४२ । घा० ४ $\frac{3}{4}$ ×४ $\frac{3}{4}$  इन्त । भाषा-सम्कृत-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स०४११ ।

विशेष -- ऋषिमडल स्तीत्र एव पद संग्रह है।

६६१६. गुटकास० ३७ । पत्रस० ३४ । घा० ५३,४६ इश्वर। माघा-हिन्दी। ले०काल स०१⊏६६ । पर्सावेकनस० ४१२ ।

विशेष--पुत्रापाठ एव पदो का संग्रह है--

**१६१७. गुटका स**० **३६ ।** पत्रस० २५ । म्रा० ६imes४ इन्द्रा । नापा- हिन्दी । ले०कान imes । पूर्ण । बेहन स० ४१३ ।

विशेष---निम्न रचनामां का सम्रहहै---

ब्याहनो बारहमामा वर्गन

(१२५ पदा हैं। र०काल स० १८४३)

श्रेमकरमा

# प्राप्ति म्यान-दि॰ जैन ते हर्णथी मन्दिर मालपुरा (टों ह)

**६६१६. गुटकास० ३१।** पत्रम० ११२ । आ.०. ५३ ८४ है इ.ख.। भाषा-सम्पृत-जिन्ही। लेक्सल 🗡 । पूर्णा जीर्णा वेष्टनम० ५२ ।

विशेष---निम्न पाठा का सम्रह है।

१. तत्वार्थं सूत्र सम्कृत २. जिनसहस्रनाम उमान्वामी ग्रामाप*र* 

हिस्दी

३. ग्रादित्यवार कथा ४ प्रचमगति वेलि भाऊ दर्वनीन

इनके ऋतिरिक्त सामान्य पूजा पाठ है ।

६६१६. गुटका स० २ । पत्रस० ६४ । घा०  $\times$  इन्त्र । भाषा+हिन्दी+सस्कृत । ले॰काल  $\times$  । पूर्गं। बेप्टन स० ५८ ।

हिस्दी

**विशेष**—पूजा पाठ सग्रह है।

६६२०. गुटकास०३ । पत्रस० १२० । प्राप्त ६×६ इञ्च । माथा-हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णावेष्टनस०२६ ।

विशेष - मैद्धातिक चर्चाओं का साग्रह है।

**१**६२१. गुटका सं०४ । पत्र स०११६ । घा०६imesद इश्वा । भाषा-हिन्दी । ले०कालimes। पूर्यों । बेच्दन स०२२ ।

विशेष--- निम्न पाठ है---

- १. बनारसी विलास के १७ पाठ (बनारसीदाम)
- २. समयसार नाटक (बनारसीदाम)

  विशेष--जीवनराम ने विदरखां में प्रतिक्रिपि की थी।

६६२२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १६० । मा० ५×५ इ.च. । माबा-प्रकृत—सस्कृत-िहन्दी । ले• काल १६७४ मादवा बुदी १३ । पूर्णा विष्टास ०२३ । विशेष —िनम्न पाठ है —

🕻. तत्व।र्थमूत्र	उमास्वामी	पत्र १-३१
२. चौबीसठाग्गा चर्चा	×	पत्र ३२-१३१
३ सामायिक पाठ	×	पत्र १३२-१८३

विशेष-साह श्री जिनदास के पठनार्थ नारायगुदाम ने लिखा था।

६६२३. **गुटका सं**०६ । पत्र स०५४-१६१ । घा०४३४४३ इञ्च । भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स०१७४६ कातिक सुदी४ । घपूर्णा विष्टन सं०२४ ।

**विशेष**—निम्न पाठ है ।

१. सुदर्शनरास	<b>ब</b> हारायम <b>ल</b>	हिन्दी	पत्र ४६ से ६४ तक
२ दर्शनाष्ट्रक		सस्कृत	६५-६६
३. बैराग्य गीत	×	हिन्दी	23-03
४. विनती	×	"	33
<b>५ फागकी लह</b> ि	×	,,	₹00
६ श्रीपाल स्तुनि	×	n	१०१-१०३
७. जीवगति वर्गन	×	,,	808-608
<ul><li>जनगीत</li></ul>	हर्षकीति	,,	१०६-२०७
६ टडाग्गा गीन	×	,,	309-209
१०. ऋषभनाय विनती	×	,,	११०-१११
११. जीवढान राम	समयसुन्दर		885-888
<b>१</b> २. पद	रूपचन्द	हिम्दी	पत्र ११५
	ग्रनस्त चित्त छाडदे र	<b>रेभगव</b> न्त चरगा चित्त ला	ई

प्रनन्त चित्त छाडदे रे भगवन्त चरणा चित्त लाई १३ नाममाला घनञ्जय संस्कृत १९६-१६० १४. कल्याण मन्दिर स्तोत्र भाषा — बनारसीदास हिन्दी १६२-१६० १४. विवेक जकडी — जिन्दास १६. विवेक जकडी × , प्रपूर्ण १८०-१८१

६६२४. गुटका सं० ७ । पत्रसं० १२ ⊏ । ग्रा० ७ × ५३ इश्वः । भाषा संस्कृत–हिन्दी । ले०काल メ । पूर्णः । वेष्टन स० २४ ।

विशेष---पूजा पाठो का सम्रह है।

६६२५. गुटकासं० ६ । पत्रस० २२४ । ग्रा० ६४७ ¦ इच्या । भाषा-संस्कृत-हिल्दी । ले०काल सं० १७४६ चैत बुदी ४ । पूर्णा । बेष्टन सं० २६ ।

विशेष--- निम्न पाठौं का संग्रह है---

१. भविष्यदत्त रास ब्रह्मरायमल

हिन्दी

र०काल स०१६३३। ले०काल स०१७६४ २. प्रबोधवावनी जिनदास

जिनदास हिन्दी। ले०काल सं १७४६

**श्चन्तिम पृष्टिपका**—इति प्रबोध दूहा वावनी साथु जिनदास कृत समाप्त । ५३ दोहे है ।

- श्रीपाल रासो भ्र॰ रायमल्ल । हिन्दी
- ४ विभिन्न पूजा एव पाठो का सग्रह है।

**६६२६. गुटकासं०६ । पत्रस०** ⊏६ । बा० ⊏्रै×६्रेडख । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्या। बेष्टनस०२७ ।

विशेष--विभिन्न कवियो के पदों का सग्रह है। द्यानतराय के पद अधिक है।

**६६२७. गुटकासं० १० । पत्रस**० ४ ≒ । ग्रा० ५ × ४ डब्च । मापा–सम्कृत-हिन्दी। ले•काल × । पूर्णावेष्टनस०२ न ।

विशेष-सामान्य पाठो का सम्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर चोधरियों का मालपुरा (टोंक)

६६२६ गुटका सं०१। पत्र स०१६६। आ० ४६ ४६७वा।भाषा-स्थिति पद्याः ने०काल सं०१७६६ भादवा सुदी २।।पूर्णाः वेष्टुन स०१६।

### 

१. सर्वया	विनोदीलाल	हिन्दी ।
२. भक्तामर भाषा	हम <b>राज</b>	,,
३. निर्वाग काण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	,,
४. फुटकर दोहे	×	
५. राजुल पच्चीसी	विनोदीलाल	,,
६. यत्र संग्रह		बलीसयत्र हैं।
७. कळवाडा राज वशावलि	×	

## विशेष -- ११५ राजामा के नाम है माधोसिंह तक सं० १६३७।

प्रौषधियों के नुस्सेकीरासी गौत वर्णन

१०. डोलमारू की बात imes हिन्दी झपूर्य । ४२३ पद्य तक

**६६२६. गुटका सं**०२ । घा० ५imes६ ६ व्यः । भाषा-हिन्दी पद्यः । ले०काल imes । पूर्णः । वेष्टन स०३७ ।

विशेष-विविध जैनेतर कवियों के पद है।

**६६३० गुटकासं०३**।पत्र स०१७।ध्रा०६×६ इला।भाषा–हिन्दी गद्याले०काल × । घपर्रा। वेष्ठन स०३६।

विशेष--हितोपदेण की कथाये है।

६६३१. गुटका सं० ४ । पत्र स० ४–६८ । प्रा० ७ $^1_i \times ^2_i$  इ.च । भाषा–सस्कृत । ले० काल  $\times$  । ग्रपुर्गा । वेस्टन स० ३७ ।

विशेष-सामान् पूजामी का सम्रह हैं।

**६६३२. गुटका सं० ५ ।** पत्र स०६-१४ । ग्रा० ५×६ इश्वः । भाषा-हिन्दी । ले० काल **× ।** ग्रापुर्ता। वेटन स० ३६ ।

विशेष—नित्य पुजास्रो का सम्रह.है।

**६६३३. पुटकासं० ६**। पत्रस**० १**७२ । **ग्रा०** ५×६ इश्वर। काषा–सस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्गा। बंदुनस० ३६ ।

विशेष — विविध पूजापाठो का सम्रह है।

६६**३४. गुटका सं० ७ ।** पत्रस० ७४ । आर० ६४५ डञ्च्',। भाषा-हिन्दी-सरकृत । ले०काल ४ । पूर्णु । बेष्टुनम० ४० ।

विशेष--- नित्व पूजा पाठो का सम्रह है।

६६३.स. गुटकास० ६ । पत्रस० २२ । घा० ७४४ टशा भाषा-हिन्दी पद्या । ले०काल ४ । पूर्यो । बेष्टन म० ४१ ।

विशेष — नित्य पूजा सप्रह है।

**६६३६. गुटका सं० ६** । पत्रसं० ६६ । मा० ६imes६६ इच । गाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले $\circ$ कालimes। पूर्णै । बेप्टन स $\circ$  ४८ ।

विशेष--- आयुर्वेद के नुस्से तथा पूजा पाठ सग्रह है।

**६६३७, गुटका सं० १० । पत्रसं∙**६२ । ग्रा० द×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी—सन्कृत । के० काल × । पूर्णावेष्टन स०४६ ।

विशेष---पूजा पाठ संग्रह है।

**१६३ व. गुटका सं० ११** । पत्रसं० ३ से २६० । आ० व $^1_7 \times \mathbf{5}^3_7$  इन्छ । भाषा–हिन्दी– सरकृत । से०काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ५० ।

विशेष-- निम्न प्रकार संग्रह है। इसके ग्रनिरिक्त ग्रन्य सामान्य पाठ है।

१-सबोध पंचासिका--मृनि धर्मचन्द्र।

यह सबोघ पंचासिका, देखे गाहा छद । माषा बंघ दूहा रच्या, गछपति मृति धर्मचद ॥५१॥

२-धर्मचन्द्र की लहर (चतुर्विशति स्तवन)।

३ पात्रवंनाय रास-ब॰ कपूरचद । र०काल स० १६९७ वैशाख सुदी ४ ।
मूलसघ सरस्वती गच्छ गछपति नेमीचन्द ।
उनके पाट जगकीति, उनके पाट गुराचन्द ।।

तामु सिवि तमु पंडित कपूरजी चद। कीनो राम चिति घरिवि धानन्द।।

क्त्वाई की शिष्या श्राविका पार्वती गगवाल ने स॰ १७२२ जेठ बढी ५ को प्रतिलिपि कराई थी।

दिन्दी

४-पंच सहेली --छीहल

५-विवेक चौपई — ब्रह्म गुलाल ,, ६-मृदर्शन रास — ब्र॰ रायमल्ल ,,

# प्राप्ति स्थान - दि॰ जैन मन्दिर कोट्यो का नेखवा।

**६६३६ गुटकासं०१** । पत्रस०१४१ । घा०६३ ×५ इल्बः। भाषा-सस्कृत-हिन्दी । विषय -सप्रहः। ले•काल म०१६१४ धामोत्र दृदी ६ । पूर्णः। वेष्टनस०३५।

विशेष--मृख्यत. निम्न पाठो का सग्रह है-

जिन सहस्रनाम		सम्कृत	
शानिचक पूजा		,,	
रवियार वन कथा		हिन्दी	
বানা	बुलाकीदास	,,	
सक्तासर स्तीत्र	मानन् गाचार्य	मम्बन	
कल्यामा मदिर स्तोत्र	कुमुदचर	.,	
एकी भाव स्त्रोत्र	वादिराज	,,,	
विषापहार स्तोत	धनजय	,,	
तत्वार्थं सूत्र	उमास्वामि	**	
दशनक्षमा पूत्रा		11	
रत्नत्रय पूजा तथा सम	समार नाटक बना	रमीदाम	

प॰ जीवराज ने स्नावा नगर में स्वयभुराम से प्रतिलिपि कराई थी।

१६४०. गुटका सं०२ । पत्रसं०१४१ । ग्रा० ५ $^{1}_{2}$  ६ $^{4}_{3}$  इश्वः। ले०काल सं० $\times$ ा सपूर्णं। लेष्टन स०५०।

विशेष-चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

६६४१. गुटकासं० ३ । पत्रस० २१३ । ग्रा० ६×४ ¦ इथा। भाषा∽हिन्दी । ले∘काल× । पूर्णे । वेहनस० ७१ ।

विशेष -- विविध स्तोत्र एव पाठों का सम्रह है।

**६६४२. गुटका सं० ४** । पत्रसं० १३० । म्रा० ११imes ५ ६२व । भाषा-तिन्दी-सस्कृत । ने० कान imes । वेष्टनस०७५ ।

विशेष - पूजा स्तोत्र एव गुरा स्थान चर्चा ग्रादि का सग्रह है।

**६३४३. गुटकासं०५** । पत्रस०१४४ । घा०७ ४५ इश्वर। भाषा-संस्कृत । वे०काल ४ । पूर्णे। बेष्टनस०७७ ।

**६६४४. गुटका सं० ६**। पत्रस०१६७ । आ०६८५३ इखा माषा-हिन्दी—सन्कृत । ले•काल ४ । पूर्ण । बेक्टनस०६०।

**६६४५. गुटका सं०७ । पत्र स०**४२ । ब्रा०११x४. इल्बा नाया—सस्कृत⊸हिन्दी। ले०काल × । बपूरुएं। बेष्टन स०६३ ।

विशेष---मूल्यतः निम्न पाठो का सग्रह है।

१-यशोधर गम

ਵਿਦੀ

(र०काल स० १६७**६**)

मवत् सोलासी परमाण् वस्य उगुन्यासी ऊपर जाण् । किसन पक्ष कानी भला तिथि पचमी सहित गुरवार ॥

कवि रमाथभ गढ (रमायभीर) के निकट शेरपुर का रहने वाला था।

जिनदास

२-पुजा पाठ सम्रह

६६४६, गुटकासं∘ ६ । पत्रस॰ ४७ । प्रा॰ ७ × ४ इ.च.। भाषा सस्कृत । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण । बेकनस॰ ६८ ।

**६६४७. गुटका सं० ६** । पत्रस० १२८ । घा० ६imes१२ इ.स. । भाषा-सम्कृत-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्णु । बेष्टुनस० १६।

१६४ म. गुटकासं० १०। पत्र स० १४०। या० ६ $^{1}_{2}$  × ५ इञ्च। माषा–मस्कृत–हिन्दी। ले•काल × । पूर्ण। बेस्टन स० १०२।

६६४६. गुटका सं० ११ । पत्रस० १०-२४७ । स्रा० ७ x ४ इ.चा। भाषा-हिन्दी पद्य । लेक्काल स० १४६५ । स्रपूर्ण । बेष्टन स० १०४ ।

विशेष-गृटका प्राचीन है तथा उसमें निम्न पाठों का सग्रह है-

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	
१-चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न	<b>न</b> रायमल्ल	हिन्दी	मपूर्ण
२-बारह ग्रनुप्रेक्षा		,,	पूर्ण
३-विवेक जकडी	जिग्गदास	"	,,
४-धर्मतरू गीत	,,	0	"
(मानीरास)			
५-कर्महिडोलना	हर्षकीर्ति	"	,,
पद-(तज मिथ्या पथ दुख काररण)		11	,,

पद-(साधो मन हस्ती मद मातो) 	 हर्मकीर्ति	"	"
पद (हुतो काई बोलुरैं बोलुंभव दुरु		,, ,,	•
्हिताकाइ वालू र बालु न प ५० ६ पोथी के विषय की सूची। इसके		नसाहै—	
पोथी को टीकै लिस्यते वैसाख दुती		-	(ध्ये।।
		पश्च	पद्य
१. श्राराधना प्रतिबोध सार	विमलकीर्ति	१ - ६	XX
२. मिछादोकड		€-=	२८
३. उन्तीम भावना		5-60	₹६
४. ईश्वर शिक्षा	-	₹9-09	38
५ जम्बूस्वामीजकड़ी	साधुकीर्ति	१३-१७	3€
६. जलगालन रास	ज्ञान भूषरा	१०-२०	<b>३</b> २
७. पोसहपारवानीविधि तथा रास		२०-२७	
<ul> <li>धनादि स्तोत्र</li> </ul>		35-07	२२ (मस्कृत)
१. परमानद स्तोत्र	-	२ <b>९</b> −३१	२४
१०. सीखामिंग रास	सकलकीर्ति	३१-३४	
११. देव परीषह चौपई	उदयप्रभ सूरि	६४–३७	२१
१२. वलिभद्र कृष्ण् माया गीत	-	39-3=	
१३. वलिभद्रभावना		\$~~X\$	<b>አ</b> ጳ
१४. रिषमनाथ चूल	सोमकीर्ति	X\$~&X	¥
१५. जीववैराग्यगीन		ሄሂ	's
१६. मत्र सग्रह		86-80	€ास्कृत
१७. नेमिनाय युनि		٧ĸ	हिन्दी पद्य
		(₹	काल १५८०)
१८. नेमिनाथ गीत	<b>व</b> ० यशोधर	86-85	
<b>?</b>		<b>x</b> २- <b>x</b> ३	
२०. योगीवासी	यशःकीर्ति	ХЭ	७ पद्य
२१. पद (मन गीत)		ЯR	
२१. (क) मल्लिगीत	सोमकोति	xx-xx	¥
२२. मल्लिनाथ गीत	<b>क</b> ० यशोधर	<b>x</b> x-x <b>e</b>	3
२३. जलही	Name of Street, Street	४६-५७	¥

			पद्य संख्या
२४. कायाक्षेत्र गीत	घनपाल	५७-५=	Ę
२५. नेमिनाथ गीत	<b>व</b> ० सभोधर	४६-६३	<b>₹</b> €
२६. चौबीस तीर्यंकर मावना	यश.कीर्ति	<b>\$ 3</b> - <b>\$ X</b>	२ <b>४</b>
२७. रामसीतागस	<b>ब</b> ० जिस्पदास	<b>६</b> ४- <b>६</b> १	
२८ सकौसलरास	सामु	६१-१०६	
२६ जिनमेन बोल	जिनसेन	१०६	x
३०. गीत		१०७	¥
३१. शत्रु जयगीत		209-602	१४
३२. पार्श्वनाथ स्तवन	मुनि लावण्य समय	१०६-११२	₹X
(इति श्री पाष्टवैनाव स्तवन परि	इत नरबद पठनार्थ)		
३३. पचेन्द्रिय गीत	जिनसेन	११२	9
३४. मेघकुमार रास	कवि कनक	233-884	४८
३५. बलिमद्र चीपइ	इव यशोधर	<b>११६-१</b> ३२	१८७
		(र०का	लासं १५≂५)
सबत प	नर पचासीइ स्कथनयरः	मकारि।	
	मजित जिनवर तिए ए गुरा		.1
	भागत । यात्र र ताला ५ पुरा		
३६. बुधिराम		<b>१</b> ३२–३६	४८ पद्य
३७. पद	अर्थशोधर	<b>१</b> ३६	¥
(प्रीतडी रेपाली राजिल	। इ.स.क।हर)	***	
देय. पद		<b>१३६-३७</b>	
चेतुलोई २ थिर २ कहु	काइ		
<b>३</b> €. पद		<b>१</b> ३७	¥
(स्नादि स्ननादि एक पर	ोश्वर सयल जीव साधारएा)	)	
४०. घेपनिकयागीत	सोमकीर्ति	१३७	×
४१. रत्नत्रयगीत	promote	<b>१</b> ३⊏	₹₹
४२. देहस्तगीत		680-86	٧
४३. पर रमग्गी गीत	स्तीमराज	3 🕫 🦻	¥
¥¥. "		3 € \$	•
४५. वैराग्य गीत	<b>व</b> ० यशोधर	6.8.6	٩
४६. भासपाल छंद		888-848	
४७. व्यसन गीत	-	१४१	
४८. मगल कलश चौपई		१५१–६१	ΥĘ
"इति भगलचुपाई समात्या	बद्धा यशोषर लिखितं ।		
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •			

४६. पद नेमिनाथ	<b>य</b> ० यशोधर	१६३	5
(श्रांगि हो श्रनीयम वेरग	रेकरी उग्रमेन घरि बाइ	राजुल वरी)	
५०. नेमिनाथ बारहमासा		863-868	१२ पद्य
५१. षट्लेशा क्लोक		१६४ <b>–६</b> ५	११ सस्कृत
१२. जीगवली स्तवन		१६५–६६	? ?
५३. धराधनासार	सकलकी नि	१६६-१६=	२४ पद्य
१४. वासपूज्य गीत	<b>ब्र०</b> यशोधर	१६८	<b>१</b> २
५५. ग्रादिनाथ गीत		१६ <b>५-६</b> ६	₹
५६. ग्रादि दिगबर गीत	mamo	१६८	3
५७. गीत	यश कीर्ति	१६६	ŧ
(मयग् मोह्माया	मदिमातु)		
५८ गीत	यशःकीनि	800	£
तडकि लागि जिस	त्रेह त्रूटि, ग्रजिन उदक	जिम द्राऊपुफूटि।	
५१, गीन	त्र ० यशोधर	900	9
(बागवाग्गीवर मागुमा	तादि मुक्त प्रविज्लाबार	गी रे)	
६०, गीत	व० यशाधर	१७१	¥
(गढ ज़न्जम नलब्रटी	रेलाई मिरिमवामाहि	मार)	
६१ मेघकुमार शय	पुरम्	<i>⊊</i> υ-9υ9	÷ १
६२ स्थूलभद्रगील	लावण्यसमय	१७३–१७७	ર્શ
६३. मुप्यय दोहा	****	१७७-१८२	७८ प्राकृत गाया
६४. उपदेण श्लोक	* ***	१८३	५ स० भनोक
६५. नेमिनाय शाजिमति बेलि	सिघदास	8=3-=×	१७ हिन्दी गव
६६ नेमिनाय गीन	-	१८६	हिन्दी पद्य
६७. नेमिनाथ गीत	व० यशोधर	१८६	ų
(यान लेर्डनेमि तो रार्ग्	ो द्याउपम् इदोडि गढ गि	रनार)	
६८. प्रतिबोध गीत		१८६	हिन्दी प-प
(चेतरे प्रागी मुख जिस	स्वाग्गी)		
६६. गीत (पार्श्वनाथ)	त्र० यजोघर	१८७	.,
७० गीत (नेमिनण्य)		१८७	
(समुद्र विजय मृत याद	व र।जातोरिंग् श्रायाक	री दिवाजा)	.,
७१. चेतना गीन	ममयमृत्दर	१८७	
७२. ग्रटारह नाने की कथा		₹==	प्राकत
विशेष-हिन्दी में प्रनुवाद	मी दिया है ।		
७३. कुबेरदत्त गीत		8==-80	¥
(ग्रठारह नाता रास)			-

७४. गीत	<b>ब</b> ०यमोधर	१६१	हिन्दी पद्य
(तोरिंग द्यावी वेागे	बल्युरे पणूडा पाण्यि पेखीरे	:)	
७५. ग्रजितनाथ गीत 🔻	o यणोघर	868	.,
७६ गीत	_	989-83	,,
(प्रसामू नेमि कुम <b>ा</b> र	जिशि संवभ धरउ)		
७६. नेमिगीत	<b>व</b> ० सणोधर	१६२	हिन्दी पद्य
(पस्डातोरिंग परि	हरी)		
७७ नेमिगीत	,,	१६२-६३	,,
नेमि निग्जन निरोप	म तोरिंग पसूडा निहाली	₹)	
७८. पार्स्वगीत	"	<b>१</b> ६३	,,
(मूरति मोहरा वेल	मग्गीजि भ्रवर उपमा कहुन्	हुरादीजि)	
७६. नेमिगीत	**	₹83	"
(पसूडा कारग्गि परह	<b>त्युरे गजिल मरमु राज)</b>		
८० नेमिगीत		₹3\$	11
(गुल चढीरे निहालि	निरोपम उद्यावतु नेमिकुार	.)	
६१ जैन वर्गजारा रास		73-639	,,
<- २. <b>बा</b> वनी	मतिशेखर	१६६ २०१	પ્ર₹
<३ सिद्ध धुल	रत्नकीर्ति	२०१-२०३	,,
<b>८४. राजुल</b> नेमि	लावण्यसमय	२०३-५	<b>१</b> %
<b>भ</b> वोला			
<b>८</b> ५. यशोवर रास	सोमकीर्ति	₹ <b>0 X</b> − ₹ <b>४</b>	
		(ले∙कालः	ቸ∘ የሂ⊏ሂ)
<b>विशेष</b> —इति यशोधर रास	समाप्त । संवत् १५०५ व	।र्षे मुदि १२ खो ।	
६६. कमकमल जयमाल	anus n	₹ <b>३४</b> -३ <u>४</u>	
(निर्वाग् काण्ड भाष	र है)		
८७. शत्रुजय चित्र प्रवाह		२३६-३८	₹X
६८. मनोरथ माला		२३६	_
६८. मनोरथ माला	 कल्यारण मृनि	२३६-४० २३६-४०	٠,
६६. मनोरथ माला ६६. सानवीसन गीत	— कल्यागा मुनि —		٠ *-
६६. मनोरथ माला ६६. सानवीसन गीत	 कल्याएा मुनि 	98-80	80
६६. मनोरथ माला ६६. सानवीसन गीत ६०. पचेन्द्री बेलि	— कल्यासा मुनि — — सिंहनन्दि	580-85 536-80	<b>?</b> ·
६६. मनोरय माला ६६. सानवीमन गीत ६०. पचेन्द्री बेलि ६१. ससार सासरयों गीत	_	२४८-४३ २४०-४२ २४२-४०	
६६. मनोरथ माला ६६. सानवीमन गीत ६०. पचेन्द्री बेलि ६१. ससार सासरयों गीत ६२. रावलियो गीत	—- —- सिंहनन्दि	<i>5</i> 83-88 <i>5</i> 85-83 <i>5</i> 80-85 <i>5</i> 36-80	

**६६५०. गुटका सं० १२** । पत्र सं० २४७ । घा० ६ $^{3}_{7}$  $\times$ ५ इञ्च । मापा-हिन्दी । ले॰काल $\times$ । पूर्णे । बेहन स० १०४ ।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर श्रादिनाथ स्थामी मालपुरा (टोंक)

**६६५१. गुटकासं०१**। पत्रस० ४१। धा०६×६ इञ्च। भाषा−हिन्दी। ले∘काल ×। पूर्णे। बेष्टन स०४६।

**६६५२. गुटकासं०२ ।** पत्रस∙६५ । धा०६×६ इ.चा। माषा−हिन्दी।ले∘काल × । पूर्यावेहन स०५७ ।

६६५३, गुटकासं०३ । पत्रस०१३ । घ्रा०७×५ इचा भाषा−हिन्दी। ले० काल ×। पूर्या। बेष्टनस०५६।

६६५४. गुटकासं० ४ । पत्रसं० ३० । घा० ७४.५. इ.ला। साया–हिन्दी पद्य । ले०काल ४ । पर्यो । बेग्रन स०५२ ।

विशेष—भानुकविकृत ग्रादियत्वार कथा है।

**६६५५. गुटका सं०५ ।** पत्र स०२३ । घा०५×४ ड॰ब । भाषा-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । केक्न सं०५१ ।

**६६५६. गुटका सं०६ । पत्रस०**१≒ । श्री० ७×५ इखा सामा-हिन्दी । लेञ्काल × । पूर्णा । बेह्नसं०५० ।

**६६५७. गुटका सं० ७ ।** पत्र म० २४० । ग्रा० ७imes४ इ**था । भाषा**-हिन्दी । ले० कालimes । पूर्ग । बेप्टन स० ४६ ।

विशेष-- चौबीसी ठाग्। चर्चा है।

**६६५६. गुटका सं० ६** । पत्र स० २७ । म्रा० ५ ४ ४ इ.च । माया-हिन्दी पद्य । ने० काल ४ । पर्यो । वेष्टन म० ४६ ।

६६५१६. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ३४ । ग्रा० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल ×। पूर्यों । बेष्टन स० ४७ ।

६६६०. गुटका सं० १० । पत्र सं० ६४ । ग्रा० ८×६ इञ्च । भाषा−हिन्दी–सस्कृत । ले•काल ×। पूर्ण । बेष्टन म० ४१ ।

**१६६१. गुटकासं०११**। पत्रस•२६ । ग्रा०६×५ इल्<u>ड</u>ामाषा−हिन्दी गताले ०काल×। पूर्वावेटन स० २०।

विशेष-स्नृतियों का संग्रह है।

६६६२. गुटकासं० १२ । पत्रसं० ६१ । ग्रा० ५ ४ ६ इ.च. । भाषा–हिन्दीगग्रः। ले०काल ४ । श्रपुर्ण। बेष्टन स० ३१ ।

विशेष - पूजाओं का संग्रह है।

**१६६३. गुटका सं० १३** । पत्र सं० ६-१२४ । घा० १×६ इश्व । भाषा-हिन्दी पद्य । ले०काल पूर्ण । वेष्टन सं० ३२ ।

विशेष-- रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

**१६६४. गुटका १४** । पत्रसं० २२४ । आर्० १imes६ ६ वा । साधा-प्राक्टन,-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण । बेष्टुन सं० ३३ ।

**विशेष**—निम्न पाठों का सग्रह है:—

₹.	जयनिहुग्रग् स्तोत्र	मुनि स्रभयदेव	प्राकृत । श्रपूर्ण ।
٦,	नव तत्व समाप्त	×	 प्राकृत
ą	श्रावक ग्रतिचार	×	**
¥	ग्रादिनाथ जन्माभिषेक	×	
х.	कु <i>मुमा</i> जलि	×	,,
Ę	महावीर कलश	×	
৩	लूरा पानी विधि	×	,,
۲.	शोशन स्तुति	×	संस्कृत
3	गराघर वाद	श्रीविजयदास मुनि	हिन्दी:
१٥,	जग्बूस्वामी चौपई	कमलविजय	27
۲۶.	ढोलामारूगी	वाचन कुसललाभ	11

र०काल रा० १६७७ । ले० काल सा १७११ चैन सुदी २ ।

#### प्रारंभ---

दिविस रमिति २ सुमति दातार कामभीर कमलासनी । ब्रह्म पुत्रिका बाएा सोहद मोहएा तरु घरि मजरी । मुख मयक त्रिहमुबन मोहद पय पक्त प्रगामी करी । म्रखी मन प्राग्यद सरस चरित ग्रुगार रस, मन प्रमिश्च परमाग्रद म्रणी मन प्राग्यद सरस चरित ग्रुगार रस, मन प्रमिश्च परमाग्रद

#### ग्रन्तिम--

सबत् सोलह सत्तोत्तरइ मादबा त्रीज दिवस मन खरइ। जोडी जेसलमेरु गञ्कारि बाच्या सुख पीमइ ससारी। समिल गहगहइ वाचक कुसल लाभ इम कहड़ रिघि बुधि मुख संपति सदा संभलता पामइ सबदा ॥७०६॥

**६६६५. गुटका सं० १५** । पत्रसं० ३४ । घा० ४ × ४ डञ्च । भाषा-हिन्दी प० । ले०काल × । जीर्राणीर्था । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४ ।

विशेष-सामान्य पाठी का सम्रह है।

**६६६६. युटकास० १६** । पत्र सं०३०। घ्रा०७४४ टश्वामाया-हिन्दी पद्याते० काल ४ । पूर्णावेष्टन स०३४ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठों का संग्रह है।

६६६७. युटकासं०१७ । पत्रस०१०१ । ग्रा०६×४ दश्वा । भाषाहिन्दी,सस्कृत । ले०काल × । पूर्यः । वेष्टनस०३६ ।

विशेष--सामान्य पुजा पाठ है।

**६६६ म. गुटका स० १ ⊏ ।** पत्र स० १५ म.। घा० ७ × ५ ६ञ्च । भाषा−हिन्दी, संस्कृत । से० काल स० १७७६ । घपूर्णा । वेष्टन स० ३७ ।

विशेष -- पूजा पाठी का संग्रह है।

**६६६६. गुटकासं०१६ ।** पत्र स०२०। स्रा०६×६ इश्वः । भाषा−हिन्दी प•ा ले**॰काल** × । पूर्णावेष्टन स०३६ ।

**१६७०. गुटका सं**०२०। पत्रस०७६ । झा० ७×५ इचा। भाषा–हिन्दी प०। ले०काल⊸ स०१⊂३३ ।पूर्णा वेष्टन स०३१ ।

विशेष-अक्षर घसीट है पढ़ने में कम आते हैं। पद, पूजा एवं कथाओं का समह है।

# प्राप्ति स्थान – दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

**६६७१. गुटकासं० १** । पत्र स०२ ⊂ । घा०१२ × ⊏्रै इञ्च। भाषा–हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णावेष्टन स०१३ – ७४ ।

विशेष--मूल्यत निम्न रचनाओं का सबह है--

पंच स्तोत्र भाषा		हिन्दी	
बारतखडी	मूरत	<b>j</b> 1	
ज्ञान चितामरिंग		,,	-

(र०काल स०१७२८ माघ मुदी) भवत सतरासै घटाईम सार, माह मुदी सप्तमी णुकवार ॥ नगर बहारन पुर पालान देस माही, ममारलपुर सेवग गुग गार्ट ॥

६६७२ मुटकास०२ । पत्र स०११ । धा० २ ¦ ४ ६ ॄं इआर । भाषा हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्णे। वेष्टन ग०४२ ।

विशेष -- मुख्यतः निम्न पदो का सग्रह है ---

पार्श्वनाथ की निसागी, कल्यामा मन्दिर भाषा, विषापहार, वृषमदेव का छद ।

६६७३. मुटकासं०३ । पत्रस०१४८ । ब्रा०१०×७ दृद्धा। भाषा हिन्दी। ले०काल सं० १⊏२६ भादवाबुदी१०।पूर्णावेषूनस०५१ ।

विशेष —साधारण पाठों के श्रांतरिक्त निम्न रचनाएं और हैं --

धर्मपरीक्षा मनोहरलान हिन्दी (र०काल सं१७०० । के∙काल सं०१८१४) पार्थवुरागा भूघरदास सहदेव कर्णा ने प्रतिलिपि करवासीथी । **६६७४. गुटकासं०४** । पत्रस०६४ । श्रा०१०×७ इ.स. । मापा-हिन्दीपद्यः। ले•कालास० × । पूर्णं। वेष्टनस०६२ ।

विशेष — नेथाराम कृत चौबीम नीर्थकर पूजा एव बन कथा कोप मे से एक कथा का सग्रह है।

**६६७५. गुटकासं०५ ।** पत्रस०१३६ । धा०६×६ इ.च । मापा–हिन्दी,मस्कृत । ले० काल × । पूर्णावेहन स०७५ ।

विशेष--- निम्न पाठों का संग्रह है --

पद्मावती पूजाप्टक, बनारमी विलास तथा भैरव पद्मावती कवच (मल्लिषेगा) ब्रादि का सम्रह है।

**६६७६. गुटकासं०६ ।** पत्रस•२२६ । स्रा० ६१ूँ×६२, डञ्च । माषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०१४१/७७ ।

विशेष - नित्य नैमित्तक पाठो का संग्रह है।

६६७७. गुटका सं०७ । पत्र स० ११२ । ग्रा० ८ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  डक्षा भाषा-हिन्दी सस्कृत । लेक्काल  $\times$  । पूर्णा । वेटन स० १४२, ८०।

विशेष--पूजा पाठ एव स्तोत्र ग्रादि का सग्रह है।

६६७६. सुटकासं०६ । पत्र म०१६४ । ब्रा०४३ ४६ इश्वा। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ति०काल ४ । पूर्णावेष्टन स०२६२ ।

विशेष- - एजा पाठ के स्रतिरिक्त नेठ शालिभद्र राम गर्व मेठ मृदर्शनराम ( द्वः शयमल्ल ) और है।

शालिमद्र राम

फकीर

र०काल म०१७४३

प्रारम्भ---

नकल मिगेमणी जीनवर सार, पार न पार्व ने ध्रमस प्रपार। तीन तिरलोक वर्द मदा मुर फुनी इंद नर पूजत ईम। नाष ते वस मे ऊपनो धहो श्री वरघमान सामी नमु सीस॥ मालिभद्र गुण वरनउ ॥१॥

ग्रन्तिम---

धही बस बधेरवार खडीग्या गोत

बंस बेएगा दुहाजी हौत।

ताम ते मृत फकीर में साली ते भेद को मडियो राप्त

मन मरोह चीते उपनी भ्रही देखी चारित्र कं.घीजी परगास ॥२२०॥

मही सबत सतराम बरम तीयाल (१७४३) मास बंसाल पृणिम प्रतिपाल। जीग नीरवतर सब भत्या मिल्या गुडा मभी पूरसावास रावने सनरव राजई।

भाही साली मन की पूगजी ग्ररु सालिभद्र गुए। वरसाउ ।।२२१।।

सेठ सुदर्शन रास--

भौलपुरनगरमें रचागया था। भौलपुर सहर देवरो बर्गो

वाने देवपुर सोभैजी इन्द्र समाने

सोव छतीस लीलाकर मवी महाजनै वस घनवन्त।

देव गुरुसासत्र सेवाकर घोहो करैंजी पूजन ते अपहत जी।।१६८।।

**६६७६. गुटका सं० ६ ।** पत्रस० २४८ । मार्० ६imes४ इ.स. । मार्था-हिन्दी-सस्कृत । ले॰काल स० १७७६ वैशाल मुदी १३ । पूर्ण । वेष्टम स० २६३ ।

विशेष -- निम्न पाठो का सप्रह है--

समयसार नाटक समयसार कलशा बनारसीदास ग्रमृतचन्द्र सूरि हिन्दी सस्कृत

६६ द०. गुटकासं० १०। पत्रस० २६०। प्रा०६×६ इ.च.। भाषा –संस्कृत –हिन्दीः ले०काल × । पूर्णः। बेष्टन स० २६४।

विशेष — मुख्यतः पूजाओ का सग्रह है ।

**६६⊏१. गुटकासं० ११ ।** पत्र स० १०० । झा० ६×४ इश्वा। भाषा∹सस्क्रत∹ित्दी। ले∘काल × :पूर्सावेष्टनसं०२६४ ।

विशेष -- पूजा पाठ सग्रह है ।

**१**६६ म**. गुटकासं० १२ । पत्र स०** २१७ । म्रा० ६imes६१ हन्दा। माया हिन्दी । ले**०काल** imes । पूर्णा वेष्टन स०२५६ ।

विशेष-मूख्यत. निम्न पाठीं का संग्रह है।

चतुर्दशीकथा टीकम ज्येष्ठजिनवर अन्त कथा त्र० रायमञ्ज ज्येप कियारस द्रर्यकीनि

ह्यंकीित "

धर्मरासो

र०काल १६८४

हिन्दी

मविष्यदत्त चौपई

६६ स.च. गुटकासं० १३ । पत्रसं∘ ३२५ । ग्रा० ६ ४४ ट्रै इचा। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले∘काल ४ । पूर्णा वेष्टन स० २६७ ।

इ० रायमस्ल

विशेष-कथा स्तोत्र एवं पूजा पाठ के घतिरिक्त गुराठाएग गीत और है।

गुराठारमा गीत-बृह्य वर्द्ध न

हिन्दी

र०काल १६ वीं शताब्दी

#### प्रारम्म

गोधम गणहर विषया मिन घरि मुखाठाला गुण गाऊ ।
गुण गाऊ रिधमरी रेपि मरीय गाऊ ।
गुष्य पाऊ भेर गुणठाणा नता। ।
मिम्यान पहिलाहि गुणह ठाली बसद जीव प्रनतुगुणा ।
मिम्यान पहिलाहि गुणह ठाली वसद जीव प्रनतुगुणा ।
मिम्यान पहिलाहि गुणह काली मनतु निहारह ।
मति होन च्युहुगति श्रीम भूला मनो धमंते मिला लहह

### ग्रन्तिम---

परम चिदानन्द संघद पद घरा । धनन्त मुग्गा कर णकर निवकरा । णिवकराए श्री सिद्ध मृत्दर गाउ गुग्ग गण्ठाग्यर जिम मोक साक्ष्य मृत्वि नाषु केवल गाग्ग प्रमाग्यरा मुभवन्द मृति पद कमा आगढं मधुष बत मनोहर घर मग्गदित श्री वर्ढीन कहा एह वारिण भविषण मुख्य करई ॥१७॥ इति गुग्ग उग्गा गीप

**६६ म् ४. गुटका सं०१४ ।** पत्र म० ६०। ग्रा० ६ ${}^{2}_{7}$  imes ४ इ.ख.। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले• काल स०१६६१ । पूर्ण । बेष्टन स०२६म ।

विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।

सेवाराम बधेरवाल ने इन्दरगढ़ में प्रतिलिपि की थी।

**६६**८५ . गुटकासं० १५ । पत्र सं०२८५ । घा० ६ $\frac{2}{7} \times \frac{5}{7}$  इ.च.। माषा—हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्णा। बेप्रन सं०२६८ ।

ल 🗶 । पूर्णावष्टन सण् २६८ । विशेष — पूजापाठसग्रह है।

गुटकालिखवाने मे १४। = ।। व्यय हुमा था।

**६६८६. गुटका सं०१६।** पत्र स०१०६ । झा०६<sup>2</sup> ४४ इच्चा भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। पूर्णा। बेष्टनसं०२७०।

विशेष-- श्वेताम्बर कवियो के पद एव पाठ सग्रह है।

१६ क्ष. गुटकासं०१७ । पत्रस०४२ । घा०४ १४५१ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल ×।पूर्वा । बेष्टनसं०२७१ ।

विशेष--ढोलामारूवाग्ति की बात है। पद्य सं ० ५०४ है।

**१६८८. गुटकासं०१८**। पत्र स०१९८ । घा०६२<sup>2</sup> ×५२३ इ.च.। माषा−हिन्दी। ले∘काल सं∙ १८४३ । पूर्णा। केप्टन सं०२७२ ।

विशेष --- गरिगत छद शास्त्र है गरिगत शास्त्र पर बच्छा ग्रंथ है।

१६८६. गुटकासं० १६ । पप्रसं० ११ । घा० ६×५ इ.चा। माया−हिन्दी। ले∙काल × । पूर्णावेष्टनसं०२७३ ।

विशेष --सामान्य स्तीत्रों एवं पाठों का संप्रह है।

६६६०. गुटका सं०२०।पत्रसं०६३। घा०६×५ इञ्च। भाषा~हिन्दी।ले॰ काल सं०१६४६।पूर्ण।बेष्टनस०२७४।

**विशेष**—मुम्यतः निम्न पाठों का सग्रह है, सामायिक पाठ भाषा-जयचन्द छावडा हिन्दी २ चौबीस ठारणा चर्चा ।

**६६६१. गुटकासं०२१** । पत्रस०२४ । झा०६×६डश्वा । भाषा–सस्कृत । ले०काल x ।पूर्णं। वेष्टनस०२७४ ।

विशेष-ऋषि मडल पूजा, पद्मावती स्तोत्र एव धन्य पूजा पाठ संग्रह है।

सेवाराम बचेरवाल ने भीगागा मध्ये चरमनदी तटे लिखित ।

६६६२. गृटका सं०२२ । पत्रस०११० । ग्रा०६×६ इ.च । माषा-हिन्दी-सस्कृत। ले∘काल स०१६१० । पूर्ण। वेषून स०२७६ ।

विशेष-पूजा पाट सग्रह है तथा गुटका फटा हम्रा एव जीखं है।

६६६३, गृटका सं० २३ । पत्रस० ७६ । ग्रा० ६८४ इ.च.। भाषा∹हिन्दी -संस्कृत । क्षे०काल × । पूर्ण । बेष्टन स०२७७ ।

विशेष--पुत्रा पाठ सपत है।

६६६४. स्टकास० २४ । पत्र स० ९७१ । घा० ६५ ४६६ दशाः भाषा—सस्कृत क्रियी। ले०कालस० १८५८ प्रामीत सुरी ११ । पूर्णाः बेप्टन स०२७६ ।

विशेष-पुजापाठ एवं स्तीत्र ग्रादिका सग्रह है।

६६६४ गुटकासं० २४ । पत्रस०३१७ । आरा०६३४४३ दञ्च । भाषा-हिन्दी । लेल्याल स०१६१२ । पूर्णा वेहनस०२७६।

विशेष —मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है— गीना तत्वसार

हिन्दी पद्य म० १६० (से•काल स० १६१२)

सेवाराम बधेरवाल ने प्रतिलिपि की थी। क्रक्तिनिध

हिन्दी पद्य स० ५४१

वेद्दविवेक एव भोस का उपदेश

ले •काल स० १६१३ मगसिर सुदी १२।

**६६६६. गृटकास० २६ ।** पत्रसं• ६१ । झा० ६१ × ५२ इ.चा । भाषा⊸हिन्दी। ले∘काल स० १६०४ । पूर्णावेष्टन स०२ ⊏०।

विशेष-भक्तामर स्तीत्र भाषा सत्र सहित है।

६६६७. **गुटका सं**० २७ । पत्रसं० ७० । धा० ६ × ४ है इ.चा । भाषा−हिन्दी। ले∘काल स० १⊂३४ फागुण, बुदी ४ ।

विशेष-मक्तामर स्तोत्र माथा मंत्र सहित है।

```
६६६ द. गुटका सं० २ द । पत्रस० १३८ । घा०६ ४ ६ द व । भाषा-सस्कृत । ले∙काल
सं• १७६४ सावरा मुदी ६ । पूर्णा । वेष्ट्रन स० २०२ ।
        विशेष---निम्न पाठी का सग्रह है---
भक्तामर स्तोत
                                          मानत् गाचार्यं
                                                                                     संस्कृत
तत्वार्थमूत्र
                                          उमास्वामी
कल्यारा मन्दिर स्तीत्र
                                          कुमृदचन्द्र
भूपाल चतुर्विशानिका
                                          भूपाल
लघ् सहस्रनाम
         कुल १३ = पत्र है जिनमे धारे के द्याधे ग्रर्थातु ६६ खाली हैं।
         ६६६६. गटका सं० २६ । पत्रस० ७६ । ग्रा० ६×६ इन्ह । भाषा-हिन्दी । से•काल 🗙 ।
 पूर्णावेष्टन स०२ ५३ ।
        विशेष -- नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठो का और संग्रह है --
रत्नत्रय पूजा
                                                                                      हिन्दी
योगीन्द्र पूजा
क्षेत्रपाल पूजा
        ६७००. गृटका स० ३०। पत्रस० १६४। ग्रा० प×६३ इञ्च । मापा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल
स०१६१६ । पूर्ण। वेष्टन स० २०४।
        विशेष - निम्न रचनाश्रो का सप्रह है-
सुगुरु शतक
                                                                            हिन्दी पद्य पत्र ६
                                              र०काल स० १८५२। (ले०काल स० १६१६)
                          करावता नगर मे प्रतिलिपि हुई थी।
ढाल गरमसार
                                                                                           ₹
                                                                  ,,
सामायिक पाठ
                                                                प्राकृत
                                                                                           38
                                                                हिन्दी
सामायिक पाठ भाषा
                               ध्याम
                                                                                           ሂሂ
                          सो सामायिक साधसी लहमी श्रविचल थान ।
                          करी चौपई मावसुं जैसराज सुत स्थाम ।।
                               (र०काल स॰ १७४६ पौष सुदी १०)
विषापहार स्रोत्र
                            धनजय
                                                                संस्कृत
                                                                                         800
सामायिक वचनिका
                                                                हिन्दी (ग०)
                            जयचन्द छाबडा
जैनबद्री यात्रा वर्शन
                            सुरेन्द्रकीति
                                                                हिन्दी
        मदिर चैत्यालय ग्रादि का जहां जहा यात्रा गये वर्णन मिलता है। ग्रामेर घाट भादि का भी वर्णन
किया हुआ है।
लंपक पंचासिका
                                    जिनदास
                                                                               हिन्दी (पद्य)-
        जैनेतर सामुझों की पोल खोली गई है।
हक्कानिवेध
                                     भूषर
                                                                               हिन्दी
```

६७०१. गटका सं० ३१। पत्र सं० १०-७०। आ० ७ × ४ इवा। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । **से∘काल** × । श्रपुर्गा वेष्ट्रन स० २८४ । **बिशेष**—नित्य पूजा पाठ सग्रह है। ६७०२. गुटका सं०३२ । पत्र स०१६० । स्ना० ६×४ इ॰ड । भाषा-हिन्दी, ले० काल × । पूर्णा । वेष्ट्रन सं० २८६ । विशेष -- निम्न पाठों का संग्रह है --षडदर्शन पालड हिन्दी जैन दर्शन व १६ पाखंड---मूलसघी काष्ट्रासघी निग्रंथ श्राल र्धाजका वतना धवती डबहिय मावनियी विपर्मय मानार्य भट्टारक स्वयभ मिश्री साध्य बारहमास पूर्णमासी फल हिन्दी साठ सवत्सरी सबन् १७०१ से लेकर १७६६ तक का फल है। हंसराज वच्छराज चौपई जिनोदय सरि-हिन्दी---(र०काल स० १६८०) कवि त्रिया केशव हिन्दी ६०७३. गृटका सं०३३ । पत्रम० १४२ । आ० ४×३ ड॰ब । माषा— सन्कृत ।ले०काल × । पूर्गावेष्टन स०२८७। विशेष-- राम रनोत्र एव जगन्नाथापृक भ्रादि का समह है। ६०७४. गृटका सं० ३४। पत्रस० ७६। ग्रा० ६×४१ इन्हा भाषा-हिन्दी। लेकाल ×। पूर्णं। बेष्टनसं० २८८। विशेष-भांक कवि कृत रविवार कथा का संग्रह है। ६७०५. गृटका सी० ३५ । पत्र म० ६५ । ग्रा० ५५ ४४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल स०१ = २४ । पूर्ण। बष्टन स०२ = ६ । विशेष-मन्यतः निम्न पाठों का सग्रह है। बाईस परीपह हिन्दी मक्तामर स्तोत्र पुजा ---देव पृजा कका वीनती पार्खनाथ मंगल (ले०काल स०१≍२४) विननी पाठ संबह हिन्दी चनुर्विभति तीर्चकर स्तृति ---

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर बोर अली कोटा

६७०६, गुटका सं० १ । पत्र सं० १७ । ग्रा० ६४६ इ.च.। भाषा-संस्कृत । ले∙काल ४ । पूर्णा । बेहन सं०२४७ ।

विशेष-तत्वार्थं सुत्र प्रादि हैं।

६७०७. गुटका सं० २ । पत्रस०११-६७ । ब्रा॰ ५imes६३ इ.च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰काल imes । प्रपूर्ण । बेटन स॰ ३५१ ।

विशेष—तत्वार्थं सृत्र श्रादि सामान्य पाठ एव पृजाझो का संग्रह है । सुरेन्द्रकीति विरचित श्रनन्तवत समुच्चय पूजा भी है ।

६७० द्र. गुटकास० ३ । पत्रसं० १०४ । आर्० ६imes४ इन्त्रः। भाषा—हिन्दी । ले०कालimes। पूर्ण। बेष्टनसं० ३५२ ।

विशेष -- वेगराज कृत रचनाधों का सग्रह है।

- १. चनडी --- वेगराज।
- २. ज्ञान चूनडी
- ३. पद समह
- २. पदस्तप्रह् ॥ ४. तमञ्जाहपञ्चीसी ॥
- ४. बारहसदी
- ६. सारद लक्ष्मी सवाद .

६७०**६. गुटकासं० ४ ।** पत्र स० ११-१६ तथा १ । ग्रा० ८ ४ ४,<sup>5</sup> इ.चा। भाषा–हिन्दी। से∙काल स०१७२२ । प्रपूर्ण। वेष्टनस० ३४६ ।

- १. कवि प्रिया केशवदास
- २. विहारी सतसई -- विहारीलाल
- ३. मधुमालती
- ४. सदयवच्छयासार्वालग । प्रपूर्ण ।

६७१०. गुटकास० प्रः। पत्रस० ७-१८५ । ब्रा० ६४५ हेच्या । माषा−हिस्दी । ले० काल स० १८०६ । ब्रपूर्सी विस्टन स० ३५८ ।

विशेष---निम्न पाठ मुख्य हैं।

- १. श्रावकातिचार चउपई पासचन्द्र सूरि । से •कास सं० १८०६ ।
- २. साधुबंदना---×। ८८ पद्य हैं।
- ३. च उदीसा--जिनराजसूरि।
- ४. गौडी पार्श्वनाथ स्तवन---× ।
- ४. पद संग्रह—× ।

विशेष - गटका नागीर में कर्मचन्द्र बाढिया के पठनार्थ लिखा गया था।

६७११. गुटककासं०६ । पत्र स०५-२२१-⊏०। घा०६४५१ इथ्यः । भाषा-सम्कृत-हिन्दी । ले० काल स०१७६१ । प्रपूर्णः। बेष्टनसं०३४७ ।

- १. तत्वार्थं सूत्र---उमास्वामी । भाषा-संस्कृत ।
- २ भक्तामर स्तोत्र—मानतुंग। ले० काल १७६४।
- ३ पद्मावती राग्गी रास---× । हिन्दी ।
- ४ गौतम स्वामी सज्भाय---× । "
- ४ स्तवन ---×।
- ६ चिलौड बसने का समय (सबन् १०१)
- ७ दान शील तप भावना--- 🗙 । हिन्दी । ले० काल १७६१ ।
- द सङभाय—× । हिन्दी ।
- ६ पदमध्याकी बीहाली— 

  × । हिन्दी ले० काल १७६३।
- १०. ढोलामारू चौपई—कुणललाभ । हिन्दी ।

९७१<mark>२, गुटका सं० ७</mark> । पत्र स० ४०। ग्ना०६ ४६ इचा भाषा-सस्कृत । ले० काल ४ । पूर्णावेष्ट्रन स०३६४ ।

विशेष - ज्योतिष सर्वधी माहित्य है।

**१.७१३. गुटकास० ६ ।** पत्रस० १००। झा०१×६ इ.चः। भाषा∹–हिन्दी। ले० काल × । पूर्णः। बेहनसं०३६६।

मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

१. विहारी मनसर्ट — विहारीलाल । पद्य स० ७०६

- २ नवरत्न कवित --- x
- ३ परमार्थ दोहा -- रूपचन्द । ४. योगमार -- योगीन्द्र देव

६७१४. गुटकासं०६ । पत्रस०१२६ । ग्रा० ७१४ ४३ डला। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल ४ । पूर्णावेष्टनसं०३६७ ।

विशेष--सामान्य पूजा पाठ एव स्तोत्रो का सग्रह है।

१७**१५. गुटका स० १०**। पत्रस० ६० । स्रा॰ ६imes५२ हे इश्वः । भाषाimesहिन्दी-सस्कृत हे ले॰काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं॰ ३७० ।

विशेष-पूजा सम्रह के स्रतिरिक्त गुलाल पञ्चीसी तथा भाऊ कृत रविन्नत कथा है। लिपिकार वेनराग है।

६७**१६. गुटका सं∘ ११** । पत्र स० २१६ । घा० ६<sup>3</sup>ू ४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले∘काल स० १६२४ फागुन सुटी ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ३७६ ।

प्रशस्ति—श्री मुलसधे अट्टारक श्री धमंकीति तत्पट्टे म० शीलसूपरण तत्पट्टे म० ज्ञानसूषण तदास्नायेत्रेनेवालान्वये प्रयान श्री दुर्गाराम द्विशिय आता कपूरवन्द तद्मार्या हर्गिसहरे तत्पुत्र श्री लोदी तेनैदं पुस्तक लिखाय्य दत्तं श्री बह्य श्री बुद्धसेनाय । पूजा एवं स्तोत्र सम्रह है। मुख्यतः पंडितवर सिघात्मज प० रूपचन्दकृत दशलाक्षरियक पूजा तथा भाज कृत रवित्रत है।

**६७१७. गुटका सं० १२ ।** पत्र स०१००। ग्रा०७ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इश्वा भाषा-हिन्दी। ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेटन सं० ३७७।

विशेष-वनारसीदास, भूघरदास, मोहनदास ग्रादि कवियो के पाठों का संग्रह है।

१७१ म. गुटकास० १३ । पत्रस० १४० । ग्रा० ६×४ ३ इच्छ । भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १७३४ । पर्गावेष्टनस० ६७१।

- १. गौतमगस -- वितयमल । र०काल १४१२ ।
- २. ग्राजितनाथ शांति स्तवन-मेरूनदन ।
- भागवाहवनि संज्ञाय—× ।
- ४. ग्रापाट भन धमाल--× । र०काल स० १६३८ ।
- ४. दान शील तप भावना- सययमन्दर

६७१६ मुटकासं०१४ । पत्रस०१५८ । घा०६.४६ इल्बाभाषा∹हिन्दी। ले∘काल ×। पूर्णावेषून स०३६४ ।

विशेषः - प्रत्य पृजामां के म्रानिरिक्त चीबीस तीर्थकर पृजा भी दी हुई है।

. ६७२०. गुटका सं० १५ । पत्रस० ६४ । या• १४६} इश्व । माघा-हिन्दी-सस्कृत। ले∘काल ⋌ । पूर्णावेष्टन म०३=४ ।

विशेष -- मत्र तत्र सग्रह है।

**६७२१. गुटकास० १६** । पत्रस० ११६ । स्ना० म<sup>2</sup>,४६१ डला। भाषा−िल्दी । ले• काल स०१७७१ डि॰ प्रासाह बुटी १ । पूर्ण बेष्टन स०३६३ ।

१. स्वामी कात्तिकेयानुत्रेक्षा - कात्तिकेय।

हिन्दी टीका महित

२. प्रीतिकर चरित्र --- जोधराज

ह७२२, गुटकासं० १७ । पत्रस० ४६ । ग्रा॰ ७४४ इ.च.। भाषा–हिन्दी। ले॰ काल 🗴 । पर्या। बेक्टनस० ३२२ ।

विशेष — विभिन्न पाठो का सग्रह है।

१८७२३, गुटका सं० १८ । पत्र सं०४०। घा० १४६ इ.च । भाषा—हिन्दी–संस्कृत । ले•काल ४ । पूर्णा। बेष्टन स०३ म्६।

- १. भक्तामर स्तोत्र-मानतुंग।
- २. दशलक्षरगोद्यापन—× ।

**६७२४, गुटका सं०१६। पत्र स०**४६६। म्रा०६३,४४३ इला। भाषा−हिन्दी। ले० काल स०१८ द्यासोज बुदी ७। पूर्णावेष्टन सं०३८७।

- १. वाक्वंपुरासा---मुधरदास । पत्रस० १-१८८
- २. सीता चरित्र कविबालक । " १८६-३४८
- ३ धर्मसार--×। ,, १-६० तक।

# प्राप्ति स्थान - खरडेलवाल दि॰ जैन पंचायती मन्दिर अलबर

**६७२५. गुटकासं०१** । पत्रस० १३८ । म्रा०६×४ इचा । भाषा−हिन्दी । ले० काल सं० × । पुर्णे बेहन स०२०२ ।

विशेष-वनारसीदास कृत समयसार एव नेमिचन्द्रिका का सग्रह है।

**६७२६. गुटकासं० २** । पत्रस० १०२ । झा० ६४७ इ.च.। भाषा−हिन्दी । ले० काल ४ । पूर्णावेष्टन स० २०३ ।

विशेष--पजाओं का संग्रह है।

६७२ म. गुरुका सं०३ । पत्रस०११३ । झा० ७१४ ७ इ.खा भाषा-हिन्दी। ले०काल 🗙 । झपूर्णावेष्टन स०२०४ ।

विशेष-गोम्मटसार, त्रिलोकसार, क्षपणासार ब्रादि सिद्धात ग्रंथी में से चर्वाए है।

६७२६. गृ<mark>टकासं०४</mark> । पत्र स०८०। द्या०६<sup>2</sup>, ४ ६ इच्च। भाषा-हिन्दी। ले∙काल स० १६६२ । पूर्णावेष्टनस०१०४ ।

विशेष-स्तोत्र एवं पूजा सग्रह है।

६७३०. गुटका सं० ५ । पत्र स० १४० । धा० १०३८७ इन्हाभाषा-हिन्दी। ले० काल ४ । पूर्णं। येष्टन सं० १०६ ।

विशेष--स्फुट चर्चाघो का सग्रह है।

६७३१. गृटकासं०६ । पत्रस० ६१ । घा०७ॄे×५ै इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × ।पूर्ण।वेष्टन स०१०७ ।

विशेष---निम्न पाठो का मूल्यतः संग्रह है--

१. दर्गन पाठ व पूजाएं द्यादि

२. घर्मबावनी चपाराम दीवान । र०काल स १८८४ । पूर्ण । चपाराम बुन्दावन के रहने वाले थे ।

१७३२. गुटकासं० ७ । पत्र स० २८ । ग्रा० ७ ४ ४ ६ च । भाषा हिन्दी । ले०काल ४ । पर्गावेटन म० १०६ ।

विशेष--विभिन्त पदो का सग्रह है।

१७३३, गुटकासं० ⊏ । पत्रस० ७ ⊏ । ग्रा० ८ ४ ६ इखा भाषा-हिन्दीसंस्कृत । ले० काल ४ । पूर्णा वेष्टन स०१०६ ।

विशेष-पूजा एव स्तोत्र सग्रह है।

६७३४. गुटका सं० ६ । पत्रस०२३७ । झा० ५ $\times$ ५३ ६चा । भाषा हिन्दी—संस्कृत । लेकाल सं०१०० ।

विशेष---समयसार तथा बनारसी विलास का सम्रह है। नोट---३७ छोटे बड़े गुटके भौर है तथा इनमें पूजा स्तोत्र एवं कथाओं का भी संग्रह है ३

## प्राप्ति स्थान-दि० जैन अप्रवाल पंचायती मन्दिर अलवर

**६७३५. गुटका सं०१**। पत्रस० ⊏५ । ग्रा॰ ११×६ इ.च. भाषा-हिन्दी । ले∘काल ×। पूर्णं। वेष्टन स०१४६ ।

विशेष-हिन्दी कवियो की विभिन्त रचनाओं का सग्रह है। मूख्य पाठ है.--

- १. ध्यान बलीसी । (२) नेमीश्वर की लहरी ।
- ३. मगलहरीनिंह । (४) मौक्ष पैडी—बनारसीदास
- पंचम गति वेलि । (६) जैन शतक भूधरदास
- ७. भादित्यवार कथा-भाऊ।

६७३६ गुटकासं०२ । पत्र स०३७ । म्रा०१० ४५ ३ इ.च.। भाषा–सस्कृत हिन्दी । ले•काल ४ । पूर्ण। बेहनसं०१६०।

विशेष--नित्य नियम पूजा तथा रविवृत कथा है।

६७३७. गुटकासं० ३ । पत्रसं० १४६ । म्रा० १०४५ इश्वर । माथा–हिन्दी । ले∘काल ४ । पूर्णे । वेष्टन सं० १६१ ।

विशेष --- मरूय निम्न पाठ है---

१. यणोधर चौपई

पाण्डे जिनराम

२. जम्बूस्वामं, चौपई ४. पुरंदर चौपई

-A--C

४. बकचूल की कथा

पद्य ५७२ (मपूर्ण)

मपुर्ण

**६७३ ⊏. गुटकासं० ४** । पत्र स० ४३ । धा० १० १ँ × ५२ ँ इला। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्णा। बेष्टन स० १६२ ।

विशेष--समयसार कलका की हिन्दी टीका पाप्रहे राजमल कृत है।

६७३६. गुटकासं० ५ । पत्रसं० १५८ । घा० ६४५ १ इ.च.। भाषा-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । बेहन स० १६३ ।

१ प्रनित्य प्रचासिका

२. समयसार नाटक

बनारसीदास

प्रथ्य सग्रह भाषा पर्वत धर्मार्थी

¥. नाममाना

सम्बं पवत बर्मायी

६७४०. सुटका सं०६ । पत्र सं०२२२ । झा०  $= \frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इ.स. । प्राथा=संस्कृत=िहरदी । के० काल स०१८०४ धाषाउ बुदी १ । पूर्णं। वेष्टन सं०१६४ ।

१. जिनसहस्रनाम

जिनसेनाचार्य

२. पूजा सग्रह

× २४. पूजार्थे हैं।

३. घादित्यवार कथा

भाऊ

६७४**१. गुटका सं० ७** । पत्रसं० १४० । झा० ७×५ इथा । भाषा–सस्ट्रन–हिन्दी । ले०काल स०१८६२ । पूर्णे । वेष्टन स०१६५ ।

विशेष-- जैन शतक (भूवरदास),पाश्वनाथ स्तोत्र, पंच स्तोत्र एव पुजाओं का सम्रह है।

१७४२. गुरका सं० म । पत्रस० २४ । प्रा० ११imes६५ इश्व । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले०काल imes। पर्या । देवनसं० १६६ ।

विशेष-इसके प्रधिकाश पत्र खाली है द्रव्य संग्रह गाथा एवं जैन शतक टीका है।

१८७४ **३. गुटका सं**०६ । यश्वस० ७३ । श्रा० १२, ४६ ३ दञ्च । भाषा−हिन्दी । ले०काल स०१११६ माहबृदी⊍। पूर्ण । वेष्टन स०१६७ ।

#### विशेष --- निम्न पाठ है।

- १. पूजा संग्रह । (२) पचमगल-रूपचन्द ।
- २ बारहम्बड़ी स्रत ।
- (४) नेमिनाथ नवमगल---लालचन्द

र०काल म० १७४४। ४. नेमिनाथ का बारहमामा—विनोदीलाल।

**६७४४. गुटका सं० १०।** पत्र स० २३७। द्या० ६४७ इला। भाषा∸हिन्दी। ले०काल ४। पूर्ण। बेहन म०१६६।

विशेष---निम्न पाठ है---

१. प्रीत्यकर चौपई

नेमिचन्द्र

२. राजाचन्द की कया ३. हरिवश पुरागा

,, र०काल म० १७६६ ग्रामोज सदी १०

ह७४**४. गुटका सं० ११**। पत्रस० ८६। स्ना० ७ $\times$ ४ै इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पर्मा । बेप्टन स० १६६ ।

विशेष-सामान्य पूजाओं का संग्रह है। ४३ से भागे पत्र खाली हैं।

१७४६, गुटकासौ०१२ । पत्र स०६४ । झा०६×४३, इ.च.। आया-हिन्दी। ले० काल ४ । झपूर्ण। वेस्टन स०१७०।

१ ग्रादित्यवार कथा

भ्रपूर्ण

२. शनिश्चर कथा ३. विष्सा पजर स्तोत्र

ह७४७. स्टकास० १३ । पत्रस० १२ । ग्रा० ६×४३ ६२४ । भाषा—किन्दी । ले० काल × । ग्रापुणे । बेप्टन मं०१७१ ।

ह्७४ द्व. गुटकासं० १४ । पत्रसं० ११६ । घा० ५३ ४४३ इ.चा। भाषा⊸हिन्दो । ले०काल ४ । पूर्णावेष्टन स० १७२ ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ (हिन्दी)। संवत् १८६१ (जयपुर) तक की प्रतिष्ठाओं का वर्णन तथा स्रावक की चौरामी किया स्रादि सम्य पाठ भी है। गुदका संप्रह ] [ \$08 ]

६७४६. गुटका सं०१ ४ । पत्र स० ६६ । आर० ४×४ इ०४ । भाषा – हिन्दी । ले∙काल × । धपूर्णं। बेष्ट्रन सं० १७३।

विशेष-भक्तामर सटीक ( १वे० ) । महापुराग संक्षिप्त-गगाराम । विवेक खलीसी तथा चैत्य बदना ।

१७४०. गृटका सं०१६। पत्र स०५०। ग्रा०४×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले० काल×। ध्रपूर्ण । वेष्ट्रन स० १७४।

विशेष-जिन सहस्रनाम, परमानन्द स्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र एव समाधिमरण ग्रादि का सग्रह है।

**९७५१. गृटका सं०१७** । पत्र स०३४ । ग्रा०७×६ इथा । भाषा-हिन्दी−सम्इत । ले**०काल** 🗙 । पूर्णं। वेष्टन सं०१७४ ।

विशेष-सम्मेदाचल पूजा गगाराम कृत, गिरनार पूजा तथा मागीतुगी पूजा स्नादि का सग्रह है।

६७५२. गृटका सं० १८ । पत्र स० ११४ । घा० ७} ४६} इचा । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗙 । पूर्गा । वेष्ट्रन स० १७६ ।

विशेष —गोम्मटमार, क्षपगासार, लब्बिसार में में प॰ टोडरमल एवं रायमल्ल जी कृत चर्चाओं का सग्रह है।

१७४३. गुटका स० १६ । पत्रस० ८६ । घा० ६×४ इचा । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । के•काल 🗙 । पूर्णा । देष्टन स०१७७ ।

विशेष---निन्य नियम पूजा संग्रह है।

६७५४ गुटका सं०२०। पत्र स०२०। घा० ५×६ इचा। भाषा-हिन्दी। ले∙काल स० १६६५ ग्रामोज मुदी २ । पूर्णा । बेपून म० १७६ ।

विशेष -- इष्ट पिचावनी रघनाथ कृत तथा ब्रह्म महिमा आदि कवित्त है।

६७४४. गुटका सं० २१। पत्र स॰ ६६। झा० ६×७ इआ। भाषा-हिन्दी। ते० कास × । पूर्ण। बेष्टन म० १७६।

विशेष -- नित्यनियम पूजा नग्रह, सुरत की बारह खडी, बारहभावना आदि का सग्रह है।

**६७५६. गुटका सं० २२** । पत्र स० २४८ । घा० ६३ ×६३ इश्वा । भाषा−हिस्दी । ले०काल × । पूर्णं। वेष्टन सं०१ ६०।

	विशेष—निम्न मुख्य	पाठ हैं			
₹.	उपदेश शतक	द्यानतराय	1	र०काल स० १७४⊏	
₹.	संबोध झक्षर बावनी	**			
₹.	धर्मंपच्चीसी	,,			
¥,	तत्वसार	11			
X.	दर्गन शतक	17			
٤.	ज्ञान दशक	,,			
٥.	मोक्ष पच्चीसी	,,			

८. कवि सिंह सवाद

द्यानतराय

इ. दशस्थान चौबीसी

विशेषतः द्यानतराय कृत धर्मविलास में से पाठ हैं।

१७५७. गुटकासं०२३ । पत्र स०६०। घा०१४६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले॰काल×। पूर्ण। बेष्टनस०१६१।

विशेष-सामान्य पूजाओं का सग्रह है।

**९७५ ⊏ गुटकासं०२४ ।** पत्रस• २ ⊏ । घा० ⊏्रै×६्रै इश्वा भाषा-हिन्दी–सस्कृत । के•काल × । पूर्णावेटन स०१ ⊏२ ।

विशेष-- प्रादित्यवार कथा, भक्तामर स्तीत्र एव तत्वार्थ सूत्र का सम्रह है।

**६७५६ गुटकास० २५ । पत्र**सं० ४४ । **घा० १०३** ४५ १ इ.स. । भाषा—हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्यः । बेष्टनस० १८३ ।

१. तत्वार्थसूत्रभाषा पद्य छोटीलाल ।

२. देव सिद्ध पुजा ×

६७६०. गुटकासं० २६ । पत्रस० ७४ । घा॰ ≒्रे ४ ६ देवा। भाषा-हिन्दी। ले०काल  $\times$  । अपूर्ण। बेहनस० १८४ ।

विशेष---वनारमी विलाग में में पाठों का सम्रह है। जैन शतक भृथरदास इत भी है। इसके इतिरिक्त नामान्य पाठों एवं पुत्राधों का सम्रहहै।

ह७६१, गुटकासं० २७ । पत्र स० १०४ । ग्रा० ⊏ ४६ इ.च.। भाषा-हिन्दी । ले०काल 📐 । भ्रमुर्गा वेबलस० १४ ⊏ ।

ें विशेष — भनामर स्तोत्र मापा, बाईम परीषह एवं कल्यासा मन्दिर स्तीत्र मापा धार्दि का संग्रह है।

ह७६२. गुटकासं० २ ⊏ । पत्रसं० १३३ । ग्रा० ११ × ७ ॄे इ.च.। भाषा सस्कृत । ले० काल × । पूर्णावेष्टन स० ⊏६ ।

विशेष-पूजा एवं स्तोत्रों का मंग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि० जैन दीवानजी मंदिर मरतपुर ।

१७६२, गुटकासी०१। पत्र स०२८। भाषा—संस्कृत। ले॰ काल 🔀 । पूर्णं। दशा सामान्य। बेग्टन स०१।

१८७६३, गुटका स्रं०२ । पत्र स०३०। साइज ४ । भाषा–संस्कृत । के∙काक्ष ४ । पर्या।वेष्ठन स०२ ।

ि श्रीय—प्रथम गुटके में स्राये हुये पाठो के प्रतिरिक्त पार्थनाथ स्तोत्र, धटाकर्ए संत्र तथा ऋषिमंडल स्तोत्र स्रादि कासघह है। **६७६४. गुटका सं०३** । पत्रसं०२६१ से ३२३ तक । भाषा–संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०३ ।

विशेष-स्तोत्र, तत्वार्थं सूत्र ग्रादि हैं।

६७६५. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १५ । भाषा–सम्कृत । ले०काल ४ । पूर्ण । बेष्टन स० १६ ।

विशेष-देवपूजा तथा सिद्ध पूजा है।

६७६६. गुटका सं० ५ । पत्रस० ६७ । भाषा-सस्कृत । ले०काल imes । पूर्गं । वेष्टन म० २४ ।

विशेष--गुटका सुल पत्री में है तथा स्तीत्र तथा पूजाधीं का संबह है।

**६७६७. गुटका सं० ६ ।** पत्रस• १६७ । भाषा---हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनस०२६ ।

१७६८ मुष्टका स०७। पत्र २०२४२ । भाषा हिन्दी—सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्या । वेष्टुत स०३३ ।

विशेष --- गृटके मे विषय-सूची प्रारम्भ मे दी गई है तथा पूजा पाठ स्रादि का सम्रह है।

१७६१. गुटका स० ६ । पत्र स० ६४ । भाषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेरटन स०२४ ।

१७७०. ग्टका सं०१ । पत्र स०१०६ । भाषा-हिन्दी । लेक्काल 🗴 । पूर्णा वेष्टन स०३६ ।

१८७१. गुटका सं० १० । पत्रस० १३४ । भाषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्सा । वेष्टतसं० ३७ ।

६७७२. गुटकासं० ११ । पत्र सं० १७३ । भाषा−हिन्दी। ले∘काल सं० १८२४ मादों मुदी ४.। पूर्णावेष्टन स०३६।

विशेष---निम्न पाठों का सम्रह है।

- (१) पद सग्रह (जगराम गोदीका )
- (२) समवशरण मंगल (नथमल रचना स॰ १८२१ लेखन सं॰ १८२३)
- (३) जैन बद्री की चिट्ठी (नथमल)
- (४) फुटकर दोहा (नयमल )
- (१) नेमीनाथजी का काह्ला (नथमल)
- (६) पद सग्रह (नथमल )
- (७) मूघर विलास (मूघरदासजी)
- (द) बनारसी विलास (बनारसींदासजी ) । आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

६७७३. गुटका सं० १२ । पत्रस०४६। भाषा-हिन्दी पद्य । लेक्काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसं०४०।

विशेष--(१) सभाभुषण् ग्रथ --(गगाराम) पद्य सस्या ६४ । रचना काल-१७४४ ।

(२) पद सम्रह-(हेतराम) विभिन्न राग रागनियों के पदों का सम्रह है।

१७७४. गुटकासं० १३ । पत्रसं०१६० । भाषा-सस्कृत । से०काल स०१७७६ । पूर्स । वेष्टन स०४५ ।

विशेष — पूजाओं का सग्रह है।

१७७५. गुटका सं० १४ । पत्रस० ७६ । भाषा-हिन्दी । ले॰काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ४६ । विशेष — (१) चौबीम ठाणा चर्चा ।

(२) चौबीस तीर्थंकरों के ६२ ठाएगा चर्चा।

६७७**६. गुटका सं० १५।** पत्रसं० ११< । भाषा-हिन्दी । र०काल × । पूर्णावेद्यनस०५०।

विशेष--इन्द्रगढ मे प्रतिलिपि की गई थी। समयसार (बनारसीदासजी) भी है।

६७७७. गुटका सं० १६। पत्रस० ४२। भाषा-हिन्दी। तेश्काल 🗴। पूर्ण । बेपून सं० ७। ६७७६. गुटका सं० १७। पत्रस० १६। भाषा-हिन्दी। तेश्काल 🗴। पूर्ण ।बेपून स० ८।

विशेष--- शनिण्चर की कथा दी हुई है।

६७७६. गुटका सं० १८ । पत्रस० ८४ । भाषा-हिन्दी । के•काल ×। पूर्ए । बेष्टन स० २१ ।

विशेष--बुधजन मतमर्ट, पद व वचन बतीसी है।

६७८०. युटकासं० १६ । पत्रस० १६३ । भाषा-हिन्दी मरुकृत । 🗙 । ले∙काल ४ । पूर्ण । वैष्टन म०२४ ।

विशेष – पूजा पाट व कथा-सग्रह है ।

६७६१. गुटका स० २०। पत्रसं॰ ६०। माषा-हिन्दी-सस्हत । imes । के॰काल। imes । पूर्यं। बेष्टनस॰ २४ ।

विशेष-- पूजा पाठ ग्रादि सग्रह है।

६७६२. गुटका सं० २१। पत्रसं० ६२। भाषा िहन्दी। ले०काल ×। पूर्गं। बेष्टन सं० २६।

विशेष---रत्नकरण्ड श्रावकाचार माया वचनिका है।

६७६३. गुटका सं० २२ । पत्र स० १०१ । माथा-हिल्दी । ले∘काल 🗴 । पूर्णं । वैद्युतसं०२७ ।

विशेष-चर्चा वर्गरह हैं।

६७८४, गुटका सं० २३ । पत्रसं∘ २७०। भाषा∽हिन्दी। ले०काल ४ । पूर्णं। वेष्टनसं०२८।

विशेष-पुजा पाठ स्तोत्र आदि है ।

**६७६५. गुटकासं०२४ । पत्रस०**४७ । भाषा−हिन्दो । ले∘काल × । पूर्यं। वेकनस०२६ ।

विशेष— धक्षर बावनी, ज्ञान पच्चीमी, वैशस्य पच्चीमी, सामायिक पाठ, सृत्यु महोत्सव आदि के पाठ हैं।

**६७८६. गुटका सं०२४।** पत्रसं०४३। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले∘काल ×। श्रपूर्ण।वेस्टन स०३१।

विशेष-चेतन कर्म चरित्र है।

१८७५७. गुटकां स०२६ । पत्रस०२ मे २६६ । भाषा-हिन्दी । लेक्सल 🗴 । मपूर्ण । बेट्नस०३२ ।

**विशेष** - भूघरदास, जिनदास, नवलराम, जगतराम आदि कवियो के पदो का सग्रह है।

१७८८ गुटकास०२७।पत्रस०६७ मे २२३। भाषा-हिन्दी। ले∘काल × । प्रपूर्ण। बेष्टनस०३४।

विशेष-पद, स्तात्र, पूजादि का सम्रह है !

ह७८६. **गुटकास० २८ ।** पत्र स**०** १०३ । भाषा-प्राकृत । ले०काल स० १६०१ । पूर्णा । वेग्टन स० २४ ।

विशेष--परमान्म प्रकास, परमानन्द स्तोत्र, वावनाक्षर, केवली, लेश्या ग्रादि पाठो का सग्रह है।

६७६०. गुटकास०२६ । पत्रस० २२७ । भाषा-क्रियो । ले०काल स०१६३० । पूर्णं। बेह्न सं०४६ ।

६७६**१. गुटका सं० २**०। पत्र स**०** २७५। माषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ए । **बेहन स०** ४७।

विशेष -- नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ, पचस्तोत्र एवं जैन शतक आदि हैं।

८७६२, गुटका सं० ३१ । पत्रसम् ७२ । भाषा - हिन्दी । ले•काल × । पूर्णं। वेष्टन स०५० । विशेष — देव पूत्रा भाषा-टीका जयवन्द जी कृत है ।

६७६३. पुटका स॰ ३२। पत्रसं॰ ३२। भाषा-हिन्दी। ले॰ काल 🗴 । पूर्ण । बेट्टन म० ४१ विशेष – देव पूजा तथा भक्तःमर स्तोत्र है।

**६७६४, गुटका स० ३३**। पत्र स<sub>०</sub> २६। भाषा—हिन्दी । ले०काल × । पूर्म् । वेष्टन सं० ४२।

विशेष--पूजन सम्रह है।

६७६५. गुटकासं० ३४ । पत्र स०२ से ३६ । ले० काल 🗴 । पूर्णा वेष्टन स०५३ । विशेष — निस्य पूजा संग्रह है।

१८७६ ६, गुटकास० ३५ । पत्रस० ४८-१३५ । माषा—हिन्दी-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्णा वेष्टनस०५८ ।

विशेष-जिन महस्रनाम एव पूजा पाठ है --

१७२७. गुटका सं० ३६ । पत्रसं० ७१ । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗙 । पूर्णः । बेष्टनस० ५४ । विशेष — जिन सहस्रनाम स्तीत्र-प्रामाधर, बोडप कारण पूजा, पत्रमेह पूजाए है ।

६७६८. गुटकास०३७। पत्रम० १४३। प्रापा-हिन्दी-सस्कृत। ले०काल 🗴 १ पूर्ण। बेहनसं०४४।

विशेष --पवमगल-रूपवर्दः। सिद्धं पूजा भ्रष्टाह्निका पूजा, दशलशरण पूजा, स्वयभू स्तोत्र, नवमगल नेमिनाय, श्रीमवर जी की जलडी --हरण कीति । परम ज्योति, भक्तामर स्तोत्र भादि है ।

६७६**६. गुटका सं०३**⊏ । पत्रस• २४० । भाषा−हिन्दी -सम्कृत । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टन स• ४६ ।

विशेष — नित्य नीमिलिक पूजा पाठ, सम्मेदाचल पूजा, चौबीम महाराज पूजा, पच मगल, धन कथा व पूजाए हैं।

६८००. गुटका स० ३६ । पत्र स० २२३ । भाषा-हिन्दी--मस्कृत । ले० कान ४ । पूर्या । वेष्टनस० ४७ ।

विशेष —तत्वार्य मूत्र, मगल, पूजा, पच परमेशी पूजा, रत्नत्रय पूजा, प्रादित्यगर कथा, गाउल पच्चीसी प्रादि पाठ हैं ।

पद-१-भक्सी पारसनाथ-भागचन्द ।

२-प्रमुदर्णन का मेला है – बलिभद्र।

३-मै कैसी कर साजन मेरा त्रिया जाता गढ़ गिरनार-इन्द्रचन्द्र ।

४-सेवक कू जान कै--लाल।

५-जिया परलोक सुधारो — किशनयन्द्र।

६-मागे कहा करसी भैया जब ग्राजासी काल रे-बुधजन ।

६८०१. गुटका सं०४०। विशेष-सत्रा प्रांगार है। धन्तिम पाठ--

> माया करी नाम समाधूयन गिरच कह लीजिए। यामे रागरागिनी की जात समें ......यह ते तान ताल ग्राम मुरगुनी मुनि रोफिए। गगाराम विनय करत कवि कांन मुनि बरनत भूले तो मुखारि कीजिए।

बोहा

सम्बह सन सबत् सरस चतुर प्रश्कि चालीस । कातिक मुदि तिथि प्रष्टभी बार सरस रजनीस ।।६२॥ सागानेर मुश्रान मे रामसिह नृपराज । तहा कविजन बचपन मे राजित समा समाज ।।६३॥ गगाराम तह सरम कार्य कोनी वृधि प्रकास । श्री भगवत प्रसाद ते इह सुभ समा विनास ।।६४॥

इति समासृगार ग्रथ सपृरन ।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

६८०२. गुटका स० १ । पत्र स० १३–१४३ । भाषा-हिःदी । ले०काल ४ । पूर्गः। वेष्टतस०३३४ ।

विशेष — पदो का सम्मह है। मुख्यतः जग्गाराम के पद है। ग्रंत में हरच द सभी कृत चौबीस महाराज की बीनती है।

भ्रातम बिन सूख भौर कहारे।

कोटि उपाय करी किन को 3. विन प्यानी नही जान तहारे।
भव विरक्तत जोगी मुर हैंगे, जिहि ये पिरिव विराचिर हारे।
बरनन किर कहीं कैंमे किहिएं, जिसका रूप प्रश्नेप हारे।
जिहि दे पाये विन समारी, जग प्रन्दर विच जात बहारे।
जिहि दे पाये विन समारी, जग प्रन्दर विच जात बहारे।
जिहि दे ने किर के पाइव नै योर तपस्या सकल सहारे।
जिहि दे भाव प्रास्थ उर कीना, जो पर सेनी नाहि फस्यारे।
कहें दोप नर तहीं प्रस्य हैं जिस दानीड सदा रूप चहारे।। प्रातम।।

8्⊏०३. गुटका सं० २ ।पत्रस• ४३ ।साषा-प्राइटत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा। वेष्टनसं• ३०६ ।

विशेष---निम्न पाठ है।

 द्रव्य-सग्रह—हिन्दी टीका सहित टीकाकार वशीधर है।

२. तपोद्योतक सत्तावनी, द्वादणानुप्रक्षा, पच मगल ।

६८०४. गुटकासं० ३ । पत्रसं• ७६ । माया-सस्कृत । ले॰ काल सं॰ १९०७ । पूर्णं । वेष्टन सं• २८४ ।

चिशेष — नित्य नैमित्तिक १२ पूजाओं का संबह है। इनमें नवसेना विचान, दस दान, मतमंतार दर्भनाष्ट्रक भादि भी हैं। **६८०५. गुटका स० ४ ।** पत्रस० १६० । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन म० २७४ ।

विशेष —७४ पाठो का सपह है जिनमे श्रीयक स्तोत्र सपह है । कुछ विनती तथा साधारण कक्षाणें है । कुछ उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है ।

- १. कलियग कथा-- रचयिता, पाक्षे केशव, ज्ञान भूषए। के उपदेश से । भाषा हिन्दी पद्य ।
- २ कर्म हिडोलना---रचयिता---हर्षकीति । भाषा-हिन्दी पद्य ।

#### पद---

साथो छाडो कुमति सकेली, जाके मिग्या मग सहेथी।
माधो तीज्यो मुमति प्रकेली, जाके समना सग महेली।
बह सात नरक ..... यह समग्रतायक।।१।।
यह प्रागे कोध यह दरसन निरमन किना माधित धर्म बलाने।।२।।
यह सुगति तनी व्यवहार चित्र चेती जान समार्कः।
यह कुनल कोरित गति गार्व गांव जीवन के मन भाव।

## पत्र १४७ मालीरासा --

भव तक मीच हो मालिया, निह चक चार गृहाल। चिहुँ डानी फल जब ज्यर, ते फल राय्यय काल रे। प्रानी नुकाह त चेत रे।।१।। काल कहे गृति मालिया, सीच जुमाया गवार। देखत हो को होडा होड है, भीतर नहीं कुछ गार रे। ६।।

काया कारी हो कन करें बीज मुदेशन नोप। सील मुकरना मालिया, धरम प्रकुरो होय रे प्राग्यी। गहि बैराग कुटाल की, लोदि मुचारत कूप। भाव रहट वृत बोलि छट कार्थ श्राम कुपरे।।१७।1

कहै जिनदास मुरास्थियो हसत बीज सुभाल। मन दाच्छिन फल लागमी, किस ही भव भव कालरे ।।२६।।

पत्र १६३ से १८१ तक पत्ती से काट कर ले जाये गये हैं।

## निम्न पाठ नहीं हैं --

ऋषभदेव जी की स्तृति, बहत्तरि सीख, झप्ट गध की विधि यत्र, नामावली, मृहूर्त्त, सरोधा, विस्तीकी जन्म पत्रिका।

यह पुस्तक स० १६३१ में बछलीराम रामप्रमाद कासलीवाल वैर वाले ने भरतपुर के मंदिर में चढाई।

**६८०६. गुटका स० ५ । पत्र**स० २०२ । भाषा –सस्कृत-हिन्दी । ले**०काल स० १**८८२ । पूर्ण । वेष्टन स० २३७ ।

खिरोख - नित्य पूजा पाठ है। पत्र १०३ से १६६ तक बहुत मोटे ग्रअर हैं। पोडय कारण तथा दसलदारण जयमाल है। प्राह्न गाथाओं के नीचे नस्हन ग्रथं है। ३५ पाठो का सग्रह हैं।

**६८०७ गुटका सं० ६।**पत्र स० ७५६ । भाषा−हिन्दी । **ले०**काल × । पूर्णा वेष्टन स०२७२।

विशेष—१२० पाठो का सग्रह है। ब्रक्षर मृत्य तथा काफी मोटे है। प्रारम्भ में पूजा प्राकृत तथा विजोदी लाज कुन मतन पाठ है। प्रारम्भ में विषय मृजना भी दी हुई है। नित्य नैमित्तिक पाठों के मितिरिक्त निम्न पाठ और है—

भजन — जगतराम, नवलर्जा, जोधराज, खानतराय जी स्रादि के पद तथा टोडरमल कृत दर्शन तथा शिक्षा छन्द ।

६६० म. गुटकास० ७ । पत्रस० ६६ । भाषा हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण । वेष्टनसं• २६४ ।

## 

पार्थनाय स्तोत्र, िद्ध दूजा, भक्त.मर स्तोत्र, सम्कृत तथा भाषा, कल्यासा मन्दिर स्तोत्र, भाषा हादशानुभेक्षा, त्रिलोकसार भाषा-रचना मुमति कीति, र०काल १६२७।

**छहढाला**—चानतराथ । र०काल १७५६ ।

समाधिमरस

€ ५० ६. गुटका सं० ६ । पत्रस० ३१६ । भाषा हिन्दी ।ने० काल स० १८८४ ।पूर्ण ।वेष्टनसं० २६६ ।

विशेष — ४६ पाठों का सब्रह है। सब नित्य पाठ ही हैं। जोधराज जी कासलीवाल कामा वालों ने लिखाई। सक्षर बहुत मोटे हैं एक पत्र पर ख्राठ लाइन है तथा प्रत्येक लाइन में १३ खक्षर हैं। एक टोकर सल कृत दर्शन भी है जो गद्य में हैं।

६**८१०, गुटकासं०६ ।** पत्रस० १७० । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७८५ । पूर्णी । वेहनसं०२६३ ।

- (२) भ्रनित्य पञ्चीसी-भगवतीदास
- (३) ब्रह्मविलास-भगवतीदास-पत्रस० ६६। र०कास सं० १७४४।

६८११. गटका सं० १०। पत्रसं० १४६। माषा-हिन्दी । लेब्बाल 🗴 । मपूर्ण । बेष्टनसंब 1 835

विशेष — नित्य नैमित्तिक पूजा पाठो का सग्रह है। मोक्ष शास्त्र के प्रारम्स में मगवान का एक सुन्दर चित्र है। चित्र में एक स्रोर गोडी डाले हाथ जोडे मुनि तथा दूसरी ग्रोर इन्द्र है।

६**८१२. गृटका स० ११।** पत्रस० १०८। भाषा-सस्कृत । ले॰काल × । पूर्ण । **बेष्टनस**० २१४ ।

विशेष-भरतपूर में लिखा गया था। पद्मावती स्तोत्र, चतु पष्टि योगित्री स्तोत्र, लक्ष्मी स्तोत्र, परमानन्द स्तोत्र, रामोकार महिमा, यमक वय स्तोत्र, कटट नाशक स्तोत्र, ब्रादिन्यहृदय स्तोत्र श्रादि पाठो कासग्रह है।

**६८१३. गृटका सं० १२** । पत्रस० ४२३ । भाषा-हिन्दी । ले•काल स० १८०० । पूर्गे । बेष्ट्रनस० १७८।

## विशेष--

- (१) पद्म पुरास्य-न्युषात्व चन्द । पत्रस० १३६ । र०काल १७८३ । पूर्सं ।
- (२) हरिबंश पुरारग---खुणालचन्द । पत्रस० १०१ ।
- (३) उत्तरपुरागा—- ल्यालचन्द । पत्रस० १८३ । र०काल स० १७६६ ।

६८१५. गुटका सं० १३ । पत्र म०३४६ । भाषा-हिल्डी । ले० काल 🔀 । पूर्ण । बेल्टन स० 1288

<b>विशेष</b> —- गुटकं में निर	न पाठ हा	
१. ब्रह्मविलास	भगवतीदाम 🕽	पश्चस० १३३
		ले∙कालास०१७६३ चैत्र शुक्ला१०।
२. पद ४		पत्र स०१३४ से १३६
३. बनारसी विलास	वन।रसीदास ।	पत्र स० १४१-२०६ तक ।
		ले • काल स० १८१८ कार्तिक मुदी६।
४. समयसार नाटक	बनारसीदास ।	पत्र सं०१ से १२७ तक
५. पद सम्रह	AND ROTH OF	पत्र स०१ से १७ तक

## पद सुन्दर है-

निजनन्दन हुलरावै, वामादेवी निजनन्दन हलरावै। चिरजीयो त्रिभुवन के नायक कहि कहि कठ लगावै ॥१॥ नील कमल दल अंगमनोहर मुखदुतिबन्द हुरावै उन्नतभाल विसाल विलोचन देखत ही वनि आवै ।।२॥ मस्तक मुकुट कान युग कुण्डल तिलक ललाट बनावे । उज्जल उर मुकताफल माला, उडगन मोहि तिहरावै 11311

मृत्य रूप से हर्षचन्द के पद हैं।

मुन्दर सहस प्रष्टोत्तर लक्षन ध्रग गुन मुभग मुहार्ब । मुख मुदुहास दतदुति उज्जल ध्रानन्द धिथक बढार्ब ॥४॥ जाकी कीरत तीन लोक मैं मुरतर मुनि जन गार्ब । सो मन हरषबन्द थामा दै, ने ने गोद लिलार्ब ॥४॥

ग्रन्य पाठ संग्रह है---पत्र स०३५

**६८१६, गुटकासं०१४** । पत्रस०१३४ । भाषा-हिन्दी-तस्कृत । ले०कालस०१८०७ । पूर्णाबेष्टनस०१२०।

विशेष—जगतराम कृत १६४ पदो का सक्ष्ह है। ६१ पत्र तक पद है। इसके बाद सिद्ध चक्र पूजा है।

ह⊏१७. गुटकासं० १४. । पत्रस० २४६ । भाषा-हिल्दी । ले∙काल 🗴 । पूर्णं। बेष्टन म०१०७।

विशेष -- पूजा भजन तथा पद ग्रादि का मुन्दर सग्रह है।

ह्द**्रद. गृटका सं०१६ ।** पत्र स०३४३ । आषा-हिन्दी । ले० काल स०१८८८ । पूर्ण । बेष्टनस०१०६ ।

६८१६. गुटका स० १७ । पत्रस० २६५ । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले० काल ६८ । पूर्ए । वेष्ट्रनसं० १०, ।

विशेष--पुतायो तथा कथायो प्रादि का सग्रह है।

६⊆२०**. गुटका सं० १**८ । पत्रस०४०। भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०१०२।

विशेष---मामान्य पाठो का सग्रह है।

६८५**२. गुटका सं०१६** । पत्रस० ३१ । भाषा-हिन्दी। ले∘काल × ।पूर्ण।वेष्टन स०१०३ ।

विशेष—सामान्य पाठी का सग्रह है।

६६२२, **गुटका सं**०२० । पत्रस० ५६ । भाषा−हिल्दी पद्य । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स०४०३ ।

विशेष—हरिसिंह के पद है।

९८२३ सुटकासं०२१। पत्रसं०३१। भाषा-हिन्दी। वे०काल ×। पूर्णा वेष्टनसं०४०४। विशेष—समाधि मरसातथाजिन शतक शादि है।

१८२४. **गुटका सं० २**२ । पत्रम० २०० । भाषा हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन स०४०६ ।

विशेष—पुष्यता, तेतराम,भूषरदास, भागचन्द, विनोदीलान, जगतराम ग्रादि के पदो का समेह है। ६८२५. सुटका सं० २३। पत्र सा० १ से १६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । ब्रपूर्ण। वेस्टन सं० ३१७।

विशेष ---मुख्य पाठ निम्न प्रकार है---

कलियुग की कथा हिन्दी केशव पाण्डे
 बारहबडी, ग्रहारह नाने की कथा हिन्दी कमसकीति

 रामदास पश्चीमी -- रामदास
 प्रेमघुमार सिक्काय -- प्रृतो
 कवित्त जन्म जल्यागुक महोस्मव -- हरिचन्द इसमे २६ एख हैं।

६. सूम सूमनी की कया, परमार्थ जकडी

रामकृष्स्

**९८२६. गुटकास० २४। पत्रस०** २०से २०६ । भाषा-प्राइत-हिन्दी । ते∘काल × । अपूर्ण । बेष्टनम० ३६८।

**विशेष** — मुख्य पाठ ये है।

पचिद्रिय बेनि टक्कुरसी । भाषा-हिन्दी ।

रचना काल स० १४८५ । के•काल × । प्रपूर्ण ।

प्रतिकमम्म × । प्राकृत । रचना काल × । क्यूर्ण ।

मनोरय माला मनोरय । भाषा-प्राकृत । रचना काल × । पूर्ण ।

द्रव्य सबद नेमिचन्द्राचार्य । भाषा-प्राकृत । ने•काल × । पूर्ण ।

६⊏२७, **गुटकास० २५** । पत्र स० ४४ । भाषा हिन्दी । लेल्काल र । पूर्णं । बेस्टन स० ३६६ ।

विशेष---राजुल पच्चीमी विनोदीलाल, नेमिनाथ राजमति का रेलता --विनोदीलाल

६८२८ गृ**टका सं० २६** । पत्रस• ६३ । ले॰ काल स॰ १८६० । पूर्या । बेष्टन स॰४००।

विशेष --- नित्य पूजा पाठ है।

६ स२६. <mark>गुटकासं० २७</mark> । पत्रम**० ४०। भाषा** हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्णे। बेस्टन सं०४०१।

विशेष--मंडराम कत पद है।

६८२०. **गुटका सं २८।** पत्र स०६७ । मापा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल स०१८१४ । पूर्ण । वेष्टन स०४०४ ।

विज्ञोष —िनित्य पाठ तथा स्तीत सबह है। पूजरमन पुत्र मेघराज मोजमाबाद वान की पुस्तक है। ६८३१. गुटका सं० २६। पत्र स०५०। भाषा-हिन्दी। से∙काल ×। पूर्ण। बेहन स०३५६।

विशेष --मामान्य पाठ है।

६ ६ ३२. गुटकासं∘ ३० । पत्रस∘ ४ ६ । मार्चा—हिन्दी-सस्कृत, । कॅ०काल × । पूर्णी। वेष्टन सं∘ ३५१ ।

विशेष--तत्वार्थं सूत्र एव पूजा शग्रह है।

गुटका संबाह ] [ १०४४

६८३३. **मुटका सं०३१।** पत्र सं०१० से ४०। मापा-हिन्दी संस्कृत। जे०काल ×। श्रपूर्ग। बेष्टन स०३४२।

विशेख--स्तोत्र सग्रह है।

६८३४. गुटकासं० ३२ । पत्र स० १४ । मापा-हिन्दी-सम्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्ट्रनसं० २५३ ।

विशेष --- पूजा पाठ संग्रह है ।

६ स. २५. गुटका सं० ३३ । पत्र स० ४६मे१४३ । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले०काल ×। ब्रपूर्ण । वेष्टनसं० २४६ ।

विशेष - धार्मिक चर्चाएं हैं।

६⊏३६. गुटका स० ३४ । पत्रस० ४० । भाषा-हिन्दी-सस्प्रत । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ३५० ।

चित्रेख - नवमंगल (विनोदीलाल) पदावती स्वोत्र (सस्कृत) चत्रेष्वरी स्तोत्र (सस्कृत)

६ ८ ३७, **गुटकास०३५** । पत्र सं०२३ । भाषा हिन्दी । ले० काल स०१६६६ । पूर्ण । बेष्टुन स०३४५ ।

विषय --- बनारमीदास कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है।

६ ⊏३ म्. गुटकास० ३ ६ । पत्रस० २० । भाषा-हिन्दी । २०काल 🗴 ः ले०काल ४ । पूर्णा। बेष्टन सं० ३४६ ।

६ द ३६, गुटकास० ३७ । पत्रस० १६ मे । १२० । माया-हिन्दी । से∙काल 🗴 पूर्णा। वेष्टनस०३४ द ।

विशोध — श्वेतास्वरीय पूजाधो का संग्रह है। १०८ पत्र मे पचमतपवृद्धि स्तवन (समय— सुन्दर) वृद्धि गोतम रास है।

६८४०. ग्टका सं० ३८ । पत्रस० १६ । भाषा-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३४२ ।

विशेष--दणलक्षरा पूजा तथा स्वयम्भू स्तोत्र माचा है।

६८४१. मुटका स० ३६। पत्रस० २४। भाषा -िहन्दी। ले∘काल ×। पूर्ण। वेष्टन सं० ३४३। विभोज -- कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है।

**६८४२. गुटका सं०४०**। पत्रसं०४८। भाषा हिन्दी। ने०काल × पूर्ण। वेष्टनम० ३४४।

६६४३, गुटकासं० ४१ । पत्रसं० १६ से ७० तक । भाषा~हिन्दी । ले•काल × । ग्रपूर्ए । वेष्टनसं• ३३६ । ६ **८ ६ ४४ . गुटका सं∘ ४**२ । पत्र स० ७४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ए । वेष्टन स० ३४० ।

विशेष--- ५ पूजाओं का संग्रह है।

६८४. गुटका सं० ४३ । पत्रस० ४७ । भाषा-हिन्दं। । ले० काल 🗴 । पूर्एं। वेष्टन सं० ३४१ ।

विशेष---धार्मिक चर्चाए है।

६८४६. गुटका सं० ४४ । पत्रसं०७ से ५७ । माषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । सपूर्णः । वैद्यनसं०३३४ ।

विशेष — ब्रह्मरायमन्त्र कृत सोलह स्वप्न किसर्नासह कृत प्रच्छारना पच्चोसी तथा सूरत की बारहसडी है।

६८४७, **गुटकासं० ४५ ।** पत्रस० ७२ । भाषा-क्रिन्दी। ले०काल स० १८०६ मगसिर मुदी ६ । पूर्णावयन स० ३३६ ।

विशेष-मामान्य पाठ है।

६८४७. गुटका सं०४६ । पत्र स० १८८ । भाषा हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ए । वेश्न सं०७७२ ।

**विशेष**— पूजा पाठ एवं पद संग्रह है।

६८४**८. गुटका सं० ४७** । पत्र स०२०४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्णा । वेष्टन सं० ७७३ ।

**विशेष --** छोटे२ मजन है।

६८४**६. गुटका सं० ४८ ।** पत्र सं०३३ से ६०। भाषा–सस्कृत-हिन्दी।ले०काल ४ । अपूर्ण।बेष्ट्रन स०६६२।

६८.५०. गुटकासं० ४६ । पत्रस० २० । सापा-प्राकृत । ले०काल 🗴 । सपूर्णा । बेस्टन सं∙ ६३१ ।

६८ प्र**१. गुटका सं० ५० ।** पत्र स० ६५ । मापा-हिन्दी । विषय-सम्रह । ले०काल imes । प्रपूर्ण । वेग्टन म० ५२१ ।

विशेष-विनोदीलाल कृत पद तथा नित्य पूजा पाठ है।

६८५२. गुटका स० ५१ । पत्र स०६० । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । र०काल 🗴 । ले॰काल स०१६४४ । पूर्ण । बेष्टुन स०५२४ ।

विशेष-मामान्य पाठ हैं।

६८५३**३. गुटकासं० ५२** । पत्र स० ५ से २२१ । भाषा∸हिन्दी-संस्कृत । ले**∘कास** ४ । भाषुर्स्। वेग्टन स०५०१।

विशेष--- नित्य पूजा पाठी का संग्रह है। उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार हैं।

चतुर्विमति देवपूजा-सम्कृत जोगीरास-जिनदास कृत सज्जनचित्तबल्लभ---

श्रुतस्कथ---भ० हेमचन्द्र ।

नवग्रह पूजा---सस्कृत

ऋषि मडल, रत्न त्रय पूजा----

चिन्तामिंग जयमाल - राइमल

माला-इसमे बहुत से देशों के तथा नगरों के नाम गिनाये गपे हैं।

६८५४. गुटका सं० ५३। पत्र स० १६-६३। भाषा-हिन्दी। ले०काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन सं० ४६६।

विशेष-- पूजा सप्रह---दशनक्षण जयमाल ग्रादि है।

६८५५. गुटकासं०५४। पत्रसं०५०। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। लेक्जल 🗴 । अपूर्ण। बेष्टनसं०४६७।

६८४६. गुटका सं०४४ । पत्रसं०४१ । मापा-हिन्दी । ले∘काल ४ । धपूर्ग। वेष्टन स०४६⊏ ।

विशेष---नित्य पूजा, स्तोत्रादि भी है।

६८६**५७ गुटकासं०५६ ।** पत्र सं०२५ । मापा-हिन्दी । ले०काल × । प्रपूर्ण**। वेष्ट**न स०६८७ ।

१८८५ क. गुटका सं० ५७। पत्रस० १८०। भाषा सस्कृत-हिन्दी। ले॰काल स० १८६४। पूर्ण। बेष्टत स० ४६३।

विशेष---नित्यपूजा पाठ स्तोत्र भ्रादि सवह है।

६८५६. गुटका स० ५८ । पत्रस० १७-११३ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल स० १८२४ । अपूर्ण । बेष्टन स० ४६४ ।

**विशेष**---पूजायो का सप्रह है।

६८६०. गुरका सं० ४६ । पत्र स०१ - २४ । भाषा- संस्कृत-हिन्दी। ले०काल 🗴 । पूर्णं। वेप्टन सं० ४६५ ।

विशेष--पूजा पाठ ग्रादि का सग्रह है। लालचन्द के मगल ग्रादि भी है।

६ ६ ६१. गुटकास ०६०। पत्र स०४४। भाषा-हिन्दी—सस्कृत। ने०काल सं० १४४६। मादवासुदी ४। अपूर्ण। वेटटन स०४६१।

विशेष---निम्न सवह है---नित्य पूजा, चारित्र पूजा-- नरेन्द्रसेन ।

**६७६२. गुटका सं**०६१ । पत्र स०६६ से १६३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं०४६२

६८६६३, गुटका सं० ६२ । पत्रसं• ३४ । भाषा-हिन्दी । ले॰काल स॰ १८८१ माघ वदी ७ । पूर्णे । वेष्ट्रन सं०४८१ । ८ = ६४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७-६४ । भाषा—हिन्दी । लेक्सल  $\times$  । पूर्ण । बेण्टन स० ४ = ६ ।

विशेष - मक्तासर स्तोत्र, कल्याए मन्दिर स्तोत्र भाषा स्तोत्र भाषि है।

६८८६५. गुटकासं०६४ । पत्र सं०५८ । माषा-संस्कृत । ले∘काल 🗴 । पूर्णं। बेटन सं०४७३ ।

**८८६६. गुटकासं०६५ ।** पत्र सं०४४ । भाषा∽सस्कृत~हिन्दी । ले०काल 🗙 । पूर्ण। बेष्टन सं०४८० ।

विशेष— कमं प्रकृति, चर्नावशनि तीर्थकर वासीठस्थान, बावन ठाग्गा की चौपई, परमशतक (भगवतीदाग) मान दक्षीसी (भगवतीदाम) का सम्रह है।

१८६६७ गुरुका सं०६६ । पत्रस०२६१ । भाषा—पम्फुल-हिन्दी । ले०काल सं०१४६३ मगसिर बढीर पुर्णा। वेफ्नस०४७१ ।

विशेष--पृथापितविन, सारसमुज्जय, निध की पापटी, योगसार, द्वादणान्त्रेक्षा. चीत्रीस टागा, कर्मप्रकृति, भाव सबंद (श्रृतमृति) मुभापित जतक, गुगास्थान चर्चा, ब्राय्यान्म वावती श्रादि का सब्द है।

**९८६८ गुटकास० ६७ ।** पत्रस० । २६८ । माषा-प्राकृत-सम्ब्रुत-हिन्दी । ले∙काल 🗸 । पूर्मा । बेप्टनम० ४७२ ।

विशेष--पूजा सपह है।

**६८६६ गुटकासं० ६८**। पत्रस॰ ६८। भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले∘काल ४ । पूर्णः । वेकनसं∘ ४६५।

विशेष--सामाधिक पाठ, पूजा पाठ, स्तीत्र बादि का संग्रह है।

६८७०. गुटकासं० ६६ । पत्रसं० ३८। भाषा~सस्कृत । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टनस० ४४६ ।

हस्य १. गुटका सं०७०। पत्रस० ३१०। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ने०कान 🗙 । प्रपूर्ण। वेष्टनसं०४६२।

विशेष---पूजा पाठ एवं पद संग्रह है।

६ द७२. गुटकासं० ७१ । पत्रसं∘ १६४ । भाषा~प्राकृत-संस्कृत । से∙काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रतस०४६४ ।

विशेष-पडभक्ति, मावना वनीसी, ग्रागांदा । गीतडी ग्रादि पाठो का संग्रह है ।

६८७३ गुटकास० ७२ । पत्र स०३४० । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्त्ताकानाम	भाषा	विशेष
घटाकर्णमत्र		सस्कृत	(৭য় ৬)
देवपूजा ब्रह्मजिनदास	-	,,	, ,
शास्त्र पूजा ,, ,,	and the same	.,	

जिनशतक	भूधरदास	हिन्दी	
ग्रठारहनाताका चौढाल्या		,,	
भक्षर बावनी	दौलनराम	"	
वैराग्य उपजावन भ्रग	चरनदास	,,	१०७
दानशील तप भावना	समयमुन्दर	,,	
<b>भै</b> रवपूजा		,,	
लोहरी दीतवार कथा	मानुकीति रचना १६७२	1)	
भडली वचन	ले∙काल १८२८	,,	
निपट के कवित्व		"	
ज्ञानस्वरोदय	चरनदास	,,	
सबद		11	
पदव स्तुति सग्रह		,,	
सामुद्रिक	र०काल स० १६७⊏	"	पद्य २४७
म्रादित्यवार कथा	भाउकवि	,,	
जीवको सिज्भाय		,,	
पद व भजन सम्रह	-	,,	

**६८७४. गुटका सं० ७३** । पत्रस० ७२ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसं० ४५० ।

विशेष—अक्तामर ऋद्धि स्तोत्र मत्र सहित, सूरत की बाग्हचडी, पूजा सग्रह, भरतबाहुबिल रास (२ = 90) ब्रादि पाठ है।

**६८७५ गुटका सं०७४।** पत्र म०३७। भाषा-हिन्दी । ले० काल $\times$ । पूर्ण, । वेप्टन म०४५२।

विशेष--पूजासग्रह है।

**६ = ७६. गुटका सं० ७५।** पत्र स० १०१। भाषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्टन म०४०६।

**६८७७. गुटका सं० ७६।** पत्र स० २३। भाषा-हिन्दी। ले० काल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स० ४१६।

विशेष—ज्ञान जिल्लामिण 'मनोहरदास' जैन बारहखडी, 'फूरत' लघु बारहखडी 'कनक कीर्ति'। वैराग्य पच्चीसी, धर्मपच्चीसी, कलियुग कथा, जैन झतक, राजुल पच्चीसी, बहत्तर सीख ग्रादि है।

६८८७८. गुटकासं०७७ । पत्र स० १५०। भाषा- × । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं०८००।

विशेष---नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६८७६. गुटकासं०७८ । पत्रस० ७०। माया-हिन्दी। ले०काल 🗴 । पूर्एं। वेष्टनसं० ८०१।

**विशेष** — चौरासी गोत्र श्रादि का वर्णन हैं।

६८८०. गुटका सं० ७६ । पत्रस० १४६ । भाषा−सन्दृत-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णः । वेकृतसं० ७६६ ।

६८८**१. गुटका सं०८०**। पत्र सं०७०। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। **ले∙काल** × । पूर्ण। वेष्टन स०७६७।

विशेष-साधाररा पाठ एव पूजाए हैं।

६८८२, गुटकासं० ८१। पत्रस०१५०। भाषा—संस्कृतःहिन्दी । ले०काल ४। श्रपूर्णं। येक्टनस० ७६६।

६ सन्द ३. गुटका सं० स्२ । पत्रस॰ ६६ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल म० imes । पूर्ण । वेबनसं० ७६६ ।

विशेष-स्तात्र व पूजा पाठ संग्रह है।

६८८४. **गुटकास**० ६३ । पत्रस० ७७ । भाषा–सन्कृत-हिन्दी । ले∘काल × । पूर्णं बेहुतसं०७६० ।

विशेष-पूजा, स्तांत्र ग्रादि का सग्रह है।

**्ट्रत्रप्र गुटकासं० म४ । पत्रस० ८७ । भाषा**−हिन्दी । ले∘काल स० १८१८ । पूर्णा । वेकनस० ७६१ ।

विशेष — पत्र ६२ तक जैन शतक (भूधरदास) तथा ६३-८७ तक सलभद्र कृत नश्वसिस्यवर्णन दिया हमा है।

६८८६६ गुटका सं० ६४ । पत्रस० २२६ । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्णे । वैकृतस० ७८६ ।

विशेष - पूजा संग्रह है।

६८८७. गुटका सं०८६ ः पत्रस० ४६ । माषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल 🗴 । दूर्एं । वेकृतसं०७८७ ।

६८८८. गुटका सं०८७ । पत्रस०११४ । भाषा-संस्कृत–हिन्दी । ले∘काल 🗴 । पूर्ए । वेष्टनस०७८८ ।

विशेष-पद, स्तोत्र एव पूजाबी का संग्रह है।

६८८६. गुटका सं० ८८ । पत्रस॰ २७० । माया—सस्कृत-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टनसं• ७८३ ।

विशेष-पाठों का भ्रच्छा सग्रह है।

६६००. गुटका सं० ८६ । पत्रसं० ११५ । सावा-संस्कृत-हिन्दी । क्षे०काल सं० १६२१ । पूर्णं। वेप्टन स० ७६४ ।

विशेष---पूजा संप्रह है।

**६८६१. गुटकासं**० ६० । पत्रस० १८२ । भाषा हिन्दी । ले०काल 🗶 । पूर्ण। वेष्टन स० ७८४।

विशेष---पूजा संग्रह है।

६८६२. गुटका सं० ६१ । पत्रस० १८० । भाषा-हिन्दी । ले•काल स०१८२३ । पूर्ण । वेबन सं०७८० ।

विशेष-चन्विमति जिन स्तृति,

जिनवर सात बोल स्तवन-जसकीर्ति ।

उपधान विधि स्तवन-साधुकीर्ति ।

सिज्भाय-जिनरग।

नगाद भोजाई गीत-धानन्द बर्द्धन ।

दिगम्बरी देव पूजा-पोसह पाडे।

कम्मगा विधि-रतनस्रि ।

समीगा पार्श्वनाथ स्तोत्र, भानुकाति स्थूलभद्र रासो उदय रतन ।

कलावनी सती सिज्भाय तथा भैरू सवाद ।

६८६३. गुटकासं०६२ । पत्र स॰ १४२ । भाषा–हिन्दी ।ले≪काल 🗴 । पूर्णा बेष्टन स०७७८ ।

विशेष — पद सम्रह निज्याय, श्रवुं रामल तीर्थ स्तवन, सवत् १८२६ पोष बुदी ११ से १८२१ माघ बुदी ६ तक की यात्रा का ब्योरा, गोडी पाश्वेनाथ स्तवन, सिद्धायल स्तवन ।

६८६४. गुटका सं० ६३ । पत्र म०२ से १६। भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । बेष्टन म० ७७६।

विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।

१८६५. गुटका सं०६४ । पत्र स०२० । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । प्रपूर्णा । वेष्टन सं०७७६ ।

विशेष - ज्ञानकल्याम्। स्तवन तथा चर्चा है।

६८६६. गुटका सं०६५ । पत्र स० ८४ । माषा-हिन्दी । ले० काल 🗙 ।पूर्णा । वेष्टन सं०

बिशेख—दानशील तप भावना घादि पाठो का सम्रह है। समयसुन्दर । सिद्धाचन स्तवन, प्रानन्द रास, गौतम स्वामी रास, विजयभद्र पार्थनाथ स्तवन-विजय वाचक। कल्यारा मन्दिर भाषा-बनारसीदास। क्षमा खलीसी-समय मृत्दर।

**८८८७. गुटका स**० ६६ । पत्रस० २३६। माषा~हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा । बेटन सं• ७७४।

विशेष - छोटे २ पदो का संग्रह है।

६८६८ मु<mark>टका सं० ६७</mark> १ माषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल 🗴 । स्रपूर्ण । वेष्टनसं० ७७५ । विशेष—पूजा पाठ ग्रादि हैं ।

ले ब्हाल सब १८०६

# प्राप्ति स्थान - दि० जैन पंचायती मन्दिर (बयाना)

६८६६. गुटकासं० १ । पत्रस०	३१२ । झा० ६ ४ ६ इआ।	माषा - संस्कृत - हिन्दी । ले ●काल
🗙 । पूर्णं। वेष्टनस० १५०।		

**विशेष**—निम्न पाठो का सग्रह है ।

१. भक्तामर स्तोत्र -- सस्क्रत हिन्दी

विशेष-जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी। २. पद लक्ष्मगादास हिन्दी ४ ग्रतरे राजमति सुनुहो रानी पट घनप्रयाम ३ ग्रनरे जबरथ दुर गयो जब चेती धठारह नाने का चौढान्या लोहट तीस चौबीमी के नाम EP 0 2-33 तथा चौपर्ह र० काल स० १७४३

#### विशेष---

## **ग्रन्तिम**-पद्य निम्न प्रकार है-

नाम चौपई प्रव में रच्यों नाम दान विश्वाम । जैमराज मुन टोनिया जोविनपुर मुभथान । सन्तरार्भ उनचास में प्रणा यथ मुगाय । चैत्र उज्ञसनी पचमी विजीसह न्तराय । एक बार जो मध्यह मथवा करमी पाठ। नगक सोध यनि के विषे रोध कीची साह ।

इति श्री तीम चौपई नाम ग्रथ समाप्ता । रूपचन्दजी विजैरामजी विनायक्या कामली के ने

प्रतिनिधि की थी। नेमजी की डोरी क्रा० नाष्ट्र हिन्दी ७६ पाबायुर गीत स्रावेगम ,, ७६ सासिमद्र कोपर्ट जिनराजसूरि ,, १०८

र०काल म० १६७८ आसोज मृदी ८ ले०काल सं० १८०३ भादवा बुदी ११ ।

जयपुर के पार्श्वनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी। विजेराम कासली के ने प्रतिलिपि की थी। मेपकुमार गीत पूर्वो हिन्दी १०२

नन्दू की सप्तमी कथा — ,, १०३ ग्रादित्यवार भाऊ ,, १९६

धन्ता चउपई		**	<b>१</b> २५
नित्य पूजा पाठ		,,	
नेमिश्वर रास	ब्र० रायमल्ल	,,	१७५
धन्ता सरुकाय	किलो <b>कप्रसाद</b>	हिन्दी	१८२
		ले•काल स•	१८०१
मृगीसवाद		**	
		२० काल स०	१६६३
	सवन सोलसै त्रेसठे वैत्र सृदि रविद्यार		
	नवमी दिन काला भावस्यौ रास रच्य	सुविचारः।	
	विज्ञागच्छ माडगपुर बास सरदेव राज		
	र्थापननदन दिने हुई सुनीस मुकाज।	ı	
इति मृगी सवाद	सपूर्यं ।		
चौरामी ज्ञांत की उत्पत्ति		हिन्दी	२०१
भोपाल राम	<b>१० रायमल्ल</b>	,,	२३२
पच मगल	सप्यन्द	,,	२३४
जन्म कुण्डली			
१. साह रूपचन्द के पौत्र त	थाटेकचन्द के पुत्र की स०१ ६२ ५ का		
२. साह टेकचन्द की पृत्री	(मानबाई) की स०१ ८२६ की ।		
प्रद्युम्न रामो	व ० रायमत्ल	19	२८३
	र०काल स०१६२⊏ <b>ले∘</b> का	लास०१८०७	
प० रुडमल ने प्र	तेलिपिकी थी।		
भविष्यदत्त कथा	ब्रह्मा रायमल्ल	हिन्दी	३१२ श्रपूर्ण
६६००. गुटका	<b>स</b> ०२ । पत्रस०१६६ । ग्रा०६ ¦ 🗙 ४	ंदच। माषा~संस्कृत	।ले∙काल 🗙 ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठो का सग्रह है।

**९६०१. गुटका सं० ३ ।** पत्रस० ८० । ग्रा० ६<sup>१</sup> ४४ इञ्च । भाषा~सम्कृत~हिन्दी । ले० काल ४ । ग्रमूर्ग्र-जीर्ग्ग । वेप्टन स०१४६ ।

विशेष—नामान्य पाठोका संग्रह है।

पूर्णं । बेष्टन स० १४८ ।

ह€०२, गुटकासं० ४ । पत्रस० ७३ । ग्रा० ६४ ५ है इला। भाषा-सम्कृत-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण। बेप्टन स० १४७ ।

वृहत् सिद्धं पूजा	शुभचन्द	सम्कृत	<i>i-</i> 86
श्रष्टाह्निकापूत्रा		,,	€0-0×

 $\mathfrak{E}\mathfrak{E}\mathfrak{o}$ ३. गुटका सं $\mathfrak{o}$ ४.। पत्रस $\mathfrak{o}$ ३६ । प्रा $\mathfrak{o}$ ६ × ७ ६ व । माषा-हिन्दी । ले॰काल × । प्रप्रुर्से । बेप्टन स $\mathfrak{o}$ १४४ ।

विशेष---निम्न पाठी का सम्रह है।

स्तुति ग्रहँन देव	ब्न्दावन	हिन्दी	पत्र १−१६
मगलाष्ट्रक		,,	१७-१९
स्तवन		'1	x 3 \$
मरहञी	11	,,	२६-२६
जम्बूस्वामी पूजा	"	"	३०-३६

विशेष — जैन गायत्री विधान दिया हमा है।

हरू अ. गुटका स० ७ । पत्र स० ६४ । घा० ७४५, इन्था । भाषा — सम्कृत-हिन्दी। ले० काल ४ । धारमां । बेस्टन स० १४० ।

विशेष-सामान्य पाठी का सग्रह है।

**६६०६. गुटका सं० ६ ।** पत्रसं० २४ । ग्रा० १  $\times$  ४ है इश्व । भाषा-सक्हन-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० १४२ ।

विशेष-सामान्य पाठी का सग्रह है।

**६६०७. गुटका सं०६** । पत्र स०६३ । ग्रा० ७२ ४६ डचा। भाषा-हिन्दी⊸सन्कृत । ले० काल ४ । ग्रपुर्सा विद्यनस०१४०।

विशेष---मान्य पूजा एव अन्य पाठो का सम्रह है।

६६०६. सुट**का स० १०** : पत्रस० ७-१४० । ब्रा० ४ $\S \times$ ५ इञ्च । **माया** -हिन्दी । ले**०**कान  $\times$  । ब्रदुर्ग । वेष्ट्रन स० १३७ ।

विशेष - नित्य पूजाधो का संग्रह है।

€६०६. सुटक्ता सं०११ । पत्र स० ⊏१ । धा० ४४३ हे डञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल ४ । पूर्ण । बेस्टन स० १३८ ।

विशेष--- मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है---

कल्यागार्मान्दर स्तोत्र भाषा	बनारमीदाम	हिन्दी	
जिनसहस्रकाम स्तोत्र	जिनमेनाचार्य	संस्कृत	
भक्तामर स्तोत्र	मानतुं गाचार्य	,,	

६६**१०. गृटकासं०१२** । पत्र स०३०। धा०६्रै ४५ इथ**ा भाषा**−हिन्दी । ले<sup>०काल</sup> ४ । पूर्णावेल्टन सं०१३६ ।

विशेष—िनम्न पाठो का सम्रह है — जम्बुस्वामी पूजा जगतराम

हिम्दी १-१३

चमत्कारजी पूजा		हिन्दी	१३-१६
रोटतीज वत कथा	चुन्नीलाल बैनाडा	n	<b>१</b> =-२६
विशेष — कवि क	रौली के रहने वाले थे।	₹	०काल सं० १६०१

**६६११. गृटकासं० १३ ।** पत्रस०⊏१ । झा० ⊏ृे×५ रै इश्वा। स्राया−हिन्दी।ले०काल × । झपूर्ण। बेष्टनसं०१३४ ।

विशेष--- निम्न पूजाओं का संग्रह है---

चोबीस महाराज पूजा रामचन्द्र हिन्दी १-७३ पंत्रमेरु पूजा — — ७३-८१

६६९२. गुटकासं० १४ । पत्रस० १०१-१६६ । ग्रा० ६३४६ इ.च. । मावा—हिन्दी। ले∘काल×। मपूर्णे। बेष्टनस० १३५।

विशेष--पूजामो का संग्रह है

६६९३. गुटकास०१४ । पत्रसः प्रदाझा०७ ४६ इश्वाम्यसः—संस्कृत-हिन्दी। ले० कालस०१८५१ । पूर्णावेष्टनसं०१३३ ।

विशेष--निम्न पाठो का सम्रह है--

पच नवकार	Page 1	प्राकृत	,
मक्तामर स्तोत्र संत्र सहित	-	संस्कृत	7-88
ऋषि मडल स्तोत्र	*****	•,	17-90
श्रीपाल को दर्शन		हिन्दी	09-09
नवलादेव जी		,,	२०-२२
महा सरस्वती स्तोत्र		संस्कृत	<b>२२-२४</b>
पद्मावती स्तोत्र		•1	२४-२६
कल्यारण मन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	**	३०-३६
चितामिंग स्तोत्र		संस्कृत	₹७
नेमि राजुल के बारह मासा		हिन्दी	¥2-¥ <del>६</del>
पार्श्वनाथ स्तोत्र		सस्कृत	80
लक्षमी स्तोत्र	पर्यप्रभदेव	,,	¥0
स्तवन	गुणसूरि	हिन्दी	¥s
		·	

ले०काल स० १८४१

६८९४. गुटकासं० १६ । पत्रसं० २६ । धा०७३ ×६ इन्त्र । माषा∽हिन्दी । ले० काल × । सपूर्त्ता वेष्टन सं०१३२ ।

विशेष--देवाबहा के पदों का संग्रह है।

**१८९५. गुटका सं० १७** । पत्रस० २२ । ग्रा० ७ $\frac{3}{4}$  ४ ६ इचा । माषा-हिन्दी । **ले०काल**  $\times$  । पूर्णै । वेष्टन सं० १२१ ।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है---

१. भक्तिमाल पद बलदेव पाटनी हिन्दी वौद्यास तीयँकरो का स्तवन है। २. पद

पदो की संस्था१ ८ है।

**६६१६, गटका सं० १**६ । पत्र सं० ६६ । ग्रा०५ $\times$ ४ इ.चा। माषा-हिन्दी। लेकाल सं०१८२३ द्वितीय चैत बुदी १३ । पूर्णा। बेष्टन सं०१३० ।

विशेष---तत्वार्यसूत्र की चतुर्थ प्रध्याय तक हिन्दी टीका है।

**६६१७. गुटका सं० १६ ।** पत्र सं० १२७ । ग्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$   $\times$  ५ इ.ख । भाषा—हिन्दी । ले० काल  $\times$  । श्रदुर्सा। वेष्टन सं० १२६ ।

विशेष — पूजा एवं स्तोत्र तथा सामान्य पाठों का सग्रह है। बीच के तथा प्रारम्भ के कुछ पत्र नहीं है।

**६६१६. गुटकासं०२०।** पत्रस० ३७४ । म्रा०६×३३ इञ्च। भाषा−हिल्दी। ले∘काल × । पूर्ण। बेष्टनस०१५⊏।

विशेष--- निम्न पाठो का संग्रह है।

तत्वार्थं सूत्र के प्रथम स्त्र की टीका कनककीर्ति हिन्दी सामाधिक पाठ टीका सदामुखजी ,

**६६१६. गटका सं० २१ ।** पत्र स० ३६ । झा० ५ $\frac{1}{4}$  $\times$ ७ इ.स. । भाषा - हिन्दी । ले० काल  $\times$  । झपूर्त्ता । वेष्ट्रन स० १२७ ।

विदोध—म्बाभी हरिदास के पदो का सफह है। पत्र २३ तक हरिदास के १२६ पदो का अबह है। २३ वें पत्र से २६ वें पत्र तक विदुलदास के ३६ पदो का सफह है। २६ पत्र से ३६ पत्र तक विहारीदास का पद रहस्य लिखा हुमा है।

६६२०. गुटका सं० २२ । पत्र स० ११४ । ग्रा० ६१४६ इंच । माया-सस्कृत-प्राकृत-हिन्दी।
ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १२६ ।

विशेष--मध्यतः निम्न पाठीं का सग्रह है।

ग्रंब ग्रंथकार मा**या विशेष पद्य** प्रतिक्रमण — प्राकृत १-४ पद महमद हिन्दी ४

प्रारम्म--

भूल्यो मन भमरारे काइ मर्म दिवसनि राति। मायानी बाध्यो प्राणीयौ भर्म प्रमलजाय ॥१॥

### द्मन्तिम--

महमद कहै वस्त्र बहरीयो जो कोई झावै रे साथ। झापनो लोभनी वाहिते लेखो साहिब हाथ।।७०॥ भूल्यो

कल्यारा मदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	सस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	म।नतु गाचार्य,	,,
कलियुगकी कथा	_	हिन्दी
<b>ग्रा</b> रती	दीपचद	,,
चौबीस तीर्थंकर भारती	मोतीराम	,,
वैराग्य षोडश	धानतराय	,,
चौबीम तीयंकर स्तुति	_	
उदर गीत	छीहल	
द्यादिनाथ स्तुति	<b>अ</b> चलकीर्ति	,,
धनुप्रका	धवघ्	11
नेमिराजुल गीत	गुराचन्द्र	,,

प्रारम्म के ७ पद्य नहीं हैं। ६ वापद्म निम्न प्रकार है—

#### प्रारम्म--

मंजन साला हरि गये मेलन संग जिन राय रे। करजुणहो प्रजुलेम को हरिकरि मंजुलि लपटाह हो।। देव तहां जप जप करैं बार्ज दुदुभिनाद रे। पुष्प बृह्यितहां म्रति भई विसल्व मई कर बाहुरे॥ × × ×

# धन्तिम—

पुर सुलताए मुहावएं। जहा बसै सरावण सोगजी।
पुर परियन प्रानस्ट स्यो कर है विविध्यस भोगी जी।।७१।।
काष्ट्रा संघ सुहावएंगा मधुरा गच्छ धनूपरे।
शीलवन्द्र मुनि जानिये सब जितवन सिर मुचजी।।७२।।
तासु पट अस कीनि मुनि काष्ट्रा संघ सिगार रे।
तासु सिस गुरुवंद मुनि विद्या गुरुह मंडाक रे।।७३।।
मन वक का आवस्यों पढ़िस् सुनिह नर नारि रे।
रिद्धि सिद्धि सुस्त संयदा तिन वररणन पर वारि रे।।७४।।

# इस से झागे के पद नहीं हैं।

हादशानुत्रेक्षा सूरत हिन्दी

ग्रन्तिम---

हंसा हुल्लंभी हो मुकति सरीवरतीर।

इतिय बाहियाउही पीवत विषयह नीर।।

प्रति विषयनीर पियास लागी विरह बेदन व्याकुने।

बाह प्रेसा मुरति छांडी एम भूनो बाबने।

प्रक होउ एतनु कहऊ तेनउ बुढ बंसइ जम्मणु।

सज्ञा समरणुउ धाय सरने परम रयननेय गुणु।।१२॥

इति द्वादशानुत्रेक्षा समापिता ।

ग्रादिनाय स्तुति विनोदीलाल हिन्दी खिचरी कमलकीति ...

×

प्रारम्म-

सजम की प्रमु सेज मगाऊ स्राह्मद को गेंदुका।
पानी हो जिन पानी मगऊ स्रव्या चौरिक्ष सम्बक्ती।
प्रार्व जाय प्रजवादम्त लाड, पीपर कोमल जावरी।
पिनया हो जिन पद को लाह मूढ महामद छाडिये।
पीरज को प्रमु जीरी लाई सब विस्पारम्, वेस्त्रणा।
मुक्त स्थान की मूंट मगाऊ कम्बेकाड ईंघनु पर्णे।

× ×

ग्रन्तिम---

भ्रो म्रादिनाथ जिनराज """भावग हो तहा चतुर मुजान।
मर्म व्यान गुग म्रागरौ कीजे """ पदमारांच जानि।
यह जिनती जिनराज की चहुँ सम्र के "" कस्याग।
भ्रो कमल कीर्ति मुनिहर कहो" ""

इति खिचरी समाप्ता

सोलहसती की सिरुकाय प्रेमचंद हिन्दी क्षेत्रपाल गीत सोभाचद ,,

भक्तामर स्तोत्र भाषा हैमराज ,, लेब्काल सं०१८२८ बैशाल बुदी ६ विशेख — जतीमान सागर ने जनी सेवाराम के पठनार्थ पिगोरा मे प्रतिलिपि की थी। श्री महावीर

जी के प्रसाद से ।

गागुपति स्तोत्र — संस्कृत
बारहस्रदी सुदामा हिन्दी
सीर परिवार — ,,
स्कूल मह ग्रिजकाय गुग्गवटंत सूर्रर ,,
बन्नाजी की बीनती — ,,,,

		<u></u> -
शत्रुंजय स्तवन	समयसुन्दर	हिम्दी
तत्वार्थं सूत्र	उमास्वामी	सस्कृत
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	
लक्ष्मी स्तोत्र	-	,,
चौसठ योगिनी स्तोत्र	-	,,
वृषभदेव बदना	ग्रानद	हिन्दी
ऋषि मडल स्तोत्र		सस्कृत
पोसह कारमा गाया		,,
गौतम पृच्छा	-	,,
जिनाष्ट्रक		*,

**६६२१. गुटका स**० २३ । पत्रस० ४८ । ग्रा० ४ $\frac{3}{4} \times 8^{\frac{6}{4}}$  इन्त्र । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले•काल 🗙 । पूर्णं। वेष्टनस० ६२ ।

विशेष--पूजाओं तथा अन्य सामान्य पाठी का मग्रह है।

६६२२. गटका स० २४ । पत्रस० ७६ । ग्रा० ७ ×५३ इश्व । भाषा-हिन्दी । से ब्राल × । पूर्णा विष्टनस० ६१ ।

विशेष--मुख्यत निम्न पाठो का सप्रह है-

१ बाहुबलिछद

**कुम्**दचन्द हिन्दी

र०काल स०१४६७

विशेष-कुल २११ पद्य है रचना का ग्रादि ग्रत भाग निम्न प्रकार है-

ग्रादिका पाठ (पत्र १३)

> प्रथमविषद ग्रादीक्वर केरा, जेह नाम छुटे भव फेरा। बह्म मुता समरू मति दाता, गुरा गरा पडित जगविदत्ता ।।२।। भरत महीपति कृत मही रक्षण, बाहुबलि बलवत विचक्षण । तेह भनो करसुं नवछद, साभलता भएता भानद ॥३॥ देह मनोहर कौशल सोहै, निरयता सुरनर मन मोहे। तेह माहि राजे अति सुन्दर, साकेता नगरी तथ मदिर। ×

मध्य पाठ---

विकसति कमल ग्रमल दलपती, कोमल कमल समुज्जल कती।

बनवाडी श्री राम सुरगी श्रय कदवा ऊवर तुगा ।।४२।। करागा केतकी कमरख केली, नव नारंगी नागर बेली। द्मगर नगर तर तुंदुक ताला, सरल सुपारी तरल तमाला ।।४३।। बदनि बकुल बादाम विजोरी, जाई जुई, जबू जभीरी। चदन चपक चारु चारोली, वर वासति वर मोली ॥४४॥

## श्रन्तिम पाठ---

सबन् बौदम में सडमठो, ज्येष्ट गुल्क पचनी तिथि छट्टे। किवीबर बारे पोधा नयरे, ग्रति उत्तर मनीहर हुम घरे। १२०॥। मध्म जिलवर ने प्रामादे सामित्वार्ध जिलाना मुखारे। रत्तक्षीति वदवी गुरा पूरे, रिवयो छद कुमुद गाणी भूरे। १२००॥ सोमता भनता भानंद, मब भातप नामे मुख कद। दुख दिद बहु पीडा नासे, रोग शोक नहि यार्व पासे। १२०६॥ सामिता डाक्निनी करे चकच्य प्रतुत्र में जावे सहू पूरं। रोग मान राविसा दाविसी। १२०॥

#### कलस---

जकट विकट कठोर रोर गिरि प्रजन सत्यवि । विहित कोह सदोह मोहनम प्रोच हरण रवि । विहित रूप रित भूप चारु मुण क्षितुत कवि । धनुष पाच सै पर्योग वरन सहैय तन् छवी ।। ससार सारि त्याग पत्र विमुद्ध हुँद वहित चरणं। कहे कुमुदचन्द्र मुजबल जयो सकत संघ मगत करण ।।२११॥ इति बाहबान छद समुर्णं।

२. नेमिनाथ को छद हेमचन्द्र हिन्दी (श्रीभृषसाके जिल्ला)

विशेष ---यह रचना २०५ पद्यों की है।
रचना का ग्रादि ग्रात भाग निम्न प्रकार है---

#### प्रारम्भ -

विदेहं विमल वेष स्तभ तीर्थस्य नायक। गीराव गौतम वीर छद प्रार्भ सिद्धये ॥१॥

### छंव बाल-

प्रथम नमोह जिन मुखजेह जज बज नादे सकल विदेह । बदन मुखदे निर्मेश कर दिश्ववन वदे भगत मुखदे ।।२।। भत्तकिन फल्ले फ्रममग गल्ले, चहुन कुलाब गणगण चल्ले। कमदल पोपी कमल मुहत्ती मधुर वचेना खुभ वांचती।।३।।

#### मध्य माग--

ाय मनोहर बारिनी नारी पतिवरतानी बत घर नारी। समरीराय निज चित्त मक्कारी, हम महुजबता मुख संबारी।।६=।। नृथी वितत्त पेस पवारी, सोम मुखी सोमांति गोरी। नेज जीति चक्ति चकोरी, साहत की गज गमन बिहारी।।६६।। मल पति हीडे जोबन भारी, पैंव पवित विषय विकारी। जाने विधि कामिन सिनगारी, संगी भगति कला अधिकारी।।१००।।

 $\times$  ×  $\star$ 

#### ग्रन्तिम पाठ---

काष्टा सघ विस्यान धर्म दिगदर धारक ।

तस नदी तटगच्छ गगा विद्या भवितास्क।

गुरु गोयम कुल गोत्र, रामसेन गछ नायक।

नर्गमघ पुरादि प्रसिद्ध द्वादश न्याति विधायकः।

तद ग्रनुक मे भागु भन्या गछ; नायक श्रीकार ।

थी भूषण् सिष्य कहे हेमचन्द विस्तार ॥२०४॥

	×	×	×
३- राजूल पच्चीमी	विनोदीलाल	हिन्दी	
४-नेमिनाथ रेखता	क्षेम	9	
५-राजूल का बारहमासा	विनोदीलाल	11	-
६-बनिभद्र वीनती	मुनिचन्द्र स्रि	,,	
७ बारह खडी	_	**	
⊏−ग्रनिन्य पचासिका	त्रिभ्वनचन्द	.,	
⊱-जैन शतक	भघरदाम		

**६६२३. गृटकासं० २४.** । पत्रस० १३४.। घा०४१¦४७१ डव्याः भाषा–हिन्दी–मंस्कृत । ले•काल × । पूर्णः। वेष्टनसं०६६ ।

विशेष - पूजा एव स्तीत्र संग्रह है।

**१६२४. गुटका सं० २६** । प्रवस**० ११४** । फ्रा॰ ७×४ ॄै इश्वा । भाषा हिन्दी−सस्कृत । ने∘काल × । पर्यो । वेष्टनसं० ६० ।

विशेष--पूजाभी का सम्रह है।

**६६२५. गुटका सं० २७ ।** पत्र स० २१–१२१ । ग्रा० ६×६ इ.स. । भाषा-हिन्दी । ले•काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० ६७ ।

विशेष--- प्रायुर्वेद के नुस्ते है।

**९९२६. गुटका सं० २८ ।** पत्र स० ३६–३२० । ग्रा०६ ४७ इ.च.। माषा र—हिन्दी । विषय – संबह । र०काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वेष्टन स० ६५ ।

विशेष--पूजा तथा स्तोत्र सग्रह है श्रमर कोष एव ग्रादित्य कथा सग्रह ग्रादि है।

**६६२७. गुटकासं०२**६ । पत्र स०३ – २ – ६६ । स्रा०६ × ६ इ.च.। भाषा-हिन्दी। विषय-मग्रहाले • काल × । पूर्णावेष्टन सं०

विणेष--वृत्दावन कृत चौवीसी पूजा है। तथा सुलसागर कृत प्रष्टाह्मिका रासी भी है।

. १९२६. मुटकासं०३०। पत्रसं०७८८ । झा०८्रे×७ इला। माया-संस्कृत-हिल्दी। विषय⊶संग्रहार०काल × ।ले०काल स०१८६३ माघमुटी१४ । पूर्णा। वेप्टनस०८४ ।

निम्न पाठी का सग्रह है.—			
भ्र य	ग्रथकार	भाषा	विशेष
पद्मनंदि पच्चीसी माषा	जगतराम	हिम्दी, संस्कृत	र०काल सं० १७२२
			फागुए। सुदी १०
ब्रह्म विलास	भगवतीदास	हिन्दी	
समयसार नाटक	बनारसीदास	,,	र०काल स०१६६३
स्तोत्रत्रय मापा	-	,,	
तत्वसार	द्यानतराय		
चौबीस दण्डक झादि पाठ		**	
चेतन चरित्र	भैया भगवतीदास	**	
श्रावक प्रति कमरण		प्राकृत	
सामायिक पाठ		हिन्दी	
तत्वार्थं सूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	reading.
सामायिक पाठ भाषा	जयचन्द	हिन्दी	
चरचा शतक	द्यानतराय	हिन्दी	
त्रिलोक वर्गान		हिन्दी	-
श्राचार्यादि के गुरा वर्णन		**	
पट्टावली	-	"	सं० १२४६
•			तक है।

> चावरा धाम मुजारा महाबीर मन्दिर जहां । नन्दराम धरुवान कठा पाठ बेठे पढे ।।६।। सुनयम मैं कुमाई जीवह बहालविह हरपरसाद धरिचन्द जदि जानियी । रोसनचन्द गंगादास भासानन्द मनचन्द सज्जन धरेक तिहां पढे सर्वानियी ।

विशेष

ता माइयों की इत्या सेती लिख्यो रामसनी पाठ नन्दसाल के पढने कूं मुनो जू ज्ञानियों ।। यामें भूलकृक होइ ताहि सोध सुघ कीजो मोहि ग्रन्थ वृषजान छिमा उर ग्रानियों ।।२।।

# चौपई---

ग्रंथ

\*\*\*\* TENT \*\*\*\*\*

संवत् ठारासै वारावै जान. माघ शुक्ल पूर्णमासी बाबान । सोमवार दिन हैगो श्रीष्ठ, पूररा पाठ लिख्यो ब्रति श्रेष्ठ ।

ग्र थकार

**६६२६. गुटकासं० ३१** । पत्र स० ३७० । घा० १२×७ इन्दा भाषा-हिन्दी । ले०काल स० × । पूर्णा विष्ठन स० ⊏३ ।

भाषा

fa-sh

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठो का सप्रह है---

Rad Blue aldi		16.41	
नक्षत्र एव बार विचार	_		
<b>विशेष</b> — विभिन्त न	क्षित्रों में होने वाले फलो का वर्णन	! है ।	
पच स्तोत्र एव			
तत्वायं सूत्र तथा १च		सस्कृत	_
मगल पाठ		हिन्दी	
धनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	सस्ऋत	
जिनसहस्रनाम ।	जिनसेनाचार्य <b>ः</b>	"	
म्रादित्यवार कथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	-
लघु मादित्यवार कथा	मनोहरदास	19	३५ पद्य
पूजा सग्रह	-	,,	and the same of th
जैन शतक	भूघग्दास	हिन्दी	
पूजा सग्रह			
शील कथा	भारामझ	हिन्दी	
निशि भोजन कथा	-	,,	
भठारह नाता	भचलकीर्ति	n	-
जैन विलास	भूषरदास		
पद संग्रह	बनारसीदास, जगराम विनोदीलाल, द्यानतरा	कनकर्काति, हर्षचन्द्र, य,	नवलराम, देवाबह्य
चौबीस महाराज पूजा,	बृन्दावन	हिन्दी	

६६३०. गृटकासं०३२ । पत्रसं०२३१ । ग्रा० १०४६ ई. इ.च.। भाषा-हिन्दी। ले०काल ४ । पूर्णावेष्टनसं०६२ ।

विशेष--पूजाओं का सग्रह है।

£ ६३१. गुटकासं० ३३ । पत्रस० ७–२६४ । ग्रा० १० ४६ ¦ इला। माणा–हिल्दी । ले०काल ४ । पूर्ण। बेष्टन म० ७६ ।

विशेष--- मुख्य पाठो का सग्रह निम्न प्रकार है।

ग्रंथ	ग्र वकार	भाषा	विशेष
कल्याम्। मन्दिर स्तात्र	कुमुदचन्द	संस्कृत	
शास्त्र पूजा	द्याननगय	हिन्दी	
द्यादित्यवार कथा		,,	-
नवमंगल	लालचन्द	,,	
भ्रनन्त व्रत कथा	मुनि ज्ञानसागर	11	
मक्तामर तथा ग्रन्य स्तीत्र		सम्बन	
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	,*	
पूजा सग्रह		सस्कृत, हिन्दी	
भादित्यवार कथा	मुरेन्द्रकीति	हिन्दी	₹० काल
			स० १७४४
जैन शतक	सूघरदास	34	र० काल
			स० १७८१
चौबीस महाराज पूजा	वृन्दावन	н	

६६३२, गुटका सं०३४ । पत्रसं०२६३ । झा०१०%६ टब्च। भाषाहिन्दी-संस्कृत । के० काल स०१६१२ । पूर्णे। बेष्टनस० ७४ ।

विशेष--मृत्यत निम्न पाठी का सग्रह है--

ग्रंथ	ग्रंथकार	भाषा	विशेष
कल्यारा मन्दिर भाषा	बनारसीदाम	हिन्दी	
भक्तामर स्तोत	मानतु गाचार्य	संस्कृत	
भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्मप्रभदेव	सस्कृत	
तत्वार्यं मूत्र	उमास्वामी	"	****
पूजा मंग्रह		"	

नित्य पूजा, पोडथ काररा, दशनकारा, रस्नज्ञम, पंचमेरू, नदीक्ष्वर द्वीप एव चोबीस तीर्थंकर पूजा रामचन्द्र कुत हैं।

ब्रादित्यवार कथा भाऊ हिंदी

<b>ग्चमं</b> गल	रूपचन्द	हिन्दी	
नेमिनाथ के नवमंगल	विनोदीलाल	,,,	र०काल स०१७०४
सामायिक पाठ		संस्कृत	_
व्रत कथाए	खुशालचन्द	हिन्दी	
जिन सहस्रनाम		संस्कृत	
६६३३, गटका र	सं०३५ । पत्रस०२ ६० । घा०१३	× । । হতলা । মাত	ग-विस्ती। लेक काल सक
१७६५ चैत बुदी = । पूर्ण		( / ( 4 - 4 1 - 4) -	16.41 1 10 411 10
	ाठों का सग्रह है—		
पाण्डव प्रास	बुलाकीदास	हिन्दी	र०काल स०१७८४
सीता चरित्र	युषामापास कविवालक (रामचन्द्र)	।हण्दा	१७१३ का लाक्क
WILL 4174	काववानक (रामचन्द्र)	••	रुपर
६६३४. गुटका र	तं०३६ । पत्र स०६८ । झा०८)	≺६३ इला। भाषा	'–हिन्दी।ले०काल ×ा
पूर्णावेष्टन स०१६।			
<b>विशेष</b> निम्न पा	टो का संग्रह है।		
स्रतकी बारहलाड़ी	स्रत	हिस्दी	पत्र १ १३
ग्रादित्यवार कथा	, भाऊ	,,	१३-१६
पद	भूघरदास, जगतराम	"	84-80
चौबीस महाराज पूजा	वृन्दावन	,,	908=
प्राप्ति	त स्थान—दि० जैन छोटा ।	मन्दिर, बयाना	
६६३५. गुटका सं	०१ । पत्रस० १६६ । धा० ५३	×४५ इला। ३	ग्रापा-हिन्दी । ले० काल
× । पूर्णं । वेष्टनस० १५१	•		1
विशेष-मुख्य पाट	निम्न प्रकार है—		
बारह <b>सड़ी</b>	सूरत	हिन्दी	<b>१</b> २
त्वमंगल		,,	<b>३</b> २
विदत कथा	भाऊ	.,	१७
गर्देस परीषह वर्णन		••	_
<b>गव</b> र्गी	जिनदास	11	१३४
ख		,,	
	लाभ नहिं लीया जिनन्द भ	रजिके	१३६
,			,,
	श्रव भजब रसीलो नेम		,,
गवसी	रूडागुरुजी		,, <b>१४</b> 0
	-		र०काल १८७४
द	लान मुहम्मद		,, <b>१</b> ४५
	-		

### सोग्ठा करवा-

तोसों कौन करिबो कर काम भवधर हरें। करत बीनती बलभद्र राजा । करत टकार ह कार बर बक्यो तीन लोक भय चक्रत जाग्या। बाई कर धांगुली कृष्ण हिण्डोलियो नेमनरनाथ राजाधिराजा ॥२॥ तौसौ स्वामी नग्न पुखबर भग्यो मान दुर्जन गरया कप करिनारि बाल उछग लाया। हिरन रोभ सारंग हरित्रास भडकत फिर स्थव गजराज बह दुक्ख पाया ।।३॥ सतती दतती ग्रजरती ग्रमरतो मृद्धनी बृद्धती ज्ञानवता। मार्ड निवादेवी के उदर उपन्नियो चित्त चिल्लामनी रतनवता ।।४।। तोसो स्वामी जिन नाग मिज्यादली नेम जिन ग्रति बली बाई कर धागुली धनुष साजा। बहा बहापुरी इन्द्र श्रासन टरी कपियो सेष जब सल बाजा ॥ १॥ तोसी छपन कोटि जादौ सुम मुक्ट मनि नीन लोक नेरी करत सेवा खानमहमूद करत है बीतती राखिल भरग देवाधिदेवा ॥६॥ तोसी कोन करवो कर काम भय थर हर करत वीनती बलभद्र राजा ॥ ॥॥

इसकं प्रतिरिक्त जगतराम, भूघरदाम, द्यानतराय, सुलानन्द भ्रादि के पदो का सग्रह है। भूघरदास का जैन शतक भी है।

६६३६. गुटकासं०२ । पन स०२७४ । घा०६×४्रै इञ्चा। भाषा−हिन्दी। ले०काल सं०१८५० मादवाबुदी ६ । प्रपूर्णावेष्टन सं०१४० ।

विशेष-मृख्य पाठ निम्न प्रकार हैं-

मार्**ड घर टीका** हिन्दी ं

हिन्दी ले॰काल सं० १८५० मादवा मुदी १। अपूर्ण ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका महित है। बैर में प्रतिलिपि हुई थी।

ग्रन्जद प्रश्नावली --- हिन्दी

पूर्ण

धजीएां मजरी	वैद्य पद्मनाभ	हिन्दी	.,
			ले०काल सं०१८४१
वैद्य वल्लभ	लोलिम्बराज	सस्कृत	**
			ले०काल स०१८५०

**९६३७. गृटकासं०३ ।** पत्र स०१३३ । प्रा०१०३<sup>3</sup> ४७ इ.च. । भाषा−हिन्दी । ले०काल ४. । पूर्णा विद्युतसं०१४६ ।

### विशेष--- मुन्यतः निम्न पाठों का संग्रह है---

चौबीस महाराज पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी पद्य	पत्रस १७
शास्त्र पूजा	<b>ब</b> ० जिनदास	**	२३
गृक्त पूजा	,,	11	२३
बीस तीर्थकर जखडी	हर्षकीति	11	7=
प्चामक् पूजा	मुखानन्द	11	४६
शेपन क्रियाकोप	র৹ গুলাল	,,	११८
		र०काल स० १९६५	कीर्तिक सुदी ३
वारहम्बडी	सूरत	हिन्दी	
शनिष्चर की कथा		हिन्दी गद्य	१३१
कलियुगकी कथा	पाडे केणव	, पच	<b>१</b> ३१
		·	

# विशेष - पाडे केशवदास ने ज्ञान भूषण की प्रेरणा से रचना की थी।

ग्रोकार की चौपई	भैया भगवनीदास	हिन्दी पद्य	१४०
ग्रादिनाथ स्तुति	विनोदील।ल	"	888
राजुल बारहमासा	**	,,	,,
र।जुल पच्चीमी	n	n	,,
रेखता	**	"	,,
<b>श्वित्रत कथा</b>	सुरेन्द्र कीर्ति	1)	१७७

र०काल स० १७४४

8.8 द्रम्म, शुटकास० ४ । पत्रसं० ५० । ब्रा० ७ × ६ डश्वा । माषा∼हिन्दी सस्कृत । ले∙काल × । पूर्णावेष्टनसं० १११ ।

विशेष---पच मगल रूपचन्द के एव तत्वार्थ सूत्र आदि पठ हैं।

**६६३६. गुटकास० ४ ।** पत्रस० १०-६४ । घा० ५३ × ८ ६ अत्र । भाषा−हिन्दी। ले० काल × । पूर्णावेष्टन सं०११० ।

# **विशेष**—निम्न पाठो का संग्रह है—

पद संग्रह	नवल, जगतराम	हिन्दी (पद्य)	पत्र १०-१४
जैन पच्चीसी	नवल	31	१६

बारह मावना	नवल	"	१८
म्रादित्यवार कथा	सुरेन्द्र कीति	13	**
			र०काल सं० १७४४
बारहखडी	सूरत	"	٧0
राजुल पच्चीमी	लालचन्द्र विनोदीलाल	**	¥X
ग्रक्षर बावनी	यानतराय	27	४६
			(र०काल स०१७५⊏)
नवमगल	विनोदीलाल	,,	४६
पद	देवा ब्रह्म	"	६०
धमं पच्चीसी	बनारसीदास	n	६२
ग्रठारह्नाते की कथा	ग्रचलकीर्ति	11	६२
विनती	ग्राव मल	**	£X3

कौन जाने कल की खबर नहीं इह जगमें पल की। यह देह तेरी प्रस्तम होयती बंदन चरची।। सन्तुक्त तैसीचन मानी विनानी घर्षमण की इनके म्रतिक देवा बहुत, विनोदोनाल, मुघरदाम म्रादिके पदो का मण्ड है।

**६६४०. गुटकासं० ६** । पत्रसं० ११२ । द्या० ७ $\frac{3}{4}$  $\times$ ५ इ.स. । मापा सस्क्रत । ले० काल  $\times$  'पूर्ण । बेप्टनस $\circ$  ६६ ।

विशेष -- मञ्चतः निम्न पाठो का सम्रह है---

भक्तामर स्तोत्र	मानतु चार्य	सम्ब्रत
तत्वार्थसूत्र	उमास्वामी	,,
पच मंगल	स् । चन्द	हिन्दी
जिन सहस्रताम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत
पद	मारगक, रत्नकीति	हिन्दी
लक्ष्मी स्तोत्र	पद्म प्रभ	संस्कृत
<b>विन</b> ती	वृन्द	हिन्दी
चितामिए स्तात्र		,,
घ्यान वर्गन		,,
बाबनी	हरसुख	,, पद्य

१९४**१, गुटकास०** ७ । पत्रसं०२२ । ग्रा० ७४ ५ इच्छ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी **। ले॰**काल ४ । पूर्णं। बेष्टन स०१८ ।

विशेष — नित्य पाठ संग्रह है।

**६६४२. गुटका सं० ५ ।** पत्र स० ५२ । आ ० ७imes ४२ हेडख**ा आपा**—हिन्दी । ले०काल imes । अपूर्ण । बेष्टन स० ६७ ।

**बिशेष**—निम्न पाठो का सग्रह है—

ग्रठारह नाते की कथा अचलकीर्ति हिन्दी

धादित्यवार कथा

इसके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ भी है।

९६४**२. गुटकास०**६ ।पप्रस०१०⊏।ग्रा०६×६ इश्वा भाषा-हिन्दी। ले•काल × । पूर्णावेष्टनसं०६६ ।

विशेष--- निम्न पाठो का सम्रह है---

जैन शतक भृथरदाम हिन्दी र०कालास०१७८१ शील महारम्य वन्द .. ——

नित्य पूजा पाठ एव नयल, बुधजन, भूधण्डाम श्रादि के पदो का सम्रह है।

६६४४. गुटकासं० १०।पत्र स०४२ । ग्रा० ⊏ ४४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल ४ । पूर्ण । बेहन स०६४ ।

विशेष--- नित्य नैमिलिक पूजा पाठो का सग्रह है।

**६९४५. गुटका स०११।** पत्रस०६५। घा०६ $^2_1 \times 5^3_2$  इश्वाः भाषा-हिन्दी-सन्हतः। ते**०काल**  $\times$ ा पूर्णः। वेप्टन स०६५।

**६६४६. गटकासं०१२** । पत्र म०८ ने ८८। घा०६ै ४५ इ.आ. । भाषा−हिन्दी। ले०काल メ । घ्रपूर्णा थेष्टन म०६३ ।

विशेष - मृध्यतः निम्न पाठो का सग्रह है-

द्यादित्यवार कथा विनोदीलाल हिन्दी (पद्य) जलडी वीम विरहमान हर्षकीर्ति "

विशेष-इनके अतिरिक्त नित्य नैमित्तिक पूजाएं भी है।

**१८४७. गटका सं**० **१३** । पत्र सं० १०४ । द्वा० ५imes६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । नेक्काल imes । द्यपूर्ण । वेप्टन स० ६६ ।

विशेष — नित्य नैमिनिक पाठ सग्रह एव जवाहरलाल कृत सम्मेद शिखर पूजा है।

**६६४८. गृटका सं० १४ ।** पत्रस• ३०० । घा० ६१ूँ ४५१ इन्त । भाषा−हिन्दी-सस्कृत । ते० काल × । घपूर्णा । वेष्टनस• ५४ ।

विशेष---बीच के प्रमा० ७१-२३३ तक के नहीं है। मुख्यत: निस्न पाठों का संग्रह है।

बारहम्बडी सूरत हिन्दी

राबुल बारहमामा विनोदीलाल ,, पूर्ण

888

**६६४६. गुटका सं० १५** । पत्रस० ३७ । ग्रा० ६<sup>९</sup> ×५<sup>९</sup> इ.च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णः । वेष्टनसं० ६४ ।

विशेष — निम्न पाठों का संग्रह है। र०काल सं०१७४४ हिन्दी (पद्य) विनोदी लाल नेमि नव मंगल सावरा मुदी ६। मग्बतीदास र०काल स०१७४४ बारह भावना सुरेन्द्रकीर्ति जेठ बुदी १०। रविवृत कथा स्रत वारहखडी

इनके ग्रनिरिक्त नित्य पाठ ग्रीर हैं।

**६६५०. गुटका सं०१६** । पत्रस०१४० । घा०११×५३ इ.च.। मापा–सस्कृत । ले० काल × । पूर्गें। वेष्टन सं० ७३।

विशेष- मुख्यतः निम्न पाठो का सप्रह है-

विशेष - मुम्यतः	निम्न पाठा का राष्ट्र		श्रहेद् भक्ति में से हैं।
पच संगल	ग्रा <b>शा</b> धर	संस्कृत	क्षत्र मार्क्षा सहित पर झपूर्ला।
सज्जनचित्त बल्लभ	मस्लिवेरा	••	ति∘काल स० १८६७
	नदराम सीगागी	हिन्दी	पत्रस० १८
श्रावक प्रतिज्ञा		प्राकृत	38
द्रव्य संग्रह	नेमिचन्द्राचार्यं	418.1	Ęo
चौबीस ठागा चर्चा		,,	৬০
प्रनिष्ठा विवरग्		हिन्दी	१००
ऋषि मडल स्तोत्र	-	सस्कृत	१०१
बज्जपजर स्तीत्र	-		
प्रारम्भ-परमेष	ी नमस्कार सारं	रवपदात्मकं ।	

ग्रात्मरक्षाकरवीर विव्वपिजरस्वराध्यहं।। ग्रपभं श योगीन्द्र देव

योगसार १२२ ग्राहार वर्गन इनके प्रतिरिक्त मक्तामर स्तोत्र, चौदीमी के नाम पट्टाविल, सूतक निर्माय, चौरासी गोत्र, सामायिक पाट, बारह मावना, विवापहार, बाईस परिवह, एवं निर्वास काण्ड ग्रांदि पाठों का मंग्रह है।

६६ ४१. गुटकासं० १७ । पत्रसं∘ ६ । घा० ११ ४ ५ ३ इ.च.। भाषा हिन्दी - सन्द्वन । ले०काल सं० 🗙 । पूर्णा । वेष्ट्रनसं० ५६ ।

विशेष-निम्न पाठों का संबह है-

भ्रादित्यवार कथा ध्वस्य पाठ

वत्वार्थं सूत्र टीका

	न । पत्रस <b>्</b> ७ । झा	० ७×४३ <sup>६</sup> इ÷व । माषा-	सस्कृत । <b>ले०काल </b> ।
भ्रपूर्णाः वेष्टनसं० ५३।			
<b>विशेष</b> —निम्न पाठों का	सप्रह है		
ज्ञानांकुश			संस्कृत १-५
मृत्यु महोत्सव			,. ¥~Ę
योग पाठ			,, 9
६६४३. गृटका सं० १६	। पत्रसं० २६।	आ।० <b>६</b> ×६ इञ्च ।	भाषा-हिन्दी। ले०काल
स० १६०७ । ग्रपुर्ण । वेष्ट्रन सं ० ५।			
<b>विशेष</b> —निम्न पाठी का			
बुधजन सतसई	बुधजन	fi	हनदी धपूर्ण
जयपुर के जैन मन्दिर		**	ू पूर्ण
चैत्यालयो का वर्णन			ले ० काल
			स॰ १६०७
धन्य पाठ संग्रह			_
हृहभू४. गटका सं० २०	। पत्र सै०१२४।	ग्रा० ६×४ इला। भाष	। -द्रिन्दी। ले∘काल ×।
पूर्ण । बेष्टन स० ४४ ।		,	•
विशेष निम्न पाठी सपह	का है		
भक्तामर सर्वेया		हिन्दी	<b>१६-४</b> २
चरचा शतक	द्यानतराय		9=-58
जैन मतक	भूषरदास	,,	= <b>१-१</b> २४
हृहभूभ. गुटका सं० २१	ा पत्र स० ७०-१०	६। ब्रा० १३×४३ इल	। भाषा-हिन्दी-संस्कृत ।
ले • कालासं० १६०१ । अपूर्णा । वेष्ट		, ,	
<b>विशेष</b> — मुख्यतः निम्न प			
जैन संध्या		संस्कृत	१-५ भ्रपूर्ण
सोम प्रतिष्ठापन विधि		,,	
चरचा शतक	द्यानतराय	हिन्दी	७७~१०६पूर्ण
<b>६६५६. गुटका सं० २२ ।</b> पत्रसं० २६७ । ग्रा॰ ६×४ इचा। भाषा−सस्कृत−हिन्दी । ले०काल			
सं० १६०७ । पूर्ण । । वेष्ट्रनस० ४			•
श्रावक प्रतिक्रमण		प्राकृत - हिन्दी	पत्र १-६६
11 1 11 11 11 11 11 11 11			ले०काल सं० १६०७
सामायिक पाठ		प्राकृत-संस्कृत	40-908

संस्कृत-हिन्दी

009-209

सामायिक पाठ माषा तत्वसार माषा	 द्यानतराय	 हिन्दी	२० <b>८-२३३</b> ४~१४
पंच मंगल	द्माशाधर		१५
सञ्जन चिन्न वल्लभ	मिल्लियेरा	सस्कृत	१६-२=
		हिन्दी <b>धर्य</b> स	हित है।
व्रतसार		**	₹=-३०
लघुसामायिक	किशनदास		3 6 − 3 €

६६५७. गुटकासं० २३ । पत्रस० ११४ । ग्रा० ७ ४ ४ इ.जा. माषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्णावेहनसं० ४० ।

विशेष--- निम्न पदों का संग्रह है---

स्वयभू स्तोत्र सम्कृत समन्तभद्र श्रष्टु पाहुड भाषा हिन्दी ----

**६६५ प. गुटका सं० २४ । प**त्रसं० ३३ – १४७ । घा० ५३ × ३३ इ.च. । माषा - हिन्दी - सस्कृत । ने०काल × । पूर्ण । **वेष्टन स०** ३५ ।

विशेष -- सामान्य पाठो का संग्रह है।

६६४६. गुटकासं०२४ । पत्र स० ६६ । घा० ५३, ४४ इ.चा। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले∙काल × । पूर्ण। केप्टन सं०२६।

विशेष--सामान्य पाठो का संग्रह है।

**६६६०. गुटकासं०२६ ।** पत्र स० ६४ । धा० ६ ४ ४ <mark>- इ.चा। साथा</mark> सस्कृत । ले० काल स०१६६.... ४ । पूर्णावेषून सं०२४ ।

विशेष-मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है-

एकीमाव स्तोत्र सस्हत वाहिराज देवसिद पूजा ,, —— भ्रास्म प्रवोध ,, ——

**९९६१. गुटका सं०२७ ।** गणसं०६४ । ग्रा०६<sup>2</sup>, ४४ इञ्च । भ्राष्ण−संस्कृत । ले०काल ४। प्रपूर्ण । वेष्टन स०२४ ।

विशेष-- निम्न पाठी का सग्रह है।

एकीमाव स्टोन वादिराज संस्कृत तत्वार्ष सूत्र उमास्वामी संस्कृत जिनबहुलनाम स्तोत्र जिनसेनाषार्थ ,, धमरकोश धमर्राहरू **६६६२. गुटकासं०२ ८** । पत्रसं०२०। ग्रा०६×३ है इश्वर। भाषासस्कृत प्राकृत। ले०काल × ।पूर्या। वेष्टन स०२२।

विशेष--मलाचार धादि प्रन्थों में से गायाओं का संप्रह है।

**१९६३. गुटकासं**०२**६।** पत्रस०१४० । घा०६ $rac{1}{2}$ ४४ $rac{1}{2}$  इश्वः। भाषा-हिन्दी-संस्कृतः। ले०कालimes।पूर्णः। वेष्टनसं०२१ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है।

भ्रादित्यवार कथा भाऊ हिन्दी १-३० संबोध पंत्रांतिका बुधजन ,, १००-१०७

इसके ग्रतिरिक्त पूजाधो, भक्तामर एव कल्यारामन्दिर ग्रादि स्तोत्र पाठो का संग्रह है।

**६६६४. गुटका सं०३०।** पत्र सं०३६ । आः० ४ $\frac{1}{4}$ ४३ $\frac{3}{4}$  इच्च । भाषा—सस्कृत । ले॰काल  $\times$ ।पूर्णे। वेष्टन सं०१६।

विशेष--निम्न पाटी का सम्रह है--

पार्श्वनाथ स्तोत्र	_	संस्कृत	
कल्यारामन्दिर स्तोत्र	कुमुक्ष्चन्द	"	
दर्शन		n	
एकीभाव स्तोत्र	वादिराज	"	_

**१८६५. गुटका सं० ३१** । पत्रसं• ७३ । म्रा॰ ६imes ४ $rac{1}{4}$  इन्था । भाषा –सःकृत । ले॰काल imes । पूर्ण । वेष्टन स॰ २० ।

विशेष — गुटका जीर्ग है। सामान्य पाठो का सग्रह है।

**१.६६६. गुटकासं०३२ ।** पत्रस० ⊏२ । घ्रा० ७३<sup>°</sup> ×६ इच्च । भाषा−हिन्दी । ले० काल स**०** १६१०। पूर्णा । **वेष्टन सं०१**३ ।

विशेष---निम्न पाठो का सम्रह है --

14114			
चेतनगारी	विनोदीलाल	हिन्दी	पत्र १~२
<b>मिक्षा</b>	मनोहरदास	,,	२-३
नेमिनाथ का बारहमासा	विनोदीलाल	,,	₹~ሂ
राजुल गीत		,,	¥~0
शांतिनाथ स्तवन	_		৬ - =
		(र०काल सं०१७४७)	
मविष्यदत्त रास	<b>क</b> ० रायमक्ष	"	१- द२
		र०काल सं० १६३३	

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर बैर (बयाना)

६.६६७. गुटका सं०१ । पत्र सं०१६४ । घा० ⊏ै्×४० ै इञ्च। माया−हिन्दी। ले०काल स०१७२० । घपूर्ए। बेष्टन स०१६ ।

विशेष-निम्न पाठो का संग्रह है-

चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्त-कारायमस्ता। हिन्दी। लेक्काल संग्रीश्याः धानन्दराम ने प्रतिलिपि की पी एव कुणला गोदीका ने प्रतिलिपि कराई थी।

श्रीपाल स्तुति		हिन्दी	
रविवार कथा	भाऊ	D	१७२०
√ जकडी	रूपचन्द 😾	19	****
बारह चनुत्रेक्षा		31	१७२४
निमित्त उपादान	बनारसीदाम	,,	
बीस तीर्यंकर जकडी			
चन्द्रप्रभ जकडी	व शास	,,	
पद	वनारमीदास	**	

जाको मुख २२म तें मधन को नैनन को पिरता वार्त बरो चष्वता विनमी मुद्रा देखि केवली की मुद्रा बाद धावे जेड़ जाके घार्य हरू की विभूति दोशी अहासी । जाको जस जपन प्रकास जम्मो हिरदानें सोडी मुम्ममती होई हुनी मी मिननती । कहन बनारसी महिल्मा प्रगट जाकी सोडी निकसी मधीह विख्यमान जिनसी ॥

इनके अतिरिक्त नित्य पूजा पाठ और है।

६९६ स. **गुटको स**० २ । पत्रस०१०१ । भाषा-हिन्दी (पक्क) । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्टनसं०३५ ।

**६६६६. मुटका सं० ३ ।** पद । दरगाह कवि । वेष्टन सं० ३६ ।

६९७०. गुटकासं० ४ । पत्र सं०२०२ । झा०६४७ इक्षा । माषा–संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं०१ = १३ । पूर्णावेष्टन स०३२ ।

विशेष---मुख्यतः निम्न पाठों का सर्वत है---

षोडपकारस पूजा	सुमतिसागर	संस्कृत	पत्र १६-२६
सूर्यंत्रतीद्यापन	<ul><li>जयसागर</li></ul>	,,	₹8-39
ऋषिमंडल पूजा	*******	n	₹ <i>७-</i> ४ <i>४</i>

त्रिशंच्चतुर्विशति पूजा	<b>णुभचन्द्र</b>	,	44-608
समोकार पैतीसी	मुमित सागर		389-xx
रत्नत्रय व्रतोद्यापन	धर्मभूषरण	,,	१२०-१३२
श्रुतस्कथ पूजा		,,	१३२- <b>१३</b> ४
भक्तामर स्तोत्र पूजा	man.		\$3X-5RE
गगाधर वलय पूजा	णुभचन्द्र	,,	6.86-6.86
पंच परमेष्ठी पूजा	यशोनदी	सस्कृत	१५०-१८५
पच कल्याग्यक पूजा		**	१=६-२०२

**६६७१. गुटका सं० ५ ।** पत्रस० १७६ । ग्रा० ७४५ इच्छ । माघा हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्गो । बेष्टनस० ३१ ।

**६६७२. गुटका सं० ६ ।** पत्र स० १६४ । म्रा• ६imes४ इश्व । भाषा-हिन्दी । ले॰काल imes । पूर्ग । बेपून ग॰ २३४ ।

विशेष - पूजा गव स्तीत्र पाटों का मग्रह है।

# प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन पंचायती मन्दिर कामा ( भरतपुर )

**६६७३. गुटकासं० १** । पत्रस० १२० । ब्रा॰ ५imes४ डब्ब । मापा-हिन्दी । ले•काल imes । पूर्मा । बेष्टन ग० ११२ ।

विशेष --- मुख्यत. निम्न पाठो का मग्रह है।

ग्रादित्यवार कथा, तेरह काठिया, पच्चीसी।

६६७४. गुटका स०२ । पत्र म०१७० । घ्रा०७imes५ इन्द्रा। भाषा-हिन्दी। से•कालimes। पूर्ण। बेष्टन स०११३ ।

विशेष - हिन्दी पदो का मग्रह है।

**६६७५. गुटकासं० ३**। पत्र स०१०८। घ्रा० ७×५ दश्वः । माषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्णः। वेष्टन स०११०।

**विशेष** - - स्फुट पाठो का सग्रह है।

६६७६, गुटका ४ । पत्रस० १० ⊏ । आ ० ७ × ४ इ.चा भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्सा बेष्टन सं०१११ ।

**विशेष--**-पूजा सग्रह है।

६६७७. युटका सं० ४ । पत्र स० ७७ । घा० १२ x ४ इञ्च । भाषा प्राहृत-हिन्दी ।ने०काल imes । पूर्ण । बेहनसं० १०८ ।

विशेष - गुग्स्थान पीठिका दी हुई है।

**६६७८. गुटका स**०६ । पत्र स०२१० । झा०६४४ डञ्च । माया-प्राकृत-हिन्दी । से०काल पूर्ण । बेष्टन स०१०६ ।

विशेष-स्फुट पूजा पाठों का संग्रह है।

**६.६७६. गुटकासं०७** । पत्रस०२१० । म्रा० ६<sup>2</sup>,×४ इ.चा। भाषा−हिन्दी। ले०काल सं० १८६४ । पूर्यावेकन स०६४ ।

विशेष---मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है।

**१९६०. गुटका सं० द**ा पत्र सं० द्या भाग ७imes ४ हुन्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल imes । पूर्ण । वेष्टन स० १४ ।

विशेष--- निम्न पाठी का सम्रह है--

नित्य पाठ सम्रह, भ्रादित्यवार कथा (माऊ) परमज्योति स्तोत्र भ्रादि ।

**६६८ १. गुटकास० ६ ।** पत्र स० १६ । ग्रा० ११×६ इ.चा। भाषा−हिन्दी−संस्कृत । ले०काल ४ । अपूर्णावेष्टन स० ६५ ।

विशेष-पूजा पाठ सग्रह है।

१८६८ न्, गुटकासं० १०। पत्र सं० १८०। ग्रा० ७३ ४६३ दश्वा भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले∘काल था पूर्णी। वेष्टनस० ७६।

विशेष---मुम्यतः निम्न पाठों का सग्रह है ---

१. तत्वार्थं सत्र हिन्दी टीका सहित ।

२ ज्ञानानन्द श्रावकाचार ।

३ निर्वास काण्डक्रादि।

**६६६३. गुटका सं० ११** । पत्र स. • ६--१६ । झा० ७ $\times$ ५ $^2_7$  इश्व । साया-सम्कृत- $\mathbb{R}^{rd}$  । ले० काल  $\times$  । प्रपृष्पं । बेकन स० ७२ ।

**विशेष**---पूजा पाठ संप्रह है।

६९६ प्रेटकास० १२ । पत्रस० १३२ । ब्रा० १×६ ॄेइ श्व । माषा–सस्कृत । ले∘काल ४ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रत स० ७३ ।

विशेष---नित्य पूजा पाठ मग्रह है।

**१९८५. गुटका सं**० १३ । पत्र स० ६० । घा० १० ४७ इश्वा । भाषा-हिन्दी-मस्कृत । <sup>ले ०काल</sup> म० १६६६ । अपूर्णा विष्टुन स० ६६ ।

विशेष - नित्य पूजा पाठ, तत्थार्यसूज, भक्तामर स्तोत्र, ग्रादि का संग्रह है । सूरत की बारहसडी भी है।

**६९८६. गुटकासं० १४** । पत्र सं० ६–१६ । झा० ७ × ५३ इ.च.। माघा— संस्कृत । ले०काल × । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० ७० ।

विशेष - बारहमासा वर्णन है।

६६८८७. गुटकासं० १५.। पत्रस०१००। घा० ७४६ है दशाः भाषा−हिन्दी । से∙कास सं०१६०३ । पूर्णावेष्टन स०५१।

विशेष---मूल्यतः निम्न पाठो का सग्रह है---

लबु चाग्गबय नीतिज्ञास्त्र भाषा कार्याराम हिन्दी विवेष र०काल स० १७७४ कृत्या रुविमाणी विवाह --- ,, २२० पद्म दानलीला --- ,, १९ पद्म

**१९६८ म. गृटका सं० १६ ।** पत्रस• २०६ । ग्रा॰ ५ $\times$ ६ है इक्ष । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स॰ २६ ।

विशेष — स्फुट पाठो का संग्रह है।

**६६८६. गृटका सं० १७ ।** पत्रस० ३५३ । घा० १२imes६ इ.ख । माषा-संस्कृत । ले०कालimes । पूर्ण । लेपन स० २० ।

विशोद —पत्र २६ तव सम्कृत में रचनाएं हैं। फिर ३२५ पत्र तक सिद्धातसार दीपक माया है। वह प्रपूर्ण है।

६.६६०. गुटकासं० १८ । पत्रस० २८० । ग्रा० ६२,४६३ इञ्च । माषा−हिन्दी। ले० काल ×ापूर्सावेष्ट्रनस० १४ ।

**विशेष**—- विविध पूजाए है।

६९६**१. गुटका सं० १**६ । पत्रस० १६४ । प्रा०१२ ४७३ इल्बा मा**पा**−हिन्दी –संस्कृत । ने∘कान ×ापूर्णा वेष्टन स०११ ।

विशेष -- ३४ पूजा पाठो का सग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर दीवान जी कामा (मरतपुर)

**६६६२, गुटका सं०१।** पत्र स०१६०। घा०६ ४ ४ ६२४। भाषा–सस्कृत-हिन्दी। ले**०काल** ४.। पूर्या। वेष्टन रा०वे४४।

विशेष--पूजाको का सम्रह है।

**९९६३. गुटकासं० २** । पत्र सं० १४४ । घा० ७×४३ इ.च. । भाषा−हिन्दी−संस्कृत । ले∘काल × । घनूर्याः वेष्टन स०३४६ ।

विशेष--- नित्य पूजा पाठ संग्रह तथा तत्वार्थं सूत्र झादि हैं।

६६६४. गुटकासं० ३ । पत्रस० १४४ । घा० ७४४ इचा । भाषा−हिन्दी−संस्कृत । ले०कास ४ । घपूर्सा वेष्टनस० ३४६ ।

विशेष-नित्य काम भाने वाले पाठों का संग्रह है।

हरह×ू. गुटका सं० ४ । पत्र स० १२३-१८४ पुनः १-४६ । ग्रा० १०×६-३ इश्वः । भाषा⊸ संस्कृत । के•काल × । प्रपूर्णः । वेष्टनसं० ३४२ ।

विशेष—पुजातथाध्रन्य पाठों का संग्रह है।

**६६६६. गुटका सं० ४**। पत्र स० ४०२ । घा० १×६ इ.च.। माषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल × । अपूर्णा। वेष्टन स० ३४३ ।

• विशेष — विविध पाठों स्तोत्रों तथा पुजाओं का संग्रह है।

६६६७. गुटका सं०६ । पत्रस०२३४ । घा०६४६ इश्वरः। भाषा~-हिन्दो । से०काल स०१७६६ । घपुर्साकेष्टन स०३३६ ।

**विशेष**—फुटकर पद्य हैं। प्रविष्यदत्तरास तथा पंचकत्यागुक पाठभी हैं। बीच में कई पृथ नहीं हैं।

**६६६न. गुटका सं०७ ।** पत्र स०४३-१६२ । द्वा०६imes६ इञ्च। भाषा–हिन्दी । ले•काल imes । द्वपुर्ण। बेष्टुन स०३४० ।

विशेष-भविष्यदत्त रास तथा श्रीपाल राम है। प्रति जीएं है।

६९६६. गुटका सं० ६ । पत्र स० १४१ । घा० ६×४३ इचा । मावा—हिन्दी । ले०काल स० १६४३ । प्रपूर्ता । बेहन स० ३३६ ।

विशेष-हिन्दी के विविध पाठी का संग्रह है।

ब्रालोचना जयमाल व व जिनदास हिन्दी नेमीक्वर राम ---

१००००. **गुटका सं० €**। पत्र स० ३८१ । घा० ८ हे X७ इचा भाषा-हिन्दी । ले•कान ४। बपूर्ण। बेहन सं० ३३१ ।

विशेष--- निम्न रचनाओं का मग्रह है---

पद	गुरएचन्द्र	हिन्दी	_
बारहत्रन	यश-कीर्नि	"	
साम्द्रिकशास्त्र		संस्कृत	
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर		,	
मदन जुज्ञ	बूचराज	हिन्दी	रचना काल स०१५८६
जिन सहस्रनाम	<b>जि</b> नसेन	संस्कृत	
पूजा सम्रह	-	,,	
गराधर बलय पूजा		,,	-
ज्वालामालिनी स्तोत्र	eterne.	,,	
श्राराधनामार	देवसेन	"	-
रविवत कथा	माक	हिन्दी	
श्रावकाचार			-
धर्मचऋयूजा		संस्कृत	
तत्वार्यमूत्र	उमास्वामी	"	-
ऋषि मडल स्तोत्र		• •	

बेतनपुद्धल धमाल	वूचराज	हिन्दी	
पद	वल्ह (बूचराज)	**	
पद (राजमति)	वूचराज	**	
पूजा		**	
<b>बू</b> नडी	_	,,	~
संविद्यारास	कोल्हा	,,	
नेमीक्ष्वररास	<b>ब</b> हाद्वीप	**	-

विशेष--रचनाकार संबंधी पद्य निम्न प्रकार है-

रएथ भौर की तलहटी जी रएपपुरु सावय वासु । नेमिनाथु को देहुरौजी बंभ दीप रिच रासु ।

यह ससारु असारु किय होसै मवपारु ।। हो स्वामी ।।२४।।

मवधू परीक्षा (मध्युवानुत्रेक्षा)		हिन्दी	
रोस की पायडी		,,	
जय जय स्वामी पाथडी	पल्हग्गु	,,	_
पंडित गुरग प्रकाश	नस्ह	•1	
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	<b>ब</b> ० रायमल्ल		
मनकरह।रास	ब्र० दीप	"	

### विशेष-- बहादीप टोडा भीनसेन के रहने वाले थे।

खटोला	<b>ब</b> ० घर्मदास	हिन्दी	
हिंदोला	भैरवदास	,,	
पचेन्द्रियबेलि	ठक्रुरसी	**	
सुगंवदशमीवत कथा	मलयकीर्ति	,,	
कथा संग्रह	जमकीर्ति	<i>n</i>	_
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	ग्रपभ्र श	
पाशोकेवली		,	
घन्यकुमार चरित्र	रइधू	धपश्चम	

१०००१, गुटका सं०१०। पत्र सं०१०३। धा० ६२/४६ देघञ्च। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। के०काल × । धपूर्णावेष्ठन स०३३०॥

विशेष--मुख्यतः निम्न पूजाओं का सप्रह है--

गराधरवलय पूजा, तीस चौबीसी पूजा, बररोगद्र पदावती पूजा, योगीन्द्र पूजा, सप्त ऋषि पूजा, असयात्रा, व हवन विधि झादि हैं। १०००२. गुटका सं० ११ । पत्र स॰ ४६ । ग्रा॰  $\times$ ७ इचा । भाषा-हिन्दी । ने॰कान  $\times$  । श्रपूर्ण । बेष्टन स॰ ३२६ ।

विशेष--द्यानतराय, भूबरदास, जगतराम भादि के पद है।

१०००**३. गुटका सं० १२** । पत्र स० ४–६३ । मा० ६imes६३ इ.च. । भाषा-हिन्दी ले॰ काल imes । मपूर्णुं । बेष्टन स०३२६ ।

किशेष —हर्षकीर्ति, मनराम, द्यानत स्नादि की पूजायें तथा जिनपंञ्जर स्तीत्र स्नादि पाठों का सब्रह है।

१००० ४. गुटकासं० १३ । पत्रसं० २२६ । ग्रा० ६२ ४.७ इ.खा भाषा-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० ३०६ ।

विशेष—पूजा पाठ संबद्ध, भूपान स्त्रीत्र, पच परमेष्टी पूजा, पच कल्यागाक पाठ (श्यवन्य कृत) भक्तामर स्त्रीत्र एवं तस्वार्थ भूत्र बादि का सम्रद्ध है।

१०००**५. गृटका सं० १४** । पत्र स० ११६ । घ्रा० ७ ४ ४ दे इश्वा । माषा –हिन्दी । लै० काल ⋉ । ब्रमुस्सं । बेस्टन स० २६६ ।

१०००६. गुटकासं० १४ । पत्रस० ४२ । ग्रा० ७ 🗙 ४ दला । आया-सस्कृत-कृत्वी । ले०काल 🖂 । भ्रमुर्सा । वेस्टन स० २०५ ।

विशेष-स्तीत्र एव पद सग्रह है।

**१०००७. गुटका सं० १६** । पत्र स० २१-२०६ । ग्रा०६x४्रे इङ्च । भाषा सन्क्रन । ले० काल x । प्रपृष्णे ।वेष्टन स०२०६ ।

विशेष—गुटका जीर्गहै। पूजाओं का संग्रह है।

१०००**द. गुटका सं० १७ ।** पत्र स०२७३ । द्या० ४ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इक्टन । माया - क्रिनी । लेक्सल × । प्रपूर्ण । बेप्टन स०२८७ ।

विशेष-वीच के अधिकाश पत्र नहीं हैं। हिन्दी पाठों का सग्रह है।

१०००**६. गुटका सं०१६ ।** पत्र मं० ३६ । ग्रा० ६×६२ इला। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । से० काल स०१७६३ ।पूर्णा। वेष्टन स०२६३ ।

विशेष — धादित्यवार कथा (माऊ किब) तथा रावृत्यप्रचीसी (लाल विनोदी) एव पूजा गाठ संग्रह है।

१००१०. गुटकासं० १६ । पत्र स० ६६ । ब्रा० क्रॄं ४६ डआः । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स०१७५३ पीप वदी ६ । ब्रपूर्ण वेष्टनसं०२क्षर ।

विशेष--भक्तामर स्तीत्र, कल्याम् मन्दिर स्तीत्र, तत्वार्थ सूत्र हिन्दी टीका ग्रादि का सग्रह है।

१००११. गुटका सं०२० । पत्रस०१२४ । ग्रा०७×४ इल्बा । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं०१७४६ । पूर्णावेष्टनसं०२७७ ।

विशेष — निम्न पाठों का संग्रह है।

नेमिनाथ रास -- ने०काल सं० १७४६ चंदन मलयागिरि कथा -- ले०काल सं० १७४६

गुटका पढने में नहीं भाता। भक्षर मिट से गये हैं।

१००१२. गुटका स ० २१ । पत्रस॰ १२४ । ग्रा॰ ७×४ इश्व । भाषा—हिन्दी । ले•काल सं० १७४६ । पूर्ण । बेष्टन सं० २७६ ।

विशेष-पदो का धच्छा सग्रह है। इसके भ्रांतरिक्त हनुमन रास, श्रीपाल रास ग्रादि पाठ भी हैं।

**१००१३. गुटका स**०**२२ ।** पत्रसं० २४४ । आ०६ $\times$ ६ हे इथा। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले•काल  $\times$  । पूर्ण, । वेष्ट्रनस०२६१ ।

**विशेष**—विविध पाठो व पूजाग्रों का सग्रह है।

**१००१४. गुटका सं० २३ ।** पत्रस० ३४४ । ब्रा० ७ $\times$  ६ द्व । भाषा-हिन्दी । से**०काल**  $\times$  । सपूर्ण । बेष्टन स० २४८ ।

विशेष-संद्वातिक वर्चाए है।

१००१**४. गुटकास ० २४** । पत्रसं∘ ३७ । ग्रा० १०×५ इश्वा भाषा—सस्कृत-हिन्दी । ले**०काल** स० १७६४ । अपूर्णः । बेष्ट्रतस० २५७ ।

विशेष — निम्न पाठो का सब्रह है। एकोभाव स्तोत्र एव कल्याग्मन्दिर स्तोत्र भाषा ।

१००**१६. गुटका र\*० २५** । पत्रसं० ४४ । द्या० ८×५ इचा भाषा –हिन्दी । ले०काल × । पूर्णं । बेष्टनसं० २०२ ।

१००१७. गुटका सं० २६ । पत्रस० ७० । ग्रा० ६imes५३ इन्छ । भाषा-सस्कृत । लेक्काल imes । पूर्ण । बेष्टनस० १७१ ।

**विशेष** —स्तोत्र ग्रादि पाठो का संग्रह है।

# प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन पंचायती मन्दिर हएडावालों का डीग (मरतपूर)

**१००१ स. गुटका सं० १ ।** पत्रस• ३० । माचा-हिन्दी-सन्क्रन । लं∘काल ४ । पूर्णा। वे**टनसं∘** २३ । पूजापाठ है।

**१००१६. गुटका सं०२** । पत्रस० १३३ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल 🗴 । झपूर्सा । वैद्युतसं०२७ ।

विशेष--सामान्य पाठो का सग्रह है।

१००२०. गुटका स० ३ । पत्रसं० ७७ । भाषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेहनसं० २८ ।

विशेष—तत्वाथं सूत्र एवं पूजा ग्रादि हैं।

१००**२१. गुटका सं**० ४ । पत्रसं० २४ । भाषा–हिन्दी संस्कृत । ले**०का**ल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनसं०२६ ।

विशेष--पूजा संप्रह है।

१००२२. गुटका सं० ४ । पत्रसं० १८६ से २१३ । भाषा—हिन्दी । ले०काल 🗴 । सनूर्या । वैष्टनसं० सं० ३१ ।

विशेष--अध्यात्म बत्तीसी, अक्षर बावनी भादि है।

१००२**३. गुटकासं**०६ । पत्र सं०१८२ । भाषा-हिन्दी। ले०कात 🗴 । सपूर्णं। वेष्टन-स०३४ ।

विशेष — सन्योध प्रक्षर बावनी, धर्म पच्चीमी तथा धर्मविलास खानतराय कृत हैं एवं तत्वसार भाषा है।

१००२४. गुटका सं० ७ । पत्रस० ४० से १०३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८०७ । प्रपूर्ण। वेप्टन स० ३७ ।

**विशेष---पुजा** संप्रह है ।

१००२**५. गुटकासं**० ⊏ । पत्रसं० २से ११४ ।भाषा−हिन्दी । ले∘काल 🗴 । पूर्णं । वेष्टनस० ३८ ।

विशेष--बस्तराम, जगराम भावि के पदों का सम्रह है।

## प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन बढा पंचायती मन्दिर डीग

**१००२६. गुटका सं० १ ।** पत्रस**० १०**३ । भाषा-हिन्दी । ले∘काल × । पूर्गा । वेष्टनस० २६ ।

विशेष--हिन्दी पदो का सग्रह है।

१००२७. गुटका सं० २ । पत्रसं॰ २६१ । मापा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰काल imes । पूर्ण । वेध्न स॰ ३० ।

विशेष-पूजा पाठ है।

१००**२ ट. गुटका सं० ३ ।** पत्र सं• १८० । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण । वेक्तसं• २६ ।

विशेष-प्रति जीर्ग् है, नाममाला, पूजा पाठ ब्रादि का संग्रह है।

१००२**६. गुटकासं**०४ । पत्रस०११६ ।भाषा-हिन्दी । ले∘ काल× । घपूर्ए । वेष्टनस० २७ ।

विशेष---धर्म विलास में से पद लिये हुए हैं।

१००**३०. गुटका स० ५** । पत्रस**० ६०** । भाषा-सास्कृत । ले०काल × । पूर्णे । बेष्टनसं० २६ ।

विशेष-जिन सहस्रनाम, प्रतिष्ठा सारोद्धार ग्रादि के पाठ है।

१००**३१. गुटकासं∘ ६।** पत्र सं० २४७। भाषा⊸हिन्दी-संस्कृत । से० काल × । धर्सं । वेष्टनसं०१४।

विशेष---वनारसी विलास, समयमार नाटक तथा पूजा पाठ ग्रादि का संग्रह है।

१००६ २. मुटकासं०७ । पत्र सं०१२० । साथा-हिन्दी-संस्कृत । से०काल 🗴 । पूर्णी वेष्ट्रन सं०१४ ।

विशेष --- पूजा वाठ हैं।

ै १००३३. **गुटका सं० ६ ।** पत्र स०१७४ । भाषा-ग्रपन्न स~सस्कृत । ले० काल x । • षपुर्मा।वेष्टन स०२४ ।

विशेष -- कथा तथा पूजा पाठ सग्रह है।

# प्राप्ति स्थान- दि० जीन मन्दिर चेतनदास दीवान, पुरानी डीग

**१००३४. गुटका स० १**। पत्रस**०** ७२। ग्रा० १० $\times$ ६२ इन्छ । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले**०** काल  $\times$  । पूर्ण वेष्टन स० १७।

विशेष-- नीवीस तीर्थंकर पूजा तथा भक्तासर स्तीत सत्र सहित है।

१००३ **भ्राटकासं०** २ । पत्रस० १६६ । घ्रा० न्हें ×५ ई इश्वर । भाषा-हिन्दी । ले**०काल सं०** १८४७ विभाग्य सनी ११ । पूर्णी । बेष्टन सं० २६ ।

विशेष -धीवाल चरित्र भाषा (परिमल्ल) त्रेपन किया, त्रिलोकमार श्रादि रचनाए हैं।

१००३६, गुटकास ७ ३ । पपस० २४ । घा० ११८७ है डवाः भाषा~सस्कृत । ले० काल ≾ । पूर्णा । जीला ।वेष्टन सं०४४ ।

विशेष -- तत्वार्थ मुत्र एव सामान्य पूजा पाठ सग्रह है।

१००२ ७. गुटका सं० ४ । पत्र म०३६ । ग्रा० १० $^1_i imes \xi^1_i$  इश्वा। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । के० काल imes । पूर्णा। वेप्टन मं० ४६ ।

विशेष--पूजायो का सग्रह है।

**१००३ स. गुटका स० ४ ।** पत्रस० ४२ । ग्रा० ६ $\frac{7}{4} \times ६ \frac{5}{4}$  इन्थ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८४६ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वेष्टनस० ४८ ।

विशेष---- लूहरी रामदास विनती ,, पद सग्रह ---

**१००३ ह. गुटकासं०६ ।** पत्रस०२४४ । घा०६×४ ॄेइश्वर। मावा-हिन्दं, । ले० काल × । पूर्णावेष्टनस०४६ ।

विशेष—समयसार नाटक, बनारसी विलास तथा मोह विवेक युद्ध ग्रादि पाठ है।

१००४०. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १३४ । मा० ६×६ इचा। भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० ४१ ।

विशेष--जगतराम के पदों का संग्रह है। ग्रन्त में भक्तामर स्तोत्र भाषा तथा पंच मंगल पाठ है।

१००४१. गुटका सं० ६ । पत्रसं० ६० । प्रा० ७×५ ६ था । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १६०० । प्रमूर्णी । बेष्टन सं० ५२ ।

विशेष-ज्योतिष सम्बन्धी पद्य हैं।

१००४२. गुटका सं० ६ ।पत्रसं० ४४ । ग्रा० ७ × ५ इ.चा । भाषा⊸हिन्दी । ले०काल × । ग्रपुर्ण । बेष्टनसं० ५३ ।

विशेष — मर्तृहरि शतक तथा अन्य पाठ है लेकिन अपूर्ण है। २२ से आगे के पत्र नहीं है। आगे पूर्णार मंत्ररी सवाई प्रतापसिंह देव विरक्षित है जिससे कुल १०१ पद्य हैं तथा पूर्ण है।

१००४३. गुटका सं० १० । पत्रस० ६० । घ्रा० ५imes४ इ.स. । भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्णे । वेप्टन स० ४४ ।

विशेष-पृटका नवीन है। हिन्दी पदो का मग्रह है।

१००४४. गुटका स० ११ । पत्रस० २२-५४ । धा ० ५४४ इ.च. । भाषा -हिन्दी । ले०काल × । मपुर्सा । बेप्टनस० ५५ ।

विशेष- जैन जनक एवं भनामर स्तीत्र ग्रादि का संग्रह है।

**१००४५. गुटका सं० १२ ।** पत्र म० १-५४ । द्या० ७ × ५ <sup>°</sup> इश्वा **भाषा**−संस्कृत । ले०कात × । कपुर्सा विष्टत म० ५६ ।

विशेष-- लक्ष्मी स्तोत्र, ऋषिमङल, जिनपजर ब्रादि स्तोत्रो का सबह है।

**१००४६, गुटका सं० १३।** पत्र स०६५ । द्या० ५×४ इ.आ.। मापा−हिन्दी। ले∘काल ग० १⊏२३ । पूर्गावेषन म०५७।

विशेष—चेनन कर्म चरित्र (भगवतीदास) पद-जिनलाभ सूरि, दादाकी स्तवन, पार्थ्वनाथ स्पवन श्रादि विभिन्न कवियो के पाठ है।

१००४७. गुटकासं०१४ । पत्रम०२३२ । ग्रा०६×५ इ.च.। भाषा–सस्कृतः विश्कास × । पूर्णः। वेकृतस०५६ ।

विशेष — योडण कारम्प, तीन चौथीसी योडण कारम्प मडल पूजा, दणलक्षमा पूजा-महस्रताम आदि का सब्द है।

१००४ ८. गुटका सं०१४ । पत्रस० ४१ । ग्रा० ७ ४ ५३ इच । भाषा-हिन्दी । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ४६ ।

विशेष-हिन्दी के विविध पाठी का मग्रह है।

१००४**६. गुटकासं०१६।** पत्रस०६०। द्या०८,४१ॄंदञ्च। भाषा-संस्कृताले०काल ×। प्रर्गावेकनसं०६०।

विशेष--- पच स्तोत्र, तन्वार्थ सूत्र, मिद्ध पूजा, घोडशकारण तथा दशलक्षण पूजा का संग्रह है।

१००**५०. गुटकासं० १७** । पत्रस० ४४ । द्या० ७२¦ x ५ इञ्च । प्राथा~−हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा वेष्ट्रन सं०६१ ।

विशेष-सामान्य हिन्दी पदी का संग्रह है।

१००५१. गुटकासं० १६ । पत्र सं०े१४४ । ध्रा० द×५ इ.च. । भाषा−हिन्दी⊸संस्कृत । ले• काल × । पूर्ता । बच्टन स०६२ ।

विरोध — पूजा मंग्रह, रामाष्ट्रक, बारहमासा, नेमिनाथ का ब्याहला, संवत्सर फल, पाता केवजी पाठों का संबद है। **१००५२. गृटका स० १६** । पत्रस० ४६ । आग० ७imes७ ६ खा भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८२४ । पूर्णा । बेष्टन स०६३ ।

ę	प्रारणायाम विधि	×	ξX	पद्य
₹.	पदस्थ ध्यान लक्षमा	×	७४	पद्य
-	MANAGE STREET,			

३ बारहभावना ४ दोहापाहड

योगीन्द्रदेव

विशेष — हिन्दी ग्रर्थ सहित है। सेवाराम पाटनी ने कुम्हेर में प्रतिविधि की थी।

**१००५३. गुटकास**० २०। पत्रस०२०। स्रा० ७×५ इन्द्र । भाषा<del>-संस्कृत—हिन्दी।</del> लेञ्चालस०१८८३ पीय सुदी ११। । पूर्णा वेष्टुन स०६७।

**बिशोध**--- मस्यत निम्त पाठो का मग्रह है---

भक्तामर स्तोत्र	मानतुगाचार्य	सस्कृत
अस्ट्रामी एचा	_	हिन्दी
प्राग्गीडा गीन	N/We	,,
मगन प्रभानी	विनोदीलाल	"

१००**५४. गुटका सं० २१** । पत्रम० ६४ । धा**०** ६×४ ¦ इ.च. भागा-हिन्दी । ले०काल स० १७६७ पूर्मा । वेष्टन म० ६६ ।

विशेष-मृत्यतः निम्न प्रकार सम्रह है-

पूटकर सर्वेषा				हिन्दी
सिद्धात गुरा चौबीसी	कल्याग्इास			,,
कल्यारण मन्दिर भाषा	वनारमीदाम			,,
बारहण्डी				,,
कानीकवच			1.7.	,,
विनती नेमिक्मार	भूषग्दास			,,
पद नेमिकुमार	डू गरसीदाम			,,
		- 9 - 9		• •

१००**५५ गुटकासं० २२।** पत्र स०७६। ब्रा० ६ $\frac{1}{4} \times Y_{7}^{2}$  इन्छ । भाषा—हिन्दी सस्कृत। से•काल  $\times$  । धपूर्सा विष्टनसं०७७।

चिशेष — पूजा पाठ, जिनदास कृत जोगीराम, विधापहार स्तोत मानुकीर्ति कृत रविव्रत कथा (र०काल स० १६६७) क्षेत्रपाल पूजा संस्कृत एव सुमति कुमति की जलडी विनोदीलाल की है।

१००**५६. गुटकासं०२३** । पत्रसं०२५१ । सा० ७ ¦४५६ इ.ख.। भाषा–हिन्दी। ले०काल ४ । पूर्णावेटन स० ७६ ।

िबरोब—करीब ७८ पाठों का सग्रह है। प्रारम्भ में ७२ सीवें दी हुई है। मुख्य पाठ निम्न है—
रै. फठारह नाता—कमतकीर्ता। (२) घटाकरण मंत्र। (३) मगलाचरएा-हीरानन्द। (४) गोरख चक्कर। (४) रोटतीज कथा। (६) चेननगारी। (७) सास-बहुका भगडा—देवाबह्या। (८) सूरत की बारहखड़ी ग्रादि।

१००५७. गुटका सं० ४ । पत्रसं० ६० । ग्रा० म × ६३ इन्छ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले०काल सं०१८८७ माहसूदी ४ । पूर्णा । बेष्टन सं०८० ।

विशेष--गुरास्थान चर्चा तत्वार्थ सत्र हिन्दी ग्रथं (श्रपुरां) सहित है।

प० जयचन्द जी छाबडा ने प्रतिलिपि की थी।

१००५८. गटका सं० २५ । पत्रसं० १७० । आ० ७३×६ इच । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १७८५ द्वि० देशास सूदी ३ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ८४ ।

विशेष -- निम्न पाठ है----

१. त्रेपन किया कोश-किशनसिंह। से • कास स० १७८५। पूर्ण। १६२ पत्र तक।

२. ६४ ग्रासादन दोष-हिन्दी ।

१००५६. गुटका सं० २६ । पत्र स० ६२ । आ० दर्र ४६३ इवा । माषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 । ब्रपुर्ग । वेष्टन स० ८१।

🗙 पत्र १५ तक । र०काल सं० १७७० फागुगा बुदी २ । १. रत्नकरण्ड श्रावचार भाषा × पत्र २ द तक । र०काल स० १७७० चैत्र बुदी द ११२ परा है। २. समाधि तत्र भाषा

३. रमरमसार भाषा × पत्र ३४ तक। र०काल सं०१७६८

पत्र ४३ तक। र०काल स० १७०२ चैत सुदी १४ ४. उपदेश रत्नमाला ×

५. दर्शनसार × पत्र ४६ तक। र०काल स०१७७२ × पत्र ४६ तकः।

६. दर्शन गृद्धि प्रकाश ७. ग्रष्टकर्मवय विधान × प ४६ तक ।

E विवेक चौबीसी X पत्र ६२ तक । र०काल सं० १७६६ ।

٤₹

£. पच नमस्कार स्तांत्र भाषा × पत्र ६३ तक।

१०. दर्शन स्त्रोत्र मापा रामसन्द

११. सुमनवादी जयाप्टक ٤٤

१२. चौरासी ग्रामादना × وع १३. बत्तीस दोष सामायिक х

१४, जिन पूजा प्रतिक्रमसा ×

१४. पुजा लक्ष्मा ×

१६. कषायजय भावना × ६७-७२ तक

१०. वैराग्य बारहमासा × wx .. प्रक्तोत्तर चौपई

१८. जयमाल × ue .,

१६. परमार्थ विश्वतिका × **ت** ۶ २०. कलिकाल पंचासिका **c3** 

× २१. फुटकर वचनिका एवं कवित 🗴 १००६०. गुटकासं० २७ । पत्रस०१०६ । ब्रा०६२, ४५३ इञ्च । माया-संस्कृत-हिन्दी । ले∘काल × । पूर्ण । वेष्टनसं०६१ ।

विशेष--नित्य पूजा पाठ सग्रह है।

**१००६१. गृटका सं० २८ ।** पत्रस० ६२ । घा० ७×५ इश्वा । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३ ।

विशेष--तत्वार्थ सूत्र, पूजा पाठ सग्रह, लक्ष्मी स्तीत्र एवं पदों का संग्रह है।

**१००६२. गुटकासं**० २६ । पत्रस० ७० । ग्रा० ७ × ४२¦ इश्वा भाषा−हिन्दी । ले०काल मं० १८६० । ग्रपुर्ता। वेष्टन स० ६४ ।

विशेष — संद्वातिक चर्चा, कृतिम सकृतिम चैन्य बंदना, बारह भावना, त्रेपन माव एव श्रीधिधयों के नुमखे हैं।

**१००६३, पुटकासं० ३०।** पत्र म०२३२ । सा• ७३<sup>°</sup> ४४<sup>°</sup>, इला। भाषा~सम्कृत-हिन्दी। लेक्काल × । पूर्णावेष्टन स०६४ ।

विशेष---निम्न पाठ है----

चतुर्विशति पूजा, सक्तामर, सहस्रनाम, राजुल पच्चीसी, ज्ञान पच्चीसी, पश्चिनाय पूजा, स्रनंत वत कथा, सूबा बत्तीसी, ज्ञान पच्चीसी एव पद (हरचन्द) हैं।

१००६४. गुटकासं० ३१ । पत्रस० ३६ । ग्रा० ६×४ इश्वा । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्या । वेस्टन म० ६६ ।

विशेष---

सुरेन्द्र कीर्ति र०कालः स०१७०४।

१. रविव्रत कथा २. पद

ब्रह्म कपूर प्रभुजी थाकी मूरत मनडो मोहियो ।

**१००६५. गुटका भं० ३२**। पत्र स० ३२१। घा० ६×४ हे इच्छा। भाषा–सस्कृत–हिन्दी। ले∘काल × । पूर्णा। वेप्टन म०६८।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है---

तत्वार्थ सूत्र उमास्वामी । सरकृत ।

२. भक्तामर स्तोत्र मानतुंगः।

३. मक्तामर पूजा विश्वभूषरा। " श्रीकाष्ठसंघे मुनि राम सेनो

नदी तटाख्यो गुरु विश्वसेन ।

तत्पट्टघारी जनसौस्यकारी विद्याविभूषो मुनिराय वभूव।

तत्पादपद्माचेनमुद्धमानुः

श्रीभूषरो बादिगजेन्द्रसिंह।

मट्टारकाधीश्वर सेव्यमाने

दिल्लीक्वरैणापितराजमान्यः ॥

तस्यास्ति शिष्यो वतमारधार

ज्ञानाव्यि नाम्ना जिनसेवको य ।

तेनै नदध्य प्रपूर्वपूजा मक्तामरस्यात्मज विशुद्ध जैवै: ।।

इति भक्तामग्स्तोत्रस्य पूजा पुन्य प्रविद्विनी ।

१००६६. गुटका सं० ६३ । पत्र स० ३४६ । झा० ६ $\frac{1}{2} \times \mathbb{X}_{5}^{2}$  इन्त । भाषा - हिन्दी - संस्कृत । लेव्काल स० १८३७ बैंगाल सुदी १ । पूर्ण । बेहन सं० १०० ।

विशेष---निम्न संग्रह है---

द्रत विवरण । प्रतिक्रमरा । दश भक्ति । तत्वार्थसूत्र । वृहत् प्रतिक्रमण् । पच स्तोत्र । गर्भ-पडार स्तोत्र-देवनिंद । स्वनावली-भीरसेन । जिनसहस्रनाम-जिनसेन । रविद्रत कथा-भाऊ ।

१००६ ७. गुटकासं० ३४ । पत्र सं० २०० । आ०० ६×४ १ इल्डा भाषा—संस्कृत, हिन्दी। लेक काल × । पूर्णी बेष्टन स०१०१ ।

विशेष-६० पाठो एव पदो का संग्रह है। प्रारम्भ के ४ पत्र तक पाठो की सची है।

मुख्य पाठ ये हैं—चेतन जलडी बाई भेषश्री जलडी-कविदास । रोगापहार स्तोत्र मनसम्। जलडी माहरा चुवरी वर्रान ।

कक्का-मनरामा जन्म-पित्रका खुशालचन्द की पत्र १५७ स्वति श्री गरोश कुल देव्या प्रसादात् ।

जननि जन्म सौल्याना बर्द्धनी कुनसंपदा।

पदवी पूर्वपृत्याना लिस्यते जन्म पत्रिका ॥

स्थ गुज सवस्मरेन्सन श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये सवन् १७५६ वर्षे जाकं १६२१ जवनंमाने सह,सानात्यप्रदुक्तमानोत्तमसारे पीयमाने जुन मुक्तपक्षे सूर्व उत्तरासरी हेमज्जती पुणानित्वी एकादाजो गुक्जारे घटी ४० अरणीन्त्रको स्थाटिका अप्रामादेक संवादे सादी विकास्तरी श्री अप्रा दणा मध्ये जन्म सीत स्थाय साति पाचके, माता पिता सानन्दकारी मात्या दीव विकास से पाचके, माता पिता सानन्दकारी मात्या दीव विवास सक्त पताम दिन २२ । भोष्यास दिन दिन प्रमाण घटी २६ । राजिप्रमाण घटी २४ । खहो गिज प्रमाण घटी २४ । सहो गांव प्रमाण घटी २४ । सहो प्रमाण पटी २६ । साव प्रमाण पटी २६ । साव प्रमाण पटी २६ । साव पटी १४ । सहो प्रमाण पटी २६ । साव पटी १४ ।

### प्राप्त स्थान--दि० जैन पंचायती मन्दिर करौली

१००६ स्र सुटका सं० १ । पत्रसं० १४ ताझा० ५२ ४ ४३ इ.चा माया –हिन्दी –सम्कृत । क्षेत्रकाल म०१ त१ ४ । भादो सुदी ४ । पूर्णा विक्वन सं०२ ४ ।

विकोध -- नित्य एवं नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है।

१००६ ६. गुटकासं० २ । पत्रसं० १२४ । म्रा०१०×७ है इश्वा। भाषा-सस्कृत । ले∘काल × । पूर्णावेष्टनसं० २६ ।

विशेष-पूजा स्तोत्र, पाठ एवं पदो का संग्रह है।

१००७०. गुटका सं० ३ । पत्र स० ७६ । घा० ४०% ६ इ.स. । भाषा –हिन्दी –सस्कृत । ले०काल メ । पूर्ण । वेष्टन सं० ७६ ।

विशेष-पद विनती ब्रादि है।

१००**५२, गृटका सं० ४ ।** पत्रस० ७४ । प्रा० ४  $\frac{1}{2}$  × २ $\frac{1}{4}$  इ.स. । मापा-हिन्दी-संस्कृत । केश्काल × । पूर्ण । वेष्टनसं० २२ ।

विशेष--जिनसेन कृत सहस्रनाम तथा रूपचंद कृत पंच मगल पाठ है।

**१००७२. गुटका स० ५** । पत्र स० ६४ । घा० ५ ×४ इच्चा सापा–सस्कृत–हिन्दी । ले० काल × । पुर्या वेष्ट्रन सं० १०६ ।

विशेष-सामान्य पुजा स्तोत्र एवं पाठ हैं।

**१००७३. गुटका सं०६**। पत्रस॰ ६३। घा० ५×४ है इ'च । भाषा—हिन्दी । ले•काल स० १८४२ कॉलिक बुदी ११। पूर्ण । बेष्टनसं० १०६।

विशेष--निम्न पाठ है--

- (१) सूरसगाई---सूरदास । पद्य स० ५
- (२) बाग्हमासा-मृश्लीदास । १२

ग्रगहन ग्रगम ग्र**पार सखी** री

यादल मैं कासो कहैं।

पन एक जीय मे एसी आवत है

जाय यमुना मैं बॅहा।

बह यमना जरुपायक

मीस करवत सारि हो ।

पथ निहारत ए दिन वीते

कौ लगि पंथ निहारि हो ।।

निहार पथ धनाथ में भई

यादुख मैं कासो कहूँ।

भनत मुरली दास जाय

यमुना में बहु ॥६॥

#### श्रन्तिम--

भनत गिरवर सुन हो देवा

गति मुकति कैसे पाइये।

कोटि तीरथ किये को

फल बारामासा गाइये।।

- (३) भौवनी लोला— 🗙 ।
- (४) कविल-नागरीदास । पत्रसं० १२०।

(५) पचायध्याई---नददास । पत्रसं० १२७ ।

इति श्री भागवतपुरासे दशमस्कध राज कीडा वर्सन मो नाम पञ्चाध्याय प्रथम ग्रध्याय पूर्सी। इसके बाद ८६ पद्य और हैं।

ग्रघ हरनी मन हरनी सुन्दर प्रेम बीसतानी।

नददास कैकठ वसो सदा मगल करनी।

सवत् १८४२ वर्षे पोथी दरवार री पोथी थी उनारी।

१००७४. गुटकार्स० ७ । पत्रसं० २२४ । ग्रा० ६×६ दे इन्था। भाषा हिन्दी। के०कास सं० १७६६ चैत सुदी १२ । पूर्णावेष्टनसं० १३६ ।

विशेष-धर्मविलास का संग्रह है।

१००७५, गुटकासं० ६ । पत्रस० ४४४ । प्रा० ६×१३ इ.च.। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले•कालस०१८६० ज्येष्ठसदी२ । पूर्णावेष्टनसं०१४६ ।

विशेष -- नित्य नैमित्तिक एव मडल विधान धादि का मग्रह है।

१००**७६. गुटका सं० ६**। पत्रस० ११७। घा०६ $\frac{3}{4} \times 6\frac{3}{7}$  इन्छ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी। लेक्काल स०१८४८ भादी बदी ६। पूर्ण । वेष्टनसं०१६८।

विशेष--नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ स्तोत्र ग्रादि का संग्रह है।

### प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर सौगाशियों का करौलो

१००७७. गुटका सं०१ । पत्रस० ३६ । स्रा० ६ $rac{1}{2}$ × $rac{1}{3}$  इ.च. । प्रापा-संस्कृत । ते०काल imes । स्पूर्तगं । वेष्टनसं०७३ ।

विशेष--भक्तामर स्तोत्र स्नादि है।

१००७ म. युटका सं० २ । पत्र स० १२–१२ मा । ६२ $^1$  ४ $^2$  दश्व । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले•काल  $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन सं०७४ ।

विशेष-सामान्य पूजाओं का सम्रह है।

१००७६. गुटका सं०३ । पत्रस०१० से ६२ । झा०६×६ इ.खा आया-हिन्दी। ले•काल × । झपूर्णा वेष्टनसं० ७४ ।

१००६०. गुटकासं० ४ । पत्रसं० २४ से ११५ । धा० १imes६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-प्राकृत । ले॰काल imes । ध्रपूर्ण । वेष्टुन सं० ७६ ।

विशेष---निमित्त एवं नौमित्तिक पुजा पाठ संग्रह है।

१००**८१. गुटका सं०५**। पत्रसं०६ से ४५। ब्रा०४ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इञ्च। प्राणा-हिन्दी। से०काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेष्टन सं०७७।

विशेष-मन्तिम पुष्पिका---

इति सदैवछसावाँलगा की बात संपरस ।

**१०० न्. गुटका सं०६।** पत्रस०३ से १२६। ग्रा०६imes ४ हुं इन्छ। भाषा-हिन्दी-सन्कृत। **क्षेत्रकाल** imes। श्रपूर्ण। बेष्टन सं०७८।

विशेष—-पृजाओं के प्रतिरिक्त लघु रिवब्रत कथा, राजुल पच्चीक्षी, नव मंगल और रिवन्नत कथा (अपूर्ण) है।

**१००६३. गुटका सं०७।** पत्र स०११ से ८०। ग्रा०६ $\frac{3}{2}$ imes६ इ.स.। भाषा—सस्कृत । ल०-कालimes। **भ**पूर्ण। बेष्टुन स०७६।

**विशेष**--- पूजा एव पाठो का संग्रह है।

**१०० म** ४. **गुटका सं० म** । पत्र स०६ म से ३०६ । म्रा०६ हेimes६ हुन्छ । माया—सम्कृत । के**०काल** imes। पूर्णा। बेप्टन स०५०।

विशेष--सामान्य पूजा पाठ है।

१००**६५. गुटका सं० ६ । प**त्रस० ४७ मे १४१ । ब्रा० ६<sup>5</sup>४ ४ हे उच । माषा-हिन्दी-सस्कृत। सं**०क**ाल । अपूर्ण । बेहन स० ६१ ।

विशेष--पूजा, ग्तोत्र एव विनतियो का सग्रह है।

१०० **६ , गुटकासं० १० । पत्रस०** २२ से १४४ । ब्राठ ६ हे×४० है एखा सापा – जिल्ही लेक्कालस० १८४० चैत्र बुदी दा ब्रदूर्णा विष्टनस० ६२।

१००८७. गुटकास० ११ । पत्र स०४-७७ । झा० ८ड्डै४५ इखा आषा—सस्कृत-प्राहुत । ले० काल ×ा ब्रपूर्स । वेष्टन स०८३ ।

१००६ सः गुटकास० १२ । पत्रस० ४१ । ग्रा० ५ $\times$ ६ हे इत्त्र । भाषा—हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ५ $\times$  ।

१०० च. मुटका सं० १३ । पत्रस॰ ५१ । ग्रा॰ ५ ४ १ है इ.च. । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ने०काल स०१७ ६ ४ ब्रासीज बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टनस० ६४ ।

विशेष---निम्न पाठो कासग्रह है।

१. मोक्ष शास्त्र	उमास्वामी	सस्कृत	ले०काल स०
V		१७८५	
२. रविवार कथा	×	हिन्दी	
३. जम्बूस्वामी कथा	पाण्डे जिनदास	"	र०काल स०

१६४२ भादवा बुदी ५ । ले०काल सं० १८२८ ।

१००६०. गुटका सं० १५ । पत्रस॰ २ से ३६८ । घा० ८ ४ ६ ईं इंच । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले॰काल 🗙 । घरूषं । बेष्टनस॰ ८७ ।

# प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहपेथी बमवा

१००६ १, मुटका सं० १ । पत्र स० 🗴 । भाषा-हिस्दी । ले०काल 🔀 पूर्ण । वेष्टनसं० ७३ । विशेष — निम्न पाठों का संग्रह है — पद दीपचन्द हिन्दी

द्यव मोरी प्रभु सू प्रीति लगी

श्रनेक कवियो के पदों का संग्रह है। रचना सुन्दर एव उत्तम है।

१००६२. मुटका सं०२ । पत्र स० imes । भाषा-हिन्दी। ले० काल imes । पूर्ण। बेष्टन स० ७२ ।

विशेष---निम्न पाठों का संग्रह है।

मेषकुमार गीत समयगुरूर हिन्दी
पन्ना ऋषि विश्वभाव हर्पकीर्ति ,,
मुपति कुमति संबाद विश्वभित्तन ,,
पाचो गति की बेनि हर्पकीर्ति ,,
(र०काल म०१६६३)

१००६३ गुटकासं० ३ । पत्रस० २४२ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले•काल 📐 । पूर्ण । वेस्टन स०३ ।

**विशेष**—पूजा पाठो का सग्रह है । राजुल पञ्चीमी तथा राजुल नेमजी का *बारह*राभा भी दिवा है।

१००६४, पुटका सं०४ । यत्रस० ३० । भाषा-हिन्दी । ते०काल 🗴 । अपूर्ण । येष्ट्रन स० ३८ । विशेष —वनारमी विलास में से कुछ सम्रह दिया हुम्रा है ।

# प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बड़ा बीनपंथी दौना

**१००६५. गुटका सं० १। पत्रस० १५०। छा०** क $\S \times \S$  इन्द्रः। ले०काल  $\times$ । छपूर्णः। वेष्ट्रन स० १३०।

विशेष —मामाग्य पूजा पाठो का सग्रह । गुटका भीगा होने से सक्षर मिट गये है इसलिंग धर्काः तरह से पटने में नहीं झामकता है ।

१००६६. गुटका सं०२ । ग्रा०६ हे $\times$ ४. हे इचा मापा-हिस्सी सस्ट्रन । ले० काल  $\times$  । ग्रापुर्ग । वेठून स०१३१ ।

# प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी दीसा

१००६७. गुटका सं० १ । पत्र स०१६४ । द्वा०१२ 🗙 ७६ साया-हिन्दी-प्राकुत । वे०काल स०१६९६ फानुग्ग बुटी ६ । पूर्ण । बेहन सं०१३६ ।

विशेष-- निम्न पाठी संग्रह है --

ज्ञान पन्नीसी, गन्नमंगल, ब्रव्य सब्ह, वेपन किया, दाहर्स, गाया, पात्रभेद, यद् पाहुड गाया, उत्पत्ति महादेव नारायरण (हिन्दी) अृत ज्ञान के भेद, छित्रालीसठाणु, यद् ब्रव्यमेद, समयसार, वर्शनसार मुजापितावित, कर्मप्रकृति, गोम्मटसार गाया । १००६ **म. गुटकास०२ ।** पत्रस०२४६ । ग्रा० प्र×६ हे इश्वाः भाषा-हिन्दी-सस्कृत । × । ने॰काल × । प्रपूर्णावेशन सं०१४० ।

विशेख—पूजायों के सम्रह के श्रीनिष्क्ति तत्वार्थमूत्र परमास्य प्रकाश, इष्ट छत्तीसी, शोलरास परमानन्द स्तोत्र, जोगीरासो, सज्जनचित्तवल्लन तथा सृपय दोहा, ग्रादि का सम्रह है। दो गुटकों को एक में भी खा है।

१००६६, गुटकास० १४ । पत्रस० ३ से १०० । ग्रा० प्र≾्नेह श्वा। माषा~सस्ङ्गा । लेक्काल × । ग्रपूर्ण । बेट्टन स० प्रद्रा

विशेष--- पत्र कल्यास्तक पूजा एव सामाधिक पाठ है।

**१०१००. गुटका संo ४** । पत्रय•० २२५ । क्रा० १०४६ इन्ता भाषा– प्राकृत । ले०काल ४ । पूर्णा। वेक्रमम ० १३ ⊏ ।

विशेष---गृगास्थान चर्चा है। गृटका जीएां है।

### प्राप्ति स्थान-दि॰ जैन मन्दिर मादवा (राज॰)

१०**१०१. गुटका सं० १**। पत्रस० १४६। ग्राट**ः है ४७% इन्ह**। **भाष'-**हिन्दी । गे० करल स० १७४६ पोष धुदी है। पूरा । बेपून स० १३२ ।

विशेष---निम्न गाठो का संग्रह है---

समयमार	वनासरीदाम	हिन्दी
गृदामा चरित्र		19
सज्ञा प्रक्रिया		संस्कृत ।

१०**१०२. गुटकासं०२** । पत्रस०२४६ । घा० ७×७ <sup>हे</sup> डला। भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पर्गावेदनस०१३० ।

**विशेष**---मुख्यतः निम्न पाठों का सम्रह है---

ममाजितन्त्र नापा — पर्वत वर्मावीं
 इच्य सग्रह भाषा — (ले क्लाल सं० १७०० श्रापाड स्टी १५।

जावनेर में प्रतिलिपि हुई थी।

१०१०३. गूटका सं० ३ । पत्रस० 🗙 व्वेष्ट्रनस० १३१ ।

विषय--भीग जाने के कारण सभी ग्रक्षर भूल गये हैं।

१०१०४. गुटका सं० ४ । भाषा तहिन्दी-। ले० काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० १३३ ।

बिशेष-- फुटकर पद्यों में धर्मदास कृत धर्मोपदेश श्रावकाचार है।

१०१०**५. गुटका सं० ५** । पत्रस० ६४ । म्रा० ८४६ इ.च । नापा-हिन्दी–संस्कृत । ले० काल ४ । पूर्ती । वेप्टन स०४१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर धादिनाथ स्वामी मानपुरा ।

१०११६. गुटका सं० ३ । पत्र सं० १४० । स्ना० १×६३ इ.च. भाषा-हिन्दी । ले०कास × । पूर्णं । वेष्ट्रनसं० २२३ ।

विशेष --- निम्न संग्रह है।

१. पद-मनराम

हिन्दी २. भक्तामर भाषा-हेमराज

नाटक समयसार—बनारसीदास

४. नेमीएवर रास-ब० रायमल्ल स० १६१४

 श्रीपाल स्तिति ६ चितामिए। पार्श्वनाथ

७. पचमगति बेलि-हर्पकीति

१०११७. गुटका सं०४ । पत्रस० १४१ । ग्रा० ७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णं । वेष्ट्रन स० २२४ ।

विशेष-निम्न प्रकार संग्रह है-

१. सीता चरित्र—रामचन्द्र । पत्रस० ११६ तक हिन्दी पद्य । र०काल स० १७१३ । ले०काल स०१८४१ ।

मोतीरान श्रजमेरा मौजाद के ने सवाई जयपूर मे महाराज प्रतापितह के णासन म लिखा था।

२. जम्बूस्वामी कथा-पाण्डे जिनदास । र०काल स० १६४२ । लेक्काल स० १८४५ । स० १६६६ में लक्कर के मन्दिर में चढाया था।

१०११८. गुटका सं० ५। पत्र स० २६७। ग्रा० ८×७ इन्छ । भाषा-हिन्दी। ले०काल 🗴 । ग्रपुर्गा। वेष्टन स० २२५ ।

विशेष---निम्न पाठी का सग्रह है---

१. जिन सहस्रनाम मापा

२ सिन्दुर प्रकरण

३. नाटक समयसार---भापा---हिन्दी।

४. स्फूट दोहा--भाषा हिन्दी ।

७१ दोहे

१०११६. गटका सं० ६ । पत्र स० ४२ । मा० ६३ 🗙 ४ ई इंच । भाषा--- हिन्दी । से० काल × । श्रपूर्णं । वेष्टन स० २२६ ।

विशेष-पट्टी पहाडे तथा सीधावरणं समाना भादि पाठो का सग्रह है।

१०१२०. **गृटका सं**० ७ । पत्र सं० १६१ । ग्रा० ७×५३ इ**न्छ** । भाषा × । ले० काल× । ग्रपूर्ण । वेष्टनस० २२७ ।

विशेष--मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है

पट्टावली-वलात्कार गए। गुर्वावली है।

पडिकःमण्, सामयिक, भक्ति पाठ, पश्च स्तोत्र, बन्देतान जयमाल, यशोधर रास—जिल्हास, म्राकाश पत्रमी कया-बहा जिनदास, प्रठाईस मूल गुण रास—जिल्हास, पाणी गालण् राम-व० जिनदास । प्रति प्राचीन है।

**१०१२ १. गुटका सं० ६ ।** पत्र स०२७ । द्या॰ ५ $\frac{1}{2}$  ×१ $\frac{2}{5}$  इश्वः । भाषा-हिन्दी । ले॰ काल प्रपूर्ण । बेटुत स०२२ ६ ।

विशेष---निरय पुजा पाठ सम्रह है।

**१०१२२. गुटकासं० ६ ।** पत्रसं० १४६ । ग्रा०१० ×६ इञ्च । भाषा⊸सस्कृत **। ले०काल** × । ग्रपूर्णा वेष्टन सं०२२६ ।

विशेष-विशेषतः पूजा पाठो का सम्रह है।

पद~ जिन बादल चढि द्यायो.

भया ग्रपराध क्या किया-विजय कीर्ति

समिम नर जीवन थोरो-एपचन्द । जगतराम ग्रादि के पद भी है ।

पूजा सग्रह, सात तत्व, ११ प्रतिमा विचार—त्रिलोक चन्द्र—हिन्दी (पद्य) पार्वपुराएा—भूधरदास ।

**१०१२३. गुटका** सं० १० । पत्र स० ३४६ । प्रा० ७imes५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ने० काल स० १६६८ । प्रपूर्ण । वेष्टन स० २३० ।

विशेष-मृत्यतः निम्न पाठो का सग्रह है-

पडिकोला, श्रृत स्कम्थ---ब्रह्म हेम, प्रक्ति पाठ संग्रह, पट्टावलि, (मूल सघ) पडित जयमाल, जसो--घर जयमाल, मृदसग्प की जयमाल, फुटकर जयमाल ।

**१०१२४. गुटकासं०११** । पत्रस०१४३ । बा०४्रै×४ इश्वा भाषा−िहन्दी।ले०काल × । पूर्णावेष्टनस०७७७ ।

विशेष--मून्यतः निम्न कवियो के पदो का संग्रह है--

किथन गुलाब, हरखचरद, जगतराम, राज, नवल जोवा, प्रभाती लालचन्द विनोदी लाल, रूपचन्द, सुरेन्द्रकीति, नित्य पुजन, मगल, जगतराम । नित्य पुजन भी है ।

सम्मेदणिखर पच्चीगी - खेमकरगा-र०काल स० १८३६

रविवार कथा--- माऊ कवि

भक्तामर भाषा-हेमराज

सभी पद अनेक राग रागिनियों में हैं।

**१०१२ ४. गुटका सं० १२ ।** पत्र सं० १६ । द्या० ६ $imes Y_{\xi}^3$  इश्वः । भाषा—हिन्दी । ले० काल imes । सपूर्ण । वेष्टन स० ७७ = ।

विशेष--नित्य पाठ एव स्तोत्रों के अतिरिक्त कुछ मख्य पाठ निम्न प्रकार है-

स्तवन---ज्ञानभूषण पद---भानुकीति

पदपं० नाथू		हिन्दी
पदमनोहर		,,
पद — जिनहरष		,,
पदविमलप्रम		.,
बारहमासा की विनती—पांडे	राज भुवन भूषस-	.,
पदचन्द्रकीर्ति		,,
श्रारती सग्रह		"

**१०१२६** गुटका सं० **१३ । पत्र**स० ६६ । भ्रा० म्हे  $\times$  २३ इला । भाषा-हिन्दी । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ७७६ । गुटका प्राचीन **है ।** 

| विशेष — मृतीश्वर जयमाल — ∎० जिएदास | हिन्दी | नन्दीश्वर जयमाल — पुमतिसागर | हिन्दी | चतुर्विज्ञात तीर्यकर जयमाल | हिन्दी | चतुर्विज्ञात तीर्यकर जयमाल | हिन्दी | चतुर्विज्ञात तीर्यकर जयमाल | हिन्दी | चन्दा | चन्

**१०१२७. गुटका सं० १४** । पत्रस**०** २६ । ग्रा० ५imes६ इश्वा । भाषा-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्णं । वेष्टन स० ७५० ।

विशेष---निम्न संग्रह है---

पार्श्वनाथ स्तोत्र

मादित्यवार कथा (ग्रपभ्रंश)

मानवावनी-मनोहर (इसका नाम संबोधन बावनी भी है)

मवैया बावनी --मन्ना साह

बावनी--- हूं गरसी

१०१२ त. गृटका सं० १५ । पत्र सं० १६४ । छा० ६imes ५ $rac{1}{4}$  इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्यों । बेष्टन सं० ७८१ ।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है-

सामायिक पाठ

भक्ति पाठ

तत्वार्थं सूत्र--बादि का संग्रह है।

```
१०१२६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १७० । ग्रा० ६×६ इन्द्र । भाषा-हिन्दी । ले०काल
🗴 । पूर्णं। वेष्ट्रन स० ७६२ ।
        विशेष--- निम्न पाठों का सग्रह है---
        मदन जुज्ज--- बुचराज---र०काल १५८६।
                                                                        हिन्दी
        मान बावनी---मनोहर
        हनुमान कथा--- ब्र० रायमहा र०काल १६१६ ।
        टहाना गीत
        दशलक्षरा जयमाल
        देवपूजा, गुरु पूजा----शास्त्र पूजा
        सिद्ध पूजा
        मोलहकारसा पूजा
        कलिक्ट द्रुजा
        नितामीगु पूजा जयमाल
        नेमीश्वर पूजा
        शातिचऋ पूजा
        गराधर वलय पूजा
        सरस्वती पूजा
        शास्त्र पूजा
        गुरु पुजा
        १०१३०. गृटका सं० १७ । पत्र सं० ४२ । ग्रा० ६३ × ४५ इन्छ । वेष्ट्रन स० ७८३ ।
        विशेष - मानमजरी-नन्ददास । ले॰काल सं० १८१६ दः जीवनराज पाड्या का ।
        इसके आगे घौषधियों के नुस्त्ते तथा बनारसीदास कृत सिन्द्र प्रकरण है।
        १०१३१, गृटका सं० १८ । पत्रसं० १०२ । मा० ६×४ दे इन्ह । भाषा--हिन्दी-सस्कत ।
बेष्ट्रन स० ७८४।
        विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।
        १०१३२. गुटका सं० १६। पत्र सं० १६-६६। घा० ६×४३ इन्छ। वेष्टनसं० ७८५।
        राजुल पच्चीसी
पंच मंगल
                                                                        रूपसन्द
पुजा एवं स्तोत्र
        १०१३३. गृटका सं० २०। पत्र सं० ४-६७। माषा-हिन्दी-सग्रह । बेष्टन सं०७८६ ।
        बधाई---
```

विशेष---पद-सर्वसुख हरोकिशन, सेवग, जगजीवन, रामवन्द नवल, नेमकीर्ति, छानत, ।कमं~ वरित, १३ पद्य हैं।

```
१०१३४. गुटका सं०२१। पत्रस० १२६। घा० ४×६ ४ खा। भाषा-हिन्दी-सग्रह।
वेप्रनहा० ७८७ ।
        विशेष---नित्य पाठ सम्रह एव विनती मादि है--
कल्यारा मन्दिर भाषा
नेमजीकी विवती
       १०१३५ गुटका स०२२। पत्र स०६६। ब्रा०६६×४६ द≈। भाषा-हिन्दी—सस्कृत।
वेप्रन स० ७== ।
कोकशास्त्र
                                    धानस्य
                                                                           मपूर्ण
       १०१३६. गटका स० २३ । पत्र स० १६ । आ०६३×४३ ड॰ा । भाषा-हिन्दी।
वेस्टन स० ७६१ ।
       विशेष--पुजा संग्रह है।
       १०१३७. गुटका सं० २४ । पत्रस० ७४ । ब्रा०६×५ इश्व । बेष्टनस० ७६० ।
       विशेष---निम्न पाठो का सग्रहहै---
       १. रविद्यार कथा
       २. जोशीरासा
                                                                  जिमाराम
       3 जान जकदी
                                                                   जिनदास
                                                                   प० गोविन्द
       ४. उपदेश विलि
                      पडित गो॰यद प्रचल महोछव उपदेशी बेलीसार ।
                      द्याधमं रुचि ब्रह्म हेनु भएगी कीधी जासि ने भवपार ।।
       ५ जिन गेह पूजा जयमान
                                     ६ बाहबलि वेलि
                                                                  शास्तिदास
       ७. पद बडा
                                        राजपान
       ६, तीर्थंकर माता-पिता नाम बर्गान हेमल्
                                                       ३० पद, र०काल स०१५४=

 किंव परिचय—

                      ह मनिहीन ग्रयानी प्रक्षिरु कानी जोडि ।
                      जो यह पढ़इ पतावड भविजन लावइ खोडि।।
                       कवितासुर कहायो नारी कवी ग्रहपूत्।
                      कानो मानु न जानो पद्रहसय घटनाला ।
                      वरमा सुगति मुबाला सीत नो ग्रमराला ।)
                      वस्त डारनी रूमप मोला भलिहइ गाऊ।
                      गोल पूर्वमहाअनुहेमलुहइतम् नाउ ॥
                      तिसकी माना देल्हा पिता नाउ जिनदास ।
                      जो यह कावि पढ स्यो कछु पुन्य को धाशु।।
       १०. मुक्तावली गीत ११. धाराघना प्रतिबोध सार दिगम्बर १२. राम सीता गीन-बहा श्री वर्डन
```

१३. द्वादशान् प्रेक्षा-भवध् १४. सरस्वती स्नृति-ज्ञानभृषण्-हिन्दी

१५ कलिकड पूजा १६ मागीत् गी गीत ग्रभयचन्द सूरि हिन्दी ४४ पद्य १७. जंद्र कमार गीत ४४ पदा १८. रोहिसी गीत धतसागर हिन्दी १०१३४. गुटका सं० २४ । पत्र स० ४-६८ । आ० ६ × ६ हे इन्या । बेप्रन सं० ७६१ । १. शतक संवत्सरी— विशेष-प्रारम्म के ३ पत्र नहीं है। स० १७०० से १७६६ तक १०० वर्ष का वर्षफल दिया गया है। महात्मा भवानीदास ने लवाए। मे प्रतिलिपि की । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—स० १७८५ वर्षे शाके १६४० प्रवर्तमानं मिति अपाढ मुदी १ वार गुरुवामरे सपुर्णं दिल्ली तखतपति साह श्री महैमदसाहि । आवेर नगर महाराजा श्री सवाई जयमिहजी नवारा ग्रामे महाराजाधिराज श्री बाका बहादर श्री ररादरामजी লাল স্কৃতিয়া २. चितोड की गजल— कवि मेतान हिस्दी र०काल स १७४८ प्रारम्भ के चार पत्र नहीं है। खरतर जती कवि खेताक अर्थ भोजस एनाक। सवत सतरार्थं ग्रहताल, श्रावण मगसिर साल ।। वदि पास वारमी ते रीक कीन्ही गजल पहियो ठीक। कवि ने ४६ पद्यों में चिल्लीडगढ़ का वर्णन किया है। प्रार्थ के ३७ पद्य नहीं है। रचनाएं ऐतिहासिक है। गकराचार्य ३. शकर स्तोत्र संस्कृत ४. कर्मविपाक सर्वागंव भपुर्ण ग्रन्तिम २५ पत्र सस्कृत मे है। १०१३६, गृहका सं० २६ । पत्रम ० ४१-१२६ । ग्रा० ६×५ इन्स । भाषा -हिस्दी । वेप्टन म० ७६२ । १, मनोरथ माला साह ग्रचल २. जिन धमाल \* 3. धर्म रासा ४. संबोध यचासिका प्राकृत प्र. साध् गीत मनोहर ्/ ६. जकडी रूपचन्द 🗸 ७. पट ब्रह्मदीप, देवसुन्दर, कबीरदास, वील्हौ, ८. धर्मतस्य सर्वया मुन्दर ६. षट्लेश्या वर्णन (सस्कत) १०. ढाढसी गाया ۶۶ बीस विरहमान गाथा

**१०१४०. गुटका स०२७** । पत्रस०२ - २३ । ग्रा०७ ४ ४ इ**४४ । भाषा-**हिन्दी **। ग्रपूर्ण ।** वेग्रन सं०७६३ ।

विरोध — गुटका प्राचीन है। मोज चरित्र हैं पर लेखक का नाम नही हैं) इसमें रतनसेन ग्रीर पर्यावती की भी कया है।

१०१४१. गुटका सं० २८ । पत्रसं० ४-२४४ । घा० ६३४ ४६वा । भाषा—सस्कृत-हिन्दी । घपुर्रो । बेष्टन स० ७६४ ।

विशेष--मुख्यतः नित्य नैमित्तिक पाठ पूजा का संग्रह है। पत्र खुले हुए है।

१०१४२. गुटका सं० २६ । पत्रस० १५-११८ । ब्रा० ५×४ इन्था । भाषा-हिन्दी । ब्रपूर्ण । बेष्टन सं० ७६५ ।

विशोष--भूधरदास, द्यानतराय व बुधजन ग्रादि कवियों के पदो का सग्रह है।

**१०१४३. गुटका सं० ३०**ा पत्र सं०६ । ब्रा०६×४ैृ इञ्चा भाषा–सस्कृत । ले० काल स०१६४६। पर्सा वेष्टन स**०**७६६।

विशेष— लक्ष्मी न्तोत्र, शान्ति स्तोत्र झादि । देवेन्द्रकीति के शिष्य ५० नोनदराम ने किशनपुरा में प्रतिनिषि की थी ।

**१०१४४. गुटका स० ३१।**पत्रस०१६ । आ० ३३X४ $^7_2$  इख । भाषा-हिन्दी सम्छन । पूर्ण । वेष्टन स० ७२७ ।

विशेष---नित्य पाठ करने योग्य स्तीत्र पूजा एवं पाठों का सबह है।

**१०१० ४. गुटका सं० ३२ । पत्र स**० ७६ । ग्रा० ४ ×४ इ.चाः माषा---हिन्दी-संस्कृत । पुर्गावेषन सं० ७६ ६ ।

विशेष — इसमें कडुवाहा राजाम्रो की बजावली है महाराजा ईमरोसिह जी तक १८७ पीटी गिनाई है। म्रागे बजावली की पूरी विगत भी दी है।

**१०१४६. गृटका सं० ३३** । पत्रस० ३१ । झा० प्र $\mathbf{x}$  ६ । माथा-हिन्दी-सस्कृत । पूर्णं । वेश्न स० ७६६ ।

विशेष---नित्य पूजा पाठो का सग्रह है।

१०१४७. **गृटकासं०३४** । पत्र सं०४६ । ग्रा०४३ ४४ इञ्च। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। पूर्णावेष्टन स० ६००।

विशेष—शौषधियों के नुस्खे है तथा कुछ पद भी हैं।

१०१४ म. **गुटका सं० ३५ ।** पत्र स० ७० । ग्रा० ५ॄँ x ४ इचा नापा−हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण । वेष्टनस० म०१।

विशेष-पद स्तोत्र एव ग्रन्य पाठों का संग्रह हैं। गरीश स्तीत्र (१७६५ का लिपिकाल)

१०१४६. पुटका सं० ३६ । पत्रस॰ ३०-६२ । ग्रा॰६१×४२ इन्य । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । पूर्ण । बेकनसं० ६०२ ।

१. मुनीववरों की जयमाल

२. पचम गति वेलि हिन्दी हवंकीति र०काल स०१६०३

३. पद सग्रह " ---

**१०१५०. गुटकास**ं० ३७ । पत्र स०६२ । स्रा० ५.४४ <sup>2</sup>, इञ्च । माया–हिन्दी-सस्कृत । पूर्ण, । बेष्टन सं० ६०३ ।

- १. पद सन्नाह २ पूजा पाठ सम्रह
- ३. शनिश्वर की कथा-विक्रम ले∙काल १८१६
- ४. मुर्य स्तृति-हिन्दी । ५१ पद्य । ले०काल १८१६

विशेष--हीरानन्द सौगाणी ने प्रतिलिपि की थी।

- नवकार मंत्र—लालचन्द—ले०काल १८१७
- ६. सूरज जी की रसोई ७ चौपई द कवित
- सङ्भाय १० पद

**१०१४१. गुटका स**० ३८ । पत्रस० ४१-८६ । घा० ६ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इन्ज । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वेष्टन स० ८०४ ।

विशेष---नित्य पूजा पाठ मग्रह है।

**१०१४२. गुटकासं० ३६**। पत्रसं० २६। ग्रा० ८२<sup>3</sup>४६६ इला। आया-हिन्दी-संस्कृत। पूर्णं। वेस्टन स०६०४।

विशेष---वाल सहेली गुक्रवार की तरफ से चढाई गई नित्य नियम पूजा की प्रति सं० १६७८

**१०१५३. गुटका सं४० ।** जर्जुविशतिपुत्रा—जिनेश्वरदास । पत्रसं० ८७ । आ० ६ ४७ इन्छा । भाषा-हिन्दी । ले॰काल स० १६५६ । पूर्णः । लिपिकाल १६६१ ।वेष्टन सं० ८०६ ।

विशेष-(जिनेश्वरदास सुजानगढ के थे।)

## प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर फतेहपूर शेखाबाटी (सीकर)

१०१४४. गुटका सं० १ । पत्रस० प्यः । घा० ६ $\frac{1}{2}$  × ५ $\frac{1}{2}$  इत्थः । भाषा-हिन्दी । ले॰काल  $\times$  । पूर्णः ।

१. पद सम्रह	×	पत्र १–४
२. विनती (म्रहो जगत गुरु)	भूधरदास	पत्र ४५
३. पद संग्रह		पत्र ५-१०
४. सहेल्यो पद	सुन्दरदास	पत्र १०-११
५. पद संग्रह	_	पत्र १२–६२
६. स्वप्न बत्तीसी	मगौतीदास	पत्र ६२-६५
<u></u>		

**विशेष-**-३४ पद्य हैं।

७. पद संग्रह --- पत्र ६६-८८

विशेष—विभिन्न कवियों के पद हैं। पदो का श्रच्छा संग्रह है। पदों के साथ राग रागिनियों का नाम भी दिया है।

```
१०१५५. गुटका सं०२ । पत्रसं० ११२ । ग्रा० ५३ × ४३ इन्छ । भाषा - हिन्दी । ले० काल
  ×1 पूर्ण ।
         विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है--
 १. जैन शतक
                                     भृषरदास
                                                               पत्र १-२७ ।र०काल सं० १७८१
 २. कवित्व छुपय
                                                     हिन्दी
                                                                पत्र २८-३७
                                       ×
                                     धचलकीति
                                                                 पत्र ३८-४२
 ३. विषापहार स्तोत्र
                                                                 ¥7-X7
 ४. पुजा पाठ
 ५. कमलामती का सिज्भाय
                                                                 ¥ ?-¥ €
                                                   ३२ पद्य हैं। कथा है।
                                                      हिन्दी
 ६. चौबीस दडक
                                     दील तराम
                                                                   83-08
                                     केशरीसिह
 ७. सिखरजी की चौपई
                                                      हिन्दी
                                                                   33-83
                                                      ४४ वद्य है ।
 ८ एकसी ग्रष्टोलर नाम
                                                     हिन्दी
                                                                  90-00
 ६. स्तुति चानतराय
                                                     हिन्दी
                                                                  6e-50
१०. पार्ग्वनाथ स्तोत्र
                                   द्यानत राय
                                                     बिन्दी
                                                                   80-F0
११. नेमिनाय के १० मव
                                      ×
१२. रिषभदेव जी लावसी
                                   दीपविजय
         ६२ पद्य हैं। र० काल सं० १०७४ फागुन सुदी १३।
         विशेष - उदयपुर के भीवसिंह के शामन काल मे लिखा था।
                                                   हिन्दी
१३. पद सग्रह
                                      ×
                                                                  ०३-४२ हर
१४. सर्वेय्यां
                                   मनोहर
                                                                   23-83
१५. प्रतिमा बहोत्तरी
                                                   हिस्दी
                                  द्यानतराय
                                                                   24-804
१६. नेमिनाथ का बारहमासा
                                 विनोदीलाल
                                                                   १०६-११२
         १०१५७. गृटकासं०३ । पत्रस०१८३ । ग्रा०७ 🗡 ६ इश्वरामाषा-हिन्दी । ले०काल 🗡 ।
 पूर्णं। वेष्टनसं०।
         १. पच मगल-
                                                     ਵਿਲੀ
                                                                  पत्र १-१४
         २. बीस विरहमान पूजा
                                                                  पत्र १४-२१
         ३. राजुल पच्चीसी
                                                                  पत्र २२-३१

 आकाश पंचमी कथा

                                     ब्र० ज्ञान सागर
                                                                  पत्र ३१-४३
         ५. नेमिनाथ बारहमासा
                                     विनोदीनास
                                                                  पत्र ४४-५२
         ६. ग्रादित्यवार कथा
                                     माऊ कवि
                                                                  पत्र ५३-७६
         ७. निर्वास पुजा
                                                                  पत्र ७६-५०

 निर्वास काण्ड

                                                                  पत्र ५०-५३
         देव पूजा विद्यान
                                                                  पत्र ६३-१०६
        १०. पद सम्रह
                                                                  पत्र १०६-१८३
```

विशेष--विभिन्न कवियों के पद हैं । लिपि विकृत है इसलिये अपाठ्य है ।

**१०१५ द. गुटका सं० ४** । पत्र स० १२२ द । प्रा० १ $\frac{1}{2}$  $\times$ Y हुन्य । भाषा-हिन्दी । ले०काल सं० १९१७ जेठ ब्दी २ । पूर्ण ।

विशोध — इसमे ज्योतिष, प्रायुर्वेदिक एव मत्र शास्त्र सम्बन्धी साहित्य का उत्तम संप्रह है। लिपि बारीक है नेकिन स्पट्ट एव सुपाठ्य है।

प० जीवनराम ने फतेहपर मे प्रतिलिपि की थी।

- २. गृह प्रवेश प्रकरण × । हिन्दी । पत्र २ सपूर्ण
- ३. स्रायुर्वेदिक नुसक्षे—× । हिन्दी । पत्र ३-५
- ४. नेत्र रोगकी दवा—- × । हिन्दी । पत्र ६− ⊏
- ४. सारम्मी स०६४, ६६ की ---×। हिन्दी। द−१२
- ६ हक्कमैकला ४ । मस्प्रत । १३-१४
- ७. सारग्गी स० १७८२ से १८१२ तक सस्कृत । १४-२१
- s. निपेक --- × । सम्बत । २२-२४
- €. निषेकोदाहरगा— × । हिन्दी गल । २६-३४
- १० मास प्रवेश सारगी, पत्र ३५-५२।
- ११. ग्रहमा वर्गन शक सवतु १७६२ मे १८२१ तक पत्र ४६-६२।
- ११. ग्रहमा वर्गान शक सवत् १७६२ मे १२. १८ प्रकार की लिपियो

के नाम ······ हग लिपि, भूतिलिपि, यशितिषि, राक्षम लिपि, उड्डी लिपि, पावनी लिपि, मालवी लिपि, नागरी लिपि, लाटी लिपि, पार्रमी लिपि, प्रतिमित्त लिपि, वार्गारी, मौलवी, देशाविशेष ।

इनके ध्रतिरिक्त—लाटी, खोटी, माहली, कालडी, गुजेरी, सोश्ठी, मरहठी, क्रांकणी, खुरामसी, मागधी, सिहली, हाडी, खीटी, हम्मीरी, परतीस, मनी, मालबी, महाधोधी धीर नाम गिनाये हैं।

 पुरुष की ७२ कलायं, स्त्री की ६४ कला, बृत्तादि भेद (हिन्दी) न्सथे - ६४ पत्र तक

- १४, सारिगी सं० १८७५ शक सबत् १७४० से १६२५ तक १६५ तक
- १४. भायर्वेदिक नुसले -- हिन्दी -पत्र १६६ २०६ तक एव भनेको प्रकार की विधिया।
- १६. . विभिन्न ग्रंथों से पत्र २०७-२४७ हिन्दी में।
- १७. ग्रहमिद्ध क्लोक -- महादेव । सस्कृत । २४८--२४६
- १८. उपकर्शानि एवं घटिका वर्शन-धंकों मे । २५०-३५५
- १६. गोरखनाथ का जोग-- imes। हिन्दी । ३४६-३७७
- २०. दिनमानकरएा—४ । हिन्दी । ३७८-३८२
- २१. दिनमान एव लग्न ग्रादि फल क . ः
- २३. ज्योतिष सार संग्रह -- × । सस्कृत । ५८२-६१८

```
२४. गिरधरानन्द--- 🗙 । संस्कृत । पत्र ६१६-६७६
                        ले॰काल सं॰ १८६५ मंगसिर बदी १२।
       विशेष - प० जीवराराम ने चरू मे प्रतिलिपि की थी।
      २४. तिथिसारणी--लक्ष्मीचद । संस्कृत । ६८०-६१६
                        र०काल स० १७६०।
       विशेष-ये जयचद सरि के शिष्य थे।
      २६. कामधेन सारराी---ग्रंको मे । ६६७-७१६
      २७. सारोद्धार---हर्षकीति सरि । संस्कृत । ७१७-७८८
      २६. भ्रारान्य मिराका कल्प--मानत् ग । संस्कृत । ७६१-७६५
       विशेष-- अन्तिमपुष्पिका-- ध्वेतास्वराचार्यं श्री मानतु ग कृते श्री मानतु ग नदाभिधाना
ब्रह्मसागरे उत्पन्न मिणमकेतस्थान लक्ष्मणोनामत्वमानंद मिणका कल्प समाप्तः ।
     ३०. केणवी पद्धति भाषा उदाहरण--× । सस्कृत । पत्र ७६६-६३७
     ३३. मृष्टिका ज्ञान---× । संस्कृत । १०४
     ३४. द्याचाडी परिगुमाफल-श्री खतुपाचार्य संस्कृत ६०४
     ३५. वस्तज्ञान-× । मस्कृत । ६०६-६०६
     ३६. रमल चितामिएा—× । सस्कृत । ११०-६६६
     ३७. मीझफल—-ग्रंकों मे। १६७-११५
     दिया हमा है।
     ३६. ताजिक नीलकठोक्त घोडण योग---- × । सस्कृत । पत्र ६६८ - १००५ । ले० काल सं० १८६६
         माघ बदी ७
      विक्रोच-- पं० जीवराराम ने चरू मे लिखा था।
     ४०. भरिष्टाध्याय--- × । संस्कृत । पत्र १००६-१००८
         (हिल्लाज जातके वर्ष मध्ये)
    ४१. द्रगंभग योग--- × । संस्कृत । १००८-१०१० ।
    ४२. घोरकालाननचक--। संस्कृत । १०१०--१०११
    ४३. तिथि, चक्र तिथि, सौरभ, योगसोरभ, बाटिका, वास्ति, ग्रहफल, बोद्यफल-बांको में ।
                                                          १०१२ से १०४३
    ४४. धायुर्वेदिक नुसक्षे—× । हिन्दी । १०४४-१०५७
    ४४. विजययंत्र परिकर-- 🗴 । संस्कृत । १०४५-१०६१
```

४६. विजय यंत्र प्रतिष्ठा विधि सस्कृत १०५६-१०६१

गुटका संग्रह ]

8880

```
४७. पन्द्रह अ क यंत्र-सम्झत । १०६४-६६
      ४८. पन्द्रह श्रक विधि एव यंत्र साधन--- सस्कृत-हिन्दी । १०६६-६९
      ४६. सुभाषित-। हिन्दी । १०७०-१०८८
      ५०. मृतक म्लोक--। संस्कृत । १०८८-८६
      ४१. प्रात सच्या-। सस्कृत । १०६४-९६
      ५२. ब्रनस्वरूप-भट्टारक सोमसेन । सस्कृत । १०६०-६३
      ५३. ग्ररिप्टाध्याय-धनपनि । संस्कृत । १०६७-११०८
      थ ४ कर्मचिताध्याय— । संस्कृत । ११०६-११५
      ४४. ग्रहराणिकल (जानका भरसो)—× । संस्कृत । १११६-३६
      ४६. गुद्ध कोष्टक--× । सस्कृत । ११३७-११४८
      ४७. टिप्पगा--- × । हिन्दी । ११४६-११५३
      ४ = ग्रायर्वेदिक न्सवे---×।
      ५६. चन्द्रग्रहरा कारक
           मारक किया---× । हिन्दी । ११७०-११७३
      ६० ग्रायवॅदिकनुसथे---× । हिन्दी। ११८४-११८६
      ६१. गरापति नाममाला--- 🗙 । सस्कृत । ११६०-१२०४
      ६२. रत्न दीगिका-चडेश्वर ८ संस्कृत । १२०५-१२११
                          ले॰काल स॰ १६१७।
        विशेष-फटेहपुर मे लिखा गया।
      ६४, सारसी----× । संस्कृत । १२१५-१२२=
       १०१५६. गृटका सं० ५। पत्रम० १७५।मा० १०×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ने० काल ×।
पूर्ण ।
       १. पूजा संबह--- x । हिन्दी ।
       २. तत्वार्थरूत्र-उमास्वामी । संस्कृत ।
       ३, पार्श्वनाथ जयमाल--- 🗙 । हिन्दी ।
       ४. पाडे की जयमाल-नहह । हिन्दी ।
       ४, पृथ्य की जयमाल--× । हिन्दी।
       ६. भरत की जयमाल — × । हिन्दी।
       ७. न्हबरा एवं पूजा व स्तोत्र--- × । हिन्दी-संस्कृत ।

 धनन्त चौदण कथा—ज्ञानसागर । हिन्दी-संस्कृत

       ६. भक्तामर स्तोत्र - मानत्न । सस्कृत
      १०. नेमिनाथ बारहमासा — × । हिन्दी
      ११. सिक्भाय - मान कवि हिन्दी।
      १२. पारवंनाय के छंद--× । हिन्दी । ४७ पदा है।
```

१३. पद एवं विनती संग्रह—× । हिन्दी।

१४. वारहमासा--- × । हिन्दी ।

१५. क्षमा छत्तीमी-समयसुन्दर । हिन्दी ।

१६. उपदेण बत्तीमी — राज किव । हिन्दी ।

१७. राजमती चूनरी—हेमराज। हिन्दी।

१८. सर्वेया — धर्मासह । हिन्दी ।

१६. बारहखडी---दत्तनान । "

२०. निर्दोष सप्तसी कथा-रायमल्ल ।

ले • काल स० १८३२ फालगण मदी १२।

विशेष-चुरु मे हरीसिह के राज्य मे बलतमस्ल ने प्रतिलिपि की थी।

**१०१६० गुटका स०६**। पत्रस० १३०। घा०१२ $\times$ ७ इन्त्रः। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। लेक्काल स०१६२६ पीप बदी २ । पूर्णः।

विशेष—पडित महीचन्द्र के प्रशिष्य प० मास्तिकचन्द्र के पठनार्थ लिया गया था। सामान्य पारी का मग्रह हैं।

धादित्यवार की छोटी कथा भानुकीति कृत है जिसमें १२४ पद्य है—म्रन्तिम पाठ निम्न प्रयार है

रम भुति सोरह सत यदा कथा रची दिनकर की। नदायहबन कर वे सुख लहै, भानुकीरन मुनि बर्म कहै।।१२४।।

१०**६२१. गुटका स** $\sim$  ७ । पत्र स्१० १-६+१-७८+१% + १८+८ × ५६+४५+२४ . ६ ११+४+२+२+२+३+३+४+२+२२४ =१२६ । केल का का १८४७ । दली

₹.	मन्तामर स्तांत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	पत्र १∼६
۶.	नीन चौबीशी पूजा	शुभचन्द्र	11	30-9
			ले∙काल सं०१⊏५७ भादवा वृ	हुदी ५ ।
₹.	चिन्तार्माण पाण्यंनाथ पूजा	×	संस्कृत	१-१५
٧.	कर्मदहन पूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत	8-8=
ч.	जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	**	3-8
₹.	सहस्रनाम पूजा	धर्मभूषग्	,,	32-8
છ.	सिद्धचक पूजा	देवन्द्रकीर्ति	,,,	8- K4
r.	भक्तामर निद्ध पूजा	ज्ञानसागर	,,	8-63
3.	पंचवरुयाग्व पूजा	×	संस्कृत	5-58
<b>१०</b> ,	विश विद्यमान तीर्थकर पूजा	×	19	
११.	घष्टाह्निका पूजा	×	संस्कृत	8
१२.	पंचमेरू की धारती	द्यानतराय	हिन्दी	₹
۶۹.	घष्टाह्मिका पूजा	×	संस्कृत	<b>8-</b> 4

१४. गुरु पूजा	हेमराज	हिन्दी	<b>१</b> २
१५. घारा विद्यान	×	,,	१-२
१६. भठाई का रासा	विनयकीर्ति	n	१-३
१७. रत्नत्रय कथा	ज्ञानसागर	**	१−३
१=. दमलक्षरा वृत कथा	-	11	6-8
१६. मोलहकारण रास	मकलकीर्ति	**	१−२
२०. पखवाडा	जती तुलसी	हिन्दी	8-8
२१. सम्मेद शिवर पूजा	×	संस्कृत	8-8

**१०१६२. गुटकास** ० मः । पत्र स० ३ मः । प्रा० १ × ६ $\frac{3}{2}$  उत्ताः भाषा-हिन्दी पद्य**ः** लेकाल म० १६६१ भीष बुदी ३ । पूर्णः ।

विशेष-मारामल्ल कृत दान कथा है।

१०१६**३. गुटका सं० ६ । पत्रस**० ४२ । घ्रा० ⊏×६ हेइआर । माषा-हिन्दी गद्य । ले∘काल × । पूर्ण । बेटुन × ।

विशेष — प्राचार्य जिनसेन कृत जैन विवाह विधि की हिन्दी भाषा है। भाषाकर्त्ता-पं॰ फतेहलाल। श्रावक प्रशालाल ने लिखवाया था।

१०१६४ गुटका सं० १०। पत्रस० ४६। धा॰ ७imesimesimes ः । साथा-संस्कृत । ले०काल imes । पर्गा ।

विशेष—मक्तामर स्तोत्र ऋषि यत्र सहिन है। यन्त्री के चित्र दिये हुये हैं। परणादीलाल वनिया (सिकादरा) श्रागरे वाले ने लिखा था।

**१०१६ ४. गुटका स०११** । पत्रम०११६ । मा० ६imes६५ इ.च । मापा-हिन्दी । ले• काल घ०१६१७ प्रथम स्नासोज मुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द्र इत चौबीस तीर्थंकर पूजा है । नारायण जालडावामी ने लक्कर मे लिखा था ।

**१०१६६. गुटकासं० १२ । पत्रसं०** ७५ । ग्रा० ६×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णः ।

विशेष--निम्न पाठों का संग्रह है--

१. छहुबाला वजनिका — हिन्दी ग॰ पत्र १-१४ **हिन्दी ग**॰ पत्र १-१४ **हिन्दी ग**॰ पत्र १-१४ **हिन्दी ग**॰ पत्र १-१४ १ हिन्दी ग॰ पत्र १४-३०

विशेष-- ब्रधजन कृत छहढाला की गद्य टीका है।

३. दर्शन कथा	मारामल्ल	हिन्दी पद्य	8 88
४. दर्शन स्तोत्र	×	संस्कृत	<b>ሄ</b> ሄ

**१०१६७. गुटकासं० १३** । पत्रस० ४४ । झा० ६×६ दक्षा भाषा −हिन्दी । **के०**काल सं० १६६५ । पूर्ण ।

विशेष — भारामल्ल कृत भील कथा है। परसादीलाल ने नगले सिकन्दरा (ग्रागरे) में लिखा था।

**१०१६ स. गुटका सं० १४** । पत्र स० ११७ । ग्रा० म $_2^2 \times \S_2^2$  इल्ब । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १६२० पीय बदी ३ । पूर्ण ।

विशेष--पडित रूपचन्द कृत समवसरम्। पूजा है ।

**१०१६६. गुटका सं० १५** । पत्र सं० १२८ । घा० ६×७ इ.च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल स० १६६६ । पूर्ण ।

विशेष--पूजा एव स्तीत्र सग्नह है। पीताम्बरदास पुत्र मोहनलाल ने लिला था।

१०१७०. गुटकासं० १६ । पत्रस० ८१ । घा० ६ ${}^{\downarrow}_{i} imes ६ व्या भाषा-हिन्दी-सन्कृत । से०काल <math> imes$  । पूर्ण ।

विशेष-तत्वायं सूत्र, सहस्रनाम एव पूजाक्यो का सब्रह है।

**१०१७१. गुटका सं० १७ । पत्रस**० २७ । धा० ७ $\frac{1}{5}$  $\times$   $\frac{1}{5}$ ६ डला । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण ।

बिशेष---निम्न पाठों का संग्रह है।

१. कल्याए मस्दिर मापा	बनारसीदास	हिन्दी	१−३
२. भक्तामर भाषा	हेमराज	हिन्दी	ą -=
३. एकी सावस्तीत्र	×	सस्कृत	⊏∼१२ झपूर्ण
४, सामायिक पाठ	×	,,	<b>१</b> २-२६
५. सरस्वती मत्र	_	सस्कृत	२६
पद्मावती स्तोत्र	वीज मत्र सहित	**	२७

१०१७२. गुटकासं० १६ । पत्रस० ६०। ग्रा० ७२/४६-६ इश्व । भाषा−हिन्दी-सस्कृत । ले•कालस० १८६६ ज्येष्टसदी १२ । पूर्णा।

विशेष-स्तीत्र एव पुजाओं का संग्रह है।

**१०१७३. गुटका सं०१६।** पत्र म०७३। झा०६ $^1_7 imes \xi^1_2 imes \xi^1_3$  इन्जा भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेक्काल सं०१८८१। पूर्या।

विशेष — मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१ समोसररापूजा सासजीलाल हिन्दी र०काल सं०१८३४

विशेष — छोटेराम ने लिखा था।

२. चौबीम जिन पुजा देवीदास हिन्दी

इनके प्रतिरिक्त सामान्य पूजायें ग्रीर हैं।

**१०१७४. गुटका सं० २०**३ पत्र सं० ३१। घा॰ ५५ $\times$  $\times$ ै इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले॰ काल सं० १०१६ माह सुदी १२ । पूर्ण ।

विशेष - चरणदास विरचित स्वरोदय है।

१०**१७५. गुटका सं० २**१ । पत्र स**०** १२० । प्रा० ६imes६ दे इन्छ । साथा-पूजा पाठ । ले०काल सं० १९६१ मादवा सदी imes । पूर्ण ।

विशेष--पूजा एव विभिन्न पाठो का संग्रह है।

१०१७६. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १६ । ग्रा० ७४ ५ दृ् इचा भाषा-संस्कृत । ले०काल सं० १६४० पौष बृदी ११ । पूर्णा।

विशेष-उमास्वामी कृत तत्वार्थं सूत्र है। लालाराम श्रावक ने लिखा था।

१०**१७७. गुटका सं० २३।** पत्र सं० ३६। घ्रा० ७×४-३ इला। भाषा–सस्कृत । ले०काल सं∙ १९६२ मगसिर बढी ४। पूर्ण।

**विरोध**— भक्तामर स्तोत्र, तत्वार्थं सूत्र एवं जिनसहस्रताम जिनसेनाचार्यं कृत है। परशादीलाल ने सिकन्दरा (प्रागरा) मे प्रतिनिधि की थी।

१०१७ म. गुटकासं०२४ । पत्रसं०६ । म्रा० ७४ ५ है इ.च.। भाषा-सस्कृत । ले•काल ४ । पूर्णा

विशेष--भक्तामर स्तोत्र है।

**१०१७६. गुटका सं०२५।** पत्र स॰ ३-१३४। घा७×५३ हवा। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले० काल म० १६१३। पूर्णं।

विशेष—सामायिक पाठ, दशलक्षरा। पूजा, एवं देव शास्त्र गुरु की पूजा हिन्दी टीका सहित है। तत्वार्य सत्र प्रपूर्ण है।

**१०१** म**ः न**्र**ः सं**० २६ । पत्र सं० १३३ । आ ० ७imes६२ ृहश्वः । साया-हिन्दी-संस्कृतः । ने०काल स० १८=१ भादवा मुदी = पूर्णः ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह हैं।

१०१ द १. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ६५ । धा० ७imes ४ $\frac{1}{7}$  इश्वः । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६७ जेठ शुक्ता १५ । पूर्णः ।

विशेष---मनसुख सागर विरचित यशोधर चरित है। मूलकर्ता वासवसेन हैं।

9 5 5 5

मुनि वसु बसु शस्ति समय गत विक्रम राज महान् । जेष्ट शुरूल ए अंत तिष, पूरण मासी जान ।। चित सुख सागर सुगुरु दीनों रह उपदेश । लिखो पढ़ो चित दे सुनो बाढ़ चर्म विशेष ।। १०१८ २. गुटका सं० २८ । पत्रसं०१६६ । घा० ७imes१६ १ व्यव । भाषा–हिल्ली–संस्कृतः । ते काल imes । पूर्णः ।

#### विशेष---निम्न पाठों का संग्रेह हैं।

१. भक्तामर स्तोत्र	मानतु नाचार्यं	सस्कृत
२, तत्वार्थसृत्र	उमास्वामी	**
<ol> <li>जिनसहस्रनाम</li> </ol>	जिनसेन	,
४. भैरवाष्ट्रक		,,
५. ऋषि मंडल स्तोत्र	×	,
६. पार्श्वनाथ स्तोत्र	×	,,
<ol> <li>कल्यासा मन्दिर स्तोत्र भाषा</li> </ol>	बनारसीदास	हिन्दी पद्य
द. भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	,,
<ul><li>स्पाल चौबीसी माषा</li></ul>	जगजीवन	,,
०. विद्यापहार भाषा	ग्रचलकीर्ति	,,
१ । ग्रहीभाव स्त्रीत्र	भघरदास	

१०**१८ ३. गुटका सं० २८ ।** पत्र सं० ५० । घा० ७४४ है इ.च.। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ने०काल ४। पूर्ण ।

### विशेष---पूजा पाठ सग्रह है।

१००६ ४. गुटका सं० ३०। पत्र सं० ४२ । घा० द×६ ई. इञ्च । माषा−हिन्दी । ले० काल सं० १६६६ श्रावरण गुक्ता १२ । पूर्णी ।

विशेष-मारामल्य कृत दर्शन कथा है।

१०१८ म्. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६३ । घा० ६×१ इचा । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल स० १६५३ आवरा बुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष--पूजा पाठ संग्रह है।

१००६६. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० १७७ । घा० ७imes५ ६ च । साथा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल imes । पूर्ण ।

विशेष --पूजा, स्तीत्र एव कथामों का संग्रह है।

१०१८ ७. गुटकासं० ३४ । पत्रसं० ३३ । घा•६×५३, इ.च. । माद्या–हिन्दी। क्षे•काल सं० १६६६ । पूर्ण।

विशेष--वर्गभीका समह है।

१०१८ स. मुटकासं० ३५४ । पत्र सं० १३७ । झा० ६२,४६ इ.च. । मावा-हिन्दी—संस्कृत । ले∙काल स०१७६५ कार्तिक सुदी७ । पूर्णी।

विशेष--- उल्लेखनीय पाठ----

गुटका संग्रह ] [ ११२३

```
१. क्षेत्रपाल पूजा--बुघटोटर । हिन्दी । १-३
        २. रोहिस्मी प्रत कथा-बशीदास । ,, । ६-१४ । ने० काल सं० १७६५ ।
        विशेष -- धाचार्य कीतिमृरि ने प्रतिलिपि की ।

 तत्वार्थं सत्र वाल बोध टीका सहित—× । हिन्दी समक्रत । २६-६७

        ४. सहस्रनाम---ग्राशाघर । संस्कृत । ६८-८२
        ५. देवसिद्ध पूत्रा × । ",
                                        53-883
        ६. त्रेपन किया ब्रतोद्यापन — विक्रमदेव । संस्कृत ११२-२२
        ७ पचमेरु पूजा--महीचन्द । संस्कृत । १२५-१३३

 प्रतित्रय पूजा × । संस्कृत । १४५−१६६

        विशेष---कासम बाजार मे प्रतिनिधि हुई।
        १०१८६, गृटका सं० ३६। पत्र सं• ३२८। ग्रा॰ ६×४१ इथा। भाषा-हिन्दी-सस्कृत।
ले० काल × । पर्गा
        १. नेमिनाथ नव मगत्र 🗴 । हिन्दी
        २. रत्नत्रय वृत कथा---ज्ञानसायर । हिन्दी
        ३. षोडण कारणः कथा -- भैरुदास । "र० काल १७६१ । ७४ पद्य हैं ।
       ४. दशलक्षरा कथा-जानसागर । ,,

 दशलक्षण राम—विनयकीति । ,, । ३३ पद्य हैं ।

        ६. पूष्पाजलि बत कथा---सेवक । हिन्दी । पत्र सं० ५२-६४
       ७. ब्रष्टाह्मिनका कया-विश्वभूषरा । ,, ६४-७=
               ,, रास-विनयकीति । ,, ७६-६४
      \epsilon. ब्राकाश्रपंचमी कथा-घासीदास ,, \epsilon५-१०१ र०काल स०१७६२ ब्रासोज बुदी १२। १०. निर्दोष सप्तमी कथा 	imes । , \epsilon१०१-११०। ४२ पद्य हैं।
      ११. निशल्याप्रमी कथा---जानसागर । हिन्दी । ११०-१२० । ६४ पद्य हैं।
      १२. दशमी कथा---जानसागर । ,, । १२१-१२६ ।
     १३. श्रावरा द्वादशी कथा-जानसागर । हिन्दी । १२६-१३२ ।
      १४. धनन्न चतुर्दशी कथा -- भैरूद्रास । .. १३२-१४१ ।
       र०काल सं०१७२७ धासीज सुदी १०।
       विशेष-कविलालपूर के रहने वाले थे।
     १४. रोहिस्सी वृत कथा - हेमराजां। हिन्दी । १४१-१४४
          र०काल स०१७४२ पौष सुदी १३।
     १६. रसीव्रत कथा---भ० विश्वभूषरा । हिन्दी । १५४-५७ ।
     १७. द्वारस कथा-विनयकीति ,, १५७-१४६
     १८. ज्येष्ठ जिनवर वृत कथा--सुमालचन्द । हिन्दी । १५६-१७१ ।
```

```
१६. बारहमासा---पांडेजीवन । हिन्दी । २८०-१६० ।
```

२०. पद सग्रह x ।

२१. शील चुनडी-मृनि गुराचन्द । हिन्दी । २१६-२२४ ।

२२. ज्ञान चूनडी---मगवतीदास ,, २२६-२३०।

२३. नेमिचन्द्रिका × । , २३१-२७ ।

र०कास सं० १८८०।

२४ रिववत कथा × । ,, २७६-३०८ ।

१०१६०. गुटका सं० ३७ । पत्र सं॰ ४६ । आ० ६×४ इन्य । भाषा-हिम्दी । ले॰काल 🕢 । पूर्यो ।

विशेष — भक्तामर स्तोत्र ऋदि मंत्र सहित एवं हिन्दी धर्म सहित है। कल्याए। मन्दिर स्तोइ भाषा भी है।

**१०१६१. गुटका सं० ३८** । पत्रसं० २४ । मा० ६ $\frac{1}{2} \times Y$  हवा । मापा-सस्कृत । से०काल पूर्णे ।

विशेष--वृत बध पद्धति है।

१०१६२. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ३१६ । घा॰ ४ $\frac{1}{2}\times$ ४ इचा । मापा-हिन्दी-सस्कृत । सेकाल स॰ १=६१ बैंगाल सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष--नवावगंज में गोपालचन्द वृन्दावन के पोते सोहनलाल के लडके ने प्रतिलिप की थी।

४५ स्तोमों का संग्रह है। जिल्द जककी के मेम पर है जिसमें सोहे के वकतुए जया नटके या ताला है। युद्धों में दोनो थोर ही घनद की तत्फ कोच में जड़े हुए नैनिनाय एव प्दाप्तम के पद्मासन चित्र है। चित्र वंदाान्वर घान्नाय के हैं। प्रारम्भ के द पत्रों में दोनों धोर मिलाकर ४६ नेक्सूटों के मुख्द वित्र है। चित्र क्षिप्त प्रकार के हैं। इसी तरह धान्तम पत्रों पर मी पेडपीधों धादि के १६ मुक्दर चित्र हैं।

१. ऋषिमङल स्तोत्र-गोतमस्वामी । संस्कृत । पत्र ६ तक

२. पद्मावतीस्तोत्र—— × । सस्कृत । १८ तक

३. नवकार स्तोत्र—× । " २० तक

४. ग्रकलंकाष्ट्रक स्तोत्र—×। ,, २३ तक

४. पद्मावती पटल---× । संस्कृत । २७ तक

६. लक्ष्मी स्तोत्र--पद्मप्रभदेव , २६ तक

७ पार्श्वनाथ स्तोत्र—राजसैन ,, ३१ तक

मदन मद हर श्री वीरसेनस्य शिष्यं,

सुभग वचन पूरं राजसेन प्रसीतं।

जयति पठिति नित्यं पार्स्वनायाष्ट्रकाय,

स भवत सिव सौक्यं मुक्ति श्री शांति वीम ।। विगत बजन यथं नौग्यहं पार्श्वनायं ॥

```
द. भैरव स्तोत्र— X ।
                              सस्कृत । ३२ तक । ६ पद्य हैं।
 ६. बर्ढमान स्तोत्र— × 'हिन्दी । ३४ तक । द पद्य हैं।
१०. हनुमत्कवच--- × ।
                              सस्कृत । ३८ तक ।
 विशेष-- धन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---
 इति श्री सदर्शन सहिताया रामचन्द्र मनोहर सीताया पचमूली हनुमत्कवच संपूर्ण ।
११. ज्वालामालिनी स्तोत्र-- × । सस्कृत । ४२ तक ।
१२. बीतराग स्तोत्र ---
                     पदमनदि
                                          ४४ तक।
 विशेष--- ६ पद्य है।
१३. सूर्याष्ट्रक स्तोत्र---× ।
                                सम्ब्रुत । ४४ पर
१४. परमानन्द स्तोत्र--- × ।
                             सस्कृत । ४७ तक । २३ पदा हैं ।
१४. गानिनाय स्तोत्र— 🗙 ।
                                      ४६ तक । ६ पदा है ।
१६. पार्श्वनाथ स्तोत्र--- 🗴 ।
                                  ., ५३ तक।३३,
१७. शानिनाथ स्सोत्र—× ।
                                  ,, ५७ तका१⊏ ,,
१८. पद्मावती दण्डक---× ।
                                  " ५६ तक । ६ "
                                  "६१तका
१६ पद्मावती कवच--- x ।
                              हिन्दी ६२ तक ६ पद्म है।
२०. झादिनाथ स्रीत्र-- × ।
 प्रारम्भ--- संसारसमूद्रं महाकालरूप,
           नही बार पार विकार विरूप।
           जरा जाय रोमावली माव रूप ।
           तदं नोहि सरग तमो ब्रादिनाय ।।
२१. उपसर्गहर स्तोत्र---× ।
                         प्राकत । पत्र ६४ तक ।
२२. चौसठ योगिनी स्तोत्र---×। संस्कृत ।
                                        Eų
२३. नेमिनाथ स्तोत्र--पं० शालि । .. ।
                                       ₹ (9
२४. सरस्वती स्तोत्र -\times । हिन्दी ।
                                      ६६ तक। ६ पदा है।
२५. चिन्तामिए स्तोत्र-- × । सस्कृत ।
                           संस्कृत। पत्र ७१ तक।
२६. क्रातिनाथ स्तोत्र— × ।
२७. सरस्वती स्तोत्र--× ।
                                         ७४ तक । १६ पदा हैं।
 किशेष--१६ नामी का उस्लेख है।
२८. सरस्वती स्तोत्र (इसरा) -- × । संस्कृत । ७६ तक । १४ ॥
२६. सरस्वती विश्विजय स्तोत्र- संस्कृत ।
                                       11 69 1 20
३०. निर्वास काण्ड गाया—× । प्राकृत ।
                                     =२ तक।
३१. चौबीस तीर्थंकर स्तोत्र-×। संस्कृत । ८३ तक ।
 विशेष --- प्रन्तिम
```

सक्त गुए। निधान यत्रमेन विमुद्ध हृदय कमल कोस धामता धेय रूप । जयति तिलक गुरो शूर राजस्य फिल्य वदत सुख निधान मीक्ष लक्ष्मी निवास ।।

हिन्दी। ८४ तक।

### ३२ रावलादेव स्तोत्र----× ।

श्री रावतादेव कर बुहारा, स्वामी कन मेवक निज सारा।
तृ विक्व चिन्तामिंगा एक देवा, कर सदा क्षेत्रक राहरी ।।१।।
सेवा वर्रे लक्षण नाग राजा, सार र सदा क्षेत्रक ना कोई काजा।
पीडा तागा दुवना मून तोड , घटी घटी सकट ली विज्ञोड ।।२।।
की ताहरो नाव जगत जागों, विल विल महिमा ते बलागों।
को बुहरा पोहरा मारू ध्यादें, ते ऊनरी सकट पारी जावें।।३।।
के बुटस्यों को तारीपात वार्ज, जे वितरा विनरी दीव दार्म।
के प्रेत पीम प्रभु तुम ध्यावें। के ऊनरि सकट पारि नावे ।।४।।
के काल किकाल ये साथ सीजें,

जे भूत बैताल पैमाल कीजे । जे डाकरणी दृष्ट पडिलाज ध्यावै.

ते ऊतरि सकट पार जावै ॥५॥ जे नाग विर्थे विषकाल सकै.

तस्य विषे भमियाभाडसकै।

ने तिगाँ इस्या प्रभू तुभः ध्यावै .

ते ऊनरि सकट पार जावै ।।६।।

जे द्रव्य हीएगा मुख दीन भानै,

जे देह सीगा दिनरात खासै।

जे द्यग्ति माभ पडियाज घ्यावै,

ने ऊतरि सकट पार जावै ॥७ ।

जे चक्ष पीड़ा मुख बंब फाड़ै.

जे रोगरूच्यानिज देहताडै।

ज वेदनी कष्टनी कष्ट पडिपाज ध्यावै,

ते ऊतरि संकट पार जानै ॥ ।।। जे राज विश्रेष्ठ पश्चियात थटै.

फिरी फिरी पार का देह कूटै। ते लोह बच्या प्रभूतुभः च्याबी,

्षच्या अञ्चलक च्याण, चे स्टब्स्ट संस्य सम्बद्ध

ते ऊतरि संकट पार जागै ॥६॥

```
श्री पाद्मासा हम एक पूरी,
                                        दःकर्मगा कव्ट समग्र चूरौ ।
                          सूभ कर्मजा सपदा एक धापी,
                                        कृपा करि सेवक मुफ्त थापो ।।१०।।
                             इति श्री रावल देव स्तोत्र सपुर्शा।
        ३३ - सर्वजिन नमस्कार---- 🗶 : स०। पत्र ६०।
            (सर्व चैत्य शदना)
       ३४-नेमिनाथ स्तीत्र - 🗴 । संस्कृत । पत्र ६१ तक । २० पद्य हैं ।
        ३५-मृनिस्वतनाथ स्तोत्र—× । संस्कृत । ६३ तक ।
        ३६-नेमिनाथ स्तोत्र--× । सस्कृत । ६६ तक ।
       ३७-म्बप्तावली-देवनदि । संस्कृत । १०० तक ।
        -८-वन्। एग मन्दिर स्तोत्र —कुमुदचन्द । संस्कृत । १०० तक ।
       ३६-विपापहार स्तोत्र--धन जय । संस्कृत । १२१ ।
       ४०-भूपाल स्तोत्र-भूपालकवि । संस्कृत ।
       ४१-भक्तामर स्तोत्र ऋदि मत्र सहित--- 🗙 । सस्कृद्ध ।
       ४२-भगवती श्राराघना---× । संस्कृत । २८ पद्य हैं।
       ४३-स्वयभ् स्तोत्र (बडा) समतभद्र । संस्कृत ।
       ४४-स्वयभूस्तोत्र (लघु) — देवनन्दि । सस्कृत । पत्र १६० तक ।
       ४५-सामयिक पाठ--- 🗙 । सस्कृत । पत्र २१७ तक ।
       ४७-सहस्रनाम---जिनसेन । संस्कृत । पत्र २६३ तक ।
       ४८-तत्त्वार्थमुत्र-उमास्वामी । सरकृत । पत्र २६३ तक ।
       ५०-चिन्तामिए। पार्श्वनाथ स्तोत्र-पं० पदार्थ । संस्कृत । पत्र २६ ।
       ४१-पार्कानाथ स्तोत्र --पद्मनंदि । संस्कृत । पत्र २६५ ।
       ४२-पार्श्वनाथ स्तोत्र--× । सस्कृत । २६७ तक ।
       ४३-ब्रह्माके ६ लक्षरग—- × । संस्कृत । १६७ ।
       ४४-फटकर श्लोक--× । संस्कृत । २६६ ।
       ४५-घटाकररण स्तोत्र व मत्र--× । संस्कृत ।
      ४६-सिद्धि प्रिय स्तोत्र-देवनंदि । संस्कृत । ३१० ।
      ५८ चलक्ष्मीस्तोत्र— × । सस्कृतः। ३१६ः।
        १०१६३. गुटका सं० ४०। पत्र स० १४१। ग्रा० ४ x ४ इ॰ । मापा—संस्कृत-हिन्दी।
ले० काला। पूर्ण।
        विशेष-- मामान्य पाठों का संग्रह है।
```

**१०१६४. गुटका सं०४१।** पत्र सं०२२७। ग्रा० ४imes<sup>2</sup> इ.सा. साथा-हिन्दी। ले०काल imes । पूर्ता।

विशेष---मुख्य पाठ निम्न है---

१-शालिभद्र चौपई--समिति सागर। हिन्दी। पत्र २८-१४०।

र०काल स०१६०८। ले०काल स०१६१६ चैत बुदी ६।

२-राजमती की चूतडी-हिमराज। हिन्दी। १५२-१७३।

पारस्य--

श्री जिनवर पद पकर्ज, सदा नसो घर माव हो। सोरीपुर सुरपति छनौ, ग्रति ही ग्रनुपम ढांम हो।।

ग्रन्तिम---

काष्ट्रासच मुहाबती, मयुरा नगर धहुए हो। हेमचन्द मुनि जांएाये, सब बतीयन सिर भूप जी।।७६॥ तास पट जसकीति मुनि, काष्ट्र संव सिमार हो। तास गिय्य गुएचन्द्रमुनि, विद्या गुएह सङ्गर हो।।७०॥ इहां बदराण हीयडी चरी, निमग्रह चोर निरमारे। हेम भएंगें ने जाएंगियों ते पाने मचनार हो।।=।।

इति राजमति की चूनडी स पूर्णम् ।

३. नेनिनाथ का बारह मासा--पांडेजी पंत । हिन्दी । पत्र २११-२२५ ।

१०**१६५. गृटका सं० ४२ । पत्रस० १**८५ । धा० ४ $^1_1 \times 3^1_2$  इक्षा भाषा—हिन्दी। ले•काल $\times$ । पूर्णे।

विशेष-पद एवं विनती संप्रह है। लिपि ग्रन्छी नहीं है।

१०१६६ ग्टकास० ४३ । पत्रसं० ४० । म्रा० ६imes ६ व्या । भाषा—संस्कृत-हिन्दी । ले० काल imes । पूर्ताः

विशेष—पार्शनाय स्तीत्र, देवपूजा, बीस विरहमान पूजा, बासुपूज्य पूजा (रामजन्द्र) एव विपायक्षार स्तीत्र सादि का सम्बह है।

१०१६७ गुटका सं० ४४। पत्रसं० ६२-११७। झा० ४×३ इचा। मापा-हिन्दी। ले०काल × । मधुर्गा।

- १. नेमिनाथ का बारहमासा-पाडेजीवन । हिन्दी । ७४-६६
- २, ,, ,, विनोडीलाल । ,, । ६६-११२
- ३. पद संग्रह—× । हिन्दी । ११२-११७

१०१६ स. गुटका सं० ४५ । पत्रस० ३३ । झा० द $\times$ ५ इञ्च । सावा-सस्कृत । ले० काल  $\times$  । पूर्ण ।

देवसिद्ध पूजा, मक्तामर स्तोव, सहस्रनाम (जिनसेन कृत) है ।

१०१६६. गुटका स० ४६ । पत्र स० २६ । ग्रा० १०३ ×७ इन्छ । भाषा - हिन्दी । ले०काल 🗙 । पूर्णे ।

विशेष---भक्तामर स्तोत्र भाषा (हेमराज) बाईस परीषह, पद एव विनती, दर्शनपच्चीसी (ब्यजन) समाधिमरण (खानतराय), तेरह काठिया (बनारसीदास) सोलह सती (मेघराज), बारहमासा (दौलत-राम) चेतनगारी (विनोदीलाल) का सग्रह है।

१०२००. गटका सं० ४७। पत्रस० २४। आ० ५×४३ इ॰४। भाषा — संस्कृत-हिन्दी। ले•काल × । पूर्णं।

विशेष-देवपुजा, निर्वाणकाण्ड, चौबीस दण्डक (दौलतराम) पाठ का सग्रह है।

१०२०१. गुटका सं० ४८ । पत्रस० ५६ । ग्रा० ७×५ इन्छ । भाषा — सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८६६ माघ शक्ला १३ । पूर्ण ।

#### विशेष---

१. विमलनाथ पुत्रा, ग्रनन्तनाथ पुत्रा (ब्रह्म शातिदास कृत) एव सरस्वती पूत्रा जयमाल हिन्दी (ब्रह्म जिनदास कृत) है ।

भज्ञानतिमिरहर, सज्ञान गुर्गाकरं पढई गुरगड जे मावधरी।

बह्य जिनदास भागाह, विवृह पपासइ,

मन विद्धित फल बुधि घनं ॥१३॥

१०२०२. गृटका सं० ४६ । पत्रस० ३६ । मा० ६३ ×६३ इ॰व । माधा-हिन्दी । ले०काल स०१६३२। प्रशं।

विशेष-भगवतीदास कृत चेतनकर्मचरित्र है।

१०२०३. गटका स० ५०। पत्रस० ५६.। आ० ६×५ इचा। भाषा-- सस्कृत। ले०काल × । पर्शाः

विशेष —देवपुत्रा, भक्तामर स्तोत्र, पद्मावतीसहस्रनाम घरलेव्द्र पूजा, पद्मावती पूजा, शातिपाठ एव ऋषि मण्डल स्तोत्र का सग्रह है।

१०२०४. गृटका सं० ५१ । पत्र स० २-१२४ । आ० ६३ ×५३ इ॰व । माषा-हिन्दी । ले•काल सं० १६०२ श्रावरा सदी १५ । पूर्ण ।

विशेष -- निम्न पाठो का सम्रह है।

१. श्रीपाल दरस---× । हिन्दी । पत्र १-२ ।

३. विषापहार स्तोत्र--हिन्दी पद्य । ४-६ ।

विशेष---१२ से १० तक पत्र नहीं है। ४. सीता जी की बीनती -- × । हिन्दी । १६-२०।

४. कलिय्ग बत्तीसी--- × 1 हिन्दी । २१-२४ । ६. चौबीस भगवान के पद-हिन्दी । २४-४६ ।

७. नेमिनाय विनती-धर्मचन्द्र । ६०-६४ ।

ज. हितोपदेश के दोहे—× । हिन्दी । ६४-७२ ।

ग्रठारह नाता वर्गन--कमलकीति । हिन्दी । ७५-५० ।

१०. चन्द्रगृष्य के सोलह स्वप्न-× । हिन्दी ६०-६२ ।

११. ग्ररहंतो के गुगा वर्गान--- × 1 हिन्दी । =३-=४।

१२. नेमिनाथ राजमती सवाद-वह्य ज्ञानसागर । हिन्दी । =७-६४ ।

१३. पचममल – रूपचन्द। हिन्दी। १४-१०४।

१४. विनती एव पद सग्रह— 🗙 । हिन्दी। १०५-१२४।

१०२०५. म्टकासं० ४२ । पत्रस॰ १२ । घा० ७×५१ इल्ड । भाषा न्संकृत । ले०काल × । पूर्ण ।

विशेष--चर्चाग्रोकासग्रहहै।

१०२०६ ग्टकासं० ५३ । पत्रस० १०१ । स्रा०७×६ इला । भाषाः –हिन्दी। ले०काल स०१६७१ पोप मुक्ता१४ । पूर्गा।

विशेष — चरणबाई दिल्ली निवासी के पदो का सबह है। जिसने अपनी बीनारी की हालन से भी पद रचना की भी और उसमें रोग की शांति हो गई भी। यह सबह बस्पालनक के नाम से प्रकालिन हो चुका है।

१०२०७. गुटकासं० ४४ । पत्रसं० ६६ । ग्रा० ६×५ है इन्छ । भाषा-हिन्दी । लेब्बाल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का संग्रह है।

१०२०**८. गुटकासं० ५५।** पत्र सं० १८१। आ.० ६३ूँ×५३ इञ्च। भाषा∽सस्कृत-हिन्दी। ले०कालस० १६२२ । पूर्ण।

बिशेष-- २० पूजाओं वा सग्रह है। बडी पंचपरमेण्डी पूजा भी है।

**१०२०६. गृटकासं० ५६** । पत्र सं०१६१ । म्रा०५<sup>2</sup>, ४३ इच्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले०काल म०१६१४ श्रावण मुदी र । पूर्ण।

विशेष---मामायिक पाठ, श्रावक प्रतिक्रमस्स, पंच स्तीत्र भ्रादि का संग्रह है।

१०२१०. पुटका सं० ४७ । पत्रसं० १६३ । घ्रा० प्र $\frac{3}{4} \times 4^{\frac{1}{4}}$  इच्य । भाषा-संस्कृत । ले०काल स० १८६७ पीप मुदी १३ । पूर्ण ।

विशेष-चीवीम तीर्थंकर पूजा-रामचन्द्र कृत हैं।

१०२११. गुटका स० ४६ । पत्र सं० ४४ । ग्रा०६ है × ५ इका। भाषा-हिन्दी। ले० काल × । पुर्णाः

विशेष-पद एवं स्तीय तथा सामान्य पाठों का संग्रह है।

१०२१२. गुटकासं०६०। पत्रसं० ५३ - १४३। झा०६ै ४४ ई इला। भाषा हिन्दी⊷सरकृत। ले∘काल स० १६३७ मगमिर बुदी१३। पूर्ण।

विशेष---निम्न पाठों का सग्रह है---

- १. पाशा केवली---× । संस्कृत । १-१७
- २. पद संग्रह--- × । हिम्दी । १८-४४

- ३, पाच परवी कथा -- ब्रह्म विक्रम ४५-५३
- ४. चौबीसी तीर्थंकर पूजा-बस्तावर्रासह । १-१५३

१०२१३. गुटका सं० ६१ । पत्र सं०१६८ । ग्रा० ५३ ४४३ इ॰व । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले∘काल × । पूर्ण।

विशेष-स्तोत्र एव अन्य पाठी का सग्रह है।

१०२१४. गटका सं० ६२ । पत्रस० ६० । ग्रा० ५×५३ इन्ब । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८६६ स्नायाट बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष---निम्न पाठों का सम्रह है।

१. शालिभद्र चीपर्ड मतिसागर हिन्दी 888 हिन्दी २. पद × ४५-५५ ३. गोराबादल कथा जरमल ×4-80

र०काल स०१६=० फागुरा सुदी १२। पद्य स०२२४ विशेष--जोगीदास ने प्रतिलिपि की थी।

**१०२१५. गुटका स०६३ ।** पत्र स०१३६ । ग्रा० ५३ × ५ डन्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले∘काल × । पूर्गं।

विशेष--पुजा एव स्तांत्र मादि का सम्रह है।

१०२१६. गृटका सं० ६४ । पत्र स० १०७ । ब्रा० ५ र्≒४४ ; ऽच । भाषा-हिन्दी । ले•काल स० १८७६ द्वासोज बुदी १३ । पुर्ग ।

विशेष--निम्न पाठीं का सम्रह है।

१. ग्रादित्यवार कथा भाऊकवि हिन्दी १-२२ २. मानगीत हिरदी २७-२६ Х ३. बढा चरित्र जतीचन्द ., ३०-४३

र०काल सवत १८३६

विशेष-वृद्ध विवाह के विरोध में है।

४. शालिभद्र चौपर्ट मतिसागर हिन्दी ४४-१०७

१०२१७ गृटका स० ६५ । पत्रस० १६५ । ग्रा०१० × ५ ड॰व । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले∙काल × । पर्गः

विशेष - पूजाये, स्तोत्र एवं चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदाम) का सग्रह है।

**प्रारम्भ में** पटलेश्या, आदित्यवार अतोद्यापन का मडल, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा का मडल, कल्यारामन्दिरस्तोत्र की रचना, विपापहार स्तोत्र की रचना, कर्म-दहन मडल पूजा, एकीभाव रचना, नंदीश्वर द्वीप का मडल द्वादि के चित्र है। चित्र सामान्य है।

**१०२१८. गुटकासं० ६६ ।** पत्र सं०६ । ब्रा०८ ३ 🗙 ७ इश्वा भाषा-हिन्दी। ले०काल ×ाप्रसं।

विशेष - जलगालन विधि है।

१०**२१६. गुटका सं०६७**। पत्रस०१२। ग्रा० म $\frac{1}{4} \times$ ७ इला। माया-हिन्दी। से॰काल स०१६६४ । पूर्णः

विशेष-दौलतराम कृत छहडाला है।

१०२२०. गुटका सं० ६८ । पत्रस० ४१ । झा॰  $-\frac{1}{5} \times 5 \frac{5}{5}$  इन्हा भाषा-हिन्दी । ले॰काल imes । पुर्ती ।

विशेष--पद सग्रह है।

१०२२**१. गुटका सं०६६** । पत्र स० ४१ । ध्रा०५ $^{3}_{7}$ ×५ $^{3}_{7}$  इन्दा । माषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण ।

**१०२२२. गुटका सं०७०। पत्रस०** १२। ग्रा०⊏×६ इ**था**। भाषा–सस्कृताले∞काल × । पूर्णा

विशेष—विम्ब निर्माण विधि है।

**१०२२३. गुटका सं० ७१।** पत्रस**०३४**। म्रा० ६imes६ $^3$  इ.खा। भाषा-हिन्दी-सस्कृत। ले•काल imes। पर्गा।

विशेष-- भक्तामर स्तोत्र एवं निर्वाण काण्ड ग्रादि पाठ है।

१०२२४. गु**टका सं०७२** । पत्र सं० १२ । द्या० ६×४ इच्चा भाषा—हिन्दी। ले० काल × । पूर्णा।

१०२२ ५. गृटका सं०७३ । पत्रस०१४ । धा०६ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले०काल imes । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठ, सग्रह है।

# प्राप्ति स्थान – दि० जैन खएडेलबाल मन्दिर उदयपुर

१०२२६. गुटका सं०१ । पत्र सं०१०। भाषा–हिन्दी । पूर्या। केट्टन सं०१००। विशेष— मुख्यतः निम्न पाठो कासंग्रह है—— जनसङ्ख्या विशि

जम्बूस्वामा वाल	वारचम्द	हिन्दा पद्य
जिनातररास	"	,,
चौबीस जिन चौपई	कमलकीर्ति	,,
विनती	कुमुदचन्द्र	.,
बीर विलास	वीरचन्द	,,
	;	ले∙काल सं० (१६⊏६)
भ्रमर गीत	वीरचन्द	,,
	(₹	०काल सं० १६०४)
ब्रादीश्वर विवाहलो	,,	हिन्दी पद्य
पागी गालनरो रास	ज्ञानभूषरा	,,

<b>६क्मिस्सिहर</b> स	रत्नभूषम्।	हिन्दी
द्वादश भावना	वादिचन्द्र	,,
गौतमस्वामी स्तोत्र	,,	11
नेमिनाथ समवणरगा	,,	11
फुटकर पद		n

१०२२ ७. गुटका सं०२ । पत्रस०११-७२ । घा० ६ $^3+^3$ ृद्धः । भाषा-हिन्दी । ले० काल स०१६०६ । प्रपूर्णा । वेष्टनस०६७ ।

विशेष-मुख्यतः निम्न पाठों का सग्रह है-

त्रिभुवन बीनती	गगादास	हिन्दी प०
सत्ताम्, दूहा	वीरचन्द	,,
विरनाः वीनवी		19
चैरयालय वदना	महीचन्द	"
ग्रष्टकमं चौपई	रन्नभूषरा	"
		(र०काल स० १६७७)

इस रचनामे ६२ पद्य है।

१०२२ स्. गुटका सं० ३ । पत्रस० २७-१४६ । प्रा०१०२४६ इश्वाभाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले० काल स०१८७ ⊏ । पूर्णावेष्टनसं०२०।

विशेष-मस्यतः निम्न पाठो का सम्रह है-

٤.	कक्का बत्तीसी		हिन्दी पद्य
			(२०काल स०१७२५)
₹.	जैनशतक	भूधरदास	**
₹.	दृष्टात पच्चीसी	भगवतीदास	,,
٧.	मधु विन्दु चौपई		**
		(-	र०काल सं० १७४०)
¥.	घष्टोतरी शतक	भगवतीदास	***
٤.	चौरासी बोल		,,
<b>v</b> .	सूरत की बारहखड़ी	सूरत	,,
۲.	बाईस परीषह कथन	भगवतीदास	,,
в.	धर्मपच्चीसी	भगवतीदास	हिन्दी
٥.	बह्य विलास	भगवतीदास	एवं
	क्रक्टरपरि विकास (सरा	न्सीतास । के सन्य पाठों क	त स्वत्र है।

(ज्योतिष)

## प्राप्ति स्थान - दि. जैन अग्रवाल मन्दिर उदयपुर

१०२२६. गुटका सं० १ । पत्रस० ६३ । स्रा० ६×६ इचा । भाषा−प्राकृत । ले•काल सं० १७१० मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष-पट् पाइड की संस्कृत टीका सहित प्रति है।

१०२३०. गुटका सं०२ । पत्र स०४०-६२ । भाषा-सम्कृत-हिन्दी । ले०काल सं०१६७० । अपूर्ण । बेयन स०३६६ ।

विशेष—पुष्यत: निम्न पाठो का सम्नह है—
लघु तत्वायं मृत्र — संस्कृत
दान तपक्षोल सावना बहा बामन हिन्दी
गीत मितसायर ,,
कृषिमडल स्तवन — संस्कृत
सत्रोप पवानिका — ,,
गृटका जीर्गा है ।

**१०२३१, गुटकासं०३।** पत्रस०१८८-२६८ । बा० ११२,४७० इथा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले०काल स०१६४३ ब्रासीज बुदी ⊏। श्रपूर्णै। बेष्टनस० ।

विशेष—मुटका बहुन ही महत्वपूर्ण है। इसमें हिन्दी एवं संस्कृत की अनेक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण रचनार्थ है। गटके में सम्रहीत मस्य रचनाओं का विवरण निम्न प्रकार है—

स० सामग्रंथ	ग्रथकार	पत्र स० ४६	भाषा	विगेष
१. सीमयर स्तवन		3	हिन्दी प	द्य स॰ ३१
२. स्त्री लक्षम्		88	,,	
३. श्री रामचन्द्र स्तवन		2.5	पद	ा स० १०
		धन्नालि	वत	
४. बकचल कथा		११-१३	q	ह्य सं० १०३
५. विषयं मूची		88-80	,,	
६. चौर्वासी नीर्थकर स्तवन	विद्या मूपरा	पत्र १७	हिन्दी	
<b>विशेष</b> —वृषभदेव श्री ग्रजि सुमति पद्म मुपान	त सकल सभव र्घा वंश्रीचतुर चन्द प्रश			
७ जिनमगल		१=	संस्कृत	
<ul> <li>मेबाडीना गौत्र</li> </ul>			हिन्दी	
	३० गोत्रो काबर	र्णन है।		
६. अठारह पुरागो की नाम	विनी	"	,,	
<b>विशेष</b> —पुन पत्र स १ से	चालू है —			
१०. गुरुराणि गत विचार		8	संस्कृत	

११. निरजनाष्ट्रक		8	संस्कृत
१२. पत्यविधान कथा	_	₹-8	**
			(पद्य गद्य)
विशेष मवत् १६वर्षे	स्राचार्यश्री विनयकी	ति नत्रशिष्य ग्र	श्री घन्नालियन ।
१३. विनती	ब ० जिनदास		हिन्दी
१४. गृस्पठासाविल	जीवन्धर	8-€	,, पद्य
<b>विशेष</b> —-जीवन्धर यश.की	त के शिष्य थे ।		
१५. जीवनी धालोचना		Ę	**
१६. महात्रतीनि चौमासानुदड		`	हिन्दी
विशेष-चतुर्माम मे मूनिय	ो के दोषपग्हार विष	गन है ।	
१७. चिन्यामींग पार्वनाथ पू		७-११	संस्कृत
,	•	(ने०काल	स॰ १६१६)
<b>विशेष</b> —िचरतामिंग पाण्यंत	राथ स्तोत्र भी है।		
		रठामधे श्री मृतिम	वननैत्यालयं ग्राचार्यं थी विजय
कीर्नि शिष्ये ब्र॰ धन्ना केन पटनार्थं।			
१⊂, नीतिसार	-	११-१३	सस्कृत
१६. सञ्जन वित्तवल्लभ		१३-१४	*1
२०. साठिमवन्सरी		88-58	्रहिन्दी
	(ऐतिहासिक विवर	ण है)	
सबन् १६०६ से १६८६ तक	की सवत्सरी दीगर	ते है ।	
२१. सवत्सर ६० नाम		२ <b>१</b>	"
२२. वर्षनाम		२१	भस्कृत
२३. तीस चौबीसी नाम		58-38	हिन्दी
२४. सकातिफल		२६	संस्कृत
•	विनयकीर्तिने धन्ना		17)
२४. गुरु विरुदावली	विद्याभूषरा	२६-२⊏	संस्कृत
२६-त्रेसठशलाका		<b>२</b> ⊏-३०	हिन्दी
पुरुष भवावलि			
२७. भक्तामर स्तोत्र सटीक		३१-३६	संस्कृत
२८. दर्णनप्रतिमा का व्यौरा		रे <b>य</b> 	हिन्दी
२६. छद सम्बह	गंगादास	इं⊏-३१	हिन्दी
		१७ छ	र ह ।
३०. पट्कर्मछंद		3.5	,;
३१. ग्रादिनाथ स्तवन		3.5	संस्कृत ?
३२. बलभद्र रास	ब॰ यशोधर	<b>₹0-</b> ₹⊏	हिन्दी

विशेष—स्कथ नगर मे र	चनाकी गयीर्थ	ft i	
३३- बीस तीर्थंकर स्तवन	ज्ञान भूषर	l Aş	सस्कृत
३४- दिगम्बरों के ४ भेद		83	सस्कृत
३५- व्रतसार		*\$	संस्कृत
३६. दश धर्मवर्णन		83	.,
३७ श्रीशिक कथा		88-80	
३८० लब्धि विचान कथा	पं० ग्रभ्नदे	38-08 B	,
३६. पूष्पांजलि कथा	-	86-X8	,,
४० जिनरात्रि कथा		48-42	
४१. जिनमुखावलोकन कथा	सकलकीर्ति	¥7-¥₹	,,
४२, एकावली कथा	-	43-88	"
४३. शील कल्याएक व्रत क	था	<b>x</b> 8-42	,,
४४. नक्षत्रमाला वन कथा		<b>XX</b>	• •
४५. व्रत कया			**
६३. विद्यान करनेकी विधि		ሂሂ	सस्कृत
६४. ग्रकृत्रिम चैत्यालय विन	नी —	9.3	संस्कृत
६५- धालोचना विधि	-	<b>₹</b>	
६६-७७ भक्तिपाठ सम्रह	-	७६ नक	"
७८. स्वयभू स्तोत्र	समतभद्र	<i>د</i> ۶	,,
७६. तत्वार्थं सूत्र	उमास्वामी	€व	,,
८०. लघुतत्वार्थसूत्र		<b>#</b> \$	"
विशेष-सं०१६१६ माह	वदि ५ को धक	साने प्रतिलिपि की ।	५ श्राप्याय हैं।
८१. प्रतिक्रमग् (श्रावक)		54	संस्कृत
द२. लघुग्रालोचना		19	,,
< इ. महावृती श्रालो <del>वना</del>		<b>⊏</b> ξ	11
६४ सीखामण राम	_	F. 9	हिन्दी
८४. जीवस्थर राम	त्रिमुवनकीर्ति	६३-७=	19
विशेषर०काल स०१६	०६ है इसकी र	चिना कल्पवल्ली नगर	मे हुई थी।
श्रन्तिम पद्य निम्न प्रका	ार है		
		करी पहलू जिब पद ठा	म
		नविदेयों तम गुराग्रा	
८६. पाशाकेवली	गर्गमुनि	¥3-€3	संस्कृत
८७ यति भावनाष्ट्रक		દય	**
<ul><li>प्रवासी क्षा की की निर्दा</li></ul>	-	"	हिन्दी

7

<b>८६- कर्मवि</b> पाक रास	व ० जिस्	ास ६६	हिन्दी
	•		(ले∙काल स०१६१६)
६०. नेमिनाथ रास	विद्याभूषस्	. \$00-\$0	
विशेषदेवपस्ती स्था			न्नाने प्रतिलिपि की थी।
<b>६१. श्रावकाचा</b> र	प्रतापकीर्ति		हिन्दी
			(र०काल स०१५७५ मंगसिर सुदी २)
६२. यशोधर रास	सोमकीर्ति	१०७-१३	हिन्दी
<b>६४. भविष्यदत्त</b> रास	विद्याभूषरा	<b>११४−२०</b>	,,
	-		(र०काल सं० १६०० श्रावण सूदी ४)
६५- उपासकाध्ययन	प्रभाचन्द्र		संस्कृत
			ले•काल स० १६०० मगसर बुदी ६
<b>१</b> ६. सामुद्रिक शास्त्र	-	१२०-१२४	सस्कृत
			ले०काल सं० १६१६ मगसिर बुदी ११
६७. मालिहोत्र	_	828-28	सस्कृत
€ <b>८. सुदर्शनरा</b> स	<b>ब्र॰</b> जिनदास	82X-2E	हिन्दी पद्य
			ले•काल सं०१६१६ प्रशसिर बुदी ४
६६. नागश्रीरास	,,	१२६-३२	ले∙काल सं०१६१६ पौँप सुदी ३
(रात्रि मोजन रास)			
१००. श्रीपालरास	,,	१३२-३६	**
१०१. महापुराए विनती	गगादास	35-059	**
			ले∙काल स०१६१६ पौष बुदी
१०२, सुकौशल रास	गगुकवि	836-88	•
१०३. पल्य विचार वार्ता	_	188	,,
१०४ पोसानुरास		6.8.3	n
१०५. चहु गति चौपई		१४३	,,
१०६. पार्श्वनाथ गीत मुनि	लवण्य समय	१४३	27
राग धवरस—			an Company is
		व्यंदशगराधर	
=		ानाथ तुतारिः	
१०७. ग्यारहप्रतिमा बीनती	<b>व</b> ०जिए।दास		हिन्दी
१०६- पानीगालन रास		688	"
१०६. झादित्यवतरास		१४५	,
११०. मालए। मूछ कथा	_	68X-RE	,,
			६४ पद्य हैं
१११. गुरगठासम चौपई	वीरचन्द	686	3.7

```
११२. रत्नत्रयगीत
                                   १४६
                                                                   हिन्दी
                    जीव रत्नत्रय मन माहि धरीनि कहि सुचारित्र सार
 ११४. ग्रविकासार
                        ब्र० जिरगदास १४८-४८
                                                              १५८ पद्य है।
११५. घाराधना
                        सकलकीनि १४५-४६
                                                                   हिन्दी ४४ पद्य
      प्रतिबोध सार
११६. गूरानीसी सीवना
                                                                    ,, ३२ पद्य
                                    88€
११७. मिछादोकस्
                      व्र जिस्तदास
                                                                   हिन्दी पद्य
      (मिथ्यादुकड)
                                                 ले०काल स० १६१६ माह सुदी १४
११व. सताग् भावना
                                                                   हिन्दी ६७ प०
                      वीरचन्द
                               १५०-५१
                   ग्रतिम पद्य निम्न प्रकार है---
                   सूरि श्री विद्यानदि जय श्री मिल्लभूपरा मुनिचन्द ।
                   तस पट महिमानिल् गुर श्रीचन्द लक्ष्मीचन्द ।
                   नेह कुल कमल दिव सपती जयनि जीप वीरचन्द ।
                   मुगाता भगाता ए भावना पामीइ परमानन्द ॥६७॥
 ११६. नेमिकुमार गीत
                                 १५१
                                                                 हिन्दी
      (हमची नेमनाथ) लावण्य समय
                                             र०काला सं०१४६४ ७० प०
१२०. कलियुग चौपई
                                 १५२
                                                                 हिन्दी ७७ प०
१२१. कर्मविपाक चीपर्ड
                                 १५२-५३
                                                                   ,, ६४ प०
१२२. वृहद् गुरावली
                                                                  संस्कृत
१२३. ज्योतिय गास्त्र
                                848-48
१२४. जम्बूस्वामी राम बर्जिगादाम १५६-६६
                                                                   हिन्दी
                                                                  १००६ पद्य हैं।
१२५. चौबीस ग्रतिशय
                                 १६६–६७
                                                                     ,, २७ पद्य
      विनती
१२६. गराधर विनती ---
                                                                  हिन्दी २६ पद्य
१२७. लघुबाहुबलि वेलि शातिदास १६७
                                                                    ,,
   विशेष - णानिदास कल्यासाकीति के शिष्य थे।
   ग्रतिम पद्य निम्न प्रकार है ---
                   भरत नरेश्वर धावीया नाम्यू निजवर शीस जी।
                   स्तवन करी इम जंपए हैं किकर तुंईस जी।
                   ईस त्मनि छांडीराज मक्तनि भाषीउ।
                   दम कही मन्दिर गया सुन्दर ज्ञान भुवने व्यापीछ ।
                   श्री कल्यासाकीरति सीम मुरति चरसा सेव मिनसा कड़।
                   शातिदास स्वामी बाहुबलि सरए। राख् पुत्र तम्ह तराी ।
```

```
१२८. तीन चौबीसी पूजा
                                विद्याभूपरा
                                               १६= ७१
                                                                       संस्कृत
                                             ले०काल सं०१६१६ ज्येष्ट बुदी १३
     १२६. पल्य विधान पूजा
                                                १७१-७३
                                                                        संस्कृत
     १३०. ऋषिमङल पूजा
                                                863-66
                                                                        सम्कत
                                                     ले∙काला स०१६१७ ग्रापाढ सुदी ११
     १३१. बृहद्कलिकुण्ड पूजा
                                            30-209
                                                                        संस्कृत
     १३२. कमंदहन पूजा
                                शुभचन्द्र
                                           808-58
                                                        ले • काला स०१६१७ ग्रापाढ बृदी ७
     १३३ गराघरवलयपूजा
                                           828-28
     १३४. सककलीरसा विधान
                                           १८५-८६
     १३५. सहस्रनाम स्तोत्र
                              जिनसेनाचार्य १८६-८८
                                                  ले•काल स० १६१७ ब्रापाड सुदी ११
     १३६. वृहद् स्नपन विधि
                                           85-58
                                                                          संस्कृत
                                                       ले०काल स० १६१७ सावगा मूदी १०
        प्रशस्ति - निम्न प्रकार है--
        सबत् १६१७ वर्षे श्रावरण सुदी १० गरी देवपत्या श्री पार्श्वनाथभूवने श्री काष्टासथे भट्टारक श्री
विद्याभूषरण् ग्राचार्यं श्री ५ विनयकीति तच्छित्यं ब्रह्म घन्ना लिखनं पठनार्थं ।
     १३७. लघम्नपन विधि
     १३५-४१ सामान्य पुजा पाठ ---
                                        984-700
     १४२. सोलहकारमपाव्यक्षी
     १४३-१४७ नित्य नैमिनिक पूजा -- -
                                         २००-४
                                                        ले • काल म०१६१७
     १४८. रत्नत्रय विधान
                              नरेन्द्रसेन २०५-६
            (बड़ा ग्रध्यं खमावणी विधि)
        इति भट्टारक श्री नरेन्द्रसेन विरचिते रत्नत्रयविधि समाप्त । ब्र॰ धन्ना केन लिखित ।
     १४६. जलयात्रा विधि
                                          २०६
                                                                          संस्कृत
                                                        ले • काल म ० १६१७ भादवा युदी ११
        प्रशस्ति—स०१६१७ वर्षे भादवा वृदी ११ श्री काष्टासधे म० श्री राममेनान्वये । मट्टारक
```

प्रशस्ति—स०१६१७ वर्षे भादवा बुद्धे ११ श्री काष्टासघे म०श्री राममेनास्वये । महारक श्री विक्वसेन तत्पट्टे भट्टारकश्री विद्याभूपरण स्राचार्थश्री विनयकीर्ति तिष्छत्यश्री धन्नास्थेन लिखत । वैवपस्त्रीश्री पाण्येनाथ मुबने लिखित ।

१४०. जिनवर स्थामी वीनती सुमतिकोति २०६-६ हिन्दी श्रीमृत्सक्ष महत सत् गृरु श्री तक्ष्मीवन्द । वीरवन्द जिनुस वंघन्याय भूषण, मुनिन्द । जिनवर कीनती के मणि मनिषदी माणद । मगति सुगति मुनिकर ते लहि जिटा परमानंद ।

```
इति जिनवर स्थामी विनती समाप्त ।
      १५१- लक्ष्मी स्तोत्र सटीक
                                         ₹00-₹05
                                                                        संस्कृत
      १४२. कर्मकी १४८ प्रकतियों -- ३०८-१०
                                                                        हिन्दी
             का वर्णन
      १५३. विनती पार्श्वनाथ
                                          280-88
                                                                    पद्य सं० १४
                         जय जगगृरु देवाधिदेव त्ंत्रिभूवन तारए।।
                         रोग ज्ञोक भ्रपहरराधरि सबि संपद काररा।
                         रागादिक श्रतरंग रिपु तेह निवारए।।
                         तिहुं ग्राण सत्य जे मयरा मोह भड़ देवि भजरा।
                         जिन्तामिए। श्रीयपास जिनवर प्रद्वनवर प्रांगार।
                         मनह मनोरथ पूरगुए बांछित फल दातार ।।
     १५४. विद्युत्प्रम गीत
                                        २११-१२
                                                                        हिन्दी
     १५५. बाईस परीषह वर्गन --
                                        282-88
                                                                        संस्कृत
                                            ले ०काल स० १६३२ बैशाख मुदी १०
        प्रहलादपुर में बरु धन्नाने अपने पठनार्थ लिखा था।
     १५६. षट्काल भेद वर्गान
                                       २१५
                                                                        सस्कृत
     १५७- दुर्गा विचार
                                       २१६
     १५८. ज्योतिप विचार
                                       २१६
        विशेष-इसमें वापम विचार, शकुन विचार, पस्ली विचार छीक विचार, स्थप्न विचार, स्राफडक
विचार, एव वापस घट विचार भ्रादि दिये हुए हैं।
     १५६. धकलकाष्टक
                                      284-80
                                                                        संस्कृत
     १६०, परमानद स्तोत्र
                                      २१७
     १६१. ज्ञानांकुश शास्त्र
                                      ₹१७−१5
                                    २१=−१६
     १६२ श्रुत स्कंघ शास्त्र
     १६३. सप्ततत्व वार्ता
                              --- 386-30
      १६४. सिद्धांतसार
                                       220-22
     १६५-६८ कमों की १४८ प्रकृतियों का बर्णन
                जैन सिद्धांत वर्णन चौबीसी ठाएा
                चर्चा, तीर्थंकर आयु वर्णन
                                       223~38
                                               ले०काल सं०१६१ = झासोज सुदी १
     १६८. सुकुमाल स्वामी रास वर्मरुचि २५१-६५
                                                                        हिन्दी
```

सुमतिकीर्ति भवि भिए थे ध्यावो जिसवर देव । ससार माहि नवतयु पाम्यु सिवपरु देव ॥२३॥

```
ग्रन्तिममाग---
         वस्तु---
                         रास मनोहर २ कियु मि सार।
                         मुकुमाननु श्रति रुग्नडु मुशाता दुखदालिइ टालि श्रति ऊजन ।
                         मण्यो तह्यो भविज्ञाच्यु भनेक कथा इस वर्ग वीलोह जल ।
                         श्री ग्रमयचन्द्र युरू प्रशामीनि ब्रह्मधर्मं रुचि मशिसार।
                         मिए। गुरिएज सोमलि ते पामि सुख श्रपार ।
         इति श्री सुकुमाल स्वामी रास समाप्त ।
      १७०. श्री नेमिनाथ प्रबंध
                                   लावण्य समय मूनि
                                                        २६५-७०
                                                                         हिन्दी
      १७१. उत्पत्ति गीत
                                                       २७१
      १७२-नग्सगपुरा गोत्र छद
                                                       २७१
                                व्र० जिरादास
                                                       3=7=8
      १:3३ हनमन रास
   ग्रन्तिम पाठ---
        वस्तु---रास कहयु २ सार मनोहर सहितयुग सार सहोजत ।
                         हनुमत वीनुनिर्मल ग्रजल।
                         भ्राति केडवा स्रतिषर्गी भवीयग्रासुग्गतामार प्रजल
                         श्री सकलकॉरित गुरु प्रशामीनि भवनकीरित भवसार ।
                         बह्मजिए।दास एसी परिभरोी पढता पुष्य भ्रपार ।।७२७।।
        ७२७ पद्य है।
      १७४. जिनराज वीनती
                                                २१२
                                                                          हिन्दी
      १७४. जीरावलदेव बीनती
                                                     ले०काल स० १६३६
        सवत् १६२२ वर्षे दोमडी ग्रामे लिखितः।
     १७६- नेमिनाय स्तवन
                                               335
                                                                                ३६ पद्य
     १७७ होलीरास
                                  व • जिसादास २१६
                                          ले•काल सं०१६२५ चैत सुदी ५
                                  ब्र० जिरगदास २६६-२६७
     १७८, सम्यवत्व रास
                                               ले•काल स० १६२५ पौष सुदी २
                                 सकलकीर्ति
     १७६. मुक्तावली गीत
                                                ले•काल सं०१६२६ पौष बुदी १३
     १८०. वृषमनाथ छद
                                                 ले०काल सं•१६४३ द्यासोज दुदी ३ ।
        १०२३२. गुटका० सं०४ । पत्रसं० १३० । भाषा-हिन्दी । ले०काल स० १८३३ । पूर्ण ।
बेष्ट्रन सं० ३८६।
        विशेष-- निम्न दो रचनाओं का संग्रह है--
```

कवित्त

दिन्दी

त्रेपनिकया विभि—दौलतराम । भाषा-हिन्दी । ।पूर्णा । र०काल स०१७६५ भादवा सुदी १२ । ले० काल स०१८३३ ।

## प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सबत् १८३३ वर्षे मासोत्तमासे गुभज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे पाडिबा शुक्रवासरे श्री उदयपुर नगरे मध्ये लिखित नाह मनोहरदास तोनेशनालजी सुत श्री जिनधरमी दीसतराम जो सीय यथ करना बन्गारी मात्रा यकी सरका धानी तेरेपयी देवधरम गृह सरक्ष। शास्त्र प्रमार्ग वा ग्रथ गृह भक्ति कारक।

२. श्रीपाल मुनीश्वर चरित

बह्य जिनदास

(ले•काल स० १८३४)

**१०२३३ गुटका सं०५।** पत्रस०१६०। भाषा~सस्कृत~हिन्दी।**ले∘काल ×**। पूर्ण। बेष्टन स०३६५।

विशेष — मुख्यतः निम्त रचनाम्रो का सम्रह है — मानकवि किन्दी

देव पूजापृक — भ्रन्य साधारम पाठ है।

**१०२५४. गुटकास० ६। पत्रस० १६६ । आ० ११×**८ इ.च.। भाषा-संस्कृत रिन्सी। **लेकाल** × ।गर्गाविन स० ३८४।

विशेष-निम्न प्रकर संप्रह है-

पुत्रा पाठ, पद, विनती एवं तत्वार्थसुत्र ब्रादि पाठों का सब्रह है।

बीच बीच में कई पत्र खाली है।

**१०२३४. गुटका सं०७**। पत्रस० १८४ । आ० ७५४ इखा **भाषा**-सन्धन-हिन्दी । लेकाल × । पूर्ण । **वेष्ट्रस०** ३८३ । गुरुष याद निम्न अकार है—

खिरोय---नामाधिक गठ, भक्ति पाठ, ब्राराथनामार, पट्टावलि, इब्ब सम्रह, परमारम प्रकाश, हादचानुप्रेक्षा एव पूजा पाठ सम्रह है।

**१०२३६. गुटका सं० ८ ।** पत्रस० १४० । ग्रा० ६×४ इन्त्रः । भाषा-प्राकृत-हिन्दी-सस्कृतः । ले•काल ×। ग्रदूष्णं । बेष्टन स०३६२ ।

हिन्दी

विशेष--- मृत्यत निम्न पाटो का संग्रह है--

हुमुल्यान नर्था प्रकृत तत्वार्थपुत नार्थ — हिन्दी (गद्य) भाव त्रिसंगे नैमनन्द्राचार्थ प्राकृत साथव विभागी — "

हिन्दी गद्य टीका सहिनहै

पंचास्तिकाय

पार्मामानन राम

विनती

**१०२३७. गुटका सं० ६**। पत्रस० २१-१३१। ग्रा० ६४५ इचा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। से•काल स०१७६१। प्रपूर्ण। वेष्टन स० ३८१।

विशेष - मुख्यतः निम्न पाठो का सम्रह है।

, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,		
ग्रनन्तनाथव्रत गम	व • जिनदास	हि <b>न्दी</b> ।
भन्तामर स्तोत्र	ग्राचायं मानतुग	संस्कृत
दान चौपई	समय मृत्दर बाचक	हिन्दी
पार्श्वनाथजी छद सबोध	-	,,
		(ले∙काल १७⊏१)
बाहुबलिनी निषद्या	error.	',
		(ले∙काल १७८१)
रविक्रत कथा	जयकीति	,,
भोग , नागम कथा	व्र० जिनदास	

१०२३ म. गुटका स० १०। पत्रस०४ १–११। घा० = ', ४४ दश्व। भाषा–हिन्दी (पदा)। क्रेश्काल स०१७ म.१ । प्रपूर्ण। येष्टन सं०३ म.०।

विशेष - निम्त रचनाथ्रो का सप्रह है-

ज्ञानभूषरग

हन्मन कथा	ब ० रायमल्ल	हिन्दी	भ्रपूर्ण
जम्बू स्वामी चौपई	पाडे जिनदास	<b>*</b> 1	पूर्णं
मृगी सवाद		**	धपूर्ण

**१०२३ ६. गुटका सं० ११ । पत्रस∘** ४२० । घा० १०×६ द्वा । भाषा-हिन्दी । ले०काल स०१६२० काती सुदी १ । पूर्स । वेष्टनसं०३७६ ।

विशेष---निम्न पाठो का सम्रह है---

14444			
धनन्तवत कथा	व्र० जिनदास	हिन्दी	पत्रस० ६
सोलहकाररा रासा	n	,,	१५
दशलक्षरण यत कथा	*1	0	२१
चारुदत्त प्रबंध रास	,,	n	४४
गुरु जयमाला	n	21	५६
पूष्पांजसि पूजा	Page	सस्कृत	9 શ
धनन्त वत पूजा	शातिदास	हिन्दी	
पुष्पाजलि रास	ब्र० जिनदास	**	
महापूरागा चीपई	गगदास	29	
प्रकृत्रिम चैत्यालय	लक्ष्मग्ग		

काष्ट्रासघ विख्यात सूरी श्री भूषणा शोभताए चन्द्रकीति सरि राग तस्य शिष्य लक्ष्मणा वीनती कक्ष्णे ।।

388

बराजारा गीत

नुंकामत निराकरण रास	वीरचन्द	हिन्दी
		(र०काल सं०१६२७ माघ सुदी ५)
मायागीत	ब्र० नाराण (विजयकीर्तिका	<b>भिष्य) हिन्दी १७७</b>
त्रिलोकसार चौपई	सुमतिकीर्ति	"
होली भास	<b>प्र</b> जिनदास	n
विशेष१४ पद्य हैं । उदयप	र नगर मे प्रतिलिपि की थी।	
सिन्दूर प्रकरण भाषा	बनारसीदास	हिन्दी
		(लेक्सल सं० १७८४)
प्रशस्ति निम्न प्रकार है-	<del>-</del>	
सवत १७५४ वर्षे फाराग मासे	शक्लपक्षे प्रतिपदातिथौ सोमवा	सरे पूर्वभाद्रपदनक्षत्रे साकानामि
गोत्र मेबाइदेशे श्री उदयपुरनगरे मह		
चैन्यालये भ० श्री विजयकीर्ति जी बाम्ना		
भक्तिकारकश्री जिनाजाप्रतिपालक द्व	ादशदतघारक लिखापित वालेस	देवजी तन् मृत एक विशति गुग्
विराजमान वाले साश्री रतन जी पठना	र्थ।	
मुदर्शन रास	० जिनदास	हिन्दी पत्रस०२४३
रात्रि भोजनरास	**	<del></del> २८४
		(ले∍काल स० १७⊏७)
दानकथा रास		- 984
		कथा लुब्धदत्त साहकी)
त्रानकथा रास	_	
		साह घनपाल की दान कथा है।
ग्रकलक यनि रास	वा जयकीति	हिन्दी
		(र०काल सं०१६६७)
कोटानगर में रचना की गई।	ft ı	
नामावलि छद	व • कामराज	हिन्दी
नूर की शकुनावली	नूर	
•		म्रोल फडकने संबन्धी विचार
बारह ⊈न गीत	ब्र॰ जिनदास	हिन्दी पत्रसं•३५३
ग्यान्हप्रतिमा रास		
मिथ्या दुक्ड जयमाल		
जीवडा गीत	***	
दर्णन बीनती		
भारथी राम जिस्तुंद गीत		

🗙 । पूर्यो । वेष्टन सं०३७६ ।

विरह के फूटकर दोहे

मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है---

लालकवि

हिन्दी

कायां जीव सुवाद गीत ब्रह्मदेव श्री मूल संघे गछपति रामकीर्ति भवतार। तस पट कमल दिवसपति पधनंदि गुराधीर । तेहरणा चरण कमल नमी गगदास बहा पसाये। काया जीव सुवादडो देवजी ब्रह्मगुरा गाय। पोषह रास ज्ञानभूपरा हम्द शान पच्चीमी बनारसीदास .. गोरखकवित्त गोरखदास जिनदत्त कथा रत्न मुचरा ,, सवत् १८२० मे उदयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी। १०२४०. गुटका सं० १२ । पत्र स० ११० । ग्रा०७ 🗙 ५ इचा। भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗙 । पूर्णा विष्टन सं० ३७८ । विशेष--मुख्यतः निम्न पाठो का संग्रह है। क्षेत्रपाल पूजा संस्कृत ऋषिमडज पूजा संस्कृत मांगीत्गीजीकीयात्रा सभयचन्दसूरि हिन्दी विशेष-इसमे ४२ पदा है। अस्तिम पक्तिया निम्न प्रकार है-भाव मे मवियस साभलोरे भर्स ग्रमयचन्द सुरी रे। जाहुने वलभद्र जुहारिजो पापु जाइ जिमि दूरि रे। योगीरासा जिनदास हिन्दी कलिकु डपार्श्वनाथ स्तुति । १०२४१. गुटका सं० १३ । पत्र स० ६० । आ० ५ र्रे × ५ रे इचा । भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले∙काल × । घपूर्णं । वेष्ट्रन सं०३७७ । विशेष - मुख्यत: निम्न पाठो का सग्रह है। कलिकुंड स्तवन, सोलहकारण पूजा दशलक्षरण पूजा, ग्रनन्तवत पूजा। धन्य पूजा पाठ संग्रह है। १०२४२. गुटका सं० १४ । पत्रसं० २०६ । ग्रा० ६×५ इवा । भया-हिन्दी । ले० काल--

```
नित्य पूजा
बुघरासा
                                           .. ले०काल सं० १७३७
         प्रारम्भ का पाठ निम्त प्रकार है-
                       प्रसामीइ देव माय, पाचाइसा कमसी।
                       समरिए देव सहाय जैन सालग सामगी।
                       प्रसमीइ गस हर गोम सामसी।
                      दरियरमासे जेने नानि सदगृष्ठ वेसिरिमरी कीजे।
        धन्त में---
        सवतु १७३७ मंगसर सुदी ११ सैंगडी किलाएगजी खीमजी पठनार्थं।
राजा ग्रशोधर चरित्र--
                          डिल्डी
काया जीव सवाद गीत
                          हिन्दी
                                                    देवा ब्रह्म
        ग्र निम भाग निम्न प्रकार है---
                   गगदास ब्रह्म पसाये राखी काय जीव सुवादडो ।
                   देवजी बहा मुख गाय राखीला।
        इति कामा जीव सवादजीव संपुर्शा ।
                गरी ग्राडकालाल जीकलास्त्रजीस्वलिखिता।
                सबन् १७१२ वर्षे द्वापाड बदी ११ गुरौ श्री उज्जेग्गी नगरे लिखता ।
                              बिनदी
                                                   वदा जिनदाम
व्रशोधरणम
श्चे शिकरास
                               ,,
                                       से • काल सं० १७१३ माघ सदी ५।
        विशेष - यहमदाबाद नगर में प्रतिलिपि हुई थी।
जिनदनगर
                                     हिस्दी पद्य।
        १०२४३. गृटका स० १५। पत्र सं० ११०। ग्रा० ८×७ इन्छ। भाषा-सस्कृत-हिन्दी।
ले ब काल मण १७३० । अपूर्ण । वेष्ट्रन संव ३७२ ।
        विशेष--मुख्यत निम्न पाठी का संग्रह है।
धनस्तवत राग
                             व० जिनदास
                                                हिन्दी
जिनसहस्रनाय स्तोत्र
                             म्राशाधर
                                               सस्कृत ले०काल सं०१७१६
                                                 त्रिन्दी
प्रदास्त प्रवध
        १०२४४, गुटका सं० १६ । पत्रस० ३१ । मा० ६×४ इच । भाषा-- संस्कृत । ले०काल
× । पूर्णा । वेष्ट्रन सं० ३७३ ।
        विशेष---नदीश्वर पूजा जयमाल स्नादि है।
```

हिन्दी

**१०२४५. गृटका सं० १७ ।** पत्र सं० घ-घ४ । ग्रा० ६×४३ इ**न्छ ।** भाषा—संस्कृत~हिन्दी । ले•काल × । धपूर्गं। वेष्टन स० ३७४ । विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है। प्रतिक्रमण् पाठ सस्कृत राजुल पच्चीसी हिन्दी सामायिक पाठ हिन्दी १०२४६. गुटका स० १८ । पत्र स० ४६ । मा० ८ ४ इन्छ । भाषा-हिन्दी । ले•काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन सं०३७५ । विशेष---मनोहरदास सोनी कृत धर्म परीक्षा है। १०२४७, गृटका सं० १६ । पत्र स० ३-५३ । आ० : ४४३ इन्छ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले • काल 🗴 । अपूर्ण । बेष्टन सं • ३७ : । विशेष-पुजा पाठ तथा विननी एव पदों का सप्रह है। १०२४८, गृटका सं० २०। पत्रसं० ७४। या० ६ १४४) इन्हा भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल 🗴 । झपूर्णं। वेष्टन स०३६ = 1 विशेष---मरूपत निम्न पाठो का सग्रह है। भक्तिपाठ वृहद् स्वयभूस्तोत्र गुर्वावलि नेमिनाथ की विनती तिनदी १०२४६. गुटका सं० २१। पत्रस० २०७। भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३६६ । विशेष--मुख्यतः निम्न पाठो का सग्रह है। हनुमतरास ब्र० जिनदास हिन्दी जम्बस्यामीरास पोषहरास ज्ञानभूषम् संबोध सनाग दहा बीरचन्द नेमकुमार वीरचन्द ले०काल स० १६३८ हिन्दी सुदर्शनरास इ० जिनदास **धर्म**परीक्षारास इव जिनदास ले•काल स० १६४४ हिन्दी भजितनाथ राम १०२५०. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २२८ । ग्रा० ६३ ×६ इन्द्र। भाषा-प्राकृत । ले•काल

१०९२०: युक्तारा १९०। ४ । ब्रापूर्ण हेक्स ने २६०। विक्रोत-चारस्य से पत्रा पाठ है। तनपश्चात अन्बद्वीप पण्णाति दी हुई है। यह तेरह उट्टेंग

१०२५१. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६४ । ग्रा॰ ५imes४ इ.च. । माबा—हिन्दी गद्य । से॰काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० ३६६ ।

विशेष -- गुरास्थान चर्चा एवं समाधि मररा का संग्रह है।

१०२५२. गुटका सं० २४ । पत्रसं० ८६ । घा० ५×४ इञ्च । माषा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰काल imes । पूर्ण । बेष्टन सं० ३६४ ।

विशेष-मस्यतः निम्न पाठों का संग्रह है-

भ्रादित्यवार कथा		भाऊ	हिन्दी
विषापहार भाषा	annote.	ग्रचलकीति	,,
कल्यारा मदिर भाषा		बनारसीदास	,,
सर्वेजिनालय पूजा	_		संस्कृत

१०२५३. गुटका सं०२५ । पत्रस०१५ । ग्रा०६ $rac{1}{2} imes ४ ६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । ले०काल <math> imes$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं०२६५ ।

विशेष-- प्राचार शास्त्र सबधी ११८ गाथाए है।

**१०२५४. गुटका सं० २६।** पत्र स०२⊏-१२३। झा०७×६ इचा। भाषा-हिन्दी। ले∘काल ×।पूर्या। केण्टन स०२ ८४।

विशेष--मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

ग्रादित्यवार कथा	 भाऊ कवि	हिन्दी
श्रीपाल स्तुति	 महाराम	ले∙काल सं०१⊏१०
भक्तामर भाषा	 हेमराज	हिन्दी
विनती	 कनककीति	, लेश्काल सं० १८०

१०२५ थ्र. गुटका सं० २७ । पत्रस० १० से १८०। घा०११ हैimes७ ह्या । भाषा- हिन्दी। ले०काल imes1 पूर्ण। बेष्टन सं० २८४ ।

**१०२५६, गुटका सं० २८ ।** पत्र सं० १४८ । घा०१० $\frac{3}{4}$  × १ इ.च. । भाषा — सस्कृत । ले० काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन स० २८६ ।

विशेष--- निम्न पाठो का संग्रह है---

सामायिक पाठ सटीक ..... हिन्दी गद्य । से •कास स० १८२३ कर्म विपाक माया विचार --- हूं डारी पद्य । पद्य सं० २४०५ हैं।

सम्यक्त कीमुदी-जीवराज गोदीका । हिन्दी गद्य । ले०काल सं० १=३२

महाराजा हमीरसिंह के शासन काल में उदयपुर में प्रतिलिपि हुई।

१०२४. गुटकासं०२ थै। पत्र सं०२६६ । मा० ७२,४४ इ.चाः माचा–हिन्दी। ले०काल सं०१ ८२३ मपूर्ण। वेष्टन सं०२ ६७ विशेष -- निम्न पाठो का सग्रह है---

नाटक समयसार --- बनारसीदास र०काल स० १६६३। हिन पचास्तिकाय भाषा --- हीरानन्द

भक्तामर भाषा — हेमराज

१०२४८. गुटका ३० । पत्रस० १७६ । ग्रा०१२×६ इचा । ले०काल × । ग्रपूर्ण। वेष्टनसं०२८८ ।

रत्नत्रय पूजा --- सस्कृत

विशेष—नरेन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

म्रादित्यवार कथा प्रर्जुन

कल्यागम्नोत्र वृत्ति विनयत्र इ. संस्कृत

१०२४६. गुटका स० ३१।पत्र स० ७०। ग्रा० १०×६ $\frac{1}{7}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत। ने॰काल imes । अपूर्ण । बेष्टनस० २८६।

प्राकृत

१०२६०. गुटका सॉ० ३२ । पत्र सं∘ म्६ । ब्रा०१२ ४ म्इंच । माषा-हिल्दी –संस्कृत । ले०काल म०१७६० । पूर्ण। बेप्टन स०२६० ।

विशेष---निम्न पाठो का सम्रह है---

सरस्वती स्तवन एवं पूत्रा—ज्ञानभूषणः संस्कृत मृनीश्वर जयमाल पाण्डे जिनदास हिन्दी सम्यक्त्यकौमदी जोधराजगोदिका ,

१०२६१. गुटकासं० ३३ । पत्र स० ४०। आ०६×५ इचा। भाषा–हिन्दी। के∙काल ×। श्रपूर्णावेष्ठन स०२६३ ।

१०२६२. गुटकासं० ३४ । पत्र स०१०० । ग्रा०६×५∛ इल्ब । भाषा≔−हिन्दी । ले० काल ग्रपुर्गावेष्टनस०२६४ ।

विशेष---निम्न मुख्य पाठो का सम्रह है---

पार्श्वनाथ जी की विनती मूनि जिनहर्ण हिन्दी

क्षेमचन्द्र ,, ते० काल स०१६२४

भारमपटल — " जिनसहस्रनाम जिनसेनाचार्य सस्कृत

परमात्माप्रकाश योगीन्द्र देव अपभ्रंश

१०२६३, गुटकासं० ३४,।पत्रसं० ६३। घा० ⊏×७६२४ । भाषा–हिन्दी। ले∘काल सं० १६=६। पूर्णावेष्टनसं० २८६।

विशेष--- रूजा पाठ संप्रह है।

योगसार

१०२६४. गुटकासं० ३६ । पत्रस० ४३ ।मा० ६×४३, इ.चा। माषा-हिन्दी-संस्कृत । ले•काल × ।पूर्णावेष्टनसं० २६७ । विशेष-- पूजा पाठ एवं सामायिक पाठ स्नादि का संग्रह है।

१०२६**५. गुटका सं**ठ ३७ । पत्रसं• १०४ । झा० ४३ ×६३ इ.च.। भाषा-हिन्दी-सम्ब्रुत । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० २६० ।

विशेष--पूजा पाठ सबह है।

**१०२६६. गुटका सं० ३६** । प्रतसः १६ । धा॰ ५imes४६ च । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । के०काल imes । पूर्णः । वेष्ट्रसः २६६ ।

**विशेष ---पू**जा पाठ संग्रह है ।

**१०२६७. गुटका सं० ३६ ।** पथस० ३ २३० । ब्रा०४३<sup>3</sup> × ४ इखा **भाषा**-हिन्दी गद्याः से**०काल** × । बपुर्णः । बेष्टनसं० २०० ।

विशेष---वनारसीदासकृत नाटक समयगार है।

**१०२६ स. गुटका स**ंठ ४०। पत्रम० २००। प्रा० ५ $rac{1}{2}$ ४७ ६ खाः भाषा—सम्फ्रल-हिन्दी। ले**०काल म० १६६६ बे**शाल बुदी १४। बेष्टन सं० २२१।

**विशेष---मु**क्य पाठ निम्न प्रकार है----

परमात्म प्रकास, द्रव्य सबह, योगसार, समयसार भाषा (राजमन्त—प्रमारा मं स० १६८६ म प्रतिलिपि हुई थी ) एव गुगास्थान चर्चा प्रादि है।

१०२६६. गुटका सं० ४१।

विशेष ---

समयसार वृत्ति है। श्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० ३३२ ।

**१०२७०. गुटकास० ४२ ।** पत्रस० १४० । स्रा० ४५ × ६ इ॰ख । भाषा-हिन्दी । ले०कान × । स्रपूर्ण । वेष्टनस० २२२ ।

विशेष---ग्रक्षर घसीट हैं।

**१०२७१. गुटका सं०४३**। पत्रस० २४ । स्रा० ६×६ इथा**ः भाषा**—हिन्दी सस्∄ा से•कास×। पूर्णः वेष्टन स०३३४।

विशेष--पूजा पाठ सम्रह है।

**१०२७२. सृटकासं० ४४ ।** पत्रस•२२६ । घ्रा∘द×६ इश्वा । भाषा—हिन्दी। ले∘कान सं<sup>8</sup>ददशापूर्णावेदनस• २३४ ।

विशेष--- निम्न रचनाओं का सम्रह है--

समयनार नाटक-वनारमीदास हिन्दी

पोपहरास ज्ञानभयमा ,,

१०२७३. गुटका सं⊃ ४५ । नत्रस० १२० । ग्रा० ५×५ इञ्च । भावा-हिन्दी । ले०कान × । पूर्णे । वेष्टनसं० ३३६ ।

विशेष-- बारहमाड़ी स्नादि पाठों का सम्रह है।

जिनसहस्रनाम

```
१०२७४. गुटका सं० ४६। पत्र स० ४१। ग्रा० ६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×।
भवर्गं। वेष्टन सं० ३३७ ।
        विशेष--पद एव स्तोत्रो का सप्रह है।
        १०२७५. गृटका स ० ४७ । पत्र स० १४४ । ब्रा० ५३×३ इ॰ । भाषा-हिन्दी । लेकाल
🗙 । पूर्णं। बेष्टनस० ३३८ ।
        विशेष---निम्न पाठा का सग्रह है।
मध्विद् चौपई
                                     मगवतीदास
                                                                           हिन्दी (पद्य)
                                                    (र०काल स० १७४०)
मिद्ध चतुर्दशी
मम्यक्त्व पच्चीमी
                                                    (ले०काल स०१⊏२५)
ब्रह्मविलास के धस्य पाठ
        १०२७६. गुटका सं०४८ । पत्रस० ३४४ । ब्रा॰ ६×४ इवा भाषा-प्राकृत-संस्कृत ।
ले॰काल स॰ १८१२ वैशाय सुदी १०। पूर्म । वेष्टनसं० ३३६।
        विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है।
        गुरास्थान एवं लोक चर्चा, पचस्तिकाय टब्बा टीका ।
        तत्वज्ञान तरर्गागा—ज्ञानभूषगाकी भी दी हई है।
        उदयपुर नगरं राजाधिराज महाराजा श्रीराजिमहजी विजयते सवत् १८१२ का बैशाख
सदी १०।
        १०२७७. गुटका सं० ४६ । पत्र स०६० । ग्रा० ६×४ इश्वा । भाषा-संस्कृत-हिन्दी ।
ले०काल 🗙 । पुर्गा । बंधन स० ३४० ।
        १०२∪ म्टका सं० ५०। पत्र स० ६३। ग्रा० १०४७ इवा। भाषा-सस्कृत हिन्दी।
ले॰काल 🗙 । पूर्ण । येष्ट्रन स०३४१।
        विशेष--पूजा, स्तीत्र एव सामायिक ग्रादि पाठी का सग्रह है।
        १०२७६. गृहका सं० ५१।
        विशेष- निम्न पाठों का सग्रह है।
कक्का बत्तीमी
                                                       हिन्दी
बगाजारी रासी
                               नागराज
                                                                         ७ पद्य है
पंचमगति बेलि
                               हर्षकीति
पंचेन्द्रिय बेलि
                               घेल्द्र
        इनके श्रुतिरिक्त पद विनती एवं छोटे मोटे पदों का संग्रह है-
        १०२८०. गुटका सं० ५२ । पत्रस० १३४ । घा० १०×७ इश्वा भाषा-सस्कृत-हिस्दी।
ले • काल 🗶 । पूर्ण । बेष्टन सं • ३४३ ।
        विशेष---निम्न पाठी का संग्रह है।
                             जिनसेनाचार्य
```

संस्कृत

दशस्थाए पूजा		संस्कृत
क्षमावली पूजा	नरेन्द्रसेन	
पूजा पाठ सम्रह		
बृहद चतुर्विशति-		
तीर्थंकर पूजा	_	सस्कृत
चौरासीज्ञाति जयमाल	<b>क</b> ० जिनदास	हिन्दी
शील बलीसी	श्रक्मल	हिन्दी
चितामिंग पाश्वनाय	विद्यासागर	,,
वृहद् पूजा		****
स्फुट पद	भानुकीर्ति एव	,,
	महेन्द्रकी ति	

**१०२८१. गुटकासं० ५३ ।** पत्रस•१५१ । ग्रा० ११×४ हेदा । **भाषा**≕संस्कृत । ले०कान × । प्रर्णं। बेष्टनसं•३४४ ।

विशेष -- विभिन्त ग्रन्थों के पाठी का सग्रह है।

**१०२८२. गुटका सं० ५४ ।** पत्र स० ८० । बा॰ ६imes४ $^{3}_{7}$  इन्छ । भाषा-संस्कृत । ने० काल imes । पूर्ण । बेष्टनसं० ३४५ ।

विशेष---पूजा पाठ संग्रह है।

# प्राप्ति म्थान-दि० जैन मन्दिर कोटडियों का हु गरपुर

**१०२ ⊏३. गुटकासं० १ ।** पत्रसं० १०० । घा०१०×६ इन्ता । भाषा-हिस्टी-मस्क्रन । ले∘काल × । पूर्णा विष्टन स०५४३ ।

१०२८४. गुटका सं०२ । पत्रस० 🗴 । वेष्टनसं० ५४२ ।

विशेष -- निम्न पाठो का सग्रह है---

- १. नेमि विवाहलो— × । हिन्दी। पद्यार०काल स०१६६१।
- २. चौबीस स्तवन-- x । " ।
- ३. त्रेपनिकया विनती—वहागुलाल । हिन्दी पद्य ।
- ४. महापुरासा की चौपाई--गगदास । हिन्दी पद्य ।
- ४. विन्तामिंग जयमाल-- x । हिन्दी पद्य ।

१०२ म्. सुटका सं०३ । पत्र स०६२ । स्रा० ५ $\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$  इश्वर । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल  $\times$  । प्रपूर्ण । केटन म० ५५१ ।

विशेष—कल्याग्मन्दिर स्तोत्र, अक्तामर स्तोत्र आदि स्तोत्र, मैनागुर्दरी सण्झाय एव पद सप्रह है।

१०२६ ६. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ६० । प्रा॰ ४imes४ ६ ख । भाषा—हिन्दी । से॰काल imes । पूर्णै । बेपुन सं॰ ४६६ ।

विशेष-- प्रायुर्वेद के नुस्क्षों का सग्रह है।

१०२८७. गुटका सं० ४ । पत्रस० १४ । बेष्टनसं० १८ ।

विशेष---निम्न पाठ हैं---

- १. प्रतिक्रमण मूत्र—× । भाषा —प्राकृत ।
- २. स्तुति सग्रह × । माषा हिन्दी ।
- ३ स्त्रीसञ्काय—× । **भाषा—**हिन्दी।

**१०२८ स**्**टकासं०६। पत्रसं०६३। धा०८\frac{3}{4}\times६ इ.ख.। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। त्रे०काल \times। पूर्णं। वेष्टनसर० ४८४।** 

विशेष -- निम्न पाठ है---

- १. बारहखडी---× । हिन्दी । पत्र १---७
- २. बारहमासा--- × । हिन्दी ।
- ३. ग्रनित्य पंचाशिका —त्रिभुवनचन्द । हिन्दी ।
- ¥ जैनणतक---× । भवरदास । हिन्दी ।
- ४. शनिश्चरदेव कथा—× । "।

**१०२८६. गुटकास० ७** । पत्र स० ४४ । घा० द<sup>3</sup> ४६ इञ्च । माषा—सस्कृत । ते**०काल** ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ६८४ ।

विशेष---निम्न स्तोत्रों का सग्रह है---

- १. शिवकवच---× । संस्कृत ।
- २. शिवछन्य----× । " ।
- ३. वसूधारा स्तोत्र---× । संस्कृत ।
- ४. नवग्रह स्तोत्र-× । । "
- ५. सूर्यं सहस्रनाम--- × । ,,
- ६. सूर्यं कवच-- imes।

१०२६०. गुटका सं०६ । पत्रसं०१ । भाषा-हिन्दी । से॰काल स० 🗴 । पूर्ण । वेष्टन स०४८० ।

विशेष--नेमिनाथ के नव मंगल हैं।

**१०२९१. गुटका सं**० १ । पत्रसं० १६ । छा० ५ $\frac{1}{2}$   $\times$ ४ इखा । माषा सस्कृत । ले० काल  $\times$  । पूर्यों । बेष्टन सं०४७६ ।

विशेष---सध्या पाठ भ्रादि है ।

१०२६२, सृटकास० १०। पत्रसं∘१६०। भा∘ ६४४ इ.च.। साथा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल ४.। पूर्णाबेष्टन सं∘४७⊏।

किशोध---नित्य पूजा पाठ, स्तवनं, विन्तामिण स्तोत्र, कर्म प्रकृति, जीव समास घादि का वर्णन है।

श्री सेनसचे

श्री सिंहसंघे

३. सामायिक पाठ

६. भक्तामर स्तोत्र

**१. मंबोध पंचा**सिका

```
स्तेह परिकाम--नरपति । हिन्दी ।
        बिशेष → नारी से मोहन करने का उपदेश दिया है।
        तेमीश्वर गीत--- × ।
         १०२६३. गुटका सं० ११ । पत्रस० २०० । ग्रा० ६× ४ इवा । माषा-मंस्कृत-प्राकत ।
ले ब्हाल 🗴 । पूर्ण। बेष्टन सब् ४७७ ।
        विशेष-- मृत्य पाठ निम्न प्रकार है--
१. कजिकावतोद्यापन---लनितकीर्ति । सस्कत ।
२. सप्त भक्ति— 🗙 । प्राकृत । मालपुरा नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।
३. स्वयम स्तोत्र--- × ।
                                      संस्कृत ।
४ तत्वार्थं मुत्र-उमास्वामि ।
५. लघ्सहस्रनाम — 🗙 ।
६. इट्टोपदेश--पूज्यपाद ।
        १०२६४. गुटका सं० १२ । पत्रस०४० । घा० ५ x ४ इचा । भाषा - सस्कृत । से •काल म०
१७८१ । पूर्णं । बेब्रुन सं० ४७६ ।
        विशेष--- मत्र शास्त्र, विचापहार स्तीत्र (संस्कृत) तथा यत्र आदि हैं।
        १०२६५. गृटका सं० १३ । पत्र स० १८० । धा० ७४५ इन्द्र । भाषा-हिन्दी-सम्कृत ।
ले • काल 🗶 । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ४७५ ।
       विशेष--- निम्न पाठी का सप्रह है।
        १ · भद्रबाहुगुरुकी नामावली — 🗙 ।
        विशेष--सवत् १५६७ से १६०७ पौष सुदी १५ तक । गोपाचल में प्रतिलिपि हुई थी।
        भट्टारक पद्मनदि तक पट्टावली दी है।
        २. गच्छभेड
                                  मलसधे
                                                                         १६ भेद नामानि
                                                 सघ ४
                                                               स चहुड
                                  नदि १
           नटि सधे
                                                चन्द्र २
                                                               कीर्ति
                                                                        ३ भूषरा
           टेवस घे
                                  देव १
                                              दले २
                                                              नाग
                                                                       ३त्म
           सेनघ सधे
                                  सिंह १
                                                कभर
                                                              धासव
                                                                       ३ सागर
           श्चेमी सचे
                                  सेन १
                                                              वीर
                                               ਸਟ
                                                                       ३ राज
           श्रीनदिसधे
                                  सरस्वतीगच्छे
                                                              बलात्कारगरो
           श्री देवसमे
                                 पुस्तकगच्छे
                                                             देसीगगे
```

ले•काल सं०१५६७

**मुरस्थग**खे

कानुरगरो

५ तत्वार्यसूत्र

घपशं श

वदेशान की जयमाल।

पुष्करगच्छे

चन्द्रकपाटगच्छे

४ भक्तिपाठ

७ स्तोत्रसग्रह

रइघ

प्रशस्ति—सन्त ११६७ वर्षे कार्तिकमासे कृष्णवक्षे मगल त्रयोदस्या सुसनेर नगरे श्री पद्म प्रम चैत्याचये श्री मूलस्ये सरस्तीमच्द्रे बलात्कारमणे श्री कृष्कृ दाचार्यास्ये भट्टारक श्री प्रमादे देवास्तराष्ट्रे मृद्दारक श्री सकनकीतिये वास्तराष्ट्रे मृद्दारक त्रुवनकीतिदेवातराष्ट्रे मृद्दारक श्री ज्ञातभूषण्ये स्वत्य हुन् हर् गुरुभातृश्री रन्तनीतिस्वित्यावार्यदेशात्वाक्षित्याचार्य श्री देवकीतिदेशा तृत्रीच्याच्यार्य श्री ज्ञीलसूष्यण्य किम्बयार्य परायकारायसावन्य पडाव्यक्षय स स्वहस्तेनातिक साचार्य श्री मृत्यच्ये । गुभ भवतृ ब० क्षेत्रचन्द्र राष्ट्रव सावार्यो कृष्णवस्य की राधी श्री थी । क्रवाणामस्त

सवत् १६६१ वर्षे शाके सागवाडः नगरे ग्रादिनाथ चैत्यालयं मङलाचार्यश्री सकलचन्द्रे ए इद पुस्सक पण्डित वीरदासेमा गृहीतः ।।

१०. जिन सहस्रनाम	×	सस्कृत
११. पद सग्रह	×	हिन्दी
१२ पच परमेष्टी गीत	यश.कीर्ति	हिन्दी
१३ नेमिजिन जयमाल	विद्यानन्दि	,,
१४. मिथ्या दुक्कड	<b>ब</b> ० जिनदाम	.,
१५. विनती	×	

१०२८६. गुटकासं० १४ । पत्रस० १०१ । झा० ४.८३ इ.च । माया-संस्कृत । लेक्काल × । पूर्णावेष्टनस०४७४ ।

विशेष--नीति के श्लोक है।

**१०२६७. गुटका सं० १५:। पत्र** स० २६ । आर० ४×४<sup>3</sup>, दश्व । सापा—हिन्दी । ले०काल × । पुर्णा वेष्टन स०४७३ ×।

विशेष-विननी एव पद ग्रादि है।

१०२९ ⊏ **गुटका सं० १६** । पत्र स**० १०२ । धा० ५** × ४ <sub>२</sub> इ**च ।** भाषा−हिन्दी । ले० काल × । धपूर्गा । बेष्टन स० ४७२ ।

विशेष--मुख्य पाठ निम्न प्रकार है---

१. नवमगल लालविनोदी

२. लेक्यावली हर्षकीर्ति र०कालास०१६८३

३. पद सग्रह बखतराम, भूषण ग्रादि के है।

१०२६६. गुटका सं०१७ । पत्र स०५२ । झा०६२ॄै×६२ृइश्वा । भाषा-हिन्दी-सम्कृत । ले०काल × । पूर्णा विष्टन सं०४७१ ।

विशेष-पट्टी पहाडे तथा स्तोत्र एवा मत्र झादि है।

१०३००. गुटकासं० १६ । पत्रसं० २३३ । घा० ४ × ४ इ.च.। माषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णे। बेष्टनसं० ४७०।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार ह

१. क्षेत्रपालाष्ट्रक

विद्यासागर

२. गुरु जयमाल जिनदास

३. पट्टावसी X **से॰काल सं० १७**५७

विशेष-- ब्रह्म रूपसागर ने बारडोली में प्रतिलिपि की थी।

**१०३०१. गुटका सं०१६ ।** पत्रसं० २४०। स्ना०५×४२ॄँ इश्वराभाषा-सस्कृत-प्राकृत । ले०काल ×। पूर्णा वेष्टनसं०४६६ ।

विशेष---नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है। प्रति प्राचीन है।

**१०३०२. गुटकासं० २० ।** पत्रस० २२४ । द्या० ७imes४ है इ.स. । माषा-हिन्दं। । ले० काल imes । पूर्ता। बेटन स० ४६= ।

विशेष — बायुर्वेद के नुसलों का सग्रह है।

**१०३० २. गुटकासं० २१** । पत्रस**० ७७** । आर्थ ६ $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इश्वा । भाषा-सस्कृत-हिन्दी **।** से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसर० ४६७ ।

विशेष---मुख्य निम्न पाठ हैं----

१. गौतमस्वामी रास

विनयप्रभ

चारित्रसिंह

प्रभ हिन्दी

२. चौबीस दण्डक गजसागर

ग ले०काल स० १७६६

र०काल स० १४१२

३. मुनिमालिका

ले∙काल स०१६३२

ग्रन्तिम--

सबत् सोल बनीस ए श्री विमलनाय मुए साल । दीक्षा कत्याराक दिने गूर्यो श्री भुनिमाल ।।३२॥ श्री रिलापुरे रिलाम मणो श्री कोतल किराणस्य । मूर विजय रार्ज तदा सब प्रायिक मालद ।।३३॥ श्री मित्रश्रम मुपुर तार्णं मु पसावे मुलकार। मन्हर श्री मुनिमालिका गण गण परिपल पूर ।।३४॥ महामुनीसर गांवता सुर तक सफल विहाल । श्रष्ट महानिधि पर फले सदा सदा कल्याए।।

इति श्री मुनिमालिका सपूर्णं।

पद सम्रह विमलगिरि, दुर्गीदास भ्रादि के

१०२०४. गुटका सं० २२ । पत्रस० १३१ । प्रा० ४२ ४ ६ इन्छ । माया-हिन्दी । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनसं० स० ४६६ ।

विशेष--- निम्न पाठों का संग्रह है।

ग्रारनी संग्रह, विजया सेठनी बीननी, मुभदा बीनती, रन्नगुरु बीनती, निर्वाण काण्ड भाषा, बन्द्र-गृप्त के मोलह स्वप्न, चौबीस तीर्थंकर बीनती, गर्भवेनि-देवमुरार

न ∝रेमास गरभ मे रह्यो

ते दिन प्राणी विसरि गयो। देवमुरार जी वीनती कही

ग्रापेन पाई प्रभुग्नाये लहि ।।७।।

बलभद्र वीनती, जिनराज बीनती, विनती सग्रह श्रादि हैं।

१०३० ५. गुटकासं०२३ । पत्रस० ११२ । ग्रा॰ 🔀 । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले॰काल 🔀 । पूर्णा । वेष्टनसं०४६४ ।

विशेष---निम्न लिखित पाठ है---

१. पच कल्यासाक रुपचन्द हिन्
 २. छ।दित्याबार कथा मानुकोनि ,
 ३ धनस्यतराम व॰ जिनदास ,

मत्र तथायत्र भी दिये है।

१०३०६ गुरकासं० २४ । पत्र स॰ २१ । ग्रा॰ ६×६ इ.चा। माषा-सस्कृत । ले०काल 🗴 । पूर्वा। वेटटन सं॰ ४६४ ।

**विशेष**——केवल पूजाए है।

**१०३०७. गुटकास० २५** । पत्रस० ⊏० । ग्रा० ६×५३ दश्व । भाषा–हिन्दी । ले०काल सं० १⊂१३ । पूर्ण । बेष्टन स० ४६३ ।

विशेष -- निम्न पाठ हैं---

१. भडलीविचार × हिन्दी ज्योतिष

विशेष-पाचोता में लिखा गया था।

२. सम्मेद विकास देवकरण हिन्दी

ग्रन्तिम--

लोहाचार्य मुनिद सुषमं विनीत है। तित कृत गावा वध सुष्यं पुतीत है।। साह तते श्रंजुषार मन्मेव विलास जु। देवकरण विनवे प्रभु कौ दासजु। श्री जिनवर कूं सीस नमार्वे सीय। धर्म बुद्धि तहां सचरे सिद्ध पदारय मोय।

३ जीवदया छद भूभर हिन्दी ४. म्रांतरीक्ष पात्रवेनाय छद माव विजय ॥ ४. रेज्यता मोडका

६. फूलना		हिन्दी
७- छंदमार	नारायगादास	")
<. छद	केणबदास	हिन्दी
६- राग रत्नाकर	राधाकुष्ण	हिन्दी
१० ज्ञानारम्ब	शुभवन्द	संस्कृत

१०३०८. गुटका सं० २६ । पत्रस० ८४ । भाषा हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४६२ ।

विशेष -- मृन्य पाठ निम्न प्रकार है---

वृषभनाथ लावग्री

मयाराम

विशेष-इसमे छ्लेव नगर के बृषभनाथ (रिखनदेव) का वर्गन है। छूलेव पर चढाई ग्रादि का वर्णन है।

१०३०**६. गुटका स**०२७ । पत्र स० ५० । ग्रा० ५३ 🗙 ६ इश्वर । भाषा-सस्तृत हिन्दी । ले •काल 🗴 । पूर्णं। बेष्टन स०४६१।

विशेष -- मुख्यतः निम्न पाठ है---

१. वृषभदेवनी छद हिन्दी Х २. सुभाषित सग्रह × सम्बन्ध ३. णान्तिनाथ की लावगी × हिन्दी १०३१०. गुटका सं० २८।। भाषा-हिन्दी। लेश्काल 🗴 । पूर्णं। वेष्टन सं० ४५६।

विशेष--- पद पूजा पाठ ग्रादि है।

१०३११. गृटका सं० २६ । पत्रस० ६४ । घा० ६५ ×४३ इटच । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले ० काल 🔀 । पूर्गावेष्ट्रन स०४५७ ।

विशेष - पद स्नुनियों का सम्रह है।

१०३१२. गुटका सं० ३०। भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले० काल 🔀 । पूर्ग । वेष्ट्रन स० ४५६ ।

विशेष - अभिवेक स्तपन पूजा पाठ एवं मत्र विधि आदि है।

१०३१३. गृटका सं० ३१ । पत्र स० ४४ । भाषा-हिन्दी । लेक्काल 🗴 । पूर्ण । बेप्टन स० 8881

विशेष - विभिन्न कवियों के पद, स्तृति गिरघर की कुडलिया, पिंगल विचार तथा स्तृतिया हैं।

१०३१४. गुटकासं० ३२ । पत्रसं० ८० । धा० ७ 🗴 ६ 📲 । साथा-संस्कृत-हिन्दी । ले •काल 🗴 । पूर्ण । बेष्ट्रन सं • ४५४ ।

विशेष-- भ्रायुर्वेद एवं ज्योतिष सम्बन्धी विवरण है।

१. मेघमाला

```
१०३१५. गुटका सं० ३३ । पत्र स० ६६ । मा० 🗶 । भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗴 ।
पूर्ण । बेष्टन स० ४५३ ।
        विशेष -- निम्न पाठ है---
        १. त्रिलोकसार चौपई
                                       मुमतिसागर
                                                                        हिन्दी
        २. गीत सलना
                                       कमटचन्द
        १०३१६. गुटका स० ३४ । पत्र सं॰ १०० । भाषा-हिन्दी । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन
सं० २४२।
        १. पद सग्रह---
        २. विनती रिखवदेव जी घलेव
                                                            य० देवचन्द
        विशेष-ागड देश में घलेव के वृषभदेव (केशरिया जी) की दिगम्बर विनती है। मदिर ४२
शिखर होने का जिबरमा है। कुल २६ पद्य है।
                        ब ॰ रामपाल ने प्रतिलिपि की थी।
        ३ यच परमेष्ट्री स्तृति
                                      ब ० चन्द्रमागर
        ग्रहितम---
                        दिगम्बरी गछ महा सिरागार।
                                        सकलकोर्नि गछपति गुराधार
                        तास शिष्य कहे मधरी वारिए।
                                         ब्रह्म चन्द्र सागर बखारा ।।३२।।
                        नयर सज्यंत्रा परसिद्ध जारा ।
                                        सासन देवी देवल मनुहार।।
                        भरो गुरो तिहुकाल उदार ।
                                   तह घर होसे जय-जयकार ॥३३॥
        ४. नेमिनाथ लाबग्री
                                      रामपाल
        विशेष---रामपाल ने स्वयं ग्रपने हाथ से लिखा था।
        ४. चौबीस ठाएगाचर्चा
                                        х
                                                           हिन्दी
        ६. ग्रीषियों के नससे
                                        ×
        ७. भ्रमर सिज्भाय
                                                             ,,
        क्रिकेश-परनारी की प्रीत का वर्णन है।
        १०३१७. गुटका सं० ३५ । पत्रस० १००। माथा-सस्कृत । ले०काल सं० 🗙 । पूर्ण ।
वेष्ट्रन सं० ४५०।
        विशेष---निम्न मूख्य पाठ है---
```

संस्कृत

ले•काल सं०१७२१

ले॰काल स॰ १७२२ माघ सुदी १५

प्रशस्ति---सबत् १७२१ वर्षे धासोज सुदी १० सोमे बागीदोरा (बासवाडा जिला) स्थाने श्री गांति-नाथ चैत्यालये ब्र० श्री गरादास तत् शिष्य ब्र० श्री घास्थेन स्वहस्तेन लिखितेय मेघमाला सपूर्णे ।।

सवत् १११५ से ११६२ तक के फल दिये हैं।

२. प्रेह नक्षत्र विचार, ताजिक शास्त्र एवं वर्षफल (सरस्वती महादेवी वाक्य)।

ज्योतिष सबघी गुटका है।

**१०३१ स. गुटका सं० ३६** । पत्र स०१४० । घा० ४ × ४ इ**न्छ । भाषा**—सरकृत । ले० काल स०१७१४ व १७२२ । पूर्ण । वेस्टन स०४४६ ।

निम्न उल्लेखनीय पाठ है---

१. पूजा स्रमिषेक पाठ × सस्कृत

२. ऋषिमडल जाप्य विधि 🗴 सस्कृत

प्रशस्ति—१७२२ वर्षे माघ मुदी १५ शुक्के श्री मूलसंबे द्वावार्य श्री कल्यासकीर्ति शिष्य इ०वार्र संघ जिल्लाना लिखन पहिन इंटिंगस पठनार्थ ।

३. नरेन्द्रकीति गुरु ब्रष्टक 🗴 सस्कृत

५ गगावर वलय भ०मकलकीर्ति सम्कृत

लेकाल स० १७३४

प्रमन्ति—स० १७१४ वर्षे माथ बुदी २ भीमे श्री मूलसबे गरस्वतीगच्छे बलात्वारगणे कुरस्कृत्व। चार्याबन्ये भट्टरक श्री रामकीति तत्यट्टे भ० श्री पद्मनदि तत्यट्टे भ० देवेन्द्रकीति तत् गुरु भाता मुनि श्री दव-कीति तत्र शिष्याचार्य १भी कल्याणकीति तत्र शिष्य क० चिदसीच निष्याणा निस्तित प० प्रमरसी पटनार्य।

६ चार यत्र हैं — जलमङल, ध्राग्नमंडल, नाभिमडल वायुमंडल ।

७. पटटाविल हिची भटारक पटटाविल दी हुई है।

सरस्वती स्तृति श्राशाधर सस्तृ

१०**२१६. गुटकासं० ३७ ।** पत्रस० ५४ । ग्रा० ७ × ७ इ**चा । आचा**-हिन्दी-संस्कृत । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ४४६ ।

विशेष---ग्रीपियो के नुमले, यत्र मत्र तत्र ग्रादि, सूर्य पताका यत्र, चौसठ योगिनी यत्र लावणी-जसकर्ति ।

स्नन्तिम— कोट प्रगराभ में कीना तारा क्षमा करो जिनवर स्वामी। तीन लोक नादक साहित सर्व जीव मन्तर जासी।। जयकीर्ति की प्रश्त मुनीन राखो सेवक तुम पाइ। दीनदयाल कुणा निर्ध सागर प्रादिनाथ प्रमु सखदायी।। **१०३२०. गुटका स० ३८** । पत्रसं० ३२२ । घा० ६×४३ इन्त्र । माथा—संस्कृत । ले०काल ×। पूर्णे । बेष्टनसं० ४४७ ।

बिशेष---निम्न पाठो का सप्रह है।

सोनप्रभाचार्यं	सुभाषित
×	- "
_	,,
<b>मतृ</b> ंहरि	12
×	,,
×	
×	11
×	,,
	सोनप्रशाचार्य

१०३२१. गुटकासं० ३६ । पत्रस० १८१ । झा॰ ६४६ इचा । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । ले∙काल ४ । पूर्णावेष्टन स० ४४६ ।

विशेष—मुटका महत्वपूर्ण है । वाजोकरण भौत्रविया, यत्र मत्र तत्र, रासायनिक विधि, श्रनेक रोगों को भौषधिया दी हुई है। प० श्यामलाल को पुस्तक है।

**१०३२२. गुटका सं०४०।** पत्र स०१४८ । ग्रा०६ $\times$ ७ इ.च.। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। ले० काल  $\times$ । पूर्ण। बेष्टन स०४४१।

विशेष---मुख्य पाठ निम्न हैं ---

१. महावीर वीनती — प्रभाचन्द्र । हिन्दी ।

**ग्रन्तिम--**डाकिनी साकिनि भुत बैताल

वाघ सिघते नडे विकराल

तुक्त नाम घ्याता दयाल ॥२८॥

जग मगलकारी जिनेन्द्र। प्रभावन्द्र वादिवन्द्र जोगिन्द्र।।

स्तव विक्रम देवेन्द्र ॥२१॥

- २. पारवंनाथ बीनती-वादिचन्त्र । हिन्दी । र०काल सं० १६४८ ।
- ३. सामायिक टीका---× । संस्कृत ।
- ४. लघुसामायिक --- × । सस्कृत ।
- भांतिनाथ स्तोत्र—मेरूचन्द्र । संस्कृत ।

### मन्तिम -

व्यापारे नगरे रम्ये शांतिनाथजिनालये।

रचितं मेरूबन्द्रेश पढंतु सुवियो जनाः ।।

```
६. बास्पूज्य स्तोत्र-मेरुचन्द्र । सस्कृत ।
 ७. तत्वार्थंसुत्र---उमास्वामी ।
 द. ऋषि मडल पूजा---× ।
 ६. चैत्यालय वदना---महीचन्द । हिन्दी ।
         ग्रन्तिम - मूलस<sup>के</sup> गछपति वीरचन्द्र पट्टे ज्ञानभूषण मुनींद ।
                  प्रभाचन्द्र तस पटे हसे, उदयो धन्य ते हैंबड वशे ।
         तेह पट्टे जेगो प्रकट ज करो
                             श्री वादिचन्द्र जगमोर धवतरयो।
         तेह पढ़े सुरि श्री महीचन्द्र,
                             जेह
                                    दीठे होय भानन्द।
         चैत्याला भगसि नर नार,
                             तेह घट होसि जयजयकार। सपूर्ण।
         लिखित ब्र॰ मेघमागर स॰ १७२४ ब्रासीज सुदी १।
         १०३२३. गुटका सं० ४१ । पत्र स० १६७ । ग्रा• ६ × ६ इंच भाषा -हिन्दी । ले०काल सं०
१८६३ । पर्गा । वेष्ट्रन स० ४२२ ।
        विशेष--मन्य पाठ निम्न प्रकार हैं--
१. प्रचाम्यान कथा--- × । हिन्दी ।
        विशेष-हितोपदेश की कथा है। मंद्रा ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी।
२. चदनमलयागिरि कथा--भद्रमेन । हिन्दी ।
         विशेष-मारोठ में बाचार्य सकलकीर्ति ने प्रतिलिप की थी।

 चतर मकट ग्रीर चन्द्र किन्सा की कथा— × । हिन्दी।

        विशेष-३२७ पद्य है। रचनाकार का नाम नही दिया हमा है।
         १०३२४, गटका स० ४२ । पत्र सं० २१० । भा० ६×६ इ.च । भाषा-हिन्दी । ले० काल
× । पूर्णं। बेष्टन सं० ४४३ ।
        विशेष--पूजा पाठ समह है । मुख्य पाठ निम्न हैं--
भक्तामर माषा--हेमराज ।
        छूप---
              सोरठ देश मभार गाम नंदीबर जाएगे।
              मलसघ महंत तिजग माहि बलाएगे।।
              सीत रोग सरीर तहा बाचारिय निपनो।
              लेह गया समसान काष्ट मो भलो निपनो ।।
              सवत् १ = सौ तले त्रैपन गृष्ठ वसना लोगी करि।
              सोम श्री बहा वाणी वंदे चमरी पीछी कर वरी।।
२. यशोषर चरित्र-खणालचंद।
```

१०२२ ४. गुटकासं०४३ । पत्रसं०७६ । ग्रा० प×४२ इ.च.। भाषा-संस्कृत-हिन्दी । से∙कास × । पूर्णावेष्टनसं०४४४ ।

विशेष - नित्य तथा नैमित्तिक पूजा पाठ एव स्तोत्र ग्रादि है।

१०२२६. गुटकासं०४४ । प्रतः०४४ । द्या० ४ $\frac{1}{2}$ ४६ $\frac{1}{2}$  इ.च. । भाषा $\sim$ हिन्दी $\sim$ संस्कृत । सेल्काल  $\times$  । पूर्तः। बेहनसं०४३२ -१६३ ।

विशेष--- पूजा एव अन्य पाठों का सम्रह है।

१०३२७. युटका स० ४५ । पत्र स० ६६ । भाषा-सस्क्रत । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० ४३२–१६३ ।

विशेष-निधन पाठ है -

1404 1111	, 6	
१. पद्मावती गायत्री	सस्कृत	पत्र २१
२. पद्मावती सहस्रनाम	D.	पत्र २३
३. पद्मावती कवच	"	पत्र २६
४, घण्टा कर्णामंत्र	n	पत्र ३२
४. हनुमत्त कवच	**	पत्र ३२
६. मोहनी मत्र	1,	पत्र ३ ⊏

**१०२ २ त. गुटका सं० ४६ ।** पत्र स०२२१ । झा० ५×५ है इश्वा । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ४३१-१६३ ।

विशेष---निम्न मध्य पाठ है---

१ झादित्य व्रत कथा-पाडे जिनदास ।	हिन्दी	पत्र १३७
२ " द्व∙ महतिसागर	**	पत्र १४४
३. ग्रनन्तकथा — जिनसागर ।	*)	पत्र १७५

सामायिक पाठ, भक्तामर स्तीत्र एव पूजा पाठों का सग्रह है।

**१०२२ ६. गुटका सं०४७** । पत्र स**०१७६ । आ० ७**४७ इ.च. । भाषा–संस्कृत–प्राकृत । से•काल सं०१६१ । पूर्णे । बेष्टन सं०४२६–१६२ ।

विशेष—लघु एव वृहद् प्रतिक्रमण् पाठ, काष्ठासघ पट्टावलि झादि पाठ है।

**१०३३०. गुटका सं०४८।** पत्र स०१८५ । भाषा-सस्कृत । ले० काल स०१८८२ । पूर्ण । वेध्टन स० ४२६-१६० ।

विशेष--निम्न पाठो का सग्रह है।

India House and be		
१. क्षेत्रपाल स्तोतमृति शोभाचन्द	हिन्दी	पत्र ३
२. स्नपन	11	पत्र ६
३. पूजा सग्रह् एवं जिन सहस्रनाम	संस्कृत ।	पत्र ५२
४. पुष्पांजलि व्रत कथा—व० जिनदास ।	हिन्दी	पत्र ५८
५. सोलहकारए। वृत कथा	•	पत्र ६३

६. दशलक्षरा वत कथा —		हिन्दी	पत्र ६८
७, धनन्तव्रत रास		n	দস ৬४
८. रात्रि भोजन वर्ग्गन	<b>द्र</b> ० वीर	n	पत्र ७६

विशेष-श्री मूल संघे महरगो जयो सरसीत गच्छराय।

रतनचन्द्र पाटे हवो ब्रह्मवीर जी गुरागाय ॥

बाहुबिन नो छन्द — वादीचन्द्र ।

हिन्दी ।

पत्र ८४

पत्र ८७

विशेष-तम पाय लागे प्रभासचन्द।

वारिंग बोल्ये वादिचन्द्र ।।५८॥

१०. पारमनाथ नो छन्द---×।

**११.** नेमि राजुल संवाद — कल्यागाकीति । हिन्दी पत्र १३

**१०३३१. गुटका सं० ४६**। पत्र सं० ३४। **माथा**∼हिन्दी।ले•काल ४।पूर्णं। बेष्टन सं०४२४-१६०।

हिन्दी ।

विशेष--नीन लोक एव गुगास्थान वर्णन हैं।

**१०३३२. गुटका सं४०**। पत्र स॰ १२ । भाषा-हिल्दी ।ले∘ काल ४ । पूर्णं।बेष्टन स॰४२३-१४६।

विशेष -- निम्न पाठ है ---

१. महारक परम्परा २ बधेरवाल छद

१०३३३. गुटकासं० ४.१ । पत्रसं० ४४ । भाषा-हिन्दी । ले०काल × । पूर्णा । बेहनस० ४१४−१४४ ।

विशेष -- पहिले पद संग्रह है तथा पश्चात् मट्टारक पट्टाविल है।

१०३३४. गुटका सं० ४२ । पत्र स॰ ४०३ । भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वेस्टन सं० ४०७ १४३ ।

**विशेष--**पूजा पाठ सम्रह है ।

१०३३ **४. गुटका सं० ४३ ।** पत्र सं०१८६। झा०३५ ४४ इ**व्य**ा भाषा-संस्कृत-हिन्दी। ले०काल × । पूर्यो । बेप्टन स०३६४-१४३ ।

विशेष--मुख्य पाठ निम्न प्रकार है---

१. ग्रादित्यवार कथा	वादिचन्द्र सूरिके	पत्र १४७ तक
	शिष्य महीचन्द	
२. श्राराधना प्रतिबोधनार	सकलकीति	पत्र १५ ५,
३. ग्रादित्यवारनी वेल कवा		<b>१</b> ८४ "

१११ पद्य हैं।

१०३३६. गुटका सं० ४४ । पत्र स० ४० । ग्रा० ११ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इख । भाषा-हिन्दी । से०काल $\times$ । पूर्णे । वेष्टनस० ३६७-१४०।

विशेष--गुरास्थान चर्चा, स्तीत्र एवं भाराधना प्रतिबोधसार है।

**१०३३७. गुटका सं० ५५** । पत्र स॰ ४६४ । स्रा॰ ५ $\times$ ५ इश्वर । माषा-सस्कृत-हिन्दी । ले॰कालimes । पूर्णं । बेष्टन स॰ ३५६–१३६ ।

विशेष---विभिन्न प्रकार की १०५ पूजा एव स्तोत्रों का संग्रह है। गुटके में सूची दी हुई है।

१०३३ स. गुटका स० ५६ । पत्र स० १०० । घा० १० $\times$ ५ इश्व । भाषा-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेप्रन स० ३५५-१३७ ।

मु	प्य निम्न पाठ है—				
۶	गुग्गस्थान चर्चा	×	हिन्दी	पत्र १-६६	पर
3	त्रै <i>लो</i> क्यसार	×	**	₹७-6\$	,,
Ę	मः।पुराग विननी	गगादान	,,		

१०३३६. गुटका सं० ५७ । पत्रस० ५६४ । आ० ६×७ दखा भाषा−हिन्दी−सस्कृत । ×ाने०काल ×ापूर्णावेशुन स०३५२-१३४ ।

१.भक्तिपाठ	×	प्राकृत <del>-सस्कृ</del> त
२. स्वयभू स्तोत्र	समतभद्र	**
३. भक्तामर स्तोत्र		
(समस्या पूर्ति)	भुवनकीर्ति	,, ४६ पद्य है।
४. ,, (द्वितीय स्तोत्र	) ×	**
४. पचस्तोत्र	×	"
६. महिम्न स्तोत्र	पुष्पदत	n
७. सकलीकरए। मत्र	×	*1
<ul><li>सरस्वती स्तोत्र</li></ul>	×	,, १६० पत्र पर
६. झन्तपूर्णीस्तोत्र	×	,, १६१ पत्र
१०. चक्रेश्वरी स्तोत्र	×	,, १६२ "
११. इन्द्राक्षी स्तीत्र	×	,, १६६ ,,
१२. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	,, १६८ ,,
१३. पचम्खी हनुमान कवच	×	,, १७१ ,,
१४. शनिश्चर स्तोत्र	×	सस्कृत १८७ पत्र पर
१४. पार्श्वनाथ पूजा	×	" १६२ "
१६. पद्मावती कवच एवं सह	स्रनाम X	" २१४
१७. पाववंनाय धारति	×	हिन्दी
१८. भैरव सहस्रनाम पूजा	×	संस्∌त २३३ "

११. मैरव मानभद्र पूजा । स्तोत्र	्व शान्तिदास	"	२४६ ,,
-०, नवग्रह पूजा	×	,,	२५४ ,,
२१. क्षेत्रपाल पूजा	×	सस्कृत	२६१ ,,
२२. गुरावलि	×	सम्कृत	गद्य २६७
२३. जिनामिषेक विद्यान	सुमतिसागर	,,	२७४
२४. सप्तवि पूजा	सोमदेव	सम्कृत	२८० ,,
२५. पुण्याहबाचन	×		२६२ ,,
२६. देवसिद्ध पूजा	<b>भाशाधर</b>	.,	₹₹€ "
२७. विद्यादेवताचंन	×	7/	٠, وοξ
२८. चर्नुविमति पद्मावती स्थापित पूजा		n	₹ <b>₹</b> % "
२१. जिनसहस्रनाम	जिनसेन	13	383 "
३०. विभिन्न पूजास्तोत्र	×	,,	₹७€ ,,
३१- छलय	जिनसागर	हिन्दी	३७६ ,,
३२. चौबीसी	रत्नचन्द	,	३६२ "
		र०काल स०१६७६	
३३ लवाकुज्ञषटपद	भ०महीचन्द	19	\$£% "
३४. रविवृत कथा	बहा जिनदाम	हिन्दी	880 "
३५. पश्वकल्याग्।	×	11	850
३६. धनल्न द्रत कथा	×	<b>हिन्दी</b>	४३१ पत्र पर
३७. ग्रन्तरीक्ष पाप्रवेताय स्त	विन ४	1)	8£6 "
३८. माड्या भूलना	4	,,	830
३६. कविल	मुन्दरदास	n	650
४०. भवबोध	×		
४१. भगवद्गीता	×		43x 338

१०३४०. गुटका सं० ५८ । पत्रस० ३७७ । ह्या० ४४४} इन्स । भाषा-हिन्दी-सम्यूत-प्राकृत । ले० काल 🗴 । पूर्ण । बेष्टनसं० ३५१–१३३ ।

विशेष- पूजा स्कोत पद एव अन्य पाठों का सबह है। गुटके में पूरी सूची दी हुई है।

१०३४१. मुटका सं० ५६ । वेष्ट्रन सं० ३५०-१३२ । विशेष---निम्न पाठो का सब्द है---

14414-111-1 4101 411	TINO N	
१. रत्नत्रय विधान	काष्ट्रासधी भ० नरेन्द्रसेन ।	संस्कृत ।
२. बृहद्स्नपन विधि	×	,,
३. गुरु धष्टक	थीभूषरा	**
४. कर्मदहनपूजा —	मुभवन्द	,,
५. जलवात्रा विधि	×	

६. पल्य विधान — X सस्कृत ७ जिनदत्तराम — X

णक सवत् १६२४ सर्वगति नाम सबत्सरे घ्राषाढ सुदी ८ गुरुवारे लिखित कारंजामाहिनगरे श्री पार्वनाथ चैत्यालये मट्टारक श्री छत्रमेन गुरूपरेणात् लिखिन बाथा बाइन लेहबिल ।

त्रधुस्तपन विधि — अ० ज्ञानसागर । सस्कृत ।

१०३४२. गृटका सं० ६०। पत्र म० 🗙 । वेष्टन स० ३३४-१२८ ।

विशेष--- निम्न पाठ है---

१. दानशीलतप मावना — श्री भूषरा हिन्दी पद्य ले० काल १७६५ २, श्रापाढ भूतनी चौपई — × ,, —

३. बैद्यकग्रथ — नयनसुख ,, ले०काल १=१४

प्रशस्ति—मनत् १८१४ वर्षे गाने १६७६ प्रवर्तमाने गसोत्तय माने शुभकारीमासे प्राधितमासे गुक्तपक्षे निथि ५ चट्टवारे श्रीमत् काष्टासये निस्तिरगच्छे विद्यागरों म० श्री रामसेताच्ये तसनुक्रमेसा भ० श्री मुमनिकोति जी तराटुं घा० श्री रूपमेन जी तस्तद्वे घा० विनयकीति जी तत् शिष्य श्री विजयसामर

त्रीप० केञब जीपडित नाय जीलियित । १०३४ ३. गु<mark>टका स०६१</mark> ।पत्र म०१६६ । झा०द ४६ १०४ । भाषा हिन्दी।ले० काल ⋌ । पूर्णावेष्ठन स०२६०-११४ ।

१. श्री एक चरित्र -- ह्रगा वैद र०काल स० १६६६ भादवा बदी १३

२. जसोघर चौपई — लक्ष्मीदास

३. सम्यक्त्वकौमुदी — जोधराज

४. जम्बूस्वामी चोपई -- पाढे जिनदास र०काल स० १६४२

४. प्रद्युम्न कथा — व० वेगीदास

६. नागश्री कथा --- किशनसिंह ले०काल स०१८१६

विशेष-ग्रहिपुर मे प्रतिलिपि हुई।

१०३४४. गुटकासं० ६२ । पत्रसं० ३२१ । ग्रा० ६×६२ इ.च. । भाषा–हिन्दी-संस्कृत । ले० काल—× । पूर्णा । वेष्टनस० २७६-१०६ ।

१-विनती एवं भावनाएं --- 🗙 । हिन्दी

२-पंच मगल-रूपचन्द-X । "

३-सिंदूर प्रकरण-वनारसीदास । हिन्दी

५-भक्तियोध--दासद्वैत । गुजराती

६ – लघु भ्रादित्यवार कथा — भानुकीर्ति । हिन्दी

७-ग्रादित्यवार कथा---माऊ हिन्दी।

५-जसडी--रामकृष्ण । हिन्दी ।

६-जलडी-भूषरदास । हिन्दी ।

१०-ऋषभदेवगीत--रामकृष्णः । हिन्दी ।

११-बनारसी विलास-वनारसीदास । हिन्दी ।

१३-छन्द--नारायनदास । हिन्दी ।

**१०३४ ४. गुटका सं०६३ ।** पत्र स० ३४ । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । बेष्टन सं०२७४ - १०७ ।

विशेष—देव, बिहारी, केलव भादि की रचनाम्रो कासंग्रह है। गुटका वडा है बारहमागा सन्दर किव का मी है।

**१०३४६, गुटका स० ६४ । पत्र सं**० ४६ । ग्रा० १८४६ इ.ख. । मापा-हिन्दो पद्य । ले० काल ४ । ग्रपुर्गा । वेष्टन स० २२०-=७ ।

विशेष -- निम्न पाठ है --

१-धनुरुद्ध हरण --- जयमागर।

२-श्रीपाल दर्शन -- X । ३-पद्मावनी छद -- X ।

४-सरस्वती पूजा --- × ।

**१३४७. गुटकासं०६**५. । पत्र स० फुटकर । धा०६ है ४४ दूँ इ**चा। भाषा** –हिन्दी पछ । ले० काल— × । **प**पूर्ण। बेपून म० २१३ - ⊏६ ।

विशेष -- सप्तव्यमन चौपई,ग्रादित्यवार कथा श्रादि हैं।

१०३४ द. गुटका सं०६६ । पत्रसः० ६२ । झा० ७३ ४४ इश्व । भाषा –सम्कृत-हिनी । ले० काल ४ । पूर्णा । वेटनस० १८०-७५ ।

विशेष -- लघु चाग्म्य एव आदिनाथ स्तवन और धर्मसार हिन्दी में है।

१०३४६. गुटका सं०६७ । पत्र स० १०४ । द्या० ५×४३ ६ वा । सावा–हिन्दी । । ले० काल × । पूर्ण । वेहनसं०१६६-७२ ।

विशेष - निम्न ग्रंथ हैं---

१-भाषा भूषम् -- जसवंत सिंह। २०६ पद्य हैं।

२-सुन्दर शृंगार-महाकविराज ।

३-विहारी सतमई--विहारीलाल । ले॰ काल सं॰ १८२८ ।

४-मध्मालती कथा-चतुं भूं जदास । ६७७ छन्द है।

१०३ ५०. गुटका सं० ६ म. । पत्रसं० २१४ । ग्रा० म. ४५ हे इ.च. । भाषा—संस्कृत-हिन्दी। से∙कालासं०१ म. १ म. १५ म. १५० म. १४२ – १४ ।

विशेष - इसी वेष्ट्रन स० पर एक गुटका और है।

**१०३ प्र. गुटकासं० ६६** । पत्र [सं०१४२ । घा० ६२ प्रइच्छा। भाषा-हिन्दी—संस्कृत । के•कालासं०१ व्य० । पूर्णावेष्टनसं०१४१ – ६४ ।

विशेष---निम्न संग्रह है।

१-नैमित्तिक पजाये ।

२-मानत्ंग मानवती --मोहन विजय । हिन्दी ।

३-साड समछरी--- × । स० १८०१ से १८६८ तक का वर्णन है।

४-भनत वत रास-जिनसेन।

१०३५२. गुटका सं० ७० । पत्र स॰ फुटकर पत्र । घ्रा॰ ७३ ४५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । हिन्दी । ले॰ काल imes । ब्रपूर्स । बेष्टुन सं० ११२-५४ ।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है।

**१०३५३. गुटकासं० ७१** । पत्र सं० १०० । ब्रा० ६×४ <sup>हे</sup> इल्खाभाषा-हिन्दी-संस्कृत । ले० काल × । पूर्णावेष्ठन सं० ७२−४२ ।

विशेष -- भितापाठ के स्रतिरिक्त मस्य निम्न पाठ है---

 ग्रादित्यवार कथा—महीचन्द । हिन्दी । पत्र ७८ महिमा ग्रादित्य वृत तस्मोए हवै जगत विख्यात ।

माहमा भ्रावित्य क्रतंत्रिशाएं हवं जगतावरूयाता. जेकरसीनर नारी एहते पायेम्ख भन्डारा

मूल सघ महिमा उत्तग सूरि वादी चंद्र।

गछ नायक तस पटेघर कहे श्री महीचन्द्र ।

२. महापुरागा विनती—गगदास । हिन्दी पत्र ६२।

१०३.४४. गुटका सं० ७२ । पत्रस०१६६ । घा० १४.५ ५ इ.चा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी । ले•काल 🗴 । पूर्णावेष्टन सं०६७-४१ ।

विशेष --- नित्य नैमित्तिक पूजाश्रो का सग्रह है।

**१०३५ ४. गुटका सं० ७३ ।** पत्र सं०१३ त । ग्रा०६ $\frac{1}{3}$  $\times$ ५ इन्थ । ग्राया-हिन्दी-संस्कृत । ते० काल imes । पूर्ण । येष्टनसं० प्र-६ ।

विशेष -- पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है।

## प्राप्ति स्थान-संमवनाथ दि० जैन मन्दिर उदयपुर

**१०३५६. गुटका सं० १**। पत्रखं∘ २२३। भाषा-हिन्दी (पद्य)। ले∘काल ×ः श्रपूर्णं । बेहन सं० ४⊂३।

विशेष-अश्वचिकित्सा सम्बन्धी पूर्ण विवरत्ग है।

**१०३५७. गुटका सं० २** । पत्र स० ७२ । **घा० ६** $\times$ १ इ<sup>ंच</sup> । भाषा-हिन्दी -संस्कृत । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ४४१ ।

विशेष-पूजा पाठ तथा विरुदावली है।

१०३५ म. गुटका सं० ३ । पत्रस० ६० । घा० ६ × ६ ङच । भाषा-हिन्दी—सस्कृत । ले०काल × । अपूर्ण । बेष्टनसं० ४४० ।

विशेष--- नित्य पूजा पाठ संग्रह है।

**१०३४.६. गुटका सं०४** । पत्र स०७-१२२ । ग्रा०५ ्ट्वा । गाया—हिन्दी । ले०काल ⋉। ब्रपूर्या । वेष्टन स०३७३ ।

विशेष--कबीरदास के पदो का संग्रह है।

१०३६०. गुटका सं० ४ । पत्रस० ३० । म्रा० ६४४ इ.४ । भाषा—प्राकृत-हिन्दी । ले०काल  $\times$  । म्रपूर्ण । वेष्टन स० ३२६ ।

विशेष -- मभाषित तथा गोम्मटसार चर्चा सग्रह है।

**१०३६१. गुटकासं०६। पत्रस०**२ – २३ । श्रा०६ ×४ इला। माषा – हिन्दी। ले०काल ×। श्रपूर्ण। वेहन स०२ ४१-६४०।

**विशेष**— वैद्य रसायन ग्रंथ है।

**१०३६२. गुटका सं०७ ।** पत्र म०४६ । ब्रा०५ $\times$ ४ इ.चा । प्रापा—हिन्दी । **से॰का**ल  $\times$  । ब्रदुर्गा । वेष्टन स०२३० ।

विशेष---निम्न पाठो का सग्रह है---

म्रनत पूजा द ० जानिदास हिन्दी ---श्रनतव्रतरास द ० जिरादास ,, ---प्रति प्राचीन है ।

१०३६३. गुटकासं०६। पत्रस०११३। झा०८ $rac{1}{2}$ imes५३ माषा-सस्कृतः $\left[ R^{-2} \right]$ । केलकाल $\times$ । पूर्णावेष्ठन स०२२६।

विशेष -- निम्न पाठी का संग्रह है---

चरचा बामठ बुधलाल हिन्दी स्तवन

विशेष — नोबीस तीर्थकरो के पत्रकल्याएक तिथि, महिमा बर्एान, शरीर की ऊंचाई वर्एान, शरीर का रम सथा तीर्थकरो के शामन व उपदेश निरूपण का वर्एान है।

#### व्यक्तिम भाग---

धन्त एकावण पूरव चौबह और प्रजापति पंच बलार्ग । चुनीका पंच है प्रथमानुयोग सुभ सिद्धान्त सु एकही जानी ।। प्रकार्गक चौदह कहे जगदीस सबै मिसि सुच एकावत मानो । ए जिन भाषित सुत्र प्रमाण कहे बुचलाल सदाचित मानो ॥६२॥ दोहा

देव बास्त्र गुढ नमी करी ए जिनगुरा पुण्य महान ।
मुफ बुधि मुत्रे करी माल ग्रृषि मुखदान ॥१॥
मिदितन पादे पहरच्यो एक धरूरव हार ।
यव करित गुरूनाम करि कहें लान गुणकार ॥२॥
सवद भौगति दय साल में गुढ कागुराना सुभमात ।
दश्तिनित गूरण, भया चरचा बात्तठ भात ॥३॥
समुग्ति न मुख्यी भवितन को मुख कर्ण।
लाल कहें मुभ मब भव को मुझ हो जो तुत्त चरण।।४॥

द्वात चरचा बासठि सपूर्ण ।

₹.	सार संग्रह		सस्कृत			पूर्णं
₹.	शान्तिहोम विधान		उपाच्याच व्योगरस	संस्कृत		
	ग्रन्तिम पुष्पिका	_	इति श्री उपाध्याय वोमरस	विरचिते शानि	होम	विधान
			समाप्त			
٧,	मगलाप्टक		भ ० यशःकीर्ति	सम्कृत		
٧.	वृषभदेव लावरणी		लाल	हिन्दी		
	(मट्टारक यण कीर्नि	के शिष्य लाग	न )			
गुज	रात देश मे चोरीवाड	नामक स्थान	के ग्रादिनाथ की लाव ग्री है	1		
उन	की प्रतिप्ठाकासवत्	निम्न प्रकार	₹—			
	सवत् उ	गो सा साता	वरवे वैशाल माम शुक्लपक्षे	ı		
	षण्ठदिन	सिगासरा जि	।नकी प्रतिष्ठा की घी मनहर्षे	n		

इसके अतिरिक्त नित्यनैमित्तिक पूजाओं का सम्रह है।

# चित्र व यंत्र

## यंत्र कागज व कपडे पर

१०३६४. १-हाथी के चित्र में यंत्र—

विशेष—यह चित्र कागज पर है किन्तु कपढे पर चिपका हुआ है। यह १४ वी जताब्दी की कता का छोतक है। हामी काफी वडा हैं। उस पर देव (इंड) देठा हैं। सामने बच्चे की गोद से जिसे हुए एक देवी है सभव है इन्द्राएगी हों। ऐसा लगता है कि समवान के जन्मोत्सव का हो। चित्र से लोगों की पगडियाँ उदयद्गी हैं।

१०३६५. २-पंच हनुमान बीर---

विशेष-- कपडे पर (२०×२० इंच) हाथी, घोडे तथा हनुमानजी का चित्र है।

१०३६६. ३-धृत ज्ञान यंत्र---

**विशेष**— मट्टारक हेमचन्द्र का बनाया हुन्ना यह यंत्र कपडेपर है। इसका श्राकार ३६imes४४ इ.च्य है।

१०३६७. ४-काल यंत्र—

विशेष—यह उत्सर्पिए। और धनसर्पिए। काल चकका यत्र कपडे परहै। इसका ध्राकार २२imes२ है। इस पर सं०१७४७ का निम्न लेख है—

संबत् १७४७ भादवा सुदी १५ लिखनं तेजपाल संघई द्वागरवाला गर्गगोति बार्च ज्याने म्हा को श्री जिनाय नमः।

१०३६८. ५—तीन लोक चित्र—

विशेष—यह यत्र ४० × २२ ६ व के झाकार वाले कपडे पर है। यह काफी प्राचीन प्रतीत होता है। इससे स्वर्ग, नरक तथा मध्यलोक का सचित्र वर्णन है। सभी चित्र १४ वी या १६ वीं शताब्दी के हैं।

१०३६६. ६-शांतिनाथ यंत्र--

विशेष--- १२ × १२ इ.च के बाकार वाले कपड़े पर यह यत्र है।

१०३७०. ७-घढाई द्वीप मंडल रचना--

विशेष—यह २६×२६ इंच भाकार वाले कपडे पर है। इसमें तीर्वकरों तथा देवदेवियो भादि के संकड़ों चित्र हैं। चित्र १६ वी मताब्दी की कला के खोतक हैं तथा श्वेतास्वर परंपरा के पोषक हैं।

१०३७१. ८-नेमीस्वर बारात तथा सम्मेवशिखर चित्र-

विशेष—यह ७२ × ३६ इंच के भ्राकार के कपडे पर है। इसमे गिरनार तथा सम्मेदाचल तीर्थ वहां के मदिरो तथा सात्रियों भ्रादि के चित्र हैं। चित्र-कला प्राचीन है।

प्राप्ति स्थान-(संमवनाथ मंदिर उदयपुर)

## श्रवशिष्ट रचनायें

१०३७२. म्रठारह नाता का गीत—शुमचन्द्र । पत्रस० १ । मा० ११×५ रच । प्राचा— हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० ३१८ । प्राप्ति स्थान— म्रायाल दि० जैन मन्दिर उदयुर ।

१०३७३. स्रयवंशावेद प्रकरण् $-\times$ । पत्र सं०५६। सा०१० $^2_Y \times ^2_0^2_0$  इच । भाषा— सस्कत । विषय-वैद्यिक साहित्य । र०काल $\times$ । ले०काल स०१८४४ भादवा बुदी १। पूर्ण । बेष्टुन स०१४ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टॉक ।

विशेष--ग्राचार्य विजयकीर्ति ने नःदशाम में प्रतिलिपि की थी।

१०३७४. ग्रनाश्च कर्मनुपाशन $-\times$ । पत्रसं $\sim$ २। श्रा॰ ११ $\times$ ४ इन्छ । माप-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल  $\times$ । ले॰ काल  $\times$ । पूर्णं । वेष्टुन स॰ ५७ । प्रास्ति स्थान-लडेलवाल दि॰ जैन मदिर उदयपुर ।

१०२७५. ग्रावीश्वर फाय-महारक ज्ञानमूष्या। पत्र स॰ २६। ग्रा॰ १०३ ४४६ इचा। भाषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय-फायु काव्य । र०काल ४ । ले० काल सं० १५८७ ग्रापाइ सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन स॰ १६१। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर।

विशेष-- म० शूभचन्द्र के शिष्य विद्यासागर के पठनार्थ लिला गया था।

**१०३७६. धारमावलोकन स्तोत्र—दीपचन्द**ा पत्र स० ६६। प्रा० ११ $\times$ ६ $^1_2$  इच्च । भाषा– हिन्दी पद्य । विषय-प्रध्यारम । र०काल  $\times$  । ले० काल स०१८६० । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहपूरी मन्दिर दौता ।

विशेष--इसका दूसरा नाम दर्पए। दर्शन भी दिया है। श्री हनूलाल तेरहपथी ने माघोपुर निवासी बाह्मण भोषन से प्रतिलिपि करवाकर दौसा के मन्दिर में रखी थी।

१०३७७. स्नादिनाथ देशनाद्वार $-\times$ । पत्र स० ४। मा० १० $\times$ ४ इन्छ । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १४१४ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मस्टिर प्रजमेर।

विशेष--भगवान भादिनाथ के उपदेशों का सार है।

१०३७८. इट्टोपदेश—पूज्यपाव । पत्र स० ४ । मा० १० ४४ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय प्रव्यास्म । र०काल ४ । ले०काल स० १६४७ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ७६ । मास्ति स्थान—दि० जन मस्टिर प्रियनस्न स्वामी, बुंदी ।

१०३७६. उडम्पर भाष्य — जयन्त महा । पत्र स० २६ । घा० × । भाषा सस्कृत । विषय – सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टत सं० ७०४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन पवायती भावर भरतपुर ।

विशेष--इति भी मज्जयन्त भट्ट विरचिते वादि घटमुकर वदन्त समाप्तमिति ।

**१०३००. उपदेश रत्नवाला—सकलभूष्यए**। पत्रस्त० ११७ । झा० ११ $\frac{1}{4}$  ×५ ४ व । भाषा– सस्कृत । विषय-सुभाषित । र०काल-स० १६२७ । **स०काल** × । पूर्णः। वेष्टन स० ६ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पनायती मन्दिर कामा ।

विशेष --- प्रति जीर्ग है ।

१०३६२. उपदेश रत्नमाला — धर्मशास गरिए । पत्र स०१३ । मा० १०४४ हुइन्च । माथा – धन्पप्र गा विषयन-पुशायित । र०काल ४ । तेर्ग्काल ४ । पूर्ण । वेष्टन स० ७३३ । माप्ति — स्थान – म० डिट जैन महिट धर्मोरे ।

**१०३६२. प्रतिसं० २** । पत्रत्त० २ से २३ । द्या० १० $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । बेक्रन स०२४६ । **प्राप्ति रूपान**—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष — प्रतिप्राचीन है। प्रथम पत्र नहीं है।

**१०३ म. प्रतिसं० ३ । पत्र स० २३ । ग्रा० ११**३/४४ **१६२४ ।** लेक्सल स० १४६७ ग्रागाह सुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन स० १४६ । **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन ग्राप्तिगथ मन्दिर बूटी ।

विशेष --योगिनीपूर (दिल्ली) मे लिखा गया था।

**१०३ म.४. प्रतिसं०४ । पत्र** स०१० । घा०६<sup>5</sup> ×४३ इच्छाले ० काल × । पूर्णी। बेष्टन स० ३१ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन घादिनाय मस्दिर खुदी।

१०३=५ ज्यदेश सिद्धान्त रस्तमाला भाषा—भागचन्द । पत्रसंक ४० । प्राक्ष ११४६) इन्छ । भाषा–हिन्दी गद्य । विषय-मुभाषित । रक्काल मक १६१४ माघ बुटी १३ । सेक्काल मक १६४४ । पूर्णु । बेहुतसक २० । प्राप्ति स्थान—दिक जैन पार्यनाय मन्दिर टांडारायसिह (टोक) ।

विशेष-म्होरीलाल भौंसा ने चोर में प्रतिलिपि की थी।

र०काल निम्न प्रकार धौर मिलता है।

दि॰ जैन तेरहपथी मन्दिर जयपूर स॰ १६१२।

दि॰ जैन ग्रयवाल मन्दिर नैरावा सं० १६२२ ग्राषात बुदी ६।

**१०३ म.स. प्रतिसं०२** । पत्र सं०२ १। ग्रा०१२ ४७३ इला। ले० काल स०१६४७ । पूर्णः। वेष्ट्रनसं०२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि०जैन प्रप्रवाल मन्दिर नैसावाः।

१०३८७. उपदेशसिद्धान्त ररममाला— $\times$ । पत्रस्व ४०। मा० १२  $\times ४$  इञ्च । माषा हिन्दी । विषय-मुभाषित । र०कान  $\times$ । से०कान  $\times$ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० २००। प्राप्ति स्थान—दि॰ र्जन पनावनी मन्दिर प्रतवर ।

१०३८८ प्रतिसं०२ । पत्र सं० ४३ । ले०काल 🗙 । ध्रपूर्ण । बेष्टन स० ६१/१८० । प्रास्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर ग्रालवर ।

१०३८६. ऋविषंसमी उद्यापन $\times$ । पत्र स०१०। म्रा०१० $\frac{1}{9}$  $\times$ ४ $\frac{1}{7}$  इ.स. । भाषा संस्कृत। विषय-वैदिक साहित्य। र०काल  $\times$ । ने० काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं०११०६। **प्राप्ति स्थाप**— स० दिठ जैन मन्दिर खन्नमेर। १०३६०. कृष्णा मुबिष्ठिर संबाद — < । पत्र स०१६ । प्रा० १० $\times$ ४ इश्व । माषा — संस्कृत । थिपय –वार्ना (क्या ) । र०काल  $\times$  । ले०काल स० १७८४ । पूर्णा । वेष्टत स०१२० । । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर दवनान (वृंदी) ।

विशेष- चि॰ सदामूल ने प्रतिलिपि की थी। पत्र दीमको ने खा रखा है।

१०३६१. कृष्ण रुवमिण् बेलि — पृथ्वीराज (कत्यारामल के गुत्र ) । पत्रस० २-१६। ब्रा॰ १×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य । रुकाल × । लेशकाल × । प्रपूर्ण । बेष्टनसं॰ १२६ । प्राप्ति स्थान — म॰ दि॰ जैन मन्दिर अजेस्र ।

विशेष -- पत्र स० ३०० हैं।

**१०३६२ प्रतिसं० र**ायत्र स० २३। घ्रा० १०४४ इ.खा । ले०काल २०१७३४ **। पूर्ए ।** केवनसं० १०६ । **प्रारित स्थान**—दि० जैन मन्दिर दबलाला बृडी ।

विशेष --श्री रग विमल शिश्दान मिल लिखत म० १७३४ ई टडिया मध्ये ।

१०२६३, कर्गामृत पुरास्प-नष्टारक विजयकोति । पत्र म० ४१ । प्रा० १२ ४६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुरागा । रक्काल म० १८२६ काती बुधी १२ । लेक्काल 🗶 । प्रपूर्ण । वेष्टन म० ४८ । प्राप्ति स्थान-दिक जैन तेरहपथी मन्दिर दौता ।

विशेष-भगवान प्रादिनाथ के पूर्व मबों की कई कथाए दी है।

१०३६४. कलजुगरास—ठक्कुरसी कवि । पत्र स॰ २१ । आ॰ ६×५ ६७ । आघा-हिन्दी (पद्य) । विषय-विविध । र०काल सं॰ १८०८ । ते० काल स॰ १८३६ द्वि ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । बेष्टन स॰ १७ ११ । प्राप्ति स्थान—दि जैन पाव्यंनाथ मन्दिर इन्दरगढ़ (कोटा)।

विशेष-ग्रन्थ का प्रादि घन्त भाग निम्न प्रकार है-

#### प्रारम्भ--

बीतराग जति नमु बदु गुर के पाय। मनिष जन्म बद्र दोहिला गुरू भारूयो चितलाय। साध ऋषि स्वर धार्गै माषिया कलजुग एसा धार्व। साध ऋषिस्वर साच तो बोलिया ठाकुरसी ऋषि गार्व।

प्राणी कुडाररे कलजुग म्राया ।। नप्र देखियो गांव सरीक्षा उजर वास दसाया। राज हम्रा वाजम सारिक्षा भजा तो दुख पायारे ॥३॥

### ग्रश्तिम--

संवत् ग्रधारमी ग्राठ वरसे जुजु वारसेहर भक्ता रै। तिच बारस मगलवार सावरण सुद जग सार रे। प्रार्गी कुडार के कलजुन श्राया।।

पासिंड की बहुत जो पूजा साध देख दुल पावै। टाकुरसी ऋषि सांची भालै चतुर नार चित द्वावै।।३।। १०३६५. कलियुन की बिनती—चैवा बहा। पत्र सं०६। प्रा०५४६ इच । प्रापा-हिन्दी। विषय-विविध । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं०७३६। प्राप्ति स्थान—दि० बैन मन्दिर लक्कर (ववपुर)।

१०३६६. **कल्पन्नुम कलिका-** × 1 पत्रसं० १८० । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । र०काल लै०काल सं० १८६२ । पूर्णु । **बेहन सं० ७४० । भ्राप्ति स्था**स—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपूर ।

**१०३६७. करुपसुत्र बलाएगः** \*\*\*\*\*। यत्र सं०१४७ । माचा-हिस्दी। र०काल $\times$ । ते०काल $\times$ । पूर्णं। बेष्टनसं०६१८, ६१८, ६२०, ७४६ । **प्राप्तिः स्थान** --दि०जेन मन्दिर मन्द्रपुर।

विशेष-कल्पसूत्र चतुर्थ, वंचम एवं सप्तम

२ बेष्टनों में है।

१०३६ ट. कस्यासमाला—पं० झाझाघर । पत्रस्व ४ । प्राव ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इ.स. । भाषा—संस्कृत । विषय—विविध । रक्काल— $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । बेहन स० ४२-१४ ६ । प्राप्तिस्याला—विव जैन मन्दिर नैमिनाथ टोडारावसिंह टोक ।

विशेष-तीर्थंकरों के कल्यासक की तिथियाँ दी हुई हैं।

१०३६६. कंबरपाल बसीसी—कबरपाल । यत्र स० ४ । मा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-घमं । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । बेष्टन सं० २६० । प्राप्ति स्थान—दि० जंन मन्दिर दवलाना (ब्रुदी) ।

१०४००. कविकास्य नास $-\times$ । पत्र सः० ३-१४। बा० १२ $\times$ ४ इत्त । भाषा-सस्त्त । विषय-मृति । २०काल  $\times$ । से० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१४/६४०। प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर समवनाथ उदयपुर ।

१०४०१. कविकास्य नाम गर्भचकवृत्त $-\times$ । पत्र सं० १६। प्रा०१२ $\times$ ६ स्त्रा भाषा-अन्त्रत । विषय-स्तुति । रक्ताल्ञ  $\times$ । ते० कान सं० १६६८ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १५१/२४० । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर सभवनाय उदयपुर ।

विशेष — कुल ११६ स्लोक है। प्रति सस्कृत टीका सहित है। ११६ क्लोकों के आपने लिखा है— कवि काव्य नाम गर्म चक्र बुत्त । ७ चक्र नीचे दिये हुए हैं। टीका के आते में निम्म प्रणस्ति है—

मवत् १६६८ वर्षे उपेष्ट मुदी २ शनौ जिनशतका स्थालकृते स्वज्ञानावर्गी कर्मशयार्थं पडित सहस्र वीरास्थेगः स्वतःनाभ्यानिखिता ।

टीका का नाम जिनकातका स्थालवति है।

१०४०२. कवि रहस्य-इलायुष्य । पत्रसं० ४। ब्रा०११३४ ४ इचा। साया-सस्कृत । विषय-कोज । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णा । वेष्ट्रनसं० २२० । **प्राप्ति स्थान**—दि० औन मन्दिर लक्कर, जयपुर ।

१०४०३. **कात्तिक महासम्य**— × । पत्रस्य ० ३७ । ग्रा० १० × ४ हे इचा । भाषा-संस्कृत । विषय -वैदिक साहित्य । र०काल— × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन सं० २२१ । **प्राप्ति स्वान**— दि० जैन मन्दिर प्रश्निनन्दन स्वामी बृदी ।

विशेष--३७ से मागे पत्र नहीं हैं।

१०४०४. कालो तस्य —  $\times$  । पत्रसं० २१ । ग्रा॰ ११ $\times$ ४  $\frac{1}{2}$  इत्य । भाषा-सस्कृत । विषय-पूत्रा एवं यत्र शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । ग्रपूर्ण । वेष्टुम सं० ६८ । **भाषित स्थान** — दि॰ जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०४०५. क्षेत्र ग्रासित टोका— $\times$  । पत्रसं• १० । प्राः १०५ $\times$ ६ इत्रः । भाषा-सस्कृत । विषय—गिसित । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० १६ । प्राप्ति स्थान—वि० जैन प्रग्रवाल मदिर उदयपर ।

विशेष — प्रति प्राचीन है। भ्रांत मे निम्न प्रकार लिखा है—
"इति उत्तर क्षेत्री टोका संपूर्ण"

१०४०६. क्षेत्र गिरात टीका $-\times$  । पत्र स॰ २१ । प्रा० ११ $\frac{1}{5}\times$ ५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय—परिएन । र०काल  $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ २०१ । प्रास्ति स्थान—वि॰ जैन प्रयंताल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष—इसका नाम उत्तर छत्तीसी टीका भी है। भ्र्यारक श्री विजयकीर्ति जित् ब्रह्म नारायस्य दत्तमूत्तरछत्तीसी टीका ।

१०४०७. क्षेत्र गिरात व्यवहार फल सहित— x । पत्र स० १४ । मा० ११xYै इन्छ । भाषा-संस्कृत । विषय—गसित जास्त्र । र०काल x । से० काल x। पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ५२ । **प्राप्ति-स्थान**—दि० जैन लब्हेलवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--प्रति रेखा चित्रो सहित है।

१०४० द्व. क्षीरार्ग्य—विश्वकर्मा । पत्रस० ४१ । प्रा०  $- \frac{1}{4} \times 4 \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$  सामा—सस्कृत । विषय—शिल्म शास्त्र । रकाल— $\times$  । ले॰ काल सं० १६५३ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४-२ । प्राप्ति—स्वाल—दि० जैन मंदिर कोटडियो का हु गरपुर ।

विशेष — इति श्री विश्वकर्माकृते क्षीरार्श्ये नारद पृच्छते क्षतायुग्ग एकोर्नावकोऽध्याय ।। १६।। संपूर्ण । संवत् १६४३ वर्षे कार्तिक सुदी ११ रवी लिखितं दशोग ब्राह्मग्ए ज्ञाति व्यास पुरुषोत्तमेन हस्ताक्षरं नग्र हंगरपुर मध्ये सुभ भवत् ।

१०४० ६. **खण्ड प्रशस्ति** —  $\times$  । पत्रस**ः** । प्रा० १० $\times$  ४ ३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । एकाल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टुनसं० २८८ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर सक्कर, जयपुर ।

१०४१०. खंड प्रशस्ति स्लोक —  $\times$  । पत्रसं० २-४। मा० १० $\times$ ४ है इ.च.। भाषा — सस्कृत । विषय – काव्यः । २०कातः  $\times$  । से० कातः  $\times$  । मपूर्णः । वैष्टन सं० २४२ । प्राप्ति स्थान — विरु जैन मंतिर बोरसली कोटा ।

१०४११. संगद्ध प्रायक्तित—— × । पत्र सं० १४ । ब्रा० ११×४ इन्त्र । साथा-हिस्सी । विषय—ब्राचार ब्रास्त्र । र०काल × । से०काल × । पूर्ण । बेष्टन सं० २०४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन ब्रॉक्ट ब्रोसकी कोटा । १०४१२. गिएतनाममाला—हरिवतः । (श्रीपति के पुत्र) — पत्र सः ५। माः ११४४ इतः । भाषा—सस्कृतः विषय —गीगतः । २०काल ४। ते० काल सः १७३४ । पूर्णः । बेहनसं ४४४४ । प्राप्ति स्थान—दिः जैन संवताय मन्दिर उदयपुरः ।

#### प्रारम्भ---

गिरातस्य नाममाला वश्ये गुरु प्रसादतः बालानां सुखयोषाय हरिवत्तो द्विजाग्रगी ।

#### ग्रन्तिम---

श्री श्रीपतिमृतेनैते बालाना बुद्धिबृद्धये ।

गरिगतम्य नाममाला प्रोक्त गुरुप्रसादतः ।

१०४१३. गिर्मितनाममाला— 🗙 । पत्रस्व १० । घा० 🗥 ः उत्तः । भाषा—सस्कृतः । विषय—गरिमत शास्त्रः । र०कालः 🗴 । लेकालः स० १९०५ मंगांसर गर्भः । पूर्णः । वेष्टुन स० १४०६ । प्राप्तिः स्थान—भ० दि० जैन सदिर मजसेर ।

**१०४१४. गिएतनाममाला**— $\times$  । पत्रस**०**३ । आ० १० $\times$ ४३ इस्त । भागा—सम्हत । विषय—गिएत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनस० १०१७ । प्राप्तिः स्थान—भ० ६० जैन मन्दिर सजमर ।

१०४१५ गिरिएत शास्त्र—×ा पत्र स० २६ । घा० ६×५ इखा । भाषा नस्कृत । विषय-गिरात । २०काल × । ले०काल स० १५५० । घपूर्ण । बेष्टन स० ४७२ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ म दिर उदयपुर ।

विशेष—सबत् १४१० वर्षे श्रावरण बुदी ३ गुरी बखेह कोट नगरे वास्तव्य मुत्रा देवा सुत कान्हादे भ्रातृशा पटनार्चं निक्तिमया ।

निमित्त शास्त्र भी है। घत में है---

इति गरिगत शास्त्रे शोर छाया तलहरा समाप्त ।

१०४१६. गिरित शास्त्र— $\times$ । पत्र सं० फुटकर । ग्रा० १२ $\times$ ४ ६ खा । भाषा-सस्कृत । विवय—गिर्गृत । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण । बेहुन सं० २२० । प्रास्ति स्थान —िद० जैन अग्रवाल मंदिर उदयपुर ।

१०४१७. गिएतसार — हैमराजा। पत्रस्य १। मा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  हवा। मापा-हिन्दी पत्र । विषय — गिएत । र०काल  $\times$ । सेक्नाल स० १७५४ वेच्ठ मुदी ६। पूर्ण । बेष्टन सं० १६२ । प्राप्ति - स्थाल — दि० जैन मन्दिर प्रान्तिमाथ बूंदी ।

१०४९८. गिशितसार संग्रह—सहाबोराचार्य। पत्रसं० ४३। ग्रा० ११४७ इ.च.। माषा-संस्कृत । विषय-गिशित । र०काल ४ । लेक्काल सं० १७०५ श्रावण सुदी २ । पृशो । वेष्टन सं० ४ । प्रास्ति स्थान—म्हेलवास दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

१०४**१६. प्रतिसं०** २ । पत्रस० ३६ । मा० १२५  $\times$  ४५ हवा । याषा-संस्कृत । ले०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेल्टन स० १४८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर कोटड़ियों का हुंगरपूर ।

**१०४२०. गांधालक्षर्**ग $\times$ । पत्रस० १–६। म्रा०१२ $\times$ ४  $\frac{1}{9}$ । माधा-प्राकृत । विषय-लक्षराम् यं। र०काल्  $\times$ । ले०काल्  $\times$ । पूर्ण्। वेष्टनं सं०६११। **प्राप्तिः स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष - प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत टीका सहित है।

**१०४२१. गोजिरात्रवतोद्यापन**— ×ा पत्र सं० ७ । ब्रा० १०×४३ हश्वा भाषा–सस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल ×ा ले०काल ×ा दूर्ग । वेष्टन स० ७२७ । **प्राप्ति स्थान**—भ० दि० जैन मन्दिर सत्रमेर ।

१०४२. ग्रह्मण्याहुप्रकारम् —  $\times$  । पत्र संब्दा । ११×५ $\frac{1}{2}$  इचा । भाषा-सस्कृत । विषय-वर्णीतिय । उब्साल  $\times$  । लेव काल  $\times$  ।  $\frac{1}{2}$  । येव संब्दा निष्या निष्या । उपलित स्थान — मेव दिव तैन मिल्टि प्रवारा ।

**१०४२३. चन्द्रोमीलन—सधुसूदन** । पत्र स० ३२ । द्वा० १२ × ४ दत्र । भाषा- उस्कृत । विषय-काव्य झात्र । र०काल्  $\times$  । के**॰काल**  $\times$  । पूर्णः वेष्ट्रन स० १६३ । **प्राप्ति स्थान**—सम्बनाध्य दि० जैन मन्दिर उदयनर ।

विशेष — दुसका दूसरा नाम शिष्य निर्माय प्रकरम्। तथः शिष्य परीक्षा प्रकरम् भी है। चन्द्रोनमी-सन जैन ग्रंप में उत्रुत् हैं। शारम्म में चन्द्रप्रम मगवान एवं सरस्वती को नमस्कार किया है।

प्रस्तिम ---

लय्यपदमहाजान स्वय जैनेन्द्रभाषित । चन्द्रोम्सीनतक जास्त्र तस्म मध्यानयो धून ॥ रुद्रे सा सापित पूर्व बाह्यपा मधु सून्ते । न व हट मया जान भाषित च अनेकमा १०। एतत् जान महाजान सर्व जानेषु चीनम । गोषितच्य प्रकानन विदणी रिष दुर्नेभ ॥

इति चन्द्रोग्मीलने ज्ञास्त्रार्थाव विनगीतम् जिय्य निर्णय प्रकरमा । प्रस्तुन ग्रंथ में ज्ञिप्य किसे, कब घोर कीने बनाया जाय इसका पूर्ण विवरमा है । प्रति प्रचीन है ।

१०४२४. चरसाब्यह—चेबब्यासः । पत्रस०४ । म्रा०६ $\frac{1}{3}$ ४ $\frac{1}{6}$  इन्तः। भाषा—सस्त्तः। विषय-वैदिक साहित्य । र०काल  $\times$  । से•काल  $\times$  । पूर्णः। वेष्टन सं०१०४७ । प्राप्ति स्थान—स० वि० जैन मन्दिर प्रजनेरः।

१०४२५. चेतन कर्म संवाद — भैया भगवतोदास । पत्रसं० २१ । या० १०४४ स्वा । भाषा-हिन्दी पदा । विषय-रूपक काव्य । र०काल सं० १७३२ ज्येट्ट बृदी ७ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ४४ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर धादिनाथ बृदी ।

१०४२६. प्रतिसं० २ । पत्रस० ५६ । लेक्काल स० १६३६ । पूर्ण । बेष्टनसं० १४ । प्राप्ति 🔸

१०४२७. प्रतिसं० ३ । पत्रसं० ४६ । ले०काल सं० १६३६ । पूर्णा विष्टन सं० १४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर तेरहपंथी बसवा ।

१०४२ द. प्रति सं०४ । पत्रस०१६ । मा०१३३ ४४ इल्ड । ले∙काल ४ । सपूर्णे । वेष्ट्रतसं०१६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागदी बूंदी ।

१०४२६. चेतनगारो-- विनोबीसास । पत्रसं॰ १४ । म्रा॰ १४४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-मध्यात्म । र॰ काल सं॰ १७४३ । से •काल ४ । पूर्ण । बेष्ट्रन सं॰ ४१ । प्राप्ति स्थान-- दि० जैन वंजाननी पन्तिर कामा ।

१०४३०. खेतन गीत— $\times$  । पत्रसं० १ । आ० १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$  इक्ष । माया-हिन्दी गया । विषय-प्रध्यास । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० २११-६४ । प्राप्ति स्थान—विः जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपूर ।

१०४३**१. चेतन पुद्गल ममाल— बूचराज** । पत्र सं०१६ । घा० ४३४४) इञ्च । माण्-हिन्दी । विषय—रूपककाल । र०काल × । ले०काल सं० १६२६ । पूर्ण । बेष्टन सं० ६६६ । प्राप्ति-प्राप्ति— म० दि० जैन सदिर प्रजमेर ।

विशेष--ग्रा० मानुकीति के शिष्य म्० विजयकीति ने लिखा था।

गुटके में सग्रहित है।

१०४३२. चेतन मोहराज संवाद—खेमसागर। पत्र मं०४६। प्रा०१०३,४४६ २७। माथा-हिन्दी। विषय—सणक कथा र०कास ४। से०काल सं० १७३७। प्रपूर्ण। बेष्टनसं०३५४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन प्रवाल मंदिर उदयपुर।

विशेष-भीलोडा नगर में शानिनाथ चैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई।

१०४३३. **चौढात्यो — मृत्र प्रोहित ।** पत्र तं॰ ३। पा॰ ६ $\frac{1}{4} \times 6^{\frac{1}{2}}$  दख । याथा-हिन्दो पछ । विषय — स्फुट । ७०कात  $\times$  । ले०कात  $\times$  । पूर्ण । वैष्टत तं॰ ३११ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मिटर दवनाना वृदी ।

१०४३४. चौरह विद्यानाम × । पत्र सं० १ । घा० ११×५ इचा । माचा-हिन्दी । विषय-सक्षम् ग्रम्य । ले०कास × । ले०कास × । पूर्ण । वेष्टन सं० ६३७ । प्रास्ति स्थान---दि० जॅन मन्त्रिः सक्षम् जयपुर ।

विशेष--वीदह विद्याची का नाम कवित्त दोहा तथा गोरोचन छन्द (कल्प) दिया हमा है।

१०४३५. **जीबीस तीर्यंकर पूजा—वृत्वाबन ।** पत्र सं० ८५ । म्रा० ११४६ इच । आग-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । लेक्सल ४ । लेक्सल ४ । पूर्ण । वेच्टन सं० १५३-६१ । **प्राध्ति** स्यान---दि० जैन मंदिर कोटडियों का हु गरपुर ।

१०४३६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ६४ । सा० १३×६ इ.स. । से०कास × । पूर्णः । वेहनसं० २२४–६१ । प्राप्तिः स्थान----दि० जैन मन्दिर कोटहियों का द्वारपूरः ।

१०४६७. क्षेत्रपिड---पत्रसं० ४। सा० १३ ४३ इ.स.। भाषा-प्राकृत। विषय-सिदाना। लेक्सल × । लेक्सल × । भपूर्य। वेष्टुनसं०७०। **प्राप्तिः स्थान-**---मथवाल दि० जैन मन्दिर उद्यपुर १०४३ स. जम्मूडीप पट $-\times$ । पत्रसन्ध १ । घा॰ imes। वेष्टनसं० २७४-१०६ । प्राप्तिः स्थान-वि० जैन मन्दिर हूँगरपुर।

विशेष--जबूद्वीप का नक्शा है।

१०४**२६. जिनगुरा बिलास—नयमल** । पत्र स० ६१ । ग्रा० ७३ ४ १०३ इच । प्राचा— हिली पद्य । विषय—स्तवन । र०काल स० १८२२ धाषाड बुदी १०। ले० काल स० १८२२ धाषाड सुदी २ । पुर्ण । वेष्टुनसं० २६/१५ । **प्राप्त स्थान**—दि० जैन सीनासी मदिर करीली ।

विशेष--- ५२ पत्र संभक्तामर स्तोत्र हिन्दी मे है।

साह श्री लुशालचन्द के पुत्र रतनचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

१०४४०. प्रतिसं० २ । पत्र स० ५६ । घा० १२३×६ इवा । ते•काल स० १८२३ काती मुदी १५ । पूर्ण । बेहनसं० ३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष-सवाई राम पाटनी ने भरतपूर मे प्रतिलिपि की थी।

१०४४**१. प्रतिसं० ३**। पत्रसं० ६५। आ० १२,४४<sub>२</sub> इन्छ । ले∘काल सं० १८२३ मादवा बुदी १५। पूर्णः वेष्टनस०२१। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मनिर दीवान चेतनदास पुरानी डीग।

विशेष---नौनिधिराम ने ग्रामाराम के पास प्रतिलिपि करवायी थी।

१०४४२ प्रतिसं•४ । पत्र स० न्द। ग्रा० न्हें ४६ इच्छा ले∘काल स० १न्२२ भादवा गुदी १२ । बेष्टन सं०१न । **प्राप्ति स्थान** — वि० जैन पंचायती मदिर करीली ।

विशेष-दोदराज ने करौली नगर में लिखबाया था।

१०४४ ३. जिनप्रतिमास्वरूप वर्गन— छीतर काला। पत्रसं∘ ३६ । मा॰ १२३४७ इन्छ । मारा—हिन्दी गए। विषय—नवास । २०काल स० १६२४ बैसाल सुदी ३। लेकहाल सं० १८४४ बैसाल सुदी १४। पूर्णे। बेहनसं∘ १४७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मदिर प्रमिनस्वन समामी, ब्रेदी।

विशेष—क्षीतर काला ग्रजमेर के रहने वाले थे। ग्राजीविका वज्ञ इन्दौर प्राये वही १६२५ मे ग्रथ को पूर्ण किया।

> सहर बास धजमेर मे तहां एक सरावग जान । नाम तास छीनर कहे गोत्र ज कालो मान । कोई दिन बहा मुख सो रह्मों केर कोई कारए। पाय। नमत काम धाजीविका सहर स्प्तीर में धाय। × × ×

ग्रस्तिम---

ान्तम-── नगरसहर इन्दौरमें सुद्धिसहसि होय ।

तहां जिन मन्दिर के विषै पूरों की नो सोय।

सं०१६२३ सावन सुदी १५ को इन्दौर आये। और स०१६२४ में प्रंय रचना प्रारम्भ कर सं०१६२५ वैज्ञाल सुदी३ को समाप्त किया।

छोगालाल लुहाडिया ग्राकोदा वालों ने इन्दौर मे प्रतिलिपि की थी।

**१०४४४. प्रतिसं०**२ । पत्रसु०४६ । झा० ११×६ई इला । ले०काल स० १६६० । पूर्ए । वेकनसं०४०२ । प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सदिर बोरसली कोटा !

१०४४४. जिनकिस्तिनीस् विधि— × । पत्र स०४७ । सा० ६}×३६ इका । साथा-संस्कृत । विषय—विक निर्मास जिल्ला आत्रत्र । र०काल × । तेसं । वेस्तं । वेहनसं० ६१४ । प्राप्ति स्थान — ४० विक जीन संदिर प्रकोर ।

विशेष-गुटका साइज है।

**१०४४६. जिनांबस्य निर्मारा विधि** —  $\times$  । यत्रस्य ११ । मा॰ १३ $\times$ ४२ इस । भाषा – हिन्दी गद्य । विषय — शिल्प मास्त्र । २०काल  $\times$  । ले०काल स० १६४४ । पूर्ण । बेहुनसं० ११३ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर श्री महाबीर व दी ।

१०४४७. जिनसिस्य निर्माण विधि— $\times$ । पत्रसं० १०। आ० १२ $\times$ १ $^{3}$  इश्व । भाषा – हिन्दी । विषय—जिल्न शास्त्र । २०कान  $\times$ । से०कान  $\times$ ।पूर्ण । वेष्टुनस०२०–१६। प्राप्ति स्थान – विरु जैन महिर भाडवा ।

१०४४ द. जिनशतिका— $\times$ । पत्रसः १६। ग्रा० १२  $\times$ १, इसः। भाषा—मस्ट्रन्। विषय—नक्षण ग्राथ। २०काल  $\times$ । से०काल  $\times$ । वेष्ट्रन सं०६६१। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिन लक्कर, जयपुर।

विशेष--ग्रंत मे इति श्री जिनगतिकाया हस्त वर्णन द्वितीय परिदाय चुर्ण ।।२।।

१०४४६. जीप्रश्नात-नासिका-नयनकर्मासंबाद--नारायम् मृनि । पत्रस० २ । झा० १०४४ इच्छा सामा-हिन्दी पद्या विषय---मवादा । र०काल ४ । ने० काल स०१७८१ झामोज बुरी ८ । पूर्णा वेष्टुनस०४३४ । **प्राप्ति स्थान**-----म० दि० जैन मदिर खबनेर ।

**१०४५०. प्रतिसं० २**। पत्रस० २। ग्रा० १०imes४ इ.स. । ले०काल imes। पूर्णं । **बे**ष्टनस० १८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मदिर बोरसली कोटा ।

१०४५१. ज्ञानभास्कर—×। पत्र स० २६ । ग्रा० १२×४ डव्ह । भाषा—सम्ब्रुत । विषय-वैदिक शास्त्र । र०काल × । ने० काल म० १६८५ । पूर्ण । वेष्टुनस० ३४५ । **प्राप्ति स्यान** — विकास मन्त्रि कोरमानी कोरा ।

विशेष—र्हात श्री जानभारकरे कर्मविशके सूर्याक्सपुसवादे कालनिस्यो नाम प्रथम प्रकरण । स॰ १८-५ वर्षे चैत सुदी ७ सोसे महोस्सु लिख ।

१०४५२. जानस्वरोवय—चरनदास । पत्र स० ४३ । आ० ५ $\times$ २३ १ आ । माषा-किन्दी । विषय-उपदेश । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रनस० १८१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नागरी (वृंदी) ।

१०४५२, द्वादसी गाथा-  $\times$  । पत्रस० २ । झा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इख । भाषा-प्राष्ट्रत । विषय-सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले०काल १०२१, भादवा बुदी ११ । बेष्टनसं० ६५ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर (अव $\frac{1}{2}$ )।

विशेष--प॰ सुलराम के लिये लिखा था।

१०४५४. समीकार महास्म्य $-\times$ । गय स० १ । या० न्ह्र्रे $\times$ र्नु इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तवन । रुकाल  $\times$ । ते०काल  $\times$ । वेष्ट्रमस० ४२३ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन मन्दिर समकर (जवपर)।

१०४**५५. तत्वज्ञान तर्गाग्गा—ज्ञानमूष्यग्**। पत्रस० ६३। ब्रा० १२१४६ हे इश्व । माषा— संस्कृत । विषय-निद्यान्त । रण्काल स०१४६०। लेण्काल म०१८४६ सानोत्र बुटी १ । **प्राप्ति स्थान**— म०१८० जैन मन्दिर स्वजोर ।

विशेष-- श्रन्त में निम्न प्रकार लिखा है---

भागचन्द मोनी की बीदस्ती के ग्रसाध्य समय चढाया । १६८५ चैन बदी १२ ।

**१०४५६. तस्वसार—वेबसेत**ा पत्र स० १२ । ग्रा० १०३ ×४ ६चा । भाषा–प्राःा । विषय— मिद्राना । रक्तान × । तेककान × । पूर्णः । वेष्टनसँ० २२२ । **प्राप्तिः स्थान**—प्रकृतिक देन मन्दिर सर्वोगः ।

विशेद --ग्राचार्यं नेमिचन्द्र के पठनार्थं प्रतिनिधि हुई थी।

१०४५७. तस्वार्धं सूत्र-उमास्वामि । पत्र स० १३ । प्रा० २१४६ इश्व । भाषा-सम्बन्धः । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल स० ११६५। बेष्टुनसं० ६५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर (विषयर) ।

१०४५८. तत्वायं सूत्र भाषा-पं० सवामुख कासलीयाल । पत्रस० १७७ । या० १० $\frac{1}{6}$  $\times$ १ $\frac{1}{6}$  १०३ । याण -राजम्याती (ङ्वारी-गर्य) । विषय-सिदाल । र०काल म० १६१० फागुग्ग बुरी १० । क्षेत्रसल सं० १६१२ । प्रपूर्ण । वेष्ट्रसं० ३६५ । प्राप्त स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुंदी) ।

१०४५६. तम्बाल् सङ्ग्रसम्प्रमाग्द ऋषि । पत्रस० १ । मा० ६ $\frac{2}{3}$  ×५ $\frac{2}{3}$  रख । भाषा-हिन्दी (प०) । । र०काल × । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टनसं० २१४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर वक्ताना (वंदी) ।

१०४६०. **तोस चौबीसी पूजा—सूर्यमल**। पत्रसः १६। घा० ११३४६ इस्त्रः । साथा-हिन्दी पद्य ।विषय-पूजा। र०कास × । ते० काल × । पूर्णं। वेष्टनसं ० २७१-१०६। **प्राप्ति स्थान—दि०** जैन सन्दिर कोटडियो का हुँगयपुर।

**१०४६१. द्रष्टिजवरिगया**— × । पत्रसं∘६ । साथा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल × । ले०काल × । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ४०६ **। प्राप्ति स्थान**— दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६२. दस ग्रंगों की नामावली— $\times$ । पत्रतं॰ ६। प्रा॰  $\ell_{+}^{1} \times \ell_{+}^{2} = 1$  माथा—हिन्दी। विषय-प्रागम। र०काल  $\times$ । ले॰काल  $\times$ । पूर्णं। बेप्टन स॰ ३३१। प्राप्ति स्थान—म॰ ठि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

१०४६३. दशिवन्तामरिंगु प्रकरिंगु $-\times$ । पत्र स०११। माथा-प्राहत । विषय-विविध । र०काल  $\times$ । त्रेशकाल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन सं०७२३। प्राप्ति स्थान-वि० जैन पंचायती मिन्दिर मरतपुर।

१०४६% **दश प्रकार आहारण विचार** × । पत्र सं०१। मा० ११×४ इचा । माणा-संस्कृत । र०काल × । लेक्साल × । बेष्टन सं०६२०। **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन मण्डिर लक्कर जयपर ।

१०४६५. बातासूम सवाद  $\times$  । पत्रसं० २१। मा० १२ $\times$ ५ $^1$ ६७। भाषा-हिन्दी। विषय-सवाद। र०काल  $\times$ । से०काल स० १६४८ प्रापाढ बुदी १। पूर्ण । बेष्टन स० १। प्राप्तिः स्वाम—दि० जैन पार्वनाव मन्दिर टोडारार्यास्त्र (टॉक)।

विशेष--- जीसं एवं फटा हमा है।

१०४६६. विशानुवाई—  $\times$  । पत्रसं०१। प्रा०१० $\times$ ४१ इन्छ । भाषा-तित्यी पदा । विषय-सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । से० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स०४१४। **प्राप्ति स्वान**— भ०दि० जैन मदिर प्रकोर ।

विशेष --- डाग्राग सूत्र के ग्राधार पर है।

**१०४६७. दिसानुवाई**— $\times$  । पत्रसं० १ । फ्रा० १० $\times$ ४ $^{1}{}_{7}$  दश्वः । भाषा—हिन्दी । विषय - फुटकर । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्णं । बेष्टन सं० २७१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दक्साना बुदी ।

१०४६ स. बूरियरय समीर स्तोत्र वृति—समय सुन्वर उपाध्याय । पत्र स०१४ । आगा— संस्कृत । विषय—स्तोत्र । र०काल 🗴 । ते०काल १८७६ । पूर्ण । वेष्टन सं०५६४ । प्राप्ति स्थान— दि० जैन पनायतो मन्दिर भरतपुर ।

१०४६६. वेबायम स्तोत्र—समंतमदाखार्थं। पत्र सं०५। प्रा०१३×५६ या भाषा— संस्कृतः। विषय-स्तोत्र एव दर्भनः। २०कालः × । ले० कालः × । पूर्णः। वेष्ट्रन म०४२०-४३२। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिर संभवनाय उदयपुरः।

विशेष-प्रतिप्राचीन है।

१०४७०. प्रतिसं० २ । पत्रस० १२ । बा० ११ x ५ इश्व । के •काल x । पूर्ण । वेष्टन स० १७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन प्रग्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — इसका नाम ग्राप्रमीमामा भी है। प्रति प्राचीन है।

१०४७१. प्रतिसं० ३ । पत्रस $\circ$  मा । ११ $\times$ ४ इला । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं॰ १०५–२२ । प्रास्ति स्थान-- नि॰ जैन मन्दिर पार्चनाथ इन्दराव (कोटा) ।

१०४७२. प्रतिसं० ४ । पत्र स०८ । ग्रा० ११४५ इच्च । ले०काल ४ । ग्रपूराँ । वेष्टन स० १२३ । प्राप्ति स्थान—द० जैन मन्दिर पार्थनाय इन्दरगढ (कोटा) ।

१०४७३. प्रतिसं० ४ । पत्र सं०४ । म्रा० १०हें ४४ है इञ्च । ले०काल स० १०७७ । पूर्ण। वेष्टन सं० १२६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सप्रवाल पंचायती मन्दिर म्रलवर ।

१०४७४ . प्रतिसंग्६ । पत्रसंग्यः । प्राग्रेश्यः । क्षेत्रकालः अः । पूर्णः । वेष्टनसंग् ६१ । प्राप्तिः स्वामः—विश्वने मन्दिर समिनन्दनः स्वामी बृदी । **१०४७५. प्रतिसं**० ७ । पत्रसं० ५ । ग्रा० ६ $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इन्छ । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्ट्रनसं० ६७ । प्राप्ति स्थान — उपरोक्त मन्दिर ।

१०४७६. वेबागम स्तोत्र वृत्ति — साचार्य वसुनंदि । पत्रसं∘ ४३ । घा० ११४४ इ**च ।** भाषा-संस्कृत । विषय-च्याय । र०काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं∘ ४७४ । **प्राप्ति स्थान —** दि० जैन सभवनाय मस्दिर उदयपुर ।

१०४७७. प्रतिसं० २ । पत्रस० २४ । ग्रा०११४५ इला । से∙काल सं०१८५३ कार्तिक सुदी ७ । पूर्ले । बेट्टनसं०१३२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

विशेष - जयपुर में सवाई राम गोधा ने प्रतिलिपि की थी।

१०४७ ६. द्वादशनास—शंकराचार्यः। पत्रतः १। घा० ६ ४ ३ इच । माया-सस्कृतः। विषय-वैदिक साहित्यः। र० काल ४ । से कालवंऽ १२३४ सावणः चुदो १३ । पूर्णः। वेष्टन तः २५१ । प्रास्ति स्थान—हिंद केन महिंद प्रस्तरणः कोटाः।

१०४७१. द्वासप्तति कला काव्य — × । पत्रस० २ । प्रा० ११४५ इच । मार.ं-हिन्दी । विषय-लक्षरा ग्रथ । र०काल × । से०काल × । पूर्ण वेष्टन सं० ६२६ । **प्राप्ति स्थान**— दि• जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

विशेष--पुरुष की ७२ कला एवं स्त्री की चौसठ कलाओं का नाम है।

१०४६० धर्मपाप संवाद —विजयकीति । पत्रस०५६। आ० ६२ ४४ इन्छ । आषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । र०काल सं० १६२७ मगसिर सुदी १४। मे•काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० १५६५ । **प्राप्ति** स्थान — ५० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

१०४८६१ समं प्रवृत्ति (पासुपत सूत्रास्मि)नारायण── । पत्रस० १२३। प्रा० ११४४६ इ.च.। भाषा-सस्क्रन । विषय-वैदिक साहित्य । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० ११०३। प्राप्ति स्थान ─ भ० दि० जैन मस्दिर धजसेर ।

१०४५२. धर्मपुधिष्ठिर संवाद —  $\times$  । पत्र स० १४ । घ्रा० ६ $\times$  ५२ हन्त । भाषा-सस्कृत । विषय-महाभारत (इतिहास) । र०काल  $\times$  । ले•काल सं० १७६४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२७ । प्राप्ति स्थान—म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--महाभारते शत सहस्रगीतायां । ग्रश्वमेष यजं धर्मयुधिष्ठर सवादे ।।

१०४ म ३. **धातु परीक्षा** --  $\times$  । पत्रस० १३ । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षागु यथ । र०काल  $\times$  । भेककाल  $\times$  । भपूर्णे । बेष्टन सं ६२६ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन पंचायती मन्दिर मरतपुर ।

१०४८४. ध्र**ुचरित्र**— ४ । पत्रत० ४६ । घा० ५२, ४४ हे इया । मापा-हिन्दी । विषय-चरित काव्य । र०काल ४ । ले**०काल** ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० १२२ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मनिद खबसेर।

विशेष --इसमें २०० पद्य है।

१०४८-४, नलोदय कास्य— × ।पत्रस०२०। प्रा०१०} ×४}। माथा-संस्कृत । विषय-काल्या ।रुकाल × नैककाल स०१७१६ वैशाल सृदी । पूर्ण।वेष्टन सं०६१४ । **प्राप्ति स्थान**— भ०दिक जैन मन्दिर ग्रामेर ।

विशेष-- नलदमयती कथा है।

१०४८६ नवपद फेरी— $\times$  । पत्रस॰ ६। भाषा-सस्कृत । विषय विविध । र०काल $\times$ । के॰काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स॰ ६५८। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन पत्रायती मन्दिर भरतपुर ।

१०४६७. नवरत्न कवित्त—  $\times$  । पत्रस० १। मा० १२ $\times$ ७३ इच । माषा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं० ४३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१०४८८ नवरस्न काव्यः— × । पत्रस० २। या० १० ×४ हुन्छ । भाषा-सस्त्रत विषय-काव्य । र०काल × । ने०काल × । पूर्ण । वेष्ट्रनसं० २६१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

**१०४** म.६. प्रतिसं०२ । पत्रस०१ । मा० १०×४ १६ च्या ले∙काल × । पूर्णावेष्टनस० २६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्ष्य अयपुर ।

१०४**६०. प्रतिसं० ३**। पत्रस०१। म्रा०११ × ४ इश्व**ा ले∘काल** × । वेष्टन स० २६३। प्राप्ति स्थान— ति० जैन मन्दिर लक्कर, जयपुर।

१०४६१. नारचन्द्र ज्योतिष प्रंथ-नारचन्द्र । पत्रस० २४ । माषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल ४ । ले॰काल स १७५६ माह बुदी ३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेन्द्रपथी मन्दिर (बमवा)

विशेष-हिन्दी में वर्थ दिया हुआ है। केलवा नगर में मुनि सोभाग्यमल ने प्रतिलिपि की थी।

१०४६२. नारदोष पुरास्ए $--\times$ । पत्र स०२०। प्रा०६ $\frac{1}{4}\times \frac{1}{4}$ ृहन्तः । भाषा-सस्कृतः । विषय-वैदिक-साहित्यः । र०कालः  $\times$  । से०कालः  $\times$  । पूर्षः । वेष्टन स०२०६ । प्रास्ति स्थास--दि० जैन मन्दिर प्राप्तिनन्दन स्वामी वृदीः ।

१०४६३. नित्य पूजा पाठ सम्रह— ४। पत्र स०११। म्रा०१०३ ४५ ६७। भाषा सस्त्र । विषय-पूजा। र०कान ४ । ते०कान ४ । पूर्ण । वेष्टन सं० २१६ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर वजनाता (ज्ञी

१०४६४. निर्वाण काण्ड मोबा—भैया मगवतीदास । पत्रस०४ । मा० ६५४४ इखा । भाषा-हिन्दी (पत्र) । विषय-स्तवन, दिनहास । र०काल स०१७४१ । लेकाल सं०१६४० पोप सुदी २ । पूर्ण । वेहनसं०१५१ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन लख्येनवाल पंचावती मन्दिर सल्वर ।

विशेष — प्रतिस्वर्शाक्षरों में लिखी हुई है। मुंधी रिसकलालजी ने लिखवाकर प्रति विराज-मान की थे।

१०४६ ५. निर्वास्य काण्ड याथा—  $\times$  । पत्रसं० २ । मा० १० $\times$ ५ इन्छ । भाषा-प्राहत । विषय-इतिहास । र०काल  $\times$  । ले०काल स०१६२७ । पूर्ण । वेष्टन स०१५७ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर सक्कर जयपुर ।

१०४६६. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ३ । मा० १२ × ११ इला । ले०काल सं० १६६२ ग्रासोज बुदी ७ । पूर्णे । बेष्टनसं० ५३३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर ।

१०४६७. प्रतिसं० ३ । पत्रस० २–३ । प्रा० १० $\frac{2}{5}$  $\times$ ४ इच्च । ले॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ४३४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

**१०४६ म. प्रतिसं० ४ ।** पत्रस•३ । ग्रा० १०५ ४ ४ ट्रेट इचा । ले०काल × । पूर्णा । वेष्टन स०३६४ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपर ।

**१०४६६. प्रतिसं० ४** । पत्रसं० २१ । घा० १०४४ इ.चा । ले०काल ४ । पूर्णं । बेष्टन सं० २२६ । **प्राप्ति स्थान** – टि॰ जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०५००. नेमिराजमती शतक—लावष्यसमय। पत्रस∘४। माया-हिन्दी। विषय– फुटकर।र०कालस०१५६४।ले०काल ⋉।पूर्ता।वेष्टनस०५५/६४१।

विशेष - शन्तिम भाग निम्न प्रकार है -

हम थीर हम बीर इस चलाइन रासी मृति लावण्य समय इमावलि हमाँव हर्षे इवासी रे। संवत् पनरच उमठि इरेगायज नामिकुतार। सनि लावण्य समइ इमा वालिइ वरतिज जय जयकार।

इति श्री नेमिनाय राजमती शतक समाप्त ।

१०५०१. नेमिराजुल बारहमासा —िबनोबीलाल । पत्रसः २ । प्राः १०३४४ हुन्त । माषा-हिन्दी । विषय-वियोग १४ गर १ र०काल 🗴 । वेशकाल 🗴 । पूर्ण । बेष्टन सः ६४६ । प्राप्ति स्थान— ५० हि० जेत मन्दिर प्रजेम ।

विशेष — नेमिनाथ द्वारा तोग्सा द्वार से मृह मोडकर चले जाने एव दीक्षा धारसा कर लेने पर राजुलमती एव नेमिनाथ का बारहमामा का रोवक सवाद रूप वर्सान है।

१०५०२. प्रतिसं० २ । पत्रसः २ । झा० ६×४ इ.चा । ले०काल × । पूर्णं । वेष्टन स० ३४१ । प्राप्ति स्थान--दि० जैन मन्दिर देवलाना (बृथी)

१०५०३. पंच कत्थाराक फाम —ज्ञानमूचरा। पत्रसः २-२६। प्राः १० $\frac{1}{2}$  $\times$  $\frac{1}{2}$ दः । भाषा—संस्कृत-हिन्दी। विषय-स्वतः। रक्तालः  $\times$ । तेक्कालः  $\times$ । बपूर्णः। वेष्ट्रनः संव्रदः। प्राप्तिः स्थानः—विव्यत्र विषयः प्रवासः प्रदियः प्रदेशपुरः।

१०५०४, पश्च कत्यांसक गीत —  $\times$  । पत्रसं० = । मा॰ =  $\times$  ६ $^3$  हजा । भाषा = हिन्दी प० । विषय-गीत । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन सं० ३३६-१३२ । प्राप्ति स्थान — टि० जैन मन्दिर कोटडियो का हु गरपुर ।

**१०५०५. पञ्चल प्रंक पत्र विधान**— $\times$ । पत्रस० १। प्रा० १२२ $^{1}$  $\times$  $^{1}$  $^{2}$  इन्त । जाषा संस्कृत । विषय-वैदिक । रक्ताल  $\times$ । लेक्काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० २७५ । प्रा**प्ति स्थान** – दि० जैन मन्दिर प्रशिनन्दन स्वामी, दूंदी ।

विशेष —शिव तांडव से उध्दृत ।

१०५०६. पं**चमी शतक पद** —  $\times$  । पत्रस $\circ$  १। घा॰ १० $^1_2$  $\times$  $^1_2$  इच । प्राचा—सस्कृत । विषय-विविध । र० काल  $\times$  । ले•काल स $\circ$  १४६१ सावस्य सुरी १०। पूर्य । बेष्टन सं $\circ$  १८०-१५३ । प्राप्ति स्थान — वि $\circ$  जैन सन्दिर नेमिनाय टोडारायसिंह (टॉक)

विशेषः ग्रभवालान्यमे प० फरेगा लिखापित गोपाण्चलपुर्गे गोलाराडान्यमे प० सेमराज । तस्यपुत्र पं० हरिगगा लिख्ति ।

१०५०७ पंचम कर्मग्रंथ— $\times$ । पत्रज्ञ १६। ग्रा० १०५ $\times$ ५६ व । ग्राण-संस्कृत । विषय—सिद्धात । र० काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १६६ । प्राण्त स्थान—वि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा ।

१०५० क. पच लिब्स $-\times$ । पत्रसं॰ ५। प्राः ११ $\times$ ५ दे द्वा । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल  $\times$  । ले०काल $\times$ । धपूर्ण । वेष्ट्न स० १८२ । प्रास्थिः स्थान-दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडारायिषिह (टोक)

१०५०६. पंचेन्द्रिय संवाद— भैग्या मगवतीबास । पत्रस० ४ । झा० १०४५ है इन्छ । भाषा - हिन्दी (पद्य) । विषय—वाद-विवाद । र०काल स० १७५१ । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १६१ । प्राप्ति स्थान—दि जैन मन्दिर दवलाना (बूंदी)

१०५१०. पं**चेन्द्रिय संवाद — यहाःकीति सूरि**। पत्रस• १४। मा० १ $\times$ ४ ३चा । भाषा— हिन्दी (पद्य) । विषय-पाचो इन्द्रियों का बाद विवाद है। र०काल स० १०६० चैत मुदी २। ने०काल  $\times$ । पूर्णु । बेहन स० ४६७-२४०। **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

१०**५११. पञ्चाधमः कहा (प्रखुन्न कथा)— सहाकवि सिंह। पत्रस**० ३६ । प्रा० १०४×४<sup>१</sup>, इन्द्रा सामा-प्रपन्न गा। विषय-काव्य । र०काल × । ले०काल स० १४४६ कार्निक बुदी १ । वेक्टनसं० १६६ । प्रणस्ति प्रच्छी है । **प्रास्ति स्थान** — वि० जन मदिर लक्कर जयपुर ।

१०५१२. प्रति सं० २ । पत्रस० ६४ । बा० ११ $^2_i imes ४$  इ.स. १ र०काल imes । से०काल imes । प्रप्रते । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर नागदी बूंदी ।

१०५१३. पद स्थापना विधि—जिनवत्त सूरि । पत्र सं०२ । आधा-सस्कृत । विधय-विधान । र०काल  $\times$  । ले॰काल स०१८५७ । पूर्ण । वेष्टनस०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती सदिर भरतपूर ।

१०५१४. पद्मति यंचिवशति भाषा—मन्नालाल सिन्यूका। पत्रस०२०६ । प्रा० १३×८ ्रैं इच्च । माषा-हिन्दी (पद्म)। विषय-प्राचार शास्त्र। र०काल सं० १०५। ले० काल सं० १०३५ | पूर्ता | बेस्टन स०८१। प्राप्ति स्थान—सहेलवाल दि० जैन मदिर उदयपुर।

१०५१५ परदेशीयतियोध-कानचढा पत्र म०२१। माथा-हिन्दी। विषय-उपदेशात्मक । र०काव × । ले० काल स०१७६६ कार्तिक वदी २। पूर्णा विष्टन सं०१५५। प्राप्ति स्थान-दि० जैन प्वायती मदिर मरतपुर।

विशेष--वैराठ शहर में लिखवाई थी।

१०५१६. परमहंस कथा चौपई — कार रायमल्ल । पत्रसंश्रः । द्वाः ६४५३ इन्दा । भाषा-हिन्दी । विषय-रुपक काव्य । रुकाल स० १६३६ ज्येष्ट बुदी १३ । लेक्काल स० १७६४ ज्येष्ट बुदी ११ । पूर्णे । बेहन स० २०४ । प्राप्ति स्थान — म० वि० जैन मंदिर प्रजमेंग् ।

विशेष — गृटका श्राकार में है।

१०५१७. प्रति सं०२ । पत्र स०३६ । झा०१२ ४५ इ.खा । ले०काल स० १८४४ कालिक सुदी ६ । पूर्ण । बेहुन सं०२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर बड़ाबीस पथी दौसा।

विशेष —प्रशस्ति मे तक्षकगढ़ का वर्णन है। राजा जगन्नाथ के शासन काल में स०१५३५ मे पार्थनाथ मंदिर था। ऐसा उल्लेख है।

पडित दयाचद ने सारोला मे ब्रह्मजी शिवसागर जी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१०५१न. पत्य विचार  $\times$  । पत्रतः ६ । प्रा॰  $-\frac{1}{4}\times \frac{1}{4}$  इचा । भाषा-हिन्दी । विषय- स्कुट । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं॰ १४६–२७५ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर स्थानाल जेपरागामिह (टोक) ।

विशेष-वार्टस परीपह पार्श्वपूरामा 'भूधर कृत' में से और है।

१०५१६. पाकजास्त्र—  $\times$  । पत्रस्थ १८। का० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ १३ ६ वा भाषा-सस्कृत । विषय-पाकशास्त्र । रुकाल  $\times$  । ते०काल स० १९१६ चैत्र सुदी १ सोमवार । पूर्ण बेष्ट्रनस० १ । प्रास्ति स्थान—भ० दि० जैन मंदिर अजमेर ।

१०५२०. पाकावली  $\times$  । पत्रसक् २६। आव ११ × ४६ खा। भाषा-सस्कृत। विषय-पाक णास्त्र। रक्काल  $\times$ । लेक्काल सक् १७४१ फाल्गुए। जुक्ला ६। वेष्ट्रसंक ३४१। प्राप्ति स्थान— दिक जैन सन्दिर लक्कर, जयपुर।

१०५२१. पाण्डव चिन्निका—स्वरूपदासा। पत्र स०६२। ब्रा०११रॄँ ४५ इ.च.। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-वैदिक माहित्य। र०काल ४ । ते०काल स०१६०६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण। वेकनस०४२२। प्राप्ति स्थान—स०दि० जैन मंदिर अवसेर।

१०५२२. पाण्डवपुरारा  $-\times$ । पत्रसं० ३४६। प्रा० ११ $\frac{3}{6}$  $\times$ ४ इथा । भाषा-सस्कृत। विषय-पुरारा। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन स० ४६। प्राप्ति स्थान -भ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

१०५२३. पुष्यपुरुष नामाविल — ४ । पत्रस० २ । मा० १०४५ ई. इ.च । भाषा - सस्हत । विषय - स्मुट । र०काल ४ । ले०काल सं० १८०१ माघ विदि ७ । पूर्ण । वेष्टन स० १२०६ । प्रास्ति स्थान — म० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

विशेष--प॰ देव कृष्ण ने धजयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी।

१०५२४. पुष्पाह मंत्र— $\times$ । पत्रसं० १। मा० ११ $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इ.स.। माषा-संस्कृत। विषय-वैदिक साहित्य। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन स०४२३। **प्राप्ति स्थान**— भ०दि० जैन मन्दिर फलभेर।

१०५२५. योसहरास-जाननुष्या । गनसं० - । ग्रा० १० है ४४ है इस । भाषा-हिन्दी य० । विषय-कथा काव्य । र०काल ४ । सै॰काल सं० १८०६ । पूर्ण । वेष्टन सं० १६४-७२ । प्रास्ति स्थान दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हंगरपुर । **१०५२६. प्रतिसं० २** । पत्रसं० ५ । घा० ११ ई. ४.६ इच्च । ले०काल ४ । पूर्णं । वेष्टन स० २८७-१११ । प्राप्ति, स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का हुंगरपुर ।

**१०५२७. प्रजूरां गायाना झयं** —  $\times$  । जनस**० ६०**। झा० ६ $\times$ ४ $\frac{1}{2}$  इस । भाषा-प्राकृत हिन्दी । विषय-मुनापित । र०काल  $\times$  । से०काल स० १७६८ । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ३४६-१३२ । **प्राप्ति** स्थास—दि० जैन सन्दिर कोटडियों का हु गण्डर '

**१०५२ स. प्रजाबरूलरोय** —  $\times$  । पत्रस्व २ । प्राप्त १० $\times$ ४ इ.च । भाषा –सस्कृत । विषय — काव्य । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । वेष्टन स० ७३२ । प्रपूर्ण । भ्रास्ति स्थान –दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर (जयपूर) ।

१०५२६. प्रतिमा बहुत्तरी—कानतराय । पत्रसः ३ । आ ० १२ $\times$ ५ दश्व । भाषा-हिन्दी प०। विषय-स्तवन । र०काल स० १७८१ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स०४१-१४५ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर नैमिनाय टोडारायसिह (टोक) ।

विशेष --- ग्रन्तिम ----

दिल्ली तन्त्रत बखत परकास, सत्रीमै इक्यासी वास ।

जेठ सकल जगचन्द उदीत, द्यानत प्रगट्यो प्रतिमा जोत ।।७१॥

१०**५३०. प्रत्यान पूर्वालपूठ—** × । पत्रस० ५४ । भाषा-प्राकृत । वेषय-विविध । र०काल × । ने**०का**ल × । पूर्ण । वेष्टुन स० ६३३ । **प्राप्तिः स्थान**—दि० जैन मस्दिर मरतपुर ।

१०५३१. प्रयोध चिन्न्नका – बैजल सूपति । पत्रस० २३ । घा० ११ ४५ हे दश । साया-सन्द्रत । विषय-व्यावरणा । र०काल ४ । बैठकाल ४ । पूर्ण । बेठुन स० १३१४ । प्राप्तिः, स्थान-म० दि० जैन पीटर प्रवर्षन ।

**१०५३२. प्रतिसं० २** । पत्रस० ३१ । मा० १४६ इ.च. । ले० काल स० १६४३ फागुण बुदी ६ सोमवार । पूर्ण । बेष्टन सं० १२**१ । प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक ।

१०५३३. प्रतिसं० ३ । पत्रस० ३१ । घा० ११ ४ ४. इ.ख । ले० काल 💢 । पूर्ण । बेष्टन स० ४६ । प्राप्तिः स्थान—वि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी, ब्रुटी ।

१०५३४. प्रबोध चितामिएा — जयशेखर सूरि । पत्रसः० ४-४०। प्रा०१०१४४६ दश्च । विषय-विविध । र०काल ४ । ते० काल स०१७२० चेत सुरी १२ । प्रपूर्ण । वेष्टन स०७१०। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर सण्कर (जयपुर) ।

१०५३५. प्रशस्ति काशिका — त्रिपाठी बालकृष्णः। पत्रसं० १८ः। ग्रा०  $\mathbb{E}_q^2 \times \mathbb{F}^{\infty}$ । भाषा –संस्कृतः। विषयः -स्कृत लेखतः विषिः। र०कालः  $\times$ । ले० कालः स० १८४१ बैशालः सुदी २। पूर्णः। बेहुतः सं०७१। प्राप्तिः स्थानः —दि० जैन पार्श्वनाय मन्दिर जीगानः बूदी।

१०५३६. प्रस्तुतालंकार—imes । पत्रस $\circ$  ३। प्राधा–सस्क्रत । विषय–विविध । र०काल imes । तुर्ण । बेष्टन नं $\circ$  ६६०। **प्राप्ति स्थान**—दि $\circ$  जैन पद्मावसी मन्दिर भरतपुर ।

विशेष---प्रशस्ति में प्रयोग होने वाले धलंकारों का वर्णन है।

१०५३७. प्रस्ताविक स्लोक —  $\times$  । पास० १-७ । प्रा० १०१  $\times$  ५ दख । भाषा-सस्कृत । विषय-मुभाषित । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । सपूर्ण । वेष्ट्रन स० ७२३ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्ष्कर (जयपुर) ।

१०५३ स. प्रतिसंट २ । पत्रस० १- ⊏ । आ० १० ४ ५ ई दश्व । ले० काल 🗴 । अपूर्य । बेष्टन स० ७३० । प्राप्ति स्थान---दि० जैन मन्दिर लक्कर (जयपुर) ।

१०५३६. प्रतिसं० ३ । पत्रस० १-३३ । बा० १०३४ ४ इश्व । ले० काल 🗴 । बपूर्ण । बेष्टन मं० ७३१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर (जयपुर) ।

विशेष -- कविल मग्रह भी है।

**१०५४० प्रासाद बल्लम— मंद्रन** । पत्रस०४०। ब्रा० ६२४७ **दुख । भाषा-सस्कृत ।** विषय-जिल्ला जास्त्र । २०काल ४ । ले० काल स० १६४३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२४१ **। प्राप्ति स्थान—** रि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वरायुर ।

द्मन्तिः।—इति श्री गृत्रधारमङ्गतिरचिने वास्तुशास्त्रो प्रासादमङ्ग साधारण् श्रष्टमोध्याय ।। इति श्री प्रासाद वल्लभ ग्रथ संपूर्णा । ङ्गारपुर मे प्रतिचिति दुई थी ।

१०५४१ प्रिया प्रकरन— × । पत्रम० १७-७६। भाषा-प्राकृत । विषय-विविध । र०काल × । ते० काल म० १८७६ । प्रपूर्ण । वेष्टुन म० १६७ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती मन्दिर भरनपुर ।

१०५४२. प्रेमपत्रिका दूहा— $\times$ । पत्रस० २ । ब्रा० १० $\times$ ४६ इचा भाषा-हिन्दी। विषय-विविध । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्टन स० १३६। प्राप्ति स्थान—सण्डेलवाल दि० जैन मन्दिर उदयपुर।

**१०५४३. प्रीतिकर चरित्र** — ४ । पत्रसं०४६ । ज्ञा० १२४५२ इ.ख.। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। २०काल स०१७२१ । ले० काल स०१६४३ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०५३ । **श्राप्ति स्थान** — रि० जैन पचायनी मन्दिर कामा।

१०५४४. फुटकर ग्रन्थ—× । पत्रसं∘ १ । भाषा-कर्णाटी । बेष्टन सं० २१०/६५६ । प्रास्ति स्थान---दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--करण्टि भाषा में कुछ लिया है। लिपि नागरी है।

**विशेष**—हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

१०४४६. बराजारा गोत-कुमुबचन्त्र सूरि। पत्रसः २। प्राः ६४४ हे इश्वः। माषा-हिन्दी (पदा) विषय-रूपक काव्यः। र०काल ४। ते०कान ४। पूर्णः। बेष्टन सं० ६६। प्रास्ति-स्थान-दि० जैन मंदिर लण्डेलवाल उरपपुरः। १०५४७. बारहमासा— $\times$  । पत्रसं०१। घा०१० $\frac{2}{X}$ ४६वा। भाषा-िहत्दी (पष्ट)। विषय—िद्वरह नर्गंत । रकाल x । सं०काम x । पूर्णं। वेष्टन सं०१०। प्राप्ति स्थान—िद० जैन सर्वेदाल मंदिर उदयपर।

े १०४४८. बिहारीबास प्रश्नोत्तर— × । पत्रसं० १ । ग्रा० १४४३ इख । भाषा—हिन्दी । विषय—विविध । र॰काल × । से॰काल सं० १७६० मगसिर मुदी ४ । पूर्ण । से॰काल १२४। प्राप्ति स्थान— दि० जैन मन्दिर भादवा ।

विशेष --- साह दीपचन्द के पठनाथं प्रतिलिपि हुई थी।

**१०५४६. शहा बेवलं पुरारा**—× । पत्रस॰ १५ । झा॰ १र्ट्रे×६ इच । भाषा —सस्कृत । विषय —वैदिक साहित्य । र०काल —× । से०काल —× । पूर्ण । वेष्ठनसं० २०७ । **प्राप्ति स्यान**— वि० जैन मंदिर प्राप्तनन्दन स्वामी, इ'दी ।

इति श्री बहार्ववर्त पुरासे आवसा कृष्णपक्षे कामिका नाम महातम्य ।

१०४४०. ब्रह्मसूत्र— ×ापत्रसं० ७। ब्रा० १०४४ है इचा गावा-सस्कृत । विषय -वैदिक साहित्य । रक्काल × । से०काल × १ पूर्ण । बेष्टन स० १००१ । **प्राप्ति स्थान**—अ० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

१०५५१. मक्तामर पूजा विधान भीभूषरा। जनस०१४। प्रा०६३ ४६३ इन्छ। माषा-संस्कृत। विधय-पूजा। रुकास ४। ले०काल स०१८६५ कागुण मुदी १। पूर्ण। वेष्ट्रन स०८४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्थनाथ इन्दरगढ कोटा।

विशेष—भीलवाडा में चि० सेवाराम बथैरवाल दूधारा वाले ने पुस्तक उतारी प० ऋषमदास जी वयेरवाल गोत ठोल्यामाले गांव मुंकोम २० तुंगीगिरि मे प्रतिलिपि हुई थी।

१०५५२. सक्तासर साचा—हेसराज । पत्रस० ३६। घा० ११५६) इन्छ । भाषा-हिन्दी पट विषय स्तोत्र । र० काल सं० १७०६ माघ मुटी ६। ले०काल सं० १८८३ फागुरा सुदी ६। दूर्ण। बेष्टन सं० ७३। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर बयाना ।

विशेष-- ग्रमीचन्द पाटनी ने प्रतिलिपि की थी।

१०५५२. सर्गृहिर—सर्गृहिर । पत्रस०५७ । द्वा०१० $\frac{1}{2}$   $\times$ ४ $\frac{3}{2}$ दख । मावा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल  $\times$  । ते० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ४६१ । प्राधित स्थान —दि० जैन मंदिर लक्कर अवसर ।

विशेष--प्रति टिप्पगी सहित है।

१०५५५ प्रतिसं० २ । पत्रसं० १३ । आ० १० $\frac{1}{4}$  $\times$ ५ इन्छ । ले०काल  $\times$ । वेष्टन सं $^{1}$  $^{3}$ ६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१०**४४५. प्रतिसं**० ३ । पत्र सं० ७० । प्रा० १००ुँ×४२ ॄै इला । ले०काल सं० १८६७ कॉरिक बुदी ४ । बेप्टन सं० ४४६ । प्राप्ति **स्थान**—दि० जैन सन्दिर सक्कर जयपुर ।

विशेष - लिपिकार -चिरंजीव जैकृष्ण । प्रति सटीक है ।

१०४४६. मलेबावनी—विनयमेरु । पत्र स० ५ । ग्रा० १०४४ इखा । भाषा -हिन्दी (पष्य)। विषय-सुमापित । र०काल ४ । ले०काल स० १६६४ माह सुदी ७ । पूर्स । वेष्टन सं० ३५१ । प्रास्ति स्थान विज्जैन मंदिर दवलाना बृदी ।

**१०५५७. मागवत**—  $\times$  । पत्र स॰ ६। घा० ६ $\times$ ३ इ.स. । मागा-सस्कृत । विषय-पुराहा । र॰ काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$ । घ्रपूर्ण । वेष्टन स॰ २६३ । **प्राप्ति स्थान**—सभवनाय दि॰ जैन मदिर उदयपुर ।

१०५५०. सगवद् गीता— $\times$ । पत्रस॰ ६०। ग्रा॰ ६ $\frac{1}{2}$  $\times$ ४ इ च । माधा-संस्कृत । विषय-धर्म । र०काल  $\times$  । ले०काल स॰ १७२१। भादवा बुदी ६ । पूर्ण । बेष्टन सं॰ ५२ । प्राप्ति स्थान —िद॰ जैन मदिर दबनाना (ब्रादी)

विशेष --मोहनदास नागजी ने प्रतिलिपि की थी।

**१०५५६. सगवद् गीता**— $\times$ । पत्रसन् ६०। ब्रा० ५ $\frac{1}{2}$  $\times$  ३ $\frac{1}{2}$ ६ खा। ल० काल  $\times$ । पूर्ण । वेकृतसं० १०४४। **प्राप्ति स्थान** — भ० दि० जैन मदिर ब्रजनेर ।

१०४६० सावनासार संग्रह (चारित्रसार)—चामुं डरायः। पत्रस $\circ$  ६६। मा $\circ$  १२४४ स्व। भाषा-सङ्कता विषय-चारित १० तथास  $\times$ । ते $\circ$ कास  $\times$ । पूर्णः। बेष्टनसं $\circ$  २६४। प्राप्ति स्थान-पि $\circ$  जैन मिटिर दीशनजी कामा।

१०५६१. भावशतक — नागराज । पत्रसं० २०। प्रा० ११४५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-भूगार । र०काल ४ । ते०काल स०१६५३ भादवा बुदी १३। पूर्ण । वेष्टनसं० ५६०। प्राप्ति स्थान----दि० जैन मंदिर लक्कर जयपुर ।

१०५६२. माषामूबरा-भ० जसवन्तीसह । पत्रसः ११। म्रा० ११४४ । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षरा येष । र०काल × । ले०काल सं० १८४३ । बेष्टनसं० ६०२ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१०५६३. भुवनहार —  $\times$ । पत्रस० १४-११६ । छा० १ $\times$ ४  $^1$  इत्त्र । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । र० काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० ७६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सदिर बोरसली कोटा ।

१०५६४. मूचर शतक — मूखरदास । पत्रसं०६। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय-सुभाषित। र०काल  $\times$ । पूर्ण। वेष्टन सं०२००। प्राप्ति स्थान — दि० जैन पत्रावती मदिर भरतपुर।

विशेष - ६७ पद्य हैं। इसका दूसरा नाम जैन शतक भी है।

१०५६५. मृत्यु सहोस्सव — सदाभुख कासलीवाल । पत्रस० २६ । घा० १२६४७ इन्त । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-मध्यारम । र०काल सं० १६६८ । ले०काल सं० १६४५ । पूर्णे । बेहन सं० ४७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० बैन मंदिर श्री महावीर दूंदी । **१०५६६. प्रति सं०२।** पत्रसं०११ । घा० १२imes६५ । घत्रा । ले०काल imes । पूर्णः । केकुन सं०२१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सम्बेतनाल मदिर उदयपुर ।

**१०५६७. प्रति सं०३।** ले०काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन सं०४६। **प्राप्ति स्थान** — दि० प्रैन पचायती मदिर नरतपुर।

**१०५६** द्र. प्रतिसं**० ४ ।** पत्रस० १४ । स्ना०  $- \times %$  दे द्रश्च । ले०काल स० १८४८ माघ बुदी १४ । पूर्ण । बेठून स० १२८ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भादवा (राज०)

१०५६६. प्रतिसं० ४ । पत्रसः० १२ । सा० १२×५ है इश्वः । ले०काल × । पूर्णः । बेष्टन सं० २३ । प्राप्ति स्थान—(द० जैन अप्रवाल मन्दिर उदयपुर ।

१०५७०. प्रतिसं० ६ । पत्रस० ५३ । बा॰ ११×६० डब । ले॰कान स० १६६५ माघ वृती ६ । बेहुन सं० ११६ । प्राप्ति स्थान—दि॰ जैन मन्दिर फतेहपुर शेलाबाटी (सीकर)

विशेष-रत्नकरण्ड श्रावकाचार में से है।

१०५७१. प्रतिसं० ७ । पत्रस० २१ । ले॰काल 🗴 । पूर्णे । वेष्टनस० १६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पचायती मन्दिर भरतपुर ।

**१०५७२. प्रतिसं∘ म**ापत्रस॰ ६ । झा०१४८७} दचा। ले० काल म०११७६ । पूर्गा वेकुत सं∘ म४ । **प्राप्ति स्थान** —दि० जैन मन्दिर पार्खनाथ चौगान, यूदी।

१०५७३. प्रतिसं० ६ । पत्रसं० ६ । आर० १०४५ इखा । ले०काल 🗴 । पूर्ण । बेठन स० ६८ । प्रास्ति स्थान---दि० जन मन्दिर पार्थनाथ चौगान, बूंदी ।

**१०५७४.** पत्र सं० १० । झा० ११ $\times$ ४ है इन्छ । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २४२ । **प्राप्ति** स्थान—दि० जैन मन्दिर पाण्येनाय चीगान बुदी ।

१०५७५. मृत्यु महोत्सव $-\times$ । पत्रस०२। धा० १२ $\times$ ४ दश्च। माषा-सस्कृत। विषय-ग्रध्यातम। र०काल $\times$ । लेकाल $\times$ । पूर्णं। बेष्टन म०३६३/४७१। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन सभव-नाय मदिर उदयपर।

१०५७७. सर्पकरहा जयमान—  $\times$ । पत्रस० ३। म्रा० ११३ $\times$ ५ देखा भाषाहिन्ती। विषय-रूपक काव्य । र०कान  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्ण । बेष्ट्रन स०१७६ । प्राप्ति स्थान—
भ०६० जैन मन्दिर प्रजमेर।

विशेष ---मनरूपी करथा (चर्ला) की जयमाल गुरा वर्णन किया है।

१०५७ मर्बान्ध प्रबोध---× । पत्र सं० २६१ । माया-सस्कृत । विषय-धर्म । र०काल ४ । ले॰काल सं० १६७६ । पूर्ण । बेष्टन स॰ ६०० । प्राप्तिः स्थान -- दि० जैन पत्रावती मन्दिर भरतपुर । १०४७६. मनमोरहा गीत - हर्षकीर्ति । पत्रस् १ । द्वाः १०X ४  $\xi$  इच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र०काल X । ल०काल X । पूर्ण । वेष्टन स० २२४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर दबलाना (बुडी)

विशेष - म्हारा रे मन मोरडा तू तो उडि उडि गिरनार जाइ", यह गीत के प्रथम पक्ति है।

१०५६० सहादेव पावंती संबाद $-\times$ । पत्रस॰ १-२६। ग्रा॰ १२ $^1_2\times$ ६ इखा। प्राचा-हिन्दी (गवा)। विषय-वैदिक-साहित्य (सवाद)। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । प्रपूर्ण विष्टन स॰ २२। प्राप्ति स्थान -वि॰ जैन मन्दिर राजमहल (टोंक)

विशेष -- कई रोगों की ग्रीपवियों का भी वर्णन है।

**१०५८ १. महासती सज्काय** —  $\times$  । पत्रस० १ । या० १० $\times$ ५ इन्त । भाषा-हिन्दी ग० । विषय-विविध । र०काल  $\times$  । ने०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । **प्राप्तिः स्थान** —दि० जैन मन्दिर नेमिनाथ टोडाग्यांसह (टोक)

विशेष---सियों के नाम दियेहैं।

१०५६२ <mark>सानतुंग मानवती चौपई —रूपविजय । पत्रस० ३१। प्रापा-हिन्दी।विषय-</mark> कया। र०काल  $\times$ । वे $\bullet$ काल  $\times$ । पूर्एं। बेट्टन स०६५६। प्रा<mark>प्तिः स्थान</mark>—दि० जैन मन्दिर पचायती मन्दिर सरनपुर।

१०४८३. मिन्छा दुक्कड़ —  $\times$  । पत्रसः १ । ग्रा० १२ $\times$ ५ इश्र । मापा-हिन्दी । विवय- धर्म । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेट्टन सः० १५ $\times$ /४२२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन समय-नाय मन्दिर उदयपुर ।

१०५८४ सीन एकादशी ब्याख्यान—पत्र म० २ । भाषा-सम्कृत । विषय-कथा। र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वेष्टुनसं० ७३४। प्राप्ति स्थान—दि० जैन पंचायती संदिर भरतपुर ।

**१०५८५. यत्याचार** —  $\times$ । पत्र स०२। आ० १२ $\times$ ५ इश्वः। भाषा-सस्कृत। विषय-मृति प्राचार धमं। र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । पूर्णः। वेष्टनसं०२६६/१५४। प्रास्ति स्थान — सभवनाथ दि० जैन मदिर उदयपुर।

१०५६६ रस्तपरीक्षा —  $\times$  । पत्र त० १-२५ । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षम् प्रंथ । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टनसं०६१४ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०५८७, रयस्पासारव चिनिका—जयचन्द छावडा । पत्र सं० ७ । प्रा० ११४८ इस्त । सावा-राजस्थानी (गर्य) । विषय-प्राचार सास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० १०२ । प्राप्ति स्थान — भद्रारकीय दि० जैन मदिर धजमेर ।

१०५८ स्त्र रिवबार कथा एवं पूजा—पत्रसं० म । घा० ११ $\times$ ५ $\frac{1}{2}$  इन्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टन सं० १६२ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर राजमहल टोंक ।

१०५८६. राजुल छलीसी--बालमुकन्द । पत्र सं० ८ । भाषा-हिन्दी । विवय-वियोग श्रु गार । र०काल × । ले•काल × । पूर्ण । बेष्ट्रन सं० ४६० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर भरतपूर ।

१०५६०. राजूल पच्चोसी---× । पत्रस०३। ग्रा०६×५ इन्त्र। भाषा-हिन्दी। विषय-वियोग शुगार । र० काल × । ले • काल × । अपूर्ण । वेष्टन स० १४१ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर राजमहल टोक।

१०५६१. राजस पच्चीसी---× । पत्रस०६। ग्रा०६×६ इश्व । भाषा-हिन्दी । विषय-वियोग शृगार । र० काल × । ले • काल × । पूर्ण । वेप्टन स० ७०-४२ । प्राप्ति स्थान- दि० जैन मन्दिर कोटडियो का द्वगरपूर।

विशेष- निम्न पाठ और है:---

मुनीश्वर जयमाल भूधरदास कृत तथा चौबीस नीर्थंकर स्तुति ।

१०५६२. राजुल पत्रिका--सोयकिव । पत्रस० १। भाषा-हिन्दी । विषय-पत्र-लेलन (फटकर) । र०काल 🔀 । ले० काल 🔀 । पूर्णा । बेष्टन स ४६/६३६ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन सभव नाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष--

प्रारम्म---

स्वस्ति श्री पद्दपति पाय निम गढ गिरनार सुठायरे सामलिया । लखित राजन राग बीनती सदेसड परिशामरे पीयारा 11811 एक बार अबोरे मन्दिर मा हरड जिम तलिय मन हेजरे सामलिया । तम विन सना मन्दिर मालिया सनी राजुल मेजरे पीयारा ॥२॥ धत्र कुणल ते मुजीना ध्यान की तुम कुशल नित मेव रे समलिया। चरगानी चाकरी चाह ताहरी दरमन दिखबह देव पीयारा ।३॥

ग्रन्तिम--

वंगीमालग् करी जेवा लही ढील भरो रहि कामरे। पाणि नखड मड पीउड़ा पातली दोहिलो बिरह बिरायरे पीयारारे ॥२०॥ माह वदि सातिम दिन इति मगल लेख लिख्यौ लख बोलरे सामलिया । जस मोम कवि सीस माहि प्रीति राजल मनर ग रोलरे पीयारा ॥२१॥ पुज्यारात्य तुमे प्रारिगुसरु श्री यद्मति चरगानुरे सामनिया । राजुल पतिया पाठवी प्रेम की गढ गिरनाप मुठामरे पीयारा ॥२२॥ एक बार धावोरे मन्दिर माहरे ।।

१०४६३. रामजस-केसराज। पत्र स० २४२। घा० १० x ४३ इन्छ। भाषा-हिन्दी। पद्य)। विषय-विविध । र०काल स० १६८० धासोज वदी १३ । ले•काल स० १८७४ धाषाङ सुदी ५ । पूर्ण । देष्टनसं • ८१ । प्राप्ति स्थान-दि • जैन मदिर दबलाना बूंबी ।

विशेष-इसका नाम रामरस भी दिया है। य तिम-श्री राम रसौदिकारे संपूर्ण ।

१०५६४. रावसा परस्त्री सेवन व्यसन कथा— $\times$ । पत्रस० २४। म्रा० ११ $\frac{1}{5}$  $\times$ ६ इश्व । माषा—सरकृत । विषय-कथा । २०कान  $\times$ । ते०कान  $\times$ । मपूर्ण । वेष्टन सं० ३२०/६३। प्राप्ति स्थान—पि० जैन सम्बनाथ मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - ६५७ श्लोको से ग्रागे नही है।

१०४६४ स्पकमाला बालाबोध—रत्नरंगोपाच्याय । पत्रस० १०। ग्रा० १०३ ४ ४} इन्द्र । मापा-हिन्दी । विषय-विविध । र०काल × । ले०काल सं० १६४१ । पूर्ण । बेप्टन सं० ७३४ । प्रास्ति स्थान—ग० दि० जैन मन्दिर प्रजमेर ।

#### विशेष---

स० १६५१ वर्षे श्रावणः बृदी ११ दिने गुरुवारे श्री मुलतारामध्ये प० श्री र गबर्द्धन गरिष्वपासा भिष्य प० थिरउजस्म भिष्येगा निक्षतो बालावबोधः ।

१०५६६, लिथियस्त्रय टीका—ग्रमयचन्द्र सूरि।पत्रमः २६। प्राः०१४४५६ दश्वः। भाषा-मः १३। (पिय-व्याकरणः। र०कालः ४ । लेक्कालः ४ । पूर्णः। वेष्ट्रनः स०१६६ । प्रास्तिः स्थान—रिक्जन प्रयान मन्दर उदयपुर।

१०५६७. लघुक्षेत्र समास वृत्ति — रत्नशेखर । पत्र म॰ २६ । प्रा॰ १० $\frac{1}{4} \times \frac{1}{5}$  इत्त्व । भाषा — सहकृत । विषय-लोक विज्ञात । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स॰ १०६ । प्राप्ति स्थान — दि॰ जैन मन्दिर लक्कर जयपुर ।

१०५६८. लिध्यसार माषा—पं० टोडरमल । पत्रस० १४ । म्रा० १४—७ इश्व । भाषा— हिन्सी (गण्य) । विषय-मिद्रात । र०काल  $\times$  ।क्षे०काल  $\times$ । क्ष्पूर्ण । वेष्ट्रन सं० २१८ । **प्राप्ति स्थान**— दि० जैन क्रयंवाल मन्दिर खरवपुर ।

१०४६६. लोलावती—भास्कराचार्य। पत्रस० २१। छा० ११४४ इच्चा भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष-पणित । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वेष्टुन स०१०७ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जबपुर ।

१०६००. प्रतिसं० २ । पत्रस० १० । झा०१०१ँ ४४ है इ.ख.। ले०काल 🗴 । झपूर्एा। बेहन स०१८ । प्राप्ति स्थान—उपरोक्त मन्दिर ।

विशेष---१० से भ्रागे के पत्र नहीं है।

**१०६०१ लीलावती**—  $\times$  । पत्र सं० ३३। मा० २ $\frac{1}{2}$   $\times$  ४ इत्त्र । भाषा-तरहत । विषय- अ्योतिष-गिर्मत । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । बेष्टन स० स $\times$  । **प्राप्ति स्थान**— म० दि० जैन मिस्ट प्रजेर ।

१०६०२. सीलावती— × । पत्रसं० २० । सा०१×५ इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय— ज्योतिष-गरिएत । र०काल × । ले०काल × । सपूर्ण । वेष्टन सं० ४७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदसपुर ।

१०६०३. लीलावती— $\times$ । पत्रसं॰ ६७। मा॰ १० $_2^*$  $\times$ ४ इच । माषा-सस्कृत । विषयज्योतिष-गीततः । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । धपूर्णं । वेष्टन सं॰ २३४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन
पाववैनाथ मन्दिर इन्दरगढ (कोटा)

१०६०४. लीलावती मावा---लालबन्द सूरि । पत्रस० २८ । झा० ११ ४ ४ ई. इ.च. । माया--हिन्दी (पछ) । विषय-ज्योतिय-गरिगत । र०काल स० १७३६ अघाड बुदी ४ । ले०काल स० १६०१ । पूर्ण । वैष्टत स० ६३ । **प्राप्ति स्थान**--- दि० जैन श्रोटा मन्दिर (वयाना)

विशेष-प्रथ का बादि अन्त भाग निम्न प्रकार है-

#### प्रारम्म -

शोभित सिन्दूर पूर गण सीस नीकद ।
नृर एक मुदर विराज भाल चन्द खु
मूर कोरि कर जोरि श्रमिमान दूरि छोरि
प्रसामत जाके पद पक्ज धानरु ॥
गौरीपुत मेदें जोड मन किस्सी,
पार्व रिद्ध बृद्धि सिंद्ध होत है सम्बंडब् ।
विश्व निकारित मेद को कुंपुशर्
गिम गामपति देव जय जय मुस्तवद्व ॥१॥

### वोहा

शमापति देव सनाय के मुसरि बात मुरसति भाषा लीलावनी करू चतुर मुग्गो इक चिन्त शराश श्री भास्कराचार्य कृत संस्कृत भाषा सप्तमती ॥ लीलावनी नाम इस ऊवरि सिद्ध ॥३॥

#### ग्रन्तिम पाठ--

सपुरमा लीलावनी भाषा में मल रीति। ज्युं की घि जिम्मदिन हुई निको कहें घरि प्रीति ॥ सतरामें छत्तीम समें बंदि धपात ब्रखान । पाचम निथि बधवार दिन ग्रंथ संपरमा जान ।। गुरु भी चडरासी गच्छे गच्छ खरतर सुबदीत। महिमङल मोटा मन्ष्य पूरी कर प्रतीत ।।११।। गछनायक गुरावत धनि प्रकट पुन्य संक्र्र। सोभागी सुन्दर वरण श्री जिनचंद सुरिंद ॥१२॥ मेवग तासुसोभागनिधि लेग साख सुखकार। शांति हुए वाचक भन्यो जस सीभाग्य ध्रपार ।।१३।। शिएय तास सविनीत मनि नालवन्द इस नाम । गरु प्रसाद कीथी भली य य मण्या ग्रामिराम ॥१४॥ मला ग्रास्त्र यदापि भला तो प्रति जिल जल्हास । गरिगत शास्त्र धूरि अन्ति लगि कीयो विशेष अभ्याम ।।१५।। बीकानेर बड़ो सहर चिह्न दिस में प्रसिद्ध । घरघर कवन घन प्रवल घरघर ऋदि समदि ।।१६।

घरघर मृन्दर नारि गुन किगमिंग कवन देह ।
फोकल प्रका कामनी नित नित वहती नेह ।।१७॥
गडमढ धिर देहर देवत हरवन नेन ।
गर्क कि घोषम ऐसी कहे स्वर्ण कोम मनु ऐस ।।१६॥
गर्क तिहा राजा वड़ी श्री प्रतोपसिंह भूप ।
गर्क तिहा राजा वड़ी श्री प्रतोपसिंह भूप ।
गर्द वज नृप करग् मुत मृन्दर रूप प्रनृप ।।१६॥
जैतसात जामे वसै सात वबा श्रीकार ।
कपुवय में विद्यासिंग कियों महान प्रस्थास ।।२०॥
सात्मती लीनावती मरी बहुकीश प्रस्थास ।।२॥
मानवाद मु विनय कार कीष प्रसी प्ररास ।।२१॥
भागा श्रीकावती करी श्र व गुगम ज्युं होर ।
गत्म सेम में विद्यार भागो कुर सह कोड़ ॥
प्रभागमें मानह जुड़ायों किर ठीक ।
मृन्नावत निजयों कहों न ब्र व स्तीक ।।२२॥

इति लीलावती भाषा लालचन्द सुरि कृत सपूर्ण ।

सबत् १६०१ मिनी ग्रमाड बुंदी ११ मगलवारे जिसतं ध्रावण पारणी उकार नलपुरमध्ये निक्की हैं। ध्रावण उदासी सोगामी वासी जेंपुर भाई के नन्दराम वाधनार्थ। ध्रावक गोत्र वाकलीवाल मूलाजी कर्नी-राम बोराचन्द्र विस्ताद दीवी।

१०६०५. लीलावती टीका—देवजराम कृष्णा। पत्रस० १४८ । ग्रा० १०४४ हुन्न। भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योनिष, गणित । र० काल ४ । ले॰काल स०१८३७ प्रयाड बुदी ४ । पूर्णा। वेष्टनमं०१२५। प्राप्ति स्थान—म०दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

विशेष--सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१०६०**६, प्रतिसं० २ ।** पत्रस० १०६ । मा० १४४ इ.च । **से०काल** स० १६०१ (शकस०) । पूर्णा वेष्टन सं० १६८ । **प्राप्ति स्थान—** दि० जैन स्रयवाल सन्दिर उदसपूर ।

विशेष — इति श्री नृसिंह देण्जात्मज लक्ष्मण देवज सुत सिद्धात वि०देवज रामकृष्णेन विराचन स्रोलावती वर्ति ।

**१०६०७, लेख पद्धति**—  $\times$  । पत्रसु०७। बा० ११ $\frac{1}{7}$   $\times Y_{7}^{2}$  इख । बाधा-संस्कृत । बिधय-विविध । २० कात  $\times$  । लेक्कान  $\times$  । पूर्ण । बेष्टुन सं० १३६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसतो कोटा ।

**विशेष**— पत्र लेखन विधि दी हुई है ।

१०६०६- **वृषमधेव गीत- बहामोहन ।** पत्रस० २ । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र०काल×। ले०काल × । पूर्ण । वेष्टन स० ६९/४७८ **प्राप्ति स्थान**-दि० जॅन समबनाव मन्दिर उदयपुर ।

विशेष - अ निम पाठ निम्न प्रकार है-

बारि वारि विधान हारे संसार सागर तारीएं। पुनि वर्मभूषरा पद पकज प्ररामी करिमोहन श्रह्मवारिएं।

**१०६१०. वच्य उत्पत्ति वर्**षान—× । पत्रस० ३ । माधा-संस्कृत । विषय-विविध । र०काल ×। ले०काल×। वेष्टनस० ६१४ । पूर्ण वेष्टन ६१४ । **प्राप्ति स्थान**-दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपर ।

**१०६११. वज्यसूची (उपनिषत्)—श्रीघराचार्य ।** पत्र स $\circ$  ४ । प्रा० ११ x ४ दुख । भाष-सस्कृत । विषय-वैदिक (शास्त्र) । र०काल  $\times$  । ले॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ठन स $\circ$  ४१६, ४०६ । प्राप्ति स्थान—दि $\circ$  जैन सभवनाथ मदिर उदयपुर ।

**१०६१२. वरुए प्रतिष्ठा**— $\times$ । पत्र स०१६। प्रा०१०×४३ इत्व। भाषा-सस्कृत। विषय-विधान। लेक्शल स०१६२४ कॉर्तिक बुदी मा पूर्ण १ वेष्टन स०११०४। प्राप्ति स्थान — भ०दि० जैन मन्दिर प्रजमेर।

**१०६१३. बाकद्वार पिड कथा**— × । पत्रस॰ २१ । मा॰ ६ × ४ ६२४ । भाषा–िहन्दी । विषय-कथा । र• काल × । ले०काल × । पूर्ण । बेष्टनस॰ ३६७ । **प्राप्ति स्थान—** म∘दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**१०६१४. बाजनेय संहिता**— $\times$ । पत्र स०१ से १७। भाषा-सम्कृत। विषय-प्राचार शास्त्र। र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ । प्रपूर्ण। बेष्टत स०७४१। प्राप्ति स्थान —दि० जैन प्रशासती निवर भरतपुर।

**१०६१४. बाजनेय संहिता**— × । पत्रम० ३०६ । माषा-सस्कृत । विषय-प्राचार-नास्त्र । रक्ताल × । लेक्काल म० १६४६ । श्रपूर्ण । वेष्टन म० ७०-७०१ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन प्रचायती मन्दिर भरतपुर ।

विशेष --- बीच २ के बहुत में पत्र नहीं है।

१०६१७. **बास्तुराज—राजसिंह** । पत्रस० ४७ । **धा**० त $\times$ ६६ इश्व । भावा-सस्कृत । विषय-बास्तु गास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल सं० ११५३ । पूर्ण । बेष्ट्रन स० ४४६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर कोटडियो का इंगरपुर ।

मन्तिम—इति श्री वास्}मास्त्रे वास्तुराज सूत्रधार राजसिंह विरचिते शिखर प्रमास कपन नाम दममेष्याय ।।

सवत् १६५३ वर्षे मृगमास मुदी १५ रवे। निस्तित दशोरा क्राह्माण क्रांति व्यास पुरुषोत्तमे हस्ताकरं नघ इंगरपुर मध्ये । **१०६१**तः **वास्तु स्थापन** —  $\times$  । पत्रसं० १८ । मा० ६ $\times$ ४ इःख । भाषा-शस्कृत । विषय-वास्तु वास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेशन २२८/३५६ **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन संभवनाप मन्दिर उदयपुर ।

१०६१६. बास्तु शास्त्र — $\times$ । पत्र सं०१-१७। घा० ६ $\frac{1}{7} \times \frac{1}{3}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-वास्तु शास्त्र । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । घपूर्ण । बेप्टन सं० ७४४ । प्राप्ति स्थान —दि० व्यं न मन्दिर लक्कर जयपूर ।

१०६२०. विजयमद्र क्षेत्रपाल गीत—तः नेमिदास । पत्रसं० १। प्राः १२४४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्टनसं० ३६७/४७३ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन सभवनाथ मन्दिर उदयपुर ।

## विशेष---ग्रन्तिन---

नित नित स्नावि बधावणा चन्द्रनाथ ना भुवन सभार रे। घवल मंगल गाइया गोरडी तहां बरत्यो जय जयकार रे।। इणि परि सगति भनी करो जिम विचन तणु दुख नासि रे। इति नरेन्द्र कीरति चरणे नमी इम बोलि कु० नेमिदास रे।

१०६२१. विदश्य मुखसंडन—धर्मदास । पत्रसं० २२ । ग्रा० ११ $\times$ ५ इन्छ । भाषा-सल्हत । विदय-काव्य । रक्ताल $\times$  । से॰काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्टनसं० १२२१ । प्राप्ति स्थान—स० दि० जैन मन्दिर प्रजनेर ।

विशेष - प्रति टब्बा टीका सहित है।

१०६२२. प्रतिसं० २ । पत्रसं० ४ । घा० ६×४६ इन्तः से०काल × । पूर्णः । बेष्टनसं० ११७ । प्राप्तिकथान— मे० दि० जैन मन्दिर अजमेर ।

**१०६२३. प्रतिसं० ३** । पत्रस० १३ । ले०काल सं० १७४० जेल्ठ सुदी १३ । पूर्ण । **वेष्टनसं०** २ म्ह । **प्राप्ति स्थान**— भ० दि० जैन मन्दिर धजमेर ।

१०६२४, प्रतिसं० ४ । पत्रस० ४२ । आर्थ ६२ ४४३ इ.च.। लेकाल सं०१८०० पीच बुढी ८ । पूर्वा। बेब्रन स०१४२६ । प्राप्ति स्थान — मण्डिक जैन मन्दिर अजमेर ।

१०६२५। विदश्य भुत्समंडन टोका — विनय सागर । पत्रसं० १०८ । घा० १०४४ इच । सावा-संस्कृत । विषय-काव्य । र०काल ४ । से०काल ४ । पूर्ण । वेष्ट्रगसं० २२४ । प्रास्ति स्थान — स० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

## विशेष---टीका काल----

म कर्त्रु रसराकेश वर्षः तेजपुरे वरे । मार्ग शुक्ल तृतीयायां खावेषा विनिर्मिता ॥

इति सरतरागच्छालंकार श्री जिनहुवं सुरि तत् शिष्य श्री विनयसागरसुनि विरोवतायां विदग्ध मुसमंडमालंकारटीकायां शब्दार्थमंदाकित्यां महेलादि प्रदर्शको नाम चतुर्थोच्याय । १०६२६. विद्वजन बोधक—संघी पन्नालाल । पत्र स० १८२। ग्रा० ११३,४७३ इचा। भाषा-हिन्दी गर्छ। विषय-सुमापित । र०काल स० १९३६ माघ सुदी ४। ले०काल सं० १९६७ पौच सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन म० ४६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर पार्यनाख टोडारायसिह (टोक)

१०६२७. बीतराग देव चैरयालय शोभा वर्शन $-\times$ । पत्रस॰ ६। या॰ १२ $\times$ १ इश्व । भाषा-हिन्दी गय । विषय-चैन्य बदना । र०काल  $\times$ । ले० काल  $\times$ 1 पूर्ण । वेष्टनसं॰ ४६६ । प्राप्ति स्थान-दि० जैन सभवनाय मन्दिर उदयपुर ।

विशेष — - द्र० सवराज की पोथी।

१०६२ **म् बेलि काम विडस्बना—समयसुन्दर**। पत्रसं०१। ब्रा० ६२/४४ दुखा । साया—हिन्दी। र०काल ४ । **ते॰काल** । फपूर्णं। विषय—वेलि । वेष्टनसं०७१०। प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर लक्कर अयपुर।

विशेष-वनारसीदास कृत चितामिंग पार्थनाथ भजन भी है। "चितामिंग साचा सालि मेरा"

१०६२६. वैराग्य सांति पर्व (महाभारत) — × । पत्रस ०२-१४ । आ० १ × ४ इन्छ । मावा-संस्कृत । विषय — वैदिक सास्त्र । र०काल × । ले०काल स० १६०४ । प्रपूर्ण । वष्ट्रन स० २३३ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मदिर दवलाला (खंदी) ।

विशेष- लिखी तत् वाडिशी कृप्सपुर नदगाव मध्ये ।

**१०६३०. भूंगार बैराग्य तर्राग्मी—सोमप्रभाषायं** । पत्रस॰ ६ । आग० १२५ूँ ५ थूँ । स्वा भाषा-सन्द्रत । विषय-सुभाषित । र०काल × । के•काल × । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १०२ । प्रास्ति-स्थान—दि० जैन पंचायती मंदिर करोनी ।

विशेष-४७ म्लोक हैं। अकबरा बाद में ऋषि बालबद्र ने प्रतिलिपि की थी।

१०६३१. शंकर पार्वती सवाद — × । पत्रम० ७ । धा० १० × ४० दे इचा । भाषा — सस्हन । विषय — सवाद । र०काल × । ले•काल स० १९३० । पूर्ण । वेष्टन स० २०१ । प्रास्ति स्थान — दि० जैन मदिर राजमहल (टोक) ।

१०६३२. शतरं**ज खेलने की विधि ×**-पत्र स० ७ । भाषा-हिन्दी-सस्कृत । विषय-विविध । र० काल  $\times$  । सेपूर्ण । वेष्टनसं० ७०० । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पदायती भदिर भरतपुर ।

विशेष-४ पत्र नहीं हैं। ७१ दाव दिये हुए है। हाथी, घोड़ा, ऊंट, प्यादा भादि का प्रमाण

दिया हुमा है।

१०६३३. शत्रुजय तीर्थ महास्म्य-धनेश्वर सूरि । पत्रसं० २-२३६ । भाषा-सस्तत । विषय-इतिहास-सन्नुजय तीर्थ का वर्षान है। र०काल X । ले०काल X । प्रपूर्ण । बेष्टनस॰ ४ । प्राप्ति स्थान-दि० जन तेरहत्यी मंदिर बसवा ।

१०६३ ४: शास्त्रभेदप्रकाशः — × । पत्र सं०१७ । सा०११×४ इ.च.। भाषा-सस्तृत । विषय—कोष । र०काल × । ले०काल सं०१६२६ जेष्ठ सुदी१ । पूर्णः। बेष्टन सं०२८८ । प्रास्ति स्थान भ०दि० जैन मन्दिर भन्नेर ।

विशेष---मडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि की भी।

१०६३४. शब्दानुशासन —हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ७ । ग्रा० १० हे×४३ इस्त्र । भाषा-संस्कृत । विषय--व्याकरण । र० कान ४ । ले०काल ४ । ग्रपूर्ण । बेष्टनसं० १०१३ । **प्राप्ति स्थान** — म० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर ।

**१०६३६. प्रतिसं० २** । पत्रस० ४६ । छा० १३ ४ ४३ इला । ले•काल स० १४१४ । पूर्ण । बेष्टनसं० ४२⊏ । प्राप्ति स्थान — भ० दि० जैन मन्दिर ग्रजमेर । प्रति सटीक है ।

विशेष -- प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

संबन् १४१४ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ३ गुरिदिन पुत्रसंसुनकार्त्र वृद्धियोगी श्री हिरु.रथेरोजायत्तने तथ स्वाधिकायपुर पुरवारण थी बहलील साह राज्य प्रवर्तमाने श्री काष्ठामधे साहुरान्व्ये पुष्पार्थ्य सुद्धार श्री काष्ठास्त्र साहुरान्व्ये पुष्पार्थ्य सुद्धार श्री काष्ठास्त्र सुद्धार श्री काष्ठास्त्र सुद्धार श्री व्यवस्त्र देव तथ गुरु आता पुनि श्री धर्मकाददेवात्त्वव्य श्री प्रभावस्त्र तथ्य शिवस्त्र सुद्धार सुद्धार प्रभावस्त्र तथ्य श्री प्रभावस्त्र तथ्य श्री वास्त्र सुद्धार सुद्धार प्रभावस्त्र सिद्धार सुद्धार प्रभावस्त्र सुद्धार सुद्धार प्रभावस्त्र सुद्धार प्रभावस्त्र सुद्धार सुद्ध

१०६३७. शारङ्गधर संहिता—दामोदर । पत्र म० ३१४ । या० ६ $\frac{3}{2}$ ४४ इख । माया—सस्हत । विषय—प्रापुर्वेद । र० काल  $\times$  । लेकाल सं० १६०७ वैशाल सुदी ४ । पूर्ण । वेष्ट्रन सं० ४४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मदिर राजमहल (टोक )।

विशेष--लाल कृष्ण मिश्र ने काशों में प्रतिलिपि की थी।

१०६३ द्र. शील विषये बीर सेन कथा— $\times$ । पत्र स०११ । प्रा० ६ $^2_7 \times Y$  दश्व । भाषा—संस्कृत । विषय —कथा । ले॰काल  $\times$ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०६ द्यापित स्थान —दि० जैन मदिर दबलाना (वंदी) ।

१०६३६, श्रमण् सूत्र माषा— $\times$ ा गत्र म०७। ग्रा०१० $\times$ ७ $\xi$  इला। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धांत । र० काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्टन स० १०। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर बोरसली कोटा।

१०६४०, **षट् कर्म वर्गन**— × । पत्र सं० १०। प्रा० ११×५ इत्व । भाषा— संस्कृत । विषय—वैदिक शास्त्र । र० काल × । नै० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० १३५८ । **प्राप्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर प्रजमेर मण्डार ।

१०६४१. अनुतर्वचमी कथा— धनपाल । पत्र सं०४४ । ब्रा०१०१४३ इ.च. । ब्राया— सपफ्रांश । विषय—कथा । र० काल ४ । ले०काल सं०१५०१ फायुरा सुदी ४ । पूर्णै । बेष्टन स० ६४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन तेरहरांबीम न्दिर दौसा ।

विशेष — लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है। सवत् १५०१ वर्षे फाल्गुन सुदी ४। शुक्र दिने तिजारा

नगर बास्तस्ये श्री मूलसंघे माषुरान्वये पुष्करनाएं श्री सहस्रकीति देवाः तत्पट्टे श्री गुएकीति देवाः तत्पट्टे श्री यश. कीति देवा तत्पट्टे प्रतिष्ठाचार्यं श्री मलयकीति देवाः तेवामान्ताये ।

१०६४२, संस्था शब्द साधिका— $\times$ । पत्र स०२। घा० १० $\times$ ५ इख। भाषा-संस्कृत। विषय—गणित। र०काल  $\times$ । से॰काल  $\times$ ।वेष्टन स०२१६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिदर लक्कर जयपूर।

१०६४३. सकत्य शास्त्र— $\times$  । पत्र स० १२ । द्या० १० $\times$ ४३ इस्त्र । भाषा—सस्त्रत । विषय—वैदिक साहित्य । र०काल  $\times$  । ले०काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० ११०४ । प्राप्ति स्थान— भ० दि० जैन मदिर सजमेर ।

१०६४४. संध्या बंदना— ४ । पत्र सं०४ । घा० ८ ४२३ इ.च.। भाषा — सस्कृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० काल ४ । ले०काल स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन स०१०१८ । प्राप्ति स्थान— म० दि० जैन मन्दिर सजमेर ।

१०६४४, सज्जनस्वत्तं बल्लमः — मस्लिवेस्म । यत्र म०६। द्वा०१० $\times$ ४) द्वा । भागः सस्कृत । विषयः — सुनापित । र०काल  $\times$  । से०काल  $\times$  । पूर्णं । वेष्ट्रन स०२४२ । प्राप्ति स्थान । वि० जैन सन्तिर यस्ताना (ब्रुवी)।

विशेष--मूल के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया है। किन्तु गुजराती मिथित हिन्दी है।

**१०६४६ सत्तरी कमं ग्रन्थ**—×। पत्र स॰ ३६। गाया–प्राकृत । त्रियय-सिद्धान्त । २० काल  $\times$  । के॰काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स॰ ६३२। **प्राप्ति स्थान**—दि॰ जैन पत्राय ने मदिर भरतपुर ।

**१०६४७. सत्तरिरूपठारा**—पत्र स०२ से १२। भाषा —प्राकृत । विषय-सिद्धातः । पञ्जात × । लेञ्कालः × । अपूर्णः । वेष्टुन स० ६४२ । **प्राप्ति स्थान**—विञ्जीत प्रवायती। सदिर सदतपुर ।

**१०६४६ समाचारी** — पत्र म० ३६-६३। भाषा-सस्कृत । विषय-विविधः । र०कालः 🔀 । लेक्काल स० १६२७। अपूर्णः । वेष्ट्रन स० ६२६ । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन पंचायती मन्दिर भरतपुर ।

१०६४**६. प्रतिसं० २** । पत्र स० ११३ । ले॰काल 🗴 । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ६२५ । प्राप्ति – स्थान-डि० जैन प्रवासनी मदिर मन्तपूर ।

१०६५०. सर्वरसी-- $\times$ । पत्र म॰ २६ । धा॰ ६ $\frac{1}{2} \times ६\frac{1}{2}$  इश्वः। भाषा-िहन्दी। विषय-सग्रहः रुकाल  $\times$ । लेक्सल  $\times$ । पूर्णं। वेष्टन स॰ २६६। प्राप्ति स्थाल—िद॰ जैन मिल्दर प्रभितन्दन स्वामी वृदी।

१०६५१. सर्दार्थासिद्धि भाषा-जयचन्त्र छात्रज्ञा । पत्रस्य २०२ । प्रा०१४ १४८ ४५ इन्छ । साथा-राजस्थानी (कृषार्गगण) । विषय-सिद्धान्त । र०काल सं०१८६५ चैत सुदी ४ । ले० काल स० १६३२ । पूर्णु । बेष्टन स०१२१ । प्राप्ति स्थान—दि० चैन छोटा मन्दिर वयाना ।

१०६५२. साठि —  $\times$  । पत्रसं• १२ । मा० १० $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$  इन्त्र । साथा-संस्कृत । विषय — ज्योतिक । २०काल  $\times$  । ले० काल स० १५११ चेत बुडी १० । पूर्ण । वेष्टन सं० २०२ । प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्तिर इन्तरगढ़ ।

विशेष-- रूपचन्द ने लिखा या ।

१०६५५. सामुद्रिक शास्त्र— $\times$  । ५७ सं॰ ११ । प्रा॰  $c_{\chi}^{+} \times Y$  इका भाषा—संस्कृत । विषय-लक्षण प्रस्थ । २०काल  $\times$  । ले॰ काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्ट्रन स॰ १०१ । प्रास्ति स्थान—दि॰ जैन पास्त्रेनाथ मन्दिर चौगान वृद्धी ।

१०६५४ सामुद्रिक शास्त्र $-\times$ । पत्रसं०१७। घा०१० $\times$ ४ $^2$  इंच। भाषा-लक्षणस्य। ?०कालः  $\times$ । ते० कालं सं०१५६६। पूर्णं। बेष्टनं म०२११। प्राप्तिः स्थान—दि० जैन मन्दिरं चौगान वंदी।

बिशेष---शैनाचार्य कृत है।

१०६५५. सामुद्रिक शास्त्र— $\times$  । पत्रस० १० । ब्रा० १ $\frac{3}{4}$   $\times$  ४ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-सक्षस ग्रन्थ । र०काल  $\times$  । ले० काल  $\times$  । पूर्ण । वेष्ट्रन स० १३१ । प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर ग्रादिनाथ व दी ।

१०६५६. सामुद्रिक बास्त्र — × । पत्र स०२०। प्रापा—हिन्दो। विषय — सराग प्राच । रक्ताल  $\times$  । २० काल म० १८६६ दीयाल वदी ७ । पूर्ण । वेष्ट्रन स०२०। प्राप्ति स्थान—दि० जीन पत्रायानी प्रतिष्ठ दीवानकी, प्रत्यदः ।

१०६५७. सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष लक्षर्गः)— $\times$ । पत्र सं० ४। ग्रा० १० $\times$ ४% इन्त । भाषा-मस्कृत । विषय-मामुद्रिक शास्त्र । र०काल  $\times$ । ले०काल  $\times$ । वेष्टन सं० १४०। **प्राप्ति स्थान** दि० जैन मस्तिर वाग ।

१०६४८. सामुद्रिक शास्त्र (स्त्री पुरुष लक्षरा)— x । पत्र स०३६। प्रा० ८ x ४ इन्थ । भाषा-हिन्दी । विषय-मामुद्रिक (लक्षरा प्रत्थ) । र०काल x । ले० काल स० १८४० काती सुदी ७ । पूर्वो । वेप्टन स० १६४ । प्राप्ति स्थान—दि० गैन मदिर राजमहल टोक ।

विशेष-- तक्षकपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१०६५६. सामुद्रिक सुरूप लक्षरा-× । पत्रस० १६। प्रा०६×५ इवा भाषा-सस्कृत-हिन्दी। विषय-सामुद्रिक। र०काल × । ले०काल म० १७६२ मादवा सुदी ४ । पूर्ण। वेष्टन मं० १४१३ । प्राप्ति स्थान-स० ति जीन मन्दिर मजमेर।

विशेष- इस प्रति की जोवनेर मे पडित प्रवर टोडरमल जी के पठनार्थ लिपि की गई थी।

१०६६०. सार संग्रह-महाबोराचार्य। पत्रसं० ११। पा० ११×५ हेचा । प्राप-संस्कृत। विषय-गीस्त । र०काल  $\times$ ा ले० काल स०१००६ । वेष्टन स०१०६। प्राप्ति स्थान—दि० जैन मीरिंग लक्कर (जयपुर)।

विशेष-महाराजा रामसिंह के राज्य में लिखा गया था। इसका दूसरा नाम गिएतमार संग्रह है

१०६६२. सारस्वत प्रक्रिया—परिवाजकाचार्य । पत्रसं० १२ । भाषा-सस्कृत । विषय— ध्याकरण । र०काल  $\times$  । ले०कान  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन सं० १५/४५० । प्राप्ति स्थान—दि० जै समबनाय मन्दिर उदयपुर ।

१०६६२. सिद्धचक पूजा—सुमचन्द्र। पत्रसं० १०८ । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र। र०काल  $\times$  । ते०काल  $\times$  । प्रपूर्ण । वेष्टन स० ११/३१४। प्रास्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर संभवनाथ उदयपुर।

विशेष - इसका नाम सिद्ध यत्र स्तवन भी दिया है।

१०६६३. सुद्दित्वरिगिनी साथा—टेकचन्द्र । पत्रस्व ४२६ । प्राव १४३ ×७६७ । भाषा-हिन्दी गव । विषय-मुमायित । र०काल स० १६३६ सावग् मुरी ११ । ने०काल स० १६०७ बैपाय सुदी १४ । पूर्ण । बेप्टन स० १७४ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मन्दिर प्रभिनन्दन स्वामी बूदी ।

विशेष —सवाई जयपुर में बाह्मण जमनालाल ने चि॰ सदामुखजी तथा पं॰ चिमनलालजी वृदी बालों के पठनार्थ प्रतिलिंग की थी। युवाय थ १६२२२ पडितजी की प्रशस्ति —

ष्याचार्य हुपंकीति—स० १६०० घ्राचार्य श्री हरिकीतिज्ञी सवत् १६६६ कं माल टोटा में हुया, ज्याकी बान छत्री हाल मोडूद । त्याके सिध्य रामकीनि, नृतृत्रिष्य भवनकीति, टेक्चर, पेमराज, भुवाराम, पराकीति दोरराज पटित हुए । तत्रिष्य छाडूराम, तत्रिष्य पट दमाचद, तत्रिष्य पर्यभ्वात ने शिक् सेवाराम, द्वितीय हू गरमीदास, नृतीय साहित्यदाम एतेषा मध्ये प० हूंगरसीदास के शिष्य मदानुग शिवलाल तत्रिष्य रानकाल, देवालाल मध्ये बृह्यू शिष्येन लिपीकृता । ६० विमननाल पहनार्य ।

> ऐसा हुमा बूदी के सेडे पंडित जिवलाल । बाग बागाया तीम जिनने तलाव उत्तर त्यारा । मव दुनिया में जोमा जिनको त्यया देव उपारा । जिनका जिय्य रमनलाल पीत्र नेमीचंद 'यारा ॥ सबन् ११०७ के मई प्रथ निखाया सारा । जाग दुकाना कटला का दरवाजा बसाया नामदी साई ॥

**१०६६४. प्रतिसं०२ ।** पत्र स०५२६ । ग्रा०११×८ इ.च.। ले०काल स०१९६८ । प्<sup>रा।</sup> । बेष्टन स०८० । **प्राप्ति स्थान** — दि० जैन मदिर पार्थनाच डन्टरगढ ।

विशेष -- ईश्वरलाल चादवाड ने प्रतिलिपि की थी।

१०६६५. सूक्ताबली— $\times$  । पत्र सं० १-५ः । म्रा० १० $\times$ ४ हे इश्व । भाषा-संस्कृत । विषय-सुमाषित । र०काल  $\times$  । मे० काल  $\times$  । वेष्टन स० ७२१ । धपूर्ण । प्राप्ति स्थान—दि० जैन मिन्दर सक्कर जयपुर ।

**१०६६६. सूर्य सहस्रवाम** —  $\times$  । पत्र स० ११ । प्रा० ७३ $\times$ ३ $\frac{3}{4}$  इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०कांच  $\times$  । ले॰कांच  $\times$  । पूर्णे । बेष्टनसं० ११०७ । प्रास्ति स्थान — भ० दि० जैन मंदिर शबसेर ।

विशेष-मिवण पुरामको के हैं।

१०६६७. स्तोत्र पूजा संग्रह— imes । पत्र स०२ से ४१ । म्रा०११ ४५६ इंच । माया-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा स्तोत्र । र०काल ४ । ले०काल स०१८४७ । मपूर्यं । बेष्टन स०५० । मास्ति स्मान—दि० जैन मदिर प्रीननवन स्वामी वृदी ।

विशेष --- प्रारम्भ का केवल एक पत्र नहीं है।

१०६६**८ स्थरावली चरित्र— हेमचन्द्राचार्य**। पत्र त० १२७। माषा-सरकृत। विषय-**चरित्र।** र०काल × । लेकाल स०१=७६ त्रेठ मुटी ११। पूर्ण। बेष्टन स०५=१। **प्राप्ति स्पान—दि**० जैन पचायतो मंदिर सरतपुर।

१०६६६ प्रतिसं०२ । पत्र सं०२ से १५० । लंब्काल imes । प्रपूर्ण । बेष्टन स० ५६६ । प्राप्ति स्थान—दि० जैन पत्रायती मदिर भरतपुर ।

१०६७०. हिण्डोर का दोहा $-\times$ । पत्र स०१। झा० १० $\frac{1}{2}$  $\times$ ५ इखा। भाषा-हिन्दी। बियय- $\frac{1}{2}$ टगर। २०काल  $\times$ । ते० काल  $\times$ । पूर्णं। बेष्टन म० ८१८। **प्रास्ति स्थान**—दि० जैन मन्दिर लक्कर जयपूर।

॥ समाप्त ॥

## ग्रंथानुक्रमशिका क्रकारादि स्वर

प्रंथनाम लेखक	माषा	पत्र	सख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र	संख्या
मकलक चरित—		हि०	358	पक्षर बावनी-	–दौलतराम		हि॰	3 × 0 \$
।कलक निकलक चौपई—×।	विजयक	ीनि		ग्रक्षर बावनी-	—द्यान्तराय	हि० १	o9≅,	११११
		हि०	£83	प्रक्षर मोला			सं०	६६४
<mark>प्रकलक</mark> यति रास— द्र० जय	कीर्ति	हि०	6688	श्रक्षरमाला –	-मनराम		हि॰	ХX
प्रकलकाष्टक		म •	300	ग्रगलदलक का	या — जयशेखर	सूरि	सं०	856
			6880	अग्रवासी के १	⊏गोत्र~		ক্তি॰	< 99
प्रकलकाष्टक भाषा जयचन्द	खावडा	信。	300	ग्रजितनाथ रा	स – व्र० जिल	दास हि०	€\$0	,११४७
<b>प्र</b> कलकाष्टक भाषा सदामुख	कासलीयः	ल हि	300 0	भ्रजित माति	स्तवन		सं०	દ ધ્ર ૬
ष्रकलकदेव स्तोत्र भाषा — चं	पालाल ब			भ्रजित शाति	स्तवन — नन्दि	वेसा	সা৹	७१०
		हि०	400	ग्रजित शाति	स्तवन -	_	स०	७१०
प्रकृतिम चैरयालय जयमाल-	∽मेयामः	गवनीय हिरु	सास ७७७	श्रीजन माति	स्तवन मेरून	दन	हि०	3505
				श्रजीसाँ मजरी	न्यामत ख	3	हि॰	₹セダ
श्रकृत्रिम चैत्यालय पूत्रा—चै				धजीर्ग मंजरी	—वैद्य पद्यना	भ	f₹∘	१०७७
ग्रक्रतिम चै॰यालय पूत्राम 				ध्रठाई का रास	त विनयकी	বি	हि•	3999
धकुत्रिम चैत्यालय पूजा लाल	जाताह				्ग् गस⊸ द		त हि०	११०७
भक्तिम चैत्यालय पूजा			१००२					१०७३
श्रकृत्रिम चैत्यालय विनती	लक्ष्मरा							8000
धकृत्रिम चैत्यालय विनती			86:6	ग्रठारह नाता			-	\$00X
श्रक्षय नवमी कथा		Ħo	४२६	धठारह नाते				8028
श्रक्षय दशमी कथा — ललितः	भीत	सं •		ग्रठारह नाते	की कथा—क	मलकीति		
धक्षय दशमी पूजा		स •						(,११३)
श्रक्षय निधि दशमी कथा		स•		ग्रठारह नाते	की कथा—दे	दालाल	-	४२१
मक्षर बत्तीसी		हि०		श्रठारह नाते	की कथा अर्थ	ोवंत	स	· 851
सक्षर बलीसीभैया भगवत	विदास	-	१००५	घठारह नाता	कागीत र्	रुभ चनक	हि०	११७
पक्षर बावनी		-	१०४७	घठारह नाता	का चौड़ाल्या	,	हि •	१०५
मक्षर बावनी		-	\$30\$	धठारह नात	ाकाचौदाल्य			
ग्रहार बावनी-कबीरदास		-	१००६					<b>१</b> =६
म्रक्षर बावनी —केशवदास		•	€ < \$	षठारह पुरार	हों की नामाव	सी	हि०	\$ \$ \$ X
शकर वादनी		हि०	<b>६</b> ⊏१	षट्ठोत्तरी स	तोत्र विधि		80	68

ग्रंथनाम लेखक भ	गवा	पत्र सस्या	ग्रंथ नाम	सेखक	मावा	पत्र संस्य
महाई होप पूजा	संव		1	(जाः प० चिनदास	4.0	950
श्रदाई द्वाप पूत्रा डालूराम	हि	, ,,	ं धन्मन पूजां	: य० मान्तियाम	t∉ o	189
श्रदाई द्वीप पूजा भ० शुमचन्द्र	स०	,,	धनःतनाथ क	থা	<b>स∘</b>	668
मड़ाई द्वीप पूजा लालजीत	हि॰	3 શ અ	धनत्त्रनाथ पू	जा वर्गास्तिदा	म हि॰	११२६
मढ़ाई द्वीप मडल		६२५	ग्रनन्तनाथ पू	जाः श्रीभूपरा	स०	، و و
भ्रढाई द्वीप मडल रचना		११७२		, रामचन्द्र	føo	
धतिचार वर्णन	हि०	80,9018			स०	હ∈ક
धयवंवेद प्रकरम्म		११७३	धनन्तनाथ पू	जामङल विद्यान	गुमाचन	ाचायं .
च ध्यारम कल्पद्रुम मुनि सुन्दर सू	रिस०	१५०	भनंतवत कथ	TT .	Ħ o	७६१
बाध्यःतम तर्रागरो बा॰ सोमदेव	स०	800	प्रनन्त पुत्रा	वधान	47 e	900
ग्रध्यात्म पैडी बनारसीदास	हि॰	१०११	यनस्त वन पू	ना	f≓∘	9089
भव्यातम बत्तोसी	हि ०	\$30\$	.,,	: मुनि ज्ञानसार	ार म०	800
,, बनारसीदास	हि०	€ € €			10	53 9006
<b>p</b> 1 41	हिं०	ERS	,,	. त्र० जिनदास	fao	११४३
भध्यात्म बारहस्त्रही : दौलतराम	कासली	वाल :		∵ भ०पञ्चनन्दि	म∘	४२१,
,		१६०				४३४
	•	१८१	**	त्र० धृतसाग	<b>7</b> ∏ 0	43 6
ग्रध्यात्म बावनी	हि •	₹04 <b>=</b>	,,	नालित कीर्ति	440	895
ध्यात्म रामायसा —	स०	848	,,		tgo	€= €
ग्रन्थात्मोपनियदः हेमचन्द्रः	<b>स∘</b>	\$=o .	• .	हरिकृत्स वा	हे हि०	853
ग्रध्यारमोपयोगिनी स्तुति : महिमा			पनस्त वत कश	यापूत्राः ललिनकी	ति स०	७⊏१
a-dicaladital - Car - 41641	त्रवर्षः हि०	880	ब्रनस्त व्रत पूर	ताः पाण्डे धर्मदास	₹{ •	७८२
	•		,,	मेबाराम साह	हि०	625
धनगार धर्मामृत प <b>्रधामाधर</b> ः		6.5	**	-	स∘र्	ह० ७८२
<b>धन</b> गरंग . कम्याग्रामस्त	₩.	६२५	,,,		H 0	963
ग्रनस्तकथाः जिनसागरः	हि॰	2843	चनन्त वत पूर	वा उद्यापनः भ०ः		
धनन्तचतुर्दशोकयाः भैरुदास	हि •	8 4 8			स०	७८३
	_	११२३	धनन्त वत पूज	ा∵ द० मांतिदास		66.83
धनन्तवतुरंभी वतकवाः खुशासव			11	: সুসৰক	स∘	8000
	हि॰	*48	,,	ः संवाराम	हि०	550
भनन्तचौदभ कथाः ज्ञानसागर	-E- -ۥ	१११७		। विघान भाषा		\c=₹
मनन्त चतुदशी पूजाः श्रीभूषसम				षानः य०गान्तिदाः -		%=₹ •••∨
	स •	300	अनस्त वत्राः		ۥ	2848 *****
•, ,, शान्तिदास		300	,,	: ब्र० जिनदास		११४७,
धनन्त चतुवर्शी व्रतपूजाः विश्वभू	वसाहि	0 950		११७•	, 114	. 6623

ग्रंथ नाम	लेखक म	षा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक :	माचा	पत्र संख्या
धनन्तवत रास	: जिनसेन	हि	११६६	ग्रदेजद प्रश्नावली	t	- fzo	१०७६
<b>प्रन</b> न्तव्रती <b>वा</b> पन	. नारायम	मं०	७८३	ग्रवृंदाचल स्तवः	<b>त</b>	हिल	१०६१
1,		,.	,,	श्रमयकुमार कथा	r -	~ हि०	858
,, ব্স	rr	٠.		ग्रभयकुमार प्रवध	ī	fr o	RSK
धनाथी ऋषि सः	5 <b>भाव</b>	রি ০	e\$3	ग्रभयपाल शेवात	r	्रि	६६२
धनादि स्तोत्र	_	म् o	१०२४	ग्रभिषान निनाम	तित नामग्रामा	टेस बर	टाचार्य
ग्रनाण्य कर्मनुपार	शन	সা ০	११७३			स०	× 12
म्रनिटकारिका		स०	* \$ \$ 0	प्रभिधानसारसग्र	ē		433
द्यनित्य पंचाणत	<b>বি</b> মুবনদৰ	हि०	80	यभिनन्दन गीत	.,		862
श्रनित्य पचासिक	er	हि०	9088	श्रमिषेक पाठ		₩•	७=३,
भ्रतित्य पचासिक	ा त्रिभुवनचन्द	हि०	११५३,				928
			१०७१	श्रमियेक पूजाः	विने% िलाल	fg∘	9=8
धनित्य पचनीसी	: भगवतीदास	हिल	१०५१	स्रभिनेक विधि		₽jo	95¥
भनिम्द्रहरम् ।	जयमागर	हि०		श्रमरकोश		स०	\$ 019 \$
		,	853, 858	भ्रमरकोण: ग्रम	रमिट	e is	x 3 3
भनिरुद्धहरस (उ	यहारस) रत्नभूष	ग्ग सूरि	<b>t</b>			(38, X	
		हि०	853	धमरदत्त मित्रानं			
मनुप्रकाः धवः	1	हि ०	१०६७	ग्रमरमुन्दरीविधि		हि०	६६६
सनुप्रेक्षाः योगर		स०	Ye3	ग्रमरुक शतक		स०	388
धनुप्रेक्षासग्रह		हि०	१८१	श्रमितिगति श्राव	काचार भाषा		
भनुभय प्रकाश	दीपचन्द कासर्ल	-				हि॰	
3		हि०	१८१	ग्रमुनमजरी क	। शीराज	₽ 0	₹ € ₺
धनुयोगद्वार सूत्र-	—प्राकृत	য়া৽	8	ग्रमृतसागरः सर	गई प्रतापसिह	हिर	<b>५७3</b> ,
धनेकार्थध्वनि म	जरो. क्षपसक	Ħο	४३१				४७४
	,,	.,	,,	द्यगंलपुर जिनवः	दना —	हि०	£=¥
धनेकार्थं नाममार	ताः भ०हर्षकीः	न म०	પ્ર₹	मर्जानिश्यं —		हि०	60
,,		**	,,	धर्यप्रकाणिका	-सदास्ख कासर	शेवाल—	–राज०गद्य
भनेकार्थमञ⊹ी		हि०	€ ७ ६		•		?
,,	जिनदास	हि०	४३१	षर्य संहिष्ट—	प्रा० सं०		२
**		स∙	५३२	ग्रहंत प्रवचन —	×	その	6.9
श्रनेकार्थ शब्द म	जरी —	स •	x a a	श्चरहंत केवलीप	ামা	₹ 0	***
धनेकार्थ सप्रहः	हेमरात्र	सं०	ध्र१०	धरिष्टध्याय		সা৹	8000,
प्रपराजित यथ	(गौरी महेश्वावा	र्ता) स	४१४			१११६,	xx8, 663
धपराजित मत्र	साधनिका —	₹∘	७११	प्ररिष्टध्याय : घ	निपति	<b>₹</b> 0	१११७
अगुमाजन स्तोत्र	_	स०	७११	भरिहंतों के गुरा	वर्णन —	हि०	1840

ग्रंथनःम लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
भलकारचन्द्रिकाः भ्रत्यय दीवि	त स०	¥83	ग्रण्टाहिनका	पूजाः सकलकी	नि म॰	628
घलकार सर्वयाः कृवस्याजी	हि०	१०१४	, ग्रष्टाहिनका	पूजाः शुभचन्द्र	स०	७६५
ग्रवञ्ज परीक्षा (ग्रञ्जू बानुप्रका)	हि०	8058	,, ब्रतोर	यापनः मोभाचन	द स०	७८४
धवधून	स०	४७४	**	पूजा —	सर्°	हे० ७६५
धवन्तिकुमार रासः जिनहर्ष	हि०	६६७	,,	., उद्यापन	: गुमचन्द्र	
ष्ट्रवती सुकुमान स्वाध्याय : प	जिनहर्ष	f	1		म ०	७८४
33	fg •	४०५		,,	मुमितिम	ागर
भव्ययार्थं	e P	a y y			हि०	७=५
श्रदव चिकित्सा	हि०	2746	••	,, द्यानतराय	f₹o	७८४,
श्रमोकशेहिएरे कथा	मं •	४२४	1			<b>==</b> ₹
<b>ध</b> रुटकः पद्मनन्दि	स•	₹ 5 3	••		• मर्∘ा	हें ० ५ ६६
बष्टकर्मचूर उद्यापन पूत्रा	स०	७०३	. <b>ग्रष्टा</b> हिनका	रासः	हि ०	६६१
बन्दकमं चौपई : रत्न भूषरा	हि०	<b>११३३</b>	,,	:सु <b>स</b> सागर	हि ०	9009
श्रब्ट कमें प्रकृति वर्णन	₩.	<b>१</b> ६८	बध्टाहिनका	वनकथा	끅 •	X5X
ग्रष्ट कमंबव विधान	हि०	₹ = € €				¥25
ब्रष्ट द्रव्य महा बर्ष	हिं•	45	. "		•	¥ <b>?</b> ¥,¥₹€
बष्ट प्रकारी पूजा	हि०	७८६	,,	ग्र० झ	ानसाग <b>र</b>	
घटः प्रकारी पूजा जयमाला	"	,,			हि ० क	856
घष्ट प्रकारी देव पूजा	हि०	<b>१६</b> ८	,,	<b>म</b> ०स्	(रेन्द्रकीति 	
घष्ट पाहुड : कुन्दकुन्दा नार्य	Δiο	₹=१			म० ोतिम०	AÁA
	€5₹, 8	£4, EEX	,			४७६
धष्ट पाहुड भाषा	हि॰	8057	म्राप्टाहिनका	वतोद्यापन पूजाः	्पा¤ नाःमा स्	ara U⊏X
श्रष्ट पोहुड मावा : जयबन्द छा			ध्रष्टाहिनका व	ध्यारूयानः हृदय		\$3
		द <b>२, १</b> ८३	घ्रष्टोत्त रीदणा		स०	***
<b>बच्ट सह</b> स्वती : बा० विद्याननि		₹४८		क भगवतीदास	हि०	223
बब्द सहस्त्री (टिप्पर्ग)—	मं ०	२४⊏	प्रसक्ताय निर्		সা৽	₹= १
मध्टापद गीत	हि०	€७=	धसञ्काय वि		हि॰	७६६
भाष्टावक कथा टीकाः विश्वेषव		<b>858</b>	प्रसिज्माय कृ		भा•	७११
प्रष्टांग सम्यक्तव कथा : ४० जि		:	शसोद्र का मन		हि०	ERR
	हि∙	४२५	ग्रह <b>मं</b> शविधि	<b>,</b>	हि•	*88
घष्टाहिनका कथा : विश्वभूषरा	हि•	993	प्रतिसाधमं म	हातम्य	₹ 0	£ ₹
भष्टाहिनका रासः विनयकीति	fa	<b>११२३</b>	घ कफल	•		१११६
	हि॰ ६६ हि॰	€ = W .	ग्रंक बलीसी	: चग्द	हि•	६ = १
मध्टाहिनका पूजा		3, १११=	ष कुरारोपरा		ij.	642

ग्रंथ नाम	लेखक व	नावा	पत्र संख्या	ग्रंथन।म लेखक		पत्र संख्या
श्रं कुरारोपसा वि	ৰ্ঘ	स्₃	333	ध्रागम विलास : द्यानतराय	हि०	६४=
ग्र कुरारोपम् वि	र्धाः ग्रामाधर	स०	955	ध्राचार शास्त्र—	সা৹	8000
**	,, इन्द्रनन्दि	स •	320	ग्राचार सार वचनिकाः पन्ना		
ग्र गपष्णती		वाव	Ę		हि •	€ ₹
ग्र गविद्या		સ •	**\$	ग्राचारागमृत्रवृत्ति —	সাত	
द्मगरुगशंन		स∘	५४१	भ चायं गुरा वर्णन —	#•	83
ग्रजनाचरित्र	भुवनकीति	हि०	5 6 €	भाचार्यादि गुरा वर्णन —	हि•	8005
ग्राजगारास		हि॰	६११	भजितकिन पुरस्सः पण्डिताच	।यं महरा	मिंग
भाजना सुन्दरी	च उपई : पुण्यस	गर हि	३१४		मं ०	२६४
ग्रजनासुदरी	सतानो रास	हि०	६३२	भ्राठ प्रकार पूजा कथानक —	प्रा०	<b>७</b> द ६
धन्तकृत दशाग	वृत्ति —	সা৹	7	धाराद श्रावक समि : श्रीसार	िहि∙	७११
धन्तगढ दसाम्रो		प्र(०	२	<b>प्रा</b> ग्रंदा —	हि०	१०५८
ग्रतर दशावर	i —	e 19	** \$	मारादा . महानद	हि ०	¥33
भ्रन्तरिक्ष पाश्वं	नाथ स्तवनः भ	ावविजय	वाचक	धारएन्द्रमस्तिका कल्पः मानतु	ग स०	१११६
		हि०	७१४	द्यारमपटल	हि•	85.RE
,,		लावण्य	समय	ग्रात्मप्रकाश श्रात्माराम	हि०	४७४
		हि०	७१५	ग्रात्मप्रदोध	सं •	१०६२
श्रातरीक्ष पश्यं	नःय छदः भावी	वजय हि	ह० ११५७	झात्मप्रबोधः कुमार कवि	Ψ۰	१=१,१=४
भ वड चरित्र		हि०	\$ <b>{ X</b>	<b>धात्मरक्षामत्र</b>	सं०	६२०
ग्राबिकारास⊸	-	fgo	६२३	द्यास्मशिष्याविंगः मोहनदास	हि॰	१०१५
मं विकासारः	व्र० जिस्पदास	हि०	११३८	<b>बा</b> त्मस <b>बो</b> ध	हि •	EXE
माकार शुद्धि वि	वधानः देवेन्द्र व	र्गित		ग्रात्मानुशासनः गुरामदावार्ये	सं०	१८४
•		स०	७८६	ग्रास्मानुशासन टीका : प॰ प्र	भाचन्द्र	
धाकाश पंचमी	कथाः घासीदार	म हि०	११२३		₩o	<b>१</b> 4४,१44
**	: बहा जि	नदास हि	ह० ११०७	धात्मानुशासन भाषा	हि०	१८४
,	: রু০ সান	सागर		,, पं व टोडर		
		हि०	6662			१==, १=E
,,	ः ललितकी			भारमानुशासन मावा टीका		हि० १८५
			806,840	धारमावलोकनः दीपचन्द का		
• •	: हरिकृष्					₹=E,E¥.9
		हि•	893	धात्मावलोकन स्तोत्र : दीपप	-	
श्रांक्ष के १३ दो		हि •	XOX	म्रादिजिनस्तवनः कल्यास		
भारमात प्रक्रिय	ाः धनुभूतिस्वरः			धादित्यजिन पूजाः केशवसेन		७८६
		सं०	* 4 4	,, : भ०देवे		
<b>मागमसारोद्वार</b>	: देवीचन्द	हि०	२	l	सं०	७=६

प्रंथनाम ले	सक र	माषा	पत्र संख्या	, प्रंथनाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
भ्रादित्य वत कथाः			<b>११</b> ६३	ग्रादिनाय चरित्र		₩.	312
	त्र० महति स	-	••••	धादिनाय जन्म		সা•	१०२६
,,		हि॰	११६३	ग्रादिनाथ के दस		हि०	388
भादित्यवत पूजा		<b>स</b> •	დ=დ	धःदिनाथ देशना		प्रा०	8893
भादित्यवन रास—		ftt o	११३७	द्यादिनाथ फाग्	. भ० ज्ञानभूष	स्म हि०	\$ 9 8
म्रादित्यवार कथा—		हि०	800	भ्रादिनाथ मगल	. नयनमृख	ਰਿ-	७११
			₹ <b>५, १</b> ०७४	,,	. रुपचन्द	हि०	8408
मादि∹यवार कया ।	विक्रम स		2039	. ग्रादिनाथ की वं	ोनतीः किशोः	र हि	84
धादित्यवार कथाः ।		प्राट	3888	भादिनाथ विनर्त	ि ज्ञानभूषग्	हि०	६५४
	. जुग संगादास	हि०	873	ग्रादिनाथ विनर्त	ाः सुमति +ीर्ति	ि हि॰	£ X 3
	० नेमिदत्त	fē.	४२८	द्यादिनाय स्तवन		हि	११६८,
		हि० ४	२८,१०१८,	_	_		१ <b>. ११</b> ३४
			88, E&G,	भ्रादिनाथ स्तवन		हि	€ < ?
१०	Eo, 2027	, १०४	₹, <b>१०४</b> २, <sup>°</sup>	द्यादिनाय स्तवन		**	
<b>१</b> 0	¥¥, १0¥१	, <b>१</b> ०५	E, 2050,	म्रादिनाथ स्तबन		हि ०	
<b>१</b> 0	c 3. 2 o c 5	, १११	४, ११६८,	भ्रादिनाथ स्तवन			१७४
		१०७	¥, १•७4,	म्रादिनाथ स्तुति		हि०	6903
स्रादित्यवार कथाः भ	<b>ानुकी</b> ति	fgo	१११८,	ग्रादिनाथ स्तुति		हि०	४४
	807	न, <b>१</b> १४	७, ११६⊏,	मादिनाथ स्तुति	ः ।वनादालाल	हि०	
,, :=	बोहरदास	हि०	₹003			-	6003
	हीचन्द	स०	1168.	ग्रादिनाथ स्तोत्र		हि ०	<b>११</b> २५ ७१२
			3389				9 { ¥ ⊋ € !9
,, . fa	नोदीलाल	fe •	3009	द्यादिपुरागाः अ		राज०	7 t 5
	• सकलकी	-	€4=	ग्रादिपुरामाः पुर ग्रादि पुरासाः भ		<b>भ्र</b> पभ्रश	६६,२६७
	रेन्द्रकीति	हि•	४२६,	श्राद पुराण । • श्राद पुराग भा			
-	4, 600	r, <b>2</b> 00	- 1	भाव पुराल भा	યા : ૧ લાભાવ	राम मन्द्रसाल हिं	२६७
भादिस्यकथा संग्रह		fgo	३७१			२६⊏, २ <sup>,</sup>	
श्रादित्यवार पूजाव <del>व</del>	वा	स॰ हि	933 0	ग्रादि पुराशा मह	IPEN	₹o	२६४
म्रादित्यवारनी वेल कर		हि०	6668	मादि पुरास सह		_	638
मादित्यवार वृतोद्यापन			1	भाव दुराल रा भाविसत स्मरण		हि॰	EXE
	e	स∙	965	ग्रादीश्वर विवाह	लो:बोरचन्द		११३२
मादित्य हृदय स्तोत्र-	-	स•	७११,	भानन्द रास		हि॰	१०६१
***************************************	1		0. e 0 x 2	मानम्द लहरी : !	तंकराचार्यं	<b>स</b> •	७११
मादिनाय गीत		हि॰	१०२६	मास परीक्षाः वि		₩•	१४८

ग्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र सल्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्रं संख्या
भ्राप्त मीनायाः भ्रा० समन्तमः	द स	० ५४६	ग्राराधनामार	ः विमलकीर्ति	हि०	\$33
		२४६ ८५५	<b>ग्राराधनामार</b>	ः सकलकीति	हि०	१०२६
श्राप्त-मोमासा भाषाः जयचन्द	*******	,	ग्राराधनासार	टीकाः पंडि	नदास गगर	तस
भ्राप्त-मःमामा मानाः गपचन्द		। जा० २४३,			हि	. ६२
	٠,	40 (00, 480	ग्राराधनामार	टीका नदिगन	ण स	. १२
भ्राप्तस्यरूप विचार	<b>4</b>		, ब्रारःधनःसार	भाषाः दुली	बन्द हि०	. १३
श्चापुर्वद प्रत्य—	ग		<b>भा</b> राधनासार	भाषा टीका-	-आ० हि	<i>\$</i> 3 o
anga 4 ana		४७४ ४७४	ग्राराधन(आर	वचनिकाःप	मालाल चौध	
भ्रायुर्वेद निटान	'Ç" ₹I≎	404			हि०	€₹
भाग्वंद के न्रथे—		x 5 x 5 x 5 x	ग्रनाधनासूत्र		গ্লা •	
हप्रह, ह्यु , ह्रु ०, १०१			ग्रालाप पद्धति	: देवसेन		२५०, २५१
(20, (20, 640, 10)	*, **	2778	1			₹, १००६
श्रापूर्वेद महोदश्रि मुखदेव	Ψo	४७५	ग्रालोचनाः		हिं भं	१८६
आयुर्वेदिक शास्त्र	हि०	४७४	ं ग्रालोजनागीत		हिल	EXZ
आयुपायक मान्य धाराधना	हिं	£ ?	, ग्रालीचना जयः	माल: ३० जि	नदास हि॰	8≃€
म्रारावना मारावना	सं∘	७१२				8055
भारायना ग्रन्तावना कथाकोश—	H 0	358	धालोचना पाठ		स०	846
भाराधना , बन्तावरमिह रतन			मालोचनाविधि		स०	११३६
भारायना ,, यन्तामरान्ह रतन भाराधना ,, यन्त्रेमिदत्त	लालाह स०	95.	प्रावश्यकसूत्र		प्रा॰	₹
धारावना ,, अरु नामदत धारावना ,, अनुत मागर	संo	¥3 o	ग्रावश्यक सूत्र ।	नियुक्तिः ज्ञाः	न विभवसूरि	
धारायना ,, अुन नागर धाराधना ,, हरियसा	स०	A30	ł		明。	3
श्राराधना सारु कया प्रबंध : प्रभा			ঘাওৰ বিমণী		प्रा॰	११४२
ग्राराधना चतुष्पदी: धर्मसागर	भाष छ । हि०		ग्राश्रद त्रिमणी	ः नेमिचन्द्राच	गर्य प्रा०	ą
द्वाराधना पजिकाः देवकीति	₩•	€3	ग्रःशाघर ज्योति	तर्रम्थः स्नाश	ाघर सं∘	488
ब्राराधना प्रतिबोधसारः	हि॰	8880	धाषाढी पूरिएमा	फलः श्रीद्य	तूपाचार्यसं	१११६
भाराधना प्रतिबोधसारः विमल			श्रापाढ् भूतनी	चौपई	हि०	११६७
धाराधना प्रतिबोधसारः सकल		, ,-	ग्राकाढ भूति व	मालि '	हि०	£=¥
antian andarant contract			मावाढभूत धम	ाल—	हि०	3809
	-	९१, ६५१	श्राषाडभूति मुन	नेका चोढाल्य	ं कनकसो	Ŧ
*		६४, ११३८				
माराधनासार	हि॰	€ X •			हि०	१०१३
माराधनासार		६६५ ११४२	भाषाढ-भूतरास		-	६३१
भारावनासारः समितिगति	€ 0	દર	धासपाल छ द	: .	हि •	१०२४
माराधनासारः देवसैन		६१, ६७७	श्राहार वर्णन		श्रफ	8050
	Ę	3, 2055	घाहार पचलाए	ij	श्रा०	७१२

ग्रंथनाम लेखक	भावा	पत्र संख्या	ग्रंथनाम बेखक	मावा	पत्र सक्या
भासादना कोशः	स ०	£3	उत्पत्ति महादेश नारायसा —	हि०	<b>११०</b> २
भासपाल छद	हि ०	१०२५	उत्तम चरित्र	हि	• ₹ <b>१</b> ५
भ्रोंकार की चौपई : भैया भगव	तीदास		उत्तरपुराराः गुराभद्राचार्य	स •	२७०,२७१
	हि०	१०७७	उत्तर पुरारा : पुष्प-दस्त	भग	भ्रांग २७२
घोकार वचनिका	हि०	420	उत्तरपुराएगः सकलकीर्ति	स •	२७२
सीषिषयों के नुस्तेः	हि०	१०२०	उत्तर पुराग् भाषाः खुशालचन		२७२
भौषधि-विधि :	हि०	४७४			७४, १०५२
भीषध सग्रहः ।	हे॰ सं०	११६१	<b>उत्तर पुरागा भाषाः पन्नालाल</b>	हि •	
इक्कावन सूत्र :	हि०	€ 3	उत्तर प्रकृतिवर्णन :	हि०	, k
इक्कीस ठाएग प्रकरणः नेमिचन	द्रवार्यः		उत्तरध्ययन टीका :	সা •	स० ४
	পা •	8	उत्तराध्ययन सूत्र	प्रा०	
इकवीस विधिपूजा—	हि०	95¥	उत्तराध्ययन सूत्र बालः बबोध ट	ोका प्रा	०स० ४
इतिहास सार समुख्याः लालद	स हि०	१०१४	उत्सव पत्रिकाः	f₹o	Ę X P
इन्द्रजाल विद्याः	हि०	EXX	उक्ति निरूपस्य :	हि ०	·
इन्द्रव्यजपूजाः स० विश्वभूषरा	स•	959	उदर गीतः छोत्रल	हि०	6.308
,,	सं०	७६७	उद्घार कोशः दक्षिग्गा-भूति मु	ने स	પ્રક્રપ્ર
इन्द्रनन्दि नीतिसारः इन्द्रनन्दि	刊の	६६२	उन्तीस भावनाः	€o	<b>१०</b> २४
इन्द्रमहोत्सवः	हि०	€ 3	उपकरगानि एव घटिका बर्णन	: 60	. 6668
इन्द्रलक्षाम् :	स०	888	उपदेण पच्चीभी : रामदास	हि०	६५६,६६६
इन्द्रिय नाटकः	हि॰	€03	उपदेश बत्तीसी : राजकवि	fg o	१११८
इन्द्रिय विवरसः	<b>प्रा</b> ०	160	उपदेण बावनी : किणनदास	हि॰	६६२
इलायची कुमार रासः झान सार	ार हि०	<b>६:</b> १	उपदेश बीमी :रामवन्द्र ऋषि	हि०	६५६
इश्क चिमनः महाराजकुवर स			उपदेशमालाः	हि	έχε
	हि०	દ <b>૬</b> પ્ર	उपदेश माला : धर्मदास गरिए	য়া৹	६५७
इ.स्वरी छन्दः कवि हेम	हि०	१६६	उपदेश ग्त्नमाला	সা •	६०,१०१६
इण्ट छत्तीमी:	हि०	₹09\$	उपदेश रन्नमाला : धर्मदास गा	ग्रा∘	६५,११७४
<b>एट छ</b> त्तीसी : बुषजन	हि०	१३,१६	उपदेश रतमाला . सकल भूषर	ग सं∘	£8,6x
इष्ट पिचावनी : रघुनाव	हि०	5083	उपदेश बेलि : प० गोबिन्द	हि०	१११०
इष्टोपदेश : पुत्रयपाद	सं०	039,83	उपदेश भनकः : द्यानतराय	हि०	१०११,
•	* *	48,8863			6023
इष्टोपदेश भाषाः	हि०	\$00\$	उपदेश सिद्धान्त रत्नमालाः भ	।श् <b>चन्द</b>	£ € , ₹ १ ७ ¥
ईश्वर शिक्षाः	हि०	१०२४	उपदेश स्त्रोकः	हि०	
रिवर का सृष्टि कर्नृत्व <b>संडन</b> —	- सं•	२५१	उपदेश सिद्धान्त रत्नमालाः	हि॰	११७४
उज्भर माध्यः जयन्त सट्ट	सं •	११७३	उपदेश सिद्धान्त रत्नमालाः ने		

प्रंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	लेखक	माचा	पत्र संख्या
उपदेशसिद्धान्त	रत्नमाला—पा	हे लालघ	न्द	्एकीभाव स्तो	त्र – भूधरदास	हि	७१४,
		हि	у. 3				११२२
उपधान विधि	स्तवन-साधुक	ति हि०	8058	ं एकी भाव रती	त्रवादिराज	सं∘	७१३,
उपसर्ग वृत्ति		<b>स</b> ०	2 8 8	19/	१,७७२,७७५	,१०२२,१	०८२,१०८३
उपसगंहर स्तो	স	সা	७ ७१२	एकी भाव स्तो	त्र टीका	सं०	७१४
उपसर्गहर स्तो	ষ	सं०	513,590	एकी भावस्तीः	त्र भाषा	हि०	633,886
			११२५				£ 15 0
उपःधि प्रकरग्	ī	戦の	२५१		त्र भाषा— हीर		१०१३
उपासकाचार-	—ণবাদদিব	मं०	€€,6४	ं एकामाव स्ता	त्र वृत्ति — नाग	***	434
उपासकाचार	पुज्यपाद	₩ 0	. દદ્			सं०	988
उपासका दशा	ग	प्रार	y y	ऋतुचर्या—व		मं ०	४७४
उपासकाध्ययन	प्रभाचन्द्र	संद	११३७	ऋतु महार —		सं∘	३१५
	। — विशल श्रीम	er .		ऋदि नवकार		स•	७१४
		fg.	03	-	राम कृष्सा	हि०	
उपासकाध्ययन	न टिप्परा	स	e13 c	ऋषभदेव स्त		हिं 	
<b>उपासका</b> ध्ययः		स	e3 c		वन—रस्नसिंह	मुनाहर हिर	
	श्रावकाचार	श्रीपाल वि	υβ og	ऋषमनाच वि			
	सूत्र भाषा टीव				विद्य-भेषराज	हि	, ४३१ ११७४
उवाई सूत्र		प्रा		ऋषि पचर्मा		स० संब	
एकष्ठि प्रका	<b>र</b> स	प्राप	, <b>4</b>	ऋषि मडल उ			
	तीस प्रकृति का	व्यौरा सं	,	ऋषि मडला व		स० संद	
एकसी ग्रन्टोर		हि		: ऋषि मडल १			36, 8888
एकाक्षरी छंद		हि	. હશ્ર	चर्चियस्त	हागूलनन्दि		959,885
एक।कारीनाम	माला	स	১ ধুই ধু		ুলা— সুমৰণ্ট		
एकाक्षर नाम	मालिका विश	वशंभु स	५ ५३४,४३६		्राविद्याभूष इ.बाविद्याभूष		959
एक।क्षर नाम	T	स	, ५३६		भाषा—दो <b>ल</b> त		
एकादणी महा	सम्ब	₹ίο	830,838	ऋषि महल		स॰	838
एकादको वत	कथा	ग्रा	० ४३१	ऋषि मडल	•		६२४.७८८
एकादशो स्तु		हि	६९७ ०	े ऋषि महल		स <sub>्</sub>	
एकावली कथ		#	० ११३६	1			8 8 3 8
	ा—ललितकी <b>ि</b>	त सं	<i>3ల</i> ४ ०	ऋषि मंडल	स्तोत्र	सं	€७७३
	कथाविमलकीर्वि		30¥ o		\$ 088,806	(, १ = = = , १	१२२,११२६
	त्र . बादिराज	सं	• €Х३		स्तोत्र-गौतम		० ४६,७१४
i i		££€, ₹	· ६१,११२ ·	1			७१४,११२४

वंबनाम लेखक	भावा प	संख्या	ग्रंच नाम	लेखक	मावा प	<b>त्र</b> संश्वा
寄			कर्मदहन उद्याप			७८६
••			कर्मदहन उद्याप			
कक्कामनराम	हि०	2308	कमंदहन उद्याप			
	8108	११०५	कमंदहन उद्याप	न पूजाविधान		७१२
कक्का बत्तीसी	हि०	٤٤٥,	कर्मध्यज पूजा		सं०	==3
€5₹, €	£\$, <b>११३३</b> ,	११५१	कर्मनिर्परावन			
कक्काबोनती	हि०	१०३६	कर्म निर्जरणी	चनुदंशी विधान		७१२
कछवाहा राज वशावलि	हि०	१०२०	कर्मप्रकृति		हि०	233
		2552		•••	e	१०४६ १४३
कजिका वनोद्यापन	ति स॰	\$ 8 X X	कर्मों की प्रकृति कर्मप्रकृति ने		हि०	6,640
कठियार कानडरी चौपईमा	नसःगर हि०	1			সা • হি •	११४०
	¥3	₹,64 }	कर्मकी १४०			ورده
कर्णामृत पुराण-भ० विजय	नीति हि॰	२७४,	कमं प्रकृति टी			
		११७४	कर्म प्रकृति दी	काभ०सुमा	तकात एवः सब्	।।न भूषरा
कवाकोण — चन्द्र कीनि	सं०	¥38	कर्मप्रकृतिभा	कर बनारसी		१८२
कथाकोश थ० नेमिदल	सं०	¥\$2 :	कर्म प्रकृति वर		हि •	-
कथाकोणभारामल्ल	हि ०	**	कर्मप्रकृति वि		fgo	€.3
कथाकोश — मृ०रामवन्द्र	सं०	.,	कमं विषाक —			E, १०१४
कवाकोशश्रतसागर	मं •	•1	कर्मविपाक-		सं०	¥.3X
क्षाकोजहरिवेश	₩0			भ०सकलकी		=
कथाकोश	हि०	835	कर्माविपाक		ਜ਼ਿ ਰ	2222
कथा संग्रह	He &	11,818		भूगास्त्रय था—हरिकृष्ण	-	830
कथा संग्रह	গা	,,	कर्मविपक्त व		fa-	११३८
वथा मग्रह—विजयकीनि	हि०	434	कर्मायपाना प		fgo	११४८
कथा सप्रहु जयकीति	fg。	१०६६	कर्मविपाक स्		সা৹	<b>१</b> •
कमकमल जयमाल	fg •	१०२७		र प्रत-—देवेण्द्र सू	হি সং	१०
कमस्रवन्द्रायस् वतीयापन	<b>#</b> •	320	कर्म विपाक		हि॰	٤
कमलामती का सल्काय	हि०	4468	कर्म विपाक		हि०	१०
कम्मण विधिरतन गूरि	हि०	१०६१		।स रास− व जिना	-	६३२
कर्मचिताध्याय	सं०	१११७	कम । वस	(151 - M 144.)	·u·	6630
कमंसूर उद्यापन	#o	3=0	कर्म सिद्धान्त	मांडगी	সা •	70
कर्म छत्तीसी-दनारसीदास	हि ०	6.8.6	कमंस्तव स्तो		সাৎ	७१६
कमंदहन पूजा	গাং	440	वर्ज हिंडोलन		हिं	
	<b>१११</b> ≈, ११३	E. 2244				60%

ग्रंथनाम ले	लक मा	षा प	त्रसंख्या	प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्रसंख्या
करकण्टुचरित्र ~ मुर्ग	ने कनकामर इ	व रा	३१४	कल्यारः मन्दिर		सं०	७१८,७१६
करकण्डुव्यरित्र—म	• णुभचन्द्र	सं∘	384	दल्यासा मन्दिर	(स्तोत्र माषा	हि०	8088
करकष्टुनोरासब०	जिनदास	हि॰	६३२				1309
करुए। १८क – पद्मनन्दि	•	य०	७१६	कल्यासा मन्दिर	स्तोत्र भाषा	- ग्रह्मयरा	न श्रीमाल
कस्पद्रुम कलिका		甲の	११७६			हि	390
कल्पलवा टीकासम	नयसुन्दर उपाध	याय		कल्याग् मन्दिर	स्:ोत्रवचनिक	ग—पं∘	मोहनकाल
		स०	<b>१</b> २			हि०	390
करुपसूत्र-भद्रवाहु स	वामा	সা০	80	कल्यामा मन्दिर	वृत्ति-देवतिः	तक स०	७२०
कल्पसूत्र बखाल		हि०	११७६	कल्यारा मस्दिर			७२०
कल्पमूत्रबालावबी	ध !	प्राःहि	. 88	कल्यासा मन्दिर	: वृत्ति—नागच	न्द्रमूरिस	० ७२०
		igo.	28	कल्यामा मन्दिर	वृत्ति	₩.	७२०
कल्पसूत्र टीका		हर स॰स०		कल्यागमाला-		स०	११७६
कल्पसूत्र वृत्तिः कल्पार्थ		য়া০ গাত্ধত	65	कल्यारा मन्दिर	स्तोत्रवृत्ति		
		10	88			सं०	868€
कल्याध्ययन सूत्र			1	कसजुगरास—		हि॰	११७५
कत्पावचूरि		সা ০	१२	कलयुग बत्तीसी		हि०	₹93
कल्यारा कल्पद्रुम-	वृन्दावन	हि॰	७१६	कलशाविधि		₹∙	६३७
कत्यारा मन्दिर-कु	रुवचन्द्र	स৹ ७৩	६७७,५	कलशारोहरण		हि०	७१३
		66	४,६५३	कलशारोहरा		स०	७२०
कल्यामा मन्दिर स्तोत	र—कुमुदचन्द्र	सं०	१०२२	कलावती सती		हि०	१०६१
१०३४, १०	६४, १०७४,	१०६३,	११२७	कलिकाल पचा		हि०	\$060
कल्यासा मन्दिर पूजा	देवेन्द्रकीति	सं०	£3.0	कलियुगकथा		हि∙	१०५०
कत्याण चन्दिर माषा		हि०	€33		१० <b>५३, १०</b>		
मत्त्वाल मान्यर मान		-	8030	कलियुगचरित्र	—बारा	हि•	
कल्यास मन्दिर माया			£88,	कलियुग चौपई		हि०	
			1	कलियुग बत्तीर्स		हि०	
	50, 202E, 8		,	कलियुगकी वि	नतीदेवा इह		
	ex, ११२२,		ļ	कलिकुंड पूजा			\$\$\$,£\$\$,
कत्थारण मन्दिर स्तव							£¥, ११११
		स <b>०</b>	७१६	कलिकुंड पार्श्व		- E •	
कल्यामा मन्दिर स्तोत्र		ijο 	€ € ७,	कलि चौदस कथ			
			१०१२	कलि स्पवहार			
कश्याग्यमन्दिर टीका-		स०	७१८	कवरपाल बली			
कल्यासा मन्दिर—च	रत्रबद्धन स	१७ ७१	390,2	कवल चन्द्रायए	पूजा	सं०	603

ग्रंथनाम लेखक	माषा	वत्र सं*या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संस्था	
कविकलपद्भमः - कत्रोन्द्राचार्यः	स०	५१३	कार्तिक पचमी	कथा	स०	Rák	
कविकाल्य नाम	<b>#</b> 0	११७६	कानिक महत्स्य	य	स ०	४३४	
कविक व्यानाम गर्भ चक्रवृतः	म०	₹2.38	कार्तिक महात्म	q	9 拼	ं ११७६	
कवि रण्या — हनायुध	स०	११७६	कार्तिक सेठ को	चौढाल्यो	हि०	<b>ス</b> まれ	
कांबल	हि द	• ६४,८	यानड कठिया	तनी <b>चौ</b> पई	हि०	દપ્રય	
कांबन-दनारसी दास	हि ०	६४=	कानडरे कठिय	रिका	हि०	६४४	
करित्त युपराववूदी	हि०	9003	कामधेनुसारस	री .	हि. ०	१११६	
कवित भानकवि	हि०	११४२	कामशिकाय य	ोग प्रसग	सं०	१२	
कविन यन्दरदास	fg o	११६६	कार्यक्षेत्र गीत-	–धनपाल	स०	१०२५	
कदि-उ इत्य	हि०	8888					
कविन । भ कल्यागुक महोत्सव	हिंगः	बन्द	कायाजीव संव	ाद गीत—बह	ग्रादेव हि	० ११४४	
	हि०	१०४४	कारक खडन-	भीष्म	स०	४१२	
कविल नागरीदास	हि०	१०६६	कारक विचार		स०	<b>५</b> १२	
कवित्त व स्तोत्र संग्रह	हि०	£XE.	कारिका		ग०	प्र१२	
कवित्रिया	स •	€3	कालक कथा		प्रा॰	४२४	
कविभियाकेशवदास	म०३	87,8030	कालकाचायं क	षा — ममयमुन्द	दर हि०	४३५	
कविसिहविवादद्यानतराय	हि०	8088	कालकाचार्यक	या मास्तिक्य	सूरि स०	४२५	
कष्ट नाशक स्तोत्र	₹•	१०५२	कालका वःयंत्रव	<b>१</b> जिनसुसस्	(रिहि∞	X £ 8.	
कष्ट विचार	हि॰	४४२ .	कालज्ञान		सं	५४२,	
कष्टावलि	स०	६६४			ય હ ધ્	५७६,८५३	
कषाय जय भावना	हि०	१०६६	कालजान भाग		म हि	¥ :9 €	
काबाय मार्गगा	平中	<b>१</b> २	कालज्ञान सटी	6	सं०	४७६	
का:जकावत कथा जलितकीति	₩•	56	कासयन			१९७२	
काजी बनीद्यापन	棋・	\$30	कालावनि		feo	ε χ 3	
., , मुनि ललितकोर्नि	स ०	४३७	कालीकवच		हि॰	१०६५	
कानन्त्र रूपमन्ता शिवदर्मा	æio	488	कालीतन्व		Ħ o	११७७	
कातन्त्र रूपमाला टीका-दौर्म्या	सहस०	* 8 8	काव्य मंग्रह		सं०	₹ 🎖 ५	
कातन्त्र रूपमाला वृत्तिभावने	न सं०	प्रश्च	काशिका वृत्ति-	बामनाबार्य	स०	५१२	
कातन्त्र विक्रम सूत्र —शिववर्मा	मं ०	५११	कियाकलाप		सं∘	५१३	
कार्तिकेयानुत्रका-स्वामी कार्ति	<b>টৰ</b> সাঞ	,	क्याकसाप टी	काप्रभाचन्द्र	ाचार्यं सं०	٤٩,	
		280,888	1	•		66,800	
कार्तिकेवानुत्रेक्षा टीकाशुभवन	द्र स॰	१६१,१६२	क्रियाकोण भार	राकिशनसिंह	ृ हि०	१००	
		मा अज	\$08,807,803,808				
	888	¥39,638,	क्रियाकोश मार	तः दूलीचन्द	ं हि	808	

पंथनाम लेखक	माधा पत्र	संख्या	ग्रंथनाम लेखक	नावा प	त्र संस्था
क्रिया पद्धति	स०	१०४	कोकसार	ताया ग हि॰	. १६४
कियासार भद्रवाह	সা•	808	कोकिला वतीद्यापन	सं०	430
किरातः ज्नीय — भारवि	स० ३१		कोए सूची	₩•	<b>1</b> 888
कुण्डलिया — गिरवरराय	fē•	१०११	कौमूदी कथा	₹•	¥3.€
क्ण्डांसद्धि	<b>स</b>	450	कृत्रिम ध्रश्तिम चैत्यबंदना	 हि॰	8050
कुनुहल श्त्नावनी—कल्यामा	स०	५४२	कृदन्त प्रक्रिया - ग्रनुभूतिस् <b>वरू</b> प।		488
कुदेव श्वलप <b>ब</b> र्ग्न	fz o	् =	कृपण कथा—जीरचन्द्र सूरि	हि॰	¥3 €
कुदकुटाचार्यकथा	हि०	४३५	कृपम् जगावस्य <b>— व</b> ० गुलाल	हि०	६ ९ २
कुन्दकृत्द के पाचनामी का इ	निहास		कृपरग पच्चीमीविनोदी लाल	हि॰	६५=
	f₹∘	६५१	कृपग् पट्पद-ठक्कुरसी	हि०	१६४
कुबेन्दन भीत (ग्रठारह नाता	रास)		कृमि-ोगका व्यौरा	े हि 🗠	४७६
-	<b>রি</b> ঃ	१०२६	कृष्ण बलिभद्र सञ्ज्ञय	हि॰	१०१५
कुमति को विनती	हि०	€ 5 0	कृष्ण बलिमद्र सज्भाय—रतनी		७२०
कुमनि सज्भाव	हि ०	850	कृष्णजीकावारहमासा—जीव	श्राम हि॰	640
कुमारपाल प्रवस्थ हेमचन्द्राः	चार्यस०	३१७	कृष्ण युधिष्ठिर संबाद	, सं०	११७५
कुमार समव कालिदास	₹ ○評	७,३१८	कृष्ण रुक्मिणी विवाह	हि०	१०८७
कुमार समव — सटीक मल्लिक	नाथ सूरि		कृष्ण ध्वमित्य वेलिपृथ्वीराज		११७५
	स०	₹१=	कृष्ण गुक्त पक्ष सज्भाव	हि०	689
कुवलयानन्द — श्रप्पय दीक्षित	Ħο	£3,⊻	_		
कुलकरी	स०	६५१	ख		
<b>कुप्टी चिकि</b> त्मा	हि०	५७७			
कुसुमाञ्जलि	Ai o	१०२६	खटोला त्र० धर्मदास	हि०	3208
कूट प्रकार	स०	१२	खण्ड प्रशस्ति	स०	११७७
बू.प च ऋ	स०	3008	खण्डेनवालों की उत्पत्ति	हि०	१००४
केवली	हि०	800		:	\$602
केणर चन्दन निर्एय	हि० ग०		खण्डेनबाल जाति की उत्पत्ति व		
केशवी पद्धति—केशव दैवज	₹∘	485		हि०	
केशवी पद्धति भाषोदाहरए।	सं०	१११६	खण्डेलवालों के ८४ गोत्र	हि०	
कोकमजरीआनन्द	हि०	६२६	खण्डेलव लों के ८४ गोत्र	हि॰	
कोकसास्त्र	हि॰	ERR	सण्डेलवाल श्रावक उरपत्ति वर्ण		
कोकशास्त्रधानन्द	हि०	१११०	सित्ररी कमलकीति	E.	
कोकमास्त्र—कोकदेव	हि०	६२६	स्तीवह राम	हि०	
कीकसार	हि०	६२६	खडन खाद्य प्रकरण	स •	
कोक शास्त्र के घंश	हि०	¥33	खड प्रशास्त काव्य	€ 0	३१८

ग्रंथनाम स्रो	क म	ाचा	पत्र	संख्या	प्रथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
खड प्रशस्ति श्लोक		<del>स</del>	0	<b>७७</b> १९	गर्भवऋवृत संख	या परिस्ताम	श्रा	<b>१</b> २
46 441111 11111					गर्भ बधन		सं∘	१११६
	ग्				गर्भषडारचक-	-देवनन्दि	स०	७२०
								१०६६
गर्ग मनोरमागर्ग :	ऋषि	सं	0	४४२	गब्ड पुराए।		स •	२७४
गज सुकुमाल चरित्र		हि	-	Ęss	<b>धृह्मतिकम</b> ण स्	ूत्र टी <b>का</b> रत	नशेखरग	रेए
गब स्कृमाल चरित्र-	–जिनसूरि	हि		३१८			स०	१०५
ग वसिंह कुमार चरित्र	।विनयच	द्र सूचि	₹		गृह प्रवेश प्रक	<b>ट</b> रग	हि	8 6 6 x
		सं	ř۰	318	े गृह शान्ति वि	घवर्द्ध मान	सूरि स	७१६
गर्जासह चौपई—राष	<b>बसुन्द</b> र	हि०		<b>8</b> 3€	गाया लक्षरा		प्राप	3099
गरमधरवलय पूत्रा		हि०		€ ≒ э	गिरिधर की <del>बु</del>	डिलिया	हि	० ११५=
	8000			3 8 9 8	गिरधरानन्द		ŧήο	१११६
गराधस्यलय पूजा		हि०	•	¥30	गिरनार पूजा		हि	6085
गस्वरवलय पूजा		त्रा०			गिरनार पूत्रा-	—हजारीमल	हि	130
गराघरवलय पूजा		स०			गिरनार बीनत	fr	हि	० ११३३
गराधरवलय पूजा वि	धान	सं०		૭ દેશ	गिरनारी गीत	विद्यानन्दि	हिं	२७५
गरावर वनय पूजा —!	गुमचन्द्र	हि०		१०६५	गीन —मतिसा	गर	हि	
गराधरवलय पूत्रा —	भ० सकलकी	र्ति स	0	११६०,	गोत-यमःकी	ৰ্নি	हि	
				@ £ &	गीत-विनोदी	सान	ફિ	० ८५१
गरमधरवाद - विजयद	ाम मुनि	हि	•	3603	गीत गोविन्द-	–जयदेव	₹1 (	७२०
गराधर विनती		हि०		११३८	गीत सलूना	कुमुदचन्द	हि	
मस्प्रपति नाम माला		स०		१११७	गीता तत्वसार		િ	
गरापति मुहूर्ते राव	ल गरापति	सं०		***	मुएकरण्ड गुर	।।वसीऋषि	दीप हि	
गरापति स्तोत्र		स०		१०६=	गुगाघटि । विच	ıτ	स ∙	
गग्तमुस्दरी चउपई	कुसललाम	राज	۰	४३६	गुराठाएगगीत-	—कहावद्वांत	fિ	
गणितनामम.ला-इ	<b>रि</b> दास	स०		४४२				१०३२
				११७=	गुस्रठासा चौप	ाई — वीर <b>च</b> न्द	f	
गरिएत शास्त्र		fį۰	,	१०३३,	गुराठासा वेति		fi	० ११३५
				۶ ۾	गुरातीसी भाव		हि	664
गश्चित सार —हेमरा	¥	हि०		११७=	वृत्त्वतीसी सीव		हिं 4	284
गिर्ण तसारवस्तु सब्ह				११७८	गुरादोव विचा	₹	स०	802
गरोश स्तीत्र		₩.		1111	गुरामाला		हि	१०१७
गतवस्तुज्ञान		स॰		E . Y o	गुणुमाला —	दृषि अयमस्त	ફિં૦	७२१
ग <b>र्भच</b> कवृत		<b>₹</b> 0		444	गुरारत्नम।सः।	— मिश्रमाव	सं०	<i>200</i>
		-		. ,				

ग्रंथनाम लेखक म	वा	वत्र संख्या	यथ नाम	लेखक	मीवा	पत्र संख्या
गुरगुवर्मा चौरत्र - मारिएक्य सुन्दर	सृदि		गुरु स्तोत्रवि	जयदेव सूरि	हि॰	७२१
	स •	388	गुलाल मयुराव	ाद पच्चीसी—	- हि०	8 <b>=</b> ¥
गुरपविलास—नथमल विलाला	हि०	8£*	गुर्वावित		हि॰	६४२,
गुग्गवेलि भ०धर्मदास	हि०	१४३			73	०, ११४७
गुरगस्थान कमारोह	स०	₹ \$	गुर्वाबली (चौस	ठऋदि) पूजा	— स् <b>बस्</b> पच	न्द विसालां
गुरगस्थान गाथा	श्र	१३			हि०	५३ ७
गुरगम्थान चर्चा	<b>₹</b> •	१२, १३,	गुर्वावली सज्म	ाय	श्रा∙	६५१
८६०, ६६७, ६६८, ८६	€, €€	0, १०५६,	गोत्रिरात्र बती	द्या रन	स०	3089
		3709	गीपाल सहस्त्र	नाम	स०	७२१
गुर्गस्थान चर्चा	श्रा ०	6524	गोम्मट सार	नेमिचन्द्राचार्य	प्रा॰	१५, १६
गुरगस्थान चौपई - वर् जनदास	हि०	68	गोम्मटसार भा	षा—पं० टीड	रमल राज०	१८, १६
गुरगस्थान पीठिका	हि०	१०५४	गोझ्मटसार कम्	काण्ड टीका-	—नेमिचन्द्र	
गुरास्थान भागंगा चर्चा	सं०	68			সা ৽	सं० १७
गुरगस्थान मार्गरणा वर्णन-नेभिः	वद्राचा	र्य	गोम्मटसार चच	rf	हिं •	ग० १७
	সা৹	6.8	गोम्मटसार चूरि	लका	सं०	6.8
गुरग्स्थान रचना	हि ०	१४	गोम्मटसार टीर	कासुमतिकी	ति सं०	१६
गुरएस्थाने वर्णन	प्रा०	१४	गीम्मटसार (क	र्मकाण्ड) माव	ाः हेमराज	
गुरमस्यान वृत्ति—ग्त्नशेखर	सं०	१४			हि०	38
गुरावली	स •	६५१	गोम्मटसार पूव	द्धि (जीवकाण	<b>E)</b> —स∘	₹'3
गुरावली पूजा	हि०	<b>१</b> ५६	गोम्मटसार पूव	द्धिभाषा—पं	० टोडरमल	
गुरावली पूत्राः द्युभचन्द्र	सं०	७१५			राज	१८,११
गुरावली समुच्चय पूजा	स०	७६५	गोम्मटसार जी	वकाण्ड वृत्ति (	तत्व प्रदीपि	का)
गुरावली स्तोत्र	स०	७२१			सं०	२१
गुरु भ्रष्टक—श्री भूषण	स०	११६६	गोम्मटसार (पं	च सग्रह) वृत्ति	श्रमयचन	द्र
गुरु जयमाल — व्र० जिनदास	हि •	७१५,			· सं०	२१
	११४	≀३, ११४६	गोम्मटसार वृशि	तकेशववर्ण	र्म सं∘	3.5
गुरुपदेश शाक्काचारडालूराम	हि०	१०४,१०५	गोम्मटसार संह	ष्टि—पा० ने	मिचन्द्र प्रा	• २१
युरु पूजाव्र० जिनवास	हि०	१००७	गोम्मट स्वामी	स्तोत	सं०	७२१
गुरु पूजाहेमराज	हि०	३११६	गोरस कविल-	—गोरसदास	हि •	8 8 X X
गुरु राशि गत विचार	सं०	११३४	गोरख चक्कर		हि॰	१०६४
गुरु विनती	मं ०	<i>છ</i> છ 3	गोरखनाय का	जोग	हि०	१११५
गुरु विश्वावली—विद्यामूषरा	सं०	११३६	गोरस विवि		सं०	y3e
गुरु शिष्य प्रश्नोत्तर	सं ०	१०८५	गोराबादल कथ	11 बटमल	€ f€•	6636
गुरु स्तवन-नरेन्द्र कीर्ति	हि०	११०६	गोरोचन कल्प		हि	० ६२०

ग्रन्थ	ानुकम	ास	का

\$5:x. ]			[ ग्रन्थ	ानुकम	<b>शिका</b>
ग्रंथनाम लेखक आ	स प	त्र संख्या	ग्रंथनाम लेखक मा	वा प	त्र संख्या
गौडी पारवेताय छद - क्याल लाभ	हि०	७२१	ग्रहसिद्धण्योक — महादेव	सं०	१११५
गौडी पारवंनाय स्तवन	fg۰	१०३७			
	-	१०६१	ঘ		
गौतम ऋषि संग्रभाय	সা৹	७२१			
गौतम पृच्छा	₩.	२१,२२	घोरकालानतचक्र	मं •	१११६
<b>836, 78</b>	, EXX	, १०६६	चण्टा <b>कर्ण</b> कल्प	हि •	<b>\$</b> 20,
	f₹∘	२१	:		5 8 ==
गौतमरास	हि॰	६३२	घण्टाकरणं सत्र	हि०	<b>६</b> २०
		e33	१०४४, १०४६		
गौतमरास-विनयप्रभ	हि •	१०३६	घण्ट।कर्ग्विचिविधान	स०	६२०
गौतम स्वामी चरित्र-धर्मचन्द्र	₩.	386	घण्टाकरग्रास्तीत्र व मत्र	₩ o	११२७
		\$ <b>?</b> o	-		
गौतमस्य.मीरास	fg o	CX &	<b>च</b>		
गौतगस्वामी रास विजयभद	हि०	8058	च उदइ गूमागीत	লৈ ০	ह६२
गौतमस्वामी रास —विनयप्रम	हि॰	११६५	च उदह गुलगात च उद्योगी की चौपर्द चतर	:50	644
गौतमस्यामी संस्काय	हि॰	१०३८	मञ्चालाकामामः भागर	हि •	१०६
गोनम स्वामी स्तोत्र-वादिचन्द्र	١Ē٥	११२८	चउवीसः	।ह <b>॰</b>	१०३७
ग्रह प्राविष्टत	हि॰	११७७	च उसरम्मे प्यन्न	हि०	203
गगानहरी स्तोत्र - मट्ट जगन्नाथ	सं०	७२१	च उसरम्म प्रयस च उसरम्म वृत्ति	সাৎ	\$ 0 X
गथकूटी	₩•	233	च असरम् पृति च अस के थर्ला	हिं	Exx (cx
ग्यारह प्रतिमा रास	f₹•	9986	चक्र स्वना देवी स्तीत	स०	७२२
ग्यारह प्रतिमा वर्णन्	fgo	६८१	चन्न स्वना दवा स्तात चनुर्गतिरासवीरचन्द	हिं •	<b>6</b> 32
ग्यारह प्रतिमा बीनती-न जिनदार	-	8830	1 -	हि० हि०	६ द ४ १ द ४
ग्रन्य विवेक चित्रवर्णी-सुन्दरदास	-	8088	चतुर्गति वेलि - हर्षकीर्ति	,	१०५
प्रत्य सूची शास्त्र भण्डार दबलाना-		<b>4 4</b> £	चनुरचितारणी—वीलतराम	हि०	५०र ७२२
<b>प्र</b> हर्णवर्णन	fe۰	१११४	चतुर्दश भक्ति पाठ	स० हि०	
ग्रहश्विवार	ei o	483	चतुर्दशीकथा—टीकम	-	१०३२
ग्रहप चवरांन	₩•	X83	चतुर्दशीकया — डालूराम	हि०	<b>8 6</b> 6
प्रमुमायप्रकाश	<b>स</b> •	483	चतुर्दश गुरास्थान वेलि - इ० जीव	थर हिन	६६२
प्रहराशिकन	₹ 0	X. C &	चतुर्दशी चौपईचतुरमस	हिन्दी	80%
प्रहराशिकल	सं०	. १११७	चतर्दशी प्रतिमासीपनास पूजा	€ o	330
ग्रहण राहु प्रकरश	€.	3019	चतुरंशी व्रतोद्यापन पूजा-विद्या		
ग्रहुलाधवगलोग दैवज्ञ	a TS	488	Ladan surara Las sam.	सं०	730
ब्रह्नलाधनदेवदल	棋中	483	ì		989

ग्रंथनाम लेखक मा	षा प	त्र सल्या	ग्रंथ नाम	लेख क	भाषा	पत्र संख्या
ंचतुर बगाजारा गःतः भगवतीदास	हि०	E=4	चतविश्वति स्वो	च – एं० जगक	ाच स	७२३
चनुर्माम घर्षव्यास्त्रान	हि०	१०५	चतुविशति स्तो	त-समस्तभद्र	ा सं∗	<b>203</b>
चर्त्रमसि व्यास्थानः समयमुन्दरः र	उपाच्याय	1	चतुः शरराप्रव	ीर्एक सूत्र—	स	• २२
•	₹ 0	१०५	चतु. चष्ठि योगि	त्रीस्तोत्र	<b>स</b>	१०५२
		१०६	चतुष्कवृत्ति टि	ास — पंगी	न्हरा सं	<b>६१</b> ४ ०
चतुर मुकुट-चन्द्रकिरण को कथा	- fgo	११६२	चतुष्कशरण वर	र्गन	प्रा∘हि	१०५
चतुव्धिः।न कवित्त-बह्य ज्ञानसा	गर हि०	६६३	चतुः सन्गाप्रज्ञ	त	<b>X</b> (	• २२
चन्विध स्तवन	सं०	७२२	चन्द्रनमलयागि	रकवा	हि	<b>६६२</b>
चतुर्विणति जयमाना-माधनन्दि ह	तीसं०	७२२				906.
चतुर्विशति जिन दो ::	हि०	७२२	चन्दन मलमागि	री क <i>वा</i>	द्रमेन हि	. १४५
चतुर्विगति जिन नमस्कःर	स०	७२२	चन्द्रन मलगाग			
चतु । गति जिन पूजा	हि •	હ કેશ	चन्दन मलयागि			
		330	चन्द्रन परिठ पुज			
चनुरिंशति जिन शासन देवी पूजा-		636	चन्दन घच्ठो प्रत			
चतुर्विंगति जिन षट् पद बंध स्तोत्र	धर्मन	ीति	चन्दन बन्ठी व्रत	-		
	हि०	१००८	चन्द्रन परिठ व्रत			
चतुर्विशति जिन स्नवन	प्रा०	७२२	चन्द्रनाचरित्र-	**		
चनुविगति जिन स्तुति—	हि०	७२२,			_	
		, १०६१	चन्दराजानी दाल		हि	
चतुर्विशनि जिन स्तीत्र टीका जि	नप्रमसू	रि	चन्द्र गुप्त के १		हि	
	स०	७२२			E=E. 901	7, ११३०
चतुर्विशति नीर्थंकर जयमः ल	हिं ०	₹ १०=	चन्द्र गुप्त के से	लहस्वन	ब्र० रायमर	PF
चतुर्विशनि तीर्थं हर वासी स्थान	हि०	१०४=	Î		हि	£ <b>X</b> ₹,
चतुर्विगति तीर्थकर स्तुति—	हि०	₹ • 3 €		७२, ६८६, ६	६८०, १००	४, १०१२,
चतुर्विशति पूत्रा	सं∙	१०५६		१०२३, १	०८४, १००	•६११ ३३
<b>च</b> ्रुविशति पूत्रा—जिमेश्वरदास	हि•	१११३	चन्द्रग्रहण कारव	मारक किया	r	१११७
चतुर्विमति पूजा भ० गुस्पन्द	₩•	७१८	चन्द्र दून काव्य-		सं	· \$2.
		330				
चतुर्विमति पूजाष्ट्रक	सं०	८७४	चन्द्रप्रभ काव्य	सावा टाका	हि	
चतुर्विवति पच कल्यासक समुख्यये	खापन	विधि	चन्द्रप्रभगीत		हि	• <b>£</b> 34
क० गोपाल	स •	9 <b>.8</b> e	चन्द्रप्रभ जकडी-	—खुनाल	हि	o foct
पतुर्विभित स्तवम	सं०	७२२	चन्द्रप्रभ चरित्र-	—यशकीति	धरभ्र	त ३२०
चतुर्विगति स्नवनप० जयतिलक	सं०	७२३	चन्द्रपम चरित्र	—वीरनन्दि	स०	३२० ३२१
चतुर्विश्वति स्तृति शोभन मुनि	सं०	७२३	चन्द्रप्रम चरित्र	– सकलकीति	सं	978
-						

प्रंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	खेलक	मावा	पत्र संख्या
चन्द्रप्रम चरित्र-	श्री वस्त	मपभ	श ३२१	चर्चा शतक		ਵਿੱ	£33 o
चन्द्रप्रस चरित्र	भ षा —होरात	ान हि	० २७६,	चर्चा शतक	-बानसराय	हि	२३
			322	₹¥,	२४, १०११, १	083, 80	७२, १०८१
चन्द्रप्रम छन्द्र	ग्रा० नेमचन्द	हि	० ७२५	चर्ना शक्क टी	का—नाथूनाल	दोधी हि०	२७
चन्द्रप्रम पुरासा	—जिनेन्द्र भूषम्	हि	० २७४		ोका—हरबी शल	हिन्दी	२६,२७
चन्द्रप्रस्पुरासा	– धुभचन्द्र	ŧ	० २७४	चर्चा समाधान	—भूघग्दास	हि०	२७
चन्द्रप्रमुग्तवन	मानस्यव	हिं	० ७२३				€, १०७२
चन्द्रयभ स्तीव		स	७ ७७४	चर्चासमाधान	∵भूघर मिश्र	हिन्दं	
चन्द्रश्रम स्वामिन	ो विवाह—भ	नरेन्द्रक	र्गित				१०११
		र (ज	<i>७</i> ४३७	}	प॰ चम्पालाल	हिरु	70 30
चन्द्रप्रज्ञप्ति		<b>#</b>	० ६१०	चर्चास।गग्व		हि०	₹ •
चन्द्रलेहा चौपई-	-रामबल्लभ	हि	ऽ ह५४	चर्नारध		हि०	÷ 0
चन्द्राकोदिनय	7 <b>7</b>	हि	१ = ३	अविधारप		हि०	₹e
चन्द्रावनोक		सं	, XX4	चर्चासार मग्र	ह-∼भ०सुरेन्द्रभृ	परास •	
चन्द्रावलोक टीक	विषवेसर (	गगभट्ट)	स० ४४४				₹ ₹
चन्द्रोदय कर्ण टो	का — कविरात्र	शसंघर	स॰ ५७७	चर्चासग्रह	प्रा	० मं० हि	
चन्द्रीदय 'व नार		fa	* **	चर्चास्यह		हि	१०१३,
चन्द्रोनमीलन म	धुमूदन	₹ 4	• ११७८				4610
चमस्कार चिताम	(ल −नारायस	₩.	, X K K	चरमते ब्यूह्		स -	
चमत्कारपूत्रा-	रात्रकुमार	हि	e30 o	चतृगति चौपई		हि	
चमत्कार पूत्रा		<b>स</b> (	. <b>૭</b> ૨૭				११३७
चमत्क। रफ व		₩ •	466	चपगक्य नीति	चाग्रवय	₩ •	
चमत्कार बट् पच	:स्का-महार	मा विद्या	विनोद			£	८४, ६८५
•		Ħ º	,	चार कथाय स	•भाय—पदासुन्द	र हि•	488
चम्पाशनकचम	पाबाई	fge	. <b>६</b> ५ ह	चार मित्रो की	कथा	€.	83⊏
बरसा भीपई		fac		च।रित्र पूजा∽	नरेन्द्रसेन	स०	8010
चर्चा		₹ 9	i		बा—धी मृषस	₹1 0	630
वर्जाभ० मुरेन	दकीति	₹1	. (	ৰা∘িদ সুৱি বি	विधानभ० गु		030
<b>चर्चाकोश</b>		हिं	. २३	चः∤श्चसःर		NI.	£ E.A.
चर्चाग्रन्थ		fge		नारिय सार-	-चापुण्डराय	#i o	१०६
वर्षा नामावली		tg∙		चःरित्र सार—		प्रा०	१०६
चर्चा पाठ		íg •	43	वःगित्र सारं व	व्यतिका मन्नास		4 . £
<b>बरपा</b> बायठ व्	्य <b>मा</b> ल	fgo	6600	वंश्यस कथा		स०	¥\$€
न्या बंध		हि०	. २३	चःस्वल चरित्र	वीकित देवदः	त संश	\$ 55

इंच नाम	लेखक '	माचा	पत्र संस्य	। प्रथ नाम	लेखक	मधा प	त्र संख्या
चारू स्त प्रदन्ध-	–कल्य साकीति	ा हि	o 83	चूनडी		हि•	१०८2
बारूदत प्रवध र	स - इव जिन	शस हि	o	३ चूनडी— वेग	ग <b>ाज</b>	हि०	१०३७
च.रूदत्त सेठ रास	त (शमोकार र	ास) — व	। जिनदा	🛘 चूनडीरास –	~भगवनीदास	हि•	£5%
		हि	• &\$	चूनडाराम-	–विनयचन्द्र	हि ॰	€ € •
बारूदल थेप्ठीन	ोरास—भ०य	भ कंति		चेतनकमं व	रित्र	हि॰	१०४७
		हिं		वेतनक मंचि	त्र —भैया भगव	ीदास हि०	१००५
वारों गतिकः च	ौढ निया	fæ	• <b>१</b> 0	.	8097.8	0EX, 229E	, ११३१
चार्वाकमती मडी		fa •	२४	े चेतनकमंसव	ाद - भैया भगव	तीदास इ.०	११७१
चिकित्मासार	घीरजराम	स०	યુ			हि•	8068
विनीडकी गजन	कवि वेदान	हि०	9 9 9	formered 3	–विनोदी <b>न</b> ाल	fg。	११५०,
चित्रीड बसने का	समय	हि ०	803			-	१८५२ १०८३
चिद्दविलास दी	गचरः कासलीट	ाल		चेतनगीत		हि०	११८०
		हि०	\$ \$ 8 3 5		क्र जिनदाम	हिं	6=8
चिद्रपत्रिन्तन प	<b>ज</b> मु	हि०	Ęş	र	#0 1#1414	160	१०२७
चित्रबंध स्तीत्र		स∘	93	वेतनगोत-	ararin	हि०	१०२७
चित्रबंध स्तीत्र		प्रा०	.55			हि॰	१०६६
सचित्र यंत्र			₹₹€	२ चेतनजन्महा		ਹਿਨਰ ਵਿੱਚ	७२३
चित्रसेन पद्मावती	क्याः गुरासः	धु सं•	83	9		-	933
चित्रसेन पद्मावती	कथाः राज्ञवल	लाम स०	४३	ह वितन पुद्गल	षमाल — बूचर		001 02 <b>9</b> 1.3
चिन्त मिए अयम	।।ल	हि ०	<b>१</b> १५	R	। धमालवत्ह	हि० हि०	4#27,0 \$=3
विश्वार्शन जयम	।ल:र।यमल्ल	हि०	१०५	अपन पुरमल चेतनप्रास्ती	-	हि० हि०	8 6 R.X
बिन्त,मिशा पाइवं	नाथः विद्यास र	ार हि०	११५		पाप्त जसवाद — खेमस		११=o
वितामिए पः इबं	नाथ पूजा	सं०	* ? ?		गतपाद च्यानत —ारमानस्य जी		4 × 8
चिन्तामीस पाप्रव	न। य पूत्रा म	৹ সুমৰ	स <b>न्</b> द्र	i	समय मृत्दर	ાં ફિ∘	256
		₩° °	199,73	(	444 344	16.	1075
बिन्तामिंग पाइव	निश्वविनतीः	ম্মাৰদ্	हि॰ ६५	चेतालाणी स	थरामचग्रा	हि०	184
चितःमशि पाम्बं	ताथ न्तोत्र		सं० ७२	a !	रो चोवालियो—		
चित्रमस्ति पाध्वंत	।थ स्तोत्रप	• पदार्थ	स॰ ११२	9 चल्ला सता	रा चावा।लया	-	
चिन्तामरिए पूजा		f	हे० ६४	चैत्यबंदना		राज∘	368
चित्रामिए। यंत्र			स॰ ६२	र वित्यवदमा		भा•	४०४३ ७२४
चितामिए। स्तवन	ı		ei	चेत्यालय व	न्दनामहीचन्द	fgo	<b>११३३</b>
वितामिए स्तोत्र		+	सं० १०६		and other	.62	रेरेंदर
		8 0	७७,११२	चैत्याल बीन	ती —दिगम्बर र्	शंब्य हिं०	७२४
चुर/दिगरा		,	मं∘ ५१	वैत्यालयों व	त वर्णन	हिं•	<b>१</b> 05१

एंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सब्ध	ग
चौर्घाडया निक	लनेकाविधि	स०	488	चौशीस ठःखा	संस्कृत		38,88	ą
चौडात्यो मृगु	प्रोहित	हि०	११८०			€€0,8	¥ • \$ . ₹ • ¥ •	=
चीःसक्षाः—ः	ोकम	हि०	દેક્ષ્	- चौबीम ठारा।	गथा	য়া৹	8005	¥
चोदह गुगास्थान	वर्षा	हिन्दी	<b>३</b> २	· चौबीस ठ:एा। प	वर्चा	दि०	3 = ,8 ₹	,
चौःह गुरास्यान	वचितका — प	स्यराज	श्रीमाल	:	3909,833	१०२८,१८	* 4, 2 2 4 8	3
		र । ज	• ३२३३	∙ चौबीस ठासाः	चर्चानेमिच	न्द्राचार्यप्र	To #Io	
चौदशपुगा स्वान	वर्गान —नेमिब	द्राचार्यं प्र	110				.⊋७,१०६	٥
			₹१,३२	वौबीस ठःसा			3 6	
चौदह मार्गगार्ट		हिन्दी	\$ 6	चौबीस तीर्थक		fgo	5.6	
चौदह विद्या नाम		हि≠	११८०	चौबीस तीर्थं कर	T 41 - 267		Za 1939	,
चौकानी लीनाव		-	8.9€	वौदीस तीर्थं कर				•
चौरासी ग्रासादन		हि०	8062	वौत्रीम तीर्थकर				
चौरासी ग्रासादन	π	हि •	१०६६	चौबीम तीर्थकः			,	
चीरासी गीत		हि•	₹ १ <b>२ •</b>	चौर्वाय तीर्थ कर			30 508	
चौरासी गोत्र वर	र्गेन -	हि •	१००४	चौदीय तीर्वकर	**			
			₹•₹0	चौबीस तीर्थं कर	**		;- ==\ ;- ==\	
चौरासी गोत्र वि	-	fáo	६४१	11410 1114 111	*5		,०४, ५०५	
बौरासी जयमाल	(माला महोत्स			चौडीस तीर्थं कर				
	_	हिं	६५१	4(4)0 114 00	X-11 (11.0)		580	
चौरासी जाति क		हि•	8013	चोबीस तीथं कर	ताका स्वोत्सा	क प्रायमी वि	•	
चौरासी अति ज		हि०	६४२	कोबोस तीर्थ कर			o = 0 %	
चौरासी जाति की	वियमालव	-	1	41414 (14 4)	, 3011 Bara		09, 505	
		हि•	€ ₹	चौबीस तीर्थ कर	nwसेता			
चौरामी अःति ज	यमालव्र०			चीकीस तीर्थ कर				
		हि•	११४२	यामान ताल कर	X 41 041		3505.0	
चौरासी जाति के	1 1 रहा छ।	हि०	६५२	भौबीस तीर्थ कर	******** 1710	-,		
चौरासी बोल		ફિં•	3 = 8 = =	चोबास ताथ कर चौबीस तीर्थं कर			3009 0	
चौरासी लाख जो	वया विस्ती			चाबान ताय कर	43:		2. 2830	
पाराता साल पा	941 1440:	हुनाराका। हिं	958	भौबीस तीर्थं कर	mm			
चौवनी लीला		ig o	1088	-ाबाच साल कर	7-11		2250	
चौदीस प्रतिप्रव	ीत-री	(g o	223=	वीबीस तीर्थ कर	वजा सेवार	ाम हि	. e. st	
चौदह गुरुवन्यानः			6602	वीबीस तीर्थ करों				
चौदीस दिन चौर			1133	श्रीबीस तीर्थं कर				
चौबीस जिन पूडा			2220	#1#12 11# #C	1 1 1 1 1 1 1 1 1			
A1410 144 741		.4	1110			,,	•	

प्रथ नाम	लेखक माव	पत्र संख	या प्रथमाम	लेखक	भाषा पत्र संख्या
चौबीस तीर्थं क	र भवान्तर	हि० २५	अर्थ चौसठ ठाएगाः	बर्चा	हि॰ १०११
चौबीम शेथ क	र मात पितानाम	हि० १	६ वौयठ योगिनी	स्तोत्र	स॰ ७२४,
चौबीस तीर्थक	र वीनतीदेवाबहा	हि० ७			११२४
चौबीस महारा	न की बीनती—चन्द्र	कविहि० ७	र्४ चंपकमाला सत		हिं० ६३२
चीत्रीस महारह	न की वीनती—हरिद	बण्द	चपावती सील	कल्यागादे	मुनिराज <b>चद हि॰ ४३</b> ८
		রি ত	{ <b>x</b>		
चौदीस तीर्थकर	1377	হি০ ৩		হ্	
41410 3144	. (	•	 (८ छनीसी ग्रन्थ		सं॰ ३१
-4-0	रस्तवनविद्याभृषश्			<del>î</del> r	हि० ६६०
चोत्रोस तीर्थक चौत्रोस तीर्थक			१४ छत्पव		हि० १००३
	र स्तुत र स्तुति(लघुस्वयं				fro ess.
	र स्तुति— (लघुस्वय र स्तुति — देवाब्रह्म	तू)सब्द हि०१०			883, 888
चोत्रीस ताथ क चौत्रीस तीथंक	•	स०११	**************************************	. चन्द	हि० १२६
	C +014		छहदाला—दो	लतगम	हि॰ ११३२
चौबीस दण्डक			<sup>9</sup> ४ छहराना—दो	लतराम पल्ली	वाल हि॰ १९६
		१०.	ं छहदाला —धा	नन राय	हि० १०४१
चौबीस दण्डक-	गजसागर	हि० ११			3155
चौबीस दण्डक-	धवनचन्द्र	সাং १	७७ छहदाला—बुध	(जन	हि॰ १६६
चौकीस दण्डक-	—सुरेन्द्रकीर्ति	₹• ₹	खादसीय सूत्र-	भटकेदार	ብ» አየጵ የያነ <b>ይ</b>
चौथीस दण्डकम	।।याप० दोलतराम	हिं १०			हि॰ ६५३
		<b>१११४. १</b> १		•	हि॰ ३१
चौद्योग भगवान	ा के प्रक	हि० ११	1		सं० १०६
	। जपुत्रा—रामचन्द्र	हि० १०	1		स० ४४४
didio delo	4 24. (1.14.2	10.8	2.0		हि० १६४
-4-0		हि० १०७	E		प्रा० ११५०
याकास महाराष	त पूजनवृदःवन	160 (00	प्राप के सम्बद्धा	स	हि० ११४०
	_	•	छद नारायर	गु दास	हि० ११६=
चौसठ योगिनी	स्वीत्र	स० १०	अंद्रकाभ टाका	— च-द्रकीति	, प्राव्सव ५६३
वीबीस स्तवन		हि० ११	थ छद रस्नावलि		सि निरंजनी हि० ५६३
चौदीसी कथा		सं० ४	व्यक्त वस्तरस्ताव	हर टीकाप	० सम्हरा स० ५६४
चौकोसी वत क		हि॰ ४	छंदानशासन स	वोपज्ञवृक्ति	- हेमचन्द्राचार्य
चीब सी द्रमक्ट		स० ४		•	सं० ५१४
चासठ ऋदि वृ	जास्वरूपचन्द्र	हि० =	ં અર પલાંગલા પ	रसना <b>च</b> ल	ध्मी वस्त्रभूगींश
		41	41		हि० ७२५

<b>१</b> २३० ]			् प्रवानुक्रमस्यिका
र्श्वयनाम लेखक मा	खा यः	। संस्या	ग्रंथनाम लेखक भाषा पत्रसंस्थ
<b>छ</b> दमार — नाराय <b>लदास</b>	f۶۰	११५८	जम्बू स्वामी कया पाडे जिनदास हि० १०१
खद संप्रह – गगादास	fe o	x # 3 \$	११०१, ११०
<b>ज</b>			जम्बूस्यामी चरितमहाकवि बीर ग्रय० ३२
<b>4</b>			जम्बूस्वामी चरित्र — भ०सकलकीति स० ३२२
जकडीदिरगह	हि०	888	32:
जकशे—मोहर		2555	१०४६, ११६:
जक्टो — स्वाचन्द		१०६४	जम्बूस्वामी चरित्रव्रा०जिनदास सं० ३२:
जस्वडिया सम्रह	हि॰	१०११	जम्बूस्वामी चरित्र — पांडे जिनदास हि० ३२४
जसाडी	fg o	१०२४	350
जलडी कविशस		2309	अम्बूस्वामी चरित्र—नाषूराम लेमेचू हि० ३२ <b>९</b>
अवडीरामकृष्या	F# 0	११६=	जम्बुस्वःमीचित्रि— प्रा०स० ३२४
अकडी भूघ 'दास	हि०	8 8 E C	जम्बूस्वामी चौपई—कमल विजय हि० १०२६
जवडी बीस विरहमःन —हपंकीति	हि०	१०७३	अम्बूस्यामीजकडीसाधुकीति हि०१०२०
<b>ज</b> नही महस् <b>स्वरी वर्सन</b>	fao	730\$	जन्बुस्वामी पूजा हि० ६१३
अगन्नाथ घष्टक	fg o	१०३६	जम्बूस्वामी पूजा जयमाल स० ६१३
व्यक्तम कुल्डली	Ħο	*88	जम्बूस्वामी पूजः हिरु १०६४
		१०६३	जम्बुस्वःमीपूत्रात्रगतराम हि०१०६४
जन्म कु∙डनी सह विचार	म्∘	५४५	जस्बुस्यामी पूजा—बृन्दावन हि० १०६४
अन्स जातक चिह्न	सं०	**4	जम्बूस्वामीरास—-प्रविजनदाम हि० ६३३
जन्म पत्रिका—— <b>खुशाल बन्द</b>	स०	१०१६	जम्बूस्वाभीरास—नर्यावसल हि०६३३
जन्म ।त्रापद्वति	यं ०	<b>ሂ</b> ሄሂ	; जम्बूस्वामीरास — य० जिरावास हि० ११३०,
अपनित	स •	<b>= ₹</b> ₹	११४७
<b>अ</b> स्युकुमार स <b>रकाय</b>	हि०	· 80	जम्बूस्वामीवेलि—वीरचन्द्र ति० ११३२
अम्यू दीप धक्तत्रिम चैत्यालय पूजा-	– শৃণ জি	नदास	जयकीति गीत हि॰ १६३
	सं०	485	जयकृतात यात जयकृतार चरित्रकः कामगाज स० ३२६
जस्यू द्वीप पट	₹ 0	११८१	जयज्ञयारे वार्य
अस्त्रु द्वीप पण्यासि	সা৹	६१०	जय तिहुम्मा प्रकरमा— सभयदेव प्रा० ७२४
जम्बू ही। पूत्रा—प <b>ः</b> जिनदास	<b>सं</b> ०	= १२	जय तिहुवस्य स्त्रोत्र-मृति समयदेव प्रा० १०२६
जम्बू होप सं <b>त्रयाता — हरिमद्र सूरि</b>	গা •	480	जय पराजयसाम समयप नार १००६
कम्बूस्वामी श्रद्धवनपदातिलकः			
<del></del>	ZII o	840	जयपुर जिन मन्दिर यात्रा — पं॰ गिरषारी हि० ६५२
अस्यूस्वामी कथा साम संस्कृति कथाः चे-कील्यास्य	ξο.	880	
जम्बू स्वामी कथीपे॰ दौसतराम			442.
	हि॰	880	वयपुराशाव॰ कामराज स० २७६

प्रथमाम लेखक मावा	पत्र संख्या	प्रथनाम बेखक	मावा पत्रस	स्या
	हे० १०२४	ज्योतिष ग्रंथ भाषा-कायस्थ	नाथराम	
	ह० ६८५		T-	(४७
	हे० ११३१	ज्योतिष रत्नमाला केशव	-	( 8 9
	े हे <b>० १</b> ०१६	ज्योतिय रत्नमाला टीका – पं	०वैजा ५	(४७
जलयात्रापुत्रा म	333 0	ज्यांतिष विचार	सः ११	₹ 0
जलयात्रापुत्राविद्यान स	० ८१३	ज्योति विद्यापनय	.स॰ ५	१४६
जलयात्राविधान स	० ५१३	च्योतिय शास्त्र	सं॰ ११	१३८
जलयात्रा विधि स	० ६१३.	्रजोतिय शास्त्र <b>हरिभद्रसूरि</b>	सं० ५	480
	११३६, ११६६	ज्योतिव शास्त्र-चितामिता	पहिताचार्यं	
	म = ६१३		स• ५	480
	स० ८१३	च्यातिष शास्त्र	· #0	(RE
जल होम विवि स		ज्योतिष सार-	स॰ ११	<b>†</b> 4 0
जसकीति गीत हि	० ६६२	ज्योतिय नारचन्द्र	स० ५४८,११	٤=٤
जसहरचरिउ—पुष्पदन्त श्रप	० ३२६	ज्यातिमार भाषा—	•	. 8 €
जसंधर वौपईलक्ष्मीदास हि	० ११६७	ज्योतिषमार सग्रह		(83
जसोधर जयमाल हि	० ११०७	ज्योतियसार सम्रह-मुंजादि		<b>( c 1</b> (
ज्येष्ठ किनवर कथा—श्रुतनागर स	368 01	ज्योतिष सारगी	सं० १	K R =
ज्येष्ठ जिनवर कथा—लित कीर्ति	स॰ ४७९	ज्बर त्रिशती—शाङ्गंध <b>र</b>	सं• '	4" 10
ज्येष्ठ जिनवर कथा—हरिकृष्ण पार्श	3	उदर पराजय <b>—</b>	स० ५	<i>७७</i> )
हि		ज्वालामालिनी स्तोत्र	स० ए	o ş e
ज्येष्ठ जिनवर कथा ग्र॰ रायमस्त			१००५ १	१२५
	० १४४,९६६,	जातक तीलकण्ठ	सं• :	K K M
.4	803	जातक पद्धति—केशवदैवञ्च	सं० ५	१ ४ ४
ज्येष्ठ जिनवर पूजा हि•	668	जातकाभरणदुंढिराज दैव	अप्त सं ः	x x x
=		जानक लकार		₹¥£
ज्येष्ठ जिन्दर दत कथाखुशाल चस्ट स		जिनकल्पी स्थविर माचार वि		8 o =
Ti	हे॰ ११२३	जिन कन्यासक प० भागा		804
ल्येष्ठ जिनवर वृतीद्यापन स	११३२	जिन गौतहर्षकीर्ति		390
	fo দংখ	जिनगुण विलास-नयमल		₹∓₹
अयेष्ठ जिनवरनी विनती ब्र० जिनद		जिन गुए। सम्यक्ति कथा-ल		833
	६४२	जिन गुर्ग सम्पत्ति वतीबापन	•	
ज्योतिष ग ॥ - नारचन्द्र सं				600
	• ४४६	जित गुरा सपति वतो बापन	पूजा—सं ०	è g a
ज्योतिष ग्रंथ ि	हे॰ ४:६	जिनगह पूजा जबमाल —	हि० १	११०

प्रंथनाम लेखक	माषा	यत्र सख्या	प्रंथ नाम	लेखक	मावा प	त्र संख्या
जिन जन्म महोत्सव षट्पदवि	चासाग	₹	जिनबिस्व निर्मार	ग विवि	सं०	<b>११</b> =२
• •	हि	₹00₹	जिनविस्व निर्मार	ए विधि	দ্ধি •	११८२
जिनश्त कथा-रत्नभूषण	हि०	११४४	जिनमहामिषेक ।	वेधि झाशाः	धर स•	≈ 6.R.
जिनदत कथा	मं •	<b>ጸ</b> የ	जिनमुखाव लोक	न कथा—सक	सकीति मं०	<b>११३</b> ६
जिनदत्त चरित - गुराभद्राचार्य	सं०	३२७.	जिन मंगल		स०	6638
• • • •		144. XX8	जिनयज कल्प	ग्राष्ट्राधर	Ħ o	द्ध ४
जिनदत्त कथा भाषा	हि	YY8	जिनव्हा स्तीत्र		<b>₹</b> •	७२६
जिनदत्त चरित्र —पं० लाख्	<b>ध</b> पभ		जिनराज वीनती	,	हि ०	65.86
- जिनदल चरित्र - स्टन्सुष्या स्टि			जिनरात्रिकथा		#i o	११३६
जिनदत्त परित्र-विश्वभूपरा	ि हिर		जिनर।त्रि विधान		स०	8.8 6
Mark and the last had	.60	4 7 G	जिनगति प्रतम	हारम्य — मुनि	पद्मनन्ति	
अनदत्त चरित्र भाषा-कमलनय	ान दि	376	ł		₽i o	886
्रजिनदत्तरास-रस्नभूषण	fgo		जिनरात्रिकथा	∽ललितकीर्ति	। स॰	¥७⊏,
>14.14.11.11	.6-	Ę į Y	1			800
भिनदत्तरा <b>य</b>	हि		जिनवर दर्शन स			७२६
म्बागदत्तराय	150	११४६, ११६७	बिनवर वत कथा			४७३
जिनदर्शन मध्तव्यसन चौपई	٠.	{{43 {\$=	जिनवत सात बोर	न स्तवनज		
जिनदशन मध्यव्यसन चापद् जिनदशनस्थान सावा	₩.				हि०	8088
	हि॰	<b>6</b> 73	जिनवर स्वामी वि	नतीसुमति	कीर्तिहि०	F 14 3
जिनदर्शन स्तुति	₩•	७२६	जिनशतक		<b>म∘</b>	७२६
जिनधमान	हि •	***	•	रदास	हि ०	3 × 0 9
जिनपाल ऋषि का चौढालिया —			जिनगतिका		सं०	88=≥
. 1	हि०	७२६	जिनसमवशररा स	रंगलनथमल	,	७२६
जिन्धितर स्नोत्र—कमसप्रम	₹i∘	७२६	जिनसहस्र नाम		स॰	१०२२
किनपूजा प्रनिकमस्य	हि •	4309	1			8.8
जिनपूजा विचि-जिनसेनाचार्य	स∙	£ {X	जिनसहस्र नाम-		मं ॰	६५७
जिना वर	g o	8068	84.	¥, €€=, ₹o	8= 60RE	, 8686
<b>लि</b> नटणंत्रहतवन <b>भाष</b> ः	feo	e Fe1	जिनसहस्र नाम -	माणाघर	ŧi o	७२४
जिनवत्र स्नोब-कमस प्रससूरि	<b>₹</b> •	£ X =	जिन सहस्र नाम-			٠¥,
जिनप्र'तम स्वस्य	हि०	<b>₹</b> 0≤	७२८, ६५६,	2000, 200	४१, १०४२,	१०६४,
जिनप्रतिमा स्वरूप माथा-छीतरमल काला			१०७३, १०७४, १०७८, १०८२, १०८८, १०६६,			
	हि॰	₹ o ⊏	१११८, ११२२,११४६, ११५१			
जिनप्रतिमा स्वरूप वर्शन-छीतः	काला		जिनसहस्र नाम	जिनसेना चार्य	सं०	७२४
	fg.	111=				७२=
	•					

प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्रसंख्या	प्रंथ नाम	लेखक	भावा पत्र	संख्या
जिनसहस्रतामः	टीका—समरकी	ति म॰	३२८,३१६	जीवन्थर चरित्र—		<b>श</b> प०	3 \$ 0
जिनसहस्रनाम		हि०	७२६	जीवन्धर चरित्र—	-दौलतराम	कासलीवाल	३३०
जिनसहस्रन!म	टीकाथ_नसा	गर सं०	७२६	जीवन्यर प्रवन्धः			३३०
	—जिन सेनाचार्य		εχξ,	जीवन्यर चरित्र—	-नथमल बिल	गलाहि०	330
8000	. १०४१, १०१	(3 <b>, १</b> ०६	۲, १०६२, <u>.</u>			338.	, ३३२,
	, १०६६, ११२			जीवन्धर गस—		हि॰	€38
	११५१, ११9	3, 1997	८, ११७=,	जीवन्धररास	र <b>मुवनकोति</b>	हिं०	११३६
जिनसहस्त्रनाम	स्तोत्र बनार	सीदाग		जीव विचार		हि •	<b>E&amp;</b> 5
		हि०	१०४५	जीव विचार		গা ০	308
जिनसङ्खनाम	पूजा — पुमति	साग		जीव विचार प्रक		প্না ৽	309
		स०	E 6 X	जो । विचार प्रक	रस—भाभ	तसूरि प्रा॰	80
जिनसेन बोल -		हि०	१०२४	जीव विचार सूत्र		स ० हि ०	3.5
जिनमहिता		स०	£ 8 X	जीव वैराग्य गीत		हि •	8058
जिनस्तवन-ग्		हिल	११०५	जीवसमास		দ্রি•	ex3.
जिनस्मरण स्त		हि०	७२६	जीवसमास विचा	₹	<b>प्रा</b> ०स०	80
जिनवर स्वामी	वीनती — सुर्भा			जीवसार समुच्च	य	e #	309
		fξο	8 8 3 8	जीवस्वरूप		प्रा०	3.€
जिनाग्टक		1£°	१०५६ १०५६	जीवस्वरूप वर्णन	ī	स॰प्रा॰	४०
जिनांतररास	-बीरचन्द	हि०	<b>११</b> ३२	जीवाजीव विचार	τ	शर	3 €
जीभदांत नासि	का नयन कर्यां सं	बाद—ना	रायस मूनि	जैनगायत्रे :		स ∘	620
		fe.	<b>११</b> 5२				380
जीरावल देव	<b>ी</b> नती	हि॰	6888	जैनगायत्री विधा	न	ন্থি •	8068
जीर।बलि बीन	ती	हि॰	११३७	जैनपञ्चोसी न	वल	हि•	१०७७
भीरावली स्तव	ान	fgo	१०२६	जैनप्रबोधिनी द्वि	• भाग	<b>ৰি</b> ০	309
जोब उत्पत्ति स	क्साय—हरसर	रूरि हि॰	3 €	जैनबद्री की चिट्टी	— नथमल	हि •	१०४४
जीवको सज्भा	य	हि •	१०५९	जैनबद्री की पत्री		हि॰	१६४
जीवगति वर्णन	हवंकीति	हि॰	3909	जैनबद्री यात्रा वर	र्गन — सुरेन्द्र	कीर्तिहि०	१०३५
जीवडा गीत	•	हिं	6 6 8 8	जैनशस		हि॰	888
जीवढाल राम	समयसुन्दर	हि	3909	i ·		१७=	£90\$,
जीवतत्व स्वरू		स०	3.5	जैनवनजारा रा	f	١Ē٥	8050
जीव दयाम		स०	8á8	जैनविलास—भू	वरदास	ਰਿ•	१०७३
जीव दया छंद	मुघा	हि०	११५७	,		•	<b>६</b> ६.
बीबनी प्रासीय	•	કિ	2838	जैनविवाह पद्धति	— जिनसेन	ाचार्य सं०	= 84.
जीवन्यर परिः	r—शुभवन्द्र	स•	378				¥,88?E

त्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सहया	्रयथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
जैन स्तक		हि०	१०४७	İ	ढ		
			१०५७	1	•		
जैनशतकभूध	रदास	हि०	१०११	दाहसी गाथा -	- हादमी	সা ০	88
१०४२, १०६०,	2008, 20	93, ₹00	6, 8000	टाडमी गाथा		प्रा०	११६२
	१०८१, १	११४, ११३	₹ <b>११</b> १३	रादसी गाथा		গাহ	833
जैनमतक दौहा		f₹o	€⊏⊻	ढाटसी गाथा		हि•प्रा॰	११७२
जैन श्रावक ग्राम्न	।।य <del>सम</del> ना	राम हि०	900	वादसी गा <b>था</b>	भाषा	180	११११
जैन सदाचार मात	गण्ड —नाम	त्पत्रका	उत्तर	दालगरासार हि०			१०३५
		fa∈o	१०१	ालसागर व	[ग्गुसागरसू रि	fao	<b>६</b> ६०
जैन सध्या		स •	8068	दालसप्रह्ज	यमल	F2 0	६६०
जैनेन्द्र व्याकरण-	देवनन्दि	FF 0	7 8 ≥	दृतियामत उ	१११		
जोगीरासा		₹•	ह ६०	दो नामारु चौप	ईकृशललाभ	fgo	१०२६.
	ē	६७४, १०२	૭, ११०३		-		१०३२
जीगरास		हि,•	€ ⊏ X	ढोना मारुसी	चौपई	राज०	* 68
जोगीरासा — जिन	दास	हि०	838	होलामारुकी	बात	हि०	8020
≈00, €!	५१, १०११	t, <b>१०१</b> ₹,	१०४६,	डोलामा स्वर्णी	री बात	f# o	8033
		₹0€	८, १११० :				
जोग विचार		₹	XRE.	ग्			
जोराकी विधि		हि०	400				
जंबूकुमार गीत		हि०	११११		<b>ीसुम</b> तिसाग		१०५४
अबू स्वामी चौपई-	पाण्डे जिन		66.85	समोकार महि		स •	१०४२
जबुक नामो		हि०	१००१	एमोकार मत्र		हि०	886
			1	गमोकार महा	स्य	40	११८३
	भ			समोकाररास		हि०	€ ⊏ ₹
				गोमिचरिउ।		धप -	
भूलना		हि०	११४८	गायकुमार च	रतपुरुपदण्त	धपभ्रम	<b>३३</b> २
भूननातानुसाह		हि ०	\$00\$		-		
					त		
	ट		1	तकाराक्षर स्त्रो	•	सं०	630
टंडाग्ग गीत		हि •	3808				¥1
टंडागा गीत		fgo	3099	तत्वकौस्तुम — पं॰ पन्नालाल पाडया हि॰ तत्वज्ञान तंरगिशो — भ॰ त्रानमूषयश			
					J. 10 11.1	<b>祝・・・</b>	86
	3		1	तस्वदीपिका		हिं	2 2 2
ठाणांग सुत्त		A10	86			`	* 6.3

पंघनाम लेखक	मावा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
तत्वधर्मामृत	स	. १११	तत्वार्थसूत्र भाष	शमहाचन्द्र	हि	48
तत्वप्रकाशिनी टीका	# 4	२०२	तत्वार्थसूत्र भा	षापं० सदाः	मुख कासल	ोवाल
तत्व वर्णन	हि	४२			े हि	
तत्वमार	(go	१०६२				११८३
तत्वसारदेवसेन	श्चप	82	तत्वार्थसूत्र भाग	पासाहबरा	म पाटना हि	, <b>५</b> ३
		११८३	तस्वार्थमूत्र भा	का जीका	. हि. हि.	
तत्वसार द्यानतराय	fgo	£808	तत्वार्थमृत्र भा		_	
		१०७२	तत्वार्यसूत्र भाग			
तत्वसः माषा	fgo	१०८२		(		10 48,88
तत्वानुशासनरामसेन	<b>#</b> 1 0	62	तत्वार्थसूत्र भा	षा (बचनिका)		
तत्वार्थबोष — बुधजन	हि ०	४२		. (		 स्थानी ५४
तत्वार्थं ग्रनप्रभाकर-भ०	प्रभाचन्द्र स	82, 83	तत्वार्थसूत्र मग	ल	हिं	
तत्व।यंराजवातिक भट्टर	प्रकलक संब	8.5	तत्वार्थमुत्र वृत्ति		सं ३	
सस्बार्थवृत्तिप० योगदेव	म०	. ₹\$	तत्वार्थमूत्र साध		हि	
तस्वार्थश्लोकवानिक-स्मा	विद्यानन्दि		तत्वार्थमुत्र सम		सं०	₹33
	स०	४३	' तद्धितप्रक्रिया -			
तत्वार्थसारग्रमृनचस्द्राच	।यं स०	Αź	त द्वितप्रत्रियाः		सं०	
तत्वार्थसार दीपक म० स	क्लकीतिस	10 88	तशेग्रहम् विधि	_	स०	
तत्वार्थसूत्र	संव	. ६५७	तपोद्योतक सत		प्रा	8086
2003	, 288, १०	११, १०६७	तकंदीपिका		स०	२४२
तस्वार्थं सूत्र —उनास्वार्मा	स	88	तकं परिभाषा-		संद	२५२
४४, ४६, ४७, ४८, ४६,	४०, ५७६,	६५३, ६६६	तकं परिभाषा	प्रकाशिका	वेन्नभट्ट स	२४२
६७३, ६६४, ११०४, १	००६, १०	१८, १०१८	तकं परिभाषा		•	<b>#</b>
१०२२, १०३५, १०७२,	१०८२, १०	दद <b>, १</b> ११७,	तर्कभाषा		स	२४२
११२२, <b>११</b> २७.			तकंभाषा वानि	<b>ा</b> क	सं०	<b>२४</b> २
तस्यार्थं सूत्र टीका	सं ० हि ०	१०८१	तर्कसग्रह—श्रद	त्रभट्ट	₩•	<b>२</b> ४२,२ <b>४</b> ३
तत्वार्थमूत्र टीका—गिरिय	दरसिंह हि०	४२	ताजिक ग्रन्थ		सं∘	
तत्वार्थं सूत्र टीका—श्रृतस	।गर स	* * * * *	ताजिक।लङ्गति	—विद्याधर	स	486
तत्वार्यं सूत्रवालावबोध टीव	ा हि०सं⊲	, ११२३	ताजिक नीलक	ठोक्तवोड्शयोग	स व	१११६
तत्वार्थं सूत्र भाषा	हिं •		ताजिक सार	•	संद	
	४४, ४६, ४	૭, <b>૫</b> ૦, પ્રદ	ताजिक सार-	– हरिभद्रगरिए	संब	388
		१०६५	तारएतरए स			
तत्वार्थमूत्र भाषाकनकर			1	- ,	हि	
तत्वार्थसूत्र भाषाश्रोटेला	ल हि	X.\$	तालस्वरज्ञान		संद	६०८

प्रेच ताम लेखक भाषा पत्र संख्या तेष नाम लेखक भाषा पत्र संख्या तिर्व विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विष								
तिष मण सं ० ६६६ तरहलाठिया—बनारसीय स हि० ६६६ तरहलाठिया—बनारसीय स ११६६ तरहवीय पृत्रा—लालभीत हि० ६६६ तरहवीय पृत्रा विष्या स० ६६६ तरहवीय पृत्रा विष्या हि० ६६६ तरहवीय हि० ६६६ तरहवीय पृत्रा विष्या हि० ६६६ तरहवीय पृत्रा विष्या हि० ६६६ तरहवीय हि० ६६६ त	प्रंथनाम लेखक भ		पत्र संख्या	ग्रंथनाम लेखक		पत्र संख्या		
तिषे सारणो—सःसीचन्द मः १११६ तिरु सारिणी साः ४६६ तेरहृद्वीप प्रश्ना—संस्थायन हिः ०६६ तिरु सारिणी साः ४६६ तेरहृद्वीप प्रश्ना—संस्थायन हिः ०६६ तिरु सी सी प्रश्ना सार्वे सार्वे से स्वर्धीय प्रश्ना—संस्थायन हिः ०६६ तिरु सी सी प्रश्ना सुन्तायन हिः ०६६ तिरु सी सी प्रश्ना—संस्थायन हिः ०६६ तिरु सी सी प्रश्ना—संस्थायन हिः ०६६ तिरु सी सी प्रश्ना—संस्थायन हिः ०६६ तिरु सी सी प्रश्ना—संस्थाय प्रश्ना हिः ०६६ तिरु सी सी सी प्रश्ना—संस्थायन हिः ०६६ तिरु सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी	तिथि दीपक ध्य	हि०	X R E					
तिर्देश प्रशासित । स० ११६ तेरहृदीय पृषा-जालकोन हि० ६१६ तिलोयस्थाति — पा० यतिवृषम प्रा० ६१० तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृपि द्वामा प० ६१६ तेरहृप्यव्यव्यव्य — परनानाल दृत्रोवाने हि० ११६ तेरहृप्यव्यव्यव्य — परनानाल दृत्रोवाने हि० ११६ तेरहृप्यव्यव्य — परनानाल दृत्रोवाने हि० ११६ तेरहृप्यव्यव्यव्य — परनानाल दृत्रोवाने हि० ११६ तेरहृप्यव्यव्यव्य — परनानाल दृत्रोवाने हि० ११६ तेरहृप्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य — परनानाल दृत्रोवाने हि० ११६ तेरहृप्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव व्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य ्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्यव्य व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्	तिथि मत्र	र्म ०	દ્ધ જ	तेरहकः।ठियाबनारसीदःस	हि०	-		
तिलोवप्रकाशित — मा० वरितृषम या० ६९० तेरहडीय पूजा	तिथि सारगी—नःमीचन्द	म०	१११६					
तीन चौबोती पूजा स० द१६ तेरहीप विधान म० द१६ तीन चौबोती पूजा हि० द१६ तेरहीप पूजाविधान हि० द०० तीनचौबोती पूजा- विद्वालय स० द१६ तीनचौबोती पूजा- विद्वालय हि० द१६ तीनचौबोती पूजा- विद्वालय हि० द१६ तीनचौबोती पूजा- विद्वालय हि० द१६ तीनचौबोती पूजा- वेर्चालय हि० द१६ तीनचौबोती पूजा- वेर्चालय हि० द१६ तीनचौबेत पूजावेर्चालय हि० द१६ तीनचौबेत पूजावेर्चालय हि० द१६ तीचें करमाना-पिया नाम वर्णनवेर्चालय हि० द१६ तीचंं करमाना-पिया नाम वर्णनवेर्चालय हि० द१६६ तीचंं करमाना-पिया नाम वर्णनवेर्चालय हि० द१६० तीचंं करमाना-पिया नाम वर्णनवेर्चालय हि० दिव्यलय हि० दिव्यलयोती हि० द१६६ तीचंं वीचींं पाणवेर्चालयोत हि० द१६० तीचंं वीचींं पाणवेर्चालयोत हि० द१६०	तिबि सारिगी	40	* 4 E	* **				
तीन चौबीरी पूजा हि॰ द१६ तेरहतीय पूजा विषाव हि॰ द२६ तेरहतीय पूजा विषाव हि॰ द१६ तेरहतीय पूजा विषाव हि॰ १११ तीनचौबीसी पूजा—हज्वावन हि॰ द१६ तीनचौबीसी पूजा—हज्वावन हि॰ द१६ तीनचौबित पूजा—हज्वावन हि॰ द१६ तीनचौबित पूजा—हज्वावन हि॰ द१६ तीचीयहारस्य (सस्पेद विज्ञाद  तिलोयपभगत्ति — ग्रा० यतिवृपभ	प्रार	६१०		हि॰				
तीनवीसीसी पूजा— हिन्दुबनक्य स० ६१६ तेरहण्यवाडन—परनानाल दूर्नोवाने हि० ११६ तीनवीसी पूजा— हृत्वाबन हि० ६१६ तीनवीस विज ११० ६६ व्यक्तिनिवीस पूजा— नेमीचन्य पाटनी हि० ६१६ तीम्बोस पूजा— नेमीचन्य पाटनी हि० ६१६ तीम्बोस प्रान्न नेमीचन्य पाटनी हि० ६१६ तीम्बेसहास्य (सम्मेद सिल्स विलास)—मनमुच्याय हि० ६१६ तीम्बेसहास्य (सम्मेद सिल्स विलास)—मनमुच्याय हि० ६१६ तीम्बेसहास्य (सम्मेद सिल्स विलास)—सन्तुचन्य हि० ११६ तीम्बेसहास्य (सम्मेद सिल्स विलास)—सन्तुचन्य हि० ११६ तीम्बेसहास्य (सम्मेद सिल्स कर्माम)—सन्तुचन्य हि० ११६ तीम्बेसहास्य स्वान्य सि० ६१६ तीम्बेसहास्य स्वान्य सि० ६१६ तीम्बेसहास्य सि० ६१६ तीम्बेसहास्य सि० ६१६ तीम्बेसहास्य हि० हि० ६१६ तीम्बेसहास्य हि० ६१६ तीम्बेसहास्य हि० ६१६ तीम्बेसहास्य हि० ६१६ तीम्बेसहास्य हि० हि० ६१६ तीम्बेसहास्य हि० हि० ६१६ तीम्बेसहास्य हि० हि० हि० हि० हि० हि० हि० हि० हि० हि०	तीन चौबोसी पूजा	स०	≈ <b>१</b> €			5 g E		
तीनवीकोमी पुत्रा - हुन्तवन हि॰ द१६ तीनवीकोम पुत्रा - हुन्तवन हि॰ द१६ तीनवीक पुत्रा - नेमीचन पाटनो हि॰ द१६ तीनवोक पुत्रा - नेमीचन पाटनो हि॰ द१६ तीनवेक पुत्रा - नेमीचन पाटनो हि॰ द१६ तीचंमहारूच (सम्मेद विवाद दिवास) - मन्युच्याय पाटनो हि॰ द१६ तीचंमहारूच (सम्मेद विवाद दिवास) - मन्युच्याय पाटनो हि॰ द१६ तीचंकरमाना-पिता नाम वर्गन - हैन्सु दि० द१६ तीचंकरमाना-पिता नाम वर्गन - हैन्सु द१६ तीचंकरमायानीचन कथा में ११६ तीचंकरमायानीचन कथा में ११६ तीचंकरमायानीचन कथा में ११६ तीचंकरमायानीचन कथा में ११६ तीचंकरमायानीचन व्याप कवि तीचचोमी विवाद प्राप्त हि॰ द१६ तीचचोमीम दान विवाद हैं हैं दर्भन विवाद प्राप्त हैं दर्भन विवाद विवाद विवाद विवाद विवाद हैं दर्भन विवाद विवाद विवाद विवाद विवाद हैं दर्भन विवाद विवाद विवाद विवाद हैं दर्भन विवाद	तीन चौबीसी पूजा	हि	= ? <b>\$</b>					
तीनवोक दिव ११३२ तीनवोक पूजा—देकचार हि॰ ८१६ तीनवोक पूजा—देकचार हि॰ ८१६ तीनवोक पूजा—देकचार हि॰ ८१६ तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु ताम वर्णन—हेमलु तीचे करमाना—पिता नाम वर्णन—हेमलु ताम वर्णन—हेमलु ताम वर्णन ताम वर्णन ताम वर्णन ताम वर्णन—हेमलु ताम वर्णन ताम वर्णन ताम वर्णन—होमलु ताम वर्णन ताम वर्णन ताम वर्णन—होमलु ताम वर्णन ताम वर्णम वर्णन ताम वर्णम वर्णन ताम वर्	तीनवीबीसी पूजा त्रिमुबनचन्द	₹ •	= १६	तेरहपथावष्टन पन्नामाल दूर्न	ोवाले हि	111		
तीनवोक पुत्र—टेकबन्द हि० द१६ हीनवोक पुत्र—टेकबन्द हि० द१६ हीनवोक पुत्र—टेकबन्द हि० द१६ हीनवोक पुत्र—तेमीचन्द पाटनो हि० द१ठ तीचं करमाना—पिता नाम बर्गन—हेमलु हि० द१६ व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव	तीनचौबीमी पूजा बृन्दावन	fgo	= 9 €					
है - विश्व के स्वाप्त कि स्वप्त कि स्वाप्त कि स्वाप्त कि स्वप्त कि स्	तीनलोक चित्र		११७२	द				
होतवाक पुत्रा — नमांचन पादता हि॰ दर्द तीर्थमहास्वर (सम्मेद सिवर दिवास) — मनसूचराय हि॰ ७३० तीर्थ करमाना—पिता नाम बर्गान — हेसलु हि॰ ६१२ तीर्थ करमाना—पिता नाम बर्गान — हेसलु हि॰ ६१२ तीर्थ करमाना—पिता के नाम हि॰ ६१२ तीर्थ करमाना—पिता के नाम हि॰ ६१२ तीर्थ वर्दानायानोचन कथा स॰ १११ तीर्थ करसाना—पिता के नाम हि॰ ६१२ तीर्थ करसाना—पिता कथा स॰ ११६ तीर्थ करसान—पिता कथा हि॰ ११३ तीर्थ करसान — व्यवका हि॰ ११३ तीर्थ तीर्थ वीर्थ वीर्थ करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय करसान है॰ ११३६ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय करसान है॰ ११३६	तीनलोक पूजाटेकबन्द	霞。	द१६		6.			
तीर्थमहाहत्व (सम्मेद विकार विकार)— मनगुलराय हुँ रहे के देशक मार्गहरू (सामेद विकार विकार)— समगुलराय हुँ रहे के देशक करणा— निजन मुनि प्रा० ११३ व्यवस्था करणा— हि० ११३ व्यवस्था करणा— हि० ११३ व्यवस्था करणा— विज्ञान मुनि प्रा० ११३ व्यवस्था करणा— मारामल्य हि० ४४३ व्यवस्था करणा— स्थाप करणा— हि० ४४३ व्यवस्था करणा— हि० ११३६ व्यवस्था करणा— हि० ११३६ व्यवस्था करणा— हि० ११३६ व्यवस्था करणा— विज्ञान स्थाप करणा— हि० ११३६ व्यवस्था करणा— विज्ञान स्थाप करणा— हि० ११३६ व्यवस्था करणा— विज्ञान स्थाप करणा— हि० ११३६ व्यवस्था करणा— विज्ञान स्थाप करणा— हि० ११३६ व्यवस्था करणा— विज्ञान स्थाप करणा— हि० ११३६ व्यवस्था करणा— हि०	रीनलोक पूजा - नेमीचन्य पाटनी	हि ०	<b>८१७</b>					
ति ७३० द्रष्टक्रकराग- निज्ञ मुनि प्रा० ११३ व्यवस्थान हि ११६० द्रष्टक्रकराग- निज्ञ मुनि प्रा० ११३ व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि ११६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्य व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्य व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६० द्रष्ट व्यवस्थान हि १६	तीर्थमहातम्य (सम्मेद शिखर विला	स)	मनसुम्बराय	9				
नीचं करमाना-पिता नाम कर्यन — हमनु हि० ११६० ति । १६६० ति					~			
हि० १११० दण्डकमान (ग्रा-व-वांवन हि० १११ दण्डकमान (ग्रा-व-वांवन हि० १११ दण्डकमान (ग्रा-व-वांवन हि० १११ तांवेचनामाहतवन हि० ६४२ दण्डकमान (ग्रा-विवास महि भाग हि० ४४६ तांवेचनामानोचन कथा म० १११ तांवेचनामानोचन कथा म० १११ तांवेचनामानोचन कथा म० १११ तांवेचनामानामान हि० ४४६ तांवेचनामानामान हि० ४४६ तांवेचनामान हि० १११६ ११२२ तांवेचनामान हि० ११३६ तांवेचनाम	नीयं करमाना-पिता नाम वर्गन-	-हेमर	7					
सीर्थ करो के माता-पिता के नाम हि॰ १०१२ तीर्थ वासास्तवन हि॰ ६२२ तीर्थ वासानी कवा मान हि॰ ६२२ तीर्थ वर्षातानीचन कथा म॰ १११ तीर्थ करस्तुनि हि॰ १११ तीर्थ करस्तुनि हि॰ १११ तीर्थ करस्तुनि हि॰ १११ तीर्थ वीर्थ वीर्थ करस्तुनि हि॰ १११ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ कर्षात्म क्रिक हि॰ ११२२ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय कर्षा हि॰ ११३२ १०६२ तीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय कर्षा हि॰ ११३२ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय कर्षा हि॰ ११३२ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय कर्षा हि॰ ११३२ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय विषय कर्षा हि॰ ११३२ तीर्थ वीर्थ वीर्थ वीर्थ विषय वीर्थ विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय								
तीर्थ वरतायालोचन कथा त १११ त्याचना चित्रकम मह त० १४१ त्याचना चित्रकम मह त० ४४३ त्याचना चित्रकम मह त० ४४३ त्याचना चित्रकम मह त० ४४३ त्याचना चित्रकम मह त० ४४३ त्याचना चित्रकम मह त० ४४३ त्याचना चित्रकम मह त० ४४३ त्याचना चित्रकम मह त० ४४३ त्याचना चित्रकम मह त० ४३३ त्याचना चित्रकम मह त० ४३३ त्याचना चित्रकम मह त० ४३३६ त्याचना चित्रकम चित	तीर्थं करों के माता-पिता के नाम	हि	१०१२			, .		
तीर्थ बरदायामोत्तन कथा म २ १११ दर्शन कथा—आरामलल हि० ४ ४३ तीर्थ करस्तुनि हि० १४६ १४६ १११६, ११२६ तीर्थ करस्तुनि हि० १११ दर्शनपञ्चीसी पुमानीराध्य हि० ७३० तीर्थ वीर्थायीयी— इस्तुम कवि हि० १९३६ तीर्थायीयीयीमा हि० १९३६ तीर्थायीयीयीमा हि० १९३६ तीर्थायीयीयीयामा हि० १९४४ तीर्थायीयीयीयामा हि० १९४६ तीर्थायीयीयीयामा हि० १९४६ तीर्थायीयीयीयामा हि० १९४६ तीर्थायीयीयीयामा हि० १९४६		हि	६४२			• • • •		
तीषं करसतुनि हि० १६६ १४२ १११६, ११२२ तीसचीबीची हि० १११ तस्त्रीयचीची हि० १११ तस्त्रीयचचीची पुमानीराम हि० ७३० तीसचीबीची—स्याम कवि हि० ६२३२ त्यांनपच्चीची —स्रुव्यका हि० ११३४ त्यांचित्रचीबीची नाम हि० ११३४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० ११३४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० ११३४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० ११४४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० ११४४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० १४३४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० १४३४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० १४३४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० १४४४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० १४३४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० १४४४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० १४३४ त्यांचित्रचीचीची पुमानीराम हि० १४३४ त्यांचित्रचीचीचीची पुमानीराम हि० १४४४ त्यांचित्रचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीचीची	तीर्धवंदनाग्रालोचन कथा	Ħ o	222		•			
तीसचौबीमी हि॰ १६१ दर्शनपच्चीसी गुमानीराम हि॰ ७२० तीसचौबीसी— च्यान कवि हि॰ ६२२ दर्शनपच्चीसी— बुचजन हि॰ ११२२ तीसचौबीसीनाम हि॰ ११३५ दर्शनप्रतिमाकास्परी हि॰ ११३५ १०६२ दर्शनिबाजी प्रकारण— देश प्रहाचार्य स॰ ११४ तीसचौबीसी पुत्रा हि॰ १९३२ दर्शनिबाजी हि॰ ११४४	तीयं करस्तुनि	हि०	3,83					
तीसचोबोसी—स्याम कवि हि० १६२२ तीसचोबोसीमाम हि० ११३६, १९३६, व्ह्रीमहिमाकास्पीरा हि० ११३६, १९६२ स्वित्तिमाकास्पीरा हि० ११३६ तीसचोबोसी पाठ—प॰ रामचन्द्र हि० वर्षः तीसचोबोसी पुता हि० १९४२	तीस चौबीसी	fgo	111					
तीसचीबीसीनाम ति० ११३५, दर्शनप्रतिमाकाश्यरेग हि० ११३५ १०६२ दर्शनिकश्विधि पाठ—प० रामचन्त्र हि० ६१ दर्शनिकश्विधि प्रकरण—देव महाचार्य स० ११४ तीसचीबीसी पुना हि० ६१ १००३, दर्शनिक्षत्रक—वानतराय दि० १०४३	तीसवीबीसी दयाम कवि	<b>রি</b> ০	६६२					
१९६२   स्थानिकाबि पाठ — प॰ रामचन्त्र हि॰ वश्य = इंगनिकाबि पाठ — प॰ रामचन्त्र हि॰ वश्य = इंगनिकाबि हि॰ ११४४   होने का का का का का का का का का का का का का	तीसचौबीसीनाम	f۲۰	११३५,					
तीतचोबीकी पाठ—प॰ रामचन्त्र हि॰			१०६२					
तीसचीबीसी पूजा हि॰ १००२, दर्शनशतक- द्वानतराय हि॰ १०४३	तीसचौबीसी पाठ-प॰ रामचन्द्र	fg.	द१⊏					
वसम्मात्राचा कामा	तीसवीशी पूजा	हि०	१००२,		•			
			\$080		•			
तीनवोबीसी पूजा - विश्वाभूषसा सं० ११३६ दर्शनसन्तति प्रा० ११४	तीनकोबीसी पुजा विद्याभूषस्	e ja	2226		-			
तीसचीबीमी पूजावृत्यावन हि॰ ६१८ दर्शन स्पतिका प्रा॰ ११४	तीसचौबीमी पूजावृन्दावन	हि •	<b>د</b> १ د					
तीसचौबीसी पूजा शुमजन्द्र सं० ६६४, दर्शनसार हि० १०६६	तीसवीबीसी पूजा गुमजन्द्र	सं०	£ 4¥.					
मरे७, मरेन, १११न वर्शनसार — वेबसेन प्रा० २५३.		٥, s	24, 2224					
तीसबोबीसी पूजा-पं साधारण संभाव = १८								
तीसनीबीसी पूजा — सूर्यमल हि॰ ११=३ दर्शनहसीत-म० मुरेन्द्रकीति सं० ७३०		-	-		संव	०६७		
तीसचीबीसीवरीबापन सं॰ १०७ दर्शनस्तीव मावा-रामचन्द्र हि॰ १०६६		-			fgo	7309		

ग्रंथनाम लेखक	मावा प	रत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संस्था
दर्शन,ष्टक	स。	309	दशलक्षरण पूजा		सं∘	£ ¥ = , £ \$ •
दर्णनाष्टकसर्वयाविद्यासागर	् हि०	१००३	दशनक्षास पूजा-	वाननगय	हि •	۲٩¢,۲۲۴,
दणचिन्तामिंग प्रकरम्	हिं∘	११८३				१०११,
दशदिवग'ल।चंनविधि	सं०	द२३	दशनक्षरा पूजा	विद्यान — टेकर	दन्द हि∘	
दशधमंबर्गाम	स०	११३६	दणसक्षण पूजा		स <u>्</u>	
दशपरमस्थान कथा ललितक	ीनि स०	850	दशलक्षण पूजा	,	हि०	
दशप्रकारक।हाग्।विचार	स०	११८४	दशलक्षण पूजा		स •	
दशभक्ति	हि०	908=	रणलक्षमा भाव	21U o 20212		
दशमीकथा - ज्ञानसागर	fgo	११२३	***************************************	1110 ((4))	राज राज	
दणरथकी जयम। ल	हि०	७७७	दणलक्षरम् नंडल	प्रजा—साजर		
दशनक्षरगउद्यापनपाठ श्रुतस	ागर स०	१०००	दशलक्षसम्गस-		ि। हि०	
दशलक्षराउद्यापन पूजा	सं०	द२४	दणलक्षण्विधान		हिं	
दशसक्षरगउद्यापन पूजा	हि०	द <b>२४</b>	दशसक्षमा विधा		हि०	
दशलक्षराउद्यपःन विधि	₽jo	<b>c</b> ? <b>c</b>	दशलकासात्रतः	••	हि•	
<b>ः शनक्षण कथा — धौसेरोलाल</b>	हि०	9 4 8	4.7.7.0.3		, ,	8868
दणलक्षम्। कथा ज्ञानसागर	हि ०	११२३	दशनक्षरण वत	<b>ह</b> था	हि०	
दशनक्षणः कथा—हरिचन्द	भप०	888	दशलक्षास्य दल व			
दशलक्षण कथा	₹⋄	ጸጻጸ	दशलक्षरगवत		स	
दशलक्षम्। कथा— य० जिनदाः	स हि०	888	दशलक्षमा वन		हि	
दशलक्षण वधा	Ę۰	886	दशलक्षण वतोः		सं०	
दशनक्षण कथा—ललितकीति	. ≝o,	8 <i>98,</i> 850	दशलक्षमा वतीः		हि •	
दशलक्षरणकथा − हरिकृष्ण प	ाण्डे हि०	8 € \$	दशलक्षण वतीर		हि	
दणलक्षम्। जयमः।ल	हि०	<b>=</b> 78	दशलक्षण व्रतीः		-	
द <b>२४,</b> द२७,	दरद, हह	3, ११०६		., .	स् व	
दशलक्षराजयमाल पूजाभा	वशर्मा		दशलक्षरा वनी	रापन—मुधीस	ागर स	<b>5</b> 30
		२४, ६२५	दशलक्षरा व्रतीव	द्यापन	संव	<b>= 3 •</b>
दशलक्षरा जयमाल - रहपू	स्प <sup>0</sup>	=28	दशलक्षरण व्रतीः	द्यापनभ० श	ान भूषए	г
दशलक्षरण वर्मपूजा	स०	१६४			संव	530
वशस्त्रसाधमंबरांन	हि०	₹₹\$	दशलक्षरावतो		श्चप	• 53 •
दशसङ्ख्याचर्म वर्णन	सं०	£ 9 9	दशनक्षरा वृतीः	द्यापन	प्रा॰सं	
दणसङ्ख्याचर्म वर्णन-रह्यू	धपभ्रं श	88.8	दशलक्षरगस्तीत्र		सं	
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	सं०		दशलक्षरणीकमः		सं	
दशस्त्रस्थाधर्योद्यापन		<b>८२७</b>	दशलाक्षासिक व		सं∙	
दशलक्षरापद	हि०	१२३	दशलाक्तरिएक पृ	(जापं०रूपः	बन्द हि	350\$

ग्रंथ नाम	लेखक माथ	ा पत	संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
दशवैकालिक सूत्र			47	दानडीकी कथ		हि॰	840
दशस्यान चौबीसी		₹0	१०४४	दानतपशील म		-	
दसम्रागेकीनाम		ह०	११८३	दानफलरास—		हि-	
दसदान		; ; o	3006	दानलीला		हि०	
द्रव्य गुरा शतक		٩o	५७७	दानशीलतप भ	<b>ावना</b>	fg •	
द्रव्यपदा <b>र्थ</b>		F o	२५४			`	१०६१
द्रव्यसमुच्चयक	जकीति ।	F •	Ęą	दानगीलतप भ	ावना ⊬मृनिः	प्रसोग प्रा॰	११५
द्रव्यसग्रह		70	११४२,	दानशीलतप भ	प्रवनाश्रीभू	षगा हि०	११६७
			११५०	दानशीलतप भ	।वना-समय	पुन्दर हि०	383
द्रव्यसग्रह—नेभिच	त्द्राचार्य प्र	To	44			१०	३६, १०५६
	ĘĘ,	०५४,	₹0≤0 °	दानशीलभावन	१भगौतीबार	प हि़∘	669
द्रव्यसग्रह टीका	प्रा॰ि	हु०	٤×	दानादिकुनवृत्ति	त	मं ०	887
द्रव्यसंप्रह टीका	सर्ग	g o	ξX	द्वादशनाम	तकराचार्य	स०	8 8 = X
द्रव्यसग्रह् टीका	-प्रभावन्द्र स	0	£8.	द्वादशमासा	विषया भाषा	महा ०	8003
द्रव्यमग्रह भाषा	f	ह०	ξX	द्वाद गानुष्रे क्षा		हि०	१४१,
٤	६, ६७, १००=,	१०७३,	११०३	₹.	६०,ह=३,१	o8E, 205	(१, १०५⊂.
द्रव्यमग्रह भाषा	-प० जयचन्द छाव	š!				8.8	१०, ११८२
	₹15	70 E	૭,६⊏	द्वादमानुत्रेथा-	कुन्दकुन्दाचा	यं प्रा०	२०३
द्रव्यमग्रहभाषा	प्रवंत धर्मार्थीगु∙		٤٤,	द्वादमानुप्रदेशा-	—गौतम	সা৹	₹०३
			१०८१	द्वावशान्त्रं का-			
द्रव्यमग्रह भाषा	~मैया मरवतीदास	हि ०	8004	हादशानुष्रेका		हि०	
द्रव्यमग्रह् भाषा टी	i≆t f	ē°	٤¥	द्वादणानुत्रे क्षा	जिनदास	हि०	१६०
द्रव्यसग्रह भाषा टी	का—बसीघर हि	Į o	€ છ	द्वादशानुत्रे का-	व्र० जिनदार	त हि०	€७२
द्रव्यमग्रह वृत्ति	ब्रह्मदेव सम्ब	त	६४,६४	द्वादशपूजाविध		₹10	द३२
द्रव्यसयह सटीक	श्रा ० रि	Ę 0	<b>ę</b> ę	द्वादशभावना-		हि०	
द्रव्यशत्रहस्टीक –	–बशोघर प्रः∘ि	g o	3808	<b>क्षादणरा</b> णिसङ		स •	
दातासूम संबाद	f	g o	११८४	द्वादशक्त कया		स -	
दानकथामाराम	ररुव ि	g o	४४६	(ग्रक्षय निधि	विधान कथा)	₹:•	880
दानकथा — भागा	≀ल्ला ि	<b>₹</b> •	3959	द्वादशयतकथा-	—-समितकीति	सं●	¥98,
			880				800
दानणील कथा—	भारामत्त्र हि	₹•	<i>გ</i> አ	द्वादशत्रत पूजा	— देवेन्द्रकीति	सं०	
दानशील संवाद	-	ę o	*80	द्वादशवत पूज	— मो उद्देव	410	
दानकथा रास		<b>₹</b> •	\$ 688	द्वादशत्रतमंदल	पूजा	हि ०	
दानचौपईसमय	सुन्दरवाचक वि	ę o	68.83	द्वादशत्रतोद्याप	न	सं∘	<b>=</b> ₹२

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या	ग्रथनाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
द्वादजीव था	(० ज्ञानमागर	हि०	333	देवपूजा		हि	<b>5</b> 5 5
द्वादणाग पूत्रा		म०	<b>5</b> \$ 2				7609
द्वातिशिका (युव	स्यष्टक)	Pρο	७३१	देवपूजा — ब्रह्म	जिनदास	मं ०	१०५८
द्वासप्ततिकला व	<b>।</b> व्य	feo	११८५	देवपूत्राभ!पा	- प० जयचन्द १	छा <b>वटा</b> हि	० द३३,
दिगम्बरीदेव पू	जापोसह पाटे	्रि <b>र</b>	१०६१				१०४७
दिगम्बरों के ४	भेद	Ħο	११३६	देव ३ जा भःषा-	- देत्रीदाम	हि०	द३३
दिनचर्यागृहागम	कुतुहलभास्व	तर स∘	XXE.	देवपूजाप्टक		स •	११४२
दिनप्रमागा		स०	५४६ :	देवशास्त्रगुरु पूर	नः — दोगतराय	हि॰	αá&
दिनमानकरशा		fę, o	१११५	देवशास्त्रगुरु पृज	िजयमाल भा	षा हि०	亡まえ
दिशानुवार्द		Fro	११५४	देवसिद्ध पूजा		<b>स∘</b>	द्ध <i>,६५६,</i>
इप्टानपच्चीमी	– भगवतीदास	हि •	£ € \$ 9		8028 60	द <b>२, १</b> १	२३, ११२⊏
शरदांतणतक		fe o	£ \$ X	देवागमस्तोत्र	समन्तमद्राचार्यं	सं०	११८४
हर <b>टान्तश</b> तक		स •	€ξο	देवागमस्तीत्र वृ	त्ति—धा० वसु	नन्दिस०	११८५
हप्टान्तशतक -	कुसुमदेव	<b>₹</b> 0	६८६	देवीमहास्म्य		सं०	884
द्विग्रहयोगफल		行っ	४४०	देशनाशतक		সা ব	६८६
द्विजमतसार		सं∘	११५	देहस्तगीत		हि	१०२५
डि <b>अवदनच</b> पेटा		秤。	<b>२</b> ४४	दोषावली		हि०	<b>५</b> ४६,५७७
हरप्रहारलाव	व्यसमय	हि०	884	दोहरा—ग्रालूक	वि	हि॰	888
दोपमालिकाकल्प	ſ	सं∘	885	दोहापाहुड-यो	<b>गीन्द्रदेव</b>	श्र २०	x308
दीपमालिकाचि	লে	₹ં∘	३३२	दोहाबाबनीप	ं॰ जिएादास	हि०	६४२
दीपावलीकस्पनी	कथा	हि०	<b>ጸ</b> ጸሮ	दोहाशतक		हि०	६८६,
दीपाविल्महिम	ı — जिनप्रभसूरि	स०	<b>6</b> \$ <b>3</b>				१००६
दीक्षापरम		स •	=33	दोहेतुलसीदा	स	हि •	1905
दीक्षाविधि		सं०	द३३	द्रौपदीशीलगुराः	सस-⊷म्रा∘नरे	न्द्रकीति	हिरु ६३४
दुखहर गाउद्यापन	—यशकीति	स०	<b>&lt; 3 3</b>	दौलतविलास	-दोलतराम	हि•	६६०
दुषहियामुहर्त		₹o	*xe	दौलतविलास	दौलतराम पल्स	नीवाल हि	० ६६०
दुघारस कथा	-विनयकीति	हि०	११२३				
दुर्ग मंगयोग		₹∘	१११६		घ		
दुर्गमबोषमटीक		朝の	३३२				
दुर्घटकाव्य		₩•	333	धनकलश कया-		सं∘	308
दुर्गाविचार -		平中	6620	घनञ्जय नामम	ला—कविधन		
दूरियरयसमीर र	तोत्रवृत्ति —सम	यमुन्दर					(३७, १३⊏
देवकोनीढाल		सं०	88=8	धम्नाऋषि सउभ	ы <i>यहषका</i> त	•	११०२
		हि०	SAS	<b>धम्नाच</b> उपई		हि॰	₹0€3
देवपरीषह जीपा	उदयप्रमसूार	ं €ि	१०२४	बन्नाचउपई —	मात <b>शंख</b> र	हि०	AAE.

ग्रंथनाम लेखक भा	वा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र सं•या
धन्नाजी की बीनती	हि ०	१०६८	धर्मपच्चीसी		हि०	₹8€,
	fę۰	₹0₹3			802	१६, १०६२
धन्यक्तार चरित्र -गुग्मद्राचार्य	<b>₹</b> 0	\$ 2 \$	धमंगस्वीसी	चानतर।य	हि०	60,83
धन्यकुम्पर चरित्र -सकलकीति	स०	334,	धर्मपच्चीसी	वनारमीदास	हि०	₹005
, <b>30</b>		३३४,३३५	भ्रमं गच्चीसी	भगवतीदास	feo	११३३
धन्यकुमार चरित्र-व० नेमिदल		३३४,३३६	धमंगरीक्ष ह	र्गमितिगति	刊の	११४,११६
धन्यक्षार चरित्रभ० मल्लिभूव	ण म	० ३३६	धर्मपरीक्षाकथ	ादेवचन्द्र	मं∘	388
वस्यकुमाः। चरित्र — बुगालचन्द क	ाला वि	हें० ३१६,	धर्मपरीक्षा भाग	शांदणस्य वि	नगोत्या हि	० १२१
•		३३७, ३३८	धर्मप-ीक्षामा	पाबाबा दुर्ल	विन्द ह्वि०	526
घन्यकुमार चरित्र—र३वृ	ग्रयः	झंशा १०⊏ ⋶	वर्मगरीक्षा भा			
बन्यकुमार चरित्र वचनिका	fē, o	352	44111411 111		हि	F 8.3
धन्यकुमार चरित्र माषाजोधरा	ৰ দি	• 3₹ <b>=</b>			tt=.	११६, १२०
धन्यक्रमाग्रास - व • जिनदास	fŧ۰					20, 1983
धरसंन्द्र पूजा	स०	११२८		ar merinan		£27.
धर्मक्या चर्चा	f₹٥	६८	धमपुराक्षा भा	षा — मुमनिकी	101 160	£31
धमंकीति गीत	fe	० ६६२				
धमें इ डलियां — बाल मुकुन्द	fŖ	० ११५	धर्मपर'क्षा रा	स— व ० त्रिनः	सम हि	
धमंचक पूजा	Ąo	E¥4,				6 8 8 3
	٧, ٤	<b>६६, १०</b> ६६	. धर्मपरीक्षा वर	वनिकापना	नाल चौध	Ť.
धर्मचक पूजा खड्गसेन	₩.	- = \$ d			हि	, १२१
धर्मबक पूजा-यशोनिन्द	स०	E 3 K	धर्मपाप सवाद	1	fe	, გა:
समंज्ञ यत्र	<b>#</b> 0	€58		वविजयकी	त हि	११६५
धर्मचन्द्र की लहर (चतुर्विणति स	नवन	)				
444.8 40.00	fg			(काक्रांबिं		
धरंचर्य	fg		, बर्म प्रवृत्ति (	पाशुपत सूत्रारि	त) नारायः	ग़ , ११६५
वर्गरा	fg				fe	
धर्मतस्य सर्वया-सुन्दर	हि		धर्मप्रकोत्त ग		fe	
धर्मतस्वीत—पं• जिनदास	हि		वर्तवावनी	वंपाराम दीवा	न हिं	
वर्गतहरीत (मानीरास)—जि			वर्षवृद्धि कम		14	
Addenial introduction	fe		และราชาน	बक्ति चौपई	हि	
			क्रकेंबिक पाप	बद्धि बीपडे—	िनहषं हि	· 64,
धमंदत्त वरित्र व्यासागर सूरि			सम्बद्धि संभी	क्या - बलत	ाम । १६	•
धर्मदस वरित-नालिक्यसुवर			वर्तवंद्वतं शा	यालाला नव	ामल हि	
वर्मनाबस्तवनधानंदवन	Ę			संवाद	€	० ११=
धर्मनाब रो स्तननबुशसागर	fę	. EEE	da Banco.			

				_		•
द्रंथनाम लेखक	माषा प	<b>1त्र संख्या</b>	ग्रंथ नाम	लेखक	मधा	पत्र संख्या
धर्मरत्नाकरजयसेन	₩٥	<b>१</b> ६२,		— व्र० करमसी	हि०	६३४
		१२३	ध् <b>वजा</b> रोपसा वि		स∘	# £ £
घमंरसायनपदानन्दि	A(0	१२३,	धातकी खडद्वीप		स •	
धर्म रासा	हि०	888	धातुतरगिराी-	– हपंकीति	स०	
धर्मरास	हि०	६३४	<b>थातुनाममाना</b>		स०	
		<b>प्र, १०३</b> २	<b>घानुपद</b> पर्या <b>य</b>		सं०	168
वर्मरासो — जोगीदास	हि०	8 = 3	धानु परीक्षा		सं०	
वर्मविलास	हि०	११००	धासुपाठ		स०	₹33
घर्मविलास श्वानतराय	हि॰	६६१	धानुपाठ —पा	<b>ग्</b> नी	e FF	× 6.8.
	६६२, १०४	४, १०१२	धातुपाठ भा		स •	x 6.R
षमंशर्मात्रयुदय-सहाकवि ह	रिचन्द स०	355	धातुपाठ हर्ष	कीर्नि	स०	XSR
घमंदाम:स्प्रदय टीका — यश	कीर्तिस०	3 \$ \$	धानुषाठ		सं०	488
धर्मेणुक्लध्यान निरूपग्	₩•	१२३	धातु शब्दावली		स •	४१४
धमंस्तम्भवर्द्धमान सूरि	सं०	538	धातुमम:स		स०	५१५
धर्मसार	हि०	११६८	<b>ध</b> ःराविधान		हि॰	3989
धर्मसार—प० शिरोमणि द	ास हि० १	२३,१२४	धुचरित्र—परम	मानन्द	हि •	8008
धर्मसद्ग्रह श्रावकाचारप०	मेघावी स०	<b>१</b> २३	ध्रुचरित्र		हि०	११८५
धर्मसंग्रहसार — सकलकीति	स ∘	१२४		_		
धर्मामृतसूक्ति सग्रह	स•	६८६		न		
धर्मोपदेश	हि॰	१२४				
धर्मोपदेश रत्नभूषरा	म०	१०५	नक्षत्रफल नक्षत्रमालावत	æw.	स० सं०	
धर्मोपदेश रत्नमालानेमिर	ांद प्रा∘	१२५	नक्षत्र एवं वार		हि	
धर्मोपदेश श्रावकाचारपं	जिनदास स	० १२६	नख सिख वर्ण		्। हि∙	
धर्मोपदेश श्रावकाचार — धर्म	दास हि०	१२६,		१तधानन्द व		
		\$ 60 \$	ननदभोजाई क		.खा। हि∙	
धर्भाषदेश श्रावकाचार व	नेमिदनासंब	१२५	नन्दबत्तीसी		सं •	
		<b>१</b> २६	नन्द बलोसी		हि	,
वर्मोपदेशसिद्धान्त रत्नमाला	भागचन्द		नन्दिमगल विध		.ए. सं०	
	हि०	१२६	नन्दीण्वर जया		सं०	
धर्मो वदेशामृत पदानन्दि	सं०	<i>३७</i> ३		 गल—सुमतिसा		
व्यानवत्तीसी	हि∙	१९३	नन्दीइवरतीर्थ		प्राप्त प्राप्त	
		१०४१	नन्दीस्वर पूजा		हि	
ध्यासवर्शन	ह०	१०७=	मन्दूसप्तमी की		fg o	
ध्यामसार	₩.	₹•३	नमस्कारमहात्य		.6 ∧ £7 o	
		( - 1		•	40	(14

ग्रंथनाम लेखक	भाषा	पत्र सस्या	प्रंथनाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नयचकदेवसेन	円の	२५४,	नवकार सज्भा	य	हि०	७२१
		888	नवकार सर्वेगा	— विनोदीनाल	हि॰	9 ई €
नयवक भाषा — निहालचन्द	हि०	२५४,	नवकारस्त्रोत्र		स०	११२४
		२५६	नवग्रहमरिष्ट	निवारसः पूजा	fg o	द ३ ७
नयचकभाषा वचनिका—हेमरा	ज हि०	२१४,	नवप्रहण्डा		स०	= ३५,
		२५५	1		# <b>\$ \$</b> , # <b>3</b>	৩, १०५७
नण्कदुखवर्णनभूषरदास	f∉∙	१२६	नवपहपूजा—	मनमुखलाल	हि	⊏ ३७
नरकदोहर	हिं	5₿6	नवग्रह पूजा		teo	5.50
नरकवर्णन	हि०	€ 8 3	नवग्रहपूजावि	धान	ਵਿ o	म ३७
नरकविवरसा	fg :	3 <b>x</b> 3	नवग्रहस्तवन		য়া	ম০ ৩३१
नरकनुढाल — गुरग्सागर	हि०	8X o	नवग्रहस्तोत्र-	- भद्रबाहु	म०	७३१
नरपति जयवर्या — नरपति	٩o	४४०	नवप्रदेशास्त्रंनाः	य स्तोत्र	म०	<b>७</b> ३१
नरसगपुरा गोत्र छद	हि०	११४१	नवग्रहस्तोत्र		स०	११५३
नरेन्द्रकीर्तिगुरु भष्टक	स •	११६०	नवतस्वगाया		भा०	€ =
नलदमयतो चडपई	हि०	४५०	नवतत्वगाधाः भ	ध्यापन्नाला	न चौघरी	हि० ६६
ननदमयती सबोध-समयसुन्दर	हि॰	४५०	नवतत्व प्रकरण	Ĭ	प्रा०	4 8
नसोयाः व्यान	<b>#</b> 0	४५०	नवनस्वप्रकरस्	टीकाप०भ	'नबिजय	
नलोदय काव्य	P G	११⊏६			म ० हि	ه <i>ډ</i> و
नलोदय काव्य-कालिदास	Ą٥	3 🕫	नवतत्वशभ्दार्थ		য়া৹	3.7
नलोदय काव्य टीका	<b>#</b> 0	355	नवतस्वसमास		Яfe	१०२१
ननोदय काव्य टीकारामऋषि	स०	₹80	नवतस्य मूत्र		সা•	90
नलोदय काव्य टीकारविदेव	e FF	340	नवनिधान चतुर	शंगरत्नपूजा⊸	- सध्मीसेन	
नवकारग्रथं	हि०	१२६			# •	600
नवकार पूजा	सं∘	c 3 X	नवपदफेरी		म॰	? <b>१</b> ८६
नवकार पैतीसी पूजा	सं०	<b>634</b>	नवपदार्थ वरांन		हि०	3143
नवकार पैतीसी वतोद्यापन पूजा-	सुमति	सागर	नवमंगल		f₹∘	१७३
,,	<b>#</b> •	= 34	नवमंगल — सार	नष-द	हि०	१०७४
नवकार बालावबोध	١٤٥	120	नवमगल — विन	विवास	fgo	१०७४,
नवकार मंत्र	सं०	VOX			१०७	⊏, ११४४
नवकार मत्र सालचन्द	हि •	2113	नवरस्नकविश		हि०	१०३⊑,
नवकारमंत्र गाया	ЯI•	६२१				११८६
नवकाररास	fgo	848,	नवरत्म काव्य		सं०	<b>१</b> १=६
		660	नवरत्न काव्य		सं •	<b>4</b> = <b>4</b>
नवकाररास व विख्दास	हि॰	434	नवरस स्तुति —	स्यूलभद्र	हि•	033

प्रंथ नाम	लेखक स	ावा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सख्या
नवनादेव		हि •	१०६५	न.ममाला ६	<b>नञ्जय</b>	₩・	१०११,
नवबाडीविनती		हि०	€ ७ ⊂				3909
नवसेनाविधान		सं०	१०४६	नाममाना – न	<b>स्ददास</b>	हि॰	X 3 ==
नमीहन — जुक्मान	ह की म	fgo	ووي	नाममाना—ह	रिदत्त	स•	ध्र⊏
नमीहतबोल		हि०	६≈६	नाममाला - व	नारसीदास	हि०	४३८
न्यायग्रं थ		स०	२५६	नामरत्न।कार		हि०	प्र३=
न्यायचन्द्रिकाभ	ट्रकेदार	# o	<b>૨</b> ५૬	नामनिस्स्यविद	riet.	हि०	<b>द</b> ₹ <b>द</b>
न्यायदीपिका -धा	र्नभूषस्य	स०	₹५६	नामलिगानुषा	सनश्रा० हेम	चन्द्र स०	¥ <b>₹</b> ⊏
न्याय ीपिका माप	। वचनिका—स	को पन	सनान	नामलिंगानुषः।	सन वृत्ति	स०	χşα
		य०	२४६	नाम निधा <b>नुशा</b>	सन अमरसिङ्	, स	X35
न्यायबोधिनी		स •	२४७	नाम।बलिछर-	– व० कामराज	हि०	8888
न्यायविनिश्चय —	<b>प्रकलकदेव</b>	स०	796	नारचन्द्र ज्योति	तषनारचन्द	स०	ሂጂ ০ ,ሂ ሂ ፂ
स्यायसिद्धारः दीप <b>व</b>	टीका— शशि	धर स	२४७	नारदीय पुराग्	Ţ	सं०	११८६
न्यायसिद्धान्त प्रमा	<b>यनन्तमूरि</b>	स०	2810	नारिपत्रिका		स०	3008
स्थाय।वतार वृत्ति		æi∘	२५६	नारी पच्चीमी		हि०	<b>६</b> द ६
न्हबरा एवं पूजा	स्तोत्र	हिल्स	० १११७	न.सिकेतपुरास्	ı	हि०	850
न्हवरगविधि — प्राप	गाधर	₽₽	z 3 z	निषदु		स०	४७८
म्हाबरापाठ भाषा-	—बुधमोहन	f₹o	<b>⊏</b> ३ ∈	निघटुटोका		सं०	<b>1</b> 65
नागकुमारचरित्र	-मल्जियेख	स०	₹¥0,	नित्यकर्म पाठ	सग्रह	हि०	१२७
		¥	५०, ४५१	नित्यनियम पूर	जा	स०	580,
नागकुमारचरित्र							286
नागकुमारचरित्र	-विबुधरत्नाकर	स •	388	नित्यनियम पूर	गा	हि०	280
नागकुमारचरित्र-	-नथमल बिला	लाहि०	३४१,	नित्यनियम पू		हि॰	6083
			\$85	नित्यनैमित्तिक	पूजा	स०	€8 <b>6</b>
नागकुमारगस – स	। • जिनदास	हि०	څنځ				3 7 9 9
नागश्रीकथा – वि		हि०	११६७	नित्यपाठ संग्रह	5	सं०	६६३
नागश्रीरास (रा	त्रिभोजन रास	)— <b>व</b>	० जिनदास	नित्य पूजा		सं०	<b>535</b>
		हि॰	११३७	नित्य पूजा		हि	- ===
नागश्री कवा ब	० नेमिदत्त	सं०	४४१	नित्यपूजा वाठ	—माशाधर	संव	352
नाडीप रीका		सं∘	¥ 1919,	निस्यपूजा पाट		स •	452
		χu	न, १११५	नित्यपूजा संग्र		हिं	
नाम व भेद संग्रह		हिं०	90		ग-पं स्दार्		
नाममाला		हि०	₹ <b>0 ¥</b> ₹,	1	•	ें हि	
			8083	नित्यपूजा पाट	संग्रह	हि॰सं	

षंय नाम	लेखक	मावा	पत्र सख्या	प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
नित्यपूजा सग्रह		स०	560	निर्वागकाण्ड	पूत्रा	हि	=88
निस्य ब्रावचनि	काजयबन्द	छाबढा वि	ह० ⊏४०	निर्वागक्षेत्र पू	ना	हि॰	286"285
नित्यपूजापाठ स	<b>ग्रह</b>	मं०	११८६	निर्वागक्षेत्र म	डल पूत्रा	fge	=85
निदान		सं०	495	निर्वाश मगन	विषान जयर	सम ति∗	<b>≈</b> 85
निदान भाषा	श्रीपत भट्ट	हि०	४७⊏	निशस्याष्ट्रमी व	तथा — ज्ञानसाग	ार हि∙	<b>११</b> २३
निदाननिरुक्त		Ħο	प्रथ	निशिमोजन क	था	हि	६७०१
निपट के कवित्व		हि०	8086	निशिमोजन क	या—किशनसि	ह हि०	8 <b>4</b> 8,8 <b>4</b> 3
निमित्त उपादान-	बनारसीदास	हि०	१०८४	निशिभोजन भ	ाराम <b>रुल</b>	figo	888,688
निमित्तशास्त्र		स∘	**	निःशस्य घष्टम	ीक था	हरिकृष्म	8 \$ \$
नैमिलकशास्त्र	भद्रबाहु	<b>₹</b> 0	५५१	निषेक		स०	१११५
नियमसार टीका	- पद्मप्रभमलम	।रिदेव सं	io yo	निषेकीदाहरस्य		हि०	888X
नियमसार भाषा-	—जयचन्द छ।	इडाहि∘	90	नीतिमंत्ररी		fgo	<b>६</b> ८ <b>६</b>
नियम।वलिसुत्त		प्रा०	90	नीतिवाक्यामृत	— ग्रा० सोमदेव	म २०	ξ <b>ς</b> ξ
निरजनाष्टक		सं०	¥	नीतिशतक—स	<b>० प्रतार्थामह</b>	हिन	8 * 8
निर्जरानुप्रेक्षा		हि०	२०३	नीतिशतकभ	तृंहर <u>ि</u>	et o	€¥₹
निर्भरपंचमीविधा		श्रप ०	४५२	नीनिश्लोक		₹ 0	६८७
निर्दोषसप्तमो कथ	ī	हि•	६५१	नीतिशास्त्र व	ागवय	स०	333
			११२३	शीतसार		ij o	११३४
निदीषसम्मी कथ	— स॰ रायम	ल्लाहि०	४४२.	नीतिसार—धा	० इन्द्रनन्दि	₹●	€ = 9
¥	50, E¥3, E	88, E E E	, १११=	नीतिसार चा		स०	€ ₹ €
निदॉयसप्तमी कथा	हरिक्रया	हि०	883	नीतिसार-सम	41	दि०	3.83
निदोंचमतमी वत	-	•	- =88	नीसकण्ठज्योति		म०	** 5
निर्वोषसममी ब्रती		70	568	नीदहर्ला किश		हि•	# 19 to 19
निर्वाशकत्यास पू		Ħ°.	= 18	नूरकी शकुन।वरि		हि०	6688
निर्वागुकाण्डभै			१०१७,	नेत्ररोगकी दव	•	हि०	१११५
tad trifattee al	वा भगवतावास	180	११०५	नेमकुमारवी		fe∘	\$ \$ 8.00
निर्वाताकाण्ड गाया		त्रा ०		नेमजीकी कोरी		हि •	१०६७
। नवार्शकाण्ड गावा		अ।० १,११८६	११२४,	नेमजीकी विना	भ	हि०	£44,
निर्वासकाण्ड गाथा							१११०
		अ१०	६५२	नेमन्याहपच्चीसी	देवराज	हि०	2609
निर्वाग्काण्ड माण	— भैया भगव	तीदास हि	० ६५२	नेबिकुमार गीत-	मुनिलावण्यः	समय हि०	2 8 3 =
	₽e	०, १०२०	, ११व६	नेमिकुमारवेलि		हि॰	દદ્દ્
निर्वागुकाण्ड गाथा	व पूजा तथ	यकीति	(	नेमिचन्द्रिका		हि०	6000
		ग•सं∘	EYE.				११२४

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
नेमिवन्द्रिकाभःषा	हि०	३४२	नेमिनाथराजम	तीसवादव०	ज्ञान साग	₹
नेमिचरित्र – हेमचन्द्र	₹•	३४२			हि०	११३०
नेमिजिनचरित्र— द्र० नेमि	स्त म०	३४२	नेमिनःचरास		fgo	ε <b>χς</b> ,
नेमिजिनजयमालविद्यान	स्दिहि	११५५				9080
नेमिजिनस्तवनऋषि वद्ध	न स०	१६७	नेसिनावरास	- 11 THE P	हि ०	
ने मियुलकाव्य —-विक्रम	म∘	३४२	नेमिनायरास –		হিত হিত	£3 <b>£</b>
		३४३	नेतिनाथरास		. हि o	8=8
नमिनवयगन-विनोदीलार			1	मुनिरल्नकीति		£ X 3
नोमनाथत्रीका व्याहला —			लमिनाथराम-		हि०	£ <b>\$ \$</b>
नमिनाच गीत	हि०		नेमिनाथरास—		हि०	११३७
नेमिनाथ गोत—अरुयशोध	ार हि०		नेभिनाधरेखता-		हि०	१०७१
नेमिनाय चरित्र	সাত		नेमिनाथकीलह	ft .	डि०	११०५
नेमिनःथ चरित्र	संग		नेमिनाधना <b>व</b> रा		हि०	3289
नेमिनाथ छद-हेमचन्द्र	हि०	७३१, ०७०१	नेमिनाथ की बिन	ती	हि०	8880
मेमिनाथ जयमाल	स०	•	नेमिनाथविनती		हि ०	११२६
नामनाथ जयमाल नेमिन;थ के दशभव	स्ट हि०		नेमिनावविवाह	लोखेतसी	हि॰	536
नामनाय क दशमय नेमिनाथनवमगल	हि०		नेमिनाथ वेलि-		हि ०	€ ¥ 3
नामनायनवमगल नेमिनायनवमगललालच	•				-	१६२
नामनायनयमगल	•	७३२	ने विनाध्य प्रकृत	।रश — बादिचन	द्र हि०	223
नेमिनाथपुरासाव ० नेमिव		२७७.२७८	नेमिनाथस्तवन	110 -1114-11	्र ।६० हि०	१०१४,
निमनाथ प्रबंध - लावण्य स		. , .				55.85
नेशिनाथफाग्रविद्यानन्दि	नमा । हर हिर		नेमिनाथस्तवन		£-	
diamana iaalaha	16-	६३७	नामनायस्तवन नेमिनाबस्त्रुति		हि० हि०	६५५
नेमिनाथवारहमासा	feo	१०२६.	नामनायस्तुत नेमिनायस्तोत्र		-	१०२४ १००५.
414.11441.64101	,	७. ११२=	नामनावस्तात्र		हि •	,
नेमिनाथ का बारहमासा-			>c>			११२७
नेमिनाथ का बारहमासा—			नेमिनाबस्तोत्र-		सं०	११२५
	१०८३, ११		नेमिनिर्वाण		हि <b>०</b>	858
			नेमिनिर्वाश—	·बा•मट्ट	सं०	3,83
नेमिनाच का बारहमासा —						<i><b>≜</b>R</i> R
नेमिनाथ का व्याहला	हि॰		नेमिपुरास		हि०	₹€3
नेमिनाधराजिमति वेलि-			नेमिपुरास भा		हि०	
वेभिनायराजमति का रेखता			नेमिराजमतिगी		हि॰	
	हि० १	००३,१०५ ह	नेमिराजमतिवे	ालठ <del>बकुरसा</del>	हि ०	€ €,8

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संस्था	प्रंथ नाम	लेखक	माधा	पत्र संख्या
नेमिराज्ञमतीशतक	नावका स	na feo	११८७	नदीश्वर जयम	ाल	प्रा०	८४५
नेमिराजुनगीत		हि॰	१०६७				eY\$
नेमिराजुल का बा		हि	१०६४	नदीस्वःद्वीप पू	जा	हि०	<b>EX3</b>
नेमिराजुल बारह			. ११८७	नंदी स्वरद्वीप पू		ŧi o	<b>5 Y Y</b>
नेमिराजुलमवाद-			११६४	नदीश्वरद्वीप पू	जा उद्यापन	Pi o	583
नेमि विवाहली		हि०	<b>૧</b> ૧૫૨	नदीश्वर द्वतीश	<b>ा</b> पन	₽e	211
नमिस्तोत्र		# 0	৬৬২	नंदी इवर पूजा		棋。	288
नेमीश्वरगीत		fz∘	<b>হ</b> ৩ দ	नंदीञ्चग्द्वीय पू	आ—टेकचन्द	हि०	£3.8
			११५४	नदीश्वग्पूजा	डालूराम	Fro	24.4
नेमिश्यर के पचक	स्यासकारीत	f₹o	€ 5/4	नदीस्वर पूजा	रत्मनिद	# <b>7</b> 0	5 < 4
नेमीक्वरफाग	categor and	fao	દયદ	नदीश्वरद्वीप पू	जा— पं० जिले	वरदाम सं	० ८४६
नेमीक्वरबारातवि	7	·ų-	११७२	नदीरबरहीप पू	ग्रालाल	हि ०	± €€
नेमीइवरराजमति-		fgo	853	नदीश्वरद्वीप पू	जा-विरधीच	द्र हि०	दर६
नेमीश्वरराज्ञनगीत		हि०	દકુક	नदीश्वरद्वीप उ		#7 o	E & £
नमीश्वररास		हि	2055	नदीदवर (जावि	धान	मं०	= X £
नेमीयवरराम — ब	৹ জিবৱাশ	हि०	. 053	नदीदवरद्वीपमञ्			६०४
नेमीश्वररास-क		fao	3208	नदीस्थरपंक्ति पृ			e.k.;
नेमीस्वररास-भ		fgo	६५४	नदीश्वरपक्ति प		हि०म०	C 8.8.
नेमीश्वररास	- राष्ट्रप्रस्य	हि॰	£=3.	नदीश्वरपक्तिः (	<b>ग्र</b> ा	'ह ०	233
741444	£ = ¥. £	-					
नेमी श्व ! कीलहरी	. , .	î; o	1081		ष		
नेमीसर का रास-	menta: z	fgo	888	पविस्तय सूत्त		সা৹	५४
नैभित्तिक पूजा मा		मं ०	E 8 E	पस्तवाडाजर्त	ी तुलसी	feo	३११६
नैमिलिक पुत्रा संस		fgo	282	पच्चववास भा	-	त्राष	२०३
नैषध वस्त्रिटीका	.6	.g.	588	पट्टामलि		हि	£¥8,
नैवधीयप्रकाश	रसिंव पाडे	सं०	388		, १०७२, ११	· Ę. ११४:	१. ११५६,
नदिताद्य छंद		हि॰	3.8.3	15., 14.	,		१५६०
नवीवस्रव नदित	१दव	प्राव	¥3,¥	प्रतिष्ठापट्टावर्स	<b>,</b>	हि •	£ ¥ ¥
नंदीश्वर कथा		₹•	848	श्रात∘ापट्टावल भद्रारकपट्टावर्ल		(E)	<b>688</b>
नंदीश्वर वृक्त कथा		सं०	883	मृति पट्टावकी	•	हि०	EXX
			YXX	वृति पट्टावसर विकाम्मरा		١Ę٠	११०७
नंदीस्वर कथा—	रत्नपाल	#.	368	पश्चिकीरता		हि०	8800
नंदीश्वर कथा		हि॰	84.3	पतंत्रील महाभ	ह्य पतंत्रकि	सं∙	* \$ \$
		-					

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या	ग्रथनाम	बेखक	मावा	वत्र सस्या
पत्र परीक्षा—ि	वद्यानन्दि	<b>4</b> 0	२५७	पद-चाननराय	ī	हि	<b>8</b> 80×
पच्य निर्णय		हि०	30'4	पदभागचन्द		हि०	११०५
पथ्य निर्माय		₩.	3 e K	पद-सनराम		हि०	११०६
पश्यापश्य निर्गर	ī	मं०	30,4	पद — विजयकी	ĺπ.	fgo	११०७
पथ्यापय्य विचा	7	स०	3 e K	पद — जगतराम		हि	११०७
पश्यापय्य विवोध	शकवैद्य जयह	व म०	४७६	पद-स्थवन्द		हि	११०७
पद — करबीदास		हि०	११७०	पद — हर्षगरिए		हि०	, ६८३
पद — गुगाचन्द्र		हि०	१०८८	पद एवं डाल		f₹o	६६३
पद—-जिनलाभ	सूरि	हि०	8068	पदनेमिकुसार-	– ड्रगरसीदास	हि०	80€%
पद — टक्कु॰सी		हि०	823	पद त्रक्षराजा	<b>स्था</b>	हि	१११०
पद साहागु		हि०	६८४	पदमध्याकी वीत	हालो	हि०	१०३८
पद - य्चा		हि०	(५४	पद गंग्रह		हि०	
पद—- इविष्,		हि ०	११११			c	११०६ १ <b>१</b> ०७
कवीरदास	r, बोल् <b>ही</b>			पदसग्रह-किय	•	हि <b>०</b>	
पद - दीपचन्द		हि०	११०२	पद मग्रह—हर		हि०	
पद — द्यानतराय		हि०	१०२०	पद संग्रह जग		हि०	
पढ बनारसीय	स	हि०	८७४,	पद संग्रह—नवः		हि०	
		51	७७, १०८४	पद सम्रहप्रभ		हि० ि	
पद — बल्ह (बूच	राज)	fؤه	१०⊏€	पद संग्रह—रूपः पद सग्रह—स्रे		हि० हि०	
वदवस्तराम,	जगराम	हि०	१०६२	पद संग्रह—सुर पद संग्रह—मग		ाह० डि	
पद जगतगाम,	यानतराय	हि ०	१०६०	पद सम्रह—भग		ाह० हि०	
पद — भूषरदास		हि०	\$080	पद संग्रहपं०	-	हिर	
वद ब्रह्मकपूर		हि०	<b>⊏७</b> ४,	पद सग्रह— मन	**	हिन हिन	
			१०६७	पद संग्रह—जिन		हिल	
पद रूपचन्द		हि०	८७६	पद संग्रह—विम		हि० हि	
			११०५	पद संग्रह—चन		-	
पद बनारसीदा	स	हि०	<b>500</b>	पद संग्रह—-खुष		हि०	
पद-सनरय		हि०	500	पद संग्रह—चैन		हि	
पदव० यशोध	र	हि०	१०२५,	यद संग्रह—देव	-	हि	
		१ 0 :	१६, १०२७	पद संग्रहपार		हिः 	
पदहषं कीर्ति		हि०	११०५	पद संग्रहसीर			
पदसुन्दर		हि०		पद सम्रह—हा	(1मग्प	हि	
पदभूघर		हि	११०४	पद संग्रह पद संग्रह		हि <b>व</b> हिं	
पदककीति		हि	११०५	पद संग्रह		हर हि	
		`				181	, <i>६६६</i>

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा प	त्र संस्था	ग्रंथनाम खेलक	माषा	पत्र संख्या
पद सम्रह जग	तराम, भूघरद	ास हि॰	१०७६	पद्मनिद पंचविशति टीका	सं०	१३१,
द्यानतर	ाय, सुखानन्द,	नवल हि०	१०७७			१३२
पद सग्रह— जग	राम गोदीका	हि॰	₹ 0 8 %	पद्मनन्दि पच्चीसी भाषा——अग	तराय हि	।० १३२
पद सग्रह—नथ	मल	हि०	१०४४	पद्मनिद पञ्चीसी भाषा-सन	नासाल 1	सिन्द <u>ु</u> का
पदसग्रह हेतर	ाम	हि•	१०४६		राज०	१३२,
पद संग्रह—भूष	रदास	हि ०	१०४७			११८८
पद संबह—जिस	<b>ग्दास</b>	हि०	१०४७	पद्मनित्द महाकाव्य टीकाप्र	हलाद स	० ३४४
पद सग्रह—नवः	तराम	हि०	१०४७	पद्मनन्दि श्रावकाचारपद्मन	न्द संद	, 853
पद सम्रह—जग	तराम	हि०	१०४७	पद्मनन्दि स्तुति	स	१००८
वद सग्रह—वार	सदास	हि •	€25	पद्मपुरागाखुशालचन्द काला	हि०	२८४,
पद सग्रह—बना	रसीदाम	हिन्दी	₹00\$		5	<b>८५, १०</b> ५२
पद सग्रह—जग	रःम	हिन्दी	१०७३	पद्मपुराशव ० जिनदास	म	१७६
पद सम्रह—कन	ककीर्ति	हिन्दी	8008	परापुरासा—भ० वर्मकीति	<b>#</b> (	<b>.</b>
पद सग्रहहर्ष	बन्द्र	हिन्दी	१०७३	वदापुरा <b>णर</b> विवेग्गाचार्य	सं०	२७८, २७३
पद स⊈ह— नवा	नराम	हिन्दी	€0:09	पद्मनाभ पुरारग—भ० शुक्रवन	इ.स.	<b>৯</b> ২৬৫
पद सम्रह धार	तराय	हि०	8003	पद्मपुराल-म ० सोमसेन	स :	• २८०
पद संग्रह—देवः	बह्य	हिन्दी	₹0:0\$	पद्मपुरास भाषा — दौलतराम	कासलीव	<b>ाल</b>
पद सम्रह— विन	ोदील।ल	हिन्दी	₹00\$	-	हिल	२०,
पद सग्रह		हि०	१०१२,	२=१	, २=२,	२८३, २८४
			१०६५	पदावती कवच	<b>स</b>	• ११२५
पद मग्रहमव	संगर	हि०	६४३	पशावनी गायशी	#	. ११६३
<b>पद सब्रह—-वेग</b>	राज	fg۰	१०३७	पद्म बती सहस्रताम	<b>स</b> (	, ११६३
पद सग्रह—— म०		-	<b>= Ę</b> , Ę = 9	पद्मावती शबच	स	, ११६३
	जिनदास, जा			पद्मावनी गीन-समयमृत्दर	हि	• ৩३२
पद संग्रह—स्वा		हिल	१०६६	पद्मावती स्तीत्र	<b>स</b> <	७३२
पद संग्रह सिज्ञ	-	fgo	8048	पद्मावती छद	हि	, ११६⊏
पदस्य ध्यान सः		हि०	2043 2064	प्याबती दण्डक	म	११२५
पदस्यापना वि			29ex 22es	पद्मावती देवकरूप संडल पूजा-	बन्दन	ra
पदस्यापना ।या पद्म चरित्र	य ।जनदत्त	• 1		deliagi danes and V.	- H	- EĘ0
	rannus -6.	स o	52.2 52.2	पश्चाबती पटल	<b>स</b> •	550,
पद्म चरित्र—वि पद्मचरित्र टिप्प				AMINGS 201		117×
		_	२७द - ६५७	पद्मावती पूजा	स०	
पद्मनन्दि सम्ब्रुः पद्मनन्दि पंचवि				पद्मावता प्रया		
नमनान्द प्रवाद			₹ <b>२</b> 4,		₹:	
	**	E, ₹\$0 ₹	३४, ६७६	वधावती पूजाटोपए।	4	- "11

			· · · · ·			माचा प	त्र संख्या
ग्रंच नाम			र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	۳۱۹۱ م ۱, وډه, وډ	
पद्मावः । पूजा		हि॰	१०३१			40, 80cE,	
पद्मावती पूजा		स०	८६१			१४२, ११४६	
पद्मावती पूजा		30	# <b>E</b> ?			१०२, ११०८ सं०	, ((X)
पद्मावती मडल		सं०	<b>⊏ ξ</b> ₹	परमात्म प्रकाश			†o 204
पद्मावती पर्चा	गस्तोत्र	स०	७३२	परमात्म प्रकाश परमात्म प्रकाश			,, ,,,
पद्मावती मत्र		हि ०	१०१२	परमास्म प्रकाश	Slab1# 0		\$05,40
पद्मावती वृत		स०	मध्				
पद्मावती राग्		हि०	803=	परमातम प्रकाश			२०४
पद्मावनी सहस		स•	११२६	परमात्म प्रशास			तं० २०५
पद्मावती स्तो		स०	৬ ৩३,	वरमात्म भक्ताप		हि॰	२०६
3	४४, १०२७, १०३	(२, १०६५	, ११२४	परमात्म प्रकाश	भाषादौर		
पद्म।वती स्तो	স্পুলা	₹∘	€ ⊏ 火			fe•	२०७,२०८
पद्मिनी बस्तार	ŋ	हि०	8003	परमात्म प्रकाश	भाषा – बुष	जन हि०	२०६
पण्डह संकय	त्र	सं०	१११७	परमात्म प्रकाण	भाषापारे	हेमराज हि	२०६
पन्द्रहश्चंकि	विधि	₩ o	१११७	परमात्म प्रकाश	वृत्रि	सं०	२०६
पन्द्रह पात्र चं	पिईभ० भगवत	ीदास हि॰	१२७	परमात्म प्रकाश	τ	हि॰	१०००
परदारो परर्श	ोल सज्भायकुपु	द <b>च</b> न्द <i>ें</i> ह	४५६	परमात्मराज स	तवन	सं०	868
परदेशी मनिव	रोधशानचन्द	हि०	११०५	परमात्म स्वरू	7	सं०	२०⊏
परदेशी राजा	नी सङ्भाय	हि॰	४५६	परमानन्द परू	रोसी -	सं ०	६००
वरमज्योति		हि॰	६ द १	वरमानन्द स्तो	7	सं०	<i>پ</i> ۶٤,
परमज्योति	(कल्याण मन्दिः	(स्तोत्र)	भाषा	9	. ¥33 , €€¥, ¹	१०२४, १०४	३ १०४७,
<b>बना</b> रसी	दास	हि०	७३३			११०३, ११२	
			508	परमार्थं गीत-	-क्रव <b>सन्ट</b>	हि०	१=३
परमज्योति स	नोत्र	स •	१०५६	परमार्थ जकडी		हि॰	9999
	–भगवतीदास	हि०	१०५=	परमार्थ जकडी			8088
	ा चौपईव राव		328	परमार्थ दोहा-		fe •	१०३८
	— व ० जिनदास	हि०	६३७	परमार्थंदोहा प		-	£=₹.
	ध चरित्र—नवरम	-	388	परमायदाहा ४	1/1-2	4 160	१०११ <u>.</u>
परमहस संब		প্রাত	₹¥¥			हि०	1°65
	णदीपचन्द कास	लीबाल		परमार्थ विश		-	१०६६ २०३
- 44164341	(i 411 414 4117		(03,20¥	परमार्थ शतक		-	र०३ १०२६
		•		पररमणी गीर		हि० सागर सं०	
परमास्य प्रव	ग्रमयोगीन्द्रदेव	मप ०	२०४,	पर्वरस्नावली-			44 £
			२०६,	परिकर्मविधि	i	सं०	6 \$ 6

ग्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र संस्था	्रयंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं <del>ख्या</del>
परिकर्माध्ट ६	हि०	98	पाणिनी व्याक	रस्य —पास्मिनी	। सं०	४१६
परीक्षा मुख-मासिक्यनस्यि	स०	२४७	पालिनीय लिंग	तनुषासन वृत्ति	सं०	35 %
परीका मुक्त (सघुवृत्ति)	₩ 0	२५७	पानीगालनरास		हि०	११३७
परीक्षामुख भाषाजयचन्द	आवहा राज	ro २५७	पासीगालगरा	स—-व० जिनद	तस हि	११०७
पत्यवत पूजा	सं०	208	पासीगालनरास	— ज्ञानभूषस	हिं∗	<b>६</b> ३८,
पत्यवत फल	म∘	848			६५१, ११	३२, ११४३
पल्यविचार	हि०	१५१,	पाण्डवचिन्द्रका	स्वरूपदास	हि	३२११ ०
	प्रपर, द ६		पाण्डवचरित्र	ष० जिनदास	<b>#</b> 0	₹8¥
पत्यविचार वार्ता	हि०	११३७	पाण्डवचरित्र	देवभद्रसृग्	म	3 4 4
पस्यविधान	₹10	द्दर,	पाण्डव पुरासा-	-	स	११⊏१
_		\$ <b>१</b> ६ ७	पाण्डब पुरागा-	– द्र ० जिनदास	स	ಶಿಷ್ಟ
पत्यविधान कथा	म •	४५६,	पाण्डव पुरासा-	—देवप्रमसूरि	<b>#</b> 6	२ ६७
	6-	११३५	पाण्डव पुरासा-	— बुलाकीदाम	fg o	ಶಿವ್ಷ,
पस्मविधान कया — खुशालचन्द		० ४४६			ą	द्ध, १०७¥
पस्यविवान वतोशायन कथा-	•		पाण्डव पुरासा-	—यश-कीति	ग्रगभ	
	स∙	××€	पाण्डब पुरासा -	- भ० शुभचन्द्र	#10	२८६, २८७
पर्वावधान पूजा	41.0	=42,	पाण्डब पुरासा-			२६४, २६६
		₹, ११३६	वाण्डब पुराग	व वनिकापन	नःलाल च	ौधरी
पत्यविधान रास — भ० शुप्रच	द्र हि॰	६३७,			हि •	२ २ २ ०
		434	पाण्डवी गीता		संद	१३६
पत्यविधान वतोद्यापन एवं कर	ग श्रुतसा		पांडे की जयमार	न नस्ह	हिर	१११७
	स०	دولا	पात्र केशारी स्त	त्र पात्र केश	ी संब	, ७३३
पत्य विधि	₩•	€ ७ ધ	पात्र केशारी स्त	त्रिटीका	<b>#</b> 0	५६७
पत्मव्रत विधान	40	દહય	पात्र भेव		हि. ०	११०२
पल्लीविचा र	सं •	१११६	पारसीसूत्र		প্রাহ	৬ৼ
पदनवय चरित्रभुवनकीति	हि०	388	पारमनाथ की	सहेलीव्र०न	।स्य हि॰	£8£
पाक शास्त्र	स •	₹9€,	पारसविलास-	वारसदास निर	गेत्या हि०	€ € ⊏
		8856	पाराशरी टीका		स •	४४२
पाकावली	सं॰	११८६	पारिकात हरस	—पंडिताचार्य	नारायस	
पाठ सम्रह्	हि०	६६६	11/4/4/4	******	₹ 0	± ₹¥
पाठ संबह	प्रा∙ र	ं॰ ६६६	पाइवंचरित्ररे	जपाम	भ्रव भ्र	₹8¥
पाठ संग्रह	सं०	६६७	पाश्वंजिन स्तुरि	•	सं०	७३३
वाठ सम्रह	स∘हि	० ६६७	पारवंजिन स्तीत	—जिनप्रभसूि	र स०	9₹
पाठ सग्रह	हि॰	६६७	पार्श्वदेव स्तवन	— जिनलामस्	रि हि०	७३३
पाठ संबद्ध	हि॰	११०२	पार्श्वपुरास-		₹0	२६०,३४५

ग्रंथनाम लेखक	मावा	पत्रसंख्या	ग्रंचनाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
पारवंपुरास-पद्मकीति	वयभ्र श	₹€•	पारवंनाथ स्तवर	न—विजय वा	क हि०	१०६१
पाइवेपुरागा—भूधरदास	fro	₹ <b>४६,</b> ₹४७,	पाश्वंनाथ स्तुति	बलु	हि०	YX.
३४=, ३४€, ३४०,	₹ १ १ , ३	४२, ६६३,	पादवंताय स्तोत्र	ī	स०	<b>υ</b> ₹ <b>Χ</b> ,
۶ o ۶	०, १०	१८, ११०७	४७७	, १०४२, १०३	ſ¥, <b>₹</b> ∘€	५, १०६३,
पाववंपुरागा—रहवू ।	स्पभ्र श	२.६०		2.8	٥٥, ११	२२, ११२६
पार्श्वपुरागा — वादिचन्द्र	₩•	२१०	पाइवंताथ स्तीत्र	◆शानतराय	हि०	866x
पात्रवंनाथ ग्रन्टक —विश्वभूषण	<b>#</b> 0	લ ૭ ૭	पादर्वनाथ स्नोत्र	विधनन्दि	सं०७	₹¥,११२.
पार्थ्वनाथ कथा — जिनदास	हि०	१०१६	पाञ्चेनाथ स्रोत्र	—-पप्तप्रभदेव	सं०	७३५,६५८
पाप्रवैनाय कवित्त —भूघरदास	हि ०	६६८	पारवंताच स्तरेत्र	राजसेन	स ०	4888
पाइवंनाथ गीन - मुनिलायण्यसम	म हि॰	११३७	पाशा केवली		हि०	५५२,५५३
पाइवेनाथ चरित्रभ० सकलकी	त स०	३४६	68x, 66;	५, १००६, १०	56, 80	EY, <b>११३०</b>
पादवंनाथ चिन्तामशिदास	हि०	६४⊏	पश्चाकेवली -	गर्गमुनि	स∘	४४२,
पार्वनाथ के छद	हि०	१११७			_	११३६
पादवंनाय छंद हर्षकीर्ति	हि ०	७३३	पाञ्चाकेवली भाष		-	(४३, ४१४
पाइवंनाथ छद लब्धरुचि	हि ०	४१७	पाहुड़ दोहाय		धपभंग	
पार्श्वनाथजी खंद सबीघ	हि०	११४३	पाचपस्तीकथा-		हि०	
पादवंनाथ जयमाल	हि०	१११७	पांचोंगतिकी बे	-	हि•	
पाइवंनाय की निसार्गी	हि०	१०३०	पाबापुर गीत-		हि॰	१०६२
पार्श्वनाथजी की निशानी — जिन	हर्षहि०	७३४	विमल रूपदीप	भाषा	हि •	48%
पाण्वंनाय पूजा	सद	६६५,	पिगल विचार		हि ०	११५८
		१०६७	पिगल शास्त्र —		সা৹	AER
पाश्वंनाथ पूजा देवेण्द्रकीनि	सं०	<b>= ٤</b> ٧	विगल सारोद्धाः		स०	<b>પ</b> દપ્ર
पार्श्वनाथ पूजावृन्दावन	हि०	= 4 8	पिडविगुद्धि प्रक		সাভ	दहर
पार्श्वनाथ मगल	हि०	१०३६	पिडविगुद्धि प्रक	नस्य	सं∘	<b>⊏</b> €\$
प।श्वंताथरास—कपूरचन्द	हि०	ERR	पुष्णासव कहा-	—प०र <b>इच्</b>	श्रद ०	<b>₹</b> €0
	c-	१०२२	पुष्यास्त्रव कथा	कोश मुमुक्षु		
पार्श्वनाथ विनती	हि०	6680				***
पाश्वंनाय विनतीमुनि जिनहर्ष		3888	पुष्यास्त्रव कथाक	गश माषा—द		काससावाल ४५७,४५⊂
पारवंनाय का सहेला	हि०	€58			160	४५६,४६०
पाश्वंस्तवन	# o	७३४	पुण्य की जयमा	ल	हि०	
पार्श्वनाथ स्तवन	हि०	४६७	पुण्य पुरुष नाम		₹;•	
पार्श्वनाथ (देसतरी) स्तुतिपा	सकाव सर	७३४	पुण्यफल		भार	
.चारवंनाय स्तवन	स०	.003	पुण्यसार चीपई	पध्यकीनि	हि	
्रारमभाष <b>्याप</b>	40	१०२४	पुण्याह मंत्र	2	संब	
			3 6 44		40	1646

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या	। प्रंचनाम	लेखक	मावा	पत्र सं•या
पुष्याहवाचन - भागा,घर	स०	- <b>६</b> ४ , - <b>६</b> ४	पुष्पाजलि व्रत	कथा – ललित	कीतिस०	3.8
पुन्यम लिका	<b>#</b> •	33	पुष्पाजिस वत		हि०	
पुरदर कथा—भःवदेव सूरि	हि०	> 4 ?	पुज्य पुजक वर		हि॰	
पुरंदर विधान कथा	# •	840	पूत्राकथा(मे		•	
पुरदर विधान कथा-हरिकृष्ण	हि०	* \$ \$	] "		हि ०	*68
पुरम्दर चौपई	हि०	8088	<b>पूजापाठ</b>		सं०	म६७
पुरन्दर वतोद्यापनमुरेन्द्रकीर्ति	स •	<b>c ६</b> ५	पूजापाठ संब्रह		मं०	द ६७
पुरपरयस्। जयमाल	हि०	693	पूजापाठ सप्रह		हि०	G 5'9
पुराससार (उत्तर पुरास)म	सकलकं	र्गित	पूजापाठ संबह		स ० हि	0 555,
	स, ०.	२६०,२६१	l	€ € , € b		७२, ६७३,
पुराससार-सागरसेन	स०	939	2.0	¥, 50%, 50	€, ≈७७, i	. ७६, ८७६
पुरुष जातक	শ ৽	3005	पूजापाठ तथा	कथा संग्रह	हि •	स० ६७६
पुरुपायं सिद्ध पुपाय - प्रमृतवन्द्राः	वापं स०	<b>१३३</b> ,	पूजापाठ विकास	7	स०	3€:⊅
		₹¥, ₹₹ <b>\$</b>	पूत्रापाठ विधान	<del>1 – ৭০ গ্লা</del>	बर म०	307
पुरुषार्थं सिद्धयुपाय भाषा	<b>g</b> 3	<b>?</b> ३६	पूजापाठ संग्रह			८८६,६८७
पुरुषोप्तिन सक्षमा	म २	११४	पूताप्रकरस्य		स०	द७६
पुष्पमाला प्रकरता	शा	=	पूजानकस्म		हि॰	80€€
पुष्पांजित कथा	<b>#</b> 0	११३६	पूजाब्टक—सो	re e	हि∙	404
पुष्पाञ्जलि कथा स्र <del>ा० गुर्लेको</del> र्	में हि० 	६६१	पूजाव्टक ज्ञा	नभूषस	सं०	c & 0
पुष्पांजील जयमान	₹ •	264	पूजाव्टक — हर	स्य चन्द	हि •	<b>c t</b> 9
पुष्पाजलि पूजाशानतराय	<b>হি</b> ০	द६५	पूजासार		स∙	८७६,८८२
पुष्पाजलि पूजाभ० महीचन्द	Ħ o	268	पूत्रःसार समुच्य	व	₹0	2-0
पुष्पात्रलि पूजा -रस्तचन्द्र	<b>ਜ਼</b> •	बद्द	पूजा संग्रह		fgo	, Koo \$
पुष्पात्रील यतोद्यापनगगादास	# o	= 4 4		۶ ا	१०६, १११	७, ११६६
पुष्पाजलि वर्गाद्यापन र्टका गग	ादास स	० द६६	पूजा सम्रह - द	। नतराय	fee	550
पुष्पाजनि पूजा	स•	22.2	पूषा संग्रह		हि•स	
पुष्पात्रसिरासत्र० जिनदास	हि∙	66.85		l, 553, 561		
पुष्पाजित वत कथा - ब्र० जिनदा		११६३	पूर्ण बंधन मन्त्र		हि०	६२१
पुष्पांजलि वत कथा-श्रुतसागर		X4.8	षोषहं गीत १		हि०	७३ ५
पुष्पात्रनि वत कथा—खुशानचन्द	राञ्च	***	पोवहरास-ना		हि	
पुष्पांत्रित वत कथा - गंगावास	सं०	888	€ % १, € =	x, 88xx" 51	१४७, ११५	
पुर्णाजील जत कथा मेघाबी	स •	*11	पोसहकारमा गा	षा	हि०	१०६९
पुष्पांत्रलि कथा सटीक	प्रा ०सं ५		पोसह पारवानी	विधि तथारः	हि•	
पुष्पांजीत विधान कथा	सं∙	A44	पोसानुराव		हि०	११३७

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्वा
यं बहरदी चौपई	- भूषरदाम	हि	<b>१</b> ०७२	पचपरमेष्टो	गीतयशकीर्ति	हि॰	११५४
पचकत्याग् क-	रूपचन्द	fe	११५७	पचपरमेष्टी	गु <b>रा</b>	स•	<i>७३६</i> ,
वंचन स्यास्त	उद्यागनगूजर	मल ठग		1			१०१७
		<u> ਭਿ</u>		य <b>चप</b> रमेष्टी	गुरुवर्णन		७३६,१२७
प स र स्यारणक		हि			ागुरावरांन — डाल्		१०११
पंचकस्याग् प	।ठ <b>रूप चन्द</b>	हि		,	नमस्कार पूजा	स०	<b>⊏ ¼ §</b>
पचकल्यास्क	पूजा	सर		प वपर मेष्टी		सं०	६६८
पंचकल्य(ग्व	पूजा	सं	१०६५, १११८		। प्रा—भ० देत्रेः		<b>५५१</b>
		£-		पश्चपरमेष्ठी	प्रजा- <b>–यशोन</b> न्दि		=५१,=५२
	पूजाटेकचन्द	हि •		पचपरमेष्ठ	। पूजा म० शुम	चन्द्र स०	८५१,८५२
	यूजा—प्रमचन्द			पंचपरमेर्ब्स	ो पूजा—टेकचन्द	हित	<b>5</b> 12,
	प्ता बुधजन	বি -				_	. <del>५२</del> , ८५३
	यूजा –रामरुद				ो पूजा—डालूराम		
	पूजा वादिभूष			1	ो पूजा—बुधजन	हि०	
	पूजा सुधीसार		-X	पचपरमेर्ष्ठ	ो पूजा	सं०	
पंचकल्याग्। क	पूजासुमितस	गर मं -					<b>ፍ</b> ሂሂ
प चकल्या सक	पूजाचन्द्रकी		o		ी पूजा—यशोनन		१०८४
प चकल्या एक	বিঘান—ম৹	मुरन्द्रका। जि	त ० ⊏१०,⊏११		ी स्तुति—व्र० वर		
					या बह्वविनय	हि०	
	फाग — ज्ञानभूष		∘हि० <b>१</b> १=७ ० ⊏५१	1 1 1 1 1 1 1 1	पूजा-वेस्यु ब्रह्म		
पचकत्या <b>रा</b> ज		f₹ 6-		441040		-	७१, १२७
	विधान-हरि			14104		स०	
पचकत्य। गाक	विधान—भ०			वंचवरावतं		सं०	
		<b>स</b>		1 4441144	ाविवरण—प्रका		ाबत 💮
पंचकत्यासक	स्तात्र	स		1		सं∘	
पच्चक्स।एा		স			ससारवर्गन	₹10	
प चतुरु गुराम	।।लापूजाम०	मुभचन्द्र स	: ● 5% i		— हवंकीर्ति	हि	
		र्ग हि		1 1 1 1 1 1 1 1	तीतीर्थं कर पूजा	हि	
वयज्ञान पूजा			• ६ <b>८७.</b> ६६:	1 44461	बतुर्दशी वृतपूजा	सं	
पंचतत्र — वि				11.00	बतुर्दं शीवतो <b>द्या</b> पन-	भ०सुरत सं	
पंचादल भंक		स :		•			
पंचयमाक्षर-	नारद	सं			चतुर्दशीवतोद्यापन		
पचनवकार			० १०६१		ही भारती—द्यान 		
	स्तोत्र-उमास				ाथा नन्दीश्वर द्वी		
<b>पंचनमस्का</b> र	स्तोत्र भाषा	f	{o	1		fe	० दह्

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	सेसक :	माथा '	पत्र संख्या
पंचमेत् पूजा		हि०	१०४८,	पच स्तोत्र मावा		हि०	१०३०
			१०६५	पंच हनुमानबीर	বিস		११७२
पचनेन पूनाडा	<b>नू राम</b>	हि०	११२३	पचम कर्मग्रंथ		₩•	११८७
पंचयस्युतः द्वाः	नक्राय	हि •	१०११,	पचम गति वेलि		हि०	8008
			<b>१</b> १२३	पंचमगति देलि -	-हर्षकीति	हि०	হঙঙ,
पचमेरपूजा भूष	रदास	हि० ।	598,558	ļ	१०१	३, १०१=	, ११०६,
पंचमेरु पूजासुर	बान-ए	हि०	१०७७			१११	२, ११५२
पचमे ६ पूजा		हि०	द६०	पवमतपवृद्धि स्त	वनपमयमृत्द	र हि०	१०५५
पचमेरु पूत्रः विधा	न	स०	६६०	प्यमीकवा—मू	रेन्द्र भूषस	हि० ४	\$3,¥c3
पचमेरु पूता विषा	नटकचन्द	हि•	5,60	पचमी कथा टिप्प	ारा — प्रभाचन्द्र	ध्रप ० म	yy'Y o
पंचमेरु मडल विध	न	feo	£ 6	पदमी दत कथ।	मुरेन्द्र भूषाग्	हि०	<b>ሄሂ</b> ३
पच मगन		हि ०	8000	पचमीत्रत पूत्रा-	- कल्यासा माग	स् ० ५	. χε, <b>ς</b> χ э
पंचमगल —धाशाध	र	平。	₹050,	पचमी विद्यान		₩•	८५६
			१०६२	प्रचमी वनोद्यापन	हर्षकस्याग्	स०	c x 2
पवमगल-स्वयन्द	•	हि •	∌इं€	पचमी वनोद्यापन	पूजा-नरेन्द्रसे	न स०	ह५६
	८७४, १००	४, १०४२	, १०४८,	पवसी व्रतोद्यापन	पूजा - हपंकी	न म॰	E X E
	१०६३, १०७	4, १०७७	, १०७८,	प्रवसी व्रतीद्यापन	বিভি	<b>#</b> 0	≈ १ ८
	₹0€, ₹₹₹	४, ११३०	, ११६७,	पंचमीशतक पद		स०	११८८
पवमगल पाठ	गचन्द	हि •	६७४	पवसी स्तोत्र - र	<b>रदय</b>	fe o	ودوو
पचमगल पूजा		हि∙	¢χ⇒	प बास्यान		म०	800
पचलक्षिय		सं०	११८८	पचाहपान -विध	पुदत्त	₹•	***
पचवटी सटीक		स •	, ३६०	पनास्थान कथा	•	हि ०	११६२
पचसहेनी मीत-स्ट	ीहल	हि०	६६६	पचारूयान भाषा		fgo	6 % 0
			१०२२	पचामृत नाम रस		€ •	30%
पचसप्रहनेमिचन	राचार्य	शा०	98	पचाभुतामियेक		सं०	# <b> </b>
पंचसंग्रह वृत्तिसु	मतिकीति	प्राव्संo	७१	प वायध्याई नंद	वास	हि॰	1800
पंच सिघ ( प्रक्रिया	कौमुदी )	fg o	EXE	वंचानीनी ज्याह-	- ग्र्णसागर सुरि	feo	४५६
पंच सधि		₹o ₽	१४,५१६	पंचामध्य प्रक्र	-	₹10	4 x 8
प्रमसार स्वह्य नि	<b>नक्प</b> ण	e ip	હર	प <b>कास्त्रिकाय</b>	-	हि •	1884
पचस्तोत्र		€io oi	₹७,६५३,	पंचास्तिकाय	To WITERIE	সা৹	७१,७२
13	to, E46, E1	99, EE4	. 2000.	पनास्तिकाय टब्ब		प्रा ० हि	
	took, too			पशास्तकाय टीक		-	
			. 9085				ξυ
पच स्तोत्र एवं पाठ		₩ o		पंचास्तिकाय बास		सं• हि	
						//- 1 <b>&amp;</b>	

ग्रंथ नाम लेखक मावा पत्र	संस्था	। वयनास लेखक स	तवा	पत्र संख्या
पच।स्तिकाय भाषा—बृषजन हि॰	98	प्रतिक्रमशाटीका—प्रभावन्द्र	 सं∙	₹•€
प-बास्तिकाय भाषा — पाण्डे हेमराज हि०प०	193.	प्रतिक्रमण पाठ	সাত	हि० २०६
A WILLIAM AND THE CONTROL OF THE	98	प्रतिक्रमस्य पाठ	स •	5580
पचास्तिकाय भाषाहीरानन्द हि०प०	<b>9</b> ₹.	प्रप्रिकमसासूत्र	সা৹	₹0€,
	383	"	28	0, ११५३
र्वचाग स०	** ?	प्रतिज्ञापत्र	हि०	१३६
पचांग हि०	448	प्रतिमा बहनरी-धानतराय	हि०	१३६,
पंचीनद्रय गोत जिनसेन हि० १	०२५		188	8, 8860
पंचेन्द्रियकाल्यौरा हि∙ १	\$00	प्रतिमा स्थापनः	भा०	550
पञ्चेन्द्रिय वेलि हि्०	εξ₹,	प्रतिष्ठाकल्प — श्रकल्क देव	सं ०	559
ट <b>१,</b> १	०२७	प्रतिष्ठानिलक—ग्रा॰ नरेन्द्र <b>से</b> न	सं०	559
पचेन्द्रियवेलि—ठ <del>नकु</del> रसी हि०	६६२,	प्रतिष्ठः पद्धति	स०	559
JER' 60XR' 6	320	স <b>রি</b> ন্তা <b>ণা</b> ত	₽०	€€€,
पचेन्द्रियवेलिगेन्ह हि॰ १	१५१			१०४२
	१८८	प्रतिष्ठापःठ—श्राक्षाधर	स ०	555
	१८८	प्रतिष्ठा पाठ—प्रभाकर सेन	सं०	555
	320	प्रतिष्ठ पाठ	स०हि	0 455
	600	प्रतिष्ठा पाठ टीका—परशुराम	₹0	505
पंक्तिमाला हि॰	=88	प्रतिष्ठा पाठ वचनिका	fؤه	<b>α Ε</b> ξ
	५५१	प्रतिच्ठा मत्र संबह	सं०	<b>≒ ⊑ €</b>
	प्रश्६	प्रतिष्ठामंत्र सग्रह	सं०हि	
	५१६	प्रतिष्ठा मन्न	सं०	552
	४१६	प्रतिष्ठा विधि ग्राणावर	स०	558
46.4	3e.x	प्रतिष्ठा विवरसा	हि०	₹ 0 = 0
प्रज्ञापनासूत्र (उपाग) प्रा•	७४	प्रतिष्ठासार सग्रहग्रा॰ वसुनि-द	स०	550
	<b>EC</b>			≈€•
	188	प्रतिष्ठा सारोद्धारग्रा <b>शावर</b>	सं०	560
	160	प्रत्यान पूर्वाल पाठ	গা •	११६०
	105,	प्रत्येक बुद्ध चतुष्टय कथा	र्म •	866
	२०६	प्रद्रम्न कथा—क० वेशीदास	हि०	११६७
	٤٥,	प्रद्युम्न कथा—-सिहकवि	अप ०	११मद
हख <b>७, १०</b> ४४ <b>, १</b> ०		प्रशुप्त कथा प्रवध - भ० देवेन्द्रकी	-	864
११२७, ११	- 1	प्रस्तुम्न चरित्र	हि∙	3 % 3
प्रतिक्रमस्—गौतमस्यामी प्रा॰	₹0€			źXR

ग्रंथनाम लेख	क भाव	ŧŦ	पत्र संख्या		लेखक	मावा	वत्र संख्या
प्रदास्त चरित्र—महा	सेनाचार्य	सं०	३५२	प्रमारानयतत्वालोः	नालकार वृ	त्त-रत्न	
प्रसुप्त वरित्रसोम	कीर्ति	<b>₹</b> ∘	३५२			सं	
-			३५३	प्रमासानय निर्साय-		ागर गरिए	
प्रद्युम्न चरित्र—शुभव	न्द्र	₩0	३५३	प्रमास निसंय—		स	
प्रधुम्न चरित्र टीका		सं०	३५३	पमाग् परीक्षा	विद्यानन्दि	<b>स</b>	
प्रद्युम्न चरित्र — रतन		सं∘	₹X₹	l			२४६
प्रधुम्त चरित्र —सधा	₹	हि०	₹ % ₹	व्रमास परीक्षाभा	षाजयच	न्द छ। बड	हिं० २५३
			१०१५	प्रमासा प्रमेय करि	कानरेन	द्रमेन सं	, ગ્રફ
प्रद्युम्न चरित्रमन्ना	सम	हि०	३५३	प्रमाग् मजरी टिप		स :	२५६
प्रबुम्न चरित्र वृत्ति-		सं०	₹ ४. <	प्रमेयरत्नमात्रा-			० २५६
प्रद्युम्न वरित्र भाषा-	ज्वालाप्रसाद			l			२६
		हि०	3 % &	प्रवचनसारकु	क दाचार्य	प्रा	۰ ۶۹ ۰
_		c-	3 % %	प्रवचनसार टीका		प्रा	
प्रद्युम्न चरित्र—खुशा	सचन्द	हि॰	३५५	प्रवचनसार टीका	To <b>T</b> Y		
प्रवासन प्रबन्ध		हि॰	११४६	प्रवचनसार भाषा	1. 4.	fg.	
प्रवास्त प्रबन्धभ०	देवग्द्र कीति	हि०	₹ <b>५</b> ५ <b>३</b> ५६	3441111		***	281
		हि०	*** ***	Į.			
प्रद्युम्न रास सम्बद्धाः		हि०	\$\$¢	प्रवचन सार भाष	विचनिका-	—हेमराज	
प्रद्युम्त रासो—क्रिक				ł			२१२,२१
	, €¥₹, € <b>६</b> ६			प्रवचनगार वृत्ति-	-धमृतसम्ब	सुरि हि	٠ २१:
प्रद्युम्न लीला वर्णन—				प्रवसनसारोद्धार		मं ०हि	
प्रबन्ध चिन्तामिता — र			EXX	प्रद्रज्याभिषान सम्	वित	ri H	. १३१
स्बन्ध चिन्तामशि श	-	H 0	EAR	प्रश्नवृद्धामरिए	.c	ŧi	
बोध चन्द्रिका		संट	376	प्रक्रम(ला		हि	
बोध बन्द्रिकावैजस		सं ०	¥१७	प्रदेशमाला मावा		हिं	
बोध चन्द्रिका	" ;	Ħ o	५१७	प्रकृतमाला नावा प्रकृतमाला वचनिक		हिः हिः	
	_		8860			-	
वोध चन्द्रोदय नाटकः—	-कृष्ण मिश्र र	H o	३४६,	प्रदन्यप्टि गतक क	ाव्य टाका-	-	
			६०६	प्रश्न सार		संब	
बोव चितामिशाजय		o P	8860	प्रश्नावली-स्त्री दे	दी मन्द	<b>स</b>	
बोध बावनीविनदार		हे॰	१०२०	प्रक्तीत्तरी		सं	
बोध बावनी —जिनरग	सूरि हि	į.	७३७	प्रश्नमास्त्र		सं	. XXX
भवन चरित्र		g o	344	प्रदनोत्तरमासा		₹	৬
मारानयतत्वालोकाल क	ारवादिदेव	सूरि	: )				890
		gi o	२१७	प्रस्तीलरमानिका			

ग्रंथनाम लेखक म	ावा पः	। संख्या	ग्रंथनाम लेखक म	वा	पत्र सख्या
प्रश्नोत्तर रत्नमाला	हि०	१३७	प्राग्गीड़ा गीत	हि०	१०६५
		६४०	प्रातः सध्या	सं०	१११७
प्रश्नोत्तर रत्नमाला-समोबहर्ष	स०	છ્છ	प्रायश्चितग्रथ प्रा०स	ioहि•	१४१
		<b>%</b> ==	प्रायश्चित ग्रन्थ ग्रकलक स्वामी	सं०	ξ⊏ξ,
प्रस्तोत्तर रत्नमाला-बुलाकीदास	स०	<b>&amp;</b> EE			१४०,
प्रक्नोत्तर रत्नमाला—विमनसेन	स०	६८५		1	१४१, २१४,
प्रश्नोत्तर रत्नमाला	その	६८६	प्रायश्चित पाठ		323
प्रश्नोत्तर रत्नमाला वृत्ति - मा०	देवेन्द्र स०	१३७	प्रायदिचत माधा	हि०	₹33
प्रकालर श्रावकाचारभ० सक	<b>नको</b> नि		प्रायश्चित विधि	स	
	स०	१३७	4141411111	, <u>,</u>	640
!	१३५, १३	९, १४०			
प्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा वर्चा	नेका		प्रायश्चित शास्त्र-मुनि बीरसेन	₹.	
,	सं ० हि ०	626	प्रायदिवत समुख्यय- निष्दगुरु	₹ •	
प्रश्नोत्तरी	₹0	66	प्राथिष्वत समुख्यय वृत्ति- नदिर्		
प्रश्नोत्तरोपासकाचारबुलाकीदा	स हि॰	8 € \$	प्राप्ताद वल्लभ—मंडन	₹ .	
		688	प्रियमेलक चौपई		
प्रदमव्याकरणसूत्र	MI o	<b>७</b> ६	प्रियमलक चौ ।ईसमयुसुन्दर	राज	
प्रश्नव्याकरसासूत्र वृत्ति-प्रभयदे	वगिस		प्रिया प्रकरण	प्रा	
	प्राव्संव	७६	प्रीत्यकर चौपईनेमिचन्द्र	हि <b>ट</b> -	
प्रश्न शतक	सं०	७६	प्रीतिकर चरित्र	हि ट	
प्रशस्तकाशिका त्रिपाठी बालक्		3388	प्रीतिकर चरित्र—जोधराज	ફિ	
प्रसाद संग्रह	₩io	પ્રશ્હ			- १०३१
प्रस्ताबिक दोहा	feo	£ X E	प्रीतिकर चरित्र व० नेमिदत्त	सं	
प्रस्तावक प्रतोक प्रस्ताविक श्लोक	.e- सं∘	\$ac	प्रीतिकर चरित्र—सिंहनन्दि	सं	
प्रस्ताविक श्लोक	₩•	६८१	प्रेम पत्रिका दूहा	हि	
अस्ता(वक श्लाक	40	8888	प्रेम रत्न।कर	हि	• ६२६
	_		प्रोषध विधान	हि	o 5 5 0
प्रस्ताविक सर्वेया	हि०	₹00₹	1		
प्रस्तुतालकार	₩ 0	११६२	फ		
प्राकृत कोश	₩ 0	x ex	1	_	
प्राकृत खब	मा०	x 8 x	फागकी लहुरि	हि	
प्राकृत लक्षरा—चंडकवि	सं०	x	फुटकर ग्रन्थ	_	1351
प्राकृत व्याकरस् — चन्डकवि	সা•	४१७	फुटकर दोहानयमल	ŧ	
प्राचीन व्याकरश्-ाशित	सं०	* \$ 0	फुटकर वचनिका एवं कवित्त	हि	
प्रायाम विधि	हि०	१०६५	<sup>1</sup> फुटकर सर्वया	हि	० ६११

ग्रंथ नाम	लेखक व	गवा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
				<b>ब्याह</b> मो		हि	० १०१८
	ब			वद्याज्योति स्व	क्य-श्रीधः	राचार्य स	० २१४
				व्रद्धातुच्यकरम्	भास्कराच	ार्य स	o
बखाग		वाष्ट्र	११६१	वहाके शलक	स्स	स	० ११२७
बगनामुखी स्तो		₹∘	७३७	ৰয় পুসা		स	0 5 6
बधेरवालों के ५	२ गोय	हि०	5.59	ब्रह्म वावनी	-निहाल <b>चन्द</b>	<b>क्रि</b>	० १४३
बधेरवाल छंद		f۲۰	११६४	बहामहिमा		fis	5809 o
बटोई गीत		हि०	6500	बद्धाविलाम -	- भैया भगवत	शिदास हि	० ६७०
बडा विगल		म०	x 3 x	€ 198,	६७२ १६८,	? ox ?. ?	७७२, ११३३
बराजारा गीत		हि.०	ε = χ	क्रहा विभाग	के भ्रन्य पाठ	-भैया भगव	तीदाम
			48 € €			ਵਿੱ	० १००५
	-कुमुदचन्द्र यूरि	हि०	2325	ब्रह्म वैवनं पुर	स्म	#1	• ११८२
बएकारो रासी-	न(गराज	fg o	११५१	वहा मूत्र		27	० ११८२
बत्तीस दोप साम	। यिक	हि ०	१०६६	बाईस ग्रमध्य	वर्गन	हि	० १४२
बसीस लक्षण छ	पय गगादास	हि०	***	बर्दस परीवह		हि	۶٥.٩
द्यनारसी विलास	जगजीवन	हि०	६६८			<b>१</b> c	¥6, 199E
		•	46, 299	बाईस परीपह	भूधव्दास	fe	० १४२
		3.3	¥, <b>१</b> ०१२.	बाईम वरीपह	कथन मग	वतीदास हि	० ११३३
		१०१	=, १०=१,	बाईस परीपट	बर्गान	ਵਿ	
	१०४	X, 204	२, ११६६				6680
बभगागीत		हि०	દ્દર	कारह सनुप्रेक	17	हि	o १०२३ १०२३
वलिभद्र कृष्णा स	ाया गीन	fgo	१०२४			fg	•
बलभद्रगीत श्र		fgo	€ € €	बाग्ह अनुप्रदे	।। — डालूराम	ir fr	
बलिमद्र गीत	-1	हि०	853	बारहसडी		18	, (°C)
बलिभद्र चौपई	3	हिं	2017	बारहसडी	क्रमस क्रीति	हि	
विसमद्र भावना		हि॰	8058	बारहसकी -		fe	
बलभद्ररास	• यजोधर	हि०	283X	बारहसडी-		fg	
बलिभद्र विनती		fg o	886=	बारहत्त्वडी		fg	
बलिभद्र वीनती-	मनिषस्द	हि॰	१०७१	बारहबडी		हि हि	
बलि महानरेन्द्र	•	H o	३८७	बारहसडी		fe	
बसन्तराज टीका-			, , ,	\$085. \$08			
		स∙	222				ozo, 20EX
बसत वर्णन	। जिदास	€io	340	बारह माबना	,	हि	
बहत्तर सीख		हि॰	3409			-	. Ex. 1080
-		•				. , ,	

ग्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र संस्या	। प्रथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संस्था
बारह भावना व परिषह	fgo	=33	बावनीवना	रसीदास	हि०	646
बारह भावना नवल	हि		बावनी हूग	रसी	हि॰	११०५
बारह भावना- मगवतीद	।स हि∘	8050	बावनी-जिन	हयं	हि०	<b>4= 6</b>
बारह मासा	fgo	3:5	बावनी-स्यार	गामर.	हि॰	६८६
1309	c, १११४, ११	<b>५३, ११</b> ६२	बावनीग्र०	में स्थ्य	हि०	६८६
बारहमासामेतसी	हि०	2002	बाबमी छ,पर्ट		हि 🤈	8=8
बारहमासापाडेजीवन	हि०	११२४	बाबनीमनिष	गेखर	हि०	१०२७
बारहमासा दौनतराम	हि०	११२६	बावनी — हरम्	ख	हि ०	१०७८
बारहमःसा मुरजीदास	हि ०	3309	बासठ मार्गरहा	बोन	हि०	৩৩
बारहमासा वर्गान	हि०	₹054	बाहुबनि गीत-	⊶कल्यारणकीि		६६२
बारहमासावरांन—क्षेमकः	रस्य हि०	१०१८	बाहुवनि छद-	–कृमुदच∗द्र	हि०	१०६६
बारहमासा की वीनती—	इ.हे राजभुवन	भूषरा	बाहुबलिनो छद		हि०	8668
	हि०	११०८	बाहुबलिनी निष		हि०	११४३
<b>का</b> रहमासी पूरगंगासी कल	हि०	१०३६		–वीरचन्द सूरि	हि॰	43=
बारहबतयश कीर्ति	fgo	१०८८	बाहुबलि बेलि-		हि०	१११०
्वारहब्रतगीत—-व० जिल	ादास हि०	6688	बिम्ब निर्माश		हि०	<b>११३</b> २
बारहर्सं चौबीसी वतोद्यापन	त स०	وهع	विम्ब प्रतिष्ठा		₩•	580
बारहसी चौतीस वत पूजा-	शुभचन्द्र स	0 5Ĉ0	बियालीस ढारा		हि०	99
बारहसौ चौतीस वत पूजा-	—श्रोभूषरण स	0320	विहारीदास प्रश		हि०	११६२
बारा भारा महा चौगई बा	थ—⊹ <b>व</b> ० रूपर्ज	1	बिहारी सतसई		हि०	६२६
	हि०	३५७	६२ बिहारी सतस्ई	∖७, १००२, १० जीका	१३७,१०३ हि०	म्हर्भ म्ह इर्
बारा ग्रारा की स्तवन	ऋषमो हि०	७३७	बीज उजावलीरी		हि०	२,५ १७६
बाल चिकित्सा	स०	४६०	बीज कोष	' 3*	सं०	<b>६२१</b>
ब। लतत्र	刊の	ሂሩዕ	भीस तीर्थं कर	जकारी	हि०	8028
बालतंत्र भाषाप० कल्य	ाग्दास स०	४८०	1	जकडी हर्षकी	_	2000
बाल त्रिपुर सुन्दरी पद्धति	₹1 0	६२१		जयमाल— हर्पं <b>र</b>		532
बाल प्रवोध विश्वतिका	मोतीलाल पन्ना	लाल		पुजा जौहरील		588
बालबोधमंजादित्य	軒。	५५५		पूजा — बानजी		
बालबोध ज्योतिप	स०	***	बीस तीर्थं कर		मणगरा । हि०	१००२ १००२
बावनाक्षर	शार	१०४७		ूर्याः तवन—ज्ञानभूष		2836
बावन ठःगों की चौपई	हि०	१०५८	बीस विरहमान		हि०	1999
<i>बावन</i> बीराकानाम	सं०	६२१	बीस विरहमान		स्ट स	\$32
बावनी	हि०	१८८	714 14 (6414	2-11	fg o	1117
बाबनी — छीहल	हि०	343				११२=

			/			
		पत्र संख्या	ग्रंथ नाम			गत्र संख्या
बीस विरहमान सर्वयाविद्यासा	-		मक्तामर सटीक		हि∙	6083
बीस विदेहक्षेत्र पूजाशिसरचन्द	-	53≈	भक्तामर सर्वया		हि •	8 0 5 8
बीस बिदेहक्षेत्र पूजाचुन्नीलाल	हि०	≈ € \$	भक्तामर सिद्ध पृ	•		१११=
बुद्धि प्रकाश — टेकचन्द	हि०	885	मकामर स्तोत्र-	•		७३८
बुद्धि प्रकाश —कवि घेल्ह	हि०	8 8.1		, 088, 085,		
•	-	£ 57	१०११, १०१२	, १०२२, १०३		
बुद्धि प्रकाण रासपान	हि०	48=	ŀ	११२२, ११	२४, ११२	७, ११४३
बुद्धि रास	हि०	≂६३ ७३३.४≈	भक्तामर ऋदिम	।त्र – ग्रर्थसहित	· #1 •	\$ ? 7 %
वृद्धि विलास-वस्तराम	हि०	१४३	भक्तामर न्तोत्र	(ऋडि मत्र सहि	त) स०	७४२
3/4 (4/10- 4/10/04	16.0	666	भनामर स्नोत	(ऋषि यत्र सहि	त) स०	3999
बुधजन विलायबुधजन	हि •	377	मकामर स्तोत्र व	त्या - विनोदील	ाल हि०	848
बुधवन सतसई	हि०	\$ E o .	भक्तामर स्तोत्र	कवा	₹ <b>7</b> 0	848
		9088				* 4 4
		१०८१	मक्तामर स्तीत्र		ਰਿ •	४६५
वृधिरास	١Ę٠	१०२४	भक्तामर स्तोत्र		•	983
3		8888	भक्तामर स्तोत्र		स०	683
बुवाष्टमी कवा	<b>स</b> •	853				988
बुढा परित्र—जतीयन्द	fg o	1831	भक्तामर स्तीत्र १	rar	हि०	१०३६
बोष सत्तरी	fe•	₹=₹	4004 ( 1014 )	(4)	.4	१०८५
बंकचूल की कथा	feo	50.85	भक्तामर स्तोच प	जातरराम	हि ०	53≥
4084 21 441	16-	8838	मनामर स्तोत्र प्र		4.0	932
वंक बूलरास द० जिनदास	हि०	£3=	मन्तामर स्तोत्र १		#10	दहेर
वंकचोर कथा (धनदल सेठ की कृष	-		मक्तामर स्तोत्र र			
And Canal fadeti 40 mil do	।)। हि•	868	40,44 (014 (	241111 X41	#•	= १३
बंधतत्व —देवेन्द्र सृरि	সাত		मक्तामर स्तोत्र ।	गमावकोच टीका		988
बंधफल	सं०	X = 0	भक्तामर स्तोत			988
बंध्या स्त्री कल्प	हि॰	250	मकामर स्तीत्र			
4-41 444	160	***	4.014. (014.		हि०	488
¥		- 1	मक्तामर स्तोत्र	नाथाअवसम्ब	खावडा	
**		1			हि •	७४४
भक्तामर पूजा-विश्वमूषरा	₹ •	8063	मन्तामर स्तोत्र व	रावा टीकावि	नीदीलाल	
मक्तामर पूजा विधान—श्री मूचग्र	हि•	११६२			हि॰	98É
भक्तामर भाषा—हेमराव	Æ.	ए७७	भक्तामर स्तोत्र व	गाषा टीकालं	विश्वयंत	
१०२०, ११२०, ११४८, ११४६,	284	२, ११६२			हिं •	6×£

ग्रथनाम लेखक माध	। पत्र		ांथनाम लेखक		सं <b>रुधा</b>
	हि॰	७४६, :	मग्वती स्नाराघ≂ामाषा—पं∘	सदासुख कासर	शवाल १४६
Manager Control of the Control of th	9×9,	٤٤٦,		राज०	68.00 6.00
	€ 50, ₹			<u>-</u>	७५०
	११२२,		भगवती स्तोत्र	हि॰	99
मक्तामर स्वीत भाषा (ऋद्वि मंत्र व	सहित)		भगवती सूत्र	সা •	
	हि॰		भगवती सूत्र वृति	સં∘	५१४ ७७
		19 Y C	भगवद् गीता	सं०	
भक्तामर स्त्रोत्र भाषा टीका—गुरा	कर सूरि	1			₹399
.,	मं ॰	989	मज गोविन्द स्तोत्र	<b>स∘</b>	9× 0
मक्त मर स्तोत्र वृत्ति – कनक कुका	ल स०	७४७	भट्टारक पट्टावली .	हि॰	e x3
भनाभर स्तीत्र वृत्ति-रत्नचन्द्र	स ०	७४७	-		6888
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		৬४८	मट्टारक परम्परा	160	-66ER
भक्तामर स्तोत्र वृत्ति—व्र० रायम	ल्लम०	৬४७	भडली	स ॰	***
मक्तामर स्वान श्रुप्त न		380	<b>म</b> डली	हि॰	<b>XXX</b>
	मं ॰	380		_	४५६
मक्तामर स्तोत्राबच्हरि	स०	940	भडली पुराग	हि॰	<b>५५</b> ६
मक्तामर स्तात्रावचूरि	सं	8608	भडली वर्णन	हि॰	४५६
मक्तामर स्तोत्र सटीक—हर्षकीति	सं०	2234	भडली विचार	हि०	५४६
भक्तामर स्तोत्र सटीक	स <b>०</b>	8028	भडली वाक्य पृच्छ।	हि॰	<b>भू</b> ५
मक्तिनिध	-		भडली वचन	हि०	१०५६
मक्ति पाठ	स •	६६२	भडली विवार	हि०	११५७
		EER	शद्रवाहु कथा — हरिकृष्ण	हि॰	४६५
मिक्त पाठ	ĦФ	११४७	भद्रबाहुगुरुकी नामाक्ली	हि०	6678
भक्ति पाठ सग्रह (५७)	सं०	११३६	भद्रबाहु चरित्र—रत्ननन्दि	स •	३५८
मक्तिमाल पदबलदेव पाटनी	हि०	१०६६			318
भक्ति बोध-दासद्वंत	गु०	११६७	भद्रबाहु चरित्र माषा—वि	शनसिंह पाटनी	
सगवती साराचना	स०	११२७	Taxang area area	हि॰	3118
भगवती भाराधना — शिवार्ये	प्रा ॰	१४४	भद्रबाहु चरित्र भाषा—च	म्पाराम हि॰	358
भगवती झाराधना (विजयोदया	रीका) अप	राजितसूरि	भद्रबाहु चरित्र सटीक	हि०	३६२
भगवतः झारावनः (। जजवायनः	<b>₹</b> ∘	१४४	भद्रकाहु चरित्र—श्रीधर	भ्रप॰	३६२
		१४६	14418 71111		3 4 3
n	प्रा॰सं॰	88.8	मद्रबाहु रास व ० जिनव	तस हि॰	६३६
भगवती भाराधना टीका		, , ,	मद्रवाहु सहिता-भद्रवाह		180
भगवती द्वाराधना टीका— ननि	दगारा				X X 1
	प्रा॰सं॰	6.86	1	•	

ग्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र सख्या	प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
मयहर स्तोत्र	स	. १४६	भ्रमरगीतवं	रिचन्द	हि	* ११३२
भयहर स्त्रोत्र (गुरु गीता)	सं	७४०	भ्रमर सिज्मा	व	हिं	3,488
भरटक कथा	<b>#</b> 4	* <b>* \$ \$ \$</b>	भागवत		<b>स</b> (	११६३
भरत की जयमाल	fg e	<b>१११</b> ७	भागवत महापू	गए।	f) e	२८१
भरत बाहुबिल रास	हिं	१०४९	भागवत महातु	राग	₹ 4	२ २१
भनुंहरि शतक	हि	8088	भागवत महाप्	[गरा भावार्य	दीपिका (प्र	वस स्कथ)
मतुहरि शतक—मतुहरि	स	<b>६८१,</b>			श्रीव	515
	Ę	€२ <b>, ११</b> ६१,	भागवर महापू	राग भावार्थ	दीपिका (हि	(० स्क्य)
		₹ १ ६ ≺			श्रीध	769
मतृंहरि शतक भाषा	fg o	६६०	भागवत महापु	गाग भःवार्थ	दीपिका (तृ	० स्कंघ)
भतृंहरि शतक टीका	₹ 0	६६२			श्रीध	₹ २६१
मतृंहरि शतक माचा — सवाई	प्रतार्गम	ē .	भागवत महापु	गण भावार्थ	दीविका (च	(০ ≱ৰ্ষ,
	हि०	६६२			থীগ	र २८२
भले बावनीबिनयमेरु	हि	\$863	भागवत महापू	rim winisi	बीरिक्टर स	ET 1STS)
भवदीपक भाषा - खोधराज गो	दोकाहि	० २१४	41.14.1 .161.3	ाम् मानस	भारतमा (प श्रीधर	
भव वैराग्य शरक	द्राव	₹१४	मागवत महापु	2133 MINISTER		
भवानी बाई केरा दूहा	で見ずる	903	andan ani	*************	थावना (ः श्रीधर	
भवानी सहस्य नाम स्तोत	स •	৩২০				
मिबसयत्तकहा — धनपाल	শ্বাদ ০	४६३	भागवत महापु	रास भावाय	क्षापका (स श्रीघर	
		६४६	भागवत महापु	zem vistá		
भविष्यदत्त कथा ब० रायमत	न हि०	४६६	MINAT NEIG	ाल मायाय	यसपना (ग श्रीघः	
	` (	¥4, <b>E</b> ¥4,	मागात महापु	21311 WEED		
		₹₹=.	मागारा महानु	CIQI HIHIH	श्रीध	
		१०६२				
भविष्यदन चौपई	fę o	€ ७ =	मागवत सहापु	रास भावाध	दाविका (स	कादशस्कथ)
मविष्यदत्त चौपई इ० रायमर	न हि०	343			श्रीय	
	-	00, १०३२	भागवत महापु	रास मानाय	दाापका (द्र श्रीषः	
मविष्यदत्त रामव॰ रायमस						
		२०, १०८३	मामिनी विलः			
	-		भारती राग		- हि∈	
भविष्यदत्त राम - ४० जिनदार			भारतील घुर			
भविध्यदत्त रास-विद्याभूवस	सूर हिं		भारावःहवनि		् हि <sub>ं</sub>	
	_	\$ \$ \$ to	भाव त्रिभंगी	-नेमिचन्द्राच	र्म प्रा	
अमरगीतमुकु ददास	हि०	<b>\$</b> ₹७				6685

ग्रंथनाम लेखक	माषा पत्र	संस्या	प्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
भाव दोपक भाषा	हि०	१४७	भुवन भानु केवर	तीचरित्र	सं०	₹ <b>€</b> 8
मावदीपिकाः	हि०	२१५	मूकप एवं भूच।	ल वर्णन	हि०	488
মাৰ্সকাগ — মাৰ দিখ	स •	५६०	भूधर विलास-	-भूवरदास	हि॰	<b>६७</b> ३,
भागप्रदीपिका	स ०	१४७			808	१४, ११६३
भ≀वफल	स •	४४६	भूगल चतुविशा	तिकाभणल	कवि सं०	હ <b>ષ્</b> શ્
भावना बलीसी	tgo	8082	, , ,			७१, ७७४,
भावणतक नागराज	27 0	१४७,				2x, 8 8 70
	७४१,	4852	भूपाल चतुर्विक	Faran anaar•		
भावसम्बद्ध देवसेन	श्रा •	१८८	भूपाल चीबीसी भूपाल चीबीसी			६५१.
भावसम्रह - वामदेव	म०	१४५	यूगल गामाना	माचा जात	4 (141 164	٠٠٠ <b>,</b> ७४२
भावमग्रह्-भृतमुनि	সা৹	७८,			c-	
		\$ 0 % ⊏	न्पाल चौबीसी			
भ(वसग्रह टोका	सं०	885	भूपाल स्तोत्र छ भैरवाप्टक	क्ष्पय ।वधाः	मामय ।हर स०हि०	
भावनाष्ट्रक	स०	७४०	भरवाण्डक   भैरवाकत्प		संब	
मावना चौबीसी पर्यनन्दि	स∙	£ £8	मेरवा पद्मावती भैरवा पद्मावती			
भावना बत्तामी-श्रमितगति	स०	৩২০	भैरवा पद्मावत			
भावना विनती — इर्ज जिनदा		£ <b>X</b> ₹	भैरवा पुजा	1 4044	रलपम । हि•	हर १७२१ १०५६
भावनामार संग्रह—चामुण्डरा		₹3₹\$	भैरवा स्तोत्र		स०	
भाविसमय प्रकरण	#1 o	४४७	भैरवा स्तोत्र-	_ क्षो प्राचःत	हि	
भाषापृक	स ०	. €€X	भैरू सवाद	-411711914	हि	
भाषा परिच्छेद—विश्वनाथ प		14 २६०	भोज चरित्र		हि	
	₩.		भोज चरित्र—	- মৱানীৱাম হ		
मापा भृषरग-जसवन्तसिंह	हि० ११६८	, 838 8388	भोज प्रवस्थ —		ह	
माषा भूषरा टीका—नारायर		8084	मोज प्रबन्ध		ं सं	
भूवनकीति गीत	हि॰	643	मोजराजका	5 <b>य</b>	 स	
भुवनकीति पूजा	₩•	583	1		*	, , , ,
भूवन द्वार	हि०	£319		म		
भूवन दीपक	सं०	3008				
भुवन दीपकपद्म प्रम सूरि	祝。	४४७	मकरद (मध	प्रलग्न ज्योतिष	र) सं	৽ ৼৼড়
भूवन दीपक टीका	मं ॰	ХХO	मक्सी पारसन	<b>। व</b> - मागसन	ৰ বি	ह० १०४८
भुवन दीपक वृत्ति-सिहतिल	क सूरि सं०	४५७	मराकरहा ज	पमाल	fa	० ११६४
भूवन विचार	₩•	४५७		रिषहरिचन		१० ३६५
भुवन दीपक मावा टीका	धनन्दि सूरि		मिसिभद्रकी व	ते इन्द-राव	<b>गरत्न पाठ</b> व	हिं ७५२
•	स∘	933	मतमतातर द	र्शन।ष्टक	,	3¥0\$ 0H

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र सस्या	प्रंथ नाम	लेखक	माखा	पत्र संख्या
मदनजुरुभबूच	राज	हि	० ६८४,	मल्लिनाथ गीत	ब्र० यशोध	र हि०	१०२४
		₹•	दद, १ <b>१०</b> ६	मस्तिनाथ चरिः	त—म०सक	नकीति संब	३६४
मदनपर।जय —ि	बनदेव सूरि	सं	० ६०६,	मल्सिनाथ चरिः	र — सकल भू	षसा स०	३६६
			६०७	मल्लिनाथ चरिः	त्र माषा — सेव	ाराम पाट	नी
मदान्ध प्रवोध		सं∘				हि॰	३५६.
मधुकर कलानिधि	—सरसुति	हिं				-	३६७
मधुमानती		हि०		मल्लिनाथ पुरार	Ţ	सं०	२१३
मधुमालती कथा		हि		मस्लिनः थ पुरास	ग भ≀षा — से॰	शराम गाट	ৰ্না
मधुमालती कथा~	—चतुमु ब	हि				हि०	२६३
			६२, ११६८	मस्तिनाथ स्तवन	घमं मिह	हि०	७४२
मधुबिन्दु चौपई		हि		महर्षि स्तवन		Ħ o	७५३
मधुबिन्दु चौपई		f₹∘		महाकाली सहस्र	नाम स्तोत्र	村の	७५३
मनकरहा जयमार	r	हि ०		महा दण्डक		e Ps	२६३
			६७२	महादण्डकवि	ज4कोति	fe :	8 46'
मनकरहा रास		fga					२६३
मनकरहा रास	इ॰ दीप	हि०		महादेव पावंती	सवाद	हि०	११६५
मन गीत		हिर	The state of the s	महायुरारा		हि०	१०४३
मनराज शतक - १		हि०		महापुरासा —जि	नमेनाचार्यं गुर	एभद्राचार्य	
मन मोरङ्ग गीत-		हि०				<b>₹</b> 0	२६३,२६४
मनुष्यभव दुलंभ व	हवा	₩.	844	महापुरासा श्रीपा	—गगदास	हि०	६६१,
मनोरय माला		हिल	१०२७			२६४, १११	<b>१३, ११</b> ५२
मनोरय माला	-	हि०	११११	महापुरारा विन	ती वयादास	हि•	११३६,
मनोरव माला-		সাৎ	\$ o x x			888	.४, ११६६
मनोरयमाना गीत	—धम भूषए।	•		महापुरुष चरित्र-	धा॰ मेरुत	ंग स०	EXA
मयस् रेहा चरित्र		(£°	3 5 %	महाभारत		स॰	738
मरकत विकास-	मातालाल	ۥ	६७३	महानिधेक विधि		सं∙	£32
मरश करडिका	_	₩•	488	महायस विद्याल		जिनदास	हु० ४६६
मरहहोवृन्दावन		हि०	8068	महासक्ष्मी स्तीत्र		₩.	1085
मलय सुन्दरी कथ	जय विस्र	हसूरि		महात्रदी बालोच		सं०	११३६
		€	<b>३</b> ६४,	महावदीनि चौम		हि॰	\$ ? ₹ X
*			866	महाविद्या		सं०	२६०
मलय सुन्दरी चरि	त्र साथा	सयराम प्	<b>बुहाहिया</b>	महाविद्या पक्र क	क्री स्तोत्र	₩•	<b>6</b> × 3
-		ŧ٤٠	344	महाविद्या स्तोत्र		सं∙	७५३
महिल गीत-सोर	कींत	fg.	१०२४	महाबीर कलश		য়া৹	१०२६

ग्रंथनाम लेखक मा	षा पः	न सल्या	प्रंथ नाम	लेख क	भाषा	पत्र संख्या
महाबीर जिनवृद्धि स्तवनसमयस्	स्दर हि०	७२१	मृत्यु महोत्सव		स∘	eer,
महाबीर निर्वाण कथा	सं०	४६६		888, 8	०११,१०	४७, १०८१
महाबीर पूजा —वृन्दावन	हि०	<b>₹3</b> ≈	मृत्यु महोत्सव	माषा—सदासुर	झ कासली	वाल
महाबीर बीनतीत्रादिचन्द्र	हि॰	११६१			हि•	११६३,
महाबीर सत्ताबीस भव चरित्र	সা৹	३६७				\$ \$ E.R.
महावीर समस्या स्तवन	सं०	10 PR	मृत्यु महोत्सव		सं०	
महावीर स्तवन-जिनवल्लम सूरि	भा•	७५३	माखरा मूख कः		हि०	११३७
महाबीर स्तवन—विनयकीर्ति	हि ०	७५३	माग्यक पद क्षप्र			₹७३
म हाबीर स्तवन —सकलचन्द्र	हि ॰	७५३	मानृका निघदु-		₩°0	६२२
महाबोर स्वामीनो स्नवन	हि॰	७५४	माघवनिदान	माधव	सं∘	X = E .
महाबीर स्तोत्र वृत्ति जिनप्रम सूर्व	रस०	७५४				¥={
महावीर स्तवनसमयसुन्दर	हि∙	६४१	माधवनिदान टी			¥=१ 
महाबीर स्तोत्र—विद्यानन्दि	स०	৬৬५	माधवःनल काम	कन्दला चापइ-	—कुशल ० राज०	गाम ४६६
महासरस्वतीस्नोत्र	स०	१०६४	माघवातल चीप	ŧ	हि॰	840
महा शांतिक विधि	<b>स</b> •	<b>53</b> ≈	माधवानल चौप		हि॰	£55
महासती सज्भाय	हि॰	११६५	माधवानल प्रबन		हि०	<b>६</b> २७
महिम्न स्त्रोत्र-पुष्पदताचार्यं	स०	७५४	मानगीत		हि ०	1838
महोपाल चरित्र—वीरदेव गरिए	সা ০	३६७	मानतुंग मानवर	रीमोहन वि	_	2846
महीपाल चरित्र—चारित्र भूषरा	स०	३६७,	मानतु ग मानवर			
		३६⊏	मान बलीसी		हि॰	१०५=
महीपाल चरित्र भाषा—नवमल दे	-	३६⊏	मान बावनी		हि॰	₹७३
महीमट्ट काव्य-महीमट्ट	सं०	३६६	मान बावनी	मनोहर	हि॰	880E
महीभट्टी प्रक्रिया—प्रमुभूति स्वरूपा	चार्य सं०	४१७	मान बाबनी		हि०	3055
महीमट्टी व्याकरण — महीभट्टी	स•	५१७,	मान भद्र स्तवन	-	हि॰	७४४
		४१८	मान मंजरी		fgo	4961
महुरा परीक्षा	स०	१११७			•	3088
मृत चर्म कथा		४६७	मान विनय प्रक	म	हि०	६७३
मृगापुत्र बेलि	हि•	६३६	माया कल्प		सं∘	478
मृगापुत्र सज्माय	हि•	४६७	मायागीत		हि०	\$ \$ \$ \$ \$
मृगावती वरित्र—समयसुन्दर	हि•	३७०	मायागीत व	नारायस	हि०	6688
मृगोक लेखा चौपईभानुषन्द	हि•	६६१	मार्गेशा चर्चा		हि०	F33
मृगी सवाद देवराज	हि ०	EXX.	मार्गेगा स्वरूप		प्रा॰सं॰	৬দ
4	१८३,	१०६३	मागंगा सत्ता वि	त्रभंगीनेमिय	<b>न्द्राचार्य</b> !	स• ७८
मृगी संवाद चीपई	(go	६४४	मातंण्ड हृदयस्तं	াস	सं०	**

प्रंथनाम लेखक भाष	वा	पत्र संख्या	प्रंथनाम लेखक	माषा	पत्र सं•या
मालीरासा	हि०	१०५०	मुक्तावली बन पूजा	Æ o	532
मालोरासजिनदास वि	है ०	€ &X,	मुक्तावली जनोद्यापन	स०	E&X
		1802	मुक्तिगीत	f# c	१ ६ ४
मास प्रवेश सारगी	हि०	१११४	मृक्ति स्वयवरवेग्गीचन्द	<sup>6</sup> ह ०	१५०
मामान्त चतुर्दशी वतोद्यापन	मं ०	<b>८</b> १३	मुनि गुरगरास बेलिश्र० गाग	जी हि०	5 ‡ €
मागीतुंगी गीत-प्रमयचन्द गुरि	हि०	११११	मुनि मानिका	হি ০	७४४
मागीतुगी चौपई	स ०	303	मुनि मालिका — चारित्रांमह	हिल	११५६
मागी <b>ट हो</b> अजा	हि ०	१०४६	मुनिराज के छियालीस अन्तरा	ष—भंगा	मगयनीटास
	Ħ o	532		١٤٥	१५०
मागीतुं <b>भी</b> जीं र्दे ।त्रा-समयवस्य	सृदि		मुनिरंग चौपईलानचाद	fe; o	328
· - 1	īz o	88.87	मृतिवत पुरामाव व कृष्णादार	म स०	२८४
मांगीतु गी सज्भाय-प्रमयवन्द्र सूरि	t fg •	৬ ২	मृतिसुबन नाथ स्तोत्र	ηo	e c 3 }
मागीतुंगी स्तवन	<b>80</b>	<b>€=</b> 0	मुनीइवर जयमालजिनदास	便。	ς υ¥,
मित्रताम-सुहदभेद वि	7,0	६५०			3E, ११०t
मिश्यादुक्कड !	80	११६४	मुनीक्ष्वर जयमाल पाण्डेजिन		6689
मिय्या दुक्कड़ — त्र० जिनदास हि	80	₹₹₹,	मुस्टिका ज्ञान	# o	१११६
	, \$ \$ 3	=, ११५५	मृहर्न चितामिंग त्रिमस्ल	Ħο	५ ४ ७
मिथ्या दुक्कड जयमाल	हि०	86.8	मुहर्न विनामस्यि—दैवज्ञराम	स०	223,
मिथ्यान्व लडन-डस्तराम वि	7,0	₹¥€			४्४⊏
		€00,	मुहूर्न परीक्षा	स०	* * *
		६०=	मृहसं तत्व	सं०	४४८
मिथ्यात्व संडन नाटक	fg o	٤٥٢,	मुहुर्नमुक्तावली —परमहस परि	(प्रजाकाचा -	
		દષ્ય	. 100	सं०	ሂሂ።
मिथ्यास्य दुवकड (मिछादोकड़) वि	है	१०२४	मुहर्न विश्व	स∘ _	४५१
मिध्यात्व नियेश हि		१४९,	मुहर्ने ज्ञास्त्र	स∙ 	***
		840	मूत्र परीक्षा	<b>∓</b> ∘	3 = 5
मिध्यात्व भजनरास वि	ξo	8=६	म्य परीक्षा	हिं•	£ ¥ 3
	ų o	308	मूल गुरा मज्जाय-विजयदेव	हि०	७५४
मुक्तावली गीत ध	प०	દપ્રર	म्माचार प्रदीप सकलकीति	र्म ०	१५१
मुक्तावसी गीत	g o	2880	म्लाचार भाषा-ऋषभदास वि	नगरमा र *	अप्तः ५१,१४२
मुक्ताकली गीत-सक्लकीति ।	ह०	8888	मूसाचार सूत्र—बट्टकेराचार्य	সা৹	840
मुक्तावली रास-सकलकीति	è.	EXX	मूलाचार वृत्ति — वसुनन्दि	ŧίο	8 % 8
मुक्तावली वत कथा-सुरेन्द्र कीति व	ğ o	४६७	मेयकुमार गीत-पूनो	हि०	£ 80,
मुक्तावली वर कथा-सकल कीति	₩°	860			२, १०६२

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा प	त्र संख्या	ग्रंथनाम लेखक	मावा पत्र संस्थ	Ħ
मेधकुमार गीत	—समयसुन्दर	हिल	११०२	भंगलकलक चौपई	हि० १०२	×
मेघकुमार का	बौढाल्यागरो	श हि॰	४६७	मगलावरमा –होरानन्द	हि० १०६	4
मेबकुमार रास	—कविकनक	f∉∘	807X	मगल पाठ	हि० ६६	19
मेवकुमार रास	पूनो	हि०	१०२६	मगल प्रभाती —विनोदीसास	हि० १०६	X
मेवकुमार सिज	भाय —पूनो	हि०	१०५४	मगल स्वोत्र	स० ७५	
मेथदूतकारि	<b>रदा</b> म	Ħο	३६१	मगल हरीसिह	हि०, १०४	8
गेयद्वा टीका-	-मल्लिनाय सुनि	(स०	3.90	मडोबर पण्यंनाय स्तवन — सु	मति हेम	
मेघमाला		सं०	४५६,		ાં કે કેન્યું કહે કે	?
			3 28 9	मंत्र प्रकरम् सूचक टिप्पम् —	गवरे संभवद्य देव	
मेथमाला प्रकर	2117	<b>स</b> •	ሂሂ፣,		स.० ६२	?
244121 42	***	"	3299	मत्र यत्र	स० ६२	
मेथमालिका इ	कोगातज्ञ	स०	E E 6	मत्र शास्त्र	हि॰ ६२	?
मेघमालिका व		म०	432	मत्र शास्त्र	हि०सं० ६२	7
मेघ स्तमन	nan jan	स∘	१११६	मत्र संग्रह	हि०सं० ६२	?
मेवाडीना गोत्र		हि॰	8838	मत्र सग्रह	सं०हि० ६५	
मैना सृत्दरी स	THE STATE OF THE S	हि०	११५२		805	x
मोक्ष पच्चीसी-		fë o	6083			
	क तक तालामं	-		य		
मोक्ष पाहुड —	कुदकुदाचार्य	সা৹	२ <b>१</b> ५	•	<del></del>	
मोक्ष पाहड — मोक्ष पैडी		प्रा <b>०</b> हि०	२१५ ११०४	यक्षिरणो कल्पमिललवेरण	सं० ६२	
मोक्ष पाहुड — मोक्ष पैडी मोक्ष पैडी — ब	नारसीदास	प्रा• हि• हि•	११०४ ११०४ २१४	•	स० ६६)	٧,
मोक्ष पाहुड — मोक्ष पैडी मोक्ष पैडी — ब		प्रा• हि० हि० स्मल राज०	११०४ १९०४ १४३,	यक्षिसो कल्पमिललेयस यति भावनाष्टक	स० हहा <b>११३</b>	¥,
मोक्ष पाहुड — मोक्ष पैडी मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रका	नारसीदास शक —पं० टोडः	प्रा• हि॰ हि॰ रमल राज० १४	8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8	यक्षित्यो कल्प—मल्लिषेया यति भावनाष्टक यत्याचार	स० हहा ११३ स० ११६	¥, Ę
मोक्ष पाहुड — मोक्ष पैडी मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग बत्तोः	नारसीदास ग्रक –पं० टोडः सी—दौलतराम	प्रा• हि० हि० रमल राज० १५ हि॰	२१४ ११०४ १०४१ १४३, १४, १४४	यक्षियो कल्प—मल्लियेया यति भावनाष्टक यत्याचार यत्याचार वृत्ति — असुनन्दि	स० हहा ११३ स० ११६ स० १४	¥, Ę X
मोक्ष पाहुड — मोक्ष पैडी मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रका मोक्षमार्ग बत्ती मोक्षमार्ग बत्ती	नारसीदास शक —पं० टोडः	प्रा• हि० हि० रमल राज० १५ हि० हि०	666 673 673 673 6086 6086 6086 6086 6086 6086 6086 608	यक्षिस्यो कल्य	स० ६६) ११३ स० ११६ सं• १४	¥, ; ¥ ; ¥
मोक्ष पहुंच —! मोक्ष पैडी — ब मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकार मोक्षमार्ग बत्ती मोक्षयार्ग बाब- मोक्षस्वरूप	नारसीदास तक —पं० टोडः सी—दौलतराम सी—मोहनदास	प्रा• हि॰ हि॰ रमल राज॰ १५ हि॰ हि॰	? ? \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	यक्षियो कल्प—मल्लियेया यति भावनाष्टक यत्याचार यत्याचार वृत्ति — असुनन्दि	स० हह ११३ स० ११६ स० १४ हि० ६७ स० ७५:	¥, ;
मोक्ष पाहुड —! मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकाश मोक्षमार्ग बक्ती मोक्षमार्ग बक्ती मोक्षमार्ग बाब मोक्षस्वरूप मोह्नबिक युड	नारसीदास तक —पं० टोडः सी—दौलतराम सी—मोहनदास	प्रा• हि० हि० रमल राज० १५ हि० हि० हि०	२१४ ११०४ १५३, ४,१४४ १६६ १४५ १८३	यक्षिस्यो कल्य	स० ६६° ११३ स० ११६ स० १४ हि० ६७ स० ७४:	Y, 15 X 1 X 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
मोक्ष पहुंच —! मोक्ष पैडी — ब मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकार मोक्षमार्ग बत्ती मोक्षयार्ग बाब- मोक्षस्वरूप	नारसीदास तक —पं० टोडः सी—दौलतराम सी—मोहनदास	प्रा• हि॰ हि॰ रमल राज॰ १५ हि॰ हि॰	? ? \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	यक्षित्यो कल्प-मल्लियेस् सति भावनाष्टक यत्याचार सत्याचार वृत्ति - अमुनन्दि सम् विलास समक वय स्तोत्र	स० ६६° ११३ स० ११६ स० १४ हि० ६७ स० ७४ स० ७४	٧, ٤ ٤ ١ ٤ ١ ٤ ١ ٤ ١ ٤ ١ ٤ ١ ٤ ١
मोक्ष पाहुड —! मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकाश मोक्षमार्ग बक्ती मोक्षमार्ग बक्ती मोक्षमार्ग बाब मोक्षस्वरूप मोह्नबिक युड	नारसीदास तक —पं० टोडः सी—दौलतराम सी—मोहनदास	प्रा• हि० हि० रमल राज० १५ हि० हि० हि०	२१४ ११०४ १५३, ४,१४४ १६६ १४५ १८३	यक्षिएं। कल्प-मिल्लवेस् वित भावनाष्टक यत्याचार यत्याचार वृत्ति अमुनन्दि यम विलास यमक वय स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र	स० ६६° ११३ स० १९६ स० १५ हि० ६७ स० ७५ १०५ स० ७५	٧, ٤
मोक्ष पाहुड —! मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकाश मोक्षमार्ग बक्ती मोक्षमार्ग बक्ती मोक्षमार्ग बाब मोक्षस्वरूप मोह्नबिक युड	नारसीदास शक – पं० टोड़ा सी—-दौलतराम शे — मोहनदास	प्रा• हि० हि० रमल राज० १५ हि० हि० हि०	२१% ११०४ १०४१ १५३, ४, १५५ १६६६ १९६३ ६२२,	यक्षित्यो कल्प—सिलवेया सित भाष्ताच्यक स्याचार स्याचार वृत्ति— अनुनिद स्याचार वृत्ति— अनुनिद स्या विलास स्याक वय स्तोत्र स्याक स्तोत्र स्याक स्तोत्र स्याक स्तोत्र स्याक स्तोत्र स्याक स्तोत्र स्तान्तिस्यास्तिलक चारू— स्वावानित	स० ६६) ११३ स० ११६ स० १५ हि० ६५ स० ७५ स० ७५ स० ७५	۲,
मोक्ष पाहुब —! मोक्ष पैडी — ब मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग वादा मोक्षमार्ग वादा मोक्षस्य वाद्य मोह्य वेद्य स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य स्व	नारसीदास शक – पं० टोड़ा सी—-दौलतराम शे — मोहनदास	प्रा॰ हि॰ हि॰ १४ हि॰ हि॰ हि॰ सं॰	२१४ ११०४ १०४१ १४३, ४,१४४ १४५ १९६३ १२६३	यक्षिएं। कल्प-मिल्लवेस् वित भावनाष्टक यत्याचार यत्याचार वृत्ति अमुनन्दि यम विलास यमक वय स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र	स० हह। ११३ स० ११६ स० १४ हि॰ ६७ स० ७४ स० ७४ सं० ७४ देव सं० ३७	**
मोक्ष पाहुब —! मोक्ष पैडी — ब मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग वादा मोक्षमार्ग वादा मोक्षस्य वाद्य मोह्य वेद्य स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य स्व	नारसीदास श्रक — पं० टोडः सी——दौलतराम री — मोहनदास	प्रांक हि० हि० रमल राजक १४ हि० हि० संक सक	२१४ ११०४ १०४१ १४३, ४,१४४ १४५ १९६३ १२६३	यक्षित्यो कल्प—मल्लियेया वित भाषनाष्टक यत्थाचार यत्थाचार वृत्ति—असुनन्दि यम निनास यमक वय स्तोत्र यमक स्तोत्राध्टक—विद्यानन्दि यमक स्तोत्राध्टक—विद्यानन्दि यमस्तिलक चम्पू—सा० सोम यशस्तलक चम्पू—सा० सोम	स० हहा ११३ स० ११६ स० ११६ हि० ६७ स० ७५१ स० ७५ दिव स० ३५ सागरस० ३५ सागरस० ३५	Y, 15 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12 12
मोक्ष पाहुड — । मोक्ष पैडी — व मोक्ष पैडी — व मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग वादः मोक्षस्वरूप मोह्यिवेक गुउ मोहिनी मंत्र  मौन एकादणी	नारसीदास शक – पं० टोडा सी — दौलतराम शो — मोहनदास - व्यास्यान वृत कथा — व्र	प्रा॰ हि॰ हि॰ १४ हि॰ हि॰ हि॰ सं॰	288 888 888 888 888 888 888 888 888 888	यक्षित्यो कल्प—मल्लियेस्य सित भावनाष्टक स्वयाचार स्वत्त — अमुनन्दि सम्बन्धिय सम्बन्धिय स्वयाचार कृषि — अमुनन्दि समक स्वयाचार कृष्टि — अमुनन्दि समक स्वयाचार स्वयाचार स्वयाचार स्वयाचार स्वयाचितक चम्मू — साथ सोम स्वयास्ततक चम्मू निका — मृत्यास्ततक स्वयास्ततक स्वयास्त स्वयास्ततक स्वयास्त स्वयास्त स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्ति स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्ति स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्ति स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्ति स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्ति स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्ति स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वयास्त स्वया — सित स्वयास्त स्वयास स्वयास्त स्वयास स्वयास्त स्वयास स्वयास स्वयास स्वयास स्वयास स्वयास स्वयास स्वयास स्वय	स० हहा ११३ स० ११६ सं॰ ११६ हि० ६७ सं॰ ७५ सं॰ ७५ दं सं० ७५ स्वागर सं० ३५ सं॰ ३५	¥, 5, 2, 2, 3, 6, 7, 8, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1,
मोक्ष पाहुब —! मोक्ष पैडी — ब मोक्ष पैडी — ब मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग प्रकाः मोक्षमार्ग वादा मोक्षमार्ग वादा मोक्षस्य वाद्य मोह्य वेद्य स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य स्वाह्य स्व	नारसोदास गरू - पं० टोडः सी - दौलतराम रो - मोहनदास ः व्यास्यान व्रत कथा - वर	प्रा क हि ० हि ० १ १ हि ० हि ० हि ० से ० इगनसागर हि ०	28	यक्षित्यो कल्प—मल्लियेस्य वित भावनाष्टक यत्याचार वृत्ति — अमुनन्दि यम निवास यमक क्य स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यमक स्तोत्र यम्	स० ११६ ११३ स० ११६ स० ११६ हि॰ ६५ स० ५५१ सं० ५५ देव सं० ३५ सागरसं० ३५ स० ३५	¥, 5, 2, 2, 3, 6, 7, 8, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1, 1,

ग्रंथ नास	लेखक	मावा	पत्र संख्या	धंथ नाम	लेखक १	रावा	पत्र संस्या
य लोघर चरित्र	—हिष्पणी	प्रभाव	ल्द्र ३७१	योग पाठ		Æ.	१०८१
यशीवर चरित्र	— बादिराज	सं०	३७२	योगमाला		स•	<b>4  </b>
यशोधर चरित्र	वासवसेन	सं०	३७२	योगशत		सं०	५ = ३
यशोधर चरित्र	—पद्मनाम काट	रस्य मं०	30₹	योगमत टीका		स०	¥=3
यशोधर चरित्र	पद्मराज	ŧ۰	393	योग शतकध	न्वम्तरि	स∙	<b>¥</b> ⊏ ₹
यक्षोघर चरित्र	— सा॰ पूर्गदेव	सं०	₹७३	योग शतक भाष		हि०	333
यशोधर चरित्र	-सोमकीर्ति	सं०	₹0\$	योग शास्त्र—हे	मचन्द्र	<b>#</b> 0	२१४
यशोधर चरित्र-	सक्तकोति	सं∘	३७४,	योगसतम्रमृत	प्रमव	₽ •	.33
			₹ 194	योगसार		fgo	6082
यशोधर वरित्र	—सुझालचन्द	हि०	₹७७,	योगसार-संम	चरद	हि०	688€
		३७	⊏, ११६२				११५०
यशोधर चरित्र-	मनसुख सागर	. हि∙	११२१	योगसार—योगी	न्द्र देव	भ्रप	२१४,
यमोधर चरित्र-	—साह लोहट	हि०	३७⊏		२१६, ६६)	¥, १०∶	द, १०८०
यशोधर चरित्र-	—विकम सुत दे	वेन्द्र स०	३७६	योगसार वर्चानक	7	हि०	२१६
यक्षोधर चरित्र	पीठिका	सं०	३७२	योगमार संग्रह		स्	¥αş
यशोषर चरित्र	रीठबंघ प्रमज	न गुरु सं०	३७२	योगातिसार-म	।।गीरथ कायस्य	कानुगो	
यशोधर चौपई		हि•	३७८,			हि०	४६०
		£A.	४, १०४१	योनिनी दशा		₩•	४६०
यशोषर रास-		हि॰	418,	योगिनी दशक्त		सं •	१११६
		₹, <b>११०</b> ;	s, ११४६	योगीचर्या		हि०	९८४
यशोधर रास-	धोम शैति	1हं ०	१०२७,	योगीरासा — जि	नदास	हि०	\$ <b>6</b> 8 8 7
			११३७	योगीन।स्मी या	ग:कीति	हि०	१०२४
याग महल पूजा		सं •	=6x	योगीन्द्र पूजा		स •	#8¥
याग मंडन विश	नपं० धर्मदेव		=£X	योगीन्द्र पूजा		हि०	4058
यादवरास-पुण	रत्न	हि •	£4.6	योगेन्द्रसार बु	<b>ाज</b> न	हि०	₹ १ ६
यात्रा वर्शन		हि॰	444	यंत्र		सं०	₽33
याचावली		fξ∙	६४४	यंत्र संग्रह		हिं • स	० १०२०,
यात्रा समुख्यय		eæ	603				\$ 5 € 0
युगादि देव स्तीः		सं०	६६५	यंत्रावसी प्रमुप	ाराम	सं०	६२३
योग विदासिंगुः	हर्वकीति	सं०	४८१,	•			
			2024		₹		
योग चितामशि			४६२				
योग तर्गमणी -	-निमल्स मट्ट	€.	४=२	रक्षक विधान क			808
योग मुक्तावली		सं∞	५०२ ।	रधास्याम रत्न	नन्दि	₩°	४७१

रक्षा वयन कथा—विनोदीलाम हि॰ ४७० रस्तदीपक सं० ४ रक्षा विधान कथा—सकतकीति म॰ ४७०, रस्तदीपका—वदेश्वर सं० १६	\$0 \$0 \$7 \$2 \$3 \$5				
रक्षा विद्यान कथा—सकलकीर्ति म॰ ४७०, रत्नदीपिका — वडेडवर सं० १६ ७६१,३८० रत्नवय उद्यापन सं० =	₹७ = ₹ ! € , ? ₹				
७६१,३८० रत्नत्रय उद्यापन सं० =	= <b>?</b> (E,				
७६१,३८० रत्नत्रय उद्यापन सं० ८	ξ. ₹₹				
रघुवश — कालिदास सं० ३७८, रत्नत्रय कथा – ज्ञानसागर हि० ११	₹₹				
३७६, ३=०	95,				
रघुवंश टीकामिल्लिनाथ सं० ३८० रत्नत्रय कथाललितकीर्ति सं० ४					
रच्वश टीका — समयसुन्दर सं॰ ३=१ ४७६, ६	ХЗ				
	Ęs				
	4=				
न्युवश सूत्र स० ३⊏२ रत्नत्रय गीत हि० १०	२४				
	₹=				
रतनभूड रास हि० ६८८ रत्नत्रय जयमाल स० ८	٤¥				
रतनसिंहजी री बात हि० १०१७ रत्नत्रय जयमाल प्रा० द	X,				
रतना हमीर री बात राज॰ ४६७	₽3				
रत्नकरण्ड आवकाचारआ० समन्तमद्र रत्नत्रय जयमाल मावानवमल हि० व	દદ				
सं० १५४, रत्नत्रय पूजा सं० म	₹,				
१४७ === , हत्द, १०२३, १०	٩¥				
६४७ रत्नत्रय पूजाश्वानतराय हि० दा	₹,				
रत्नकरण्ड श्रावकाचार टीकाप्रमाचन्द स० १४६,	व्हक, व्हव, १०११				
	ξę				
***************************************	ĘĘ				
	٩,				
	32				
	६०				
रत्नकरण्ड श्रावकाचार भाषा बचनिकापन्नासाल रत्नत्रय विधान सं० ८।	₹,				
वनीवाले राजा० १५६ - ६६, व	33				
रत्नकरण्ड आवकाचार मावा वचनिका हि० १०४६ रत्नत्रय विधान नरेन्द्रसेन सं० ११					
म्रा०रत्नकीति बेलि सं० ६५२ १९	ξĘ				
रस्नकोश सं० ७८ रत्नत्रय विद्यान कथा ब० श्रुतसागर स० ४	٧,				
(dablet out and a	১৯				
Colored No	Ęĸ.				
trade tra	e X				
रत्मजूड़ामरिए सं० ५६० रत्न परीक्षा सं० ११	٤५				

प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र सस्या	प्रथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
रत्नपाल च उपई	ৰান भावति	लकहि०	४६७	रविवत कथः-	–भानुकोर्ति	हि •	१०६५
रत्नपाल प्रबध-		भाषा		रविवार कथा	रहपृ	भार	866
रत्नपान रास—	सूरबन्द	feo	६३९	र्रावद्वार कथा-	—विद्यास≀गर	हि	४६६
रत्नमाना— महा	देव	म०	χξο	रवित्रतं कथा-	–मुरेन्द्रकीर्ति	f₹∘	११७७,
रत्नशेखर रत्नाव	लोवधा	प्राव	४६८	रविवार कथ।	एव पूजा	# c	११८५
रत्न संबह नन्न	(मल	हि०	દ'કરે	रिवन पूजा	- भ० देवेन्द्र की	ति संब	ં ૭૬૬
रस्नःबनो टीका		₹ 0	६६४	रिक्षियम पूजा	क्या —मनोहरद	in feo	<i>۾</i> ڙو
रत्नावली न्यायवृ	त्ति —जिनहर्ष	मृरि स०	<b>६</b> ६०	रवित्रनोद्यापन	पूत्रारश्नभूष	म मंद	ξυφ
रमन गीत—छी।	रुल	हि०	६६२	रिश्यनोद्यापन	पूजा — केणवंस	न संब	600
रमन		fह∘	યુદ્	रस चितामस्य		₹1 0	ye.s
रमल प्रश्त		मं ०	ષ્ર દ શ	रस तर्गगणी -	-भानुदन	410	£ 2 X
रमल ज्ञान		₹ 0	४६१	रस तर्गगगो-	—वेग्गीदन	₹ •	458
रमल प्रइत पत्र		<b>#</b> •	४६१	रस पद्धति		म०	X = K
रमल शकुनावली		fgo	५६१	रस मंजरी		fę۰	٠. ٠
रमल शास्त्र		₩ 0	યુદ્	रस मजगे	भानदल मिश्र	म०	ય્રદ્
रमल सास्त्र		f∉∘	४६१				६२८, ५६४
रमल चितामिए।		#;•	१११६	रस मजरी		मं	० ५८४
रमल शास्त्र		80	606	रस मंजरी	गानिनाथ	स	५ ५ ५
रयस्सार-कृद	कुदावायं	সা ০	95,	रम रस्नाकर -	निरयनाथि निद्ध	#1	, ५६४
			¥33	रस रत्नाकर-	⊸ग्त्नाकर	ŧj c	, भू⊏४
			७९	रस राज - मा	तराम	fe	ा० ६२५
रयगसार माषा		हि०	१०१६	रस राजम	ीराम	fe	v 5 8 x
रयससार वचनि	काअयचस्द	खावड़ा		रसायन काव्य	कविराष्ट्रसम	र स	० ३८२
		र≀ज∘	4333	रस।लुक्वर की	वार्ता	16	323 0
रयगागर कवा		भार		रसिक प्रिया-	-इन्द्रजीत	<b>स</b>	• ६६६,
रविव्रत कथा		हि०	६८४				६२८
	६६६, १०	२२, १०	४१, ११२४	रविद्रत कथा-	भ० विश्वसूष	ण हि	० ११२३
रविव्रत कथा	प्रकलक	हि ०	853	राक्षस काव्य		#	3=2
रविव्रत कथा	नयकीति	हि०	\$683	रागमाला		सं	. 405
रुविवत कथा	प्र० जिनदास	fg•	¥ĘĘ,	रागमाला		fë	• ६०६
			4846	राग रत्नाकर-	राबाक्रुब्स	हि	• ११५८
रविवार कथा-	भाक	हि०	¥₹₹,	रागरागिनी		हि	० ६०६
500, EE	१, १०३६, १	o¢¥, ₹.	व्यय, ११६५.	रामव पाण्डवी	य धनं अय	सं	• ३८२
		•	6600	राधव पाण्डवी	ष टीकानेमी	चंद सं०	३६२

ग्रंथनाम र	नेखक	मावा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या
रापत्र पाण्डतीय टी	ोका—चरित्र	वर्द्धन सं	• ३८३	राश्विमोजन	कथाव०	नेमिदस स०	४७१
राघव पाण्डवीय	-कविराजपि	ण्डन स	३८३	रात्रि मोजन	कथाभ०	सिंहनंदि स०	४७१
रागय पाण्डवीय टी	का⊸कविर	ज पण्डि	त	रात्रि भोजन	चौपईहस	हि •	४७१
		मं०	3 = 3	रात्रि भोजन	त्याम कथा-	–श्रुतसागर स	ं० ४७२
राजनीति समूच्चव	—च.गावय	дo	€ € ३	रात्रि भोजन	रामम्र० ।	जिनदास हि	5 6888
राजनीति सर्वया		हि •	5.63	रात्रि मोजन	वर्णन — ५०	बीर हि	<ul> <li>\$\$\$\$</li> </ul>
राजमान गीत		fg »	६८४	र त्रि विद्यान	10.4	सं०	४७१
राजमती की चुनडी	हेमराज	(go	११२=.	रामकथा	रामानन्द	हि	<b>ξοο ξ</b>
14411 14 214			१११=	रामच्यद्र रास	— ब्र० जिन	दास हि०	₹४0
राजमति नेमीण्वर		हि		राम सम—	मध्यदास	हि •	६४०
राजमात नमाध्वर राजाचन्द्र की कथा		ार हि		श्रो रामचन्द्र	स्तवन	हि	११३४
राजाचन्द्र का कथा राजाबील	नामचन्द्र	ir fe		रामचन्द्र स्तो	ঙ্গ	स०	७५४
राजाविकम की क	str.	ाहर हिं•	१ ६८५ १७१	रामजस – के	<b>म</b> राज	हि॰	११६६
रामा। प्रकल का क राजाहरिवद की व		fgo	४७१	रामदास पञ्च	तेमी-—रामद	ास हि०	१०५४
राजादिगरा वृत्ति	. 41	स०	५१८	रामपुरागा	सकलकीति	सं०	२६५
राजावली		स •	X E R	राम पुरासा-		ग सं∘	२६५
रण्जावती संबन्सर		म ०	४६२	रामयश रसा			४७२.
राज्न गीत		हि०	१०८३	राम परा रता	બળ	ગ હ્	১৩২, ১৩২
राजूल छत्तीसी —ब	। प मुकुन्द	fp o	११६६	राम विनोद		हि०	₹ <b>9</b>
राजुल नेमि ग्रबोला	लाबण्यसः	मय हि०	१०२७	राम विनोद—	–तयनसख	हि• हि•	448
गजुल पच्चीसी		fह०	દપ્રદ્	राम विनोद-	9	हि •	¥=¥
	008,303	o, 80X	६, १०६७,	राम विनोद		सं०	<b>X=X</b>
	१११	8, 882	७, ११६६	राम विनोद	-प० पद्मरंग	हि ०	१०१६
राजुल पच्चीसीर	गल चन्द	हि०	3099	राम विनोद व	सथा	हि०	333
राजुल पच्चीसी —ि		हि०	εχ=,	राम सहस्र ना	म	स०	७४५
(igh round)	508, 803			राम सीता गी	तव्रह्मश्री	वर्द्धन हि॰	१११०
	१०७, १०७			राम शीता प्रव	त्व समयस्	इन्दर हि∙	808
राजूल पच्चोसी पाठ		हि०	80X=	राम सीता रा	सव० जिल	नदास हि०	१०२५
राजुल पश्चिमा — सो		हि०	9389	राम स्तोत्र		租。	१०३६
राजुल गातका — ता राजुल बारहमासा~	-गंगकवि	हि॰	\$003	रामाष्ट्रक		祖。	848
रागुल बारह मासा -	– विनोदीलार		8003.	रामाष्ट्रक		हि०	8068
1134 ALIC 11111	809	१, १०७	6. 6008	रावस्। परस्त्री	सेवन व्यसन		2389
राजुल की सज्माम		हि०	६४६	रावलादेव स्तो		हि॰	११२६

ग्रंथ नाम लेखक	माचा	पत्र संख्या	)ग्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र संस्या
रावलियो गीत-सिंहनन्दि	हि०	१०२७	रोहिएगी रासव जनदास	राज०	६४१
राशिकन	स०	५६२	रोहिसी वन पूजा	€°	€00
राण्यिक न	हि०	४६२	रोहिएगिवतपूत्रा (	हे०स०	€••,
रास सपह- व० रायमस्स	हिल	6,80			६७३
राहुप ल	स०	<b>४</b> ६२	रोहिग्गी वत पूजा-केशवसेन	₽í∘	608
रिषमदेवज' ःवाणी-दीप विज	ाय हि०	5568		स०हि०	€00
रियमनाथ ध् ।सोमकीति	中	१०१४	रोहिएगी अलोद्यापन-वादिबन्द्र	सं०	600
रुक्मिमी कयः—सुत्रसेनावार्यः	₹ 0	AźA	रोहिस्गी वतीद्यापन	मं ०	€ • ₹
रुक्मिस्सी हर ग—रत्नमूक्स	हि०	£80,	रोहिसी बनोद्यापन पूजा	٩o	£ = 5
		११३३	रोहिएगी स्तवन	हि०	७४४
रुपकमाला बानावबोध रत्न रं	गोराध्यम हि०	₹₹₹	न		
रुप दीपक पिगल	-	33.8			
रुप मामा-भावसेन त्रिविधदेव	हि० स०		लक्ष्मी विलास—पं० लक्ष्मीबन्द	fro	દિહઇ
रपावली		४१८	लक्ष्मी मुक्त कथा	स०	6.0,3
रपसेन चौपई	स∘ 	41=	सक्षीस्तोत्र	<b>₹</b> 0	٦ <sup>9</sup> ٢,
रपसेन राजा कथा—-जिनसूरि	١Ę٠	४७६	हरह, १०४२, १०६६, १०१	r, १०६	
२४तगराजाकथा। बनसूर रेखतामांडका	40	308	सक्ष्मी स्तोत्र-पद्मप्रभदेव	स •	७४४,
रसताभाडका रेसताविनोदीसास	हि॰	११५७	७४६. ८७६, १०६४, १०७१	८, १०७	
	हि∙	१०७७	सक्यी स्तोत्र गायत्री	₹ •	હ્યુ દ્
रेवा नदी पूजाविश्व	सं •	600	लक्ष्मी स्तोत्र सटीक	सं०	७४६,
रोगापहार स्तोत्र — मनराय	₹ •	603=			66.80
रोटजीत कथा	स∙	808	सरन चन्द्रका-काशीनाथ	स•	* 4 3
रोटतीज वत कथा—चुत्रीराय वैर	(हि॰	¥3¥,	भग्न फल	हि०	१११४
		१०६४	सधियस्त्रय टीका प्रभवचन्द्र सूर्वि	र स•	११६७
रोटतीय कथागुग्रुनन्दि रोस की पावशी	सं०	808	लयु भासोचना	स ∘	444
	ۥ	१०५६	लच् उप सर्गवृत्ति	स •	* 6 0
रोहिसी गीत — श्रुतसागर	हि •	2555		•सं∘	४१⊏
रोहिंसी वत कथा ब॰ ज्ञान सा	-	६५२	समुक्षेत्र समास विवरतारत्नशेस	र सूरि	
रोहिसी वत कवा — मानुकीति	€ 0	Yex		সা৽	৩ছ
तिहिस्ती वत कथा—तनितकीर्ति	स•	308	नवतेत्र समास वृत्ति रत्नकेखर	₹i o	११६७
रोहिसी वत कथा	हि०	४७४	लचु चाराव्य	fg o	११६८
रोहिएरी वत कथावंशीदास	ۥ	११२३	सष् चारावय नीति (राजनीति मार	म्य) या	एक्य
रीहिएरी द्रत कथा-हेमराज	€°	¥=3,		ŧ o	<b>48</b> 3
->6		११२३	नम् चाराक्य नीति सास्त्र माचा-	-काशीर	<b>म</b>
रोहिसी रास	हि॰	E=X		B.	₹0E9

व्रथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संस्या	प्रंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या
लघुजातक— भ	ट्टोस्पल	स०	५६३				४७७
लयुँ जात टीका		₹ 0	¥१⊂	लिध्य विद्यान	पूजाहपंकीति	स •	₹∘3
स्वष्टं तत्वार्थं सूत्र		स०	११३४	ल व्यिवानी	ध्यःपन पाठ	स०	€03
लघुनाम माला-	–हपंकीति	# 0	ሂየፍ	लब्धि विद्यानो	द्यापन पूजा	संब	६०२
लाघ पच कल्याग		भान हि०	808	लब्धसार		हि०	608\$
लघ बाहुबलि वे	लभातिदास	r fgo	११३८	लब्घिमार भा	शावचनिकापं	टोडरमर	r
ल पृशेस्तर (शब्	रेन्दु )	<b>#</b> 0	6 % (			राज०	٧٤,
लघु मानि पाठ	सूरि मानदे	द स∘	608				११६७
लघु शातिक पूर	đ į	₩ •	333	लब्धिसार क्षप	ए।सार भाषा वर	निका	य ०टोडरमल
लघु शानिक पूज	-पद्मनिर	Ħ o	903			राज	30
लघुणातिक वि	ধি	<b>#</b> 0	E 0 <	लाटी मंहिता	वाडे राममल्ल	संद	<b>१</b> ६०
लघ् सहस्य नार	f	Ħο	৩% হ	ल भालाभ म	न संकल्प महार	वी स	६०२
		80	३४, ११५४	नावर्गीजि	नदास	हि	१०७५
नघुमः मः स्थितं -	- किशनदास	feo	१०६२	लावग्री—स्ट	रागुरुजी	fg	१०३५
लघुंसिड वक पू		चन्द्र स०	१०३	लाहागीत		हि	२७५
लघु सिद्धान्त क	ौमुरीभट्टोज	ो दीक्षित	स० ५१७	निषिया		हि	१११५
लघु सिद्धान्त क	ोमुदीवरदर	ाज स	, ५१६	विगानुषासन	(शब्द संकीर्श स	वरूप) घ	नंजय
लाष् सग्रह्गाीस्	(74	प्रा	9 ७€			स	
लघुस्तोत्र टीक	ř	₩.	७४६	लियानु <b>सारो</b> ड	nτ	स	3 F <b>,B</b>
लघुस्तोत्र टीक	<b>भाव श</b> र्मा	सं	. ७५६	लीलावती-		Ħ	0319 0
लघुस्तीत्र विशि	व	स	० ७६५	लीलावती म	षा - लालचन्द	सूरि हि	७३११ ०
लघुस्नपन		स	, ११६	लीलावती टी	का—दैवज्ञ राम	हृष्या सं	3399
लाघुस्तपन वि	घ	村。	६०२,	लुकमान हकी	म की नसीहत	हि	७ ६६४
			883€	लुकामत नि	राकरण राम	बीरचन्द	हि० ११४४
लघुस्तपन वि	ঘ—শা৹ লান	सागर स	<b>१</b> १६७	लूए पानी वि	र्शि	য়া	७ १०२६
सम्बुस्ययभूक्त	ীয	#	. ६ <b>५</b> २	बूहरी-सम	दास	हि	£30\$ 0
लाघुस्ययभूकत	ोत्र —देवनस्वि	ŧ ŧi	० ७५७	सूहरी- सुन्द	( <b>T</b>	fe	o =৩৬
लघुस्वयभूस्त	ोत्र टीका	<b>स</b>	৩ ৬ ৬	लेख पद्धति		₹	3399 0
सरिष विश्वान -	— भ०सुरेन्द्रकी	ति स	० ६०२	लेश्या		স্	০ १०४७
सम्बद्धाः उद्यापन		सं	903 0	लेश्या वर्णन		fê	<i>१७३</i> ०
सम्ब उद्यापन	पाठ	स	• €•₹	लेश्यावली	-हर्षकीति	fi	्० <b>११</b> ५५
सब्धि विधान	कथापं० ग्र	भ्रदेव स	¥\$¥,	लोंकामत नि	राकरण <b>रास</b> —	सुमतिकी	ति हि० १६०
		४७६,	8 <b>98, ११३</b> ६	लोहरी दीत	वार कथाभानृ		
संब्धि वत कथ	किमनसिंह	हि	¥0₹,	लघन पथ्य	निर्णंय	₹	ि ५६५

ग्रंथ	नाम	लेखक	भाषा	पत्र सल्या	प्रथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संस्या
लपक	पंचासिक	— दिनदास	हि०	8037	वर्द्धमान स्वाम	ो कथा—मुनि	श्री ब्रह्मान	न्दि
					1	•	सं०	833
		7			वर्ष तत्र — नी	ल कपड	₹৽	४६३
					वर्षफलवाम	17	स०	५६३
	शेश-—बुल		f≠o	3 € 12	वर्षभावफल		म :	४६३
	ली—य०		ार	£5.8	वर्षनाम		म०	११३४
	त्पत्ति वर् ८		π.	<b>१</b> २००	वराग चरित्र-	–तेजगाल	श्रप व	\$25
		तीवैराग्यमावः 	नााह०	२१६	वराग चरित्र-	– भ०वद्वं मानवं	(ৰ আন্ত	103,
		यत्र सहित		ولاد	]			きゃん
	त्रर स्तोऽ		ਸੰਹ	8050	वरांग चरित्र	- कपलनयन	fgo	3 ≈ ₹
•		खद) श्रीघराचा		१२०	वरांग चरित्र	-पाडेलाभचन्द	f.º o	इद्ध
	न जयमाल		हि०	११०७	वस्मा प्रतिरक्ष		FF o	१२००
		माचनन्दी	स०	⊂ ⊃X	वशीकरम् मत्र		μo	१११६
		पूजा – बुझीला	-	€03	वगुदेव प्रवध	- जयकीति	f₹∘	656
		जयमित्र हल	ध्रग ०	3 = 5	वसुधीरचरित्र⊸	-श्रीभृषग्	f# o	€8%
-	। चरित्र⊸		धप ०	3 = €	वस्थारा		<b>4</b> 0	ۥ3
	। चरित्र∽		Ŧ1 o	\$r.6	बसुधारा महावि	<b>र</b> द्या	Ħ۰	€ € €
		- मुनि पधनस्दि	Ħ •	3=5	बस्धरास्तोत्र		स •	હય, હ
_		विद्याभूषम्	#I o	३६६	ĺ	.9,	५८, १०१	७, ११५७
		सकलकीत	<b>∓•</b>	इद६	वस्तिन्दि श्रावस	तचार - ग्रा० व	मुनन्दि सं	ο <b>१६</b> <i>ο</i> ,
बद्धं मान	-		हि ०	२६६	-		-	4 5 8
		-कविग्रमग	सं०	<del>५</del> १६	वम्नन्दिश्रावका	वार भाषा	हि०	<b>१</b> ६२
बढ़ें मान	पुराश-	-नवल माह	हि॰	२१६, <b>२</b> १७	वसुनन्दि श्रावक	।चार भाषा—-त्र	<b>ट्यभदा</b> स	
बढ़ मान	पुराग्ग	-सकलकीति	सं०	२६७			हि०	१६१
बढ़ें मान	पुराश क	ावा	हि०	२१६	बसुनन्दि श्रावक	वार माषाद	ौलतराम वि	हे॰ १६२
वह मान	पुरासा म	ाषानवलराय	म हि०	२६=	बसुनन्दि श्रावक			
बर्ख मान	यूगा — हे	वकराम	fg o	803	बमुनन्दि श्रावका	वार वचनिका	हि•	₹¶२
बढ़ें मान	रासव	द्धं मान कवि	fg o	488	वस्तुज्ञान		# <b> 0</b>	<b>₹११</b> ६
बद्धंमान	विसास स	तोत्रजगद् भू	(वश सं०	७५७	व्यसनगीत		हि॰	१०२५
कर्टमान	समवशर	ए वर्णनव	गलाल	- 1	व्रसक्त्या		सं०	११३६
, .			fg -	१६२	वतकया खुशा	समन्द	हि०	१०७४
बद्धं मान	स्त्रति		हि॰	७४७	त्रतकवा कोश	-ब्रुत्सागर	स०	800
बढ मान			₹.	60Y.	व्रतकवाकोश	विन्द्रकीति	सं∘	800
			ξXe	, ११२४	बतकवाकोश	<b>४० नेनिबस</b>	मं ०	<b>800</b>

ग्रंथनाम लेखक	भाषा	पत्रसंख्या	ग्रथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
व्रतकथाकोशमल्लिभूषग्र	स •	800	वृत्त रत्नाकर	-भट्टकेदार	भा०	334
धतकथाकोश — मु० राम <i>चन्द्र</i>	<b>स∘</b>	४७७	व्रव रत्नाकर टी	का —प० सोम	बनद्र स०	પ્રદૃદ
त्रनकथाकांश —सक्तकीति	₩∘	४७=	वृत <b>र</b> त्नाकर टी	का —जनादंन	विबुध सः	x e e
वतकथाकोण-प० ग्रभ्रदेव	ць	¥35,	बृत रत्नाकर वृ	त्त — रमवमुरः	दर स∙	<b>4</b> €€
	,	(98, 800	वृत्त रत्नाकर वृ	नि—हारे भार	कर सं∙	€00
व्रतकथाकोश—खुगालचन्द	feo	85.0.	वृत्तं अस्य पञ्चति		स∙	११२४
Manager Sailer	,	४८१, ४८२	बृद्ध समिनि यंत्र		सं०	१०१७
	€°	845	वृद्धिगौतमरास		हि०	१०४५
वनकथा रासी	मृ०	४८३ ४८३	ृत्द विनोद सत	सईहृत्दकवि	हि॰	3355
वनकथामग्रह	feo	843	वृन्दं विगम।	कविवृन्द	हि •	६७६
श्रतकथासग्रह			तृत्य शतक—क	विवृत्द	हि०	<b>£</b> &8
वतकथासग्रह	दि॰	258	वृन्द सहिता	परम विधराज	स•	४६४
वत निर्संव	म०	१६४,	वृषमजिन स्तोत्र	ſ	संब	६५०
		ړه ۲	वृषभदेव गोत	- ब्रज मोहत	हि॰	१२००
वत पूत्रासप्र	स∘	¥03	वृषभदेव काछ।	द	हि०	9090
वर्तावधान	सं०	६०५	वृषमदेवनी छन्द	ī	हि०	११५८
वतिषान	म०	६०६	वृषभदेव लावए	ो—लाल	हि०	११७१
व रविधान पूजाः—प्रमरचन्द	हि ०	₹ 0 \$	वृषभदेव वन्दना	मानन्द	हि०	9046
व १विषानरासो —दिल।राम	हि०	288	वृषभदेव स्तवन	- नारायण	हि०	७६०
वत्रविधानरासो —दोलतराम	पाटनी हि॰	€ = ₹	वृषभ स्तोत्र— प	। ० पद्मनन्दि	Ħ o	७६०
व्रत विवररा	हिं•	2308	वृषभनाथ चरित्र	ı—सकलकीर्ति	स∙	३८७,
वत समुच्चय	हि०	१६४				३८८
वनसार	ぜっ	१६४,	व्यभनाथ छन्द		हि०	११४१
	६०७, १०३	≂२, ११३६	वृषभनाथ लावर	ग़ीमायाराम		
यत स्यक्ष्य — भ० सोमसेन	स०	१११७	वृहद कलिकुण्ड		सं∘	3 5 7 9
वनोद्यापन सग्रह	₹◦	७०३	वहद गुरावली		सं०	283=
वतोद्यापन पूजा संग्रह	स •	603	बृहद गुरावली	पुजास्वरूपः	बन्द हि०	605
वतोयोतन श्रावकाचारमक	बदेव सं०	868	वहरजासक	••	सं०	448
		o=, EXO	बृह्ज्जातक टीव	तवराहमिति	हेर स०	४६४
वतों का व्यौरा	हि॰		वृहद्तपागच्छ गु		स∙	६४५
वृत्त चन्द्रिका—कृष्णकवि	 दि०	4.6 €	वृहद् तपागच्छ	गुरावली मूर्	ने सुन्दरसू	<b>t</b>
बृत रत्नाकरभट्ट केदार	स०	¥€ς,			सं०	<b>EXX</b>
E		33.8	वृहद् दशलक्षरण	पजा-केशवर	तेन हि॰	€€=
			1 544 200400	4 Palat	6.	CC-

ग्रंथ नाम	लेखक भ	ाषा	पत्र सरुवा	प्रथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या
वृहद् पुण्याहवास	ान	ų o	805	वासुपूज्य पूजा-	राम <b>च</b> न्द्र	हि०	११२=
वृहद पूजा सग्रह		₹ • 5	भा• ६०५	वास (उप स्तीत्र		सं०	११६२
वृहद पच कल्या	एक पूजाविधान	स०	502	वास्तुकमंगीत		हि०	€95
वृहद शानिपाठ		स०	940	वास्तु पूजा 🖟	,न	स०	€03
वृह्त भाति पूत्र।	•	स०	805	बास्तुपूत्रा विभि	Ŧ.	440	804
वृहत शाति विध	नधर्मदेव	स०	€ 0 =	बास्तु विधान		म०	ۥ3
			303	बास्तुराज - राः	र्वामह	स०	? २००
वृहत शांति विधि	व एवं पूजासंब्रह	₽ o	303	वास्त् जास्य		₽to	8208
वृहद शाति स्तोः	r	स् ०	७६०	वास्तु स्थापत		म०	१२०१
वृहद बोडशकारर	ग्पूजा	Ψo	808,	বিক্ৰ ৰণিয়—	-रामचन्द्र सरि		:=9
			6,84	विकस चरित्र च			359
वृहद सम्मेद शिक्	तर महातम्य—म	नसुम्बस	ागर .	विकमलीलावती	चोगईजिन	चन्द्र हिं	<b>૮૬૫</b>
		हि०	3 = 3	विक्रमसेन चउप		ía o	६४५
वृहद सिद्धवक पू	जाम० भानुकी	निस	303 0	विच-रषह्तिश		FI o	£ 43
बृहत सिद्ध पूजा-		स •	१०६३	विचान्यद् त्रिण		77 0	१६३
बृहद स्नपन बिधि	Ī	स०	११३€,				
			१११६	विचारपड्लिश	कास्तवन टाका		
वृहद स्वयम् स्तो	तसमंतभद्र	सं०	€33			সাতা	
_		_	668	विचारमार पड	गीति	# o	६७५
वाकद्वार विदक्षय	r	हि॰	१२००	विचार सूख दी	_	₩•	१६३
वाक्य मंत्ररी		Щe	५१६	विचार मग्रहराी	-	সা৹	
वाग्भट्टालकार	वाग्भट्ट	<b>#</b> 0	<b>₹</b> €,	विचारामृत संग्र		# 0	 £08
		_	€3≴	वित्रयचन्द्र चरि		श्रा ॰	३८७
वास्भट्टालकार टी	काविनवह न	सूरि		विजयमद्र क्षेत्र	।।न गीन <b>—व</b>	० नेमिदास	
		स०	४१७			हि •	१२०१
वाग्मट्टालंकार द	का वर्द्ध मान	धूरि		विजय यंत्र			६२३
		₩°	५६७	विजय मत्र		स०	६२३
बाग् श्ट्रालंकार टी	कावादिराज	# •	४६७	विक्य यंत्र परिः	कर	स०	१११६
वाग्मट्टालंकार वृ	लि-जान प्रमोद	वाचक	गरिए	विजय यत्र प्रति	टा विवि	सं०	१११६
		सं∙	४६७	विक्रुसेट विज			
बाच्छा करूप		₹ •	१२००	ानज्यु संदेशिया	था सत्ता रास-	राममप्प हिं	488
बाजनेय सहिता		सं•	१२००		•	-	
वालां बुवाकीन		हि०	१०२२	विदम्ध मुक्षमंडन		सं०	२६०,
वासपूज्य गीत	त्र व यशीवर	Ħ.	* १ • २६	विदग्ध मुख मंद	न टीका—विग	ग्यसागर स	० १२०१

ग्रंथनाम लेखक	माखा प	त्र संस्या	ग्रंथनाम लेखक	भाषा पत्र संख्या
विदम्ध मुख मडन शिवचन्द	स०	२३१	विनती का भ्रागदादुदयाल	हि० <u>६</u> ६०
विद्वज्जन बोधक — सधी पत्नाः	লাল ত্রীয়া	ना	विनती आदीश्वर-त्रिलोकर्क	ोति हि० ७५८
110741 4141 3141 11	राज∘	813	विनती पाठ संग्रह	हि० १०३६
		१२०२	विनती संग्रह—दवाब्रह्म	हि० ६७४,
विद्वद्भूषरा काव्य	म०	३८६		६७६, ७५८
विदरभी चौपई- पारसदत्त	हि ०	8 = 7	विनती सम्रह	<b>টি০ १</b> १५७
'बदेहक्षंत्र पूजा	हि०	803	विशाल सूत्र	সাত দত
विद्यमान बीस तीर्थं कर पूजा -	– ग्रमरचन्द		निमलनाथ पुराशा—व० ऋषः	गुदास स० २६६
	हि०	ۥ8	धिमलनाथ पुरासा भाषा—- <b>पा</b>	हि लालचन्द
विद्यमान बीस विरहमान पूजा	— जोहरीला	ल		हि० २६६
	हिल	806	विमनन।थ पूरा	हि० ११२६
विद्यानुशास्त्र — महिलवेगा	स •	६२३	विमान पक्ति पूजा	सं० ६०४
विस्तर्भवेलान प्रवय-प्राज्ञामुः	दर हि०	७४६	विमान पन्ति वनोद्यापन—स्रा	० सकलभूषगा
विद्युरप्रभ गीत	हिं•	११४०		सं० ६०४
विधःन विधि	सं∘	११३६	विमान मुद्धि पूजा	स० ६०४,६६६
विनतीग्रकंमल	हि०	१०७८	विमान गुद्धि शांतिक विधान-	चन्द्रकीति
विननीध्रजयराज	রি •	503		सं• ६०४
विनतीऋषमदेवय०देव	चन्द हि०	8 8 X E	विरदावली	हि० ६४४
विनती — कनककीर्ति	हि०	८७६	विरदावली	स० ६५५
		११४८,	विरह दोहे लालकवि	हि० ११४५
विनती <del>कु</del> मुदचन्द्र	हि०	८७६,	विल्हरण चौपईकविसारंग	हि० ४८५
		११३२	विवाह पटल	स० ६०४, ४६४
बिनती — गोपालदास	हि॰	६५२	विवाह पद्धति	स० १०४, ४६४
विनतीव्र० जिनदास	हि०	८७६,	विवाह विधि	¥0 60%
		११३४	विविध मत्र सम्रह	स॰ ६२३
विनती—दीपचन्द	हि०	११०५	विवेक चिन्तामणि-सुन्दरदा	
विनती नेभिकुमार—भूघरदास	ि हि∙	१०६४,	विवेक चौपईब्र० गुनाल	हि० १०२२
		599	विवेक चौबीसा	हि० १०६६
विनतीरामचन्द्र	€्०	६४४	विवेक छत्तीसी	हि० १०४३
विन्तीरामदास	हि॰	530	विवेक जकडी — जिस्सदास	हि॰ ६६४,
		१०६३,		१०१६, १०२३
विनती - रायचन्द	हि <b>०</b> -	<b>≈0</b> €	विवेक विलासजिनदत्त सूर्वि	
बिनती — रूपचन्द	सं०	<b>≒</b> 9€		६७६
विनतीबृत्व	हिं •	१०७८	विवेकशतकथानसिंह ठोल्य	ग हि॰ ६६४

प्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या	प्रथनाम लेखक ः	मावा	पत्र संस्था
विशालकीति गी		हिं •	8 4 3	बीरविलासनथमल	fgo	६६२
विशेषसत्ता त्रिभ			<b>ξ</b> 0	वोरविलास—वीरचन्द	हि०	<b>११३</b> २
विषापहार छप्प	य — विद्यासाग	र हि०	8.03	वेद विवेक	हि०	
विषापहार व	न जय	₹ 0	3×0.	वेदान्त सग्रह	स०	
		, ৬৬१, ৬		1		
		ξ <b>ε, ₹</b> ο₹		वेदी एव बण्डवताका स्थापन नव	- 11	
		०६५, ११२	<b>७, ११२</b> ⊏		• FF	603
विषापहार ीका		स०	૩૫૬	वेलिकाम विडम्बना-समयपुर	•	१२०२
वियापहार टीका	—-प्रभानन्द्र	Ψo	3 X e	वैतात पञ्चीसी	fgo	863,
विषापहार स्वोध	ī	f≓∘	€ 0 ° °,			828
			₹ १२ €	वैताल पर्चावशतिका-शाबदास	ग्र	654
विषापहार स्तोत्र	सावाप्रस	वराज रिक	હપ્રદ	वैदिक प्रयोग	Ħo	χ ‡ ξ
विषापद्वार स्तीत				वंद्रक्ष थय-न्तरन हुव	fą o	११६७
		9 €, ₹eo¥		वैद्यक प्रक्षन सग्रह्	म०	X = =
		111		वैद्य मनोत्यवनयनमुख	हि०	४६६,
विष्णुकुमार कथ	1	Hゥ	Yso,			بج
			११६१	वैद्य मनोत्सवकेशवदास	# o	५८५
विष्मु पुरास्		fe o	300	वैद्य मनोत्सव	₹ •	<b>{</b> 55
विष्मुपंत्रर स्तोत्र	ī	Ħ o	१०४२	वैद्य मनोत्यव-नयनमुख	feo	६६२.
विष्णु सहस्रवाम		मं •	१०१७			3008
विसर्गसन्ध		स०	५१६	वैद्य रत्न भाषागोस्वामी जना	दंन भट	
विश विद्यमान तं	विषंकर पूजा	स०	१११८	14 (11 (11)	संब	યુદ્ધ
विश्वस्थान		हि०	१६४	वैश्व वस्त्रभ गोम्बामी जनार्दन	Ħ o	¥≈€
बीतराग देव चैरर	पालय मोभावः	-	<b>१</b> २०२			
बीतराग स्तदन		स०	450	यंद्य बल्यमहस्तिश्व	40	<b>3</b> ~ E
बीतराग स्तवन -	—पद्मन'न्द	祝。	5 E.A.	वैद्य बल्लम टीका—हस्ति रूचि		* 60
A			११२४	वैद्य विनोट	सं∙	प्रत
बीरचन्द दूहा बीर जिसांद	लदमाचन्द	हिं	<b>€=3</b>	वैद्य रसायन	fgo	
बार जिल्हा बीर जिन स्तोत्र-		हा वि	6=4	वैद्यवल्लम लोलिम्बाराज	सं० सं०	१०५७ ४०४
वाराजन स्तातः वीरत्तुति	भनवसूरर	সাত গাম	७६० ७६०	वैद्यकप्रन्य वैद्यकप्रन्य	संक	रूपर धूद६
भार त्युत्तः भीरनाथ स्तवन		স।∙ हि•	हत्य इ.स	वशकप्रन्म वैद्यकन् <b>र</b> से	#io	Xu 4 Xu 4
बीरपरिवार		हि	1044		हिं वि	प्रवर्ष
		.6.	1-11	4444164	150	

प्रंथनाम लेखक स	ावा पत्र	सल्या	ग्रथनम	लेखक	मावा प	त्र संस्था		
वैद्यक्श।स्त्र	स०	४६६	शत्रुजय गीत गि	रस्तवन — के	शराज हि०	6 £ 0		
वैद्यकसमुख्यय	<b>ि</b>	४८६	शत्रुं जय चित्र प्रव	गह	fgo	१०१७		
वैद्यकसार	70	५≈६	गतुजय तीर्थमा	हात्म्य — घने	वर सूरिस	8202		
वैद्यकसार — ह्यंकीति	H o	४६६	शतुजय तीयंस्त्	ति⊸ ऋषभः	शस हि॰	७६१		
वैद्यक श्रीवन लोलिम्बराज	स० ५०६	, ¥≂೨	शक्तुजय भाग	विलास मुन्द	र हि०	9 इ. इ.		
वंद्यकटीका⊷ हरिनाथ	<b>4</b> ه	४६६	शञ्जय मंडल -	सुटुकर	म∘	७६१		
वैद्यकटीका — स्द्रभट्ट	Ħ o	4==	সঙ্গুজয় শ্বল	-	हि०	944		
वंगास्यउपजावन ग्रांग - चरनदास	i feo	१०५८	अञ्चल स्तवन		सं०	७६१		
वैराश्य गीत	f≅∘	8088	गञ्जब राम	गमय सुन्दर	हि∵>	£83,		
वैराग्य गीत —प्र० यशोधर	fro	\$058	1	-		€ € છ		
वैशस्यपन्धीमी	10	१०४७,	शत्रुजय स्तवन	–समयमुन्दर	fۥ	309		
		3086	शनिद्वर कथा		हि०	१०४२		
वंराय बाह्र, ♥ मा प्रश्नोत्तर चौ		3108		8	०४६, १०७	७, १११३		
वैराग्य अर्थामाना	f€o	२१६	शनिक्चर देव की	कया	हि०	500,		
<b>बैरा</b> ग्यशनक	व्रा०	२१६	ĺ			११५३		
वैराग्य शतक-स्थानसिह ठोल्या	हि०	२१६	शब्दकोदा — धर्मव	शस	स०	x₹€		
वैराग्य शातिपर्व ( महाभारत )	स•	१२०२	शब्दभेद प्रकाश		सं०	१२०२		
वराग्य योडश द्यानतराय	हि•	१०६७	शब्दभेद प्रकाश -	–महे≉बर	स०	५१६		
वंगसेन मूत्र — वगसेन	स०	48 o	शब्दरूपावली		स०	५१ε		
वदना जखडी	हि •	৩५७	शब्दानुशामन	हेमचन्द्राचार्य	स०	१२०३		
<b>য</b>			णब्दानुणासन वृत्ति प्रा०स० ५४०					
मकुन बर्गन	हि०	X £ & .	शब्दालकार दीप	क-⊹पौंडशी=	रामेश्वर			
शकुन विचार	स∘	xex	l		सं	० ६००		
शकुन विचार	हि•	४६४	शतश्लोक टीका-	—मल्लभट्ट	सं०	3==		
शकुनावली — गौतमस्वामी	भा •	४६५	शतक्लोकी टीका	-	सं०	50		
शकुनावली – गौतमस्वामी	स०	* * *	शक्राका पुरुष ना	म निर्शिय	भरतदास हि	० १६५		
शकुनावलीगौतमस्यामी	हि०	६४४, ६५२	शाकटायन व्याक			<b>4 ? E</b>		
वत ग्रष्टोत्तरी कवित्त-मैया भ	राग्यतीय स	Cat	शाकुषर		सं०	₹8€		
मत अव्दात्तरा कान्या - वना व	हि॰	१००४	शाङ्गं वरटीका		हि०	१०७६		
शतक सवत्सरी	हि∘	११११	शाङ्कियर दीपिक	हा — ग्राडमर	न सं०	x & 8		
शतपदी	₩•	ĘXX	शाङ्गंधर पद्धति	— म. ङ्गीधर	सं∘	४१६		
शतरजकीडा विधि	हि॰सं ॰	१२०२	शार्ज्ज घर संहित	ा—शाङ्गंघ	र स∙	¥₹€		
सञ्ज्ञ जय उद्धारनयनसुन्दर	हि०	€•€	बारक्रघर सहि	ता—दामोद	र सं०	१०२३		
शत्रुं क्य गीत	हि	१०२५	शारदीय नाम म	गमा – हर्षक	ोति सं•	¥80		
			•					

ग्रंथनाम लेखक भ	ावा प	त्र संख्या	प्रंथ नाम	लेखक	भोषा पः	व संख्या
शालिभद्र चौपईजिनराज सूरि	हि ०	850.	शाति चक्र गडल	पूत्राविधि	Ħ o	193
	₹ :	.383,83	णाति जिनस्तव	न —गुग्ग मा	गर हि∙	७६१
	13	(४, ६७४	भाति जिनस्तव		प्रा०	७६१
शासिभद्र चरित्रपं० धर्मकुमार	₩ •	938	शांतिनाथ चरित्र	7	स०	३८१
ण(लिभद्र चौपईमितिमागर	feo	१०१३,	शान्तिनाथ चरि	त – मजितप्र	य सूरि स०	इदह
	~	8838	णान्तिनाथ चरि			378
शालिभद्र चौपईसुमति सागर	180	११२५	शास्तिसाथ चरि			\$ 44
गः निमद्र चौपई	हि०	8=9	शःस्तिनःय चरि	त्र - – सकलकी	ৰি ন০	३६१,
•	-					360
मालिमद्र चौगई—विजयकीति	हि०	8==	भान्तिमाथ चरिः			3€ (
शालिभद्र धन्ना चौपईसुमित स		855	ण निनाथ चरिः			₹ - १
णानिभद्र धन्ना चउपई — गुरा सा		923	मान्तिनाथ पुरस	ग — संवाराम		3 0 ?
शानिभद्र राम	fg o	१०३१	शान्तिनाथ पूत्रा		H o	193
मानि होत्र	स <b>∘</b>	<b>१</b> १३७ ७६२	शान्तिनाच पूजा-			६११
गाश्यत जिन स्पत्रन	प्रा० स०	¥38	शास्त्रिनाथ की ब	। १२ समिता	feo	२१६
शस्त्रदान कथा ग्रभ्रदेव	fgo	• 7 6 6 0 6	मान्तिनाथ सत्र		c.	११७२
बास्त्र पूजा	•		शान्तिनाथ की र शान्तिनाथ स्तव		हि० हि०	११४६ १०८३
शास्त्र पूजा-सह्य जिनदास	हि०	१०४८	मान्तिनाथ स्तवः मान्तिनाथ स्तवः		-	७६१
शास्त्रपूत्रा-चानतराय	हि ०	१०११,	मानिनाय स्तब		गर शू∶र । इ.० स•	હદ્
		१०७४,	मान्तिनाथ स्तबः मान्तिनाथ स्तब			७६२
		१०७७	मान्तिनाथ स्तुति मान्तिनाथ स्तृति		मूर तर स०	७६२
गःस्त्र पूजाभूषरदास	हिं ०	१०११	मान्तिनाथ स्तोः मान्तिनाथ स्तोः		rio.	ن <b>و</b> ۶,
वास्त्र समुच्यय	स •	१६४	4111 11114 5711	'		, ११२५
शास्त्र मुची	हि०	€0€	शान्तिन थ स्तोत्र	- मेश्चस्द	सं०	2252
मातिकाभिषेक	₹io	٤٠٩.	णान्ति पाठ		fe o	Eto,
Andrai 444	.,.	680			<b>#33</b>	, ११२६
गांतिकर स्तवन	ЯIe	930	शान्ति पाठध	मंदेव	सं०	६१०
मास्तिक विधि	स •	٤ŧ۰	मान्ति पुरासा		सं०	300
गांतक विधि-धमंदेव	सं०	.33	शांति पुगरा	पं॰ मामाघर	कविस०	300
			बास्ति पुराख	ठाकुर	हि•	300
मांति गीत .	हि॰	60.	मान्ति पुरास्-	-सकल कीति	सं≉	308
माति चक्र पूजा 👵	Ħ*•	eto,	चान्ति पुरासा भ		हि०	308
1 e	११५	, १०२२	बान्डिपूका संत्र		सं∘	. 658

ग्रंचनाम लेखक	मावा पत्र संख्या	प्रिंथनाम लेखक	भाषा प	१त्र संख्या
द्यांतिक पूजा विधान	स० ६१०	भील बसीसी	हि •	ودلا
शातिक पूजा विद्यान —धर्मदेव	। स० ६१०	शील बत्तीसी	स•	१०१०
शास्ति मत्र	स॰ ६११			883
शास्ति ग्तवनगुरगु ।गर	हि० ७२१			११४२
माति होम विधान ग्राशाध	<b>र</b> स० ६११	शील बावनीमालकवि	हि॰	१०१५
शांति होम विधान — उपा० व	ब्योमरससं० ११७१	शील महातम्यब्न्द	हि०	3009
शिक्षामनोहरदास	स० १०८३	गील महिमा-सकलभूषरा	हि •	€=3
शिक्षा छद	हि० १०५१	शीलग्थशभचन्द	हि०	११०५
शिक्तर गिरिरास	६० ६४१	शील रास	हि०	११०३
शिखर विलास—केशरीसिंह	teo took	गोलरासविजयदेव सुरि	हि०	€७=.
शिखर विन्यस लालचन्द	हि० ६७६	1	.,,-	648
গিব শ্বৰ	स• ११५३	शील विलास	स०	<b>\$1919</b>
शिव स्त्रन्द	हि॰ ११५३	शील विषये बीर सेन कथा	 सं •	१२०३
शिव भन्दिर स्तीत्र टीका	स० ७६२	मील वत कथा—मलुक	हि०	8=3
शिव विधान टीका	हि॰सं० १६५	मील सुदर्शन रास	हि •	<b>5</b> 88
शिणुपाल वय — माघकवि	सं• ३६१,	शील सुन्दरी प्रबन्ध-जयकीरि		880
	३६२	शीलोपदेश माला-जर्यासह म	-	exo
शिद्युपाल वघटीका — मस्लिन	**	शीलोपदेश माला-सोमतिलक		१६५
भी झबोच — काशीनाथ	स० ४६६,	शीनोपदेश रत्नमाला- जसकी		860
-3	<b>Χ</b> ξ७, ε <b>१</b> १	शीलोपदेश माला - मेहसून्दर	सं०	480
शोधकल	हि० १११६	मुकदेव दीक्षित बार्ता	स∘	६६५
शीतलनाथ पूजा विधान	म० ६११	णुक्ल पंचमी वनोद्यापन	सं०	६१२
भीतलनाथ स्तवनरायचन्द	•	गुद्ध कोस्टक	सं०	१११७
शील कथा— भारामल्ल	हि० ४८८, ४८६, १०७३, ११२०	शुल मंत्र	सं०	१११६
गील कथाभैरोलाल	हि॰ ४६०	शोभन स्तृति	सं०	3508
शील कल्यासक वृत कथा	सं० ११३६	शोभन स्तुति	हि०	970
शील चुनडीमृनि गृशाचन्द		शकर पार्वती संवाद	₩° o	1202
भील तरगिर्गा(मलय सुन्दरी व		शकर स्तोल-शंकराचार्य	सं०	2222
	हि० ४६०	श्लोकवातिकविद्यानन्दि	सं•	50
भीलनोरासविजयदेव सूरि	हि० १०१५	इलोकवातिका लकार	सं०	<b>50</b>
मील पञ्चीसी	हि॰ ६४३	म्लोक संग्रह	सं∘	६७६
शील पुरन्दर भीपई	লি০ ४೭০	क्लोक संग्रह	सं०हि०	<b>400</b>
कील प्रकाश रासपद्म विज	य हि० ६४१	क्लोकावली	सं०	£30
कील प्रायुतकुन्दकुन्दाचार्यं	प्रा० २१७	श्वास मेरव रस	सं०	488

ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सस्या	ग्रंथ नाम	लेखक	भाषा	पत्र संख्या
क्वेताम्बर पट्टाव	ाली	हि	દપ્રદ	पर्पाहुड इ		সা৹	٦٤٥,
ण्वेन(स्वर मन स		সা৹		` •	3 9		१८.११०२
	•			षा पःहड टीक	ar.	हिल्स	385
	ঘ			प∴्पाहुइ भाष			
		_		षट् पाहुड भाव			790
षट्कमं छद		f∉o		षर्पाहड युनि			<b>२</b> २०,२.१
पट्कमंरास—- ज	ान भूषरण	हि०		षर्पचिमका		म०	9000
षट्कमं वर्णन		∓ o		षट्पंचाणिक'-	—भट्टोन्पल	η,	ષ્ટ દ નુ
षट्कर्मोपदेश र				पट्प्रकार यत्र		figo	६०३
पर्कर्मोबदेश र				पट्रम कथा	- सनितकीति	म०	8.8
षट्कर्नी देश र	ननामा नापा		१६=,१६८	षट्रस कथा	शिवमृति	at o	108
				पर्नेक्यागाव	π	f# o	645
पर्कारक — कि	नम्बरनान्द आ		3 \$ K	षट् लेण्या वर्ग		f/•	4555
षट् विवरग्		<b>#</b> •	485	षट् नेत्या बलो	<b>₹</b>	(io	80.0
षट्कान्किः		# e	भूदेव	गट्बगंफ च		শ ০	પ્રદ
थष्ट्र पाद	£	#I o	४२०				१११६
षट्काल भेद वर्ष		<b>€</b> 0	8840	षड्मिकि		स०	१०४८
षद्त्रास्मय स्तः 	वन		હર્ફ	पडामस्यक		সা৹	₹30
षट त्रिशति		<b>#</b> •	६७७	पडाबस्यक		हि०	838
षट्त्रिणति काः	सूत्र	# o	६७७	पड़ाबश्यक बार		श ० स ०	830
षट्दशंन		स०	२६ <b>१</b> , ४३३	षडावस्यक दार			
		£	*** <b>?</b> \$?	पडावश्यक बार		प्रा०हि०	१७०
पट्दर्शन के छिन		हि • हि •		षड।बदयक विव		# ·	१७१
षट्दर्भन पासण्ड	i	गहरू सं०	१०३६	पड्गीतिक शा		म ० हि ०	१७०
षट्दर्शन वचन		# o	२६१ २६१	पष्ठि योग प्रक		स •	४६८
यट्दशंन विचार		₩io	741	षष्ठि भतक	भंडारी नी मच		७६३
षट्दर्शन समुख्य				षष्ठि संवरसरी		<b>स</b> •	€=₹
षट् दर्शन समुख्य	यहारभद्र	सूर स०	348,	षष्ठि संबत्सरी	-	संद	¥ € =
			२६२	वष्ठि संवत्सर	कल	₩•	४६०
षट्दर्शन समुख्य		सं •हि •	747	<b>कोड्सका</b> रस		#i∙ C-	8.68
षट् दर्णन समुख्य			२६२	वोड़शकारण व			<b>११२</b> ३
षट् द्रव्य विवरस		<b>ફિ</b> •	exe	षोड्णकारण क			308
बट् पदीमकर	वार्य	सं∘	44	कोइसकारण अ		<b>#</b> •	6 \$4
षद् पाठ		ۥ	600	भोडशकारसः व	ममाल रह्यू	離れっ	ESA

षोडणकारगा जयमान वृत्ति—जिबबोलान प्राण्या १९५ सण्या १९६ सण्या १९५ सण्या १९६ सण्या १९६ सण्या १९६ सण्या १९६ सण्या १९६ सण्या १९६ सण्या १९६ सण्या १९६ सण्या १९६ सण्या १९६ १९६ १९६ सण्या १९६ १९६ १९६ १९६६ १९६६ १९६६ १९६६ १९६६ १	۰,
प्राप्ति ११५ सम्बन्धाः सन्तर्भा सन्तर्भा सन्तर्भा सन्तर्भा सन्तर्भा सन्तर्भा सन्तर्भा सन्तर्भा सन्तर्भा सन्तर्भ १९६ सम्बन्धाः सन्तर्भ सन्तर्भा सन्	8
पोडशकारस पुत्रा म० ६११ सण्याम हि० ६६: पोडशकारस पुत्रा म० ६११ सण्याम १०३६, १९१	
पोडशकारम् पुना मङ्क विधान टंकचन्द	u
पाडमकोर्स पुत्रा मुडल विधान ८५ सन्द	
हि० ६१५ सम्भाय—समय गुन्दर हि० ७६	
१०४८ सज्भाय एव आरहमामा हि० ६७	
पोडशकारए प्वा -सुमित सागर स० १०८४ सत्तर भेटी पुत्र। हि० ६१	
पोदशकारम्ग भावना - प० सदासुख कासस्रीवाल       सत्तरी कर्म ग्रस्थ प्रः ०     १२०	
हि. १७१ गत्तरी रूपठासा प्रा० १२०	۶,
मोडणकारमा न्नाद्यापन हि॰ ६०६ मत <sup>35</sup> —वृद्यानन हि॰ ६७	96
वाञ्चानाम् अभिवादानाशासार वर्षः १६६	0
41001-11775 30-20144 201-2011 4147	٤.
हि० ८१४ सित∷गुदूहा–वीरचन्द हि० ११३	₹
<sup>६१६</sup> सदयवच्छाम।र्वालगा हि० १०३।	
षोड्शकारम् बतोद्यापन स० ६१६ ११०	
षोड्रणकारण त्रनोद्यापन जयमाल भा० ६८८ सदयवन्छ स।वर्लिंगा चौपई हि० ४६	
पोडश नियम स॰ ६५० सनत्कुमार रास—ऊदौ हि॰ ६४	
पोडमयोग टीका स० २२० सन्तान होने कः विचार हि० ५६	
भ ० सकलकोर्तिनुरास व ० सावल हि ० ६५६ सन्तिपात कलिका सं० ५६९, ५६	
सप्त ऋषि गीत—विद्यानित हि० ६७	
स्म सप्तर्षि पूजाश्री मूषण स० १००	
सप्ति पूजा विश्वभूषण सं ० ६१७,६१	
सकल प्रतिबोधदौलतराम हि० ७६३ सप्तिषि पूजामनरगलाल हि० ६१	
सकलीकरण स० ६१६, सत्तिषि पूत्रा - स्वरूपबन्द हि० ६१	ζ=
। सप्त तत्व गात । १६० ६६	٠,٦
ं। सप्त तत्व बाता स० ११३	40
सकलीकरण विधान स० ६१७, ९६४, ११३६	<b>५</b> ۲
सकलीकश्रम् विधि हि॰ १९७ सप्ततिका सूत्र सटीक प्रा० १७	७१
सकलीकररा विधि स० ६१७ सन्तदश बोल हि० १७	9 દ
	<b>5</b> }
	६२
	<b>د १</b>
	• 🕹
	ŧ=

प्रंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
सन्त मिक्त		alo	6688	समयसार टीक	ा—- म० देवेन्ड	कीति सं०	२२५
सप्त भगी न्याय		その	२६२	समयसार टीक	त (ग्रध्याःम त	ारगिएगी) भ	० शुमवन्द्र
सप्त भगी वर्णन		स०	२६२	l		ە 🖰	२२२
सप्तब्यसन — विश		हि०	१००३	समयसार नाट	क—बनारसी	दास हि	२२=,
सन्तब्यसम् कथा-	—सोमकीति	<b>4</b> 0	¥88,		55	€, २३0,	२३१, २३२,
			४६२, ४८३	1	٦.	३३, २३४,	६४१, ८६२,
सप्तब्यसन कथा-	—भारामल्ल		863' RER		۶ ۶	३, ६६४,	६६५, १६१,
सप्तब्यसन गीत		हि				264, 80	t, tota.
सप्तब्यसन चन्द्राव	***					१०	२२, १०३२,
सप्तब्यसन चीपई		हि०				800	10. 2052,
सप्तवार घटी		₩.	४६=			99	०३, ११५०,
सप्तममास लक्षरा		₹ °	४२०			१०	५२, १०७२
सप्त स्तबन		# o	063	समयगार वी	<del>डका</del>	#10	833
संबद		রি ০	3 40 \$	समयसार प्रक	रग प्रतिकोध	पा०	. ၁၃६
सभातरग		संब	६१६	ममयमार प्राप	ল—ভূ বভূ ব	ाचार्य प्रा	, २००
सभाभूषण गय-		हि०	6082	समयसार भाष		हि ।	, २२८
सभाविनोद (राग	माला)— गगा			समयसार भाष	त टीका रा	जमल्ल हि०	२२६,२२७
समाविनास		हि		समयसार वृत्ति	प्रभावन्द	e FF	२२५
समाभ्यांगार प्रन्य		हि	१०४३,	समयसार	।मचन्द्र सोमर	ाजा सं०	५६८
			\$0.85	समबगरण पू	ता रूप चन्द	fe o	१०१३,
समक्ति वर्णन		हिं	१७१				<b>११</b> २०
समन्त्रभद्र स्तृति		संव	6 6 8	सम्यवस्य कीम्	की	स०	640
समन्तभद्र स्तुति-	-समन्तमद्र	₹ 0	७६३	-			£ 4 8
			988	मध्यक्त की मु		हि०	
समयभूषमाइन्ह		सं •	* 1	सम्यक्त्व की मु	वीधर्मकीति	सं०	AEA
समयसार कलवा-	—अमृतचन्द्राच	ार्थ सं		सम्यक्त्व कीमु	वी <del>व</del> ० वंत	ग सं∘	४६४
			२२१	सम्यक्त कीमृ	दी-जोधराज	गोदिकाहि	¥8¥,
		_	१०३२			¥84,	
समयसार कलका	पाण्डे राजम	हल हि	4.26	सम्बद्धक की मृ	वीबिनोदी	नाल हि	¥85
समयसार कमबा	टीका नित्य	विजय		1		_	
		सं०	२२२	सम्बद्ध कीमु			
समयसार टीका (	ब्रात्म स्याति)-	समृत	बन्द्राचार्यं	Hadden diller utat Bes and A			
		प्रा∙		सम्यक्त कीमु	वीकवा -	सं∘	¥88,
			२२४, २२६	ŀ			<b>X00, X</b> 08

ग्रंथनाम लेख	ह मावा	पत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
सम्यक्त की मुदी	fg	o <b>4</b> 00,	समवशरग् रव	ना	€िं	६२२
		<b>છ</b> છ 3	समवशरण विद	।।न−-प० हीरान	नद हि०	११९
सम्यक्चारित्र पूजा	नरे∘द्रसेन स	333 0	समवायाग सूत्र		द्रा०	द्ध
सम्यक्त गीत	हि	c {95	समाचारी		मं •	6502
सम्यक्त्व चिनामीए।	# 4	३२३ (	समाघान जिन		हि०	६६४
सम्यदशन पूजा — बुधसे	न स	660	समाधितत्र - पू	ज्यपाद	स०	538
सम्यवत्व पच्चीसीभ	वितीदास हि	. ११५१	समाधितव भाष	ī	tĕ∙	२३८,
सम्यक्तव प्रकाश भाषा-	- डालूराम हि	० १७२			-a- c	१०६६
सम्यवस्य बलीसी कव	ग्पाल हि	० १७२		ा—नाथूलाल दो ⊺— पर्वत वर्मार्थ		
सम्यवस्य रास- प्र० वि			समञ्चलन माप	। — पवत समाय २३४, २३६, ३		
सम्यक्त्व सीमा विलास	कथा	लाल	समाधितत्र भाष		हि०	२३⊏
	ਫ਼ਿ		समाधितत्र भाष	रायचन्द	हि०	२३८
सम्यक्त्व सप्त षष्टि भे			समाधिमरश		हि०	१०४३
			गमाधिमरण भ	ापाचानतराय	हि०	२३८
सम्यग्दर्शन कथा	स				•	११२६
समवसरण को धाचुरी	स	. <b>१</b> २२	समाधिमरण भ	षा	हि०	२३६
समवणरण पाठरेव	ाज म	७ ५४	समाधिमरगाम	ाषा—सदामुख	कासली	ाल -
समवणरण मगल—मा	पाराम हि	७ ५४			हि०	२३⊂
समवशरण स्तोत्र वि	म्णु <b>चेन</b> स	० ७६४	समाधिमरग् स्व		हि०	२३८
समवशरण स्तोत्र	<b>#</b>	० ७६४,७६५		पन्नालाल चौच	-	
ममबशररा मंगल चौबी			समाधि शतक		हि ०	
111110 1111 1111	િં		समाधिशाक टी	का-प्रभावन्द्र	<b>स∘</b>	580
1112m2m (121 _ (121			समाधिस्वरूप		सं०	२३६
समवशरण पूजा - पन्ना	_		समासचक		स •	४२१
समबशरण पूजाहप			समास प्रक्रिया		सं•	४२१
समवशररापूजा-विनो			समास लक्षरा	অ 6ৱীসমান্	₩. Tio	<b>X</b> 78
	हि		सम्भेद विलास-		कारत <i>च</i> संक	१३०१ oi ७४११
		<b>१</b> २०, १२१	सम्मेद शिखर		40	११७२
		<b>१</b> २२		• गच्बीसी — सेमक	रसा टि	
समवशररापूजा-लानः	तीलाल हि	११२०	सम्मेद शिखर		.∵, iq	
समबग्नरण मंगल-नय	मल हि	१०४४	सम्मेद शिखर		हि	
समबश्रुत पूत्रा-गुमन	न्द्र संद	६२२	सम्मेद शिक्षर प		हि॰	£ 9 4
					•	

·						
		पत्र संख्या	ग्रथनाम	लेखक		पत्र संस्या
सम्मेद शिखर पूजा — लालचन्द	हि•	६२२,	सर्व जिनालय		स्व	888€
		£ ₹ 5	सर्वे जिनालय	पूत्रामाधोलाः		ल
		१२⊏			हि०	६२६
सम्मेद शिखर पूजा—जवाहरलाल	्हें। इं	१०८६	सर्वरसी		हि०	8508
सन्मेद शिखर पूजाभ० सुरेन्द्रकं	ोति स	६२२	सर्वार्थसिद्ध-प्	ज्यप <i>्</i> द	संस्कृत	<b>⊏</b> ₹
सम्मेद झिलार पूजा – गगादास	e FF	६२२	1			१६६
सम्मेन शिक्षर पूजा—सेक्कराम	हि०	६६३	सर्वार्थं मिदिः	नापाप० जयः	वन्द राज	a:,
सम्मेद शिखर पूजा—सनद।स	हि ०	€ = \$				FR. 1708
सम्मेद शिखर पूत्रा—हजारीमल्ल	हि०	६२३	सरस्वती दिग्	विजयस्तीत्र	म०	११२५
सम्मेदशिखर पूजा—क्वानचन्द्र	हि०	ε ₹ ₃	सरस्वती पूत्रा		हि०	280%
सम्मेद शिखर पूत्रा-जबाहरलाल	हि०	६२४,				१९०८
		६२४	सरस्वतीपूजा	ज्ञात भूषमा	fro	401
सम्मेद किस्यर पूजा – भागीरथ	fؤه	દેરપ્	सरस्वती पूजा-	मधी पन्नाला न	r fa⊸	5 - 3
सम्भेद शिखर पूजा—द्यानतराय	हि०	દર્ય	सरस्वतो पूत्रा		11.0	(२)
सम्भद्र शिखर महातम्य पूत्रा—मोन	•		सरस्वती पूजा	जयमाल — वर्०	जनदास है	हुंव ११००
"	fro	e 7 3	सरस्वती मत्र		f₹∘	496,
सम्भद्रशिस्तर महातम्य पूजा—मन	शस्य सा	गर				११२०
4	हि॰	€२=	सरस्वती स्तबः	Ŧ	सं०	988
सम्मेद शिक्षर महात्म्य पूजा – दी			सरस्वती स्तवस	• श्रद्दशायन	स०	1984
a arrangement year and	स	. १२८	ı	प० बाशाधर	मु०	<b>૭૬</b> ૪
सम्मेद शिलार महातम्य पूत्रा	feo	F 7 8				११६०
सम्मेद शिखर यात्रा वर्णन प०			सरस्वती स्तोत्र		स्७	७६५
	E.	દ્દશ્હ	सरस्वती स्तव	नज्ञानभूषम्	म०	2880
सम्मेद शिखर वर्णन	fe	६५७		"		3399
सम्मद किर विसास-रामचन्द्र	fg.	દયુહ	सरस्वती स्तोत्र	ī	f∉∘	११२५
सम्मद शिखर स्तवन	fgo	७६५	सरस्वती स्टीव		सं∙	७७४
सम्मेदाचल पूरागगाराम	हि॰	\$ o ¥ \$	सरम्बती स्तोत्र		संब	७७४
सम्मेदासम् पुत्रा उद्यापन	€.	દરદ	सनुगारी सङस	सयबुधचन्द	fg o	७६६
समोसरन रचना—	हि॰	¥33	सर्वया कृम्द	_	fgo	8003
सदवंग सार विचार-नवलराम	fg o	२४६	सबेया धर्मच		हि•	533
सर्वेज महात्म्य	ei o	757	सबेबा-धर्मार		(go	१११=
सर्वेज सिद्धि	₹i o	२६३	सर्वयामनोह	-	fgo	6668
सर्वजन स्तुति	<b>स</b> •	७६५	सर्वया - विनो		fgo	8020
सर्वजिन नमस्कार	सं०	११२७	सर्वया-सुन्दरवा		हि•	६७व
				**	-	

ग्रंथ नाम	लेखक	मावा प	त्र सस्या	प्रथ नाम	लेखक म	साचा प	त्र संख्या
सबैया वावनी	मन्त्रसाह	f≢o	११०५	साधुवन्दना	-बनारसीदाम	हि०	७६६,
सहस्र गुगाप्त्रा-	⊶म० धर्मकी	तं म०	353				538
सहस्र गुरिग्त पूज	f i	ぞり	393	सःघु वन्दना		हि०	€50,
सहस्र गुलित पूत्र	া— ন৹ গুনৰ	ान्द्र स०	₹३०,				e € o ×
सङ्खगुमी पूत्रा	खङ्गसेन	हिं	630	गाबुसमावारी		स०	१७५
महस्य नाम		स०	€ દ	साम्य भावना		सं०	२४६
यहस्त्रनाम — ग्राश	1थर	मं ०	≂9€,	सामायिक प्रति	करण	हि०	२४%
		8800	=, ११२३	सामाधिक पाठ		গা •	280.
सहस्वनामिक्स	भेन	₽ o	११२७		28	१, १०३५	, १०५१
सहस्रताम पूत्रा~	-ध <b>मंत्र</b> ः मृति	सुउ	१३०	सामाध्यक पाठ		मं ०	२४२,
सहस्रताम पूषा	-घर्मशूपण	₩ο	€₹0,		३,७७३,६४०	દેષ, ૧૧૧	० ११२७
			११२=	सा <b>मा</b> यिक पाठ	—बहुमुनि	स०	२४३
स≂स्रत≀म प्जा	न्वे नमुख	हि ०	0€3	सामायिक पाठ		हि०	5 88.
सहस्रताम भाषाः	बनारसीदाम	हि•	373	3	.६२, १६३, <b>१०</b> ४	७, १०७२	, ११४७
सटघाक्षीस्तीत्र		स० ७	६६,६६६	सामायिक पाठ	टीका —सदासुखः	त्रीहि०	१०६६
सरस्रतःम स्तोत्र-	– ग्रामाधर	₹∘	१००४,	सामयिक पाठ	टीका	हि ०	२४५,
सहस्रताम स्तोत्र	— जिनसेनाचाः	र्वस∘	७७२,				२४६
	3	€⊏, ₹001	₹ <b>, ११३</b> ६	सामायिक पाठ	भाषा — जयचन्द	हि०	₹₹,
सागर चक्रवर्ती की	ी कथा	₩∘	\$388		28	€, १०३¥	१०३२
सागर धमाभृत-	-प्राणाधर	म०१∖	૭₹, १७४	सामायिक पाठ	भाषा – भ० तिल	<b>ोकेन्द्रकी</b> ति	r
सागर धर्मामृत भ	पा	हि॰	१७४			हि०	२४४
सःठ सबत्सरी		स०	४६८,	सामायिक पाठ	मापाधन्नालार	ग हि∘	२४४
			3008	सामायिक पाठ	माषाश्यामरा	म हिं०	588
साठ संवत्सरी		हि•	४६८,				X 5 0 9
	४६१, १०	३६, ११३	५, ११५६	सामायिक पाठ	माषा	हि०	१०८२
साठि संबत्सर ग्रह	र्फलपं∘ि	गरोमिंगिस	० ५६६	सामायिक पाठ	सम्रह	स०	२४५
<b>प</b> ।তি		स०	१२०४	सामायिक भाष	।। टीका—त्रिलो <del>वे</del>	न्दुकीति	
सातवीसन गीत-	-कल्याग् मुनि	हि॰	१०२७			सं∘	€ = ₹
साधारण जिन स	तवन — भानुच	न्द्र गरिए सं	• ७६६	सामायिक वव	निकाजयचन्दः	<b>झाबड़ा</b> हि	१०३५
साधारण जिनस	तवन वृति—।	<b>त्नककुशल</b>	सं० ७ <b>६</b> ६	सामुद्रिक		हि०	१०५६
सः बुधाहार लक्ष	ए	हि०	१७५	सामुद्रिक शास्त्र	r	सं०	प्रइंह,
सामुगीत		हि०	1111		200	. <b>११३</b> ।	9, १२०५
साधु प्रतिक्रमश् र	<b>मूत्र</b>	প্লাত	444	सामुद्रिक शास्	<b>ৰ</b>	₹io	प्रइष्ट,
साधु बन्दना—ग्र	र० कु <sup>ं</sup> बरजी	हि०	७६६	l			EAA

ग्रंथ नाम लेखक	भाषा	पत्र संख्या	। ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संश्या
सामुद्रिक शास्त्र माथा	fg o		सारस्थत वृत्ति		स •	¥ <b>? §</b>
सामुद्रिक मुरूप लक्षण	स०		सारस्वत व्याव		सं०	४२६
सारचतुर्विशतिका—सकलव				ररए दीपिका		
सार चीवीसीपारवंदास वि		શ હવ		,	स०	¥24
सारसमूच्चय	सं०	१७४,	#17### 201#	रगापचसिध-	– <b>घ</b> नभ <i>ि</i> न	स्वरूपाचार्थ
		€€€, C= ?			-13 K	४२६
सारसमुच्चयकुलमदाचार	तं स∘	<b>د</b> ٦,	सारस्वत सूत्र		सं०	५ २७
		१७५		—ग्रनुभूतिस्वर	पाचार्यं स	<b>५</b> ५२७
मार समुच्चय	हि०	१०५८	सारस्वत सूत्र		सं०	६२७
सार सिद्धान्त कौमुदी	स ०	४२१	सारस्वत सूत्र ।	शङ	<b>#</b> 0	५२७
सार सग्रह	सं०	४२१,	सारोद्वार		सं०	११६१
	ધ્	६२, ११७१	सारोद्धारह	पंकी ति	स०	१११६
सार स्ग्रह—महावीरा वार्य	粧。		सार्ख द्वयद्वीपपूर	ताविध्यपुभूवर	ग स०	0 € 3
सार सग्रह—वरदराज	#•	२६३	सार्वदय द्वीप पू	जा शुभचन्द्र	# c	€₹0,
यार सग्रह—सुरेन्द्र भू <b>ष</b> रा	स०	६७८				१६३
सार सग्रह	प्रा०	१७५	सार्द्धं द्वय द्वीप	पूत्रा — सुधासा	र स०	8 = 8
सारगी	हि०	१११५,	साद द्वय द्वीप	पूजा	स०	55°,
	_	१११७				१६३ १६३
सारद लक्ष्मी सवाद वेगरा	-	8050	सालिभद्र चौप	<b>जिनराजसू</b> रि	र हि०	१०६२
सारस्वत चन्द्रिका—ग्रनुभूति			सावित्री कथा		हिं	६६२
सारस्वत टीका	स •	४२१	सास बहुका भ	स्पडा—देवाब	ह्य हि०	8000,
स।रस्वत टाका	<b>स∘</b>	५२१,			१०	१२, १०६५
		४२२	सांख्य प्रवचन	<b>मूत्र</b>	供り	२६३
सारस्वत दीपिका वृति — च			सांस्य सप्तति		#Ţ o	२६३
सारस्वत घातुपाठधनुभूति			सिन्दरजीकी च	रौपईकेशरी	सह हि०	8888
	सं०	४२२	सिज्मायजि	नरंग	हि०	१०६१
सारस्वत प्रकरण	सं०	યુવર	सिज्ञाय – मा	न कवि	feo	१११७
सारस्वत प्रक्रिया			सिद्ध कूट पूजा		₹i•	<b>६</b> ३२
	स०	५२३,	सिद्ध क्षेत्र पूजा		स •	१०११
	२४, ४२४,		सिद्ध क्षेत्र पूजा		हि०	7 = 3
सारस्यन प्रक्रिया	#io	४२६	सिद्ध क्षेत्र पूज		हि०	६३२
सारस्वत प्रक्रिया-परिवाव		१२०४	सिख क्षेत्र पूजा		हि०	<b>FF3</b>
सारस्वत प्रक्रिया वृत्ति-मा			सिद्ध को च पूजा		हिं≉	₹₹3
सारस्वत वृत्ति	सं०	X 5 £	सिद्ध गिरि स्त	वन क्षेम विज	य सं∙	७६६

प्रंथ नाम लेखा	क सावा	पत्र संख्या	प्रथनः	म लेखक	मावा	पत्र सक्या
सिद्ध चक कथाशुभव	बन्द्र स०	५०१	सिद्धान्त प	वन्द्रिका	स	५२६
सिद्ध चक कथाश्रुत	सागर स०	४०१	सिद्धान्त	चन्द्रिका टीका—स	तदानन्द सं	, X \$ 0
सिद्ध चक कथा – भ०	सुरेन्द्र कीर्तिसं०	४०२	सिद्धान्तः	चन्द्रिका टीका—ह	ह्वंकीति स	, ४३०
सिद्ध चक व्रत कथा	नेमिचन्द्र स०	५०२	सिद्धा-तः	गुरा चौवीसीक	ल्यासादास वि	
सिद्ध चक्र व्रत कथा	नथमल हि०	४०२	सिद्धान्तः	मुक्तावली	सं	, २६३
सिद्ध चक्रगीतअभय	चन्द्र हि०	६४२		रस शब्दानुशासन	संब	•
सिद्धाचक पूत्रा	सं०	<b>ह</b> ह ६	सिद्धान्त	शिरोमिणभास्य	त्राचार्यस	५६६
सिद्धचक पूजाप०	षाशाधर स०	£\$3	सिद्धान्त	सागर प्रदीप	स (	<b>5</b> 9
सिद्ध चक पूजा— घर्मकी		€₹₹	सिद्धान्तस	गर	संव	
শिद्धचऋ पूजा—ललि		£ ₹ 3				6620
सिद्ध चक्र पूजा—भ०ः	गुभचन्द्र सं०	€≑३	सिद्धान्तस	।।र जिनचन्द्राचा	र्थ प्रा	5 5 5
		<b>१</b> २०६	सिद्धान्तम	ार दीपक—नथम		-
सिद्ध चक्र पूजा—सतल	ाल हि०	४६३			<i>د</i> ۾ ,	<b>८७, १०७२</b>
सिद्ध चक्र पूजा — देवेन्द्र	अभीति सं०	१११=	सिद्धान्तस	।र दीपक—भ०३	<b>मकलकी</b> ति	सं० ८०,
सिद्धाचक पूजा—पद्मन	न्दि स०	९६६				۳ <b>۷,</b> ۴ ۲
तिद्व चक्र यत	स०	६२४		।।र सग्रह—नरेन्द्रसे		50
सिद्ध चक स्तृति	श्रा ०	७६६	<b>শিৱি</b> সিফ	स्तोत्र-देवनन्दि	: स	৬ ६७,
सिद्ध चतुर्दशीभगवत	ीदास हि०	११५१			७६८, १	११२७
सिद्धि दण्डिका स्तवन	न्ना ०	७६७	सिद्धिप्रिय	स्तोत्र	₹	<i>ছ</i> ৩৩ •
निद्ध घूलरत्नकोरि	हि०	१०२७	मिद्धिप्रिय	स्तोत्र टोकाग्र	ग्रशाघर स	० ७६८
सिद्ध पूजाखानतराय	हि॰	₹00₹	मिद्धिप्रिय	। स्तोत्र माषा—— <del>हे</del>	मराज हि	७६=
सिद्ध पूजा	स०	६३४	सिन्दूर प्र	करस्	हि	• <b>६</b> ६२
निद्ध पूजा भाषा	हि॰	838	सिन्दरप्र	कररगबनारसीद	तस हि	६६६,६६७
सिद्ध पंचासिका प्रकरर	াম া	२४७				88, 8840
सिद्ध प्रिय स्तोत्रदेवन	ान्दि स०	१∈२	सिंघकी	पायडी	ੈ ਫ਼ਿ	
सिद्ध मित्त	प्राव	७६६	सिहनाम	चरित्र	हि	
सिद्ध भूमिका उद्यापन -	-बुधजन हि०	६३५	सिंहासन	बत्तीसी — ज्ञानबन	द्र सं	 
सिद्धहेमजब्दानुषासन	हेमबन्द्राचार्य सं०	४३०	मिहासन	बत्तीसीविनयः	समृद्र हि	. ૫૦૨
सिद्धहेमशब्दानुशासन सं	ोपज्ञ वृत्ति –हेमच	न्द्राचार्य		बत्तोसी — हरिफूल	हि	
- •	सं०	٩°°	सिहासन		हि	
सिद्धाचल स्तवन	हि≎	१०६१	सिहासन	बत्तीसी	हि	
सिद्धान्त कौमुदी	स०	५२७	सीखामरा	रास	हि	
विद्वान्त चन्द्रिकाराम	खन्द्राश्रम स०	४२८,			•	2 2 3 5
		४२६	सीखामरि	गुरास—सकलक	ोति हि	

वंथ नाम	नेखक	मावा	पत्र संस्य	। प्रंच नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
सीता चरित्र	रामचन्द्र (क	वे बालक)	Ro Yos	, मुलवितास—व			
,	₹0, €=0,	2016. 8	०७४ ११०	341-1414	गानराज काल्ल	गमाल ।ह	
सीताजी की बी	नती	हि	1888		THE MONT	ДIO	६७व
सीताशील पता	का गुराबेलि	WT o 3	रमकी ति	स्गृह चितामित		न्नार हिरु	y o y
		हि				हि० हि०	११२७ १०३५
सीता सतु—भग	वतीदास	हि०	EYX,			हि	६६७
_			858			.ए- स०	469
सीतग्हरसा रा <b>स</b> -	-जयसागर	हि ०	६४६,	सुगन्ध दशमी क	षा राजचन्द्र	fg •	X 0 X .
			€ 8.0	सुगन्ध दशमी क			X 0 X.
सीमंघर स्तवन	कमलविजय	₩•	६४३	1	J		£ 4 ₹
सीमधर स्तवन		हि०	११३४	सुगन्ध दशमी क	वा	हि०	५०५
सीमधर स्तुति		#10	) E =	सुगन्ध दशमी कर	ग हेमराज	हि०	844
सीमघर स्वामी स्ट	विन प०ज			सुगन्ध दशमी पूज		हि०	<b>\$</b> ₹ <b>\$</b>
सुप्रावहत्तरी		हि०	333	मुगन्ध दशमी वर्त		स०	6 <b>3</b> X
सुकुमार कथा		स०	χοχ	मुगम्ब दशमी क्रत	कथामकर	द हि०	४५३
सुकुमाल कथा		40	११६१	सुगन्ध दशमी ब्रत			१०८१
सुकुमाल चरिउ	मुनि पूर्णभद्र	ग्रद •	888	सुदर्शन चरित्र - त	रीक्षित देवदत्त	4.0	४१५
सुकुमाल चरिउ	श्रीधर	ग्रप०	888	सुदर्शन चरित्र— इ		स ०	* १ ६
सुकुमाल चरित्र	भ० सकलकी	निसं०	888.	मुदर्णन चरित्र-	<b>বু৹ বি</b> द्यानिद	स०	* ? ¥
		¥	१२, ४१३	सुदर्शन चरित्र	प <b>० सकलकी</b> ति	स०	४१५
सुकुमाल चरित्र—न	(बराम दोसी		823	सुदर्शन चरित्र —न	यनन्दि :	<b>ध</b> प०	884
सुकुमान चरित्रमाय	ा—गोकल सं	े 'ए'- तेल पर्व	* ' ' '	मुदर्शन चरित्र साथ		ीति हि०	४१७
सुकुमाल चरित्र मा	वा	हि॰	818	नुदर्भन रास	जिनदास	हि ०	६४८,
मुकुमाल चरित्र वच		हि०	889		8 4 3	७, ११४४,	११४७
सुकुणाल चरित्र		हि०	888	सुदर्गन रास - व		हि०	Exo.
सुकुमाल चरित्रभ	० यशकीति	हि०	818	€ ¥ ₹ , £ ₹ ₹ , £ €	=, १७६, १७	न, १०१३	१०१६,
सुकुमाल सज्भाय		16.	658			१०२२,	9608
सुकुमाल स्वामी खद	— इंग्रेटा	स कि	V.44	मुदर्शन सेठ कथा	-नन्द	हि०	8 & 8
मुकुमाल स्वामी रास	धर्म हिंच	।ह- हि०	v. l	सुदामा चरित्र		हि०	११०३
सुकीशल रास		हि०		मुदंसरा जयमाल		र्हि०	११०७
मुकीशल रास-गंग	<b>ক</b> ৰি	हि॰	1130	मुदृष्टि तरगिएगे—	टेकचण्ड	ि इ	१७७,
मुकौशल रास-वेर्ग		हि॰	640				१७व
सुकोशल रास—सामु		हि॰		######################################		<b>c</b> .	१२०६
सुस्तिधानजगन्नाध		स•	888	पुण्दर शृंगार—मह	शकाषर[ज	हि॰	६२६,
			-,,				११६=

पंचनाम लेखक	भाषा	वत्र संस्वा	प्रथ नाम	संखक	भाषा	पत्र संख्या
सुन्दर श्व गारसुन्दरदास	हि	<b>\$</b> 7 <b>6</b> ,	1		हि०	17 (1941) Y\$0
		EX, 2002	सुभीम चरित्र-		₹•	¥8=
सुन्दर स्तोत्र	ख∘		सुमतवादी जय	ष्ट्रक	हि०	₹•8€
सुष्पय दोहा	हि०		सुमति-कुमति	की असडीवि		
		₹ • ₹	1		हि०	१०६५
सुपंच कुपंच पञ्जीसी	हि०	333	सुमति कुमति स	वंबाद — विनोदी	लास हि०	3802
सुप्रमातिक स्तोत्र	<b>#</b> 0	370	सुमतिनाथ पुरा			308
सुबुद्धि प्रकाण — यानसिंह	f∉∘	६९७	सुमिरए। - दाह		fg.	860
सुबोधि का	स∘	¥₹∙	सुरसुन्दरी कथा		fē•	Kξο
सुमद्रकथा—सिघो	हि॰	8088	सुनोचना चरिः	र—वादिर।ज	स०	४१=
सुमद्र सज्भाव	हि •	७६०	सुवेशाचरित्र		₩•	४१⊏
सुभावित	हि•	६९७,	भूक्ताबनी		₩•	१२०६
		१११७	सूक्ति मुक्तावसी		हि०	<b>१७६</b>
सुमाषित	स०	६९७	सूक्ति मुकावली			688
सुमापित-सकलकीर्ति	₩•	033	सूक्ति मुक्तावली	माषा-सन्दरः	बाल कि	606
युमापित कथा	e o	४०६	सूक्ति मुक्त वसी		हि०	909
सुमाधित प्रश्नोत्तर रत्नमाल			सूक्ति मुक्तावसी-			७०१
- C. C	₩•	६६७	सूक्ति मुक्तावली			७०१,
सुभाषितरत्न संदोह-धामिति		६६८		908, 808, E		
सुभाषित रत्नावली	स•	७०१	सूक्ति मुक्तावली	टीका	त्र स०	
सुभाषित शतक सुभाषित संग्रह	हि०	१०५८	सूक्ति संप्रह	611111	.। स <b>ं</b> •	906
	हि॰स॰ १९०, <b>१</b> ००	<b>६५</b> ६,	सुतक निर्माय -	सोमसेन	सं०	909
सुभाषितार्गव—सकलकीति	स०	₹, ₹₹₹5 ₹€¥,	सूतक वर्णन		₩°.	દ રૂપ્
3					# 0	१७६, ६३४
		٦, ६६६,	सूतक वर्णन भ	० मोग्रसेन	सं०	
स्मावतावली		v33,90	सूतक वर्णन		हि•	30?
8	स० ७००, ७३१	६६५. ११६१	सूतक श्लोक		<b>∄•</b>	११०४
सुमाषितावली-कनककीति	₩•	000	भूत्र प्राभृत —कुन	कस्दाचार्य	সা৹	2226
सुमापितावली	हि॰	2044	सूत्र विधि	.5 414	सं∙	<b>49</b>
पुभाविताविल माषा— <b>बु</b> द्याल		500	सुत्रसार		4.	433
· 3		900	सूत्र सिद्धान्त श्रीप	r <del>£</del>		X 3 .
पुमाषितावलीदुलीचन्द	Fro	000	सुष स्थान		हि० सं०	4.0
पुमावितावति भाषाप्रभासा	स चीवरी	- 1	सूब सूमनी की क	eiTresco		E 19
	fg.	468	पूरश्रात की इस सुरख जीकी इस			\$ • X Y
	•		K 1 40 40	• •	腹。	666#

ग्रंथ नाम	लेखक '	मावा	पत्र सल्या	प्रथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या
सूरत की बारह	खडीम्रत	हि॰	1652	सोलहकारश	मंडल पूजा	सं०	€ 3
सूरसगाईसूर	दास	हि०	5309	सोलहकारएा	महल विघान	हि •	<b>e</b> ‡9
सूर्याष्ट्रक स्तोत्र		स्∙	११२४	सोनहकारएार	१म ५० जिनद	ास हि∙	६४८,
सूर्यकवच		स •					8 \$ ₹ ₹
सूर्यग्रहरण		स०	४७०	सोलहकारग्र	।स-स्कलकोति	⊺ हि०	દયય,
सूर्यप्रकाश – ब्रा	० नेमिचन्द्र	स०	309				3999
सूर्यत्र नोद्यायन —	ब्र० जयसागर	#1.0	१०८४	सोवहकारस		हिह	११६३
सूर्यंत्रतोद्यापन पू	ञा— ब॰ जानस	ागर स	७०३ ०		व्रतोद्यापन पूजा	स०	<b>e</b> ‡ 9
सूर्वसहस्रनाम		स०	११५३,		व्रतोद्यापन <b>पू</b> जा	हि०	€39
			११०६	सोलहकारम्।		हि०	وءَن
सूर्यस्तुति		हि०	१११३	मोलह सनी		हि •	११२६
सूवा बत्तीसी		f≢o	१०६७		सिज्भाय—प्रेम		१०६८
सेठ सुदर्शन स्वा	घ्या <b>य</b> -विजयस	ाल हि	५०६		छप्यविद्यासा		
सँद्धान्तिक चर्चा		हि०	<i>030</i> §	सोह स्तोत्र		Ħ o	હદ્દ,
सैद्धान्तिक चर्चा	संग्रह	हि ०	१०१=				<b>१</b> १६१
सौनागिरि पूजा		हि०	X ∮ 3	भौस्यकाम्य व	तोद्यापन विधि	सं०	=₹3
सोमप्रतिष्ठापन	विधि	स०	१०८१	सीस्य पूजा		हि०	233
सोमवती कथा		सं०	४०६	सौमाग्य प्रवम	ो कथा	म ०	४०६
सोलहकारण उद	।।पन - मुमति स	।गर सं	० ६३५	सकट दशा		स•	५७०
सोनहकारमा उद	रापन—ग्रमयन	नेद स	<b>£</b> 3 <b>X</b>	संकरप शास्त्र		₩•	850%
			<i>३</i> <b>इ</b> 3	सकान्ति फल		₩ •	११३५
सोलहकारस् कर	गवर्गनदा	स हि	\$ 883	सकान्ति विद्या	र	हि ०	883
सोलहकारस जय		प्राप		सक्षेप पट्टाबल	Tr.	हि०	€ 4 €
सोलहकारण जय		ग्रप		संख्या गब्द स	विका	₹ •	650.8
सोलहकारम् जय			हि॰ ह३६	सगीतशास्त्र		स०	६०६
सोलहकारण जय		हि॰	-	संगीत स्वर भे	द	स •	₹•€
सोलहकारस पार		सं०	3555	सबह		हि॰	६७८
			234,248	संग्रह ग्रंथ		सं 🕶	६७८
सोलहकारण पूर			234,844	सम्रह ग्रंथ		₩∘	६७६
सोलहकारण पूर		हि॰	एई 3	सग्रहणी सूत्र		प्रा	<b>5</b> 9
सोलहकारण वि	क्षान करणात्र विकास	₹ •		संग्रहरणी सूत्र	मापा	fşo	55
स्रोलहरूरण पूजा		gt o		सब्रह्मी सूत्र		11 o	55
सोलहकारस पूज		सं •	8 2 3		-मल्लिवेश <b>मू</b> नि	্যা	55
सोनहकारस मा		80	30\$		माषा—दयासिंह		०हि० ५
सोलहकाहरा मा	वृता	:60	,,,,	N.			-

प्रंथनाम लेखक स	गवा प	त्र संस्या	प्रथानाम लेखक म	वा	पत्र संख्या
सघचूल	हि॰	४०६	सबोध सत्तासु दृहा बीरवण्द	हि०	909,
भंघपसहक टीका — ब ० जिनवल्ला	म सूरि				\$ \$ \$ \$ \$
	φo	६४७	संबोध सत्ताबग्री मावना-वीरच	न्द हि	० ६५२
सघ पट्ट प्रकररा	स∙	६५७	सबोध सत्तरिजयभेखर	हि०	६४७
मध्या सूत्र	গাং	<b>ج</b> ٤	संभवजिनचरित्र—तेजपाल ग्र	पन्न श	¥ \$ €
संवायिंगहेमसूरि	গা ০	388	सवर्जनादि साधन-सिद्ध नागार्जुः	ाहि∘	६२४
संग्राप्रक्रिया	म् ०	११०३	सवत्सरफन	हि०	ERR,
सन्तासुभावनावीरचन्द	हि ०	११३⊏			8068
सतोप जयतिलकबूचराज	हि०	933	सवत्सर ६० नाम	हि०	११३५
संथारा पारम विधि	সাত	६३८	संवत्सरी	हि०	¥00,
संयारा विधि	সা৹	६३८			६४७
सदेह समुच्चयज्ञान कलश	<b>स∘</b>	9 e 9	सदत्सर महात्म्य टीका .	.सं•	५७०,
संध्या वन्दना	स०	१२०४			६५७
सच्या मंत्र—गौतम स्वामी	₩ o	६२४	सवरानुप्रेक्षासूरत	हि०	२४६
सबोध अक्षर बावनी	हि ०	१०६२	सवाद सुन्दर	सं∘	¥०६
सबोध श्रक्षर बावनी — द्यानतराय	हि॰	8083	सक्टचीय कथा—देवेन्द्रभूषशा		833
संबोध दोहा—सुप्रभाचार्य	हि०	१७६	संस्कृत मजरी	सं०	¥30,
सबोध पचासिका	प्रा०	909,			६०२
		8388	सम्कृत मजरीवरदराज	स∘	४२०
मदोघ पचासिका	प्रा॰ सं	003 0	मंसार वर्चिनिका	हि०	£XX
सबोध पंचासिका	ŧο	१७२.		हि०	१०२७
	£ { ¥ },	8838	संमार स्वरूप	सं०	
सबोध पचासिका	हि ०	११०५	स्तवन धाराद	हि०	19190
सबोध पंचासिका गौतम स्वामी	प्रा०	₹७२	स्तवन - गुरासुरि	हि०	
सबोध पंचासिका	हि०	₹७=	J - 6	•	१०६५
मबोध पंचासिका-मूनि धर्मचन्द्र	हि॰	१०२१	स्तवन – ज्ञानभूषस्म ः	हि०	9909
सबोध प्रचासिकावानतराय	हि०	१७२	स्तवन पाठ	सं०	990
संबोध पंचासिकाबुधजन	हि॰	8053		सं•	990
संबोध पद्मासिका— रह्यू	धप•	8848	स्तुति भ्रहंत देव वृन्दावन	हि॰	4068
सबोध रसायन-नयचन्द सुरि	हि॰	६५७	स्तुतिवानतराय	हि॰	
संबोध सन्तरी	प्रा॰	१७२	स्तुति-भूषरदास	हि•	
संबोध सन्तरीजयशेखर मृरि	সা৹	१७२	स्तुति पंचासिका-पाण्डेसिहराज	ग् <b>ए</b> •	990
संबोध सन्तरी प्रकरण	₩o.	202	स्तुति संग्रह	हि०	
संबोध सन्तरी बालावबोध	ন্তি ০	909		,60	११५३

संय साथ शेखक	मस्या	वत्र संख्या	प्रंच नाम	सेखक	भाषा	पत्र संख्या
स्युति सप्रह	Ħ o	990	स्वप्न बत्तीसी	भगौतीदास	हि	1883
स्तोत्र चतुष्टय टीकामामाध	ार स०	. 660	स्वप्न विचार		fē	
स्तोत्रत्रय माथा	हि		स्वय्त शुभागुभ	विचार	ਵਿੱ	983
स्तोत्र पाश्वं	fg•		स्बप्नसती टीक		ार्य स	400
स्तोत्र पूजा	fee		स्बप्नाध्याय		सं	, ২,৬০
स्तोत्र पूजा	स•		स्वप्नाध्यायो		स	પ્રહદ,
स्तोत्र पूजा सग्रह	हि॰	१२६७				४७१
स्तोत्र संग्रह	प्रा॰ स	ુ હુક	स्वाप्तावली		स (	<b>X</b> 90
	9	9X, ११६X	स्वप्नावली — है	बनन्दि	स <b>व</b>	
स्तोत्र सग्रह	₩°	990,	स्बद्नावनीव		संद	
७७१, ७७२, ७७३,	998, I	د33, لاوي	स्वयंभू स्तोत्र व		स०	
स्तमनक पाण्येनाथ नमस्कार	स०	€ ¥ €	(11 % (0))			७६, १००२,
स्त्री जन्म कुन्डली	स०	४६०				४३, १०६२,
स्त्री द्रावरण विवि	स०	<b>48</b> 8				२७, ११३६,
स्त्री नक्षण	हि०	6652				80, 8888
स्त्री सङ्काय	हि०	<b>११</b> ४३		3F		
स्थरावली चरित्र —हेमचन्द्रायं	म०	१२०७	स्वयंभूस्तीत्र-		स €-	
स्थानक कथा	40	४०७	स्वयभू स्तोत्र			
स्थान माला	हि०	१०५७	स्वयभूस्तोत्र	(ल। प्रभाषत	द सर हिल्	
स्यूलभद्र गीतलावण्य समय	f₹∘	१०२६	स्वर विचार स्वरोदय—चर	marn	fg o	
स्थूल भद्र को नवरास		EAS			हि <b>व</b>	
स्थूलमद्र फागु प्रवन्ध	য়া০	६६०	स्बरोदय-कपू स्बरोदय-प्रह		figo	
स्थूलभद्रनुरास उदय रतन	<b>ৰি</b> ∘	ξ¥ς,	स्वरोदय अह		-	
		१०६१	स्वरोदय टीका	वृत्तवास कायरअ	स •	408
स्यूलभद्र सर्भाय	हि०	<b>१</b> ६६	स्वराद्य टाका	री <i>गाळा</i> म	fé o	2 8 9
स्यूलभद्र सिज्भःयमुश्वर्द्धनः	.,		स्वरूपानम्य = र स्वरूप सबोधन		स•	
म्नपन	हि॰	8864	स्वस्थ्ययन पाठ	404101	₩.	6=0
स्नपन विधि	स •	€ दे =	स्वाध्याय मक्ति		स०	१७६
स्तपन बृहद	सं∘	१३८				£88,
स्तेह परिक्रम — नरपति	हि•	११५४	<b>स्वामीकी</b> तिकेय	12× 011	9 P P P P P P P P P P P P P P P P P P P	१०३१
स्फुट पत्र सग्रह	e o	६७९	_			
म्फुट पाठ सम्बह	fg o	६००	श्रमसा पारवंगः		भा	
स्पुट संग्रह	fę o	Ec.	श्रमण सूत्र भाव		हि	
स्याद्वाद मंजरी मल्लियेण सूरि	स •	२६३	क्षात् विधि	स्मगेखर सूरि	संव	<b>१</b> १२

ग्रंथनाम लेखा	क्र स्रावा प	त्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
श्रावक ग्रतिकार	शा०	१०२६	श्रीपाल चरित्र	चन्द्रसागर	ছি•	₹8₽,
পাৰক কিষা	स०	१६५	ĺ		₹8€,	Y00, Y08
শ্ব।ৰক কিয়া	हिं ०	१६६	श्रीपाल चरित्र-	—लास	हि॰	Yet
श्रावक गुण वर्णन	সাত	१६६	श्रीपाल चरित्र		हि•	2000
श्रावक धर्म प्ररूपशा	प्रा०	<b>१</b> ६६	श्रीपाल दर्शन		हि॰	११ <b>६</b> =,
श्रावक प्रतिकमस्	棋の	२१७	जाताल प्रशा		•	२६, १०६५
श्रावक प्रतिक्रमग्	সা •	२१७				
श्रावक प्रतिक्रमशा	शष्ट	१०७२	श्रीपाल प्रबन्ध	-	ફિ∘ -	808
श्रावक प्रतिकमरग	प्रा०हि•	१०८१	श्रीपाल राज वि श्रीपालराट	संक्रम्।यख्रम्।	•	
श्रावक प्रतिक्रमग्	f≓o	१०३०	श्रीपालरामः—ः श्रीपालरासः—ः	. France	हि॰	१०६१
थात्रक प्रतिज्ञा—नन्दर।	म सौमाणी हि०	१०८०	वापालरास	प्रवाजनदास	हि०	६४२,
ধ্যাৰক অব ৰিঘান—— प्र	भिदे <b>व</b> स०	583			_	११३६
श्रावकाचार	সা •	१६६	श्रीपालरास —	•	हि०	६४२
श्रावकाचार	म ०	१६६	श्रीपाल रास—		हि०	६४२,
श्रावकाचार	हि •	१०८८	E80, E87, E	£ ६६, ०६ <b>=, १</b>		
श्रावकाचार—ग्रामितिग		१६६				२०, १०६३
श्रावकाचारउमाम्बा		१६६	श्रीपाल सीमार	गिग्रास्थान—ः		
श्रावकाचार—प्रतापकी		११३७	श्रीपाल स्तुति		हि०	€ € ₹.
श्रावकाचारप्रभाचन्द	स ०	¥33				१६, <b>१०</b> 5४
श्रावकाचार रासपदा	-	१६७	श्रीपाल स्तुति-		हि ०	\$ \$ 8≈
श्रावकाचार रास—जिस		£ <b>8</b> \$	श्रीमधरजी की	-		808€
श्रावकाचार सूर्वनिका	हि०	६७७	श्रुनकेवलि रास		-	
श्रावकः।तिचार चउपई			श्रुत ज्ञान के भे	द	हि०	११०२
श्रावकाराधनसमयसु		१६६	श्रुतज्ञान मत्र			११७२
श्रावण द्वादशी कथा—		११२३	श्रुत पूजा		सं०	
श्रीपाल चरित्र—रत्न हे		३६२	श्रुत पचमीकद		श्रप •	१२०३
श्रीपाल चरित्र—प०न		93€	श्रुतबोध कार्रि	<b>ल</b> दास	सं∙	₹00,
श्रीपाल चरित्र—जयमि	महल झप०	३६३			_	4 • €
श्रीपाल चरित्र-रइच्नु	भ्रय०	₹8₹	श्रुतबोध टीका-	-	ि म	€0₹
श्रीपाल चरित्र—सकला	रीति स∙	₹€₹,	श्रुतबोध टीका-	—हर शम्म <u>ं</u>	संव	€0₹
		3€8	थुत स्कन्ध—-	ा० हेमचन्द्र	प्रा॰सं ॰	* \$ \$ \$,
श्रीपाल वरिश्रव्र० ने		३६४		ŧ	EV, tok	४७, ११०७
श्रीपाल वरित्र—परिमत	ल हि∙	३१४,	श्रुत स्कम्ध सूत्र	ī	संद	११०७
	३८६, ३८७, ३८	द, १०१३	श्रुत स्कन्य कव	rī	स •	<b>ξ</b> α•

ग्रंथनाम लेखक	मावा	पत्र सख्या	यथ नाम	लेखक	भाषा	वत्र संख्या
श्रुत स्कन्ध पूजा	संस्कृत	- ==२	श्वारस		हि	ક પ્રદ
श्रुत स्कन्ध पूजाज्ञानभ्षरण	स •	<b>११</b> ३	श्वार वैराग्य	तरगिसी —	सोमप्रभाव	<b>मं</b>
श्रुत स्कन्ध पूजा-विमुवन की	ति स०	£93	1		₹∘	१२०१
श्रुत स्कन्त्र पूजा— म० श्रीभृष		₹\$3	ऋंगारशतक⊸	– भर्तुं हरि	स •	દ૪ર
श्रुत स्कन्ध पूजा-वर्डमान देव		६१६		Ę	•	
श्रुत स्कन्ध पूजा विधान—बाल	बन्द हि	, ६१४	हक्कार्म कला		, #10	. <b>१११</b> ४
श्रुत स्कन्ध मडल विद्यान — हः	गरीलाल	हि॰ ६१४	हनुमत कथा -	-बंदरायमल्ल	हि	
श्रुत स्कन्य मंडल विघान	सं०	€ 8.8	1 "3"		-	EXE, ESO,
श्रुत स्कम्भ णास्त्र	स०	66,80	İ	,		e, ११४3
<b>श</b> ुना <b>व</b> तार	स०	६५६	हनुमन कवच		स	
श्रुतावतार कथा	<b>स∘</b>	A56				9x, ११६३
श्रे शिककथा	₹10	₹१३६	हनुमण्डरित्र	- ব ০ মজিল	₹. •	
थे शिकचरित्र— हुंगावंद	हि०	११६६	431-411			398
श्रोशक चरित्र — ग० शुभचन्द्र	स ∘	805,803	हनुमच्बरित्रू	ত্তি জিলৱান	स०	
श्रे शिक चरित्र माथा—म० वि	बयकीति		हनुभच्चरित्र—		ਵਿ ਵ	
	हि०	803,	हनुमच्चरित्र			
	ì	08, 80X	हनुमत बौपई-			
श्रोणिक चरित्र भाषा—दोनतर	ाम क।सर	शेवाल 🏻	103.00 41.14	4- 1-1		\$ ¥3,0, ¥3
	हि०	¥o¥	हनुमग्नाटक	मिश्र मोहनदार	न म०	₹05
श्रीसमक चरित्र भाषा~-दौततः।	पौसरी हि	0 X0X	हनुमतर।स		हि •	9309
श्रीरएक प्रबन्ध – कल्यारएकीनि	हि०	¥0€	ह्तुमंतरास व	० जिनदास	हि०	₹४८,
श्रीएक चित्र लिखमीदाम	fg.o	४०७,४०८			EYE, ११	४१, ११४७
श्रोरंगकपुरासा—विजयकीनि	हि०	300	हरियामी खप्पय	र — गंग	हि०	905
श्रीम् कप्रबन्ध राम व्र० सघः	ते हि०	६४२	हरिवंश पुरासा		₹ 0	8085
श्रोरिणक पृथ्य'— म ० गुगाकीति	हि॰	દયર	हरियम प्राग्-	खुशाल वन्द	हि •	₹₹0,
श्री गिक महामागितक प्रवन्ध	हत्यास्क	ifa			<b>३१२,</b> ३१	₹3 <b>, ₹०</b> ६२
	हि॰	838	हरिवश पुराशः -	त्र ० जिनदार	ग स०	₹04,
श्रीसगुरुरामव० जिनदास	हि०	£83,	•			08, 300
श्रोशकरास —सोम <b>विवस सूरि</b>	fgo	११४६	हरिवंश पुरासा-	जिनसेनाषा	र्गस•	३०२
र्श्यार कविल	ŧξ۰	<b>६</b> २=	हरिबंध पुराग्-	—दीलतराम व	गसलीबाल	
णुगार मनक—म <b>नु</b> हरि	<b>₩</b> o	६२व	•		स०	₹0४,
श्र गार दीविका-कोमट भूपाल	स •	4.08				10k, 30k
भू वार मंजरी प्रतापसिंह	हि ०	ε ξ ξ ξ ,	हरिवस पुराख-	यशःकीरि	<b>श</b> ए ०	\$ 0 \$
		6068	हरिवंश पुरास-	-शालिवाहन	हि∙	२०३

ग्रंथनाम लेखक	माषा	पत्र संस्या	ग्रंथन।म लेखक	भाषा पत्र संख्या
हरिवण पुरासा— श्रीभूषसासूर्वि	र स॰	303	होली चरित-प० जिनदास	सं० ४२०
हरिवश पुरासा मावा—सड्ग	सेन हि	<b>\$0</b> \$	होली पर्व कथाश्रुतसागर	स०सं० ४७६
हरिश्चन्द्र चौपईकनक सुन्द	र हि०	४२०	होलीपर्दकथा	स० ४०६
हरिश्चन्द्र राजा को सज्भाय	हि०	४०७	होलीरास—व० जिएादास	हि॰ ११४१
हरिपेगा चकवर्ती कथा — विद	गनन्दि स	<b>५०</b> ७		6688
हवन विधि	स०	१०६	होलोरेग्युकापर्वप० जिनदा	स सं० ५०६
हसनलाकी कथा	हि०	१०११	हसराज बच्छराज वीपईि	वनोदय सूरि
हिकमत प्रकास—महादेव	₹10	४६२		हि० ५०६, ६५४
हिण्डोर का दोहा	हि०	१२०७	हसराज बच्छराज चौपई	हि० ६६५
हितोपदेश—विष्गु शर्मा	स०	৬০হ		
हिलोपदेशवाजिद	हि	৬ ০ হ	ৰ ব	
हितोपदेश चौपई	हिल	905		
हितोपदेश की कथाए	हि०	१०२१	क्षम् विति क्षेत्रपाल पूजा — विष	
हितोपदेश दोहा—हेमराज	हि •	१०१६	क्षत्रचूडामिश्य - बादीमिसिह	स० ३१=
हिलोपदेश के बोहे	हि०	6830	क्षप्रसासारमाधवचन्द्र त्रं वि	
हियहुलास ग्रन्थ	हि •	१ <b>०१</b> २	क्षप्रसार	हि० १०४०,
हिंदोला भैरवदास	féo	१०८१		6.80\$
हीयाली — रिष	हि०	७७६	क्षमा छत्तीसी —समयमुन्दर	हि० ६६०
हुक्कानियेष — भूषर	हि •	хғор		१०६१, १११=
हेमीनाममालाहेमबन्दाचार्म	स •	* * 0	क्षमा बत्तीसी-समयमुन्दर	हि॰ ६४२
होम एव प्रतिष्ठा सामग्री सूर्च	ी हि० ग०	₹3=	क्षमावस्ती पूजा — नरेन्द्रसेन	हि० ११४२
होम विधान	₹ 0	. ६३८	क्षीरएांव—विश्वकर्मा	र्स० ११७७
होम विधान	स०	2 \$ 5	क्षेत्र गरिएत टीका	सं० ११७७
		3#3	क्षेत्र गरिएत ब्यवहार फन सर्	हेत सं० ११७७
होम विघान	प्रा० सं०	3 7 3	क्षेत्र न्यास	हि० ६१६
होम विधि	₹₹	3 € 3	क्षेत्रगल गीन – शोभाचन्द	हि० १०६⊏
होरा प्रका <b>श</b>	स०	५७२	क्षेत्रपाला पूजा	सं० ७१६,
होरा मकरन्द	सं०	५७२	8	०३४, १०६४, ११४५
होरा मकरस्द - गुगाकर	स•	४७२	क्षेत्रपाल पूजा बुघटोडर	हि∘ ११२३
होलिकाचरित्र	₹∘	820	क्षेत्रपाल पूजागान्तिदास	हि॰ =ডখ
होली कथा	₹◦	४०७,	क्षेत्रपाल पूजा — मु० सुभवण्य	हि० ८६५
		¥ =	क्षेत्रपःल स्तुति मुनि शोमा	
होली कथामुनि गुभचन्द्र	हि०	40=	क्षेत्रपाल स्तोत्र	सं• ७७४
होली कथा - झीतर ठोलिया	हि॰	ሂ∘ፍ	क्षेत्रपालष्टक	सं॰ ७२०

ग्रंथनाम लेखक स	नावा	वत्र संख्या	ग्रंथ नाम	लेखक	माषा	वत्र संध्वा
क्षंत्रपानाब्टक—विद्यासागर्	हि	११५५	त्रलोक वर्णन		हि०	१०७२
क्षेत्र समास	সা	१०४,	त्रिलोक वर्णन	जिनमेनाचार्य	40	६११
		498	त्रिलोक वर्णन		भा०	६११
क्षेत्र प्रमास प्रकरण	সা৹	१०४	त्रिलोक विद्यान	पूजा-टेकचन्य	ह हि०	<b>८२१</b>
			त्रिलोक सप्तमी	वन कथाव	० जिनदा	स
74					हि०	४४३
			त्रिलोकसार—-	मिचन्द्राचार्य	aio	६१२,
त्रिकाण्ड कोशपुरुषोत्तम देव	स •				६१३, ह	E8, 8000
त्रिकाल चौदीसी कथा—-प० ग्रक्	त्रदेष स		त्रिलोकसार	प्रमित की नि	f? o	६१३
		RáR			3	१, १०५१,
त्रिकाल चौबीसी पूजा	स०	८२०,			8 8	<b>८४, ११</b> ५२
		उ५, १०१०	त्रिलोकसार—		<b>#</b> 0	
क्रिकाल चौबीसी पूजा — त्रिमुदनः			त्रिलोकसार -	वचनिका	हिल	- ૬૬૬
त्रिकाल चौबोमी पूजाम० शुभ			त्रिलोकसार		f₹o	१०४०,
त्रिकाल चौदीसी विद्यान	हि०					50€\$
त्रिकाल सध्या व्याख्यान	स ०		त्रिलोकसार पट		170	६१६
त्रिपुर सुन्दरी यत्र	मु०	६२१	त्रियोकसार चर	rî	भा व	६१५
त्रिपचाशत किया बनोद्यापन	<b># o</b>	570	त्रिलोकसार पूज	∏—म∄ विस्ट	f₹o	= 28
त्रिपचाशत किया वतोद्यापन	₩ o	< २१,	त्रिलोकसार पूज	१ - गुमचन्द	円。	=२१
		દ્યપ્ર	त्रिलोकसार पूज	ा - <i>गुमतिसाग</i>	र स०	= ? ?
त्रिपचाशन कियोद्यापनभ० वि	ण्यभूष	ए ।	जिलोकसार पूज	ı	₹₹	
	स •	600	श्रिलोकसार भा		हिन्	
त्रिभुत्रम बीनती - गगादाम	f≓o	११३३	त्रिलोकमार मा	षा— प०टोडर	मन राज	
त्रिभगी	40	६५६	त्रिलोक सार स	<b>ीक</b>	সা৹	€ 6 €
त्रिभगीसार – नेमिचन्द्राचार्यं	व्रा	Ę0,	त्रियोक सार म		हि ०	£ \$ X
		६१	त्रिक्षोकसार टी	हा नेमिच∗द्र	गणि स०	६१५
त्रिभगीसार टीका - विवेकनन्दि	संब	Ę۶	त्रिलोकमार टीव			
त्रिमगीसार मावा	हि•	६१	त्रिकोकसार टी	का— सहस्रकी	त स	
त्रिभगी मुबोधिनी टीका — प० ग्र	शावर	स॰ ६१	त्रिलोकसार सह		प्राष	६१३
त्रिजोक दर्पेग्खड्गसेन	हि०	¥¥₹,	त्रिवराचिर		₩•	
,	· •	424, 420	त्रिवर्णाचार	<b>बोमसेन</b>	स ं	. १ <b>१</b> २
		४४३	त्रियध्य शलाक	ापुरय चरत्र-	—हेम <b>च</b> न्द्र	<b>19</b> 1र्थ
त्रिलोक दीपकवामदेव	सं∘	488,484			सं∘	₹७६
त्रिलोक प्रजयित टीका	স্ত্রা	588				३३२

व्रंथ नाम	लेखक	माषा	पत्र संख्या	प्रथ नाम	लेखक	मावा	पत्र संख्या
त्रिषध्ठि स्मृति		स०	२७६	l			
त्रिश्च्यतुविशति	पूजा शुभ चन	द्र म०	द२३,		ज्ञ		
•			१०८५				
त्रेपन किया—हे	मबन्द्र	स०	દહ્ય,	ज्ञानरास-भा		हि०	
			₹30\$	ज्ञातुधर्मकथा	टोका	সা	•
त्रेपन कियाकोश	г	দ্ধি •	8=3	ज्ञातृ धर्म सूत्र ज्ञान कल्याए।		प्रा० हि०	४० १०६१
त्रेपन कियाकोश	—किशनसिंह	fgo	१०६६	ज्ञान कल्याल ज्ञान गीना स्तं		ाहर हि०	१०५१ ह=१
त्रेपन क्रिया काश	I——व∘गुलाल	हि॰	१ ७७	शनचर्चा •	14	₩io	٧٠.
त्रेपन किया गोत-	-	श्रपः	દયર	*****			158
त्रेपन कियागीन		हि०	१०२४	ज्ञान चालीसा		हि •	ĘĘŞ
त्रेपन कियापूजा		स०	€8€	ज्ञान चिन्तामा	रेंग	₹∘	६८१,
त्रेपन कियापूजा			<b>4</b> 23				१०३०
त्रेपन किया रास	—हर्षकीति	ছি ৽	१०३२	ज्ञान चिन्नाम	रंग — मनोहरदा		308,
त्रेशन क्रिया व्रती	द्यापन	Ηo	<b>५</b> २३			६५०, १०	
श्रपन क्रिया ग्रतीः	द्यापन विक्रम	ादेव स०	<b>११</b> २३	ज्ञान चृतडी—		हि०	
अंपन विद्या विधि	। दोलनगम	हि ०	११४२	ज्ञान चूनडी—		हि०	
त्रपन किया विन	तोसा० गुला	ल हि०	१०५२	ज्ञान जकडी—	ाजनदास दीपचन्दकासर्ल	हि० भागास्त्र	१११ <b>०</b> १०१.
त्रेपन भाव	,	हि •	१०१७	शाम ध्यस्तु	વાયમાવ માનલ	1414 .60	१६६
भेपन भाव चर्चा		हि०	६०	ज्ञान भनक	द्यानत गय	हि	१०४३
श्रेसट णलाका वर	एं <i>न</i>	स०	8004	ज्ञान दीपिकाः	भाषा	हि •	१०६
शेसठ शलाका पृष	स वर्गन	हि०	२७६	ज्ञान पच्चीसी		हि०	
त्रेयट इलाका पुरु	म भवावित	f₹ o	११३४				६७, ११०२
त्रैतोक्य मोहन क	वच	∓ा०	६२१	ज्ञान पच्चासा-	बनः रसीदास	•	
त्रैलोक्य मोहनी र		刊 0	६२१	व्यवसंख्यी ह	स्यानकनव		६०, ११४५ ११०
त्रैलोक्य वर्शन		feo	3 x 3	ज्ञान भास्कर	116414 4144	स्थाल स	
र्जनोक्यसार		हि०	११६५	ज्ञान मजरी		₩ e	
त्रैलोक्य सार सह	fie	प्रा०	<b>६१३</b>	ज्ञान लावएति		संद	
	_			शान समुन्द्र-	जोघराज गोदी	का हि	
त्रेलोक्य स्वरूप-	-	हि०	ERR	-		-	€< ₹
त्रैलोक्य स्थिति ब	-	हि०	६१६	ज्ञानसार-पद	निः	द्रा	¥33 •
त्रैलोक्यइवर जय	माल	fgo	₹33	ज्ञानसारमु	ने पोमसिह	प्रार	86

प्रंथन#म लेखक	भाषा प	त्र संख्या	प्रंथ माम लेख	क सोबाय	त्र संख्या
ज्ञान सूर्योदय नाटक—वादिः	बण्द्र स०	608	ज्ञानार्गव भाषा	सं∙	२००
ज्ञान सूर्योदय नाटक भाषा-	-भागचन्द हि०	६०४	ज्ञानार्णव भाषा - जय	बन्द छ। बडा हि०	२०१
ज्ञान सूर्योदय नाटकपारस	दास हि०	६०५		२०	२, २०३
ज्ञान सूर्योदय	हि०	€ a €	ज्ञानार्गाव भाषा टेक	चन्द्र हि०	२००
ज्ञान स्वरोदय—चरनदास	हि०	५४६,	ज्ञानार्शव भग्पालि	थ विमल गिग्हि०	२० <b>०,</b> २० <b>१</b>
		, ११८२	ज्ञानानन्द श्रावाचार	मं∘	१०८६
गानार्एव — द्या० घुभचन्द्र	स०	१६७,	ज्ञानानन्द श्रावकाचार-	— भाई रायमल्ल	
१६८ ज्ञानार्ण <b>व गरा</b> टीका	:, १६६, २०० म०	, ११४८ २००		राज्ञ	११०, १११
ज्ञानार्गाव गद्य टीका—ज्ञानच	ग्द हि०	२००	ज्ञानोकु <b>ण</b>	Ħο	१०८१
जानासांव गद्य टीका—श्रुतः	सागर म०	२००	ज्ञानोकुश शास्त्र	<b>₹</b> ₽	११४०

## ग्रंथ एवं ग्रंथकार

ग्रंथाकार कानाम	ग्रंथनाम ग्रंथसू पत्रस		प्रंथाकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
ग्रकलंक देव	श्रकलकाष्ट्रक स॰ ७	30		शीलतंरगिएी ४६०
	नत्वार्थराजवानिक मं०		ग्रचलकोति	ग्रादिनाथ स्तुति हि०
		४३		<i>७३०</i> १
	न्यायविनिष्चयस० २	પ્ર ૭		ग्रठारह नाते की कथा हि०
	प्रतिष्ठ।कल्पम० =	: = ৩		१०७३, १०७८, १०७६
	प्रायश्चितः शास्त्रस्०			विषापहार स्तोत्र भाषा हि॰
	१४१, २	₹ <b>१</b> ४		¥¥,
	प्रायम्बित ग्रंथ स०६	द६		७६०, ८७४, १००४,
प्रकलंक	रविवत कथाहि० ४	४३३		१११४, ११२२, ११४=
प्रकमल—	श्रील बत्तीसी हि० <b>६</b>	14	ग्रचल सःह—	मनोरथ माला हि० ११११
	१०१०, ११	१५२	ग्रजयराज	वीनती हि॰ ६७७
ग्रसवराज श्रीमाल-	कल्या <b>रा मन्दिर</b> स्तोत्र स	माषा	_	पद हि० ८७७
	हि॰ ५	-	<b>स० म्रजित—</b>	हनुमच्चरित्र स० ४१०, ४११
	चोदहगुग्गस्थान पचारि		द्याजतप्रम सूरि	शान्तिनाथ चरित्र सं∘
	राज ०	३२		358
		3 3	ग्रजुं न	म्रादित्यवार कथा प्रा॰
	भूपाल चौबीसी भाषा	-	3	88.88
		કપ્ર <b>१</b>	ग्रनस्तवीयं —	प्रमेयरत्न माला स० २५६
	भक्तामर स्तोत्र भाषा	•	श्रनस्तसूरि	न्यायसिद्धान्त प्रमा सं•
		388		२५७
	विषापहार स्तोत्र भाषा		ब्रनुपूति स्वरूपाचार	i−म्राल्यात प्रक्रिया सं∘
	हि० ७	3 પ્રદ		प्रश्
ग्रमर प्रमसुरी	कक्तामर स्तोत्र टीका	सं∘		कृदन्त प्रक्रिया सं० ५१२
	৩	४२		तबित प्रक्रियासं० ५१३
<b>श्रक्षंमल</b> —	विनती हि॰ १०	94		महीमट्टी प्रक्रिया हि॰
ग्रखेराम	गरबांपुर हि॰ १०			* \$ 0
ग्रस्तयराम लुहाविया	-मलयसुन्दरी चरित्र भाष	TT .		सारस्वत चन्द्रिका सं०
•	হি০ ৰ			<b>४२१</b>

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूबी पत्र सं०		ग्रंथनाम ग्र	ंथ सूची पत्र सं०
	सारस्वत घा	युपाठ सं•		स्तभनक पार्श्वनार	निमस्कार
		* * * * *		स•	દયદ્
	सारस्वत प्रति	यासं०	ध्रमयचन्द सूरि	मागीलुगी जी व	ी यात्रा
		प्र२३, ६५४		हि	• ৬২২
	सारस्वन व्या	करमा पचसं	व		8888
		स० ४२६		मॉंगीतुगी गीत वि	
	सारस्वत सूत्र	स॰ ४,२७			११११
श्रन्पाचार्य -	भाषाढी पूरिए	माफन स०	ग्रमयनन्दि	पत्यविधान पूजा स	00301
		7999		मोलहकारण उद्य	(पन ग०
<b>भ</b> न्पाराम —	यत्रावली स	ro ६२३			X \$ 3
भ्रप्यदोक्षत —	अलकार चन्द्रिक	ता म० ५१३	पं० ग्रभ्रदेव	লভিয় বিখান কণ	. मृ०
	कुबलयानन्द स	<b>€</b> 3 <b>火</b> •		83.	४, ४७६
द्यपराजित सूरि—	मगवती द्याराध	ना (विजयो		वन कथाकोण म	
"	दगाटीका)स	० १४५		लब्धि विधान कथ	( # o
श्रभयचन्द्र	गोम्मटमार (				११३६
	वृति स			चनुविज्ञति कनाम	
	नचीयस्त्रय टीब			त्रिकाल चौबसो क	
	74141.44 514	<b>११</b> २७		,	636
भ्रमवदेव गरिए	प्रकार व्याकरम्			द्वादश वन क्या ग	
	प्राव्स			त्रतोद्यातन श्रावकाः	
ग्रभयदेव सूरि	रतभावक पाइबंब			शास्त्रदान कथास	
अनवदय स्वार				श्रावक वृत कथाः स	
	<b>#</b>				<b>€ १</b> २
श्रमयचन्द्र	नेमिनाथ राम वि		श्रमरकीति	जिनस∉स्र नाम टी≇	
	सिद्धचक्र गीन हि				, ७५६
	बलभद्रशीत हि			योगिवन्तामरिए टीव	
म्रभवचन्द्राचार्थ—	कर्म प्रकृति टोक	ा स० ७			४=२
	म्राचागगमूत्र वृ	त प्राण्य ०	धमरकीति —	षट्कर्माखेशरत्नमा	
		3		<b>ध</b> प०	१६८
प्रभयवेब	जयनिहुयम् प्रकः	सा प्रा०	ग्रमरचन्द	विद्यमान बीस तीर्थ व	
		(, १०२६		हि॰	808
	वीर जिन स्तोत्र	সা •		ऋतविधान पूजा हि	
		७६०			६०६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंग <b>सूची</b> पत्र सं०
ग्रमरसिंह	ग्रमस्कोश	स० ४३३.	म्रागद उदय	शास्तिनाथ १	वरित्र स०
		१०८२	·		3=8
	नामलिगान्	गासन स०	ग्राएांद ऋषि—	तम्बाख् सर्भ	स्रय हि॰
	•	१०८२			११८३
ग्रमोघवर्ष	गण्नोनर रह	नमाला स०	ग्रात्माराम	आस्मत्रकाश	हि० ५७४
		હક, ६०६	म्रानन्दधन	चन्द्रप्रमु स्तर	ान हि॰
ग्रम्तचन्द्राचार्य	तन्वार्थसार	म० ४३			७२३
•	पुरुषार्थं सि	द्वयुपाय म०		धमंना <b>ध</b> स्त	वन हि० १४२
	समयसार व	ल्लास०	श्रानन्व—	वृषभदेव बन्द	नाहि०
		२२०, २२१			१०६६
	समयसार ट			स्त <b>वन</b>	রি০ ৩৩০
	(ग्रात्म य्या	नि) २२३	ग्रान्दन वर्द्धन	नस्द भोजा	रंगीत हि०
		२२४, २२४			१०६१
ग्रमृत प्रभव	योगसत	स• ११६	म्रानन्द—	कोकमजरी	हि० ६२६
भ्रमितिगति —	गाराधनासा		ग्राल्कवि	दोहरा	हि० ६४१
	धमंपरीक्षा			श्र कुरारोपर	एविधि सं०
	भावना बत्त	ोसी स०७७३			७६
	श्रवकाचार		ग्राशाधर—	ग्रनगार धम	मित सं• ६०
	गुभाषितरत	न सन्दोह स०			ोतिग्रन्थ संद
		२६४			488
ग्रहरामरिग—	श्रजितजिन्	पुरास्त स०		कत्यासमार	
		२६४			वेक स० ⊏१
घवधू	ग्रनुप्रेक्षा	हि० १०६७,			ा सं० ⊏१
		१११०			कसं० १०
कविग्रशग	बद्धं मान पुर	ग्ग स० २६६,		जिनसहास्त्रन	
		३६६			, ६५७, ६६४
		ए सं० ३००			, EEG, 800k
धश्वलायन		तोत्र सं० ७६४			०४८, ११०=
मुनि घ्रसोग	दानशीलतप	भावना प्रा०			120, 11×
		११५		पच मगल	<b>१</b> ०८
द्याज्ञासुन्दर	विद्यावना	स प्रबन्ध हि० ७५०			ţes
	माञ्जूषर <b>व</b>			त्रिभगी सर्व	ोधिनी टी <b>का</b>
श्राहमस्त —	साञ्चर ९	शापका सण ४६१			सं० <b>६</b> ।

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूबी पत्रसं०	प्रंथकार का नाम	पंथनाम प्रथमूकी पत्रसं०
	देवसिद्ध पुत्रा ११७६	उदयकीर्ति —	निर्वाल काण्ड गाया व
	-ह <b>बरावि</b> श्विस० ⊏३८		पूजा प्राव्सक ८४१
	नित्यपुत्रापाठस० ८३६	उदयसूरि	देव परीवह स्रोपई हि०
	पुण्याहवाचन स० ८६४	••	१०२४
	पूजाविधानस० ५७३	उवय रतन	स्यूल भद्रनुरास हि० ६४८
	ू प्रतिष्ठापाठस० ८६८		स्यूच भद्र रामो हि०
	प्रतिष्ठा विधि स० ६८६		१०६१
	प्रतिष्ठा सारोद्धार स०	उदय सागर सूरि-	- शान्तिनाथ स्त्रवन हि०
	50	•,	७६१
	शान्तिपराशास० ३००	उपाध्याय व्योमरस	—शास्ति होम विधान म०
	सरस्वती स्तुति स० ७६५		. ११७१
	११६०	उमास्वामी	तत्वार्थमुत्र सं० ४४
	सिद्धि त्रिय स्तोत्र टीका		\$\$\$,0X.38,24,88
	स∙ ७६⊏		Ex3, Ex3, EX4, EEP,
	स्तोत्र चत्रुध्य टीका ग०		£ 50, 900x, 900E.
	930		१०03, <b>१०</b> १६, १०२२,
	सागारधर्मामृत स॰		१०३२, १०३x, १०६2,
	ं १७३		१०७२, १०७४, १०७६,
	शान्ति होम विधान म०		१०६२, १०६६ १०६७
	सिद्धचकपुत्राम० ६११		११०१, १११७, <b>११</b> २१,
	होस विधान मण ६३८		११२२, ११३६, ११४४
(न्द्रसन्द्र	यद स० १०४६		<b>११</b> ८३
रम्बरम् रम्बजीत	रसिक प्रियाहि० ६२८,	उमास्वामी	थावक।चार हि० १६६
**************************************	\$33	जवी	सनत्कुमार रास हि०
न्द्रमन्दि—	श्चंकुगगोपसाविधि ७ <b>⊏</b> ६		EAA
{*#******	इन्द्रनिद नीति सार स	म० एकसन्घ—	जिन संहितास० ८१४
	\$67, \$69	धौसेरोलाल	दणनक्षरा कवा हि॰ ६६१
	पद्मावती देव कल्प महल	ऋषभवास	वसूनस्दि धावकाचार भाषा
			हि० १६१
	a ·		सञ्जनवित्त बल्लभ भाषा
	समाधूषसा स० ६१		हि॰ १६४
लायुध	कविरहस्य स०११७६ इत्यक्तानुष्येकाहि० ६५१		गतुजय तीर्थस्तृति हि॰
HT		ऋवभवास —	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
ऋषम	बारा भ्राराका स्तवन हि०	मुनिकपूरचन्द—	स्वरोदम हि॰ ५७२
	939	कबीरदास	ग्रक्षर बाबनी हि० ११०६
ऋषमदास निगोत्य	—मूलाचार भाषा राज <b>०</b>		पद हि॰ ११११, ११७०
	१५१	कमलकोति—	ग्रठारह नाता हि०१०५३,
ऋषि जयमल्ल -	गुरामाला हि० ७२१		off9, x308
ऋषि दोष	गुराकरण्ड गुराविली हि०		खिचरी हि० ११६≖
	<b>\$</b> 1.6		चौबीसजिन चौपई हि०
ऋषि वर्द्धन	नेमिजिनस्तवनस० ७३१		११३२
कविकनक —	मेघकुमार रागहि०		बारहस्रडीहि० १०५३
	१०२४	कमलनयन	जिनदत्त चरित्र भ।षा, हि॰ ३२६
	कर्मघटा ११०५	कमलभद्र —	ाहु* २२८ जिनपंजरस्तोत्र स०
कनकर्क ति	तत्वार्थमूत्र भाषा हि०	कमलमप्र	७२६, ६५=
	५१, ४२, १०६६	कमलविजय	जम्बुस्वामी चौपई हि॰
	पद हि० १०७३, ११०५	4	36.58
	बाग्हलाडी हि० १०५८		सीमधर स्तवन हि॰ ६४७
	विनती हि० सं० ८ ७६,	ब्र <b>० कर्मसी</b>	व्यानामृत हि० ६३५
	११०५, ११४=	कल्यारग	कुतुहल रतन।वली स०५४२
	सुमाषितावली ७०० भक्तामर स्तोत्रवृत्ति स०	कल्याराकीति	नेमि राजुल सवाद हि०
कनक कुशल	मकामर स्वात्रश्रात सर		6602
	साधारण जिनस्तवन वृत्ति		चारदत्त प्रवध हि० ४५६
	स० ७६६		बाहुबलिगीत हि॰ १६२
कनकशाल	ज्ञ नपचमी व्यास्यान		श्रेणिक प्रवन्थ हि० ४०६,४११
	सं० ११०	कस्यारगदास —	सिद्धात गुरा चौबीसी
कनक सुन्दर	हरिश्वान्द्र चौपई	464161410	हि० १०६५
	हि० ४२०		बालतन्त्र भाषा हि० ५८०
कतक सोम	माषाढभूति मुनि का	कत्यारामल्ल	धनंगरगसं० ६२६
	चौडाल्याहि० १०१३	कल्यारममुनि	सात बीसन गीत हि॰
मुनि कनकामर —	करकण्डुचरित्र ग्रपभ्रंश,	3	१०२७
_	₹१४	कल्यासागर	विजिनस्तवनहि० ७११
बहाकपूर	पद हि० १०६७		पचमीव्रत पूजासं० ६५६
- "	पाद्यंनाथ रास हि०	कंवरपाल	कंवरपाल बलीसी दि०
	६४४, १०२२		₹₹७₹
			4

ग्रंथकार का नाम	प्रंथनाम ग्र	ंष सूची यत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रं <b>ष सूकी</b> पत्र सं०
	सम्यक्तव बत्तीर्स	े हि ०		नागश्री कथा	क्रिंग ११६७
		१७२		निशिभोजन व	
कविराज पंडित	राधवपाडवीय ट	ीका			४५२
	स•	३⊏३		भद्रवाद् चरिः	न हि∘
कवीन्द्राचार्य	कवि कल्पद्रम स	Ţ o		₹4€,	३६०, ३६१
		¥ € 3 K		लस्थिविधान	
य॰ कामराज	जयकुमार चरित्र				170 80E
		३२६	किशोर	ग्रादिनाथ वीन	ली हि० ४५
	जयपुरागास०	२७६			হি০ ৯৬৬
	नामावलि छद	ह• ११४४	कुंदकुरदाचार्य	घटपाहुङ प्र	० १८१.
(स्वामी) कातिकेय-	—कानिकेशालपेशाः			-	823, 888
((111)	१६0, <b>१</b> ६१			द्वादणानुष्रे का	प्रा० २०३
	,	80₹€		पश्चास्तिकाय	সা০ ওং,৬২
कालिदास	ऋत्सहार स०	x y ç		प्रवचनसार प्र	0 = 90
	कुमारसभव सं०	३१७		मोक्षपाहुड प्र	११५ ०१
	नलोदय काव्यास			रयस्मार प्रा	০ ৩=
	बसत बर्गन स	e 2 \$ 0		शील प्राप्तृत प्र	To २१७
	मेघदून स•	3 ₽ €		वर्वाहुड प्रा०	२१⊏
	रघूबशास०३७।	द, ३७६		समयमार प्राः	त्र प्रा॰
	वृत्तरताकर म०	33×			२२०
	খুবৰীয় শ ৹	600		सूत्र प्राभृत प्र	
काशीनाथ	लग्न चन्द्रिकास	० ५६३	कुमार कवि—	ग्रात्म प्रकोध	
	शोधकोष स॰ ५१	44,888	कुमुदचन्द्र	कस्यास्य सिं	
काशीराज	भ्रमृत मजरीस०	\$ 40 €		सं० ७१६, उ	
काशीराम	लधुवाराक्य नी	निगास्त्र		७७२, ६४३	
	मापा हि०	१०८७		१०३५, १०६	
किशनचन्द्र	पद हि॰	8085		8000, 800	
किशनदास	उपदेश बादनी हि	• ६६२	स॰ बु. मुन्दबन्द्र	प्रादिनाय स्तु	
	सम्सामायिक हि			गीत सञ्जना	888
किशनसिंह	श्रम्खादना पच्चीर	शिहि•		परवारो ८२ शी	
•		6086		बराजारा गीत	-
	त्रेपन क्रियाकोश	Υ			४६, ११६१
	१००, १०१,	4056		बःहुबलि छंद	हि० १०६६

हुनुदयह विननी ८७६ , सा० केशव — वोडवकरण वरोखापन १८६८ केशराज— राममण स्वामन दिल १८६८ केशराज— उन्हें स्वान प्रवास ति १८६८ केशराज— उन्हें केशवी पढिल स० १४६८ केशवी कि ने प्रवास कि १८६८ केशवी कि ने प्रवास कि १८६८ केशवी	ग्रंथकार कानाम	ग्रंथ नाम ग्रं <b>थसूची</b> पत्र स०	प्रंथकार का नाम	गंधनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
स्वताहि		कुमुदचन्त्र विनती ८७६,	ग्रा० केशव —	षोडशकरण द्रतोद्यापन
जुतमहावार्य — पाठमुण्वय म० द व स्वावित क प्रथर माण्य विवाद माण्य		११३२		जयमालास० ६८८
स्राठ कुं बरजी — वाजु बस्ता हि० ७६६ के साव वेबल — वाज प्रथर वातक पढ़ात स० ४४४ वातक पढ़ात पढ़ात स० ४४४ वातक पढ़ात वातक पढ़ात स० ४४४ वातक पढ़ात वातक पढ़ात वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक वातक वातक वातक वातक वा		सर्वयाहि० १०३०	केशराज	रामयश रसायन हि॰
स्राठ कुं बरजी — वाजु बस्ता हि० ७६६ के साव वेबल — वाज प्रथर वातक पढ़ात स० ४४४ वातक पढ़ात पढ़ात स० ४४४ वातक पढ़ात वातक पढ़ात स० ४४४ वातक पढ़ात वातक पढ़ात वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक पढ़ात वातक वातक वातक वातक वातक वातक वातक वा	क्लमद्राचार्य	साठममुख्ययस० ६३		४७२, ११६६
हुगललाम — गुलामुनरी चउवर्द । ताक पढित स० ४४५   ताक पढित स० ८४६   ताक पढित स० ८४६   ताक पढित स० ८४६   ताक पढित स० ८४६   ताक पढित पढित ८६०   हि० ७६० १६०   ति० १०६८ १०३८   तावातक तामकरवा   चौणाह राजा० ४६६   तुमुमदेव — १८८१ ताक सर्ग ६० १८६   कुमुमदेव — १८८१ ताक सर्ग ६० १८६   कुमुमदेव — १८८१ ताक सर्ग ६० १८०   विकलताम पुतारा स० १८६   तुमान्यत पुतारा स० १८६   तुमान्यत पुतारा स० १८६   तुमान्यत पुतारा स० १८६   तुमान्यत पुतारा स० १८६   तुमान्यत पुतारा स० १८६   तुमान्यत पुतारा स० १८६   तुमान्यत पुतारा स० १८६   तुमान्यत पुतारा स० १८६   तुमान्याक स०			केशवर्द बज्ज	केशवीपद्वत्तिस० ५४२
मीहीपाईबंनाय छट हि॰				बातक पद्धति स० ५४५
प्रश्निक   प्रिक   प्रश्निक	•		केशव मिध	
हेश्यानिक्षा वीपर्ट् हिंद १११४ हिंद १११४ हिंद १११४ हिंद १११४ हिंद १११४ हिंद १११४ हिंद १११४ हिंद ११४४ हिंद १८५०, १०५३, १०५०, १०५५, १		गोडीपाइवंनाथ छद हि०	केशराज	
हि० १०२६, १०३८ । सि स्वायान कामकरवा विष्ण १९१४ । सि स्वायान कामकरवा विष्ण १९६६ । सि स्वायान कामकरवा विष्ण १९६६ । सि स्वायान कामकरवा विष्ण १९६६ । सि स्वायान कुम हि० १०५०, १०५३, १०७७ । १०१४ । सि स्वायान कुम हि० १०६४ । १०१४ । सि स्वायान कुम हि० १८६४ । सि स्वायान हि० १८६४ । सि स्वायान हि० १८६४ । सि स्वायान हि० १८६४ । सि स्वायान हि० १८६४ । सि स्वायान हि० १८६४ । सि स्वायान हि० १८६४ । सि स्वायान हि० १८६४ । सि स्वायान हि० १६६४ । सि स		७२१		
माधवानल हामदत्वा		होलामारुणी चौपई	केशरीसिह—	णिखरजीकी चौपई
स्तुमनेदेव — इट्टान बनक सं० ६८६ क्षावस्तान प्रवास स्वयाहि० है०१०, १०५३, १०७० हम् दे रू पण्डे केशव — १०१०, १०५३, १०७० हम् दे रू प्रवास सवाहि० है०१०, १०५३, १०७० हम् दे रू स्वयस्ता है० १०१० हम् दे रू स्वयस्ता — १०१४ हिमान्य प्रवास स० ६८१ हम स्वयस्ता है० १८१८ हम् दे रहे राज्य बढ़ापन स० ६८० हम हम हम हम हम हम हम हम हम हम हम हम हम		हि० १०२६, १०३८		
कुसुमदेव		माधवानल कामकदना		
कुनरसाजी		चौपाइ राज० ४६६	पाण्डे केशब—	-
हिस्साकवि— वृतविहका हि॰ ५१८ केशवसेन— सक्ताम स्तोत्र उद्यापन स्व क्ष्रायसेस — भूनमुवत पुरासा मः २६६५ हिस्सानाम पुरासा सं ० ६०६ राहिस्सानाम सुरास सं ० ६०६ राहिस्सान स्वास सं ० ६०६ राहिस्सान स्वास सं ० ६०६ राहिस्सान स्वास सं ० ६०६ सं ० ६०६ सं ० ६० सं ० ६०६ सं ० ६०६ सं ० ६०६ सं ० ६० सं ० ६० सं ० ६० सं ० ६० सं ०	कुसुमदेव—	हण्डान्त सतक सं० ६८६		
हुत्यास्त्रि व वृत्रविष्टि हु	क्त्रदखाजी —	ग्रनकार सर्वयाहि <b>॰</b>		
प्रवास — भूनिमुद्रत पुराणा में प्रवास कर देश स्वयस खाणा से कर देश स्वयस खाणा से कर देश स्वयस खाणा से कर देश स्वयस खाणा से कर देश स्वयस खाणा से कर देश स्वयस खाणा से कर देश स्वयस खाणा से कर देश से स्वयस खाणा से कर देश से स्वयस खाणा से कर देश से स्वयस खाणा से कर देश से स्वयस खाणा से कर देश से स्वयस खाणा से कर देश से स्वयस खाणा से कर देश से स्वयस खाणा से कर देश से स्वयस खाणा से कर देश के समय बावास हि कर देश से स्वयस खाणा से कर देश से समय बावास कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश से समय खाणा से कर देश समय समय से कर देश समय समय खाणा से कर देश समय से कर देश समय समय से कर देश समय समय से कर देश समय समय से कर देश समय समय से कर देश समय से कर देश समय समय समय से कर देश समय समय समय समय समय समय समय समय समय समय		१०१४	SS	
स्थ्य विभागता सुराण सं० स्थ्य स्वापन स० ६८ र स्वयत खापन स० ६८ र स्वयतो खापन पूना सं० हुए स्थ्य स्वापन स्था सं० हुए स्थ्य स्था स्थापन पूना सं० हुए स्थ्य स्थापन स्था सं० हुए स्थापन स्था सं० हुए स्थापन सूना सं० हुए स्थापन सूना सं० हुए स्थापन पूना स्थापन पूना स्थापन पूना स्थापन स्थापन स्थापन पूना स्थापन स्यापन स्थापन	कृष्सकवि—	वृतचन्द्रिकाहि० ५६०	कशवसन	
विस्तानाथ पुराण सं०   १००००   १०००   १०००   १०००   १०००   १०००   १०००   १०००   १०००   १०००	ब० कृष्रगदास —	भुनिसुक्त पुरासाम०		
हर रहिण किया प्राप्त कर कर कर कर कर कर कर कर कर कर कर कर कर		२६५		
स्टि रोहिस्पीव-विधापन सं ० १० १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १		विभलनाथ पुराण सं०		
हुस्शासश्र— प्रशिवनदारव सण्ड १०१ १९६, ६०६ रानत्रयोधायन पूजा सण्ड स्थाप सुत्र संच १६४ हृहत् दहनकारा पूजा भूत्रकेदार— छुत्सीय सुत्र संच १६६ हृहत् दहनकारा पूजा भागवनिकास संच १६६ हृहत् दहनकारा पूजा भागवनिकास रूप्त स्थाप स्याप स्थाप		3 3 5		
सहकेदार— छ्रसीय मूत्र सं० ४६४ हुनर त्रात्र प्राप्त प्राप्त सं० ४६८ हुनर त्रात्र सं० ४६८ हुनर त्रात्र सं० १८८ हुनर त्रात्र संग २४६ स० ६८८ हुनर त्रात्र संग १८० ६८८ हुनर त्रात्र संग १८० ६८८ हुन हुन ११४० हुन हुन ११४० हुन हुन ११४० हुन हुन ११४० हुन हुन १६८ हुन हुन १६८ हुन हुन १६८ हुन हुन १६८ हुन हुन १६८ हुन हुन १६८ हुन हुन १६८ हुन हुन १६८ हुन हुन हुन १६८ हुन हुन हुन हुन हुन हुन हुन हुन हुन हुन	कृष्शमिश्र	प्रवोधवन्द्रोदय स०		
सहकेदार छुद्मीय मूत्र सं० ४६४ हुए७ हुनारताकर सं० ४६० वृहर दक्रतका पूजा स्वाप्त स्वाप्		३४६, ६०६		रःनत्रयोद्यापन पूजा सं०
वृत्तरताकर सं० १६६ वृह्द दक्षलकाग पूजा स्वायवांद्रका सः० २५६ कशाव वर्सा — गोमहुसार वृत्त सः० ६८ कशाववांस— प्रति हि० ६११ कशाववांस— वेद्य मनोस्तव सः० ५६ कशाववांस— प्रति संव प्रति ह० १११६ कशाववांस— वेद्य मनोस्तव सः० ५६८ कोन्द्र मुपाल— प्रति वांस्ति ह० १६६ ह० १६६ ह० १६६ ह० १६६ कशाववांस— वेद्यातां संव १६९ कशाववांस— प्रति वांसिप स्मासना म० क्षायांस्त— प्रति वांसिप स्मासना म० क्षायांस्त— प्रति वांसिप स्मासना म० क्षायांस्त— प्रति वांसिप स्मासना म०	भट्टकेदार	छदसीयसूत्र सं० ५६४		
भ्यावविश्विता स० २५६ स० ६८ <b>केशव वर्गा</b> गोमहुसार वृत्ति स० २१ केशव वर्गा गोमहुसार वृत्ति स० २१ केशवदास थिया नोत्सव स० ५०६ केशवदास थिया नोत्सव स० ५०६ कोशवदास विश्वित स० ६०२ कोशवदास १६० ६४२, विश्वित स० ६०२ कोशवदास १८० १६६ १६६ १६६ १६६ १६६ १६६ केशव अर्था से १२१ केशव अर्था से १२१ केशव अर्था से १२१ केशव अर्था से १२१ केशव अर्था से १२१ केशव अर्था से १२१ केशव अर्था से १२१ केशव अर्था से १२१ केशव अर्था से भीरा से भीरा से १२१ केशव अर्थ केशव केशव केशव केशव केशव केशव केशव केशव	•	बृत्तान्ताकरसं० ५६८		वृहद् दशलकाम पुजा
छत हि॰ ११४८ कांकवेय		न्यायचन्द्रिकास० २५६		
छत हि॰ ११४८ कांकवेय	केशवदास	ग्रक्षर बावनी हि० ६ <b>८</b> १	केशव वर्सी	गोमट्रसार वृत्ति स० २१
केशबदास— वर्षात्रयाहि० ६४२, कोल्हा— सबियारास हि० १६९ १०२६, १०३० कजकीति — द्रव्य समुज्यय सं० ६२ केशब— ज्यांतिप रत्ममाना म० <b>क्षपराक—</b> प्रनेकार्य घ्यनि मंजरी		छदहि० ११४६		
१०३६,१०३७ <b>कजकीति</b> द्रव्यसमुज्यस <b>ं० ६२</b> केशाव ज्योतियस्त्रमालास० <b>क्षपर्गक प्र</b> नेकार्यस्वनि मंजरी	केशबदास	वैद्य मनोत्सव स० ५८८	कोमट भूपाल—	प्रशारदीपिका <b>स०६०</b> २
१०३६, १०३७ <b>कजकीति</b> — द्रश्य समुज्यम सं० ६२ <b>केशव</b> — ज्योतिय रत्नमाला म० <b>क्षयरणक— ध</b> नेकार्य व्यनि मंत्ररी	केशबदास	वित्रियाहि० ६४२,	कोल्हा—	सिवयारास हि० १६६
4-11-4		१०२६, १०३७	कंजकीति	द्रव्यसमुच्चयसं० ६२
५४७ सं• ५३१	केशव	ज्यांतिष रत्नमाला म०	क्षपरगक	द्यनेकार्थं ध्वनि मंजरी
		४४७		सं० ५३१

प्रंथकार का नाम	प्रंथनाम ग्रथसूर्ज पत्रसं		ग्रंथनाम ग्रंथसूकी पत्रसं०
क्षेमकरण	बारहमासा वर्णन हि॰		यमोधर चरित्र भाषा
	१०१५		हि० ३७७,११६३
क्षेमचन्द्र	योगसार हि० ११४६		व्रतकथाकोश हि० ४६१,
स्वड्गसेन	त्रिलोक दर्पए। कथा		४८०, १०७४
	हि० ४४२,६१६		सुगन्धदशमी कथा हि०
	<b>वर्म</b> चक पूजाहि० =३४		१०५
	हरिवशपुरास भाषा हि॰		मुगापितावली भाषा हि०
	₹०₹		500
	सहस्रगुर्णोपूजा हि० ६३०		हरिवशपुरास भाषा हि०
खानमुहम्मद <i>—</i>	गद हि० १०७५		३१०, ३११, ३१२,
स्रीमराज	पद रमग्रीगीत हि॰		३१३, १०४२
	१०२४	खेतसी	नेमिनाथ विवाहको हि०
खुशालचन्द	भनन्त बतुदंशीयतकया		<b>\$</b> 3 <b>\$</b>
	हि० ४२१		वारहमासाहि० ११०५
	उत्तरपुराग् भाषा हि॰	० खेता	सम्यक्ष्य कीमुदीस०
	२७२ २७३, २७४	कवि खेतान	¥9¥
	१०४२	काव सतान	वित्तीष्ठ की गजल हि॰
	चन्द्रनषप्ठीवनसद्यः हि०	<b></b>	1999
	x3C	लेमकरण	सम्मेदशिकार पच्चीसी हि०
	चन्द्रप्रभ जक्हो हि॰	लेमराज—	११०७ सिद्धित्रियस्तोत्र माथा
	-i €	44(14)	_
	अंग्ठ जिनवर व्रतक्या	त्रेमविजय	हि॰ ७६८ सिद्धियरिस्तवन सुं०
	हि० ११२३	441444	। चक्कानार स्तवन <b>स्</b> ठ
	धन्यकुमार चरित्र हि० ३३६	वेशसागर	चेतनमोहनराज संबाद,
	पदसग्रहहि• ६६३		हि॰ ११८०
	पद्मपुरास्य भाषा हि०	तेमा	श्रीपासराज सिज्माय हि०
	२०४, १०५२		949
	५०४, ६०३५ पल्य विधान कवा हि०	गंग	हरियाभी खप्पब हि॰
	पत्य विद्यान क्षा । हरू ४५६		500
	पृष्पोजलिवत कथा हि०	गंग कवि	राजुल बाग्ह मासा हिंद
	301141141111111111111111111111111111111		₹ <b>0</b> •₹
	प्रस्तास्त्र मावा हि०	पं० गंगादास	भादित्यवार कथा हि०
	944		¥20

ग्रंथकार कानाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रं <b>थसूकी</b> पत्रसं०
	छदसग्रहहि० ११३५	पं. गिरधारी लाल—	- सम्मेद शिक्तर यात्रा वर्णन
	त्रिभुवन विनतीहि०		हि० ६४७
	११३३		जयपुर जिन मदिर यात्रा
	५चमेरुपूजास० ६५६		हि० ६५२
	पुष्पांजलि व्रतक्यास०	गिरिवरसिह—	तत्वार्थसूत्र टीका हि०
	8.58		५२
	पुष्पाजिल जिल्लोद्यापन स०	गोकल गोलापूर्व	सूकुमाल चरित्र भाषा हि०
	द६्	· ·	898
	बनीस नक्षरा छापय हि	व.गोपाल—	चतुर्विश्रति पचकत्यास्यक
	**	!	समुच्चयोद्यापन विधि स०
	महापुरास चौपर्ट हि०		930
≈ ६४, ६	६१, १०६३, ११४३, ११४	गोपालदास	विनती हि॰ ६८२
	महापुराग् विनती हि०	गोरखदास —	गोरस कवित्त हि॰ ११४५
	११२७, ११६५, <b>११</b> ६	पं. गोल्हरा—	चतुष्क वृत्ति टिप्परा सं०
	सप्त परम स्थान पूजा स	,	¥ ? \$
	83	गोवद्धं नाचार्य	स्वप्नसती टीका स०
	सम्मेद शिखर पूजास०		४७०
		<sup>₹</sup> पं.गोविन्द—	उपदेशवेलि हि० १११०
गंगाराम—	सभाभूषराग्रन्थ हि० १०४	20	चौबीस गुरास्थान चर्चा
	सभाविनादहि० ६०		हि॰ ३४
	स्कीशल राग हि० ११३	•	द्वादशानुत्रीक्षा प्रा०२०३
गंगुकवि	दडकस्तवन प्रा० ११	` .	ऋषि मडल स्तोत्र सं०
गजसार—	चौबीस दण्डक हि०		७१४, ७७४ ११२४
गजसागर —	११४	c	प्रतिक्रमसमुप्रा० २०६
			शकुनावसी प्रा॰ ५६५
गरापति	माधवानला प्रवन्धा हि० ६२		सब्यामंत्र मं॰ ६२४
राबल गरापति	गरापति मुहुर्तस <b>० ५</b> ४		संबोधपचासिका प्रा०
	यहलाघव सं० ४		₹७२. <b>१७</b> २
गणेश वैवन	गर्गमनोरमासं० ४°		१७४,६७६ श्रेणिक पुच्छाहि० १५२
गर्गऋषि —	गगमनारमास० ४ पाशाकिवलीस० ४		श्राणक पुच्छा हरू स्थ्र नेमिराजुल गीत हि०
गगंमुनि	पाशाकवला सरु ३	3	
		. •	१०६७
इ. गांग जी	मुनिगुणरास बेलि हि०		पदहि० १०८६
	Ę	€	शील चूनडी हि० ११२४

ग्रंथकार का नाम	ग्रथ नाम	ग्रथ सूची	प्रंथकार का नाम	••
		पत्र स०		पत्र स०
<b>ुरम्बन्द्राचार्य</b> —प्रन	न्तनाथ पूजा म	ाडल विधान	गुरम्पूरि—	स्तवन हि० ७६६, १०६४
		स० ७⊏१	गुरगहर्ष —	एकादशीस्तुति हि० ७१३
गुरानन्दि	ऋषि मडल	पूजास०	गुर्गाकरसूरि	मक्तामर स्तोत्र टीकास
		७८७, ७६८		৩४७
		वासं० ४७४	_	होरामकरंद सं० ५७२
गुरामद्राचार्य—	<b>म्रात्मानुशा</b> स	निस० १८४	गुमानीराम —	दर्शन पच्चीसी हि० ७३०
	उत्तर पुराग	स०	गुरुदत्त	कल्यारममन्दिर स्तीत
		२७०, २७१		वृत्तिम० ७२०
	जिनदत्त च	रेत्र स०	गुलावचन्द —	दयाराम हि० ६६५
		३२६, ४४१		कृपमा जगावमा हि० १६२
	धन्यकुमार	चरित्र स०	ब॰गुलाल	चौरासी जाति की जयभान
		3 8 3		हि० ६६१
	महापुरागः	स० २६३		जनगानगा विचि हि० ६८५
पुरारत्नसूरि	कल्यास्य मि	दर		थपनकियाकोश हि०
	म्तवनावसूरि	म० ७१६		१०७७, ११५२
गुरगवर्द्ध नसूरि —	स्थूलभद्र निः	भाग हि०		बद्धीमान समबद्यारण दर्शन
		१०६८		हिंठ १६२
गुराविनय -	रप्वण काय	वृत्ति स०		विधेक चौपई हि० १०२२
*****	.5	342		समोसरम् रचना हि०
गुर्णसागर	श्रीपाल चरि			413
		₹€४, <b>₹</b> €¥	गूबरमल ठग	वंचकल्यामक उद्यापन दि०
गुरमसागर सूरि		हिं हिं ४५६	_	e.8.3
		हिंग ११०५	घट कर्पर	घटकपंर काव्य संग ३२०
		हर ६६०	धनस्याम	पद हि॰ १०६२
	धर्मन,थर्ग ह	नवन हि॰	घासीराम	ग्राकाण पचर्माकथः हि०
		€ ⊄ €		११२३
	नरकनुहाल वि		संदक्षि	प्राकृत सक्षमा स० ५६५
	<b>गानिजिनस्</b> त			प्राकृत व्याकरण स०
		७६१		४१७
	शःसिभद्र श्रद		चन्द	भ्रक्षक्तीसीहि० ६⊏१
		हि० ६६६	षडेश्वर	रत्नदीपिकासं० १११७
गुरासाधु -	चित्रसेन पर्	सबती कथा	चत्र शिष्य	नउदोली की चौपई हि०
		सं० ४३६	सांबलजी	₹05

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	य्रंथकार का ना <b>म</b>	ग्रंथनाम ग्रंथ <b>सूची</b> पत्रसं०
चतुर्भु जदास	मधुमालतीकथाहि०	पं० चम्पालाल	चर्चासागर हि० ३०
3.0	६४०, ६६२, ११६८	चपाराम दोकान	पर्म बावनी हि॰ १०४०
चतुरमल	चतुर्देशीचौपई हि॰ १०५	चरनदास	जानस्वरोदय स०
(जाति)चन्द-	बुटाचरित्र हि० ११३१		५४६, ५७२, १०५६,
चन्द्रकवि	चौत्रीस महाराज की		११२१, ११८२
	विनती हि० ७२४		वैराग्य उपजीवन ग्रंग
चन्द्रकीर्ति—	कथाकीण सं० ४३१		हि॰ १०५६
	छदकोणाटीका स० प्रा०	चरित्रवद्वं न	कल्यास मन्दिर स्तोत्र
	£3.⊁	41(140)	टीका सं० ७१⊄
	पंचकल्यासाइः पृजाम०		राघव पाण्डवीय टीका स०
	γ¢		348
	पाष् <b>र्वपुराग्य स०</b> २६०,	चारगक्य	चाराक्य नीति सं०६८३,
	38⊀	-1.011	६०४, ६०४.
	∵पाल चतु।वैश्रतिकी		राजनीति शास्त्र स०
	टीकास० ७४१		\$83, <b>6\$</b> 8
	विमान गुद्धि शातिक		राजनीति समुख्य सं. ६६३
	विधानस० १०४	चामृण्डराय	चारित्रसार स०१०६
चन्द्रकीति	पदहि० ११०⊏		भावनासार संग्रह सं०
चन्द्रकोति सूरि—	प्रकिया व्याख्यान स०		€399
	५१६	चारित्र मुवरा—	महीपाल चरित्र सं० ३६७
	सारस्वत दीपिकावृत्ति स० ५२२	चारित्रसिह—	मुनिमालिका हि० ११५६
	३९५ सारस्वत ब्याकरण दीपिका	पं० चितामशि—	ज्योतिष शास्त्र सं० <b>५४</b> ७
	भारस्वत व्याकरण दानका	चिमना—	द्वादशमामा महाराष्ट्री
चन्द्रसागर	श्रीपाल चरित्र हि॰ ३६८	14441	१००३
ब्र० चन्द्रसागर	पंचपरमे <b>डी हि॰ ११</b> ५६		
चन्द्रसेन	चन्दनमलयागिरि कथा	चुन्नीलाल—	चौबीस महाराज पूजन
4.40.	हि० ६४५		हिं० द००
चम्पाबाई	चम्पामतक हि० ६५ <b>१</b>		(बतंमान चौबीसी पूजा)
4. 11414	पद हि० ११३०		£03
चम्पाराम	भद्रबाहुवरित्र भाषा हि०		बीस विदेह क्षेत्र पूजा हि०
4.4171.1	358		=61
सम्बालाल बागडिय	<b>ा—</b> प्रकलकदेव स्तोत्र भाषा		रोटतीज वत कथा हि०
4: 41:41:4	हिं ७१०		४७४, १०६५

प्रथंकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	प्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
चित्रं भट्ट—	तर्कं परिभाषा प्रकाशिका		पदसंग्रह हि०१०४५
•	सं० २५२, ५१४		\$ . 3 Yo \$
(दैवज्ञ) चितामित्त-		जगद् मूषरा —	वर्द्धमान विलास स्त्रोत्र स०
•	५६ <b>१</b>	• • •	৩ 🗴 ৩
चैनसुख —	ग्रकुत्रिम चैत्यालय पूजा	मृह जगन्नाथ —	गगालहरी स्तोत्र स०
5	हि० ७७७		७२१
	पदसग्रह हि०६६३	पं० जगन्नाथ —	भामिनी विलास स०६२७
	सहस्रनाम पूजा हि० १३०	पं० जगन्नाय	चतुर्विगति स्तोत्र सं०
पं० चोसचन्द	चन्दन पष्ठी पूजास०		७२३
	७३७		मुखनिधानस० ४१५
छत्रसेनाचार्य—	रुक्मिस्तीकचाम०४३४	जटमल	गोरा बादल कथा हि०
छीतर ठोलिया—	होत्रीकद्या हि०५०६		9 = 9 9
छीतरमल काला —	जिन प्रतिमा स्वरूप भाषः	जनार्थन विबुध —	वृत्त रत्नाकर टीकास०
	हि० १०८, ११८१		33X
छीहल	उदरगीत हि॰ १०६७	गो० जनार्वन मट्ट	वैद्यरत्न भाषास० ५८३
	पचसहेली गीत हि० ६६६,	जयकीति—	ग्रकलकयनिरास हि०
	<b>१०</b> २२		११४४
	बाबनी हि०६४६		ग्रमरक्त मित्रानद रागी
	रेमन गीत हि०६७२		हि० ६३०
छोटेलाल	तत्वार्थं मूत्र भाषा हि॰		रविवत कथा हि० ११४३
	¥3, 38¥		वसुदेव प्रबन्ध हि०४८४
जगजीयन	बनारसी विलास हि०		शीलसुन्दरी प्रवस्य हि०
	६६=		860
	मूपाल बोबीमी भाषा हि०		सीना चील पताका
	<b>११</b> २२		मुराबेलि हि॰ ६४५
जगतराय	सम्यक्तव कौ मुदी हि० ४६६	वयकीति	वतुर्विगति तीर्यं कर पंच
जगतराम	अस्बूस्वामीपूजा १०६४		कत्यासक पूजासं० ८१०
	पद १०४७, १०४३,	जयवन्य छाबड़ा	धकलंकाध्टक भाषा हि०
	१०६०, १०६३		300
	पद्मनंदिपश्चीसी भाषा हि०		धव्टवाहुर माथा हि०
	१३२, १०७२		रेदर, रेदर, रेदर
	भजन १०५१		बाप्तमीमांसा २४१
जगराम	निर्वाण मंगल विधान हि०		कातिकैयामुत्रेका हि०
	=४२		१६२, १६३

प्रंथकार कानाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूर यत्रसं		ग्रंथनाम ग्रंथसूची यत्रस०
	धानार्णव माषा हि०	जयदेव —	गीत गोविन्द सं०७२०
	२०१, २०२, २०	३ वैद्याजयदेव ~	पथ्यापथ्य विद्योषक सं०
	तत्वार्थसूत्र माघा हि०		४७६
	" 48, X	५ जयन्त मट्ट	उज्कर भाष्य स० ११७३
	देव पूजा साथा हि० = ३		ढाल संग्रह हि०६६०
	द्रव्य संग्रह भाषा हि॰	जयमित्र हल	वर्त्तमान काव्य ग्रपभंश
	६७, १	5	३८६
	नित्य पूजावचनिका हि	۰	श्रीपःल चरित्र सपन्नंश
	G 1	•	₹3∓
	नियमसार भाषा हि०	पं० जयवन्तः -	सीमधर स्वामी स्तवन हि०
	y	•	७६९
	परीक्षामुख भाषा हि	अयशेखर सूरि—	ग्रगलदत्तक कथा सं०
	24	e e	४२१
	प्रमारण परीक्षा भाषा हि	•	प्रबोद चितामणि सं०
	२६	3	११६०
	मक्तामर स्तोत्र भाषा हि	• जयशेखर—	संबोहसत्तरि प्रा॰ ६५७
	9	¥	१७२
	रयगसार वचनिकाहिः	उपा० जवसागर-	· श्रादित्यव्रतोद्यापन पूत्रा
	999	¥	स॰ ७६६
	षट्पाहुड भाषा व वनि	17	पर्वरस्तावलि सं०४४६
	हि० २	3	सूर्यवतोद्यापन स०
	समयसार भाषा हि०		१०८४
	२२७, २	= ब०जयसागर-	ग्रनिरुद्ध हरण कथा हि०
	सर्वायंसिद्धि भाषा हि	,	४२३, ११६०
	<b>=</b> ₹, १२	8	सीताहररा रास हि०
	सामायिक पाठ भाषा वि	<b>50</b>	£4£
	२४३, १०३४, १०		शीलोपदेशमाला हि
जयतिलक सूरि	मलयसुन्दरी चरित्र सं		2.7.3
	ૈ <b>ર</b> ૬ <b>૫</b> , ૪		धर्मरत्नाकर स॰ १२३
जयतिलक	प्रकृति विच्छेद प्रकरण	जबाहरलाल-	चौबीस तीर्यं कर पूजा
	₩° X		 (ह• ⊏००
पं० जबतिलक	चतुर्विशत स्तवन सं०		सम्मेदशिखर पूजा हि०
	•	<b>?</b> 3	27Y, 2005

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची	ग्रंसकार का नाम	***
	पत्र सं०		पत्र सं०
जसकीर्ति —	शीलोपदेश रत्नमाला प्रा०		लावएगे हि॰ १०७५
	860		विवेक <b>जकड़ी</b> हि०६८४
जसकीति	कथासग्रह हि० १०८६		१०१६, १०२३
	जिनवर स्तवन हि०		विनती हि००७६
	१०६१		होलीचन्त्रि स०४२०
जसबंतसिह—	मावाभूषमा हि० ५६५		होलोरेग्रुका पर्व मं० ४०८
	११६८, ११६३	पाण्डे जिनदास —	ग्रादित्य वन कथा हि०
बिनकोर्ति—	षट्त्रासामय स्तवन स०		११६३
_	७६३		चेतनगीत हि०६६२,
जिनचन्द	चौबोली लोलावती कथा		१०२७
	हि० ४३१		जम्बू स्वामी चौपई हि०
	विश्रम लील।वती चौपई		३२४, १०१५, १०४१,
	हि० ४८४		११०१, ११०६, ११४३,
जिनबन्द्राचार्य —	सिद्धान्तसार प्रा० ६३		११६७
जिनदत्त सूरि—	पदस्थापनाविधिम०		जागीगसा हि∙६२४.
	<b>११</b> ८=		Ext. 2022, 2023.
जिनदत्त सूरि-	विवेक विलास स० हि०		१०५६, १०६५, १११०,
	१६३, ६७६		११४४
पं० जिनदास गोधा -	– ग्रकृतिम चैत्यालय पूजा		दोहाबावनी हि०६५२
	स० द१२		धर्मतक गीत हि॰ ६५१.
	जम्बूढीप पूजाृस∙ ८१२		1053
	सुगुरु शतक हि० १०३ ५		प्रबोध बावनी हि० १०२०
पं० जिनदास	द्यनन्त जिन पूना स०		माली रासा हि०६४४,
गंगवाल	ە ئەن		११०२
	श्रनेकार्यमञ्जरीहि० ५३१		म्नीक्दर जयमाल हि०
	ग्राराघनासार टीका हि <b>∘</b>		50x. 606, 8805,
	٤٦		3888
	द्वादणानुत्रेक्षा हि०६६०	बह्य जिनदास	श्रजितन। परास हि॰
	धर्मोपदेश श्रावकाचार सं•	मह्य ।जनवाल	६३०, ११४७
	१२६, हि० १०४७		श्रास्टांग गम्यक्त्व कवा
	पाश्वंतायकथा हि०		हि० ४२४
	39.09		ब्रादिपुराखरास <b>हि</b> ०
	लंपक पचासिका हि॰		भारपुरास सम् २६७, ६३१
	x F • 9		440, 445

ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम
(बारुदत्त सेठ रास)		ग्रलोचना जयमाल हि०	
दशलकराक्या हि०		१८६, १०१६	
888' <b>6</b> 88\$		ग्रनन्तवत रास हि०	
दानफल रास हि॰ ६३४		११४३, ११४४, ११४७,	
द्वादशानुष्रेक्षा हि०६७२		११७०	
धन्यकुमार रास हि०		भ्रनस्तद्रत कथा हि०	
443		£8 <b>\$</b> \$	
घर्मं पंचविंशतिका प्रा०		ग्रविकासार ति०११३०	
१२२		ग्राकाशपचमी कथा हि०	
धर्मपरीक्तारास हि <i>०</i>		<b>१</b> १०७	
६३४, ११४७		ग्रठाईस मृत्रगुरास हि०	
नागकुमार राम हि०		6083	
६३६		कर्मवियाक रास हि०	
नागश्रीरास हि०११३७		६३२, ११३७	
निर्दोष सप्तमी वत पूजा		करकडुनो रास हि०६३२	
हि० ६४१		गुगास्थान चौपई हि०१४	
नेमीक्ष्वर रास हि॰ ६३७		गुरुजयमाल हि०७६५,	
पद्मपुरासा स०२७६		११४३, ११४६	
परमहंसरास हि॰ ६३७		गुरुपूजा हि०१०७७	
याण्डबपुरासा सं०२८७,		ग्यारह प्रतिमा विनती हि०	
₹8.Ř		११३७	
पागोगालगरास हि०		चाहदन प्रवय राग हि०	
११०७		<b>१</b> १४३	
पुष्पांजलिवत कथा हि०		चौरासी जाति जयमाल	
1943		हि० ११५२	
पूजाकथा हि०४६१		जम्बूस्वामीचरित्र स०	
वक चूल रास हि०६३०		३२३	
<b>बारहदत गीत</b> हि०		जम्बूस्वामीरास हि०	
6628		६३३, ११३८, ११४७	
भद्र <b>बाहु</b> रास हि॰ ६३६		जीवन्वर रास हि० ६३४	
भविष्यदस्तरास हि०		ज्येष्ट जिनवर विनती हि०	
3.63		exit	
भावना विनती हि० ६५२		समोकार रास हि० ४३६	

ग्रंथ सूर्वी पत्र संद	ग्रंथ नाम	प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूक्ती पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम
ग्र स० ३०६	हरिक्कापुरा		महायक्ष विद्याघर कथा	
, 3 os, 3 o	₹00,		हि० ४६६	
हि० ११४१	होली रास		मिथ्या दुक्कड हि० ६५१,	
668.			११३८, ११४४	
हि० १०६	सिज्भाय	जिनरंग	यक्षोधर रास डि०६३६,	
नी हि००३।	प्रकोध बावन	जिनरंग सूरि	१०२३, ११०७, ११४६	
हि० १०३	चउबीसा	जिनराज सूरि	रविव्रत कथाहि० ११६६	
ीपई हि	शालिभद्र व	"	रविवार प्रबंध हि० ४६६	
६५४, १७४	ξκ3,		शित्र भोजन रास हि०	
(069, ४८७	٤ , 9€		\$\$ CR	
टीका स०	सन पराटुक	क० जिनवस्त्रम	रामचद्र रास हि०६४०	
٤x		सूरि	राम रास हि०६४०	
न चरित्र हि०	गज सुकुमाल	जिनसूरि—	रामसीता राम हि॰	
₹ ?			१०२४	
य} म०६०	मदन पराज	जिनदेव सूरि	रोहिस्सी रास हिल्६४१	
हि० ७२	चौडालिया	जिनपाल—	विनती हि०११३४	
हिमा स	दीपावली म	जिनप्रमसूरि —	शास्त्रपूत्रा हि०१०५७	
53			श्रावकाचार गस हि. ६४२	
बन स्तोत्र टीर	चतुर्विणति वि	जिनप्रसमूरि	£88	
स॰ ७२	•	**	श्रीपाल राम हि॰ ६४२,	
गेत्र सं	पादवंजिनस्तं		<b>११</b> ३७	
৬३			श्रुत केवलि रास हि०	
गोत्र वृत्ति सं०	महाबीर स्तं		श्रीरणकरास हि०६४३	
ં હધ	•		सम्यक्तव राम हि०	
सं० ७	प्रदन शतक	जिनबल्लमसुरि	1888	
वन प्रा०	महाबीर स्त		सरस्वतीपूजाक्रयम⊓न हि. ११२६	
৩ ধ	•		११२० सुदर्भन रास हि० ६४८,	
पर टीका	बागभट्टालं क	जिनवर्द्धं न सुरि	86±0' 66 400'	
सं• ४६	•		सोलहकारसारास हि०	
हम हि	पादवंदेवस्तव	जिनलामसूरि —	सालहकारसा राम १६० ६४८, ११४३	
. છે			हनुमधरित्र सं०४१६	
	कवलचन्द्रावर	जिनसागर	हमुमंत राग हि० १४०,	
. 60		. ,	2377, 2280	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची यत्र सं०
जिनसागर—	ग्रनन्त कथा हि० ११६३,		पद हि॰ ११०८
14-141-14	375		पाक्ष्वनाथ की विनती हि॰
	छप्पय हि०११६६		3888
जिनमृख सूरि	कालकाचार्यप्रबन्ध हि०		२६०
3 "	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,		श्रीपाल रास हि॰ ६४२
जिनसूरि	<b>स्</b> पसेन राजाकशास <b>०</b>		पाइवंनाय की निशानी
"	Yes		हि० ७३४
	धनस्तवनगस हि॰		बावनी हि० ६८६
	9959	जिनहर्ष सूरि	रत्नावली न्यायवृत्ति सं०
जिनसेन	जिनसेन बोल हि० १०२५	जिनहंस मुनि—	दडक प्रकरम् प्रा०११३
	पचेन्द्रिय गीत हि १०२५	जिनेन्द्र भूषरा	चन्द्रप्रमपुरारण हि∙
जिनसेनाचार्य —	धादिपुरस्य स०⊏१४		२७४
	२६४, २६४, २६६	जिनेश्वरदास	नन्दीश्वार द्वीप पूजा सं०
	जिन पूजा विधि स०		= 4¢
	जिनसहस्रमाम स्तोत्र		चतुर्विशति पूजाहि०
	स० ७२७, ७२८, ७७२,	जिनोदय सुरि	११ <b>१३</b> हंसराज बच्छराज चौपई
	हर्भ्रह, १००० १००६,	ाजनावय पूर्र	हराज ब <i>ण्यराज</i> बारक हिरु ४०६, ६५४
	१०४१, १०६४, १०७३,	जोवन्धर	पूरा ठासावेलि हि॰
	१०७४, १०७८, १०८२,	-114.4	€67, <b>११३</b> ¥
	१०६६, १०६६, १११६,		(चौदहगुरास्थान बेलि)
	११२२, ११३९, ११४१,	जीवराराम	कृष्णजीका बारहमासा
	११६६ जैन विवाह पड़ति स०		हि० ६८०, ११२४,
	जन विवाह पदात सम् =१५, १११६		११२६
	निरु, १११६ त्रिलोक वर्णन स॰ ६११	व० जीवराज	परमात्मप्रकाश टीका हि० २०५, २०६
	महापूराण स॰ २६३	जोगीदास	२०२, <b>२०३</b> धर्मरासो हि० १८१
जिनसेनाचार्य	हरिवश पुरासा सं० ६०३		वाल सूख विलास हि०
जिनहर्ष —	भवन्तीकुमार रास हि०		मारताञ्चल सम्राह्म हि० १६७.
	5=4		१७६, ६७=
	द्यवन्ती सुकुमाल हि० ४२५		धन्यकृमारचरित्र भाषा
	स्वाध्याय ६८%		हि॰ देवस
	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपई		प्रीतिकर चरित्र हि॰
	हि० ६५१	•	३४७, १०३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंब सूची पत्र स०	प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रं <b>य सू</b> ची पत्र सं०
	भजन हि०	१०५१		(बलगालन व	ास) १०२४,
	मवदीपक मा	षाहि०		<b>?</b> !	३२, ११४३
		288		पूजाष्ट्रक स०	<b>८ ६</b> ७
	सम्यक्त्व कौम्	(दी भाषा		पोषहरास हि	० ६३⊏,
	हि० ४६५. १	έξ, ¥ξ <sub>0</sub> ,		६४१, ६५४,	११४४,
	88=, 88¥8	, ११६७		११४७, ११५	
	सुगुरुशतक हि	c3 \$ 63		बोस तीर्थं क	(पूजास०
जौहरी लाल—	बीस तीर्थकर	पूत्राहि०			११३६
		432		षट्कमंरास	
	विद्यमान बीस	विरहमान		श्रुतस्कय पूत्र	
	पूजाहि०	803		सप्तव्यसन च	दावल हि०
ज्ञानचन्द	ज्ञानासंव गद्य	टीकाहि•			६६५
		ग० २००		सरस्वती पूज	हि० ८७६
	परदेशी प्रतिबं	ोम हि०			66.85
		११८८		सरस्वती स्तु	न स॰ ७७४,
	सम्मेदशिखर	उत्राहि०			११०, ११४६
				स्तवन हि०	११०७
	सिहासन बनी		ज्ञानविभव सूरि	भावश्यकसूत्र	निर्युक्तिम ०
		٧o२			3
ज्ञान प्रमोद	बागभट्टालकार		ब० ज्ञानसागर	ष्मष्टाह्मिका व	
बाचकगरिग	•	્ પ્રદુહ			¥₹ Ę
म० ज्ञान मुख्या —	ग्रादिनाथ फागु			भनन्त <b>प्रतक्रया</b>	हिं •
		११७३		४२२, १०७	
	षादिनाथ त्रिन	तीहि•		ग्रनन्त चौदस	कथाहि०
		£=¥			१११७
	तत्वज्ञानतरंगिः	गी सं०		द्यायाडभूत रा	म हि०
	,	11. 1144			444
	दशलकीरा वती	धापन पुत्रा		इलायची कुम	र रास हि॰
		सं० ≒३०			<b>६३१</b>
	पंचकत्वागक प	हाग सं०		चतुर्विध दाम	कविस हि॰
		हे॰ ११८७			<b>4</b> =3
	पाणीगालन रा			दमलक्षराकथा	fg o
		३८, ६५१			११२३

प्रेंचकार का नाम ,	ग्रंथनाम ग्रथसूची पत्रस०	ग्रंथकार कानाम	गंथनाम ग्रंथसूकी पत्रसं०
	दशमीकवा हि॰ ११२३		त्रिलोक विधान पूत्रा हि॰
	निशन्याष्ट्रमी कथा हि०		
	११२३		दशलक्ष <b>रापू</b> जा <b>विधान</b>
	नेमिरात्रमति सवाद हि०		हि॰ द२द
	११३०		नदीण्वर पूजा हि॰ ६४४
	भक्तामरसिद्ध पूजाहि०		पचकल्यासम्बाह∙
	१११=		<b>5</b> 89
	भौनएक।दशोद्रत हि०		पचपरमेष्ठी पूजा हि०
	४६७		≂४२
	रक्षाबधन कथाहि०		प्रथमेरुपूजा हि०६५६
	8:0		,, ,, विघान हि∙
	स्त्तत्रयकथा हि०१११६,		<b>द</b> ६०
	११२३		बुद्धिप्रकाश हि०१४२
	लघुम्नपनिविधि सं०		रत्नत्रयपूजा हि० ६६७
	११६७		षोडशकारसापूजा मंडल
	षोडशकारमा व्रतोद्यापन		विधान हि० ११ ५
	स०६०७, ६१५		€ 53
	श्रावरण द्वादशीकथाहि०		सुदृष्टितरंगिरणी हि॰ १७७,
	६६६, ११२३		१२०६
	मुर्भापत प्रश्तोत्तरमाला	पं० टोडरमल	बात्मानुशासन माथा हि०
	स० ६६७		१८४, १६६, १८७, १८८,
	सूर्यत्रतोद्यापन पूजा सं०		१८६
	<b>e</b> 003		गोम्मटसार राजा१=
	हनुमान चरित्र हि० ४१६		त्रिलोकसारमाया राज०
<b>उवाला</b> प्रसाद	प्रखुम्नचरित्र भाषा हि०		६१६
बस्तावरसिह—	\$ <b>%</b> X		पुरुषार्थंसिद्धयुपाय माषा
टोकम—	चतुर्देशीकयाहि० १०३२		राज॰ १३४,१३५
	<i>2</i> <del>2</del> 3		मोक्षमागं प्रकाणक राज्
टेकचन्द	ज्ञानार्शय भाषा हि०		१५३
	२००		लब्धिसारभाषा हि०
	छहडाला हि०१६६		9389
	कर्मदहन युक्रा हि० ७८६		लब्धिसार क्षपगासार <b>भाषा</b>
	तीन लोक पूजाहि० ६१६		30 OFF

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रस	ग्रंथकारकानाम ग्रं	यनाम ग्रंथसूत्री यत्रस०
टोडरमल	दर्शन हि०१०५१	दं दिराज देशज — ज	यन सण तकाभरतास० ४४४
टोपरग	पद्मावती पूजा म० ५६१	•	लना हि०१००३
ठक्कुरसी	कलजूगरास हि०११७५	भ० तिलोकेन्द्रकोतिस	
<b>3</b> ····	कृपराषटपद हि०६=४		76Y
	नेमिनाय बेलि हि० १५३.	(जती)तुलसी प	लबाहा हि०१११६
	883		हि हि०१०११
	नेमिराजमति हि०६५४		एवं वरित प्रभ्रयंग
	पद हि०१६२,१८४		384
	पचेन्द्रिय बेलि हि० हध्र,	a ·	तंगवरित्र "३६३
•	€=¥. १0× . १0=E		मव जिन चरिउ
ठाकुर	गान्तिनाथ पुरागा हि०	"	885
-	300	त्रिभवनकीर्ति - जो	बन्बर राज हि० ११३६
डू गरसी	बावनी हि० ११०८		<b>१स्कथ पूजास</b> ० ६१३
डूंगरसोदास	यद वेशिक्सार हि०	•	नःसपचाशात हि०प०
	? o E X		
ड्रंगा धेर	श्रॅसिकचरित्र हि०	val	नित्यपंचासिका हि०
	११६७		११५३
डालुराम	भटाईडीप पुत्रा हि०	तीः	त चौबीसी पुत्रा प०
	200		८१६
	गुरूपदेश श्रावकाचार हि०	(f <del>s</del>	कालचत्रविमति पूजा)
	108	,	E7.
	चतुर्दशीकया हि०४३६	त्रिमल्ल (मट्ट) मुह	र्ने विदामिंग सं० ११७
	दशस्थासम्बस पूजा		गतरपिस्ती स०४ = २
	हि॰ ६२६		क्सोकी टीका स० ८०
	नदीस्बर पूजा हि॰ ६४४	त्रिलोकचन्त्र— पर	हि• <b>११</b> >७
	पंचपरमेष्ठीगुरुविल		त सक्साथ हि० १०६३
	हि॰ १०११		विवास द्वीप प्रशा हिं∘
	पंचपरमेष्ठी पुत्रा हि॰	41.1-10 114.11	460
	4 th	rie.	मेर पुजा हि॰ <sup>=६०</sup>
	पंचमेरपूजाहि॰ =ध्र		त तीर्थ कर पूजा हिं°
	सम्यक्त्व प्रकाश माथा		±28
	हिं• १७२	बागसिंह ठोल्या — विरे	क शतक हि॰ ६६४
aravit	बाबसी गावा   आ • ४१	•	।काशासक हि॰ २१६
were vit	काचना मान्य आने हर्	40	Led engals 16

प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	प्रंथ सूची पत्र स०	प्रथकार का नाम	गंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	समवणरण र	कौबीसी पाठ		शानदपंश	हि॰ ११६
	,	हि० ६२२		परमात्म पुर	ए हि॰ २०४
	मृबुद्धि प्रकाश	स हि॰ ६६७		विनती	हि० ११०५
दत्तलाल		हि॰ १११=		स्वरूपानंद	हि० २४७
मृनि दयाचन्द	सम्यक्त्व की	मुदी भाषा	दीप विजय	रिषभदेव क	ो लावगी हि.
3		हि० ४१=			6668
वयाराम	व्यभनाथ ल	ावरां। हि०	दुर्गदेव	षष्ठि सबत्स	री सं०५६८
	•	११५८	दुलीचन्द	ध।राचनासा	र भाषा हि०
बयासागर	धर्मदत्त चरिः	प्रहि•३३⊏	•		۶3
	वाबनी	हि॰ ६=६		कियाकोशः	
दयासिह गरिए	सग्रहग्रो सूत्र	भाषा			. १०४
•	5	ग० हि॰ ६६		षर्मपरीका	भाषा हि०
दर्शह	<b>अ</b> वडी	<b>हि</b> ० ६४१			. १२१
दशर्थं निगोत्या —	धमंपरीक्षाभ	गवा हि०		सभाषिताव	ती हि० ७००
		१२१	देवकरण	सम्मेदविला	
दादूदयाल—	सुमिरश	feo eeo	444.0		११५७
वामोदर—	सोमिचरिड	भ्रपभ्रंश	देवकीति	धाराधना प	जिकासं∘ ६३
		३३२	देवचन्द्र—	धर्मपरीक्षा	
वामोवर	शारङ्गधर सं	हिंता सं०	444.2	4.1.5.40	3XE
		१२०३	<b>ब</b> ० देवसन्द	विनती रिक्ष	विदेव धूलेव
दासद्वेत	भक्तिबोध	गुज ०११६७	W- 444.4		हि॰ ११५६
विगम्बर शिष्य	चैत्यासय वी	ोनती हि०	देवितलक —		रस्तोत्र वृत्ति
		७२४	दवातलक —	कल्यासमान	•
विनकर-	चन्द्र।की	हि० ६८१	-*		स० ७२०
दिलाराम पाटनी	व्रत विधान		र्दवदत्त दीक्षित—	-	सं० ४४३
(दोलतराम)		₹¥₹, £=६		सगर चरिः	
बीपचन्द	धनुभव प्रका			सम्मेद शिर	तर महात्म्य सं०
कासलीबाल-		?=?			€२६
मगत्तामाल <u> —</u>	धातमाव लोव			सुदर्शन चि	रत्रसं० ४१६
		, , <sub>0</sub> 0 १⊏६, ११७३		समतिनाय	पुरास हि॰
	भारती	हि० १०६७		3	30.0.0
		हि० ४१४,	वेबनन्दि	गर्भषडार	

	<sup>।। भा</sup> त्र वाम प्रथम् श्री प्रयकारका नाम प्रथमल प्रयस् पत्र सं०
	जैनेन्द्र व्याकरमा सं
	पद संग्रह दि्० ६६
	सिबिप्रिय स्तोत्र स० १०१२, १०६
	७६७, ७६८, ६८२, ६६४, पद्मनदिगच्छ की पट्टाबर्ल
	११२७ हि॰ ६४
	स्वप्नावली स० ११२७ विनती सम्रहहि० ६ sy लघुस्यभूस्तोत्र सं० ६७५
वेवमट्टाचार्य —	
	दशन विश्वाद प्रकरमा स० ६७६, ७४८ १९४ मास बहु का भगडा हि०
वेवप्रम सूरि	पाण्डवपुरासा सं २६७ - १०१२ १८८५
	३४५ वेवालाल — घटारह नाते की क्रमर हिन
देवमद्र सूरि देवराज	संबह्सी सूत्र प्रा० ६६ - ४२९
यपराज	मृगा मवाद हि० १४५ ववाचन्द - प्रागम सारोजार हिन
वेबसुन्दर	१८३ विवादास बोबीस तीर्थं कर एका जिल्
वेबसूरि	160 4444
	प्रदामन चरित्र वृत्ति स० <b>देवीदास</b> - राजनीति सबैया ति०
देवसेन	३५४ ६६३ प्राराधनासार प्रा० ६१ <b>बेबीनन्द</b> — प्रश्नासनी सं
	हिंदा हुन व नेसिया स्थापना सव प्रमुख
	२१६ ६६६, ६८३, १००६ वेबेन्त्र मुखराग संकः चीय कथा हि०
	तर्वसार का ०००
	११८३ १९८३
	दर्शनसार हा । १८०
	नयचक म० २५४ वयन्द्र (विकास सुत) यशोधर वरित्र हि० ३७६
	१० विष्या सूरि कमें विषाक सूत्र प्रा० १०
बाबहा—	मान संबद्ध प्रा० १४० व व संवत्त्व प्रा० ५ ७०
	कलियुग की विनती हिं उपा० देवेश्वर - रत्नकीत सं० ४८३
	१२७६ म <b>ं बेवेन्द्रको</b> र्ति — समयसार टीका सं॰ २२५ कायाजीव संबद गीत हि॰ (भे <b>॰ जगस्कोर्ति के शिष्टा</b> )
	कायाजीव संबाद गीत हिं (भें क जमस्कीरित के शिष्य) (१४४ भू हेकेडह क्रिक्ट
	चीबीस तीर्थं कर बिजारी
	C
	१६० ७२४, वयश्यकाल झाकार मुद्धि विद्यान स० १००५ ७८६

ग्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	ग्रं <b>य सूची</b> पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रं <b>थ सूर्या</b> पत्र स०
	भादित्य जि	न पूजास०		चतुरचितार	एगे हिं•
		७⊏६		-	१०५
	कल्यारा मनि	दर पूजास०		चौबीस दण्ड	कहि०१०७,
		€3€		8	११४, ११२६
	त्रेपनिकयावर	न पूजासं०		जम्बूस्वामी	कथाहि•
		¤₹\$			₹₹●
	द्वादशस्त्र पूर			जीवन्धर च	-
		に身ち			<b>გ</b> გο
	पचपरमण्टी	.,		त्रेपनिकयावि	षि हि•
	_	⊏५१			११४२
		जासं० ८ ४		पद्मपुराग् भ	तवाहि•
	रत्नत्रय वत				२८०
		४६८		परमात्म प्रव	हाका जासा
		ास० ह€			हि० २०७
		।शासं०४७७		######################################	याकोश द्वि०
	सिद्ध चक्र पू	जास० १११=		-	थाकाश ।द्वु० :, ४५६, ४६०
	<b>क्षोक्षत्रकारम</b>	जयम।ल स०			•
	01464110	१३६		बसुनाद श्रा	वकाचार भाषा
बौर्ग्यसिह—	कातत्र रूपम	स्तास ०			हि॰ १६१
•		* 8 8		श्रे शिकच	रित्र भाषा हि०
बौलत झौसेरी	ऋषि मंडल				४०५
		हि॰ ७८५		सकल प्रतिक	शेष हि०
	श्रे शिकचि				७६३
		Rox		हरिवश पुर	
दीलतराम	mor work	ोह <b>० १</b> ०५६			३०४, ३०४
कासलीबाल —		ाहण (०४८ रहसडीहि०	दौलतराम पत्लीव	स्त छहढाला	हि० १६६,
	<b>अ</b> च्यारम <b>या</b>	१६० १६०			<b>१</b> १३२
	<b>ग्रादि</b> पूराश	-		दौलत दिल	।स हि॰ ६६०
	<b>म</b> तवपुरास्त	मापा १६७ २६७		पद	हि॰ ११३२
	२६०	. २६६, २७०		बारहमासा	हि॰ ११२६
	िकवाकोश			सिद्धक्षेत्र पू	
		200			£\$?

वकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूकी पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ययनाम प्रंथसूर्व पत्रसं
नतराय	ग्रक्षर बावनी हि॰		पुष्पांजलि पूजाहि∙ ≃६९
	१०७८, १११६		पूजासग्रह हि० ५५
	स्रष्टाह्मिका पूजाहि०		प्रतिमा बहोत्तरी हि॰
	७६५ ६५६		११४, ११६
	<b>भागम विलास</b> हि० ६५८		मोक्ष पच्चीसी हि॰
	द्यारती पचमेक हि०		808
	=७६, १११६		रत्नत्रयपूत्राहि० ५६१
	उपदेश शतक दि॰		=E0, 202
	6088		वैराग्य पोडम हि॰ १०६।
	कविसिंह संवाद हि०		सबोध श्रक्षर बावनी हिं
	₹0.83		*o*
	चर्चाशतक हि० २३,		सबोध पत्रासिका हि॰
	२४, २४, १०११, १०१३		१७२, ११०
	१०५१		समाधिमरण भाषा हि०
	छहदाला हि०१०५१		२३⊏, ११२
	ज्ञान दशक हि० १०४३		सम्भेदशिखर पूजा हि०
	तत्वसार भाषा हि०		£ ?'
	१०४३, १०७२, १०८२		स्वयंभूस्तीत्र माणा हि०
	दर्शन शतक हि० १०४३		יטט
	दशलक्षरण पूजाहि०	धनंजय कवि	धनंत्रय नाम माला सं०
	= १=, == १	4144 414	प्रकृत, १०११, १०१
	दणस्थान चौबीमी हि०		राधव पाण्डवीय सं०
	8088		34
	देवशास्त्र गुरु पूजाहि०		लिगानुशासन (शब्द संकी
	महे४ -		स्वस्य) स॰ ५३
	धर्मपच्चीसी हि०		विवायहार स्तीत्र सं०
	१०४३, १०६२		७४८, ७७१, ७७३, ६४३
	धर्मविकास हि॰ ६११,		१०२२, १०३४, ११२
	६६२, १०४३ ,१०६२		
	पद संग्रह हि॰ १०७३	बनपति	ग्ररिप्टाध्याय स० १११
	पक्षमेह पूजा हि॰ ५५६,	धनपाल	कायाझेत्र गांत हि० १०२
	पाश्वंनाथ स्तोत्र हि०	धनपाल	भविसयसकहा अप०
	<b>.</b>		४६४, ६४

प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची पत्र सं०
	श्रुतपंचमीकवाश्रप०	ब० धर्मदास	बटीना हि॰ १०८६
	१२०३		सुकुमाल स्वामी छंद हि॰
	(भविसय तका दूसरा नाम)	_	χοχ
বদালাল —	वर्वासार हि० ३०	भ० धर्मदास	गुरावेलि हि∙ ६४२
	सामायिकपाठ मावा हि०	पॅ० घर्मदेव	यागमडल विधान सं०
	२४४		£6.8
धन्यन्तरि	योगशतक स० ५८३		बृहद शांति विद्यान सं०
धनेश्वर सूरि	शत्रुं जय तीर्यमहात्म्य स०		<b>€</b> 0≒
	१२०२		शान्तिपाठ सं० ६१०
म० धर्मकीति	पद्म <b>पुराग्।</b> स० २८०		शान्तिक विधान स०
	सम्यक्तव कीमुदी स०		033,0\$3
	AfA		सहस्रमुण पूजास० ६२६
	सिद्धचक पूजा स० ६३३	वर्मभूषरा	न्याय दीपिका सं० २४६
धर्मकोति	चतुर्विशतिजिन षट् पद	धर्मभूषाय —	मनोरथ गीत माला हि०
	बबस्तीत्र हि०१००८		६७३ रत्नत्रय व्रतोधापन सं०
वं ० धर्मकुमार	श∣लिभद्रचरित्र सं०	वर्मसूषरा —	
	93₽		X zo \$
धर्मचन्द्र	गौतमस्वामी वरित्र स०		सहस्रनामपूजासं• ६३० १११८
	385	info	रराद सुकुमालस्वामीरास हि∙
	नेमिनाव विनती हि०	धर्मरुचि	नुकुनालस्वामारात हिण् ११४०
	११२६		
	सबोध प्रचासिका हि०	धर्मसाग्रर—	ग्राराधनाचतुष्पदी हि० ४३०
	१०२१	धर्मासह—	मल्लिनाच स्तवन हि॰
	सहस्रताम पूजासं० ६३०	441116	942
वर्मवास	धर्मोपदेश श्रावकाचार		सर्वया हि• १११५
	हि० १२६,	घवलचन्द्र	चौबीस दण्डक प्रा० १०७
	£033	घीरजराम	चिकित्सासार सं० ५७७
धर्मवास	विदग्धमुखमङन सं०	घेल्ह	पंचेन्द्रिय वेसि हि० ११५१
	२६०, १२०१		विशालकीति गीत हि०
	शब्दकोश सं• ५३६		₹₹₹
बर्मवास गरिए	उपदेशरत्नमाला प्रा०		बुद्धि प्रकाश हि॰ ९७२
2.2	६४, ६४७, ११७४	साला न <b>वमल</b>	वर्ममण्डत मावा हि॰
वाण्डे बर्मवास	शनन्त दत पूजासं∙ ७⊏२	**	<b>१</b> २२

वंशकार का नाम	ग्रंथ माम ग्रंथ सूची यत्र स०	प्रंथकार का नाम	प्रंथनाम ग्रं <b>यसू</b> त्री पत्रसं
नवमल दोसी—	महिपाल वरित्र मापा		भक्तामरस्तोत्र पूजा हि॰
	हि॰ ३६६		= 8
बमल बिलाला—	गुर्णविलास हि॰	नग्दराम सौगार्श	—श्रावक प्रतिज्ञा हि॰
	\$ £ ¥ , \$ \$ < \$	-	
	जीवन्घर चरित्र हि॰	नन्दि गरित	भगवती धाराघनाटीक
	0 \$ \$	•	प्रा∘स०
	जैनवद्रीकी चिट्ठी हि०		£5, \$4
	6 0.8.8	नन्दि गुरू	प्रायक्तिन समृज्यय वृति
	नागकुमार चरित्र हि०	34	स० १४२, २१
	₹४१	नन्दितादय —	नन्दीयछद प्रा० ५६।
	नेमिनायजी का काहला	नन्दिषेशा	म्रजितशाति स्तवन प्रा०
	Eo SORX		७१०, हम
	पदसग्रहहि० १०४५	नन्त्रमल	रत्नसम्रह हि० ६७
	फुटकर दोहाहि० १०४४	नयचन्द सूरि	सबोध रसायगा हि॰
	मक्तामरस्तोत्र कथा	and Mark	8.83
	(भाषामहिल) हि∙	नयनस्यि	मृदसरग चरित धपन्न न
	४६४, ७०४		861
	रत्नत्रय जयमाला भाषा	नयनसुख	ग्रादिनाथ मगल हि॰
	हि॰ ६६		45
	वीर विलास हि॰ ६६२	नयनमुख	राम विनोद हि० ५०
	समवशरण मगल हि०	•	वैद्यमनोस्सव हि० ५०८
	७२६, १०४४		£ € ₹ ? • • •
	सिद्धचकवत कथाहि०		११६:
	<b>५०</b> २	नयतसुग्दर	शत्रुजय उद्धार हि॰
	सिद्धांतस।र दीपक हि०	nang.ac	Fol
	≂४, १०४२		जम्बुस्थामीरास हि॰ ६३
TT	सुदर्शन सेठ कथा हि॰	नयविमल—	
	173	नरपति	मरपति जयसर्या स॰ १५०
व कवि	तस्य बलीसी स॰ ६८७	नरसिंहपाण्डे —	नैवधीय प्रकाश सं० ३०३
खनवास— '	चेतन गीत हि॰ १०२७	पं० नरसेम	श्रीपाल चरित्र ग्रपभंश
:	नाममाल। हि॰ ५३८		7.5
वराम	कलि व्यवद्वार पण्डीशी	मरेन्द्र	दशकाक्षासिक कथा स०
	हि॰ १००३	-	£6¥

प्रंथकार का नाम	षंथ नाम प्रं <b>य सू</b> ची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	यंत्र नास प्रंथ सूची पत्र सं०
षा० नरेन्द्रकीति —	गुरुस्तवन हि० ११०८		कत्यामा मन्दिर <b>स्तोतः</b>
	चन्द्रप्रम स्वामिनो विवाह		वृत्तिस० ७२०
	(राज०) ४३७		विषःपहार स्तोत्र टीका
	द्रोपदीकील गरारास		3 re • 15
	(राज॰) ६३४	नागराज	पिगलबास्य पा० ५६४
	सगर प्रबन्ध हि० ४२१	नागराज	द्यानामा मासी हि०
नरेन्द्रसेन —	प्रमास प्रमेयकलिका स०		११५१
	₹.₹.€	नागराज	भावणतक सं० १४७,
<b>प्रा</b> ० नरेन्द्रसेन — प्र			७४१, ११६३
	(पण्डिताचार्य) सिद्धान्तमार	नागरीदास	कविल हि॰ १०६६
	सग्रह स० ८७	पं० नाथु	पद हि० ११०८
	सम्यक् चरित्र पूजा स०	<b>इ</b> ० नायु	न्मजी की डोरी हि॰
	e ko, 80% 3		१०६२
	क्षमावनी पूजा सं०		पारसनाथ की सहेसी हि०
	११५२		373
	यचनी व्रतोद्यापन पूजा	नायुराम	रंसायन काव्य सं० ३८२
	स० ६५६	नाथूराम कावस्थ- व्योतिष	
	रत्नत्रय विभान पूजा सं०		¥8'9
	११३८, ११६६	नाथुराम दोसी	चर्चान्नतक टीका हि० २७
नस्ह—	पडितगृगाप्रकाश हि० १०८६		समाधितन्त्र भाषा हि॰
नवरंग	परमहस सबोध चरित्र		२३८
14.1	म० ३४४		सुकुमालचरित्र हि०४१३
नवलराम —	बद्धंमानपुरास भाषा २६८	नाथूराम लमेवू —	जम्बू स्वामी चरित्र हि॰
नवलशाह	बर्द्धमानपुराश हि०		₹ <b>?</b> ¥
	₹8 <b>\$</b>	नारचंद्र	नारचन्द्रज्योतिष सं०
नवल	जैन पच्चीसी हि० १०७७		४४०, ११८६
	यद हि० १०४७		ज्योतिषसारस० ५४८
	बारह भावना हि० १०७८	नारद	पचदशाक्षर सं० ४५१
	भजन हि॰ १०५१	पंडिताचार्यं नाराया	ग-पारिज≀त हरण सं∘
नवलराम	सरबंगसार सत विचार		388
	हि० २४६	नारायस—	धनन्तवतीसायन सं० ७८३
नागवन्त्र सूरि	एकीभाव स्तीत वृत्ति सं०	,	ब्धमदेव स्तवन हि॰
	७१४		७६०

प्रथकार का साम		र सूची असं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम प्रंथसूची पत्रसंक
नारायश—	चमत्कार चिन्तामरि	संगं•		धर्मीपदेश रत्नगावा प्रा०
		***		<b>१</b> २५
	थमं प्रवृत्ति स •	११८५	मा० नेसिचन्त्र—	सूर्वप्रकाश स० १७६
<b>इ</b> ० नारायस ~-	मायागीत हि॰	6688	पं० नेमिसन्द्र	<b>ध</b> ण्टाह्नि <b>का</b> व <b>रोग्रा</b> पन
नारायस मृति	जीमदात नासिका	नयन-		प्रजाप ०६ महरू
	कर्ण सवाद हि॰	११८२		कमेपकृतिस० १६०
नारायखदास	छदमार हि०	११४६		विलोकसार पूजा हि०
		११६८		तीनलाक पूजाहि० ६१६
	भाषाभूषस्य टीका वि	g o	20 0	E < {
		१०१५	नेमिचन्द्र गरिए	त्रैलोक्यमार टोका गं० ६१४
निहाल चन्द	नयचक भाषा हि०	211	नेमिचन्द्राचार्य	ग्राश्रद विभयी प्राः ३
	ब्रह्मबाबनी हि॰	683	नानचन्द्राचाय	कालवातम्यायाः २ इक्कीस्र ठारणाः प्रकाशम
नित्यनाथ सिद्ध	रसरस्नाकर स	808		इत्तरसाठःसामकस्या प्री० ४
नित्यविजय	समयसार कलशाटी	<b>4</b> 51		
	ĦΦ	२२२		
नीलकण्ड	वातक स॰	8.88		गुरमस्यान मार्गरमा बर्गन
	साजिक प्रत्थ स	8.8.8		মাণ १४
	नीसकण्ड ज्योतिष स			गोम्मटसार प्रा० १४, १७ गोम्मटसार सहस्टि प्रा०
		44.8		गाम्भदमार सहारु प्राव २१
	वर्षतस्त्र स ०	<b>143</b>		चौदहवृग् स्थान वर्णन
नुर	नूर की सकुनावली			बौबीस ठासाचर्चा प्रा०
		\$ 18		श्रे श्र
नेशियन्द—	राधवपाण्डवीय टीक			\$¥, \$X, \$000
	म ०	342		त्रिभंगीसार प्रा० ६०, ६१
इ० नेमचन्द्र		७२४		त्रिलोक्तमार प्रा० ६१२,
** 11/4/4	मादिन थ स्तवन हि			£8x, £8x
		£= ?		₹000
नेमिचन्द्र	प्रीत्यंकर चौपई हि			ब्रव्य संबह् प्रा॰ ६२, ६३,
4144.2	,			६४, १०१४, १०८०
	र राजा चन्द की क्या	•¥₹		पंचसंब्रह प्रा॰ ७१
		•		मावत्रिमंगी प्रा० ७७,
नेमियना सम्बारी		•85		\$ \$ 4 8 5
नानवन्त्र संबद्धारा				मार्गसा सत्तात्रमंगी मा॰
	प्रा॰ सं ०	ŧχ		95

पंच एवं प्रंचकार	]	उप ग्रंथनाम ग्रंथसूची
वंचकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूत्री ग्रंथकारका	पत्र सं०
I MANY	पत्र सं०	पट्मनंदि श्रावकाचार सं∻
	विशेषसत्तात्रिभगी प्रा०	843
	50	क्रानसार प्रा∙ ६६४
	वस्ठीणनक प्रा ७६३	धर्मापदेणामृत स॰ १७६
o नेशिदल	भ्रादित्यवार क्याहि०	बर्ढमात वरित्र सं०
हुठ मानवरा-	845	इद६, ४७७
	धाराधनाकयाकोश	धर्मरसायन प्रा० १२३
	म० ६३० पद्मनंदि-	по
	कथाकोश म० ४३२ २० पद्मन	, ४२१, ४३४
	धस्यकुमार चरित्र म०	कह्माष्ट्रक स०७१६
	३३४	<sub>जिनवर</sub> दर्शन स्तवन स <b>॰</b>
	धर्मापदेश श्रावकाच।र सं०	944
	<b>१</b> २४	जिनरात्रिवृत महारम्य
	नेमिजिन चरित्र स०३४२	सं० ४४६
	प्रीतिकर चिश्वस०३५७	पार्श्वनाथ स्तीत्र सं०
	गत्रिभोजन कथास० ४७१	७३४, ११२७
		मावना चौबीसी स॰ १६४
		<sub>रत्नत्रय</sub> पूजासं० ८६६
	सुदर्शन चरित्र स० ४१६	रत्नत्रय विधान कथा स॰ ४६८
क० नेमिदास	. विज्यमद्र क्षेत्रपालगीत दिक १२०१	
		लघुणातिक पूजा सं० ६०२
न्यामतस्रो—	ग्रजीसंमजरी हि० ५७३	वीतराग स्तवन स॰ ६६४,
पतजिल-	पतजनि महाभाष्य सं०	११२४
*******	४१६	वृषभ स्तोत्र सं० ७६०
पदमराज	क्रमयकुमार प्रवध हि०	र्णातनाच स्तवन स <b>०</b> ७६२
पद न राज	*51	
पद्मकोति	पार्श्वपुरासा श्रपभ्रश	2 Fra 9 049
	<sup>२६०</sup> वैद्यप	द्मनाम- ग्रजीएं मजरी हि॰ १०७७
faas t	शि— जम्बूस्वामी भ्रध्ययन प्रा॰ पद्सन ४४०	ाच्य <b>कार्यस्थ</b> — यशोधर चा त ते पर
पद्भातलक व		व्यक्रेड लक्ष्मा स्वान प
٠.	उपासक संस्कार सं०६७	
पत्मनंति-	पद्मनदि पर्वविमति सं०	१०७४, १०७८, <b>११</b> २
	१२८, १२९, १३०, १३१	पाश्वंनाथ स्तोत्र स० ७६ ६४
	१७६	

ग्रंथकार का नाम		सूची । स०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंचनाम ग्रंचसूची पत्रस०
पद्मप्रभमल	नियमसार टीकास०	190		सद्भाषितावति हि० ६१४
षारिवेव				समाधिशतक हि॰ २४०
पड्मप्रम सूरि	भुवनदीयक स०	yyэ,	संघी पन्नालाल—	विद्वजनबोधक हि०१६३
, "	=	133	(दूनी बाला)	<b>१</b> २०२
प० पर्मरंग	गमविनोद हि०१	085		समवणरसापूजा हि०
पद्मराज —	यशोधर चरित्र म०	३७३		885
पर्वमिवजय -	शोलप्रकास रास	हि •		मरम्बती पूजाहि० ६२८
•		६४१	परम विद्यार।ज—	वृत्दसित्ताम० ५६४
पद्मसुन्दर	चारकषाय सज्भाय	Fo	परमानन्द	ध्वरित हि०१००१
` •		338	परमानन्द जौहरी-	- चेतन विलास हि०६४६
पर्मा —	श्रावकाचार राम	हि०	परशुराम	प्रतिष्ठापाठ टीका स०
•		e 7 9	•	555
प।इया पन्नालाल	ग्राचारसार बचनिका	हि ०	पि मल्ल	श्रीपाल चरित्र हि० ३१५,
चौबरी		83		\$84, \$80, \$C=,
	ग्र।राधनासार वचनि	का		१०९३
	हि •	<b>६</b> २	परमहंस	मुहर्नमुक्तावलीस० ५५ ५
	उत्तरपुरास भाषा	हि०	परिवाजका वार्यः	सारम्बन प्रकिया स०
	•	२७४		<b>१</b> २०५
	तेरहपथम्बडन	fgo	प्रवंत धर्मार्थी	द्रव्य संग्रह भाषा
		222		६६, १०४१
		88		समाधितत्र सावा गु०
	•	हि०		२३४, २३४, २३६, २३७
		१२४	वल्हणु	जय जय स्वामी पाथडी
	नवनस्य गाया भाषा		. •	हि० १०८६
		<b>\$</b> =	पास्त्रिन	श्रतुपाठसं० ५१४
	<b>स्यायदीपिका भाषा</b>	हि०		पाणिनि व्याकरण सं •
		२४६		xex
		हि०		प्राचीन व्याकरण सं•
	~	₹€0		५१७
	रत्नकरण्ड श्रावकाचार		पाण्डकराम	परमात्म प्रकाश टीका स॰
		१५६		२०४
	वसूनंदि आवकाचार		पात्रकेशरी	पात्रकेशरीस्तोत्र सं०
*	हि॰			480

प्रंथकार कानाम	ग्रंघनाम ग्रंथसूची यत्रस०	प्रथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रस०
पारसदत्त—	विदरभी चौपई हि० ४५५	पुष्पदस्ताचार्य	महिम्नस्तोत्र स० ७५४,
पारसदास निगोत्या	— ज्ञानसूर्योदय नाटक हि०	•	११६४
	Ęox	पूज्यपाद	इष्टोपदेश सं ३ ६३, १६०,
	पद सग्रह हि० ६६३, ८१८		११४४, ११७३
	पारम विनास हि॰ ६६=		उपासकाचार स० ६६
	सार चौबीमी हि॰ १७४		समाधितत्र सं०२३।
पाल	बुद्धिप्रकाश रास हि०		समाधिशतक स०२३६
	६८०		सर्वार्थसिद्धि मं० ८१,
पास कवि—	पार्थ्वनाथ स्तुति सः ७३४		<i>६ ६</i> इ
पासचन्द सूरि	द्यादिनाथास्त्रवन हि०	पूनो	मेघकुमार गीत हि० ६७२
	P.W.5		६८४. १०२६, १०५४,
	श्रावकविचार च उर्ण्ड हि०		<b>१</b> ०६२
_•	१०३७	श्राचार्य पूर्णदेव	यणोघर चरिउ सं०३७३
पुंजराज	माग्स्वत टीका स० ५२१	मुत्न पूर्णभद्र —	सुकुमाल चरित्र ग्रापभ्रांश
पुन्यकीति	पुण्यमार चौपई हि० ४६३	3. 40	888
युष्यरतनमुनि	नेमिनाथ रास हि० ६३६, ६०४	पृथ्वीराज	वृष्ण्यक्षिमणी वेलि हि
	यादवरास हि०६४६	2	११७३
पुण्यलाभ	पोषहगीत हि०७३५	मृनि पोर्मासह	ज्ञानसार <b>प्रा</b> ०४
पुण्यसागर—	<b>ग</b> जना सुन्दरी च उपई हि.०	वोसह पाण्डे—	दिगम्बरी देव पूजा हिल
3.4	368		9041
	प्रश्नवरिक्षणतक काव्य	पौडरीक	शल्दालंकार दीपक संब
	टोकास० ३५६	रामेश्वर	£00
	सुबाहुचरित्र हि०४१७	प्रकाशचन्द	सिद्धक्षेत्र पूजा हि० ६३ व
पुरुषोत्तमदेव	त्रिकाण्डकोश स० ५३६	प्रतापकोति—	श्रावक।चार हि० ११३१
पुडपदन्त	भ्रादिपुरास अपभ्राग २६६	महाराजा सवाई	श्रमृतसागर हि॰
3	उत्तरपुरासा भ्रपभ्रम	•	•
	२७२	प्रतापतिह—	Xv:
	जसहर चरिउ धपभ्राश		नीतिशतक हि० ६५
	₹₹		भतृंहरि शतक भाषाहिः
	गावकुमार चरिउ प्रपन्न श		€ €:
	<b>३</b> ३२		ः गुंगार मंजरी हि० ६%।
	महापुगराभापञ्चण २६४	प्रतिबोध	समयसार प्रकरण प्रा
	६७१		77

ग्रंथकार का नाम		ष सूची पत्र सं०	प्रथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
प्रभंजन गुरु—	यशोधर चरित्र पं	ीठ <b>वष</b>	प्रमाचन्द्र —	चितामिता पादवंनाय
	₹	रं० ३७२		विनती हि०६५२
प्रमाकर सेन	प्रतिष्ठा पाठ स	90 255		महाबीर विनती हि०
प्रभाचान्द्र —	बात्मानुशासन सं	० १८४,		११६१
	•	१८५		२१३
	ग्राराधनासार कर	या प्रबंध	प्रहलाद —	पद्मनन्दि महाकाव्य टीवा
	Ŧ	0 £ 8 0	-	भं १४४
	उपासकाध्ययन म	११३७	प्रहलाद	म्बरोदय हि०५०२
	कियाकनाप टीक	ा म•	प्रेमचंद—	गोलहमती की मिल्काय
		۾ ج		हि० १०६=
	द्रव्यसग्रह टीका	स० ६४	पं० फतेहलाल	जैनविवाहविधि हि०
	पंचकत्यासाक पूजा		vg	3999
	- "	569	बकतराम साह	धर्मबृद्धिमन्त्रीकचा हिल
	प्रमोक्षा टिप्पस्	r		840
	घपअ श	***		पद सग्रह हि० ११४५
	प्रतिक्रमश् टीकास	रं० २०६		बुद्धि विलास हि०१४३
	प्रवचनसार टीका	म०		551
		२१०		मिथ्यात्व खडन हिं
	यजोधरचरित्र टिप्पस			१४६, ६०७, ६४४
	स	१८६ को		चोबीस तीर्थं कर पूजा हिं
	रस्तवय कथा स	० ४६८	बस्तावर लाल-	200, \$\$3
	विचापहारस्तीत्र ट	ोका	F	धाराबना कथ कोश हि
	सं	ं ७५६	बस्तावर सिंह	
	श्रादकाचार स	¥33 o	रतन लाल	85
	समयसार वृत्ति स	• २२४	बनारसीदास	म्रध्य त्मपैडी हि॰ १०११
	समाधिशनक टीव	ता संक		श्रद्धात्म बलीसी हि
		580		5.93
	स्वयंभूस्तोत्र टीका	स•		ग्रनित्य पंचासिका हि
		300		१०४१
व॰ प्रमाचन्द्र	तत्वार्थरत्तप्रभाकर	τ		कार्म खतीसी हि० ६४।
५० प्रनासम्बर्भ (हेमकीति के शिष्य)		to V?		कमें प्रकृति हि॰ ६५३
	। रतकश्च्य श्रा <del>व</del> क			कर्मविशक हि॰ म
प्रमाचन्द		iraie io EXE		१०१४

ग्रंथकार कानाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र स०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	प्रंच सूची
	a sama a fe	पत्र स० स्तोत्र भाषा			पत्र सं०
		र क्लान नावा ७१६, ७३३,		साधु बदना	हि० ७६६,
		£50, \$0 \$8.			<b>=</b> 6%
		EX. 2008.			ए। माथा हि॰
		२ <b>व.</b> १०७४, २०, ११:२.		<b>₹₹₹, ₹</b> ₹	७, ११४४,
	1064, 51	₹₽, {{·⊀, {१४≤			११६७
	कविस हि०	€४ <b>८</b>		सूक्ति मुक्तावः	
	जिनसहस्रताम		बंभीदास—	रोहिस्री वत	कथा हि०
	गाया हि <i>०</i> १				<b>११</b> २३
			बंसीधर—	द्रव्य सम्रहम	षा टीका
	ज्ञान पच्चीमी			राज०	€0, ₹08€
		२०, ११४५	बलदेव पाटनी	मक्तिमाल पद	हि० १०६६
	तेरहकाटिया		बलिमद्र	पद	हि० १०४८
		398	बहुमुनि	सम्मायिक पार	5 स०२४३
	वमं पच्चीसी	हि॰ १०७६	बारग	कलियुग चरिः	म हि०
	नाममाला	हि० ५३६	_		१००२
	निमित्त उपादा	न हि०	कवि बालक	सीताचरित्र	हि॰ १०३६,
		8058	(रामचन्द्र)		2004
	पद हि० ८	७५, १०६४	बालकृष्ण त्रिपाठी -	- प्रशस्ति काशिः	का सं०
	बनारसी विला	स हि०			1960
		α	बालनन्द	राजुल पच्चीसं	ते हि॰ ६५६
	१० <b>५२, ११३</b>			श्रुतस्कच पूजा	
	बावनी	हि० ६४६			888
		हिल् १०४१	बालयुकुःद	वर्गकुडलिया	
				राजुल छत्तीसी	
	रत्नत्रसंपूजा!			•	११६६
	समयसार नाटक	•	बिरधीचन्द	मन्दी इवर द्वीप	
	775, 776				a 16.a #R£
	२३१, २३२	, २३३,	बिहारीदास	पद हि०	₹0€€
	5 28' ER6	, ६६२,	बिहारी लाल		
	हत्र, हहर		6.0.014	बिहारी सतसई	ाह. ६२ <b>६</b> ,
	1018, 101	, १०२२		\$007, \$03	
	₹03₹, ₹0¥		बुधवन्द		११६=
	१०४२, १०७२ ११०६, ११४	, {{0},	4444	सनुसारी सक्त	
	110	4 1140			9₹€

प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूर्च पत्रस		ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं
बुधजन	इष्ट छत्तीमी हि०६३		प्रश्नोत्तर स्त्नमाला संब
•	8 8 3		£ tt c
	छहढाला हि०१६६		प्रक्तीलरोपसकाचार हि
	111		१४३, १४०
	तत्वार्थवीध हि० ४२		बचनकोश हि० ५३३
	· दर्शनपश्चीमी हि० ११२८		<b>ৰা</b> বৰি দিও १৫২৭
	पचकत्यास्यक पूजा हि	. बूचराज	चेतनपुद्गलधमाल हि
	280	1	१०८१, ११८
	पचपनमेकी पूजा हि०		पद हि० १६२, १६४
	ε <b>ξ</b> ξ		१०८
	पचास्तिकाय भपा		सदनजुङभ (१०१८)
	fe o sy		१०६
	पद हि०१०४८,१०५		संतोष जयनिलक हि
	परमात्मप्रकाश भाषा		€:3
	Re ≥of	वं अलमुपति	प्रबोध चन्द्रिकास० ५१०
	बुधजन विलास हि० ६६:		3 9 9
	बुधजन सत्तसई हि० ६६०		नेमीश्वररास हि०१०८
	₹ v a.	;	मनकरहारास हि
	योगेन्दुमार ठि०२१		<b>†</b> 05
	सदोध पच. निका हि		पद्म हि०१११
	१०५	W 77 27	द्रव्यसद्ग्रह वृत्ति म०६
	सम्मेदशिस्तरपूता हि। ६२!		परमात्मप्रकाम टीका
	सिद्धभूमिका उद्यापन	•	स० २०
	हि० १३:	, ब्रह्मभोहन	बुषभदेव गीत हि०१२०
<b>बुधटोडर</b> —	क्षेत्रपालपुत्रा हि		त्रिवर्णाचारि स०११
acie.	वानगण प्रका हि		
en mas	१८९ न्हावाण पाठ भाषा हि	` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` `	लब्सिद्धान्त कीमुदी
वुध मोहन	रहायसः याठ सामा । १३: ६३:	•	सं• ४१
व्धराव	कविस हि० १००		समुजाकत टीका सं० ५१
नुषलाल	चरचा बागठ हि० ११७		<b>४</b> ६
वृषसेन	सम्यग्दर्शन सं ० ६६		वट् पंचाशिकासं० ५६
नुनराः बुलाकीदास—	पाण्डव पुरासा हि॰ २०६		कल्पसूत्र प्रा॰ १
2 4.1.4 tt	रवह १०७		2 M

ग्रम्ब एवं प्र'यकार			[ १३३x
प्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रं <b>थ सू</b> ची पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंचनाम ग्रंथस् <b>जी</b> पत्रसं०
	नवग्रहस्तोत्रस० ७३१		ज्ञानसूर्योदय नाटक भाषा
	नैमिलिक णास्त्र स०		ंं हि० ६०४
	५ ५ १		धर्मोपदेशसिद्धांतरत्नमासा
	भद्रबाहु महिता स० ५५६		हि० १२६
मद्रसेन	चन्द्रनमलयागिरी चौपर्ड		नेमिपुरासा मावा हि॰
	हि० ४३७, ११६२		२७७
मरतदास	णलाकापुरुषनाम निर्माय		पद हि॰ १०४८, १०५३
	हि० १६४	भागीरय कायस्य —	योगातिसार हि॰ ५६०
मर्जुहरि	मतूं हरि शतकस० ६६१	आगीरब~-	सम्मेदशिस्तर पूजाहि॰
• `	₹ह <b>२, ११६१, १</b> १६२		<b>ह</b> २५
	नीतिमतकस० ६४२	भान विजय—	नवतत्व प्रकरशाटीका स०
	भृगाग्ज्ञतकस० ६२⊏		हि० ६६
	683	म० मानुकीति	बहद सिद्धचक पूजा सं०
भवसागर	पदसंग्रहहि० ६४२	3	303
भाउकवि—	धादिस्यवत कथा हि॰	मानुकीसि—	मादित्यवार कथा हि०
	४२८, ४३३, ८७७		१०६४, १११८, ११४७.
	£83, £88, ££3,		११६८
	£\$=		(रविश्रत कथा)
	(रविवार वृत कथा) ६७३.		पद ११०७, ११५२
	१०१२, १०१=, १०२=,		रोहिसीवत कथा सं०
	१०३६, १०४१, १०४६,		Yex
	१०६२, १०७४, १०८३.		लोहरी दीतवार कथा स०
	१०58, १०54, <b>१०</b> 56		3808
	१०६= ११०७, १११४,		समीसा पार्खनाथ स्तीत
	११११, <b>११</b> ४८, ११६८		हि० १०६१
	नेमीश्वररास हि० ६८४	भानुचन्द	मृगीकलेखाचौपई हि०
	विक्रम चरित्र चौपई हि॰	41344	2 11 11 11 11 2 18 5
	359	भानुषन्त्र गरिए	वसन्तराजटीका स०
MINTER	ग्रमितगतिश्रावकाचार	3	XXX
भागचःद —	कानतगातत्रावकामार हि॰ ६०		साधारण जिनस्तवन सं
	•	_	७६१
	उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला	भानुदत्त मिथ	रसतरिंगगी सं १८३
	मा <b>षा हि० ६५, ६६</b>		रसमञ्जरीसं∙ ५८४
	११७४		५६६, ६२

ग्रंचकार का नाम	ग्रंबनाम ग्रयसूची पत्रसं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रं <b>थसूकी</b> पत्रसं०
भारती	भारतील घुस्तवन सं०		बहातृस्यकरसा सं० ४४४
	ু ৩ <b>ৼ</b> ৹		लीलावनी स० ११६७
भारवि—	किराताजुंनीय स० ३१६		सिद्धांत णिरोमणी सं०
भारामल्ल	कथाकोशाहि० ४३२	_	५६६
	ज्ञातरासहि० ६४१	मीडम	कारक स्वंडन सं० ५१२
	दर्शनकथा हि॰ १११६	भुवनकीतिं	भक्त।रस्तीत्र समस्यापूर्ति
	दानकचाहि० ४४६		स० ११६४
	दानशीलकथा हि० ४४७	भुवनकीर्ति	ग्रजनाचरित्र हि० ३१४
	निशिभोजन क्याहि०		पवनजय चरित्र हि०
	¥ <b>X</b> ₹, ¥X¥	_	9.9.4
	शीलकथाहि० ४८८,	पाण्डे राजभुवन	बारहमासा की विनती
	१०७३, ११२०, ११२२	भूषरा	हि॰ ११०=
	सप्तब्यसन कथा हि०	मूघ रहास	एकीभाव स्तोत्र सामा
_	A63' RER		हि० ११२२
मावचन्द्र सूरि-	क्यान्तिनाथ चरित्र स०		जसकी हि० ११६८
	;q£		जीवदयाछद हि० ११५७
भावतिलक	रस्तराल चौपई हि० ४६७		जैन विलास हि० ६६०.
भावदव सूरि	पुरम्बर कथाहि० ४६१		१०७३
भावमिध	मावप्रकाण स० ५६०		जैन भनकहिं० १०११,
भावावजय वाचक	— धन्तरिक पास्त्रंनाय		\$0.85
	स्तवन हि० ७१४, ११४७		(भूघर शतक) १०४२,
भावविद्येश्वर	सप्तापदःथंटीकास० ८१		१०४४, १०४९, १०६०,
भावशर्मा	दशलकारण जयमाल पूजा		8008, 8003, 8008
नापराना	मा० दर्श		१०७६, १०६१, १११४,
	लग्रसवन स० ७४६		११३३, ११४३, ११६३
भावसेन	कातंत्ररूपमाला कृति सं		नरकदुःसामर्गनहि०
41461	जीवदयास० ४३४		87 E
vredu dde de	— मंत्रप्रकरण सूचक टिप्पण		पद हि० १०४७, १०४३
नःचलन अवश्व द्वन	— समप्रकरण सूचक ।८०५ण सं० ६२२		पंच इन्द्री चौपई हिं०
	स्यमासास ५१६		9009 
मास्करचार्य	. क्योतिस सम्बद्धाः ५४६		पत्रमेशपूजाहि० ५५६, ६७६,८८१
			पाद्यंनाथ कवित्त हि०
وکر د <sup>۱</sup> ۰۰	., विनयमा गृहागमकुत्रहरू सं• ३४६		पादवाराच कावरा १६८

ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	प्रंथकार का नाम	प्रंथनाम प्रंथसूची पत्रस०	प्रयकार का नाम
ज्ञानचूनडी हि <b>० ११</b> २४		पादवंपुरामग्हि० १६३.	
दानशीलतप मावना हि०		१०२६, १०३१, ११०७	
<b>११</b> ४		भूघर, विलास हि०	
द्रव्य संग्रह भाषा हि०		६७३, १०४५	
१००५		विनती हि॰ ८७७,	
ह्टात पच्चीसी हि॰		8888	
£ <b>\$ \$</b> \$		विनती नेमिकुमार दि०	
धर्मपच्चीसी हि॰ <b>१</b> १३३		806%	
निर्वाशकाण्ड माचा हि॰		भास्त्र पूजाहि० १०१९	
६५२, ७३१, ८७६,		हुक्कानिषेघ हि० १०३४	
१०१७, १०२०, ११०५		चर्चा समाधान हि॰	मूघर मिश्र—
11=		२७, २८, १०११.	
पचेन्द्रिय सवाद हि॰		१०७२	
<b></b>		भूपाल चतविणतिका	भूपाल कवि
पंद्रह पात्र चीपई हि॰		स॰ ७४१, ७७३, १०३४	
<b>१</b> २७		भूगालस्तोत्र स० ७७१	3.5
पद एवं गीत हि॰ ६८%		चौडाल्यो हि० ११८०	मृगु प्रोहित—
परमणनक हि∙ १०५८		ग्रकृत्रिम चैत्यालय जय~ -	भैया भगवतीदास-
परमार्थशतक हि॰ २०३		माल हि० ७७३	
बाईस परीषह कथन हि॰		ग्रक्षर बनीमी हि०	
113		१००५	
बारह भावना हि॰		द्यनित्य पच्चीसी १०५१	
<b>१</b> 050		ग्रष्टोत्तरी भतकहि० ११३३	
ब्रह्मविलास हि० ६७०		(१२२ (शतब्रप्टोत्तरीकवित्त)	
हदः, १००४, १०४१			
१०५२, १०७२, ११३३		हि० १००५	
<b>११</b> %		ग्रोंकार चौपई हि० १०७७	
मध्बिन्द् चौपई हि०			
₹.য়		चतुरबराजारा गीत हि० ६८५	
मानवत्तीसी हि॰ १०५		चूनडी रास हि॰ ६०६	
मुनिराज के ४६ अन्तरा		चेतनकर्मचरित्र	
हि० १४		हि० १००५, <b>१०</b> ७२.	
सम्यक्त्व पञ्चीसी हि॰		१०६४, ११२६, ११३१	
<b>११</b> %		3895	

भ्रंचकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०	कंथकारकानाम ग्रंथनीम कंकासूंची पत्रसं०
	सिद्धचतुर्वशी हि० ११४१	मनसुखराय तीर्थ महातम्य हि॰ ७३०
पं० मनवतीशास	सीतासतु हि॰ १४४,	मनमुखलाल नवग्रह पूजा हि० ८३७
	853	मनसुलसागर यशोधर वरित्र हि॰
	स्वप्नबत्तीसी हि० १११३	2 8 7 8
भेग्दास —	ग्रनस्त चतुरंशीक <b>या हि०</b>	वृहद सम्मेदशिखर महा-
	<b>६६१, ११</b> २३	हस्य (पूजा)
	षोडशकारसः कथा हि०	£0£, £7£
_	<b>११</b> २३	
भेरवदास	हिंदोलाहि० १०८६	<b>मञ्चालाल व</b> ारिश्रमार वचीनका हि० १०६
भेरोलाल	<b>ज्ञीलक्याहि० ४</b> ६०	
भोजदब	द्वादशयत पूत्राम० ८३२	मञ्जालाल खिम्बूका पद्मनन्दि पंचविशति माना
मकरन्द	सुगन्घ दशसी व्रत कथा	हि० १३२,
	हि॰ ४८३	११८=
मंडन	प्रासाद बल्लभ स० ११६१	प्रद्युम्न चरित्र हि० ३५४
मतिराम	रसराज हि० ६२६	मञ्जासाह सर्वया बावनी हि॰
मतिशेखर	गीत हि०११३४	११०=
	षन्नाच उपर्दहि० ४४८	मनीराम रसराज हि० ६६१
	बावनी हि•१०२७	मनोरय मनोरय माला हि॰
मतिसागर	शालिमद चौपई हि०	भनारय नाता १० १०५४
	१०१३, ११३१	
मधुसूदन	चन्द्रोम्भीलन स० ११७६	मनहर पद हि०११०८
मनरंगलाल	चौत्रीस तीर्थं कर पूजा	मानवाबनी हि०११०८,
	हि० ६०१	११०६
	सप्तिषि पूजाहि॰ ह१ द	सर्वया हि० १९१४
		साधुगील हि॰ १९११
मनराज	मनराज शतक हि० ६६२	मनोहरवास सोनी- ज्ञान वितामिण हि॰
मनराम -	<b>श</b> क्षरमाना हि॰ ४५	१०६, ६४०, १०११,
	करका हि०१०८८,	ente
	११०४	• •
	पद क्षि० ११०६	धर्म परीक्षा माया हि <b>०</b>
	रोगापहार स्तोत्र हि०	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$
	\$ • E =	११४७
मनसार	सालिमद चौपई हि०	रविवत पूजाएवं कथा
	Y59	हि० ६०७

श्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्र <b>णसू</b> पत्रस		गंथनाम ग्रंथ <b>सूची</b> पत्रसं०
	लघु ग्रादित्यवार कथा हि		प्रहसिद्ध क्लोक सं०
	800		१११५
	शिक्षा हि०१०		रत्नमाला संव ५६७
मनोहर शर्मा—	श्रुत बोध टीका स०६०	, १	हिकमत प्रकाश स॰ ५६२
मलबकीति	सुगन्ध दशमी ब्रन कथा	महादेवी	लाभासाभ मन संकल्प हि०
	हि॰ १००	: 6	१∈२
सल्लमहु	शतक्लोक टीका गं०	महानन्द	ग्रागन्दा हि॰ ११४
	कुमार संमव सटीक स	महाराम	श्रीपालस्कुति हि०
	कुमारसमय सटाक सर		66.8€
मस्लिनाथ सूरि	मेघदून टीका सं० ३७	, महावीराचार्य-	गिरिएतसार सग्रह स०
	रघुवणटीकास० ३०		११७=
	शिश्रपाल वध टीका <b>म</b>	महासेन।चार्य	प्रद्युम्न चरित सं०३४२
	3.5		
महिलबेश सूरि	सग्रहरणी सूत्र प्रा०		११६३
	स्याद्वाद मजरी स० २९	👯 महिमा प्रमसूरि—	ग्रध्यात्मोपयोगिनी <b>हि०</b>
मस्लिषेश	भैला पद्मावती कल्प सं०		७१०
		२२ <b>म∘महोस्रन्द</b> —	द्यादित्यवार कथा हि०
	यक्षिणीकल्पस० ६		११६४, ११६७
	विद्यानुशासन सं० ६	₹₹	चैत्यालय बदना हि०
मल्लिबेरा—	नागकुमार चरित्र स०		११३३, ११६२
	ž 83, 81	<b>4</b> •	पंचमेरुपूजाहि० ११२३
	सज्जनचित्तवल्लम स०		पुष्पाजलि पूजा स॰ म६६
	₹6¥, १०=०, १०८		लवांकुश षट्पद हि॰
	११ वन्यकुमार चरित्र सं०	_	7799
भ० मस्तिमूषस—		३६ महोधर	म।तृकानिषंदुसं•६२२
	व्रतकथाकीश सं०४	- mailway)	तद्धित प्रक्रिया सं॰ ५१३
मस्लिसायर	श्रकृतिम चैत्यालय पूज		महीभट्टीकाव्य सं०
	स॰ ७		375
सलुक	कील व्रत कथाहि० ४	'द३ '	महीमट्टी व्याकरण सं•
महाचन्त्र	पंचायत प्रदन स॰ ५	48	४ १७
सहाचन्द्र	तत्वार्थसूत्र भाषा हि०	<b>4</b> १	सारस्वत प्रक्रिया वृत्ति सं०
•	त्रिलोकसार पूजा हि०		<b>५</b> २६
	=	२१ महेन्द्रकीति—	पद हि•११४२

ग्रंथकार का नाम	यंथनाम ग्रंथसू पत्रस		ग्रंघनाम ग्रं <b>थ सूची</b> पत्र सं०
महेश्वर	शब्दमेद प्रकाश सं•		१०३८, १०६४, १०६७,
`	4:	3	१०६६, १०७४, १०७८,
माधकवि	क्रिशुपाल वध सं०३।	: १	१०१x. १०६७, १११६,
माघनन्दि वती	चनुविशति खयमान स	,	\$ 6.R.B
	19:	२ मानतुंग	ग्रासाद मस्तिका काल स०
	बदेतान जयमाल म०	•	* ? ? \$
	47	थ सूरि मानदेव—	लघुणानि पःठसं० ६०१
माराकचन्द	समाधितंत्र भाषा दि॰	मानमागर—	कठियार कानडरी चौपई
	ş	5	ह० ४३१,
माराकचन्द	मारएकपद सम्रह हि०		848
	€ (	३ मायाराम	समवशः साम हि॰
	पद हि०१०७		35.6
४० मासक—	बावनी हि॰ ६०	६ मानराय -	पद हि॰ २७७
	मानगद्र स्तवन हि० ७५	४ मालदेव सूरि	शांतिनाथ स्तवन स०
पारिषक्यनंदि —	परीक्षामुख सं० २५		<i>ક</i> દ ર
माशिक्यमृत्दरसूरिः	—गुए।वर्माचरित्र सं०३१	६ मिश्र भाव ─	गुरगरत्नमालास० ५५७
- 3 "	धमदस परित्र सं ०३३		हनुमन्नाटक स० ६००
मास्मिक्य सूरि	कालकाचार्यं कथा स०	मुकु दवास	भ्रमरगीत हि॰ ६२७
	Y:		ज्योतिषसार सम्रह म०
माधव —	मासव निदान स० ५०		XXE
माधवच-द्र			बालबोब सं० ४४४
त्रविधरेय	क्षप्रशासार सं०	् मृतिदेव सूरि	शास्तिनाथ चौरत्र स०
माधबदास	गमरास हि॰ ६४	•	\$2\$
	सर्वेजिनासय पूत्रा हि०	मुरलोबास	बारहमासा हि॰ १०६६
-1410101 404101	44,44,44	मेघराज	ऋषिदसा <b>चौ</b> पई १० ४३ <b>१</b>
महाकवि	कविस हि॰ ११६		
	सिज्ञाय हि॰ ११	10	स्रोलहसती हि० ११२६
	शीलबावनी हि० १०१		धर्मसंग्रहश्रावकायार स०
मांडन	रेखता हि०११		पुष्पांजसियत कथा सं०
		.0	. A & \$
मानतुङ्गाचार्य	मक्तामर स्तोत्र सं०	मेरकंड	बासुपूज्य स्तोत्र सं०
	७३८, ७३६, ७४०, ७४		<b>११६</b> २
	७७२, ०७४, ६५१, ६५		शांतिनाथ स्तोत्र सं० ११६१
	१०११, १०२२, १०३	<b>Χ</b> ,	7777

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूची पत्र सं०	प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
द्या० मेरुतु <sup>'</sup> ग	प्रबन्ध चितामिग् स०	यशकीर्ति सूरि—	पचेन्द्रिय संवाद हि०
•	EXX		<b>१</b> १≂=
	सहायुक्तय चरित्र स०	यशकीर्ति	कोजिका वतीद्यापन सं०
	દેત્ર		e•3
	सूक्तिमुक्तावली सं०		गीत हि० १०२६
	90\$		चारुदत्त श्रेष्ठिनो राम स०
मेरुनंदन	श्रजितशाति स्तयन हि०		६३२
	3509		चौबोस तीर्थं कर भावना
मेरुमुंदर	शीलोप <b>देशमा</b> ला म०		हि० १०२५
	890		दुःसहररा उद्यापन सं०
मेहउ~	ग्रादिनाय स्तवन हि०		495
.6-	७१३		प् <b>वपरमेष्ठी</b> गोत हि०
मोतीराम	चौबीस तीर्थं कर आरती		११५४
	हि० १०६७		बारहवत हि॰ १०८८
	सम्मदशिखर महातम्य		मगलाष्ट्रक स०११७१
	हि॰ ६२७		योगीवासी हि०१०२४
मोतीलाल		भ० यशकीर्ति	सुकुमाल चरित्र हि॰ ४१४
(বন্ধানান)—	बालप्रबोध त्रिणतिका हि० १४२		मुदर्शन चरित्र भाषा हि० ४१६
	मरकत विलास हि०		हनुमच्चरित्र हि०४१६
	£03	यशकीर्ति	जीवन्धर चरित्र प्रबन्ध
मोहन	चग्दराज्ञानी ढाल हि॰		हि० ३३ <i>०</i>
6.,	859		वर्मशरमाम्युदय टीका
मोहनदास	ग्रात्मशिष्यावरणी हि०		सं० ३३६
6.14171	१०१५		ुचन्द्रप्रसम्बरित्र श्रप्
	मोक्षमागं बावनी हि॰		320
	१५५		पाण्डबपुराए। प्रपन्न श
चोक्यकास सामस्थ	—स्वरोदय हि० ४६२		२८७
पं० मोहनलाल	कत्यार्गमन्दिरस्तोत्र		हरिवंशपुरासा धपभ्रंश
40 416-1414	वयनिका हि० ७१६		žož
. S C	-	श्री यशसागर	प्रमासनय निर्सय सं०
मोहन विजय	मानतुंग मानवती हि०	मिल	74=
6	3799	बह्य यशोषर	गीत पद हि०१०२६,
भा <b>० यसिवृ</b> वम—	तिलोगपण्एति प्रा०६१०		१०२७

षंचकार का नाम	ग्रंथ नामः व स सूची पत्र सं०	पंचकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रंथ सूकी पत्र सं०
	नेमिनाय गीत हि॰ १०२४		षोडशकारण जयमाल
	१०२४		ध्यप० १७१
	बलिभद्र चौपई (रास्र) हि॰		(सोलहकारण जयमाल,
	१०२४, १०३४		ग्रप० ११४, १३६
	मिल्लिनाय गीत हि० १०२४		श्रीपाल चरित्र ग्रंप० ३१३
	वैराग्यगीत हि॰ १०२५		सबोध पंचासिका ग्रप०
यशोनन्दि	<b>धर्मचक</b> पूजा स० ८३४		8888
	पवपरमेश्रीपूजास ८५१,	रघृनाथ	इन्ट पिचावनी हि०
	१०७, १०⊏५		\$ 4 % \$
योगदेव 1	त्तत्वार्थवृत्ति स०४३	इ० रतन	नेमिनाथ रास हि॰ ६८४
योगवेब II	<b>मनु</b> प्रेक्षा हि० १७४	रत्नकोरिं।	काजीवनीद्यापन
योगीन्द्रदेव	बोहा पाहुड चप० २०८,		स० ७६३
	<b>१</b> ०६ <b>५</b>	मुनि रत्नकोर्शि —	नेमिनाथ रास हि॰ ६५३
	परमात्म प्रकाश अप०		नेमीश्वर राजुल गीत हि०
	<b>२०४, ६</b> ५२, ६६०, ६६२,		६६३
	€¤₹, €€४, १००¤,		पर हि०१०७८
	\$0=€, ११४€		सिद्धयून ।हि॰ १०२७
	वोगसार भ्रप०२१४,	रानचंद्र गरिए—	प्रसुप्त चरित्र सं०३५४
	EEX. 1075, 2050	रस्मश्रं व	चौबीसी हि०११६६
रद्वयु	ब्रात्म सबीच ब्रय०१८४	पं० रत्नमं ह	षंजमेरुपूजा सं०८५६
-	जीवघरचरित्र प्रप०		पुष्पांजलि पूजा सं० ८६६
	330		मक्तामर स्तोत्र वृक्ति स०
	दशनकारा जयमाल ग्रप॰		৩১৫
	<b>= ? </b>		बुभौम चरित्र सं०४१८
	दशलकशा वर्म वर्गन	रत्मनंदि	नंदीक्वरपूचा सं०८४४
	सय० ११४		षल्य विघान पूजा
	दशनकारा इतोद्यापन पूजा		सं• ६६२
	भ्रप० ६३०		मदवाहु खरित्र सं०३५व
	धन्यकुमार चरित्र श्रप्		रक्षास्थान सं०४७१
	<b>\$</b> *#8	रत्नवान	नम्बीश्वरक्षमा स०४७६
	पात्रवंपुरासा सप० २१०	रत्नप्रभाषार्थः	<b>प्रमारा</b> नयतस्याः
	कुण्यासयकहा श्रम• ४९.a		लोकालंकार सं०२४०
	रविकार कथा श्रप० ४६६	स्त्रमूबाह्य	वर्गीपदेश सं०१२५

मं धकार का नाम	ग्रंच नाम	यं <b>थ सूची</b> पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	प्रथ <b>नाम ग्रंथ सूची</b> पत्र सं०
	रविद्रतीद्याप	ন কুলা	मुनि रागचंद्र—	चपावती सीलकल्यासावे-
		स० ६००	3	हि० ४३६
रहनम्बरा सूरि-	ग्रनिरुद्ध हर	ए। हि० ४२२	राजपाल	पदस्रक्का हि०१११०
11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	ग्रष्टकर्मची		पांडे राजमत्ल	नाटी संहिता स० १६०
		223		समयसार भाषा टीका
	जिनदत्त रार	म हि० ३२७,		हि॰ २२६, २२७, ११६०
		593. <b>११४</b> ४	राजरत्न वाठक	मिश्चिमद्र जी रो छन्द
	र्शवमसीहर	गुरास हि∘		দ্ধি ওধ্ব
		६४०. ११३३	पाठक राजबल्सभ-	<ul> <li>चित्रसेन पद्मावती कथा</li> </ul>
रत्नरंगोपाध्याय —	रुप <b>कमाना</b> व	ाला <b>ववी</b> च		म० ४३ <b>६</b>
		हि॰ ११२७	राजशेलर सूरि	प्रवन्धः चिन्नामित्। सं०
रत्नशेखर गणि —	गृहप्र <b>तिक्रम</b> स	मूत्र टीका		€ A A
•		संस्कृत १०५	राजसागर —	विचारषड् त्रिशिकास्तवन
रत्नशेखर सुरि—	শ্বান্ত বিধি	सं• ६१२		प्रा० हि० ७५ द
रत्नशेखर-	वच्छेत्र समा	सवृत्ति स०	राज सिह	वास्तुराज म०१२००
	3	2886	राज सुन्दर —	ग <b>जसिंह चौ</b> पई हि० ४३६
	श्रोपाल चरि	त्र प्रा०३६२	राजसेन	पाव्यक्ताथ स्तोत्र स०
रतनसृरि—		हि० १०६१		७७४, ११२४
रस्नसिंह मुनि—	ऋषभदेव स्त		राजहंस	षट्दर्शन समुख्य कां०
		७१४		२६२
	कृष्ण्यस्मित्र	-	राधाकृष्ण	रागरत्नाकर हि०११५८
		हि० ७२०	देवज्ञ राम	मुहूर्तं चितामिए। सं०
रत्नाकर —	रस रत्नाकर	स०४८४		¥ ¥ 9
रविदेव	नलोदय काव			लीलावती टीका सं०
~ ~ ~ ~		सं० ३४०	राम ऋषि —	११६६ नसोदय टीका मं३४०
रविषेशाचार्य—	वहस्रवसाम	म० २७८		
राजकवि—		सी हि॰	रामकृष्या—	ऋषभदेव गीत हि० ११६८
CIMITAL	-,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,			परमार्थं जलकी हि०
	सन्दर श्रामा	र हि॰ ६२६,		१०५४, ११६=
		225=		सुमसुमनीकथा हि०
रावकुमार	समस्कार पर	त हि॰ ७६७		4 × × × × × × × × × × × × × × × × × × ×
राजचं ब्र	सुगन्धदशमी		रामच ह—	रामविनोद हि० ५८५
\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	a	¥•¥	रामचंद्र सूरि	विकम चरित्र सं ३०७

प्रंचकार का ताम	प्रंचनाम ग्रबसूची यत्रस०	मंथकार का नाम	गंबनाम ग्रंबसूको पत्रसं०
रामचंद ऋषि /	उपवेश बीसी हि॰ ६८२	रामदास	उपदेश पश्चीसी हि॰
	चेलना सतीरो चौडालियो		हथद हदह, १०४४
***	रा० ४३९		<b>लूहरी हि० १०६</b> ३
	बिज्जु सेठ विजयासती रास		विनती हि० = ७७, १०६ व
1.1	हि० ६४१	रामपाल	नेमिनाथ लावस्पी हि०
रामच द्र (कवि	सीताचरित्र हि०४०६,		<b>११</b> ५८
बासक)	४१०, ११०६		सम्मेदशिक्षर पूत्रा 7ि०
मृमृत् रामचं ह—	कथाकोश मा०४३२		१९३
334	पृष्याश्रव कवाकोश स०	रालबल्लभ	चन्द्रलहाचीवई हि० ६५४
	8× 4, 8× 0	रामसेन	तत्वानुशासन स० ४४
	वनकवाकोश सं ४७=	रामानद—	रामक्या हि०१००३
	ग्रनन्तनाथ पूजा हि० ७८०	रायच द—	विनतो हिल्दः.
रामच इ	चौबीस तीर्थकर पुजा		शीतलनाय स्वयन हि०
(144 #	हिं		उ६२
•	E08, E02, E03, E08,		समाधितत्रभाषा हि० २३८
	=04, 200E, 207E,	ब्रह्मरायमस्ल	चन्द्रगृप्त के सोलह स्वान
	₹0 € X , ₹0 0 € , ₹₹७७,	महाराजनस्य	हि० ६४३, ६७-,
	1830		150 Ext, 631, \$00%, \$004, \$0%5.
	तीस चौत्रीसी पाठ हि॰		\$002, \$0-4, \$020.
	न्ति सामासा गण हर		चितामीमा जयमाल हि॰
	दर्गनस्थोत्रभाषा हि०		भितासास्य ज्ञाबसाय १८४३ १८४३
	१०६६		ज्येष्ठ जिमकर व्रत क्या
	पचवायामकपूत्राहि <b>०</b>		हि०१४४, <b>१६६</b> , १७२
	E 5 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10		६७३, १०३२
	विनमी हि०६६५		निर्दोष सप्तमी कथा हि०
	सम्मेदशिक्षर विकास हि॰		642. EXE. EX6.
	६४७		£ 4 4 , 8 9 8 =
	•		नेमि निर्वास हि॰ ६५३
रामचंद्राचार्य	प्रक्रिया कीमुदी सं० ५१६		नेनिश्वर शस हि॰ ६४०,
	सिद्धांत चन्त्रिका सं०		£ \$ € £ € € € € € € € € € € € € € € € €
	**		हत्त्र, १०८३, ११०६
रामचंत्र सोमराना	—समरसार सं• ५६=		परमहसकवा चौपड हि॰
रामचरण	वेतावसी स्थ हि० १६५		3818

थिकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूबी पत्रसं०	प्रथकार का नाम	ग्नंब नाम ग्रंथ सूची यत्र सं०
	प्रद्युष्त रामो हि०६३८,		दश लक्कारगपूजा हि०
	દથ્ય, દથર, દદ્દ		3509
	८६८, १०६३		नेभिनाथ स्तवन हि॰
	भक्तामरस्तोत्र वृत्ति स०		exx
	৬४৭		पंचमंगल हिल्ह्छ४,
	भविष्यदत्त चौपई (रास)		Eur, 2004, 2087,
	<b>हि॰</b> ३६३, ४६६, २४०,		१०४८, १०६३, १०७५,
	€83, €88, €¢=,		१०७=, १०११, १११४,
	88C, 2000, 208x		११३०, ११५०, ११६७
	१०२०, १०३२, १०४३,		पद हि० ८७६, १०१६, ११०५
	१०६३		परमार्थगीत हि॰ ६८२ राष्ट्रमार्थगीत हि॰ ६८२
	श्रीपाल राम हि० ६४२,		परमार्थ दोहा- हि. ६=२,
	EXO, EXP. EEE, 9093		शतक १०३८
	१०१५. १०१६. १०६३	•	विनती हि० =७६
	सुदर्गनरास हि० ६४०.	रूपचन्द	समबसरण पूजा
	Ex3, 6x3, 608,	4444	स० ६१६,१०१३,११२०
	Eur, EEr, 9083,	ब० रूपजी—	द्वारा ग्रारः महाचौपईबंध
	₹• <b>१</b> €. <b>१</b> •२२	40 6 1011	हि॰ ३५७
		रूप विजय—	मानतुंग मानवती चौपई
	हसुमंत कथा (रास )	V.1.4-14	हि॰ ११६५
	हि० ४०७, ६४६, ६४०,	रूपसिह—	प्रज्ञाप्रकाश सं०६८८
	६४५, ६४६, ११०६, ११४३	रेखराज—	समवशरण पाठ सं० ७६४
वाई रायमस्त—	ज्ञानानंद श्रावकाचार	लक्ष्मरग—	श्रकृत्रिम चैत्यालय विनती
	राज॰ ११०		हि॰ ११४३
	वैद्य जीवन टीका	लक्ष्मग्रादास	पदहि० १०६२
व्यमह—	संव ४०६	लक्ष्मग्रसिह—	सूत्रधारसं० ५३०
		पं० लक्ष्मीचंद	लक्ष्मीविलास हि॰ ६७४
ह्या गुरुजी—			बीरवन्द दूहा हि० ६८३
रूपचन्द —	द्यादिनाव मगल	लक्ष्मीचन्द	विविसारणी सं॰ १११६
	हि॰ ११०४	लक्ष्मीबल्लभ —	कालज्ञान भाषा हि०
	इदोटामंगल हि०११०५		70X
	वकड़ी हि०१०८४,		छंददेसंतरी पारसनाच
	***		हि० ७२४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथसूची पत्रस०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रस०
लक्ष्मीसेन	नवविधान चतुःशास्त्वपूजा		व्झाविधान कथा सं०
	स० ६०७		3er8
लब्बरुचि —	पार्थनाय छन्द हि०		रत्नत्रय त्रत कया म०
	४६७		४३३,३६४,३६४
लब्धिवर्द्ध न	भक्तामर स्तोत्र टीका स०		रोहिस्सीव्रत कथा म०
	७४६		3eY
लिंघ विमलगरिग	ज्ञानार्णव भाषा हि॰		षण्रसक्यास० ४७६
	२००, ४०१		पंख्यकारस कथा स०
ललितकीर्ति	श्रक्षयदशमीकथा म०		31.3
	308		मिद्धचक्रपूत्राग० १३३
	<b>भ</b> नन्तवत कथा म०४७८,	पं० लाखु	जिनदल कहा स्रपंत ३५७
	७८१	लाल —	गद हि० १०४=
	धाकाश पचमी कथा स०	ालकवि	विरह के दोहे हि०
	308		११४४
	एक।वनीकयास० ४७६		वृषभदेव सावगी हिल
	कर्मनिर्जरावन कयास०		११७१
	3e¥		श्रीपाल चरित्र हि॰ ५०१
	काँ विकादन कथा स०	लालचन्द —	पंचमगल हि० ११०६
	४७१		नवकार मन्त्र हि॰ १११३
	जिनगुगासंपत्ति कथा		सम्मदक्षियरपूजाहि०
	हि० ४३३, ४८०, ११४४	_	१२६
	जिनसिवदत गयास०	पाण्डेलालबन्द	उपदेशमिद्धांत ग्रनमाला
	.494		हि० ६५
	ज्येष्ठ जिनवर कथा स०		वरागचरित्र हि० ४०४
	308		विमलपुरासा माथा हि॰
	दशपरमस्थान वन कथा		335
	मं० ४८०		षट्कर्मीपदेश रतमाला
	दशलाक्षारिएक कथा स०		fg ? \$40
	805, 850		सम्मेदशिखा विलाम हिल
	द्वादशवत कथा सं० ४७१		६७६
	घनकसमा सवा सं० ४७६	नालबन्द	मुनिरंग की नई हि॰ ३६६
	बुष्पोजलियत कथा सं०	लालचं दसूरि	लीन।वती भाषा हि॰
	YUE		1885

वंबकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथसूची पत्रस०	प्रथकार का नाम	गंधनास ग्रंधसू <del>वी</del> पत्रसं०
लालजीलाल	समवगरण पूजा हि०	बट्टकेराचार्य	मूलाचार प्रा०१५०
	<b>१</b> १२०	वंगसेन	वंगसेन सूत्र सं०५६०
लालजीत	श्रकृतिम चैत्यालय जिन	वरदराज	लघुसिद्धान्त कीमुदी
	পুলা <u>ह</u> ি ৩৩৩		स॰ ४१६
	घडाईद्वीप पूजा हि० ७३६		सस्कृत मंजरी सं०५२०
	तेरहद्वीप पूजा दि० =११		सारसंग्रह सं०२६३
लालवास	इतिहःससार समुख्यय हि॰	वर शम्मं	श्रुत बोध टीका स. ६०१
	१०१४	∎० बद्धं न—	गुरगठारमा गीत हि॰
लाषण्यसमय	ग्रन्तरिक्ष पार्श्वनाथ		ह५२, १०३२
	स्तवन हि० ७१५		रामसीतागीत हि॰
	हड प्रहार हि० ४४८		1810
	नेमिकुमार गीत हि॰	भ० वर्द्ध मान देव	
	११३=		€∮A
	नेमिनाय प्रयन्थ हि०	वर्द्ध मान कवि—	वर्द्धमान रास हि॰ ६४१
	११४१	वर्द्धमान देव—	श्रुतस्कन्व पूजासं० ६१३
	नेमिराजमती शतक हि०	वर्द्ध मान सूरि	गृह शांति विधि स० ७६६ धर्मस्तम्भ स० ६३४
	११=७		
	पाव्यंनायस्तवन गीत		वाग्भट्टालंकारटोका स० ५६७
	हि० ११२४, ११३७	forfer	
	राजुलनेमि श्रवोला हि०	वराह मिहिर—	वृहज्जातक स• ५६४ चेतन पुद्गल धमाल हि॰
	१०२७	बल्ह	401 3410 4410 18°
C	स्थूलमद्रगीत हि० १०२६	पं० बल्लह—	वज्जवली प्रा॰ ६६४
लिखमीबास	जसोघर चौपई हि० ११६७	पं० बल्लाल —	भोज प्रवन्ध सं०३६४
	४.२.५ श्रोणक चरित्र हि०	बलु	पाश्वंनाथ स्तृति हि॰ ४१
	Y09. You	घा० वसुनन्दि –	देवागम स्तोत्र वृत्ति स०
लोलिम्बराज-	वैद्यजीवन स॰ ४६६		<b>११</b> 5%
dilara (10)	वैद्यवस्त्रमस् १०७७		व्रतिष्ठासार संब्रह् स०
साह लोहट	भठारहनातेका चौडा∙		558
416 416	लिया हि॰ ४२१, ६८१,		मूलाचार वृत्ति स०१५१
	1908		बसुनंदि श्रावकाचार सं०
	पुत्राष्टक हि॰ ६७६		84.0
	यशोधर चरित्र भाषा हि०	<b>इ० वस्तु</b> पाल	रोहिसी वत प्रबंध हि॰
	₹95	•	OFF

प्रथकार का नाम	प्रथानाम ग्रेथसूर्व पत्रसं		ग्रंचनाम ग्रंचस् <b>ची</b> पत्रस०
21772	पत्र सर ऋतुचर्या स०५७%		
वाग्मह	ऋतुषया साग्रीक नेमिनिर्वासा सग्देश		त्रिलोक दीपक स० ६११
	वाग्भट्टालकार स॰	4044	424
वाजिव	हितोपदेश हि० ७००		भावसंग्रह स०१४०
वादिचन्द्र-	गौतम स्वामी स्तीत्र हि		दानतपत्रील मावना हि०
41144-2	813		6638
	ज्ञानसूर्योदय नाटक स		काशिकावृत्ति स०५१२
	£01		वर्षकल स० ५६३
	द्वादश भावना हि०	वासवसेन	यशोधर चिन्त्र स० ३७२
	<b>? ? ? ?</b>		नेमिद्रत काव्य मा• ३४२
	नेमिनाथ समवशरण हि॰	_	पाच परबी कथा हि०
	\$ \$ 3		8858
	पारवंताच पुरासा स०	विकारदेव	त्रेपन कियावतोद्यापन
	780		∓ा० ११२३
	पारवंनाय बीननी हिल	विकासेन	विक्रमसेन चउपई हि०
	215		£XY
	बाहबलिनो छद हि	भ० विजयकोति	श्रकलक निकलक चौपई
	1168		हि० ६४३
	श्रीपाल सौमागी धाल्यान		कथा संबद्घ हि०
	हि० ४६१		E : X
बादिवेव सूरि	प्रमागानयतत्वालोक लकाः		कर्णामृत पुरास हि २०४,
anda Mit-	मं० २५३		६७४, ११७४
वादिम् षरा	पश्चकस्यासम्बद्धाः सं० ६४७		चदनवध्ठीवत पूजा स०
वादिराज	•		
वावराज	एकीमाव स्तोत स० ७१३		धर्मपापसवाद हि०
	७७१, ७७३		११०४
	७७२, ६५३, १०२२		पद हि०११०७
	\$ 057, \$ 053		महादण्डक हि॰ १४१,
	यशोधर चरित्र सं०३७२		783
	वाग्मट्टालकार टीका स		मशोधर कथा सं०४६७
	* 20		वाकिमद्र चीवई हि. ४८८
	युनोबना वरित्र स		श्रेरिक पुरास हि॰ ३००,
	¥ŧ		405' AON' AON

मृत्यनुता सकताम हि॰ ७९४ कर्मबहुत यूवा सा ६० ७९४ होत रास हि॰ १९६६ हि॰ १९६ हि॰ १९६६ हि॰ १९६६ हि॰ १९६६ हि॰ १९६६ ह	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथसूची यत्रस०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रथसूची पत्रसं०
विजयदेव सुरि-  पुरु स्तोत्र हि० ७२१ पुरुष सङकाम हि० थ प्रेप्प पुरा सङकाम हि० १९६ शील रास हि० १७६ शील रास हि० १७६ सेट मुरणेन स्वाच्याम स० १० हि० ४०६ विजयानंव— किवाकलाय म० ११३ विद्वाचय— ताजिन स्वाच्याम स० ११३ विद्वाचय— ताजिन स्वाच्याम स० ११६ विद्वाचय— प्रिक्त सि० १९६ तीन श्रीवीती तोचा पुरु सिश्च तील श्रीवीती तोचा हि० १९६ तील श्रीवीती तोचा हि० १९६ ताल परीक्षा स० १४८ तील श्रीवीती तोचा हि० १९६ ताल परीक्षा स० १४८ तील श्रीवीती तोचा हि० १९६ ताल परीक्षा स० १४८ ताल परीक्षा स० १४८ ताल परीक्षा स० १४८ ताल परीक्षा स० १४८ ताल परीक्षा स० १६० व्यव्याचन प्रचा स० १६० १६६ हाल १६० १६६ हाल १६० १६६ हाल १६० १६६ हाल १६० १६६ हाल परीक्षा स० १४८ ताल परीक्षा स० १४८ ताल परीक्षा स० १६० हाल परीक्षा स० १४८ ताल परीक्षा स० १६० हाल परीक्षा	विजयवास मूनि	गराधरबाद हि० १०२६	विद्या भूषर्ग	ऋषिम्। इल पूजा स०
भील रास हि० ६७६ , १६३ हि० ६७६ , १६३ हि० १७६ से हि० १७६ से हि० १७६ से हि० १७६ से हि० १७६ से हि० १७६ से हि० १९६		गुरुस्तोत्र द्वि०७२१		959
शील रास हि० ६७६, ६८४, १०१४ सेट मुद्रणंन स्वाज्याय साठ ६० विद्यासांच्या सावस्त्राच पूज हि० ४०६ नीबीसतीय कर स्वाच्यानंच प्रवेदासांच्या साठ ६० विद्यासांच्या साठ ६० विद्यासांच्या साठ ६० विद्यासांच्या साठ ६० विद्यासांच्या साठ ११६ तील श्रीकीसी त्राचा हि० ११६ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ ताल विद्यानांच्या साठ १४८ व्याच्यानांच्या साठ १४४ व्याच्यानांच्या हि० १४४ विद्यानांच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्या	,,	मूलगुरग सज्भाय हि०		कर्मदहन पूजा स०६०७
हिंद १,१०१४ विद्यामिश पार्थनाय पूर्व हिंद मुद्रमेन स्वाप्याप साठ १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		
सेट मुश्जेन स्वाज्याय स० २१२ विद्यासानंद — कियाकलाय स० ११२ हि० १९३ विद्यासानंद — कियाकलाय स० ११२ हि० ११३ तीन क्षेत्रीसतीर्य कर स्तवन विद्वासा — वाजित । त्रकृति सी० १४६ साटसहस्री स० १४६ साटसहस्री स० १४६ साटसहस्री स० १४६ साटसहस्री स० १४६ तीन क्षेत्रीसी जतीद्यापन १०० ११३ ति स्वावसान पूजा स० १४६ विद्यासान प्रतास हि० १४६ प्रमासा निर्णय स० १४५ प्रमासा निर्णय स० १४६ प्रमासा निर्णय स० १४६ प्रमासा निर्णय स० १४६ प्रमासा विद्यासान स० १६० १३१ ११६ व्यासान सि० १३१ ११६ व्यासान सि० १३१ ११६ व्यासान सि० ११४६ निर्माण कर्माण हि० १३६ ११४६ निर्माण कर्माण हि० ११४६ निर्माण कर्माण हि० ११४६ स्वर्धासान सि० ११४६ स्वर्धास स्वर्धास हि० ११४६ स्वर्धास सि० ११४६ स्वर्धास स्वर्धास हि० ११४६ स्वर्धास स्वर्धास सि० ११४६ सि० १४६ सि० १४६ सि० १४६ सि० १४६ सि० १४६ सि० १४६ सि० १४६ सि० १४६ सि०				११३४
हि० ४०६ विश्वासाय हि० ११६ विश्वासाय स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व				.,
विज्ञासांव —		-		₩03 o1¥
विद्यान   पव हि० १०६६   तीन चीचीती पूजा हि० १९६   तीन चीचीती पूजा हि० १९६   तीन चीचीती पूजा हि० ११६   प्राटसहली सा० १४८   प्राटसहली सा० १४३,८०   पत्र पर्याची सा० ११३   प्राटसहली सा० ११३   प्राटसहली सा० ११४   प्राटसहली सा० ११४   प्राटसहली सा० ११४   प्राटसहली सा० ११३   प्राटसहली सा० ११३   प्राटसहली सा० ११३   प्राटसहली सा० १६० ११३   प्राटसहली सा० ११३   प्राटसहली स	c	•		
विद्याचर				हि० ११३४
सा० विद्यानवि—  साटसहस्रो स० २४व  प्रान्त परीक्षा स० २४व  तत्वायंत्रलेकवानिक स०  ४३, ८०  पत्र परीक्षा स०  २४, ८०  पत्र परीक्षा स०  २४, ८०  पत्र परीक्षा स०  २४७  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २४०  प्रमाण निर्णय  स० २३०  स० २०० २०० २०० २०० २०० २०० २०० २०० २०		-		
प्रान्त परीक्षा स० २४८ स० पत्था प्राप्त हु १२० व्यवसात पूजा स० १४० पत्था विद्यान पूजा स० १४० व्यवसात पूजा स० १४० व्यवसात पूजा स० ११० व्यवसात प्राप्त हु ११० व्यवसात प्राप्त हु ११० व्यवसात प्राप्त विष्य व्यवसात प्राप्त हु ११० १४८ व्यवसात प्राप्त हु ११० १४८ व्यवसात प्राप्त हु ११० व्यवसात प्राप्त हु ११० व्यवसात विद्यासात व्यवसात				
त्वायंत्रनोकवानिक साठ १२, त० पत्यविवान पूजा साठ १२, त० पत्र परोक्षा साठ १२, त० पत्र परोक्षा साठ १२, त० ११३ प्रमाण निर्णय अविष्यवस्त रास हि० ११३ प्रमाण परीक्षा साठ २५० ६३१, ११३ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ३६ वढंमान परित साठ ११३ वढंमान परित साठ ११३ वढंमान परित साठ ११३ वढंमान परित साठ १६० ६६ साठ १६० सा	मा० विद्यानाद—			
भूदे, त०  पत्र परोक्षा स० २१७  प्रमाण निर्णय  स० २१०  प्रमाण निर्णय  स० २१०  पत्र परोक्षा  स० २१०  पत्र परोक्षा  स० २१०  पत्र परोक्षा  स० २१०  पत्र परोक्षा  स० २१०  महारमा  विद्यानिय—  निरमारी गीठ हि० १७०  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० ११११  नेमिजन जयमान हि० १११९  नेमिजन जयमान हि० १११९  नेमिजन जयमान हि० १११९  नेमिजन परान हि० १११९  नेमिजन जयमान हि० १११९  नेमिजन परान हि० ११९  नेमिजन परान हि० १९०  नेमिजन परान हि० । १९०  नेमिजन परान हि० । १९०  नेमिजन परान हि० । १९०  नेमिजन परान हि० । १९०  नेमिजन परान हि० । १९०  नेमिजन परान हि० । १९०  नेमिजन परान हि० । १९० ।				
पत्र परोक्षा सं				पत्यावधान पूजा सार्व ६६२
२१७  प्रमाण निर्णय  सार २१८  प्रमाण परीक्षा  सार २१८  प्रमाण परीक्षा  सार २१८  प्रमाण परीक्षा  सार २१८  महास्मा  विद्यानन्ति  गिरनारो गीत हि॰ १९८  नैमिजिन जयमान हि॰ १११५  नेपिनाव फागु हि॰ ६२६  १११५  प्रमाण परीक्षा  सार ११६  १११६  प्रमाण परीक्षा  सार ११६  १११६  प्रमाण पर्यानावि  सार १६०  १११६  प्रमाण पर्यानावि  सार १६०  ११६६  प्रमाण पर्यानावि  सार १६०  पर्यावि  सार १६०				* * *
स० २४८ ६२१, ११६ वर्ड मान चरित्र स० ३८ स्ट महास्मा चरित्र स० ३८ स्ट महास्मा चरित्र स० ३८ स्ट महास्मा चरित्र स० ३८ स्ट महास्मा चरित्र स० ३८ स्ट महास्मा चरित्र स० ३८ स्ट महास्मा चरित्र स० ३८ स्ट स्ट महास्मा चरित्र स० ३८ स्ट महास्मा चर्चित्र पर्यापार स्ट स्ट स्ट स्ट स्ट स्ट स्ट स्ट स्ट स्ट				<b>११३७</b>
प्रवाण परीक्षा वर्षाम परित्र सं० ३६ महासमा वर्ष मान परित्र सं० ३६ महासमा वर्ष मान परित्र सं० ३६ महासमा वर्ष मान परित्र सं० ३६ विद्यानविद्या संविद्यानविद्या संविद्यानविद्या स्वर्थ है। विद्यान		प्रमास निर्संय		भविष्यदत्तरास हि॰
हा० २५० महासमा वनस्थार प्रद्यवासिका विद्यानिब मिरनारी गीत हि० ६७० वन्द्रभन गीत हि० ६७० तेमिजिन जयमान हि० ११५ तेमिजिन जयमान हि० ११५ तेमिजिन जयमान हि० ११५ विद्यामिर मिरनाय छात्रु हि० ६३६ विद्यामिर पश्चेनाय हि० ११६ विद्यानिव वनुषंगी जतीयान पूजा ११० ७६६ सोलह स्वन्न ख्रुप्य विद्यानि स्वीन स्वीन स्वान स्वान हि० ४ तेमिजिन स्वान		स० २४=		६३१, ११३७
विद्यान वि		प्रमास परीक्षा		बढ्रमान चरित्र स०३८६
विद्यान वि		₹Fo ₹¥¤	महात्मा	वमस्कार षट्पचासिका
नेमिजिन जयमाल हि॰ ११४ चितामिछ पाश्वेनाच हि ११४ चितामिछ पाश्वेनाच हि ११४ चितामिछ पाश्वेनाच हि ११४ स्वाप्ताच स्वाप्ताच हि॰ ११४ स्वाप्ताच हि॰ ११४ स्वाप्ताच स्	विद्यानन्दि	गिरनारी गीत हि० ६७६		भ्रा ६५६
नेमिजिन जयमाल हि॰ ११४ चितामिछ पाश्वेनाच हि ११४ चितामिछ पाश्वेनाच हि ११४ चितामिछ पाश्वेनाच हि ११४ स्वाप्ताच स्वाप्ताच हि॰ ११४ स्वाप्ताच हि॰ ११४ स्वाप्ताच स्		चन्द्रप्रमगीत हि॰ १७८	विद्यासागर	क्षेत्रपासाध्टक हि०
नेमिनाच फागु हि॰ ६३६ ११ पुशुक्षु विद्यालंबि — चतुरंगी बतोधापन पूजा रिजियत कथा हि॰ ४ सं॰ ७६६ सोजह स्वप्न छण्य रि महाबीर स्तीम सं॰ ७७५४				र१४४
बुबुबु विद्यालंबि — चतुरंगी प्रतीधापन पूजा रिजयत कथा हि० ४' सं० ७६६ सोजह स्वप्न खण्या महाबीर स्तीत्र सं० ७७५				वितामिण पार्श्वनाथ हि॰
सं० ७९६ सोलहस्वप्न हत्या र महावीरस्तोत्र सं० ७७५		नेमिनाव फागुहि० ६३६		११५२
महाबीर स्तोत्र सं० ७७५ १०	मुमुभू विद्यानंदि	चतुर्दंशी वतोद्यापन पूजा		रविव्रतक्षा हि०४६६
	•••	सं० ७६६		सोलाहस्वप्न छप्पय हि०
		महाबीर स्तोत्र सं० ७७५		8008
यमक स्तात्राब्दक सं० का विशय पंचपरवा क्या हि० ४		यमक स्तीत्राष्टक सं०	प्र० विमय	पचपरवी कथा हि० ४५५
<sup>७५५</sup> विनयकीति— ग्रठाईका रासा हि			विनयकीर्त्त	ग्रठाईका रासा हि०
सुदर्शन चरित्र स०४१५ ६६१.११				641, 1216
इरियेश जन्मती कथा दशककाश रास		•		
		eto you		११२३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंचनाम ग्रंचसूर्च पत्रस	ग्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
	द्वारसक्या हि॰	चौबीस तीर्थं कर जयमाल
	<b>१</b> १२३	हि॰ ११०४
	महाबोर स्तवन हि० ७५३	भौरासी जयमाल हि०
बिनयचन्द्र	करुयासामन्दिग्स्तोत्र वृत्ति	£X.\$
	मं॰ ११४६	नवकार सर्वेगाहि० ७३१
	चनकीरास हि०६६०	नेमिनाय नवमगल 🕫 🌣
विनयनन्द्र सुरि	गजसिहकुमार चरित्र	<b>७३२, १०४२, १०४५,</b>
ranatin Mil	₹ro 3 \$ €	\$0×4, \$000, \$000,
विनयप्रभ	गौतमस्वामी रास हि	\$ to \$
	\$0\$E, 28X5	नेमिनाथ का बारहमासा
	चन्द्रदूत काव्य स० ३२०	हिं १०४२, १०८३,
विनयमेर	भने बायनी हि॰ ११६३	१११४, ११-८, ११८० नेमिराज्ञमतीका रखता
विनय समद	पद्मचरित्र हि०	हिंद १००३ १०४.
बाचक गरिए	388	£003
	सिहासन बलीसी हि॰	पद हि० ४३३,१०४३
	402	मक्तामर स्तात्र कथा हि०
विनयसागर	विदम्पमुख मञ्जन टीका	868, 088, 686
14.14.11.1	#to १२०१	मगल प्रभाती हि॰ १०६४
विनश्वर नंदि	बट्कारक स०	रक्षाबम्बन कथा हि०
	* 18	830
विनोदीलाल	धनियेक पूजा हि॰	राजुल पच्चीसी हि० ६५६, १७४, १० <sup>०</sup> ०,
बासचंद	968	₹0 <b>% ¥.</b> ₹0′5₹, ₹0′5°
******	धादिनाथ स्तुति हि <i>•</i>	\$ 8 0 X
	चारकाय रद्वातः ।हुः १०६≈. १०७७	<b>राजुल शारहमासा</b> हिल
		₹003, ₹062, ₹003,
	मादित्यवारकवा हि०	9009
	300\$	समबगरण पूजा हि॰
	कृपग् पच्चीसी हिं	818
	eğa, çuv	सम्यक्त्व कीमुदी हि०
	गीतसागर हि०६=१	¥€=
	जेतनगारी हि०१०=३,	सम्यक्त्वसीसाविनास
	1878, 88=0	कथा हि०५०१

रंथकार का नाम	ग्रंथानाम ग्रंथासूची पत्रसं०	ग्रंथकार कानाम	प्रथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र सं०
	सबैया हि०१०२०		रविव्रत कथा	हि॰ ११२३
	सुमति कुमति की जलडी		रेवानदी पूजा	स० ६००
	हि॰ १०६५,११०२		सप्त <b>वि पूजा</b>	सं० ६१७
विद्यय रत्नाकर—	नःगकुमारचरित्र सं०	विष्णुदत्त	पंचास्यान	
	₹ <b>१</b>	विष्णु भूषरा	साद्ध <b>ं द्वयद्वीप</b> ्	्जा सं∘
विमलकीति	ग्राराधना प्रतिबोधसार			€3•
	हि० ६६१, १०२४	विष्णुशर्मा—	पचतत्र	सं॰ ६८७
	डिकावली बत कथा सं०		हिनोपदेश	सं० ७०८
	yo\$	विष्णुसेन	समवसरसा स	
	नद बलीसी हि० ६४४			७६४
विमलप्रभ	पद हि०११०=	विश्वशंभु	एकाक्षर नाम	
विमल श्रीमाल-	उपासकाध्ययन हि०६७			र्स० ५३५
विमलसेन	प्रश्नोत्तर रत्नमाला सं०	विश्वसेन	क्षाग्वति क्षेत्र	
	६८म			€†० ७६६
विलास सुन्दर	शत्रुं जयमास हि० ७६१	विश्वेश्वर	भ्रष्टावक कर	गटीको सं∘
विवेकनन्दि	त्रिभगीसार संऽ६१			४२४
विश्वकर्मा	क्षीरार्णव सं०११७७	विश्वेसर (गंगामट्ट	) चन्द्रावलोक	
विश्वनाथ पंचानन	भाषा परिच्छेद स०२६०			488
मट्टाचार्य —		वीर	जम्बूस्वामी	चरित
विश्वनाथाश्रम	तर्कदीविका स० २५२			प्रपश्चिम ३२
म० विश्वमूषरा-	भ्रमन्तचतुर्दणी वतपूत्रा	कं० वीर—	रात्रिभोजन	वर्णन हि
,,	দিও ৩০০, ६০৬			664.
	ग्रस्टाह्निकाकथा हि०	वीरचन्द	भावी <b>स्व</b> र	विवाहली
	६६१, ११२३			हि० ११३
	इःद्रध्यज्ञपूजा सं०७०४		गुराठासा =	
	कर्मदहन उद्याप्त सं०			883
	৬5€			म हि०६३
	जिनदस चरित्र हि० ३२७		खम्बूस्वामि	-
	दशनक्षरापूजा सं०			88#
	44		जिनांतर र	ास हिं
	पाप्रवेनाचाष्ट्रक सं० ८७७			११३
	मक्तामर पूजासं॰ १०१७			हि० ११४
	मांगीतुंगी पूजा सं० ८१३		बाहुबलि वे	लि हि॰६३

क्रंथकार का नाम	ग्रंचनाम ग्रंचसूची पत्रस०	ग्रंथकार का नाम	षं चनाम संचसूची पत्रस०
	भ्रमरगीत हि०११३२		पार्थ्वनाथ पूजा हि०
	नुकामत निराकरण रास		442
	हि० ११४४		मगलाष्ट्रक हि॰ १०६४
	वीरविज्ञास हि∙११३२		मरहठी हि०१०६४
	संबोधसत्तासू दूहा हि॰		महाबीर पूजा हि॰ ८१३
	७०७, ११३३, ११४७		स्तवन हि० १०६४
	संबोधसत्तागू बाबना		स्तुति ग्रहंदेव हि० १०६४
	६५२, ११३⊏	वृंदकवि	वृत्दविभोद चौपई हिः
<b>बीरचन्द्र सूरि</b> —	कृपराकवा हि०४३१	•	. 88 €
वीरवास	श्रुतस्कन्य पूजा स० ६०७		वृत्वविसास हि० ६७६
बीरसिंह देव	कर्मविपाक हा० ५७५		बृन्दशतक हि०६६४
वीरदेव मिर्ग	महीपाल चरित्र प्रा०		बिनती हि० १०७६
	३६७		शीलमहातम्य हि॰ १०७६
बीर नन्दि—	भाषारसार सं०६१	बेगराज	युनडी हि०१०३७
	चन्द्रप्रश्रुचरित्र सं०	वेरगीचन्व	मुक्तिस्वयवर हि०१५०
	<b>\$</b> ?0	वेश्गीवस	रसत्तरगिरगी स० ५६४
	चरित्रसार प्रा०१०६	इ० बेर्गीवास	प्रशुप्त कथा हि॰ ११ ७
मुनि बीरसेन	प्रायश्चित शास्त्र सा०	W(141)	सुकोशसारास हि०६४७
•	<b>1</b> ×1	वेद ब्यास	भारता ब्यूह सं ११७६
	स्वप्नावली हि०१०६८	वेल बहाचारी	पंचपरबी पूजा हि० ८६४
बीरहो	पद हि॰ ११८१	पुरु बैजा	ज्योतिष रत्नमाला टीका
बृत्दावन	कल्याम कल्पद्रम हि॰	4. 441	सं० ५४७
•	984	वैद्य वाचरपति	साधव निदान टीका स०
	चीडीस तीर्थं कर पूजा	वद्य वाचस्पात	भावव ।नदान टाना १८१
	80 cot, cou, coc.		सामन्द जहरी स० ७१२
	€७€, १०७१, १०७३,	शंकराचार्य	44-11
	8008		
	जन्युस्वामी पूजा हि॰		प्रश्नोत्तर रस्तमाला म० १५०
	\$0 \$¥, \$\$=0	Ž.	
	तीन बौबीसी पूजा हि॰		शंकर स्तोत्र स० ११११
	C15	कविराव शंक्षभर	
	तीस चौबीसी पूजा हि॰		ever
	# te	स्रशिषर	म्बाय सिद्धान्त दीपक स०
	रबक प्रकरण हि॰ ११३		२५७

प्रविकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूत्री यत्रस०	ग्रंथकार का नाम	यंथनाम प्रंथसूची एनसं०
गाकटायन	धातुगाठ सं० ५१४	पं० शिवजीदरून	वर्जासार हि०३०
	शाकटायन व्याकरण स०	(शिवजीलास)	
_	39.8		वोडशकारण जयमास
शान्तिबास —	ग्रनन्त चतुर्दशीपूजा <b>म</b> ०		वृत्ति प्रा०सं०६१५
	300	शिवदास	वैताल पत्रविशतिका सं०
	ग्रनन्त्रत विधान हि०		843
	953	शिवमुनि	षट्रसक्या सं० ४७६
	श्चनन्तनःयपू <b>जा</b> हि०	शिववर्मा	कातत्र रूपमाना सं०
	११४३, ११२६, ११७०		488
	क्षेत्र पूरा हि० ६७४		कातंत्रविकम सूत्र सं०
	पूजासग्रह हि॰ ६५१		488
	बाहुबलिबेलि हि० १११०,	शिवादित्य	सप्त पद। वीं सं० २६२
	११३⊂	शुमचन्द्र	शीलरथ हि० ११०५
	भैरवम।नभद्रपूजाहि०	प्रःचार्य शुभचन्द्र—ं	जानास्व स॰ १६७, १६८
	7156		१६६, २००
	मोनिनम्य पूजास <b>० ६</b> ११	म० १ म <b>चन्द्र</b> —	ऋषि मंडल पूजा संब
शांति सूरि—	जीवविचार प्रकरण प्रा०	, ,	950
	¥۰		घठारहनाता का गीत
शान्तिहर्ष	सुकुमाल सज्भायस० ६८१		हि॰ ११७३
शङ्गं घर—	ज्बर त्रिकति स०५७७		ग्रनन्तवस पूजा संब
	शाञ्जंघरपद्धति स०४६१		
	शाङ्गधर संहिता सं०		ग्रद्धाहिनकावत कथा
	131		#o X31
वं० शालि—	नेमिनाथ स्तोत्र सं०११२४		ग्रव्टाहिनका यूजा स
शालिनाथ	रसमझरी सं० ५६४		€ <b>6</b>
शालिबाहन —	हरिबंशपुरासा हि० ३०३		ब्रध्टाहि नकापूजा उद्याप
शिसरचन्द	बीस विदेह क्षेत्र पूजा हि०		सं० ७५
	# £ \$		भ्रदाई द्वीप पूजा सं०५७
पं० शिरोमशि —	साठि स्वत्सर प्रहमल स०		भालोचना गीत हि॰ ६४
	398		करकण्ड्र चरित्र सं०३१
पं० सिरोमशिवास	I—धर्मसार हि० १२३		
शिवधन्दगरिंगप्रद	पुन्त लील। वर्णन सं०३५३		कमंदहुन पूजा सं० ७६
	विदाध मुखसंत्रन सं०		£ {¥, {{{\$}};
	248		* * *

प्रवकार का नाम	ग्रं <b>चनस्य ग्रंथसू</b> ची पत्रस०	प्रंचकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रं <b>थसू</b> ची पत्रसं०
	कःतिकेयानुप्रेक्ष स०		प.ण्डव पुरासा सं  २८६
	१६१, १६२		प्रद्युम्न चरित्र स० ३५३
	गरमधर वलय पूजा हि०		व। ची।सन्नतपूत्रा
	१०=४		#io == 0
	गुर।वली पूजा सं० ७६४		लधसिद्धचक पूजा स०
	चतुर्विशतिपूजासं० ७६०		F v 3
	चन्दनाचरित्र मं० ३२०		यृष्ट्रिसद्धपूजास० १०५३ श्रोसिक चरित्रस० ४०२.
	चन्द्रप्रस पुरास्त् स० २७४		
	चिनामणि पाश्येनाथ पूत्रा		801
	म० ७१८, ११३५		समयमाक्टीकाम०२२०
	जीवधर चरित्र स० ३२६		(ग्रन्थातमः तरशिर्माः)
	१६७, १६०, १६६, २००		ममयश्रुम पूजा म० ६२२
	तीत भौबीभी पूत्रा सं०		रहस्तगुसियत पुत्रा स०
	5888		\$93, 593 
	भीस (निमत)चोबीमी पूजा		मार्ज्ञ बद्दीर पूजा स० ह
	म० = १७, ६०४, १६४,		610
	\$0CX		सिद्धचक कथास्य ५०१
	সিকলে ৰবুৰিলাৰ পুৰা		सिद्धचक पूजास० (३६, १२०६
	म० ६२०		गुभाषितार्गवस० ७०१
	त्रिलोकपूत्रास० ६२१	मनि शुभवन्द्र	होनी कवा हिल् ४०६
	अपन क्रियागीत स०१५०	शोमन मनि—	चतुर्विणति स्तुनि स०
	मदीश्वरक्षा म० ४ १ ४	***************************************	923
	नदीश्वरपन्ति पूत्रा स०	शोभाचन्य	द्यारशिक्षका प्रतोद्यापन
	483		स० ७८४
	प्रवागुरममाना पुत्रा मं०		क्षेत्रपालस्तोत्र हि॰ ११६३
	<b>5</b>		भैरव स्तीत्र हि० १००५
	प्रवापरमेण्डी पूजा म•	श्याम कवि	तीस चौबीसी हि॰ ६८२
	६५२	श्यामराम	सामयिक पाठ भागा हि०
	<b>पंचमेर</b> पूता सं०८५८		२४४, १०३४
	पद्मनाम पुराश सं० २७=	धीसन्द —	चन्द्रशमचरित्र प्रपन्नेश
	पत्पविधान गस हि०		<b>३२</b> १
	e#)	श्रीवन्त्र मुनि —	पद्मवरित टिप्पसा स॰
	पत्म विधान सं० ६६३		२७६

ग्रथकार का नाम	ग्रंचनाम ग्रथसूकी पत्रसं०	पंथकार का नाम	ग्रंथ नाम ग्रं <b>थ सूची</b> पत्र सं०
भीधर –	भगवत महापुरासा		श्रातस्कत्स पूजा सं•
	मा <b>वा</b> र्थदीपि <b>का</b> (प्रथम		र्१३
	स्कन्धमे १२ स्कन्धतक)		सप्तऋषि पूजा सं०
	म० २११, २६२		१००७
	मविष्यदन चरित्र ग्रपः	श्रीभवश सूरि	पाण्डव पुराशा सं० २५५
	३६०, ३६६		हन्बिंश पुरासा स०३०३
	वर्दमान चिं/त्र ध्रप०	श्रांलाल पाटनी	चौत्रीस तर्थकर पूजाहि०
	३६६		<b>50 5</b>
	सुकुमानचरित्र धप०	श्रीवंत	ग्र <b>टारह नाते की कथ्या सं</b> ∙
	866		856
श्रीघराचार्य	व्यक्षाज्योति स्वस्य सं०	ध्रुतमुनि —	मावसग्रह पा० ७८, १४८,
	२१४		१०५=
	वज्रमुचीसं० १२००	श्रुतसागर	भ्रतस्तवन कथा स०४२२
श्रीपतिभट्ट	<b>अ्योतिय रत्नमाला स</b> ०		ग्राराधनाकयाकोष सं०
			४३०
2-6-	निदान मापा हि० ५७७		उद्यापन पाठ स० १०००
द्य० श्रीपति	रत्नपाल प्रबन्ध हि० ३५२		कथाकीय सं० ४५२
श्रीपाल	उपासकाध्ययनश्रावकाचार हि० ६७		चन्दन पष्ठिकथासं०
·			४७ <b>१</b> जिनसहस्रताम टीका सं०
धीमूषरायति	धनन्तचनुर्दशीपूत्रास०		जिनसहस्रनाम टाका स <b>र</b> ७२६
	300		ज्ञानासोव गद्य टीकास०
	श्चनन्त्रसाथ पूजा सं० ७८०		200
	गुरुधपृक्त स० ११३६ चरित्रशुद्धिपूजा स०		अ्येष्ठ जिनवर <b>कथा सं∘</b>
	વાત્ત્રસું કરૂતા લઘ્		3e8
	दानक्रीलतप भावना		तत्वार्थसूत्र टीका सं०५०
	हि॰ ११६७		पल्यविधान वतोद्यापन
	पदसग्रह हि०११५५		कथा सं० ४५६, ६६४
	बारह सी चौतीस वन पूजा		पुष्पांजलिवत कथासं० ४३४
	स० ६६०		≉र• यशस्तिलकचम्पृटीकास०
	भक्तामर पूजा विद्यान स०		यशास्तलकाचन्त्र टाका सर ३७१
	<b>११</b> ६२		रत्तत्रय विद्यान कथा सं०
	<b>बसुधोर चरित्र हि० १४</b> ४		83X, 8£¢

प्रंथकार का नाम	ग्रंथनाम ग्रंथसूची	ग्रंथकार का नाम	
	पत्र सं० रात्रिमोजन त्याग कथा		<b>पत्र सं</b> व पार्श्वनाथ चरित्र संव
	स० ४५२		३४६,३४७, ३४८, ३४८
	व्रतकथाकोश स० ४७७		३५०. ३५१, ३४३
	षट् पष्टुब बृति स० २१६,		पुराशासार मं०२६०
	550		प्रक्रोत्तर श्रावकाचार
	सिद्धचक कथा म० ४०१		#10 <b>१३७, १३</b> ८, <b>१</b> ३६
	हौली पर्व कथा सं० ४७६		मल्लिनाथ चरित्र सा
वृतसागर	रोहिस्सी गीत हि॰ ११११		3 6 5
• सकलकोति—	धनन्त्रतपूजा उद्यापन		मुक्टसप्तमी कथा स०
	ह्म ७ ७ व ३		891
	भ्रष्टान्हिका पूजा मं० ७२४		मुक्तावसीर्गत हि
	ग्रादित्यवार कया हि॰		8181
	£4=		मुक्तावित रास हि० १५:
	ब्रादिपुराम्। सं०२६६,		मूलाचार प्रदीय स०१४
	२६७		यशोधर चरित्र स०३७३
	द्माराधना प्रतिबोधसःर		\$51
	信		रक्षाविद्यानकथा संव ४७०
	११३८, ११६४		रामपुरासा सं०२६५
	उत्तर पुरासा सं०२७२		बद्धंमान पुराशा हो
	कर्मविकाक संबद		नद्धमान पुरासा राज्य २१७, २१८, ३८१
	गराधरवसय पूत्रा स०		व्रतकशाकीण सं० ४८०
	७६४, ११६०		वस्य नाथ चरित्र सं
	चन्द्रप्रसंबदित्र स०		र्वेत्रस्य साम्राज्य सरस्य । १८०
	<b>३</b> २१		शासिनाच पुरासा मा
	अम्बूस्थामी चरित्र गं०		¥00, 496
	३२२		श्रीपालवरित्र गं० ३६३
	जिनमुखादलोकन कथा		सद्भाषितावली सं
	सं• ११३६		
	तस्वावंसार दीपक राज		सारवासुविकातिका संव १७३
	YY		सिद्धांतसारदीयक शं
	वस्तकुमार चरित्र सं०		सिद्धातसारदायकः स
	111		सीखामणि रास हिं
	वर्षसारसंबद्ध सं= १२४		031

ग्रंथकार का नाम	पंचनाम पंचसूची यत्रस०	प्रथकार का नाम	ग्र <b>म भाग</b> ग्रंथ शुकी पत्र सं०
	मृश्रुमाल चरित्र सं०४११,		नित्वपूजा माथा हि॰
	€₹₹, ¥₹3		598
	मुदर्शन चरित्र सं०४१५		मगवती बाराधना माबा
	सुभाषित सं०६८६,		हि॰ १४६, १४७
	\$68, W10		मृत्युमहोत्सव हि॰ ११६३
	(सुमावितार्गव) १६०,		रत्नकरण्ड आवकाचार
	433		माषा हि० १५७,६७३
	मोलङ्कारशारास स०		षोडशकरण भावना १७१
	६४५, १११६		समाधिनरशामाषा हि०
सक्तवम्	महाबीरनीस्तवन हि०		२३८
	Exe.		सामयिक पाट टोका हि०
सकलमूबरा -	उपदेश रस्तमाला स०		<b>१०६</b> ६
	११७४,	सथार	प्रद्युम्न वरित हि०३५४
	मन्तिनाथ वरित्र स०	समताराम	जैन श्रावक ग्रम्नायहि०१०६
	३६६	मा० समन्तमद्र <b>—</b>	<b>प्रा</b> प्त मीमासा म०२४८
	विमानपक्ति वृतीद्यापनस०		बतुर्विशतिंस्तोत्र स०
	€0 %		xo3
	वर्कर्मीवदेशस्त्रमाला		देवागम स्तोत्र सं०,११८४
	सा॰ १६=		रतनकरण्डश्रावकाचार सा
	शोलमहिमा हि०६⊏३		१५४, ६५७
इर० संघजी —	श्रीस्पक प्रबन्ध रास हि०		समन्तमद्ग स्तुति २००५३
	445		स्वयभूस्तोत्र सं०७७५,
सतदास	सम्मेदणिखरपूका हि०		७७६, १६३, ६६४,
	६२३		१०=२, ११२७, ११३६,
सदानन्द	सिद्धान्तवन्त्रिका टीका		१ <b>१</b> ६४,
	सं० ५३०	समय भूबरह	नीतिसार सं० ६५६
सदा <b>सुलजी</b>	अकलंकाध्टक भाषा	समबसु बर	कालकाचार्यकथा हि०
कासलीबाल	हि० ७०१	-	xfx
	कर्यभकाशिका हि०१		क्षमा छलीसी हि० १६०,
	तत्वार्थसूत्र माया हि ५३,		१०६१, १११=
	४४, ११, ६३		समा बलीसी हि॰ १४२
	दशलकारा मावना हि॰		बेतन गीत हि॰ १६६,
	118		\$075

प्रथकार का नस्थ	षय नास ग्र <b>वसू</b> ची पत्रस०	रा चकार का नाम	स्थानस्य प्रथस् <b>यो</b> पत्रस०
	अतीवाढाला राम हि०		श्रावकाराधन मा०१६७
	39 9	सरसति –	मधुकर क्लानिधि 1.०
	दान चौपई हि॰ ११४३		६२७
	दानशोलनप भावना हि०	<b>प</b> ० सस्हरग	छ बुत्त र राकेर र ०
	3408 3508,383		168
	दान शील सवाः हि०	सहस्रकोति	त्रौनोक्यमार टाका स०
	683		11
	नल दमयनासःबार हि	स्र० मागर-	ग्रन्ति याप्ता
	¥10		710 f
	पत्रमनप विद्याहि० १०५५	सागरसेन –	पुरासामा म ०
	पदमावता गीत हि०	प० साधाररा—	लीम चौबीमाप्⊬ ०
	૭ ર		Я о ⊏ १ ∈
	प्रियम नव चौई <b>राज</b> ०	साघुक्तीन	उपनाम विभिन्नमन्तर्ग 🔹
	४६२		Pc P
	बलिबाम विख्याना १००		जम्बूस्यामः। नाजन्यणी
	१२०२		fgの まいくな
	मह बीर स्तवन हि० १/१	कविसारग	बिक् <sub>ट</sub> गाचौप <sup>‡</sup> ि ४ ५
	मृगावती चरित्र हित ३०	कु० साबतसिह —	इषक चिमन हि० ६४
	मधकुमार गीन हि०	य० सादल-	भ०स≇लकीनिज्रस
	3 60 6		170 848
	रामसीता प्रबंध हि० ४ ४	स्रास	मुक्तीमण रास हि० १०४४
	शत्रुजय राम हि० ५४०	साइगा —	पत्र प्रि० ८४
	013	साहित्रराम	सत्काय सूत्र माया हि०
	मञ्जूषय स्तवन हि०	षाटनी	4
	3709	सिद्ध नागाजु न	शवजनदि रा०५४४
	सज्भाष हि० ७६३	सिधदास-	नैमिनाथ राजमित बेनि
समय मुन्दर	कल्पलनाटीका स०१५		ह्या १०२६
चपच्याय	चतुमीय व्यास्यान मास्त्रत	सिघो	मुमद्रकथा हि०१०१४
	408	महाकवि सिह—	प्रशाहन कथा द्वाप
	दूरियरय सभीर स्तोत्र वृत्ति		<b>१</b> १≈≈
	सं० ११५४	सिहतिलक सूरि-	भूवन दीपक वृक्ति स्०
समय सुचर	रमुवम टीका स० ३८१		४४७
	वृत्तरत्न।कर वृत्ति सं० ५१६	सिहनन्दि	मेश्रीक्वर राजमति हि० ६८३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंबनाम ग्रंबसूची पत्रस०	ग्रंथकारकानाम ग्रंथनस्य ग्रं <mark>थसूची</mark> पत्रस०
	प्रीतिकर चरित्र स०	स्थासागर दणलक्षण वतोद्यापन पूजा
	₹1,3	*To #\$0
	गतिभोजन कथा	यच कत्य।साक पूजा
	\$63 olz	६४३ ०१३
	रावलियो गीत हि०	मार्डंडय द्वीप पूजा
	8033	210 616
वाण्डे सिहराज -	स्तुति पचाणिका सं∘	<b>स्प्रमाचार्य</b> — सबोध दोहा हि०६७८
·	ى و بى قال ئ	भ  स्मितिकोर्ति — यादिनाथ विनती हि०
मखदेव	स्रायुवंद <b>महो</b> दधि स०	A X \$ ' E 3 R
	y e y	कमेप्रकृति टीका स० प
सखसागर-	ग्रष्टान्त्रिकारमी हि०	गोम्मटमार टीका ना० १६
•	9009	चौरामी नःस जोननी
मुखानन्द—	पचमेरुपूजा हिल्द५६,	विनती हि० ७२४
	१०७७	जिनवर स्वामी विनती
	पद हि०१०७६	हि॰ ६४२, ११३६
स्दामा	बारत्यक्षी हि०१०६८	त्रिलोकसार चौपई ां∄०
सुस्दर	लूहरी हि० = ७३	६१६, ६८१, ११५१,
मंदरदास	कविस हि०६५६,	<b>११</b> ¥४
	११६६	त्रीलोक्य स् <b>वरू</b> प हि०६४४
	यद हिल् ११०४, १११३	धर्मवरीक्ताभाषा हि०१२१
	विवेक चितासीम हि०	पमंपरीक्षा रास हि० ६३४
	१०१५	पचर्मग्रह वृत्ति सार ७१
	विवेकचितवर्गी हि०	बलिभद्र हि०१६४
	4088	लोंकामतनिराक ग्रास
	सर्वया हि०६७⊏,	हि० १६०
	1888	सुमति विजय— रघुवण काव्य दृश्ति
	सुन्दरभृगार हि०	सं० ३८१
	६६४, १००२	सु <b>मतिसागर</b> — श्रष्टान्हिका पूजा हि०
स् दरसाल—	सूक्ति मुक्तवली माषा हि०	9=4
	606	जिनगुरा <b>संप</b> स्ति
मुनि संदर सूरि	<b>ब</b> ध्यात्म कल्पद्रुम १६०	वतोबायना सं ० १०७
-	वृहत्तपानच्छ गुरावली	जिनसहस्र नाम पुत्रा सा
	सक दश्ध	# <b>?</b> ¥
		717

प्रवकार का मास		ब सूची वत्र सं०	ग्रंथकार का नाम		पंच सुची यत्र सं०		
	जिनाभिषेक विधा	न हि०		कलि चौदस का	या हि∘		
		6666			858		
	रामोकार पैतीसी	FTO		पर्चा	<b>\$10</b> 03		
		<b>१०</b> ५४		चौबोस दण्डक	स० १०७		
	त्रिलोकसार चौपई	हि०		जैनबद्री यात्रा	वर्गान		
		११५६		fi	इ० १०३५		
		० ६१६		दर्शन स्तोत्र	ere was		
	त्रिलोकसारपूत्रास०			पद्म कल्यागक	विधान		
	दणलक्षरा वतोद्याप	न पूत्रा			<b>₹اه د</b> ۲۰		
		9530		पचमास चतुरी	पचमास चतुर्दशी		
	नवकार पैतीसी व	तोद्यापन		वनीवापन	\$1.0 C.(\$		
	पूजास	o =34		पुरम्दर बनोद्याप	न स०		
	वसकत्यासाक पूजा				£ € ¥		
		# A C		मुक्तः वलीवन क	या ि		
	योडशकारस क्रत				673		
	पूजा साहे१४,				₹ा० १०२		
	मालिमद्र यौपई हि	0 XCC		सम्मेदशिखर पृत्			
		११२८			6.2		
	•	वापन		सिद्धचन्न कया			
		• ६३५		चर्णासार कायत			
सुवतिहंस -	रात्रिमोजन चौपई		स्रेग्द्र भृषश्	पंचमी कथा	हि०		
		896			€= ₹		
सुमति हेम	महोवर पार्श्वनाथ			सार सम्बह	स० ६७८		
	fe	o fA:	सृहकर	शतु अय महल	मा० ७६१		
भ० सुरेन्द्र कौर्ति	धनन्तवत समुख्य	f•	सूरत	इ।दसानुप्रेका हि	० १०६७		
•		1010		बारहमाडी हि			
	प्रष्टाञ्जिका कथा	€İ•		१०५६, १०५६			
		YEY		१०७६, १०७६			
	बादित्यवार कथा	fg o			6068		
	¥38, ¥48,	fest,		सबर धनुप्रे बा	हि० २४४		
	(रवि वह कथा)	₹ab¥,			<b>4</b> 8€		
n- 19 <sub>0</sub>	₹060, <b>₹00</b> 0,	3=09	सुरदास		3309 08		
**		\$080	वृश्य र	रस्नपात्र शस	हि॰ ६३६		

Marri.	पुष्पात्रलिक	१ स०१ हि०१ खा ६६१, १ गहि०	१६६ १११ १०४४ हि• ११२३	य० सोमचद्र — सोमतिलक— सोमवेव — झा० सोमवेव —	सप्तव्यसन कथा ४६१,४/ वृत्तरस्तावर टी शीलोपदेशमाला सप्तवि पूजा व	का स <b>०</b> ४६६ स० १६४
भूपांर्शव— सेदूराम— सेवक—	पद पुष्पात्रिक बढंमान पूर्व सम्मेदशिखर	म ० १ हि० १ चा ६६१, १ गाहि०	१११ ०४४ हि• ११२३ ६०३	सो मतिसक— सोमदेव—	वृत्तरस्ताकर टी क्रीमोपदेशमाला सन्तर्षि पूजा व	का स <b>०</b> ४६६ स० १६४
भेडूराम सेड्राम	पद पुष्पात्रिक बढंमान पूर्व सम्मेदशिखर	हि०१ चा ६६१, १ गहि०	(०४४ हि• ११२३ ६०३	सो मतिसक— सोमदेव—	क्षीलोपदेशमाला सन्तर्षि पूजाः <b>र</b>	<b>५</b> ६६ स॰ १६५
भेडूराम सेड्राम	पद पुष्पात्रिक बढंमान पूर्व सम्मेदशिखर	हि०१ चा ६६१, १ गहि०	(०४४ हि• ११२३ ६०३	सोमदेव	सन्तरि पूजा ।	स० १६४
सेवक	पुष्पात्रील क बद्धंमान पूर सम्मेदशिखर	६६१, १ πिहि०	११२३ ६०३	सोमदेव	सन्तरि पूजा ।	१६५
	वद्धं मान पूज सम्मेदशिखर	६६१,∜ गहि०	€03			
सेवकराम	बद्धं मान पूत्र सम्मेदशिखर	n हि॰	€03			म० १ <b>१६</b> ६
	सम्मेदशिखर	पूजा	हि०			
	चोडीस तीय			MIO MINER -	भ्रध्यतम तरन	
	चोदीस तीय		€53			\$40
सेवग		कर पू	वा		नीतित्रक्यामृत	
***		हिं व	505		यशस्तिसक वस्	दू स॰
सेवाराम पाटनी	मल्लिनाय प	पुरासा व	नःषा			300
44111		• २१३		<b>ग्रा० सोमप्रम</b> —	- ऋगारवैराय	य तरगिसी
	शांतिनाच पु	रास ह	g o			स० ११०२
			136		सूक्तिमुक्तावर	ते स० ७०१,
सेवाराम साह—	धनन्तकतपू	वा वि			907, 60	\$, 00×,
4411111116			, 55.		90 X 90	६, ११६१
	चौबीस ती			सोमविमल सुनि		€0 €X\$
	हि० ८०६			सोमसूरि —		्त्र प्रा∘६३
सोमाचं र—	क्षेत्रपाल र्थ			म० सोमसेन		
सोमकवि—	राजुल प	-	हि॰			स० २८०
साराकाच	(1.2°)		११६६			तोत्र पूजा स०
<b>॥० सोगकी</b> र्ति—	ब्रशहासिका					" =€₹
म० सामकाल-	अष्टा हुका	वित क्	४७६ ११ सम		रामपुरास	स॰ २६४
	त्रेयनकिया	मीत	हि		व्रतस्थरूप	ए१११ ० म
	7711771	-11(1	<b>१</b> ०२४		सुतक वर्स	न स०१७६,
	प्रस्कर	श्चित्र हा	-		•	€₹X
			841		नवरस	हि॰ ६६७
	मस्मिगीर	τ fæ	० १०२)	•		व्या हि• ७६५,
	रिषभना	-	- E	_	3	₹05
		. 6.,	\$ 0 5.		चीसङ ऋ	द्विपूजा हि०
	यशोधर	चरित्र स			4145	= ₹₹, <b>=</b> ₹₹,
	यशोवर य <b>शो</b> वर				present a	प्रवाहि• दरे

ग्रंथकार का नाम	ग्रथनाम ग्रथसूबी पत्रस०	ग्रंथकार का नाम	ग्रथनाम ग्रं <b>शश्ची</b> पत्रस०
	सप्तिषि पूजा हि० ६१८		सूक्ति मुक्ताबसी टीका
	सिद्धक्षेत्रमञ्जल पत्राहि०		स० ७०६
	£ # \$		हर्षकीति विद्यान पुत्रा
स्वरूपदास -	प.ण्डव चन्द्रिका हि०		स० १०३
	3=89	हर्षकीर्ति ।!	कम हिटोचना हि०
सुन्दर दास	मुन्दरदास हि०६२६	Edducer 11	१०२-, १०४०
हजारीमल्ल-	श्रुपस्कन्यमन्डल विधान		चनुगंशिवनि हि० ६८४
	हिंद ९१४		जिनगीत हि∙ १०१६
हरतूलाल—	सङ्जनचित्तं बत्त्रभ भाषा		त्रेपन कियाराम हि॰
	हि० ६६४		₹ c: ₹
हरजीमल	चर्चाणतक रि० २६		धन्ना ऋषि र ज्ञास हि
हरससूरि	जीवउत्पन्ति सङ्भाय हि॰		7702
	3.5		मिनाचवा बारमामा
हरसुख	बावनी हि॰ १०७८		fg• cai
हर्ष कल्यारा	प बसी बतोद्यापन स०		पचमशीत बेलि हिः
	६४३		a, \$0\$3, \$0\$€
हर्षकीर्ति I	ग्रनेकार्थं नाममाना स०		११०२, ११०६, १११२,
6.4	X 3 8		??¥?
	कन्यासमिन्दिर स्ताप		पच बचावा हि॰ ११०४
	टीका स० ७१८		पदमग्रह हि॰ १०१४,
	५ चमीवनोद्यापन पूजा सक		१०५२ ११०५,
			पाप्रवंताथ छद हि० ३३३
	धातुपाठ स० ४१४		बीसतीर्थकर जलही हि॰
	घानुतर्गाससी सं० ५१४		१०७७, १०७६
	योगविन्तामीए स०		बीसनीयं क्रूर खबमाल
	427, 2025		हिं दर्द
	स्युनाममाला स०५१०		भक्तामर स्तोत्र हि॰
	वैद्यकसार सं ० ५०६		\$1.4X
	शारदी नाममाना सं०		मनमोरडा गीत हि॰
	Axo		\$48X
	মুৱৰীৰ তীকা ব		लक्याबली हि॰ ११५५
	\$4.2		श्रीमधरजी की जलडी
	सिद्धान्त वन्द्रिका टोका		१०४व
	सः० ५३०		• • •

व्रथकार का नाम	ग्रथनाम ग्रथसूची यत्रस०	ग्रथकारकानाम ग्रथनाम ग्रथसूची पत्रस०
	साराद्वार हि० १११६	हरिदत्त- नाममाला स० ५३८,
हर्षगरिग	पद किं ६६३	५४°, ११७≡
हर्वचन्द्र	पद हि० १०७३	(स्वामी) हरिदास- पद मग्रह हि० १०६६
`	पुत्रादरकाहि <b>द</b> ६७	हरिनाथ - वैद्यजीवन टीका म॰
हस्तिवि—	वैद्यवस्त्रमम्० -८६	
हरिकृष्ण पाण्डे	भन नवन कया दि०	हरिफूला मिहासन बनीनी हि०
	<b>₹</b> ₹:	Χοş
	भावाश प्रमी नथाहिः	हरिभद्गसूरि जम्बूडीय सथयिंग प्रा०
	¥33	६१०
	कमविपाक कथा हि०	हरिमद्रगरिंग- ज्योनियशास्त्र स० १४७
	8×2	ताजिकसार स॰ ५४६
	उपेटरजिनवर यथा रि०	हरिमान - लघु पचमत्यासा पूडा
	853	fह० ६०१
	दशस्थागवन कथा <sup>हि०</sup>	<b>हरिमास्कर</b> — वृत्तरनावृत्ति स० ६००
	44444111741 4141 1-0 63	हरिरामदास छदरत्नावनि हि॰
	निर्नेषमन्तमी कथाहि०	निरजनी - ५६३
	४ ३	हरिषेश - प्राराधना कथाकोश स०
	हिंगस्य ग्रप्टमी क्या	830
		कयाकोशास० ४५२
		हरिकिशन — पचकल्यागाक विधान हि
	पुरन्दर विधान कथा हि०	548
	£ £ £ \$	भद्रवाह कथा हि० ४६५
हरिचन्द	रतत्रयक्षाहि० ४५	<b>हीराचन्द</b> पद सम्रह हि० ६६३
614.444	दशलकाग कथा भगभ्र ग०	होरालाल चन्द्रप्रभवन्त्रि माषा
	XXX	हि० २७६, ३२
-e	कविसाहि० १०५४	चौबीमतीय दूर पूजा हि
हरिबन्द सघी	चौबीस महाराज की	८०२, दहै।
	विनतीहि० ७२५,	हीरानद एकी भाव स्तोत्र भावा
	34.8	हि० १०१
हरिषाय	षर्वेभमिम्युरय सं०३३६	प्रवास्तिकाय मावा हि
हरिश्वन्व सूरि	मिस्पिति वरित्र प्रा०	•
	349	43 \$ \$ \$
	वब्दर्भन समुख्यम स	मंगला वरसा हि॰ १०१
	989	समनशरण विवास द्विक हैं है

प्रंचकार का नाम	वंषनाम ग्रंथसूत्री यत्रसं०	प्रथकार का नाम	प्रंथनाम ग्रंथसूची पत्रसं०
हेतराम -	पद संग्रह हि० १००६,		गिश्तिसार हिं ११७०
`	१०४३		गृत्यूकाहि० १११६
कवि हेम—	ईव्यरी खदहि० ६६६		गोम्मटसार (कर्मकाण्ड
हेमकोसि	पद हि० १६७		भाषा हि० १६
हेमबन्द्रावार्य—	ग्रभिषानचिन्तामणि		चौरासीबोल सं∘ १८३
`	नाममाला स॰ ५३२		नयचऋभाषा वचनिका
	ग्रन्थामोयनिषद् स०		हि० २४३
	<b>!</b> =0		नन्दीइवरव्यत कथा ि०
	कुमारपाल प्रवन्य , म०		, Yeş
	३१६		पदास्तिकाय भाषाहि० ७३
	खरानुषासन स्वोपज्ञवृत्ति		परमात्मप्रकाश भाषा हि॰
	म० ४१४		परमारमभकाश मापः ।२० २०६
	विष <b>िठक्षलाकापुरुष</b>		प्रवासमार भागा वचितिक
	चरित्रस० २७६,३३२		हि॰ २११, २१२, ५१३
	नामनियानुशासन स०		भक्तामरस्भीत्र भाषा हिल
	प्र३⊏		৬४६, ৬४७, =७३
	शब्दानुसासन स० १२०३		ह्यद, हद्यक, १०२०
	सिद्धहेमलन्दानुष्टासन स०		१०६=, ११०६, ११०७
	¥\$*		११२०, ११२२, ११२६
	संड हेमकन्द्रमुखासन		११४=, ११४€, १२६१
	स्वोपन्नवृत्तिस० १३०		राजमती चूनगी हि०
	स्वापनामृत्य सन् स्वरावली चरित्र सन्		1880
	१२०७		रोहसीवत कथा हि.०
			cv3, 11c3
	4		स्यान्धदमानी की कथा,
ा० हेमचं प्र	श्रुतस्कम्ब प्रा० ६५६		¥11,
	£83		हितीपदेश दोहा हि॰
म० हेमचन्द्र	अनुसरकामा हि॰ १०५७		7014
हेमचं इ	त्रेपन किया हि॰ १७४	A	तीयंद्धर माता पिता नाम
-	नेमियरिय स॰ १४२	हेमसु	बर्गुन हि॰१११
	नेजिनाच छंद हि॰ ७२१,	<b></b>	वहाबहरक हालावनीय
	take	हुनहस	हि॰ १७
वार्थ क्रमराज	शीनसार सं० २१५ सनेवार्थं संबंह सं० ५१०	श्रासुरि	संवासिता आ • ६१६

## शासकों की नामावलि

धकवर	<b>७३, १२१, ६०, ३</b> ०७	(र बगजा) चार्यसह ३६६
	३२४,३३०, ४१७, ४३६,	(महाराता) तगर्मासह (६०, २६६, ७१४,६५७
	४४७ ६४८, ६४४	3 4 2
ग्रश्वर (जलालुदीन)	४४६, २०३	राराजगत्तमह ३६६,४७६
महाराजा धजयमस्त	972	राज प्रिराज जग्न्नाय ३०३१९०६
श्रजीत[मह	45 <b>£</b>	जगिसह -४ ७१६
चनुर्यासह	ونع	(महारागः) अयमितः ३१६
धमरसिह	388	(महाराजा) जयमित्र ७,२६५
<b>द्म</b> ल'उद्दोन	८७१	(सहाराजः) सन 🕏 जर्यासह 🗸 १६, ३०४,११११
धन्सावल खान	94	जराभिष ४२३
(रायल) भ्रासकरण	398	जबाहरसिंह ११६
(सवारं) ईश्वरसिंह	- 57	जसवर्गसह ५६५
<b>इंश्वरीसिह</b>	हरू४, १११०	जहासोर १२१ १६६, ३३३, ४१७
उदर्गास <b>ह</b>	301	¥8.3
(महाराब) उम्मे <b>र्शसह</b>	4/	जालिमसिह ६४
उम्मेदसिंह	३२६ १००२	जिनसिंह 3
धीरगमाह	.६४, ४६४, ६४६	जीवरणीयह डिगावन १०११
(राजा) कररा	9e3	राजा जैनसिंह ६९७
कमंतिह	<b>ક</b> રે	(रावराजा) दनेलमिह 💛 🤏 🗸
(महाराजा) कस्यारा	४०६	(हाड़ा) दर्जनसाल अद, २३७
कीतिसिहदेव	२०६	देवीसिंह १६६
किल्हरा	¥¥¥	दोलतिराव महाराज
कुमारपाल	78%	नूरमोहम्मद १६६
श्यामः त	ų o i	मनराजा प्रतापसिंह ११०
(राउल। र्यमदास	11	ं (महागजा सवार्ड) प्रतापसिंह ३५, १८८, ३१६,
गयायुद्दीन	ξ¥ι	. X02
	786	द्रम्, १०६४, १९०५
गुमानसिंह महाराव	251	. अरखा प्रतापसिंह १२०, ११२, ४६८
गोबद्धं नदास	\$ 0°	, प्रशीराज
भाद्र स <b>म्ब</b>		781
चन्द्रसोखाः	* (*)	e Seamond

सवाई पृथ्वीसिह	४४, २४४, ४२२	(राजाधिराज) मानस्यंथ	5 6 3
पुत्रराज	<b>4</b> <del>2</del> <del>2</del> <del>2</del>	ठाकूर मानसिह	३०६
पूंज विजय	3.5	मालदेव	४२६
(स्तान) पेरोज	90	णाहजादा मुरादखान	3 6 3
पेरोजसाहि	<b>२</b> ३४	राव मोकल	६ <b>१</b> २
फर्नियर	508	मोहम्मदशाह	\$ 0 × 3 € ¥ , £ X X , 5 0 3
फर्स्स माह	305	रगुजीत	₹⊏, ३६७
बद्धर (ब्रासर)	દ્યૂદ	र।गावत जी	See
बनभद्र	بإبه	राजमिह	२०६, ३६८, ११४१
बलवन्नसिह	X28, X88, 800	रामा राजसित	: 7:
(सवाई) बलबन्तामः	: ६७	रामचन्द्र	%9 <b>⊆</b>
बहलोल साह्	१००३	रामचन्द्र (मोलही)	د به في * و د د
(राजा) बीठनदास	Ę	ठाकुर रामवरण	8 25
रावराजा बुधमिह	\$ e 5	गम्बद	8085 8208
महाराजा भावसिह	≎ હ <b>६</b>	महाराजा राम†सह	13, 884" : 50
राव भावसिह	२७६ ,४८४	(सवाई) रामसिंट	¥ ₹ ₹
(गवर)जा) भीमसिह	9 % \$	(राजा) रामग्यथ	\$43
भोवसिंह	6668	गमग्यथ (हाडा)	४०=
राजा भैरवंगन	<b>યુ</b> છે છે	स्मादराम	9 9 9 9
टाकुर भैराकण	પ્રદ્	बस्देव	6२३
भोज	406	विश्वमनप	48.5
<b>मद</b> र्भन्	કે ૯ ઠે	विक्रमराय	808
महमदणाह	३३૪, ૧૧૧૧	विक्रमादित्य	३७ ६८६
महमृद	: = १	विजयमित	4.0
महमूद <b>स</b> रहि	२२३	िश्वनसिह स्थानसिह	3 9 8
महाराजसिद	££X	बीर्रामह देव	<b>V</b>
महानिह	5003	(रावन) वंरमञ्ज	335
माधर्वामह	१३5, १36, १ <b>0३,३</b> −६,	शाहजहा	२१८. ६४८. ६१७
	373, 550	शिवदानसिह	50, 353
माधवेश	و۶۶	(गला) मयाम	२६०
माघोतिह	४६४, १०२०	(महारागः) नग्रामनिह	२७१, ११४४
मानसिंह	११६, १६४, ३२३, ३६४	सन्मतिमिष्ठ	305
	360, 304, 346, 683	समासिष्ठ	२१८
		समुद्र विजय	४२२, ६३६
मः नविद्व देव	335	सरदारसिंह	१३१, ६०६
	***	-	

शासकों की नामावरि	1 }		[	१३६७
	१३१, १८०,२२५, ३१३	मूयमस्त	ę	oe

सनमसाह	<i>१६१, १८०,५४</i> ३, २८३	ત્રુવમલ્લ	(34, 230
रामा सागा	3=4	हुमायू	४१७, ६५=
सद्वसिंह	.%	(महाराजा) हरिकृ'गा	398
सार्थामह	- 0 8	हरीसिह	१११८
मृतमातसिंहजी	ξ ⊋ ע	होर्शसह	४२३
मुमर्गमः	<b>ي</b> ∲و	, मीर्रामह	११४८
-			

## **प्राम** एवं नगर नामावलि

भउडका देश	\$ 5 \$	<b>श</b> रूपगढ्	# te
<b>धकव</b> रपुर	3 १ २	धर्गलपुर	१२०, २२४
<b>मकवरा रा</b> द	७३, २२६, १२०२	धर्गलापुर	o Xe', o e'
<b>म स</b> यगड	***	<b>भ</b> सवर	1, 10%, 180, 140
<b>धस्</b> यगढ	१४८, १७२, १८४		१६२, १८७, २८३, ३४८,
श्रगलपुर (श्रागरा)	२४८		<b>३५३, ७०६, ८४१. ८</b> ५४.
ग्रगरतस्ता	ह०१		£
<b>ध</b> चने रा	<b>१</b> <i>∝</i> €	भ <b>लीग</b> त	¥3, €3¥
धत्रवगढ	808,8 0	<b>ध</b> यवतीपु र	990
<b>ध</b> क्मेर	२, ४१, ६२, ≈१, १२२,	<b>ग्रव</b> स्ति	X \$ 3
	₹₹७, ₹¥६, १×٤, १६=,	भ्रष्टानगर	3 \$ 1.
	२२४, २८४, २६१, ३१६,	धहमदाबाद	१७०, २६४, २७२, ३६४,
	३३१, ६६७,१८६, ४०२,		₹¥₹, <b>६</b> ४≈, ५७६, ६≈≈,
	870, X30, X89, 438,		७०५, ११४६
	EXE, EER, ERO, EUX	घहमदाबाद	\£ €
	<b>!!</b>	द्याकोदा	११=१
भन्यगढ्	११८, १६८, २६३, ३१६,	धाकोला	<b>४</b> २७
	845, 640, X84, X00	द्मागरा	२८, ७१, ६१,६४,००१,
<b>भजयदु</b> र्ग	3299		२२६, २३०,३०२ ३२४,
<b>श्रजै</b> नगर	895		331, 38x,360, Yox,
श्रजीग्रंगद (ग्रजभेर)	७१६		890, XXO, 860, EUX,
<b>प्र</b> टेर	७२४		६६७, ७४७, ११४०
बरागर ग्राम	₹ <b>१</b> ६	<b>प</b> रमी	र्सस्य
<b>प्र</b> श्लिहिमपुरपत्तन	५३२	क्षत्रदा	२१८, ४७२
ममरापुर (दक्षिश)	YEX	धानन्दपुर (बूदी)	*** ***
<b>प्रम</b> रावती	=६४, १२४	<b>भा</b> मेट	። ተ
ग्रम्बावती	٠, ٥٤, ٤૪, २ <b>७६</b> , २ <b>०१</b> ,	धामेर	१२०, १६१, १८६, २०४,
	२८६, २६४, ३३५, ३३७,		५०६, १३०, १०३६
	\$40, 802, 802, X28,	<b>श्रांवे</b> र	***
	६१३, ६६४, ७४६	<b>बास्ह्</b> स्पृ <b>पुर</b>	mee

m W	तवं	नगर	नामावलि

8	ş	٩E
---	---	----

	rिल Ì	[ १३६६	
बाम एवं नगर नामा		२२०	
qiat	१८३, १२०, ३१६,४३६ भोबेर	હંપ૪	
нія.	EOY EEX, १०२२ श्रीरमाबाद	४४७, ७०६.	
हटावा	२७५ कठूमर	きまれ	
इटावी इटावी	४८३ कनवाडा	<b>પ</b> ૃદ્	
इटावा इन्दरगढ़	१,६४,६६,८६,१०२, कनोज	<i>ودد, دو۶</i> ,	
Estation	२१८, २१६, २४६,३३३, करवर	४०४	
	B४४, ३७६, ३७६,३६७, करवाड	<b>५</b> ५=	
	४१६ ४४३ ४०४, ४८३, करवार	×εο۶	
	६००, ८०३,१०३३,१०४६ करावता	ુ, ૨ <sub>૧</sub> ૬૭, <b>૧૦</b> ૦,	
इन्दोर	१४२, १५० ३४८,३४४,  कराला	१३८, १६१, २०१, २०२.	
t-di-	Eष्र्, ७६८ € ₹४, ११८१	२१२, २२७, २६६, २७०,	
इन्द्रपूरी	११=	२७१, २७८, २६७, २६६,	
६७८३ः। इटडिया	११७४	३०६, ३०८, ३२६, ३३०,	
६८।७५। ईहर (बुजरात)	१२६, ३६३, ४५७,	388, 382, 386, 386,	
<b>ईलद</b> र्ग	३७४	350, 3EX, XXX, XEX,	
इंस इंस	३१०	AGA' AE	
६ल ईलचपुर	€4€	EOK, EUO, EEK, WOR.	
-	9.89	७५६, ८००, ८३०, ८४१,	
ईलाबा उज्जैनी (उज्जैन)	१७१, ११४६	€0 €, €0 €, €₹0, € <sup>2</sup> ₹.	
	३२२	\$ 0 EN . \$ \$ E \$	
उपवास	२२४, २२६, ८४३.	१०८३, १९=१ २ <b>१</b> ५, २३२	
र्दसग्दा	१०३, १३०, १३४, ३००, कर्लापु	गी	
उश्चिमारा	३६८, ३६४, ७१४, ८०३ कस्त	41.	
	२, ३३, ३५, ४१, १००, कर्बट	TDm:	
उदयपुर	१२४, १४१, १६४,२०६, कलक	त्ता	
		बल्ली नगर	
	३३०, ३४३, ३७०, ३७४, अस्त्र	रोपर रोपर	
	३८८, ४०१, ४७८, ४६१, कल्ड	भू भेरते	६२
		ाजा वर	ĘĶ
		गरापुरी (करोनी) ११२, ४	16
		हस्बपुर	44
		•	XX
		नपुर 	<b>Ę १</b> (
उदैगढ (उदयपुर	,	मबन मबन (कामा)	44
उदैनगर			<b>50</b>
एटा	६१० का	मवन	

कामा	२, ५०, १०१, १७६,		४७७, ४७६, ५८३,
	१७७, १८४, १८६, १६७,		=११, ६२६
	२२७ २३०, २३६, २१८,	कृष्णपुर	<b>१</b> २०२
	३२४, ३३७, ३६६, ३६७,	क्रैकडो	¥56. 403, 449
	४२४, ६११, ६७०, ७४६,	केथिना	5=
	७७६, १०४१	केलवा	6 = 3 8
कामागढ	२१ ३	के लिया म	
	358	केशं.	રદદ
कामापुर	≑૬€	काकिश्नमर	990
कामावती नगर	၁၇၁	कोटनगर	486, 808, 865.
गढ का शावती	ئ <b>و</b>		८५१, ४=४, ४०४,
कारजा	100' R50'R30' FRE'		४१२, ४२७, ६४७,
	११६७		36 d, 500, 8855
कालपीनगर	÷ + 3	कोटडा	τς
कालाडेहरा	५३८, ६६१, १४७	कोटः	१ ७४ हट १०२,१३८,
काणी	८५७, १२०३		१४८,१४४, १७४, २३७,
कासम बाजार	* 4 5 3		२४१, २४६, १२६,
कत्मसी	\$ a e 5		346, 384, 864,
किशनकोट	द१७		४१८, ४१३, ५७६.
<b>किश्रनगढ</b>	प्रह, १४०, १६५, ५१३,		६६८, ६८८, ७०६,
	४१६, ४८३,४८८,४८१.		<b>८५७, ११४४</b>
	७४७, ६४६, १७५	कोठी ग्राम	308
किन्ननपुरा	****	कोमी	<b>२</b> १:
कुचामए।	म <b>ें</b> इ	<b>कोशलदेश</b>	3309
कुत्रह	४०६	लंकनगर	२०४
कुण्ड (गांव)	₹ 4 %	खडगदेण	<b>£</b> \$ <del>\$</del>
कुम्दनपुर	404	समार	300
कुम्भावनी (कुम्हेर १)	३०४, ६५४	ख1ीली	२५३,५८७
कुम्हर	१८, ५५, ३४८, ७४६,	सार्जु रिक्पूर	4 5 5
-	= ¥0, १०६५	<b>खु</b> रई	84.
कुरस्थ	xee	<i>खुश्याना स्पूर</i>	४०२
कुरुवांगलदेश कुरुवांगलदेश	७३, ३१३	स्रोतरा	399
कुशसगढ	130, 438	स्रोहरी (डीगके पास)	२०१, ४४६
<b>मृतमनगर</b>	e\$3	गजपुर	४५६
कुब्समद	हेप्र, ४८२, ४४८	गढवाल	२७७

गधार	३२१,३६२,३७१ ग्राब	गुर	386
गंचारापुर	६१० घट	यानी	३५ ३
गोग र हू	३०३ घन	रिया	३६२
गाजीका चाना	६८ घा	Ž.	१०३५
गिरध <b>रवा</b>	২০ ঘা		348
गिरनार		भोर्ड तुर्ग	१३€
	૪,૨,૬,,,,૧,૬, ધો	ঘ নিল	3∓€
*		था	\$ 0000
		ग्दम <b>पु</b> र	. १२
गिर वी	त्वद च	म्देरी	७०, १३६, १४६,
गिरि <b>पु</b> र	६, ३५, १:८, ३२७		१७४, ४१६, २४ <b>१</b> , २८० ४ <b>४४</b> ७४२
	३६६,३८८,३१०, इ	र-देशी	<b>২</b> 19.9
	X84, 780, 880, 4	स्द्रपूर	4.6 0
	- 4	बन्द्रपुरी,	93, <b>9</b> 88
गीरसोपा नगर (कर्माटक)		<b>ब</b> स्द्रापुरी	१३३, ४१३, ७४२
war		चन्द्रावतीपुरी	<b>३६३</b>
गुढा सन्दर्भ	E 62. 8838	चमत्कारजी	630
गुजरःत गुजर देश	330, 830	चम्पानग नी	४३६
गुजर्यय गुवाजी		चम्पापुरी	३१८, ३२७, ५०४
-	ي ۽	च≭पावनी	३४, १२६, १७४, २०७
गुर्जर देश 	8 = 3		इन्ह, देदे <b>वे, वे</b> ं⊀,
गुरुवासपुरी	<b>\</b> :,		३६०, ३५२,५७४,
गगना	250		५४३, <b>५</b> ८१, ६१४.
गैसोसी	\$ 68, 35a, 684,		દપ્રદ, દેદ્ય, ૭૦૧
गोठडा		च, ३०इ	*8*
	प् <b>१७. ५</b> ६३. ४६४,	चा स्मू	११, ५००
	¥30, 58(	चाटम्	१, १३४, १५२, २०५,
गोपःचल	840, 864, 858,		६६२, ४४२, ४६५,
	२०६, २६६, ४६६,		४ उ≒् = <b>५७, ६३ ८</b>
	६७०, ११५४, ११८८	बादनगाव महाबीर	₹\$
गोवागिरी	YKX	वित्तीर	भ्रह०
गीरदेश	xxx	वित्रकृट	२१०
गोडीपाइवेंमाब	१०६१	(चन्द्रामि	£X.£
गोराशिकाय पत्तन	\$ex	चूह	१३०, ४५८, १११६
माश्रियर माश्रियर	१३६ १४०, ६७०	3."	१११८
व्यासम्	(45 (40) 40.		

वैद्यपुर	২৬ ?		१४१,१५०,१६२, १६३,
बोम्	y x y		२ : ४,२०६,२४४, २७५
चोरीवाड	११७१		320,328,3 <b>38, 33</b> 8,
चोइ	8108		३६३,३७ <b>७,४०२, ५</b> २२,
चौय का दरवःडा	3 <b>K</b> #		€0 ! € ? ७, ६ १=, ६ € €,
चौरानी (मयुरा)	१¥૭, ६¥¥		⊏ह६, हु२ह, ११०६.
<b>छ</b> त्रपुर	€9.4		११६६, १२०६
छ,बडा (बूदी)	3,44,35	जयसिहपुरा (जहानाबाद	) X < \$
अगदाल्हादनपुर	<b>५</b> १२	जना <b>ल</b> पुर	400
जग्गनिपुर (योगिनिपुर	383	<b>जवा</b> खा	३५३, :६०
जम्बुद्धीय	697. 69t	<b>प्रवा</b> लापुर	€5,9
	લું કે ફ	<b>अ</b> सरासापुर	\$ <b>\$</b> ¤
जयनासाः	980	अ' इंगा	644
जयनगर	२×२,६२३,७२,३३ <b>८</b> ६०	जालडा -	१११६
जयनगर	₹4,4(4,7,446	ज्ञालो <i>र</i>	5.63
जयनगर	२०१	त्रहानाब द	स४,२७,१६६,२४६,४८१
		्त् <b>नःगर</b>	₹ <b>₹</b>
जयपुर	5.34.88.40 c £' \$ \$ o'	<b>जैसल</b> मेर	ч,
	१५२,१८६,२२७, २४०,		२८=,४१=,४२४, १०२६
	२६३,२६४,२६८, २४८,	<b>बे</b> शि <b>हपु</b> र	<b>३</b> १२
	÷ 9 o	वैसिहपुरा	₹€=
	२७२,२७३, २८०,२८४,	जोडीगाय	844
	३०१,३२०, २४७,३०१,	जोधपुर	३८८, ४२६
	399,343, 344,397,	जोधागा	३६४
	808,80E. (25,888,	जोवनेर	१९४,२००, २३०,२३४,
	४५४,४५७, ४८१,४६१,		२७५,६१७,६४६, ६६०,
	<b>५</b> ०७		१७४, १२०४
	Mak, Max, MXR,ME5,	भन्ना	440
	६६१,६६ <sup>२</sup> , ७५७,⊏६०,	भाडोल	388
	दद <b>४,६०६,६०६,</b> ६२६,	मांक् <b>री</b>	४१०
	een, <b>१०४२,१</b> ०६२,	भासरापाटन	१४१,२५४,३१२,७१०.
	१०८१, ११०४, ११८४,		द२६
	3319	भालाबाड	१६१
सबाई जयनगर	<b>\$</b> ?•	भिर्कार	११३५
सवार्ध जयपुर	519 ,929,04,930,92	भिनाय	₹७,₹₹₹,६८४

प्राम एवं नगर ना	शबसि ]	<b>[ १३७३</b>
तो <b>ह</b> ा	६४,७४,१०३,११२ २३२ तेत्रपुर	1908
	६०४,३०८,३११ ३०७, लोक्सगट(टाडसम्ब)	२७२, ४१८,
	३७४,३१३,४१२, ४६०, धनोट हुर्ग	२४२
	<b>५५३,२१३,</b> २१६,१२०६ घर्मपण	<b>9</b> #5
टीडा भी म	६७,१०⊏६ धस्त्रो	e ¥
- टोडा गयमिह	<b>१. ४१. ⊃६६</b> , ८०४. पूरिक	६६२, ११५०, ११५६
•	<b>द</b> ३२ <i>्</i> तवगढ	७५<
रायमिह का टीडा	३२१ घोलपुर	१०६२
टोक	इ. ११०. २०८. ०१७,  व्यभगपप्र	9÷¥.
	३०० द्याला	<b>१</b> २४
<b>डिस्मी</b>	१६६ सालेबा	5.59
<b>प्र</b> ीग	<b>१५</b> , २१६, ३६७, ४८०,   ठबलाना	د. ود», غ×¢, عن×,
41.1	प्रथ्, प्रइ.६.२, ८०३,	૪૬૨, ૧,૩૨
डड्का गम	ভ হিন্দ <b>ী</b>	₹, १०१, ₹≥≥, ३०४,
होस्वाना स्रोह्याना	6 <b>?</b>	ક્ (પૂ, ૫૭૨, દેષ્ટ્ર ક્રેપ્ટર,
	<b>११</b> , ६१ <b>२,१</b> १७, १२००	E88, 80Es, 8888,
हूं गरपुर रूपायकीयाय	59.5	११३०, ११७४, ११६०
हिलाबटीपुर 	y⊀ दिलिकाम <b>डल</b>	<b>४</b> ६६
दू हार 	as) २६५, ३१२, ३६१, ४०८ टोल (डीम)	३३१
द इतहर देश (दू व	म्बासह) २८, ११२, ११२, १६२ दीवपुर	* \$ 2 5
नक्षकपुर (टाकार	१६७, २३३,२६६, ३०८, दीर्थपुर (डीस)	२६४, ३२१, ६९७
	३३३, ४०४,४४२, ४४४, दुस्ति	६२, २⊂, १३१,
	₹ <b>€</b> ₹ ₩0€,₩₹€, ≒₹₽₽,	१४६, १६०,२८८, ३६८,
		AUR COM CER. 654.
	505, 588,509, 50 <sup>5</sup> ,	१०११
	११८८, १२०४ कोक-स्थापिका ३६२ ७०३, देउल ग्राम	६४१
सकाक महादुर्ग	होत्रारायसिह) ३६२, ७०३, देउल पान २२५ देलवीडा	Rán
तरजाजनगरे	, C	* 63
तसपुर		१२४, ३०१,३७८, ४२३
ताजगंज	* * *	x40, 59
तिवारा	७२,१२०४. ९⊻≕ देवशिर(दौसा)	१८७, २०४, ३४१
तिहुनगरी	a c (-Eu-man	
<b>तु</b> ंगी	- 1.1	~, ~,
-	१०४३ देवगीय	, şo
तु गीमिरि	११६२ देवसाम	, A£
दुस्कपुर	६८३, ८२० देवडा	

देवनःम	: 3 3	नगरचालदेश	<b>2</b> \$ \$ \$
देवपस्ती		नःगपुर नःगपुर	१०, ६४, १३४, २४, <b>१</b>
देवपूरी	33×. 689	44.30	\$ EY, X ? ?, X ? ?, E ? Y
ये गुरा देवली	\$ <b>\$ \$</b> 0		304, 314
देवसाह नगर	8=	नागी र	808, <b>588</b> , 8030
देव्याद	3 6 8	नाषद्वारा	¥
देहसी (दिल्ली)	78=	नारनील	४४, १२७
दोसा	₹o, ६o ,११=, १∓३	नामग्दा	३४, ११६
	₹₹₹, ₹₹¥, ₹¥¤, ₹७₹,	निस्त्रीती कला	% १ व
	\$50, Pob, 286, 232.	निवाई	E08
	२४६, २६८,२६३, ३०६	नीमव	¥.00
	340, 348, 348,346,	न्गामा	308
	3 E4. 807, 865, X02,	न्ननपुर	રે ૭૫. ⊄ર્ય
	६७१, ६६६, ३७६, ७६३,	नृपसदन (गजमह्रून)	भ्रः
	८०४, व्हेद, १०१४,	नृग्हर्म्य (राजमहरू)	<b>¥</b> . 9 €
	9837	नेवटा	X2.X
इध्यपुर (मानपुरा)	१२३, १३३, ४२४ ८८२	नैसपपुर	१३०, २२१
<b>द्वा</b> रावती	४२६	नेगावः	२,४ ७,१०३, १३०,१७८,
डोस्गीपुर (दूग्गी)	**4		२१६, २२४,२३७, २८६,
नगर	1:6, 060, 203		30E, 310,310 31E
<b>नग</b> ंत्र	€54		too, 500,581, 515.
नधीरमापुर	= 1 =		E \$6, 738, EEX, EEX.
नस्टयाः	दर, ७११,१२४, ११७३.		ete, tt⊅
	2202	<b>नै</b> न	1.25
	• • •	नैमखार	y 4,7
नयनापुर	352	नोनाही (नौनाई)	5,4
न्यवर	? o { x	नीमाई	νía
नारायम्	હાકરે, હાક્ષ્ય, કાંગ્રદ,	भौतनपुर (नृतनपुर)	980, 3X0
(गढ) नचपुर	305	पचनाइ	λεs
नसपुर	<b>११३</b> ६	पश्चेषर	४१⊏
नवग्रामपुर	***	वं ज्ञाब	£73
नवावगत्र	3=4, 8424	पटसास्थल (केशोरायपाटन	<b>(1)</b>
नसीराबाद	¥€	पट्टला	eff
नाई (दबसाना के पास)	440	वर्ष -	<b>१</b> ‡१
मागढ नगर	¥¥¢	वरतासपूर	9 PM
	•		

प <b>रानपुर</b>		कायुई (फानी)	४१८, ४०६
<b>वबस्त्</b> युर	75.	यगरू	२३७, ७४८, १०८
वाम्बानदेश	9000	बड्वन नगर ( <b>बडोन</b> )	322
पाचीला	1913	बटवा-न	₹ ४=
वाटगा	. o X	वडीन	\$8\$
यानीयन	ν, ν,	बमाहरा (बमीठा)	⇒3.9, <b>X</b> 00
<b>पार्थपुर</b>	143	यस:इन	४२७
पालम	÷ 1.9,	araj	₽३६, ३६७
पालव	y = 5	बगह	83.9
पःलब (पालम)	*. *	नयाना	१,२६, ५३,8६, १९, १४७,
वियोग	pric		१५४,१६४, २३१, २३६,
विनो अपुर	0 °,		रेम्ब,३०१,३३१,३४०,
प्शिवपुर	٠٠, ٠٠.و		368' 805'802' 860'
पूर्ण सगर	12.8		<b>૪૫૬, ૫૬૬,૫૭૦, ૬</b> .૨,
गे <b>गेअपुर</b>	t o i		बर्द्द, ब्दर्ह,ब्द्र्यूर्, ब्र्ट्र्,
शंटलग्राम	9.0		r EX
पोसीना	. 64	यसक	द <b>१</b> ७
प्रशासगर	48. 384, 338, 809,407	, बसवा	प, ३ <b>०,६</b> ६, २१६, २४०,
	उद्यद् दर्द, द०१, ३६५		२५०, ३४१,३४४, ४६४,
प्रतापप् <b>र</b>	क्षेत्र <b>, ४</b> २४ ८०२		<b>८११</b> , ८२७
प्रयःग		बसनपुर (राजमहल वे	
प्रश्लावपुर	45.60	पाम)	
प्तेहपूर (शे <b>कावार्टा</b> )	₹, ⊑४, १०१, १४१,	बहारादर	: 93
1( Y. ()	१५८ १८७ १८८, २२०,		55
	२३५, २६६, २८७,०४,		२०४, ३०१,३१०, ३७४,
	: 86, 430, 850, 85%,		४०६, ४७३, ६८८
	Ye3, E3, Fey		११६०
			886
	9,739,6°3 ,33⊐,⊐Xe		११५६
TT P	१११५	_	***
फारक:	£ 5 3	_	280
फर्ग साथाव	999		368
फलटन	१४०		 (% =
फागी	स <b>३, १४२, १</b> ६७, ३४६		११६०
	३०४, ३१०,३८८, ६४८		
	<b>5</b> X 5	5 बामी	६५३

वास	명함	सतर	नामाचलि

ſ

₹₹७६	1
------	---

विसादः	₹€¶		६२४,६३१, ६८७,१०४१
<b>बीका</b> ने र	, 860, X03, GX5. E08,		१०५२, ११६१
	2999	<b>ग</b> रतक्षेत्र	3.23
बीबलपुर	xx	माइल	१४३
बीजापुर	४४७, ७६२	मादवा	१३, ३८, ६८, ११८,
बीमही	£3		हेप्र, ७३६ ८४३
बुरहानपुर	*c=	भादमोडा	X a
बुहारनपुर	0609	भानपुर	<b>દ</b> ર, પ્રદ <b>દ</b>
बूद <sup>र</sup>	<b>१, ३१</b> , ¥३, ≤०, ≤१	भावगर	द१४
	२६६, २७०,२८६, ३०२,	भांडःरेज	λ≃£
	, <b>३०६, ३३४</b> ,३६० ३६६,	মিশ্রী	525
	. ३७४, ३७८ ३६४,४१६,	भीलवाडा	4462
	xx0, €€\$,0x1, 0=+,	भीलंग्डाग्रध्य	\$¥\$, <b>११</b> ⊏०
	, 200, 208,298, 290,	भी हर	प्र. ४०१
	EX\$ , 430,460, 65%,	भुसा <b>व</b> र	śεA
	₹₹0€	भूडा	46%
गम्पुर	₹ ₹	<b>मेदकीपु</b> र	163
ोरी	* F & '	भेलपुर	و لاوا
ामी	, 407	भेनसा	<b>⊀</b> ↑?
वस्वर	€•¥	भैसरोडदुर्ग	9 द रे
रगवनगढ	चे t ४	<b>मेससागा</b>	२१४
ाइसदा नगर	<b>?</b> 50	भोजपुर	3 X G
वावर	208	मकसूदाबः द	¥6'
<b>य</b> शेठा	ε <b>ξ</b> •	मगधाक देश	373
<b>रतप्</b> र	1, XY, Xo, 53, 5Y,	भव्दर्ग	२१४
,	E3, 222, 226, 226,	मंहलगढ	184
	१२१. १४६.१=E. १E3,	मडलद्गं	166
	₹₹¥, ₹£¥,₹#₹, ₹₹₹.	मङ्ग	400
	270, 224,382, 274,	मंडो <b>व</b> र	१४३
	338, 366,36¥, 369,	मना	6485
	803, 82c,830, 804,	मधुरा (चीगसी)	\$xu, \$47,388, eco.
	4 ta, Exe, Est	3 1/	mes, ete, tt?#
	\$\$7, \$ <b>60.</b> \$86.66\$.	मस्मई (बन्बई)	***
	७५६, ७६४,७१८, ४००,	ममारसपुर	1020
	=2€, =30, E8¥,E8¥,	मरह्ठदेश	4.65

मनयशेष्ठ	300	मालदा	२३५, ५६०, ६१४
मनारगढ	४६१	मालं गाव	११६२
मलारगाः	४१०	माहेण्वर्	FXX
मलारसा हुगर	3.5	<b>मिभल</b>	<b>५•</b> €
महाराष्ट्र	६, ६४६	मित्रीपुर	१८७, २६६, ३१९
महारीठ	८७, ३८६		980
(मारोठ)	४०२	मीगामा	१०३४
		मुक्त विरि	६२४
महावीरजी	કર્ગ કે <b>પ્<i>ઠ</i>, દેપ</b> પ્ર	मुमोर्ड (बबर्र)	\$\$0
महिम लगर	c \$ Y	मु । मग्राम	• 5 5
महिमासा	३ः⊂	मुलनारम	११६७
महीसान (यहिसामा)	£ 2.3	मृहस्यतपृरा	६७४
महुग्रा	१४७, १४६ ३६७	मेडडा	8 € 3
यागनपर नगर	44	मेदन'पुर	5 6 ₺
मानीलु गी	Fros	महत्र	४४०, ७०४
माडरत्युर	\$0 63	मदगार देश	३१६, ३६०, ४६१
माहग्।	४ € व	मेवुपुर	903
मारापुर	2 9 5	मेदनीपुर	९५६
मण्यवपुर	२५० २८६	मेरुपाट	383
(सवार्ट माधोपुर)	EXS	मनपेडा	५६१
माधोगद	३७	मेवाड	११०, ६३४, ६६३,
माधाः जपुरा	\$40		<i>\$\$</i> 88
मानगर	२३६	मेवाद्य	३८६
मारवाष्ट	४७६	र्भनपुरी	3=4
मारोड	७१०, ६१६,६२६, ६४६	मोदी	६२२
	६३७ ११६२	मोजवा	<b>११</b> ६
मालपुरा	४. ५१. ५६, ६१, १०३.	मंशिकपुर	ξ¥
	१२४. १४३, १८४, २०७	मोजी मियाका गुढा	प्रदर्भ
	२६६, ३५०,३८६, २४३,	मोस्टका	,
	<b>४१२, ५३७, ५५३,६१</b> ६,	मोहा	₹¥=
	£ \$2, £ \$6, £ \$2,£ \$3	मोजपुर	4 • c = ¥, § c =
	504, 820, <b>११</b> ४४	मौजमादाद -	-
मासव देश	₹08, ₹06, ¥00, ⊑≈€,	भः <b>जमादाद</b>	११६, १७४, ३ <b>८</b> ६,
मालव मंडल	202		800, K00,
यालव	२४२, २७१, २८७	मोखाद	₹ <b>₹</b> ₹, ७०१
	141, 101, 150	નાખ(વ	₹₹•€

[	ग्राम	एवं	नगर	नामा	वलि

१३७⊏	]
------	---

७३, ७४, द२, २२४.	सदाव तकी गढी -	१६६, ३८५
		100, 400
३६३, ११७४	स्हनगपुर	64.0
Ę t.	<b>रस्त्रमगढ</b>	६१०
\$0\$0	नेवाडी	हरद, १२७
3=0	रोहतक	300
१२०, २१४, ६२६	रोहितक नगर	55.4
१०२३, १०८६	(रोहतक)	
\$ 028	रोहितगर	3:0
₹0=6	(रोहनक)	
\$0.7	रोहिताम नगर	2-3
७१०	(गेहनक।	
∌ ६ મ્	चकातगरी	€5
१४१, ६२४	लाधुदेवगिरी	4.6
303, 848	सब्यविजयप्र	१२०३
خىبىلا	लसितपुर	848
5.73	नवाग	२२४, ६०६, ११११
१0, PE, (03, 93%)	ल प्रकार	२, ३४, १४०, ३८-
142, 200,250, 30X,		४२६, ४४७, ४ %
340, 350, You, YFE.		485, 318, . a ,
₹¥₹, ¥€¥,¥•€, €•€.		हर्स, १११
2 8 8	नाइबेडा (प्रागरा)	- t
?, <==	माने रा	902. 192, x89, 127
≈ 30, ₹3¥, ¥° =		975
	नाक्षण (कीटा)	<b>1</b> 44
	•	388
	**	∓ده, ۱۹۵۶
		96?
	•	¥o¥.
		500
		308
		e:3£
		प्रदर्
	•	858
	_	
	41.410	३६, ४६०, ४६३, ४६७, ४८ <b>१,</b> ६८४
	\$0,000,000,000,000,000,000,000,000,000,	१०१७ नेवाडी ३६० रोहतक ११०, २०१९, २०१६ १००१, १००६ १००४ रोहितक नगर १००४ रोहितक नगर १००४ रोहितक नगर १००४ रोहितक नगर १००४ रोहितक नगर १००४ रोहितक नगर १००४ रोहितक नगर १००४ रोहितक नगर १००४ सेहितक नगर

भरपुर	<b>इ</b> ंक्, ७०३, १००३	सागपुर	६००
<b>शेवपु</b> र	\$ 6.3	मामनपुर	<i>= 4x</i>
नौरीपुर बटेश्वर	<b>৬</b> २ <b>ছ</b>	सामवाहा	वेट, ४४, <b>१</b> ०८, २३ <b>५</b> ,
श्रीपत्तननगर	<b>१</b> •		₹०६, ३ <b>६०, ४८७,</b> ५२५,
श्रीवत्तनपुर	30		११६, १४४. ६४१,६८८,
श्रीप <b>या</b>	;c.s.		६ <b>६२,</b> ७ <b>६०, ८१३,८६२,</b>
श्रीपुरा	<b>७</b> १४		₹ <b>८</b> ६, <b>११</b> ४४
मईबारी	tta	मागानगर	₹€३,
सकूराबाद	१२०	साय। नेर	१०३, ११६, ११८,२१८,
संकाशद्वंग (मध्यदेशस्य	<b>ৰে</b> ) ৩২३		२४०, २४१,३११, ३८४,
मगरब।हापुर	७५३		४०६, ४६३,५३५,७५२,
संवासपुर	१८४, २६४, ७४२, ६२४		₹0 <b>४₹</b> , ₹0₹5
मरोले	Fr¥	सागावती	२६४, ४०८
सदारा नगर	\$ <b>?</b> c	सांगर (माकगरी)	e3, 668, 6xx
सम्मेदशिवर	द२१, १०७१	सामपुर	<b>३</b> २४
सम्मेदाचल	१०४३, ११७२	सामगिरपुर	<b>4</b> 84
सरवाड	390	सायपुर	<b>૭</b> ૬૪
सक्य नगर	२६७	सारमंगपुर	<b>~</b> 6 <b>3</b>
सरोव	Yop	सारगपुर	२४२, २६५
सरोजनगर	£ 3 ¥	सामी	१•३१
सरोजपुर	७६, ६२७	सामोडा	<b>६१</b> २
सरोका	२६७	सावसा	484
सम्बर	६३१, ८१२,८४७	मासनी	٧٤.
सबाई याषोपुर	□¥, ξ=, ₹οο, ₹ξο,	सासवासी	3=0
	१२० १२३, १३४,	<b>साहपु</b> रा	X=0, ==4, E (¥, E (¥,
	१४८, १७६ १८०, १८६		हर्व, १००२
	२३७, २६२,२=२, ५११,	साहीखेडा	***
	484, 848, 694,576,	सिक <b>दरपु</b> र	৬१५
	=40,=48, €30,8863	सिकन्दरा	1.1, 144,7.1, 1.1,
सहारनपुर	¥3.3		€0¥, €8€, ७8•
साकेता	33.9	सिकदरा (बागरा)	= २०, १११E, ११२ o
साबूएा	345, 8ck	सिद्धवरकूट	÷••
मागरबपुर	£4.8	सिरपुर	७६६
सागपसन	₹ <b>६, ६५, ३०२, १२१,</b>	सिरोज	१८८, २१७, २८०,३६२.
	2 E		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
	3		49x, 644

सिरोजपुर	33\$	सोलापुर	хę
मिहपुरा	३७१	स्कथनगर	११३६
सीकर	c २ १	स्वामी	ÉÃO
भीग <b>ो</b> ली	84€	(गद) हरमोर	= ३८
मीनोर	ey s	(श्री) हरिदेश	285
मीमवाली	३०८, १५०, ८ ६	हरिदुर्ग(किशनगर।	५७३,४६०, ५६१, २०४
<i>मुजानग</i> ढ	2882	होरयागा	1-1
मुजालपुर	3 0 3	ह <b>मन</b> ार	333
<b>नुदारा</b>	784	हस्तिकातपुर	4-6
मृने व	१३५	हरितकानिपुर	3.8
मुरोज नगर	: <7	'मगत्तन	, १
मुलतारा (पुर)	Fe. 5	राजीपुर	840
मुक्तगव <b>य (मी</b> नीपत)	१३२ १८३	हाडीनीदेश	४्००,४०१,६००
मुसनर	२७१, सब <b>६,</b> ११४४	हाभूकस	(*)
मुम्यान नगर	242	हासोट	- 73,878,5
म्*अगः	<b>۷ يو پ</b>	ट्रिय <b>ह</b> ील	६२,०६,६६७,३३१ १६०
स्रम (बदर)	६३, १८०, १४४, हरूर		4 ,
म्रनगड	701	stange tracters	(4'5 3'4*6'*10
सूर्वपुर	605,40¥	बीसपूर्वः (जिल्हापः)	309,309,000
मेगला	Ass	हिस्स (पुर	438
साजन्या	315	िमार	8-4.865,65-,. 18
मागुर	E 0 ?	हित्सार (हिन्सर)	y
मारठदेश	٠, ١	हिमार प्राज्यस्य	£0.1
सीरीपुर	४८४,३३६,६७४	होंडोली	३३५,६८३,०१२

## शुद्धाशुद्धि विवरण

पत्र संस्था	पक्ति	ग्रमुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
o o	: /	उतेरा चरा गांग	दंबन्द्र चन्द्र गरिंग
	(	<b>उगाम</b>	जयार्थ
± ?	9 €	म राज्य	र उभा <b>य</b>
X3	,	ग्रंपभ ग	प्राप्त
30	5.0	निपनावित	नियल।वलि
9.3		वियालीन दासी	बियालीम ठार्गी
9=	5	सिद्धास्त	धर्म
50	93	तदानमाये	तदामनाये
\$ o X	• :	चर्तुटशी	चतुर्दं शी
224	9	जनभीत तप सावन	ादानशील तप भा <b>वना</b>
۶. ২	9.0	दीवन जी	दीनान जी
Y . Y	:	प्रतिष्ठ गियारा	प्रति उग्गियारा
Y:=	<i>.</i> ૢ <b>૧૧,૧</b> ੩.૧૫ <b>,</b> ૧√,૧૦	प्रसिक्षक २,०,४,४,	,प्रतिस०२(क)३(क)४(क)
		६,७	प्र(कः)६(कः)७(कः)
9 * 3	⊽ =	वीरमेनामिधैः	वीरननाभिर्धः
\$ 3"	ų	चन्द्रप्रभा चैत्यालये	चन्द्रप्रभ चैत्यालये
86:	ς,	बुद्धि वि	वृद्धि दिलास
<b>१</b> ४६	*	नलपि	मे प्रतिलिपि
१४८	₹₩	भाषा सस्कृत	भागा-प्राकृत
१४१	२०	e8-9	<b>१</b> ५४७
१५३	<b>t</b>	महा−५०	— महायं०
<b>१</b> ६०	२०	लोकामत	लोकामत
१७३	¥	सागर धर्मामृत	सागारधर्मामृत
१७६	¥	मगसिर मुदी १४	मगसिर मुदी ५
318	२१	ब्रह्म ज्योवि स्वरू	य ब्रह्म ज्योति स्वरूप
२०३	<b>१</b> २	द्वदशानुमोक्षा	द्वादशानुत्रे का
319	. 44	रचनिका	वचनिका
222	30	सम्प्रक	सम्यक्
222	ąχ	जपनु	जयतु

पत्र संख्या	पंक्ति	मगुद्ध पाठ	मुद्ध पाठ
२२ <b>६</b>	<b>રે</b> હ	प्रकारगा-प्रतिरोध	प्रकरसा <b>प्रतिकोध</b>
२२६	₹•	समसार	समयसार
. ३ द	¥	ना <b>ष्ट्रस</b> ाल	न।थूराम
२३⊏	ς,	समाधि दत्र	समाधि तत्र
२४६	<b>?</b> *	स <b>वराधनुमत्रे धा</b>	मवरानुप्रेका
₹¥=	२	<b>ध</b> वसहस्री	<b>ध</b> प्रसहस्रो
२६१	२२	समुख	म मृज्य
248	<b>२</b> %	हरियन्द	हरिमद
२€७	ŧ	मवि	कवि
₹ € =	३, ६, १∙	६, ७,⊏	<b>9,</b> =, €
₹₹	₹¥	बढा	बहा
३१५	₹\$	व्येतास्वरनाष	<b>स्वेताः बराम्नाय</b>
३१५	२	पुरतकः	पुस्त <i>क</i>
9 € €	¥	भावा	भाववा
\$ : 0	ŧ	जानन्धर	जीवधार
334	2 %	<b>बन्दु</b> मार	धन्यकुमार
₹ 6 •	5	<b>मकु</b> त	संस्कृत
β¥⊏	X.	तेरहपणी	तरहरथी
३४६	3 2	सकृत	सम्ब्रन
360	१⊂	दि० जैन मन्दिर	दि० त्रैन मन्दिर
		वचेर वालीका	बधेर वालो का ग्रावा
347	24	कविपरग	कवियस
३७१	१०	सर्वाई मानसिद	सवाई रामसिह
दे <b>७६</b>	<b>t</b> :	यभोधर	यक्षोधर चरित्र-परिहानस्य
303	२⊏	अनसेन	जयमन
350	<b>₹</b> 3	र० कास 🗶	र० काल स०१५८ ⊏ ने
60?	•-	w . www	<b>新河 ★</b>
	₹ <b>२</b>	र० काल × पति म० ७	र०कालास०१८६७ प्रतिसं०१
<b>₹</b> •'3	4.A		भग्यणः कीति भग्यणः कीति
	<b>tt</b>	यशःकीति	
४१७ ४२४	3 t T	सुसाहु चरित्र तजी	मुबाहु चरित्र तस्त्री
४५६ ४५६	₹ २•	तजा बादितवार कथा	तस्या स्रादित्यवार कथा
*1¢ Y≥X	२ <b>२</b> २२	भादतवार क्या कामाका वार्य सवा	
8+4	7.7	कालाका चाय कवा	कालकाचाय कथा

गुद्धागुद्धि वि	बरस् ]	[ १३८३
पत्र सस्या	पंक्ति	<b>श्र</b> शुद्ध पाठ <b>शुद्ध पाठ</b>
Yŧs	*	म ० नरेन्द्र कीर्ति आ ० नरेन्द्र कीर्ति
88:	9 9	भाषा-कथा माषा-हिन्दी/विषय - कथा
***	3	उदयमुर <b>उदयपु</b> र
8 4 9	w #	में इत में ढक
6 € 8	¥	नयमल × 1
<b>/%</b> ≒	Ψ¢	∞नावतीकथः रत्नाव <b>नीकया</b>
695	13	ानमागर श्रु <b>तसागर</b>
636	~:	चुर्त्रारामबंद चुन्नीलालवैनाडा
૮७૬	÷ Y	ग्रस्नदेव <b>श्रभ्रदेव</b>
820	в	कजिकावतकया काजिकावतकया
75-	* *	भीवसी घनराज
\$ 3 0	१६	<b>श्रीम्</b> क श्रे <b>म्मिक</b>
४२२	२४	वादीभ कु <b>मस्य वादीभ कुभस्य</b>
·6:	२६	प्रति प्रोदप प्रतिष्ठोदय
46.6	5,2	म्बल्य स्वल्प
Уо≒	و	यथ उत हृत यंथ ते उहात
प्र११	υę	कातन्त्रत रूप माला कातन्त्र रूप माला
315	3	शृतन्द <b>बृदन्त</b>
487	9	पष्ठि सदतस्मरी पष्ठि सवल्मरी
<b>४</b> ०७	<b>१</b> ३	कवि चन्द्रका कविचन्द्रिका
200	¥	जिन पूजापुरदर जिन पूजापुरदर
2 \$ \$	'9	प्रदेशक <b>६१५४</b>
€.₹ 0	4.8	रामराम रामरास
860	18	रामसीनाराम रामसीनारास
<b>₹</b> ४¥	<b>१</b> ≒	श्ररोपम भनोपम
<b>48</b> 4	40	\$2.5. <b>\$2.0</b> x
६४६	-8	स्खथाम सुखयाय
દપૂર	`&	विहासी दि <b>हाडी</b>
<b>£</b> ¥ ¥	₹¥-₹ <b>Ę</b>	तयागच्छ तपागच्छ
<b>દપ્ર</b> દ	3 ₹	इ० सामान ब्र॰ सावल
६७१	Ę	े ज्ञान ज्ञात
६७४	<b>?</b> o	वशेष विशेष
303	२६	सग्रह द्रत्य सग्रह ग्रन्थ
६८२	२०	किञ्नदास वाचककिशन

पत्र संख्या	पंक्ति	प्रमुद्ध पाठ	
७११	?	साधमिका साधनिका	
७१६	<b>१</b>	85.50 £5.80	
৫≎¥	€	सफलकीरती भक्तकारती	
७२१	ə ş	प्राकृत संस्कृत	
७३०	₹ः	यमरम पार्थ्वनाच धभरम पार्थ्वनाच	
03X	₹'&	सम्ग्रन हिन्दी	
9.9 ?	6.8.	स्तीवय स्तीतश्रय	
و څو	\$	ৰদুৰিলানি কিব বুজা লঃবিলনি বিক মুজ	ì
<b>= ₹</b> १	8.8	सुद्ध श्रयास - श्रद्धास्ताय	
⊏१२	э×	50	
e \$.R	٥ و	नरन २०न	
न १७	\$ \$	चतुनि शनिका नतृविशनिका	
526	¥	दशनक्षरम् द्यापनः दणनः अस्मोद्यापन	
= 3 9	Y	बनुझामे चन्द्रपम बरुषाथ चन्द्रप्रभ	
=35	3 ₹	शानिक शानिक	
= 69	÷ .	निवास काड निर्वास काड	
≂χ∍	9.0	पत्रमीयतापुत्रा शत्रमीवरपुत्रा	
<b>≂</b> ¥.€	4.5	प्रतिस०७ प्रतिस०२	
⊑ 3 €	9 0	उमार क्यामी उमा स्वामी	
વિષ્દ	१२	सम्पत हिन्दी	
550	=	विद्याविद्यानुवादा विद्यानुवादा	
443	30	सामो पैतीमी सामो कार पैतीसी	
€ 0 3	₹ <b>c</b>	भाषा-विद्यान भाषा-सम्बद	
ह ४६	3 €	प्रसाम् प्रशाम्	
€ 2 =	33	स्परि वसुधरि	
£#£	<b>१</b> ७		
<b>ર્ષ્</b> દ	€	,, हिन्दी	
₹४६	१८		
€45	<b>१</b> ६	भ०सकलकीति मुनिसकलकीति	
€'9•	₹¤	निर्वासि निर्वासि	
££ \$	t a	पद्मनंदि सूरि पद्म प्रमसूरि	
وقع	¥	मन्तिम श्रन्तिम	
<b>१</b> ००२	₹•	. विहारीदास विहारीसाल	

पत्र संख्या	पंस्कि	ध्रमुद्ध पाठ	मुद्ध पाठ
₹••३	\$4-\$K	े महाराष्ट्र मावा	द्वादश मासा
		द्वादश मासा	महाराष्ट्र भाषा
१००५	३२	वेतक कर्मवरित्र	नेतन कर्म परित्र
2022	<b>१</b> २	उपदेशतक	उपदेश शतक
१०१३	٤	धनपतराय	द्यानत राय
१०२६	¥	षट्चेशा	बट्लेश्या 📑
8088	१६	पाण्डे जिनराम	पाण्डे जिनवास
8083	3	गगाराम	गगादास :
२ <b>०४४</b>	२८	काहला	स्याहला -
4 • X c	२६	सवाध्य गार	सभाग्र गार
१०६९	₹8	देह	देश
१०७४	१७	सूधरदास	. भूधरदास
8056	3 6	क्र जयसागर	उपा० जय सागर
9.05€	*	वेतन पृत्रल धमास	त वेतन पु <b>द्शक धमाल</b>
7.086	<b>t</b> %	रमण नार भाषा	रयस सार भाषा
2308	٤	स्वनाः वली	म्ब <b>्नाव</b> ली
2085	<b>१</b> %	म <b>नराम</b> ।	मनराम
\$1.01	*	पश्चापध्यायी	पं <b>चाध्या</b> यी
\$103	15	बनामरीदास	बनारसीदाम
1110	48	<del>प्र</del> क्षिस	वक्षिर
<b>११२</b> २	*	बुषटोटर	बुषटोडर
<b>११</b> २३	<b>१</b> ४	भघ <b>रदा</b> स	भूषरदास
<b>११</b> २८	<b>१</b> =	पांधेजी पन	पाण्डे जीवन
1121	3	बस्नाबर सिंह	बस्तावर लाल
११३७	२७	लबण्य समय	र.[बच्य सम्ब
<b>११३</b> =	4	गुणतीसी सीवना	गुएतीसी भावना
3488	4.		तंडी सोनह कार <b>ल पांकडी</b>
\$\$AA	N.	होली भास	<b>हो</b> ली रास
1133	₹•	शिष्या दुक्ट	मिथ्या दुक्तः
1140	₹€,	संबोध संगास	संबोध सत्ता ग्रु
<b>1110</b>	11	- मार्डक	मांडन
११६८	ŧ	मधायम	दया राम
1149	२७	खप	क्षपथ
101	¥.	प्रकाश देश	द्भवर्ग पेद

पत्र तस्या	पंक्ति	समुद्ध पाठ	যুক্ত বাত
£e\$ \$	*	वैद्धिक	वैदिक
११७५		बुटका सपह	प्रवशिष्ट साहित्य
1105	२०	गमंबक्युल	गर्भवऋदुत्त
११७६	र४	जिनसतका रब्यालं कने	जिनमतकार <b>व्यनं</b> कृति
2055	રથ	इलायुध	हनायुष
\$ <b>\$</b> 0 <b>\$</b>	**	वन्द्रोमीलन	चन्द्रोत्मीमन
\$ <b>\$</b> ###	<b>2</b> 6	पञ्जूष्म कहा	पञ्जूष्णकहा
<b>{ { 4 4 4</b>	२६	परदेशी मतिबोध	परवेसी प्रतिबोध
<b>११</b> ९२	₹ <b>¥</b>	रवशसारव चनिका	रयससार वयनिका
ttex	35	मतुं हरि	भतुं हरि शतक
1185	* *	सोभकवि	सोमकवि